

অর্থাৎ

শব চীৰ সংস্কৃত, আলালা ও আদ্য শব্দের অৰ্থ ও ব্যবশাত আহন, পাহজ, হিলে চেড্ট্ট প্ৰেণ্ড চণ্ড বিভাগ শব্দ ও চাহাদের মাত ত বিৰাগী, মহ্বত হ ব্যবহা আহা ও আহাদের মাত ত বিৰাগী, মহ্বত হ ব্যবহা আহা ও আনাগা লাভিত্র হুতায় টুবনিক, পৌলানিক ও ইতিহালিক সাইলোটায় তামিক বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত বিশ্বত হৈ বিশ্বত বিশ্বত হৈ বাহিন্দ্র বিশ্বত আহিছিব, আল উলিহ্ন, ব্যবহার ক্ষাদ্র প্রেলালিয়া হাত্ত লোভিত্ব, আল উলিহ্ন, জালিব, জালিব, জালিব, জালিব, আহুলিহালা, ক্ষাদ্র ও হলিমী মাত্র চিক্রিন, গালিব, ইলালালা ব্যবহার বিশ্বত বিশ্বত আহুলি বাহা প্রায়েশ অকালালী ব্যবহার বিশ্বত ক্ষাদ্রালাল বিশ্বত আহুলি বাহা প্রায়েশ অকালালী ব্যবহার বিশ্বত বিশ্

তাফীম ভাগ 🎙

তিমি-**ুদেবহু**দ

(১৭) নং নীলমণি মিজের খ্রীট, বিপ্রকাণ কর্মিটার হউতে)

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বন্ধ সঙ্কালিত ও

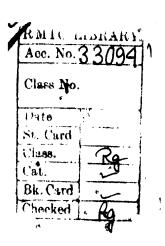
धकाभिउ।

কলিফাভা

७ नः जीर इपादवत्र उनम्, ध्यृष्ठे देखिन् ८ शहम

ইউ, দি, বহু এও কোম্পানি দ্বারা মৃত্রিত।

. ১৩०৪ मान ।



জিমি (খং) ডিন্ইন্বাভাষাতি তম ইন্অকারভ ইকার-দেশঃ। সমুস্রচর স্কর্ত্বহ শুক্তপারী মৎখ্যকোর ভীববিলেন। পি জনচৰ কি স্বলচৰ জীৰণ শ্ৰণীৰী মধ্যে ভিমিৰ অপেকা গৃহংখান জীব আলিও অংথিসূত হণ নাই। মৎজের ভার ইহাদের পুছে (ভাজা) আছে । জলে দাঁতার দিবাব জভ মংভের্ 🛴 चाप्र कार्यत नीर्घ भाषना चाहि। हेशानत भा नाई, कन-পেটের কিছু উপধে জন লাছে, স্থানের সৃতী বোঁটা, ছগ্মাধার (मर्ट्ड भर्तार शार्फ, भागात्मत छोत्र छेळ रहा ना । हेशास्त्र বৰ্ণ ও লাক্রণত নানা প্রভেদ আছে, প্রাণীভব্বিদেরা ইহা-দিগকে তদম্বারে প্রায় ৩০।০২ ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন। অতি প্রাচীন কাল হইতেই ভিমিৰ অভিনে ত ভাছার মংস্ত্রাতি ইইতে শাভ্রা সভাজণতে বিদিত হইয়াছে: মহাভারত, রামারণ প্রভৃতি প্রাচীন গ্রন্থে 'তিমি', 'তিমিলিল', মিহাতিমিলিল' প্রভৃতি শদে এই বৃহদাকার জীমের উল্লেখ পাছে। আরিষ্টেল তাঁছার জীবতথে তিমি, শুশুক ও মংপ্র পরস্পর বিভিন্ন শ্রেণীর্ম জীব বলিয়া বর্ণনা করিয়া, গিরাছেন। "ভিনি"বংগন, ভিমি ঠিক অভান্ত চতুপদ জন্তর ভার খাদপ্রখাস শায়, সম্বন করে, শীৰিত,ও আকীরবিশিষ্ট সঞ্জান প্রস্থ করে, িত্তক্ত পিয়া সন্তান পালেন করে। ইহাদের কৃষ্কৃদ্ প্রভৃতি আভ্যন্তরিক শারীধ্যরের কার্য্যও অক্টাম্স চতুলাদের ছায়।

তিমি এধানতঃ চইজাগে বিভক্ত-দন্তহীন ও বন্ধবিশিষ্ট। বাহাদের দন্ত নাই, ভার্থদের মুখ মধ্যে কোমল অভি ক্লকবণ্ড একপ্রকার কোমগাছি করে। ইক্লানের কোব্ন। ব্যুক্ত কি ও নােট ব্যুটি ইহাদের গায় কাঁই্স (পক্ত) নাই।

নাদিকার ছিল্ল অভি রুছ্র। উহনের বস্তা ভণ ও কার ক্র लाजात करता पालारमत मन्न मार्ट, हे (बाक् आनोक मानपर) ভাষাদের বাঁলনি (Balicanda) নাম দিহাবভন, গর্থাং ইংলের উপর কার্ডভার স্থায় এক গ্রহার । ব ম্পাণি করে। 聖教記古藝 菱色性酶范围 野州(1912年1917年1917年1917年17日) करिकादित समिकतन दरेगाएकः प्रथ्येत क्रियेत जातास চারি**ভাগে** বিভিক্ত। বলিনা (Balance শর্লাৎ ঘ্যসূত্র রুড়ীন্ ভিমি, কইমাছের পুষ্ঠের উপরিভাগে কটোর 🗈 🕯 😁 🕝 क्षेत्र भाग्ना वा भूकंकनीक नारी, भूक ए द्वा छात्र अप नरक । वॅटिक्त **काम मु**ँहिर्निभेष्ठे नटका वैभटन (**मन्ट**्र हो र वाफिरण (ययन खताबधी पृष्ठे २४ (अधेकण्) छन भए 👚 শ্ৰেণীতেই ভিমাপি ৰ(Balcen) পূৰ প্ৰান্ত স তিমান্তি ঠিক দাঁতের ভাষ ভালতে উপর সারি দিশ 👓 🗀 । এক এক নাতিতে এক এক নিদের মাজতি ১৯০ সান প্ৰান্ত তিমান্থি ক্ৰো। ইছাৰ এক কুক্থানিছে খাংব ষ্পভার পাছের স্থায় ১২ থানি গর্যান্ত পাত গাকে।

তিমান্তি তাল্র মধ্যবেধা হইতে আফ্ডাবে দমক কল্ জুড়িরা থাকে। সংগাল অবিক বিশ্ব ইছা প্রবন্ধ ইছা প্রবন্ধ ইছা কলে। প্রত্যেক প্রিধানের ছদের দিকে জনে কল্ল হইরা কোনলান্তিক টকবং মাফ্রির কাছে ব্রনিলা থাকে। এই তিমান্তি ব্রনারের একটা ম্লাবান্ উপকরণ, ব্যবসায়ীরা ইহাকে তিমিক দ্বক নামে অতিহিত করেনুর ইহাদের কিহবা কোমণ, গলনালা অভিক্ত, এমন কি অভি সুহৎ শ্রেণীর কিমিতেও এক ইফির অপেকা বড় ইছিল হয় নায় মতক খুব হছং ও

न्याक्षरभारत्य देनायात अक कृष्टीयाः म स्टेरन । साथात प्रदे लाक्षीन्यान नरक । साथातीन अकृष वासार्गी हसेंटल वर्ष, भारत करूवन कृष प्रकर्णना । सार्था कृष्टिन वा लाहिन नाये, दक्वन कृष्य कृष्ट कृष्ट कृष्टि कृष्टिन वा लाहिन हम । देहारात्र कृष्ट कृष्ट कृष्ट कृष्ट कृष्टिन कृष्टिन कृष्टिन कृष्ट कृष्ट कृष्ट कृष्ट नाया हम कृष्ट कृष्ट वा त्र यह आफानरान किल्ड कृष्टि शादक । व्याप्ट कृष्ट क



दृश्यंकात्र किथि।



সান্ধে ীত জবলিও শাণ্ডা প্রক্র ক ভিনাধির সংখ্যা ও পরিষাণ দেখিয়া ইহানের ব্যস নিক্রপণের চেটা হইয়াছে, ভাহাতে ইহানের প্রমান্ ৮০০ হইতে ৯০০ বংসর প্রাক্ত পিল ইয়াছে, কিন্তু ইহা ল্লম্ম্য নহে ব্যানা বিক্রেডিত হয়।

শ্রু রম্বরান সমপ্রতি তিমি ল্লাতির মধ্যে আবার কর্তুকটী ১৫ তার্ উপজেন মাডে (খা --

Balana mesucetus or the Right Whale — কুংখিন-প্রী বৃত্ত।

- े Balæna marginata of the Western Austrafen. Vinan - शिक्त आर्द्धी नशासनीय जिमि---शिक्ट देशिया। . 1 Belana - dustralis of the Cape Whale, जिल्लाम अस्त्रीतार जिम्हि---जैज्ञ्यांमा अस्त्रीम ।
- ৪৮ i alerta la; onica of the Japan Whale--শাপান পেণীয় জিমি ২ গুন সুগুর।
- 1 Bulmus deference of Allema Antipodarum or the New Zee, and Whale—নিউলিলও দেনীয় াডমি—শক্ষিণ মহাসাগর।

- ৬। Balæna gribbosa or the Scrag-Whale আছি-সার তিমি--আট্টনাণ্টিক মহাসাগর।
- १। Balcona Hunterius Temminekii—विका (प्रीक्र निकाती डिमि—উक्रमाना असतीर।
- ৮। Balana Hunterius Swedenborg; —উত্তর দৈরীক শিকারী তিমি —উত্তর বা কর্মণ সাগর।

এই অই প্রকার ভিমির মধ্যে বৃহত্তিমি (the Right Whale) অতি বিখ্যাত : ইহারা ভূষাবাবৃত স্কুত্তর মহাসাগরেই পাকে, ক্ৰম ক্ৰম ইহাদিগকে ফ্ৰান্সের উত্তর সীমা পর্যাক্ত আসিতে त्मशा बाह्य। देश देनत्था करेशक विकृत्य। **देशामत्र प्**क क्रिक शकारमधीत बार्न मकरत्य भूट्य ग्राप्त, भूष्ट रनार किहें रिकुछ हव । त्रकुरवक्ष शार्थमा ৮।১ कि है मीर्च छ ।। कि है हछड़ा हता। पुरा १६०० कि मीर्ग । ठक्त्रम पूर्यत्र द्वान ६हेएड ্রত সূট উর্দ্ধে অবস্থিত। ইহাদের জলোৎক্ষেপের ছিন্নথয় গুরু দশার মন্তকের সর্বোক্তরানে অবস্থিত। ইহাদের গাল-र्व 6का क्रकार्व र काल भयभाव भक) (शटछेत पिक् नामा । াম তিমির বর্ণ কিছু ধুসর । ইহারা কওদিন গর্ভ ধারণ করে, डाहा स्नाना यात्र मा। এक शर्ट अक मान मस्रान सत्ता। मध्य-काफ मुद्धान ३० हहेएक ३८ किंद्रे भीर्ष ११। देशानत्र मुखान-স্কেছ অতি প্রবল, এইক্স বুহতিমি-শিকারীরা সমরে সময়ে শাবকহত্যা ক্রিয়া শাবকের জননীকে অপেক্ষাকৃত অলা-মানে ধরিণা আনিয়া থাকে। তিমিপ্রস্তি ছলে উচিনা চিভাইয়া পড়িয়া থাকে, সম্ভান পেটের উপর উঠিয়া স্বরুপান कात । देशदा माधातनकः वालात अह भारेन दिखारेश थादकः। कलात (वनी नीटह हेशक्षा त्वजाय ना, त्वजाहेवात मगत्र पूथ ही कविल हाल अ शालि कालत माल पाछ सवा व्यावन कतितारे यथ राष्ट्र करिया मल्टाकात ज्ञान ज्ञान विश्व करिया (भन्न) इंश्राबा (मोड़ाइवाद ममस्य व्यात्रक अन्त्र हत्न। शैकारत्रत्र ममय देशाया वर्षायाया चार्ड रहेटल करतक मार्क्छ मरधा অতি বেগে গভীর জলে তলাইয়া যায়। ইহাদের বেগ व्यंति व्यव्धः भूष्ट्रि याश्रीष यह वह निकाती लोका 💣 ড্বাইরা হিয়া থাকে। তিমিরা ক্রের মধ্যে একাদিকমে অদ্বধন্টারও কিছু অধিক কালু ভূবিয়া থাকিতে পাজা। चान श्रादातक बच्च करनत है भन्न खिक हार मिनिटि पूर्व ज्वित्रा जानिया উঠে। चान अचारमञ्ज नमटबरे करणांदल्कन क्रिंडि बार्क, क्रमस्मान ममग्र हेशांसक माधान क्रिज इंगे निका কোরারার স্থায় উর্চ্চে জল উদ্ভিত থাকে। এই জল উর্চ্চে 🗫।>৫ ছাত্ৰ পৰ্যাক্ত উঠে ও শক্ত হটুতে থাকে। 🏻 কথন কথন 🦠 देशाता क्षीकास्ट्राल मजक निरम वाश्विता किल निया बहेबा

करनेत्र विक्री शृद्ध विक्रो कण चारकानिक ७ मूर्त वक व्यकान अन्य कंतिएक थाएक, कहे जब २१० माहेक हुत हहेएछ समा चार 🕫 देशक्वित वाधिक्रा त्वकात्र मा, व्याप्त धका कथम वा ्त्री प्रेम्प्य धक्य (बढ़ाहेन्ना शास्त्र) छेखनामा अखनीत्मव विविक्त मध्यक प्रांत्रकाइन्छ मुद्रा, वर्ग मम्ब इक्तवर्ग, हेहाता জীবের নিকট অলম্বলে বেড়াইয়া বেড়ার। এই জাডীর छिमि विव्वत्त्रथायः निक्ठ रहेएक प्रक्रिंग भरामाभावत्र प्रवात-स्म्बाब मर्था रवणाहेवा **आ**टक धवः উत्तरत ज्ञानाम नर्वास शमनात्रमन करत्र । विक्रम काञ्चिका ও निউक्षितरश्चेत्र निकर्षे "जिमि-मी कांत्रीता हेरामिशत्करे व्यथिकाश्म धतिता थात्क। আইস্ণতের নিকট বৃহত্তিমির (the Right-Whale) এক উপবিভাগ আছে, আইস্লভীরেরা ভাছাকে Nord-kapper গলে। ইহাদের শরীর বৃহত্তিমি অপেকা স্বল, মন্তক ক্ষু, निरम्ब कम र्गाण ও চওড়া, वर्ग धृमत्र, मखटकत निर्धारण উज्जन খেতবর্ণ ও বৃহত্তিমি অপেকা অধিকতর চতুর এবং ভয়ঙ্গর থ জাব। গ্রীণলতের অধিবাদী ও একুইমো ভাতি বুহু ভিমির মাংশ খার ও উদরের পাতলাচর্ত্ম পরিধান করে এবং অস্তাবরক-বিল্লী শইয়া জানালার শাসীরূপে খালায়।

দস্তহীন তিমির দিতীয় তাগের নাম Alexaptera of the Humpbacked Whale বা কৃজপৃষ্ঠ তিমি। এই শ্রেণীর পৃষ্ঠদেশ উদ্ভের স্থায় কৃষ্ণ। অনেকের মতে, এই কৃষ্ণ ভাগ আর কিছুই নহে কেবল পিঠের পাথনা বা পৃষ্ঠকন্টকেরই রূপান্তর। ইহাদের সম্প্রে আর বড় বেশী কিছু জানা যায় না, তবে সাধারণতঃ ইহারা সমপৃষ্ঠ তিমিশ্রেণীরই মত। ইহাদের মধ্যে দেশভেদে নিম্নলিখিত ক্রেক্টী পাথা আছে।

- া Megaptera Longimana orishe Johnston's Hump-backed Whales, বৃহৎ কুজপৃষ্ট ভিমি—উত্তর বা জ্বাপ সাগর।
- Negaptera Kuzira or the Kuzira—কুজীয়
 ভিমি বা লাপান দেশীয় কুজপুয় ভিমি লাপানসাগর।
- ত । Megaptera Americana or the Bermuda Humpbacked Whale-ৰাৰ্মণা ধীপীয় কুজপুঠ ভিফি।
- s te Megaptera poeskop or The Cape Humpbacked Whale—উত্তথাশা এব্দরীপের কুকুণ্ঠ তিনি— বিশিপ আজিকা।
- et M. Eschrichtus Robustus—মুগকার কুজ-গুঁচ ডিনি Balemoptera or the Rorqual (or the pike shales) সুইডেন ১

पचरीन किनिध्सपित पुर्शित जारतत नाम उक्तूप जिलि।

देशारम्य पूर्व कम्पूच विनाई अहेक्छ नाम वृहेबार्छ । हैराएक शुट्ट वैक्यानि क्य बाबनात छात्र शृहक छ वाहि ।' दृर्खिमि व्याप्तभा रेशामत जागामत मधानि छोळा पाए। জনে উদর ভরিয়া পেলে এই সক্স ভালে খুলিয়া পেট নিটোগ हरेमा उँक्षि। क्रिमिकाजीम कीरवन्न मध्या এই ध्यानीर नुहर । : এই তিমি অপেকা বড় জীব আর জগতে নাই। উত্তরদেশীর **5कृ**म् किमि > • किटिंत्र व्यत्नकात मीर्च इत। এই वृहर শ্ৰেণীই ইংরাজীতে Rorqual নামে খ্যাত, এজন্ত বাঙ্গানায় ইহাকে রকোলাল বা বৃহৎকার চঞুমুথ তিমি বলা,যাইতে পারে। এই শ্রেণীতে ২৫।২৬ কিটু দীর্ঘ এক জাতীয় তিনি আছে, ভাষাকেই ই:রাজীতে Pike-phale বা বর্ষামুখ তিমি बटल। इंशापत मुधाक्वि हे:बाबी भाइर नामक वसा जाय-ফলকের ভাষে। এই শ্রেণীর সংখ্যাই অধিক। উত্তর শুরোপীয় রকোঁয়ালের বর্ণ স্লেটের ভাষ ধুদর, উদ্যু আরও শাদা। ইচারা वृष्टेन बीरभन्न मिक्रा आरम ना । करण अक शास्त्र श्रित ०३४। ভাসিমা থাকে না, সাঁডার দিয়া বেড়ায়। ঘণ্টার ৪।৫ মাইল চলিয়া বেড়াইতে পারে এবং ছাতি উচ্চ শব্দ কবিয়া পাকে। देशवा नर्याबावा व्याहण हहेटल जुक स्त्रोटफ २००० छिट्ट পর্যাস্ত চলিয়া যায়। লিকারীরা এই জাতীয় ডিমি ধানতে যায না ৷ একে ইহাদের ধরাও বড় কষ্টকর ও বৃহস্তিমি ধরা অপেকা বিপদ্জনক, তাহাতে আনার ইহাদের চারি অল. তিমারি कृत 9 निक्षेत्रे। क प्रक्रियालय भगनानी अल्लक्ष्यक वृद्धः এলভ ইহারা মংখ্যাদি ভক্ষণ করিতে পাবে ও পুদ कींगिषि भारेल जाशापत्र अक अक बांक अकवारत बाह्या एक त्या । अकति प्राक्तियालन छेन्दा अकतात ७ मेड कड মংজ্যের কথাল পাওয়া গিয়াছিল। এই জাতির চইটী মাত্র উপভেদ দেখা যায়।

- ১। Balænoptera rostrata—উত্তরদেশীয় দুক্র্যথ তিমি—উত্তর বা জর্মণ দাগর পর্যাস্ত ।
- २। Balanoptera Swinhoa or Chineusis डीन-दानीय तकुमूच--फरचंद्रका बीटर्नेंद्र निकते।

দ্বাহীন তিমির ৪র্থ বিভাগের নাম Physalus অধাক প্রকাটকী,। ইহারা দেখিতে ঠিক রকোয়ালের গ্রায়, তবে ইহাদের পূর্ঠকাটক বৃহৎ ও প্রাশস্ত। ইহারাও চকুমুখ বটে। প্রাকৃত পক্ষে ইহাদিগকে চঞুমুখ তিমির এক উপবিভাগ বলাই মুক্তি সক্ত। ইহাদের অভাবাদি ঠিক বর্কোরালের মত। ইহাদের মধ্যে এই কর্টী প্রেদ আর্থেন

>। Physalus Antiquorum or the Razor-back কুম্পুট-প্রীপ্রত্য উত্তর্মহাসাগ্র।

ন্ধপরিমিত গুণশালী বলিয়া ইংগার মূল্য শান্তে নির্দিষ্ট হয়
নাই। ইংগারাঝাদিগের জত, পর্য সৌজাণ্য ও ফাংসালাক,
বোগলোকহারক এবা কানপ্রদান (বৃহৎনা চটি আ)
ভিমিতা (বি কিন্দু হরি জ । ১ নিশ্চল। ২ ক্লিপ, আর্থা, ভিজা।
ভিমিতি মিজিলে (গং) মহামংজ ভেগা ও বড় মাছ
আর নাড় শভিমিজিলাং ক্রেপান্চ তথা ভিমিতি মিজিলাং।
(ভাগত বন্ধ্বর্ম)

জিমিধ্বজ (পুং) দানব বিশেষ, ইংকে নাম শ্বৰ, ইংবি প্রথাৰ নাম ছবাছ, বাম-জি দ্বারকে বিনাশ ক্রিয়া জন্ধার নিক্ট হুইন্সেদিবাপ্তি নাভ ক্লিয়াছিলেন। (রামাণ হা৪৪৮১১) জিমির (রা পুং) ভিনালীদি ভিমাকিরচ্ (ইধি মদি মুদীতি। উন্তল্প ১০০২) ১ অধ্যার। ২ চন্দ্রোগ্রিশেষ, ইংবি বিষয় প্রকাত এই প্রার লিখিত আছে-

দ্ধিবিশারদ পশুতের। বলেন, যে মানবের দৃষ্টি পঞ্চ দ্বের ওব ইংও সন্মুদ্ধ। বাহাপটারে অবাষ তেজ কর্তৃক অবেচ, শৈতল এর তিনিশিপ্ত, প্রেছাতের বিশ্বলিক্ষয়ে নির্মিত তবং মঞ্চদগ্র পরিমাণে বিব্বাকৃতিবিশিষ্ট, এই দৃষ্টিগত রোগ ও প্রত্যের অভাপর ভাতিবিল তিনির বোগেল গ্রুণ বলা বাইতেতে।

দোষ শিশুৰ হইয়া শিরাগমূহের অভ্যন্তরে গমনপূর্বাক দুষ্টির প্রেথম পটানে অবস্থিতি কবিলে সকল অপ অব্যক্ষভাবে प्रहेक्या विश्वविक भाग विजीय गंगेरन अविविधि कविरय श्रीविध्वल ६४ এवर मुर्बाच मिक्का, भनक, एकनकाल, माउन, नठाका, महौिक छ कूछल ममूर पृष्टे रूप। अवना अलगध ना ্ট টোডাড বলিয়া বোধ হয়, কিখা মেথাছেল বা তিমিবা-্ এর চার দেখার। দুষ্টির জান্তিতে প্রস্থিত বস্তু নিকটে ও বিকটাপ্ত বস্তুরে জ্ঞান হয় এবং যায় করিলেড় স্চীপার্ম দৃষ্ট হয় না। দোষ ভূতীয় পটল আশ্রেয় করিলে বৃহদাকার দ বস্তাঞ্চার ক্লায় এবং কর্ন, নাসিকা ও চকু:বিশিষ্ট च्या हो छ , तम छ विश्व है। छ छारत स्मधात्र : साय वनवान रहेन मिलत अव्याकारण विष्ठ रहेरल मभी भन्न स्वता, डिक्कार विष्ठ ত্তাল ৰুৱন্থ প্ৰবৃত্ত এবং পাৰ্থভাগে স্থিত হইলে পাৰ্শ্বছ জব্য • ३ १० मां : ८ शब मृष्टित भव्यंत व्याख इहेटल मयखहे मङ्कि-Coa को 1 (त्योग) विषेत्र रहे द्वारम त्याय व्यवस्थि क्रेटन ্ৰক মাল্ডি জিলা এবং অনব্যিত ভাবে থাকিলে ব্যুগ্ন জান ২ ম । পোষত কৰ্ম প্ৰতিশে অবৃদ্ধিতি ক্ষিত্ৰলৈ ভিমিন্নবৈধি জন্মে। -२२ (४मित्रद्वार १ १ ककारण मु**ष्टित्राध क्रत्रिरण शिक्नाण** কংহ। তিমির রোণ অতিশ্য গভীর না হইলে চল্ল, তুর্বা, थिकार १९ नक्ष अविभिष्ठे जाकांन प्राथित्य भाग्न ध्वर निर्मन रहकः ९ क्यांकिः भनार्य पृष्ठे इष्ट्रां निक्रमाण त्यारम्य **धरे**

अवकारक नीशिका वा कांठ बना प्राप्त । अहे निकेलान द्वीप वायू कर्तृक क्षत्रित्व नक्ष्ण नवार्थ अक्ष्म वर्ग, नहम के आविन (म्यात्र । निख कर्जुक अभिरत आविका, थरणाक) रेखर्गम, एक्टि । भव्यभूरास्त्र कांत्र विविद्यवर्ग स्था भीन वा स्कार्ग দুই হয়, অথবা শেক চামর বা শেতবর্ণ মেদের ভার শতাক্ত 🗻 कून, अथवा स्मर्म्छ नगरम् स्पर्धास्त्र साम, अध्वा সমস্ত জলপ্লাবিভের ভার দেখার। রক্ত কর্ড্ড করিবে সমস্ত ব্রুবর্গ ও আইকারময়, क्रक्का এই রোগ समितन সমস্ত है (बंकर्ग । शिक्ष दिना एक इ.साम, मकन भनार्थ है विश या वहना, अथवा इन्हें के नीर्च विश्वकाटन दिनवाह अथवा दिहाकिः দৃষ্ট হয়। পিত কর্ত্ব পরিষ্লানিবোগ উদ্বত হয়। ইংলেজ দিক্ সকল নবে!দিভ স্ব্যাের আয় বা প্রভাতপুর্ণ রক্ষসমূহে नमाकीर्वत आह (नगाम । वांत्र कर्ड्क पृष्टिमध्य बक्क वर्व, शिव कड़क अतिमारिक्षाण अथवा नीलवन, श्रम कड़क दरे उवर्न, (मानिक कड़क त्रक्कवर्ग এवः मित्राक कर्वक विक्रिक वर्ग हत्र। পরিমামিরোগে দৃষ্টিমগুলে রক্তজন্ত অক্ণবর্ণ মণ্ডলাকার

পরিয়ামিরোগে দৃষ্টিমগুলে রক্তজন্ত অক্ণারণ মণ্ডলাকার

মূল কাচ জন্মে, জাগ্রা সমন্ত মগুল টাবং নীলবর্ণ হয়।
এই রোগে ক্রম কথ্য আলিনা হইতে দোয় ক্ষম হইরা নৃষ্টিশক্তি প্রকাশ পায়।

অভয়তীত পিরুণিদগ্রন্তী, ককবিদন্দ্রী, রাত্রাক্ষতা,
পুমদর্শী, গুল্পভার, মকুশারতা এবং গড়ীরক এই ৭ প্রকার
বৈরাগ জলা। দাই স্থানে ত্ইপিত আশ্রয় করিলে ঐ স্থান
পীত্রর্গ হয় এবং দকল পদার্থ পীত্রর্ণ দেবায়। ইহাকে পিত্রবিদগ্রন্তী বলে। দোর তৃতীয় পটলে আশ্রম করিলে রোগী
দিবাভাগে দেখিতে পায় না, রাজিকালে দেখিতে পার।
দৃষ্টি শ্রেলা কতৃক বিদশ্ধ হুইলে সকল পদার্থ খেত্রর্ণ দেখায়।

ভিন পটলেই অন্নদোৰ অবন্ধিতি করিলে সহসা নকারতা অনুন। ইহাতে দিবাভাগে স্থাকিরণে কফেন্ধ অন্নতাগ্রন্থ দৃষ্টিশক্তি প্রকাশ পার। শোক, অনু, পরিশ্রম ও নতকের অভিভাগ বারা দৃষ্টি অভিহত হইলে সকল পদার্থ ই ব্যবর্ণ দৃষ্ট হয়। ইহাতে ধুনশ্লী কছে। ইহাতে দিবাভাগে অতি ক্তেপ্লার্থ অতি কটে দেখা যায়।

রাত্রিকালে শৈত্যগুণ বারা পিতের অন্নতাপ্রত্ক সেই
সকল পদার্থ দেখিতে পার, ইহাকে হয়স্বাত্য কহে। যে
রোগেন্টি দোবাভিত্ত হললে নকুলের দৃষ্টির কার ভাহাতে
বিহাতের আভা প্রকাশ পায় এবং দিবাভাগে বিনিঅবর্ণ
লৈখিতে পার, ভাহাকে নকুলাদ্ধ করে। বায়ু কর্তৃক দৃষ্টিয়ান
বিরূপ হইলেও ভাহার অভ্যন্তরভাগ অভিশর গভীরভাবে
প্রাক্তিকর।

এই সঞ্জ রোগ খাতীত গৃতি হানে সনিষিত্ত ও
অনিষিত্ত নামক হই প্রকার বাছরোগ হর, ইহার জন্ত
মত্তকের অভিভাগ জন্ত গৃতিহত হইকে সনিষ্ঠিত বলা বার।
এই রোগ অভিন্তুল নিদর্শন বারা জালা বার। দেবভা,
নাবি, গন্ধর্ম, মহোরগ বা জ্যোভি: পদার্থের বা নীপ্রিমান্
পদার্থের নন্দর্শনে গৃতিহত হর্তনে অনিষিত্ত লিক্সাশ বলা
বার। এই রোগে গৃতি পাই বিমল বৈহুর্গুস্থির ক্লার দেখার।
গৃতি অভিবাত জন্ত হত হইলে, বিদীর্ণ অবসঁর বা হীন দেখার।
(স্থাপ্রত চিকিৎসিত ৭ অং)

কুপিতলোৰ বাছপটলে অবস্থান করিলে সর্বভোডারে দৃষ্টি ক্ষম হর, ইহাকে তিমির, কেই কেই বা লিজনাশ কহিরা থাকেন। এই তমংসদৃশ তিমিররোগ অচিরজাত হইলে রোগী, চক্ত্র, স্থা, নক্ষত্র, বিহাৎ, অগ্নাদির তেজ এবং রম্ম স্থবণিদি দীস্তিশীল বস্তুর প্রায় দেখিতে পাম, এই লিজনাশ রোগকেই নীলিকা ও কাচ কহে। (ভাবপ্রণ) ইহাদের লক্ষণ পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে। [বিশেষ বিবরণ নেত্ররোগ দেখা] তিমিরসুদ্ (পুং) ডিমিরং স্থাতি খণ্ডরতি স্থা-কিপ্।> স্থা। "ভিমিরসুদো মণ্ডলং যদি স লেহংন" (রৃহৎসংই।৪৫) (ত্রি) ২ অক্ষকার নাশক।

তিমিরভিদ্ (পুং) তিমিরং ভিনত্তি ভিদ-মিপ্। > পূর্বা। (ত্রি) ২ অন্ধকারমাশক।

তিমির্রিপু (পুং) তিমিরক রিপু: ৬তং। ১ স্থা। (তি) ২ তিমিরনাশক।

জিমিরারি (পুং) তিমিরক অরি: ৬৩৫। স্থ্য।
"তিমিরারি স্তমো হস্তি প্রাত: অবধন্তীরবং।
বয়ং কাকা বয়ং কাকা ইতি জন্নন্তি বায়পা: ॥।" (উন্তট)
তিমিরি (পুং) তিমি মংগু। (রান্ধনিং)
তিমিরিন্ (পুং) তিমিরং অন্তাপ্ত তিমির-ণিনি ১ অন্ধনারকারী।
তিমিরি (পুং) দৌরুশ্রুত। "

তিমিষ (পুং) তিম-ইদক্।> গ্রাম্যকর্কটী, কাকুড়। ২ কুলাও, কুমড়া। ৩ নাটাত্র, তরমুক। (শলার্থচি॰)

তিনী (ত্রী) তিমি পূরোদরাদিশাৎ ভীষ্। তিমি মংস্ত। তিমীর (পু: পুরুষভেদ।

তিন্ম, ভিন্মপ, এই নামে দান্তিণাতো অনেক ক্স রাজা, সামস্ত বা সন্ধার ছিলেন। ক্লফাজেলা হইতে, আবিত্বত বহ শিলালিসিতে তাঁহাদের নাম কীর্তিত হইরাছে। ইহাদের মধ্যে এক তিল্প ক্লফ্টেন্সনাম্য ছিলেন, তিনি ১৪০৭ শকে কোঙ্বীড়ু অধিকার ক্রবন। মললগিরির শিলা-ক্লাকে তাঁহার মাহাল্যা বর্ণিডু আছে। ম্ললগিরির প্রক্ড- ল্বর মন্দিরে একথানি শিলালিপিতে উত্রালপুত্র তিবের পরিচর পাওরা বার। বিজয়নগরের একথানি শিলাকলকে চিক তিন্দারের মহা অরন্তর পুত্র তিন্দারের নাম বোবিত হইরাছে। বেকটিগিরির নামুড্রংশেও গণি-তিন্দ্রনামে এক মহাবীর জন্মগ্রহণ করিরাছিলেন। তাঁহার সমর পলনাড় ক্ষকার দক্ষিপ্রাংশন্তি প্রবেশে কভকওলি দক্ষাস্থার প্রকার মহা উৎপাত করিতেছিল। ইনি বিজয়নগরাধিপ অচ্যতদেবরার কর্তৃক প্রেরিত হইরা তাহা-দিগকে শাসন করেন। এইরুপে ১২৩০ খৃটাক্ষে মরপুরের ক্ষার করেক জন স্থারকে জর করিরাছিলেন। পরিশেবে রণক্ষেত্রেই তিনি নিহত হন। তাঁহার পুত্রও মুস্লমান স্থারগণের সহিত খোরতর মুদ্ধ করিয়াছিলেন।

তিয়ুর (দেশৰ) মংস্থলীবিন্ধাতিবিশেষ। [তীবর দেখ।] তিয়ান্তর (দেশৰ) অিসপ্ততি।*

তিয়াদাদ্ (আরবী) তারদাদ। তিয়ারা (দেশল) বৃক্তেদ।

ভিরশ্চ (ঈৌ) [বৈদিক] শ্বাাধারের ভির্ব্যক্ অবলম্ব। ভিরশ্চতা (ঝি) ভিরশ্চীন,∂ভির্ণ্যভূত।

"তিরশ্চতা পার্যালিগমানি" (ঋক্ ৪৷১৮৷২) 'তির্শ্চতা তির্শচীনাং' (সায়ণ)

তিরস্কুচ্থা (অব্য) তির্বাগ্ভাবে, শুপ্তভাবে।

তির**শ্চিরাজি** (পুং) অঙ্গিরস বংশীয় প্রিভেদ।

তিরশ্চী (ত্রা) > তির্গ্রু লাভি: ব্রিরাং এট্। > পগুপলিদিগের
ন্ত্রী, চলিত্র কথার মানী। (পুং) ২ অলিরস বংশীর অধিভেদু।
তিরশ্চীন (ত্রি) তির্গাগের আর্থে খ। তির্গাগ্ভূত, বক্রা।
২ কুটিল। "ডিরশ্চীনো বিততো রশ্মিমেষাং" (অক্ ১০)২২১।৫)
'তিরশ্চীনত্তির্গাগ্রন্তিও' (সার্গ)

তিরশ্চীননিধন (ফ্রী) সামভেদ। ক্রিসম্প্রীনপঞ্জি (তি) কির্মালতে রাপ

তিরশ্চীনপৃশ্ধি (बि) তির্বাগ্ভাবে নাগ করা। তিরশ্চীনবংশ (পং) [বৈ] মৌচাক।

ভিরুস্ (অব্য) তরতি দৃষ্টিপথং তৃ-অস্থন্। ঠ অন্তর্ধান, কৌপন। ২ তিহাগ্, বক্রন ৩ তির্ভার।

তির্ক্র (বি) তিরক্রোতি পিচ্সলোগ তিররতি আছো-দরতি। তিরঃ করোতি কুট। আছোনকাঁ, বিসাং ভীপ্। "আহোবত ব্যবস্তিরক্রী" (ভাগ ১০১ - ১৮)

ভিরক্ষরিন্ (জি) তির: করোতি ক্-পিনি। আ্ট্রানক।
"নো হত্যালান্ত চ তবেশা তিরক্ষরিণমন্তর।" (রামাণ ২০১৫)২০)
ভিরক্ষরিণী (ত্রী০) তিরক্ষরিন্ সংজ্ঞাপুর্কক্ষিণিভার্বিত বুদ্ধান্তাব্য তত্তো ত্রীপ্। পটমর আচ্ছাদক প্রার্থি, ব্যবধারক

भऐ, कामार, भमा। अनर्ननी श्वमा, य विमावाता क्टरे ভাহাকৈ দেখিতে পার হা। তিরক্ষার (পুং) ভিরদ্ রু ঘঞ্। ১ অনীদর, ভৎ দনা। ্রুমাংশক্ত তিরস্কারাৎ অভিচানপ্রধানতার (পঞ্চদশী ৭৮) কর্তি অণ্। (আি) ২ অবজ্ঞাকারক। ে "তিরস্কারিন্ (ৃতি)"তিরদ করোতি ক্র-গিনি। 🕒 আছোদস্কু । ২ পর্টভেদ। (ত্রি) ৩ স্বজ্ঞাকারক। স্তিরাংভীপ্। 🕹 ক্তিরস্কুত্ত (ত্রি) তিরস্'ক কর্মণি জ । ১ অবজ্ঞাত, অনাদৃত । ২ আছে।দিত। ৩ ঠেলগারোক মন্ত্রবিশেষ। "म्खें भेरधा प्रकारताश्खि कवहः मृर्क्षनि विधा । অস্ত্রং তিঠতি মন্ত্র: স তিরস্কৃত উদীর্যাতে ॥" (ভন্নসার) त्य मज्ञमात्या मन्त्रंत्र व्याष्ट्र व्यवः मन्त्रत्क क्वान्यः ७ व्यवः আছে, ভাূহাকে,ভিরস্কুতমন্ত্র কছে। তিরুক্তিয়া (রী) ভিরস্-রু-ভাবে শ। ১ অনাদর। ২ ভির-হ্বার। ও জাচছাদন, কঞ্ক। ি "বিপৰিষ: প্ৰভূতি সাঠিও,সিনুষা।" (মাৰ ২সং) ভিরস্য (পুং) ভিরস্ক জ্বাদিছাৎ যক্। অন্তর্ধান। জিরান্ট (দেশল) ত্রিনবতি, তেন অধিক নকাই। তিরানকাই (দেশজ) ত্রিনবতি। তিরাশী (দেশজ) ক্লাশীতি, তিন অধিক আশী। তিরিজিহ্বিক (পুং) বৃক্ষভেদ। ভিরিটি (পুং) ইক্এছি, আকের গিরো। (শব্দমালা) তিরিন্দির (পুং) এই নামে বিখ্যাত একজন রাজা। "শতমহং ভিরিন্দিরে সহজীং।" (ঋক্ ৪।৬।৪৬) 'ভিরিন্দিরে এতৎসংজ্ঞেরাজনি।' (সায়ণ) তিরিম (পুং) তৃইমক্। শালিভেদ। (রাজুনিং)। তিরিশ (পুং) তৃ-ইষক্। শালিভেদ, একপ্রকার ধাষ্ট। তিরীট (ক্লী) ভাষাতে শিরোবিপদোহনেনেভি ভ্ কীটন্ (কৃ-তৃ কপিডাঃ কীটন্। উণ্৪া১৮৪।) ১ কিরীটা (পুং) ২ লোএবৃক্ষ। জিরীটক (পুং) ভিরীটএব স্বার্থে কন্। লোএবৃক্ষ। তিরীটিন্ গ তি) ভিরীটং অভাতি ভিরীট-ণিনি। মন্তকা-চ্ছাদনধুক । তি ক্কচুর, চেকলপট্রেলার মধ্যপত চেকলপট্রগরের ৪৪০ ্জোশ্দকিণ্ট্ৰিকেন্থিত একখানি গ্ৰাম। এখানে চুইটা প্ৰাচীন শিবসন্থির ও তাহাতে অনেক প্রাচীন শিলালিপি আছে। তিরুক্সিলিছার, তিশিরাপলী জেলার কট্টলই টেসনের অর্থনাইল অন্তরে হিত প্রাচীন প্রাম ও নদী। এই হান প্রাচীন চের, চোল ও পাণ্ডারাজ্যের সীমা চুলিয়া নির্দিষ্ট হইত। তিরুকলর তথাের বেশার অবর্গত মরারওছির ৮ কোপী

পূর্বেছিত একগারি গওগ্রাম। এখানকার শিবমর্শির অতি প্রাচীন, ভাহাতে প্রাচীন শিলালিপি ও পাঁচগানি কলকযুক্ত ভাত্রশাসন আছে।

তিরুক্তবলই, ভ্রোর জেলাহ্ নাগপট্টনের ৭ ক্রোপ দকিণ-পশ্চিমে অবহিত গ্রাম। একটা এখানে প্রাভন শিবমন্তির ও ভাহাতে কএকথানি শিল্বালিপি আছে।

তি ক্লকাল্র, তিয়েবেলি জেলার অন্তর্গত ঐ বৈকৃষ্ঠম্নামক হানের ২ জোপ দিকিণপুর্বে হিত একথানি বিধাত গ্রাম। এধানে অতি প্রাচীন শিব ও বিষ্ণুমন্দির আছে। এধানকার ইলপুরাণে বিষ্ণুমন্দিরের মাহাত্ম্য বণিত আছে। এধান-কার চেলচোলপাত্যেশারনামক দেবমন্দিরও অতি প্রাচীন। তথাকার শিলালিপিতে লিখিত আছে— ৭০৭ কোলখাবে (১৫৩২ খঃ অস্ত্রে) (আবাছ্ড্রাল) মার্ত্তবর্দ্ধা দেবলৈবার জঞ্চ শাসন দিরাছিকান। গ্রামের মধ্যম্বলে একথানি প্রান্তর্গতন্তে শিলালিপি উর্থকীণ আছে।

্তিরুকুলম্, মলবার জেলার অন্তর্গত, মঞ্জেরির ৭ জোশ দক্ষিণপশ্চিমে অন্ত্তি একটা অতি প্রাতন গ্রাম। এখানকার
শিবমন্দির অতি প্রাটান। এখানে একটা হর্গ আছে, টিপ্
স্থলতান তাহা ব্যবহার করিতেন। এ ছাড়া কএকটা পাণরকটো গোরস্থান আছে।

তিরুকে।ইলুর (তিরুকোবিশুর), আরকাড় জেলার তিরু-কোইলুর তালুকের অন্তর্গত একটা সহর। তিরুকোইলুর সহরে প্রীবৈষ্ণব সম্প্রদায়দিগের একটা বিষ্ণুমন্দির আছে। এই मिन्नित्र का जिनम अभिद्या । এই मिन्नितत्र त्र श्रेन अभागी जिस्त्र का [•]মলয়ের ুশিবমন্দির অপেকাউৎকৃষ্ট। উৎস্ব ম**ওপে**স স্তম্ভে অতি পুন্দর কার্কার্যা ও বহিঃপ্রকোষ্ঠের দেয়ালের উপর , তিনটী এবং মন্দিরের দরজায় উপর একটা গোপুর আছে। এই মন্দিরে অনেক শিলালিণি দেখা যায়। কিউল্বের শিবমন্দির অপেকা ইহা শৃতন বলিয়া বোধ হয়। ইহাতে . বিষ্ণুমূর্ত্তি দণ্ডায়মান, তাহার হতে শব্দ, চক্রন, গদা, পদ্ম, কঙে ১০৮টী শালগ্রামমালা, বক্ষে মহালন্ত্রী বিরাজিত, বামপদের উপর ভর রাধিয়া দক্ষিণপদ্ধ এশ্বলোকাভিমুখে বাছু৷ইয়ু निद्याह्म । अनुरत्र भवायानि मनकानि स्ति मकन श्रृकाः कतिएउ इन । वीचमारमञ् छङ्गानक्ष्मी इटेए जाहुछ कतिया। श्रुनिया शर्वास विकृत वारमृतिक उरमय इत। हेश किन शक्फ-बाह्रानारमव, ८७अन्क्न छेरमव, त्नात्नारमव ७ त्रवारमवानि অতি সমারোহের সহিত সম্পন্ন হয়।

এইখানে নিতা বেলপাঠ ও দেবনর্জকীদিগের নৃত্য হইর থাকে। প্রতি ওজ্বারে ক্লভিবেকাদি উৎসব হর, এইবর দিন বছলোকের সমাপম হইরা থাকে। প্রমেণ্ট হইতে এই মলিবের বার-কারণ ১৮ শত টাকা ব্রিদিট আছে। ধর্ম-কর্তা উক্ত টাকা লইরা ইহার সকল বার নির্কাহ করেন। তথানে বিষপ্র-শুলীকুল রেলওবের টেসন আছে। এই টেসন পোরার বা শিণাকিনী নদীর বামভাগে দেবনূর নামক্র প্রামের পার্বে অবহিত। ত্বলপুরাণে দেখা যার, পুরাকালে বালখিলা মহর্দিরা দেবনূর গ্রামের শর্মিকটে পিণাকিনীতটে ভপতা করিরাছিলেন, কিন্তু কোন খানে তপতা ক্রিয়া-ছিলেন, তাহা নির্দারণ করা বার না।

ইতিহাস। পূর্বে জিঞ্জীক হিন্দু বাজাদিগের অধীনে আর্ত্ত্রকাড় ছিল। পরে বিজয়নগরের রাজাদিগের অধীন হয়। প্রায়
১৬৫৪ খৃঃ অব্দে গোলকণ্ডার স্থবাদার বেলুরের নরসিংহরারকে
পরাড়ত করিয়া জিঞ্জী মুসলমান রাজ্যত্তক করিয়া লন ও
তথার নবাব নিযুক্ত হন, তিনিই ইহার শাসনকর্ত্তা ছিলেন।
১৬৭৭ খৃঃ অব্দে শিবাঞ্জী জিঞ্জী অধিকার করিয়া হুর্গছাপন
করেন, এই হুর্গ বিশেষরূপে স্ন্দৃছ ছিল। শিবাঞ্জী বিদেশ
প্রত্যাবর্ত্তন-সময়ে শাসনকর্তা রুখিয়া বান। কিন্তু তাহার
গমনের অবাবহিত পরেই মুসুলমান শাসনকর্তা ইহা অধিকার
করিয়া লয়। জিঞ্জীর হিন্দ্রাজগণই এথানুকার মন্দির প্রতিহা
করেন। তিণ্ডীবনম্ রেল প্রেসন হইতে তিক্রবয়ামলয়ের
দিকে ১৮ মাইল দ্রে ভ্রাবিশিষ্ট জিঞ্জীর হুর্গ আছে।

তিরুকোইলুরের বিষ্ণুমন্দিরের আর্দ্ধমাইল দুরে পিণাকিনী
নদীতীরে কিউলুর গ্রাম অবস্থিত। এথানে একটা পুরাতন
্শিবমন্দির আছে। এই মন্দির ৫০০ শক্ত বংসরেরও
পুরাতন হইবে। এই মন্দির এবং পুর্বোক্ত হরিকাওম্ রেরুণ্
রের শিবমন্দিরের ব্যয় কারণ গবর্মেন্ট হইতে ৯ শক্ত টাক্যা
বাংসরিক বরাদ আছে। এই টাকা ধর্মকর্তার তত্ত্বাবধানে
ব্যয়িত হয়। এই মন্দ্রিরের নিত্যসেবার বন্দোবন্ত অতি
উচ্চ। ফাল্কন মাসে ইহার উৎসব হয়। এই উৎসবের সময়
বৃষ্ভ ও রপোৎসব অতি সমারোহে সম্পন্ন হয়। এই সময়

তিক্রতের জীবর, মহর। জেলার মধ্যবর্তী লিবগল্পার ৮ জোল উদ্ভুৱে অবহিত এক প্রচীন প্রামণ এখানকার লিবমন্দির বিখ্যাত। একখানি লিল্লালিপি পাঠে জানা যুার যে, রঘুনাথ তিক্রমলন্ত্রপৃতি মন্দিরের ব্যয়নির্জাহার্থ ১৬০১ শকে বিভর ভূমিদান করিরাছিলেন।

তিরুকরকাব্র, ভঞাের জেলুর অধীন কুছকােণের ৭ জােশ শক্তিপশিচমে অবস্থিত একুথানি আম। এথানে এক অভি আচীন শিব্যক্ষির ও ডাহাঁতে থােদিত লিপি আছে। তিক্লকক্ষকৃশুম্, চেদলগট্ট জেলার মধ্যবর্তী চেললগট্ট সহরের ও জেলাত দলিণপূর্বে হিড একথানি মনেহির প্রাচীন প্রাম। এথানে হিল্পালগণের সমর পাহাড় কাৃট্রিরা একটি বৃহৎ মণ্ডপ প্রস্তুত হইরাছে এবং ছক্লর শিলকার্ব্যক্ত একটা প্রাচীন মন্দির আছে। (Indian Antiquary, Vol. X. p. 198 জ্বইবা।)

তিরুকাটুপ্লা, ভলোছের খান জোপ উত্তরে অবহিত একটা প্রসিদ্ধ গ্রাম। এখানে চোলরাজ-নির্মিত একটা প্রাচীন শিবমন্দির ও ভাষাতে প্রাচীন প্রাকৃতি লিপি দৃষ্ট হয়। অনেক মাত্রী ঐ শিবলিক দর্শনে আসিরা থাকে।

তিরুকার্বাশাল, ডঝোর জেলার তিরুবালুর রেল-টেসনের ৪৪০ কোশ দক্ষিণে অবস্থিত একথানি প্রাম। এবানে প্রাতন -শিবমন্দির ও তাহাতে প্রাচীন শিলাদিপি আঁচে।

তিক্রকোলকুড়ি, মহরা জেলাছু একটা অভি প্রাচীন গ্রাম,
মহরা সহর হইতে ১৫ ক্রোল উত্তরপূর্ব্ধে অবস্থিত। এখানকরি প্রাচীন শিবমন্দিরে পাণ্ডারাজগণের সমরে থোদিত
কএকথানি শিলালিপ্রি আছে। তল্মধ্যে হইখানি ত্রিভ্বনচক্রবর্তী স্থলরপাণ্ডার ১১ শ ও ২০ শ বর্বে এবং একথানি
ত্রিভ্বন চক্রবর্তী বীরপাণ্ডাদেবের রাজাছ ৩১ শ বর্বে উৎকীর্থ
হইয়াছে।

তিরুচ ক্লগোড়, (চলিত কথার চেকচেলোড়) শেলম্ (সালেম্) জেলার অন্তর্গত্ব তিকচেলোড় তালুকের সদর। অক্ষণি ১১ ২২ রিও অব্যথি ১৭ ৫৬ ২০ পৃঃ, শ্বনিরি ছর্গের সাড়ে তিন জোল দ্রে এক সমুচ্চ পর্বতের পাদদেশে সমন্তল ভূমি ইইতে ১২০ কিট্ উচ্চে অবস্থিত। সহরে ও গিরিচ্ডার কএকটি শিবমন্দির আছে, তল্পধ্যে অর্জনারীশ্বরের মন্দিরে নাবেশরের মন্দিরে সংবিক বিখ্যাও। অর্জনারীশ্বরের মন্দিরে ১৫২২ শক ইইতে ১৫৮১ শক মধ্যে উৎকীর্ণ অনেকগুলি শিলালিপি আছে। কৈলাসনাথেশর মন্দিরেও কএকথানি শিলালিপি আছে। কৈলাসনাথেশর মন্দিরেও কএকথানি শিলালিপি আছে, তল্পধ্যে একথানি পুটে জানা বায়, ঐ মন্দিরের সম্প্রবর্গী গোপুর ১৫৮৫ শকে মছরার বিজয়রক্ষ চোক্লিক নারক কর্তৃক নির্দ্ধিও হয়। এখানবার একথানি তাম্রশাসনে লিখিত আছে—শৈলচ্ডাক্ত মন্দিরের দেবদেবার জন্ত ১৬৫৬ শকে মহিন্থরের রক্ষরাক্ষ উন্নের্যর অনেক জনি

এই বহরে হাজারের অধিক লোকের বাস। বস্তবয়ন ব্যবসাই এখানকার প্রধান। এখানে অতি চমৎকার চন্দন-কাঠের গোলা প্রস্তুত ইয়।

তিব্ৰুচেন্দুর, ভিন্নেবেলি জেলার ভেম্বরই ভালুকের মধ্যবর্তী

একটা সরস। অকা ৮ ২৯ ৫ জার, জাবি ৭৮ ১০ ৩০ পাই।

অইবক্ষী ইইডে ৯ জোল পূর্বাক্ষিণদেশাল সম্ভক্লে

অবস্থিত। এথানকার স্থান্ত্রস্থানীর মন্দির অতি বিখ্যাত।
স্বল্পরালা এখানকার মাহান্ত্রা বিহিত আছে। বর্বে বর্বে
অনেক তীর্থবাতী এখানে আনিরা থাকে। এখানকার
মন্দিরের নির্নিস্থা অতি স্কর, তর্মধ্যে অনেক প্রাচীন
নিগানিপি আছে। সম্ত্রের ধারুর বোড়শটী তম্ব দ্ধার্মান
আছে, তাহাতেও প্রাচীন নিপি উৎকার্থ দেখা বার।

তি ক্লচানুক বৈ অলনের্গ্ন প্রম্) আরকাড় (আর্কট)
লেলাছ একটা প্ণাছান, নিম্ন তিরুপতির ১০০ কোশ দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত। এথানে লন্ধী, ঘরদরাজন্বামী, কৃষ্ণবামী, অন্ধ্র বাক্ত প্রভৃতি প্রাচীন দেবমন্দির আছে, ভন্মধ্যে এথানকার ভ্লপ্রাণে লন্ধীর মাহান্ধাই বিভ্তভাবে বর্ণিত আছে। লন্ধীকে দেখিবার ক্লস্ত অনের্ক বাজীর সমাগম,হর। কৃষ্ণবামী ও শন্মবাক্র মন্দিরে কএকথানি শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে।

তি ক্রচুন ই, মহরা জেলার একটা গ্রাম। মেল্রের ৭॥।
কোশ উত্তরে ত্রিশিরাপলীর পথে, অবস্থিত। এথানকার
প্রাচীন নিবমন্ধির পরাক্রম চোল কর্তৃক নির্মিত বলিয়া
প্রবাদ আছে। তাহাতে অনেক নিলালিপি দৃষ্ট হয়; তমধ্যে
একথানি আধুনিক নিলালিপি পাঠে জানা বায়, ১৭০৫ শক্তৃ

ঐ মন্ধিরের সংস্কার হইরাছে।

তিরুচ্**লই, উক্ত জে**লার মধ্যে রামনাদের ২২ জোশ পশ্চি-মোন্তরে অবস্থিত একটা তালুকের সদর। এপানে পরাক্রম পার্গ্তা নির্মিত একটা বৃহৎ শিবালর আছে। তক্ষ্ম[্] এথানে অনেক তীর্থাত্তী আসিরা থাকে।

তিক্লছিরই, ভলোরের মধ্যবর্তী কুন্তকোণের ও জোশ দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত একটা প্রাচীন গ্রাম। এথানে এক প্রাচীন বিষ্ণুমন্দির ও ভাগতে শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে।

তিরুক্তানি (ভিরুত্তিণি) একটা প্রাচীন সহর। শোলিক ম্ হইতে ১৫ মাইলু দ্বে অবস্থিত ও কারবেট নগরের অমি-দারীর অন্তর্গত। অকাণ ১৩°১০ হি০ উঃ, জামিণ ৭৯°২৮ ৪০ কি পু:। ভিরুতানি এই নামের উৎপত্তি বিষয়ে স্থানীর প্রবাদ এইরুপ প্রচলিত স্থাছে—

প্রাকানে হবদাগোমী ভারকান্তর, সিংহচক্রান্তর, ত্রপন্থান্তর প্রছতি অন্তর্নিগকে বধ করিরা এই স্থানে আসিরা বিশ্রাম করেন। "ভিক্লভানিগৌ" শব্দের অর্থ ত্ববিশ্রাম, ইহা হইতে এই নাম উৎপন্ন হইরাছে, ও ভাহারই অপশ্রংশ ভিক্লভানি। ইক্র উপশ্রবশৃত্ত হইরা অর্পরাজ্যে প্রভিতি হইলে মুব্রদ্বান্থানিকে পরিভূই করি-

বার বন্ধ আপন করা দেবসেনাকে অর্থণ করেন। প্রক্রণ্য-খানী ইহার পাণুগ্রহণ করিয়া এইখানে অবছিড়ি করিডে থাকেন।, ভাহার পর বল্লীখা নাবে আর একটা রগবকী ^এ त्रमधित शानिश्रहन करतम। अहे विवरत इहेमे धारान चारह । अम धार्वान वज्ञीचा क्लान वाचरणत्र वेतरम हथान-ক্সার গর্ভে ক্যা প্রহণ করেন। "তাহার মাত। আপদ স্বাধার নিকট এই প্রতিজ্ঞা ক্রেন, সম্ভোজাত শিশুকে বনে কেলিয়া পতির অনুসরণ করিবেন। স্মৃতরাং বলীর অন্ম হইবামাত্র ভুাহার মাতা ভাহাকে ভ্যাগ করিয়া স্বামীর অহগামিনী হইয়াছিল। কোন অভিভুক্ত জাতি ভাহাকে লালন পালন করিরাছিল, বল্লী যুবতী হইলে অভিশব রূপবতী বলিয়া বিখ্যাত হইল। বল্লী পাহাড়ে বসিল পালকপিতার শভক্ষেত্র রক্ষা করিত। একদিন স্থত্তরাণ্যামী ইহাকে দেখিয়া রূপে বিষোহিত হন। পরে ইহাকে বিবাহ করিবার উদ্দেশে ডিক্র-তানি হইতে এক স্তৃত্ব কাটিয়া তত্বারা প্রত্যহ বলীর নিকটে याजीताज कतिराज गांतिरान्य। भारत ऋत्रका हेरारक विवाह করিয়া তিব্রতানিতে শুইরা আদেন। উত্তর আরকাড়ুর অন্তর্গত চিভুর তালুকের মেলপদি গ্রামে বরীক্ষার পালিত পিভার বাদ ছিল। এই প্রামের > মাইল পশ্চিমে বে স্থানে फाहारतत व्यथम नाक्नाः, भरत मिनन ও विवाह हम, आखि अ তথায় একটা মন্দিরে পুরক্ষণ্য স্বামী ও বলীক্ষার মূর্জ্তি বিরাজিত আছে। বলীর মাতাকোন অস্খ জাতির ক্রাছিল। কৈহ কেহ'বলেন যে বলীর মাতা স্থাসিদ্ধ তামিশ কবি তিক্ষ-বল্লব্রের ভগিনী ভিন্ন অপর কেছ নছে।

২র প্রবাদ, কোন সমদে লক্ষী ও নারায়ণ হরিণ ও হরিণীরূপে কৌতৃক জীড়া করিরাছিলেন। হরিণরণিণী লক্ষী
এই সময় একটা কৃষ্ণা প্রসব করিয়া পরিত্যালগুর্কক স্বহানে
গমন করেন। পরে সপতীকা নগরীয় ক্রব নামে কোন রাজা
বলীমলয় নামক পর্কতে এ ক্ষাকে কুড়াইয়া পাইয়া লালন
পালন করেন এবং ভাহাকে বলীমলয়ের নিকট পাইয়া
'ছিলেন বলিয়া ভাহায় নাম বলীয়া রাখেন। কোন সময়ে
স্বেক্ষণা ক্রেমী মৃগয়া করিতে ঘাইয়া ইহাকে দেখিতে পান,
এবং ইহার রূপে বিশোহিত হুইয়া রাজায় নিকট এই ক্ষার
করপ্রাধা হন। রাজা ইহাকে ক্রা সম্প্রদান করেন।
স্বেক্ষণা ইহাকে বিবাহ করিয়া স্বহান আগ্রমন করেন।

তিক্তানির মন্দির অতি প্রাতন । একাদশ শতাকীতে তোল রাজাদিলের সদর ইত্তান্ত্রণ পত্তন হর এবং বিজয়
শব্দের রাজ্পণ কর্ত্ ইহার সংখ্যার বর্ত্তিত হয় ৷ এই ব্
মন্দির একটা উচ্চ পাহাড়েম উপর অনুকৃতিত, পাহাড়ে উটিবার

इस्ति भूव जाटह धनः केकी भटवर केका मानाम जाटह, वाजीविश्वत्र, पांक्यित कड वांखांत पारत् चरतक्षीत् इज ి লাছে। বলিবের পার্বে কুষার, এলা, লগন্ত্য, ইন্স, শেষ, त्राक, विकू, नातम ও সগুৰি नामে ছোট वक नहीं छीर्च আছে। প্রড্যেক তীর্ধের মাহান্ম্য বিষয়ে শতন্ত্র ইভিহাস আহৈ। মলিরের সমূবে বে প্তরিণী আছে, ভাহাকে কৈলাসভীর্থ করে। ছত্তক্ষণ্যখানীর ক্ঞারবান প্রস্তর্বর-সূর্ব্তি প্রমাণ মার্চবের ষত ও চতুর্ত্ত। ইনি শৈশব-কালে ক্সন্তিকা বারা বর্দ্ধিত হইরাছিলেন বলিরা প্রাত্তি वश्तर कार्डिक मार्ग कृषिक। तुक्तरक এই मिनारत विरामर नमारत्रास्त्र नहिन्न छे९नव हत्र, এই छे९नरव व्यरनक नृत्र হইতে ৰাত্রী আইসে। দেবদেনা ও বলীয়াভার মন্দির তিরুতানি চারি অংশে বিভক্ত। ১ম, •ধান তিরুতানি, ইহা পর্বভের উপরে ও দেবালরের পার্দ্রে; এখানে অধিকাংশ বৈদিক অচ্চক বাদ করেন। ২ন্ন, মঠ গ্রাম। এখানে ৩০টা মঠ, ১০টা ছত্ত ও ২০টা মঞ্প আছে, এই জন্ত এই স্থানকে মঠম্ কছে। ৩র, নরীনগুণ্টা, নরীন নামে কোন রাজা ৯০ বংসর পূর্মে এক বৃহৎ পুষ্করিণী ধনন করিয়া পাহাড়ের চারিদিকে ত্রাহ্মণদিগের বাসের জয় পাকা বাটা নির্মাণ করিয়া দেন, ভদবধি রাজার নামে উক্ত গ্রাম হইয়াছে। ৪র্থ, অমৃতপুর-এই স্থানে এইরূপ প্রবাদ আছে, এখানকার বর্ত্তমান অনিদারের পিতামহ বেঙ্কট পের্মল্রাজ কোন সমরে অতি কঠিন রোগাক্রান্ত হইয়া এই স্থানে হয় ও লোল থাইরা আরোগ্য লাভ করেন, এই অবুধি এই স্থানের নায় অমৃতপুর হইরাছে। দেবালয়ের দক্ষিণে ১ মাইল দুরে এডুবন নাৰক একটা বনে ৭টা কুও আছে, উক্ত কুণ্ডের निक्षे मश्क्रमादीविश्वद्भमित्र, किन्न अथन जाहा छन्नावष्टात्र আছে। কারবেট নগরের জমিদার এখানকার মন্দিরের वात्र निर्कीष्ट कतित्रा बाटकन ।

্ফুভ্রৈপৃতি, তলোর জেনাত তিরুত্বৈপৃতি তাল্কের নদর। তুলোর হইতে ১৯ জোল পূর্বদিলিণাংশে অবহিত। এবানে অতি প্রাচীন নিবমন্তির ও তাহাতে উৎকীর্ণ নিলানিপি আছে।

ারুত্তক্ষল, বিরেবেণি কেনার শাত্র তীনুকের বধাছিত একথানি প্রাচীন গ্রাম। এথানকার বিকুমন্দিরের বহিং-প্রাচীরে প্রাচীন শিলালিপি ব্যেক্তি আছে।

াক্তরকোশককৈ, মহরা বেলার রামনাদের ও জোল ক্ষিণাশ্চিকে অবহিদ্ধ এইটা আচীব আম । প্রবাদ এই ন্নণ, এখানে পাণ্ড্য-রীক্সণের প্রাচীন রাজধারী ছিল। এখানকার ভাতত্তর ও শিরকাবীবুক্ত শিবনন্দির কেথিবার কিনিব। ঐ যন্দিরে অনেক শিলানিপি থোনিত আছে, ভক্তবেগ্য সর্ব্ব প্রাচীন নিপি উত্তর শকে বীর পাণ্ড্রানেবের রাজ্যকালে উৎকীর্ণ ক্ট্রাছে।

জিক্তনন্রিয়্র, তথাের কেলাছ বারাবরবের ও জ্যোদ দক্ষিণ-পশ্চিবে অবস্থিত একথানি প্রাচীয় গ্রাম। এথানে একটা অতি প্রাচন শিবসন্ধির ও ভাগতে প্রাচীন শিলাশিশি ধােদিত আছে।

তিরুনরুক্সন্, দক্ষিণ আয়লাজুর অন্তর্গত তিরুলোইল্বের আন জোশ দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত একটা আম। এবানে
অতি প্রাচীন শিবমন্দির ও লৈন দেবমন্দির আছে। শিবমন্দিরে কএকথানি বৃহৎ শিলানিপি উংকীপ রহিরাছে।
এখানকার স্থলপুরাণে লৈন মন্দিরের মাহাত্মা বর্বিত আছে।
তিরুনবারি, মলবার জেলারু পোনানি তালুকের অন্তর্গত একথানি প্রাচীন আম। কুঁটিপুরম্ ও তিরুর বেল্টেসনের
মাঝামাঝি অবস্থিত। আমের পার্খে ক্রিক্ষেত্রের উপর
একটা আলি আছে। পূর্ককালে প্রতি দাদ্দ বংদরাস্থে
রাজ্যাভিবেক উপলক্ষে এখানে নরবলি হইত। প্রায় গুই শত
বর্ব হইল, এই প্রথা রহিত হইরাছে। বন্দের নিকটই একটা
পীহাড়কটো গুহা দেখা যায়, এখানে দাড়াইয়া রাজা বলি
দর্শন করিতেন। প্রামের মধ্যে রামচক্রের মন্দির আছে।

তিরুনামবল্লুর, ছকিণ আরকাড়ুর অন্তর্গত তিরুকোইল্র সহর হইতে প্রায় ১০ কোশ দক্ষিণপূর্বে অবস্থানি প্রাচীন প্রাম। এথানে এক শিবমন্দির ও তাহাতে বিশুর প্রাচীন লিপি উৎকীর্ণ আছে। ১১৫৪ শকের পূর্বেও এই মন্দির ক্লিন্তমান ছিল, কারণ ঐ শকে,উৎকীর্ণ নিলালিপিতে প্রোহিতগণের সহিত দেবদেবার বন্দোবন্তের কথা বর্ণিত আছে। এ ছাড়া বিক্লুত সংবৎসরে উৎকীর্ণ মহারগুলেশর , নরসিংহদেব ও চোলরাল কোনেরি-নশ্মই কোপুনের ক্এক-শ্বানি অনুশাসন লিপি আছে।

তিরুনাগৈশ্বম্, তলোর জেলগ্র কুন্তকোণ তাল্কের অন্তর্গত একটা সহর। এথানে প্রার ছুর হালার লোকের বাস। জেলার মধ্যে এথানেই বস্তব্রনাথির প্রধীন আউচা। একটা অতি প্রাচীন শিবমন্দিরও আছে।

তিরুনিরইয়ুর, তথাের জেলাছ কুন্তকোশের আড়াই জােশ দক্ষিণপুর্বে অবহিত একথানি প্রাচীন গ্রাম। এখানে শিব দক্ষির ও তাহাঁতে প্রাচীন-লিশি উৎকীণ আছে।

াফিশ্পন্চিমে "অবছিম একটা আচীব আন। প্রবাধ এই তিক্লপ্তি (বিগতি) উত্তর আরকাড় বেলার একটা প্রধান

देवक्षव छोर्च ७ हक्षिति छामूरकेत ध्येशन महत्र। ध्येशन भाक्सन अध्यत नाथा-दार्दनद अवजि ट्रेंगनु चाट्ड, ट्रेंगनजी निम्न किन्नशिक नहत्र इटेटल अंक मारेन मृत्त्र व्यविष्ठ। এখানে পাহাড়ের উপর জীনিবাসদেবের মন্দির অভিষ্ঠিত। ঐ, গাহাড় তিরুমলয় নামে খাতে। ইহা নিম্ন তিরুপতি হইতে ৬ মাইল-পূর্বদিকে হইবে। তিক্সলরে উঠিবার এটা প্রধান পথ আছে। ১ুমটা নিম্ন ডিক্লপতি হইতে উত্তরদিকে। ২মটা চক্রগিরির দিক্ হইতে পুর্বোভরাভিমূবে। এরটা নাগ-भड़ेन इह्नेट्ड भिक्तमित्य ७ हरूर्थ है वालभड़े इहेट शूर्य-দিকে হিহা ভিন্ন উপরে উঠিবার আরও অনেকগুলি স্থু জি পথ আছে। ইহাতে উঠিবার সিঁড়ি নিম ভিরুপতি हरेटकः > मारेन पृत्तः हरेता। अरे भाराष्ट्र भी श्रामा नृत्र चाहि, अरु अपे कि इस नाम अतिक, य मृत्री स्वाहन नारम कथिछ, छाहात्रहे छेशस श्रीनियामस्यत्त मिनत चाहि। এই कातर्श (कड़ (कड़ मंगन्न नर्कडरक (नवाहनम् বলিঘাথাকে। এই গিরির অপর নাম ব্যক্ট। কৃদ্পুরাণীয় ব্যক্ষটান্তিমাহাত্ম্যে ইহার বিবরণ এইরূপ দেখা যায়---

• • কোন সময়ে বিষ্ণু রমার সহিত অস্তঃপুরে ক্রীড়া করিতেছিলেন, শেষনাগ পুরধারে **ছাররক্ষার নিযুক্ত ছিল।** এমন সময় বায়ু আসিয়া অন্ত:পুরে ঘাইবার চেষ্টা করেন। শেষ ভাহাকে নিষেধ করিলে বায়ু ভাহার কথা না শুনিয়া বলপ্রয়োগে ভিতরে যাইতে চাহিলেন, তাহাতে **इरेक्टन चा**डास कनर चात्रस रहा। ,विकृ बात्रहान कनर শুক্দ গুনিয়া বাহিরে আসিয়া কহিলেন, তেঃমরা কেন বিবাদ করিতেছ। বিষ্ণু বিবাদের কারণ **অ**বগত **হ**ইয়া (भवरक कहिलान, कागरा शायूरे मर्कारभक्ता वनवान्। (भव বিষ্ণুর কথা ভনিয়া বলিলেন, ভগবান বায়ু 🗝 আমার মধ্যে কে বলবান ভাহা প্রভাক্ষ করুন। ভাত্নদভটে বাঙ্কটগিরি আছে, আমি তাহা বেইন করিয়া থাকিব, বারু আমাকে ভানচাত করিতে পারিলে ভাহাকে সর্বাপেকা বলবঃন্ স্বীকার করিব। শেষ ব্যঙ্কটগিরি বেষ্টন করিলে বায়ু প্ৰৰণ বেগে তাহাকে উড়াইয়া অৰ্থণক বৌৰন দূৰে দক্ষিণ সমুদ্র হুইভে ৩২ বোজন উত্তরেও পূর্বে সমুদ্র হইতে পশ্চিমভাগে স্বৰ্ণমূপী নদীর বামভাগে ফেলিয়া দিরাছিল। শেষ পত্ন জন্ত বিশীৰ্ণ দেহ ও লজ্জার ভ্রিরমান হইরা আপ-नारक अवसांतिष्ठ त्वाध करतन अवः अहे त्रितिशृत्क अस्तक দিন ধরিয়া ভগবান্বিকুর ধান করেন। বিকু প্রীত হইয়া छाहारिक वत्र क्षार्थना कतिएक वस्तन। (मृत्र वह क्षार्थना करवन, जाशनि रामम जामात्र कुछान रेवकूर्छ नर्सना जविष्ठ ।

আছেন, ওজপ ব্যব্টবিত বৈলক্ষণ আমার দেহে নিত্য বাদ
কলন। তপ্রান্ "তথাত্ব" বলিয়া তদব্ধি শুখ্টকে হল্ডে
শেবাচলে বাস করিতেছেন। তিনি ব্যব্টগিরির উপরিষ্ঠি
বলিয়া ব্যব্দটেশ বা ব্যব্টগিতি নামে অভিহিত হইয়া থাকেন।
বরাহপুরাণে দেখা বায় বে, ত্রেভাস্গে জীয়ামচক্র লইয়
গমন সমরে সদলে এই হানে আনিয়া অমিভীর্থে লান করেন
এবং এই পুরাণ্ডের ১৯ অধ্যারে দেখা বায়, গাঙ্ডবগণ বনবাস
কালে এই প্রত্তে আনিয়া এক বৎসর কাল বাস করিয়াছিলেন ও বে তীর্থতটে তাহারা ছিলেন, ভাষা পাগুবতীর্থ
নামে অভিহিত হইতেছে। কলপুরাণে ব্যব্টাচলমাহাজ্যে
দেখা বায়, রামান্ত্রলাহার্য ব্যব্টশৈলে আসিয়া আকাশগলার ধারে বিক্রর পঞ্চ অক্ষর মন্ত্র ধ্যান করিয়াছিলেন,
বিক্রু তপে তুর্ত্ত হইয়া প্রত্যক্ষ হইয়াছিলেন। রামান্ত্রক্ষ
কলির ৪১১৮ স্ক্রেক্স লয়গ্রহণ করেন, স্ক্তরাং ৯০০ শত বর্ধের
পূর্বের্ও এই স্থান মহাতীর্থ বিলিয়া প্রস্থিছ ছিল।

পর্বাভশৌর ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ঝরণা ও ভাহার নিকট ছোট বুড় ধলাশয় আছে। সে গুলি পুণাতীর্থ বলিয়া विशाज। ভारात मर्सा १ जी अशान; >म वामिटीर्स, २म विमन्-श्रमा, ०व পाপविनामिनी, वर्ष পाश्ववजीर्थ, १म जूपीतरकान, ৬ ঠ কুমারবারিকা ও ৭ম গোগত। স্বামিতীর্থ লয়া ১০০ গল ও প্রত্তে ৫০ গল, চারিদিকে গ্রেনাইট প্রস্তর স্থারা সোপান বাঁধান। এই তীর্থ দেবালয়ের নিকট। পাতিগণ इशास्त्र व्यवगार्न कतिया शास्त्र। भागविनामिनी जीर्थ দেবালয় হইতে ৩ মাইল দূরে একটা সামাভ জলপ্রপাতের নীচে অবহিত, এই অলপ্রপাতের নীচে দাড়াইয়া স্থান করিলে ব্ৰশ্বহত্যা প্ৰভৃতি মহাপাতক বিনষ্ট হয়। এখানে এইরূপ অবাদ আছে, পাপের ভারতমা হেজু, কলের বর্ণ পর্যান্ত মলিন হয়। পাহাড়ের পুর্বাদিকে বে জলপ্রপাত তাহাই তুষ্রকোল (ভূষিরকোণা) নামে পরিচিত। ছলপ্রাণের মতে-পুর্বে এইথানে ঋষিগণ বাস করিতেন। এথন ইহা জললে পরিপূর্ণ। এখানে কোন মানসিক করিতে হইলে ফপিলতীর্থে লান করিলা বর্ণ বা রোপানির্বিত কার-हिएमत की है। शब्सत शांत्र कतिए इत्र। शरत वामिकीएर्स খানু করিলে ঐ কাঁটা ভাষার কপোলদেশ হইতে আপনি খুলিরা পড়ে, এইরূপ প্রবাদ আছে। ক্পিনতীর্থের পশ্চাতে ৰে বৃহৎ গোপুর আছে, ভাহা অলিপিলি নামে খাত। এই গোপুরের খার পর্যন্ত সকল শ্রেণীর লোক আদিতে পারে, ইহার পর কেবল হিন্দু ভিন্ন অভ আডি বাইবার অধিকারু নাই ৷ এই খান হইতে উপরে উঠিবার পাঁকা সিঞ্জি আরত হইরাছে। এই সিঁড়ি আর ১ মাইল লখা ও জনির
সমতল হুইতে নানাধিক এক হালার ফিটু উচ্চ হইবে। যথ্যে
মধ্যে বিশ্রামন্থান আছে। সিঁড়ির সর্কোচ্চ ছানে একটা বৃহৎ
সাৈপুর আছে, ইহা 'গালি-গোপুর' নামে খাত, এই গোপুরের পশ্চাতে বৈকুঠ নামক মন্দিরে রামক্ষের মূর্ত্তি বিরাজমান। এই মন্দিরের জ্পানকোণে বৈকুঠগুহা নামে এক
গুহা আছে। শ্রীরামচক্র শ্রীপৈলে আগমন কালে তাহার
অম্চরপণ এই গুহার আশ্রম লইরাছিল। এই স্থান হইতে
ব্যহটেশ মন্দিরে বাইবার পাকা রান্তা আছে।

তিরুমলর গিরিহিত নগরটা অতি সামাক্ত। ইহা স্বামী-তীর্থের ব্যঙ্কটভামী ও বরাহভামীর মন্দিরের চতু:পার্ফে অবস্থিত। এধানে হিন্দু ভিন্ন অন্ত কোন জাতি বাস করিতে পায় না। এথানকার লোকসংখ্যা পনর যোল শতের অধিক হইবে না। এখানে বাত্রীদিগের থাকিকার জ্বস্ত অনেকগুলি ছত্র আছে। এই ছত্র সকল মহিন্দর ও কোচীনের রাজা এবং কালছন্তী ও ব্যন্তটিগিরির অমিদারগণ প্রস্তুত করিয়া দিয়াছেন। মনিবের পার্ছে সহ্স্র তত্ত্বমত্তপ, আছে, এই স্বাস্ত্রের কার্যা অভি পরিপাটী, ইহা গ্রেনাইট প্রস্তরম্বন্তম্ব উপর বিস্থত রহিয়াছে। রাস্তার দিকে তাুহার প্রভ্যেকটাতে षড় বড় মৃর্ত্তি থোদিত। এই মণ্ডপের একাংশ পড়িয়া शियां हिन, > नक ठाका वाद्य देशांत कीर्नश्यात हरेबाह्य। ইহার একপার্শ্বে একথানি অপূর্ব্ব প্রস্তররথ পড়িয়া আছে, চক্রচোল নামে এক রাজা এই প্রস্তরের রথ প্রস্তুত কুরিয়া দিয়াছিলেন। পূর্বেই হাতে ব্যঙ্কটেশের রথ •হইত, এখন আর হয় না। এখানে স্বামীত্রীর্থে লান করিতে হয়। দেবালয় তিনটা ভিন্ন ভিন্ন প্রাচীরহারা বেষ্টভ, বাহিবের প্রাচীর ক্বঞ্চবর্ণ গ্রেনাইট প্রস্তরদারা নির্দ্ধিত, তাহার একপার্শে একটা বৃহৎ অন্থাসভুলিপি থোদা আছে। ইহার দরজায় একটা দামান্ত গোপুর আছে; এই প্রাচীর লখ্ময় ১৩৭ গব্দ ও প্রন্থে ৮৭ গল। এই মন্দিরে চতুর্ত্ত বিষ্ণুমূর্ত্তি দণ্ডায়মান। हैरात मिक्स्पन च्यक् बर्ख ठक, अभन्न ब्छ शृथियोत मिदक এবং বা্বনিকের এক হল্তে শব্ম, অপর হল্তে পন্মু শোভিত। এই মৃর্ত্তির সঙ্গে শক্তি না থাকার অনেকে অনুমান করেন, পুর্বে এখানে কেবল শিবস্তিই ছিল, রামাছলের যত্নে সেই মূর্ভিতে শব্দ ও চক্র শোভিতী ছইথানি সোণার হাত জুড়িয়া দিয়া বর্তম¦ন বিষ্ণু বলিয়া খোবণা করা **হ**ই-রাছে। প্রবাদ এইরূপ, কুলোভূল চোলের পুত্র ভোগতমন চক্রবর্ত্তী এই প্রসিদ্ধ মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন।

धारे मिलात (म्बंमर्लन क्तिएक हरेरन किছू मर्लनी मिएक

কর। দেকের হথকান কেঁথিতে হইলে ১০ টাকা, ভতুলসীবারা गरवनाम पूर्वना १ होका ७ कर्नुदारनारक रावसर्वन कत्रित > होना निष्ठ इत्र। दना >२हा इहेट्ड २हा পর্যাত অর্চনা প্রভৃতি হুইয়া থাকে। সাধারণের দুর্শনের वञ्च व्यवदानी वात (थाना थाटक) व्यातकाणू क्षातम देश्त्राव-भागनावीन रखन्ना व्यवधि ১৮৪७ थुडीस- शर्वास मारे मस्तित ইংরাজ গবর্মেণ্টের ভত্বাব্ধানে ছিল্। পরে ইহার ভার महरखत উপর অর্পিত হয়, অভাবধি মহস্তের উপর এই ভার আছে। এই দেবালরের বাঁৎসরিক স্থার প্রায় ২১ হাজার টাকা ও ব্যয় প্রায় ১৫ হাজার টাকা, অজীক্ত দেবালয় नष्म अरे प्रवानम्म प्रवानना नारे। अथात्न भूट्स दकान কুলটা পদার্পণ করিতে পারিত না। এখন আকর সে দিন নাই, ইহার অনেক ব্যতিকুম হইয়াছে। বে সকল মহাত্মা এই মন্দিরে উরতি ক্রিয়াছিলেন, তাঁহাদিগের নাম আঞ্ড মন্ত্রপুলোর সহিত উচ্চারিত,হইয়া ,থাকে। দেবালয়ের হন্ত-লিপিতে উহিাদের এইরূপ বিবরণ পাওরা যার। পরীকিং-थाकरनत विजीय थांगीत ७ जांशत भूव कनरमक्त वह-र्ভाग्तंत्र श्राहीत्र निर्माण कत्राहेत्राहित्नन । शरत विक्रम नैारम অপর কোন রাজা এই মন্দিরের সংস্কার করিয়া দেন ৭ কেহ ণকেছ কহিয়া থাকেন, তোওমন চক্রবন্তী মহারাজ বর্ত্তমান মূলমন্দির নির্মাণ করেন। ত্রহ্মাণ্ডপুরাণীয় ব্যহ্নটেশ মাহায্য্যে এই विषयत्रत्र ज्यालाहे উत्तब (पथा यात्र,--कान ममरत्र नात्रम পৃথিবী পর্যাটন করিয়া ভগবান বৈকুঠনাথের দর্শন করিতে গিয়াছিলেন এবং বলিয়াছিলেন, গলার দক্ষিণ এক সহস্র ক্রোশ অন্তরে ও পূর্বসাগরের ২৫ ক্রোশ পশ্চিমে এক মনোহর গিরি আছে। বিষ্ণু ইহা গুনিয়া বলিরাছিলেন, কলি-যুগে ৰচালরাজপুত্র চক্রবর্তী কর্তৃক্ত প্রতিষ্ঠিত হইয়া আমি ঐথানে থাকিব। এথানকার প্রধান উৎসব আখিন মাদের > • मिन वािशिया हम । छे ९ मत्वन्न श्रक्षम मितन श्रक्र ए । ९ म न ও দশম দিনে নারায়ধবনে পলাবতীর সহিত বাংশরিক ु कन्तारभाष्त्रव हहेवा बादक ।

বাঁছটেশখামীর মন্দিরের স্কাহিরে খামী-পুক্রিণী-ভীরে একটা সামান্ত মন্দিরে বরাহখামীর মূর্ত্তি আছে। কেই বলেন, কোন বজ্ঞ-বরাহ বিচরণ করিতে করিতে, ঐ স্থানে আসিয়া ছিলেন, অতএব ইনি ঐ শুলের অধিঠালী দৈবতা। সেই অবধি ঐথানে বরাহখামী প্রতিষ্ঠিত আহিন। বাজিগণ ইহার পূলা আগে দিয়া ব্যহটেশখামীর পূলা দিয়া বাকেন। ব্যহটেশ খামীর মন্দিরের নিক্ট গোগর্ভতীর্থের কাছে ক্ষেত্র বনিগুণ্ডি নামে এক প্রস্তর্ময় যন্ত আছে। কেইই

এ তান্তের নিকট মিধ্যা কথা বলিতে সাহসী হয় না। বে
সকল বিবরের সভাবিধারণ করিতে বিচারক সমর্থ হন না,
এথানে তাহা নিশান্তি হইরা গিরাছে, বাদী ও প্রতিবাদী
গোগর্জনীর্থে লান করিরা ভিনা কাপড়ে ঐ তান্তের নিকট
আনিরা বাহা বলে, তাহা সভ্য বলিরা গৃহীত হয়। এই
রূপ শপথ করিতে হইলে বাদী ও প্রতিবাদীকে ৭ টাকা
আমা দিতে হয়। তৎপরে থিচুড়ী, প্রী, আয় ও দ্ধিমণ্ডীর
ভোগ হইরা থাকে। বৈরাগিগণ এই ভোগ প্রসাদ পার।

নিম ছিক্লুপতি নগর্মী 'কথন কথন খামীনী গোবিন্দপত্তন নীমে অতিহিত হইরা থাকে। এই সহর হইতে
চারিদিকের দৃশ্র অতি মনোহর। দেড় ক্রোশ দক্ষিণে স্থবর্ণমুখী নদী প্রবাহিত। 'উত্তরে এক মাইল দৃরে তিক্রমলরগিরিমালার "মনোহর শোভা। পূর্বা ও পশ্চিমে বহুদ্র
ব্যাপিরা অগণন ছোট ছোট গিরিমালা বিরাক্ত করিতেছে।
সহরের উত্তর দিকে ই মাইলের মধ্যে তিক্রমলরের গারে
কপিলতীর্থ নামে জলপ্রপাত আছে, বর্বাকাক্ষে এই
প্রপাত হইতে বখন জল নির্গম হয়, তখন ইহা অতিশয় মনো'হর্ব শোভা ধারণ করে। প্রত্যেক বাত্রী তিক্রমলরে উঠিবার পূর্ব্বে এই তীর্থে অবগাহন করিয়া থাকে। পর্বতের
পার্বে একটী প্রস্তরময় হস্থমানের সৃর্ত্তি আছে।

এই সহর অতি প্রাচীন। অক্ষাণ ১৩ণ ৩৮ ডিং, দ্রাখিণ ৭৯ণ ২৭ ৫০ পু:। ইহার পথ অতি অপ্রশস্ত। এথানকার লোকসংখ্যা ১৪২৪৫। এখানে ডিপুটা ডহুলীনদার ও ডিব্রীক্ট মুন্নেকের আপিন আছে। এ ছানে সর্বাঞ্জ ৩১টী পদবালর বিশ্বমান। ইহার মধ্যে গোবিক্স্পামী ও রাম্প্রামীর দেবালর প্রসিদ্ধ। রাম্প্রামীর মন্দিরের গোপুর অতি উচ্চ ও পরিকার। এখানে এইরপ প্রবাদ-আছে, গোবিক্স্পামী ব্যক্টেশ্স্থামীর জ্যেষ্ঠ সহোদর। এখানকার বিশ্বু মৃত্তিটা অতি বৃহৎ ও শেষণ্যার অর্জ্নারিত।

নিম তিরুপতির ৩ কোশ পশ্চিমে চক্রগিরি নামে একটা আচীন-সহর আছে। চোলরাজগণ এক সমরে একাদশ হইছে পঞ্চদশ শতাকী পর্যান্ত এইখানে রাজত্ব করিয়াছিলেনী তৎপরে উহা বিজ্ঞানগরের রাজাদিগের অধীনে আসে। ১৬৪৯ খ্যু অব্দে ইও ইড়িয়া কোশ্দানী চক্রগিরির রাজা প্রীর্ক্তরারের নিকট হইডে মাল্রাকের বন্দর স্থাপনের সনন্দ পাইরাছিলেন। ইহাঁত্বে স্পষ্ট প্রভীরমান হর বে, তথনও চক্র-গিরির রাজগণ স্থাধীন ভাবে রাজত্ব করিতেন এবং এই রাজ্য মাজ্রাক্র পর্যান্ত বিস্তৃত ছিল। এখন রাজা ও রাজধানী কিছুই নাই। কিন্তু রাজভবনের এক অংশ বিভ্রমান আছে, ভারাও

এখন দেখিবার উপর্ক। ভিক্লপভিতে প্রস্তত্ববিদ্পণের দেখিবার জিনিব অনেক আছে। দান্দিণাত্যের প্রাচীন নিরনৈপুণ্য, ভারব্য ও হিন্দুরাজগণের সমরে উৎকীর্ণ বছসংখ্যক নিগালিপি তিহুপতির নানাহানে দেখিতে পাঙরা যার। ভনা বার, এখানকার মহত্তের নিকট প্রায় ছই গাড়ী ভাষ্ণাসন রহিরাছে।

২ পুর্বোক ফ্রিকপতি ছাড়া গোদাবরী বেলার এল্ক তাল্কের মধ্যে আর একটা তিরপতি আছে, ইহার অপর নাম বারকা-তিরুমল। উপরোক্ত তিরুপতির ভার এই হানও মহাপুণ্য হান বলিলা এই কেলার অধিবাদিগণের নিকট প্রসিদ্ধ। এধানকার মন্দিরটাও তিরুমলর নামক ছোট পাহাড়ের উপর অবস্থিত।

তিরুপভূর, মান্তাজ প্রেসিডেনীর শেণম্ (সালেম) কেনার

একটা তালুক ও ঐ তালুকের প্রধান নগর। সহরটা অকা

১২° ২৯ ৪০ উ: ও জাবি॰ ৭৮° ০৬ ৩০ পূর্ব্বে অবস্থিত।

সহরের লোকসংখ্যা ১৬৪৯৯, তন্মধ্যে অধিকাংশই হিন্দু,

তৎপরে মুসুলমান। এখানে রাজকীর কার্যালয়াদি সকলই
আছে। জৈলার মধ্যে এই হান হইতে নানাদিকে পথ
বাহির হওয়ার চারিদিক্ হইতে এখানে শহ্ত আমদানী হয়।

এখানে চামড়ার ব্যবসাও মন্দ্রনর। সহরের মধ্যে একটা
অতি বৃহৎ সরোবর আছে, জেলার মধ্যে তত বড় পুকুর
আর কোথাও নাই।

তিরুপরক্ষাড়ু, দক্ষিণ আরকাড়্র অন্তর্গত আরকাড়ু সহরের দশ-ক্ষোপ পৃর্বে অবস্থিত একথানি প্রাচীন গ্রাম। প্রামের মধ্যে প্রাচীন দেবমন্দিরে কএকথানি প্রাচীন শিলালিপি ধোদিত আছে।

তিরুপুট্ড মরুদ্র, এই স্থান ভিরেবেদ্ধি দেলার মধ্যে অধাসমূদ্রের দেড় কোশ উত্তরপূর্ব্ধে বেধানে ঘটনা নদী ভাষ্মপর্ণীর সহিত মিলিভ হইরাছে, দেই সঙ্গমের ধারে অবস্থিত। এধানে অনেক পবিত্র দেবমন্দির আছে। প্রধান সন্দিরে ধৃষ্ঠীর ১৫শ হইতে ১৭শ শৃতাশীর মধ্যে প্রদত্ত কোলস্থান-অত্বিত কএকধানি শিলালিপি উৎকীর্ণ ও একধানি ভাষ্যশাসন আছে। ১

তিরুপুর, কোএখাডোর জেনার অন্তর্গত একটা সহর ও রেল-টেসন। অকা *১১ ৩৭ উ:, জাবি ৭৭ ৪০ ৩০ পৃং। লোকসংখ্যা প্রায় ৪০০০।

তিক্রপোলুর, চেলনপটু বেলার অন্তর্গত কোভনন সংবের ত্ব পদিনপশ্চিমে ও চেলনপটু সংবের ৭ ক্রোল উত্তরপূর্ব্বে এই স্থান অবস্থিত। এথানে থকটা আটিক শিবমন্দির আছে। ৪০ বংসর পূর্ব্বে প্রথান আমিটাণ্ট কালেটার এই মন্দিরের অধ্যক্ষের নিকট হইতে কডকগুলি পরওয়ানা ও প্রাচীন ডামশাসন পাইরাছিলেন।

নুরুপ্নংক্তিক্লন্তি, তলোর বেলার তিরুবাড়ী ইইতে ১ ক্রোশ পশ্চিমে ও তলোর ইইতে ৪ ক্রোশ উত্তরপশ্চিমে এই স্থান অবস্থিত। এথানে শিরকার্যখিচিত এক প্রাচীন শিবমন্তির ও ভাষাতে অনেক খোদিত দিপি আছে ৫.

চরুপ্পাচ ট্রি, মছরা বেলার মধ্যে শিবগলা জমীবারীতে তিরপ্পাবনৰ নামক খানের ও জোশ দক্ষিণপশ্চিমে এই জার অবস্থিত। এখানে একটা প্রাচীন শিবমন্দির ও ভাহাতে অনেক শুলি খোদিত লিপি আছে।

চক্ষপ্পাট্টুর, তিশিবাপরী জেলার সুশিরি তালুকে সুশিরি সহরের ১২ জোল পূর্ব্বে এই স্থান অবস্থিত। এথানে এক প্রাচীন শিবমন্দির ও তাহাতে অনেকগুলি প্রাচীন শিলালিপি আছে।

চক্ষপ্পত্র, মছরা জেলার তিক্মকলম্ তাল্কের মধ্যে তিক্মকলম্ সহর হইতে ৮০ কোশে উত্তরপশ্চিমে এই স্থান অবস্থিত। এখানে এক প্রাচীন শিবমন্দির ও তাহাতে থোদিত লিপি আছে।

চরুপ্পদিকুন্রম্, চেললগট্ জেলার কাঞীপুর তাল্কে কাঞীপুরের ১ঃ জোল দক্ষিণপশ্চিমে এই স্থান অবস্থিত। এখানৈ একটা প্রাচীন, অতিস্কর কাঞ্চকার্যবিশিষ্ট শিব-মলির ও অনেকগুলি খোদিত লিপি আছে। তমধ্যে এক থানি কৃষ্ণদেব মহারারের রাজস্কালে ১৪৪০ শকান্ধে (১৫১৮ খুষ্টান্কে) খোদিত হয়। লিপিথানিতে মন্দিরার্থ জ্মীদানের কথা লিখিত আছে।

চক্লপ্পদিরিলিয়ুর, দক্ষিণ আরকাড় লেলার ক্লান্ক সহরের ৪ মাইল উত্তর-পুশ্চিমে এই স্থান অবস্থিত। এথানে রেল টেসন এবং উত্তম কার্ক্কার্থাবিশিষ্ট এক্টা প্রাচীন শিবমন্দির ও মন্দিরে অনেকগুলি থোদিত লিপি আছে।

ন্তুপ্পনন্দাল, তলোর জেলার কুন্তবেল। নহরের >> মাইল, উত্তরপূর্ব্বে এই ছান অবহিত। এথানে এক সম্পত্তিশালী শুদ্র প্রতিষ্ঠিত মঠ আছে। এই মঠে একলাল পত্তে লিখিত বহুদংখাক ভাষিল পুঁধি আহে। মঠে একথানি তেলগু ভাষার ও ভিনথানি তামিলভাষার থোলিত জাম্রশাসন পাওরা বার। তেলগু শাসনথানি এই মঠে তুরইয়্র নামক ছানে ভ্রমিদান পত্র, ইহা ১৯৬৬ শক্তে (১৭৪৪ খুটান্দে) অনগিরি নাম ছানে বেছটপতিরারের, রাজস্বকালে থোলিছু হয়। ভাষিল শাসনগুলির ক্রে একথানি ১৬৫৭ শকান্দে (১৭০৫

খুটাকে) রামনাদের নেতুপীতি সন্ধার হিরপাগর্ডবাট্ট-কুমার মুজুবিজয় রমুনাথ নেতুপতি কর্তৃক রাষেধ্যের নিক্ষট এই মঠে কতকটা ভূমিধানের জন্ত থোগিত হয়।

ভিক্লপ্পরক্ষু, মনবার কেলার 'ময়বনাদ তাল্কে অলদীপ্রের কেলাশ উত্তরপূর্বে এই ছান অবছিত। এখানে ৩৯টা ভল-দেন (প্রাচীনকালে অক্তা জাতীর বৃত ব্যক্তির বৃত্তিচিলার্থ চারিথও প্রস্তারের উপর একুখণ্ড ব্রহৎ প্রাণত দিয়া বে আসনবং ছান প্রস্তুত হইত) আছে।

তি ক্লপ্পালস্থৃ ড়ি মছরাজেলার রামনাদ সমীদারী ্তে রামনাদ সহরের ১৮ মাইল উত্তরপূর্বে সমুদ্রের নিকটে এই স্থান অবস্থিত। এখানে এক প্রাচীন শিবমন্দির ও তাহার সমুধে একথানি খোদিত লিপি এবং মন্দির মধ্যে একথানি তাত্রশাসন আছে।

তিক্রপ্লান্ত রুই, তিশিরাপরী জেলার তিশিরাপরী সহরের

্য জোশ উত্তরপূর্ব্বে এই স্থান আইবিহত। এথানে এক ।
প্রাচীন-শিবমন্দির ও তাহাতে শিলালিপি আছে।

তি রুপ্পাক্ক ড়ি, চেল্ল পট দেল বাল কাঞীপুর ভাগুকে কাঞীপুর সহরের ৩২ জোল পশ্চিমে এই স্থান অবস্থিত। এথানে একটা আচীন বিষ্ণুমন্দির এবং ভাহাতে নানা প্রকার অক্ষরে খোদিত অনেকগুলি লিপি আছে।

তিরুপ্পাকিড়ল্, উত্তর আরকাড় জেলার অত্তর্গত বালাজাপেটের ৪ জেলা দক্ষিণপূর্ব্ধে অবস্থিত একটী প্ণাতীর্ধ।
এথানকার বিষ্ণুমন্দির বিখ্যাত। স্থলপুরাণে বিষ্ণুমন্দির
ও এথানকার মাহাত্ম্য বর্ণিত আছে। এথানে বিত্তর প্রাহীন
বিলালিপি উৎকীর্ণ আছে। কাহারও মতে পূর্ব্বে শিবমন্দির
ছিল, তাহাই এখন বিষ্ণুমন্দিরে পরিণত ইইরাছে।

তিরুপ্পাশ্র, (অিপাহর, ডিরুপাহর) চেল্লপটুলেলার মধ্যবর্তী ডিল্বরুরের ১ জোল পশ্চিমে অবস্থিত একটা সহর। অক্ষা ১৩ ৮ হি• ডিঃ, ড্রাখি ৭৯ ৫৫ পু:। এখানে প্রার সাড়ে তিন হাজার লোকের বাস।

ু এছানও একটা পবিত্র তীর্থ বলিয়া গণাঁ। হিলুরাজ-গণের সমরে ছাপিত একটা হুর্গ তুও তয়ধ্যে একটা অতি প্রাচীন শিবমন্দির আছে। এখানকার ছণ্ণুরাণে এই ছান ও শিবমন্দিরের মাহাজ্য বিভ্তভাবে বর্ণিত আছে। ঐ শিবমন্দিরের নানাছানে চোলরাজগণের সমরের উইকীণ বিভর শিলালিপি আছে। এখানকার স্থলপুরাণে, লিখিত আছে, মহারাজ করিকাল চোল কুরুধরদিগকে জর করিয়া ছিলেন।

পূর্ব্বে পলিগারদিগের দৌরাত্ম্য হইতে অব্যাহতি শীইবার

অভ অনেকে এই ছর্গে আশ্রম লইড। ১৭৮১ গুটাকে

সর্ অক্সার কৃট এই হুর্গ আক্রমণ করেন। কোম্পানীর আমলে
এখানে নিমন্ত্রীর সৈনিক পুরুষেরা, বাস্ক করিত। তৎপরে
অবসুর প্রাপ্ত গোরাসেনারাও অনেকে এখানে আসিয়া থাকিত।
তর্কপ্রিরিয়ম্, এই হান তল্পোরজেলার কুন্তকোপের ২॥ক্রেণি উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। এখানে এক অতি প্রাচীন
শিবমন্দির ও তাহাতে পুরাবিদগণের জইবা বিজয় শিলাগিশি
ধোদা আছে।

উক্লপুল্লাণি, ইহার সংস্কৃত নাম 'দর্ভণরনম্'। মছরাজেলার त्रामनान • क्रुमिनातीत मध्य तामनान नहरतत ७ ट्याम निकरन অবৃষ্ঠি। স্বপুরাণে ও সেতুমাহাত্মো এই স্থান একটী পবিত্র ভীর্থ বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। রামেখরের যাত্রিগণ প্রায়-এই ভান দর্শন ও এথানকার বিষ্ণুর দর্ভণয়ন মৃঠির পুঞ্জাদি করিয়া যায়। সেতুমাছাত্ম্যে লিখিত আছে,—রামচন্দ্র नकाराजाकारम नमूरस्त्र धारत चानित्रा वक्रगरमवरक धानत করিবার অস্ত ভিন দিন দর্ভ বা কুশশ্যায় শয়ন করিয়াছিলেন, এই জন্ম এই স্থান দর্ভশর্মন নামে বিখ্যাত। এথানকার মৃলমন্দিরত্ব শেষশায়ী বিষ্ণুর্ত্তিকেই পাণ্ডারা রামচল্ডের 'দর্জশয়নমূর্ত্তি বলিয়া দেখাইয়াঁ থাকেন। দেখিলেই বোধ हशः, এक प्रमग्न এहे छान प्रमूखित ठिक धारत्रहे हिन, এथन সমুজ প্রায় তিনমাইল সরিয়া গিয়াছে। মূলমন্দিরের সল্লুথে এক বৃহৎ সরোবর আছে, তাহাই সেতুমাহাত্ম্যে চক্রতীর্থ नारम वर्गिङ इरेबार्छ। छाहात ठातिभिरक भागत निया दौधान ছিল, কিন্তু এখন তাহার অধিকাংশ ,নষ্ট হইয়া গিয়াছে। টুহার উত্তরদিকে একটা পুন্ধরিণী আছে, তাহা-রামতীর্থ। মন্দিরের প্রাচীর দৈর্ঘ্যে ও প্রন্থে প্রায় ৪০০ ফিটু হইবে। প্রবেশহারের উপর বৃহৎ গোপুর। মৃলফ্লির বড় না হইলেও উহার চারিদিকে বড়্বড় মণ্ডপ আছে। বিজয়-নাথ সেতুপতি এই প্রস্তরমগুপগুলি নির্মাণ করাইয়াছিলেন। এখানকার জগরাগজীর মন্দির প্রধান, প্রবাদ এইরূপ---তিরুমঙ্গের আবার নামে এক ব্যক্তি চৌর্যাবৃত্তি করিয়া এই মন্দির নির্মাণ করেন। মৃলমন্দির মরক্তনীলপ্রস্তুরে নিশ্চিত। কোন্সমুয়ে নির্মিত হয়, তাহা জালা যায় না। তবে এখানে চোলরাজগণের সময়ে উৎকীর্ণ অয়োদশ भडाकीर अपनक्षांन निनानिभिष्ठ এই मनिर्देतन धानक ণাকায় ত পুর্বের্ম নির্দ্দিত হইয়াছিল বলিয়া অঠুমিত হয়।

দর্ভশরনৈদ্ধ মনিরপার্থে বরুণকুও। সেতৃমাহাছ্যো লিথিত আছে—রামচন্দ্র তিনদিন দর্ভশরনে থাকিয়া যথন দেখিলেন, বরুণদেব আসিলেন,না, তথন তিনি কুছ হইয়া সমুদ্রকে ওক করিবার অঞ্পারবোজনা করিলেন। সমুদ্র ভরে বেলা ছাড়িরা একবোজন হটিরা গেল। তথন বরুণ উক্ত কুও হটুতে উঠিরা ভাতিবাদপূর্বক রাস্চল্পকে প্রসন্ধ করিলেন। তদবধি সেই কুপ বরুপকুও নামে থাত হইরাছে। চক্র, বরুণ ও রাসতীর্থ বাতীত এখানে সেতু ওব্দাত্তা

্ব বিজ্ঞ্মন্দিরে বিশ্বর প্রাচীন শিলালিপি থোণিত আছে। তিরুকপুণ্ডি, তল্পোর জেলার নাগপট্টন সহরের ৫ জোণ দক্ষিণপশ্চিমে এই স্থান অবহিত। এখানে এক প্রাচীন শিবমন্দির ও তাহাতে থোদিত লিপি আছে।

তিরুপুরাপুর (তিরপুয়পুরম্)—রক্ষা কেলার বিহুকোণ্ড সহরের ৪ ক্রোশ উত্তরে এই হান অবস্থিত। এথানে অসভ্য জাতির মৃত-সমাধি-নির্দেশক কতকগুলি প্রভরাসন আছে। তিরুপ্রক্রোত্র, মলবার কেলার কোট্টয়ম্ সহরের ৩ ক্রোশ দক্ষিণে এই হান অবৃষ্থিত। এথানে একটা পাহাড়ে থোদিত গুহা আছে।

তিরুশ্মঙ্গলম্, নাজাজ প্রেনিডেন্সির মত্রা জেলার একটা তালুক ও ঐ তালুকের প্রধান দদর। তালুকের পরিমাণ ৬২৫ বর্গমাইল। সহরটী অক্ষা ৯°৪৯/২০ তিঃ ও জাবি ৭৮°১/১০ প্রা প্রা সহরে লোকসংখ্যা প্রায় ছয় হাজার। ১৫৬৬ থুটাকে এখানে বেলালর জাতি আসিয়া উপনিবেশ করে।

ভিক্লমঙ্গলকুড়ি, এই স্থান ডঞাের জেলায় ক্স্তকােণ হইতে ৪ কােশ উত্তরপূর্বেই অবস্থিত। এখানে এক প্রাচীন শিক মন্দির ও ভাহাতে গ্রন্থীকরে উৎকী্শ শিলালিশি আছে।

তিরুদমকুর (ভিক্সাহর) ত্রিশিরাপলী জেলার উদৈরার পলৈরম্ তালুকের অন্তর্গত এক্টা প্রাচীন গ্রাম। এথানে স্থলর ভারব্যযুক্ত এক শিবমন্দির ও তাহাতে কএকথানি শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে।

•িত্রক্ষলা-নায়ক, মহরার এক্জন বিখ্যাত রাজা। ইংগর প্রকৃত্ব নাম 'মহারাজমান্তরাজ্ঞী তিরুমল শেবরি নারণি আয়ালু গারু'। ক্রিনিরাপরী পরিত্যাগ করিরা মহরায় আসিরা রাজ্ধানী হাপন করেন। তাঁহার যতে মহরায় হলর রাজ্পানী হাপন করেন। তাঁহার বতে মহরায় হলর রাজ্পানী হাপন করেন। ক্রিক্রকরিরা একবার স্বাধীন হইবার চেটা করিরাছিলের। এই সমর মহিস্কর্বসন্ত দিখিভিল ভারার চেটা করিরাছিলের। এই সমর মহিস্কর্বসন্ত দিখিভিল ভারার সম্পূর্ণরাক্ষিত ভারাহিল।

১৬২৩ খুটাবে রবার্ট ডি নবিলিরাস্ নামক প্রাসিদ্ধ ক্রেইট মগুরার স্থাপমন করেন, তথন মগুরারাক।তিক্রমনের সহিত রামনাদের সেতৃপতির বোরতর যুদ্ধ চলিতেছিল। এই মুদ্ধে তিক্রমল ক্রতকার্য্য হুইতে পারেন নাই।

ু ভিনি বরাবর বিজয়নগুর রাজ্যের নিষ্ট ভাঁহার অধীন-তার চিক্ বর্মণ উপহার পাঠাইতেন। কিন্তু মধ্যে ভাহা चवरहना क्यात >७६१ पृष्टीत्म विवर्तनगत-त्राकक्मात जिल्न-মলকে শাসন করিবার অন্ত বুদ্ধ বোষণা করিলেন। ভিক্রমল ভঞার ও বিঞ্জীর নারক্ষিণের সহিত বোগ দিলেন। "বিঞ্জৰ-নগরের দলবল বিঞ্জী আক্রমণ করিল। এ দিকে ভিক্নলের व्यद्राह्मात्र मूननमात्मत्रा शिक्षा विकासमात्र चाक्रमण कत्रिन। তথা হইতে তাহারা ক্রমশ: মুসলমান-ঝ্রন্তা বিস্তার করিতে করিতে দক্ষিণাভিষুবে আসিয়া বিজয়নগরের করদরাজ্যসমূহ আক্রমণ করিতে লাগিল। ,তথন তিরুমন পলাইয়া আসিয়া মহরার আশ্রর লইলেন। শেষে তিনি গোলকভার মুসলমান-বাজের সহিত যোগ দিয়া মহিন্দর ও বিজয়নগরাধিকত অব-শিষ্ট রাজ্য আক্রমণ করিতে লাগিলেন। মহিক্র-রাজ উদৈ-দার তিরুমলের বিশাস্থাতক্ষতার প্রতিশোধ লইবার জ্ঞ তিক্মলকে আক্রমণ করিলেন। ভীষণ মুদ্ধের পর জয়লন্দ্রী (১৬৫२ थृष्टोट्स) मह्तात्राटकत व्यवनामिनी रहेन। किन्ह वे বর্ষেই তিক্রমল ইহলোক পরিত্যাগ করিলেন।

তিরুমল্দেব, বিজয়নগরের একজন প্রসিদ্ধ রাজা। স্বিধ্যাত রামরাজের লাতা। বিজয়নগরের নানাছান হইতে তিরুমলের সমরে উৎকীর্ণ শিলালিপি আরিক্কত হইয়ছে, তৎপাঠে জানা যায়, তালিকোটের যুদ্ধে রায়য়ালের অধংপতন ঘটিলে তিরুমলই বিজয়নগর-রাজবংশের প্রাধানী ছানাস্করিত করেন এবং পেয়কোও নামক ছানে রাজধানী ছানাস্করিত কয়েন। ইনি ১৫৬০ হইতে ১৫৭১ খুটাম্ব পর্যান্ত রাজত্ব করেয়ছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার জ্যেই পুত্র

ভিক্তমলপুরম্, এই হার উত্তর আরকাড় কোর বালালাপেট ডালুকের মধ্যে পুরু র রেল-ষ্টেসনের ২। কোশ উত্তরে
অৱস্থিত। এখানে এক অতি প্রটীন ভগ বিক্তমন্দির ও
তাহাতে শিলালিপি খোদ্ভিত আছে। এই নামে ভিরেবেলি
খেলাতেও এক প্রাচীন হান আছে, তাহা ভিরেবেলি সহর
ইইতে ৬ জোশ উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। এই গ্রামের নিকটেই
এক বৃহৎ প্রক্তরনির্মিত অটাপুল্লার ভগাবশেব পড়িয়া আছে।
ভিক্তমালকান্তান্কোট্টে, মত্রাজেলাত্ব রামনাদের >৭
জোশ পশ্চিমে অবস্থিত একটা গ্রাম। এধানে অতি স্থক্ষর

ভাৰমনৈপ্ৰাযুক এক প্রান্ধন শিব্যুশির ও ভাহাতে খোদিত লিশিক্ষায়ত।

তিক্রমুকুড়ল, ত্রিশিরাপরীয় ক্লিডলর সহরের ৮ জোশ পিতিমে অমরাবতী ও কাবেরী নদীর সদমের নিক্ট এই প্রায়ান অব্ধিত। এখানকার ছাতিপ্রাচীন, শিবমালিরে
বিভার খোদিতলিপি আছে।

তিক্লমুক্লপন্পৃতি, কোএনতোর প্রকার তিরূপ্র-রেগ-টেসনের ২ ক্রোশ উত্তরপশ্চিষে এই স্থান অবস্থিত। এথান-কার ছইটা প্রাচীন দেশমন্দিরে কডকগুলি শিলাবিশি খোদিত আছে।

ভিরুষ্ঠিকোবিল (অিন্র্রিমন্তির) কোএখাতোর কোনাছ
একটা প্রাচীন প্রাম। অকা ১০ ২৭ ডিঃ, দ্রাঘি ৭৭ ১২ পূ:।

এধানে একাধারে ব্রন্ধা-বিষ্ণু মহেশ্বর এই অিন্র্রির এক
স্থানর ও বৃহৎ মন্দির আছে, তজ্জ্ঞ এই স্থান থ্যাত ও
ছলপুরাণে ইহার মাহাত্মা ক্রিভ আছে। এধানে প্রতি রবিবারে বারীর স্যাগ্য হয়।

দেবতার বার্ধিক উৎ্বাবের সময় এবানে সহস্র সহস্র লোক আসিরা থাকে। এথানকার সহস্রস্তম্বস্থপ দেবিবার জিনিস। ইহার পালেই পাহাড়। থানিকটা পাহাড় ঢলিরা পড়িয়াছে, তাহাতে অতিস্কল্ব থোদকার্য্য ও বিষ্ণুপদিচিক্ দৃষ্ট হয়।

তিরুদ্মোকুর, এই স্থান মছরাজেলার মছরাসহর হইতে ২ ক্রোশ দক্ষিণপশ্চিমে অবৈন্ধিত। এখানে অতি প্রাচীন শিবমন্দির ও বিষ্ণুমন্দির আছে, উভর মন্দিরেই অনেকগুলি থোদিউলিপি দেখা বায়। একথানি শিলাফলকে লিখিত আছে, ১৬২২ শকে দলবার সেতুপতি এখানকার শিবমন্দির সংস্থার করেন। তিরুদ্ধকরি, দক্ষিণ আঁরিকাড় জৈলার বিরপুর সহরের ৬ ক্রোশ উত্তরপশ্চিমে এই স্থান অব্দিত। এখানে এক প্রাচীন শিবমন্দির আছে। এই মন্দিরে এক গোপুরও আছে, তাহার চতুর্দিকে নানারপ থোলিত লিপি আছে।

এই মন্দির বেরুরের জনৈক রাজকর্ত্ক নিশ্বিত বলিয়া প্রবাদ আছে।

তিক্লক, জোর, এই স্থান আিবার্ড রাজ্যের মধ্যে প্রানাজ তীর্থের ৪.কোশ উত্তরণশ্চিমে অবস্থিত। এখানে তামিল অক্ষরের শিলালিপিযুক্ত ছই প্রত্তরত্ত ও সিরীয়ক, খুটান-দিগের একটা প্রাচীন গির্জা আছে। পূর্বে এ অঞ্চলে এক কুপ্রথা,ছিল বে, উচ্চ প্রেণীর ছিল্বমণীগণ কোন নির্দিষ্ট দিনে পথের বাহির ইইলেই পুলিয়ার নামক নীচ দাস জাতি তাহাক্তে ধরিয়া লইয়া ঘাইত। এথানকার একথানি শিলা-

নিপিতে সেই কুপ্রথা রনিতের কম্মনীর রাজার আদেশ বোষিত হইরাছে।

জিক্ষণ্ট্রার, তিবাছড়ের অন্তর্গত ক্লক্লমের ৩০ সাড়ে তিন ক্রোপ উত্তরপশ্চিমে এইখান অবস্থিত। এখানে অনেক প্রাচীন দেবমন্দির ও ভাছাতে বিভার শিলালিশি থোনিত আছে।

তি ক্লবড় দৈন, চেললগট্ জেলার চেললগট্ সহরের ৭ জ্রোপ উত্তরপূর্বে এবং কোবলিল্ হইডে ৩ জ্রোল নিল্পালিনে সম্প্রতীরে এই হান প্রবিষ্ত। এখানে এক প্রাচীন শিব-মন্ত্রির ও তাঁথাতে খোদিত লিপি আছে।

তি ক্লবড় মাতুর, তঞার জেলার ক্সতকোণ ভালুকে ক্সতকোণ সহরের ৩ ক্রোল উত্রপূর্বে এইবান অবহিত। এথানে রেলওরে ট্ট্রেন আছে। এথানে এক অভি প্রাচীন শিব-মন্দির ও তাহাতে ভামিল ভাষার উৎকীণ ১৪৬৬ শকালে (১৫৪৪ খুটাব্দে) রামলাজ বট্টলদেব রারের অধিকার কালে থোলিত এক শিলালিপি আঁছে। মন্দিরের শির্টনপ্ণ্য অতি ক্ষলর, তাহার সমূথে একটা ক্ষলর গোপুর আছে। মন্দিরটা বৃহৎ।

তির্ভবৃতি, দন্দিশ আরকাড় জেলার ক্তল্ফ তাল্কে ক্ডলুক সহরের ১৪ জোল পশ্চিমোন্তরে ও পনরোভি রেলওরে
ষ্টেশনের অর্দ্ধ জোল দক্ষিণে এই হান অবস্থিত। এখানে
থোনিতলিপিবিশিষ্ট ছুইটা প্রাচীন শিবমন্দির ও একটা
বিক্ষুথন্দির আছে। ইহার মধ্যে একটা শিবমন্দিরের সন্থ্যে
এক অত্যুক্ত গোপুর ও তদ্গাত্তে খোদিত দিপি আছে।

তি ক্রুবড়িশুল (তিরুবদিশুলম্) চেল্লপট্ট জেলার চেল্ল-পট্ট তালুকের পূর্বাংশের পাছাড়ের উপর এই গ্রাম অবস্থিত।
এখানে একটা প্রসিদ্ধ মন্দির আছে। কুরুবরেরা এখানেও
একটা হুর্গ নির্দাণ করিরাছিল বিলিয়া অছমিত হয়।
আলোটেওর সমরে অর্থাৎ ১১শ খুটান্দে এখানে হুর্গ নির্দ্দিত
হয়। বিজয়নগরের প্রতাপের সময় ছুই জন সন্দার এখানভার
হুর্গ সংখার করাইয়া তলবলখনে বিজয়নগরের প্রভুদ অবহেলা
করিতেন। বিখাস্বাতক্তার তাহাদের ধ্বংশ হইলে হুর্গও
বিন্ত হয়। এই ঘটনার নানা গর তনা বায়।

'তির্বত্তুরৈ, তৃংঞার জেলার মন্নারগুড়ি সহরেন্ধ ও ক্রোণ ুদক্ষিণপূর্বে, এই স্থান অবস্থিত। এথানে এক প্রাচীন শিবথন্দির আছে। তাহাতে ৪৪৫৪ ক্লিব্র গড়ান্দে (১৩৫৩ স্থান্ত) থোদিত মন্দির-সংখ্যারবিষয়ক এক দিশি আছে।

তিক্বভিয়ুর, মালালের চেললণটু বেরার নৈলাণেট তালুকের মধ্যে মাল্রাল নগরের ওকোশ উররে এইখান অবহিত। এথানে এক অতি প্রাচীন শিবয়শিক আছে। মন্দিরের পর্জগৃহের মধ্যে ও বহির্জাগে প্রছ-জব্দরে বোলিত শিলালিশি আছে। ১৬৭০ খুটাকে জারার কাহেব জবণু ক্রিতে আনিরা এই মন্দির ও শিলালিশি বেধিরা বান।

তিব্ৰুব্ৰুব্ৰ, মাল্লাজের উত্তর আর্কাড়, খেলার, আর্কীড়ু ज्ञहरत्त्व >> contr किन्नुर्क त्रवात नकीत खेखत्र्र्ल वहे चान अविष्ठ । भूटर्स हेश देवनिष्ट शर्वे वक्की अधान সহর বলিরা গণ্য ছিল। এখানকার দেবমন্দির পুর্বে স্থানীর পৌরাবিক্ষতাচারীবিগের হতে ছিল। ইহার - সমুখে নদীয় অপর পারে পূর্ণাবভী নামক স্থানে এক জৈন-मिलात्रत जनजान जनलिंहे आह्म। कथिल आह्म, এই मिलत ভালিয়া সেই স্কল জ্ব্যাদিবারা ডিক্লবজুরের মন্দির নিৰ্মিত হইয়াছে। পূৰ্ণাৰতীয় মন্বিয়ের লৈন-প্ৰতিমা এখন মাটিতে পড়িরা আছে। তাহার নিকটে একটা ধাল আছে ; শুনা বার্ন ঐ থালে মুন্দিরের পিত্তলের কবাট ও ধন-রত্ন নিহিত আছে। মন্দির ধ্বংস্কালে অনেক জৈনকে কাঁসিতে, অস্ত্রাঘাতে অথবা ঘানিতে পিষিয়া বিনাশ করা হয়। মশ্বিরগাতে খ্যেদিত চিতে ইহার প্রমাণ স্থরকিত আছে। মন্দিরে একধানি খোদিত ছবিতে একটা ভাগ গাছ चाट्ट, সাধারণের বিশ্বাস মহাদেবের অর্ধনারীখর মৃর্ভির প্রতিমা-শ্বরূপ এই গাছ খোদিত। এই ছবির ফলকথানি অতি বিখ্যাত। ইহা একটা মগুণে অবস্থিত ও উচ্চে ৮ ফিট্। মন্দিরের প্রাচীরে অনেক অস্পষ্ট খোদিত নিপি আছে।

ভিক্লবিন্দপুর (ভিক্লবিন্দপুরম্) দক্ষিণ আরকাড় জেলার কুর্তল্প সহরের ২ই ক্রোণ উত্তরপদ্দিনে এই স্থান অবস্থিত। 'এধানে এক প্রাচীন বিষ্ণুমন্দির আছে। ভাহার নানাস্থানে নানা অক্ষরে বহু থোদিতলিপি আছে। ভিতরের উঠানের প্রাচীরের গায়ে এক শিলালিপি উৎকীর্ণ আছে। ভিক্লমণিকুলি নামক নিকটর প্রামে এক বৃহৎ বথেট্ট কাক্ষাবাবিশিট শিবমন্দির 'আছে। কথিত আছে, ইহা খুলীর অরোগশ শতাকীতে নির্দিত্ত। ইহাতেও অনেক খোদিত লিপি আছে। 'পূর্বাদিকের প্রবেশবারে বিমান গাজে '১৮ ইঞ্চি চওড়া প্র ১৫ গঞ্চ গলা একথানি শিপি আছে। বারের লার্থে উতর দেওবাল খোদিত লিপিতে ভরা। বিমানের পশ্চিম প্রাচীরের বাহিত্রর পেটীত্বে এক খোদিত লিপি আছে, তাহা ১৮ ইঞ্চি চওড়া এবং ২০ গল করা।

তি ক্লবল্লামলায় (তিহ্নবল্লামলার) দক্ষিণ আরকাড়, জেলার
, উত্তরপশ্চিম ভালুক। ইংরুর পরিমাণ ১৪৪ বর্গ মাইল,

লৈকিসংখ্যা ১৬ হাজার; হিন্দুই অধিক। এই ভালুক্তের
প্রধান সুহরের নাম ভিক্লবল্লামণার। ইহা ১২/১৬ তেওঁ উত্তর

অঞ্চালে ও ৭৬% ৪০ পূর্ব প্রাধিষার অবস্থিত। লোক লংখ্যা ১২ প্রাক্ষার ভর্মধ্যে হিন্দুর নংখ্যাই ১৯৫০। বারস্থান হইতে চেল্পন গিরিলথের রাজার উপর এইটাই জীখন নহর্ম, এজন্ত ঘট পর্বতের উপরিস্থ স্থানসমূহের ব্যবনার এই সহরেই হয়। পর্বতের উপরিস্থ স্থানসমূহের ব্যবনার এই সহরেই হয়। পর্বতের উপর কর্মধার আছে। ১৭৫০ গৃষ্টান্দ হইতে ১৭৯১ গৃষ্টান্দের রাধ্যেই হা দশবার আজাত হইরাছিল। ১৭৬০ গৃষ্টান্দের এখানে বৃত্তীনিধিপের একটি কর্মাবর ছিল। ১৭৬০ গৃষ্টান্দে কর্মেল বির্থা হারদের আলী ও নিজাবের সহিত ব্যবের সময় চেল্ম গিরিলথ দিয়া আলিছে, আলিতে এই স্থানে নম্বন্দে বলীয়ান্ হইরা উহান্দিগের সহবোলিগণের অনেক্ষেকই এক এক ক্রিরা পরাত্ত ক্রেন; কিন্ত ১৭৯১ গৃষ্টান্দে ইহা টিপুর হন্ডগত হয়। টিপুর পতনে ইহা পুনরার ইংরাজ হন্তগত হুইরাছে।

তিক্ষরামনর দাক্ষিণাজ্যে মাক্রাজের ইংবা একটা প্রধান তীর্ব। ইংবা একটা রেলওরে টেশন, টেশন হইতে সহর এক-পোরা পথ দ্রে। টেশনটা অক্ষণাচল পাহাড়ের পূর্ক্দিকে। এই তীর্থ লংকত শাল্লে অক্ষণাচল নামেই থ্যাত। এথানে মহাদেবের পাঞ্চভৌতিক মূর্দ্ধির তেলোমূর্দ্ধি বিরামিত। অক্ষণাচল গিরিশ্ল সমূল্যপৃষ্ঠ হইতে ২৬৯৪ ফুট্ ও সহর হইতে ২০১৫ ফিট্ উচ্চ।

महारमरवत एउरबाम्खित बाविकाव विषय धहेन्न वक्ती ञ्चमंत्र श्रह चाह्यः। এक ममस्त्रः, इत्रशास्त्रकी देवनारमत्र পুলোভানে ভ্রমণ করিছেছিলেন, পার্বভী কৌতুক করিবার रेक्सात्र भण्ठाद स्रेटल जानिया बरारमस्य हक् हिनिया शरबन । महारमटवत्र हक् वस र अवाव विचनः नात्र व्यक्तकात्राव्हत रहेश পড़िन। धरे घटेना (एउनीनाव क्यकारनव वाभाव स्टेर्न्ड পৃথিবীতে অব্কার বছকালব্যাণী হইল। চন্ত্রপূর্য্যের উদয় ৰন্ধ হইয়া পেল 🕩 আলোকাভাবে ত্রিভূবন হাহাকার ক্রিতে ক্রিভে শিবস্থিধানে উপস্থিত হইল ৮ শিব সমস্ত ভানিয়া পার্কতীয় প্রতি অসম্ভষ্ট হইলেন এবং তাঁহাকে অভি-ব্লুম্পান্ত করিয়া বলিলেন, 'বধন তোমা হইতে পৃথিবীর অষশন ভুইয়াছে, তথন ভোমায় পৃথিবীতে গিয়া তপুষ্ণা করিয়া প্রায়ুল্ডির করিতে হইবে।' পার্মতী অভিশপ্ত হইয়া গলাতীরে আসিরা তপভাুকরিতে লাগিলেন। বছুবৎসর অতীত হইলে আকাশবাণীতে তাঁহার প্রতি আদেশ হইল, 'কাঞ্চীপুরে গিরা ভণভা করুন'। পার্বভী কাঞ্চীপুরে গিরা ওপঞা করিতে নাগিলেন। ুসেধানে বহ বংসর অতীত रहेरन भूनतात्र देववानीटा जङ्गणांहरन छभका कत्रिवात आदिक হুইল। পার্মতী ভাহাই ক্রিলেন। এবার পার্মতী পঞ্চারি [।] ভণ আরম্ভ করিলেন। কিছুকাল পরে মহাবেব কুট হইবা
পর্বতিশিবে জ্যোজ্রিররপে দর্শন দিলেন। পার্বতীথ প্রারকিন্ত সমাপ্ত হইল। হরণার্বতী তথন ঐ মৃতিতে অরুণাচুলেই
বাস করিলেন। অরুণাচুলে এখন মহাদেব ও মহাদেবীর
মৃতি আছে। মহাবেব তিরুবরামলব্রেরর বা অরুণাচলেশ্বর
নামে এবং মহাবেবী অপীতকুচাবল বা উন্নমান্ত নামে
অভিহিত। এখানে বিবেশবর, ক্রেক্তান, চভিকেশর প্রভৃতি
ব্রেম্তির পৃথক পৃথক পূলা হর। দাক্ষিণাত্যের বিধানার্যনারে অরুণাচলেশরেরও হুই মৃতি আছে, একটা হাবর
মৃতি ও অপরটা উৎসব মৃতি। মূলমৃতি প্রেরের ও উৎসবমৃতি গাত্র। অরুণাচলেশর কতকালের প্রতিমা ভালা লানা
বার না; অরুনিত হন চোলরাজদির্গের সমরে স্বাশিত হইনাছে। ইহার মন্দির লানাদার (Granite) পাইরে নির্দিত।

মন্দিরের চতুর্দিকে প্রাশণ, ডাহার পর চতুর্দিকে ছ্রা-রোহ প্রস্তর-প্রাচীর। দান্দিণাতের ব্রাদির সম্ম এই • সকল অভ্যুক্ত প্রাচীরবেষ্টিত দেবমন্দিরাদি একপ্রকার স্থান্দ্ ছান বলিয়া ব্যবহৃত হইতু। ১৭৫০ খুটাকে মুর্জ আনীখাঁ এবং মহারাষ্ট্রীর সেনাপতি মুরারিরাও এই মন্দির অবর্মোধ' করিয়াছিলেন। কণ্টিকের নবাবের পক্ষ হইতে তথন মন্দির রক্ষা করা হয়। ১৭৫৭ খুটাকে করানীরা এই ছান অধিকার করে।

১৭৫৮ খুটাকে ভিরাগারের ক্ষরাও পুনরার দবল করেন।
১৭৬০ খুটাকে ফাথেন ষ্টিকেন কর্ণাটকের নবাবের পক্ষ
হইতে উদ্ধার করেন। ১৭৯১ খুটাকে ইহা টিপুর ক্তেগত হর। শেবে ১৭৯০ অলে টিপুর সহিত সদ্ধি হইলে
ইংরাজাধিকারে আইসে।

মন্দিরের বহিঃপ্রাচীতে চারিটা শোপুর আছে। মন্দিরটা একসারিতে সপ্তপ্রকাঠে বিভক্ত। সন্থুবের প্রকাঠ উৎসবমঞ্জপ নামে কথিত। ইহার পশ্চাতে পর পর অপর ছয়টা প্রকাঠ। এই প্রকোঠগুলি ক্রমাররে ছোট ও অর্কার হইতে অক্ষকারতম। প্রত্যেক প্রকোঠগুলি জালার বারে দীপালাক দিবার ব্যবহা আছে। দ্বিবনেও ঐহানে আলোক দেওরা হয়। সর্কাশেষ প্রকোঠটী সর্কাপেকা ছোট ও অক্ষকার্মময়। এই গৃহের নাম মৃলহান, এখানে দেওতার হাবর মৃত্তি বিরাজিত। এ গৃহে বায়ু বা আলোক প্রবেশের ব্যবহা নাই। এই অক্ষকার দ্ব করিবার জন্ত সর্কাণ আলো অলে। মৃলহানে প্রক ভির অপরের বাইবার অধিকার নাই। বাজীরা বিপ্রতি-দর্শনার্থ মৃলহানের হারদেশে দীড়াইয়। থাকে এবং প্রক ভিতরে

तिता कौहारात्र अछिनिधियक्षण काहीखन्न वा नहेंच-নাম পাঠবারা অর্জনা করেন। নারিকেল, কললী, পাণ ও ञ्भाति देनदब्ध (मञ्जा इत्रृ। शत्त शृज्क कर्न्त ज्ञानिया বেদিশাঠ করিতে করিতে আরত্তি করেল এবং সেই আলোকে , বার্ত্রীরা দেবভাদর্শনু করে। কার্ত্তিকী শুক্লা ভূতীরা হইতে পূর্ণিমঃ পর্যান্ত অরুণাচলেখরের বার্ষিক উৎসব হয় ; ইহাকে ত্রজোৎসব বলে। ভুউৎসবের শেষ দিনে অনতা বেশী ব্র। উৎসব উপনক্ষৈ ৬।৭ লক লোক আসে। ডেপুটা मााकिएके डिनविड शांदकन। পूनिन देकालकेत नित्व মন্দিরবার রক্ষা করেন। মগুপের ছাদের একপার্যে नार्ट्विमरात्र जानन निर्मिष्ठे हत्र। छान लाटक छतित्रा यात्र। সন্ধারি পরেই অরুণাচলেখরের ও অপীতকুচামল দেবীর উৎসবসৃত্তি নানা মণিমুক্তারে অলহারে ভূষিত হইরা বাহক करक উৎসবমগুণে कानीज इत। , मृतशान इहेरज मञ्जापुज কর্পুরালোক পরদা ভাকা দিয়া প্রাক্তাের মধ্যত্তলে আনা हम, अमिन अविने हाउँहैराकी हूँ का हम, महत्र महिन कर्भूमा-লোকের আবরণ খুলিয়া দেওয়া হয়। হাউই উপরে উঠিবা-মাত্র অরুণাচুলের সর্ব্বোচ্চশৃঙ্গে এক প্রকাণ্ড আলোক জলিয়া 'উঠে। সেধানে এক কুণ্ড আছে। স্বলপুরাণ মতে, তাহাই ভগবতীর তপস্তার অধিকৃত। পূর্ব হইতে এই কুঁতে घड, नववल्च, कर्भुत्रामि दन अत्रा थात्क ववर वक लाक व्यात्नाक লইয়া প্রস্তুত থাকে। মন্দির প্রাক্ত হইতে হাউই উঠিলেই त्म कूरण अधि श्रामान करता तमहे आलाक वहम्त हहेरछ eদথা যায়। এখানকার জনেকে এই দিন উপবাসী থাকে ও এই আলোক দেখিয়া জলগ্রহণ করে। এই মন্দিরের ব্যয়ের জন্ম ইংরাজ-রাজ বাৎসরিক ৯ হাজার টাকা দেন। মন্দিরের । অভিভাবক 'ধর্মকর্জ' নামে অভিহিত হন। প্রথাদ আছে, গৌতম মুনি এথানে তপস্তা করিয়াছিলেন। তিনি চিরলীবী, এখনও প্রতি রাত্রে অরুণাচলেখরের পূজা করিয়া যান।

২০ ছইতে ৪০টা ব্রাক্ষণকুমার এখানে বেদ অধ্যয়ন করিতে পার্ম। নিজ্য নিয়মিত যে জোগ দেওয়া হর, জাহা অভ্যাগত ব্রাক্ষণ ও পুৰকেরা পাইরা থাকেন। দাক্ষিণাজ্যের নিয়মানুদারে এই মন্দিরেও দেবনর্ত্তী আছে। ভাহারা সংখ্যায় ৫০টা

এথানে কতকগুলি ধর্মছত্র আছে, তাহাতে ব্রাহ্মণযাত্রী তিনদিবস বিন্দ্রায়ে আহার পাইরা থাকেন, শুভ্রমাতির অফ্র পুণক্ ধর্মশালাও আছে। তাহাতে ভাহারা থাকিতে পার মাত্র, থাইতে পার না, পাক করিবার অফ্র স্বতম্ম বর আছে, এদেশের নটকোটা পেঠারা প্রধান ধনী। তাঁহারা অনেক স্থানের অনেক দেবালরে ও বাত্রীদের স্থাবিধার অন্তু অনেক ছত্র নির্মাণ করাইরা দিরাছেন।

তিরুবমুক্ত র, দক্ষিণ আরকাড় জেলার বিষপুর সহরের ৩ জোশ পূর্বে এই হান অবৃহিত। গোদিত নিলালিশি সহ প্রাচীন শিবমন্দির আছে।

তিরুবরার (তিরুবাড়ী), তলোর বেলার কাবেরী নদীতীরে তঞ্জোর সহরের ৩০ ক্রোশ উত্তরপশ্চিমে ১০ ৫২ ৪৫" • উত্তর অকাংশে ও ৭৯ ৪ পূর্ব তাবিমার অবহিত। এধানকার লোকসংখ্যা প্রান্ত হাজার। তল্পার প্রথম আক্র-मर्गत नमत्र मिराकी अथात्न इकारात्र शानन करत्रन । এখানে প্রস্তরের অতি প্রাচীন শিবসন্দির আছে। সন্দির্টী অতি চমৎকার কারুকার্যাবিশিষ্ট। ইহা একটা প্রধান তীর্থ। এথানে উৎসবের সময় সহস্র সহস্যাত্রী আসে। উৎসবের নাম সরওমান। এই স্থানের দেবতার নাম তিফুনস্থি वा जिनन्मिरक्यंत्र । अक्षनांशी नामक शृहत्रीएठ शानार्थ राजी সংখ্যা স্বারও অধিক হয়, বছদুর দেশ হইতে ধাতী আসে। मणहत्रात्र मितन शकाकारन (य भूगा, भक्षनाथीरक এই मितन ज्ञान করিলে সেই, পুণ্য হয়। শিবমন্দিরের প্রাক্তে এই পুণ্য সরসী অবস্থিত। কথিত আছে, ভারমিশ্র নামে এক ঋষি এখানে এক শব্দু শিবলিকের তপস্তা করেন। তুট হইয়া শিব প্রত্যাদেশ করেন বে লিঙ্গমূর্ত্তির নিকটে উত্তরাংশে তিনটা গোষ্পদ চিহ্ন আছে; তাহা খুঁড়িলে তাঁহার বাসনা পূর্ণ हरेरत। चवि छाहा गुँ छित्रा धक्रीय रेडेक्ब्रामि, धक्रीय চুণ স্থরকী ও অপরটায় স্বর্ণরাশি পাইলেন, তত্বারা তিনি সেই স্বয়স্থ লিলির উপর বর্জমান মন্দির নির্মাণ করাইলেন। সরথমান সহত্ত্বে প্রবাদ আছে বে, বিশ্লী নামে এক ত্রাহ্মণ ছিলেন। শৈশবে তিনি বনমঙ্গা থেলা করিছে করিতে এক ঋষির দৃষ্টিপথে পতিত হন। কৌতুক করিবার জস্ত বালক ত্রিশ্লী ঋষির ভিক্ষাপাত্তে অর্থদানচ্ছলে লোট্র নিক্ষেপ করেন। सवि दर्गन कथा ना विनया हिनया देशतन। विभूगी तयः-প্রাপ্তির সহিত এই সামায় ঘটনা ভূলিয়া গেলেন। ক্রমে তিনি বিবাহ করিয়া সংশীর ধর্মে প্রবৃত্ত হইলেন। বছদির অভীত रहेंहा, उँहरात नवान रहेन ना। जिमि उक्कम काजत रहेश নানা ধর্মাহ্র্টনি ও ব্রত নিরমাদি করিতে লাগিলেন। এক দিবস খপ্পে সেই ঋষি দর্শন দিলেন এবং তাঁহাকে তাঁহার শৈশৰাচরিত কুকর্মের অস্ত্রুমূহ তিরস্বার করিয়া বলিলেন যে, मिर्दे कर्षाणाय जिल् श्रिकुष पर्नात विकेष इदेशाह्न । তিনি তথ্য প্রারশ্চিত করিবার অভিপ্রারে স্থির করিবেন্

লোহমদে অভিভূত হইয়া শৈশবে ধবিকে ভোকনার্থ যৈ श्राहरू, जिका वित्राहिनाय, अथम चामाक जाराहे कावन कता উচিত। এই হির করিয়া তিনি অঞ্চাম্ভ খাভ ভাগেঁ করিয়া কুক্ত কুক্ত প্রান্তর থণ্ড খাইরা বাস করিতে লাগিলেন, ভাঁহার ুনাম হইল শিলাভরণ (বুশিলাভক্ষক)। আর্ফিন্তে ভগবান্ मब्दे इहेबा पर्मन पिरानन ७ बनिरानन रव, मुखिकामधा इहेर्ड এক সিন্দুক ও ভন্মধ্যে একটা শিশু পাইবে। এইরপে ত্বিপুলী বে শিশু পাইবেন, তাহার মছন্ত দেহ, কিন্তু গো-মুধাকার। শিশু পাইয়া ত্রিশ্লী ভাহাকে শিবের °নামে অর্পণ করিলেন। শিব ভাছাকে নিজায়ুচর প্রমথগণের অধিনায়ক করিলেন। ইহারই নাম ডিফ্লনছি বা ত্রি-নন্দী। ত্রিনদী শিবের বাহন বলিয়া খ্যাত।, বশিষ্ঠ ঋষির ভগিনীর সহিত ত্রিমন্দীর বিবাহ হয়। ত্রিমন্দীকে প্রমথাধিপত্ব-দানের সময় বে অভিযেক করা হর, সেই সময়ে তাঁহার মন্তকে শিবের হত্তত্ত্ব কমগুলুর কল, শিবের মন্তকত্থ গলা-জল, শিৰবাহন ব্যভমুখের জল ও চক্র হইতে অমৃতধারা পতিত হয়। ত্রিনন্দীর মস্তক, হইতে এই চারি প্রকার লল গড়াইয়া এক নদীধারার সহিত মিলিত হইয়া এক গহ্বরে সঞ্চিত হয়। সেই গহ্বরই বর্তমান পঞ্চনাথী সরোবর। বর্ত্তমান শিয়ালী সহরের নিকটে পূর্ব্তকালে ইক্সের এক প্রিয়কানন ছিল। বৃষ্টির অভাবে ইহা বিশুদ হইয়া উঠে। বরুণের অধিকারে অব্যাদি থাকায় ইক্র ইহার কিছুই প্রতীকার করিতে পারিলেন না, নারদ আসিয়া °পরামর্শ দিলেন যে, প্রিয়ন্ নামক পর্ক্তশিবরে° অগত্য ঋষি ক্মওলুতে গলাজল রাখিয়া দ্রাছেন। যদি •ভুমি পিলিমর নামক দেবতার সাহাব্যে তাহা হরণ করিতে পার, ভাছা হইলে স্থবিধা হয়। ইজ্র ভাতৃতি করিলেন, পিলিয়র গোম্তি ধারণ করিয়া কমওলুতে জল থাইতে যান। অগন্ত্য সামাক্ত গো-বোধে তাড়া দেন। কমগুলু উলটাইয়া পড়িয়া कन नगीक्रां ध्वाहिक इत्र । धहे नमीहे भृत्वीक अखिरहक-্বারির সহিত মিলিভ হুইয়া প্রথমে পঞ্চনাথী হলে সঞ্চিত হয়, তৎপত্নে ইহার অধিক জলরাশি অক্সহান হটুতে ভালিয়া क्वारवजीननी छैरशब स्त्र।

তিনলী উৎসবের সুমর বাহকসকে সাতৃটী স্বতন্ত কানে
লীত হন। কথিত আছে, এই স্থান্থানে সাতৃত্বন ঋষি
শুপ্তভাবে তপ্তা করিতেছেন, তাঁহাদিগকে দর্শন দিবার
শুক্তই এইরূপ করা হয়। প্রাকানে প্রাথশীর মহারাজ
শুর্প এই উৎস্বে বছ অর্থু বার ক্রিতেন।
ভিক্তবর্ত্বর্গন্ধী দক্ষিণ আর্কাড় ক্রিনিটার্করেইটি

সহরের ১০ জোল বন্দিণপূর্বে এই স্থান অবস্থিত। এথানে খোদিত নিসিব্ধিনিই এক অতি প্রাচীন বিক্সন্থির আছে। তিরুস্বর্জুর, তিলিরাপরী কেলার তথার রাতার উপরে তিলিরাপরী সহরের ও জোল পূর্বোভরে এই সাল অবস্থিত। এথানে রেলওরে টেশন আছে। ইহার নিকট একটা উচ্চ পাহাড়ের উপর একটা ভ্রুলর লিবমন্দির আছে, দূর হইতে এই মন্দির যেন ছবি থানির মৃত দেশ্বুর। ইহার প্রাচীরে অনেক শিলালিপি আছে। এস্থানের অপর নাম এক্দেশ্বর।

তিরুবল, তিবাছুড রাজ্যে কুইলন্ সহরের, १९ কোশ উত্তরে এই ছান অবস্থিত। এখানে এক অতি প্রাচীন মন্দির আছে। তিবক্রমের প্রস্থিত হয়।

তিক্রবলক্ষড়, তথোর ক্লেনার শিয়ানি সহ্বের ৩ ক্রোশ দক্ষিপপুর্বে এই স্থান অবহিত। এখানে এক প্রাচীন শিব-মন্দির ও ভাহাতে অনেকুগুলি শিনানিপি এবং এখানবাঁর ু ক্ষমধ্যি মঠে এক্থানি ভাত্রশাসন আছে।

তিরু বলপ্পুরি, তলোব্ধ কেলায় ক্সতকোণ তাল্কে ক্সতকোণ শহরের দেড ক্রোল দক্ষিণপদ্যি এই খান অবস্থিত।
এখানে এক প্রাচীন শিবমন্দির ও তাহাতে আনেক খোদিতলিপি আছে। এই মন্দির অতি বৃহৎ ও স্থানর গোপুরবিশিষ্ট।
তিরু বল্ল (তিরু বলম্) উত্তর আল্লকাড়ু কেলার বেলুর সহরের
৫ ক্রোল উত্তরপূর্বে অবস্থিত একটী গ্রাম ও রেল টেশন।
এখানকার বিধনাথেশর খামীর মন্দির অতি বৃহৎ। তাহার
দেওীয়ালের উপর অনেক ওলি অস্পাই খোদিত লিপি প্রাছে।
তিরুক্ত ক্লুবুর, প্রসিদ্ধ তামিল কবি ও দার্শনিক। ইনি
'ক্রল' নামে নীতিমূলক প্রসিদ্ধ কবিতাপ্তক রচনা করেন।
এই অপুর্বে সর্বালন্দমান্ত তামিল গ্রহথানি ২০০০ লোকে
রচিত। ধর্ম, অর্থ ও কাম এই ত্রিবিধ পুরুষার্থ কিল্পানে লাভ
হয়, কুরলগ্রহে তাহাই বিস্তভাবে বর্ণিত হইয়াছে।

ভামিল পণ্ডিভেরা বলিরা থাকেন, এখন তামিলভাবার বত প্রাচীন গ্রন্থ পাওরা যার, তন্মধ্যে তিরুবর্বরের ক্রলই সর্ব্বাচীন। এই প্রন্থে শইরাচার্ব্যের অবৈভবার, শৈবসিদ্ধান্ত বা রামান্ত্রক-প্রবর্ত্তিত ভল্তিমার্পের আভাস রা থাকার এই গ্রন্থ গুরীর নবম শতান্ধীর প্র্কের রচিত হইরাছে, ভারতে সন্দের নাই। দান্দিশাত্যে প্রবাদ্ধ আছে, যে সময়ে চের, চোল ও পাঞ্জারাজগণ প্রবল হইরা উঠিরাছিলেন, সেই সমরে মাজ্রাজের নিক্ট মাইলাপুর নামক হানে তিরুবর্বর ও ভারার ভানিনী বিভাষতী আবিয়ার (উবৈয়ার) কর্মগ্রহণ

NA MISSION তাৰার কাহারও মতে বিহুৰী আবিষার কুণাত্র-

VIII

চোণের ক্ষর বিভ্যান ছিলেন। বাহা হউক, এই সকল প্রবাদের কোনটা নিঃসন্দেহে গ্রহণ করা ক্ষর লা। বাত্তবিক কবি তিকুবর্বর ও আবিরারের ক্ষরসহছে নানাপ্রকার উপাধ্যান আছে, ভন্মধ্যে 'কন্দ্রপ্রাপ্তন্' নামক ভাষিল গ্রহে ব্রহ্নপ'বর্ণিত, হইরাছে, ভাহাই সংক্ষেপে লিখিভেছি—

বহুকাল গত হইল, এক পিতামাতার ঔরসে সাওজন জানী অন্মগ্রহণ করেন, এই সাঞ্জনের মধ্যে চারিজন জী ও তিনজন প্রশ্ব। জী চারিটার নাম—আবিষার, উপ্লয়, বল্লী ও উক্তবই, পুন্ধা তিনজনের নাম—ভিক্রবল্পর, আদিসমন ও ক্ষিবলর।

ঐ সাত মহাস্মার জন্মবিবরণও বড়ই অভুত। তাঁহা-द्यत शिर्जीत नाम (शत्रिन ७ शिर्जामरहत्र नाम (वनस्मीन, উভয়েই সাধুপ্রকৃতি ও মহাজ্ঞানী বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিলেন। বেদমৌলি ভবিশ্ব গণনা করিতে পারিতেন ৷ এক দিন রাত্রিকালে তিনি দেখিলেন, একটা উজ্জলতারকা কক্ষ্যুত হইয়া একটা আমে আসিয়া পজিল। সেই আমে তথন এক বালিকা ভূমিষ্ঠ হইল। ঐ গ্রামে ব্রীচ পরিয়া জ্বাভি বাদ ক্রিত। গণনা ভারা বেদমোলি জানিতে পারিলেন বে, সেই অশ্র পরিয়া-কুমারীর সহিত তাঁহার একমাত পুত্র পেরলির विवाह हरेरव। बाञ्चन छाहारछ अिलम विव्वा हरेराना। তাঁহার আত্মীর স্বন্ধন ও অপরাপর ব্রাহ্মণদিগকে নিম্বের পুত্রের কণা গোপন করিয়া কহিলেন, 'অমুক পরিয়ার ক্ফার সহিত ष्मामात्मत्र मत्था त्कान बाक्षनक्मात्त्रत्र विविद हहेत्व, 'अक्रभ हरेंदर्ग आमारमञ्जलकर निकल हरेर हरेरव।' उथनह সকলে সেই নবজাত কুমারীর পিতাকে ডাকাইয়া তাহাকেও तिहें नकन कथा कानाहेबा विनन, 'এখन তোমার বেরেকে চাও, না আহ্মণদিগের ভাতিরকা করিতে চাও ?' দিরিজ পিতা ত্রান্ধণের সম্মান রক্ষা করিতেই চাছিল। ত্রান্ধণগণ সেই নির্দোষ হ্রপোয় শিশুকে আনিয়া মারিয়া ফেলিতে আদেশ क्तिरनन। निकृ द्वम्योगि छाराक श्रात ना मात्रिश দেশান্তরে দিয়া আসিতে বলিল। তদমুদারে ব্রাহ্মণেরা দেই কুমারীকে একটা পেটকায় বৰ করিয়া কাবেরীর স্ত্রোতে ·छात्राहेश निन। 😝 त्रमग्न छात्राहेश त्न छत्र हत, त्नहे तमन পেরণি পিতার অধ্দেশে সেই বালিকার উক্তে একটা কৃষ্ণ **डिन**िक् प्रथिया त्राथिवाहिन।

বছ দ্রদেশে এক আদ্ধা প্রাতঃমান করিতেছিলেন।
সেই পেট্কা নদীর স্বোতে ভাসিতে ভাসিতে গুসই আদ্ধার
নিকট আসিল। সেই পেটকাতে ইন রত্ন আছে ভাবিরা
আদ্ধার্মন ধরিরা খ্লিলেন, এক স্কারী কুমারী ভাছার

নরনগোচর হইল। বাদ্ধবের কোন পুত্র সন্তান হর নাই।
ভাবিলেন, তাঁহার ইইরেব বৃদ্ধি দলা করিয়া তাঁহাকে শভারত্র
পাঠাইরা দিরাছেন। বাহা হউক, ভিনি ভাহাকে আপনার
গৃহে আনিয়া পুত্রের ভার লাগনপালন করিতে লাগিলেন।

দেখিতে দেখিতে করেকবর্দ্ধ কাটিরা পেল। পেরনিও তথন নানাশাত্রে পণ্ডিত হইরা উঠিরাছেন, তাঁহার ব্যবিতারও মৃত্যু হইরাছে। জিনি নানাস্থান দর্শন করিরা সাধু ও জ্ঞানিগণের সহিত শাত্রালাপ ও জ্ঞানার্জন করিবার বস্থ দায়া করিবেন।

একদিন ঘটনাক্রমে তিনি বালিকার প্রতিপালক সেই বাদ্মণের গৃহে আসিরা উপস্থিত হইলেন। ব্রাহ্মণ তাঁহার বিভাবতা ও চরিত্রে সম্ভষ্ট হইরা করেক মর্ব 'তাঁহাকে অতি বত্রে আপনার গৃহে রাবিলেন। শেবে তাঁহার প্রতিপালিত কঞ্চার সহিত বিবাহ দিতে চাহিলেন, কুমারীকে সকলেই সেই ব্রাহ্মণের কঞ্চা বলিরাই জানিত। স্থভরাই পেরলি বিবাহে অসমত হইলেন না। ভবিত্যগণনা আল স্থসিদ্দ হইল। দেই নীচ পরিয়া-কঞ্চার সৃষ্টিত ব্রাহ্মণবংশীর পেরলির বিবাহ হইরা গেল। উভরে মহাস্থে বাস করিতে লাগিল।

একদিন প্রান পর কাপড় ছাড়িবার সময় পেরলি পত্নীর উরুতে সেই কালতিল দেখিতে পাইলেন। তিনি মনোভাব গোপন করিয়া অপরাপর রাহ্মণের নিকট পত্নীর পূর্ব্বকাহিনী জানিয়া লইলেন। এখন যে তিনি নীচ পরিয়া-কভাকে বিবাহ করিয়াছেন, তাহা আর জানিতে বাকি রহিল না; ক্তিত্ত কিবা কথা আর কাহারও নিকট প্রকাশ না করিয়া মনের ছুমথে পৃহ ছাড়িলেন। খণ্ডর বা পত্নীর নিকট বিদার লইবারও কময় হইল না।

সেই সমরে ত্রারণ কামাতাকে বাইকে কেথিয়া ভাবিল,
ব্বি তাঁহার কল্পা কিছু বলিরাছে, পদেই কল্প সে কাহাকে
কিছু না বলিরা চলিরা বাইতেছে। এই ভাবিরা তিনি কল্পাকে
বলিলেন, বেথানে তোমার স্বামী বাইবে, ভূমিও পিরা তাহার
সংক্র সংক্র পরিভাব, কথনও ইহার স্বন্ধণা করিও না। ক্লোন্দ পালক পিরুরে আন্দেশ প্রতিপালন ক্রিল।

সাধনী পতির পাছে পাছে চলিল, কত ছবা, কত খুণ্য-ক্ষেত্র স্থাতির সক্ষ ছাড়িল না। পতির চরণ ধরিয়া কত সাধিল, কত মার্জনা চাহিল, কিন্ত নির্দ্দর পতির মন কিছুতেই উলিল না। এইরপে পাঁচদিন কাটরা গেল। গজীর নিশিখে পেরজু বখন দেখিলেন, পথকটে অবলা বালা গাছ নিজার অতৈক্ষম হইরা পড়িয়া আছে, সেই

অভাগিনীর আর ছংবের সীমা রহিদ না। তথন কৌবার বাইবে, কি করিবে, কিছুই দ্বির করিতে পারিদ না। পিতার গৃহে কিরিরা বাইতেও আর ইচ্ছা হইদ না। দীর্ঘনিঃবাদ ও রোদন এই ছইটা তাঁহার স্বল। এই স্বল লইরা অভাগিনী দ্রিরা বেড়াইতে লাগিল। তাঁহার অবহা দেখিরা এক রাজ্পের বড় দ্বা হইল। রাজ্প ভাহার ছংখের কারণ জিল্পানা করিলেন। অভাগিনী কাঁদিতে কাঁদিতে সকল কথা খুলিরা বলিল।

ব্রাহ্মণ তাহাকে গৃহত্ব আনিয়া রাখিলেন। তাহার সেবাভশ্রমার গৃহত্ব সকলেই তাহার উপর অত্যন্ত সন্তই হইরাছিল। এমন কি ব্রাহ্মণের অপরাপর কল্পার্থণ সকলে তাহাকে ভরিনী বলিয়া সম্বোধন করিত। সেই সদাশর ব্রাহ্মণ মৃত্যুকালে তাহার সম্পত্তির এক অংশ সেই হুংখিনী অবলাকে দিয়া গিয়াছিলেন। হুংখিনী সেই হুবে বারা একটী রহং ছঅ নির্মাণ করাইলেন এখং তাহাতে প্রত্যহ অতিথি, তীর্থযাত্রী ও সাধু সয়াাসীর সেবার্থ ফল, মৃল, হুয়, অয় প্রভৃতি বিতরণ করিতে লাগিলেন। ঘটনাক্রমে সেই ছত্তে এক দিন পেরলি আসিয়া উপস্থিত হইলেন। ই্রাধিকারিনী,প্রত্যেক সাধু সয়াাসীর জীবনের ঘটনা ও সহুপদেশ শুনিত এবং তাহাদের নিকট আপনার হুংখের কাহিনীও বর্ণনা করিত।

যথন পেরলি আসিয়া ছত্তে উপস্থিত হন, তথন পর-ম্পরে কেহ কাহাকেও চিনিতে পারে নাই। কিন্তু যধন আপন পত্নীর মুথে তিনি তাহার ছ:থের ও তাহার ধর্মচর্যার क्षा छनित्नन. ज्यम वास्त्रविक जिनि विष्ठानिक इटेश्राहित्नन। অতি কৰে রাত্রি যাপন করিয়া প্রাতে উঠিয়াই কাহাকে কিছু না বলিয়া প্রান্থান করিবার উদ্যোগ করিলেন। • ভাছা দেখিয়া ছত্রাধিকারিণী অতিশয় ছ:খিত হইল এবং তাঁহার নিক্ট গিয়া জিজ্ঞাসা করিল, 'কি কারণে আপনি কাহাকে কিছু না . বলিয়া চলিয়া যাইভেছেন, আমার কি কোন অপরাধ হইয়াছে ? আমার কি কর্ত্তব্যপালনে কোন ফ্রটী হইরাছে। বলুন, আমার मार्कना करून। जाभनि त्व छात्व हिनद्या वाहेरल्ड्न, जानात यामेब वर्ष ভाবে आमांब किनवा शिवाहन। अजनी (পदनि আর দ্বির থাক্ষিতে পারিলেন না; সনের আবেগে কহিলেন, 'হাঁ আৰ্চ্ছি' ভোমার দেই স্বামী, ভুমি আমার সেই প্রণয়িনী। তোমার ধর্মনীলভার বাস্তবিক অসমি মুগ্ম হইরাভি আলার কথা বদি রক্ষা কর, তাহাছিইলে আমি পুনরার ভোমার প্রহণ করিব।'

আৰু বহুকাল পরে পতিকে পাইরা স্বাধনী থোমাঞ্জ বর্ষণ করিতে করিতে ধলিল, 'বলুন, শ্লীমি প্রাণ দিয়া আপনার স্থান পালন করিব। আমি পুকি কুখন আপনার কথা প্রবাহেলা করিয়াছি ?' এত দিন পরে আবার উভরে দিলন হইন্ত। এখন হইং সভী আর পভীসদি ছাড়ে নাই। পভির সদে তীর্থপর্য। টন করিয়া বেড়াইতে লাগিল।

ৰধাকালে তাঁহানের গলী কল্পা ও তিনটা পুত্র সন্তান লামিল। পতির আনেশে সভী সেই সাউ লনকেই শিশুকালে পরিত্যাপ করিয়াছিল। এই সাত লনের মধ্যে এক জনকে রাজা, এক জনকে ধোবা, এক জনকৈ ক্ষি, এক জনকে পণ্ডিত এক জনকে ওঁড়ী, এক জনকে ডোফ, এক জনুকে ব্রাহ্মণ এবং এক জনকে পরিরা নামক জন্পুত্র জাতি প্রভিপালন করিয়াছিলেন। এই ক্ষণে কবি তিক্ষবর্ষর পরিয়া জাতির হত্তে এবং তাঁহার ভাগনী আবিষার ক্ষির বত্তে বর্দ্ধিত হন।

সাত জনই জানী পণ্ডিত হইয়া উঠিলেও.ভিন্নবন্নুবন ও বিহুষী আবিয়ারের নামই তামিল-সাহিত্যে বিশেষ ভামিলেরা [®]ভিক্বলুবরের [°] "কুরল" পঞ্ম ুবেদ বলিয়া এছণ ক্রিয়া থাকেন। বার্তবিক কুরবের ছানে ছা<u>নে</u> উচ্চ অঙ্গের আধ্যাত্মিক কথাও সহ পদেশ আছে, সেরূপ উচ্চ কথা কোন প্রাচীন তামিলএছে रम्था योत्र ना। त्कह त्कह त्वह ममछ छानगर्ड वाकाध्वनी পাঠ করিয়া ছির করিয়াছেন, তিরুবল্পবর বাইবেল পাঠ করিয়া ভাহা হইতেই ঐ সকল ভাব গ্রহণু করিয়াছেন। অবির কাহারও মতে কবি ভগবালীতার মর্ম্ম স্থানে স্থানে প্রকটিত ক্রিরাছেন, কিন্ত তাঁহার গ্রন্থ সমালোচনা করিয়া কি দেশীর কি পাশ্চাত্যু পণ্ডিত সকলেই এক বাক্যে বলিতেছেন, তিকু-বলুবর প্রাকৃত দার্শনিক ছিলেন, তিনি আপন বছদর্শিতাগুণে যে সকল সত্নপদেশ দিয়া গিয়াছেন তাহা কোন এছের ° অফুকরণ নুহে, তাহা দার্শনিকের ছদয়ের মুম্মকথা—মানবের রীতিনীতির অভিজ্ঞতার নিদর্শন।

এই দার্শনিক কবির প্রকৃত নাম কি জানা বায় না।
পরিয়া জাতির এক পুরোহিতপ্রেণীকে 'বরুব' বলে। বোধ
হয় বরুব অর্থাৎ পুরোহিতগণের শ্রেষ্ঠ বলিরা তিঞ্বরুবর নাম
হইরীছে।

তিক্বলুবরের জ্ঞান তাঁহার হুপ্রসিদ্ধা ভগিনীর প্রকৃত নাম
আজাত। উবেই বা উবেরার শব্দের অর্থ মাজা বা প্র্জনীয়া
ন্থনী। ভাহা হুইভেই চলিত ক্থান লোকে আবিদ্ধার বলিয়া
থাকে। আবিরারের নচিত 'আভি-শৃড়ি', 'কোল্টেই-বেন্দন',
'মুছরেই', 'নড়কালি', এবং কল্বি 'ওলকাম্' এই কয় গ্রাস্থ
লাওরা বার। কাহারও মতে মুসলমান আগমনের পর কোন
ব্যক্তি আবিরারের নাম দিরা মুছরেই নামক ক্বিভাপ্তক
ন্থচনা ক্রেন। আবিরারের রচিত এক্থানি কুরল পাওরা

ষার । এখানি অবৈক্বাদ-বিষয়ক। কোন কোন তামিল পণ্ডিত বলেন, আবিয়ারের নামে বে অকথানি কুরল প্রচ-কুত আছে, সেথানি পুক্ত পক্ষে বিছুষী আবিয়ারের রচনা নহি। দাক্ষিণাত্যে মুসলমাত অভ্যাদয়ের পর ঐ গ্রেছ রচিত হিয়াছে (১)। •

তির্ফীবাস্কোড়, বিবাস্কুড় রাজ্যে বিবস্তম্ সহরের ২৭ সাইল দক্ষিণপুর্বে এই স্থানি অবস্থিত। এই স্থানে মহাদেব-মন্দিরে, মোইলফোটু-অম্বল্যে, কোলর অম্বল্যে, নৃতন গির্জার নিকট উত্তরে অক্থানি প্রস্তারে ও প্রাতন রাজ্যর নিকট ক্রক্---

তি ক্রালুর (তিরুব্লুর) > তল্পোর জেলার জার্ত্ত নাগপট্টন রেলপথের ধারে অবস্থিত একটা সহর ও প্ণাতীর্থ। এথান-কার বিকুধাম বিধ্যাত P লোকসংখ্যা ২২৯৩৪।

২ চেক্লপট্র ক্লেণায় আর একটা বিষ্ণুধান আছে, তাহারও নাম ডিজবলুর। ইহা মাজাল হইতে ১৩ জোশ দুরে হইবে। এখানকার লোকসংখ্যা পাঁচ হাজারের অধিক নয়। এখানে ্বেলষ্টেশন আছে। এখানকার বিষ্ণুমূর্ত্তি দর্শন করিবার জন্ত দুরদেশাস্তর হইতে যাত্রী আসিয়া থাকে। এথানে হৃত্তাপ-নাশিনী নামে একটী ভীর্থ আছে। প্রবাদ এইরূপ, শালি-হোত্রক ঋষি বছকাল এই জ্জাপনাশিনীর ভটে কঠোর তপক্তা করিয়াছিলেন। তপজার সম্ভষ্ট হইয়া বিষ্ণু দেখা দিলে, ঋষি বর চাহিলেন, 'যেন এই সরোবরে সান করিয়া মহা-পাপীও হুতাপ হইতে নিম্বৃতি পায়।' বিষ্ণু তাঁহার মাধায় হাত निया 'তাহাই इहेरव' निया भाष करत्रन, उनन्धि এই जीर्ध সন্তাপনাশিনী নামে বিখ্যাত হইয়াছে। এখানকার অনন্তশায়ী চতুত্ৰ বিফুম্ভির একহাত শালিহোত্রক ঋষির মাথায় ছাউ तिहताएक (पथा यात्र। अकरो मैन्सित कनकवन्नो एमवी विज्ञान-মান। প্রবাদ এইরূপ, ঐ মূর্ত্তি স্বর্ণদীতার অফুরূপ। এখানেও ক একথানি শিলালিপি খোদিত আছে।

তিরোগ্রাঞ্চ্য (ত্রি) অহনি ভবং অহাং ভবেদ্দেশীতি বং।
তিরোহিতো হহাঃ। পূর্কাবিনে অভিবৃত বে সোম পরিবিনে
হ্ত হইলে তাহার এই সংজ্ঞা হয়। "তং পাত তিরোজহাং"
(গক্, ১৪৫। ১০) 'তিরোজহাং এতলামকং পূর্কাবিলহাভিমৃতো
যাং সেমে: উত্তরে হহনি হ্যতে ততৈতলামধেরং।' (সারণ)

"ভিরেণ্ডফ্রং ধন্তং রম্বানি" (**ছক্** ১।৪৭।১) **'ভিরোজফ্রাং** ভিরেণ্ড্তে পূর্কমিন্ দিনে অভিযুক্তং তং সোমং।' (সারণ) তিরোজনং (भरा) বছজের বাহিরে।
তিরোধা (জীঃ) তিরস্থা-কিশ্। অন্তর্থান ৷
তিরোধাতবা (জি) তিরস্থা-জবা । আজ্ঞাননবোপ্য ।
তিরেধিতিবা নিয়েশ কপে । হতাদিনা তিরেধিতবা)

(मञ्च २। ५०० कृत्व व ।) 。

তিরোধান (ক্লী) তিরস্থা-ভাবে শৃট্। অন্তর্ধান। তিরোজবিতৃ (জি) তিরস্ জু-তৃচ্। ১ তিরোজার। ২ ওওঁলার। তিরোজার (পুং) তিরস্ জু-ভাবে ঘঞ্। ১ অন্তর্ধান, অদ-শিন। ২ আছিবিন। ৩ ওপ্তজার।

তিরোভূত (ি) ভিরঁস্-ভূক। অন্তর্হিত, অদৃষ্ট।
তিরোবর্ষ (ঝি) ভিরঃ তিরোহিতঃ বর্ষাঃ যতা। বৃষ্টি হইতে রক্ষিত।
"যত চাগশ্রত, স বৈ ভিরোহর্ষাণি বর্ষতি।" (ভারত ৪।৫।২১)
তিরোহিত (ঝি) ভিরস্-ধা-জ। ১ অন্তর্হিত, ক্রপ্ত। ২
আফ্রোদিত। "ন চাসায়ঃ ন চ ন্যনং ন দ্রেন ভিরোহিতং"
(মহ্য ৮।২০৩)

তিরোহ্ন [ভিরোম্ফা দেখ।] তিহ্য (ড্রি) ভিল-রিশিত।

তির্য্যক্ (খবা) বক্ত। পর্যার সাচি, তিরস্। (অমর)।
"তির্য্যক্রিপ্র (দি) ডির্যাক্ বক্তভাবেন কিন্তা। বক্তভাবে কিন্তা।
তির্য্যক্রা (দ্বী) ডির্যাক্ বক্রভাবেন কিন্তা। বক্রভাবে কিন্তা।
তির্য্যক্রা (দ্বী) ডির্যাক্ ক্রভাবের সা। ১ বক্রভাবের কিন্তা।

ভিৰ্য্যক্তৰু (ক্লী) ডিৰ্যাচ্ ভাবে স্ব। ১ বক্ৰম্ব। ২ পক্ষিপ্ৰভ্-ভিন্ন ভাব।

"দেবজং দান্তিকা বান্ধি মহয় সঞ্চ বান্ধদা। । ভিৰ্যাক্তং ভামদা নিভামিতো বা ত্ৰিবিধা গভিঃ ॥" (মহ ১২।৪০) ,ভিৰ্য্যক্পতি (ত্ৰী) ভিন্নতী গভিঃ কৰ্মধা। বক্ৰগভি, কুটিল গমন।

তির্য্যক্পাতিন্ (জি) ভির্যাপ্পততি পত-ণিনি। '১ বজু
প্রসারিত। ২ কুটিশ বুভির্জ । \ (শকার্থচি)

তিষ্যক্ প্রমাণ (ক্রীং) ডিব্যক্ প্রমাণং। কর্মধা। বিভার-প্রমাণ।

তি ফাঁক্ প্রেক্ষণ (বি) তিবাক্ প্রেক্ণ বহু বহুরী।
বক্রদৃষ্টিকারী। "বিষিত্বা আচ্যাভিমভিরহকু তি বিবাক্
প্রেক্ষা" (ভাগ বাহডাও৮)। তিবাক্ প্রেক্ষা
ব বক্রভাবে দিখা।

তিৰ্য্যক্প্ৰেক্ষিন্ (তি) ভিৰ্য্যক্ ৰক্ষং যথা তথা প্ৰেক্ষ্ট্ৰ প্ৰাটক গিনি। বক্ৰ মুক্টিকামী।

ভিৰ্যাক্তোতস্ (,পুং) • ডিবাক্ বক্ষং বোৰঃ আক্রী স্কারো বস্ত বছরী। পুরু পক্ষী প্রভৃতি।

⁽a) Asiatic Researches, Vol. V11. p.345f; Rev. Caldwell's Dravidian Gramman; The Cutal of, Tiruvalluvar by Rev. Drew; Indian Antiquary Vol. IX, p. 71f.

"ভন্নাভিধানত: সর্বং ভিবাক্রোভাভাবর্তত। বনাং ভিবাক্থাবৃত্ত: দ ভিবাক্রোভাতত: বৃত: ।"

ख्याः बुका ॥ (विकृत्यः ऽ।४।४)

ভাগবতে ইহাদের বিষয় এইরূপ লিখিড আছে-ভির্যাক্-স্রোতাদিগের অর্থাৎ পশুপন্দীদিগের স্কটি, অটম। ঐ জাতীর জীব⁸ ২৮ প্রকার। ইহারা[®]জ্ঞানশৃষ্ট এবং বহু তমোগুণ-বিশিষ্ট, এইআভ আহারাদি মাত পরারশ্ব। ইহাদের কেবল খ্রাণে ক্রিয় বারাই অভীষ্ট অর্থ পরিগ্রহ হর, অন্ত:করণে কোন জ্ঞান থাকে না, অর্থাৎ দীর্ঘ অমুসন্ধানশৃষ্ট ৷ ঐ অটাবিংট্রতি-তির্যাক্সোতা গো, ছাগ, মহিন্ন, কৃষ্ণপার, শৃক্র, গবর, রুকু (মুগবিশেষ), মেষ এবং উট্র এই নরপ্রকার পশু ছিকুর। গৰ্মজ, অব, অবতর (থচ্চর), গৌর (মুগবিশেষ), শর্ভ এবং চমরী মৃগ এই সকল পশু এককুর। কুকুর, শৃগাল, বুক, ব্যান্ত, বিড়াল, শশক, সিঞ্চ, বানর, হন্তী, কছেপ এবং ছাদশবিধ জন্ত পঞ্চনধ এবং মকরাদি জন্ত, কলচর, কছ, গৃঙ, বক, খেল, ভাস, ভলুক, ময়ুর, হংস, সারস, চক্রবাক, কাক, পেচক ইত্যাদি থচর, ইহারা তিৰ্য্যক্ষোতা অৰ্থাৎ তিৰ্য্যক্ জাতি। (ভাগ' ৩।১১।২১-২৫) তির্যাপ (পুং) তির্যাগ্ন, কুটলগামী পশুপক্ষানি।

"কর্মভূমিকতং দেবা ভ্রতে তির্যাগাল্চ যে।" (ভারত)
তির্য্যপন্তর (ক্লী) দ্রব্য ধ্যের মধ্যখানের পরিমাণ।
তির্য্যপার্ম (ক্লী) ভিরশ্চাং অরনং ৬৩৫। ১ পশু পক্ষীদিগের
গতি। তির্যাক্ অরনং কর্মধা। ২ বক্রগতি, কুটিল গতি।
তির্য্যপাগত (ত্রি) তির্যাক্ বক্রভাবেন আগতঃ। বক্রভাবে অসা।।
তির্য্যপীক্ষ (ত্রি) তির্যাক্ উক্ষ-অচ্। বক্রভাবে দেধা।
তির্য্যপীক্ষ (পুং) ক্রফের নামান্তর ভেদ। তিরশ্চাং ক্লীশঃ
৬৩৫। পক্ষিগণের অধিপতি।

ভির্য্যগ্র (অ) তির্যাক্ এছেতি তির্যাক্-গম-ত। কুটিলগামী। তির্য্যগ্রাভ (অ) তির্যাক্ বক্রভাবেন গভঃ। বক্রগামী। তির্য্যগ্রাভ (অী) তিরশ্চী গভিঃ কর্মধা। বক্রগভি, কুটিল ব্যুতি। (অ) তির্যাক্ গৃতিঃ ষস্ত। বক্রগমনশীল। তির্য্যগ্রাম্ (ক্লীং) তির্যাক্ গমং গমনং। বক্রগমন।

"তির্বাগ্গমেন নাগেন সমদেনাগুগানিনা" (ভারত ফোণপণ)
তির্বাগ্গমন (ক্লী) তির্বাক্ গম-লাট । ১ বক্রগমূন। (বি)
তির্বার্থ সমনংক্ষুত । ২ বক্রগতিশীল বাছ, বায়র গতি বক্র।
"ভির্বাগ্গমনবানের: ভের: শ্রুপাদিলিক্ষর: ।" . (ভাষাপণ)
তির্বাগ্র (বি) তির্বাক্ ক্লুড । ১ পনী প্রভৃতি হইতে
ভাত । ২ প্রাদি রাজি । "র্ম্বারীরপ্রভাবেন তির্বাগ্র ব্রবাহতন্ত্র (ব্রুপ্র ১২) ২

ত্তিৰ্য্যপৃক্ষন (গং) ডিৰ্যাক্ ক্ষমঃ কৰ্মা। ক্টিল লোক।

"বভত্তক্ষমপুৱাৰুণনীগশিকাতিৰ্যাগ্ৰনাগৰণি কিছুক্তৰাৱৰা যে।" (ভাগা ২।৭।৪৫)

ভিষ্যগ্লাভি (বী) ভিষ্ণাং লাভি: ৬৩ং। পদিলাভি।
ভিষ্যগ্দিশ্ (বী) ভিষ্কৃ দিশ্বিপ্। উত্তরদিক্।
ভিষ্যগ্ধার (পং) ভিষ্যক্ ধ-ৰঞ্। ৰজধান, যাহার পার্ব বজ।
ভিষ্যগ্যাসা (বী) ভিষ্যক্ দাসা বৃত্ত বছরী। বাহার নাসিকা বজ।
ভিষ্যগ্যবোদর (কী) ববের দানা। (Barley-corn.)
ভিষ্যগ্যান (পং) ভিষ্যক্ বানং বৃত্ত বইরী। কুলীর, কাকড়া।
ভিষ্যগ্যোন (পং) ভক্সারিকাদি পদ্দী লাভি।
ভিষ্যগ্যোনি (বী) ৬৩ং। পশুপদ্যাদি ভিষ্যক্ লাভি।
শ্লাললী নিদিবেবেণ যো বৃত্তিমুপশীবভি।
স নিদীনাং হরত্যেনভিষ্যগ্রোনে চ লাগতে।"

•

(মফু ৪৷২০০)

গৃহী যদি ব্ৰহ্মচারীদিগের বেশ ধারণ করিরা ভিন্ফাদি বারা । জীবিকানির্কাহ করে, ভাহা হইলে ভির্যাগ্যোনি প্রাপ্ত হয়। পশু, পক্ষী, মৃগ, সরীস্থপ ও স্থাবর এই পাচভাগে ভির্যাগ্যোনি বিভক্ত।

তির্য্যপ্রামান্ত্রয় (পুং) তির্যুক্ যোনীনাং অবর: শুডং। পণ্ডপক্ষাদি জাতি।

তির্য্য থিছা (আ) তির্যাক্ তির্যাক্ভাবেন বিদ্ধ:। স্প্রশতোক এক প্রকার শিরাবেধ। তির্যাক্ (বক্র) ভাবে শঙ্গণাত হইলে যদি সমুদর কাটিরা অর অবশিষ্ট থাকে, তাহা হইলে তির্যাক্বিদ হয়। শুই তির্যাগ্বেধ অতি দ্বণীয়। (স্প্রশত চিকি ' ৮ জাঃ) ২ বক্রভাবে বিদ্ধ।

তির্য্যঙ্নাল'(পুং) যাহার নাদিকা বক্র। তির্য্যচ্ (ক বি) তিরো অঞ্তি-তিরদ্-অঞ্জিপ্, তিরদ: তিরি আদেশ: অঞ্চেন্দোপশ্চ। বিহল প্রভৃতি।

"পাপানি চনর: রুদা তির্গ্যারেত ভারত।" (ভার॰ ১৩৯১১)১২৫)
মহয় সকল পাপকর্ম করিয়া তির্গাক্ অর্থাৎ বিহল প্রভৃতি
ুহুইয়া জন্মগ্রহণ করে।

"ওবধী: পদবো বৃক্ষান্তির্যাঞ্চ: পদ্ধিশতথা।

যজার্থ নিধনং প্রাপ্তা: প্রাক্তি জী: পুন:॥" (মহু ৫।৪০)

২ বক্রগামী।

তির্যুক্ষী (স্থা) তির্যাচ বিরাং তীপ্। তিরশ্চী, পশুপক্ষীদিণের স্থা।
তিল (পুং) তিলতি নিছতি তৈলেন পরেভিবতি তিল-ক।
বনামধ্যাত রবিশত বিশেষ (Sesamum Indicum)।
পর্যায়—হোমধান্ত, ধনিত্ত, পিতৃত্পণ, পাপন্ন, পৃত্ধান্ত,
বেছফল, ফলপুর।

প্রকাশত বাংগ ইহা গণাঁহইরা থাকে। ইহা হইতে
'জ্বৈল' জরে গ সন্তর্গত ভারতবর্বে ইহারই তৈল প্রথম
আবিদ্ধত হর বলিরা সংস্কৃত ভাবার উহা 'তেল' নামে পরিচিত
হইরাছে। পরে অভান্ত 'তেলকর বীর্জ (সর্বপ, মসিনা,
পোত্ত, বালাম প্রভৃতি) হইতে নির্বাস আবিদ্ধত হইলে
তাহাপু 'তেল' নামেই অভিহিত হইরা বার। এখন 'তেল'
বলিলে অভত: বালালাদেশে তিলের তৈল না ব্যাইরা সর্বপ
তৈলই ব্যার। দেশভেদে তিলের নাম যথা—
শত্ত, 'তেল
ক্ষতিতল
বারিকতৈল
বিস্তাতল
ভিল, তির,
বিস্তিতল
তিল কাতিল

, ,	ভিল-কা-ভৈল	
ডিল	তিলের তেল	বাঙ্গালা।
রসি, খাদা, তিলি	F.,	উড়িয়া।
তিৰ্মিন 🔐		गॅा ওডাল ় ।
তিৰ …	• **	নেগাল।
,िंकन, जिनि …	• •••	মধ্যভারত।
् जिब, जिनि, बिकिनि	মিঠা ভেল	डेः शः श्र टम् ग ।
ভুকুক, তিল …	, ···	কুমাউন।
তিল, তিলি, কুঞ্জ	•••	পঞ্চাব। -
ত্ৰিল, কুঞ্জিত ···	•••	আফগানিহান।
ভিল, থির	•••	निक्।
তিল, তল, } বারিকভিল }	•••	(वाचारें।
তিল	•••	মহারাষ্ট্র, গুজরাট।
रवत्र्र्हिष, द्रक्तून्, धृत्र्	নল-লেরি …	তামিল।
लात-रुख्नू र्	रूका, रूकान् }	ত লপ্ত।
	थम्, राजगान	কণ্টিক।
करत्रम्, ठिजाम्, अ धम्	िक्टिश्वन्, मिनिक-दिक्नन्, नरक्षक्र र	म्बाह्य । ,
रुन	नाष-ति 😷	व्यक्त ।

শত	ভৈশ		
ण्डा, ण्डा- मर्ड }	ভূন্-পঙ্ক, } ভেল-ভল	•••	निःहन ।
चन् च्न-क्नाम, । निमनिम्	•		
রোঘেন শিরিন, রোঘেন, কুঞ্জ 🕈	বাংখন কুঞ্জ	•••	গার্ভ,।
त्मरम्य	¢	•••	শিসর।
বেখাম …		•••	পুমাত্রা।
সিদামাম	निरम्भि खरत्रन	•••	हेरनख ।
ङ्खिश्रीनन्, ञन्द्याद्यानिकः}	•	•••	ক্রান্য।
অল্ জোঞালি		•••	ম্পেন।
विश्विष्ठिता (जतस्वित्व)	٠	•••	ইটাদী।
ভের্জে শিম্		•••	পর্জুগীল।

তিন গ্রীমমণ্ডলের, শক্ত । পাশ্চাত্য উত্তিদ্পান্তিবিংশগুতেরা অমুমান করেন বে, এই শৃত্যের আদিবাস আফ্রিকা ও পূর্বাভারতীর বীপপুঞ্জে। এপর্য্যন্ত ১২শ প্রকার তিল আবিষ্কৃত হইরাছে। আফ্রিকার বাদশ প্রকার তিলের মধ্যে আট প্রকার বস্তুভাবে জন্মে। তৈলকর বীজের চাব আফ্রিকাতেও বহুপূর্ব্ব হইছে প্রচলিত। গ্রীক, লাটন ও আরবীর প্রচীন গ্রছকারদিগের গ্রছে সিসেম বা সিসেমাম শব্দ পাওরা বার (আরবীর সিম্সিম)। থিওফ্রেন্তাস্ ও দিওস্কোরিনিস্ লিখিরাছেন, 'মিশরে সিসেম নামক তৈলকর বীজের চাব হর।' দিনি আরও লিখিরা সিরাছেন যে উহা ভারতবর্ব হইতে এদেশে আনীত হইরাছে। আরবীর "সেমসেম" বা "সিমসিম" শব্দ হইতেই গ্রীক 'সিসেম' শব্দ কিশার হইরাছে।

পাশ্চাত্য পভিতেরা বাহাই বসুন, ভিদ ভারতবর্ষে বহদিন
হইতে প্রচলিত। মুরোপ যথন আফ্রিকার বিবরণ মোটে

শানিতে পারে নাই বা আফ্রিকার ধথন আরবীর সঞ্জতা
বিস্তত্ত্বর নাই, তথন হইতে ভারতে ভিদ ব্যবহার প্রচলিত।
পৃথিবীর প্রাচীনগ্রন্থ বেদে ইহার উল্লেখ দেখা বার (, অথর্ম-বেদ্ধ হাচাত্ত, ৬।১৪০।১; ভ্রম্বজ্পুর্মেদ ১৮।১২ ও শতপথরাক্ষণে
১।১।১।০।) এতভির হিন্দুর প্রাদ্ধ, তর্পণাদি কার্য্যে বহু পূর্মানা
হইতে ভিলের ব্যবহার প্রচলিত হইরা আসিতেছে। এতভির
ভারতবর্ষের বিভিন্ন হানের বিভিন্ন ভাবার এই শতের বতগুলি
নাম দেওরা হইরাছে, ভাহার সকল গুলিতে ভিল এই নামু
একপ্রকার ক্ষবিক্তভাবে গৃহীত হইরাছে। অপর কোল

শক্তের নামের এরণ সমতা ভারতবর্বে নাই। বিক্লি, विश्वनि थ्यष्ठि চनिত नामश्रीन रक्षिः बाजरीत (क्न् क्नान्) मर्ल ऋभाखन्न, ख्यांनि छाराहे त चानिय नाम ভাহা বলা বার না। ভারতীর আয়ুর্কেদশান্ত সর্বাণেকা প্রাচীন। আযুর্বেদ শাল্পেও তিলের বাতিভেদে গুণভেদ ইভ্যাদি লিখিভ আছে। গ্রীম্মখলের শক্ত বলিরা মধ্য-ভারতের কোন খানে বস্তুতিল বহিষ্ট দেখা বার নাই, ভবুও विश्यानत्र चाक्त्रानिशान, शांत्रच, चात्रव, मिश्त टाकृष्टि त्रत्थ ইহার চাব দেখিয়া বুঝা যায় বে যদি ইহা ভারভের **জীবি°শ**ভূ ना रत्र, তবে रेरा वि चार्याशन बात्रा अरहाम ध्येष चानी छ रहेमार्ड, छविरात मान्य मारे। देशात चार्या माम छिन छ ইরাণীর নাম 'দেমদেম' দেখিরা অনুমান করা বার বে, অতি পূৰ্ব্বে ইহা এমন এক স্থানে জন্মিত, যেখান হইতে ইহা সমভাবে পূর্বেও পশ্চিমে চাব হইতে হইতে বছদ্রে চলিয়া গিয়াছে। ইংরাজেরা তদস্পারে বলেন বে, ইউফেটীশ নদীতীর হইতে উত্তরভারত পর্যস্ত মধ্য এসিয়ার কোন স্থানে ইহার আদিবাস ছিল। সেই স্থান হইতে আর্য্যকাতি হইতে প্রথমে ভারতে, পরে ভারতীর বীপপুঞ্চ ছড়াইরা পড়ে। ভারতে প্রচারের পূর্ব্বে তিল আরব বা য়ুরোপে যার নাই, ইহা সংস্কৃত শাল্লের প্রমাণে বিখাস করা যায়। সম্প্রতি গ্রমেণ্ট হইতে ভারতীয় পণ্যত্রব্যের বিবরণসংগ্রহ করিবার জম্ম যে কর্মচারী নিযুক্ত হন, তাঁহার অফুসন্ধানে প্রকাশিত হইয়াছে যে, পরেশনাথ পাহাড়ের ১৫০০ ফিটু হইতে ৩৫০০ ফিটু উর্দ্ধে এবং হিমালয়ের উত্তরপশ্চিমাংশে এই জাতীয় শভের বভাবভার গাছ পাওয়া গিরাছে। তাহাদের আক্ততিগত অনেকটা প্রভেদ আছে। চাবের ভিলের ফুল শাদা ও বস্তু ভিলের ফুল কাল। পাতা,• ডাঁটা, মূল ইত্যাদিরও অনেক পার্থক্য দেখা যায়।

পিনি ও পেরিপাদের গ্রছে জানা বার বে, তিলের তৈল শুজরাট ও সিদ্দেশ হইতে লোহিতসাগর দিরা মুরোপে রওনা হইত।

ু আইন-ই-আক্বরীতে, খেততিল ও রঞ্জিতেরে বিবরণ আছে। ,আন্ত (আউশ বা শারদ) শক্তের মধ্যে ইহা গৃহীত হইয়ুছে। আগ্রা, আলাহাবাদ, অবৌধ্যা, দিল্লী, লাহোর, মূলতান, মালব প্রভৃতি স্বব্ধা ইহার চাব হুইত ৮

বিগত ৩০।৪০ বংসরের মধ্যে ইহার কারবার বাড়িরা গিরাছে, বিদেশে রপ্তানী হইতেছে।

চাব। ভারতে প্রীয়প্রধান ছানে ইহার চাব হর। গ্রীয়মগুলহ প্রদেশে ইহা প্রীতকালের শক্ত, অক্তর ইহা শার্হ শক্ত এবং শীষ্ণপ্রদেশে ইহা গ্রীয়কালের শক্ত। প্রাব-

आस्ति वर्षाकारण देशांत्र हात हुत्र। प्रशृक्षात्रराज ७ मालारक वनरेक ७ वंतरण इरेनांत्र कमन इत। मधाणांतण ও উত্তরভারতের বাসুকাষত্ব ভূমিতে ইহার ক্ষেন বৃদ্ধি ও পুটি দেখা বার, এক, আনাম ও বালালার স্থল অংমীতে -সেরপ হর না। ভিল সাধারণতঃ ৪ শ্রেণীতে বিভক্ত। এই চারি শ্রেণী ঠিক লাভিগত বিভাগ কি চাবের অবস্থাগত বিভাগ ভাহা বলা বার ^হলা। বর্ণ ধরিয়া ভিলের, শ্রেণী বিভাগ করাহর। খেত, ক্লফ, একে ও ধ্নুর। ভারতের কোপাও ইহার গাছ মরকুটে রকম হয়, এওঁ কুত্র হয় যে ১৮ ইঞ্চির অধিক দেখা যায় না,কোথাও ৩।৪ ফিটুদীর্ঘ হয়। কোন কোন কেত্রে ইহার ফুল,খাদা, পাতা বুড়, পাতার থোঁচগুলি অসমান, কোন কোন কেত্ৰে. মূল পাটল বা রক্তবর্ণ, পাতা লখা, সরু এবং খোঁচহীন হয়। এই সকল দেশিয়া বোধ হয় 'ভারতে ভিল ধাঞ্চের সহিত প্রায় একু नमरम्बे हार जान इंदेनारहन [शांक (नथ ।] दर्जीन दकान তিল পাকিতে তিন মাস, কোন কোন তিল পার্কিতে ৮৷১০ मान विनव इयः। ইहांक श्राচीन(वत्र विषत्र व्ययुधावन कत्रितन বিখাস হয় যে তৈলকর বীজ যত প্রকার আছে, তল্পধ্যে তিলই প্রথমে মস্থাের ব্যবহারে আসে ও ইহার তৈলই ব্দগতের প্রথম তৈল।

পূর্বভারতের তিল গাছ একটু খতদ্ররণে কলো। শাদা তিলের পাতা কৃষ্ণ তিলের পাতা অপেকা চওড়া হর, ফুলের বর্ণ মলিন হয়, পাতার রং গাড় উচ্ছল সব্ল হয়। শাদা তিলের আখাদ মিষ্ট, দানা মোটা ও বড় হয়।

বালালা দেশে তিলের চাষ ভিন্ন ভিন্ন জেলায় যেরূপে সম্পর হ্র, তাহা নিমে লিখিত হইতেছে।

ঢাকা। দলীনদীর তীরে ইহার চাব খুব বেশী হয়।
ধান্তের সহিত একতাই ইহার চাব হয়। ইহার ক্ষেত্র
প্রস্তুত করিবার সময় প্রথমতঃ পূর্ব্ধ বংসরের ধান্তের জনীতে
গোড়াগুলি তুলিয়া রাশীক্ষত করিয়া পূড়াইলী কেলে, তাহার
পর লাকল দের। জনী বদি বেশী শুক হইয়া যার, তাহা
হইলে লাকল দিয়াই সলে সলে মই দিয়া থাকে। সরস
থাকিছে মই দিবার আবেশুক করে না। প্রথম চাবের পর
১৫ দিনের মধ্যে আর একবার আড়ভাবে লাক্স দিতে হয়।
মাবেই পাট করিয়া রাথে। তার পর আরু এ৪ বার লাকল
দিরা প্রতি বিঘার ৴সা
 দেড় দের তিল ও। দশ সের
আমন ধান্ত একতা মিশাইরা ছড়াইরা বুনিরা হার স্কার্ত্বনের মাঝামাঝি হইতে চৈত্রের শেব পর্যান্ত বপন করিবার প্রশন্ত সমর। ৪৫ ইঞ্চি চারা গলাইলে একবার

কোলালি দিরা কোন্লাইয় দিরা থাকে। চারা বছ বন হইলে এই সময় কতকগুলা উঠাইয়া ফেলেঁ। কোন্লাইবার দ্বার দ্বার দ্বার ক্রিক পরে নিজাইত্ত্বর, তৎপরে মাবার পোনর দিন পরে আর একবার নিজাইতে্ত্বর, তৎপরে মাবার পোনর দিন পরে আর একবার নিজাইতে্ত্বর, তৎপরে মাবার পোনর দের পরে আর আর এক রার নিজাইতে কাটিয়া লয় ও দিন করেক এক রানে কাঁড়ি করিয়া রাখিয়া দের, তাহার পর ঠেলা মারিয়া শত্ত ঝাড়িয়া লয়। প্রতি বিধার ২০০ মণ্ড লেম। ঢাকার কোথাও কোথাও আও (আউল) আমন ও তিল পর্করী এক লমীতে ব্নিয়া থাকে। তৈত্ত্বের শেষে একটা বৃষ্টি ইইয়া গেলে পূর্ক্রনতে প্রস্তুত্ত লমীতে প্রতি বিঘার /মাত সের তিল। সের আউল ও /৬ সের আমন একতা মিলাইয়া ছড়াইয়া ব্রিয়া যায়। অত্রর গলাইলে একবার আল্গা মই দের, ভারপর লালি টানিয়া ১০০২ দিন অত্রর ২০০ বার নিড়াইয়া দেয়। জৈটে মানে তিল কাটে। এই প্রথায় নাঁকি ফ্লেল ভাল হয়।

মেদিনীপুর। কৃষ্ণ ভিল ও শাঁকী (শন্মের স্থার্য থৈক)
. জিল, জললী জমীতে আঘাঢ় আৰুণে বপন করে ও অগ্রহারণ
পোষ্ফ্রানে কাটে। থশলা ভিল ইকুক্ষেত্রে চৈত্র বৈশাথে বপন
করে ও বৈশ্রষ্ঠ আঘাঢ়ে কাটে। ভাছ (ভালীয়) ভিল
জঙ্গলী জমীতে আঘাঢ় প্রাবণে বুনে ও ভাজে কাটে।

হুগলী। কৃষ্ণতিল আবাঢ় প্রাবণে বুনে ও ভাজ আবিনে কাটে। কাঠতিল পৌষ মাবে বুনে ও আবাঢ় প্রাবণে কাটে। থেঁলারির স্থায় এই জেলায় তিলও ধানের জনীতে বিতীয় ফদল ক্ষপে বুনিয়া থাকে। বেশী জলে ধান বুড়িয়ানই হইয়া গেলেই এইরূপ করিয়া থাকে।

ক্রিদপুর। এথানে উচ্চ জমীতে মাঘ ফাস্কনে কালতিল বুনে ও আঘাঢ় প্রাবণে কাটে। আমর নিম জমীতে প্রাবণ ভালে শাদাভিল বুনে ও অগ্রহারণ পৌষে কাটে। এথানে ভিল ও ভিলের তৈল হই ভৈষারী হয়।

র্দ্ধপুর। এথানে প্রাবণ ভাজে ক্ষভিল বুনে, অগ্রহারণ পৌষে কাটে। উচ্চ শুক জমীতেই দসল ভাল হয়। প্রাথই ঠিকরি কলাইয়ের সঙ্গে একতা বুনিয়া থাকে। জ্মীতে চারবার চাষ ও চরার জালি টানিয়া দিভে হয়। ভাল ফসল হইলে প্রতি বিঘার সাংকি ই/মণ জন্মে। সর্ধপের সহিত স্মানদ্ধে বিজ্ঞীত হয়। রক্ত বাংম্ভ (আউশ) ভিল জারই হুনে; পৌর মাথে বুনে ও জাঠ আধাড়ে কাটে। ইহার দ্ব, স্থপের অপেকা ক্ষা।

রংজশাধী। ধানের জমীতে চৈত্র বৈশাধে বুনে, আবাঢ় প্রাৰণে কাটে। ক্ষাভিশ বৈশাধে বুনে, অগ্রহারণে কাটে। এ জেলার ভিলের চায় খ্ব কম। বশুড়া। এথানে তিন প্রকার ডিলই জরে। ক্লক্তিনই ডাল। বর্ধার শ্বেরে বুনে ও হিমের আরছে কাটে।

লোহার্ডাগা। ভিল বা তিম্লি ভাজ আধিনে উচ্চ লমীতে '
বুনে ও চৈত্র বৈশাধে কাটে। পালামৌ উপবিভাগের ইহা
একটী প্রধান শক্ত, দকিলাংশে প্রচুর জন্মে। এধানে ইহার লভ
ক্ষেত্রে বেনী পাট আবস্তক করে না। একেশে প্রভি বিধার
১৪০ মণ জন্মে ও ১৮০ হইতে ২১ টাকার মণ বিজীত হর।

জাসাম। স্মাসামে ভিলের চাব হয় এবং বাজালা কেশে এরপ্রামী হয়। চাব বাজালারই মন্ত্র।

ত্রন্ধ। ডিলের চাব পুব কম। মালাল হইতে এখানে ভিল আমদানী হর। তিল বেশে না ক্সিলেও ত্রন্থবালীরা, ভিলের বাবহার এবনী করে।

বরার। এথানে ২৮০৫৪৮ বিবা অমীতে তিলের চাব হর; বিবার ১০০ থকে মণ দশু সের হিসাবে করে। নিজামের রাজ্যের ও বরার প্রদেশের তিলই অধিক পরিমাণে বোঘাই দিয়া রুরোপে রপ্তানী হর।

মধ্যভারত। নাগপুর, নর্মদা প্রভৃতি স্থানে ভিলের চাৰ বেশী হয়। এখানকার তিলও বোখাই দিয়া রপ্তানী इया अथात्न भारतः ७ वानजी इहे कमरनहे जिन इया শরতের ভিলকে মুখেই ভিল ও বসত্তের ভিলকে হাওড়ি जिन वरन। भन्नीय क्रश्रक्टे न्डन समीटि ट्रांत हाय করে। ইহার চাষে বেশী পরিশ্রম বাব্যয় হয় না। 'জমীর कक्न नाफ क्तिया व्यव नामन नियारे रेटा द्निया (नय। এক মুঠা তিলে তিন বিঘা অমী বুনা হয়। এক বার নিড়া-ंटेर्ड इम्र। खान ना शांकिरन छात्र, स्मय, त्रवांनिर्ड देश नहे ক্রেনা। পাকিলে ভাড়াভাড়ি কাটিয়া তুলিভে হয়। অতি বিজী কুব্বা অনীতেও প্ৰতি বিশ্ব ২॥০, ৩/ মণ শভ काम क २॥०, ७ होकांत्र विक्रीक इत्र। विचाकता अतृहा টাকাটাক বাদ যায়। তিল কাটিয়া সেই অমীতে বাজরা বা জোদার বুনিলে ভাহাতেই ধরচা উঠিয়া সমস্ত লাভে দাড়ায়। অভি বন্দ, খানিতেও এখানে /৯ ভিলে /০ দের তৈল 49 /৬ সের খোল হয়। খানি ধরচা । প> আনা वा 10 । नारंग। धवानकात्र चानिएक टेंडन वाहित हरेवात খতর পথ নাই, ভৈল ও খোল একজ খানির কুঁড়াব্ উপর উঠে। जन विंदा श्वान ७ जिन পृथक् कडिया नहेल्ड इय বলিয়া, এথানকার তৈল থারাপ।

পঞ্জাব। প্রায় সক্ষু দেশাতেই কর বিভার তিস ক্ষো। করাচী বন্ধর দিয়াই ইহার অধিকাংশ রপ্তানী হর। রাব্যশিভির পার্কভা ক্ষীতে ইহা প্রচুর ক্ষো। এবেঙে

į

ভিল প্রার অক্সান্ত কসলের ক্ষেত্রের কিনারার ব্নিরা থাকে।
কৃষ্ণতিলই বেশী করে। এথানে আবার গুরুর কলের আহ্জা
বিরা কৃষ্ণতিলের খোলা উঠাইরা বিক্রের করে। বালালার
ইবা খলাভিল নামে খ্যাত। এথানে /৫ সের ভিলে /২ সের
তৈল অস্মে।

শক। সরস হাল্কা মাটিতে তিল হর। এদেশে পাত্না মৃত্তিকাতরাজানিত বাল্কার উপুর তিল তাল লয়ে। জোরার, নাব, মুগ অভ্তির সহিত একত ইহা বুনিরা থাকে। একটা কি ছইটা চাব দিরা জমী তৈরার করে। ভিন্তু ও বালি মিশাইরা প্রাবণ ভাজে, বুনিরা থাকে। প্রতি বিঘার বালিতে তিলেতে ৴০০ সের লাগে। উত্তরে বাতাস লাগিলে মুল ব্রিরা বার।

মণ্ট্গোমারি। জোরার, মুথা, মুগ অভিতির সহিত তিল বুনে। বর্ণাকালেই ইহার চাষ হয়। , জলসেচনের স্থবিধা থাকিলে. অভ সময়েও হয় বৃষ্টির পর লাকল দিয়া অভ শক্ত বা মাটি মিশাইরা ছড়াইরা বুনিরা দেয়, তারপর আর একবার লালণ দেয়; কথন কথন লালল-থাতের মধ্যে ছড়া-ইয়া দের মাত্র। প্রতি বিষার % ৬০ পোরা বীক লাগে। তিৰ ঘন জ্মিতে দেয়না। ইহাদের মধ্যে প্রবাদ আছে. यर পাতना कतिया त्नितन, जिन चन कतियाँ त्नितन, महित्यत এঁড়ে বাছুর হইলে ও বধুর কলা হইলে যে কট হয়, তাহার আল কথা নাই। এথানে কেবল ক্লফডিল জন্মে। এদেশে বেশী বিহাৎ হানিলে ভিলের ক্ষতি হয়। তিল কাটিয়া আনিয়া গাছের মাথাগুলি একদিকে করিয়া গোল কুরিয়া সঁমন্ত কাঁড়ি সাজাইয়া রাখে। ইহার উপর খুব ভার চাপা-देश रमय। देशांख खिलात च्यें विश्वनि नत्रभ रहेता यात्र, त्यार খড়ের দড়িতে প্রত্যেক গাছা সারি দিয়া গাঁথিয়া রৌজে নিমম্থ করিয়া ঝুলাইয়া দেয়। নিম্নে কাপড় পাতিয়া রাখে। রৌদ্রে স্থাটী ফাটিয়া কাপড়ে তিল ঝরিয়া পড়ে। এবেশে ।৫ সের ভিলে /৬ সের তৈল হয় । ভিলগাছে আবানি কাঠ হয়।

কর্ণাল। এথানে পতিলের শ্রেণীভেদ নাই। নৃত্ন কঠিন ক্ষমীতে এ অঞ্চলে তিল ভালু হর। নর্দক্ষের নিকট সেই বস্তু তিলের চাব কিছু বেলী হয়। কোরার দত্তের সহিত মিলাইরা তিল বুনা হয়। কোরারের চার বেরপ তিলের চাবও সেইরপ। তিল কাটিরা রৌজে শুকাইতে দের। শুকাইলে স্কুটী কাটিরা লয়। তিলের গাছগুলিকে তাঁস্ডা বলে, ইহা কেলিরা দেয়। ভিল্লসংগ্রহকারী কলুকে /৫ সের ভিল দিয়া /২ সের তৈরু গুইয়াপ্লাকে। রন্ধনে ও প্রাধীপে এই তৈল বাবস্বত হয়। এলেশে তিলের গান্তে বড় ভারা পোকা লাগে এবং একবার ভাকা ধরিলে আর ঐচচাইতে । পারা বার না।

केः शः थर्रम् । अस्तर्भ (चठ ७ इक्छिन बर्द्भ । कान ভিলকে 'ভিল' ও খেডভিলকে 'ভিলি' বলে। তিলি অপেকা ভিল পাকিতে বিলম্ভ হয়। ভিল জোয়ারের সুহিত আরু তিলি কার্পাদের সহিত বিশাইরা বুনিলে ফসল খুব ভাল হয়। তিলের তৈল অপেক্সী তিলির তৈল রন্ধনকার্ব্যে ভাল रत्र। श्मिनारत्रत्र निरत्न । सन्देश, "शिनिकिक, «पक्ति, श्रीत्रथ-পুর প্রভৃতি ছানে ভিট্রের চাব মধ্যবিধ রক্ষী হয়, কিন্ত व्यमनथर्थ देशंत हाय द्यम इनिख। आनाश्वादाय जिन रावष्टं करमा। धारमान देश्वातिक मछ। स्मोद्धासन मूर्य ইহার বপন ও কার্ত্তিক অত্যহায়ণে ছেদন করে। হাল্কা অমীতে ইহা ভাল অয়ে। ব্লেলখণে হাল্কা পীতবর্ণের অমী (রহুর) ইহার বিশেষ উপযোগী। তিল উঠিয়া গেলে কে অমীতে নিকৃষ্ট কোদধান বা কুট্কী ছাড়া আর কিছু অয়ে না। তিনৰার ঘন চাষ দিয়া কাপাস জোয়ার প্রভৃতির সহিত ছড়াইরা বুনিরা যার। [®] ক্লকের ইচ্ছামত পরিমাণ মিশাইরা লয়। থালি ভিল বুনিলে প্রতি বিঘার ^{*}/২॥• সের চিল লাগে। ভিল পাকিলে আঁটি বাঁধিয়া আনিয়া ডগাগুলি উৰ্চ্ছে রাধিরা শুকাইতে দেয়। স্থুটী ফাটিয়া তিল ঝরিতে আরম্ভ হইলে আছড়াইয়া পাছড়াইয়া তিল বাছিয়া লয়। গাছ-श्वनित्क जिन्दर्गीठी बत्न, जाहाराज खानानि कार्छ हम । जनभरव বৃষ্টি ভুইলে ও ফুলের সময় বৃষ্টিতে ইহার বড় ক্ষতি হয়। श्राधितंत्र दृष्टिष्ठ काम काम काम कि इरे कंतर हम ना। জোরার বা কার্পাসের সঙ্গে জান্মিলে প্রতিবিধার আধ মণ অিশ দ্বোর হয়, কিন্তু খালি ভিলের ক্লেডে প্রতি বিঘার ১॥/ মণ হইতে ২/ পর্যান্ত জন্ম।

সিদ্পাদেশ। তিল এখানকার এক প্রধান শক্ত। সকল কোনেত ই হার চাব হয়। মহম্মদর্থা কেলার জনী এই শক্তের অভ্যন্ত উপযোগী। এই জেলার প্রতি আরার দিনে তিলক্ষেত্রে জল সেচন করিছে হুর। সাড়ে চারিমানে তিল পাকে, প্রতি বিঘার ২ ১ মণ উৎপন্ন হয়। নৌশহরো কোনা আবাচ মানে সরস উৎকৃষ্ট জনীতে তিল বশন করে। প্রতি ক্ষেত্রে ৭ ৮ বার জল সেচন করিতে হয়। ৫ মানে, পাকে। প্রতি বিঘার তিশ সের তিল জলেনী

বোষাই প্রদেশে গুলরাট, থালেশ, পুণা, নাসিক, কণা-টক, কোঙ্কণ, রন্থগিরি প্রস্তৃতি হানে তিলের চাব হব। কাণা-ভার বেশী বর্বার শুভ তিল মোটেই লয়ে না। এ স্কুল বালে শ্রেড ও ক্ষাতিনই করে। গৃসরতিল একমাত্র অবরাটে করে। নৈগানে বাজরার সহিতু তিল একতা ব্নিরা
থাকে। কাঠিবাড় প্রদেশে আবার্টী (খেড) কালাকাটওরা
(কর্ম) ও প্রবিরা (রক্ষ) এই তিন প্রকার তিল করে।
খেততিলের তৈল আন্ত তিলের তৈল অপেকা প্রবাহ ও
অধিক তৈলন। নেথানে প্রবিরা তিলই অধিক করে।

নাজ্রান্ধ প্রদেশে প্রাদানুরী জেলার তিল কাটিরা জাঁটি
বাঁধিয়া রোজে ভালপাতা প্রপা দিরা আট দিন চাকিরা
রাখে। সারুয় পর জাঁট প্রির্মা নাড়িরা নাড়িরা লইলে
বার অনি আনাল তিল ঝুরিরা বার। বাকি অংশ আর
হই তিন দিন গুকাইলেই ঝাঁড়িরা লয়। কোএঘাতোর জেলার
কি জনা, কি গুক, কি বাগানের জনী সকল ছানেই তিল
লগে। এদিশে 'কার' গু 'টাট্রু' এই হিবিধ তিল জগে।
প্রথম প্রকার ভিলই উৎক্রই ও প্রীয়কালে জগে। উত্তর
আরক্তাড় জেলার বড় ও ছোট ভেলে তিল হই প্রকার।
এখানে ঠেলাইয়া তিল ঝাঁড়িরা লয়। এদেশে ৴৪ সের
ভিলে সংস্কর ভৈল হয়। তিলতেল এদেশে সকল প্রকার
ভৈল অপেকা উৎক্রই। এদেশে ইহাই রক্ষনের ভৈল।
এই 'ভৈলই সকলে মাথিরা থাকে। এখান হইতে অধিকাংশ
ভিলই বুরোপে চালান হয়।

মহিস্থরে 'বোল-এরু' 'কার এরু' ও 'গুর-এরু' এই ত্রিবিধ তিল অংম। এধানে তিলের গাছ পোড়াইরা ছাই করিয়া সাররূপে ক্ষেত্রে ব্যবহার করে।

তিলের ব্যবসা। তিলের ব্যবসা অতি বিজ্ত । বালালার ও আসামে বাহা ক্ষেত্র, তাহার কতকাংশ বলদেশেই ধরচ হর এবং অধিকাংশ মাল্লাজে রপ্তালী হর। মাল্লাজে বাহা লমে ও বালালা হইতে ঘংলা আমদালী হচ, তাহার ৮/০ আনা অংশ একে রপ্তালী হইরা থাকে। একর মাল্লাজে তিলের ব্যবসা বহুবিজ্ত। অযোধ্যা ও উ: প: প্রদেশ হইতে যাহা ক্রেয়, তাহার কিছু বোঘাইরে ও কিছু বালালার চালাম হর, অবশিষ্টাংশ তত্তদেশেই ধরচ হর। মধ্যভারতের সমত্ত তিল বোঘাইরে চালান হর। বোঘাইরে যাহা জন্মে ও বাহা আসে, ভাহার মধ্যে দেশে বথেই ধরচ হইরা বাহা অবশিষ্ট বাকে, ভাহা র্রোপে চালান হর। বিদ্ধার্থনে অবশিষ্ট বাকে, ভাহা র্রোপে চালান হর। ব্রোপে এই তিল হইতে অইট অরেল, অলিভ অরিল প্রভৃতি প্রস্তুত্ত হইরা আবার এনেশে আসে। তিপুরার পার্যভাগ্রেশে ও ফালীর প্রদেশ হইতে তিল ভারতবর্বে আসিরা বাকে।

তিলের খোল গবাদি পশুর খাছরূপে ব্যবস্থত হয়। পঞ্চাবে

ও নিম ৰাজালার পরীবেরা: নরদার সহিত বিশাইরা ইংাতে শিইকাবি প্রায়ত করে। পশ্চিমে ইরায় ধর আছে।

তিলের ভেষৰাঞ্ব। তিল অর্ণরোগের হহোঁবব। রক্ত-वारी चर्म छिन चन नित्रा वाष्ट्रित। माधन विनाहेता खरनन मित्न **च**ि छेभकात मर्त्य । किननाष्ट्र, किनक्षा, किनक्षा অভৃতি ভিলের খাদ্য অর্শবোর্গার পথা। ভিল ও ভিল্টভল आमानव अवर मृत्रदूरात्राधिकाद्य चि छेत्रकात्री। हेरा विद-কারক। রক্ষারোধ-রোগে গরম খলে ভিলচুর্ণ নিক্ষেপ ্ৰুমিনা **ভদ্মধ্যে বোপীকে কোম**র পর্যান্ত ভূবাইনা বদাইনা त्राधित উপकात हत । जितृतिष घटन हिनि मिणाहेता थाहेरन কাশি নরম পড়ে। তিখ ও ডিলি-সিভছলে কামোদীপন रत, वक्तारमाव क् नहे रहेरछ शादा। अधिमध शास जिन বাটিরা প্রনেশ দিলে উপকার হর। তিলফুলে পতিত निनित्रविष् भीत्रके नर्सकात हक्त्राशित खवार्थ बरहोवर विनित्री भगा । मृष्ट् विन्द्रिकां, जामानव, प्रम्का (छन्, शीनन, খেতপ্রদর ও মূজনালীর রোগসমূহে ইহার পাতা ভিজাইয়া .সেই অলপানে উপকার হয়। ছটা টাটকা পূর্ণ পুষ্ট পাতায় **रक्**ष्रभावा ज्यान्ताज अने निवा किष्टुक्त नाष्ट्रिकर जन ठठेठट হইরা পড়িলেই পানীর প্রস্তুত হয়। শুকপত্তে গরম জল দিতে হয়। ভারতে ভিলের পাভা কুড় হয়, শ্বভরাং বেশী সংখ্যা ष्पावश्रक। ডाउनात्र এভার্স বলেন (মার্চ ১৮৭৫), 'আমি ভিলপাতা ভিজাইয়া তাহার আঠাবং পানীর বতগুলি জ্বান্য द्वार्श वावशांत्र क्वित्राष्ट्रि **मकनश्चनिष्टे जा**रवाता बहेबाह्य ।' গর্ডিণীর পক্ষে ডিল অপথা। ইহাতে গর্ভপ্রাব হইতে পারে। ্তিৰপাতা ভিজায় জলে চুলের 💐 বৃদ্ধি হয়। ভালাতিলে 33099 আন্ত্রের শিথিলতা সম্পাদন করে।

কলে চিনি প্রস্তুতের সমর চিনির মরলা দূর করিবার জন্ম তিল ব্যবজ্ঞ হয়।

আর্র্নের মতে—তিল চারিপ্রকার ক্লম, শুরু, রক্তবর্ণ ও
আর একপ্রকার ক্ষ্ম ক্ষ্ম তিল আছে, ভারাকে বন্ধ তিল
করা যার। তিলের গুণ—কটু, ডিক্ত, মধুর, ক্ষার রস, গুরু,
কটু, মধুর, বিপাক, নিগ্ধ, উফবীর্য্য, ক্ষর, পিত্তনাশক, বলকারক, কেশের হিতসম্পাদক, শীন্তলম্পর্ন, চর্পের হিতকর,
গুদ্ধবারক, মলরোবক, বাসুমার্শক এবং অমি ও বৃদ্ধিপ্রদারক।
এই চারিপ্রকার ভিলের মধ্যে ক্লফ্ডিল সর্বাপেকা উত্তম।
গুদ্ধ ভিল মধ্যম, অপর রক্তবর্ণাদি ভিল সমন্তই হীনগুণে বিশিষ্ট। (ভারপ্রকাশ)

বৰণুদাত ভিনকে উপতিন কৰে। ইহার তৈনের ৩৭—

चनवत, रंगरमत रिछकत, क्यात, खेंक, ठीक, मधूत, छिक, वनकात्रक, करू, बाँठ, वर्ग ७ क्षूत्रामक, कांडिवार, बाँछ, " অভ্যত্নপান, মভ, কর্ব ও অফিপুরণে হিতকর। (রাঞ্জীন) তিলভৈল। স্বঁপের স্থায় বানিতে তিল প্রাক্তিরা তৈল वांश्ति करत। जिनरेजन चाक्, शतिकात, छत्रंग, हेरात्र वर्ग यनिन न्रीडांड तक । देशाँ नक नारे, भूतांडन स्टेरन नार रत्र नां वा अप्ता शर्व रत्र नां। छात्रस्य जिनकेल प्रवासन, পাত্র মর্দ্দেও দীপে ব্যবস্থা হয়। দেশী সাবানও তিল-তৈলে প্রস্তুত হর। বুরোপে দীপে ও সাবানে লাগে। পাদা-মের তৈলে ও মতে ভিলতৈল মিলাইরা থাকে। ভারতে বে नकन ब्रह्मानीय 'अनिख अदबन' आवशानी इस, छाराय অধিকাংশ বাঁটী ভিলের ভৈল মাজ। চীনের বাদাম, ভিল **७ क्यम्**न वक्ब निविद्या वक्शकात रेडन इत, हेरारक গোরাতেল বলে। যাবভীর ফুলেল ভৈল তিলের তৈলে প্রস্তুত হর। তিনঋণ ফুল ও তিন্তুণ তৈলে ভিজাইয়া বোতলে প্রিরা ছিপি আঁটিরা রৌজে দিলে অতি স্থন্দর ফুলেল-ভৈল হর, অথবা এক তার কুল সাজাইয়া, তাহার উপর তিল দিরা বিত্তপ কুল সাজাইয়া আবার তিল দিয়া ফুল চাপা দিয়া তাহার উপর রাখিতে হর। এইরপে তিলে ফুলের গন্ধ সংক্রমিত হর, তখন সেই তিল ভালিয়া তৈল গ্রহণ করিলে সে তৈল অতি অংগরমুক্ত হয়। ব্যবসায়ীরা আতরে তিল-তৈক মিশাইরা আতরের দরের কমি বেশী করিয়া থাকে।

তিলতৈলের ডেবজ গুণ। সকল প্রকার ঘারে ইহা
বার্ষ্ত হইরা থাকে। স্ইট অয়েল বা অলিভ অর্রল
যেরপে বাবহারে লাগে, ইহাও সেইরপে বাবহৃত ইইরা থাকে।
মেহরোগে তিলতৈল মহা উপকারী। সর্বাচ্ছে একপ্রকার
লোম বা কন্টকবং রোগ জন্মে। ডাক্ডারেরা সরা দিরা এগুলি
ভূলিরা ফেলিতে পরামর্শ দেন। কিন্তু তিলতৈল মর্দনে উহা
নরম ইইরা ঝরিরা যার এবং প্রত্যেক কন্টকের গোড়া একটী
করিরা অলপোরা ক্সুড়ি হইরা ফাটিরা যার ও ঐ তৈল
মর্দ্দনেই সারিরা যারণ তিলের পোসা ভূলিরা তৈল বাহির
করিলে তৈল অভি উৎক্ট হর। ক্ষণ্ডিল প্রত্যেক ধ্র্মকার্য্যে
ব্যবহৃত হয়। তৈল প্রভিত্যহ করিলে শাভিত্য জন্ম।

"ব্ৰাহ্মণঃ প্ৰতিগৃহীয়াও বৃত্তাৰ্থং সাধুতত্তথা।

হ্মব্যখনপি মাতলভিললোহাংক বৰ্জনেও ॥" (ব্ৰহ্মপু॰)
ভিলদানেও অলেববিধ পুণ্য সঞ্চায় হয়।

বে বান্ধণ প্রাতঃকালে উট্টিরা তিলদান করেন, তিনি নকল প্রকার পাতক হইতে বিস্কু হল। প্রেতোদেশে তিলদান করিতে হয়। বাহারী প্রেতোদেশে হেমগর্ভ তিলদান করে, তাহাদিগের পিতৃগণ ভিল্মংখ্যক বর্ব বর্গকোকে বাস করে। হেনগর্ক-ক্রিলন্দ আভ একোনিট আছের দিন করিতে হয়।

অশোচান্ত বিতীর বিন ও আছিপ্রাছের দিন প্রথমে ইনিদান করিয়া পরে অঞ্চ দানাধি করিতে হয়। এই তিলদান বে প্রাহ্মণ গ্রহণ করে, তিনি পশ্চিত হন, এই জন্ত এই দান মহাব্রাহ্মণ (অগ্রদানী) সকল গ্রহণ করিয়া থাকে। প্রাহ্ম দেখ।

ভিলবারা পিছ্দিগকে তর্পন করিতে হর, কিছ সকল দিন ভিলতপুন নিবিদ্ধ। গলাদি তীর্থে ও প্রেভগক্তেশ (প্রভিণদ্ হইতে মহালরা অমাবক্তা পর্যান্ত) ভিলতপুন করিতে পারা বার। [তর্পন দেখ।]

তিলোৰজী ভিলনায়ী ভিলহোমী ভিলপ্ৰদ:।
তিলভুক্ ভিলবাপী চ ষ্ট্ডিলী নাবসীদতি॥" (ডিবিডৰ্)
ভন্মতিথি দিনে ভিলবারা লান, ভিলভক্ষণ, ভিলহোম,
ভিলপ্রদান, ভিল বপন ও ভিলোবর্তন করিলে চিরার্হ্য এবং "
ভাহার সকল প্রকার বিপদ্ বিনষ্ট হয়।

রাত্রিকালে তিল ভক্ষণ করিতে নাই এবং তিলমিপ্রিত জবাও ভক্ষণ করিতে নিবেধ আছে। সপ্তমী, নবমী, চতুর্দনী, অষ্টমী, অমাবক্সা, পূর্ণিমা ও সংক্রান্তি এই কয় তিথিতে তিলতৈলে মান করিবে না। ২ তিলকালক, দেহছিত তিলাকার চিহ্ন বিশেষ, ইহা তিল নামে খ্যাত।

"দেব শুরু প্রসাদেন জিহ্বাত্রে মে সরস্বতী।

তেনাহং নূপ জানামি ভাত্মত্যান্তিলং যথা ॥" (কালিদাস)

৩ ভিনতুন্য শ্বর প্রমাণ।

"তিলং তিলং তং কৃষা চ চিক্ষিপুর্দিকু সর্বত:।
নগরারিগটিত: সৈটেছইন্তমানা: পদে পদে ॥"(রাজ্জর॰ ৪।৩২৮)
তিলাভ বিকার: অণ্। ১তল, তিল্নির্বাস, তিল্লেছ, তিল্
সদৃশ বস্ত্রজাত স্বেহ।

তিলক (রী) তিলবৎ তিলপুলাইব কারতি কৈ ক। চঁলনাদি বারা ললাটাদি বাদশালে ধারণীর চিহ্ন, কোঁটা। পর্যায় — তুমালপত্তা, চিত্রক, বিশেষক। (অমর)

খাদশ তিলকের বিধি-প্রত্যেক বৈষ্ণব সানাস্তে বিষ্ণুর খাদশ নাম করিয়া খাদশালে তিলক করিবে।
"খাদশালে ললাটাদৌ তিলকং হরিমন্দিরং।
সানাস্তে বৈষ্ণুবঃ কুর্যাৎ প্রত্যেকং রুক্ষনামন্তিঃ ॥" (হরিভক্তিবিং)

ললাটে কেশব, উদরে নারারণ, বক্ক:ছলৈ মাধব, কঠ কূপে গোবিন্দ, দুন্দিণকুন্দিতে বিষ্ণু, বাছতে মধুস্পন, করুরে তিবিক্রম, বামপার্থে বামন, বামবাছতে প্রীধর, করুরে ছবী-কেশ, পৃঠে পদ্মনাভ ও কটাতে দামোদর এই বাদশ স্থানে ইহাদেশ নাম শারণপূর্ত্তক তিলক ধারণ কর্ত্তব্য। (পদাপু উ॰)
ভিলক্ষারণ করিবার সমর ললাটে প্রথম উর্জপুত্র ধারণ
করিবে, পরে ললাটাদিক্রমে ভিলক্ষারণ কর্তব্য।

"छैर्द्रभृशुः ननारहे जू नर्ट्स्वार व्यथमः चुन्छः। ननाहाक्तिकरमरेनव भावनश्च विधीवरणः।" (भवन्यः)

সম্প্রদারাত্বসারে মতকে কিরীটমন্ত ভাস করিয়া সর্বার্থ সিন্ধির নিমিত্ত ধারণ করিবে,।

ি কিরীটমন্ত্র। "ওষ্ ঐকিরীটকের্বহারমকরকুণ্ডল-চক্রশত্মগদাগলুহত্তপীতবিষধর ঐবংক্তান্ধিতবক্ষ:ফ্ল-ঐভূমিসহিতস্থান্দ্রেগাতির্দীপ্তিকরার সহস্রাদিত্যতেশ্বসে নমো নম: ।"
(হরিভক্তিবি ও বি)

ল্লাটানি বাদশ আছে ডিলক হরিমন্দির বলিয়া খ্যাত। বাম বঁকাং, নেত্রাস্ত, পুণ্ড ও ক্ষম, ইহাতে শখ্য চিহ্নিত তিলক করিতে হইবে। এই প্রকার দক্ষিণ নেত্রাস্ত প্রভৃতি ক্ষে চক্রান্ধিত তিলক করিবে।

ললাটে কেশব, কঠে শ্রীমধুত্দন, বামবাছতে আফ্রেনের, সব্যবাহতে দামোদর, নাভিতে নারারণ, হলরে মাধব, দক্ষিণ-পার্ছে গোরিন্দ, বামপার্ছে ত্রিবিক্রম, সব্যক্পমূলে বিষ্ণু, দক্ষিণ কর্ণমূলে মধুত্দন, শিরোমধ্যে হ্রীকেশ ও প্রেটি পল্পনান্দ, হরির এই বাদশ নাম পাঠ করিয়া ভিলক করিতে হইবে। যে বৈষ্ণুব এইরূপ ভিলকধারণ করে, সে প্রভিদিন প্রেম ও ভক্তি প্রাপ্ত হয় ।

বে বৈষ্ণৰ গলদেশে তুলসীকাষ্টমাল্যধারণ ও বাদশাকে পূৰ্ব্বোক্ত তিলক ধারণ করিয়া থাকে এবং ক্ষেণ্ড দৃড্ভক্তি-সম্পন্ন হয়, সেই সকল লোক বারা জগৎ আগু পবিত্র হয়।

মধ্যদেশ ছিত্তমূক উর্কপৃত্যধ্যতিলক হয়িমন্দির বলিরা থাতে। নাসিকামূল হইতে জ্বাশ্রর করিয়া ল্লিরোমধ্যগত পর্যস্ত তিলক করিবে।

উর্কপুগুকের মধ্যদেশে পীত রেখা থাকিলে রামাত্ত তিলক কছে।

"ফ্র্কপুগু ছিলকং শোভনং তন্মনোহরং। তন্মধ্যং পীতরেধঞ্চ শ্রীমন্তামামুক্তং বিদ্যঃ॥" (পরপুং উ)

বাহারা রাবোপাসক, ভাহাদের ভিলক উর্কপ্ত্ক এবং জনবের মধ্যস্থল সবিক্ষযুক্ত বদি হয়, তাহা হইলে হরির " মংখ্যাদি সকল অবভারের উপাসকদিগের ভিলক জানিবে। "

বিজ্ঞাপ উর্দ্ধপুক করিবে এবং ক্ষরিরেরাও ফ্রাবাই করিবে। বৈশ্র ও প্র মণ্ডলাকৃতি তিলক করিবে। বাহারা উর্দ্ধপুত্র মণ্ডদেশে ছিত্রপুঁক না করে, তাহারা বরাধম এবং তাহাদের তুলাটে এই তিলক কুকুরের পাদ সদৃশ। যদি কোন বিজ্ঞাতির মন্তকে এই প্রকার তিলক দেখা, বারে, তাহা তুইলে ক্রক্ষনাম শ্বরণ করিরা ব্রহারা মুখ আছোদন করিবে।

ললাটের দক্ষিণে ত্রন্ধা, বামে মহেশর ও মধ্যে বিফু নিত্য বাদ করেন, এই জন্ত মধ্যদেশ পৃক্ত রাধিবে। বর্জুল, তিথাক্, আছিলে, ত্রন, গার্থ ও তড (বিজ্ত) এই বড্লকণ তিলক নির্থক।

ত্তিপুশুকের প্রমাণ দীর্ঘ হইবে। নাসিকার মূল হইতে বন্ধরদ্ধ পর্যান্ত তিলক করিতে হইবে। শ্রের ইহা একা-দূল, বৈশ্রের ছই অঙ্গুল, ক্ষত্রিরের তিন অঙ্গুল ও ব্রাহ্মণের চারি অঙ্গুল পরিমিত আরত হইবে। নাসিকাকে তিন ভাগ করিলে যে এক ভাগ হয় অধাৎ ক্রহরের মধ্য হইতে অধঃহানই মূল বলিরা পভিতেরা কহিয়া থাকেন।

ব্রহ্মচারী, বাণপ্রান্ত, গৃহস্থ ও যতি ধে উর্কপ্ত ক বিবে, ভাহার নাম হরিমন্দির। বৈষ্ণব, বিপ্রা, ভূপাল, বৈশ্য, শৃত্র ও অস্তাক্ত যে উর্কপ্ত ধারণ করে, ভাহাও হরিমন্দির নামে থাতে। নর বা নারী যদি ক্লফপদে মতি রাখিতে অভিলায খাকে, ভাহা হইলে যত্নপূর্বক তুলনীমালা ও হরিমন্দির (ভিগক) ধারণ করিবে। দণ্ডাকার ছইটা রেখা 'ম্লদেশে কোণক অর্থাৎ কোণমুক্ত এবং মধ্যছিত্রযুক্ত, এইরপ হইলেই ভাহাকে উর্কপ্ত কহা যার +।

অধােম্থে পদ্মকলিকাকার মধানেশ ছিত্রযুক্ত এবং । ছইটা যুগারেথা হইলে ভাষাকে উর্জপুণ্ড ভিলক করে। ভীর্থমৃত্তিকা, বজ্ঞকার্ড, বিৰ, অখবা ও ভুলসীমৃলমৃত্তিকা, গোলাদ মৃত্তিকা, গলামৃত্তিকা, মহানিষ, ভুলসীকাঠমৃত্তিকা, কন্তুরী, কুছুম, ফুন্তু, সিন্দুর, রক্তচন্দন, গোরেচিনা, গর্কাঠ, অল, অগরু, গোমর ও ধাত্তীমূল এই সকল বারা সন্ধানি সকল কার্টো ভিলক, করিতে হইবেণ

 [&]quot;वश्वाकातः विरत्नशः वश्विककः पृत्राकानकः।
प्रशास्त्रिक पश्चाक्षविष्ठः प्रताहतः।
प्रशास्त्रिकनिकाकात्रुः विवक्षपृत्रः।
प्रशास्त्रिक वृद्धपृत्रुः अकोर्डिकः।" (गन्नपूर)

প্রতিরিন সান করিয়া সকল বর্ণের ডিলক করা আবস্তান ।
নিত্য, লৈমিডিক, কাম্য এই জিবিধ কর্ম এবং পৈত্রাহি কর্ম
ভিলক না করিয়া করিলে ভাবা নিকল হয়। সান, সন্ধ্যা, প্রশ্নত্ত, পৈত্র, হোমানিকর্ম, ভিলক এবং মর্ভ ব্যতীভ সকল নিফল হয়। আমান উর্কিপুণ্ড, করিবে, ক্ষজির জিপুণ্ড, করিবে, ক্ষজির বর্ণে এই চারি প্রকার ভিলক করিবে।

"উর্জপুণ্ডং বিলঃ কুর্ব্যাৎ ক্ষরিয়ন্ত ত্রিপুণ্ড্ কং।
কর্মকার বৈশ্রুক বর্তু লং শুদ্রবানিলঃ ।" (ক্ষাক্তিকাই)
উর্জপুণ্ড বৃত্তিকা বারা, ত্রিপুণ্ড ভত্ম বারা এবং ভিলক
চন্দন বারা করিবে। (প্রাক্তেণ) বাহারা ক্ষণ্ডি ও আনাচারী এবং মনে মনে পাপ আচরণ করে, তাহারাও
ত্রিপুণ্ডুক ধারণ করিলে সকল পাতক ইইতে বিমৃক্ত হয়।
উর্জপুণ্ডুধারী যে কেই যে কোন স্থলে মরে এবং বদি চণ্ডালও
হয়, ভাহা ইইলে অর্গলোকে গ্রুমন করে। (প্রজ্পুণ্)

পৈত্রিক কার্য্য অর্থাৎ প্রান্ধ করিতে উদ্ধৃপু , ত্রিপুণ্ডু বা চন্দ্রাকার তিলক করিয়া প্রান্ধকর্তা প্রান্ধ বা পৈত্রিক কার্য্য করিবে না।

"উর্পুভূং ত্রিপুভূং বা চক্রাকারমথাপি বা।
আন্দক্তা ন ক্বরীত বাবং পিগুল্ল নিবঁপেং॥" (বিশ্বপ্র*)
বেদনির্চ বিজ্ঞাণ উর্পুভূ, ধারণ করিবে না।

"উর্পুভূং ত্রিশূল্ঞ বর্তু লং চতুরঅকং।
অর্কচক্রাদিবালিকং বেদনিটো ন ধার্বেং॥
জ্মানা ক্রজাভিত্ত বেদপ্রান্মাপ্রিতঃ।

পুভূান্তরং ত্রমারাপি ল্লাটে নৈব ধার্বেং॥"

(দেবীভাগ)

বেদনির্চ ব্রাহ্মণ উদ্ধপুত্র, ত্রিশ্ল, বর্জুল চত্রপ্র'বা আদ্দিক্রাদি চিহ্ন ধারণু করিবে না। বৈদনিষ্ঠ আহ্মণ যদি আজ্ঞানতাবশতঃ এই সকল চিহ্ন যদি ধারণ করে, তাহা হইলে নিশ্চর পতিত হইবে, তাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। "বেদমার্গৈক্ষিষ্ঠন্ধ মোহে নাপ্যস্থিতো যদি।

পতত্যেৰ ন সন্দেহত্তণী পুঞ্ৰিৱাদপি ॥"

(নিৰ্ণৱনি হত্তৰ)

তিলকদেবা বৈক্ষবদিগের একটা মুখ্য সাধন। ইহার।
ললাটাদি ঘালপালে গোপীচন্দন ও অন্ত বৃত্তিকা ঘারা নানাবিধ তিলক ধারণ করিরা থাকেন। ললাট, কঠ, বাম ও
দক্ষিণ বাছ, জ্বর, নাভি, বাম ও দক্ষিণপার্থ, বাম ও
দক্ষিণকর্ণমূল, শিরোমধ্য এবং পুঠ্বেশ এই ঘাদশাল ।
ইহাদিগের ভিলক অব্যের মধ্যে ঘারকার গোপীচন্দনই

মর্কাশেকা প্রাপত। বার্কটারির মৃতিকা ও তিল্কু ধারণও সর্কোৎকট ।

পরম ভজিপুর্মক বাঁকটাত্রিস্থ ছনের মুদ্রিকা গ্রহণ করির।
উর্ক্পুন্ত ভিলক ধারণ করিকে। তাহা হইলে হরিরী-সমান
লোক লাভ হইবে। ঐবৈক্রেরা-নারামূল অবধি কেল পর্যান্ত
ছইটা উর্ক্রেথা চিহ্নিত করিরা দের, এবং ঐ ছই রেথার
নারামূলস্ট উভর প্রান্ত অপর একটা ক্রমধ্য গত রেথা বারা
সংযুক্ত করিরা দের এবং ঐ ছই উর্ক্রেণ্ড র মধ্যহলে গীত
অথবা রক্তবর্ণ অপর একটা উর্ক্রেণা অভিত করিয়া থাকেন।
কলি দিলা রক্তবর্ণ রেথা করে। হরিমা ও চুর্ণের কলি প্রন্তত হয়।

ভঙির ইহারা হ্বদরে ও বাহর্গলে গোপীচন্দন স্থিকা দিরা শৃষ্ণ, চক্রে, গলা ও পল্লের প্রতিরূপ চিক্তিত করিরা আইকেন।

শঝাদির মধ্যছলে এক একটা রক্তবর্ক রেখা সন্ধীঘর্রপা। কাশীখণ্ডেই এই সকল বৈঞ্চবাচার বিষয় এইরূপ
লিখিত আছে—ব্রাহ্মণ, ক্ষান্তির, বৈশু ও শ্রা বা অপর কেই ।
শরীরে শঝা, চক্র প্রভৃতি চিহু অন্বিত করেন, এবং অলে
গোপীচন্দন লিপ্ত করেন, তাহা হইলে তাহাকে দেখিলেই
পাপ বিনত্ত হয়।

অনেকের নিকট এই সকল তিলকের একথানি ছার্চমর অথবা ধাতুমর মূলা অর্থাৎ ছাপা থাকে। তাহারা তাহাই আল বিশেষে অভিত করিয়া শরীর পবিত্র করেন। কেহ বা ঐ ধাতুমর মূলা উত্তপ্ত করিয়া শরীরে অভিত করেন। কিন্ত ইছা শাল্রবিক্ষা। বৃহয়ারদীরপুরাণে লিখিত আছে—যদি কোন নার শন্মাদি চিক্ত উত্তপ্ত করিয়া শরীরে ধারণ স্থারে, তাহা হইলে সে সকল পাতক ভোগ করিয়া শত কোট জন্ম চন্ডালযোলি প্রাপ্ত হর এবং নরক ভোগ করে। এরপ লোকের সহিত আলাপ করিলেও নরুক ভোগ হর ।

শ্রীসম্প্রদারদিথের স্থার রামানন্দী বা রামাতদিগেরও তিলক সেবা তুলাক্ষণ। কিন্ত ইহারা আপন আপন ক্ষতিক্রমে উর্জ-পুত্তের অন্তর্কার্ডী রেধার ক্ষপ ও পরিমাণের ক্ষিঞ্চিৎ বিশেষ

मक्कांबा (बोबबर बाफ़ि बाबिक्क्क्फूर्यन 🗗 (चुरवांत्रवीवर्यः)

খো মৃতিকা বারবভীসমূত্যাং করে স্বাবার ক্লাট্পটে।
 করেতি নিভাং ঘণ চোর্ছপূত্ং ক্লিরাকলং কোট্ডপং সব। ভবেং।"
 (হরিভভিত্তিং ধুতু পাক্ষড় বচন) •

আবার পররা তক্তা বাতটাটো হবে মুবং ।

কারবেদুর্বাপুর্বি হরিসালোকাসিবরে ।" (হরিতকিবিং ২৬ আঃ)

† "তবাহি তথান্থাবিলিকচিক্তসূর্বরঃ।

স স্কালাতকাভোগী চাঙালো ক্রাকোটিভিঃ।

তং বিষং তথান্থাবিলিকাভিততপুং হর।

ক্ষিত্র বাকেন এবং প্রায়ই রামান্ত্রীদিসের পালেকা কিছু ত্রস্থাকরিয়া অভিত করেন।

দাপুণছী সম্প্রদান ভিলকদেশা ও নালা ধারণ করে না।
মূপর্কুদাসী সম্প্রদান কলাটে এক কুত্রবর্ণ রেথা অভিত করেন।
রামসনেকী সম্প্রদার কলাটে এক খেতবর্ণ দীর্যপৃষ্ণ, ধারণ
করিরা থাকে।

সনকাদি সম্প্রদায় অর্থাৎ নিমাতেরা ললাটে সোণী-চন্দদের ছইটা উর্জ এবং ভাহার স্থাস্থলে এক ছম্বর্থ কর্তুলাকার তিলক করিয়া থাকেন।

বিট্টনভক্ত সম্প্রদার বৈক্বনিসের ভার ললাটে হুইটা । শেতবর্ণ উর্ক্তরেখা চিহ্নিত করিয়া খাকেন।

ক্ষভাচারী সম্প্রধার গলাটে ছই উর্কুণ্ড করিয়া নাসা-মৃণে অর্কাক্তি করিয়া মিলাইয়া দেন, ঐ ছই পুণ্ডের মধ্যস্থলে একটা রক্তবর্গ বর্তু গাঞ্চার ভিলক করিয়া থাকেন। এ সম্প্রদারের ভক্তেরা প্রীবৈক্ষবদিপের ভার বাহ ও বক্ষঃস্থলে শুন্ম, চক্র, গদা ও পল্লের প্রতিক্রণ ক্ষতিত করেম এবং ক্ষেহ কেহ ভামবিলী নামক কৃষ্ণমৃত্তিকা অথবা কৃষ্ণবর্ণ অভ্যন্ত্রপ ধাতু ধারা উল্লিখিত বর্তু গাকার ভিলক করিয়া থাকেন।

' চরণদাসী---এই সম্প্রদায় স্থিত লোকেরা ললাটে চন্দন বা গোপীচন্দনের একটা দীর্ঘ রেখা করিলা থাকেন। উদাসীন শৈব কি বৈক্ষব, তিলক দেখিলেই তাছা অক্লেশে জানা বার।

বৈরাপীরা নাদাম্ল হইতে কেল পর্যান্ত উর্জরেখা করেন।
আর লৈবেরা ললাটের বামপার্শ হইতে দক্ষিণপার্শ পর্যান্ত
বিভৃতি দিরা ডিমটী রেখা করিরা থাকেন। • প্রথমাকে
ভিলককে উর্জপুত্ ও লেবোক্তকে ত্রিপুত্ করে। বৈকবেরা
উর্জপুত্ ও লৈবেরা ত্রিপুত্ করিরা থাকে। তিলকের
ভেদে উৎকলে ক্মেন অভিবড়ী ও বিন্দুধারী জভ্তি সম্প্রদারকে জানা যার, সেইরুপ হিন্দুহানেও ছরিবাানী, রামপ্রসাদী, বড্গল্ প্রভৃতিকেও জনারানে জানিতে পারা বার।

নিমাৎ সম্প্রদারী হরিব্যাসীরা অস্ত অস্ত সকল অংশেই রামণনলীদের মতন তিলক সেবা করে, বিশেব এই বে—ললাটত্ব উর্জপুত্রের মধ্যত্বল রক্তবর্ণ শ্রী (উর্জপুত্রের মধ্যত্বল রক্তবর্ণ শ্রী (উর্জপুত্রের মধ্যত্বল রক্তবর্ণ শ্রী (উর্জপুত্রের মধ্যত্বল রামাননীরা ক্রমণুবল লারা তল্পুত্র বিন্দু করিরা থাকে, শ্রীমবিন্দীর অসংহান হইলে গোপীচন্দন হারা তল্পুত্রবর্ণ বিন্দু করিরা থাকে। রামাননীরা ক্রমণুগলের নিরন্ধনে ও নাসিকার উর্জভাগে গোপীচন্দন লেগন করিয়া বে অর্থ গোলারতি বা তলহুরূপ এক প্রকার আইতি প্রস্তুত করে, ভাহাকে সিংহাসন করে। হরিবাসনীরা ক্রমণ নিশ্ধ সিংহাসন

ত্রা করিয়া অর্ড গোলাক্তি বেধায়াত করিয়া থাকে। এ আছতি বা বেখাৰ উত্তৰ আৰু দলাট্ছ উৰ্ছাণ্ডের নির-कारन यह क्रिया रमध्या हत्। कायुक्तवर्यत्र मिक्निन्यरश्चर्यः শতর্গত সুধীপট্রনে হরিব্যাসীরিপের কাদি শবস্থান আছে। ब्रायां ने ने ने विक्रमां के बार के ब করিরা উহার কিঞিৎ উর্ভে ললাটলেলের স্বরান্তলে খেডবর্ণ विन् करतः। त्रृहे विन्ही इतिदानीत्व व्यवका बृहखतः। हेशारमञ अहे फिनकरक रवनेकिनक करह । हेशारमञ्जयका अडेक्न व्यवान व्यविष्ठ—मीडाएनवी पहरण क्राम्ब्यमारमव কপালে এই ভিলক অভিড করিয়া দেন। বভুগল নামক त्रामाध्यक्षात्री देवकदवन्ना उक अर्थ विम्नू ना कतिका नामा-নশীদের মত উৰ্নপুত্তের মধ্যদেশে রক্তবর্ণ শ্রী করে। কিন্ত ভারাবের ভার ত্রর নিরন্থলে নাসিকার উর্জভাগে तिरहानन कदत्र- मा। वो नच्छानात्री नकत्री नामक देवकद्वता রামাননীদের মত সিংহাসন করে। কিন্ত ভাহাদের মত ব্ৰক্তবৰ্ণ শ্ৰী না করিয়া খেতবৰ্ণ শ্ৰী করে।

চত্ত্ জীনিগের তিলক রামানদ্দীনিগের মতন, কেবল ললাটে প্রী নাই। প্রী খান শৃক্ত থাকে। বৈক্ষবধর্মে তিলকের বড় মহিমা। বাফালা দেশে ও ভিন্ন ভিন্ন বৈক্ষব দলে ভিন্ন ভিন্ন প্রকার তিলক সেবা দেখিতে পাওয়া বায়। নিত্যানন্দ প্রভুর পরিবারে বেগুগুরাক্সভি, অবৈত প্রভুর পরিবারে বটগুরাক্সভি, আচার্ব্য প্রভুর পরিবারে তিল-পুলাক্সভি, গোরীদাস পশুতের পরিবারে রস্কলিকাক্সভি ইত্যাদি নানা বৈক্ষবদলে নানা প্রকার তিলক প্রচলিত আছে। এই সকল তিলক নাসিকাপ্টে করা হইরা থাকে। তদভিরিক্ত ঐ সকল বৈক্ষব পরিবারের ললাটদেশেও নানা-রূপ উর্জুপ্ত দেখা বায়।

গোপীচন্দদে খেতবৰ্ণ শ্রামবিশী নামক মৃত্তিকাতে কৃষ্ণবৰ্ণ এবং হ্রিজা, সোহাগা ও নেব্র মদ মিশ্রিত করিয়া পীত
ও রক্তবর্ণ তিলক করিছে হয়। এই শেঘোক্ত তিলক
উপাদানে সোহাগার ভাগ অধিক হইলে রক্তবর্ণ হয়।
নতুবা একরপ শীতবর্ণ হইয়া থাকে।

১ সৌবর্চন লনণ, চনিত কথা সচল লবণ। ২ ক্রফবর্ণ , সৌবর্চন লবণ। ৩ ক্লোম, কৌনজা, ফুলঘরা। (পুং) ৪ লোএবৃক্ষ, শোধগাছ। ৫ মক্রবক কুক্ষ, গমকরা মূল পাছ। ৬ রোগভেদ, ভিলকালক রোগ। ৭ অথভেদ। ৮ অথববৃক্ষ বিশেষ। ৯ পুলাবৃক্ষ বিশেষ পর্বায় ৬—বিশেষক, মুধ্যখনক,

* ইহা পুরাণ জাতীর বৃক্ষা, কাওজের করিরা রোপণ করিলে পুনরার নথীয় হয়। যসকলালে পুন্ধারি যারা ফ্লর বী ধারণ করে টু

नुसु, नुसुक, दिश्रभूनी, दिश्रमंद, वर्षमद् पृष्ठवीव, छन्नी-क्षांक्रकान, वामक्ष्यमन, अवसर, जानविक्रवर्गमःक, प्रीत्र, ি ধ্রেচঞ্চ, কুরুক, জীবান্, প্রব, ছফ্রপুপক। (রাজনিং ভবিজ্ঞা) •ইহার তাৰ পাকে কটু, বাভ, পিত ও ক্ষমাৰ্ণক, ৰন, शृष्टि ७ (भवकातक, श्रवा ७ गयु) हेशात परकत ७१ व्यक्ति--উঞ্চ, পুংস্ক, বস্তলোষ, কৃষি, শোক, ত্রণ ও রক্তলোষদাশক। (রাজনি৽) ১০ জবর্জবিশেব। "পঞ্চবিংশতিবৰ্ণাচিবু স্টিলকো ধ্ৰুবকৈণ ভবেৎ। हेंडे-इक्-रन्ति छात्न तर्त्र वीत्त्रश्रृष्ठिन वा ॥"(मनीस मध्याः) ১১ बुखाशात्र । (खि) ১२ ८ थर्छ ।

"শ্ৰিমং ডিলোকী ডিলক: স এব" (মাব ৩।৬০)। তিলকক (পুং) কাশ্বীরের একজন রাজ। (রাজভরণ ৮।৪৬৯) জিলকট (রী) ভিলম্ভ রবা ভিল-কটচ্ (অলাবৃদ্ধিলোমা ভঙ্গাভ্যো রজন্মগণগোনং। পা এ।২।২৯ ইডি প্রভ বার্ত্তি-কোক্ত্যা কটচ্।) ভিলচুৰ্ণ, ভিলের ঋঁড়া। (শকার্বকরতক) তিলকরাজ (গুং) কাশীরের একজন রাজা।

(রাজভরু ৭১৩১৯)

তিলকল্ক (পুং) ভিনন্ত কৰঃ ৬৩৭। ভিনচ্ণ। তিলকক্ষ্ম (बि) ভিনক্ষাং আয়তে ভিনক্ম-জন-ড। ভিন চুৰ্ণ হইতে জাত।

তিলকসিংছ (পুং) কাশীরের একজন রাজা। (রাজভরণ ৮।৪০২) তিলক কামোদ, খাড়ৰ রাগিণীবিশেষ। কামোদ ও ঘিচিত্রা বা কানাড়াকামোদ ও থটুযোগে উৎপন্ন। (সঙ্গীতর°)

তিল্লকা (ত্ৰী) ভিলম্ভিল বীলকোষ ইৰ কাৰ্ছভি ভিল-কৈ-ক টাপ্। ১ হারভেদ। ২ অবেদ পদ্ধাদি ধারা ভিলপুস্পাকার চিহ্ন। ৩ ছলোবিশেব, এই ছলের প্রত্যেক পালে ৬টা क्तिया चक्त पारक। এই ছन्म्त्र गक्त।

"সগণ বিভয়ং ভবজীহ বলা। त्रमवर्गभा जिनाकि जमा ॥" (अकार्यिक वास्त्रीशृक्त नक्त्र) উদাহরণ—"বনমালিকথা সকলালি বৃধা।

প্ৰস্তেতি কৃথং মম দৃষ্টিপৰং ॥" জিলকালক (পুং)ভিন ইব কালক: কৃষ্ণবৰ্ণ:। ১ুদেহস্থিত ভিনু গাত্রভিন। পর্যায়--ভিনক, কালক, পিপ্লু, বড়ুন। (৻হম•)

ইহার লক্ণ---"ক্লফাণি ভিলমাজানি নীক্লানি সমানি চ। বাতপিত্তকলেক্ষেকাৎ ভান্ বিদ্যাৎ ভিনকানকান্ 🗗 (স্ফ্রাড)

बाहान भित्रवान खिर्मित्र घठ अवर पर्न क्रम ७ द्वर्षि खांश सत्र मा, अवः कडेशात्रक मरह, काशास्त्र किनकामक करह। वाछ, निष्ठ ७ करकत्र चौथिका हहेरन धहे जिनकानक इत्र। २ त्त्रानविरमव। रेहाक नक्त क्ष्म व्यवन विविध वर्गिवाक, **प्रक व्यत्नन व्यन्तन क्**त्रिटन प्रक्रिक्त नत्र्नत व्यत्म नाकिता উঠে, এবং মাংস ४७ जरून कुक्र वर्ष इरेश पिता बाहा। अहे वाधितक जिनकानक करह। नित्रिशृष्ठ वहेरछहे वहे बाधित **डे**९१डि इहेबा बारक। (क्षूक्षंड नि॰ ১८ क॰)

क्क, अब वर्षना निविध्वर्ग निविश्नुक व्यक्तानु (क्फू नमल শিশ্ন সম্বর পাকিরা উঠে এবং উহার স্বাংস কাল হলৈ৷ গলিরা **१८५ । এইরণ সারিপাভিক খুকরোপকে ভিনকালক করে।** (**郷**村空。)

ত তিলযুক্ত ব্যক্তি। (অমরটীকা) ৪ ভিলক-অলক, বাহার অনকে ভিনক আছে। जिनका खात्र (प्र) डिनक्ड पालतः ५७९। ननां देन।. জিলকিট্র (রী) ভিলম্ভ কিটাং'বলং ৬ডং। ভিলমন, ভিলের देशन। हिन्हीरक श्रीना; भर्ताह भिग्राक, किनश्रीन। इंहात **चन रमधन, ऋक, विहेखि, मृष्टिम्यन। (छारवा॰)** তিল্কিড (মি) ভিনকোহত্ত সঞ্চাতঃ ভারকাদিদাদিভচ্.। নঞ্চাততিলক, অহিত।

"নৌজ্ঞানৃত্ববিভিজ্ঞিলকিডং নৈষ্ট্রের্ন কিং মঞ্জং।" (**রাজ**ভর° ২।৪•)

जिम्किन (बि) जिनकम्खाच जिनक-हेनि। जिनक्यूक, ভিলক্ষারী, ভিলক্ষারণ করিয়া সকল কর্ম করিছে হুয়। ব্রিরাং ভীষ্। "মোনৌ চঞ্লচুলিনী তিল্ফিনী ভালে সুথে हात्रिनौ ।" • (८गाश्रीमाधशूरतत मिनानिशि)

जिम्दिक्षत्रजीर्थ (जी) जिन्दक्षत्र नाम जीवर । निवन्ता-ণোক্ত ভীৰ্থবিশেষ।

তিলখলি (বী) তিলন্ত থলি: ৬তৎ। তিলের থৈল। जिल्ला वकी खाहीन बननम । इन्तर्वाण क्माविकायण ध्रे जनगरमञ्ज উল्लंब चारह। बिक्निक गरेसन अश्रयःन विनन्न देवाथ रूप । এখন তৈলক नार्म थार्छ ।[टिस्नक दमथ ।] ভিলচিত্রপত্তক (পুং) ভিলচিত্রাণি ভিলবং বিচিত্রাণি পত্রাণি বঁক্ত বছবী, কপ্। তৈলকন্দ। (রাজনিং)

ভিলচুর্ণ (क्रो) ভিলন্য চুর্ণ ৬৫९। চুর্ণীকৃত ভিল, ভিলের। ভঁড়া, ভিলকুটা। ' পর্বাায়--ভিলক্ষ, পন্তল, পিটক, ইছার গুণ মধুর, কচ্য, পিন্ত, রক্ত, বল ও পুটিনায়ক। (রাজনি॰) তিল্জপা, উত্তর বেহারে প্রবাহিত একটা নদী। নৈপালের ভরাই হইতে উৎপদ হইরা ভাগলপুর জেলার মধ্য দিরা

পুল হ্রাকৃতি। হিন্দুগ্রীর প্রীলেগ্রকরা সুল ক্পালের শেতির

তিলভ্রেমর প্রানের নিকট দক্ষিণপূর্বস্থে বাঁকিরা স্কেরের ফড়ক্লিরা পরগণার প্রবেশ করিরাছে, আবার বলহর নামক ছানে ভাগণপূর কেলার প্রবেশ করিরা ঠিক পূর্বস্থে গিরা সৌর্বিভী গ্রামের নিকট কুনী নদীতে মিলিড হইরাছে। বার মানেই এই নদীতে নৌকা যাতারাত করে। ইহা হইতে কতক্তালি শাখা নদী ও থাল বাহির হইরাছে।

তিলত পুলক (রী) তিনত তথুন ইব কারতি-কৈ-ক। '১
নালিকন। (পুং) তিনত তথুনঃ ৬তং। ২ তিনের শত্ত,
নিক্তব জুন, মালাতিদ। ১৩ তিনমিশ্রিত তথুন।

তিলভেঞা (ত্রী) ভিল ইব তেম্বাতি চুরাদি তিব্দ সচ্ টাপ্।' লতাভেদ। "কফলে ভিলতেমাহবা দন্তীযজ্জিকচিত্রকাঃ॥"

ি ক্ষেত চিকি আ

(ক্ষেত চিকি আ

)

তিলতৈল

(ক্লী) ডিলক্ত মেহা ডিল-তৈলচ্ (মেহে ডৈলচ্ ।

পা হাহাহ

ইতি স্বক্ত বাৰ্তিকোক্তা ডৈলচ্ ।) ডিলম্বেই,

ডিলের ডৈল । স্কল্ প্রকার তৈল হুইডে ডিলটেডল প্রশক্ত ।

তিলতৈল আধ্যের, উষ্ণ, তীক্ষ, মধুর, পৃষ্টিকর, ভৃত্তিকর, গ্রাম্য ধর্মের উত্তেলক, হৃত্ম, বিশদ, গুরু, সারক, বিকাশী, তেজকর, ককের প্রসরতাসম্পাদক, মেধা, শরীরের কোমনতা ও মাংসের দৃঢ়তাকারী, বর্ণকর, বলকর, দৃষ্টিরাহিত্যসাধক, ম্বরোধক, লেখনকর, ভিক্ক, পশ্চাৎ ক্রবার, পাচক, বাতলেয়ানাশক, কৃমিয়, যোনিশৃল, শিরঃশৃল ও কর্ণশ্লের শান্তিকর, গর্জাশরের শোবণকর, ছিল্ল, ভিল্ল, উৎপিই, বিদ্ধ, চ্যুত্ত, মথিত, ক্ষত্ত, ভগ্য, ফ্টিড, কারদগ্ধ, অগ্নিদগ্ধ, বিলিই, দারিত, অভিহত, ছর্ভগ্য, মৃগব্যালাদিনই এই সকল হলে এবং পরিষ্থানন, কর্মন ও অবগাহনে তিলভৈত্বই প্রশন্ত । (স্ক্রক্ত) তিলাদেশ্বর তীর্থ (পুরু) ভিলাদেশ্বর ইতি নালা প্রাদিদ্ধ তীর্থ। রেবানদীর তীরবর্ত্তী তীর্থ বিশেষ, ইহার নামান্তর ভিলাদেশ্বর তীর্থ। (রেবানাহান্ম্য)

जिल्लाम्नी (जी) जिल्लाकनामिनियमपुरु बामनी। बामनीएकर, माध्यीम, कठीठ हरेल अवनानकव्यक्क त्य कृष्णवामनी,
काहात्र नाम जिल्लामनी, अहे जिल बामनीत्व कान, जिल्लामन,
जिल्लाम, जिल्लामनी, जिल्लामन के जिल्लाकनीति क्षान,
जिल्लाम, जिल्लामनीति जिल्लामनीति कामनीति कामनीति कामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति कामनीति जिल्लामनीति जिल्लामनिति जिल्लामनित

खनवान् वाष्ट्रस्टवत्र भूषा वाशं कतिरव । अहे संभ वहें जिनवजी नवश्ल चित्रका गत्र मिन व वास्त्री जोहारक जिन्न शास्त्री करह कवर है होत्र नाम वहें जिना व वताहवास्त्री । † है हार्छ वहें जिनाहत्रश कतिरण मक्त भाग है हे छ पूर्क हम । विष क्षत्रवादक वहें जिनो है है छ भागा यात्र, छाहा कहें ल चात्र कान भाग बारक ना कवर क्षिण होचात्र वश्नत चर्गरणारक वांग हत्र । [वास्त्री ७ वछ स्मर्थ ।

ভিক্তস্ত্রদ (জি) তিলং তুলভি-তুল-থশ্ মৃম্। তৈলিক, ভিলপীড়ক।
ভিল্পধেন্যু (জী) ভিলনির্মিতা ধেছ, মধ্যলোগ কর্মধা। বিধানপূর্বক ভিলনির্মিত ধেছ। পদ্মগ্রাণে : লিখিত আছে—
বোড়শ আড়ক পরিমিতি ভিল বারা ধেছ করিবে। চারি
আড়ক পরিমিত ভিল বারা বংস করিবে। ইক্ষণ্ড বারা
পাদ, পুশুমন্ত্র দুঞ্জ, গ্রমন্ত্রী নাসিকা, গুড়মন্ত্রী জিহ্বা করিতে

🍍 মাখাৰে সমতীতায়াং প্ৰবংশৰ তু সংবুতা। दाएनी या छरवर कुका (श्राष्ट्रा मा जिनदापनी । किटेनच निः किटेनर्र्दायः देनर्रमाः किनरमापनः। मीनक डिमरेडलम **डथा (मृ**र डिलामकः। ভিলাক দেয়া বিগ্ৰেভাঃ ফলং হোমোপৰাসভঃ। **७: नत्या क्र**नराज धाषा वाक्रायवात्र देव वरस्य । সকুল: বর্মাপ্রোভি বট্ ভিল্ডারণীত্রতী ।" (জপ্লিপু• ১৮৮ জ•) ः "এकाषभारः गिष्ठ शक्क स्मानवास्मा बिष्ठित्वदः । ৰাৰণ্যাং বট্ভিলাচারং কৃষা পাপাৎ অমূচ্যতে । তিলখারী ভিলোবতী ভিলহোমী ভিলোবকী। **ভিলক্ত पांडा (काक्षा 5 वहें जिलो मान्त्रीपिक 8** मकुख् बर्टे (जिल्ली कृषा मर्त्सभारेभः व्यमु हारख । जिःमदर्ग महत्वानि वर्गामा स्वीकृति ।" (विविष्ठ 🛊) ‡ दिशानः जिनास्थानाचाः अहि मौजः रिकासम 🖡 वृतिः श्राष्ट् विशानः व**९ ७ व्ह**ृप्**ष मद्रा**थिण । बाढ्रमाष्ट्रकटेकर्स्यक्षुष्टि वंश्त्रका बरवर । रेषुष्वत्रकाः भाषा पद्याः भूष्यकाः एकाः । শাসা গৰুময়ী তন্তা কিহুৱা ঋড়ময়ী ভথা। 🏾 विजाः कृषाबित्म (शबू: वाट्याक्रिवीनिका: क्षणा:) मृत्यन बामिलाः कृषा नक्तप्रमबिलाः । সর্বোবধিসমার্কার মন্তপুতারভাগদেব । श्वतः एक स्वात्रकार महाः भावः महात्रमासका । कामः मकानग्रीचाकः जिन्दश्चमुनाव्यिकाः ह भुद्रामि पार रश्यि चक्का कृष्ट्रेपार्ट्य विरम्बन्धः। कृष्ट्रेक्कानः कृत्रकाः किन(पर्ना ! नरनाश्च **क**) अवःविधाः नत्त्रा एका फिलावयुः मृत्याखन । नर्भकावनवाधिक कुक्राक नाज जरमतः ।" (नवापूर प्रदेश)

ন্ইবে। এইয়াণে ভিলনেষ্ঠ প্রস্তুত হয়। ক্লাজিনে এই
ধ্যু হাণিত করিবে। পরে বল্প বারা আজ্যানন করিবে এবং
পঞ্চরত্বসম্বিত করিতে হইবে। পরে বল্প করিবে নানা
ক্রিতে হইবে। এই ডিল্মেড্ বান করিবে নাকল কামনা
সিদ্ধান, ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। (পল্পণ্)

ভিজ্পেণ্ (পুং) ভিদভেব পীৰ্বজ্ঞ। ১ শ্রীবেট, সরণ গাছের আঠা। (রাজনি॰)(ক্লী)২ চক্ষন,,র্জচেক্ষন ∤

> ্রব্রক্তন্দনমাধ্যাতং রক্তাকং ক্রচন্দনং। তিলপণং রক্তনারং উৎপ্রবাদফলং শ্বতং ॥ (ভাবঞ্জ) তিলন্ত পণং ৬৪৫। ও ভিলু বুক্কের পরা।

তিলপর্ণি (রৌ) তিলপর্ণী খার্থে কন্টাপ্চ। রক্তকলন।
তিলপর্ণী (রৌ) ভিলক্তের পর্ণাঞ্চপ্তা: ভীর্। ভিলপর্ণী নদী
আকরো হস্তাস্থা: ইতি অচ্ ভীর্। (অনুরটীকা) ১ রক্তকলবিশের, ভিলানী।

"চিত্রকন্তিলপণী চ'ককপোঁকক্রো লখু:।" (ক্লুক্ত ১।৪৬) ২ নদীবিশেষ। (অমরটাকা ২।৬।১৩২)

জিলপিচ্চট (রী) ভিল্ফ পিটকং প্ৰোদরাদিশাৎ সাধু:। ভিলপিটক, ভিলকুটা।

তিলপিঞ্জ (পং) নিফগন্তিন: তিন-পিঞ্জ। (তিনাদ্নিফলাৎ পিঞ্চপেজো। পা ৪।২।০৬ বার্ত্তিক) নিফল ভিনবৃক্ষ। (অমর) তিলপিফ্টক (ক্লী) তিলভা পিটকং ৬ডং। তিলপিচেট, তিলক্টা, তিলক্টা, তিলক্টা, পর্যায়—পনল। ইহার গুণ বলক্কং, বৃষ্ণ, বাতম, কফপিতক্কং, বৃংহণ, গুক, বিশ্ব, ম্ত্রাধিক্যকারক গু রিবর্ত্তিক।

তিল্পীড় (পুং) তিলং পীড়রতি পীড়-অচ্। তৈলিক, তিলন্তদ, তিলপীড়নকারী।

তিলপুত্প (রী) তিলম্ভ পুতাং ৬৪९। ১ তিলের ধ্বন। ২ ব্যাজনথ বৃক্ষ, বাধনখী।

তিলপুত্পক (বং) ভিলতের পুত্রমন্ত কণ্। বিজীতকবৃক্ষ। তিলন্ত পুত্রকং ৬ডং। ২ তিলের ফুল। ও নানিকা,
ভিলপুত্র্পের সহিত্ত নানিকার উপমা হইয়া থাকে, এইজ্জ
ভিলপুত্র শক্ষে নাসিকা।

"भूजः मृह्या उथा विषः शक्षनः मिथत्रस्था। চामतः त्रविविषक जिनभूमारं मदताकृदः॥"

'ভिनপুष्णः नानिकरि।' (उन्ननाक्त)

তিলপেজ (পং) নিম্পতিক: ডিল:পেল (ভিনারিম্পনাৎ পিরপেকো। পা ৪।২।৩৬ ইতি হুত্রেন্ত বার্তিকোজ্যা (পল) নিম্পতিকার্ক।

্তিলভার (পং) দেশভেদৰ

"ভিনভারা: সভীরাত বধুমখা: ত্ৰনভাঃ।"
(ভারত ভীমু ৯০ খাং) ,
ভিলভাবিনী (বী) ঐলং ভাবরতি ভিল ভূ-ণিনি ব্রিরাং ভীপ্।
তৈলভাবিনী, ভৈদবানক, আজিদুলের গাছ। (রাজনিং)

ভিলভ্ট (ক্লী) ভিবেন ভৃত্তি ৩ডং। ভিনহারা ভর্ত্তিত, গ ভিনহারা ভালা জিনিস শাইতে নাই।

"ভিন্তৃটং ন চাল্লীয়াং ৷" (ভারত)

ভিলভেদ (পং) থাবদ, চলিত কথার পোরদানা।
তিলময় (ঝি) ভিলত বিকার: অনংক্রারাং মরটু । ভিলবিকার ।
ভিলময়ুর (পং জী) ভিলপুশাচিছিতঃ মর্বঃ মধ্যালা। মর্বতেদ, চিত্রগাত্র মর্বপন্দী, ভিলেমর্র। পর্যার—গুরুতিক।
ভিলমিঞ্র (ঝি) ভিলেন মিশ্রংণ্ডতং। ভিলবারা মিশ্রিত।
ভিলরেদ (প্রং) ভিলত রসং ৬৩ং। ভিলবৈদ। (শলার্থকণ)
ভিলব্রতিন্ (ঝি) ভিলত ব্রত্মন্ত্রত ভিল-ব্রত্ইনি। ভিলব্রত্ধারী, বাহারা ভিলব্রত অন্তর্ভান করে।

তিল্পস্ (অব্য) তিলং ডিলং ডৎপরিমিডং করোতীতি মানার্থবাৎ বীঞারাং কারকার্থে শদ্। তিল তিল করিমা অর্থাৎ ধীরে ধীরে।

তিলপত্ত অং চক্রে সাধ্যক্ষণভাকিনম্।" (হরিব' ১৮৬ অং)
তিলিপ্রাল (পং) তিলনির্মিত: শৈল: মধ্যলো কর্মধা।
দানের নিমিত্ত তিল করিত শৈল, দানের ক্ষয় ১০টা
পর্কত করিত ছইরাছে, এই তিলপৈল ভাহার মধ্যে
একটা। তিলশৈল দিবিধ, প্রথম পর্কতের তিলময় প্রধান
মেক, এদিতীর ধান্ত শৈলের পশ্চাৎ করিত তিলময় বিক্ স্থানির।
এই শৈলদানের বিধান এইরূপ লিধিত আছে—

অন্ন; বিষ্ব, ব্যতীপাত, দিনক্ষ, শুক্তৃতীয়া, অমাৰ্ভা, বিবাহ, উৎসব, যজ্ঞ, ধাদশী, পুণাদ্ধিন প্রভৃতিতে এই শৈল । দান করিতে হয়। যথাশাস্ত্র এই শৈল দান করিবে মহয় ফ্লাভন বিষ্ণুলোকে গমন করে।

দশজোণ পরিমিত তিল্বারা বে শৈল করিত হয়, তাহা উত্তম, পাঁচজোণ তিল্বারা বাহা করিত হর তাহা মধ্যম, তিন জোণহারা বাহা হর তাহা সুধ্ম।

এইরপে বথাশক্তি ১০,৫ বা ৩ জোণবারা প্রথমে শৈশ প্রস্তুত করিতে ১ইবে, পরে এই মন্ত্রার আক্ষন্ত্রণ করিতে হইবে। মন্ত্র—

"যন্ত্ৰান্ মধুৰণে বিকোনেছিছেৰদসমূত্ৰী:।
জিলা: কুশাশ্চ মাৰাশ্চ ভন্নাজ্জলো ভবজিত্ব।
ছবো কব্যে চ মনাজ ভিলা এবাভিনক্ষণম্।'
ভবাহ্ৰৱ শৈলেক ভিলাচল নমোহস্ত তে॥"

এই মত্তে আমত্রণ করিলা ত্রাক্রণকে লাল করিবে। ইংগ লাল ,করিলে বিস্কুলোক লাভ হর, আর পুনর্বায় হর মা। ভিলবিক ভাগিরি করিতে হইলে 🍎 ভিল পর্বতের মধ্যে অনেক্ ত্রগজি পুলা, সৌবর্গ, লিল্লল এবং হিরপ্তর হংসমুক্ত করিলা দিতে হর, পুনে পুনর্বাক্তরণে বথাবিধি দলে করিতে হইবে।, (মৎতপুণ ৮১।৮২ অং)

তিলাস্থেছ (পাং) ভিনন্ধ গৈছা ৬ডং। ভিনতেন। তিলাহার, ১ উপা আলেশে শাহমহানপ্র জেলার একটা তহলীল।

২ উক্ত তহদীলের অন্তর্গত একটি সহর ও প্রধান সদর।

অক্ষাণ ২৭° ৩৭´৫০´´ উঃ, জাবিং ৭৯° ৪৬´৪১´´ পুঃ। শাহ
অহানপুল নগরের ৮ ঠেনাল পশ্চিমে অবস্থিত। এথানে

রেলটেসন আছে। এক সুষর এই নগরের চারিদিকে

ইটকের প্রাকার হারা বেটিত ছিল, এখন তাহার ভরাবশেষ

পড়িরা আছে। সিপাহীবিজোহের সমর এখানকার সম্লাস্ত

মুসলমানগণ বিজোহী হইলাছিল, সেইলক্ত ভারাদের সমুদর

সম্পতি বাজেরাপ্ত হয়। এখন ধনী মুদলমান অভি বিরল।

গ্রেখানে প্রডের ব্যবসা প্রধান। লোকসংখ্যা ১৭২৬৫, ভরুখ্যে

৮৮২৬ ছিল্প ও ৮৪১৩ মুসলমান।

জিলা (দেশৰ) ১ একপ্ৰকার মাছ । (Cyprinus Tila) ২ চিন্দিত, ভিলযুক্ত।

তিলাঞ্চিতদল (পুং) ভিলবং অভিতং দলং যত বছরী। তৈলকন্দ। (রাজনিং)

ভিলার্দ্ধ (क्री) ভিলভ অর্জং ৬তং। অত্যর পরিমিন্স, তিলের

অর্জ, অর্থাৎ অতি অ্বর, চলিত কথার এইরূপ ব্যবস্তুত হর,

বগা—'আমার ভিলার্জ্যও সময় নাই।'

তিলান্ন (রী) তিদমিশ্রিকং অনং মধ্যলোগ কর্মধা। ক্লমর, তিলমিশ্রিত অন, থিচুড়ী।

তিলাপত্যা (ত্রী) ভিনন্তের কুদ্র: অপভা: বীষ্ণৰতা: বছরী। কুঞ্চনীরক, কেনে দ্বীরা।

তিলাম্বু (রী) তিলমিভিতং অবু মধ্যনো কর্মধা। তিলোদুক, তিলমিভিত জল।

তিলি (দেশৰ) ভৈগৰীৰি ছাভিবিশেষ।

[তেদী ও তৈদিক **গেখ**।]

'তিলিৎস ('সুং') গোনস সর্প, বোড়া সাপ। তিলিয়া (দেশৰ) একপ্রকায় গাছ।

ভিলিয়াগড়ী, সাঁওভাল পরগণার অন্তর্গত একটা পরগণা ও এই পরগণার মধ্যে অনামধ্যাত একটা গিরিপথ। তিনিয়া-গড়ী গিরিপথের উত্তরভাগে রাজমহল পাহাত ও দক্ষিণভাগে

নলা। পূৰ্বকাৰে শক্তবিধেন আক্রমণ হইতৈ বৌদ্বাল্য নলা করিবার লক এইছাৰ ব্যবহৃত হইত। তিলিয়াল্ড (বেশল) একপ্রকার বাছ। তিলিয়ালা্ড (বেশল) অনার্ বিশেষ। এই নাউরের পার তিনের মতন ক্র ক্র চিক্ বাকে। (Gucurbita punctata) তিলিয়ালা্ড (বেশল) একপ্রকার বাছ। তিলিয়ালা্য (বেশল) একপ্রকার বাছ। তিলিয়ালা্য (বেশল) অভি অলে বুহৎ করা, নাবাক্র একটু (অর্থাৎ ভিল পরিমাণ) বটনা হইরাতে, ভাহাতে

ভিজেতাল (দেশৰা) অভি অন্তে বৃহৎ করা, সামাজ একটু (অর্থাৎ ভিল পরিমাণ) বটনা হইরাছে, ভাহাকে বাড়াইরা বৃহৎ (ভাগ পরিমাণ) করা। চলিড ক্থার এইশ্লণ ব্যবহার হর—"তিলৈ তাল করিরাছে।"

ভিলোভমা (বা) তিলপ্রমানেঃ সর্বরন্ধানাং অংশৈক্ষমা।
ব্বেক্তা, এক বুর্গার বেক্তা। ত্বক ও উপকৃষ্ণ নাকে প্রবল পরাক্রান্ত ছইটা অন্তর ছিল, ইহারা দেবতার অবধ্য। আপনারা ছই ভাই বিবাদ না করিলে ইহাদের মৃত্যু ত্বট। লোকপিতামহ ভগবাক্ ব্রন্ধা এই অন্তর্গরের বিনাশ সাধন মানসে সমুদ্র রন্ধের ভিল তিল গ্রহণ করিয়া ইহাকে নির্দাণ করেন।

"ভিকং ভিনং সমানীর রন্ধানাং বছিনির্মিতা। ভিনোত্তমেভি তত্ততাঃ নাম চক্রে পিডামহ:॥"

(ভারত আ' ২১১ জ')

"ভিলোভমা নামপুরা এক্ষণো বোৰিছ্ডমা । ভিলং ভিলং সমুদ্ভ্য রন্থানাং নির্দ্ধিতা ওভা ॥"

(ভারত অমু. ১৪:১১)

ইহার ক্লান্ত রমণী অর্থরাক্ষা আর কেই ছিল না।
ইহার রপলাবণ্য সহছে বর্ণিত আছে, একলা এই অসামাক্রা
রপলাবণ্যবতী মহাবেবকে প্রবোজিত ক্রিবার অন্ত তাহারে
চতুর্দিকে ভ্রমণ করিতে লাগিল, তথন মহাবেবও তাহাতে
বিয়োহিত হইনা তাহাকে লেখিবার নিমিন্ত নিতান্ত অভিলানী
হইলেন, অন্তরাং সে বে বে দিকে গদন করিল, বোগবলে সেই
সেই দিকে মহাবেবের অ্চাক্রবদন বিদির্গত হইল, এই ক্লপে
সেই তিলোভ্যার দর্শন নিমিন্ত মহাবেবের চতুর্পুর্ব হইনাছিল।

"বতো বতঃ সাংক্রণতী নামুপাধাৰণতিকে।
ততততো মুখঞাক সম দৈবি বিনির্গতন্।
তং দিদুকুরুং বোগাচতুন্তিঘ্নাসতঃ।
চতুর্খত সংবুডো দর্শরন্ বোসমুভ্যন্।

(ভারত অলু ১৪১।২-০)

ভিলোভয়াকে লাভ কুরিবার নিমিত কুক ও উপস্ক পরন্পর বিবাদ করিয়া নিধন প্রাপ্ত হয়।

```
खिल्लामक (क्री) जिनविविधः केवनः स्थारताः कर्वथा।
   ভিগৰিশ্ৰিভ ঋণ।•
      "তেবাং বৰা ভূ হতেৰু সপৰিত্ৰং ভিলোদকং।" ( शङ् )
जिट्छोपन (हो) जिनमिक्षिकः धरमः मराद्वाः कर्यमा।
   ক্লার; ডিলের খিচুড়ী।
     • "मर्स मार्डियारिणि फिल्मोरयः नाहत्रिक्षाः।"
                                  ( भूक बार अशामधात्र )
      'ডিলমিশ্ৰং প্ৰদান কুপৰ্যিভাৰ্য:।' (ভাল্ক)
তিল্পিঞ্জ ( গং ) ভিন-পিঞ্চ বেদে ডিচ্চ ( শিক্ষান্দানি ভিচ্ছ।
  পা এং।৩৬ বার্ত্তিক ) বদ্ধাভিক ৮
      "देवीकार चत्रकीनिहैं। किशिक्षर नक्तर नक्तर ।"
                                      ( जवर्ज ) शर ६८ )
जिना (जी) जिनानाः जननः (क्यः वा जिन-४६ (विद्यादा-
  ভিনমবোষাভদাপ্ত্য:। পা । ।২।৪) 🗦 ভিনের 🖛ত।
  (बि) जिनात रिष्ठः रिष्ठाः वै ४६। '२ जिलात रिष्ठकत्र।
তিস্ত্ (পং) তিলজীভি ভিল-বন্ (উৰাদয়শ্চ্য উণ্ ৪৷৯৫)
  ইভি স্তৰেণ নিপাতনাৎ সাধুঃ। ১ লোএবৃক্ষ। ২ খেডবর্ণ
  লোব। ৩ রক্তলোব।
তিল্বক ( গং ) ডিৰ-খাৰ্যে কৰু। '১ লোৱ । ২ ভিনিশ।
   "প্রয়োধাৰণতিবক্হরিক্রক্ জবিভীতক্পাপনামভাল্ড।"
                                ( ৰাজ্যাণ শ্ৰৌণ ২১৷৩৷২০ )
     ঠভিৰক: ভিনিশঃ।' ( कर्क )
ভিল্বিল ( बि ) দেববৰনহান।
   ্ভত্তে ক্ষেত্ৰে নিৰ্মিতা ডিৰিলে বা।" ( ঋক্ ৫।৬২।৭ ) ,
   'তিসুং স্বিধা ইৰা ভূমিৰ্বস্ত ডৎ ক্ষেত্ৰং তিৰিনং'দেবহজনং ৷'
তিষ্ঠ ( ক্রিরা ) স্থা-লোট্ হি। ভূমি থাক। অবহাম কর। '
তিন্তা ( দেশৰ ) স্থানিদ।
তিষ্ঠান ( एमन ) बाका।
ডিষ্ঠান্য ( অব্য ) ভিট্রো পাবে বিনিন্ কালে ভিট্না-
  व्यक्षियोश निभाजनार व्यवसीकावः। त्वाहनकान, रशाविकिः
  गॅनर, नकाकाव ।
   "আ ডিচঁনৰ অপন্ সভাাং প্ৰক্ৰান্তান্ত্ৰীপৰং।" ( ভিট্ট )
  नकारिकारम श्रीवंश काहरमञ्ज अक्षान करत, विदेशक
  সন্ধ্যাসমধ্যের নাম ভিঠন্ত 🗗
তিষ্ঠদৃশু প্ৰভৃত্তি (রী) পাণিছাক গণ বিশেষ, অব্যৱীভাষ
  ন্নানে নিপাত প্ৰযুক্ত তিঠন্ত প্ৰভৃতি কতকভালি শক সিদ্ধ
```

रत, वर्धा-फिर्डम्थ, वरम्थ, बाह्यक्षेत्रव, बरमयव, बरमप्त,

🍷 गृनवन, गृनमानवर, भूख्यन,,शृषयानवर, मध्यख्यन, मःहित्रमानः

ৰৰ, নংক্তৰ্ন, নৰভূমি, শীংপদান্তি, প্ৰেৰ, বিৰৰ, ছংসুম, মিৰম, অপসম, আরতীনম, প্রোচ, পার্ণমম, প্রাচন, প্রাচ্ন, প্ররথ, व्यन्त्रं, व्यनक्तिन, व्यनद्वाकिन, नच्चित्, व्यनच्चित्रः। (भानिति) ডিষ্ঠজোম (बिं) ভিচ্চা হোদো বত্ত। বলতিরণ র্ব-ভেদ, **अरे रात्त्र व्यानात (चार्डांड) नक्रम वर्**ड्रेकात अरे महराता দান করিতে হয়। ঁ "ৰলভি**ৰ্হোভীনাং কো বিশেষ:।**" (কাত্যাণ শ্ৰৌণ সাহা**৫**) 'वज्ञकीनाः वात्रामाः क्र्रहाकीनाः हात्रामाः ह भवनातः (का वित्यव माह जिल्लामा काह्यमान अनामाः, वसहेकातन व्यवानः (वश् (७ ववहेकात्र श्रवानाः।' (कर्क) 🕨 তিষ্য (গং) ভুম্বতান্মিন্ ভূম-কাপ্ নিপাতনাৎ সাধুঃ। ১ প্রা-नक्ता (ज्ञी) विय-वीरशी व्यक्तांक्षिक्ष वक् मिशक्त जानूरः। ২ কণিবুগ। ভিন্তং নক্ষত্ৰমন্ত্ৰক পৌৰ্বাভাং ০ পৌষমাস, প্রভানক্ষত্তে পৌষমাসের পূর্ণিমা হর। (তি) ডিয়ে নক্ষে ভাত: অণ্ডত নৃক্।, প্যানক্ষলাত। "তজ্ঞতি**ছেহৰ সং**প্ৰাপ্তে বৃগে' কলিপুরস্কতে ৷ একপাদহিতো ধর্মো হত্ত তিয়ে ভবিস্থৃতি॥[#] "তপভাদৃক্ ক ৰা ভিয়েড ডিক্সবোগ: ক ভাদৃশ:। **ক বা এড: ক বা দান: ভিয়ে সোক্ষত: কুড: ॥**" (.ভাশীখ ৩৫ ছা) (बि) मानगाः। তিষ্যক (গৃং) তিম্ব এব স্বার্থে কন্। পৌৰমান। (শলক্ষ')

তিষ্যপুষ্পা (স্ত্রী) ডিফং মালন্যং পুশং ৰঙ্গাং বছরী। আমননী। তিষ্যকলা (ত্রী) ডিছং ফলং ৰঙা: বছত্রী। আমলকী। জিষা। (জী) ভিন্তং মঙ্গলং হেতৃত্বেনান্ত্যকাঃ অচ্। আমলকী। তিসি (জশব) একপ্রকার তৈনকর শ্বন্ত । ভিন্ন ভাষার ভিন্ন দেশে ইহার নাম যথা---

हिन्ही (ভाষার) অল্সি, তিসি। তিসি, মসিনা। বালালা তিসি, চিক্ৰা। বিহাল উড়িকা ্গের। উ॰ প॰ প্রদেশ विक्ति। ক্ষাবুন তিনি, অল্নিণ কাশ্মীর ফিযুৰ্, ভাগিস্। আঁলিশ, তিনি, অনৃদি। পঞ্চাৰ কাশবর किषित्र। বোষাই चननि, चन्नना, चन्नन । **७** व त्रांहे जन्ति । .

⁴ अन्मि, वित्राहै। ভামিছা (ভাষার) षाउनी, उन्नू, मृन्, महन-निश्चान्। ভেল্লখ (ভাৰদা) 'जननी, जनानी। কণ্টিক চেক-চাৰ্না বিভিত্তে-বিশৃতা। মলগ তুৰী ব্দিগ্পর। আরব ' ক্তান বা বৰুৱত ক্তান। ় অখু, অধির, কুতান বা তুধ্মে-কুতান্। পারস্ত . হিব্ৰু (ভাষায়) পিশ্ভা । সংস্কৃত (ভাষার) অওসী, উমা, কুমা, মালিকা, মস্থা, শণ। गाहेनाम्। লাটিল (ভাষায়) লিনসিড্। हे:गु দিন। কেল্টিক (ভাষার) 🔒

हेहात्र देवखानिक नाम Linum Usitatissimum । छिति ছইতে এদেশে তিসিবীল, তিসিতৈল ও তিসিরপোল ব্যব-হ্ত হয়, কিন্তু যুরোণ ও আমেরিকায় ইহার গাছ হইতে পাটের ক্লায় একপ্রকার অংগু প্রস্তুত হয়, ইহাই লিনেন (Linen) वा विनाजी माहिन नात्म এमেশে विश्वाछ। য়ুরোপীয় পণ্ডিভেরা বলেন, য়ুরোপে আর্বাগণের বিভৃতির -সমর তিসির ব্যবহার প্রচলিত হইয়াছিল। মিশরের প্রাচীন সুমাধি-মন্দিরে দেওয়ালের গাত্তে অভিত ছবির মধ্যে তিসি গাছ হইতে অংশু প্রস্তুত করিয়া বস্ত্রনির্মাণ করিবার সমস্ত কার্য্য স্থান্ট চিত্রিত আছে। প্রাচীন মিশরবাসীদিপের সমাধিবস্ত এই তিসির অংশু হইতে প্রস্তুত হইত। পুটম্পন্মের ২০ শতালী পূর্বে মিশরে তিসির অংশুর ব্যবহার ভালরপ জানা ছিল, ইহা প্রমাণিত হইয়াছে। হিব্রু ও গ্রীক গ্রন্থে ভিসির काः खुत् २००० वात्र **উत्तिथ व्याद्धः। ऋ**रेक् माँ खुत्र इपमानात्र নিকট যে সকল প্রাচীন স্তৃপাকারা বাসস্থান, আবিষ্কৃত হইয়াছে, তন্মধ্যে তিসি বাঁল, তিসি গাছ ও তিসির স্থাটী পাওয়া গিরাছে। উত্তর মুরোপে শার্লামেন অক্সাম্ভ প্রয়োজনীর বুক্ষাদির ভাষ তিসির চাষ প্রচলিত করেন, কিন্তু নর ওয়ে ও সুইভেনে খুটীর দাদশশতান্দীতে ইহা প্রচলিত হইয়াছে।

প্ল্যানতন নামক র্বোপীয় পণ্ডিত ১৮৪৮ খৃ: অব্দে প্রকাশ করেন যে তিসির ভিনটী প্রেণী আছে ;—(১) Linum usitatissimum; (২) L. humili ও (৩) L. angustifolium. • হিনার নামক আর একজন পণ্ডিত প্রমাণ করিয়া দেশাই-রাছেন যে, পুর্বোক্ত ৩য় প্রেণীর ভিনিই চাবে উন্নতি লাভ করিয়া ১ম প্রেণীর তিসি দাঁড়াইয়াছে। এই প্রথম প্রেণীর তিসির আবার হইভাগ আছে,—(ক) সামান্ত (alpha vulgar) ভ ত্মিলি (Beta humili)। ইহার মধ্যে প্রথমভাগ ভারত- বর্বে ও বিতীয়ভাগ পারতে চাম হয়। গাঁইনাম্ অন্তি-কোলিয়ম্ ভ্রধাসাগরের উজয়পার্যে পার্মতা প্রদেশে । কফলী অবছার লয়ে। ভিন্ন ভিন্ন মূল ভাকরে ইহার নাক বেরপ অপ্রধান, তাহাতে বোধ হর বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন কাতি বারা ইহা প্রাচীনকাল হইতে প্রচলিত আছে।

ভারতেও ভিসির প্রচলন বহু কালাবধি আছে। আজু কাল এদেশে ভিসির বীজ ও তৈল ভির ভিসির অংশুর ব্যবহার নাই, কিছু পূর্ব্বে ছিল, সংস্কৃত শাজে কৌমবজ্লের ব্রেটর ব্যবহার দেখা বার। জনেকে ক্ষোমবজ্ল অর্থের ব্যবহার দেখা বার। জনেকে ক্ষোমবজ্ল অর্থের ব্যবহার দেখা বার। জনেকে ক্ষোমবজ্ল অর্থ্য রেশমী বজ্ল বলেল, কিছু ভাহা নহে, কারণ ভিসির একটা নাম ধখন 'ক্মা', তথন ভজ্জাত বজ্লকেই ক্ষোমবজ্ল বলিত। চীনে 'চুমা' নামে একপ্রকার বান হর, ভাহার অংশুতে 'চুমা' নামে একপ্রকার বান হর, ইহাও দেখিতে ঠিক রেশমী বজ্লের স্থার ও রেশমী বলিরাই চলিয়া সিয়াছে। বোধ হর এতদত্মনারে ক্ষোমবজ্লও রেশমী বজ্ল বলিরা কথিত হর।, মন্ত্র্যংহিতার কথিত আছে, বৈপ্রেরা ক্ষোমস্ত্রের উপবীত ধারণ করিতেন।

তিদিবীল । ভারতে তিদির গাছ হইতে তিলি বীল, বীল হইতে তৈল ও ধোল উৎপর এবং ব্যবহৃত হয়। এদেশে তিদির অংশু তুলিবার রীতি নাই বলিয়া থুব পাত্লা করিয়া বুনিয়া থাকেঁ। পাতলা করিয়া বুনায় গাছে ডাল বাহির হয় এবং ফ্ল বেলী হয়। বেলী ফ্ল হইলে বেলী ফল হইবার সম্ভাবনা থাকে। য়ুরোপে কিন্তু অংশুরই আদর বেলী, সেই লয় বাহাতে গাছে ডাল না হয় অথচ গাছ দীর্ঘ হয়, ডজ্জ্জু খুব ফল করিয়া তিদি বুনিয়া যায়। ভারতে চাবের দোমে বা শুলে তিদির দানা পাতালা ও মোটা হইয়া থাকে, বর্ণেও পার্থকা লয়েয়। তিদি শাদা ও লালবর্ণের হয়। চাবেয় প্রণালী ও লললীর শুলে য়ক্জতিদির আবার নানারূপ ভেদ আছে। তিদিবার্বামী মহালনেরাই তাহা চিনিতে পারে।

খেততিসির বীজ রক্ততিসি অপেকা পুর এবং বীজের বিধানা পাতলা। ইহাতে তৈলও ধুব বেশী জন্মে। ইহার ধোলও হাল্কাও স্বাস্থা। ইহা গমুও ছোলার দরে বিকের হয়। জবলপুরে এই খেত তিসি জন্মে। নর্মার দক্ষিণ এই তিলের ব্যবহারই বেশী। জবলপুরের খেত তিল অক্স দেশে চাব করিলে লাল হইরা বার।

শ্বতি বৃদ্ধিতে তিসির সমূহ ক্ষতি হব। ইহার পাতার গুটি বাঁধা একটা বিষম রোগ। ইহাতে শক্তের প্রার অর্দ্ধেক নট হয়। এডডির করেক প্রকার কীটাণুতে ইহার সর্ক্রনাশ করিবা থাকে। "

वालालाव वरश •वर्षमीन दिखारण नक्षत्र हेश बत्य मध

দেরারার তিনি ভাল হর। হাল্কা কর্মবন্ক পচা ক্ষী ভিসির চাবের উপবোগী। **अँ**टिन माणिएं वा বেলে माणिएं जिनि इत লা। তিনির কেতের জন ভাল ক্লপে বাহির করিরা দিবার युम्मावस कता डेविछ। यक करन देशत विराधय अनिहे इत। कांगारि स्थाना समीरिक सन क्रकाहर विश्व विश्व ধান থাকিতে থাকিতে প্ৰভি বিবাৰ /২ সের তিসি ছড়াই-লেই ইহার চাব হইরা গেল। শেবে ধান পাকিলে ধান কাটিয়া লয়। ভিলি চৈত্ৰ পৰ্যান্ত মাঠে থাকে। দেয়ারা জমীতে তিসি হয়। গম, ছোলা, সর্বপ বা ধেসারির সহিত মিশাইরা वृत्न, ज्यात्र ना रुत्र थानि छिपिरे वृत्न । छिन ठात्र वात्र ठावे ९६ ছুই ভিন বার জালি টানিয়া দেয়। তিসি খুব গর্জ করিয়া বুনিতে नाहै। जिनि इड़ाइबा महे नितन वीय जाका পड़िबा शितनह ভাল হয়। প্রথমে অক্ত ফসল বুনিয়া একবার লাক্ল দিতে হয়, তার পর তিসি ছড়াইয়া গুইবার মই দিলেই হয়। তিসি আখিন ও কার্ত্তিকে বুনিতে হয়, চৈত্তে কাটিতে হয়। থালি তিসি বুনিলে প্রতি বিঘায় /৩ সের ও মিশাইয়া বুনিলে /১॥• দের বীজ লাগে। থালি বুনিলে বিখার ২/ মণ জলো। গঙ্গাতীরে ইহার ফসল ভাল হর্মণ সাঁগাতা জ্মীতে ভাল হয় না। ফসল সম্পূর্ণ পাকিবার অত্যেই শিকড় সমেত গাছ তুলিয়া লইতে হয়।

শাহাবাদে ইহা বব, মসুর প্রভৃতির সহিতও বুনিয়া
গাইকে। উত্তরপশ্চিমে ও অবোধ্যার সকল জেলাতেই
ইহা জন্মে। কাশ্মীরের পশ্চিমাংশে ইহার বেশ চাব হর।
ইহার তৈল সে দেশে বেশী বাবহৃত হইয়া থাকে। মাস্রাজ্ ও প্রক্ষে ইহার চাব হয় না বলিলেই চলে। নোধাই প্রদেশেও বেশী হয়। পুণা, শোলাপুর, নাসিক, গান্দেশ, আন্দর্শগর, গুজারটি প্রভৃতি হানে অয়বিত্তর জন্মে। মধ্যভারত ও রবারে অপেক্ষাকৃত বেশী হয়, হায়দ্বাবাদেও মন্দ হয় না।

তিসির তৈল। বীজের পুষ্টি ও শ্রেণী অন্থসারে ইহার তৈলের পরিমাণ জানা বার। নৃতন বীজ তালিলে প্রাতন বীজ অপেকা তেল বেশী হয়। পাতলা দানা অপেকা মোটা দানার বেশী তৈল হরণ অলোনের শাদা দানার সর্বাপেকা বেশী তৈল পাওয়া বার। সচরাচর /৪ সের বীজে /> সের তৈল পাওয়া বার, কিছ দানা তাল হইলে /০ সেরে /> সের হইয়া থাকে। শাহাবাদে এই তৈল প্রাণীপে বাবহুত হয়। প্রতিবার সময় এই তৈলে ধোঁয়া হয়। বিলাত হইতে বে সকল তিসির তৈল এদেশে আনে, তাহা বিশুদ্ধ বিলায় ভক্লারিতা গুণ অধিক এবং তৈললটিত্র প্রভৃতি কার্বো ভাহারই ক্ষাব্যাণে ব্যবহৃত হয়, কিছ এদেশে তিসি জভাভ তৈলকর

বীজের সহিত ভেলাজে ভালা হর বলিরা এদেশের ভৈলের

তেকলারিতা অনেক কম। এদেশের তুল বিলাতে বেচিবার অন্ত পাঠানি হইরাছিল, কিন্ত দেখানে বাচাইরা বাজার
লয় অপেকা গল পনর টাজা কম হওয়ার সে চেষ্টা পুরিতাজা

হইরাছে। মীর্জাপুরের লাল তিসির তৈল বিলাতী তৈল
অপেকা অনেক পাতলা ও ভাল, কিন্ত ভালিবার ওপে ইহরে

তেমন আলর হর না। ঘানিতে তৈল ভালিতে ধরচও
বেশী হয়। ১০০ পণ তৈলে প্রার্থি ৮০০ টাকা ধরচ পড়ে।
বিলাতী বাল্পীর কলে ১০০ পণ তৈল ভালিতে প্রায় ১৯০
টাকা ধরচ হয়।

ভিসির স্তা। এখন মুরোপীয়গণের প্রাণপণ যত্তে ও চেষ্টায় ভারতে অনেক হলে তিসির স্তা প্রস্তুত হইতেছে। ১৭৯ • इटेट ১१৯৯ थुड़ारच क विषय ध्वथम् ८० है। कता इत्र। এদেশের ক্বকেরা তিসির আঁশ তুলিতে কোন মতে সম্মত হর না। ভাহাদের বিখাস বে বাপ পিতামহ যে কার্য্য করে नाहे, जाहा कतिता विस्मय अनिष्ठं हहेरव। এই प्रका अंक लात्कत्र मृत् विश्वात छेन्টाहेट्ड नारह्वमिशत्क य क्लक्टे পাইতে হইরাছে তাহা ব্ললা বার না। লাভের কথা, উদাহরণ, वा উপদেশ किছুতেই ইहाরा ভূলে না। छाः त्रक्म्वर्ग गर्स-প্রথমে ইটইভিরা কোম্পানীর রিশড়ার শণের কুঠিতে তিনির স্ভা প্রস্তুত করিবার ব্যবস্থাকরেন। তাঁহার প্রস্তুত স্তা ভान इहेबाहिन। ১৮৩৯ थृष्टीत्म नखन ०,वदार्म नात्म এক ব্যক্তির অধীনে একটী কোম্পানী গঠিত হয়। রিগা ও ওলনাত্রী বীজ সহ একজন বেলজিয়মের ক্রবক ও বেল জিয়মবাসী এক ভিসির স্তা-প্রস্তকারী গুরোপীয় যন্ত্রাদি লুইরা এদেশে আসে। এই কোম্পানীকে এদেশে আসিয়া চাষ আরম্ভ করিতে হয় নাই। ইহাদের উপদেশে अर्मानंत्र लारकहे अ विषद्ध कहें। करता कांगीत निक्ठे वाणिया नामक शांत >98 शृष्टीत्म (य ठाव १ य, ভাহাতে কাল ভাল হয় নাই। আসময়ে চাষ[®]ও অসময়ে স্তা তুলিতে গিয়া সব নষ্ট হইয়া যায়ুন ১৮৪১ পৃষ্টাব্দে মুলেরে চেটা হয়। তিন বৎসর চেটার পর ১৮৪৪ খুটালে স্তা অপেক্ষাক্বত পরিষ্ঠার ও[®]কোমল হয়, কিন্তু গ্রমেণ্টের সহামুভূতি না পাওয়ায় এখানকার কার্য্য আর করেকু বৎসর চেটার পর বন্ধ হর। শেষে নর্মান্তীরে জববলপুরে এবিষয়ে কতকটা ফল হইয়াছিল। এখানুকার তিসির গাঁছৈ বেশ ভাল স্তা হয়। শাহাবাদে ১৮০৭ খুটালে পরীকা আবিস্ত হয়। এথানে যে হতা হয়, তাহা বড় কড়া। ক্ৰিয়ার প্ডার ভার ইহাও কম দরে বিলাতে বিক্র

হর। এই সমরে বালালা দেশেও চেটা হর। চাইপ্রামে বে হতা হর্ন, কোম্পুনীর পরীক্ষার তাহা দীর্ঘে কম হ্ইলেও অতি উৎকৃষ্ট বলিরা প্রমাণিত হইরাছিল বিশ্বমানে ৪ প্রকার হতা প্রান্ত হব, তরাধ্যে এর প্রকার স্ভাই অপেক্ষাকৃত ভাল ইইরাছিল।

এইরপে নানা হানে তিসির স্তার অভ চার আরম্ভ হইলে ক্রমশঃ ক্রকেরা আপনা হইতে ইহা আরবিতার উৎপাদন করিতে প্রার্ভ হইল'।

>৮৫৫ খুটান্দে পঞ্জাবে লাহোরের নিকটবর্তী হানে শিখাল-কোটে ও দীননগরে ইহার হতা তুলিরা চারপারা প্রভৃতির জন্ত দড়ি প্রস্তুত কার্য্য জারম্ভ হর। কালড়া উপত্যকা হইতে ১৮৫৮ খুটান্দে বে হতোর নমুনা বিলাতে পাঠান হয়, সেধানে তাহা খুব জাদর পায় ও উচ্চদরে বিজীত হয়। ইহা হইতে ভারতবর্বে রীতিমত ব্যবসা চালাইবার ইজ্বার বেলজাট সহরে ১৮৬১ খুটান্দে বেলফাট-ভারতীর তিসি-হতার কোম্পানী নামে একদল ইংরাজ কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন।

শিয়ালকোটে ইহাদের এজেন্ট আপিস স্থাপিত হয়।
প্রাথমে ইহাদের এত ক্ষতি হয় যে কারবার উঠিয়া বার যার
হইয়াছিল, শেবে হোম গবর্মেন্টের বার্ষিক সাহায়ো ইহারা যে
স্তা প্রস্তাত করেন, তাহা ভাল আইরিল স্ভার সহিত সমান
হয়।কিন্ত বেশী জমী ও বেশী ক্রয়ক না পাওয়ার উঠিয়া যায়।
১৮৬৯ খুটাকে অপর এক কোম্পানী এই কার্যা আরম্ভ করেন।

পেশাবরে তিসি হইতে গৃহকর্মে ব্যবহারার্থ দড়ি প্রস্তুত করে। এতত্তির এখন আর পঞ্চাবে তিসির হতার কোন वावशात्र नाहे वा त्नाटक कतिएछ । हारह ना । भक्षाद्वत जिनिएड কিন্তু ভাল হুতা হুইবার কথা। উ॰ প॰ প্রদেশেও হুতা প্রস্তুত হয় না। এধানে বীজসংগ্রহের পর গাছগুলা আঁটি বাধিয়া সাত আটদিন পুঁছরিণীর জলে ফেলিরা রাখে । প্রতি-मिन উन्টाইয়া দিতে হয়। १.৮ দিন পরে (বেশী গরমের সময় ৪া৫ দিন পরে) গোড়া ভালিয়া দেখিতে হয় বে পাটের ক্লায় শাুকাটী আল্গা হইয়াছে কি না। ভাহা হইলে >e দিন পর্যান্ত শিশিরে ভিনিতে দিতে হয়। পাতনা করিলা মাঠে ছড়াইলা রাখিলা দেল। যদি বৃষ্টি ছইবার • আশহা থাকে, তবে আঁটা বাঁধিয়া কোণাকায়ে মাঠে দাঁড় করাইরা রাপে। তৎপরে মুপ্তর মারিরা পাকাটী ভালিরা ন্টতে হয়। <u>ভাহার পর পরিকার করিয়া</u> বাণ্ডিল বাধিয়া রাধিতে হয়। ইঁহা বোখাই হইয়া বিলাতে চালান হয়। तिनी कृष्टक अथन देशांत्र वायनात्र आत्रक कटत हाहे।

মধ্যভারতে ভিসির পাছ এক ক্টের ৰেশী বড় হর না,

কিন্ত তিসি বংগঠ কলো। এখানে ইহা রবি শতের সহিত কলো। বরারেও ঐরণ। এই চুইয়ানে কোথাও শতা হর না।

নিদ্ধ প্রদেশের উত্তর সীমার ভিনির স্কাহর, অমীদারের।
তাহা হইতে দড়ি প্রস্তুত করান। নিদ্ধর আর কোন স্কংশে
তিনির চাব আদৌ নাই। বোহাইরে বীজে কেবল তৈল হয়।
স্তা কোথাও হয় না। মাজাজেও ভাহাই। বালালার ঐদ্ধেপ,
কিন্তু এখানে বদ্ধ ক্রিলে ইহার স্তার দড়ি চট প্রভৃতি ভাল
হইতে পারে। কলিকাভার নিকটে গলার অপর পারে ঘুস্থাড়ির
টেকে ক্যাখিসের কলে একবার এই স্তার পালের কাপড় ও

"বিপ্লের কাপড় ভৈরার হইরাছিল। ভাহা অভি উৎকৃষ্ট হয়।

ভারতে সকল দেশেই এখন ভিসির বীক সংগৃহীত হর।
গাছগুলি হয় গবাদিকে থাইতে দের, নতুবা পুড়াইরা ফেলে,
আর নহেতো কোলরা দের, কিন্তু ভাহা অপেক্ষা বদি আঁটি
গুলি গুকাইর। কাগজের কলে চালান দের, ভাহা হইলে
উভরপক্ষে অনেক লাভ হয়।

ভিদির ব্যবসার। ভারতে ভিদি কত ধরচ হর ঠিক জানা যার না। এদেশে ভিদির তৈলের ঘানি বা ভাল কল নাই। এক কল আছে ভাহার্কেযে ভৈল হয়, তাহা এদেশেই বিক্রীত হয়। বড় মাহুষের বাটার কাঠকাঠরার যে সবুজানি রং দেয়, ভাহা এই ভিদির তৈলে গোলা হয়। বছ শভ মণ বীজ বিদেশে রপ্তানী হইয়া ধাকে। বাজালা হইডে বেশী যায়।

তিসির ব্যবহার। প্রান্তত করিতে পারিলে ইহার সাংশু হইতে আপাততঃ দড়ি, চট, জিপল, পাল প্রভৃতি হইতে পারে। আর যদি হতা তোলা না হয়, তবে এখন আপাততঃ গাছগুলি শুকাইরা কাগজের কলে চালান দিতে পারিলে বঁড় ভাল হয়। ইহার তৈলে গোলা রং, ছাপার কালী, অয়েল রুপ, নকল ইগুরা রবার, তেলাবার্ণিশ ও ন্রম সাবান প্রস্তুত হয়। তৈল বিশুদ্ধ হইলে এই সক্ল প্রব্য ভালই হয়, কিন্তু ভারতে মিশ্রিভ তৈলই অধিক।

ঔবধে তিসির বছ ব্যবহার আছে। বা, কোড়া প্রতিত তিসি বাটিয়া গ্রম করিয়া প্রাটন দেওরা হয়। দন্কা দাত ও মৃত্কাশি রোগে তিসি উপকার করে; মহ ও মৃত্র রোগে এবং নিলবত্রের পীড়াতেও ইহা উপকারী। মৃত্বিরেচক হাদ্যত্রের পীড়ার ইহার হল উপকারী। মাতব্য চিকিৎসালয়ানিতে তিসি অলে সিদ্ধার করিয়া মেহরোগীকে সেবন করিতে দেওয়া হয়। বীজপূর্ণ চিনির সহিত মিশাইয়া ধাইলে মেহরোগে উপকার হয় ও কামার্মি বৃদ্ধি করে। তিসি তালিয়া আঠার ভালার সহিত ধাইয়া ধাকে। লাড়ু তেও-ইহা তিলের ভার মিশাইয়া ধাকে

अक्षरण देखन भन रत्र, इंख्ताः स्थानक अन्न रत्र। किन्द ক্ৰিলাৰ পরীকা করা হইরাছে, বে এই খোল প্ৰাদিকে " পাওয়াইলে"উহাদের ছথ্যে যাথন বেশী হয়।

क्रिप्रका (द्वो) वि-छार्टन कन् छिप्र बारमनः (डिम्स्डारन नरखादार कत्रू भनः बानिः। भा १।२।३३ वा॰) आमरखनः।

(বাঙ্টিক) তিস্ধল্প (ক্লী) ভিক্তি রিবৃতিবৃতিং ধৰ পঞ্: বৈদিকপ্রবোগে षठ् नमानासः अविष्ठकाविन त्वतः विद्यातनः । छिनते वान-যুক্ত ধনু।

"ভিস্থৰং দক্ষিণাং দদাভি।" (•শভপথবা ১১।১।৪।১•) তিহ্রা (জী) শব্দপুণী।

তিহন্ (গং) তৃহ-অর্ণনে কনিন্ নিপাতনাৎ সুঃধুঃ। ১ ব্যাধি, পীড়া। ২ বীহি। ৩ ধন্থ। ৪ সম্ভাব। (সংক্ষিপ্তসা॰)

তীক্ষ্ (ফী) তেলমতি তেলাতে ুংনেন বা তিল-কৃষ্ দীৰ্ঘক (তিজেনীখন্চ। উণ্ ৩০১৮) ১ ধরম্পর্ল, উদ্ভাপ, উক্তা। ২ বিষ। ৩ লোহভেদ, ইস্পাত। ৪ বৃদ্ধ। ৫ মরণ। ৬ শস্ত্র। १ नीष । ৮ नाम्सन्तर्य, कत्रकत् नर्यः। २ मूक, काश्वरकारः। ১ চবাক, চইগছে। ১১ মরক। (হেমচ) (আ)১২ তীক্ষডাযুক্ত। প্রতিভা, হীরক, কটাক্ষ, হর্মাক্ষ্যু, নথ, লবণ, রবিকর, এই সকল জীক্ষ বস্ত। (কবিকল্পতা)

"তীক্ষলৈব মৃহণ্ড ভাৎ কাৰ্য্যং বীক্ষ্য মহীপতি:।" (মহু)

(🖎) ১৩ ঘবক্ষার। ১৪ খেতকুশ। ১৫ কুন্দুরুক, কুন-क्रको । ১७ स्क्रालिस्थाक नक्ष्यंग्रग, खाला, ब्यक्ष्या, स्क्रांश छ ম্লাৰ্ক্ত। (তি) ১৭ আত্মত্যাগী। ১৮ নিরাল্ড। ১৯ বোগী। २ • সংবৃদ্ধি। ২১ শাণিত, ধারাল। ২২ অস্ভ্।

"नमखौक्त्रवरव हांबूधिरन।" (वाक्त्रप्रतत्रत्रः ১৬/৩৬)

'তীক্ষা অসহ। ইষবো বাণা: যক্ত দ ডলৈ ।' (মহীধর)

তীক্ষক (পুং)তীক্ষ সংজ্ঞারঃ কেন্। ১ খেত সর্বপ। ২ মৃচ, অওকোৰ।

তীক্ষকণ্টক (গং) তীক্ষানি কণ্টকানি বন্ত বছত্ৰী। ১ ধুন্তুর, युष्ता। २ हेक्नीवृक्क, • जानमञ्जन। ० वर्क्वृत्त, वावनागाह। 8 क्त्रीत, वः मू । (बि) c, छोक्ककणे क्यूक । छोक्कः कुछेकः কর্মধা। ৬ তীক্ষ এমন কণ্টক। ধারাল কাটা।

গীক্ষকণ্টকা (ত্রী) ভীক্ষণ্টৰ্-চাঁগ্। কছারী বৃদ্। চীক্ষকন্দ (পুং) ভীন্ধ: কন্দোস্পং বস্ত বছত্ৰী। পঁলাপু, পোৱাল। গীকক্ষৰ্পান্ (ঝি) ভীক্ষং কৰ্ম বছ বছরী। ভীত্রকার্যকর, कार्यापक। भर्यात्र—आवःभृतिक्। (विका॰)

গীক্ষকদ্ধ (গৃং) ভীক্ষ: কৰোবন্ত বুচ্বী। ভূত্দবৃদ্ধ।(রাজনিণ) টিক্লকান্তা(রী) ভীজা উঠো কার্বী কমনীয়া কর্মধা। मनगाविकात मुर्विवित्यव, काबारहरी, केंबाकाता। ^{প্}পীঠে দিকরবা**নিত। বিভূপা** বসতে শিবা। তীক্ষণভাষ্যা,ছেকা গোগ্ৰতারা প্রকীর্ষিতা॥ পুরা ললিডকাভাখ্যা বা খ্রীমঙ্গলচাভিকা। তভাৰ সভতং ৰূপং তীক্ষৰাভাইবং নূপ ॥ ,क्का नत्यानदी वा जू मा जात्मक्का निवा। তেন রূপেণ ডাং দেবীং সততঃ পরিপুলরেং ॥"

ু(কালিকাপু: ৮০ অ:)

निकत्रवानिनी दिवीत शीर्क चत्रः छशवान् मञ्जू निकत्रतः। বিষ্ণু শিলারপে এবং ত্রন্ধা লিক্ষরণে অবস্থিত। আর এথানে দেবী ছুৰ্মা তীক্ষকান্তা ও উপ্ৰভাৱা এই ছুইরপে বিহার করিয়া থাকেন। ললিতকান্তা নামে পরাৎপরা মললচ্তিকার नामरे ठीक्क काखा। छीक्क का खद्रमवी कृष्कवर्गा, नत्यामती अ अक्लिपातिनी । अकेलिदीरक माथक मर्सना भूका कतिरव । মত্রপাঠপূর্বক ইহার ত্রিকোণ মুগুল করিবে—"রেণে সুরেধে তথা তিগ্রত ইহাই তীক্ষকাস্তার মঞ্চল্লাস মন্ত্র।

नत्रास्त्रक, विश्वास्त्रक, दुनवास्त्रक, यमास्त्रक, विजानास्त्रक, ছৰ্দ্ধরান্তক, গণান্তক এবং প্রমান্তক এই কর্মন জীক্ষকান্তার ৰারপাল। মণ্ডলের ৮ দিকে ইহাদিগকে পূলা করিতে ছইবে। পূজা করিতে হইলে সংখাধনাস্ত এক একটা নাম, তৎপরে "বজ্রপুষ্ণাং" তৎপরে "স্বাহা" একতা করিলে বাহা ৰৰ, তাৰাই এই ৰারপালদিগের মন্ত্র। তীক্ষকান্তা ও উগ্রভারা এই হুই মূর্বিতেই পাত্র, উপকরণ, স্থান, স্থাস প্রভৃতি করিতে हरेत्व। क्रीमुखा, कताना, च्छना, छीवना, छना व्यवः विकर्तै-(प्रवीत थहे ७ जन (पातिनी।

"হে ভগৰত্যেকজটে বিল্লছে বিকটদংট্রেধীমহি ভল্কারে व्यटापदारै।" हेराहे भीर्रापवी जीक्नवाश्चात गावजी। विकत **চি । कारत्वी हेहात्र निर्मानाशांत्रिमा**।

মৃশ্বর বা কজাব্দে ইহার জপমালা করিতে হুইবে। তীক্ষকান্তা-मित्रीत श्वारिक देशहे विस्मत, এত द्वित्र छे भठाइत, त्रामिनान, ৰপ, প্ৰভৃতি সমূদৰ কাৰ্য্যই কামাখ্যাপুলামূদারে করিতে रहेरत। किञ्चकाखारनवीत भानीरतन मरधा मनिता, वनित মাংস, ব্যঞ্জন ও ইকুই প্রশন্ত এবং প্রীতিপ্রদ।, ইহাঁর পূজা कतिरा नाथक अछीडे नाख करत । (कानिकार्यः ৮० वाः)

তীক্ষুগন্ধ (পং) তীক্ষ্ণ প্রচাপো গন্ধো বন্ধ বছরী। ১ শোভা-बनर्क, निबनागाइ। ২ রক্ততুলদী। ৩ বেডডুলদী। ৪ কুন্তু-

🍳 নামক গৰুত্ৰব্য ।

ভীক্ষণদ্ধা (বী) তীক্ষণদ্দটাপ্। ১ খেতৰচা, শাদা বচ।

২ কর্মীরী। ৩ ব্লাব্দিকা, ক্লাইসরিয়া। ৪ বচা, বচ। ৫ জীবন্তী। "উত্ৰা কুঠং তীক্ষগৰা বিড়ক্ষং শ্ৰেষ্ঠং নিজ্ঞ চাবপীড়ে করঞ্চ।" (इ.इ.च. द्वे द्वे द्वे देव देव र १८ व्य.) ৬ ক্লৈলা, ছোটএলাচী। ৭ কুজনিকা, ইাচোটী। 🕝 তীক্ষতপুলা (জী) তীক্ষা অপুলা: যন্তা: বছরী। পিপ্ললী, তীক্তা (बो) তীক্ষ ভাষে তীক্ষ ভাবে তদ্টাপ্। তীক্ষের ভাব, তীব্রতা, কটুতা, ধার। তীক্ষতাপ'(পং) তীক্ষা তাপা বন্ধ। মহাদেব। (ভারত ১৩৷১৭৷৫৪) ক্রীক্ষুক্তিল (ফ্রী) তীক্ষ্ম মেহ: মেহে তৈলচ্ বা তীক্ষং তৈলং মেহো বৃক্ত। ১ লুহীকীর, সিজের আটা। ২ সক্তর্স। ৩ মন্ত, সুরা। তীক্ষদংষ্ট্র (পুং জী) তীক্ষা দংষ্ট্রা যন্ত বছত্রী। > ব্যার। (ত্রি) २ श्वीक्षमः द्वीयूकः। "স্তীক্ষদংষ্ট্রাঃ সমাশ্চ শুভাঃ।" (বৃহৎসং ২৩ অর্ণ) ঠৌক্ষদংষ্ট্রক (পুং) তীক্ষদংষ্ট্র-কুন্। ব্যাদ্র। তীক্ষদস্ত (পুং) যে জীবের দস্ত অতি তীক্ষ বা ধারাল। তীক্ষদৃষ্টি (ত্রী) ভীক্ষা দৃষ্টি: কর্মধা। স্ক্রদৃষ্টি। তীকুষার (পুং) তীক্ষাধারা যতা বছরী। ১ ৭ড়গ। "অসির্বিশসন: থড়গন্তীকুধারো ছুরাসদ:।" (থড়গপুর্নামন্ত্র) (আি) ২ তীক্ষধারযুক্ত। তীক্ষপত্র (পুং) তীক্ষানি প্রাণি যত বছরী। তুমুক গাছ, ধনিয়ার গাছ। (তি) ২ তীত্রপত্রযুক্ত। তীক্ষং পিতং কর্মধা। তীক্ষ এমন পত্ত। তীক্ষপুলপ (রী) তীক্ষং পুলাং যঞ্চ বছরী। > লবল। (তি.) ২ তিগাপুষ্প বৃক্ত । তীক্ষ্ণং পুষ্পং কর্মধা। ৩ তীক্ষ্ণ এমন পুষ্প। তীক্ষুপুষ্পা (ত্রী) তীক্ষপুষ্প-টাপ্। কেতকী। (রাজনি) তীক্ষপ্রিয় (পুং) যব। ত্তীক্ষাফলণু পুং) তীক্ষা ফলা যন্ত বছবী। ১ তুৰ্কবৃক্ষ, ধনিয়া গাছ। (ত্রি) ২ তিগাফলযুক্ত। তীক্ষং ফলং কর্মধা। ৩ তিগাফল। की क्का कला (खी) बीक्रिकन-छान्। बाजनवन, बाह्मविया। ভীক্ষমঞ্জরী (স্ত্রী) পর্ণ বভা, পাণের গাছ। তীক্ষমূল (পুং) তীক্ষং মৃশং যন্ত বছরী। ১ শোডাঞ্চন, শিগু, मिनाबाह । २ क्मक्रन, शक्त वादिल्य । (वि) ० जिश्र-মৃলক। (ক্রী) তীক্ষং মূলং কর্মধা। ৪ ডিগামূল। তীক্ষরশা (পুং) তীক্ষা রশবোষস্থ বছত্রী। ১ ডিগ্নাংভ, হর্যা।

(অি) ২ ডিগ্রেসিযুক্ত। (পুং) ভিগ্ন এমন রশিন।

তীক্ষুরস (পং) তীক্ষো বসো বক্স বছতী। ১ বৰক্ষার, সোৱা।

(তি) ২ তিগ্রসবৃক্ত। (পুং) তীক্ষা রসঃ কর্মধা। ৩ ভিগারস। তীক্ষলৌহ (রী) তীক্ষং নৌহং কর্মধা। নৌহন্ডেদ, ইম্পাড 🕈 তীক্ষবৃদ্ধি (প্ৰ) ভীক্ষা বৃদ্ধিত বছবী। প্ৰধরণতি ৮ তীক্ষুবেগ (জি ় তীক্ষা বেগা যন্ত বছরী। অধিক বেগযুক্ত। তীক্ষুপুক (প্র্) তীক্ষা শ্রে। অঞা বন্ধ বহরী। ১ বব। २ ध्रम्कयुक्त । (क्री) छोच्नः मृकः कर्मधा । २ ध्रम्क । তীক্ষসারা (জা) তীক্ষ: কঠিন: সারো বস্যা বছরী। শিংশপা-ণ কৃষ্ণ, শিশুপাছ। (ত্রি)২ তিপ্রদারযুক্ত। ও ধরদার। তীক্ষা (ত্রী) তীক্ষ-টাপ্ ১ বচা। ২ সর্পকম্বালিকার্ক্স, সাং কাঁকলা। ৩কপিকচ্ছু, আলকুশীলভা। ৪ মহাজ্যোভিশ্বভীলভ হিন্দীতে বড়, মালক সুনী। ৫ অত্যন্ত্রপণীলতা। ৬ জলোকা ৭ কটুবীরা, লম্কামরিচ। ৮ তারাদেবী *। [ভীক্ষকাস্তা দেব। তীক্ষাংশু (পুং) তীক্ষা: অংশবো যদ্য বছত্রী। তিগারশি, স্ব্য তীক্ষাংশুতনয় (পুং) তীক্ষাংশু: পূর্যান্তস্যতনয়: ১৩ৎ সূর্য্যতনর। তীক্ষাগ্লি (পুং) > রোগবিশেষ, বুকজাগারোগ। ২ অজীণ রোগ। ত উদরত্ব অটি তীক্ষ হইলে ভ্কু দ্রব্য শীঘ পরিপাক হয় "মাত্রাতি মাত্রাপ্যশিতা তীক্ষাগ্রে: পচ্যতে স্থং। ব্যতএব হি কেনাপি মতন্তীক্ষাগ্রিফন্তম: ॥" (ভাবপ্রং) তীক্ষাগ্র (তি) তীক্ষ: অগ্রো যদ্য বছরী। স্কাগ্র, যাহা অগ্রভাগ তীক্ষ। তীক্ষায়স (ক্লী) অন্ব এব আয়সং তীক্ষণ তৎ আয়সঞ্চেং ' কৰ্মধা। লৌহবিশেষ, চলিত কথায় তীথা ইস্পাত। পূৰ্য্যায়--लोह, मञ्जात्रम, मञ्ज, शिक्षा, शिक्षात्रम, मठ, ब्यात्रम, निनिक তীব্ৰ, খড়গ, মৃত্তিত, অৱস্, চিত্রারস্, চীনজ। ইহার গুণ— উষ্ণ, তিক্ত ; বাত, পিত্ত, ক্ফ, প্রমেছ, পাণ্ডু ও শূলনাশক এবং তীক্ষ। (রাজনি°) তীক্ষায়সচূর্ণ ও ত্রিফলাচুর্ণ একতা মিশ্রিত করিয়া গুগ্নের সহিত পান করিলে শ্লরোগ আগু প্রশমিত হয়। "তীক্ষায় দুর্ণসংযুক্তং তিফলাচুর্ণমুক্তমং। ूकीरत्र भागरत्रकीमान् मणः मृननिवादशः॥" (त्रशिक्षमात्र मृनाधिकात्र) তীু ক্লেষু (পুং) অসহ বাণযুক্ত। "নমন্তীক্ষেষ্বে চাছুধিনে नमः।" (%क्रवस्ः ১৬।৩৬) 'छीका अनस देवटवा वांगा वड

• "হে ভগৰভোগনটে গ্ৰন্থহে পথ মন্ততঃ। বিকটলটেই বীমহি ভল জ্বালা প্ৰচোগলাং। এবা জু তীকা পালনী শীঠবেবীয়া প্ৰকীৰ্ত্তিভা।" (কালিকাপুং 🏃

नः छीरक्वयुः' (महीधत्र)

ভীন্নর (ভীবর শক্ষ) ধীবর, জেলে, বর্ণসন্ধর আভিবিশেষ।
ইহারা সংখ্যাদি বারা লীবিকা নির্কাহ করে। [ভীবর দেখ।]
ভীর (ক্লীণ ভীর-জছ়। নভাদির কুল। নদীর গর্ভ হইতে নার্ছ
শত্রুত্ব পর্যান্ত পরিমিত স্থানকে ভীর করে। ভাত্রমানের
কুঞাচতুর্কনী ভিবিতে বে পর্যান্ত জনপ্রাবিত হয়, নেই পর্যান্ত
গর্জ, অর্থাৎ সেই স্থল হইতে ৫০ হাত পর্যান্ত ভীর।
"নার্ছিত্তপতং ধাবৎ গর্জভন্তীর মূচ্যতে।
ভাত্রক্ষচতুর্ক্সাং বাবদাক্রমতে জনং।

ভারেক্ষচত্দভাবে বাবদাক্র তে লগং।
তাবদগ্রহ বিলানী গাৎ তদভাতী রম্চাতে।" (প্রারন্টিভূতজ্ব)
প্রাণ মতে, গলাদি প্ণান্দীসমূহের তীরে প্ণা বা পাপ।
করিলে তাহা চিরহায়ী হয়, এলভ যত্নপূর্বক প্ণান্দীসমূহের
তীরে পাপকার্য পরিহার করিবে এবং যথাশক্তি পুণ্যাপার্কনে
যত্নবান্ হইবে। (পুং) ২ সীসক। ও বাণ। ৪ অপু, টিন।
তীরপ্রাহ্ (পুং) দেশভেদ।

"তীরগ্রহা: শুরসেনা: ইলকা: কঠকা: গুরা:।" (ভাণ তীম > আ:)
তীরগর (তীরকর) > তীরপ্রস্তকারী। ২ এক শ্রেণীর
মুস্লমান। আক্ষদনগর জেলার ইহাদের বাস। পূর্বেই ইহারা
যুদ্ধের জন্ত তীর প্রস্তুত করিয়া দিও, এজন্ত তীরগর নাম হইয়াছে। এখন আর তীরের আদের নাই। স্বতরাং ইহারাও
আতীয় ব্যবসায় পরিত্যাগ করিয়াছে। এখন ইহারা চোবদার
বা দাসের কার্যা করিয়া জীবিকা নির্বাহ করে।

তীর্মার (দেশজ) ১ তীর রাখিবার গৃহ। ২ হিন্দুর্মণীগণের মধ্যে প্রথম ঋতু হইলে চারি দিন যে বরে আবদ্ধ থাকে,
যে বরে কোন পুরুষ ঐ চারিদিন যাইতে পারে না, দেই
ঘরকেও সাধারণে তীর্ঘর বলে। পূর্বকালে চারিদিকে তীর
প্রিয়া তাহার মধ্যস্থলে ঋতুমতী রমণীকে রাখা হইত, তাহা
হইতেই তীর্ঘর নাম হইরাছে। এখন ক্একটী বাঁখারি
কাটিরা তীর শক্ষণ ব্যব্হত হয়।

• তীরণ (ক্লী) শতাভেদ, করঞ্জিকা। (নির্ধন্ট প্র•)
তীরন্দাজ্ (পারনী) শরনিকেপনিপ্ণ ব্যক্তি, ধর্মর।
তীরভুক্তি (প্রং) দেশবিশেষ, ইহা বিদেহের নামান্তর।
ইহার অপবংশ তীরহৃত। বিহত দেখ।
তীরক্তেই (বি.) তীরে রোহতি কহ-ক। বৃক্ষ।

তীর*ছ (অি) তীরে ডিঠতি তীর-হা-ক। > তীরছিত। ২ মৃত্যুর পুর্বে গলাতীরে মীত। চলিত কথাদ বাবহৃত হয় "তীরছ করা হইরাছে।"

ভীরাট (পুং) গোধ। তীরান্তর (ক্লী) ভীরভ অন্তর্নং ৬ডৎ। অপর পার। • জীরিড (অি) ভীর-ক্ষ। ক্লব্যিসমাধি। ভীক্ষ (পুং) ১ শিব, মহাদেব। "নমতেহতীৰু হুতার তীক তীক হুৱাৰ চৰ" (হরিব ১০৮ মঃ)

২ শিবস্থতি।

তীর্ণ (বি) ভূ-জে। > উত্তীর্ণ, পারগত। ২ ক্তিভূত। ত আপুত। ৪ অভিক্রেটি।

"তীর্ণোহি তদা ভবতি ক্ষমত গৈহান।" (প্রতি) তীর্ণপদী (জ্বী) তীর্ণ: পালে। মূলমত্মা অস্ত্যেনোপঃ ক্সপদ্যাণ ভীষ্। তালমূলী।

তীর্ণা (স্থা) প্রতিষ্ঠাধ্য বৃত্তিবিলেষ, পিলগছন্দশান্ত্রাক্ত বড়ব্দর ছন্দবিলেষ, ইহার তৃতীয় ও বঠ গুরু। স্বব্দ 🍨

, "যশ্মিন্ বৃত্তে কণঃ কণঃ বেদৈববৈণঃ সাভাৎ তীৰ্ণা।" "গ্ভৌ চেৎ কনোতি।"" (গিল্লছ") •

তীর্থ (ক্লী) তরতি পাণাদিকং যন্ত্র তুথক্ (পাতৃ তৃদি বচীতি। উণ্ ২০০)। ১ শাস্ত্র। ২ যক্তর। ৩ ক্লেত্র। ৪ উপার। ৫ নারীরক্তর। ৬ অবতার, অবতরণ। ৭ অবিস্কৃত্ত কল, বে অল অবিরা সেবন করিরা থাকেন। ৮ পাত্র। ৯ উপাধ্যার, গুরুল। ১০ মন্ত্রী। ১১ যোনি। ১২ দর্শন। ১৩ থট, থাট। ১৪ বিপ্রা। ১৫ আগম। ১৬ নিদান। ১৭ বহি,। ১৮ প্রায়ানাদি। কাশীথতে তীর্থের বিবর্গ এইরূপ লিখিত আছে—তীর্থ ত্রিবিধ অলম, মানস ও হাবর। অগতে ত্রাহ্মণাণ অলম তীর্থ। ইহারা পবিত্র হতাব এবং স্বক্লামপ্রদ। ইহাদিগের বাক্যোদক হারা মলিন লোক সকল বিশুদ্ধ হয়। ত্রাহ্মণদিগকে সেবা করিলে পাপ থাকে না এবং সকল কামন্য সিদ্ধি হয়।

"ত্রাহ্মণা অক্সং তীর্থং নির্দাণ সর্ক্রমানিকং।
বেষাং বাক্যোদকেনৈর গুছান্তি মলিনা: জনা: ॥" (কাশীর্থণ)
মানসতীর্থ। সত্য, জ্মা, ইক্লিয়নিগ্রহ, দয়, অস্তুতা,
দান, দম, সস্তোষ, ত্রহ্মচর্য্য, প্রিয়বাদিতা, জ্ঞান, থৈগ্য ও
তপন্থা, ইহার প্রত্যেক্টী মানসতীর্থ; ইহার মধ্যেও মনের
বে বিশুদ্ধিতা তাহাই সকল তীর্থ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। দেশ
ভ্রমণ করিলে আত্মার উন্নতি বা বহুদর্শিতা লীত হয়, এক্সপ্ত ওীর্থবারা হিন্দুগণ অতি প্র্যাদ্ধারক বনিয়া জ্ঞান করিতেন।
তীর্থবারা হিন্দুগণ অতি প্র্যাদ্ধারক বনিয়া জ্ঞান করিতেন।
তীর্থবারা হিন্দুগণ অতি প্রাদ্ধার আশ্রন্ধে গম্মন করা যায়,
তাহাদের বৃত্তান্ত অরণ করিলে জগতের অনিত্যতা স্পষ্টই
প্রতীর্মান হয়, "কত শত লোক এই স্কুলী আশ্রমে আসিয়া
জন্ম ও মৃত্যুর হাত হইতে উদ্ধার লাভ করিয়াছেন, এই
সকল চিন্তা করিয়া মন এক উদার ভাব ধারণ ক্বরে, এবং
সর্ক্রণ পাপ হইতে দ্বে থাকিবান্ন চেটা হয়, এই নিমিত্ত

প্রত্যেক, মনুষ্যেরই আত্মার উন্নতির কম্ম তীর্থদাতা আবশ্রক। দর্কাল, ললে আপুত করিয়। লানুকরিলে তীর্থনান इत ना, (य नकल लांक देखित्रंनमृहत्क अत्र कतित्राहर, ভাহাগাই প্রকৃত তীর্থনায়ী। বাহারা লোভী, জুর, দান্তিক বা বিষয়াসক্ত, ভাহারা শত শত ভীর্বে স্থান করিলেও পাপ হইতে মুক্ত হয় না। কেবল শ্রীবের মলত্যাগেই মহয় निर्धन हत्र ना, मन इहेटल मनत्क मृत कतिराज शांतिरनह প্রস্থৃত নির্মাণ হওয়া ঘায়। তীর্থগমনের প্রকৃত উদ্দেশ্য চিত্তের ভারিলাভ। যদি অন্তঃকরণের ভাব পবিত্র না হয়, ভাহা हरेल मान, राख, जभः, त्योह, जीर्शनवा, प्रतक्षा अवग প্রভৃতি সদস্ঠান করিলেও কোন ফললাভ হয় না। মুর্য্য हे क्रियम्बर्ग्हरक अन्न क्रिया (प्रशास्त्रहे व्यवद्यान करूक ना কেন, সেই স্থানেই ভাহার কুরুক্ষেত্র, নৈমিষারণ্য ও পুঞ্জর প্রভৃতি সমুদর তীর্থ। রাগবেষ প্রভৃতি মল অপনয়ন করিয়া विकक्ष खानक्रभ खाला वाहाता बान करत, उाहारनत उ दक्ष है গতিলাভ হয় ৷

স্থাবরতীর্থ-গন্ধাদি পুণা প্রদেশ। যেমন শরীরের অবরব 'বিশেষ পবিত্র বুলিয়া গণা, তজপ এই পৃথিবীরও কতকগুলি প্রদেশ পুণাতম বলিয়া বিখ্যাত। স্থাবর ও মানস তীর্থে যাহারা নিত্য অবগাহন করে, তাহাদের উৎকৃষ্ট কললাভ হয়।*

তীর্থ যাত্রা করিলে যে ফললাভ হয়, বিপুল দক্ষিণার সহিত বহুতর যজ্ঞঘারাও সে ফললাভ করা যায় না। যাহার হল্ত পদ ও মন সংযত হইয়াছে এবং যে ব্যক্তি বিদ্যা, তপ্রাা ও কীর্ত্তি-সম্পন্ধ, তাহারই তার্থফল লাভ হয় ৮০প্রতিগ্রহ হইয়া যে কোন উপায়ে যে ব্যক্তি সল্ভই থাকে, তাহারই তার্থফল লাভ হয়। যে ব্যক্তি দান্তিক নহে, যাহার আরম্ভ সকল নিফলং ইয়াছে এবং যিনি সমন্ত অব্দ হইতে নির্ত্ত, যিনি ক্রোধ রহিত, জিতেন্দ্রিয়, সত্যবাদী, স্থিরবৃত্ত ও সমন্ত প্রাণীকে আপনার নাায় দর্শন করেন, তাহারাই তার্থের ফলভোগ করেন। ইল্রিয় সংযত করিয়া, শ্রদ্ধা ও ধীরতার

শ "শূণু ভীর্থানি গদতে। মানসানি মমান্যে।
বেষ সমাক্ নর: আবা এয়াতি পরমাং গতিং।
সভাং তার্থং ক্ষমা ভাবং তার্থমিক্রিরনির্মহ:।
সক্ষেত্তসমাতার্থ সক্ষাঞ্জবনেব চ।
দানং তার্থং দুমতার্থং সংস্কারতার্থ মূচ্যতে।
ব্রহ্মচর্ঘাং পরং ভাবং তার্থ প্রেরবাদিতা।
ক্ষানং তার্থং দৃতিধীর্থং পুণাং তার্থ মুদারতং।
তার্থিমানি ভতার্থং বিভ্রম্বিনসং পরা।
এততে ক্ষিতং দেবি নামসং তার্থক্রুপং।" (কাশীর্থং)

সহিত তীর্থ ত্রমণ করিলে পাপীজনও বিশুর্দ হর, সাধুদের কথা আর কি বলিব। তীর্থাস্করণ করিলে তির্যাগ্রোনি বা কুদেশে জন্ম হয় না। তীর্থত্রমণকারী ব্যক্তি ছংখী হয় না এবং তির্বাসি হয়। যাহার শ্রহা নাই, যে পাপালা ও নাজিক, যাহার সংশর দ্র হয় নাই, যে নির্থক তর্ক করে, তাহাদিগের তীর্থের ফললাভ হয় না।

ষাহারা শীতোক্ষু সহু করিয়া ধীরভাবে বিধিপূর্বক তীর্থ বাত্রা করে, তাহারা শুর্গগামী হর।

্তীর্থগমন করিতে হইলে প্রথমতঃ যে ব্যক্তি তীর্থে গমন कतिरत, त्म शृंदर मःवछ इहेबा उभवाम कतिया थाकिरव ; তৎপরে যথাশক্তি গণেশ, পিতৃগণ, ত্রাহ্মণ এবং সাধুগণের পূজা क्तिर्व । ज्र्भरत्र भात्र क्तिया नियम व्यवस्मभूर्यक व्यानस्म গমন করিবে। তৎপরে তীর্থ হইতে প্রত্যাগত হইয়া প্ন-রায় পিতৃগণের ক্মর্চনা করিবে। এইরূপ করিলে ভীর্থের ফলভোগী হওয়া যায়। তীথৈ ত্রান্সণের পরীক্ষা করিবে না। কেছ অন্ন প্রভতি দ্রব্য চাহিলে তাহাকে যথাশক্তি প্রদান করিবে, কাহারও প্রতি ক্রোধ প্রকাশ করিবে না। ভিলপিষ্ট ও গুড় বারা প্রাদ্ধ করিতে হইবে। প্রাদ্ধে অর্থ প্রদান ও আবাহন করিবে না। কাঁলবিশুদ্ধ হউক বা না হউক. কোনরূপ বিঘুনা হইলেই ভীর্থে শ্রাদ্ধ ও তর্পণ করিবে। প্রসঙ্গাধীন তীর্থে গমন করিয়া যদি স্নান করে, তাহাতে তাহার সানের ফললাভ হয়, কিন্ত তীর্থযাত্রানিমিত সানের ফললাভ হয় না। তীর্থগমনে পাপাত্মাদিগের পাপ বিনাশ ह्यु এবং अक्षांत्रम्पन्न वाक्निमित्तत ठीर्थनमत्न सर्थाक कननाछ হর। যে 'অভের অভ তীর্থেগমন করে, সে ১৬ ভাগ ফল প্রাপ্ত হয় এবং যে প্রসঙ্গাধীন গমন করে, তাহার অর্দ্ধেক ফল, খাহার উদ্দেশে কুশের প্রতিক্ততি করিয়া তীর্থে দান করান যান্ন, তাহার অপ্তমাংশ ফললাভ হনু। তীর্থে উপবাদ ও মন্তক মুখন করিতে হয়। তীর্থে মস্তক মুখন করিলে শিরোগত পাপ সকল নষ্ট হয়। যেদিন তীর্থে আসিতে হইবে, তাহার পূর্বাদিন উপবাস করিয়া থাকিতে হয় এবং তার্থে আসিয়াই প্রাদ্ধ করিতে হইবে। কাশী, কাঞ্চী, মায়া, অঘোধ্যা, বারবতী, मश्रा विदः व्यवस्थी व १ ती भूती साक्त अन वर्दः वीरेनन छ কেদার ততোধিক মুক্তিপ্রদ।

তীর্ধরাল গুরাগ হইতে খবিমৃক্ত ক্ষেত্র বিশেষ মুক্তিপ্রাল গুরাগ হইতে খবিমৃক্ত ক্ষেত্র বে নির্মাণ মুক্তি হয়, তাহার আর কোথাও ক্ষম হয় না। অভান্ত যে সকল মুক্তিক্ষেত্র আছে, সে সব কাশীতে পাওয়া যয়ি, কাশীতেই জীবগণের নির্মাণ মুক্তি হয়, অন্ত কোন জীর্থে তীহা হয় না। (কাশীণ ৬ আঃ)

ব্রদ্পুরাণে তীর্থের বিষর এইরূপ নিধিত আছে, বিশুদ্ধ মনই পুরুষের তীর্থ। অন্তঃশ্বণ বাহাতে নির্মাণ হর, তীর্থ করিতে হইলৈ তাহাই আবশুক। বতক্ষণ পর্যন্ত মন বিশুদ্ধ না হর, ততক্ষণ ভাহার কোন তীর্থেই ফললাভ হইবে না। বেমন মন্তপাত্র লত শতবার খোত করিলেও ভাহা পবিত্র হর না, সেইরূপ অবিশুদ্ধান্ত্রিলোক শত শত তীর্থজ্ঞলে মান করিলেও ভাহার ফল পার না। হুইাশর দ্বান্তিক লোকদিগের তীর্থ, ব্রত, দান প্রভৃতি সকলই নিক্ষণ। মন্ত্র্যুগণ ইক্রিম্নিগকে ব্লীভৃত করিয়া বে কোন হানে বাস করিলে সেই স্থানই ভাহার পুদ্র নৈমিবারণা প্রভৃতি ভীর্থ হর।

"ইক্সিয়াণি বশে ক্লছা যত্ৰ ভত্ৰ বসেলবঃ।

তত্র তন্ত কুক্দেত্রং প্ররাগং পুদ্ধরং তথা ॥" (পদ্মপুণ)
তীর্থে গমন করিয়াও যাহাদের চিত্তের মূল দ্র হর নাই,
তাহাদের তীর্থগমনের কোন ফলই নাই। প্রেরাগতীর্থে
গমন করিয়া পিতৃগণের শ্রাদ্ধ ও কেশমুগুন করিবে, অন্তথা
কেশমুগুন করিবে না। তীর্থযাত্রার পূর্ব্বেও তীর্থ হইতে
ফিরিয়া আসিয়া পিতৃগণের উদ্দেশে শ্রাদ্ধ করিবে। ঐশর্য্য
মন্ত যে ধনী যানাদি বারা তীর্থযাত্রা করে, তাহার সকল
তীর্থই নিক্ষণ হয়।

"ঐত্বর্যালভমাহাত্ম্যাৎ গচ্ছেৎ যানেন যো নরঃ। নিক্ষণং ভক্ত ভত্তীর্থং ভক্ষাৎ যানং বিবর্জয়েৎ ॥" (মৎক্ষপু॰)

ইক্ষাতে কেছ কেছ বলেন, যানছারা তীর্থ গমন করিলে অর্দ্ধেক পুণ্য নষ্ট হয়, ছত্ত ও পাতৃকা লইয়া গমন করিলে তদর্দ্ধ বিন্তু হয়, তীর্থে তৈল ও মাংস ব্যবহার করিলে তাহার অর্দ্ধেক নষ্ট হয় ও তীর্থে মৈথুন আচরণে সকলই নষ্ট হয় শ

"পুণার্দ্ধং হরতে যানে তদর্দ্ধং ছত্রপাছকে।°

তদর্জং তৈলমাংসাভ্যাং দর্বাং হরতি মৈথুনে ॥" (কর্মলোচন)

সত্যব্গে প্রুর, ত্রেভাষ্ট নৈমিষারণ্য, ছাপরে কুরুক্ষেত্র ও কলিতে গলাই শ্রেষ্ঠ। তীর্থে প্রতিগ্রহ করিবে না। নারায়ণক্ষেত্র, কুরুক্ষেত্র, বারাণসী, বদরীনাথ, গলানাগরস্ক্ষম, পুরুর, ভান্তর, প্রভান, রাসমণ্ডল, হরিঘার, কেদার, সরস্বতী, রুলাবন, গোঁদাবরী, কৌলিকী, ত্রিবেণী প্রভৃতি তীর্থে যাহারা ইচ্ছাপ্রক প্রতিগ্রহ করে, সেই তীর্থপ্রতিগ্রাহীলোক কুঁজীপাক নরকে গমন করে। তীর্থেণ গমন করিয়া প্রাণক্ষাগত হইলেও দান গ্রহণ করিবে নী। জ্বাল, মন্ত্রমাস ও যাঁত্রোক্ত নিষিদ্ধ দিন পরিহার করিরা তীর্থিঘাত্রা করিবে। কিন্তু পরাক্ষেত্রে অকালেও গমন করা যার, অথবা সংক্রান্তিতে সকল তীর্থেই যাওরা যাইতে পারে।

এই পৃথিৰীতে কত তীৰ্থ পাছে তাহা নিৰ্ণন্ন করা

হংসাধ্য। এক পদ্মপুরাণেই সার্দ্ধ তিনকোটা তার্প্রের উল্লেখ আছে।

"তিল্র: কোট্য হ বিকোটা চ তীর্থানাং বায়ুয়ন্তবীং।

বিবি ভ্বান্তমীক্ষে চ তানি তে সন্ধি আছেবি॥" শৈলপুণ্)

এইরূপ অবস্থার সকল তীর্থের নির্ণর করা অসম্ভব।

একমাত্র এই ভারতবর্ম মধ্যেই যে কত্পত তার্থ আছে,"
তাহার ইয়ভা করা বায় না। বেখানে কোন মহাপুরুষ
আবিভূতি হইরাছেন, অথবা যেখানে কোন দেব বা মহাপা
লীলা করিয়াছেন, ধর্মপ্রাণ হিক্ষুর নিকট সেই স্থানই তীর্থরূপে গণ্য হইয়াছে। সকল তীর্থের নাম একত্র-প্রকাশ
করিয়া গ্রন্থের কলেবর বৃদ্ধ করা র্থা। (বিশ্বকোধের বথাস্থানে
সেই সেই নামে তীর্থ সমুদ্ধের বিবরণ-প্রদক্ত হইয়াছে।)

এখানে মহাভারত হইতে প্রাচীন কতকত্ত্বলি তীর্থের উল্লেখ করিব।

পুকর। ইহার নাম জীর্থরাজ—এই তীর্থে তিসদ্ধা। দশ-কোটা ক্রীর্থ আগমন করে, ইহাতে স্থানাদিতে অখনেধ থজের ফল এবং ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি হয়।

জন্মার্গ—ইহাতে অন্ধ্রীধ সদৃশ ফল ও বিষ্ণু প্রাপ্তি হব । তুপুলিকাশ্রম—ইহার ফল তুর্গতিবিনাশ ও বন্ধ প্রাপ্তি,। অগন্ত্য-সরোবন্ধ—ইহাতে ত্রিরাত্র উপবাসে বাজপের যজ্ঞ ল ও শাকভোজনে কৌমারলোক প্রাপ্তি হয়।

ধর্মারণ্য — এইবানে কথা শ্রম, প্রবেশমাতেই পাপক্ষ, দেবপিতৃপুন্ধা থারা অখনেধকণ ও দেবলোক প্রাথি ২য়। যযাতিপত্তন — এই স্থানে গমনেই অখনেধ ফল হয়।

কোটাতীর্থ—এথানে মহাকাল নিত্য বিরাজিত আছেন। স্থানে অখনেধ তুলা ফল হয়।

ভদ্রবৃট—নর্দাননী, এথানে পিতৃদিগের তর্পণে অগ্নিষ্টোম তৃল্য ফল হয়। দক্ষিণসিদ্ধ—এথানে ব্রহ্মচর্য্য আচরণে অগ্নিষ্টোম তৃল্য ফল ও স্বর্গ প্রাপ্তি হয়। চর্মাণ্ডী ননী—এথানে ইক্সিমনিগ্রহে ক্যোতিষ্টোম তৃল্য ফল হয়। অর্ক্ দাচার্য্য—এথানে বিশিষ্ঠাশ্রম, একরার উপবাসে সহস্র ক্রীদানত্ল্য ফল হয়। পিকতীর্থ—এথানে ইক্সিয় জ্ব্যু সবৎস শত কপিলাদান তৃল্য ফললাভ হয়। প্রভাস—এথানে হতাশন স্বয়ং বিরাজিত আছেন, স্বানে অগ্নিষ্টোম সদৃশ ফল হয়। সুস্বতীসাগরসঙ্গম—এথানে স্নান্ধারা সহস্র গোদানতৃল্য ফল ও তিন দিন । উপবাসে পিতৃ এবং দেবতাদিগের তর্পণ্ঠে অথ্নেধ তৃল্য ফল হয়।

বরদান—এথানে ছর্কাসা বিষ্ণুকে বর প্রদান °করিয়া-ছিলেন, স্বানে সহস্র গোদানতুল্য ফল হয়। শ্বৰতীতে পিণ্ডারক্তীর্থ—এথানে প্রচিত্যুক্ত মুদ্রা ও শ্বতিতিত পর আলিও দেখা বার। মহাদেব অরং এহানে আছেন, রানদানাদি বারা বহু প্রবর্গনান বজ্ঞ সদৃশ ফললাভ হর্মণ সম্ভানিত্বসক্ষ—এথানে রাম ও পিতৃগণের তর্পণ করিলে বর্মণালাক প্রাপ্তি হয়। ডিমীতীর্থ—এথানে মহাদেব অরং বিরালিত আছেন। সানে অখনেধকল ও মহাদেবের দর্শন প্রনথারা সকল পাপনাশ হয়। বস্তুধারাতীর্থ—ইহার দর্শনে আখমেধকল, সান ও তর্পণ্যারা পিতৃলোক প্রাপ্তি হয়। সিদ্ধৃত্য-তীর্থ—এথানে সানবারা বহু যজ্ঞত্বা ফললাভ হয়। ফুড্ল-তীর্থ—এইখানে গমন করিলে জন্মলোক প্রাপ্তি হয়। কুমাণ রিকা ও শক্রতীর্থ—এখানে সান করিলে সকল পাপনাশ হয়।

পঞ্চনদতীর্থ-ইংবতে পঞ্চযজ্ঞের ফল লাভ হয়। ভীমা-হানতীর্থ-এখানে স্থান করিলে মহুষ্য দেবীপুত্র হয় এবং সহত্র গোদানতুল্য ফল লাভ করে।

গিরিক্ঞতীর্থ— এধানে স্বরং বৃদ্ধা বিরাজিত আছেন।
ইহাকে প্রণাম করিলে গহল গোদান সদৃশ ফল, লাভ হয়।
বিমলতীর্থ— আজিও এথানে সৌবর্ণ ও রক্তমংক্ত দেখা যায়।
"মান ও পানবারা বাজপের সদৃশ ফল লাভ হয়। বিতন্তানদী—
. এখানে তর্পণ বারা বাজপের ফল ও স্বর্গলোকে গমন হয়।
কাশ্রীরে বিভল্কা নামে ভক্ষকনাগদদন ভীর্থে সান বারা
বাজপের ফল ও স্বর্গলোক লাভ হয়। শমপরাতীর্থ— এইখানে
সায়ংসদ্ধাকালে সান ও স্থাচ্চিকে চক্ষ প্রদান করিলে
সহক্র অর্থমেধের ফললাভ হয়।

क्रजाम्लान्डीर्थ-- এইथान महारावरक वर्गन कृतिरा व्यथ-মেধ সদৃশ ফল লাভ হয়। মতিমানু পর্বত--এইথানে তিন मिन उपवाम कतिरम स्काछित्याम ममृन कम माछ इत्र। रमिवका नमी-हेड्डा महारमद्वत द्वान, ज्ञान ७ मूहारमव नर्भन এবং মহাদেবকে চরু প্রদান করিলে সকল কামনা সিদ্ধি ও দেবলোক প্রাপ্তি হয়। দীর্ঘদত্ততীর্থ-এম্বানে গমন भाजरे मीर्चनरजत कन, त्रामरुष ७ व्यथरमध्य कन इय। विन्मन डीर्थ - याना निष्ठ वां बर्भ प्रमुभ क्ष्म माछ इस। भर्म-পানভীর্ধ--এথানে স্থানে শিবের স্থায় দীপ্তি ও গেসিহত্র দানতুল্য ফল লাভ হয়। কুমারকোটাতীর্থ—ম্বানে এবং পিতৃ ও দেবজাদিগের পূজনে গ্রামরন যাগতুলা ফল লাভ হয়। ऋज-কোটাতীর্থ-এইথানে কোটা ঋৰি মিলিত হইয়া স্থামি স্বত্যে ক্সতকে দেখির এই বলিয়া সকলে প্রস্থান করিলে ক্রড়দেব তাহাদের গুতি সম্ভষ্ট হইয়া সেইখানে কোটী হইয়াছিলেন, এই-थान्त बार्न व्यथरमध्यक्ष कन ও कून छेदात हत्। मत्रवाजी-नक्रमजीर्थ- अथात्न क्रनाक्त चत्रः वित्राक क्रांत्रन, क्रांत्न वह च्रवर्भ वागकन नाज रहा। नवायमान जीर्थ, धरेशान गमतन मरुख शानान कन खाखि रहा।

কুক্তে অভীর্থ—এখানে বাইলে সকল পাংকর, মচকুক্
বারপালের পূজা করিলে গোসহত্র দান কল প্রাপ্ত হয়।
বিক্ষান—এখানে সান ও দর্শনবারা অখ্যেধ কল ও বিক্
লোকে গমন হয়। পরিপীরবভীর্থ—এইখানে অলিটোম ও
অভিরাজ যজের, কল লাভ হয়। পৃথিবীভীর্থ—এইখানে
সহত্র গোলানভূল্য ফল। শালুকিনীভীর্থে গিরা মান করিলে
সূত্র গোলানভূল্য ফল। সপির্বীভীর্থ—এইখানে গমনে
অগ্নিটোম ফল ও নাগলোক প্রাপ্তি হয়। অবর্ণকবারপালভীর্থ—
এইখানে একরাজ বাস করিলে সহত্র গোলানের ফল হয়।

भक्षनमञीर्थ-- এখানে স্নানে **অখনেধ** ফল লাভ হয়। **पाषिछीर्थ-- वर्षात्न উত্তম ऋश गान्छ इयः। वत्राह्डीर्थ-- शात्न** व्यविष्टिम कन् थालि हर। वर्षाविर्ध-- এইथान बावस्य यक्रकन नाफ इम्र। এक इश्मिकी -- अथात महस्य शीमान-তুল্য ফল লাভ হয়। কুতলোচতীর্থ-এখানে গেলে পুঞরীক रक्करुन প্রাপ্তি इत्र। मुक्षाविडेडीर्थ-- এখানে মহাদেবের স্থান, এক বাজি বাদ করিলে গাণপত্য প্রাপ্তি হয়। জামদ্য্যাহত পুষরতীর্থ-এইথানে স্নান ও পুঞা বারা হয়মেধ ফল লাভ হয়। রাম্ভুদতীর্থ-পরশুরাম ক্ষতিয়দিগকে বিনাশ করিলে ভাছাদের রক্তে ৫টা ব্রদ উৎপন্ন হইয়াছিল। এইথানে পিতৃ-তৰ্পণে বছস্থবৰ্ণ মজ্ঞফল লাভ হয়। বংশমূলকতীৰ্থ-এই তীৰ্থে স্থান করিলে স্বকুল উদ্ধার হয়। কারশোধন-স্থানে দেহ ুভুদ্ধি হয়। লোকোদ্ধারতীর্থ লানে স্বকীয় লোকোদ্ধার ও প্রীতীর্ধে গমন করিলে উত্তম শ্রীপ্রাপ্তি হয়। কপিনাতীর্ধ ---এইখানে মান, দেবতা ও পিতৃপুদ্দে সহস্র কপিলা দানের •ফল হয়। স্থ্যতীর্থ—স্নান, উপবাস 🗷 পিতৃপুরুনে অগ্নিষ্টোম ফল ও দেবলোক আথি হয়। গোভবনতীর্থ-এইথানে অভিষেক বারা সহস্র গোদানের ফল হয় : শঙ্মিনীতীর্প-মানে উত্তম বীর্যা লাভ হয়।

ব্রুমাবর্ত্তবি—মানে ব্রহ্মলোক থাপ্তি হয়। স্থতীর্থ—
দান, পিতৃ ও দেবতাপুদ্ধনে অখনেধ ফল ও পিতৃলোক প্রাপ্তি
হয়। শীতবনতীর্থ—মানে সকল রোগনাশ ও ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি
হয়। শীতবনতীর্থ—এথানে কেশমুঙ্ডন ঘারা প্রিত্তা ও
ঘানলোমাপফ্টীর্থে মান ঘারা পরমগতি প্রাপ্তি হয়। দশাখমেধিক তীর্থ-মানে নিশ্চলাগতি প্রাপ্তি হয়। মাহ্যবভীর্থে
ব্যাধণীড়িত কৃষ্ণ মৃগ সকল অবগাহন করিয়া মাহ্যবহ্
প্রাপ্ত হইয়াছিল, মানে স্কল পাপ বিনষ্ট হয়। আপগানবী—
এইথানে ধ্যেবতা ও পিতৃগুনের উদ্দেশে ব্যাহ্মণ ভোক্তা

করাইলে কোঁটা রাজণ ভোজনের ফললাভ হয়। মক্ষোভূ হয়-ভীর্বে সপ্তর্বিভূতে দান করিলৈ নকল পাপনাল ও বন্ধলোক তথাবি হরণ।

•কপিলকেলার ভীর্বে ভণভা করিলে সকল পাসনাশ ও जरुद्गानशासि, नवक्छीर्थ वृवश्यवरक धार्माम कविरन मकन क्षिमा निष्टि ও निवरनाक वासि, रेनाम्नकीर्ध मान, দেবতা ও পিড়পুৰার হুর্গতি বিনালু ও বাৰণের ফল, किसामछीर्थ द्वारन जवारमञ्जान कन । क किश्वभाषीर्थ द्वान कतिल कथामत्र वनक्षेत्र हत्। वदावनाकीर्य-वर्षे छीर्य नात्ररमत दान, এইशान मृष्ट्रा हूदेरन करूखम लाक आर्थि হর। বৈতরণী নদীতে খান ও মহাদেবের পূজা করিলে সকল পাপ মুক্তি ও পরম্পর প্রাপ্তি হয়। ফলকীভীর্থ ও मिलक छोर्थ--नात्रम ध्यानि नकन छोर्थ मिलिक कत्रिताहितन, লান ক্রিলে দকল ভীর্থসান কল হয়। ,মধুবটীভীর্থে সান, त्तवज ७ शिज्भूबान मध्य शीमान कृता कर, स्मेविकी-দুশৰতীসক্ষতীৰ্থে কান করিলে সকল পাপবিমৃক্তি, কিন্দত্ত-কৃণতীর্থে ভিল প্রান্থ দান করিলে ঋণতাম হইতে মুক্তি ও পরম সিদ্ধিলাভ ও বেদীভীর্থে মান করিলে সহক্র গোদানের कन इमा। बाहः ও स्मिनजीव-এই ছই जीर्थ मान कतिरन স্বালোক লাভ হয়।

মৃগধ্মতীর্থে থান ও বামনপুলা করিলে সকল পাপনাশ ও ক্র্যালোক প্রাপ্তি, সরস্বতীতীর্থে থান করিলে স্বর্গে বাস ও নৈমিযকুঞ্জীর্থে থান করিলে হসমেধ ফল লাভ হর।

কভাতীর্থন্নানে জ্যোতিষ্টোম ফল, এক্ষমানভীর্থন্নানে শুজের বাহ্মণত্ব প্রাপ্তি, সপ্তদারসভতীর্থে লান ও লগ বারা বহুলোক-প্রাপ্তি, অগ্নিভীর্থন্নানে বহুলোকলাভ, বিশামিক্সভীর্থে লান বারা ব্রহ্মণাপ্রাপ্তি, বহুলোকলাভ, বিশামিক্সভীর্থে লান বারা বহুলোকলাভ, পৃথ্দকতীর্থে অভিবেক করিলে অশ্বমেধ ফল এবং পালীদিলের স্বর্গ লাভ হর। মধুত্রবতীর্থে লান করিলে সহত্র গোদান ভূল্য ফল লাভ হর। সরস্বত্যক্রণাসক্ষমতীর্থ—এইথানে ত্রিরাক্ত উপবাস ও লান করিলে ব্রহ্মহত্যাক্সনিত্ত শীপ নাশ হর।

অবকীণতীর্থ দানে ছুর্গতি বিনাশ, হয়। শতসঁহলকভীর্থ ও সাহলকতীর্থ—এই ছুই তীর্থে দানে সহল গোদান ফল; লান ও উপবাসে ফল শতশুলী বৃদ্ধি হয়। রেপুকার্তীর্থ—এইখানে অভিবেক, পিতৃ ও দেবতাপুদ্ধনে সকল পাপনাশ ও অগ্রিটোম বজ্ঞের ফল লাভ হয়। বিমোচনতীর্থে লান ক্ষরিলে সকল প্রভিন্তবংশাপ বিস্কুক্ত হয়। পঞ্চনটতীর্থগননে মহৎ পুণালাভ ও স্থগ্যনা হয়। ইপুনুস্ভীর্থ—এই স্থলে ব্রহ্মাণ বেষ্কুল

কার্তিকরকে বেনাপতিবৈ অভিবেক করিরাছিলেন। কুল-चीर्थ मान कतिरम कवरमाक व्यक्ति रूप । • वर्षपात्रश्रीर्थभरन অগিটোম বজ্ঞের কল লাভ হয়। অনরকভীর্থগমনে ছুর্গতি विनाभ रत्र । - अदिभूत्रजीर्य-- अरेशान शिकृ ७ स्वरक्षितियत्र " ভৰ্ণণে অমিটোম ফল আধি হয়। গলাইদকৃপতীৰ্ণে দান कतिरम उत्तरमारक्याधि स्त्र । व्यन्तिकीर्थ पान ७ धकताव 'উপবাৰে ইন্তৰোকপ্ৰান্তি হয়। বদরীপাচনজীর্থ—এইবানে বলিঠের আশ্রম, তিরাত্ত উপীবাস ও বদরীফল ভক্ষণ নারা व्यथरमध्य कन ও इत्रामाक आश्चि-इत्र । देखमार्गक्रीर्थ व्यव्हा-রাত্র উপবাবে ইন্সলোক প্রার্থি হয়। আঁদিভথুপ্রমতীর্থ-ঘানে বৰ্গলোক গ্ৰাপ্তি হয়। সোমতীৰ্থলানে সোমলোকে থমন হয়। কলাশ্রমতীর্ধ—বিরাত্র অবস্থান 😘 উপবাসে ব্রশ্বলোকে গমন হয়। দধীচতীর্ধ-লানে বাজপের যজের कन इत्र। मुझिरुठीठीर्थ-- ध्रिशान व्यमावज्ञात निच मकन ভীর্থ আগমন করে। অমাবভার দিন ও সুর্যাগ্রহণে দান कत्रिक्षा भेक व्यवस्थित परकारी कम माक इत । जुर्वे। शहरन जान माख गरून भाभनांग ७ उजारगांक शांशि रह। भनाइप-তীর্বলানে রাজসুর ও অস্থবৈধ বজ্ঞের ফল লাভ হর।

তৎপরে কারাপচনতীর্থে স্থান করিলে স্থাট্টার ব্যক্তর কল ও বিষ্ণুলোক প্রান্তি হয়। সৌগন্ধিকবনতীর্থ—এইবানে ক্রন্থানি দেবগৰ প্রত্যহ স্থাগ্যন করেন, এই বন প্রবেশ মাত্রই সকল পাপনাশ হয়। প্রক্রময়তীতীর্থে স্থান, পিছ ও দেবপুলার স্থান্যেশ যজ্ঞের ফল লাভ হয়। ক্রন্থানিততীর্থ—এথানে ত্রিরাজোপবাস ও শাত্তাহার ক্রিলৈ বাদশবর্থ শাকাহারের ফল হয়।

स्वर्गाककीर्थ— এইशारन महाराव चनः वित्रांकिक चारहन, मिल्मुक्का चन्यास रख कन क गांगभका श्रीख हन। श्रीविक्ष वित्रांक केशवारन मनकामना निकि हम। त्रशाविकीर्थ बारनाहन कतिरान महारावरत श्रीपार भन्नभकि श्रीख हन। श्रीविक्षितान माकनाम हन। गणावातकीर्थ सान कितान प्रश्नीक सां कन हन।

শ সপ্তথন, জিগদ ও স্থাবর্ডভূবি—এই তিন তীর্থে পিতৃ ও দেবতা-তর্পণে প্ণালোক প্রাপ্তি হয়। গদাবমুনাসদমতীর্থদানৈ দশার্থমেধ ফল প্রাপ্তি ও কুলোদার হয়। কনওলতীর্থে দ্বান ও জিরাজ উপবাস বারা বাজিমেধ ফল ও জদলোক প্রাপ্তি হয়। কশিলাবটতীর্থে গুরুদান বাস করিলে সহল গোদানের ফল লাভ হয়। কশিলনাগরাকতীর্থে জাভিবেক করিলে সহল কশিলাবানের ফল হয়। কশিলভিকাতীর্থে দ্বান ক্রিলে ত্র্গতি বিনাশ হয়। স্থাদাতীর্থগমনে

मनन भागनाम ७ उन्नत्मक धीरि रह। क्रमार्काहीर्य-कारम् ब्रह्मस्मारु व्याधिः 'हत्र। शकानत्रक्रिनम्मकीर्वज्ञारम व्यथ्याम कम ७ वर्ग गमन इत्र । अञ्चर्निकीर्स् मान ७ मिन शृक्षां कातिरण पूर्विक विमान रहता कुका अक्कोर्थ भग्राम वर्ग-লাভ, অঞ্হতীবটভার্থে একরার্ত্র বাস করিলে সংক্র গো-° शास्त्रक केंग ७. कुरणाबाक हत्। ব্ৰহ্মাৰ্ড তীৰ্থগদনে व्यक्तिका वास्त्र क्षेत्र १ अवस्तान मान हत । वस्ताशकर्व-जीर्यभारत व्यवस्मक कत ७ वर्गलाक आखि रहा। नर्की-म्हा मन्द्रीर्थभारत वाचित्रमः कन ७ उन्हरनाटक भन्न इत्र। निष्ध अञ्चल कोट के शक्त का का किया विकास का का बाष्ट इत्। व्यर्थरवत्री जीरर्थ गमन कतित व्यवस्थि राख्यत कन छ वर्माका नाफ स्मान वानिक्षेत्रकी अम्बद्ध गर्सवर्णत्र विकष गांछ ७ पास्नाभवारम बविरमाक्यांशि इत्र। ज्वजूनकीर्थ-नमत्त अन्नदाव कन नाक्षं दीत्र श्रामक छीर्थन यतः नकन श्रांभतान, विकाशिर्वज्ञात प्रकृत करण विवासिक धरः महासंप्रजीर्ध উপৰাস করিলে ওভলোক প্রাপ্তি হয়।

মহালয়তীর্থে উপবাস ও এক মাস বাস করিলে আপনার
সহিত ২১ পুরুষ উদ্ধার হয়। 'বৈতসিকাতীর্থ-গমনে অর্থনেমধ ক্ষম ও ঔপনসগতি প্রাপ্তি, অ্লারিকাতীর্থ-গমনে রূপপ্রাপ্তি, ব্রাহ্মনিকাতীর্থ-গমনে ব্রহ্মলোক লাভ, নৈমিষ্টীর্থে
প্রবেশ করিলে স্কল পাপনাশ, স্নানে সপ্তক্লোদ্ধার ও
প্রাণ্ড্যান্যে স্বর্গ প্রাপ্তি হয়।

গলেত্তেদতীর্থে তিন দিন উপবাস করিলে বাজিমেধ কললাক্ত ও বিক্লোকে বান হয়। সরস্বতীতীর্থে পিতৃ ও দেবতাতর্পণে সারস্বতলোকে বান হয়। বাহদা নদী তীর্থে একরাত্রি
বাস করিলে একলোকপ্রাপ্তি হয়।

গোপ্রচারতীর্থে স্থান করিলে সকল পাপ, নাশ ও দেবলোক প্রান্তি, রামতীর্থরানে জনমেধ ফললান্ড, সাহস্রব তীর্থ-গমনে রাজস্ক ও জনমেধ ফল, রাজগৃহতীর্থ-সানে ক্রেরের মত সন্তোবলান্ড, মণিনাগতীর্থে গমন করিলে সহস্র গো-দানি তুলা ফল ও সপ্রিয় ভয় নাশ হয়। গোত্তমবনতীর্থ—এইখানে অংলাাহদে লান করিলে পর্যুম গতি লাভ হয়। প্রীদেবী-তীর্থ-গমনে প্রীঞ্জান্তি, উদ্পান তীর্থ-অভিযেকে বাজিমেধ ফলপ্রান্তি, বনশন-তীর্থ-গমনে বাজপের ফলপ্রান্তি, বিশলাতীর্থ-গমনে বাজপের ফল ও স্ক্রিলোকপ্রান্তি, তপোবনতীর্থে জরস্থান করিলে গুহুক লোকে বাস, কম্পনাননী-গমনে পুঞ্জীক বালক্ল, বিশ্লাা-ন্সীতে গমন করিলে জরিটোম ফল ও দেবলাকে ছিরবাস, मार्ट्यत्री छोर्थः गप्तरः व्यवस्थ वन बाकः वं यक्राव्यत्तः,

तिर्दोकः भूकृतियैः गप्तरः प्रगिष्ठिनामः ७ वाबिरमधः कन नाल,

ताम भग्ने छोर्थः गप्तरः व्यवस्थ कन, मार्ट्यत्रभन्छोर्थः ।

सानः कृतिरनः व्यवस्थ कन गाल, नातात्रभ्यानः छोर्थः प्रमानः व्यवस्थ कन, ७ हेळ्लारक वान् अवस्थ वाष्ट्रप्रतः ।

कृतिरनः वाष्ट्रप्रतः वाष्ट्रप्रतः वान् अवस्थ वाष्ट्रप्रतः ।

कृतिरनः वाष्ट्रप्रतः वाष्ट्रप्रतः वान् अवस्था विषयः विषयः वाष्ट्रप्रतः ।

कृतिरनः वाष्ट्रप्रतः वाष्ट्रप्रतः वान् अवस्था विषयः विषयः वाष्ट्रप्रतः ।

বটেশরপুরতীপে কেলবের দর্শন, পুজন ও উপবাস বারা
অভীষ্ট নিছি হর। বাষনতীর্থ-গমনে হর্গতি বিনাশ ও
বিষ্ণুনোকপ্রাপ্তি, চম্পকারণা জীর্থে এক রাজি অবস্থান
করিলে সহস্র গোদানের, কল, গোষ্টাবনতীর্থে একরাজ
উপবাসে অগিটোম কল, কল্পাসংবেদ্য তীর্থে আহার কর
করিলে মন্ত্রণাকপ্রাপ্তি, নিশ্বীরা নদীতে গমন করিলে
অব্যেধ কল লাভ ও স্কুলোছার এরং বনিষ্ঠাশ্রমে অভিবেক
করিলে বাজপের কল লাভ হর।

দেবকৃটতীর্থ-গমনে বাঝিপের ফল লাভ ও স্বকুলোদার হয়। (मध कम माछ इस। नर्काठोर्धवत्रद्दक-- এইथान वान कतित्व বছকুবর্ণ মাগ ফল ও ফুর্গতি বিনাশ হয়। বীরাশ্রমতীর্থে शमन क्रिट्र व्यथ्याय 'क्रव्याखि, व्यथिधाताजीर्थ-शमरन অখ্যেধ ফর্ল লাভ ও অকুলোদ্ধার, পিতামহ-সরে-चिक्टिरिक क्तिरन चित्रिरहीय कन नाज, कूमात्रधात्राजीर्धि नान ক্ষিলে কুতাৰ্থতা, ও ব্ৰদ্মহত্যাপাপনাশ, গৌরীশেখন্নতীর্থে আবোহণ, মান, দেবতা ও পিতৃপুৰনে অখমেধ ফল ও অর্গ গমন হয়। কোকামুখতীর্থে সান করিলে জাতিম্বর, नमाजीर्थः बादन क्रुडार्थजा, मर्स्त्राश नाम ७ वर्गर्शमन, ৰযভৰীপতীৰ্থ ও উদ্দালকভীৰ্থে অভিযেক করিলে সকল পাপ नाम, बन्नजीर्थ-शमानः वाकालम कन्युशासि, हम्लागमान সহস্র গোলানের ক্লন, নরেভিকাড়ীঞ্পদনে বাজপের ফল ও गः विमाजीर्धः ऋतः कृतिर्गं विमागाणः हत्र । लोहिणाजीर्धः গ্মন ক্রিলে বছস্থবর্ণ যাগ্যক্ল, ক্রতোয়াতীর্থে তিরাত क्षेत्रवादम >> वृष्य मारत्व कन, कान्छीर्थ शमत कविदन गह्य (शामान कन ७ वर्ग नाज हत। शकामाशदमन मडीर्स গমন ক্রিলে শভাশুদেধ কল, পরবীপভীর্বে স্নান' ও তিরাত্র केशवाल, जक्त कामना निषित्र देवजबनीकीएर्व अमन केब्रिटन मुक्क भार्तनाम त्यारः वित्रमाठीर्थभरत हत्त्वत छात्र कांद्र লাভ হয়। প্রভ্রতীর্থ-গমনে সকল পাপ নাশ হয়। শোণ-खानीयथीनकरमः निष्कृ ७. त्वरक्रांखर्नतः व्यविद्धांम कन व्याखि स्त । त्नामश्राक्षत्, मर्जनचिक्रतः ७ वश्मश्रुष धरे जिन कीर्धाः चामः कतिरमः वामिरमर्थः सन् थाथिः स्त्र । . अवस्कीर्धः । সমলে সহক্র থোষাদ কল্য পুশেষতীঃ জীর্থে মান ও বিরাজ্ঞ উপবাস করিলে সহক্র গোদাদ কর ও ক্লোছার হয়।

বর্ষিকাতীর্থ মানে বীর্যায়লাভ ও স্থান্ত গমন হয়। মহেজ্ঞ পর্মতে গিরা মান করিলে বাজিমের কল, মতলকেদার-মানে বর্থলোকলাভ, শ্রীপর্মত নামক রামতীর্থে মান করিলে আগমের কল ও পরমগতি, 'ব্যুভ পর্মতে পমন করিলে বাজপেরকলনাভ, কাবেরীগমনে সহ্যুহ গোদান কন্য, কল্যতীর্থ-মানে সকল পাপ নাল, গোক্রণতীর্থে উপবাস, মান, পূলা প্রভৃতিতে অথমের হজাদির কল, সম্পর্বাণীরমনে রূপ ও গৌভাগ্যপ্রান্তি, ব্রুবাতটে পিছ, ও দেবতাতর্পপে মহুর ও হংসমুক্ত বিমানপ্রান্তি, গোদাবরীতীর্থে
গমন করিলে বাহুলোকপ্রান্তি, বেরাসকমে মান করিলে
সর্ম্ব পাগনাশ, বর্ষাসকম-মানে বাজিমের কল প্রান্তি এবং
ব্রুম্বণার তিন দিন উপবাস করিলে সহন্তে গোদানের কল
লাভ হয়।

কুশপ্লবন-তীর্থে স্থান ও উপবাস করিলে চন্ত্রলোকপ্রাথি, দেবছদ, কৃষ্ণবেধা-সমৃত্তব, স্ব্যোতিশাত্র হল ও কথাপ্রম এই ৪টা তীর্থে গমন করিলে অগ্নিষ্টোম বজ্ঞের ফল লাভ, পরোঞ্চী নদীতে স্থান ও তর্পণে সহস্র গোদান ফল, বগুকা-রণ্য, শরভলাপ্রম ও কুশাপ্রমে গমন করিলে তুর্গতিনাশ ও অকুলোকার হর। স্পারক, রামতীর্থ, সপ্রগোদাবর, দেবপথ, তুলকারণ্য, মেধাবিক, কাল্ঞারপর্বত, স্বের্দ, ত্রিক্টপর্বত, ভর্ত্থান, ল্যেন্ট্র্ছান, শৃক্রবেরপ্র, মুঞ্জাবট, প্রভৃতি তীর্থে স্থান, দান, গমন ও প্রভাতর্পণাদি ছারা স্থামেধাদি মজ্ঞের ফল ও স্বর্পনোক প্রাথি হয়।

প্রয়াগ, বাহ্নকিতীর্থ, অবোধ্যা, মধুরা, মারা, কাশী,
কাঞ্চী, অবন্তী, প্রী ও বারাবতী এই সকল তীর্থ ধোকলারিকা। পুত্রর, কেলারু, ইক্সতী, ভর্তুদর প্রভৃতি তীর্থ
পিতৃকার্ব্যে প্রশন্ত। বংশোভেদ, হরোভেদ, গলোভেদ, মহালয়,
ভত্তেশ্বর, বিশ্বুপদ, নর্মানারার ও গরা এই সকল পিতৃতীর্থ।
গরার পিওলানের ফ্লায় এই সকল তীর্বেও পিওলান মুক্তিপ্রমান এই সকল পিতৃতীর্থ সর্ব্য পাপহর, ইহাদের নাম
মরবেই অধিক পুণ্য হর, পিও প্রদানের কথা বলা
অনাবশ্রক। গরাশীর্থ, অক্সরবট, অমরকণ্টকপর্বত, বরাহপর্বত, নর্মানাতীর, গলা, কুশাবর্ত্ত, বিক্ক, নীলপর্বত,
কনপদ, কুলার, ভৃত্তুল, কেলার, নড়ভিকা, ম্পাকা, শাকভ্রা, করু, মহাললা, কুমারধারা, প্রভাস, সরক্তী, প্রয়ায়,
প্রলাসাগরসক্রম, নৈমিরায়রা, প্রভাস, সরক্তী, প্রয়ায়,
কোনাগরসক্রম, নৈমিরায়রা, বারাবনী, অপ্রয়ায়্রম,
বেন্টিকী, সমন্তীর, শোল, প্রশিক্ত, বিশালা, বিভঙ্কা,

শতক, চত্ৰভাগা ও ইয়াবতী এই সমলভাগ আছে অলুবঙ্গ। (বিকুনংহিতা।)

বাহা কিছু তীর্থকলের বিষয় বলা হইল, এ সকল বিতে-বিরদিপের পকে ব্রিছে হইবে । অবিতেব্রিদ্রদিপের শত ব্র গমনে মন পবিশ্র হয়, বিষয়ারক্তি কম হয়, এই অভ প্রত্যেকের তীর্থবারা আরগ্রহণ । তীর্থে পাণ আচরণ করিলে তীহা অক্তর হয়। এইলভ তীর্থে হত্ত পদ ও ইব্রিরদিগকে বিশেষ রূপে সংযত করিতে হয়।

১৯ হত্তবিত তীর্থ, হত্তের ছান্দ বিলেখনে তীর্থ করে; বথা দিশিশ হত্তের অনুষ্ঠের উত্তর হইতে বে রেখা তাদ্ধার নাম বন্ধতীর্থ, আচমন কালে এই বন্ধতীর্থে অনুনাইয়া আচমন ক্রিতে হর। তর্জনী ও অনুষ্ঠের শেব ভাগ পিতৃতীর্থ, এই পিজ্জীর্থ বারা নালীর্থ ভিন্ন অন্ত সকল প্রান্ধে পিঙাদি গ্রান ক্রিতে হর।

অঙ্গুলির অত্যে দৈবতীর্ধ, এই দৈবতীর্ধ বারা দৈবকার্য্য করিতে, হইবে। কনিঠা অঙ্গুলীর অংধাতাগের নাম কার বা প্রাজাপত্যতীর্ধ, ইহা বারা পিড়্দিগের সহিত দেবতাদিগের কার্য করিতে হর ।

২০ মন্ত্রী প্রভৃতি অটাদশ রাইসম্পৎ, রাজা এই তীর্থে অবগাহন করিতে পারিলে কৃতকৃত্য হর অর্থাৎ ইহাদিগকে সমাক্রপে জানিতে পারিলে রাজকার্য স্থলররণে নির্মাহ করিতে পারা বার।

অটাদশ নাম—> বত্রী, ২ প্রোহিত, ও ব্যরাজ, ৪ তৃপতি, ৫ বারপান, ৬ অন্তর্বংশিক, ৭ কারাগারাধিকারী, ৮ জ্বাসঞ্চরকারক, ৯ ক্রড্যাক্তত্যে অর্থের বিনিয়োজক, ১০ প্রদেষ্টা, ১০ নগরাধ্যক, ১২ কার্যানির্দাণকারক, ১০ ধর্মাধ্যক, ১৪ সভাধ্যক, ১৫ দুগুপান, ১৮ ত্র্বপান, ১৭ মাট্রান্তপান, ১৮ অটবীপান। এই অটাদশ রাট্রসম্পৎ ভীর্থ নামে অভিহিত।

(मार्कः भूः ७८/५०५५०)

"বোনৌ জনাবভারে চ মন্ত্রাছটাদশবণি। পুশ্রুক্তেতথা পাত্রে তীর্থং ভাং দর্শনেষণি ॥" (নীলক্ষ্ঠ)

২১ জনাশর হইতে জরত্নিমাত্ত প্রেরিশ, জরত্বি মাত্র হান পঞ্চিত্যাগ করিয়া তাহাতে শৌচকার্য করিবে। "অরত্নিমাত্তং জলং ত্যক্ত্বা ক্র্যাচ্ছোচমন্ত্রুতে। পশ্চাচ্চ শোধরেত্তীর্থমঞ্জবা ন শুচির্ভবেৎ।" 'তন্মিন্দেশে শৌচং ন কর্ত্ব্যং বন্ধানরত্বিমাত্রব্যবিভ-ললাৎ তৎখ্লমেবভীর্থং জলসমীপদাং।' (জাল্কতন্ত্র)

২২ , সন্মাসীদিধের উপাধিভেদ, বাহারা তত্ত্মভাদি লক্ষণ-রূপ ,ত্রিবেণীসভ্তমে ভত্তার্থভাবে দান করিরাছেন, ভাহারা' তীর্থ উপাধির হোগ্য।

"তিবেশীসকমে তীর্থে তর্মজানি লক্ষণে।
সামান্তবার্থভাবেন তীর্থনামা স উচ্যতে।" (প্রাণভোবিশী)
অর্থাৎ "তর্মসি" এই শ্রুতি বাক্যের অর্থ যাহারা ক্রমদম
করিয়াছেন, তাহারাই এই তীর্থ উপাধি পাইতে পারেন।
২০ অবসর।

"দ তদা দৰ্কতীৰ্থোহিশি ন ববাধে নিরাবৃধং।" (ভাগং ০১১৯৪) • স্তীৰ্থক (অ.) ভীৰ্থ-কন্। ১ বেগ্যি।

"গছো অন্ব বন্ধ বন্ধন্দেব্যাঃ ক্ষর্ত্র ।
কুপরাতিথিরূপেন ভবভিস্তীর্থকাঃ কৃত্যঃ ॥" (ভাগং ১।১৯।৩২)
'তীর্থকাঃ বোগ্যাঃ কৃত্যঃ' (এধর)

(পুং) ১ তীর্থকারী। ২ বাহ্মণ। ৩ তীর্থক্তর।

ভীর্থক্র (পুং) তীর্থং শাত্রং করোতি ক্ব-ট। ১ জিন। ২ বিষ্ণু।
চতুর্দশবিভার মধ্যে বাছবিভাগ্রেণেতা এবং প্রকলা, ইনি
হর্তীবর্রণে মধু ও কৈটভকে হত করিয়া স্টির প্রথমে
বন্ধাকে সকল প্রতি ও অঞ্চ বিভার উপদেশ দিরাছিলেন +
এবং অরি ও বৈত্যদিগকে মোহিত করিবার জন্ত বাছবিভা
প্রদান করিমাছিলেন। (ত্রি) ও শাত্রকর।

তীর্থকিকে (পুং) তীর্থে কাকইব লোল্পদাং। তীর্থবাজ্ঞ, তীর্থস্থিত কাকের স্থায় ব্যবহারী, লোল্প, যেমন কাক ইতক্তভ: থাঁআফুসন্ধানে সন্ধান ব্যক্ত থাকে, সেইন্দ্রপ কতকগুলি লোক তীর্থে গিরা ও ধর্মের ভাগ করিবী কাকের মতন অর্থান্তসন্ধানে ব্যক্ত থাকে, ইহারা অভিশন্ন পাণী, ইহাদের অন্তর্মনরক হইয়া থাকে। (পুরাণ)

তীর্থক্ত (খুং) তীর্থ করোতি তীর্থক হিন্ ভুগাগদভ।
> জিনদেব। (ত্রি) ২ শাজকার।

তীর্থস্কর (বং) তীর্থং সংসারসমূত্রতরণং করেছি ক-ধ-মৃদ্চ ? किन। देवनिरागत माळक्षत्रमाहाच्या माछ, विनि मश्कातार्थन হইতে উত্তীৰ্ হইরাছেন এবং সাধারণ লোককে সংসারাণ্ব इहेट उन्न करनन, छिनिहे छीर्बहन। हिन्त्मिरगर्न मर्पा বেমন দশটা অবুভার, জৈনগণের মধ্যেও সেইক্ষপ ২৪টা অবতার আছেন, সেই ২৪টাকে তীর্বন্ধর বলে। স্থাসিদ্ধ दिनाहाया एक्सहन्त जीर्बक्दतत्र और २०ही नाम निवादकन---"অর্চন জিনঃ পারগভন্তিকালবিৎ ক্ষীণাষ্টকর্মা পরমেষ্ঠাধীখরঃ। नकुः चत्रकृष्धभयान् वनश्याञ्चीर्यवत्रवीर्यकरता वितनवतः ॥ श्राह्मण्डरुष्ठत्रमनार्काः नर्क्कः नर्कमर्निद्वविदनो । (म्वाथित्मवत्वाधिमश्करवाखमवीखत्राशाखाः ॥" >।२८-२€ । ১ অর্হন, ২ জ্বিন, ৩ পারগত, ৪ ত্রিকালবিৎ, ৫ ক্ষীণাটকর্ম্বা, ७ शत्राम्बी, १ पाधीयत्, ৮ मंख्, २ पर्यु, ३० छश्यान्, ३० वर्ग-প্রভু, ১২ তীর্থকর, ১৩ তীর্থকর, ১৪ জিনেখর, ১৫ ভারান্য, ১৬ ष्यञ्चत्रम, ১१ त्रार्स, ১৮ तर्सङ, ১৯ तर्समनी, २० (करणी, २> (मशिधित्वव, २२ (वाधिन, २० श्रुक्रशाखम, २८ वीजवान, २৫ जारा।

জৈনগণের মতে—এই তীর্থন্বর দেবতা অপেক্ষাও প্রধান । কারণ দেবগণও তীর্থন্বরদিগের পূলা করিয়া থাকেন।

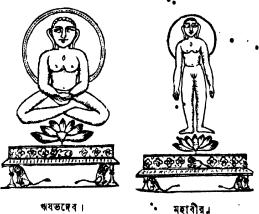
কৈনাগমে উৎসর্পিণী ও অবসর্পিণী এই ছুইটী কালের কথা আছে। এখন বে কাল চলিতেছে, তাহার নাম অব-ফর্পিণী, তৎপূর্বে যে কাল হইয়া গিয়াছে, তাহার নাম উৎ-সর্পিণী। উৎস্পিণীতে এই ২৪ জন তার্থন্বর হইয়াছিলেন—

স কেবলজানী, ২র নির্কাণী, ৩র সাগর, ৪র্থ মহাযশ, "হর বিমলনাথ, ৬ট সর্কার্ডুভি, ৭ন,শ্রীধর, ৮ম দভ, ৯ম দামোদর, ১০ম হুডেজ, ১১শ ছুমী, ১২শ মুনিস্ত্রভ, ১৩শ স্থমতি, ১৪শ শিবগতি, ১৫শ অন্তাগ, ১৬শ নেমীবর, ১৭শ জনল, ১৮শ বুশোধর, ১৯শ ক্লতার্থ, ২০শ জিনেবর, ২১শ শুদ্ধতি, ২২শ শিবকর, ২৩শ ফুলন,ও ২৪শ সংপ্রতি।

বর্ত্তমান অবস্পিনীতে এই ২৪ জন তীর্থছর হইরাছিলেন।
১ম ঝবভদেব, ২র জ্বিত্তনাথ, ৩র সন্তবনাথ, ৪র্থ অভিনন্ধন, ৫ম স্থমতি, ৬র পদ্মর্থীত, ৭ম স্থপার্থ, ৮ম চক্রপ্রভ, ৯ম স্থবিধি (অপর নাম প্রপানত), ১০ম শীতলনাথ, ১১শ প্রোংসনাথ, ১২শ বাত্মপুজ্য, ১৩শ বিমলনাথ, ১৪শ জনস্তনাথ, ১৬শ ধর্মনাথ, ১৬শ শাত্তিনাথ, ১৭শ কৃছ্বাথ, ১৮শ জ্বনাথ, ১৯শ মন্ত্রিনাথ, ২৬শ শাত্তিনাথ, ২১শ ক্রেমনাথ, বা জ্বিইনেমি, ২৩শ শার্ত্তনাথ ও ১৪শ মহাবীর বা বর্ত্তমান।

^{† &#}x27;মনোবনুত্বীপ'করো বহুরেজ্বী বহুগ্রহা ।', (ভারত ১৬)১৪৯ ৮৭)
'চতুর্কনিবিদ্যানীং বাহুমরানাং ত প্রবেক্তা প্রথকা চেতি ভারতিরঃ,
ইয়্রীব্রনেশ মধুকৈটভৌ হথা বিরিক্তরে সর্পাকৌ সর্বাঃ প্রভারতাক বিদ্যা উপাদিশৎ, বাহুবিদ্যা প্রইব্রিশাং বঞ্চনার চোপাদিশং ইতি পৌরাশিকাঃ কথব্ডি।' (টীকা)

বর্জমান অবস্পিনীর তীর্বছরপণ্ট এখন পুলিও। ভক্ত লৈনগণ শেষ ২৪ ভীর্থছরের প্রজিষা নির্দ্ধাণ করিয়া ষথা-विधि भूमा कतिया थारकन । अरे २८ जरनव मूर्जिरे निगमन-ভন্মধ্যে ব্যষ্থ, বাহুপুৰা ও নেমিনাথের মূর্ত্তি যোগাসনে উপবিষ্ট এবং আর সকলেব্ন মূর্ত্তি দঙারমান। উপবিষ্ট ও দণ্ডারমান মৃর্জিণ্ডলি দেখিতে ঠিক একপ্রকার, কেবল



ঋষভদেব।



ম্বপার্খ।



পার্খ।

প্রত্যেকের বর্ণ ও সিংহাসন মধ্যস্থ চিহ্ন দেখিয়া কোনটা कुश्वि मुर्कि स्वानिष्ठि পারু। रात्र। (এই २८ स्टन्त मन्नीत छ **हिस्ट्रित दिवत्रण देवन भट्य ३७७-३०৮ शृष्टीय दिक्**छछाटन নিঞ্জিত হইরাছে এধানে পুনরুলেথ নিন্দ্রীরোজন।) সাধারণের দর্শনার্থ উপরে কএকটা প্রধান জৈন প্রতিমার চিত্র দেওয়া গেল, এতদ্যুট অপরাপর তীর্থছরের মূর্ত্তি ফুলনা করিয়া লওরা बाहेरक शाहिरव। [रेकन बाल जवर रेकनभूतानम्रह जे সকল ভীর্ষন্তরগণের বিবরণ জইন্য।]

তীর্বতম (ङो) অরমেষামতিশ্বরেন তীর্বং তীর্ব-তমপ্। শ্রেঠ-প্ ভীর্থ, ভীর্থরাজ।

VIII

जीर्परमय (प्रः) कीर्थमिव (अर्धः (मवः । निद, महारमय । তীর্থধাঞ্জ (পুং) ভীর্থে ধ্যাক্ষইব। ভীর্থকাক। "

[छोर्थकाकू (मथ।] • जीर्चभन (पूर) डीर्चर भारती वज वस्त्रीहि नमात्र भागनक्छ भवारमणः । इति, कृषः । "मनिर्मणः कोत्रवशुश्रामस्या गर्नाः , स्तवाखीर्थभनः भनानि ।" (ভাগ° অ১।১৬) 'ভীর্থশনঃ হরে: भवानि' (चौथत) नवारन भानान कारन विकरत भवारतम इत्र, **बहे निम्नमाञ्जादत जीर्बनाम् ७ जीर्बनम् बहे इहे** जिन हहेटव । **डीर्थभागी**य (प्रः) देवकव, विक्वक ।

"यम्भृरुखीर्थभागीयभागकीर्थविवक्तिछाः ।" (कागः है। २२। ১১) তীৰ্বভূত (ত্ৰি) ভাৰ্ব-ভূ-ক । ভাৰ্যস্কপ ।

"ভবৰিধা ভাগবতাভীৰ্ণভূতা: স্বয়ং বিজো ৷" (ভাগ[°] ১৷১৩১১) ভীর্থসহাত্রদ্ধ (পুং) তীর্থরণো মহাহদঃ। স্বনামধ্যাত তীর্থতেদ। "নব্দা চাপরনন্দা চ ভণা তীর্থমহারদঃ।" (ভারত অনু• ১২৫ অ॰) **তীর্থস্বত্যুযোগ (শং): ভীর্ম্নে মৃত্যু**বিষ**রকঃ বোগং।**° বোগ-वित्मय, धरे त्वाश थाकित्म बस्त्वात छीर्थ मृङ्ग इत । हेशत বিষয় জ্যোতিষে এইরপু, লিখিত আছে। জ্পাকালীন, চন্দ্র বদি উচ্চত্থানে অবস্থিতি করেন এবং দশম-স্থানে বুৰুস্পতির দৃষ্টি থাকে কিমা অষ্টমন্থানে শুক্র ও বিতীয়ন্থানে বৃহস্পতি, ভাহা হইলে স্বাভ ব্যক্তির ভীর্থমৃত্যু হয়।

বৃষ রাশিতে রবি, নবম স্থানে বৃহস্পতি ও লগ্নে শুক্র অব-স্থিতি করিলে ও অপ্টমস্থানে বুধের দৃষ্টি থাকে, তবে মহুদ্যের গলাবলে মৃত্যু হয়।

নর্মে খজ ও বৃহস্পতি অবস্থান করিলে যদি অষ্টম স্থানে চক্র পাকে, এবং ভাহার প্রতি লগাধিপতির দৃষ্টি থাকে, ভবে আত ব্যক্তির কাশীতে মৃত্যু হয়।

যাহীর সিংহলরে জন্ম, ষষ্ঠ স্থানে শনি, মিথুনে বৃহস্পতি এবং অষ্টম স্থানে লগ্ধাধিপের দৃষ্টি থাকে, সেই ব্যক্তির কাণীতে

বদি ধর্মস্থানে ধর্মাধিপতির ও লয়ে লুঞ্লধিপ্লতির, মৃত্যু-ুখানে মৃত্যুখানাধিপতির দৃষ্টি থাকে, তাহা হইলে মহুয়ের তীর্থ স্থানে মৃত্যু হয়।

ৰাত্মৰ স্বাদালে তিন্টী গ্ৰহ রাশি ও লগ্ন হইতে ভিন্ন যে . কোন গৃহে অবহান করে, সেই ব্যক্তি বিবিধ হুও সম্পদ্ ভোগ করিরা জাল্বীজনে প্রাণ পরিভ্যাগ কুরে।

विम नार्च, ठकूर्वि, वर्ष्ठ, मश्राम, कहरम वा मणम कारन বৃহস্পতি অবস্থান করেন এবং ঐ বৃহস্পতি যদি উচ্চস্থান স্থিত হন এবং আছ বালক্ষের লগ্ন যদি মীন হয়, ভাহা হইতে তাহার তীর্থমৃত্যু হর এবং তাহাতে মোক্ষ হর। (জ্যোতিষ)

তীর্থযান্ত্রা (ত্রা) , তীর্থসুদিক যাত্রা। তীর্থের উদ্দেশে বাত্রা, তীর্থগর্মন।

তীর্ধরক্লে (পু:) তীর্থানাং রাজা ৬তং। প্রয়াগ তীর্ধ। তীর্থরাজি (জী) (জী) তীর্থানাথ রাজিয়ত বছরী। আবি-, সুক্ত কাৰীক্ষেত্ৰ, এইধানে সকল তীৰ্ঘই বিরাজিত আছে, এইবভ কাশীকে তীর্থরাজি বলা বার। কোন্ কোন্ তীর্ম হইতে কোন্ কোন্ডীর্থ কাণীতে আসিরাছে, তাহার বিবর কানীবতে এইরপ বিৃথিত আছে। খর্গ, মর্ত্তা ও রুসাতবে वावंजीत मुक्ति अन एक ब्यात्रजन बारह, ठाहा नक्नरे धरे कानीए आनोज रहेबार, क्रक्रक्क रहेरल एवरण्यत श्राष्ट নামক মহালিক এইখানে আবিভূতি হইরাছেন, সেইখানে তাহার ক্লামাত্র আছে। ভাহারই নিক্টে লোলার্কের পশ্চিম-ভাগে স্বিহতী নামক মহা পুছরিণী আছে, এই স্থানই কুরু-क्या जीर्थ। देनियरक्या इरेटज प्रतापत बक्तावर्ख कृत्मन স্থিত আসিরাছেন, চুন্দ্রাজের উত্তরভাগে অবস্থিত আছেন, ইহার সমীপে বন্ধাবর্ত্তকৃপ রহিয়াছে। গোকর্ণ स्ट्रेंटि यहारन नामक निष्म, अङ्गान छीर्थ स्ट्रेटि मिल्यूरन নামক লিল, খাণনোচন তীর্থের পূর্বদিকে অবস্থিত আছে, फंक्कतिनी इटेटल भागनामन निय, खंडारत्रधनिस्यत शूर्सिस्टिक অবস্থান করিতেছেন। পুকর হইতে অরোগক্ষের শিক मश्रकामतीत डेखत्रमिष्क, प्रदेशम इटेड्ड महानारमध्य निक जिल्लाहरू देख इमिटक, मक्र १८कां इटेल्ड मरहार करियंत्र निक कारमचात्रत छेखत्रितिक, विश्वचान हहेटछ विमानचेत्र निक वंगीतित शिक्तमितिक, मह्द्रुपर्वा रहेए महाउउँ नामक মহালিদ্ধ ক্লেখরের নিকটে এবং গরাতীর্থ হইতে ফল্ক প্রভৃতি নাৰ্দ্ধ অষ্টকোটা পরিমিত তীর্ষের সহিত পিতামহেশ্বর এশানে আসিয়া অবহান করিতেছেন ৷ প্রয়াগতীর্থ হইতে শূলটয় নামক মহেশার তীর্থরাজের সহিত আসিয়া নির্বাণমগুণের प्रक्रिंगितक, महात्कत मञ्जूकर्ग इटेट्ड महात्डत्वात्र अवा टिक नामक निक, क्रम्यकां हिंडीर्थ इहेट्ड महारवाशीयत निक, ज्ञानचन्न क्ला हरेएउ चन्नः क्लियांन धरः कूनकानन हरेएक চণ্ডীশ্বর এখানে অবস্থিত আছেন।

কালগ্রর তীর্থ হইতে বরং ভগবান নীলকণ্ঠ আদিয়াছেন এবং কাশীর হইতে বিজয় নামক লিল আদিয়া শালকটছটের পূর্মাদিকে ত্বছিত আছেন। ত্রিদণ্ডাপুরী হইতে ভগবান্ উর্নরেতা এইখানে আদিয়া কুয়াওক নামক গণপভিকে সমুখে রাখিয়া অবস্থান করিতেছেন। মণ্ডলেখর নামক ক্লের হইতে শ্রীকণ্ঠ নামক লিল আদিয়া মণ্ড নামক বিদায়কের উত্তর্গনিকে অবস্থান করিতেছেন।

ছাগলাও নামক মহাতীৰ হইতে ভগৰান্ কপ্ৰীপ্ৰ निभाग्दमान्तजीर्थ चन्नः व्यानिकृत स्रेनार्हन । व्यामाज्य-चत्र स्कृत रहेरछ ज्ञाचत्र नामक निक् चानिता विक्षेत्रस्य ११-পতির সমীপদেশে অবস্থান করিতেছেন। মধুকেশর ইইডে ক্ষর নামক মহালিক এইখানে লবোদর প্রণতির সমুধে अवश्राम क्तिराज्यकः। औरना इहेराज स्वराह्य विश्वासक বিবেশবের পশ্চিমভাগে অবস্থিত আছেন। সৌমাখান হইতে फनवान् कृक्रियंत्र, जारमचत्र स्टेर्ड्ड खनवान् विण्नी, तारमचत , इंहर्ड क्वीरमव, जिनकारकज इंहर्ड रमवरमव जायक, इतिकता क्ति इहेट छश्यान् हरप्रधंत्र, मधारमधत्र हहेट छश्यान् मर्स्त, খুলেশ্বর হইতে যজেশ্ব নামক মহালিক, হর্ষিত ক্ষেত্র হইতে छाबाहात्री हर्षिष निक, त्रवाध्यक क्लाब हरेए छन्नवान् त्रवस्त्रत्र, **टक्नांत्रक्कि इरेटि नेनार्ट्यत नामक निष्म, मेनान्ट्यत्य** হইতে মনোহর ভৈরব মৃর্জি, কনগণতীর্থ হইতে সিদিপ্রদ ভগবান্ উত্র, বল্লাপথ নামক মহাক্ষেত্র হইতে ভগবান্ ভব-रम्य, माक्रयन हरेटा छग्यान् मधी, छम्रकर्गद्रम हरेटा छम्रकर्ग ছদের সহিত সাক্ষাৎ শিব, হরিশ্চক্র নামক পুর হইতে ভগবান্ শহর, কায়ারোহণ ক্ষেত্র হৃইতে আচার্য্য নকুনীশ পাঞ্পত ব্ৰভাৰদ্বী স্থীয় শিষ্যগণের সহিত আগমন করিয়া অবস্থিত चाट्टन। शकानागत हरेटड चमटत्रचत्र, मश्रद्धशानावत्री हरेटड ভগবান্ ভীমেশ্ব, ভূতেশ্ব ক্ষেত্র হইতে ভগবান্ ভন্মগাত্র, नकूनीयत हहेरा छगवान् यम् , रहमकूष्ठे नर्व्या हहेरा विन्न-পাক্ষ, গলাধার হুইতে হিমাজীখর, কৈলাস হুইতে সপ্তকোট অক্টান্ত মহাবল গণনিচয়ের সহিত গণাধিপ, গল্পাদন পর্কত 'ছইতে ভুতুৰিঃ সংজ্ঞক নিদ, জনলিদ খন হইতে পবিত্র জ্লপ্রির লিক এবং কোটাখর তীর্থ হইতে শ্রেষ্ঠলিক এই-খানে আসিয়া অবহিত আছেন: এই সকল তীৰ্থ এই কাশীতে অবস্থিতি আছে বলিয়া ইছার নাম তীর্থরাজি। ঐ সকল তীর্ণে লান দানাদি করিলে বে পুণা হয় এই কাশীদ্বিত সেই সেই তীর্থে দানাদি করিলে তাহার শতগুণ অধিক পুণ্য इतः (कानीयक ७३ वा॰)[क्नी (तथ।]

তীর্থবং (ত্রি) তীর্থহ বিদ্যতে ২ক্ত তীর্থ-মতুপ্-মক্ল বাদেশ:। বছসংখ্যক তীর্থবিশিষ্ট।

তীর্থবাক (পং) তীর্থকেব বাকো বচনং বত বছরী। কেশ, চুল।

তীর্থবায়স (পং) তীর্ধে বায়স ইব। তীর্থকাক। [তীর্থকাক দেখ।]
তীর্থশিলা (ব্রী) কোন তীর্ধে দান করিবার প্রভয়ের ধাপ।
তীর্থশোচ (ক্লী) তীর্থক ধটক শৌচং পরিকার: ৬তৎ। প্রীদি
পরিকার।

"নেতৃবন্ধরতা বে চ তীর্থদৌচরতাশ্চ বে।
ভড়াগকৃপকর্তারৌ সূচ্যতে তে ভ্রাভরাৎ ॥" (আদিতাপু॰)
ভৌর্থদৌচং শইপরিছার: '(রমুসক্ষ)

ভীর্থদৈনি (খ্রী) কুমারাস্কর মাতৃত্তের।

"মাধ্বী ওচবন্দু । চ তীর্থদেনিন্দু ভারত।" (ভারত শল্যু॰ ৪৭ অং)
ভীর্থদেবা (খ্রী) তীর্থে দেবা ৭ডং। তীর্থসমন, তীর্থবাজা।
ভীর্থদেবিষ্ (গ্রুং জী) ভীর্থং ব্যাদিকর্গপ্রাপ্তিস্থানং দেবতে
দেব-পিনি। ১ বক্পকী। (ব্রি) ২ তীর্থবাজী, বাহারা তীর্থে
গমন করে।

°

তীর্থিক (পুং) > তীর্থকারী বান্ধণ। ২ বৌদ্ধয়তে—বৌদ্ধ-ধর্ম বিদেয়ী বান্ধণ। ৩ তীর্থকর।

তীর্থীকরণ (জি) পবিত্রীকরণ।

ঁদৈত্যদানবকুণতার্থী করণশীলাচরিতঃ ।" (ভাগণ ৫।১৮।৭) তীর্থী স্কুন্ত (ত্রি) তীর্থ স্কুন্ততভাবে চি । তীর্থ স্বরূপ পৰিত্র । "গোভিঃ প্রবর্ত্তিতে তীর্থে কুর্যুন্তত্ত পরিগ্রহম্ ।" (মমু ১১।১৯৭) 'গোভিঃ পৰিত্রীকৃত্বাৎ তীর্থীভূতে' (কুরুক্

গোপণ বে স্থানে বিচরণ করে 'সেই স্থল প্রিত্ত অর্থাৎ তীর্থ অরপ।

তীর্থ্য (পুং) তীর্থে ভব-ষং। রুক্তভেদ। • "নমন্তীর্যায় চ কুল্যায় চ" (ষজু• ১৬।৪২) সমানতীর্থে বস্তি-ষং। স্তীর্ণ, সহাধ্যায়ী, বাহারা এক শুরুর নিক্ট অধ্যয়ন করে।

ভীবর (পং) ভীর্যাতে তৃ-বরচ্ (ছিদ্দর ছন্তরেতি। উণ্ থা১) ১ সমুদ্র। ভীরমতি কর্মসমাধিং করোভি ভীর-বরচ্। ২ বর্মধ। ৩ বর্ণসন্ধর জাতি বিশেষ। বন্ধবৈবর্জ মতে, এই জাতি রাজপুত স্ত্রীর গর্ডে ও ক্ষ্তিমের ওরসে উৎপন্ন হটরাছে।

> "সম্ভ: ক্ষত্রিরবীর্যোগ রাজপুত্রস্থ বোবিভি। বভূব ভীবরকৈর পতিতো জারদোষভঃ॥"

> > (उद्युदेश उ. १० व्यः)

পরাশরের পদ্ধতি অনুসারে এই কাভি চুর্ণক ঔরপে উৎপর—ইহারা প্রধানতঃ মংস্ত ও হলব্যবসারী। এই কাভি অন্তাক, ইহাদিগকে কার্শক করিলে সান করিতে হর। এই তীবর জাভি হইতে তৈলকারের স্ত্রীতে দক্ষ্য ও ক্টে কাভি উৎপক্ষ হইরাছে। তীবরী ও লেট হইতে বলা, মলা, মাঠর, ভড়, কোলা, কলার এই ছর জাভির উৎপত্তি।

বালালা ও বেহারের কোন কোন ছানে এই লাভি তিরুর, ডিওর, রালবংশী লখবা নাছুরা নামে প্রসিদ্ধ।

কেই কেই ডিরর ও বিষর জাতিকে এক জাতীয় বলিয়া ্বর্ণনা করিয়াছেন, কিন্তু তাহা উস্ফ নুহে। ধিবয়েরা কাহার "পাতিরই এক শ্রেণী। কাহারের সৃহিত তীবর জাতির কোন সংক্রব নাই। আকৃতি ও প্রকৃতিতে বিযুর জাতি অপেকা তীবর্দিসকে নিশ্বই বনিরা বোধ হয়।

পূর্কবলে ভিষরেরা আপনাত্তিগকে রাজবংশী, সমন্ত্রুসিংহে ভিলকদল এবং গলাভটছ ফ্রীবরেরা স্থাববংশী বলিরা পরিচর দিরা থাকে। ভাগলপুরে ভিররের স্মধ্যে বামদবোগ্য ওওগাবরিরা এই ছই থাক দেখা বার । বামনবোগ্যেরা সংশ্রে বলিরা পরিচর দের; নৈথিল প্রাজ্ঞানেরা ইহাদের পৌরোছিড্য করে, ইহারা দশনামী গুরুর শিব্যু। কিন্তু গোবরিরাগণ অভি হীন বলিরা পণ্য, ইহারা মদ শুকর মাংস প্রভৃতি থারু।

বাদানার গোত্থাবীগণ পোবরিরাদের গুরুসিরি করিয়া বাকেন। পতিত আন্ধণেরা ইহালের পুরোহিত।

তীবর লাতির মধ্যে চৌধুরী, ছজিদার, মালা, মন্ঝন (মহাজন), মরর, মুধিরার প্রভৃতি উপাধি দৃত হয়। ইহাদের মধ্যে ইৎবাদ, কাঞ্চপ," জয়সিংহ এইরূপ গোত্ত আছে।

পূর্ক বলে তিররেরা জিন থাকে বিভক্ত—প্রধান, পরামাণিক ও গণ। প্রধানেরা সর্বপ্রেষ্ঠ, তৎপরে পরামাণিক ও তাহার নীচে গণ। ত্রির থাকের তিররকে উচ্চ প্রেণীর কলা প্রহণ করিতে হর, আবার তাহাতে কলার পি্তাকে অধিক পণ না দিলে বিবাহ হর না। ইহাদের মধ্যে বিধবাবিবাহ প্রচলিত নাই। তবে বিধবারা আপন ইচ্ছাফ্সারে মংশুবিক্রর, দড়ি খুন্সি প্রস্তুত অথবা বৈষ্ণবী হইরা হারে হারে ভিক্লা করিরা জীবিকা নির্বাহ করে।

তীবরেরা সকলেই প্রার বৈক্ষব। ইহাদের ধর্ম কর্ম গাছের তলার করিতে হয়। সেওড়া গাছই ইহাদের নিকট অতি পবিত্র। নিকটে সেওড়াগাছ না থাকিলে নিম, বেল বা গলানী গাছের তলার শুভকর্ম সম্পন্ন হয়।

বালালী তিওরেরা পৌষসংক্রান্তি দিন বুড়াবুড়ির উদ্দেশ্যে একটা শুকর বলি দের। আবার জৈচি মাসে দশহরার দিন গলাদেবীর উদ্দেশে একটা শুকর ছানা, একটা কপোত ও থানিকটা হগ্য উৎসর্গ কল্পে। , হিন্দুখানী তিররেরা, দীয়ালির দিন কালীর নিকট একটা ছাগ্ বলি দিরা থাকে।

মনসাদেবীকেও তিররের। অতিশর ভার ভার্কি করির। থাকে। ঢাকা জেলার লখিয়া নদীর ক্লে মাহারা বাস করে, তাহারা পীর-বদর ও থাকাখিলিরের পূলা করে, আবার মানসিক সিদ্ধ হইলে কোন মুসলমানকে দিয়া মানারের উদ্দেশ্তে একটা ছাগ অর্পণ করে। ঝড় ঝাপটের দিন তাহারা সৌভাগ্যকামনার থলকুমারীর পূলা দের। বেহারের ভিররেরা মক্লচঙী, ক্রসিংহ ও লাল নামক গৃহ দেবতার

পূলা করে। ুপূর্ণিরা অঞ্চলে এই জাতি প্রেমরাল বা প্রিরাজের পূজা দেয়। এধানকার জীবরেরা বলে প্রেম্বরাজ ভাহাদের অক্টান্তীয়। বছরাপর নামক স্থানে প্রেমরাল বাদ করিতেন। তাঁহার অনেক অনৌকিক · ৩৭ ছিল; তিনি-ইইদেবের কুপাতিকা লাভ করিয়া একদিন নৌকাসহ অগ্রকট হইলেন। এই প্রেমরাজের উপর জীবর ক্লাতির প্রগাড় ভব্তি লক্ষিত হয়। ১৮৬৪ খুৱাবে বইকুসা নামে এক তীবর প্রকাশ করে, যে পমিরাক তাঁহাকে স্থে দেখা দিলা আদেশ করিয়াছেন, 'আব বেন কোন ভিয়বু মংস্ত জীবীর কাল না করে, তাহারা ধেন এমন কাল করে, যাহাতে তাহাদের অবস্থা উল্লভ হয়।' তীবরসমালে ত্রসুল পড়িয়া গেল। ১৮৬৫ খুটাকে ফেব্রুয়ারী মানে প্রায় চারিহালার তীবর গালিপুর, কাশী প্রভৃতি স্থান হইতে আদিয়া বর্ষরানদীতটে পূর্ণিয়া 'সহরে মিলিত হইল। এবানে বোইজুয়ার ইউদেরকে সকলে গলাললে অভিযিক করিয়া তাঁহার প্রীভার্থ ৩·•• ছাগবলি দিল। ^ইইহার পর ুকাশীতেও এক্ৰার সন্মিলনী হয়, তাহাতে এত তীবর এক্ত হইরাছিল যে, শেষে জনতায় নরহত্যা পর্যন্ত ঘটয়াছিল।

বাঙ্গালী তিরবের। মাথীসংক্রাস্তিতে জ্বালপালনী উৎসব করে, এই উৎসব ছই দিন হইতে পনর দিন পর্বাস্ত থাকে। এ সময়ে তিয়রের। জাল দিয়া মাছ ধরে না। তবে বিক্রম করিবার জ্বন্ত পূর্বে হইতেই মাছ সংগ্রহ করিয়া রাখে। বেহার ও বাঙ্গালার তিয়রের। অম্পালীয় বলিয়া গণা। গঙ্গাতীরে এক শ্রেণীর তীয়র আছে, তাহারা নল্ধাগড়ার মাছর প্রস্তুত করে বলিয়া নল তিয়র নামে থাতে।

দেখানে নদী মঞ্জিয়া গিয়াছে বা মাছ ধরিবার স্থাবিধা নাই, তথায় তাবরেরা চাষ, মাঝী মালা বা দোকানীর কার্য্য করিয়া জীবিকানিকাছ করে।

চাকায় পঞ্চত্তত নামে এক শ্রেণীর তীবর আছে, তাহারা আপনাকে কেতকটা উন্নত বলিরা বিবেচনা করে। এই জাতীয় এক শ্রেণী ভাহাদের দাসত্ত করিয়া পাকে। ত

বেহারে ভিমন্ত্রিন মধ্যে বিধবাবিবাধ প্রচলিভ আছে, কিন্তু বালালার প্রচলিভ নাই। ইহাদের মধ্যে এক এক জন মহাজন বা প্রধান থাকে, সে বাজি পঞ্চায়তের পরামর্শ অন্ত্রারে সামাজিক বিধি বাবলা বা ছণ্ড করিয়া থাকেন। ভীবরী (ঝী) ভীবর স্থিয়াং ভীব্। জীবরপত্নী, ভীবরদিশের জী।, ২ ব্যাধপত্নী।

ভীব্র (ক্নী) ভীব-রক্রা ভিজ নিশানে রন্দীর্থ:। (জ্বর্গী বোবা। উণ্থাং৮ ক্রে উজ্জবণ) ১.অভিশর। ২ ভীক্।

ও গৌহভেদ, ইম্পাড। ৪ তীর, নদীক্ল। ৫ অপু, টনা, ৬ গৌহনাত্ত, সাধারণ দৌহ। ৭ অভ্যুক্ত। ২ কুটু। (পুং)
> শিব। (শক্ষরণ) (ত্তি) >> অতিশর যুক্ত। ১২ বৈরাগ্যের
উপারবিশেষ।

"छीजनः दशानामाननः। .

মৃত্মধ্যাধিমাত্রঘান্তভোষ্পি বিশেবঃ।" (পাতঞ্জল ১২২)-২২)
কোন কোন বাজ্জিকে তীব্রবোগী বলা যার, যোগ-সাধনের উপার তিবিধ মৃত্, মধ্যু ও অধিমাত্র অর্থাৎ তীব্র।
বাঁহারা তিবিধ উপার অবলঘন করে, তাহাদিপের বিশেব
বিশেব ফল হইয়া থাকে। ইহাও তিন প্রকার, মৃহ উপার,
মধ্য উপায় ও তীব্র উপার। প্রবার ইহার প্রত্যেকটা তিবিধ—
মৃত্সংবেগ, মধ্যসংবেগ ও তীব্রসংবেগ, অ্তরাং যোগিদিপের
উপার নম্ন প্রকার। যাহারা তীব্রসংবেগী তাহাদের সিদ্ধি
সন্ত্রিকট। প্রত্যৈক যোগীর তীব্রসংবেগে যম্ন করা উচিত।
(পাত্রু ব্যাসভাষ্যু)

তীব্ৰকণ্ঠ (পুং) তীব্ৰ: কঠো বন্ধাৎ বছবী। শ্বণ-ফল, ভক্ষণ ক্রিলে কঠের পীড়া ক্রন্মে, এইবাল ইহার তীব্রকণ্ঠ নাম।

[७न (मथ ।]

তীব্রকশ্ব (९ং) তীবং কলং মৃলং যন্ত। ১ শ্রণ, ওল। ২ পলাপু, পৌরাজ। (মেদিনী)

তীব্ৰগতি (ঝি) তীবা গভিষ্ঠ বছবী। ১ শীল্পতি। ২ বার্। তীব্ৰগন্ধ (ঝী) তীবঃ গদোষ্ঠা। তীবগদ্ধতুক। অতিশ্য গন্ধবিশিষ্ট। তীবঃ পদং কৰ্মধা। ২ তীব্ৰ এমন গদ্ধ।

ভীব্ৰণন্ধা (খী) ভীব্ৰণন্ধ-টাপ্। খবানী, ভোষান। .

°ভীব্ৰগ**ন্ধিকা**,(গ্ৰী) ধবানী, ভোঁয়ান।

জীব্ৰজ্ঞানিন্ (তি) তীব্ৰ জ্ঞান-দিনি। অভিশয় জ্ঞানী। তীব্ৰজ্ঞালা (ত্বী) তীব্ৰং যথা তথা স্থানয়তি জ্ঞা-দিচ্ সচ্টাপ্।

তাএে আলা। দো। ভারম মনা ভ্রম বিলাগত আলান্ত্রিক স্থা ধাতকী, ধাঁইফুল। ইহার স্পিনি গাতে ত্রণ জন্মে, এইরূপ লোক প্রসিদ্ধি আছে এইজক্ত ইহার নাম তীত্রজালা। (ত্রি)

২ তীব্ৰলাগাযুক। তীবা জ্বালা কৰ্মধা । ৩ তীব্ৰ এমন জ্বালা। তীব্ৰতা (স্ত্ৰী) তীব্ৰস্ত ভাব: তীব্ৰ তদ্ । উক্চতা, কঠোৱতা।

তীব্ৰদাক (ক্লী) তীবং দাক কৰ্মধা। তীব্ৰকাৰ্চ। তীব্ৰবন্ধ (পুং) তীব্ৰ: বদ্ধো যন্ত্ৰাং বছৰী। তামস্ত্ৰণ, তম-

जाञ्चतक्ष (गूर) जावः वृक्षा यमार वरुवा। अवन्यसम्, जन

ভীত্রবেদনা (ন্ত্রী) ভীত্রা বেদনা কর্মধা। বোর ধাতনা, জডি শব্ব বরণা।

তীব্ৰসংবেগ (পুং) ভীব্ৰঃ সংবেগঃ কৰ্মধা। ভীব্ৰবৈরাগ্য। [ভীব্ৰ দেশ।] ় •ু

ভীত্ৰদৰ (পং) একার বাগতেন।

ন্তীব্ৰহুত (ত্ৰি) সোমের অবয়বভূত প্ৰাতঃসবনিক। "ৰঙ্গ তীবস্থতং মদং মধ্যমন্তং ॥" (পাক্ ৬) ৪৩) ২) 'দোমত অবয়বভূতং ভীবস্থতং। ভীক্ষং স্থতং অভিযুবো বস্ত্র বাতঃস্বনিক:।' (সায়ণ) ভীব্ৰা (স্ত্ৰী) ভীব-টাপ্।' ১ কটুরোহিণী, কটুকী। ২ গও-দ্র্কা, গেঁটেদ্র্কা। ৩ রাজিকা, রাইসর্বে। ৪ মহাজ্যোভিন্নতী। ७ उत्तीत्यः। ७ जूनमी। १ नमीविद्ययाँ ৮ छीब्रदशब्दाः। তীব্রানন্দ (পুং) তীব্র মাননোয়ন্ত। শিব। (শিব সহম্মনাম) তীব্ৰাম্ভ (बि) তীত্ৰ বা তীক্ষ ফল বা অবশেষ। তীসট (পং) এক বৈদ্যক গ্রন্থকার। জু (चरा) ১ নিরর্থক পাদপূরণ। ২ ভেদ। ৩ অবধারণ। ৪ সমুচ্চর। ৫ পক্ষান্তর। ৬ নিরোগ। ৭ প্রশংসা। ৮ নিগ্রহ। "উট্টবানং সমাক্ষ খরবানং তু কামত:। দাৰাত্ বিশো দিখানাঃ প্ৰালামেন ওদাতি ॥" (মহ) २ मण्यक् । ১० किन्ह । ১১ व्यक्ति । ((तभक) >२ क्कृत-व्याख्वानवाहक । তৃই (দেশৰ) খং তুমি এই শব্দের অপভ্রংশ, ইহা ডাহ্ছিলা,

আজীয়তা ও মেহ প্রকাশ জন্ম ব্যবস্থত হয়। ভূঁত (তৃদ শব্দ সাছ। [তুঁত দেখ।]°

ভুঁত (তুদ শব্দের অপত্রংশ) অনামধ্যাত বৃক্ষবিশেষ। ই্হার ফল থায়, পাতায় গুটীপোকা প্রতিপালিত হয়, গৰাদির আহার্য্য হয়, ছালে অংগু হয়, কচি সরু ডালে কাঠের আঁটি বাঁধিয়া থাকে, আঠায় গঁণ হয়। ভূতৈর পাশ্চাত্য বৈজ্ঞা-নিক নাম Morus। পাশ্চাভ্য উত্তিদ্ শাল্লাহ্সারর ইহার ৫টা শ্ৰেণী আছে—(১) Morus Alba বা খেড তু-ত-ইহা পঞ্চাব, উত্তর পশ্চিম হিমালয়, পশ্চিম তিক্কতে এছেতি ভানে জয়ে। এখান হইতে উত্তর ও পশ্চিম এসিয়ায়, বোল্পাইয়ে ও বালালায় ে ছড়াইরা পড়িরাছে। শীতে ইহার পাতা পড়িরা যার। ইহার সূলে গর্ভ ও পরাগকেশর উভয়ই আছে। পার্বভাপ্রদেশে ইহার বৃদ্ধি অধিক। বাঙ্গালা দেশে ইহার ফল ও পাভার জ্ঞ চাৰ করে। ইহার ফলের রসে হাকিমী মতে গলক্ষত, আমাশর ও বিমর্বচিত্ততা আরোগ্য হর। ইহার ছাল বিরেচক ও ক্লমনাশক। মাথ ও ফাল্কনে ইহার ফুল হর ও বর্ষাকালে কল পাকে। স্থানভেদে ইহার বর্ণভারতম্য দটে। তথাভিশাদা कन रहेएछ क्रेयर ब्रक्काफ क्रक वर्ग कनल रहा। करनब आचामल মিট, টক ইত্যাদি। বেলুচিস্থানে দিয়া (ধ্নরবর্ণ), বেদানা (वीजरीन), পেড়ওয়ানী (कनस्यत हाता क्ष बुकात छात्र), অবাহ বেতদন বা শাহ্ডু'তু বিড় স্থল) ও ধর্ডু'ত্ কাশ্মীরে °লবে, ইহার ফল ওকাইরা বা বোর্বনা করিরা রাথিরা দের ও

শরৎ কালে ব্যবহার করে। আক্সানিস্থানে ইহার কলের
ভাড়ার কটি করিরা খার; ঐ কটি বল ও মেদবর্জক।
কাশ্রীরে ইহার পাতাতেই • রেশমকীট প্রক্তিশালিফ হয়।
[রেশম দেখ।] ভাটী হইরা গাতা বাঁচিলে গাতীকে দেওরা
হয়। ইহাতে অতি মাুআর হয় র্জি হয়। প্রভাহ সকালে

১০ সের ও বিকালে ১০ সের পাতা খাওরাইলে ১০ সের
ছধের গকতে ১৫ সের হধ দিরা খাকে।

তুঁত কাঠের বর্ণ পীত ও র্ক্তাজ পাটল। ইহা কঠিন, ল্ট এবং মত্থ বলিয়া ইহাতে পালিস ও গঠন অতি অন্তর হয়। কাহাল, গৃহোপকরণ ও চাবের ধ্যাদি এই কাঠে অতি উত্তমরূপ প্রস্তুত হয়।

- (২) Morus Atropurpuria বা চীনে তুঁত—চীনদেশীর তুঁতের চারা হইতে এদেখে 'ইহার চাব হইরাছে। পঞাবে শাহরণপুর বৃক্ষবাটিকা হইতে বারিদোরাব পর্যান্ত ইহারই চাব কিছু বেশী হয়। ইহাতেও গুটী প্রতিপালিত হয়। এই লাতীর তুঁতের ফল খুব লখা, (পিপুলের ফ্রায়) গোলাকার ও গাঢ় বেগুনি রং হয়।
- (৩) Morus Indica বা দেশী তুঁত—হিমালয়, কাশীর, দিকিম, বাঙ্গালা, আসাম ও ব্রহ্মদেশে জয়ে, এথান হইতে চীনে ও জাপানে গিয়াছে। শীতে ইহার পাতা ঝরিয়া য়য়। প্রথম বসত্তে নৃত্ন পাতা গজায়। গ্রীয়ে ফুল ধরে, বর্ষায় পাকে। পার্কতাপ্রদেশে ফল পাকিতে বিলম্ব হয়।

দেশুভেদে তুঁতের নাম ভিন্ন। বালালার তুঁত, উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে তুত, তুৎরি, আসামে হানি বা বোলা, নেপালে কিছু বা ছোটা কিছু, পঞ্চাবে তুত, তুতরি বা করণ, বোছাইয়ে তুত, তুৎরি, আছর, সেতর বা তুলা আছর, গুলরাট ও মহারাষ্ট্রে তুৎ, কর্ণাটে হিপ্লল-নেরলি, তৈলকে কছলি বা কছলি বুচি, জাবিজে ক্ছিলিপ্চ্ বা মহুক্তাই, আরবে ও পারস্যে তুৎ বা শহু তুৎ। সংস্কৃত ভাষার তুদ।

শুটী বা বেশমকীট পোষণের অন্ত তুজুগাছের বিশেষ আদর। চাবের প্রতি মনোষোগ থাকিলে যে কোন প্রাকার উচ্চ বা নদীমাতৃকদেশে তুত অন্মিতে পারে। তবে এই গাছের থাট করিতে কিছু যত্ন লইতে হর ৮ এদেশে বেরূপ লাকল চলে, তাহাতে বড় স্থাবিধা হর না। বর্রা থামিলেই আখিন, কার্জিক মানে নরম মাটিতে কোঘালী রারা এক হাত গভীর করিরা গর্জ খুঁড়িতে হর। ইটু পাটুকেল যাহা থাকে, তাহা হর সরাইরা কেলিবে, নর শুঁড়া করিরা দিতে হর। ভংপরে ছইবার লাকল দিয়া ও মই দিরা অমী চৌরস করিয়া লইবে। বদি বুটি না হয় অথবা অমি শুক্ থাকে, তাহা হইলে

বাহাতে জমীতে ভাগ ঝর্গ সরবরাহ হয়, তাহার উপার করিবে এবং ভাগরণে বাতাস খেলিতে পারে তৎপ্রতিও সনো-বোদী হইবে।

এরপে জমি তৈরার হইলে একহাত অক্তর আধ্বাত গভীর সারিসারি গাঁও করিয়া বাইবে। তুতের ভাল কাটা শাবা প্রশাবা হইতেই গাছ জন্মে। বড় গাছ হইলে মাধা অবা সরু ও শুক শাবা গইবে না। ভাল কাটিতে হইলে অতি তীক্ত্র অন্ত ব্যাহার করিবে, বাহাতে স্লোচ্ছেদ না হর ভাহাতে লক্ষ্য রাধিবে। এইরপে শাবা বা ভাল কাটিয়া আনিয়া তাড়া বাধিরা প্রায়িশীর বারে পাঁকে বা কাদার প্রিয়া রাধিবে। এমন ভাবে রাধিবে, বেন আর বেশী অল চুকিরা পাঁচিয়া না বার। এ অবস্থার একমাস রাধিবে মধ্যে মধ্যে জল ছিটা দিবে। বধন দেখিবে, সেই শাবা হইতে প্রায় রুই ইঞ্চি মাতার নবীন অন্তর গলাইরাছে, তথন ভাহা রোপণ করিবার জন্ম আনিবে।

তথন সেই তৈরায়ী অমির এক একটা গর্জে ছই তিনটা
তাল ফেলিবে ও মাটি চাপা দিবে এবং কলসী করিয়া অলসেচন করিবে। কিন্তু যাহাতে অভ্নপ্তলি মাটির চাপে
ভালিয়া না যায়, তংপ্রতিও লক্ষ্য রাখিবে। বে পর্যান্ত
না শিক্ত গলায়, সেপর্যান্ত সপ্তাহে একবার করিয়া অলদিবে, যথন এক হাত করিয়া গাছ বড় হইয়া উঠিবে, সেই
সময় যাহাতে সমন্ত ক্ষেত্র অলে ডুবিয়া যায়, তাহা করিবে।
সপ্তাহের পর কোদালী দিবে, কোদলাইলে গর্জের উপরের
মাটি গাছের চারিদিকে বেশ ছড়াইয়া পড়িবে। গাছ ২।০
হাত বড় হইয়া উঠিলে আর বড় অল দিবার প্রয়োজন হয়
না, তবে দেড় মাস, কি তুই মাস অন্তর অল দিবার প্রয়োজন হয়
না, তবে দেড় মাস, কি তুই মাস অন্তর অল দিবার প্রয়োজন হয়
না, তবে দেড় মাস, কি তুই মাস অন্তর অল দিবার প্রয়োজন হয়
বা, তবে দেড় মাস, কি তুই মাস অন্তর অল দিবার প্রয়োজন হয়
বার্ বার্ ইয়া উঠিলে পার বড় ভল দিবার প্রয়োজন হয়
বার্ বার্ বার্ ইয়া উঠিলে পার হিছিতে কোডা হিছিতে পারিবে।
প্রথম প্রথম কেবল একএকটা পাতা হিছিতে হয়, কিন্তু গাছ
বেশী বড় হইয়া উঠিলে পরব হিছিতেল কোন হানি হয় না।

বৈশাধ ও লোটমানে ক্ষেত এক একবার কোলনাইতে হর, সে সমর আগাছা বাছিয়া ফেলিয়া দিতে হর। পাতা তুলিবার পূর্বে টেত্রমারে পূক্রের গাঁক আদিয়া সার দিতে হর। এমন কি অনেক স্থলে এক বিবার ৪০০ মণ পীক ঢালিয়া দের। তাহা রৌজ ও বাতারে ওকাইরা বায়। পরে কোলনাইবরি, সমর ক্ষেতের জমির সহিছে মিশিরা বায়। প্রতি তিন বংসর অন্তর ক্ষেতে এইর্লি পাঁক দিতে হয়। এক একটা গাছ ১০০২ বর্ধ থাকে, তংগলৈ তাহার মূলাবিধি কাটিয়া কেলা হয় এবং তাহার শাবা প্রশাধা নৃতন গাছ উৎপাদন ক্রিবার অন্তর স্থিতিয়া দেয়। এইর্লেণ আম্বার

ন্তন পাই গৰাইয়া উঠে। পাঁচ বংসর পর্যক্ত নেওলি আরা হয়। তংপরে আবার ন্তন ক্ষেত প্রস্তুত করা উচিত। বহুকাল হইতে চীনদেশে তুতের অংশু কাগল প্রভাতের জন্ম ব্যবহৃত হইরা আদিতেছে। মার্কোপেলে আপনার প্রমণ বৃষ্ণাক্তে দিবিয়া গিয়াহেন, এই অংশুকার্ড কাগল কাগলের মত।

তৃতের কলেও এক দিবা জন মধুর ক্লাছ আছে।
এবদকার ব্রেপীয়চিকিবনকদিনের মতে ইবার ওপ শীতন,
মূহ বিরেচক, ভ্রানাশক ও জনম। ইবার বক্ কৃষিমাশক
ও জতি বিরেচক, স্লাক্ষিহর ও সংবাচক। আলফিবের
শিক্ষিণভার ও কর্মনাহে কলের রনে কুলী করিকে আনে
কটা শাক্তি বেধি হর। আনুক্রেনের বভাও জনেকটা জন্মণ।

[कृष (पथ।]

আগানে ভূতকাঠে মৌকার দাঁড় ও কোন কোন আগ-বাব প্রস্তুত হয়। ইহাতে ভাল চা-বারা তৈয়ার হইতে পারে। [বেশম শব্দে অপরাপর বিবরণ স্তব্য।]

कुँ एक (कुक्ष मास्त्रक क्षमेक्षम) जेनशाकृतिसमय । [कुक्ष प्रत्य ।] कुँ म (प्रमास) बृहद वृक्षतिसमय । [कुँक प्रत्य ।]

ভুঁষ্ (দেশৰ) ধাকাদির অবলিষ্ট। [তুব দেব।] ভুক্ (পুং) ভূল-ছিপ্। অপত্য, সন্তান।

তুক্ (দেশৰ) > বশীকরণাদির জন্ম প্রকরণবিশেষ, পরের অনিট সাধন জন্ম বছ বা অন্ত উপার। ২ সলীতে কতকগুলি মাত্রা একতা ছলে বোজনা করিলে তাহাকে তুক্ কহে।

তুক্তাক্ (দেশল) মত্র তত্ত্ব।
তুক্ত্যোতির্থিদ্, একলন প্রাচীন হিলু ল্যোতির্থিদ্।
তুক্ত্যোতির্থিদ্, একলন প্রাচীন হিলু ল্যোতির্থিদ্।
তুক্ত্যানা, বিলাগ অভ্যন্তরে প্রাপ্ত পদার্থবিশেব, বংশলোচন।
তুক্ত্যানা, নহারাই দেশের একলন সর্বালন্ত্রি ভক্তক্বি।
তারতবর্ষ ধর্মজীবন মহাপুরুবদিগের লীলাভূমি। প্রতিবৃগে
এবং দেশে দেশে তর্পবন্তক মহাপুরুবরণ অল্পপ্রহণ করিয়া
এ দেশের গৌরব বর্মন করিয়াহেন। কেই ভক্তি, কেই
ভানা, কেই বৈরাগা প্রভৃতি সদ্ভণসমূহ ছারা বদেশবাসীদিপের প্রভৃত উপকাল সাধন করিয়া গিয়াহেন। ' বৈদিক
মর্ম্ম হইতে আরম্ভ করিয়া বর্তমান সময়ের ধর্ম-দলীত পরীর
সকলই ধর্মভাবে অল্প্রাণিত। আলাদের দেশে আধুনিক
ভারতীর ভাষাসমূহে ধর্ম-ভাষোদীপক গলবনীর অভাব
নাই। হিন্দীতে ভুলগীলীন, বালালার রামপ্রসাদ, ভাষিনে
তিরুবর্মর এবং মহারাইেই, ভুক্তিরাম প্রত্যেক্ত নর নারীর

स्वरदः विश्वास्थि। अन्यक्षत्रात्मक नक्षेष्ठ माः छनिवास्थ्यन

वा मा खारनन, वर्षत्र अवन विकिष्ठ हिन्दू मञ्चान एकं वाहिन किना छाड़ा विवर्ध ज्यात ना । त्रीक्षणिय, नमहत्र, महीरक, नमीरक अवन कान नाहे, रवशरन त्रांत्र आसीरक, नमीरक अवन कान नाहे, रवशरन त्रांत्र आविकात मनीरक क्ष्म हिंदा कि व्याप्त अविकात क्षित्रोहिरानन, कृष्णात्रांत्र ज्यात्र अविकात क्ष्मित्रांत्र आमन नाक कत्रित्रोहिरानन । अवे कक महामून्य आभागता कत्रकृष्य स्वताह्य वे रवाह्य में विवार क्षित्र आमन काक कत्रित्रोहिरानन । अवे कक महामून्य आभागता कत्रकृष्य स्वताह्य वे रवाह्य महानाह्य आखित क्ष्मित्र विवार महिराह्य । अवे नक्ष्म अक्ष्म महानाह्य आखित क्ष्मित्र वे त्राव्य कत्रित्रां वे रवाह्य क्ष्मित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्र व्याप्त क्षमित्र विवार व्याप्त क्षमित्र व्याप्त क्षमित्य व्याप्त क्षमित्र व्याप्त क्षमित्र व्याप्त क्षमित्र व्याप्त व्याप्त क्षमित्र व्याप्त क्षमित

মহারাট্র-রাজধানী পুণার আট ক্রোণ প্লিবোজরে ইক্রাইণী
নামে একটা ক্ষুত্র নদী আছে । ইহার ক্লো দেহনমিক গ্রাম।
এই গ্রামে "মোরে" উপারিধারী পুজলাতীর একটী প্রাচীন
মরাঠী পরিবার বাস করিতেন। ইহারা বাণিলা বাবসারী
ছিলেন। এই বংশ অতিশর ধর্মপরারণ। তুকরোমের পূর্বাপুকরণণ ভক্তি ও বৈরাগ্য বিষয়ে সেই সময় সকলের শীর্বছানীর ছিলেন। তুকারামের উর্জ সপ্তম পুক্রের নাম
বিশ্বভর, ইনি বাণিলা ব্যবসায়ী, কিন্তু সাধারণ বণিকের
ভার, অভারাচারী ছিলেন না। তিনি অতিবি ও সম্যাসী
শাইলে পরম যত্নে তাহাদের সেবা করিতেন। রাজিকানে
ভক্তর্নের সহিত স্মিণিত হইরা মহানলে স্কীর্ডন করিতেন।

শপতরপুরের বিঠোবাদেবের পূজা ইহানিগের কৌনিক রীতি ছিল। তদমুদারে প্রতি একাদশী তিথিতে তিনি পণ্টরপুরে বাইরা বিঠোবা দেবের পূজা করিতেন। কিন্তু এক দিন
তিনি স্বপ্ন দেখিলেন, বিঠোবাদেব স্বাং উপস্থিত হইরা
বলিতেছেন, বংস! আমি তোমার ভক্তিতে প্রীত হইরাছি।
তোমার আর ক্লেশ করিরা পশ্যরপুরে বাইবার প্রত্যোজন নাই।
ভূমি নিজ গ্রাম দেহতেই আমাকে প্রাপ্ত হইবে। বিশ্বস্তর
ইহার পর স্বলনির্দিষ্ট একটা আমকাননে বিঠোবার বিগ্রহ
প্রাপ্ত ব্যানির্দিষ্ট একটা আমকাননে বিঠোবার বিগ্রহ
প্রাপ্ত ব্যানির্দিষ্ট একটা আমকাননে বিঠোবার বিগ্রহ
প্রাপ্ত বিশ্বন ভাহাতে ঐ সুর্দ্ধি স্থাপন করিরা উল্ভিতরে
প্রাক্তিনার নিযুক্ত হইলেন। ইহারা এইরূপ ধর্মপ্রার্শ ছিলেন
বলিরাই ত্র্যার্থের স্থান বংশের গৌরব্রস্কর্প প্রশাভ
ভরিতে সমর্ধ হইরাছিলেন।

ত্কীরাম ১৬০ গাদ খৃঃ অধিক বোলোধার ঔরলে ও খনকালয় গতে জন্মগ্রহণ গরেন। ত্কারানের সিতা * বোলোবা সল্ভবসমূহে বিভূষিত ও ইছার রাভা অভিশর

পতিপরারণা ভিলেন। ইহার আবন পুরুত্র নাম শান্তলী। ভুকারার পিতার বিভীর পুত্র। কনকার বধন গর্ভবতী हम, ७५न नः नारतत थाडि । छाहात माडास विकास मित्राम हिन व्यवः गर्वानः निर्व्हात विश्वा रिव्रेनात्र पत्रिएम। ভুকারাম যে একল্লম ভক্তশিরোমণি হইবেন, ইহাডেই 'ডাঁহারা ব্ৰিয়াছিলেন। ভুকার্যবের পত্নেও কন্ফালীর একটা পুত্র ও একটা করা করিবাছিল। একদিকে বেমন পুত্রকতা লাভে, অপর্নিছক, খেই প্রকার ধনসম্পদে ट्वांटलावा ७ क्वकांकेत वानना भतिभून ब्हेबाहिन। অবস্থা উন্নত হইলেই প্রান্ত সকলে ভগধানের নাসী ভূলিরা বার, কিন্তু বোলোবা ও কনকারী সে প্রফুলির গৌক हिल्ल मा। माःमादिक मकन जेकादै छूप नांछ कदियां। জগৰানের কথা বিশ্বত হল নাই। তিনি ব্থাসময়ে পুত্র-কঞ্চাদিপের বিবাহ দিবেন, কিন্তু ধ্য জন পুত্র প্রভৃতিতে পরিবৃত্ত হইরাও ভাহার অংহংভাব বর্জিভ হয় নাই। জোঠ পুত্ৰ শাস্ত্ৰী ৰয়ঃপ্ৰাপ্ত হ্ইৰ্লে ভাৰার উপন্ন সংসারের ভার অর্পণ করিয়া নির্কিন্নটিত্তে ভগবদারাধনার জীবন যাপন করিবার সহল করিলেন এবং তদমুবারে জ্যেষ্ঠপুত্র শান্তলীকে সংস্তিরর ভার গ্রহণ করিতে অফুরোধ করেন। কিন্তু শান্তলী ৰাল্যকাল হইতেই সংসারের অতি বিরক্ত ছিলেন, শ্বরাং এই ভার তিনি নইতে ক্ষীকার করেন। বোলোবা তখন মধ্যমপুত্র ভুকারামকে সংসারের ভার প্রহণ করিতে আদেশ করেন ৷ পিতার আজা অপরিহার্যা, এই লভ তুকারাম অবোদশ বৎসরে সংসারের শুরুতর ভার গ্রহণ করেন।

তৃকারামের ছই বিবাহ। তাহার প্রথমা পদ্মীর নাম ক্ষমানাই এবং বিতীরার নাম আগবাই (ইনি সাধারণতঃ জিলিবাই বা লিজাই নামে পরিচিতা)। প্রথমা পদ্মী কাশ-রোগগ্রতা বলিরাই তৃকারাম বিতীরবার দারপরিগ্রহ করিয়ছিলেন। ইহার পদ্মীবরের মধ্যে কনিষ্ঠাই সাংসারিক সর্কবিষরে কর্মী ছিলেন। তৃকারাম বদিও-এও জর বগসে সংসারের শুক্তর ভার গ্রহণ করিয়াছিলেন, কিব তিনি এই শুক্তার বহনে অরভকার্য হন নাই, বরং ভিনি অতি শক্ষতার সহিত সাংসারিক কর্তব্য সম্পাদন করিতে পারিলেন।

কৌলিক বাণিজ্য ব্যবসারে ভাছার বিশেষ প্রতিষ্ঠা, জারিল এবং জর দিনের মধ্যে তিনি জনেক বনাচ্য বণিকের বিশাসভাজন হইরা বথেট জর্ম উপার্জন করিলেন। ভুকারামের সকল বিবরেই সৌভাগ্যের শক্ষণ লক্ষিত হইতে লাগিল। মন্থব্যের জবন্ধ চিরদিন সমান বাম না। প্রারই ভূথের পর হংগ আদিরা ভারার ভার অধিকার করে। তৃকারামেরও এই সাংসারিক হৃথের অবস্থা অধিক দিন স্বানী হর নাই। তৃকারামের সপ্তদশ বর্ষ ব্যবসের সময় প্রথমে তাহার পিতা, তাহকে পর তাঁহার মাতা চিরদিনের মতন ইহলোক পরিতাগি করিয়া ধর্গধামে গমন করেন।

তুকারাম পিতৃমাতৃবিয়োগে এফেবারে অধীর হইরা পড়িলেন। এই শোকই সংসারবন্ধনের সমস্ত মল অপনীত করিয়া তুকারামের চিত্তের নির্মালতা সম্পাদন করিল। ভগবউক্তি এবং বৈরাগ্যশীলতা ভ্কারামে প্রাযুক্তমে वर्त्तमान, हिन, किन्त मन्नाम, शिलामालात स्मर, विवशासूत्रिक ও সংশারের ভার একত হইরা এতদিন তাঁহাকে আখ্যা-আ্রিক উন্নতিসাধনে অ্বসর প্রদান করে নাই। তুকারাম তুঃথ কাহাকে বলে, তাহা একদিনও অনুভব করেন নাই, এতদিন সংসার তাহার নিষ্ট স্থময় ছিল, কিন্ত পিতা-মাভার মৃত্যুতে তাঁহার জ্ঞানচকু: উন্মীলিত হইল। সংসার অনিভা, হ:থ অবখ্যন্তাবী, ইহা তিনি স্পট্ট ব্ৰিতে পারি-লেন। তুকারাম অরোদশবর্ব হইতেই সংসারের ভার গ্রহণ ক্রিয়াছিলেন, সভা, কিন্তু পিভা জীবিত ছিলেন বলিয়া সে ভাব তত অক্লভর বোধ হয় নাই। কিন্তু এখন এই ভার তাঁহার পক্ষে অতি কট্টদায়ক বোধ হইতে লাগিল। ভবিতব্য অনতিক্রমণীয়, ইহা ভাবিয়া তিনি সাংসারিক কার্য্যে যথাসাধ্য मत्नानित्वण कतिरा यञ्जवान इहेरलन। विशन विशासन অফুগমন করিয়া থাকে, এই সমরে আর একটী ছ্র্বটনা জ্মানিয়া তাঁহাকে বিপর্যান্ত করিল। এই সময় ইহার জ্যোষ্ঠ ভ্রাতৃবধু অকালে ইহনংসার পরিত্যাগ করিলেন। শান্তজী একেই সকল বিষয়ে উদাসীন ছিলেন, পিতামাতার মৃত্যু অবধি আরও উদাসীন ভাব বর্দ্ধিত হইয়াছিল, এখন পত্নীর পরলোক গমনে আপেনাকে দকল প্রকার বন্ধনমূক্ত হির করিয়া ভীর্থপর্যাটন ও ধর্মচর্চার জন্ত গৃহভ্যাগ করিলেন।

এই সমর তুকারামের বয়স অষ্টাদশবর্ষ মাতা। তুকারাম যে কার্য্যের ক্ষপ্ত এই পৃথিবীতে আসিয়াছিলেন, ক্রমেই তাহার পথ উমুক্ত হইতে লাগিল।

ভাতৃদায়ায় মৃত্যু ও জাঠ সংহাদরের পৃহত্যাগে ভগবছক্তি আদিয়া তৃকায়ামর জ্বদরে অধিকার করিল। তৃকায়াম ভগবদ্পেনে 'কমেই নিমন্ত হইতে লাগিলেন, সংসারের প্রতি করে 'ওদাদীল শ্রন্তি লাগিল। ব্যবসায়ের প্রতি ভাদৃশ মনোযোগ না থাকায় ক্রমে বাণিজ্যে বিত্তর ক্ষতি হইতে লাগিল। তৃকায়ামের ধননাশ হইতে লাগিল। ব্যবসায় বাণিজ্য চালাইতে হইলে আদান প্রদান বিশেষ আবশ্রক, কিন্তু ইহার অর্থ প্রাস হইতেছে দেখিয়া ব্যবসায়িগণ তৃকা

রামের সংক্র আদান প্রদান বন্ধ করিতে লাগিলেন। কিন্তু তুকারাম বাহাদের নিকট টাকা পাইতেন, ডাহারা ইহার ব্যবসারে উদান্ত দেখিরা ঝণ পরিলোধে বিলম্ব করিতে লাগিল। স্থতরাং দিন দিন তুকারামের সংসারের অবনতি ঘটিতে লাগিল। সাংসারিক ব্যর পূর্ববেৎ রহিল, আরের পথ কুমে একেবারেই বন্ধ হইতে লাগিল। তুকারাম অতি বিপদে পিছলেন, শত চেষ্টা করিয়া সংসারিক অবত্বা পূর্ববিৎ করিতে কিছুতেই সমর্থ হইলেন না। তাঁহার হাবর যে ভগবান ভর্তিত পূর্ণ ছিল, ক্রমে তাহার বৃদ্ধি হইতে লাগিল। এই সময় তুকারাম পূর্বের ভার্ম মহালনী ব্যবসারে আর উ্রতিঃ সম্ভাবনা নাই দেখিরা অবস্থারূপ একটী মুদিধানার দোকার খুলিলেন। এই সময় তুকারাম যেখানে বসিয়া থাকিতেন সর্ববাই সেখানে হরিসন্থাতিন করিতেন।

• अतिननात्र व्योगित्न मत्न. ज्ञानित्वन- अना यनि कम इत्र **छाहा इहेरन आ**मात अथर्च हहेरव, हेहा ভाविश्रा शतिनमारतः हेक्हाक्रवां की खवानि निष्ठन, कारकहे अहे वावनारत छाहा। লাভ হওয়া দুরের কথা, আসল হইতে অনেক ক্তিগ্রন্ত হইতে गागिरमन। मूमिथानात्र प्राकारन गांछ नाहे विरवहना कतिः আবার আবে একটা ন্তন ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইলেন। কিং **ভাহাতেও প্র**বিধা হইল না। এই সময় চারিদিক্ হইতে সকলেই তুকারামের নিন্দা করিতে লাগিল, একে সাংসারিং কট, তাহাতে চারিদিক্ হইতে আত্মীয় অঞ্নের স্থমি গালিবর্ষণ। কেছ বলিতে লাগিল, তুকারাম অতি নির্কোং কৈহ বলিজে লাগিল ভুকারাম অকর্মণ্য ও ব্যবসায়ঞার্যে 'নিতাস্তম্থ'। ৢএই সকল কারণে ভুকারামের মন নিতা চুঞ্চল হইরা উঠিল। তুকারাম চেষ্টা করিয়াও মন কিছুভো সংসারের প্রতিৃ আকৃষ্ট করিতে পারিলেন না। তাহা छन्त्र (य ভाবে পূর্ণ হইয়াছিল, তীহার বেগ দমন করা কাহা সাধ্য। ভূকারাম কাঞ্জ কর্ম করিতেন বটে, কিন্তু অন্তঃকর দর্মনা হরিভজিতে পূর্ণ থাকিত। ক্রমে ক্রমে লোকসা দিয়া ভুকারামের মৃশধন সকল ফুরাইরা গেল। এই সম অভিশন্ত্র সাংসারিক কট্ট উপস্থিত হইল।

জুকারাম এই কট নিবারণ করিবার জঞ্চ জাবার ব্যবসা কার্য্যে প্রবৃত্ত ইংলেন। কিন্তু মূলধন তাহার কিছুই নাই কাজেই জঞ্চ ব্যবসার তাহার পক্ষে কট সাধ্য হইল। তথ তিনি ভারবাহী ব্রভের পৃষ্ঠে ধাজের ভার দির। গ্রামে গ্রামে বিক্রের করিরা বেড়াইভে৯ লাগিলেন। দিবারান্ত পরিপ্রম জাহার নিজা, শীতগ্রীষ্ প্রভৃতিতে তাঁহার ক্রক্ষেণ নাই। কি তাহার ব্যবসারের রীতি স্বতর, কালেই তিনি লাভবান হইট

शांतिस्त्रन मा। क्षि छिनि शांशांत्रिक कान कडेरे आह क्तिएजन ना । छाँशांत रंडहे श्रःथ चाफ़िएड नातिन, छिनि खडहे विक्षांबाहत्रतः आञ्चनमर्गन कतित्व गानितनन । अहे नमन क्रुवादारमञ्ज अनदात्र अञ्चिष्ठ यात्रा किছू हिन, नमखरे क्राम निःश्व इहेबा कांत्रिम, छिनि धरक्वाद नर्सवास इहेब्रा পড়িবেল। তথন প্রতিবাসী বণিকেরা আসিয়া তাঁহার কাগল পত্র সকল দেখিতে বাগিলেন। ভাঁহার। দেখিলেন বে, ভুকারামের রক্ষার আর উপার নাই। তুকারাম দেউলিয়া হইরাছেন, ব্যবসায়ীর পক্ষে দেউলিয়ার ভার কটকর ও নিক্ষা আর কিছুই নাই। এই সংবাদ नर्काख थाठाविछ हरेन, महास्त्र नक्न सानिवा छौहाव पात्र অৰুৱোধ করিল, তখন তুকারাম অভিশন্ন বিপলে পড়িরা একেবারে হতবৃদ্ধি হইলেন। এই সমর ভাষার কএকজন আত্মীয় কেই অর্থ সাহায্য করিয়া বা কেই মহাজনদিগের নিকট ক্লামিন হইয়া তুকারীমকে এ যাত্রা রক্ষা করিলৈন। ভুকারামের বন্ধুবাদ্ধবদিগের এইরূপ ধারণা ছিল, বিঠোবা-ভক্তিই তাঁহার অবনতির কারণ। বন্ধুগণ সমবেত হইরা বলিলেন, 'ভূমি বিঠোবা-ভক্তি পরিত্যাগ করিয়া সাংসারিক कार्या मनानिरवन कत्र, ध सगरत रक विर्काशिक एकि করিয়া উন্নতি লাভ করিয়াছে ?' এই [®]প্রাকারে তুকারাম চারিদিক্ হইতে তিরস্কৃত হইতে লাগিলেন। গৃছে অবলাইএরও এইরূপ ধারণা ছিল ; তিনিও সর্বাদা বলিতেন, বিঠোবা-ভজি-তেই আমাদের এই অবনতি ঘটিতেছে। গৃহে ল্লী, বাহিরে বন্ধু ুবান্ধব প্রভৃতি সকলই তাঁহাকে উত্তাক্ত করিতে লাগিলেন। অদিকে সংসারের দারুণ কষ্ট। ভুকারামের কিছুতেই দৃক্পাত माहे, य याहा वलुक ना तकन, नकनहे मझ कतिए गानि-লেন। তিনি বিঠোবা-প্রেমে নিমগ্ন থাকিতেন, সংসার্বের ত্ব: ব কট তাহার নিকট তত কটকর বোধ হইত না। লোকের ভাড়নার, স্ত্রীর ভং সনার আরও তাঁহার ভগবদ্প্রেম বৃদ্ধি পাইভে লাগিল।

বণিকদিগের ব্যবসা ভিন্ন জীবিকানির্জাবের জার উপায়
নাই। স্থতরাং তুকারাম এবার শেষ উল্পম করিলেন। বাহা
কিছু সঁঘল ছিল তাহা একত্র করিরা কতকপ্রলি লকা ক্রর
করিলেন এবং তাহা লইনা কোছণদেশে বিক্রেরের জল্প লইরা
গেলেন। যদিও ইনি নৃতন জব্য লইরা ভিন্নদেশে গিরাছিলেন,
তথালি ভাঁহার ব্যবনারের রীতি পূর্ববেই ছিল, নৃতন ব্যবনারী দেখিরা দলে দলে ক্রেতা আসিতে লাগিল। ক্রেতাগণ
স্বা দিয়া আপন ইচ্ছামত লইরা বাইতে লাগিলেন, অনেকে
বার কইরা পেলেন, এইনিল ক্রেরিলিনের মধ্যে লাভ হওরা

স্বের কথাঁ, ব্লখনের ক্তক অপচর হইল। লহা বিজের করিয়া বাহা কিছু পাইরাছিলেন, ডাহা লুইরা বেলে প্রত্যাপত হইলেন। কিছু দৈবের এখনই বিড্বনা বে, পথে আসি-বার সমর এক প্রতারকের হুত্তে পতিত হইলেনুন। এই প্রতারক তাঁহাকে ক্তকভলি কৃত্রিম স্বর্গালয়ার দিয়া তাঁহার নিকট বাহা ছিল, তাহা বইরা চলিল। তুকারমে বাটা আসিরা এই হ্র্কুজিতার জন্ত আত্মীর বজনের নিকট বেরপ লাভিত হইরাছিলেন, বোধ হর আর এরপ কথন তাঁহার ভাগ্যে বটে নাই।

अमिरक অভिশব সাংসারিক কট উপস্থিত ইইল, অবলাই दिश्वान यामी नर्सवाख हरेबादबन, छाहात छेनेब लादकत विचान विन्ध रहेबाहि, कार्त्रिक निक्षे जात थात गाल्या ক্ষিন। অবলাই সৃদ্ভিপন্ন গৃহত্ত্বে ছহিতা, ভাঁহার উপর অনেকের বিখাস ছিল, তিনি ২০০১ শত টাকা কর্জ্ব क्तिया चानीरक अत्नक वृक्षाहेशा वादनारमञ्जूष मिरणन। ভুৰুবাম এই টাকা লইৱা,বালাঘটি নামক স্থানে ব্যবসায়ের निभिन्न गमन कतिरमन धवः धहैवात क्य विकास उंशित একচতুর্থাংশ লাভ হইল। তুকারাম গৃহে প্রভ্যাগমনুকালে टम्बिटनन, এक्यम बाचानरक दावास्ट्रवर्गन सर्गत् कछ वसन করিয়া শইরা যাইতেছে, তাহার পদ্মীও এই সঙ্গে কাঁদিতে কাঁদিতে অনুগমন করিতেছে। ব্রাহ্মণ ঋণ পরিশোধের জন্ম ১২ বংসর ধরিয়া ক্রমাগত ভিক্ষা করিয়াছেন। কিন্ত কিছুতেই এই টাকা সংগ্রহ করিতে পারেন নাই। তুকারাম বান্ধণের এই ছদিশা দেখিয়া একেবারে গলিয়া গেলেন। তখন তিনি আপনার বাবসায়লক সমস্ত অর্থ আলগকৈ দান করিলা ভাষাকে তৎকণাৎ ঋণ মুক্ত করিলেন। আহ্মণের কৌরকার্যা এবং দানের দক্ষিণাস্ত অরপ আরও দশজন ত্রাক্ষণ ভোজন করাইলেন। এইবার তুকারামের শেষ সম্বন্ত গেল।

তৃষারাম গৃছে প্রত্যাগত হইবার পুর্বেই এই সংবাদ চারিদিকে প্রচারিত হইন এবং সকলে তাহাকে পাগন দির করিলেন। অবলাই দরিদ্রতার পীড়নে একেই রুত্মখন্তাবা হইরাছিলেন। আমীর এই ব্যবহারে একেবারে অগ্নিমূর্ত্তি ধারণ করিলেন, তুকারামের গৃঁছে অবস্থান অতি কঠিন হইরা উঠিল। এই সময় দারণ হতিক উপস্থিত হইল, টাকার হইসের শক্ত বিক্রেম্ন হইতে লাগিল। এই হর্তিকে তুকারামের পরিব্রার্বর্গ অরাভাবে দারণ ক্লেশ ভোগ ক্লেরিতে লাগিলেন। তুকারাম প্রতিবাসিগণের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিলে তাহারা তাহাকে অবজ্ঞার সহিত তাড়াইরা দিত, কেহ কেহ বা তাহাকে বিজ্ঞাকরিরা বিজ্ঞাকরিরা বিজ্ঞাকর

কোধান, বিষ্টল-ভক্তির পরিণাম ত দেখিলে। তৃত্যারাম এই সর্কল কথার একেবামে মর্দ্মাহত হইলেন। কিন্তু তথন ছাইছেক্লর প্রকোপ আরও বর্দ্ধিত হইলে। তৃত্যারামের জ্যান্তা প্রাক্তি হুইলে। তৃত্যারামের জ্যান্তা প্রকাশ করেন। তাহার এবং ক্রেপে এই সময় তিনি ইহলোক পরিতাগ করেন। তাহার মৃত্যুতে সক্লই তৃত্যারামকে ধিকার দিতে লাগিল। ইহার কিছুদিন পরে তৃত্যারামের জ্যান্তপুত্র সন্তোলীও প্রাণত্যাগ করিল। তৃত্যারাম সঞ্জোলীকে অত্যন্ত মেহ করিতেন। তাহার এই অকাল মৃত্যুতে হৃদরে দাকণ আঘাত পাইলেন।

তুকারামের জ্ঞান এতদিন পূর্ণ বিকশিত হয় নাই, কিন্ত এইরপ উপর্তপরি বিশংপাতে তিনি ব্রিতে পারিলেন, সংসার কর্মকের—স্থার স্থান নহে। সাংসারিক অধ সমন্তই অনীক ও ভাতিমাতা। প্রথমা পদ্মী ও পুত্রের মৃত্যুতে ভুকারামের সংসার-মোহ এতদিনে অন্তর্হিত হইল। ভুকা-রাম ভাবিলেন, সংসারে অ্থের আশাম কতই চেষ্টা করি-माहि, छाहाट कि कन नाछ हटेन छेउदाखद क्वरन इ:थ ভোগ করিলাম। সংলারে হঃথ পর্বত প্রমাণ, সুথ ভাত্তিমাত্র। ভুকারাম ইহা ভাবিরা সংসারবন্ধন, একেবারে ছিল্ল করিয়া দেহর নিকটবর্তী ভাশ্বনাথ নামক একটা পর্বতে আশ্রর এইণ করিয়া ভগবদারাধনা করিতে লাগিলেন। ভূকারাম এই পর্বতে আসিয়া শাস্তিলাভ করিবার জন্ত সপ্তাহব্যাপী व्यविद्याभ व्यात्राधना ও চিত্তনের পর তাঁহার হৃদয় শান্তি-লাভ করিল *। তুকারাম যধন ভাকনার্থে অবস্থিতি করিতেছিলেন, তথন তাঁহার আত্মীর অজনগণ চতুর্দিকে তাঁছার অবেষণ করিতে লাগিলেন, তাঁছার কনির সহোদর কানাইয়া চারিদিকে পর্যাটন করিয়া এই স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। অনেক অম্বোধ উপরোধের পর ভুকারাম পর্বত হইতে অবভরণ করিরা ইক্সারণী তীরে আনুগমন করিলেন। এই ৭ দিন তুকারামের আরোহার হয় নাই ৷ ভুকায়াম শানাহায় করিলে কানাইয়া উাহাকে সাংসারিক অবলা ভাপন করিলেন। ব্যবসারে তুকারামের সমন্ত সম্পত্তি নট হইলেও তাঁহার পিতা লোকনিগকে

তৃত্যারামের চরিপ্রলেখকগণ কলেন, বিঠোবা এখনে কৃত্যাপরি আকারে ওঁারার নিকটে আবিতৃ ও হইলা আনেক কর এছপর করেন, কিন্ত তুকারার কিছুতেই ভাত হব বাই। তথম আকাশবাদী হইল, কুল্পাপই ভোনার অগবাধ কেবলা। ইহাতে তুকারার বনেব বল্পাপুর্বি বর্ণন ভিন্ন আবার পরিভোগ হইবে বা, তথম বিঠোবা চতুতু ব মুর্তিভেই ওাবার সমীপে উপন্থিত হব। তুকারার এই মুর্তি বর্ণনে বাজিলাভ করেন।

বে সকল ধুণ দিয়াছিলেন, আনেকের নিকট তাহা এখন ও পাওনা ছিল। কানাইরা সেই সকল ঋণের কথা ভূলিরা তাঁহার নিকট কাগলপত্র চাহিলেন, তুকারাম কাগলপত্র-श्रीन कानारेक्षा कनिर्शतक कहितनत, 'छारे कात त्था काना वहन कत्रिवात चारश्रक कि, चंग्नं धरेश्वनि हेखानी बरन निरम्भ कता याष्ट्रक।' कानारेता छारारक वनिरनन, 'আপনি সংসারত্যাণী, আপনি পারেন, কিন্ত আমাকে यथन এই পরিবারবর্গকে প্রতিপালন করিতে হইবে, তথন আমার পকে है। कि धकाद मस्य हव।' ভুকারাম क्रितिबेन बहे कथा अनिवा जाहात व्यक्तारम जाहारक मिटमन, चात्र चर्काः न हेळात्रभीत्र चल नित्क्र कतित्रा विलिनन, "আৰি হইতে ভোমরা নিশ্চিক হও, এই কছা আমার শীতাড়পের সমল হইবে, ভিক্ষাতেই আমি জীবন ধারণ করিব" এই বলিয়া ভিনি কানাইয়াকে বিদায় দিলেন। তৃকারামকে এই অবস্থাপর দৈখিয়া নানা জনে নানা কথা বলিভে লাগিল, কেহ বলিল, ব্যবসায়ে ক্তিগ্রন্ত হইয়া ভুকারামের মন্তিফ বিকৃত হইরাছে, আর কেহ বলিতে লাগিল, তুরুারাম জীবিঁকার জক্ত এই সাধুভাব ধারণ করিয়াছে। কিন্তু তুকারামেন নিন্দা ও স্ততি একই সমান। এখন তৃকারাম আপনার ইচ্ছাত্তরপ নানাভানে ধর্মচিস্তার সময় অভিবাহিত করিতেন।

क्रकात्रास्मत्र भूक्षभूक्षय विषक्षत्र सिष्ट्र विदिश्वात ब्लब्स रि मिलित निर्माण कतिबाहित्नन, তाहा मःश्वात अভाবে छर्म-আৰু হইয়ছিল, ভুকারাম এই মন্দির সংস্কার করিবার মনুত্ত कतिरानन, किंग्र छाँहात व्यर्थ क्लाथात्र रय, हेहात कार्या ममोधा করিবেন। কিন্তু সাধু উদ্দেশ্ত হইতে নিরত্ত হওয়া ভগ-বভ্তক্তের পক্ষে হৃক্ঠিন। তৃকারাম অহত্তে মন্দির্টীর সংস্থার করিবার অভয় কতসভল হইলেন এবং করং মৃত্তিকা খনন कतित्रा मन्दित्रमिर्दार्शत कार्या आतस्य कतिरत्न। निष्ठा-প্রণোদিত কর্ষ্যি কথন অসম্পূর্ণ থাকে না। ক্রমে প্রতিবাসি-পণের সাহাষ্যে উপকরণ জব্যাদি সংগৃহীত হইল। তুকারাম প্রথম হইতে শেষ পর্যান্ত সামাক্ত প্রমন্ত্রীর ক্রায় মন্দ্রিরনির্মাণ कार्र्श भिन्नम कतिरलन अवः नाधात्रश्व नाहारम अहे मन्दित রীতিমত প্রতিষ্ঠিত হইল। এই সময় হইতে তুকারাম নিব অনুরাগে বিঠোবার পূলা ও নামকীর্তনে নিযুক্ত হইলেন। অক্সান্ত ভক্তগণ অভিনৰ পদাবলী রচনা করিয়া বিঠোবার চরণে উপহার প্রদান করিতেন, কিন্ত ভুকারাম এইরুপ পদাবলী ৰচনা করিবার নিভাও ইচ্ছা হইড, কিন্ত ভক্তি গ্রন্থ-সমূহে অভিক্ৰতা না থাকার, তাঁহীর এ বাসনা পূর্ব হইছ না। এইবন্ধ ভিনি পূর্বভিন সাধু ভক্তবিপের প্রহাবনী বনোবোগের সহিত পাঠ করিতে লাগিলেন। মহারাষ্ট্রদেশীর প্রাচীন ভক্ত-শ্বিব নামনেবের অন্তল্প, শ্বীরের পদাবলী, জানেশর কৃত্ত গীতাবলখ্যা, অমৃতাস্থ্যক নামক অধ্যাত্মগ্রহ, বোগবাসিষ্ঠ, প্রামতাগবত প্রভৃতি ভক্তিগ্রহ পাঠ করিরা তাহার হৃদর আরও ভক্তিবিগলিত হইন। ইহার শ্বতিশক্তি অভিশন্ন তীক্ষ ছিল, এইবছ অন্ন সমর্মের মধ্যে এই সকল প্রস্কের তত্বাবধারণে সমর্ম্ব হইলেন। তথন তিনি ধ্যান, ধারণা, নিদিধ্যাসন প্রভৃতিতে অভ্যক্ত হইতে লাগিলেন। এইরূপে তৃকারাম্রের ধর্মজীবন সঠিত হইতে লাগিল।

ত্কারাম দেহতে প্রভাগমনের পরই সাধুও সক্ষন-निश्तित त्रवात्र नियुक्त इहेरनेन। त्यथात्न इतिमङ्गेर्खत्तत्र লক্ত > জন একতা হইত, পাছে ভক্তগণের চরণ কঠিন कदरत क्रिडे इस, अटेक्छ छिनि त्मरे दान निक रूट्य मार्कन कतिराजन। नकरन यथम हित-कथा अवरागत क्य गृहासा স্তরে প্রবেশ করিভেন, তখন তিনি ভাহাদের পাছকা বকা করিতেন। ভ্কারামের জীবনে যেনু আরে কোন লক্ষ্য मारे, পরের উপকার ও সাধুদিগের সেবা করিতে পাইলেই তিনি চরিতার্থ হইতেন। তৃকারামের এইরূপ অবস্থা দেখিরা অনেক লোক ভাছাকে দিয়া বুণা পরিশ্রম করাইরা লইভেন, তুকারামের জীর ইহা সহু হইত না। তিনি এই জন্ত অনেকের महिछ कनह कतिरङ्ग। जुकातारमत्र खीवनीरनथक्शन ভুকারামের জ্রীর বিষয় বর্ণন করিতে গিয়া ভাহাকে মুখরা প্ৰভৃতি বলিয়া দ্বিয়াছেন, কিন্তু বাস্তবিক একটু পৰ্য্যালোচনঃ করিরা দেখিলে ভাহাকে প্রকৃত পতিপরায়ণা ভিন্ন আর কিছু वना यात्र ना। अवनाहे धनवात्नत्र कछा, यथन हैशात्र विवाह ^{হর}, তথন তুকারামের সমৃদ্ধির অবস্থা, ক্রমে অনৃষ্ট লোবে দরিজতাপীড়নে তাহাকে মর্বলা অন্নচিন্তায় ব্যস্ত থাকিতে হইত। ভুকারাম বিঠোবাভক্তিতে এই সমস্ত হারটুরাছেন, তাঁহার এইরূপ ধারণা হইয়াছিল, এই কারণে অবলাই তুকারামকে অনেক সময় ভিরস্কার করিত, কিন্তু ভাহার একটা প্রধান ভূপ ছিল, স্বামীকৈ ভোজন না করাইয়া নিজে ক্পন ভোজন করিত না। এইজয়ত তুকারাম পৃহ হটতে चमृत्र हरेल, खरनारेटक नरीजित, आखत, १र्काउ थरा, বেশান হইতেই হউক তুকারামকে অবেহণ করিয়া আহার না করাইরা অবলাই কিছুতেই নিরত হইতেন না। তুকারাম ভাষনাথ পৰ্কতে আশ্ৰয় প্ৰহণ করিলে অবলাই আহার্যা প্রব্য লইয়া তাঁহার নিকট গমন করিতেন। এক দিন এইরপ প্ৰবাৰ রোজে ভণ্ড ও প্ৰশ্ৰমে ক্লাক্ত হইয়া মূৰ্চিত হইয়া।

পড়িলেন। ডুকারাম ইহার ক্লেশ দেবিয়া সেই হইডে ক্লেড্ডেই থাকিলেন।

ভূকারাম নামদেবের রচিত অভঙ্গ হইতে ধর্মনীবেন বিকাশের বিশেষ সাহাযা পাইরাছিলের। এই সমন্ত এক দিন ভিনি অল্ল দেখেন, বিঠোবা দেব উপরিত হটুরা বলি-তেছেন, 'ভূকারাম! আমার ভক্ত নামদেব যত অভঙ্গ রচনা করিবার মনন করিয়াছিলেন, ভাহা টোহার পূর্ণ হর নাই, ভূমি তাহা সমাপ্ত করিরা জীবের কল্যাণ সাধন কর, আমি ভোমাকে সংগ্রমজ্ঞান প্রদান করিতেছি, বিঠোবা এই বলিয়া অন্তহিত হইলেন।

তুকারাম প্রথমে ভাগবতের দশমক্ষরণিত প্রক্রিকার বালালীলা ৯০০ শত শ্লোক বর্ণন করিয়া একথানি প্রছ রচনা করেন এবং সভীর্ত্তনের সময় ভুকারামের মুখ হইতে ভাবমরী কবিতা অনর্গণ নিঃস্ত হইত । ধর্মবিবেরিগণও তুকারামের এই উপদেশপূর্ণ পদাবলী শুনিয়া একেবারে আত্মবিশ্বত হইত, এই সভার্ত্তনের এমনই এক মোহিনীশক্তি ছিল, যে একবার তাহা শুনিত, আর তাহা ভুলিত না, তাহার হদয়ে দৃঢ়রূপে অভিত হইয়া থাকিত।

আলে ৰাহারা তুকারামকে পাগল বলিয়া ছণা করিত, এখন ভাহারা তুকারামের ভাব দেখিয়া বিশিত হইতে লাগিল। ক্রমশ: ভুকারামের গৌরব ও প্রতিষ্ঠা বর্দ্ধিত হইতে লাগিল। তুকারাম যে একজন প্রকৃত সাধু, তাহা সকলের দৃঢ় ধারণা জ্বিলি। জনমানবহীন স্থানই ভপস্থার উপযুক্ত, তুক্তারাম পূর্ব্বে हूटा दित করিয়াছিলেন, কিন্তু এথন তাঁহার মনের ভাব পরিবর্ত্তিত হইল। সংসারে থাকিলে ্তিনি নানাপ্রকারে জীবের কল্যাণ সাধন করিতে পারিবেন, এই ভাবিয়া॰ সংসারের প্রতি বিরাগ ছাল হইল। পুনরার সংসারে প্রবেশ করিলেন। তুকারাম অনাসক্ত ভাবে সংসারে থাকিয়া নামকীর্ত্তন করিতে লাগিলেন। তাঁহার এই কীৰ্ত্তন তানিবার অস্তু বছদেশ হইতে কত লোক আসিতে লাগিল। এই সমর দলে দলে তুকারামের শিশু হইতে লাগিল। [°]ভুকারাম নব অহরাগে ও উৎসাহে কীর্ত্তন করিতেন। তুকারামের শিশুদিগের মধ্যে গলাধরপন্থ নামক ৰনৈক ৰাজণ ও সন্তাৰী নামে একৰন তৈলিক এই ছুইৰনই প্রধান। তৃকারামের পশ্চাৎ কীর্ত্তন ও কথকতার মুম্র ইহারা করতাল ও বীণা লইরা ধ্রা ধরিতেন। °গলাধরপছের উপর ভূকারামের কবিত। লিধিবার ভার ছিল। এই • সমর কপট ধার্মিকগণ তুকারামের উপর অভ্যাচার করিতে লাগিল। স্থানী বাবা গোঁগাই নামে একলন ব্ৰাহ্মণ ইহার

প্রক্তি প্রথম অভ্যাচার সারম্ভ করেন। মখানী গোঁসাই এই श्राप्त अक्री मठ कतिया स्माहाकु हरेबाहित्तन, शृर्क हैहारक স্কণ্ট ভক্তি করিত, এই তৃকারামের প্রতি স্কণের অন্থ্রাগ क्षिया हैहाक अस क्षितात अस विलाम कही कतिएक লাগিলেন। তৃকারামের একটা সহিব এক দিন এই সন্দিরে বেড়া ভালিয়া দিয়াছিল, এই উপলক করিয়া মনের সাধে डीहाटक शानि पितन एतः यस्पितत शा विशिध कैंगित বেড়া দিলেন। একদা সামংকালে একাদশীতে বিঠোবার চারিদিকে কাঁটার বেড়া থাকার দর্শকদিগের কট ইভৈছে দেখিয়া তৃকারাম অহতে কাঁটা উৎপাটিত করিয়া ছান পরি-ছত করিয়াছিলেন। মহাজী গোঁলাই ভূকারামকে কাঁটা ভুকারামকে প্রহার করিতে লাগিলেন। একটার পর একটা করিয়া ১০I১eটা কণ্টক্ষটি তুকারামের পৃষ্ঠে ভর **হই**লে मचाओं क्रांस इहेबा धाहारत कांस इहेरनन। '(शानाह धाजू এইরূপে তুকারামকে প্রহার করিয়া মন্দিরে প্রত্যাবৃত্ত হই-লেন, তুঝারাম নিঃশব্দে সকল সহ করিল। তুকারামের এই অবস্থা দেখিয়া সকলেরই নেত্র অঞ্পূর্ণ হইল। তুকারাম এই প্রহার উপলম্ক করিয়া কএকটী অভঙ্গ রচনা করেন।

তুকারাম যে কিরপে অসাধারণ পুরুষ ছিলেন, তাহা বর্ণন করা অসাধা। তিনি এইরপে দণ্ডিত হইরা গৃহে প্রভ্যাগমন করিলেন, অবলাই তাঁহার অল্পবেদনা লাখবের লক্ত গুলারার প্রস্তুত্ত হইলেন। তুকারাম কিছু স্বন্থ হইলে একাদনীর হরিজাগরণের নিমিত্ত সমস্ত আয়োজন হইল, কীর্ত্তন শুনিতে দলেদলে লোক আসিতে লাগিল, কিন্তু মন্থানী গোঁনাই আসিথেন না, তথন তুকারাম তাঁহার নিকট লোক প্রেরণ করিলেন। শ্রীর অস্তন্থ বলিরা তিনি সেই লোককে ফিরাইয়া দিলেন। তুকারাম তথন নিজে বাইরা সারীলে প্রশিক্ত করিয়া কহিলেন, "বহুত্তে বহুক্ষণ যাই প্রহার করাতে গ্রন্থর আজি হইরাছে, ইহা আমারই দোবে ঘ্টিয়াছে, এখন আমাকে ক্ষমা করিয়া কীর্ত্তনে যোগদান কর্মন।" মন্থানী তুকারামের এই ব্যবহারে একেবারে স্তন্তিত হুইলেন, সেই দিন হইতে,তাঁহার বিধেষ ভাব দূর হুইল এবং অস্তরের সহিত তুকারামের প্রতি ক্ষম্পুরক্ষ হুইলেন।

দীক্ষা না হইবে জ্ঞান সম্পূৰ্ণ হর না, এইবস্ত এক দিন বিঠোবা বপ্লে আদ্ধণের রূপ ধারণ করিয়া তুকারামকে "রাম, কুঞা, হরি" এই মত্রে ধীক্ষিত করেন। অপ্লুট্ট মহাপ্রকারে অন্তথ্যানে তুকারাম অভিশব ব্যাকুণ হইকোন। ভারার কিছু- ভেই শান্তি হইত না। তুকারার মনে ভাবিলেন, প্নাসংসারে প্রবেশই আমার শান্তি না পাইবার কারণ। এই ভাবিরা আবার কিছুদিনের জন্ত সংসার পরিত্যাগ করেন। এই श्राप्त्रत निक्रि वज्ञात्मत्र यन मारम अक्री व्यवरा व्यास्त्र প্রহণ করেন এবং প্রতিদিন প্রাস্থাবে ইস্তারণী নদীতে বান कत्रित्रा, विटीया प्रवन्तर्भन कत्रित्रा अत्रत्गा गाहेर्छन, धहे সময় কোন দ্লিন ফিরিয়া না আসিলে তৃকারামের ত্রী অবলাই অতাত ব্যাকুল হইয়া তাঁহাকে পুঁলিতে লাগিলেন, পরে ইক্রারণীতীরে তুকারামকে ধরিলেন, অনেক বলিয়া कहिता शृह् किताहेता • ज्यानितन अवः वनितन भामि जात ধর্মকার্য্যের ব্যাঘাত করিব না'। কিন্তু অবলাই এ প্রতিজ্ঞা অনেক দিনু রাখিতে পারিলেন না, কারণ ভুকারামের তিনটী কান্ত হুই পুত্র ছিল। কল্পা ভিনটীর নাম ভাগীরণী, কাশী ও গলা; পুত্র ছইটীর নাম মহাদেব ও বিঠোবা। একে এই পুত্র-ক্ঞাদিপকে প্রতিপালন, ইহার উপর প্রভূত অভিবিসমাসম, **এইअश्व अवनाहेरक** व्यक्तिशस्त्र हहेर्छ हहे**छ, कारबहे अ**रनक সময় ইহার অন্ত ভূকারামকে গুই চারি কথা বলিতে হইত। এ দিকৈ প্রথমা কল্পা বিবাহের বোগ্যা হইয়াছে, তুকারামকে এই কথা সূৰ্ব্বদাই বলিভেন, এক দিন ভূকারাম পাত্রাহুসন্ধানে গমন করিয়া অভাতীয় জিনটী বালককে দেখিতে পান, ভাহাদিগকে ধরিয়া আনিয়া একই দিনে ভিনটী কয়া मध्येषांन करत्रन।

जुकाताम व्यवनाहेरप्रत इन्छ इहेर्छ এहेवाब निइंडि · পাইলেন। তৃকারামের খ্যাতি ক্রমশ: বিভ্ত ভ্**ই**তেছিণ, অনেক দূর দেশ হইতে লোক আসিরা তাঁহার উপদেশ প্রহণ করিতে লাগিল। তুকারাম শুদ্র হইরা ত্রাহ্মণকে ধর্মোণ দেশ দেন, শাস্তজানরহিত হইয়াই শাস্ত্রের মর্ম সাধারণের নিকট প্রচার করেন, ইহা কাহার কাহার অস্থ হইয় উঠিলু। মখাজীর স্থার রামেশ্বর ভট্ট নামক একজন ত্রার্থ তুকারামের উপর অভ্যাচার আরম্ভ করেন। রামেশ্বর নিবে রাজমান্ত শান্ত্রজ্ঞ পণ্ডিত বলিয়া পরিচিত ছিলেন। তি^{নি} आमाधिकातीरक वृकाहेरणम, जूकाताम नृज हहेवा अखित वर्ष প্রকাশ করিতেছেন। সকল ধর্মকর্ম উৎপাটিত করিয়া নাম মহিমা প্রচার ও ভব্জিপ্থস্থাপনে চেষ্টা করিতেছেন, এবি धिकाँ ती धरे कथा छनियाँ जुकाबायटक निर्सागतनत्र जातन अनान कतिरनन। फुकाबाम विवय विभाग पिछानन। ভুকারাম ভাবিলেন, রামেখরের শরণাপর হইলে এ বিগ হ্ইতে উদ্ধান হইব, এই ভাবিরা রামেখরের শর্ণাণ হইলেন। রাবেশীর অভিশয় সর্বিত ছিল, এইবার বিশুরী

ক্ল ফ্লিল, রাদেখর বলিলেন, তুমি বে স্কল অভল রচনা ক্রিয়াছ, ভাষাতে ঐতির অর্থ প্রকাশিত হইয়াছে, তুমি এই স্কল অভল ইক্লায়ণীর জলে নিকেপ কর।

ব্রাহ্মধের আজা অপরিহার্ব্য, এই সম্ভ তুকারাম দ্বনরের ধন সেই অভদগুলি ইস্লার্থীর জলে নিক্ষেপ করিলেন।

ভুকারাম ইহাতে বড়ই বার্থিত হইলেন। অর্কল জ্যাপ করিয়া বিঠোবার চরণ অনবন্ধত ধ্যান করিতে লাগিলেন, অংগালশ দিন এইরপ ভাবে অভিবাহিত হইল। পরে বিঠোবা খপ্লে প্রভ্যাদেশ করেন, 'স্থামি সেগুলি রক্ষা করিরাছি, তুমি উদ্ধার কর।' প্রামের লোকেরা এই কবিতা উদ্ধার করিয়া তুকারাম্যকে প্রভ্যপণ করেন। ভূকারাম এই উপলক্ষে গটী অভঙ্গ রচনা করেন। পরে রামেশ্বরও তাঁহার একজন প্রধান শিক্ষ হইরাছিলেন।

এই সময়ে বাছবলে, कानवल ও ভক্তিবলে মহারাষ্ট্রদেশ অপুর্ব গৌরবে গৌরবায়িত হইবাছিল। বাছবলের অবতার चक्रभ निवासी, खानवरनंत्र कावजात त्रामनात्र चामी, अनिरक ভক্তিবলে তুকারাম, মহারাষ্ট্রদেশে শীর্ষহানীয় হইয়াছিলেন। कृकात्राम, निवासी जवर तामनामयायी त्करन जुक ममंद्र আবিভূতি হইয়াছিলেন তাহা নহে, পরম্পরের সহিত অতি ঘনিষ্ট সম্বন্ধ ছিল। ভুকারামের সহিত শিবাজীর সাক্ষাৎ ও मित्रानम, जाहामित्रात्र উভয়েরই कीवत्मत्र এक এकটী विस्था উল্লেখুযোগ্য ঘটনা। শিবাজী তুকারামকে পুণায় আনিবার জন্ম সন্ত্রমস্চক ছত্র, অর্থ ও একজন কারকুন প্রেরণ করেন, किन्न कृकाताम मन्नान्तक विरमत मजन ভाविरजन, कारकरे उहक्षमाकीर्ग भूगा महत्त्र छाहात्र बाहेबात्र चार्लो, हेव्हा हहेल না। তিনি শিবাফীর জন্ম কএকটী অভঙ্গ রচনা করিয়া কার-ফুনকে বিদার করিলেন। কিন্তু শিবাজী ভুকারামের অভঙ্ক ও গুণ শুনিয়া একেবারে মোহিত হইয়াছিলেন, এই জয় শির থাকিতে পারিলেন না। শিবালী রাজপদ ভুচ্ছ করিয়া ভুকা-রামের পর্ণকুটীরে উপস্থিত হইলেন, শিবালী প্রাঞ্চ স্বর্ণমূলা তৃকারামকে উপহার প্রধান করিবেন। তৃকারাম শিবানী প্রসত্ত প্রভূত স্বর্ণাশির দিকে একবার যাত্রও দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন না এবং কছিলেন, 'মহারাজ, হরিদেবকের নিকট ফুত্তিকা ও অবৰ্ণসূত্ৰায় কিছুমাত পাৰ্থকা নাই, ইহাতে মোহ ও আশা ৰ্ষ্টিত হয় মাত্ৰ।' এ দুৱা বাস্তবিক্ট অবলোকুনীয় ৮ এক্দিকে त्रामठक्रवर्की भिक्षमी कृष्ठांभनिश्र्हे 'मधात्रमान, ज्यात्रनिरक আছত স্থৰ্ণমূজ। শিৰাকী তাঁহার নিম্পৃহতা দেখিয়া একে-বারে অন্তিত হইলেন এবং নিজ লাজপদকে তুদ্ধে জ্ঞান করিয়া এই সন্মানীর ক্ষতা ক্ষিক এই কারিতে লাগিলেন। তিনি রাজকার্ব্যে ক্ষর্ভার করিয় তুকারামের কীর্ত্তন ও ধর্মচর্চার জীবন অভিবাহিত করিবেন হির করিলেন, পরে তুকারাম তাঁহাকে উপদেশ দিয়া পুরা সহরে প্রেরণ করেন। এইরপে তুকারামের দিন দিন প্রতিপত্তি ও শিব্য সংখ্যা বৃদ্ধি চুইতে লাগিল। তুকারামকে দেনাবতার ও' দেবামুগ্হীত পুরুষ বিলিয়া সকলে অর্চনা করিতে লাগিল। এই সময়-তুকারাম সর্বালা বলিতেন, 'প্রভা আর কেন আমাকে বৈকুঠে লইয়া চল্ন।'

কান্তনী দোলপূর্ণিমায় এইথানে আনুনক প্রকার কুৎসিত चारमान क्षरमान रहेबा थारक, ज्याताम এইशाब रहानिव কুৎবিত আমোদ রহিত করিয়া নামকীর্ত্তনের নির্মাণ ভক্তির উচ্ছाদে এইशान প্লাবিত করিলেন। এই রাত্তিতে ২৪টী অভক রচনা করেন, তাহা "কারব্রহ্মকরণ" অর্থাৎ ব্রহ্মে দেহসমর্পণ নামে পরিচিত। পর দিন প্রাতে তিনি কীর্ত্তন क्तिया भिष्यिनिशत्क भानाध्यकात छेभरम्भ निया विमासन्त. 'আমি বৈকুঠে গমন করিব।' অবলাইকে সংবাদ প্রেরণ कतिरनन, 'ट्यामात्र देवकूर्ण घारेट हरेरन, आहेन, आमता ष्ट्यत्न এक्ज रहेश देवकूर्छ गमन कति।' व्यवनांहे ভावित्ननु, প্রভু কোন তাঁর্থে গমন করিতেছেন, এই ভাবিয়া উুৰেগ প্রকাশ না করিয়া বলিয়া পাঠাইলেন, 'আমি একে গর্ভবতী, ভাহাতে সংসার ফেলিয়া কেমন করিয়া ধাইব।' তুকারাম এইক্রণে সকলের নিকট বিদায় গ্রহণ করিয়া নামঘোষণা করিতে করিতে বহির্গত হইলেন। তুকারাম সত্য সত্যই যে মহাপ্রস্থান করিলেন, তাহা কাহারও বিখাস হইল না। ১৫৭১ শকামে ফান্তনী ক্লফা বিতীয়া তিথিতে তুকারাম মহা-প্রস্থান করেনু, এই হইতে তুকারামকে আরে দেখা যায় নাই। ভুকারাম তিরোহিত হইয়াছেন, এই সংবাদ চারিদিকে ঘোষিত হইল। সকলই হাহাকার করিতে লাগিলৈন, তুকারামের দেহ পাওয়া যায় নাই বলিয়া তিনি অশরীরে অর্পে গিয়াছেন বলিয়া ভাহার চরিতলেথকগণ এইক্লপ নির্দেশ ক্রিয়াছেন।

তুকারাম তিরোভাব-কালে অবলাইকে বলিয়া গিয়াছিলেন, তোমার পর্চে এবার যে সন্তান হইবে, তাহার নাম
নারায়ণ রাখিও এবং এই সন্তান বিশেষ ভক্তিমান্ হইবে,
তুকারামের এই ভবিষাৎ বাণী সফল হইয়ছিলেন। নারায়ণ
সত্য সতাই বিশেষ হরিভক্তিপরায়ণ হইয়াছিলেন। কিছু দিন
পরে শিবাজী হরিভক্ত শিশুকে দেখিতে দেহুগ্রামে আসিয়াছিলেন এবং এই পরিবারের ভরণপোষণের অভ্য কএকথানি
গ্রাম কারণীর দিয়াছিলেন। অন্যাপি তাঁহার বংশীরগুণ এই
সকল আরণীর ভোগান্ধন করিতেছে।

ভূকারাম যে সকল অভত রচনা করিরাছিলেন, তাহা দকলই প্রায় এই ভাবে নিধিত—

°১। স্থা, ছ:খ, সম্পদ, বিপদ্ সকল অবস্থাতেই ভগ-যানুকে ভক্তি করিবে। . .

ং। ত্রাতা, পাতা ও শরণারপে তাহাতেই নির্ভন করিয়া থাকিনে।

- ৩। তিনি কেবল ভক্তিলভা। বাছাছ্ঠানে তাঁহাকে লাভ করা যার না।
- ৪। জীবের প্রতি অস্কম্পা, চরিত্রের নির্মাণতা, আত্মায়ত্তি, এই সকল ধর্মের লক্ষ্ণ। ভক্ষণেথনাদি ধর্মের নিক্ত অংশ মাত্র।
- ६। বিজ, শৃদ্ৰ, ন্ত্ৰী, পুৰুষ প্ৰাভৃতি সকলই ভগবানের কুপার অধিকারী।
- ৬। গুগবানের সহিক্ত জীবের সম্বন্ধ অতি নিকট এবং অতি মধুর। তিনি আমাদের দ্র নহেন। ঝাকুল ফদরে ডাকিলে তাঁহাকে পাওয়া যার।

ইহাই তৃকারামের প্রচারিত ধর্মের মূলমন্ত্র এবং ইহা , খারাই তিনি মহারাষ্ট্রদেশের আবালর্থবনিতা সকলকে মোহিত ক্রিয়াছিলেন।

হুকোজী হোলকর, ইন্দোরের একজন অধিপতি। মনহার রাওর পুত্র থণ্ডেরাও পিতার জীবদ্দাতেই (১৭৫৪ খুটান্দে) কুন্ডের দুর্নের অবরোধ-কালে নিহত হন। ভারতপ্রদিদ্ধ অহল্যাবাইএর সহিত এই থণ্ডেরাওর বিবাহ হয়। তাঁহার গর্ভে মলিরাও জন্মগ্রহণ করেন। মলহার রাও ইহলোক পরিত্যাগ করিলে মলিরাও সিংহাসনে অভিষিক্ত হইলেন। কিন্তু তাঁহার ভাগ্যে অধিক দিন আর রাজ্পণ্ড পরিচালন করিতে হয় নাই। অভিষেকের ১ মান পরেই ভিনি কাল-গাসে পতিত হইলেন।

এ সমর মন্ধার রাওর আর কোন উত্তর্ধিকারী
ছিল না। অহল্যাবাইএর এক কল্পা হইরাছিল বটে, কিন্ত
এক ভিন্ন গুলীর সামস্তের সহিত তাঁহার বিবাহ হর, এক্স
ছিল্প ধর্মালাক্রাম্পারে তিনি উত্তরাধিকার পাইলেন না।
অহল্যাবাই এ সমর ভ্রমাপনার হত্তে রাক্যালাসনদণ্ড প্রহণ
করিলেন। কিন্ত সৈক্রপরিচালনা করা জীক্যেকের পক্ষে
সম্পত ন্যু ভাবিয়া অলাতীর ভূকোনী হোলকরকে (১৭৬৭
খুটাক্ষে) বেনাপতিত্বে বরণ করিলেন। ইন্দোরের ইতিহাসে
তুকোনী হোলকরের অভিযেক এই সমর হইতে ধরা হয়।

মুণহার রাও হোলকরের সহিত তুকোনীর কোন নিকট সম্পর্ক ছিল না। তিনি মুলহার রাওএর স্বধীনে কর্ম করিতেন,

ভাহার বীর্ঘবন্তা, প্রভুক্তকি ও সাহসে পরিতৃত্ব হইকা মণছার ভাহাকে কতকগুলি সেনার নারকগদে নিবৃক্ত করেন। বৃদ্ধিনতী আহল্যাবাই তৃকোজীর দক্ষতা ও বিচক্ষণতার সন্তই হুইবা ভাহাকেই রাজ্যের দর্কপ্রথম করিরা লইলেন। অহল্যাবাইএর অন্থমতি অনুসারে তৃকোজী আগনার উচ্চপ্রদর্ম নিদর্শন অরুপ ধেলাত গাইবার অক্ত মহারাট্র-রাজধানী অভিমুধে অঞ্সর হুইলেন। পুণার তৃকোজী যথেষ্ট সন্মানআভিমুধে অঞ্সর হুইলেন। পুণার তৃকোজী যথেষ্ট সন্মানআভ করিলেন।

ভাহার সমন্ত্র গলাধর প্রধান মন্ত্রিক লাভ করেল। হোলকরি রাজ্যে ইহারও বেশ কমতা ছিল। অহল্যাবাই সেনাপতিত্ব ছাড়া শীঘ্রই তুকোলীকে 'হোলকর' অথবা রাজসন্ত্রমস্তক উপাধি প্রদান করিলেন। অহল্যাবাই এমন কৌলক্রমে এই গন্মান প্রদান করিরাছিলেন, বে কেহই তাঁহাতে
কোন অসন্তোহ প্রকাশ করিতে পারে নাই। তুকোলী
নির্মিবাদে ৩০ বর্ষ কাল এই উচ্চ সন্মান ভোগ করিয়াছিলেন,
এই স্থামি কাল অহল্যাবাই এর গুণে একদিনের জন্মও রাজ্যে
কোন বিশ্ব ঘটে নাই।

অহল্যাবাই যে উপকার করিরাছেন, ক্বতত্ত তুকোঞী এক দিনের জন্মও তাহা বিশ্বত হন নাই। তিনি অহল্যা-বাই অপেকা বর্ষে অনেক বড় হইলেও অহল্যাবাইকে মাতৃসংখাধন করিতেন। কিন্তু অহল্যাবাইএর অভিযাম মত তাঁহার মুদ্রার 'মলহার রাও হোলকরের পুত্র তুকোঞী' এইরূপ অন্ধিত থাকিত।

তুকোন্ধী 'হোলকর' উপাধি গ্রহণ করিবার পর সনৈতে প্রার ঘাদশ বর্ষকাল দাক্ষিণাত্যে অবস্থান করেন। এই সমরে সাতপুরগিরিমালার দক্ষিণাংশ তাঁহার শাসনাধীন, এবং উত্তরাংশ অহল্যাবাইএর শাসনাধীন ছিল। তিনি যথন ছিন্দুখানে ছিলেন, রাজপুরানা ও বুলেলথণ্ডের অন্তর্গত খোপার্জিত জনপদ হইতে নিজে কর আদার করিতেন। তিনি সর্বাদাই অন্তর্গত কার্যাক্রিতেন বটে, কিন্তু সর্বাদাই অহল্যাবাইএর নিক্ট কার্যাক্রিতেন বটে, কিন্তু সর্বাদার অহল্যাবাইএর নিক্ট কার্যাক্রিতেন।

বাস্তবিক বতদিন অহল্যাবাই বাঁচিয়াছিলেন, ততদিন রাজপদপাইয়াও তুকোজী কেবল প্রধান সেনাপতি ও ওাঁহার নিকটবর্তী খানের রাজস্ব-আদারকারী কর্মচারীর স্থায় কর্ম করিতেন। এমন কৃতজ্ঞ, এরপ উচ্চ প্রকৃতির লোক আর হোলকর রাজ্যে দেখা যার না।

তিনি বেমন প্রাক্তক আবার তেমনি মিক্সপ্রিয় হিলেন।

পাণিপথের বৃষ্ধের পর যুগদাধান রাজ্য ধ্বংস করিরা প্রতিশোধ णरेवात वक्र मरावाद्वेवीत्रगर्यत अक्ष्वात स्व रेष्ट्रा इत । ज्यन ভুকোলী হোলকর পুণার গিরা পেশবার নিকট অবছান ক্রিতেছিলেন। পেশবার আদেশে রামচক্রপণেশের সহিত छिनि वरनम्यदा ८ श्रीतिक स्टेरनन । अ ममन नामिन् छेम्रामीना अकबन धार्यान यूननमान नदीत हिरनन। धार्थाम महाताहुगंग (১৭৭০ খুটান্কে) জাঁহারই অধিকৃত নাুজিবাবাদ ছর্গ আক্রমণ করিলেন। নালিব্ বাঁর সহিত মণহাররাও হোলকরের মিত্রতা ছিল। তুকোনী সেই ক্ষে তাঁহার সহিত কথাবার্তা চাুলাইতে লাগিলেন। কিন্তু ভাহাতে মাধোনী সিদ্ধিরা অভিশয় চটিরী গিরা বলিলেন, 'আমরা প্রভিশোধ লইতে আসিরাছি, সন্ধি স্থাপন করিতে আদি নাই। আমার ভাতা ও বাতৃপ্রের শোণিতের কি প্রতিশোধ লওয়া হইবে না ? ভুকোজী মুসলমান ওমরাহের সহিত ভ্রতিভাব স্থাপন করিতে-ছেন। . পুণার পেশবাকে সংবাদ দেওয়া হউক। আমরা छांशात चारमनाशे माख; छांशात चारमन चसूनारतहे कार्या করিব।' কিন্তু তুকোঞী সিদ্ধিয়ার প্রস্তাব গ্রাহ্থ করিলেন না। বাঁহার সহিত তিনি একবার কথা দিয়াছেন. তাঁহার আবার বিরুদ্ধাচরণ করিতে কিছুতেই তিনি সম্মত হইলেন না। তিনি নাজিব্উদ্দৌলোর সহিত পূর্বা মিত্রতা রক্ষা করিবেন। তাহাতে মহারাষ্ট্রগণের অনেক স্থ্রিধা হইরা-ছিল। তাঁহারা জাট ও রাজপুত রাজ্যে অবলীলাক্রমে লুটপাট ও কর আদায় করিতে লাগিলেন।

নালিব্উদ্দোলা ত্কোজীর উদার প্রকৃতিতে অভিশর আইট ইইরাছিলেন। এমন কি, তিনি মৃত্যুর পূর্বে তাঁহার প্রিরপ্ত জবিতা বাঁকে ত্কোজীর হত্তে সমর্পণ করিয়া গিরাছিলেন। তিনি জানিতেন, তাঁহার মৃত্যুর পর মহারাষ্ট্র-দিগের করাল কবল হইতে ত্কোজী বাজীত কেইই তাঁহার পরিবারবর্গকে রক্ষা করিতে পারিবে না।

বাস্তবিক তাঁহার মৃত্যুর পর মহারাষ্ট্রগণ হিলুছানের অধিকাংশ গ্রাস করিরা ফেলিল। এই সময় সিদ্ধিরা হিলুছানে প্রক্রপ্রকার সর্ব্বের হইনা উঠিলেন। তুকোনী সহবোগীর উন্নতিতে সম্ভই ছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার অধীন সামস্তের ভার কার্য্য করিতে প্রস্তুত ছিলেন না। তিনি মালবে ফিরিয়া আসিলেন।

কিছুদিন পরে পেশবা মধুরাতর মৃত্যু ও রাঘব কর্তৃক পেশবার কনিষ্ঠ সহোদর নারারণ রাতর মৃত্যুতে মহারাট্র সামস্তগণ দাব্দিণাত্যে উপস্থিত হইবেন। হত্যাকারীর বিক্তমে এই সময় "বারভাই" ভাবে মহারাট্র স্পারগণ পঞ্জন ক্রিরাছিলেন, মাধোনী সিন্ধিয়া ও ভূকোনী এই দলে বোগ দিলাছিলেন। তাহাতেই বুটাশ গবর্মেণ্টের সহিত • ভূকোনীকে যুদ্ধ ক্রিতেঁ হয়।

নারারণ রাওরের মৃত্যুর পর মধুরাও নামে এক প্র জনে।
সর্দারগণ সেই মধুরাওকেই পেদবা পদে বরণ করেন; কিন্তু
প্রকৃত ক্ষমতা বালালী জনার্দনের হল্তে রহিল। (বিনি
ইতিহাসে নানা ফড়নবিশ নামে খাতে) রাববের বিফলে বে সৈন্দল গঠিত হর, তাহাতে এই জনার্দন যথেই কার্য্য করিরাছিলেন। ১৭৭৬ খুটাকে কর্লে আপট্রের মধ্যমতার উত্তরদলে এক সন্ধি হয়, কিন্তু সে সন্ধি রক্ষিত করে নাই।
অবশেবে সালবাই নামক স্থানে এক সন্ধি হয়, তাহাতেই
যুদ্ধ ক্ষান্ত হয়।

পুণা গবর্মেন্ট নিজামের সহবোগিতার টিপু স্বলভানের বিরুদ্ধে বে যুদ্ধ করেন (১৬৮৫ খুটান্দে), ভাহাতে তুকোঞ্জী প্রধান কর্ম্মের ভার নইয়াছিলেন। পরবংসর তিনি মহেখরে উপদ্বিত হইয়া অহল্যাবাইএর সঙ্গে সাক্ষাৎ করেন এবং ভাহাতেই সমস্ত গোলমাল মিটিয়া যায়।

প্রথম বাজীরাওয়ের ওরসে এক মুসলুমানরমণীর গতি আলী বাছাছর নামে এক পুত্র হয়। বুন্দেলথণ্ডের অধিকাংশ এই चानो वाहाहरतत ও সমস্ত ভারতবর্ষে মাধোলী সিধিদার অধিকার সাব্যন্ত করিবার জন্ম মহারাষ্ট্রগণ সচেট হন, এই বিষয়েও বোগ দিবার জন্ত তুকোজী আহুত হন, কিন্ত তুকোজী মাধোলী সিদ্ধিয়ার জয় কোন সাহায্য করিতে সম্মত হন নাই। , এই হত্তে যুদ্ধ হয়, কিন্তু তাহাতে তুকোলীও কোন উপকার পান নাই। अवरभर हिस्हात्नव त्राक्ष ए हानकत्र ও সিহ্নিরার সমান অংশ আছে বলিয়া খীকুত হয়। রণজী সিন্ধিরা,ও মলহার রাও হোলকরের মধ্যে দেনা পাওনা गरेवा एव हिनादवत शांग हिल, छाहा এर नमव मिठान हव। করেকটা জেলা দেনা পরিশোধের জন্ম তুকোজীকে দেওরা रत, किन्छ मार्थाकीत धावाना छारा हहेटछ जूरकाकी বিশেষ কোন লাভ পান নাই। মাধোনী "এই সমন পুণার দীরবাকে স্বীয় প্রভ্তা ভাপন করিতে উপস্থিত হইলে **कृ**टका**की** मक्षात्रशांगत महिङ विवास निश्च हहेबा शास्त्रन। निकित्रात्रै व्यक्तिथि मूक नाना नाथित्रौ निक्फ नक्टि जूटकाकीत সহিত যুদ্ধ করিতে গিয়া ১৭৯২ খৃষ্টাব্দে তাঁহীর ডি-বয়েন নামক করাসী সেলাপতির পদাতিক দল ক্রুত্ক পরাজিত হন। সিদ্ধিরার সৈত পলারন করিলে তুকোলীর সৈতগণ ইন্দোর পর্যন্ত ভাহার পশ্চাদাবমান হয়, কিন্তু মাল্বের मर्था निकित्रात रकान कि करत नारे। या बूरक निकित्रा

ও हालकरतत (कान चार्थ हिन ना, উভत्र मरनत मर्कारतत्र म्लाका क्षत्राम कतीहे উष्टक्ष्म ।

তুকোলী মালবে কয়েকমাস অবস্থান করেন। এই সমর্থ বিহুলিন হইতে সক্ষেত্রত নিজাম আলী বাঁর বিহুছে যুদ্ধ করিবার জন্ত পুণায় সদার্থণ একত্র হইতেছিলেন, তাঁহারা তুকোলীকে আহ্বান করিলেন। ১৭৯৫ খুটাকে এই যুদ্ধ ঘটে। এ সময় তুকোলীর বয়স ৭০ বংসর। মাধোলী সিন্ধিরার এই সময় মৃত্যু হইলে, ইনি সর্ব্বাপেকা প্রাচীন সদার বলিয়া, সসমানে কালখাপন করেন, কিন্তু দৌলতরাও সিদ্ধিয়ার ক্ষমতাই সর্ব্বাপেকা বেশী ছিল। নিজামকে পরাজিত করিবার জন্ত যুক্ত হুক, তাহাতে হোলকর প্রেক্ত গিকে সিদ্ধিয়াকে পরামর্শ দানে সাহায্য করেন, বিশেষ কার্য্য কিছুই করেন নাই। এই যুদ্ধ শেষ হইবার পুর্বেই টাহার মৃত্যু হয়। ইনি বীর পুরুষ, সমরকুশল ও ক্তত্ত ছিলেন। উন্নতির পথে অগ্রসর হইয়া মৃত্যু পর্যান্ত অহলা। বাইএর নিকট বেরূপ বাধ্য, বশীভ্ত ও ক্তত্ত ছিলেন, তত্ত্ব পত্মুবে তাহার প্রশংসা করিতে হয়।

ভূতিকেশ্বরী পাহাড়। ইহার শিখরে কনৈক বিজনী রাজকর্তৃক নির্মিত একটা প্রকাশ প্রাচীন মন্দির আছে, তন্মধ্যে ত্র্গাদেবী প্রতিষ্কিতা আছেন। মন্দিরটা অতি স্বদৃশ্য কারুকার্য্যবিশিষ্ট, গঠনপ্রণালীতে যথেষ্ট কৌশল আছে। এথানে নানা স্থানের সন্ন্যাসী ও বাত্রী আসে। পর্কতে কেবল সন্ন্যাসীর কাস। সন্ন্যাসীর মধ্যে একজন রাজা ও সন্ন্যাসিনীগণের মধ্যে একজন রালা উপাধি পাইরাধাকেন। ইহারাই এধানকার সামাজিক বিষয়ের সর্ক্ষম কর্ত্তা বলিরা মাননীর।

ভুক্ক (দেশজ) ১ বাণ্বিশেষ। ২ প্লোকের শেষ ভাগ।
ভুক্ক (ত্রি) ভূষ্ বাহলকাৎ ক্স। ভোষযুক্ত, সম্ভই। ভুক্
পক্ষাধিতাৎ ফক্। ভৌক্ষারণ, তৎসন্নিক্ত দেশাদি।
ভূথাভূ (দেশজ) চালাক, নিপুণ।
ভূথাব্ব (পুং) বিদ্ধাপক্ষিত্ব লাভি ভেদ।
"সে চালে বিদ্ধানিক্রাজ্বারাজ্বার্ত্র

"যে চান্তে বিদ্ধানিলয়ায়্লখারাস্তব্যাতথা।

অধর্মক্রয়তাত বিদ্ধি ভান্ বেণসন্থবান্॥" (হরিবংশ ৫ আঃ)

মহর্মিগণ মোহান্ধ ও মদগর্মিত বেণকে নিতাই করিয়া

মন্থন করিয়াছিলেন, সেই সময়ে এই জাভির উৎপত্তি হয়,

ইহারা বিদ্ধানিরিতে অবস্থান করে। 'এইজাতি অসভ্য ও

অধর্মিরতি, তুম্ব বা তুথার নামে প্রসিদ্ধা। (হরিবংশ ৫ আঃ)

তুরা (গ্রী) তুল বাছপকাৎ ঘ কিচে। বংশগোচন, ইহা কয়
কাশ, খাস ও কাসবিনাশক।

ভূগাক্ষীরী (জী) ভূগা সাএৰ ক্ষীরী। বংশলোচনা।
ভূগ্র (ক্লী) ভূল-রক্ ভঙ্গাদিখাৎ লক্ত গ:। বৈদিক কালের
একলন রালবি। ইনি ক্ষমিনীকুমারব্বের উপাসক ছিলেন। ।
ইহার প্রের নাম ভূজ্য। ইনি বীপাস্তর্বাসী শক্রদিগকে
শাসন করিবার কল্প আপনার প্রকে সম্ভণ্থে প্রেরণ
করিয়াছিলেন। ভূজ্য দেখ ী

ভূজ্য সমুদ্র পূথে অনেক দ্ব গমন ছবিলে বার্ বারা বিপদ্পতাত হইরা অধিনীকুমারের তাব করিরাছিল। অধিনী-কুমারেরর তাবে সভাই হইরা সেনার সহিত ভূজ্যকে নিজের নৌকার করিরা তাঁহার শিভার নিকটে তিন দিনে পৌছিয়া দিরাছিলেন। (ঝক্ ১০১৯৩)

তুগ্রা (রী) ১ জন। "পিব অধৈনবানামূত বস্তুগ্রো দ চ"
(ঝক্ ৮০৩২।২০) 'ব্দং তুগ্রমিত্যাদকনামন্থ পাঠাং' (দারণ)
তুগ্রন্থ রাজবেরপ্তাং বা বং। ২ তুগ্রপ্তা ভুজা। "অতং
বরোন তুগ্রাং" (ঝক্ ৮০৩২০) 'তুগ্রাং তুগ্রপ্তাং' (দারণ)
তুগ্রা (নী) তুগ্রা-টাপ্। জন। (নিঘণ্টু) "আবং শমং ব্ৰভং
তুগ্রাম্থ" (ঝক্ ১০৩০২৫) 'তুগ্রাম্থ জলেম্' (দারণ)

তুগ্যাবৃধ্ '(জি) তুগ্রা বৃধ্ কিপ্। উদক বর্দ্ধরিতা, জলের বৃদ্ধিকর্তা। "বর্তব উক্থেব্ তুগ্রাবৃধং" (ঋক্ ৮।৪৫।২৯)
'তুগ্রাবৃধং উদকত বর্দ্ধিতারং'(সামণ)

ভূথন্ (ত্রি) ভূজ কনিপ্ শুরু । দিছাং জন্ত গছং। হিংসক।
"স্বাদ্ধা অধি তুর্থনি" (ঋক্ ৮০১৯০৭)
ভূতান্ খাঁ, দিলীর সমাট আল্তমানের একজন জীতদাস,

ইংার পূর্ণ নাম মালিক আইজুকীন্ত্ডিল্তুখান্ধী। ইনি
ুফুলর রূপীবান্পুক্ষ ছিলেন। ইংগর ৩৪৭৪ যথেই ছিল,
দরা, দাক্ষিণা, মহিমা, ভদ্রতা, উচ্চাশর ও লোকপ্রিয়তার
সকলেই ইহার সুধ্যাতি করিত।

স্থাতান আল্তমাস ইহাকে ক্রের করিরা সর্ব্য প্রথমে সাকি-ই-থাস্ (নিজ পানপাতা-বাহক) পদে এবং তৎপরে সর্মওয়াত দার (প্রধান লেখ্যাধাররক্ষক) পদে নিযুক্ত করেন, পরে ক্রমশ: বাদ্শাহী পাকশালের অধ্যক্ষ ও অখ্যালাধ্যক নিযুক্ত হন। তৎপরে ৬০০ হিজিরার বলাউন্প্রদেশির শাসনকৃতা হইলেন। তুখানু ধা এই খানে

^{&#}x27;করেরমাখ্যারিকা:। জুঝো নামাবিনো: থিয়: ককিজালবি:। স চ বীপারখবর্তিভি: লক্তভিয়তার যুপক্ষত: সন্তেবাং কায়র বপুরং পুরুৎ সেনরা সহ নাবা আহৈবীৎ সা চ বৌর্মধ্যে সমুক্তনতিমূরং গভা বাসুবংশন ভিয়াসীৎ। ভথাবীং স ভুকুঃ শীর্ষব্বিসৌ তুইবে।' (সার্ব)

ক্ষাতি লাভ করিলে পর তাঁহাকে বিহারের শাসন ভার বেণ ওয়া হইল। ৬০১ হিজিয়ায় লক্ষণাবতীয় শাসনকর্ত্তা মালিক ব্যন্তাতের মৃত্যু হইলে ত্থান্থাই শাসনকর্ত্তা হন। হল-ভান আলতমালের মৃত্যু হইলে ত্থান্থাই শাসনকর্তা হন। হল-ভান আলতমালের মৃত্যু হইলে ত্থান্থা ও আইবক নামক লখনোর (রাচ) প্রদেশের শাসনকর্তার মধ্যে বিবাদ বাঁধে। মিনহাল্ লিথিয়াছেন, এই সমরে লক্ষণাবতী হইভাগে বিভক্ত ছিল—একভাগ লখনোর বা রাচ্ন ও অপরক্ষাণ বসনকোট আ বরেক্ত। ত্থান থা বরেক্তভূমে এবং আইবক রাচ্ছে আসনকর্তা ছিলেন। লক্ষণাবতী নগরের অন্তর্গত বসুনকোট সহরের অধিকার লইয়া উভরে বিবাদ বাঁধে। আইবক লাহসী পুরুষ ছিলেন, তাঁহাকে আওর থাঁ বলিভ। মুছে ত্থান্ থা আওর থার মর্মায়ানে শরামাত করিয়া বিনাশ করেন। আইবকের মৃত্যুতে উভর্ব প্রদেশ ভূবানের অধীন হয়।

স্পতানা রজিয়ার রাজগাঁকালে তুখান্ থাঁ দিল্লীর দর্বারে অনেক উপযুক্ত লোক ও উপহার প্রেরণ করেন। স্বল্ডানও চক্রাতপ, রাজগাঙ্ধ, পাঞা, নহবত ইও্যাদি প্রদান করিয়া ভ্যান্কে সম্মানিত করেন। তৎপরে ভূযান্ ভ্রিছত আক্রমণ করেন এবং বহু ধনরত্ব লুঠন করিয়া আনেন।

স্বতান মুইজ-উদ্দীন্ বহরাম শাহের রাজ্যকালেও
ত্থান্ খাঁ সমাটের সহিত সন্তাব রাধিয়া চলিয়াছিলেন।
স্বাতান আলাউদ্দান্ মসায়ুদ শাহের রাজ্যের প্রথমে ত্থানের হিতৈবী বিখাসী মন্ত্রী বহাউদ্দীন্ হিলাল স্থারিরানী
(সিরীয়াদেশীয়) আবোধ্যা, করা মাণিকপুর ও উণ্যদেশ
অধিকার করিবার জন্ত পরামর্শ দেন। ৬৪০ হিজিরার ত্থান
থাঁ করা মাণিকপুরে উপস্থিত হন। ওৎপরে আযোধ্যার
সীমার কিছুদিন বাস করিয়া লক্ষ্ণাবতীতে চলিয়া আসেন।
*

৩৪১ হিজিরার জাজুনগরের (উৎকপের) রাজা লক্ষণাবতী রাজ্যে উৎপাত আরম্ভ করেন। তুঘান থাঁ জাজনগরদৈঞ্জের উৎপাতনিবারণার্থ তাহাদিগকে তাড়াইরা, কতাদিনের নিকট হুইটা থাল পার ক্রিরা দেন। তাহারা এক বেতবনে লুকাইরা থাকে। শেষে বখন মুললমানেরা পানাহারের জন্ত শিবিরে ফিরিরা আমেন, তখন হিন্দ্দৈশ্ত পশ্চাও হুইতে আক্রমণ করিরা অধিকাংশ মুললমানকে বিনাশ করে। তুঘান থাঁ বিফল হুইরা রাজধানীতে ফিরিরা আসেন। রাজধানীতে আসিরা শীয় মন্ত্রীকে বিল্লীতে পাঁঠাইরা ধেন। "সর্ক্-উন্-র্ন্ক্ নিল্লীনরবারে উপন্থিত
হইরা লমক জানাইরা সমাট্ "জানাউনীন্ মমারুদ্ধাহের
নিকট সাহাব্য প্রার্থনা করেন। সমাট্ কাজী জনাল-উদ্দীন্
কনানীকে ধেলাং, চন্ত্রাতপ্য, প্রাঞ্জ ও রাজচিক্ দিয়া প্রেরণ
করেন এবং কমর উদ্দীনের, অধীনে হিন্দুখানের সৈঞ্জদল
(অন্তর্বেদ দোরাবের, এবং গলানদীর পূর্বাহ খানের সৈঞ্জদল)
'প্রেরণ করিলেন। আরপ্ত অবোধ্যার শাসনকর্তা তমর ধা-ই
কিরানকে সলৈত্তে সম্মাণবিতীর সাহাব্যার্থ আদেশ দিজেন।

৬৪২ হিজিরার আজনগুরাধিশতি কভাসিনের যুদ্ধের व्यक्तिमार्थ निवात बस्न मन्त्रवावकी बाक्रमन-केर्युक्त-वहुमःश्वाक অখারোহী ও পদাতি সৈক্ত লইয়া উপস্থিত হইলেন। রাঢ়ে धरे नमरत्र क्यान्तत्र अधीत • कथन्न-छन्-मून्क् कतिम-छन्नोन् লাবনী শাসনকর্তা ছিলেন। আজনগরের সেনাপতি প্রথমেই রাঢ় আক্রমণ করেন। যুর্বে করিম্ উদ্দীনের বহু দৈগ্র বিনষ্ট হর। শেষে করিম সদলে লক্ষণাবভীতে পলায়ন করেন। [চাটেখর শব্দ দেও।] আজনগর সেনাপতি তাহাদের পশ্চাদ্ধাৰমান হইলেন, কিন্তু দিল্লী হইতে সৈতা আসিতেছে শুনিরা তিনি শিবিরভক্ষ করিতে বাধ্য হইলেন। দিলীর প্রেরিত নৈদ্ভদল উপস্থিত হইয়া দেখিল, 'বিপক্ষ নাই, যুদ্ধ নাই', কাজেই ভমর খাঁর সহিত তুঘান খাঁর বিবাদ বাঁধিল। কিন্তু করেক ঘণ্টা বুদ্ধের পর এক ব্যক্তির মধাশ্বভাগ্ন যুদ্ধ বন্ধ হইল। নগর বারেই ভূখান থার শিবির ছিল, তিনি স**সৈ**ছে শিবিরে গিরা অস্তানি ত্যাগ করিয়া বিশ্রামের উত্যোগ করি-লেন, কিন্তু ভমর পাঁর শিবির কিছু দূরে থাকায় ভিনি অক্তাদি ভাগের ছলে শিবিরে গিয়া অবশিষ্ট সৈম্ভগণকে প্রস্তুত করিয়া হঠাৎ আসিয়া তুঘান্কে আক্রমণ করিলেন। क्षान, व्यथात्त्राहरण नगरत । व्यवम क्तित्रा व्याग वाँ।हरणन । जूषान थात्र व्यक्टदार्ध मिन्हाक-छेकीन् नित्राको উভয়ের মধ্যে সন্ধির প্রস্তাব করেন। তমর থা প্রস্তাব করিলেন্যে, ভূঘান খাঁ যদি তাঁহাকে লক্ষণাবতীরাকা ছাড়িয়া দিয়া দিলী চলিয়া যান, ভাহা হইলে সন্ধি হইতে পারে। ভূতান থাঁ এই আশুৰ্য্য প্রস্তাহের বুঝিলেন, ইহা তমরু খাঁর প্রস্তাব নহে, দিলীর मञाहिरे डाँशारक এरेक्रम कतिए छेनाम मित्राह्मन, नजूरा এরপ অসমত প্রভাব ভমর খাঁ করিতে সীহস পাইভেন না ৫ याहा इंडेक, फूचान थें। ताक्षणकियान खादीहे कतिया चीय धन রত্ন, হাতী ঘোড়া ও অনুচরবর্গ লইয়া ৬০ট হিজিরার দিলী প্রাহান করিলেন। লক্ষ্ণাব্জী তমর খার অধীন হইল। তুবান বাঁ দিলীতে পিয়া মহাসন্ধান প্ৰাপ্ত হইলেন ও তাঁহার রাজভক্তি এবং ক্তিপুরণের ক্ষপ তাহাকে ত্মর খার

^{*} এই সময়ে তবকত-ই-দশিরির গ্রন্থার মিনহাজ-উজীন্ সিরাজী সপরিবাতে তুমান্থার মঙ্গে হিলেব এবং তুমান্থার সবিভই লক্ষণায়তী সমন করেব।

পরিত্যক্ত অবোধ্যার শাসনকর্তৃ দেওবা হইল। আহার পর করেক মাস-পরে সত্রটি নাসিকলীন মহক্ষদ শাহ সিংহা-সনে অধিরোহণ করিলে তৃথান্ থা অবোধ্যার গমন করিয়া তথাকার শাসনভার গ্রহণ করেন। এখানে তিনি বেশ হুখ শাস্তি পাইরাছিলেন, কিন্তু, ক্ষেক মাস্ত্রপরেই তাঁহার মৃত্যু হয়। আশ্চর্যোর বিষয় এই যে, যে রাজিতে অবোধ্যার তুগান্ থার মৃত্যু হয়, ঠিক সেই রাজিতে বালালায় তমর খাঁর ও জীরনলীবা শেষ হয়।

তুম্রিল খাঁ, ইনি দিয়ীর , স্বল্ডান আমাতমাসের একজন জীতদাস। ইহার পূর্ণ নাম মালিক ইথ্ডিয়ার-উদ্দীন্-উল্বক্-ই-তুম্রিল খাঁ। তাঁহার সময়ে ইনি বাদশাহী পাকশালার সহকারী, অধ্যক্ষ (নায়েব-চাশনিগীর) ছিলেন। স্বল্ডান ক্কন্-উদীন্-ডিরোজ শাহের সময়ে দ্রবারের মুখপাত্র পদ (আমার-ই-মজলিস্) পাইরাছিলেন। তুৎপরে তিনি হতীলার অধ্যক্ষ হন।

স্মাটের জীতদাসেরা যথক বিজোহী হয়, তথন ভূষ্রিক থাঁও বিজোহে বোগ দিয়াছিলেন, কিন্ত স্থতান বজিয়ার রাসভ্কানে ভূষ্রিল থা অখশালাঞ্চক পদ প্রাপ্ত হন। বহ্-রাম শাহের রাজ্ঞ ৬০৯ হিজিরায় তুর্কী মালিক ও আমীরগণ यथन निही चाक्य कटतन, उथन मानिक जूच्तिन थे। ও মালিক করাকস্থা বিপক্ষালে থাকিয়াও শেষে সমাটের দলে মিশিরা বিপক্ষদিগের সহিত যুদ্ধ করেন, কিন্তু গুপ্ত শত্রু त्वाद्ध् काबागारत्र निकिश्व इन । त्याद्य मिल्ली खेकात रहेरन তাঁহার মুক্তি হয়। আলাউদীনের রাজস্কালে ইনি তবর-হিন্দ ও লোহরের শাসনভার প্রাপ্ত হ্ন, তৎপরে কনোন্দের শাসনকর্তা ইইলেন। এই স্থানের ভার পাইয়া ডিনি বিজোহী হন, কিন্তু মালিক কুতুব-উদীন্ হোদেন কর্ত্ক পরাজিত হইয়া দিল্লীতে নীত হন। তৎপরে কিছুদিন পরে অবোধ্যার এবং তাহারও কিছুদিন পরে লক্ষণাবতীর শাসনভার প্রাপ্ত हरेलाम । हेशत प्रहित कांसनगत्रशित (उरक्नतात्स्त्र) यूक খটে। ভালনগ্রপতির মন্ত্রী সেনাপতি হইরা আসিয়ছিলেন, কিন্তু তুষ্রিল ছুইটা যুদ্ধে পরাজিত হইয়া পলায়ন,করেল। তৃতীয় যুদ্ধে মালিক তুৰ্বিল খা দিলীতে দৈল দাহায়্য প্ৰাৰ্থনা করেন, পরে লক্ষণাবতী হইতে এক বৃহৎ সৈম্ভদন লইয়া काकनगरतत , व्यक्षिणित व्यक्षिकातकुक व्यक्ति एन श्रीए আক্রমণ করেই,

এখানকার রাজা পরিবারবর্গকে ত্যাগ করিয়া পলাইরা যান। ধুন রত্ন হত্তী অধ সমতই তুত্রিলের হতগত হর।

তুৰ্বিলু বালধানীতে ফ্রিবা আসিয়া বজ, খেড ও

ক্ষাবৰ্ণ চক্লাতণ বাবহার করিতে আরম্ভ করেন ও অবোধা।
আক্রমণে বাজা করেন। অবোধ্যানগরে প্রবেশ করিবা দর্মজ
উহোর নাম্ভে পুত্রবা + পাঠের আদেশ দেন এবং আগনাকে ক্ষাবান মুদ্দিন্টকীন্ নামে প্রচার করেন। একপক্ষ পরে
হঠাৎ একলন সমাটের অধীন আমীর আদিয় সংবাদ দেন বে
সমাট্টিসেন্ত নিকটেই আদিয়া গৈছিয়ছে। ভূত্রিল ভনিরাই
নৌকারোহণে এক্বারে গক্ষণাবতীতে প্রস্থান করিলেন।

এই विद्यार्क्तात् भूमनमान ७ दिन् गांधात्रत् जीहात উপর বিশ্বক্ত হইরাছিও। বাহা হউক তিনি লক্ষণাৰতীতে ' ফিরিয়া আলিয়া বাহনতী নদী পার বইয়া কামরূপ আক্রমণ করেন। কামরূপাধিণতি পরাক্ষিত হন। ভূত্রিল কামরূপ-নগর ও ধন রত্ন অধিকার করেন। কামরূপাধিপতি কর विश्वा बाका शार्रेतीक व्याणात विश्वामी लाक ध्यावन करवन, কিন্ত ভূষ্রিল তাহাতে সম্মত হইলেন না। তথন কামরূপ-পতि बिल देन । अवावर्गादके वर्ष किया विनया किरणन (य বছ মূল্য লাপে ছাছাই দিয়া কামরপের সমস্ত শভ ক্রয় कत्रिया आन । छाहाहे हदेन । पूच्तिन व्यत्मत्र छेर्व्यत्रजाय विश्वान कृतिया जानस्वरं नदा नमन्त्र मन्त्र काछिया निर्मान । তৎপরে মাঠের শক্ত কাটিবাধ সময় কামরূপপতি চতুর্দিকের জনপথ উদ্বক কঁরিয়া দিলেন, তৈরারী শত ভাসিয়া গেল। মুসন্মানেরা অনাহারে মরিবার ভবে শক্ষণাবতীতে পলাইতে মনস্থ করিল। দেশ জলে ভাসিতেছে, পথ পাওয়া দার, कारको भेथक्षानिका माहार्या मकरन भारते जाभरव भनायन করিতে বাধ্য হইল। শেষে এক স্থীর্ণ পথে উপস্থিত হইলে क्ठा १ हिन्दू रा कालमा कतिन। धहे बूद्ध नताचा छ पूर्व तिन हरो शृष्ठ इहेट 'शिष्ट्रश वान ७ हिन्नूतन इट्ड वन्नो हन। সুধাৰুর দৈল্পনাও কতক মরিল, কতক ৰন্দী হইল। তুদ্-तिरागत मखानाति अ भन्नोवर्ग व वसी इटराम ।

তুষ্রিল কামরূপপতির সন্মুখে নীত হইলে, তিনি বীয় সন্তানকে দেখিতে চাহেন। পুত্রকে উপস্থিত করিলে তিনি তাহাকে ক্রোড়ে লইয়া মুখচুখন করিতে করিতে প্রাণত্যাগ করিলেন।

ভূক (প্ং) ভূক হিংসারাং বঞ্জজ্বাদিছাৎ কুছং। ১ প্রাগ-বৃক্ষ। ২ পর্বত। ৩ বুধগ্রহ। ৪ নারিকেল। ৫ গঙ্ক।

ভোরাণের কোন বিখেক অংশ সক্ষমবিধানার্থ পাঠ করা হয়। ইহা
আয়াদের ক্রমীপাঠের ভায়। ভোন বাঞ্জিবিশেবের নামে পুরবা পাঠ
অর্থে আয়াদের "বীবিজু নীতিকার" বরুদের ভায় ভগবানের নাম স্বলে
নেই বাজির নামোরেথ করা হয়।

(बि) ७ फेक, फेब्रक । १ ब्रह्मित्मात्वत्र त्रामित्कम, अर-লিগের উচ্চরাশি। জ্যোতিবে ইহার বিষয় এইরপ শিশিত ण्वारह—वक्नाहारवात्रं मरख स्ववादि-मध वानि, ऋवािन मध-अरहक वनमावि जारन वशकास डेक ७ नवरमाकः। स्वव वानित प्रभारम तरित फेक ও वर्गारामत त्मरारमके भन्नस्थाक। বুব রাশির ভিন অংশ চল্লের উঁচ্চ ও তৃতীরাংশের শেষ অংশ পর্যোচ্চ। মকর রাশির অটাবিংশতি স্থাপ মঙ্গলের উচ্চ, क्षष्ठीविश्निकित शूर्वगारमधे श्रवस्थाकः। कञ्चातानित्र भक्षमनाश्म वृद्धत छेक, नकमनारम्ब भूतनारमहे नत्रद्याक । कर्कण्यानित शकारम উচ্চ ও शकारत्मत (भव **जरम्रहे** भवत्माकः। मीन वास्त्रित সপ্রবিংশতি অংশ শুক্রের উচ্চ ও সপ্রবিংশতিশেষাংশই পরমোচে। তুলা রাশির বিংশাংশ শনির উচ্তু ও বিংশভির (भव व्यः भारे भवरमाळ। এই स्वामि मध द्राभित मध्य ভবনে রবি প্রভৃতি সপ্ত গ্রহের দশমাদি আংশকে ম্থাক্রমে नौठ ও দশাংশের শেষাংশই छनौठ। এইরূপ চন্ত্র, মঙ্গণ, ব্ধ, বৃহস্পতি, শুক্র ও শনি, ইহাদের বৃশ্চিক, কর্কট, মীন, মকর, কক্সা ও মেষরাশিতে পূর্কোকে উচ্চাংশ অনুসারে নীচ.ও পরমনীচ বিবেচনা করিতে হইবে। এই সকল অংশ বিভাগ গ্রহ সকলের জিংশাংশ ক্ষুট গণনার জানিতে হইবে।

মেবরাশি রবির উচ্চ গৃহ, ব্যরাশি চল্লের, মন্দর মললের, কভা বুধের, কর্কট বৃহস্পতির, মীন গুজের ও তুলা শনির উচ্চ গৃই জানিবে। এই সকল উচ্চ গৃই স্থিত ইইতে যদি পূর্বোক্ত উচ্চাংশে থাকেন, ভাহা ইইলে এইগণ সম্পূর্ণ বলী লানিতে ইইবে। এই এইগণের উচ্চ ছানের নাম তুল এবং পরমোচ্চ ছানের নাম স্থাক্ত । এইগণ নীচ গৃহে নীচাংশে থাকিলে বলহীন জানিতে ইইবে। জন্মকালীন সিংহ, ব্য, কভা ও কর্কট রালিতে রাহ্গ্রহ থাকিলে তুল হয়। রাহতুল ইইলে নানাধন রক্তৃষিত রাজ্যহ থাকিলে ও চিরায়ুং হয়।

"মুগপতির্বক্ষাকর্কট্ছে চ রাছে।
ভবতি বিপুলনন্ধী রাজরাজাধিপো বা।
হরগজনরনৌক্মেন্ডিতঃ সার্বভৌমঃ
নুপতিরুমরপুজ্যো রাহ্তুলী চিরায়ুঃ ॥" (কোটাগ্র•)

ম্ল অবেশণকেও তুল কহে। সিংহ্রালি রবির
ম্ল অবেশণ গৃহ, ব্যরালি চল্লের ম্ল অবেশণ, মেষ মললের,
কলা ব্ধের, ধল্ল বৃহস্পতির, তুলা ভূজের ও কুন্ত শনির
ম্লঅবেশণ গৃহ জানিবে। অবেশাণাংশ রবি প্রভৃতি সপ্তগ্রহের
সিংহাদি সপ্তরাশির বিংশাদি অংশু বথাক্রমে মূলঅবেশাংশ
বিদিয়া খ্যাত হয়। বথা—রবির সিংহ রাশির বিংশতি অংশ,
ক্রম্পনের মের রাশির বাদশাংশ, বৃহস্পতির ধল্লাশির দশাংশ,

ভক্তের তুলারালির পঞ্চলশংশ ও শনির কুন্তরালির বিংশতি অংশ মৃণজিকোণাংশ, ইহার মধ্যে বৃধ ও চল্লের বিশেষ এই বে বৃধের হাজাংশের পর দ্বাংশ ও চল্লের হাজাংশের পর নপ্তবিংশতি অংশ মৃণজিকোণ "অর্থাং বৃধের পঞ্চনাংশ হাজ, অভএব স্কারালির পঞ্চনাংশের পর দ্বাংশতি অংশ মৃণজিকোণ এবং চল্লের ভৃতীরাংশ হাজের পর স্থাবিংশতি অংশ মৃণজিকোণ হইরা থাকে: মিথুনরালি রাহর উচ্চগৃহ, কুন্তরালি মৃণজিকোণ, কলা রালি অগৃহ, শুক্ত ও শনি মিল্লা, হাজা চল্লা মঞ্জল রাণি অগৃহ, শুক্ত ও শনি মিল্লা, হাজা চল্লা মঞ্জল ইহারা শক্ত, আন বিপ্নের বিংশ্বতি অংশ উচ্চাংশ আনিতে হইবে। সিংহরালি কেডুর মৃণজিকেরণ গৃহ, ধন্ন উচ্চাংশ আনিতে হইবে। সিংহরালি কেডুর মৃণজিকেরণ গৃহ, ধন্ন উচ্চাংশ আনিতে হববে বৃধ ইহারা শক্তর নহে এবং মিত্রেও নহে; আর ধন্ন মালির বঠ অংশ কেডুর উচ্চাংশ আনিবে।

মেৰে সবি, ব্বে চজু, কভাতে বুধ, কুলীরে গুরু, মীনে গুরু, মকরে মঙ্গল এবং তুলাতে শনি গুলিলে তুল হয়।

"আদিত্যমেহে বৃষ্ঠি শশাকে
কলাগতে জে চ প্রের) কুলীরে।

মীনে চ প্রকে মঁকরে মহীজে
শনৌ জুলায়াঘিতি তুলগেহাঃ॥" (সময়ামৃত্ত).

তৃত্বকল। রবি স্বীর উচ্চ গৃহে থাকিলে মহুব্য পণ্ডিত, ধার্ম্মিক, ধীরস্বভাবসম্পর, স্বরোগী, স্মনেকের প্রতিপালক, দাতা, বহু স্থুপড়োগকারী এবং মণ্ডলেশ্ব নুপতি হয়।

শ্ব সমরে বুধ খীয় উচ্চ স্থানে থাকিলে মানব কন্তা, পুত্র ও উত্তম রদ্ধসম্পন্ন, নুগতি কর্তৃক মাননীয়, রাজ্যের একদেশে অধিপত্তি, শাস্ত্রালাপে আমোদ যুক্ত এবং সর্বাদা সৌভাগ্যবিশিষ্ট হয়।

জন্ম দ্বদরে বৃহস্পতি স্বীয় উচ্চ রানিতে থাকিলে মনুষ্য উত্তম মন্ত্রিস্পার, অভিশর বলবান্, মাননীর, কোধী, অভি-শর ধনবান্, হত্তী, ক্ষর্ব, যান ও উত্তম স্বীর পতি এবং বহ লোকের প্রতিপালক হয়।

ৰুৱা সমরে গুক্র শীর উচ্চ রাশিতে থাকিলে মুর্য্ম বিষ্টার-ভোঁনী, সকল গুণযুক্ত, রাজমন্ত্রী, দ্বীর্ঘায়ু, দাতা, দেবত্রাহ্মণ-ভক্ত এবং উক্তম ভোগী হয়।

জন্ম সময়ে শনি স্বীর উচ্চ গৃহে থাকিলে মহুত্ব স্ত্রীবিদাস-কর, উত্তম কীর্তিশালী, অভিশব ধনবান, দীবঁজীবী, রাজ্যের এক দেশের অধিপতি, পণ্ডিত, দাতা এবং জ্যেকা হয়।

"একজুলে ভবেডোগী বিজুলে চ ধনেশবঃ।

অিজুলে চ ভবেডালা চডুর্থে চক্রবর্তীন:॥"

ক্সাকালীন একটা প্রহ-ডুল হইলে রালা হর, ছইটা

গ্ৰহ কুলে ধনেখন, তিন্টা গ্ৰহ তুলে নালা, চারিটা গ্ৰহ তুলু ছইলে রাজচক্রবর্তী হয়।

যদি শক্তা, নিধন ও ব্যৱস্থিত গ্রহণণ তুক হন, ভাহা হইংলে কথিত ফল সক্ষা বার্থ হর, আর কেন্দ্র বা তিকোণে হইলে যথোক্ত ফল হইরা থাকে। লগ্নের সপ্তম, চতুর্থ ও দশম স্থান কেন্দ্র। (কোটাপ্রদীপ) (ক্লী) ৮ কিঞ্জন। ৯ উপ্রা ১০ প্রধান। ১১ উরত।

্তৃত্বত্বিতরা নাজৌ নেদং সিকাবগাধতা।" (মাঘ) ১२० भित्र । ১० कविद्रश्य । हैनि छन् अकार्य नायावनरक छुटे कि तिशा तिश नाम हेक्स मृत्र । এक शूख नाङ करतन । व তৃত্বক (পুং) ভূত্র বার্থে ক, সংজ্ঞানাং কন্ বা । > পুনাগ বুক্ষ। (ক্লীণ) ২ ভূক শকার্থ'। ৩ অরণারূপ তীর্ধভেদ, পূর্বে क्षिरु खित्र मात्रच्छ मूनि এই अत्रात्म वांत्र कतिया मूनि-निगटक दिनाधालिना कर्ताहै उन । त्रहेशात लात दिन मकन নটু হইলে অলিরাতনয় "ওঁ" এই শব্দ বথাবিধি উচ্চারণ করিয়াছিলেন। এই শন্দ উচ্চারিত হইলেই • প্রাভাত (दान मकन उँभिञ्चि इहेन। उथन अधि ও प्रिनग्न. • বরুণ, অধি, প্রজাপতি, হরি, নারায়ণ, ভগবান্ পিতামছ . প্রীভৃতি সকলে মহাগাতি ভৃগুকে ধলনার্থ নিযুক্ত করিয়া-ছিলেন। তিনি যথাবিধি ঋষিদিপের অধীন ক্রিয়া করিতে লাগিলেন। আজ্যদারা অগ্নিকে সম্ভট করিলেন। পরে দেবতা ও ক্ষরিগণ স্ব স্ব স্থানে প্রস্থান করিলেন। এই ক্ষরণ্য ভূপকতীৰ্থ নামে প্ৰসিদ্ধ হইল। পুৰুষ বা ভৌ এই তীৰ্থে • আসিলে সকল পাপ বিনষ্ট হয় এবং এইথানে এক মাস বাস করিলে ব্রহ্মলোক লাভ ও সকল কুল উদ্ধার হয়।

(ভারত বনপর্ক ৮৫।৪৬—৫৪,)

তুক্ষকুট (পুং) তুদ্ধং কৃটমন্ত । উচ্চশৃদ্ধ পৰ্যতিচেল ।
তুক্ষতা (জী) তুক্ষ ভাবঃ তুক্ষতল্। উচ্চতা, উগ্ৰতা।
তুক্ষপ্ত (ক্ষী) তুক্ষ ভাবঃ ভাবে দ। উচ্চতা, উগ্ৰতা।
তুক্ষপ্ত নু (পুং) তুক্ষং উন্নতং ধহুৰ্যতা বছবীহো ধহুৰ্যনালেশঃ।
উচ্চদ্ধঃ ।

তুঙ্গনাভ (পং) তুজোনাভির্যন্ত বছরী। কীটভেদ। [তুলীনাস দেখ।]

তৃত্বপ্রস্থ (পুঁং) রামগড়ের নিকটণ্ড একটা পর্বত। তৃত্বপ্রকা পুঁং) [তৃত্ব দেখ।] তৃত্বস্ত কৌ) তৃত্বং তং কর্মধা। স্থ্যাদির উচ্চরাশি মেব প্রভৃতি। [তৃত্ব দেখ।]

তুঙ্গ ভঁদ্ৰে (পং) তুঙ্গোহপি ভদ্ৰং। মধমন্ত হন্তী। তঙ্গভদ্ৰা (ত্ৰী) তুণা এধানা ভদ্ৰা নিৰ্মানা চ। নৰীবিশেষ। "ত্ৰভন্তা সুপ্ৰয়োগা বাহা৷ ভাবেরী টেব হি। দক্ষিণাপথনভন্তা: সহাপাদাধিনিঃস্তা॥" (মংভপুং ১১এ২৯)

দাক্ষিণাত্যের একটা বড় নদী। তুল এবং ভরা নার্মে छ्टें हैं। नतीत नः त्यारण देश छे ९ शह । महिन्द्र ततः पिनन-পশ্চিম সীমার সহাপর্বভের গলাম্ল নামক শিধর ইইতে ঐ ছটা নদীই উৎপর হইয়া দক্ষিণ কাণাড়ার মধ্য দিরা প্রবাহিত। মৃদ্ধিস্থরের মধ্যে ১৪° উত্তর অকাংশে ও ৭৫° ৪০ পূর্বক্রাবিষার শিষোগাজেলার কুদলি নামক ত্রাহ্মণ-ঞানে ইছাদের সন্মিলন হইরাছে। তুক্তভার প্রশন্ততা প্রার অর্দ্ধ মাইল, তবে গভীরতাও বেশী। পশ্চিমস্থ বনের বড় বড় कार्क नगी निम्ना ভाসाইया गहेबा याख्या रुव । ७०० वर्श्यव পূর্বে বিজয়নগরের রাজারা এই নদীতে ৭টা আনিকট নির্মাণ করান। মহিন্দর ও ধারবার জেলা হইতে বর্দ্ধা ও কুমছতী पूरेंगे ও मिन्निनित्क दिनाती किना श्रेटि श्राती धरः কর্ল হইতে হিন্দরী নদী আসিয়া মিলিয়াছে। তুক্তরা ৮ ক্রোল বহিয়া আসিরা ক্লঞা নদীতে মিলিয়াছে। তুক্ভভার মোট দীর্ঘতা ২০০ ক্রোশ। বাঁশের বা বেতের ভোলায় এই ন্দীতে যাতারাত চলে। ইহার তীরে মহিস্থরের মধ্যে হরি-হর, বেলারীর মধ্যে কঁম্পিলি এবং কণ্ল নগর অবস্থিত। হরিহর নগরে একটী ইপ্তকপ্রস্তারে নির্শ্বিত দেতু আছে। ननीटि क्छीत यटबंडे । दिवाबीत मत्या नामक इति e ২টা ক্তন্তের উপর নির্দ্ধিত মা**ন্তাজ** রেলের সেতু আছে।

এই নদীর চলিত নাম তুংভদ্রা। আয়ুর্বেদে ইহার কলের গুণ-স্থিদ, নির্মাল, স্বাছ, গুরু, কণ্টুও পিতাবেদায়ক, প্রায় সাম্মাকর, মেধাকর। (রাজনি°)

তুক্সমুখ (পুং) গণ্ডক পশু, গাণ্ডার। *তুক্সরস (পুং) তুক্ষ শ্রেষ্ঠো রসে: যতা। গদ্ধরাভের। "কালাগুক্ষবিমিশ্রেশ তথা তুক্সরফেন চ।" (ভারত আং ১২৭ মা) তুক্সবীজ (ক্রী) তুক্ত শিবত বীলং ৬তং। পারদ।

"তৃদ্বীজসমাযুক্তং গোলযন্ত্রং প্রসাধ্যেৎ" (স্থাসিং)
'তৃলো মহাদেবস্তস্ত বীজং বীর্যাং পারদ ইত্যর্থ: ।' (রলনাথ')
তৃদ্বেশা (স্ত্রী) নদীভেদ।

"विननीः शिक्रनाः त्वाः जूक्रत्वाः महानमीः।"

্ভারত ভীম ন অ') তুপ্রশেশর (পুং) তুদ্ধং উন্নতং শেধরং ষ্ডা। ১ পর্বত। (আ

২ উচ্চশেধরযুক্ত (ক্লী) ভূকং শেধরং কর্মধা। ও উর্ব এমন শেধর।

তৃত্বা (ক্রী) ভূক টাপ্। > বংশলোচনা। ২ শমী বৃক্ষ। রাজনি)
তৃত্বারি (পুং) বেড কর্মীর ধুক।

জুরিন্ (জি) জুলং সেবাদিকং ছানবাল্লরেমেনাতি অভ ইনি। ► ১ উচ্চত্তিত গ্রহ। (জি) ২ প্রধান ছানত।

তৃক্লিনী (জী) তৃলিন্ ঙীপ্। > মহাশতাবরী, বড়শতমূল। তৃক্লী (জী) তৃক গৌরাদিবাং ঙীষ্। > হরিজা। ২ রাজি। ত বঁকারী বৃক্ষ, বাবৃই গাছ।

তুলীনাস (পং) তুলী হরিজেব পীতা, নাসা ষত বছত্রী।
কীটভেদ, তুলীনস, বিচিলিক, ভালক, বাহক, কোঁচাগারী,
কুমিকর, মগুলপুদ্ধক, তুলনাত, সর্বপীক, অবস্থলী, শুদ্ধক
এই বাদশ প্রকার কীট প্রাণনাশক। এই সকল কীটের
দংশনে সর্পদংশনের ভার বিবকোপদৃষ্ট হয়, এবং সারিপাতিক
অন্ত বেদনা ও তীত্র বাতনা অন্মে। ক্ষার বা অরিবারা দগ্ধ
করিলে বেরূপ হয়, দই হান সেইরূপ হয় এবং তাহাতে রক্ত,
পীত, ক্রঞ্চ ও অরুণবর্ণের আভা দৃষ্ট হয়। অয়, অলমর্দ,
রোমাঞ্চ, বেদনা, বমন, অতীসার, তৃক্ষা, দাহ, মোহ, সর্বদ।
হাইতোলা, কল্প, বাস, হিকা, দাহ, অভিশর পীত, শরীরে
পীড়কার উৎপত্তি, শোফ, প্রহিমগুলাকার চিহ্ন, দক্ষ, কর্ণিকা,
বিসর্প প্রভৃতি কীটের প্রকৃতি অনুসারে এই সকল উপদ্রব
হয়। (স্প্রশুত করণ ৮ অণ)

ভূঙ্গীপতি (পুং) ভূঙ্গা: রাজে: পতি:। চক্র, নিশাপতি। ভূঙ্গীশ (পুং) ভূঙ্গী সর্ব্বপ্রধান: ঈশ: কর্মধা। ১ শিব। ২ কৃষ্ণ। ও স্ব্যা। (শস্বরং) ভূঙ্গা: ঈশ: ৬৩९। ৪ চক্র।

ভূচ্ (গং) ঘচ কিপ্ সপ্সারণং, তৃজ-কিপ্ প্ৰোদরাদিখাৎ
সাধু:। ১ অপত্য। "তুচে তনার তৎস্থ" (ঋক্ ৮।১৮।১৮)
'তুচে পুরার' (সারণ) "তুচে তৃ নোভবন্ধ" (ঋক্ ৮।২৭।১৪)
'তোলয়তি পিতৃত্ থাদিকমিতি তুচ্ পুত্র' তদৈম' (সারণ)
হেমচন্দ্র সকল স্থলে তৃল্ এই পাঠ করিরাছে, কিন্ত বেদে
সকল স্থলেই "তুচ্" চকারান্তই আছে।

তুচ্ছ (ক্লী) তৌতি অসারদং গছতে তু-ছে (ছোহদিক্চিড্যাং
ততুড্যাংস্ক কিং পীপুঙো: খণ্ড। উণ্ ২০০০) ইতি টীকাশ্বত
প্রদাৎ ছে, স চ-ছিং। ১ পুলাফ, তুব, ভুবী, পোসা। ২ হীন।
(ত্রি) তুল কিণ্ তেন তং বা ছলীতি ছো-ক। ০ শৃষ্ট। ৪ অর।
"কিমেতিরাত্মনত্তৈঃ সহ দেহেন নখারৈ:।" (ভাগে গাণা৪ং)

¢ নীলীবুক । ৬ ডুখা॰ ৭ মন্দ, অলীক । ন্যান্ত (কী) জন্ম জীলং ৬জং । সামালং বোধ

ভুচ্ছজ্ঞান (রী) ভূছেও জানং ৬৩৭। সামারণ বোধ, হের বলিয়া বিবেচনা।

ভুচহতা (বী) ভূছত ভাব: তল্টাপ্। সামারতা, অসারতা। ভূচহুত্ব (রী) ভূছত ভাব:। অসারতা, বেরতা, সামারতা। "ভ্যোবরুষে ভূছবং" (সাংগ্যুস্থাওং)

তুদ্ভোচ্ছল্য (দেশৰ) হেরজান।

ভূচনুদ্রে (পুং) ভূজো হীনোজ বুলিং কর্মধা। ভূজ্জন, এরও-বৃক্, ভেরাধা গাছ।

जुष्ट्याञ्चक (ज्ञी) पृष्टः वीषः वजार्थ वन्। श्राक, क्राफा, चुरी।

জুচ্ছা (দ্লী) फूচ্ছ বেলে স্লার্থে ইহার্থে বা'বং ৷ ১ ডুচ্ছশন্বার্থ ৷ ২ ডুচ্ছ কর ৷

"তুছেনাভূপিছিত: বদাসীংঁ" (ঋক্ ১০।১২৯।৩) 'তুছেন ভুছকেলেন সদস্থিসকণেন।' (সালে ১

ষ্টুচছা (ত্ৰী) তৃদ্ধ-টাপ্। ১ ডুখ। ২ নীলীবৃক্ষ, নীলস্থি। (ভাবঞ) ত সংক্ষান, গুৰুৱাটদেশীর এলাচী।

জুচ্ছীকৃত (বি) অভুদ্ধং ভুদ্ধং কৃতঃ অভ্ততভাৱে ছি। অবজাত।

ভুজ্ (ত্রী) তুল-কিপ্। ১ রক্ণসমর্থ। "বং অবৃক্ত তুলাগিরা"
(অক্ ৫।১৭।৬) 'বো অধিস্তলা লগজকুণসমর্থেন।' (সারণ)
ভুজি (ত্রী) বলবান্। "নভলুরে" রাজহসাভরে" (অক্ ৫।৪৬।৭)
ভুজি (পুং) একজন রাজা। "বং ভুজিং গুণভ্তমিক্ত তুভোঁ"। (অক্
৬।২৭।৪) 'তুজিমেতলাধ্যং রাজানং' (সারণ)

তুঞ্জ (পু:) ভূজি বলে অচ্। ১ বছ। (নিষ্টু) ২ সেই ফল-দাতা, পূৰ্বোক্ত ফলদানকৰ্তা।

"তৃষ্ণে তৃষ্ণে য উত্তরে তোমা" (থক্ সাণাণ) 'তৃষ্ণে তৃষ্ণে তন্মিন্ তন্মিন্ ফলদাতরি' (সামণ)

তৃঞ্জীন (গং°) কাশীরের একজন রাজা। (রাজতর° ২।৭) তৃটিতৃট ১ গং) শিব।

"নমস্তপ্তার ক্টারে নমস্বাটিত্টার চ।" (হরিবংশ ২৭৭ আঃ) তুট্ম (পুং স্ত্রী) তুটভি নাশরতি দ্রবালাতঃ তুটবাছলকাৎ উম। ইন্দুর। (বিকাশ)

कृष्डि (बी) कृष-देन् किछ। তোডन। 🍐 '.

জুড়কী (দেশজ) লক্ষ্ক, লাফ।
জুড়ী (দেশজ) রাগিণীবিশেষ। বসন্তরাগের ভার্যা, ইহার
নামান্তর তোড়ী, ডুড়িকা, ভোড়ীর ও ভৌড়ীর, এই রাগিণীর
গ্রহ অংশ ও ভাগ মধ্যম। সৌবীরী মুর্চ্চনাং এই রাগিণী
সম্পূর্ণা। কেহ কৈহ বলেন, ইহার গ্রহাপে ভাগ ষড়জ।
ইহার মুর্ত্তি—

'জুষারকুলোজ্লগদেহবটি: কাসীরকর্সুরবিলিপ্তবেহা। । বিনোদরতী হরিণং বনাভরে বীণাখুরা রাজতি তোড়িকেরং॥' (করিনাণং হত্যান) ইহার বর্ণ অতিশর শুল্র, ও বন মধ্যে হরিণ দিগের চিত্ত-রিনোদন করিয়া বীণাপাণি হইয়া, নিত্য বিয়াজিত আছেন।

*
নারদসংহিতায় ইহার ধ্যান, এইয়প—

শ্বন্তামানাতি সুশীলব্ঁকাম্কানতাকরিতহারবটিঃ। চ্তাছ্রং পাণিষ্ণে বহরী জবারণীকী তুজিকেরিতেরং॥"

(নারদসং

তি রাগিণী নৃত্যশীলা, অতি স্থশীলা, শুল্রবর্ণা ও হতে চ্তা-স্থ্য ধার্মণ করিয়া রহিয়াছেন, চক্ রক্তবর্ণ। এইরূপ মৃর্তি-বিশিপ্তা রাগিণীর নাম তৃড়িকা। সঙ্গীতসারসংগ্রহে মৃর্তি এইরূপ বর্ণিত আছে।

"উদ্ধিত্রপঁক্তেরছচারুনেতা কুরজনাজিং দধতী করেণ। সস্তাবরতী বিপিনোপকঠং তোড়ীয়মিন্দীবরদামরমা।।"(সঙ্গীতসা॰) এই রাগিণী মধ্যাক্ত সমরে শৃকার ও বীররসে গের। মান-কোষ ও কানড়া যোগে উৎপন্ন। স্বর গ্রাম —

> সা ঋ গঁম প ধ নি। (সংলা°) সা ঋুগ ম • ধ •। (না॰পু॰)

· শুভরাং নারদপুরাণ মতে ওড়ব। ভুড়ী (দেশৰ) অব্লীৎয়ের ধ্বনি, অব্লীক্ষোটন। ভুড়ীলাফ (দেশৰ) উলক্ষন; লাফ।

তুড়ীলাফ (দেশজ) উল্লফন; লাক।
তুলি (পুং) তৃণ সংকোচে ইন্ প্ৰোদরাদিছাৎ সাধুং বা
তুণতি সকোচরতি তুণ ইন্ (সর্কধাত্ত্য ইন্। উণ্ ৪।১১০)
'তৃত্মবৃক্ষ, তুলগাছ। পর্য্যায়—তুনি, তৃত্মক, আপীন, তুনিক,
কছক, কুঠেরক, কাস্তলক, নন্দির্ক্ষ, নন্দক। ইহার—গুণ
কটু, বিপাক, ক্যায়, মধুর, তিজ্বস, লঘু, ধাঁরক, শীতবীর্ঘ্য,
ভক্রবর্দ্ধক এবং এণ; কুট ও রক্তপিত্তনাশক। 'ভোবপ্রণ)
তুলিক (পুং) তুণি আর্থে-কন্। নন্দির্ক্ষ। (রাজনিং)
তৃণিক (পুং) তুণি আর্থে-কন্। নন্দির্ক্ষ। (রাজনিং)
তৃণিক (পুং) তুণি আর্থে-কন্। স্থ।

"ভুগুমুদ্ধমুথাকালে তাব্ভৌ সমচক্রত্য:।" (দেবীভাগণ ২।৬।২৬)

" (পুং) ২ মহাদেব। (হরিবণ ১৫।১৫) ৩ রাজ্মবিশেষ। (ভারণ অং৮৫।৯) ৪ এক দানব, এই দানব অভিশর
বলশালী ছিলু। আয়ুর পুত্র নহবের হত্তে এই দানব
নিহত হয়। (পল্নপুণ)

তুগুকেরিকা (গ্রী) কার্ণাদী, কাপাদ গাছ। (রাজনি') তুগুকেরী (গ্রী) প্রশন্তং তুগুং প্রশংদারাং কন্। তদীর্ষে জীরমতি বা ঈর-অণ্ গ্রিমাং তীষ্। ১ কার্ণাদী, কাপাদ গাছ। ২ বিছিকা, তেলাকুচা।

জুওলেব (পাং) ভ্ওমশো দেবঃ ভ্তেন দীবাতি দিব পাচ্।

তুন্তি (পুং) তুণ্ডতে নিশীড়রতি তুণ্ড-ইন্ (সর্বধাত্তা ইন্। উন্৪া১১৭) ১ মুধ। ২ চঞ্। ৩ বিধিকা। ৪ বন্ধা। (बी) ধনাতি। (শবরণ)

ভূত্তিকা (খাঁ) ভূতিরেব ভূত্তি—যার্থে কন্ টাপ্ চ। > নাজি। ২ বিধিকা, ডেলাকুচা।

তৃতিকেরী (খ্রী-) কার্পানী, কাপান গাছ। ২ বিছিকা, তেলা-কুচা। পর্যার—তুষা, রক্তক্লা, বিদ্বী, বিদিকা। (বৈশ্বক রন্ধানাণ) সমন্ত্রকাবের টীকার এইরূপ রূপান্তর আছে, তৃতিকেরিকা, তৃতিকেনী। (পুং) ৩ কীটবিশেব। কৃত্তীনন, তৃতিকেরী, শৃদী প্রভৃতি জান্তাদশ প্রকার বায়ব্য কীট। এই কীট দংশন ক্রিলে বায়ু, মৃক্ত রোগ ক্যো।

৪ তালুগত রোগবিশেষ, ইহার লক্ষণ ক্লা, ত্বল ঘা, বেদনা, দাহ ও পাকিয়া উঠিলে তৃতিকেরী বলা যায়। (অ্ঞত) এই রোগে যথা নিয়মে শস্ত্রকার্য উচিত।

তৃতিকেশী (স্ত্রী) বিশ্বিকা, তেলাকুচা। (শলচ°)
তৃতিত (ত্রি) তৃতিবুদ্ধা নাভিরক্ত তুন্দি-ভ (তুন্দিবলি
বটের্জ: । পা ৫।২।১৪০) বৃদ্ধনাভি, বৃহৎনাভিযুক্ত, স্থলোদর,
ভূঁড়িযুক্ত। ,

তু(গুল (অি) তুগু সিখাদিখাদিলচ্। ১ র্হৎ নাড়িযুক, ভু'ড়িযুক । ২ মুধর। (উজ্জল)

তুঞ্জেল (পুং) অস্থ্রবিশেষ, ইহারা সর্বানা গর্ভের পীড়া জন্মার। "উপেষস্ত মুহ্বণং তুঞ্জেলস্ক্তশাস্ত্ং।" (অথর্ক ৮।৬।১৭)

তুৎ (দেশৰ) বৃক্ষবিশেষ, ভূৎ গাছ। তুৎপোকা (দেশৰ) তম্বকীট, গুটিপোকা।

তৃত কুড়ি, (Tuticorin) সমুজভীরবর্ত্তা একটা প্রসিদ্ধ বন্দর। সপ্তদশ শতাব্দীর প্রায়ন্ত পর্ক গীব্দেরা এইখানে প্রথম জাবাস স্থাপন করে। ১৯৩৫৮ খুটান্দে তাহারা উহা জাবিকার করিয়া লয়। তৎপরে প্রায় ১৭০০ খুঃ অব্দে দিবেমারেয়া এখানে একটা ছোট ছর্গ নির্মাণ করেন। সেই সময় তিনেবেলীর সমিহিত সমুজ হইতে মুক্তা, বিস্কৃত ও শম্ম সংগ্রহের করু ৭ শত বোট ব্যাপ্ত থাজিত।

এই কার্ব্যের ভার তাহাদিগের উপর বিক্তত ছিল। এই একচেটিয়া ব্যবসা ইহাদের অনেক দিন ছিল এবং ইহাতে ববেষ্ট পরিমাণে আর হুইত।

১৭৮২ খুটান্থে ইংরাজেরা তৃতকৃতি অধিকার করেন ও ১৭৮৫ খুটান্থে উহা আবারু দিনেমারদিগকে প্রভ্যপন করেন। ১৭৯৫ খুটান্থে ইংরাজেরা উচ্চা আবার অধিকার করিবা ১৮১৮ খুটান্থ পর্যান্ত আপন অধিকারে রাখিরা পরে দিনেমারদিগতে কালার্গন ক্ষয়েন। দিনেমারেরা ১৮৫২ খুটান্থে উহা আবার ইংরালকে প্রত্যর্গণ করেন। অভাবধি উচা ইংরালাধিকারে আছে। বাজী সকল এই বন্দর হইতে কলখো গিরা থাকেন। ইংাই ডীয়ে কল কম বলিয়া বড় কাহাক তীয়ের নিকটে আইনে না, ষ্টামলঞ্ করিব। বাজিপণ জাহাজে উঠিরা থাকেন; এথানে কএকটা ডুলা ও স্তার কল আছে, এই-খানে ডুলা ও স্তার গাঁইট বাদ্ধা হইরা বিল্লাতে রপ্তানি হয়। এই হান হইতে মারার উপকৃলে মুকা-বিছক তুলিবার वरमावछ इहेबा थारक। नमूखठोरब वीह नारम अकि প্রশন্ত রাজ্য আছে। এইথানে আম্র, বাতাবি ও কমলা-८नत्, कमनी थाष्ठ्ि नानाविष कन পाश्वता याद्र, नातिएकन ও তাল বৃক্ষ যথেষ্ট পরিমাণে হর। ভালের ওড় ও তালের চিনি প্রচুর পরিমাণে পাওরা বার। এই হলের স্বাস্থ্য উত্তৰ, কিৰ মিটলাের বড়ই অভাব, ৃসপ্রতি আটিলেন কুপ খনন হইরাছে। গৃহরের সমুদ্রতীরবর্তী বহু অংশ প্রজাবিশিষ্ট ও সমৃদ্দিশালী। এইথানে হিন্দুদিগের থাকিবার কএকটা ছত্ত ও সাহেবদিগের জন্ত একটা উত্তম হোটেল আছে। এইখানে তৃতকুড়ি টারমিনশ নামে রেলের একটা ষ্টেশন আছে।

তুতান (গং) মীমাংদকভেদ। তেন প্রোক্তং ঠক। ভৌতানিক, তৃতানকথিত মীমাংদাদর্শন।

তুতিয়া (দেশন) তুখ। [তুখ দেখ।]

তুত্ত্বি, একজাতীর ছোট শৃক্ষত্ত । এই যত্ত্র মাঙ্গলিক কর্মে ও দেবমন্দিরে বাবহাত হয়। (যত্ত্বকোষ)

তুতুর্বাণি (পুং) ত্ণোবনির্জনমক্ত বেদে পুষোদরাদিকাৎ সাধ্:। তুর্গভলন। "যজ্ঞায়জ্ঞাব: সমানাং তুত্র্গণিঃ" (अ.स. ১)১৬/১) 'তুত্র্গণিঃ অরমাণঃ সংভলমানঃ।' (সায়ণ)

তুথ (ক্লী) তুণতি পীড়ন্নতানেন তুন-থক্ (পাত তুলেতি।
উণ্ ২০০) ১ গ্রাবা, প্রস্তর। ২ অগ্নি। ৩ অঞ্জন ভেদ।
৪ নীলী। ৫ হুকৈলা। ৬ উপধাতু বিশেব, তৃত্তে। পর্য্যান্ধনীলাঞ্জন, হরিতান্ম, তুথক, মরুরগ্রীবক, তামগর্জ, অমৃতোতুব, মরুরতুখ, লিধিকঠ, নীল, তুখাঞ্জন, লিধিগ্রীব, বিত্রন্ধ,
মযুরক, তুতক, ম্বাতুখ, মৃতামদ, হেমসার। (রুনেক্রচি°)
তৃতিরা তাত্রের উপধাতু। ইহাতে তাত্রের ভাগ অরই
আছে,কিন্ত ইহাতে তাত্রের প্রধানতার তাত্রের ভাগ অর
পরিমাণে আছে। অন্তান্ত ক্রবান্ধ্রন্ত, আছে বিলিয়া অপরাণর
ভগও আছে। ইহার ভগ—ক্রারসংযুক্ত, কটু, ক্রার রস,
বখনকারক, লল্ব, লেখন গুণরুক্ত, ভেদক, শীতবীর্যা, চক্ত্র
হিতকারক এবং কন্ধণিত, বিষ, অন্মরী, কুঠ ও কণ্ড্নালক।
(ভাবপ্রণ) রনেক্রনারসংগ্রীহের মতে—ইহার লোধনপ্রণালী
আইরপ—বিভাগও পাররার বিঠান তুতিরা মর্ছন করিরা পরে

দশভাগের এক ভাগ লোহাগা মিশাইরা মুহুপুটে পাক কুরিডে হইবে। তাহার পর দৈর্হকববণের সহিত মধু দিরা প্ট দিলে বিশুদ্ধ হয়। প্রকারান্তরে—বিভালের বিভাগেই তুঁতিরা মর্দন করিয়া এবং মধু ও নোহাগাঁ চতুর্ধংশ মিপ্রিত করিয়া তিনবার প্ট দিলে বমন ও প্রমিক্ষর শক্তি রহিত হইয়া বিভার হয়। শোধনের ক্ষম্প্রকার—উুতিরার করিছাংশ গরুক মিশাইরা চার দও পাক করিবে। বমন ও প্রমশক্তি রহিত হইলে পাক পিছ হয়। উুতিরার গুণ কটু, ক্ষার, ক্ষার শ্বস, বিশদু, রাণু, লেখন, কিরেকক, চাক্ষ্ব, কণ্ডু, কুমি ও বিবনাশক। (রসেক্রসংরসং) তুথেক (রী) তুথমেব স্বার্থি কন্। তুথ, উুতিরা।

জুথা (ত্রী) ভূখ-টাপ্। > নীনীর্ক। २ कूछिना।° ৩ মহা-নীনী। (রাজনি°)

ভূথাঞ্জন (রী) ভূথক ডং জন্ধনকৈতি কর্মধা। উপধাতৃ. বিশেষ, জন্ধনভেদ, উূতে। ২ ময়্রকণ্ঠ, ময়্রের কংঠ্র বর্ণ উূতের মতন, এই জন্ত ইহার নামও তৃথালন।

তুপ (পুং) তৃ-ধক্ তৃদ-থক্ পুৰো সাধু:। ১ হননকর্তা।
"তৃথোহসিজনধারয়ো নভোহদি" (তাঞ্যুবা ১।৪।৩)
'তৃত্বতেবধকর্মণ: তৃথা রক্ষপ্রভৃতীনা হস্তা' (ভাষা)। হঁ বন্ধ।
"তৃতোহসি বিধাবেদা:" (যজু ৫।৩১) "বন্ধ বৈ তৃতঃ" (শ্রুতি)
৩ দক্ষিণাবিভাক্ষক বন্ধরূপ ঋষিক্ভেদ।

"তুথোবো বিশ্ববেদা বিভল্পতু" (যক্তু ৭।৪২) 'কিঞ্চুথো ব্ৰহ্মন্তঃ প্ৰলাপতিবা যুমান্ বিভল্পতু বথাবোগাবিভল্য ঋষিণ্ভাঃ দদাতু' (বেদদীপ)

তুদাদি (পং) তুদ আদি করিয়া ধাতুগণবিশেষ, এই গণীয় ধাতুর উত্তর স হর্ষ। "তুদাদিতাঃ স" এই "স" প্রতার হইলে গুণ হর না, এই অভ ইহার নাম অগুণ। [বিদোষ বিবরণ ধাতু দেখ।] তুদ (জি) তুদ-ক। ব্যথক। তত্মাপতাং শ্রাদিছাংঠক। তৌদের, তুদাপতা।

তুন্দ (রী) তুদতীতি তুদ-দন্ (অবাদয়দ্য। উণ্ ৪।৯৮)
তুনেস্মিত ইত্যুক্তের্ম ততোদত লোগ:। উদর, পেটণ
তুন্দক্পিকা (ত্রী) তুন্দত ক্পিকেব। ক্তক্প, নাভি।
তুন্দক্পী (ত্রী) তুন্দত ক্পিকে। নাভি।

ভূম্পরিমার্জন (অ.) তুমং পরিম্জিক্ পরিমৃজ্ক তুম-পরিমৃজ-অণ্। ১ মন্দ। "অল্যাদ্ভাত তুম পরিমার্জ এব" (পা অং।)

जून्त शिव्यक्त (श्ः) ज्न शिव्यक्तं का २ जनगा २ मना। जून्त मुख (बि) ज्ना माहिं-मृज् का २ जनगा २ मना। जून्त मुख (बि) ज्वा विचात ज्ञा जूना-मजून्। जूनिन, ज्ंिक् मृक, ब्रानावा।

जुम्म्रं मि (पूर) भागिनिक्षिक मम गर्गितान्त, धरे जुमापि শ্বের উত্তর অন্তার্থে ইনচ্ প্রতার হর। "তৃশাদিভাঃ हेर्नह । (পা ८।२।३১०) जून्म, जेनब, निरुष्ठ, ववडीहि । ত্লিদ (ঙ্গী) ভূন-ইন্ বাহলকাৎ হৃষ্চ। গছৰ্কবিশেষ। জটা-ধরের মতে এই শব্দ পুংশিল। ('ব্রী) নাভি। (ত্রিকাণ) ত্শিক (অ) অভিশয়িতং ভ্লম্দরমন্ত্যক তুল-ঠন্। বিশাল-বিঠরবৃক্ত, ভূঁড়িবিশিষ্ট। ত্ন্দিকর (পুং) তৃন্দিং করোতি কু-অচ্। তৃন্দিন, ভুঁড়িযুক্ত। जुम्मिका (वो) जूमिक-ग्रेश्। नाणि। ত্নিত (জি) তৃতিল। (জ্বত দিরপকোব) जुमिन् (बि) जूमार्खां इति । जूमय्क, जुँ फिय्क । ত্নিস্ভ (বি) তুনিব্রা,নাভিরত্তাত তুনি-ভ (তুনিবিল े वर्ष्ठेर्फ:। भा बाराप्रथम) फूम्मिन्, जूँ फियूक्र। ত্লিদল (জি) তুল মন্তান্তি তুল-ইলচ্ (তুলাদিভা ইলচ্। পা ৫।২।১১৭) ছুলোদর, ভুঁড়ে, বিশাল অঠরষ্ঠ বাজি। পর্যায় পিচিপ্তিল, বৃহৎ কৃক্ষি, তুন্দিক, তুন্দিভ, তুন্দী (শক্ষরণ) जुन्मिलकला (जी) जुम्मिनः वृहरकनः यञ्चाः। जन्दी, मेंगा। ত্ম (পুং) ভূদ-জন। ১ ননিদ, উতুগাছ। (আ) ২ ব্যথিত। ৩ছিন। স্বার্থে-ক।

ভুষবায় (পুং) ভূরং ছিলং বন্ধতি ভূল বৈ-অণ্। সৌচিক।
স্চ্যাঞ্বী, দরজী। ইহারাভূল প্রভৃতি বন্ধ করিয়া জীবিক।
নির্বাহ করে। ইহাদিগের অর অভক।

"শৈলুব ভুলবায়ালং কৃতদ্বভাল মেবচ।" (সহ ৪।২১৪) যাজ্ঞবিভাগংহিতারও ইহাদের অন্ন অভক্ষ বলিয়া কথিত ইয়াছে।

"শান্তবিক্রমি কর্মার ত্রবারখণীবিনাং।" (বার্জী ১।১৬০) তুরসেচনী (ত্রী) তুরং চ্ছিরং দীচ্যতেহনয়া সিচ করণে শুট্ ভীপ্। স্চীভেদ।

তৃফান (আরবী) ১ বড় বাড়ী। ২ লোর বাডাস। ও বস্থা। তৃবড়ন (দেশল) সহুচিত, কোঁকড়ান।

ত্বড়া (দেশজ) একপ্রকার আধের ক্রীড়াবিশের। মাটির থোলে বারুদ ও লোইচুর্ণ মিশাইয়া এইরূপে বাজী প্রস্তুত হয়। ইহাতে আয়ি সংযোগ করিলে ইহার অভ্যন্তরন্থ দহামান বারুদায়ি বেগে নির্গত হইয়া রমণীয় শোভা উৎপাদন করে, এই ত্বড়ীবাজী বিবাহ প্রভৃতি ও দেবপূজাদিতে লোকে ব্যবহার করিয়া থাকে। ২ আর্যাদিগের প্রাচীন একটী ছিনল বল্ল। এই বল্ল আহিত্তিকেয়া (সাপুডিয়া) সর্প থেলাইবার সময় ব্যবহার করিয়া থাকে। এই বল্লের নিয়্দেশে

একটা তিক অলাব্কোষ সংবোজিত থাকে। উহাই বায়ুকোষ,

• উহার উপরিভাগ নলাকার ও ঈবং বক্ত, তাহাতে একটা ছিত্র আছে। উহাই সুংকাররনু। [ভিক্তিরী দেখ।] • ভূমি (দেশক) খং শক্তর, গুঁহ ও আপনি এই ছরের মধ্যবর্ত্তী অর্থবোধক শক্ষ। দিতীর পুরুষ।

जुञ्जूत (क्री) ज्यूक गण व। ज्यून।

তুমুল (রী) তু সৌত্র ধাড় বাহলকাং মূলক্। রণসঙ্গ, হস্তাহড়ি, পরস্পর আঘাত ছারা সঙ্গ বৃদ্ধ। (পুং) ২ কলিবৃদ্ধ, বরড়াগাছ। ও ব্যাক্ল বৃদ্ধ। (তি) ৪ প্রচণ্ড, উপ্র, সঙ্গমত্র।

"ববৌগদ্ধশত্মূলো দহাতামনিশং তদা।" (ভারত ১।৫২।১২)
তুমূলযুদ্ধ (অ) তুমূলং যুদ্ধং। বোরতর সংগ্রাম।
তুমূল (পুংক্লী) কলিবৃক্ষ, বয়ড়া গাছ।

ভূম্ব (পং লী) ভূমতি নাশয়তাক্ষচিং ভূম-মচ্। মনাব্, নাউ। মনাব্য ৩৯ ঘক্।

শ্সশিক্যতৃষকরকৌ,গোপবেগ্প্রবাদকৌ।" (ছরিবংশ ৬৪।৫) [জলার্ দেধ।]

ভূম্বক (পুং) ভূম-খূল। জনাব্, রাজালাব্। (রাজনি॰) ভূম্বর (ক্লী) ভূমং তদাকারং রাভি-রা-ক। বাছভেদ, তানপুরা। ২ ভূম্ক গ্রহ্ম।

ভূম্বরচক্র (ক্লী) ভূষরং চক্রং কর্মধা। রাজার জর্মচর্য্যোক্ত চক্রভেদ। [চক্র দেখ।]

जुल्दक (प्:) शक्करंडिन । [जून्क रमथ ।]

জুস্ববন (রী) দেশভেদ, এই দেশ দক্ষিণে ১২।১৩)১৪ নক্ষত্রে অবস্থিত। (বৃহৎস' ১৪।১৪)

জুমা (ত্রী) জ্ব-টাপ্। ২ অলাব্। ২ গবী। (জিকাণ)

ভূম্বি (জী) ভূমতি নাশরতাক্ষচিকভূম-ইন্। অলাব্।

ভূম্বিকা (,রী) ভ্ৰ-গুল্ টুাপি অভ ইম্বং। ১ অলাব্। ২ কটু-ভূমী, ভিতলাউ। (রাজনি*)

তুম্বিনী (জী) তুম-পিনি তীপ্। কট্ছ্মী। (রাজনি*)
তুম্বী (জী) তুমি তীষ্। ১ অনাব্। ২ কুনিকর্ফ্। (রছমানা)
তুম্বীপুজ্প (জী) তুমাং প্লমিব পুলমন্ত। অনাব্পূল।
(চারাবনী)

जुम्नूक (ही) पूर-वाहतकार खेकः। चनात् कन। (शूर) चनात्।

ভুস্থুকী, ভারতবর্ষীর একটা প্রাচীন স্থানত যর, ইহার স্থাকার চকার ভার। (যরকোব),

ভূমুর (প্ং) বিদ্যাপর্কভীয়ত বাঁতিভেদ।
"ৰে ছাত্তে বিদ্যালয়ালয়ালয়াত্তব্যালথা।" (ইরিবংশ ৫ বাং)

ভূম্বুরী (ত্রী) ভূম্বৎ আকারং রাভি রা-ক তীপ্ পূবোদরাদিদা-ছম্ম: ১ কুকুরী। ২ ধ্যাক, ধনে। (মেদিনী)

চুমুক্ল (क्री) ক্তব্দ, বছাক। (পুং ক্রী) > তপখিবিশেব।
২০ অর্হ্ছপাসকভেদ। ৩ কলবৃক্ষবিশেব, ইহার ফল মরিচের
মত ব্যাপ্তমুধ হর। পর্যায়—শৃণয়, সৌরজ, সোর, বনজ,
সাহল, বিজ, তীক্ষকক, তীক্ষকল, তীক্ষপল, তীক্ষপল, মহামুনি, ফুটল,
হুগদ্ধি। ইহার গুণ—কফ, বাত, শৃল, গুল্ম, উদরাগ্মান, কুমিনাশক ও অরির প্রদীপ্তকারক। (রাজনিং) ভাবপ্রকাশে
ইহার পর্যায়—সৌরজ, সৌর, বনজ, সাহল ও অদ্ধক।
গুণ—তিক্ত, কটুরস, কটু, বিপাক, কল্ম, উফ্লবীর্যা, আয়িদীপ্তকারক, তীক্ষ, ফচিকারক, লঘু, বিদাহী এবং বাতলৈ দিকে
বোগ, চক্ষ্রোগ, কর্ণরোগ, ওঠগতরোগ, শিরোরোগ, শরীবের
গুরুত্ব, ক্রমি, কুঠ, শৃল, অফ্লচি, খাস্প ও প্রীহা প্রভৃতি
ক্রচ্নুসাধ্য রোগনাশক। (ভাবপ্রং)

তুমুরে (গ্রং) ১ একজন গর্ধক। এই গদ্ধক মধু অর্থাৎ চৈত্র মাসে ক্রেনির রথে অবস্থান করেন। ইনি সঙ্গীতবিদ্যার বিশেষ পারদর্শী ছিলেন। ইনি ব্রহ্মার নিকট সঙ্গীত শিক্ষা করেন। বিফুর অতি প্রিয় পার্য্য ইয়াছিলেন।

অদৃত রামায়ণে লিথিত আছে —ত্রেতামূগে কৌশিক নামে এক ব্রাহ্মণ ছিলেন। তিনি বাহ্মদেবে ভক্তিপরায়ণ হইয়া স্ক্রিণ হরিওণ গান ক্রিতেন। স্কল সময়ই হরিওণ-গান ভিন্ন তাঁহার অন্ত কোন কার্যা ছিল না। তিনি বিষ্ণুত্বল নামক অমুত্তম হরিক্ষেত্রে গমন করিয়া তথায় মৃচ্ছেনার উন্নতিযোগে তালবর্ণে প্রিত করিয়া অত্যন্ত ভক্তির সহিত হরিওণ গান क्तिराज প্রবৃত্ত হইলেন এবং ভিক্ষা করিয়া জীবনযাতা নির্বাহ করিতে লাগিলেন। সেই স্থানে পদাক শামে বিখ্যাত এক আক্ষণ ছিলেন। তিনি কৌশিকের গান শুনিয়া সর্কাণা তাহাকে অর দান করিতেন। যথন কৌশিকের অর চিন্তা বিদ্রিত হইল, তথন তিনি আরও হরিতেথমে উন্মন্ত হইয়া হরিঙাৰ পাহিতে লাগিলেন। পদ্মাক্ষও এই গান ভব্তি-পূর্বক সর্বদা ভনিতেন। ক্রমে কৌশিকের ক্রতিয়, বৈশ্র ও কান্ধণ কুলোৎপর জ্ঞান 🔏 বিদ্যাতে শ্রেষ্ঠ ৭টা শিশু হইল। পদাক সকলকেই অল্লান করিতে লাগিলেন। দৈই স্থানে -মালব নামে বিফুভক্তিপরায়শ এফ বৈদ্য ছিলেন। তিনি ক্টিচিত্তে হরিকে প্রতিদিন দীপমালা প্রদান করিতেন। মালতী নামে তাঁহার পতিব্রতা ভার্যাও প্রীতমনে হরি-ক্ষেত্রের চারিদিকে গোমর লেপন করিতেন। হরির গানের নিমিত্ত কুশত্বস হইতে ৫০ জীন আক্ষণ আসিয়া কৌশিকের কার্য্যসাধনে তথার অবস্থান করিছত লাগিলেন। ক্রমে এই

গান অতি বিখাত হহুঁরা উঠিল। ক্লিক্রাক∞এই গানে क्था छनिया धरेथात जानियां कहिरनन, '(कोनिक्स ! जूरि সহচরগণের ষহিত আমার মুশোগান কর।' ইহা ভুনিঃ कोनिक कहिरनन, 'महाताल'।' आमातु बिह्वा वा वाश्री कथनः হরি ভিন্ন অন্ত কাহারও এমন কি ইক্তেরও তবে করে না। পরে তাঁহার শিয়গণ- সকলেই রাজাকে এইরূপ কহিলেন রালা ইহাতে অত্যক্ত কুত্ত হুইরা আপুণনার ভ্তাদিগকে কৃতি লেন, 'তোমরা অতি উচৈঃ স্বরে আমার গুণগান কর, যাহাতে ইহাদের গান কেহ ভনিতে না পায় গ'. ভৃত্যুগুঙ গান আরম্ভ করিলে দেই সকল আহ্মণ ও কৌশিক অত্যন্ত হু:ঝিত হুইয়া কৰ্ণব্যোধ ক্রিলেন এবং কার্চশঙ্কারা পরম্পর প্রস্পরের कर्गाचन कतिरनन। शास्त्र प्रांका वनशृक्षक गारैन नियुक्त करतन, धारे करत च च किस्ताधा (इमन करतन। तांका धारे वार्गारत व्यक्तिमत क्रूब हरेता हैशनिगरक राम हरेरक विवृक्त করিয়া দিলেন। তাহারা সকরে উত্তরমূথে মহাপ্রভান করিৰে ভাহাদের ভোগ শেঁব হইল। অনতার হরি ভাহা-দিগকে স্বীয় পার্ষদ করিলেন। কৌশিক দিয়ত্ম নামে গণা-ধিপ হইল। সেই সমর্য কৌশিকের প্রীতি, উৎপাদন জ্বন্ত মধুরাক্ষরদক্ষ, বীণাগুণতত্ত্ত গীত বিশারদগণের গান্ধারা বিফুদভার অতুত মহোৎদৰ আরম্ভ হইল। এই সভার মহাম্মা তুমুক এবং কৌশিক প্রাণ ভরিয়া হরিগুণ গান করিলেন। এই গান শুনিয়া নারদের মনে অভিশয় ক্রোধ হইল। নারদ কুত্ত হইয়া তুমুককে জায় করিবার জায়ত বিষ্ণুর উপদেশাম্সারে গানশিকার্থ গানবদ্ধ নামক উলুকেখনের নিকট গমন করেন। তাহার নিকটে যথানিয়মে সহস্র বৎসর গান শিকা করিয়া ইহার মনে কিছু অহলার জন্মিল, পরে ভুত্কক্তে আলল কৰিবাৰ জ্ঞাতাহাৰু গৃহ নিকটে আসিয়া দেখিলেন, কতকগুলি বিক্বতাকার জী পুরুষ রহিয়াছে। ভাহা-দের কাহারও প্রকৃত অঙ্গ নাই, ইনি তাহাদিগতে এইরূপ विक्रां विकास किया निविध्य कियाना कियाना कियाना विवास 'আমরা রাগ ও রাগিণী। আপেনার গানবারী আমাদের এই হঁৰবন্থ। ভ্ৰমাছে। ভূমুক আমাদিগ্ৰকে গানৰারা হন্ত করিবেন বলিয়া এথানে আসিয়াছি।' নারদ এই কথায় অতি লক্ষিত হইয়া नातांत्र (भैत्र निक्छे शमन कतिरामन। नातांत्र भै नातरामत कारकश শুনিরা কহিলেন, 'নারদ তুমি এখন ৪ গীতশাঁল্লে পারদর্শী হও नारे। पूच्यत मृश्र हरेवात अथन ७ ज्यानक द्विन । ज्यामि कृष्क-রূপে ব্যাত্রহণ করিলে তোমার গানশিক্ষার উপায় করিয়া দিব।' পরে নারদ যধন সম্পূর্ণরূপে গীত অধিকৃত করিলেন, তথন তুর্কর প্রতি তাঁহার বেবভাব অপনীত হইল। (অমুত রামাণ)

তুৰুক্ষীপা, ইহার চণিত নাম তহুবা বা ভানপুরা। একটা আলাকুনিবিত ধর্ণর বা ধ্বনিকোব, একটা কার্ক নির্মিত দও বা ধ্বনিপট্টকাদি বারা প্রস্তুত হর। তুৰুক গ্রহ্ম এই ব্যের স্টেক্ডা, এইলভ ইহার নাম তুৰুক্ষীণা, তহুরা বা ভানপুরা ইইলাছে। গীত ও বাদ্যের সমর হার বিরাম নিবারণ অভ এই বন্ধ প্রবেশন। ইহাতে গুইটা গিন্তলের ও গুইটা গৌহের ভার প্রেক, ইহার কুরবন্ধনক্রম এইরপ—

পি—লৌ—লৌ—পি সং, স স প

ভানপুরাভে বে চারিটা তার থাকে, তাহা এই রীভিত্তে বন্ধ হর্ম। (ব্যুকোর)

ভূত্র (জি) ভূম-বোরণে ভাষরপে চ রক্। ১ প্রেরক। ২ হিংসক।
"সজাহণং দাধ্বিং ভূত্রমিজং" (প্রক্ ৪।১৭।৮)। 'ভূত্রং ব্যেরকং' (সারণ) "জগত্যা ভূত্রো বৃষ্ণো মরুখান্" (শক্ ৩।৫০।১) 'ভূত্র: আইস্তা ভূমিরাইননার্থঃ।' (সারণ) ভূবু (জি) ভূম-ক। বেগবিশিষ্ট।

🕯 "প্রতবৎসোনমউক্তিং তরস্থাহং" (ঋক্ ৫।৪৩।৯)

ভূরকী (পারসী) ভূকদদেশীর মুসলমান জাতি। [ভূকী দেখ।]
ভূরগ (পং ত্রী) ভূরেণ বেগেন গছেতি গম-ড। > খেটক।
ত্রিয়াং জাতিখাৎ ভীষ্। ২ চিত্ত। (মেদিনী)

তুরগণন্ধা (বা) ত্রগভেব গদোযভাং বছরী। ১ অবগদা।
(রাজনি) (পুং) তুরগভ গদ্ধ: ৬৩৫। অবের গদ্ধ, তুরদসদ্ধাদিও এইরপ।

তুরগদানব (পুং) তুরগাকার: দানব: মধ্যানো কর্মধাণ।
কেশিদানব, এই দানব কংসের আদেশে বৃদ্ধাবনৈ প্রীক্লফকে
বধ করিবার জন্ত তুরগ বেশ ধারণ করিয়া অবস্থান করিতে
লাগিল। ইহার অত্যাচারে এই স্থান জনপ্রাণিশৃত্ত
হইলা হরাম্মা তুরগরপী দৈত্য গোপগণকে নিহত করিতে
আরম্ভ করিয়া বনস্থলী একেবারে কম্পিত করিয়া তুলিল।
কেইই আর সাহস করিয়া সেই বনে বাইত না। একদা
এ দৈত্য কালপ্রেরিত হেইয়া ঘোষপরীতে প্রবেশ করে।
উহাকে দেখিয়া ঘোষগণ সকলই ভীত হইয়া প্রীক্লফের
শরণাগত হইল। কেশীও উর্নুখে বিস্তৃত নয়নে দশন
বিকাশপূর্কাক প্রতিকঠোরশ্বরে চীৎকার করিতে করিতে
কক্ষের দিকেও ধাবমান হইতে লাগিল। ক্লফ ইহার সহিত
অনেকক্ষণ বৃদ্ধ করিয়া ইহাকে বিনাশ করেম। (হরিক ৮০ আং)
তুরগাবিয়া (পুং) তুরগাণাং প্রিয়ঃ ৬৩৩। বর। (রাজনিং)
তুরগাবিয়ার ক্রিফিক (ক্রি) তুরগাবেষ ব্লক্ষবন্ধ ভেঙা আর্থে কন্।

ত্তীর অভাববেত্ অন্ধনাভাগিরণ ব্রহ্মণ্ডেন, জোগা নারীর অপ্রাথিনিবন্ধন অথের ভার ত্তীসল ভ্যাপরণ বত। (ব্রিকাণ) তুরগম্পের্থ (পং) ভুরগেন মেখঃ ওভং। অব্যামক (পং) ভুরগের রক্ষক: ৬ভং। অব্যামক (পং) ভ্রগভ রক্ষক: ৬ভং। অব্যামক (পং) স্বাটিতের ভালবিশেব। "ক্রভং ব্যাম বিরামান্তং লপুভাগুরীলকে।" (নলীভবাণ)
এই ভালে ছইনী ক্রভা, অন্তে লবু ও বিরাম।
ভ্রগায়ত্ব (বি) ভুরেশ গাড়ং গম বৈদ্যে ভাতু। ১ শীম প্রন

र्वात्रको २ जूर्ग अवन, नीज शबन। "অনচ্ছরে তুরগাঁতু জীবৰেডং" (ঋক্ ১**৷১৩৪৷০**০) 'ছুর• 🖯 গাভূ খব্যাপারার গমনং।' (দারণ) ত্রগানন (পুং)ভূরগজ আনন্বিক আনন্মভ। কিল্পভেদ, ইহাদের মুখ **অখের ও অক্তান্ত** পরীর মহুযোর ক্তার। 🕒 ২ দেশ-एक, **এই দেশ উত্তরদিকে অবস্থিত। (বৃহৎস** >৪।২৫) ভুরগারোহ (গং) স্বধারোহী। (রুহৎসা ১৫।২৬) জুরগিন্ (ঝি) জুরগো বাহ্নদ্বোভাভ ইনি। অধারোহী। (হেম•) ত্রগী (जौ) ভ্রগবং গন্ধেহিত্যক্ত অর্শ-আদিয়াং অচ্, ভভো ेढीय्। > व्ययुत्रका। खार्ल्जी ढीय्। २ व्ययी, (याठेकी । ভুরনীয় (পু: স্ত্রী) অব সম্বনীয়। "থরভুরনীয়সম্পর্কাৎ জাতা-খতরবং" (মহু ১৷২, কুলুক) জুরপোপচারক (পু:) অখনানী, অখানোহী। পনি অখিনী नकरत्व विष्ठत्रभ कतिरम अन्तरं, अन्तरामी, कवि, देवच्च এदः कमाजानिरभन्ने हामि हन्न। (तृह९म॰ ১०।०) ক্রক্স (পংজী) ভূরেণ গচহতি তুর-গম্ থচ্-বা ডিচচ।

জুরক্স (প্রেটী) তুরেপ গছতি তুর-গম্ ধচ্-বা ডিচে।

> বোটক। (রাঁ) ২ চিত (শলর)। ৩ সৈরব।

তুরক্সক (প্রং) তুরদ ইব কারতি কৈ-ছ। ২ বোটক।

ইলীভাষায় বর্ডাভোরই। স্বার্থে কন্। ২ বোটক।

তুরক্সগন্ধা, (ত্রী) [তুরগগন্ধা দেখ।]

তুরক্সভিষ্ণী (ত্রী) তুরদো বিশ্বতেহনরা তুরক্স-বিব্ বাহু ক্য

ভীপ্। মহিষী, ত্রী-মহিষ। (রাজনি),

जूतक्रशिव (११) ज्यक्रक खियः ७७९। यव। (संयनिः) जूतक्रम (११ खी) छ्या ग्रव्हाज्य यह प्रम्। प्रिकः। जूतक्रमभाला (खी) ज्यक्रमक भाना गृहः ७७९। व्यवसाना, ज्यव शांकियाव द्या ।

जूतक्रात्रश् (११) जर्गात्रशः जूतक्रवस्तु (११) जूतकराज्य रक्ष्म्यस्थः जरम्यांकात्र कित्रतरस्यः जूतक्रवस्त्र (११) जूतकराज्यः यस्त्रसञ् । ज्यसम्याकात

कित्रद्राज्य ।

জুরজারি (পৃং) ত্রকত অনি ১৩৫। ১ করবীর, করবী ছুলের গাছ। ২ বহিন, ইহারা অবদিপের অভাববৈরি। (রন্ধনাণা) "ভুরজিকা (বাী) ত্রকবং আফারেহেন্ডাডাঃ। ত্রক-ঠন্। বেবলাদীদতা, ঘোষা। (রাজনিং)

ভুরক্সিন্(ঝি) ভুরকো বাহনুছেন অভ্যন্ত। ভুরক-ইন্। অবারোহী।

ভূরক্লী (জী) ভূষকভংগজোহতাভাঃ অন্ত এগারানিদাং তীব্। > অধগলা। জাতৌ ভীষ্। ২ অধী, ৰোটকী।

ভুরণ (রী) ভূর ভাবে কুঁা। ক্লিপ্রগমন "হুরেডস্করণে ভূরণা" (বক্ ১০২১/৪) ভূরণে ক্লিপ্রগমনে (সারণ)

ভূরণ্য (পৃং) ভূমণ্য কথা দিছাৎ ভাবে কঞ্। ছরা, শীত্র। "উবস্তরণাসং" (ঝক্ ৪।৪•।২) 'ভূরণাসদ্ ছররা দীদভি' (সারণ) ভূরণ্যসদৃ (তি) ভূমণ্য-সদ-কিপ্। বিনি শীত্র অবসর হন।

তুরণা (জি) ত্রণা কণ্ণাদিখাও উণ্। খরাযুক্ত।
"ত্ভাং শুক্রাস প্রয়ন্তরণাবং" (শক্ ১।১০৪৮১)
'ত্রণাবং খরাযুক্তাং' (সামণ)

ভুরপুণ (দেশজ) হত্তধরদিগের অন্তবিশেব, এই অত্ত ধারা কাঠে ছিদ্র করা হর।

তুরম্ (অব্য) ভ্র-অম্। বরা।

(44 818 • 15)

"তুরং যতীরু তুরমন্ত্রিপাঃ" (ঋক্ ৪।৩৮।৭)

ভুররা ('ডি) ভূর্ণ, শীজ। "ভুররাউ গব্যুং" (ঋক্ ৪।২০০১ -)
'ভূররাজুর্ণং' (সালণ)

ভূরস্ (ক্রী) ভূর-অস্থন্। স্বরা, শীজ। (ঋক্ ১০।৯৬৮৮)
ভূরস্পৌর (ক্রী) ভূরন্ পা-বং। ভূর্ণপের। "আর্মজ্জরস্পেরে"
(ঋক্ ১০।৯৬৮) 'ভূরস্পেরে ভূর্ণং পাতবো'। (সারণ)

ভূরাণ, (পারসীক শব্দ) ইরাণ অর্থাৎ পারভাদেশের উত্তরে ও উত্তরপুর্বে অবস্থিত মধ্য এসিরার সমস্ত দেশকে পারভা-বাসীরা 'ভূরাণ' নামে অভিহিত করিত। হিন্দুরা যে ভাবে আর্য্য ও ক্লেছ এই চুই শব্দ ব্যবহার করেন, পারভ্যবাসীরা ঠিক সেই ভাবে 'ইক্লেণ' ও 'ভূরাণ' শব্দ ব্যবহার করে। ভূরাণ দেশের গোককে ভূরাণী বলে।

শাশ্চাত্যজাতিতথবিদ কুতীরের মতে, মোদলীর (আফেত-বংলীর) আতির আদি বাসখান শুইজর্গণ্ডের অন্তর্গত জল্টাই শর্কতে। এই হান হইতে তাহারা উত্তর ও মধ্যএসিরার এবং গদানধীর উত্তরপ্রদেশ পর্যন্ত ভারতবর্বে, পূর্কাদকে লাপান, কোরিরা, নাইবিরিরা প্রভৃতি স্থানে হড়াইরা পড়ে। বর্তবান শর্বের ভূকন, তুর্কী, মোগল, কিন্ন প্রভৃতি জাতি এই বৃহৎ তুরাধী লাতির শাধা বনিরা প্রায়।

भरेनिक्शिं कान इहैए अक्डन वीव बाकि एक हिमा-गद्र रहेट७ फन्होरे भर्गाच वृद्द भर्तकानात प्रक्षिकाका আনেশে বাস করিত, ইহা সমন্ত জাচীন সভ্য জাতির জানিম প্ৰবন্ধার বিবরণ অন্নত্তনান করিলেই জানা বার। এই জাতি সমরে সমরে দলে দলে নামিরা এসিরা ও র্রোপে উর্বর দেশ সমূহে পুটপাট করিত। এরপ পুটের শব্দ বভদ্র পাওরা গিরাছে, ডক্মধ্যে চীন ছেশের স্ট্রমার হিরোজ্-মু-কর্তৃক উৎপাত ও চানের প্রবল পরাক্রান্ত চীন-রাজগণ কর্তৃক ভাহার দখন-বিবরণই সর্বাপেকা প্রীচীন ব্রিলা অভ্যিত হর। ইহারাই পূর্কদিকে চীনসীমার বাধা পাইরা পশ্চিম দিকে হারমনরিচ নামক প্রাচীন গথিকরাজ্যে উৎপাত করে এবং একেল বা অটিলার অধীনে ফ্রান্সের অভ্যন্তরে গিরা: বাস করে। এই জাতির সোকটু সময়ে সময়ে তুল্রিল বেপ, সেলুজুগ মহত্মৰ (পিজনীর), চৰেজ খাঁ, তৈমুর, ওথমান প্রভৃতির অধীনে চীন, বোগদাদ্, বাইজানটিরম্ ও ভারতবর্ষে উৎপাত[®] করিরাছে। এই স্বাতীর লোকেরই এক শাথা তুরুকে আধিপত্য করিতেছেন। একশাধা মোগল নামে পরি-চিত হইয়া ভারতবর্বে বর্কাল রাজত্ব করিলা গিয়াছে ব এই জাতীয় লোক কখন কোন সভ্যতর জাতির অধীনতা শীকার করে নাই। ইহারা ইহাদের পার্মবর্ত্তী সভ্যবাতির নিকট হইতে নানাবিধ বিষয়ে শিক্ষালাভ করিয়াছে বটে, কিন্ত তাহাদিগের বন্ধভাবে বা প্রজাভাবে নহে, বরং তাহাদের অনেকের উপর প্রভূত্ব ও রাজত্ব করিয়াই শিক্ষা করিয়াছে ।

ত্রাণী জাতিকে বর্তমানকালে তুর্কী-তাতারীর জাতি বিলালই বিশেষরূপে পরিচিত করা বাইতে পারে। প্রাচীন কালে আর্যাগণ সামাজিক ও রাজনৈতিক বন্ধনে বন্ধ হইরা বাসের চেষ্টা করিতেন, তাঁহারা একস্ত্রী বিবাহ ও এক পরমেখরের উপাসনা করিয়া জাতি ও সমাজ বন্ধনের চেষ্টা পাইতেন, কিন্ত ত্রাণীরা ঠিক তবিপরীতে চলিত। ইহাদেরও ধর্মসমাজ ছিল, কিন্ত তাহাতে আধ্যাত্মিকভাব বেশী ছিল না। পাশ্যুতা পৃত্তিতগণের মতে অখ্যেধাদি (পশুবধমূলক বজ্ঞাদি) আর্যোরা অতি প্রাচীনকালে এই তুর্মাণীসংঘর্ষে প্রাপ্ত প্রাচীনকালে এই তুর্মাণীসংঘর্ষে প্রাপ্ত ক্রামান প্রাচীন পারস্ত ভূপতির মহোৎসবে খেত অর্থ বলি একটা প্রধান অল ছিল। সাইবিরিয়ার দক্ষিণাংশে এবনও এইরপ অথবলি প্রচলিত আর্টে।

পাশ্চাত্য পণ্ডিতেরা অহ্মান করেন বে, ভারতের তামিল, তেলগু প্রভৃতি ত্রাবিড়ীর স্বাতি এবং কোল, ভীল, সাঁওতাল প্রভৃতি অসভ্য স্বাতিও এই ভুরাণী স্বাতির স্বস্ত্রণত। তীহারা প্রমাণার্ক বলেন বে, বধন স্বাব্যেরা ভারতে প্রবেশ করেন,

তথন ভাঁছারা এদেশে প্রাচীন শক জাতিতে পরিব্যাপ্ত দেখেন। এই শক জাতীয়েরা উক্ত তুরাণী জাতির ভাতার বা তুর্কী শাধার অন্তর্গত। আর্ব্যেরা এই সকল শককে উত্তরভারত इहें उ (पान, पक्षा, सिंद है जानि नाम अधिश्व कतिता) বিদ্ধা প্রভৃতি প্রকৃতাঞ্লে ভাড়াইয়া দেন। ইহারাই जाविष, मनम ও निःश्ल इष्टिया পড়ে। তেলগু, তামিল, কর্ণাটী, মলয় প্রভৃতি ভাষার ঘনিষ্ট সাদৃষ্ট এরপ অনুমানের এৰটা বিশিষ্ট প্ৰমাণ ৰটে। ভীৰ, গোঁড়, তোড়া প্ৰভৃতি পার্মভীষ্ট, জাতির ভাষাও আবার ঐ সকল দাক্ষিণাত্য ভাবার সহিত অনেকাংশে সাদৃশ্য থাকায়, ইহাদিগকে প্রাচীন শক জাতির বংশধর বলিরা অনুমান করা হয়। অষ্ট্রেলিয়া দীপৰাসীর ভাষাও এই দাক্ষিণাত্যে অনেক ভাষার সহিত সাদৃশ্রবিশিষ্ট, এই সকল অহুমানে নির্ভর করিলে বলা যার ভুরাণী জাতি এখন মধ্যএসিয়া ও উত্তর এসিয়ায় বাস ক্রি-ৰেও ভুরাণী ভাষা দানাক্রপ বিকৃত হইয়া সমস্ত উত্তর ও মধ্য এসিয়াম, উত্তর মুরোপে এবং দক্ষিণ ভারতে ছড়াইয়া পড়ি-রাছে। ল্যাপণও, ফিন্লও, হঙ্গেরি, তুরুক, ক্রিমিয়া 🏓 প্রভৃতি দেশের ভাষাও এই ভুরাণী ভাষার অন্তর্গত। আর্য্য ও সমিতিক ভাষা ব্যতীত অভাত য়ুরোপীয় ও আসিয়িক ভাষাই এই তুরাণী ভাষার অন্তর্গত। চীনের ভাষা ইহার অন্তর্গত নহে। তুরাণী ভাষা বিকৃত হইয়া এখন উত্তরদেশীয় (Ural Altaic বা Ugro Tartaric) এবং দক্ষিণদেশীয় ভাষা এই ছই ভাগে বিভক্ত হইয়া পড়িয়াছে। উত্তর-" তুরাণীয় ভাষায় আবার মোকলীয়, মকোদীয়, তুর্কী, কিনীয় ও সাময়দীয় এই পাঁচভাগে বিভক্ত। দক্ষিণদেশীয় ভাষাও তামিলার, গান্ধা, বহিছিমালর ও অন্তর্হিমালর প্রদেশীর, লোহিতা, তৈলক ও মলয়প্রদেশীয় এই পাচভাগে বিভক্ত।

চীনের উত্তর হইতে সাইবিরিয়ার মধ্যবর্তী তম্বন্ নদী-তীর পর্যান্ত মঙ্গদীয় ভাষা প্রচলিত। চীনান্তর্গত মাঞ্ আতীয় লোকে এই ভাষায় কথা কয়।

ৈ বৈকাণ হলতী রবর্তী স্থান মোললীর ভাষার আদিস্থান।
সাইবিরিয়ার পূর্বাংকে এই ভাষা চলে। চলেন বা
শ্রীকে মোললীয়, ব্রিয়াত, ওলোট বা কালমক প্রদেশ
একত্র করিয়া মোলল রাজত স্থাপন করেন। এই সমর
হৈতে মোললীয়, তুলসীয় ও ভাতারীর ভাষাবাদী লোকেরা
একদেশার্কতি হইয়া পড়ে।

ভারতে শতক্রতীরে উচ্চ ও নিম্ন কুনাবর প্রবেশ হইতে ভোঁটান পর্যাত গালাত্রাণী ভাষা অন্তর্হিমালয় অংশে প্রচ লিতঃ ব্ৰহ্ম, অন্নম প্রভৃতি পূক্তিপনীপের উত্তর্বেশীর ভাষা, আসামের মিকির আতির ভাষা ও বোলো, কাছাড়ী, কুকী, নাগা, গোড় প্রভৃতি পূর্ক বালাগার অসত্য আতির ভাষা; কোল, মুও, সাঁওতাল, ভূমিল প্রভৃতি পশ্চিমবালাগার অসত্য আতির ভাষা; কোল, মুও, সাঁওতাল, ভূমিল প্রভৃতি পশ্চিমবালাগার অসত্য আতির ভাষা, ছোটনাগপুরের মুওা আতির ভাষা গোহিত্য ভূরাণী ভাষার অব্যাত তামানীর-ভূরাণী ভাষার মধ্যে বেলুচিয়্বানের ব্রাহুই আতির ভাষা, গোঁড়ভাষা, কানাড়া প্রদেশের ভূস্ব আতির ভাষা, কণাটী ভাষা, নীলগিরির ভোড়া আতির ভাষা, জিবালুড়ের মলরালম্ ভাষা, ভামিল ভাষা, জ্বেলগুভাষা, ভাষী নর্জনার মধ্যবর্তী ভীল, কুর, কোকু প্রভৃতির ভাষা গণনীর। পূর্বালীপপুরের মধ্যে নিফন সাম্রাল্য ও শিকু সাম্রাজ্যের ভাষা কতকটা উত্তরদেশীর ভূরাণী ভাষার প্রকৃত। অস্ট্রেলিয়ার ভাষা ভামিলের অসুরূপ। ভূক্তের ভাষা ও ব্যাকরণ অবিকল ভূরাণীর ভাষার ভাষা র ভাষা র ভাষা র ভাষার ভাষা র ভাষার প্রাণী

ভুরায়ণ (রী) ভূর-ক, তত্ত অমনং 'পূর্বাণদাৎ সংজ্ঞায়াং' ইতি হত্তেশ গদ্ধ:। ১ অসক। ২ মজভেদ, এই মজ বৈশাধ শুরুপঞ্মী বা চৈত্তে শুরুপঞ্মীতে করিতে হয়।

"তুরায়ণং বৈশাধতকপঞ্চমাং" "চৈত্রত বা" (কাত্যাণ ২৪।৮।সা২) 'তুরায়ণং সত্তনাম' (কর্ক) ও পরায়ণ, আসক্ত। তুরাসাহ্ (পুং) তুরং ওরিজং সাহয়তি সহ-ণিচ্ কিপ্। অভ্যেমামণি দৃভাত্তে ইতি স্ত্তোণ দীর্ঘ:। ইক্স। "সহে: বাঢ়: সং" (পা ৮।৩।৫৬)

তুরাদি শব্দের পর সহধাতুর যথন যাঢ় রূপ হইবে, তথনই সহধাতুর স যথ হইবে, যাঢ় রূপ না হইলে হইবে না। তুরা-যাট, জনাঘাট প্রাভৃতির স যথ হইল, কিন্তু তুরাসাহ জনা-সাহ প্রাভৃতির স যথ হইল না।

তুরাসাহং পুরোধার ধাম স্বারস্তুবং যথৌ।" (কুমারসং ২।১)
তুরি, এক যুক্তির জাতি। আফগানিস্থানের নিকটবর্ত্তী
কুরম্ নদীর তীরবর্তী স্থানে, এই জাতির বাস। ইহাদের
মধ্যে ৫০০০ যোদ্ধা আছে। ইহারা অপরাপর জাতির সহিত
মিলিত হইয়া মীরঞাই উপত্যকার মহা উৎপাত করে।
ইহারা ইংরাজবেবী, সর্কান ইংরাজাধিকতা কোহাট জেলার
উৎপাত করে। অপর জাতিকেও ইংরাজের বিরুদ্ধে উভেলিত করে। ১৮৫০ খুটালে কান্ডেন কোর্ক একদল তুরি
বিজোহীকে ধৃত করেন। 'ইহারা লবণধনিতে ঘাইতেছিল।
১৮৫৪ অক্টে সদ্ধি হয়, কিন্তু করেকমান পরে প্রার ২০০০
তুরি মীরঞাই আক্রমণ করিয়া সদ্ধি ভল্ল করে। কাবুল বুর্দ্ধে

দাউদপুত্র, বিজনেটি, নোক, লোরাকেট, উত্তর প্রভৃতি স্থানে একদল ভূদ্ধি বাস ক্লবে। তাহারা উট্ট ভাষা বিশ্ল ধাকে, কিন্তু বাউরি ও ধেলারদিগের স্থার অভিশর চৌর্যা-পরারণ ব্লিয়া ভাহারা শর্জানের বংশধর এবং ভূত প্রেত নামে আধ্যাত হয়।

ভূরি (ত্রী) ভূর্-ইন্। তত্তবাবের কাঠাদি নির্মিত বরনসাধন, মাকু, তাঁতির বয়বিশেব।

ভূরী (ত্রী) ভূরি-ঙীপ্। > ভূরি, মাকু, তদ্ধবারের বন্ধবিশেষ।
পর্ব্যার—তন্ত্রকাঠ, ভূলি, ভূলী। (খঙ্গর॰) ২ দ্বরাযুক্ত।
"রুচা নৃপতীব ভূর্ব্যে" (ঋকু ১০।১০৬।৪) 'ভূর্ব্যে দ্বরমাণারৈ
সংভ্রমবত্যা।' (সারণ)

জুরীপ (ত্রি) ত্র্নাপ্রোতি ব্যাপ্রোতি ত্র্-আপ-ক প্রোদরা।

দিছাৎ সাধু: । ত্র্ব্যাপক । "ত্রী তুরী ত্রী ত্রীপোহত্ত
ইক্রামী" (বজু ২১।২০) 'ত্রীপঃ ত্র্মাণ্রোতি ত্রীপঃ।'
(বেদদীপ)

তুরীয় (ত্রি) তুরীর অচ্ চতুর্ণং পুরণঃ চতুর্ছ, আদ্যাদোপশ্চ।
১ গতিষ্কা। ২ চতুর্থের পুরণ। ৩ তারক।

"মনন্ত্রীয়মধ পোষয়িজু" (ঋক্ ৩।৪।৯) 'ভুরীরং ভারকং' (দারণ) ৪ চতুর্থী বৈধরীরূপা বাকু।

"ভূরীয়ং বাচো মহন্তা বদন্তি" (ঋক্ ১৬৪।৪৫) 'ভূরীয়ন্ত-পদং বৈধরীসংজ্ঞকং মহন্তা সংক্ষা বদন্তি।' (সায়ণ)

পরা, পশুন্তী, মধামা, বৈথরী এই চারিটা বাক্য। ইহার
মধ্যে বৈথরী বাক্যের নাম তুরীয়। এক নাদান্মিকাবাক্য
ম্লাধার হইতে উথিত হইয়াছিল এবং তাহার নাম পরাবাক্. এই নাদোথিত বাক্য অতি হক্ষ এবং ত্রিরূপক (কেহই
নিরূপণ করিতে সমর্থ নহে) এবং ইহা কেবল ঘোগিগণই
দেখিতে সমর্থ, এইজন্ত ইহার নাম শশুন্তীবাক্। পরে এই
বাক্য বৃদ্ধিগত হইয়া বিপক্ষ (বিনিবার ইট্ছা) প্রাপ্ত ইইয়াছিল এবং তাহার নাম মধ্যমা হইয়াছিল; অনন্তর যে সময়ে
এই বাক্য মুথে স্থিত ব্রইয়া তালু ও ওচীদি ব্যাপার হারা
বাহিরে নির্গত হইতে লাগিল অর্থাৎ মুথে উচ্চারিত
হইতে লাগিল, তথন তাহার নাম বৈথরী বা তুরীয় হইল।
ইহার মধ্যে পরাদ্ধি তিনটা ছদমের অন্তর্বর্তিক হেতু গুহা
নিহিত হইল এবং চতুর্থ সংখ্যক তুরীর বাক্য সকল
লোকই উচ্চারণ ক্রিতে লাগিল। ৻ অক্ সাভারিত
হ স্থাবিত্ত অস্পহিত চৈতক্ত, পরব্রহ্ণ।

বেদান্তসারে ইহার বিবর এইরূপ দিখিত আছে,—বন বা তত্ত্ব আকাশ এবং বৃক্ষ বা তত্ত্ব হিত আকাশ এবং ক্লা-শর বা তলগত প্রতিবিশ্বহিত আকাশাদির আশ্রয়রপ অফ্ল পহিত মহাকাশের ক্লায় এই সমষ্টি ব্যষ্টি অফ্লান ও তত্ত্বপহিত চৈত্ত্ববিশের আধারভূত এব অফুশহিত চৈত্ত্ব, তাহাকে ভূনীর বন্ধতৈতক্ত বলা বার ।। এই বিবরে শ্রুতিপ্রাধাণ বধা—

শপ অধিতীয় তৈতক্তকে চতুর্ব বলিয়া মানি, তিনি
আয়া, তিনিই বিজেয়। বেমন দগ্ধলোহ পিঙের সহিত
অভিন্ন রূপ অধি "অব্যোদহতি" এই বাক্যের বাঁচ্য এবং
লোহপিও হইতে ভিন্নপে ভাহার লক্ষ্য বলা বার, তক্ষপ্
এই সমন্তি বাই অক্যান ও তত্পহিত চৈতক্তের সহিত অভিন
রূপ এই ত্রীর চৈতক্ত "তব্দ্বনি" ইক্যাদি মহাবাক্যের বাচ্য
এবং ভিন্নরূপে মহাবাক্যের লক্ষ্য হন। (বেদান্তসার)

ভুরীয়ক (পং)ভুরীর খার্থে ক'। চঁভুর্থ। 🕞

"ভগিন্তল্চ নিজাদংশাৎ দ্বাংশস্ক ভুনীরকং।" (ৰাজ্ঞ ২।১২৪)
ভুনীয়বর্ণ (পুং) ভুনীয়ঃ বর্ণ কর্ম্মধা। চতুর্থবর্ণ শুক্ত। (হলায়্মধ)
ভুনুফর, মেচ্ছজাতি বিশেষ। তুর্কজাতি। ভুর্কাছান। তারাজেদ।
ভুনুফর, এসিরা ও র্রোপের অন্তর্গত দেশ বিশেষ। এই দেশ
প্রধানতঃ ছইভাগে বিভক্ত-এসিরক ভুক্ষ ও র্রোপীর
ভুক্ষ। ইহার মধ্যে এসিরক ভুক্ষই বৃহৎ। এসিরক
ভুক্ষই এসিরার পশ্চিমান্তদেশ। ইহার উত্তরে ক্রম্থসাগর
ও এসিরক ক্ষিরা, পুর্বে পারস্ত, দক্ষিণে আরব ও
ভুমধ্যসাগর এবং পশ্চিমে ভুমধ্যসাগর। আ্বাকারে এই দেশ
ভারতবর্ষের অর্দ্ধেক। এই প্রদেশে নিম্নলিথিত প্রদেশগুলি
আছে, —এসিরা মাইনর, সিরীরা, আর্শ্বেশিয়ার কতকাংশ,
কুর্দ্ধিন্তান (বা আসিরীরা), অল্-জেলিরাহ্ বা মেসোপোটেমিরা, ইরাক আরবী (বা কালদিয়া) ও আরবীহান (বা
ভুক্ষধিকত আরব)।

বামনপ্রাণে তারতের উত্তরসীয়া যে তুরুক দেশের উল্লেখ
আছে, তাহা এতুরুক নহে, তাহা এখন তৃর্কিত্বান নামে খ্যাত।
এসিয়া-মাইনর (কুল এসিয়া)—একটা বৃহৎ উপবীপ।
ইহা ক্রুসগার ও ভূমখ্যসাগরের মধ্যে অবস্থিত। ইহার
অভ্যন্তর ভাগে উচ্চ মালভূমি। উত্তর ও দক্ষিণে পর্বতমালা
আছে। এই প্রদেশের প্রধান নদী কিন্তিল ইশ্মাক (লোহিত
নদী, ইহার প্রাচীন নাম হালিজ) ও 'সকেরিয়া' ক্রুসগাগরে
পড়িরাছে। মিয়ান্দার, হরমুল ও সরাবত নদী লিবাক উপসাগরে পড়িরাছে। অলোরা নামক স্থানে লোমশ ছার পাওয়া
বার, ইহাদের লোমে এ দেশে শাল হয়। এই প্রদেশ
আবার পল্ডিমে আনাতোলিয়া, মধ্যত্বল কারামাণিয়া, উত্তরপুর্বের্জিয় বা শিবস এইকর ভাঙ্গে বিভক্ত। শ্মিণা এ প্রদেশ
শের স্ব্রাণেকা বৃহৎ সহর ও বাণিকাছান। স্থাটারি,

"ব্যবৃহত্ব বিভাগ কাশরোর্জনাশয়য়লতপাত এতিবিখাকাশরে বি
আধারানালুপহিতাকাশ বববেয়য়য়ানতরপহিত হৈততরয়া রাধায়ত্তং
হৈততঃ তৎ ভুরীয়বিত্যচাতে।" (বেরাতনাং)

আবোরা, সিনোপি, তিবিজন, কোনেহ, (প্রাচীন নাম আই কোনিয়াম্), শিবস প্রভৃতি নগরগুলি প্রধান। ইহার পশ্চিমহ বেবা অন্তরীপই এসিয়ার সর্বপশ্চিম অন্তরীপ।

দিরীয়া এসিয়া-মাইনরের দক্ষিণে আরবের উত্তরে অবস্থিত। থৃটানদিনের পকিত্র স্থান পালেন্ডাইন এই সিরীয়ার মধ্যে। ইহাই পশ্চিম বিভাগ, জেক্সালেম ইহার প্রধান নগর, বেধহেলম্ সহরে যীঞ্জীই জুল গ্রহণ করেন। সিরীয়ার রাজধানী আলেণো। অন্তিওক বা আন্তাকিয়া একটা নগর এবং ইন্দা (প্রাচীন সিদোন), তায়র (Tyre), একার, জাফ্দাকু গাজা প্রভৃতি কয়টী বিধ্যাত্ত সহর আছে।

আর্মেণিয়া প্রদেশ কৃষ্ণসাগরের দক্ষিণপূর্ব্বে অবস্থিত।
ইহার সমস্তই পূর্ব্বে তুক্জাধিকারে ছিল, পরে ক্ষ-তুক্ক
ম্কের পর ইহার পূর্বাংশ ক্ষরালকে অর্পণ করা হইয়ছে।
ইহার পূর্বাংশে আরারাট পর্বত পারয়, ক্ষ ও তুক্ক এই
ভিনটী বৃহৎ সাম্রাজ্যেক সীমাসক্রপ দণ্ডায়মান। ইহার শিণরদেশ উর্ব্বে দেড্কোশ পর্যন্ত চিরত্যারে আছেয়। এপ্রাদেশ
য়্ফেভিস্ নদী দক্ষিণমুখে, ক্র ও অরস্ পূর্বমুখে, কাম্পীয়
'য়্র্যান পড়িতেছে। আর্জক্রম ইহার রাজধানী, ও ভাণ নগর
ভাণ ইদভীরে অবস্থিত।

কুর্দিন্তানের প্রাচীন নাম আদিরীরা। এই প্রদেশ আর্দ্রেণিয়ার দক্ষিণে তাইগ্রীস নদীর উত্তরে অবস্থিত। এথানকার অধিবাদীরা কুর্দ্দনামে খাতে। ইহারা ক্রমিলীবী, কিন্তু দন্তাবদারী ও ভয়ানক স্বভাব। ইহাদের ধর্ম মুদলমান ধর্ম বটে, কিন্তু তাহাতে প্রেতোপাসনা ৩ অগ্ন্যু-পাসনা মিশ্রিত আছে। এথানে তাইগ্রীসতীরে প্রাচীন নগর নিনেভির ধ্বংসাবশেষ আছে।

অল-জে-জিরাহ্ প্রদেশের প্রাচীন নাম মেসোপোটেমিয়া।
ইহা কুদিস্তানের দক্ষিণে তাইগ্রীস ও র্ফ্রেতিস্ নদীব্যের মধ্যে
অবস্থিত। তাইগ্রীস তীরে মৌজল নগর ইহার রাজধানী।
এথানে প্রাচীন কালে অতি সক্ষ বস্ত নির্মিত হইত, ভাহাকেই অর্জালন্ধ মস্লিন) বলিত।

ইরাক্ আরবী প্রান্থেশর প্রাচীন নাম কাণ্টাদরা বা বাবিলোনিয়া। ইহা পারত সাগরের নিকটে অবস্থিত। পুর্বে এই প্রদেশ অতি উর্বরা ছিল, কিন্তু এখন ইহার অধিকাংশ 'মুক্তুমি হুইয়া গিরাছে, বোগদাদ নগর (ভাইগ্রীস তীরে) ইহার রাজধানী। 'এই নগরই খলিফাগণের রাজধানী ছিল। য়ুক্তেতিস তীরে প্রাচীন নগর বাবিলনের ধ্বংসাবশেষের মধ্যে বর্ত্তমান হিল্লেছ্ নগর অবস্থিত। য়ুক্তেতিস্ও ভাইগ্রীস নদী এই প্রদেশে মিলিত

হইরা সাট্-অল্-আরব নাম ধারণ করিয়াছে। এই র্জনদীতীরে বসোরা বা বস্রান্সর অবস্থিত। এই নগরের
বাণিজ্ঞা বহু বিস্তুত। এথানকার গোলাপ ফুল অতি উৎক্লই।

র্রোপীর তুরুক। ইহার উত্তরে অন্ট্রা, সার্ভিরা ও রুমাণিরা, পূর্বে কৃষ্ণসাগর; দক্ষিণে ইন্ধিরান সাগর ও প্রীস এবং পশ্চিমে আড্রিরাটিক সাগর। দানির্ব নদী উত্তরাংশে শাথা প্রশোধা লইরা সমস্ত দেশে প্রবাহিত হইরা কৃষ্ণসাগরে পড়িতেছে। দক্ষিণাংশে অনেকগুলি কৃষ্ণ নদী আছে। এ দেশের অলবায় স্বাস্থাকর ও সাধারণতঃ নাতিশীতোক্ষ, কিন্তু সমরে সমরে অতিগ্রীয় ও অতিশীত হইরা থাকে। য়ুরোপীয় তুরুকে এই কর্মী প্রদেশ আছে,—ক্ষমেলিয়া, পূর্বক্ষমেলিয়া, অলবানিয়া ও বুলগেরিয়া।

কনন্তান্তিনোপল বা ইন্তাম্ব সহর তৃক্ক সামাজ্যের রাজ-ধানী। এই নগর বস্করসের তীরে অবস্থিত। নগরটা দেখিতে স্বন্ধর। অট্টালিকা প্রায় নাই, অধিকাংশ গৃহ কার্টনির্শ্বিত। রাজ্য সক্ষ ও গলিজ। কলিকাতা অপেকা এই সহর কুদ্র।

গলিপোলি সহর দার্দেনেলিস্ প্রণালীর তীরে অবস্থিত।
এই সহর ভুরুক রাজ্যের নৌ-সেনাগণের থাকিবার প্রধান
আজ্ঞা। এড্রিরানোপল্ (রোমীর সম্রাট এড্রিরান কর্তৃক
প্রতিষ্ঠিত) ভুর্কীগণের প্রাচীন রাজধানী ছিল, ইহাই
রাজ্যের বিতীয় সহর। সলোনিকী (প্রাচীন থেসালোনিকা)
বিতীয় বন্দর।

বুলগেরিয়। প্রদেশে বুলগেরিয়। ও কুমলা, বলকান পর্বক তের গিরিবত্বে অবস্থিত, ইহা দৃঢ় হুর্গবেষ্টিত। বর্ণা ক্রম্ফ-নাগরের তীরে একটী বন্দর। দিলিন্ট্রিয়া, ত্রিনোভা ও দোফিয়া (বুলগেরিয়ার রাজধানী) আরও কয়েকটী প্রধান নগর।

অারবীস্তান বা ত্রকাধিক ত জারবপ্রদেশ। ইহার পরিমাণ ১ লক্ষ ৪° হাজার বর্গ ছাইল। বোগদাদই ইহার
রালধানী। শাসনবিভাগাহসারে ক্র্লিস্তানের কভকাংশ
ইহার অন্তর্গত। মেসোপোটেমিয়াও ইহার অধীন।
ইংরাজেরা ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানী ক্রিয়া ধবন ভারতে
আসেন, তবন হইতে এই প্রদেশের সহিত তাঁহাদের একটা
সম্পর্ক দাঁড়াইয়াছে। তবন বসোরায় তাঁহাদের একটা
ক্রি ছিল, বন্দর আক্রাস দামক হানে তাঁহাদের একটা
ক্রি ছিল, বন্দর আক্রাস দামক হানে তাঁহাদের একজন
এক্ষেণ্ট থাকিক। ১৮০০ ধ্টাকে এই এক্সেণ্টের রাজনৈতিক
ক্ষমতা বোগদাদত্ব ইংরাজ প্রতিনিধির হত্তে গিয়াছে।

য়্রোপীয় তুক্তের অধিকাংশ হুবই পর্বভাকীণ, বলকান পর্বাত এখন বদিও ক্ষের অধীন, তব্ও ইহার গিরিপণ-ভালি-তুক্তের ব্যবহারর আছে। এধানে ধনিকের মধ্যে লোহই অধিক, ভঙির রোপামিশ্রিভ সীনা, তামা, গদ্ধক, লবণ, ফট্কিরি ও করলা উখিত হর।

রুরোপীর ভূককে ৭৬৮ নাইল ও এসিরক ভূককে ৫০০ মাইল মাত্র বেল হইরাছে।

বুরোপীর ও এসিরক তুকুর বাতীত তুক্ষের অধীনে আফ্রিকাতে করেকটা দেশ আছে। এই সমন্ত একত্ত হইরা মুরোপে তুক্ষসাম্রাক্তা বা আটোমান-সাম্রাক্তা বলিরা অভিহিত হইরা থাকে। তুক্ষ সাম্রাক্তা এক সমরে সমন্ত দক্ষিণ
মুরোপে ও উত্তর আফ্রিকার বিস্তৃত হইরাছিল। ক্রয়-তুক্ষ
মুরোপে ও উত্তর আফ্রিকার বিস্তৃত হইরাছিল। ক্রয়-তুক্ষ
মুর্বের পর এখন তুক্ষ সাম্রাক্তার অধীনে আফ্রিকার
বিপলী, বার্কা, মিশর এবং এসিরার এসিরিক তুক্ষ ও
তুক্ষাধিক্ত আরব মাত্র বর্তমান।

তুরুকে তুর্কী, রিহুদী, গ্রীকচর্চের খুটান ও অভাভ শ্রেণীর লোকও আছে।

তুরুকে •ইস্লাম ধর্ম প্রধান। স্রাট্ও মুস্লমান। বর্ত্তমান স্ত্রাটের নাম স্থলতান আবিজ্ল হামিল (২য়), ইংর জন্ম ১৮৪২ খুটাকে ও সিংহাসনারোহণু কাল ১৮৭৬ খুটাকে।

রাজ্যশাসনপ্রণালী। তৃরুদ্ধের স্থলতান স্বৈচ্ছাচারী त्राका। उाँहात हेव्हात वाथा निवात क्या कि हूहे, नाहे; व्याहेन, দেশের চলিত প্রণা বা প্রজার অভিপ্রায়, কিছুতেই তাঁহাকে বাধ্য হইয়া চলিতে হয় না, তেবে কোরাণ মানিয়া চলিতে হয়। কোরণামুদারে তাঁছার বিধি নিষেধ নিয়ন্ত্রিত করিবার জন্ত তাঁহার একটা পণ্ডিত-সভা আছে। এই সকল পণ্ডিত উত্তম কোরাণশাস্ত্রবিৎ ও ইহারা 'উল্মা' নামে ক্ৰিত। পণ্ডিতসভার সভাপতি সেথ-উল্ইস্লাম ও মুথপাতকে মুক্তি বলে। এই সভায় ধর্ম সম্বন্ধীয়, রাজনৈতিক, ফৌজ-দারী, দেওয়ানী ও দামরিক স্কল গোলমালের মীমাংদা কোরাণ মতে হয়। এতত্তির কতকগুলি আইনও আছে। কোরাণাছ্সারে যে সকল বিধি রাজ্যারম্ভ কালু হইতে এ পৰ্যান্ত পণ্ডিতদভা ও স্থলতানগণ ৰাবা চলিত হইৱাছে তাহাই "कारून-नामी" नाटम চলিও ट्रेश আছে। युक-निक्ष-বিগ্ৰহ বিষয়ে স্থলভান একা কিছুই করিতে পারেনু না; তাঁহাকে পণ্ডিতসভার মত লইয়া চলিতে হয়।

রাজসভার সম্মানকর পদ বিবিধ—বিভার স্মান ও অত্তের সমান। বিভার সমান তিরিধ—রিজাল, থাজা ও মাগা। রাজার মন্ত্রিসভার সদভেরা "রিজাল" নামে আখ্যাত, ইখাদের মুধপাত্র ম্বরং প্রাধান উল্পীর। ইথাদের ক্যেরা-বে (রাজধানীস্থ সকল বিভাগের বিভিন্ন মন্ত্রিগণ), রইস-এফেন্দি (বিদেশী মন্ত্রিদল), চাউশ-বাদী (শাসন-পরিচালক মন্ত্রী ও প্রধান কর্ম্মচারী দল) গণ্য। রাজ্যে বিভাগের প্রধান কর্মন্দ্র চারীবৃদ্ধ "থাজা" নামে খাতে। প্রথম বিভাগে ও তৃতীক্ষ প্রধান কর্মমচারী দক্তরদার নামে কথিত হন। নিশানজী-বাশী (স্থাজানের মোহর-রক্ষক) ও দক্তরজামিনী (রাজ্য বিভাগের পরিদর্শক) এই প্রেণীর অন্তর্গত। ইহার মন্ত্রীসভার ক্ষান্তর "উজীর" নামধারী। উজীরমগুলীর নাম 'দেওরান'। নানাবিধ দেওরানী ও সামরিক কর্মমচারী 'আগা' নামে খ্যাত। ইহাদের মধ্যে "বোস্তনজী বাশী" (অন্তঃপ্রোজ্ঞান-রক্ষার অধ্যক্ষ), ভোগজী বাশী (তোপথানা, গোলাগুলি, বাক্ষা ও কামানের অধ্যক্ষ), মিরি-আলম্ (মহন্মদের চিক্যুক্ত পতাকাবাহক) প্রভৃতি গণ্য।

সামরিক সন্মানও ত্রিবিধ—ইংলা মন্ত্রী, পালাওঁ বে-গণ পাইরা থাকেন। উজীরেরা ত্রিচিহুধারী পালা, প্রাদেশিক লাসনকর্তারা বিচিহুধারী পালা ও বে-গণ এক চিহুধারী। বে-গণ পালা নামে কথিত হন্না। খুরের সেনাপতিরাও উজীরদিংগর স্থার ত্রিচিহুধারী, ইহাদিগকে 'শিরস্কর' বলে।

সমগ্র সাম্রাজ্য কতকণ্ডুলি প্রদেশে বিভক্ত। প্রত্যেক্
বিভাগকে এক এক জন পাশা শাসনকর্ত্তা আছেল। ইহাদিগকে 'ওয়ালী' (প্রতিনিধি বা Viceroy) বলা হয় বি
ওয়ালীয় অধীন থাকে বলিয়া প্রত্যেক প্রদেশকে ওয়ালীয়ত
বলে। প্রত্যেক ওয়ালীয়ত আবায় কতকণ্ডলি সন্ত্রক বা
লিবায় বিভক্ত। প্রত্যেক লিবায় একজন 'কায়মকান'
(সহকায়ী প্রতিনিধি বা Lieutenant Governors) আছেন,
প্রত্যেক 'লিবাও আবায় কতকণ্ডলি কাজায় (জেলা)
বিভক্ত। প্রত্যেক কাজা আবায় কতকণ্ডলি 'নহিজে'
(পরপণা বা মণ্ডল বা চাক্লায়) বিভক্ত। ওয়ালী ও লিবায়
শাসনকর্তায়া পাশা উপাধিধায়ী, কাজা প্রভৃত্তির শাসকেরা
'বে' উপাধিধায়ী, পাশার হত্তে সামরিক, দেওয়ানী, কৌজদায়ী
ও রাজ্য বিভাগের সকল ক্ষমতাই থাকে। পাশায়া অধীনত্ত্ব
শাসনকর্তাদিগের উপর প্রভৃত্বটেন, কিন্তু কার্যুতঃ তাঁহাদের
কেন্ন প্রভৃত্ব নাই।

এখান কার অধিবাসীরা প্রধানতঃ কৃইভাগে বিভক্ত — ভূকী ও রারা। মুসলমানেরা (ভূকী, কুর্দ্দ, আরব, বোসনিরাবাসী মুসলমান, আলবেনিবাসী মুসলমান ও প্রাচীন এপিরাবাসী মুসলমানগণ) সাধারণতঃ ভূকী নামে অভিহিতু। বিধ্সী বিদেশী মাত্রই 'রারা' নামে কথিত হয়।

ইতিহাস। ওস্মান্-লি-তুকীরা এসিয়ার তুরাণীর জাতিরই এক শাখা। এসিয়া মাইনর, কমেলিয়া, কাজান প্রভৃতি ছলে ইহারাই অধান অধিবাসী। হিরোদোভালের এছে বর্ত্তমান কিউ সহরের দক্ষিণপশ্চিমে 'ইয়্বকি' নামে একাজাতির উল্লেখ দেখা বায়। ঐ জাতির বসতি স্থানের নাম তাহারই গ্রাছে তুকী (Turcæ) বলিয়া উলিখিত আছে। প্লিনি ইহাকে 'তুকি' (Turk) বলিয়াছেন। মুক্ক নামে এক শ্রেণীর অমণনীল আদিম জাতি এখনও এসিয়া মাইনরে ও পারত্তে বর্ত্তমান আছে। তুকী ও তুক্ক দেশের কণা এটায়৽চত্র্থ বা পঞ্চম শতাকীতে প্রথম মুরোপে বিজ্ঞাপিত হয়। ইহার কয়েকশত প্রেক্ চীনেরা কিছ ইহা-দের বিবয়ণ্জবগত ছিল।

তৃকীদিগের করেকটা প্রাচীন বংশ বিভাগ আছে —(১) ওঘুল (২) সেলজুক ও (৩) ওসমান-লি।

(১) ওলুজ। প্রবাদ এই, তুর্কীভানে (মধ্য এসিয়ার ত্রাণ দেশে) ওঘুৰ খাঁনামে একজন পরাক্রান্ত ত্কী-নর-পতি ছিলেন। ইহার পিতার নাম কারাখা। ওমুক খাঁ ইরাহিমের সমসামরিক ছিলেন। ইহার রাজত্ব ইহার কয়জন উত্তরাধিকারীর মধ্যে বিভক্ত হয়। পূর্বাঞ্লে তিন অন খা ু (তিন শর বলিয়া ধাতি) চীনু পর্যাস্ত রাজ্য বিস্তার করেন। পৃশ্চিমাঞ্জে তিন অনে গা অকু ও অক্লেরতিস্নদীর ঁচতুর্দিকে রাজা বিভার করেন। ইহাদের মধ্যে প্রথম বাঁ পাৰ্কভীয় খাঁ নামে গ্যাত। ইনি তুৰ্কমান (বৰ্ত্তমান কাম্পীয় সাগর তীরবর্তী তুকী) জাতির আনিপুরুষ। বিতীয় থাঁ সামুদ্রিক ধানামে ধ্যাত। ইনিই সেলজুকগণের আদিপুরুষ। ভূতীয় থা স্বৰ্গীয় থা নামে খ্যাত, ইনি কায়ি জাতির আদিপুক্ষ। এই কান্নি জাতি হইতে ওসমান-গি তুকীদিগের উৎপত্তি হইয়াছে। ওঘুদেরা বহুকাল পারভের সহিত যুদ্দে লিপ্ত থাকিরা গ্রীষ্টীয় ৭১১ অবেদ আরবের সহিত্ বিজোহে লিপ্ত হয়। আরবেরা এই সময় বেখিারা ও সমর-কন্দ স্বয় করে। বোগরা থাঁ ছারুণ ৯৯৯ গ্রীষ্টান্দে চীন পর্য্যস্ত वाका विश्वात करतन। ७९भरत अरुविरक्ताहर (मणसूरकता ध्यवन रहेश हेरारमंत्र त्रांका व्यथिकांत्र करते।

(২) সেনজুক। ১০ শতাকীর শেষ ভাগে সেনজুক্দিগের অধিপতি প্রবল হনণ ইহার পৌত্র তুবরিল বেগ ১১ শ শতাকীর মধাভাগে একজন স্বাধীন রাজা ছিলেন। এই সময়ে বোগদাদে ধনিফা অলু কায়েম রাজত্ব করিভেন। ভাহার পুত্র বেদানিরি পিতৃরাজা জয় করিতে ইচ্ছা করার সেনজুকপত্তি তুবরিল কর্তৃক নিহত হন। ধনিফা সেনজুক পতিকে স্বীয় রক্ষাকর্তা ভানিয়া আমীর উল্-ভমরা-ই (রাজাধিরাজ) উপাধি প্রদান করেন, তাহার ভন্নীকে নিজে বিবাহ করেন এবং নিজ ক্ঞার সহিত তাহার বিবাহ দেন।

১০১৯ প্রীপ্তান্তে তৃত্বিল-বেগের ত্রাতৃন্থ অল্প্-আর্স্কান
রালা হন ও থলিকা কারেমের এক কল্পাকে বিবাহ করেন।
ইনি পারন্তের উত্তরপশ্চিমাংল, আর্মেণিরা, অর্জিরা, মেনোই
পোটেমিরা ও সিরীয়া লয় করেন। ১০৭১ প্রীপ্তান্তে ইনি
গ্রীকসমাট রোমেনাস্কে পরালিত করিরা বন্দী করেন।
ইহার প্র মালিক শাহ এসিরা মাইনরের অধিকাংশ লয়
করেন। ইহার পর এই বংশীরেরা অভিশর
পরাক্রান্ত রালা ছিলেন। ইহারা পশ্চিম এসিয়া প্রায়
সমস্তই অধিকার করিরা লইয়াছিলেন। সেলজ্কগণের শের
নরপতি থিতীয় আলাউনীন্ ১০০৭ প্রীপ্তানে মোগলদিগের
হত্তে বিনম্ভ হন। ইহার পর ইহার রাল্য নানা সন্ধারে
বিভাগ করিয়া লয়। [তৃকীস্থান দেখ।] ইহাদের সমরে
কোনে নগরে রাল্যানী ছিল।

(৩) ওদ্যানলি। ফুলেমান শাহ কারি জাতীর রাজ-পুত্র ছিলেন, খ্রীষ্টীর ১৩শ শতাব্দীর প্রারম্ভে তিদি থোরাসানের অন্তর্গত মহান নামক খানে রাজ্জ করিতেন। চঙ্গেজ খার ভয়ে ভীত হইয়া তিনি ১২৩৪ খ্রীষ্টাব্দে ৫০০০০ লোক সহ আর্মেণিয়ার মধ্যে আথ্লাত ও আরজেনজান নামক ভাবে গিরা বাস ক্রেন। । বংসর পরে কোনে নগরস্থ দেলজুক রাজ আলাউদীন খোরাসান ও থারেজ্ম্ অধিকার করিলে তিনি দেশে ফিরিয়া আসেন; পথে জাবের সহরের নিকট য়ুফ্রেডিস্নদী পার-হইবার সময়ে ডুবিয়াধান। উাহার অমুযাতীরা এধানে তাঁহার এক সমাধিমন্দির নির্মাণ করেন, তাহা আমাত বর্ত্তমান আনচে। ইহারই এক পুত্র অর ভূঘ্রিল পশ্চিম দেশেই বাস করিবার অভ্যক্তসংকর হইরা चानाउँकीन् तिनक्र्रकत चरीनठा चौकात करतन এवः सामन-দিগের সহিত যুদ্ধে তীহার ব্যায়ভা করিয়া সে যুদ্ধে ৰয় লাভ করেন। আলাউদ্দীন এইজন্ত সম্ভই হইয়া তাঁছাকে অকোরা প্রদেশ জায়গীর দেন ও তাঁহাকে সামস্তরাজ বলিরা খীকার করেন। অব্রত্ত্ব্রিণ ইহার পর আলোউদ্দীনকে গ্রীক ও মোগল যুদ্ধে সাহায্য করিরাছিলেন। ইহাতেই তিনি সেলজ্ক রাজ্যের পশ্চিম সীমাত কৃষ্ক বৰিয়া মহা সম্মানিত হন। ১২৮৮ এটাকে তাঁহার মৃত্যুঁহর। তাঁহার भूरत्वत्र नाष्ट्रे अन्यान ।

(১২৮৮-১৩২৯) ওসমান রাজা হইরা এীকগণের সহিত মুদ্ধ করিরা তাহাদের অনেকগুলি স্থান জর করেন। সেলজ্ব-রাজ আলাউদ্বীনের মৃত্যু হইলে ওসমান এসিরা মাইনরে অনেকগুলি কুজরাজ্যের উপর প্রভুত্ব স্থাপন করেন। ১০ বংসর পরে ইনি ক্রমা অধিকার করেন। ইহারই নাম্যি নারে এ প্রবেশের কারি কাতীর তুর্কীরা ওসবাদলি দাবে প্রাত হর। ১০২১ খৃত্তাকে ওসবাদলি তুর্কীরা বসকরন্ উত্তীপ হইরা কনভাত্তিনোগলের নিকটবর্তী প্রবেশ অধিকার করে। ১০২৬ খৃত্তাকে ইহার মৃত্যু হয়। ইহার কার্চ পুত্র উর্ন বা রাজাহন। ওস্মান মৃত্যুকালে উত্তরে বিধিনিরা, পুর্বে গালাসিরা, দক্ষিণে ফ্রিসিরা ওপশ্চিমে সন্ধোরিরাস্ নদীতির পুর্বাত রাজ্যসীমা বাড়াইরা গিরাছিলেন। ইহাই তৃক্ষ নাত্রাক্ষের ক্রপাত। বর্জনান স্যাট্ ইহারই বংশোতর।

(১৩२७-১৩৫०)--- फेब्र या ब्रामा रहेना चीन खाला चाना-উजीन्एक धार्यान छेजीरतत शाम मित्रुक करतम। छेत्र गी। चनारम मूजा श्राह्मन । ब्रिन भारति व जीरमन रमन । हैनिहै স্বাধীনতা অবলম্বন করেন। রাজ্যশাসনের জন্ত ইনি বে স্কল কর্মচারী প্রতিষ্ঠিত করেন, আঞ্রপর্যান্ত সেই স্কল नत्तर कर्याती निवृक्त रहेवा वात्क। छाराव मामनश्रामी এখনও চ্লিতেছে। ইনি প্রাত্বিজ্ঞোহের আশদা করিয়া পূর্ব হইতে সভক থাকিবার উদ্দেশে একদল নিয়মিত দৈন্ত গঠিত ও নিযুক্ত করেন। এরপ দৈন্ত যুরোপে ইতিপূর্ব্বে কেছ গঠিত করেন নাই। এই কার্ব্যে প্রধান বিচারক কারা ধলীল চেন্দেরেলি তাঁহাকে পরামর্শ দেন। এই সৈগুদলকে জেনিসেরি বলিত, ইহা হইভেই বর্তমান ভুক্ষের জেনি-দেরি (নবগঠিত দৈয়দল) কথার উৎপত্তি हहेगारह। ১৩৩ चुष्टारम এই रेम्ब नहेग्र किरनारकत्नत्र যুদ্ধে সম্রাট্ উর বাঁ কনিষ্ঠ আক্রনিকাসকে পরাজিত করেন। এই যুদ্ধে তিনি নিকিয়া কর ও তথার রাজধানী স্থাপন করেন। ছয় বৎসর পরে (১৩৩৬ খৃঃ ফুলে) মিদিয়া অন্ন করেন। ১৩৩৩ খৃষ্টাব্দে সম্রাট্ আল্পুনিকাস্ এক সঁদ্ধি করেন, তাহাতে তিনি তাঁহার এসিরান্থ রাজ্যগুলি উর বাঁকে ছाড়িয়া (हन। ১৩৩৭ थृः व्यास चन्नः खेत्रु याँ वनकतम् উखीर्ग হইরা গ্রীকরাজ্য আর্ক্রমণ করেন। সম্রাট্ জন কাণ্টাকু-কেনাস্থীয় কম্ভার সহিত উর খাঁর বিবাহ দিয়া (১৩৪৬ थुडोर्स) डाँहारक मांख कत्रिएंड राष्ट्री करत्रम, किंद्र कारण -ক্লিছুই হইণ না। উর্বার পুত্র স্থেমান ১৩৫৪ খুটাকে দার্দানেলিস্ উত্তীর্ণ হইরা জিম্পি ছর্ম (বর্ত্তমান চিক্কি) অধিকার করেন। ভূকীদিগের মুরোপে রাজ্যাধিকার এই প্রথম ও जनविष जांशास्त्रहे दाख चाहि। नक्षाहे चन कुल्डिक्समान् ও তাঁহার অপর এক জাষাতা প্যালিওলোগদের মধ্যে বিজ্ঞাহ উপহিত হয়, উর বাঁ দার্দানেলিনের বার স্কল গালিপোলি इर्न जाकमन **७ जरिकांत कर्त्वन**। ১०६२ थ्**डोरक १**६ वरनत বৰদে উর বার মৃত্যু হর। তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার নাত্রাল্য

বিভক্ত হইরা বার । প্রতি বিভাগে এক একজন পাশা নামে রাজা হন। পারসীক "পর-শাহ" শক্ত হইতে পাশা শক্তের উৎপত্তি, ইহার অর্থ স্থাহারা পারত্তের শাহকে এধানতঃ রক্ষা করে।

(১৬৫৯-১৩৮৯)—উর বার জার্চ পুত্র হুলেয়ান অর্থ হইতে পড়িয়া যারা ধান, স্বভরাং কনিষ্ঠ পুত্র সুরান্ধ রাজা হন।. তিনি রাজা হইরাই অবশিষ্ট বাইজাণ্টাইন্ সাঝাল্য অধিকার' कतिरात উল্যোগ करतन। • ১৩৬১•वृष्टीत्क जिनि चाजित्रा-নোপল অধিকার ও তথার রাজধানী ছাপন করেন। হলেরি, বোসনিয়া, সার্ভিয়া ও ওয়ালাসিয়ার রাজগণ এ্রীদের বিক্তম একতা উখিত হন, কিছ তাঁহারা সকলে ভূফীহতে ১০৬০ খুটালে বিশিটকাপে পরাজিত হুন। এই যুদ্ধে প্রেন, বুল-श्रित्रत्रो, मांकिरनानित्रा, रथमानि ७ अभितान् पूर्कीविरगत व्यक्षिकारत व्यारम । ১৩৮७ वृष्टीरक मूत्राव कात्रामानिवात সেলজুকরাজ আলাউদীনকে বনীভূত করিয়া নিজ অধীন রাজা বলিরা স্বীকার করেন। ইভিমধ্যে সার্ভিরারাজ লাজারাস্ বোদ্দিরা, বুলগেরিয়া, হলেরি, পোলও ও ওরালাদিয়া-রাজগণের সাহায্যে তুকীবিগের বিরুদ্ধে যুদ্ধ বোষণা করেন। ১৩৮৯ খুটান্দে সার্ভিরার দক্ষিণে কোসোৰা নামৰু স্থানে भूतारे तत्र प्रहिष्ठ युक्त हत्र। यूर्क्त त्रक्त-नती वहिर्छ शास्त्र। শালারাস্বলী হন। সাহায়কারী রাজগণ পলায়ন করেন। व्यथान व्यथान वन्मीता निविद्यहे भूतात्मत्र मचूर्य व्यानील हम।

মিলোশ কোবিলেবিচ্ নাবে একজন সাভিয়ার সেনাপতি মুরাদের সল্পুথে সাষ্টালে পতিত হইয়া তাঁহার পদচ্যলাদি করিয়া হঠাও উঠিয়া দাঁড়ান ও বল্ল মথ্য হইতে ভীষণ ছুরিকা বাহির করিয়া মুরাদের বক্ষে বিদ্ধ করিয়া দেন। সুরাদ সিংহাসন হইতে পড়িয়া গোলেন ও তৎক্ষণাৎ সাভিয়ার রাজা লাজারীস্ এবং নিজ হস্তা সাভিয়ার সেনাপতির শিরশ্ছেদনে আদেশ দিলেন। তাঁহার সল্পুথই সে কার্য্য সমাধা হইল। মুরাদের মৃত্যু হইলে তাঁহার জ্যেষ্ঠপুত্র বয়াজিদ্ রাধা হন এবং সাভিয়া প্রাজ্যভুক্ত করেন।

(১০৮৯-১৪০০) — বরাজিদ্ ম্রাদের জ্যেষ্ঠ পূর্ত। ইনিই ওস্মান্-লি-দিগের মধ্যে সর্বাঞ্চম 'স্থলতান' উপাধি গ্রহণ করেন। সিংহাসনে আরোহণ করিয়াই তিনি প্রথমে আপনার কনিষ্ঠ সহোদর বাকুবের শিরক্ষেদের আদেশ করিলেন। ১৩৯১ গৃতাকে তিনি কনতাল্পিনোপল্ আক্রমণ করেন। কএকলন ফরাসীবীর আসিয়া এই সময় নগর রক্ষা করেন। ভংপরে লাভবর্ষ পর্বাক্ত অবরোধ চলিয়াছিল। এসিয়া মাইনরে বয়াজিদ্ কালামানিয়া ও কএকটা সেলজুক

द्राया यत्र करवन । এই नमह शूक्त विवास निभिन्मक वार्श औ-পতি খুন, নেভারের কাউণ্ট ও বাছা বাছা করাসী অবাহদাহী रवाक्क वर्षत्र नाहारवा विश्वन विकारम वदाकिनरक जास्कमन করেন। ১৩৯৬ গৃষ্টাকে নিকিপোলিকেতে বোরতর যুদ্ধ इत्र । यूद्ध वत्राक्षिरमत्रहे अन्त्र हहेग । भन्नवर्द छिनि धौक-रमन व्याक्तमन करत्रन, नरतं रूप्तिबरम्त मन्न कतित्राहिरनन, কিন্ত তৈমুরের অভ্যাদয়ে তিনি এসিয়াত্ব অধিকার স্বকা করিবার জন্ত যাত্রা করিলেন। শেষে ১৪০২ খৃষ্টাব্দে অব্দোরার यूरक रेडियूरतत्र निक्रे भर्ताक्षित्र ७ वन्त्री हरेरनन । उर्भन्न वर्दहे शिनिनियोष्ट्र न्याकनहरत्र जांजात्रनिविदत्र व्यानजान कविदनन । ্ (১৪•৩-১৪১৩)—অকোরার যুদ্ধের পর ভৈমুর কারা-মানিয়া, অইদিন প্রভৃতির সেল্ছুক্ রাজকুমারদিগতে প্ন-রার পৈতৃক রাজ্যে স্থাপন করিলেন। কিন্তু তাঁহারা পরস্পরে विवाम व्यात्रेष्ठ कतिन। अमित्क अन्यात्नित्र निःहानन महेन्रा স্থলেমান, ঈশা ও মহম্মদ এই তিন পুত্রের মধ্যে গোলযোগ वाँधिन। ८ नत्य ऋर्तमान गुरतारा चायीन हरेरान। क्रेमा ও মহম্মদ সেলজুক্দিগকে পরাত্ত করিরা পিত্রাজ্য উদার-পূর্বক ক্রদায় ঈশা ও আমাসিয়ার মহম্মদ স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিতে লাগিলেন। কিন্তু মহত্মদের কাছে ভিনবার পরাস্ত इहेशा क्रेमा काরামানিয়ায় পলায়ন করেন। তৎপরে আর উহার নাম শুনা যার নাই। বয়াজিদের মুসা নামে আর এক পুত্র ছিল। তিনি মহম্মদের অধীন থাকার স্থলেমানকে আক্রমণ করিবার জন্ত মহম্মদ তাঁহাকে প্রেরণ করেন। ১৪১০ পৃষ্টাব্দে স্থলেমান পরাত্ত হইলেন ও পথিমধ্যে প্রাণ হারাই-দৈন। মুসা যুরোপে তুকীদিগের অধিপতি হইলেন। এখন মুসাও মহম্মদে সমর আবেন্ত হইল। কারাপুনদীর উৎপত্তি-शास्त्र निक्रवेवर्की हाम्ब्रमा (ऋत्व ১৪১० वृष्टीरक मूना मन्त्र्न-ক্সপে পরাজিত হইপেন। স্থতরাং মহম্মদ এখন একমাত্র ত্মণতান হইলেন।

(১৪১৩-১৪২১)—রূপে, গুণে, শৌর্ব্যে সকল প্রকারে মহল্মন (১ম) প্যাতিলাভ করিলেন। চাম্রলাক্ষেত্র হইতে তিনি বরাবর এসিরায় আসিয়া সেল্ছুক্দিগকে স্মুস্থ রাজ্য হইতে তাড়াইয়া দিলেন। ১৪২১ প্রাকে তিনি কনন্তান্তিনোপলে গিরা সম্রাট্ মাম্বএলের সহিত্ সাক্ষাং করেন। এখানে মহাসমারোহে সম্রাট্ তাঁহার অভ্যর্থনা করিয়াছিলেন। ঐ বর্ষেই মহল্মন পুত্র (২য়) মুরাদকে রাজ্য দিয়া ইহলোক পরিভাগে করেন।

(১৪২১-১৪৫১)—১৮শ বর্বে মহত্মদের ৩য় পুত্র ২র মুরাদ সিংহাসনে আবোহণ করেন। মহত্মদের মৃত্যুর পরই মৃত্যাদানামে বরাজিদের এক পুত্র আলিরা সিংহাসনের দাবী করেন। মুরাদ ভিনিশের নৌসেনাপতি অন্তর্ণার সাহাধ্যে মৃত্যাদাকে পরাজর ও বিনাশ করেন। ১৪৪২ পৃষ্টাক্ত্রে হলেরিরাজের সহিত তাঁহার যুদ্ধ বাঁধে। যুদ্ধে অনেক তুরুক্তাসন্ত নিহত হর, অবশেষে সদ্ধি হইলে সব পোলমাল মিটিয়া মার। মুরাদ শান্তিপ্রির ছিলেন। হলেরির সহিত সদ্ধি হইলে তিনি জ্ঞানচর্চার জন্ত পুত্র মহম্মদের উপর রাজ্যভার দিয়া এসিরার আগমন করেন। কিন্তু সদ্ধিপত্র স্থাকরিত হইবার দশ সপ্তাহ পরে মুরাদ শুনিলেন, হল্পেরির সৈত্যাপ তাঁহার রাজ্য আজমণ করিতে আসিতেছে। তিনি অবিলম্থে সমৈত্তে আসিয়া হলেরিরাজকে পরাপ্ত করিলেন। এই যুদ্ধে হলেরিরাজ ও অপর কঞ্জন প্রধান সামন্ত নিহত হন। ইহার পর মুরাদ পুত্রের উপর আর একবার রাজ্যভার অর্পণ করিয়াছিলেন। কিন্তু অর দিন পরে রাজ্যমধ্যে একবার বিজ্যাহ ঘটার, তিনি আবার শাসনভার প্রহণ করিয়াছিলেন।

(১৪৫১-১৪৮১)—২য় ম্রাদের প্র ২য় মহম্মদ ২১শ বর্ষ বয়:ক্রমকালে সিংহাসনে আরোহণ করেন। ইহার সময় তৃরুক্ষরাজ্যের ক্ষমতা ও সমৃদ্ধিযথেষ্ট বাড়িয়া উঠিয়ছিল। ইনি ১৪৫০ খৃষ্টাব্দে ২৯এ মে কনন্তান্তিনোপল, সার্ভিয়া, পিলপনিসান, ত্রিবিজন্দ, কাফা, ত্রিমিয়া প্রভৃতি রাজ্য জয় করেন। গ্রীকদিগের যে শেব মাধীনতা ছিল, ত্রিবিজন্দ লয়ের পর সেটুকুঙ্
বিলুপ্ত হইল। মহম্মদের পরাক্রমে য়ুরোপীয় রাজ্যুবর্গ পর্যান্ত ভীত ও বিচলিত হইয়াছিলেন। ইনি অভিশর চতুর ও রাজনীতিক্ত ছিলেন। ধর্মা, বিজ্ঞান, আইন ও অঙ্কশাল্প শিক্ষা
দিবার জয়্য নানাস্থানে বিজ্ঞান, আইন ও অঙ্কশাল্প শিক্ষা

(১৪৮১-১৫১২)—২র মহম্মদের মৃত্যুর পর ২র বয়াজিদ্ সিংহাদন লাভ করেন। কিন্তু তাঁহার সহোদর জেম্ রাজ্য পাইবার জন্ম গৃহবিবাদ আরম্ভ করিলেন। কএকটা যুজের পর জেম্ রোড্দ্রীপে পলারন করেন, দেখানে আবার ধৃত হইয়া তিলি ফরাসীরাজের নিকট প্রেরিত হন। তথা হইজে জেম্ পোপের আশ্রর পাইবার জন্ম রোমে গমন করেন। পোপ আবার তাঁহাকে ৮ম চার্লনের কাছে পাঠাইয়া দেন। কিন্তু এইবার তাঁহার আয়ুও শেব হইল।

এতব্যতীত বয়ীজিদের রাজস্বকালে ইজিন্ট, ডিনিশ, হলেরি, পোলগু ও অক্সিমার মৃদ্ বাধে। ইহারই সমর ১৪৯৫ খৃষ্টাব্দে সর্ব্ধ থব্ম ক্ষদ্ত কনতাজিনোপলে উপস্থিত হন। শেব দশার বয়াজিদ্ আপন প্র সেলিমের সহিত গৃহবিপ্লবে ব্যতিব্যক্ত হইরা পড়েম। শেবে সেলিমের রাজ্য অর্পণ করিয়া নিশ্চিত্ত হইবো বংড়ম। ২৫১২ খৃষ্টাব্দে তিনি ইহলোক পরিভ্যাগ করেন।

(১৫১२-১৫২+)--- त्रिनिज (दयन निर्कृत ज्ञादात्र एक्पनि কার্যকুশন ও বীর ছিলেন। তাঁহার সময় তুরুকের ইভিহাসে 💂 অনেক বিখ্যাত ৰটনা সংঘটিত হয়। রাজা হইবার পরই ভিনি ছোট ভাই কোরকুণ ও পাঁচলন আতুপুত্রের প্রাণ বিনাশ করেন। তৎপরে ১৫১৩ খৃষ্টাকে অপর ভ্রাডা আক্ষদকে পরাত্ত করিবা তাঁহার প্রাণসংহার করেন। ১৫১৪ शृहोत्म भात्रत्भव महिल त्य वृद्ध हत्र, लाहात्ल मिनम माह-ইস্মাইলকে পরাভৃত করিয়া তাব্রিক অধিকার করিলেন। इंहात्रहे अनिजिप्त जिनि । आर्प्यानिया हहेए कात्रामानिया পর্যান্ত ভূভাগের অধিপতি আলাউদ্দৌলাৎকে আক্রমণ করেন। व्यानाचेत्मोनार यूर्क भवाजिङ इहेरनम । छाहात विखीर् वाजा ভুক্তের সাম্রাজ্যক্ত হইক। তৎপরে (১৫১৬-১৭ খুটাবে) তিনি ইজিপ্ট ও সিরীয়া অধিকার করিলেন । এই সময় তিনি मूमनमान-ममार्ख मर्ख्यधान वनिहा श्रेग इटेरनन । स्कात অধিকারী কাবার চাবি আনিয়া সেলিমের হত্তে অর্পণ করিলেন। সেলিম একজন গোঁড়া হুরি ছিলেন। শিরা-দিগের উপর বিধেষবশতঃ তাঁহাদিগকে হত্যা করিবার আদেশ त्मन এবং যে সকৰ খৃষ্টান মুদলমান ধর্ম গ্রহণ না করিবে, তাহাদিগকেও বিনষ্ট করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন, কিন্ত তাঁহার মন্ত্রী তাঁহাকে এই বলিয়া নিরস্ত করেন, যে সকল विधर्मी किकिया कत निया थात्क, त्कातात छाहानिगत्क विनाम क्त्रिवात्र विधि नाहे । ১৫२० शृष्टीत्म अधिक अहित्कन সেবনে সেলিমের মৃত্যু হয়।

(১৫২০-১৫৬৬)--প্রথম দেলিমের মৃত্যু হইলে তৎপুঞ স্থান রাজ্যারোহণ করেন। ওস্মানলিপিগের রাজগণের মধ্যে ইনি অতি প্রবল পরাক্রাস্ত ছিলেন। ব্যুক্ষা হইরাই সেই বৎসরেই ইনি বেশগ্রেড ও রোড্স্ দীপ অধিকার করেন। সেই বংসরেই ওয়ালাসিয়ার রাজা রাড়ল তাঁহার অধীনতা श्रीकांत्र कतिराज वाधा हन। ১৫२७ श्रुष्टोर्स राजवितां म मूरे स्रात्मात्मव विकास यूक्याज। कतिया त्मारात्कक यूद्क थान-ত্যাগ করেন। স্থলেমান হলেরিতে প্রবেশ করিয়া রাজধানী বুড়া নগর এবং পরে ট্রানসিলভানিয়া রাজ্য অধিকার করেন। ১৫২৯ খুষ্টাব্যে জর্মণিতে প্রবেশ করিয়া ভিয়ানা নগরুজবরোধ करत्रन, किन्तु 8 वरमत्र भरत्र खुवरत्राध छक्न कतिरा वाधा हन। ইহার পর তিনি পারজ আজেমণ্ করেন। শুহি ভ্যাম্প তথন পারভের সিংহাসনে অধিষ্ঠিত ছিলেন। তুরুছের অধীনস্থ दिम्लिन्ताक रुत्रिक-८व विद्यांकी हरेबा शाबत्कत नारहत्र নিক্ট আশ্রম গ্রহণ করেন্য, এই কারণেই পারভের निहरू युष् परि । । । युष् ५००८ बुड्डीस नर्गास हिना ।

क्रींता (वाश्रमाव व्यविकात कृदत, किन्द मार विद्याशीमिशतक বুদ্ধকালে সাহায্য না করার অ্লভান বিজিত পারভাগিকার-श्वनि इाष्ट्रिया त्यन । भावत्यत्र यूदकारन स्नडारनव त्नोद्रमना-গণ ভিনিশীয়দিগের সহিত বৃষ্করে। ইবিয়ান সাগরের व्यानकश्वनि वीश वहे यूर्व , जूकरकत व्यथीन इत । हिनिनिन् ভানিয়ার রাজা জাপোলার মৃত্যু হইলে অল্লিয়ারাজ স্থার্ডিনাও্ हरकति अधिकात करतन । Ses> थृष्टीरम हरकति अत्र कतिराज क्र्रानमान देशक ८ श्रीत्र । २ ६८१ थ्होरस क्रिजा-রাজা বুজোবাওকেন নগর সহ হজেরির অধিকাংশ ছাজিরা ় দিতে বাধ্য হন। ছই বংসর পরে হলেরি লাইরা আবার বুদ্ধ হয়। খেৰে ১৫৬২ খৃষ্টাকে সদ্ধি ইইল, ভাৰাতে স্বীকৃত হর বে সমস্ত হঙ্গেরিরাজ্য তুরুছের অধীন, কেবল উত্তর হঙ্গেরিরাক্তা অগ্রিয়ার অধিকারে থাকিবে এবং তিনি তজ্জভ कुक्क भिक्ति वार्षिक क्य निर्वत। এই मिक्ति भूर्सि স্থালমানের পুত্রন্তর পোলম ও বলাজিদ সমাটের মৃত্যুর भत रक উত্তরাধিকারী হইবে, তাহা नहेवा বিবাদ করেন। কোনে নগরে উভয় ভাতায় বৃদ্ধ হয়। যুদ্ধে পরাঞ্জিত হইয়া বয়াজিদ আপন চারি পুত্রের সহিত পারক্তে গিয়া আশ্রয় লয়েনু। স্থলতান সেলিমকে উত্তরাধিকারী বলিয়া স্বীকার ক্রিলে পারভারাজ বরাজিদ ও তাঁহার পুত্র চতুইয়কে সমাটের হতে व्यमान करत्रन । ञ्चलाजात्मत्र चारमान मश्च वराविम ১৫৬১ খুটাবে হত হন। ইহার সময়ে ভুক্লের নৌসেনা সর্বাণেকা প্রাধান্তলাভ করিয়াছিল। নৌদেনাধ্যক্ষেরা সর্বদা ইতালী, রোম ও আফ্রিকার বন্দরাদি আক্রমণ করিত এবং রেগিরো সোরেটো, বুজিয়া, ওরাণ ও মেজ্কা দীপ অধিকার করিয়াঁ-ছিল। ১৫৬• খুটানে আর্কার নিকট ইতালী ও স্পেনের একঅ নৌবল ভুরুদ্ধের নোলেনার নিকট পরাস্ত হয়। আর এক দল ভুকী নৌবল লোহিতসাগরে, পারতোপসাগরে ও ভারত-মহাদাগরে ব্রিয়া বেড়াইত, পর্কুণীঞ্গণের সহিত এই দলের সর্কানাই যুদ্ধ হইত। আর্কার যুদ্ধে অয়শাভ করিয়া ইংলতান স্লেমান মান্টা অন্ন করিতে গমন করেন এবুঃ ১৬৬০ খৃটাজে ब्रिट्म अक तृहर तो वन नहेना मानी अवस्ताध छात कतिना इटक्रिय युद्ध उनिष्ठ इन। मिट युद्धि ১৬५५ थृटी स्म निस्तिश অবরোধ-কালে তিনি মৃত্যুম্থে পতিত হন ১

(১৫৬৬-১৫৭৪)— স্থানের মৃত্যুর পুর তৃৎপুত্র বিতীয় সোলম রাজা হন। ইনি রাজ্যারোহণ করিয়৳ই জেনিসেরি-দিগের এক বিজোহ দমন করেন ও অজিয়ারাজ বিতীয় ম্যাক্সিমিলিয়নের সহিত সন্ধি করিয়া ১৫৬২ খুটাকে সন্ধির সর্ত্তি বজার করেন। পরে ১৫৭০ খুটাকে আরবের অন্তর্গত বেমেন প্রদেশ ও সাইপ্রাস্ শ্রীপ অধিকার করিরা লইলেন।
১৫৭৪ খুটান্দে স্পেনীরদিগের নিকট হইতে আফ্রিকার
অন্তর্গত টিউনিস দবল করেন। ১১৫৭২ খুটান্দে তুরুক্তের এত
প্রবল নৌ-সেনাগণও লেপাল্টোর বুদ্ধে অন্তর্গর তন জুরান
কর্ত্বক প্রায় একবারে ধ্বংসপ্রাপ্ত হইল।

(,>৫৭৪->৫৯৫)— বিতীয় সেলিমের পুত্র তৃতীয় মুরাদ রাজা হন। চিলদিরের যুদ্ধে তৃঞ্জনদ্রাট্ এরিবান, জর্জিরাও দাঘিতান জয় কেরেন। ক্রিমিয়ার খাঁ এই সমর ক্ষক্তৃক জাক্রান্ত হন। তৃঞ্জ সেনাপতি ওস্নান পাশা তাঁহার সাহাযার্থ পামন করেন। ১৫৮৪ খুটান্সের যুদ্ধে তিনি ক্রিমিয়া। উর্লার করেন। ইহার রাজন্তের শেষ ভাগে পারভ্যের সহিত জাবার যুদ্ধ ঘটে, ট্রানসিলভানিয়া, মলদেবিয়া, ওয়ালাসিয়া প্রভৃতির রাজগণ খাধীনতা অবলম্বন করেন ও য়ুরোপীর রাজভাবর্গের সহিত কোন কোন সম্পর্ক হাপন করেন। ইংলভের সহিত প্রথম বাণিজা ব্যবসারের সর্কি ইহার সমরেই হয়।

*(১৫৯৫-১৬০৩)—তৃতীর ম্রাদের পর তৎপুত্র তৃতীর
মহম্মদ স্বীয় ১৯টা ভাতার ও ৭টা গর্ভবতী বেগমের প্রাণ,গংহার করিয়া রাজ্যারোহণ করেন। ইহার সমস্ত রাজ্যকাল
অল্লিয়ার সহিত যুক্তে কাটিয়া গিরাছে, কিন্তু কোন যুক্তেই
জয় পরাজয় নির্দ্ধারিত হয় নাই। সিজিলমণ্ড নামক ট্রানসিলভানিয়ার রাজা বিজোহী হইয়া আবার বশীভূত হন ও অধীনতা
স্বীকার করেন। ইহার রাজ্যকালে এসিরায় দিশহোসেন
বিজোহী হন।

(১৬০৩-১৬১৭)—তৃতীয় মহন্মদের পুত্র প্রথম আন্ধাদ হঙ্গ বর্ষে রাজ্যারোহণ করেন। দিল হোসেনের বিজ্ঞাহ পারক্তের প্রবল রাজা শাহ আব্বাসের সাহায়ে বিষম আকার ধারণ করে। ১৬১৩ খৃষ্টাক পর্যান্ত এই যুদ্ধ চলো পিতামহ কর্তৃক বিজিত রাজ্যত্তর ইনি পারক্তরাজ্যকে প্রত্যুপণ করিতে বাধ্য হন। অন্তিরাসমাট্ দিতীয় রোডল্ফ্ অক্তাক্ত রাজ্ত্তবর্গের সহিত একত্র হইয়া হঙ্গেরি আক্রমণ করেন। অনেকঞ্লিক্তীয়ণ যুদ্ধ হয়। শেষে ১৬০৬ খৃষ্টাক্তে আন্দাদ সিটভাটোরোক নামক স্থানে সদ্ধি করেন। এই যুদ্ধ ক্ত্রুণান অনিয়াকে তদ্ধিকত উপ্তর হঙ্গেরির কর ছাড়িয়া দেন। এ সময় নেদারলুপ্রের সহিত বাণিজ্য স্থাপিত হয়। একদল করে। অই সময়ে এসিয়ায় সাইনপ নগর লুঠন ও ধ্বংস করে। অই জান ব্রীলোক ও প্রিরপাত্ত্বণের হজ্যের ক্রীড়াপ্র্ল ছিলেন বিলিয়া ইহার সময় তুক্কসাম্রাজ্যের অনেক ক্ষতি হয়।

১৬১१ वृष्टोटल हेरात मृञ् हरेटन हेरात लाखा व्यथम

মুক্তাফা ছর্মাস রাজত্ব করেন। অন্তঃপুরবাসিনীগণের চক্রান্তে ইনি কারাকুত্ব হন।

(১৬১৪-১৬২২)—প্রথম আদদের প্র বিতীয় ওসবান রাজ্য হন। পোলপ্রের বৃদ্ধ ইহার রাজদের প্রথম ও প্রধান ঘটনা। তৃক্ষ সম্রাটেরা ক্রীতদাসী ভির অন্ত ক্রমারীর পাণিগ্রহণ করিতে পারিতেন না। এই সম্রাট্ সে নিরম উরক্ষন করিয়া প্রধান কর্ম্মারীদিগের ফ্রাগণের মধ্য হইতে তিনটা ক্লার পাণিগ্রহণ করের। ইহাতে তিনি প্রজাবর্ণের অপ্রীতিভাজন হন। জেনিসেরিগণ বিজ্ঞাহী হর। তাহারা মুক্তির পরামর্শ প্রহণ করিয়া স্থলতানকে কারাক্ষম ও তাহার কুপরামর্শদাতাদিগকে বিনম্ন করে। প্রথম মুক্তালকে কারামুক্ত করিয়া রাজ্যাতিবিক্ত করা হইল, কিন্তু তিনি উন্মাদ হওয়ার দিতীর ওসমানের প্রাতা চতুর্থ মুরাদ সিংহাসন লাভ করিবেন।

(১৬२७-১७৪•)--- ठळूर्थ मुत्रान ১२म वर्ष वत्रत्म त्राव्याद्राह्य করেন। প্রথম দশ বংগর তাঁহার মাতা তাঁহার অভিভাবিকা ছিলেন, শেষে ভিনি নিষ্ঠুর অথচ কার্য্যদক্ষ সম্রাট্ ছইয়া উঠেন। ইशांत्र সময়ে বোগদাদের শাহ বিজ্ঞোহী হন এবং বোগদাদ পারভের অধিকৃত হয়। ক্রিমিয়ার ভাতারগণ বিজোহী হইয়া তুকী দেনাপতি কপুদান পাশাকে পরান্ত করে। প্রায় দেড় হাজার কোশাক এই সময় বসফরসের তীরে মহা লুটপাট আরম্ভ করে। জেনিদেরিগণ তথন কাতর হইয়া আপনারাই কনন্তান্তিলোপলের একাংশে অমি দিয়া স্মাটকে জানায় যে, 'আপনার তলবারির সাহায্য ভিন্ন রাজ্যের कहे गहिरद ना।' ১৬৩৩ शृष्टीरम এই कथात्र यूदक সমাটের উৎসাহ হইল। অস্তঃপুর ত্যাগ করিয়া তিনি সৈম্পঠনে মন **मिल्नन । इन्हें, वर्णन अरब अनिवाब युक्तयांका कतिवा व्यक्तिं क्र**म, এরিবান ও ভাবিজ উদ্ধার করিলেন। ১৬০৮ পৃষ্টাবে বোগদাদ উদ্ধার হইল। এই যুদ্ধে ৮০ হাজার প্রাণ বিনষ্ট হর। ১৬৩৯ পৃষ্টাব্দে পারস্তের সহিত সন্ধি হয়। সন্ধিতে হির হইন, বোগদাদ রাজ্য তুক্তের ও এরিবান পারস্তের অধীন হইবে। এই জন্নশভের পর দেশে ফিরিয়া আসিয়াই সমাটের

(,2৬৪০-2৬৬৪) --- চতুর্থ মুরাদের পর ভালীয় প্রাভা প্রথম ইরাহিম রাজা হন। কোশাকদিগের হস্ত হইতে আরক জ্বর ও ভিনিশের মুদ্ধে কাণ্ডিরা অধিকার ইহার রাজ্যের প্রধান ঘটনা। বিলাসিভা ও লাম্পট্যদোবে দিবারাত্র মর্ম থাকিভেন। জেনিসেরি-বিজ্ঞাহে ইনি নিহত হন।

(১৬৪৮-১৬৮৭)---প্রথম ইত্রাহিমের মৃত্যুর পর ওাঁহার গম বর্ষীর পুত্র চতুর্থ মহম্মদ রাজা হন। প্রথম আক্রের

পত্নী ও ইহার শিতামহী ইহার অভিভাবিকা ছিলেন। जावानक जरकात्र गर्राम डेबीय शतिवर्डान ब्राह्म जानक গোলমাল ও ক্তি ব্ইরাছিল, ১৬৪৮ হইতে ১৬৫৬ পুটাকের मत्था > वात्र व्यथान मजी পরিবর্তিত হর, শেবে বৃদ্ধা ছল-**छाना यार्-भिक व्यवः भूतवक्**षदा निरुष्ठ रन । ১৬৫७ पृद्<u>ठी</u>एक মংখ্যার কেবিলে প্রধান টুজীর হইরা রাজ্যের হুর্দশা দূর করেন। ট্রানসিশভানিরার রাজা রাগোজি অন্তিরাকে কডক দেশ প্রদান করার সম্রাট্ প্রথম লিওখোল্ডের সহিত বিষম युक्त इतः। जूककरेमस कृतक जान सत्र करतः। ১७५८ वृहीरस्त्र এক বৃদ্ধে তুক্কনৈত পরাজিত হয়। পরে সঞ্চি হইলে ট্রানসিলভানিরা ও হঙ্গেরির আরও ক্তকাংশ অভ্রিয়াসাত্রাক্য जुक हत । चन्छान ১৬৬৯ वृष्टीत्य काश्वित्रा यत्र कतित्रा এह ক্ষতি পূরণ করিয়া লয়েন। ১৬৭৫ খৃটাল্কে ভিনি পোলখের कछकाः म अत्र करतन । ১৬৮२ बृष्टीत्म इत्मतिरछ विंद्याह হর, তাহার সাহাষ্য করিতে, পিরা তুরুকের সহিত অল্লিয়ার चारात रेक् पटि। ১৬৮0 पृष्टीरच धारान छेजीत कता मुखाका २ नक रेमछ नहेशा ভिয়्ता नगत खराताथ करतन, কিন্ত কাউণ্ট প্রারহেমবর্গের বীশ্বত্বে ও কৌশলে দেবার ভিয়ানা উদ্ধার হয়। পোলভুরাজ ও বাভেরিয়ারাজ অক্সিয়ার সহিত যোগ দিরা তুর্কীকে সম্পূর্ণক্লপে পরাজিত করেন। করা মুক্তাফা হলেরিতে পলাইয়া বান। ৬ হাজার পুরুষ, ১১ হাজার জীলোক, ১৪ হাজার বালিকা ও ৫০ হাজার শিশু ভুরুকেরা ক্রীতদাস করিয়া আনে। অক্রিয়ার সৈঞ্চগণ অফুদরণ করিয়াছিল। ওবংসর বৃদ্ধের পরে ভুক্ক দানিয়ুব নদীর পরপারত্ব সমত অধিকার হারাইতে বাধ্যু হন। পরে তিনিশীয়েরা ইহাদের সহিত বোগ দিয়া ভুক্তের সমগ্র গ্রীস রাজ্যাধিকার গ্রাদ করিল। জেনিদেরিগণ বিজ্ঞাহী হইয়া। স্থলতানকে অন্তঃপুরে কারাক্ষম করিয়া রাখেন।

(১৬৮৭-৯১)—তংশরৈ ভাষার ভাতা বিজীয় ক্লেমান বালা হন।

(১৬৯১-৯৫)—বিতীয়/ স্থলেমানের অপর প্রান্তা বিতীর শাক্ষদ রাজা হলী অন্তিরারাজ আবার কতকগুলি রাজ্য জয় করিরা লয়েন। ভিনিশীর্যেরাও কিয়স অধিস্কার করে। রাজ্যের সর্ক্ষা বিজ্ঞাহ হয়।

(১৬৯৫-১৭০৩)—চতুর সংখ্যদের পুত্র বিতীর ম্থাফা ভংপরে রাখা হন। ভিনিশীরের কডকটা দ্যিত হর, কিব অত্রিরগণ ব্যান্ পর্কতের নিকটে সহা উংগাত আরম্ভ করে। ১৬৯৬ পৃষ্টাব্যে ক্ষয়ব্বাক্ষ পিটার বি এটে অত্রিয়ার সহবোগে আফক প্রব্যুক্ত পিটার বি এটে অত্রিয়ার নৌবল, জুক্কবত্তে পরাব্রিজ হইলে কার্লোউইজের সন্ধি হয়।
করিছ বোক্ষকের উত্তরবর্তী সমস্ত শ্রীস তুরুক্তর অধীন হয়।
করিরা তেমেখন বাতীত সমস্ত হলেরি কর করেন ৮ ওসমানলিরা এই সকল রাজ্য হারাইরা উত্মন্ত হইরা উঠে ও ১৭০৩
পৃঠাকে বিজ্ঞাহী হইরা ছিতীর মুন্তাকাকে রাজাচ্যুত করে।

(১৭০৩-৩-)—বিভীয় সুঁতাফার প্রাতা তুতীয় আক্স তৎপরে রাজা হন। তিনি বিজোহ দমন করিয়া রাজ্যের শাব্তিরকা করিতে বিশেষ রুপ্ট পট্টয়াছিলেন। ১৫ বংসরে **डीहारक ১८ कन ध्यशान डिकी**त नम्नाहेरछ हत्र। <mark>डीहात्र</mark> वाजपकारण चरेराजनवाज पार्मम हार्गम् कृत्रीरक भनारेवा আসিরা আশ্রর গ্রহণ করেন। এই স্ত্রে ক্ষরিলীর সহিত যুক্ষ ঘটে। বালভাকী মহত্মদের চক্রান্তে পড়িরা পিটার नि প্রেট সলৈতে তুরুদহতে বনী হইতেন, কিন্তু কব-রাজী ক্যাথারাইন্ প্রধান উজীরকে বুব দিয়া চক্রান্ত হইতে উদ্ধার পান। আজফ নগর ক্ষিয়াকে ছাড়িয়া দিতে হয়। ১৭১৪ খুটাকে মোরিয়া অধিক্বত হয়। ১৭১৭ খুটাকে অজিনার সহিত যুদ্ধ বাঁধে। তেমেখর অন্তিয়ার অধিকারভূক্ত হয়। পারভের সহিত তাহার পর যুদ্ধ খুটে। যুদ্ধে উত্তর পারস্ত স্মধিকৃত্ হয়, কিন্ত ১৮২৬ পৃষ্টাব্দে আবার ভাষা হত্তচ্যুত হয়। কেনিসেরিগণ এই কারণে বিজোহী হইয়া রাজাকে রাজাচ্যুত করে। ইহার রাজত্বকালে তুরুত্বে ছাপাধানা হয়।

(১৭৩০-৫৪)—তৎপরে দিতীর মৃত্তাফার পুত্র প্রথম মাজুদ রাজা হন। ইহার সেনাপতি তাবিজ্ঞ দখল করেন। পারস্তপতি তমাম্পের সহিত বে সন্ধি হর। তালতে ওসমানদি-গণ সন্ধাই না হইরা বিজ্ঞাহী হর। তালকে নাদি কুলিখা পারস্ত অধিকার করিয়া তুরুছের বিপক্ষে অন্তধারণ করেন ও তৃতীর আহ্মদ বে সকল রাজ্য জয় করিয়াছিলেন, সেগুলি উদ্ধার করিয়া লয়েন (১৭৩৬)। ১৭৩৭ পৃষ্টাক্ষে ক্রিয়ার সহিত তুরুছের মনোমালিস্ত ঘটে এবং অন্তিয়া করিয়ার সহিত ত্রুছছের মনোমালিস্ত ঘটে এবং অন্তিয়া করিয়ার সহিত বোগ দিয়া তুরুছের বিরুদ্ধে বৃদ্ধ বোষণা করেন। ১৭৩৯ পৃষ্টাক্ষে অন্তিয়া পরাজিত হইয়া ওঝুলালিয়া, সার্ভিয়া ও বেলগ্রেড তুরুছকে ছাড়িয়া দিতে বাধ্য হন। ক্ষম মল্পেরিয়া অধিকার করেন। শেক্ষালে পারত্তের ও আরবের ওহাবীদিগের বহিত বৃদ্ধ হয়। ১৭৫৪ পৃষ্টাক্ষে সম্রাটের মৃত্যু ঘটে।

(১৭৩৪-৫৭)—প্রথম মাজুদের পর ভ্রমীর প্রভাতা তৃতীর ওসমান রাজা হন।

(১৭৫৭-৭০)—ভংপরে তৃতীর আন্ধানের পুত্র তৃতীর সুত্তাকা বিংহাসন্থাত করেন। ইনি ক্ব-সাম্রাকী হিতীয়া ক্যাথাছিলের বিক্সছে যুদ্ধ বোষণা করেন। পোলঞ্জকে ক্ষরিয়ার প্রাস হইতে রক্ষার্থ এই বৃদ্ধ ঘটে (১৭৬৮)। ইহার স্বীবক্ষশার এ যুদ্ধ-শেষ হয় নাই।

(১৭৭০-৮৯) — তৎপরে ভৃতীর আদ্দের অপন্ন পুত্র
প্রথম আবহল হামিদ (বা চতুর্থ আদ্দা) রাজা হন।
ক্ষিয়া ক্ষেক বৃদ্ধে জনলাভ করার ১৭৭৪ প্রাক্তে সন্ধি
হল। এই সন্ধিতে ক্ষ কাবাদি।, আজ্বদ, কিলবরণ, ফার্চ,
কেনিকেল, বোগ ও নিপর নদীর মধ্যত্ত প্রদেশ, ক্ষুসাগরে,
বস্ক্রসে ও হাদিনেলিনে অবাধগতি এবং মলদভিরা ও
ওল্পালাসিরার বিভাগত বিধা ত্রুক্ত্বসাম্রাজ্যের সম্ভ প্রীক্
স্মাজ্যুক্ত প্রানগ্রের উপর প্রভুষ প্রাপ্ত হন।

ক্রিমিয়ার থাঁ খাণ্টান হইলেন। তিন বংসর পরে অন্তিরাকে ব্লোনিয়া ছাজিয়া দিতে হয়। ইহার পর কব ক্রিমিয়া গ্রাস করিলে ক্রক্তে মহাযুদ্ধোস্তোপ হইল। ক্রিয়াও অন্তিয়ার সহিত বোগ দিলেন। ১৭৮৭ খুটাকে ব্রু ঘটে। এ যুদ্ধে ত্রুছেরা অন্তিয়ার উপর কতক্টা প্রাধানালাভ করে, কিন্তু ক্রছেরা অনিকট পরাজিত হয়। ইহার পর ফ্লতানের মৃত্যু হয়।

(১৭৮৯-১৮•৭)—তৎপরে তৃতীয় মুস্তাফার প্র তৃতীয় দেলিম রাজাহন। এ সময়ে ক্লয়-অস্ত্রির যুদ্ধ চলিতেছিল। करबक यूरक जूकक भन्ना बिन्ड इहेग। এই यूरक जूकक स्वःन হুইড, কিন্তু ইংলও, প্রাসিয়া ও স্থইডেন মধ্যন্থ হুইলেন। ১৭৯১ খুষ্টাবে নিষ্টাওয়াতে অক্সিয়ার সহিত সন্ধি হয়। ইহাতে কুক্ষ হত রাজাগুলি ফিরিয়া পান। ১৭৯২ খৃষ্টাবে বেসিতে কঁষিয়ার সহিত সন্ধি হয়। তুকক ক্রিমিয়ার দাবী ছাড়িয়া रमम ७ निष्ठेत्र नमी छेज्य तारकात नीमातरण निर्कातिङ इय। এই সময় বোনাপাটী মিশর জয় করায় ফ্রান্সের সহিত युद्ध घटि, किस्र देशक मिन्द्र डिद्धांत्र कतिया अर्डे ०० वृष्टीत्म जूरकरक ध्रमान करतन। ১৮०० थृष्ठीरस ख्रमजान मिनम ক্ষবিরা, নেপল্স ও ইংলভের সৃহিত সন্ধি করিরা আইওনীয় बीभावनी नथ्न करवन । ज्वाडान त्रिनिम এই ममग्र प्रवाशीय धत्रार्ग रेम्छ गर्जन करबन ७ म्ह अपनी ७ श्रिवर्डि करतून। ইভিমধ্যে ইংলণ্ড ও ক্ষিনার প্রতিবন্দিতা জ্মিল। ফ্রাসীর व्यद्याचनात्र सन् ७ जूकरक १४०७ वृष्टीत्स युक्त वैथित। ইংলও তৃক্ষের সহার হইলেন। রুষ দানিয়ুবের তীরে অগ্রসর इहेट नार्शित्। स्विनिरनित ७ मुक्छि बिनिड इहेबा स्नडान द রাম্যচ্যত ও কারাক্তর করিল।

, (১৮০৭৮)—তৎপরে প্রথম আবছন হামিদের প্রত্ত মৃত্যাফা রাজা হন। ইনি তৃতীয় সেলিমের সংস্থারবিধি

পরিত্যারপূর্মক প্রাচীর, প্রথা অবন্ধন করিয় বিজ্ঞাহ দমন করিলেক। কব কর্ত্ব ভূকচের নৌবল পরাজিত হইল। ক্ষণ্টু কনামক প্রাধেশের গাশা মুখ্যাফা বৈরক্তার হঠাৎ ননৈতে আগিয়া স্থলতালকে রাজ্যচাত করিছে চাহেন। কারাবছ ভৃতীয় সেলিমকে এই বিজ্ঞোহের মূল বোধে স্থলতান মুখ্যাফা তাঁহাকে বিনম্ভ করিতে আদেশু দেন। কিছ তিনিই ক্ষনতি-বিল্যাকে গাশাকর্ত্ব রাজ্যচাত হন।

(১৮০৮-৪০)---জৎপরে তাঁহার প্রাতা বিভীয় মাধুদ রাকা হন। ইনি স্বতান ভ্তীয় দেলিমকে কারামূক করেন ও তাঁল্য উপদেশমত বাজহ করিতে থাকেব। এখন মুরোপীয় জ্বরাক্ত রাজ্যের সহিত প্রতিবোগিতা রাধিয়া চলিতে হইলে তুফ্ছে দেসমত সংখার আবঙ্গক, বৃদ্ধ প্রস্তান নব স্থলভানকে ভিৰিবয়ে উপদেশু দিকে লাগিলেন । পাশা মুন্তাফা প্ৰধান উলীর হইলেন। সংকারবিধি অবলম্বন করায় জেনিসেরিগণ জাবার বিজোহী হইল। বিজ্যেহীরা অন্তঃপুর আক্রমণ করিল। রাল্যরক্ষার্থ প্রধান উলীর রাল্যচ্যত স্থলভান চতুর্থ মুস্তাফাকে নিহত করিলেন এবং নিজেও কেনিসেরিগণের ক্রোধের মুধে ভত্মীভৃত হইলেন। স্থলতান বিতীয় মাক্ষুদ ওসমান-বংশধর বলিয়া প্রাণ পাইলেন। তিনিও স্বীয় সিংহাসন নিষ্ণটক করিবার জন্ত চতুর্থ মুগ্তাফার শিশু পুত্রকে বিনাশ করিবেন। জেনিসেরিদিগের ইচ্ছাফ্সারে তিনি সংস্থারপ্রথা (নিজাম জেদিন) পরিত্যাগ করিলেন। তিনি ইংলভের সহিত সদ্ধি ক্রিরা ফ্বিরার সহিত যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। এই সমরে অনেক অধীন রাজ্য স্বাধীনতা অবলম্বন করিল, কাজেই বাধ্য रुधेया ১৮১२ थुडोरक युकात्ररहे कृषियात महिल मिस कृतिरण ' हरेग। थाथ ७ दिनादिखियात পूर्वाच नमख दिनम, हिन्निदिवत किम्रमः । এवः मानिमूर्वत्र साहाना कृषिमारक मिर्ड हहेग। গ্রীকেরাও এই সময় স্বাধীনতা খ্রক্ষন করিয়া তুরুজকে একবারে হীনপ্রভ ও হীনবঙ করিয়া দিল। অনেক बूरताभीव तावा औरमद शक रहेग। हेश्म ७, खांच्य ७ कृतिवाद नोरम अकल बहेश ১৮२१ वृष्टीत्य नालावित्वात गूल जूकत्कव स्तोदन अस्वादत स्वःत कतिन। **अहे** बृद्धत शत और यम्पूर्व चारीन बहेक। बास्किता ताकवरत्नत अर्था अर्थम दावा हरेलम ।

১৮২২ খুৱাব্দের পরে বিজোহী দমন করিতে গিরা আপন থ্রির পত্নী ও ভার্ক রাজপ্রথমিদিকে হারাইরা মাজুদ জেনি-সরিদিপের মুনোচ্ছেদ করিলেন। তাহা হইতে তুক্তে নবস্থার প্রণাত হইল। মনদেবিয়া ও ওয়ালাসিয়া নইয়া বহু দিন হইতে ক্ষরের কহিত বিদাদ চলিতেছিল। ১৮২৬ খুটাবে

আকৃক্রণের দৃষ্টি অর্থারে গোল্যাল বিটিয়া বার। এই সমর মাজুদ আপনার দল বল বৃদ্ধি স্বরিয়া লইলেন। তথ্নও औरमत रिवार छनिताहिन। प्रतानीत प्रामन औरमत খাধীনতার পক্ষপাতী ছিলেন। মানুদ ব্রোপীর রাজ্ত বুৰ্ণকে জ্ৰন্দেশ না করিবা জীলে মুসলমান অধিকার স্থায়ী कत्रितात अस विरमव वक्षवान् रहेरणन । ১৮२৮ थ्होरक करवत সহিত যুদ্ধ বাঁথিল। ক্লবসেনাপতি ডিবিস (Diebitsch) সামলা নামক ছানে ভূক্তৈভালিগকে পরাজর করিয়া আডুিরানোপল অধিকার করিলেন। এই সমর পান্ধিবিচ্ নামে আর এক ক্ষমে দাপতি আর্জ্কৃষ্ আক্রমণ করেন। মান্দ্ৰ আডিুয়ামোণলে (১৮২৮ খৃঃ অব্দে) ক্ৰের সহিত সন্ধি कतिया क्लिटनन। छाहाए बीम्बाका निर्सियाम चारीन इहेन। यनप्रविद्या ७ ७ बानानिया चारीन, याननयकि नाज করিলেন। এ ছাড়া কএকটা জনপদ রুবের অধিকারভুক্ত हहेत। ১৮৩১ थुंडोस्म ज्यानात है किल्पित भाग महत्त्रम আলীকে আঁক্রমণ করেন, কিন্তু এই যুদ্ধে স্থলতানদৈত্তই পরাস্ত इश्व। देहात भन्न वर्ष हेवाहिम भागा कन्छास्टिताभरमन ७६ ক্রোশ দুরে কুটারা নামক ভানে অগ্রসর হইরাছিলেন্। ১৮৩৩ वृष्टीत्क प्रक्षि रहेन, ভাহাতে মৃত্यन व्यानी प्रमेख पित्रीया त्राका এवः ইত্রাহিম পাশা आদানার কর্তৃত্ব পাইলেন। এই সময় বিজয়ী ইত্রাহিম পাশার কবল হইতে কন্তান্তিনোপল রকা করিবার জন্ত রুষসম্রাট্ নিকোলাস্ জলপথে একদল সৈক্ত পাঠাইয়াছিলেন। এই জন্ম (১৮৩৩ খৃঃ অব্দে) আভিয়ার-ক্ষেলে-शिष्ड अक मिक्क इम्न, जाहाए हिन्न इटेन दन, ऋरमन कान विभन्न नार्तित्विम् भात्र शहेत्रा याहेर्ड भातिरव ना । ১৮०० थुः जरम जूक्तरहत्र त्नोरमनाशन जिल्ली चिध्कात कतिल। ইহার পর স্থলতান মাক্ষুদ মহম্মদ আলীকে দমন করিবার क्ष आवात न्छन युद्ध (चारणा कतिरामन, किन्हु ১৮०৯ वृहीस्म ২৪এ জুন ইব্রাহিম্ পাশার নিকট তুরুদ্ধের সৈভাগে সম্পূর্ণ ক্সপে পরাভূত হইয়াছিল। তাহারই ছয় দিন •পরে ২য় भाक्ताद्रमञ्जाह्य।

হর মাক্ষ্ দের প্র আব্দুল মেজিল্ ১৬শ বর্ষ বর্ষের বিহালনে স্থাবোৰণ করিলেন। এই সমর নেজিব্ল-মুদ্ধে পরাজর, কপুদান পাশার বিশাস্থাতকতার মহক্ষদ আলীর নোসেদাদলের অপচর এবং বিছরী ইআহিম পাশার ক্লাগমনে বেন ত্রুছ-সাম্রাজ্য-বিলোপের সন্তাবদা হইরাছিল। এই সকটকালে অ্লতান ইংরাজনিংগর সহিত (লগুনে ১৮৪০ খ্যাসকে ১০ই জুলাই) এক সন্ধি হাপন্ত করিলেন। সন্ধি অনুসারে একদৰ ইংরাজ ও করাসী কৌসেবা আন্বিরা একর, সিদন ও

নিরীরার উপকৃশবর্তী কঞ্জনী নথর অধিকার করিল। ঐ সকল স্থান ইরাহিম পালা বাধা হইরা ছাড়িরা দিলেন। লীত্রই শাত্তি স্থাপিত হইল। মহস্থদ আলী বার্থিক কর বিরা পুঁক্ষাস্থ-ক্ষমে পালা হইরা রহিলেন। , ,

অ লমর ভুরুকের জেঁড়ো মুদ্দমানগণ মহা গোলমান আরম্ভ করিরাছিলেন। তাঁহারা ভাবিলেন থে, এবার ° দেখিতেছি সকলেই খুটানের অনুকরণ করিবে, পূর্ব্ব রীতি-নীতি আর থাটবে না। স্থতরং ইস্লাম্ ধর্মের অবনতি হুইবে ভাবিরা তাঁহার। অভ্রধারণ ক্রিলের। রসীদুপাশা সর্কা नगरक थानात कतिरामन, ऋगजारमत व्यापान व्यापान मरशा সকল ধর্মের লোকই সমভাবে গৃহীত হইবে, সকলেই সমভাবে আপনাপন ধর্ম কর্ম পালন করিতে পারিবে, বিধর্মীর উপর অম্ভায় করিয়া কোন রূপ কর আদায় করা হইবে না। কিন্তু এই প্রস্তাব ভুক্তকের বৃদ্ধ আমীর ওমরাহগণের ভাল লাগিল না, স্থভরাং ভাঁহারা সকলেই অসম্ভোব প্রকাশ করিছে नांशितन्। এमिटक श्र्वांभीत जूत्रक्त्र मर्था जानक খুটান প্রজা বাস করিত। তাহারাও এখন স্থবিধা পাইরা আপনাদের ভার্থকংরকণের জন্ত ক্ষরাজের হল্তে, রাজ্য সমর্পণ করিতে প্রস্তুত হইল। এদিকে ফ্রান্স, ক্ষন্তিয়া ও ইংলণ্ডের রাজদূতগণ তুক্ষের সভায় স্থােগ পুঁজিতে ছিলেন। কিন্ত এই সময় বৃদ্ধিমানু স্থলতান নিরক্ষেণ আইন চালাইয়া খুষ্টান প্রজাগণকে শান্ত করিলেন। ৰাম্ভবিক এখনও য়ুরোপীরগণ আবহুল মেজিদের সমূরত প্রক্রতির স্থাতি করিয়া থাকেন। ১৮৪৯ খৃষ্টাব্দে হলেরির প্রধান রাজপুরুষগণ আদিয়া সুলতানের আশ্রর গ্রহণ করেন। অজিয়া ও রুষসমাট তাঁহা-দিগকে ধরিয়া, দিবার **জন্ত অ**মুরোধ করেন। কি**ন্ত স্থ**গতান °তাঁহাদের প্রতাব উপেকা করিয়া বলিয়াছিলেন, "আ**লি**ত ব্যক্তিকে রক্ষা করাই আমাদের জাতীয় ধর্ম। প্রাণ বিদর্জন করিয়াও আমার জাতীয় ধর্ম রক্ষা করিয়া থাকি।"

পূর্ব্বে ক্লযের সহিত তুক্তকের কএকটা সন্ধি হইরাছিল বটে, কিন্তু ঐ সকল সন্ধিতে ক্লযের তার্থ অড়িক্ত ছিল। • রুষ বরাধারই তুক্তকের উপর তীত্র দৃষ্টি রাণিরাছিলেন।

তুরুকের গ্রীসসমাজভুক খুটানগণ স্বলতানের বিরুদ্ধে রুবরাজের নিকট অভিযোগ করেন। আর পূর্ব সদ্ধিপত্তের বিরুদ্ধ পাঠ গ্রহণ করিয়া তুরুকের আভ্যন্তরিক ব্যাপারে হত্ত-কেপ করিলেন। রুবইসম্ভ আসিয়া মলদেবিয়া ও ওয়ালাসিয়া দথল করিয়া বসিল। তথন স্থলতানও নিশ্চিত থাকিতে পারিলেন না। তাঁহার সেনাপতি ওমার পাশা বল্কান্ ও দানিরুব ননীভীক্ষ হুর্যগুলি অধিকার করিয়া বসিলেন।

এদিকে করাদী ও ইংরাজ নোদেশা বেদিক উপসাগরে আদিরা গল্পর করিল। অভৌবর মাদে তৃত্তক রূবের বিরুদ্ধে যুদ্ধ বোর্বণা করিলেন এবং ইংরাজ ও করাদীদিগকে সাহায্য-দান করিবার জন্ত আহ্বান করিলেন।

ছোট अवानानियात्र कृष्टे मरन क्याक्यात्र युद्ध हहेन, व्यक्ति युष्करे अवदेशस्य भवाख रहेट जाशिन। नरववत्र मार्श करवत्र *नोरमना भिराखरभाग रम्मत्र इहेर*ल राहित हहेबा मिछ्टित পথে ভুকীযুদ্ধভাহার্ডগুলি 'মষ্ট করিল। তৎপরে (১৮৫৪ थुडीटक) क्यरेमच मानिद्वनमी शांत रहेता त्माव्कात हर्नश्री व्याक्रमन केतिन। धरे नमग्र हेरनश ७ खान गुहत्वावना, क्रियोहिन। ১৫ই क्न क्यान वह ८०%। ७ विखत रेमछ ক্ষরের পর সিলিপ্রিয়া,আক্রমণ করিয়া ফিরিয়া আসিল। कुर्करेमञ्चगन । नानियुर भात रहेबा अवटेमस्त्रत भनार धावमान **रहेन। निष्ठेत्ररार्या नामक द्यारन क्यरमना शतिन। ७७८५८**म অব্রিয়ার সৈম্ভগণ তৃক্ষের অধিকারভূকে যে সকল জনপদ দ্বল করিয়া রাধিরাছিল, ভাষাও এখন ছাড়িয়া দিল। ইতি-मर्था देश्त्राक ७ कतांनीत त्रवंखति कृष्कनागरत व्यर्वे कतिश्रा ওডেদা নগরের উপর গোলাবর্ষণ করিতে লাগিল। স্বযরণতরি भिवाख्यां विकास व्यामिशा व्याञ्चल वहेन। ১৮৫8 थुटेस्स ১ ४ रे राष्ट्रिय मार्गान रमणे वार्गछ व नर्छ वाश्रानात्त्र व्यथीत ইল-ফরানী দৈল্পণ ক্রিমিয়া সহরে অবতরণ করিল। এই कारन य क्य़ी ভीषन यूक हरेबाहिल, यूरताश्रीय देखिहारम তাহাই 'ক্রিমিয়া-সমর' নামে খ্যাত।

यभीन क्यरेमञ्चर्भ मण्पूर्वत्रत्म भद्राव्यिक इहेन । अदिनास हेक-कवामी रमना चानिया वानाक्रावा ७ क्विम वन्तव चिध-কার করিল। ২৬এ সেপ্টেম্বর তাহার। শিবাস্তপোলের मक्तिगाः म नवन कतिया दाविन। এই সময় माद्रुग मीटल **শ্বিস্তিশোবের উপরে ইংরাজ ও ফরাসীলৈক্তরণ তুরুছ-**রাজ্য রক্ষার জন্ম যেরপ দাফণ কট সহু করিয়াছিল, তাহা त्रनिशं (भिष्ठ क्या यांग्र ना। क्रिक्टद्र श्र वाहित्य महावनभानी ক্ষ্পেক্ত তাহাদিগকে আক্রমণ করিতেছে, ক্লম স্থাপনার গৌরব রক্ষা করিবার অন্ত প্রাণপণে চেষ্টা করিতেছে। কিন্ত তাহাদের নিকট মৃষ্টিমের ফরাদী ও ইংরালদেনানী তুর্ক-रमनात्र माहारमा करमत रमहे विश्वन भोतव चर्स कतिन, जाहा সাতিশর প্রেশংগনীয়। এ সময় তুর্কসেনাপতি ওমার পাশাও यिक्र वृद्धिमञ्जा । विहन्दन्छात्र भत्रिष्ठत्र विद्या क्वरेत्रस्ट वात-ব্রি পরাজয় করিয়াছিল, ভুক্তের পঞ্চে মহাগ্রেরবের বিষয় छाहारण गरम्बर नाहे। स्पर्य कवानी बाक्यांनी भावी नगरव সদ্ধি হইরা উপস্থিত গোলমাল মিটিল। তুকুর্কপতি সলবেবিরা ও কুঞ্চনগরের উপকূলবর্তী নদীর মোহানা পর্যান্ত সম্প্র অনপদ এবং নিস্তার ও দানিযুব নদীর উত্তরাংশ ক্তক প্রদেশ ফিরিরা পাইলেন।

১৮৬১ খুটাকে আবছল আজিল সিংহাসন লাভ করিলেন।
ইহার সমর মন্টেনিগ্রো ভূক্কের অধীন রাজ্যরূপে গণ্য হয়।
১৮৭৬ খুটাকে আবছল হামীল (২র) সিংহাসনে আরেহণ
করেন। ইহারক সমর বিখ্যাত ক্ষত্কৃক সমর আরম্ভ হইল।
ক্ষম আপনার প্রণট গোরব প্রক্রার করিবার জল্প এবার
ভীমবলে ভূক্ক আক্রমণ করিল। পাদে পাদে ক্ষরের জর হইতে
লাগিল। অবশেবে ভূক্করাল (১৮৭৮ খুটাকে) ক্ষরেক বটন,
কার্ম্ ও আভাহান ছাড়িরা দিলেন। ক্রবের যুদ্ধ্যার ক্ষরণ
৩২ কোটা টাকা দিতে সক্ষত হইলেন, তদক্সারে ভাহাকে
প্রতি বর্ষে ৩১৮১৮০২ টাকা ক্ষগবর্মেন্টকে দিতে হয়।

फुक्फबाका शृर्स्त तह विच्छ हरेलं अथन हैराव ख्र प्रिमान ७७८०० वर्ग माहेन ७ (नाक मःशा 8७७৮०००। তুরুক্র (পুং) পদ্ধরুব্য ভেদ। তুরুদ্দদেশবাত ধুমাবর্ণ স্থপদ্ধি গাঢ়তৈলবন্ধ্য ভেদ, চলিত কথায় শিলারস (Oblibanum Indian incense, the resin of the Boswellia Serrata, the resin of the Ponus Longifolia) পর্যায়- यदन, ধুম, ধুমবর্ণ, স্থগন্ধিক, দিহলক, দিহলদার, পীতদার, ক্পি, পিণ্যাক, কপিন্ধ, কন্ধ, পিণ্ডিড, পিণ্ডিভৈনক, करत्रवत्र, कुछिमक, रम्भन, मिस्न, क्षिप्रकृत, यावन, তৈলাথ্য, পিণ্ডিক, জাব, যাবত। (শব্দরণ) ইহার গুণ স্থর্নি, जिक, करू, त्रिय, क्रं, करु, शिख, जामात्री, म्वक्रकः ও का नामक। (त्राक्रनिः) छावश्रकाम मर्ड-मिनात्रम दरन **८मटम उर्भन्न इम्र, এইজ** छ हेहादक कृत्रक करह। मिस्सक, क्रिटिंडन ७ क्रि, निवादरमद बहे क्री नाम अमिक। ७१-कहे, मधुत तम, जिन्न, उक्षवीर्धा, अक्रमनक, काखिवर्क्षक, नही (तत्र डे Mbत्रकात्रक, कर्श्वाधक धवः वर्षा, कूर्ड, व्यत्र, मार व গ্রহদোষনাশক। (ভাবপ্রকাশ) ই**রা** মধুর সহিত ভা^{রনা} निया भाषिक रहा।

"তুলকো মধুনা ভাষাঃ কাশীরঞাপি সর্পিষা।" (চক্রপাণি)

২ শ্রীবাস বৃক্ষ, বন্টাপাকল। (বিশ্ব) ভূকুক্রস্কুন্ত্রীড়, ভূরক্ণগৌড়। গৌড় বিবিধ, ভূরক্লগৌড় ও জা^{রিচ} গৌড়, ইহা ওড়ব। ইহা বীর ও বৌজ রসে গীত হর। ^{ইর্র} শ্বশ ও শপ বর্জিত। মূর্ত্তি—

"ভুক্তগৌড়আরঞ্চরপূর্চোক্শছাতিঃ। শৃথকভোগনীভক্ত বোকীবঃ ক্বচার্ডঃ॥" (স্কীডনার্নো जूर्पत्र थी, ১৩٠० बृंडोटक जानाजेकीन् वशन किरलांत जाजनन ক্রিতে যান, তখন ভূর্বর খাঁ নামক একজন যোগল স্কার खात्रज्यर्व मूर्कत खारतायन करतन। ১২०००० चर्चारतारी **১**নম্ভ দইরা ভিনি বসুনাজীরে দিরীর নিকটে আসিরা শিবির স্থাপন করেন। আলাউদীন্ পূর্ব্বেই সংবাদ পাইয়া শীত্র রাজ-ধানীতে ফিরিয়া আদেন ও' তাঁহার পূর্ব্বে উপস্থিত হন। আলাউদীনের বৈশ্বদল তথনও রাজপ্তানার পড়িরা আছে, কাৰেই তিনি অপ্রসর হইরা বৃদ্ধ করিতে পারিলেন না, কেবল দিল্লীর উপকঠের অহির্দেশ দিলা পরিধা ধনন করাইরা ছুই মান বৃদিয়া রহিলেন । মোগলেরা বাহিরে থাকিয়াঁ সহরে। রসদ যোগান বন্ধ করিল ও নগরের উপকণ্ঠে সুঠপাট আরেন্ড করিল। ১৩•৪ খুটাকে ছঠাৎ এক দিন রাজে এক মুসলমান ফ্কীরের কি এক আশ্রহ্য উদ্ধাবিত কৌশর্গে মোগলেরা হঠাৎ ভীত হইরা একবারে অবরোধ ছাড়িরা দেশে গ্রন্থান করিল। ভুৰ্বর খাঁ এত ভীত হইয়াছিলেন, যত দিন না দেশে পৌছি-লেন, ভতদিন তিনি পথে কোথাও থামেন নাই।

ভূর্ফরী (ত্রি) ভূফ হিংসায়াং বা॰ অরী। হস্তা, হই প্রকার স্থাণ ভর্ৱাও হস্তা, অখিনীখয় ভর্তা ও তুর্ফরী ও ক্লর্ডরি হস্তা। (अक् ১०।১०७।७ मांग्रण) [अर्च्हित (मथ ।] •

ভুর্ফরীতু (অি) ভৃফ-অরীতু প্ৰোদরাদিয়াৎ সাধুং। হস্তা। [जूर्कत्री (मथ।]

তুর্য্য (ত্রি) চতুর্বাং পূরণঃ চতুর-বং চ ভাগন্ত বোপঃ। চতুর্থ। "এক এবেশরস্তর্যা: ভগবান্ স্বাশ্রয়ঃ পরঃ।" (ভাগণ ৬।৫।১২) ু তুর্যা শবের একদেশি সমাস হয়, যথা তুর্বাং ভিকারা:

তুর্যাভিকা, পকে ষ্মা স্মাস হয়, ভিকাত্র্যাং।। पूर्व्यारशील (प्रः) कानकानार्थ यद्यस्म । .

"দ্ৰীকৃতং চক্ৰমুশন্তি চাপং কোদগুৰখং ধ্ৰু ভূৰ্য্যগোলং"

(সিদ্ধান্তলি)

जूर्यायोङ् (पूरं) जूर्याः ठजूर्थः वर्षः वरुषि वर-वि । ठजूर्थ বর্ষের পশু।

"जूरावाष्ट्र बर्बाझ्ट्रेन्हमः" (यक् >81>>) 'अूर्वावाष्ट्र ভুর্যাং চতুর্থং বর্বং বহজীতি পশু: অত্তুপুছ্দো ভূষোৎক্রান্তং **जूर्यावाई: १७:।' (त्यम्मी** भ)

पूर्व वि (बि) पूर्वः तष्टरक वन् जालाको हेन् श्रावामत्राविषां ।

 "ए(ग)व अस्त्री पूर्णशेषु विख्णांगव पूर्वती नर्वशेषां" (वक् >०। ১০৬া০) 'ভৃষ ভৃক হিংসায়াং। অসাত্মতও পুর্বরী ভাষাবিতত शृरवाश्त्राश्चार वर्गविकातः। _व वदाणार वाहनकारनेगाविरकाश्त्रीष्ट्र ি প্রভায়ঃ। উক্তং চাঞ্জনিক্ষকে (১০/৫) বিবিধা স্থাপ্তিবভি ভর্তা চ হস্তাচ ় ভণাখিনে চালি ভর্তারে ভুর্তরীভূ হতটির ' (নার্ব)

नांशः। क्नीरकका। "क्सीनत्रवा किया क्रीनः" (वक् ১।১৩০।৯) 'जूर्वनिख्नेवनिः किश्रः मध्यका।' (माह्रन) जूर्यन् (क्री) भक्कत हिश्यक। "वश्पृश्यपूर्वात" (बक् bib) >) 'कूर्सरन भक्कवाः हिःगरन ।' (नाव्य)

खूर्य्यभ (पूर) तृशरण्यः। "अयोविथ नर्षत्रः फूर्यभः यष्टरं" (अक् ১।৫৪।৬) "নৰ্য্যাদীন্ হি রাজঃ" (দারণ)। ইনি এবাতি পুত্র -ভূৰ্মক হওয়া অসম্ভব নম। কারণ ঋথেদে এক ছানে ইহার यष्ट्रक्षम नाम (पथा यात्र। 📍

जूर्तरभ (चरा) चिक, निक्छे । (निष्के)

তুর্বিস্তু (পুং) ব্যাভি রাজার এক পুত্র । ব্যাভির ঔরলে দেব-ষানীর পর্ডে ইহার জন্ম হর। ব্যাতি ইহাকে একদিনীডাকিরা কহিলেন, পুত্র ! বিষয়ভোগে আমার পরিতৃপ্ত হয় নাই, আমি ভোমার যৌবন প্রার্থনা করি, সহজ্র বৎসর ভোমার বৌবন উপভোগ করিয়া ভোমাকে গ্রহান করিব। তুর্বস্থ ব্যাতির এই কথা গুনিয়া কছিলেন, পিতঃ। আমি লয়া লইতে স্বীকৃত নহি।

"নু কাময়ে জরাং ভাভ। কামভোরপ্রণাশিনীং। " वनक्रशांखकक्रेगीर वृद्धिश्रावश्रवानिनीर ॥" (छात्रठ षा) ব্যাতি পুত্রের এই • কথা শুনিয়া নিতাভ কুর চুইয়া ভাহাকে এইরূপ অভিশাপ প্রদান করেন---

ভূমি আমার শরীর হইতে জন্মগ্রহণ করিয়া আপনার যৌবন দিতে খীকৃত হইলে না, এই জন্ত তুমি যেখানে রাজা হইবে, टम्हेथात्म क्षवानित्रंत्र मःकत्र इहेटव ध्वरः वाहानित्रंत्र धर्माधर्मः छान नारे, श्रीठित्नामाठात्र, माःगछक्क, नर्सना श्रमनात्र প্রস্তুও তির্গান্থোনি এই সকলের মধ্যে তুমি রাজা হইবে, এবং বিবিধ প্রকার কট্ট অনুভব করিবে। (ভারত আ॰৮৪ অ॰)

ভুর্কল্পর বংশ বিষরণ বিষ্ণুপ্রাণে নিম্নলিধিত ল্পণ আছে— ভূৰ্বস্তু পুত্ৰ বাহ, তৎপুত্ৰ গোৰ্ডান্ত, তৎপুত্ৰ তৈৰাৰ, তৎপুত্ৰ করন্ধম, তংগুত্ত মঙ্গুত অনপত্য হন, এই কারণে তিনি পুরু বংশীয় ছয়ত্তকে প্রজ্বপে গ্রহণ করেন। এই প্রকারে ব্যাতি শাপপ্রভাবে ভূক্সুর বংশ পৌরববংশকে আশ্রর कतिवाहिल। (दिक्शूर्॰ 8 काःम >७ का॰)**।**०

উব্বাতি (পুং) দালভেদ। "বৃহত্তৰং তৃৰ্নীতিং দক্তবে" (बद २।०५।३৮)

জুল (দেশজ) পরিমাণ দশুবিশেষ। • তুল্ট (বেশঅ) হয়িতাললিজ কাগন্ধবিশেষ, পূৰ্ব্বে এই কাগল অধিক পরিমাণে ব্যবহৃত হইত ়া প্রায় অধিকাংশ সংস্কৃত গ্ৰন্থ এই কাগৰে নিধিত। ইহা অধিক দিনস্বায়ী হয়। जुलना ((मनव) छेशमा, नाम्छ, हटीख। जूनमूज्की (तनम) पिछमूब शनिवित्नव।

₹8

खुल्ख (पूर) फूरत्रन त्वरभन छास्ति छा छ त्रक गैः। प्यायूशकीवि-मन्दर्कतः।

ভূলসারিশ্ব (বী) তুরেণ বেগেন সরভি স্থ-পিনি ভীপ্। ভূণ।
ভূলসী (বী) তুলাং সাদৃগুঃ ভৃতি নাশরতি সো-ক-পৌরাধিদ্ধাৎ
জীব্ পকদ্ধাণ। অধানখ্যাত বৃদ্ধ, (Oeymum Sanctum)
"ভূলসী" এই নামোৎপত্তির বিবন্ধ এইরূপ লিখিত আছে।
এই অখিল অগতে বে দেবীর ভূলনা নাই, তিনিই ভূলসী
নামে বিখ্যাত হইয়াছেন।

"ৰঙা দেব্যান্তলামান্তি বিবেৰু চাৰিলেৰু চ। ভুলসী ভৈন বিখ্যাতা" (শৰাৰ্ধচি॰)

বৃহদ্দপ্রাণের মতে—তকার অর্থে মরণ, উকার বৃক্ত হইলে, মৃত অর্থাৎ মৃতব্যক্তি যাহার প্রভাবে "লম্ভি" দীথি পাম, ডাহার নাম তুলসী।

"ডকারো মরণং প্রোক্তং ভদ্যোগ: ভাতৃকারত:। মৃতা লসতি সেত্যেবং তুলসীভাবে গীয়তে ॥"(বৃহদ্ধপুণ ৭।৬৩)

भवात्र—श्रमा, जीवा, -भावनी, विक्वत्राणा, त्रारत्या, श्रमा, कामचा, स्वत्रकृष्णि, श्रदणि, वरुभवी, मक्षती, रितिथामा, प्रमा, कामचा, धामा, रभोती, वित्रभमक्षती, प्रवत्नी, प्रवत्नी, प्रवा, करिक्त, क्रिक्त, क्रिक्त, रिक्वनी, भूगा, भविवा, मांची, प्रमा, भविभूणा, श्रमा, भक्षांत्रिणी, श्रव्यत्नी, र्थाण्ता, श्रमा, स्वा, वरुमा, द्रव्यती, र्यव्यत्नी, र्यव्या, व्यामा, श्रमा, वरुमक्षी, र्यव्या, वामा, श्रमा, वरुमक्षी, र्यव्या, वामा, श्रमा, वरुमक्षी, र्यव्या, वामा, श्रमा, वरुमक्षी, र्यव्या, वामा, श्रमा, वरुमक्षी, र्यव्या,

ক্ষুপত তুলদীর পর্যায়—ধরপত্ত, জন্মীর, পত্তপুষ্প, ফশিজ্যক, অরপত্ত, সমীরণ, মরুবক, প্রস্তৃপুষ্প।

গৰাতৃলগীর পর্য্যার—স্থান্ধক, গন্ধনামা, তীক্ষণ্ণন, গন্ধ-ফণিজ্ব, স্থান্ধ, দেবছন্দুভি। বিৰগদ্ধের পর্য্যায়—বৈকৃষ্ঠক, বিৰগন্ধ, অন্নবানক।

খেততুলনীর পর্যার—অর্জক, খেতপর্ণাশ, পদ্ধপত্ত, কুঠেরক, অপ্রার্জক, তীক্ষা, তীক্ষপদ্ধ ও সিতার্জক।

क्ष ज्ननीत्र भर्यात्र--क्षांक्रक, क्रक्षवर्गी, कानमान, कत्रानक, कानभर्गी, छत्रछि, मानका कानमानक, वर्सत्री।

বর্কারীতুলমীর পর্যায়—স্থরতি, স্থরতিবেষা, স্থরসা, অপেতরাক্ষদী, বর্কারী, কবরী, তুলী, ধরপুলা ও অঞ্চাদ্ধিকটি

ইহার গুণ—কটু, তিজরস, হানয়গ্রাহী, উঞ্চনীর্বা,
নাহজনক, পিতকারক, জায়প্রদীপক এবং কুন্ঠ, মৃত্রক্তন্তু,
রক্তনোষ, পার্যন্তা, কফ ও বাহুনালক। গুল তুলসী প্রা

वर्मकी वा वाव्हे ज्लामीत अन-क्यू में खबीर्या, क्यूंबम, विवाही, जीय, मिक्कातक, क्यूबाही, जिल्लामिक, मणुलाकी, निख-वर्षक अवः क्यू, वाब्, त्रक, क्यू, क्यू क्यिकीवान्य, (जाव्या)

हेरात पेरशिविव्यव वामरेयवर्जगुतारम धरेक्य जारकः তুলনী নামে এক গোপিকা গোলোকৈ কৃঞ্চপ্ৰিকা ক্লাধিকার गर्छत्री ছिल्मन । अक्ना त्राधिका देवारक कृष्कत महिल कीणा » করিতে দেখিয়া শাপ দেন যে, ডুমি মানবী মোনি প্রাপ্ত ৰও। ভুলসী এই লাপ গুলিয়া ছঃখিতচিত্তে ক্লঞ্জের শর্ণাপত্র ৰন। কৃষ্ণ তাহাকে কৰিলেন, তুমি মহস্তবোনি এহণ করিয়া ডপল্লা বারা আমার জংশ লাভ করিবে। এই শাপে ইনি ধর্মধ্যক রাজার ওরদে ও ভাঁহার পদ্ধী মাধ্বীর গর্ভে কার্ছিক পূর্ণিমার দিন অন্ম গ্রহণ ধরেন। তাঁহাকে দেখিয়া সকলে তুলনা দিতে অক্ষম হইয়াছিল, এই জন্ম তাঁহার নাম তুলদী। পরে তুলদী বনে গিয়া কঠোর ওপশ্চরণ করিতে আরম্ভ করিলেন। তাঁহার ধোরতর ভপতার সকলই উৰিম হইলেন["]। 'ৰভ কঠোর ভপস্<mark>তা হইতে পারে, তুল</mark>সীর ভাহা কিছুই অবশিষ্ট রহিল না, এই তপস্তায় ত্রন্ধা হির ধাকিতে না পারিরা তুলদীর মিকট জাদিয়া কহিলেন, তুলদী ভোষার অভীষ্ট বর লাভ কর ৮

তুলদী বন্ধাকে কছিলেন, 'ষদি আমার প্রতি দন্তই ৰইয়া থাকেন, তাহা বইলে আমাকে এই বর প্রদান করন। আপনি সর্বজ্ঞ আপনার নিকট লজার আবশুক নাই। আমার নাম তুলদীগোপী, আমি পুর্বে গোলোকে ছিলাম, একদিন আমি গোবিন্দের সহিত সজোগ করিতে করিতে মুর্চ্ছিত বইয়ছিলাম এবং আমার সজোগ তথনও পরিতৃত্ত হর নাই। এমন সমর রাসেখরী রাধা সেইখানে আসিয়া আমাদিগকে তদ্বস্থায় দেখিয়া কৃষ্ণকে ভর্পনা ও আমাকে শাপ দিয়ছিলেন এবং কৃষ্ণ আমাকে বলিয়াছিলেন, তুমি তপতা করিলে আমার চতুর্জ অংশ প্রাপ্ত হইবে। এখন আমি নারারণকে পতিরলে পাইতে ইচ্ছা স্রি।'

বন্ধা বলিলেন, 'শ্রিক্ষের শেকসমূত্তব স্থাম নামক গোপ রাধিকার শাপে দানবস্তে অন্তর্গণ করিরছে। তাহার নাম শন্তাচ্চ, গোলোকে তুমি ইহাকে দেখিলা কাম পীড়িতা হইয়াছিলে, রাধিকার তরে কোনদ্ধপ অহিতাচরণ করিতে পার নাই। এখন ইহাকেই তুমি পতিরপে এইণ কর, পরে ক্রককে প্রাপ্ত হইবে! নালারণের শাপে তুমি বৃক্ষ হইবে। তুমি অতি পূতা ও বিশ্বপাবদী। সকল পূপের প্রধান ও নালারণের প্রাণাধিকা হইবে। তুমি না হইলে সকল পূজাই বিফল হইবে।' তুলনী ব্রজার বাজা শুনিয়া কহিলেন, 'আপনি বাহা বলিলেন, তাহাই বত্য হউক। কিন্তু ক্রক্ষের নহিত ক্রীড়াত্তক হেতু আনার অভিনাব পূর্ব হয় নাই প্রারহক্ষর বিক্রক ক্ষেত্র আনার অভিনাৰ করি, ভোষার প্রসাদে গোবিক হুচ্চত। কিছ এখন অপ্রে আমার রাধাতীতি মোচন কমন।

ব্রন্ধা বোড়শাক্ষর রাধিফামত্র, তাব, ক্বচ প্রভৃতি প্রাদান করিলেন এবং 'ডুমি রাধার ভার হুডগা হইবে' এই বলিরা প্রহানে আহান করিলেন। ভূলনীও তপ্তা শেব করিয়া স্থচিতা হইলেন। এখানে শব্দুড় নামক দানবের সহিত ইহার বিবাহ হয়। শৃথচুড়ের বর ছিল ডেড়াহার স্ত্রীর সভীত্ব नहे इहेरन डाँशांत्र मृङ्ग इहेरत। শৃশ্চুড় পুর্যবাদ্য প্র করিয়া দেবভাদিগের অধিকার হরণ করিয়াছিলেম। দেরগণ किञ्चरकरे छारारक भन्नाबन कन्निर्छ नमर्थ रहेरनम ना। भरत দেবগণ সমবেত হইয়া একার নিকট গমন করিলেন। একা हैहानिशत्क नहेश नित्वत्र सिक्टे शमस क्षित्नन, निवल रेरकूर्छ विकृत निक्ठे हेरानिशरक नहेन्ना वाहरनन। विकृ বলিলেন, 'আপনারা সকলে শতাচুড়ের সহিত যুদ্ধ করুন, আহি শৃশ্বচুড় রূপ ধারণ করিয়া তুলদীর সতীত্ব নাশ করিব। পরে শব্দুত্ তোমাদের বধা হইবে।' এই বলিয়া নারায়ণ ঐরপ ধারণ করিয়া তুলসীর সতীত নষ্ট্র করেন। পরে তুলসী ইহাকে নারায়ণ বলিয়া জানিতে পারিয়া "ভূমি পাষাণ ছইরা থাক" এই অভিশাপ প্রদান করেন। স্বামীর মৃত্যু হইয়াছে জানিতে পারিয়া নারায়ণের চরণে পতিত হইয়া রোদন করেন। নারায়ণ বলেন, 'তুমি এই শরীর পরিত্যাগ করিয়া লক্ষীর সদৃশী আমার প্রিয়া হও, তোমার এই শরীর গওকী नहीं এবং কেশসমূহ তুলনীরক্ষরণে পরিণত হউক।' उरक्षार डाहाइ इहेग। ८गई खरवि नात्रायन निगात्रात्र चाह्म এवः नर्समा जूननीमःयुक्त थारकन, जूननी वाजीज ইহার পূজাদি হয় না। (ব্ৰহ্মবৈ ১০ প্রক্তেব ১৩—২১ অ)

র্হছর্মপুরাণের মতে—পূর্বকালে কৈলাসপুরে ধর্মদেব নামে বিফুভজিপরায়ণ এক সাধুদীল আহ্মণ বাস করিতেন, তাঁহার পত্নীর নাম রুকা। এই সাধ্বী আহ্মণী নিরুক্তর ধর্ম-চারিণী এবং পতির অহুগতা ছিলেন।

একদিন ধর্মবে • বাদ্ধণসভার সমাগত হইরা ক্ষণ্ডণ গান করিছে হিলেন, এদিকে তোজনের সমর অতীত হইল। বৃদ্ধা গৃহে অভ্যাগত অভিথির পূজা করিকা মনোহর কৈলাস-শিধরে প্রতিবাদিগণের বাটাতে পরিত্রমণ করিছে লাগিলেন, ইত্যবসরে ধর্মদেব গৃহে আগমনপূর্বক পদ্ধীকে প্রতিকাশ দর্শকের ও চঞ্চলা দর্শনে রোবাবিট হইরা তৎক্ষণাৎ অ্লাকণ অভিশাপ প্রদান করিলেন। তিনি কহিলেন, 'তৃমি কুধার্জা হইরা বৃহ্দ পরিভাগপূর্মকে ইত্তেজঃ ত্রমণ করিতেহ, এই ক্লাভ তোমাকে রাক্ষরী ক্লেশবারণ করিতে হইবে।' কুলা

ভংকণাৎ রাক্ষসী দেহ ধারণ করিরা পৃথিবীভবে •আসিরা বাবতীর লভ ভক্ষণ করিতে লাগিলেন। কিন্তু রাক্ষসী পূর্ব্যতি-ক্রুমে গো, রাক্ষণ ও বৈক্ষব প্রভৃতিকে হিংসা করিত না। বহুসংখ্যক জীব নষ্ট হওরাতে পৃথিবী অন্থিমালিনী হুইরা পড়িল। বৃন্দা আর কোন জীব না পাইরা তিন বিন উপ-বাস করিলেন।

भरत कीरवत चन्न किमारत अमन कतिरमन रमशासक শৈব ভিন্ন আর কোন সভাবিলিল না। তখন বুদদাণ দিন খনাহারে থাকিয়া শরীর ত্যাস করিলেন,। ॰ একদিন ষহাদেব পার্বতীর সহিত ভ্রমণ করিতে করিতে এইয়ানে উপনীত হইয়া কহিলেন, 'এই ক্লপবতী বুন্দা ধর্মদেবের পরী। অভিশাপ বশে রাহ্মণীরূপ ধারণ করিয়াও বাহ্মণ হিংসা করে নাই। ইহার বেহ নিক্ষল হওরা উচিত নতে, আমার বচনাত্রপারে এই বৃক্ষা ধরাতলে ভরুরণে জ্যাগ্রহণ করিয়া প্রীতিবিধান করুক। এই বুন্দ ভক্তরূপে প্রাক্তুত হইলে ইহার পত্তে বিষ্ণুর অর্চনা হইবে। ইহার পত্ত ভিন্ন मिन मुका প্রভৃতি কিছুতেই বিষ্ণুর পূঞা সমাহিত হইবে না। এই বুলা তরুরপিণী তুলসী নামে খ্যাত হটুবে। ইহার । পত্র পবিত্র হইতেও পবিত্রতম জানিবে। এই তুলঁসীর প্রতিদলে বিষ্ণুর ছাদশাক্ষর মন্ত্র বিরাজিত থাকিবে। আমি ও পার্বভী ইহার অধিঠাত্রী দেবতা হইব এবং নারায়ণ ইহার উপাভ হইবেন।

তৃণনী কার্ত্তিকমানে অমাবস্থা তিবিতে ধরাতলে তরুরূপে অন্মগ্রহণ করেন। (বৃহদ্ধিপুণ্ড অং)

ভূলদীমাহাক্ষা। কার্ত্তিকমাদে ভূলদীদল দিরা বাঁছার।
নারায়ণের অর্চনা করেন এবং দর্শন, স্পর্শন, ধাান, প্রণাম,
অর্চন, রোণণ ও দেবন করেন, উাহারা কোটিসহত্রসুগ হরিগৃহে বাস করেন। বাঁহারা ভূলদীর্ক রোপণ করেন, ঐ
গাছের মূল যত বিস্তৃত হইতে থাকে, তত্ত্যুগসহত্র পরিমাণ
ভাঁহার পুণা বিস্তৃত হইতে থাকে। ভূলদীদল দ্বিলা বে নারায়ণ্যুর পূজা করে, ভাহার জন্মার্জিত পাতক সকল বিনষ্ট

বংপুরা বিক্না প্রোক্তং তক্তে বক্ষাস্থলেবত:।

সম্প্রাপ্তং কার্ত্তিকং দৃষ্ট্রা নির্দেশ জনার্থন:।

পূলনীরো সহস্তিক কোবলৈজলনীদলৈ:।

নৃষ্ট্রা ক্ষা বাচা কার্ত্তিকে ননিভার্তিভা ।

রোগিতা সেবিতা নিঞাং পাশং হতি বুগার্জিকং।

জইবা জুলনী বৈন্ধ সেবিতা বিজ্ঞানত্ব ।

বুগাকোটসহম্রাণি তে বস্তি হবেপুর্বহ ।

রোগিতা জুলনী বাবং কুলতে সুল্বিভূতং ।

ভাবং বুগাক্ষাণি ভবোভি র্কুজ্ঞ হরি:।

ভাবং বুগাক্ষাণি ভবোভি র্কুজ্ঞ হরি:।

স্থাবং বুগাক্ষাণি ভবোভি র্কুজ্ঞ হরি:

স্থাবং বুগাক্ষাণি ভবোভি বুকুজ্ঞ হরি:

স্থাবি বুলিক বুলিক

হর ৮ বারু তুগদীর গন্ধ লইবাঁ যে দিকে গমন করে, সেই
সেই দিক্ পবিঅ হর। তুলদীবনে পিড্লান্ধ করিলে
তাহা পিতৃগণের অতিশর প্রীতিপ্রদ হর। যাহার গৃহে
তুগদীতলের মৃতিকা থাকৈ, তাহার গৃহে বমকিন্ধর যাইতে
পারে না। তুলদীমৃতিকা লিঠ হইরা যদি প্রাণ পরিত্যাগ
করে এবং দেই ব্যক্তি যদি ঘোরতর পাণী হর, ভাহা হইলে
যমকিন্ধরণ ভাহাকে দেখিতেও সমর্থ হর না। বিনি
তুলদীমৃলে দীপ দান করেন, তিনি বৈক্ষবপদ লাভ করেন।
যাহার গৃহে তুলদীকানন আছে, তাহার গৃহ তীর্থস্বরপ,
নর্ম্মণা ও গোদাবরী মান করিলে যে পুণ্য হর, একমার্ত্র
তুলদীবনসংসর্গে দেই ফল হর। যিনি তুলদীমন্ধরী বারা
বিশ্বপুলা করেন, ভাহরি আর গর্ভবাস্বরণা ভোগ করিতে
হর না, অর্থাৎ তাহার মোক্ষ হর।

পুষ্পকাদি তীর্থ, গলাদি সরিৎ,, বাহ্মদেব প্রভৃতি দেবতা, রিয়ত ভুলদীদলে অবহিত আছেন।

"প্করাভানি তীর্থানি গলাভা: সরিতত্তথা দ বাহ্নদেবাদয়ো দেবা বসস্থি তুলসীদলে ॥" (পদ্মপু') বেথানে একটা মাত্র তুলসী বৃক্ষ আছে, সেইথানে ত্রন্ধা, বিষ্ণু ও শিব প্রভৃতি ত্রিদশ সকল অবস্থিত আছেন।

প্রমধ্যে কেশব, প্রাত্রে প্রস্থাপতি, প্রবৃত্তে শিব সকল সমল অবস্থিত আছেন। ইহার পুলে লন্ধী, সরস্বতী, গান্ধরী, চক্রিকা ও শচী প্রভৃতি দেবীগণ নিত্য বিরাজিত আছেন। ইন্ত্রে, অগ্নি, শমন, বরুণ, পবন ও কুবের প্রভৃতি দেবগণ ইহার শাধাতে বাদ করেন। আদিত্যাদি গ্রহ, বস্থ, মন্থ ও দেবর্ষি, বিভাধর, গন্ধর্ম প্রভৃতি সকল দেবয়েনি ভূলসীপ্র আশ্র করিয়া আছেন।

যাহার। বৈশাধমানে তুলনীবৃক্তে সেচন করে, তাহারা অখনেধের ফল লাভ করে। তুলনী সদৃশ এমন প্রাও মুক্তিপ্রাব বৃক্ষ আর নাই।

ভূলদী হতে করিয়া যদি কেহ মিথা শপথ বা মিথ্যাকথা বলে, 'তাহাঁ হইলে যত দিন চতুর্দশ ইক্স থাকে, ততদিন ভাহাকে খোর কুত্তীপাকু নরক ভোগ করিতে হয়।

তুলসীচরন নিবেধ। পূর্ণিমা, অমাবক্তা, বাদশী ও সংক্রান্তিতে তুলসী চয়ন করিতে নাই। তৈল মর্দন করিয়া মধ্যাক্ত মান না করিয়া নিশি ও সন্ধ্যাকালে ও রাত্রিবাদ পরিধান করিয়া বে তুলসী চন্দন করে, তাহারা হরিয় গস্তক ছেদন করে।

তুলসীদলপূপাৰি বো হলাছহতে মূৰে । আৰ্টিকে সকলং পাপঃ সোধত অলাৰ্জিতং নহেছ। যোগতা তুলসী থাইং বৰ্জিত বহুখাতলে। ভাবং কলনহয়াৰি বিকুলোকে মহীৰজে ঃ" (প্ৰসুকু) তুলসীচরনবিধি। মধ্যাক্ত থান করিয়া ও পবিত্র বসন্
পরিধান করিয়া তুলসী চরন করিতে হইবে। তুলসীপর
ধীরে ধীরে চরন করা কর্ত্তব্য, বেন শাধা কম্পিত না হয় ?
শাধা ভগ্ন হওরা মহাপাপ, চরনের পূর্বে ভক্তি করিয়া নিয়লিখিত মন্ত্র পাঠ করিয়া ভিন্নার করতালি ধ্বনি করিবে,
তৎপরে শনৈঃ শনৈঃ পত্র চরন করিবে। চরনমন্ত্র—

শ্বাতজ্বসি ! গোবিশহদরানন্দকারিণি !
নারারণত পূজার্থং চিনোমি ডাং নমোহন্ত তে ।
কুত্বমি: পারিজাতাতৈঃ তুগকৈরপি কেশবঃ ।
ডরা বিনা নৈব তৃত্তিং চিনোমি ডামতঃ ভড়ে ।
ডরা বিনা মহাভাগে সমতং কর্ম্ম নিক্ষলং ।
ডাতজুলসি দেবি ডাং চিনোমি বরদা ভব ॥
চরনোত্তবহুংখং বদেবি তে হাদি বর্জতে ।
তৎক্ষমত্ব জগ্যাত্ত্বলসি ডাং নমামাহং ॥"

(ক্রিয়াবোগদার)

ত্ৰসমৃতজ্ঞানি সদা খং কেশবপ্রিয়া।
কেশবার্থে চিনোমি খাং বরদা ভব শোভনে ।
ভবলস্তুবৈঃ পত্রৈঃ প্রামি যথা হরিম্।
ভবা কুরু পবিত্রালি কলৌ মলবিনাশিনি ॥" (কলপুং)

এই সকল মন্ত্রপাঠ করিয়া তুলসীদল চয়ন করিয়া বিষ্
পূজা করিলে লক্ষকোটি ফলপ্রদ হয়। বাদশী প্রভৃতিতে
তুলসীচয়ন করিতে নাই। বিষ্ণুপূজার জন্ত এক বাদশী
বাতীত আর সকল নিষিদ্ধাদনে তুলসী চয়ন করা যায়।

"সংক্রান্তানে নিবিজোহপি তুশঅবচয়ঃ স্বতঃ।
 পরং প্রীবিক্তটকাল্প বাদখাদেব নেবাতে॥" (বিকৃৎপ্রোতর)

ত্লসীকাষ্টমালামাহাত্ম্য। বিষ্ণুস্ক জিপরারণ প্রত্যেক বৈষ্ণবের ত্লসীকাষ্টের মালা ধারণ করা অবশ্র কর্তব্য। বে তুলসীমালা ধারণ করে, তাহার পদে পদে অব্যথম বজ্ঞের, ফল হয়। তুলসীমালা বৈষ্ণুবদিগের চিক্ অবশ্য অন্ত বচনাস্তরে ত্রান্ধণের কাষ্টমালা, যতির যানারোহণ ও বিধ্বার পট্টাশব্যা দেখিলে সচেল স্থান করিতে হয়।

"কার্ত্তমালাধরং বিপ্রাং বিজিনং যানরোছিণং। শারীজাং বিধবাং দুট্। সচেলং জলমাবিশেৎ ॥" (পর্ন্ত্ত) এই বচনাস্পারে রাক্ষণের তুলসীমালা ধারণ নিবিত্ত হইন পড়ে। বৈক্ষবেরা ইহার উত্তরে বলেন—তুলনী কাঠেজর লাদ মালা ধারণ নিবেধ। তুলসীমালা ধারণ নিবেধ এ বচনের এক্লপ অভিপ্রায় নহে।

শ্বার্ত পণ্ডিভেরা কৰিয়া থাকেন—ইহা বিপ্রে**ড**র ^{পা} ডাহার পোষক এই বচন দিয়া থাকেন— "ভূলনীগৰ্জাভেন মালোন ভব ভূবিতঃ।" বিএখং ন চ তং কাঠমালাং গ্লগভাং কুরু॥"

(পাছোভরখ•)

এতত্তির অপরের মত বিফুদীকাবিহীন বিপ্রের ইহা ধারণ করিতে নাই।

তুলসীর স্তব। "বৃন্দাং বৃন্দাবনীং বিশ্বপ্রিক্তাং বিশ্বপাবনীং। পূলাসারাং নন্দিনীঞ্চ তুলসীং রুক্ষজীবনীং॥ এতরামাইকক্ষৈতৎ স্তোত্তঃ নানার্থসংযুক্তং। যং পঠেবাঞ্চ সংপ্রা সোহস্বমেধং কলং লভেও॥"

(उक्तरैववर्खभू ं)

বাঁহারা এই তব প্রতিদিন পাঠ করেন, তাঁহারা অখনেধ ফল লাভ করেন। তুলনীপত্র হারা সংগ্লেপ্তা করিতে নাই। "ন তুলভাঃ বিনায়কং"। (স্তি)

তৃশদীবিবাহ ও তুলদীপ্রতিষ্ঠা বিধি। প্রথমে তুলদীবৃদ্দ গৃহে বা অক্সরানে রোপণ করিবে। পরে তিন বংসর পূর্ণ হইলে দেইথানে একটা বেদিকা প্রস্তুত করিতে হইবে। তাহার পর বিশুদ্ধকালে বা কার্ত্তিকমাসে বৈবাহিক নক্ষত্তে, দেইথানে মণ্ডণ প্রস্তুত করিতে হইবে ও কুণ্ডবেদী নির্মাণ করিবে। এই প্রতিষ্ঠা পূর্ণিমাতেও বিশেষ ফলপ্রদ।

তাহার পর শান্তিকর্ম, মাতৃত্বাপন, বৃদ্ধিশ্রাদ্ধ প্রভৃতি
বিবাহ বিধির মত সকল করিতে হইবে। বেদবেদালপারপ আহ্মণদিগকে ঋদ্বিক্ নিযুক্ত করিবে, বৈষ্ণব বিধান
দারা বৰ্দ্ধনীকলস স্থাপন করিবে। এইথানে মণ্ডপে লক্ষ্মীনারারণ বিগ্রহ স্থাপন করিতে হইবে। স্থা অন্তমিত হইলে
ভতল্যে মন্ত্রপুর্বক বিবাহকর্মবং স্কল কার্য্য স্মাপন
করিয়া হোম করিবে।

শওঁ নমে। ভগবতে কেশবার নম: স্থাহা, নারারণার স্বাহা, মাধবার গোবিজ্বার বিষ্ণুবে মধুস্পলার ত্রিবিক্রমার বামনার প্রীধরার ক্রবীকেশার পল্লনাভার দামোদরার উপেক্রার জনিক্রমার অচ্যুতার আনজ্ঞার গদিনে চক্রিণে বিষক্ষেনার বৈকুঠার আনার্দ্দনার স্কুলার অধাক্ষরার স্বাহা" এই মলে হোম করিতে ইইবে; পরে বলমানপত্নী ও সংগাত্র বল্পনিগর সহিত মিলিন্ত হইরা ইহা প্রদক্ষিণ করিবে। বেদিকাতে তুলসীর পাণিগ্রহণে স্ক্র, শাক্ষিক্রাধ্যান, ক্লপ ও বৈক্ষবসংহিতা পাঠ ক্রিতে হইবে।

পরে নানাবিধ সক্ষণবাদ্য করিয়া পূর্ণাছতি প্রধান করিতে হইবে। ভাহার পর অভিবেকবিদি সমাপন করিয়া পরিক্-বিপর্কে ইজিনা বিভে হইবে। প্রইরণে বিষ্ণুর সহিত দেবী পুলসীকে অর্চনা করিবে। বিনি এইরণে বিষ্ণুর সহিত ত্লদীপ্রতিষ্ঠা, ত্লদীয়োপণ ও ত্লদীর দেবা করিয়া থাকেন, তিনি বিপুক্ত ভোগ লাভ করিয়া মেক্লিলাভ করেন। (ছরিভজিবিণ ২০ রিয়াণ)

"রোপরেং তুলসীং কর দেবরেচ্চ প্রবন্ধত:।
প্রতিষ্ঠাপ্য বংগাকেন বিক্না সহ মানব:।
ন মোকং লভতে কর্ত্তবিক্তালকং তথাকরং।
প্রাপ্রোতি বিপ্রান্ ভোগান্ বিক্রনা সহ মোদতে।"
(হরিভক্তিবি)

্ প্রত্যেকের গৃহে অন্ততঃ একটা ত্লগীরকী রোপণ করা কর্তব্য।

তুলসীক্রবি, একজন হিন্দিক্রি। ইহার পিভার নাম বচ্চরার। ইনি ১৬৫৫ খুটাকে ক্রিমালা নামে একথানি হিন্দি গ্রন্থ বিদ্যালয় বিদ্যালয় বিদ্যালয় এই রচনা করেন। ইহাতে ৭৫ জন পূর্ববর্তী ক্রির ক্রিডা উদ্যুত হইয়াছে।

ভূলসীদান, হিন্দ্খানের সর্বপ্রধান ভক্ত কবি। কাছারও
মতে, ইনি কনোল ব্রাহ্মণ, আবার ব্যাহারও মতে সরষ্পরীণ
ব্রাহ্মণক্লসভ্ত। কনোলীর ব্যাহারও মতে সরষ্পরীণ
ব্যাহারত্বল গুণা প্রকাশ করিয়া থাকেন, কিন্ত ভূলসীদান আগনার কবিভাবলীতে নিথিয়াছেন, 'লারো কুল-মলন' অর্থাৎ
যে কুল মালিয়া বেড়ার সেই কুলেই আমার জন্ম। ইহাতে
তাহাকে কনোলীর না বলিয়া বরং সরষ্পরীণ বলিয়া গ্রহণ
করা ধায়। ইহার ছবে উপাধি ও প্রাশ্ব গোত্ত। ১৫৮৯
সন্থতে ইনি জন্মগ্রহণ করেন। পূর্ব্বে অনেক হিন্দুরই বিখাস
ছিল যে লোড়ার শেষ ও মুলা নক্ষত্বের প্রথমে অভ্তক্তম্লা
(গণ্ডে) জন্ম গ্রহণ করিলে সে পিতৃহক্তা ও অভি নীচ
প্রকৃতি হয়। এরূপ প্রকে পিতা ভ্যাস করেন। যদি দেহবশতং ভাগে করিতে না পারেন, ভাহা হইলে অন্ততঃ আট
বর্ষ তাহার মুখ দর্শন করিতেন না। ইহাই জ্যোভিষের আদেশ।

ভূলগীদাগও ঐরপ অভ্কম্ল নক্ষত্রে ক্ষাগ্রহণ করেন।
বোধ হয় এইলছ ওাঁহার পিতা ওাঁহাকে পব্লিভ্যাগ ক্রিয়াছিলেন। সে কালে এরপ শিশুকে অপর কোন গৃহত্ব
প্রতিপালন ক্রিতে চাহিত না। সৌভাগ্যক্রমে ভূলগীদাস
এক সাধ্র হাতে পড়িরাছিলেন। ওাঁহায় বিনয়প্রিকায়
লিখিত আছে—

"জননী জনক জ্জো জনমি করম বিস্থ বি্ৰিছং শিরজ্যো অবডেরে।" অর্থাৎ জয়িবার পর জনক জননী আমার পরিভাগে করিরাছিলেন, বিধিও আমার ভাগ্য ভাল করিয়া করেন নাই, ভাই আমাকে ভ্যাগ করিয়াছেন।

त्वरे नायुरे जूननीनात्नत अक, डाहातरे नत्न जूननी

ভারত পর্যটন করেন এবং তাঁহারই নিকট সাধ্যাদ্ধিক নিকা পাইগ্রাহিলেন।

ুতাহার কবিত্ত-রাষারণ পাঠে জানা বার—তাহার আরুত নাম রামবোলা, তাহার মিতার নাম আছারাম তরু, মাতার নাম হলসী, পত্নীর নাম রছাবলী, বত্তরের নাম দীন-বন্ধপাঠক ও পুত্রের নাম ছারক। শৈশবেই পুত্রের মৃত্যু হর । একটা দোহার এইরপি পরিচর জাত্তে—

"বৃবে আথারাষ হৈ পিতানাম লগ লান।
নাজা হল্যী কৰ্ত বৰ জ্লামী হৈ তৰ কাৰ ছ
প্রেছলাদ উধারণ নাম করি তক্ত কো ত্তনিএ সাধু।
প্রেগট নাম নহি কহ্ত লগ করে হোত অপরাধু॥
বীৰবদ্বপাঠক কহত সন্থা নাম ব্ৰ কোই।
সন্তাদনী তির নাম হৈ ত্ত তারক গত হোই॥"

আনেকেরই বিখাস, তুলসীদাস এ নামটা তাঁহার গুৰুপ্রন্ত।
তাঁহার ক্ষয়ান লইরা নাকা মত। কেই বলেন লো-আবের
অন্তর্গত তরী নামক খোনে, কেই বলেন ইতিনাপ্রে, কাহারেও মত্তে চিত্রক্টের নিকটবর্তী হাজিপ্রে, আবার কেই
বলেন বাকা জেলার বম্নাতীরে রাজাপ্র নামক খানে
তুলসীদাস ক্ষপ্রহণ করেন। কিছু আন্তর্গক প্রমাণ দারা
তরীগ্রামই তাঁহার ক্ষত্নি বলিরা বোধ হর।

বাল্যকালে শৃক্রকেতে (বর্তমান শোরোণ নামক ছানে)
তিনি বিদ্বান্ত্যাস করিতেন। তবে তিনি সেরপ সংস্কৃত ভাষার
পাঞ্চিত্যনাত করিতে, পারেন নাই। নাধুর রূপার বধাকালে
পিতৃগৃহে ছান পাইরা মোটামোট উর্কু ও হিন্দুছানী শিধিরাছিলেন। তাঁহার বে সংস্কৃত ভাষার বিশের রুধন ছিল না,
তাহা তাঁহার রামারণের উত্তরাকাতের মক্লাচরণ রোক্টী
পাঠ করিলেই বোঝা বায়।

তাহার উপদেষরে নাম নরহরি। রামানক বেরপে রামাহকের বিশিষ্টাবৈত মত প্রচার করেন, তুলনীয়ান দেই মতের অন্বেকটা পক্ষপাতী ছিলেন। তিনি প্রেড়া বৈরাগী বৈক্ষবন্দিসের মত বৈত্তবাদ মানিজেন না। অবেধ্যার বার্ত্ত রাজ্য বলিরাই তাহার আতি আছে। তিনি শক্ষাচার্যা প্রবৃত্তিত বেদাক্তের অবৈভ্রাক্তের নির্বিশ্বেরাইবত নামে উল্লেখ করিয়াছেন। তাহার রামারণে অনেক স্থানে শক্ষাচার্যার মত গৃহীত তুইয়াছে। শক্ষাচার্যোর ক্লম্ম তুলনীয়াকের নিকট রাম নামে আখ্যাত।

শহরাচার্য্যের যতাবলন্ধী বিধ্যাত মধুস্থান সরম্বন্ধী তুলসী-দাসের একজন বন্ধ হিচলান।

রাদায়ক হইতে বে ওক্পরশারা আচলিক আছে,

ভন্নধ্যে ছই একথানি ডালিকার ডুলনীর্নলের নাম পাওরা বার। বধা----

১ দ্বানাস্থলবাধী, ২ পটকোপাচার্ব্য, ৩ কুরেশাচার্ব্য, ৪ লোকাচার্ব্য, ৫ প্রান্ধনাচার্ব্য, ৬ বাকাচার্ব্য, ৭ লোকাচার্ব্য, ৮ দেবাধিপাচার্ব্য, ৯ শৈলেশাচার্ব্য, ১০ পুরুবোজমাচার্ব্য, ১১ প্রথারানন্দ্র, ১২ রামেশ্বরানন্দ্র, ১৩ হারানন্দ্র, ১৪ দেবানন্দ্র, ১১ প্রানানন্দ্র, ১৬ প্রানানন্দ্র, ২৬ প্রানানন্দ্র, ২৬ প্রবানন্দ্র, ২৬ রাধ্বানন্দ্র, ২৬ ব্যাধানন্দ্র, ২৬ ব্যাধানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ গারীবানন্দ্র, ২৬ কর্মনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৬ ক্রমনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ১৯ কর্মনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ১৯ ক্রমনান্দ্র, ১৯ ক্রমনান্দ্র, ২৮ ক্রমনান্দ্র, ১৯ ক্রমনান্দ্র

তুলসীদাদের খণ্ডর দীনবদ্ধ রামের উপাসক ছিলেন, তাঁহার বালিকা কলা তুলসীদাদের সহিত বিবাহিত হইবার পরও অনেকদিন পিছুগুছে ছিলেন। তিনিও রামকে অতিশর তক্তি করিতেন। বথাকালে রন্ধবিলী তুলসীর গৃছে আসিরা বাস করিলেন। তাঁহার একটা পুত্র সন্ধান হইল। তুলসীদাস একদণ্ড পদ্মীকে ছাড়িরা থাকিতে পারিতেন না। তিনি বড় জৈণ হইরা পড়িরাছিলেন। এক দিন তুলসীকে কিছু না বলিয়া তাঁহার পদ্মী বাপের বাড়ী চলিয়া আসিলেন। তাহাতে তুলসীদাস অতিশর চিন্তাক্র হইরা পদ্মীর পাছে পাছে গিরা তাঁহাকে ধরিলেন। এ সমর রন্ধাবলী বলিয়াছিলেন—

"লাজ ন লাগত আপু কী ধৌরে আরেহ সাধ। বিক বিক ঐসে প্রেম কী কহা কহোং সৈং নাথ। অস্থিচপুমর দেহ মম তা মোং জৈসী প্রীতি। তৈসী জৌং শ্রীরাম মহং হোত ন তৌ তবভীতি॥"

তোমার কি লজা হর ন। বে তুমি আমার পাছু পাছু ছুটিরা আসিরাছ। নাথ! তোমার এরপ প্রেমতে থিক, আমার অভিচর্গনর দেহ ভার উপর ভোমার বেরপ প্রীতি, এরপ প্রেম বদি জীরামের উপর থাকিত, ভাষা হইলে ভোমার ভবতর থাকিত না।,

গ্রীর মিষ্ট ভং সনার ত্লকীদাকের আল চৈতত হইস। তিনি আর পর্যার দিকে চাহিলেন না, ফিরিলেন না। রন্থাবলী কানিতেন না যে, এই সামাত কথার তাঁহার পচিয়

তভ্যাল ও ভভিষাহাত্ম। নামক সংস্কৃত এংছ লিখিত আহে।—
 তুলনীগানের পদ্মী বিবিকা করিয়া গিতুবৃহে বাইভেছিলেন, পথে ব্যানিক
 পশ্চাতে আরিতে বেবিরা উক্তবিদ্যাল কথা বলেন। কিন্তু অংমার্থা বক্রে

এবাহ আছে, পুলনীয়ান্ধ্ ব্রহালরে উপরিত হইলে: রয়াব্রানী ব ব্রী
 ক্যা বলিহাজিলেন।

ক্লরে আখাত কাগিবে। ডিনি তুলনীবানকে লেখানে রাখিরা আহারাধি করিবার অস্ত কতনাধ্য সাধনা করিবেন, কিছ কোন কলেখর হইল না। তথনই তুলনীধান রামনাম আশ্রর করিরা সরাধী হইলেন।

क्षथाय आवाधाव उरशात वाताधमीरा आतम्मिन वर्ष-वान क्रात्न। अरे नेवाद जिनि स्थ्वा, वृक्षायन, क्राक्ष्य, क्षत्रात्र ७ श्रुक्रवाक्रयाक्य वर्षन क्रिया आहुन ।

সংসার ভ্যাগের পর রত্বাবলী তুলসীধানকে একথানি পত্র বেখেন—

"কটি কो খীনী কনক সী সহত স্থিন সন্ধ সোই। মোহি কটে কী ভর নহীং অনত কটে ভর হোই॥"

কনকবরণী ক্ষীণক্টি (আমি) স্থিপণ স্কে আছি, আমার (বুক) ফাটে ভাতে ভর নাই, ভর পাছে অভ রম্পী ভোমার ধরে।

তাহাতে তুলনী উত্তর করেন"কটে এক রতুনাথ সল বাদ্ধি লটা সিরকেন।
হম তো চাথা প্রেমরুস পত্নীকে উপদেস।"

কি মধুর কথা । পতির পত্র পাইরা রক্নাবনী আখারিত হইলেন। প্রাণ ভরিরা পতির নাধু উদ্বেশ্তর প্রশংসা করিতে নাগিলেন।

বছবৰ অতাত হইল! তুলদীদাস এখন বাৰ্দ্ধকো পদার্পণ করিয়াছেন। এখন গৃহ্বার কিছুই উাহার মনে নাই। নানাস্থান পর্যাটন করিতে করিতে ঘটনাক্রেমে আপনার খণ্ডরালয়ে আসিয়া একদিন অভিধি হইলেন। তাঁহার মনেই ছিল না বে এ তাঁহার খণ্ডরবাড়ী! তাঁহারই বৃদ্ধা পত্নী অতিথিসংকার করিতে আসিলেন। তিনিও প্রথমে আপনার স্বামীকে চিনিতে পারেন নাই। তিনি जूनतीषात्मत बाहात्राणित जात्त्रास्त्र कतिया पितन । जूनती-দাস স্বার্ক্ত বৈষ্ণব ছিলেন, -তিনি স্বহত্তে পাক করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। ছই একটা কথাবার্তার পরই র্লাবলী জাপনার হুদরসর্বাহক চিনিতে পারিলেন। তিনি আপনার মনোভাব গোপন করিয়া কেবল বলিলেন, 'আপনাকে মরিচ জানিয়া निव 1º कूननी উछत्र कर्तिरनन, 'श्रारतासन नारे, आमात्र · बूनिएडरे चारह।' 'उरद कि এक्ट्रे क्षान चानित्रौ दिव ?" 'তাহাও আমার কাছে আছে।' 'তবে একটু কর্পুর আনির। तिहे ?' जूननी कहित्नम, 'खाबांख आधात सूनिएं आहि।'

পরে সাধ্বী পতিকে কিছু না বলিরাই তাঁহার চরণ থোত করিতে অগ্রসর হইলেম। কিছু তুলনীলান নিরেধ করি-লেন, স্বভরাং রড়াবলীর মনকাবনা সিদ্ধ হইল না। নে নিশার তাঁহার চক্ষে ব্যালাদিক লা; বেবকা এই চিডা---

'কিরপে আনি ব্রব্যাহরর পর্নাসের। করিতে পারিব ?'
অনেক ভাবিরা চিত্তিরা বিহু করিবেদা, বিনি নারাভ ত্রবা
এখনও ভ্যাগ করিতে পারেন নাই, তিনি কি আসমখর্থপরীকে একবারে ভ্যাগ করিবেনঃ পরনিদ প্রাতে আনিরা
ভিনি জিজানা করিবেনা, 'ছাকুর ! আসনি কি আমার
ভিনিতে পারেনা p' ভূলদ্বী উত্তর করিবেনা, 'না।' 'আই
ক্যানের নাম কি জানেনা p' ভীহাতেও উত্তর হইল—'না'।
ভখন রত্বাবনী একে একে নব প্রারত্ব দিরা ভাহার সক
'প্রার্থনা করিবেন। কিন্ত ভূলদীকান কোনবঁতে সম্বত
হইলেন না। তখন রত্বাবনী অভি ত্রখিত ভাবে বলিবেন

'ধরিরা ধরী কপুর লোং উচিত ন পির তির তাগি। কৈ ধরিরা মোহি মেলি কৈ অচল করে অনুরাগ ন'

বখন ভোমার বুলিতে খড়ি ছইছে কর্ণ্য জবিধি হান লাইল, তখন প্রির্ভন ! ব্রীকে ভ্যাগ করা উচিত নহে। হর আরাকেও পুলির ভিতর লাও, নয় (সর্বভাগি হইমা) নেই ভগবানে অনুরাগ কর।

ত্রীর কথার সাধু তুলসীদাসের জ্ঞানোদর হইল। তিসি বীকার করিনেন, তাঁহার চেরে তাঁহার ত্রী অধিক জ্ঞানলাত করিরাছেন। আজ তুলসীদাস সর্বতাগী হইলেন। শেবের স্বল বুলিটাও এক ব্রাহ্মণকে প্রদান করিলেন।

তুলদী বলিয়া কেলার অবর্ণত ভ্তর আশ্রম, হংদনগর, পারাশিরা (পারাশরীর) প্রভৃতি পুণাস্থান দর্শনের পর গায়-খাটের ব্রাঞ্চা গন্তীরদেবের আভিথেরভার মুখ হইয়া কিছু कान छथात वाम करतन। छथा हहेट अद्याचर्तमाथ मामक महारमवरक नर्मन कत्रिवात क्षष्ठ कात्रारक्षमात्र मधाविक अका-পুরে গমন করেন। সেধান হইতে কাণ্ট-ত্রশ্পুরে গিয়া अधिवानिशत्भव बाक्तमी नीजि मर्भन कवित्रा अजिमव इः विज হইলেন। এখানে মঞ্জুকনামে এক আহীর পর্ম যদ্ধে তুলসীলালের দেবা করেন। আহীরের আতিথেরতার বিমূধ হইরা ভুলদীদাদ কিছু আর্থনা করিতে বলেন ে দরিত্র লাহীর প্রীর্থনা • করিল; 'বেন ভগবানের উপর তাঁহার পূর্ণভক্তি থাকে, তাঁছার বংশ বেন দীর্ঘনীবাঁ হয়।' তুলদীবাদ কহি-त्मन, 'वृष्टि कृषि (वा शतिवादित नत्था त्कर्'तिवेशवृष्टि कृतिवे। . मा थांक, किया काहात्र अपन कहे ना निता थांक, छाहा হইলে ভোষার অভিপ্রার পূর্ণ হইবে।' ,বীলয়া ও শাহা-वांश टक्कांत्र लाटकता अथमक अहे नह कतिहा विनेत्र थाटक, जूगनीलातम कथा गठा बरेगाइ।

কান্ট হইতে তুলনীদান ধেলা-পতৌত নামক হালে বাতা

করেন। এখানে পণ্ডিত গোবিদ্দমিশ্র নামে এক শাক্রীপী আদ্ধা ও রখুনাথ সিংহ নামে এক ক্তির পরম স্মাদরে তাঁহাকে এইণ করেন। তাঁহার প্রস্তাবে বেলা-প্তোতির নাম রখুনাথপুর হইল । এখন রখুনাথপুর নামেই খ্যাত। এখানে বে চৌড়ার তিনি উপবেশন করিতেন, এখনও ভাহা ভক্তির চক্ষে লোকে দেথাইরা খুকে। রঘুনাথপুরের নিকট কারথ-প্রামে জোরাবর সিং নামে এক ক্ষত্রির তাঁহার নিকট দীক্ষিত হন।

ত্লসীদাস প্রথমে অযোধ্যার আসিরা সার্স্ত বৈক্ষবরূপে কিছুকাল বাস করেন। এই সমর ভগবান রামচক্ষ একদির্ন বর্মির দেখা দিয়া তাঁহাকে (হিন্দী) ভাষার রামায়ণ রচনা করিতে আদেশ করেন। ১৬০১ সমতে তিনি রামায়ণ লিখিতে আরম্ভ করেন। অরণ্যকাশু শেষ হইতে না হইতে বৈরাগী বৈক্ষবগণের সন্থিত তাঁহার মতভেদ হইল। তিনি বাধ্য হইয়া কাশীধামে চলিয়া আসিলেন। লোলার্ককুণ্ডের নিকট অসিঘাটে তিনি থাকিতেন। এইখানে ১৬৮০ সমতে তিনি ইহলোক পরিত্যাগ করেন। যেখানে তিনি থাকিতেন, তাঁহার নিকটবর্তী ঘাট এখনও জুলসীঘাট নামে থাতে। তাহার পাশে উক্ত কবির প্রতিষ্ঠিত একটা হত্মান্ মন্দির আছে।

তাঁহার সহস্কে কাণীধামেও অনেক প্রারাদ প্রচলিত আছে—
তুনা যায়, রামারণ শেষ হইবার পরে এক দিন তুলসী
মণিকণিকার ঘাটে লান, করিজেছেন। এমন সময় একজন
সংস্কৃত্বৎ পণ্ডিত আসিয়া তাঁহাকে বলেন, 'সাধু! আপনি
সংস্কৃত জানেন, তবে ভাষায় এরূপ রামায়ণ রচনা করিলেন
কেন ?' তুলসীদাস হাসিয়া উত্তর করিলেন, 'আমায় ভাষা
নিতান্ত নীচ ভাষা বটে, কিন্তু আপনার, নারিকারণন
অপেকা অনেক অংশে উত্তম।' পণ্ডিত বলিলেন, 'কিরপে ?'
তুলসী কহিলেন—

"মনিভাজন বিথ পারই পুরন অমী নিহারি।
কা ছান্দির কা সন্থানি কহন বিবেকবিচারি।"
্মনঞ্চাম ডেক্ক একজন কবি ছিলেন, তিনি স্থান্দ হিন্দী
কবিতা রচনা করিতেন। একদিন কএকজন পণ্ডিত তাঁলাকে
সংস্কৃত ভাষার কবিতা রচনা করিতে আদেশ করিলেন।
তিনি কহিলেদ, 'আমি তুলসীদাসকে জিজ্ঞাসা করিরা
উত্তর দিব।' তুলসীদাসকে জিজ্ঞাসা করিলে ভক্ত কবি

"কা ভাষা কা সংস্কৃত প্ৰেম চাহিছে সাঞ্চা। কাম কো আবই কাময়ী কা লই কলৈ কুমাঞা॥" এক সময় কভকঙলি ডাকাড তুলসীদাসকে মারিতে

উত্তর করিয়াছিলেন---

আলে। তিনি আপনার রক্ষার চেটা না করিয়া খলিয়া ছিলেন—

"বাসর ঢাসনি কে ঢকা রজনী চহুং দিশি চোরা।"
দলত দরানিধি দেখিরে কপিকিশরিকিশোরা ॥"
তুলসীদাসের কথার হছুমান দেখা দিলেন। সেই ভীয়
আকার দেখিরা ডাকাতেরা মৃতিহত হইরা পড়িরা গেল।

অকবর বাদ্ধণাহের রাজস্বসচিব টোডরমল তুলসীলাসের একজন পরম বন্ধু ছিলেন। ১৬৪৬ সম্বন্ধে টোডরমনের মূত্য হইলে তাহার স্মরণার্থ তুলসীদাস এই কর্মী কবিভা রচনা করেন—

"মহতো চারো পাংব কো মন কো বড় উ মহীপ।
তুলসী য়া কলিকাল মেং অথয়ে টোডরদীপ ॥
তুলসী রাম সনেহ কো সির ধর ভারি ভার।
টোডর ধরে ন কান্ধ হু জগ কর রহেউ উতার ৪
তুলসী উর থালা বিমল টোডর গুনগন বার্গ।
সম্থি স্লোচন সীঞ্চিহেং উমগি উমগি অসুরাগ ॥
রামধাম টোডর গ্রে তুলদী ভয়েউ নিসোচ।
জিরবো মীত পনীত বিষ্ণু বহী বড়ে স্কোচ॥

অধররাজ মানসিংহঁও জগৎসিংহ প্রভৃতি হিন্দ্রাজকুমারগণ সদা সর্বদা তুলসীলাদের সহিত সাক্ষাৎ করিতে
আসিতেন। একদিন এক লোক তুলসীকে জিজ্ঞাসা করিল,
'এ সব বড়লোক আপনার কাছে কি করিতে আদেন।'
তাহাতে তুলসী উত্তর করেন—

"লাই ন ফুটা কৌড়িছ কো চহৈ কহি কাল।
সোঁ তুলসী মহলো কিলো লাম গরীবনিবাল ।
বর বর্ম মাঙ্গে টুক পুনি ভূপতিপুলে পাই।
তে তুলসী তব রাম বিহু তে অব রাম সহাই।"
এইরপ তুলসীদাস সম্বন্ধে অনেক কথা প্রচলিত আছে।
তুলসীদাস প্রকৃতপকে হিল্লুখনের মহাকবি। তাঁহার
রচনার মাধুর্বা, লিপিচাতুর্বা ও আধ্যাত্মিকভাব-সন্নিবেশ অতি
প্রশংসনীর। হিল্লুখানী অতি উচ্চ রাজা মহারাজ হইতে
দীন দরিক্র ভিক্ পর্যাত্ত তুলসীদাসের দোহা সমানর করিয়া
থাকেন। অনেক গ্রন্থ ত্লাহার নামে প্রচলিত আছে।
কিন্তু সকলগুলি তাঁহার লেখনীপ্রস্ত বলিয়া বোধ হর না।
এই কর্মানিগ্রেছ তাঁহার নিজ্প বলিয়া প্রচলিত আছে—

> त्रामनीनां नर्ष्ट्र, २ देवतागामनीननो, ७ वत्रदव द्वामावन, श भार्तजीमन्नन, ६ जानकीमन्नन, ७ त्रामाळा (७३ इत्रश्नानि कृष्ण श्रष्ट्र), १ द्वारायनी (वा मश्मर्ष्ट्र), ५ कविख्वतामावन वा कविख्यानी, ३ निष्नामावन सा नीखावनो, ३० इक्श्नांनी, কা ক্ষুক্ষীতবিলী, ১২ বিনরণজিকা, ১২ বাসচরিতমানস, (এখন তুলসীরামারণ নামে খ্যান্ড)। শেব ছরণানি বৃহৎ গ্রন্থ।
তুলসীতৃত্বারি, বিশাগগন্তন জেলার অন্তর্গত বভাররাজ্যে
বিস্তুত একটা গিরিযালা। জকা ১৮'৪৫ উ:, ত্রাবি ৮১'০০
হইতে ৮২'৪০ পু:। ইহাপ উচ্চপুলের নাম তুলনী, তাহা
সমুত্রপৃষ্ঠ হইতে ৩৯২৮ ফিট্ উচ্চ।

ভূলসীৰেষা (ত্ৰী) ভূলসীং ৰেষ্ট ভূলাগছৰাং বিব অণ্ ভত-होপ্। ৰৰ্জনী, বাব্ই ভূলসী। [বৰ্জনী ও ভূলসী দেখ।]
ভূলসীপত্ৰে (ক্লী) ভূলজাঃ পত্ৰং ৬ডং। ভূলসীর পাতা।
[ভূলসী দেখ।]

ভুলসীপুর, > অবোধ্যার গোণ্ডা জেলার অন্তর্গত একটা পর্
গণা। ইহার উত্তরদীমার হিমালর, দক্ষিণে বলরামপুর পরগণা,
পূর্ব্বে আরনালা নদী এবং বহুরাইচ্ জেরা। এই স্থানের
প্রাকৃতিক দৃশ্য অতি মনোরম। উত্তরভাগে পাহাড়ের উপর
গবর্মেন্টের রক্ষিত বিস্তীর্ণ বনরিভাগ, তাহার পরই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
গিরিসমাছের উচ্চ নীচ ভূমিধণ্ড। এধানকার ক্ষমি উত্তম
হইলেও জলবায় নিতান্ত অস্বাস্থাকর। এই জন্ম এধানে
লোকের বাসও অল্প, তেমন চাববাসও হর না।

পরগণার প্রধান অংশ সাঁ।তেনেতে কিন্ত এ খানে ভাল ধান হয়। এতান্তির যব গম ও কলার মন্দ হয় না। এধানে হিন্দুর বাসই অধিক। তন্মধ্যে থাকুজাতির নামই উল্লেখ-যোগা। ধাকুদিগকে দেখিতে সর্বাংশে ত্রাণীর জাতির মত হইলেও ইহারা আপনাদিগকে চিতোরের রাজপুতকুলসভূত বিলয়া পরিচর দের।

• বড় বেশীদিনের কথা নয়, জ্লসীপুর পুরগণার অধিকাংশই শালবনে ঢাকা ছিল। মাঝে মাঝে ছই এক বর
থার অ স্ব সর্দারের অধীনে অর্দ্ধ আধীনভাবে বাস করিছে।
সেই সকল থারুসর্দারেরা ছই রক্ষ কর দিও। এক
'দখিনাহা' বা দক্ষিণাংশে বলরামপুরের রাজা এবং অপর
'উত্তরাই' বা উত্তরাংশে দল (বর্ত্তমান তুলসীপুরের) রাজা
পাইতেন।

ু প্রবাদ আছে, 'প্রার ৫০০ বর্ষ পূর্বে এপানে মেমরাজ লামে ছৌহান্বংশীর এক রাজা ও পরে তাঁহার বংশধরগণ বহুদিন থাক্দিগের উপর আধিপত্য করিবাছিলেন।

আর শতবর্ষ হইল, বলরামপুরের রাজা পৃথীপাল দিংহের শুসূত হয়। জাঁহার পুত্র নবলসিংহের রাজা হইবার কথা। কিন্তু জাঁহার রাজুপুত্র কলবারি-সর্দার নবলকে ভাড়াইরা রাজ্য শবিকার করেন। চৌহানরাল্প বিরিজ্ঞলন আশ্রর লইরা ছই হাজার বাক্তর নাহাব্যে শৈভূক রাজ্য উদ্ধার করেন। তথ্ রাঞ্চারী গ্রাছাড়ে বিশ্বা আত্রর লইলেন। কিছুদিন পথে নিপালরাজ তাঁহাকে আক্রমণ করিলে তিনি আবার বলরামপুরে আনিরা নবলসিং তাঁহার সাহাঘ্যে তুলসীপুরের থাকসন্ধারগণকে দমন করিলেন এবং তাঁহাকে তুলসীপুর রাজ্যে অভিবিক্ত করিলেন। তিমিও বল্রামপুরের রাজ্যকে বার্থিক স্বেড়াজার টাকা কর দিতে সম্মত হইলেন। তাঁহার পুত্র দলীলসিং যথারীতি কর দিরা আসিতেছিলেন। শেবে দারবাহাছ্রুসিং রাজ্য হইলে তিনি কর বন্ধ করিলেন।

১৮২৮ খৃষ্টাব্দে গবর্ণর কেনারেল জুলসীপুরে ফুগরা করিতে যান। রাজার আতিথেরতার মুদ্ধ হইয়া বড়লাট ক্রেযাধার নবাবকে বার্ষিক কর লইয়া ভূলসীপুর প্রগণা চিরস্থায়ী বলোবস্ত করিয়া দানবাহাছরকে দিতে আদেশ করেন।

দানবাহাছরের সমর রাজ্যের অনেক উন্নতি সাধিত হয়।
১৮৪৫ খুটাকে দানবাহাছরের মৃত্যু হইলে তাঁহার পুরা
দৃগ্রাজিসিং পিতৃসম্পত্তি প্রাপ্ত হইলেন। কাহারও মতে,
দৃগ্রাজিসিংহের বড়যন্ত্রে তাঁহার পিতার মৃত্যু হয়। দৃগ্
রাজকেও বছদিন রাজ্যভোগ করিতে হয় নাই; তাঁহার পুরা
দিগ্নারারণিসং ১৮৫০ খুটাকে পিতাকে রাজ্য হইতে তাঁড়া
ইয়া সিংহাসন অধিকার করেন। দৃগ্রাজ বলরামপুরে আসিয়া
আশ্রের লইলেন। তাঁহার সাহাব্যের কল্প বৃটীল গবর্মেন্ট
একদল সৈল্প পাঠাইলেন। দৃগ্রাজ সেই সৈল্প সাহাব্যে নিজ
রাজ্য অধিকার করিলেন। কিন্তু ছবুভি পুল্লের হাতে
আবার তাঁহাকে নিগ্রহ ভোগ করিতে হইল। দিগ্নারারণ
অবসরক্রমে পিতাকে অল্পনাল বন্দী করিয়া বিব পাওরাইয়া
তাঁহার প্রাপ্সংহার করিলেন।

অংশার্থাপ্রদেশ বৃটাশ শাসনাধীন হইলে দিগ্নারায়ণের নিকট গবৈর্মেণ্ট কর চাহিয়া পাঠান। কিন্তু হীনমতি দিগ্নারায়ণ করদানে সম্মত হইলেন না। তজ্জ্ঞ তিনি বন্দী হইয়া লক্ষোনগরে আনীত হইলেন। এই সমর বিজ্ঞোহ হয়। বন্দী অবস্থার দিগ্নারায়ণের মৃত্যু হইল। তাঁহার ক্রীও বিজ্ঞোহ ব্যাগ দিরাছিলেন। তজ্জ্ঞ তুলসীপুররাজ্য বাজেয়ার করিয়া গবর্মেণ্ট বলরামপুররাজ্য অর্পন্ধ করেন।

২ উক্ত পরগণার প্রধান নগর। এথানে তুলসীপুর-রাজ-গণের নির্দ্ধিত একটা পুরাতন গড় আছে। প্রায় ছই শত ' বর্ষ হইল, তুলসীদাস নামে একজন কুর্মি এই নগর স্থাপন করেন, কাহার নাম হইতে তুলসীপুর নাম 'ইইয়াছে।

ভূলদীমঞ্জরী (গৃং) ভূলজা: মঞ্জী। ভূলদীর সুকুল। [ভূলদী দেখা] जूनजोबांको (बी) जूनकाः मृत्याः। जूनकोतः योकाः। -[जूननो त्यथः]

ভূলসীতাই, ইলোরপতি আশাবজনাও হোলকরের একজন প্রিরনী। এই রমনী নালাভ দর্ভকী হইতে শেবে ফশোবজরাত্তর জনর অধিকার করিয়াছিল। বশোবভ শেবাবদ্ধার উদ্ধানরোগ-প্রত হইলে ভূলদীবাই হোলকররাক্তো সর্কেন্স্র্রা হইরা উঠে। ভাহার রপের ছটার মধ্র কথার ভাবভলিমার অন্ত দিন সংখ্য ভূলদী সক্লের ফ্লর ভৃথিকার,করিল। ভাহার কোন প্রায়াদি হর নাই। ফশোবত্তের মৃত্যুর পর ভাঁহার পুল মলহার রাধ্যকে পেরেপুল প্রহণ করিয়া ভূলমীবাই রাল্য চালাইতে লানিক। দেওরান গর্ণপত্তরাওর সহিত ভাহার একটু মাধামাধি ছিল, সেই জন্ত সন্দারেরা সকলেই ভূলদী বাইত্রের উপর চটিরা বান।

রূপে অপ্সরা ও কথায় সুর্বিষতী করণা হইলেও তুলসী-বাইএর ক্লয় ক্ট অভিসন্ধিপূর্ণ ছিল। যাহারা তাহার কোনরপে বেষ করিও, তাহাদের কিরূপে সর্কানাশ করিবে, তুলসীবাই সর্কানা ভাহার উপায় ভাবিত।

এই সময় মহারাষ্ট্রগণ বৃচীলশ্কি পরাভব করিবার জন্ত 'সকলে দশ্বদ্ধ হন। তুলদীবাই সন্ধারদিগের অভিগ্রায়ে (भरे तरन योश निम्नाहिन। किन्द शनशब्दां प्रिश्वान বে, মহারাষ্ট্রস্পারগণ যেক্ষণ একজ হইতেছে, তাহাতে তাঁহার ও তুলদীবাইএর শীন্ত্রই বিপদ্ ঘটবার সম্ভাবনা। এই ভাবিয়া তিনি বুটীশের পক্ষ অবলম্বন করিবার জন্ত দুত পাঠাইলেন। ১৮১৭ बृष्टीरक २०० ডिम्बिन श्रीएड वानक मनहानुसाह তাঁবুর বাহিরে থেলা করিতেছিল, সেই সমর শত্রুগণ ভাহাকে ধরিয়া লইয়া যায় এবং একদল সৈক্ত আসিয়া ভূলদীবাইকে দেরিয়া ফেলে। ভূলদীবাই আসদ্ধ বিপদ্ দেখিরা তাহাদিগকে 'সভর্ক হইবার জক্ত ভিন্নস্থরি কয়ে। কিন্ত কেহই ভাছাকে প্রায় করিল না। শেষে ভাছারই রক্ষীগণ ভাষাকে পাকী করিয়া শিঞা নদীর ভীরে বাইয়া रान এবং তাভার বাধা কাটিয়া নদীর জনে ফেলিয়া দিল। জুলসীবিবাছ (পৃং) জুলছা: বিবাহ:। জুলদীর বিবাহু। [जूनशी (मर्थ।]

ভূলদীশাম, স্থাগড়ের সন্তর্গত উনা বা উন্নতনগরের প্রায়

> জোশ উত্তরে অবস্থিত একটা পুণাস্থান। এথানে কডকগুলি বিফু, স্থিত হছমানের মন্দির ও উফ্চপ্রত্রবণ আছে।
প্রজানগণ্ডে এই উক্ষপ্রত্রবণ মহাতীর্থ বংশা গণ্য হইয়াছে।
এখানে আদিয়া বৈক্ষবেরা হাতে বিশ্বর শৃত্য ও চাক্রের
ছাপ এইণ করিয়া বাকে।

বুলা (আ) তোলাতেহবরা দুক্ত লাই। ১ সাঁকুরা, জুলকা।
২ গ্রের বাক্তবর্তার কলিকার। এ মান। ১ লকণদ
পরিষাণ। ৫ ভাও, উজে। ৬ রালিবিবের, রালিকে ভারশ,
ভাবে বিজ্ঞান, এই রালি তাহার সংস্করালি। (র্ইনি নক্ষত্র ও কবলি নক্ষত্রের চারিভাগের ১ ভারে এক একনি রালি হর।)
চিত্রা নক্ষত্রের দেব ০০ দক্ত এবং খাত্রী ও বিশাধার আত্র ৪৫ হক্ত কুলারালি হয়। ইহার অঞ্চল সংজ্ঞা—কুলাপ্রত্বর, চরা, নানাবর্ণ, সন্ধ্ব, উক্তবভাব, পশ্চিমনিকের স্বামী, হারু-প্রতি, চিত্তপ, করপুরা, বনচারী, জনাবীসক্তির, জন্দ সন্ধানসংখ্যা, শুলবর্ণ, উগ্রবভাব, দিনবনী, হিপান, সমান ৩ লিখিলাল। (নীলকঠনাং)

ক্বনেখনের মতে—পুণাধর, পুরুষ, উক্রাল, লান্ডি, কটি, বজিলেন, বীমি, বিক্রমন্থান, নগর, পেদণশিলাদি, পঝ, শুরুবর্ণ, ধনাগার, অর্থাধিবাদ অর্থাৎ সিম্কুকান্তির উপর, বাসগৃহের উপর এবং শক্তের,ভূমি, পাহাডের পার্ছ, পর্বাতের চুড়া, বৃক্ষ, মৃগরাস্থান, উভ্যন বায়্ প্রভৃতি তুলা শক্তে এই সকল বুঝার। (ভটোৎপলপুত ব্বনেশ্ব)

ইহার সংজ্ঞা নির্দেশ। ওজ, বিষম, চর, জনুর, (পুং) কায়ু, শীর্ষেদেয়, পুণ্য, দিন্বনী, বিচিত্রবর্ণ, জ্ঞান্তের ক্ষেত্র, ভক্তমূলত্তিকোণ, শনির উচ্চতুক, রবির নীচ, পশ্চিমদিকের কামী, বন্চর ও তীর্ষসানাধিপ।

এই সকল সংজ্ঞাৰায়া নানাপ্ৰকার গণনা হুইতে পারে।
ক্ষেমন হত বস্তব প্রশ্নগণনায় ঐ রাশি কোন স্থানে অবন্ধিত,
তাহার জান এবং ঐ বাশিবারা বেরূপ শরীর বিজ্ঞাগ আচছ,
সেই সেই স্থানে প্রহণণের অবস্থাননশতঃ এণাদির চিক্ত এবং
গ্রহগণের বলাবলে সেই সেই অলপ্রত্যকের হানি বা দৌর্কন্য
ইত্যাদি স্থানা বায়।

এই রাশির আফার তুলাবান পুরুষের কভ। ইছার অধিপতি দেবতাকার শহুলক্ত উুলাবান পুরুষ। এই রাশি কৃষ্ণবর্গ ও ক্ষবিদ।

তুলা রাশিতে জন্ম হইলে দেবতা ব্রাহ্মণ ও সাধুগণের অর্জ্যনারত, বৃদ্ধিনান, পরিজ, শ্রীবিজ্ঞিত, উন্নতদের ও উন্নতনাদিকা মুক্ত, স্থান, চঞ্চল গাত্রবিশিষ্ট, অটনশীল, অর্থমুক্ত, হীনাঞ্জ, ক্রেনবিক্রেক্সার্থ্যকুশল, রোগী, বন্ধ্বিদের উপকারী, তেনবী, নন্ধ্বাহ্মানিনিত এবং বন্ধু অর্ভুক্ত পরিত্যক্ত হইকে:। (বৃহজ্ঞাক্তক)

কোটাথানীপের মডে, জুলা রালিছে জন্ম হইবে অল্লিগর নীর্যভাবিদ্ধীন, নিবিদ্ধ গাঞ্জবিদিত্ত, কর্মানি দিল্ল হাজবঙ্গিতার পরিভোবকারক, অভিশব বহুভাবী, জ্যোতিবক্ত ও ভৃত্যবাধার ক্ষয়ক্ত হুইবে: (কোটাথাং) [নালি নের।] भत्नीकारितन्त्र, अक खकात विदा, द्व क्रांण दाही क्र खाँच्यांत्रीत त्योक्कि खनान मार्डे, त्यहें क्रांण विद्यातक अहें भत्नीका वात्रा व्यर्थनिर्गत क्षित्वम । वीत्रविद्यात्रदत हेंद्रात्र विधान अहेत्रन णिथिक चारह----

"বিবৰৰ্জা: ভ্ৰামণত দৰ্মেৰাত তুলা মৃতা।" (বীৰ্নিভোৰ্ছ) বজীর বৃক্ষ বৃপের ভার বত্ত পাঠ করিলা ছেন্দ ক্ষিত্র, नाक्शानिकारक व्यथांव कतित्रा शिखनर्व हकूर्यक, हकूतव ও বাজুত্না প্রস্তুত করিবেন। এই ভূগার ভিন ছানে वनत्र निर्ण रहेरव । हेरारक्न ७ राज एक कतित्रा इहें राज भवतं निक्त क **वेख**त्रनिटकत्र रखबत्र थनन क्रिंतिक हरीरव এবং তাহাতে পট্রধারক ও কীলকাঞ্র ক্তন্তের উপরি চুইটা ছিত্র করিবে ও ভাহার মধের নৌহাতুশ পট্টক নিবিষ্ট দরিবে। লৌহাত্মণ পট্টকের মধ্যত্বিত অত্ন বারা ভূলার व्धावनक्रिक लोरमध्यूक क्तिए इहेरव। এই अकात्र করিলে তুলাদণ্ড স্তন্তের মধ্যে বক্রভাবে থাকিষে। **হলার পার্শে পূর্ম্ব ও পশ্চিমদিকের তোরণত্তত ভুলা হইতে** 🕫 অঙ্গুলি উচ্চ হইবে। তোরণের উপর স্ত্ত প্রথিত করিবে। इनामछ शूर्व ७ शिक्तमितिक बात्रन कतित्व। शूर्विभित्का গুলাও পশ্চিমে কর্ত্তাকে ডোব্রিত করিবে। পরে তুলার अभारत जन निर्देश करेरन, यनि जन ना खानिका यात्र, छाहा हरेल जुला ममान कानित्।

ত্লাপ্ররোগ। উপবাস করিরা লানাদি সমাপন করিবে।

ারে বিচারক জিজ্ঞাসা করিবেন, নিবেদিত বিবরের বিচার

উক। তাহার পর অভিবৃক্তকে ওজন করিয়া অবতারণ

চরাইবে এবং ধর্ম্মের লাবাহন করিতে হইবে। "ঐ তৎসং"

হো উচ্চারণ করিয়া তিন জন ব্রাহ্মণকে গল্লাদি বারা পূজা

চরিতে হইবে এবং এই তিনজন ব্রাহ্মণ স্বতি, পুণাহ, ঋদি,

তনবার পাঠ করিবে। পরে দিব্যাক ভৃত্রহামের নিমিত্ত

করিবে। অসক হইলে একটা ব্রহ্ম ও একজন ঋদিক নির্ক্ত

করিবে। অসক হইলে একটা ব্রহ্ম ও একজন ঋদিক নির্ক্ত

করিবে। পরে তুলার পুশামাণা ও পতাকাদি দিয়া স্বাভিত

এবং ঐ তুলা ভ্রিতে রাবিতে হইবে। বিচারক প্রস্কুবে

পুশা ও অকত নইয়া "ও ভৃত্বং মাণ্ড উচ্চারণ করিয়াক

"এত্তি ভগবন্ ধর্ম দিব্যে কৃষ্ণিন্ সমাবিশ। সহিতো লোকশালৈক ক্যাদিত্যসক্ষ্ণিয়ে ॥"

এই মন্ত্ৰ পাঠ করিবেন ! পরে পাঁত অর্থ্য প্রভৃতি পূজা বিধি অহুসারে ধর্মাকের পূজা করিতে হইবে ৷ পূর্ববিকে ইক্ত, দক্ষিণে বম, পশ্চিমে বম্পু, উভরে কুবের, অগ্নি-কোণে অগ্নি, নৈপ্রতি নিশ্বন্তি, বায়ুক্তোৰে বায়ু, ইন্যানভোগে केनान, वेट्यवा किनगार के जहेवस, थन, अन, ट्रान, जान, जान, जान, जन, उन्होंन, अकान, देख के मेगान मर्था वान-मानिका, बाँका, जर्मा, मिस्र, वक्रम, जरक, क्रम, वेख, विश्वान, पूँवा, नर्काक, पड़ी, विश्वा, पर्वा, नर्काक, पड़ी, विश्व, जावित्र ग्रान्त काल कर, विश्वान, नर्का, विश्वान, जावित्र, क्रान्ति, ज्ञान कर्मा, ज्ञानिक, क्रान्ति, ज्ञान कर्माक, क्रान्ति, चार्च, क्रान्ति, वावाही, मारक्षी, वाक्षिक, क्रान्ति, मारक्षी, क्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, त्रांत्र, व्याप, व्याप, क्रांत्र, व्याप, व्याप, क्रांत्र, व्याप, व्याप, क्रांत्र, व्याप, क्रांत्र व्याप, क्रांत्र, व्याप, क्रांत्र व्याप, क्रांत्र, व्याप, व्याप,

এই পৃত্ধাহোম শেষ হইলে আর্ত্রবন্ত্র পরিহিত শোধ্যকে গশ্চিম শিক্যে ও ইইক পৃর্ব্বশিক্ষে উত্তোলন করিবে এবং উত্তোলনীর ঘটের উপরি জল দিলে যথন পরিমাণ স্বান হইবে, তথন তাহাকে নামাইতে হইবে। পরে বিচারক—"আদিতাচক্তাবনিলোনলন্চ দাৌ ভূমিরাপো হৃদয়ং যমন্চ। অহন্ত রাজিল্ড উভেচ সন্ধ্যে, ধর্ম্মেহিপি জানাতি নরক্ত বৃত্তং ॥", এই মন্ত্রও অভিযোগের বিষয় ইনি দোধী বা নির্দ্ধোষ্
 এইক্রপ প্রতিজ্ঞালিপি পত্রে লিখিরা শোধ্যের মন্তকে রাখিবন এবং ঘটে এই মন্তে আমন্ত্রপ করিবেন।

"স্বং ঘটো ত্রন্ধণা স্বষ্টঃ পরীক্ষার্থং ছরাত্মনাম্। चकाরাদ্রশ্রমূর্ত্তিখং টকারাৎ কুটিলং নরং॥ ধৃতো ধারয়তে যন্ত্রাৎ ঘটজেনাভিধীয়তে। ছং বেৎসি সর্বভূতানাং পাপানি স্কৃতানি চ ॥ चरमय (पर कानीय न विष्यानि मानवाः। ব্যবহারাভিশতোহয়ং মামূব: ওদমিছতি॥ তদেনং সংশয়াদকাদ্ধতিস্তাতুমর্হসি।" পরে বিচারক তুলাধারককে উদ্দেশ করিয়া এই মন্ত্র পাঠ করিবেন---"ব্ৰহ্মল্লা যে স্বৃত্তা লোকা যে লোকা: কুটদান্দিণ:। कुनाथातच ८७ टनाकाखनाः थातवरा ग्रवा ॥³ এশাধ্য,ব্যক্তি এই মত্রে তুলা আমন্ত্রণ করিবে— "খং ভূলে সভ্যধামার্সি পুরা দেঁবৈ বিনির্মিতা। - তৎ সতাং বদ কল্যাণি সংশ্রামাং বিমোচয়। ৰক্তবিন্ পাপকুষাতভতো মাং ক্মধো ন্র। **७६८-७१**नमरबार्षः मार नर्दर (वर्शन क्रखादुःछर ॥" পরে পূর্বের ভার শোধাকে পূর্বাদিকে ও ঘট পশ্চিম-मिक नित्रा क्लिनिङ कतिरव । यसि के दाकि भागमुख हत्, **छाहा हहेरन छैर्फ উ**ठिर्द, भाषी **हहेरन निरम्न नामिरद,** ममान

থাকিলে পাপ অন্ন জানিতে হইবে। সম্পের্ছ ইলে প্রকার
এইরপে পরীক্ষা করা উচিত। কক্ষ, কীলক, পিক্য প্রস্তৃতি
ভর্গ ইইলে অন্তর জানিতে হইবে। (দিব্যত্ত্ব বীরমিজোদর)
১৮ তোলন, তুলানগু, তুর্গনির্দ্ধিত তুলানগু প্রধান, রম্ভত
নির্দ্ধিত মধ্যম, ইহার অভাবে ধদিরকাঠহারা তুলা করা
উচিত। তুলার প্রভাবে সকল জুবাের হ্রাস বৃদ্ধি জানা যার।
এই তুলা ব্রন্ধার চ্হিতা আদিত্যা নামে বিধ্যাত। শণ-

এই তুলা একার ছাইতা আদিওয়া নামে বিখ্যাত। শণ-নির্মিত চারিটা হ'তে ষড়বুল কোমবল্পই শিক্য যন্ত, ভাহার চারিপার্ম্বের হত্তঞ্জি পরিমাণ দশাব্দ। এইরপ ছইটা শিক্যের মধ্যহণেও অব্লি পরিমিত হত্তনির্মিত কক্ষা-রাধিতে হইবে। (বে হত্ত ধরিয়া ওজন কর্মী বার, ভাহার

নামুককা)। (বৃহৎসংহিতা ২৬ অ॰)

ভূলাকাবেরী, কাবেরী নদীর উৎপতিন্থান। কোরগ রাজ্যের পশ্চিমে সন্থাজির বে অংপ ব্রহ্মগিরি নামে থ্যাত, তাহারই উপর অক্ষা ১২° ২৩´১٠´ উ: এবং জাঘি ৭৫° ৩৪´১٠´ পূর্ব্বে গিরির পাদদেশত্ব ভাগমণ্ডল হইতে ২ ক্রোশ দ্রে ভূলাকাবেরী প্রবাহিত। উৎপতিত্বানের নিকট একটা অতি প্রাচীন দেবমন্দির আছে। দেব দর্শন করিবার জন্ত সহত্র হুব্র তীর্থাত্তী এথানে আসিয়া থাকে। এই ভূলাকাবেরীর অনেকগুলি মাহাত্মা পাওয়ায়, ভন্মধ্যে কোনথানি অফিপ্রাণীয়, কোনথানি ব্রহ্মবৈবর্ত্বপুরাণীয়, আবার কোনথানি ব্রহ্মবৈবর্ত্বপুরাণীয়, আবার কোনথানি ব্রহ্মবৈবর্ত্বপুরাণীয়, আবার কোনথানি ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণীয়, আবার কোনথানি ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণীয় ইত্যাদি নামে প্রচলিত আছে। স্থলপুরাণে লিখিত আছে—ভূলা (কার্ত্তিক) মাসে এখানে গলা আগমন করেন, সে সময় এথানে লান করিলে অনের প্র্যাণাভ ও

এইমাসে কোরগের প্রতি ঘর হইতে, এক এক ব্যক্তি গঙ্গাদেবীর পুঞা দিতে আসে।

সর্বাপাপ কর হয়।

মন্দিরের দেবসৈবার জন্ত গবর্মেণ্ট হইন্তে বঁৎসরে ২৩২ •্ টাকা বরাদ আছে।

তুলাকুট (রী) তুলারা: কৃটং ৬তং। তুলামানের কৃট, প্রকৃত পরিমাণ কম করা। তুলারাং কৃটং যক্ত। তুলার কৃটকারক লোক, যে ওজনে কম করে। , «

"মানক্টং তুলাক্টং কঠমোঠং নিপীড়র।" (কালীথ ৮ অং)
তুলাকোটি ('ত্রী) তুলাং সাল্খং কোটরতে ক্ট-ইন্।
১ স্প্র। তুলারা ক্টতি ক্ট-ইন্। ২ মানভেদ, পরিমাণ
বিশেষ, প্র্নুদসংখ্যা।

ভূলাকোটী (স্ত্রী) তুলাকোট বিষাং তীব্। ভূলাকোট দেখ।]
ভূলাকোষ (পুং) ভূলারা: পরিমাণত কোষইব। ভূলাপরীকা। (মিডাকরা)

তুলাক্সা (তুলখা) কাঠিবাড়ের অন্তর্গত ভাউনগর রাজ্যের মধ্যহিত একটা প্রাচীরবেটিত নগর। অক্ষাণ ২১°২১ ১৫" উ:, জাবিণ ৭২° ৪০০" পূ:। পাহাড়ের ঢালুদেশে অবছিত। ইহার চারিদিকে অতি স্থান্তর ও শিরনৈপুণাযুক্ত বিজয় দৈন-মন্দির আছে। গিরিচ্ডার প্রদিদ্ধ তুলখা-ভবানীর মন্দির ও একটা অতি মনোরম সরোবর বিজ্ঞান। শত শত তীর্ষবাত্রী তুলখাদেবী দর্শন ও সরোবরে স্থান করিবার ক্ষ এধানে আলিরা থাকে। স্থাপুরাণীর তুলখামাহাজ্যে এই স্থানের কথা বিজ্ত ভাবে বণিত আছে। এশানকার পাহাড়ে ধোদিত গুহা আছে। ১৮২০ খুটান্থ পর্যান্ত ঐ সকল গুহার চোর ডাকাতের। বাস করিত।

তুলাক্সী (তুগলি)—তঞ্চোরের বিভোৎসাহী একজন প্রাসিদ্ধ রাজা। ১৭৬৫ হইতে ১৭৮৮ খৃটান্দ পর্যন্ত রাজত্ব করেন।
ইহার নাম দিয়া নিম্নলিথিত কএকথানি সংস্কৃত গ্রন্থ রচিত
হইরাছে—১ আদিধর্মারসংগ্রহ, ২ ইনকুলতেজোনিধি
(জ্যোতিষ), ও ধন্বস্তারিসারবিধি, ৪ মন্ত্রশান্ত্রসংগ্রহ,
৫ রাজধর্মারসংগ্রহ, ৬ রামধ্যান, ৭ বাক্যামৃত (গণিত),
সন্ধীত্সারামৃত।

ভূলাজী অঙ্গ্ৰীয়, প্ৰিসিদ্ধ মহারাষ্ট্রনস্থা কনোশী অঙ্গীয়ার এক পুত্র। কনোশীর মত ইহার উৎপাতে ইংরাজ ও মহারাষ্ট্রগণ ব্যতিব্যক্ত হইয়াছিল। শেবে বোম্বাই গবর্মেণ্ট ও মহারাষ্ট্র-সেনাপতি একত হইয়া অনেক কষ্টে ভূলাজীকে পরাস্ত করেন। ভূলাদপ্ত (পুং) ভূলায়াঃ নওঃ। মানদপ্ত, নিক্তী, দাঁড়ী।

তুলাদান (ক্রী) তুলয়া খদেহমানেন দানং। তুলাপুরুষ গংজক,মহাদান। [তুলাপুরুষ দেখ।]

জুলাধ্ট (পু:) তুলারৈ তোলনার ধট:। তুলাধার দও। (আকাণ)
জুলাধ্র (আ) তুলারা মানদওত ধর: ধু-অচ্। ১ বাণিকক,
বণিক্ধর্মাপুরুষ। ২ তুলারাশি। ও স্থা। ৪ তুলাগুণ।
ধনিক্টার দড়ি। (আ) ৬ তুলাদগুধারক। (মেদিনী)

তুলাধার (পুং) তুলা-ধু-অণ্। ১ তুলারালি। ২ তুলাঙা।

ত বারাণসীনিবাসী একজন ব্যাধ। ইনি নিরন্তর পিতৃমাত্
নেবা করিতেন, সেই পুণ্যে ইনি সর্ব্ধানী হইরাছিলের। কুডবেগে নামক এক ব্যক্তি কোন আন্ধণের আদেশে ইংার
নিকট আসিলে ইনি ভাহার পূর্ববৃত্তান্ত সমন্ত বলেন। কুডবোধ ইংা ভানিয়া বিশ্বিত হর এবং ইহার বাক্যাল্লনার
তিনি পুনরায় পিভাষাভার পরিচর্যার কালকেপ করিতে
আরম্ভ করেন। (বৃহদ্ধাপুং ৩ অং)

৪ একজন বারাণসীনিবাসী বণিক, ইনি মহর্দি জাজনির্দে মোক্ষধর্মের উপজেশু দান করেন। "ভূলাধারো দ্বিগ্ধশ্বা বার্থপঞ্চাং মহাবশাঃ। লোহপোবং দার্হতে বজ্ঞাুং বধা খং বিজ্ঞসন্তম ।"
(ভারত ১২।২৬০৮)

ভুলাপুরুষদান (জী) ছ্লাপুরুষত ভূলোখিতপুরুষভারসম পরিমিতপ্রবাজ দানং ৬তৎ। বোড়শ মহাদানের অন্তর্গত बान विटेनव। त्यांकृतं महानादनत्र मदश्य अहे नान श्राथान . ও আদিদান। এই দান অরন, বিষুব্দংক্রাভি, ব্যতীপাত, निनक्त, युशानि, अवखवानि, शःकाखि, cलोर्गमात्री, बादनी, , আছক। প্রভৃতিতে করিতে হয়। সংসার-ভয়ভীফ তীর্থ, গৃহ, বন, ভড়াগ অথবা ষ্নোজ্ঞ স্থানে এই মহাদান . · कतिरत । कीरन कमिछा, धन कछा**ड ६क्**ण এই বিবেচনা করিরা এইরূপ দানাদিতে প্রবৃত্ত হইবে। পুণা ভিথিতে ব্রাহ্মণ নির্দিষ্ট করিয়া মণ্ডপ প্রস্তুত করিলে[®]। ভাহার মধ্যে **দপ্তহন্ত তোরণ এবং চারিদিকে চারিটা কুও ও পূর্ণকুত্ত** স্থাপন করিতে হইবে। ইহার° পূর্ব্বোত্তরে এক হাত বেদী করিবে, তাহাতে গ্রহাদি, ব্রহ্মা, শিব, অচ্যুত প্রভৃতি দেব-তাকে ফল, বন্ধ ও মাল্য ধারা পূজা করিতে হইবে। একা, শিব ও অচাতের প্রতিমাতে ও অভ পেবভার হ**ভিলে পূলা** করিতে হইবে।

সাল, ইঙ্গুনী, চলন, দেবদাঞ্চ, প্রীপর্ণী ও বিৰ এই সকল কাঠে তুলা প্রস্তুত করিতে হয়। তুলাদণ্ডের উক্ততা ৫ হাত ও মধ্যে ৪ হাত ফাঁক দিতে হয়। লোহ বারা শৃন্ধল করিতে হইবে। স্বর্ণযুক্ত রত্নমালা, মালাবিলেপন প্রভৃতি বারা ভাহা বিভৃষিত করিবে এবং ভাহাতে পঞ্চবর্ণ ও পঞ্চপতাকা শোভিত করিবে।

ইহাতে বিধানদক্ষ বেদবিদ্ গ্রাহ্মণ সকল নিযুক্ত করিবে। ঋথেদী হইলে পূর্মদিকে, যফুর্বেদী দক্ষিণদিকে, সামবেদী পশ্চিমদিকে ও অথর্মবেদী হইলে উত্তরদিকে ছই জন গ্রাহ্মণ স্থাপন করিতে হইবে। পরে বিলায়কাদি লোকপাল, আদিত্য প্রভৃতি গ্রহণণ, ব্রহ্মা প্রভৃতি দেবতা-দিগকে পূজা করিয়া এবং অ স্ব মন্ত্র বারা হোমচতুইয় জপ স্তক্ষ প্রভৃতি যজ্ঞান সন্তিত যথাবিহিত মন্ত্র বারা আর্চিত করিবে। পরে জাপকগণ শান্তিক অধ্যার জপ করিবে। ইহাতে আদি অন্ত ও মধ্যে ব্রাহ্মণ স্থিবাচন,করিবে।

পরে তিন বার তুলা প্রাক্ষণে করিয়া পুজাঞ্জলি লইয়া এই মত্তে তুলা আমত্রণ করিবে—

্ৰন্যতে সৰ্বদেৰানাং শক্তিত্s শক্তিমাৰিত। । সাক্ষীত্তা কগড়াতা নিৰ্দ্ধিতা: বিশ্বদেশিদা a व्यक्तः मर्सम्छानि छ्या छ्डल्छानि छ ।

सर्वाधर्षक्रछाः मरम् द्याणिकानि कनिहरू ॥

सर छ्रम नर्सक्छानारै व्यमाणमिह कीर्विडा ।

मार छानवछो नरनावाछ्कत्रथ नरमाश्च छ ॥

नरमा नमरण त्याविक्त । छ्नाश्करनारक्षक ।

सर हरत छात्रवाद्यानकार नरनात्रनावार ॥

स्थार कानमधानाच क्रवाधिनाननः श्नः ।

स्वाः व्यक्तिनः क्रवा छाः छ्नामान्यस्व थः ॥

नथक्रवाक्तिनः क्रवा छाः छ्नामान्यस्व ॥

नथक्रवाक्तिनः क्रवि नर्साक्त्रव्य ।

सर्वताक्रमधानाव हिम्मः स्र्याण नरम्छः ॥

এই মত্র পাঠ করিলে তাহার পর বাহ্মণগণ তাহাকে তুলার হাপন করিবে, ক্লাকাল তুলার থাকিয়া আ্যার এই মত্র পড়িতে হইবে।

> "নমতে সাকীভূতানাং গাকী ভূতে সনাতনি। পিতামহেন দেবি জং নির্দ্ধিতা পুরমেটিনা ॥ জুলা ধৃতং জগৎ সর্কং সংস্থাবরজন্মম্। সর্কাভূতাক্ষভূততে নমতে বিশ্বধারিণি॥"

এই মন্ত্র পড়িরা তুলা হইতে অবতরণ করিবে। পরে তুলাঞ্চিত্ত দ্রবেরর অর্থেক গুরুকে দিবে, আর অর্থেক অন্তর্গক বিভাগ করিরা দিবে। তুলান্থিত দ্রব্য অধিককণ গৃহে রাধিবে না।

জুলাদানে একদিকে নিজে ও অঞ্চদিকে স্বৰ্ণ, রজত প্রভৃতি দিয়া ওজন করিতে হয়।

জবাবিশেবে তুলা করিলে তাহার এইরূপ ফল হয়। বে ব্যক্তি অটুধাত্র তুলা করেন, তিনি মন, বাক্য ও কারসম্ভব সকল পাপ হইতে মুক্ত হন এবং যতদিন পর্যান্ত ঐ সকল ধাতৃ পাকে, তত শত কোটি বর্ব অর্গলোকে বাস করেন। পরে পুণাক্ষর হইলে উচ্চ কলে জন্ম হয় এবং ধন ধান্ত প্রভৃতি ঘারা সমুদ্ধ হন। যিনি স্থবর্ণ ঘারা তুলা করেন, তিনি পূর্বের দশপুরুষ ও পরে দশ পুরুষ পিতৃগণকে উদ্ধার করেন এবং আপনিও অর্গগামী হন ও কথনই তাহার দারিত্র হয় না। যিনি রৌপ্যের তুলা করেন, তিনি অর্গণীত রাজা হইরা জুন্ম গ্রহণ করেন। স্থবর্ণ করিরা নিস্পাপ হয় ও অর্গলোকে বাস করে।

কাংতের ত্লা করিলে ইস্তের পদ, 'লোহার ত্লা করিলে উত্তম হানলাত, পিওলের ত্লা করিলে হুর্গ, নীসকের ত্লা করিলে গদ্ধর্কলোকে বাস, রাঙ্গের ত্লা করিলে চল্লের সার্ধালাত, মুডের ত্লা করিলে তেঞ্জনী এবং তৈলের ত্লা করিলে স্বালী ও স্থা হব। যত্ত প্রকার দান আছে, তর্গণো তুলাদানই সর্বপ্রধান।

দীবন ধারণ করিয়া প্রত্যেক সম্খ্রই দান করা অবস্থ কর্তব্য। বিজ্ঞাধাত্সারে স্থবগানি তুলা দান অবস্থ বিধের।
(দানসাগর)

২ ব্রতভেদ, এই ব্রত ১৫ দিন বা ২১ দিন ধরিয়া করিতে হয়।
১৫ দিন সাধ্য ব্রভে পিঞাক, জ্বাচাম (ভাতের মাড়),
তক্র, উদক, সক্তু এই ৫টা জব্য ভিন দিন করিয়া ধাইয়া
ধাকিতে হয়। ২১ দিন সাধ্য ব্রভে পূর্ব্বোক্ত ৫টা জব্য
ভিন দিন করিয়া ১৫ দিন ও ৬ দিন বায়ুভক্ষণ অর্থাৎ উপবাস
করিলে এই ব্রভ করা হয়। ৬

্লাপ্রপ্রান্ত (পুং) তুলা-প্র-প্রন্থ অপ্। তুলাদ্ধ, তুলার ঋণ, নিক্তির দক্ষি।

লোপ্রাহ (পুং) তুলা-প্র-প্রহ বঞ্। তুলাদও।

চুলামান (ক্রী) তুলার্জং ডোলনার্জং মানং মীরতে হনেন মা
করণে লাট্। ১ তুলাদও। ২ তুলাদওে পরিমাণ, ওজন।

চুলাযক্তি (প্রা) তুলারা বস্তঃ ৬তৎ। তুলাদও।

তুলাযান্তি (ব্রী) তুলারাঃ বস্তঃ ৬তৎ। তুলাদও।

তুলারাম সোনাপতি, কাছার্জের শেব হিন্দুরালা পোবিন্দ
হপ্রের একজন চাপ্রালি। বিজোহে তুলারানের পিতার

বৃত্য হইলে তুলারাম পাহাড়ে গিরা আপ্রর লইল। এধানে

তুলারাম আপনার প্রভুছ বিতার করিতে আরম্ভ করিলেন।

১৮২৪ খুটাকে ব্ৰহ্ণসৈত্ব আসিরা বধন কাছাড় রাজ্য আক্রমণ করে, সেই সমর তুলারাম তাহাদের অনেকটা সাহাব্য করিমাছিলেন। ১৮২৯ খুটাকে কাছাড়রাজ বাধ্য হইয়া তুলারামকে থানিকটা পার্কতীর ভূতাগ ছাড়িয়া দিলেন। ১৮৩৪ খুটাকে রাজা গোবিক্লচক্রের হত্যার পর ভূকারাম মহর ও দরাজ নদীর অন্তবর্তী এবং দরাজ ও কাশিনী

্ইতিপূর্ব্বে তুবারাম 'দেনাপতি' উপাধি গ্রহণ করেন। উদ্ভৱে দরাল ও বমুনা নদী, দক্ষিণে মহর নদী, পূর্ব্বে ধনে-

ু প্ৰজাস চিন্ত কোষ্ট্ৰাত কাৰ্য্য কৰা বিশ্ব কৰ

জুলাপুরুব ইংতাব জেলঃ পঞ্চশাহিকঃ ।
এবাং পিভাভাগীনাং পঞ্চানাং ক্ষেত্র বৈক্ষিত বিশ্ববিভাগেনৰ পঞ্চলাহ্যাপী জুলাপুরুবাধাঃ কুজেু। বেছিতবাঃ। অত পঞ্চশাহিকছবিধানাত্বপ্রাস্ত নিমুজিঃ। বংগিন জু একবিংশভিদ্যানিকজনাপুরুব উজঃ।

वांताववर निकांकर वक्षरभावनमञ्ज्ञाम् । जोहर वाहर अवुक्षामा नांत्र्यक्षवावनवर ॥ अवनिरमक्तिवाजक कृषानुबन वेतारक ।" (वेत) খরী এবং পশ্চিমে ধরাজ নজীর মধাবর্তী সক্ষার জ্ঞাপ তুলারান সেনাগতির অধিকারে থাকে। এইখান সরকারী । কাগলগতে তুলারান সেনাগতির রাজ্য বা মহাল স্বলিলাপুর । নামে উক্ত ইইলাছে।

তুলারাম প্রমেণ্টকে প্রথমে প্রতিবর্ধে এটা হস্তী, পরে ৪৯০ টাকা করিরা কর দিতেন। অতিশর বৃদ্ধ হইরা পড়ার ১৮১৪ গুরাকে তিনি আগন সম্পত্তি আগনার তুই প্রকে তাগ করিরা দেন। ১৮৫০ গুরাকে তাঁহার মৃত্যু হর। তাঁহার জ্যেরপুত্রের নাম নকুলরাম। তিনি ১৮৫০ গুরাকে লাগাদের বিক্ষে বৃদ্ধ করিতে গিয়া নিহন্ত হল।

তৎপরে-তৃলায়াম সেনাপতির রাজ্যে নানা প্রকার
বিশুমালা ছটিতে লাগিল। ভজ্জাত বৃটীল গবর্মেন্ট ১৮৫৯
গৃষ্টাক্ষে তৃলারামের পরিবারক ৫ জনকে থানিকটা লাখরাজ্
জমি ও সামাত বৃত্তি নির্দারিত করিয়া সমুদার ভূতাগ
উত্তরকাছাড়ের সামীল করিয়া লইলেন। তথ্য ঐ ভূতাগের
পরিমাণ ১৮০০ বর্গমাইল ছিল।

ভুলাবe (বি) তুলা বিভাতে ২ছ তুলা-মতুপ্ মত বঃ। ভুলাবারী।

তুলাবীজ (ক্নী) তুলায়া: ভোলনন্ত বীলং ৬তং। গুলা, কুঁচ। তুলাসূত্ৰ (ক্নী) তুলার্থং ভোলনার্থং পুজং। তুলাদগুহিত কুজ, প্রপ্রহ, নিক্তির দড়ী।

ভূলি (ত্রী) ভূরি রক্ত ল। ১ ভূরী, ভদ্ধবারের ভূরী। ২ চিক্র করের বর্তিকা, ইহা ছারা ছবিতে রং দেওরা হয়।

ভূলিকা (খ্রী) ভোলয়তি নানৃষ্ঠং গছতি ভূল বাহুলকাৎ ইব্দন্ ু সচ কিং। ১ খন্ত্রনপকী। (জিকাণ) ২ ভূলি।

তুলিত (বি) তুল ওংকরোডীতি পিচ্ কর্মণি জ। পরিমিত. বাহা ওলন করা বইরাছে, সদৃশীকত, বাহার তুলনা করা হইরাছে।

তুলিনী (ত্রী) তুলমতি কলে ২জা তুল-ইনি জীপ্ প্রো হয়:। শালনী, শিম্ল গাছ।

जुलिकला (बी) जूनि जूनत्वर कमा वकाः श्राम उपा। भागमी, भित्रम नाकः। (बद्रमानाः)

जूली ('बी) जूती-तज माः) क्षत्रशास्त्र जूती। (भवना) २ ('समल) जूलि।

जुलूव (जूल्) वाक्तिवारणकः अक्ति आठीक जनशकः। जन्निव अ नमूख अवर क्लालिश्कः कळितित मदीवारकः नग्वः वदः विक । अक्ति >२० २५ ह्हेटक >४० २४ के. आविष्तार वर्ष हहेटक ५४० ०० लेटा नश्राक्तिवारक और सामा दिक्तिवार दिल मार्ग वाधाक हहेत्रोटकः শুভত: সহাজিশিখরে হৃদ্রে দৃষ্টবাশ্বনিঃ।...
নানাক্লপ্রজ্ববৈশনাককরসাত্তি: ।
জ্বতীর্যা নদশিখ তৌলবং দেশসূত্যস্।
জংক্ষেরং প্রাপ্তবান্ রামো মেধাবী ভৃগুনক্ষনঃ।
হৃহালিকেবরং সমাক্ পূজরামাস শাস্তভঃ।

(केंक्सोई २०१६०-६१)

এই ছানের অধিবাসীরাও সহাজিপতে "ভৌল্ব" নামে ক্রিড হইরাছে। (সহাজি॰ ২।৪।৯)

এখন এই স্থান উত্তর কাণাড়া নামে খ্যাভ। স্থলপুরাণীর তুলুবনার উৎপত্তিশ নামক প্রহের এই স্থানের মাহাস্ম্য বীর্ণিক আছে।

এই প্রবেশে ভূনুভাষা প্রচনিত। প্রার চারিলক লোকে এই ভাষার কথা কর। ছরটা প্রধান ফ্রাইক্ভাষার মধ্যে ভূনুও একটা। এই ভাষার কোন ক্রমাদি নাই। মলরালম্ অথবা কণাড়ী অকরেই এ ভাষার লেখনকার্য্য সমাধা হয়।

কাণাড়ার ইতিহাসের সহিত তুলুবের ইতিহাস সংশিষ্ট।
তুলোপলা (ম্বী) ছুলা ও উপত্লা, চতুর্থভাগের নাম
তুলা, তৃতীর ভাগের নাম উপত্লা।

"ভ্ৰতি ভূলোপভূলানাং মূলং-পাদেন পাদেন।"

(বৃহৎসং**হিতা ৩৩**০০)

তুল্তুল্ (দেশক) কোমল, চাপসহ।
তুল্তুলায়া (দেশক) কোমল, চাপসহ।
তুল্যু (ি) তুলরা সন্ধিতং বং। (নোবরোধর্মেতি। পা
৪।৪।৯১) সাদৃশ্য। পর্বার—সম, সদৃক্ষ, সদৃশ, সদৃক্, সাধারণ,
সমাম, সধর্ম, সন্ধিত, করপ। (ফটাধর) এই সক্র পদ উত্তরপদত্ব হইলে তুলাবাচক হয়। নিত, সহাশ, নীকাশ,
প্রতীকাশ, উপমা, ভৃত, রূপ, কয়, প্রভ এখণিও তুলাপর্বার। (শকরং) (পুং) ২ বনামধাত গ্রহ্ম।

(ভারত ২।১•৩।৭)

তুল্যকোণিক (Equiangular) বে সকল ক্ষেত্রের কোণ-ভাল গরন্পার সমান: ৷-

जुलाखा (ग्र) ज्नार बानां जिल्लाका-कः ज्ना कानी, नगनकानीः

जुलाजा (बी) ज्नाच छारः ज्ना छन् हेर्न् । नावृत्रं, ज्नाच । जुलाक्षेत्रं (बि) जूनार बर्गनर रक रहती । वनान वर्गन ।

"চকু: রুণাং বছণি জুলারশনাঃ।" (ছাগ ১/৫।২৪) তুল্যুপান (রী) ভুলোঃ নহ পানং। তুল্য অর্থাৎ বজাতীর ব্যক্তির সহিদ্ধ পান, বজাতীয় অনেক লোকের সহিক পান করা। পর্যায়—গদীভি। (জুমর) जूला देश (बिर्व) जूनोर स्नर का । अन्यन्तिमन्त्र । जूनार वनर कर्नारा । र नमान रन ।

जूला छावन (जी) जूनाः जायनः। अवधानात मानित निज्ञनन। जूला मृत्रा (जि) जूनाः मृताः रकः। > नवान भृतादिनिद्र। २ नवान, नवृत्त।

তুল্যযোগিতা (খ্রী) কাব্যাগকারবিশেষ, বেখানে প্রছড (প্রতাবিভা) বা প্রভঙ্গ (অপ্রতাবিভা) প্রার্থসমূহের খ্রণ ক্রিয়া ও রূপের একধর্ম সেয়ক হুর, সেই হুলে এই অস্তার হয়।

শিলার্থানাং প্রস্ততানামন্তেবাং বা বলা ভবেং।

একধর্ণাভিস্থন্ধ: ভাতনা তুলাবোগিতা ॥ (সাহিত্যার্পরি)
তুলারেনি (জি) তুলাং রূপং যভ। একরপ, সদৃশ ।
তুলারেনি (জি) তুলা বৃত্তির্যভ। এক ব্যবসারী।
তুলাক্রনি (জবা) তুলা বীপার্থে-লন্। সমান সমান।
তুলাকুনি (জি) তুলা আকৃতি বভ। সদৃশাকৃতি, সমান জাকারবিশিষ্ট।

ভুজ্জল (পুং) ধবিভেদ। [ভৌষণি বেখ।] ভূবর (পুংক্লী) ভবভি হিনতি রোগান্ ভূ-বাছ বরচ্।

১ ক্ৰার রদ। (ত্রি) ২ ক্ৰাররসমূক্ট।

"নাতিসাক্তরং তক্রং আছরং ভূবরং রদে।" (রুঞ্চ ১।১৫.)

৩ শাঞ্চীন। ৪ ধান্তভেদ।

তুষর্যাবনাল (পং) তুবর: ক্বার: ধাবনাল: ক্র্মণাণ।
ধান্তজ্যেল লালজনার। পর্যার — জুবর, ক্বার্যাবনাল, রক্তবাবনাল, লোহিতকুস্তব্দুক্ধান্ত। ইহার গুণ — ক্বার, উঞ্চ, বিদ্ধে চক, সংগ্রাহী, বাতনাশক, বিদাহী ও শোবকারক। (রাজনিণ) তুবরিকা (ত্রী) তুবর: ক্বাররসোহস্ত্যকা: তুবর ঠন্।

১ সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা, ফটকিরি। ২ আঢ়কী, অভ্ছর। (গুরত)
তুবরী (ত্রাঁ) তুবর ত্রিরাং বিভাও তীব্। ১ আঢ়কী, অভ্ছর।
২ ধান্তভেদ, তোরী। ইহার তাল ধারক, লঘু, তীক্ষ, উষ্ণবীর্ব্য,
অগ্নিকারক এবং কফ, বিব, রক্ত, কণু, কুঠ ও কোঠগভ
রোগনাশক। (ভাবপ্রাং)

ত সৌরাই-মৃত্তিকা, কটকিরি। পর্যার—মৃৎ, সৌরারী, মৃৎবা, আসল, মসী, জুরাইলা, স্বতানক, কানী, মৃত্তিকা, জত্যা, কানী, জুলাতা। ইহার গুণ—তিজ্ঞ, কটু, করার, উষ্ণ, লেখন, চক্ষুর হিতকর, প্রাহী, ছর্দি ও পিত অন্ত অ্তানালক। (রাজনিং)

जूरती मिच (ग्र.) पूरवी। देव भिचा क्शवक् वंछ। हक्पमेन्द्रक, हाकूरक बाह।

खुवि (बी) खूबी शृत्वा नावू:। > खूबी, जनाव्।'

ভৰতি বুৱাৰ্য: সৌত্যোধাতৃঃ ইতি ই। (আচ ইঃ। উণ্ ৪।১৩৮) ६ वह मसार्थ। (निष्णे ू ७)

কৃবিক্লাম্ম (তি) বছকর্মা, যুদ্ধে, অনেক প্রকার কার্যাকর্তা। "তুৰিগ্ৰাভং তৃৰিকুৰ্শিং রভোদাং" (ঋক্ ভাষা**২৫) 'তুৰিগ্ৰাভং** ভুবীনাং বহুনাং গ্রহীভারং ভুবিকৃশ্মিং বছকশ্মাণং' (সারণ) "মহাব্রাভন্তবিকৃৰ্দ্নি" (স্বক্ ৩৩০।৩) 'কৃবিকৃৰ্দ্নিঃ সংগ্রাদে मानाविधकर्षनाः कर्छ। ज्विक्यिं कत्त्राट्ड त्रोगांपिटका মি আর্ডায়ঃ ৩৫.০ ফুচতে ২,কারজোজং ছান্দসং'। (সারণ) তুবিতা (তি) প্রভূতগমন।

"তুবিগ্রেভি: স্বভির্বাতি" (ঋক্ ১৷১৪০৷১) 'তুবিগ্রোভ: ঞ্জুভং শক্ষমি: প্রভূতগমনৈ বাঁ' (সায়ণ)

্তুবিগ্রাভ (অ) বহুগ্রাহক। [ডুবিক্র্মি দেখ।] ত্বিত্রি (জি) পূর্ণগ্রীব, অনেক প্রকারে স্বোতবা।

"তুৰিগ্ৰামে বছায়ে ছইরীত্বে" (ঋক্ ২।২১।২) 'তুৰিগ্ৰামে পূর্ণক্রীবাম গু-শলে ওণাদিক: কর্মণি ক প্রত্যয়: তুবিভি: वङ्डिः (छोडवााय" (मात्रग)

জুবিত্ৰীব (তি) বিত্তীৰ্ণকন্ধর । "জুবিত্ৰীবো বপোদরঃ" (শক্ ৮০১৭৮৮) 'ত্ৰিগ্ৰীৰো বিত্তীৰ্ণ [®]ক্ষর:'(সায়ণ) প্রবৃদ্ধ গ্রীবা। ["]ত্বিপ্রাবা ইবেরতে" (ঋক্ ১।১৮৭।৫) 'তুবিত্রীবাইব তুবীতি বছনাম। প্রবৃদ্ধত্রীবা ইব' (नाय)

ত্বিজ্ঞাত (জি) যাহা হইতে পৃথিকাদি বহ স্বাহিছ। ["] ওলায়মানং তুবিলাত তব্যান্" (ঋক্ **এ**০২৷১১ <u>)</u>, '**ত্বিলাত**-বছুনি লাভানি পৃথিবাদীনি যন্তাৎ সোহয়ং ভূবিলাভঃ' (সায়ণ) এইস্থা ভূবিজাত ইন্দ্রের বিশেষণ।

তৃবিস্তাল (ত্রি) তুবি বহু ছান্তং ধনং মন্ত। প্রভূত ধনেক্র, প্রস্তুত ধনশালী। "তুবিহান যশসতঃ" (ঋক্ ১।৯।৬), 'ছে ভূবিছায় প্রভূতধনেজ' (সায়ণ)

जुितमुद्ध (जि) श्रेष्ट्ड वगर्क ।

"মহিশ্ৰস্তৰিনৃষং" (ঋক্ ১।৪৪।৭) 'তুবিনৃষং প্ৰভূত-बनयूकः' (भावन)

জুৰিপ্ৰতি (অ) বহু প্ৰতিগন্তা। "ভূবিপ্ৰতি নরং" (খুক্ ১৷৩∙ঃ৯) 'তৃবিপ্লভিং জুমীনাং বছ্নাং প্ৰতিগস্তারং' (সায়ণ) তৃবিবাধ (অিৃ) বছর বাধক, অমনেকের পীড়ক। ैभहाबोत्रः ज्विवाधः" (**ब**क् ১।०२।७) 'ज्विवाधः बहुनाः बांधकः' (माध्रा)

ভূবিত্রকান্ (অি) বছভোত, বাহার অন্নৈক ভোতে আনছে। ^লতমং তৃবিত্রকাণমূত্মং" (ঋক্ circle), 'ছুবিত্রছাণ' ৰহুভোতিং' (সামণ)

कृतिमध [जूरीमद (म्य.।] : ভূবিমৃক্যু (অ) প্রবৃদ্দতি। "ভীমাসন্ত্রিমন্তবঃ" (বন্ ৭) এ. 'ভূবিম্ভব: প্রবৃদ্ধমভরঃ' (সার্ণ)

তুবিস্ (রী) তৃ-রঙ্গৌ পুভৌ বা ইনি কিচে। > इहि। ′२े≾।ख्डा। ७ दग≀

"ভীমস্তবিল্লাঞ্ৰ্যণিত্য" (ঋক্ ১৷৫৫৷১) 'তুবিল্লাবান্ **প্ৰক্ৰাবা**ন্ বলবান্ ৰা' (সাৰণ)

তুবিত্রক (তি) পানেকের বর্ষণে সংবেহনকর্তা। স্বর্ধাৎ **স্থানেক** বর্ষণ করিয়া সিগ্ধকারক। "ডুবিড্রন্সোনদন্ত্রাং।" (পক্ জ্বের) 'ভূবিত্রক। সংক্রের কর্তা, ভূবীনাং বহুনাং বর্ণদেন সংকেহনকর্তা।' (नाइन)

ভুবিরাধস্ (জি) প্রভৃত ধনযুক্ত। "বিপ্রা ভুবিরাধসো নূন্।" (अक् बाबमार), 'कृतिवाधमः व्यक्तिधनान्।' (मात्रग)

তুবিবাঞ্জ (অ) প্ৰভূত বলযুক। "সম্ভ ত্ৰিবালাঃ" (পক্ ১।৩-।১৩) 'তুবিবাজাঃ প্রান্ত্রবলাঃ।' (সায়ণ)

জুবিশাগ্ম (তি.) বছ হুধযুক্ত। "বঃ শগাস্তবিশগা" (শক্ ৬।৪৪।২) 'হে ভূবিশগা বছথথেকা।' (সায়ণ)

তুবিশুস্থা (তি) বছৰল, অনেক বলগপার। "ঘৰাশিরং তুবি-ভন্নতৃপৎ" (ঋকু ২৷২১৷১), 'তুবিভন্মো বহুবলঃ ন' (সায়ণ)

তুবি শ্রবস্ (তি) বহু অরযুক্ত। "অফি স্থবিশ্রবস্তমং।" (सक् दारदाद) 'जूरिअवस्य स्थाजिमायन वस्त्राः।' (नायन)

তুবিষ্টম (बि) বছতম। "তুবিষ্টমো নরাং ন" (ধক্ ১।১৮৬।৬) 'তুবিইমো বছতমো' (সায়ণ)

कृतिज्ञा (बि) कृतिम् मकू १। > शिक्षावान्। २ वनवान्। "ভীমস্তবিশ্বান্।" (ঋক্ ১।৫৫।১) 'ত্বিশ্বান্ এক্তাবান্ वनवान् वा'। (সায়ণ)

ভুবিস্থণস্ (তি) প্রভৃত ধ্বনিযুক্ত। "ভূবিছণসং স্থযজং" (শক্ eচেত) 'তুবিষণদং প্রভূতধ্বনিং' (**সা**য়ণ)

তুবিল্বলি (बि) महायन, महानलपुक । "स्गा তুবিলা।" (ঋক্ ১/৫৮/৪) "তুৰিস্বনিৰ্মহাস্থনঃ" (সারণ)

তুবিস্বন্ (জি) বছশক যুক্ত। "ৰশ্মিন্ তুবিষণি" (ঋক্ ৫।১৮৩) 'তুবি্ছণি বছণজে' (সারণ) 🥊

ভুবীমঘু(অ) প্ৰভূত ধনষ্ক। "সহত্ৰেষ্ ভ্ৰীমঘ" (वर ১৷২৯৷১) 'তুৰীমৰ বহুধনেজ্ৰ' (সাহণ)

তুবীরব (, জি) বহুশক্ষ্ক। "তুবীরবং পতির্দন্"। (🔫 ১০।৯৯।৬) 'ত্ৰীরবং মহণকং' (সায়ণ)

जूदो त्रवद् (वि) जूनी मच्नीत्त्रा तः उट्डा मजून् मछ द । वह তোভূবুক ্ "কথা ক্ৰিজনীয়বান্" (শক্ ১০।৩৪।৪) 'ছ্ৰীক বান্ বহুতোত্যুক্তঃ ত্বিশস্ত বো মুর্থীয় ।' (সারণ)

जूरवाकम् (वि) जूरि उवः रकः। रक्ष्यन युकः। "जूरवाबनः
तभोः" (बक् वारकाः) 'कूरवाबमः रह्यनः' (मात्रमः)
जूर्य (ग्रः) जूर-कः। > शक्ष्यक्, शास्त्रत्र (बार्या, जूरः। र विकी-क्षक् वृक्षः, यरक्षांगाहः।

"ত্বেণাপি পরিত্যকা ন প্ররোহবি তওুলাঃ।" (হিডোপণ)
তুর্প্রহ (পুং) তুবেণ গৃহতে প্রহ কর্মণি অপ্। আয়। (ত্রিকাণ)
তুষক্র (ত্রি) তুবে কারতে, জন-ড। তুবলাত আরি প্রভৃতি।
তুমধান্য (ক্রী) তুবাবৃতং ধাঞ্জং। সভ্যধাঞ্জ।

ত্বধান্তভীক্ষরাভিচান্ধবভালকর্মজা:।" (বৃহৎস ১৫।৪)
ভূষদার (পুং) তৃষং সরতি অফুসরতি ক্ষণ। অমি ভূষের
মধ্যে ক্রমে ক্রমে সঞ্চারিত হয় এই রাল ভূষের নাম তৃষ্পার।
ভূষানল (পুং) ভূষত অনলঃ। ১ ভূষলাত অমি, ভূষের
আভিন। ২ ভূষাবিতে আত্মদাহরূপ আর্শিভ্তবিশেষ।

"শ্রুডেডি ডাং সম্বর্মেষ গচ্ছন্

ব্যালোকরতং ত্ররাশিসংখ্য।" (শহরবিজয় ৭।৭৭)
তুরালু (রী) ত্বত অভ্: ৬তৎ। তুবোদক, কাঞ্জীক, কাঞ্জী,
সত্ব যব কুটিরা যে কাঞ্জী প্রস্তাকরা বার, ভাহাকে তুবোদক করে। ইহার গুণ—জ্মিলীপ্রিকারক, ভ্রমগ্রহাইট,
তীক্ষ, উষ্ণবীর্ঘ্য, পাচক, রক্তপ্রেজনক এবং পাণ্ডু, ক্লমি
ও বস্তিগত শূলবিনাশক। (ভাবপ্রকাশ)

"ত্ৰাখ্দীপনং জ্ঞং হৃৎপাঙ্পাৰ্যরোগস্থ। গ্রহণার্দোবিকারমং ভেদিসোবীরকং তথা॥"

(সুশ্ৰুত স্তু ৪৫ অ॰)

জুষার (পুং) ভুয়াত্যনেন শহাং ভুষ-আবেন্ (ভুষারাদয়ণচ। উণ্তা১৩৯।) ১ হিম্নীহার, শিশির। ২ হিমুকণ।

বিকিরণ শক্তিই তুষার উৎপত্তির প্রধান কারণ। রাত্রিকালে ভ্তলত্ব বস্তু সকল তেজবিকীর্ণ করিয়া বাযুরাশি অপেকা সম্বিক শীতল হইলে চতুঃপার্শ্বর বাযুর অন্তর্গত কিরদংশ জলীর ব্রাম্প দ্রণীভূত হইরা তুষার বিন্দুরূপে উহাদিগের
উপরিভাগে বিক্তন্ত হর।

উষ্ণতার যত হাস হয়, বায়ুরালিতে তত জার বাজা থাকিতে পারে অর্থাই তত জার বাজা বায়া বায়ুরালি পরিবিক্ত হয়। স্ক্রেরাং বিবাভাগে বায়ুতে যে বাজা থাকে, রাত্রিতে সমধিক শীতল হইলে বলি তুলারা উহা পরিবিক্ত হইরা উঠে, তাহা হইলে শীতল ক্রমা কুলারাবিশ্রুরে পরিপত হয়। বায়ুতে বত জাধিক পরিমাণে বাজা থাকে, তত জার পরিমাণে শীতল হইলেই তুরার সমুৎপদ্ধ হয়। এতজেশে ত্রীয়কালে বিবাভাগে বায়ুরালি জাতাক উত্তর্জ হয়, কিছ রাত্রিতে সেরপ

শীতল হয় না, এ কারণ বাযুত্ ৰাম্পণ্ড ভূবাররপে পরিণ্ড হয় না। বে সকল বস্তর বিকিরণশক্তি সম্ধিক প্রাবল, ভাহার। রাজিকালে সম্ধিক শীতল হয়, 🕰 কারণ সেই সকল বস্তুর উপর সমধিক তুবার সঞ্চিত হয়। ধাতুদ্রবা সকলের বিকিরণ শক্তি নিভান্ত অল, এই নিমিত্ত ভাছাদের উপর ভাদৃশ শিশির সঞ্চিত হয় না। কিন্তু মৃত্তিকা, কাচ, বালুকা, বৃক্ষপত্র, পশম প্রভৃতি দ্রব্য সমধিক বিকিরণশক্তিসম্পর **হওয়াতে ভাহাদের উপর শ্রহুর পরিমাণে ত্**ষার সঞ্চিত **হই**য়া ধাকে। তদ্বারা পৃথিবীপৃষ্ঠ ∢ইতে তেঅ-বিকিরণের প্রতি-বন্ধকতাহয়, তদ্বারা তুষার উৎপত্তির প্রতিবৃদ্ধকতা হইয়া থাকে। আকাশমগুল মেঘাবৃত হইলে ভূপৃষ্ঠ তেজ-ব্রিকিবণ ৰারা তাদৃশ শীতল হইতে পারে না, কেন না মেখাবলী হইতে তেজবিকীর্ণ ছইয়া আসিয়া উহার উপরে পতিও হয়। এ কারণ মেঘাচ্ছর রাজিতে সেরপ শিশির সম্ৎপর হয় না। বিভ্ত শাথাবিশিষ্ট বৃক্তবেও এই কারণে শিশির উৎপন্ন হয়না। মলল মলল বেগেবায়ু প্রবাহিত হইলে এবা,সকল সমধিক' শীতল হয় এবং তুষারোৎপত্তি অপেকাক্ষত অধিক ছইয়া থাকে, কেননা তত অৱ পরিমাণে শীতল হইলে বাজা কর্তৃক বাযুপরিবিক্ত হইয়াউঠে। নদী হইতে সমুদ্র প্রায়ত সমস্ত জ্ঞলাশয়ের অন্তর্বন্তী তেজ সংযোগে ধ্মের অবয়ব সদৃশ ৰাম্পাকারে উত্থিত হইয়া যে জল পতিত হয়, তাহাকে তৃষারজ অল বলে। এই তৃষারজ জল প্রাণিগণের পকে অহিতকর, কিন্তু বৃক্ষাদির বিশেষ উপকারক। ভাবপ্রকাশ মতে ইহার গুণ--শীতল, রুক্ষ, বায়্বর্দ্ধক, পিত্তনাশক এবং क्फ. डिक्नैन्डस, कर्शदांग, मन्ताधि, स्मन ও গলগভাদি রোগ-নাশক। (ভাবপ্রকাশ) [বিশেষ বিবরণ শিশির দেখ।] ৩ শীতল স্পৃশ। (অ.) ৪ শীতল স্পৃশ্কু।

"অপাংহি তৃপ্তার ন বারিধারা আছে: স্থগদ্ধি: অপতে তৃষারা।" (নৈষ্ধ)

ধ কর্প্রভেদ। ৬ দেশভেদ, হিমালয়ের উত্তরবর্তী একটা দেশ। গ্রীকদিগের গ্রন্থে 'তোথারি' নামে বৃণিত হইগাছে। ৭ তুষারদেশোদ্ধব কাজি।

"ত্বারান্ বর্করান্ কারান্" (মৎস্পু ' ১২০ ।৪৫)
প্রস্কুত্তব্বিদ্গণের মতে ইহারা শক জাতিরই এক শালা।
খ্রীয় ১ম শতাক্ষীতে ইহারা ভারতবর্ষে প্রবেশ করিয়া নানা '

স্থান আক্রমণ করে।
তুষারকণ (গং) তুষারাণাং কণ: ৬তৎ। হিমকণ, শিশির।
তুষারকাল (গং) তুষারত কাল: ৬তৎ। শীতকাল।
তুষারকর (গং) > হিমকর, চক্র । ২ কর্প্রভেদ।

তুষার কিরণ (পুং) হিমকিরণ, চক্র।
তুষার গিরি (পুং) হিমালর, হিমগিরি।
তুষারগোর (তি) তুষারবং গৌরং। > হিমের মতন ধ্বল।

১ কপুর।

ভূষারন্ বিহার, প্রতাপগৃত্দেলার অন্তর্গত একটা প্রাচীন সহর। অবোধ্যার মধ্যে এই স্থান অতি প্রাচীন ও বিধ্যাত। মুস্পমান আমলে এথানে জেলার প্রধান সদর ছিল। এথনও এই স্থান স্বাবিহার নামে থ্যাত। স্লার প্রাচীন গর্জের উপর নগর স্থাপিত। নগরের পশ্চিমাংশে উচ্চ ও মৃত্তিকাক্ত প্রতিকাক্তি তাহার মধ্যে মধ্যে থনন করিয়া প্রস্তুত্তবিদ্ধে কার্দিংহম সাহেব বৃহদাকার ইষ্টক পাইয়াছেন। তাহার মতে, চীনপরিবাজক হিউএন্ৎসিয়াং যে অরোম্থ বা হয়ম্থ নামক স্থানের উল্লেখ করিয়াছেন, তাহাই এই ভূষারন্বিহার হইতে পারে। এখানে পূর্বের বৌদ্ধ প্রথম ও ব্রারাম বিহার বলিত, তাহা হইতে অপ্রংশে ভ্রারান্বিহার নাম হইয়াছে। এখানকার অইভ্লার মশ্বির উল্লেখ্যোগা।

তুষারমৃত্তি (পুং) ত্যার: মৃত্তিগত। চক্ত, হিমাংত।
তুষাররশ্মি (পুং) তৃষারত অজি:। হিমালর পক্ষত, এই পর্বাতে
অতিশয় হিম পতন হয়, এই জন্ত ইহার নাম তৃষারাজি।
তুষিতে (পুং) তৃষাতি তৃষ বাহলকাৎ কিন্তচ্ তারকালিছাৎ
ইতচ্বা। > গণদেবভা ভেদ, ইহাদের সংখ্যা বাদশ, কিন্তু
মন্তরভেদে ইহাদের নাম ভিয় হইয়া পাকে। ইহাদিগের
নাম —প্রাণ, অপান, সমান, উদান, ব্যান, চক্ত্র, শ্রোজ, রয়,
ত্রাণ, শপ্ন, বৃদ্ধি, মন। (সারক্ত্রকারী)

চাকুৰ মন্ত্ৰে তুষিত নামে ছাদশ দেবতা বৈৰম্ভ মন্ত্ৰ উপত্তিত হইলে লোক হিতের জ্ঞ অদিতির গর্ভে জন গ্রহণ করিয়াছিলেন। বৈবস্থত মন্ত্ৰেরে এই ছাদশ দেবতা ছাদশ আদিকা নামে প্রাণ্ড হইয়াছিলেন। (হরিবংশ ও অং)

ইন্দের নাম তোব, প্রতোব, সন্তোব, ভ্লু, শৃঞ্জি.
ইড়পাতি, ইগ্ন, কবি, থিড়, শ্বাহা, স্থানেব, রোচন। কেই
কেই ইহার সংখ্যা বট্তিংশৎ ৩৬, আর কেই দানশ বলিয়া
থাকেন। বিবেককার ইহার এইরূপ মীমাংসা করিয়াভেন। এক এক ময়ন্তরে ১২ জন, আর তিন মন্তরে ৩৬ জন,
এই অভিপ্রায়ে "বট্তিংশৎ ভূবিতা মতাং" এইরূপ উজ
হইরাছে। ২ বিষ্ণু। (ভারত শান্তি ৬৮ জন)

ত বৌদ্ধ মতে স্বৰ্গজেদ।

ভূমোঝ (क्री) ভূমাছতিউক্তি উব-ছা-ক । ভূবোদক, কাৰী।
তূমোদক (क्री) ভূমত উদকং ৬৩৫। ভূমাৰু, কাৰীক, কাৰী,
সত্ব যব কুটিরা বে কাৰী প্রস্তুত করা বার তাহাকে ভূমোদক
কহে। ইহার ৩৭—অগ্নিনীপ্রকারক, ক্ষরপ্রহী, তীক্ষ,
উক্ষরীর্ঘা, পাচক, রক্তপিত্তলনক এবং পাঞ্, ক্রমি ও বভিগত
দ্লনাশক। (ভাবপ্রং)

সৌবীরকও তুষোদকের স্তাহ গুণসম্পার। পক অথবা অপক যবের তুষ বাহির করিয়া বে কাঁজী প্রান্তত হর, ভাহাকে সৌবীর কহে। সৌবীর ও তুষোদকে প্রভেদ এই সতুষ ববের কাঁজী করিলে তুষোদক ও নিস্তব যবের কাঁজীর নমি সৌবীর। [সৌবীর দেখ।]

তৃষ্ট (ত্রি) তৃষ কর্ত্তরি জ্ব । ১ সংস্তাবযুক্ত, তোবপ্রাপ্ত । "তন্মিংস্তটে স্থাগৎতৃটং শ্রীণিতে প্রীণিতং দগং।" (পুরাণ)

२ विक्ष्। हेनिहे এकमाळ चानसम्बद्धा ७ चानसाधः এই बक्ष जूडे भरम विकृरक् व्यावः।

ভূপ্তি (জী) ভূব-ভাবে জিন্। ১ ভোষ, ভৃপ্তি। ২ বৃদ্ধিভেদ,
এই বৃদ্ধি নৰ প্ৰকাৰ—

"আধ্যান্মিক্যশ্চত্ত্ৰঃ প্ৰস্কৃত্যপাধানকলেভাগ্যাখ্যাঃ। বাহুবিব্যোপরমাৎ পঞ্নুন ভূইবোহ্ভিমতাঃ॥"

(সাংখ্যকাং ৫১)

আধ্যাত্মিক তৃষ্টি চারি প্রকার—প্রকৃতি, উপাদান, কাল ও ভাগা। বিষয়ের উপরতি হইতে বাহু পঞ্চ প্রকার, এই নয় প্রকার তৃষ্টি। আধ্যাত্মিক অর্থাৎ আভ্যন্তরিক। প্রকৃতি সঞ্জণ কি নিশুণ, ইহা জাত হইর। এবং তত্ম সকল প্রকৃতিরাই কার্যা, ইহা জানিয়া যে তৃষ্টি হয়, এই, তৃষ্টিকে প্রকৃত্যাথা তৃষ্টি কহে।

উপাদান—কেহ তব সকল না ক্ষানিয়া কেবল উপাদান গ্রহণ করে (উপাদান অর্থে দঙ্গ, কমঙলু প্রভৃতিকে ব্ঝায়), ইহাকে উপাদানাথা তৃষ্টি বলে ি

কাল-কালজমে মোক হইবে, তথাভ্যালে নিপ্পরোধন, এই প্রকার যাহার জ্ঞান হর, এবং ইহাতেই যিনি সভঃ থাকেন, এই ভূষিকে কালাথা ভূষি কহে।

ভাগ্য--আমার ভাগ্যে যদি মোক থাকে, তবে আমার মোক হইবে, এইরূপ ভাষিয়া বাহরো তুই থাকেন, এইরূপ তুটিকে ভাগ্যাথাত্টি করে। উক্ত চারি প্রকারই আধ্যান্মিক তুটি।

वास विषयमा जेननां स्टेस्ड दि गक्ष क्षेत्रात्र पृष्टि वर्षाः गक्ष, न्नार्म, क्षेत्र, त्रत्र, शक्कां विषय स्टेस्ड दि पृष्टि स्व, क्षेत्रारक दास पृष्टि स्टर्गः वर्षान, वृक्षन, क्षेत्र, त्र বিবরণ এইরূপ।

ভ হিংসা দৰ্শনহেতু উভাবি গঞ্জ বিষয় হইতে উপস্থতি আৰ্থাৎ ইন্যানের প্রভোকের দোব ধর্ণন করিয়া ভাকা হইতে নিবৃত্ত হওবার নাম পঞ্চবাহুত্তি। (সাংবাহুকাং)।

"আধ্যাত্মিকাহিজেদারবধা তৃষ্টিঃ" (সাংখ্যাদ ৩।৪১)

ভুটি আখ্যাত্মিকারি ভেলে ৯ প্রকার। আধ্যাত্মিকী ভূটি ৪ প্রকার ও বাহাভূটি ৫ প্রকার। আত্মতারে বা আত্মত্মির ও প্রকার ও বাহাভূটি ৫ প্রকার। আত্মতারে বা আত্মত্মতির পৃথীত বলিরা আধ্যাত্মিক নাম দেওরা ছইরাছে। প্রকৃতির বিবেক জ্ঞানেই মুক্তি, একল প্রকৃতিই উপাত্ম, প্রকৃতি ভির আর কিছু উপাত্ম নাই, এই ভাবিয়া সভ্তই থাকিলে, প্রকৃতিভূটি করে, ইহার নাম অন্ত। প্রভাবিয়া সভ্তই থাকিলে, প্রকৃতিবিবেক জ্ঞানেও মুক্তি হয় না. এই সকলই মুক্তির প্রতিকারণ, এই ভাবিয়া অনেকেই প্রতী হল এবং সভ্তই থাকেল, এই ভূটি উপাদানভূটি, ইহার নাম সলিল। প্রতী হইবাম, কালে মুক্ত হইব, এইরূপ ভূটিকে কাল, ইহার নাম ওব। ভাগ্যে থাকিলে মুক্তি হইবে, এইরূপ ভূটিকে ভাগ্য, ইহার নাম বৃটি। এতিরির বিষরত্যাগলনিত ৫ প্রকার ভূটি আছে, ভাহার

ধনোপার্জন বড়ই কঠকর, উহাতে প্রয়োজন নাই, ইহা ভাবিয়া সন্তুই থাকিলে যে সদ্ধোষ, তাহার নাম পারতুই। ধনরক্ষা মহৎকই, ইহা ভাবিয়া বিষয় পরিত্যাগপুর্বাক সন্তুই থাকিলে যে সম্বোষ, তাহার স্থপারতুই। ধননাশে মহৎকর, উহা ভাবিয়া বিষয় পরিত্যাগপুর্বাক সন্তুই থাকিলে যে সম্বোষ, তাহার কাম পারপারতুই। বিষয় সকল ভোগকে আকর্ষণ করে, ভোগও ছঃখদায়ক, উহার ত্যাগই প্রেয়য়য়য় । এইরাপ ত্যাগবৃদ্ধি হইতে যে সম্বোষ করে, সেই সম্বোষ্কে অহরমান্ততুই করে। বিষয় সম্পর্কে হিংসাদি নানা দোর্য ঘটে, এই ভাবিয়া বিষয় বিয়ৢথ হইলে ভাহার যে সম্বোষ হয়, এই সম্বোষ্কে উত্তমান্ততুই করে। এই ৯ প্রকার তুই জ্ঞানশক্তির উর্বোধক বা উত্তেজক। ইহার জ্ঞাবে জ্ঞাননাশক ও বোগনাশক বিপ্রায় বৃত্তি সকল প্রবাল হইতে থাকে। (সাংখ্যদণ)। তুর কর্ত্তরি তৃত্। ৩ সৌর্যাদি বেড়েশ মাকুকার মধ্যে মান্তুভেদ। [কুল্লেবভা দেশ।]

৪ শক্তিবিশেষ। (দেবীভাগণ সাসংগ্ৰুত) । তুষ্টিকর (জি) ভূটিং করোভি তুষ্টিকেট। সংবাদকর, তৃথিজনক। ভূষ্টিজনক (জি) তুষীনাং জনকঃ ৬৩৭। সংবাদজনক, ভূষ্টিকর।

ভূষ্টিদ (তি) ভূষ্টিং বদাভি দা-ক। আনন্দদারক। ভূষ্টিন্দ (তি) ভূষ্টিরজ্ঞান্ত ভূষ্টিরজ্প। ১ জোবসুক্র, সর্ত। (প্:) ২ উগ্রবেদের পুক্র, কংসের জুব্জা। (ভাগা-৯া৭৪।২৪) ভূষ্য (পং) পুৰ ৰাছ্ণকাৎ ভূক্। কণ্ডিত মণি। (শক্চণ)
ভূষ্য (পং) পুৰ কৰ্জনি কাপ। ১ মহাদেব। [ভূটিভূট (দধ।]
ভূস (পং) ভূব প্ৰোণ ৰজ্ঞ সন্ধা। ভূব, ধাল্লক্।
ভূষ্য (প্ং) ভূব-বাহণ করণু। কুমারাল্লচর ভেল।
ভূষ্য (পং) ভূব-বাহণ করণু। কুমারাল্লচর ভেল।
ভূষ্য (পং) ভূব-বাহণ আরন্। কুমারাল্লচর ভেল।
ভূষ্য (পং) ভূব-বাহণ আরন্। কুমারাল্লচর ভেল।
ভূষ্য ভূষ্য ভূষ্য ভূষ্য ভ্রেবিশে বীর্থাবান্।" (ভারত ৯।৪৬ অং)
ভূষ্য (ক্রী) ভূষ্তে হনেন ভূষ্য নিন্ধা বাতে ভূষ্য (বেণিভূষ্য বিল্লা উণ্ ২০২১। ১ হিমা ২ চক্ষের ভেল। (উজ্জ্বা)
"বির্হেণ পাভিমানং নীতা ভূষ্যনেন দূর্কেব্রী॥"

(भार्यामक्षनजी ७७०२) (আ) ৩ শীতল। তুহিনকণ (পু:) ভূহিনত কণ: ৬ঁতং। হিমকণ। ভুহিনকর (গং) ভূহিনং করে। ২ছে। ২ কর্পর। ভূহিনকিরণ (পুং) इस । তৃহিনকিরণপুত্র (পু:) তৃহিন্কিরণত পুত্র: ৬তৎ। চন্ত্রপুত্র, বুধ, ইনি ভারার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। [ভারা দেশ।] তুহিনপ্ত (পুং) তুহিনা: গৌৰিভা শীত, চক্তা। তুহিনদীধিতি (পুং) চন্ত্ৰ। তুহিনচ্যুতি (পুং) চল্ল। ভুহিনরশ্মি (পুং)চক্র, ভূহিন, কিরণ। তু হিন শৈল (পুং) তুহিনত শৈলং ৬তৎ। হিমালর পর্বত। ष्ट्रिना१७ (११) हता। তুহিনাংশুতৈল (ক্লা) তুহিনাংশ্যে: তৈলং ১৩ং। কর্প্রতৈল। তুহিনাচল (পুং) হিমালর। जूहिनाफि (प्रः) हिमानम। •তৃত্গু(পুং) > দস্বংশীয় দানবভেদ। এই দানব অতিশয় পরাক্রমশালীছিল। (ভারত আনি উ৫ আব॰) ২ ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (ভারত আ' ১৮৬ আ') ভূল (পুং) ভ্ণাতে পূর্বাতে বালৈঃ ভ্ণপূরণে খঞ্। বালিধার। পর্যার—উপাসল, তুণীর, নিষঙ্গ, ইব্ধি, তুণী। (শক্র) ,"তৃণৰভুগাধরঃশ্রো বন্ধগোধাঙ্গলিজবান্।" (ভারত ৩০১৭৩) ভুণ্ক (ক্লী) ছন্দোবিশেষ ; ইহার প্রভোক চরণে ১৫ অকর ↔

ভূণক্ষেত্ (পং) বাণ, তীর।
ভূণধার (পং) তৃণং ধাররতি ধারি-অন্। তৃণধারী, ধাহুছ।
ভূণব (পং) তৃণভাদাকারো হস্তাক্ত কেশাদিবাৎ ব, তুণং ভদাকারং বাতি বা-ক ইতি বা। তৃণাকার বাছভেদ। ইনুবাবাগ্

"जूनकः छटवित्रमः तटको त्रत्को उठक तः" (वृद्धतः हीका)

পাকে, প্রথম হইতে এক একটার পর এক একটা স্তরু।

বনস্পতিরু বদতি বা ছন্দ্রে) বা-তৃপবে বা" (তৈজি সং ১)।৪।১)
তৃপবিধা (পু:) তৃপবং বাজভেদং ধমতি খা-ক। তৃপববাজকারক।
"বীশাবাদং ক্রোশার তৃপবধ্বং" (বক্তুণ ৩-১১৯) 'তৃপবং বাজ-ভেদং ধমতি তথাভূতং' (,বেদ্দীপ)

তুণবৎ (আ) তৃণ পভার্থে মতুণ্ মন্ত ব । ১ তৃণযুক্ত, ধাহ্ম । তুণি (পুং) তৃণ । [তৃণ দেখ ।]

कुनिक (प्रः) [जुनीक त्मथ ।]

তুনিন্ (পং) তৃণবদাকতিরপ্তাভেতি তৃণ-ইনি। নন্দীরকা।
শর্ষায়— তৃণী, তৃরক আপীন, তৃণিক, কছেক, ক্ঠেরক, কাস্তলক, নন্দির্গক, নন্দক। ইহার গুণ-কট্পাক, কবার, মধুর,
লগু, তিক্ত, শীতল, বলকারক, ত্রণ, কুঠ ও অন্নপিত্তনাশক।
(ভাব-পং) (ত্রি) তৃণবৃক্ত।

শশ্মী চক্ৰী গৰা ধড়গী শাস্ত্ৰী তৰজবান্।" (হরিব ১৮।৩৫) তৃণী (জী) তৃণ্যতে পূর্য্যতে বাগৈ: তুণ কর্মণি ধঞ্গৌরা-দিয়াৎ শ্লীষ্। তৃণ, ইযুধি।

"তৃণীমুখোদ্ভশরেণ বিশীর্ণপঙ্ক্তি।" (রঘু৯।**৫৬**)

২ নীলীরক্ষ, নীলগাছ। ও বাতরোগ বিশেষ, লক্ষণ-মল,
'ও ম্রাশর হইতে বেদনা উৎপন্ন হইরা অধোভাগে মলদার
ও 'এস্রাবের দাব যেন ভেদ করিতে থাকে, এইরূপ হইলে
তাহাকে ত্ণীরোগ কছে। মলদার ও প্রস্রাবের দার হইতে
োদনা উৎপত্তি হইয়া বেগে পকাশরে গমন করিলে তাহাকে
প্রতিত্ণী কহে। (সুঞ্ভ ১ অং)

"बाद्धा या द्वाना याजि वर्ता मृजानस्याचिन।

ভিন্দ গীৰ শুদোপত্বং সা ত্ণীত্বপদিখাতে ॥" (স্ঞাত ১ আ॰)
তৃণীক (মং) তৃণী তৃণ ইৰ কাষতি কৈ-ক। নন্দীর্ক। (রাজনি॰)
তৃণীর (মং) তৃণাতে প্র্যাতে বাণৈ: তৃণ বাছলকাৎ ঈরণ্।
তৃণা, ইষ্ধি। এই শ্বে কৌবলিকও দেবা বার।
তৃণীরবং (অ) তৃণীর অভাবে মতুণ্ মন্ত ব। তৃণীরধারী,
ধার্ক।

्किन्धः । (निवर्षे ु)

ভূতৃষ (জি) ভূব-সচ্ বিষে অভ্যানদীৰ্ব: পূৰে। নাধু: । ১ ভূব।

"এতা বিখা সবলা ভূতৃমা কৰে? (খক্ ১০।৫০।৬)

'ভূতৃমা ভূণানি' (সাহণ)

তুল (পুং) তুলতি তুল-ক প্ৰোলরালিছাৎদীর্ঘ:। তুলবৃক্ষ, তুঁত গাছ। ২ অনামধ্যাত বৃক্ষ বিশেব, এই বৃক্ষ পার্ধ-পিপ্লল নামে ধ্যাত।

ত্ন, ত্ন, পৃগ, জমুক ও ব্রহ্মণাক এই কএকটা একপর্যার শব্দ। পাঁকা তুদকন—গুরু, মধুররস, শীতবার্য্য এবং
পিত্ত ও বায়্নাশক। অপক তৃত্বকন—গুরু, সারক, অন্তরস,
উন্ধানীর্য্য এবং রক্তশিক্তকারক। (ভারপ্রং)

তৃদী (স্ত্রী) দেশভেদ। তৃদী অভিজ্পোহত চক্। ভৌদের, পিত্রাদিক্রমে তৃদীদেশবাসী।

তূপর (খং) বৃন্ধহীন পশু। জ্বিরাং টাপ্।

ত্বর (পৃং ব্রীং) তু-কিপ্ তু: বৃ-বৃত্যাং অচ্ বা তুপর পূষোণ পঞ ব। স্বাজপুরুষ লক্ষণ। ৪ ক্ষার রস। (ব্রি) ৫ ক্ষার রস্যুক্ত। তুমকুর, মহিন্তর রাজ্যের অন্তর্গত একটা জেলা, অক্ষাণ ১২৬ ৪০ ইইতে ১৪৬ ১০ উ: এবং জ্রাঘিণ ৭৬৫ ১০ ইইতে ৭৭৫ ৩০ পৃ: মধ্যে অবস্থিত। ইহার উত্তরে বেলারি জেলা ও আর তিনদিকে মহিন্তর রাজ্য। ভূপরিমাণ প্রায় ৩৪২০ বর্গমাইল, লোকসংখ্যা প্রার ৫ লক্ষ।

এই দেশের অধিকাংশ ভূমিই সমতল। মধ্যে নদীবাছিত উপত্যকা ও কতক অংশে মহিন্তরের অধিত্যকা আছে। ইহার অমি কোথার সমৃদ্রপৃষ্ঠ হইতে ২৪০০ ফিট্ আবার কোথাও ও০০০ ফিট্ উচ্চ, এখানে কাবেরী, অয়মঙ্গলা, শিণাকিনা ও শিম্শা নদা প্রবাহিত। এখানকার গিরিলৈলের গঠন বঙ্গলুরের মত। এখানে লানাবিধ থনিজ পদার্থ পাওরা বার, তত্মধ্যে লোইই বেশী। পাহাড়ের ঝরণা দিরা অর্ণরেপুও ধৌত হইরা যার। নারিকেল বৃক্ষ যথেই। মধ্যে মধ্যে চন্দনবৃক্ষ ও অন্মে। এখানকার দেবরারত্র্গনামক পাহাড়ের রক্ষিত রাজস্কল আছে। এখানকার জমিও উর্কারা।

বহু পূর্বকাল হইডেই এই জেলা মহিন্দর রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত ছিল। এখান হইডে আবিক্লত দিলালিপি ও তারলাসন বারা জানা বার বে, প্রথমে চালুক্য ও তৎপরে বরালরাজগণ বহুদিন এখানে রাজত করিরাছিলেন। খৃষ্টীর ১০শ
লতাক্ষে এখানে পলিগারদিগের অভ্যাদর হয়। তাঁহাদের
পূর্বে গৌড্বংশীর হল্বনহলী ও মৃদিগরির পলিগারগণ বিশেব
খ্যাতি লাভ করিরাছিলেন। হারদর্জালীর উৎপাতে এই
বংশ অবসন্ধ হইরা পুড়ে। হারদর্জালীর অভ্যাদরের: পূর্বে

উত্তর হইতে মুসলমানেরা আসিরা কএকবার তুমকুর আক্র-মণ করে। মহারারীর শিবাজীর পিতা শাহলী এই ছান অধিকার করিরাছিলেন। অরঙ্গজেব কর্তৃক বিজ্ঞাপুর আক্র-মণের পর শিরা-নামক ছানে রাজধানী হইল। ১৭৫৭ খুটাকে মহারাট্রেরা শিরা অধিকার করেন, তৎপরে ১৭৬১ খুটাকে হারদর্আলীর অধিকারভুক্ত হর।

এই সমর হইতে ত্মক্র জেলার অবনতির ক্ত্রপাত হয়।

চারদরজালী ও টিপুর্লতানের সমর মুদিগরিতে রাজধানী

হইল। টিপুর মৃত্যুর ১৯৯৯ খুটান্দে ত্মক্র মুদিগর তালুকের

অন্তর্গত হয়। তৎপরে ১৮০২ খুটান্দে মহিন্দ্রের বৃটীন্দ-শাসর

শ্রচলিত হইলে ত্মক্র জেলা গঠিত ও ত্মক্র নগর স্থাপিত

হয়। অক্ষা ১৩° ২০ ২০ তি: এবং দ্রাঘি ৭৭° ৮ ৫০ পু;,

দেবরারহর্গনামক পাহাড়ের দক্ষিণপশ্রিম আংশে ত্মক্র

সহর অবহিত। অ্রাদিন মধ্যেই এই সহরের উন্নতি দেখা

যার। এখানে অনেক স্থরব্য হর্ম্য ও বাগান আছে।

অধিবাসীর সংখ্যা ১১০৮৬, তর্মধ্যে অধিকাংশই হিন্দু।

ভূয় (ক্রী) ভোর প্ৰোদরাদিভাৎ দাধু:। ১ জল । (নিখন্টু) ভূভাবে কিপ্ ভাং যাতি যা-ক । °২ কিপ্প ।

"দেব হরিভির্যাহি ত্যং" (ঋক্ ৩।৪০।৩) 'তৃয়ং ক্ষি প্রং'
(সারণ) (ত্তি) ৩ ক্ষি প্রতাযুক্ত। "অদ্রিণা তে মন্দিন ইক্ষ্ট্রান্" (ঋক্ ১০।২৮।৩) 'তৃয়ানবিলম্বিতান্' (সারণ)
তুর্ (ত্তি) তৃর কর্তারি কিপ্। ১ বেগযুক্ত'। ভাবে তৃর-

"পুর্ভিময়েন বিহিতাভিরদৃশ্রত্ভিং" (ভাগবত ২।৭।২৭) • 'অদৃশ্রত্ভিং অলক্ষাবেগাভিং' (শ্রীধর)

ভূর (ক্রী) ভূর্বাতে মুখং ভূর্-ঘঞ**্। ১ বাস্তভেদ, সানাই।** ২ ভাডামান পটহাদি। (শকাখচি°)

ভূরী (জী) ভূরং তদাকারঃ পুসাদৌ আব্তাভোতি ভূর-আংচ্ ংগারাণভীষ্। ধুজূররুক, ধুতরাগাছ।

তৃকী, ভূগণীয় জাতির সাধারণ নাম। পারক্তবাসীরা এই জাতিকে তৃরাণী ও অঞ্চাল্প দেশীরেরা বিশেষতঃ হিন্দুরা ইংদিগকে তৃকী বৈলে। এই জাতির মধ্যে যাহারা এখন মধ্যএসিয়ার বাস করে, তাহারা কতকাংশ মোগুল ও কতকাংশ ভাতারী নামে কথিত হয়।

বামনপুরাণে ইহারাই ভারতের উত্তরবর্তী 'তুরুক' নামে বণিত হইরাছে।

থীকেরা বে ভাবে এসিরক গ্রীক্সণকে 'দ্বীদীর' বিশিত, আরবেরা ঠিক সেইভাবে আরব-বহিত্তি সমস্ত বেশের মধ্য ও পদ্চিম এসিরার মুসদমানকে তৃকী বলিয়া থাকে। • ভুক্তের ওচুমান্লি স্বাভি এই তৃকী বাভিরই এক শাধা।

মধ্য এগিরার তুর্লীরা এখন বুরুত, কৃঞ্চকার « অমিল্র) কির্বিজ, সাধারণ ক্রিবিজ্ (প্রকৃত পক্ষে ক্সাক্), কর-क्यक, जूर्कमान ७ , जेवनक वह क्यकार्श विकतः। [(मांगन, मांक व्यक्षि कांजित विवत्न 'जाजात' , भरक (मथ।] সাইবিরিয়ার ভূষারার্ভ উত্তর উপকৃশ হইতে হিশুকুশ হিমালবের দক্ষিণ পাদমূল পর্যাস্ত এবং রুরোপের এডিরাটিক উপদাগর হইতে মধ্য এদিরার গোবিমরুর পূর্বদীমান্ত পর্যান্ত সমস্ত ভূপতে ভূকী জাতির বাস। অতি প্রাচীনকালে ঘর্থন ইহারা মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করে নাই, ভাছার পরও ইহাদের नाम প্রাচীন প্রথামুদারে রাধা হুইভ, আরবী বা পারদী শব্দে नामकत्रण इटेड ना। कृकीमिरशत चामिम त्राव्यवस्तात मर्ता त्रनक्क मूननमान स्टेशा वृ चीत्र প्তগণের नाम माहे दकन, ইআরেল, মুসা, ইুহুস্ রাধিয়াছিলেন, কেবল তাঁছার পৌত্র তুত্রিল নাম ধারণ করেন, কিন্ত তুঁত্রিলের প্তের আল্প্ আর্সলন নাম ছিল। ইহাদের মধ্যে বংশগত নাম অনেক পশুর गংজা **रहेर्ड গৃহীত रूहेबाहि। यथा--- মাঙ্গ**্টং (পীড়িত কুকুর), কিরা-ইৎ (ধুদর কুকুর), ওয়ুম-আৎ বা ওইর-আৎ (ধুদর অখ), কৃপর্-আৎ বা কিজ্যুর-আৎ (বাদামী বর্ণের অখ)।

চীনবাদীরা পূর্বকালে সমস্ত তুর্কী জাতিকে হিউন্-ত্র नारम व्यक्तिक कतिक। धृष्टे कारमात्र २०७ वरमत शृरका এই হিউক্-ফু জ্বাতি চীনের পশ্চিমে মধ্যএগিয়ায় এক সাম্রাক্রী স্থাপন করিয়াছিল। চীনবাসীদিগের সহিত এই জাতির স্কলি যুদ্ধবিগ্রহ হইত। খুটীয় প্রথম শতাকীর মধ্যভাগে ইহারা চীন কর্তৃক দমিত হয় ও ইহাদের সাম্রাজ্য ত্ইভাগে বিভক্ত হইয়া দকিণাংশ° চীনের অধিকৃত হয়। এই প্রদেশের হিউন্-ছুগণ চীনের সাহায্যে উন্তর হিউন্-থু-দিগকে যুদ্ধে পরাস্ত করিয়া আমুর নদীর এবং সেলেঞ্চা নদীর অপর পারে ও অল্টাই পর্বতের পুলিংমে তাড়াইয়া ুদেয়। এই ভাড়া পাইয়া ভাহারা পশ্চিম ঞ্সিয়ায় ও যুরোপে ছড়াইরা পড়ে। তৃতীয় শতান্দীর প্রথমে উত্তর श्चित्र- इ. व्यापारण स्मात्रणीय छ जूत्रगीय कां जि. व्यापार सहिया निक्न श्डिल्- र थानि याक्रमन कतित्रा अधिवानीनिगरक **रमणविश्व कतिया रमय। এই छाड़ा शाहेया मकिन** হিউল-ফুগণও পশ্চিমে মুরোপ পর্যস্ত প্রায়ন করে। ইহার পর খৃষ্টীয় ৬ই শতাশীতে তুলকিউ নামে এক কুল্ললাতি প্রবৰ হয়। অভঃপর চীনবাসীরা ভূকীদিগকে 'তৃকিউ'

किप्। २ (वर्ग।

এই সাধারণ নাম প্রদান করে। অনেকের অনুমান এই 'कृकिके' मस हहेट के 'कृकी' मस खेरनत हहेबाह्ह। हहाता প্রবন্ধ হইয়া অন্টাই পর্কভের ধার হইতে কাম্পীর সাগরের তীর পর্যান্ত রাজ্য স্থাপন করে। ইহাদের রাজার নিকট গ্রীক-সমাট क्षितिशान निमात्रर्कम् नात्म এक्कन पृष्ठ পাঠाইश-ছিলেন। ৮ম শতাকীতে হই-হি (কাও-চি) জাতি প্রবল হইয়া তৃ-কিউ রাজা ধ্বংস করে। ইহারাও তৃকী জাতীয় বটে এবং এক শতাদ্লীকাল পর্যান্ত প্রবল ছিল, পরে চীন-निर्गत हत्य छे ९ मन्न हत्र । हे हार एत अक्परण जूत्रू ज ध्यरमरण चाधीन हिंगः। ১२०१ वृष्टीत्म छाहात्रा सामगीवश्य कर्ज्क পরাঞ্জিত ও বিভাড়িত হইয়া উইগুর জাতির সহিত মিলিত হয়। উইগুর জাতির নির্দিষ্টাবাস ছিল না, সাধারণতঃ তুর্ফাণ, কাশঘর, হামিল, অক্সু প্রভৃতি স্থানে তাঁবুতে বাদ করিত। शृहीय ८७৮ व्यत्स कुर्कीता यूद्यांशीय ऋषियात्र वन्शा नतीत তীর হইতে আঞ্জদাগরের তীর পর্যস্ত ভূমিতে দুঢ়রূপে বাস্থান করিয়াছিল'।

- (क) তুর্কমান। পারত্তের উত্তরাংশে, কাম্পীর সাগরের পশ্চিমাংশে, आर्प्यानियाय, अर्ज्जियात प्रक्रिश ও শित्रवटन ও ' দাবিস্তানে এই তুর্কমান তৃর্কীদিগের সাধারণ বাস। ইহারা खमनभीन कांछि। धुष्ठीय >>भ ७ >२भ भकासीत मर्था हेराता এ প্রদেশে আসিরাছে। কাম্পীর সাগরের পূর্বভীরত্ব ভূর্ক-মানেরা খিভা, ফর্ণানা ও বোধারার উত্তর্ জাতীর খাগণের অধীনে বাস করে। ভাছারা আপনাদিগকে খাঁদিগের প্রকা विनया श्रीकात करत्र ना। छाहात्रा वर्त, छाहात्रा श्रीमिरशत আহত বন্ধলাতি মাত্র। ইহার পূর্বস্থ জনপদের তৃর্কমানের। होत्मत्र अधीन । काम्भीय नागदत्रत्र मक्किनभूर्सक् (थात्रानात्मत ভূর্কমানেরা পারস্তের অধীন। ইহাদের অস্ত্রাবাদ, হিরাট ও বাস্থ্নপরের চতুম্পার্থক ভূভাগেও দেখা যার। ইঁহারা কখন विकलन ब्राकात क्येशीरन वान करत्र नाहे, करत्र ना । हेहारनत মধ্যে ধলক, তৈকি ও ডাইরি বিভাগ আছে। অকুনদীতীরে ইহাদের কত্কাংশ গ্রাম পত্তন করিয়া বাস করিতেছে। हेशाएंत्र माथा विक्रित्र (अंगीत नाम---
 - (>) চল্লোর বা চুদের, ইহারা কাম্পীর সাগর ও আরক রদের মধ্যে বাস্করে। ইহালের মধ্যে ৭টা তৈকি আছে। ইহালের শিবির সংখ্যা ১০ হইতে ২০ হাজার।
 - (২) এরজারি বা ওরজারি—ইহারা ক্ষুন্নীর বাষতীর-বাসী। শিবির সংখ্যা ৫০ হাজার হইতে ১ লক।
 - (৩) আলিচ বা অনপ্ই—অনপ্ই ও মার্ভের নিকটে বাস করে, শিবির প্রার ১ শত।

- (৪) করা—বঞ্চলতাৰ বিশিষ্ট—জন্মণ্ট্ ও মার্ভের রথ্যে বাস করে, শিবির সংখ্যা > হাজার।
- (৫) সালোর—সাহসী প্রাচীন জাতি, মুর্থার ও মার্ভের । মধ্যে বাস করে, শিবির সংখ্যা ৬ হাজার।
- (৬) সারিফ---মুর্ঘাব নদীতীরে পঞ্চাবের নিকটে বাস করে; শিবিরসংখ্যা ৯।১০ হাজার।
- (१) তেকে—সর্বাপেকা যুদ্ধপ্রের ও ক্ষমভাশালী আতি।
 গোল্কেন্দিগের •উত্তর হইতে বিভা পর্যন্ত ভূমিতে ইহাদের
 বাস। মার্ডের অপর পারে অকুতীরেও ইহাদের অর বাস
 আছে। তালেকের নিকটে আখাল তেকেও মার্ডের নিকট
 মার্ডতেকে নামক ইহাদের সমস্ত নিবিরের ছইভাগ আছে।
 ইহাদের অর আবাদী কমী আছে। সূঠপাট ও পারস্তবাসীদিগকে ধরিয়া দাসক্রপে বিক্রয় করাই ইহাদের উপজীবিকা।
 ইহাদের শিবিরসংখ্যা ৪ হইতে ৬ হালার। মার্ড ইহাদের
 ক্রেক্তরেন। ১৮৮৪ খুইাক্রের আক্ররারী মাসে ইহাদের অক্র
- (৮) গোল্কেন্—ইহারা ক্ষিণীবী, গোর্থেন উপত্যকার ৪৫ জোশু ভূভাগে ইহারা ৮।১০ হালার শিবিরে বাস করে। ইহারা পারক্তের অধীন। ুভেকেদিগের সহিত ইহাদের চির-বিবাদ। ইহাদের ১০টী বংশ আছে।
- (৯) রোম্ট—ইহাদের ছইটা ভাগ আছে, ভৈকি গোর্থেন-রোম্টগণ গোর্থেন নদীতীরে পারক্তের অধীনে বাস করে ও থিতা-রোম্টগণ অক্লনদীর বামতীরে মরুপ্রদেশে বাস করে। পারক্তবাসীদিগকে ইহারা ক্রীভদাস করিয়া থাকে। ইহাদের শিবিরসংখাৃ ৪০।৫০ হাকার।

ইহাদের মধ্যে কোনরূপ রাজবিধি নাই। প্রভাকে নিজ নিজ নিবিরে স্ব প্রধান। ইহারা বৃদ্ধকে ও বীরকে মার করে। তাতারবংশে তাতারী পিতামাতার সন্তান ইহাদের সমধিক আদরণীর। পারতের বিপক্ষে যদি ইহারা একত্ত হর, তবে পারতের আর আপনাকে রক্ষা করিবার ক্ষমতা থাকে না। ইহাদের দৈর্ঘ্য ৫ ফিটু ৭ ইঞি। মুধ শ্রশ্রবিহীন, চকু গোল ও ক্ষ্তে, কিছ তীক্ষগৃত্তিস্ম্পর। তাহারা আপনাদের মধ্যে পুরম্পর সৌন্তাভাবে অবস্থান করে, বিদ্ধ বিদেশীর প্রতি বড় অত্যাচার করে, তৃবে আতিথেরী বটে। ইহাদের অত্যের মধ্যে বাকা ক্ষ্ত্র তরবারী (Sabre), দীর্ঘবর্ষা, বন্দুক বা পিতল। তেকেলাতির কামান আছে। স্ত্রীলোকেরা ক্ষরী ও সভী। ইহারা অর বর্ত্রে বিবাহের সমর বর কল্পার শিবির আক্রমণ করিবা ক্যাকে হরণ করিবা থাকে। ক্যার নিবির আক্রমণ করিবা ক্যাকে হরণ করিবা থাকে। ক্যার নিবির আক্রমণ করিবা ক্যাকে হরণ করিবা থাকে। ক্যার নিকট একটী মৃত হাগল থাকে, বর

त्मकरकृतास्त्र अहरूदार (मणेख महेदा आत्म। हेदाज्ञ। इत्रिवजादमधी मूननमान ।

- (খ) উত্তবক। ইহারা ছই-ছি ও উই-এর জাতির বংশধর। প্রথমে ইহারা থোতান, হামিল, কাশবর ও তুর্ফান সহরের নিকটে বাস করিত, শেবে অক্জর্জিশ (সর-ই-দরির্কা) পার হইরা ১৬শ খুটান্দে বাল্ধ, থারিজম্ (খিভা), বোথারা ও কর্ণনা অধিকার করিয়া বাস করিডেছে। ফর্গনা ও বাল্ধে ইহারা ক্বিজীবী হইরাছে। ইহারী সাধারণতঃ প্রমণ্নীল ও যুদ্ধপ্রির।
- (গ) নোগাই।—কাম্পীর সাগরের পশ্চিমে ও রুঞ্চ সাগরের উত্তরে এই আজি বাস করে। খৃষ্ঠীর ১৭শ শতাকীতে ইহারা কাম্পীর সাগরের পূর্বভীরে ও ইর্জিশনদীতীরে
 বাস করিত। কাল্যক নামক মোগল জাতীরেরা প্রবেশ হইয়া
 ইহাদিগকে পশ্চিমে অস্ত্রাকান প্রদেশে দ্রীভূত করে।
 করিরার প্রথম পিটার ইহাদিগকে সেথান হইতে ককেশীর
 পর্বতের উত্তরে তাড়াইরা দের। সেইখানেই এখনও
 ইহারা আছে। ইহাদের একদল এখনও বল্গা নদীর তীরে
 বাস করিভেছে, তাহারা কাল্যক্গণের অধীনে আছে।
 ককেশীর পর্বতে বলিয়েন ও কুমিয়িক নামক আরও হইটী
 ভাতি আছে।
- (च) বশধির।—অল্টাই পর্কতের দক্ষিণে এই জাতির অধিক দিন হইতেই বাস আছে। ইহারা এখন মোলগীর-দিগের সহিত প্রায় মিশিয়া গিয়াছে। ইহারা মূর্য, বস্তু ও ক্ষিয়ার অধীনে বাস করে। ইহাদের মধ্যে উকা প্রামে মেশ্চেরাক নামে এক শ্রেণীর তৃকী আছে, ভারারা পূর্বেধ বলগাতীরে বাস করিত।
- (ও) করকম্পক। আরলছদের তীরে এই জাতির বাস। ইহাদের কতক ফ্যিরার ও কতক থিভার খাঁরের অধীন।
- (চ) সাইবিরীয়। সাইবিরীয়ার যে সকল তৃকী আছে, তাহারা পূর্বে আরল ছদের তীরে বাস করিত। শেবে সাইবিরীয়ার চুকিরা শিবির নামে রাজ্য স্থাপন করে ও তাহার অধিপুতি বাঁ উপাধি এইণ করে। ইহাদের রাজ্যে টোবলয়, ইবেনিসিম্ব ও টোমম্ব এই তিনটী প্রধান নগর। উরাগ্রহাট ও বর্ষা প্রভৃতি ভূকীরা ইহাদের অন্তর্নিবিষ্ঠ। লেনানদীর তীরে ইরাকুট জাতির মূলও ভূকীআতি হইতে। ইহাদের পূর্বাক্তরের বৈকাল ছদের ভীরে বাস করিত।
- (ছ) কির্বিজ্। দক্ষিণ সাইবিরিরার ওবি ও ইনিসি নদীয় মধ্যে ইহারা পূর্বে বাস করিত। এখন সেধানে মোলনীয় জাভি বাস করিতেছে। ু১৬০৬ গৃষ্টাব্দে ক্রেরা

কিন্বিশ্বনিগতৈ শ্বর কলে, তাহার পর ভাহারা ক্রমণ:
বিতাড়িত ইইরা ১৮শ শতাকীতে সাইবিরীয়ার বাহিরে
আসিরা পৃড়িয়াছে। এখন চানাধিক্বত তুর্কীয়ারে বাহিরে
ক্রেট নামক ছানে বাস করিত্বেছে। কাশখর সহরের নিকট
হইতে ইর্জিশনদীয় তীর পর্যান্ত য়ানে ইহাদের বাস অধিক।
এই য়ানে ইহাদের বৃহৎু সম্প্রদার বাস করে, ইহারা ক্রিয়ার
অধীন। ইরেয়া হইতে আরল প্রদের তীর পর্যান্ত ইহাদের
কুল্ত সম্প্রদার এবং ইরেয়া হইতে সায়ান্ত পর্যান্ত ছানে মুধা
সম্প্রদার বাস করে।

- , (জা) এসিয়া মাইনর ও সিরীয়ার তুর্কীজাতিরাঁ সেলজুক-দিগের বংশধর এবং য়ুরোপীয় তুরুজের ওসমানলি তুর্কীরাও তুর্কীজাতির এক শাধা। (ইহাদের বিশেষ বিবরণ তুরুজ শক্ষে জটব্য)।
- (ঝ) আধুনিক সামরিক ভাজক জাতীরেরা অপেকাকত সভা। ইহাদেরও প্রীস্ত নির্ণীত হইয়ছে। তুক্কে ইহারা বাস করে।
- (এ) উইগুর। ইহারাই তুর্কীজাতির সর্বাপেকা প্রাচীন শাধা। ইহারা প্লুর্কে চীনতাতারে বাস করিও। ইহারাই সর্বপ্রথমে (নেটোরীর খুটানিদেগের নিকট ,মক্ষণ ও লিথনপ্রণালী লইরা, তুর্কী ভাষাকে লিখিত ভাষার পরিণ করে। নেটোরীর খুটানের। ৪র্থ শতালীতে ইহাদের দেশে প্রবেশ করিরাছিলেন। ইহাদের হস্তালিখিত প্রকাদি হইতেই মধ্য এসিরার প্রাচীন ইতিহাস জানা যার, কিন্তু প্রকের সংখ্যা বড়ই অর হইরা গিরাছে। যথন রুরোপের অধিকাংশ আধুনিক সভ্যজাতি মূর্থ ও বহা ছিল, তথন ইহাদের মধ্যে প্রকের আদুরর খুব ছিল। খুষীর ১০৬৯ খুটান্দে লিখিত ইহাদের একথানি প্রাচীন গ্রন্থ পাওরা গিরাছে, ভাহাতে রাজনীতি ও অর্থনীতির বিষয় লিখিত আছে।
- ভূকী স্থান, মধা এসিয়ার পশ্চিমাংশকে সাধারণতঃ তৃকীস্থান বলে। সাইবিরিয়ার দক্ষিণে ও আফগানিয়ানের
 উত্তরে, কাম্পীয় সাগরের পূর্বেও তিব্বতের ঃর্ল্চনে প্রকৃত
 ভূকীয়ান, অবস্থিত। ইহার তিনটা বিভাগ আছে।
 (১) উত্তর বা ক্ষর তৃকীয়ান কির্ঘিক জাতির ত্রিবিধ সম্প্রদারের
 দেশ, বোধারা, ধোকন্দ ও ধিভার কিয়দংশণ্টহার অন্তর্গত।
 (২) দক্ষিণ তৃকীয়ান—এই ভাগে বিভার অপ্ররা শ, তৃর্কমান
 এবং করকম্পকদিগের দেশ ও তাস্থান। (৩) পুর্কাত্রীয়ান—
 চীনাধিক্বত ব্রেরিয়া ইহার অন্তর্গত।

ক্ব-তৃকী ছানের পশ্চিমে কাম্পীর সাগর ও আরুলনদী, পুর্বে পানীর মালভূমি, তিয়ানসান্ও অল্টাই পর্বত, উত্তরে কির্মিজ মাণত্মির পর্কতদলো। ইহা ক্রমিরার জাধীনে পশ্চিম সাইবিরীয়ার সহিত একঅ শাদিত হয়।

করণতি পশ্চিম তৃকীস্থানের মধ্যে প্রথমে অক্লেন্ডিশ নদীর তীরত্ব প্রদেশ, তংপরে অক্লেদীর তীরত্ব প্রদেশ, তংপরে তাসকন্দ (১৮৮৫) এবং তংপরে বিস্তা (১৮৭০ খৃঃ অব্দে) কার করিয়া শইরাছেন।

পূর্ব তৃকীয়ান কাশ্যরিয়া বা ক্ষুদ্র বোধারা নামেও কেপিত হয়। চীর্নেরা ইংকি নান লু বলে। পার্শবর্তী মুসলমানেরা ইংার অল্টিসহর বলে। ইহার পূর্বের গোবিমরন। ইংার মধ্যে কিউএন্লন্ কারাকোরম, মুবভাঘ (ভ্যারপর্কত), ভাষভুস্বাস (পর্কতেক্স) প্রভৃতি বিধ্যাত পর্কতমালা আছে। পানীর মালভূমি ইহার পশ্চিম। কিউএন্লন্ পর্কতে অপ্থনি আছে। ফারাকোর্মে ভামা, সীসা ও গদ্ধক উৎপর হয়।

थ्डोरकत चात्रक्षकारण हेश हीरनत चर्षीन हिल। **ठ ज्या वर्ष हिंहा अग्र क** तिशा ल त्या । ১৮ म म **डाक्नी**त स्था-েভাগে চীনেরা ইহা পুনরধিকার করিয়াছে। তৈমুর শাহই कामधरत छाथम ताका २न। ১৪১৯ शृष्टीरक वाधारन जूर्मान ও তাদিল সহরে বৌদ্ধধর্ম প্রচারিত হয়, এখনও তাহার **डिझ्माळ जाट्छ। महम्मात्मत्र वः नगरत्रत्रा थाङ्गा नाटम** অভিহিত, তাঁহারাই ধর্মবাজক ও অভুতকর্মা। ইহারাই তুই দলে (খেত ও ক্লফ) বিভক্ত হইয়া কিয়দিন এ প্রেদেশে অরাজকতা বাড়াইয়া তুলিয়াছিল। খেত দুলের সন্দার থোজা অপাক কৃষ্ণ দলের দদার ইম্মাইল কর্তৃক কাশখর হইতে ১৭শ শতাদ্ধীতে বিতাড়িত হন। তিনি **জুক্লরি**য়ার কালমক স্দার পল্দান্ থারে আশ্রেষ প্রহণ করেন। ১৬৭৮ शृहोत्स शन्नान् थाँ। जिज्ञान्मान् भर्कर जन प्रक्रिन ह ভূভাগ আজেমণ করেন এবং কাশঘরের গাঁর পরিবারবর্গকে বন্দী করিয়া আনেন। তিনি শ্বেত দলের সন্দারকে (তাঁহার অধীন) ঐ সকল ভানের শাসনভার আলোন करत्रन। ७९भद्र वह्वर्ष धत्रिया शानमान , हिनस्हिन। এক এক জন করিয়া অনেকেই প্রাধান্ত লাভের চেষ্টা ক্রিয়াছিল। তবে আকুর্বারে খাঁনেরাই সর্বাপেক্ষা প্রবল **र्टेगो**हिल । , ১৭৫**१ धृहोत्क हौत्नत्रा जूकतिया जाक्रमण क**तिया খেত দলকৈ প্রশ্রর দের। অবশ্বে ইহারা ভূজীয়ান অধিকার করিয়া বদে।

ুএথানে তৃকীভাষা ও উইগুর অক্লর প্রচলিত। প্রাচীন সিরীয়ক অক্লর হইতে উইগুর অক্লর বাহির হইরাছে, এখানকার মোগল ও মাড়ু লাতিই ঐ জন্মর ব্যবহার করির। থাকে।

তৃকীয়ানের প্রধান নগর তিনটা। ১ এল্টি—(জ্ঞাণ ৬৬ ৫০ উ: ও দ্রাবি ৭৮ ২০ পৃ:, ৫০০০ ফিট্ উচ্চ), ২ মর্কন্ম—(জ্ঞাণ ৬৮ ১০ উ:, দ্রাবি ৭৪ পৃ:, ৪২০০ ফিট্ উচ্চ), ও ৩ কাশঘর (জ্ঞাণ ৩৯ ১৫ উ:, দ্রাবি ৭১ ৫০ পৃ:, ৩৫০০ ফিট্ উচ্চ)। ইহার মধ্যে এল্চিতে বারমানই শীত এবং কাশঘরে বারমানই গারম। কাশঘরে বরফ পড়ে বটে, কিন্তু জ্বধিককাল থাকে না। কিন্তু মর্কন্মে বরফ পড়িয়া ৪০ দিন পর্যান্ত পথ্যাট ঢাকা থাকে।

জুৰ্প (ক্লী) স্বর ভাবে জা পক্ষে ইড়ভাব তত উট্ নিঠা-ততা ন (জ্বস্বরেতি। পা ৬।৪।২০)ইতি উট্। রদাভাং নিঠাত ইতি।•পা ৮।২।৪২ ইতি ততা ন) ১ শীঘ । ২ স্বরাযুক্ত।

"চূর্ণমানীয়তাং ভূর্ণং পূর্ণচক্ষনিভাননে।

প্রণানি স্বর্ণবর্ণানি দীনস্ত্যাকর্ণলোচনে ॥" (উন্তট)
তুর্ণাশ (ক্রী) তুর্ণমশুতে অশ্ অচ্। ১ উদক, জল। "প্রতিশ্রুতারা
বোর্ষত্র্ণাং" (ঝক্ ৮ ৩২।৪) তুর্ণাশং উদকং ভবতি' (সারণ)
তুর্ণি (পুং) স্বরতে স্বনি নি দ চ নিং। "বহি শ্রিশ্রু যুব্রাগ্রাহাছরিভ্যোনিং। উন্ ৪।৫১) ১ মক। ২ স্বরা ৩ মনদ্
(ত্রি) ৪ ক্রিপ্র। ৫ ক্রিপ্রপামী। "অপো ফর্ত্র্ণিশ্বরতি
প্রজানন্" (ঝক্ ১০।৮৮।৬) তুর্ণিস্বরমাণঃ' (সায়ণ)।
তুর্ব্র (ত্রি) শীল্প গমন্যুক্ত স্বরিত গমন্যুক্ত "প্রযতংক্তোতা
ভারিতা তুর্গার্থ" (ঝক্ ০)৫২।৫) তুর্গার্থ স্বরিতগমনাঃ' (সায়ণ)
তুর্ত্র (ক্রী) স্বর ক্র উঠ্বেদেন নিষ্ঠান্তক্ত ন। ১ ক্রিপ্র "ব্রহিডিক্র ক্রেড্রেল্ডাই। শত্রপ্রাণ্ডাই।।

ভূষ্য (ক্লী) তৃষ্যতে ভাভাতে তুর্ ণাৎ। বাছভেদ। "সতৃষ্যশতশব্দানাং ভেরীণাঞ্চ মহারনৈঃ।

(ভারত ১।১**১**৩।৪৪)

ভূর্যাপ্ত (পুং) ভূর্যাত পঙ্ইব। বাছভেদ জগড়বাছ। কোন কোন হানে ভূর্যাণ্ড এইরূপ পাঠান্তর দেখা যায়।

ভূহ্যময় (তি) ভূহাৰকপ: বক্তে মন্ট। ভূহাৰকণ। বাছভেদ।

ভূবি (ক্লী) তুৰ আচ্ রেকে প্র্রাণো দীর্ঘ:। ১ ক্লিপ্র, তুর্ণ।
ভূবিয়াণ (বি) ত্র্বং যানং যন্ত। ক্লিপ্রগামী "তুর্বাণো
গ্র্বাচন্তম;" (বক্ ১০ ৩১ । ২) ত্র্বাণন্ত্র্ণগমনঃ' (দারণ)
একলন রালা। ইক্ত ইহার শক্তনাশ করিরাছিলেন।
সারণাচার্যা ইহাকে দিবোদাস হইতে অভেদ করনা করিরাছেন।
ভূবি (ক্লী) তুর্বইন্ দীর্ঘ:। ১ ক্লিপ্র "বা ব্ধানার ভ্রাণে

(44 M8510)

তুল (রী) ত্লয়তে প্রয়তি সর্কাং ব্যাপকছাৎ তুল ক।
১ আকাল। ২ অবখপত্তাকার বৃক্ষবিশের, পলাশপিপুল, তুঁত।
পর্যার—তৃদ, বৃদ্ধকাঠ, বাজপেঠ, পৃষক, বৃদ্ধদার, অপুলা,
ক্রমণ, নীলবৃত্তক, ক্রম্ক, বিপ্রকাঠ, মদসার। গুণ—মধুর,
অয়, দাহনাশক, বলকারক, ক্রমার ও ক্ফনাশক। (রাজনি॰)
[তুঁত দেখ।] (পুং) ৩ কার্পাসাদি বীজ্জাত, বৃদ্ধোপাদান,
তুলা। পর্যায়—পিচু, পিচুল, পিচুতুল, তুলিসচু।

"নৰ্জং দৃহতি গলাপ্তত ল্বাশিমিবানল:।" (প্ৰাৰশ্চিতত্ত্ব)
যন্ত্ৰী তৎপুক্ৰ সমানে স্বিকা শব্দের পর তুল শব্দ থাকিলে

ক্ষিকা শব্দের আকার ক্রন্থ হয়। বথা ক্ষিকিত্লং"। ভূর্যাচার্য্য (পুং) ভূর্যক্ত আচার্য্য: ৬৯৩। যিনি বাল বিষয়ে শিক্ষা প্রদান করেন।

ভূর্যাজীব.(ত্রি) ভূর্যাং আজীব: জীবিকা ষষ্ট। (Musician)
বাছব্যবসায়ী।

जुलक (क्री) जुन चार्थ कन्। जुन।

তূলকার্মুক (ক্লী) তুলার তুলকোটনার কার্মুক্মিব। তুল-কোটনার্থকুঃ, তুলা ধুনিবার যন্ত্র, ধুন্থারা। পর্যার— পিঞ্জল। (অিকা॰) এই যন্ত্রে তুলা পরিষ্কৃত হয়।

ভূলচাপ (পু:) ভূলায় ভূলকোটনায় চাপইব। ভূলকার্মুক,
ভূলাধুনিবার যন্ত্র। ,

তুলনালিকা (ঝী) তুলনিশ্মিতা নালিকা। পিঞ্লিকা, তুলার পাইজ। স্ত্র প্রস্তুত করিতে হইলে প্রথমে তুলার পাইজ করিয়া লইতে হয়।

ভূলঝালী (ন্ত্রী) ভূলনির্মিতা নালী। ভূলার পাইজ, পিঞ্জিকা। ভূলপিচু (পুং) পিচ্-কুন্ ভূলপ্রধানঃ পিচুং। ভূলবৃদ্ধ, ভূলার গাছ।

তূলফল (পুং) অর্কর্ক্ষ, আকন্দগাছ।

তুলমূল (ক্লী) কাশ্মীরের চন্ত্রভাগান্থ একটা জনপদ।

তুলমূলাপহর্তা চ চন্দ্রভাগাতটে হিতঃ।" (রাজত । ৪।৬০৯) তুলব্তী (জী) বৃক্ষবিশেষ, হিন্দীতে তুলী।

তৃলুবুক্ক (পুং) তৃণভ বৃক্। তৃণার গাছ, শাকানীবৃক।

ভূলশক্রা (স্ত্রী) ভূলভ শর্করেব। কার্পাসবীর।

ভূলদেচন (ক্লী) তুলভ দেচনং উতং। তুলস্তাকর্তন, কাট্নাকাটা।

ভূলা (ত্রা) ভূক-অচ্ততঃ টাপ্। কার্ণানী, কার্পানগাছ। ২ বর্তি, শলিতা। (শকরং)

ভূলি (ত্রা) ভূল ইন্ সচ কিং (ইগুপধাং কিং। উণ্ ৪।১১৯)
খনামখ্যাত চিত্রকরোপকরণ, চিত্রকরের বর্ত্তিকা, ভূলি।

• जृतिका (बी) ज्नित्तव आर्थ कर्ने। विवक्ताशक्त्रम, जूनी,

পর্যার — জবিকা, জবীকা, ইবীকা, তুলি, তুলী। ২ বীরণানি-দলাকা। ও ত্রবস্ত্রবর্পরীকার্থ দলাকা। ৪ তার স্থবর্প ঢালিবার-পাত্র, মুচি। তুল-ঠন্ কালি অভইমং। ৫ শব্যো-পক্রণবিশেষ, ডোবক।

"कक्ष्कः जूनगर्धक जूनिकाँः ज्निवीधिकाः।" (कानै॰ ৪।৯१) जूलिनी (बो) जूनार्खाञ्चा हेनि छीष्। > भाँत्रनीवृक्तः। र नक्तराकनः। (बि) > जूनयुकः।

'তৃবর (পুং) তৃ-বাহুলকাৎ বরচ্দীর্ঘণ্চ। ১ঁ তৃপরশ্রার্থ। ২ ক্ষার রুদ। (ডি.) ৩ ক্যাররসযুক্ত।

ভূবরিকা (ত্ত্তী) ভূবর সংজ্ঞারাং কন্টাপ্ অতইছং। > আছকী, অরহর। ২ সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা, ফট্কিরি।

ভূবরী (ত্রী) ভূৰর গ্রেরা ভীষ্ । ১ আঢ়কী। ২ দৌরাষ্ট্রয়ন্তিকা। ভূফীংশীল (ত্রি) ভূফীংশীলং বস্ত। মৌনাবলম্বী। প্র্যার— ভূফীকা।

ভূষ্ণীক (তি) ভূষ্ণীং শীলং বস্ত। (শীলে কো মলোপশ্চ।
পা হাতাৰত ইতি বাৰ্তিকোক্ত্যা কঃ মলোপশ্চ।) মৌনী,
মৌনাবলম্বী।

"আসীনমণি তৃঞীকমন্থ্যজ্ঞান্তি তং প্রজা ।" (ভারত ৫।০৪।২০)
তৃষ্ণীকাং (অব্য) তৃঞ্চীম্ কাং (অকচ্ প্রকরণে তৃঞ্চীমঃ
কাং বজন্তাঃ। পা ৫।০।৭২ ইতি বার্তিকোক্ত্যা কাং) মৌন।
তৃষ্ণীক্ষকং (অব্য) তৃষ্ণীং গলা যত্র বহুবীহুর্থে অব্যরীভাবঃ।
(দেশভেদ। "তৃষ্ণীক্ষকে চ কোন্তের সামাত্যঃ সমুপম্পূল।"
(ভারত বনপং ১০৫ অং)

তৃষ্ণীমৃ (অবা) ত্ব বাহলকাং নীম্। মৌন।
"ভৃজামানং পরৈকুফীংনস তল্পকু মহঁতি।" (মহ ৪।১৪৭)
তৃষ্ণীংশক উপপদ হইলে ভূ ধাতুর উত্তর জ্বা ও গম্ল্ হর।
যথা তৃষ্ণীংভূলং তৃষ্ণীস্তাব।

তৃষ্ণীস্তৃব (পং) তৃষ্ণীংভূ-বঞ্। মৌনাবলখন, নিত্তৰতা।
তৃষ্ণীস্তৃত (ত্তি) তৃষ্ণীং ভূ-জ। মৌন, নীর্বৰ, নিত্তৰ।
তৃষ্ণ (ক্লী) তৃদ-বাহলকাৎ তন্ত্নীর্ঘশ্চ। > রেণ্। ২ জটা।
ত চাপ। ৪ স্ক্লপদার্থ, অণ্।

তৃংহণ (ক্লী) ভূহ ভাবে লুটে। হিংসন।

ভূকন্ (পু:) তেন, চৌর। (নিঘণ্টু) ইহার পাঠান্তর রিজন্। ভূকা (পু:) ভূক আঁচ্। কশুপ ঋষি। ভক্ত অপত্যং গ্র্গানিদাৎ যঞ্জার্কা।

ভূক্ষাক (পু:) ভূক আকন্। ঝবিভেদ। তত্ত অপত্যং শিবা' অণ্। তদপত্য, তাহার অপত্য।

তৃ কি (পুং) তৃক্ষ-ইন্। অসদস্থার পুত্র শবিভেদ। "বেভিতৃকিং
বৃষণা" (শক্ ৮।২২।৭) 'অসদতোঃ পুত্রং তৃকিং' (সারণ)
তৃথ (ক্লী) তৃষ-ক পূরোং সাধু:। আতীফল, আরকল।
তৃচ (অ্যুচ) (ক্লী) তিসুণামৃচাং সমাহারঃ ত্রিস্র প্রচো যত্র
বা, অচ্ সমাসাতঃ সম্প্রসারণং। সমানদেবতা ও সমান
ছন্দক শক্তার, এই প্রকের দেবতা ও ছন্দ সমান। (ত্রি)
এই প্রকৃষ্ক্র অম্বাকৃ স্ত্রাদি।

" "মধুবাতা তৃচং জপেং।" (হেমাজি) সম্প্রসারণ না হইলে
"অ ্চত "এইরূপ হয়।"

জুণ (ক্লী) তৃণাতে ভক্ষাতে তৃণ-ধঞ্বা তৃহ-ক্-হকারলোপশ্চ (তৃহে: কো হলোপশ্চ।উণ্ ০৮) নড়াদি, চিনাথড়। প্র্যায়— অর্জুন, ত্রিণ, থট, থেট, হ্রিড, তাগুব। (শক্রণ)

''তৃণেন বাভ্যেব ভয়াহন্থগম্যতে"। (নৈষ্ধ)

(পুং) ভূণস্থ অবং শিবাঁ অণ্। তার্ণ, ভূণজন্থ বহি ।
গোদিগকে ভূণ দিলে অশেষ পুণালাভ হয় । ধনিষ্ঠাদি পঞ্চ
নক্ষত্রে গৃহের জন্থ ভূণ ও কাষ্ঠ আহরণ করিওে নাই।
আহরণে অধি, চৌরভয়, রোগ, রাজপীড়া ও ধনক্ষয় হয়।
' "অধিচৌরভ্যাং রোগোঃ রাজপীড়াধনক্ষতিঃ।

. সংগ্রাহে তৃণকাঠানাং ক্বতে বস্বাদিপঞ্চকে "" (জ্যোতিসারসং)
> গদ্ধজ্ব্যবিশেষ, রামকর্প্র। পর্যায়—কুতৃণ, তৃণ, স্থগদ্ধ,
শীত, স্থশীতল। (বৈঅক্রম্মণ)

ভৃণক (ক্লী) তৃণং বরার্থে কন্। > বয়তৃণ। ২ চীনাক, চীনেধান।
ভৃণকর্ণ (পুং) ভৃণমিব কর্ণোহন্ত। ঋষিভেদ, একজন ঋবি।
ভূণকণ্ড অপত্যা শিবাং অণ্। ভার্ণকর্ণ, ভূণকর্ণর অপত্য।
ভূণকায় (ক্লি) ভূণানাং সমূহ: দুর্কাদিছাং কান্তচ্। ভূণসমূহ।
ভূণকায় (ক্লি) ভূণ-মছর্পেছে নড়াদিছাং কুক্চ। ভূণজব।
ভূণকৃষ্ট্র ম্বালী) ভূণসভূতং কুছুমং। অগন্ধ ক্রব্যভেদ, পর্যায়—
ভূণাস্ক, গন্ধি, ভূণশোণিভ, ভূণপূল্প, গন্ধাধিক, ভূণোথ,
ভূণপৌর, লোহিত। ইহার গুণ—কটু, উষ্ণ, কফ, বায়, শোফ,
কঙ্ব, কোটু ও আমনেবনাশক, পরমভাষর। (রাজনিং)
ভূণকৃটী (জ্লী) ভূণাছাদিভা কৃটী। ভূণাছাদিভ গৃহ, কুড়েঘর, ধড়োঘর। (ক্লিকাড়) পর্যায়—কায়মান।
ভূণকৃটীরক (ক্লী) ভূণোকং। (হেমং) ভূণনির্শ্বিত গৃহ,

তৃণকুট (পুং ফ্লী) তৃণরাশি, তৃণত্প ।
তৃণকুশ্ম (পুং) তৃণময়: কুৰ্ম:। তৃষী। (শব্দমাণ)
তৃণকেতকী (জী) তবকীর ভেদ।
তৃণকেতুর্তু (পুং) তৃণেবু কেতুরিব। ১ বংশবৃক্ষ, বাশগাছ।
২ তালবৃক্ষ।

ভূণকে ভুক (পুং) ভূণকে ভূ-সার্থে কন্। বংশ, বাঁশ। ভূণগড় (পুং) > সমুদ্রের এক প্রকার কর্কট। ২ কীটভেন, উচ্চিকট, উচ্চিকড়া।

'উচিলটভূণগড়মংক্তকোপনরোঃ পুমান্।' (মেদিনী) তৃণগন্ধা (জী) তৃণবৎ গল্ধো যক্তাঃ। বিদারী, শালপর্ণী, শালপাইনগাছ।

তৃণ্গোধা (স্ত্রী),তৃণক্ত গোধেব ক্ষুত্রছাৎ। ১ চিত্রকোন, কুকলাস, কাঁক্সাস। ২ তৃণকলৌকা।

তৃণ্রেণীর (ক্লী) স্থগদ্ধ জব্যভেদ, তৃণকুৰুম। (রাজনি*) তৃণ্ঞাস্থি (স্ত্রী) তৃণমিব গ্রন্থিক। স্বৰ্ণজীবন্তীর্ক, সোণা জীবই। (হিন্দী)

তৃণপ্রাছিন্ (পুং) তৃণং গৃহ্লাতি তৃণ-গ্রহ-ণিনি। মণিবিশেষ, নীলমণি, কাফুরদানা। পর্যায় — শৃকাপুট, তৃণমণি। (হারাবলী) তৃণচর (পুং) তৃণেষু চরতি চর-অচ্। > গোমেদমণি। (জি) ২ তৃণচারিমাজ।

তৃণজ্ঞ নু (জি) তৃণং জ্বভো ভক্ষং যস্ত (জ্ঞাস্থ বিততৃণ-সোমেভাঃ। পা (৪৪) ২৫) ইতি নিপতেনাৎ সাধুঃ। ১ তৃণভক্ষক। তৃণমিব জ্বভোদতে যস্তা ২ তৃণতুল্য দস্ত-যুক্ত, তৃণবৰ্ণদস্তবিশিষ্ট।

তৃণক্সলায়ুকা (ত্রী) তৃণাকারা ছণজাতা বা জলাযুকা। জলোকাভেদ, ছিনেজোঁক। "তন্তথা তৃণজলায়ুকা তৃণভাত্তং গড়া আত্মানং উপসংহরত্যেবমেবারং পুরুষ:।"

(শতপথবা ১৪।৭।২।৪)

তৃণজ্ঞ লুকা (ত্রী) জলোকাভেদ, ছিনেজোঁক।

"যথা তৃণজ্ঞলুকেয়ং নাপষাত্যপ্যাতি চ।" (ভাগ গু ৪।২৯।৭৬)
তৃণজ্ঞলোকাভায় (পুং) নৈয়ায়িকগণ এই ভাষের বিষয়
এইরূপ বলিয়াছেন—তৃণ ও জলোঝার ভাষ জীবের অপর
দেহ সংযোগ ঘারা পূর্বদেহপরিঙাগেরপ ভায়ভেদ।

জ্বলোক। যেরূপ একটা তৃণ আশ্রয় না করিয়া পূর্ব্বাশ্রিত তৃণ পরিত্যাগ করিতে পারে না।

তৃণজাতি (রী) তৃণমেব লাতিঃ। উলগাদি খড়। তৃণজীবন (ত্রি) তৃণেন লীবতি লীব-লাট্। যে সকল লীব তৃণ ভক্ষণ করিয়া প্রাণধারণ করে।

তৃণজ্যোতিষ (রী) তৃণের্মধ্যে স্বোতিঃ স্বোতিষতঃ। স্বোতিমতীপতা, এই পতা রাজিকাশে দীপ্রিবৃক্ত হয়।

(শম্বার্ণচি)

তৃণ্তা (ত্রী) ড্ণমির ভারতে ভার-কিপ্। ১ ধরু। ড্ণড ভার ভল্। ২ ভূগদ্ধ, ভূগের ভার, ড্গের ধর্ম। তৃণ্ডুছ্ (থং) ভূগ-ছহ-কিশ্। বাড়বামি। তৃণ্দ্ৰেন (পুং) তৃণমিব ক্ৰমঃ অসারস্থাৎ। > নারিকেল।
২ তাল। ০ গুবাক। ৪ তালী, তাজিয়াৎ গাছ। ৫ কেত্ৰী,
কেয়াগাছ। ৬ থৰ্জ্ব। ৭ হিস্তাল, হেঁতালগাছ। ইহাদিগের
নির্যাসগুণ—শীতল, লঘু, মোহন, বলকারক, হৃত্ব, তৃষ্ণা গু
সন্তাপনাশক।

ভূগধান্য কৌ) ভূণবছলং ধান্তং। ধান্তবিশেষ, নীবার, উড়িধান।

তৃণধ্ব জ (পুং) ভূণেরুধবজুইব। ১ তালর্কন। ২ বংশর্ক, বাশগাছ।

তৃণধান্যক (ক্নী) তৃণধান্ত-কন্। কলুধান্তাদি। তৃণনিম্ব (পুং) তৃণাকার: নিম্ব:। নেপালনিম্ব, কিরাওঁতিজ্ঞ, চিরেতা। (রাহ্মনিং)

তৃণপ (পং) তৃণং পাতি পা ক। গন্ধকিতেদ। তৃণপঞ্মূল (ক্লী) তৃণকপাণাং পুঞানাং মূলং। পঞ্চালবিশিষ্ট পাচন। কুশ, কাশ, শর, দর্ভ, ইকু এই পাঁচটী তৃণপঞ্চ ইহার মূল।

"কুশ: কাস: শরোদর্জো ইকুশেচ তি ত্ণোন্তবং।
পঞ্চুণমিদং থাতিং তৃণকং পঞ্মূলকং॥" (রাজনি॰)
শালি, ইকু, কুশ, কাশ, শর এই পাঁচটীও তৃণপঞ্চক, ইহাদিগের
মূলগুণ তৃষ্ণা, দাহ, পিত্ত, অস্ক্ প্ত মূত্রনাশক। (রাজনি॰)
তৃণপক্তি (প্রং) রাজঘাস, কালাঘাস, কালাকপূর।
তৃণপক্তিকা (স্ত্রী) তৃণপ্তেব প্রমন্তান্তাং ঠন্ টাপ্। ইকুদর্জ
তৃণ, গুণ্ডাশিনী তৃণ। (রাজনি॰)

তৃণপঞ্জী (জী) তৃণমিব প্রমন্তাঃ ভীষ্। তৃণপত্তিকা, অঙাশিনী।

তৃণপদা (স্ত্রী) তৃণজ্ঞের পাদোহস্তা: অন্ত্যকোপ: ঙীরি পদ্ধার:।
তৃণতৃলা মূলযুক্ত লভা, যে লভা তৃণের সদৃশ মূলবিশিষ্ট।
তৃণপানি (পুং) ঋষিভেদ। *

তৃণপুষ্পিকা (ত্রী) দিশ্বপুশীরক।
তৃণপুষ্পী (ত্রী) তৃণমিব পুশমন্তাঃ ভীষ্। দিশ্বপুশীরক,
দিশ্বিরা ফ্লগছে। (হিন্দী)
তৃণপুলক (পুং ক্লী) ক্লীববিশেষ।

पुनभूती (जी) छ्नज भूनः मृश्हिण्यं त्रातानिचार छीय्। हका, हाह, वन्मा।

कृतम्बि (पूर) कृतबाहरकात्रुतिः। कृतबाहिम्बिरक्त, कृत्असै ।

ভূপমংকুণ (পুং) প্রতিভূ, জামিন। (জিকাণ)
ভূপমংকুণ (পুং) প্রতিভূ, জামিন। (জিকাণ)
ভূপমায় (জি) ভূপজ বিকার: ভূপ-মাই । ভূপবিকার, ভূপরিভিত।
"কুর্যাৎ ভূপমার চাপং শরীত মৃগশারিকাং।"(ভারত ১০১৪৫ অং)
ভূপমারী (জী) ভূপমার ভীপ্। ভূপনির্মিতা।
ভূপমারিকা (জী) মিলিকাপুর্শান্তের, কাঠমিলিকা মূলগাছ।
ভূপমার (পুং) কুলাকরক্ষ।
ভূপমার (পুং) কুলাকরক্ষ।
ভূপারাজ (পুং) ভূপের রাজতে রাজ-জাচ্ বা ভূপজ রাজা।
ভালর্ক।

ভূণরাজ্বর্গ (পুং) ভূণরাজানাং বর্গ:। বৃক্ষসমূহ, গুবাক, তাল, হিস্তাল, তাড়ী, কেডকা, থর্জুর, নারিকেল এই ৭টী বৃক্ষ ভূণ-

রাজবর্গ। ইহাদের প্রাদি ধারা দীস্তধাবন করিতে নাই। "গুবাকতালহিস্তালাস্তথা তাড়ীচ কেতকী। থক্ক্রনারিকেলৌচ সংগৈতে তৃণরাঞ্চকঃ।

্তৃণরাজশিরাপতৈর কুর্যাদরধাবনং।" (আছিকতৃ) তৃণবল্প বা (জী) তৃণরূপা বৰ্জা। বৰজাতৃণ, হিন্দীভাষায়

সাবে বাগে। (রাজনি॰)
ভূণবিন্দু (পুং) একজন মহর্ষি। এই ঋষি চতুবিংশ স্থাপরে ।
বেদ স্কল বিভাগ করিয়া বেদবাস হন।

*ভৃণবিন্দুস্থা বাদে: ভার্গবস্ত ততঃপরং। "।দেবীভাগ ১০০২)
ভৃণবিন্দুস্রোবর (পুং) ভৃণবিন্দা: সরোবর: ৬তৎ। ভৃণবিন্দ্
ঋষির সরোবর রূপ তীর্থ, এই সরোবর কামাকবনের নিকটবস্তী মরুভূমির প্রান্ধভাগে অবস্থিত। (ভারত বন ২৫৭ জং)।
ভূণবীক্ত (ক্ষা)ভৃণত বীজং ৬তং। শ্রামাক, নীবার, উড়িধান।
ভূণবীক্তোত্তম (পুং) ভূণবীলেষু উত্তম:। শ্রামাক, ভূণধান্ত।
ভূণবুক্ত (পুং) ভূণমিব কৃক্ত: অসার্ভাং। ১ নারিকেল।
২ তাল। ত প্রবাক। ৪ তালী। ৫ কেত্কী। ৬ থক্স্রী।
৭ হিস্তাল।

তৃণ্শীত (ক্লী) তৃণেষু নীতং নীতলং। কড়ণ, গন্ধত্ণ, গন্ধ থড়। (রত্নমাণ)

তৃণ্শীতা (ত্রী) তৃণেষ্ শীতা। জলপিপ্পণী। তৃণশূন্য (ক্রী) তৃণমিব শৃঞ্চ ফলস্ক্তিং। ১ কেতকীপুষ্প।
২ মলিকা। ৩ নাগরঙ্গ, নারালানেব্। (ত্রি) তৃণেন
শ্রং। ৪ তৃণরহিত।

ভৃগশ্লী (জী) তৃণং শ্লমিব তীক্ষাগ্রং ষষ্ঠাঃ গৌরা ভীব্। লতাভেদ।

তৃণশোণিত (ক্লী) তৃণকুত্বম, কুত্বম ঘাস। তৃণশোষক (পুংক্লী) তৃণমণি শোষরতি ৩ব-শিচ্ অণ্। বালিমং জাতীর দর্শভেদ। তৃণশৌতিকা (ব্রী) তৃণেষু শৌতিকা। বঘুকেতকী বৃক্ষ। (পারস্কর নিঘণ্টু)।

তৃণ্যট্পদ (পুং তৃণমিব ষ্ট্পদ:। বরোল, বোলতা। (হারাং) তৃণদংজ্ঞক (পুঃ), তৃণং দংজ্ঞ। যভা। তৃণদম্হ। কুল, কাল, নল, দর্ভ, কাও, ইকু, ইহারাং তৃণদংজ্ঞক। (সুক্রত)

তৃণদারা (স্ত্রী) তৃণভেব সারো বঁখা:। কদনী গাছ।
তৃণদিংহ (পু:) তৃণ্যু সিংহ ইব তরাশকডাং। কুঠার, কুড়ানী।
তৃণদোমাঙ্গিরস্ (পু:) দক্ষিণদিক্ষিত যুধিষ্ঠিরের ঋতিক্
(পুরোছিত্ব) ভেন। উর্চ্ প্রমূচ্, স্বস্ত্যাত্রের, দৃঢ়বা, উর্জবাহ,
তৃণদোমাঙ্গিবা ও মিত্রাবরুণের পুত্র অগন্তা এই ৭ জন ঋবি
ধর্মরাজের পুরোহিত এবং ইহারা দক্ষিণদিকে অবস্থান
করিতেন। (ভারত অফুলাং১৫০ অং)

তৃণস্কল (পুং) তৃণমিব স্কলতি স্কল-অচ্। তৃণবৎ চঞ্চলস্বভাব, তৃণের মত চঞ্চল স্বভাবসূক্ত। "তৃণস্কলন্ত মু বিশঃ" (ঋক্ ১। ১,৭২।০) 'তৃণস্কলন্ত তৃণবচ্চঞ্চলস্বভাবন্ত' (সামণ)

তৃণহশ্ম (প্ং ক্লী) তৃণাক্ষাদিতে। হশ্ম:। তৃণযুক্ত অটালিকা,
অটালিকার উপরিস্থ তৃণনিশ্মিত ঘর, পর্যায়—ময়ট। (হারা)

তৃণাংক্রিপ (প্ং) তৃণরূপ: অর্ছ্রিপ:। মহানকতৃণ। (রাজনি)
তৃণাপ্রি (প্ং) তৃণজাত: অগ্নি:। তার্ণ অগ্নি, থড়ের আগুণ।
তৃণাপ্তরন (পুং) তৃণদাব অগ্নন:। ক্রকলাস, আজনাই।
তৃণাপ্তরী (স্ত্রী) তৃণপুত্রা অটবী। তৃণময় বন।
তৃণাত্র (স্ত্রী) তৃণপুত্রা অটবী। তৃণময় বন।

তৃণাদি (পুং) তৃণ আদি করিয়া সপ্রত্যয় নিমিত্ত পাণিস্থাক্ত গণবিশেষ। তৃণ, নড়, মৃল, বন, পর্ণ, বর্ণ, বরাণ, বিল, পুল, ফল, অর্জুন, অর্ণ, স্থব্ণ, বল, চরণ, বস্থ এইগুলি । তৃণাদি। (পাণিনি)

তৃণান্ন (ক্নী) তৃণক্ত তৃণধান্তক অরং। উড়িধানের ভাত। তৃণামল্ল (ক্নী) তিমল, তৃণবলীতীর্থ।

তৃণাপ্স (ক্রী) তৃণের অমং। লবণ তৃণ। (রাজনিং)
তৃণার পিল্যায় (পুং) স্থারভেদ, তৃণ ও অরণি অগ্নিজননে
দেরপ পরস্পর নিরপেক্ষ কারণ, অর্থাৎ যে কারণে তৃণ হুইতে
অগ্নি জনে, দেই কারণে অরণি হইতে অগ্নি জনে না, অগ্নিজননের প্রতি তুয়েরই পরস্পার ভিন্ন কারণ। যেধানে এইরূপ

কারণের পরস্পর ভিন্নতা বোধ হইবে, দেইথানে এই স্থায় হইবে। [ক্লায় দেখ।]

তৃণাবর্ত্ত (পু:) তৃণং আবর্তরতি ভ্রমন্ত্রি জ্ঞা-র্ভ-পিচ্-লণ্।
> বাত্যারূপ বাত্সমূহ, ঘূর্ণবায়ু। ২ কংশরাজের জাত্তর
লৈত্যবিশেষ। একলা এই অহ্নর কংসের আবেশে
জীকুঞ্চকে বধ করিবার নিমিত্ত চক্রবাতরপী হইরা গোকুল

আন্দোলিত করিয়াছিল, ঐ সময় ধ্লিধারা সকলের দৃষ্টিক্র্
ও মহাশন্দে দশদিক্ পরিপূর্ণ হইয়াছিল। তৃণাবর্জনান্ব
চক্রবার্রপে শ্রীকৃষ্ণকৈ হরণ করিয়া লইরা বাইতেছিল
শ্রীকৃষ্ণ অত্যন্ত ভারী হওয়ায় ভূরিভার বহন করা তায়া
হ:নাধা হইল। ক্রমে বায়ুবেগ মন্দীভূত হইতে লাগিল
যদিও ঐ দানব শ্রীকৃষ্ণকৈ লইয়া আকাশ অতিক্রম করিল
কিন্ত তাহার পর আর যাইতে সমর্থ হইল না। তথন তৃণাব
বিলাতীর শুকুত্ব হেতু ঐ অ্তুত বালককে পর্বত্তুলা বো,
করিতে লাগিল। কিন্তু কৃষ্ণ উহার গলদেশ গ্রহণ করিয়াছিলেন
বিলারা দানব পরিত্যাগ করিতে সমর্থ হইল না, বরং গল
বাহর হইয়া পড়িল, তথন ঐ দানব অব্যক্ত ধ্বনি করিতে
করিতে গতাল্ল হইয়া কৃষ্ণের সহিত ব্রক্ত মধ্যে পড়িয়া গেল,
আকাশ হইতে শিলাতকে পতিত হওয়াতে সেই দান
বের সম্পর্য অবয়ব বিশীণ হইয়া গেল। (ভাগা ১০।৭ অং)

তৃণা বল্লী তীর্থ (ক্লী) তীর্থবিশেষ, তৃণামল তীর্থ।
তৃণাস্তজ্ (ক্লী) তৃথেষু অস্থানিব রক্তথাৎ। তৃণকুৰুম, স্থাদি
দ্রাবিশেষ।

তৃণাহ্বা (গ্রী) তৃণবিশেষ, চীনাঘাস।

ভূবে ক্ষু (পুং) ভৃণমিক্রিব মধুররসভাৎ। বল্পা, হিলীরে সাবে বাগে।

তৃলেন্দ্র (পুং) তৃণং ইক্সইব। তৃণরান্ধ, তালরক্ষ।
"ধ্বলস্থগেন্দ্রো দেবজ ভবিষ্যতি রণাশ্রিতঃ।"

(ভারত অহু ১৪৭ অ')

ভূণোন্তম (পুং) তৃণেষু উত্তম:। উথর্জনতৃণ। (রাজনি*) ভূণোত্থ (ক্লী) তৃণকুছুম, কুছুম ধাস।

ত্ণোদ্ধ (পু:) তৃণের উদ্ভবতি উদ্ভূঅচ্। ১ নীবার ধান্তভেদ, উড়িধান। ২ তৃণজাঁত অগ্নি। (ত্রি। ৩ তৃণজাত মাত্র। তৃণোক্ষা (স্ত্রী) তৃণজাতা উদ্ধা। তৃণজা উদ্ধা, তৃণের মশান, পাজালি।

"ন হি ভাপন্নিত্ং শব্যং সাগরাগুন্ত্গোন্দা।" (হিভ্যেপদে)
ভূগোক্ত্স্ (ক্লী) ভূগনিশিতং ওক:। ভূগনিশিত গৃষ্ট প্রভেষ্ক্র ।

তৃণী ষধ (ক্লী) তৃণাত্মকং ঔষধং। এলবালুক নামক গন্ধ স্ত্ৰা।
তৃণ্যা (স্ত্ৰী) তৃণানাং সমূহং তৃণ ব। (পাশাদিভ্যো বঃ। গা
৪।২।৪৯) টাপ্। তৃণসমূহ, তৃণবাশি।

ভৃতীয় (তি) ত্রনাণাং পুরণঃ তি-তীর সম্প্রদারণং (^{তেঃ} সম্প্রদারণক। পা ৫৷২৷৫৫) ভিনের পুরণ, হিন্দীতে তেসরা। "প্রথমান্দে তৃতীরে বা চূড়াকার্যাে বথাকুলং।" (স্ক্রোভিতর) তৃতীয়ক (গ্ৰং) ভৃতীর-ভন্। বিষয় অৱবিশেষ। আৰাগ্র, ক্ষর, কঠ, শির এবং সমিদ্ধান্ এই ৫টা ককের দ্বান। দিবা ও রাজি দোবের এই ছইটা প্রকোপ কাল। ইরার মধ্যে এক একটা প্রকোপেকালে জর প্রকাশ করে। দোব কঠে হিত হইলে জরন্বিবন হলতে থাকিরা ভূতীরনিবনে আমাশর আফ্রানন করিয়া জর উৎপাদন করে, ইহাকে ভূতীরক জর কহে। এই জর এক দিন অন্তর হয়। (প্রশ্রুত) প্রনিমক্মতিক্রমা বো ভ্রুবেং স্ভৃতীরক:।" (ভারপ্রণ)

একদিন অতিক্রম করিয়া বে জর হয়, তাহাকে তৃতীয়ক
য়য় কহে। যে তৃতীয়ক জয় কফশিতা হইতে উৎপদ্ম
য়য়, তাহা প্রথমতঃ ত্রিকয়ান বেদনা করিয়া উপভিত
য়য়। বায়ুও কফ হইতে উৎপদ্ম হইলে তায়া৽প্রথমতঃ পৃষ্ঠয়ানে বেদনা হয়, বায়ুশিতা হয়তে উৎপদ্ম হইলে তাহা
প্রথমতঃ মতাক বেদনা করিয়া উপদ্বিত হয়। তৃতীয়ক য়য়
এই তিন প্রকার। (ভাবপ্রণ) [জয় দেশ।]

তৃতীয়কবিপ্র্যায় (পুং) তৃতীয়ক জনবিশেষ। বে জন মধ্যে এক দিন হইরা আলো এবং স্বস্তুদিবসে বিমৃক্ত হয়, ভাহাকে তৃতীয়কবিপ্র্যায় কহে।

"মধ্যে একং দিনং জরং জনরতি আদাবস্ভাচ দিনে মুঞ্জীতি তৃতীয়কবিপ্যায়:।" (ভাবপ্র•)

তৃতীয়তা (স্ত্ৰী) তৃতীয় ভাবে তল্। তৃতীয়ন্ত্ৰ।

তৃতীয়প্রকৃতি (রী) তৃতীয়া প্রকৃতি: প্রকার:। স্ত্রী ও পুরুষ অপেকা করিয়া তৃতীয় প্রকার, নপুংসক।

ভৃতীয় যুগপর্যায় (পু:) ভৃতীয়ত যুগত বাপররূপ্ত পরিবর্ধ:

যত কালে। যেকালে বাপর যুগের ভৃতীয় পর্যায় উপস্থিত

হয়। বাপরহুগের পরিবর্ত্তাধার কলিস্ফিরণ কাল ভৃতীয়

যুগের পরিবর্ত্তা।

"বাপরে সমস্থান্থে ভৃতীর্যুগ্পর্যারে।" (ভাগ ১।৪।১৪)
ভৃতীয়স্বন (ক্লী) স্বতে সোমোহন্দিন্ ভৃতীয়ং সবনং কর্ম্থা।
বজ্ঞতেন, কালত্তার স্বন্তর্যুক্ত অনিটোমানির ভৃতীর বজ্ঞ।
এই,বজ্ঞ প্রাতঃ মথাক্ত প্রারংকালে করিতে হয়। কাত্যায়ন-ভৌত্ততে এইরূপ লিখিত আছে, প্রাতঃকালের বজ্ঞ বে
সকল কর্ম উচ্চবর হারা করিতে হইড, ভাহা উচ্চবরে না
করিয়া প্রথমবরে, মধানকে বে স্কল কর্ম নীচ ও উচ্চবরে
করিতে হইড, ভাহা মধ্যমন্ত্রে ও সারংকালে বাহা নীচ ও
বধানবরে হইড, ভাহা প্রথম্বরে করিতে হইবে। এ

"शाकः जन्दन, त्यारेक्ट कर्णार्शन ।" (शाकः अन्दम चानि केरेक्ट-कर्णाति
 देकदन्याकानगरिक करकृषि अध्यक्षप्रतिपत्र कार्गाति ।" "जन्दर व्यक्त्यन्यवा

ফুজীরাংশ (বং) ছুড়ীর সংশাঃ। ছুরীর ভাগ। ডুডীরা (বী) ভূতীর টাণ্। ডিথিবিশের। [ডিপি রেখ।] ফুডীয়াকুকু (বি) ভূতীর ডাচ্-কুক্ত। বারত্তর ক্রিডকেন্দ্র, ডিনবার চাব বেওরা ক্ষেত।

তৃতীয়াপ্রস্কৃতি (ত্রী) ভূতীয়া গ্রহজিং (সংজ্ঞাপুরণাদে। গা ৬০০৮) ইজি ন গুংবজাবঃ। নগুংবজ।

তৃতীয়াশ্রেম (পু: क्रो) ভূতীয়ং স্থাশ্রম:। বাণএখ্যাশ্রম, গৃহস্থাশ্রমের পর এই আশ্রম্ অবলম্বন করিতে হয়। "উবিবৈধং গৃহে বিশ্রো বিতীয়ালাশ্রমাৎ পরং।

বলীপণিতদংযুক্তকৃতীয়ন্ত সমাপ্ররেং ॥" (সম্বর্তদংহিতা)

[বাণপ্ৰস্ত দেখ ৷]

তৃতীয়াসমাস (পুং) ভৃতীয়া সৃষ্ট্রমার:। সমাসবিশেব,
ভৃতীয়া তৎপুরুর মমাস, তৃতীয়া বিভক্তির সহিত্ এই সুমাস
হর বলিয়া ইহার নাম তৃতীয়াসয়াস। [সমাস দেখ।]

তৃতীয়িন্ (তি) তৃতীর অন্তার্থে ইনি । তৃতীয়ভাগার্ছ, তৃতীয় ভাগের যোগা।

"তৃতীয়িনস্ত্তীয়াংশাশ্চপুর্ধাংশাশ্চ পাদিন: ।" (মসু ৮।২১০)
ক্যোতিষ্টোম প্রভৃতি নাগের অজ্যাবাক্ নেষ্টা, জয়ীএ,ও
প্রতিহর্তা ইহারা প্রধান ঋষিকের তৃতীয়ী অর্থাৎ তৃতীযুক্তাগী,
(ইহারা প্রত্যেকে তৃতীয়ভাগ পাইবার যোগ্য।)

ড়েৎ সু (ক্রি) তৃদ্ বাছলকাৎ স্থক্। হিংসক। "গব্যা তৃৎস্থভ্যা অনুগ্র্যাধানূন্" (ঋক্ ৭০৮।৭) 'তৃৎস্থভ্যঃ হিংসকেভ্যঃ' (সামণী ২ 'রাজবিভেদ। "ব্যানবস্থা তৃৎসবে গ্রং" (ঋক্ ৭০৮৮১৩) 'তৃৎস্থা রাজবিভেদ্য' (সামণ)

তৃদিল (আঁ) তৃদ্বাহ• ইলচ্। ১ ভেদক। ২ ভিল। "তৃদিলা অতুদিলাসঃ" (অক্ ১০।৯৪।১১) 'তৃদিলা ভেদকাঃ অতৃদিলা অভিলাং' (সায়ণ)

তুপ্ৰ (পুঁং) তৃপ্লোতি প্ৰীণয়তি তৃপ-অভি (সংশচৰ্ত্পৰেছৎ। উণ্ ১৮৫) ইতি ক্ৰেণ নিপাতনাৎ সাধু:। ১ চক্ৰ। ২ ছব। ৩ ইক্স। "তৃপ্ৎসোম মপিববিঞ্না ক্তং" (ঝক্ হাঁহহা১) 'তৃপ প্ৰীণনে তৃদাদি: আগমান্তশাসনক অনিত্যৱাৎ ক্মভাব:। তৃপানু ইক্স' (সাধণ)

ভূপাল (জি) ত্লাতি-ত্ল-কল (কঁলছ্ণশ্চ। উণ্ ১।১০৬)। কিপ্রা "প্রহংসাসম্পূল্য মহাং" ((অক্ ১।৯৭৮)

চরতি ইতি লগেত্রাব।" "সধ্যমেন সাধানিকে।" 'সাধানিকে স্থনে ত্রাকি
ভূপানি জীবৈর্থনি চোইতভাস্তেভাত্তিল সধ্যমেন ন্দরেন কার্যানি
লাবাস্তবে কথা অবসংব।" 'জিভ্নেন ভূজীবস্বনে।" 'তৃতীরস্বনে বাবি
নীবৈর্থানি চ স্থান্ত্রন স্বরেশ অধ্যুত্তি ভূমনি স্কাণ্ডেমেন্ন স্বরেশ
কার্যানি কবৈব নাবাস্থান ক্ষর্থাধ্য (কাড্যাণ কৌণ ক্র ১৮১৮-১৯২০ কর)

'তৃপ্লশ্সঃ ক্ষিপ্ৰবাটী, ডছড়াং বাহেন তৃপ্লথাডর্মা কিথা-প্রহারীডি' (সারণ) তুপলা (ব্রী) তৃপল-টাপ্। > গভা। ২ বিফলা, হরীতহী, व्याम्मा, वय्रा। তৃপলপ্রভর্মন্ ('বি) ,> প্রস্তরাদি ছারা প্রহারকারক। "অপাংতম্যুস্পল প্ৰভৰ্মা" (গুক্ ১৮৯।৫) 'তৃপলপ্ৰভৰ্মা গ্রাবাদিভি: ক্ষিপ্রপ্রহারী' (সারণ) २ किटाधारात्रकात्रकः। [ज्लन (मथ।] पुर्भाना (बी) ए% कान्छ्। २ नजा। (वाठ॰) তৃপ্ত (ত্রি) তৃপ-ক্ত। তৃপ্তিযুক্ত, সম্বষ্ট, আহলাদিত, ম্বষ্ট, পূর্ব-কাম। "অপাং হি তৃপ্তার ন বারিধারা স্বাহ: সুগন্ধি: স্বদতে ডুবারা।" (নৈবধ তা৯৩) তৃপ্তা (বী) তৃপ্ত:টাপ্। গান্ধৰীভেদ। "তৰ্পণা তৃপ্তিদা তৃপ্তা তামসী তুষ্কস্ততা।'' (দেখীভাগণ ১২।৬।৭৩) ভৃত্তাংশু (ত্রি) তৃপ্তঃ অংশুর্যস্ত । তর্লিভাবরব, যাহার শরীর তৃপ্ত হইরাছে। "নযে স্থতাস্থপ্রংশবো" (ঋক্ৢ১।১৬৮।৩) 'তৃপ্তাংশবন্তর্পিতাবয়বঃ' (সার্ণ) . কৃপ্তি (ত্রী) তৃপ-জিন্। ভশ্বণাদিবারা আবেজানিবৃতি, দৈগুষ্টি। পর্যায়—দৌহিত্য, তর্পণ, প্রীণন, আদিতম্ভব। (শব্দরণ) "নৈব তৃপ্তিং ব্রজামোহত্ত স্থাপানেহমরা ধ্বা।" (प्रवीखांग॰ ১। ১।२०) তৃপ্তি কর (ত্রি) ভৃতিং করোতি ক্ব-ট। গ্রীতিপ্রদ, আহলাদবনক। কৃপ্তিদা (ত্রী) ভৃপ্তিং দদাতি দা-ক, টাপ্। পারতীভেদ। [ज्धा (नथ ।] তৃপ্তিন্ (তি) কৃষোন্তান্ত তৃপ্ত-ণিনি (স্থাদিভাচ্চ। পা e12.202) ज्ञियुक्त । তৃপ্তিমৎ (তি) তৃপ্তি: বিশ্বতে অস্ত তৃপ্তি-মতুপ্। ১ তৃপ্তিযুক্ত। ब्रियाः डील्। २ উन्क, सन्। (नियण्डू) তৃপ্ন (তি) তৃপ-ক্ । তৃপিনীল। তৃপ্র (পুং) ভূপ্যত্যনেন ভূপ-রক্ (ক্ষায়তক্ষীতি। উণ্ ২।১৩) ১ হুত। ২ পুরোডাশ। (অি) ৩ ভর্পক। "ন হুরাশী র্কুণ্ডা" (ঋক্ ভাষা ে) 'তৃপ্তান্তপুকা:' (সায়ণ)। (ক্লী)'৪ ছ:খ। তৃপ্রালু (ত্রি) ভূপ্রং ইংবং ন সহতে অসহনে ভূপ্র-আনু। হঃখাসহন, হঃধ সহ করিতে না পারা। **्रकता** (बी) ङ्फिड भीष्ट्रिड ङ्क्-कन्त् होन्। बिक्ना। [विक्ना (नप ।] ভৃষ্ণ (ত্ৰী) ভ্ৰতি পীজনতি ভ্ৰ-উ। স্পৰাতি।

कुक्कोनि (पूर) शाकुननेविष्यव, कुक्क, कुन्क, कृन्क, कन्क,

खन्क, উन्क, खन्क धारे कंदी शाजू ज्ञानि।

पृष् (बी) चृर्किम् । [पृश (तथ ।] जुरा (बी) पृर्वेग्। > चाकाव्या । नर्गात--रेष्का, चुरा, नेहा, जृष्, वाक्षा, निश्ना, बरनावर्ष । 🕆 ্২ পিপাসা। ৩ কামকল্পা। ৪ লাকলীবৃক্ষ। "লোভেন বৃদ্ধিশ্চসতি লোভোজনরতে তৃষাং।" (হিজোপং) তৃষাভূ (ত্রী) ভ্ষায়াঃ ভূকংপক্তিছানং। ক্লোম, মূত্রাধার। ভূষাত্ (ক্লী) ভ্ষাং হস্তি হন-ড। ১ লগ। ২ মধুরিকা, মৌরী। ভৃষিত (তি) ভ্ৰা জাতা অস্ত তারকাদিখাদিতচ্। ১ ভ্ৰা विछ। २ न्सा ७ रेफ्का ' "ত্ষিতান্তাহৰে ভোজ ুং নৃপমাংসানি বৈ ভূশং।" (इतिव २२ घर) তৃষিতোত্তরা (বী) ত্বিত উত্তরো বস্তা:। অশনপর্ণী বৃদ্ধ, আরাটী গাছা ভূষু (ক্লী) তৃ:স্থক্ প্ৰোদরাদিদ্বাৎ সাধু:। ১ ক্লিঞা। (জি) ২ ক্ষিপ্ৰভাষ্ক । ব্ৰিষাং ভীপ্। তৃষী, কিপ্ৰ। "ভূষীমমুপ্ৰসিডিং' (ঋক্ ৪।৪।১) 'ভৃষীতি ক্ষিপ্রনাম' (সার্ব) ভৃষুচ্যবস্ (তি) তৃষু চাবঃ বগু। কিপ্রগমনযুক্ত । "দিছাং ভৃষ্চ্যবদো" (ঝক্ ৬।৬৬।১০) 'ত্তিষ্চ্যবস: ক্ষিপ্রগমনাঃ' (সায়ণ) তৃষুচুৰে (ত্রি) তৃষ্চাত্-ফিপ্। কিপ্প গমনশীল। "তৃষ্চাত মা সাম্যং" (ঝক্ ু ১৷১৪ - ৩০) 'তৃষ্চুাতং অরণীভ্যাং কি গ্রং নিৰ্গচ্ছস্তং' (সারণ) ভৃষ্ট (ত্রি) তৃষ-ক্ত বেদে বাছলকাৎ ইড়ভাব:। > দাহলনক। "छ्डेट्सउ९ करूक्टसड९" (अक् > • ।৮ e। ०৪) 'छ्डेर माइबनकः' ু(সায়ণ) ২ ভৃবিত। ভৃষ্টামা (ত্রী) ভৃষ্টং লাহং অময়তি গমরতি অম-ণিচ্-অচ্। নরী। "তৃষ্টাময়া প্রথমং যাতবে" (ঋক্ ১০।৭৫।৬) 'তৃষ্টাময়া নদাা' (সায়ণ) তৃষ্ণজ্ (ত্ৰি) ভ্ষাতি আকাজ্জতি ভ্ৰ-নৰিঙ্ (ৰণিভ্ৰোনজিঙ্। পা তাং।১৭২) সুক্ক। ২ ভৃষিত। "ক্সসিক্ষুৎসং গোডমাং তৃফ্জে" (ঋকু ১৷৮৫i১১) 'তৃক্জে তৃষিভার' (সারণ) তৃষ্ণা (ত্ৰী) তৃব ন, সচ কিং (তৃবিশুবিরাদিভাঃ কিং। (উণ্ ৩।১২) ১ পিপানা, পানেচ্ছা। পর্যার—উন্তা, ভৃষ্, ভর্ন, ভ্^{ষা,} उर्नन । (बहायुत्र) २ निन्ना, लाख ि ७ व्यवाशीषिनाद। ৪ রোগভেদ। এই রোগের বিষয় স্কুশ্রুতে শিখিত আছে— স্কলি কলপানে তৃতি না হইলা পুন্ধীর জলের আকাজা হইলে তাহাকে তৃষ্ণা বলা বার। ইহা সংক্ষোভ, শোক, শ্র মখণান, কক, অন্ন, ৩ছ, উঞ্চ ও কটুত্রব্য ভোজন, ধাচু^{কা}, লজ্বন এবং ভাগ এই লক্ষণ বারা পিড ও বারু বৃদ্ধি ব্রী

লনীর ধাতৃবাহী স্রোক্ত সকলকে দ্বিত করে। এই সকল সোত

পথ দ্বিত হইলে অতিশর তৃঞা জন্মে। তৃঞা সপ্তপ্সকার— বার্মান্ত, পিতথান্ত, প্রেমানান্ত, ক্ষতনান্ত, ক্ষরনান্ত, (ধাতুকার) আমনান্ত এবং কটু তিক্ত প্রভৃতি ভোলন লক্ত।

ভালু, ওঠ, কঠ এবং মুধ সম্যক্ শুদ্ধ, দাহ, সন্তাপ, মোহ, অম, বিলাপ, প্রলাপ, সামায়তঃ এইগুলি ভ্ষার পূর্ব্ধ লক্ষণ। বিশেষতঃ বায়ুজন্ত ভ্ষার মুধ্পোর, শহ্মদেশ, শিরো-দেশ এবং পলদেশে ভোল (টন্টনানি), প্রোভংগথের অবরোধ, মুধের বৈরক্ত এবং শীতল জলে ভ্ষার বৃদ্ধি হয়। মুদ্ধা, প্রলাপ, অরুচি, মুধ্শোষ, পীতনেত্র, অভান্ত লাহ, শীতাভিলাব, মুধের ভিক্ততা এবং কঠ হইতে ধ্মোলগম এইগুলি পিত্তজন্ত ভ্ষার লক্ষণ। জঠরানল কম্ব কর্ত্বক সংবৃত হইলে ভাহার বাপা অবক্ষম হয়, ভাহাতে জলবাহিস্রোভংগথ দ্বিত হইয়া শুক্ ভ্ষা জন্মার।

নিজা, দেহের শুক্তা, মুখের মধ্রতা, শীতজ্ঞর, বমন, অফচি এইগুলি কফজন্ত তৃষ্ণার লক্ষণ। শোণিতজন্ত পীড়া বা শোণিত নি:দরণ হইলে তৃষ্ণায় দকল লক্ষণ প্রকাশ পাইয়াও অধিক জলের আকাজ্জা থাকে না। ইহাকেই রক্তন্ত ভৃষ্ণা বলা বায়। রদ প্রভৃতি ধার্তুক্ষর জন্ত যে তৃষ্ণা জয়ে, দিবানিশি পুন: পুন: পান করিয়াও তাহার শাস্তি হয় না। ইহাকে কেহ কেহ সায়িপাতিক তৃষ্ণা বলে। আমজ তৃষ্ণাতে তিনোবেরই লক্ষণ দৃষ্ট হয়, ততিয় হৃদিশ্ল, নিষ্ঠাবন এবং শরীরের অবসাদ এই সকল লক্ষণ জয়ে। অতিশয় য়েহ, অয় বা লবণ কিয়া শুক্ষণাক অয় ভোজন করিলেও তৃষ্ণা জয়ে, ইহাকে ভোজনজন্ত তৃষ্ণা কহে। তৃষ্ণার্ত্ত বাজিক ক্ষীণ, মানসিক ক্রিমাইন ও বধির হইলে এবং তাহার জিহ্বা নির্গত হইয়া পড়িলে রোগ অসাধ্য জানিবে। (সুশ্রুত উত্তরতন্ত ও৮ অং) ভাবপ্রকাশে ইহার বিষয় এইরপ লিথিত আছে—

ভর, পরিশ্রম, বলক্ষ এবং পিত্তবর্দ্ধক দ্রব্য ভক্ষণে পিত্ত ও বায়ু কুপিত হইরা উর্জ্ঞামী হর, পরে তালুভে গিরা পিপাসা উৎপাদন করে। অর, কফ, আমরস কর্তৃক দ্বিত দোব সলিলবহ লোভ:সম্হকে দ্বিত করিয়া তৃষ্ণা উৎপাদন করে। তৃষ্ণা সাত প্রকার—বাতজ, পিত্তজ্ঞ, কফল, ক্ষতজ্ঞ, ক্ষত্ত প্রকার—বাতজ, পিত্তজ্ঞ, কফল, ক্ষতজ্ঞ, ক্ষত্ত প্রকার এবং অরল্প। স্প্রশ্রেত 'সলিলবহলোত।' ইহাতে বহুবচন নির্দিষ্ট থাকার চরক্ষের মতাস্থ্যারে জিহ্বা, হলর, গলদেশ ও ক্লোমকে (মৃত্যাধার) ব্রিতে হটুবে ক্ষর্থাৎ তৃষ্ণা হইবার সময় দোব ঐ সকল স্থানকে আশ্রের করিয়া থাকে।

তৃক্ষার সামাক্ত লক্ষণ—তৃক্ষা উপস্থিত হইলে রোগীর তালু, ওঠ, কঠ, ব্ধবেদনা ওদাহস্ক্ত,হয় এবং সন্তাপ, মোহ, প্রম ও অলাপ এই সকল হইয়া থাকে। বাতৰ তৃষ্ণার স্থান নাতৰত তৃষ্ণারোগে রুখের মণি নতা ও বিরস্তা, শৃথা (কুণালছি) ও মন্তব্দ বেদ্না এবং রস্ত অধুবাহিধমনী কর হর। শীতল জুল ব্যবহারে এই রোগ বর্ত্তিত হইরা থাকে।

পিত্তল লক্ষণ—লৈজিক তৃষ্ণারোগে মৃদ্ধা, আরেবিছেব, প্রালাপ, দাহ, রক্তাক্ষ, অনুত্যন্ত মুখ্পোষ, শীতল সেবলভিলাব, মুখের তিক্ততা এবং ধুমনির্গমবং বোধ হয়।

ক্ষত্ত লক্ষণ — ক্ষত্ত ভূকানোগেশ্বকারণে কুপিত কৃষ্
কঠরায়িকে আছোদন ও পাবক উদ্বাকে কৃষ্
ক্রের, ঐ
অবক্ষ উন্না অমুবহস্রোতকে শোষণ করিরী কৃষ্
কৃষ্
কৃষ্
উৎপাদন করে। এই রোগে নিম্রাধিকা, দেহের
গুরুত্ব, মুধের মধুরতা এবং ভৃষ্ণাপ্রীড়িত বাজি অত্যন্ত কৃশ
হইরা পড়ে।

ক্ষতল লকণ---শত্রাদিধারা ক্ষত ব্যক্তির বেদনা ও রক্ত-নি:সরণ হেতু তৃঞা উপস্থিত হয়, ভাহাকে ক্ষতল তৃষ্ণা কহে।

ক্ষুত্র লকণ—রসক্ষ প্রমুক্ত যে তৃষ্ঠা কয়ে তাঁহাকে
ক্ষুত্র তৃষ্ঠা কছে। ক্ষুত্র তৃষ্ঠারোগে রোগী দিবারাত্রি সকল
সময় কলপান করিরাও তৃত্তিলাভ করে না এবং রসক্ষের
লক্ষণ সকল উপস্থিত হয়। কেহ কেহ ইহাকে সারিপাতিক
তথ্যা কহিরা থাকেন।

রসক্ষরের লক্ষণ---রসক্ষ হইলে জ্বরে বেদনা, কম্প, মুধশোৰ, জ্বরের শ্ল, শোষ ও শৃক্ততা হয়।

আমজ লক্ষণ—আমজ তৃষ্ণা সারিপাতিক তৃষ্ণার স্থার লক্ষণযুক্ত, ইহাতে হৃদয়ে বেদনা, নিষ্ঠাবন এবং শরীরের অবসরতাহয়।

আনল দাকণ—নিশ্বজেবা, আন, লবণ ও কটুরসমূক দ্রবা এবং গুরুদ্রবা সেবন ধারা শীঘই ভূকা উৎপন্ন হয়, এই ভূকাকে অন্নলা ভূকা কহে।

উপদর্গ ভৃষ্ণার লক্ষণ—বে স্থান রেগীর স্বর স্থীণ, মৃক্র্ ও ক্লান্তি হর এবং মুখশোষ, হৃদরশোষ ও তালুশোষ উপদ্বিত হর, দেই ধাতুশোষণকারী ভৃষ্ণা কটদাধ্য জান্তিব।

তৃঞ্চারোগের উপসর্গ ও অরিষ্ট—অর, মোহ, ক্ষর,
 কাস ও খাসাদিব্রুক অত্যন্ত মুর্ধশোষাদি ঘোরতয় উপদ্রব
যুক্ত রোগহেতু রুশ এবং বমিবেগে কাতর, আই সকল বাজির

তৃঞ্চারোগ মৃত্যুর কারণ জানিবে।

ভৃষ্ণাচিকিৎসা — বাতল ভৃষ্ণারোগে বাধুনাশক অথচ কোমল, লঘু ও শীতল অব্য দারা চিকিৎসা করিবে। বাতল ভৃষ্ণারোগে ওড়সংষ্ক দধি আলত। পিত্তলভ্ত ভৃষ্ণারোগে মধুর ও তিক্তরসমূক অব্য এবং তরল ও শীতল অব্য হিত্তরর।

শুণা, শ্বেশুপাপড়া, বালা, ধনিরা, বেণারমূল এবং খেত-চলান এই সকল বিলিত ২ তোলা, ছইদের জলে নিছ করিরা শেষ ১ সের থাকিতে নামাইরা শীতল করিরা কেবন করিলে পিপাসা, দাহ ও জরুর প্রাণমিত হয় । বৈচুর্গ ৮ ভোলা ৩৮ তোলা উক্ষললৈ কেলিয়া একরাত্র রাখিবে, পর দিন মধু ৪ মাবা, গুড় ৪ মাবা, গাজারীফলচুর্গ ৪ মাঝ এবং চিনি ৪ মাবা উহার সহিত মিলিত করিরা চটকাইরা সেবন করিলে গৈতিক তৃক্ষা নিবারিত হয় ।

আৰ্ফু ৰস্ত্ৰবারা শ্যা এবং শরীর আর্ত করিলে তৃষ্ণা এবং উপ্রশাহ নির্ত্তি হর। ডাক্ষা, ইক্রস, ছগ্ধ, ৰচিমধু, ব্ মধু এবং নীলোৎণল এই সকল দ্রব্য পেষণ করিয়া জলের সহিত নিরত নাসিকা্রারা পান করিলে দারণ তৃষ্ণা বিদ্-রিত হয়।

দাজিন, বদর, লোধ- কথবেল এবং ছোলল নেবু এই পক্ল একলে পেঘুল করিরা মন্তর্কে প্রলেপ দিলে ভৃষ্ণা নিবারিত হয়।

শীওলজন আকঠ পর্যান্ত পূর্ণ করিয়া পান ও অর
কার্পান করিয়া বমন করিলেত্কা প্রশমিত হয়। ধনের
কার্বা, চিনির সহিত প্রাত:কালে পান করিলেত্কা ও দাহ
নষ্ট হয়। আমলকী, পর্মুল, কুড়, বৈ, বটরোহক এই সকল
চুর্ণ মধুবারা বটকা প্রান্তত করিয়া মুথে ধারণ করিলে
অত্যন্ত্ত পিপাসা এবং দারুণ মুপশোষ নিবারিত হয়।
ক্রমঞ্জ ভ্রমার তুলা পরিমাণে জলমিশ্রিত রুল হিতকর।
আমজন্ত ভ্রমার ত্লা পরিমাণে মধুমিশ্রিত জল হিতকর।
আমজন্ত ভ্রমার বিষ ও বচবারা কাথ সেবনীয়। গুরুতর
আহার করিয়া ভ্রমা উপিছিত হইলে বমি করিলে প্রভীকার
হয়। এই প্রক্রিয়ার বারা ক্ষমজ ভ্রমা ভিন্ন সুকল প্রকার
ভ্রমাণ ভাল হয়।

মুক্তা, ধমি, আনাহ, শক্তিপিত ও মদাভার রোগীকে এবং রমণ ও মন্তাভাবিত বাজিকে শীতন কল পান করিতে দিতে হইবে। হিতকর অর পানীর ও ঔবধবারা ত্বিত রাজির তৃষ্ণা নিবারণ করা স্ক্তিভাবে কর্তবা। কারণ ভূষণ নিবারণ করা স্ক্তিভাবে কর্তবা। কারণ ভূষণ নিবার হইলে পর অন্ধ রোপের চিকিৎসা করিতে পারা যার। তৃষ্ণাভূর বাজি বদি কল না পার, তাহা হইপে তাহার উৎকট বাাধি বা মৃত্যু পর্বান্ত হইতে পারে। তৃষ্ণাভারা নোহ হব, শোহ ধইতে জীবন ধ্বংস হর। এইলন্ধ সকল অবস্থার জাল প্রদান করা উচিত। অর আহার না করিবান জীবন কারণ করা বার, কিন্তু ভূষাভূর বাজি জাল না পাইলে শীরই ভাষার কীবন ধ্বংস হয়। (ভাবপ্রণ ভূষণাধিকার)

ভৃষ্ণাক্ষয় । প্রং) ভৃষ্ণারাঃ ক্ষরোগর । > শাস্তি।

"যজ কামস্থং বোকে যজ দিবাং মন্ত্র্থং ।

ভৃষ্ণাক্ষরত্বতৈক কলাং নাইভি ব্যোক্ষীং ॥"

(শক্ষার্থতিকামণিয়ন্ত বচন)

ভূকা কর হইলে সকল স্থাবের অধিকারী হর। ভূকারা: কর: ৬ড়ং। ২ পিপানানার।

তৃষ্ণাত্ম (জি) তৃষ্ণাং হান্ত তৃষ্ণা-হন্-টক্। ১ ঘণ। ২ ভৃষ্ণানাশক। "নিৰ্গন্ধন ব্যক্তরসং ভৃষ্ণাত্মং শুচিনীতলং।"

তৃষ্ণালু (পু:) তৃষ্ণা অন্তার্থে আলু । তৃষিত । তৃষ্ণাতুর (পু:) তৃষ্ণারাঃ আতৃরঃ ৬৬২। পিণারার্ক, পিণানা-কাতর ।

তৃষ্ণার্ক্ত (পুং) তৃষ্ণরা ঋতংশ্ততং। পিপাদাযুক্ত। তৃষ্য (ত্রি) তৃষ শ্লছপধন্বাং কাপ্। ১ লোভা। ২ এষণীয়। (ক্লী) ভাবে-কাপ্। ৩ লোভ।

তৃষ্যাবৎ (অি) ত্ৰামন্তাভ মতুপ্-বেদে দীর্ঘ: মন্ত ব। ভ্ঞাযুক।
"অভাবর্বীৎ ত্ৰাাৰভঃ-প্রাব্ধাপভায়াং" (ঋক্ ৭।১০৩।৩)
'ভূষাাৰভক্ষাবভঃ' (সায়ণ)

ক্তে (জ্বা) > স্বা, তোনাকর্ত্ত । ২ গৌরী।
"তেশব্দেনোচ্যতে গৌরী ন শক্ষেনোচ্যতে হরঃ।

তেন মাঙ্গলিকাশ্চয়ং শব্দস্তেন ইতি স্মৃত:॥" (সঙ্গীতদামো') তে ওয়ার (তেকার) মধাভারতের বর্ত্তমান একটা ক্ষুত্রগ্রাম: জবলপুর হইতে ইহা পশ্চিমে ৬ মাইল দূরে বোধাই রাভার উপরে অবস্থিত। এথানকার অধিবাসীরা অধিকাংশই পাণর কাটিয়া জীবিকার্জন করে। 'গ্রাচীন নগর করণবেন ধবংসাবশের মধ্য হইতে এবং মৃন্দিরাদি হইতেই ইহারা পাগঃ काषिया च्यात्न। এই खारमद शृक्ताःश्य এक्षी सम्मद दृश्य সরোবর আছে, ইহার নাম বাল-সাগর। ই**হার পাড়**গু^{রি} ৰড় বড় চকুকোণ **ব্যানিট পাণর ও লোহা দি**য়া বাঁধান[্] महत्रावरत्रत्र सथाण्यम अकति सूख वीभ व्याह्न । এই. वीत्म একটি আধুনিক মন্দির আছে। গ্রামের পশ্চিম **প্রা**ৱে একটা বৃহৎ বৃক্ষের তলে বিশ্বর কাক্ষকার্যাবিশিষ্ট ক্ষুত্র বৃহং প্রস্তর্থ স্বল সংগৃহীত হইয়াছে। ইহার অনেকণ্ড^{রিই} আছে ভাল, কডকঞ্জি ভাক্ষিয়াও গিয়াছে। করণ^{বেন} नगरतत ध्वःनावरमय इहरूडरे न्य अनि नःगृशील इरेबारह। তে ওয়ার গ্রান্যের দক্ষিণপ্রিংবে একপোয়া পথ দুরে প্রাচীন कत्रगटनम् प्रस्टवत् छत्रावटायम् वर्खमानः। । अहे मुक्क ऋधेरी

मान, ইহাতে 9 পাদপীঠে ছুই পংক্তি থোদিভলিপি আছে,

কিন্ত অক্ষর প্রায় দুপ্ত হইয়া গিলাছে। শরিভম্বি পুরুষের অবয়ব হইলেও ত্রিপুরাদেবী নামে গ্রামের লোকের মধ্যে

খাত। আর একটা পুত্তলিকার প্রতিমা আছে। মূর্বিটী

কুজীরার্কা চতুর্হতা দেবী মৃর্তি। , স্থানীর লোকে "নর্মানা মাই" নামে ইহার পূজা করে। সম্ভবতঃ ইহা কোন প্রাচীন

মন্দিরস্থ গলাপ্রতিমা। এতন্তির শিব, কৃষ্ণ ও ভৈরবাদির

মূর্ত্তি আছে। একথানি বৃহৎ ফলকে উলঙ্গিনী গোপী বেটিড

, ভেওরার

বংশীবদন ক্ষেত্র মূর্ত্তি বড়ই স্থান্দর থোদিত হইরাছে। জৈনদিগের দিগখর সম্প্রদারের আদিনাথের মূর্ত্তি থোদিত প্রস্তুরক্ষকত আছে।

ক্রণবেল ও তেওয়ার গ্রাম অতি প্রাচীন কা**ল হইতে** ইতিহাস পুরাণাদিতে বিখ্যাত। এই উভন্ন প্রামের প্রাচীন নাম ত্রিপুর নগর। ইহা চেদিরাজ্যের রাজধানী। কথিত খাছে, মহাদেব যে স্থলে ত্রিপুর দৈত্যকে বিনাশ করেন, সেই ম্বল্ট ত্রিপুরনগর নামে শ্রিখ্যাত হয়। "নর্ম্মদার উৎপত্তি হলহ প্রদেশে (এখনকার মধ্যভারতে) পূর্বে পৌরাণিক যুগে প্রবলপরাক্রান্ত হৈহর বংশীর রাজগণ রাজত্ব করিতেন। এই স্থানে চেদিরাজ্যাও বিস্তৃত ছিল। মহাভারতে উপরিচর, শিভূপাল, ভীমক প্রভৃতি চেদিরাজের নাম পাওয়া যায়। উপরিচরবস্থর রাজধানীর নাম মহাভারতে নাই, কিন্তু ভক্তি-मञी ननीजीत्त्र हिन देश डेनिबिज चाह्न । कानकृत्म हिन-রালা ছই ভাগে বিভক্ত হয়। একু ভাগ ক্ছাকোঁশল নামে খাত এবং মণিপুর (বর্তুমান শক্রিনদীর তীরত্ব রত্নপুরের উত্তরে অবস্থিত) এই থণ্ডের রাজধানী ছিল। অপর ভাগ **टिंगिनास्मर था** छन। रेश्न त्राव्यानीरे वर्खमान एउ छात्र वा विश्वनगतीत्क हिन। देवुमत्कात्क विश्वनगत्वत्र व्यथन नामः চেদিনগরী কবিত আছে। চৈদি নাম কেন হইল, কিছু লানা বার না। কানিংহাম সাহেব অন্থান করেন, মণিপুররাজ্বছিতা চিত্রালদার নাম হইতে "চিত্রালদীদেশ" "চেল্টী দেশ" "চেল্টী দেশ" "চেল্টী দেশ" এই রূপান্তর হইরা দাঁড়াইরাছে। কিন্তু ইহাৎ সভত বলিরা বোধ হর না। তাঁহার মতে টলেমির "সাগেদ" নগরও এই চেদি বলিরা বোধ হর। কিন্তু আমাদের বিবেচনার "সাগেদ" সাকেত শক্রেই রূপু। মহাভারত পাঠে বোধ হর, মণিপুর কলিলরাজ্যের অন্তর্গত ছিল। রুদ্পুরের প্রত্তর-লিপিতে কলচুরীরাজ ভাজর শ্রেরপাধিপত্তি নামে উক্ত ইহাছেন। কানিংহাম্ কলচুরী শক্রের মুলাছসন্ধান করিতে গিরা ঐ উপাধি হইতে ইহাকে "কুলন্ত্র" শক্রের রূপান্তর বলিরা অন্থান করিরাছেন। [কলচুরি দেখ।]

করণবেদ প্রামে এখনও অনেক ভগাবশের আছে, তবে ভেওরারের লোকেরা এইখান ইইতে প্রভাররাদি আনিরা প্রাচীনকীর্ত্তির অবশেষ একপ্রকার নিঃদেষ করিরা তুলিরাছে। তেওরাররর দেড় মাইল দ্রে কারিসরাই পর্কতের পাদমূলে একটা গুহা আছে। তর্মধ্যে চুই তিনটা করিয়া ছুই সারি থাম আছে। ইহার মধ্যে মধ্যে বড় বড় প্রভারত্বপ। থাম-প্রত্যেকটা ১২ কুট করিয়া মোটা। ইহার ছাদ পিড়িয়া গিরাছে। লোকে এই গুহাকে বেনিরার বাড়ী বলিয়া থাকে। ইহার ২০০ ফিট্ দ্রে ছুইটা অট্টালিকার ভগাবশেষ দপ্তার-মান। ইহা দালানের ভার, কেবল থামের সারির উপর ছাদ দেওয়া ছিল, এখন নাই। ইহা ঘ্রিয়া একটা কুল পাহাড়ের ভার একটা ত্পের নিকট বাওয়া বার। তাহার উর্দ্ধেশ সমতল, প্রশন্ত ও ইইকরাশিতে পরিব্যাপ্ত। এই জুপ বড় হাতিয়াগড় 'নামে খ্যাত। এখানকার ইইকপ্রলি ৬ ফিট্

অক্সান্ত ক্ত পাহাড়ের উপরও এইরূপ ইটকরাশি পরি
ব্যাপ্ত দেখিরা অকুমান হর, এক সমর এই সকল হান প্রাচীর
হারা দৃঢ় বেটিড ছিল। একস্থানে একটা ক্ষুদ্র হর্ণের ভ্যাবশেষ দেখা যার। ইহার প্রাচীরাদি ক্ষুদ্র প্রত্তর্গওওে নির্মিত
হিল। ইহার তিনদিকে একটা ক্ষুদ্র নদী ব্রিরা গিয়াছে,
এই নদীর নাম বনগলা। নদীর তীরে পাহাড়ের গালগুলি
হুরারোহ, এখানে এক বৃহৎ প্রতিমা আছে, তাহার তিনটা
মন্তক, মন্তকে দীর্ঘ টোপর, প্রত্যেক মুধে জিনয়ন। বামদিকের মুধ হইতে একহবা লোলারমান। প্রতিমার ৫ ফিট্
মাত্র অবহিত এবং নিরাংশ (কটিদেশ পর্যন্ত) ভালিরা
গিয়াছে। ইহার নিকটে এক বিত্তীর্ণ প্রত্তরগহনরে জল
সঞ্জিত হইরা ক্ষুদ্র প্রত্রিবং হইরাছে। করণবেলের নিকট

একট্র প্ৰিত্ত প্রুমিণী আছে। ইহার নিকটে একটা প্রায়ন সৃষ্টির পাদপীঠে গোদিত লিপির শেষ চরণে "ঈশান সিংহ মুর্জিকপহিত" এই কর্মী কথা আছে।

তেওরা, ভালবিশেক, তাঁঅ ভাল, ইহার ভিনটা পদ। এই ভাল ৭ মাত্রার ভাল। প্রথম ও বিতীয় পদ প্রভ্যেক ছই মাত্রা, তৃতীয় পদ তিস মাত্রা বিশিষ্ট। বোল—

া । । । । । । । ধা ছিনি নাক ধাগে নাগে ঘিনি নাক : : (সঙ্গীতদামোণ) তেঁই (সেশান) সেই ছেড়, প্রাচীন বাঙ্গানাকাব্যে এই শব্দের ভূরিপ্রয়োগ দেখা যায়।

তেঁতুল (দেশৰ) ভিস্তিড়ী।

তেঁতুলিরা (দেশৰ) এক শ্রেণীর ইতর লোক, বাগদীবাতি। তেঁতুলিয়াবিছা (দেশৰ) এক প্রকার বৃশ্চিক, বাহাদের শরীরের বিশ্বাগ সকল তেঁতুল বিচিত্ত ভায়।

তেঁধ (নেশন) তিনি।

তেকাঁটাসিজ (দেশজ) বৃক্ষবিশেষ।

্তেকাটা (দেশল, ত্রিকাষ্টশলল) এব্যাদি ঝুলাইয়া রাধিবার লগু কাষ্ট নির্দ্যিত ত্রিভূজাকার আধার।

তেকটিনিজ (দেশৰ) (Euphorbia antiquorum) বৃক্ বিশেষ।

তেকালা (দেশৰ) মংস্থাদি বেধনাৰ্থ তিন ফলা বিশিষ্ট লোহনয় অন্ত্ৰিশেষ।

তেকোপা (দেশন, ত্রিকোণ শব্দন) ত্রিকোণ, তিনকোণবিশিষ্ট।
তেগবাহাতুর (ভেলবাহাত্র) শিধসম্প্রদান্তের ৯ন গুরু।
৬৪ গুরু হরগোবিন্দের পুত্র। হরগোবিন্দের তিনটা পদ্মীর
গর্ভে ৫ পুত্র জন্মে, তন্মধ্যে দামোদরীর গর্ভে জােষ্ট পুত্র
গুরুণত এবং নান্কীর গর্ভে তেগবাহাত্রের অক্স হয়।
পিতার জীবদ্দার গুরুণতের মৃত্যু হয়। কিন্তু তাহার পুত্র
হররীয়কে হরগোবিন্দ বড়ই ভালবাসিতেন। এই হয়রাম্বকে
হরগোবিন্দ, আপনার গদি দিয়া বান। তাহাতে নান্তি
পতির কাছে অতিশ্র ছঃগ প্রকাশ করেন। মৃত্যুকালে
হরগোবিন্দ নান্কিকে বলিয়াছিলেন, "ভবিষ্তে তেগবাহাত্র
আমার গদি পাইবে। তুমি আমার কবচ রাধিয়া শাও,
বথন তেগ গুরু হুইবে, তথন তাহাকে দিও।"

শুক হরুরারেরও ছই পুত্র ছিল—রাসরার ও হরকিবণ। হর-রারের পর হরকিবণও অরবরুরে শুক ছইলেন। জীহার বসত-রোপে কুছা হয়। কুড়াবলৈ জিনি নিবাবর্গকে বলিরা বান, 'বাও', বিপাশানদীর জীরে বকালা আন্দে ডোকানের শুক শুবস্থান ক্ষরিভেছে।'

্ তেগৰাছাত্ৰ বছদিল পাটুনার ছিলেন, তৎগ্ৰে বানা क्षांन शक्कंप्रेन कतिका क्षांविक्यवादनत निक्रे वकांका आहम জাসিরা বাস করেন ৷ হরকিমণের সৃত্যুর পর_্তাহার অমুগত শিধ্যণ তেগবাহাছরকেই শুক্ল বলিয়া এইণ করিল। কিন্ত সোধিগণ হরকিবণের ভাতা রামরারকে ভারপদে জডিবিক্ত করিবার জন্ত বন্ধপরিকর হইল। তাহাদের বড়ে बांबबाब मिल्लीनगरत अखिविक इंहेरनन। किन्छ अहे मबद ছরগোবিন্দের একজন প্রধান শিষ্য মাধনশাহ দিল্লীতে ক্ষবস্থান क्तिरिक्टिनन, उथनकात्र भिथमच्छ्रनारम् छेभत्र छै।हात्र कारतको। श्राज्य हिन। এখন তিনিই श्रुक्तवांका श्राप्तिक ক্রিবার জন্ত ক্লালাগ্রামে জাগমন ক্রিলেন ও তেগবাছা ভূরকে শুরু স্থীকার করিয়া নজরাণা প্রদান করিলেন। তেগ-वाहाएत जाहा अहन ना कतिया वितालन, 'आमारक रकन ? (य ताका छाहाटक नक्षत्रांश मिन। " व्यवस्था मार्ज ७ माथन শাহের চেপ্তায় তেগবাহাত্র গদিতে বসিলেন। তাঁহার মাতা সেই কবচ ও হরগোবিক্ষের তরবারি আনিয়া দিলেন। তেগ-ৰাহাত্ৰ ভত্দেশে বলেন, 'আমি ঐ সকল গ্ৰহণের উপযুক্ত নহি। আপনারা আমাকে তেগবাহাছর (মহাযোভা) বলিয়া কানেন, কিন্তু আমার নাম হউক দেখ বাছাত্র (অর্থাং পাক্ষালীর রক্ষাকর্তা)।'

তাঁহার শেষ কথার সমস্ত শিধসমাল তাঁহাকে ভব্তিচকে দেখিলেন এবং তাঁহাকেই শিথধর্ম্মের রক্ষক বলিয়া স্বীকার করিলেন। অল্পনি মধ্যেই শত শত লোক আসিয়া তাঁহার শেষ্যত্ব গ্রহণ করিল। এখন তেগবাহাত্ব পিতা হ্রুসোবিদ অপেকা বিখ্যাত হইরা পড়িলেন।

প্রথমে তেগবাহাত্র সোধিদিগের উচ্ছেদে মানস করিরাছিলেন, কেবল সাথনশাহের স্থায় তিনি ক্ষান্ত হইলেন।
এখন তিনি 'দহা আড়েখরে কোল্যাপন করিতে লাগিলেন
সহত্র অখারোহী তাঁহার আদেশপালনে সশত্র প্রন্তত প্রাকিত
শিক্ষাগণের প্রভৃত উপহারে যথেই অর্থ সঞ্চিত হইল। তদারা
কর্ভারপুরে একটা স্থান ফুর্গনির্মাণে প্রের্ভ হইলেন। তথার
উহার ধর্মসভা সংখাপিত হইল। রামরায় এত বিন হল
খুঁ বিতিছিলেন, এখন স্থাবিধা পাইয়া তিনি দিলীখর অর্থ
জ্বেকে জানাইলেন, 'তেগবাহাত্রর দিলীখরের শক্ষতা করিবার
জ্বত্র স্থানির্মাণ করিতেতে। শীক্ষই ভাহাকে গ্রন ক্ষরা উচিত বিলীব দ্ববার হইতে তেগবাহাত্ররক গ্রভ করিবার বর্গ
পর্বহানা বাহির হইল। ভেগবাহাত্রর স্পরিবারের বিলীবে
আসিরা জ্বপ্ররাজের প্রালাকে আক্রর স্কর্লেন। ক্ষরপ্রবাধ

ল্লন শান্ত শিষ্ট ফকিল, উচ্চপর্লাভি বা রাজ্যের অনিট-নাধনে ভাষার কথন ইচ্ছা নাই। নানাতীর্থ দর্শন করাই ভাষার অভিপ্রেত।' বাহা হউক সে বাতা অরপুররাক্ষের যথেই তেগ-খাহাত্র এক অকার রক্ষা পাইলেন। পরে তিনি জরপুর-পতির সহিত বন্ধদেশে আগমন করেন। তিনি পাটনানগরে দপরিবারে অবস্থান করিতেন। তথার তাঁথার পদ্মী গুলুরী ভাবী শিথश्रक अनिष গোবিদ্দিনিংছকে अनव करतन। পাটনাম তেগবাহাছর প্রায় ৫।৬ বর্ষ ছিলেন, পুরা ও ধ্যানে সর্বাদা অভিবাহিত করিতেন। এখানে তিনি শিধদিগের ধর্মনীতি শিক্ষা দিবার জম্ভ একটা বিভালয় স্থাপন করেন। তংপরে তিনি খদেশে ফিরিয়া আসেন। কহলুররাজ দেবী-भाषत्वत्र निक्षे इहेट्ड ८०० होका विश खान्सश्रद्ध थानिक्षा জ্মি ক্রয় করেন, সেই অমিতে ডিনি মথোবাল মামক নগর পত্তন করেন। অভাপি এই নগর নিধদিগের নিকট অভি পৰিত্র স্থান বলিয়া পরিগণিত। বঙ্গে এফ উদাসীর নিকট উপদেশ পাইয়াছিলেন, সেই উপদেশগুণে গুরু তেগবাহাত্র পঞ্জাবে উপস্থিত হ্ইয়াই একজন ডাকাত হইরা উঠিলেন। হানসি ও শতক্ষনদীর মধ্যবর্তী সম্দায় ভূভাগ তাঁহার উৎপাতে ব্যতিব্যক্ত হইয়া পড়িল। অনেক গৃহত্ব গৃহত্যাগ করিয়া প্লাইতে লাগিল। এই সময় আদম হাফিল নামে এক ধর্ম-ধ্বজী তেগবাহাছরের সহিত যোগ দিরাছিল। ক্রমে তেগ-বাহাতরের দলে অনেক অন্তথারী আসিয়া মিলিত হইল। মোগলসমাটের হস্তে নিম্নতিলাভ করিবার জন্ম জনেক পলাতৃক ব্যক্তি তেগবাহাতুরের আশ্রের বইতে লাগিল। সমাট্ ভাছাদের দমন করিবার জ্ঞ একদল সৈত্ত পাঠাইরঃ দিলেন। ভাহাদের সহিত একটা কৃত্র যুদ্ধ হইল। ভেগ-বাহাছর বন্দী হইলেন। দিল্লীতে বাইবার পূর্বে তিনি গোবিস্পকে তাঁহার পিতৃপদে অভিষিক্ত করিলেন। ভবিষ্যতে ইনিই শুক্লগোবিক্ষসিংছ নামে বিখ্যাত হইলেন। তেগ-বাহাছর দিল্লীতে আনীত হইলে অবস্থেব তাঁহাকে ধর্ম সংক্ষে অনেক কথা বিজ্ঞাসা করেন। লেখে তাঁহাকে মুসলমান ধর্মে দীক্ষিত করিবার ক্ষা আদেশ করেন। কিন্তু তেগ-বাহাত্র অসমত হইলেন।

প্রথমে ভাষাকে কারাগাঁরে রাধা হইন ও বুসন্মান ধর্ম গ্রহণ করিবার করু বধেই টুংপীড়ন করা হইন। শেবে ভেগবাহাছর একদিন সমাট্কে বনিরা পাঠাইলেন, দিরবারে আমি এক বুল্বকি নেধাইতে ইচ্ছা করি।

দরবারে অরক্ষেব তেগবীহাত্তরকে উপস্থিত হইতে আনেশ করিলেন। তেমবুলাছর একথানি কার্যনে দিখিয়া

তেহালি

তেগবাহাছর এইরূপে ১০ বর্ষ ৭ মাস ২১ দিন গুরুগিরি করিরাছিলেন। নির্দ্দর সম্রাট্ কবিলম্প তেগবাহাছরের দেহ দিলীর সদর রাজার ফেলিয়া দিতে আদেশ করিলেন। দিলীবাসী শিথগণ গুরুর পবিত্র শির দাহ করিল, তথার একটা সমাধি মন্দির হইল। মাথনশাহৈর যত্নে মন্দ্রবিশিথ বা ঝাড়ুদারেরা তাঁহার সেই ছিল্লশিরদেহ আনন্দপুরে বহিরা আনিল। এথানে গুরুগোবিন্দ মহা সমারোহে পিতার প্রদ্ধিনেল। এথানে গুরুগোবিন্দ মহা সমারোহে পিতার প্রদ্ধিন দেহিক কার্য্য সম্পন্ন করিলেন। আনক্ষপুরে তেগবাহাছরের স্মরণার্থ একটা বৃহৎ মন্দির নির্দ্ধিত হইল।

এখন ও শিখসমান্ত তেগবাহাত্রকে "সচ্ বাদ্শাহ" আখ্যা

দিয়া মহাসন্মান ও অশেব ভিক্তি প্রদর্শন করিবা থাকেন।
তৈগা (ত্রা) তিল-পুংসি ঘ লভ গং। অপ্রসিদ্ধ দেবতাভেদ।

"শাদং দত্তিরবকাং দন্তম্লৈ মূদিং বলৈ তেগান।" (ভক্লযক্ষ্ ২৫1১)

'তেগাং দেবতাং শাদাদরোহপ্রসিদ্ধদেবাঃ আদিত্যাদ্রঃ
প্রসিদ্ধাং দেবাঃ।' (বেদদীপ)

তেক্ককুস্থলা, দক্ষিণ কাণাড়ার সমূদ্রকুলে কাসরগোড়
হৈতে ৯ ৰাইল উত্তরে জবস্থিত একটা প্রাচীন গ্রাম। এখানে
ইক্টেরি রাজাদিগের নির্মিত একটা প্রাতন গড় জাছে।
গড়ের প্রবেশবারে একধানি কর্ণাটী শিলালিপি দৃষ্ট হয়।

তে হর ই, সছরা জেলায় পেরিয়ক্লম্ ছইতে অর্দ্ধলোপ পূর্বে অবহিত একটী পুণাস্থান। এখানকার স্ত্রহ্পণ্যের মন্দির অতি প্রাচীন। ভাষাতে অনেক শিলালিপি আছে।

তে হর ই, তিরেবেনী জেলার তে হরই তালুকের সদর।
ইহার অপর নাম আড়বার তিরুনগরী, অক্ষা ৮ ৩৫ উঃ,
জাবি গদি পত প্রা ত্তকুড়ি হইতে ১০ ক্রোশ দক্ষিণপশ্চিমে এবং ভাষ্মপূর্ণী নদীর দক্ষিণকূলে অবহিত। এখানে
ভেকরই সরোবরের ধারে একথানি প্রাক্তরন্তন্তে খোদিত-

তেক্ষাপ্রি, ভিরেকেনী জেলার তেকালি ভালুকের সদর। জকা ৮ ৫৭ হি তিঃ, দ্রাষি ৭৭ ২১ হৈ পুঃ, ভিরেবেনী সহর হইতে ১২ কোল উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত।

निक्नकानी भरकत अभवःत्म व्यक्तामि नाम द्वेताहा

এখানকার লোকেরা এই স্থানকৈ কানীর ভার পুণাস্থান বলিরা মনে করে। এথানকার বিখনাথখামীর মন্দির প্রসিদ্ধ। এ ছাড়া আরও অনেক শিবালয় আছে। তন্মধ্যে কাশীবিশ্বনাথ খানীর মন্দির অভি স্থলর। এথানকার স্থলপুরাণে ঐ সকল মন্দির,ও এখানকার তীর্থগুলির মাহাম্মা বর্ণিত আছে। ঐ সকল মন্দিরে পাণ্ডা-রাজগণের সর্মরে উৎকীর্ণ অনেক শিলা-লিপি দেখিতে পাওয়া যায়।

এক সময় এই দক্ষিণকাণী ছর্গম ছর্গপ্রাসাদপরিবেটিত हिन, शैनशात्रितात्रै यूर्काल के त्रमख विशाख इत्र। अथान-कात्र (नाकगःथा) २৮७)।

C छ इन म (वा (छ इन हे) माला इन ध्यामरम देवकारवत्रा इहे সম্প্রদায়ে বিভক্ত, একের নাম বড়গল বা উত্তরবেদী এবং ব্দপর স্থাদার তেকল বা দুক্ষিণবেদী নামে খ্যাত। রামা-মুজের সমর ইহারা এক সম্প্রদায়ভূকে ছিল, তৎপরে রামা মুক্তের শিক্ত মনবলমহুথি বা রাম্যঞ্মত্রির মতাবলমীগণ তেলল এবং রামাছজের অপর শিষ্য বেদাস্তচার্য্য বা বেদাস্তদেশি-ুকের অনুবৰ্তী লোকেরা বড়গুল নামে বিখ্যাত হয়। কেহ কাঞ্চীপুরনিবাসী বেদাস্তদেশিক এইরূপ (कृह वरमम, 'প্রচার করেন, 'আমি দাকিণাত্যের ব্রাহ্মণকুলের আচার ব্যবহার সংশোধন ও দাকিণাত্যে উত্তরাপথের সনাতন লাজ ও ধর্ম পুন: প্রতিষ্ঠার জয় ভগবান্ কর্ত্ক প্রেরিত হইয়াছি।' বড়গলের। তাঁহার মত মানিলেও তেললের। কেহট তাহা মানিল না। তাহাতেই ছই দলে বিষম বিরোধ উপস্থিত হইল। উভর সম্প্রদারই বিষ্ণু উপাসক। ৰড়গলের। বিষ্ণুর স্থায় বিষ্ণুশক্তির অক্তিছ ও প্রভাব অঙ্গী-কার করেন, তাহাই বিফুর কফণা ও কমাম্বরূপ। তেলং শেরা জীবাত্মার মুক্তিলাধন সম্বন্ধে ঐ. বৈঞ্চবী শক্তির অনুক্লতা মানিয়াথাকেন, কিন্তুআর কোন বিবরে তাহার কাৰ্য্যশীলতা বীকার করেন না। এই মতভেদ লইয়াই উভয়নলে विद्यांथ ও বিষম বিবেষ দাঁড়াইয়াছে। এ সম্বন্ধে क्यानक वानाक्रवान इहेशा शिशास्त्र ।

এ ছাড়া ভিলকদেবা লইয়াও অনেক বাক্বিভণা হইয়া থাকে। তেহলের তিলকের সিংহাসন আছে। বড়গলের ভাহা নাই। উভয় দলই ৰ ৰ তিলক শাস্ত্ৰসম্মত ও প্ৰতি-পক্ষের তিৰক অশাস্ত্রীয় ও অধর্মজনক বলিয়া প্রমাণ করিতে cb हो करतन। त्रमरत त्रमरत এहे जिनक नहेना-नाना হালামা পৰ্যস্ত হইয়া গিয়াছে।

বঁড়গল ও ভেদল পরস্পর বিস্কৃত্বাদী হইলেও এক बाजि इहेरन विवाह वांधा नाहे।

टिकटका (तमस बिहक्मंसस) छिनहक्तिभिष्ठे। তেজঃপুঞ্জ (পুং) তেজনাংপুঞ্জ:। তেজোরাশি। তেজঃফল (क्री) তেজনে ফলমন্ত তেজঃ ফলভি বা ফল-জে। वृक्त छन, एडक्न, भर्यात्र-वहमन, भागनीमन, उदक्षन, জেরফল, গল্পকল, কণ্টবৃক। ইহার ঋণ--কটু, তীল্ল, স্থগদ, দীপন, বাতশ্বেয়া ও অফ্রচিনাশক, বালরক্ষাকারক। (রাজনি॰) তেজকরণ (অপর নাম ছল্হারার) গোরালিরারের এক-জন রাজা। ভট্টকবি থড়ারার প্রভৃতির এছে তেজ করণের আখ্যায়িকা বিভ্তভাবে বর্ণিত আছে। দেওসার রাজা রণমলের কঞার সহিত ইহার বিবাহ হর। রণমলের পুত্র সম্ভান না থাকায় তেজকরণকে স্বরাজ্য প্রদান করেন। তেলকরণ সম্বাদ্ধ গড়গারার, টডসাহেব ও জেনারেল কানিং হাম যে সময় নিরপণ করিয়াছেন, তাহা প্রকৃত বলিয়া বোধ হর না। [গোরালিয়ার শব্দ ৫৫১ পৃষ্ঠা ক্রষ্টব্য ৷] তেজকলম্ (পারসী) শীল্ল লিখন। লেখার তেজ বা জোর। তেজন (পুং) ভেজরতি শাল্লং অগ্নিমিতি বা তিজ-ণিচ্-শূ। ১ বংশ, বাশ। ২ মুঞ্জ, মুজ। ৩ ভদ্ৰমুঞ্জ, রামশর। (ফ্রী)

৪ দীপন। "শিরামুখ বিবিক্তমং স্ক্রভায়েশ্চ তেজনং॥"

(সুশ্রুত চিকিং ২৪ জং)

(তজ্বনক (পুং)ভিজ-পিচ্ দ্যু, সংজ্ঞায়াং কন্ বা। শরভূণ, হিন্দীতে কাঁড়া। .

তেজনাথা (পুং) তেজন আখ্যা বস্ত। মুঞ্জুণ, মুজ্। তেজনী (ত্রী) তেজন -গৌরা ভীষ্। ১ মুর্কা, শোঁচসুৰী। '২ চৰিকা, চই। ৩ ভেলোবতী, ভেন্ধবল। ৪ ব্যোতিমতী। '(তেজপত্রে (क्री) তেলয়তি তিল-ণিচ্-অচ্ তেলং প্রমখ। খনামধ্যাত পত্ৰ, তেজপাত। পৰ্যায়—গদ্ধজাত, পত্ৰ, পত্ৰক, ত্বকুপত্র, বরাঙ্গ ভৃঙ্গ, চোচ, উৎকট। ৩৩৭—কন্দ, বায়ু, জর্শ, হলাস ও অফুচিনাশক ৷ (রাজব) ভাবপ্রকাশ মতে--লঘু, উঞ্চ, কটু, স্বাদ, ভিজ্ঞা, রুক্ষ, পিত্তল, কফ, বাত, কণ্ডু, আম ও অকৃচিনাশক। (ভাবপ্র॰) [ভেন্নপাত দেও।] তেজপাত, তেলপত্ত। ইংৰাজী উদ্ভিদ্ শাত্রাস্থ্যারে দারুচিনি লাতীয় বৃক্ষ শ্রেণীর অন্তর্গত। সংস্কৃতে ইহার পর্বাাদ মধ্যে তমাল নাম পাওয়া যায় এবং ইংরাজী উত্তিদ্পারে नाम Cinnamomum Tamala (पश्चिता असूमान कता गाँउ যে, ইহা সংশ্বত উত্তিদ্ শাল্পের তমাল জাতীর বৃক্ষপ্রেণীর অন্তর্গত। ইংরাজী উদ্ভিদ্ শাল্তের ইহার আরে একটা নায Cassia Lignea 41 Cassia Cinnamon.

তেজপাত বিবিধ-তেজপতি Cinnamomum Tamala ধ রাম ভেৰণাত বা পাতি বেঁৰা (Cipnamomum Obtusifolium)

তেজপাতের পাছ বেকী বড় হর নান ইহার পাডা নীতকালে বরেনা। হিমাগরের পূর্বাংশে ও হইতে ন হাজার
ফিট্ উর্জ পর্যান্ত ছানে, বাজালার, আসামে বসিরা পর্বতে,
ব্রহ্মদেশ ও আন্দামান বীপে ইহা পুর বেশী জন্মে, সিমুতীর
হইতে শতক্রতীর পর্যান্ত ছানেও জন্ম পরিমাণে জন্ম।

ইহার ছাল ও পাতা বাবহৃত হয়। দাক্ষ্টিনির ছার তেলপাতের ছালও অগক্ষ্মিটি ও অধিকাংশ সমরে দাক্ষ্ চিনির সহিত ভেলাল চলে। ছাল হইতে এক প্রকার তৈল ভুপাতা হইতে এক প্রকার রং প্রস্তুত হয়।

ছাল।—দাফটিনির প্রার ইহার শুঁড়িও মোটা ডালের ছাল ত্লিয়া দারুটিনির প্রার ব্যবহার করে। দারুটিনির অসের ব্যবহার করে। দারুটিনির অসের ইহার ছাল কোঁক্ডাইয়া জড়াইয়া বার না, ঠিক প্রেলাল নলের মত থাকে। দারুটিনির ছালের উপরিভাগ বভটা বত্বের সহিত টাটিয়া এক পুরু ছাল (বহিত্তক্ত্ত) বাদ দিয়া থাকে, ইহার ততটা বাদ দের না, এলপ্র অনেক গুলে ইহার গাত্রে শক্ লাগিয়া থাকে দেথা যায়। ইহার শাথা বা শুঁড়ির ছাল অপেকা শিকড়ের ছালে দারুটিনির গদ্ধ অধিক। মণিপুর অঞ্চলে শিকড়ের ছালেই তুলিয়া লয়, প্রাছেয় ছাল লয় না। তেজপাতের ছালের শুণ্ড দারুটিনির প্রার, তবে ততটা উৎক্লই লহে, কিন্তু শিকড়ের ছালে ঠিক ততটা উৎক্লই প্রণই দেথা যায়। চীনের কাণ্টম, কলিকাতা ও বোবাই প্রভৃতি হানে ইহার বিভৃত ব্যবদা আছে।

তৈল। — ইহার ছালের বে উপরের থক্ চাঁচিরা তেজপাতা বাদ দেওরা হয়, তাহা হইতেই এক প্রকার ত্বগদ্ধ তৈল হয় । । সের ছালে । । ছটাক আন্দাল তৈল পাওরা বার । এই তৈল দেখিতে রান, পীতবর্গ ও দার্ক্লচিনির গ্রহবিশিষ্ট, কিন্তু দার্ক্লচিনির তৈল অপেক্ষা গুলে হীন । এই তৈলে প্রধানতঃ সাবান (military soap) প্রস্তিত হর।

ক্ল ও ফল।—ইহার ফুল দেখিতে ঠিক লবলের মত।
ফলও ঠিক লবলের ভার অপ্রক্টিত পুলালগুলি মুখে
করিয়া থাকে। ফল বড়, হইতে দের না। ইহাও ছালের
ভার গুণবিশিষ্ট। পূর্ব্বালে হিপোজাস্ (Hippocrus) নামক
ফার মন্ত ইহা হইতে প্রস্তত হইত। গুঁরোপে ইহা Cassia
bud নামে এবং বোঘাইএ 'কালা নাগকেশর' নামে খ্যাত।
চীন ও দক্ষিণ ভারত হইতে ইহা বোঘাইএ রপ্থানী হর।
'চীনা' ও 'মালাবারী' নামে ইহার বিবিধ তেল আছে।
দাক্ষিণাভ্যের মুললমানেরা ইহা ব্যক্তনাদিতে অ্পক্ষ মললারণে
ব্যবহার করে।

নাভা । এতেবগজের পাডা নাধারণতঃ ভারতে, ব্যক্তাবিত্তে প্রগদ্ধ সপলাদ্ধপে ও অন্ন পরিষাপে ওরং ব্যবহৃত হর।
এতত্তির কেনিকো-রং করিবাদ সমর বা ভারতে ছিট প্রায়ত
করিতে এই পাতা-বহুড়া, হরীতকী ও আমনকীর সহিত
ব্যবহৃত হর। এই উদ্দেশ্যে প্রতি বংসর ৫২০।৬০০ মণ্*পাতা
রাম গলী ও সরদার সধাবর্ত্তী স্থান হইতে রপ্তানী হইনা থাকে।

উষধ।—ইহার ছাল ও পাতা মেছ ও বাতরোগে উত্তেজক রপে এবং উদরামর ও আমালতে ইহার, কেবল পাতা ব্যবহৃত হর। হাকিমেরা মৃত্রহৃত্ব, প্রীহা, উদরামর, পেটবাখা, দর্পদংশন ও অহিছেল বিষে ইহার পাতা ব্যবহৃত হর ও তৈলে মাথাখরা, আধকপালিরা প্রভৃতির উপলম হর। পিপুল, মধু ও ভেকপাতার ক্রলেহ দেবনে কালি, ছর্দি, গুকু ইংপানি ইত্যাদি ভাল হয়। বদি প্রস্ক্রের প্রাব্দ ক্রিরার দর্শে। ক্রিরার মহালয়েরা অনেক ক্রের ঔষধৈ ইহার পত্র প্রয়োগ করেন। জাপানের এক প্রেণীর তেজপাতের লিক্ড হইতে ব্ধেই কর্প্র ক্রেন।

অনেকের মতে এই গাছ ভারতের আদিম গাছ্মহে। **हीनत्म हहेरछ हेहा . अफि. श्राकात्म अत्मार्ग आनीछ हहेग्रा** এখন বহু বিভাত হইরা পড়িরাছে। কিন্ত ইহা সকত ৰলিয়া বোধ হয় না। কারণ তেজপাতের ব্যবহার ভারতে বছ প্রাচীনকাশ হইন্ডে ছিল। পুষ্টমন্মের পূর্বেও এই পত্র ভারত ছইতে মুরোপে যাইজ। প্লিনি মালবপুষ (Malabathrum) নামে বে পত্রের উল্লেখ করিয়াছেন, তাহাই ভারতীর তমাল-পত্রম্পক্ষের অপকংশ। টীন হইতে এদেশে ইহার ছাল ও পাতা প্রতি বৎসর প্রায় আড়াই লক্ষ টাকার আমদানী হয় ও আরব, পরিস্ত ও তুরুছে প্রায় শক্ষ টাকীর দ্রব্য রপ্তানী হয়। তেজপাল, গুর্জন্মের একজন বিখ্যাত মন্ত্রী। অখরাজের পুত্র, বস্তুপালের ভ্রাতা, চৌলুকারাজ বীরধবলের বঁদু ও প্রধান মন্ত্রী। ইহার পদ্মীর নাম অনুপ্রমা 🗝 পুতের নাম न्।वनात्रिःह। हेनि देवन धर्मात्र अकवन क्षधान उरमाहनाका। খুষ্টীর ১৩শ শভাব্দে ভেজপাল ও বস্তুপাল প্রভূত অর্ধব্যর করিয়া অর্কাদ ও গির্ণর পাহাড়ে তীর্মন্তরগণের উদ্দেশে কএকটা অতি স্থানার ও স্থারম্য দৌধাবলী নির্মাণ করাইরা-ছেন। [আবুও বল্পাল দেখ।] তেজপুর, আসার্মের দরক কেলার প্রধান নপর ও সদর।

ভেজপুর, আসাদের দরক জেলার প্রধান নপর ও সদর। অক্ষাণ ২৬ ৩৭ ১৫ ভিঃ, জাবিণ ৯২° ৫০ (শৃণুং, ত্রন্ধপুত্রের উত্তর কুলে ভোরোলি ও ত্রন্ধপুত্রের সক্ষমে ক্ষরিভ । এই নগরের অবখান অভি ক্ষর, ইহার ছইনারে মুইটা
ক্ষু পাহাড় মধ্যে সমতল ক্ষেত্রের উপর নগঃমী দিখিত।
নগরটা অভি প্রাচীন। ইহার, নিকটেই পিরনৈপ্রাম্ক
প্রাচীন বেবালরের ভরাবশেষ পড়িরা আছে। কোন কোন
প্রাচীন ভর্মনিকরে নিলালিপি আছে। দেববেরী মুসলমানগণের, উৎপাতে ঐ সকল মন্দির বিধবত হইরাছে।

প্রবাদ আছে---এখানে বাণরালার সহিত প্রক্রকের বুদ্দ হইরাছিল। এখানে রাজকীর কার্যালর, জেলখানা, ইংরাজী বিদ্যালার ও ছাত্র্য চিকিৎসালর আছে। দিন দিন এই সহবের উনতি দেখা বাইতেছে, জনেক ছামে পাকা বাড়ী, হইতেছে। বাণিজ্যেরও দিন হিন প্রীরুদ্ধি দেখা বার।

ত্তেজ্বল (গৃং) তেজতি জডিশনেন পালনতি শাবলানিতি ত্তেজনাহলকাৎ কলচ্। কণিঞ্চলপক্ষী। (রাজনি*) ডেজনতী (ব্রী) তেজোবড়ী।

ত্তেজ্বস্থারী) ভেলরতি ভেল্পাডেংনেন বা তিল-জন্ন।
১ দীপ্তি। ২ প্রভাব। ৩ প্রাক্রম। ৪ রেডন্। ৫ দেহজক্রম্ভি। ৬ নবনীত। ৭ বহি। ৮ স্বর্গ। ৯ মজ্জা। ১৯পিড।
১১ অধিক্রেপ ও অপমানাদি অসহনরপ নারকের ভণ্ডেদ।

"অধিকেশাগমানাদেঃ প্রযুক্ত পরেণ বং। প্রাণাত্যরেপ্যবহনং তত্তেকঃ সমুদার্ভং।"

পরপ্রযুক্ত অধিকেপ ও অপনান প্রভৃতি প্রাণনাশে ও অসহলের (নহু না করার) নাম তেজ।

১২ সার, রুসানি গুকারধাতুর মেই তেজঃপনার্থ।

গর্ভোহণতিকালে তেজাধাতু অধিকাংশ অন্ধাতুর সহিত মিলিত হইলে গর্ভ গৌরবর্গ হর, পার্থিব ধাতুর সহিত মিলিত হইলে গর্ভ ক্ষরবর্গ হর। অধিকাংশ পৃথিবী ও আকাশ ধাতুর সহিত মিলিত হইলে গৌরভার হর। তেজো-ধাতু দৃষ্টিশক্তির সহিত মিলিত হইলে গৌরভার হর। তেজো-ধাতু দৃষ্টিশক্তির সহিত মিলিত না হইলে আতাক হর, তেজ শোলিত আতার করিলে রকাক্ষ, পিত আতার করিলে চক্ত্ পীতবর্গ, স্লেয়া আতার করিলে ওকাক্ষ ও বায়ু আতার করিলে বিকৃতাক্ষ (টেরা) হয়। (ত্তুক্রত শারীরহান)

১৩ প্রাগল্ভ্য। ১৪ পরাভিতর সামর্থ্য, তেল থাকিলে পরকে অভিতর করিবার সামর্থ্য থাকে। ১৫ শক্রর জনভি-ভাব্যত, বে গুণে শক্ররা অভিতর করিতে পারে মা। ১৬ অপ্রতিহতাক্তব, আজা প্রতিহত হর না। ১৭ চৈত্রভাত্তক জ্যোতিঃ। ১৮ সম্প্রণভাত সিদদেহন। ১৯ অথের থেগু, অধ্যবিদ্যার আতানিক ভ্রণই তেল, এই জেল দুই আভার, নতভোগিত ও ভ্রোগিত, অথবিবের প্রেরণ বিনা আছারিত ভারতির হৈ ক্ষণ, ভারার নার সভ্তোগিত হৈছে। কশাখাভাগিবারা ও ভর হেতু বে ক্রণ, ভারাকে ভ্রোগিত ভেল করে। ও (ভোল্বারার) ২০ পঞ্চ সহাভূতের ভূতীর ভূত। ইহার কর্পে উষ্ণ, রূপ গুরু ও ভাগর।

বে বে বস্তুর স্পর্শ করিলে উক্ষ বোধ হয়, ভাহার নায় তেক। এই তেক, শক্ষ ও অক্ষাত্র সহিত রূপ তর্মাত্র হইতে উৎপক্ষ হইরাছে, এই অন্তু তেকের তিনটা ঋণ, শক্ষ, স্পর্শ ও রূপ। (সাধ্যদা)

লার ও বৈশেষিক দর্শনের মতে—ইহা ছই প্রকার, নিডা
ও অনিডা, পরমাণ রূপ নিজা ও কার্যারপ অনিডা, এই
জনিডা অর্থাৎ কার্যারপ ডেল্ল্ শরীর ইক্সির ও বিবর জেদে
ডিন প্রকার। শরীরজেল আলিডালোকে প্রসিদ্ধ, ইক্সিরডেল্ল্ রূপপ্রাহক চৃক্, বিবর ডেল্ল্ডেম, দিবা, প্রদর্বা ও
আকরল এই চারি প্রকার। ডৌম অ্রি প্রস্তৃতি, দিবা
বিদ্যাদাদি, ভুক্ত জবোর পরিপাকের হেডু প্রদর্ব্য, উদরে বে
কেল্ল্ নিহিত আছে, সেই ডেল্ল্ডাবা ভুক্ত জবা সকল পরিপাক
হইরা শরীরের পৃষ্টি সাধিত হয়। আকরল শ্রবাদি। ইহার
ধর্ম রূপ জবদ্ধ প্রজ্জাকবোগিছ। ইহার ৩৭ ম্পর্ন, সংবাা,
পরিমাণ, পৃথক্ত, সংবোগ বিভাগ, পরত্ব অপরত্ব, রূপ, তাবা,
বেগ, ডেল্লের জব্দ, নৈমিক্ক, কিত ইহা সাংসিদ্ধিক জব
প্রার্থির নহে, নিমিত অক্স জব হইরা পাকে।

"আটোম্পর্নাধ্যরার্রপং ক্রবো বেগশ্চ তেজ্বরি। ৩০
কর্প উক্তরেল্পন্থ জাত্রপং জ্বলভাষরং ॥
নৈমিত্তিকং ক্রবছর নিতাছাদি চ পূর্ববং।
ইক্রিয়ং নরনং বহিন্দর্গাদিবিবরোমতঃ ॥" (ভাষাপ ৪০-৪১)
রূপ, দর্শনেক্রিয়, পাক, সন্থাপ, তীক্ষতা, বর্ণ (গৌরাদি)
আজিক্তা, অমর্ব, পৌর্বা, সাহ্দ এই সকল তেত্তের ৩৭
আর্থাং তেজ হইতে এই স্কল উৎপত্তি হয়। শরীবের মধ্যে
তেজঃ প্রদর্থ থাকে বলিয়াই রূপবান্, দর্শনেক্রিয়সম্পর্ক
প্রভৃতি ঋণসম্পন্ন হয় এবং ভৃত্তরুবা সকল পরিপাক হয়।
২১ তেল্পী, উপ্চার হেজু তেজস্ শব্দে তেল্পবীকে বুঝার।

"ত্রীণি ভেষাংসি নোচ্ছিই আকভেড কদাচন। অধিং গাং বাহুণচৈব" (ভারত অমুশা॰)

 [&]quot;ডেজোনিসর্বাং সন্থ বাজিনাং ক্ষরং আছা ।
 ফোন্ডম ইতি জেলাড্রেহিশি সহলা তথা: ।"
 ডাচ ছিবিবং । সতভোগিতং তলোগিতক ।
 বালাত্ত বোজিতানাক নিসর্বাং গ্রেমবং বিনা ।
 অব্যক্তিয়ানিবাভাতি ভড়েজঃ সভতোগিতং ।
 ফ্লাপাড়াছিবাতৈর্ব্ধ সাধ্যনাথ কুইডিড তব ।" (ভোজনাল)

टिकानिश्ह, व्यान्तिवर्गात्र जिल्लाम नामक, वैदान निकास नाम विज्ञानिश्ह ७ निकामस्य नाम विज्ञान । देखि देववालाहिक नाम जन्मानि क्यांकिक इ व्यनसम्बद्धन ।

তেজাসিংহ, প্রাস্থ নিথসেনাণতি। গৌড় বাজাবাংশে জ্ব। ইহার প্রকৃত নাম ডেজরাম। ইহার পিতার নাম নিধিরাম। ইনি মহারাজ রণজিওসিংহের গ্রিরপাত্র গুলাল-সিংহের প্রাত্তপুত্র। খুলালসিং রণজিতের বেউড়িবালা পদ প্রাপ্ত হন। খুলালসিংহের জ্বন্থতি ভিন্ন রণজিতের সহিত কাহারও দেবা করিবার স্কুম্মতি ছিল না। কাজেই বধন কোন বড়লোফের রণজিতের সহিত দেবা করিবার প্রারোজন হইত, তথনই তিনি অর্থলার গুলালসিংহকে সন্তই করিজেন। এইরপে খুলালসিংহ একজন বড় ধনী ও শিবরাজ্যের মধ্যে একজন প্রধান ব্যক্তি হইরা পড়িবেল। এইরিঠে তাঁহার আদি নিবাস ছিল। তথা হইতে তিনি ভেজরামকে শিব মরবারে আনাইলেন। ১৮১৬ খুটাকে ডেজরাম শিবধর্ম গ্রহণ ও ডেজসিংহ নাম ধারণ করিলেন। পিছব্যের জার তিনিও ক্রমে ক্রমে শিব-ক্রমারে একজন গণ্যমান্ত লোক হইরা উঠিলেন।

১৮৪৫ খুটান্দে ২১এ সেপ্টেবর ক্বাহিরসিংহের হত্যার পর মহারাণী বিশ্বন লালসিংহকে প্রধান উত্তীয় ও ডেজ-সিংহকে প্রধান সেনাপতি মনোনীত করিয়া রাজ্য চালাইতে লাগিলেন। কিন্তু লালসিংহ ও তেজসিংহের উপর ধালসা-দৈল বিরক্ত ছিল। নামা কারণে সেই বিরক্তিভাব জ্রেমণ: বন্ধমূল হইতে লাগিল। এই সময় পালসালেনানীবর্গের ক্ষতাও वर्ष वाष्ट्रिया केंद्रियाहिन। नकन बालपुक्वरे छाहापियांक ভর করিত। এই কারণে তেজসিংহ থালসালৈক্সের পরাক্রম শানসিংহও তাহাতে যোগ দিলেন। তাঁহারা হির করিলেন যে বুটীশনৈত ভিন্ন থালসাবৈক্তকে বিদলিত করিতে পারে কাহার সাধ্য 🕈 তাঁহারা দরবারে প্রচার করিলেন্দবে, বুদীশ-দৈর শতক্র পার হইয়া শিধরাক্তা আক্রমণ করিতে আসি-তেছে। এরণ হলে তাঁহাদেরও বৃটাশ রাজ্য **আ**ক্রমণ করা উচিত रहेबाह्य। একদিন रुत्रवाद्य ख्रधान ख्रधान निशु स्वाक्षा-গণের সমক্ষে বেওয়ান দীমনাধু কএকথানি মিখ্যা পদ্ম পাঠ করিরা জানাইলেন, "বাড্ভ্যির রক্ষার অভ এথন, সকলেরই শত্ৰ ধারণ করা উচিত। মহারাণীর ইচ্ছা রাজা লালনিংহ উদীর ও ডেজসিংহ প্রধান সেনাপতি নিযুক্ত হউন।"

বৰেশাহরার ধান্নানৈত মাতুত্নির জাসর বিশন্ শুনিরা নকসেই উত্তেজিত হইয়া উটিলেন। এ সময়ে রাজা লাগ-

निरवेंदर विक्रीय के विक्रमेनिरवेंदर मंगीय प्राणीय विवा करिएक टेक्ट जानकि कड़िन माँ। मीठायद एकक्तिरह अपन योजना-নৈভের কর্তৃত্ব পাইরা ভাষাকের ক্ষানে নাধনে প্রবৃত্ত হইলেন। जनात्रत अथम निथम्ब परिन्। दिशास दिशास श्रान्ता নৈভের সহিত বৃটাশ সৈভেত্র সংঘর্ব হুইয়াছিল, সেইখানেই ছৰ্বতি ভেৰসিংহ বিখাদ্বাভক্তা ক্রিভে ফটি করেল নাই। কিন্ত রণোয়ত শিবসৈত কিছুতেই জকেণ করে নাই। আপনাদের স্কারের কৃটনীতিতে বিৰুঞ্জি হইরাও ভাতারা বেরণ বীরত প্রভাগ করিয়া গিরাছে, ভাহা সাভিগর প্রভাগ-त्वधात रेंग्नात्वत्र किंद्रुमां बत्नीमा हिन ना, তেজসিংহের বিধাসবাভকার সেইথানেই ইংরাজ প্রভৃতি तक्र भाक क्रिया क्यांक्रिन क्यियाहन। त्व क्रियाक महरेयत বুদ্ধে শিখনৈত সম্পূৰ্ণরূপে পরাজিত হর, বে বিখ্যাত বুদ্ধে ইংরাজ সেনানারকগণ খবেশে মহাসন্মানে বিভূষিক হইলা-हिरमन, त्रहे युक्त रकैयम और श्रृत्त एडव्यतिःरहत्र विश्रोत-বাভকার শেব হইরাছিল। সেই বুদ্ধে ভেলসিংহ বিংশতি-সহল প্ৰাতি ও পঞ্চ সহল অখারোহী সহ উপস্থিত হিলেন।

তিনি সন্থে गांगिपध्दत रेप्रस्थात्वत्र भवास्त्र ७ भदा-রন দর্শন ক্রিলেন। তিনি পরিপ্রান্ত ও নিরূপার বুটাশ নৈক্তগণের অবস্থাও বিলক্ষণ অবগত ছিলেন। উছিব देनछान पूक कविवात वह नकत्नहे छैदविक हरेबाहिन, কিত কাপুকৰ তেজসিংহ বিখাস্থাভকতাপূৰ্কক আপনার বৈভগণকে ভুলাইরা শতক্ষণারে ফিরাইরা আনিশেন। তাহাতে তাঁহার সৈভগণের প্রাণে আঘাত লাগিরাছিল। শেৰে ছাহারা তেলসিংহের বিধাসবাতকভা বুঝিতে পারিরা কভই অস্তাপ করিয়াছিল। ১ম শিধ বুদাবসানে ভেজসিংহ বুটাশ শিবিরে পিরা গ্রপর জেনারলের সহিত সাঞ্চাৎ করিয়া সন্ধির প্রজাব করিয়াছিলেন, কিন্তু বড় লাট তাঁহার প্রজাব অগ্রাহ্ করেন। অবশেষে শিধ দৈরুদিগের ভরে ভেক সিংহ বাজুল হইয়া পড়িলেন। কথন কে আসিরা তাঁহার প্রাণসংহার করিবে, এই আশবার তাঁহার রাত্ত নিদ্রা হইত ন। জিনি এক দৈৰজের পরামর্শ লইরা নিরাপদে থাকিবার জন্প এক অভুত হৰ্ণ নিৰ্দ্বাণে প্ৰবৃত হৈ নাছিলেন। বাহা হুটক শেষ দশার অতি সদোকটে তাঁহার জীবন বাহির হয়।

ৰণি সৰ্দাৰ ভেলসিংহ এতিপদে বিশাস্থাতকতা না করিতেন, ভাহা হইলে শিধ যুদ্ধের ইতিহাসণ্ডির রূপ পাঠ করিতাম। [শিধ যুদ্ধ দেখ।]

তেজকর (নি) তেল: করোডি ছ-ট। তেলোবৃদ্ধিকারক, ভেষক দিনিদ। তেজস্ত (জি) ভেলসি সাধু-বং। ভেলংসাধন। "বাবানিজা বরুণা সহভা রক্ষতা ভেলজা তন্ঃ।" (তৈ° স° ২।০।১৩।১)

(পুং) ২ মহাদেব। (ভারত ১৩)১৬।৪৭)

Сङ्ख्यूर (िंक) एडमन् अखार्थ मङ्ग् मछ व। एडमाय्क, वीदारान्, एडमोबान।

তেজস্বতী (জী) গুণবর্মার কল্পা। কথাসরিৎসাগরে ইহার বিষয় এইরপ লিখিত আছে। উজ্জারনীনগরে আদিতা-''সেন নামে এক রাজ। ছিলেন। একদিন তিনি সসৈত্তে গঞ্চা-ুতীরে অবস্থান ক্রিডেছিবেন। সেই আদেশে গুণবর্ম। ু নামে কোন ধনী ব্যক্তির ডেক্স্মতী নামে এক কন্তা ছিল। ু গুণুবর্মা আদিত্যসেনকে ইহার অহুরূপ বর বিবেচনা করিয়া েউছোকেই কলা দান করেন। তিনি ইহাকে লাভ করিয়া ইহার রূপ গুণে মুগ্ধ হইয়া এককালে রাজকার্য পরিভাগে করেন। কিছুদিন পরে ইহার গর্ভে এক কন্তা জনিল। त्रीको हेरात्र ऋत्म क्मिन मुख हहेशाहित्नन त्य हेरात्क त्किनश একদণ্ডও থাকিতে পারিতেন না। একদিন রাজা ভাহাকে হত্তীপৃঠে আরোহণ করাইরা নিজে অধারোহণে িপ্রভৃত সৈল্পের সহিত শক্ষরাকা আক্রমণে গমন করিতে । ছিলেন। পৰিমধ্যে মহিষীর প্রীতির জক্ত অতিবেগে অখচালনা ं कितितन्त । ज्यथ पृष्ट् भर्या त्नजमार्ग जिल्लम कितिहा त्रन । ৈ অনেক অনুসন্ধানেও রাজাকে পাওরা গেল না। তথ্ন অমাত্যগণ মহিধীকে দইয়া রাজধানীতে প্রতিনিবৃত্ত হইলেন। এদিকে রাজা দিক্তাত হইরা বিদ্ধাটবী মধ্যে উপস্থিত হন। পরে আপনি নিতাত ক্লান্ত হইয়া অথকে স্বেচ্ছা-গমনে স্বাধীনতা প্রদান করেন। অস্থ নিজ জাতীর বৃদ্ধিবলে রাজাকে উজ্জারনীতে লইয়া চলিল। এই সময় রাত্রি হই-য়াছে, নগরের বারকৃত্ব। রাজাও অবারোহণে ঘুরিতে ভ্রিতে ক্লান্ত হ্টয়াছেন। শ্মশানের নিকটে ছালাস আক্ষণগণের িএক পলী ছিল, রাকা অগত্যা সেই পল্লীতে প্রবেশ করেন। সেইখানে একটা মঠ ছিল, রাজা ঐ মঠের মধ্যে প্রবিষ্ট হইবার সমীয় তথাকার লোকদিগের সহিত কলছ হয় এবং এমন সময় বিদ্ধক নামে একজন আহ্মণ এইখানে উৎস্থিত हहेरमन **এবং ভবাবেশ দেখিয়া हे**हारक चाल्यत्र श्रामन करतन। এই বিদ্যক তপো-প্রভাবে অগ্নির নিকট হইতে এক থড়গ লাভ করিয়াছিলেন।

বিদ্যক রাজাকে পরিচারক বারা ভূঞ্যা করাইরা শ্রনের ছান দেন এবং ভাহার শ্রীররকার জঞ্জ নিজে জাগিরা থাক্ন। প্রভাতে রাজা জাগিরা দেখেন, বিদ্যক ভাহার জ্বাধ্যক্তিত করিয়া দ্থার্যান আছেন। তথ্য রাজা জ্বা-

त्वाहरण नगरवं व्यवम करवन। वाकारक भूनः व्यक्ति हहेवा রাজী প্রভৃতি অতি আনন্দিত হন। রাজা ক্বভজতার উপহাঃ শ্বরূপ বিদূষককে সহত্রপ্রামের আধিপত্য ও রাজ-পৌরোহিত্য व्यर्गन करत्न । विन्दक व्यापनात्र धन मठेष्ट् बान्तनिगरक मान करतन। किছुमिन পরে রাহ্মণেরা বিদ্যককে অঞাছ ক্রিয়া পরস্পর কল্ছ আরম্ভ করেন। এই সময় চক্রধর লামে একজন ব্ৰহ্মণ উপস্থিত হইয়া কহিলেন, ভোমাদের একজন नावक आवश्रक, हेहाब मध्या विनि अधिक गाहरी, जिनिहे **এই পল্লীর নায়ক ইইবেন। তথন সকলই নায়ক হ**ইতে हेका ध्यकाम कतिएक नाशित्नन। ठक्कपत्र जाहां मिश्ररक कहित्वन, देवस भागात जिनकन जयत मृत्व मृत्र स्थाह, त्य वाक्ति छोहारमञ्ज नानिका (इमन कतिता व्यानिष्ठ भातिर्व, जिनिहें नोम्नर हहेबोन्न (योग्रा। এই कार्या नकत्नहें प्रनिष्का প্রকাশ করিলে কেবল বিদ্যকই স্বীকার করিলেন। পরে বিদূষক অংগ্ৰিদত্ত, থড়ল কইয়া নিশীথ রাজে সাশানোন্দেশে প্রাহান করিলেন। বিদূবক নানাঞ্কার বিভাষিকা দর্শন করিয়া ও শাশানে শ্লজমের নিকটে উপস্থিত হইলে শবজয় বেতালাবিষ্ট হইরা তাঁহাকে মুষ্টিপ্রহার করিতে লাগিন। ভুথন বিদ্যক ভাহাদের, বেভালাবেশ দুর করিবার অভ থড়গাখাত করিলেন এবং নাগিকাত্তর ছেদন করিয়া বস্ত্রপ্রান্তে वस्त कतिरामनः शरत श्राजागमनकारम रमिश्रामनः अक्यनः শবের উপর বসিয়া জপ করিভেছে। বিদূষক প্রচ্ছনভাবে তাহার কাণ্ড দর্শন করিতে লাগিলেন। কিছুক্শ পরে व्यात्रनम् भव ८वछानाविष्ठे हहेम्रा भूरकान्नमान कतिएउ नाधिन, ভাহাতে,ভাহার মুধ হইতে অধি এবং নাভি হইঠে সুৰ্বণ নিৰ্গত হইতে লাগিল। হোগী সেই সুৰ্যপণ্ডলি লইয়া উঠিয়া শবকে চপেটাঘাত করিবামাত্র বেতালাবিষ্ট শর উঠিয়া দাঙ্গাইল। বোগী ভাহার ক্ষরে আনোহণ করিলে শব চলিতে वांत्रिन । विष्यक अविकर्ड छाटर शण्डार शण्डार हिन्छ লাগিলেন। ক্রমে উভরে এক কাত্যারনী মন্দিরে উপস্থিত ^{হইন,} ষোগী শব ভাগে করিয়া মন্দিরের মধ্যে প্রবেশ করিল। विष्यक मिन्द्र ভिडिएक कर्ग मःबन्न केत्रिमा थाकिन। किम्प কণ পরে দৈববাণী হইল, "ধনি ভোমার বাহিত ফল লাভের বাসনা থাকে, 'আদিত্যসেনের একখাত তনরাকে আমার উপহার দাও।" ভাষা ভনিষা যোগী বেডালঘোগে নভঃপ্ৰে প্রায়ন করিল। বিদ্যক ভাবিলেন, আমি অবশুই প্রাভি পালকের কন্তারকা করিব। এই ভাবিরা অসিহত্তে ভ^{থার} প্রস্তুত থাকিলেন। যোগী রাজকন্তাকে লইরা উপস্থিত হ^{ইকে} विष्यक जाराज मजन दशन कविद्यान । छथन देशवराण হইল, বিদ্বক এই বোগী মহাবেতাল ও সর্বপসিশ্ব ছিল, কেবল পূথিবী ও রাজকল্পা সন্তোপের বাসনা করার আজ ৰঞ্জিত হইল। তুমি ইহার সর্বপশুলি গ্রহণ কর, ইহার প্রভাবে অল রাজিতে আকাশমার্গে অভীষ্টদেশে গমন করিতে পারিবে।' বিদ্যক তচ্ছুবলে সর্বপশুলি গ্রহণ করিয়া রাজ-কল্পাকে ক্রোড়ে লইলেন। পরে অশরীরী বাদী হইল, "মাসাত্তে এখানে আসিও।"

বিদ্যক প্রণাম করিরা আকাশপথে রাজপুরাভিমূথে প্রস্থান করিলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে রাজকন্তার গৃহে উপহিত হইয়া ভাহাকে নিজ শ্যায় রক্ষা করিলে রাজকন্তা বলিলেন, 'আর্য্য আপনি এখান হইভে গমন করিবেন না, ভাহা হইলে ভবে আমার প্রাণ বিরোগ হইবে।' বিদ্যক সেইখানেই शंकितन। अखार तामा नकन व्यवगर इहेना विमुक्करक পুরস্বার অরূপ কল্পা দান করিলেন। মাসাত্তে রাজতনরা তাহাকে देवववागित कथा जीनाहेटन छिनि भूनतात्र भागारन গমন করিলেন এবং কাত্যায়নী মন্দিরসমীপে গমন করিয়া বলিলেন, 'আমি বিদূষক আসিরাছি।' গৃহাভাত্তর হইতে আদেশ হইল, 'অভ্যন্তরে প্রবেশ কর।' বিদূষক অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়া দেখিল, একটা প্রদার বাসভবন ও অসামান্ত্র-রপবতী একটা কলা। বিদ্ধক পরিচয়ে জানিদেন, ঐ কল্পা বিভাধরকলা, উহার নাম ছদ্রা। পরে ভাহার অফু-রোধে ইহার পাণিএহণ করিরা তথার থাকিলেন। এদিকে পর দিন রাজতনয়া পভিকে না দেখিরা ব্যাকুল হইলেন। ক্ষেকদিন অতীত হইল, তথাচ তাহার সন্ধান নাই। স্কলই চিঙ্কিত হইলেন। অনস্তর ভদ্রা খীয় সহচরী যোগেখরীর নিক্ট শুনিলেন, বিভাধরগণ এজন্ত তাহার উপর ক্রম হইয়াছেন।

বিদ্যককে বলিলেন, 'আপনি এখানে থাকুন' আমি পূর্বসাগরের পারত্ব কর্কেটিক নদীর পার্যন্তি শীতোদাননীর অপর পারে উদরগিরির সিদ্ধাশ্রমে গমন করিব।' এই বলিয়া তাহাকে স্থীর অস্থাী অভিজ্ঞান স্থরপ প্রদান করিয়া প্রতান করিবেল। বিদ্যকও উন্মন্তবেশে 'হা ভজে! করিতে করিতে বহির্গত হইলেন।' পরে রাজা আদিত্যসেন ইহাকে এই অবস্থার পাইয়া অনেক চিকিৎসা করাইলেন। পরে ত্ঃসাধ্য বিবেচনা করিলা এবং চিকিৎসকের আদেশে তাহাকে যথেছে ব্যবহার করিতে অধিকার নিলেম। বিদ্যক ভদার অস্সন্ধানে প্রস্থান করিলেন। দিবারাত্র প্রদিকে গমন করিয়া একদিন সন্ধ্যাকালে পোঞ্ বর্দ্ধন নগরে উপস্থিত হইলেন। তথার এক রাক্রাকে পরাত্ত করিয়া দেবসেন রাজার ত্থাবিদ্ধিকা নামে ক্রাক্রে বিবাহ করেন, তৎপরে

তথা হইতে তাত্রণিপ্ত নগরে উপস্থিত হন। এই স্থান হইতে इनकान नामकं वनिरक्त नहिक नमूजनेर्य गांजा करतन।, क्टिबिन भारत अवसारिमा व्यवस्थान मध्य माथा वित रहेन। ছব্দাস কাতর হইয়া কহিন্ত, 'বে আমাকে উপস্থিত বিপদ **হইতে উদ্ধার করিবে, আমি ভাষাকে আর্দ্ধেক ধন ও আ**মার क्छा दिव।' विवृद्ध इक्तनामरक कहिरनम, 'आमान कहिर्छ तब्स् वैधिता नगूरल नावाहेका दिन, आमि आशनात अर्थ-बारिमत वांशा मृत कतिवा! विमृत्य छाहाहे कतिरामन । किन्न कमाना व्यर्थ निवात करत खाहात वस्तत्रक कारिता निवा তাহাকে সমূত্রে ফেলিরা প্রস্থান করিল। বিদূষক অভি কটে ममूज छेखीर इटेरन देववानी इटेन, 'विमूवक, कृति थड, त्य স্থানে তুমি উপনীত হইরাছ, ইহার নার নগরালা। এই ন্থান হইতে পূর্বাদিকে আর দান্ত দিন গেলেই কর্কেটিনগরে পৌছিবে।' সপ্তম্ দিনে তিনি কর্কেটনগরে পৌছিলেন, তথার পূর্বপরাজিত ধনদংট্র নামা রাজসের বামহত ছেলন করিয়া ভাহাকে পরাভ করিয়া তথাকার রাজকভাকে বিবাহ করেন ৷ পরে যমদংক্রের সহিত ভাহার বন্ধুত হইলে ভাহার সাহায্যে শীভোদানদী পার হইয়া উদম্গিদ্রির তলে উপস্থিত হইলেন, তথায় ভজার সহিত ভাহার মিলন হইল। পরে वधनश्दक्षेत्र मार्वारण कम्मनारमत क्या ध्वर व्यर्थ वनभूर्वक গ্রহণ করিয়া পদ্মীগণের সহিত উজ্জিনীতে উপস্থিত হুইলেন। এখানে আসিয়া স্থাপে খণ্ডরের রাজ্য করিতে লাগিলেন। (কথাসরিৎসা°) ২ গজপিপ্ললী। ৩ চবিকা। ৪ মহা ব্যোভিমতী।

তেজস্বিতা (জী) ভেলবিনঃ ভাবঃ ভদ্। তেলবিদ্, প্রভাবশালিতা।

তেজস্মিত্র (ক্রী) তেলপিনঃ ভাবঃ ছ। তেলোবিশিইছ, বলবন্ধ। তেজস্মিন্ (জি) তেলোহস্তান্ত তেলস্-বিনি। তেলোযুক্ত। "তেলপিমধ্যে তেলপী দ্বীয়ানপি গণাতে।" (মাদু)

(গং) ইক্সের প্তবিশেষ। (ভারত ১০১৯৮।২৯)
ভেজ্বিনী (বী) তেজবিন্ ব্রিরাং ত্রীপ্। ১ জ্যাতিয়তীনতা,
শ্বরাশ্কটকী। ২ মহাজ্যোতিয়তী, বড় মানকস্নী। প্র্যার—
ভেজবিনী, তেজবতী, তেজোহনা, তেজনী। ইহার গুণ—কফ,
খাস, কাশ, মুখরোগ ও বাতনাশক, কঁটু, ভিক্ত ও অগ্নি
দীপক। (ভাবপ্রণ)

তেজঃসেন (পং), কাশীরের একজন রাজা। বাঁজতর ৮।৪০০) তেজারৎ (আরবী) স্থান কাইরা কর্জা দেওরার বাবসা। ডেজারতী (আরবী) বৃদ্ধিনীবিকা, স্থান কাইরা ক্লর্জা দিবার বাবসা, স্থান কাইরা টাকা ধার দিবার বাবসা। তেন্ত্ৰাল (দেশৰ) ডেৰোব্ৰু ৷

তেজিত (ত্রি) ডিল-ণিচ্-জ। শাণিচ, তীক্ষীকৃত, পর্যায়— নিশিওঁ, কৃত, শাণিত, শাস্ত, শাণাদিমার্জিত, ক্ষুত, নিশাত, শিত, শাত। (অটাধয়)

তেজিনী (জী) তেৰোঁবলন্তা।'(Sanseviera Zeylanica) তেজিষ্ঠ '(জি) তেজখিন অভিশয়ৰ্থে ইষ্ঠন্ বিনেলুকি ডিভাব:। অভিতেজখী, অভ্যস্ত প্ৰভাবশালী।

• "তেৰিষ্ঠনা তিথিবঁত বৰ্তনী" (ঋক্ ১)৫০৮) 'তেৰিষ্ঠনা ক্ষতিশন্ধেনু তেজবিভা', (সান্ধণ) জিনাং টাপ্।

ডেজীয়স্ (বি) তেৰো বিভতে ২স্ত তেজন্সরস্ন্। তেৰো- '
যুক্ত, তেজামা। তেজামিন্ অতিলয়াথে ঈরস্ন্ বিনেল্কি
ডিডাব:। অতি তেজামী, অত্যস্ত তেলোযুক্ত।
"তেজীরসাং নদোবার বহেং স্কভ্রো ধ্থা।"

(ভাগণ ১০।৩৩।২৯) ব্রিয়াং দ্বীপ্।

তেতেরু (পুং) রৌজাপু নৃপের প্রভেদ। (ভারত আদি ১৪অ॰)

তেজোনাথতীর্থ (ক্লী) শিবপুরাণোক্ত ভীর্থবিশেষ_ণ

তেকোমগুল (রী) চক্র বা স্থ্যমগুল।

তেজৈ মস্থ (গং) তেলো মহাতি মছ অণ্। গণিকারিকা বৃক্, গুনিরারী গাছ।

তেজোময় (জি) ভেলপ্ প্রচুরার্থে বিকারে বা মর্ট্।
> ভেলংপ্রচুর। ২ ভেলোবিকার। ৩ জ্যোভির্মর।
"ভক্ত ভেলোময়া লোকা ভবন্তি ব্রহ্মবাদিন:।"
(মহ ৬।৩৯) ব্রিয়াং তীপ্। "ভেলোময়ী বাক্" (শ্রুতি)

তেজোমাত্রা (আমি) তেজসাং সম্বর্গানাং মাত্র অংশ:। তৈজস অংশ। অহলারের সাধিক অংশ হইতে ভূত সকলের উৎপত্তি সাংখ্যশাত্রসিদ্ধ।

তেজোমূর্ত্তি (পুং) তেজঃ তেজসভী মূর্ত্তি বঁজা । ১ পর্য্য। (জি) ২ তেজাজ ক । ৩ তেজঃপ্রচুর ।

"র গছতি পরং স্থানং তেলোম্রিপথজুনা।" (মনু ২।৯৩) তেজোরাশি (পুং) তেজসাং রাশিং। তেজঃপ্ঞা, তেজঃ-সমূহ।

তেজোদ্ধপ (ক্রী) ভেল: বুসর্বপ্রকাশকং তৈতন্তং রূপং যঠ।
> এক, ইনি জ্যোতিরূপ প্রকাশায়ক, একের স্বরূপ জ্যোতিরূপে প্রকাশিত হুয়।

"অপরীরং বিগ্রহবদিজিয়বদতীজিয়:। বদসাকি সর্কাসকি তেজোরূপং নমাম্যছং॥" (ব্রহ্মবৈবর্ত্তপু॰) তেজসাং রূপঃ। ২ তেজের রূপ।

তেকোকং (বি) তেলদ্ অন্তাৰ্থে মতুপ্ মন্ত-ৰ। তেলোক্জ । তেলোক্তা (বা) তেলবং ভীপ্। ১ গলপিলনা । ২ চৰিকা। ত মহাজ্যোতিয়তী, বড়মালকজুনী, হিন্দীতে তেজ্যতী, ডেফ বহল, নেপালী ভাষার ডেজবল। [ডেজম্মডী দেখ।] । ২ অগ্নির বিমান।

"महाविमानः व्यथिङः खाद्रदः कांखरवहनः।

সা হি তেলোবতী নাম হতাশস্ত মহাসমা।।" (ব্রহ্মাণ্ডপু: ৩৮ জ:)
রাজা বিহিতদেনের পদ্মী। ইনি অতিশন্ন পতিপরারণা ও
পতির প্রিয়া ছিলেন। (কথাসরিংসা:)

তেজোবিদ্ (অ) [বৈ] যাহার তেজ বা দীপ্তি আছে।
তেজোবিন্দুপনিষদ্ (অ) উপনিষদ্ ভেদ। নারারণ ইহার
দীপিকা রচনা করিয়াছেন।

তেকোবীজ (ফ্লী) মজ্জা। (নিঘণ্টুপ্রাণ)

তেজাবৃক্ষ (পুং) কুডাগ্নিমছ বৃক্ষ, ছোট গণিগারি গাছ।

তেতকার্ত্ত (क्री') তেজনো বৃদ্ধ: ৬৩९। বীর্যাহরণ।

"চন্দ্রভাগে: পৃথিব্যাল্ড ভেলোবৃত্তং নৃপশ্চরেং।" (মনু ৯।৩০৩) জেলোবকং বীর্ষাদ্যকর্পঃ । (কল ক)

'তেলোব্তং বীর্যভাত্রপং'॥' (কুলুক)

তেজোহ্বা (জী) ভেন্ধ: হ্বন্নতে লাৰ্দ্ধতে হ্বে-ক। ১ ভেন্ধে-বতী, ভেন্ধবল। ২ চৰিকা।

(उड़ा (तनक) विदान, वक।

তেড়ামগজ (পারদী) বাঁকা ভাবে কাল করা।

তেড়ালি (দেশৰ) এক প্রকার তৈলাধার।

তে ড়িয়াৎ (দেশজ) ভাগর্কের ভার এক প্রকার বৃক্ষবিশেষ (Corypha Taliera) ইহার পত্রে উত্তম পুধি
শেখা হর, ভাহা অনেক দিন হারী হয়।

তেত্ৰা (দেশৰ) ভিৰা।

তেতান (দেশৰ) ভিৰান।

তেতেরিজ্ঞা, কোন বক্র ভূমি বিভিন্ন অংশে বিভাগপূর্বক জরীপ করিয়া তাহার ক্লেত্রফল ন্থির ক্রাকে দোতেরিজা বা তেতেরিজা করে।

তেতালা (দেশৰ) ত্রিতন হর্মা।

তেতাল্লিশ (দেশক) ত্রিচন্থারিংশং।

তেত্রিশ (দেশব) ত্রমন্তিংশৎ।

ত্তেপুর (দেশক) > তিন হল। '২ তিন থাক।

তেথরী (দেশক) ক্রিন্তরযুক্ত।

C জননী (জী) দেবতা ভেদ'। "ভেদনী মধ্বকণ্টেনাপং" (ভক্ষভ্" ২০া২) 'ভেদ্নীং দেবতাং' (বেদদীপ)

তেন (পু:) তে গৌরী ন শিবো বত্র। গানাঙ্গ ভেদ। "তেনেতি শস্বস্তেন স্থাৎ মঙ্গলানাং প্রদর্শকঃ।"

তে এবং ন, এই ছইটা শব্দ মললপ্রদর্শক। তে ^{প্রে} গৌরী এবং ন শব্দে হুল বুঝার, এইজয়ুই তেন এই শ্বা নালনিক। গানের পূর্ণেক হরগৌরীর প্রানাদ লাভের বাস্ত 'এট শব্দ উচ্চারিত হর।

(ত্রি) তদ্-পুং ৩য়া এক বচন। ভাহার বারা।

;তনসেরিম্ (প্রকৃত নাম ত-নেং-ধ-রি) ত্রদ্দদেশর একটা
বিত্তীণ বিভাগ, অক্ষ্: ৯° ৫৮ হইতে ১৯° ২৮ উ: এবং
দ্রাবি॰ ৯৫° ৫০ ইইতে ৯৮° ৩৫ পু: পর্যান্ত বিত্ত। ভূপরিমাণ ৪৬৭৩০ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা প্রায় সাড়ে আট লক্ষ্,
ভন্মধ্যে সাতলক্ষ বৌদ্ধ। আমহাই, তাবর, মাগুই, শরেগিন্,
তৌক্স্, মৌল্মেন্ ও সালউইন্ শৈলভূভাগ এই ৭টা জেলা
তেনসেরিমের অন্তর্গত।

২ উক্ত তেনদেরিম্ বিভাগের মাগুই জেলার মধ্যবর্তী
নগর ও সহর; অক্ষা ১২° ৫ ৪০ "উ: ও জাখি ৯৯° ২ ৫৫ "
প্:। ছোট ও বড় তেনদেরিম্ নদীর সঙ্গমে মাঁগুই নগরের
২০ ক্রোশ দক্ষিণপূর্ব্বে অবস্থিত। ছুইশত ফিট্ উচ্চ পাহাড়ের
চালুর পাশে লাল বালুপাথরের উপরে এই নগর নির্দ্ধিত।
ইহার চারিদিকে পাহাড় ও বন জললে আবৃত। এক সমর
এই ভান বছজনাকী প্রস্থিদালী ছিল। ব্রহ্ম ও খামরাজের পুন: আক্রমণে এই নগর এককালে ছত্ত্রী
হইয়া পড়িরাছে। যেধানে এক সমর লক্ষ্ণোকের বাস
ছিল, ১৮৮১ খুটাকে তথার ৫৭৭ অন মাত্র দেখা যার।

১০৭০ খৃষ্টাব্দে শ্রামবাদীগণ বহু যত্নে এই নগর নির্দাণ করেন, এখনও স্থাহৎ প্রভরস্তম্ভ অতীতকীর্ত্তির দাক্ষা প্রদান করিতেছে। স্তন্তে কোন নির্দি উৎকীর্ণ নাই বটে, কিন্তু ক্ষদদেশীয়েরা বলিরা থাকেন, নগরের ভাবী উন্নতির ক্ষম্ত দেবতার প্রীত্যর্থে একজন রমণীর জীবস্ত সমাধি হইরাছিল। এখনও নগরের চারিদিকে প্রায় ৪ বর্গ মাইল মাটির প্রাচীর দিয়া ঘেরা আছে। ১৭৫৯ পৃষ্টাব্দে ব্রহ্মরাজ আলংপরা এই নগর অধিকার করেন এবং শাসনকর্তার ভীক্ষধার কপাণাঘাতে অধিবাদীগণের প্রাণবায়ু বহির্গত হর। সেই সমর হইতে শ্রামদেশীয়েরা এই স্থান অধিকার করিবার জ্বস্তু কতবার চেষ্টা করিরাছিল। এখন সে পূর্বারী গিয়াছে, একটী সামান্ত পরিণত হরগান্তে।

ত মাণ্ড বি কোলার ছইটা নদী মিলিত হটুরা তেনদৌরিষ্
াান গ্রহণ করিরাছে; প্রার আড়াইশত মাইল দক্ষিণমুথে
রাবাহিত হইরা সমুদ্রে পতিত হইরাছে। ইহার •অনেকগুলি
মাহানা, তাহাতে অনেক কুল্ল বীপ লাগিরা আছে।
নাড় (দেশক) এক প্রকার কুল্ল মংস্ত।

স্নূত্থেরা, মধ্যপ্রদেশের নরসিংহপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষা ২৩°১০ উ: ও জাবিং.৭৮°৫৮ পু:। গাদর- বাড়া রেল-টেসন হইতে ১১ জোপ দুরে অবস্থিত। এই
নগরের ১ জোপ দুরে উৎক্ট লোহের আকর বাহির হইরাছে।
তেপড়িয়া (দেশক) বৃক্ষবিশৈষ। (Physalis grossularia)
তেপাগড় [ভিগাগড় দেখ।]
তেপান্তর (দেশক, তিপ্রান্তর শক্ষর) বহুদ্র বিভ্তু মার্চ,
কনপ্ত বৃহৎ মরদান।
তেপায়া (দেশক, তিপদ শক্ষর) তিপদ, তিপদবিশিষ্ট পাতা।

তেপায়া (দেশক, ত্রিপদ শক্তক) ত্রিপদ, ত্রিপদবিশিষ্ট পাতা।
তিপারা, ত্রিপ্রা ও চট্টগ্রাদের পার্ক্তি প্রদেশবাসী এফ
স্থানশীল জাতি। আরাকাণে ইহারা মৃদক নাষেই পাত।
তিই জাতির প্রকৃত জাতিগত নাম তিপারা নহে। ত্রিপুরার
পার্কত্যপ্রদেশে ইহাদের সম্বিক বাস বলিয়া তিপারা নামে
খ্যাত হইয়াছে। ইহাদের জিজ্ঞাসা করিলেও ইহারা বালালার 'তিপারা' নামে পরিচর দেয়। য়ুরোপীর মানবতস্থানিপণ এই জাতিকে লোহিতাপ্রেণী ভূকে করিতে প্রস্তুত বিদ্গণ এই জাতিকে লোহিতাপ্রেণী ভূকে করিতে প্রস্তুত বিদ্গণ অই কাতিকে গুলাহিতাপ্রেণী ভূকে করিতে প্রস্তুত বালালী অপেকা শরীর গঠন অনৈকটা বলিষ্ঠ ও মন্তব্যুত্ব বিলয়া বোধ হয়।

ইহাদের চাববাস মঘদিগের মন্ত। লুশাই, মন ও' হিন্দুদিগকে ইহারা আপনাদের দলভূকে করিয়া লইতে কিছুমাত্র আপত্তি করেনা।

ইহাদের মধ্যে বাল্যবিবাহপ্রথা প্রচলিত নাই। দ্রীলোকের মধ্যে অসতী নাই বলিলেই হয়। বিবাহকালে বিশেষ কোন অফুর্চানাদি পালন করিতে হয় না। পানভোজন ও নাচ গান বিবাহের প্রধান অল। এই সময় বন ও নদীদেবভার উদ্দেশ্যে একটা শৃকরছানা বলি দেওয়া হয়। কছার মাতা একপাত্র স্থরা শইয়া কছার হাতে অর্পণ করে। কছা বরের কোরো বসিয়া বরের হাতে সেই পাত্র দেয়। বর নিজে অর্কেক থায়, বাকি অর্কেক অর্কালিনীকে ধাইতে দেয়। কছার শিতামাতার সম্মতিক্রমে বিবাহ হইলে, বরকে তিন বর্ষকাল মণ্ডরালরে থাকিয়া কাল্য কর্ম করিতে হয়।

ইংবা কালী ও সত্যনারারণের পূজা করে। পূজার ব্রাহ্মণ নিযুক্ত হর না। ওচাই নামে স্থুজাতীর একঘর বংশাস্থ্যক্রমে পৌরোহিত্য করিয়া থাকে। কাহারও মৃত্যু হইলে তাহার মৃতদেহ মাঠের মধ্যে লইরা আসে, একটা মুরগী মারিরা থানিকটা চাউলের সহিত তাহা মৃত্যাক্তির পারের কাছে রক্ষা করে। তৃৎপরে নদী বা সরোবরের ধারে দাহ করে। বেথানে দাহ করা হর, মৃত্তের আরীরগণ উপরি উপরি ৭ দিন আসিয়া মৃত্তের উদ্দেশে তথার একটা শোরগ মারিরা চাউল সহ রাখিরা বার। তৎপরে মৃত্তের জম্ম আনিরা

পাহাড়ের উপর রক্ষা করে এবং তাহার উপর একটা কুল কুটার নির্ম্বাণ করিয়া মৃতের জন্ত শত্র অতি যত্নে রাশিরা দের। हेशामत्र माथा अकासनी ताकवंशी नाम अकिहिक। जाहाता অপুপনাদিগকে ত্রিপুরার রাজবংশীর বলিরা পরিচর দের। তেপালিতা (দেশৰ) রক্ষবিশেষ। (Erythrine indica) তেপ্পদ, উপরাগদর্শণ নামক সংস্কৃত জ্যোতিপ্রস্থিকার। তেম (পুং) ভিম-ঘঞ্। আর্জীভাব, আর্দ্রতা। ভৈম্ত (দেশল) তদ্রপ, সেই প্রকার। C তমন (ক্লী) তিষ-পুট্। ১ আর্জীকরণ। কর্মণি পুট্। २ वाक्षन। (प्रमुख) स्मृहे व्यकात, एक्पभ, उपाविष। '' তেমনী (ত্রী) তেমন-ভীপ্। চুলী ভেখ, উনান। তেমা (দেশৰ) বৃক্তেদ। তেমাত্রাপথ (দেশন) তিন পথ বারা সম্মিলিত, যেধানে তিনটা পথ আসিয়া সম্মিলত হইয়াছে। তেমাথা (দেশৰ.) > তিন মতকবিশিষ্ট। ২ তিন পথ বারা সন্মিলিভ, ডেমাথা পথ। তেমোহানা (দেশজ) তিন নদীর সলম্ভান। তৈয়ান্তর (দেশব) তিদপ্ততি, ৭৩। - তের (দেশৰ) ত্রোদশ সংখ্যা, ১৩। তেরই (দেশজ) মাসের অয়োদশ দিন। তেরি, ১ পঞ্চাবের কোহাত জেলার একটা তহনীল উপবি-ভাগ। এথানে যুক্তির খটক জাতির বাস। তাহাদের দ্দার থাকা মহত্বদুখা আফগান ধুকে বৃটাশ গ্রমেক্টকে সাহায্য করার সমস্ত তেরি উপবিভাগ জারগীর পান।

২ উক্ত তহুদীলের সদর। অক্ষাণ্ডতণ ১৯ উঃ, জাখি।

৭১ প পু:। এথানে প্রায় সাড়ে চারি হাজার লোকের
বাস। জায়গীরদারের প্রাসাদ এই নগরে অবস্থিত, এতভির
অনেক মস্জিদ ও স্থানর অটালিকা আছে। নগরের মধ্যস্থলে বাজার, পাছনিবাস, থানা, বিভালয় ও ঔবধালয়
বহিয়াছে।

তেরিতোই, কোহাত জেলার প্রবাহিত একটা নদী। মীর.

এই হইতে তুইটা ক্ষুদ্র প্রোত বাহির হইয়া তিরি দগরের

েকোশে দূরে একজ মিলিত হইয়াছে। তেরিতোই নাম ধারণ
পূর্বমুখে আসিয়া সিছ্নদে পতিত হইয়াছে। এই নদী যে
সকল পাহাড়ের উপর দিয়া প্রবাহিত, প্রায় ভাহাদের নিকট
লবণের পনি আছে।

তেরিজ (আরবী) বৃদ্ধি করা, বোগ করা। তেলিদাল (ডের্দাল) সাঞ্চলি নামক দক্ষিণ মহারাষ্ট্র রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। অক্ষাণ ১৬° ২৯ ৪৫ উ:, ত্রাঘিণ ৭৫° ৫' ৩২" পৃ: কৃষ্ণানদীর ভানধারে অবস্থিত। পৃর্বে এই সহর চারিদিকে প্রাচীর বেইউ ছিল। এখনও হুর্গপ্রাকারো ভগাবশেষ পড়িরা আছে। এখানে ১১৮৭ খুটাকে নির্দিদ্ধ একটা প্রাচীন জৈনমন্দির, এতভির একটা বিভালর ৬ চিকিৎসালর আছে।

ভেক্তারা, পালনপ্রের কর্তৃত্বাধীন একটা দেশীর রাজ্য। উদ্ধানীয়ার দিওদর, পূর্কে কাঁকরেজ, দক্ষিণে রাধণপুর ও পশ্চিমে ভারতরাজ্য। ভূপরিমাণ ১২৫ বর্গমাইল, লোকসংখ্যা প্রায় ৯ হাজার। এখানকার জমি'নমতল, মাটি কাল ও বানুকা যুক্ত। বর্ষে একবার মাত্র ফদল হয়। মাটির ২০ হইঙে ৫০ হাত নীচে জল পাওয়া বার।

পূর্ব্ধ এখানে বাবেলা রাজপুতগণ রাজঘ করিতেন।
১৭১৫ খুটালৈ নবাব কমান্উন্দীন্ খাঁ দখল করেন। নেই
অবধি রাধণপুরের নবাবের শাসনাধীন ছিল। সিন্ধ্পানে
ছইতে একদল মুসলমান আসিরা নবাবের অধীনে ঘোড়
সওয়ার হইল। তরাধ্যে বল্চ খাঁ প্রধান। ১৮২২ খুটানে
পালনপুরের পলিটকাল অপারিন্টেভেন্ট বল্চ্খাকে এই
আন প্রদান করেন। বল্চ্খার বংশধর এই রাজ্যভাগ
করিতেছেন।

তেলকুপী, মানভ্ম ভেলার মধ্যে দামোদর নদের দক্ষিণক্ অবস্থিত একথানি গ্রাম। স্থাদর, স্বদৃষ্ঠ ও সূর্হৎ প্রাচীন দেবমন্দির এই গ্রামে অনেক আছে। ঐ সকল প্রাজ মন্দির কোন্সময়ে নিশ্বিত হইরাছে, ভাহা ঠিক্ জানা যা ना। **के मकरण**त मरश मिवमन्त्रिके अधिक, छाहात, शत विक् মন্দির, তৎপরে স্ব্যমন্দির। ঐ সকলে বালালী শিরনৈপুণে যথেষ্ট পরিচয় আছে। বহুসংখ্যক প্রাচীন মন্দির থাকিলে। তেমন শিলালিপি দেখিতে পাওয়া বায় না। ছই স্থানে ^{চুই} অক্ষর পাওয়া গিয়াছে, ভাছাও খুটায় ১০ম শতাকীর বিনিঃ বোধ হয়। রাজা মানসিংহ কএকটী মন্দির সংস্কার করাইং ছিলেন। দামোদরের বস্থার এথানকার প্রার সমস্ত প্রাচীন ইটকমন্দিরের সমূহ অনিষ্ঠ হইয়াছে, তবে প্রস্তরমন্দি^{রপ্তি} অবিকাংশই মাটিতে বদিরা গিরাছে অথবা ধ্লিতে সমাছ। হইথাছে। এথানে মহাবীরস্বামীর উদ্দেশে প্রভিষ্ঠিত এক অতি প্রাচীন কৈনমন্দিরও আছে, স্থানীয় লোকেরা ভা^{ছাবে} বীরুপের «মন্দির বৃলিয়া থাকে। এথানকার সমস্ত ম^{রিরা} বণিকদিগের যত্নে নির্শ্বিত হয়। প্রবাদ আছে, রাজা ^{বিক্র} মাদিত্য ছল্মির ছাতাপুখুরে লান করিবার পুর্বে এই গু^{নি} আসিয়া তৈল মাথিচেন, সেই জস্ত এই স্থান তৈৰক্^{পী ব} তেলকুপী নামে বিগ্রাত হয়।

এথানে পূর্বেষ মহা খুমধামে মেলা হইও। এই মেলার দিন অবিবাহিত সাঁওতাল-রম্বী অইছোর পরপুরুবের সহ্বাস করিতে পারে, তাহা দোবের বলিরা গণ্য হর না। এ স্বদ্ধে অনেক গান ও গর অচলিত আছে।

তেরেণা (দেশব) সদীতের প্রকারভেদ।

(তরো (मिन) **অরোদ্**শ।

ভেল (দেশঅ, ভৈল শম্জ) মেহ, ভৈল, ভিলাদির রস।

তেল্গাগড়া (দেশজ) এক প্রকার ক্র মংস্ত। (Pimelodes Telgagra, Buch.)

তেল্চাটা (দেশৰ) তৈলপায়িকা, ভেলাপোকা।

তেল্চুক্চুকিয়া (দেশৰ) উচ্ছল, মহণ, ভৈলাক।

তেলঝরা (দেশৰ) বৃক্ষবিশেষ (A species of Gelonium)

তেল্সার (দেশৰ) কেন্দগাছ। (Ebony)

তেল্ছাই (तम्ब) वृक्तितिमः। (Sterculia urens)

(ভলগু, ভৈলদের ভাষা। [ত্রিলিঙ্গ দেখ_।]

তেলক্স (পুং) ১ ভিলক দেশ। ২ ভিলকদেশের লোক। [অলিক দেখা]

তেলা (দেশৰ) তৈলাক্ত, মস্থা, পিঁচ্ছিল।

ভেলাকুচা (দেশজ) বভাবিশ্যে, বিশ্বিকা। (Momordica monadelpha)

তেলাক্সশুরা (দেশজ) বৃক্ষবিশেষ। (Limodorum longifolium)

ভেলাঙ্গা (দেশৰ) ভৈলকদেশের লোক। [ত্রিলিজ দেখ।] তেলাঙ্গাচীনা (দেশৰ) এক প্রকার স্থার পূষ্ণবৃদ্ধ। (Lågerstærmia Indica)

তেলাটিয়া (দেশৰ) তৈলাক।

তেলানী (দেশৰ) তৈললিপ্ত, তৈলভূষিত।

তেলাপোক। (দেশক) ুৈতলপারিকা, আরহুলা।

[আরম্লা দেধ।]

তেলি, ভারতের একটা বছবিত্ত জাতি। ভারতের সকল স্থানেই ইহাদের বাস আছে। সাধারণত: যাহারা বীজ হইতে তৈল বাহির করে, তাহারাই তেলি নামে অভিহিত হইরা থাকে। বালালার কলুনামে একজাতি আছে, [কলুদেখ।] তাহারাই প্রধানতঃ তৈলনিকাশন ব্যবসায় করিয়া থাকে। বিহার, উড়িয়া, উ: প: প্রদেশ, এবং দালিণাত্যে। তেলিরাই তৈল-নিকাশন করে। আজকাল অনেক স্থলে তেলিরা অন্ত ব্যবসায়ও অবলম্বন করিয়াছে। বালালার তেলি, তিলি ও কলু এই ত্রিবিধ স্থাতিই স্লতঃ তৈলিক জাতি হইতে উংপর, তল্পধ্যে কলু শাতি,পতিত। তেলির অপরা-

পর নাম---তৈলী, ভৈলিক, ভৈলকার, ভৈলগাল ও ক্লু। এই জাতির উৎপত্তি সহজে করেকটা প্রবাহ জাছে,---

- (১) মহাদেব চিরকাল ছাই মাথিয়া থাকেন, হঠাৎ এক দিন তাঁহার তৈলমর্দনে ইচ্ছা হইল। ইচ্ছা মাত্র তাঁহার দক্ষিণ হতের ঘর্ম হইতে এক দিবা প্রক্রৰ উচ্চত হইল। এই প্রক্রই তৈলিক দিগের আদিপুরুষ রূপনারারণ বা মনোহরপাল। শিববরে ইনিই প্রথম ঘানিগাছ প্রস্তুত করেন। কেই কেই বলেন, প্রথম ঘানিগাছে ছইটা উও জ্তিয়া দেওয়া ইইত ও তাহাদের চক্তে ঠুলি দেওয়া ইইত না। কল্রা একটা বও ও তাহার চক্রর ঠুলি ব্যবহার করার গভিত হইয়ছে।
- (২) একদিন ভগবতী লানের সময় হরিলা মাথিয়া সেই মলা হইতে ছইটা পুরুষ মূর্ত্তি ক্ষেত্রন। ভগবতী সেই পুরুষদ্বাকে শীঘ্র তৈল প্রস্তুত করিরা আনিতে বলেন। একজন অতি শীঘ় তৈল প্লান্তত করিয়া আনিল, কিন্ত অপরের আসিতে বিশুণ বিশব হইল। ভগবতী বিলম্বের কারণ জিজ্ঞানা করিলেন। বে বিলম্বে আসিয়াছিল, সে বলিল, পেৰণী হইতে বল্লখণ্ড ভিজাইয়া তৈল সংগ্ৰহ করিতে বিলম্বইয়াছে ৮ যে ক্রত আসিয়াছিল, সে বল্লিল, আমি পেৰণীর তলদেশে একছিজ করিয়া দিগাছিলাম, তদ্ধারা মৃত্যধারার ভার তৈল আপনা হইতেই পাতে স্ফিত হইরাছিল, কাজেই সম্বর হইরাছে। ভগবতী শুনিয়াই ক্র হইয়া উঠিলেন। মৃত্তনির্গমনের প্রণালীতে যে ক্লেছ জব্য সংগৃহীভ, সেই জব্য তাঁহার ভোগার্থ আনা হইয়াছে विन जांहात चार्क त्कांध हहेन। जिनि (भरवाक वाकित्क অভিসম্পাত করিয়া পতিত করিলেন। এই প্রথম ব্যক্তি ভেলিদিগের ও বিভীয় ব্যক্তি কলুগণের আদিপুরুষ। এই এবাদৰয়ু হইতে বুঝা যায় যে, কলুদিগের আদিপুরুষ প্রাচীন ঘানিগাছে আপনা হইতে যাহাতে তৈল সংগৃহীত হয়, তাহার উপায় বিধান করায় তৈলিকেরা তাঁহার সেই কার্য্যকে প্রচলিত প্রথা বিরুদ্ধ বলিয়া এবং তাঁহার ব্যবসায়ের উন্নতি দেখিয়া বোধ হয় ঈর্বাপরবশ হইরা তাঁহাকে সমাজ-চ্যুত করে। তদবধি তাহার বংশধরেরা তৈলিক শ্রেণী কর্ত্ত পরিত্যক্ত হইয়া 'কলু' নামে অভিহিত হইয়াছে।

তেলিদিগের মধ্যে বালালার আবার ছইটী শ্রেণী বিভাগ আছে—একাদশতেলী ও ধাদশতেলী। এরপ শ্রেণীবিভাগ সম্বন্ধে প্রবাদ আছে—আদি তেলি মনোহম্মণাল বেপারীর ব্যবসার অবলম্বন করিয়া নানাদেশে পণ্য বেচিতে ধান। তাঁহার ছই পত্নী ছিল। হঠাৎ একদিন বাড়ীতে সংবাদ আদিল বে, মনোহরের মৃত্যু হইরাছে। শুনিয়া মনোহরের

कार्ड। क्वी जनकातानि विमर्कन निया विश्वांत आठात अवनवन करत्रन ध्वरः धकाम्मी कत्रिष्ठ थाक्न, किन्न कनिष्ठा खी भःवारम विश्वाम ना कवित्रा मधनाव च्यां**ठादवरे वहिरमन**। কিছুদিন পরে মনোহর বাড়ীতে ফিরিয়া আসিলেন, তথন সমন্ত অম দূর हरेन। এই উভয় জীর গর্ভকাত সন্তানেরা তুই খডর খেণী হইয়া পড়িল। ভোষার সন্তানেরা 'একাদশ' ও ক্রিষ্ঠার সম্ভানেরা 'হাদশতেলি' নামে অভিহিত হইল। একাদশ তেলির নামকরণ প্রধান্ত খনা যায় যে, আদি তেলি মনোহরপালের জোঠা পদ্মী বুধা একাদণী করিয়াছিলেন বলিরা তাঁলার সন্তানের৷ একাদশীর পুত্র এই আখ্যার উপ-हात्राम्लन हहेब्राहिन, कानकृत्य डेहा हहेत्छ 'এकानम' मस-মাত্র রহিরা গিরাছে। এই প্রবাদ অমুসারে একাদশ তেলি-শ্রেণীর স্ত্রীরা আজিও নাক বা কপালেও হাতে উদ্ধী পরে না। ছাদশতে লির নামকরণ কিরপে হর জানা যায় না। একাদশ ভেলিদিগের সহিত পার্থক্য রাথিবার জন্ম ও আপনাদিগের শ্রেষ্ট প্রতিপাদনার্থ বোধ হয় মনোহরের কনিষ্ঠা পদ্মীর সন্তানগণ র্জ্জেলে আপনাদিগকে 'ছাদ্দ' তেলি নামে অভিহিত कुतिया थाकिरत। किह किह बुर्लन, रय मरनाहरत्रत्र ध्रथमा স্ত্ৰীর একাদশ ও বিতীয়া জীর বাদশটী সম্ভান হয়। এই বৈমাত্তের ভাতৃগণের বংশ আপনাদিগের পরিচর দিবার मंश्टक्रिय जेशाह व्यवन्त्रन कतियात क्षष्ठ क्षेत्रय नाम व्यवन्त्रन করিয়াছেন। কোঠার গর্ভনাত একাদশ ভাতার বংশধরেরা একাদশ তেলি ও কনিষ্ঠার গর্ভজাত বাদশ ভ্রাতার বংশধরেরা ৰাদশ তেলি নামে অভিহিত হইয়া থাকে। এই হুই শ্ৰেণীর মধ্যে পরস্পরে আপনাদিগকে শ্রেষ্ঠ বলিয়া পরিচয় দেয়।

ত্রদ্ধবৈবর্তপ্রাণের মতে কোটক (খরায়ী) জাতীয়া লীর গর্ভে কুন্তকার প্রথমের ঔরদে তেলি জাতির জন্ম হইরাছে। উক্ত প্রাণে জাতিমালার মধ্যে এই শ্রেণীর গণনার তেলিজাতি একাদশ, সন্তবতঃ এই একাদশ সংখ্যা হইতেই সমন্ত তেলির নামই একাদশভেলি নাম হইয়া থাকিবে। অবশেষে 'ছাদ্শ' নামে এক শ্রেণী বিভাগ হইয়া গিয়াছে।

একাদশ ও ধাদশ বাতীত তেলিদিগের মধ্যে পুর্বি
বাদালার আর এক প্রেণী আছে, তাহারা 'ঘনা' 'ঘানি'
বা 'গাছুরা' তেলি নামে অভিহিত হয়। ইহাদের ঘানি কলুর
ঘানি হইতে বিভিন্ন প্রকার। কলুর ঘানিতে তৈলকর বীজ
পেষিত হইলে গাছের নিম্নদেশস্থ এক ছিল্ল ধারা তৈল
আপনি নির্গত হইয়া আসে, কিন্তু ঘনা তেলিদিগের ঘানিতে
তৈল বাহির হইবার পথ নাই। ইহাদের ঘানিতে বীজ
পেষিত হইয়া তৈল সেই আধারেই জ্বে, পরে একটা কাটিতে

বস্ত্রথণ্ড বাঁধিয়া সেই বস্ত্রথণ্ড ভিজাইয়া ভিজাইয়া অস্ত পাত্রে নিকড়াইয়া লইতে হয়। উভয় প্রকার ঘানিতেই পোকতে । ঘানি ঘ্রাইয়া বীজ পেষণ করে। বালালা ভিন্ন ভারতের আর কোণাও ভেলিদিগের মধ্যে ভেলিও কলুতে প্রভেদ নাই, স্তরাং বিবিধ ঘানিও নাই। অস্ত্রত্র স্ব্রেই এদেশীর কলুর ঘানিই প্রচলিত।

বাদালার ঘনাতেলি ও কলু ভিন্ন অপর তেলিতে (একাদদ, ঘদেশ প্রভৃতিতে) তৈল ভালে না। তাহারা অক্তান্ত ব্যবসার অবলহন করিরা থাকে। অধিকাংশ তেলিতে শতাদির মহান্তনী কারবার করে। কেহ চিনি বা গুড়ের ব্যবসা, আবার কেহ মুদিধানার দোকানও করিরা থাকে।

পূর্ব বাঙ্গালার এইরূপ ব্যবসাদার তেলির মধ্যে আবার ছইটা বিভাগ আছে, তৈলপাল বা মনোছর পাল ও তেলি। তৈলপালেরা সংখ্যার অধিক ও অপেক্ষারুত ধনী, ইহারা "দোপাটি" তেলি নামে এবং অপর 'তেলিরা', "এক গাছি" নামে কথিত হয়। ইহাদিগের বিবাহের সময় বর আসিয় এক টাপাতলার দাঁড়ার ও তথার ক্সাকে সপ্তবার প্রদক্ষিণ ক্রান হর বলিরা এ প্রেণীর 'একগাছি' নাম হইরাছে।

কণুও ঘনা তেলিদিগ্রের সহিত অন্থ ব্যবসায়ী তেলিলিগের পার্থক্য এরপ সম্পূর্ণভাবে দাঁড়াইয়া গিয়াছে বে
আনেকেই ইহানিগকে একটা শতত্র জাতি বলিয়া শীকার
করেন এবং তেলিরাও ভারতের অন্থান্থ তৈলকার তেলি
হইতে আপনানিগকে শতত্র জাতি ব্যাইবার জন্ম তেলির
পরিবর্তে 'তিলি' বলিয়া পরিচর নিয়া থাকেন।

চাকাজেলার উত্তরাংশে যেধানে বল্লালী কৌলীক প্রথা নাই, সে সকল হানে প্রায় প্রত্যেক পরগণার তেলিদিগের নানারপ শ্রেণীভেদ দেখা যার। রায়পুর নামক হানে চারিটা শ্রেণী আছে, যথা—সতর (সহ্তর্গশ), বাইশ (বাবিংশতি), চব্বিশ (চতুর্বিংশতি) ও চার (চারি)। এই চারি শ্রেণীর মধ্যে ১ম শ্রেণী সর্বাপেকা সন্মানার্হ, তৎপরে ২য়, তৎপরে ৩য়, তৎপরে ৪র্থ শ্রেণী। ইহারা সামাঞ্জিক নিয়মান্থসারে কন্তার বিবাহ স্থ্রেণী হইতে নিয়শ্রেণীতে না দিলে নিন্দিত হয়, উচ্চপ্রেণীর কন্তাপ্রায়ির কন্ত ইহারা বিত্তর পণ দেয়।

ইহারা বাজালার সংশুদ্র বলিরা গণ্য ও নবশাধদিগের ভার আচারসম্পর। ইহাদের মধ্যে সাম্প্রদায়িক প্রাক্ষণ নাই। বিহারে তেলিরা সংশুদ্র নহে, বাজালার কলুদিগের ভার অনাচরণীয়। ছোটনাগপুর ও উড়িয়ার তেলিরা পরম্পর আদান প্রদান করে। ইহাদের মধ্যে বিধবাবিবাহ আহে; বিধৰা সাধারণতঃ কনিষ্ঠ দেবরকেই বিবাহ করে। বিবাহবিজেদেরও ব্যবস্থা আছে। বিবাহবিচ্ছিলা স্ত্রী পুনর্বিবাহ
করিতে পারে।

বালানার তেলিরা সাধারণতঃ চৈতপ্তসম্প্রদারের বৈক্ষব। আবিন্যাসে দেবীপক্ষে ইহারা গন্ধেরীর পূজা করে।

বিহারের কনৌজিয়া তেলিয়া পাঁচপীর ও গোররা নামক প্রাম্যদেবতার বেশী ভক্ত। মঘইয়া তেলিয়া কালিহাতি, জলপৈৎ ও ধর্মরাজ নামক গ্রাম্যদেবতার অভ্রক্ত। কনৌ-জিয়াগণ আধিনমাদের ভক্তপক্ষীর বুধবারে এই সকল দেবতাকে ক্ষীরপুরী, মিটার ও কটি পিটকাদি হারা পুলা করে, কিন্তু মঘইয়াগণ প্রাবেশ ও মাহ্মাদের ভক্তপক্ষীর বুধবারে ঐয়পে পূজা দেয়। প্রাবেশীর ভক্ত মজলবারে কনৌজিয়াগণ গোরয়া দেবতার নিকট অভ্নপায়ী শ্করশিশু কলি দেয়।

তেলিদিগের মধ্যে বাহারা তৈল বিক্রের করে, ভাহারা কেবল তিল হইতেই তৈল কলে, অন্ত তৈলকর বীজ ভালিলে জাতিন্ত হয় !

ইহারা তিলতৈল প্রস্তুত করিতে ছিবিধ মানির কোন প্রকারই ব্যবহার করে না। প্রথমে তিল আর সিদ্ধ করিয়া মুসলমানদিগকে কুটতে দেয়।

তাহারা কুটিয়া কেবল খোসা তুলিয়া দেয়। তৎপরে তেলিয়া একটা আলার ভিতর খোসা-তুলা ভিল পুরিয়া গরম অল ঢালিয়া দেয়। ১২ ঘণ্টা গরমজলে ভিজিবার পর প্রাতঃকালে বাঁশের একটা ঘোটনা দিয়া বহুক্লণ খুঁটিতে ঘুঁটিতে তিল গলিয়া মগুবৎ হইয়া উঠে। তথন ভাহাতে আবার ঈবৎ গরম অল ঢালিয়া দিয়া কিছুক্লণ থিতাইতে দেয়। তৎপরে থিতাইয়া জলের উপর তৈল ভাসিয়া উঠে। ইহা বস্ত্রপত্রারা শুবিয়া লইয়া অঞ্বণাত্রে সংগ্রহ করিতে হয়।

তেলিদিগের মধ্যে বালালায় চৌধুরী, দে, কুপু, নন্দী, পাল, প্রামাণিক, মগুল, সাহা, শেঠ ইত্যাদি উপাধি, উড়িন্থার ধবল, নামস্ত, কোলেমান ইত্যাদি উপাধি ও বিহারে
বেহারা, চৌধুরী, দফাদার, গোরাই, কাপ্রি, নারক, পোদার,
সাহে, সাহা, তালুকদাব ইত্যাদি উপাধি আছে।

তেলিদিগের মধ্যে নিম্নলিখিত বিভাগ ও গোত্রাদি আয়ছ—

>। বালালার গোত্রবিভাগ---আলঘারন, চক্র ঋষি। আনরপ্রীর মধ্যে কলমী, কাঞ্চপ, মৌলগল্য, নাগ এবঙ বারেক্র ফেলিদিগের মধ্যে নাগ নিকলম্ব, নিরাঝ্যি, শাণ্ডিল্য, সিমুখ্যি।

ইহাদের মধ্যে আবার আদিবাস স্থান বা কুলগত ব্যবসায়
স্থান অনুসারে কডকগুলি বিভাগ আছে, বধা---

विक्रमभूती, ठळवीली, शंकाविवती, खूवर्गविवती, खूनाविता,

বড়পটি, ছোর্টপটি, দাসপাড়া, পোবিক্ষপুরী, বারহাজারী, বর্জনানী, ছাগলিয়া, মর্রেখরী, সিংহাজারী, চীনপুরীয়া, হল্দবোনা, ফডেসিং, মদোহরসাহী, অরপসিং, কুডুবপুরী, মগধবঙী, রাটা, সপ্তথামীয়া, সেনুভূমি, লিধরিয়া বা সিক্লুর-টোপা ইত্যাদি। এডডিয় একাদুল, ছাদ্দা, ভঞ্জ (যাহারা বীজ ভাজিয়া তৈল করে) ভেলি প্রভৃতি আছে।

- ২। উড়িবার--- অভিরাম, একাদশ, গৌড়া, হল্দীরা, তুলটিরা।
- বিহারে—আড়াইরা, বঢ়ারিরা, বিরাহত, দেশী,
 রেরমানিরা, অমকপুরী, কনৌজিরা, গুলাধলিরা, লথৌর,
 মঘইরা, সরবরিরা, ত্রিছতীর, তুর্কিরা।
- ৪। ছোটনাগপুরে—দক্ষিণী, হরুদীয়া, হিয়াপেলা, কনৌবিয়া, মধুরিয়া প্রভৃতি প্রেণী আছে।

ইহাদের মধ্যে ইজর প্রাণী বা সামাল্ল বন্ধর নামে কতক-শুলি গোত্র আছে, বাহার বে গোত্র, তাহাদের সেই প্রবাকে সম্মান করিতে হর, যেমন নাগান্ধ, পাথী চাটা, বক হাড়োদ (কল), কাছুরা, কাছিম (কছপ), কাঁলি (তৃণ বিশেষ), নাগ (সর্প), পাড়কী (মুখু), তুল্লসী ইত্যাদি।

দাক্ষিণাত্যে সাভারা কেলাম তেলিদিগের চুইভাগ— লিদায়ত ও মরাঠা। এই ছই শ্রেণীতে আদান প্রদান বা একত্ত भानखाबनापि नारे। जिन, नातित्वन ७ मन वीच हहेरज ইহারা তৈল প্রস্তুত করে। ইহারাই তৈল ও খোল বিক্রয় করে। বিশারতগণ শিব ভিন্ন অন্ত দেবতার পূজা করে না। জন্ম ব্রাহ্মণগণ ইহাদের পুরোহিত। মরাঠারা মহারাষ্ট্রীয় हिन्। निवापरितरत विवादश्रानी क्रावितरात छात्र। उद বর কন্তার মধ্যে অন্তরপট্টবল্লধরা হয় না। ইহারা চারি দিন পর্যান্ত রঞ্জখনা জীকে ম্পর্ল করে না। এই জেলার তেলিরা শবদেহ সমাহিত করে ও দশাহ অংশীচ লয়। ইহারা অঞ্চাতীর ব্যবসা ভিন্ন অক্ত ব্যবসায় অবলম্বন করে না। পুণা জেলায় তেলিরা শনিবার, সোমবার, পরদেশী ও লিকারং এই চারিভাগে বিভক্ত। শনিবার ও সোমবার তেরিরা উক্ত ছইবারে কোন কার্য্য করে না। ইহাদের আচার कुंगवित स्वाप्त । প्रकल्पत भागरভाजैन चामान धामान नाहे। প্রত্যেকেরই "ঘানা" (ঘানিগাছ) আছে। দকলেই মহা-রাষ্ট্রীয় ভক্ত পরিচ্ছদধারী। জীরা অতি স্থন্দরী। ইহারা माथात्र क्न भरत्र ना। नातिरक्न, जिन, हीरमत्र वालाम, সর্বপ প্রভৃতির তৈদী ভালে। ইহারা দার্ত্ত। গণপতি, माङ्गि अञ्जि ইहारित शृहरित्य । रिमण्ड बाह्मण्यन ইহাদের পৌরোহিত্য করে। স্বান ক্রের পর পঞ্ম দিনে

हेहात्रा 'निष्वाहे' (विज्ञी) तत्त्वीत शृक्षा कर्त्व, ১২ वा ১৩ मितन नव मिल्त नाम कत्रण करत । जीनिरशत तरकानर्गरमत शृर्द्य विवाह इब, किन्तु भूकरवत्र २०।२६ वर्षत्र व्यव ना हहैला विवाह इम्र ना । विधवा, विवाह हेहारमत्र मत्था मिविक नत्ह । हेशता नवनाष्ट्रं करत, मनाह व्यर्भोठ नत्र। रकरतानिन टेजैरनत वावशांत त्रि रुखाय देशांतर नर्सनाम स्टेटिंड । हेहारनत मरश ज्यानरक काजीत वावनात जांग कतिता नकछ-. • চালक, मञ्जूत, अधिक हेर्जानि हहेत्राटह। मन्न, मरच ও मारन ইহারু। অবাধে ব্যবহার করে। আহ্মদনগর জেলার তেলিরা কুণবির অংশ বলিয়াই বোধ হয়। ভৈলকারের ব্যক্সায় अवनवन कतात्र हेराता बाजिसहे रहेशा शांकित्व। हेरापित मर्रा निवाकत्र, स्नानरम, शाहेरकावाफ, स्नाथरख, मनत्र, দৈলন্দার, কাঠেবাড় ও বলমুঞ্জকর এই কয়টা বিভাগ আছে। এক বিভাগের সহিত অপর বিভাগের বিবাহাদি হর না। আক্রদনগরের অন্তর্গত সোনারা নামক স্থানের ভৈরব, নিজাম-রাজ্যের অন্তর্গত তুলজাপুরের দেবী, পুণার অন্তর্গত জেজুরীর থতোবাদেব এবং সাতারার অন্তর্গত সিগনা প্রের महारानव देशारान व्रवसान अभाग रानवणा। देशाता निथा •ব্যতীত মন্তকের সমন্তাংশ মুখন করে, কিন্ত গোঁপদাড়ী त्रार्थ। ইहारमत जीता अ माथात्र मून भरत ना । हेहाता स्वप्न जवा পাইতে ভালবাসে।পুরুষেরা চন্দন ও খ্রীরা সিন্দ্র নিত্য ব্যব-ছার করে। ইহারা পুণার তেলির ভাষ ব্যবসায় করে। মোলী ব্রাহ্মণেরা ইহাদের পৌরোহিত্য করে। ইহারা বৈষ্ণব।

দাক্ষিণাত্যের তেলিরা সাধারণত: সন্তানদিগকে লেখাপড়া শিখার না এবং প্রাণান্তেও ভিন্ন ব্যবসায় অবলম্বন করে না, কেবল পুণা জেলায় ইহার ব্যতিক্রম ঘটিরাছে। ভাহাও থুব অর।

তেলিচেরি [তলচেরি দেখ।]

্রেলিয়াগড়ী [ভিলিয়াগড়ী দেখ।]

ভেলিয়াগর্জন (দেশজ) বৃক্ষবিশেষ। (Dipterocarpus costalus.)

তেলু (পুং) নৃপতেদু। দেশে রাজফাদিছাৎ তেলু বৃঞ্। তৈলবক – তেলুনৃপবিষয়।

তেলেনা, 'নে, তে, তেরে ইত্যাদি কতকগুলি আশাণাপের বোল লইয়া যে গান করা যায়, তাহাকে তেলেনা কহে।

Cতবন ('ফ্লী) তেব ভাবে লাট্। > ্ক্লীড়া। আধারে লাট্। ২ কেলিকানন, প্রমোদকানন।

তেরার [তেওয়ার দেখ।]

তেশিরা (দেশন) জিশিরা, তিন শির বিশিষ্ট।

তেশিরাপাতী (দেশক) এক প্রকার পাতী দাস, দ্বি
নিরমুক্ত পাত্যাস। (a species of Cyperus)
তেন্দ্র (দেশক) তিশ্ব।

তেষ্ট্ (দেশজ) ত্রিবার্ট, ৬৩, ভিন অধিক বাইট। তেসরা (দেশজ) মাসের তৃতীর দিবস।

তেসূতী (দেশৰ) বন্তবিশেষ।

তেহরী (ওর্ছা বা উর্ছারাজ্য) বুন্দেলগণ্ডের মধ্যবর্জী এর দেশীর রাজ্য। অক্ষা ২৪° ২৬ ছইতে ২৫° ৩৪ উ: এবং আহি ৭৮° ২৮ ৩০ ইইতে ৭৯° ২০ পু:। ইহার উত্তরে ঝাহি লেলা, পূর্বে বিজ্ঞাবর, চর্যারি ও গরেগীল রাজ্য, দহি ললিতপুর, বিজ্ঞাবর ও প্রারাজ্য এবং পশ্চিমে বাজি ললিতপুর জেলা। ভূপরিমাণ প্রার ২০০০ বর্গমাইল। লোক সংখ্যা তিন্দকের অধিক।

এই রাজ্যের প্রধান নগর ও বর্তমান রাজধানী ভেছা এবং প্রাচীন রাজধানীর নাম উর্ছা। উত্তর রাজধানীর লামাঃ দারে কেহ ভেহরী, কেহ বা উর্ছ্য রাজ্য বলিরা আভিছি করে। তেহরীনগর রাজ্যের দক্ষিণপশ্চিম কোণে ও উদ্দ নগর হইতে ২০ কোশ দ্রে অবস্থিত। এখানে তিক্মগ নামে একটী স্থান্ট ত্র্গ-আছে, তদক্ষারে রাজধানী ও রাষ্ট্র সময় সময় তিক্মগড় নাম প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

এই রাজ্যের অধিকাংশই গিরিজক। বেথানে গ্রা সেইথানেই একত থেশী লোকের বাস দেখা যায়। মধ্যে ম গভীর অকল থাকায় চোর ডাকাতের পক্ষে বড় স্থবিধা বিশ্বর্ব পূর্ব্বে এথানে ডাকাতের বড়ই উৎপাত ছিল, গ্রা বাসীত্র পথিকদিগকে সর্ব্বদাই সাশন্ধিত থাকিকে ছইত।

এথানে মোটামূটী চাব বাস হয়, ক্রমকদিগের অবা মলা নর। প্রতি প্রামেই একজন মণ্ডল থাকেন, তিনিই এ প্রকার ভূলামী। প্রজাদিগের অভাব হইলে তিনি টা অথবা বীজ যোগাইয়া থাকেন, পরে ফ্রস হইলে তার একটা অংশ পান। এজন্ত অন্ধন্মার বংসরেও ক্রমকদিগ বড় কট পাইতে হর না।

মধ্যভারতে হতগুলি বুলেলারাক্স আছে, তল্মধ্যে উর্ছ রাজ্য সর্ব্ব প্রাচীন ও সর্বপ্রধান। সকল বুলেলাসন্দার পেশব অধীনতা স্বীকার করিলেও উচ্ছ রিজ কথন অবনতি হন মাই। এজন্ত এখনও বুলেলাসমাকে উচ্ছ রিজ সংশা মর্য্যাদা লাভ করিয়া থাকেন।

উচ্ছ। বা তেহরীর রাজগণ ব্লেলারাজপুত। ^{তারা} আপনাদিগকে অবোধ্যাপতি রামচক্রের বংশধর বিশিরা গৌর প্রকাশ করেন। নালকবি রচিত ছ্রেপ্রকাশ নামক হিন্দীকাব্যে বুল্লো, রান্দ্রপণের পূর্বপ্রকাশকাবের পরিচর প্রকাশকাবের । এই,গ্রছ
বুলেলা-কুলগোরৰ মহারাজ ছ্রেশালের সমর রচিত হর।
রামচল্রের পর হইতে ছ্রেশাল পর্ব্যস্ত পর্ব্যারক্রমে নাম পাওরা
বার। ছ্রেপ্রকাশে লিখিত আছে, এই বংশীর গ্রুরথ গ্রার,
বলদেওরথ প্রাণে এবং ইক্রম্মন জগ্রাথে অনেক দেবমন্দির
প্রতিচা করিয়াছিলেন।

তঃশ প্রবে করমসহায় বারাণ্দী অধিকার করেন এবং তাঁহার অধন্তন ২৬শ প্রয়ু রাধা প্রতাপরুক্ত উচ্ছনিগরী ভাপন করেন। ইনি আপন প্রিরপ্ত মধুকর শাহকে রাজ্য দিরা যান।

মধুকর স্থারপর, উদারপ্রকৃতি ও বিশ্বোৎসাহী ছিলেন।
কবি কেশবদাস সনাচ্যমিশ্র ও মহিলাকবি পর নীণ রাই পাতৃরী
মধুকরের সভা উচ্ছল করেন। মধুকরের পর তৎপুত্র ইস্ত্রক্রিংসিংছ উচ্ছারাল্য প্রাপ্ত হন। ইনিও একজন স্থক্বি
ছিলেন, ইহার হিন্দি কবিতার 'ধীরাজ-নরিন্দ' ভনিতা আছে।
ইনি কোকিলকটা পরবীণ রাই পাতৃরীকে বড় ভাল বাসিতেন। স্ফ্রাট্ অকবর পরবীণের মনোহারিণী কবিতা শুনিরা
তাহাকে একবার দেখিতে চান। কিন্ত রাজা ইস্ত্রজিৎ
পরবীণকে পাঠাইতে অসমত হন। তাহাতে অক্বর ক্র্ছ
হইরা এককোটা টাকা জরিমানা করেন। কবি কেশবদাস
দিলীতে গিয়া রাজা বীরবলকে 'দিয়ো করতারো হুঁহুঁ করতারী' ইত্যাদি কবিতা শুনাইরা মুগ্ধ করেন। সেই কবিতার
খণে বীরবল ইস্ত্রজিৎকে অর্থদণ্ড হইতে অব্যাহতি করিলেন।

তৎপরে নরসিংদেব রাজা হন। ইহার পরবর্তী তিন রাজার সময় উলেখবোগ্য ঘটনা ঘটে নাই। তার পর অ্বাসিদ্ধ ছত্রশালের পিতা চম্পটিরায় সিংহাসনে আরোহণ করেন। ইহার সময় শাহজহান্ ছইবার ব্লেলথও আক্রমণ করিয়াছিলেন, কিন্তু কিছু করিয়া উঠিতে পারেন নাই। বে সময় অরজজেব দারাকে পরাত্ত করিয়া সম্রাট্ হইবার চেপ্তা করেন, সেই সময় রাজা চম্পটিরায় ও তাঁহার প্রিয়প্তা ছত্রশাল অরজজেব ব্লেল করিলে গাহাব্য করিয়াছিলেন। কিন্তু আরজজেব সমাট্পদ লাভ করিলে পর সেই উপকার ভূলিয়া বান। চম্পটিরায়ের মৃত্যুর পরই অরজজেব ব্লেলাদিগকে মুসলমান করিবার জন্ত ব্লেলথওে একদল সৈভ প্রেরণ করেন। এ সময় ছত্রশাল, জয়পুররাজের পল্কে দক্ষিণাপথে বৃদ্ধ করিছেলেন। তিনি অবিলম্বে দেশে ফিরিয়া আনেন এবং অরজজেবের মৃত্যু হইলে বুন্সেলথওের পুন্রভার করিলেন। ঘডিয়া, সম্পাতার, ঝালি ও রেয়ায় কিয়দংশ

তীহার অধিকার্জুক্ত হয়। তাঁহার সময় অধীন বুলেলখণের আর প্রার ২ কোটা টাকা হইরাছিল। তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার বংশধরেরা বুলেলখুও রাজ্য ভাগ করিরা লইলেন। নেই সলেংভেহরী রাজ্যের আরও অনেক কমিরা বার।

১৮০৯ খুটাকে তেহরীরাজের সহিত বুটাশ গবর্মেটের সর্বপ্রথম সম্ভর বটে। ভেহরীরাক বৃটীশের মিতারাক বৃণিরা গণ্য হ্ইলেন। ১৮১২ খুষ্টাব্দে পিগুারীগণ প্রবল হইরা উঠিলে তাহাদের দমনের অভাতেহরীরাজ বৃটাশ গ্রমেণ্টের আশ্রর গ্রহণ করেন। এই সময় বুটাশ গবর্মেণ্টের সহিষ্ঠ তেহরীরাজ্যের এক সদ্ধি হইল, তাহাঁতে তিনি শিত্ররাজ বলিয়া খীকৃত হইলেন। ১৮১৮ খুটান্দে তেহরীয়াল বিজ্ঞান जि९ महिक मार्क्टिम चार् हिडिश्नरक नवत निता वनिता-ছিলেন, "উদ্ভারাজ এই প্রথম অপর রাজের প্রাধান্ত স্বীকার করিলেন।" ১৮৩৪ খু**টান্দে বিক্রম্**জিডের মৃত্যু হর। **পূর্ব্বেট্** তৎপুত্র ধরমপালের মৃত্যু হইয়াছিল, এখন বিক্রমজিতের ভ্ৰাতা তেলসিংহ রালা হইলেন। তেলসিংহ ভ্রাতৃস্ত্র স্থ্যজন সিংহকে দ্তক গ্রহণ করিয়া ১৮৪২ খুষ্টান্দে পরলোক গম্ন করেন। এই সময়ুধ্রমপালের পদ্ধী ভারাইরাণী অপর একজনকে দত্তকগ্রহণ করিতে অভিলাবী,হন। বৃটীন 🕟 গবর্মেণ্ট স্থান্ত্রকা সিংহকেই দত্তক স্বীকার করিলেন এবং ভারাইরাণী বালকরাজের অভিভাবিকা নিযুক্ত হইলেন। তারাইরাণীর যত্নে ১৮৪৭ খুটান্সে উচ্ছারাল্য হইতে সতীদাহপ্রথা উঠিয়া যার। সিপাহীবিজোহের সময় তিনি বুটাশগবর্মেণ্টকে যথেষ্ট সাহায্য করিয়াছিলেন। তেহরীরাজ প্রতি বর্ফে ঝান্সিকে ৩০০০, টাকা দিতেন, কিন্তু নিপাহী-বিজ্ঞোহের পর ঝান্সি বৃটীশ অধিকারে আদিলে বৃটীশ-, গ্রমেণ্ট ঐ ভিন হাজার টাকা ছাড়িরা দেন। এই সময় মোহনপুমের রাজস ২০০১ টাকাও ছাড় হয়।

স্থ্যজনের মৃত্যুর পর তাঁহার বিধবাপদ্মী সন্ধারগণের ইচ্ছাস্থ্যারে হামীরসিংহকে দন্তক গ্রহণ করেন। ১৮৬৫ পৃতাব্দে ইনি বৃটাশগবর্মেণ্টের নিকট 'মহারাজ' উপাধি লাভ করেন।

১৮৭৪ খুটাবে হামীরসিংহের মৃত্যু হইলে তাঁহার কনিষ্ঠ মহেক্ত প্রভাপসিংহ রাজা হইলেন। ইনি ১৮৮২ খুটাবে 'স্বাই' উপাধি লাভ করেন।

তেহরীরাজ ১৫টা মা্ক্সতোপ পাইরা থাকেন। তাঁহার ৪৪০০ পদাতি, ২০০ অখারোহী, ৯০টা কামান ও ১০০ গোল-লাজ আছে। রাজ্যের আর ৯ শক্ষ্ টাকা।

তেহাই (দেশৰ) এক তৃতীয়াংশ। তেহাতা (দেশৰ) তিনহাত দীৰ্থ বা প্ৰহ। তেহান্তর (নেশৰ) ত্রিসগুডি, ৭৩, তিন ব্ধিক সন্তর। তেহারা (নেশৰ) > তিনপ্রণ, তিন থাক।

তৈ কায়ন (গং) ভিক্স খবেং গোতাপতাং ভিক্-ফক্। ভিক্
খ্যির গোতাপতা।

তৈকান্ননি (গুং'লী) ভিকন্ত ধবেঃ গোত্রাপত্যং ভিক-ফিঞ্। ভিক ধবির গোত্রাপত্য।

তৈকারনীর (পুং) তৈকারনিঃ তত্ত অপতাং ব্বা তৈকারনি
• ছ। তৈকারনির থ্বা অপতা।

তৈক্সায়ন (পুং), তীক্ষণ ধবেং গোতাপত্যং। তীক্ষকঞ্। (অবাদিডা: কঞ্। পা.৪।১।১১০) তীক্ষধবির গোতাপত্যব তৈক্ষ্য (ক্লী) তীক্ষণ ভাবং তীক্ষ-যুঞ্।১ তীক্ষতা। ২ কঠো-রভা। ৩ ক্রেডা।

"বেষং দস্তঞ্চ মানঞ্চ ক্রোধং তৈক্ষাঞ্চ বর্জ্জনেং।" (মনু ৪।১৬৩)
'মাৎস্ব্যাং ধর্দ্দান্ত্রংলাভানিকোনকোপকোর্ব্যানি ভ্যান্তেং' (কুলুক)
ভৈত্মা (ক্লী) ভিত্মক ভাবং ভিত্ম ব্যক্ত। তিগাভা, প্রথমভা।
ভৈক্ষনিস্থান্ত্রী) একপ্রকার কুল্র বীণা।

"সারাভিমপ্রাধতাং বিষত্তং তৈজনিপ্ত্" (লাট্যায়নশ্রৌণ ৪।২।৯)
'তৈজ্ঞস (ক্লী) তেজসো কিকার: তেজস্-অণ্। ১ ছত।
ং ধাতু ত্রব্য মাত্র।

"তৈজনানাং মণীনাঞ্চ সর্ব্বস্থাখনরন্ত চ।" (মহু ৫।১১১) ৩ জীর্থবিশেষ। (ভারত ১।৪৬।১০৩) ৪ সাংখ্যোক্ত রজো-গুণোৎপর একাদশেক্তিরাদি।

"সান্ত্রিক একাদশক: প্রবর্ত্ততে বৈকারাদহন্বারাৎ। ङ्डारम्खनावः न्डायनरेखकनाङ्ख्यः ॥" (नाःशाका॰ २¢) देवकुछ वर्षाद नाचिक व्यवसात हरेएछ धकानमक, व्यर्धाद একাদশ ইत्रिय, ভামস হইতে ভয়াত্র, তৈজস হইতে এই উভয়ই প্রবর্ত্তিভ হয়। অহমারের যথন সাধিকাংশ প্রবঁশ হইয়া রজ ও তমোওণ অভিভূত হয়, তথন তাহার বৈকৃত সংজ্ঞা হয় এবং ভাহাকে সাত্ত্বিক অহন্তার বলা বায়। এই বৈকৃত (সান্ধিক) অহম্বার হইতে একাদশ ইন্সিরের উৎপত্তি হট্যাছে। এই জ্বল ইন্দ্রিয় সকলের স্থাংশ অধিক হওয়ায় निक विषय नकन धारण कतिएक नमर्थ रय। जामन प्रकारि হইতে তক্মাত্ৰ অৰ্থাৰ্থ বধন তম বারা সত্ব ও রক্তঃ অভিভূত হয়, তখন সেই অহতায়কে তামস কহে। সাংখ্যাচাৰ্য্যগণ এই ভামন অহহারের ভূতাদি সংজ্ঞা দিয়াছেন। এই ভূতাদি **इहेट अक्**डमाज **उर्नन इत्र। टिडमन इहेट वहे उक्त**र অর্থাৎ একাদশ ইক্রিয় ও পঞ্চন্মাত্র প্রবর্ত্তিত হ্ইয়াছে। রক্ষারা স্বাও তম অভিভূত হয়, তথন সেই অহ্ছারই टेडबर मरका गांछ करत । शृर्व्हाकं माचिक बहदात रथन বৈক্ত হইরা একাদশ ইব্রির উৎপর করে, তথ্য ভৈছন অহন্তারের সহারতা গ্রহণ করিতে হর। সাজিক দিছির, তৈলস অহন্তারের সহিত মিলিত না হইলে ইহার জারা, করিবার ক্ষমতা থাকে না। এইলক্ত তৈলসের সহিত মিলিত হইরা একাদশ ইব্রের উৎপাদন করে। এই গ্রহার ভূতাদি তামস অহন্তার নিছির, তৈলসের সহিত মিলিত হইরা তথাল সকলকে উৎপাদন করে। এইলক্ত ভৈছন হইনা তথাল সকলকে উৎপাদন করে। এইলক্ত ভৈছন হইনা তথাল সকলকে উৎপাদন করে। এইলক্ত ভৈছন হইনা তথাল ইহাদের উৎপত্তির কারণ। তৈলসের সাহায় ব্যতীত সন্ধ ও তম কোন কার্যাই করিতে সমর্থ হয় না। (সাংখাদণ) (পুং) ও ক্ষম শরীর বাইনুপহিত চৈতক্ত।

"এতবাই গৈহিতং চৈতক্সং তৈজনো তবতি তেজোমরার:
করণোপহিত্বাং।" (বেদান্তনাণ) ৬ স্থমতিপুত্র।
"তৈজসন্তংস্তল্টাণি প্রজাপতিরমিত্রজিং।" (ব্রন্ধাওপুং ৬৬ অং)
তৈজসাবর্ত্তনী (ব্রী) আবর্ততেহত্ত আবৃত সূটে ব্রিরাং তীশ্,
তৈজসাবাং আবর্তনী। মুধা, ধাতুত্রবা গলাইবার পাত্র, মুধী।

তৈজনী (জী) গৰপিপ্লী, গৰপিপ্ল।

তৈত্তল (পুং) ঋষিতেন। তম্ভ গোত্রাপত্যং তিকা ফিঞ্। তৈতনারনি, তৈতন ঋষির গোত্রাপত্য।

তৈতিক (বি) ভিডিকা শীলমত, তিতিকা ছবাদিখাং গ। ভিতিকাশীল।

তৈ তিক্ষ্য (পং ব্রী) তিতিক্ষণ্ড ধবেং গোত্রাপতাং পর্মাণ বঞ্। তৈতিক ধবির গোত্রাপত্য। তৈতিক্ষান্ত ছাত্রাঃ কথাণ জণ্ যঞো লোপঃ। তৈতিক্ষা ধবির ছাত্রগণ।

তৈতির (পুং লী) ভৈত্তির পূবো° সাধুং। ভিডির পদী, ভিতিরী পাণী। জিলাং ভীব্।

তৈতিল (পুং) > গগুক, গগুর। (রী) ২ জ্যোভিষোল
বব, বালব, প্রভৃতি একাদশ করণাস্তর্গত চতুর্থ করণ।
তৈতিলকরণে বালকের জন্ম হইলে কলাপটু, ললনাভিনাবী,
কন্দর্পনির্জিত রূপবান্, বজ্ঞা, গুণজ্ঞা, সর্কাকর্মকৃশন ও
স্থুশীল হয়।

"কনাস্থ দক্ষো নননাভিনাই স্থম্তিসন্তব্জিভকামদেবঃ। বক্তা গুণজঃ কুণনঃ স্থলীনক্ষেত্তিভিনাথাং করণং প্রস্তৌ।" (কোন্তীপ্র^ত)। ৩ দেবভা। "শক্তিসদৃদেন দানেনাবা^(বি) ধরণীভনতৈভিনগণঃ" (দশকুমারচং)

তৈতিলন্ (পৃং) গোত্রপ্রবর্তক ক্ষিপণের প্রবর্তের। তৈত্তির (লী) তিভিনীণাং সমূহঃ তিভিন অঞ্ (অছ^{দাত্তা} দেরঞ্। পা ৪।২।৪৪)। তিভিনিপকীসমূহ। তিভিন ^{বার্গে} অণ্। ১ তিভিনপকী। ২ গঙক। हिलिति (पूर) > स्क्तरः च तृगळ्य । २ वरिष्ठर, वह वरि इक रक्ष्मण्यावर्षक ।

ভৈত্তিরীর (পুং) ডিভিরিণা প্রোক্তং অধীরতে ছন্। ডিভিরি-প্রোক্ত শাধাধারী সকল। এই শক্ত বছবচনাত্ত।

তৈতিরীর নামের বিষয় ভাগবতাদি প্রাণে এইরূপ লিখিত আছে।—একদা বৈশন্দায়ন বন্ধহতা। করিয়া প্রায়লিচতের কল শিল্পগণকে বাগাস্তানের আদেশ করেন। শিল্পধা যাজ্ঞবক্য অসম্পত হইলে বৈশন্দায়ন বলেন, 'ভূমি আমার শিল্পদ পরিত্যাগ ক্লয়।' বাজ্ঞবদ্ধ্য 'তাহাই হইবে' এই কথা বলিয়া পূর্বাশিক্ষিত বচনগুলি ব্যন করেন। অল্লান্ত শিল্পেরা সেই ব্যিত বচনগুলি ব্যন করেন। অল্লান্ত শিল্পেরা তোই ব্যিত বচন তিত্তিরীপক্ষী রূপ ধরিয়া গ্রহণ ক্রায় তাহার এই নাম হইরাছে। [যক্ত্রেদ শব্দে বিস্তুত বিবরণ প্রত্রা।]

তৈ বিরীয়ক (পু:) তৈ বিরীয় স্বার্থে কন্। তিবিরি ধবি-ক্থিত পাণাধারী।

তৈত্তিরীয়া (ত্ত্রী) তিত্তিরিণা প্রোক্তা ছন্ টাপ্। যজুর্বেদের শাণাবিশেষ।

তৈতিরীয়োপনিষদ্ (ত্ত্রী) উপনিষদ্ভেদ। [यङ्क्ष्मं দেধ।] তৈতিরীয়ত্তাক্ষণ (ক্লী) কৃষ্ণ বৃষ্ট্রেদীর ব্রাহ্মণবিশেষ, এই ব্রাহ্মণ বিবিধ সন্তুপদেশপূর্ণ। [যফুর্কেদ দেধ।]

তৈ স্থিড়ীক (ত্রি) তিন্ধীড়িকেন সংস্কৃতং কোপধদাং অণ্।
> তিন্ধিড়ীক সংস্কৃত বাঞ্চনাদি। তম্ম বিকার: বিকারার্থে অণ্।
২ তিন্ধিড়ীক বিকার।

তৈনাত (আরবী) নিযুক্ত লোক।

গতবে তাদু কানাৎ তৈনাত চলে তেরা।

চলিল হাতীর পৃঠে নিশান নাগরা ॥" (শ্রীধর্মম হা১৭৬)

তৈনিত্তি (সারবী) যাহাকে বিশেষ কোন কার্যো নিযুক্ত
করা বার। গোমস্তার প্রার্থনামত সদরকাছারী ইইতে বে

নোক মক:বলে প্রেরিত হরঁ, তাহাকে তৈনিতি কহে। তৈমির (পুং) তিমিরমেব অণ্। নেত্ররোগভেদ। [ডিমির দেখ।] তৈমিরিক (জি) তৈমিরো রোগোহত্তাত ঠন্। তিমিররোগযুক্তা। "ন,বামরেত্তৈমিরিকের্দ্ধিবাতৃগুলোদরপ্লীহমিশ্রমার্তান্" (স্ক্রুত)

रेज्यूद्ग, [षामीत रेज्यूत राव ।] रेज्युद्ग (स्विी) श्रष्ट्रज्ञ ।

তৈয়ারী (হিন্দী) প্রস্তত।

ঠৈর (রী) ভীরে ভবঃ অণ্। কুলখ।

ভৈরণী (জী) তীরে নমতি নম ভ, ততঃ স্বার্থে অণ্ জিরাং গৌরাদিছাং তীব্। ক্পবিশেষ, পর্যার তৈরণ, তৈর, কুনীলী, রাগধ। ইহার তণ নিশির, ভিজ্ক, বঁণনাশক, জ্বণবর্ণদ। (রাজনিণ)

তৈরুষ্ট (বি) তির্দ্তামিদং তিবাঁচ্-খণ্ ভখাৎ তির্দ্তাদেশ:। তিবাগ্লাতিসম্ভীর।

তৈৰ্ধ (a) তীৰ্ধে দীয়তে কাৰ্য্যং বা ব্টোদিয়াং জণ্ী
১ তীৰ্ধে দেয়। ২ তীৰ্থকাৰ্যা। ৩ তীৰ্থক্ষণ আনহান হইতে
আগত ক্ৰয়াদি।

তৈ প্ৰ (বি) তীৰ্থে দেশে ভবং গ্ৰাদি বৃঞ্। তীৰ্থদেশভৰ।
তৈ প্ৰি (বি) তীৰ্থং সিদ্ধান্তনিক্যং নিতাং অৰ্থতি ছেদাদি ।
ঠঞ্। > তীৰ্থসিদ্ধান্তাভিজ্ঞ, শাল্লকার, ক্পিল ক্ণানাদি।
তীৰ্থং বেল্লি ঠঞ্বা। ২ সিদ্ধান্তাভিজ্ঞ। তীৰ্থে ভবং ঠঞ্।
৩ তীৰ্থভব।

ঠৈত্ব্য (ত্রি) তীর্ব সহাদিষাৎ শৃ । তীর্ব সমীপাদি । তৈর্ব্যপ্তমূলিক (ত্রি) তিরক্তাং অরনং সত্তভেদঃ তদেব ঠঞ্ । সত্তভেদ, যজ্ঞবিশেষ। "অষ্টাদশভিক্যারানাদিত্যঃ সংবৎসর এব তৈর্ব্যগর্নিকো ভবতি" (শ্রুতি)

ভৈর্য্যগোন (জি) ভির্যগোনেরিদং অণ্। ভির্যগ্যোনি পশু প্রভৃতির দর্গভেদ।

> "অষ্টবিকলো দৈবতৈবাগোনন্চ পঞ্চধা ভবভি। মাস্থান্ডকবিধঃ সমাস্তো ভৌডিকঃ দৰ্গঃ॥"

(সাংখ্যকাণ হওঁ) 🖟

তির্বাগোনি পঞ্চবিধ, পশু, মৃগ, পক্ষী, সরীস্প ও স্থাবরভূত সকল। তত্র তবং অণ্। তির্ঘাগ্যোনিভব, তির্ঘাগ্-বোনি হইতে যাহাদের উৎপত্তি হইরাছে।

তৈর্য্য গ্রেষাক্য (বি) তির্যাগ্রোনেরিদং গ্য । পঞ্চ পন্দী প্রাভৃ-তির সর্গভেদ।

ৈত্তল (ক্লী) তিলক্ত তংসদৃশক্ত বা বিকার: অঞ্। তিল সর্বপাদিক্সনিত মেহ ক্রব্যক্তেন।

> "ডিলাদিরিগ্ধবন্তুনাং লেহতৈলমুদাকতম্। তথ্ঠ বাতহরং সর্কাং বিশেষাজিকসন্তবং॥" (ভাবপ্রণ)

বৈদ্যক মতে, তিল প্রভৃতি লিগ্ধ এব্যের প্রেছকে তৈল বলা বার। কিন্তু তিল হইতে যে প্রেছ-নির্যাদ নির্গত হয়, তাহাকেই প্রফুত পক্ষে তৈল বলা হয়। তিলের ফ্রায় অফ্রাফ্র ক্লেহরস্প্রদারী বীজনির্যাদকেও সামাক্রতঃ তৈল বলা হইরা থাকে। উত্তিজ্ঞ-বীজোৎপর তৈল ব্যতীত কডকগুলি বৃক্লের লাখা প্রশাখা কাশু হইতে, কতকগুলির কার্র হইতে, কডক-শুলি তৃপের পত্র ও মূল হইতেও তৈলবৎ নির্যাদ পাওরা যায়, তাহাও তৈল নামে কথিত হয়। জীবদেহ হইতে বলা ভিয় এক প্রকার তৈলবৎ রস পাওরা যায়, তাহারও নাম তৈল। এভত্তির মৃত্তিকা ও পর্কতগ্রুবরেও তৈলবৎ অভি তরল প্রার্থ পাওরা বায়, তাহাও তৈল নামে অভিহ্তিত হয়। তৈল জল অপেকা গাচ, জলের সহিত কোন রূপে মিশ্রিত হর না এবং নিক, চিকা ও বেদমুক্ত। যাহা জলের সহিত সর্বাদীনরূপে মিশ্রিত না হর, এইরূপ উত্তিক্ত, প্রাণীক্ত ও মৃত্তিল রসকেই সামায়ত: তৈল বলা হর। ইহা কাগলে পড়িলে কাগলে শুবিরা হর এবং ইহাকে কতকটা বছহ করিয়া তুলে।

তৈলের ব্যবহার নানারপে হয়। আহার্য্য দ্রব্যে, গান্তমর্দনে, ঔবধরপে, নানাবিধ দ্রব্য প্রস্তুতে ও আলোক উৎপাদনে তৈল বন্ধল পরিষাণে ব্যবহৃত হয়। মাহুষের পক্ষে
ধান্ত, গম, হোলা, ভুটা, কালনি প্রভৃতি প্রধান আহার্য্য
শক্তের পরই বোধ হয় তৈল বা তৈলাক্ত দ্রব্যের আবশুক্
হয়। তৈলকর দ্রব্য, তৈলক দ্রব্য ও তৈল ব্যবসারের সর্ক্ প্রধান দ্রব্যের মধ্যে গ্রা। নানাবিধ তৈল এবেশে আমদানীও
হয়, আবার এবেশ হইতেও রপ্তানী হয়।

তৈলের অবস্থা তেনে তৈল ছই প্রকার—উবায়ু (বায়ু-পরিণামী) ও হির তৈল।

১। উদায়ু তৈল।—প্রায় কলের স্থায় তৈল অতিশয় माछ, छीत्राक ও छीक्रयान, स्त्रांगात्त्र हेहा मिनिया यात्र, ুজলে ভাল মিশে না, কাগজে পুড়িলে ও উবিয়া গেলে কোন मांग थारक ना। यनि উवित्रा शिला कांगरक मांग थारक, ' তবেই বুঝা যায় যে তৈলে ভেজাল মিশ্রিত আছে। উদ্ভিক্তিল ভিন্ন অক কোন তৈল প্রায়ই উবায়ু হয় না। সাধারণতঃ জব্যাদি চুঁয়াইয়া উবায়ু তৈল বাহির করিতে হয়। এই শ্রেণীর তৈলের কতকণ্ঠলি একবারে এত পাতলা হয় যে, হাতে লাগাইলেও তৈল বলিয়া বোধ হয় না। ক্মলানেবু, নেবু প্রভৃতির তৈলই এইরপ দারুচিনি, অমৃত্রী, লবক, এলাচ প্রভৃতির তৈল অপেকারুত গাঢ়, জাম-ফলের ভৈল, মরিচের ভৈল প্রভৃতি অমিয়া মাধনের মঙ হট্যা যার। পিপারমেন্ট, মর্জোরম প্রভৃতির তৈল মৃত্ देखाल ऋष्ट माना राधिया यात्र। डेबायूटेजलात शास्त्रत चौवत् श्रीवता উত্তাপ निरंग हेहा উविद्या यात्र ७ त्रहे द्यारनत বায়ুরাশিতে তাহার গন্ধ ছড়াইয়া পড়ে, কিন্তু পাত্রে আবরণ मिश्रा উত্তাপ मिला व्याकितिनाच केतिया यात्र, द्वार वननुष्टित्रा কাল হইয়া উঠে, গন্ধহীন হইয়া পড়ে। বিশুদ্ধ তৈলে প্রায় গ্যাস হয় না, কিন্তু জলাদি মিপ্রিত থাকিলে হয়।

২। দ্বির তৈল (অর্থাৎ যাহা উত্তাপে উবিরা না বার),
মতাবতঃ ভ্রবন বা উত্তাপে তরল হর, নিম্ম, চিকণ ও মেদযুক্ত,
থতিদাফ, মৃছ স্বাদ, ৬০০ ডিগ্রির কম⁸উত্তাপে ফুটরা উঠেনা,
থল মিলে না, স্থ্যাসারেও ভাল মিলে না, কাগকে লাগিলে
াগ খাকিয়া বার।

বির তৈলে অলারক, উদজন ও অরজন আছে। বিশ্রেবন করিলে তৈলে দিবিধ পদার্থ পাওরা বার, তৈলের তরলাংশকে পাশ্চাত্য পদার্থবিদ্যাপ Oleum বা (liquid polition of oil) বা তৈলসার বলে, ইহার অল্ভ ও চিক্রপাংশকে margarine (a pearl-like substance in some oil) বা তৈলমৌজিক বলে। প্রাথীলতৈলে, বীজোৎপরতৈলেও জ্লাপাই জাতীর ফলের তৈলাদিতে Stearine (a proximate principles of fat) বা বসার গাঢ় জংশবং আর এক উপাদান পাওরা বার।

তৈলের ব্যবহার অনেক। সাবান ও বাতি প্রস্তুত করিতে, দীপে পুড়াইতে, কলকজার সর্বাদা বর্বণ জনিত কর নিবারণ করিতে, পশম প্রস্তুত করিতে, রং ও বার্ণিস প্রস্তুত করিতে, বাঞ্চনাদি, ঔষধে, ছাপিবার কালি প্রস্তুত, ফলাদির আচার প্রস্তুত করিতে, কেশদেহাদির সংস্কারে এবং স্থগদ্ধি তল ও আতরাদি প্রস্তুত করিতে তৈলের যথেই ব্যবহার হয়। এডব্রির আরও অনেকানেক ক্ষুদ্র কুর বিষয়ে তৈল ব্যবহৃত হইরা থাকে।

মৃত্তিক তৈল ('মেটে তৈল) তুক্ষাধীন আরবে, উত্তর পারস্তের বাকটু নামক স্থানে, উত্তর ভারতে, চীনে ও বন্ধদেশে উৎপর হয়। এক বন্ধদেশেই প্রতি বৎসর প্রায় ২৪ হাজার মণ মেটেভৈল উৎপর হয়। এই তৈল হইতে ছার প্রহার দ্রুবা উৎপর হইয়া থাকে, ভর্মধ্যে এক প্রকার ভুষারবেড কঠিন মোম ও এক প্রকার অতি উৎকৃষ্ট স্থান্মযুক্ত।

আমাদের আয়ুর্বেদ মতে, সকল তৈলই বায়ুনাশক, কিন্ত তিলোত্তৰ তৈল স্ব্বাণেক্ষা শ্রেষ্ঠ। পর্যাক্ষকণ, ক্ষেহ, অভ্যঞ্জন। (হেম)

তৈল আথের, উঞ্চ, তীক্ষ, মধুর, পৃষ্টিকর, তৃথিকর, গ্রামাধর্মের উ্তেজক, পৃন্ধ, বিশদ, শুরু, সারক, বিকান, তেজকর, অকের প্রসন্ধতাসম্পাদক, মেধা, শরীরের কোমলভা ও মাংসের-দৃঢ়তাকারী, বর্ণকর, বলকর, দৃষ্টিভিতকর, মৃত্তরেশ্বন, লেখনকর, তিজ্ঞা, পশ্চাৎ করার, পাচক, বাভন্মেমা ও ক্রিনাশক, যোনিশ্ল, শিরংশ্ল, ও কর্ণপ্রের শান্তিকর, গর্ভা শরের শোধনকর, ছির, ভিন্ন, উৎপিষ্ট, বিদ্ধ, চ্যুত, ম্থিত, ক্ষত্ত, গিচিত, ভার, ক্র্টিত, কারদত্ত, অঘিদত্ত, বিশিষ্ট, দারিত, অভিহত, হুর্ভয়, মৃগবালানি কর্ত্তক দুই, এই স্কর্গ এবং পরিবেচন, মর্দন ও অবগাহনে ভিল্ডেজই প্রশন্ত।

ৰতিজিয়ার, পানে, নতে, কর্ণরন্ধুপুরণে, জনগানের সংযোগে ও পাছুশান্তির নিমিত ভৈল ব্যবহার করা বার। সর্বপতিল—অফিনীতিকায়ক, ক্ষুব্রস, ক্ষুবিশান লঘু, ক্বণভাকারক, উক্ষণার্গ, উক্ষবীর্ব্য, তীক্ষু, রক্তণিত-প্রকোপক এবং কক, মেদ, বায়ু, অর্প, লিরোরোগ, কর্ণরোগ, কণ্ডু, কুঠ, কমি, বিত্র, কোঠ ও হুইব্রণনাশক। কৃষ্ণ, খেড সর্বপ (রাই সরিবা) হইতে উৎপন্ন ভৈলও উক্তরূপ গুণসম্পন্ন, অধিকন্ত মৃত্রকুচ্ছেন্ত্রাৎপাদক।

এরগুতৈল—মধুর, উঞ্চ, তীক্ষ, অমিকর, কটু ও পশ্চাৎ ক্ষার, ক্ল, নাড়ীশোধনকর, ছকের হিতকর, ব্যু, পাকে মধুর ও বয়:হাপক। (বাহার বাবহারে শরীর শীঘ্র জীর্ণ হয় না), যোনি এবং শুজের শোধনকর, আরোগা, মেধা, কান্তি, স্থতি ও বলোৎপাদক, বাতলেয়া ও শরীরের অধো- ভাগের দোধনাশক।

নিখ, অতসী, শণ, কুস্থ, মৃলক, দেবতাড়, ক্লতবেধন (ঘোষাফল), অর্ক, কাম্পিল, হত্তিকর্ণ '(সাল), পৃথিকা (বড় এলাইচ), পীলু, করঞ্জ, ইঙ্গুদী, শিগু, সর্বপ, অবর্চনা (তিনি), বিড়ঙ্গ, জ্যোতিয়তী 'এই সকল বীজ ও ফলের তৈল তীক্ষ, লঘু অথচ অনুক্ষবীর্ব্য, রসে ও পাকে কটু, সারক এবং বাতলেয়া, কৃমি, কুঠ, প্রমেহ ও শিরোরোগের নিবৃত্তিকর।

শণবীজের তৈল—বাতম, মধুর, বলকারক, কটুপাক, চক্ষুর অভিতকর, রিশ্লোফ, গুরুপাক এবং পিত্তকর।

ইঙ্গুদীতৈল-কুমিয়, ঈষৎ তিব্তু, লঘু, কুর্চ ও কুমি-নাশক এবং দৃষ্টি, শুক্র ও বলক্ষয়কর।

কুর্মবীজের তৈল—পরিপাকে কটু, সকল দোষের বর্দ্ধক, রক্তপিতজনক, তীক্ষ, চক্ষ্র অহিতকর এবং বিদাহী (যাহাতে গলা অলে)।

কিরাততিক্ত (চিরেতা), তিনিশ, বিভীতক, নারিকেল, কোল, পীলু, জীবন্ধী, পিয়াল কর্মদার, স্ব্যবন্ধী, অপুস, এর্মাকক, কর্মাক প্রভৃতির তৈলা মধুর বীর্যা ও পাকে মধুর, বায়ু ও পিত্তের শান্তিকর, শীতবীর্যা, চকুর অহিতকর, মলম্অজনক ও অগ্নিমান্দ্যকর। মধুক, গন্তারী ও পলাশের তৈল মধুর, ক্ষায় ও ক্ষ পিত্তের শান্তিকর।

•তুক্ষবক এবং ভল্লাভকভৈল—উঞ্চ, মধুর, ক্যার, পশ্চাৎ ভিক্ত, কটু, কফ, কুঠ, মেদ, মেহ ও কুমিনাশক এবং উর্জ্ব ও অধোভাগের দোবহারী।

সরল, দেবদারে, গণ্ডীর, শিংসপা ও অঞ্চর ইহাদিগের সারের তৈলের গুণ—ভিক্ত, কটু, কবার, দ্বিত ত্রণের শোধন-কর, কৃমি, কৃষ্ঠ, কুঠ ও বায়ুর শাস্তিকর।

ত্ৰী, কোবাত্ৰ, দত্তী, ত্ৰবফ্টী, ভাষা, সপ্তলা, নীলি, কশিলন এবং শন্ধিনী ইহাদিগের কৈুল ভিক্ত, কটু, ক্বার, শরীরের অবৈভিত্তের দোবনাশক। কৃষি, কফ, কুঠ ও বাযুর শান্তিকর এবং দূষিত ত্রদেঁর শোধনকর।

যবডিক্লে তৈল—সর্কণ দোবের শান্তিকর, ঈবৎ ভিক্ত, অগ্নিনীপ্তিকর, নেখন, পথা, পবিত্র ও রসায়ন।

ঐকৈষিকা (বকপুষ্প) তৈরু মধুর, অভি শীভন, পিন্ত-শান্তিকর, বাযুপ্রকোপক ও প্লেমাবর্দ্ধক।

আদ্রবীজতৈল—ঈবং তিক্ত, অতি তুগন্ধি, বাঙলেরা শাস্তিকর, কক্ষ, মধুর, কবার, এবং ইহার রসের ফ্রার অতিশর পিডকর।

যে সকল ফলের তৈলের উল্লেখ করা হইল, তাহালিগের গুণ—তৈলের স্থার বায়ুশাস্তিকর। সকল তৈলের মধ্যে তিল তৈলই প্রশন্ত। তৈলের স্থার কার্য্যকারী ও সেইরূপ গুণ বিশিষ্ট বলিয়াই অপরাপর তৈলের তৈলত্ব খীকার করা যায়।

তৈলপক থাতের গুণ—বিদাহী, শুরুপাক, পরিপাকে
কটু, উষ্ণ, বায়ু ও দৃষ্টির অহিতকর, পিত্তকর, এবং ত্বক্
দোবোৎপাদক। তৈলপক মাংস উষ্ণবীর্ঘা, পিত্তকর ও
গুরুপাক। তৈলপক মংশু মুথপ্রিয়, ক্চিকর ও ল্যুপাক।

• তৈল পুরাতন হইলেই অধিক গুণবিশিষ্ট হয়। (ভাবপ্রকাশ স্থাক্ত দুব্যগুণ)

প্রাত:নান, (স্র্যোগরের পূর্বের্ব) ব্রত, প্রাদ্ধ, দাদণী ও গ্রহণ দিনে তৈল মাধিতে নাই।

"প্ৰাতঃমানে ব্ৰতে প্ৰাদ্ধে বাদ্খাং গ্ৰহণে তথা।"
মদ্যনেপসমং তৈলং তমাতৈলং বিবৰ্জনে ॥" (কৰ্মনোচন) ।
এই বচনে তৈল নিষেধ। ডিলতৈলপর, অৰ্থাৎ পুৰ্কোক কাৰ্য্যে তিলতৈল একণ ক্রিবে না। "মৃতঞ্চ সার্যপং তৈলং বলৈলং পূস্পবাসিতং।

অন্তইং পকতৈলক তৈলাজ্ঞালে চ নিত্যশং ॥" (তিখিতম)

মৃত, সার্যপ তৈল এবং পূস্পবাসিত তৈল,ও পক তৈল
তৈলাভ্যালে ইছারা অন্তই, অর্থাৎ পকতৈল, সর্যপ তৈল প্রভৃতি

সকলে দোবাবহ নহে।

বার বিশেষে তৈল গ্রহণ কল। রবিবারে হৃদর বিনাশ, সোলে কীর্তিলাভ, মললবারে মৃত্যু, বুধবারে পুত্রলাভ, পুরুম্পতিবারে অর্থনাশ, গুক্রবারে শোক ও শনিবারে দীর্ঘায়ু-লাভ হয়।

"অর্কে নৃনং দছতি হ্বনয়ং কীর্ত্তিলাভন্ত সোমে
ভৌমে মৃত্যু ওবিতি নিয়তং চক্রতে পুক্রলাভঃ।
অর্থমানি ওবিতি চ গুরৌ ভার্গবে শৌক্ষুক্তঃ
তৈলাভ্যলাং তনয়ময়ণং স্থাজে দীর্ঘমায়ঃ॥" (ব্যোভিত্তই)
স্থত অপেকা তৈল মর্দম করিলে ৮ গুণ অধিক ফল হয়।
"স্থানষ্টগুণং, তৈলং মর্দয়েং নতু থাবয়েং।" (বৈদ্যক)
তৈলক (ক্নী) স্বয়ং তৈলং, অরার্থে-কন্। অরপরিমাণতৈল।
তৈলকমা (পুং) তৈলপ্রধানঃ কন্দঃ। কন্দবিশেষ, পর্যায়—
'ভাবককমা, তিলান্বিভালন, কর্বীরকন্দসংজ্ঞ, তিলচিত্রপত্রক।
ইহার গুণ লোহভাবী, কটু, উষ্ণ, বাত, অপস্মায়, বিষ ও
শোকনাশক। (রাজনিং)

তৈলকক্ষক (পুং) তৈলাৎ তিলসম্বন্ধিনঃ কৰাজ্জায়তে মন-ড। তৈলকিষ্ট, তেলের কটি-থৈল।

তৈলকার (পুং) তৈলং করোতি ক্ব-অণ্। বর্ণসন্ধর জাতি বিশেষ; কলু, তেলী, ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণের মতে কোটক-জাতীয়া ত্রীর গর্ভে ক্স্তকারের ঔরসে এই জাতির উৎপত্তি হইরাছে। পর্যায়—খ্সব, চাক্রিক, তৈলী। (হেমচ°) যাত্রা-কালে এই জাতি দেখিলে অমলল হয়।

"मन्नीमक्नाः दाका श्रदा वर्षानि वर्षानि ।

कुछकातः देखनकातः व्याधः मर्त्पानकीविनः ॥

(ব্ৰহ্মবৈ গণপতিখ ৩৫ অ)

তৈলকিট্ট (জী) ভৈলস্ত কিট্টং ৬ডং। তৈলমল, ধৰি, ধৈল।
পণ্যায়—পিস্থাক, ধৰি, তৈলকজন। ইহার' ঋণ-কট্ট,
গৌল্যা, কফ, বাত ও প্রমেহনাশক। (রাজনি')
তৈলকীট (পুং) কীটভেদ, তেলিনী কীট।

কৈলকা (ক্নী) তিলকন্ত ভাবং কর্ম বা তিলক-বক্ (পডান্ত পুরোহিতীদিভো বক্। পা ধাস্স্স্স্ত তিলকের ভাব বা তিলক কার্যা।

তৈলক (পুং) দেশবিশেষ, জীনৈদ্ হইতে আরম্ভ করিয়া চোলরাজের মধ্যভাগ পর্যান্ত ভৈলক, জিলিক দেশ। " শ্রীনৈনংকু সমায়ত্য চোলেশাত্মধ্যতাগতঃ। তৈলদদেশো এদবেশি ধ্যানাধ্যয়নতংপরঃ ॥" (শক্তিনদ্দ)

এথানকার ভাষা তিলিক বা ভেলগু। [তিলিক শংক বিশ্বত বিবরণ দুইবা।]

তৈলক্ষমানী, একজন মহাপুক্ষ। ভারতবর্ষ মহাপুক্ষ
গণের লীলাভূমি। কত শত মহান্মা এইদেশে জন্ম প্রহণ
করিরা প্রভৃত উপকার সাধন করিয়া তিরোহিত হইরাছেন,
কে তাহার ইয়ভা করিতে পারে। মহান্মা তৈলক্ষামা
কাশী-ধামের এক অম্লা রত্ন; ইহাকে দেখিলে আভ্যন্তরিক
তামিনিক ভাব সকল বিদ্রিত হয়, এবং সান্ধিক ভাবে হনর
পরিপূর্ণ হয়, যাহারা ইহার সৌমামূর্ত্তি একবার নিমীকণ
করিয়াছেন, ভাহারাই এই কথার যাধার্য্য অফ্ভব করিতে
পারিবেন, বিদেশীয় যাত্রিক ও সাধু সকল যেরপ ভক্তিসহকারে বিশ্বেমর, অয়পুর্ণী ও মণিকর্ণিকাদি দুর্শন করিতেন,
এই মহান্মাকেও সেইরূপ ভক্তি সহকারে কর্মন করিয়া
আন্মাকে চরিতার্থ জ্ঞান করিয়া বিমল অনির্কাচনীর পবিত্র
ক্রথ অফ্ভব করিয়াছেন।

चामारमत्र रमर्म मार् भूक्षिमिशत जीवनी निजास कर ভমস্চির মহাত্মা তৈলকখামী সহস্কেও তাহাই, অসুস্কানে যতদুর অবগত হওয়া গিয়াছে, এছলে তাহাই প্রকটিত হুইল। এই মহাত্মার প্রাকৃত নাম ত্রৈলিকত্বামী, ইনি জাতিতে ব্রাহ্মণ, দাক্ষিণাত্য প্রদেশে বিজনা গ্রাম নামক জনপদন্থিত হোলিয়া নগর ইহার জন্মস্থান। ১৫২৯ শতাকার পৌষমাদে ইনি জন্ম গ্রহণ করেন, ইহার পিতার নাম নৃসিংহ ধর। নৃসিংহধর সঙ্গতিপর লোক ছিলেন, তাঁহার ছই বিবাহ, প্রথম পক্ষের পুত্রের নাম ত্রৈলিকধর, বিভীয় পক্ষের পুত্র শ্রীধর। ৪০ বংসর বর:ক্রম কালে ত্রৈলিক্সের পিতৃবিয়োগ হয়। ইহার মাতা বিভাবতী ও বিলক্ষণ বৃদ্ধিমতী ছিলেন। পিতার মৃত্যুর পর তৈলিক ভাহার মাভার নিকট বিদ্যাভ্যাস ^{করি} তেন, এইরূপে ধাদশ বংসর কাল অতিবাহিত করেন, এবং এই সময় মাতার নিকট কিছু কিছু যোগ^{নিকাও} कक्तिग्राहित्मन, ट्रेजिनिक्तंत्र वहन वधन ६२ वश्मत्र, ७४न छारा মাতৃবিরোগ হয়। মৃত্যুর পর ভাহার মাতার বে ^{ছানে} अरखारिकिश कता हरेताहिन, जिनित्र उथा हरेरा आत वारी প্রত্যাগমন করেন নাই। গ্রীধর ত্রৈনিক্সকে গৃহে আনিবা জন্ম অনেক চেষ্টা করিয়াছিবেন, বিশ্ব কিছুভেই *ফুড*ৰা^{ৰ্ছ} হইতে পারেন নাই। 🎾 বিশিক প্রীধরকে এই বশিরা বি^{নার} করেন, 'ভাই, আর কেন, মারামর সংসালে আর আহি

लावन कविव मा, वाहा किছू रेनक्कनम्बाख चारक, चक्का ভোগ কর।' প্রীধর তথা হইতে খরে ফিরিয়া আসিয়া তথার रेखनित्त्वत बारमाशरशंत्री शृह निर्याण कत्राहेश नित्रा छ्ठाक क्रांत्र चाहात्रापित्र रावश क्रित्रा पिरनन्। जनविष जिनिष-ধর সেইস্থানে মাতার উপদিষ্ট যোগ অভ্যাস করিয়া বিংশতি ৰংসর কাল অভিবাহিত করেন। এই সময় পশ্চিম প্রদেশে লাতিয়ালারাজ্যে বাস্করগ্রামে ভদীরথখামী নামে এক ক্লপ্রসিদ্ধ যোগী বাস করিডেছিলেন, ঘটনাক্রমে একদিন বৈলিল্খর তাঁছার নম্নপথে পতিত হন। ঐ স্থানে উভয়ের অনেক ৰাক্যালাণ হয়, খনস্তর কিছুদিন উভয়ে একস্থানে অব্যিতি করেন। পরে তথা হইতে ভগীরথবামী তাহাকে সম্ভিব্যাহারে লইরা পুরুরতীর্থে গমন করেন, উভয়ে এই ভানে দীর্ঘকাল অবস্থিত করায় তৈলিলধর ভাগারথমানীর निक्रे विलयक्र (यांशिका क्रियाहित्व। এই शान ভগীরপস্বামীর নিকট দীক্ষিত ইইলে তিনি ভৈলিম্বধরকে গ্রপতিস্থামী বলিয়া অভিহিত করিতেন। পরে ইহারা নানাতীর্থ পরিভ্রমণ করিয়া যথন ৬ কাশীধামে উপনীত হই-लन, ज्यन कानीवानी लाक नकने हेहारक देवलिक्याभी বলিয়াই আহ্বান করিত। কিছুদিন পরে ভগীরথম্বামী পুদর তীর্থেই দেহত্যাগ করেন। স্বামীজীর দেহত্যাগের পর ত্রৈলিক্সবামীও তীর্থপর্যাটন মানদে উক্ত স্থান হইতে বহির্গত হইলেন, কিছুদিন এইরূপ ভ্রমণ করিয়া সেতৃবন্ধ রামেখরে উপনীত হন, তথায় মহারাষ্ট্রদেশীর অন্ধরাও নামক একজন ত্রাহ্মণকে শিষ্ম করেন। কাত্তিকমাসের শুক্লাপঞ্চমীতে মহাসমীরোছে একটা মেলা হয়, এই মেলায় বহুসংখ্যক যাত্রীর সমাগম হইয়াছিল। তৈলিকস্বামীর স্বদেশবাসী কএকটী याजील এইখানে आनिवाहित्नन, উशता देवनिक्याभीत्क প্নরায় গৃহে যাইবার জন্ম বারস্বার বিরক্ত ক্লরায় তিনি সেই ন্থান পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণে স্থলামাপুরীতে গমন করেন। পরে এই স্থান হইতে নেপালে গমন করিয়া কিছুকাল যোগা এখানেও লোকাধিকা দেখিয়া তিব্বতে গমন করেন, তথা হইতে মানস সরোবরে গমন করিয়া দীর্ঘকাল ধরিরা যোগাভাাস করেন। পরে এইস্কাল পরি-जाभ कतिया नर्पनाननीज्छ भ्रम कतिया मार्क छत्र अधित আশ্রমে বাস করিতে থাকেন। এই স্থানে স্থানেক মহাত্মার -সহিত সাক্ষাৎ ও আলাপ হয়। এই আ**ল্লমে থাকী**বাবা এक मिन यथा नयस नमी अटि यारेट अहम, अमन नमम तिथ-त्वन नहीं इब क्रम बात्रन क्तिया दिल्लिकवायीत निक्छे উপरिष रहेबार । जिनिस्यामी ७, व्यमास मान मिर क्य

भान कतिरहर्देन। थाकीवावा अहे बादन व्यातिरहरे नही हुई-ক্ষপ পরিহার করির। স্বাভাবিক স্থাকার ধারণ করিল। এই **অভ্যাশ্ব্য ব্যাপার দেবিয়া ভিনি ভত্তিত হইলেন এবং এই** রাজে বোগাভাাদে না পিরা আশ্রমে প্রভাার্ভ হ্ইলেন এবং তথার অভাভ মহামানিগের নিকট এই অভৃতপূর্ব বৃত্তাত আদ্যোপাত বর্ণন করিলেন। তথন সকলেই স্বামী-कीत क्रमाधात्रण क्रमजात्र विवत्र खाउ स्टेबा भूकी(भक्ता खिक्र, अका थ अकास जाया अमर्जन कतिराज्यातिरानन । जनसूत्र चामौकी এই दान इटेर्ड धातांगशारम् कि ह्रकान् अविदेउ • • করেন, তাহার পর ৮ কাশীধামে আসিয়া অসীঘাটে তুলসী-দাসের বাগানে গুপ্তভাবে বাস ক্রিতে এই সময় ৮কানীধাম নানাপ্রকৃতির অসংলোকে পরিবৃত ছিল না। তথনকার অধিবাসিগণ অধিকাংশই সাত্তিক-সভাব ও ধার্ম্মিক ছিলেন। স্বামীনী তুলসীদানের বাগানে অবস্থিতিকালীন মধ্যে মধ্যে লোলার্ককুণ্ডে গমন করিতেন। অনেক উৎকটরোগী রোগের ফ্রণায় অন্তির হইয়া স্বামীকীর **मंत्रगां भक्र हरेल जिलि मंत्राभवयम हरेवा जाहामिश्यक (महे** উৎকট রোগ হইতে আরোধ্য করিয়া দিতেন। ক্রমে অনেক্ল লোক আসিয়া ভাহাকে বিরক্ত করিতে লাগিল। তথন তিনি দশাখনেধ ঘাট প্রভৃতি স্থানে আসিয়া বাস করিতে লাগিলেন। তাহার তাৎকালিক অমামুষিক কার্য্যকলাপ অভীব আশ্চৰ্যাজনক। তিনি কোন দিন শীতকালে ত্ঃসহশীত **অত্তেও জ**লের মধ্যে অবস্থান করিতেন। আবার গ্রীষ্মকালে প্রচণ্ড গ্রীষ্মের উদ্ভাপে যথন সাধারণ লোক বাহির হইতে সাহসী হইত না, তথন তিনি অবলীলাক্রমে ছ:সহ উত্তপ্ত বালুকায় শয়ন করিয়া থাকিতেন। কথন অৱেষণ ঁকরিয়া আহোরাদি করিতেননা। যথন কোন খাদা এব্য **८कर मूर्यत्र निक्छ धतिष्ठ, व्यवाद्य छ**्रम्मूनात्र जिनि थाहेन्ना ফেলিভেন। তাহাতে কোন জাতি বা পাত্রাপাত্র কিখা থাদ্যাথ্যদ্য বিচার করিভেন না। লোকে কোন সময়ে ভাহাকে ২০৷২৫ সের পরিমাণ জিনিস খাওয়াইসী দিল, আবার পরকণেই বে যাহা দিল অনায়াসে তাহাও থাইয়া কেলিলেন। পূর্ব্বে সকলের সহিত কথোপকথন করিতেন, কিন্তু এই স্থানে আসিয়া অবধি প্রায় কাহার সহিত আলাশ করিতেন না। ভবে সময়ে সময়ে ছই একটা মাত্র কথা কহিতেন। শাস্ত্রের কোন ছুর্বোধ্য বিষয় উপস্থিত হইলে স্বামীলীকে মধ্যন্থ রাখিলে তিনি তৎক্ষণাৎ তাহা 'মীমাংসা করিয়া দিতেন। যত্ন করিয়া ভাৰ্তিক যে খাদ্য দেওৰা ঘাইত, অমান বদনে ভাৰ্তি থাইৱা क्लिएडन। ৺कानीशास अस्तक धर्मभन्नात्रण लाक आणित्रा

থাকেন, একদিন কোন ধনবান্ ব্যক্তি ২০ জরির স্থা-বলর স্থামীলীর হতে পরাইর্লীদেন, কতক গুলি ছই বৃদ্ধি (কাশীর গুডা) লোক উহা কইবার মানসে স্থামীলীকে, মদ খাওরাইরা জ্ঞান হইলে লইবে, এই মনে করিয়া ৭০৮ বোতল মদ খাওয়াইয়া দের, কিন্তু স্থামীলীর ইহাতে কিছুই হইল না। পরে স্থামীলী নিল হত্ত হইতে এই স্থাবলয় খুলিয়া ভাহাদিগকে দেন।

- স্থানীকী সর্বাণ উলক্ষ ইয়া বেড়াইতেন, একদিন পুলিশ কর্ত্ব হৃত হইয়া, ম্যাজিট্রেট সাহেবের নিকট নীত হন।
 সাহেব উলিল হইয়া বেড়াইতে নিষেধ করেন এবং বলেন;
 ভূমি কাণ্ড না পড়িলে থানা থাওয়াইয়া দিব। স্থামীজী
 সাহেবকে এই কথায়৽বলেন য়ে, ভূমি আমার খানা থাইলে
 আমি ভোমার খানা খাইব; সাহেব ভাহাকে জিজ্ঞানা করেন
 ভোমার খানা কি রূপ + স্থামীজী এই রূপ জিজ্ঞানিত
 হুইলে ভংক্লণাং মূল ভাগের করিয়া থাইতে আয়স্ত করিলেন।
 ভথন সাহেবের চৈত্ত হইল, ভিনি স্থামীজীকে ছুাড়িয়া দিয়া
 যথেছা বেড়াইতে অনুস্তি দিলেন।
- দ্যানন্দ সরস্থতী যথন কাশীধামে আসিয়া হিন্দুদেবদেবীর অসারত্ব প্রমাণ ও অযথা নিন্দাবাদ করিয়া সাধারণ লোকদিগকে মাতাইয়া তুলিতেছিলেন। "একমেবাদিতীয়ং" এই
 মত সাধারণে প্রচার করিতেছিলেন, অনেক লোক মন্ত্রমুগ্রের
 ছায় সীয়ধর্মে অনাছা প্রকাশ করিতে লাগিল, দিন দিন
 দয়ানন্দের দল পৃষ্ট হইতে লাগিল, পরে স্বামীজীর শিশ্বগণ এই
 সংবাদ মহাত্মা তৈলক্ষ্মানীকে নিবেদন করিল। স্বামীজী
 এই সংবাদ শুনিয়া তাহার শিশ্ব মঙ্গলপ্রসাদ ঠাকুরের হত্তে
 একটু কাগজে বিথিয়া পাঠাইয়া দিলেন, দদানন্দ এই কাগজ
 পাঠ করিয়া কাশী পরিত্যাগ করেন, কাগজ্বে যাহা লেখা
 স্বামীজী ও দ্যানন্দ ভিন্ন আর কেহ জানিতে পারে নাই।

১৮০৫ শতাকীতে ৮ কাশীধামে পঞ্চলার পর্স্তে তৈলকভামী "লাট" নামে একটা প্রস্তের নির্দ্দিত শিবলিক ভাপিত
করেন এবং ইহার কিছুকাল পরে পঞ্চালার উপরে যে
আশ্রমে বাস করিতেন সেই আশ্রমে মহাসমারোহে তৈনিকেখর নামে আর একটা শিবলিক সংস্থাপিত করেন। মকলপ্রসাদ ঠাকুর ইহার সেবক নিযুক্ত হন। এই আশ্রমে
ভামীজীর একটা মৃর্তিও বিশ্বমান আছে। কাশীবাসী ও
যাত্রিগণ এই মৃত্তি ভক্তিসহকারে দর্শন করিয়া থাকেন।

মহাত্মা তৈলক্ষামী দেহত্যাগ করিবার ১৫ দিন পূর্বে মৃত্যুর বিষয় সেবকগণকে জানাইয়াছিলেন, এবং তিনি যে গৃহে বাস করিতেন, সেগৃহের সমস্ক বার ক্ষম করিতে অন্ত্রতি দিরা সমাধিত্ব হইরাছিলেন, পরে কালপূর্ব হর্তে সন্থার পূর্বে সমত দরলা পূলিতে অন্ত্রতি দিরা বাহিত্রে আসিলেন, বাহিত্রে আসিরা বোগাসনে উপবেশন করিলেন পরে আত্মাকে পরবজ্ঞে নীন করিয়া দেহ পরিজাগ্র করিলেন।

শকাম্বা ১৮০৯ পৌষমাস শুক্লাএকাদশীর দিন সারংকানে শামীশী কলেবর ভ্যাগ করেন।

মহাস্মা তৈলক্ষামীর প্রকাশিত "মহাবাক্যরত্নাবলী' নামে একথানি সংস্কৃত গ্রন্থ দেখিতে পাওয়া বার। মহাবাক্য রত্নাবলীতে নিম্নলিখিত উপদেশপূর্ণ বিষয়গুলি লিখিত আছে।

বন্ধনমোকবাক্য, বিৰক্তিকাবাক্য, উপদেশবাক্য, জীৱ-ব্ৰক্তৈক্যবাক্য, মননবাক্য, জীবন্ধুক্তবাক্য, সমোধিবাক্য, অন্তৰ্ভবাক্য, সমাধিবাক্য, অন্তৰ্ভবাক্য, প্ৰালক্ত্ৰভবাক্য, জীবিঙ্গ অৱপৰাক্য, নপুংসকলিক্ত্ৰভ্ৰপবাক্য, আত্মস্ত্ৰপবাক্য, ফলবাক্য ও বিদেহবাক্য'।

মহাবাক্যরত্বাবলীতে ইহাই সুন্দরদ্ধপে নিধিত হইরাছে।
স্থামীজী এই দীর্ঘজীবন লাভ করিয়া অমরত্ব লাভ করেন,
তিনি মৃক্ত পুরুষ। শিষাগণ তাঁহাকে দ্বিতীর বিশ্বেশ্বর বলিয়
জ্ঞান করেন। এই মহাপুরুষের স্বরূপ প্রকাশ করা ভাষার
অসাধ্য। ইহার রূপা লাভ করিয়া অনেক লোক হংমাধা
ব্যাধির হাত হইতে নিছতি লাভ করিয়াছে, এই স্কন
লোকের মধ্যে অনেক লোক অস্থাপিও জীবিত আছে।

অনেক গোক ইহার শিশুছ লাভ করিয়া আপেনাকে । মনে করিয়াছেন।

ইহার শিষাগণ ইউদেবের স্থায় ইহারও নাম প্রাতঃকাণে শ্বরণ করিয়া থাকেন।

তৈলচোরিকা (স্ত্রী) তৈলং চোরমৃদ্ধি চুর ধূল্ পূষো সাধ্। তৈলপায়িকা, তেলাপোকা।

তৈলটোরিকা (ত্রী) তৈলক্ত চৌরিকেব। ভৈলপারিকা। তৈলক্ত্রিকী) তৈলক্ত ভাব: তৈল-ত্ব। তৈলের ভাব, তেলের খুণ। তৈলদোপী (ত্রী) তৈলপূর্ণা দোপী মধালোও কং। কঠ পর্যার সজ্জনার্থ তৈলপূর্ণ কাঠাদিনির্মিত পাত্রবিশেষ। এই পারে অবস্থান খুণ—বাতরোগ, ব্যাধি, কুঠরোগ, পঙ্গু, বার্ধিগ মিন্মিন, গদ্গদ, হবলন্তক, পৃঠপ্রচলিত, পবন, গাত্রকল, গ্রীবান্তল, স্পণতন্ত্র, কয়, ক্ষির মৃত্রক্ত্র, বন্ধি এই নকণ রোগে হিতকর। (রাজনিং)

রাজা দশরবের মৃত্যু হইলে ভাহার শরীর ভৈলজো^{নতে} রক্ষিত হইরাছিল। তৈলজোণীতে মৃত শরীর রক্ষা করি^র শীঅ পচিয়া বার না। "তৈলজোণ্যাং তনামাত্যাঃ সংবেক অস্তীশভিং। দ্বান্তঃ সর্বাণাধানিষ্টাশ্চক্ঃ কর্বাণ্যনন্তরং ॥"

(श्रामां शक्का ३८)

তিলধান্য (ক্লী) তৈলোপৰোগি ধান্তং। তৈলোপৰোগি সত্ব লক্ত। তিল, জতদী, ভোরী এই তিন প্রকার সর্বপ, ছই প্রকার রালী, খন ও কৌহস্তবীল ইহাদের নাম তৈলধান্ত। "তিলো হতদী চ তোরী চ ত্রিবিধশ্চাপি সর্বপঃ। থিগা রালী খনকৈব বীলং কৌহস্তবন্তবং॥ এতানি তিলধান্তানিত্যকেব্ তিলাদিষ্।"

তৈলপক (পুং) তৈলং পিবতি পা-ক। তৈলপায়িকা। তৈল হরণ করিলে পরজন্মে তৈলপায়িকা হইরা জন্মগ্রহণ করিতে হর। "মাংসংগুদ্রো বপাং মল্প তৈলণ কৈঃ ধগাঃ।" (মহু ১২।৬৩) 'তৈলং হারা তৈলপায়িকাধ্যঃ পক্ষী ভবতি'. (কুরুক্)

তৈলপূৰ্ণক (পুং) তৈলোক্তমিব পৰ্ণং বত কপ্। গ্ৰছিপৰ্ণ বৃহ্ণ, গেড়েশা গাছ।

তৈলপূর্ণিক (রী) তৈলং তৈলযুক্তমিব পর্ণমন্ত বা তিল-পর্ণো বৃক্ষ উৎপত্তিস্থানন্তে ক্ষেত্র ঠন্। > হরিচন্দন। ২ চন্দন-ভেন। পর্যায়—শ্রীপশু, চন্দন, শুদ্রশ্রী, তৈলপ্রণিক, গন্ধনার, মলয়ন্ত্র, চন্দ্রহাতি। (ভাব-প্রণ) ও বৃক্ষবিশেষ।

"কালীয়কা তুকুলাশ্চ হিল্ববৈত্তনপৰ্ণিকাঃ " (হরিবং ২২৩৬৮)
তৈলপূপী (স্ত্রী) তিলপূর্ণে বৃদ্ধে আতঃ তত্ত্ব আত ইত্যুণ্
ততোঙীপ্। ১ চন্দন। ২ শ্রীবাদ। ৩ দিহলক। (মেনিনী)
তৈলপা (স্ত্রী) তৈলং পিবতি পাকটাপ্। তৈলপায়িকা,
তেলাপোকা।

তৈলপায়িক। (বী) ভৈলং পিৰতি পা-ধুল্ টারি অভইছং।
কীটবিশেষ, ভেলাপোকা। পর্যায়—পরোকী, ভৈলচৌরিকা
ভৈলপা, ভৈলাধুকা, ধলাধারা। (জটাধর)

তৈলপায়িন্ (গুং) ভৈলং পিৰতি পা-ণিনি। তৈদগায়িকা, ভেলাপোকা।

তৈলপিঞ্জ (গং) তিলপিঞ্জ, নিম্বল তিল।
তৈলপিনীলিকা (ত্রী) তৈলপ্রিরা পিনীলিকা। পিনীলিকা
তেরা, রালাপিপড়ে। পর্যার—উদন্যা, কপিজাজ্মিকা।
তৈলপীত (ত্রি) পীতং তৈলং বেন, সমাসে পর্যানপাতঃ।
পীততৈলক, বিনি তৈল পান করিয়াছেন ।

শততেগক, বিনা তেল পান স্বারম্বাছেন।
তৈলপিষ্টক (গং) তৈলভ পিটক:। তৈল্ফিট, বৈল।
তৈলফল (গং) তৈলপ্রধানং ফলং বহাঁ। ১ ইঙ্নী। ২ বিজীতক।
তৈলভাবিনী (জী) তৈলং ভাবরতি সন্গন্ধং করোভি ভূশিহ্ণিনি ত্তীপ্। ভাতীত্লপাছ, তৈলবাদক, ভাতীপুল
বুক্, চামেলীত্লপাছ।

তৈলম্পন (क्री) ভৈলজ মৰ্থনং। ভেল নাথা। তৈলমালী (জী) ভৈলানাং মালু সমূহো যত্ত ভাষ্। বৰ্তি, দীপদশা, প্ৰিতা।

তৈলম্পাত (ত্রী) তিলগাতোহতাং বর্ততে তিলপাত এ মুদ্ (বঞ: সাডাঙ্কিবেতি এ:। গা ৪।২।৫৮। ভেনতিলড পাতে এে। পা ৬।৩।৭১) ১ বধা। বধা এই মরোপুলক্ষিত শ্রাহ্ব।

ভৈল্যন্ত্র (পুং) ভৈলমর্দনার্থং বরং। ভিলাদি নিশীড়নার্থ বরভেদ, কলুর ঘানি।

"অমীমাংস্থানি শৌচানি তৈলযক্ষেত্রাঃ ;" শ্বিতি) তৈলাবক (পুং) তেলুন্পস্থ বিষয়ো দেশঃ রাজ্ঞাণ বুঞ্। তেলুন্পের দেশ।

তৈলবল্লী (জী) তৈলাকেব বলী। লবু শভাবরী, শতমূলী। তৈলসাধন (জী) তৈলং সাধয়তি অগনীকরোতি সাধ নিচ্ লুটে। গন্ধব্যবিশেষ, কাকলা। পর্যায়—কাকোল, কোলক, গন্ধব্যাকুল, কলোলক, কোষফল। (শক্চণ)

তৈলক্ষটিক (পুং) ভৈৰাজঃ কটিক ইব। তৃণমণি। গোমেদমণি। এক প্ৰকাৰ মুখ্য কঠিন উভিদ্পদাৰ্থ, ইহা সমুস্ততীরে জন্মে।

তৈলস্মন্ধ (ত্রী) তৈলমিব ক্সন্তি ক্সন্সচ্। ১ খেড গোকর্ণী। ২ কাকোনী। (পারস্কর নিঘণ্টু)

তৈলাক্ত (বি) তৈলেন আকং। তৈলমৰ্দিত। তৈলাধ্য (গুং) ভুক্ত নাম গদ্ধত্ব্য, শিশারস।

তৈলাগুরু (ক্লী) তৈলাজমেৰ অগুর:। নাহাগুক নাম স্থান্ধ অবী।

তৈলাটী (স্ত্ৰী) তৈলেন তৈলপ্ৰদানেন অটতি দ্রীভবতি * অট-অচ্পোনা ভীষ্। বরটা নামক কীট, বোলতা।

তৈলাধার (পুং) তৈলক আধার:। তৈল রাথিবার পাত্র। তৈলামুকা (স্ত্রী) তৈলং অদু অলমিব পেরং যক্ষা: কপ্টাপ্। তৈলপারিকা, তেলাপোকা।

তৈ লিক (পৃং) তৈলং পণ্যদ্বেনান্ত্যক্ত তৈল-ঠরু। তৈলকার, ভুগবিক্ষেতা কলু।

তৈলিম্ (ত্রি) তৈলং নিশাছদেনাত্মত তৈল-ইনি। ১ তৈলকার। ২ তৈলযুক্ত।

তৈলিনী (স্ত্রী) ভৈলং ভক্ষেন আগ্রহম্বেন বা অন্তান্ত ভৈল-ইনি-ভীপ্। কীটভেদ, পর্যার—ভৈলকীট, বদুবিদ্ধা, দজ্ঞ-নাশিনী। (রাজনিং)

তৈলিশালা (লী) তৈলিনঃ শালা। যত্ৰগৃহ, তৈল্নিশীড়-নাৰ্থ গৃহ, যানিষয়।

VIII

शृक्षक विज्ञीत निश्वानत्व चारबादन करवन । धार स्थ রাজগণই ভোগলক্ বংশ বলিয়া ইভিহাসে জ্ঞানিয়া ভোগন্ম वः ध्य ८व कश्रक्षन त्रांका हहेत्राहित्नन, **छोहात्मत्र धक्**छै वःव

छानिका (मध्या हरेन। প্রাস্থান ভোগলক্ (१०२४-१०२६ धुः खः) সিপাসলয় রজক মহমাদ বাঁ (উদূব বাঁ) (>956.3960) ে ফিরোব্র ভোগলফ (7067-7044) জাফর খাঁ মহম্মদ তোগলক नामिक्षमीन् আব্বকর (8664-6664) (>&-&4&)

ভ্মায়ুন

(860く)

(टेज्यूत कर्ज्क मिल्ली-अधिकात) তোটক (ক্লী) বাদশাক্ষরপাদছন্দ, এই ছন্দের প্রতি চরণে ১২টা অক্ষর থাকে। লক্ষণ---

(3028-7878)

ফতেখা

তোগলক শাহ

(> 346 - > 349)

গদাহদীন

"বদ তোটকমন্ধিসকারযুতং" (ছন্দোম)

ইহতোটকমমুধিলৈ প্রতিথং" (র্ত্তণ রং)।

ইহার প্রত্যেকের আদি ছইটা বর্ণ লঘু, তাহার পর একট ে গুরু, যথা---

৩।৬।৯।১২ এই কর্মটী বর্ণ গুরু, অবশিষ্ট বর্ণ লঘু।

তেড়ি (দেশজ্) নদীর প্রবদ স্রোত।

তোড়ন (क्री) ভুড়-ভাবে লাট। ১ ভেদন। ২ দারণ ৩ হিংসদ।

ভোডল (রী) ভরভেদ, ভোড়লতর।

তোড়া (দেশৰ) > টাকার থলিয়া, বগ্নী। ২ প্রভৃত তি^{রুরা} করান ৩ পূষ্পঞ্চহ, ফুলের ভৌড়া।

তোড়া, মাস্তাজ প্রদেশের সম্বর্গত নীর্গারিনিবাসী এক ^{বস্তু} লাভি। কাহারও মতে ভামিল 'ভোরবন্' বা 'ভোর শক হইতে ভোড় বা ভোড়া শক বাহির হইরাহে। ইয় অৰ্থ পশুপাল বা যুখ।

ভোড়াদিগের মতে চান্নি গাঁচটা যুথ আছে, ভবুগো ^{হুই} निः म्बद्धात्र।

তৈলীন (রী) ডিগানাং ভবনং কেন্তং ডিগ-খঞ্। (বিভাষা ভিলমাবেতি। পা থাযাঃ) ভিলক্ষেত্র, ভিলের ক্ষেত্ত। ["]তিলোম্বেটিডং যন্তু ভিল্যং,ভৈলীনমিত্যপি।" (শক্ষশ্পাব॰) ঠৈজ্বক (ত্রি) লোধ। [তিবক দেধ।] न्तर्भिः পেয়ং তৈত্বকং বা পেয়ং বা" (স্থ শত উ॰ ১০ অ॰)

হৈত্ৰক (অি) ভীব-বৃৰ্ঞ্ (রাজভাগিছো। বৃঞ্ । পা ৪।২।৫৩) তীব। [তীব্ৰ দেখ।]

ৈত্রদারব (বি) তীরদারণ ইনং রলভানিষাৎ অঞ্। তীব্রদারুসম্বন্ধী।

ঠিন্তম (পুঞ) তৈবী তিয়ানক্ত্রমূক্তা পৌর্ণমানী অস্মিন্ ইতি ভৈষী দান্দ্ৰিন্ পৌৰ্থাদীতি অণ্। পৌষ্থাদ। শুক্ল প্ৰভিপদ্ হইতে অমাবভা পর্যন্ত চাক্র পৌৰমাসের নাম তৈব, পৌষ-মাসের পূর্ণিমার দিন তিধ্যনক্ষত্রবৃক্ত হয়।

তৈষী (খ্রী) ডিয়েণ নক্ষেণ যুক্তা ডিয়-অণ্। 'ডিয়া প্রায়ে र्नकवामि बरनाशः' दें ि बरनार्शः छी । श्यानकवय्का 'পোর্থমাসী।

"তৈদ্যা মধীত পূৰ্বাণাং" ('আৰ' শ্ৰৌ' ৮৷১৪৷২২) ,েতা (পারসী) ন্তবক, ভাঁজ, ন্ডর।

কোক (क्री) ভৌতি প্রয়তি গৃহং তু-বাহণকাৎ-ক। অপত্য, পুত্র, হৃহিতা।

"তোকং পুষ্মেম তনয়ং শতং ছিমাং" (ঋক্ ১।৬৪।১৪) ২ শিশু, বালক।

"(जारकम कीवहत्रगः यङ्गृकिकात्राः" (जानः २।१।२१) তোকবৎ (ত্রি) ভোকং বিশ্বতেহন্ত ভোক-মতুপ্, মন্ত ব। পুত্রাদিযুক্ত, পুত্রপৌত্র সহিত। "সহস্রবৎ তোকবংপুষ্টি মৰম্ম।" (ঋক্ ৩১৩।৭) 'ভোকবং পুদ্ৰপৌজ্ঞাদি সহিতং' (সায়ণ) তোকু (পু:) ভক্তি হসন্তি আনন্দিতা ভবন্তি লোকা অনেন जिक-वाहनकार म अविका > हिन्दर्ग व्यापक वर्ग । २ हिन्दर्ग। ও মেঘ। (ক্লী) ৪ কর্ণমল। ৫ নবপ্রারাড় যব, যবাস্থ্র। শ্রায়নীয়স্ত তোক্সানি" (শুক্লযজু° ১৯৷১৩) 'তো**ন্মানি নবঞ্চর**ঢ়-यवाः' (८८ मनीभ) ७ शह्यवामित्र व्यक्त ।

"গন্ধনিৰ্যাসভন্মান্থি তোকৈঃ কামান্ বিতন্ধতে।" (ভাগ° ১০৷২২৷২৫) 'ভোকাঃ পলবাতত্ত্বাঃ' (ত্রীধর) তে ক্রিন্ (ক্রী) ভক-মনিন্ প্বোদরাদিখাং অভ ওছং।

১ নবপ্রারু ঘব। ২ অপেণ্ড্য। (নিমণ্ট্র) তোকক (পু:) পকিবিশেষ। ('Cuculus melanoloucus) তোগলক্ (তুঘলক, তুগলক্)—স্থৰ্গভান গ্ৰাহ্মদীন্ বল-বনের একজন কুডদান। তাঁহার পুত্র (১৩২১ খুটাকে) একশাহকে বিনাশ করিয়া গলাক্ষীন্ ভোগলক্ লাম এছণ-। এই থাতি দেখিতে লখা, শরীরাজ্মণ গঠন, বলিষ্ঠ, খাধীন প্রকৃতি। ইহাবের নাসিকা বেশ-লখা, ললাই বিজ্ঞ, পশুসুল পোল, চিবৃক ও জর কেশ খন রক্ষবর্ণ, দেখিতে বেন পাশ্চাত্য সভ্য ভাতির এক শাখা বলিরা বোধ হয়। ইহাবের যেমন খভাব, পোবাকেও সেইরূপ একটু বিশেবত্ব আছে। ইহারা একথানি কাপড় জড়াইরা পরে। ত্রী প্রকৃষ উত্তরেই মাধার পাগ্ডী ব্যবহার করে।

তোড়ারা স্বভাবতঃ অতি অপরিষার থাকে। ইংানের মধ্যে এক রমণী বহুপতি,প্রহণ করিতে পারে। সচরাচর হুই চারি ভ্রাতার এক রমণীকে বিবাহ করে।

পো মেষাদির পালনই ইহাদের প্রধান উপন্ধীবিকা। সকলেই প্রার ছগ্মশালা পোরালঘর লইরাই ব্যক্ত। ইহারা প্রধানত: ছগ্ধ, দধি, মৃত এবং নানা প্রকার ক্ললারাদি ধার।

ইহারা কুঞ্চবনে ঘর বাঁধিয়া বাস করে, তাহাকে 'মঙ্গ' বা 'মল্ড' বলে। প্রতি মণ্ডে প্রায় ধ থানি করিয়া কুটার থাকে, তর্মধ্যে তিনথানি বসবাসের জন্ত, একথানি হয় দধি রাখিবার ভাঞার ও অপরথানি গোয়ালঘর। ঘরগুলি দূর হইতে দেখিতে বাদামী, এক একথানি ১০ ফিট্ উচ্চ ১৮ ফিট্ দীর্ঘ এবং ৯ ফিট্ বিভ্ত, এই সকল ঘর বংশনির্মিত ও গোময়াদি লিপ্ত। ঘরের ভিতর ৬ হইতে ১০ হাত পর্যান্ত চৌড়া। ইহার মধ্যে একত্থানে পিয়াল নামে মাটির চিপি, তাহা প্রায় ২ ফিট্ উচ্চ, তাহার উপর মুগ বা মহিব চর্ম্ম অথবা মাছর বিছাইয়া শয়ন করে। তাহার পশ্চাদিকে উনান, তাহার চারি পার্মে আসবাব থাকে। হয় ভাগারটাই অপর সব ঘর অপেকা কিছু বড়। এই ঘর মাকে বড়া দিয়া হই ভাগ করা থাকে। একভাগে হয় ঘুতাদি রাখা হয় ও অপর ভাগে তাহাদের ইইদেবতার পূঞা হয়। 'ডাড়াবল্দী (দেশজ) তোড়ার রক্ষিত।

ভোড়ামাচ (দেশজ) মংছবিশেষ। (Cyprinus kutla)
ভোড়ী (স্ত্ৰী) ভূড়-আচ্ গোরা তীষ্। তৈলসাধন ধাছাভেল।
ভোড়ী, বসন্তরোগের পন্নী, ইহার গ্রহ অংশ ও জ্ঞাস মধ্যম।
দৌবীরী মৃদ্ধনা। এই রাগিণী সম্পূর্ণা, কেহ কেহ বলেন
ইয়ার গ্রহাংশ ক্তাস বড়্জা, মূর্ত্তি—

"উদ্ধিলণজেক্হচান্ধনেত্রাকুমকনাভিং দখতী করেণ। সংস্থাবয়স্তী বিশিনোপকঠং ভোজীয়মিন্দীবরদামরম্যা॥" (স্কীতদা)

নারদসংহিতার ইহার মূর্ত্তি এইক্লপ বর্ণিত আছে—
"কন্ত্যমানাতি ক্লীলবুকা মুক্তালভাকনিতহারবট্টা।
চ্তাত্ত্বং পাণিবুগে বহুকী অব্কেশালী তৃড়িকেরীডেরং ॥"
(-মারদসংহিতা)

देश मुश्राक्त समातः श्रृंकातः ७ वीतवातः (भव । (मक्रीक्रमाः) मानत्काव ७ कामाका त्वारम केश्मतः । मा वांदी पद्यक्षाय---

সা থ গ ম প ধ নি সা থ গ ম • ধ • • (নারদগু•)

স্থাবাং নারদপ্রাণমতে ওড়ব। (সদীতর)
তোত্লা (দেশক) অক্টবাক্, অলাই কথক, বাহার কথা
বাধিয়া বাম, সহকে বাহির হয় না।
তোতলামী (দেশক) অক্ট বাক্য বলা, ভোতলা কথা বলা।
তোতা (হিন্দী) টিয়া প্রভৃতি পর্মী।
তোতস্ (অব্য) ড়-বাহলকাং ডিসি। ১ কলতা। ২ ডং ভূমি
এই অর্থে ব্যবহৃত হয়।

"বিষৌত্ম ভোভোরায়:" (अक्रयक्रु: ৪।২২)

'তোতঃশব্য কলন্দ্রবাচী অব্যয়ং বহা অব্যয়ানাং অনেকা-র্থহাৎ তোতঃ শব্য যুম্প্র্যায়ঃ' (বেদনিপ)

তোকু ("ক্লী) জুখতে তাডাতেঁংনেন জুদ-ট্রন্। (দায়ীশস যুযুক্তভুদেতি। পা এ২।১৮২)

গবাদি তাড়নদণ্ড, পাঁচনী। পর্যায়—প্রালন, ভোদন, । গল্প-তাড়নদণ্ড, বৈণুক, বেণুক। ডালস। "মাতুশ্চ শৃহিত্ং শক্তন্তোতৈরু সুস্থিইব বিপঃ।" (রামায়ণ ২।৪০।৪১)

তোতাবেত্র (क्री) বিফুদও, বিষ্ণুর হস্তত্বিভ দও।

তোদে ('পু') তুদ-ভাবে ঘঞ্। ব্যথা। (অ.) তুদতীতি তুদ-আচ্। ২ পীড়াদায়ক। "তোদো বাতক্ত হর্ব্যোরীশানঃ" (এক্ ৪।১৬।১৮) 'তোদভোদকঃ' (সামণ)

তোদন (ক্লী) ভূভতেহনেন ভূদ করণে লাট্। ১ ভোলু।

, ভাবে লাট্। ২ বাধা। ৩ ফলবৃক্ষবিশেব, ইহার ফলের
ভাণ-ক্ষার, মধুর, কক্ষ, কফ ও বাযুৱালক। "ক্ষারং মধুরং
কক্ষং ভোদনং কফবাতজিও।" (স্থাশত)

Cতাদপত্রী (জী) তোদং তোদকং পর্ণমস্তা: গৌরা শীব্। কুধান্তভেদ।

ত্যোপ (তুরকী) আথেরান্ত, কামান।
তোপ্থানা (পারসী) তোপের হান যে হানে তোপ থাকে।
তোপিচিনি, এক প্রকার বচভেদ। তোপচিনির অপর নাম
নীপান্তরবচ, অক্ত নীপে উৎপর হর বলির। উহাকে নীপান্তরবচ
করে। গুণ—ঈবং তিজ্ঞারস, উন্ধারীর্যা, অ্যাদীপ্রিকারক,
মলমুত্রবিশোধক এবং বিবন্ধ, আগ্রান, শূল, বাতব্যাধি, অপনামক রোগনাশক। (ভাবপ্রাং)

ত্তোপ্দাগ্ (ছবকী) তোপধনি করা, লক্ষের দিকে কামান পরিত্যাগ করা। তোফা (আরবী) অত্যন্তম, অত্যুৎকৃষ্ঠ। তোবা (আরবী) পশ্চান্তাপ, অমুতাপ, থেদ। ভবিষ্যতে পাপ না করার জন্ত প্রতিজ্ঞা। তোমর (পু: ক্লী) তুম্পতি হিনন্তি তুম্প বাহলকাৎ অব প্রত্যা-রেন সাধু:। প্রাচীন ভারতীয় যুদ্ধ বন্ধবিশেষ। ইহার চলিত নাম শাবরী বা শাবলী, সংশ্বত অপর নাম শর্বলা, লোইশাবল। এই শাবল হুই প্রকার দণ্ডযুক্ত ও সর্বাবেশ্ব লোইময়। ইহা প্রধানতঃ উত্তম, মধ্যম ও অধম ভেদে তিন প্রকার। পঞ্চন্ত প্রমাণ উত্তম, সার্দ্ধ চতুর্হন্ত প্রমাণ মধ্যম ও চতুর্হন্ত প্রমাণ অধম। এইরূপ বড়কুল ভোমর, উত্তম, সার্দ্ধপঞ্চন্ত

> "ভোমরান্ প্লাবরতী চ হংসমীগান্ সমূহকান্।" (মংস্পুং ১২ • ।৫ ৭)

৪ পিল্লছন্দশান্ত্রোক্ত ৯ অক্ষরযুক্ত ছন্দোবিশেষ। ইছার ৩।৫।৮ বর্ণগুরু। লক্ষণ---

মধ্যম ও পঞ্চাকুল আধ্ম। (হেমা॰ প॰)। ২ হস্তক্ষেপ্য

मखरिएमय, त्राग्रवाम । ७ व्रन्तभाविरमय ।

"প্রথমং সকং বিনিধার জগণধ্যঞ্চ নিধার।
কুক তোমরং স্থকারি ফণিরাজবন্দ্রবিহারি॥"
(শকার্থচিন্তামণিখুতবচন) উদাহরণ—
"স্থি! মাদকে মধুমাসি ব্রজ স্থরং কিমিহাসি।
সহতে ন কিং বিহরামি কিমুপাবকং প্রবিশামি॥"
(র (তুমার) রাজস্থানের এক প্রাচীন রাজপুত ক্

তোমর (ভ্রার) রাজস্থানের এক প্রাচীন রাজপ্ত ক্ষত্রিয় রাজবংশ। এই শ্রেণীর রাজপ্ত এখন আর নাই বলিলেই চয়; আগরার প্রায় তিনসহস্র ও বান্দা, ঝাজি ও ফরজাবাদে মৃষ্টিমেয় সংখ্যায় কয়েক য়র আছে মাত্র। রাজপ্তানায় ইহারা ত্রার নামে খ্যাত। এই নাম কিরপে প্রতিষ্ঠিত হইল, তাহার কিছুমাত্র ঐতিহাসিক প্রত পাওয়া যায় না। আব্লফজলের আইন-ই-আকবরীতে এই তুয়ায় বংশের বিবরণ আছে। কনিংহাম সাহেব বিকানীর, গড়বাল, কুমায়ুন ও গোয়ালিয়র হইতে এ সম্বাজ্ঞ বে সমস্ত হস্তালিখিত,ইতিহাসাদি সংগ্রহ করেন, সে সমস্ত মিলাইয়া দেখিলে আব্লফজলের বর্ণনার সভাতা অম্বভ্ত হয়। আব্লফজলের মতে দিলীতে ত্রারবংশীর নিয়লিখিত রাজগণ রাজা হইয়াছিলেন।

	नाम	রাজ্যারো	र्व चृष्टीय	ब्राक्तं वः माः निः।			
>	অনঙ্গপান	•••	୩୬ ୬ ।୬।•	•••	>> • 4		
₹	বাহ্নদেব	•••	1¢81010	•••	7517166		
ø	গাৰ্য	•••	44181011	•••	२५१०।२৮		

৪ পৃথিবীপালমল (रृष्ी).	49814174	•••	ccielec.	
८ अत्र टनच	•••	₹78191€	•••	₹+191₹Ь,	
৬ নীর বা হীরাপাল	,	८०१८ ।४०५	•••	381813	
৭ উদর্বা জ	•••	१८० ८६४	•••	રભાગાડ	
৮ বিজয় বাবচ	•••	४१९। ३०।२७	•••	२२।२।५७	
৯ বিক্ষ বা অনেক	•••	## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ##	•••	२२।७१५	
১০ রিক্ষপাল		३५३। ८१२	•••	રગાબદ	
১১ স্থপাল বা জনে	কপাল	28-12-149	•••	₹•1818	
১২ গোপাল বা মহী	পাল	३ ७ ३१०।३	•••	३८१०।४८	
১৩ সল্লকণপাল	•••	७८। काद १ द	•••	२६।२०१.	
১৪ জয়পাল (২ম)	•••	> • ¢(8) 2 %	•••	>61816	
১৫ কুমার পাল -	•••	३•२)।४।२२	•••	बराबाद ह	
১৬ অনকপাল (২য়)	•••	١٠٤١١١٥١	•••	4514125	
বা অনেকপাল (২	%)				
১৭ বিজয়পাল } তেজপাল }	'	20421216	•••	281210	
১৮ মহীপাল	•••	22.615122	•••	२८।२।२७	
অনঙ্গাল (৩য়))		339-1618	•••	२ऽ।२।ऽ६	
১৯ বাজনেরুরপাল ⁵	व्यर्था९ (১५৫५।१।५३)				

প্রবাদ এইরপ যে -ভোমরবংশীর অনকপাল নামে এক রাজা প্রাচীন দিলী বা ইক্তপ্রস্থ নগরের প্রক্রমার করেন। সম্বত্তিষ্ঠাতা বিক্রমাদিত্যের পর ৭৯২ বৎসর দিলীনগর মন্ত্যা বিরহিত ছিল, অবশেষে ৭৩৬ খুটাকো তোমরবংশীর অনক কর্তৃক প্রনিশিত হয়। [দিলী দেখ।]

প্রথম অনক্ষপালের পরবর্তী করেকজন রাজা দিরীতেই রাজধানী রাথিয়াছিলেন। পরে কি জন্ম জানা বার না, তাঁহাদের রাজধানী কনোজে উঠিয়া বার। মাজুদের ঐতিহাসিক ওটবী কনোজে তোমরবংশীর রাজা জন্বপালের উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। ইনি অনক্ষপাল হইতে ১৪শ পুরুষ অধস্তন। ১১৫ পুটালে যথন স্ববিধ্যাত মুসলমান ভৌগোলিক মহাদি এদেশ আসেন, তিনিও কনোজে তোমরবংশীর রাজাকে রাজ্য করিতে দেখিয়াছিলেন।

ফেরিন্তা বলেন, কনোজরাক জয়পাল গজনীর মাজুলের
১০১৫ খৃষ্টান্দের আক্রমণে পরাজিত হইরা উছার জ্ঞবীন হইরা
ছিলেন। তাঁহার পার্শ্ববর্তী রাজগণ মুসলমানের জ্ঞবীনতা
হইতে কনোজ উন্নারের জন্ত জয়পালের বিরুদ্ধে একল হন।
১০২১ খৃষ্টান্দে মাজুল এ সংবাদ পাইরা এলেশে আসিব্রি
পূর্বেই জয়পাল নিহত হন। তৎপত্রে ১০২২ খৃষ্টান্দে মাজুল
আবার কনোজ অধিকার করিলে পর তোমরকংশীর রাজকুমার কনোজ হইতে ও দিনের পথ দূরে গ্লার পূর্বতীরে

অবিনাৰক ছানে রাজধানী ছাপদ করেন। কনোজ ছইবাল मूजनमान आक्रमण दक्षा भारेन ना बनिवारे त्यां रव अव-পালের পরবর্তী কুমারপাল বারিনামক ভানে রাজধানী করিরাছিলেন। এই সমর জাবার কনোজের রাঠোর-রাজবংশ-প্রতিষ্ঠাতা চম্রদেব কনোজ রাজ্য মুসলমান কবল হইতে উদ্ধার করেন। চক্রদেবের পত্র পৌত্রের রাজ্যারোহণ সম্বন্ধে খোদিত লিপি আছে। তড়ারা জানা বার, চক্রদেবের পুক্র মদনপাল চক্রদেব রাজা ছিলেন স্বীকার করা যাইতে পারে। এ সমর তোমরবংশীর বিতীয় অনঙ্গপাল রাজত্ব করিতেন। সম্ভবতঃ ভিনি দিল্লীনপরে পুনরায় রাজ্যস্থাপন ও তথার লালকোট নামে তুর্ন স্থাপন করেন। লালকোটের ভগাবশ্রেষ এখনও আছে। দিল্লীর বিখ্যাত লৌহন্তন্তে অনঙ্গপালের লালকোট নির্মাণ দম্বন্ধে থে।দিত লিপি আছে। , তাহাতে লিখিত আছে "সম্বৎ চিহলি ১১০৯ অনদ্পাল বহি"— অর্থাৎ ১১০৯ দছতে (১০৫২ খুষ্টাব্দে) অনলপাল দিলীতে লোকাবাস স্থাপন করেন। কুমাওনের পুঁথিতে আছে—"দিলীকা কোট করায়া লালকোট কহায়া।" দিলীর তুর্গ নির্মাণ করিয়া লালকোট নাম দেন। এই नानरकां नाम क्रूव-डेकौरनत नमत পर्वास हिन। "লালকোট ভয়া নাগারো ৰাজতো-আ" কুতুব-উদীন্ নিয়ম করিয়া দেন, লালকোটের সীমার মধ্যে অপর কেই নাগারা বালাইতে পারিবে না। এই নিয়ম কনিংহামের সময়ও প্রচলিত ছিল। অনঙ্গপাল লালকোটের মধ্যে 'অনঙ্গতাল' नार्य >७२ किए मीर्च ७ > ६२ किए अब এक मीर्चिका धनन उ ২৭টী দেবমন্দির নির্মাণ করান। অনমভালের জল কুতুবমিনার প্রস্তুতের সময় নিঃশেষিত হইয়া গিয়াছে, এখন ও শুক্ষ গর্জমাত্র পড়িয়া আছে। আর মন্দিরগুলি মুসলমান হত্তে ধ্বংস পাই-साहि। इर्शित जार्म विष्मिय अथन अ शृक्षिवर मृत् चाहि। हैनि বলরামগড় জেলার অনেকপুর নামে এক নগুরও প্রতিষ্ঠা করেন, এই নগর এখনও খনামে গ্রামরূপে বর্ত্তমান আছে। ইহার পুত্র স্থ্যপাল অনেকৃপুর নগরের নিকট ১০৬১ খৃষ্টান্দে স্থাঁকুও নামে এক প্ছরিণী খনন করান। ভাছাও বর্ত্তমান আছে। ইহার ভেৰণাল (বিজয়পাল) নামে এক পুত্র গুরগাঁও ও অলববের মধ্যে তেকোলা নামক নগর স্থাপন করেন। অন্ত এক পুত্র ইন্দ্ররা**ল** 'ইন্দ্রগড়⁹ হাপন করেন। আর এক পুত্র রক্তরাজ আজমীরের নিকট তারাগড় স্থাপন করেন। আর এক পুত্র অচলরাল ভরতপুর ও আগরার মধ্যে "অচেৰ" বা অচনের নামক স্থীন স্থাপিত করেন, আরে এক পুত্র জৌপদ অসি বা হাঁসিতে বাস করিতেন এবং আর এক

পুত্র শিশুপাল শীর্ষ বা শিশবল স্থাপন করেন। ইছা এখন শিরশিপাটন নামে থ্যাতৃ। এই সকল প্রবাদ বদি সভ্য হয়, তবে বলা বায়, বিভীয় অনক্পালের রাজ্য উত্তরে ইাসি হইতে দক্ষিণে আগরা, পশ্চিমে অলবর ও আজমীর হইতে পূর্বে সম্ভবতঃ গলানদী পর্যন্ত বিস্তৃত ছিল।

প্রবাদে ভোমরবংশীয় কর্ণপাল নামে এক বিখ্যাত নৃপতির নাম পাওয়া যায়। ইহারও ছয় পুত্র ছিল। তাঁহারাও লগরাদি ছাপন করিয়া গিয়াছেন। ইহার এক পুত্রের নাম বচদেব, ইনি নর্গোলের নিকট 'বাবোর' ও লাজনীর টোডার নিকট বাবোরা বা 'বাচেরা' ছাপন করেন, অক্ত এক পুত্র নাগদেব আজমীরের নিকটছ 'নাগোর' ও 'নাগদ' ছাপন করেন, অক্ত এক পুত্র রক্ষরায় অলবরের উত্তরপূর্ব্বে 'কিবণগড়', আর এক পুত্র রক্ষরায় অলবরের পশ্চিমে 'নায়ায়ণপুর', আর এক পুত্র প্রামিশিং অলবর ও জয়পুরের মধ্যে 'আজবগড়' এবং হরপাল অলবরের পশ্চিমে "হরসোরা" এবং উত্তরে 'হরসোলি' ছাপন করেন। এতায়িয় অলবরের উত্তরপূর্ব্বে 'বাহাছরগড়' য়য় হরপালের ছাপিত বলিয়া প্রবাদ আছে।

কুতুবমিনারের একজোশ দ্বে মহীপালপুর নামক আমও এই বংশীয় রাজা মহীপালের কীর্ত্তি। এ বংশে মহীপাল ছইজন ছিলেন, তন্মধ্যে ইহা কাহার কীর্ত্তি তাহা নিরূপণ করা যায় না।

দিলীর দক্ষিণপশ্চিমে ভুষারবতী বা তোমরাবতী নামে একটা কোলা আছে, এখানে আজিও একজন ভোমরবংশীয় দর্জার আছেন। ঢোলপুর ও গোয়ালিয়রের মধ্যে তোমর-গড় বা ভুষারগড় নামে একটা জেলা ও ছর্গ আছে; এখান-কার জ্মীলারেরাও এই তোমরবংশীয়।

ৰিতীয় অনকপালের পর তিনজন তোমররাজ দিলীতে রাজত্ব করেন। শেষরাজা তৃতীর অসকপাল বা আক্রেপালের সময় চৌহান বিশালদেব দিলী অধিকার করেন। কনিং-হামের মতে, ইহা খুটীয় ১১৫১ অকে ঘটে।

বিশালদেবের পুদ্র সোমেশ্বর তৃতীয় অনস্থপালের ক্স্তাকে বিবাহ, করেন। এই গর্জে স্থবিধাত পৃথীরাজ বা রার পিথোরার জন্ম হয়। ১১৬৯ খুটাজে ইনি মাতামহ কর্জ্ক দত্তক্রপে গুহীত হন।

গোয়ালিয়রে প্রার ছই শতাব্দীকাল এক ভোষর বংশ রাজ্য করিয়াছিলেন। শুহানিয় বা বর্জমানু ভোমরগড়ের ক্ষমীদারেরা আপনাদিগকে দিল্লীর অনক্ষপালের বংশধর বলিয়া উল্লেখ করেন। এই বংশের ইভিছাস-লেথক কবি খড়ালায় ভোমরবংশকে পাঞ্বংশোত্তব বলিয়া বর্ণনা করিয়া-ছেন। রাজপ্তেরাও ভাহা সীকার করেন। ক্ৰিংহাম সাহেব ১৮৬৪-৬৫ খুটান্সে তদানীন্তন লমীদারের নিকট হইতে একবংশপত্রিকা প্রাপ্ত হন। শিলালিপি হইতেও গোরালিয়য়য়াল ৮ জন ডোময়-নৃপতির নাম
পাওয়া গিয়াছে। প্রজারায়ের ইতিহাসের সহিত মিলাইয়া
কনিংহাম্ গোরালিয়য়য়য় তোময়য়ালবংশতালিকা এইয়প
ভির করিয়াছেন।

় দিল্লীর দ্বিতীয় স্থানন্দপাধ্যের পরবর্ত্তী তে**লপাল সম্ভবতঃ** এই বংশের আদিপুরুষ।

	_ ` `		
নাম ঁ			.शृष्ठीच ।
তেজপাল	•••	•••	2.40
মদনপাল	·;·	•••	3>°¢
খণ্ডগির	•••	•••	>>0 •
রতনসিংহ	•••	•••	>>৫>
শ্রাম তা দ	•••	•	2296
অ'চলব্ৰহ্ম	,	•••	\$2.0
বীরসহায়	•••	•••	ે >૨૨૯
,মদনপাল	•••		>> 6 •
ভূপতি •	•••	***	> २ 9€
' কুমারসিংহ	•••	•••	>0.0
খাটমদেব		•••	ऽ७२¢
্ৰহ্ম	•••	•••	১৩৫ •
রাজাবীরসিংহদেব	•••	•••	>७१¢
উक्षात्रगरम्ब, वित्रम्	দেব ও লক্ষ	ीरमन	>8••
গণপ তিদেব	•••	•••	, 7872
তু র ড়িসিং হ	•••	,	>8₹€
কীর্ত্তিরায় বা কীর্ত্তি	ने १ इ	•••	>848
কল্যাণসহায় বা ক	भागमझ	•••	\$895
মানসিংহ	•••	•••	>848
বিক্ৰমাদিতা	•••	•••	>6>0
	4		

রাজা বীরসিংহ ছইতে রাজা বিক্রমাণিতা পর্যন্ত প্রকৃত পক্ষে পোয়ালিররে রাজা হন। বিক্রমের সময় ১৫,১৮ খৃষ্টাুজে ইব্রাহিম লোদী গোয়ালিরর অধিকার করেন, তৎপরে এই রাজবংশ জমীদ্রার রূপে গণ্য হন। তৎপরে খুজারারের প্রচ্ছে কয়েকজনের নাম আছে।

রামসহায় ,	•••	•••	५८२७
শালিবাহন	***	•	>646
শ্রামরায	•••	•••	>696
'সংগ্ৰাম স হায়	•••	•••	. 5600
কৃষ্ণসূহায়	•••	•••	>690

তৎপরে তোমরগড়ের বংশপত্রিকা হইতে আর ছইট নাম পাওরা যায়---

বিশ্বরসিংহ ··· ·· >৭১১ হরিসিংহ ··· ···

থিগলী-সম্রাট্ আলাউদ্দীনের সময় বীরসিংহদেব পোরালিয়রে সাধীন রাজা হন। ইহা সকল ঐতিহাসিকেরা বলেন।
কিন্তু ১০১৫ খুটাকে আলাউদ্দীনের মৃত্যু হয়, স্কতরাং বীরসিংহের অভ্যানর ও আলাউদ্দীনের মৃত্যু এই হই ঘটনার মধ্যে
প্রার ৬০।৭০ বৎসরের অন্তর। ওভ্রুরার ইহার সময় উরেধ
কালে বলিয়াছেন ঘে দিল্লীতে নসরৎ বা প্রধান উলীর ছিলেন,
আর ফজলআলী বলিয়াছেন, সিকন্দর বা প্রধান উলীর
ছিলেন। এই ছই ব্যক্তির নাম ধরিয়া বিচার করিনে
অন্তমান হয় বে, বীরসিংহ তৈম্রের ভারতাক্রমণের কিছু
পুর্বের আবিত্তি হন। এই সময়ই সিকন্দর, হমায়ুন ও
নসরৎ দিল্লীতে একাধিপত্যু পাইবার আলায় মহা প্রতিবাগিতার মত্ত ছিলেন।

বীরসিংহ গোয়ালিয়রের উত্তরে দলবোলি নামক স্থানে জমীদার ছিলেন। ইনিই বাদশাহের প্রধান উজীরের কোন কার্ব্যে নিযুক্ত হইয়া সর্কাদা বাদশাহের নিকট থাকিতেন। এই স্থবোগে তিনি বাদশাহের নিকট হইতে গোয়ালিয়র ছর্পের অধ্যক্ষতা ও শাসনকর্ত্ত্ব লাভ করিতে সমর্থ হন। ফললআলী বলেন, একজন সৈয়দ তথন গোয়ালিয়রের ছর্পপতি ছিলেন, তিনি হুর্পাধিকার ছাজিতে অস্বীক্ষত হন। শেষে বীরসিংহ সৈয়দ ও তাঁহার সেনাপতিবর্গকে নিমন্ত্রণ করিয়া থাদোর সহিত্ত অহিকেন মিশাইয়া দেন। নেশায় অচেতন হইকে বীরসিংহ সকলকে বল্লী করিয়া হুর্প অধিকার করেন।

বীরসিংছ প্রভৃতি করেক জন দিল্লীর অধীন থাকিয়া থিজির থাঁকে কর দিতেন। বীরসিংহের পর বিরমদেব রাজা হন, শিলালিপিতে ইহার প্রমাণ আছে, কিন্তু থড়গারারের গ্রহে রাজা উদ্ধারণের নাম পাওয়া যার। ইনি বীরসিংহের লাতা ছিলেন। ইনি প্রকৃত পুক্ষে রাজা হইরাছিলেন কি না তাহারু প্রহাণ নাই। বিরমদেবের পর শিলালিপিতে গণপতি দেবের নাম পাওয়ী যার। লক্ষীনেনের রাজ্যপ্রাপ্তির প্রমাণ নাই, কেবল থড়গারারের গ্রহে নামমাত্র উল্লেখ আছে।

১৪২৪ খুটান্দে ত্রগড়সিংহ রাক্ষা হইলে মালবের হোসৰ শাহ গোরালিয়র অবরোধ করেন, শেবে দিলী হইতে স্বারক শাহ আসিরা তাঁহাকে পরাঞ্জিত করেন। স্বারক শাহ দিলীতে প্রত্যাবর্তনের সমর ত্রভাসিংহের নিকট কর আদার করিয়া লইয়া যান। তৎপরে ১৪৩২ খুটান্দ পর্যন্ত ভিনি আর করি দ্ব নাই। স্থলতান মাজুদ তথন কুছ হইয়া সহং বহুদৈন্ত দ্বা পোরালিরর আক্রমণ করেন। ছলড়িসিংই উপায়ান্তর া দেবিরা নিজ রাজধানী সমাটের ক্রোধবছি হইতে রক্ষা দরিবার জন্তু মালবের অধিকৃত নরবর ছর্গ অবরোধ করেন। মাট্নৈত্ত কাজেই পোরালিয়র ছাড়িয়া নরবর ছর্গের রক্ষার্থ টুটিল। ছলড়িসিংই নরবরছর্গে পরাজিত ইইলেন, তিনি পছাইয়া পোরালিয়রে আসিলেন ও সমাট্নৈত্ত জন্মী হইয়া নিলয়া গোল, কৌশলে গোরালিয়র রক্ষা পাইল। ছলড়িসংহের দীর্ঘ রাজস্কশালেই পোরালিয়রের পার্বাতীর ভাষরকর্ম্ম কলের স্ক্রেণাত হল। তথন ইহার ক্ষমতা উত্তরভারতে মতি বিধাতে ছিল। দিল্লী, জৌনপুর ও মালবের মুসলমানা নাজগণ সমরে সমরে গোরালিয়রের সাহায়া লইতেন।

তঙ্গড়িনিংহের পর তাঁহার পুত্র কীর্ন্তিনিংহ রাজা হন। हेशब्रहे ममन्न शार्किजीत्र श्वहामिन्दबन्न कार्या स्मिय इत्र । हैनि প্রথমত: জৌমপুরের সহিত এক্যোগে দিল্লীর বিক্লাচরণ চরিতেন। ইহার পুত্র কীর্তিরায় ও পৃথীরায় দিলীর পক্ষা-ালখন করেন। বহেলাল লোদীর সহিত্ কৌনপুররাজ মহম্মদ াকির যে যুদ্ধ হয়, তাহাতে পৃথীরায় ফতেখা হার্ভির হস্তে নহত হন। কীর্ত্তিরায় তৎপরে ফঁতেগাঁকে পরাঞ্জিত করিয়া ानी करत्रन **এवং ভা**ছার শিরচ্ছেদনপূর্বক সেই মন্তক ाट्टानटक উপहात পाठाहेश (मन । ১८७६ शृष्टीटक स्कोन**र्**त-শতি ভ্রেন শকি বহুৎ সৈল্পল লইয়া গোয়ালিয়র জয় করেন। গীর্ত্তিরায় সন্ধি করিয়া কর দিতে স্বীকৃত হন ও জৌনপুরের শক গ্রহণ করেন। কৌনপুরপতির মাতার মৃত্যু হইবে **হীর্ত্তিরান্নের পুত্র কল্যাণমল্ল জৌনপুরে আত্মীয়তা রক্ষা করিতে** वात्रियाहित्सन । ১৪१৮ थहोत्स वदस्तान दाविति नामक शान श्त्रम भकौरक मृष्पूर्वक्रर्प भवाक्षिष्ठ कवित्रा श्रीमाणिवदव উপস্থিত হন। কীর্ন্তিসিংহ ভাড়াতাড়ি কমেক লক্ষ, মুদ্রা, গাবু, ঘোড়া, উট ইত্যাদি উপঢৌকন দিয়া বশ্রতা স্বীকার क्रबन ও তাঁহার সহিত কালী আক্রমণার্থ গমন ক্রেন। ১৪৭৯ थृष्टोटक कीर्खिनिश्टइत मृङ्ग इब्न, कन्गानमल ताका इन। हैरात कुछ त्राक्षकात देवान উল্লেখযোগ্য ঘটনা ঘটে नाहे। ১৪৮७ पृष्टीत्म कन्यागमत्त्रत्र शुक्त मानिनः है ताला হন। ইনি সিংহাসনে বসিজে না বসিজে বজেলাল লোগী कर्डक आकास इन धवः ৮० तक प्रमा निशे खेबीय शान। ১৪৮৯ बृष्टीत्म रास्नारनत मृजा स्टेरन त्रकमत नामी नञाहे रहेश शाबानियववाक मानिश्रहत्क शाबाकानि छैपछोकन দেন। মানসিংহও আবার স্বীর ভ্রাডুপুত্রের সহিত এক गरुख रेग्छ अवर छेगहात ज्ञवानि शाक्रीहेत्रा ग्रजारहेत्र मःवर्दना

करतनः ১৫০১ वृष्टीरक निर्मान मास्य अक मृख निज्ञीरख প্রেরিত হয়। সম্রাটু ভাহাকে গোরালিমরের বিবরণ জিজাস। করিলে নেলাল অভি অভন্তরপে উত্তর দেওরার দরবার হইতে তৎক্ষণাৎ বিভাজিত হয় ৯ সেক্ষার নিজে গোয়ালি-त्रद्रित विक्रष्क बाजा करत्रन । बाह्मिश्ह दैमप्रम, वावत थी ख রায় গণেশ নামক তিনক্ষ পলাতক ব্যক্তিকে সম্রাটকরে অর্পণ করিয়া স্বীয় পুত্রকে সম্রাটের নিকট উপহার সহ প্রেরণ करतन। दनवात हेशाउहे युद्ध वर्ष इत्र, किंख दनकम्मत्र ১৫०० थृष्टीत्म जावात्र श्रावानिवत जाक्रमण करद्भा । এवात, त्रत्मत 'লোক তাঁহার বিক্লাচরণ করেন। ভিনি দেশীয় লোকের চক্রান্তে পড়িয়া আহার্যা সংগ্রহে কাতর হইয়া প্রত্যাবর্তনে বাধ্য হন। শেষে শত্ৰভয়ে তাঁছাকে থক গোপন স্থানে লুকা-ইতে হয় এবং সেধান হইতে একা কোন ক্রমে পলাইরা জীবন রকা করেন। তাঁহার সমস্ত দৈত নট হয়। পর বংসর সেকন্দর গোরালিয়র গুর্গ অধিকারে হতাশ হইয়া গোয়ালিয়রের व्यशैन हिष्यज्ञ ए व्यक्षिकां वे कति व्यक्ति निष्यान तका करत्रन । ১৫১१ খুষ্টাব্দে তিনি গোয়ালিয়র ধ্বংসের ইচ্ছায় অতিদ্র দেশ হইতেও সামস্তগণকে নিমন্ত্রণ করেন। এই আয়োজন করিতে कतिरा त्रकलारतत्र मृज्य हत्र । देवाहिम लागि न्याप्टे हहिया তাঁহার বিদ্রোহী ভ্রাতা জলাল থাঁকে আশ্রয় দেওয়া অপরাধে মানসিংহের প্রতি ক্রন্ধ হন। তদকুসারে ৩০ হাজার অখা-রোহী ও ০ শত হত্তী আজিম ছ্মায়ুন নামক সেনাপতির অধীনে গোয়ালিয়রের বিরুদ্ধে প্রেরিত হয়। অভাত স্থান হইতে আরও সাত জন সেনাপতি আজিমের পকাবলখন করিতে নিযুক্ত হন। এই যুদ্ধে গোয়ালিয়র হুর্গ রাজা মান-, সিংহের হস্তচ্যত হয় ও যুদ্ধের কয়েক দিন পরে রাজা মানের মৃত্যু হয়। , রাজা মান অতি সাহসী বীরপুরুষ ছিলেন, শক্র মিত্র কর্তৃক সমভাবে পুলিত হইতেন। কথনও কাহারও প্রতি অত্যাচার করেন নাই। নিয়ামত উল্লানামক এক ঠতিহাসিক বলিয়া গিয়াছেন যে বাহিরে হিন্দু ভাব থাকিলেও তিনি অন্তরে মুসলমান ছিলেন। ইনিই গোয়ালিয়রের "মতিঝিল" নির্দাণ করেন। তোমরগড় ও জিতবর জেলায় বে সকল ঝিল আছে, তাহাও রাঝা মানের কীর্তি। স্থাপতাবিদ্যায়, ভাস্কর শিল্পে ও সঙ্গীতবিদ্যার তাঁহার যথেষ্ট অফুরাগ ছিল, তাঁহার প্রাসাদ ও তাঁহার রচিত সংগীতাবলীই ইছার নিদর্শন। তিনিই গুর্জরী নামক মিশ্র রাগিণীর প্রতিষ্ঠাতা। স্বীয় গুর্জ্জরী মহিধী মুগনয়নার প্রীতার্থে তিনি এই নবস্থরের নামকরণ করেন। তাঁহা কর্তৃকই প্রজ্জী রাগিণীর বহল-ওক্ষরী, মলওক্ষরী, মললওক্ষরী ও বিভদ্ধ

खर्कती এই চারিটা বিভাগ করিত হইরাছে। ইহার ছই শত মহিধীর মধ্যে মুগন্রনা শ্রেষ্ঠা রূপদী ছিলেন। রাজকার্য্যেও ইনি অতি বিচকণ ছিলেন, আবুলফলল তাহা স্বীকার করিয়া গিয়াছেন।

ইহার পর ইহার পুত্র বিক্রমাদিত্য কুক্লণে রাজ্যলাভ कर्तत्रन। এই সময়ে আজিম হমায়ুন বাদিলগড়-তোরণ দগ্ধ कतित्रां व्यक्षिकांत्र करत्रन्। हेहा शाहानिव्यत्तत्र अथम बात्र। • বিতীয় ও তৃতীয় তোরণে ভয়ানক যুদ্ধ হয়, কিন্তু তাহাও অব-শেষে মুসলমানের হস্তগত হয়। লক্ষণপুর নামক চতুর্থ ভোরণ অধিকার কালে ভাজ-নিজাম নামে দিলীর এক প্রধান পেনা-পতির মৃত্যু হয়। শেষ দার হাতীয়াপুর অধিকার কালে রাজা বিক্রম অপমানিত ও হর্দশাগ্রস্ত হইবার ভয়ে আত্মসমর্পণ করেন। আগরায় নীত হইলে সমাট্ তাঁহাকে শামসাবাদ প্রদেশ জায়ণীর দেন। গোয়ালিয়ুরের তুয়ার রাজ্য এইরূপে ্ধবংদ হইল। ,মোগলের সহিত পাণিপথের যুদ্ধে ১৫২৬ খুটানে ইত্রাহিম লোদীর পার্ষে যুদ্ধ করিতে করিতে রাজা বিক্ৰম নিহত হন।

বাবর পাণিপথে অয়লাভ করিয়া দিলীতে সমাট হইলেন এবং খীয় পুত্র ভ্যায়ুনকে গোয়ালিয়রে পাঠাইলেন। রাজা বিক্রমের বংশধরেরা তাঁহাকে কতকগুলি হীরা মণি মুক্তা উপरात (एन। देशंत मत्या এकथानि तृह्माकात हीतक ছিল। ফেরেস্তা ভাহার ওজন ৮ মিছল ৩২৪ রতি লিথিয়া গিয়াছেন। আর্দ্ধিন্ ও টাবার্নিয়ার এই হীরকথানিকে 'কোহিনুর' বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। সেখানি খিল্জী সমাট আলাউদীন পাইয়াছিলেন।

১৫২৬ খুষ্টাব্দের শেষে রাজা মঙ্গলরার নামক একজুন ভোমর বংশীয় বীরু গোয়ালিয়রের আফগানশাদনকর্তা ভিতর থাকে উৎপীড়িত করায় বাবর রহিমদাদ নামক এক দেনা-প্তিকে প্রেরণ করেন। রহিমদাদ আদিলে ভিতরখাঁ মত পরিবর্ত্তন করিয়া তাঁহাকে ছর্গে চ্কিতে দিলেন না, কিন্তু মহম্মদ গাউন নামক এক ব্যক্তির কৌশলে রহিমদাদ তুর্গ क्षिकांत्र करतन। ১৫२१ शृष्टीत्म तास्त्रां मन्ननतात्रं (मन्ननीतन्त) গোয়ালিয়র অবরোধ করেন। ইনি কীর্তিসিংছের কনিষ্ঠ পুত্র বলিয়া কণিও হন। তোমরগড়ের অন্তর্গত ধুরারী, অস্বা প্রভৃতি ১২০ থানি গ্রামের ইনি জমীদার ছিলেন। ইতার বংশাবলী এখনও ঐ সকল গ্রামে আছে। ইংগর চেটা ফলবতী इम्र नाहै।

সুত্রাট ছমায়্ন ১৫৪২ খুঠাকে গোয়ালিয়র তুর্গে বাস করিতেন। এই সময় রাজা বিক্রমের পুত্র রামস্হায় গোরা- লিয়র তুর্গের অধিকার প্রার্থনা করেন, কিন্তু মোগলসমুক্তি কবল হইতে উদ্ধার করিতে না পারিয়া মনোছ:খে সের্ম্ম সঙ্গে যোগদান করেন এবং সেরশার সেনাপতি কু_{জার্ম} সহিত যুদ্ধে গিয়া মালব ক্ষম করেন।

ফেরিস্তা বলেন,—১৫৫৬ খৃষ্টাবে সম্রাট্ অকবরের _{প্রধা} মন্ত্রী রাররাম থাঁ গোয়ালিয়রের শাসনকর্তা স্থাহেল থাঁর বিষয়ে দৈল পাঠাইতে উল্লোগ করেন। স্থাহেল খাঁ এই সংখ্যা পাইয়া উক্ত রামসহায়কে লিখিলেন যে, "আপনার _{পূর্ব} পুরুষেরা গোয়ালিয়বের রাজা ছিলেন। ঘটনাচজে है। এখন আমার হত্তে আছে। সম্প্রতি যোগল বা_{দশা} আক্রমণ করিতে আসিতেছে। আমার সাধ্য নাই বে আ তাঁহাকে বাধা দিই। আপনি যদি আমাকে কিছু অর্থ ঞান करतन, छाहा हहेरन चामि चार्यनात हरछ ताका धारान कति। পারি।" রামসহায় তাহা গুনিয়া গোয়ালিয়র যাতা করিলে। কিন্তু একবাল থাঁ নামে গোয়ালিয়রের নিকটবর্তী এক জ্মীনা বৈস্তৃসংগ্রহ করিয়া পথেই রামসহায়কে পরাঞ্জিত করিলেন। রাম পরাস্ত হইয়া মিরারের রাণার রাব্যে পলায়ন করিলেন। ফলল আলী নামক ঐতিহাদিক বলেন, দেরশাহের প্রে মৃত্যুর পর গোয়ালিয়র বহ্বল নামক একজন কীতদাদে হস্তগত হয়। স্ফ্রাট অকবরের সময় রামস্হার রাজপুতগণে সাহায্যে গোয়ালিয়র আক্রমণ করেন। মোগ্লদেনাণ্ডি কাবা খাঁ গোয়ালিয়র উদ্ধারার্থ প্রেরিত হন। রামস্থায়ে সহিত কাবাৰ্থার যুদ্ধ হয়। তিন দিন যুদ্ধের পর কাবা থা লা হন। অকবর যথন চিত্রোর অবরোধ করেন (১৫৬/৮ খৃ: का), তখন সৈ যুদ্ধে গোয়ালিয়ররাজ শ।লিবাছন (রামস্ছারের গুরু রক্ষা পাইলেন। শালিবাহন কোন শিশোদীয় রাজকুমারী পাণিগ্রহণ করিয়া রাণার নিকটেই বাস করিতেন ৷ গোয়াগিয়া অকবরের অধীন হইলেও শোলিবাহন রাজপুত রাজসভা গোয়ালিরর রাজ বলিয়া সম্মান পাইতেন।

তৎপরে রোহিতাখের থোদিত্রিপি শারা জানা যা नानि वांहरनत जाममहात्र ও मिक्टमन नाटम कुहै भूज हिन। हैशता कानकत्म अकरात्रत्रं अशीतन कर्ष श्रह्म काराना ১৬৬১ খৃষ্টালে ভাষসহায়ের মৃত্যু হয়। এই মিত্রেন মোগলাধীনে গোয়ালিয়রের ছর্পের অধ্যক্ষ হন। ইংগ পর মিত্রপেনের আরে কোন বিবরণ জানা বার না। अन সহায়ের বংশধর তোমরগড়ের জমীদারী ও নামমাত্র "গোট লিম্ব-রাজ" উপাধি লইয়া সম্ভুষ্ট ছিলেন। শ্রামসহায়ে ত্ই পুত্র—সংগ্রাম সিংহ ও নারায়ণ দাস। ১৬१० चुहीरक 'र्गाचानिवत-ताक' डेलांबि खां**ड**ेहर्न औ

ভাঁহার প্র দাবা রক্ষসিংহের ১৭১৮ খুটাকে মৃত্যু ছব।
ক্রফসিংহের ছই প্র বিজয়সিংহ ও হরিসিংহ উবরপ্রে
আপ্রর গ্রহণ করেন। বিজয় নিঃসন্তান অবস্থার ১৭৮১ খুটাকে
উদয়প্রে মৃত্যুদ্ধে পতিত হন। হরিসিংহের বংশধরগণ
এখনও উদয়প্রে আছেন। ইহাদের অস্ত এক শাখা এখনও
ভোমরগড়ের ভ্রীগারী ভোগ করিতেছেন।

্তামরগ্রছ (পুং) ভোদরং গৃহাতি গ্রহ-অচ্। ভোদরাত্ত-গ্রাহী, ভোদরধারী বোদা, রায়বেঁশে।

্তামরধর (পুং) ধরতীতি ধরঃ ধু-ভাচ্ ডোমরত ধরঃ। ১ পরি। ২ তোমরধারী ঘোষা।

্তামরাণ (পুং) কাশ্মীরের একজন রাজা, তোরমাণ, ইনি লল্লিয় রাজার পুত্র। (রাজতরং ৫।২৩৭)

;তামরিকা (রী) তোমর শংক্ষারাং কন্ধ্রিরাং টাপ্ খত-ইতং। ত্বরিকা।(শক্ষণ)

,তায় (क्री), তৃ-বিচ্ তবে পৃতৈ বাতি যা-ক বা তবতের কি-কর্মণ: তৃ-বং নিপাতনাং নাধু:। ১ জল। ২ প্রাবাদানক্ষ । "মৃডোরে ভ্রাতে শোধাং নদীবেণেন ভ্রাতি।" (মছ) [জল দেখ।] ৩ লগ্রান হইতে চতুর্থ স্থান।

ভোয়ক শ্বন্ (ক্লী) ভোষেন কশ্ব। তপণ, জণৰারা তপণ করিতে হয়।

তোরকাম (পুং) তোরং জলং কামরতে কম অণ্। > পরিব্যাধ বৃক্ষ, জলবেতস গাছ। (ত্রি) ২ জলাভিলার্ক, জলপ্রার্থী। তোরকুন্ত (পুং) তোরস্ত কুন্তইব। শৈবাল। (পারস্করনিঘন্ট) তোরকুচ্ছ (ক্নী) তোরেন তোরমাত্রপানেন ক্লচ্ছুং ব্রতং। জলমাত্র পানক্ষপ ব্রতবিশেষ, এই ব্রত মাসসাধ্য, এই ব্রত করিতে হইলে একমাস জল ধাইরা থাকিতে হয়।

"ম্লকজুং স্বতং ম্লৈভোষকজুং জলেন তৃ।" (মার্কপু॰)

ভোয়ক্রীড়া (স্ত্রী) ভোয়স্ত,ক্রীড়া ৬তং। মনক্রীড়া।

তোয়চর (ত্রি) ভোরে কলে বিচরতি চর-অচ্। জনচর। "কুমি: কীট: পতশোহণ পক্ষী ভোরচরো মৃগই।"

(मार्करखब्रम् ५०।००)

তোমিজ (ত্রি) তোরে জারতে জন-ড। জনজ, জনজাত। তোয়ডিস্থ (পুং) তোরস্ত ডিছইব। ুমেবোপন্স করকা, শিন, বর্ষোপন।

তোয়দ (পুং) ভোরং দদাতি দা-কৃ। ১ প্রেম। ২ বৃত্তক।
(ক্লী) ৩ ঘুত। (ত্রি) ৪ বিধিপূর্বক জলদাতা, জলদান করিলে
অভিশন্ন ফললাভ হন। অন্নদান করিলে প্রোণদান করা
হন। প্রোণদানের অধিক আর কিছুই নাই, কিন্ত জল বাতীত
অন্নাদি কিছুই ভৃতিজনক হননা, এই গম্ম স্বর্গদানই সর্বা-

শেকা ত্রের ৮ ক্রলাতা সকল কামনা ও কীর্ত্তি নাভ করিরা অক্রবর্ম লাভ করে এবং সকল প্রকার পাপ ক্রতে বিমৃক্ত হর ৷ (ভারত শান্তিপর্ম)

"ভোননো মহুৰব্যাত্ত । স্বৰ্গং গছা মহাহাতে । স্ক্রান্ সমবাধ্যোতি লোকানিভাত্তবীনু মহু: ॥"

(ভারত শাুবিণ)

তোরদাগম (পং) ভোষণত আগমঃ ৬ত৭। মেদামম, বর্ধানাল। তোর্বর (পং) ধরতীতি ধরঃ হ-আচ্ ডোম্বর ধরঃ। ১ মেদ্। ২ মৃত্তক। ৩ স্থনিবল্লাক, স্বব্নীশাক।

. পুতারধার (পুং) ভোরানাং ধারা বত্ত। ° ১ মেখন। १ মুছক।
ধারি ভাবে অচ্ ভোরজ ধারঃ। ৩ জনবর্ণ।

তোয়ধারা (ত্রী) জনগন্ততি, জলের বারা।
"নরান্ ব্যক্তভাং শীত্রং ভোরধারা ঘনাইব।"

(ভারত বিরাট ৩২ 🕶)

তোয়ধি (পং) ভোষানি ধীৰত্তেছত ধা-কি। সমূত।
"সমন্তাগ্যেক্ষধান্ত ভূলো ভাগেৰ ভৌঘৰে।" (প্ৰাসিণ)
ভোয়ধিপ্ৰিয় (রী) প্ৰীণাতি প্ৰী-ক ভোষধিপ্ৰিয়ে যভ।
প্ৰশা (প্ৰাচণ)

তোয়নিধি (সং) ভোষং নিধীরতে হলিন্ তোর-নি-ধা-কি। ক্রম্ম।

তোয়নিবী (ত্ত্রী) ভোরং সমূজোদকং নীবীব বজাং আর্হেন কপ্। ১ পৃথিবী। "ভোরমীব্যাং পজিং ভূমে রভ্যসিঞ্চলজা-হুরে।" (ভাগণ ১১১২।ত৮) লোকেতু কপ্প্রভ্যর:।

তোয়পর্নী (ত্ত্রী) > ধান্তবিশেষ। ২ কারবেল্ললতা, উচ্ছা। তোয়পিপ্ললী, কাঁচড়াদাম শাক।

তোয়পুষ্পী. (স্ত্রী) ভোয়েন বহুললদানেন পুশাণ্যস্তা:।
পাটলাতৃষ্

তোয়প্রস্তা (বা) ভোরপুলী।

ভোয় প্রসাদন (রী) প্রসাদরতি প্র-সদ বিচ্ পূট্, তোরত প্রসাদনং। ততকলল, নির্মাল ফল, এই ফল ঘরির জলে দিলে জল পরিকার হর।

ভোরপ্রদাদনফল (ক্লী) ভোরপ্রদাদনার ফলং। কতক-ফল, নির্মাণী ফল।

তোয়ফলা (ত্রী) ভোরপ্রধানং কলং যন্তা: ১১ কললভাবিলেব, তরমুজ। ২ ইর্কাঙ্গ, কাকুড়। (রাজনি)

তোরমুচ্ (পুং) ভোরং মুঞ্তি মুচ্-কিপ্। ১, জলমুচ্, মেখ। ং মৃতক।

তোয়যন্ত্ৰ (श्ली) > কালজানাৰ্থ ঘটাবন্ধভেদ। [ঘটাবন্ধ দেখ।]

र জনবন্ধভেদ, কোয়ারা।

তোর রাজ্ (পং) তোরের রাজতে রাজ জিপ্। সমুদ্র।
ভোর রাশি (পং) তোরানাং রাশিরিব। ১ সমুদ্র। ২ জলসমূহ।
"তোরবাশিসম্ভবাশি ভৃষ্ণাং সংবর্ধরভি" (কাদা)
ভোরবল্লিকা (ত্তী) তোরবলী-কন্। কারবেলক।

তোয়বাল কা (আ) তোগেল কানকে।
তোয়বলা (আ) তোগে কানিহিতখানে বলীবভাঃ।
কানবেলক, করেলা, উঠেছ।

ভোয়বুক (পং) ভোৱে বৃক্টৰ। শৈবাৰ।

জোয়বিস্থ (ক্লী) জোনোখিকং বিষং। অলবিষ, অলের উপরি-ভাগে ভাসমান অর্দ্ধ গোলাকার পদার্থ।

তোয়গুক্তিকা (শ্ৰী) তোগদাতা শুক্তিকা মধ্যদো• কৰ্মধা,। জনশুক্তিকা, থিয়ক।

তোরশৃক (গং) ভোষস্পৃকইব। শৈবাল। (পারস্কর নিধণ্টু)
তোরস্চক (পং স্ত্রী) তোরং জ্লবর্ষং স্চর্জি রবেণ স্চ-ধুল্।
> ভেক, ভেক শব্দ করিলে জল হয়। স্ত্রিয়াং জাভিতাং ভীষ্।
(ত্রি) ২ জ্লবর্ষণস্চক বোগভেদ।

তে বিশ্ব ত্রাম্বর প্রায়া করণং বস্ত। পরমেখর। "বস্তু কেশের জীম্তা: নদা: সর্বাদসদির ।

ু কুকৌ সমুদ্রাভাষে তোরাঝনে নম: ॥" (বিষ্ণুস্ততি)

' কোয়াধার (পং) ভোষত আধার: ৬তৎ। জলাধার, প্ছরিণী। তোয়াধিবাসিনী (জী) ভোষং জলপ্রধানং ত্লং অধিবস্তি অধি-বস্-পিনি। পাট্লা বুক্ষ।

তোয়ালয় (পুং) তোষত্ত আলয়:। উদধি, সমুদ্র।

তোরাশায় (পুং) ভোষত আশয়: ৬তং। জলাশয়।

তোমেশ (পং) ভোষত ঈশ: ৬তৎ। ১ বরুণ। ২ শত জিবা-নক্ষা। (ক্নী) ভোষং জ্বশঃ ক্ষমঃ অধিদেৰোহন্ত । ৩ পূর্কাবাঢ়া নক্ষা।

তোয়োদ্তবা (রী) ভোষে উত্তবো যতা:। তোরাপমার্প।
তোরেণ (পু: ক্রী) তুতৈার্ডি ছররা গচ্ছত্যনেন তুর করণে নুষ্ট্।
১ বহির্বরে, ছারের করে ফাপিত স্তন্ত্রহরের উপরি নিবদ্ধ
নানীবন্ত্র ও রক্লাদি হারা খচিত ধহুরাকার লক্ষ্য। মালাদিছারা সজ্জিভ প্রবহির্বার। বদ্ধনমালা; যহির্বরোপরিস্থ
মকলস্চক মাল্য। ভোলয়তি উরময়তি মস্তক্: তুল লু,
লতার। ২ কদ্ধরা। ও মহাদেব। (ভারত ১৩)১৭)১১৭)

তোরণমাল (কী) তীর্ধবিশেষ, অবস্থিকা।

তোরণ্বৎ (জি) ভোরণং বিদ্যতেহন্ত ভোরণ মতুপ্ মন্ত ব । ভোরণবিশিষ্ট।

তোরণক্ষাটিক। (ত্রী) ছর্ব্যোধনের স্থার নাম। ছর্ব্যোধন পাওবদিপের মন্ধনিশ্বিত সভাদর্শনে ঈর্বার এই সভা প্রস্তুত করেন। (ভারত স্ভাপ ৫৫ জণ) তোরমাণ, ১ কাশীরের একজন পরাক্রান্ত রাজান (ক্রিনি দেখ।]

২ পঞ্চাবের একজন পরাক্রান্ত স্বাধীন রাজা। লবণ বৈদ্যু বুরা হইতে আবিষ্কৃত শিলাফলকে ইনি 'রাজমহারাজ ভোরমাণ, বাহি জউল' নামে অভিহিত। ইহার সময়কার খোদিতলিপি দুঠ কেহ কেহ ইহাকে ধৃষ্টীর ৪র্থ কি ৫ম শতান্ধীর লোক বিদ্যু বীকার করেন। (Epigraphia Indica, Vol. I. p. 239.)

ত মালবদান্তাল্যের একজন স্থানিক রাজা। কাছারও মতে—ওপ্র সমাট্গণ হীনবল হইরা পড়িলে হুণবংশীর ভোঃ মাণ আসিরা মালবরাজ্য অধিকার করেন। ইনি পরাক্তার ছাবাজ মিহিরকুলের পিডা।

ব্ধগুপ্তের সময়ে (১৬৫ গুপ্ত সম্বতে) উৎকীর্ণ এরপের
শিলালিপিতে মাত্বিক্ ও ধন্তবিক্র নাম আছে। কিন্ত গোর
মাণের ১ম বর্ষে উৎকীর্ণ এরণের স্বতন্ত্র লিপিতে ধন্তবিক্
জীবিত ও মাত্বিক্ মুত লিবিত। আবার এরণের স্বার একথানি প্রস্তরন্তরে থোলিত লিপি পাঠে জানা যার। ১৯০ (গুপ্ত
সম্বতে) ভার গুপ্ত এ স্কালল অধীশ্বর বলিয়া শীক্ত হইয়াছিলেন।
এরপ স্বলে হ্ণরাজ ভোরমাণ ব্ধগুপ্তের (৪৮৪ খুটান্সের) কিছু
পরে এবং ভার্গুপ্তের (৫১০ খুটান্সের) পূর্বের পূর্বমান্তর
মাধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন। [মহিরকুল দেখ।]

তোরশ্রেবৃ (পুং) অঙ্গিরা মুনি।

ভোরা (পারসী) > পুষ্পস্তবক। ২ উষ্টীষের ভূষণ।

"মাণিক কণ্মী তোরা চক্মকে হীরা" (বিদ্যাস্থ)

জোল (পং ক্লী) তুলাতে পরিমীয়তে তুল-কর্মণি দঞ্। তোলক, ৮০ রতি পরিমাণবিশেষ, তোলা, ভরি।

তোলক (পুং ক্রী) ভোলমেব স্বার্থে কন্। ভোল পরিমাণ,

> ভোলা, ৮০ রভিতে ১ ভোলা, ইবদ্যক পরিভাষার মঞ্

৯৬ রভিতে ২ ভোলা হয়। প্র্যায়—কোল, দ্রক্রকণ, বট্ড,
কর্ষার্ম, কর্ষা। (বৈদ্যকপরি^১)

"রসং গঝং ভোলকঞ্চ জাতীকোষফলে তথা।

কিরাততিক্রকং বালং তোলকঞ্চ সমাহরেও ॥" (রসেক্রসারনা) তোলন (ক্লী) তুল লাট্। ১ তোলকরণ, ওজন কর্ব। ২ উল্লোলন, উত্থাপন, উঠান।

তোলপাড় (দেশজ) অত্যন্ত আলোড়ন, অভিশব আলোচন।
তোলা (দেশজু) ১ উত্তোলন, উত্থাপন, উঠান। ২ বাহা সচরা
চর ব্যবহৃত হয়না, তুলিরা রাধা হয়। ৩ তোল, একড্টি,
স্থানভেদে যোলমাবা, কোথার বা এক ছটাকের চতুর্থাশ।
৪ বাজারের বিজেভাগণের নিকট হইতে কর বা ভিকাশকণ
গৃহীত প্রা জব্যের কিরদংশ।

তোলা উনান (দেশৰ) ভোলা আকা, রন্ধন করিবার স্থান, এই ভোলা উনান ইচ্ছাস্থ্যারে রাখিয়া দেওয়া বার এবং সময় মত ব্যবহারে লাগে।

তোলাপাড়া (দেশৰ) মনে মনে আন্দোলন করা।
তোল্য (অি) তুল-কর্মণি গৃং। ১ তোলনীয়। ভাষে গৃং।
২ তোলন।

"জীবানাং বরসাং কোনো তোলো বর্ণক্ত ছেমনি।" (লীলা॰)
ভোশ (পৃং) ডুশ বধে ভাবে বঞ্। ১ হিংসা। কর্জনি অচ্।
২ হিংসক। "ডে রার ইক্র তোশতমাং" (ঝক্ ১/১৬৯/৫)
'ভোশতি ব্ধকশ্বা নিভোশরতি নিব্হরতীতি ভ্রামস্থ পাঠাৎ
ভোশতমাং নাশনিত্তমাং' (সায়ণ)

;ভাষ (পুং) তৃষ ভাবে বঞ্। ১ সম্ভোষ, তৃপ্তি। ২ সারস্তৃব মবস্তরে তৃষিত প্রভৃতি দেবভার মধ্যে একজন দেবভা। "ভোষঃ প্রতোষঃ সম্ভোষে। ভদ্রঃ শাস্তিরিড়স্পতি।"(ভাগ° ৪।১।৭)

তাষক (बि.) ভূষ্টিকারক, আনন্দায়ক।

তাষক (পারদী) শব্যা, পাতলা গদি।

তাষণ (ক্লী) তুৰ ভাবে সূটে। ১ দুৰোৰ। তুৰ-ণিচ্ ভাবে-ন্টি। ২ সন্তোৰোৎপাদন।

"এতাবদেব পুরুবৈ: কার্যাং হৃদয়তোষণং" (ভারত সভা ১৬ অং) (ত্রি) কর্ত্তরি ল্যা ৩ সজোধজনক। করণে লুট্। ৪ তোষসাধন। ত্রিয়াং দ্বীপ্।

তাষদান (পারদী) রুজাদির আধার। ধাপ। তাষয়িতব্য (ত্রি) ভূষ-ণিচ্-তব্য। তোষণীর।

ত।যন্ত্র (পুং) কংসের অন্তর ভেদ। এই অস্থর ধমুর্বজ্ঞে ক্ফাহডেঁ নিহত হয়। (ভাগবত)

তাষল (ক্লী) তোবং লুনাতি লু বাহলকাং ড। আত্তেল, মুমলাত্র। "ক্ষণতোষলমুদ্যম্য গিরিক্টোপমং বলী।" (হরি॰ ৮৭ জ॰) তাষাঝানা (পারনী) বত্তাদ্রি এবং অস্থার্ক্স্থলার উপ-করণ রাধিবার স্থান।

তাবাম্ (ত্বাম্) পঞ্চাবের অন্তর্গত হিসার জেনার হাঁসি
নগরের ২৮ মাইল দক্ষিণে তোবাম্ নামে একটা ক্ষুদ্র গ্রাম
আছে। এখানে বালুকাম্র সমতল ক্ষেত্র-ছইতে একবারে
৮০০ ফিট্ উচ্চ এক পাহাড় আছে, এই পাহাড়ের গাতে
বৌদ্ধ ও বৈশ্ববগণের বছে খোদিত কএকখানি শিলালিপি
আছে। প্রবাদ এইরূপ পাতিরালার অমন্যসিংহ ত্বাম্
পাহাড়ে একটা ছর্গ নির্মাণ করেন। কিন্তু এই ছর্গ দৃষ্টে
বোধ হয়, অমরসিংহের বহুপুর্ব্বে ঐ ছর্গ নির্মিত হইরাছিল,
অমরসিংহ সংকার করিরাছেন মার্ট্র।

কেং কেং জন্মান করেন, এথালে ত্যার জাভির একটা

সকারাম হিল, তাহাতেই ভুষারারাম বলিত, তাহাই অপ্রংশে ভুষান্ বা তোষান্ নাম হইরাছে।

তোষামোদ (দেশৰ) খোঁনামোদ, মন বোগান।

(जियिक (बि) जून-निह्-का। • ज्य, जूहै।

তোষিন্ (ত্ৰি) ত্বাতীতি ত্ৰ-শিনি। 'তুইকারক।

তোষ্য (ত্ৰি) ভূৰ-গাং। • ভোৰণীৰ।

তৌক্ষিক (পুং) ধছরাশি। তৌগ্র্য (পুং) ভূরের পুত্র। "ভৌরোঁ। বাং গ্রোহ্মঃ" (ধক্ ১)১১৭১৫) 'ভৌগ্রা: ভূগ্রপুত্রঃ' (সাল্ল)

তৈীজি (আরবী) প্রজার নাম, কত পরিষাণ জ্মী, থাজানা, ইত্যাদির হিসাব পত্র।

তৌতাতিক (ক্লী) তৃতাতভটেন নিবৃত্তং তৃতাত-ঠক্। তৃতাত ভট কত দর্শনশাল্ল, কৌমারিল শাল্ল।

"নৈবাস্ত্রাবি প্ররোশ্বরণ ন বিদিতং ভৌতাতিকং দর্শনং।" (প্রবোধচক্রোদর ২০০)

ত্রোজাজিজ, অপ্রাসিক কুমারিলভটের নামান্তর। মাধবাচার্যা সর্বাদর্শনসংগ্রহে এই নাম দিরা কুমারিলের বচন উক্ত করিরাছেন। ইতিপুর্বে কুমারিলভট শব্দে কুমারিলের ধর্ম- মতের বিস্থৃত আলোচনা করা হইরাছে। ঐ প্রবহে লিখিত হইরাছে, কুমারিল খুষীর ৫ম শতাব্দে প্রাছ্ত্ত হইরাছিলেন, কিন্তু এখন প্রমাণ পাওরা বাইতেছে, কুমারিল ৫ম শতাব্দীর বহু পরে আবিভূতি হইরাছিলেন।

চীনপরিবালক ইৎসিং খুষীর ৭ম শতাকীতে ভারতবর্থে আসমন করেন। তাঁহার মতে, বাক্যপদীয়রচয়িতা ভর্ত্হরি ৬৫০ খুঁটাকে মানবলীলা সম্বরণ করেন। কুমারিল খনুরচিত ,মীমাংসাবার্ডিকে বাক্যপদীর হুইতে অনেক স্থলে বচনোত্ধার ও তাহার সমালোচনা করিয়া গিরাছেনপ

প্রসিদ্ধ কৈনাচার্য্য সমস্তভক্ত আগুমীমাংসার আইতের সর্বজ্ঞত্ব প্রতিশাদন করিয়াছেন। কৈনগ্রন্থকার অকলবন্দের আইশতী নামক আগুনীমাংসার টীকার প্রকল্পে করেন যে আইতের কোন ইন্সিংরের আবশুকতা নাই। কুমারিল তাহারই প্রতিবাদ করিয়াছেন। এথানে সমস্তভদ্রের বৃদ্ধ অকলভ্রের টীকা উদ্ভ করিয়া দেখাইতেছি—

"ব্লাম্বরিতদ্রধাঃ প্রতাক্ষাঃ কন্তচিল্পা।" (সমন্তভ্র)

অকলর টীকার লিবিরাছেন 'অন্তরিত' অর্থাৎ 'কাল-বিপ্রক্ষি অতীতাদি ব' কুমারিল সমস্ততজ্ঞর মূল ও অকলত্ত্বর টীকা উচ্ ত করিরা এইরপ প্রতিবাদ করিরাছেন— "এবং বৈঃ কেবলং জ্ঞানমিজিরাম্বনগেকিণঃ। প্রতিটাদিবিবরং শীব্দ পরিক্ষিতম্। ন তে ভদাগমাৎ সিধোর চ ভেনাগমো বিনা।
দৃষ্টাস্তোপি ন ভ্যান্তো নৃষ্ কল্ডিং প্রবর্ততে।" (ভর্বার্তিক)
আবার কৈনপ্রস্থলার বিভানন্দ উচ্ছার প্রাক্রান্তিকে
কুমারিলভট্টের মত উক্তাকরিয়া শিধিরাছেন---

্তিতো ষত্পৰ্সনকারি ভটেন বৈশ্বক্তং কেবলং জানমিজিয়াপ্তনপেকিশঃ। ক্সাভীতাদিবিষয়ং ক্সুন্ধীবস্ত তৈরদঃ॥"

কুমারিলের তন্ত্রথান্তিকে অনেক হলেই ঐ রূপ অকলছের অপ্রপানী রুয়াথ্যার কথা ও ভাহার প্রতিবাদ লক্ষিত হয়। অপর পক্ষে বিভানন্দ অকলহের মত সমর্থন করিরা নির্দ্ধ অইসাহল্রী গ্রন্থে বছস্থানেই কুমারিলের তীত্র প্রতিবাদ করিয়া গিরাছেন। এরপ হলে অকলম্ভ ও বিভানন্দের সমর নিরূপণ করিতে পারিলেই আমরা নিঃসন্দেহে কুমারিলের প্রকৃত সমর হির্ম করিতে পারিব।

 ৮৬৩ শকে ৰম্প কৰ্ণাটী ভাষায় লিখিত আদিপুরাণে এবং ৮৮২ শকে গোষদেব আপেনার যশব্তিকককাট্যা অকলত দেবকে শ্রেষ্ঠ প্রমাণশাত্রবিৎ বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিরাছেন। আবার অ্নেসেনাচার্য্য ৭৬০ শকে জৈন আদিপুরাণে অকলছ-. দেবের নামোলেখ করিরাছেন। জিনদেনাচার্য্য রাষ্ট্রকুট-त्रांक)म कारमाचन र्यंत अत्र हिर्लन। जिनि कानि श्रृताहणत একত্বাৰে প্ৰভাচত্ত্বে চজোদয় নামক ভায় গ্ৰন্থের উল্লেখ করিয়াছেন। প্রভাচক্রের ভাষকুষ্দচক্রোদর এবং বিভা-নদ্দের অব্টসাহলী গ্রন্থে উভন্ন প্রস্থকারই অংকলয়নেবের শিখা বলিয়া স্ব স্থ পরিচয় দিয়াছেন। এদিকে প্রভাচক্র বাণভটের কাদম্বী ও তর্ত্হরির বাক্যপদীয় উচ্ত করিয়া-ছেন। আবার বৈদ গ্রন্থকার ব্রহ্মনেমিদর্ভ লিথিয়াছেন— অকলক্ষণেব রাষ্ট্রনুটরাজ (১ম) কৃষ্ণরাজ্বের সসসাময়িক। গুজরাট হইতে আবিষ্কৃত রাষ্ট্রকুটরাজ দক্তিকর্পের ভামশাসন হারা জানা যায়, ৬৭৫ শকে তিনি রাজত্ব করিতেছিলেন। তাঁহার পুরে তাঁহার খুলতাত কৃষ্ণরাজ উত্তরাধিকার শাভ करत्रन। विनामितार्था উত্তরপুরাণে विश्वित्रार्ह्ण - १०४ শকে কৃষ্ণরাজের পুজ বলভরাজ রাজদণ্ড প্রাপ্ত হন।

পূর্বেই লিখিরাছি, ইৎসিংএর মতে ৩৫০ বৃষ্টাব্দে বাকা পদীম-রচয়িতা ভর্ত্রের মৃত্যু হয়। কুমারিল বাকাপদীয়ের প্রোক উচ্ত করিয়াছেন। অকলগুদেবের শিক্ত প্রভাচন্দ্র ও বিভানন উভরেই কুমারিলের ভক্তবার্তিকের আলোচনা করিরা গিয়াছেন। আবার কুমারিলও অকলক্ষের অইশভীর আন্দেক কথা উচ্ত করিয়াছেন। কিন্তু অকলগুলেব কোন হানে কুমারিলের মতের এতিবাদ ক্ষেন নাই। থার্কণ ধূলে কুমারিল ধর্মকীর্জি ও বাকাপদীর রচরিতা উর্ক্টির প্রবর্তী, অকলন্ধদেবের সমলামরিক হইলেও তংপরে এছা রচনা করেন এবং অকলন্ধের শিশ্ব বিভানন্দ ও প্রভাচত্ত্রে কিছু পূর্ববর্তী হইতেছেন। অকলন্ধদেব রাইকুটরাছ ক্ষরাজ্যের সমরে (৬৭৫ শক্ষের পরে এবং ৭০৫ শক্ষে পূর্বে) বিভ্যান ছিলেন। স্থতরাং কুমারিলভট্টও ঐ সমঃ আবিভূতি হইরা বৈদিক ধর্ম গ্রাচার করিরাছিলেন।

ভৌতিক (রী)> মুকা। (পুং) ২ ভকি।

ভোদী (জী) বিষনাশক বৃষ্ঠভেদ, শুভকুমারী 1 "ভৌনী নামাসি কলা শুভাচী বা অদি" (অথর্কা ১০৪৪২৪)

তোষরবিন্ (পুং) তুষুরুদা কলাপ্যস্তেবাসিনাং গ্রোভ মধীনতে ইনি। তুষুরুপ্রোক শাধাধ্যানী, তুষুরুপ্রোক শান্ধ অধ্যয়নকারক।

তৌর (क्री) যাগভেদ।

"সংবৎসরমহরহজোরেন বজেত" (नाष्ट्रा (त्नी) ১০।२०।১)
Сजीत्रधान (क्री) फूर्नर यानमञ्ज প্ৰোদরাদিশাৎ সাধু:। ज् त्रमनयुक्त ।

তোরপ্রাবস (ক্রী) তোরপ্রবা ক্ষিরসা দৃষ্টং সাম জ্। সামভেদ।

"তৌরশ্রবদে মাধ্যন্দিনে প্রমানে" (কাত্যা° শ্রোং ২৫১১৪)ঃ) 'তৌরশ্রবদে সামনী' (কর্ক)

তোরায়নিক (ত্রি) ত্রারণং বজ্ঞং বর্তরতি ত্রারণ-ঠঞ্। (পারারণত্রারণচান্তারণং বর্তরতি। পা ৫০১:৭২) ত্রারণ । বজকারী।

তৌধ্য (ক্লী) ভূৰ্ব্যে মুরজানে তবং ভূৰ্ব্য-অণ্। ভূৰ্ব্যবাদ,
মুরজানি ধ্বনি, পাকোরাজ বাজনা।

ভৌৰ্য্যক্তিক (ক্লী) অন্নোংশ: বঁক্ত ত্ৰিসংখ্যাদাং কন্ ভৌৰ্য্যোপদান্ধিতং ত্ৰিকং। •সমূদিত নৃত্য গীত ও বাদ্য, না সম্বন্ধীয়ু নৃত্য গীত ও বাদ্য। ইহা একটা কামৰ বাসন, ইহাতে আসক্তি পরিত্যাগ করা উচিত।

"ভৌৰ্যজিকং বুধাট্যা চ কামজো-দশকোগণঃ" (বরু १।৪१)
বিষ্ণৃগৃহে বা দেবালয়ে এই ভৌৰ্যজিক অৰ্থাং নৃষ গীত ও যাদ্য করিলে পুণ্য হয় এবং অস্তিমে বিষ্ণাদি গতি হয়। (বরাহপুণ)

ভৌল (রী) তুলা এব খার্থে অন্। খার্থিকাঃ গ্রাজী কচিৎ লিলবচনানি অভিবর্তন্তে ইত্যুক্তেঃ দেবভাদিবৎ রী^{ব্ডা} ১ তুলা, তুলাদশু। (পুং) ২ তুলারাশি।

তৌলকর (বি) তৌল করোডি ছ-ট। পরিমাপক, কর্মা ভৌলিক (গুং) তুদ্যা তুলিক্দা শীখতি তুলি উক্ল চিবানী ভৌলিকিক (পুং.) ছলিকরা শীবভি ছ্লিকা-ঠক্। চিত্রছার, প্রুরা, পর্যার রলাশীন, চিত্রহুৎ, ভৌলিক। (শল্মালা). ভৌলিন্ (পুং) ছলৈব ভৌলং ডৎ বিদ্যান্তে অন্ত ইনি। ভুলারানি।

তে লা (জি) ভূলরা পরিচ্ছিরং ব্যঞ্। ১ ভূলাবারা পরিচ্ছির। ভূলাবেব বার্থে অণ্। ২ ভূলা।

তে বিলায়ন (পুং) ভ্ৰণত ধৰেরণভাং ধ্বা, ভ্ৰণ-ইঞ্ কন্। ভ্ৰণ ধৰির যুবা অগতা।

্তীপ্রলি (পৃং) ত্ৰলভ ধবেরপত্যং ইঞ্। ত্ৰলখবির অপত্য।

তৌপ্রল্যাদি (পৃং) পাণিব্যক্ত গণ বিশেষ। ভৌষদি, ধারণি,
পারণি, রাবণি, দৈলীপি, দৈবতি, বার্কলি, নৈবকি, দৈবমতি,
দৈবৰজ্ঞি, চাকট্টকি, বৈষকি, বৈদি, আন্তরাহতি, পৌকরসাদি,
আন্তরোহতি, আন্ততি, প্রাদোহনি, নৈমিশ্রি, প্রাড়াহতি,
বাদ্ধকি, বৈশীতি, আসিনাসি, জাহিংসি, আন্তরি, নৈমিবি,
আসিবদ্ধকি, পৌজরেণ্পালি, বৈক্ণি, বৈর্কি, বৈহতি।
(পাণিনি ২০৪০১)

তীবরক (ত্রি) তুবর্গ্যা ইনং অণ্ খার্প্রেকন্। তুবরী সম্মীয় মেহাদি। "ধতে ভলাতকলেহাৎ মেহাজৌবরকাত্তপা।" (ক্সাড) ২ তুবরক।

চীবিলিকা (ত্রী) ঔষধভেদ। "ভৌবিলিকে! ২বেলরাবার মৈলব ঐলরীৎ" (অথর্কবেদ ৬০১৬০)

চীষার (অতি) ত্যারভেদং ত্যার-অব্। ত্যার সম্কীর জল। ্ত্যার দেখা]

ন্ (পুং) আত্মন্ আলোপ:। আত্মা। "অনম্জংন বিশ্বধ
দর্ধাে" (ঋক্ ১৷৬৩৷৮) 'অনং আত্মানং আত্তিহিল্লাপি
লেদি দৃভতে, ইতি আত্মনী আকারলোপ: সংজ্ঞাপুর্বকভ বিধেরনিত্যতাং উপধাদীর্ঘাতাবং' (সারণ) অন্ শব্দের ভূতীয়ার একবচন ভানে বা হয়।

ভীপ অস্তা বনস্পতে" (ৰক্ ১**৷১৮৮**৷১১)

ক্ত (ঁত্রি) তাজ-ক্ত। ক্বডতাগ, বর্জিত, যাহা তাগু করা ইরাছে। পর্যায়—হীন, সমুজ্ঝিত, উৎপষ্ট, ধৃত, বিধৃত, নাক্ত, বিরহিত, নিব্ৰুচ। (ত্রিকাও)

ক্রব্য (ত্রি) ভাজ-তব্য। ভাজনীয়, ভাগের যোগা।

ক। (জি) ভাল-ভূচ্। ভাগকারী।

গল (পুং) গ্রছকর্তাজের, কেহ কেহ ইহার নাম ভিগল ইরপ বলিয়া থাকেন।

ারি (जी) নাৰভেছ।

VIII

ভাজন (রী) ভাজ-লুট্। ভাগে, বর্জন, পরিহার।
ভাজনীয় (জি) ভাজ-জনীয়র। ভাগের বোগা।
ভাজস্ (পুঁং) ভাজ ভাবে জন্মন্। ভাগের বোগা।
(ঋক্ ১০১১৯০১২) 'ভাজসাঁ ভাগেন' (সারণ) (জি)
কর্তির জন্মন্। ২ ভাগেকর্তা। "চিন্নারহতি মহি-ভাজং"
(ঋক্ ১০১৪৪৯) 'ভাজো হংগল বর্জনিভ্' (সারণ) করণে
জন্মন্। ও জোধ।
ভাজ্যমান (জি) ভাজ-শানচ্। বাহা ভাগে করা হইরাছে।
ভাজ্যমান (জি) ভাজ-শানচ্। বাহা ভাগে করা হইরাছে।
ভাজ্যমান (জি) ভাজ-শানচ্। বাহা ভাগে করা হইরাছে।
ভাজ্যমান (জি) ভাজ-শানচ্। বাহা ভাগে ভাজনিভাগ ভাজ্যমান

শিত্যবভং শত্যপন্নং ত্রিগুত্যং শঙ্কাত বোনিং নিহিতঞ্চ সভ্যে। শৃত্যত শত্যমৃতস্ত্যনেত্রং

সভ্যান্দ্ৰকং ছাং শরণং প্রপন্নাঃ ॥" (ভাগ॰ ১০।২।২৬) 'সদ্ধেদন পৃথিব্যপ্ ভেজাংসি ত্যদ্ শব্দেন বার্রাকাশো' (প্রীধর) ভাগবভের এই লোকে ত্যদ্ শব্দে বায়ু ও আকাশ অভিহিত হইরাছে।

ত সর্ব্বল পরোক্ষাভিধানার্থ বন্ত। ৪ প্রাসিষ্ক। এই শক্ষ সর্ব্বনাম ইছার রূপ ভালাদির ফারু হইবে পুংলিকে ভ, ভোটা, ভো। জীলিকে ভা, ভো, ভাা:। ক্লীবলিকে ভাদ্, ভে, ভানি ইভাাদি। অব্যথীভাবসমানে এই শক্ষের অচ্ সমাসান্ত হয়। বথা ভাভ সমীপে উপভাদং ইভাাদি।

ত্যদাদি (গং) পাণিনীরগণস্ত্রোক্ত শব্দ সমূহ—তাদ্, তদ্, যদ্, এতদ্, ইদম্, অদস্, এক, দি, যুম্দ্, অসদ্, তবং, কিম্ । অছ বিধিতে অর্থাৎ টি হানে অং হয় এই বিষদ্ধে ছি শব্দ পর্যান্ত গৈহণই ভাষ্যভারের অভিলবিত। তাদাদির টি হানে অং হয়, ইহাতে তাদ্দ্ হইতে কিম্ পর্যান্ত বুঝার, কিন্তু ভাষাকাব বলেন, অদ্ব বিধিতে ছি পর্যান্ত গ্রহণ জানিবে। (পাণিনি) ত্যাগ (গং) ভাজ-ভাবে ঘঞ্। উৎসর্গ, বর্জান, ইহা আমার নয় এইরণ মৃত্তাব্যের স্বভ্ধবংসামূক্লব্যাগার কিশেব।

"ন, মাডা ন পিডা ন জী ন প্রভাগেমইতি।" (মহু ৮।০৮৯)
মাডা, পিডা, জী, পুত্র ভাগের যোগা নয় অর্থাৎ
ইহাদিগকে ভাগে করিতে নাই।

২ দান। ও বিবেদিপুক্ষর। (শক্ষরণ) ৪ সর্বাকশ্বফল বিদ্-র্জন, ড্যাগের বিষয় গীভার এইরূপ দিখিত আছে—

সংভাস: ও ত্যাসেঁর বাত্তৰিক কোন গার্থক্য নাই, সংভাসেরই একটু বিশেব অবস্থাকে ত্যাগ কছে। বিচক্ষণ লোক সকল কান্যধর্মের পরিত্যাগ করাকে সভোস এবং সমত কর্মের ফ্লাকাক্ষা পরিত্যাগ করাকে ত্যাগ ব্লিরাছেন। অতএব সংস্থাসের বিলেষ অবস্থাকে ভ্যাগ ৰ্ণিয়া গণ্য করা হইল। ত্যাগ এবং সংস্থাস বিষয়ে কোন কোন ধবিগণের জটিল সিদ্ধান্ত দেখিয়া আপাঠতঃ মতহৈবধ वर्णिया द्वांस इब, , किन्दु विटमव विठक्ष्मणात महिल दिला मल्देवध वा विद्याध विनया दिवाध हम ना। दक्र दक्र वर्णन, भीत त्मर, मन ७ रेक्सिशांनि वांत्रा त्य त्कान किया करत, তংসমন্তই বল্লের হেতু হইয়া থাকে, এইজয় ইহাও অন্তাল लात्यत छात्र त्वर, मन ও ইक्षितानियात्रा निम्नाना नकन कर्षारे পরিত্যকা ৷শ্যাবার কৈহ কেহ তাহার বিপরীত দিদ্ধান্ত করিরা পাকেন। তাহারা বলেন, যজ্ঞ, দান ও তপ প্রভৃতি কর্মাফু-ঠান বারা বিভ্রু হইয়া চিত্ত এক্সজ্ঞানের অধিকারী হয়, অতএব ইহা পরিত্যকানহে। ভগবান্ অর্জ্নকে বনেন, ইহার মীমাংসা এইরূপ—ত্যাগ ত্রিবিধ সাধিক, রাজসিক ও তামসিক। যক্ত, দান ও তপঃ প্রভৃতি কর্ম কথনই পরিতাজা, নহে, ইহা সর্বাদীই অমুধান করা উচিত, কারণ যজ্ঞ দান ও তপঃ প্রভৃতি কর্মবারা মনীবিদিগের দেহ, মন ও ইন্দ্রিরা-. দির বিশুদ্ধি বা নির্মাণতা সম্পাদিত হইয়া থাকে। অবতএব অব্যক্তি ও ফলকামনাপরিশ্ত হইয়া এই সকল কর্মের ুজুমুঠান করা কর্তব্য। মনীবিগণ বন্ধন ভারে যে কর্ম পরি-ত্যাগের কথা বলিয়াছেন, তাহা কর্ম। অমুক কার্য্য ধারা আমার অমুক প্রকার স্থ সাধন হইবে, এই উল্লেখ্যে বে কোন কর্ম করা বায়, তাহাকে কাম্যকর্ম ক্ছে। কাম্যকর্ম ৰাৱা আৰুজ্ঞান লাভের উপযুক্ত চিত্তভূদ্ধি হয় না, কিছ चर्नानि कन दहेता थाटक, ऋजताः मुक्ति ना हिहेता तक्षनहे হইল। এইজভ ঘাহারা ঐহিক ও পারত্তিক কোন প্রকার স্থুপভোগের বাসনা রাখেন না, কেবল মাত্র মুক্তি অর্থাৎ जाखिळान पात्रा (पैर, मन ७ हेळियानि अफ्रुपैनार्यंत नहिल অভিন্নভাবে আত্মার উপলব্ধি হইতেছে, সেই ভ্রাম্ভির বিনাশই তাঁহারা প্রার্থনা করেন, এই জন্ম কামাধর্শের অনুষ্ঠান তাহা-দের প্রয়োজন হয় না। কিন্তু তাই বলিয়া নিতা ও নৈমিতিক কর্ম কথনই পরিত্যাগ করেন না। কারণ নিড়া নৈমিজিক कर्त्यंत्र यथाविथ व्यक्षेत्रान कतित्व खीरवत्र कथन वह्नन इत्र ना কিন্তু ব্ৰশ্বজ্ঞান হইয়া থাকে। অত্তৰ্তৰ মোহৰশে এই সকল কর্মের পরিত্যাগ করাকে ভামস্ত্যাগ করে। বাহারা কার-ক্লেশে ও অর্থভিয়াদি ভবে অভিশব কটকনক বলিয়া কর্ম পরিত্যাগ করেন, তাহাকে রাজন পরিত্যাগ করে। এইভাবে কর্মতাগ করিলে তাংগের ফল হর না। বাহারা সমত আনজি-ফ্লাকাজ্কা-পরিত্যাগপুর্বক কেবলমাত্র কর্তব্যতা-বোধে নিত্য ও নৈষিত্তিক কর্মের অমুষ্ঠান করেন, তাহাই

সাধিক ত্যাগ। কৰ্মে আসন্তি ও ক্লাভিগাব পরিতাস কর্ম। কেই কর্মত্যাগ বলে। ক্রিয়ার ত্যাগকে কর্মত্যাগ বলে বা।

বিনি অকুশন কর্মকেও কিছুমাত্র বিষেষ করেন না এবং ওতলনক কার্য্যেও আসক্ত হন না, ভাহারাই বাতবিক কর্মত্যাগী। যতক্ষণ পর্যন্ত দেহ, মন ও ইত্রিরাদির বিভন্নীনতা থাকে, ততক্ষণ পর্যন্ত কোন প্রাণীরই অশেষ কর্ম পরিভ্যার করা সন্তবে না। কারণ জীবন ধারণ করিতে হইলে দেহ, মন ও ইত্রিরাদির জিরা না হইরাই পারে না। এমন কি স্থপাবস্থাতেও জিরা নিতৃত থাকে না, অতএব কর্ম পরিভ্যার করা কথাধারা জিরার পরিভ্যাগ করা এরণ অর্থ বৃহিত্তে হইবে না। কিন্তু বাহারা কর্ম্মের ফলত্যাগী, ভাহারাই ভাারী বিলিরা ক্থিত হইরা থাকেন। কর্মকলত্যাগই ভ্যাগপদবাচ্য। (গীতা ১৮ অং) (ত্রি) ভ্যাগকর্জা, দাভা। "মিথো বন্ত্যাগন্ত ভ্রালো" (ঝক্ ৪।২৪।৩) 'ভ্যাগহ ভ্যাগকর্জারং দাভারং' (সারণ) ভ্যাগপত্র (ক্রী) ভ্যাগন্ত পত্রং। ১ দানপত্র। ২ দারণারি-ভ্যাগপত্র (ক্রী) ভ্যাগন্ত পত্রং। ১ দানপত্র। ২ দারণারি-ভ্যাগিপি।

ত্যাগশীল (ত্ত্তি) ত্যাগএব শীলং যন্ত। দানশীল, আত্মহং
প্রিত্যাগী।

ত্যাগস্থীকার (পুং) আত্মধ্বিসর্জ্ঞন, আত্মুখপরিত্যাগ।

🚉ভগৰাসুবাচ।

- কামানাং কর্মণং ভাসং সন্নাসং কৰলে বিদুং। ।
 সর্ককর্মকলভাগেং প্রাহত্তাগেং বিচক্ষণাং ।
 ত্যালাং বোষবিভাগে কর্ম প্রাহর্মনীবিশঃ।
 যজনানভপংকর্ম ন ভ্যালামিতি চাপারে ।
 নিকরং পূণ্ মে ভল ভাগে ভরতসভ্তম।
 ভ্যাগো হি পূক্ষব্যাল লিবিখ: সংপ্রকীর্তিতঃ ।
 বজ্ঞো দানং ভপং কর্ম ন ভ্যালাং ক্যানিকের ভং।
 যজ্ঞো দানং ভপংকর্ম ন ভ্যালাং ক্যানিকের ভং।
 যজ্ঞো দানং ভপণতের পাবনানি মনীবিশাং ।
 কর্মনানীতি মে পার্য নিকিভং মতমুভ্সং ।
 নিরভক্ত ভুসন্নাসং ক্রমণো নোপ্রস্থাতে।
- সোহাতত পরিত্যাগল্ডামসং পরিকীর্তিতঃ ।

 ছ:ধবিত্যের বং কর্ম কার্ত্রেশকরাজ্ঞানেং।

 স কুরা রাজসং ত্যাগং বৈধ ত্যাগকলং লতেং।

 কার্য্যমিত্যের বংকর্ম বিরুত্ত ক্রিরতেংক্রিন।

 সলং যক্ত্যা কলকৈব স ত্যাগং সাহিকোলকঃ।

 ন বেট্যকুশলং কর্ম কুশলে মাতৃবজ্ঞতে।

 ভ্যাগী স্বস্বাধিটো বেশাবী ক্রিয়সংগ্রাংগা

ज्यातिन् (वि) जिल्ली जिल्लाम्बर्न् (नन्त्राहरूयाध् बत्बिज। भागाराऽहर)। > शोजा। र मृत्र। ० वर्ष्कन-केन। ३ कर्षकनजानी, विद्यकी।

"ন হি দেহত্তাং শক্যং তাক্ত্রু কর্মাণ্যশেষতঃ। হস্ত কর্মকণত্যাণী স ত্যাণীতাভিধীয়তে ॥" (গীতা ১৮।১১) ভ্যাগিম (ত্রি) ভ্যাগেন নিহুত্তঃ ভ্যাগ-মপ্। ভ্যক্ত, ভ্যাগ্রারা নিশার।

ত্যাক্স (ত্রি) ভাষাতে ইতি তাল কর্মণি গাং, তালেন্চ ইঙি ন কুমং। ১ বর্জনীয়, ত্যাগেঁর বোগ্য। ২ দানের বোগ্য। ভ্যাদৃশ্ (ত্রি) তাক্সইব দুখ্যতেহনৌ তাদ্দৃশ-কিশ্। তাদৃশ,

ক্রক (পুং) অগি-জন্। প্রভেদ, দগরীবিশেষ, এই নগরী হরিশক্তের রাজধানী।

ব্রপমান (বি) বেশ-শানচ্। লক্ষমান, বে লক্ষা পাইরাছে।
ব্রপা (বী) ব্যাপ্যতে ইতি বাগ-ক্ষ্ডভটাশ্। সলকা, বীড়া।
কর্তিরি অচ্। (বি) ২ সলজ্ঞা ও কুল্টা। ৪ কুল্।
ক্লীর্ডি। (শক্তি)

ত্রপাক (পুং) অপতে লজ্জতে অপ-আ-ক। (আক: ধর্মাদে:। উণ্ ১৷২১৯) ইতি উণাদিকোবধৃতস্ত্রভাৎ আক:। মেছেবিশেষ। ত্রপানিরস্ত (আি) অপমা নিরস্ত:। নির্লক্ষ্ক, লক্ষারহিত।

ত্ৰপান্তিত (তি) অপয়া অন্বিতঃ। কজাযুক্ত।

ত্রপারপ্তা (স্ত্রী) অপারাং রণ্ডেব, লজ্জাহীনদ্বাৎ তথাদং। বেস্তা, গণিকা। (ত্রি) লজ্জাহীনা।

রপাবং (ত্রি) ত্রণা বিদ্যতে হস্ত, ত্রণা মতুপ্, মস্ত ব । দক্ষাণীক। রূপিত (ত্রি) ত্রণ-ক্ষ। ত্রণাযুক্ত, দক্ষিত।

ন্নপিষ্ঠ (ত্রি) অরমেবামতিশরেন তৃপ্র: তৃপ্র-ইন্ঠন্। প্রির-হিরেত্যাদিনা তৃপ্র-শক্ষ ত্রপ্ আদেশ:। অতিতৃপ্র, অতিশর লক্ষিত, অতিশর কজাশীল ।

ব্লীয়স্ (এ) অৱমনরোরতিশরেন তৃপ্র: তৃপ্র-ঈদ্বন্তৃপ্রস্ত অপ্ আদেশ:। এপিঠ, অতি শক্ষিত।

হ্বপু(ক্লী) অবিং দৃষ্ট্। অপতে ইব অপ-উস্। ১ সীসক। ২ রজ, টন।

অপু অর্থাৎ টিনকে হিন্দীতে করই, রাঙ্গ, বাঁ কঠেন, তামিনে তগরম্, মনবে তিম, ফঁনব, ত্রন্ধে থৈম, আরবে কন্দিন, রেনাদ্ ও পারতে উর্থিজ বলে। °(It. Latta, banda, stagnata; Fr. Fer blanc; Ger. Weissblech, sinn; Rus. Blacha, shest.)

এই ধাড় দেখিতে রূপার•মত, পরিষার থাকিলে অতি উক্ষণ দেখার। ইহাতে জর বিশাদ আছে। খবিলে এক

প্রকার গন্ধ বাহির হয়। সোণার মত না হইলেও সীসা ष्यां प्रका हिन कठिन। हेरांत्र ष्यारं किक खक्क १२२। ইহা বড়ই বাডসহ, বড়ইছো পিটিলেও ভাঞ্চেনা; এমন কি, একথানি টিনে 🛼 ে পাতব্য পাত করা যার। 👀 🖫 ইঞ্চ পরিধিবিশিষ্ট টিনের স্থাত্ত যোল, সডের সের ওঞ্জনের জিনিস युगान बारेटल পारत । •रेरा भिष्ठित्रा रियम भाउना कंत्रा वाम, কিন্ত ডেমন চওড়া করা যার না। ইহা বড় কোমল, সহজেই নোরান যার। তামা, দক্তা প্রভৃতি ধাতুর সহিত সহজেই টিন মিশ্রিত হইতে পারে। অপর ধাতু কলাই বাু ঢাকিবার অস্ত বহুপরিমাণে টিন ব্যবহৃত হয়। টিনের পাত দিরা ষুড়িলে লৌছে মরিচাধরে না। অল্লিনংম্পর্লেটিন লৌছের অভাত্তরেও প্রবেশ করে, ভারাতে লৌরের খেতবর্ণ হয়। বোধ হর, এই অস্তই ফটলতে টিনের পাত খেতলোহ (White iron) নামে খ্যাত। টিনের জাবকে অভি পাতলা লৌহের পাত ভুবাইরা সাধারণতঃ 'বেরুতনৌছ' প্রস্তুত্র। বিলাত্তে খেডলোহের বড় আদর।

ভাষের পাকপাত্রাদিতে সহম্বেই কলম ধরে, কিন্তু টিনের পাত দিরা কলাই করিলে আর কলম পড়ে না। নাইট্রিক, বিউরিয়াটিক, নাইট্রো-সালফিউরিক ও টার্টারিক এসিঙে ট্রিন স্রব করিরা অনেক মঙে মিশান হয়, তাহাতে রঙের স্থারিত্ব ও ঔজ্জনা বৃদ্ধি হইয়া থাকে।

অতি প্রাচীন কাল হইতে মানবলাতির নিকট টিন পরিচিত। বজুর্বেলে আমরা স্বপ্রথম 'ত্রপু' শব্দের উল্লেখ পাই—

"লোহক মে সীসক মে অপুচ মে যজেন করন্তাম্।"
, (শুরুষকু: ১৮/১২)। এতত্তির অথর্কবের (১১।৩৮), ছান্দোগ্যোপনিষৎ (৪।১৭।৭) প্রভৃতি শুতিতে, এবং মন্তু, যাজ্ঞবন্ধ্য
প্রভৃতি স্থৃতিতে 'অপু' অর্থাৎ টিনের উল্লেখ আছে।
নপুংসক (পশুপক্ষী) হত্যা করিলে যাজ্ঞবন্ধ্য প্রায়শ্চিত্তস্কলপ একমায়া অপুশু সীসক-দান ব্যবহা করিরাছেন।

'উরগে ভারসোদতা: পতকে অপুনীসক্ষ্।' (৩।২৭০) । মহাভারতৈ অপুরোপ্যের মল বলিয়া বণিত হইরাছে।

"ত্বৰ্ভ মৰং ক্লপাং ক্লপাভাপি মৰং ত্ৰপু। ভেনং ত্ৰপুমৰং দীসং দীসভাপি মৰং মুৰুদ্ধ॥"

(ভারত উল্মোণ ৩৮ আ:)

ভারতে যেমনু বৈদিক বুগ হইতে অপুর ব্যবহার চলিরা আসিতেছে, রুরোপেও সেইরপ বছকাল হইতে টন প্রচলিত। হিরোদোতস্, দিওলোরস্ সিকিউলস্ত ও ট্রাবো ফিনিকীর বণিকদিগের কাসিতেরিদেশ বা টন বীপে বাআর বিশ্বরণ নিশিবত করিরা থিরাছেন। পুরাবিশ্রণ সিনিনীরীপ ও বিশাতের কর্ণওরালকে প্রাচীন কাসিডেরিরেশ বলিরা ছির ক্রিয়াছেন। বাস্তরিক এথবাও কর্ণগুরাল, নামক ছানে থনি হইতে যে পরিমানে টিন বাহির হইতেছে, মুরোপের আর কোন হান হইতে এরপ টিন পাওরা বার না।

প্রাকালে আর্য থবিগণ অথুবা ফিনিকীর বণিকগণ টিন লইয়া কি কি প্রস্তুত করিতেন, তাহার কোন প্রমাণ পাঞ্চরা মার না। যজে তাপুর প্রেলিলন হইত, বফুর্কেল হইতে আমরা এই টুকু সদ্ধান পাই। স্বতিতে তাপু মূল্যবান্ জিনিস মধ্যে গণা হৈয়াছে। এই তাপু ও তাম একতা মিলিজ হইলে কাংক্ত হয়, তাহাও ভারত্বাসী বহুপ্রাচীনকাল হইতে জানিত্ন।

শ্বণা অপুস্কাররে। সংবোগে ধাদস্তরক্ত কাংস্তরোৎপত্তি। । কাজারিবাদ, ধারবার, গুজরাট ও মধ্যক্তারতের বস্তার রাজ্যের স্থানে স্থানে টিন-পাথর (Tin-stone) পাওরা গিরাছে, কিন্তু ভাল টিন কোথাও পাওরা যার নাই। বন্ধদেশ, মলমপ্রারোদ্ধাপ, বালা, যবদীপ ও চীনের কোন কোন স্থানে টিনের থনি আছে। তম্মধ্যে মলর-প্রারোদ্ধাপর টিনের খনি জগতের মধ্যে সর্পপ্রধান। এত টিন জার কোথাও নাই। প্রশিকালে এথান হইতেই ভারতে টিন জাসিত। এথানে ভাবর-নগরে ১৫৮৬ খৃষ্ঠীর প্রাস্থিক শ্রমণকারী রাফ্ফিচ আসিয়া লিথিয়াছেন,—

'I went from Pegu to Malacca, passing many of the sea-ports of Pegu, as Martaban, the island of Tavoy, whence all India is supplied with tin, Tenasserim, the island of Junk-Ceylon, and many others.'

এখনও মলয় হঁইতে ভারতে টিন আহে। এখান হইতে প্রতি বর্বে ১২।১০ লক্ষ টাকার টিন রপ্তানি হয়।

টিন থনির মধ্যে ছই প্রকার অবস্থায় পাওরা যায়।
কথন কথন শিকতাঞ্জন, তাত্র, দীসক প্রভৃতির সহিত চাপড়া
হইয়া থাকে, ইহাকে টিন-দৌহ বলে। ইহা গলাইয়া
পরিকার করিয়া লইলে টিনথও হয়। অপর অবস্থায় ওঁড়া
বালি প্রভৃতির সহিত মিশ্রিত থাকে, এই ওঁড়া টিন অক্লিম
টিন বলিয়া গণ্য।

ত্রপুকর্কটী (ত্রী) ২ অপ্রী, কাঁক্ড়। ২ শ্সা।
ত্রপুটী (ত্রী) হল্পো, ছোট এলাচি।
ত্রপুল (ক্লী) ত্রপতে অধিসংস্পর্শেন সংজ্ঞাতে ইব ত্রপ বাছং
তিস্চু। রদ, রাড়।

ত্রপুষ্ (क्री) লগ বাহু আব। > রক। ২ লগুরী কর্ম, শনা।
পর্যার—ক্রিকিকন, স্থধারান, স্থবীতন। ক্রুক্তনের ক্রুদ্দ নীল, বল, তৃকা, ক্রম, নাহ, গিত ও রক্তপিত্তনাশক। প্রক্ কলের ৩ব—শ্বম, উক, গিতল, ক্রুত্ত বাতনাশক। বৃত্ত কলের তুপ—মূত্রল, শীত, রক্ষ, গিত্ত ও অল্পক্রদ্ধাশক। (স্লাক্ষণ) ত্রপুষী (বী) অপুব গৌরা তীহ্। কর্মনী, কাঁকুড়। ত্রপুস (ক্লী) অপুব গৌরা তীহ্। কর্মনী, বাক্সনী।

ত্রপুনী (জী) জগুল গোরাণ ভীষ্। ২ মহেজ্ববার্ক ।

২ ফল লভাবিশ্বেষ, শলা, (Cucumber) পর্যায় নথিং
পূলা, কাঙালু, জপুকর্কটা, বহুফলা, কোবফলা, ভূজ্বিল্ফলা,
কণ্টকীলভা, স্থধাবাদা। ইহার ফলের গুণ-লফা, মধ্ব,
শিশির, গুরু, শুম, শিন্ত, বিদাহ ও ব্যননাশরু। (রাজনি)
ইহা ছই জাতি দেখা বায় ৷ ভূমিচারিণী বা ভূরে শলা। ইহার
ফল থর্প্রাক্তি ও ছুল। প্রার শীত হইতে গ্রীম্বহাল
পর্যান্ত ইহা জন্মার। মঞ্চারিণী বা মাচার্লদা বেহ বা
পালাশনা বলে। ইহা দেখিতে দীর্ঘ ও ছুল। কাহার ফল
খেত বা কাহার ফল সব্জ বর্ণ দেখা যায় ৷ ইহার গাত্রে
একরণ জলবং আটা আছে, ভজ্জন লোকে ইহাকে কীয়
কতে। ইহা প্রায় বর্ষা হইতে শরৎ পর্যান্ত বা বায় ।

ত্রপাদি (পুং) রদাদি সপ্তধাতু যথা—ত্রপু, সীদ, তাম, রজত, কৃষ্ণলোহ, স্ববর্গ, লোহমল।

ত্রপা (ত্রী) ঘনীভূতশ্লেমাদি। "ত্রপারা কর্ববিঃ ক্লিপ্তা বাটের রা হইতাং ব্রক্তেং।" 'ত্রপা ঘনীভূতশ্লেমাদি।' (শুদ্ভিড্) ত্রোপ্তা ক্লী) ঘনেতর দধি, পাতদা দই। (বিদ্যাবিনোদ) ত্রয় (ক্লী) ত্রিভ্রপ্। ১ ত্রিভ্র, ত্রিছ সংখ্যা, তিন।

"বেদত্তরাৎ নিরছ্ছৎ ভূভূবিঃ সরিজীতি চ।" (মহু) (তি) ২ তিছ সংখ্যাফুজ। প্রমাণ ; প্রত্যক্ষ, অসুমান ও আগন এই তিন প্রমাণ।

"প্রতিক্ষমন্ত্রমানক শারক ত্রিবিধাপনং।
ত্রাং স্থানিতং কার্যাং ধর্মগুরিক্জীপতাঃ ॥" (মন্ত্রু)
ত্রায়ঃপঞ্চাশৎ (ত্রী) > ত্রাধিকাপকাশৎ, ত্রিশক্ষণ ত্রান্
আদেশঃ। তিন কুধিক পঞ্চাশৎ সংখ্যা, ৫০, তিপ্লাল্ল। ২ তাঃ
পঞ্চাশৎ সংখ্যানুক্ত।

ত্রেম্বায্য (প্র-) এরং জন্মত্রং বাতি যা বাতৃ আয়ে,। জনতি প্রাথা "অ্তুর্ক ত্রহায়" (ঋক্ ৬।২।৭) ত্রহয়যোগ জন্মত্রংপ্রার্জ জন্মত্রং স্বর্থতে ।

"মাতৃষ্টগ্ৰহধিকননাৎ ছিতীবং সৌলিবজনাও। ভূতীবং বাল্দীকানা ইন্ধি ক্ষুদ্ধান্ত কুলি কুলু ্ৰই ক্ষত্ৰৰ শাভূগত হইতে ক্ষম আখন, নৌক্ৰিবছন কৰ্বাৎ উপন্যন সংখ্যাৰ বিভীন, বক্ৰদীকা ভূডীয়।

ব্রেরশ্চত্তারিংশৎ (বী) ত্রাধিকা চন্দারিংশৎ, ত্রিশন্ত ব্ররস্ আদেশ:। তিন অধিক চন্দারিংশৎ সংখ্যা, ৪৩, তেতালিশ।
ত্রেরঃষ্ঠি (বী) ত্রাধিকা বটিং। তিন অধিক ষ্ট সংখ্যা, ৬০, তেবটি।

ত্রয়সূ, আদেশ বিশেব, অশীতি শব্দ ও বছরীছি সমাস ভিন্ন সংখ্যাবাচক উত্তরণদ পরে থাকিলে ত্রি শব্দ ছানে ত্রন্ত্রস্ আনেশ হর। যথা ত্ররেদিশ প্রভৃতি। অশীতি শব্দ পরে থাকিলে হর না—যথা ত্রাশীতি। (পাণিনি ৬া৩৪৮)

ত্ত্রয়স্ত্রিংশ (ত্রি) জনজিংশৎ পূরণে ডট্। তিন অধিক জিংশৎ সংখ্যার পূরণ। জিরাং ঙীপ্।

ত্রয়ন্ত্রিংশৎ (ত্রি) ত্রাধিকা ত্রিংশৎ, ত্রি শর্মন্ত ত্ররস্ আদেশঃ। তিন অধিক ত্রিংশৎ সংখ্যা, ৩৩।

ত্রয়ন্ত্রিংশৎপতি (পং) অমন্তিংশতো দেবানাং পতি:।

১ ইক্র । বেদে ৩০টা দেবতার কথা আছে, তাঁহাদের মধ্যে
প্রেষ্ঠ বলিয়াও ইক্রের "অমন্তিংশৃংপতি" নাম হইরাছে।

২ প্রকাপতি । ইনি দেবতাদিগের অধিপতি; অইবস্থ,
একাদশ কক্র, বাদশ আদিতা এই একত্রিংশং, ইক্র ও
প্রকাপতি এই অরন্তিংশং। "কডমে ডে ত্রমন্তিংশদিতাটো
বসব একাদশ কক্রা বাদশাদিত্যা স্ত একত্রিংশং ইক্রান্টের

ত্ত্ৰয় ব্ৰিংশ স্থাম (পং) অৱস্তিংশ ং ভোমা অন্ত। বজাভেদ।
ত্ত্ৰয় ব্ৰিংশ (ক্লী) অৱস্তিংশং ঋচঃ সন্তামিন্ইনি ভিক্ত।
ত্ৰমন্তিংশং ঋক্ৰাৱাণীবমান সামভেদ।

"অর্ম্মিংশি নাম সাম মাধ্যন্দিনে প্রমানে ভবতি" (তৈত্তি ১।২।২।৪) ত্রেয়ঃসপ্তাত্তি (জী) আধিকা সপ্তাতিঃ। তিন অধিক সপ্তাতি, ৭০ সংখ্যা।

ত্ত্রয়ী (জী) অন-ভীপ্। ঋক্, বকু: ও সাম এই বেদুতার। বন্ধা, বিকু, মহেশর। সর্গের আদিতে ঋঙ্মর ব্রহ্মা, সর্গন্থিডিতে বসুর্মর বিকু, বর্গনাশে সামমর ক্ষুদ্র, ইহারা তারী।

"একার প্রবাদজন্তরবদেতৎ অরীমরং।
সর্গাদার্ঘরো একা বিতেট বিফুর্বর্গরঃ।
কল্ড: সামমনোহরার তথাও ডভাওচিধ্বনিঃ।" (মছ)
২ প্রহুী। তথুসভি। ৪ সোমরাধীবৃক্ত হৈ তথানী, হুর্গা।

ं विश्वक्रामास्त्रसम् नाम त्वाप्त । ज्ञील प्रकारक स्मादक मृहीमृहीर्थमाधिमी ॥ (स्मिनीप् ८८ माः) ज्ञीलक्र् (प्रः) ज्ञी त्वमा जव कक्षा मतीत्रः वक्षा प्रदेश (ज्ञाप्त क्षार । विमात्र स्वरक्षा (ज्ञाप्त क्षार । १८ ।।।) ' বেং বৰ্ণণ প্ৰা হইতে বিভ্ড পৰ্বাৎ এচারিভ হইরাছে, এইবস্ত ক্রের নাম এরীভয়।

দ্ৰেয়ীৰৰ্ম্ম (পং) অব্যা খেৰ্ডানেগ বিধীনমানো ধৰ্মঃ। বৈদিক ধৰ্ম, জ্যোতিষ্টোমাদি যক্ত প্ৰস্তুতি।

ত্ৰিরীমর (পুং) অধ্যাস্থকঃ মরটু। ১'ক্র্যা (ক্রি) ২ ত্রী-ধর্মাস্থক। ও বারাহ ত্রপ।

"এরীমনং রূপমিদক শৌকরং।" (ভাগণ ৩।১৩।৪০)

(११:) 8 शत्रदमचत्र । (क्वांशः २।८।५ र)

खरीयूर्थ (११) बरीयूर्थ रङ । बाह्मनु विका।

জ্ঞান শন্ (জি) অধিকা দশ। তিন অধিক দশ সংখ্যা, ১৩, তের সংখ্যা। এই শক দিত্য বহুবচনান্ত। ২ জ্ঞােদশ সংখ্যাবৃক্ত, কোন সময়ে জ্ঞােদশ মান্তে, সংবংসর হয়, ম্লমাস হইলে জ্ঞােদশ মানে বংসর হয়।

"দংবৎসরা কচিৎ অয়োদশমাসা:" (মলমাসভন্ধত শ্রুতি)

অবোদশ বাচক শক্ষ—> অপক্ষণাতিতা, ২ ইপ্রিয়ানিপ্রাহ, ০ জমংসরতা, ৪ কমা, ৫ সজ্ঞা, ৬ তিতিক্ষা, ৭ জনক্ষরা, ৮ ত্যাগ, ৯ ধ্যান, ১০ সরলতা, ১১ ধৈর্যা, ১২ দ্যা,
১০ অছিংসা, এই সমুনারই সত্য স্থরণ (ভারত শান্তি
১৬২ জং।) অরোদশ দোব-—> কাম, ২ ক্রোধ, ৩ মোহ, ৪ মন,
৫ মাংস্বর্যা, ৬ ঈর্যা, ৭ শোক, ৮ নিজা, ৯ জকার্যপ্রবৃদ্ধি,
১০ অস্ক্রা, ১১ ক্রণা, ১২ ভয়, ১০ প্রতিবিধানেছা। (ভারত
শান্তি ১৬০ জঃ)

, ব্রেয়োদশাক গুণ্ গুলু (পুং) গুণ্গুলু গুবণভেদ। প্রক্ত প্রণালী - বর্কার (বাবলা), আখগন্ধা, হব্রা, গুলঞ্চ, শত-মূলী, গোক্ষর, রামা, শ্রামাণতা, গুল্ফা, শঠী, ববানী ও গুলী এ সকল সমভাগে চূর্ণ করিয়া সমত্ত গুষধ যত ভাহার তুল্য পরিমাণ গুণ্গুলু এবং গুণ্গুলুর আর্দ্ধাংশ হত, উহার সহিত মিলিত ক্রিলা > ভোলা পরিমাণ প্রাতঃকালে কল, যুব, মন্থ, উপ্লেলী, হ্রা বা মাংসরস ইহার কোন একটার সহিত সেবন করিলে ত্রিকশ্ল, লাফ্শ্ল, হহস্তস্ত, বাহুগত বাত, সন্ধি, আহি, সায়ু ও মজ্ঞাগত বাত, কোঠগত বায়ু, বাতলৈ ফিল রোগ, বায়ু জন্ত হাগো ও বোনিরোগ, গুগাহি, শল্য, বিদ্ধান্ধ প্রাত্, গুগুলী এবং পক্ষাঘাত রোগ নই হয়।

(ভাবপ্রকাশ বিভীরভাণ)

ত্রেরোদশী (ত্রী) অনোদশ টিখাং তীপ্। তিথি বিদেশ, ইহা চত্তের অনোদশ ক্লার ত্রাস বা বৃদ্ধিকনিত কাল। ইহা ধর্মের ক্লিথি অর্থাৎ এই তিথি ধর্মের উদ্বেশ কার্য্য করিবার তিথি। [তিথি দেখ।] ব্রেম্যেনবন্তি (বি) ব্যাধিকা নব্ডিঃ। তিন অধিক নব্তি, ১০, তিরানবাই সংখ্যা। ব্রেম্যোবিংশতি (বী) ব্যাধিকা বিংশতিঃ। ব্রম্যোবিংশতি সংখ্যার পূরণ, ২০। ব্রেম্যারকণ (পুং) ২ মাদ্যাতাবৃংশীয় ব্রিধর্মার পুত্র নূপতেদ। "রাজ্ঞ: ব্রিধর্মণশ্চানীৎ বিশাংক্রয়ারণঃ স্কৃতঃ।" (হ্রিবং ১২ আঃ)

২ পঞ্চদশ স্থাপরের ব্যাস। ৩ ভরতবংশীর **উজ্পরে**র

পুত্র এক রাজা।

ক্রেয়্যাক্ষণি (পুং) একজন দুনি, ইনি লোমহর্বণের শিক্ষ, কাঞ্চপ,

সাবর্ণি, অক্তরণ, শিংশপারন ও হারীতের সতীর্থ। (ভাগং-)

ক্রেস্ (ক্রী) জভতি বিভেত্যক্ষিন্ অন্ ঘঞর্থে ক। ১ বন,

অরণা। (জি) অন্-অচ্। '২ জলম্। ৩ অসরেণ্।

ক্রেস্ন্ত্রেয়্ (পুং) পুক্রের্ণের পুত্র ও মাদ্ধাভার এক পৌত্র।

ক্রেস্ন্ (ক্রী) অন ভাবে লুট্। ১ ভর। ২ উদ্বেশ। কর্তরি

লুন্ (জি) ৩ জাসমুক্ত।

ত্রের্সর (পুং) অস বাছণ অরন্। উদ্ধবারের উপকরণ বিশেষ, তার্মনী, মাকু। পর্যার—হত্তবেইন, তসর। (অমরটা ভরত) ত্রেস্রের্ (পুং) ত্রসক্ষণছাৎ ভীতইব রেগুঃ। হক্ষকণা, ছিদ্রাগত হর্যাকিরণে বাহা দৃষ্ট হয়, ৬টা পরমাণ্তে বা তিনটী ছাণ্কে একটা ত্রসরেগু হয়, পরমাণ্ প্রত্যক্ষ হয় না, কিন্তু ধবন ত্রসরেগু হয় অর্থাৎ ৬টা পরমাণ্ একত্ত হয়, তথনই প্রত্যক্ষ হয়।

"আলান্তরগতে ভানৌ সৃক্ষং যথ দৃশ্বতে রজঃ।
প্রথমং তৎপ্রমাণানাং অসরেপুং প্রচক্তে॥" (মন্তু ৮।১৩২),
"পরমাণুদ্যেনাণুদ্ধুসরেপুত্ত তে অয়ঃ।" (ব্রহ্মবৈণ পুণ)
বৈদ্যক মতে অংশ পরমাণুতে এক অসরেপু হয়।
"আলান্তরগতে স্থ্যকরে ধ্বংদী বিলোক্যতে।
অসরেণুস্ত বিজেয় অংশতা পরমাণুভি:॥" (বৈদ্যকপরিভাষা)
স্থাকিরণ গবাক্ষ পথে প্রবিষ্ট হইলে দেই আলোকে
যে কুদ্র পদার্থ বিচরণ করিতে দেখ যায়, তাহারই এক
একটী অসরেপু।

(বী) ২ হুইগপদ্ধীভেদ। (বিকাণ)
ব্ৰেহ্ন (বি) বাস-উরচ্। ভীক্ষ।
ব্ৰেহ্ন (বি) বাস-জন। ১ ভীত । ২ চকিত্ব। ৩ শীজ।
ব্ৰেহ্ন (বি) বাসভাতি বাস-কু (বাসগ্ৰিশ্ববিক্ষিণে: কু:।
পা ৩ ২১১৪০) বাসশীল, ভরচকিত, বাসগ্রুল।
ব্রোণ (কী) বৈ ভাবে লাট্ বা ক্ষাপ্তেক ভক্ত নহং। স্কুলণ।

"আর্ত্তরাণার বা শঙ্কং ন প্রহর্তুমনাগসিন" (শস্ত্তগা ১ অছ): वातरण देखि वर्षति तुरः। २ क्रिकाः। व्यावरण्यस्य हेवि कद्राव मूर्छ । ७ कत्रह, पश्च । ত্রোপা (জী) জাণ-টাপ্। তারমাণা লভা। (সাজনি॰) ত্রান্ত (ত্রি) তৈনক, বিকরে তত নড়াভাবঃ। ১ রক্তিত। (ক্রী)ভাবে ওচ। ২ রক্ষণ। खांख्या (बि) देव-छवा। खाटनत त्याता । द्धांकृ (वि) देव-कृत्। व्यांका, त्रकाकर्का। ত্রাপুর (অি) অপুরা নির্বাদ্ধ অণ্ অ্কু চ। রঙ্গনির্বিত পাঞাদি, রাং দারা প্রস্তুত পাত্র প্রভৃতি। ক্রামন্ (জি) তৈ পালনে মনিন্। ১ রক্ষক। "ভব জাসভিন্তিত্র पूर्ववार्ण (अक् अव्याप्त) 'वाम खिचनीदम जान्रदेकः' (नाम्न)ः ত্রোরন্তিক। (জী) আরমাণালভা। ত্রোয়ন্তী (ব্রী) ত্রৈ কিপ্, আং অরতি ই-শভূ ততঃ ভীপ্। ভ্রায় মাণালতা। ত্রোয়মাণ (ত্রি) ত্রৈ-কর্মণি শানচ্। রক্ষ্মাণ। "পাড়নো इहेद्रः खाग्रमानः महः" (व्यथक्तर्वात ७।३।) ক্রোয়মাণা (বী) আয়মাণ টাপ্। কুজ ভুষুরাস্কৃতি ফলনতা विद्मव, वनाष्ट्रमृत, (Ficus heterophylla) পর্ব্যায়--বাধ্কি, व्यात्रकी, वनकक्रिका, वनस्त्रवा, ऋक्ष्यांनी, क्षत्रनामिका, क्रुक्तां, व्याद्रमाणिका, वन्छला, क्ष्कामा, वार्विकी, शिविका, अपूका, मालनाई।, (नवरना, शानिनी, खन्नामिनी, खन्नी, बक्नी, তাপা। ইহার ৩৬৭ -- শীত, মধুর, ওচনা, জর, কফ, আব্র, ত্র, ভ্ফা, ক্ষর, মানি, বিষ ও ছদ্দিনাশক। (রাজনি॰) ভাক -প্রকাশের ^{*}মতে ক্যায়, ডিব্রুরস, সারক, পিন্ত, ক্ফ, হুর, सरजारा, खन्या, व्यर्ग, खम, मृत ও विषनामक । (खावश्र•) ত্রাম্মাণাম্বত (ক্রী) মডৌষধিভেদ দ প্রস্তুত প্রণালী—মুভ > त्रत्र, कवार्थ रैनाष्ट्रमूत ४ भन, कन ४ भन। व्यामनकीत्र > रात्र, क्ष > रात्र, क्षार्थ करेकी, मूजा, वनाषुमूत्र, ब्रह्मानणा, ख्यामनकी, कीतकाटकानी, बीवखी, त्रक्कामन, उर्गन প্রত্যেক ২ ভোলা। এই মৃত পান করিলে পিত্তভন্ম, রক্তভন্ম, বিস্প, পৈতিই জর, ফজাৈগ, কামলা ও কুর্নরোগ আরোগ্য হর।(ভৈবন্যরা)

প্রত্যেক ২ তোলা।

এই মৃত পান করিলে পিত্তুল, রক্তগুল, বিসর্প, পৈতিক

লব, কলোগ, কামলা ও ক্রিরোগ আরোগ্য হর। (ভৈবন্ধারণ)
ব্রায়মাণিকা (জী) ব্রায়মাণালতা।

ক্রিয়ার্ড (পুং) জন্পদেশজাত গতীর নামক শাক্রিশেব,
ভরিয়া।
ব্রোয়েদেশ (জি) ব্রোদ্খাং ভবং জন্। ব্রেরাদ্শীভব, ব্রের্টিন দশীতে বাহা হয়।
ব্রাস্ (পুং) বন ভাবে ক্রেন্ত্র ১ তর। ২ মন্তির:ক্রেক্টেক্টি

দ্বাসকর (বি) জাস-জ-ট। ভয়জনক। দ্বাসক্ষত্তব (কী) অসপখার ভোত্তসম্বদ্ধি সামভেদ। "সমাজং আসদক্ষবং" (অক ৮০১৯০২) 'আসদক্ষবং অসদফ্যনাম রাজবিং, তক্ত ভোতবাদ্বেন সম্বদ্ধিনং' (সারণ)

্বাসদায়িন্ (বি) বাসং ভরং দদাভি দা-পিনি। ভয়দাভা, পর্ব্যান-শহুর। 'বাসদায়ী তু শহুরঃ' (হেন ৩।১৪৩)

্বাসন (ক্লী) অস-ণিচ্ভাবে সূচ্ট। ১ ভলোৎপাদন। (আঃ) কর্ত্তির সূত্র ২ ভলোৎপাদক।

াসনীয় (জি) অস-ণিচ্ জনীৱর্। জাসনের বোগ্য, ভাড়নীয়। াসিত (জি) অক্ট্ণিচ্ জ। ভীত, বিভীষিত, বাহাকে ভর দেখান হইরাছে।

াসিন্ (অ) অব-বিচ্-বিন । ভরশীল, ভরযুক্ত, ভীত ।

াহি (ক্রিয়া) কৈ-বোট হি । রক্ষাকর, বাচার, ইহার কর্তা

"ঘং" ত্মি । আহি বলিলে 'তুমি রক্ষা কর' ব্যাইবে ।

আহি মাং পুশুনীকাক্ষ সর্বপাপহরে ভব ।" (নারারণ প্রধাম)

য় (ত্রি) তরতীতি তৃ-ড্রি-(ভরতে ড্রি: । উণ্ ৫।৬৬) । ক্রিম্ব

য়ংখাবিশিষ্ট, তিন, তিনবাচকশক কাল্—ভ্ত, ভবিশ্বং, বর্ত্তমান; অগ্রি—দক্ষিণ, গার্হপত্য, আহবনীর; ভ্বন—ম্বর্গ, মর্ত্তা,

শাতাল; গলামার্গ—মন্দাকিনী, ভাগীরথী, ভোগবতী;

শবচক্ষ্য—চন্ত্র, স্থ্য ও অগ্রি; গুণ—সন্ত, রক্ষ্য; ভমঃ;

রোা—প্রাভ্যেরাা, মধ্যাক্ষ্যরাা, বায়ংস্ক্রাা; রাম—পরশু
াম, দাশরথী রাম, বলরাম। (কবিক্রলতা) এই শক্ষা

চ্বচনাস্ত্র।

ংশ (জি) ত্রিংশৎ-ডট্ (ডক্ত পুরণে ডট্। পা ধাং।৪৮)। ত্রিংশণ তর পুরণ, ত্রিংশন্তম। "ত্রিংশাংশকন্তথা রাশের্ভাগইত্যভিধী-তে।" (ক্র্যাসি॰)

ংশক (ত্রি) ত্রিংশতা ক্রীতঃ বুন্-ডিচ্চ। ত্রিংশৎ সংখ্যাবিত ব্য বারা ক্রীত।

শোক্ত কৌ) তিংশদধিকং শতং। ত্রিংশং অধিক শত ংখ্যা। "ত্রিংশছেতং বর্ষিণঃ" (ঋক্ ভাংণ ৬) 'ত্রিংশছেতং বংশদধিকা শতসংখ্যকা' (সারণ)

শৎ (তি) ত্রেরা দশত: পরিষাণমন্ত (পঙ্কিতিংশদিতি। | বাসক্রে) ইতি নিপাতনাৎ সাধুং। সংখ্যাবিশেষ, তিশ, ৩০।

"जिःमदार्वा वरहर कन्नाः स्नागः वानमवार्विकीः।" (मस्) मर्क (जि) जिःमर পরিমাণমক्ত कन्। > जिःमर्शितमानः। वेत्रदव कन्। २ छरमःथा।

रमावाकाः भृथक् एक्याः बिःमरकः भित्रिष्ठकरात् । (कामम्मकः) मिक्क (जी) बिःमर भृरवानत्रानिषार गाधुः । > बिःमर-पा। र बिश्मरमरत्यातः खिरमंख्य (बि) विशंषकः श्रेत्रगः कमश् । खिरमंदेत्रस्थार्षे शृच्य । बित्रार क्षेत्र ।

ত্রিংশৎপত্র (क्री) ত্রিংশংসংখ্যানি পত্তাণি দলানি প্রতিপূপা মস্ত। কুমুদ, নালফুল। (শক্ষমি)

ত্রিংশাংশ (পুং) ত্রিংশত্রিংশং প্রণোহংশ:। রাশির ত্রিংশং প্রণভান, ত্রিংশাংশের বিষর জ্যোভিষে এই প্রকার লিখিত আছে। মেষাদি বাদশ রাশিকে ত্রিশু দিরা ভাগ করিলে যে আংশ পাওরা বার, তাহার নাম ত্রিংশাংশ। এই ত্রিংশাংশ মেবাদি রাশির সধ্যে যেরূপ বিধানে ব্যবহৃত, হর, তাহার নিরম এই প্রকার—

মেবাদি দাদশ রাশি 'বিষম' ও 'সম' সংজ্ঞার বিশুক্ত হই রাছে। বে ৬টা রাশি বিষম বলিয়া ব্যবহৃত হইরাছে, সেই সকল রাশির জিংশাংশ বিচার করিতে হইলে মলল, শনি, বৃহস্পতি, বৃধ ও গুক্ত এই পাচগ্রহ ক্রমে হাহাচান আংশের অধিপতি হইরা থাকেন। প্রত্যেক রাশি জিশ অংশে বিভন্ত, ইহা পূর্বেই কথিত হইরাছে। অতএব যে কোন বিষমসংজ্ঞক রাশির জিংশাংশ বিচার করিতে হইলে সেই রাশির প্রথম অংশ হইতে পঞ্চমাংশ পর্যান্ত মললগ্রহ জিংশাংশের অধিপতি, আর বঠাংল হইতে দশমাংশ পর্যান্ত শনিগ্রহ জিংশাংশের অধিপতি হন। একানশাংশ হইতে অঠানশ অংশ পর্যান্ত বৃহস্পতি, ১৯ অংশ হইতে ২৫ অংশ পর্যান্ত বৃধ্, ২৬ অংশ হইতে ৩০ অংশ পর্যান্ত গুক্ত জিংশাংশপতি হইরা থাকেন।

যেরপ ৬টা বিষম রাশির অিংশাংশ বিচার কথিত হইল, ৬টা সমরাশির অিংশাংশ বিচার করিতে হইলে শুক্র, বুধ, বৃহস্পতি, শনি ও মঙ্গলগ্রহ জেমে ২ তিংশাশের অধিপতি হইবেন। (কোঁজিপ্রাণ)।

সংকৃতামূঁকাৰলীতে এইরূপ লিখিত আছে— "কুলার্কিগুরুনৌম্যানাং ভাগাঃ শুক্রন্স চ ক্রমাৎ। পঞ্চ পঞ্চাইসপ্তেয়্ জেরমোজঃকু রাশির্॥

বিংশাংশা ব্যন্তান্নানেতে যুগ্মরাশিষু কীর্ত্তিতা: ।" (সংক্রডামুণ)
রাশি সুকলকে বিশভাগে বিভক্ত করিয়া মলন, শনি,
বৃহম্পতি, বুধ ও শুক্র ইহারা ক্রমে মেষ, মিথুন, সিংহ, তুলা,
ধন্ম ও কুম্ব এই ৬ বিষম রাশিতে হাহাচাগাহ ভাগের অধিপতি
হন এবং বৃষ, কর্কট, কল্পা, বৃশ্চিক, মৃকর, মীন এই ৬ সমরাশিতে ইহা বৈপরীত্যান্নসারে অর্থাৎ শুক্র, বুধ, শনি, মলন
ক্রমে পঞ্চ, সপ্ত, অন্ত, গঞ্চ ও পঞ্চাগের অধিপতি হন।

বিংশাংশ জন্মকন-মলনের বিংশাংশে জন্ম হইলে ব্রী-বিজ্ঞানী, ধনহান, ক্রোধপরারণ, আত্মবিবরে গর্মিন্ত, ভত্তর-কর্মকারী এবং পুরু ও বিত্তবিহীন হয়। বদি বুধের বিংশাংশে

क्षत्र हैत, कुर्दर छेटबड़े विक्रद ७ खूबमणात्र, नामा शकात्र तप्त-সম্বিত, ও দিন দিন ভাহার, কোবাগার বৃদ্ধি প্রাঠ হইরা থাকে। বৃহস্পতির জিংশাংশে জন্ম হইলে প্রেষ্ঠ কামিনীর বল্লভ, নিত্যভাগা,সম্পন্ন, রাজপ্রিষ ও দীর্ঘায়ু হইবে। ওজের बिश्मांश्म बम्ब इंहेरन (शहे शुक्रवु बीमान्, वह जानावृक्त, नान-ধর্মপরারণ, দেবভাদিগের অর্চক এবং নৃত্যুগীতসমাযুক্ত হর।

শনির ত্রিংশাংশে জন্ম হইলে বালক পাণাত্মা, লোভী, পরনিন্দক, পরদাররত ও ধনবান্ হয়। প্রকারান্তর---

र्मलरात्र जिः भारत्म अजिरत नकत शक्विकत्रका, नर्कता कियायुक्त, धन ७ मात्रविकंठ, उत्रत, मनिन एम् ७ पूर्व-শভাব হয়।

नित्र जिः नाःरन अगिरन मनिन, प्र्वं, नर्यना काजब, সত্য ও শৌচবিহীন, সেবাপরারণ, কুপণ ও নীচম্বভাব হর।

বৃহস্পতির ত্রিংশাংশে জলিগে উপ্রস্বভাববিশিষ্ট, স্থন্দর শিরীর, বৃদ্ধিমান্, ভোক্তা, ধনী, স্থী, গুণাঢ়া ও বিষম (नाठन इहेग्रा थाटक।

বুণের ত্রিংশাংশে জন্মিলে সর্বাদা ধর্ম, অর্থ, কাম, স্থত, कीर्डि ७ जनमूक, श्रञ्जावित्वककूननी, अनवान, উत्तम बालन-व्क, विवाकिता ७ ज्ञिक प्रायुक्त रहेरद।

खटकत्र जिः भारत्भ कमिरण वस्थनशतिशृर्ग, ख्रमत्, मर्गा-हत वृष्टिमण्नतः य्वजीत चारमाववाजाः, नर्सभाव्यव्यजाः, आव्यन ও গুরুতক্ত, দানশীল ও কুপালু হইয়া থাকে। (কোৱীঞা°) ব্রিক (ক্লী) অয়াণাং সক্তঃ কন্। > ব্রিছসংখ্যা। ২ পৃষ্ঠ वः नाधत, शृक्षेतरश्चत व्यरधाञ्चात्र स्मक्रनरश्चत 'निम्न व्यरमण। ৩ কটিভাগ। ৪ ত্রিফলা। ৫ ত্রিকটু। ৬ ত্রিপথ সংস্থান, ভেমাথা রাস্তা। ত্রিযু কামতি কৈ-ক। ৭ গোকুর। ৮ ত্রিশ্ব। "ঋড় চীর্গরেসংযুক্তাৎ ত্রিক ত্রমনমন্বয়ার্ছ।

বাতরকং নিহ্ন্যাও সর্করোগহরত্বয়: ॥'' (স্থবোধ) ভৃতীয়েণ রূপেণ গ্রহণং মন্ত কন্ পুর্বপ্রত্যয়ন্ত বা লুক্। ৯ ড়তীয়ক। (জি) জয়: অধিকা: শুৰং লাভো বৃদ্ধিবা যজ भणादि। ১ जिन व्यक्षिक नाजानियुक भणानि व्यर्थाः শতকরা ভিন টাকা স্থদ।

"ब्रिकः जिकः हजूकक शक्षक मं वः नयः। মাসত বৃদ্ধিং গৃহীরাৎ বর্ণানামরপূর্বেশ:॥" (মহ ৮।৪২) ১১ সন্ধিভেদ, ক্ষিগন্ধি ও পৃষ্ঠবংশান্থির বে সন্ধি ভাহার নাম তিক।

"ক্লিগেলুা: পৃষ্ঠবংশান্ত্রে। বঃ দদ্ধিত্তৎ জিকং স্বতম্।" (স্থাক্ত) ত্তিকঁকুদ্ (তি) তীণি কৰ্দসদৃশানি ধ্ৰতুশ্যানি শৃশানি ১ विक्रें शर्मा । विकक्ष्मास्त्र शर्मा वर्षे वृत्राहेरम् पर लाभ इत्, अस क्षा दत दा । (बि) बिक्कून्-छर्त्क পুং বাছ অস্তালোপ:। ২ বিষ্ণু, পূর্বে বিষ্ণু একদত ও বি.। ककृत वत्राहम्र्विधात्रण धात्रण कत्रिया এই श्रिवी छेदाः कतिब्राहित्मन, अरे निभिष्ठ विकृत अक नाम विकक्त हरे রাছে। (ভারত শা॰ ৩৪৪ অঃ) ৩ দশরাজসাধ্যক্তভেন্। "जिकक्षा এव वरका वस्तातांज" (क्रकवक्र १।२।६।२)

ত্ৰিককুভ্ (গঃ) ত্ৰেধা কং পীতং উদকং কুভাতি কুন্ৰ হিণ্ ছान्मनः नत्नाभः। > डेमानवात् । "डेमात्ना देव खिक्क्ष् ছক্ষঃ।" (শতপথবা চাধানার) ২ নীর্মারদায় বজজে। 'মহা জিককুপ্রাঢ়ো নবরাজ:। সম্চৃজিককুপ্সমৃচ্:"।

(जायगावन(और ३०१०.२১)

ত্ৰিককুব্ধামন্ (গং) দুৰ্ধাধোমধ্যাভেদেন তিস্পাং কর্জা विभाः সমাহাतः जिककृत् ७९ धाम जालाताय**छ**। विकृत ত্রিকট (পুং) ত্রীন্ বাতাদিদোষান্ কটতি 'আর্ণোতি-জ্। গোকুর বৃক্ষ।

ত্রিকটু (রী) এরাগাং কটুরদানাং সমাধার:। শুলী, ম্রীচ ও পিপুল একত্ত এই তিন প্রবা। জুবিণ, বোব, কটুতা, কটুত্তিক। ইহার গুণ দীপন, কাস, খাস, ছক্রোগ, গুৰ, মে, कक, त्योगा, त्मन, भीभन ও नीनननामक। (ভাবঞ রাজনি) ত্রিকটুক (রী) ত্রিকটু। (চক্রদন্ত)

ত্তিকটুকাল্যমোদক (পুং) মোদক ঔষধবিশেষ। প্রৱঃ व्यगानी-विकरू, विकना, आकनामि, निकनाम्ग, विकन, हिन, करूकी, त्र्जी, कणेकाती, श्तिजा, माक्रश्तिजा, यमानी, (व्या মূল, শালপানী, আভইচ, চিতা, সৌবর্চল, শীরা, হরুরা এং ধনে এই সকল প্রত্যেক অর্থ্ধ ছটাক পরিমাণে লইয় চ্ করিবে, ভাহার পর ধবের ছাতু।১॥• সাড়ে এগার সের, গ তিন পোনা, তিলতৈল তিন পোরা এবং মধু তিন পোনা এ স্কল জব্য মিশ্রিত করিয়া মোদক প্রস্তুত করিতে হ^{ইবে} ইহা প্রত্যহ হুই তোলা করিরা **খাইলে কঠি**ন ^{প্রাম্} আবোগ্য হয়। (ভাবপ্রণ তৃতীমভাগ প্রমেহাধি)

ত্রিকৃটুগুটিকা (ত্রী) গুটিকা ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রশানী ত্ৰিকটু ও ত্ৰিঞ্লাচূৰ্ণ অৰ্দ্ধগোৱা, ঋগ্ঞল একপোৱা এই নৰ্ একজ করিয়া গোক্রের কাথ খারা ৭ দিন ভাবনা ^{বি} বটিকা [']প্ৰান্তত করিবে। দোষ, কাল ও ৰলাগুৰাট वित्वहमा कतिया श्रीताश कतित्व हेहा बाता त्मर, बार्डा বাভরক্ত, স্তাহাত, স্ত্রদোহ ও প্রদর নট হর এ^{বং বা} चमवत्रामी रहेन्ना वाटरः। (छात खः कृषीत्रवः श्राट्यारि) যত কর্মত অন্তানোপ: (অকক্দ শর্কতে। পা elsi>৪৭) । ত্রিকটুকাদ্যবর্তি (ত্রী) বর্তি ওবধতের। প্রভাভ প্রাণীরী ত্তিকটু, দৈহৰ, সৰ্বণ, গৃহধুম, কুড় ও ময়নাকল এই সকল বিনিত ২ তোলা, মধু ৮ তোলা এবং শুড় ২ তোলা এই সমস্ত দ্ৰব্য পাক করিয়া এক বৃদ্ধান্দ্লিপরিমাণ বর্ত্তি প্রস্তৃত করিবে, ঘৃত মাথাইরা শুহে প্রয়োগ করিলে আনাহ, উদাবর্ত্ত, উদর ও গুলুরোগ বিনষ্ট হয়। (ভাবপ্রণ ভূতীয়তাণ)

ত্রিকণ্ট (পুং) অর: কণ্টা: কণ্টকা: অন্ত। ১ পোক্র। ২ রুছীবৃক্ষ। ৩ মংস্তভেদ, টেংরামাছ। ৪ পত্রপ্তপ্ত। (ক্লী) ৫ মিলিত বৃহতী, অগ্লিদমনী ও ত্রালভা, প্র্যায় — কণ্টকারী-ত্রা, কণ্টকাশ্রা, কণ্টকত্রা। (রাজনিং)

ত্রিকণ্টক (পুং রী) > লঘুগর্গ মংস্থা, টেংরামাছ। (জি) ২ কণ্টকত্ররাধিত। (পুং) ও গোকুর বৃক্ষ।

ত্রিকণ্টককাথ (পুং) কাথ ঔবধবিশেষ। প্রস্তুত প্রণাদী —
কণ্টকারী, তঠ ও গুলঞ্চ এই তিন দ্রব্য সমীষ্ঠাবে লইয়া কাথ
প্রস্তুত করিতে হইবে। পরে এই কাথে পিপুলচ্ব প্রক্ষেপ
দিয়া পান করিলে জীব জর, আঁকচি, কাস, শ্ল, খাস, অমি
মাল্য, প্রতিখ্যার এবং উর্জাত রোগ আরোগ্য হয়। এই কাথ
সায়ংকালে সেবন করিতে হয়। (ভাৰপ্রণ মব্যুৰণ)

ত্রিক ত্রেয়াদ্যলোই (পং) ঔবধবিশেষ। প্রস্তুত প্রণাণী — মঙ্র, ল্লন্ত, শর্করা, মধু প্রত্যেক ৮ ভোলা, কান্তলোই এক তোলা, প্রস্তুর বা পোইখলে ভাঁঠ, পিপুল, মরীচ হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুখা, চিতা, বিভ্লের কাথে ভাবনা দিয়া রৌজে ভাক করিবে। আদি মধ্য ও অস্তে অস্পান বিশেষে দেবন করিলে স্থাকেশ পাণ্ড, কামলা ও হলীমক রোগ আরোগ্য হয়। (রসেক্সদারসং)

ত্রিকশ্রেক (পুং) জ্যোতিঃ গোও আয়ুং নামক । "ত্রিকজ-কেরুপাহি সোমমিজ্র" (ঋক ২৷১১৷১৭)

'ত্রিকজ্রুকেরু জ্যোতি র্গোরায়্রিত্যেতয়ামকেষু' (সায়ণ)

ত্রিকর্মন্ (পং) ত্রীণি কর্মাণি যত। বিজ্ঞ; যজন, যাজন, দান, প্রতিগ্রহ, জধ্যমন ও অধ্যাপন এই ৬টী ব্রাহ্মণের ধর্ম। এই ৬ কর্মের মধ্যে বৃত্তির নিমিত্ত যাজন, গ্রতিগ্রহ ও অধ্যাপন ভিন্ন অবৃত্ত্যুর্থ দান, ইজ্যা ও অধ্যয়নরূপ কর্মকারী ব্রাহ্মণকে ত্রিকর্মা করে। •

* ভৈৰিবদ্যো আন্ধণো বিদান্ন চাধ্যয়নুত্ৰীবক:। • ত্ৰিকৰ্মা ত্ৰিপরিক্রান্তো মৈত্র এব মৃতঃ দ্বিজ:॥"

্ (ভারত অমু ১৪১অ॰)

ত্রিকলিক্স [কণিদ শব্দ ২৯৯ পৃষ্ঠা ও ত্রিণিক শব্দ দেখ।]
ত্রিকশ (ক্লী) ত্রিস্ণাং কশানাং তদাঘাতানাং সমাহারঃ।
কশাঘাতত্ত্ব, তিনবার কশাঘাত করণ।

ক্রিকশুল (ক্রা) ত্রিক্স শ্বং ৬ ছং। রোগবিশেষ। ত্রিকের

শূল অর্থাৎ বেলনাবিশেষ। নিত্তের অভিবরের এবং বংশের অভিবরের সজিভানকে তিক কছে। ঐ সজিবরে কিছা উহার যে কোন সজিতে বায়ুকর্তৃক বেলনা উপস্থিত হইকে তাহাকে তিকশূল বলা বার। তিকশূলে বরের সহিত বালুকা-বেদ প্রদান করিবে এবং বোগীর পশ্চাভাগে বন্যুটিয়ার অভিন স্কাধারার বাহাব বার্ব। (ভাবপ্রণ)

ত্রিকা (ত্রী) তিথা কারতি কৈ-ক, তত্তীপ্। কুপস্মীপত্ব অংলাথারক তিথাক্ষমর ব্যুতিদ, কুপস্মীপে রজ্ঞ্ধার্থার পাক্ষরবিশেষ।

ব্রিকাণ্ড (পুং) ত্রীণি কাণ্ডাক্সত। > জনরসিংই ক্বত কোষ-ভেদ, ইহার তিনটী কাণ্ড—অর্ধবর্গাদিকাণ্ড, ভূমিবর্গাদিকাণ্ড ও সামান্তকাণ্ড, এই তিনটী কাণ্ড আছে বলিয়া ইহার নাম ত্রিকাণ্ড হইরাছে। ২ নিক্ষক্ত, ইহারও তিনটী কাণ্ড আছে—প্রথম কাণ্ড নৈঘন্টুক, বিতীয় নৈগম, ভূতীয় দৈবত। "আল্যং নৈঘন্টুকং কাণ্ডং বিতীয় নৈগম, ভূতীয় দৈবত।

ভূতীয়ং দৈবতকেতি সমান্নায়ন্তিধা মত: ॥"

(নিখণ্টু অহুক্রমণিকাভাশ্য)

ত্তিকাণ্ডী (স্ত্রী) এরাণাং কাণ্ডানাং সমাহার: ভীপ্। কাণ্ডএর।
ত্রীণি কাণ্ডানি প্রমাণমস্ত মাত্রচ্ বিগোত্তক্ত লুকি ক্ষেত্রপরত্তে
ভীপ্। ক্ষেত্রভক্তি, ত্রিকাণ্ডমিত রক্ষাদি।

ত্রিকায় (পুং) এয়ং কায়া অব্যধা ত্রিকং অয়তি অয় অপাদানে অচ্যঞ্বা। বৃদ্ধ। (হেম°)

ত্রিকার্ষিক (ক্লী) কর্ষায় হিতং ঠক্ অয়াণাং বাতপিত্তক্ষানাং কার্ষিকং। ১ নাগর, অতিবিষা ও মুস্তারূপ মিলিত ঔষণভেদ। (রাজনিং) ২ ত্রিকর্ষ পরিমাণ, ৬ তোলা।

ত্রিকাল (রুন) অয়াণাং কার্য্যকালভৃতভবিষ্যংকালানাং সমাহার:।১ ভুত ভবিষ্যং ও বর্ত্তমান কালু অয়। ই প্রাত:, মধ্যাত:
ও সায়াত রূপ কাল অয়। " জিকালং পুলয়েদেবীং" (তন্ত্র)
ক্রিকাল জ্ঞা (পুং) জিকালং জানাতি জ্ঞা-ক। ১ বৃদ্ধ। (জি)
২ ভূত, ভবিষ্যং ও বর্ত্তমানবেত্তা, যিনি ভূত, ভবিষ্যং ও
বর্ত্তমান কালের বৃত্তান্ত জানেন।

ত্ত্রিকালক্ষণিন্ (পুং) ত্রিকালং পশুতি দৃশ ণিনি। > ঋষি।
(ত্রি) ২ ত্রিকালজ, ভূত, ভবিশ্বং ও বর্ত্তমানবেতা।
"প্রধ্বংসিয়্পি কালে ত্রিকালদর্শী কলৌ ভবর্তি।"(বৃহৎসং ২১।৪)
ত্রিকুল (দেশজ) পিতৃক্ল, মাতৃক্ল ও শভরক্ল এই তিন কুল, ঘাহাদের তিন কুলই সমান তাহাদের পরস্পরের ক্সা আদান প্রদান দোষাবহ নহে। [কুলীন শব্দ দেখ।]

ত্তিকৃট (পুং) তীণি ক্টানি শ্লাণাভ। তিশ্ল পর্বাতবিশেষ,
এই পর্বত লবণসমূজের মধান্তিত ও লভাপুরাধার। পর্যায়—

স্থবেল, ত্রিকসুৎ, ত্রিক্ট, ত্রিশৃক, চিত্রক্টক । (শবরং)
ইহা একটা পীঠহান, এইখানে ভগবতী কলমুলরীরূপে
বিরাজিত আছেন।

"নারারণী স্পার্ষে তু ত্রিকৃটে রুজস্করী।"

(দেবীজাণ ৭৷৩০৷৩৬)

ই ক্লীরোদসমূজমধ্যত্ব পর্বতঃ অ্যমেকর পুত্র। এই পর্বত সাগর ভেদ করিরা উথিত হইরাছে। এই স্থানে দেবর্ষিগণের বাসত্থান এবং অপের, বিভাধর, গছর্ম, কিছর, সিছ ও, চারণগণের, জীড়াভূমি। ইহার ভিনটী শৃক,—প্রথম শৃক অ্বর্ণমর, এই শৃক দিবাকরের আশ্রেরছান। বিভীনে রজভমর শৃক, নানাপুশ সমাযুক্ত ও গদাদিবাসিত, এই শৃকে নিশাকর অবস্থান করেন। তৃতীরশৃক তৃবারস্থিত এবং সর্বাদা বৈছব্য ইক্রনীল প্রভৃতি মণির কিরণে প্রদীপ্ত, এই শৃক্ত সর্বোৎকৃত্তী; নৃশৃংস, নাত্তিক ও পাণীলোক সকল ইহা দেখিতে পার না। (বামনপুং)

ত্তিকৃট (ক্লী) তিক্ট: পর্বত: উৎপত্তিস্থানত্বেন স্বস্তাস্থ স্বৰ্শ আদিখাৎ স্বচ্। সিদ্ধুণবণ, সামুদ্ধণবণ।

• ত্রিকৃটলবণ (ক্লী) ত্রিক্টং সামুদ্রমিব লবণং। দ্রোণীলবণ। ত্রিকৃটবৎ (পুং) ত্রীণি ক্টানি অন্তান্ত ত্রি-ক্ট-মতুপ্, মন্ত ব। ১ ত্রিকৃট পর্বত। "হিমবান্ পারিপাত্রশ্চ সন্থা স্কল ত্রিক্টবান্।" (ভারভ আখেণ ৪০ অংণ)

ত্তিকুটা (জী) ভৈরবীভেদ। (ভন্তসার)
ত্তিকুচ্চিক্ (স্নী) স্থঞ্জান্ত শল্পভেদ। "বিশেষণ বালবৃদ্ধকুমারভীকনারীণাং রাজ্ঞাং রাজপুত্তাণাঞ্চ ত্রিকুচ্চিকেন, বিস্তাবহৃৎ"
(স্থশত) বালক বৃদ্ধ ভীক রাজা প্রভৃতির স্বস্তুতিকাতি তিকুচিক শল্পবার্হার করিবে।

ত্রিকোণ (রী) ত্রহ: কোণা যত। ১ যোনি। ২ কামরূপ-পীঠবিশেষ, করতোয়া হইতে আরম্ভ করিয়া দিকরবাসিনী পুর্যান্ত শতবোজন বিভ্ত সর্ক্সিদি ক্ষেত্র। [কামরূপ দেখ।]

ত লগ্নস্থান হইতে নবম ও পঞ্চম স্থান। ৪ ত্রিভূজক্তের-ভেন। ৫ মোক্ষ। (শক্ষক*) (ত্রি) ৫ ত্রিকোটিযুক্ত পদার্থ, ত্রাপ্র, ত্রিকোণ্রস্তু, হল, শিবচকু, কামাধ্যা, বহ্নিওল, একার, বজু, শৃক্ষাট, শকটাদি, যোনি। (ক্রিকর্মতা)

ত্রিকোণফল (ক্রী) ত্রিকোণং ত্রাত্রং ফলং বস্ত। শৃলাটক, পানিফল। ২ ত্রিভুলকেত্রফল।

ত্রিকোণ্ডবন (ক্লী) ত্রিকোণস্থান, রাগস্থান হইতে নবম ও পঞ্চম স্থান।

ত্তিকোণমণ্ডলভূমি (জী) নদীর মোহানাহিত নাজাস্ভ বকারের ভার বীপ, "ব" বীপ (Delta)। জিকোপ্ষিতি (জিকোণ-মিতি-পরিমাণ) শাল্পজেদ।

জিকোপ বা জিত্ত্বের বাছ ও কোপের সবদ নির্ণন্ধ করাই।
প্রথমে এই শাল্পের উদ্দেশ্ত ছিল, কিন্তু গণিতশাল্পের উন্ধতির
সলে সঙ্গে জিকোণমিতির কলেবর পূষ্ট হয় ও বীন্ধগণিতের
বিষরও ইহার অন্তর্ভুত হইয়া পড়ে। এখন জিকোণমিতি
বলিতে যে গ্রন্থে জিকুল, চহুর্ভুল বা বছর্জ যে কোন রূপ
ক্ষেত্রের বাছ ও কোণ লইয়। আলোচনা করা হয়, তাহাই
বুঝার। পূর্ব্বে জীকগণ এই শাল্প প্রকাশ করেন। আমাদের
এই ভারতবর্ষেও পূর্বাকাল হুইতে জিকোণমিতি প্রচণিত্ত,
গণিতবিদ্যার বিশেব পারদর্শী কোন পণ্ডিত কর্তৃক লিখিত
হয়। জিকোণমিতি সম্বন্ধে তিনি বাহা জানিতেন, সকল
শুলিই লিপিবন্ধ করা আবশ্রুক বিবেচনা করেন নাই। বিয়
কার্য্যে ব্যবহারের জন্ত বোধ হয় রেথাগণিতে ব্যুৎপর কোন
পণ্ডিত ইহার প্রথম প্রণয়ন করেন।

জিকোণমিতি প্রধানতঃ তৃইভাগে বিভক্ত—সরল জিকোণ মিতি (Plane trigonometry) ও বর্জুল জিকোণমিতি (Spherical trigonometry), এতত্তির আরও একটী শ্রেণ নির্দেশ করা যাইতে পারে, তাহাকে বৈশ্লেষিক জিকোণমিতি (Analytical trigonometry) বলা যার।

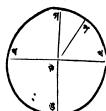
সাইন, কোসাইন, টাঞ্চেট, কোটাঞ্চেট, সীকাণ্ট ও কোনীকাণ্ট এই শক্ষগুলি ত্রিকোণমিতিতে সচরাচর ব্যবহৃত হয়। এইগুলি সমস্তই অমিশ্র রাশি। নিয়ে ইহাদের কক্ষণ নির্দেশ করা যাইতেছে—

 মনে কর ক থ গ একটা সম-কোণ আছিল, ধ কোণ একটা সমকোণ।

থগা কথ ধণ কথ ইহারা বথাক্রমে ক কোণের সাইন (sine), কোনাইন (cosine) ও টাল্লেট (tangent) নামে অভিহিত হয় ও ইহাদের বিপরীত অমুপাত ক্যা কথ কথ কা বধাক্রমে কোনীকান্ট (cosecant), সীকান্ট (secant) ও কোটাল্লেট (cotangent) নামে নির্দিষ্ট হয়। কোনীকোন বিশেবৈর (বধা ক কোণ) সাইন প্রভৃতি লিখিত হইনে সাইন ক, কোসাইন ক এইরূপ ভাবে লিখিত হয়। এই সমর্ব রাশির বর্গ গ্রভৃতি লিখিত হইলে (সাইন ক) (কোনাইন কা) প্রভৃতি না লিখিয়া সাইন ক, কোসাইন ক এইরূপ লিখিবার রীতি আছে।

রেথাগণিতের মতে হুইটা ভিন্ন সরল রেখা ভিন্ন ^{বির্} দিক্ হইতে একত্ত সন্মিলিত হইলে কোণ উৎপন্ন হর। ^{বির্} ত্রিকোণমিতির মতে কোণের উৎপত্তি অস্তরণ ভাবে বিবেচনা করা হইরা থাকে ও এই মতই উচ্চ গণিতশাল্লে গ্রাস্থ।

মনে কর কথ একটা নির্দিষ্ট রেথা ও ক একটা নির্দিষ্ট বিন্দৃ। কপ অপর একটা রেথা প্রথমে কথ এর সহিত সর্বভোডাবে সাম্মিলিড থাকিরা হড়ির কাঁটার গতির বিপ-রাত দিকে মুরিভেছে। এই মুর্ণার-

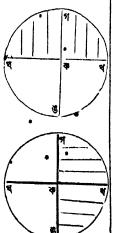


মান রেখা ও কথ এই নির্দিষ্ট রেখার আভিমুখ্যের হারা থকপ কোণ উৎপর হইরা থাকে। রেখাগণিতের মতে থকপ কোণ বলিতে ঐ স্ক্ল কোণকেই বুঝার। কিন্তু ত্রিকোণমিতির মতে থকপ কোণের বহুসংখ্যক পরিমাণ নির্দেশ করা বাইতে পারে, বেহেতু যতবার একটা সম্পূর্ণ ঘূর্ণন শেষ হর, ততবারই ৪ সমকোণ যোগ করিতে হইবে।

থক রেখাকে ব বিদ্পার্যন্ত বিদ্ধিত কর ও গকত এই লয় টান। যথন কপ রেখা কগ রেখার সহিত মিলিত হইবে, তগন এক সমকোণ অন্ধিত হইবে। পরে কথ রেখার সহিত মিলিত হইলে ত্ই সমকোণ কত এর সহিত মিলিত হইলে ০ সমকোণ ও প্নরার কথ রেখার সহিত মিলিত হইলে ৪ সমকোণ অন্ধিত হইবে।

বেগাগণিতের সহিত ত্রিকোণমিতির আরও একটু
আনকা আছে। রেগাগণিতের কোণের পূর্বেক কোন চিহ্
বাবস্থত হয় না, কিন্তু ত্রিকোণমিতিতে বিপরীত দিকে ঘূর্ণন
ভক্ত তুৎপন্ন কোণ্বিভিন্ন চিহ্নে চিহ্নিত হয়। গণিতজ্ঞেরা
এক মত হইয়া পূর্বেচিত্রে চিহ্নিত দিকে উৎপন্ন কোণকে
বোলক ও বিপরীত দিকে উৎপন্ন কোণকে বিবোলক চিহ্নে
চিহ্নিত করেন।

এইরপ রেখা সহত্ত্বেও বিভিন্ন
চিক্ন ব্যবস্ত হর। খ ঘ এর উপরিদিকে ক গ এর সমাস্তর যে সমস্ত
রেখা টানা হইরাছে, তাহাতে
যোজক ও বিপরীত দিকে টানিলে
বিযোজক চিক্ল হর। আবার
৪ চিত্রে বে সমস্ত রেখা কথ এর
কিশ দিকে টানা হইরাছে,
ভাহারা যোজক ও বিপরীত দিকে
টানিলে বিবোজক চিক্ল চিক্লিত
রে। দৃষ্টাক শ্বরূপ বৃদ্ধি ক খ এই



प्त्रथात्र देवर्षा + । निर्फ्षण कृति, छाहा हहेरन कथ द्वरथात्र देवर्षा - । निर्फ्षण कृतिरु हहेरत ।

একটা সমকোণকে ৯০ সমান ভাগে ভাগ করিলে প্রত্যেক ভাগকে ১ ডিগ্রি বলে ও প্রতেক ডিগ্রিকে ৬০ সমভাগে,ভাগ করিলে প্রত্যেক ভাগকে ১ মিনিট্ও এইরপে ১ মিনিটকে ৬০ সমভাগে ভাগ করিলে প্রফ্রোককে এক সেকেও বলে। ডিগ্রি, মিনিট ও সেকেওের চিল্ল বধাক্রমে •, ', "। ৫ পাঁচ ডিগ্রি ৬ মিনিট ৯ সেকেও লিখিতে হুইলে ৫° ৬ ১ " লিখিত হয়।

কোণ মাপ করিবার আরও এক্টা প্রক্রির আছে,
তদম্পারে একটা সমকোণকে ১০০ ভাগে ভাগ করিতে হয়।
প্রভাকে ভাগকে এক গ্রেড্ বলে ও প্রভাকে গ্রেড্কে
১০০ ভাগে ভাগ করিলে প্রভাককে ১ মিনিট বলে ও
প্রভাকে মিনিটকে ১০০ ভাগে ভাগ করিলে প্রভাককে
১ সেকেও বলে। ইহাদের ভিক্ যথাক্রমে প্রে, ', "।
পনর গ্রেড্ ছয় মিনিট ও সাত সেকেওকে অয় লিখিতে
হইলে এইরপ লিখিতে হয় যথা—১৫ গ্রেড ৬ ৭"। ফ্রান্সে
এইরপ প্রক্রিয়ার কোণ মাপ করিবার প্রভাব করা হইরাছিল, কিন্তু কার্ঘ্যে কিছুই হয় নাই।

উপরিউক্ত হুইটা ভিন্ন আরও একটা প্রক্রিয়া আছে।
সর্বাপেক্ষা এই প্রক্রিয়ার বিশেষ প্রচলন আছে ও উচ্চ
গণিতে কেবলমাত্র এই প্রক্রিয়া বারাই কোণ মাপ করা হইরা
থাকে। কোন বৃত্তের পরিধিকে তাহার ব্যাসহারা ভাগকরিলে যে সংখ্যা পাওয়া যার, তাহা সমন্ত বৃত্তের পক্ষে এক।
এই সংখ্যাট্ট প্রীক্ বর্ণ (π) ইহা হারা নিধিত হইরা থাকে,
ইহার পরিমাণ ৩১৪১৫৯ অর্থাৎ প্রার ১ ; যদি কোন
রুত্তের পরিধি ইইতে উহার ব্যাসার্দ্ধের সমান করিয়া এক অংশ
করিয়া লওয়া যার, তাহা হইলে সেই, পরিধিওতের অভিমুখী কেক্রত্ব কোণের পরিমাণ সকল বৃত্তের পক্ষেই সমান,
এই পরিমিতি কোণকে এক রেভিয়্যান্ (radian) বলে।
যেরূপ ভিত্রি ও গ্রেড্ প্রভৃতি হারা কোণের পরিমাণ নির্ণয়
করা হয়, সেইরূপ এই রেডিয়্যানের পরিমাণে ও কোণ নির্দিষ্ট
হইরা থাকে।

বদি ক ও থ ছইটা অনুপ্রক (complimentary) কোণ হর, তাহা হইলে থ অর্থাৎ ক + ধ = ৯০০

সাইন্ক – কোসাইন্ধ কোসাইন্ক – সাইন্ধ টালেট ক – কোটালেণ্ট ধ কাসীকাণ্ট ক – সীকাণ্ট (ধ

क ও थ यमि পরিপুরক (supplementary) दकान इत् काशीर क + थ = >৮०°, তাহা হইলে

माहेन क = माहेन्थ

(काप्राहेन् क = - (काप्राहेन् ब

हारअन्हें क = - हारअन्हें ब

, উপরিউক্ত সম্বন্ধ হইতে সীকাণ্ট, কোসীকাণ্ট ও কোটা-জেণ্টের সম্বন্ধ নিশ্য করা যায়। যথা—-

गौकाणे क = - - - - - - - - - - - - नौकाले थ कायाहन्क क कायाहन् थ

(कांगीकाणे क = > > > = (कांगीकांगे) व गाहेन् क गाहेन् थ

> হইতে ৩৬০° ,পর্যাস্ত কোণসমূহের সাইন্ প্রভৃতির পরিমাণে ও চিছের কিন্ধপ পরিবর্ত্তন হইয়া থাকে, নিম্নিথিত চিত্র দৃষ্টে তাহা প্রতীয়মান হইবে।

	<u> </u>								
. ক	••		200		>6.		२१•		05.
শাই ন ক	•	+	>	+	0	-	4 2	_	٠
কোষাইন ক	٥	+	•.		- >	-	•	+	,
के किल्लाहर	٩	+	φo		٠	+	s	_	•
কোদীকাণ্ট ক	, co	+	>	+	œ		د -		œ
শীকাণ্ট ক	,	+	80	-	->	_	∞	+	,
(कांग्रेडिंक	œ	+	•	_	oo .	+	•	-	9

স্তান্ত্র শীষ বিথিত কোণের পরিমাণ হইলে, মাইন্ প্রভৃতির পরিমাণ যাহা হইবে ১, ৩, ৫, ৭, ৯ স্তান্ত ভাহাই বিথিত হইয়াছে।

কোণের পরিমাণ • হইতে ৯০°, ৯০° হইতে ১৮°, ১৮০° ইইতে ২৭০°, ২৭০° ইইতে ৩৯০° ইইলে ভাহাদের পূর্বেকি চিহ্ন ব্যবহার করিতে হইবে, ২ ৪ ৬ ৮ অভেড ডাহাই শিখিত হইয়াছে।

প্রত্যে ক জিকোণে ৬টা অংশ আছে, ৬টা কোণ ও ৩টা বাহু, ইহার মধ্যে ১টা বাহু ও অপর ২টা অংশ জানা থাজিলে তিন অংশের পরিমাণ নির্ণয় করা যায়। কেবল এক স্থলে ইখাব একটু বৈলক্ষা হইয়া থাকে। যদি কোন জিভুম্বের কোণগুলিকে কথা বলা যায়ও উক্ত কোণের বিপরীত বাহুর নাম কথাও গহয় ভাহু। ইইলো

(कानाहेन् थ =
$$\frac{\eta, + \pi, - \eta,}{2 \eta, \pi,}$$

(कानाहेन् $\eta = \frac{\pi, + \eta, - \eta,}{2 \eta, \eta}$

এত তির ক + খ + গ => >৮ • * = । ত অক্সান্ত তিকোন মিতির বিশেষ বিশেষ নিরম বিশেষ বিশেষ ফলে ব্যবহৃত হয়। উক্ত নিরমগুলি ও রেথাগণিতের করেকটা প্রতিজ্ঞার দাহায়ে তিকোণের নির্ণেষ্ক বিষয় বাহির করা যার।

বর্জুল তিকোণমিতি গ্রহনক্ষতাদির অবস্থান ও প্র নির্ণয়ের জন্ত বাবস্ত হইয় থাকে। যদি কোন সমতন কোন বর্জুলের কেন্দ্র ভেদ করিয়া ইহাকে বিশ্ব করে, ভাহা হইলে গ্রভ্যেক বর্জুলচ্ছেদকে মহাবৃত্ত বলে। এইরপ ত মহাবৃত্ত দারা সীমাবদ্ধ অসমতল ক্ষেত্রকে বর্জুল তিকোণ (spherical triangle) বলে। সরল তিকোণমিতিতে বে সমস্তানিয়ম ব্যবস্ত হয়, বর্জুল তিকোণমিতিতেও ভাহা হইয় থাকে। অবশ্ব এহলে বর্জুলের ধর্ম রাধিয়া নিয়ম খাটাইত্রে হইবে।

ত্রিক্ষার (ক্লী) অয়াণুঃ ক্ষার।গাং সমাহার:। ক্ষারতার মিণিঃ অজ্জিকাক্ষার, যবকারে ও টকাক্ষার। (রাজনি॰)

ত্রিক্ষুর (পুং) ত্রীণি ক্ষুর্নণীব অগ্রাণি যক্ত। কোকিলাক বৃদ কুলেধাড়া। (রক্তমাণ)

ত্তিথ (ক্লী) তিথা খং আকাশোহবকাশ: ফলেহতা। ত্রপুষ। ত্তিখটু । ক্লী) তিন্দণাং খটুানাং সমাহার:। খটুতের।

ত্রিথাট্র (স্ত্রী) ত্রিথট্-ভীপ্। (দিগোঃ। পা ৫।১।২১) ত্রিথট্ ত্রিথর্ব্ব (পুং) সামবেদের শাথা-বিশেষাধ্যায়ী। "ভাষেত্রু ত্রিথন উপাসতে।" (ভাগ্যত্রা ২।৯।২৩) 'ত্রিথর্কাঃ শাধিনঃ' (ভাগ্য ত্রিগক্ষ (অবা) ত্রিস্রো গঙ্গা নজো যত্র বছরীহুর্থে "নদীভিগ

ব্রিগক্স (অবা) ত্রিস্রোগক্ষা নজো যত্র বছরীফর্থে "নদীভিক' ইতি ক্তেৰ অবায়ীভাবং। ১ তীর্থভেদ।

"সপ্তগত্তে ত্রিগকে চ ইন্দ্রমার্গে চ তর্পরন্।" (ভারত ০৮৪।২৬ ত্রিগণ (পুং) ত্ররাণাং ধর্মার্থকামানাং গণঃ বর্গঃ। ত্রিবণ ধর্ম, অথ ও কাম। "গুণাস্থরাগাদিব স্থামীরিবান্ন বাধিতেৎ দ ত্রিগণঃ পরস্পরং॥" (কিরাতার্জ্কুনীর ১।১১)

ত্তিগন্ধক (ক্লী) জয়াণাং গন্ধক দ্ৰব্যাণাং সমাহার:। তিকাতক।
(পারম্বনিষ্টু)

ত্তিগন্তীর (পুং) ত্তিভি: গন্তীর:। যাহার সন্ধ শর্ম ও নাচি গন্তীর, ওাহাকে ত্রিগন্তীর কহে, এই ত্রিগন্তীরযুক্ত পু^{ক্ষ} স্থী হয়।

"বরেণ সক্নাভিভাাং ত্রিগন্তীর: শিশু: শুভ:।" (কাশীখা ১১ ^{জা)} "নাভি: বরসত্মিতি প্রদিষ্টং গন্তীরমেডজিতরং নরাণাং।" (কুহ**্ম**; ধন্দং) ত্রগর্ত্ত (পুং) অরো গর্জা ঘতা। > দেশবিশেষ, এই দেশের
ঘর্ত্তমান নাম জালদ্ধর, বৃহৎসংহিতার কৃশ্বিভাগের উত্তরদিকে
এই দেশ অবস্থিত: (বৃহৎসং ১৪।২৫) [জালদ্ধর দেখ।]
২ ত্রিগর্তদেশস্থ ভূমি।

ত্রিগর্ভক (পুং) ত্রিগর্জ এব স্বার্থে কন্। ত্রিগর্জ দেশ। ত্রিগর্জ্বস্ঠ (পুং) ত্রিগর্জঃ বর্ষো বর্গো যন্ত। আয়ুজীবি-সক্তভেদ।

"আह्जिगर्डवर्धाः उत्तरिकां त्रविष्ठां विष्ठां ।

क्रिक्षे विष्ठां विष्ठां विष्ठां विष्ठां विष्ठां ।

क्रिक्षे विष्ठां विष्ठां विष्ठां विष्ठां । अस्म क्रिक्षे जी,

काम क्रिक्षे जी क्रिक्षां विष्ठां विष्ठां । असम क्रिक्षे जी,

क्रिक्षे जी क्रिक्षे विष्ठां विष्ठां विष्ठां । असम क्रिक्षे विष्ठां विष्ठां

ত্রিগতিক (পং) তিগর্জ দেশ।
ত্রিগুণ (ক্নী) তরাণাং সত্তরজন্তমুনাং গুণানাং সমাহার:।
সাংখ্যশাস্ত্রপ্রদিদ্ধ সন্ত্রজন্ত পুনাগুণাত্মক প্রধান । সন্ত্রজন্ত ও তমোগুণাত্মক প্রধান । সন্ত্রজন্ত ও তম হইতেই প্রথান বিবেক্তিক, এই বৃদ্ধিতত্ত্ব হইতেই সমস্ত উৎপন্ন হন্ন।
"ত্রিগুণমবিবেকিবিষয়: সামাক্রমচেতনং প্রসবধার্মি।

ব্যক্তং তথা এথানং তদ্ বিপরীত্তথা চ পুমান ॥"

(माःशाकाः ३३)

তি গুণ অবিবেকী, বিষয়, সামান্ত, অচেতন, প্রস্বধর্মী।
প্রাধান ব্যক্ত সদৃশ। এই পরিদৃশ্তমান অগৎ ত্রিগুণাত্মক,
অবিবেকী যাহার বিবেক অর্থাৎ ভেদ নাই, এইটী গো
এইটা অয় ইহা যেরপ পৃথক্ করা যায়, গুইটী ব্যক্ত
এই গুলি গুণ ইহা সেরপ পৃথক্ করা যায় না। এই অন্ত
যাহা যাহা গুণ, তাহাই ব্যক্ত; গুণ ও ব্যক্ত একই।
বিষয় ভোগ্য বলিয়া যাহাক্তে ভোগ্য করা যায়, এরপ পদার্থ
ভোগ্য, বিগুণ বা ত্রিগুণোৎপদ্ম ব্যক্ত ভোগ্য পদার্থ, এই অন্ত
ব্যক্তের নাম বিষয়। এই ব্যক্ত সক্ল পুরুষের ভোগ্য।

সামায় গণিকাবৎ সকলের ভোগ্য এই হেতৃ ব্যক্ত সামায়। আচেতন অংশ, ছংগ ও মোছের বোধাভাব, এই হেতৃ ব্যক্ত আচেতন। প্রস্বধর্মী বৃদ্ধি হইতে আহল্পর প্রভৃতি প্রস্ত হইরাছে এই জন্ম ব্যক্ত প্রস্বধর্মী। আহ্লার হইতে একাদশ ইক্রিয় ও পঞ্চত্রাত্ত, ত্র্মাত্ত হুইরাছে।

ত এই ত্রিপ্তণ অভিন্ন ভাবে অড়িত। বাক্তও ত্রিপ্তণ, অব্যক্তও ত্রিপ্তণ, যাহার কার্ণ্য এই মহদাদি ভাহারাও ত্রিপ্তণ। এইটী প্তণ, এইটী প্রধান, ইহা পৃথকু করা বায় না। ত্রিপ্তণ বা প্রধান অচেতন ইহার অস্মান এইরূপ, অচেতন মৃংশিশু

প্রধান বা প্রধানোৎপর অহতারাদি ত্বধ, ছাধ ও মোহে চেতনাযুক্ত হন না, এই ঋষ বিশুণ অচেতন। এই বিশুণ অর্থাৎ স্বা, রজা ও তম প্রকাশার্থ, প্রস্থার্থ ও নির্মার্থ, পরস্পার পরস্পারে অভিভূত, প্রস্পার পারস্পারের আশ্রিত, পরস্পর পরস্পরের জননত্ত্ত্, পরস্পর মিপুন সম্বন্ধ ও পরস্পর পরস্পারে বর্তমান এবং ইহা স্থুপ ছংখ ও মোহাত্মক। হুধ সৰ, হৃ:ধ রজ: ও মেহি তম, সৰ গুণপ্ৰকাশ্যৰ कर्षार ध्यकाम नमर्थ। तक ध्यव्कार्थ कर्षार ध्यवृक्ति-नमर्थ, • ভ্ম নিরমার্থ অর্থাৎ নির্মসমর্থ, নির্ম ^শদ্বে হিতি। অতএৰ সৰু, রজঃ ও তমো গুণ যথাক্রমে প্রকাশ ক্রিয়া ও ফিডিশীলরূপে পরিগণিত হয়। পরস্পর পরস্পরে অভিতৃত অর্থাৎ প্রত্যেক গুণ অপর ছইটা গুণকে অভিতৃত कतिया थाटक। यथन मच प्छण छे एक हे इत्र, छथन त्रक छ ভমোওণ আপনাপন ওণ ৰারা অভিত্ত হইয়া প্রীতি ও প্রকাশস্থভাবে অবস্থিতি করে ৷ যথন রজোগুণ উৎকট হয়, ভখন সৰ ও তমোগুণ অভিভূত হইলা অঞীতি ও এবৃত্তি-ধর্মে অবশ্বিতি করে। ভ্রমোগুণ যথন উৎকট হয়, তথন স্ত্ত প্রক্ষাগুণ অভিভৃত হইয়া বিষাদ ও হিতিশীল ধর্মে অবস্থিতি করে। এই তিখেণ পরস্পার মিথুনভাবে সংবদ্ধ। त्रक मच्दक गहेवा मिथून, मच त्रक्रक गहेवा मिथून कार्थी । ইহারা পরস্পরের সহায়। ত্রিগুণ প্রস্পার প্রস্পরে বর্ত্তমান অর্থাৎ গুণ সকল গুণেই অলাধিক ভাবে থাকিবে। ইছার একটা উদাহরণ দিলে যথেষ্ট হইবে। এক স্থলরী স্ত্রী স্থামীর স্থ, সপত্নীর ছাথ ও লম্পটের মোহের হেতু হয়। ভাহাতে এই ত্রিগুণ লাছে বলিয়াই দে এই রূপ প্রকৃতি অমুদারে স্থ, ছ:খ, ও মোহের কারণ হয়। এইরপ অবগতের সকল বিষয়ই বুঝিতে হইবে।

সবস্তণ লঘু ও প্রকাশক, রজোগুণ উপইন্তক ও চঞ্চল, তমোগুণ গুরু ও আবরক। ইহারা একল মিলিত হইরা প্রদীপের ভার কোন বিশেষ প্রয়োজনকে সিন্ধ করে। যথন সবস্তণ উৎকট হয়, তথন জলাদি লঘু, বৃদ্ধি প্রকাশ ও ইক্রিয় সকল প্রেসন হয়। রজোগুণ উপইন্তক ও চঞ্চল অর্থাৎ বেরূপ একটা ব্র জ্ঞা বৃষকে দেখিতে পাইলে উপইন্তকের অর্থাৎ রজো হারা চালিত হয়। তথন এই রজোগুণের আধিক্য হয় বলিয়া চিত্র চঞ্চল হয় এবং তদমুলারে কার্বো প্রেরুত হয়। তম গুরু ও আবরণক, যথন তমের আধিক্য হয়, তথন জলাদি গুরু (ভার বিশিষ্ট), ইক্রিয় সক্ষাজ্যা অর্থাৎ করার্থ্য জন্মর্থ হয়।

এছলে এইরপ বলা বাইতে পারে, ত্রিপ্তর্ণ পরক্ষর বিরুদ্ধ হইলে কিরূপে প্রদীপের ফ্লার কোন বিশেব প্রারোজন সিদ্ধ করিতে পারে ? ইহা এইরপ সিদ্ধান্ত কূইরাছে, বথা প্রদীপে তৈল, অগ্নি ও বৃত্তি তিনটা পদার্থ বিরুদ্ধকভাব হইলেও একত্র সংযোগে আলোক হারা অক্ত অক্ত পদার্থকে প্রকাশ করে, তক্রপ সন্থ, রজ ও ক্রম পরক্ষার বিরুদ্ধ ভাষাপন্ন হইলেও আর্থনাধনক্ষম হর। (সাংখ্যকা॰) কেই কেই বেলেন, ত্রিপ্তণ বৈশেষিকদর্শনোক্ত প্রণ পদার্থ না ত্রবা পদার্থ? ইহাতে, প্রণ শক্ষ থাকার প্রণ পদার্থ বিলিয়া সিদ্ধান্ত করেন, কিন্তু বাত্তবিক ইহা প্রণ পদার্থ নহে। সাংখ্যদর্শনের ভাত্তে ইহার শীমাংসার এইরূপ লিখিত আছে—

"সন্ধাদীনি জব্যানি ন বৈশেষিকবদ্পুণাঃ সংবোগ-বন্ধাৎ লযুদ্ধ-চলদ্ধ-শুকুদ্দি ধর্মকন্ত্রান্ত প্রত্যাদে তু প্রণ-শব্দঃ পুরুষোপকরণ্ডাৎ পুরুষপশুবদ্ধক্তিপ্রণাত্মক্ষহদাদি রক্ষ্নির্যাত্তান্ত পুরুষাতে" (সাংখ্যদ ভাষ্য ১০৫১)

সন্ধাদি গুণত্রর দ্রব্য পদার্থ, গুণপদার্থ নহে। সংযোগত্ব হেতু শব্দ, চলত ও গুরুজাদি দ্রব্য পদার্থেরই ধর্ম, গুণ পদার্থের ধর্ম নহে। ইহাকে দ্রব্যপদার্থ না বলিয়া গুণ পদার্থ বলা হইরাছে, তাহার কারণ প্রমন্তর্ম পশু বন্ধন করিবার জন্ম প্রকৃতি ত্রিগুণ মহদাদি রজ্জু নির্মাণ করে, এই জন্ম ইহাকে গুণ পদার্থ বলিয়া উক্ত হইরাছে। [বিশেষ বিবরণ প্রেকৃতি দেখ।](ত্রি) ২ স্থাদিগুণযুক্ত। "মহাস্তমেব চাত্মানং স্ক্রাণি ত্রিগুণানি চ।" (মৃত্যু)

জগৎ ত্রিগুণময় এক আআছিল আর সকল পদার্থে-ই ত্রিগুণ বর্ত্তমান । ৩ জিন দারা গুণিত। ৪ ত্রিশিথ। "ত্রিগুণ-পরিবারপ্রহরণ:" (কিরাডার্জুণ) 'ত্রিগুণ: ত্রিশিথ:' (মল্লিনাথ্) ত্রিগুণা (স্ত্রী') ত্রুয়ো গুণা যন্তা:। ১ হুর্গা,। ২ মারা। ৩ খনামথ্যাত বীক্তেদ। (ডক্সাণ)

ত্রি গুণাক্র (তি) তিখেণে কণো বছা তিখেণ কর্ণরপ লকণাহিত। লক্ষণসরত্ব কর্ণ শব্দ তিখেণ শব্দের পরে থাকিলে তিখেণ শব্দের অকারের দীর্ঘ হর। লক্ষণসরত্ব না হইলে হর না। (পা ৬।৩১১৫)

ত্রিগুণাকুত (তি) ত্রিগুণং কর্ষণং ক্লডং ত্রিগুণ ডাচ্ (সংখ্যান্দ্র গুণান্তারা:। পা ৫।৪।৫৯) বারতার ক্লটকেত্র, ডিনবার লাখন দেওয়া কেত।

ত্রিগুণাত্মক (ক্রী) অনোগুণা: তেলোবন্ধরণা আত্মানো ষক্ত। বিশ্বণবিশিষ্ট, সন্ধ, রজ ও তমোগুণপ্রধান। বেদান্ত মতে অজ্ঞানু।

ত্রি ঠিপিত (ত্রি) ত্রিভিত্ত পিতঃ। ত্রিরায়ন্ত, তিনবার ভণিত।

ত্ত্বিগুণী (ত্নী) অন্যোগণা পৰে বস্তা:। বিষয়ক, ইহার প্র ত্তিখণাত্মক। "ত্তিখণা: সবিভার বিশুণে ক্টারিকাম্লমিন্দো"। (ব্যোভিং) 'ত্তিখণী শ্রীক্সবৃক্ষ:' (গ্রমিডাং)

ত্রিপ্তল (ভিশ্বল) বোঘাই প্রদেশবাসী এক ন্ধাতি। বাহানের তিন পুরুষ গোলক তাহারাই ত্রিশ্বল নামে থাতে হইরাছে। কোন কোন স্থানের ত্রিশুলেরা বলিয়া থাকে, ত্রান্ধণ মাজা ও শৃত্ব পিতার উরসে এই ন্ধাতির উৎপত্তি। প্রবাদ আছে, পেশবাগণের আধিপত্যকালে যে সকল ত্রান্ধণরমণী ও ত্রান্ধণ বিধবা পরপুরুষ সহবাসে গর্ভকতী হইত, তাহাদিগকে মরাস্থানের প্রধান তীর্থ পশ্চরপুরে পাঠাইয়া দেওয়া হইত। সেধানে ভাহারা প্রস্থের পর নবলাত শিশুকে বিলাইয়া দিত। এই জন্তই পশ্চরপুরে ও তাহার নিকটবর্তী স্থানে ত্রিশুলের সংখ্যা অধিক।

ইহাদের মধ্যে আদিরস, ভারধান্ধ, হরিতার্ধ, কাশ্রণ, লোহিত ও প্রীবৎস গোএঁ আছে। ইহারা মার্স্ত বা ভাগবত, দেখিতে প্রায় মরাঠী রাহ্মণের মত। ইহারা প্রধানতঃ পর্ণনীবী, পাণছাড়া অনেকে শস্তব্যবসা, মহান্ধনী, দোকানী বা চাকুরী করিয়া থাকে। সকলের অবস্থা নিতান্ত মন্দ নর। আহার ব্যবহার চাল চলন সমন্তই দেশস্থ রাহ্মণদিগের মত। বাহ্মণদিগের ভায় ইহারাও যজ্ঞোপবীত ধারণ করে। কির্মণের কোন প্রেণীর রাহ্মণই ইহাদের সহিত আহার বা বিবাহ সম্ম্ন করে না। দেশস্থ রাহ্মণেরা ইহাদের পুরোহত। বারাণসী, নাসিক, আলেনি, পণ্টরপুর ও তুলনাপুর এই কর্মী ইহাদের প্রধান তীর্থ।

ইহালের মধ্যে কএকটা বিশেষ নিয়ম আছে'। প্রথম প্রস্বের সমন্ন রমণীরা পিতৃগৃহে আসিরা থাকে। সন্তান জিমিবার পর আঁতৃর বরে তিনমাস প্রদীপ জালিরা রাধিতে হয়। প্রস্বের পর প্রথম দশদিল সন্ধ্যাকালে পুরোহিত আসিরা লাজিপাঠ ও পাঠান্তে প্রস্তিকে ধাস্ত দিয়া আশীর্কাদ করেন। তৎপরে তিনি প্রস্তিও শিশুর কপালে ভঙ্ম দেশন করিয়া আসেন। এদেশে যেমন ৬ঠ দিনে পুরোহিত আসিরা বয়ী-রাজিপ্রা করেন, সেইরূপ ইহাদের'মধ্যে ৫ম দিনে ধাত্রী ফ্রার্কি প্রাণ করিয়া প্রাকে। এই দিন চারিজন ব্রাহ্মণ সমন্ত রাজি লাগিয়া শান্তিপাঠ করিতে থাকেন, প্রাত্তে তাহারা কিছু দক্ষিণা 'ও প্রাণ স্থপারি লইয়া বিদার হন। একাদশ দিনে প্রস্তিও ও শিশু স্নানাদি করিয়া শুদ্ধিলাত করে। শিশু জিমাবার তিন মাস পরে প্রস্তির শান্তভী আসিরা প্রবিশ্ব প্রান্তির পৌরাক্ত ভারির প্রান্তির প্রান্তির শান্তভী আসিরা প্রবিশ্ব প্রান্তির পৌরাক্ত শিশু স্থানাদি করিয়া শুদ্ধির শান্তভী আসিরা প্রবিশ্ব প্রান্তির পৌরাক্ত শর্ম হান।

> म वर्ष भागनि कत्रिवात शृत्स हेहात्मत **छन्।**

ত্রি প্রামী (জী) ত্রয়াণাং প্রামাণাং সমাহারঃ। > তিন প্রামের
দিলন, বেখানে তিনটী প্রাম মিলিত হইয়াছে। ২ একটা প্রাম।
"জ্বান তীক্ষপুক্রৈজিপ্রাম্যাং পৌড়পার্থিবং।" (রাজ্তরং ৪।৩২৩)
ত্রিঘণ্টা, নগর বিশেষ। এই নগর হিমালয় প্রে অবস্থিত
এবং ইহা বিভাধরগণের আবাসভূমি। (কথাসরিতসাং)
ত্রিচক্রে (পুং) ত্রীণি চক্রাণি বস্তা। অবিনীকুমারবরের রখ।
"অর্বাঙ্তিচক্রো মধুবাহনো রথো জীবাখো অবিনোর্বাড়"

(44年 >1> e 91 >)

ত্রিচক্ষুস্ (পুং) জীপি চক্ষ্ণী বন্ধ। জিনেজ, মহাদেব। ত্রিচতুর (জি) জয়োবা চন্ধায়োবা বিকরার্থে ডচ্ সমাসান্ধঃ। ত্রিড চতুক সংখ্যাযুক্ত, তিন বা চারি।

ত্রিচন্ধারিংশ (ত্রি) ত্রাধিক। চন্ধারিংশৎ প্রণে ডট্। ত্রাধিক চন্ধারিংশৎ সংখ্যা প্রণ, ১৪৩ সংখ্যার প্রণ।

ত্রিচত্বারিংশৎ (ত্রি) ত্যাধিকা চত্বারিংশৎ। তিন অধিক চত্বারিংশৎ, তেতাল্লিস্. ৪৩।

ত্রিচিৎ (পং) ত্রীন্ অগ্নীন্ চিনোতি স্ব চি-ভূতে-কিপ্। অতীতাগ্রিত্র চয়নকারী।

ত্রিচিত (পুং) ত্রিভি: ত্রিভাগোৎদেশাভিরিষ্টকাভি: চিতঃ গার্ছ-পত্য অঘিভেদ। "ত্রিচিতমিত্যেকে" (কাড্যাণ শ্রেণ ১৭।১।২২) 'গার্ছপত্যং কুর্বস্থি তত্র চ ত্রিভাগোৎদেশা ইষ্টকা ইতি সম্প্রদায়:। অস্মিংশ্চ পক্ষে প্রথমচিতিঃ লোকং পূণানাং পূরণং মৃগ্যং।' (কর্ক)

ত্রিচিনপ্লী (জিশিরাপলী) ত্রিচিনাপলী জেলান্থ প্রধান নগন্ন।
এই নঁগুর দক্ষিণ কর্ণাটে কাবেরী নদীর দক্ষিণদিকে পুঁদিচেরী
ইইতে ১০৭ ক্রোশ অস্তরে অবস্থিত। অক্ষা ১০০ ৪৯ ৪৫ ৪৫ ৬
উ:, দ্রাঘিঃ ৭৮০ ৪৪ ২১ পূঃ।

এই নগরের উৎপত্তি বিষয়ে এইরূপ জনপ্রবাদ আছে,
প্রাকালে তিশিরা নামে এক রাক্ষ্য পর্বতের গুরুষধ্য
বাস করিত। তাহার চারিদিক্ জললে পরিপূর্ণ ছিল।
রাক্ষরে ভয়ে তথায় কেছ যাইতে পারিত না। পরে
ম্বর্বদিন্তান নামে কোন সাহসা বারপুরুষ এই রাক্ষ্যকে
বিনাশ করেন, সেই অষধি ইহার নাম তিশিরাপারী
ইইয়ছে। হ্রম্বদিন্তান তিশিরা রাক্ষ্যকে বধ করিয়া
তথাকার জলল কাটাইরা এইখানে রাক্ষধানী স্থাপন করেন।
ইনি কোন্ সমর আবিভূতি হইয়াছিলেন, ভাহা জানিবার
উপার নাই। হ্রম্বদিন্তান তিশিরা রাক্ষ্যের ভয় হইতে
এই জনপদকে রক্ষা করিয়াছিলেন বিদিয়া স্বেক্ষ্যান্যে
অতিহিত হইয়া কাবেরীনদীর উওয় তীরে শিবালরে অভাপি
পুকা পাইতেছেন।

ক্ষিত আছে, চোলরাজগণ বৃত্তপূর্ব পঞ্চলভানী ইইতে এখানে রাজত করিয়াছিলেন। মগধের অশোকরাজের বিজয়তক্তে বে অমুদানন খোদিও আছে, তাহাতে চোলরাজের নাম পাওরা বার। উরেম্বর নামক স্থানে চোলরাজনিগের রাজধানী ছিল, উহা ত্রিশিরাপন্নীর এক মাইল দূরে অবস্থিত। এখন এই সহরে বহু লোকের বাস আছে।

বে সমরে রামামূলাচার্ব্য 🚇রককেতে থাকিয়া বিশিষ্টা-হৈত মত প্রচার করিতেছিলেন, সেই সময়ে করিকাল নামে জনৈক চোল · ত্রিশিরাপলী শাসন ক্রিভেন। ৢ খুটাক ১০১৭ * (৪১১৮ কল্যান্সে) শ্রীরামান্ত্রলাচার্ব্য জন্মগ্রহণ করেন, ১৭ বংসরের সময় ভিনি কাঞাপুর এবং তথা হইতে 🕮 রক্ষমে অধ্যরন করিতে ঘান। তদনস্তর বৈষ্ণবধর্মে দীক্ষিত হইয়া কাঞীপুরে ফিরিয়া আইসেন। পরে তিরুপতি হইয়া 🕮 রঙ্গমে বিশিষ্টাবৈত, মত এলচার করিতে যান। তথন তাঁহার বয়:জন ৫০ বৎসরের কম হইতে না। ভাহার ও বছ পরে তিনি জীরক্ষে মানবলীলা পরিত্যাগ করেন। স্থতরাং চোলরাজ করিকাল ১০৬০ খৃ: অকের পর কোন্ সময়ে রাজহ कतिबाहित्मन धारः जीतामाञ्चाहार्त्तात मज्ञाहरतत विश-. ক্ষতা করিরা থাকিবেন। মধুরাপুরীর বিবরণে দেখা যার যে ক্ষ্মরপাঞ্জ উরেয়্র পোড়াইয়া দেন এবং উরেয়্র পূর্ক শাসনকর্তার পুত্র করিকালকে কুন্তকোণের শাসনকর্ত। নিয়োগ করেন। মি: টেলার সাহেব পরম্পরাগত বিবরণের माहात्या (मथाहेबाएकम त्य, खेटबयुत वानिवर्याण श्वःम हहेतन চোল রাজধানী কুস্তকোনে উঠিয়া যায়।

১০৭১ খৃঃ বিজয়বাই লয়ার সিংহাসনে অধিরা হন;
তাঁহার রাজত কালে চোলরাল সিংহল আক্রমণ করেন, কিন্তু
রুত-কার্যা হুঁতিত পারেন নাই। সিংহলরালও ১১১৬ খৃঃ অবল চোলরাল্য আক্রমণ করেন। ইনিও রুতকার্য্য না হুইয়া প্রভাবর্তন করেন। পরাক্রমবাহ ১১৫০ খৃঃ হুইতে ১১৮৬ পর্যান্ত করেন। পরাক্রমবাহ ১১৫০ খৃঃ হুইতে ১১৮৬ পর্যান্ত করেন। পাত্যরুলশেধর সিংহলরাল কর্তৃক পরাভূত হুইলে চোলরাল পাত্যরালকে নষ্টরাল্য উদ্ধার করিতে সাহায্য করিয়াছিলেন। পরাক্রমবাহ প্রতিশোধ লইবার লক্ত চোলরাল্য আক্রমণ করিয়া ৹ কএকটা দেশ অধিকার করিয়া লইয়াছিলেন।

মুসলমানেরা কোন্ সময়ে ত্রিশিরাপদ্দী আক্রমণ করিরা-ছিল, তাছার প্রাকৃত বিবরণ নির্দেশ করা অতি কঠিন। হলরৎ স্থলতান আলীউন্দীন্ সাহেব ১২৯০ খ্যু অবেল মধুরাপুরী জর করিরা আপনাদেরশাসনভূক্ত করিয়াছিলেন। ১৩১০ খ্যু অবেল দিলীর বাদশাহ আলাউন্টোলের প্রধান ক্রেন্সান্ত রাজধানী খারসমূত পূঠ করিয়া রামেখর পর্যান্ত অপ্রসর হইয়াছিলেন। আিশিরাপদ্দী আক্রমণ সম্বন্ধে কোন বিবরণ না পাওয়া গেলেও অন্ততঃ ভাহারা আিশিরাপদ্দী পূঠপাট করিয়াছিল, এইরূপ অনুমান করা যায়।

তঞ্জাবুর ও মধুরাপুরীর বিবরণে জানা ধার, তঞ্জাবুরের শেষ রাজা বারশেধর তিশিরাপল্লী ও মধুরাপুরী আপন রাজ্য-ভূক্ত করিয়া লন। বিশ্বয়নগরের সেনানায়ক কতিয়ান-নাগনায়ক বীর্ণেথরকে পরাভূত করিয়া তিশিরাপলী, তঞ্জাব্ধ ও মধ্রাপ্থী অধিকার করিয়াছিলেন। বিজয়নগরের রাজা অচ্যতরায় আপন খালক সেবাপ্লা নায়ককে তঞার্ব ও তিশিরাপলীর শাসনকর্তা নিযুক্ত করেন। এই সময় ত্রিশিরাপলীতে অতিশঁর দস্থার ভর হয়। বিশ্বনাথনারক মধুরার শাসনকর্তা নিষ্ক্ত হইয়া তিশিরাপরীতে দহার প্রভাব স্থানিতে পারিয়া তঞ্জারে-রাজ্ঞকে জিশিরাপলীর বিনিমরে বল্লাম নামক তুর্গ অবর্পণ করেন এবং নিজে এবানে আসিয়া দেথেন, তিশিরাপলী অতি স্বায়্কর স্থান এবং হুর্গ সংস্কার করিলে অভি স্থান্ট হইবার সম্ভাবনা, ইংা বিবেচনা করিয়া এইথানে রাজধানী স্থাপন করেন। তিনি ি তিশিরাপলীর পুরাতন প্রাচীর সংস্কার করেন, একটা নৃতন প্রাচীর প্রস্তুত করেন এবং ইহার পশ্চাৎভাগে পরিধা ধনন করিয়া ভূর্ভেন্ত করেন। ঐ পরিধার জল আনিবার জন্ত কাবেরী নদী প্রয়স্ত একটা পয়ংপ্রণালী প্রস্তুত হয়। এই সময় काटवती नमीत उड्यमिटकत अवन काठाहेना कावान हम. নানাদেশ হইতে উত্তম উত্তম শিল্পকর প্রাকৃতি আসিয়া এখানে বাস করিতে থাকে। বিখনাথ ব্রাহ্মণদিগের থাকি-বার জন্ম তক্র বাটী প্রস্তুত করাইয়া দিলেন। আর দিনের মধ্যে এই নগরটী ত্থেসমৃদ্দিশালিনী বলিয়া পরিগণিত হইল। এই সময় ইনি শ্রীরক্ষেক্তের রক্ষনাথম্বামীর মন্দিরের বহিঃপ্রকোষ্ঠে গোপুর নিশ্মাণ করাইয়া দেন। ইনি কথন বা মধুরায় কথন বা ত্রিশিরাপলীতে অবস্থান করিতেন। ' এই সময় হইতে চাঁদগাহেব কর্জক অধিকার কাল (১৭৩৬ খৃঃ অকং) প্রাপ্তমধুরাপুরী ও তিশিরাপলী নারকরাজাদিগের भागनोहीन हिन। [महता (नथ ।] नात्रकताकान कथिकाः भ সময় ত্রিখিরাপলীতে থাকিয়া রাজকার্য্য করিতেন। তিকমল ১৬২০ খঃ অধুক রাজ্যভিষিক হইয়া মধুরায়ুরীতে রাজধানী উঠाইয়া লইয়া रान । रहात পুঞ जानगा है (मुक् ती तश्र) অশিরাপলী ছগের পুনঃ সংস্কার করেকুটা ইছার পুত্র (मार्क)नाथ ১৬৬১ के व्यक्त ताला छिविक श्रेष्टिया श्रमकात्र ত্রিশিরাপরীতে রাজধানী করেন। নামক্রাল্ট্রাণ তাঁথার সময

হইতে ১৭৩১ খুঃ অব্ পর্যান্ত ত্রিশিরাপরীতে বাস করিয়া-हिर्मित । ১१०১ थुः चरक (नव नाग्रकताक विकासाधरवस मृद्धा হয়, তিনি অপুত্রক থাকায় তাহার বিধবাপন্নী মীনাকীদেৱী वकाकि छिक्रमान अपूर्व विकार क्रमात युख् जिक्रमान क पछक नहेन्न আপনি নাবালকের অছি হইয়া আপন হত্তে শাসন ভার লইলেন। এই সময় বলাক্তিক্মল প্রকৃত উত্তরাধিকারী বলিয়া রাজ্যের দাওয়া করিলেন। ইনি খ্যাতনামা ভিক্ষক নায়কের কনিষ্ঠ ভ্রাতা ও কুমার মৃত্তুর প্রপৌক্ত। ইহার পিডা কুমার তিহ্নমল রঙ্গকৃষ্ণ মুত্র'বীরপ্লার সময়ে করেক দিন মাত্র যুবরাজের কার্য্য করিয়াছিলেন। যথন ইহার প্রপিডা-মহ রাজ্য প্রাপ্ত হন নাই, তথন ইনি কিছুতেই প্রকৃত উত্তরা ধিকারী হইতে পারেন না। দলবায় বেঙ্কটাচার্য্য ভিক্নমণকে बाब्गा जियेक क्रिएंड कानक ८० है। करबन, किन्ह किन्नर है कुछकार्या इहेटल भारतन नाहे। भारत दक्षिणार्या जानन মনোরও সিদ্ধির উপায় না দেখিয়া আরুকাড়ুর নবাব দোত আলীর পুত্র স্থবেদার আলীর শরণাপর হন এবং উাহাকে करहन, "आপनि वक्षाक्रिक्समारक दाविभिःहामरन উপবেশन कत्राहेटल भातिरम व्याभनारक ०० मक्त होका मिरा" स्ट्राया আলী স্থবিধা বুঝিয়া চাঁদিসাহেবের সহিত ত্রিশিরাপলীর তুর্বের সমুথে আসিয়া উপস্থিত হইলেন এবং সহসা বলপুর্বাণ রাণীর দৈন্ত দামস্তকে পরাব্দয় করিয়া ছুর্গ অধিকার করিতে সমর্থ বুকিয়া উভয় পক্ষের বিবাদ মিটাইয়া দিবার ছলনায় আপন দরবারে উভয় পক্ষকে ডাকাইয়া পাঠাইলেন। বঙ্গাৰু • তিকুমল এই দরবারে উপস্থিত হটলেন, কিন্তু মীনাক্ষীদেবীর পক হইতে কেহই আসিবনা। তথন তিনি বঁলাফতিক মলকে প্রকৃত স্থাধিকারী তিন করিয়া তাঁহাকেই রাজ-শাসনের ভার অর্পণ করেন এবং ৩০ লক্ষ টাকার খত লিখাইয়া नहरानन, के हाका व्यानाय कतिवात छात हानमारहरवन ছত্তে দিয়া নবাবপুত্র আক্রকাড়ু গমন করেন। নবাবপুর शयन क्तिरण योनाकीरमयी ठाँपनारहररक विद्या शांवान, यनि बाक्यम् उक्राक्षिकमारमञ्ज अतिवर्धि जाहात्रहे हाउ রাখা হয়, ভাহা হইলে তিনি > কোটি টাকা দিবেন। চাঁদ্সীহেব এই টাকার লোভ সম্বরণ করিতে না ^{পারি।} वकाक्किक्मनारक हैशावर्ष राख व्यर्शन करवन। कामनाहः আপন কথা রক্ষা করিবার জন্ত মীনাকীদেবীর নিকট কোরা হত্তে করিয়া শপথ করেন। কোন কোন ইভিহাস^{লের} वरनन, जिनि क्लांबारणंत्र भन्निवर्स्ड धकथानि हें ^{हें हैं} কাপড়ে অভাইরা উহাই হুত্তে কইরা শপথ করেন। ধনাগারে होका ना थाकांत्र मोनाकीत्ववी > क्लाक् होकांत वहाँदि

क्षान करतन । बीनाकीरमयी बनाक्षणिक्रमणस्य मधुत्राभृतीत भागनकर्छ। कतिया श्रीति। ১৭०७ थुः अस्य हीमनास्ट्र ত্তিশিরাপলীতে আদিয়া প্রতারণাপৃর্বক হর্গে প্রবেশ করেন এবং রাণীকে আপন ভবনে নজরবন্দীরূপে রাধিয়া স্বরং শাসন-ভার গ্রহণ করেন। রাণী আপনার উদ্ধারের উপার না পাইয়া বিষপানে আত্মহত্যা করেন। এইবার চাঁদসাছেব একবারে নিষ্টক হইলেন। বলাক্তিক্মল নিভাস্থ অমুপায় দেখিয়া সাভারার যাইয়া মহারাষ্ট্রপতির নিকট সাহায্য প্রার্থনা करतन। महाताष्ट्र रमना-नाग्रक त्रप्यीरणान्त्र वक्षम रेम् শইয়া কর্ণাট প্রদেশে গমন করেন। আফভাড়ুর নবাব দত্তআলী তাহার গতিরোধ করেন। কিন্তু ১৭৪০ খৃঃ জ্ঞাকে ২০এ মে তারি**থে বেল্**রের নিকট পরাভূত হইরা নিহত হন। রঘুলীভোন্সে তিশিরাপলী অবরোধ করিয়া ১৭৪১ খৃঃ অস্কে २७এ मार्फ जातिरथ इर्ग अधिकांत्र करतन এवर हांतमाह्य छ তাঁহার পুত্রকে বন্দী করিয়া সাত্রিয়ার পাঠাইয়া দেন ও সেনা-নায়ক মুরারিরাওকে ত্রিশিরার শাসনভার অর্পণ করিয়া ১৪ হাঝার মহারাষ্ট্র সেনা রাখিয়া সাভারায় গমন করেন। বলাকতিক্মল ইহার সহিত দাক্ষাৎ করিয়া রাজ্যপ্রাপ্তির কামনা করেন। রখুঞীভোন্সে যুদ্ধের বার ৩ । লক্ষ টাকা চাহেন। বঙ্গাঞ্জিক্মণ ভাহাই প্রদান করিতে খীক্ত হ্ন, किंख जांश कार्या পतिगठ इस नाहे। ১१৪० थुः जास्म निकाम् উৰ্মূল্ক আদফজাহ তিলিৱাপল্লী অবরোধ করিতে আদিলে ম্বারিরাও হর্গ ত্যাগ করিয়া যান। তদবধি জিশিরাপল্লী ও मध्राश्ती निकारमत आर्पारम आक्रकाजृत नवारवत अधीन হইরা যায়। বলাফুডিকুমল পুনরায় ভাগ্যপরীকার অস্ত নিজামের শরণাপন্ন হইলেন। নিজাম বাহাত্র ভাঁহাকে সন্মান প্রদর্শন করিয়া বলেন, যুদ্ধবায় ৩০ লক্ষ টাকা ও বাংসরিক পেশকাৰ ৩০ লক দিলে উহোকে এই রাজ্য দেওরা ঘাইতে পারে। এই সমর তিশিরাপলীর শাসনকর্তা অধরউদ্দীন্ বলাফতিক্ষলকে দৈনিক বায় নিৰ্বাহাৰ্থ ১০০ টাকা ও ভাহার প্তকে ৩৫০ টাকা বরাদ্ধ করিয়া দিলেন এবং মধুরাপুরী অপণ कतिर्वत विनिन्ना अधिअञ्च इहेरनन । वनाक्षिकमन स्निहे র্ভি ভোগ করিতে করিতে মানবলীলা সম্বণ করেন।

১৭৪৮ খৃ: অবে নিজাম্ উল্যুল্কের অৃত্য হয়। তাঁহার পুত্র নাসিরজক পিতৃপদে অধির ছন। এই সময় টালসাহেব সাতারা হইতে মুক্তিলাত করেন। নিজামের এক দৌহিত্র মূলাকরজক টালসাহেবের বড়বজে নাসিরজদের প্রতিষ্ণী ইংলা করাসীরা মুকাফরজদের পক্ষ অবলম্ব করেন। ইংরাজের নবার অবর্তীকীনেক ও নিজাম নাসিরজদের পক্ষ হইলেন। ১৭৪৯ খৃঃ অব্দে ২৩এ ছুলাই আক্লকাড়ু হইতে ২৫ জোল দ্বে অব্ব নামক ছানে বে বৃদ্ধ হব, এই বৃদ্ধ অব্ব নামক ছানে বে বৃদ্ধ হব, এই বৃদ্ধ অব্ব নামক ছানে বে বৃদ্ধ হব, এই বৃদ্ধ অব্বজনিন্ পরাড়ত হইনা মৃড়াসুথে পতিত হন। ইহার বিতীয় পুল মহলৰ আলী ত্রিলিয়াপন্নীতে পলায়ন করিন্ধ আক্লকাড়্ব নবাব নাম গ্রহণপূর্ণক ইংরাল গবর্মেন্টের পনিকট লাহাব্য প্রার্থনা করেন। একিকে টাদসাহেব পুঁদ্চান্নিতে করানী গবর্মেন্টের সাহাব্যে কর্ণাটকের নবাব নাম গ্রহণ করেন। টাদসাহেব করানী সৈক্লকিগের সহিত ক্রমে অপ্রস্ব হইনা ত্রিলিয়াপন্নী অবরোধ করেন। এই সমন মহল্মদ আলী অর্থাভাবে বড়ই কটে পড়েন। তথ্য তিনি মহিত্যরাজের নিকট অর্থ ও সেনা সাহাব্য প্রার্থনা করিনা আক্রিত এইরূপ প্রতিজ্ঞাপত্র পাঠান, "আমাকে এই আভ বিপদ্ হইতে উদ্ধার করিনে ত্রিলিয়াপন্নীপ্রনিদেশ অর্পণ করিব।"

महिन्द्रत-(जनानांत्रक ननवांत्र नन्नीतांक ७ महातांहे-(जना-নারক মুরারিরাও নরাবের সাহাযার্থ আপন আপন সেনা লইরা ক্ফলারারণপুরের নিকট আসিরা পৌছিলে, ফরাসী-বৈশ্ব তাঁহাদের পভিরোধ করে । কাপ্তেন কোপ এই সংবাদ ভনিয়া ভাহাদের সাহায্যার্থ পমন করেন এবং পরাভূত হইয়া মৃত্যুমুৰে পভিত হন। তাহার পর কাপ্তেন,দণ্টন এই যুদ্ধে সাহায্য করেম। নন্দীরাজ ও মুরারিরাও আপন স্থাপন সেনা লইরা ত্রিশিরাপলী পর্যান্ত আসেন। এ দিকে ভঞাবুররাজ মহমদ্যাণীর সাহায্যার্থ আপন সেনানায়ক মঙ্গেলীর সহিত ৩০০০ হাজার অখারোহী ও ২০০০ হালার পদাতি সৈক্ত পাঠাইলেন। পছকোট্টাইর তণ্ডীমান ৪০০ শত স্বারোহী ও ০০০ শত পদাতিক লইয়া উপস্থিত হইলেন। ভাহার পর মেঞ্স লয়েন্স সেণ্ট ডেভিন্ হুর্গ হইতে ৪০০ শত গোরাও ১১০০ শত সিপাহী লইয়া ত্রিশিরাপল্লী অভিমুথে আসিতে আসিতে ফরাসী রকের সরিকট ফরাসীদিগকে পরাজিত করিয়া ত্রিশিরাপরীর তুর্গাভ্যস্তরে আসিয়া পৌছি-त्नन । जिमि हाँ नगार वर्ष भवास्य क्विए कुछन्द्र हरेलन । চাঁদসাহেব এই সময় শ্রীরক্ষকেতের বিষ্ণুমন্দিরেও ফরাসীরা জহুকের ছাউনি করিয়াছিল। উভয়পকে কএকটা সামাগ্র সামাঞ্জ মুদ্ধ হইয়া যায়। ক্রমে বিপক্ষদিগের রসদ আসা বন্ধ হুইলে করাসীদেনানারক জমুকেশর পরিত্যাগ করিয়া শ্রীরজ-মন্দিরের ভিতর আশ্রন লইয়াছিলেন। তথন মেন্দর লরেন্দ জীরল-त्मत्र मण्डल मिन्दात कावत्ताथ कत्त्रन । এই ममत्र क्राहेव छेछत-बिटक (कानक्रण मधीत जीरब, जबात्तरमनानावक मरक्राकी विकृ-मिलात्त्र शूर्विमिटक नत्कन् शारेनदारमत निक्षे धवर महिन्द्र-(मनानावक् मनीवाम भाष्ठिमनिदक व्याभका कविष्ठिक्रिन ।

চালসাছেৰ এইরপে চতুর্দিক্ হইতে অবকৃষ্ক হন। করাসীরা চালসাহেবের সাহাব্যার্থ আসিতেছে ক্লাইব এই সংবাদ
ভানিরা গোপনে ১০০ গোরা, ১০০০ সিপাহী ও তুই হাজার
মহারাব্র সেনা লইরা করাসীসৈজ্ঞের গভিরোধ করিতে বান।
বিশিকলপুরের সমূপে একটি তুমুল বুদ্ধের পর ক্লাইব জরলাভ
করেন। এই যুক্কে ১০০ শত করাসী, ৪০০ শত সিপাহী
ও ৩৪০টা দেশীর জ্বাবাহাহীর সহিত করাসী সেনানারক
বন্দী হন। চালসাহেব এই স্ংবাদ ভানিরা ভ্ঞাবুর-সেনানারক
ম্বোলীর সহিত সন্ধি করেন। চালসাহেব মহোজীর উপর
বিশাস করিরা ভাহাকে আয়সমর্পণ করেন। মহোজী
বিশাস্বাতকতা করিরা চালসাহেবকে বহুত্বে হত্যা করেন বিশাস্বাতকতা করিরা চালসাহেবকে বহুত্বে হত্যা করেন বিশাস্বাতকতা করিরা চালসাহেবকে বহুত্বে হত্যা করেন বিশাস্বাতকতা করিরা তালসাহেবকে সহুত্বে এই সংবাদ
ভানিরা করাসীশাসনকর্তা ত্রিপ্ল অভিশ্র মনঃক্ল্ম ও
হুংবিত হুইলেন।

পরে ১৭৫০ খৃঃ অব্দে নবেম্বর মানের প্রথমে ফরাসীদিগের
ন্তন সেনা আসিলে বিপক্ষেরা রাত্রিকালে ত্রিলিরাপারী
অধিকার করিবার অভিপ্রায়ে দল্টন-বৃহ্ছের নিকট আক্রমণ
করেন. কিন্তু ভাহাতে কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই।
তাহাতে ৩৬, জন ফরাসীসেনা ইংরাজদিগের হস্তপত হয়।
১৭৫৪ খৃঃ ফেব্রুয়ারি মাসে ইংরাজদিগের রসদ কলিযুর
নামক স্থানে আসিলে ফরাসিসেনানারক এই রসদ কাড়িয়া
লন এবং পছ্কোটাই প্রদেশ লুঠপাট করিয়া ভঞ্জাব্রাভিমুথে
অগ্রসর হন। অভংপর আগেই মাসের শেবে ইংরাজ ও
ফরাসীতে কএকটা ক্রুত্র ক্রুত্র যুদ্ধ ঘটে, পরে উভর পক্ষে সন্ধি
হইয়া যুদ্ধ বন্ধ হয়। মহিত্রর-সেনাপতির নাম এই সন্ধিতে
না থাকার ভিনি এ সন্ধিতে বাধ্য হন নাই এবং বলিয়া পাঠান
গ্রামি এ নিরমে বাধ্য হইব না।

কাণ্ডেন স্মিথ ৬৫০ জন গোরা ও ৭০০ দিপাহী লইরা ক্রিলিরাপলীর হুর্গরকা করিতেছিলেন। তিনি হুর্গটী বিশেষরূপ সংস্কার করেন। ফরাসীরা এই হুর্গ আক্রমণের চেষ্টা করেন, কিন্তু কুত্রকার্য্য হুইতে পারে নাই।

১৭৬০ খৃঃ মে মাসে হায়দর আলী মহিন্ত্রের সর্ক্রেন সর্কা হন। ১৯৮০ খৃঃ অবল তিনি ইংরাজদিগের সহিত
যুদ্ধ ঘোষণা করেন। ১৭৮১ খৃঃ অবল শ্বরং কণাটকে আসিরা

ক্রিশিরাপলী ও মধুরার সর্কাত্র লুঠপাট করিতে লাগিলেন।

ক্রম্পালীর বাঁধ সকল কাটিয়া দিয়া সকতে আবালী জ্বী

নষ্ট করিয়া দেন এবং কর্ণেল বেলিকে (Ballie) বন্দী করিয়া

মহিন্ত্রে পাঠান। পরে ত্রিশিরাপলীর চুর্গ অবরোধ ক্রেন।

সারে আয়ারক্ট পরাভ্ত হইয়া পিছু হটিতে থাকেন। কিছ

্ৰা ক্লাই ভারিখে বে বৃদ্ধ হর, ভাহাতে ভিনি পরাক্তি হন, নার আরারকৃট কর লাভ করেন।

১৭৮২ খৃ: অবে হারদর আলী মানবলীলা সম্বরণ করিলে ভাহার পুত্র টিপু কর্ণাটিক পরিত্যাগ করিয়া মহিত্মরে প্রভ্যাগমন করেন। ১৭৯২ খৃঃ মাজ্রাজ গবর্মেন্টের সহিত নবাবের
সন্ধি হর।

১৭৯৯ খৃ: অন্দে টিপুর মৃত্যুর পর জীরদ্বপত্তন অধিকৃত হইলে অক্সাক্ত কাগলের সহিত নবাব হারদর আলীর আক্ষরিত কএকথানি পত্র পাপ্তরা বার। নবাব ইংরাজ বিরুদ্ধে টিপুর সহিত লিপ্ত পাকার, ১৭৯২ খৃ: অন্দে স্থি ভঙ্গ করিয়াছেন, এই কারণে বুটীশ গবর্মেন্ট এই প্রাদেশ নিজ অধিকারভুক্ত করিয়া লইলেন। নবাব বৃত্তিভোগী হইলেন।

বর্তমান সমরে তিশিরাপলীর হুর্গ আর নাই, হুইটা ছার তাহার সাক্ষী অরপ আছে। হুর্গ প্রাচীর ভালিরা গিরাছে, পরিধার ধাদ পূর্ণ করিরা ইহার উপর দিরা রাজা প্রস্তুত হুইরাছে, হুর্গের ভিতর প্রাতন রাজবাটা অভাপি হুহি-রাছে, ইহাতে তহসীনদারের কাছারী, মুক্লেফ কাছারী, স্থানীর কোবাগার ও ধ্রধালর হুইরাছে।

তিশিরাপর্রী হর্গই পর্মত তর্মানস্বামীমলর নামে অভিহৈত, পর্মতে উঠিবার দক্ষিণদিকে প্রেনাইট প্রস্তরে নির্মিত
পাকা সিঁড়ি আছে। সোপানের উপর চাতালের বামপার্মে মহাদেব তর্মানস্বামীর মন্দির। সমুবের পর্মত
কাটিয়া একটা বর প্রস্তত হইরাছে, কর্ণাটক ব্রের সমর
উহাতে বারুদ থাকিত। এই মন্দিরের দৃশু অতি স্কল্পর।
চোলরাজ্ঞগণ হারাই এই মন্দির নির্মিত হইয়া থাকিবে।
প্রতিবংসর ভাত্রমানে মহাদেবের উৎসব হয়, তাহাতে বহ
লোকের সমাগম হইয়া থাকে। ত্রিশিরাপন্নী ইংরাজাধিকত
হইবার পর অনেক উন্নতি লাভ ক্রিরাছে। এথানে জেলার
জন্ম, কালেন্টর, মুন্দেক, ভাক্তার, পুলিশ স্থপারিক্টেভেন্ট
প্রভৃতি অ্বহিতি করেন।

এখানে এস, পি, জি, হাইস্থ্য ও ওরেইলিরেন কুন, ইংরাজদিগের একটা সেনানিবাস এবং দাক্ষিণাত্যের রেনের একটা প্রধান কার্যালর আছে। এখানকার লোকসংখ্যা ৯০৬০৯, তল্পধ্যে ৬৭২৪৮ হিন্দু। এখানকার জনবারু অভি স্বাহ্যকর।

ত্রিজগৎ (ক্লী) ত্রিগুণিতং লগৎ সংজ্ঞাত্বাৎ কর্মধারয়ঃ। স্বর্গ, মর্ব্য ও পাতালয়প লোকত্তব, ত্রিভূবন, ত্রিলোক।

ত্রিজট (পু:) তিলা কটা: যক্ত। মহাদেব। (ভারত ১৩/১৭:৪৬) ত্রিজটা (বী) ভিলো কটা: যক্তা:। রাক্সীভেদ, এই দ্বাক্ষণী রাবণের অকংপুরে গীতার্ত্ত রক্ষিকারপে নির্ক্ত ছিল। গীতার প্রতি অতিশ্ব সদর বাবহার করিত। অক্সান্ত রাক্ষণীগণ শীতার প্রতি অত্যাচার করিলে ত্রিক্টা ভাছা-দিগকে নিবারণ করিত। ত্রিক্টা ব্যপ্ত রাক্ষণদিগের অমলন করিরাছিল এবং ঐ স্থার্ত্তাক্ত শীতাকে বলিয়া ভাছাকে উৎসাহিত করিত। (রামণ স্থান্দরণ ২৭-৩০ সং)

২ বিষর্ক, বিষর্কের তিনটা পত্তে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশর অবহান করেন। বৃদ্ধ শক্তিরূপী, বৃদ্ধ বৃদ্ধের বিষ্ণু পত্র ব্রহ্মান করেন। বৃদ্ধ শক্তিরূপী, বৃদ্ধ বৃদ্ধের বাই পত্র ব্রহ্মান করেন। এই পত্র আভিশর প্রয়োজন। এই পত্র আভিশর প্রয়োজন। এই পত্র হারা পূলা করিলে কৈবল্যলাভ হয়। (ফ্রানকৈরবীত্তর ৬ পণ) ব্রিক্রান্ত (ক্রী) বিশুণিতং আতং সংক্রাহ্মাৎ কর্ম্মাণ। তৃলাভাগ হক্ এলাপত্র রূপ মিলিত হুগন্ধি জ্বাভেদ। নিগের দেখ। বিক্রান্ত ক (ক্রী) বিজ্ঞাত বার্থে কন্। মিলিত তৃল্যভাগ হক্, লাক্রিনি, এলাচ, ভেজপাত। ওড়হ্মক্, এলাচি ও ভেজপত্র এই তিনটী সমভাগে একত্র করিলে তাহাকে বিজ্ঞাতক বা বিহুগন্ধি কহে। এই বিজ্ঞাতকের সহিত নাগকেশর সংযুক্ত করিলে তাহাকে চতুর্জ্জাতক বলে। বিজ্ঞাত ও চতুর্জ্জাতক বলৈ ভিজ্ঞাত ও চতুর্জ্জাতক বলৈ ভিজ্ঞাত ও বৃদ্ধু বিষ্ণাশক। (ভাবপ্রণ)

(দেশৰ) তিন পিতার ঔরস জাত। ব্রজীবা (ব্রী) ত্রিষু রাশিষু জীবা। তিন রাশির জ্যা, ৩৪৩৮ সংখ্যা রূপ জ্যার অর্দ্ধরূপ পদার্থ।

"নম্বজ্যান্ত জ্ঞীবাপ্ত:।" (স্ব্যিসি॰) 'ত্রিজ্যবা গ্রাম্বারী বেদরাম ৩৪৩৮ সিতরা ভক্ত:।' (রজনাথ) ক্লাব্যা (জ্লী) ব্যাসার্দ্ধ রেখা। বি (জ্লী) তৃণ প্রোদরা॰ সাধু:। তৃণ, তৃণ শক্তের বাৎপত্তিতে উজ্জনসন্ত নিধিরাছেন-— রেফেকারসংযুক্তমবাৎপরং শক্তান্তরমন্তি। 'উৎক্রিপ্তত্তিপদত্ত প্রাংশ্ভবিহগ: সৌমাখন: প্রিভঃ'॥" (বরাহ) ত্রিপতা (बी) বিবু ছানেবু নতা নত গছং (পূর্বপদাৎ নংকার্মগঃ। পা ৮।৪।৩) ১ ধছ। (বিকাশুণ) (বি) ২ তিনছানে নত।

खिगञ्ज (क्रों) विश्व कांव जिग्छ। ज्ञ्लांत, कृष्छ।
खिग्रं ते (प्रः) जीनि नवनानि वर्छ। तित, महास्तर।
खिग्रं ते (प्रः) जित्रावृज्ञानय कर्ष् नेमानाञ्चः नरस्राष्ट्र ।
नर्विरंभावृज्ञ नावरकामरक्षतः "नामनी जिग्यकप्रक्रिः स्मो
रक्षरभाव नावरकामरक्षतः "नामनी जिग्यकप्रक्रिः स्मो
रक्षरभाव (क्रियक्षः १०१२८) । जिग्य हेकि अध्य-नर्गार्ष्यु
अध्यार जिर्मार्षः भक्षप्रभाः भक्षप्रकृषः क्षेत्रमार नक्ष्यप्रभाः विक्रित्रमार अध्यार नक्ष्यप्रभाः विक्रित्रमार अध्यार नक्ष्यप्रभाः विक्रित्रमार अध्यार भक्षप्रभाः नक्ष्यप्रभाः निक्षप्रभाः विक्रित्रमार अध्यार भक्षप्रभाः नक्ष्यप्रभाः विक्रित्रमार अध्यार अध्यार भक्षप्रभाः निक्षप्रभाः विक्रित्रमार (विक्रित्रमार (विक्रित्रमार)) नर्विरंभिक्षपि विवाय प्रमानः (विक्रित्रमानः विवाय विक्रम भाग्रम विन्ते क्ष्य भाग्रम विक्रम विवाय विवा

जिंगाक [जिनाक (मथ ।]

ত্রিণাচিকেত (পুং) ত্রি: ক্বন্টিতো নাচিকেত: অগ্নির্বেন,
পূর্বপদাদিতি গবং। ১ বন্ধ্বেদের একদেশ গ্রন্থ। ২ অধ্যর্গুভেদ, বন্ধ্বেশিধারী।

"ছারাতপৌ বন্ধাবদো বদন্তি পঞ্চার্যরো বে চ ত্রিণাচিকেতা: '"
(শুন্তি)

"বিণাচিকেড: পঞ্চান্নিজ্মপূৰ্ণ: বড়কবিং" (মন্ত 1১৮৫) বন্ধুর্কেদের প্রাণ্ড ভাগ বিণাচিকেত নামে খ্যাত। ত নারারণ। (ভারত ১২।৩৩৮।৪)

ব্রিত (পুং) > দেবতাভেদ। ২ একার মানসপুত্র রূপ ঋষি-ভেদ। ৩ গৌতম মুনির পুত্র, ইহার একত ও বিত নামে হই আতা ছিল, ইহারা সকলেই অভিতেজনী ও মহাতাপস ছিলেন। ত্রিত কর্ম ও অধ্যয়নের গুণে অপৈর আতৃষর অপেকা শ্রেষ্ঠ ছিলেন। মহর্ষিণ্ণ ইহার গুণসমূহ দেখিয়া ইহাকে গৌতমের স্থার পূজা করিতেন। কোন সমরে ইহার আতৃগণের অন্ধরেধে পশু সংগ্রহার্থ তাহাদের সহিত অপ্থানে গমন করেন। পরে পশুসংগ্রহ করিয়া প্রতাগিমনকালে ইহার আতৃষর পশুলোভে ইহাকে অরণ্যে কেলিয়া পশু লইয়া পলাইয়ায়ায়। এমন সমরে এক বুক সমূথে আসিলে ইনি ভয়ে বেমন ধাবমান হইবেন, অমনি এক কুপে পতিত হইলেন। ঐ কুপ তৃণলভাসমূল ও অতি উ

শ শুগু বেবি প্রবন্ধাসি বহুলং নিষ্টোত্মন্।
পরং রক্ষরং বেবি অভ্যুতং ব্যববিদ্ধি।
বীশৈলপিবর লাতঃ শীকলং শীলিকেলং।
বিদ্যাভিকরকৈন মন প্রীতিকরং স্থা।
বিদ্যাভিকরকৈন মন প্রির্ভিবেশ্ব।
বিশ্বাভিক্তিপ্রাভিক্তির বিশ্বাভিক্তির ও প্রাণ্টির্ভিক্তির ও প্রাণ্টির ভিক্তির প্রাণ্টির বিশ্বাভিক্তির ও প্রাণ্টির বিশ্বাভিক্তির বিশ্

গভীর। তিনি এইধানে পতিত হইরা সোমবাগ আরক্ত করিলেন। এই যজে দেবগণ বরং উপস্থিত হন। দেবতা-দিগের বরে ইনি কৃপ হইতে উদার পাইলেন। সেই কৃণো-দকে সরস্থতী নদীর আবির্ভাব হইল এবং এই স্থান উদপান-তীর্থ নামে অভিহিত হইল। এই তীর্থে জলপান করিলে সোমপানের ফল লাভ হয়। পরে ইহার আভ্গণ ইহার অভিশাপে বৃক রূপ ধারণ করিয়া বনে বনে বিচরণ করিতে লোগিল। (ভারতঃ শলাং '০৭ অং) তিরু কিতাাদিস্থানেম্ ভারমানু: ভারত। ০ তিনদিকে বিত্তীর্ণ প্রধাত কীর্তি।

"বস্ত তিতো ব্যোজনা বৃত্তং বিপর্কমর্দরং" (গক্ ১১১৮৭)১)
ত্রিভক্ষ (ক্লী জী) ত্রশ্বুণাং ভক্ষাং সমাহার: অচ্ সমাণ। ভক্ষা,
স্তাধরতার।

ব্রিত স্ত্রীবীণা, বীণাবান্ধ বিশেষ, ইহার আকার কচ্ছপী ৰীণার স্থায়। কেবল ইহার থোল কাঠনির্মিত, এবং ইহাতে তিনটী আবদ্ধ থাকে, এই বীণায় তিনটা তার কচ্ছপীর নায়কী স্থায় ও পঞ্চমের সমন্ত্রপ। বাদনকার্য্য ও কচ্ছপীর স্থায় সম্পায় হয়। (যান্তকাং)

ইহার আধুনিক নাম হেতার, এটা বীণার অমুকর, এ শক্ষকে পারত ভাষার সে বলে, এই জয় আমীর ধস্ক তিনটী তারবিশিষ্ট ত্রিভন্তীকে সেভার নামে অভিহিত ক্রিরাছিলেন।

ক্রিত্য (রী) এরো হ্বর্বা অস্ত ত্রি-তর্গ্ (সংখ্যারা অবরবে তর্গ্। পা ধাং।৪২) এর, ত্রিস্থ সংখ্যা, ধর্মা, অর্থ ও কাম ইহার নাম ত্রিত্য।

"ত্ৰদ্ধত্যাত্ৰতং ৰাপি ৰৎসর্বিতেরং চরেং।" (ৰাজ্ঞৰক্ষ্য) (বি) ২ বি প্ৰকার। ক্রিরাং ভীষ্। ,

ত্রিতল (ত্রি) তেতালা, ত্রিতল গৃহ।

ব্রিতাপ (রী) ত্র্যাণাং তাপানাং সমাহার:। আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক ও আধিদৈবিক হংপত্রর। আধ্যাত্মিক হংপ হুই প্রকার শারীরিক ও মানসিক। বাত, পিত্ত ও শ্লেমাদির বিপর্যয়ঞ্জনিত জ্বর, অতিসার প্রভৃতি রোগাদি শারীরিক হংপ কাম, কোধ, প্রির বিরোগ ও অপ্রির সংবাদজনিত হংপ মানসিক। আধিভৌতিক চারি প্রকার, জরায়ুজ, অওল, স্থোল ও উভিজ্ঞা। শীত, উষ্ণ, বাত, বর্গা ও ব্রুপত্রন প্রভৃতি হইতে হংগোৎপত্তি হইলে আধিদৈবিক হংপ কহে। মানবগণ প্রতিনির্ভ ত্রিতাপে অভিভৃত হইয়া নানাবিধ ক্লেশ ভোগ করিতেছে। শ্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসন প্রভৃতি সক্রই ত্রিতাপ নাশের জ্বন্ত। ত্রিভাপের নাশই মোক্ষ। নিরস্কর ত্রিতাপে মানব পীড়িত হইয়া পরে তাহায়

শাস্ত্র জিজ্ঞাসা আসিরা উপস্থিত হয়। শাস্ত্র জিজ্ঞাসা উপস্থিত হয়। হইলেই সোক্ষের পথে অগ্রসর হইতে থাকে। [বিশেষ্
বিবরণ হংগ দেখা]

ত্রিদণ্ড (পুং) ত্রিদণ্ডং চতরসুলগোবালবেইনাভোস্তসকরং অন্তঃস্কৃত্ত আদিছাদ্য > সর্যাসাশ্রম।

"বন্ধ্যংযত্বড় বর্গ: প্রচণ্ডে জিল্ল নার্থি:।
জ্ঞানবৈরাগ্যরহিত জিল্ড মুপলীবতি ॥" (ভাগবড)
(ক্লী) জ্বাণাং দুখানাং স্মাহার:। যতিদিগের চতুরকুল
গোবালবেষ্টিত পরস্পরস্থ দুগুজ্র যথা—বাগ্দণ্ড, মনোদ্ধ
ভ কালদণ্ড।

ত্রিদগুক (क्रो) ত্রিদগু-সার্থে কন্। ত্রিদগু ।
ত্রিদগুক (পুং) ত্রিদগু-সার্থে কন্। ত্রিদগু ।
বাহার বাগ্দগু, মনোদগু ও কারদগু বৃদ্ধিতে নিহিত সাহে,
কর্থাৎ বিনি জ্ঞানবলে কারমনোবাক্য দমন করিতে পারেন,
তিনিই ত্রিদগু পদবাচ্য।মগুলুর ধারণ করিলেই ত্রিদগু হওর।
বার না, কাম ও ক্রোধ সংযত করিরা সর্মপুতে বিনি এই
ত্রিদগুর যথা ব্যবহার করেন, তিনিই ত্রিদগু পদবাচ্য এবং
সিদ্ধিলাতের অধিকারী।

"ৰাগ্ৰথেষ্থ মনোদতঃ কাষ্য্ৰতথৈব চ।

যতৈতে নিহিতা বুদ্ধৌ ত্ৰিদতীতিস উচ্যতে॥

ত্ৰিদত্তমেত্ৰিক্ষিপ্য সৰ্বভূতেষু মানবং।
কামকোধৌ তুসংযম্য ততঃ সিদ্ধিং নিয়ছতে॥"

(মহু ১২।১০-১১)

ত্তিদণ্ড গ্রহণ করিলে তাহাদিগের প্রেতত্ত দূর হয়, ত্রিদণ্ডী দিগের আভ্রাদ্ধ করিতে হয় না, কিন্তু মৃত্যুর পর্ "একাদণ দিনে পার্বণ প্রাদ্ধ করিতে হয়।

"ত্রিদণ্ডগ্রহণাদেব প্রেতদ্বং নৈব জায়তে। অহজেকাদদে গ্রাপ্তে পার্কাণ্ড বিধীয়তে।" (লিখিতসংহিতা ২ যজোপবীত। (লোকপ্রসিদ্ধি)

ত্রিদল (ত্রি) ত্রীণ দলানি যত। ত্রিপত্রবিশিষ্ট বিৰবৃক্ষ।
ত্রিদলা (ত্রী) ত্রীণ দলানি প্রতিপত্রং বড়া:। গোধাণনী
করা, লোয়ালে লতা।

ত্রিদলিকা (জী) জীপি দলানি যস্তাঃ কপ্কাপি জতইবং। চপ্ক্ষণতা, চাম্য়ক্ষা।

ত্তিদশ (পুং) ভূতীরা দশা যন্ত, ত্তিশক্ষণাত ত্তিভাগৰ ভূতীরার্থ কতা বা ত্রিলো কল্মসতা-বিদাশাখ্যালন ভূ মর্ত্ত্যাদামিব বৃদ্ধি পরিণামক্ষরাখ্যাল দশা যন্তঃ যরা, ত্রীন্ তাপান্দশতি দ্বা বঞ্জে ক পূৰোণ সাধ্য বা ত্রাধিকাল ত্রিরার্ত্তাল দশ পরিমাণ মন্ত । ব্যেক্ত্রাক্ষণ বিষয় বৌধন সম্পদ্ধ দেৱৰ দিপের কর সভা ব বিদাশাখ্যা প্রবহা আছে, কিছ এই

• অবহা মর্তাদিপের ভার বৃদ্ধি, পরিণান ও কররপ নতে।

কেবতা সকল মহন্তদিপের আব্যাদ্ধিক, আবিতোতিক ও
আবিদৈবিক এই ত্রিতাপ নাশ করেন, দেবগণের সংখ্যা
তিন আবৃত্তি দশ, অর্থাৎ তিন দশ ত্রিশ। ত্রিংশৎসংখ্যা দেবতাদিপের পরিমাণ হর, কিছ দেবগণের পরিমাণ করেরিংশৎ,
এ হলে এক ত্রিশক্তরভাবারা উচ্চার্গেহতু ত্রর্ত্তিংশতের
বোধ হইরা থাকে। এই সকল কারণে দেবতাদিপের নাম
ত্রিদশ হইরাছে।

এই অন্নরিংশংখন প্রধান দেবতা, ১২ অর্ক, ১১ ক্রন্ত্র, ৮ অইবস্থ, ২ অধিনীকুনার্থর এই তেত্রিশ, কেছ বা বলেন, অধিনীকুনার্থ্যকে পরিত্যাগ করিরা ইন্দ্র ও প্রজাপতিকে লইরা তেত্রিশ। (জি.) জিংশং পরিনিত। তিলোদ্ধাঃ কাপ্রদান্তবহা বস্ত। (পুং.) ৩ জীব।

ত্ৰিদশগুরু (গুং) ত্রিদশানাং দেবীনাং গুরু: ৬ডৎ। দেবগুরু, বুহুপাতি।

ত্রিদশগোপ (পং) ত্রিদশো দেবভেদ ই**স্ত:** গোপো রক্ষকোহন্ত। ইস্ত্যোপকীট, রক্তবর্গ কীটভেদ, কেনুই। [ইস্ত্যোপ দেখ।]

ত্রিদশত্ব (ক্লী) ত্রিদশক্ত ভাব: ত্রিদশ-ত। দেবত্ব। ত্রিদশদীর্ঘিকা (জী) ত্রিদশানাং দেবানাং দীর্ঘিকা। বর্গকা। (হেম)

ত্রিদশপতি (গুং) ত্রিদশানাং পতিঃ ৬ডং। ইছ:
ত্রিদশনপ্রারী (ত্রী) ত্রিদশপ্রিরা মঞ্চরী ষস্তাঃ, সংজ্ঞাদ্বাং,ন
কপ্। তুবনী। (রাজনি)

ত্রিদশবধু (জী) ত্রিদশানাং বধু:। অপেরা, বিভাধরী। ত্রিদশবণিভা প্রভৃতিরও এই অর্থ।

ত্রিদশবর্জুন্ (ক্লী) ত্রিদশানাং বর্জু। নভদ্, আকাশ। ত্রিদশবণিতা। [ত্রিদশবধ্দেখ।]

ত্রিদশস্থপ (পুং) ত্রিদশক্রিয়: স্থপ:। দেখস্থপ, স্থপ-ভেদ। (নৈয়° পাল্লত)

ত্তিদশাস্কুশ (পুং) তিদশন্ত অভুশঃ। বছা। (শবার্থচিং) তিদশাচার্য্য (পুং) তিদশানাং আচার্যাঃ। স্থরপ্তর বৃষ্টস্পতি। তিদশাধিপ (পুং) তিদশানাং অবিপঃ। তিদশের অধিপতি, ইল্ল। তিদশাধ্যক্ষ (পুং) তিদশানাং অধ্যক্ষঃ। বিষ্ণু । "তিপদ "ত্তিদশাধ্যক্ষ (বিকুসং)

विष्णाञ्चम (१११) विष्णामार जात्रनः रख । विकृ । विष्णाञ्चभ (१११) विष्णामार जात्रूषः । रख, देखंत रख । विष्णाति (११) (प्रवानार जात्रिः ६७६ । रष्टवणंक, जन्नक। (शक्तः) ব্রিদশালার (পৃং) বিশাত আলনঃ ৬৩৭। ১ খুন।
২ ছনেরপর্বত। (হলার্ধ)
ব্রিদশালার (পৃং) ব্রিদশালাং আনারঃ। ১খর্ন। ২ ছবেরপর্বত।
ব্রিদশালার (পৃং) ব্রিদশালাং আনারঃ। অমৃত, ছবা।
ব্রিদশেশ্বর (পৃং) ব্রিদশালাং উপরঃ। ইন্তা।
ব্রেদশেশ্বর (পুং) ব্রিদশালাং উপরঃ। ইন্তা।
ব্রেদশেশ্বর (প্রী) ব্রিদশেশর-তীপ্। হর্মা।
স্থানার ব্রিদশালা নকী রুশ্বির্মতা।
তেবাঞ্চ নন্দিনী নকী রূশ্বাং ব্রিদশেশরী।।
ব্রিদালিকা (নী) ব্রিদলিকা বৃক্ষবিশেব, চর্মকবা।
ব্রিদিনস্পৃশ্ (পুং) ব্রিদিনং চান্তানিকারং স্পাতি স্পা-কিপ্।
ব্রেদশেলা, করার, অধ্যানিকভা। "তিথ্বের্থবেশা দিনবারঃ
স্পাতি ব্রু তত্ত্বতাব্যমিনং। এক্রিদলস্ক্দিনত্ররম্পর্নান্
দহঃ ।" (স্যোত্বত্ত্ব)

৬০ বও অহোরাজের মধ্যে বলি ছইটা তিথির সম্প্ অবসান হর, ভাহাকে অবমদিন করে এবং একটা তিথি বদি ভিন্নটা বারকে স্পর্ল করে, ভাহাকে আহম্পর্ল করে। অবম ও আহম্পর্লে কোন ওড কার্যাদি করিতে নাই, কিছ মান ও দানাদিতে ভভকরণ [অবম দেখ।]

ত্রিদিব (পুং) অরো ত্রহ্মবিষ্ণুক্রতাঃ দীব্যস্তার্ল, দিব-দঞ্বা দীব্যস্তি ইতি দিবাঃ দিব-ক, অরঃ সম্বর্জস্তমোরপাঃ দিবা ক্রীড়কা বঅ। > পুর্গ, ত্রন্ধা বিষ্ণু ও মহেশ্বর পুর্গে অবস্থান ক্রেল, এই অন্ত পুর্গের নাম ত্রিদিব। ২ আকাশ, নন্তস্। (রী) ও পুর্থ। (শ্রুমার্থিচি॰)

जिनियां (जी) ननीरछन्। (यर्छ्यू ১১৩।०১) जिनियां भीमां (पूर्) जिनिय्छ क्यीमः। हेळा। जिनिय्ण (पूर्) जिनिय्छ क्रमः। त्नव्छ।

ত্তিদিবেশক [তিদিবাধীশ দেখ।]
ত্তিদিবোস্তবা (জী) তিদিব উত্তবোষস্থাঃ। ১ সুলৈলা, বড়
এলাচ। ২ গলা। (তি) ৩ স্বর্গন্তবমাত্র।

ত্রিদিবে কৃস্ (পুং) ত্রিদিব ওকোবত। দেবতা।
ত্রিদৃশ্ (পুং) ত্রিস্থা দেশঃ নেত্রাণি বত। বাঁত্রীণি ভৃতাদীনি ।
প্রতি দৃশ্-কিপ্। ত্রিনয়ন, শিব।

ত্রিদোস (जी) অরাণাং দোবাণাং সমাহার: । ১ বাত পিত্ত ককল দোবত্রর বিকারবিশেষ । ২ ত্রিদোবজ রোগভেদ।

ব্রিদোষ্ট্র (বি) বিদোষাক্ষারতে জন-ড। বিদোষজনিত বাতাদি সরিপাতজ্ব রোগজেদ। বাত, পিন্ত ও কফজনিত সরিপাত প্রভৃতি রোগ। [অর দেখ।]

বিদোষণ বমি রোগে অভ্যন্ত পূণ, ভূক জবোর অপান, অকটি, বাহ, পিণানা, ঝান ও বোহ হয়। এই ८त्रामि नर्सना छेक, नीन वा ब्रक्कवर्य ग्रवनाप्त्रेबनविनिष्ठे भवार्थ वयन करत्र।

ত্রিদোষঘু (অ) তিলোষং হস্তি'হন-টক্। ত্রিলোষনাশক।
ত্রিধন্ধন্ (পুং) অধবা রাজার এক পুত্র। এই ত্রিধনার ত্রারুণ
নামে সর্কবিভাবিশারদ এক পুত্র জন্মে। (হরিবংশ ১২ জং)
ত্রিধা (জবা) ত্রি-প্রকারে ধাচ্।, ত্রিবিধ, ত্রিপ্রকার।

"জ্ঞানং কর্ম চ কর্তা চ ত্রিধৈব গুণভেদতঃ।" (গীতা ১৮।১৯)
ত্রিধাতু (পুং) ত্রীন্ ধর্মার্থক মান্দ্রণতি প্রফাতীতি ধা-তৃন্।
১ গণেশ। (ত্রিকা॰)(ক্লী) ত্রাণাং ধাত্নাং সমাহার:।
ধাত্ত্রর।

ত্রিধাত্ব (ক্নী) ত্রিধা-ভাবে ত্ব। ত্রিপ্রকারত্ব, তিন প্রকারের ভাব।
ত্রিধামন্ (পুং) ত্রীপি ভ্রাদীনি স্বাদীনি বা ধামানি যত।
> বিষ্ণু। ২ শিব। ৩ অমি। ৪ মৃত্যু। (ক্লী) ত্র্যাণাং ধামাং
সমহারঃ। ৪ ধামত্রর, ত্রীত্ব পক্ষে, নঙীপ্। ৫ অর্গ।

"दः तो दः त्मन भारतन जिथाम शत्रमः वर्षो ।"

(জাগু, অ২৪।২০)

'ত্রিধাম তৃতীরং ধাম অর্গ:'(ত্রীধরতামী)(ত্রি) ৬ ত্রিসংখ্যাহিত। ত্রিধামূর্তি (পুং) ত্রিধা মূর্তি র্যন্ত। ত্রন্ধা বিষ্ণু মহেশর রূপ মূর্তিত্রসমূক প্রমেশ্বর।

ত্রিধারক (পং) ভিলো ধারা অগ্রাণ্যন্ত, ভত: স্থার্থে কন্। তথ্যভূপ। যাবক্ষ ক্ষেত্র।

ত্রিধারস্কু হী (ত্রী) ত্রির্ভাগের্ধারা ফলা: সা এব লু রী। লু হীবিশের, ভেকাটাসিজ। পর্যায় — ত্রান্তর, ধারাজু হী। (রাজনিণ)
ত্রিধারা (ত্রী) ত্রির্ভানের্ধারা প্রবাহা জলা: । ধারাত্রয়ানি করিলা, অর্গ মর্ত্তা ও পাতালে গলার ভিনটী ধারা আছে, এইলফ্ল গলার নাম ত্রিধারা।

ত্রিধাবিশেষ (পঃ) ত্রিধা ত্রি প্রকারো বিশেষ:। স্থানি
ত্রর রূপ শরীর বিশেষ, স্কা শরীর এক, মাতাপিতৃত্ব বিতীর,
মহাভৃত তৃতীর, এই ভিন প্রকার বিশেষ শরীর। ইহার
মধ্যে স্কাশরীর নিয়ত, মাতাপিতৃত্ব শরীর রুস, জন্ম, বা
বিঠা রূপে পরিণত হয়।

"স্কা মাতাপিতৃলা: সহপ্রভৃতিতঃ ত্রিধাবিশেষা: স্মাংশ"(সাংখ্যকাং)
ত্রিধাসর্গ (পুং) ত্রিধা ত্রিপ্রকার: সর্ক:। ভৃতাদি সর্ক।
"কাইবিকরেটি দৈবকৈব্যগ্যোনশ্চ পঞ্চধা ভবতি।
মাস্থলৈ কবিধ: সমাসতোহরং ত্রিধাসর্ক: ॥" (সাংখ্যকারিকা)
ত্রাক্ষ, প্রান্ধাপত্য, ঐস্ত, পৈত্র, গান্ধর্ক, যাক্ষ, রাক্ষস,
শৈশাচ, এই ৮ প্রকার দৈবসর্ক। পশু, পকী, মৃগ, সরীস্থপ ও
ভাবর এই পঞ্চবিধ তির্বাগ্ সর্ক। মান্থ্য সূর্ব একবিধ, ত্রাক্ষপ
ক্রির বৈশ্ব প্রভৃতি সক্ষ লাভিই এই মান্থ্য-সর্বের ধ্যাযুর্তী।

এই তিন প্ৰকাৰ দৰ্গ। প্ৰাকৃতিক সৃষ্টি মাৰেই এই ছিন্ প্ৰকাৰ দৰ্গের অন্তৰ্ভ ।

ত্রিনয়ন (পু:) ত্রীণ চক্রত্র্যায়িরপাণি নয়নানি যক্ত, পূর্ব नवार नः आशामिक थारि क्ष्माविद् ह देखि निरवशेर न नवाः। ১ निव, महारतव। महारतवत्र कृञीत्र स्वाविकारवा বিষয় এইরূপ লিখিত আছে—একদিন পার্ব্বতী পরিহাসজ্লে महार्मिद्देव दन्यक्ष क्रवं क्रवं कार्यक्ष करवन । महारम्द्दे নেতাৰর স্যাহ্ন হইবামাত সমুদ্র জগৎ আইকার্য্য এবং হোম ও বষট্কার শৃক্ত হইল। তথন মহাদেৰেঃ ললাটদেশে এক বুগান্তকালীন প্রচণ্ড মার্ভণ সদৃশ নেত্র সমুৎশন্ন হইল। ঐ নেত্র জ্যোভিতে চারিদিক্ পরিপূর্ণ হইল। ঐ জ্যোতি ক্ৰকাৰ মধ্যে অত্কলার সকল নাশ করিয়া हिमानत पर्कें छरक नद्ध कतिएक नातिन। पार्क्की वह करता रमिथत्रा महारम्दद छव कतिएक आत्रक्ष कतिरमन । महारम्द তথন প্রকৃতিস্থ হইয়া পার্কিতীকে কহিলেন, দেবি ! ডুমি না জানিয়া আমার নেত্র্য সমার্ত করায় সমুদ্ধ লোক জালোক বিহীন ও বিনষ্টপ্রায় হইয়াছিল। ঐ সমরে আমি উহাদের রক্ষার নিমিত্তই এই সমুক্ষ্য তৃতীর নেত্রের সৃষ্টি করিয়াছি। (ভারত অফুশাসন[•]১৪• অ[•]) (ত্রি) ২ লোচনত্রয়যুক।

ত্তিনয়না (জী) জীপি নয়নানি ষঞ্চাঃ, টাপ্। হুর্গা।
ত্তিনবতি (জী) জ্ঞাধকা নবভিঃ। ভিন অধিক নবভি সংখ্যা,
ভিরানকাই। ২ ভৎসংখ্যেয়।(জি) ভঙঃ পুরণে ডট্। জিনবভঃ
ত্তিনবভিতম (জি) জিনবভি-ডমপ্। জিনবভি সংখ্যার পুরন।
ত্তিনাক (পুং) নাস্তি অকং হুঃখং যক্ষিন্ নাকং পুখ্যনোকঃ
ভূতীয়ং নাকং। ১ ভূতীয় নাক। ২ উদ্ভম স্থান।

"যতাত্বকামং চরণং ত্রিনাকে" (ঋক্ ১০১১৩১১)
ত্রিনাভ (পুং) ত্ররো লোকা নাজে শুল আচ্ সমাসান্তঃ। বিষ্ণৃ।
ত্রিনিক্ষ (ত্রি ঠ ত্রিভি নিকৈঃ ক্রীডং ঠঞ্জ, তল্প বাছণ সূক্।

ত্ৰিনিক (বি) বিভি নিকৈ: কীতং ঠঞ্, তম্ব বাহণ সুৰ্। তিন নিক বারা কীত। ত্ৰিনেক্ৰ (পুং) বীণি নেতাণি যক্ত। সহাদেব, শিব।

ব্রিনেক্র (পুং) ত্রীণি নেত্রাণি যক্ত। মহাদেব, শিব। ক্রিনেক্র, ঝালাবারের লথ্ডর রান্যের অন্তর্গত একটা প্রানিদ প্রাম, এখন তর্নেতর নামে বিখ্যাত। বিখ্যাত প্রাচীম নগর-থার্নের পার্ব্বে, অবস্থিত।

থানমাহাছ্যের মতে স্থরাষ্ট্রের এক জংশের নাম বেশ্পকাল, এখানে ত্রিনেতেখন মহাদেব বিরাজ করেন। ত্রিনেতেখন মহাদেবের নামায়ুসারে এই স্থান ত্রিনেত বা তর্নেতা নামে খ্যাত হইরাছে। ত্রিনেত্রমাহাছ্যের মতে সভার্বে মাদ্ধাতা এখানে একটা সুর্বায়ন্দির নির্দাণ করিরাছিলেন। কর্মান্তারে প্রভানধন্তে রিধিত জাছে—

(প্ৰাছতৰ)

जिन्थगामिमी नेकांत्र केमानत्कात्न मश्त्रात्मचत्र नात्य जीर्व ' आहि। এইशान जीर्थमाशास्त्रा मरक नकन जित्नज इहेता-ভিল। এখানে সান করিলে স্কল পাতক বিনষ্ট হয়। এই कथा श्वनित्रा शार्ताजी महारत्वरक विकाला कतिवाहिरतन, जिन्नशामिनी नेना दकन . अथारन चानित्राहित्नन अवः हेहात्र मरकागरे वा टकन खिरनख स्टेशांक्नि ? टेशांत्र **केखर**त महाराव वरनन. दकान कांत्रण व्यक्कांनांक विविश्व महास्वरक मांभ रहन। এই 'সময় কতকগুলি ধবি এখানে আসিয়া আরাধ্য দেবতা মহাদেবকে শাপগ্রস্ত দেখিয়া কঠোর ভপভার প্রবৃত্ত হইয়া-हित्तन । এধানে महाम्वि अविशत्त्व भार्त त्राक्का धावन করিয়াছিলেন। ঋষিগণ কঠোর তপস্তা করিয়াও মহাদেবের সাকাৎ পাইলেন না। কিন্তু তাহারা সকলে মহাদেবকে না দেখিলেও জিনেজ হইয়াছিলেন। তথন হইতে এই স্থান একটা প্রধান তীর্থ মধ্যে পরিগণিত হইল। এই সংবাদ চারিদিকে প্রচারিত হইলে ভৃগু প্রভৃতি শ্ববিগণ আসিরা কঠোর তপস্থার প্রবৃত্ত হইলেন এবং তথার সংগালেশর নামে মহাদেব মূর্ত্তি স্থাপন করিলেন। তাঁহারাও মহাদেবের দর্শনলাভ না করিরাই विदनवष श्रीश हरेतन। भारत छाहाता शादन महारादवत यक्षभ स्नानित्र भाक्षिया महास्तर्क कहिरनन, क्षार्छा ! यहि আপনি সম্ভই হইয়া থাকেন, তাহা হইলে আমাদিগকে এই বর मिन, रयन এইখানে জিপথগামিনী গলা প্রবাহিত হন। তথনই মহাদেবের অনুতাহে ত্রিপণগামিনী গলা ভূমিভেদ করিয়া তণার উথিত হইল এবং ইহার মংস্তগণ তিনেত্রত প্রাপ্ত रुरेन। (क्रान्नि श्रष्ठांत्रवेश २) वः)

এবানকার সঙ্গালেশর মহাদেবই জিনেত্রেশর নীমে খ্যাত। এই স্থানে বিস্তর লোকের বাস।

ত্রিনেত্রচূড়ামণি (পুং)ত্রিনেত্রস্থ চূড়ামণি: শিরোভূষণং
চল্ল ৷ (জিকাঞ)

ত্রিনেত্ররস (পুং) সমিপাতরোগের ঔবধ বিশেষ। প্রস্তুত প্রণালী লাধিত পারা, গদ্ধক ও মারিত তাত্র সমতাগে লইরা ঐ তিনের পরিমাণ যত, তত গব্য হয় বারা মর্দন করিব। অনস্তর তীব্রতর রোজের উন্তাপে শুক্ষ করিরা পুনরার নিসিন্দা ও সন্ধিনার কাথ বারা একটি অদ্ধম্বার সানন্দ্রর ভিনাকে গোলকাইতি করিরা একটা অদ্ধম্বার সাপনপূর্ণক বালুকাবত্রে তিন প্রহর, পাক করিবে। পরে পাল পেরণ করিবা, করিবে, এই সমুদ্র চূর্ণের ৮ অংশের এক অংশ বিবের সহিত মর্দন করিরা ২ রতি পরিমাণে বটকা প্রত্ত করিবে। গঞ্চলোপের ক্রাণ্ড করিবে। গ্রহ্মিক স্বিস্থিত করিবে। গঞ্চলোপের ক্রাণ্ড করিবা ভাগছকের সহিত

ত্রিনৈ ফিক (বি) বিভি নিকৈ: জীতং বিনিছ-ঠঞ্ ঠঞি উত্তরপদত বৃদ্ধি:। তিন নিক বারা জীত। ত্রিপক্ষ (গঃ) ভূতীর: গলং সংখ্যাশকত বৃদ্ধে প্রণার্থবাৎ। ভূতীর পক্ষ, আন্ত প্রাক্তকানে, প্রেভোদেশে ব্যোৎসর্গু না ক্ইনে বিপক্ষে করিতে পারা বারু। "বঠে মানি বিপক্ষে বা।"

ত্রিপচ্ছস্ (অবা) জিপদে। (শান্ধ্যাণ শ্রৌণ ১১/১৪/১৪)
ত্রিপঞ্চ (জি) জিগুণিতাঃ পর্ক। প্রকাশ সংখ্যাবিত, ১৫
সংখ্যাবৃক্ত। এই শুল নিত্য বহুবচনান্ত।
ত্রিপঞ্চাঙ্গ (পুং) জিপঞ্চ পঞ্চদশ অলানি বস্ত। সমাধিতেদ, এই সমাধিতে ১৫টা অল। বম, নিরম, ত্যাগ, মৌন, দেশ, স্থানাতা, আদন, মূলবন্ধ, দেহসাম্য, দৃক্তিতি, প্রাণসংব্যন, প্রত্যাহার, ধারণা, আত্থ্যান, সমাধি, এই পঞ্চদশ অল।

"ৰষো হি নিয়মন্ত্যাগো মৌনং দেশ: স্কানতা। আসনং মূলবন্ধান দেহসামান্ত দৃক্তিভি: ॥ আপুনংযমনকৈব প্ৰভাগাহার ত ধারণা। আত্মধ্যানং সমাধিন্ত প্ৰোক্তান্তলানি বৈ ক্রমাং ॥"

(শকার্থচিণ ধৃত বাক্য)

ত্রিপঞ্চাশ (ত্রি) ত্রিপঞ্চাশৎ পূরণে ডট্। তিন অধিক পঞ্চাশং সংখ্যার পূরণ, তিপ্পান, ৫০। ত্রিরাং ত্রীপ্। ত্রিপঞ্চাশৎ (ত্রী) ত্রাধিকা পঞ্চাশং। ১ তিন অধিক পঞ্চাশং

ত্রি**পঞ্চাশত্তম** (ত্রি) ত্রিপঞ্চাশৎ পূরণে তমপ্। ত্রিপঞ্চাশৎ সংখ্যার পূরণ। ত্রিরাং ভীপ্।

ত্রিপটু (পুং) কাচ। (পারস্বরনিষ্টু)

ব্রিপতাক (ক্রী) তিল্রঃ পতাকা ইব রেখা বত্র।১ রেখাবরাবিত ললাটদেশ ১ ২ মধ্যমা ও জনামিকা ব্যতীত অঙ্গুলিতার উন্নত হক্ত।

ত্ত্ৰিপতী (दौ) [ভিৰুপতি দেখ।]

ত্তিপত্ত (পুং) ত্রীণি ত্রীণি পত্রাণি বস্তু। ১ বিবর্ক। (ক্লী)
২ দলত্ত্বযুক্ত বিৰপত্ত । বিবর্ক পর্মতীর্থ, ইহার তিনটা পত্তের
উর্জপত্ত সাক্ষাৎ শিবস্থরপ, বামপত্ত ব্রহ্মা, দৃক্ষিণ পত্ত বিষ্ণু।
"উর্জপত্তং হরোজ্ঞেরঃ পত্তং বামং বিধিঃ স্বরং।

অহং দক্ষিণপত্ৰঞ্চ ত্ৰিপত্ৰদশমিত্যুত ॥" (বুঁহদ্বৰ্মপুণ ১১।৯)

(জি) পদজরবৃক্ত। জরাণাং পজাগাং সমাহার:। পজজর। ব্রিপত্রক (পুং) জিপুত্র সংজ্ঞারাং কন্। > পলাস বৃক্ষ। (क्रो) জরাণাং পজাগাং সমাহার:। সংজ্ঞারাং কন্। ২ তুলসী, কুন্দ, মালুর (বিশ্) পজজর।

. "ज्गनीक्त्यमान्द्रभवागाष्ट्रविभवकः।" (प्रदीप्ः): ত্রিপুথ (ক্লী) ত্ররাণাং পথাং সমাধারঃ, আঁচ্ সমা'। 'পথ-সংখ্যাব্যরাদেঃ' ইতি ক্লীবদ্ধ:। ১ মার্গতিতর। ত্রেরা পদ্ধানা-যত্তা, আচ্ সমা'। ২ ত্রিমার্গযুক্ত,' তেমাথাপথ। "বিবধাতী ক্রম-ভাস্কত্রিপথে বা ভজেরিদি।" (গুপ্তসাধনতত্র)

ত্তিপ্ৰপা (ত্ত্ৰী) ত্ৰিপণে স্থামৰ্ত্তাপাতালমাৰ্গে গছতীতি গম-ড।
গলা; স্থা, মৰ্ত্ত্য ও পাতাল এই তিন পথে প্ৰবাহিত
ইইমাছেন ৰলিয়া গলার নাম ত্ৰিপথগা।

দিগলা ত্রিপথপা নাম বিব্যা ভাগীরথীতি চ।
ত্রীন্পথ্যে ভাবরস্তীত্তি তত্মাৎ ত্রিপথগা স্কুতা ॥" (রামা॰ ১।৪৪।৬)
(
বিশেষ বিবরণ গলা দেব ৮)

ত্রিপথগামিনী (ত্রী) তিপথ-গম-পিনি-ভীপ্। গলা।
ত্রিপদ্ (ত্রিপাদ্ দেখ।
ব্রিপদ্ (পুং) ত্রীণি পদানি অন্ত। ত্রিবিক্রম, পরমেশর। "ত্রীণি
পদানি বিচক্রমে।" (শ্রুভি) ২ অর্ডির দশমভাগ রূপ
গুগতেরযুক্ত প্রক্রম।

"পঞ্চারত্মিঃ পুরুষো দশপদো বাদশাস্থাং পদঃ প্রক্রমন্ত্রি-পদঃ" (কাত্যাণ শ্রোণ ১৬।৮।২১) পুরুষতা সমবিভক্ততা যং পঞ্চমো ভাগঃ সোহরত্মিঃ তত্তি দশমো ভাগঃ পদং পদতা বাদশো ভাগঃ অঙ্গুলং ত্রিভিঃ পলৈরেকঃ প্রক্রমঃ।' (কর্ক) (ত্রি) ও তিনপদ যুক্ত। "বিপদা যাশ্চভূম্পদা ত্রিপদা বাশ্চ বট্পদাঃ।" (বাজসনেরসং ২৩।৩৪)

ত্রিপদা (ত্রী) এয়: পাদা: ম্লানি যক্তা: । টাপি পাদক্ত পঁড়াব: ।

হংসপদীলতা, গোরালে লতা । পর্যায়—গোধাপদী, ক্ষবহা,

হংসপদী । (বৈছকর) (ত্রি) ত্রয়: পাদা: চরুণানি যক্তা: ।

ত্রিপাদযুক্ত, গায়ত্রীর তিনটী চরণ এই ক্ষক্ত গায়ত্রীকে ত্রিপদা
বলিয়া শাল্রে অভিহিত হইয়াছে । ত্রিপদা সায়ত্রীই একমাত্রু

বক্ষ প্রাপ্তির উপার ।

"ওছার পূর্বিকান্তিলো মহাব্যাহতয়েহিব্যরা:।

ত্রিপদা চৈব সাবিত্রী বিজ্ঞেন্ন ব্রহ্মণো মুধং॥" (মহু ২।৮)
ত্তিপদিকা (ত্রী) তান্ন: পদা: যতা: ত্রিপদী তত: সংজ্ঞানাং
কন্ তত্তীপ্। অর্থ্যার্থ ধাতুনির্মিত ত্রিপাদযুক্ত শত্থাধার,
পূজাকালীন শত্থা রাখিবার পাত্র, এই পাত্রের উপর শত্থা
রাখিয়া অর্থ্য ভাপন করিতে হয়। "তত্ত্র ত্রিপদিকামারোপ্য
শত্থাং হাপ্রেং।" (পুরুল্পদ্ধতি)

ত্রিপদী (জী) ত্রয়: পাদাং আন্তাঃ অক্তালোপঃ সমাণ, জীপি
পতাবঃ। ১ ত্রিপাদযুক্ত। ২ গার্ম্মীছন্দা, ইহার প্রত্যেক
পদে ৮ অক্ষর, অভএব ভিনপদে ২৪ আন্তর্ম এই
ছন্দা, হয়। "ইদং বিফুর্বি চক্রমে ত্রেধা রিমধ্যে পদং
সমলহমক্ত পাংস্থরে।" (অক ১।২২।১৭) ও ছব্তিদিশের

পাদৰ্ভনাৰ্থ রক্ষুভেদ। ও অব্যাধার পাত্তেন, ভেণারা। ও ছম্মেবিশেব। ক্ষণ—

> "প্ৰাটকান্তা যদি য্মকান্তঃ যাদশ পরিণতমাত্রা।

কিররগীতি তদিতি নিবীতি ভার্মসমাক্ষরগাতা।" (কাব্যোদয়)

ত্মিপদীছন্দে তিন্টী করিয়া পদ থাকে। তন্মধ্যে প্রথম ও বিতীয় পদের পরস্পর মিল আছে, তৃতীয় প্রদটী যুগ চরণের তৃতীর পদের সহিত মিলে। ত্রিপদী লঘুও দীর্ঘ তেদে তৃই প্রকার।

লঘু ত্রিপদী—লঘু ত্রিপদীতে প্রত্যেক চরণে ২০টী অক্ষ থাকে, তল্লধ্যে প্রথম ও বিতীর পদে ৬টী ক্রিয়া ১২টী এবং ডুতীর পদেঁ ৮টা। বথা—

> "কৈশাস ভূধর, অবতি মনোহর— কোর্টিশশী পরকাশ। গন্ধর্ক কিল্লর, যক্ষ বিভাধর, অঞ্চরগণের বাস"

কথন কথন বৃদ্ ত্রিপদী ছদেদর প্রথম ও বিতীয় পদে মিল থাকে না। যথা---

> "রতি কহে আহা, তুমি ইন্দ্বালা দানবকুলের মণি। না দেখি শচীরে, তার শোকে এত বিধ্রা হইলা ধনি।"

ভঙ্গ লঘ্তিপদী—ভঙ্গলঘু তিপেদীর প্রথম ছই চ্রণে ছই পদ থাকে। ঐ ছইটা পদ আটটী করিয়া সম্বন্ধ ও পর^{স্পর} (এবং যুগা চরণের শেষ পদের সহিত) মিত্রাক্ষরে মিণি^ত থাকে। বিভীয় চরণটী অবিকল লঘু তিপেদী। যথা—

"দাধিলাশ পালে ধ'লে, তবুনা চাহিল ফিলে, মলি মলি মলি, কছ সহচলি,

ভঙ্গ দীর্ফ ত্রিপদী—ভঙ্গদীর্য ত্রিপদীর প্রথম চরণে ছই^{গদ} থাকে, ঐ ছইটা পদ দশটা করিয়া অফরে সম্বন্ধ ও ^{প্রফার} (এবং যুগ্ম চরণের শেষ পদের সহিত) মিত্রাক্ষরে ^{মিনির} থাকে। বিতীয় চরণটা অবিকল দীর্ঘ ত্রিপদী যথা—

> ° "राष्ट्र राष्ट्र कि क्व विधित्त्र, जन्मन चंगात्त्र थीटन थीटन,

শিরোমণি মন্তকের, মণিহার হৃদরের, দিয়ে লয় স্থানের নিধিরে।"

সমূল্হনত পাংহরে।" '(থকু ১।২২।১৭) ত হতিদিগের বিশেষ (পুং) চক্রের দশ্চী ক্ষর্ত্ত নহয় একটা। (বাাছি)

ত্রপরিক্রাস্ত (পুং) তিবু বৃত্তার্থং কর্মক পরিক্রাস্ত: চেইবাস:।
বাজন, অধ্যাপন ও প্রতিপ্রহ এই তিবিধ কর্মনিরত প্রাক্ষণ।
শ্বৈবিছো ব্রাহ্মণো বিধান ন চাধ্যরমনীবক:।
ত্রিকর্মা ত্রিপরিক্রাস্তো মৈত্র এব শ্বতো দিল:॥

(ভারত অনু ১৪১ অণ)

ত্রপর্গ (পুং) ত্রীণি ত্রীণি পর্ণানি ষক্ত। প্রদাশ। (Butea frondosa) (ত্রি) ত্রিদল প্রত্যায়।

ত্রপর্ণিকা (জী) জীণ জীণ পর্ণান ষক্তাঃ সংস্কারাং কন্-টাপ্, টাপি অভইমং। কন্দবিশেষ, এক প্রকার মূল বিস্তৃত জিলনাবিত কন্দকাতীর লতাতেল। পর্যায়—ইহৎপত্তা, ছিন্ন-গ্রন্থিনিকা, কন্দালু, কন্দবহলা, আমবলী, বিনারহা, জিপনী। ইহার গুণ-মধুর, শীত, খাস, কাস, বিষ প্র প্রণবিনাশক। (রাজনিং) ২ ববাস।

ত্রপন্ম (জী) ত্রীণি জীণি পর্বানি যস্তা:। গৌরাদিদ্বাৎ ভীষ্।
১ শালপন্ন, শালপাইন্। ২ বুনকার্পাসী, বনকাপাস।
০ পুলিপন্ন, চাকুলে গাছ।

ত্রপর্য্যায় (অ) তিন পর্যায় বা তিন থাকঘুক্ত।
ত্রপাঠ (সুং) অয়াগাং পাঠঃ। তিন পদক্রমসংহিতার পাঠ।
ত্রপাঠিন্ (পুং) অীন্ পদক্রমসংহিতারপগ্রন্থান্ পঠতি
পঠ-গিনি। বেদের পদক্রমসংহিতারপগ্রন্থায়ী, যিনি বেদের
পদক্রমসংহিতা পাঠ করেন।

ত্রপাণ (ক্রী) ত্রি: ক্রন্থ: পানং উদকপানং বস্তা, বৃদ্ধৌ স্থচো নোপ: সংজ্ঞান্থাৎ পদ্ধঃ । ১ ত্রি:ক্রন্থ:পারিত স্থতেদ, যে স্তাকে তিনবার ভিজান হইয়াছে। ২ ব্রুল।

"ডুার্প্যং পরিধাপন্বতি ক্ষৌমং ত্রিপাণং বা"

(কাত্যাণ স্থোণ ১লাল)

'ত্রিপাণং ত্রি:কৃষ্ণ পারিডং বা সক্তৃদিভি বিকর:। বন্ধন-কালে উদকেন ত্রিন্তপ্রিষ্ধা যদ্মতে পূত্রং তত্ত্পাং ভন্ন বিকার: তাপাং ত্রি: পারিতৈত্তবভিধ্ ভ্রমিতার্থ:। কেচিং ত্রিপাণং ব্রন্মিত্যান্ত:।' (কর্ক)

য়পাদ (পুং) অয়ঃ পাদাঃ অন্ত, সংখ্যাপূর্কচেছপি সমাসান্ত-বিধেয়নিত্যভায়ান্ত্যলোপঃ । পুরুষেশ্বর।

রবিণাদন্তি নিরা: বড্ ভূজো নবলোচন:।" (ছরিবংশ ১৮১ অং)
পোদ্ (পুং) অরং পাদা অন্ত, সংখ্যা পূর্বদানস্তালোপ:।
বিকিন্দ, বিচ্ছু; ভগবান্ বিচ্ছু বাসনরপে বলির নিকট
বিপদ ভূমি প্রার্থনা করেন, অমিতভেল্পা বলি তথালা বলিরা
চূর্যনিক্ষে ত্রিপদ ভূমি অর্পণ করেন। অমনিই ভগবানের
নামনরপ তিরোহিত হইল, তৎক্ষণাৎ বলিকে স্ক্লেব্মর্
ব্রাট্রেশ দেখাইলেন। এই প্রস্কু বলি দেখিলেন,

সৃথিবী তাঁহার পাৰ্থর, আকাশ রন্তক, চল্ল, পুর্ব্য চক্ত্রর ইত্যাদি। বলি জনাদক বিশ্বরূপ বেখিরা বিশোহিত হইল। তখন জগবানের একপদে যালির সমগ্র জ্মি, শরীরে আকাশ, বাহুখনে দিক্ সকল আক্রান্ত হইল। তখন তিনি বিতীয় পদক্ষেপ করিলেন, স্থর্গে ডাহার কিঞ্চিয়ার স্থান হইল। কিন্তু ভতীর চরণ রাখিবার কিছুমার স্থান সহিল না, তখন ঐ.চরণ স্থর্প হইরা মর্ত্রনোক, জমপোক এবং তপোলোকের উপরি সত্যালোকে গিয়া উপনীত হইল। ভগ্নানের এই চরণ অতিশর ছর্গত। (ভাগ্রত ৮।২০ অং ও হরিবংশ ২৬২ অ:)

ত্রিপাদিক। (ত্রী) এর: পাদিকা মৃশানি হজা: কণ্ ওভঙাপ্ টাপি অত ইত্বং। হংসপাদীলভা। প্রায়—হংসপাদী, হংস-পদী, কীটমাভা, ত্রিপদিকা। (ভাবপ্রাণ)

ত্রিপাপচক্র (ক্লী) ত্রিপাপস্ত চক্রং। জ্যোভিষোক্ত ত্রিপাপবিষয়ক চক্র। এই চক্র বারা বৎসরের ভভাভত কল জানা
বার। জ্যোভিষে এইরূপ দিখিত হইরাছে—

রাশিচকৈ অখিনী হইতে ২৭টা নক্ষত্র আছে, প্রত্যেক মন্ত্রাই ইহার কোন না কোন্দক্ষে জন্মগ্রহণ করিরা থাকে, এইজন্ত ২৭টা নক্ষত্রে একটা চক্র শিখিত হইল। এই দ্বল দেখিলে প্রত্যেকই যে কোন বংশরের ভভাভত ফল জানিতে পারিবেন। [১৮৭ ও ১৮৮ পরপৃষ্ঠার ত্রিপাপচক্রের চিত্র দেখ।]

এক অন্ধ ইইতে ৩৬ আছ প্রান্ত এবং ৩৭ ইইতে ৭২ প্রান্ত ও ৭৩ ইইতে ১০৮ প্রান্ত বাহা লিখিত ইইরাছে, তাহা বংসরের সংখ্যা। এই চক্তে গ্রহগণের নাম সম্পূর্ণ না লিখিয়া আঞ্চকর মাঞ্জ লিখিত ইইল।

এক বৰ্ষ হৃইতে ৩৬ বৰ্ষ পৰ্যান্ত বেদ্ধপ ত্ৰিপাপ অৰ্থাৎ ক্তেপতাকী, কেতৃক্পানী ও গুৰুক্থালী যে যে বৰ্ষে দে সকল প্ৰহ অধিপতি হইবে, ৩৭ হইতে ৭২ পৰ্যান্ত ও ৭৩ হইতে ১০৮ বংসর পৰ্যান্ত ক্রেমে ক্রমে সেই সমন্ত প্রহ অধি-পতি হইবে। ইহাতে একটা দুষ্টান্ত দিলে যথেষ্ট হইবে।

মনে কর এক ব্যক্তির ক্ষত্তিকানক্ষত্তে কর হইরাছে, তাহার প্রথ্ম বর্ষে কেতৃপতাকী গণনার রবিগ্রহ ও কেতৃক্ওলীগণনার ব্ধগ্রহ এবং শুরুক্ওলীগণনার ব্ধগ্রহ বর্ষাধিপতি হয়। এই তিনটা গ্রহপতনে টুহার প্রথম বংসরে তিপাপচক্রে রবি, বৃধ ও বৃধের বর্ষ হইল। এইরূপ উক্ত ব্যক্তির প্রতি বংসরে তিন তিনটা গ্রহ, বর্ষাধিপতি হইবে। ইহার মধ্যে বিশেব এই, বে বর্ষে তিনটা পাপগ্রহ বর্ষাধিপতি হইবে, সেই বর্ষে তাহার পীড়া ও অমঞ্জল হইবে এবং বে বর্ষে ভিনটা গুলুপ্রহ বর্ষাধিপতি হয়, প্রেই

 $\eta \eta$

বৎসর নালাবিধ মদল হব। এইকণ পাণ ও ওডএহের বিশ্রিত বর্ব হইলে কলেরও তারতম্য হইবে। তিনটি পাশএহ বর্বাধিপতি হইলে বে মৃত্যু ঘটনা হইরা থাকে এমন
নহে, তাহার সহিত সপ্তশৃস্ত কোঠাতে বলি সেই বর্ব সপ্তশৃস্ত
পতন হয়, মুকুন্দদশা 'গণনার বলি সেই বর্ব পাপএহের
বর্ব হয় এবং নাক্ষত্রিণী দশাগণনার বলি পাপএহের দশা
হয় কিছা ভাহার অন্তরে ও প্রভ্যন্তরে পাপএহ বোগ হয়,
লয়চক্রের অন্তমাধিপতিরু এহের দশা বা অন্তর্দশাদি হয়,
অথবা ভাক্ষদাদিগণনার মুহাদি অন্তন্ত, অক্সান্ত মতে রিপ্ত সন্তব
হয়, ভাহা হইলে সেই বর্বে ভাহার মৃত্যু হইরা থাকে।

কোন্বর্ধে তিপাপ বর্ধ হইবে, তাহা সহজে জানিবার জন্তই পরপূঠার চক্রে দেওয়া হইল।

ত্তিপাপচকে ১ ইইতে ২৭টা নক্ষত্ত তির্গৃক্তত্তে অন্থিত ইইরাছে, প্রত্যেক অন্তের অন্তর্গত উপর্গপরি তিনটা গ্রহ আন্ধিত ইইরাছে। এইরপে ৩৬টা শ্রেণীতে গ্রহসংখাপন-পূর্বাক ঐ ৩৬টা বর্ষাধিপতির গ্রহের উপর ১—৩৬ অন, ৩৭—৭২ অন্ধ এবং ৭৩—১০৮ অন্ধ পর্যান্ত লিখিত হইল, ইহা দারা যাহার যে ক্ষমনক্ষ্ত্র সেই নক্ষত্র অন্থ্যারে তাহার ত্রিপাপচকে কোন্ গ্রহ পতিত হইবে, তাহা অতি সহক্ষেলানা যাইবে। সংগ্রহ আনিতে হইলে তদকুসারে গণনা করিতে ইইবে। [সংগ্রহালেধা]

ত্তিপাপচক্রফল—ত্তিপাত্তচক্রে যে বর্ষে চক্র ও বুধ বর্ষপতি, সেই সেই বর্ষে শুভফল জানিবে; জার যে বর্ষে রাহ ও শনি বর্ষপতি হইবে, সেই বর্ষে মৃত্যু তুলা ফল, বৃহস্পতিছয় হইলে হৃথ, মলল ও রবি বর্ষপতিতে হৃঃথ হর। কেতৃপতাকী, কেতৃকুগুলী ও গুলকুগুলী এই তিন মতেই যদি পাপগ্রহের বর্ষ হয়, তবে সেই বর্ষে জীবন সংশয় ছইয়। থাকে। রবি ও মললের বর্ষে হৃঃথ, কেতৃরী বর্ষে মহাক্রেশ, চক্র ও বুধের বর্ষে হৃথ, বৃহস্পতি ও শুক্রের বর্ষে রাজ্যলাভ, এবং রাহ ও শনির বর্ষে মহাক্রেশ হয়।

ত্রিপাণচত্রে ছই রবি থাকিলে ক্লেশ, ছইচক্স থাকিলে অথ, ছই মঙ্গল থাকিলে অগ্নিডর ও পীড়া, ছই বৃধ থাকিলে ধনসঞ্চয়, 'ছই শনি থাকিলে সর্বানাশ, ছই বৃহস্পতি থাকিলে রাজভোগ, ছই রাছ থাকিলে অক্সভর ও ছই ওক্র থাকিলে নানাপ্রকার ক্রথভোগ হয়। ত্রিপাপচক্রে তিন রবি থাকিলে বিত্তনাশ, তিনচক্র থাকিলে রোপ্য ও ওভ বক্র-লাভ, তিন মলল থাকিলে আবিনসংশর, তিন বৃধ থাকিলে রম্মলাভ, তিন শনি থাকিলে ব্য ও ব্যান, তিন বৃধ্

জ্ঞাঘাত, তিন শুক্র বাকিলে নর্মধা লাভ এবং জিন দের থাকিলে অরপীড়া হয়। ত্রিপাপের বংসরে নানা প্রকার প্রদ হইরা থাকে। (জ্যোতিষ) ত্রিপাপের বিষয় খনার বচন

"রবি বৎসর শৃত্ত কল, শিরংশূল গারে জর।
বর পোড়ে মাহ্ব মরে, জনেক বিদ্ধ রবি করে।
বুধের বৎসর ববে হর, শ্রমণ মরণ তাহার হয়।
ছেল পীড়া জী পুত্র, রোগ মরণ থারে পাত্র।
শোকবন্দি থাকে অর্থে, ধনসর্কার নালে বুধে।
শনি মকল ভূমিহাড, ভোমার বৎসর বমের দৃত্ত।
বর পোড়ে দহ্যতে মারে, যথাসর্কার রাজার হরে।
রাহর বৎসর ডাড়ুকা পারে, নানাহংথ অবশ্র পারে।
হাতে পারে নাই গোটা হানভ্রই নাই পোটা।
শ্নির বৎসর শৃত্তভোগ বছবিছেদ করার রোগ।

निनात उन्न थरन भरक, यक व्यर्क नव इरत ।" (धना) जिशिष्ठेक (बि, जिन्+ शिष्ठेक, श्रिष्ठेत्रा वा कुष्कि) (बोह দিগের ধর্মগ্রন্থ। বুদ্ধের দেহত্যাগের পর তাঁহার ৫০০ দিছ পাটলীপুত্তের সমীপবন্তী কোন গুহার সমবেত হইরা তাঁয়া? উপদেশাবলী সংগ্রহ করেন, এইটাই বৌদ্দাদের প্রথম স্মিতি এইরূপ ধর্ম্মমিভির নাম সজ্য। তাঁহারা প্রভুর উপদে গুলি তিন ভাগে বিভক্ত করেন, (১) শিশুগণের প্রতি বুদ্ধের উপদেশ, (২) তৎপ্রদর্শিত নিয়ম বিধি, (৩)জং ক্ষিত ধর্ম মত। এই তিন্টী সূত্র, বিনয় ও অভিধর্ম নামে প্রাত। প্রথম পিটকে নীতি বা বিনয় সম্বনীয় বিষয় নিধি। আছে; বিভীয় পিটকে স্ত্রাবলী ও ভূতীয় পিটকে দার্শনিক তত্বসমূহ বিধিত হইরাছে। বিতীয় ও ভূতীয় পিট্ৰ কথন কথন ধর্ম নামে অভিহিত হইয়া থাকে। স্ত্রখণি भाकाम्निकृष्ठ विनन्ना कथिछ। ইছাতে कथां প्रकारमध्य নীতিশাল্প ও দার্শনিক তত্ত্ব আনোচিত হইরাছে। ^{নারা} রণ, জনার্দন, শিব, ত্রন্ধা, পিতামহ, বরুণ, শঙ্কর, কুবের, শক্ বাস্ব, বিশ্বকর্মা প্রভৃতি দেবতার উল্লেখ এই ধর্মগ্রছে মাছে। ইণ্ডিয়া আফিসের লাইত্রেরীতে চীন ভাষার বিধিত সে ^{বোট} ত্রিপিটক আছে, তাহা ২০০০' থণ্ডে বিভক্ত। **বু**ব্দ ^{হো} অনুমান করেন যে "অথক্থা" নামক পালিভাষায় ব ^{ট্রিনী} ছিল, অশোকের পুত্র মহেন্দ্র তাহা সিংহলে লইয়া ক্রীরা তথা সিংহলী ভাষায় উহার অহবাদ করেন ও বুলাবো^{র জী} ৪০০ খুইান্দৈ শেবোক্ত গ্ৰন্থ হইতে পালি ভাষাৰী প্ৰশী অমুবাদ করেন। মতান্তরে, রাজা বত্তগমনী कारन (गृंडे भूर्स ৮৮---१७ व्यस्य) निःहरनद वाजन ७ क्निक रव धर्म ज्ञा आखान करवन (> --

				Fried	1	
10		119	1	377	ν.	
// /	1983	11 °	1 /		The Con-	

		<u> </u>	١.								<u> </u>	300	** 1	, Alle	10		170	1																	
•	वत्त्रावर्ष) 99 (रे अ•	o Oh	8 8•	t 8>	७ 8₹	80	b 8	• 6	0 · 5	9 81	\$ \\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \) (+ -	* **	- 36 82	39	68	33	۱ ۱	25	82 Q		11	10	19	4 k	123	0.	0)	95	90	98	Je o
<u></u>			0	98	94	46	99	16	95	b• b	١. ١	1 1	o b	8 1	N	1	1 14	64	9.	۵١	38 :	90		٠ <i>٠</i>	ć0 P6	94 95	8 <i>6</i> 66	98	36	6 6	49	46	42	10	93 9
> অখিনী	1	- 1		7	Ā	5	ম	<u>रू</u>	*	বুর	1 (7 V	9 3	!!	· 1	3	. *	₹ -	<u>র</u>	(₹	9	3	5 4	<u> </u>	. 4	3	 31	(¥	19	302 5	-	3 68 3	716 3	14 7	• 9 3 •
	(কতুক্ও গঞ্কুজ		्र क्	. e	٩ • •	य ह '	/9 (Q	₹ **	0 21 :	(P 7	9 9	Я} ('#8' Б		1 1	((·	γ 9 ι #1	্ৰ ৱা	(P	्र म	0 (₹	, A	7	রা (ব	7	· 4	(ক	ৰু	Ą	(क	বৃ	5	् (इ	A. X	ন রা.	ξ : (∓
ভরণী	কেতৃপতা					*		<u>.</u>	7 :	m (*	-			7	· · ·					÷	<u>\</u>	1 4	4	7	इ	म	(₹	Ď	1	বৃ	9	4	রা	র
וויאס)	কেতৃক্ও	- 1	कार कार	, ,	, . ,	ণ কে	থু ব	7) 5	१ १	ян с 1961 — 31	*	्कः इकः	भ ठ रेड	• (1	•. \ চব	. प्र	. বৃ কে		কে চ	(<u>9</u>	Я Wa	5 21	4 3	. *	বৃ	3	(4	9	1	5	Į.	1	4	3	31 6
	शक्र कु ए				, v	,	¥	রা	3	ম (क €	· •	্ব	7	*	त्रा	₹ 3	<i>र</i> म	(₹	Б	₹	भ। द	(4 A)	র	. •	্ৰু	Ą	(4	Í	5	(4	9	রা	(7	¥
কৃত্তিকা	কেছুপতা	কী র		·	· ·		4 :	3 3	11 - 63	Ŧ 1	8 3	1 5	F	-	¥	 वृ	রা	(4	77	3		, T	7	3		<u> </u>	(4	5	1	<u> </u>	9	*	31	3	ম (
V 1. V 1.	(क्षूक्थ	- 1	4	i (7	वृ ।	5	ক ক	• Ā	(3	7 4	3	1	চ ৰু	• ¥	١,	₹, °₹	5	(4	4	젟	ר (₹	মূ শ শুৱ	्र १	র। হ ফ	 (4	. 4	₹ -	5	4	ৰ্	*	इ	31	(7
	ভক্ত্ত	- 1	ৰূ	*	, *	3	d i	1	9 (₹ 5	,	[]	•	4	, și	3	Ą	(₹	Б	1	ৰূ	7	भ त	1	. •	ণ (ক	(9 5	वृ यु	1	(₹		ai T	(4	4	₹ (°
রোহিণী	কেতুপভাষ	5	Ą	ৰু	"	ৰূ	3	1 • (7	9 3	5	ম	ब्	¥	ş	31	(4		₹	Б	ম	<u> </u>	শ ∙ বু	31	(a				-	4	٦ 			4	(4)
	(কড়কুওট	Ι,	म	Ç	ক বু	5	(₹ ₹) র	1 বে	*	3	(4	ৰু	4	(3	ş	Б	(₹	9	রা (4	শ র	(ব	्र व	¥	к Ф)	5 3		(8	٩	₹ a1	त्रो /क	₩	9
,	প্রকৃত্ত	-	ď	*	31	1 3	,	(7	1	3	Ü	*	রা	3	1	(क	. 5	ৰু	₹	7	4	রা র	म्	(3	5	বু	र वृ		*	ai	न। दु	T T	η (ק	त्र (ह
মুগশিরা	কেতৃপতাক		₹	۳	• 4	ब	1 (7 7	3	5	Ą	₹	4	á	রা	(3	F 19	3	5	Ą	र्	4	রু রা	(4	9	7	5	- ম	ı	w	3.	• 31	(ক	79	7
	কেতৃক্ও	1	ਸ਼	(3 	ৰ	5	(7 7	3	(4	4	*	_,	₹	4	(4	্ বৃ	5	<u>رم</u>	4	31	(4	শ র	(₹	ৰু	Ą	(4	ब्		(4	7	31	(4	*	^३ इ. (
	গুরুকু গুলী	7	4	q }	4	4	(۲	F 5		<u> </u>	9	**	द्रा	র	<u>य</u>	(4	5	<u>₹</u>	4	• 4	1	3 1	র ম	(4	Б	₹.	ą	9	1.	3 1	ğ	¥	(†	5	ą
আরা	কেছুপতাক	1	4	র্	রা	(4	*	3	5	ম্	1	4	₹.	31	*(क	9	^ র	5	ম	ৰ্	4	₹	वा (व	9	3	5	म	₹·	1	র্	রা	(4	7	7	5
	(কড়ুকুও ন ী	1 .	7 9)	₹ -	5 31	(क		র) ব	(?	7 4	র **	(₹	₹ 2	ম্	(क	4	7	(क उ	7	র। **	(()	•	(क	₹ -	મ	(₹	ş	Б	(4	. 7	রা	(₹	4	Ŗ	(#
	ওকক্ওলী		्रह्म	*	۹		0	3	- 1		7	31	я •	٩	(क	5	<u> </u>		4	7	N N		(4	5	<u> </u>	<u> </u>		*	3	3	ਸ਼	(4	Б	₹	ą
পুনক্ষ	কেতৃণতাকী		₹ ₹	31	<u>ر</u> ة	*	3	5	म (क	ৰু	*	₹ .**	র) ব	<u>(4</u>	4	7	5	ম সে	<u>ق</u> •	ai ai	বুর কেখ	1	(क 19	₹ 	5	Ą	1	¥	1	31	(₹	Ü	3	5	¥
	কেতুকুওলী ওফকুওলী		24	Z ,	(8	K.	3	স। स	64	"I #	ai	3	N N	ণ (ক	P .	1	र	्त १७	¥	ম। বা	ਪ ਦਾ ਜ : ਰੋ	31	7 (7 7 (8)	' १ ≀	4	(4	বু ¥	5	্ৰ		31 47	(क	*	3	(क
480	·	<u>'</u>		· ·		<u>.</u>	<u>,</u>	· •	-			21	<u></u>	-		<u>^</u>	<u>,</u>	7	<u>'</u>	7	n /	*		<u>`</u>		-		XI.	-	<u> </u>		<u>,</u>	<u> 1</u>	1	9
পুষ্যা	কেতৃপতাকী কেতৃকুগুলী		प्रा (क	3	5	ਸ 	0 19	ৰ ক	٦ (3	ਾ ¥	र इ	স। (ক	८४ व	a a	х (∓	3	5	र (व	7	र द्वी (भा ५ इकम	۲ ;	к 19 18) I	্ ব	٩ ¥	্ব ক	T ₹	ž Š	(<u>4</u>	(4	70 71	র ক্র	5	¥	₹ .**
Ì	ওকু ওলী		ম	् व	Б	4	র	9	*	রা	 ₹	¥.	(ক	Б	₹	ব্	7	Ħ	রা	র ১	र (व	7 6	বু	র র		4	ķ	3	Ä	(a	5	ζ ζ	า 3	R W	(4 *
অধেষ	———— কেতুপতাকী		(क	79	7	`	ম	₹	*	₹	31	(4	*	3	Б	7	₹	4	<u> </u>	al (7 9		5	<u>-</u> -	₹	*		রা	(4	*	7	<u> </u>	<u>,</u>	7	*
MERTI	(ক ভুকু গুলী		3	Б	(4		• রা	٠ (٦	, F #	• व	.;; কে	₹	ম	(क	3	5	(₹	•	রা	(₹	4 4	(क दू	Ą	(∳	Ţ	6	(ক		31	(क	¥	3	्र • (क	, द
	ভক্তলী		(₹	Б	•	ৰূ	7	4	31	র	Ą	(₹	Б	ţ	ş	v	Ħ	রা	ኛ	Ą	(ক চ	;	1 1	• •	4	রা	3	Ą	þ	5	ৰু	इ	7	8	व्रो
ম্থা	্কতুপতা কী		7	3	5	ম	3	04	<u> </u>	त्रो	(₹		র	5	¥ (ৰ্	۳	<u>র</u>	রা	(4	9° 3		5 A	4	*	<u>₹</u>	31	(4	,	3	Б	Ą	<u> </u>	¥	3
'''	(কডুকু গুলী		Б	(₹	7	রা	(3	1	4	岭	4	¥	(4	ą,	5	(₹	7	রা	(₹	۳	র 🕡		ৰু ম	(4	ब	5	কে	9	রা	(₹	¥	3	(4	q	ম (
	গুকুকুগুলী,		5	•	ৰূ	9	*	র	3	ম	(₹	Б	₹	ৰূ	7	۳	রা	₹	ম	(†	5 <u>1</u>	. ?		4	31	₹.	Ą	(4	5	<u> </u>	₹,	9	4	31	3
र्स्कहनी	কেতৃণতাকী	•	3	Б	ম্	4	*	ৰূ	31	(4	3	3	Б	ম্	ৰু	4	3	রা	(ক	9	5	ī	1	*	ৰ্	31	(₹	•	ķ	5	Ą	3	۳	इ	রা (
```	(क्र्रूश्वगा	8	5	(₹	÷	রা	(4	Ħ	4	(₹	1	Ą	(₹	ş	5	(4	A	রা	(₹	4	Ā (*	4	<b>Į</b> 1		ৰ্ •	5	(4		র1 -	(ক -	4	` <b>7</b> •	(4	₹ -	भ (
	গুরুকু গুলী	5	<b>1</b>	ৰূ	7	4	Ŗ	<b>Ā</b>	ম	(₹	5	্ৰু	ą	9	4 (	al	3	<b>4</b>	( <del>†</del>	5	<u> </u>		) ¹	त्रा	4	4	<b>(</b> ₹	•	1		4	<u> </u>	<u>द्र</u> }	র —	ম (
<b>डे:क्ह्न</b> ी	কেতৃপতাৰী		5	Ą	4	*	বৃ	41	(1	. 0	3	5	Ą	4	4	<b>ब्</b>	রা	(Ŧ	4	4	5 7	i '	<b>4</b>	₹ -	<b>4</b> 1	<b>.</b> ₹	9	<b>इ</b>	5	٦ ح	ৰু	4	₹ 	রা	(4
	(কভুকুওলী	₹	5	(₹	7	· 회	(3	F · M	4	(₹	₹ 	Ą	(₹	₹	5•	<b>(4</b> )	7	র <b>া</b>	(₹		त्र ( र <b>भ</b>		বুম rad	কে র	ą ¥	চ কে	( <b>क</b>		त्रा त्	( <b>7</b>	7	র বু	্ক • র	र् म	म ( (क
	গ্ৰুকুগুলী	3	<b>₹</b>	7	4	31	3	4	(3	δ	1	1	4	<u> </u>	<u>র</u> ]	3	<b>म</b>	(₹	5	1	<u> </u>			_					+		· ·				
	কেতৃপতাকী	5	Ą	1	۳	ৰু	31	(3	•	3	Б	4	<b>₹</b>	4	<b>₹</b>	রা	(4	•	4	5	म <u>र</u>	. 1	† বৃ • কে		<u>رم</u>	4	₹ ७.	Б °	7 (*	٩ ٣	ण इ.	- ₹ • (₹			<b>ড</b> কে
	(ৰতুকু এশী		₹	4	রা	(₹	*	7	(1	•	¥ 4	. ( <b>†</b>	á	5	( <b>4</b>	7	রা	( <b>4</b>	۹ 7	Ā ·	(P \$	. ;	, ८११ । त	द म	₽ (₹	( <b>19</b> 5	₹.		,	4	힊	3	्र म्		5
	ভকুত্বী	<u> </u>	4	*	রা ——	3	4	(4	5	1	1	. 7	1	রা	3	4	(ক	5	<u> </u>	1	0 7								╁╴	*				<u> </u>	
	(কতুপভাকী		4	4	ş	রা	(4	4	*	5	4	4	4	4	রা	(4	4	<b>ब</b>	<u>p</u>		( 4 (* 7			₹ 3	5	द्र (क	7	ম রা	(#	4	₹ ₹	्ता <u>ं</u> (क	( <b>₹</b> ব	<del>।</del> म	ब्र (क
	(কত্ <b>ৰু গু</b> ণী		~ ( <b>₹</b>	7	71	(4	*	<b>1</b>	(1	Ţ.	<b>4</b>	্ৰে	ą ai	٦.	<b>₹</b>	4	<b>1</b>	(₹ 7	म *	۹ س	কে বু শুর			र् (क	Б	₹			40	퀽		7			₹ 1
i	ওকুকুগুলী	4	, ব	4	4	4	(1	,5	4	4	4	٦	31	7	4	, <b>(क</b>	5	₹	4	4	, 4	١					<u></u>		H		; ''	-	<del></del>		<u> </u>

							) ale	3 <u>%</u> ()	s . (	77		, "		, e	ĺ	47	Π	אס י	П		÷ .*					1	· ·	,i			· (8/4°)	61.	: 01	99	9.8	₫£	
							. i							14	<u></u>	14	>6	39	31	**	71	₹>.	. 22	२७	18	110	14	19	. \$P.	, 49.	- 21	69	, Q(	45	9.	93	•
•	*	<b>)</b>		0		» <b>(</b>	- 43	4 9		88	24	\$} 89	87	89	11	()	R	10	48	lt	"	41	14	,47 ;		. 43	44	99		303	508	١.٥	>+8	306	>•4	3.9	١,
. 1	बटझावर्ष	99	18		99	99	16	45	٧.	<b>h</b> )	n		78	>1	10	11	11	49	9.	9)	35	90	28	96	94	31	- 46	<u></u>	7	×	₹	31	(4	9	1	5	
			-	Ė	<b>A</b> I	/8			5	Į	₹	*	3	31	(4	9	ğ	5	¥	٩	4	ş	켂	(₫	9	3	<b>b</b>	٩	ᄾ	/8	×	 E	(₹	4	Ŧ	(₹	
শাতি	(কডুপতাকী কেন্দ্ৰকলী			L	प्रा इत	4Y /#	×	7	78	7	Ä		र व	Б	.(₹	9	র	(*	1	4	(Ŧ	3	Ą	(4	ş	5	( <b>q</b>	7	الا س	21	7	7	কে	5	4	3	
	কেতৃত্ওলী গুফুতুগুলী	5	(₹ 31	L	71 21	/8	, ,	3	3	*	*	व्री	3	Ą	(₹	Б	4	3	7	4	- 31	ğ	4	(4	5	<u> </u>	1	4	7	XI					<u>.</u>	÷	_
			71	gr 3		• 1	<u> </u>		<u> </u>			_		/2	7	• 3	5	7	7	M	•	31	(₹	7	3	5	¥	<b>₹</b>	4	ş	রা	( <del>*</del>	9	9	0	4	
विभाषा	(কছুপতাৰ)		3	1	₹	0	4	5	· 작	٩	1	ś	<b>4</b>	<b>(</b> ₹	_	471	•		٨.	(₹	• <del>ব</del>	Ą	<b>(7</b>	ą	5	(₹	4	31	(4	۳	4	(4	4	4	.4	,	
	(কড়ুকুগুলী		7	1	(₹	*	4	(3	<b>ब</b>	4	(4	1	9	(4		וגיי	( <del>क</del> 3	"	*	রা	3	Į	(4	5	ৰু	ş	4	۲	31	1	4	(4	5	1	1	4	
	গুরুকুওলী	31	3	Ţ	₹₹	5	<u> </u>	. 1	9	*	<u> </u>	9	4			<u> </u>		-					_	-	5	1	7	*	1	31	(4	4	4	5	Ą	Ę	
। षष्ट्रांश	কেতুপতাকী	4	ӆ	ą	0	ğ	5	Ą	3	¥	ą	, <b>3</b> 1	(₹	4	3	, 5	¥	3	4	₹ 	<b>Z</b>	(9	7	X	/B	7	회	(Ŧ	*	4	(4	4	Ą	(4	3	5	(
	(কতুকুগুলী		71	k	¥	3	(3	<b>7</b>	্ষ	(4	ş	Б	₹	Ü	31	(4	, 4	3	(ক		म -	(4	1	7	7	W	;" #	31	7	Ą	(4	5	Ę	Ą	7	۳	
	ভদক্তনী	3	¥	4	Б	4	Ą	٦	4	3	3	Ą	(₹	Б	4	3	Ü	٩	31	1	4	(4	5	<u> </u>	1				<u> </u>				5	1	₹	*	
	কেতুপতা <b>কী</b>	71	<b>/8</b>	1			<u>`</u>	7	w	7	বা	(7		3	5	Ą	3	4	ৰু	31	(₹	Ø	ğ	5	Ą	٩,	۳.	1	<b>A</b> l	(9	4	7	77	7	7	5	
(A)BI	' .		( <b>क</b> 31	1	¥	7	7	, 1 8 2	, 1 : 21	, (3	্ ব	5	<b>(4</b>	79	3	(3	F P	3	(4		Ą	(₹	ş	5	(₹	4	71	(₹	٩	9	(9	1	7	W	*	al	
	(ক্তুক্ওগ) অক্তন্ত্ৰী		( <b>₹</b>	1	7	7		Y )	ে কো	8	' १ ग्र	(₫	5	ব	3	7	×	31	ğ	4	(4	5	₹	1	7	4	য়া	3	<u> ۲</u>	(9	-	<u> 1</u>	- 1	4	1	71	_
	গুরুকুওগী			1		. 1								<u> </u>	<u> </u>		L	 7		<u>_</u>	,		5	Į	4	×	3	3	(₹	4	4	5	Ą	₹	۳	ą	
» <b>মূলা</b>	কেতৃপতাৰী	[	4	1	Б	Ą	. •	. *	ৰ্	31	(4	7	8	0	4	4	ר ש:	ξ.	রা	(ক ব	ī	(8	₹	Б	(₹	7	31	(4	۳	3	(₹	1	म्	(₹	1	5	
	(কড়কুওনী		1	19	F 4	ğ	C	7	्य	(4	;	b -	<b>.</b> 4	7	71	(4	, J 21	7	(4	٦ (18	5	₹•	, व		¥	31	ğ	Ą	(₹	5	ৰু	Ą,	4	×	3	Ŗ	
:	ভক্তলী	(₹	5	A	্ বৃ	4	۳	3	3	ম	(4	b	<u> 1</u>	40		٦	31	4	Ľ				-					/3		7	<u> </u>	7	₹	*	3	' <b>3</b> 1	
• পর্জায়	(কভূপতাকা	9	3	T	ম	4	*	1 3	3	(3	7	₹	Б	ম	₹	. 4	₹'	31	Ą	4	3	Б	4	<b>1</b>	٦	á	81	47	7	/ <b>8</b>	7	7	( <b>क</b>	1	5	(₹	,
4,,,,,	(কডুকুগুণী		(₹		4	(1	` F {		7 (	<b>7 7</b>	5	•(4	7	31	(1	۴°۴	3	(4	Ţ	Ą	(4	ş	5	<b>(₹</b>	7	9}	.4	7	X	7	٦ 7	*	×	ai	3	ম	
	খদক্রনী	5	<b>4</b>		7	*	3	1 7	ম	(3	Б	₹.	ৰ্	7	*	31	3	ম্	ģ	5	<u>₹</u>	₹ 	4	4	9)	8	٩	14	<u> </u>	<u> </u>		_					
		_	-	骴			7	7	1 (3		3	Б	ı	<u>-</u>		3	র	(₹	9	3	Б	•4	4	۳	ş	31	(₹		4	5	Ą	<b>₹</b>	4	1	۶) -	( <b>a</b>	
) ARAIdi	(কভূপতাকী কেন্দ্ৰভাৱী		7		X.	7	ן א א		11 °	, o	5	(3	,	31	(4	; ¥	3	(₹	4	Ą	(₹	ą	5	(₹	9	Ŗĺ	(₹	۳	4	(₹	4	<b>4</b>	(4	8	0	(4	
	কেতৃক্ওলী অসকগলী	l	<b>7</b> ₹	M	7	(3				ነ ‹ 5 5	٠ 3	₹		×	ąi	3	4	d	Б	₹	বৃ	7	*	4	3	Ą	(4	Б	1	<u> </u>	9	٩	द्री	4	4	-(4	,
	<b>अक्टू</b> श्री	<u> </u>	4	4		<u>ş</u>					^	<u> </u>		<u> </u>		21	(¥	i	١,	Б	<b>1</b>	7	×	1	31	(4	V	3	5	Ą	ৰ্	¥	ৰ্	র	(₹	4	
र अंगा	কেতৃপতাকী	5	म्	Ŋ	4	4	31	(3	7	ğ	5	4	4	7	3	31		7	Ľ	78	7	, F	( <b>T</b>	,	ğĺ	(₹	۲	4	(4	4	Ą	(4	<b>ą</b> .	5	(₹	9	
	কেতৃত্থলী	(4	4	1	(₹	₹	Ą	(3	ţ	5	(4	7	श	(4	7	y z	( <b>P</b>	l E		7	,	*	31	3	Ą	<b>(7</b>	Б	4	ą	7	Ħ	졁	ğ	Ą	(4	б	
	খদকু গুলী	ş	9	*	র	4	7	(3	F 5	1	ş	0	7	۹۱	я 	٩	(4		ļ.,								_			7		7	21	/8			
৩ ধনিষ্ঠা	কেছুণতাকী	4	₹	4	3	র	(3	7	ğ	Б	¥	<b>₹</b>	۳	ą	রা	(₹	4	3	Б	¥ -	₹ -	7	1	Si Si	(9	2	7	) }**	7	1	ا 178	7	XI	/T	*	ai	
	'কেতুকুঙলী		3	d	: व	ম	C	<b>7</b>	5°	(₹	7	410	(₹	4	3	(4	ৰু	4	(4	ş	5	( <b>9</b>	4	91	,-	٦	7	( <del>१</del>	`\.	্য •	( <b>क</b>	į	7	78	5	3	•
	धक्क्रीनी	9	4	3	3	Ą	(1	<b>F</b> 5	₹	• र्	9	۳	1	3	¥	(₹	5	1	1	7	4	<u>31</u>	<b>q</b>	4 	(9	0	Ĭ.	. 1	<b>V</b>	٦	31	*					
. wafav			w	7	21	/7	7 7	<b>ब</b>	5	¥.	1	*	3	31	(4	9	রু	Б	Ą	4	¥	<del>ब</del> ्	đ	(4	7	4	45	Ħ	•	٦	व्	41	(₹	4	ğ	5	
9 18 18 d	(ক্তুপতাক কেন্দ্ৰ		7		র	( <b>१</b>			- 1	12		31	(Ŧ	<b>4</b> .	ğ	(4	₹.	¥	(₹	3	5	(₹	7	31	<b>( (</b>	۳	3	(4	Ţ	Ą	(₹	ş	5	(₫	7	31	
	(কডুকুগ্ৰনী শহকুগ্ৰনী	,	র কা	[]	١,	7	r .R	, , 1	₹ 7		*	द्रा	3	Ą	<b>(</b> 7	5	3	ţ	9	۳	রা	3	¥	(₹	Б	4	ş	7	۳	র	র	Ħ	()	5	ৰু	<b>₹</b>	
	-		34	-	-												_		1	*	₹	<u>31</u>	(4		3	5	¥	3	*	<b>ą</b>	3	(4	7	3	5	Ą	
৫ পূৰ্মভান	কেতৃণতাক	4	র্	রা	(₹	9	ğ	5			4			(4		3 (8	ъ т	٦ ¥	( <b>有</b>	ৰু বৃ	5	(₹	7	31	কে	4	3	(व	₹ '	٠ <u>`</u>	(₹	ą	5	(ক	7	3	
	(বতুক্থন		শ্ব	(₹	₹	4	(3	* *{	5	(4	9	_			_	( <del>क</del>		7		, 31	3	¥	(₹	5	₹	₹	7	Ħ	ᆲ	ğ	Ą	(ক		4	3	7	
	ভরুত্বী	, <b>3</b> 1	<b>র</b>	ষ	(4	5	<u> </u>	<u> </u>	4	7	त्रा		4	(4		₹			-						<u> </u>	<u>.</u>	-			91	/10			급.	<del>_</del>	7	
৬ উত্তরভা	কেতুপডাকী	3	1	(4	0	3	Б	Ą	ৰু	4	ş	3	(₹	9]	3	5	¥ -	<u> </u>	[	4	<b>۱۱</b>	(₹		4	9	4	1	7	ź	9)	<b>(</b> 7	4	4		ম =1		
	(কভুকু ওল		(₹	₹	4	(1	क वृ	. 2	. (1		র								₹ <b>'</b>				द्र <u>।</u>	( <b>†</b>	7	8	, <del>4</del>	4	1	(4	1	7	( <b>4</b> .	_	<u>م</u> ا	<b>(</b> ₹	
	श्वक देखनी		Ą	(4	5	_	Į	7	~ M	취	4		(4		1	<b>₹</b>			31		4	(4	0	1	1	4	7	31	· ·	٦ 	(4	5	1	<del></del>		4	
fres)		-	/ <b>Z</b>	7	-	<u> </u>	1		*	7	· রা	(4	7	3	Б	Ħ	<b>₹</b>	4	þ	<b>31</b>	(₹	7	4	δ,	4	Ţ	4	ţ	<b>'</b> ¶	(4		4	5	4	Ţ	۳	
ণ বেৰজী	"		( <b>等</b>		<b>¾</b>	./1	* *		78	19	3	(₹	4	4	(Ŧ	₹	4	ι,		D	(4	4	81	(4	7		(♥	•	4	(4	ą	•5	<b>(</b> 4.	4	71	(4	
	কেতৃক্তণী ভয়ক্থনী	y Z	(W	,				¥	ą	. 1	¥	(₹	5	¥,	Ę	9	4	4	1	4	(₹	5	1	ţ	7	4	šį	4	1	(4	. 2	3	4	7	1	রা	
	## # # # # # # # # # # # # # # # # # #	١٩	(A	7	ı l	ৰ্	4	•	41		٠								1											-							

ভাহাতেই ঐ মত্ত্ৰি শিশিবত্ব হয়। নিংহলের বাজকের। বেটুকু নিধিয়াছেন, ভাষা সিংহনী ভাষাভেই নিধিত ও পরে ৫ম খুটাকে উহা পালি ভাষার অমুবাদিত হয়। কিন্ত পর্কোক ধর্মসভার সংশ্বত ভাষাই ব্যবহাত হইরাছিল। caोइधर्त्वत्र थिछिष्ठिष मछ मीर्चकान **धक्छा**द्व कार्याकात्री इत्र नाहे। धीत्रहे मत्था मत्था हेहात नतिवर्डन व्रिडिः। মহাবংশ নামক গ্রন্থে লিখিত আছে যে, বুদ্ধের খেহ-ভ্যাগের পর ২০০ বংশরের মধ্যে 🕪 বার এইক্রপ পরিবর্ত্তন विवाहिन। वोक्यर्क्तक अविवृत्ति छात्रछ्यर्व देविक श्रवाहर-शामिश्र देशंत यद्यं विक्रमाहत्र कत्रिशाहित्यम, किन्न निःश्त हेरात विकास विराग दकान छैरशीएन इत नाहे। शृंहीत ১৬न भठारक जामिनशब निश्रन चाकमन कतिया वोद्यभाजकिन नहे করিতে বর্থাসাধ্য প্রয়াস পাইরাছিল; কিন্তু ত্থাকার যালকেরা श्रामरमरम मृष्ठ भाशिहेत्रा रमन। भरत्र बन्तरमम हहेरछ উপযুক্ত বাৰক আসিয়া ধর্মুগ্রন্থ ক্রমেন। অটাদশ শতাকীর • শেষ না হইতে সিংহলে যাজকগণের যত্ত্বে বৌদ্ধর্ম্ম প্রাধান্ত লাভ করিল। তাহার পর হইতে যাজকেরা উদ্যোগী হইয়া বৌদ্ধর্মের মতপ্রচারে চেষ্টা করিতেছেন। ইহাদের মুদাবল্ল আছে; তাহা হইতে বিশুর প্তিকা ও কৃত কৃত ধর্মগ্রন্থ বাহির হইতেছে।

ত্রিপিণ্ড ( শ্লী ) জীণি পিণ্ডানি দেয়াস্থত্ত । পিত্রাদি তিনন্ধনের উদ্দেশে কর্ত্তব্য পার্কাণ প্রাদ্ধে প্রাদ্ধে পিতা, পিতামহ ও প্রশিতামহের পিণ্ডদান করিতে হয় ।

"ততঃ প্রভৃতি সংক্রাস্তাব্পরাগাদিপর্বস্থ ।

• অিপিও মাচরেৎ আদ্ধেনকোদিইং মৃতাহনি॥" (আদ্বতন্ত্র)
• পার্বানীদ্রাদ্ধি দেখ।"

ত্রিপিণ্ডী (স্ত্রী) ত্রন্নাণাং পিণ্ডানাং সমাহারঃ, ত্রীপ্। পিত্রাদির উদ্দেশে পিণ্ডত্তর।

ত্রিপিব (পুং) কর্ণাভ্যাং ক্ষিত্ররা চ পিবর্তি পা-ক। বার্ত্রীণস লম্বর্ণ ছাগভেদ, বার্ত্রীণস দক্ষে বৃদ্ধ ছাগকে বৃঝার। ইহারা কর্ণাহর ও জিন্তাছারা জল স্পর্শ করিয়া পাল করে, এই জন্ম ইহাদের নাম ত্রিপিবা।

ঁত্রিপিবস্থিজিয়ক্ষীণং খেতং বৃদ্ধমঞ্চাপতিং।

বার্ত্তীণসত্ত তংপ্রাস্থ বাজ্ঞিকা: পিতৃকর্মণি ॥" (মন্ত্র্ ৩২৭১)
'পিবতো বস্তু ত্রীণি জলং স্পৃদস্তি, কণৌ জিহলা চ স ত্রিভিঃ পিবতীতি ত্রিপিবঃ।' (মেধাতিখিণ)

ত্রিপিফ্রপ (ক্লী) মর্ত্তাপাতালাপেক্ষরা ভৃতীরং পিষ্টকং ভূবনং

বৃত্তো ত্রিশ্বস্থ ত্রিভাগবং পুরণার্বতা। ১ পর্য। ২ আকাশ।

( भक्त्रु॰ )

ভিশিকীপমৃদ্ (প্ং) ভিশিকীপে দীৰ্ভি দৰ-ছিণ্। দেবভা।
ভিশু (প্ং) ভেন। ( দিবলুঁ) ইহার পাঠান্তর ভূপু দেখা বার।
ভিশু ট (পুং) জীবি প্টানি ক্তা। ১ দতীপক, মটর ডাইল।
২ তীর। ৩ হতভেন। ৪ ডালকবর, ডালা, কুলুণ। ৫ গোকুররুক্ষ। ৬ শর। ৭ কলার ভৈদ, বেশুনারী। পর্বারি—ত্তিপূট,
ধঙিক। ইহার গুণ—মধুর, তিজ, ভূবর, ক্ক, কফ ও পিত্তনাশক, ক্ষচিকর, গ্রহিক, শীতল, ধ্বা ও পকুকারক এবং
ক্ষতিশর বারুব্ছিকর। (ভূবিপ্রাণ)

ত্রিপুটক (পুং) ত্রিপুট সংজ্ঞারাং কন্। ১ বৈদল, খেনারী।
২ ব্রণের আকার জেন।

ত্রিপুটা (খ্রী) থ্রীণি প্টানি ষস্তা:। > সন্নিকা। ২ বেলফ্ল।
ত হল্মেলা, ছোট এলাচ। ৪ ত্রিধ্ৎ, তেউছি। ৫ কর্ণন্দোটলতা, কাণফাটা। ৬ স্থ্লৈলা, বড় এলাচ। ৭ রক্তজিবৃৎ,
রক্ততেউড়ি। ৮ বেভত্রিবৃৎ, সাদা তেউড়ি। ৯ তারোক্ত
দেবীবিশেষ। ইহার সূর্ত্তি—

শপারিজাতবনে রম্যে মণ্ডপে মণিকুষ্টিমে।

রম্বনিংহাসনে রম্যে পছে ঘটুকোণশোভিতে।
অধকাৎ কর্মকুল নিষ্যাং দেবতাং মরেও।
চাপং পাশামূলসরসিজাঞ্জুলং পুস্পার্ণান্
সংবিভাগাং ক্রসরসিজাঃ রম্বমৌলিং ত্রিনেতাং।
হেমাজাভাং কুচভরনতাং রম্বমঞ্জীরকাঞ্চী
ব্রৈবেয়ালৈগ্রিলাসিতভমুং ভাবরেছেকিমাভাম্।
বহস্তীভিঃ কুচার্ভাভিদ্ তিভিঃ পরিবারিতাং।
কর্মণামূতব্রিগ্যা পশুস্তীং সাধকং দৃশা॥" (ভ্রসার)

পারিজাতবনে রম্য মণিকুটিমে রত্ময় সিংহাসনে কর বৃক্ষের নিম্নেশে এই ত্রিপুটানেবী অবস্থান করিতেছেন, ইহার সর্বনা পূজা করিতে হইবে। ইনি অভীইনাত্রী। ত্রিপুটিন্ (পুং) ত্রীণি পুটানি সক্তান্ত ইনি। এরও বৃক্ষ, ভেরাঙাগাছ। ২ বিদলবিশেষ, খেনারী।

ত্ত্রিপুটী (জী) জীণি প্টানি সন্তঃভাঃ অচ্ গৌরাণ ভীব্।
> ত্তিব্তা, তেউড়ী। ২ স্কৈলা, ছোট এলাছ। অরাণাং জ্ঞাত্জ্ঞানজ্বেরপাণাং প্টানামাকারাণাং সমাহারঃ ভীপ্। জ্ঞাত্,
জ্ঞান ও জ্ঞেররূপ পুটত্রর।

"ভূতোৎপত্তে: পুরা ভূমা ত্রিপুটাবৈতবৃ<del>র্জ</del>নাৎ। ভাতৃজ্ঞানজেবরণা ত্রিপুটী প্রলবে হি নো॥"

(পঞ্চনী ১১।১৪)
বিপ্রীরপ বৈতের অভাব হেতু তৃত সকলের উৎপত্তির
পূর্বে কেবল সেই সর্কব্যাপী চৈতক্ত ছিল, ইহা ভিন্ন আর
কোন পদার্থ ছিল না। জ্ঞান, ক্রেম্ন ক্রাভা এই ভিনের

নাম ত্রিপ্ট। প্রলন্নকালে এই ত্রিপ্টী থাকে না, আগভিক স্টিকালে এই ত্রিপ্টীর পূণক্ পূথক্ জ্ঞান হইরা থাকে। প্রলন্নকালে আর অভিন্ন বোধ থাকেনা, যিনিই জ্ঞাতা, তিনিই জ্ঞের ও তিনিই জ্ঞান, তথন সকল এক।

উৎপদ্ধ বিজ্ঞানময় কোককে জ্ঞান্তা বলাবায়, মনোময় কোষ জ্ঞান এবং শব্দ স্পর্শাদি বিষয় সকল জ্ঞের পদবাচ্য হয়। ইহাদিগের সমষ্টির নাম ত্রিপ্টা। উৎপত্তির পূর্বের এই ত্রিপ্টার সন্তা অসম্ভব। তথন পরিপূর্ণ অবৈত স্থরপ ছিল। (পঞ্চদশী) (শক্ষরাচার্য্য রচিত 'ত্রিপ্টাপ্রকরণ' এবং আনন্দতীর্থ ওলপ্রভানন্দক্ত ত্রিপ্টাপ্রকরণের টাকার ইহার বিস্তুত বিবরণ দ্রষ্টবা।)

ত্রিপুটীফল (পু:) ত্রিপুটী পুটত্ররং ফলেহন্ত। এরও বৃক্ষ।
ত্রিপুণ্ড (ক্লী) অমাণাং পুঞাণাং ইক্ষ্বদাকারণাং সমাহার:।
তিলকভেদ, ললাটন্থিত তির্বাক্ রেথাত্রয়। ত্রিপুঞ্ক
ধারণ করিয়া শিবপুজা করিতে হয়।

"বিনা ভশ্বত্রিপুণ্ডেল বিনা ক্লাক্মালয়। পুজিভোছপি মহাদেৰো ন স্থাত্ত ফলপ্রদঃ॥

তমান্যুদাপি কর্ম্ববাং ললাটেংপি ত্রিপুগু কং।" (তিথিতত্ব)
 ভুম ও ত্রিপুগু ক ধারণ না করিয়া শিবপুলা নিফল
হয়, অর্থাৎ বৈলক্ষণ্য ফলের অভাব হয়। শৈব ত্রিপুগু ক ও
বৈষ্ণব উদ্ধপুগু ধারণ করিবে। যাহারা ত্রিপুগু ককে
নিন্দা করে, ভাহারা মহাদেবকে নিন্দা করে। যিনি
ইহা ললাটে ধারণ করেন, তিনি মহাদেবকে ধারণ
করেন। [ভিলক ও পিবপুলা দেখ।]

ত্রিপুর (ত্রী) ত্রিগুণিতা: পুর: সমাসান্থবিধেরনিতাথাৎ আর্ধে ন অচ্ সমাণ। ময়দানবকত অন্থরদিগের পুরত্রয়। [ত্রিপুর দেখা]
ত্রিপুর (ক্রী) ত্ররাণাং পুরাণাং সমাহার:। অন্থরদিগের পুরতরয়। ত্রিপুরের বিধয় মহাভারতে এইরপ লিখিও আছে—
তারকাক্ষ, কমলাক্ষ ও বিছায়ালী নামে তারকান্থরের
তিন পুত্র কঠোর তপভা করেন, ত্রন্ধা ইহাদিগের
তপভায় সম্বন্ধ ইইয়া বর দিতে উদ্যত হন, তথন ইহারা
আমরা সকল ভৃত্তের অবধ্য হইব' এই বর প্রার্থনা করে।
ত্রন্ধা এই বর দিতে খীকার করেন নাই, পরে ইহারা তিন
ভাই মিলিত হইয়া ত্রন্ধাকে নিবেদন করিল, 'আমরা এই
বর প্রার্থনা করি যে, তিনজনে পুরত্রের অবস্থান করিয়া
ভনসমাজে পুজিত হই এবং সহস্র বংসর পরে আমরা
তিনভনে মিলিত হইব, দেই সমন্ধ বি ক্রে অক্রানে সমবেত
পুরত্রম সংহার করিতে পারে, তাহা হইলে আমরা তাহারই
হত্তে নিহত হইবা' ত্রন্ধা তাহাই হইবে বলিয়া প্রস্থান করেন।

এই সময় ইহারা পুরত্তর নির্দ্ধাণ করিবার অভ মরদানব্তে नियुक्त करतन, महनानव चीत्र ज्ञानावरन चार्क काक्रममू অন্তরীকে রজতমর ও মর্ত্তো লৌহমর এই পুরত্তর নির্মাণ করেন। ঐ পুরত্ররের এক একটা শতবোজন বিস্তীর্ণ ও আরত এবং বহুতর গৃহ, অট্টালিকা, প্রাকার, তোরণ প্রভৃতিতে স্থােভিত। ভারকাক স্থবর্ণময় পুরীর, কমলাক রঞ্জময় পুরীর ও বিহান্দালী লোহময় পুরীর অধীশর হইল। ইহারা অল্লবলে ত্রিলোক আক্রমণ করিল। তথন অত্মরগণ দেবতা-দিগকে নানা প্রকারে নিপীড়িত করিতে লাগিল। তার-কাক্ষের হরিনামে এক পুত্র কঠোর তপভা করিয়া বন্ধার निक्रे এই বর প্রার্থনা করেন, আমাদের পুরুমধ্যে এক্ট বাপী প্রস্তুত করিব, ঐ বাপীজনে অন্ত্রনিহত বীরগণকে নিক্ষেপ করিলে ভাহারা পুনজ্জীবিত হইবে। ইহাতেও সকলে হৰ্দ্মৰ হটয়া উঠিল। দেবগণ প্ৰতিপদে লাঞ্চিত হটয়া ত্ৰদায় শরণাপর হন। দেবগণ প্রণ্তিপূর্বক দানবগণের দৌরাজ্যের कथा विताल बन्धा जाहामिशक कहिलान, 'बे मानवबद आमा-রই বরপ্রভাবে দর্পিত হইয়াছে। শীঘ্র উহাদের নিধন হইবে, মহাদেব ভিন্ন অঞ্চ কোন দেবতা ঐ পুরত্তায় একবাণে एडम क्तिएछ नमर्थ इटेरवन ना, हन आमत्रा नकरन महारमरवत्र শরণাগত হই, তাহা হইলে অচিরাৎ ঐ পুরত্রয় নষ্ট হইবে, এবং ভাছা হইলে ঐ দানবত্তম বিনষ্ট হইবে।' এই কথা विनिश्न (प्रवर्गन बकात महिल महार्गित्व नेत्र्गित्र हरेरनन। মহাদেব দেবগণের कथा अनिया कहिलन, 'তোমরা আমার বলাদ্ধ গ্রহণ করিয়া অগ্রে যুদ্ধে প্রস্তুত হও'। দেবগণ বলিলেন, 'আমরা আপনার বলার্দ্ধ গ্রহণ করিতে পারি এরণ 'শক্তি আমাদের নাই, আপনি বরং আমাদের বলার্দ্ধ গ্রহণ করুন'। মহাদেব তথন দেবগণের বলার্দ্ধ গ্রহণ করিয়া অধিক खत तलभानी इहेग्रा छेठिएनन। **এই अवधि** भिरवद्ग नाम महारमय इहेबार्ट्छ। महारमय • जथन रमयशनरक कहिरमन, 'তোমরা আমার ধয় ও রথ প্রস্তুত কর, তাহা হইলে আমি व्यविनास जिश्रुत मध कतिय।' उथन मित्रांग विश्वकर्मात ডাকিয়া রুণ প্রস্তুত করিতে লাগিলেন; তথন তাহারা পর্বত, বন, দ্বীপ ও ভূতগণপরিবৃত বিশাল নগরসম্পন্ন বস্ত্র রাকে महारम्द्रेत तथ कतिरलन । मन्द्र शर्बा , मानवानत्र ७ अन्ति ঐ রথের অক; ভাগীরথী জঙ্বা, দিখিদিক ভূষণ; নক্ত मकल क्रेमा. मंडायुश क चर्ग युशकाई, जुझशताझ, व्यनस्टाप्तर, কুবের, হিমালয়, বিদ্ধাচল, স্থা ও চক্র চক্র ; সপ্তধিমওন চক্রবক্ষক; গলা, সরস্বতী, সিজু ও আকাশ ধ্র্ভাগ; জা^{র ও} ननी त्रकल वस्तनमामशी ; शिवा, ताबि, कला, कांडी, इव्यर्

e बीश्रश्रह ममुबाब अञ्चलकं, जातात्रन नक्तल ; धर्मा, अर्थ ७ काम ত্তিবেণু, ফলপুপ পরিশোভিত ওষধি ও লভা সকল বন্টা; রাত্রি ও দিবা পূর্মা ও অপর পক্ষ; ধৃতরাষ্ট্রগ্রমূপ দশনাগণতি ক্রবা. মহোরগগণ বোক্ত; সম্বর্তক মেঘ, বুগচর্ত্ম, কাল পৃষ্ঠ; নহৰ, ক্ৰেটিক, ধনঞ্জব ও অস্তাক্ত নাগগণ অশ্বগণের কেলর-वसन ; नमूनत्र निक् व्यक्तिक् धवर धर्मा, नजा, जल ও व्यर्क অখনশ্বি; সন্ধ্যা, ইঙি, সেধা, হিভি, সমতি ও প্রহ নক্ষত্রাদি ৰারা পরিশোভিত নভোমগুল বাছাবরণ; লোকেশ্বর ইক্র, वक्रण, यम ७ क्रव्यत भाष ; भूक भाषावा, भूक शोर्गमात्री, উত্তর অমাবস্তা ও উত্তর পৌর্ণমাসী অখ্যোক্ত্র; পূর্ব্ব অমা-বভার অধিষ্ঠিত পিতৃগণ যুগকীলক, মন রথোপস্থ, সরস্বতী রথের পশ্চান্তাগ, শত্রুচাপসমন্বিত বিছাং, প্রনোদ্ধৃত পতাকা, বষট্কার প্রতোদ এবং গায়ত্রী শীর্ষ বন্ধন হইলেন। বিষ্ণু, সোম ও হতাশন এই তিন মহাত্মার যোগে মহাদেবের বাণ করিত 'হইল। অমি এই বাণের কাণ্ড, সোম ফলক এবং বিষ্ণু তীক্ষাধার স্বরূপ হইলেন। পুর্বে ঈশানের যজে যে সম্বংসর কলিত হইয়াছিল, এখন তাহা উহার শ্রাসন क्ष अ माविजी त्योक्तींक्रभ धावन कतिन। कानठक हहेटड মভেদা দিবা বর্ম বহিভূতি হইল। মৈনাক ও মেকুপর্মত श्तबयष्टि इहेन। त्रोनामिनी महिल स्वमाना প्लाका इहेन। এইরপে অপূর্ব রথশরাসনাদি নির্মিত হইলে মহাদেবের নিকট এই বুত্তাস্ত জ্ঞাপন করিলেন। মহাদেব উহাতে নিজ প্রধান শস্ত্র সমুদয় সংস্থাপনপূর্বক আকাশকে ধ্বজ-^{ষ্}ষ্টি ক্রিয়াউপর উপর মহার্বভকে সন্নিবেশিত ক্রি**লেন**। এদদও, কালদও, রুদ্রদও ও জর রথের পার্শ্বরক্ক, অথর্ব ও আঙ্গিরস চক্ষুরক্ষক, ঋগ্বেদাদি পার্যচর হইল। ওঁকার রণের সমুথে শোভা পাইতে লাগিল। মহাদেব ছয় ঋতু-সম্পন্ন সম্বংসরকে বিচিত্র শ্রীসন করিয়া আঁপনার ছায়াকেই মৌর্কী করিলেন। ভগবান্ রুজ সাক্ষাৎকাল খরুপ্রা, সম্বৎসর ভাগার শ্রাসন, এই নিমিত্তই তাঁহার ছায়াত্মপ কালরাতি ঐ শরাসনের মৌকা হইল। বিষু, অগ্নিও চক্র ইহারা তাঁহার বাণ্যকপ হইলেন। মহাদেব এই শক্তে ভৃত ও অফিরা যজ্ঞসূত্ত হঃসহ ক্রোধায়ি নিহিত করিলেন। মহাদেব এই বংগে আরোহণ করিয়া দেবগণকৈ কহিলেন, 'এখন কোন্ মহাত্রা আমার সারথা কার্য্য করিবেদ ?' দেবঁগণ কহিলেন, 'আপ্নি যাহাকে আদেশ করিবেন ভিনিই আপ্নার সাব্ধি ^{२ हेरवन} ' हेशांट महारमव विनामन, 'विनि आमा आश्रिका শ্রেষ্ঠতর হইবেন, তোমরা বিবেচরা করিয়া অবিলয়ে তাহাকে সার্পি কর।' দেবগণ মহাদেবের এই বাক্যে পিভামত্ত্র

শরণাপর হইরা কহিলেন, 'এই বুদ্ধে আপনাকে সার্থির কার্য্য कतिए हरेरत ।' शिष्ठामर छोरारे चौकात कतिता मरास्तरतत्र সারথির পদে অভিবিক্ত[°]হইলেন। তখন মহাদেব বিফু-त्रामाधि ममू९भन्न भन्न श्रहण कवित्रा त्रत्थ चारत्राहण कन्निरनन । ক্ষলবোনি ভৃতনাথের বাক্যাঞ্সারে ত্রিপুরের অভিমুধে ষ্মাদিগকে পরিচালন করিতে লাগিলেন। এই সময় তাঁহার ধ্বজাগ্রন্থিত বৃষ্ভ ভীষণ নিনাদ করিয়া দশদিক্ পরিপূর্ণ क्तिएक नाशिन । भूनशानि महारम्य टकार्य अधीत इहेरनमें, **७** थन बिरनाक कश्भिज इरेस्ड नागिन। ७९कुरिय मिरे त्रथ 'দোম, অমি, বিষ্ণু, ত্রন্ধা ও ক্ষত্র এবং দেই শ্রাসনের সঞা-লনে অবসর হইল। তথন নামায়ণ ;সেই শরভাগ হইতে বিনিৰ্গত হইয়া ব্যৱপ ধাৰণপূৰ্ণক ঐ মহারখ উদ্ত क्तिरागन। महाराग्य व्यथ्नभृष्ठं ७ वृत्रस्त्रत्र महाराज्य व्यवश्वान-পূর্বক সিংহনাদ করিয়া দানবপুর নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন धार कार्यत खन इहान ७ तृरयत थूझ घ्रे थए विकल করিলেন, সেই অবধি অখগণ অনহীন ও গোদমূহের কুর ছইভাগে বিভক্ত হইয়াছে। অনম্ভর মহাদেব শ্রাসন অধিজ্য ও ঐ শর পাঞ্চপতাত্তে সংঘোজিত করিয়া ত্রিপুরের অপেকা . कतिरङ गांशिरनन । उथन रमष्टे भूत्रवात्र धक्व ममर्वि हुरेन । ইহা দেখিয়া দেবতা, সিদ্ধ ও মহর্ষিগণ অভিশয় আহলাদিত হইয়া মহাদেবের শুব করিতে লাগিলেন। তথন ত্রিলোকেখর महारान्य निया भन्नामन व्याकर्नभ्भूतंक भूत्रवायरक नक्का कतिया সেই অৈলোক্যসার ভূতশর পরিত্যাগ করিলেন। সেই শরে ত্রিপুর তৎকণাৎ ভূতলে নিপতিত হইল। অহারগণ খোরতর আর্ত্রনাদ করিতে লাগিল। তথন ভগবান্ শঙ্কর তাহাদিগকে এদগ্ধ করিয়া পশ্চিম সাগরে নিক্ষেপ করিবেন্। চারিদিক্ **रुटेट महारैमरवंद्र खिलान रुटेट गाभिन। महारमर**वंद्र द्राध-প্রভাবে ত্রিপুর জন্মণাং হইয়া গেল। মহাদেব ক্রোধ সম্বরণ করিলেন। পৃথিবী ভারশৃত্ত হইল, দেবগণ স্বর্গরাজ্যে অধি-ষ্ঠিত হইলেন। (ভারত কর্ণপণ ৩৫ আং, হরিবঃশ)

ত্রিপুর্ঘু (পুং) ত্রিপুরং হস্তি হন টক্। মহাদেব। [ ত্রিপুর দেশ।]
ত্রিপুরদহন (পুং) মহাদেব, শিব।

ত্রিপুরদাস, একজন ভগবদ্ধক কামন্থ ইনি প্রথমে বাদশাহের সরকারে মৃহরির কার্য্য করিতেন এবং ইহাতে অনেক টাকা উপার্জ্জন করেন। এই সমস্ত অর্থই তিনি ভগবদ্দেবার ব্যয় করেন। প্রতি বংশর গোবর্দ্ধন পর্বতে তিনি, শ্রীনাথ জীকে শীতবন্ত দিতেন, ক্রমে রাজ্মনরকারের চাকুরী প্রেল, দরিত্র হইয়া পড়েন। পূর্বে কিছুই সঞ্জুক করেন নাই, বাহা আমুহইত, তাহাই ভগবদ্দেবার ব্যয় করিতেন।

€,

অধন নিতাত ত্রবন্ধার প্জিলেন, কিন্তু প্রতি বৎসর শ্রীনাথজীত্বে গাত্রবন্ধার পিতে অবহেলা করিজেন না। এক বৎসর
কোন ক্রমেই আর বন্ধ মংগ্রহকরিজে পারিলেন না, অবশেবে
আলনার পিততের দোয়াত, বিক্রম্ করিয়া দেই আর্থে শ্রীনাথজীর গাত্রবন্ধ করিয়া দিলেন। কিন্তু ভাগুরী ভাষা
শ্রীনাথজীর গায়েন। দিরা তুলিরা বাথে। রাত্রিজে ভাগুরীকে
প্রত্যাদেশ হয়, 'আমি শীতে কট পাইতেছি, আর তুমি ত্রিপ্রদাসের দত্রবন্ধ তুলিয়া রাথিয়াছ, সহম্র শাল বনাতে আমার
শীত্র নিবারিত হয়না। সত্তর ত্রিপ্রদাসের দত্র বন্ধ আমার
দাও।' (ভক্তমাল)

ত্তিপুরভৈরবী (জী) তিপুরা ধর্মার্থকামানাং দাতী সা চামে তৈরবী চেতি। দেবীবিশেষ, ইহার রূপ রক্তবর্ণা, রক্তবজ্ঞ-পরিধানা, চত্ত্রা, তাহার উর্জ্বাক্রণ হত্তে মালা, অধোদকিণ হত্তে উত্তম পুত্তক, বামহত্তগ্ণনে বরাভয়, দীপ্তি সহত্র স্থ্যের স্থায় উজ্জ্বল, তিনয়না, গজ্জেলগমনা, উত্তুল প্রীন তানমুগলশোভিতা, খেতপ্রেভোপরি আসীনা, সহাত্রবদনা, সর্মালকারভ্বিতা, উহার মন্তক, বক্ষঃছল এবং তাহার কটি-দেশ এ তিন ছাড়া মুগুমালা হারা পরিশোভিত এবং নয়নতায় মধুপানে ঘৃণিত, ওঠাধর রক্তবর্ণ। এইর্মণে ত্রিপুরভৈরবীকে চিন্তা করিবে। ধ্যাম—

"চৰুভূ লাং রক্তবর্ণাং রক্তবন্ত্রবিভূষিকাং।
দক্ষিণার্দ্ধে অল্লকার্ধে বিল্লতীং পুতকোত্তমং॥
অভয়ং বামহন্তাল্ডাং বরক দধলীং তথা।
সহঅস্থ্যসন্ধাশাংক্রিনেল্ডাং গলগামিনীং॥
শীনোত্ত্বলব্যাং সিতপ্রেতাসনন্থিতাং।
বিতপ্রভির্বদনাং সর্বালন্ধারসংযুতাং॥
তিস্ভি মু ওম্পোভিঃ শিরোবক্ষংক্টী সু চ.।
বিশুণং বিশুণীভূতৈঃ প্রভ্যেকং পরিভূষিতাং॥
মদিরাভূণনয়নাং রক্তদেওছ্দেশ্বয়াং।

চিত্তয়েররদাং দেবীমেবং ত্রিপুরতৈর বীং ॥" (কালিকাপু: ৭৪ জ')
ত্রিপুরতৈরবীর পূজোপকরণ পাত্রাদি ও আসনাদি অস্ত পূজার ব্যবহার করিতে নাই।

তিন মৃত্র্কাল ত্রিপুরজৈরবীর পূলা করিতে হইবে।
ইহার পূলার ৩০ বারের কম লগ না হর। অকুট,
মধ্যমা এবং অনামা এই তিন অকুলিযোগে ত্রিপুততৈরবীকে পূজাদি উপচার প্রদান করিবে। মালা বিশুণ
করিরা দিতে হয়। সাধক চন্দাসনে বসিয়া পশ্চারাগে, পদবর
রাখিল অন্সচিত্তে নির্জন হানে এই দেবীর পূজা করিবে।
বিজ্ঞ সাধক পূজা ও নৈবেল্লালি বাম্বত বারা আছোদন

করিবে। এই দেবী মদি সম্পূর্ণরূপে পৃষ্ঠিতা না হন, ভাষা হইলে পৃজকের শরীরে অবশুই নিম্মিত বাদি, ত্রী পুত্র ও ভ্তাদি অবশীভূত এবং পরে ভাষার শত্রাহাতে মৃত্যু হয়। এই ত্রিপুরভৈরবী বোধনিদ্রা হর জননী মারারই রূপভেদ, এক্ই মারা বছরণে ক্রীড়া করে। (কালিকাপুণ ৭৪ অণ)

ত্তিপুরম্জ্লিকা (জী) ত্রীণি পুরাণি দলার্ভয়ো ম্ছাঃ, সা চাসৌ মল্লিকা চেতি। পুষ্পর্কবিশেষ, ত্রিপুরমাণিক। পর্যায় লেল্লা। (ত্রিকাং).

ত্তিপুরা (জী) জীন্ ধর্মার্থকামান্ পুরতি পুরতো দদাতি পুর ক, ততপ্রাপ্। দেবীবিশেষ, ত্তিপুরাদেবী কামাঝ্যার মৃষ্টি ভেদ। বাগ্ভব, কামবীজ এবং ঈখর ধর্মা অর্থ ও কামানির সাধক এই তিনটী কুগুলীযুক্ত হইয়া ত্তিপুরাদেবীর মৃলয়ঃ হয়। কামরূপিণী কামাঝ্যা তিনটী দান করেন এবং তিনেং ক্ষপ্রে পুলিতা হন, এইলগুইহার নাম ত্তিপুরা হইয়াছে।

> "ত্রীন্ যক্ষাৎপুরতো দ্ঞাৎ ত্র্না ধাতা মহেশ্বী। ত্রিপুরেতি ততঃ থ্যাতা কামাথ্যা কামরূপিনী॥" (কালিকাপুণ ৬৩ অণ

এই দেবীর মণ্ডল ত্রিকোণ রেথাত্রেরে নির্শিত, তিনী পুর মন্ত্র ত্রাক্ষর, ক্লণ তিন প্রকার এবং ত্রিদেবের স্টো নিমিত্ত কুণ্ডলী শক্তিও ত্রিবিধ, যে হেতু এই সমস্ত বর্ষ তিন তিন, এই নিমিত্তই উহার নাম ত্রিপুরা।

"ত্রিকোণং মণ্ডলং চান্তান্তিপুরস্ক ত্রিরেধকং।
মন্তস্ক ত্রাক্তরং ক্রেরং তথা রূপত্রহং পুনং ।
তিরিধা কুণ্ডলীশক্তিন্তিদেবানাঞ্চ স্টেরে।
সর্বাং তারং তারং যাবাং ভারাত ু ত্রিপুরামতা ॥
(কালিকাপুং ৬০ জা)

ইহার রূপ দিশ্বপ্রসদৃশী, তিনেতা, চত্ত্রা, বামদিকের উর্জহত্তে পুলধমু এবং অধাহত্তে পুত্র, দক্ষিণের উর্জহত্তে ৫টা বাণ এবং অধাহত্তে অক্ষমালা, চারিট কুণপের পৃষ্ঠে আর একটা কুণপ রক্ষা করিয়া দঙায়মানা, কটাজুট এবং অর্জচক্ত হারা বৃদ্ধকেশ, নয়া, মধ্যদেশে তিবনী হারা অশোভিতা, সর্বালয়ারভ্ষিতা, সর্বালয়ারভ্ষিতা, সর্বালয়ারী, মলনমান, ধনবিতরণকারিণী, সর্বালয়ণসম্পানা এইরপ তিপুরাম্নির্বিধ্যান করিতে হইবেন। ধ্যান—

"সিদ্রপ্রসভাশাং তিনেতাত চত্ত্জাং।
বামোর্জে পূজাকোদতঃ ধুডাবঃ পূত্তকং তথা।
দক্ষিণোর্জে পঞ্বাণানক্ষ্মালাং দধাত্যধঃ॥
চত্ত্রাং কুণ্পানাত পৃঠেছতঃ কুণ্পাস্তরং।

নিধার তত পৃঠে তু সমপাদেন সংহিতাং॥
ভালুটার্টার্চিটজন্ত সমাবদ্ধশিরোক্ষহাং।
নগাং ত্রিবলিভদেন চাক্ষমধ্যাং মনোহরাং॥
সর্বালভারসম্পূর্ণাং সর্বালস্থলরীং ভঙাং।
অবদ্ধবিণসন্দোহাংসর্বলক্ষণসংযুতাং॥" (কালিকাপু• ৬৩ জ•)
এইরূপে প্রথমে ধ্যান করিবে এবং আপনাকে ত্রিধারূপে ভাবনা করিবে।

বিতীয় তিপুরাম্র্ডি, এইরপ—বদ্ধকপুলাসদৃশী, অটাজুট ও চন্দ্রবারা মণ্ডিতা, সর্বলক্ষণসম্পারা, সকল প্রকার অলহারে বিশোভিতা, উন্তৎস্থ্য সদৃশ বসনপরিধানা, পদ্মপর্যায়-সংগ্রিতা, মুক্তা ও রদ্ধাবলীযুতা, পীনোয়ঙপরোধরযুক্তা, তিবলিশোভিতা, আসবের আমোদে সন্তুষ্টা, নেত্রাহলাদকরী, বিশুরা, জগতের কোভিণী, ত্রিনেত্রা, যোনিমুদ্রার প্রতি ঈষৎ হাস্তসমাযুক্তা, নবযৌবনসম্পরা, মৃণালতুল্য চর্তু ভূলা, বাম্দিগের উর্ন্নত্বের পুত্তক, অধোহত্তে অভ্যু, দক্ষিণের উর্ন্নতব্বে অভ্যু, দক্ষিণের উর্ন্নতব্বে বর, গলদ্রক্তা, স্থ্যাভা, আপাদলম্বিত্তা-শিরোনালাধারিণী, কর্দ্রশ্বেলম্বাক্তিন অবাহ্বিতা, ক্ষদ্যোপ্রনার বিতীয় ত্রিপুরা মৃঠির ধ্যান ক্রিবেণ হিতীয় হ্যান—

"तक् कश्रणनकानाः खंगेख्टिन्सिख्छाः।

नर्सनकानम्पूर्गः नर्सानकात्रज्यिकाः॥

छेळ्छित अथात्रजाः भण्णभग्रक्षनः विकास्।

स्कात्रजातनीय्काः भीटनात्रकणद्राधतः॥

तनीतिकन्रुक्तासानतात्मानत्मानिछाः।

तन्जास्नानकतीः खकाः द्याक्षितः कर्गठाः छथां॥

विद्याद्यात् स्वरीः स्वताः समीयकाननसाय्छाः।

नत्दात्रे तनम्म्पत्राः स्वाना कर्ज्ज् काः ॥

वात्मादक्ष भूकतः थटल व्यक्तमानाच निक्ति।

वात्मनाक्ष्रमाः दिन्दीः मिल्नाद्यात्रव्यमाः॥

व्यव्यक्रक्प्रवाखाः मिद्रासानाच विक्रिः।

वालानचिनीः क्रक्षस्मानाच नःश्रिष्ठाः॥

केन्द्याभ्यनाचःशः कार्मास्नानकतीः ख्वाः।

विजीताः विभूताः थाद्याद्यस्यः क्रभाः स्वाह्याः॥

विजीताः विभूताः थाद्यस्यः क्रभाः स्वाह्याः॥

विजीताः विभूताः स्वाह्यस्यान्यः क्रभाः स्वाह्याः॥

(কালিকাপু ৬৩ অং)

তৃতীয়া ত্রিপুরার বরপ বর্ণিত হইন্ডেছে। ঐ সৃষ্টি অবাকুত্মসদ্নী, মুক্তকেশী, গুডাননা, হাস্তকরী, সদাশিবকে
প্রেতবং স্থাপন করিয়া সেই দেবের হৃদরে উর্জ পল্লাসনে
উপবিষ্টা, গ্রীবাদেশ হইতে আপান্দালিনী রক্তোৎপলমিশ্রিত
মুগুমালাধারিকী, পীনোরভপদ্যোধরা, চতুর্জা, দিগ্দরী,

দক্ষিণদিকের উর্জ্বতে অক্ষালাধারিণী এবং অবোহতে বরদানী, বামদিকের উর্জ্বতে অক্ষালাধারিণী এবং অবোহতে বরদারিনী, তিনেআ, হাত্তমুণী, গলক্ষধিরভোগার্তা এবং স্কালত্দ্দরী, সাধক এই প্লালার সৃষ্ঠির ধ্যান ক্রিবে। তৃতীর মৃষ্ঠির ধ্যান

" অবাকুস্মসকাশাং মুক্তকেশীং বরাননাং।
সদাশিবং হসক্ত গ্রেতি বিনিধার হৈ ॥
হৃদরে ততা দেবতা ক্র্পেশাসনন্দিতাং।
রক্তোৎপলৈন্দিশ্রিভাত মুক্তমালাং পদাসুগাং॥
তীবারাং ধাররজীক্ত পীনোরতপরোধরাং।
চতুর্ভ্রাং তথা নগাং দক্ষিণোর্চেংক্ষমালিনীং॥
বরদাং তদধো বামে অগলারাং তথাভরং।
অধক্ত পুত্তকং ধতে ত্রিনেত্রাং হসিতাননাং॥
ববদ্ধবিগভোগার্ভাং তথা স্ব্রাক্ষম্প্রীং।"

(কালিকাপুণ ৬০ জ্ঞ)

পূজক এইরপ ধ্যান করিবে। আগ্ররণ বাগ্ভাব, বিতীর কামবীল, ছতীর ভামর এবং মোহন বলিয়া পরিকীর্ন্তিত। নাধক পূর্ব্বে এক একটা করিয়া ভিনটা রূপ ভাবিয়া বাহিরের মত হালরাভাস্তরেও মন্ত্রের উচ্চারণ করিয়া বোড়শোপচারে প্রত্যেকের পূলা করিবে। দেবীর ভিন মূর্ত্তি একত্র করিয়া হালয়ে নিবেশ করিবে।

কামরূপিণী ত্রিপুরাদেশীর নব প্রকারে পূজা করিতে হয়। বিধিবং ত্রিপুরা পূজা করিলে সাধক সকল অভিলধিত লাভ ও অভে দেবীলোকে গমন করে। (কালিকাপু ৬৩ অ॰) ত্রিপুরা, পূর্ববিদ্ধার একটা প্রান্ত ভূডাগ। এই প্রদেশের কতকাশে 'জেলা ত্রিপুরা নামে বালালার চোটলাটের অধীন এবং কতকাশে পার্বভ্য ত্রিপুরা নামে ত্রিপুরার প্রাচীন রাজবংশের অধীনে।

জেলা ত্রিপুরা।—ইহার উত্তরে বাদালার অন্তর্গত ময়মনসিংহ জেলার কিয়দংশ ও আসামের অন্তর্গত জীহট জেলা,
দক্ষিণে নোয়াথালী জেলা, পশ্চিমে মেঘনা নদী ও পূর্ব্বে
পর্বান্ত ত্রিপুরা। জেলা ত্রিপুরার প্রকাসীমাই বৃটীল ভারতের
পূর্বান্ত সীমা। ১৮৫৪ খৃষ্টাব্দে ভারত গ্রহ্মেণ্টের পক্ষে
মি: লিসেন্টার ও ত্রিপুরায়াজের পক্ষে মি: ক্যাহেল এই
সীমা নির্দারণ করেন। পূর্বে এই জেলা চট্টগ্রামের
কমিশনরের অধীন ছিল, ১৮৭৫ খৃষ্টান্থ ইতিত ঢাকার কমিশনরের অধীন ছইরাছে।

धरे बनात कृषि मर्सव मम्डन,.. द्वितन भूसीश्रम दकान

কোন ছলে লালমাই পর্কভের কোন কোন অংশ আছে।
নদী ও থালের সংখ্যা অধিক। দেশের বাণিজ্য প্রারই
নৌকার সম্পন্ন হয়। গ্রীমকালে কোন কোন নদী ও থাল
ভকাইলে বা জল কম হেইলে হাঁটা পথেও বাণিজ্য চলে।
বড় বড় নদীতে বহাঁকাৰে বঞা হইরা থাকে, নিকটবর্তী মাঠ
জলে ভ্বিয়া যায়। নির হানের মাট খ্ব হারাও বেলে,
উচ্চ গানে অপেকারত আঁঠাল মাটি পাওয়া যায়।

লাকমাই পাহাঁতে কার্পাদের আবাদই বেশী। জঙ্গল পরিক্ষর হুইলে এই পাহাড়ের সর্ব্বত গোশকট যাতায়াত করিতে পারে। এই পাহাড়ের উত্তরাংশে ময়নামতী পাহাড়ে পার্বত্য ত্রিপ্রার মহারাজের কয়েকথানি অট্টালিকা আছে, তাহাতে কেলা ত্রিপ্রার প্রধান সহর কুমিলাবাদী ইংরাজগণ বাস করে। সমস্ত লালমাই পাহাড় পূর্ব্বে মহারাজের অধীনছিল, কিন্তু কিছুদিন পরে ময়নামতীর বাড়ীগুলি ছাড়া লবর্ণমেণ্ট আর -কোথাও মহারাজকে অধিকার দেন নাই। শেষে মহারাজ প্রার ২৮ হাজার টাকার সমস্ত পাহাড় কিনিয়া লইরাছেন। ত্রিপ্রার রাজবংশী লালমাই (লালময়ী) নামে কোন রাজ্কস্তার নামে এই পাহাড়ের নামকরণ হইয়াছে।

ু এই জেলার পশ্চিমাংশে মেঘনা নদী। একমাত্র এই নদীতে ৰড় বড় নৌকা যাতায়াত করিতে পারে। গোমতী, ডাকাতিয়া, তিতাস প্রভৃতি নদীতে ডিফি নৌকা সকল সময়েই চলে।

মেঘনা।— চাঁদপুরের নিকট মেঘনার গলা ও ব্রহ্মপুত্র
মিশিরাছে। তিন নদীর জলরাশি একত্র হওয়ার এজেলার
মেঘনার পরিসর । ও বেগ খুব বেণী। নদীর গর্ভে চরও
অনেক আছে। এ নদীতে যাতায়াত বর্ড বিপজ্জনক এও
ভয়সঙ্বল। নদীতে তামমান বাহাছরী কণ্ঠ ও জলময়
রহং বৃক্ষের শাথার বাধিয়াই অনেক নৌকা মারা পড়ে।
রেনেল সাহেবের সময় ব্রহ্মপুত্রমেঘনাসম্ম বর্ত্তমান স্থল
ইত্তে ৬০ মাইল উত্তরে ভৈরবরাজ্ঞার নামক স্থানে ছিল।
কালে নদীর গতি পরিবর্ত্তন, তাজন ও চরসংগঠনে এই পরিবর্তন ঘটিয়াছে। এই নদীর নিকটবর্ত্তী স্থলে "বরিশালের
কামানের" ভায় কামানের শব্দ শুনা যায়। কিসে এ শব্দ হয়,
তাহা কিছুই নির্মাণিত হয় নাই। এই নদীতে এ জেলার
সর্মাত জায়ার ভাটা পোলে ও প্রতি কোটালে বাণ ডাকে।

গোমতী।— মেখনার পরই গোমতী এ জেলার প্রধান
নদী। ইহা লালমাই পর্বাতে উৎপক্ষ হইরাছে। ইহা ধারা
ভোলা তিপুরা প্রায় সমান অংশে ছই ভাগে বিভক্ত হইরাছে।
ক্রেলার প্রধান বহর কুমিলা নগর ইহার ভীরে। নগরের

৮ মাইল উত্তরে এই নদী এই জেলার প্রবেশ করিরছে। বর্গালিকান্দির নিকট গোমতী মেখনার মিলিরাছে। বর্গালে এই নদী প্রবেশ হর। শীতকালে ও প্রীম্মকালে ইংার আনেক হল ইাটিরা পার হওরা যার। কুমিলা ব্যতীত ইহার তীরে জাফরগঞ্জ ও পাঁচপুখুরিরা নামে আর হুইটী প্রধান হান আছে। এই নদী মোট ৬৬ মাইল দীর্ঘ, তমুধ্যে এ জেলার ৩৬ মাইল।

ডাকাতিয়া।—ইহা পার্কত্য ত্রিপুরা হইতে আদিয়া গুয়া গালী নামক স্থানে জেলা ত্রিপুরার প্রবেশ করিরাছে। ইহার মোট দৈর্ঘ্য ১৫• মাইল। ইহা পশ্চিম মুখে লাকার, চিতোসি ও হাজীপজের নিকট দিয়া পশ্চিম মুখে বহিয় দক্ষিণ মুখে ৬ই মাইল আদিয়া নোয়াথালী জেলার রাষপুর নামক গ্রামের নিকট মেঘনার মিশিয়ছে।

ভিতাস।—এই নদী এ জেলার উত্তরাংশে প্রবাহিত। লালপুরে চরের নিক্ট মেঘনায় পড়িয়াছে.। ইহার দৈর্ঘ্য ২২ মাইল। ইহার তীরে ব্রাহ্মণবাড়িয়া।

এত ত্তির মৃত্রী, বিজয়গাং, বুড়ীগাং প্রভৃতি আরও কহ-গুলি কুদ্র নদী আছে। এই সকল নদীর ৮টী বড় পার্ঘটা আছে। গোমতীতে কুমিলা, কোম্পানীগঞ্জ ও মুরপুর; মৃহ-রীতে ভভাপুর, পভরাম ও কারচুনি; তিতাসে উলানী সংয় ও বিজয়গালে নয়ানপুর নামক স্থানে পারঘাটা আছে।

সমগ্র জেলার ১০৪টা থাক আছে, তল্মধ্যে চাঁদপুরের খান ও গোকর্নথাক বিশেষ বিখ্যাত। এই জেলার বৃহৎ বৃংধ বিলও আছে, তল্মধ্যে সরাইল প্রগণার আটকোগা বিন, আলতা বিল, বড়ালে বিল, চাল্তার বিল, কার্জ্না বিন, ককাই বিল, খোলধারী বিল, ব্রদ্থোত প্রগণায় বড় বিন, বাদ্চাড় বিল ও ফুর্নগ্র প্রগণায় মন্ধারী বিলই বিশেষ বিখ্যাত। ইহার কোনটী > বর্গ মাইলের কম নহে, বড়ালে বিলটি ৫ ৯ বর্গ মাইল বিস্তৃত।

এ জেলার উত্তরাংশে ওট্কী: মাছের কারবার আছে। তাহা ঢাকা ও চট্টগ্রামে রপ্তানী হয়।

জেলা হইতে শীতলপাটী নির্মাণোপযোগী তৃণ ও গেলি বহল পরিমাণে রপ্তানী হয়। মেঘনার অনেক চরে এক প্র^{বার} থাগড়া জন্মে, তাহাতে লোকে সামান্ত সামান্ত বেড়া বাগে।

এ দেশের অধিকাংশ ক্ষেত্র জলা বলিয়া এ দেশের ধানগিছি খুব লখা হয়। সরাইল প্রগণায় ২৮ ফিট লখা বিচারি ছইতে দেখা গিয়াছে। এই জাতীয় ধানের মধ্যে বৈশানী, কালামাণিক, বনগজা ও দিঘাই প্রধান।

वालमाहे পाहाए ३৮१३ बृहादम क्वेंग लोर्शन

আবিষ্কৃত হয়, কিন্তু লৌহের অবস্থা ভাল নহে ও ধনিতে বেশী কয়লা না ধাকায় ধনির কার্য্য আরম্ভ হয় নাই।

এদেশে আয় অতি অবস্ত। অস্ত স্থানের স্থায় আমকাঠ তত ভাল নহে। স্থারী, বেত, তাল, থর্জুর প্রভৃতির রসে আর হয়। এথানকার বনে হতী, বাজ, চিতা, বস্ত শ্কর, শুগাল ও মহিবই বেনী। কতকগুলি পাথীর (মাছরাকা প্রভৃতির) পালক সমেত চামড়া এদেশের একটী লাভকর ব্যবসায়। ইহা চীন ও ব্রেফা চট্টগ্রাম দিয়া রপ্তানী হয়। মহিবের চপ্রের ব্যবসায়ও আঁছে।

াত্রপুরার তিপারা নামে একদল অসভ্য অধিবাসী
আছে। ইহারা বাঙ্গালীদিগের সহিত মিশে না। ইহারা
পার্কান্ত তিপুরা হইতে কর্মোপলক্ষে আসিয়া বাদ করিতেছে। ইহাদের ভাষা অতয়, কিয় ভাহার কোন বর্ণমালা
নাই। এক প্রকার বিক্রত হিন্দুধর্মই ইহাদের ধর্ম। ইহারা
যে প্রণালীতে চাষ করে, তাহাকে জ্মিং বা জ্ম বলে।
বন কাটিয়া গুকাইবার জন্ম ফেলিয়া রাঝে, পরে তাহাতে
আমি দিয়া প্ডাইয়া ফেলে। এই ছাই সারের কাজ করে।
পরে বর্ষার মুখে দা দিয়া গর্জ করিয়া ধান, তুলা, কাঙ্গ নি
প্রভৃতি দকল শস্তের বীজ একত্র মিশাইয়া ঐ গর্জের মধ্যে
ফেলিয়া দেয়। আর কোন পাট করে না, বেশী রৃষ্টি না
হল্ল দকল ফদলই ভাল হয়। যথন যে শস্ম পাকে, তাহাই
ভাঙ্গিয়া আনে। সক্রেশ্বে কার্পাদ ভাঙ্গে। [ভিপারা দেখ।]

সরাইল পরগণায় এক প্রকার মসলিন কাপড় বুনা হয়,
গাহাকে ভালিব বলে, ইহা ঢাকার বিখ্যাত সবনাম মসলিন
হইতে কোন অংশে হীন নহে। ইহার স্ভা হাতৈ কাটে।
এতদ্রিল নীতলপাটির ব্যবসাও বেশ বিস্তৃত। চপটা নামক
খানে গত শতাকীতে ইংরাজনিগের অধীনে বাফ্তা কাপডের কারবার ছিল। প্রায়াধিং বংসর হইল এই কুঠি বন্ধ
হয়া গিবাছে।

তিপুরা জেলায় ইংরাজ-রাজত্বের ইতিহাস। ১৭৬৫ খুটান্দে বালানর অন্তান্ত স্থানের সহিত তিপুরাও ইংরাজের হত্তে পতিওঁ হর। ইহার পূর্বে ১৫৮৮ খুটান্দে ত্রিপুরা ও নোয়া-খালী সরকার স্থবর্গ্রামের অধীন ছিল। ১৭৩০ খুটান্দে সরকার স্থবর্গ্রাম ও (১৬৫৮ খুটান্দে) স্থলতান স্থলা যে যে অংশ জয় করিয়া এই সরকারের অস্তর্ভুক্ত করেন, তাহা একর ১৩টা চাকলায় বিভক্ত হয়। তন্মধ্যে ত্রিপুরা ও নোয়া-ধালী চাকলা ভাহাজীরনগরের (ঢাকার) অধীন ছিল। চাক্লা কাহাজীরনগরে আবার, কতকগুলি জমীলারীতে বিভক্ত হয়। জালালপুরের জমীলারী তন্মধ্যে প্রধান বলিয়া

शगु इहेरछन। ১१२৮ थुडीरम स्वा था वानागारक २० है। "ইহ্তিমাম" নামক অংশে বিভাগ করেন। এই সময় পুর্বোক আলালপুর অমীদারীকে একটা 'ইছ্তিমামৃ' করা হয়। নোয়াখালী ও জিপুরা_৽এই 'ইহ্তিমামের' **অভ**র্গত हिन। ১१७৫ थुट्टोट्स देश्त्राद्यता ^{*}वानानात अधिकात পাইলে জালালপুরের শাসনভার রাজা হিমত সিংহ ও अभाव था नामक कृदेखन এमেनीय सभीमारवद इरछ দেওয়া হয়। তৎপরে ১৭৬৯ হইতে ১৭৭২ পর্যাপ্ত তিনজন ইংরাজের তত্ত্বাবধানে ছিল, ইহানের শাম মি: 'কেল্সাল, মি: ছারিস ও মি: ল্যান্বার্ট। ১৭৭২ খুটান্দে এক বাক্তিকে কালেক্টর উপাধি দিয়া তাঁচার হতে শাসন-ভার দেওয়া হয়। ১৭৭৪ খুষ্টান্দে গ্রোভিন্দিরাল কাউন্দিন স্থাপিত হয়, তদব্ধি ১৭৮০ খুষ্টাব্দ পর্যান্ত কাউন্দিলের নিযুক্ত নায়েবগণই রাজস্ব সম্বন্ধে সমস্ত কার্য্য করিতেন ও অত্য কার্য্য করেক জন চিহ্নিত ইংরাজ কর্মচারী কর্ত্ব সম্পন্ন হুইত। ১৭৮১ খুষ্টাবে নোনাথালী ও ত্রিপুরা স্বতন্ত্র विकाश विवास शंभा रुप । करवक्कन है दाक कर्मा होती व रूप এই নৃতন বিভাগের ভার থাকে, কিন্ত তাহাদের হাতে • माक्षिद्धेरित कमजा हिन ना । (भर्ष ১৮২२ थृष्टीरम विश्रा ও নোয়াখালী আবার বিভক্ত হইয়াছে। ইহার পরেও সীমা লইয়া ও পরগণার ব্যবস্থা লইয়া সময়ে সময়ে নানা পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে।

এই জেলার তিনটা উপবিভাগ আছে—সদর উপবিভাগ, চাঁদপুর ও ব্লাহ্মণবাড়িরা উপবিভাগ। সদর উপবিভাগে কুমিল্লা, মুরাদনগর, দাউদকান্দি, চাঁদিনা, জগরাথদীঘি ও লাক্ষাম্ এই ,ছয় থানা আছে। এই উপবিভাগে প্রায় ৪ হাজার ৭ শত প্রাম আছে। ব্রাহ্মণবাড়িয়ার কশবা, নবিনগর ও ব্রাহ্মণবাড়িয়া এই তিনটা থানা ও চাঁদপুর বিভাগে চাঁদপুর ও হাতীগঞ্ল এই তৃই থানা আছে। সমগ্র জেলায় ১১৭টা পরগণাআছে। এই জেলার পরিমাণ কল ২৪৯১ বর্গ মাইল। লোকসংখ্যা ২৫,১৯,০০৮, ইহার মধ্যে মুসলমানের সংখ্যাই ১ লক্ষণ হাজার।

পার্কত্য জিপুরা।—এই স্থান তিপুরার প্রাচীন বাজবংশের অধীনে আছে। রাজা ইংরাজরাজের মিত্ররাজ মধ্যে
গণ্য। ইংরাজের পক্ষ হইতে একজন প্রণিটকাল এজেণ্ট
এই রাজসভায় থাকেন। আগরতলা নামক স্থানে রাজধানী,
হাউড়ে নলীর উপরে এই নগর অবস্থিত। এই রাজ্যের
উত্তরে আগামের অন্তর্গত শ্রীহট জেলার দক্ষিণে বাজালার
অন্তর্গত নোয়ধালী ও চট্টগ্রাম, পূর্কে লুসাই ক্ষেশ এবং
চট্টগ্রামের পার্কত্যে প্রদেশ, পশ্চিমে বাজালার অন্তর্গত জেলা

ত্তিপুরা। ত্তিপুরারাজের পার্কতা রাজ্য ব্যতীত জেলা তিপুরার মধ্যে চাক্লা রৌসনাবাদ নামে এক বৃহৎ জমীদারী আছে, বৃটীশগবর্মেন্টকে ইহার কর দিতে হয়। সমগ্র রাজ্য রাজার বাহা আর হয়, এই জমীদারীতে তদপেকা বেশী আর হইয়া থাকে। মন্তবতঃ রাজা মুসলমানদিগের করদ ছিলেন, সমত্র ভূতাগের জ্বন্থ তিনি মুসলমানকে কর দিতেন। মুসলমানেরা লুনাইদিগের হস্ত হইতে রাজ্যের উৎপাত দ্ব করিবার জ্ব্যু সন্তবতঃ ইচ্ছা করিয়াই পার্কত্য প্রদেশ ব্যুজার হস্ত হইতে কোন দিন লইতে চেটা করেন নাই। এই রূপেই বোধ হয়, রাজার রাজ্যে কতকটা করিদ জমীদারী ও কতকটা আধীন রাজ্যের স্প্রিইয়া থাকিবে।

প্রতি রাজার মৃত্যুর পর উত্তরাধিকার লইয়া বড় গোল ঘটে। উত্তরাধিকারপ্রার্থীরা কুকিদিগের সহিত মিলিত হুইয়া মহা যুদ্ধবিগ্রহ উপস্থিত কমেন। রাজা স্বীয় উত্তরা-•ধিকারী নিরূপিত করিয়া থাকেন। যিনিভবিষ্যতে রাজা **क्टेंट्रिन, डांशांत डेमार्वि युवबाझ, युवब्राद्मब शत वफ्**ठीकूत পদ। রাজার মৃত্যুর পর যুবরাজ রাজা হন ও বড়ঠাকুর যুবরাজ হন। রাজার পুত থাকিলেও যুবরাজ রাজত্ব . পाইবেন। यनि ताला युवतालानि नियुक्त कतित्रा ना यान, তবে রাজার জ্যেষ্ঠ পুত্র রাজা হন। এইরূপে যুবরাজ রাজা व्हेटन जिनि वर्फ़ीकूब्रक्टे यूवबाल भन निट्ड वांधा थाटकन । যদি জীবিত থাকেন, বড়ঠাকুরও এক দিন রাজ্য পাইতে পারেন। পুর্বেই ইউ ইতিয়া কোম্পানী প্রত্যেক রাজার রাজ্যারোহণের সমর কিছু নজরাণা পাইতের এবং তাঁছারা পোধাক, থেলাৎ ও সনন্দ প্রাদান করিতেন। বর্ত্তমান কালে রাজা অপেকাক্ত স্বাধীন ভাবে চলিতে পারেন। ১৮৭১ अहाम रहेरा अन्यन शनिष्ठिकान अव्यक्ति नियुक्त इहेग्रा-ছেন। রাজার সহিত ইংরাজের কোন সন্ধি নাই। প্রত্যেক রাজ্যারোছণের সময় এখন বুটাশগবর্মেণ্টকে পার্মত্য ত্রিপুরার এক বংসর রাজ্যের অর্দ্ধেক অংশ উত্তরা-विकात-कत्र (succession duty) निरु इस्रा

রালা কতকটা খেডাচারী। রাজার ইজ্ঞানত আদেশই আইন। ইউকালর-নির্মাণ, পৃক্ষরিণী-ধনন ও বিবাহাৎসবে পালকী ব্যবহার করিতে রাজাদেশ প্রয়োজন হয়। রাজা চিরামুগত প্রথাগুলি মানিয়া থাকেন। রাজকর্মচারীয়া প্রায় সকলেই রাজার স্বদম্পর্কীয় ব্যক্তি। স্মনেক পদ আবার বংশগত হইয়া গিয়াছে, এইজস্ত স্মনেক সময়ে ১০০২ বংসরের বালকেও জ্বোর ক্ষিশনরের তায় উচ্চ পদে প্রতিষ্ঠিত হইতে দেখা বায়।

১৮৭০ খুটান্দে বালালাগবর্মেন্ট হইতে বাবু নীলমনি দাস নামে একজন বিচক্ষণ বালালী ত্রিপুরা রাজ্যে দেওবার নিযুক্ত হন, ইহার হল্ডে রাজ্যের মথেট উন্নতি হইনাছে: রাজ্যের পরিমাণ ৪০৮৬ বর্গ মাইল, লোক সংখ্যা প্রায় এর লক্ষ। নীলমণি বাবু এখানে বৃটীশগবর্মেন্টের দৃষ্টাক্তে বাবহাণর সভা, ফৌজদারী আইন, দেওরানী আইন, প্লিস আইন, তামাদি আইন ইত্যাদি প্রচলন করিরাছেন। কিন্তু রাজ্য দেশ সর্ক্ষোপরি এখনও প্রবল আছে।

পার্কভা ত্রিপুরার সমতলবাসী ও পর্কতবাসী এই বিধি প্রজা আছে। সমতলবাসী প্রজারা জেলা ত্রিপুরার লোকের ন্থার। পশ্চিম সীমার ছুই ক্রোশ প্রশস্ত স্থানে এর নোরাখালী, জেলা ত্রিপুরা ও চট্টগ্রামের সীমারের ইহাদিগের বাদ। পর্কতবাসীরা খানাবাড়ীর প্রজা নামে অভিহিত। পার্কভা গ্রামগুলির প্রভাতটীতে একজন দর্দার আছে, সেই সন্দারের নামের পর 'বাড়ী' শক বোগ করিয়া সেই গ্রামের নামকরণ করা হয়।

এই প্রদেশ সাধারণতঃ পর্বতময়। ভূমি পশ্চিম হইতে উচ্চ। ১ ৬ টা পর্বতমালা সমাস্তরাল ভাবে চলিয়া গিয়াছে। প্রত্যেকটীর মধ্যে প্রায় ৬ ক্রোশ ব্যবধান। পর্বতে বাশবনই অধিক, নিম্ভূমিতে ফলাও বেতবনই বেশী। পূর্কদিকের थ्यधान পর্বতের নাম জাম্পুই; ইহার সর্ব্বোচ্চ চুড়া বেড লিঙ্গ শিব ৩২০০ ফিট উচ্চ। গোমতী, হাওরা, খোগই, বলাই, মন্থু, জুরি ও ফেনী এই কয়টী নদীই প্রধান। এখানে অঙ্গলের বড় বড় গাছের গুঁড়ি কাটিয়া নদীক্তে ফেলিয় ভাদাইয়া আনে। এই দকল কাঠে অতি উত্তৰ নৌগ इम्र। लूपारेशन अकरन तृहर तृहर त्वाड़ा वा वामामर्ग मातिया थारक, देशाता रमदे मर्लित मान व्याहात करता জাম্পুই ব্যতীত এদেশে আরও করেকটা প্রধান পর্বত্যানা আছে, (১) দেবভার মুড়া-প্রধান শিখর চাঁপামুড়া, বড়-ম্ডা, শৈহন মুড়া, দেবতার মুড়া, শাহেলি মুড়া; (২) আঠা মুড়া-প্রধান শিখর চূড়ামণি, আতারমুড়া, লারিমুড়া, জুগ मूड़ा ; (७) वाहिया পर्वाड-श्रेथान निथंत वाहिया, माहिया, पार्गाकाति; (8) मत्रदेवक भर्कछ—निश्रत मत्रदेवक; (4) नक्डबारे পर्वड—निधंब (फक्रिश्रहे, निमवानिमा; (७) मक्ष्यनेष्- अधान निश्त मक्न।

গোমতী নদী—আঠারমুড়। পর্বত হইতে চার্মা⁹
লক্তরাই পর্বত হইতে রার্মা নামক ছইটা নদী নি^{বৃঠ}
হইরা ডুমরা নামক জল্লপ্রণাতের কিছু উর্ক্লে একল ^{হুইটা}
গোমতী নাম ধার্শ করিবাছে। কানীগাল ও পি^{ভারাদ}

_{নামে} ছইটা উপনদী আছে, বিবিবালার নামক গ্রামের নিকট _{জেলা} ত্রিপুরার প্রবেশ করিয়াছে।

মসুনদী – সক্তবঙ্গ পর্বতের ধোইশিব শিধরে উৎপন্ন হইরা শ্রীহটে প্রবেশ করিয়াছে। দেব ও জুলাই নামক ইহার গুইটী উপনদী যথাক্রমে কামনাথ ও কদমহাটা নামক থানে ইহার সহিত মিলিত হইরাছে।

এই সকল নদীতে পানসী, ডিক্সী, শালতি প্রভৃতিই চলে, ত মণের বোঝাই নৌকা প্র্যান্ত চলিতে পারে। পর্বতের ভানে ভানে কয়লা পাওয়া যাইতে পারে। নানা প্রকার পাথর পাওয়া যায়, কিন্ত চ্পাপাথর মোটেই পাওয়া যায় না। কামনাথ ও শিপ্রি পর্বতে ছইটা নদী আছে, তাহাদিগকে ভুনচড়া'বলে। এই নদীবয়ের উৎপত্তিত্বের জল লবণাক্র ও উষ্ণ। জাম্পুই পর্বতে একটা লবণোৎস আছে।

বন মধ্যে হক্তী ও গয়াল বহু সংখ্যক দেখা যায়। হাতী ধরিবাব জন্ত রাজদরবার হইতে অনুমতি লইতে হয় ও কর দিতে হয়। প্রত্যেক হাতী বেচিবার সময়ও তয়্লা হইতে বাজপ্রাপ্য বলিয়া এক-অইমাংস রাক্লাকে দিতে হয়। বন ১ইতে শুকপকী ধরিয়া অন্ত দেশে চালান দিতে হইলে রাজা ভাহার উপর একটা কৃত আদার করেন। এখানকার টিয়া, মখনা ও চনদনা অতি বিখ্যাত ও আদৃত। বর্ষার সময়ে জক্ষল বিভাগে মশা, ভাঁশ, মাছি, জোঁক এত বেশী হয়, যে বনবাসীরাও সময়ে সময়ে বাসস্থান হাড়িয়া অন্ত গ্রমন করে।

পার্কতি তিপুরা আগরতলা ও কৈলাসহর এই চুই বিভাগে বিভক্ত। আগরতলা বিভাগে ৪২ হাজার ও কৈলা সহর বিভাগে ছাজার পার্কতীয় লোকের বাসঁ। সমতল খানে মোট ২৭ হাজার লোকের বাস। একুনে পার্কতিয় তিপুরায় প্রায় ৭৫ হাজার লোকের বাস।

পার্ব্বতীয় জাতি তিন ভাগে বিভক্ত। (১) তিপারা বা টিপ্রা [ তিপারা দেখ।], (২) জামাইতা, (৩) নওয়াতিয়া ও (৪) রিয়াল। এখানে কৃকি ও লুমাইদিগেরও বাস আছে। [ কৃকি ও লুমাই দেখ।] পার্ব্বতীয় উপত্যকায় মনিপ্রী জাতিও বাস করে। কুমূল, লুয়াল, ময়য়াল্ও মেই-থেই জাতীয় মনিপ্রীই অধিক।

এখানে এই কয়টা জাতীয় উৎসব হয়। (১) চৈত্র মাসের শেষ দিন ইহারা বর্ষবিদার উপলক্ষে একটা ভীৎসঁব করে। শুহাতে ভোজ ও আমোদ আফ্লাদই বেনী, উৎসব ক্রমাগত ৭ দিন চলে। (২) আখিন মাসে ফসল কাটিবার সময় "বিকটোল" বা নবায় নামে উৎসুব হয়। পার্ক্ষতীয় লোকে এই উৎসব করে। এই উৎসবে দেবতার নিকট ক্ষমীয় উর্ব্যবতা প্রার্থন। করা হর। (৩) অগ্রহারণ মাসে হৈমন্ত্রিক ধান্ত কটো হইলে নৃতন মত্মের এক উৎসব হর। ইহারা এই উৎসবে 'মত্মই' নামক ধান্তে এক প্রকার কাঁজি প্রস্তুত করে। ইহাই পার্কাতীরগণের অতি • প্রির পেয়। এই উৎসবে দেবতাকে নৃতন চাউল উৎসর্গ করিয়া দেয় ও সক্সে নৃতন চাউলের অর ধার; ছাগল, পক্ষা, শ্কর প্রভৃতিও বলি দের।

हेशामत अधान छे परवत्र नाम '(कत्र शृका'। मर्जार्गम শাস্তির জন্ম আধাঢ় মাসে এই উৎসব হয়।° গোপনে প্রত্যেকে নিজ নিজ বাড়ীতে উৎসব সম্পন্ন করে। উৎসবটী আড়াই দিন হয়। সকলেই প্রথমদিন রাত্রি দশটা হইতে ভূতীয় দিন প্রাত:কালে ছয়টা পর্যান্ত বাড়ীর দার বন্ধ করিয়া রাথে, কেছ বাছিরে যাইতে পারনা, মাঝের দিন অতি অন্ত-ক্ষণের জন্ম হইবার বৃঞ্চিরে যাইতে পারে, নতুবা অন্ত সমরে নিষিদ্ধ। আগরতলায় রাজগাসাদের নিকট একটা স্থান বাঁশ দিয়া ঘেরা আছে। বাঁশের ডগাগুলি অভি ফুল্র রূপে কেয়ারি করিয়া ছাঁটা। ইহার মধ্যে উৎসবটী সম্পর হয়, ছাগশ্করাদি বলি দেওয়া হয়। পুর্বে নরব্লিও হইত। এই উৎসবের সময় ঐ আসরের বাঁশের বেড়া বদলান হয়। এই করপুজায় রাজা হইতে আপামর সাধা-রণে যোগ দিতে বাধ্য। এ সময়ে ইহারা অনেকগুলি নিষেধ বিধি প্রতিপালন করে। রাজা হইতে সকলেই জুতা পায় দিতে পারেন না, ছাতা মাথায় দিতে পারেন না, বলুক ছুँ ড়িতে ও অधि ज्ञानिতেও পারেন না। যে ইহা नज्यन करत, সে চতুর্দশ দেবতার নিকট অপরাধী হয় এবং পুরোহিত . তাহার জরিমানা করেন। রাজাও রাজার আগ্রীয়গণ এই উৎসবে নাশাবিধ পাপক্ষার্থ অনেক অর্থ দান করেন।

বিদেশীর বাস।—চট্টগ্রামের পার্ক্তিয় প্রদেশ হইতে লুসাই যুক্তের সময় 'বেগার' দিবার ভয়ে অনেকগুলি চাকুমা জাতীয় লোক এদেশে আসিয়া বাস করিয়াছে।

গ্রাম নগরাদি।—এক আগরতলা ভিন্ন নগর পদবাচ্য কোন স্থানই নাই। কৈলাসহর ও ত্রিপুরার প্রাচীন রাজধানী উদয়পুর নামক অপেকাকৃত বৃহৎগ্রামণ্যই সহর পদবাচ্য।

আগরতলা কুমিলা হইতে ৩০ মাইল দুরে। এখানে অট্টালিকার বিশেষ আজ্মর বা সৌন্ধ্য নাই। সামান্ত বিতল অট্টালিকাই রাজবাটী। এখানে নয় শত মাত্র লোকের বাস। পথ ভাল নাই।

কৈলাসহর—পর্বতম্লে একথানি গ্রাম মাজ। • একটা উপবিভাগের সদর হান বলিয়া এথানে বাজার আনাছে। এথানকার বাজারে তুলার বিনিময়-বাণিকা প্রচলিত আছে। তামাকু, স্পারী ও শুক মৎস্তের সহিত তুলার বিনিময় হয়।

উদয়পুর—গোমতীর বামতীরে। প্রাচীন রাজধানী উদয়পুর হইতে কয়েক কোশ দ্রে অবহিত। এখানে পার্বভীয় তুলার হাট হয়। বাহাত্রী কঠি, বাঁশ ও তুলার বিনিময়ে পাহাড়ীয়া তামাকু, লবঁণ ও ওক মংস্ত লইয়া যায়। ১৮৬১ খৃষ্টাব্দে বর্তমান উদয়পুরে কুকিরা বড়ই অভ্যাচার করিয়াছিল, অধিকাংশ গ্রামের লোককে মারিয়া কেলিয়া অনেকীকে ধ্রিয়া বইয়া গিয়াছিল।

বর্তুমান আগরতলা হইতে ২ ক্রোশ পূর্ব্বে প্রাচীন আগর্ব্ব তলা বর্তুমান। পূর্বে ১৮৬৪ খুটান্দে এথানে ১ হাজার লোক ছিল। রাজাদিগের বাসও পূর্বে এথানেই ছিল। ১৮৪৪ খুটান্দে নৃতন আগরতলায় রাজধানী হয়। প্রাচীন আগরতলার রাজবাটী এথনও ভন্ধপ্রায় অবস্থায় বর্ত্তমান। তথানে রাজা 'রাণীদিগের অনেকগুলি শ্বরণস্তম্ভ আছে। পূরাতন রাজবাটীর নিকটে একটী ক্ষুদ্র মন্দিরে প্রহাড়ীদিগের চতুর্দশ দেবভার প্রতিমা (পিত্তল নির্মিত মুণ্ড মাত্র) আছে। এই মন্দিরের নিকট দিয়া ঘাইবার সময়ে সকলেই এমন কি মুস্লমানেরাও প্রতিমাকে প্রণাম করিয়া থাকে।

প্রাচীন উদয়পুর ষোড়শ শতাকীর শেষার্দ্ধে রাজা উদয়-মাণিক্য কর্তৃক রাজধানীতে পরিণত ও তাঁহার নামে কণিত হয়। ইহাও গোমতীর বামতীরে অবস্থিত। প্রাচীন রাজ-বাচী প্রভৃতি এখনও গভীর জক্ষল মধ্যে বর্তুমান আছে। এখানে একটী ৮ ফিট্ দীর্ঘ লোহ কামান আছে। লোকের বিখাস ইহাতে ক্ষ কাড়াইলে গুভাগুভ জানিতে পারা যায়। গণিকেরা কামান দেখিলেই সেলাম করে। এ কামান কাহার, কিরুপে কেলাথা হইতে আসিল কেহ বসিতে পারে না।

এই প্রাচীন উদয়পুর একটা পীঠস্থান। এথানে দেবীর নাম ত্রিপুরাদেবী ও ভৈরবের নাম ত্রিপুরেশ। এথানে সতীর দক্ষিণ পদ পতিত হইয়াছিল। ভৈরব লিম্ব খেতপ্রস্তরোম্ভ্ত। ত্রিপুরাদেবীর মন্দিরে অনেক যাত্রীর সমাগম হয়। পীঠমালায় এই পীঠের উক্তি আছে,—

"ত্রিপুরায়াং দক্ষপাদৌ দেবতা ত্রিপুরা মতঃ:।

ভৈরব: ত্রিপুরেশশ্চ সর্বাভীষ্টফলপ্রদ:॥" (পীঠমালা ১৫ শ্লোক)

ভারতচক্স ভৈরবের নাম নল বলিগা উল্লেখ করিয়াছেন।
দেবীর মন্দিরের নিকটে কতকগুলি ক্ষুত্র অট্টালিকার শার্ধদেশে
বালালা অক্ষরে থোদিত প্রস্তুর-লিপি আছে, মন্দিরের নিকটে
একটী বৃহৎ পরিষার ভলের দীর্ঘিকা আছে, ইহার আকার
ভিষাক্বতি। ইহার তীরে ছ্প্রবেশ্য অক্ষন।

ত্তিপুরার ইতিহাস।—বালালা ভাষায় লিখিত 'রাজমালা' নামে একথানি কাব্য গ্রন্থ আছে, ইহাতে ত্তিপুরার রাজবংশের ইতিহাস লিখিত। ত্তিপুরা অতি প্রাচীন কাল হইতে এ পর্য্যস্ত একটী রাজবংশের অধীনে আছে। রাজমালার মত্তে এই রাজবংশ চন্দ্রবংশোভূত। চন্দ্রবংশ যযাভিপুত্র জক্তা হইতে এই বংশের উৎপত্তিগণনা করা হয়। কিন্তু বহুকাল সবেষণার পর ছির হইয়াছে যে, এই বংশ শানজাতি হইতে উৎপর, শানজাতি লৌহিত্যবংশ নামে অভিহিত হয়। ইংরাজেরা এই জাতির ব্যাণ্যাকালে ইহাকে Tiboeto Burman বলেন।

ত্তিপুরার রাজগণের প্রতিষ্ঠিত একটা অব্দ এখন ও প্রচলিঃ আছে। এদেশে প্রচলিত সন অপেক্ষা ৩ বৎসর পুঞ্ ত্তিপুরাক প্রতিষ্ঠিত হয়। এখন ত্তিপুরাকের ১৩০৬ চলিতেছে।

যথন চন্দ্রংশীয় রাজগণ ভারতে সমাট ছিলেন, তথন ভারতের পূর্বসীমান্তবর্তী হিড়িম্বদেশের দক্ষিণস্থ পর্বতমঃ রাজ্য "কিরাত" দেশ নামে কথিত হইত। .[কিরাত দেখা চন্দ্রবংশীয় রাজা য্যাতির চতুর্থ পুত্র ভারতে স্ঞাট্ হন: রাজমালার মতে দ্বিতীয় পুত্র জভা পিতৃপরিত্যক্ত হইয়া এই কিরাত দেশে আসেন। কিরাত দেশের কপিলা ( এক্ষপুত নদীতীরে কতিপয় কিরাতরাজ্যের সহিত ক্রন্থার যুদ্ধ হয়। এই যদ্ধে কিরাতদিগকে পরাজিত করিয়া জ্রন্থা হাকা হন এন কপিলাতীরে ত্রিবেগ নামে নগর নির্মাণ করাইয়া তথা রাজধানী করেন। ক্রন্তাকে ষ্যাতি শাপ দিয়াছিলেন, "জ্লো তুমি আমার হৃদয় হইতে জন্মগ্রহণ করিয়াও খীয় বয়ন · প্রদান করিলে না, এই কারণে তোমার প্রিয়তর অভি^{প্রায়} কোগাও সিদ্ধ হইবে না। যেখানে অশ্ব, রথ, হস্তী, রাজগোগ যান, গো, গৰ্দভ, ছাগ, শিবিকা প্ৰভৃতি ছারা গমনাগমন হইতে পারে না, সর্বদা ভেলা ও প্লুতগতি দারা ^{যাতায়াত} করিতে হয়; যেথানে রাজশব্দ প্রাসিদ্ধ নাই, তুমি খবংশে সেই দেশে অবহিতি করিবে।" (মহা, সম্ভব, ৮৪ অধার) মহাভারতের মতে ইহার বংশে 'ভোজগণ' উৎপর হইগ ছিলেন। (মহা, সম্ভব, ৮৫ অধ্যায়)

রাজামালার মতে, এই কিরাতদেশই জিপুরা এবং হ্যাতিপুত্র জত্যই এথানকার প্রথম রাজা। রাজমালার মতে জত্যর পর তাঁহার পূত্র ত্রিপুর রাজা হন। বিষ্ণুপ্রাণে ও হরিবংশে জত্যর হুইটী পুত্রের নাম পাঞ্ডরা যার, বক বি সেতৃ। এই সেতুর পৌত্রের নাম গান্ধার। ত্রীমদ্ভাগর্মক গান্ধারের পরবর্তী ৫ পুরুষের নাম পাওয়া যায়, কিছ ভর্গে তিপুর নাম নাই। পুরুষ মতে জত্যর পুত্র গান্ধার হুইবি গান্ধার দেশের নামক্রণ হর। এক্রপ স্থলে জত্য ভার্বে

পূর্মপ্রান্তে না আসিয়া পশ্চিমপ্রান্তে গমন করিয়াছিলেন, ভাছাই পৌরাণিক মতে স্বীকার্য্য।

যাহা হউক রাজমালার মতে উক্ত ত্রিপুর হইতে বর্ত্তমান কাল পর্যান্ত ত্রিপুরা একই রাজবংশের অধীনে আছে ও সেই সকল রাজার ধারাবাহিক নাম রাজমালায় আছে।

ত্রিপুর রাজ্যারোহণ করিয়া কিরাভরাজ্যের নাম পরি-বর্ত্তন করিয়া স্বীয় নামামুসারে ত্রিপুরা রাজ্য ও কিরাত হাতিকে ত্রিপুরা জাতি বলিয়া অভিহিত করেন। ত্রিপুর প্রজাপীড়ক ছিলেন এবং শিবদেবী হইয়া রাজ্য হইতে শৈবনাম লোপ করেন। ধর্মছেষী ত্রিপুরের অভ্যাচারে বান্ধণেরা ক্রমে ক্রমে অভা দেশে গমন করিতে লাগিল। কতকগুলি প্রধান প্রজা অত্যাচারীর হস্ত ইতে রাজ্যো-দারের জন্ম কামরূপাধিপতিকে আহ্বান করে, কিন্তু তিনি ত্রিপুরাপতির ভয়ে ভীত হইয়া সে বিষয়ে সম্মত হইলেন না। প্রজাগণ হতাশ হইয়া স্বদেশে ফিরিয়া আদিল। ইতি মধ্যে অপুত্রক ত্রিপুরের মৃত্যু হইল। বিধবা রাজ্ঞী সিংহাসনে আরোহণ করিয়া রাজ্য পালন করিতে লাগিলেন। ত্রান্ধ-त्वता तालवः म त्वाभ इम्र तम्बिमा भित्वत व्याताधना कतित्वन, শিব বর দিলেন, "তেমাদের ইচ্ছাপূর্ণ ছইবে, আমার ঔরদে বিধবা রাণীর গর্ভে এক স্থলক্ষণ পুত্র জন্মিবে।" কা**লে** তাহাই হইল। রাজী তিন চক্ষুবিশিষ্ট **পুত্র প্রস**ব ক্রিলেন, তাঁহার নামও ত্রিলোচন রাথা হইল। দশমবর্ষ ব্যসে তিলোচন রাজা হন। রাজা তিলোচন ক্রমশ: প্রজা-াণকে যুদ্ধবিদ্যা শিথাইয়া চতুঃপার্যন্ত রাজ্য জয় করিয়া সরাজ্যের প্রসর বাড়াইতে লাগিলেন। ইনিই ত্রিপুরপতিগণের मत्भा ताकिहरू, धवलहात ७ जातकी ध्राधम वावहात करता। তদ্বধি আজ পর্যান্ত উহা চলিয়া আসিতেছে। পার্শ্ববর্তী হিড়িম্ব দেশাধিপতি (কাছাড়ের রাজা) ত্রিপুরাপতি ত্রিলো-চনের সহিত সম্ভাব রাখিবার জন্ম তৎসহ স্বীয় ক্ফার বিবাহ দেন। মহারাজ তিলোচন শিবভক্ত ছিলেন এবং শিবাদেশে চ্ছ্ৰ্দশটা দেবপ্ৰতিমা প্ৰতিষ্ঠিত করেন। এই চ্ছ্ৰ্দ্দশ দেবতাই ত্রিপুরাপতিগণের কুলদেবতাক্সপে আজিও পুজিত হইতেছে।

"হবোমা হরিমা বাণী কুমারো গণকো বিধু:।"
থানি গঙ্গা শিথী কামো হিমাজিশ্চ চতুর্দশ ॥"
^{হর, উমা}, হরি, লঙ্গ্রী, সরম্বতী, কার্ত্তিক, গণেশী, চর্ক্ত, আকাশ,
^{* সমুজ,} গঙ্গা, অগ্নি, কাম, হিমালয় এই চতুর্দ্দশ দেবতা।

ত্তিলোচন এক যজাসূচান করিয়া বেদজ ব্রাহ্মণ আনম্বন করিবার জন্তু গদাসাগরক্ষেত্ত্বে লোক পাঠাইয়াছিলেন। ব্রাহ্মণছেবী ত্তিপুরের রাজ্মফালে বৈদক্ত ব্রাহ্মণগণ ত্তিপুরা ভাগ করার ত্রিলোচনকে এইরূপ আরোজন করিতে হর।
বঙ্গদেশের বেদজ ব্রাজ্ঞণেরা ত্রিপুর জীবিত আছেন বলিয়া
প্রথমতঃ ন্যাসিতে স্বীকৃত হন নাই; কিন্তু শেবে ত্রিপুরের
মৃত্যুসংবাদে বিখাদ হওয়ার টাহারা গিয়া ত্রিলোচনের যজ্ঞ
সম্পন্ন করেন। এই যজ্ঞে ক্লিরাত (ত্রিপুরা) ও কুকিদিগের সংগৃহীত বহুসংখ্যক হংস মহিবাদি বলিদান করা
হয়। হিড়িম্বরাজকুমারীর গর্ভে ত্রিলোচনের হাদশটী পুত্র
জয়ে। রাজমালার মতে এই সকল রাজপুত্র বিষ্ণু ও শিব
দেহের ভার অলপ্রতাল বিশিষ্ট হইয়াছিলেন। বর্জমানকালেও প্রবাদ আছে যে, রাজবংশধরেরা ঐরূপ লক্ষণাক্রাস্ত হইবেন।

রাজমালার ত্রিপ্রাধিপতি ত্রিলোচন যুধির্চিরের সমসাম-য়িক ছিলেন বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছেন। মহাভারতে किंद हैशंत्र नारमारद्वं नाहे, उत्त त्राक्य्य यखकार जीम কর্তৃক পূর্বাদেশ জয়কালে সাতজন কিয়াত নুপতির পরাজয় বিবরণ •আছে আর ঘোষ্যাত্রীর পর কর্ণকর্তৃক পূর্জদিক অমকালে ত্রিপুরারাজ্যের জমবিবরণ লিখিত আছে। ভারত-যুদ্ধে কোন পক্ষেই বোধ হয় ত্রিপুরাপতি উপস্থিত ছিলেন. না, আর রাজস্ম-যজ্ঞকালে উপস্থিত রাজভাবর্গের মধ্যেও তাঁহার মাম দেখা যায় না; কিন্তু ত্রিলোচন ও যুধিষ্ঠিরের সময় নিরূপণ করিয়া দেখিলে উভয়কে সমসাময়িক বলিয়া কিছুতেই বুঝা যায় না। তিলোচনের বংশাবলী রাজমালার যাহা প্রাদত্ত হইয়াছে তাহাতে দেখা যায় যে ত্রিপুরার বর্তমান রাজা বীরুচন্দ্র মাণিক্যের জ্যেষ্ঠ ভাতৃষ্পুত্র ব্রজেন্দ্র চন্দ্র পর্য্যস্ত ত্রিলোচন হইতে ১০৯ পুরুষ হইয়াছে। বর্ত্তমান প্রাক্তন্ত্রিদ-ুগণের মতে তিন পুরুষে এক শতাকীধরিলে ১০৯ পুরুষে ৩৬০০ বংসর হয় এবং প্রতি তিন পুরুষে শতাকী গণনায় অর্থাৎ প্রতি শতানীতে ৩ পুরুষ ধরিলে প্রতি পুরুষে ৬৩ বংসর হইয়া প্রতি শতাক্ষীতে যে এক বংসর অবশিষ্ট থাকে. ৩৬০০ বৎসরে দেই হিসাবে আর ৩৬ বৎসর পাওয়া যায়; এই ७७ द९मत ७ ১०৯ পুরুষে যে ७७०० द९मत हहेग्रांक्, তাহা এঁকুনে ৩৬৩৬ বৎসর হইতেছে স্বৃতরাং রাজমালার বংশাবলী অনুসারে ত্রিলোচন, ব্রজেন্দ্রচন্দ্র ইইতে ৩৬৩৬ বংসর পূর্বের বর্ত্তমান ছিলেন। বর্ত্তমান ত্রিপুরারাজের পূর্ববর্তী মহারাজ ঈশানচক্র মাণিক্যের ১২৭৭ বজান্দে ৩৪ বংসর বয়সে মৃত্যু হয়, তথন তৎপুঞ্চ ব্রঞ্জেক্তক্ত অভি শিশু। এখন যদি যুধিষ্ঠির কলিযুগের প্রথমে বর্ত্তমান ছিলেন বলিয়া স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে তিনি ব্রঞ্জের इहेट ४२७२ वरमत्र भूट्स वर्खमान हिल्लन विलाख इहेटव ;

কারণ মহারাজ ঈশানচজ্রের মৃত্যুর বংসরে কলিযুগের ৪৯৬৯ বংসর গত হইয়াছে। এই হিসাবে ব্ধিষ্টির ও তিলোচনে ১৩১০ বংসরের পার্থক্য দাঁড়াইভেছে। এই ১৩৩০ বংসরে প্রার ৪০ পুরুষের অভাব দেখা ঘাইতেছে; কিন্তু মহাভারতে বনপর্কেষ্থন ত্রিপুরা নাম পাওয়া যায়, তথন অমুমান করিতে হইবে যে তিলোচনের পিতা তিপুর যুধিষ্ঠিরের পূর্ববর্তী না ছউন ভাছার সম্পাম্রিক বটে। স্ভাপর্কে, ভীমের দিখিকরে বিথন কিরাতরাজোর নাম তিপুরা নাম নাই, কিরাড নামই আছে, "তথ্ন ইহাৰ ব্ঝিতে হইবে যে রাজস্য যজকালে ত্রিপুর বর্তমান থাকিলেও তথনও স্বরাজ্যের নাম পরিবর্তন করেন নাই। ইহাও সম্ভব। কারণ রাজস্য যজ্ঞের পর হুর্য্যোধন দ্যুতক্রীড়ায় পাণ্ডবগণকে ছাদশ বংসর বনপ্রেরণ করেন। এই বনবাদের শেষাবস্থায় ঘোষযাত্রা ঘটে। তৎ-পরে কর্ণ কর্তৃক ত্রিপুরা বিজিত ক্র, স্থতরাং ভীম কর্তৃক **জিরাতরাজ্য ক্তরের ঘাদশ বংসর পরে কর্ণ কর্তৃক ত্রিপুরা** नारम कितां जाका अप्र करा किছू अप्रखब नरह। • এই घटना হইতে অনায়াদে ত্রিপুরকে যুধিষ্ঠিরের সমসাময়িক বলা ঘাইতে পারে। রাজমালা মতে ত্রিপুর ফ্রহোর পুত্র। ইহা স্বীকার . করিলে ত্রিপুর যুধিষ্টিরের বহুপুর্ববর্তী হইয়া পড়েন, কিন্ত ত্রিপুরার একটা প্রবাদ আছে যে, "ত্রিপুর ক্রন্থার পুত্র নহেন কেঞাল উত্তর পুরুষ মাতে। ফ্রন্ছা হইতে থাবিংশ নূপভির পর ত্রিপুর সিংহাসনে আরোহণ করেন।" এই প্রবাদে বিখাস করিলে দেখা যার যে যযাতির তৃতীয় পুত্র ক্রছার অধস্তন ৩৩শ পুরুষে ত্রিপুর, আর যযাতির কনিঠ পুত্র পুরুর ৩৮ শ পুরুষে যুধিষ্ঠির বর্তমান, [মহাভারত আদিপর্কের সম্ভব পর্বান্তর্গত ১৫ অধ্যায়ে বৈশস্পায়ন কর্তৃক শেষ বিস্তৃত বংশ-ভালিকা দেখ ।] शोत्रांनिक विवदरण 81¢ श्रीकृत्यत अखत (১৫•।১৭৫ বংসরের পার্থকা হইলেও) ধর্ত্তব্য নহে। অভএব রাজমালার মতে ত্রিলোচনকে বুধিষ্ঠিরের সমসাময়িক স্বীকার করা অপেক্ষা মহাভারত মতে ত্রিপুরকে যুধিষ্ঠিরের সমসাম্বিক শীকার করাই সঙ্গত। কিন্তু এন্থলে বলা উচিত ঐ সকল घটना निः मत्मारह वैजिहानिक विनिन्ना श्रहण कर्ना यात्र ना। উহা পৌরাণিক আখ্যান্নিকা শ্বরূপ গণা করা ঘাইতে পারে।

রাজ্মালার মতে ত্রিলোচন ত্রিপ্রের পুত্র বলিয়া উক্ত হইরাছেন, কিন্তু ত্রিলোচনের জন্ম বিবরণের বে উপাধ্যান প্রাণত্ত হইয়াছে, তাহা অন্যাভাবিক বলিয়া স্বীকার করিতে পারা বায়।

কল্যক ধরিরা গণনার সময়েও দেখা গিরাছে যে যুখিটির ও ত্রিলোচনের মধ্যে যে ১৩৩৩ বংসর বা ৪৬ **পুরুষের অন্ত**র দাঁড়োইরাছে, ভাহা হইতে এক্সপ অসুমান করা বাইতে পারে বে উক্ত ৪০ পুক্র অথবা প্রায় সেই সংখ্যক করেক পুক্র জিপুরের ভারই দেবছিলছেবী ছিলেন বলিয়া রাজমালার করি শীর ইতিহাসে উক্ত দেবছিলছেবী রাজগণের উল্লেখ না করিয়া একেবারে শৈব ও ছিল্লভক্ত নূপতি জিলোচনকে শিববরে প্রাপ্ত শিবপুল্ল বলিয়া বণিত করিয়া গিয়াছেন।

ত্রিলোচন যে বাস্তবিক চক্রবংশোন্তব নহেন, রাজমালাও উাহাকে শিবৌরসজ্ঞাত বলিয়া বর্ণনা করায়, তাহা প্রকারা স্তরে শীকার করাইয়াছেন। এদিকে পাশ্চাত্য গবেষণায় দ্বি হইয়াছে, যে মণিপুর রাজবংশের স্থায় ত্রিপুরার রাজবংশও শান বা লোহিত্য বংশোদ্ধত অথবা যদিও চক্রবংশীয় বলিতে হয় তাহা হইলেও তাহা প্রমাণের কোন বিশেষ স্থবিধা নাই, কারণ ইতিপুর্কেই দেখা গেল যে ক্রহা হইতে ত্রিপুরের মধ্যে ৩২ জনের নাম অভাব এবং ত্রিপুর হইতে ত্রিপোচনের মধ্যে ৪০ জনের নাম অভাব। কে জানে, এই উভয় সময়ের মধ্যে রাজ্য এক রাজবংশ হইতে অগর বংশের হস্তে যায় নাই।

যাহা হউক এথন রাজমালাধৃত ইতিহাদের অনুসরণ করা ষাউক। ত্রিলোচন বর্ত্তমান থাকিতে থাকিতে তাঁহার খণ্ডর হিড়িম্বপতির মৃত্যু হয়। হিড়িম্বপতি অপুত্রক ছিলেন। ত্তিপুরার ছাদশ জন রাজকুমার মাতামহ রাজ্যের উত্রা धिकादी इहेमा श्रदम्भात्र बाब्गाधिकात गहेमा विवाह अनुव হটলে, ত্রিলোচন স্বীয় জোষ্ঠ পুত্রকে হিড়িম্ব রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত করিয়া ভ্রাভৃবিরোধ শাস্ত করিলেন। মহারাজ ত্রিলোচন দীর্ঘকাল রাজত্ব করেন, তাঁহার ভার দীর্ঘার আবা আনর কেং ত্রিপুরার সিংহাসনে আবোহণ করেন নাই। ত্রিলোচনের মৃত্^{ার} পর তাঁহার দিতীয় পুত্র দক্ষিণ পিতার আদেশামুসারে ত্রিপুরার সিংহাসনে আরোহণ করেন, কিন্ত তাঁহার জোর ভাতা মাতামহরাকা হিড়িখদেশে রাজা হইয়াছিলেন, তিনিই পৈতৃক त्राकामाञ्चर्य त्राका पक्तिरात्र विकरक मटेमरङ व्याधमत रन। সাতদিন ক্রমাগত উভয় ভ্রাতার যুক্ক হইলে হিড়িম্বরাক্স মধ্যম ভ্রাতাকে পরান্ধিত করিয়া পিতৃরাক্য অধিকার করেন ^{এবং} উভয় রাজ্য একত শাসন করিতে লাগিলেন। রাজাচুটি রাজা দকিণ ও তাঁহার অপর দশ ভাতা ত্রিপুরা পরিতাগ করিয়া থালানসানদী পার হইয়া একস্থানে বাসস্থান ^{বির} করেন। মহারাজ তিলোচনের এই জ্যেষ্ঠ পুতের ^{নার} রাজমালায় পাওয়া বায় না।

কিছুকাল পরে প্রজাবিজোহে হিড়িখরাজ রাজাচ্তি ও প্রবাসী রাজা দক্ষিণ পুনরার সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত হন। মহারাজ দক্ষিণের পর তৎ পুত্র তরদক্ষিণ রাজা হন। তাঁট হইতে প্রমার পর্যান্ত ৫০ জন রাজার রাজাছকালে জিপুরার কোন বিশেষ ঘটনা ঘটে নাই। মহারাজ প্রমারের পুত্র কুমার রাজা হইরা শুমিলনগরে শিবদর্শনার্থ গমন করেন। শুমিল নগর শিবের প্রির ক্ষেত্র বিশিরা বিখ্যান্ত ছিল। এই শুমিল নগর কোথার তাহা জানা যার না, তবে চট্টগ্রামের উত্তর্মাক্ত্র পর্বতের স্থপ্রসিদ্ধ শস্তুনাথ শিবসন্দির জাতি প্রাচীন কালে জিপুরাধিশতি কর্তৃক নির্দ্মিত বলিয়া কথিত হয় এবং এখনও সেই মন্দির সংকারের ব্যর জিপুরা-রাজাকোর হতে দেওয়া হয়। বাধ হয় এই শ্রানই সেকালে প্রামননগর নামে কথিত হইত।

রাজমালার ত্রিলোচন হইতে অধস্তন ২৭শ পুরুষ
মহারাজ ঈশরকে 'ফা' উপাধিযুক্ত দেখা যায়। ত্রিপুরা
ভাষায় 'ফা' অর্থে 'পিতা'। কোন কোন নূপতি গৌরবার্থ
এই 'ফা' উপাধি গ্রহণ করিতেন।

মহারাজ কুমারের পর তাঁহার পুত্র স্কুমার, তৎপরে তাঁহার পুত্র তক্ষরাও এবং তাঁহার পরে তৎপুত্র রাজ্যেশ্বর তিপুরার সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হন ৮ মহারাজ রাজ্যেশ্বর অতিশয় কোধনস্থতার ছিলেন। তিনি পুত্রলাভাশয়ে লিবাদ্দেশে তপস্তা করেন, কিন্তু তপস্তায় সফল না হওয়ায় কৃত্র হইয়া মন্দির মধ্যে শিবপ্রতিমার পদয়য় বাণবিদ্ধ করেন। শিব এই অপরাধে ত্রিপুরা ত্যাগ করেন। অবশেষে মহারাজ রাজ্যেশ্বর শিবের উদ্দেশে অতিকটে তুইটা নরবলি দিয়া তুইটা পুত্রলাভ করেন। সম্ভবতঃ এই সময় হইতে ত্রিপুরায় নর বলির প্রথম স্ত্রপাত হয়়। মহারাজ রাজ্যেশরের পর তাঁহার জের্ড পুত্র মিশলিরাজ রাজ্য হন। তিনি অপতাহীন ছিলেন বলিয়া তাঁহার পর তাঁহার কনিষ্ঠ ভাতা তেজাক ফা রাজ্য হইলেন। তাঁহার পর আর সাত জন রাজা হন; তাঁহাদের রাজ্য হ্লালে বিশেষ ঘটনা কিছু বটেনাই।

তংপরে মহারাজ প্রতীত রাজ্যারোহণ করিরা হিড়িম্বরাজের সহিত উভয় রাজ্যের সীমানির্দ্ধারণ করিয়া সন্ধি
ভাপন করেন এবং উভয় রাজ্যের সন্ধি ছলে শেতবুর্গ স্তস্ত
নির্দ্ধাণ করাইয়া উভয় রাজা শুপণ করেন যে যদি তাঁহারা
পরস্পরের সীমা লভ্যন করেন, তবে চিরক্লফা কাকও খেতবর্ণ
হইয়া যাইবে। উভয় রাজ্যের এবর্দ্ধি দৃঢ় সোহার্দ্ধা পার্থবর্তী অপর রাজ্যণ ভীত হইয়া উভয় রাজ্যের বিচ্ছেদ সাধনে
বয় করিতে লাগিলেন। শেষে কোন রাজা ত্রিপ্রেম্বরকে
একটা স্কল্মরী রমণী উপটোকন শ্রেরণ করেন। হিড়িম্বরাজ
ইহার দ্বপলাবন্য প্রবণে ত্রিপ্রেম্বরের কবল হইতে উদ্ধার্ম্ব

যর করেন, কিন্তু বিবাদ না বাধিতে বাধিতে নিটিরা যার। মহারাজ প্রতীতের পর আর চারিজন রাজা হন। ইহাদের সমরের কোল ঘটনা প্রকাশ নাই।

তৎপরে মহারাজ জনক ফা ব্লালা হন। ইনি বড় • যুদ্ধকুশল ছিলেন। ইনি রাজ্য-সীম্য-বর্দ্ধনাশায় দক্ষিণে অনেক
দেশ জয় ফরেন। শেবে • রাজামাটির অধীখর নির্দ্ধ দশ সহস্র
স্থানিকত কুকি দৈল্ল লইয়া তাঁহার গতি রোধ করেন। কিন্তু
যুদ্ধে পরাজিত হইয়া তাঁহাকে পলাইতে হয় । মহারাজ জনক ফা
রাজামাটিতে ত্রিপুরার রাজধানী স্থান্ধন করেন ৮ ইহার
সময় ব্রহ্মদেশের রাজধানী অমরাপুর পর্যান্ত ত্রিপুরারাজের
অধিকার বিস্তৃত হইয়াছিল। অবশেষে তিনি বঙ্গদেশ লয়
করিতে সংকর করেন, কিন্তু বহু যুদ্ধে রাজকোষ শৃত্ত হওয়ায়
দে উদ্দেশ্ত কার্যো পরিণত করিতে পারেন নাই। ইহার পর
২০ জন রাজা হন, তাঁহাদের নাম মাত্র ইতিহাদে আছে।

তৎপরে সিংহতুক্ব-ফা রাজা হন। ইংধার সময় আরাকান-়রাজের একজন চৌধুরী নানা মণিমাণিক্য উপ-ঢৌকন লইয়া গৌড়পতির নিকট যাইতেছিল। মহারাজ সিংহতুদ্ধ-ফা ভাহা বলপুর্বান্ধ গ্রহণ করেন । গৌড়েশ্বর এই সংবাদ পাইয়া . ত্রিপুরা অংমর জন্ম এক বৃহৎ দৈতাদল প্রেরণ করেন। ত্রিপুর পতি গৌড়েখরের সেনাবল বুঝিয়া ভীত হইয়া সন্ধি করিতে চাহেন, কিন্তু রাজ্ঞী স্বামীকে কাপুরুষ বলিয়া তিরস্থার ব্রুরিয়া <u>বৈভাগণকে উৎসাহিত করিবার জন্ত বলিলেন, 'ভোমাদের</u> রাজা শৃগালের ভার কার্য্য করিতেছেন, কিন্তু আমি তাহা ইচ্ছা করি-না। আনমি বয়ং যুদ্ধ করিব, যাহার ইচ্ছাহর দে আমার সলে এস, কুলগৌরব রক্ষা কর। পমন্ত দৈত্ত -রাজ্ঞীর সহিত[°]প্রস্তুত হইল। রাজ্ঞী সৈঞ্গণের প্রতি প্রীত হইয়া ভাহাদিগকে মহিষ ও ছাগমাংস লারা পর্ম পরিভোষ-পূর্ববে ভোজন করাইলেন। পর্বাদন যুদ্ধ হইল। ত্রিপুর-রাজ্ঞী হস্তীতে আরোহণ করিয়া দৈগুপরিচালন করিতে লাগি-लन। युद्ध (गोफ्रमना व्यात्र ममखहे विनष्टे बहेन। ध ममन কে গৌড়াধিপ ছিলেন তাহা বলা যায় না, রাজমালায় তাঁহার নাম নাই। মহারাজ সিংহতুল-ফার মৃত্যুর পর তৎপুত্র কুঞ-হোম-ফা পিতার ভার শান্তবভাব ছিলেন; কিন্ত তাঁহার পদ্দী তাঁহার মাতার ফ্রায় তেজবিনী ও বিদ্ধী ছিলেন। মহারাজ কুল্লহোম-ফার পর তৎপুত্র দানকুক্র-ফা রাজা ভন। তাঁহার আঠারটা প্রাহর। ভবিষ্যতে আঠারটা পুত্রের মধ্যে काहारक त्राकामान कता शहरक भारत हैहा निक्रभगार्थ মহারাজ দানকুত্র-ফা ৩০টা জীড়াশীল কুছুটকে জনাহারে कित्रएकांग क्रम कतिवा त्रास्थिन, स्मरव श्रृद्धागरक गरेना

একত্র আহার করিতে বিদয়া ঐ সকল ক্থাত্র ক্রুটকে
তাঁহাদের আহারের স্থানে গোপনে ছাড়িয়া দিতে জনৈক
অস্চরকে আদেশ দিলেন। ক্রুটসকল ছাড়া পাইয়
অয়পাত্রে ম্থ দিতে আয়িলে মহারাজ প্তগণকে বলিলেন,
তোমাদের মধ্যে থৈ পার যে কোন উপায়ে ইহাদিগকে নিরস্ত
কর। আনেকেই নানা উপায় করিতে লাগিলেন, কিন্ত
একবারে বহুসংখ্যক ক্রুটকে বাধা দিতে পারিলেন না। শেষে
কনিষ্ঠ রাজকুমার রম্বন্ধা কতকগুলি অয় লইয়া কিছুদ্রে
ছড়াইয়া দিলেন, তথন সমস্ত ক্রুট সেই স্থানে ভোজনে
নিযুক্ত হইল। নুপতি কনিষ্ঠ কুমারের ব্দিমন্তা ও প্রাত্যুৎপিয়মতিত দর্শনে তাঁহাকেই উত্তরাধিকারী বলিয়া নিরূপণ
করিলেন।

মহারাজ দানকুক্ল-ফার মৃত্যুর পর রাজকুমারেরা বড়যন্ত্র করিয়া পিতৃনির্বাচিত রাজকুমার রত্ত্ব-ফাকে রাজ্য হইতে •নির্বাসিত করিয়া সর্ব জ্যেষ্ঠ রাজকুমার রাজা ফাকে সিংহা-সনে ত্বাপন করিবেন।

কুমার রত্ন-ফারাজ্য হইতে বিতাড়িত হইয়া গৌড়েখরের শরণাপর হইলেন, গোড়ে তথন তুষ্রিল থা শাসনকর্তা। ইহার সহিত রত্মফার বিশেষ পৌহার্দ্য হইল। তিনি क्मांत्रक हाति वरुमतं कान मयामरत त्राथिया এक मन वृहर দ্বৈত্য দিয়া তাঁহার পিতৃরাজ্য উদ্ধার করিতে সাহায্য করেন। রত্ন ফা সদৈত্যে ত্রিপ্রাপ্রাস্তে উপস্থিত হইলে রাজবংশের অনেক স্থল্ ভাঁহার সহিত যোগ দেন। যুদ্ধে ত্রিপুরারাজ পরাজিত হন। কুমার রত্নকা নিক্টক হইবার জন্ত কুচক্রী সপুদশ ভাতার প্রাণনাশ: করিয়া রাজা হইলেন। সম্ভবত: ৬৮৯ তিপুরান্দে (১২৭৭ খৃষ্টান্দে) এই ঘটনা ঘটে। এই ত্রিপুরাক ত্রিপুরার রাজাদিগের নিজ প্রভিষ্টিত একটা অক। ইহা কাছা কৰ্ত্তক কোন সময় কেন প্ৰতিষ্ঠিত হয়, কিছুই জানা যায় না। ১৮৬২ পুটাকে মহারাজ ঈশানচক্র মাণিক্যের মৃত্যু হয়, তথন ত্রিপুরাক ১২৭২, হৃতরাং খৃষ্টাব্দে ও ত্রিপুরাকে ৫৯০ বংসরের অস্তর। ক্ষতএব খৃষ্টীয় ৬৮২ অব্দে প্রথম ত্রিপু-রাক প্রচলিত হয়। তাহা হইলে ঈশানচল্রের মৃত্যু কাল হইতে ১১৮০ বংসর পূর্বে ত্রিপুরাক প্রথম প্রচলিত হইয়াছিল। ১১৮০ বৎসরে ৩৫।৩৬ পুরুষ ধরা ঘাইতে পারে, তাহা হুইলে মহারাজ শিবরাজ বা দেবরাজের সময় ত্রিপুরাস্থ **প্রচলি**ত হ্ইয়া পাকিবে।

মহাবান রয়ফা রাজ্য লাভ করিয়া ক্তজ্ঞতার নিদর্শন অক্ষণ তুঘ্রিলকে ১০০ হতী ও বছবিধ মণিমাণিকা প্রদান করেন। ইহার মধ্যে একপ একটা বৃহৎ রয় ছিল যে তত বড় রত্ম গোড়েখরেরও ছিল না। তুব্রিল এই রত্ম শাইন মহানন্দে রত্ম-কাকে মাণিক্য উপাধি ও ৪০০০ স্থানিক্র বৈদ্যু প্রদান করেন। রত্ম-কা মহোপকারী বন্ধুণত্ত উপাধিধানে করিয়া নিরম করেন যে ক্তত্ততার চিহুত্মপূপ তাঁহার বংশ ধর প্রত্যেক রাজা এই মাণিক্য উপাধি ধারণ করিবেন। মুসলমান ঐতিহাসিকেরা এই ঘটনাকে ভূত্মিল কর্ত্তক নিগানিক্র বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। ত্রিপুরা-বিজয় নাইনিক্র স্বান্ধানের সঙ্গে ত্রিপুরার এই প্রথম সংশ্রব বটে। মি: মার্শমান শীয় ইতিহাসে লিথিয়াছেন যে গোড়ের শাসনকর্ত্তা গ্রাস্-উদ্দীন ত্রিপুরার রাজার নিকট কর গ্রহণ করিয়াছিলেন, কিন্তু রাজ্মালায় তাহার কোন উল্লেখ নাইন্মহারাজ রন্ধমাণিক্য স্বরাজ্যে অনেক্ঞালি তুর্থ নির্ধাণ করিয়াছিলেন।

মহারাজ রত্নমাণিক্যের পর প্রতাপনাণিক্য রাজা হন।
ইহার সময় স্থবর্ণ এমি হইতে বজাধিপ শাম্স্-উদ্দীন্ প্রতাপমাণিক্যকে আক্রমণ করেন। এই যুদ্ধের ফলে পার্মার।
বিপুরা বাতীত সম্ভ তান মুসলমানের অধিকৃত হয়। প্রতাপ
মাণিক্যের প্রপৌত্রের সময়াবধি এই সকল স্থান মুসলমান
অধিকারেই ছিল। মহারাজ প্রতাপের অপুত্রক অবয়য়
মৃত্যু হয়, স্তরাং তাঁহার কনিষ্ঠ মুকুট রাজা হনমহারাজ মুকুটনাণিক্যের পর তাঁহার পুত্র মহামাণিক্য রাজ্য
হন। মহারাজ মহামাণিক্যের জোষ্ঠ পুত্র প্রীধর্ম তায়য়
জীবদ্দশাতেই সয়্লাস গ্রহণ করেন এবং কনিষ্ঠ পুত্র প্রীধন
তাঁহার মৃত্যুকালে অতি শিশু ছিলেন।

মহারাজ মহামাণিক্য বসস্তবোগে মারা যান। ত্রার প্রথি তথন সয়াসী হইয় কাশীতে ছিলেন। মহারাজ মহামাণিক্যের মৃত্যুর পর ত্রিপুরার কতিপয় বাজি তাঁহার জয় সয়ানে আসিয়া কাশীতেই তাঁহাকে প্রাপ্ত হন এবং বনের 'কুমার, আপনার পিডার মৃত্যু হইয়াছে, সৈল্পেরা প্রভিন্ন করিয়াছে আপনি জীবিত থাকিতে অল্পের কথা দ্বে খার্ক কনিষ্ঠ কুমারকেও সিংহাসনে বসিতে দিবে না।' রাজকুমার এই অমুরোধে বাধ্যু হইয়া ত্রিপুরায় আসিয়া রাজালার বাজ করেন। ইনি ৮১৭ ত্রিপুরাকে (১৪০৭ খুটাকে) রাজা করেন। ইনি ৮১৭ ত্রিপুরাকে (১৪০৭ খুটাকে) রাজা করেন। ইনি মুসলমানদিগের অধিকতে ত্রিপুরার রাজ্যাংশ সকল উল্লার করেন। মহারাজ্য এই স্কর্মা প্রকাশ এরূপ ভাবে লুঠ করেন। মহারাজ্য এই স্কর্মা প্রকাশ এরূপ ভাবে লুঠ করেন যে কিছু দিন অধিকাদিশ করেকে বহুল পরিধান করিতে হইয়াছিল। ইহার পর প্রাণ্ডাধিপ আক্ষম শাহের সৈম্ভকে পরালা করিয়া পুর্ববিশ্ব লুঠ করেন। কুমিয়া নগরে ইনি এবি

বহুৎ সুরোবর ধনৰ করাইরা ধর্মসাগর নাম দেন। ইহার কাৰ্য্য শেৰ হইতে ২ ৰৎসৰ লাগে। ইনি ডাম্রশাসনের ছারা ব্রাজাণদিগকে অনেক ভূমি দান করেন। ইহার সমর ব্রান্ধণের পুত্রকভার বিবাহের ব্যর রাজকোষ হইতে দেওয়া হইত: ইহারই সময়ে বাশালা পতা ছলে 'রাজমালা' রচিত इत। ৩২ বৎসরু রাজত করিয়া মহারাজ ধর্মমাণিকা ভুর্গ-লাভ করেন। মহারাজ জীধর্মের পর ৮৪৯ ত্রিপুরাজে ( :৪৩৯ খুটাকে ) তাঁহার কনিষ্ঠ পুত্র রাজা হন। রাজমালায় তাঁহার নাম নাই। **অবতি [°]অলকাল পরেই সেনাপ**তিগণের সভযন্তে তিনি বিদষ্ট ও শ্রীধর্মের কনিষ্ঠ ল্রাতা শ্রীধন রাজা হটলেন। শ্রীধনমাণিক্য রাজা হইয়াই পরাক্রাস্ক সেনাপতি-রন্দের ক্ষতা হাস করিবার অভ মন্ত্রিগণের সহিত পরামর্শ করেন। একদিন তাঁহার পীড়ার সংবাদ দিয়া এক নিভৃত ভানে ছর্দান্ত দেনাপতিগণকে আহ্বান করিলেন। এই নিভত স্থানে কতিপয় গুপ্তচর রাজাদেশে উপস্থিত ছিল, ভাহারা সেনাপতিগণকে আক্রমণ করিয়া কাটিয়া ফেলিল। চর ভগণ বিনষ্ট হইলে সমরকুশল বিশ্বস্ত রায় চয়চাগ নামক বাক্তিকে প্রধান দেনাপতি করিয়া মহারাজ শ্রীধনমাণিক্য বাজৰ করিতে লাগিলেন। এই সময় ত্রিপুরার পুর্বাদিকে একটী খেত হস্তী বহির্গত হয়। মহারাজ তাহাকে ধরিয়া মানিতে বলেন। কুকীরা ধরে, কিন্তু রাজার নিকট না পাঠাইয়া দেওয়ায় সেনাপতি চয়চাগ রায় থানাদী নগরে কুকিরাজকে পরাজয় করিয়া হত্তী উদ্ধার ও কুকিদিগকে চিরবশীভূত করিয়াছিলেন। ইহারা এখনও অনেকাংশে ত্রিপুর্বরাজের বশীভূত। তৎপরে বীরবর চরচাগ ৯২২ ত্রিপু রান্দে (১৫১২ খৃষ্টান্দে) আরাকানরাজের সৈক্তগণকে পরা-দিত করিয়া চট্টগ্রাম প্রদেশ ত্রিপুরাভূক্ত করেন। গৌড়ের নবাৰ দৈয়দ হোদেন শাহ ইহাতে জুদ্ধ ইইয়া গৌরমলিক নামক একজন বাঙ্গালীকে সেনাপতি করিয়া প্রেরণ করেন। ছুমিলার চয়চাগ ও গৌরম্লিকের যুদ্ধ হয়। প্রথম যুদ্ধে তিপুরাদৈতা পরাজিত হইয়া হটিয়া গেলে মুদলমান-দেনা মেংহঁর কুল ভূর্ব অধিকার করিয়া রাজামাটির দিকে 'অগুলের ষ্য। দেনাপতি চয়চাগ পথমধ্যে দোণামাটির ছুর্নে আশ্র ^{ণইয়া} গোমতী নদীতে একটী বাঁধ দিয়া ০ দিন জলজোত ৰণ্ধ রাখেন। মুদলমানেরা নদী শুক ভাবিয়া হাঁটিয়া পার ^{হইবার} জক্ত যেমন নদীগর্ভে নামিল, অমনি সেনাপতি বাঁধ ^{ড়াপিয়া} দিলেন। অধিকাংশ মুসলমান সেনা জলে ডুবিয়া ^{দার।} পেল। যাহারা উদ্ধার হই**তে** পারিল, তাহারা চ**ণ্টা**গড়ে মাসিরা আশ্রম সইল, কিন্তু রাজিতে ত্রিপুরার সৈঞ্চগণ

ছর্মে প্রবেশ করিয়া অনেককে বিনষ্ট করিল। অভি
অর্গ্রন্থাক সেনা প্রাণ লইয়া গৌড়ে পলাইল। মেহেরকুলয়র্গে
শক্রকে পরাজিত করিবার আশায় মহারাজ প্রীধনমানিক্য
একটা রুঞ্চনার চণ্ডাল বালককে ভবানীর নিকট বলি
দিয়াছিলেন। তৎপরে চয়চাগ • আরাকান রাজ্যের কিয়দংশ
জয় করিয়া লয়েন। ইায়াতন খা নামক গৌড়ের আর একজন সেনাপতি এই সময় আবার ত্রিপ্রাভিমুথে আগমন করেন। কুমিলার নিকট যুদ্ধ হয়, প্রথম যুদ্ধি
চয়চাগ পরাজিত হন, কিন্তু শেষে পূর্ব্ব কৌশল অবলম্বন
করিয়া ভগড়িয়া ছর্গের নিয়ে মুসলমান সেনা ভাসাইয়া ।
দেন। মুসলমানের মধো যাহারা বাঁচিল, তাহারা ভগড়িয়া ছর্গে
আশ্রম লইল এবং দ্বিগুল দৈয়া না ইইলে ত্রিপ্রাজয় অসম্ভব
বিবেচনায় পলাইল, অনেকে বলীও ছইল।

জিপ্রায় প্র্কে চতুর্দশ দেবতার নিকট বার্ষিক এক সহস্র নরবলি হইত। মহারাজ শ্রীধনমাণিক সতাহা রহিত করিয়া অপরাধী ও যুদ্ধে বন্দী শত্রুদিগকে বলি দিবার প্রথা প্রচলন করেন। তিনি মিথিলা হইতে গীতবাছাবিশারদ্ লোক আনাইয়া স্বরাজ্যে স্পীত্বিছার প্রচার করেন। তদবিধি রাজবংশীয় প্রত্যেক বাক্তিরই সঙ্গীতে কিছুনা কিছু অন্তর্মাণ দেখা যায়। মহারাজ শ্রীধনমাণিক্য একটা শিবমন্দির ও স মণ স্বর্গে ভ্রানেশাণিক্য একটা শিবমন্দির ও স মণ স্বর্গে ভ্রানেশাণিক্য নির্মাণ করেন। ১২৫ ত্রিপ্রান্দে (১৫১৫ খুষ্টান্দে) তাঁহার মৃত্যু হয়। মহারাণী সহম্তাহন। শ্রীধনের জোষ্ঠ পুত্র ধ্রজমাণিক্য রাজা হন। ও বংসরু রাজবের পর ইন্দ্র নামে এক শিশু পুত্র রাধিয়া মহারাজ ধ্রজ্মাণিক্য স্বর্গাভ করেন।

তৎপরে ধরজমাণিকোর কনিঠন্রাতা দেবমাণিকা ১৩২

ত্রিপুরাকে (১ ১২২ খুটাকে) রাজাণ হন। তিনি প্রথমে
চট্টগ্রাম হইতে প্রচুর ধন ও ক্তিপয় ছ্ট রাজিকে বন্দী
করিয়া আনেন। বন্দীদিগকে চতুর্দশ দেবতার নিকট
বলি দেওয়া হয়। চোন্ডাই (চতুর্দশ দেবতার প্রধান
প্রক ) এই সময় রাজাকে বলেন, 'শিব স্বপ্লাদেশ প্রধান
দেনাপতিগণের রক্ত চাহিয়াছেন।' দেবতার প্রসায়তা-লাভের
জ্ঞা মহারাজ ছ্ট পুরোহিতের মন্ত্রণায় ৮ জন প্রধান সেনাপতিকে বধ করেন। কিছুদিন পরেই তিনি জ্ঞানিতে পারিলেন
য়ে, চোন্ডাই ধরজমানিক্যের পত্নীর সহিত মিলিত হইয়া
তাহাকে বধ করিবার চেটায় আছেন। তথন তিনিও সতক
হইলেন; কিন্তু আবার স্থবিধা মত চোন্ডাই গোপনে ভাহাকে
বিনাশ করিয়া ইক্সমানিক্যকে ৯৪৫ ত্রিপুরাকে প্রংহাদন
বসাইয়া রাজীর সহিত রাজস্ব করিতে লাগিলেন।

৪ মাস পরে সৈভেরা কানিল যে চোতাই রাজ্ঞীর পরামর্শে দেবমাণিক্যকে বিনাশ করিরাছে, তখন ভাহারা উন্মন্ত ইইয়া পাপিঠ চোতাই, পাপিনী রাজ্ঞী ও পাপীরসীর গর্ভজাত শিশু মহারাল ইন্দ্রমাণিক্যকে নিহত করিরা একটা গর্ভে সমাহিত করিল।

**७९**भरत दनवर्माणिकात स्वार्ड शूख विषयमाणिका अ84 জিপুরাকে (১৫৩৫ খৃষ্টাকে) রাজা হন। বিজয় রাজা হৈইয়া দেখিলেন মন্ত্ৰীই প্ৰকৃত রাজা, তিনি সাকীগোপান মাতা। ⁶ ভধন ভিনি গোপনে অভিরিক্ত মন্ত পান করাইয়া मजीटक विनाम करतन। हैशत नमत्र मिलीत नमाएँ जिल्हात স্বাধীনতা স্বীকার করেন। বিজয়মাণিক্য কয়েক সহস্র পাঠান অখাবোহী সেমা মিযুক্ত করেন। থাসিয়ার রাজা তাঁহাকে বার্ষিক ৫টা হন্তী ও ১০টা অর্থ করম্বরূপ দিতেন। জন্মজন্মর রাজা গর্কে অধীনতা স্বীকার না করায় বিজয়-নাণিক্য তাঁহায় ধিনাশাৰ্ব ১২ শত হাড়ীকে ১২ শত কোদালী দিয়া প্রেরণ করেন। হাড়ীর হস্তে কোনালীগ আঘাতে প্রাণ যাওয়া অনতিশয় অপমান্কর ৰোধে জয়স্তীরাজ বস্ততা স্বীকার করেন। তৎপরে তিনি পাঠানদেনাকে চট্টগ্রাম - अधिकातार्थ (श्रवन करतन, किन्न जाहारमत दिउन वाकी ছিল বলিরা ভাহারা রাজাকে বধ করিতে উল্ভোগী হয়। মহারাজ বিজ্পমাণিক্য তাহা জানিতে পারিয়া তাহাদিগকে শরং যুদ্ধ করিয়া বন্দী করেন ও চতুর্দশ দেবতার নিকট বলি দেন। তৎপত্নে বালালার নবাব স্থলেমান হাজার অধারোহী ও ১০ হাজার পদাতি সহ মহম্মল থাঁ নামক দেনাপতিকে ত্রিপুরায় পাঠান। চট্টগ্রামে ৮ মান যুদ্ধ হয়। প্রথম যুদ্ধে ত্রিপুরার দেনাপতি বিনষ্ট হইলেও শেষে মুদগ-সানেরা পরাঞ্চিত হয়। সেনাপতি মহম্মদ খাঁ লোহপিঞ্জা-বল হইয়া রাজধানীতে নীও ও চতুর্দশ দেবতার নিকট বলি ক্সপে প্রদত্ত হন।

কিছু দিন পরে বিজয়মাণিক্য নিজে বলদেশ আক্রমণ করেন। তাঁহার সঙ্গে ২৬ হাজার পদাতি, ৫ হাজার অখা-রোহী ও পাচহাজার নৌকা ছিল। স্থবর্ণগ্রামে প্রথম যুদ্ধ পটে, মুনলমানেরা পরাজিত হয়। তৎপরে তিনি লাক্ষানদী অতিক্রম করিয়া পল্লা পর্যান্ত নানা স্থান লুট পাট করিয়া চলিরা আদেন। অক্ষপুশুতীরে আসিয়া লুটের সামগ্রী রাজধানীতে পাঠাইয়া তিনি প্রীহট্ট পুটিতে যান। প্রীহট্ট লুটিয়া নেধানে একগ্রামে সমস্ত অধিবাসীকে বিনাশ ও সেধানে কতিশর ক্লাশীর ধনন করাইরা ফিরিয়া আদেন।

विख्यमाणिका अकतिन क्सछक रहेंबाहित्सन। देशव

কনিষ্ঠ পুঞ্জ অমর দেনাপতি সোপীপ্রসাদের করাতি বিবাহ করেন। একজন ঝোডিয়ী রাজাকে বলেন । তাহার কনিষ্ঠ পুজাই রাজা হইবেন। ইহা শুনিয়া তিনি খাঁ। আেই পুশ্রকে তীর্থ যাত্রাজ্ঞেলে পুরুষোভ্তমে প্রেরণ করেন। বিজরমাণিক্য প্রবল্গ পরাক্রমে ৪৭ বংসর রাজত্ব করি। ১৯০ ত্রিপ্রাক্তে বসস্তরোগে অর্থ পমন করেন। কভিপর রাজী সহমুতা হন।

তাঁহার পর তাঁহার কনিষ্ঠ প্র অনন্ত খণ্ডরে সাহায্যে রাজা হন, কিন্ত দেড় বংসর পরে খণ্ডর বর্ত্ত্ত্ব লোপনে নিহত হন। তাঁহার রাজ্ঞী অন্ত্র্যুতা হইতে চাহিনে তাঁহার পিতা গোপীপ্রসাদ নিবারণ করেন। শেষে রাজা নিজে নিংহালনে বসিতে চাহেন, কিন্তু বিশাস্ঘাতক জালাচ্ছল্ঞা গোপীপ্রসাদ কল্তাকে সিংহালন না দিয়া নিজে উন্তর্যা গোপীপ্রসাদ কল্তাকে সিংহালন না দিয়া নিজে উন্তর্যা গোপীত্র নাম ধারণ করিয়া ৯৯৫ ত্রিপ্রাক্তে (১৫৮৫ খুইানে) রাজ্যারোহণ করিলেন এবং কল্তাকে চণ্ডাগল্প গ্রাম জালীর দিয়া তাঁহাকে হন্তীগড়ের রাণী বলিয়া প্রচার করিলেন: গোপীপ্রসাদ প্রথমে ধর্মনগরের তহুসীলদার ছিলেন। তৎপরে রাজার পাচক, পরে চৌকীদার এবং শেষে শালগ্রাহ ম্পূর্ণ করিয়া শপ্র করায় সেনাপতি হন।

উদয়মাণিক্য রাজধানী রাজামাটির নাম বদ্লাইয়
উদয়পুর নাম দেন। তাঁহার সময়ে বহু জলাশয় ও
প্রাসাদাদি নির্মিত হয়। তাহার ২৪০টা স্ত্রী ছিল। তাঁহাদের
অনেকেই ভ্রষ্টা ছিলেন। এই সময় গৌড়ের একজন মুস্বশান রাজপুত্র ত্রিপুরায় ভ্রমণার্থ আসেন। মহারাজ্যতাঁহাকে
সমাদরে রাখিয়াছিলেন। ভ্রষ্টা রাণীদিগের মধ্যে কেই
কেই ইহারও সহিত সম্পত হয়। উদয়মাণিক্য জানিতে
পারিয়া গৌড় রাজপুত্রকে দেশ হইতে বহিষ্কৃত ও ত্র্য্টা
স্ত্রীদিগকে হতিপদতলে নিক্ষেপ করেন।

মোগলেরা আবার এই সমন্ন চটগ্রাম অধিকার করে। যুদ্ধে ৩৪ হাজার ত্রিপুরদৈয়া বিনষ্ট হয় । এই বুছের । বংসর পরে কোন স্ত্রীলোক বিষদানে রাজার প্রাণ নট করে। উদর্মাণিক্যের সমন্ন ত্রিপুরার ভীষণ ছর্জিক হয়, ভায়ারি বহু প্রাক্তান ই হয় ।

উদ্যমাণিক্যের পর উহিার পুত্র জয়মাধিকা ১০০০ বিপুরাকে (১৫৯৬) রাজা হল। তিনি নামে রাজা হইনের উহিার পিতৃব্য রজনারায়ণই সর্ক্ষেস্কা হইয়া য়৾য় চালাইতে লাসিলেল। রজনারায়ণ দেখিলেন, মহারাই অনন্তমাণিক্যের পিতৃব্য (বিজয়মাণিক্যের আভা) গ্রা

कतित भूताकन बाध्ययः धारात निःहानन नहेरतः । এहे _{विरवहना} कतिया ब्रह्मनाबायन व्यवद्यक्त ट्याबनार्थ निमञ्जन করিবেন। তথার অমরের এক বন্ধু ভরবারি ধারা একটা পাণ বিখও করিয়া অমরকে ইঙ্গিত করিলেন। অমর সেই ঐক্ত বুঝিয়া হঠাৎ অহুত্তার ভান করিয়া অখারোহণে প্রায়ন ক্রিলেন। তৎপরে উভয়ে উভয়ের বধার্থ চেষ্টা পাইতে नाशित्वन। त्रक्रनात्राय को इर्या क्रार्य काला नहेरनम ७ পত্রবারা খীয় ভাতাকে দদৈত্তে আসিয়া অমরকে আক্রমণ করিতে বলিলেন। পথে পত্রবাহক অমরের হস্তে পত্তিত ও বনী হইল। অমর রক্ষের হস্তাক্ষরের স্থায় এক ফুতিম পত্র প্রস্তুত করিয়া রঙ্গের নিজ বিশ্বস্ত অফুচর ধারা ভ্রাতার নিকট প্রেরণ করিলেন। রঙ্গের ভাতা পত্র পাইয়া বৃাহককে থেমন আলিম্বন করিলেন, অমনি সে তাঁহার মন্তক ছেদন করিয়া মত্তক লইয়া আসিল। অমর সেই মন্তক ছুর্গ মধ্যে রক্তের निक्रे পाठाइया पिटलन । त्रक मन्डक पर्मान आकून इंदेश जावित्यन द्य यथन जांजा निह्छ, छथन व्यवश्रहे छाहात्र देमञ्ज বৰ্গও নিহত হইয়াছে। নিজেও ভীতে হইয়া ছুৰ্গ পরিত্যাগ करिया भवाहेलन। इहे निवन शाभरन थाकिवाद भव মনরের এক দৈনিক তাঁহাকে দেখিতে পায় ও তাঁহাকে বিনাশ করিয়া মন্তক লইয়া অমেরকে উপহার দেয়। অমর मञ्जूष्टे रहेवा जाहाटक माहमनावावन উপाधि (पन ।

জনমাণিক্য এই সংবাদ শুনিয়া অমরকে পত্র লিখিয়া জিজাসা করিলেন, তিনি এত অত্যাচার করিতেছেন কেন ? সমর অজ্রমুথে উত্তর দিবার লক্ত সইনক্তে অগ্রসর হইলেন। ফারার জনমাণিক্য ভীত হইয়া পলাইলেন। আন্দরের সৈত্য তাঁহাকে পথে ধৃত করিয়া বিনাশ করিল। এক বৎসর মাত্র রাজ্য করিয়া জন্মাণিক্য নিহত হন।

>০০৭ ত্রিপ্রান্ধে অমরমাণিক্য সিংহদিনে অধিরোহণ করেন। মহারাজ অমরমাণিক্য রাজা হইয়াই ত্রিপ্রার বমস্ত ভ্যাধিকারীকে লিখিলেন, 'একটা স্থনীর্ঘ নীর্ঘিকা থনন দরাইতে হইবে, এজস্ত ভাঁহারা সকলেই যেন কোদালী প্রোর্ফ করেন।' তদম্পারে ৯ জন অমীদার ৭০০০ কোদাল পাঠাইয়া ছিলেন। ইহা ঘারা উদয়প্রে যে বৃহৎ দীর্ঘিকা থনন করান হয়, তাহা আজিও অমরসাগর নামে বর্জমান আছে।

য়িইটের অস্তর্গত তরফের জ্মীদার এই কার্ব্যে কোদালী
বিচান নাই বলিয়া মহারাজ অমর ভাঁহাকে বন্দী করিবার ভা ২২ হাজার সৈক্ত পাঠাইয়া দিলেন। জ্মীদার পলাইয়া বিহটের মুসল্মান
বিহটে মুসল্মান শাসনকর্তার অলুল্য লয়েন। ভাঁহার পুত্র জ্মী হন। অমরমাণিক্য ইহা ভরিষা ত্রিহটের মুসল্মান

শাসনক্রীর বিক্লকে ৰাজা করেন। অসমমাণিকা গঞ্জবাহ कतित्रा ऋर्त्यामत्र कारम यूक भावछ करवल, मधारङ कियू-कान विकारमञ्ज भन्न कावान यूक इत। मक्ताकारन मूनन-मानिता भवाक्षिष्ठ इत्र। > • • के विभूतारम ( ১৫৯৯ थृड्डोरम ) সম্ভবতঃ এই ঘটনা ঘটে। জীহট্ট এই সমন্ন হইতে ত্রিপুরার করপ্রদ হয়। নোরাধালীর অন্তর্গত বলরামের অমীদার অথমতঃ অমরমাণিক্যকে কর দেন নাই। তিনি বলেন অমর মুজনা নহেন, মুতরাং তিনি রাজ্যের বিধিসদত অধিকারী হইতে পারেন না। মহারাজ অমর ভালা ওনিয়া একদল দৈত পাঠাইয়াযুদ্ধে ভাঁহাকে করপ্রাদকরেন। এই সময় বাক্লা চक्करीय चिं नमुक्तिनानी दिन। ध्यमत्रमानिका धनदबाए त्म दाखा मुर्धन करदान; ख्था इहेर्ड वह मःथाक माक्रक मान-রূপে বন্দী করিয়া আনেন এবং কতকগুলিকে দাসরূপে বিক্রয় करतन । তৎপরে अध्यत्रमाणिका बाञ्चनमण्णितिमान, कुना-পুরুষ ও দীর্ঘিকা প্রতিষ্ঠা করেন। ১০১৯ ত্রিপুরান্ধে বালা-नात मवश्व हेम्नाम था त्राक्यांनी ঢाका हहेट जिल्ला जाकः मन करतन। अभन्नमानिकात हेना थे। नाम এक सन मूनन मान रमनाপতি ছিল। तृहर विकास रमना पित्रा महाताक अमत . তাঁহাকেই যুদ্ধে পাঠাইলেন। ইশা থা শক্ত সমুখীন হইয়া ? সময়ের অপেকায় আক্রমণ করিতে ক্ষাস্ত রহিলেন। ত্রিপুরার প্রধান মন্ত্রী তাহা গুনিয়া আরও একদল দৈল उँशित मार्शार्थ পाठाहेलान ७ हेमा थाँदक खालम मिलान ट्रिकांत्र ममग्रार्णका ना कतिया विभक्तरक काळमण कतित्व। ঐ সময় স্থমরমাণিক্যের মহিধী ইশা থাঁকে প্রসাদস্বরূপ স্বীয় চরণামৃত প্রেরণ করেন। ইশা খাঁ রাণীর এই অফুগ্রহে . উৎসাহিত হ**र्**या पानन महत्र अचार्याही ७ **अब** পদাতি नहेबा বিপক্ষকে ছঠাৎ আক্রমণ করিলেন। প্রথম উল্লেম্ মুসল-मात्नता পताबिक हहेगा भगाहेगा हेगा था अग्री हहेगा ফিরিয়া আসিলেন।

অমরমাণিকা তৎপরে আরাকান আক্রমণ করেন ও তদন্তর্গত করেকটা প্রদেশ অধিকার করেন। আরাকান-পতি পুন: পুন: পরাজিত হইরা পর্কু গীজদিগের সাহায্য গ্রহণ করেন। এই সাহায্য লইরা আরাকানরাজ ত্রিপুরারাজকে আক্রমণ করেন। প্রথম যুদ্ধে ত্রিপুরাপতি পরাজিত হইলেন; কিন্তু তিনি আবার বলসঞ্চয় করিয়া আরাকান আক্রমণ করিতে উন্তত হইলে আরাকানরাজ এক বংসর যুদ্ধ স্থাতি রাশিতে অন্থরোধ করেন। উভয়পক্ষে সম্মত হইলেন বে আগামী হুর্গোৎসবের পূর্বে যুদ্ধ হইবে। কারণ যুদ্ধে বন্দী ব্যক্তিদিগকে হুর্গার নিকট বিল দিতে পারা ঘাইবে।

विभूत्रारेम् कितिन, जाताकानभिं धरे श्रद्धांग वृतिहा সদ্ধি ভঙ্গ করিয়া চট্টগ্রাম আক্রমণ ও অধিকার করিয়া ল্টলেন। ত্রিপুরাপতি স্বীয় পুত্রতায়কে সৈক্তাপত্য দিয়া এক দ্রু বৃহৎ সেনা পাঠাইকেন। আরাকানপতি ভীত হইয়া গঞ্জলন্তনির্বিত মুকুট উপহার দিয়া কুমারদিগের নিকট সন্ধির প্রস্তাব করিলেন। মুকুটাধিকার লইয়া কুমারত্রয়ের মধ্যে একভার অভাব হইল। এই সুযোগে আরাকানরাঞ্ ত্তিপুরার দৈত্ত আক্রমণ করিলেন। কুমারত্তয়ের একজন এক আহত হস্তীতে আরোহণ করিতে ছন্তী যন্ত্ৰণায় অস্থির হইয়া পদতলে ফেলিয়া নিহত করে : এবং অপর হুইজন পরাজিত হুইয়া প্লায়ন করেন। মুগেরা তাঁছাদিগের অফুসরণ করিয়াছিল। আবার একটা যদ্ধ হয়। এবার ত্রিপুরার পাঠান অখারোহীরা অবাধ্য হওয়ায় কুমার পরাজিত হন। মগেরা রাজধানী উদয়পুরে উপিটিত হয়। অমেরমাণিক্য তুর্লকণ বুঝিয়া রাজধানী ছাড়িয়া দেওঘাট নামক স্থানে পলায়ন করেন। মগেরা উদয়পুর লুটিয়া প্রান্তান করিল। তদবধি ফেনী নদী তিপুরার দক্ষিণ সীমা নির্দিষ্ট হইল। চ্ট্রগ্রামাদি স্থান আরাকান রাজ্যভূক্ত হইল। . মহারাজ রাজ্যের অবস্থা, পুত্রগণের বুদ্ধি, বিবেচনা ইভ্যাদি চিন্তা করিয়া হৃ:ধে অভিভূত হইয়া পড়িলেন। শেষে একদিন পৰিত্ৰ মমুনদীতে ম্বান করিয়া অহিফেন ভক্ষণপূর্বক প্রাণভাগে করিলেন। তাঁহার মহিষীও সহমূভা হন।

১০২১ ত্রিপুরান্দে (১৬১১ খৃষ্টান্দে) অমরমাণিকার প্র রাজধ্র রাজাহন। তিনি শান্তিপ্রিয় নৈক্ষক ছিলেন, কেবল দৈবকার্য্যে লিপ্ত পাকিতেন। তিনি একটা উৎক্লষ্ট বিষ্ণু মন্দির নির্মাণ করাইয়াছিলেন। সেই মন্দিরে ৮ জন গায়ক সর্কান হিন্নাম কীর্ত্তন করিবার জ্ঞান্ত নিযুক্ত ছিল। তিনি বহু প্রাধাণকে বিস্তর জ্মী দান করেন। মন্ত্রিগণ এত অবিক ভূমিদানে আপত্তি করায় মহারাজ রাজধ্র বলেন, "শেষ অবস্থায় আমার অদৃষ্টে কি হইবে কে বলিতে পারে। সময় থাকিতে পরকালের উপায় করিয়া রাধা ভাল।" এদিকে বাঙ্গুণার নবাব রাজধ্রের এই অবস্থা শুনিয়া ত্রিপুরা আক্রমণের জ্ঞা একদল দৈল্ল প্রেরণ করেন, কিন্তু ত্রিপুরা বান্দমণিতির কৌশলে তাহারা পরাজিত হয়। রাজধ্র ব্রুপ্রার্থ বেইন। বান্ধ্যর বাণ্ডাগ্য করেন।

তংপরে ১০২৩ ত্রিপুরাদে (১৬১৩ খৃষ্টান্দে) রাজধরের পুত্র «বশোধর রাজা হন। ইনি রাজা হইয়াই ত্রিপুরার মগদিগের অভ্যাচার নিবাবণ কবেন। ইহার সমরে দিল্লীশ্র জাঁহালীর করস্বরূপ করেকটা হক্তী চাহিরা পাঠান। মহাবার মশোধর তাহা দিতে অত্যকার করার দিলীর সমাটে আদেশে বালালার নবাব ত্রিপুরা আক্রমণ করেন। _{দিলী} **ब्हेट्ड भागनरेमग्र आमिशाहिन: युद्ध** পরালিত ও বন্দীহন। কিয়দংশ মোগলসেনা রাজাল্যন ক্রিরা বদদী মহারাজ যশোধরমাণিকাকে লইয়া দিলীকে উপস্থিত হয়। সমাট্ তাঁহাকে মুক্তি দিয়া বলেন যে, তিনি প্রতি বংসর কয়েকটী হস্তা ও অধ কয়স্বরূপ দিলে তাঁচার বিক্লমে আর কথন যুদ্ধ হইবে না। যশোধর ভাছা অস্থাকার করেন এবং নিজে যবন কর্তৃক পরাজিত হইয়াছে ব্লিয় তীর্থপর্য্যটনে পাপদেহ ক্ষয় করিবার জন্ত প্রয়াগ, মধ্যা वृत्मावनामि जमन करत्रन। त्मरच १२ वरमत वराम वृत्मावस বিষ্ণুদেবায় প্রাণ পরিত্যাগ করেন। ওদিকে ত্রিপ্_{বাই} अविभिष्ठे (মাগলদেনা अन्वत्रकः २ वर्शतकाल ताका नूर করিতে থাকে। ইতিমধ্যে তিপুরায় মহামারী উপ্তিত্ত হয়, তাহাতে অধিকাংশ মোগল মৃত্যুমুথে পড়িলে অর্থা মোগণদেনা প্রাণভ্যে তিপুরা ত্যাগ করিয়া দিলীতে প্লায়ন করে। ইহার পর কল্যাণমাণিক্য সমস্ত ত্রিপুরাবাগী**ঃ** সম্মতিক্রমে রাজ্যারোহণ করেন।

>००६ जिथुत्रारम (> ५२६ शृष्टीरम ) कन्मानमानिका तहा হন। কল্যাণমাণিক্য কাহার পুত্র তাহা রাজমালার জান ষায় না। তিনি মহারাজ যশোধর মাণিকোর জ্ঞাতি ভাতা विविश উल्लिक्ट इरेशाहिन। व्यस्मान इस (य महाबाह • রাজধরমাণিকো 🎾 এক ভাতা আরাকান যুদ্ধে হস্তিপদে নিহত হন, আর ছুইজন প্লাতক হন, কল্যাণ্মাণিল हैशाम्बरं काशाब अञ्च इहेरवर। कथानिमानिकात कर সম্বন্ধেও একটা লৌকিক প্রবাদ আছে। তাঁহার পিতা এক দিন মৃগীয়ায় গমন করেন। এক পলায়িত মৃগেই ,প*চাতে ধাবিত হইয়া মধ্যাহ্নকালে পিণাসায় কাতর ইইন পড়েন। তংপরে জলাম্বেষণ করিতে করিতে এক বাছান প্রজার গৃহে গমন করেন। ত্রিপুরা জাতির বাছাল ^{নাবে} একটা সম্প্রদায় আছে। কল্যাণের পিঙা সেই বাছা^{রের} রূপ্বতী ক্**নাকে দেথিয়া বিমোহিত হন। বাছালকু^{মায়ী}ং** রাজপুল্রকে আত্মসমর্পণ করেন। এই গর্ভে কল্যাণ্নাণি^{ক্ষে} জন্ম হয় । মহারাজ কল্যাণুমাণিকা বিধান, বুরি^{মান} 'ও বলশালী ছিলেন। তিনি দৈলগণকে স্থশিকিত করেন। ইহারারা ত্রিপুরার রাজপরিবারে একটী নৃতন নিয়ম স্থা^{পিট} হয়। তিনিই স্কাপ্রথম যুবরাঞ্পদ সৃষ্টি করিয়া শী^{র রোট} পুত্র গোবিন্দকে তংপদে নিযুক্ত করেন। তিনিই মূর্যা

শীর নামের সহিত "শিব" এই দেবনাম বোগ করিয়াছিলেন। ভাহা হইভেই রাজনামের সহিত দেবনাম যোগ করিয়া মুদ্রা মুদ্রিত হইতে থাকে। সমাট শাহজহান্ তাঁহার নিকট কর চাহিয়াছিলেন, কিন্তু কল্যাণমাণিক্য তাহা না দেওয়ায় স্মাটু বালালার স্থবাদার শাহস্কাকে ত্রিপুরা আক্রমণের আদেশ দেন। শাহস্থলা যে সৈক্তদল প্রেরণ করেন, ভাহা-দের সহিত একটা চর্মনির্মিত কামান ছিল। যাহা হউক মহারাজ কল্যাণ মুসলমানদিগকে পরাজিত করিয়া ভাড়াইয়া দিয়াছিলেন। কল্যাণ তৎপরে তুলা উপলক্ষে উড়িয়া, মথুরা প্রভৃতি দ্রস্থান হইতে ব্রাহ্মণ আনাইয়া প্রচুর দানাদি করেন এবং স্বরাজ্যে ঘূরিয়া নিঃস্ব প্রজাদিগকে অর্থদান ও ব্রাহ্মণদিগকে যথেষ্ট ভূমিদান করিয়াছিলেন। কেহ তীর্থে গেলে তাহার বায় তিনি রাজকোষ হইতে দিতেন। মুরনগর কশবা গ্রামে তাঁহার খ্যাত দীর্ঘিকা আজিও কল্যাণনাগর নামে বর্ত্তমান আছে। কল্যাণ ৩৪ বৎদর রাজত্ব করিয়া ১০৬১ ত্রিপুরান্দে স্বর্গগত হন।

তৎপরে যুবরাজ গোবিন্দদেব 'মাণিক্য' উপাধি ধারণ कतिया ১०७२ जिश्रवारम (১७৫२ थृष्टीरम्) त्राक्यारतार्ग करतन । তাহার মহিষী কমলা মহাদেবী অতিশয় ধর্মপরায়ণা ছিলেন। তাঁহার মৃদ্রায় এক পৃষ্ঠে শিব ও স্বামীর নাম এবং অপর পৃষ্ঠায় নিজ নাম মুদ্রিত হইত। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত কমলা-সাগর আজিও কশবাগ্রামে বর্তমান আছে। মহারা**জ** গোবিন্দের কনিষ্ঠ ভ্রাতা নক্ষত্ররায় বাঙ্গালার স্থ্রাদার শাহ-হুঞার সহিত একযোগে ত্রিপুরা আক্রমণে উন্নত হন, কিন্ত महाब्राख (शांतिन्त्रभांनिका এ यूष्ट्र इम्न निक थांन ना इम्न সংহাদর্বের প্রাণ যাইবে বুঝিয়া বিনাযুদ্ধে নক্ষত্তের হত্তে রাজ্য ছাড়িয়া দিয়া আরাকান রাজ্যে আশ্রয় গ্রহণ क्रज्ञ। এদিকে नक्षज्जाग्र ছত্তমাণিকা নামে সিংহাসনে আরোহণ করেন। মহারাজ গোবিন্দ আরাকানের আশ্রয়ে যে সময়ে চট্টপ্রামে ছিলেন, সেই সময়ে ভ্রাতৃযুদ্ধে পরাঞ্জিত শাহস্কা আসিয়া আরাকানে আশ্রয় লয়েন। পথে মহারাজ গোবিন্দদেব তাঁহাকে নাদরে গ্রহণ ও যথাসাধ্য সাহায্য ^{করেন।} স্থলা তাঁহার ব্যবহারে লক্ষিত হইয়া ক্ষমাপ্রার্থনা কবেন ও স্বীয় "নিমচা" নামক বহুমূল্য ভরবারি প্রদান করিয়া যান।

মন্ত্রা আরাকানে উপস্থিত ইইলে আরাকশনরান্ধ স্থ্রার কিন্তার রূপে মুগ্ধ হইরা ভাষাকে হস্তগত করিবার জন্ত রাজ্যে প্রচার করিলেন যে স্থলা কৌশলে আরাকান জন্ন করিতে আদিয়াছেন; অতএব তাঁহাকে বুধ করা উচিত। কিন্তু বিনা- যুদ্ধে রক্তপাত বৌদ্ধের অনুচিত এক্স গোপনে স্থাকে ধরিয়া আনিয়া এক নৌকার বাঁধিয়া নদীতে ড্বাইয়া দেওয়াইলেন। স্থাপদী বংক ছবি মারিয়া অলুমৃতা হইলেন। স্থার ছই ক্যা বিষপানে আত্মহত্যা করেন। ড্তীয়া ক্যাকে আরাকানরাজ গ্রহণ করিতে পারিয়াছিলেন।

এদিকে ৭ বংসর রাজত করিয়া ছ্ঞামাণিক্য জগ্রাম ও নরহরি নামক ছই পুত্র ঝাথিয়া মানবদীলা সম্বরণ করেন। ছত্রের মৃত্যুর পর গোবিন্দদেব পুনরার সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত হন। তিনি স্থার প্রতি আরাকানরাক্রের নৃশংস ব্যবহারে মর্মাহত হইয়া স্থলার তরবারি বিনিময়ে অর্থ সংগ্রন্থ করিয়া তদ্বারা কুমিলা নগরে একটী মস্জিদ্ নির্মাণ করান, তাহা আজিও স্থলামস্জিদ্ নামে বর্ত্তমান আছে। মহারাজ গোবিন্দমাণিক্য মেহেরকুল আবাদ ও বাতিসা গ্রামে দীঘিকা ধনন করান। তিনিও তাম্রশাসন হারা গ্রাহ্মণদিগকে অনেক ভূমিদান করিয়া গিয়াছেন। ১০৭৯ ত্রিপুরাক্ষে (১৬৬৯ খুটাকে) তাহার মৃত্যু হয়।

১০৮ অপুরান্দে (১৬৭০ খুটান্দে) যুবরাজ রামনেব ঠাকুর (গোবিলের জ্যেটপুত্র) রাজা হন। তিনি প্রথমে স্বীয় স্থালক বলিভীমনার্রায়ণকে যুবরাজ পদে নিযুক্ত করেন, তৎপরে স্বীয় জ্যেটপুত্র রন্ধনেবকেও ঐ পদে শ্বীপন করেন। ইহার পর তিনি যুবরাজ পদের ঠিক অব্যবহিত পরেই 'বড়ঠাকুর' নামে একটা পদ স্পষ্ট করিয়া তাহাতে স্বীয় বিতীয় পুত্র হুজ্জয়দেবকে নিযুক্ত করেন। ইহাকে রাজ্যচ্যুত করিবার জন্ম ষড়যন্ত্র হইয়াছিল, কিন্তু কার্য্যে তাহা সফল হয় নাই। ঘনশ্রাম ও চক্তমণি নামে তাহার আরও ছই পুত্র ছিল।

, ১০৯২ ত্রিপুরালে (১৬৮২ খুটালে) যুবরাজ রম্বদেব রাজা হন। তিনি স্বীয় অহজ বড়ঠাকুর ছুর্জয়মণিকৈ ও মাতৃল বলিভীমনারায়ণকে প্রথমে যুবরাজপদ প্রদান করেন, কিছ উটোদিগকে ক্রমে সরাইয়া রাজবংশীয় চম্পকরায় ও গৌরীচরণকে যুবরাজপদ দান করেন, এবং স্বীয় চতুর্থ ভাতা চল্র-মণিকে বড়ঠাকুর পদে নিযুক্ত করেন। রম্বদেবের ১২৫টা বিবাহ ছিল। রম্মাণিক্য অল বয়য় ছিলেন, কিন্তু শেষোক্ত যুবরাজগণ তাঁহা অপেকা বয়োজ্যেট হওয়ায় উটাহায়া বড়ই অভ্যাচাবী হন। এই সময়ে বালালায় নবাব সায়েলা গানরেল্রচাকুর নামক রম্মাণিক্যের এক পিড়ব্যের সাহায্যে ত্রিপুরা আক্রমণ ও জয় করেন এবং রম্মাণিক্য ও বয়োধিক যুবরাজ্যরেক বন্দী করিয়া লইয়া যান।

সাম্বেক্তা থার সাহায্যে নরেক্রঠাকুর রাজা হুনু। তিন

বৎসর রাজত্ব করিবার পর রক্সমাণিকা সারেতা গাঁকে হতঃগত করিয়া পুনরার রাজ্যাধিকার করেন। ২৯ বৎসর রাজত্ব করিবার পর রক্সমাণিকোর তৃতীয় ভ্রাতা ধনশ্রাম উহাক্ষে রাজ্যচ্যত করেন। রক্সমাণিকা কৃষ্মিলার একটা সঙ্র চৃড়া মন্দিরের ভিক্তি মাত্র করিয়া যান।

খনস্থান রাজ্যাধিকার করিরা মহেক্সমাণিকা নামে
সিংহাসনে উপবেশন করেন। 'মস্ত্রীর পরামর্শে মহেক্ত এক
স্ত্রীর ছই স্থামী বর্ত্তমান থাকা যুক্তিসিদ্ধ নহে বুঝিরা রত্তমাণিক্যকে নিহত করেন। শেষে প্রাত্তবধন্ধনিত উব্বেগ
মানসিক শান্তি 'ছারাইরা ছঃস্থপ্প দর্শন করিতে করিতে
ত বৎসরের মধ্যেই প্রাণক্যাগ করেন।

১১২৪ ত্রিপুরাকে (১৭১৪ খ্টাকে ) যুবরাজ ছর্জ্জরদেব ধর্মমাণিকা নামে সিংহাসনে আরঢ় হন। তিনি বড়ঠাকুর চক্তমণিকে যুবরাজ পদে ও স্বীয় জ্যেষ্ঠ পুত্র গলাধরকে বড়ঠাকুর পদে নিযুক্ত করেন। বালালার নাজির এই সময়
একদল সৈক্ত পাঠাইয়া ত্রিপুরার কতকাংশ অধিকার করিয়া
মুসলমান জমীদার নিযুক্ত করেন এবং একদল মোগলসৈক্ত
উদয়পুরে রাথিয়া দেন। একদিন মোগলেরা যথন নিশ্চিম্ত
মনে আহার করিতেছিল, তথন ধর্মমাণিকা হঠাৎ তাহাদিগকে আক্রমণ করিয়া তাহাদিগকে ছিল্ল ভিল্ল ও নিহত
করেন। অতিঅল্প সংখ্যক লোক পলাইতে পারিয়াছিল।

ছত্রমাণিক্যের পুত্র জগন্তাম এই সময় ঢাকার মুসলমান শাসনকর্তার সহিত মিলিত হইয়া ত্রিপুরা আক্রমণ করেন। প্রথম যুদ্ধে ত্রিপুরার জায় হয়, কিন্তু বিতীয় যুদ্ধে মহারাজ ধর্মমাণিক্য প্রাজিত হইয়া প্লায়ন করেন।

১১৪২ তিপুরাকে (১৭৩২ গৃষ্টাকে) জগজামমাণিকা
মুদলমান সাহাব্যে রাজ্য লাভ করিলেন, কিন্তু তাঁহা জারা
তিপুরার যে ক্ষতি হইল, তাহা আর ইহকালে সংশোধিত
হইল না। মুদলমান দেওয়ান মীর হবিব পার্কত্য তিপুরা
স্থাধীন রাথিয়া জ্বন্ত সমস্ত স্থান মুদলমান রাজ্য ভুক্ত করিয়া
মুদলমান জমীণারের হস্তে দিলেন। কেবল জগজাম-মাণিকাকে তল্মধ্যে ২২টা পরগণার চাকলা রৌসনাবাদ নাম
দিয়া জায়গীর স্বক্ষপ দান করেন। এই জমীদারী এখনও
আছে, ত্রিপুরারাজ এখন ইহার কর ইংরাজরাজকে দিয়া
থাকেন। এই সময় যে রাজ্যাংশ হারাইতে হয় তাহা জ্বতি
বিভ্তুত, তাহা এখন সমগ্র জেলা ত্রিপুরা, শ্রীহটের জ্ব্জাংশ,
নোয়াথালীর ভ্তীয়াংশ, ময়মনসিংহের চতুর্থাংশ ও ঢাকা
জেলার কিয়দংশ মধ্যে গণা হইয়াছে।

,ধর্ম্মাণিকা রাজাচাত হইয়া মুসলমানের সাহায়া বাতীত

উপারান্তর না দেখিরা মূর্শিদাবাদে গমন করেন। ভগা লগংশেঠের সহিত বন্ধুত্ব করিরা তাঁহার সাহাব্যে প্নরার রাজ্ লাভ করেন। ধর্মাণিক্য বালালা ভাষার মহাভারত অমুবাদ করেন। অরকাল পরে ধর্মমাণিক্যের মৃত্যু হর।

তৎপরে ঢাকার ফৌলদার ধর্মমাণিক্যের জােষ্ঠ পুর বড়ঠাকুর পলাধরকে তাঁহার পিতার সময়কার (রৌদনা বাদের) বাকী রাজস্ব পরিশোধ করিতে বলিলে ডিনি অক্ষতা আনাইলেন। যুবরাক চক্রমণি সেই ঋণ পরিশাে করিরা কৌঞ্দারের সাহায্যে মুকুন্দমাণিক্য নামে রাল হইলেন। সুকুন্দ রাজ্য পাইয়া অধর্ম করিলেন না। আড় পুত্র বড়ঠাকুর গলাধরকেই যুবরাজ পদে ও খীর জাে গ্র चक्रण शाहकि एक मूर्निनावात्न द्राथिया नित्नन । मृत्न মাণিক্য ক্রন্তমণি নামক এক জ্ঞাতিকে হন্তী ধরিবার নিমিত্ত মতিয়া পাহাড়ে প্রেরণ ক্রেন। রুজমণি তথায় ব্চরনারায় নামক পার্বভীয় ত্রিপুরাস্দারের সহিত মিলিত হইয়া মুক্দ মাণিকাকে এক পত্র লিখিলেন যে পার্বভীয় ত্রিপুরাগণ ধরন সংশ্রবে থাকিতে চাহেনা, মহারাজের অনুমতি পাইরে তাহারা ফৌজদার সামুচর হাজি মুনসিমকে বধ করিতে প্রস্তুত আছে। মুকুন্দমাণিক্য পত্র পাইয়া চিস্তিত হইয় উত্তর দিলেন যে, 'তাহা হইতে পারে না, কারণ তাঁহার জো পুত্র জামীন স্বরূপ মুর্শিনাবাদে আছে।' রুদ্রমণি ইংগতেঃ काछ ना इट्रेश को कनारत्र प्राण विनारमंत्र कछ शीए। भीड़ी করিতে লাগিলেন। মুকুন্দমাণিক্য কিংকর্ত্তব্য বিমৃত্ হইন • পত्रथानि दशेकनात्रदक नित्नन। दशेकनात्र आगस्त्रकात्र वन কৃতজ্ঞ না হইয়া ভাবিল মহারাল মৃকুন্ত এই ষড়মা জড়িত, স্বতরাং তাঁহাকে, তংপুত্র ভদ্রমণি, ক্লমণি বড়ঠাকুর গঙ্গাধরকে বন্দী করিল। রুজমণি ঠাকুর ^{এই} मःवान शाहेमा मटेमरक व्यामिमा **উनम्रश्**त ८वष्टेन कविरननः

মহারাজ মুকুন্দ ইতিমধ্যে যবন কর্তৃক বন্দী হণ্ডার বিষপানে আত্মহত্যা করিলেন। রাজ্ঞী সহমৃতা হইবার উদ্যোগ করিলে সর্দার বৃচরনারায়ণ তাঁহাকে উত্তরাধিকারী নিযুক্ত করিতে অমুরোধ করেন। তিনি প্রথমে স্বপুত্র গাঁচ কড়ি তৎপরে গঙ্গাধরকে উত্তরাধিকারী নির্দেশ করেন। কিন্তু বৃচরনারায়ণ ফ্রেমণিকে নির্বাচিত করিতে বনার তিনি অস্বীকার ধরিয়া চিতারোহণ করেন।

সন্দার বৃচরনারায়ণের সাহায্যে রুজুমণি ঠাকুর ^{বা} মাণিক্য (২র) নামে সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। ^{ইরি} গোবিন্দমাণিক্যের কনিষ্ঠু ভাতার কনিষ্ঠ পুজের বো^{ঠপুর} ফৌজনার তাঁহার নিকট মুক্তিভিক্ষা করার জারমাণিকর তাঁহাকে মুক্তি নিলেন। ক্লক্ষনি প্রভৃতি রাজকুমারেরা এই সমর ফৌজনারের হাত হুইতে নিক্কৃতি পাইরা চাকার পলাইলেন।

পাচকড়ি তথনত বাদানার নবাবের নিকট ছিলেন।
তিনি বহদিন ত্রিপুরার কোন সংবাদ না পাইয়া নবাবের
অন্নতি নইয়া ইতিমধ্যে নেকৈপথে দেশে আসিতেছিলেন।
প্রাগর্ভে তিনি রুক্ষমণির এক পত্র পাইয়া রাজ্যের অবস্থা
জানিতে পারিলেন ও অন্নিনি ফিরিয়া আবার মুর্শিদাবাদে
গেলেন। নবাব সমক্ত ভানিয়া ঢাকার শাসনকর্তাকে তাঁহার
সাহায্য করিতে আদেশ দিলেন। বাঙ্গানার নবাব এই
সময়ে পাঁচকড়িকে সিংহাসনে বসিবার অন্ন্যতি অরুপ একবানি সনক্রেহণ ত্রিপুরায় এই প্রথম।

পাঁচকড়ি দদৈক্তে কুমিলার পৌছিলে প্রজাও কর্মচারিবর্গ তাঁহাকেই রাজা বলিয়া গ্রহণ করিল। উনরপুরে যুদ্ধ
হয়। বিতীয় জয়মাণিক্য পরাজিত হন। সন্তবতঃ ১১৪৯
বিপ্রাকে (১৭৩৯ খুটাকে) পাঁচকড়ি ইন্দ্রমাণিক্য (২য়)
নামে সিংহাসনে আরোহণ করেন। তাঁহার ভ্রাতা কৃষ্ণমণি
যুবরাজ ও হরিমণি বড়ঠাকুর হন।

জয়মাণিক্য রাজাচ্যুত হইয়া হরিনারায়ণ চৌধুরী নামক
সমত মেহেরকুলের দৈঞ্চল এবং আরও ১৪শক্ত দৈশ্য লইয়া
ত্রিপুরার অনেক স্থান লুঠন করিতে লাগিলেন। শেবে
তিনি উৎকোচ দিয়া ঢাকার শাসনকর্তা জলকাদেরখাকে
বশীভূত করিয়া ইন্দ্রমাণিক্যের বিরুদ্ধে উত্তেজিত করিলেন।
রৌসনারাদের বাকী থাজানার দায়ে জলকাদেরখাইন্দ্র
মাণিক্যকে বন্দী করিয়া ঢাকায় লইয়া গেলেন। এ সময়
ঢাকায় ধর্মমাণিক্যের পুত্র গলাধর ছিলেন। তিনি জলকাদেরখাকে উৎকোচ দিয়া রাজা হইতে চাহিলেন।
মহম্মদ রকি নামক একবাক্তি একদল দৈশ্য লইয়া আদিয়া
জলকাদেরের আদেশমত গলাধরকে ত্রিপুরার দিংহাসনে
বসাইলেন। গলাধর বিতীয় উদয়মাণিক্য নামে রাজা
হইলেন।

লগদামমাণিকা এতদিন রাজাচাত হইরা ঢাকীর ৩টা পরগণার লমীদারী সন্থ লইরা বাস করিতেছিলেন। (ইহার বংশধরের। এখনও ঢাকার আছেন। তাঁধীরা 'কাদ্বার রাজা' বা 'ঢাকার রাজা' নামে খ্যাত।) জয়মাণিকা নিজে সফল হইতে না পারিরা বৃদ্ধ লগদামকে আবার কেপাইরা ত্লিবার চেটা ক্রিলেন। তিনি বলিরা পাঠাইলেন যে,

বলি জগলার উৎকোচ দিয়া চাকার নবাবকে বশীভূত করিতে পারেন, তবে আবার ভিনি (জরমাণিকা) রাজা হইতে পারেন এবং রাজা হইলে জগলামের প্রাতা নরহরিকে ব্বরাজ করিবেন। জলামাও তাহাই করিলেন। জলাদেরগাঁও অর্থের দাস, তিনিও অমনি উদরমাণিকারে পরিবর্গ্তে জরমাণিকাকে ত্রিপুরার রাজা বলিয়া বীকার করিলেন ও উদরকে দ্রীভূত করিয়া জরমাণিকাকে সিংহাসন দিলেন। জয়মাণিকা আবার রাজা পাইয়া জগলামের প্রাতা নরহরিকে ম্বরাজ করিলেন।

এই সময় निराहेम् महम्बन ठाकात्र भागनकर्छ। इन। ै হোদেন কুলিখাঁ ভাঁহার সহকারী ছিলেন। ইক্রমাণিক্য হোসেন কুলির বন্ধুখনাভ করেন ও তৎসাহাযো বালালার নবাব আলীবৃদ্ধির নিক্ট হইতে দৈত আনাইয়া ত্রিপুরা অধিকার क्तिर्यंत्र । दिखीय अवस्थानिका वन्ती इटेश मूर्निनावास প্রেরিত হইলেন। ইক্রমাণিক্য বিতীয়বার রাজ্যলাভ ক্রিয়া মুর্শিদাবাদে এক প্রতিনিধি রাখিলেন। কিছুদিন পরে मूर्णिनावान स्ट्रेंटि मःवान व्यामिन, सग्रमानिका नवादवत शिग्र-পাত্র হালী হোসেনের সহিত বধুতা করিয়াছিলেন ও হাজী ट्हारमन डीहाटक बाब्य CF विश्वाहेवाब CFहोग च्याटहन। हेन्य-माधिका উवित्र इट्रेश मूर्निमावादम दशदमन अ आनोविक्तिक ममख कानाहरनन। नवाव हाकीरहारमनरक उज्जन वह তিরস্কার করিয়া জয়মাণিকাকে কারাগারে রাণিতে আদেশ দিলেন। ইক্রমাণিকা রাজো ফিরিয়া আসিলেন। ইহার **गत हां की रहारमन ज्यनभारनत প্রতিশোধ দিবার क**छ <u>(</u>68) করিয়া কুমিলার ফৌজদার হইয়া ত্রিপুরায় আদিলেন ও ইন্দ্রমাণিকোর রাজ্যে অত্যাচার আরেন্ত করিলেন। ইঞ্জ-মাণিকা সহু কঁরিতে না পারিয়া ন্বাবকে জানাইলেন। তিনি অফুস্কানার্প হোসেনউদীন্ নামে এক্সনকে পাঠাইলেন। ट्राटमन्डिकीन् त्थापत्न मङ्गान लहेश हासीद्राटमन उ हेन्द्र-मानिका छेखप्रक मान नहेशा मूर्निमानाम श्रातन। नताव राजीत्रहे त्माय अनिया ठाँशादंक हे समानित्कात कि छिन्तन कतिएक विनिद्या । १९८८ शृहीएक हे समाधिका वह छन-नत्क मूर्मिनावादन ছिल्लन। मार्शही-यूदक -नवाव उंहिरक একদল দেনার ভার প্রদান করেন, কিন্তু শারীরিক অস্তুত্ত थाकात्र यूटक याहेटल भारतन नाहे। भीफाँत कथा अनिया নবাব হাজীছোদেনের উপর তাঁহার চিকিৎসার ভার দেন। যুদ্ধে যাইবার ভাড়াভাড়িতে হালী যে ইক্সের কভদুর শক্ত তাহা নবাব ভূলিয়া গেলেন। যাহা হউক হান্সী চিকিৎসকের পরামর্শ করিয়া ইচ্ছকে যে ঔষধ থাওয়াইলেন,

তাহাতেই ভাঁহার জীবণীলা ফুরাইল। নবাব ফিরিয়া আসিয়া সংবাদ লইলেন ও মৃত্যু সংবাদ পাইয়া মহা আক্ষেপ করি-লেন এবং তাঁহার কনিষ্ঠ ভ্রাভাকে রাজ্য দিতে বলিলৈন। ফৌলদার হাজীহোদেন তাহাই করিতে শীকৃত হইয়া कृभिलात्र (भोष्टित्राहे यूवदाब क्रथमिनिक (दोननावान शहेरक দুর করিয়া দিলেন এবং দান্দের গান্ধী ও আবহুল রঞ্জাক নামক গ্রন্থ ব্যক্তির উপর শাসন ভার অর্পণ করিলেন। যুবরাজ কৃষ্ণমণি বাত্বলৈ খাধীন জিপুরার কতকাংশ খবশে রাথি-লেন। হাজীহোদেন তৎপরে মুর্লিদাবাদে আসিয়া বিভীয জয়মাণিক্যকে কারাগার হইতে উদ্ধার করিয়া ত্রিপুরায় লইয়া গেলেন। পথে ঢাকায় ওাঁহার মৃত্যু হইল। হাঞ্জী তথ্ন তাঁহার ভাতা হরিধন ঠাকুরকে বিজয়মাণিকা নাম দিয়া সিংহাসনে ৰসাইলেন এবং রৌসনাবাদ হইতে মাসিক এক সহস্র টাকা তাঁহাকে দিবার ব্যবস্থা করেন। এই রৌসনা-বাদের রাজস্ব বাকী পড়ায় বিজয়দাণিক্য বন্দী ও কারাগারে শৃত্যমূপে পতিত হন।

সমশের গাজী ও আবহুল রজাক রৌসন্দ্রাদ শাসন করেন। তাঁহারা ত্রিপ্রা জাতির নিকট কর প্রার্থনা করায় তাৃহারা বলে, রাজবংশ ব্যতীত অপর কাহাকেও কর দিব না। তথন উক্ত মুসলমানবয় পরামর্শ করিয়া বিতীয় উলয়মাণিকোর ভাতৃপুত্র বনমালী ঠাকুরকে লক্ষণমাণিকা নাম দিয়া ত্রিপুরার রাজা করিতে সংকল্প করিলেন। যুবরাজ কৃষণমণি তাহা জানিতে পারিয়া ত্রিপুরার রাজসিংহাসন ভাজিয়া নদীতে ভাসাইয়া দেন। লক্ষণমাণিকা এক বংশনির্মিত সিংহাসনে রাজা হন। মুসলমানবয় তাঁহার নামে নায়াখালি, চট্টগ্রাম প্রভৃতি লুঠন আরম্ভ করিল এবং তন্থারা আপনাদের ধনাগার পূর্ণ করিতে লাগিল। বৌসনাবাজার প্রজাগণ ইহাদের অভ্যাচার সহিতে না পারিয়া নবাব মীর কাশিম আলী থাঁর নিকট জানাইলে তিনি সৈক্ত পাঠাইয়া উভয়কে বন্দী করিয়া আনিয়া তোপের মুণে উড়াইয়া দেন।

১১৭০ ত্রিপ্রান্দে (১৭৮০ খুটান্দে) ১লা পৌষ যুবরাজ ক্ষমণি নবাব কাশিম আলী থাঁর সনন্দ লইয়া ক্রফমাণিকা নামে রাজা তইলেন। তিনি ত্রিপুরায় ন্তন রাজসিংহাসন প্রস্তুত্ত করান ও উদয়পুর পরিত্যাগ করিয়া আগরতলায় রাজ্ধানী ভাপন করেন। ক্রফমাণিকা স্বীয় ভাতা হরিমণিকে যুবরাজ ও স্বীয় পিতৃব্যের পৌল বীরমণিকে বড়ঠাকুর পদে নিযুক্ত করেন। তেই সময় চট্ট্রামের মুসলমানেরা বড় অভ্যাচার করিতে আজ্ঞু করে। কশবাগ্রামে যুদ্ধ হয়। যুদ্ধে মহারাজ ক্রফমাণিকা পরাজিত হইয়া ত্রে আল্র্য

লবেন। তথা হইতে অন্ত্রনিক্ষেপ করিরা মুসলমানদিপ্রে পরান্ত করেন। কশবা-ছর্পের ভগাবশেষ এখনও ভথাকার কালীবাড়ীর উভরে বর্জমান আছে। এই সমরে ইংরাজের বাঙ্গালা জয় করেন। তংপরে ১৭৬৫ খৃষ্টাজে লর্ড ক্লাইন বাঙ্গালার দেওয়ানী পাইয়া রাল্প লিক নামক এক ব্যক্তিরে রেসিডেন্ট করিয়া ত্রিপুরায় পাঠান।

২র রত্মাণিক্য কুমিলায় যে সপ্তদশ চূড়া মন্ধি
পত্তন করিরাছিলেন, মহারাজ রুক্তমাণিক্য তাহা সমাধ্
করিরা তাহাতে জগলাথ মূর্তি স্থাপিত করেন। যুবরাজ হরিমণি, কণ্ঠমণি ও রাজধরমণি নামে ছই শিশুপুত্র রাণিয়
অর্গগত হন। মহারাজ রুক্তমাণিক্য, ও মহিনী জাহ্বা
দেবী কণ্ঠমণিকে জনাদর ও রাজধরকে সমাদর করিভেন।
১১৯১ ত্রিপুরাকে (১৭৮০ খুটাকে ১১ই জুলাই) মহারাজ
রুক্তমাণিক্যের মৃত্যু হয়। সেসময় কুমার রাজধর কুমিলার
ও রেসিডেণ্ট শিক চট্টগ্রামে ছিলেন।

স্বামীর মৃত্যুর পর মহিনী জাহ্নবা দেনী ত্রিপুরা শাদন করিতে লাগিলেন। রেসিডেন্ট গবর্ণর জেনারল ওয়ানে হেষ্টিংস্কে সংবাদ দিলেন। মি: লিক আগরতলার আদিরে রাজী তাহাকে জানাইলেন যে রাজধর সিংহাসনে বদিনেই তিনি রাজকার্য্য হইতে অবসর লইবেন। বড়ঠাকুর বীরমনি রাজীর অভিপ্রায় বুঝিয়া রাজ্যাধিকার করিতে অভিলামী হন, কিন্ত হঠাৎ মৃত্যু হওয়ায় তিনি কিছুই করিতে পারেন নাই। রাজাচ্যুত লক্ষ্ণমাণিক্য এই স্ক্রেগে সিংহাসন অধিকারের চেষ্টা করেন, কিন্ত জাহ্নবা দেবীর কৌশনে

আহ্বা দেবী কুমিল্লায় একটা দীর্ঘিকা থনন করান।
তাহা আজিও রাণীর দীঘী নামে বর্ত্তমান আছে। প্র
বালালায় ইহার জলের প্রায় স্থাপের জল আর কোণাও নাই।
ওয়ারেণ হেন্তিংস রাণীর আবেদন মত রাজধরকে ত্রিপুরাণার
বলিয়া শ্রীকার করিলেন। ১১৯৫ ত্রিপুরান্দে (১৭৮৫ খৃঃ জার্চ
জুলাই) মহারাজ রাজধর মাণিক্য সিংহাসনে আরোহণ করেন
ও মহারাজ লক্ষণমাণিক্যের পুত্র হুর্গামণি ঠাকুরকে যুবরার
পদে নিযুক্ত করেন। রাজধর জেঠাইএর অন্থরাহ রাল।
হইলেন বটে, কিন্তু লেখাপড়া না জানায় ইংরাজ গ্রমের্গ
হক্তে রাথেন। তপন ইহাতে ১৩৯০০০ টাকা আয় হিন।
মহারাজ ইহা হইতে ধরচের জন্ম মানিক ১ হাজার সালা

রাজধর মণিপুররাজ_্জয়সিং**হের কলাকে বিবাহ** ফরের,

তাহার গর্ভে কোন সন্তান হর নাই। অন্ত পত্নীর গর্ভে তাঁহার চারিটী পুত্র হয়, তর্মধ্যে ছইটার শৈশবেই মৃত্যু হয় ও ছইটা জীবিত ছিল।

ইহার সমর ত্রন্ধদেশধিপতি ত্রিপুরা ও আরাকান আক্র-মণ করেন। সেনাপতি আশুমণি মগদিগকে পরাজিত করেন। আরাকান ত্রন্সের অধিকৃত হর। কুকিগণ বিজোহী হইলে সেনাপতি আশুমণি তাহাদিগকে পরাস্ত করেন।

রাজধর বীয় জ্যেষ্ঠ পুত্র রামগলাকে বড়ঠাকুর পদে
নিযুক্ত করিয়া তাঁহার হত্তে রাজ্যশাসন ভার দেন। তিনি
পিড়মন্ত্রী কালীচরণের পরামর্শে ক্ষন্সরন্ধে রাজকার্য্য
নির্কাহ করিতেন। শ্রীহট্টের জনৈক ভদ্র কারত্বের ক্যা
চক্রতারার সহিত রামগলা বড়ঠাকুরের বিবাহ হয়।

রাজধর রাজধানীতে বৃশাবনচন্দ্র নামে বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা ও
মোগরা গ্রামে রাজধরগঞ্জ নামে একটা বাজার ভাপন
কবেন। রাজধর শেষ দশায় বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়া
১২১৪ ত্রিপুরাকে (১৮০৪ খুষ্টাকে) কালগ্রাসে পতিত হন।
পিতার মৃত্যুর পর রামগঙ্গা রাজা হন ও ভ্রাতা কাশীচন্দ্র
বুবরাজ হন। যুবরাজ তর্গামিণি কুলাচার মতে রাজ্যাপ্রির জন্ত আবেদন করেন, শেষে ১৮০৮ খুষ্টাকে ১৮ই
ফুলাই প্রভিন্মিয়াল কোটের বিচারে তিনিই রৌসনাবাদ
মমাদারীতে অধিকারী, স্কুতরাং রাজ্যাধিকারী বলিয়া নির্ণীত
হন। মহারাজ রামগঙ্গামাণিক্য সদর দেওয়ানীতে আপীল
করেন। আপীলেও তুর্গামিণির সম্ব বজায় থাকে। এই
নিম্পত্তিবলে ইংরাজ গবর্মেণ্ট তুর্গামণিকে ত্রিপুরাপতি
বিশ্বা স্বীকার করেন। রামগঙ্গা রাজ্য ত্যাগ করিয়া
শ্রহটে গিয়া তথাকার বিষ্ণাও ও বালিশিরা নামক তুইটা
পরগণার জমীদারী স্বন্ধ লইয়া সপরিবারে বাদ করেন।

ছ্র্গামাণিক্য ১৮০৯ খুটান্দে রাজা হন। তিনি প্রথমে দেওয়ান রামরত্বের কলা স্থমিত্রা দেবীকে বিবাহ করেন, তাহার গর্ভে ছইটা কলা জন্মে, তৎপরে নকুল গাইলিমের কলা মধুমতীকে বিবাহ করেন। সদরদেওয়ানীতে মোকদ্মাব সময় ভূকৈলাদের রাজগণের পূর্বপূক্ষ দেওয়ানগোক্লচন্দ্র ঘোষাল ছর্গামণিকে বিতার সাহায্য করায় তিনি রাজা হইয়াই দেওয়ান গোকুল ঘোষালকে একুটা গ্রাম নিকর দান করেন।

হর্গামাণিকা কানীতে শিবভাগনাও শিবমন্দির নির্মাণ করান। তিনি তিন বৎসর রাজ্যশাসন করিয়া বিতীয় বিজয়মাণিকোর পৌত্র শস্তুচক্র ঠাকুরকে যুবরাজ পদো-শবোগী ছঅদণ্ডাদি দিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহার অভিবেক হয় নাই। শস্তুচজের হল্তে রাজ্যভার দিয়া তিনি কাশী যাত্রা কর্মেন, পথে ১২২৬ জিপুরান্দে (১৮০৬ খুটান্দের এপ্রেন মাসে) পটিনায় তাঁহার অর্গলাভ হয়।

হুর্গামাণিকোর মৃত্যুর পর গ্রামগলা ইংরাজের অফুগ্রছে পুনরাম রাজা হন। কঠমণি প্লাকুরের (মহারাজ রাজধরের জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা) পুত্র অর্জ্জনমণি ঠাকুর মনোনীত যুবরাজ শস্ত্চক্র ঠাকুর ও মহিনী স্থমিত্রা মহাদেবী রৌসনাবাদ জ্মীদারীর জ্যু মোকদমা করেন, কিন্তু রামগলামাণিকা পুরের বড়ঠাকুর ছিলেন বলিয়া সদর দেওয়ানী আদালতে উাহার অইই স্থিরীক্বত হইল। মোকদমা শেষ হইলে রামগলা ১২৩১ ত্রিপুরাকে (১৮২১ খুটাক জুন) বিতীয় বার রাজা হন। কাশীচক্র পুনরায় যুবরাজ হন ও রামগলার পুত্র ক্ষাকিশোর বড়ঠাকুর হইলেন।

শস্তুচক্র মোকদমীর হারিয়া কাইপেং প্রভৃতি কুকিগণের সহিত মিলিত হইয়া যুদ্ধের আয়োলন করেন, কিন্ত ত্রিপুরার সেনাপতি স্থবা ধনপ্রয়ের নিকট পরাস্ত হইলেন।
ব্রহ্মরাজ ত্রিপুরা আক্রমণ করেন, কিন্তু রামগলা কৌশলে তাঁহাকে রাজ্যে প্রবেশ করিতে দেন নাই। ব্রহ্মযুদ্ধে ইনি ইংরাজের সাহায় করেন।

মহারাজ রামগঙ্গা মাণিক্য মোগরা প্রামে একটী দীর্ধিকা থনন করাইয়া গঙ্গাসাগর নামে অভিহিত করেন, ভাহা বর্ত্তমান আছে। তিনি শীয় শুরু ও গুরুপদ্ধীর নামে ভূবন-মোহন ও কিশোরী দেবী নামে ছই বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন। তাঁহার এক মাত্র পদ্ধী ছিল। তিনি পারহা ভাষায় পশুত, শার ও শস্ত্রবিদ্যা এবং মল্লযুদ্ধে পটু ছিলেন। ১২০৬ গ্রিপু-রান্ধে (১৮২৬ গৃঃ অব্দে ১৪ই নবেম্বর) চক্তর্গ্রহণের সময় রাত্রিতে মন্তবে দীক্ষাগুরুর পদ ও রক্ষেশালগ্রাম ধারণ করিয়া মহারাজ রামগঙ্গামাণিক্য স্বর্গলাভ করেন। বৃন্ধাবনেও তিনি রাসবিহারী নামে দেবতা প্রতিষ্ঠা করেন। মৃত্যুর পর তাঁহার স্থান্ধে ১৮ হাজার টাকা কেবল গরীবদিগকে দান করাহয়।

১২৩৭ ত্রিপুরাকে (১৮২৭ খৃষ্টাব্দের মার্চ্চুমানে) যুবরাজ কাশীচন্দ্র রাজা হন। রামগঙ্গামাণিক্যের সময় হইতে ত্রিপুরা-পতির অভিষেক কালে বৃটীশরাজ থেলাত দিয়া থাকেন। রুফাকিশোর যুবরাজ ও রুফাচন্দ্র নামে কাশীচন্দ্রের পুত্র বড় ঠাকুর হন। রুফাচন্দ্রের মাতা কৃটিলাক্ষী মহাদেবী সণিপুর রাজকন্তা ছিলেন। তিনি অপুত্রকে যুবরাজ করিতে বলেন। কাশীচন্দ্র তজ্ঞা তাঁহাকে বিশেষ তিরুস্কার করেন। এই সমরে ফরাসী এফ কুর্জন চাকলে রৌসনাবাদের অধাক হন। তিনি রাজার বিখাসপাত্ত ইয়া বিশেষ ধন-শানী হইয়াছিলেন। ইহার জ্যেষ্ঠপুত্র চল্দননগরে সর্কা-পেকা উৎক্রই অটালিকা করিয়াছেন।

অপেরিমিত মন্তপানে "কোশীচক্স তিন বংগর রাজত্ব করি-রাই মৃত্যমুধে পতিত হন।

১২৪০ ত্রিপুরালে কৃষ্ণকিশোর রাজা হন। বড়ঠাকুর কৃষ্ণচল্লের মৃত্যু হওরায় কৃষ্ণকিশোর স্বীয় পুত্র (আড়াই বংসর বয়ষ) ঈশীনচক্রকে যুবরাজ পদে নিযুক্ত করেন। কৃষ্ণকিশোর তাদ্রিকদিগের অস্বরোধে কতিপর চণ্ডাল হত্যা করিয়া তাহাদের মন্তকে মহাপাত্র ও অস্থিতে মহাশন্থের মালা করাইয়া তাদ্রিকদিগকে দান করেন। তিনি বিদান, বীর ও যুদ্ধকুশল হইলেও অতি মন্তপ ও ইক্রিয়পরায়ণ ছিলেন। কৃষ্ণকিশোরের সময় চট্টগ্রামের কমিশনার ত্রিপুরার স্বাধীনতা হরণের চেটা করেন, কিন্তু গ্রণর জেনারল তাহা অনুমোদন করেন নাই। তাহার বিতীয় পুত্র উপেক্র বড়াকুর হন।

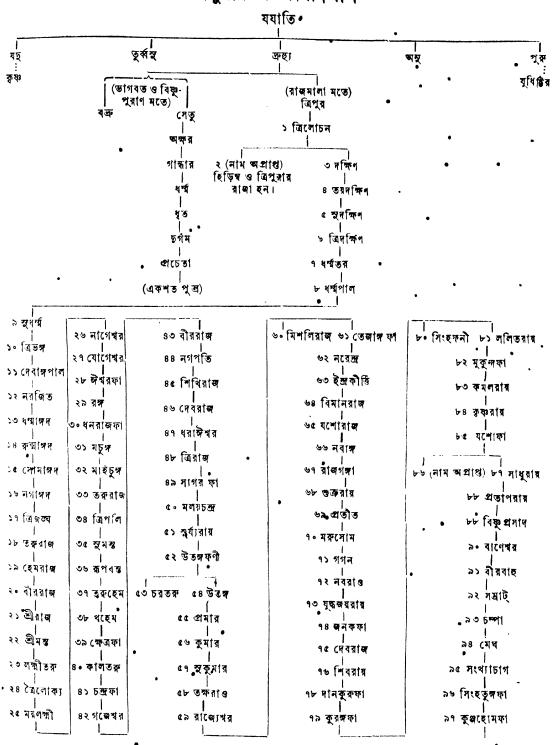
• রঞ্চকিশোর শীকানপ্রিয় ছিলেন। শীকারের অম্-রোধে এক জলাভূমিতে রাজধানী স্থাপন করিয়া 'নৃতন হাবেলী' নাম দিয়াছিলেন। ১ পুত্র ও ১৫ কলা রাথিয়া ক্ষণ-কিশোর ১২৫১ ত্রিপুরাকে ২রা বৈশাথ রাত্রি বজ্ঞাবাতে মানব-লীলা সম্বরণ করেন। ইহার অপরিমিত বার জন্ম চাকলে রৌসনাবাদ তথন গুরুঝণে বিজড়িত ছিল।

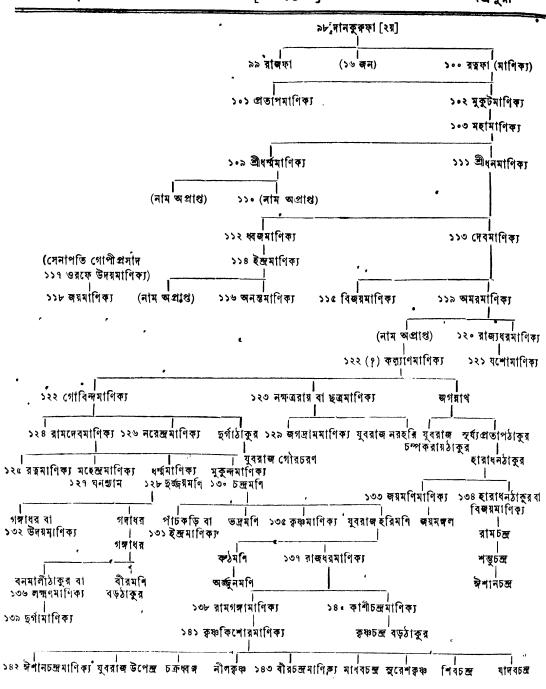
১২৫৯ ত্রিপুরান্দে ২০ মাঘ (১৮৫০ পৃষ্টাব্দে ১লা ফেব্রুয়ারিতে) মহারাজ ঈশানচক্রমাণিকা রাজা হন। বৃড়ঠাকুর উপেক্র যুবরাজ হন। তথন রাজ্যের ১১ লক্ষ টাকুা ঋণ। রুফিঃ-কিলোর স্বীয় মাত্রি স্হচরীর গর্ভদাত বলরাম নামক এক ব্যক্তিকে আলাহান্ধীর পদে নিযুক্ত করেন। ঈশান তাঁহাকে স্কুচ্তুর ভাবিয়া দেওয়ান∶পদ দিলেন। কিন্তু বলরাম স্বীয় ভ্রাতা শ্রীদামের সহায়তায় রাজ্যে অত্যাচার করিয়া নিজ কোষ পূর্ণ করিতে লাগিলেন। রাজা ও যুর্রাজ ব্যতীত मक (गरे वित्रं क हरेग। जिश्रतात अधान अधान (गारक তাঁহার বধচেষ্টা কবিতে লাগিল। শেষে কুকিদিগের সাহায্য नहेंग्रा भरोकिए ও कीर्डि नामक इहेराकि नामक रहेग्रा रनवाम ও শ্রীদামের বাটা আক্রমণ করিল। বলরাম পলাইলেন। শ্রীপাম নিহত হইলেন। ঈশানচক্র ক্রন্ধ হইয়া বলরামের শক্র-निगरक वन्नी ७ जीनः महस्रा की हिंद्र आण मध करत्रन। वनतात्मत्र প্রতি প্রकाদের বিছেষ कानिया महाताल लेनान उहारिक श्रमहा उ व अवस्मार्न ठीकू तरक रम अवान करवन। দ্বিতীর বিজয়মাণিক্যের পুজেরা এই সময় কেশীনদীর দক্ষি তীরে বগাচতল নামক স্থানে একটা ক্ষুদ্র রাজ্য স্থাপ করিয়া ত্রিপুরার দক্ষিণাংশে লুঠনাদি করিত, ঈশানচক্র ভাগ দিগকে বশীভূত করেন। যুবরা**জ** উপে<del>প্র</del> পিতার 🔊 মদ্যপান ও কুক্রিয়াসক্ত ছিলেন, ১২৬১ ত্রিপুরাবে তাঁহা মৃত্যু হইলে ত্রিপুরা স্থান্থির হইল। ত্রজমোহন দেওয়ান। थान त्नांव कतिराज भारतन नाहै। द्रोप्रनावान यात्र हो। হইল। রাজপরিবারের ভরণপোষণ ক্লেশকর হইয়া উঠিন ঠাকুরবংশীয় দক্ষিণারঞ্জন এই সমন্ন ত্রিপুরায় উপস্থিত ধন। তিনি মহারাজকে ভর্ম দেওয়ায় মহারাজ তাঁহাকেই প্রধান মন্ত্রী করিতে চাহেন কিন্তু তাঁহার চরিত্রদোষ থাকায় রাজগুরু বিপিনবিহা গোৰামী সমস্ত কর্মচারীর প্রামর্শ মতে তাহাতে বাং দেন। মহারাজ ঈশান, অতিশয় গুরুতক্ত ছিলেন। ডি श्वक्रवाटका प्रक्रिंगा वावूटक विषय प्रिमा श्वाप्रहरू विल्ला 'প্রভো। আমি চাকলে রৌসনাবাদ রক্ষার উপায় দেখি ন অবাপনার চরণে রক্তো ও জ্মীদারী অপণ করিলাম, আপনি त्रका कक्रन।

विभिनविशाती ১२७৫ जिभूताटक जिभूतात भागनजात गरे লেন। কলিকাভায় কার্য্য চালাইবার জন্ম এই সময় যজ্জ চট্টোপাধ্যায় নামক এক অতি বুদ্ধিমান্লোক আমমোলা নিযুক্ত হন, তিনি ছয়মাস কলিকাতায় ছয়মাস আগ্রতনা থাকিতেন। শুরু বিপিনবিহারী অমাত্যগণের প্রামা नाना (कोमान ताका अग मूक करतन। जेमान<u> क</u>र २४१ ভূমি আবাদ করাইয়া সীয় হই পুত্রের নামে একেজনগর: নব্দীপনগর রাথেন ও তাঁছাদি:: কে জায়গীর দেন। ভ পরামর্শে তিনি খীয় পুল্বয়তক যুবরাজ ও বড়ঠারু পদে নিযুক্ত[†] করিতে চাহিলেন। তাঁহার ভাতারা ^{ইহায়ে} চক্রান্ত করিতে লাগিলেন। গুরুর প্রাণরকা দায় ^{হইন} তিনি ভবে ঈশানচক্রকে প্রতিশ্রতি করাইলেন যে, ঈশানে পুত্ৰহয় ব্যতীত আৰ কাহাকেও কোন উত্তরাধিকা^{রী প} मिर्द्रन ना। त्राकारक अराभरन विनारमत रहे हैं हैं, कि অপ্রচরের কৌশলে রাজা তাহা জানিতে পারিয়া তাহা^{রিস্থে} ধৃত **ও বৃন্ধী করেন। এই সময় চট্টগ্রামে সি**পাহী ^{বিরো} **हत्र। झे** नानठळ जाँश प्रमनार्थ देश्ताटकत नाहाया करत्रन।

১২৬৯ ত্রিপুরাক্তে কুকির উৎপাত হয়, মহারাজ তাহার্ন করেন। এই সময় বড়ঠাকুর ও যুবরাজ্ব পদ পাইবার গ নীলক্ত্রক ও বীরচক্ত নামক, ঈশানচক্তের ভাত্রম জনেক মের্চ ক্ষমা করেন, মোকদ্মায় তাঁহারা জয়ী হন নাই; शि

## जिश्रात ताजवःगावनी।





ইছার ফলে বৃটীশ গবর্মেণ্টের সঙ্গে এই সময় জিপুরার এক ব্রুড় হিসাবে সন্ধি হয়।

ঈশানচক্ত তৃতীয় পুজের নামেও রোহিণীনগর নাম দিরা এক ন্তন নগর নির্মাণ ও তৃতীয় পুত্তকে আবায়পীয় দেন। তিক্ষা প্রগণায় রাণী চক্তেখেরী মহাদেবীর নামে এক বাআবার ছাপিত হয়। চক্তেখেরী বৃন্দাবনে রাধামাধ্ব মূর্ব্তি স্থাপন ক্রেন।

১২৭২ ত্রিপুরাকে ১৭ই আবেণ ৩৪ বংসর বয়সে মহারাজ 
কিলাচক্রমাণিকা উত্তরাধিকারী নিযুক্ত না করিয়াই বাতরোগে কালগ্রাসে পতিত হন। ইনিই ত্রিপুরায় নৃতন রাজপ্রাসাদ নির্দাণ করেন। একদিন মাত্র এই প্রাসাদ তিনি
ভোগ করিতে পাইয়াছিলেন। অনেক গোলমালের পর
বীরচক্রমাণিকা রাজ্যলাভ করিলেন। ইনি ধার্ম্মিক ও
সাহিত্যাহরাগী। ইহার যদ্ধে ত্রিপুরারাজ্যে অনেক স্থানিয়ম
ভাপিত হইয়াছে। এখন ইনিই রাজত্ব করিতেছেন।

পূর্ব পৃষ্ঠায় ত্রিপুরা রাজবংশের একটা তালিকা প্রদত হইল।

ত্রিপুবার বৌদ্ধর্ম। এক সমর ত্রিপুরার তাত্রিক বৌদ্ধর্ম বিশেষ প্রবল হইয়াছিল। রাজমালায় এ সহকে কোন কথা বিধিত না হইলেও তিকতের লামা তারানাথ খুষ্টীয় ১৭শ শতাকে অনেক কথা বিথিয়া গিয়াছেন,—এথানে সার সহ-বিত হইল মাত্র।

"রামপালের রাজত্বকালে প্রসিদ্ধ বৌদ্ধতান্ত্রিক বিরূপ আবিভূতি হন। ইহার অপর নাম ধর্মপাল। ইহার প্রধান শিয়ের নাম (উড়িয়া) কালবিরূপ, তাঁহার প্রধান শিষ্য অিপুরাধিপতি 'ডোম বিরূপ হেরুক'। এক সময় আচার্য্য কাণবিরূপ ত্রিপুরায় আগমন করেন। তাঁহার সত্পদেশ ভূনিয়া ত্রিপুরাধিপ বিমুগ্ধ হন এবং তাঁহার নিকট তাঁল্লিক বৌদ্ধর্ম্মে नीकिङ इट्टेरनन। क्रांस काहार्यात्र निक्षे थाकिया রাজাও একজন সিদ্ধ হইয়া পড়িলেন। তাল্লিক বৌদ্ধদিগের ^{মতেও} শক্তি সৃক্ষনা হইলে সিহিলাভ হয়না। রাজাও একদিন প্রত্যাদেশ গুনিলেন, পদ্মাবতী নামে এক ডোম-ক্সাকে শক্তিরূপে গ্রহণ করিতে পারিলে তাঁহার সিঁছিলাভ ^{२३८व}। त्राकाल स्टेडिस्ड मिट एजामनीरक शहर कतिरान। ভাগকে নইয়া রাজধানী ছাড়িয়াবলে গিয়া সাধনা করিতে শাগিশেন। ক্রমে ভিনি ডোমরাজ বা ডোমাচার্য্য নামে বিখ্যাত হইলেন। তিনি প্রকৃত ডোমজাতীয় ছিলেননা, ভবে ডোমনীকে গ্রহণ করার ডোমপতি+ নাম হই র। এই

ভোমপতির অনেক অসাধারণ ক্ষমতা ছিল। কিন্তু ডোম-কন্তার সহবাস করার তিনি রাজ্য হইতে নির্বাসিত হইরা-ছিলেন। জাঁহার অবর্ত্তমানে রাজ্যমধ্যে মহামারী উপস্থিত হয়। দৈবজ্ঞেরা গণনা করিয়া কৃহিল, যে রাজা না থাকাতেই এরূপ অঘটন ঘটিতেছে। প্রজা, সাধার্ত্তমে রাজাকে অভিযর করিয়া আহ্বান করিল। রাজ্যে শান্তি স্থাপিত হইল। রাজা 'ধর্মা' নামে তান্ত্রিক বৌদ্ধমত প্রচার করিলেন। অর দিন মধ্যেই শত শত লোক এই ধর্মানত গ্রহণ করিল। ধর্মপুলায় বজ্ঞ্যোগিনী, বজ্লবারাহী, বক্ষভাকিনী, বক্ত্রেব বা ক্ষেত্রপাল, নাথ প্রভৃতি পূলা পাইয়া থাকেন।

ত্তিপুরাস্তক (পুং) ত্রিপুরস্থ অস্তং করোতি অস্ত-ণিচ্-গুল্।
> শিব, মহাদেব।

"আশুতোৰঃ মিত্রমধ্যে শত্নাং তিপুরাস্তক:।" (কাশীথণ)
২১ যাচপ্রবন্ধ নামক সংস্কৃত গ্রন্থকার, ইনি ভট্টপাদের পুত্র।
ত্রিপুরারি (পুং) তিপুরস্থ অবি: ৬৩৫। ১ শিব। ২ এক্লন
টীকাকক্রে, পার্বতীনাথের পুত্র। ইংগর রচিত অনর্থরাঘ্র ও
মালতীমাধ্বের টীকা পাওয়া গিয়াছে।

ত্তিপুরারিপাল, একজন সংস্কৃত কবি। সৃত্তিকের্ণামূতে , ইহার কবিতা উদ্ভ হ্ইয়াছে।

ত্তিপুরারিরস (পুং) ঔষধবিশেষ, প্রস্তত প্রণাণী—হিঙ্গুলোখ, পারদ, তাত্ত্র, গদ্ধক, লৌহ, অন্ত্র, বিষ, প্রত্যেক ১ তোলা, রৌপ্যভন্ম অর্দ্ধ তোলা, আদার রসে মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্থপান মধু, চিনি বা আদার রস। ইহাতে অইবিধজর, প্রীহোদর, শোথ ও অতিসার আগু বিনষ্ট হয়। শৃক্র বেরুপ ত্রিপুর দ্যা করিয়াছিলেন, এই ঔষধ সেবনেও রোগ সকল সেইরূপ আগু প্রশমিত হয়, এইলক্স ইংগ্র নাম ত্রিপুরারিরসা। (ক্রেম্লায়রণ)

ত্ত্বিপুক্ষষ (ক্লী) অয়াণাং পুক্ষাণাং সমাহারঃ। ১ পিতাদি পুক্ষঅয়, পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ। অয়ং পুক্ষাং পিতা-দয়ো ভোক্তারো যস্ত। ২ ভোগভেদ।

"প্রপিতামহেন যম্ভুক্তং তৎপুত্রেণ বিনা চ তম্।

তৌ বিনা वञ्च ভোগঃ স্থাৎ স বিজেয়ঃ ত্রিপুরুষ: ॥"(ব্যবহারত॰)

প্রশিতামহ যাহা ভোগ করিয়াছেন, পরে তৎপুত্রও ভোগ করিয়াছেন, এবং তাঁহার পুত্র তাঁহাদিগের অবর্ত্ত-মানে যাহা ভোগ করেন, তাহাকে ত্রিপুক্ষ কহে। কিন্তু পিতামহ, শিতা ও পুত্র এই তিন পুক্ষ জীবিত থাকিয়া ভোগ করিলে এক পুক্ষ ভোগ বলা যায়।

"পিতা পিতামহো যত জীবেচ্চ প্রপিতামহ:।

ত্ৰদাণাং জীবিতাং ভোগঃ বিজেপ্তকপুক্ষর: ॥" (ব্যব ত॰ ) 🝃

⁺ किस डोज काराव 'कान-भ'।

( বি ) ব্য়ঃ পুরুষাঃ পরিমাণমস্তাঃ ঠন্ ওম্ভ লুক্। ৩ পুরুষব্য়-পরিমিত।

ত্রিপুরেশান্তি (পং) কাশীরস্থ একটা পর্বান্ত। (রাজত ৫।১২৩)
ত্রিপুষা (স্ত্রী) ত্রীন্ বালাদিদোষত্রয়ান্প্স্ঞাতীতি প্য-ক, তত্তাপ্। কৃষ্ণতির্বং, কাল তেউড়ী। (শল্চণ)

ত্রিপুক্তর (ক্নী) অয়াণাং পুদরাণাং সমাহার:। > পুদর্ত্তর ব্রহ্মকৃত তীর্থভেদ। ২ জ্যেষ্ঠ মধ্যম কনিষ্ঠ ভেদে পুদর হদ। (পুং) ৩ নক্ষত্র বার তিথি রূপ অশুভ যোগভেদ। পুনর্বস্থে, উত্তরাঘাঢ়া, কুল্তিকা, উত্তরকল্পনী, পূর্বভাজ, বিশাথা, রবি, মঙ্গল ও শনিবার এবং দিতীয়া, সপ্তমী ও ঘাদনী তিথিতে মৃত্যু হইলে ত্রিপুক্তর যোগহয়। মৃত্যু দিনে উক্ত বার নক্ষত্র ও তিথি একদিনে হইলেই এইরূপ ত্রিপুক্তর যোগহয়।

এই ত্রিপুদ্ধর যোগ অভিশয় অশুভ। এই যোগে মধিলে অচিরে ইহার শাস্তি করিতে হইবে, শাস্তি না করিলে 'ঐ মৃত ব্যক্তির' আগ্রীয় প্রভৃতি সকলই বিনষ্ট হয়, এবং বাস্ত রক্ষ পর্যস্ত জীবিত থাকে না। পূর্বোক্ত ভিথিবার নক্ষত্রে জ্মিলে জারজ যোগ হয়। এই যোগে রৃদ্ধি হইলে অর্থাৎ কোন বস্ত লাভ হইলে ত্রিগুণ লাভ হয়, কোন বস্ত নষ্ট হইলে ত্রিগুণ নাই হয়। সত্ত হইলে ত্রিগুণ হত হয়। মরিলে প্রথম মাসে বা বর্ষে কুট্যের পীড়া এবং ভাহার পুত্র বিনষ্ট হয়। দেবতা রক্ষা করিলেও ভাহার পুত্রের রক্ষা নাই।

"পুনর্বাস্তর্বাধানা ক্রন্তিকোন্তর্কস্ত্রনী।
পূর্বভাদ্রং বিশাথা চ রবিভৌমশনৈশ্চরা:॥ গ
বিভীয়া সপ্তমী চৈব ধাদশী ভিণিরেব চ।
এতেষামেকদা ঘোগে ভবভীতি ত্রিপুদ্ধর:॥
ভাতে তুজারজে: যোগো মৃতে ভবতি পুদ্ধর:।
ত্রিপ্তণং কলদো বৃদ্ধৌ নত্তে মৃতে ত্থা॥
প্রথমে মাদি বর্ষে বা কুট্রমিপি পীড়য়েং।

দেবাহিপি ষদি বা রক্ষেৎ তথ্য পুলো ন জীবতি।"(শুর্দ্ধিকাণ)

ক্রিপুদ্ধর্যোগের শান্তি অংশান্তের মধ্যে ক্রিতে হ্র,
ইংাতে কাল্বিলম্ব হইলে ক্রমে ক্রমে অনর্থরাশি উপস্থিত
হয়, বিলম্ব হইলে পুল, লাতা, জায়া, পজি, শশুর, মাতা,
পিতা, স্বদা, পিতৃবা, ভগিনীপতি, জ্যেষ্ঠলাতা, স্বামী
(প্রভূ), অপত্যা, ইহার এক একটী করিয়া ক্রমে বিনষ্ট হয়,
১৬ মাদ পূর্ণ হইলে বান্ধব নষ্ট হয়। পরে বান্ধবের অভাবে
বাস্তব্যুক্ষ পর্যান্ত জীবিত থাকে না। এই বোগে মরিলে
তাহাদ্ম সহিত আর তিন জন মরে এবং কোন বস্তু লাভ
হইলে ভাহার সহিত আর তিনটী লাভ হয়। এইরূপ শুরাশুভ

কার্যো তিনটা করিয়া মঙ্গলামঙ্গল ঘটে, এইজ্ঞ্ল এই যোগেনাম ত্রিপুন্ধর। ইহার শান্তি করিতে হইলে বরাহ্নার্থ তোক্ত অযুত হোম করিতে হর, অসক্ত হইলে য্থাবিদ্ অবর্ণাদি দান করিবে।

"অতন্তক্ষেশান্তার্থং হোময়েদযুতং বৃধঃ।
অসশক্তশ্চ স্থবর্গাদিদানং কুর্য্যাদ্ বথাবিধিঃ॥" ( শুদ্ধিকা )
আচার্য্য দারা হোম ও বলি প্রভৃতি করিতে হয়। [শাহ্বিবরণ পুদ্ধর শব্দে দেখ।]

ত্রিপৃষ্ঠ (পুং) অমো বংখাঃ পৃষ্ঠে পশ্চিমপ্রদেশে ব্দস্ত। ১ দৈন মতে প্রথম বাস্থদেব, পর্যায়—প্রাহ্মাণত্তা। (হেম ৩৩০১) ২ সত্যলোক। "দ্যাগতাঃ সর্বতি এব সর্ব্বে বেদা বথা মুক্তি ধরান্ত্রিপৃষ্ঠে।" (ভাগবত ১০১৯।২৩) 'ত্রেয়াণাং লোকানাং প্রদ্

ত্রিপৌর্ভষ (ত্রি) ত্রীন্, পিত্রাদীন্ পুক্ষান্ ব্যাপ্রাতি হু
উত্তরপদর্দ্ধি:। পিত্রাদিক্রমে পুক্ষব্রয়ব্যাপক ভোগাদি,
একাদিক্রমে তিন পুক্ষ ধরিয়া ভোগ। [ত্রিপুর্কষ দেখা]
ত্রিপ্রস্থা (পুং) ত্রয়াগাং দিগ্রেশকালানাং প্রশ্ন:। ১ দিক্ দেশ
ও কালবিষয়ক প্রশ্ন: ২ ত্রমূলক দিক্, দেশ ও কাল নির্পণ।
"অগুর্বিদোহদং কিল কালত্রং

দিগ্দেশকালাবগমোহত যশ্বিন্।

ত্তিপ্রশাসি প্রচুরোক্তি ধাসি।" (সিদ্ধান্তশিরোমণি)
ত্তিপ্রস্কৃত (পুং) তিষ্ স্থানেষু প্রস্কৃতঃ। মদক্ষরিত মঙ্গাদ

ধে গজের মেটু, কপোল ও নেত্র এই তিন খান ২ইতে ল করিত হয়, সেই গজের নাম ত্রিপ্রক্রত।

ত্রিপ্লক্ষ্ণ পুং) জনপদ বিশেষ। "অবভূত মভ্যবয়জি ব্যুন্ত ত্রিপ্লকাহরণং প্রতি" (কাত্যাং গ্রৌং ২৪।৬।০৯) 'ডিগ্রহণ নাম জনপদং' (কর্ক)

ত্রিফলা (স্ত্রী) ত্রয়াণাং ফলানাং সমাহার: অজাদিরাং বিংক্তির্বিক (পা ৪।২।২১) ইতি হতেবেণ ন তীপ্। মিলিত সমভাগ হরীতণী, বিভীতক ও আমলকী ফল। পর্য্যায়—ত্রিফলী, ফলত্রার, ফল ত্রিক। (রাজনিং) হরীতকী, বর্হেড়া ও আমলকী এই বিন্দ্রের সম পরিমাণ সংযোগকে ত্রিফলা বলে, ইহার ওপচ্কুর হিতকারক, অগ্রিপ্রদীপক, ফচিকারক, সারক এবিক, পিত্ত, মেহ, কুষ্ঠ ও বিষমজ্বনাশক। (ভাবপ্রং)

ত্রিফলামুত (ক্লী) ত্রিফলানাং রদেন যুক্তং ঘৃতং। ঘৃত ঠুব ভেদ। প্রস্তুত প্রণালী — ঘৃত /৪ দের, কাথাথ মিলিত ত্রি^{ক্লা} /৮ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের, গব্যছ্প্প /৪ দের, কর্ম মিলিত /১ দের। এই ঘৃত দেবনে তিমিররোগ নই ^{মুন} ( ভৈৰোলা) অন্ধ প্রকার বধা— ত্বত /৪ সের, কাথার্থ ত্রিফলা (প্রত্যেকটা) /২ সের, অন ৪৮ সের, শেব ১২ সের, ছগ্ধ /৪ সের,
করার্থ ত্রিফলা, ত্রিকট্ট, প্রাক্ষা, বৃষ্টিমধু, কট্কী, পুগুরীক কাঠ,
ছোট এলাচ, বিড়ক, নাগেশ্বর, নীলোৎপল, অনন্তমূল, শ্রামানতা, রক্তচন্দন, ছরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, প্রত্যেক ২ ভোলা,
এইরপে ত্বত প্রস্তুত করিবে। ইহাতে তিমিররোগ
এবং কামলা, অর্কুদ, বিসর্প, প্রাদর, কণ্ডু প্রভৃতি রোগ
বিনষ্ট হয়। (ভৈষ্কারণ)

ত্রিফলাদিলোছ (क्री) अवस्वित्मव। প্রস্তুত্রপানী—

জিফলা, মৃতা, জিকটু, বিড়ঙ্গ, কুড, বচ, চিতামূল, ষ্টিমধু,
প্রত্যেকের চ্বি পল, লোইচ্বি ৮ পল, গুগগুল ৮ পল এই

সকল জব্য ১২ পল মধুর সহিত মর্দন করিরা ঔষধ প্রস্তুত্রকরিবে। প্রাতঃকালে ইহা লেহন করিরা সেবন করিলে

হঃসাধ্য আমবাত, পাণ্ডু, হলীমক, শূল, শ্বয়পু ও বিষম জর

বিনই হয়। ইহা আমবাতেরই উত্তম ঔষধ। (ভৈষ্কার*)

ক্রিফলাদ্যুত্রত (ক্রী) চক্রদভোক্ত স্বত্রধধভেদ, ইহা লঘু
ও মহৎ ভেদে বিবিধ।

লঘু ত্রিফলাগুদ্বত—দ্বত /৪ সের, শতম্লীর কাথ ১৬ সের। করু, ত্রিফলা ও ঘটিমধুমিলিত /১ সের, নামাইয়া ইহাতে /১ সের মধুমিশ্রিত করিতে হইবে। ইহাতে ত্রিদোষজ তিমিররোগ নষ্ট হয়।

ত্রিফলান্তমহান্তত—ন্থত /৪ দের, কাথার্থ মিলিত ত্রিফলা /২ দের, জল ।৬, শেষ /৪ দের, ভৃপরাজরদ /৪ দের, বাদকরণ /৪ দের, অথবা বাদকর্মল /২ দের, জল ।৬ দের, শেষ /৪ দের, শতম্লীর রদ /৪ দের, ছাগছর্ম /৪ দের, অথবা পূর্ববিৎ কাথ /৪ দের, আমলকী রদ /৪ দের, করার্থ পিপুল, চিনি, ডাক্ষা, ত্রিফলা, নীলোৎপল, ষষ্টিমধু, কীরকাকলা, গান্তারীছাল, কণ্টিকারী তই সমুলামে /১ দের। এই ন্মতদেবনে যাবতীয় চক্ষ্রোগ বিন্ত হয়, ইহা নেত্রোগের একটা মহোষধ। (ভৈষজ্যরণ)

ত্রফলাদ্যমৃত (ক্লী) কমিরোগোক্ত মৃতঔষধভেদ। প্রস্তত প্রণালী—মৃত /৪ দের, গোঁমুত্র ।৬ দের, করার্থ ত্রিফলা, ভেউড়ী, দস্তীমূল, বচ, কমলাগুড়ি মিলিত /১ দের। এই মৃত দেবনে সকল প্রকার ক্রমিরোগ বিনষ্ট হয়।

অন্তবিধ — হরিতকী, বহেড়া, আমলা, বিউল, ° প্রত্যেক ১৬ পণ, পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতামূল, শুঠ মিলিত ১৬ পণ, দশমূল মিলিত ১৬ পল, পাকার্থ জ্বল ৬৪ সের, শেষ /৮ সের। মৃত /৪ সের, ক্রার্থ সৈরব লবণ /২ সের। প্রক্রেপ চিনি /১ সের। ইহারও শুণ পুর্বরূপ। (ভৈষ্জ্যণ) ব্রিঃফলীক্বন্ত (ব্রি) ব্রিঃ বিবরং ফলীক্বতঃ বিত্বীক্বতঃ।
বিধা বিত্বীক্বত তপুলাদি, যে তপুলাদির ত্ব তিনবার বাহির
করা হইলাছে। "দক্ষিণোত্তরাভ্যাং পাণিভ্যাং ব্রিঃফলীক্বতাংতপুলাংব্রিদেবভাল্ডঃ প্রকালয়েং।" (গোভিল) 'ব্রিঃফলীক্বতান্ ব্রিধা বিত্বীক্বতান্।' (স্বংস্কারত্বে রঘ্নন্দন)

ত্রিবন্ধন (পুং) > হর্ণার্শপোত্র নৃপভেদ। (ভাগবত ভাগাঃ)
ত্রীণি বন্ধনানি যক্ত। ২ জাগ্রদাদি অবস্থাত্রযুক্ত জীব।
ত্রিবন্ধু (পুং) ত্রিলোকের বন্ধু।

জিবলি (লী) ( ত্রী ) জিগুণিতা বলি: ১উদরস্থিত ফলীজয়।

* "জিবলী বলয়োপেতাং জুকুটীভীষণাননাং।" ( হুর্গাধ্যান )

তিসুণাং বলীনাং সমাহার:। জিবলি।

ত্রিবলীক (ক্লী) তিবো বল্যাে যত্ত্ব, কপ্। পার্। (ছেম॰) ত্রিবাস্ত্ (পুং) অরো বাহবােহস্ত। ১ ক্রাফ্চরন্ডেদ। ২ অসি-যুদ্ধাকার ভেদ।

ব্রিভ (ক্রী) ব্রয়াণাং ভানাং রাশীনাং সমাহার:। > লগাদি রাশিব্রফ। "ব্রিভং বিভং লগভত: ক্রমেণ স্ত্রীণাং নূণাং রাত্রিদিনেষু তেষু।" (নীলকণ্ঠতাজক)

২ রাশিত্রয় মাত্র। ত্রীণি ত্রীণি নক্ষত্রাণি ফ্র। ত্রুক্তর বিষ্
ত্রমুক্ত, রেবতী, অখিনী ও ভরণী নক্ষত্রমুক্ত আখিন; শত-ভিষা, পূর্বভাদ্রপদ ও উত্তরভাদ্রপদ নক্ষত্রমুক্ত ভাজ; পূর্ব-ফ্রুনী, উত্তর্যন্ত্রনী ও হস্তা নক্ষত্রমুক্ত ফার্ডনমাস। *

ত্রিভঙ্গ (ত্রি) ত্রীণি ভঙ্গানি বক্রাণি যক্ত। বক্র ত্রি-অঙ্গ, শ্রীক্তফের মূর্ত্তিবিশেষ, এই মৃত্তিতে ভগবানের গ্রীবা, কটি ও জাফু ঈষ্প বক্রভাবে অবস্থিত থাকে।

ত্রিভঙ্গী (স্ত্রী) মাত্রাবৃত্ত ছন্দোভেদ।

ব্রিভজীবা (ত্রী) ত্রিভগ্ন জীবা ৬তং। রাশিত্রমের ধহরাকার কেত্রের জীবা, ত্রিজ্যা।

ত্রিভজ্যা (স্ত্রী) ত্রিভন্দীবা, ব্যাসার্দ্ধরেখা।

ত্রিভণ্ডী ( স্ত্রী ) জীন্ বাতাদিদোষান্ ভণ্ডতি পরিহণঠাতি ভণ্ড-অণ্ ততো ঙীপ্। ত্রির্তা। [ ত্রির্ৎ দেখ।]

ত্রিভন্তে (ক্লী) ত্রিষু নথকতদস্তথতমর্দনেম্বপি ভন্তং যশ্মিন্। স্বরত। (ত্রিকা•)

ত্রিভমৌর্বিকা ( স্ত্রী ) ত্রিল্যা, ব্যাদার্দ্ধরেখা।

"বার্ত্তিকাদির সংযোগে কৃতিকাদিরং বয়ং।

অত্যোপারো প্রথমক ত্রিভং মাসত্রমং মুক্তঃ।" (প্রাসিং)

'লত্র কার্ত্তিক্তাদিবের এবাদত্তা আঘিনঃ, উপান্তাং, ভার্ত্তঃ, প্রথমং,
ফাল্তনঃ, মাসত্রয়ং ত্রিভিঃ মৃতং। রেবভাবিনী ভর্মীতি নক্ত্রসম্বন্ধান্তি।

শালিতঃ। শতভারাপুর্বোভরাভাত্রপদেতি বক্ত্রয়সম্বন্ধান্তাল্পাঃ।
পুর্বোভরকাল্ভনী হত্তেতি বক্তরয়বোগাৎ কাল্ভনঃ।' (রজনাধ)

ত্রিভাপ (পং) তৃতীরো ভাগং, রতৌ সংখ্যাশমন্ত প্রণার্থদাৎ।
তৃতীয়ভাগ। "ত্রিভাগেশেবার্ নিশান্ত চ কণং।" (কুমার ওসং)
ত্রিভাকু (পং) তৃর্বান্থবংশীর নূপভেদ। (ভাগং ৯২৩।৪)
ত্রিভাব (পং) ত্রির্ কালেবু,ভাবোহন্ত। ত্রৈকালিক পদার্থ।
ত্রিভুক্তি (প্ং) ত্রির্ ভুক্তিরক্ত। তীরহন্ত দেশ। (ত্রিকাং)
[মিধিলা দেখ।]

ত্রিভুক্ত (क्रो) ত্রোভ্জা বতা। ত্রিবাছক, ত্রিকোণ ক্ষেত্র-'ভেদ, যে ক্ষেত্রের তিনটা ভূক আছে। [ক্ষেত্র দেখ।]
ত্রিভুবন'(ক্লী) ত্রাগাং ভূবনানাং লোকানাং সমাহারঃ, পাত্রা-দিখাথ ন ত্রীপ্। ত্রিলোক, মিলিত স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও পাতাল এই ভ্বনত্রয়।

ত্রিভুবনচক্রবর্তী, দাক্ষিণাত্যের রাজবিশেষের উপাধি।
 চের, চোল, পাণ্ড্য, চালুক্য প্রভৃতি বংশে অনেক রাজা
 এই উপাধি গ্রহণ করিয়াছিলেন। .

ব্রিভূবনপাল, ১০ গুলরাটের চৌলুক্যবংশীয় একজন রাজা, ইনি তিহুনপাল নামে খ্যাত। ইনি ১২৯৮ মন্ত্রৎ হইতে চারি বংসরকাল রাজ্যশাসন করেন। কাহারও মতে ইনিই তুর্যাশতকের টীকা রচনা করিয়াছিলেন।

় ২ গৌড়রাজ ধর্মপালের মহা সামস্তাধিপতি। ইনি ব্রাহ্মণ পণ্ডিতের বড়ই সমাদর করিতেন। ইহারই অন্থরোধে রাজা ধর্মপাল নারায়ণ ভট্টারককে বিস্তর ভূমিদান করেন। দৃতাঙ্গদ নামক সংস্কৃত ছায়ানাটকরচয়িতা কবি স্কৃত্ত ইহার আশ্রয়ে ও উৎসাহে পুস্তক রচনা করেন।

ত্রিভুবনলাল, নারদবিলাস নামক সংস্কৃতগ্রন্থরচয়িতা। ত্রিভুবনেশ্বরলিক (ক্লী) ভ্রনেশ্ব বা একামক্ষেত্রের প্রধান লিক। [ একাম ও ভ্রনেশ্বর দেও। ] '

ত্রিভূম (পু:) ভিয়ো ভূময়: উদ্ধাধো মধ্যত্বা অন্ত, অচ্ দমা-দান্ত:। প্রাদাদভেদ, ভেতালাবাড়ী।

ত্রিভোনলগ্ন (ক্লী) ক্ষিতিজবৃত্তের উর্জ্ব ক্রান্তিবৃত্তের উর্জ্ব মধ্যপ্রদেশ। "দর্শান্ত লগ্নং প্রথমং বিধায় ন লখনং বি ক্রিভোলগ্নত্লো।" (ভাষর) 'উর্জমধ্যপ্রদেশব্রিভোলগ্ন-মিত্যর্থ:।' (হুর্যাসিক্ষান্তনিকার রঙ্গনাধ)

ত্রিমঙ্গল, একজন বিখ্যাত জাবিড় পণ্ডিত। ইনি ত্রিমঙ্গল-বার্ত্তিক নামে মধ্বাচার্য্যের মতপোষক একখানি বৃহৎ গ্রন্থ প্রণয়ন করেন।

ত্রিমণ্ডলা ( ত্রী ) লুডাভেদ, ইহা ছই প্রকার। [লুডা দেখ। ]
ত্রিমদ (পুং) ত্রিগুণিতোমদঃ সংক্রাছাৎ কর্ম্মণ। বিশ্বামদ,
ধনমদ ও অভিজনমদ এই তিন প্রকার মদোৎপর পর্বত্রে।
"নুনং নুপাণাং ত্রিমদোৎপধানাং।" (ত্তাগণ অসা৪৩) ত্রেরাণাং

সদানাং সমাহার:, অভিধানাৎপুংস্থং। ২ মৃত্যা, চিত্রক, বিজ্ঞা "বিজ্ঞানুত চিত্রক ত্রিমদ: সমুদাহতঃ।" ( বৈজ্ঞ কপরিভারা)

ত্রিমধু (ক্রী) ত্রিগুণিতং মধু সংজ্ঞাদাৎ কর্মধাণ। ১ হ্যাদিত্র,
হুদ্ম, সিতা, মাক্ষিক; হুদ্ম, চিনি ও মধু এই মধুরত্রর। "হুদ্ধা সিতা মাক্ষিকঞ্চ বিজ্ঞায়ং মধুরত্রয়ং।" (বৈজ্ঞাক)

( পूरं) २ स्वत्यरेनकरम्म । ৩ स्वत्यरमत यांगर्छन । ৪ এই ব্রতাচরণ দারা स्वत्यमाधात । ৫ মধুবাতাদি स्वक्त त्रद्वा । মধুবাতা ইতিত্র: মধুশকা যত্র । মধুবাতা ইত্যাদি सক্তর । "বেদার্থবিদ্ জ্যেষ্ঠসামা ত্রিমধুলিক্ষপর্ণক: ।" ( যাজ্ঞ ১/২১৯) মধুশক্তর ।

"গায়ত্তীং তিঃ সক্তবাপি জপেদ্যাহ্যতিপূর্ব্বিকাম্।
মধুবাতা ইতি ভূচিং মধ্বিত্যেতং ত্রিকং জপেং ॥" (পারম্বর)
ত্রিমধুর (ক্লী) ত্তিগুণিতং মধুবং সংজ্ঞাতাৎকর্মধাণ। হৃদ্দ দিতা ও মাক্ষিক রূপ মধুব্রত্ব ।

ত্তিমল্ল (দাকিণাতো এই শব্দ তিক্ষল নামে প্রচণিত) এই নামে দাকিণাতো অনেক সংস্কৃত ও তামিল গ্রন্থকার জন গ্রহণ করিয়াছিলেন, তন্মধ্যে এই কয়জন প্রধান।

১ম—ইনি গীতগোরী, গোপালাথ্যা ও ভ্রান্তিবিলাদ চম্পুরচনা করেন।

২য়—ইনি 'অফুব্যাথ্যা' নামে সিদ্ধান্তকৌমুদীর একথানি ব্যাথ্যাপুত্তক লিখিয়াছেন।

তয়—ইনি তিক্ষণ আবাই নামে থ্যাত। বৈত্যিতি নামক বেদান্ত, সহস্রকিরণী ও সারকৌমুদী প্রভৃতি সংফু •গ্রন্থ ইহার রচিত।

ত্রিমল্লজ্ঞ(ন, আখলায়নীয় 'বিধ্যপরাধপ্রায়শ্চিত্ত' নাম্ক সংস্কৃত গ্রন্থকার।

ত্রিমল্লতন্ম, কাত্যায়নসানহতের একজন টীকাকার।
ত্রিমল্লভট্ট, অলকারমঞ্জরী নামক সংস্কৃত গ্রন্থ রচয়িতা।
ত্রিমল্লভট্ট বৈদ্য, একজন আয়ুর্বেদবিদ্ প্রাণিদ্ধ তৈন্দ্র
পণ্ডিত। শিলণভট্টের পৌত্র, বলভের পুত্র ও রসপ্রদীশ
রচয়িতা শক্ষরভট্টের পিতা। ইনি দ্রব্যগুণশতলোকী, বোল তর্লিনী, বৃত্তমাণিক্যমালা ও বৈশ্বচলোদ্য প্রভৃতি বিশ্বন্ধ গ্রন্থ প্রধান করেন।

ত্রিমালী, (ত্রিমালী) বোদ্বাই প্রদেশ বাসী এক প্রধা ভিক্সজীবিঞ্চাতি। ইহারা বলে যে বছদিন হইল তৈলন হইতে এই জাতি কণাটক প্রদেশে আসিয়া বাস করিছে। ইহারা ভেলুগু ভাবার কথা কয়। ভিক্ষাই ইংারে জাতিগত উপজীবিকা। কেহ কেহ বা ক্লফাক্ষ, ক্ল্মীমান, যজ্ঞস্ত্র, পুতির মানা প্রভৃতির ব্যবসা ক্ষিম্ম ও শীর্মি নির্কাহ করে। সংস্ত, মাংস, মন্ত প্রভৃত্তি আহারে কেই
আপত্তি করে না। ইহারা ১০ দিন মাত্র আশৌচ প্রহণ
করে। মরাঠা কুণবীদিপের মত আচার ব্যবহার ও ব্রতোপবাসাদি করিয়া থাকে। বাল্যবিবাহ, বিধবাবিবাহ প্রাভৃতি
প্রচলিত আছে।

ত্তিমাতৃ (ত্তি) ত্রমাণাং লোকানাং মাতা, নির্দ্ধাতা। ত্রিলোক-নির্দ্ধাণকারক।

"উত ত্রিমাতা বিদথেৰু সম্রাট্" ( ঋক্ ৩)৫৬।৫ )

ত্রিমাত্র (পুং) তিজঃ মাত্রা উচ্চারণকালে ২য় । গ্লুডবর অত্যচ্চবর।

"একমাত্রো ভবেৎ ছবো বিমাত্রো দীর্ব উচ্যতে। ত্রিমাত্রন্ত প্রতঃ জেরো ব্যঞ্জনং চার্দ্ধমাত্রকং ॥" (শিকা)

একমাত্র বর এব, বিমাত্র বর দীর্ঘ, তিমাত্র বর পুড় আর ব্যঙ্গন অর্দ্ধ মাত্র। প্রণব তিমাত্র, প্রত্যেক কার্যোর প্রারম্ভে তিমাত্র প্রণব উচ্চারণ করিতে হয়।

"ত্রিমাত্রস্ত প্রযোক্তব্য প্রারম্ভে সর্বকর্মণাং।" (সম্বর্ড)
[প্রণব ও ওঁং দেখ।]

ত্তিমার্গ (ক্লী) অয়াণাং মার্গানাং সমাহারঃ। মার্গের তিতিয়, তিন পথ।[তিপথ দেখ।]

"ত্রিপথেতি চ নামাস্তাঃ ত্রিমার্গগমনাদিদম্।" (রামা ২।৪৫।৪)
ত্রিমার্গ্রা (ত্রী) ত্রিভি মার্গগছেতি গম-ড। গদা।
ত্রিমার্গ্রামিনী (ত্রী) ত্রিভি মার্গে গছেতি গম ণিনি, তীপ্।

ত্রিমার্গা ( জী ) করে। মার্গা: यद्या: । ১ গঙ্গা । ২ ডেমার্থা পর্য,।

ক্রিনাং-মার্গানাং সমাহার জিয়াং ভীষ্ । মার্গক্ষ ।•

ত্তিমুক্ট (পুং) তাণি মুক্টানীব শৃঙ্গানি যক্ত। তিক্ট পর্বত (২েম)

ত্রিমুথ (পুং) ত্রীণি মুথানি যক্ত। ১ শাক্তমুনি। ২ গায়ত্রী কুপান্ন চতুর্বিংশতি মুলান্তর্গত মুলাভেদ। [মুলা দেখ।]

जियूथा (जी) जीनि मूथानि यद्याः। दोक त्वरीरंखन, मात्रा त्वरी। পর্যাদ—मात्रीही, वक्कनिका, विक्छा, वक्करात्राही. लोत्री, भाजितथा। (जिका॰)

ত্রমুখী (ত্রী) বৌদ্ধ দেবীভেদ, মায়াদেবী।

ক্রমুনি (ক্রী) অয়াণাং মুনীনাং সমাহার: ।পাণিনি, কাডাায়ন
ও পতঞ্চিরপ মুনিঅয়। ২ পাণিজ্ঞাদি মুনিঅয় প্রথীত ব্যাকরণ।

ক্রমুর্ত্তি (পং) ক্রিলো মূর্ত্তমো যস্ত। ত্রন্ধা, বিষ্ণু, শিব রূপ
মৃত্তিত্র যুক্ত পরমেশর। (ত্রী) ত্রন্ধাকি ভেদ। এই শক্তি,
অক্রপিণী হইলেও জগজ্জননপালন রূপে ভিন্ন রূপিণী
হুর। ও বৌদ্ধ দেবী ভেদ। (ত্রিকাণ)

तियुक्त (११) जरता पूर्वारना २७, वस्त्रीरशे व नगानासः।
नृष्ठित बुक्त।

"বহুমূত্রো বিমুর্কাংশ্চ ত্রিমূর্কাংশ্চাহতাং মূধে।" (ভটি) ত্রিমোহিনী ফুশার ভেলাম্ব একটা গওগ্রাম। •অক্ষা २२° ८८ हैं, जावि॰ ५२'> ें भूः, दिमनभूरत्र २०० द्याम পশ্চিমে অবস্থিত। এথানে ভদ্রানদী কপোতাক ছাড়িয়া প্রবাহিত হইড, ষেধানে ঐ নদীর ভিনটী মুধ বা মোহানা विष्ठ, त्रहे श्वान जित्याहानि वा जित्याहिनौ नात्य थाउँ। নদীতটম্ব এ স্থান হাটের অক্ত বিখ্যাত, এখানকার গ্রামের • নাম চজা। এখানে পূর্কো চিনির বছ বিভ্ত ব্যবসা ছিল। এখন আল সেরপ নাই। তবে এখান হইতে নানাম্বানে िनि ब्रथानी इहेबा थाटक। देठव्यादम वाक्नीव मगब ज्यादन মেলাহয়। তিমোহিনীর এক পোয়াদুরে মীজানগর মুসল-मानि पित मम प्रवास, याभारत को धनात वाम कतिराजन, ১৮১৫ খৃষ্টাব পর্যান্ত ঐ স্থান যশোরের মধ্যে একটী রুংং নগর বল্লিয়া গণ্য ছিল, কিন্তু এখন আর তাখার কিছুই নাই। ব্রিম্বক্ নাসিক জেলাম্থ একটা বিখ্যাত সহর ও তীর্থমান। ष्पकां ১৯१ ८८ ८० डाँ:, ७ आवि १० ७० ०० ८० पृः।. নাসিক নগর হইতে প্রায় ৯ ক্রোশ দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। এখানে প্রায় সাড়েচারি হাজার লোকের বাস।

স্থানমাহাত্ম্যে এই স্থান ত্রাম্বক নামে উক্ত হইয়াছে এখানে ত্রাম্বকেশ্বর মহাদেব বিরাজ করেন, সেই জন্ত মহাপ্রা স্থান বিরাগ প্রসিদ্ধ । এই ত্রাম্বকের কএকথানি মাহাত্ম্য পা্ওয়া যায়, তল্মধ্যে একথানি পল্পরাণের পাতাল-থত্তের অন্তর্গত, একথানি বরাহপুরাণীয় ও একথানি নারদ-পুরাণের উত্তর্গধতে বর্ণিত হইয়াছে।

এথানকার ত্রিম্বকেশ্বর মহাদেবের মূন্দির আতি বিখ্যাত।
বর্ত্তমান মন্দির সদাশিব রাওএর ব্যারে নির্মিত হয়। এই
মন্দিরের দেবসেবার ব্যয়নির্বাহার্থ গ্রমেন্ট হইতে বার্ষিক
১২০০০ টাকা ব্রাদ্ধ আছে। অক্ল্যাবাই এথানে একটা
স্থান্দ্র মন্দির নির্মাণ করাইয়া ছিলেন।

ত্রিম্বক্র পাহাড়ের উপর সমৃত্রপৃষ্ট হইতে ৪২৪৮ ফিট্ উচ্চ ও নিকটবর্ত্তী আম হইতে প্রায় ১৮০০ ফিট্ উর্জে অবস্থিত। এমন হুর্ভেড ও হুর্গম হুর্গ এ অঞ্চলে কোথাও নাই। হুর্গে যাইবার কেবল হুইটী প্রবেশ বার আছে, দক্ষিণবার দিরা রসদাদি যাইত, উত্তরবারে কেবল একটী লোক যাইতে পারে। আর চারি দিক্ উচ্চ নীচ গিরিশৈল সমাজাদিত। হুর্গবার ছাড়া পাহাড়ের কোন কোর স্থানে ক্একটী বুরুক্ত আছে। ১৮৫৭ খুটাকে পাণ্ডাদিগের উত্তে জনায় কতকগুলি ভীল ও ঠাকুর এখানকার সরকারী কোষা-গার আক্রমণ করিরাছিল। দাক্ষিণাত্যের নানান্থান হইতে এখানে তীর্থবাত্রীর সমাগম হয়। বৃহস্পতি সিংহ রাশিতে প্রাধ্বশ কালে এখানেও কুন্তু হইয়া থাকে।

ত্রিস্বকজী দেক্সলিয়া, পেশবা বাজিরাওর একজন স্পতি বিখাসী ও আশ্রিত। ইনি প্রণমে একজন সামান্ত যাঙ বা প্রপ্রচরের কার্য্য করিতেন। যে সময় হোলকারের ভয়ে 'বাজিরাও পুণা হইতে মহাড়ে পলাইয়া আসেন, সেই সময় অতি ক্ষন্নকাল মধ্যে ত্রিম্বক্কী বালিরাওর পত্তের উত্তর আনিয়া দিয়াছিলেন, উাহার কার্যাকুশলভা দর্শনে বাজিরাও তাহার উপর অতি সদয় হইলেন। এই সময় হইতে তিখক সর্বাদাই বাজিরাওর নিকট পাকিতেন। তিনি অতিশয় চতুর, ধৃত ও পটুছিলেন। অংলদিন মধোই বাজিরাওর হৃদয় অধিকার করিলেন। বাঞ্চিরাও অপর সকল লোক দ্ধপেক্ষা ত্রিম্বক্তীকে অধিক বিখাস করিতে লাগিলেন। চতুর ত্রিস্ক্ষী বাঞ্চিরাওর'একজন প্রধান মন্ত্রণাদৃতো হইরা উঠিলেন। বান্তৰিক তিনি বাজিরাওকে অধিক সমান করিতেন। বাজিরাও যথন থে আদেশ করিতেন, তিম্বক হিতাহিত বিবেচনা না করিয়া অবিলয়ে তাহা সমাধান করিতেন। ক্রমেই ত্রিম্বক্ষীর অবস্থা উন্নত হইতে লাগিল। দে নাপতি গণপত রাওএর জায়গীর বাজেয়াপ্ত হইলে ত্রিম্বক্জী ্ গণপৎরাওএর পদলাভ করেন।

ইহার কিছুদিন পরে খুক্রনী কণাটক প্রেদেশের শাসন-কর্তৃত্ব পদ ত্যাগ ক্রিয়া রেগিডেন্সির এজেণ্ট পুদ নির্বাচন ক্রিলে তিম্বক্লী কণাটের শাসনক্রা হইলেন।

যুরোপীয়দিগের উপর তিম্বকঞ্জীর বড়ই আক্রোশ ছিলু।
কিনে বৃটীপরাক্তা ধ্বংশ হইবে, কিনে বৃটীপের ক্ষমতা ভারত
হইতে বিলুপু হইবে, এই চিস্তা তিম্বকঞ্জীর মনে সর্বাদা জাগক্রক ছিল। তাঁহার উত্তেজনায় বাজিরাও বৃটীশ গবর্মেণ্টের
শক্ত হইয়া দাঁড়াইলেন। 'বৃটীপের হস্ত হইতে বাজিরাওকে
শ্বাধীন করিবার জন্ম তিম্বক নৃতন গোসাবি ও আরব্দৈন্ম নিযুক্ত করিতে জ্যুরম্ভ করিলেন। ১৮১৫ খুটাকে তিনি পেশবার
পক্ষ হইতে বৃটীশ গবর্মেণ্টের সহিত কার্য্য চালাইবার জন্ম
নায়েব নিযুক্ত হইলেন। ১৮১৫ খুটাকে তাঁহারই পরামর্শ মত
বাজিরাও সিদ্বিয়া ভোন্সা, হোলকর ও পেগারিদিগের
নিকট গুপ্তার পাঠাইলেন। সকলে এক হইয়া যাহাতে বৃটীশ
পরাক্রম থর্ম হয়, তাহারই যুড়যন্ত্র করিতে লাগিলেন।

এই বর্ষে ধৃষ্ঠ ত্রিম্বকলী পণ্টরপুর নামক পুণাক্ষেত্রে গঙ্গা-ধরশাস্ত্রীকে গুগুভাবে ঘাতক হারা হত্যা করাইয়া ব্রন্মহত্যা

পাপে লিপ্ত হইলেন। এই পাপকাণ্ড চাপা রহিল না दाचाहेरम् गवर्गत अन्किन्टोन् माट्टरवत्र कर्गरगाठत हहे_{ते।} जिनि जियककीरक व्यविनास वृत्तिभ गवर्र्मा वर्ष कर्न, कतिवात खन्न (भनदादक विषया शार्किहाल । वाश्विताल ত্রিম্বক্রীকে বড়ই ভাল বাসিতেন। তিনি সহত্রে ত্রিম্বক্রীকে অপুণ করিতে সম্মত হইলেন না। এদিকে একদল বুটীশ দৈঃ আদিয়া পুণায় উপস্থিত হইল। বেগতিক দেখিয়া (২৫৫ সেপ্টেম্বর) ত্রিম্বক্ষী বৃটীশ গ্রমেণ্টকে আত্মসমর্পণ ক্রি লেন। তিনি মালাসেটের থানাইর্গে বন্দী হইলেন। বাজিরাও তাঁহাকে উদ্ধার করিবার অভ্য অনেক কৌশল থাটাইতে नाशिलन्। श्रानाष्ट्रर्ग टक्वन (शादा श्रव्यो। जांशामिशव উৎকোচ দিয়া বশীভূত করা অথবা তাহাদিগের চক্ষে ধুন मिया भनायन कता महस्य बाभात नहर। (करन धक्का স্হিসের চেষ্টায় তিশ্বক্জী থানাত্র্গ হইতে প্লায়ন করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। সহিস তিম্বক্লীর সহিত কথা কহিতে পারে নাই। ঈদ্ধিতে ঘোড়ার গা মলিতে মলিতে এইরুগ ভাবে একটা গান করিল,—'ঝোপের মধ্যে কভকগুলি ধ্যুর্গ্ অবস্থান করিতেছে, সেধানে গাছের তলায় ঘোড়া বাধ আছে, ত্রায় গিয়া দেই ঘোড়ায় চড়িয়া দাক্ষিণাভাবে স্থাধীন কর।'

ত্রিশ্বকজী সেই গানের মর্ম্ম তথন হৃদয়ক্ষম করিয়াছিলে, কিন্তু যুরোপীয় সৈনিকগণ কিছুই বুঝিতে পারে নাই। পলায়ন কার্য্যে অবশুই ত্রিশ্বক বাহাত্রী দেখাইয়াছিলেন। এখনও মহারাষ্ট্রগণ ত্রিশ্বকের অত্য কার্য্যের জত্মনা ইউক পলায়নের কৌশল ও সাহসিকতার সকলেই প্রশংসা করিয়া থাকে।

পলাইয়া আসিয়া তিনি নিশ্চিত্ত ছিলেন না, ইংরাজের উপর তাঁহার আরও জাতকোধ হইল। তিনি নাসিক, সক্ষমনেরি, থাঁদেশ ও মহাদেশ প্রভৃতি পার্বভীয় য়ানি ঘ্রিয়া ভূরিয়া ভীল, রামুসি ও বঙ্গসৈক্ত সংগ্রহ করিছে লাগিলেন। ফলতনের অন্তর্গত বেরাড় নামক য়ানি তাঁহার প্রধান আড়ো ছিল। এথানে বন মধ্যে যথন তিনি নিজে ঘাইতেন, ৫০০ রামুসি সশস্ত্র জাগিয়া তাঁহাকে রক্ষ করিত। বাজিয়াও অর্থহারা তাঁহাকে সাহায্য করিছে লাগিলেন।

এখন ত্রিষক পেগুরিদিপের স্থায় বৃটীশরাজ্যে উংপ্র আরম্ভ করিলেন। এল্ফিন্টোন সাহেব আবার বালিরা^{এরি} সত্তর্ক করিয়া বলিয়া পাঠাইলেন, অবিলম্বে তিনি ^{রে} ত্রিষক্ষীকে ধরিয়া সেন, নচেৎ তাঁহার বিশক্ষণ অনিই হ^{ইরে।} বে গর্যান্ত না তিনি ত্রিষ্কজীকে ধরিরা দিবেন, সে পর্যান্ত দিংহণড়, প্রনার ও রারগড় হুর্গ বৃটীশের হত্তে থাকিবে। কএক দিন বাজিরাও মিট কথা বিলিয়া এল্ফিন্টোন্কে ভূদাইবার চেটা করিলেন, কিন্তু তাহাতে কোন ফল হইল না। ৭ই মে (১৮১৭ খৃঃ আঃ) এল্ফিন্টোন্ আবার বিলিয়া পাঠাইলেন, পেশবা যথন এখনও ত্রিষ্কের প্রতিভূষরপ তিনটা হুর্গ ছাড়িয়া দিলেন না, তখন পুণা অধিকার করিবার জন্তু সৈন্ত পাঠাইতে হইল। এদিকে পুণার পার্মের বৃটীশ সৈন্ত আসিয়া উপস্থিত হইল। বাজিরাও হুর্গ তিনটা ছাড়িয়া দিলেন ও ইংরাজের মনস্কৃত্তির জন্তু ঘোষণা করিলেন, ত্রিষ্কেলীকে যে মৃত কি জীবিত ধরিয়া আনিয়া দিবে, তাহাকে ২ লক্ষ টাকা পারিতোধিক দেওয়া হইবে। এ ছাড়া তিনি ত্রিষ্কজীর অনুগত আত্মীয় স্বন্ধনের উপরিও লোক দেখান অত্যাচার আরম্ভ করিলেন।

যাহা হুউক এবার বাজিরাও প্রকাশ্রে যাহাই করুন, ত্রিম্বকলী যাহাতে বুটাশের কবলে না পড়ে, ভিতরে ভিতরে তাহাও করিতে লাগিলেন। এখন যাহাতে বুটাশ রাজ্য ধ্বংস হয়, এল্ফিনষ্টোন্ যাহাতে শীঘ্ট ইহলোক পরিভাগে करत्रन, वाक्षित्रां अश्वाहात्रहे आस्त्राक्षन कतिर्द्ध गाशिरनन। আপনার অভিপ্রায় স্থানিদ্ধ করিবার জ্বন্ত বাজিরাও প্রধান মন্ত্রী বাপুগোধলাকে এক কোটি টাকা প্রদান করেন। ভোন্সা, সিদ্ধিয়া ও হোলকরের নিকটও লেখালেথি চলিতে-ছিল, প্রায় সব ঠিকঠাক। এমন সময় যশোবস্তরায় খোড়-পড়ে এলফিনটোনকে এই গুপ্ত সমাচার প্রদান করেন। uन्धिन्छोन् राष्ट्रितारम् त महिल (पथा कतिरानन । u मनग्र উভয়ে বেশ সদ্ভাবে আলাপ করিয়াছিলেন। যাহা হউক অর দিন পরেই আগুন জ্বলিয়া উঠিল। চারিদিক্ হইতে মহারাষ্ট্রনৈত্ত আসিয়া পুণায় অসমিতে লাগিল। এল্ফিন্টোন্ সাহেব বিপদের আশক্ষা করিয়া পুণা হইতে ছই ক্রোশ উত্তরে কির্কিগ্রামে হটিয়া আসিলেন। ১৮১৭ খৃষ্টান্দ वह नत्वमत्र किर्कि आदम अक्टी कूक यूक चटि । >१हे नत्वमत्र বৃটীশ দৈল পুণা অধিকার করিয়াছিল। বালিরাও কএকটা যুদ্ধে পরাজিত হইয়া সদৈত পৃষ্ঠ প্রদর্শন করিছে আরম্ভ क्तिरमन ।

 যুদ্ধে পরাজিত হওরার মহারাষ্ট্র সৈঞ্চগণ নিরুৎসাহ হইরা
পদ্ধিয়াছিল, হতরাং জিম্বক্তীর বিশেষ চেটাতেও তাহারা
যুদ্ধ করিতে পারিল না আবার পেশবাকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন
করিতে হইল। কুড়িগা নামুক স্থানে একটা ভীষুণ যুদ্ধ
হয়, এই যুদ্ধে কএকজন যুরোপীয় কর্মচারী হত ও আহত
হইরাছিলেন। জিম্বক এই যুদ্ধে অনেকটা সাহস দেখাইয়া
ছিলেন, কিন্ত অবশেবে বৃটীশের আধেয়াজের সম্মুথে তিটিতে
সমর্থ হইলেন না। মহারাষ্ট্রের পরাক্ষর হইল। এই যুদ্ধকালে বাজিরাও জিম্বক্তী প্রভৃতিকে সম্থোধন করিয়া
বিলয়াছিলেন, 'ভোমরা না ইংরাজনিগকে জয় করিবে,
ভোমাদের সে দর্শ এখন কোঁথার ? ধিক্ ! একদল সেনাকেও
ভোমরা হারাইতে পারিলে না!' •

নানাস্থানে ঘ্রিতে ঘ্রিতে ত্রিক্ জী বৃটীশের করালকর্বেল পতিত হইলেন। এবার তাঁহাকে চুণার-ত্র্যে বন্দী
করা হইল। মুক্তিলাভের জালা আর রহিল না।

ক্রিয়ন্ত্রক, পেং) ত্রীণি অবকানি যতা। ইরঙ্বা (ছন্দ্রমাভর্থা। পা ৬।৪।৭৭) ত্রিনেত্র, মহাদেব। "ত্রিরক্ষং সংযমিনং
লদর্শত (কুমার) মলিলাথ ইহার ব্যাথ্যায় মহাকবিপ্রোগে বলিয়াছেন। কিন্তু ছন্দের অন্থ্রোধে পাণিনির
প্র্রোক্ত স্ত্রাহ্নারে এই পদ সিদ্ধ হয়। কিন্তু এইরুপ
প্রয়োগ প্রসিদ্ধ কবিদিগের নিন্দিত।

ত্রিযব (ক্লী) অয়ো যবাঃ পরিমাণমন্ত। পরিমাণ বিশেষ, কৃষ্ণল, তিন যবে এক কৃষ্ণল, রতি।

"সর্বপাঃ ষট্যবো মধ্যন্তিযবন্ত্বকর্ঞলং।" ( মহ ৮।১৩৪ )
'ত্রিভির্যবৈঃ রুঞ্জাং রন্তিকেতি প্রসিদ্ধং।' ( কুলুক )
ত্রিযবি ⇒ তঃবি। (কাঠক ১৭।২)

ব্ৰেবাৰ অভ্যাৰ । (২০০২ সন্তৰ) ব্ৰেষ্ট্ৰি ক্টে) বিষ্ বাতপিত্তক্ষামুকের দোবের যটিরিন। ১ কুপভেদ, কেতপাপড়া। তিলো ঘটরো যতা ২ বিশুচ্ছহার। ব্ৰিয়ান (ক্টা) বৌদ্ধত সিদ্ধ তিন্টী যান বা মার্গ।

ত্রিযামক (ক্রী) ত্রিষ্ কালের্থ্যয়তি যম-ধুল্। পাপ। ত্রিযামা (স্ত্রী) ত্রো যামা অভাঃ। ১ নিশা, রাত্রি। (শব্দমালা) "ত্রিযামাং রঞ্জীং প্রাহস্তঃজ্যুত্ত স্থাং।

নাড়ীনাং ভহুভে সঙ্কো দিবসাদাস্তমংক্তিতে ॥" (ভিথিভন্ত) .

রাত্রির প্রথম চারিদশুও পেষ চারিদশু দিবার মধ্যে গণা। এত দ্বিল আর তিন প্রহর তাহাকেই ত্রিযামা অর্থাৎ রাত্রি কহা যায়। ২ হরিজা। ৩ যমুনা। ৪ নীলা। ৫ ক্লফ ত্রিবৃৎ। ত্রিযুগ (পুং) ত্রীণি যুগানি সত্যত্রেতাবাপর রূপাণি আবি-ভাবকালো হন্ত। বিষ্ণু, যজ্ঞপুক্ষর, বিষ্ণু তিন্যুগেই আবি-ভূতি হন, এই জন্ম তাহার নাম ত্রিযুগ।

শি চাবতীর্ণ ক্রিযুগমাজার বির্ধর্বতং।" (ভাগ তাং৪।২৬)
২ বসস্তাদিকালকর। "যা ওযধীঃ পূর্বা জাতা দ্বেভ্যক্রিযুগং পুরা।" (শুক্র যজু ১২।৭৫)

'যুগশকঃ কাশবাচী অয়াণাং যুগানাং সমাহারঃ আিষুগং অিকাশং বদত্তে প্রার্থি শরদি চ।' (মহীধর )

বসত্ত, বর্ধাও শরৎ তিন কালু। ৩ ক্বত (সত্য), ত্রেতাও বাণররূপ যুগতার। (ঋক্ ১০ ১৯৭ ১ ভাষ্যে সারণ) (জি) ৪ বড়ৈখার্যাশালী।

" অিযুগৌ পুগুরীকৃাকৌ বাহ্মদেবধনপ্রয়ো।" (ভারত আচলঙ)
'ত্রীণি যুগানি যুগলানি বড়ৈখব্যাণি ভগদংজ্ঞানি বা যয়েতেই'
(নীলক্ষ্ঠ)

ত্রিযুহ (পুং) কপিলাখ, কপিলবর্ণ ঘোটক। (হেম) ত্রিযুচ = ত্যুচ। (কঠিক ৩৪١১)

ত্তিরক্ত্র (क्री) বৌদ্ধর্শের প্রধান তিন্টা ধন, বৃদ্ধ, ধর্ম ও সভ্য। ত্তিরশ্মি (স্ত্রী) ত্তিকোণ্।

ত্তিরসক (ক্নী) অয়াণাং রসকাণাং সমাহার:। ১ তিপ্রকার রসমুক্ত হরা।২ তিবার মধুপান।

, ত্রিরাক্রে (ক্লী) ত্রিস্ণাং রাত্রীণাং সমাহার: আংচ্সমা। সংখ্যা-পুর্বজ্বাৎ ক্লীবভা। ১ রাত্রিতায়। ২ তছপলক্ষিত দিনতায়।

ঁ অতিক্রান্তে দশাহে তু ত্রিরাত্রমশুচি ওঁবেং।" ( মহ ) ত্রিভিঃ নির্ভিং ঠঞ্ভভ লুক্। দিনত্রর উপবাসসাধ্যওতভেদ। "একরাত্রং ত্রিরাত্রং বা বিধীরতে।"

(প্রায়শ্চিত্তবিবেক ধৃত বচন)

(পুং) ৪ গর্গতিরাত নাম যাগভেদ। [গর্গতিরাত দেখ।] তিরূপ (পুং) জীণি রূপাণ্যন্ত। অখ্যেধীয় অখ্তেদ।

[ श्रयंदमध (मथ ।]

ত্তিরেথ (পুং) ডিল্লো রেথা যতা। ১ শব্ধ। (ক্রী) ডিস্থাং রেথানাং সমাহারঃ। ২ রেথাত্রয়।

ব্রিল (পুং) এয়ো লা: লঘ্বর্ণা যত্ত্র। লঘ্বর্ণযুক্ত নগণ।
ব্রিলঘু (ত্রি) এয়ো লঘবো শত্ত্ব: > ছল্পোগ্রন্থসিক নগণ।
"ব্রিলঘু চ নকার:" (ছল্পোম ) ছল্পে 'ন' এই বর্ণ থাকিলে তিনটা লঘ্বর্ণ হয়। ২ গুভ লক্ষণসুক্ত ছানত্ত্রয় হ্রম পুরুষ, যে পুরুষের গ্রীবা, জ্বত্তা ও মেহন এই জিন ভান হ্রম তার্হাকে ব্রিলঘু করে।

"গ্ৰীবা জঙ্গা মেহনৈশ্চ ত্ৰিভিত্ন স্বোধ্যমীড়িত:।"

(कामीयः >> व्यः)

ত্রিলবণ (ক্রী) অয়াণাং লবণানাং সমাহার:, ত্রিগুণিতং লবণং সংজ্ঞাঘাৎ বা কর্মধারর:। লবণত্রয়, মিলিত সৈন্ধব, বিদ্ধ ও ক্রচক এই তিন লবণ। "সৈক্ষবঞ্চ বিড়টেঞ্চৰ ক্লচ্চকঞ্চ তৃতীয়কং। মিলিছৈডৎ জিল্বল: ( রাজনিং

ত্রিলিক্স (বি) বীণি নিকানি অস্ত। > পুংস্থানি নিক্রর্ত্ত্ব শব্দ। বীণি স্থাদীনি নিকানি অনুমাণকানি বৈত্য ২ অহমারাদি। (ভাগণ অং•।১৪) ও বাডাদি ধাডুদোরে রোগ। (অ্প্রশ্রুত)

জিলিক, (বর্জমান তৈলক, তিলক বা তেলুগু দেশ।) বেই
কেহ বলেন—কালেশ্বর, প্রীশৈল ও তীমেশ্বর এই তিনটা নৈর
শিব লিকরপে আবিভূতি হইরীছিলেন বলিয়া এই প্রদেশ
জিলিক নামে বিখ্যাত হয়, তাহাই এখন অপ্রংশে তিলা,
তেলুগু প্রভৃতি নামে অভিহিত হইরাছে। আবার কেই
বলেন, পূর্বকালে জিকলিক নাম ছিল, 'ক' লোপ হইরা
জিলিক এবং অপ্রংশে নানা লোকের মুখে যথাক্রমে তিলা,
তৈলক, তিলিক ইত্যানি নাম হয়। [কলিক শব্দে বিভারিত
বিবরণ মন্তব্য ।]

বান্তবিক ত্রিক্লিক হইতে ত্রিলিক হইরাছে কি না, তাহা ঠিক জানা যার না। মহাভারতের সময় বৈতঃগীনদীতট হইতে গোদাবরী পর্যান্ত কলিক রাজ্য বিভ্ত ছিল। কিন্তু সে সময় ইহার কোন অংশ ত্রিক্লিক বা ত্রিলিক নাম ছিল না। পৃষীর ১ম শতাকে প্লিনি মোদোগলিক (Modogalingam) শক্রের উল্লেখ করিয়াছেন। তৈগক ভাষার মৃত্ শক্রের অর্থ তিন, স্থতরাং মোদোগলিকম্ শক্তরোগ দারা ত্রিক্লিক নাম ব্রাইতে পারে। পৃষীর মানতাকে টলেমী ত্রিগ্লিপ্টন্ বা ত্রিগ্লিফন্ দেশের উরেধ করেন, এই শব্দ সংস্কৃত ত্রিক্লিক বা ত্রিলিক উভ্যাশবের করেন, এই শব্দ সংস্কৃত ত্রিক্লিক বা ত্রিলিক উভ্যাশবের করেন, এই শব্দ সংস্কৃত ত্রিক্লিক বা ত্রিলিক উভ্যাশবের করেন প্রইতে পারে।

খৃষ্টীয় বর্চ শতাকী হইতে শিলালিপি বা তামশান্দ ত্রিকলিক দেশের উল্লেখ পাওয়া যায়। উৎকল ও কনিছে রাজগণও 'ত্রিকলিক্ষনাথ' নামে আপনাদের প্রিচা দিয়াছেন।

খৃষ্ঠীয় ১১শ শতাকীর প্রথম ছোগে (१) উৎকল্যাই উদ্যোতকেশরীর সময়ে উৎকার্গ ব্রক্ষেত্র লিপিতে স্মান্থ সক্ষপ্রথম 'ভিলল' দেশের উল্লেথ পাই। এই শিলাফনংই লিথিত আছে, মহারাজ উদ্যোতকেশরীর পূর্বপূক্ষ পূর্বে তিলল দৈশে রাজত্ব, করিতেন, তথা হইতে আসিরা উৎকা অধিকার করেন। এই ভিলল দেশই এখন তৈলল নাই থাতে, তাহাতে সম্ভেহ নাই। কিন্তু ঐ 'ভিলল' শন্ধ বিক্রিণি কি 'তিলিল' শন্ধের অপভ্রংশ, ভাহার এখনও ঠিক ক্রাণ পাওয়া যাইতেছে নাই তবে এই মাত্র বলা মাইতে গারে,

ত্রিক্লিক বা ক্লিক রাজ্যের দক্ষিণাংশ এক স্মরে ডিল্ক নামে থ্যাত ছিল। শক্তিসক্ষতন্তের মত্তে— শ্ত্রীশৈলন্ত সমারভ্য চোলেশান্মধ্যজাগতঃ। তৈলকদেশো দেবেশি ধ্যানাধ্যক্ষরতংপরঃ ॥"

শ্রীশৈল হইতে চোলেশের মধ্যভাগ পর্যন্ত তৈলক দেশ।
শ্রীশৈল কর্ণুল জেলার এবং চোলেশ বা চোললিক্সমী
উত্তর আর্কট জেলার শোললিপুরে অবস্থিত। এরপন্থলে
কুঞা হইতে পেরার বা শিনাকিনী নদী পর্যন্ত দান্দিশাত্যের
প্র্নাংশে প্রার্থ সম্পার ভূঁজাগ (শক্তিসক্ষমভ্যন্তের মতে)
তৈলক নামে খ্যাত ছিল। অনেকের মতে, প্রাণে যে
অনুরাজ্যের উল্লেখ আছে, তাহাই তৈলক দেশ। খুলীর
গম শতাব্দে চীনপরিবাকক হিউএন্ৎসিরং অনুরাজ্যে
আগমন করেন। তাঁহার মতে, এই রাজা ৩০০০ লি
অর্বাং প্রায় ৫০০ মাইল বিভ্ত*। ইহার রাজধানীর নাম
বেলিল (বেলি)। গোদার্বী জেলার ইলোরের ৬ মাইল
উত্তরে বেলি বা বেগি অবস্থিত †। এরপন্থলে (ক্নিংহাম
প্রভৃতি প্রদ্ধতন্ত্র নামতে) অনুবা তৈলক দেশ
গোদাব্বী ও কৃষ্ণা নদীর মধ্যবন্ত্রী ভূভাগ্র হইতেছে।

আইন্-ই-অকবরীতে 'তেলিজানা' বা তৈলজ স্থবা বরারের (বেরারের) দক্ষিণাংশে নির্দিষ্ট হইরাছে। তৎকালে সরকার তেলিজানা ১৯টী পরগণায় বিভক্ত ছিল এবং এই সরকার ইইতে ৭১৯০৪০০০ দাম রাজস্ব আদায় হইত ‡। তিব্বতের পণ্ডিত তারানাথ ১৬০৮ খৃষ্টাকে লিথিয়াছেন 'কলিজ তিলিছেরই কিয়দংশ' **।

আবার ১৭৯০ খৃটাকে রেনেল সাহেব লিখিয়াছেন, "তেলিজ-নের রাজধানী বরঙ্গল, (এই জনপদ) ক্রফা ও গোলাবরীর মধ্যে ও বিসিয়াপুরের (বিজ্ঞাপুর ?) পুর্বেজ অবস্থিত ও।'

এই তৈলক বা তিলিকের লোকেরা ও তাহাদের শবলন্বিত ভাষাই তৈলক বা তেলুগু নামে খ্যাত। বর্তমান মায়ে উত্তরে শ্রীকাকোলম্ (চিকাকোল) হইতে দক্ষিণে রিরবেক'ড়ে (পুলিকাট), পর্যান্ত তেলুগু ভাষা প্রচলিত। চিকাকোলের নিকট উড়িয়া ও পুলিকাটের পর হইতে টামিল ভাষা তেলুগুর হান অধিকার করিয়াছে। এদিকে

পশ্চিমাংশে মহারাষ্ট্রের পূর্বানীমা, মহিত্বর, কর্ণ জেলা ও নিঞ্চাম রাজ্য পর্বান্ত তেলুগু চলিয়া গিরাছে। ভাষা-সংস্থানের উপর লৃষ্টিপাত করিলে তেলুগু-ভাষা-প্রচলিত ভূভাগকেই তৈলল দেশ খীকার করিতে হয়। এরপত্বলে তিঞ্লিল শক্ষ হইতে ত্রিলিল বা তৈলল নাম হইয়াছে, ভাহাও খীকার করা বার এবং ক্লিলদেশ তৈলকের অংশ বলিয়া মনে হয়। [ক্লিল দেখা]

খৃষ্ঠীয় ৭ম শতাকীতে হিউএন্ৎসিয়ং অন্ধ্ দেশে আ্সিয়া দেখিয়াছিলেন, এখানে মধ্যভারতের লিপি গুচলিত। আমরা প্রমাণ পাইরাছি, ঐ সমর মধ্যভারতের বর্ণনালার সহিত উড়িয়ার বর্ণনালারও আকারগত কৌসাল্গ ছিল, কালক্রমে এত বৈলক্ষণ ঘটিরাছে বৈ, তৈলজের বর্ণনালাকে এক সম্পূর্ণ পৃথক্ বর্ণনালা বলিলেও অত্যক্তি হয় না।

কুমারিলভট দাক্ষিণাত্যের ভাষাকে আজুতাবিড় ভাষা বলিয়া বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। [তামিল-দেখ। ] কুমারিল-বর্ণিত অংকু ভাষা এখন তেলুপুলনামে থাতে হইয়াছে।

टिजनक ভाषात्र ১৩ हे खत ७ ० ६ है व्यक्षन। का, का, है, के, के, के, का, वा (इ.च), वा (कोर्च), के, ७ (इ.च), वा (कोर्च), के, वा रूप है, है, वा रूप है, है, है, वा रूप है, वा रूप वा रूप है, वा रूप वा रूप है, वा रूप वा र

তৈলক পণ্ডিতেরা বলিয়া থাকেন, কণুমুনি সর্বপ্রথামে তেলুগু ব্যাকরণ রচনা করেন। তিনি আদুরায়ের সভায় উপস্থিত হন। এই রাজার সময়েই সংস্কৃত ভাষা তৈলঙ্গ দেশে প্রচলিত হয়। উক্ত প্রবাদ বচন ছারা এইটুকু বোধ হয় বে, ব্রাহ্মণেরা আসিয়াই তৈলকে সংস্কৃত ভাষা প্রচাব कतिरम छाहात्रहे चामरम टिजनमनिशि 🗷 टिजनम व्याकत्रन গঠিত হয়। কথের তৈলক ব্যাকরণ এখন বিলুপ্ত হইয়াছে। এখন যে প্রাচীনতম তেলুগু ব্যাকরণ পাওয়া যায়, তাহাও নর্য বা নর্পভট্ট কর্তৃক সংস্কৃত ভাষায় বিরচিত। এই নম্নপভট্ট তেলুগু ভাষায় মহাভারত প্রকাশ করেন। এখন নরপঁভটের মহাভারতই তেলুগু ভাষার আদিএছ ৰলিয়া অনেকে অফুমান কংগুন। চালুক্যরাজ বিষ্ণুবর্দ্ধনের সময় नज्ञ श्वाविष्ट् छ रन, ठानुकावश्य विकृवर्क्षन नाम नज्ञ দশ জন রাজা বিভিন্ন সময়ে রাজত্ব করিয়াছিলেন। [চালুক্য मक (तथ। ] त्कान् विकृवर्कतनत समत्र नन्नश विनामान हिल्नन, जाहा ज्यानियात छेशांत्र नाहे। त्मव विकृवर्कतनत्र সময় হইলেও নরপভট্টকে খ্টীয় ১১শ শতাব্দের গোক विनम्न श्रीकात्र कत्रा वात्र।

^{*} Beal's Buddhist Records of the Western World

R. Sewell's Lists of Antiquities in the Madras seedency, Vol. I, p. 36.

Jarrett's Ain-i-Akbari, Vol. II. 228, 237.

Schiefner's Taranatha, p. 264.

Rennell's Memoir, 3rd edition, p. exi.

কেহ কেহ ইহাকে আদি প্রশ্ন বিদরা সীকার করিলেও তাহা প্রকৃত বলিয়া গ্রহণ করা যার না। তাঁহার বৃহং গ্রন্থের রচনাপ্রণালী ও ভাষার ছটা 'দেখিলে বোধ হ্র্য, তেলুগুভাষা তাঁহার অনেক পূর্ম হইভেই পুষ্টিলাভ করিয়াছে এবং তাঁহার মহাভারত রচিত হইবার পূর্মেও অনেক ক্ষুত্রান্থ প্রচলিত ছিল, তাহা অসম্ভব নয়। নয়পভট্টের পর অপ্লকবি তেলুগু ভাষায় শোকাকারে তেলুগু ব্যাকরণ প্রথমন করেন।

বৈমন নামে এক ব্যক্তি প্রাকারে তেল্প ভাষার ছই হাজারের অধিক ধর্মনীতি-বিষয়ক উপদেশ রচনা করিয়ার্ছেন। ইহার বাক্যাবলীতে কর্মকাণ্ড ও হৈতবাদের নিন্দা থাকার কেহ কেহ বেমনকৈ খৃষ্ট ধর্মপ্রচারের পরবর্তী বলিয়া মনে করেন। কিন্তু বেমনের বিশুদ্ধ আধ্যাত্মিক ও ক্ষরৈত-বাদ্বিষয়ক সরল উপদেশগুলির ভাষা পাঠ করিলে অতি প্রাচীন বলিয়াই বোধ হয়। এতন্তির তৈলক ভাষার আরও অনেক প্রাচীন গ্রন্থ আছে। মুদ্যায়ন্তের প্রভাবে তৈলকেও প্রতি বর্ষে প্রভৃত গ্রন্থ বাহির হইতেছে।

ত্তিলিঙ্গক (তি) তিলিঙ্গ খার্থে কন্। [তিলিঙ্গ দেখ।]
• তিলিঙ্গী (ত্তী) ত্রমাণাং লিঙ্গানাং সমাহার: তীপ্। লিঙ্গত্তম।
• তিলিঙ্গাং তিখিতি পদং' (অমর)

ত্রিলোক (ক্নী) ১ ত্রিভূবন, স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও পাতাল এই তিন।
( গুং) ২ স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও পাতালের অধিবাসী।

ত্রিলোকধৃৎ (পুং) ত্রমাণাং লোকানাং ধৃৎ ধৃতি রক্ত ধৃ-কিপ্। প্রমেশ্বর। (ভারত ১৩১১৪৯১৯৬)

তিলোকনাথ (পুং) ত্রাণাং লোকানাং নাথঃ। পরমেশর। তিলোকাত্মন্ (পুং) ত্রো লোকাঃ আত্মীনঃ স্বর্নাণি মন্ত। প্রমেশ্র।

"ত্রিলোকাত্মা ত্রিলোকেশঃ কেশবঃ কেশিহা হরিঃ ৷"
( ভারত ১৩১৪৯৮২ )

ত্রিলোকী (ত্রী) অয়াণাং লোকানাং সমাহার: ভীপ্। লোকত্রর, স্বর্গ, মর্ত্তা ও পাতাল এই তিন লোক, ভূলোক, ভবর্লোক ও স্বর্লোক।

"যদি অিুলোকী গণনাপরা ভাৎ।" ( নৈষধ )

ত্রিলোকেশ (পুং) ত্রয়াণাং লোকানামীশ:। > পরমেশর।
২ স্থা। (শন্দে)

ত্রিলোচন (পুং) ত্রীণি লোচনানি যক্ত। ১ শিব। (ক্লী)
২ কাশীন্থিত চতুর্দশ মহালিকাস্তর্গত নিক্তেদ; এই ত্রিলোচন
নিক্ত হিতীয়। "হিতীয়ঞ ত্রিলোচনং।" (কাশীক ৭৫ অং)

* Rev. Caldwell's Dravidian Grammars, p. 124.

(জি) ও লোচনত্রয়সূক্ষ। ও একজন সংস্কৃত গ্রহকার। । ।
পার্থবিজয় নামে একখানি কাব্য রচনা করেন।

প্রবাদ অনুসারে কাদস্বরাজবংশের আদিপুরুষ।

ত্রিলোচন্তীর্থ, বিরজাক্ষেত্রের অন্তর্গত একটা তীর্ধ
(কপিলসংহিতা)

ত্রিলোচন-দাস, ( জন্ম শকাক্ষ ১৪৪৫, তিরেছা ১৫৩০, পৌষ তৃতীয়া।) বর্জমানের দশ ক্রোশ উর্বা গুলকরা টেসন হইতে পাচ ক্রোশ দূরে কুছর নদীর ধারে মদলকোটের নিকট কুয়া বা কো প্রামে ত্রিলোচনার জন্ম প্রহণ করেন। ত্রিলোচনের আরো তিনটা নাম আছে- স্থানিন, লোচনানন্দ, লোচন। এই শেষোক্ষ "লোচনামেই তিনি বিধ্যাত। এই লোচন বা ত্রিলোচনই বনা ধ্যাত পদক্তী। চরিতামৃত ও ভক্তিরক্ষাকরাদি প্রাচ প্রছে তিনি স্থলোচন নামেই পরিচিত। চরিতামৃত সাধারণ শাধাবর্ণনে অর্থাৎ ১০ম পরিচ্ছেদে তাহার ন আছে। যধা—

"थखरांत्री पूक्तनात श्रीत्रवृतस्त । नत्रहतिनात ठित्रश्रीव स्टलाठन ॥"

নরোত্তমবিলাসে থেতরির মহোৎসবে গমনগ্রন "স্লোচনের" নাম পাওয়া যায়। যথা—-"শ্রীরঘুনন্দন স্লোচন আদি সঙ্গে।"

তাহার "ত্রিলোচন" নামটা স্বহন্তলিথিত প্রাচীন জ্য মঙ্গলে দৃষ্ট হয়।

গুদ্করা ষ্টেসনের নিকট কাঁকড়া প্রামে বিগা চৈতত্ত্বীসঙ্গলগায়ক প্রাণক্ষ চক্রবর্তীর গৃহে লোচনের বংগ লিখিত গ্রন্থ আছে। সেই মৌলিক প্রন্থে ও ছাগার চৈত্তা সঙ্গলে দিনরাত্রি প্রভেদ। ছাপার পুস্তকে অনেক কর্বা নাই। বটতলায় প্রথম যিনি চৈতত্ত্বসঙ্গল ছাপান, ইয় মুগুপাত তিনিই করিয়া থাকিবেন। বটতলার মূর্ত্তি প্রক্রের ভনিতায় কোন কোন হলে "গুণ গায় এ শেষ্টি দাস" আছে। প্রকৃত পক্ষে এই "এ" টী " ত্রি," এইগ ছইবে—"গুণ গায় ত্রিলোচনদাস।"

ছেন। উভন্ন লিখাই এক—প্রভেদ নাই। অতএ^{ব চুর্} চৈতস্ত্রমদশের পরে রচিত হয়। অনেকে বলেন বে, লোচনদাস সংস্কৃত জানিতেন না, কিন্তু তাহা সত্য লুহে। প্রাসিদ্ধ রার রামানলক্ষত সংস্কৃত জগরাথবলতের প্রোকাংশের একটা মনোহর পদ্যাহ্বাদ আছে, তাহা লোচনদাসের ক্ষত। সংস্কৃত না জানিলে প্লোকের অনুবাদে তিনি কৃতকার্য্য হইতে পারিতেন না। এইরূপ একটা মাত্র পদ উদ্ধৃত করিয়া দেখাইতেছি—

(মৃল) শপরিণত শারদ শশধর বদনা।
মিলিতা পাণিতলে গুরু মদনা॥
দেবি কিমিছু পরমন্তি মদিটং।
বহুতর স্কুত ফলিত মস্দিটং। গুল।
পিক বিধু মধু মধুপাবলি চরিতং।
রচয়তি মামধুনা স্বভরিতং॥
প্রণয়ত্রু কুদ্রুপে স্ব্যম্ভং।
রামানন্তনিত হরিরমিতং।
লোচনের জাস্বাদে যথা—.

"নিৰ্দ্দাল শাৱদ শশধৱবদনী।
বিদলিত কাঞ্চন-নিন্দিত-বরণী॥ এল ॥
পিকক্ষত-গঞ্জিত-ছ্মধুর বচনা।
মোহন ক্ষত করি শত শত মদনা॥
দেবি শুণু বচনং মম সারং।
কিল গুণধামমিলিত মন্থবারং॥
চিরদিনবান্থিত যদিহ মদিইং।
তব ক্রপয়াপি ফলিত মনোভীইং॥
ইদমন্থ কিং মম যাচিত মাস্তি।
নিথিল চ্রাচ্বে প্রিয়্মথি নাস্তি॥
প্রণয়তু রিসক্ষদর হুথ ম্মিতং।
লোচনমোহন মাধ্বচ্রিতং॥"

বাহন ভয়ে তৎক্ত বিশুদ্ধ বাদনা অনুবাদ পদ উদ্ভ ইইন না।

এই লোচনের চতুর্থ গ্রন্থ 'রাগণহরী,' এথানি, সংক্ষত ভজিবসামৃতসিদ্ধর স্থানবিশেষের পদ্যামুবাদ। চারিথানি গ্রন্থ ভিন্ন লোচনদাস কৃতি বৃহত্তর পদ আছে। এই পদের স্কুট লোচনদাসের নাম স্ক্রি স্মাদৃত।

এই পদাবলীতে তিনি "লোচন" নামে পরিচিত, ভনিতার "লোচন" বা "লোচনানন্দ" নাম দিরাছেন।

তবে এই চারি নামে চারি ব্যক্তিই ছিলেঁন, এই আপত্তি উপিত হইবার অবসর নাই; যথন চৈতক্সমলল গ্রছে আমরা "লোচন" এবং "লোচনানন্দ" নামও পাই। লোচনানন্দ নাম তিনি ছই এক স্থানে ব্লিয়াছেন, কিন্তু বৈক্ষবগ্য আদর করিরা এই নামে কখন কখন ভাহার উল্লেখ করিরাথাকেন।

এক সময় লোচনের চৈতন্তমঙ্গল সর্বাত্ত সাদরে গীত হইত। প্রেমবিলাসে লিখিত আছে---

> "বৈদ্যবংশোম্ভব হর ঞ্লোচনদাস। শ্রীনরহরির শিগ্রী শ্রীপণ্ডেতে বাস।। তৈতক্তমন্দ্রদান ভাহার রচিতে।

চৈতক্তমলল গ্রন্থের শেষাংশে এবং ছল্ভদার গ্রন্থের আদিতে লোচন নিমোক্ত রূপু আত্মপরিচর দিয়াছেন---

"বৈদ্যক্লে জন্ম মোর কো প্রামে বাস।
মাতা শুদ্ধতি সদানন্দী তার নাম ॥
বাহার শুদ্ধরে জন্মি করি রুক্তকাম।
কমলাকরদাস মোর পিতা জন্মদাতা॥
বাহার প্রসাদে গাই গোর শুণগাথা।
মাতৃক্ল পিতৃক্ল বৈসে এক প্রামে ॥
ধ্যু মাতামহী সে অভরাদাসী নামে।
মাতামহের নাম প্রীপুরুষোভ্রমগুপ্ত॥
সর্কতীর্থপৃত সেই তপস্তায় তৃপ্ত।
মাতৃক্লে পিতৃক্লে জামি একমাত্র॥
সংহাদর নাহি মোর মাতামহের পুত্র।
যথা তথা ঘাই ছলিল করে মরে।
ছলিল দেখিয়া কেহ পড়াইতে নারে॥
মারিয়া ধরিয়া মোরে শিখাইল আথের।
ধ্যু সে পুরুষোভ্রম চরিত বাহার॥" ইত্যাদি।

ঠৈত জীমললের প্রারত্তেই তিনি প্লিরাছেন—
"প্রীনরছরিদাস যে দরামর দেছ।
পাতকী দেখিরা দরা বাঢ়াল সিনেহ॥
ছরস্ত পাতকী অল আমি ছরাচার।
অনাথ দেখিয়া দরা করিল অপার॥
তার দরা বলে আর বৈঞ্চবপ্রসাদে।
এই ভরসার পৃথি হইবে অবাদে॥"

নিরছরির দয়ার বিষয় নরছরিসরকার ঠাকুর শব্দে জ্বন্তব্য ]
কোচনদাস বৈদ্য, তাঁহার পিতামাতাদি আত্মীরগণের
নাম তিনি স্বয়ংই উল্লেখ করিয়া গিরাছেন।

লোচনের আধরগুলি খুব মোটা মোটা। তাহার বাড়ীতে একটা পাধরের উপর বনিরা শৃক্ত আকাশু তলে তিনি চৈতন্ত্রমঙ্গল কাব্য লিখিতেন। সে পাধর্মানি অন্যাপি আছে। বৈঞ্বগণ তাহা দর্শনার্থ গমন করিয়া থাকেন।

"পিতৃক্লে" ও "মাতৃক্লে" একমাত্র লোচনই উত্তরাধি-কারী ছিলেন। অতএব সকলের স্বেহভাজন লোচনের বিবাহ অতি অল্ল বয়সেই হয়। বিবাহের পর তিনি পাঠাভ্যাসের জন্ম প্রীথণ্ডের নরহরি ঠাকুরের নিকট গমন করেন।

নরহরিঠাকুর প্রীগোরাক্ষের পার্থন ভক্ত, গোর-প্রেম-রসে ভূরপুর। তাঁহার কাছে গেলে যাহা হর, লোচনের তাহাই হইল। তিনিও "গোর-প্রেমামৃত সাগরে" ভূবিরা গেলেন। ইহারই ফল চৈত্রস্কলল গ্রন্থ এবং পদাবলী। নরহরির আলেশ ক্রমে ১৪৫৯ শকে তিনি চৈত্রস্কলল রচনা করেন। [চৈত্রস্কল নাম প্রাণ্ডির বিবরণ বৃন্দাবনদাস শক্ষে দ্রহীবা]

নরহরি ঠাকুর আকুমার ব্রন্ধচারী, উাহার সক্ষওণে লোচনের সংসারে বৈরাগ্য জ্মিল, তিনি শ্রীথণ্ডেই থাকিয়া গোলেন। বাড়ীতে যাননা, খণ্ডর বাড়ীও গমন করেন না।

এখন লোচনকে সংসারী করিবার উপায় কি । এদিকে তাঁহার স্ত্রীও কৈশোর প্রার অতিক্রম করিয়াছেন, যৌবন আগক্তপ্রায়। পোচনের নিকট বার বার সংবাদ আসিতে লাগিল। শেষে তিনি এক দিন পদব্যক্ষে শশুরালয়ে চলিলেন।

বিবাহের পরে খণ্ডরালরে আর যান নাই, স্ত্রীকেও দেখেন নাই। এখন গ্রামে প্রবেশ করিয়াই একটা "তেমাথা পথ" দেখিতে পাইলেন। কাহাকে জিজ্ঞানা করিবেন? নিকটে একটা অর্দ্ধ যুবতীকে দেখিতে পাইয়া জিজ্ঞানা করিলেন,—"মা, অমুকের বাড়া কোন্ পথে যাইব?" এ যুবতীই লোচনের স্ত্রী! একথা যথন অবগত হওয়া গেল, লোচন এবং তাঁহার স্ত্রী তথন অতি কাতর হইলেন গলোচন সিদ্ধান্ত করিলেন, ইহা ভগবানের ইছাক্রমেই ঘটয়াছে, তা না হইলে, তাঁহার স্ত্রীই বা তথন পথে দাঁড়াইয়া থাকিবেন কেন?

যাহা হোক, ছইজনে পরম প্রীতিতে অতঃপর একতা বাস করিতে লাগিলেন। ব্রহ্মচর্য্য রক্ষা করিয়া স্ত্রী স্থামীতে পরম স্থাবে থাকা ঘাইতে পারে, জগতের লোককে ইহা দেখাইলেন। বস্ততঃ ভগবভ্তকের অসাধ্য কিছুই নাই। ভাঁছাদের কাছে, ইন্দ্রিরগণ দভ্তোৎপাটিত সর্পের ভার। লোচন এবং ভাঁহার স্ত্রী কি রূপ শক্তিশালী ছিলেন, এই ঘটনাতে ভাহা স্পাইরপে জানা যাইতেছে।

তাঁহার স্বীর প্রতি কি রূপ অত্বাগ ছিল, চৈতন্ত-মললেই, তাহার পরিচর আছে। এই অপুর্ব গ্রন্থানি তিনি ত্রীর অনুষ্ঠি লইয়ারচনাকরেন। চৈতভ্রমকলের প্রথ_{য়েই} এই পদটি আছে—

"প্রাণের ভার্যো! নিবেদি নিবেদি নিজ কথা। আশীর্কাদ মাগে আগে, যত যত মহাভাগে,

ভবে গাৰো গোরা গুণ গাঁথা ॥"

কি মধুর ভাব ! গৌরপণোদ্দেশে লোচনের _{নায়} আছে। বৈষ্ণবগণ বলেন, লোচনের স্বরূপ "বড়াই"— ব্রজের বড়াই বুড়ি।

ত্রিলোচনদাস, একজন প্রসিদ্ধ বৈরাকরণ। ইনি কাজঃ. বৃত্তিপঞ্জিকা ও কাতয়োত্তরপরিশিষ্ট রচনা করেন।

ত্তিলোচনদেব ভাষপ্ঞানন, নবৰীপের একজন নৈয়-ষিক পণ্ডিত, রামের ছাতা। ইনি ভাষকুস্মাঞ্লিব্যাধ্যা রচনা করিয়াছেন।

ত্তিলোচনপাল, মহারাজ রাজ্যপালের পুত্র। ইরি
সম্ভবতঃ প্রয়াগ অঞ্চলে রাজ্ত্বিরিতেন। প্রয়াগ হইত্তে
প্রদত্ত ত্তিলোচনপালের ১০৮৪ অঙ্কাজিত এক তাম্রশাসন
অসিয়াটিক সোনাইটাতে রক্ষিত আছে, তাহা পাঠ করিয়
প্রজতত্ত্ববিদ্ কিলহর্ণ নাহেব ঐ অঙ্ক সম্বংজ্ঞাপক রিয়
করিয়াছেন। (Indian Antiquary, Vol., XVIII. p. 34)

কিন্তু এই তামশাসন্থানি ১০৮৪ শক্সম্থ বলিয়াও খীলার করা ঘাইতে পারে, কারণ মূল তামশাসনে সম্বং শক্সপাই নাই। তামশাসনে ইনি রাজ্যপালের পুত্র ও বিজ্ঞালের পোত্র বলিয়া নির্দিষ্ট ইইয়াছেন। ১১৯৯ সম্বরে উৎকীর্ণ একথানি তামশাসনে মহারাজপুত্র রাজ্যপালের পরিচয় আছে। (Ind. Ant. XVIII. p. 26) পুর্ব্বোক্ত শক্ত পোষোক্তটী সম্বং গ্রহণ করিনে রাজ্যপালের তামশাসন হইতে ত্রিলোচনপালের তামশাসন ২০ বর্ষ মাত্র প্রভেগ্রহ হয়। 'মহারাজপুত্র' রাজ্যপালও কান্তুক্তরাজ গোবিদ্দিতক্রের সম্বৃতিক্রনে ভূমিদান করেন। একপ স্থলে রাজ্যপালকে গোবিন্দ্রতক্রের অধীন বলিয়া বোধ হয়, কিন্তু ত্রিলোচনপালে পরমভট্রারক মহারাজ্যধিরাজ ইত্যাদি স্বাধীন রাজ্য উণাধি গ্রহণ করিয়াছেন।

ং এই নামে পশ্চিমে একজন পরাক্রাক্ত রাজা রাজ্ করিতেন। তিনি স্থপতান মাক্ষুদের সহিত যুক্ত ^{রিরা} ছিলেন। ^{*}

ও লাটদেশের চৌলুক্যবংশীর একজন বিধ্যাত রার্ন। বংসরাজের পুত্র। ইনি ৯২৭ শকে রাজত্ব করিতেন। ব্রিলোচন ভট্টাচার্য্য, জান্ত্রসংজ্ঞ নামক সংস্কৃত গ্রন্থরচিত্রন। ত্রলোচনমিশ্রা, ধর্মকোব নামে ধর্মপান্ত সংগ্রহকার। বর্জনান ও আহিকতত্বে রবুনন্দন ইহার বচন উজ্ত করিরাছেন।
ক্রলোচন শিবাচার্য্য, রক্ত্রেয়েছেয়াত ও সিদ্ধান্তনারাবলী
নামে শৈবশান্তকার।

ত্রলোচনাচার্য্য, বৈরাকরণ-কোটাপত্রনামক সংস্কৃত গ্রন্থ বচরিতা।

ব্রলোচনাদিত্য, এক সংস্কৃত গ্রন্থকার। ইনি নাইলোচন ও লোচনব্যাথ্যাঞ্চন রচনা করেন।

ত্রলোচনা (को) धर्गा।

ব্লোচনা উমী (জী) ত্রিলোচনার শিবপৃত্তারৈ যা অইমী।
কৈটে মাদের গৌণচাক্ত কৃষ্ণাইমী, এই অইমীতে শিবপৃত্তা
ক্রিলে শিবলোকে গতি হয়।

"ৰৈ ছে মাদি নৃপশ্ৰেষ্ঠ ক্ষণাষ্টম্যাং তিলোচনং।
য: পৃজ্বতি দেবেশমীশলোকং দ গচ্ছতি॥" (ভবিশ্বপুণ)
ফুলোচনী (জী) তীণি লোচনাল ষভাঃ। ছগা।
ফুলোচনেশ্ব্ৰতীৰ্থ (কী) তিলোচনেশ্বং নাম তীৰ্থং।
ভীৰ্থবিশেষ।

ালোহ (ক্নী) স্থবৰ্গ, রম্বন্ত ও তাম। ালোহক (ক্নী) স্থবৰ্গ, রম্বন্ত ও তাম এই ধাতৃত্য। ালোহক (ত্রি) ত্রীণি লোহানি ধাতবো যতা, সংজ্ঞাগাং কন্। স্থবৰ্গ, রম্বন্ত ও তাম্ময় পাতাদি।

্লো हो ( ব্রী ) ত্রীণি লোহানি সাধনত্বনাস্তাস্থাঃ গোরাণ ভীপ্। স্বর্গ, রক্ষত ও তাত্রের পরিমাণ ভেদ দারা নির্মিত মুদাভেন। তন্ত্রসারের মতে মন্ত্রীর হিতের জন্ত এই মূদ্রা নির্মিত হইয়াছে। লোহত্রের মধ্যে স্বর্গ স্বর্গ, রোপ্য চক্ষ ও তাত্র অধিস্কর্প কানিবে।

ংগামস্ব্যাধিরপা: স্থাবর্ণা লোহত্রমং তথা।
রৌপামিল্: স্বতো হেম স্ব্যান্তামের হতাশন:॥
লোহতাগা: সমুদ্দিষ্টা: স্বরাদাক্ষরসংখ্যমা।
তৈ লোইতা কার্যেস্সামসকলিতসক্ষতাম্॥
এমু স্বরা: স্বতা: সোম্যা: স্পর্লা: কার্যের ভালেমা:।
আব্যা ব্যাপকা: সর্ক্ষে সোমস্ব্যাধিদেবতা:॥
স্বরা: বোড়শবিখ্যাতা: স্পর্লা: স্থা: পঞ্চবিংশতি:।
ব্যাপকা দশতে কামধনধর্ম প্রদায়িন:॥
সাইং সহস্রং সংজ্ঞপা স্পৃষ্ট্য তাং স্কৃষ্ট্যাতা:।
ততাং সম্পাত্যেরালী সপিষা প্র্সাংখ্যমা ॥
নি:কিণা কুন্তে তাং মুদ্রামভিবেকোক্তবর্মানা।
আবাহ্য প্ররেদেবীমুপচারে বিধানত:॥
অভিষিচ্য বিনীতার দদ্যাতাং মুদ্রিকাং তর্ক:।

हेतर मूखा क्षादाणि विषय खत्र नामिनी ॥

रागि- (होत मृगोनि एका। तकार क्षां कि यादि (भव छः ।

ग्रा विकास । (छात्र विकास । स्वापिक के ती प्रार हिक्स के ला।

सात्र म् सहस्का निकार (क्षेत्र क्षां । छात्र विषय । विकास ।

जित्र (प्रा) जात्र। तरुगां: तरुगां: ग्र गः। जित्र विशय भक्ष ।

"जित्र (प्रा) जात्र। तरुगां: तरुगां: ग्र गः। जित्र विशय भक्ष ।

"जित्र (प्रा) जात्र। तरुगां: तरुगां: ग्र गः। जित्र विशय भक्ष ।

"जित्र (प्रा) जात्र। तरुगां: तरुगां: ग्र गः। जित्र विशय भक्ष ।

जित्र विशय वृत्र।

"দোমক্রয়ণন্বিবৎসঃ সাঙ্খঃ" ( কাত্যায়নশ্রৌ• ২২।৩।৪• ) 'विवरम द्विवर्षः माणः चाणमःयूक सर्वेष्ठः' ( कर्क ) ত্রিবন্দরম, > তিবাছোড় রাজ্যের একটা বিভাগের নাম। ইহাউত্তর ও দক্ষিণে ছইটী স্বয়ন্ত আলুকে বিভক্ত। ইহার মধ্যে উত্তর তালুকে ৫২ হাজার লোকের বাস। ২ উক্ত বিভাগের প্রধান নগর ও ত্রিবাক্ষোড় রাজ্যের রাজ্ধানী। মলয়ালম্ প্রদেশের সামাজিক প্রথার একটা কেন্দ্র বলিয়া বহুদিনাবধি এই নগর প্রাসিদ। তিবাকোড়রাজ্যের প্রাসাদ, সভামওপ ও ছর্গ এই নগরে অবস্থিত। ইহার চতু-ম্পার্মের দৃশ্য অতি মনোরম। নগর্টী সমুদ্রতীর হইতে এক কোশ দুরে অবস্থিত। ইহার সমূথে সমূদগর্ভে• একটা বালুকাচর ও জলাজমীবিশিপ্ত দ্বীপ পশ্চিম ঘাট পর্বতের ক্রোড্বর্ত্তী জ্মীর সহিত সংলগ্ন হইয়াছে। করুমানয় নদী এই নগরের নিকট দিয়া প্রবাহিত। নগরের দক্ষিণাংশ অস্বাস্থাকর। ঘন নারিকেল বাগানের জন্ত স্হরের এই অংশে বায়ুর চলাচল বড় ভাল হয় না। হুৰ্গটী তাশুশ দৃঢ় নহে, চভুদিকে কেবলমাত্ৰ দৃঢ় উচ্চ প্রাচীরবেষ্টিত।

• চুর্নাধা মহারাজ ও রাজবংশীয়গণের প্রাাদ এবং পায়নাজ নামক বিক্ষুম্রির বিখ্যাত মন্দির • আছে । এই সকল অট্যালিকার উচ্চ উচ্চ কোণাকার দোচালা বারাণ্ডা, চ ওড়া কার্নি, গভীর গণাক্ষ, এবং কাঠের মোটা মোটা থামবিশিষ্ট স্থানর কার্যকার্যান্ত্রন বারাণ্ডা দিখিতে বড় স্থানা । পায়নাভের মন্দির ভাতি প্রাচীন ও অতি পুণ্যতান বলিয়া প্রাসিদ্ধা এই মন্দির থাকাতেই এই হানে ত্রিবার্যকাড়ের রাজধানী উঠিয়া আনা হয় ও এই মন্দিরের প্রসাদেই এ হানের এতদ্র প্রাসিদ্ধা । মন্দিরের দেবোত্তর সম্পত্তি হইতে ৭৫ হাজার টাকা আয় আছে । অনেকেই আধুনিক রাজগণকে এই অখাত্যকর ভানের হুর্গবাস ত্যাগ করিতে অহুরোধ করেন, কিন্তু রাজারা প্রাচীন বাসন্থানের মায়ায় এবং ত্রাক্ষণিগের কথামত বাসন্থান পরিবর্তন করেন না । প্রতি পুণ্যাহ কর্মে

মহারাজের উপস্থিতি প্রয়োজন হয় বলিয়া আরও তিনি পদ্মনান্ডের মন্দিরের সাল্লিধ্যবাস ত্যাগ করিতে পারেন না। এই নগরে মহারাজের এক টাকশাল আছে। ইহাতে পর্দা ভিন্ন সভ কোন মুদ্রা হইতে পারে না। এথানে একজন वृष्टीन द्रितिए हे थारकन । प्रश्तित छेखताः म ऋक्षावात्र, অস্ত্রাগার, হাঁদপাতাল, নারর ব্রিগেড নামক নারর দৈক্তদলের कार्याानमानि । शृत्ताभीमनिरगत वान चाटह । देनल नतन धान ১৪ শত দৈক্ত। এই দলে ৩ জন মুরোপীয় দেনানায়ক আছে। ইহার। মাক্রাজ গবর্মেণ্ট কর্তৃক নিযুক্ত। মহারাজের পরই দেওয়ান সর্ব্বেসর্কা, তাঁহার বাস এবং কার্যালয়াদিও এই महरत । वंशान वक्षे मनत्र आनान ७ ७ हिकि शाविश्वानय, ইংরাজ ডাক্তারের অধীনে হাঁদপাতাল, তন্মধ্যে দাধারণ হাঁদ-পাতাল, পাগ্লা হাঁদপাতাল, গভিণীর হাঁদপাতাল, জেল হাঁদপাতাল ও বসস্তরোগের হাঁদপাতাল শ্বতন্ত্র আছে। মহারাজের একটা কলেজ আছে," তাহার অট্রালিকা অতি স্কুদুখা। ১৮০৬ খৃষ্টান্দে একটা মানমন্দির স্থাপিত হইয়াছে। মহারাজই ইহার প্রতিষ্ঠাতা। ১৮৫৪ খৃষ্টাব্দে^ৰ এই মান-মন্দিরের একটা শাথা অগস্ত্যেশ্বর পর্বতে ( ৬২০০ ফিট্ উচ্চে ) • স্থাপিত হইয়াছে। পূর্বের এখানে যুরোপীর জ্যোভিবির্দেরা . থাকিতেন, এথন দেশীয় জ্যোতির্বিদেরা আছেন। ধরচ বেশী পড়ার ১৮৬৫ খৃষ্টাবেদ অগত্যেশ্বের মানমন্দিরটী ভাঙ্গিয়া ফেলা হইয়াছে। নেপিয়ার মিউজ্ঞম নামক বাছ্বর অতি হৃন্দর। ত্রিবাকোড় রাজ্যের ৪০টা উৎপারশের (অতিথিশালার) মধ্যে প্রধান উৎপারশ রাজবায়ে পরি-চালিত হয় এবং এই নগৱে অবস্থিত। ইহা আগরশালা ( অগ্রশালা ) নামে খ্যাত। 'ত্রিবাফোড় রাজগেজেট' নামে সাপাহিক পত্র মলয়ালম্ ও ইংরাজী ভাষায় প্রতি সপ্তাহত এই ভান হইতে প্রকাশিত হয়। নাগরকয়ল সহরে 'অিবা-ক্ষেড় টাইম্দ্' নামক ইংরাজী সংবাদপত্র মাদে ৩ বার প্রকাশিত হয়। তিবাকোড় রাজের ইচ্ছামত এথানে ইংরাল কর্ত্তক টেলিগ্রাফ আফিস স্থাপিত হইয়াছে। ৫০ বৎসর হইল এথানে ইংরাজী বিভালয় ও ছাপাথানা চলিতেছে। এই नगदात १० घा छ स्मात ।

ত্তিবৰ্গ (পুং) ত্ৰয়াণাং ধৰ্মাৰ্থকামানাং বৰ্গ: সমূহং। ১ ধৰ্ম,
ক্ষিও কাম এই তিন পুৰুষাৰ্থ।

"যত্রামুকুল্যং দম্পত্যো**দ্রিবর্গন্তত্ত বর্দ্ধতে** ॥"

( যাজ্জবন্ধ্য ১।৭৪ )

২ জিফলা। "ভাগান্দশৈতান্বিপচে**ছিধিজ্ঞ।** ুদ্বাজিবর্গ মধুরাঞ্জংসং।" (সুফাত ৫।৪১ **জঃ**) ও ত্রিকটু। ৪ বৃদ্ধিহান ক্ষরকণ পদার্ব। "ত্রিবর্গণারী মসৌ ভবত্তম্।" (ভটি)

৫ সদ্ধ, রক্ষ: ও তমোক্সপ গুণুতার।
 'ত্রিবর্গো ধর্মকামার্থে ত্রিফলারাং কুটুতাকে।
 বৃদ্ধিফানক্রে সন্তর্মন্তমসি চেয়তে॥' (মেদিনী ও তাক্ষণ, ক্রিয় ও বৈশ্র এই তিন প্রধান মাহি
 শুনীতি। (শক্র) স্তিরাং টাপ্। ৮ গায়্ত্রী।

"देवययका विवर्गा ह विकालकाननायिनी।"

(দেবীভাগৰত ১২৷৬৷১১

ত্রিবর্ণ (ক্রী) তিন রঙ্। (জি) তিনবর্ণযুক্ত। (গৃহস্ত ৩১১)
ত্রিবর্ণক (ক্রী) জিবর্ণ-স্বার্থে কন্। ১ এ। স্থাণ ক্ষাত্রির বৈশ্রর
হিলাতি বর্ণতার। (মেদিনী)

২ ত্রিফালা। ৩ শ্রাম, রক্ত ও পীত এই তিন রঙ্। আছ বর্ণাঃ পুলোবু অভ কপ্। ৪ গোলুর। ৫ ত্রিকটু। ত্রিবর্ণকুত (পুং) সরটু, গিরগিটি। ইহারা তিন বর্ণাঃ করিতে পারে। (নিঘণ্টুপ্রং)'

ত্রিবর্ণা ( बो ) বনকার্পাসী, বনকার্পাস্। ত্রিবর্ত্ত্ব ( জি ) ত্রিয়ু ঋতুষু বর্ততে বৃত্ত-উন্। বসম্বাদি ভি ঋতুতে প্রাভরাদিকালে যাহা বিলক্ষণ বর্ত্তমান।

"ত্রিবর্ক্ত্রাতিঃ স্বভিষ্ঠ্য স্মে" (ঋক্ ৭৷১৯৷২)

'ত্ৰিবৰ্ত্ ত্ৰিষ্তুষতিশয়েন বৰ্ত্তমানম্।' ( সায়ণ ) ত্ৰিব্ৰু গা ( স্ত্ৰী ) ত্ৰিপথগা গঙ্গা।

ত্রিবজুন্ (ক্নী) > ত্রিপথ। ২ ত্রীণি বন্ধানি বঞ্চ। দেবদান, পিতৃযান ও দক্ষিণাযানরূপ মার্গতির যুক্ত জীব।

"দ বিশ্বরূপস্তিত্তপস্তিবকর্ম

প্রাণাধিপ: স করোতি অকর্মজি:।" (মেতাখতর উংজা ক্রিবর্ষ (তি ত্রয়ো বর্ষা বৎসরা: অন্য। ১ তিন বৎসরের দীব। "নাত্রিবর্ষত কর্ত্তব্যা বান্ধবৈক্লদকক্রিয়া।" (মন্থ এ।৭৭)

( পूः क्री ) २ वर्षवय ।

ত্রিবর্ষা (ত্রী) ভিন বংসরের গো।

'তিহারণী তিবর্বা পৌঃ' (অমর)

ত্রিবর্ষিকা (ত্রী) তিন বর্ষের গো । (হেম ৪।৩০৮)
ত্রিবর্ষীয় (ত্রি) ত্রিবর্ষে ভব: গহাদিভাক্ষ। ত্রিবর্ষেণের।
ত্রিবাক্ষুর (ত্রিবাক্ষোড়, তিরুবাক্ষোড় বা তিরুবিদালোড়।
নাজাজ প্রেদিডেলীর অন্তর্গত দেশীর রাজ্ঞশাসিত একটী
মিত্র রাজ্য। ইহার উত্তরে কোটীন রাজ্ঞা, পূর্বে
মছরা ও তিরেবেলী জেলা, পশ্চিমে ও দক্ষিণে ভার্মি
মহাসাগর। ইহার উত্তর দক্ষিণে ৮৭ জ্রোশ দীর্ঘ, প্রাধি
ত৮ জ্রোশ, মোট পরিমাণ ৬৭০০ বর্গ মাইল। ইহাতে ০০টী

তালুক আছে। ইহার রাজধানী ত্রিবন্দরম্। এই নগরে ত্রিবাকোড় রাজের বাস ।

এই রাজ্যই প্রাচীন কেরলের দক্ষিণাংশ। ইহার এই কর্মী প্রাচীন নাম পাওয়া যায়—জীবিব্রুগু, জীবর্দ্ধর ও প্রনাভপ্র। পেরিপ্রাস্ অম্সারে একটা প্রাচীন নাম 'পুরবি।'

ত্রিবাকোড়ের প্রাক্তিক দৃশু অতি হৃন্দর, যেন ছবির মত। পূর্বাংশে পর্বতমালা অতি ঘন বনে সমাচ্ছন্ন, পর্বত-শিথর ৮হাজার ফিট পর্যাস্ত উচ্চ। সাগরতীর হইতে ৫ काम पृत्त ममजन कार्क कारन शास नातिरकन अ अभाति রক্ষেপূর্ণ। এই ছই জবাই এক প্রকার দেশের ধনাগমের প্রধান উপায়। সমস্ত দেশটা এক প্রকার উর্বর উপত্যকায় পূর্ণ, পূর্বাণ-চিমে নদী আনছে। সাগরতীরে আনেক সাগর-সংশিষ্ট হ্রদ ও অনেক গুলি আভাস্তরিক হুদও আছে। এই দকল হদের মধ্যে খাল কাটাইয়া অনেক গুলি প্রস্পার সংযোজিত হইয়াছে। যথন নদীতে জল থাকে না বা সহজে সাগের দিয়া যাতায়াত করা যায় না, তথন এই ছদের মধ্য দিয়া যাতায়াত চলে। নাঞ্ভিনাড় নামক পূর্ববিভাগে ধান্ত ও তালের বহু বিস্তৃত আবাদ আছে, ইহা ঠিক তিয়েবেলী জেলার মত, তবে ইহার স্থানে স্থানে পতিত অমুর্কার জমীও আছে। ইহার উত্তরাংশে মলয়দেশীয় বতা ও বন্ধুর ভূমি ষারস্ত। সাগরতীরের ভূমি সর্কাপেকা উর্করা। পর্কতমালার ্খ বছ হালর। দকিংণাংশে পর্বতমালা বনাচ্ছয়, খুব উচচ। মধা স্থলের পাহাড় তত্ত উচ্চ নহে। উপত্যকাদিতে উচ্চ ৰিক্রু এবং গিজ্জা আনছে; পশ্চিমাংশে বাগানবাড়ী যথেষ্টু। যাদারঞ্জড়ি, কোলাচল, বিলিজ্ন, পন্তরাই, অজেছো, কুইলোন কোলম্ব), কায়স্কুলম্, পোরকাড় এবং অল্লেপ্পি এই কয়টা সমুদ্র-গীরবতী প্রধান বন্দর। এ গুলির মধ্যে অলেপ্লি, কুইলোন ও কালাচল বন্দরেই বড় বড় জাহাজাদি ও অভাভ ভানে দশী বড় বড় নৌক। আমাদে। পেরিয়ার নদীর পশ্চিমে ক্রিডমালার নাম অনয়মলয়। ইহাতে স্কাণেক্ষা উচ্চ ার্বতশিপর আছে, ভাহার উচ্চত।৮ হাজার ফিট। সর্ব কিণু পর্বতশিধরের নাম • অগত্যেশ্ব মলয়; এই শিধর हैटिहे ठास्रभी निषेत छे९पछि इहेग्राह्म। ७३०शास्त्र প্রাকা সকলে কাফি ও চা ফ্লেধিক পরিমাণে উৎপল্ল হয়, রিবিমলয় বা হামিল্টন্ উপত্যকা ৩ ক্রেখে দীর্ঘ এবং াড় কোশ বিস্তৃত, তমধ্যে ৩০ হাঞ্চার বিঘা অন্মীতে কেবল ও কাফি হয়। মেল-মলয় বা কান-দ-বন পর্বতেও ্রপ দীর্ঘ চা ও কাফিকেত্র আছে। ত্রিবাঙ্কোড়ের র্কোচে পর্কতশিপরের নাম আনিয়ন্ডি। ইহার উচততা

৮৮৩ । ফিট। হিমালরের দক্ষিণে ইহাই সর্বাপেকা উচ্চ পর্বত, ইহার নিকটে আরও কয়েকটা শিখরের উচ্চতা ৮ হাজার ফিট। এই পর্বতমালার দক্ষিণে এলাচি-পর্বতমালা। এখানে দাক্ষচিনিও যথেষ্ট উৎপন্ন হয়। ইহার পর দক্ষিণে পর্বতমালা ক্রমশ: সক্ষ ও কুর্তু হইয়া ক্রেক্সা-কুমারিকা পর্যান্ত বিস্তৃত। এই অঞ্চলে লোকাবাস অতি বিরল।

ঘাটপর্বত হইতে এদেশের অনেক গুলি নদীই উৎপদ্ধ रहेशां हि । (शतियात नमीरे अत्मत्मत्र मत्या व्यथान, शर्का छत्र অতি উচ্চ স্থানে উৎপন্ন হইয়া ১৪১ুমাইল ঘুরিয়া আমাসিয়া কোদললুর নামক হানে সাগরের এক জলাবর্ত্তে পড়িয়াছে। এই নদীর মোহানা হইতে উর্জে ৩ জেশ পর্যান্ত নৌকা চলে। ইহার পর পছই নদী, देहांत অচিন কইল ও কলদা নামক হটী উপনদী আছে। কুলিতোরই বা পশ্চিম তামপ্রী ननी मरहखानिति नामक नर्काट छेरना इहेगा जिल्लाम स्माप প্রবেশ করিয়াছে। বৃহৎ ডাম্রপর্ণী নদী ও অগস্ত্যেশর পৃর্ব্বত হইতে উৎপন্ন হইয়া তিলেবেলী জেলায় প্রবেশ করিয়াছে। দক্ষিণাংশে প্রলয় ও কোদর নামক স্থানে পাওারাজাদিগের নিৰ্মিত ক্তক গুলি আনিকট বা অলাবরোধ আছে। তীরবর্তী জলাবর্ত হল গুলির সারির দীর্ঘতা প্রায় এক শত কৈশে, চৌঘাট হইতে ত্রিবলরম্পর্যান্ত বিস্তৃত। ত্রিবলরম্ও কুই-লোনের মধ্যে ৩ ক্রোশ জমী অতি উচ্চ, এই স্থানে ছইটা থাক काछादेश निमा উछत निकरण इन छनि मःयुक्त कता इदेशाहि। অল্লেপ্লির পূর্ব্বাংশে বিম্বনাড় হ্রদই সর্বাপেক্ষা বৃহৎ, কিন্তু এীমকালে ইহার জ**ল অ**তিশয় ভকাইয়া যায়। নৌকানানা আকারের আছে, তমধ্যে শাল্তি ও ডোকার আকারই ্বেশী। এফেশে সিমূলবুকেই নৌকা অধিক হয়।

পনিজা, পদার্থের মধ্যে লোহ প্রচুর, তার্ত্তির ফট্কিরি, গন্ধক ও কৃষ্ণনীস পাওয়াযায়। হতীদন্ত এদেশের একটা প্রধান বহা পণ্য। বনে হত্তী, শাস্তর, নীলগাই ও অহাতা হরিণ পাওয়াযায়।

এদেশের মোট লোকসংখ্যা প্রায় ২॥ আড়াইকোটা, ভর্মধ্যে > কোটা ৭৬ হাজার হিন্দু হইবে। তৎপরে
খুটানের সংখ্যা শতকরা ২৬ জন ও মুসলমানের সংখ্যা
শতকরা ৭ জন। ইহার রাজধানী ত্রিবন্দরন্দী, তাহার লোকসংখ্যা প্রায় ৪২ হাজার। প্রধান বাণিজ্যকেক্স ও প্রধান বন্দর
অলোপ্প সহর, ইহার লোকসংখ্যা ২৬ হাজার। প্রধান
সেনানিবাস কুইলোন সহরে ১৪ হাজার, এতন্তির
নাগরকোল সহরে ১৭ হাজার, কোটায়ন্ সহরে ১২ হাজার,
ও শেনকোটা সহরে ৮ হাজার লোকের বাস। এতন্তির

পরবর, কোতর শরেতলয় প্রভৃতি স্থান ক্রমশঃ হৃদ্ধি পাইতেছে।

এখানে মলবারে প্রচলিত মরুমক্কতায়ম্ নিধিই সামা-কিক শাসনার্থ প্রচলিত। তামিল, তেলগু ও মরাঠীরা স্ব স্ব तिनीय विधि व्यक्ष्मादत हत्न। नाष्ट्रितिरात सर्धा स्थार्थ পুত্রই বিবাহ করে ও উত্তরাধিকারী হয়, অক্সান্ত সন্তানেরা পৈত্রিক বিষয়ে অধিকার পায় না। কন্তারা অধিক বয়সপর্য্যস্ত ' অবিবাহিত থাকে, এমন কি আনেকে অতি বৃদ্ধ বয়দেও অবিৰাহিতাবস্থায় ,মরে। [নাস্রি দেখ।] নায়রদিগের মধ্যে প্রথামত বালিকা বয়সেই কল্পারা বিবাহিত হয়; কিজ তাহারা স্বামীগৃহে যায় না বা স্বামীর সহিত তাহার কোন সংশ্ৰৰ থাকে না। তাহারা পিতৃগৃহেই থাকে ও যৌবনে অকাতীয় কোন ব্যক্তিবা কোন আক্ষণের সহিত মিলিত হইয়া স্বামীত্রীরূপে পিতৃগৃহেই বাদ করে। এই সকল কলার গতেও যে পুত্র জন্মে, তাহারাই মাতুলের উত্তরাধিকারী হয়। নায়র্বদিগের মধ্যে ভাগিনেয় বা ভাগি-নেয়ী না থাকিলে উত্তরাধিকারীবিহীন হইয়া থাকে। ভাহারা পোয়পুত্রের ভার পোষ্যভন্নী গ্রহণ করে ও , ডদগর্ভজাত পুত্রকে উত্তরাধিকার দান করে। নারবের সন্তানেরা স্কুত্রাং কেঁহই পিতার বিবাহিতা পত্নীর গর্জনাত নহে ও প্রস্পর মাতুলের উত্তরাধিকারী মাতা। তাহারা মাতৃলের আন্ধাদি ও বিষয় সম্পত্তি অধিকার করে। নায়র ও নামুরিগণ বড় গুদ্ধাচারী, দিবদে ছই তিন বার স্থান করে। ত্রাক্ষণেরা শবদাহ করে, কি,ন্ত নায়রেরা বংশপ্রথামুসারে শব দাহ বা সমাহিত করে। শাুশান वा नाधावण नमाधि शान नाहे, य य छेन्। दनद कुक স্থানে শবদাহ বা শুমাহিত হয়। ইহারা শিকা স্থানে শিথা ধারণ করে না, তালুতে শিথা ধারণ ও তাহা সমুথের দিকে উन्टे। इंग्रा द्वारथ । [ नामत्र मत्स विख्छ विवत्रण सहेवा । ]

কৃষি জব্যের মধ্যে ধান্ত ও নারিকেল প্রধান, তাহার পরেই লকা। ওপারিও খুব আদরের। কাঁঠালই এক প্রকার গরীকের প্রধান অবলম্বন, ইহার ফল গরীবের প্রধান আহার্য্য ও কাঠে গৃহাদি প্রস্তুত হয়। হরিজাগাছের মত এখানে এলাচির গাছ যথেই জব্মে। এলাচির গাছ ৬ হইতে ১ ফিট দীর্য হয়। যথা সময়ে বন জ্বল প্ডাইয়া এলাচি ছড়াইয়া দেয়, তৎপরে আখিন কার্ত্তিক মাসে এলাচ পাকিলে তাহা তুলিয়া আনে এবং রাজসরকারে জ্বমা করিয়া দেয়ও কৃষক নিজাংশের মূল্য পাইয়া থাকে। কাফি খুব বেশী এবং ভাল হয়। চা-এর চাবও হইভেছে, পাতা খুব ভাল হয়,

কিন্ত এলেশে পাতার তদ্বির ভাল হয় না। মহিব ও ব্লা উভয়েই লাজল টানে।

এদেশে স্বমীর উপর প্রকৃত প্রস্তাবে রাজকর বা ধারু नाहे। मनवात्त्रत्र प्रकलिहे अनम् वा উख्त्राधिकात्रश्ल বিনা করে ভোগ করে। নামুরি ব্রাহ্মণেরা পরভরামে নিকট হইতে এই দেশ বিনা করে বাস করিবার অভ প্রাধ इन । कथि उ आहि, उपविध हेश विना करत्रे डे पहुक ছইতেছে। এখন ত্রিবাক্ষোড়রাজ এক প্রকার কর অব্ধারু ক্রিরাছেন। যে জমী যে বংশের অধীনে আবহমানল। আছে, তাহার কোন কর কেহ এথনও দেয় না, কিন্তু কেঃ যদি দেই 'জনম' স্বজের জমী স্বজাতি ভিন্ন অপরকে জ नहेत्रा विक्रय वा वसक अनान करत्र, उत्व रत समीत 'सनर' শ্বত্ব নষ্ট হুইয়া যায় এবং রাজা তাহার উপর কর ধার্য্য করেন। এই করকে "রাজভোগম্" বলে। যে পরিমাণ জমী এই রূপে করায়ত্ত হয়, ভাহাতে বুনিবার অভাবে পরিমাণ বী। আবশুক, রাজা তাহার অর্দ্ধেক ও সেই জমীর প্রজারার कत्र मित्रा थाटक, जाहात यष्टीः न कत्र त्रास्त्रा भारतन এইরূপে সম্প্রতি অনেক জমী বিদেশীয়েরা হস্তগত করিয়াছে हेशांक 'कानम्' वत्मावछ वा विवृण्यो वत्मावछ वत, নায়র্দিগের যে সকল প্রাচীন জমী আছে, তাহা 'মাদ্বিনার' নামে খ্যাত, ইহাতে রাজা 'রাজভোগম্' আদায় করেন ন। জন্ম স্বত্বের জমী বিজোহাপরাধে ও উত্তরাধিকারী বর্তন্য ना थाकित्न तांकात थान इत्र এवः वश्च अभी, हत्र अभी अम् · দ্রের চর রাজার থাদে আছে, এ সকলকে সরকারী **হু**মী ^{ব্রো} এদেশ ধ্ইতে ঝুনা নারিকেল, নারিকেল দড়িখা ছোঞ্ नातिरकरणत माना, हंकात त्थान, नातिरकणरेखन, खह बार বা ভুঠ, লঙ্কা, লোনামাছ, বাহাত্মীকাঠ, কাফি, এগাঁচি, মোম, তেঁতুল ও তালের মিছরি রপ্তানী হয়। আর তামার্ বিলাভী খুচরা দ্রবা, চাউল, স্তা, তুলা ও তামা আম্নানী হয়। বৎসরে প্রায় ৮০ লক্ষ টাকার দ্রব্য রপ্তানী হয়, গা

৫০ লক্ষ টাকার দ্রব্য আমদানী হয়।

এদেশে আঠারটা মুক্ষেফী আদালত, ৬০টা ক্ষোঞ্চারী
আদালত, ৫টা জেলা আদালত ও রাজধানীতে একটা নার
আদালত আছে। প্রিসের একটা স্বতন্ত্র বন্দোবন্ত নার
দেওয়ান 'পেস্কার (বা বিভাগীয় প্রধান কর্মারিরা) গ
তহসীলদারেরাই প্লিসের কার্য্য করে। ত্রিবন্দরমে ক্রী
কুইলোনে একটা ও অল্লেপ্লিডে একটা উচ্চ বিদ্যালার
কলেজ, এতডির ২৫টা জেলা স্কুল ও বালিকা বিদ্যালয় আমি
১৮৬১ খুষ্টাকে' অঞ্চল বা ডাক্ষর স্থাপিত হর, ডার্মে

কেবল রাজকীয় কার্য্য চলিত, এখন ভাহাতে সাধারণেয়ও অধিকার দেওয়া হইয়াছে। আপাতত ৯৮টা ভাক্ষর হইয়াছে।

মহারাজের ১৩৬০ জন পদাতি, ৬০ জন অখারোহী, ৩০ জন গোলনাজ এবং ৪টা কামান আছে।

ইতিহাস।— ত্রিবাজাড়ের প্রাচীন বিশাস্থাগ্য ইতিহাস
নাই। প্রবাদ আছে, পরশুরাম যথন সাগরপ্রাস হইতে সমস্ত
মলয়ালম্ ভূভাগ উদ্ধার করেন, তথন তিনি এই প্রদেশ
নাদ্রি নামক ব্রাহ্মণদিগক্তে দান করেন। খুটাজের ৬৮ বংসর
পূর্ব পর্যন্ত নাদ্রিগণ এই প্রদেশ শাসন করিতেন। তৎপরে
ব্রাহ্মণেরা এক একজন ক্রিয়েকে ছাদশ বংসর কাল আপনাদিগের রাজা করিত এবং এক ব্যক্তির ছাদশ বংসর শাসনকাল দ্রাইলে ভার একজন তৎপদে অভিষ্কত হইত।

ত্রিবাক্ষেড়ের দেওয়ান সঙ্গুনিমেনন্ ত্রিবাক্ষেড়ের প্রাচীন ইতিহাস এই রূপ নিপিবত ক্রিয়াছেন—

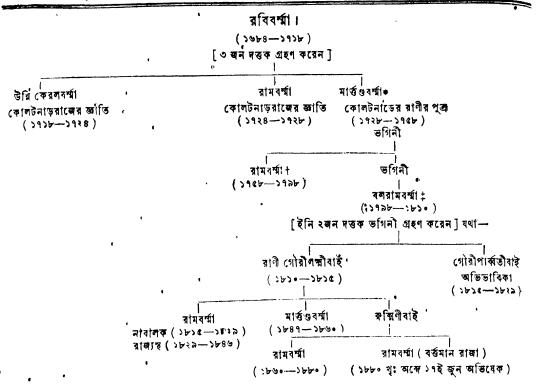
পরভরাম সাগর হইতে মলয়ালম্ ভূভাগ উদ্ধার করিয়া
দক্ষিণকেরলে ভাস্থিক্রম নামক এক চেররাল্পকে স্থাপন
করেন। ভাস্থিক্রমের পর তাঁহার আভূস্ত্র আদিত্যবিক্রম
পরশুরাম কর্তৃক অভিষিক্র হইরাছিলেন। পরে পরশুরাম
উলয়বর্দ্ধাকে উত্তরকেরল প্রদান করেন। ত্রেতামুগে এই ঘটনা
হয়, কলিমুগে দক্ষিণ কেরলে ৪৮ জন রাজা রাজত্ব করেন।
১৮৬০ কলাকো রাজা কুলশেধর আর্বার রাজত্ব করিতেন, অর
দিন পরেই তিনি সন্ত্যাসধর্ম গ্রহণ করেন; এখনও বিবাক্রাড়ের
নানা স্থানে নানা মন্দিরে তাঁহার মুর্তিপূজা হইয়া থাকে।
বহুকার পরে শকান্দের প্রারম্ভে মছরার রাজা বীরবর্দ্ধা
পাত্য ও চেররাজ্য আজ্রমণ ও অধিকার করেন, তৎপরে
কোসুরাজ্বগ চেররাজ্য দথল করেন। এই সম্যে চেররাজ্ব
বংশ মছরা ও তিয়েবেলীর জংশ পরিত্যাণ করিয়া বিবাকোড়ে (দক্ষিণ কেরলে) আসিয়া আজ্রম গ্রহণ করেন।

পেকমালের। প্রায় ২০০ শত বর্ষ কেরলরাজ্য শাসন করেন, এই সময়ে সিরীয়ক খৃষ্টানগণ ও ইছদিরং আসিয়া কোচিনে অবস্থান করিছে থাকেন। শেষ পেরুমালরাজ কোচিনের রাজা ও কালিকটের সামরিরাজকে রাজনও প্রান্ত করিয়া অন্তর্হিত হইলেন।

উপরোক্ত বিবরণ কেবল প্রবাদন্ত্রক, প্রস্তুত ঐতিহাসিক বলিয়া গ্রহণ করা বার না। তৎপরে উল্লেখযোগ্য তৃই জন মালার নাম পাওয়া বার—এক বীরমার্ত্তবর্দ্ধা ইনি ৭৩১ ইং অব্দে জীবিত ছিলেন, অপর রাজার নাম উদরমার্ক্ত-ম্বা, ইনি ৮২৪ খুঃ অব্দে কোল্মান্ত হাপন করেন, এই অন্দ এখন মলয়াগ্র্ম ক্ষান্থের প্রাচলিত আছে। তৎপরে আমরা
১১৮৯ ও ১০০০ খৃঃ অবল আদিত্যবর্দ্ধা নামে হই জন রাজার
নাম পাই। বীর রামমার্ক ওবর্দ্ধা (১০০৫-১০৭৮ খৃঃ অবল মধ্যে)
ত্রিবন্দরম্ রাজপ্রাসাদ ও হুগনির্দ্ধাণ করেন, তাহার পর এরবিবন্দ্ধা ১০৭৬ হইতে ১০৮২ খৃঃ অবল পর্যান্ত রাজত্ব করেন, তৎপরে কেরলবর্দ্ধা কুললেখর পেরুমাল তমাস মাত্র রাজত্ব করিয়া
অর্গ গমন করিলে তাঁহার বমজা সহোদর চের উদরমার্ক্তও
বন্দ্ধা রাজা হন, ইনি ১০৮২ হইতে ১৪৪৪ খৃঃ অবল পর্যান্ত
রাজত্ব করেন; ইনি চেরমাদেবী নামক স্থানে অবস্থান
করিতেন, তথায় তাঁহার শিলালিপি আছে। তৎপরে নিয়লিখিত রাজগণ যথাক্রমে রাজত্ব করেন—

রাজার নাম		রাজ্য কাল
বনবনাড় সুত্তরাজ	•••	১৪৪৪-১৪€৮ খুঃ আঃ
বীরমার্ক্ত বর্মা	•••	3846-3893
আদিত্যবর্মা	•••	7897-7898
এরবিবর্শা	•••	\$89b->e•8
মাৰ্ক্ত বৰ্মা	•••	>4 • 8
বীরএরবিবর্মা	,	> c • 8 - > e < F
মার্ক্ত ওবর্মা	•••	३ <b>८२४²३८७१</b> •
উদয়মার্গ্র ও বর্দ্মা	•••	` « <b>৩</b> ۹-১ <b>«</b> •
কেরলবর্মা	•••	>€5•->€60 .
আদিত্যবৰ্ষা	•••	১৫७७ ১ <b>৫</b> ৬१
উদয়মা <b>র্ভ</b> গুবর্দ্মা	•••	> <b>৫७१-</b> : <b>৫</b> ৯৪
বীরএরবিবর্শ্বা	•••	>¢>8->≈°8
বীরব <b>র্মা</b>	•••	<b>&gt;७-8-&gt;</b> ७-७
রবিবর্মা 🔹	•••	\$6.6.7 <i>6</i> 2\$
উন্নিকের্লবর্শা		>>> <b>&gt;</b>
রবিবর্মা	•	• >৬২৫-১৬ <b>৩</b> ২
উল্লিকেরলবর্মা	•••	১৬৩২-১৬৬১
আদিত্যব <b>র্গ</b> ।	••••	১ <del>৬</del> ৬১-১৬ <b>११</b>

শেষ আদিত্যবর্গ্ধ ও তাহার জাতিগণ নিহত হন, তাঁহার তাগিনেয় উময়য়য়য়য়ী ১৬৭৭ খু: আব্দে রাজ্যের অভিতাবিকারণে নিযুক্ত হইলেন। ১৬৮০ খু: আব্দে মুসলমানেরা ত্রিবারোড় আক্রমণ করে। তাহাদের অধিনায়ক ত্রিবন্দরমে কিছুকাল অবস্থান করেন, শেষে রাজবংশীর সেনাপতি কেরলবর্শ্ধা তাঁহাকে রাজ্য হইতে বিদ্রিত ও নিহত করেন। উময়য়য়য়য়য় পুত্র রবিবর্শ্ধা বয়ঃপ্রাপ্ত হইলে ১৬৮৪ খু: অব্দে সিংহাসনে আরোহণ করেন। রবিবর্শ্ধার প্রবর্ত্তী রাজগণের তালিকা পরে প্রস্ত হইল—



মার্ক গুবর্মা পেরুমাল ১৭২৯ হইতে ১৭৪৬ খুটান্দ পর্যান্ত রাজত্ব করেন; ইনি ১৭৪২ খুটান্দে ইলাইদাত্নাড় ও ১৭৪৫ খুটান্দে কায়স্থ্যম্ অয় করেন। তৎপরে বনলী রামবর্দ্ধা পেরুমাল রাজা হন। ইনি আনেক স্থান লয় করেন। ইহার সৈত্যবল অতি বৃহৎ ছিল। ইতালীয়, ওলনাজ ও পর্কুণীজ ইহার সেনানায়ক ছিলেন। ইনি মুর্নোপীয় ধরণে সৈত্যবল গঠিত করিয়াছিলেন।

১৭৭৬ ক্ততে ১৭৯২ খৃষ্টান্দে মহিন্ত্রের টুপু সুলতানের
সহিত যুদ্ধলালে জিবান্ধোড়রাজ ইংরাজের অতি বিশ্বস্ত বদ্ধ
ছিলেন। টিপু মলবার জয় করিলে জিবান্ধোড়রাজ ভীত
হন এবং ১৭৮৮ খৃষ্টান্দে ইংরাজের সহিত সন্ধি করিয়া রাজা
নিজ থরচে তৃই দল ইংরাজ দৈতা রাখিবার অনুমতি প্রাপ্ত
হন। এই সৈত্তের ধরচা উাহাকে নগদ বা লক্ষ্য দিয়া শোধ
করিতে হইত। এই সৈত্তদল বিপিন্ধীপের নিকট পঁছছিতে
না প্তছিতে টিপু জিবাজ্বোড় আক্রমণ করেন। আয়কেটি
ও কোদল্লর তুর্গরর তথন ওল্লাজ্বিগের নিকট জিবাকোড়রাজ ক্রয় করিয়াছেন। টিপু এই ত্র্প দাবী করিয়া
বিদ্যেন ; যুদ্ধ বাধিল। ভাগাক্রমে যুদ্ধে টিপু পরাজিত ও

ঠাছার দলে ২ হাজার লোক বিনষ্ট হয়। পর বংদা (১৭৯০ খৃষ্টাব্দে) টিপু আবার ত্রিবাঙ্কোড় আক্রমণ কলে ও পুনরায় পরাব্ধিত হন। ১৭৯২ খুটাবেদ ইংরাজ 🕬 অধিকৃত প্রদেশের কিয়দংশ (তিনটী জেলা) রাগ্র প্রত্যর্পণ করেন ও তৎপরিবর্ত্তে রাজা তিনদল সিপাহীলৈ ও একদ্ল ইংরাজ গোলন্দাজ দৈন্তের খরচ দিতে বাধা হন। রাজা বলরামবশার সহিত এইরূপ সন্ধি হয়। ১৮০০ थृष्टीरम রাজাকে ইংরাজেরা আর একদল দিপাহী ^{দৈরের} থরচ দিতে (সর্বাণ্ডক বার্ষিক ৮ লক্ষ টাক। দিতে) ^{বাগ} করেন। ১৮০৯ খুষ্টাবেদ এই টাকা বিস্তর বাকী প্রে ८म अयोरमञ ८मारम हेरा घटि । हे बादस्त्रा ८म अयोगरक वर्ष চ্যুত করিতে বলেন। ভাহাতে ৩০ হাজার নায়র বি^{রোগী} হইয়া ইংরাজের রক্ষিত সিপার্হী সৈতা আক্রমণু ^{করে।} ইংরাজেরা মধ্যত হইয়া কণাটিক বিত্রেড নাম^{ক বে} वायमाना है सोख (मनामृगहक ছত্তভक करतन, थरह स्वी দেন। তদৃৰধি ত্ৰিবাকোড়ে আনর কোন গোল ^{ঘটে নাই} ১৮১০ খৃষ্ঠাবেদ বলরামবর্মার মৃত্যু হয়। ইহার পর নদী রাণী রাজত করিয়া কর্ণেল মন্রো নামক রেসিডেটের ^{রা}

^{🔸 ু}ওল-শাল্লদিশের সহিত যুক্ত ও সঞ্জি হর। বিজীনপলীর নবাবের সঙ্গেও যুক্ত ঘটে।

[🕆] টিপুফলতানের বিরুদ্ধে হ্র ও ইংবাজের সহিত যোগদান।

[🚶] है बात नमात्र अकलम वृत्तिम (विमायक नियुक्त रूप।

वाका भविष्ठानत्नव छात्र (मन। ১৮১৪ शृहोस्य नन्तीवानीव মৃত্যুর পর তাঁহার ভগী পার্বতীরাণী অভিভাবিকা হইরা বাজা রামবর্ত্মাকে সিংহাসনে অধিষ্ঠিত করেন। রামবর্ত্মা ১৭ বংসর রাজত্ব করিয়া ১৮৪৬ খৃষ্টাব্দে কালগ্রাসে পতিত হন। তাহার ভাতা মার্তওবর্দা রাজা হন। ইহার পর ইহার ভাগিনের বনজী বাল রামবর্মা ১৮৬ পুটালে রাজা হইয়া ১৮৮০ খুটান্দ পর্যান্ত রাজা হন। ১৮৬২ খুটান্দে গভর্ণর জেনেরল উত্তরাধিকারাভাবে দত্তকভগিনী গ্রহণে অধিকার প্রদান করিয়াছেন। এই সকল দত্তকরাণীরা অভিল নামক ম্বানে বাদ করেন, তাঁহার। তুম্বতী নামে খ্যাত। মলবারের নির্মাত্সারে এই রাজ্সংসারে রাজার পর রাজভাতা, তংপরে ভোষ্ঠ ভাগিনের রাজা হইরা থাকেন। বর্ত্তমান মহারাজের পূর্ণনাম শ্রীপল্মনাভ দাস বনজী বাল রামবর্মা কুলশেথর কিরীটপতি মুদ্ধে স্থলতান মহারাজ রাজারাম রাজা বাহাছর সার্ সম্সের জ্লু জি সি এস আই। ইনি সন্মানার্থ ২১ তোপ পাইয়া থাকেন। মহারাজ সম্পূর্ণ স্বাধীন, অপ্-রাধীর জীবন মরণের উপর তাঁহার ক্ষমতা আছে অর্থাৎ প্রয়োজন মত তিনি প্রাণদণ্ড করিতে পারেন। বর্ত্তমান রাজা ইংরাজী, হিন্দী, মরাঠী, তামিল ও তেলগু ভাষায় কথোপকথন করিতে পারেন। তাঁহার মাতৃভাষা মলয়ালম্।

ত্রিবাক্ষোড় এখন আদর্শ হিন্দুরাজ্য। রাজাকে বিশেষরূপে হিন্শাস্ত্র মানিয়া চলিতে হয়, এই জন্ম তাঁহাকে প্রতিদিন অন্তঃ একবার প্রানাভ স্বামীর মন্দিরে উপস্থিত হইতে হয়, এইজন্ম তিনি রাজধানী স্থানাস্তর করিতে পারেন না।*

ত্রিব†র (আি ) ১ বারতায়যুক্ত। (পুং) ২ গরুড়ের একপুত্র। (ভারত উল্যোগ ১০০ অ:)

ত্রিবান্তর (অপ্রচলিত দেশজ, সম্ভবতঃ ত্রিকান্তর, তেমাথাপথ। "ও ফজলে মংস্থ আরে নারীর যৌবন।.

ত্রিবাস্তরে পায় যদি রজত কাঞ্চন॥" (কবিকঙ্কণ মুকুন্দরাম) * তিবাকোড় সম্বন্ধে বিজ্ঞ বিবরণ জানিতে হইলে নিম্লিখিত এস্থ

IV, N. S., p. 388; Journal Asiatic Spciety of Bengal, XV, 224; XX, 371, 382. Indian Antiquary I, 195, 229; II, 98,

180, 273; III, 310, 333; IV, 153, 181, 311; V, 25, 60; VI, 366: VII, 343; IX, 77. Asiatic Researches 171, 364; X, 106. ত্রিবিক্রম ( পুং ) ত্রিষু লোকেরু বলিবঞ্চনার্থং ভূব্যোমস্থর্গেরু क्यः शामञारमा यष्ठ यदा बीन् लाकान् विश्वारम करमि ব্যাপ্নোত্রীতি বি-ক্রম-অন্ত। ১ বিষ্ণু।

"ত্রিরিত্যেবং ত্রয়োলোকাঃ কীর্ন্তিতা মুনিসম্ভব্মৈ:।

বিক্রামস্ত ততঃ সর্বাংলিবিক্রমোহিদ জনার্দন ! ।" (হরিবংশ) ত্রিবিক্রেম ১ সছক্তিক্রামৃত ইত সংস্কৃত কবি। কাহারও মতে সছক্তিকণামৃতে ছইজন তিবিক্রমের কবিতা উচ্ছ হইয়াছে, তন্মধ্যে একজন ভাগবত ও একজন বৈ্ছ। ২ একজন ধর্মশাস্ত্রকার, নির্ণয়সিল্পু ও প্রতিষ্ঠাময়ুখে ইছার বচন উদ্ধৃত হইয়াছে।

- ৩ একজন অভিধানকঁতা, হেমাজি ও দিনকরের রঘুবংশ-টীকায় ইহার নাম উদ্ভ হইয়াছে।
- ৪ কালবিধান নামক জ্যোতিপ্রস্থিবার, মহাদেব ও বিশ্বনাথ ইহার মত উ্জুত করিয়াছেন।
  - ৫ উষাহরণ নামক সংস্কৃত কাব্যকার।
- ৬ একজন বিখ্যাত জ্যোতির্বিদ্। ইনি তিথিসারিণী, ব্রহ্মব্যবহার, শতশোকব্যবহারক বা ত্রিবিক্রমশতক, স্ত্রী-জাতক প্রভৃতি নামে ক্একথানি জ্যোতিগ্রন্থ রচনা করেন।
  - ৭ পঞ্জিকোন্টোত নামক সংস্কৃত গ্রন্থকার।
  - ৮ মদালসাচম্পুরচ্যিতা।
  - ৯ রামকীর্ত্তিমুকুন্দমালা নামক সংস্কৃত গ্রন্থকার।

ত্রিবিক্রমজ্য ভট্টারক, একজন বিখ্যাত তান্ত্রিক। রাম-ভারতীর শিষ্য। ইনি মন্ত্ররত্বমঞ্ষানামে তন্ত্র ও সংগুঢ়ার্থ-দীপিকা নামে শারদাতিলকের একথানি টীকা রচনা করেন। जिविज्ञासन्त > धाक्र वाक्रवगृख्तिविष्ठा, देनि मिन নাথের পুদ্র ও আদিত্যবন্দার পৌত্র।

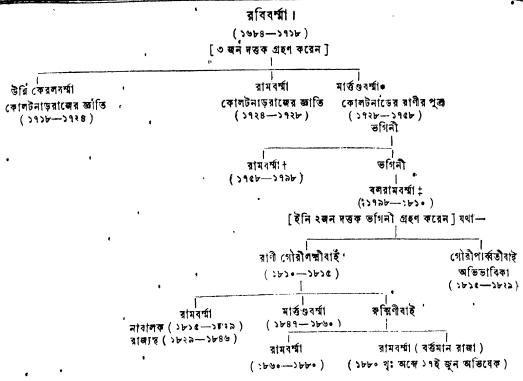
২ লোহপ্রদীপ নামক বৈশ্বক গ্রন্থকার। • ইনি গোড়াঝঃ-পুরবৈদ্য বলিয়া আপনার পরিচয় দিয়াছেন। ভোলরাল, বঙ্গদেন প্রভৃতির গ্রন্থ দৃষ্টে ঐ গ্রন্থ রচিত হয়; ইহাতে নানা থনিক দ্রব্যের গুণাগুণ নির্ণীত হইয়াছে।

ত্রিবিক্রম পণ্ডিত, পুণ্যগ্রামের একজন বিখ্যাত শালী। ইনি পঞ্চায়ুধপ্রপঞ্চ নামে একথানি সংস্কৃতভাণ রচনা করেন। ত্রিবিক্রমপণ্ডিতাচার্য্য, বায়ুস্ততি, নৃসিংহস্ততি ও বিষ্ণুস্ততি-রচয়িতা। ইনি তিবিক্রমপণ্ডিত নামেওপ্যাত।

ত্রিবিক্রমশিষ্য, যোগদীপিকা নামে বৈদান্তিক এছকার। ত্রিবিক্রমসুরি, রঘুক্রির পুত্র। ইনি আচারচজিকা ও প্রতিষ্ঠাপদ্ধতি নামে সংস্কৃত গ্রন্থ রচনা করেন।

ত্তিবিক্তমাচার্য, > গীর্ধাণভাষাভূষণনামে সংস্কৃত অভি-ধানকার।

Buchanan's Travels in Mysore, Canara and Malabar, Vol. III, 31, 51, 139. Shungoonny Menon's History of Travancore. Mattee's Travancore and its people Col. Yule's Narco Polo. II, 274, 290, 212, 318, 320, 324. Wilson's Mackenzie, Mss., Book 58, C 1027. Dr. Burnell's South Indian Palæography, 140. Madras Journal, I, 7.73, 94, 255, 342. IV, new Series, 79, 80; VII; IX, 365; XIII, Pt. I, 116, 123; Pt. II, No. I; XX1, 30. Journal Royal Asiatic Society, I, 171; VII, 341;



মার্গুওবর্দ্ধা পেরুমাল ১৭২৯ হইতে ১৭৪৬ খৃষ্টান্দ পর্যান্ত রাজত্ব করেন; ইনি ১৭৪২ খৃষ্টান্দে ইলাইদ্দাত্নাড় ও ১৭৪৫ খৃষ্টান্দে কায়স্কুগম্ অয় করেন। তৎপরে বনলী রামবর্দ্ধা পেরুমাল রাজা হন। ইনি অনেক স্থান অয় করেন। ইহার সৈত্যবল অতি বৃহৎ ছিল। ইতালীয়, ওললাজ ও পর্কুগীল ইহার সেনানায়ক ছিলেন। ইনি য়্রোপীয় ধরণে সৈত্যবল গঠিত করিয়াছিলেন।

১৭৭৬ ক্টতে ১৭৯২ খৃষ্টান্দে মহিস্থরের টুপু স্থলতানের
সহিত যুদ্ধকালে জিবান্ধোড়রাল ইংরাজের অভি বিশ্বস্ত বদ্ধ
ছিলেন। টিপু মলবার লয় করিলে জিবান্ধোড়রাল ভীত
হন এবং ১৭৮৮ খৃষ্টান্দে ইংরাজের সহিত সন্ধি করিয়া রাজা
নিজ থরচে তৃই দল ইংরাল দৈতা রাখিবার অনুমতি প্রাপ্ত
হন। এই সৈত্তের ধরচা উাহাকে নগদ বা লঙ্কা দিয়া শোধ
করিতে হইত। এই সৈত্তদল বিপিন্ধীপের নিকট পঁত্ছিতে
না প্তছিতে টিপু জিবান্ধোড় আক্রমণ করেন। আয়কেটি
ও কোদলল্র তুর্গরর তথন ওলন্দাল্দিগের নিকট জিবাকোড়রাল ক্রয় করিয়াছেন। টিপু এই তুর্গ দাবী করিয়া
বিদ্যেন ; যুদ্ধ বাধিল। ভাগাক্রমে যুদ্ধে টিপু পরালিত ও

ঠাছার দলে ২ হাজার লোক বিনষ্ট হয়। পর বংদা (১৭৯ - খুষ্টাব্দে) টিপু আবার ত্রিবাঙ্কোড় আক্রমণ করে ও পুনরায় পরাজিত হন। ১৭৯২ খৃষ্টাব্দে ইংরাজ 🕅 অধিকৃত প্রদেশের কিয়দংশ (তিনটী জেলা) রাগ্রাস প্রত্যপূর্ণ করেন ও তৎপরিবর্ত্তে রাজা তিনদল দিপাহীলৈ ও একদৃল ইংরাজ গোলনাজ সৈজের ধরচ দিতে বাধা छ। রাজা বলরামবর্থার সহিত এইরূপ সৃদ্ধি হয়। ১৮০০ খুষ্টাব্দে রাজাকে ইংরাজেরা আর একদল দিপাহী দৈলে থরচ দিতে (সর্বাঞ্জ বার্ষিক ৮ লক্ষ টাকা দিতে) ^{বার্ষ} করেন। ১৮০৯ খুষ্টাবেদ এই টাকা বিস্তর বাকী ^{পঢ়ে।} ८म अयो त्यात दिना दिशा घटि । देश्ता दिल दा प्राप्त विश्व চ্যুত করিতে বলেন। তাহাতে ৩০ হাজার নায়র বিরো^ন হইয়া ইংরাজের রক্ষিত সিপাহী সৈত আজমণ ^{করে} ইংৰাজেরা মধ্যত হইয়া কণাটিক বিগ্রেড নাম^{ক বে} वाध्यमांशा है श्रीख (मनानुगहक छ्वछक करवन, थेवह वा দেন। তদৃৰধি ত্ৰিবাকোড়ে আৰু কোন গোল ঘটে ^{নাই} ১৮১০ খৃষ্ঠাবেশ বলরামৰব্যার মৃত্যু হয়। ইহার পর বর্ষ রাণী রাজত করিয়া কর্ণেল মন্রো নামক রেলিডেটের ^{হা}

^{🔹 ু}ওল-শাঞ্দিপের সহিত যুক্ত ও সংক্ষ হর। কিচীনপ্রীর নবাবের সংস্পুত্র ঘটে।

[†] টিপুরুলতানের বিরুদ্ধে হ্র ও ইংরাঞ্চের সহিত বোগদান।

^{🚦 🥞} হার সময়ে একজন বুটাশ থেলিভেণ্ট নিযুক্ত হব।

ছারে নাই। মুদিন সেরিফ প্রভৃতি বিচক্ষণ চিকিৎসক্ষণণ 
ছারার প্রতিবাদ করিয়া বলেন যে, ত্রির্তের শিক্ষের 
হালের গুণ অধিক, সমস্ত খুলে তেমন গুণ নাই। সমস্ত 
ফুল বাবহার করাতে আনেকেই উপকার পান নাই, তাহাতেই 
দনায়া দাঁড়াইয়াছে। বাজারে মুল ও মূলের ছাল উজয়ই 
এক সলে বিক্রীত হয়, তাহা হইতে ছাল বাছিয়া লইতে 
য়। শিক্ষের ছাল এক একগাছি ২ হইতে ৪ ইঞ্চি পর্যাপ্ত 
য়। শিক্ষের ছাল এক একগাছি ২ হইতে ৪ ইঞ্চি পর্যাপ্ত 
াখা এবং সিকি ইঞ্চি হইতে এক ইঞ্চ পর্যাপ্ত মোটা হয়, 
াছা দেখিতে টুক্রা নলাকার কতকটা তেরচা, মক্ণ, 
াখাদ অয় কটু, টাট্কা হইলে বেশ সদ্গন্ধ থাকে। খেত 
য়র্তের শিক্ষের ছাল দেখিতে ধুসর বা রক্তাভ ধুসর। কৃষ্ণ 
য়র্তের শিক্ষবর্ধ। খেত ত্রির্তের ছাল কৃষ্ণ অপেক্ষা 
মনেকটা পুলা। এখন প্রধান প্রধান চিকিৎস্কর্গণের মতে 
হার গুণ—বিলাতী ফলাপের সমান ও রেউচিনি অপেক্ষা 
ধিক কার্যাকারী।

বর্ত্তনং বৃৎ জি: তিন্ত্র: বৃত্তো ষত্র। (ত্রি) ২ ত্রিধা ত্রিগুণিত, জ্ঞাপনীত তিনবার ত্রিগুণিত করিয়া প্রস্তুত করিতে হয়, ই সন্ত ইহার নাম ত্রিবৃৎ।

"কাপাদম্পবীতং স্থাৰি প্ৰস্থোধ্বতং ত্ৰিবৃৎ।" ( মন্থ ২।৪৪ )
'ত্ৰিবৃদিতি ত্ৰিগুণং কৰা উৰ্ধ্বৃত্তং দক্ষিণাবৰ্ত্তিতং এতচচ বিত্ৰ সম্বধাতে মদাপি গুণত্ৰমনেবোৰ্দ্ধং বৃতং মন্থনোক্তং ধাপি তংত্ৰিগুণীক্কতা ত্ৰিগুণং কাৰ্ব্যং তহকতং ছন্দোগ-বিশিক্তে—উৰ্দ্ধন্ত ত্ৰিবৃত্তং কাৰ্য্যং তন্ত্ৰজ্যমনধাবৃত্তং।

ত্রির ক্রঞ্গেপবীতং স্থান্ত হৈছেকো গ্রন্থিরিষাতে ॥' (কুলুক)
বিদিপ্ত মন্থ 'ত্রিগুণং কার্যাং' ত্রিগুণ করিবে বশিন্ধাছেন।
নাপি ছন্দোগপরিশিষ্ট প্রভৃতির মতাত্ত্বাবে তিনবার
গুণ করিয়া করিতে হইবে।

তিবর্তিত বৃত কিপ্। ও মিশ্রিত তেজ, লুলণও অর।

াং ত্রিবৃতং ত্রিবৃতমেকৈকাং করবাণি।" (ছানোগোগনিং)

ত্রিগুণিত। ত্রিভিশ্পাজ্ংলামভিবর্ততে বৃত কর্ত্রির
। ধ্যুজ। ত্রিগ্রিবর্তিতে ত্রিশক্ষ্ম বীপার্থকং। ৬ ঋক্
ধ্রের নরক। ইহা ঋথেদের সহিত ব্রহ্মার পূর্ববৃথ হইতে

ত্রহা।

ঞ্ পচঞেব ত্রিবৃৎক্তোমং রথস্তরং।

নক্ষ যক্তানাং নির্দাদে প্রথমাগুখাৎ ॥" (বিষ্ণুপূর্ণ চাঁহা৪৮)

( ত্রী ) ত্রিভিরবর্গবৈর্গুড়া। ত্রিবৃৎ । [ ত্রিবৃৎ দেখা ]

ভরণ (ক্রী ) ত্রিবৃড়াং করণং ৬ড়ং। তেজ, জন ও

ত্রাায়ককরণ, ডিনের একীকরণ। ক্লিডি, জন ও

নই ডিনের মিশ্রণ, এই ডিন ভূতকৈ ভাগব্বে বিভক্ত

করিরা প্রত্যেকের এক এক আইকে পুনর্কার চুইভাগে বিভক্ত করিরা শীর আইব্যতীত অন্ত চুই অর্থে এক এক ভাগ বোজিত করা।

ছ্যান্দোগ্যোপনিষদে এইরূপ নিপ্লিত আছে— "তানাং ত্রিবৃত্যেকৈকাং করবাণীতি সেয়ং ত্রিবৃত্তং"

(ছান্দোগ্য• উ• ৬।৪।৩) নেই তিন দেবতা অর্থাৎ তেল: লল ও অরক্ষণ দেবতা-অন্ন ৰীজভূত অন্যাত্ৰত স্বাত্মাৰহাতে আঁছু প্ৰবেশ করিয়া^{*} ইহাদিগের নাম রূপ ব্যক্ত করিব, এই অভিপ্রায়ে দর্শন করিয়া সেই দেবভাত্তমকে এক একটীকে ত্রিবৃৎ করিলে যেমন সমান পরিমাণে ক্তাতার হারা তিবৃত হইরা রক্ষু হর, সেই রূপ তেজ, জল ও আর ও ইহাদিগেঁর ত্রিবৃংকরণ স্থানিতে ছইবে। কিন্তু ভিনের পৃথক্ পৃথক্ নাম হইয়াছে, অর্থাৎ এই তেজ, এই জল, এই সন্ন ইত্যাদি তেজ প্রভৃতিকে বিশেষ করা যার। উক্ত তেল প্রভৃতি দেবতার উক্ত রূপে যথোক জীবের সহিত অন্ত:প্রবিষ্ট হইয়া বৈরাজ পিও অর্থাৎ দেবতা-দিগের পিঙে অহপ্রবেশপূর্বক ইহার এই নাম এবং ইহার এই রূপ ইত্যাদি প্রকারে নাম রূপ ব্যক্ত ক্রিয়াছেন, যেরপে এই বহি:ছ পিও হইতে তিন দেবতার ত্রিবৃৎকরণ হইয়াছে। দেবতাদিগের যে এই তিরুৎকরণ কথিত হইল, তাহার উদাহরণ এই রূপ।

অয়ির যে লোহিত রূপ দেখিতেছ, উহা উক্ত তেজের রূপ জানিতে হইবে। ঐ অয়িতে যে শুরুরূপ দৃষ্ট হয়, তাহা জলের এবং, উহাতে যে রুক্ষরূপ আছে, তাহা অয়ের রূপ অর্থাৎ অত্তিব্রুক্ত পৃথিবীরই ঐ রুক্ষ রূপ জানিতে হইবে। তয়াপি লোকে ঐ অয়িকে রূপত্রয় বাতিরিক্ত জ্ঞান করে, ইহাতে অয়িয় অয়িজ অপগত হইয়াছে, পৃর্বেষ যে রূপত্রয় বিবেকবিজ্ঞানবশে অয়িব্রুদ্ধি ছিল, তেজঃ লারা দেই অয়ি বৃদ্ধি ও অয়ি শক্ষ অপগত হইয়াছে। রক্তোপধানসংখৃক্ত ক্টিকমণি গ্রহণ করিলে ইহা পয়রাগ মণি এই রূপ প্রতীত হয়। বখন ইহার অয়প উপলব্ধি হয়, অর্থাৎ রক্তোপধান ইহা জানা যায়, তখন আর পয়রাগ বলিয়া ক্রান থাকে না, সেই রূপ যাবৎ অয়িতে প্রেষ্টিক গুণত্রয়ের বিবেক জ্ঞান না হয়, তাবৎ অয়ি বৃদ্ধি ও অয়ি শক্ষ থাকে। যখন ঐ রূপত্রমের সমাক্ ক্রান হয়, তখন আর প্রার প্রাক্ত বিলয়া ক্রান থাকে না।

বাস্তবিক উহা বিকার মাত্র, কেবল রূপত্রয়ই সন্ত্য। রূপত্রর ব্যতিরেকে আর কিছুই সন্ত্য নছে।

আদিতোর বে লোহিত রূপ দৃষ্ট হর, উহা তেজের, রূপ ; চল্লের বে শুরুত্বপ দৃষ্ট হর, ঐ শুরু রূপ অলের, উহার বে ক্ষণার প আছে, তাহা আয়ের, অর্থাৎ অত্তিব্রুক্ত পৃথি-বীরই উক্ত ক্ষণারপ আনিবে। যাবৎ গুণবারের বিবেক-জান নাহয়, তাবৎ পৃথক্ পৃথক্ রূপে প্রতীতি হয়। বিবেক জান হইলে রূপত্রয় ভিন্ন আর কিছুই থাকে না, এইজস্থ ক্র রূপত্রয়ই একমাত্র মত্য।

ঐ রূপত্রর ব্যভিরেকে কিছুই সত্য নহে। তেজ, জল ও অর বেরণে এই দেবতাত্ত্রের তিরুৎ করণে এক একটী হয়, তাহা এইরণে জানিতে হইবে। পূর্বে তেজেরই উদাহরণ প্রদত্ত হইতেছে।

পৃথিবীর গন্ধ ও জালের রস আছে, তেজঃ প্রভৃতির উহা অসম্ভব, যে হেতু গন্ধ ও রস তেজে নাই, সমস্ত জগৎই ত্রিবংকুত, কেবল রূপত্রই সত্য, আর ও জল নিম্পাদ্য প্রযুক্ত জলই সত্য, জলও কেবল তেজঃসম্পাদ্য, স্বতরাং জল ও নাম মাত্র তেজই মত্য, তেজ ও সংপদার্থনিম্পাদ্য, স্বতরাং তেজও নামমাত্র, স্বতরাং দেই সংপদার্থই সত্য; • যদিও বায়ু ও আকাশ ত্রিবংকত নহে, স্বতরাং উহারা তেজের মন্তর্গত নহে।

্ ত্রিবৃৎক্ত সকলই অস্ত্য। কেবল এক মাত্র সংপদার্থ ই স্ত্য। (ছান্দোগ্য উপ ভাষ্য)

ত্তিবৃত্ত ( জি ) জিরাবৃত্ত। জিঞ্চণিত। তিবৃত্তা ( জী ) তিরাবৃত্তা। তিবৃৎ।

" অবৃত্তা গ্রন্থিনকেন অভিঃ পঞ্চিরেক বা।" (মন্থ)।

বিবৃত্তি (জী) ভিজঃ বৃত্তমঃ কর্মধা। অবৃৎ।
বিবৃত্তিকা (জী) তিজঃ বৃত্তমোহস্তাঃ কপ্। > কিবৃৎ।
(কি) ২ কিধাবৃতিষ্ক, যাহার চিনটা বৃত্তি আছে।
বিবৃত্তিপূপী (জী) জীন্দোষান্নাশ্তবেন বৃণোতি - কিবৃৎ
কিনোষলং পণ্নস্তাঃ, হিলমোচিকা, হেলাঞ্চা।
বিবৃত্তিবৃদ্ধি (পুং) ঋগাদাাআ্বনা কিব্তিতে কিবৃৎ কর্মধাণ।

> এয়ী বেদএয় । ২ ভছৎপল প্রণব।

"ঝচো যজুংষি চাঞানি সামানি বিবিধানি চ।

এষ জ্ঞেয়ায়রুছেদো যো বেদৈনং স বেদবিদ্॥

আল্যং যথ এফুকরং প্রক্ষ এয়ী যমিন্ প্রতিষ্ঠিতা।

স গুংহাাহক্যারুছেদো যস্তং বেদ স বেদবিদ্॥" (মহ্ম)

ঋক্, যজু ও সাম এই বেদত্রয়ই তিরুছেদ। যিনি ইহা জানেন, তিনি বেদবিদ্ এবং এই বেদত্রয় মাহাতে প্রতিষ্ঠিত আছে, ও যাহা আদা অক্ষর ব্রহ্ম অর্থাৎ প্রণব, এই প্রণবকে যিনি জানেন, তিনিই বেদজ্ঞ।

ত্তিমুষ (পুং) একদেশ দ্বাপরের ঝাসু। (দেবীভাগ সাতাহ৮)
ত্তিবুষন্ (পুং) একদন রাম্বর্ধি, ত্যঙ্গবের শিভা।

"তৈত্তকা অথে দশকিং" ( ঋক্ ৫৷২৭৷১ ) 'তৈত্তকাৰিদি৷ পুত্ৰস্তাৰূণঃ' ( সামণ )

ত্রিবেণী (প্রী) ভিত্রো বেশ্য: বারিপ্রবাহা বিষ্কা: মান ৰা যত্ৰ। ( তির্পুণী ) বাঙ্গালার অন্তর্গত হগলী জেলার ৰঞ্জ গলাতীরত্ব একটা তীর্থ ও গ্রাম। ইছা ২২°৫৮'১০" ե व्यक्तांरम ७ ৮৮ १२७ 8 • 7 श्रुक्त जाविमात्र व्यवस्थि। दिहा গ্রামের সমুথে গন্ধার পর্ডে একটা চর আছে। এই ম দক্ষিণে অপর পারে যমুনার মোহানা ৷ তিবেণী আন উত্তর পার্ছ দিয়া সরস্বতী আদিয়া গলায় মিলিয়াছে। « তিন नतीत मिनन-शान वित्राहे **এই शान**क खिरनी रत ত্রিবেণী পূর্ণের একটা প্রধান বন্দর ছিল। গ্রীকেয়। বন্দরের কথা জানিতেন। প্লিনি লিখিয়া গিয়াছেন, দ্বি enामावती (बाहाना इटेट्ड (य मक्स बाहा<del>व</del> शावेनाम गो ভাৰা ত্রিবেণী হইয়া যাইত। টলেমীর পুস্তকেও ত্রিনে উল্লেখ আছে। তিবেণীর নিমে সরস্বতীখালে এখন মৃথি ধননের সময় অনেক মাস্তল, জীর্ণ নৌকা ও শৃত্যাদি হয়। গ্রামের মধ্যেও অনেক স্থানে মৃত্তিকার নিয়েখ লিকাদির ভিত্তি দেখিতে পাওয়া যায়।

সরস্বতীর মোহানার উত্তরে তিবেণীর স্থপ্রস্থ গাঁকথিত আছে, উড়িষ্যার গন্ধপতিবংশীর শেষ বাধীন র মুকুন্দদেব এই বাট নির্মাণ করিয়াছিলেন। ১৫৫২ গৃটা মুকুন্দদেব সিংহাদনে আরোহণ করেন। তিন শতকা হইয়া গিয়াছে, তথাপি ঘাটটীর কোন হানি হয় নাই, য একবার ইহার মেরামত হইয়াছে। এই ঘাটে গ্রাণী ঘর নাই। এই ঘাটের পার্ম্বে গ্রামীবিশিষ্ট আর এব স্কার ঘট আছে, এই ঘাটে গ্রামীবিশিষ্ট আর এব

তিবেণীর দক্ষিণ সীমায় একটা মদ্জিদ আছে। মন্থি
অতি বিখ্যাত। এই মদ্জিদে জাক্ষর খাঁও তথং নীর কা
বাক্তির সমাধি আছে। জাকর খাঁ পাঙ্যার গোগ ঘটিত যুক্তের নায়ক শাহ্ স্ফির পিতৃব্য হইতেন। লা খাঁর সহিত ভূদিয়ার রাজার যুক্ত হয়, সেই যুক্তে জাজর কি
হন। জাফরের পুত্র হুঁগলীর রাজাকে প্রাপ্ত ভারের কভাকে বিবাহ করেন। এই মস্থিদে এয় কভারও সমাধি আছে। মুসলমান পর্ব উপলক্ষেণি এথন ও বি রাজকভার কবরে সীরণি দিয়া থাকেন। গি

মিঃ বুকম্যান জাফর্থায় মসঞ্জিদ্ দেখিয়া ^{ক্ষ্} লিখিয়াছেন—

मन्किन्छ। फूट्डी (उड़ेनी श्राडीरत (वड़िड। वि

র্বন প্রাচীরটা স্থর্হৎ বাসাল্ট প্রস্তরে গাঁধা। ক্ষতিত মাছে, কোন হিন্দানির ভালিয়া ভিনি এই পাণরখানি ाः अह कतिबाहित्तन। शकात नित्क **अहे** व्याही बशाब्द ্যানার কতকটা প্রমাণ আছে। ঐ দিকের পাধরশুলিতে मत्नक हिन्यू त्ववत्ववीत अवहीन मूर्खि ও शक्कविनिष्ठे ারীসপাদির মূর্ত্তি অকিত আছে। ইহা হইতে অমুমান হয় ষ এ পাথরগুলি নিশ্চয়ই কোন হিন্দুমন্দির হইতে গৃহীত। াই প্রাচীরগাত্তে ভূমি হইতে চারি হস্ত উর্দ্ধে একটা লোহ-ও প্রোধিত আছে। প্রাবাদ আছে, উহা জাকর থাঁর যুদ্ধান্ত ब्रिट्स हाजन। विजोष (वहनी आही ब्रह्मी अथभ आही रतन াশ্চিম দিকের অংশ হইতে বহির্গত হইয়া মস্পিদ্টীকে चतिया त्राथियारक, देश मानामात्र পाथरत्र गाँथा। वर्खमान াদিম আন্তানার অধ্যক্ষকে নিতান্ত মূর্ব বলিয়া বোধ হয় না। डिन विलियन, आंकत थाँत शांत्रहान मर्क शिक्टाम । आंकत ात जिन পूछ - आरम्ब था, शारम था ७ वत था शाकीत अभन তন্টী কবর আছে। প্রথম বেষ্ট্রীর মধ্যে বর থাঁ গানীর ছই (ख त्रिम थाँ। शाकी 'अ कतिम थाँ। शाकीत ममाधिखंख। दिछीत्र वहेनीय मत्या পन्टिस ४० इन्ड वावधान अक्टी मन्बिएन ब াগাবশেষ দৃষ্ট হয়। ইহাও হিন্দুমন্দিরের উপকরণে নির্শ্বিত। शत्र थिलात्नत्र अञ्चल्ली विषय त्यांहा। এই मन्बित्नत्र শ্চিম ভিত্তিতে কভকগুলি লেখা খোদা আছে। কয়েকটী ্লুঙ্গীর ভিতরেও কয়েকথানি আরবী ভাষায় শিলালিপি াছে। তৎপাঠে জানা যায় যে, তুকী বাঁ মহম্মদ জাফর খাঁ ৯৮ হিজিরার (১২৯৪ খৃষ্টাব্দে) এই মস্জিদ্ নির্মাণ করেন । হা বাতীত কতকগুলি ইপ্তকালয়ের ভিত্তির ধর্বংসাবশেষ । एक । लारक वरन जे छनि थानिमनिरात्र गृहावनी हिन । প্রাচীন পুরাণাদিতে প্রয়াগই ত্রিবেণী নামে উক্ত হইয়াছে। ায়াগে গন্ধাব সহিত যমুনা ও সরস্বতী মিলিত হওয়ার সেই निक युक्त (वी वाल, आत जितवी नामक शास श्रना इहेर्ड বৰতী ও যমুনা শতর হইয়া ভিন মূথে যাওয়ায় এই निक् मुक्तरवनी वरन।

রঘুনন্দনের প্রায়শ্চিত্ততত্ত্ব আছে—
'প্রত্যন্দনগরাদ্ যাম্যে সরস্বত্যান্তথাক্তরে।
তদান্দণপ্রয়াগন্ত গলাতো বমুনাগতা।
বাঘা ভ্রাক্ষং পূল্যং প্রয়াগ ইব লক্ষ্যতৈ॥"

প্রহাম নগরের (পাঙ্যার) দক্ষিণ ও সরস্বতী নদীর তবে দক্ষিণ প্রয়োগ। এই স্থানে গলা হইতে যমুনা লিয়া গিরাছেন। এখানে সানু ক্রিলে প্রয়াগে সানের বি.অক্ষর পুণা লাভ হয়। "দক্ষিণপ্রবাগ উন্মৃক্তবেশী সপ্তথ্যমাধ্যা দক্ষিণদেশে ত্রিবেটিভি থ্যাত।"

উत्करवेष मिक्न श्रेत्राण नश्यास्य निक्षे मिक्नराम विदिनी नारम थाछ ।

মার্ক রঘুনদান চৈতভের সমক্টাবর্তী, প্রতরাং চারিশত বর্ব পূর্বেও বে তিবেণী তীর্মবং প্রসিদ্ধ ও প্রায়া জুল্য গণ্য ছিল, তাহার প্রমাণ পাওয়া যার। ইহার পরে কবিকছণের চতীতেও তিবেণীর উল্লেখ ও তাহার সমৃদ্ধির কিছু কিছু গ্রমাণ আছে—

"বাম দিকে হালিসহর দক্ষিণে ত্রিবেণী। বাত্রীদের কোলাহলে কিছুই না শুনি ॥ লক্ষ ক্ষ লোক এক কালে ক্ষরে হান। বাস হেম তিল থেছ হিচ্ছে দের দান ॥ গর্জে বসি শিবপুরা করে কোন জন। রজতের সিপে কেই করর তর্পণ॥, জাদ্ধ করে কোন জন জালের সমীপে। সন্ধাকালে কোন জন দের ধূপদীপে॥"

ত্তিবেশী একটা প্রধান তীর্থ+ ও বাণিজ্যের স্থান বলিরা উক্ত প্রকে জার এক স্থলে জাছে—

"তিবেণী তীর্থের চ্ড়ামণি। আশ্রম করিয়া তথি স্নান করে ধনপতি তরী পুরে নানাধন কিনি॥"

বিবেণীতে শিবেশর নামে এক স্থান আছে। এই
শিবেশরের, সমুধে গঙ্গার একটা দহকে লোকে কানী সদহ
বলে। কবিকম্বণের চণ্ডী ব্যতীত কেতকা ও ক্ষেমানন্দ
দ্যাসের মনসার ভাগানেও কানী সদহের উল্লেখ আছে।

ত্রিবেণীখাটের উত্তরে বান্দাপাড়া প্র ত্রিবেণীর মধ্যে এক হানে একথানি বৃহৎ প্রস্তর বছকালাবধি পড়িরা আছে। লোকে ইহাকেই মনসার ভাসানের দেব-রঞ্জনী 'নেতা ধোপানীর পাট' বলে; কিন্তু ভাসানৈ লিখিত আছে, নেভার পাটা সোণার ছিল। প্র ত্রিবেণীর বাধাঘাটের বিছু উত্তরে ত্র পাথরের নিকট একটী পুদরণীও আছে, তাহাও 'নেতা ধোপানীর পুক্র' বলিয়া প্রসিদ্ধ।

কোন কোন কৃতিবাসী রাষায়ণের হতলিপিতে এই ঝিবেশী ভীর্থ-য়পে বর্ণিত হইয়াছে।

পু তলোল্কের লোকেয়া বলে, তথা দেতার বাস চিল, কিছ তাহা এমাজক। তমোল্কের রলকেরা একথানি প্রভারকদক্তে বহুকালাব্দি নেতার প্রভারত্তস্তি বলিয়াপুলা করে। ইয়া ইইতেই এ এম প্রচারিত হইয়াছে বোধ হয়।

আবাফ্রবার মস্কিদের গাতে যে লৌহদতের কথা বলা इहेब्राह्म. ७९मयस्य এकते श्रवान चाह्य। त्नारक मधात्रवाः ় উহাকে 'গালীর কুড়ুল' ও ঐ স্থানকে 'দফ্রা গালির তলা' वूरत। ये लोहमध नाए। हेरत नए, किन्न थानीत हहेरड ৰিসিয়া আদেনা, এজতা একটা প্ৰবাদ আছে "গাজীর কুড়ুল নড়ে চড়ে পড়েনা।" দফ্রাগাল্পী সম্বন্ধে একটা গরও আছে। मरुवाशाको नाम এक मुमलमान धनी हिल्लन। जिनि এक িদিন নিমন্ত্ৰণ থাইয়াআসিতেআসিতেপথে মহা ঝড়বৃষ্টিতে পড়েন। নিকটে আশ্র না পাইয়া পথের ধারে এক বৃহৎ বটগাছের তলায় দাঁড়াইলেন। বটগাছের পার্শ্বেই শ্মশান। শ্বশানের একটা ভূত ও একটা প্রেভিনী ঐ গাছে বসিয়া তথন কথা কহিতেছিল। দফ্রাগালী শুনিলেন, প্রেতিনীটা बिखाना कतिराज्ह, 'हैं। श्रामात कि विराव हरव ना। हित-कांगरे आहेत्एं। शाक्त ?' जूठ विनन-'निनि, अभूक ্থামের দফ্রাগাজীর চাকরকে কাল তার বুধিয়া গাই গুঁতিয়ে মেরে ফেল্বে, সে মরে ভূত হবে। সেই ভূতের সঙ্গে তোমার বিষে দিব।' দফ্রাগাজী বৃষ্টি ধরিলে বাড়ী चानित्न এবং काहारक । किछू ना विनिधा हाक त्ररक छाका है शा এঁকটা ঘরে বন্ধ করিয়া চাবি দিয়া চলিয়া গেলেন। চাবিটা किञ्ज नहेबा घारेटंड जूनिया शिलन। उांशांत खो जाश কুড়াইয়া রাথিলেন। এদিকে বুধিয়া গাই দড়া ছিঁড়িয়া মহা উৎপাত আরম্ভ করিল। দে একবার গন্ধাতীর ও একবার রাড়ীর মধ্যে ছুটিয়া বেড়াইয়া মহা অনর্থ বাধাইল। গৃথিণী দেখিলেন, মহাবিপদ।পথের মাত্র মারা যাইতে পারে। এই ভাবিয়া গোরু বাঁধিবার জন্ত চাকরকে খুলিয়া দিলেন। চাকর গোরু বাধিতে গেল; ব্ধিয়া তাড়াইয়া আসিয়া এমন গু তাইল যে চাকধের নাড়ী ভুঁড়ি বাহির হইয়া পড়িল, দে মরিয়া গেল।

দক্রাগাজী আর্সিয় শুনিলেন, ভ্তা মরিয়াছে। তিনি কাহাকেও কিছু না বলিয়া সন্ধার সময় সেই শাশানের বটতলায় আনিয়া চুপ ফেরিয়া বিদিয়া রহিলেন। কিছুকণ পরে তিনি শুনিলেন, প্রেতিনী বলিতেছে, 'তুমি বলিয়াছিলে দক্রাগাজীর চাকর মরে ভ্ত হবে, কৈ ভা'ত হ'ল না।' ভ্ত বলিল, 'হাঁ সেত ভ্ত হতে পেলে না। বুধিয়া মধন দড়া ছিঁড়ে' গলাভীরে গিয়েছিল, সেই সময় তার শিলে গলায়্তিকা লেগেছিল, মরণকালে গলায়্তিকাম্পর্লে চাকরটা উদ্ধার হয়ে গেছে।' দক্রাগালী শুনিয়া মনে মনে বলিলেন, হিলুর দেবতা গলায় যদি এত মাহাম্মা, তবে আমি গলাতীরে থাকিয়া কেন বঞ্চিত হই। এই ভাবিয়া তিনি তৎপারী দিন, বেধানে জাফরবার মস্কিদ আছে, ঐ স্থানে

আসিয়া বাস করিতে লাগিলেন। উহার পশ্চিমের আর্ন্ন গাত্রে অর্থাৎ বাহাতে গান্ধীর কুড়ুল আছে, তাহাতে এর ছাদবিহীন প্রস্তরের বাড়ী দেখা যায়। কথিত আছে १३ গান্ধী গলাবাসী হইয়া ঐ স্থানে থাকিতেন। লোকের বিশ্ব বিশ্বকর্মা গলার আদেশে গলাভক্তের ক্ষপ্ত এক রাজির মবোড়ীটী নির্মাণ করিতেছিলেন, কিন্তু প্রাতঃকাল হইয়া গছ আর তিনি থাকিতে পারিলেন না, কালেই বাড়াটী অস্প্রার তবমালার মধ্যে সংশ্বত ভাষায় স্থললিত ছলে এর তব আছে, তাহা দরাফ খা নামক কোন মুসলমানের রার্ক্ত আহার প্রসিদ্ধ। তবটী যেমন ভাববিশুক, তেমনি স্বান্ধীর সকল হিন্দুই এই স্তবটী জানেন ও নিত্য গলামাতকে ইহা পাঠ কিরিয়া থাকেন। তবটীতে যেন প্রাণের আছে

"যৎ তাকং জননীগাঁট গ্ৰদিপি ন স্পৃষ্টং স্কল্পন্ধ বির্যমিন্ পাছদৃগন্ত সরিপতিতে তৈঃ স্মর্গতে শ্রীহরি: ৷
স্থাকে স্তস্ত তদীদৃশং বপুরহো সংনীয়তে পৌক্ষং
দং তাবৎ ককণাপরায়ণপরা মাতাসি ভাগির্থি ৷
শৈষ এইরূপ—

"স্বধুনি মুনিকতো তারবেঃ পুণ্যবস্থং সতরতি নিজপুণ্যৈ স্তত্র কিং তে মহন্ধ্য। যদি চ গতিবিহীনং তারবেঃ পাপিনং মাং তদিহ তব মহন্থং তনাহন্থং মহন্ধং ॥"

ইতি দরাফথাঁ বিরচিতং গঙ্গাষ্টকং সমাপ্তং। •

গাজীর কুড়ুল ও জাফরথার যুদ্ধান্ত এবং দিছ্রাগাই দরাফ থাঁ ও জাফর থাঁ এই কর্মটী নাম ও তিন জনের গঙ্গাভক্তির কথা শুনিয়া অফুমান হয় যে, এ সমস্তই এ ব্যক্তির বিকরণ। লোকের মুধে এক জাফরথার নার্য অবিধ আকার ধারণ করিয়াছে।

পূর্ণের সংস্কৃত শিক্ষার জন্ম চারিটা স্থান নদীরা রাবে বিশেষ বিখ্যাত ছিল, এই চারিটাকে চারি সমাজ বিনিহ দেই চারিটা স্থান—নবন্ধীপ, ভাটপাড়া, গুপ্তিপাড়া ও এটা বিবেণী। এক সময়ে বিবেণীতে বিশেষী টোল ছিল।

স্বিখ্যাত সারউইলিয়ম জোন্সের সংস্কৃতশিক্ষক অধিন পণ্ডিত ৮৫ জগলাওতর্কপঞ্চানন এখানে, জন্মগ্রহণ করে ও এই গ্রামবাসী ছিলেন। [জগলাথতর্কপঞ্চানন দেব।]

বারণী ও মকর সংক্রান্তিতে ক্রিবেণীতে দিবস্ত্রা^{র্গ} মেলা হয়, তথন বহু যাত্রী আগমন করে। এর্গি গ্রহণাদিতেও অনেক যাত্রী আসে। ২ ইড়া, পিল্লা ও স্ব্যারূপ পারিভাবিক নদীরেবের স্বস্থান।

> "কালপাশমহাবন্ধবিমোচনবিচক্ষণঃ। ত্রিবেণীসঙ্গমং ধত্তে কেদারং প্রাপারেক্সনঃ॥"

(হঠযোগদীপিকা ৩২৪)

ত্রবেলু (পুং) অয়োবেণবোষজ্ঞ। রণমুখন্থিত অবরবভেদ।
(শব্দাধচিং)

ত্রবেদ (পুং) আন্বেদান্ বেন্ডি বিদ-জ্ঞাণ্, অয়ো বেদাং অধীতজ্বন সন্ত্যক্ত জচ্বা । ১ বেদত্তরবেকা। "নাষ্ত্রিতে বিবেদাহপি সর্কাশী সর্কবিক্রী।" (মহু ২০১১৮)

ত্রিগুণিতো বেদ: মধ্যলো । ২ বেদত্রর। ৩ বেদত্রর-বিহিত কর্ম। "ত্রিবেদসংযোগাচ্চ" (কাত্যা প্রে) ২৫।১৪।৩৭) 'বেদত্রর ক্মবিহিত ক্মবোগী ব্রাহ্মণঃ' (ক্র )

ত্রবৈদিন্ (পুং) ত্রিবেদং বেক্তিইন্। বেদত্রমজ্ঞ।

ত্রবেলা (স্থা) তিলো বেলা সামানোহন্ত। ত্রিবৃৎ, তেউড়ী।

ত্রবৈস্তিক (ত্রি) ত্রীণি বিস্তাণি স্বর্ণকর্ষমূল্যান্তর্হতি ঠক্ তহ্য
চল্গলবে:। স্বর্ণকর্ষত্রমূল্যার্হ, স্বর্ণের কর্ষত্রম মূল্যের যোগা।
ত্রশাক্তি (স্থা) ত্রিগুণিতা শক্তি:। ১ কালা, তারা ও ত্রিপুরাক্রণ ত্রোক্ত দেবীত্রম।

র্নিশ কিবিষয়ে দেবি ! ক্রমনীক্ষা প্রকীর্তিতা।" ( তর্মার )
২ ইছো, জ্ঞান ও ক্রিয়ারূপ ঐশরশক্তিত্রয়, ইছোশকি,
জ্ঞানশকি ও ক্রিয়াশকি এই তিনটী ঐশরিক শকি ৷ ৩ রাজাকিগের প্রভাব, উৎসাহ ও মন্ত্রজ্ঞ এই শক্তিত্রয় ৷ "ধর্ত্গাঃ
শক্রয়াত্তরঃ" (কামন্দকী) তিত্রঃ শক্তমঃ ষভা ৷ ৪ ক্রিগুণায়ুক
প্রধান, নহত্ত্ব বা বৃদ্ধিত্ব ৷ ৫ গায়তী ৷ (দেবীভাগে ১২৷৬৷৬৭)
ত্রশক্তিপুৎ ( পুং ) ক্রিশকিং ইছোদিশক্তিত্রয়ং ধরতি ধু-কিপ্ ৷
১ পরনেশ্র ৷ ২ বিজিগীয়ু নুপ ৷

এশক (পুং) তারঃ শক্ষব ইব যতা। ১ মার্জার। ২ শলভ।
০ চাওক পক্ষী। ৪ খানোত। ৫ স্থাবংশীর নৃপতিভেদ,
ইংার বিষয় রামায়ণে এইরূপ লিখিত আঁছে,—রাজা
গ্রিশক্ক্ স্পরীরে অর্গলাভাশায় স্বীয় গুরু বিশিষ্ঠ কৈরিক যজ্ঞ
করিংত বলেন। বশিষ্ঠ ইহাতে অসম্মত হন এবং উাহাকে
বলেন 'ইহা হইবার নহে।' এইরূপে ত্রিশক্ক্ বশিষ্ঠ কর্তৃক
প্রত্যাখ্যাত হইয়া দক্ষিণদিকে গমন করেন। এখানে
বিশিষ্ঠতনয়ণণ তপস্তার নিযুক্ত ছিলু। ত্রিশক্ক্ ইহাদিগের
শরণপেন হন এবং এই যজ্ঞ করিবার জন্ম বিশেষ অমুরোধ
করেন। তথন বশিষ্ঠপুত্রগণ তাহাকে বলিলেন, 'তোমার
বৃদ্ধিত্রংশ হইয়াছে, দেখিতেছি। যখন বশিষ্ঠ তোমাকে
প্রত্যাখ্যান ক্রিয়াছেন, তুমি তাহাকে আতিক্রম ক্রিয়া

অন্তের শরণাপন্ন হইতেছ। বশিষ্ঠ যাহা বলিরাছেন, সেই বাকা অমোদ, তাহা অতিক্রম করা ধার না। স্থতরাং যথন তিনি 'ইহা হইবার নহে', এইরূপ°বলিয়াছেন, তথন আমরা পিতাকে অ-তিক্রম করিয়া এই যজ্ঞাকরিতে সমর্থ নহি।' তথন জুিশ **ছু** বশিষ্ঠপ্তদিগকে কছিলেন, 'আপ্নার থিডা আমাকে প্রত্যা-খান করিয়াছেন এবং ভ্লাপনারাও করিলেন, এখন আমি গত্যস্তর অবলম্বন করিতে বাধ্য হইব।' বলিষ্ঠতন্মগ্র **এই कथा क्रिया ट्वार्थ अधीत हरेया 'कूरे छशानव ना**छ कत्र' এই শাপ দিয়া স্বস্থাত্রমে প্রস্থানুকরিলেন। অন্তর ত্রিশঙ্ক চণ্ডালত লাভ করিয়া ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। ত্রিশমু এই রূপে ছংথে নিতাত অভিভূত হইয়া মহর্বি বিখামিত্রের শরণাপর হইলেন। রাজাকে চণ্ডালরূপী ও ৰিফলকৰ্মা দেখিয়া মহৰি বিখামিতা নিভাস্ত দ্যাপুর্বশ হইলেন। তিনি কহিলেন, 'আমি দিবা নয়নে অবলোকন করিতেছি যে তুমি মহাবলসম্পর অযোধ্যাধিপতি, অভিশাপে চাঞালতু প্রাপ্ত হইরাছ, তুমি যে কার্য্যেদেশে আমার নিকট আদিয়াছ, ভাহা নির্দেশ কর, ভোমার মল্ল हहेरव।' उथन ताका जिन्दू इच्छाञ्जलि हहेग्रा वनिश्नन, 'আমি যজ্ঞ করিয়া অশরীরে অর্থে যাই, এই আমার অভিশাষ; আমি গুরু বশিষ্ঠ ও গুরুপুল্গণ কর্ত্ক প্রত্যাখ্যাত হইয়াছি, এখন অপনিই আমার একমাত্র শরণা। আমি অনেক यञानित अञ्चोन कतिशाहि, कथन धर्मिविशर्दिक कार्या করি নাই।' বিখামিত তিশস্কুর এই কথা ওনিয়া বলিলেন, 'তোমার কোন ভয় নাই, গুরুর অভিশাপে তোমার এইরূপ হইয়াছে, ভূমি এই রূপেই স্বশরীরে স্বর্গে গমন করিতে পারিবে। এখন আমি যজসাহায্যকারী পুণ্যকর্মা মহর্ষি সকলকে স্থানস্থা করি, তুমি নিশ্চিত্ত হ্ইরা যজ্ঞ শকর। তথন বিখামিতা পুত্রদিগকে যজের আহিয়াজন করিতে আদেশ कतित्वन এवः ममन्त्र निषाशनत्क आस्तान कतिया कहितन, 'তোমরা আমার আজাতে ঋষিক্ও বশিষ্ঠ পুলগণপ্রভৃতি বহুঞ্ত ঋষিদিগকে সুজ্দ ও শিষাবর্গের সৃহিত আনমূন কর। আহুত বা অনাহুত যে যাহা বলিবে, আমার নিকট তাহা জ্ঞাপন कतिद्व।' नियागन हातिनिदक गमन कतिदन द्वनित् अविशन मकलाइ এই राष्ट्र वागित्त नाशित, किन्त विश्व शूल्यश्न ও মহোদয় নামা ঋষি আদেন নাই। বলিষ্ঠপুত্রগণ ও মংখাদর এই কথা বলিয়াছেন, 'যে যজের যালক ক্ষত্রিয়. বিশেষতঃ যে চণ্ডাল, তাহার ফ্রেসভায় কুর ও ঋষিরা কি প্রকারে হবি ভোজন করিতে পারেন।' বিশামিত্র এই कथा छनिया क्रेष्टे रहेया बनिरमन, 'बनिर्श्वभूखिता' विना

দোৰে আমাকে দোৰী করিতেছে, তাহারা এই পাপে বিক্কান্ত কর্মাংসাহারী মৃষ্টিক (ডোম) হইয়া রপ্তশত জন্ম লাভ করিয়া এই সকল লোকে বিচরণ কর্মা । মহোদয়ও নিয়াদয় প্রাপ্ত ইইয়া বছকাল ধরিয়া ছুর্গতি ভোগ কর্মাণ ।' পরে বিশ্বামিত্র আর্থান করিয়া জ্বামার শরণাপর হইয়াছেন, অতএব ইনি যে জ্ঞানরার সশরীরে অর্থানার শরণাপর ইইয়াছেন, আতএব ইনি যে জ্ঞানরারা সশরীরে অর্থানার আমার কর্মাণ, আপনারা আমার সহিত সেই যজের অনুঠান আরম্ভ কর্মাণ।'

শ্বিগণ বিমামিতকে অতিকোপন অভাব জানিয়া কিছু মাতে প্ৰতিবাদনা ক্রিয়াযক্ত আরম্ভ ক্রিদেন।

বিখামিত খলং এই যজে অধ্বয় হইলেন। মন্ত্ৰোবিদ ঋত্বিকৃগণ যথাশাস্ত্র সমস্ত কর্ম আমুপূর্বিবক সম্পন্ন করিতে লাগিলেন। মহর্ষি বিশ্বামিত দেবগণকে হবিভাগ প্রদান করিলেন, কিন্তু কোন দেবভাই ুএই যজে আসিলেন না। ज्यन विश्वामिक त्रायाविष्टे इहेग्रा उत्तव উত্তোলন করিয়া ত্রিশৃত্বক এই কথা বলিলেন, 'নরেশর ৷ আমার অজিভ তপস্তার বীণ্য দেখ, এই আমি খীয় তেখে ভোমাকে স্পরীরে অর্গলোকে প্রেরণ করে। কেহই স্পরীরে অর্গে যাইতে পারেনা। তুমি গমন কর। আমি তপস্তাহারা যে ফললাভ করিয়াছি, তুমি তাহার প্রভাবে স্পরীরে স্বর্গলাভ কর। বিখামিত্র এইরূপ বলিলে ত্রিশস্কু স্পরীরে স্বর্গে গমন করিতে লাগিলেন। এদিকে ইন্দ্র ত্রিশঙ্কে স্পরীরে चर्न श्राप्त (प्रथिया कहित्वन, 'मूर्थ । त्जात चर्न चान नाहे, তুই গুরুশাপে অভিহিত হইয়াছিদ্, অতএব আবার তুই অবাক্শিরা হইয়া মর্ক্তো পড়।' এই কথা বলিলে ত্রিশঙ্কু মর্ত্ত্যে পড়িতে লাগিল এবং 'আমাকে তার্ণ' করুন' বলিয়া উচ্চৈ: বরে আর্ত্রনাদু করিতে লাগিল। তথন বিশামিত্র সভীব কুদ্ধ হইয়া "তিষ্ঠ তিষ্ঠ" এই কথা বলিলেন এবং দিতীয় স্ষ্টি করিবার মনন করিয়া দক্ষিণদিকে অপর সপ্তর্ষি ও নক্ষত্রগণ সৃষ্টি করিলেন। ইন্দ্র সৃষ্টি করিবার ইচ্ছা করিয়া আবার ভাবিলেন, ইন্দ্রশূত্য সৃষ্টিই প্রশস্ত। তথন দেবগণ্ নিতান্ত ভীত হইয়া বিশামিত্রের শরণাপন্ন হইলেন, তথন বিখামিত্র দেবগণকে কহিলেন, 'আমি ত্রিশহুর অর্গারোহণ প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, ইহা কি প্রকারে মিণাা করিব। এই রাজা দশরীরে চিরকাল স্বর্গে বাস করুন, যে পর্যান্ত সকল লোক বর্ত্তমান থাকিবে, সেই পর্য্যন্ত আমার সৃষ্ট ঞৰ ও নক্ষত্ৰ সকল ইহার চতুর্দিকে অবস্থিত কম্বক। আপনারা এই বিষরে অহমতি প্রদান করুন।' দেবগণ ভাতাই শীকার क्रिंगो। जिनकू अर्थामञ्जक इहेश (महे नकन उक्कान नक्राजन মধ্যে অবস্থান করিতে লাগিলেন। এই নক্ষত্ত সকল ভিন্তু সর্বাণা অমুগমন করিয়া থাকে। (রামায়ণ ১।৫৭-৬২ মুর্গ) হরিবংশে তিশেকুর বিষয় এইক্রপ লিখিত আছে—

মহারাজ অ্যাাঞ্ণের সভ্যত্তত নামে এক পুত্র 🛺 हैनि महारणमाणी हिल्लन विलय्ना देववाहिक निवस लकः পূর্ব্বক অন্তের বিবাহিত পত্নীকে হরণ করিয়া আত্মদারক পরিগ্রহ করেন। মহারাজ তাষ্যারুণ এই বুতান্ত জানি শস্কুজানে ইহাকে পরিত্যাগ করেন। তথন সত্যত্রত পিতৃষ্ঠ তিরস্কৃত হইয়া পিতাকে বিজ্ঞানা করেন, 'আমি বোল যাইব।' ত্ৰয়াৰুণ অতীব কুদ্ধ হইয়া বলেন, 'তুই চঙালগ্ৰে সহিত মিলিত হইয়া বাস কর। আমি তোর মত _{ছরাই} পুত্রবারা পুত্রবান্ হইতে ইচ্ছা করি না৷' সভারত _{পিডা} বাক্যে নগর ইইতে নিজান্ত হইলেন। বলিষ্ঠ ইহাতে দ্বিভূটি করিলেন না। সভাবত এইরূপে চণ্ডালগণের বাসভ্যি নিকটে অবস্থান করিতে লাগিলেন। ভগরান ই<del>জ</del> স্থা ব্রভের বাদস্থলে একেবারে ১২ বংসর বৃষ্টি রহিত করিং দিলেন। এদিকে বিখামিত স্বীয় ভার্ব্যাকে এই প্রদে পরিত্যাগ করিয়া অতি কঠোর তপস্থা করিতেছিলেন বিশামিত্রের পত্নী অক্লাক্ত পুত্রগণের ভরণপোষণের ল ঋবির ঔরসজাত মধ্যম পুত্রকে গলে বন্ধন করিয়া গোশ্য মুল্যে বিক্রমার্থ প্রস্তুত হইলে সভ্যত্রত ঋষির ভৃষ্টিসম্পাদনার্থ অথবা অমুগ্রহপ্রাপ্তির আশায় তাহার মুক্তিসাধন করেন এবং স্বয়ংই ভাহাদের ভরণপোষণের ভার গ্রহণ করেন। বিশানিত্রপুত্র সভাবত কর্ত্তক মৃক্তিলাভ কণ্ণেন বলিয়া ডিন গালব নামে সর্বাত্ত প্রসিদ্ধ হইয়াছিলেন।

সত্যবত প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হইরা বিশামিত্রভার্যাকে প্রতিগানন করিতে লাগিলেন। সত্যবত রাজ্য হইতে বহির্গত হয় আসিবার সমন্ন বশিষ্ঠ কিছু বলেন নাই, এইজয় বশিষ্টের প্রতি কোপাবিষ্ট হইয়াছিলেন। সত্যবতের উপর বে, তায়ে পিতার অপরিতোষ জ্ঞানিছিলেন। সত্যবতের উপর বে, তায়ে বিশ্বলবর্ধণ বন্ধ করিয়াছিলেন। এখন সত্যবত ছাদল বংসা মধ্যে তুর্বহদীক্ষা গ্রহণ করেন। ইহার অভিপ্রার এই য়ে, গাল হইতে নিতৃত্ব হইয়া কুলের নিয়্নতি লাভ করেন। বিশ্বতিকা মাংলের অভাব হইলে বলিঠের কামত্বা পর্যবিশীক্ত অকলা মাংলের অভাব হইলে বলিঠের কামত্বা পর্যবিশীক্ত অকলা বংগার বংগার মহাপাতকের অনুষ্টার হইল। ঐ মাংস বিশ্বামিত্রতনয়গণকে ভোজন করাইন্দে এবং নিজেও ভক্ষণ করিলেন। বলিঠ ইহা জ্ঞানিতে গায়িরা সত্যবভবক কহিলেন, 'বলি তুমি আর পাপক্ষর্পন্ম করাইনি না করিতে, আমি নিশ্চয়ই ভোমার পাপক্ষর্পন্ম বিরাক্ষী

করিকান। তৃমি প্রথমে পিতার অসন্তোব উৎপাদন করিরাছ, অনস্তর গুরুর পর্যাহনী পাভী হত্যা করিরাছ, আরও
উহার রুণা নাংস ভক্ষণ করিরাছ, এই ত্রিবিধ মহাপাতকের
অনুষ্ঠান করিরাছ।'. এই ত্রিবিধ শব্ধু আচরিত হইল বলিরা
সভ্যত্রত ত্রিশব্ধু নামে অভিহিত হইলেন। মহার্যি বিশামিত্র
পূত্র কলত্রের প্রতিপালরিতা বলিরা ত্রিশব্ধুকে বর দিতে
চাহিলেন। ত্রিশব্ধু সশরীরে অর্গবাসের কল্প প্রার্থনা করিলেন।
বিশামিত্রও 'তথান্ত' বলিরা ত্রীকার করেন। পরে হাদশ্
বার্ষিকী অনার্টি ভর নিরাক্ষত হইলে বিশামিত্র তাহাকে
পৈতৃক রাজ্যে অভিহিক্ত-করেন এবং শ্বাং তাহার পুরোহিত
হন। বিশামিত্র যক্ষ করিলে দেবগণও বিশিষ্ঠকে অনাদর
করিয়া ত্রিশব্ধুর সশরীর অর্গারোহণ অন্থমোদন করেন।
ত্রিশব্ধুর কেকয়বংশোৎপরা সভ্যরুণা নামী পত্নীর গর্গে
মহারাল হরিশচক্র অন্মগ্রহণ করেন। এই ছরিশচক্র ত্রেশহুব
নামে অভিহিত হন। (হরিবংশ ১২-১০ অ॰)।

ত্রিশঙ্কুজ (পুং) তিশভোজায়তে জন ড। হরিশচক্র রাজা। তিশঙ্যাজিন্ (পুং) তিশঙ্ং যাজয়তি যজ গিনি। বিখা-ামত ক্ষি।[তিশঙ্গেধ।]

ত্রিশত (ক্রী) ত্রিগুণিতং শতং মধ্যমোণ। ত্রিগুণিত শত, ৩০০। "চতুর্বিংশতিসংযুক্তং মণ্ডলং ত্রিশতং স্মৃতং" (কামন্দ্রী) - দ্বিগুসমাসে ভীপ্। (স্ত্রী) ২ শতত্রয়।

্রেশতীপ্রসারিণীতৈল (ক্রী) ভৈণঔষণভেদ; প্রস্তুত গ্রণালী—তিলতৈল ৪৮ সের, কাথার্থ মূল, পতাও শাখা মহিত সারবিশিষ্ট গন্ধভাদালিয়া ১০০ পল, পাকার্থ কল ৬৪, সেব, শেষ ১৬ সের, অবগলা ১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ-১৬ সের, দশমূল ১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, দ্ধির মাত ১৬ সের, অন্ন কাঁজি ৩২ সের, কল্প পাকার্থ জল २८७ (मत्र, ककार्थ भीवनीत्रशन व्यास्त)क > भन, कामा द भन, ভেলার ষ্টী ৩ পল, পিপুলমূল ২ পল, চিভামূল ২ পল, रवकात २ भन, रेम्बर २ भन, महनन्यन २ भन, मिंक हो २ भन, প্ৰভাদালিয়া ২ পল, ষ্ঠিমধু ২ পল এই সকল অব্য তৈলবিধি অহসারে পাক করিয়া নামাইতে ২ইবে। এই তৈল অভাদ, বৃত্তিকশ্ব, নিরহ, পান ও নভার্থে প্রযোজ্য। ইহা বাত ব্যাধি অধিকারে একটা উৎকৃষ্ট তৈল, এই তৈল ব্যবহৃষর করিলে খনীতি প্রকার বাতজ ব্যাধিও বিংশতি প্রকার গৈত্তিক ও লৈমিক ব্যাধি আশু প্রাশমিত হয় এবং পৃথসী, অভিভঙ্গ, মকায়ি, অবেরাচক, অথকার, উন্মাদ, বিভ্রম, থকাহাত, নৰ্কাসহত, বাতভ্ৰম প্ৰভৃতি বিবিধ বাাধি বিনষ্ট হয়। (टिक्यमात्रप्रावनी)

ত্রিশরণ (क्रो) জীণি শরণানি বছ। বৃদ্ধ। (জিফাণ)
ত্রিশর্করা (জী) জিভণিতা শর্করা, মধ্যনোণ। মিণিত
শর্করা, মিস্রী ও ওড় এই তিন প্রকার মধ্রত্তিক।
(রাজনিণ)

ত্রিশলা (স্ত্রী) তিত্র: শলা মস্তা: পূবোদং সাধু:। অর্ন্ মাত্বিশেষ, শেষ জৈন তীর্থইর বর্জনানের মাতা।

ত্রিশাথ (ত্রি) ডিঅ: শাধা অঁগ্রাণি যন্ত। দিধাকার অগ্রত্তর-যুক্ত। "কৃষা ত্রিশাধাং ক্রকুটাং ললাটে" (ভারত কর্ণ ৮৫ অং) ত্রিশাথপত্র (পুং) বিবর্ক। (রাজুনিং)

ত্তিশাণ (তি) তাম: শাণা: পরিণামমত তৈ: ক্রীড: বা অণ্ ডক্ত বা লুক্। ১ তিশাণপরিমিড। ২ তিশাণ বারাক্রীড। ত্রিশালক (ফ্রী) ডিল্ল> শালা যত্র বা কপ্। হিরণ্যনা-ভাগ্যবাস্তভেদ।

"উত্তরশালাহীনং হিরণানাভং ত্রিশালকং ধ্রুম্।
প্রাক্শালয় বিযুক্তং সুক্ষেত্রং বৃদ্ধিদং বাল্ল ॥"(বৃহৎসং৫০।৩৭)
যাহার উত্তর দিকে শালা (গৃহ) থাকেনা, ভাহার নাম
হির্ণানাভ এবং ইহাকে ত্রিশালক কহে, এই ত্রিশালবিশিষ্ট
বাল্প ধ্রু, যাহার দক্ষিণদিকে শালা থাকেনা, ভাহাকে চুল্লীত্রিশালক কহে, ইহা ধননাশক।

ত্রিশিথ (ক্রী) ডিল্ল: শিখা যত। ১ ত্রিশূল ক্ষরভেদ। ২ কিরীট। (ত্রি) ৩ শিখাতায়যুক্ত।

*অিশিথাং জকুটীং রুজাসলত দশনছেদং*(ভাবত১।১৬৩ অং) ৪ রাবণের পুল্ল রাজগভেদ। ৫ বিধ । ৬ তামস মহতবের ইক্র।

"গত্যকা হরয়ো বীরা দেবাজিশিথ ঈখর:" (ভাগগত ৮০১২৮)
ত্রিশিথর (ত্রি) ত্রীণি শিথরাণি যন্ত। তিশুল পলত।
ত্রিশিথিদলা (ত্রী) ভিল্ল: শিথা: সন্তাত্র ইনি তাদৃশং দলমন্তা, মালাকল নামক মূল। (রাজনিং)
ত্রিশিথিন্ (ত্রি) ত্রিশিথা: সন্তান্ত ইনি। ত্রিশিথ।
ত্রিশিরিস্ (পুং) ত্রীণি শিরাংগি জন্ত। ১ কুবের। ২ রাববোর প্রভেদ। ৩ খরের এক সেনাপতি। ৪ জরপুরুষ,
বাণযুদ্ধ কালে এই জ্বেরর স্প্রীহয়। [জ্র দেথ] ত্রয় বেদাঃ
শিরাংসীব যন্ত। ৫ ক্রৈবরধ।

"রথচক্রস্থিতিরোস্থিশিরশ্চ।" (ভারত ২২৷১৯৮ অং ) ৬ স্থনামধ্যাত স্বষ্ট্ প্রকাপতির পূরা। ংভারত ২৩৷১৪৭-৪৫) ৭ অস্ক্র বিশেষ। (ভারত ধানা২) ব্রিশীর্ষ (বি ) কাঁণি শার্ষাণি যস্ত। ব্যাশিধ্র।

জিশীর্ষক (ক্লী) জিশীর্ষ কপ্। জিশ্ল। জিশীর্ষন্ (জি) জিশিরস্ক, ঘটার পুজ।

VIII

"অিনীৰ্বাণং দম্ভং" ( অক্ ১০।৯৯।৬ ) 'অিনীৰ্বাণং অিশিরস্থং
উঠু: পুত্রং বিশ্বরূপং' ( সারণ )

ত্তি শুচ্ (পুং) তিত্র: শুচো দীধর: শোকা বা অস্ত। সুর্গ,
আন্তরীক ও পৃথিবীস্থিত দীধিতারযুক্ত ধর্ম।

"ধর্মন্ত্রিশুক বিরাজতি বিরাজা" ( শুক্ল যজু• ৩৮।২৭)

'ত্রিগুক্ তিস্র: শুচা দীপ্তরা যন্ত স, ১৮ মত্রে উক্তা যথা, যাতে ধর্ম দিবা শুগ্যা গায়ত্র্যাং হরিধানে। সা ত স্থাপ্যার তাং নিষ্ট্যায়তাং তল্মৈ তে স্বাহা।' (মহীধর)

२ ष्यांशाब्रिकां कि (भाक्यश्रयुक्तः)

ত্তিশূল (পুং) ত্তীণি শূলানি ইব অগ্রাণি বস্ত। স্থানামধ্যাত স্ত্রে বিশেষ। পর্যায় ত্তিশিধ, শূল, ত্তিশীর্ষক।

"ত্তিশূলং দক্ষিণে হত্তে থড়সং চক্রং ক্রমাদধঃ" (ভূসীঘ্যান) ইহা মহাদেবের অত্ত। ১

ত্রিশূলঘাত (ক্রী) ত্রিশ্বেন খাতং। তীর্ববিশেষ, এই তীর্থে স্নান করিয়া পিতৃ e দেৰতাদিগের অর্চনা করিলে গাণ্পত্যদেহ লাভ হ্র।

"ত্রিশুলঘাতং তত্ত্রৈব তীর্থমাপান্থ ভারত। তত্ত্বাভিষেকং কুর্বীত পিতৃদেবার্চনে রডঃ॥

্গাণপতাঞ্চ লভতে দেহং তাকা নশ্যংশর:।"(ভারত ৩৮৪অ)
বিশ্লমুদ্রা (রা) বিশ্লং আকারত্বেনাস্তান্তা:। মুদ্রাভেদ।
"অসুটেন কনিঠান্ত বন্ধা শিত্তাসুনীব্রং।

অসাররেজিশূলাখ্যা মুদ্রৈষা পরিকীর্তিতা ।" (তন্ত্র)

অঙ্ঠ হারা কনিঠা অঙ্কীবন্ধ করিয়া অবশিষ্ঠ অঙ্কী-আর প্রণারিত করিলে এই মুদাহয়।

ত্রিশ্লিন্ (পুং) তিশ্লং অস্ত্রমন্তান্ত, তিশ্ল ইনি,। শিব।
(ভি) তিশ্লধারী। স্তিয়াং ভীপ্। ছগা।

" ত্রিশ্লনাং নমস্থামি মহিধাস্থরবাতিনীং।" (ইরিব'১৬৬অ'), ত্রিশৃঙ্গ (পুং) ত্রীণি শৃঙ্গাণি যস্ত। ১ ত্রিক্ট পর্বাত। ই ত্রিকোণ। ত্রিশৃঙ্গিন্ (পুং) ত্রীণি শৃঙ্গাণীব সম্ভাস্ত ত্রিশৃঙ্গ-ইনি। রোহিত-মৎস্ত। (শ্বাধকলতক)

ত্রিশোক (পু:) তায় আধ্যাত্মিকাদম: শোকা অক্ত। > জীব,
আধ্যাত্মিক, আধিদৈবিক ও আধিতৌতিক এই ত্রিবিধ
শোক জীবের আচে বিনিয়া জীব মাত্রই ত্রিশোক।

২ কণুপুত অধিভেদ। "অফু তিশোক**ং শত বাবহন্নুন্"** (অক্ ২০।২৯।২[°]) 'তিশোকনামৰি' (সারণ)

"বাভিন্তিশোক উব্রিয়া" ( ঋক্ ১৷১১২৷১২ )

'কণুপ্তান্তিশোক ঋষি:' ( সায়ণ )

ত্রিষংযুক্ত (তি ) তিভি ইবিভি: সংযুক্তং বেভি ছক্ষণীতি
চাহর্টের বেদে যথ:। ভিনবার হবিসংযুক্ত যজভেদ।

"এন্দাবৈক্ষবং চরুং বৈক্ষবং ত্রিকপালং বা পুরোডালং চন্ধুং বা তেন ত্রিষংগুক্তেন বন্ধতে" ( শতং ত্রাং ৫।২।৫।১ )

"দ্ৰিবংযুক্তেযু" ( কাড্যা' খ্ৰৌ' ১৫।২।১১ ) 'ব্ৰিভিহ্বিভ্লি: , সংযুক্তং কর্ম ত্রিষংযুক্তং' (ভাষ্য)। ২ তিন দারা সংযুক্ত মার্ लोकिक व्यापार्य वच हहेरव मा, रक्वन रवराहे वच हहेरव । ক্রিষ্বেৎসর (ক্রী) ত্রয় সংবৎসরাঃ সাধনকালা অস্ত বেদে ষধ্বং। ত্রিবর্ষসাধ্য সত্তভেদ। "ত্রিষংবৎসরং ষ্টিনীক্ষং" ( কাজ্যাণ প্রেণীণ ২৫।৫৩।১২ ) 'ত্রিষংবৎসরং সত্রং ভচ্চ ষষ্টিদীক্ষ ভবতি' (সংবাাণ)। লৌকিক বাবহারে বছ হইবে না। ত্রিষ্ঠ্রি (তি) তার: সন্ধরোহস্ত, বেদে বা ষত্বং। ১ তিসন্ধিৰ্জ। "চাতৃমাস্তানি তিবকীনি বিসমস্তানি" (শত° ভা° ১১৷৫৷২৷৭) 'ত্রেয় সন্ধ্রেষ্ঠ্স্তরালকালাশ্চন্থারো মাসা যেবাং তানি।' (ভায়) ত্রিম্ব (ত্রি) ছম্ব (নিখণ্টু) ভূষম ইহার পাঠান্তর দেখা যায়: ক্রিষুর্ব ( ক্লী )'হয়তে সোমোহত স্থ-আধারে সূট্, পূর্বপদা দিতি ঘত্বং। ত্রিকাল, প্রাত মধ্যান্ত ও সামান্ত রূপকাল, এই कारम रावका ও পিতৃদিগের উদ্দেশে তর্পণাদি করিতে হইবে: "কুৰ্য্যাৎ ত্ৰিষ্বণস্বামী কৃচ্ছুং চান্দ্ৰায়ণং তথা।" ( যা**জ্ঞ**াকা _/ cलोकिक अरबारन यञ्च इहेर**र ना, रमहे एरल जिन**रम धरे

লোকিক প্রয়োগে ষত্ব হইবে না, সেই স্থলে জিসবদ এই রূপ হইবে।

ত্রিষ্টে (তি) তিবেটা যুতং শতাদিছাৎ ড। তিবেটিযুত্শতাদি।
ত্রিষ্টি (ত্রী) ত্রাধিকা ষটি: বহুছে হপি একবচন:।
১ ত্রাধিকবটি সংজ্ঞা। ২ তৎসংখ্যের।

"চতুংৰটিজিষটি বাঁ বৰ্ণা: সম্ভৰতো মতাঃ।" **(শিকা**)

বিকল্প পক্ষে তায় আদেশে তায়:ষষ্টি।

ব্রেষ্ষ্ঠিতম (ত্রি) ত্রিষষ্ট প্রণে তমপ্। ত্রিষষ্ট সংখ্যার পূরণ।
ব্রিষ্পূপ্ন (পুং) ত্রয়: স্পর্ণান্তধাচকশব্দা যত্র। ১ বহন্ চ*বেদভাগ
ভেদ। [ ত্রিদৌপর্ণ দেখ। ] ২ তণ্ড্রতা। ৩ তৎত্রতধারী প্রদা
ত্রিণাচিকেতঃ পঞ্চাগ্রি ক্লিমুপ্ন: বড়গ্রিবিৎ।" ( মহ )

ব্রিষ্টু ভ (গ্রী) • বিষ্ণু হোনেষ্ অভাতে অভ-কিপ্ৰয়:।

একাদশ অক্ষরপাদক বর্ণবৃত্ত ছন্দোভেদ। ইক্র একাদশ

অক্ষর হারা বিষ্টু ছন্দ বিধান করেন। "ইক্র একাদশ

করেণ বিষ্টু ভুমুদজয়ভায়ুজ্জেষ্ম্" (ভক্ষজু• ১০০০)

এই ছল প্রজাপতির মাংস হইছে উৎপন্ন হইরাছে?
"তঠোঁ কিগাসীলোমভোগ গান্তী চ ছচো বিভোঃ।
ভিটুপ্মাংসাৎ লুতোহনুই প্ কগতান্তঃ প্রজাপতেঃ ।"
(ভাগবত ৩১২।বন)

ইহার প্রকার—

উপলাভি তির ছল্লবোগে—  সুম্বী । । । । । । । । । । । । ।  লালিনী ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥	-			-	-										اشاد
শালিনী ॥ গ । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	4	গৰাতি	তি	# E	मा (	বাং	গ	•							
বাতোৰ্ষি । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•	হুমুধী	1	t	1	t	Ħ	1	1	Ħ	1	1	Ħ		
য়েরবিলাগিত য়	,	ণালিনী	N	Ħ	ŭ	Ħ	Ħ	i	ŧ	ı	ı	Ø	ŧ		
স্থাপ্ত । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	7	গতো <b>ৰ্শি</b>	8	1	0	11	1	1	Ħ	đ	i	Ħ	ń		
সংগোজতা । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	[मत्र	লিসিত	4	ŧ	Ħ	Ħ	i	1	1	ł	1	i	ŧ		
পাগতা । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•	<b>মহক্লা</b>	1	1	ł	K	Ħ	1	ł	1	1	ŭ	Ħ		
দোৰক ॥ । । । । । । । ॥ ॥  বুৱা । । । । । । । । ॥ ॥  উপিছত  লিখবিত  লিখবিত  । ॥ । । । । । ॥ ॥ ॥ ॥  উপিচিত । । ॥ । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  কুপুক্ষজনিতা। । । । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  কুপুক্ষজনিতা। । । । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  কুপুক্ষজনিতা। । । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  কুপুক্ষজনিতা। । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥	•	হণোৰত	i	1	H	1	ı	ł	Ħ	ŧ	Ũ	ŧ	Ħ		
সোচনক ॥ ॥ । । । । । । । । । । । । । । । । ।	٠	যাগতা	1	1	1	1	ı	1	ı	1	1	Ħ	đ		
ভুজিকা।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।	(	দাবক	Ħ	ŧ	ı	ti		١	þ	1	1	8	ŧ		
ভিন্তি । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•	মাটনক	IJ	Ħ	1	1	'n	١	1	1	1	1	•		
বিপতিত । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	3	ভা	1	1	1	t	1	1	i	1	Ħ	Ħ	Ħ		
জপচিত্র । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			t	1	1	t	ı	1	ŧ	1	8		R		
উপচিত্র । ॥ । ॥ । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥		ı	1	N	1	1	ı	*	ħ	8	ı	. 6	ŧ		
জ্প্লবজনিতা। । । । । । । । । । । । । । । । । । ।		,													; ;
ক্ষানিতা । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	1			1	17	1	1	đ	. !	ı	ı	ł	•		
নির্দেশনা । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•		١.	ı	1		•	1	•	1	Ħ	•	ſ		
সাজ্ৰপদ ॥ । । ॥ ॥ । । । ॥ ।  সাজা ॥ । ॥ । ॥ । ॥ । ॥ । ॥ ॥  ইন্দিরা । । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  মানতীমালা ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  হেন্দোং বৃত্তং পিলল)  ইন্টোমান প্ং) অন্ন: স্তোমা যক, যজং। ক্ষত্রেগৃতি যজ্ঞের উভন্ন কিলে কর্ত্তরা যজ্ঞভেদ। "ক্ষত্রেগৃতিং" (কাত্যাং প্রৌং স্বাং তিলাং ক্রিটামন্তোভিটোমে (কাত্যাং প্রাং ) একে তং ক্ষত্রন্তিং উভন্নতঃ ত্রিটোমন্ত্র্যাতি টোমে কুর্বৃত্তিং (বৃদ্ধ বাং )  ইন্তি (পুং) অনু চন্তেন্ন তিষ্ঠিত স্থাক অবাবেত্যাদিনা যজং। চক্রত্র বিভাগে চক্র্ত্রেগ্রহ্বিত্তং রলং (সামন)  ইন্তিন্ (নিত্র) ত্রের্ বিদ্যাদানমন্তের ভা-বাং ইনি স্বামাদিছাং ব্রং। বিদ্যাদি শীলযুক্ত, বিদ্যাদান ও যক্তর্কে। "উৎক্রান ক্লেভাক্তিনং" (ক্রম্বুং ২০০।১৪) 'ত্রির্ বিদ্যাদির্কিতং শীলব্দ্তং (বেদ্দীল)  ইন্তং শীলব্দ্তং (বেদ্দীল)  ক্রেন্ন ব্রিনা প্রারং ত্রেরক্সন্ত হি নির্বণেৎ।"			1	1						ı	1	-			
ফুতা ॥ । ॥ । ॥ । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥				ū	1			1	D	n	1		1		
ইন্দিরা । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			-	ł					1						
দমনক । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			I	1								ı			
মালতীমালা ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥			!	1					а			!			
ছেলো বৃত্ত পিলল )  ইন্টোমন গ্ৰুণ আয় স্থোমা থকা, যজা। ক্লেন্ত্ৰ যজ্ঞের উভয়নিকে কর্ত্তবা যজ্ঞভেদ। "ক্লেন্ত্ৰপ্তিং" (কাত্যাণ প্রৌণ কর্ত্তবা যজ্ঞভেদ। "ক্লেন্ত্ৰপ্তিং" (কাত্যাণ প্রৌণ ১৯ কর্ত্তবাতঃ একে জিটোমন্ড্রোভিটোমেনী (কাত্যাণ প্রেণ ১৯ পেই) একে তং ক্লেন্ত্রপ্তিং উভয়তঃ জিটোমন্ড্রোভিটিয়েন ক্রিপ্তিং (দং বাণ )  ইন্ত্রি পেই) জিমু চন্তেন্ত্র ভিন্তিত স্থাক অবাবেত্যাদিনা বছং। চক্রন্তর স্থিত রখা "জিল্লাং বাং হরে ছহিতাক্রহন্ত্রপং" (ক্র ১০০৪) 'জিল্লু বিদ্যাদানবজ্ঞেনু স্থা-বাণ ইনি স্বামাদিতাৎ বছং। বিদ্যাদি শীলযুক্ত, বিদ্যাদান ও যজ্ঞ্জুক্ত। "উৎক্রি ক্লেভান্তিলিং" (ক্রেম্বুণ্-০০।১৪) 'জিন্তু বিদ্যাদিয়ু হিতং শীলবন্ত্রং (বেদ্দীপ)  ক্রেম্বুণ (ব্রুণ প্রা) জি বারার্থে স্ত্র্ জিনাক, তিনবার।  ক্রেম্বুণ (ব্রুণ প্রা) জি বারার্থে স্ত্র্বিরক্তে ছি নির্বণেৎ।"				1					1	7					
ত্রন্থের প্রত্যা বিষয় হিল্প বিষয়						-		ti	Ħ	•		0	R		
উত্যদিকে কর্ত্তরা যজ্ঞভেদ। "ক্ষত্রপৃতিং" (কার্ত্যাণ শ্রেণি ১৫০৯) "তম্ব্যতঃ একে জিটোমন্সোভিটোমো" (কার্ত্যাণ শ্রেণি ১৫০৪) 'একে তং ক্ষত্রবৃতিং উভয়তঃ জিটোমন্সোতি- টোমো কুর্বস্তি' (সং ব্যাণ) ইচ্চ (পৃং) জিমু চল্লেমু ভিষ্ঠিত স্থান্ক অব্যান্থভাদিনা বহুং। চক্রত্রর স্থিত রপ। "জিষ্ঠং বাং হুরে ছহিতারুহ্মেপং" (বক্ ১০০৪) 'জিষ্ঠং চক্র্ত্রেয়েহবস্থিতং রণং' (সামণ) ইচন (নিজ) জিরু বিদ্যাদানমক্ষেত্র স্থান্থণ ইনি স্ব্রামাদিছাৎ বহুং। বিদ্যাদি শীল্মুক্ত, বিদ্যাদান ও মজ্জ্মুক্ত। "উৎ- ক্ননি ক্লেডাফিলিং" (জুক্মক্ত্ণেত।১৪) 'জিরু বিদ্যাদিমু হিতং শীল্বস্তং' (বেদ্দীপ)  স্থা) জি বারার্থে হুচ্। জিবার, তিনবার। "শনেন বিধিনা শ্রাদ্ধং জিরক্স্ত হি নির্বণেও।"													c.		
হল্প তম্ভয়ত: একে ত্রিষ্টোমন্ত্রাভিষ্টোম্ন (কাডাণ শ্রেণ ১২।২৪) 'একে তং ক্ষত্রন্ধিং উভয়ত: ত্রিষ্টোমন্ত্র্যাতি-টোম্ন কুর্বন্তি' (সং বাণ )  এই পেং) ত্রিষু চক্রেরু তিইন্ডি স্থাক অবাবেত্যাদিনা বহুং। চক্রের হিত রথ। "ত্রিইং বাং হরে ছহিতাক্ষ্য্রথং" (বক্ ১।৩৪।৫) 'ত্রিইং চক্রেরেংবহিতং রণং' (সামণ )  হর্তন্ (নিজ) ত্রিরু বিদ্যাদানম্বজ্রেরু ভা-বাণ ইনি স্থ্রামাদিছাৎ বহুং। বিদ্যাদি শীলযুক্ত, বিদ্যাদান ও যক্তযুক্ত। "উৎ- ক্রনি ক্লেভাত্রিষ্টিনং" (ভক্রযক্ত্ং-৩০।১৪) 'ত্রিরু বিদ্যাদিমু হিতং শীলবন্তং' (বেদ্রাণ )  মৃ (অয়া) ত্রি বারাধে স্ক্। ত্রিবার, তিনবার।  শ্বনেন বিধিনা আদ্বেং ত্রিরক্ষত হি নির্বণেও।"															
প্রেণ ১ থাং ৪) 'একে তং ক্ষেত্রবৃতিং উভয়তঃ ত্রিষ্টোমজ্যোতি- টোমৌ কুর্বস্তি' (সং বাণ )  ত্রিষ্ঠ (পুং) ত্রিমু চক্রেব্ তিষ্ঠিতি স্থাক অবাবেতাাদিনা ববং। চক্রত্র স্থিত রখা "ত্রিষ্ঠং বাং হুরে ছহিতারুহল্লখং" (বক্ ১ ৩৪। ৫) 'ত্রিষ্ঠং চক্রেত্রেয়েহবস্থিতং রণং' (সামণ )  ত্র্তিন্ (নিত্র) ত্রিবু বিদ্যাদানবজ্রেবু ভা-বাণ ইনি স্ক্রামাদিছাৎ বহং। বিদ্যাদি শীলযুক্ত, বিদ্যাদান ও যক্তযুক্ত। "উৎ- ক্লিনি ক্লেভালিটিনং" (শুক্রবজুণ ৩০।১৪) 'ত্রিবু বিদ্যাদিরু বিতং শীলবস্তং' (বেদদীপ)  ক্রেবা বিধনা লারং ব্রেরক্স হি নির্বণেৎ।"															
(शेर्य) क्सीख' (म॰ वाा॰)  क्रिक्ठं (भूः) जिसू ठटक्व ् जिक्ठे जि खां क क्रवार्य ज्ञानिना  वदः। ठक्क वर्ष विक्ठं तथा "जिक्ठेः वाः एरत इहिज क्रव्यथः" (बक् २१०८१) 'जिक्ठं ठक्क ज्ञार व्यवस्य विक्र द्वार ' ( मामन )  क्षेन् (लेक) जित्र विनामान पटक्क यू छा-वा॰ हेनि स्वामानिषा  वदः। विनानि नीन युक्त, विनामान ७ वक्क युक्तः। "छेद-  क्निन क्लक जिक्ठिनः" (क्रविक् ००। १८) 'जित्र विनानि स्  विक्तः मीनवसः' ( दिनतीन )  म् ( अरा ) जि वादार्थ स्व । जिवात, जिनवात ।  "स्तन विधिना आदः जित्रक्ष हिनिर्वापः।"															
किष्ठ (भूर) विष् ह हिंद्य कि कि श्री-क व्यवादिका मिना वयः। हिंद्य इटिंग्ड इस्ट इस्ट इस्ट इस्ट इस्ट इस्ट इस्ट इस्ट								19:	હ	9 ¥ 3	);	ା ଏହ	डा ग८	<b>ध्</b> र)।।	9.
वरः। ठळ्ळत्र विख तथं। "जिक्ठेः वाः एरत हरिकाक्ष्रस्यथः" ( कर् २।०८। ) 'जिक्ठेः ठळ्ळाराश्चित्रिकः तणः' ( मामण )  छिन् ( तिख ) जित्र विमामानयर्क्षत्र छा-वाः हैनि स्वामामिषाद  वरः। विमामि नीनयुक्त, विमामान ख यळ्युक्तः। "छेद- क्नि क्लाकाखिमः" ( क्ष्यक्र्यक्र्-००। २८ ) 'जित्र विमामिस् विकः भीनवसः' ( दबम्मी भ )  म् ( अरा ) जि वात्रार्थि स्त्। जिवात, जिनवात ।  "अरनन विधिना आदिः जित्रम्य हि निर्वर्णदः।"	78	( 919 ) ( 919 )	પ્લ જિ	( T	E 7	)(°	) fræ	i c.		<b>794</b> 9	_	, .	+	=1460	
(बरु ১।०৪।६) 'जिर्डः ठळ्ळादाश्विष्ठः तणः' (माप्तम) छिन् (निज) जित्र विमामिनवर्ष्ठित्र छा-वा॰ हेनि स्वामानिषाद  विदः। विमानि मीनव्रकः, विमामिन ও यक्कव्कः। "उद- क्निन क्लाठाखिनः" (स्क्रविक्॰००।১৪) 'जित्र विमानिव् हिन्दः मीनवस्थः' (विमनीभ)  म् (अरा) जि वातार्थं स्र्। जिवात, जिननात्र।  "अरनन विधिना आदिः जित्रमञ्ज हि निर्वर्णदः।"	ষ <b>ত</b>	. 1 5.34 1 5.34	্ বৈষ	ায় ফি	<b>3</b> 2	19 1 19 1	"fi	91 V	o at						
ार्छम् (निष) वित् विमानानवर्ष्किय् छा-वा॰ हैनि स्वामानिषा९  वदः। विमानि मौनयुक, विनानान ও यक्कयुकः। "छेद-  क्नीन क्लाठाखिनितः" ( कुक्यक्॰००। १८८) 'वित् विमानिष्  विठः मौनवस्थः' ( दननीन )  म् ( खरा) वि वादार्थ स्ह। विवाद, जिनवाद्र।  "स्तन विधिना आदिः विद्यक्ष हिनिर्वर्णः।"															4.
ষ্য:। বিদ্যাদি শীলযুক্ত, বিদ্যাদান ও যক্তযুক্ত। "উৎ- ক্ণনি ক্লেডালিটিনং" ( শুক্রম্কু • ৩০।১৪ ) 'ত্রিরু বিদ্যাদিরু  হিতং শীল্বস্তং' ( বেদ্দীপ )  শ্ ( অবা ) ত্রি বারাধে সূচ্। ত্রিবার, তিন্বার ।  "অনেন বি্ধিনা আছেং ত্রিরক্ত হি নির্বপেৎ।"															ste
ক্ণনি ক্লেডাল্লিটিনং" ( শুক্লবজু • • ৩ - । ১৪ ) 'লিষু বিদ্যাদিয়ু ফিডং শীলবন্ধং' ( বেদদীপ ) • • • • • • • • • • • • • • • • • •															
ষ্টিং শীলবস্তং' (বেদদীপ )  স্ ( জ্বা ) তি বারার্থে স্ত্। তিবার, তিনবার।  "জনেন বি্ধিনা আলেং তিরেক্স ছি নির্বণেৎ।"															
স্ ( অবা ) তি বারাধে হচ্। তিবার, তিনবার। "অননেন বিধিনা আছেং তিরকাক হি নির্বপেৎ।"	<b>হি</b> ব	5: मीन <b>द</b> ः	g;'	( c	, i	' 1প	) )	18			,	,,	•	•	1 4
^{"জনেন} বিধিনা আদ্ধং তিরক্ষ ছ চি নির্বপেৎ।"								f	ভ্ৰব	<b>र</b> इ.	তি	বেধ	<b>.</b> .		
		"व्यानन	वि	धेना	3	্ কং	্তি ত্রি	दक्तर	9 E	i Fa	 বিশে	ا ۱	,		
[ ME GIVE) ]	ŧ		•		•	•			' '	•				ર⊭১	)

```
জিদংবৎসর (क्री) জিগুণিড: দংবংসর:। জিবর্ষ।
 [खिवः वरुगत्र (मथ ।]
ত্রিসন্ধি (স্ত্রী) তার সম্বোহস্তরকালা বিকাশে হস্তা:। পুল-
 ८७०, भर्याच माक्षाकृष्यमा, भक्षिवली, मनाकना, जिमकाकृष्यमा,
 কাণ্ডা, স্কুমারা, সন্ধিলা। এই পুশ তিবিধ-রক্ত, স্তি ও
 অসিত। ইহার গুণ ফুচিকর, কফ, কাস ও তিলোবনাশক।
 (রাজনি°)
জিস্ফার (ক্লী) তিম্বনাং সন্ধানাং স্বাহারঃ, আবস্তো বেভি
 পাকিকী ক্লীবভা। পূর্বাহু, মধ্যান্ত ও অপরাহু কাল, সন্ধ্যান
 वन, जिबि विमन्तानातिनी इहेरन भूजनीम अर्थाए रमहे
 তিথিতে কাৰ্য্যাদি প্ৰশন্ত।
 "জিসদ্ধাব্যাপিনী বা জু সৈব পূজা नবা ভিৰি:।
 ন তত্র মুগ্রাদরণমন্যত্র হরিবাসরাৎ ॥" (ভিথিত ব)
 किनकारे अहेजन भगत रहा।
জিলকাকুত্ব (জী) জিলকাং ক্রমং বতাঃ। জিলকিকুত্বম,
 ফাগুনিয়া ফুল।
ত্রিসন্ধাব্যাপিনী (জী) ত্রিসন্ধাং ব্যাগ্রোভি বি-আপ-ণিনি
 তীপ্। যে তিখি তিসন্ধা কাল অর্থাৎ পূর্বাহ্ন, মধ্যাক ও
 অপরাহ্রকাল ব্যাগিয়া থাকে।
ত্রিসপ্তন্ (তি) তিগুণিতাঃ সপ্ত। একবিংশতি সংখ্যা, ২১।
 এক বিংশতিসংখ্যেয়।
 "जिमश्रक्ष: পৃথিবীং বো क्षिनाय ভূগু हम: ।"(ছविव॰०•৪ष्म॰)
 ক্রিসপ্তাতি (স্ত্রী) ত্রাধিকা সপ্ততি:। তিন অধিক সপ্ততি, ৭৩।
 ত্রিসপ্ততিতম (ত্রি)ত্রিসপ্ততিপূরণে তমপ্। ত্রিসপ্তির পূরণ।
 ক্রিসম্ (ক্রী) ত্রীণি হরীতকীনাগরগুড়ানি সমানি যতা। ১ সম-
 পরিমাণে হরীতকী, নাগর ও গুড়। (রাজনি) ২ বর্ষতায়।
 ত্রিরর (পুং) ভিভি: জীয়তে স্তপ্। কুশর।
জি সরক (क्री) बिवातः সরকং, ত্রমাণাং সরকাণাং শীধুপানানাং
 সমাহার: বাং পাতাদিখাৎ ন তীপ্। তিবার মধুপান।
 "প্রাতিভং ত্রিদরকেন গতানাং" (মাঘ)
 ত্রিস্প (পুং) ত্রয়াণাং দত্তবজ্ঞমসাং দর্গ:। দত্ত রজ ও
 ভমোগুণের সর্গ, কৃষ্টি। "ঘত্র ত্রিসর্গো মৃষা" (ভাগ ১।১।১)
 ত্রিস্বন [তিষ্বণ দেখ।]
 ত্তিসবনস্মায়িন (পুং) ত্রিসবনে ত্রিকালে লাজীতি লা-ণিনি।
 खिकानमात्री, बाहात्रा ध्याङः,मगाङ् ७ मात्रःकार्तम मान करत ।
 ত্তিসামন (পুং) ত্রীণি সামানি স্ততিগাধনানি ষ্ঠা। ১ পর্মেশ্বর।
 "ত্রিদামা দামগ: দাম ত্রিবর্ণো ভেষজ: ভিষ্কু।" (বিষ্ণুস•)
```

'ত্ৰীণি বেদত্ৰতসামাখ্যানি তৈন্ত্ৰিসামভিঃ স্বতন্ত্ৰিসামা॥' (ভাষ্টু) 'ক্ষণিতাই মিত্ৰ ় পতাই স্বংগতাই' ইত্যাদি এই জিনাম। ত্রিসামা (খ্রী) ত্রিসামন্টাপ্। মহেক পর্বত হইতে নিঃস্ত নদীবিশেষ। (ভাগং এচনাই৮)

ত্তিসাহসু (তি) ত্রীণি সহজাণি পরিমাণমন্ত অণ্ উত্তরপদ-বৃদ্ধি:। তিনু সহস্র দারা পরিমিত। ত্রিমাং তীপ্। "তিসাহজা-জ্মা" (কাত্যা" শ্রো॰ ১৭।৭২৩) 'উত্তমা চিতিং ত্রিসাহস্রী লোকম্পূণানাং ভবতি' (কর্ক)

ত্রিসিত। (খ্রী) ত্রিগুণিতা সিতা। ত্রিশর্করা। (রাজনিং)

ত্রিসীত্য (ক্রী) ত্রিবারং শীতরা সহিতং বং (নৌবরো ধর্মেতি। পা ৪।৪।৯১) বারত্রর ক্রষ্ট ক্ষেত্র, যে ভূমি তিন বার কর্ষিত হইরাছে।

ত্রিস্থান্ধি (ক্লী) ত্রয়াণাং স্থগনিত্রব্যানাং সমাহারঃ। ত্রিজা-তক, তুল্যপরিমাণ এলাচ, দাক্ষচিনি ও তেজপাত। "অংগ্রাপত্রসংযোগে তিস্কুগন্ধি ত্রিজাতকং।

নাগকেসরসংযুক্তং চতু জাতকমূচাতে ॥" ( অখবৈদ্যক ১২।৭৩)

ত্রিপূপ্ণ ( পুং ) ১ বছ ঋকের বেদভাগ। ২ তৎরত। ৩ এই
. ব্রতধারী পুরুষ। "ত্রিণাচিকেতঃ পঞ্চাহিত্রিস্থপণ যড়পবিৎ।"
(মহু ৩০১৮৫) 'ত্রিস্থপণ বহুচাং বেদভাগঃ, ডদ্বতঞ্চ,
তদ্যোগাৎ পুরুষেহিপি ত্রিস্থপণ:।" ( কুলুক )

ত্রিন্তবর্চ ক্ ( পং ) আঙ্গিরস চ্যবনরূপ অগ্নি।

"অগ্নিরালিয়সইশ্চব চাবনক্সিস্থবর্চকঃ।" (ভারত বং ২১৯ ঋণ) ত্রিসৌগন্ধ্য [ ত্রিস্থান্ধি দেখ। ]

তিনৌপর্ণ (ক্রী) অপর্ণেন ঋষিণা ক্রতং অণ্ রতৌ তিশক্ষ হৃদ্ধতা উত্তরপদর্দ্ধঃ। অপর্ণ ঋষি আচরিত ব্রতভেদ, মহর্ষি স্থান কঠোর তপত্যা, নিয়ম ও দমগুণ প্রভাবে অমং ভগবান নারায়ণের নিকট হইতে এই ধর্ম প্রাপ্ত হইয়া প্রভাহ তিনবার করিয়া পাঠ করিতেন। এই নিমিত্ত পতিতেরা এই ধর্মকে তিনৌপর্ণ কহিয়া থাকেন। এই ু ধর্ম শ্রেদ মধ্যে কীঠিত আছে, ইহার অমুষ্ঠান নিতান্ত ক্রমর। জাগংগ্রাণ স্মীরণ, মহর্ষি স্থান ইইতে এই সনাতন ধর্ম লাভ করিয়াছিলেন। পরে স্মীরণ এই ধর্ম বিঘসানী মহর্ষিদিগকে এবং উহারা মহাসমুদ্রকে প্রদান করেন। তংগরৈ পুনরায় ঐ ধত্ম ভগবান্ নারায়ণে লীন হইয়া মায়। (ভারত শান্তিং ৩৫০ অং)

স্থাণা এব স্থাৰ্থে অণ্, ত্ৰয়: সৌপণা: যত্ৰ। মন্ত্ৰ জিক,
খাংগুদেৱ নিম্নলিখিত মন্ত্ৰ তিনটার নাম ত্ৰিসৌপণ।
"চতুক্পদা যুবতি: স্থাপেশা স্তপ্ৰতীকা ব্যুনানি যত্ত্ব।
ডেখাং স্থাণা বৃষণা নিষেদতু হত্ত্ব দেবা দখিলে ভাগুধেরং ১৩
এক: স্থাণ: সসমূজ মাবিবেশ স ইনং বিখং ভ্ৰনং বিচটে।
ভং পাকেন মনসা পশ্ৰমন্তিত্ত্বং মাতা হল স উ রেছিল মাতরং 18

সুপৰ্ণ বিপ্ৰা: ক্ৰানো বচোভিনেকং সকং বছধা ক্ষুণ্ডি;
ছন্দাংসি চ দ্ধভো অধ্বনেৰ গ্ৰহান্ত সেমিত মিমতে বাদ্ধ।
( পাক ১০।১১৪।১৯

এক যুবতী নারী আছেন, তাহার মন্তকে চারিংগ তাহার মূর্ত্তি স্থলার ও ন্নিগ্ধ, তিনি উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট বস্ত্র পরিখ করেন, ছই পক্ষী তাহার উপর উপবেশন করে, তথায় 🙉 তারা ভাগ প্রাপ্ত হন। (এই স্বলে নারী শব্দের অর্থ যজ্ঞ। ইহার চারিদিকে মুত থাকাতে ন্নিগ্ধ আছে, ইহাকেই 👍 বলা হইয়াছে এবং যজ্ঞ সামগ্রীই উত্তম উত্তম বস্তু। ইয়া ছুই পক্ষী যজমান ও পুরোহিত, স্থপর্ণ অর্থাৎ জীব ও প্রমা हेशांट निषक्ष चाहिन, এहे दिन्हीट व्यक्षांति हारा ভাগধের অর্থাৎ ভাগ প্রাপ্ত হন। (৩) এক স্থপর্ণ (পর্বা সমুদ্রে প্রবেশ করিল, তিনি এই বিশ্বভূবন অবলোঃ করেন, পরিণত বুদ্ধি ঘারা আমি তাহাকে দেখিয়াছি, রি নিক্টবর্জিনী মাতাকে লেহন করেন এবং মাতাও তায়া লেহন করেন। পক্ষী এই ফলে প্রাণবায়ুবা পরমাত্মা, ফ্ অর্থাৎ ব্রহ্মাঞ, তিনি এই বিখ, সকল ভূবন এবং ভূতল বিশেষ রূপে স্থাপিত করেন। মাতা অর্থে বাক্য। এ ना थाकि त्व वाका थाकि ना। (8) सूपर्ग এक ই आफ প্তিভগ্ৰ কল্পনা করিয়া তাহাকে অনেক রূপে 🕫 করেন। ইহারা যভ্তের সময় নানাপ্রকার ছন্দ্র উজা कर्त्रन धवः चान्म मःशाक माम्याख मःशायन करान সুপূৰ্ণ অৰ্থাৎ প্ৰমান্মা একই, তৰ্জ্ঞ লোক সকল গগ ছন্দও স্তোতাদি ছারা নানা বলিয়া থাকেন। জি দেবতার নাম এক আত্মা। (৫) ( সায়ণ)

৩ পরমেশ্বের নাম ভেদ।

"জিসৌপর্ণ তথা এক যজুষাং শতরু জিরং।" (ভারতশা বিচ্ছ অনেক ক্লে 'জিসৌবর্ণ' এই পাঠ আছে, ইহা নিশি প্রমাদ, এই কন্ত এই শব ধৃত হইল না।

ত্তিসংশ্ব (ক্নী) তার: ক্ষাইব অবরবা যন্ত। জ্যোতি:শার।
নানা প্রকার ভেদবিবরক জ্যোতি:শার তিন কর্ম।
প্রতিষ্ঠিত। সংহিতাক্ষর, তক্র ক্ষর ও হোরা কর, জ্যো
শারের এই তিনটা ক্ষর। যাহাতে ক্যোতি:শারীর সর্
বিবরণ থাকে, তাহাকে সংহিতাক্ষর করে। যাহাতে গা
ঘারা প্রহাতি নির্মণ্ড হয়, ভাহাকে ত্রক্ষর এবং যালা
অধ্বিদিশ্বর অর্থাৎ যাত্রা বিবাহ নির্মণ্ড হইরাছে, ভার্টি
হোরাক্ষর করে। (বৃহৎসা ১)৯)

ত্তিস্তন (ক্লী) তায়: স্তনা দোহা বত ত্তি তাহসাধ্য বলা প্রথম উপসদে দোহ তিম্বনক্ষণ এতবিশেষ।

Butther character

° ত্রিন্তনং প্রথমারাং দোহরতি'' (কাড্যাণ প্রৌণ ৮।২।১)

ব্রেন্তনী (স্ত্রী) স্ত্রয়ঃ ন্তনা অভাঃ ত্রীপ্। রাক্ষসীভেদ,
ব্রহ্ রাক্ষমীর তিনটী ক্রন ছিল।

"ত্রিস্তনীমেক পাদাঞ্চ ত্রিজটামেক লোচনাং।" (ভারত বং ২৭৯ জং) ২ গানতী। (দেবী জাগং ১২।৬।৬৮)

ব্রিস্তাবা (ব্রা) বিশুণিতা তাবতী বেদিঃ অচ্ সমাসাস্ত টিলোপৌ সমাসত নিপাত্যতে (বিস্তাবা ব্রিস্তাবা বেদিঃ। পা হা৪.৮৪।) অখনেধ যজের অঙ্গ বেদিভেদ, বেদির স্বাভা-বিক যে পরিমাণ, তাহার, ব্রিশুণ অধিক।

ত্রিস্থলী (ত্রী) এরাণাং গরাকাশীপ্ররাগন্ধপঞ্চানাং সমাছারঃ। কানী, গরা ও প্রয়াগন্ধপ তিনটী স্থান। এই তিন স্থানমাহাত্ম্য অবলম্বন করিয়া নারারণ ভট্ট ও ভট্টোঞ্জি ত্রিস্থলীসেতু নামে এক একথানি সংস্কৃত গ্রন্থ প্রণায়ন করিয়াছেন।

ত্রিস্থান (জি) ত্রীণি স্থানায়স্ত। > স্বর্গ মর্ত্তা ও পাতালস্থিত প্রমেশ্বর। ২ জাগ্রাদাদি অবস্থাতায়দাকী জীব, জাগ্রৎ, স্বপ্র ও স্বৃধ্ধি এই অবস্থাতায় যে জীবের আছে।

ত্রিসোত্স্ (রী) ত্রীণি স্বোতাংদি ষ্ঠাং, তিষু স্থানেষু পর্ণমর্তাগতালেষু স্বোতো ষ্ঠাং। গঙ্গা।

"অঙ্গুঠ নিষ্ঠ্যত মিবোর্জ মুটেচ স্থিসোতসঃ সস্তভধারমন্তঃ ॥" ( মাব ৩।১০ ) ২ নদীভেদ। (মেদিনী) [ত্রিস্রোভা দেধ।] ত্রিস্রোতা, উত্তর বালালার একটা বৃহৎ নদী। সামাগুত: বিভানামে থাতি। তিকাতের অভারতি চতামুছদে ইহার উৎপত্তি হইয়াছে, আবার সিকিমের মধ্যে কাঞ্চনজভ্যা শুঙ্গেও ইংার আর একটী উংপজিন্থান পাওয়া যায়। দার্জিলিকের উত্তর্গীনায় এই নদী সিকিম ছাড়াইয়া ইংরাজরাজতে প্রবৈশ করিরাছে। কিয়দূর দার্জিলিকের সীমা স্বর্মণ থাকিয়া বৃহং রঞ্জিং নামক নদের সহিত মিলিত হইয়াছে। এই নণের সহিত মিলনের পর তিস্তা দক্ষিণমূপে দার্জিলিলের পার্বত্যপ্রদেশ বহিয়া জলাইওড়ি জেলায়, প্রবেশ করিয়াছে; পার্কতা প্রদেশে ভিস্তার শালের ডোলা চলে। ইহার তীরে পাহাত্তে শালবনও অনেক। যেথানে তিস্তা শিবকগোলা নামক গিরিবঅ দিয়া সমতল ভূমিতে পড়িতেছে, সেখানে তিস্তার বিস্তার ৭।৮ ^{*}শত গজ। এথানে ৫• वाकाहरमञ्ज त्नोका ठलिटा भारत । नमीशर्स्ड वर्फ वैष् भाषत ^{থাকার} স্থানে স্থানে নৌকার পক্ষে বড়ই বিপজ্জনক। ভরাই ছাড়াইরা অলাইগুড়িতে, তৎপরে বল্লীগঞ্জৈর নিকট ^{*} কোচবিহার রাজ্যে প্রাবেশ করিয়াছে এবং জয়সিংহেখনের নিক্ট কোচবিহার পরিভ্যাগ ক্রিরা বাক্নণীগ্রামের ৬ মাইল উত্তরে রলপুর জেলায় প্রবাহিত হইয়াছে। রলপুরে ভবানীগঞ্জ উপবিভাগের মধ্যে চিলমারীথানার নিকট বাগওয়া লামকছানের . নিরে ইহা অন্ধপুত্রে পড়িরাছে। রলপুরে ইহার দৈখা ১১০ মাইল, বিস্তার ৬ হইতে ৮ শত গল। ইহার লোত বড় ধর। সকল সময়েই রলপুরে এই নদীতে শত মণের বোঝাই নৌকা যাতারাত ক্রিতে পারে। কেবল নীতকালে অন্ধপ্তের মোহানার কাছে চৌরাবালী ও বালীর চড়ার বড় বিপদ্ঘটার। ভিস্তার গর্ভ বাল্মর। ভিস্তার দক্ষিণাংশকে কাপানিয়া হইতে নলগঞ্জ হাট পর্যান্ত পাুগ্লানদী বলে।

তিস্তার জলফোত বড় শীঘ্র শীঘ্র পরিবর্ত্তিত হয়। এইরূপে ইহার অনেকগুলি প্রাতন গর্জ ছেটি তিন্তা, বুড় তিন্তা, মরা তিন্তা নামে অভিহ্নিত হইয়া আদিতেছে, এই দক্দ খালে এখন কেবল বর্ষাকালে যাতারাত চলে। মেজর द्रतर्गालत **क**तीत्रत्र ममग्र (১१७৪—१२ धृष्टीस्म) जिस्तात প্রধান স্রোত দক্ষিণমূথে বাহিয়া দিনাজপুরের আত্রেয়ী নদীর সহিত মিলিভ হইয়া গলা বা প্লায় পড়িত। ১১৯৪ সালে বা ১৭৮৭ খৃষ্টানে বৃদ্পুরে যে মহাপ্লাবন হয়, সেই সময় ভিতা উক্ত পথ ত্যাগ করিয়া দক্ষিণপূর্বমুথে উহারই একটা শাথা নদীতে ভর করিয়া সমস্ত দেশ ভাগাইয়া ঘাট, মান্স প্রভৃতি কুজ নদী ভরাইয়া ব্লপ্তে আদিয়া পড়ে। ইহার পর আবার একটা পরিবর্ত্তন হয়। বর্ত্তমান শতাকীর প্রারম্ভে ইহা একটা বিশক্রোণী বাঁক পরিত্যাগ করিয়া ঠিক সোজা আসিয়া বর্ত্তমান পথ অবলম্বন করিয়াছে। এখনও रयकार नानावात वानुकामय हत्रश्रीत धराम कति छिए। ভাহাতে আশকা হইতেছে যে হঠাং কবে কোন দিকে ভাষা-ইয়া দিৱব। ইহার পশ্চিমতীরে ঘোড়ামারা নামক বৃহৎ গঞ্জ যেরূপ প্রতি বংসর পশ্চাতে সরিয়া যাইতেছে, তাহাতে • শীঘ্ৰ উক্ত গ্ৰামের প্ৰকৃত অবস্থিতি লোপ পাইবে বোধ হয়। তিঁন্ডার এইরূপ পরিবর্ত্তনে ইতত্তরবঙ্গরেল ওয়ের ধারে ভোমর নামক স্থানে হাটবাজার দিন দিন বাড়িভেছে।

তিতার এইরূপ হঠাৎ গতিপরিবর্তনেই রঙ্গপুর এত নদী-বছল হইরা পড়িয়াছে।

দার্জিলিকে তিন্তার প্রধান শাধার নাম রীক-চু, রোলি, রহৎ রীজং, রকজো, রায়েক ও শিবতা। এখানে তিন্তার জল সম্ভবং নীলবর্ণ, সমরে সময়ে ইহা জ্গাবং খেত হইয়া উঠে। জ্বাইগুড়িতে তিন্তার অনেক উপনদী ও শাধানদী আছে, তাহারা তত প্রবল বা প্ররোজনীয় নহে। ইহার মধ্যে ঘাঘট ও মান্স বিধ্যাত।

ইহার সংস্কৃত নাম ত্রিফোতা বা তৃষ্ণা। কালীপুরাণে ইহার উৎপত্তির বিবরণ এইরূপ শিখিত আহাছে—যে কোন সমন এক শিবভক্ত জন্মর ভগবতীকে উপেক্ষা করার ভগবতীর সহিত তাহার যুদ্ধ হন। যুদ্ধে কাতর হুইরা জন্মর তৃঞ্চাত্র হয় এবং শিবের নিকট জুল প্রার্থনা করে। শিব ভগবতীর বক্ষ হইতে ছগ্পধারা রূপে অন্তরকে পানীর প্রদান করেন। অন্তরের তৃঞ্চা দূর হইলেও দে ধারা ভকাইল না, সেই ধারা ত্রিধারার বিভক্ত হইরা ত্রিপ্রোতা রূপে পৃথিবীতে প্রবাহিত রহিল।*

ক্রিসোতসী (ত্রী), ত্রীণি প্রোতাংসি সন্ধি অস্তাং। শ্রোত 
ত্রয়য়ুক্ত নদী ভেদ, এই নদীর তিনটী প্রোত আছে। গলা।
ক্রিম্পুশা (ত্রী) ত্রীণি চাক্রদিনানি এক স্মিন্ সাবনে দিনে
স্পাতি স্পান্ক। একাদশীজেদ, যে একাদশীর পূর্বাদিনে
দশমী এবং পরদিনে অন্ন মাত্র একাদশী, পরে বাদশী ও
রাত্রি শেষে ত্রয়োদশী হয়, তাহাকে ত্রিস্পা কহে, অর্থাৎ
একাদশী, বাদশী ও ত্রয়োদশী এই তিন তিথি এক সাবন
দিনে হইলে ত্রিস্পা হয়। এই দিন অতিশয় পুণ্যকর।
ইহাতে রান দাগাদি বিশেষ কলপ্রদ। শ্রদা পূর্বাদিনে
দশমী পরদিনে চৈকাদশী অল্পা।

· · • कामुनी चाननी ह ताकित्मत्य कत्मांननी।

তত্ত্ব ক্রেতৃশতং পুণ্যং ত্রেষাদখান্ত পারয়েৎ॥"(একাদশী ভবধুত বচন॰) এই একাদশী করিলে ব্রহ্মছত্যার পাতক বিনষ্ট হয়। এই একাদশীতে ত্রেষোদশীর দিন পারণ করিবে।

ত্রিস্নান (র্রী) তিষু কালেষু স্নানমত । ত্রিকাল স্নানাক্ষত্রত ভেদ, এই স্নান বাণপ্রস্থাক্ত ও প্রায়দ্ভিতাক, যাহার।
বাণপ্রস্থ অবলম্বন করেন, তাহাদের প্রাতঃ, মধ্যাক্ত ও
সায়াক্ষকালে স্নান করিতে হয়। প্রায়দ্ভিত করিতে
হইলে ত্রিকাল সান কর্ত্বিয়।
◆

ত্রিহল্য (রী) তিবেরং গ্লেন কৃষ্টং হল-বং মৈতজনহলাৎ করণজন্নকর্বেষ্। পা ৪।৪।৯৭) বারত্রস্কৃষ্টক্লেত, পর্যাদ তিখাবাক্ত, তৃতীয়াক্ত, তিশীতা।

ত্রিছায়ণ ( জি ) জয়ো: হার্মনা বয়ো ২স্ত, গজং। ১ জিবর্ষ বয়য় গবাদি। ২ জিবৎসর।

ক্রিহায়ণী (জী) ক্রিহামণ-ভীপ্। তিবর্ব গাভি।

"বংশতর্ঘ্যন্ত ত্রিছায়ণ্যো প্রীন্তাং" (কাত্যাণ শ্রোণ ২২।৯।১৩)
২ জৌপদী, ক্বত যুগে বেদবতী, ত্রেতায় লনকাম্বলা,
বাপরে জৌপদী, ইনিই ক্লফা ও ত্রিছায়ণী।

* এই উপাধ্যানটা হণ্টার সাহেব কালীপুরাবের উপাধ্যান বলিয়া লিখিয়া গিয়াছেন, কিন্তু কালিকাপুরাপে ত্রিভোভার বাদ থাকিলেও এক্সপ উপাধ্যান দেখা যায় না। "কৃতে যুগে বেদবতী বেতারাং কনকান্ধরা। বাপরে জৌপদীচ্ছারা তেন রুফা তিহারণী॥" ( ব্রস্তবৈবর্ত শ্রীকৃষ্ণল্মাণ)

জিত্ত, জিহুত, তীরহুত (সংশ্বত তীরভুক্তি শংলের অপ্রংশ)
১৮৭৪ খুটান্দের শেষ পর্যান্ত জিত্ত ভারতবর্ধের অন্তর্গত বিহার
প্রদেশের পাটনা বিভাগের সর্ব্বোত্তরবর্ধী একটা জেলা ছিল।
বালালার ছোটলাটের অধীনে এত বৃহৎ ও অধিক লোক
সংখ্যাবিশিষ্ট জেলা আর বিতীর ছিল না। ইহাতে মঞ্চঃকরপুর,
হাজীপুর, সীতামাড়ী, দরভালা, মধুবাণী, তাজপুর এই হাট
উপবিভাগ ছিল। তখন ইহার উত্তর সীমা নেপাল রাজ্য,
উত্তরপ্র্বে ভাগলপুর জেলা, দক্ষিণপশ্চিমে মুলের জেলা,
দক্ষিণে গলা নদী, দক্ষিণপশ্চিমে সারণ জেলা বা গণ্ডক ননী,
উত্তরপশ্চিমে, চম্পারণ জেলা ছিল। উত্তর সীমান্ন নেপাল
রাজ্যের সহিত ইংরাজ রাজ্যের সীমানির্দ্ধানণের অন্তর্থাদ,
নদী, ইটকের ও কাঠের ক্ষণ্ডাদি আছে।

১৮৭৫ খুঠাকে ১লা জাত্রারী হইতে এই বৃহৎ জেলাটী
শাসনকার্য্যের স্থ্রিধা ও স্থাবহার জ্ঞা ছইটী স্বতন্ত্র জেলার
বিভক্ত হইরাছে। মজ:ফরপুর, হাজীপুর, দীতামাড়ী এই
তিনটী উপবিভাগ লইরা মজ:ফরপুর নামে ও দরভালা,
মধুবাণী ও তাজপুর এই তিনটী উপবিভাগ লইয়া দরভালা
নামে ছইটী স্লতন্ত্র জেলা হইরাছে। প্রকৃত পক্ষে এখন
বালালা বিহারের মানচিত্র হইতে ত্রিহত জেলার অভিষ
লোপ পাইয়াছে। মজ:ফরপুর ও দরভালা এই ছই জেলার
বিবরণ এখনও স্বতন্ত্র ভাবে সংগৃহীত হয় নাই; স্বতরাং
'ত্রিহত নামেই ইহার যাহা কিছু বিবরণ সংগৃহীত হইল।

১৭৬৫ খৃষ্টাব্দে যথন স্থবা বিহার ইংরাজের হত্তৈ আদে, তথন গলার উত্তরকূলবর্তী স্থান নকল সারণ, চন্পারণ, জিত্ত ও হাজীপুর এই চারিটী সরকারে বিভক্ত ছিল। তথন সরকার জিত্তের পরিমাণ ৫০৫০ বর্গমাইল ও সরকার হাজীপুরের পরিমাণ ৭৮০৫ বর্গ মাইল ছিল, কিব তথন সমগ্র জিত্ত বেলার পরিমাণ ৬০৪০ বর্গ মাইল মাত্র। পূর্বেগ সরকার জিত্ত ও সরকার হাজীপুর এই উত্তরে ১০৪টী পর্যাণ ছিল। এই সকল পর্যাণার নামের তালিকা-পাঙ্রা যার মা, তবে সরকারী কাগজ পত্র হুইতে জ্ঞানা যার বিতথন ভাগলপুর ও মুলের ক্লোলার অধিকাংশ স্থান এই ফুই সরকারের জন্দীন ছিল।

১৭৯৫ খুটান্দে ভাগলপুর ও ম্লেরের অন্তর্গত বালিয়া, ^{মন্} জিল্পুর, বাদেভুগারি, ইমাদপুর, নয়সিংহপুর, কুড়া, গাও^{৭৬,} ক্বথও, নারাদিগর, ছয়, ফয়িয়া, মালক্বিলিয়া, মান্^{নে} গোপাল ও নরপুর এই তেরটা পরপণা বিহত কালেইবীর অন্তর্তু হর; কিছ আবার ১৮০৭ খুটাকে উহাদিগকে বিহত হইতে বিষ্কু করা হয়। ১৮৬৫ খুটাকে দারণের অন্তর্গত পরগণা বাবেন স্থানির বিহতের অন্তর্ভুক হয় এবং ১৮৬৯ খুটাকে গলা নদীর গতি পরিবর্তিত হওরার পাটনার অন্তর্গত ভীমপুর, গ্যাস্পুর, আলিমাবাদ এই পরগণা শুলির কতকাংশ বিহতের অন্তর্ভুক হইল।

ত্তিত জেলার ত্তাগ আধারণতঃ পলি জমী, মধ্যে মধ্যে
নদী আছে, অনেক ছলে বনও আছে; বাঁশঝাড় ও আন্ত্রন্দন বথেই। সমস্ত ত্তাগ জমীর প্রক্ষতি অফ্সারে তিনটী
ভাগে বিভক্ত করা ঘাইতে পারে। দক্ষিণপশ্চিমে হাজীপুর,
বানাগাছা, সরেদা, বিপাড়া, রতি ও গদেশুর পরগণা লইমা
একটী বিভাগ;—ইহার জমী উচ্চ ও দমপ্র জেলার মধ্যে
উর্জরা। তৎপরে ছোট গ্রুক ও বাঘমতী নদীর
আন্তর্গত দোরাব ভ্তাগ,—ইহার জমী নাবাল, বর্ধায় নদীর
প্রাবন হয়; এখানকার প্রধান শস্ত খারিফ। ত্তীয় বিভাগ
বাঘমতী নদীর উত্তরে ও পুর্ক্রে,—এই ছানের জমী নাবাল,
জলা ও জেলার মধ্যে সর্কাপেক্ষা অস্বাস্থ্যকর। হৈমন্তিক
ধান্তই এ অঞ্চলের প্রধান শস্ত।

জনী সভাবত: পলিবিশিষ্ট, কোথাও ককরময়, কিন্তু অধিকাংশঙ্লে মাটির মধ্যে সোরা ও লবণ পাওয়া যায়। জ্নিয়া নামে এক জাতি এই দোরাও লবণ বাছিয়া লইয়া জীবিকার্জন করে।

ত্রিত্তে গলা, বৃহৎ গণ্ডক, বদা, ছোট গণ্ডক এবং তিলগুলা এই চারিটা নদী প্রবাহিত আছে। ইহার মধ্যে গলা, গণ্ডক, ছোট গণ্ডক, বাঘমতী, ছোট বাঘমতী, তিলগুলা ও করাই এই সাভটী নদীতে বৎসরের সকল সময়ে যাভায়াভ চলে, আর কেবল বর্ধাকালে কমলা ও ভাঁহার শাথানদীখিল বলান, ঢাউদ, ঝিম, লাথহাণ্ডাই, পুরাতন বাঘমতী ওবয়া এই কয় নদীতে যাভায়াত হয়।

গলা—শিক্ষারীপুরের নিকট গলানদী এই এজনার দকিণ্দীমারূপে গণা। হাজীপুরের নিকট চাম্তা ঘাটের ক্ষেক কোল উত্তরপূর্ব্বে বাড় নামক স্থানের সম্পূথে গঙক আসিয়া গলার মিলিয়াছে। বর্ষাকাল ব্যতীত অস্ত্র সমরে এ জেলার গলার বিতার অর্দ্ধ কোল মার্ম থাকে, কিন্তু বর্ষাকাল অনেক বাড়িয়া ঘার। সারণ দিয়ারা হইতে গলার একটা খাতাবিক থাল বাহির হইয়া হাজীপুরের নিকট নেপালী মিলিরের নিয়ে গগুকের সহিত মিলিয়াছে। ইহার বিভার এত আর বে ইহাকে কোন রূপে নদী বলা বার না । গলার

যথন জনবৃদ্ধি হর, তথন তীরবর্তী হান সকলেও প্লাবন হর,

আবার গওকের জলও প্রতিক্ষ হইরা তথ্যধ্য গলার

জলও প্রবেশ করিয়া ও তীরবর্তী হান সকল প্লাবিত করিয়া
থাকে। তালপুর উপবিভাগে, প্রতি বংসরই প্লাবন হয়।

গলাতীরে ত্রিহতে কোন বিথাতে হান নাই। বাড়ের সমুধ

হইতে গলা উত্তরপূর্বাসুধে ফিরিয়া বাজিতপুর পর্যান্ত

আসিয়া দক্ষিণপূর্বাসুধে ত্রিকা তাগে করিয়াছে।

গশুক—হাজীপুরের নিকট ইহা গলা নদীর সহিত সংযুক্ত হইয়াছে। এই নদী ছানে ছানে নারারণী ও শাল-গ্রামী নামে কথিত। হিমালর হইতে উৎপর হইয়া মজংকরপুরের কণোঁল নীলকুঠির এনকট ইহা ত্রিছত জেলায় প্রবেশ করিয়াছে, তৎপরে দক্ষিণপুর্কমুখে আঁকিয়া বাকিয়া হাজীপুর পর্যান্ত আসিয়াছে। গশুকতীরে লালগঞ্জই প্রধান গঞ্জ বা বাজার। ইহার স্রোত বড় প্রবল, নৌকায় যাতায়াতও বড় ভয়াবহ। হাজার মণ বোঝাইয়ের নৌকা লালগঞ্জ পর্যান্ত স্বছলে যাইতে পারে। গশুকের গর্ভ তীরভূমি অপেকা উচ্চ, এজন্ত প্রাবন প্রতিরোধ করিবার জন্ত উন্তর তীরে দীর্ঘ বাধ দেওয়া আছে। সারণ জেলার দিকে যে বাধ তাহা অতি উচ্চ, কিন্তু ত্রিছত জেলার বাধ তত উচ্চ নহে বলিয়া সময়ে সময়ে বাধ হাগাইয়া প্রাবন ঘটয়া থাকে।

বয়া---চম্পারণ জেলায় গণ্ডক হইতে বয়া উৎপন্ন হইয়া कारी न नीनक्ठितनिकारे जिल्छ जनात्र शायम कतित्राहि । দক্ষিণপূর্ব মূথে ইহা ক্রমশ: ডুরিয়া, সরিয়া, ভটৌলিয়া, চিতবারা ও শাহপুর পতৌরি নীলকুঠির কোল দিয়া একবারে জেলার দক্ষিণপূর্বাপ্রান্তে গলার সহিত মিশিয়াছে। ছোট গণ্ডক-চম্পারণ জেলায় উৎপন্ন ছইয়া ছোট গণ্ডক মল:ফরপুর বিভাগে খোষেবাত গ্রামের নিকট তিহত क्रिलाय थाराम क्रियार्ट्, उर्परत मझःक्रप्रतत निक्रे আঁকিয়া বাকিয়া আঠারক্ঠির নিম দিয়া ভালপুর বিভাগে পুদা ও কলেরা সহরের নিকট দিয়া দকিণমুখে মুকের সহরের ঠিক সন্মূথে গলায় পড়িয়াছে। বর্ধাকালে গলা হইতে ছই হাজার মণ বোঝাইয়ের নৌকা ক্লেরা পর্যান্ত ও হাজার মণ বোঝাইদের নৌকা মঞ্জেরপুর পর্যান্ত বুটিতে পারে। নাগরবস্তির নিকট এই নদীর উপর দিয়া দরভালা টেট রেলওয়ে গিয়াছে। ইহার তীরে ম**লঃফরপুর, সম্ভিপুর** करत्रता थ्रधान वानिकारक्खाः

বলান—তামপুরের নিকটে ছোটগওক হইতে বলান উৎপর হইয়া তামপুর দলদিংহ পরাইয়ের নিকট দিৃয়া পিরা বেখানে আমওরারী নণী মুক্তেরের নিকট ছোটগওকে মিশিরাছে, ঠিক তাহার কিছু উর্জে আমওরারীর সেহিত মিশিরাছে।

বাধমতী—নেপালে কাটমাপু নগরের নিকট উৎপন্ন হইরা সীতামাড়ী উপবিভাগে মণিয়াড়ী ঘাটের নিকট অিত্ত জেলার প্রবেশ করিয়াছে। কিছু দুরে ইহাতে লাল-वांकिया ननी कांनिया मिनियां हि, उ९भारत हेहा नांत्र उदा পর্যাস্ত ছোটগণ্ডকের সহিত এক প্রকার সমান্তর ভারে আসিয়া পূর্বকালে ক্লেরার নিকট ছোট গণ্ডকেই মিলিত **হ্ট্**য়াছিল, কিন্তু এখন ঘুরিয়া হারাঘাটের নিকট कताह नती व्यवन पत्नः जिन श्रुका नतीर् शित्रा मि भिग्नार । বাৰ্মতীর পুরাতন গার্চ এখনও পুরাতন বাৰ্মতী নামে বর্ত্তমান আছে। দরভাকা ও মজঃফরপুর সহরের সমদ্রবর্তী গাইঘাটী নামক ভানে নুতন বাঘমতী দরভালা মঞাফর-পুরের রাস্তা ভেদ করিয়া চলিয়া গিয়াছে। তুর্কি নামক স্থানে ইহার প্লাবন-প্রকিরোধের অক্ত বাধ আছে। এই ननीटक आद्योति नामक शान नानवाकिया, मर्गियात घाटित নিকট ভূরেদী নদী, সীতামাড়ীর নিমে দরভাদা মজংকর-রাশ্তার ৭টি মাইল দকিণে লাথহাতাই নদী মিলিয়াছে। 'কুমতৌল নামক স্থানে কুমলা নদী এবং পালী নামক স্থানে পুর্ম হইতে ঢাউদ ও পশ্চিম হইতে ঝিমনদী ছোটবাঘমতী নণীর সহিত মিলিত হইয়াছে। তৎপরে ছোটবাখমতী-দরভাঙ্গা সহরের ৪ ক্রোশ দক্ষিণে হায়াঘাটের নিক্ট বড় বাখনতীতে মিলিয়াছে।

করাই—বাদমতী যথন পুরাতন বাদমতী নদীর ভিতর
দিয়া বহিত, তথন ইহা সামায় নদী ছিল, এখন ইহাই
ছারাঘাটের নিমে বাদমতীর প্রধান স্রোত হইরা দাড়াইয় ছে।
মুদ্দেরের সীমাম তিলকেশ্ব নামক স্থানের নিকট তিলগুলা
নদীতে মিলিয়াছে।

তিলগুলা—নেপালে উৎপন্ন হইরা কহোল গাঁর নিকটে জিল্ভে গলায় পড়িয়াছে। রাইসারি প্রামের নিকট ইহা ছইভাগে বিভক্ত হইয়া ডেজা প্রামের নিকট পুনরায় একঅ হইয়াছে। শশ্চিমের শাখায় বাগ্তা নামক ছানে বলান নদী মিলিয়াছে। রাইসারি হইতে নদীগর্ভে স্থানে স্থানে বাধ দেওয়া; নৌকা যাভায়াতের উপায় নাই।

ক্ষণা—নেপালে উৎপন্ন হইয়া ক্ষমনগর নামক স্থানে কিছতে প্রবেশ করিয়াছে। পূর্ব্বে এথানে শিলানাথ নামে এক শিব্যান্দির ছিল, ভাছা কালে নদীর গতি পরিবর্ত্তনে ন্দীগুর্ভে পড়িয়াছে। ক্মভৌগের নিকট ক্ষণা বাধ্যতীতে মিশিরাছে। কমলার প্রাতন থাদ তৎপরে বরাবর ডিলকে.
খরের নিকট তিলগুলা নদীতে মিলিয়াছে।

এভত্তির ছোট বলান, নারাধারক্মলা, পাডেলনালা প্রাকৃতি নদী আছে।

ভালপুরের ৫ ক্রোশ দকিণণশ্চিমে পরগণা সরেসার মধ্যে ভালবরৈলা নামক বিলই বিখ্যাভ, ইহা দৈর্ঘ্যে ও ক্রোন, পরিমাণ প্রায় ২০ বর্গ মাইল। ইহাতে প্রচুর সোলা জন্মে।

তিহতে থনিজ জব্য কিছুই উৎপন্ন হর না, তবে মাট্র সহিত দোরা ও লবণ পাওয়া-আয়। হারৌলি নামক খানে ছোট পণ্ডক হইতে কাঁকের তোলা হয়।

বক্ত জবোর মধ্যে মধু, গোঁজড়া (যে সকল শশুক, দিহুক বা তবং প্রাণীদেহ পুড়াইরা চূণ প্রস্তেত করে,) চিরেল, শাভারা, সহরকোশ, শুম্চ, মুণ্ডি, তালমূলী এবং মকাই প্রাভৃতি ভেষজ্ব উৎপল্ল হল। বনের মধ্যে সিদ্ধিগাছও কলে। প্রকৃত পক্ষে এ জেলার নির্দান বন বা পতিত জমী নাই। সেশুপ, জাম, শিশু, ঝাউ, শিরীষ, তুন (মৈহগনির স্থার,) গামার, আম, কাঁঠাল, মহুরা প্রভৃতি কার্চোৎপাদক বৃদ্ধবিধই আছে।

এদেশে শতকরা ৮৮ জন হিন্দু ও ৮ জন মুসলমান। খোবেবাত নামক হানে একদল পার্বতীর জাতি বাস করে। প্রথমতঃ তাহারা একজন নেপালী স্থবাদারের ভ্রারণে ছিল, এই স্থবাদারের বংশ উৎসল্পে গিয়াছে। তাঁগ্র ভ্রোরা এখন চাষবাস করিয়া থাকে।

প্রাহ্মণদিগের মধ্যে মৈপিলী ও গৌড়ীয় এই ছই বিভাগ আছে। মধুবাণী ও দরভাঙ্গায় ইহার অর্থ্রেকের বাস ও গামা প্ততঃ ত্রিত্তীয় ব্রাহ্মণ নামে খ্যাত। মৈথিল ব্রাহ্মণের মধ্যে শ্রোত্রিয়েরা শুচি, সমরৌতি, যোগিলা ও গৃহস্ত বা মৈথিৰ, শোত্রিয়, যোগ চঙ্গোলা এবং পণ্ডিত এই পঞ্চভাগে বিভক্ত, ^{এই} পঞ্চশ্রেণীকে পঞ্জিব-বড় বলে। শ্রোত্তিয়েরা সর্বাপেক্ষা মাননীয় দরভাতার মহারাজও এই শ্রেণীর অন্তর্গত। ইহারা বালা^{নার} কুলীন ব্রাহ্মণের স্থায় বহু-বিবাহ করিয়া থাকে এবং ইছাম্ট এক খণ্ডরালয়ে কিছু দিন, অপর খণ্ডরালয়ে আর কিছু ^{দিন} বাস করে। খণ্ডরের নিক্ট প্রতিবার বাসের **জন্ম** ইর্না অর্থ লইয়া থাকেন। সৌরাথ নামক এক গ্রামে এক ^{বেই} মন্দিরে যাবণীয় ত্রাক্ষণের মেলা হয়। সেই মেলায় ব^ব শ্রেণীর পণ্ডিভেরা প্রত্যেক বাক্তির বংশতালিকা ^{ধুনির} বিবাহ সম্বন্ধ নিরূপণ করেন। উচ্চ কুললাত সন্তানের ^{পিরা} নিম্নকুলে বিবাহ দিলে কুলমর্য্যাদামত্রপ অর্থ পাইয়া ধারের। ঐ মেশার দিন বর ও কভার নাম নিরুপিত ও ভাং^{নুর।} পিতার সম্মতিস্টক এক তালিকা লিখিত হয়। শ্রোত্তিরেরা শ্র্রেণ ভিন্ন অন্ত শ্রেণীতে বিবাহ করিলে সেই শ্রেণীতুক্ত ও আয়ার স্বজন কর্ত্ক পরিত্যক্ত হন। ইহারা সকলেই স্বহন্তে স্ব জনীতে কোদাল দেন ও জলসেচন প্রভৃতি করেন, কেবল লাগল দিবার জন্ত লোক নিযুক্ত করিয়া থাকেন। পূর্বেই ইহারা কাহারও নিকট বেতন গ্রহণ করিয়া চাকুরী শ্রীকার করিতেন না, কিন্তু এখন অনেকেই তহণীলদার ও প্রোমন্তা হইতেছেন। ইহাদের অনেকেই আয়্রবাগান করিয়া জীবিকার্জন করেন। [মৈথিল ব্রহ্মণ দেখ।]

বান্ধণের পর এ দেশে রাজপুতের সন্মান অধিক। ইহারা অধিকাংশই জমীদার ও কৃষক; আল কাল অনেকে পুলিসের চৌকীদার, পেয়াদা ও ছারবানের কার্য্য করিয়া থাকে। রাজপুত ও বান্ধণের পরই 'বাভন' নামে আর একজাতি আছে। তাহারা রাজপুত অপেকা হীন-মর্যাদ হইলেও অপরাপর জাতি অপেকা গণ্য মাস্থাবটে। ইহারা জমীদারী বা অন্ধনীবি বান্ধন নামেও পরিচিত।

[ वाङन (प्रथा]

রিজতের মধ্যে নিমলিথিত সহ্রগুলি বিশেষ বিখ্যাত —

(১) মজ:ফরপুর-মজ:ফর থাঁ নামক এক বাক্তি কর্তৃক থাপিত হয় বলিয়া ইহার নাম মঞ্জরপুর। ছোট গুওকের ীরে ২৬° ৭ হি০ তিন্তর অক্ষাংশ ও ৮৫° ২৬ হি০ পুর্ব জাঘি-মাৰ অৰ্ত্তি। এই নগৱেই এ জেলার সদর কাছারী। वयात मिडेनिमिलालिए, कारलक्षेत्री, रत्वत्रांनी ७ रको छ-দারী আদাণত, জেল, ডাক্তারথানা ও স্কুল আছে। সহরটী র্মারজীর, রাস্তাগুলি প্রশস্ত। বাজারগুলি বড়, প্রত্যুহই প্রাণ বিক্রয় হয়। কাছারীর নিকট মান নামে এ<mark>কটী বিলের</mark> মত ললাশয় আছে, ইহা কোন নদীর পুরাতন গর্ভের কিয়দংশ মাত্র। বাজারে পুষ্করিণীতীরে ঘাট সম্বলিত একটা রাম্গীতার ও একটা শিবের মন্দির আছে, সহরটা বড় বেশী অধিক দিনের নয়। স্থাপয়িতা মজঃফর খাঁ একজুন 'আমিল' ণা 'চাকলা নাই' (নায়ক) ছিলেন। কেম্পানীর দেওয়ানী-^{লাভের} বছ পূর্বে তিনি উত্তরে সেকেন্দরপুর গ্রাম, পূর্বে কণৌলি গ্রাম, দক্ষিণে দৈয়দপুর এবং পশ্চিমে সারিয়াগঞ্জ ^{হইতে ৭৫} বিঘা জমী বাহির করিয়া লইয়া তাঁহাতেই ^{খনামে} নগর স্থাপন করেন। ক্রমশঃ ইহার উন্নতি হইয়াছে। ১৮১৭ খুপ্টাব্দে ছোট গণ্ডকের প্লাবনে ইহার যথৈষ্ঠ ক্ষতি 'ইইয়া গিয়াছে।

র্ছয়া—মজঃফরপুরের ৩ কোশ দ্রে পুসা রাস্তার উপর এক্থানি ক্স গ্রাম। এথানে জুলাইমাসে ৭ দিন বাাপী একটা মেলা হয়। এখানে এক পীরের আভানা আছে, তথায় অনেক যাত্রী আদে।

সারিয়া—মজঃফরপুরের দক্ষিণপশ্চিমে ৯ ক্রোশ দুরে বয়া নদীর তীরে এই স্থানে একটা নীলকুঠি আছে। বয়ার উপর ছাপরা রাস্তার মুথে তিন-খিলানের একটা পোল আছে। এই ফানের কিছু দ্রে একটা প্রস্তরময় থাম আছে। একটা বাহ্মণের উঠানে উহা স্থাপিত। ইহাকে 'ভামিসিংহের লাঠি' বলে। ইহা উচ্চে ২৪ ফিটু এবং একথানি প্রস্তরে নির্দ্ধিত। ইহার মাথায় একথানি চত্রস্র পাথরের উপর একটা প্রস্তরময় সিংহম্ন্তি আছে। সিংহম্ন্তি পর্যান্ত সমস্ত স্তন্তের উচ্চা ৩০ ফিটু। ডাঃ রাজেক্রলাল মিজের মতে ইহা একটা অন্যাক্তন্ত ও ফিটু। ডাঃ রাজেক্রলাল মিজের মতে ইহা একটা অন্যাক্তন্ত । ইহার পার্যের একটা স্থাতীর কুপ আছে।

বসন্তপুর – সারিয়ার নীলকুঠির কিছু দক্ষিণে এই বৃহৎ গ্রাম অবস্থিত। এখানে গ্রাম্যসমিতি আছে।

সাহেবগঞ্জ — মজঃ ফরেপুরের ১৫ জোশ উত্তরপশ্চিমে বয়া নদীর তীরে এই সহর অবস্থিত। এখান হইতে মতিহারী, মতিপুর ও লালগঞ্জে রাস্তা গিয়াছে। বাজার খুব বড়. তৈলকর শস্ত, গম, কলাই ও লবণের ব্যবসায়ই বেশী। কণোঁলের নীলকুঠি বাজারের অতি নিকটে। এখানকারণ প্রস্তুত জুতা অনেক স্থানে চালান হয়।

কণ্টাই—মজঃফরপুরের ৪ কোশ দ্বে মতিহারী রাস্তার উপর অবস্থিত। এই স্থানেই কণ্টাই নীলকুঠি। সোরার কুঠিও আগে ছিল। সপ্তাহে ছইবার হাট হয়। এই গ্রামে মিনাপুরের রাস্তা আসিয়া মজঃফরপুরের রাস্তায় মিশিয়াছে।

বেলমান্দ কলান—মজঃফরপুর হইতে ১৪ ক্রোশ দ্রে দীতামাড়ী রাস্তার উপরে অবস্থিত। ইহা পুরাতন বালমতী •নদীতীরে অবস্থিত। বড় নীলকুঠি আছে।

রাজপত্ত — মজংফরপুর হইতে উত্তরপুর্বে ১১ কোশ দ্রে এই বৃহৎগ্রাম অবস্থিত। এখানে ভৈরবের মেলা নামক এক টা বৃহৎ মেলা হয়। এই মেলায় গোক বিক্রয় হইয়া থাকে। এখানে নীলক্ঠি আছে। পূর্বে চিনির কারখানা ও চোলাই-খানা ছিল। গ্রামের পশ্চিমে লাখহাগুট নদী বি

কার্ট্বা বা অক্বরপুর— লাথহাগুট্ট নদীর তীরে অব-স্থিত। গ্রামের পশ্চিমে ভ্রমাবশিষ্ট এক মৃথার হুর্গ আছে। হুর্গের পরিমাণ প্রায় ৬০ বিঘা, ইহার প্রাচীর ৩০ ফিট্ উচ্চ। রাজটাদ নামে এক ব্যক্তি এই হুর্গাধিপতি ছিলেন। তিনি দরভালায় যাইবার সময় স্বীয় পরিবারবর্গকে বলিয়া যান, যদি তাঁহার ধ্বজা পড়িয়া যায়, তবে তাঁহার মৃত্যু নিশ্চিত জানিবে। এক কুর্মী রাজার শত্ত ছিল, সে ধ্বজা ভালিয়া ফেলিয়া রাজপরিবারকে সংবাদ দেয়। রাজ-পরিবারবর্গ জলত চিতায় প্রাণ বিসর্জন করেন।

মধুবাণী—দরভালা সহরের ৮ ক্রোশ উত্তরপুর্বে এই সহর অবস্থিত। ইহা মধুবাণী উপবিভাগের সদর থানা। এখানে বেশ বড় বাজার আছে; শাক সব্জি ও কাপড় প্রধান্ত পণ্য। সহরের উত্তরাংশে দরভালারাজ মধুসিংহের তৃতীয় পুত্র কীর্তিসিংহের বংশাবলী "মধুবাণীর বাব্" নামে খ্যাত হইরা আছেন। ইহারা জবদী প্রগণার কতকভালি গ্রাম রাজসংসার হইতে পাইরাছেন। এই সহরের ভিতর দিয়া নেপাল ঘাইবার প্রধান পথ।

ভওয়ারা—মধুবাণী হইতে এক পোয়া পথ দক্ষিণে এই বৃহং গ্রাম অবস্থিত। ইহার দক্ষিণে একটা হর্গের ভয়াবশেষ আছে। পূর্ব্বে এই হুর্গে ইপ্তবের প্রাচীর ছিল। রঘুসিংহ নামে এক ব্যক্তি এই হুর্গ প্রস্তুত করাইয়া ছিলেন। ইনি দরভালারাজের বংশোন্তব। ১৭৬২ খুলাকে ইহার বংশীয় প্রতাপ সিংহ এথানকার বাস ভুলিয়া দিয়া দরভালায় মান। এথানে একটা মস্থিদের ভয়াবশেষ ও থেলাম্ম্ক এক প্রাচীর আছে। অকবরের সমসাময়িক বালালার শাসনকর্তা আলাউদ্দীন, এই মস্পিদ নির্মাণ করাইয়াছিলেন।

বিরংপুর (বিরাটপুর)—থাজোলি থানার অস্তর্গত একটী গ্রাম। এখানেও এক তুর্গের ধ্বংশাবশেষ ও গৃহপ্রাচী-রাদির চিহ্ন আছে। এক স্থানে এক গর্ত্তে মহাদেবের লিক্ষস্ত্রির কতকাংশ আছে। কথিত আছে, মহাভারতোজ্ঞ রাজা বিরাট এই তুর্গ নির্মাণ করিয়াছিলেন। তেলিরা এই বিরাট রাজাকে স্বজাতি বলে এবং গর্ত্তমধ্যগত শিব-লিক্ষাংশকে ঘানির মুদল বলিয়া থাকে।

সোরাথ—মধুবাণী হইতে ৪ কোশ দ্রে এই গ্রাম। ১০ বংসর পূর্বেল দরভালার রাজারা এথানে এক: শিবমন্দির প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। তাহারই নিকট ত্রিছতীয় ব্রাহ্মণ-দিগের বাংসরিক মেলা হয়। সময়ে সময়ে লক্ষাধিক ব্রাহ্মণ উপস্থিত হয়। এই মেলায় বরকর্তা ও ক্যাক্তারা পুত্র-ক্যার বিধাহ সক্ষা হির করেন।

ঝঞ্বারপুর—মধুবাণীর পূর্কদিক্ষণে ৭ ক্রোশ দ্রে অবহিত। এই কুল গ্রামে দরভালারাজবংশীয় প্রতাপসিংহের নামে প্রতাপগঞ্জ ও রাজা মধুসিংহের ভগ্নী প্রীদেবীর নামে প্রতাপ এই ছটা বাজার আছে। দরভালারাজের সমত্ত সন্তান এই গ্রামে ভূমিষ্ঠ হইলাছে বলিরা ইহা প্রসিদ্ধ। রাজবংশের অনেকেই নিঃসন্তান অবস্থায় মৃত্যু হওয়ার রাজা প্রতাপসিংহ নিক্টবর্তী মুর্মগ্রামবাসী মোহাত্ত

শিবরতনগিরির প্রসর্কা লাভ করিতে বান। মোহান্ত রঞ্চার প্রে জাসিরা জটার একটা শিখা সেই হানে দক্ষ করি বলেন, বে এই প্রামে বাস করিরে, তাহারই পুত্র সরা হইবে। প্রতাপসিংহ তদস্সারে এখানে এক জাবাস বা নির্দাণ করেন, কিন্তু বাটী শেব হইবার পুর্বে অপ্রা অবস্থার প্রতাপের মৃত্যু হর এবং তাঁহার প্রাতা মধুসিঃ বাটী নির্দাণ শেষ করাইয়া বাস করেন। এই প্রাম প্রে রাজপুতদিগের ছিল। মহারাজ ছ্রসিংহের মহিবী গর্ভিঃ হইরা প্রসবকাল পর্যান্ত এই রাজীতে ছিলেন বলিয়া ছ্রসিং এই প্রাম কিনিয়া লন। এখানে রক্তমালাদেবীর এঃ মন্দির আছে। এই প্রামে পিতলের পোনের বাটা নির্দার আছে। এই প্রামে পিতলের পোনের বাটা নির্দার লাকে

মাধেপুর, (মধ্যপুর)—ইহা বহামপুর, হ্রসিংহপুর
গোপালপুরবাট ও দরভাঙ্গারাস্তার মিলনস্থলে অবহিত্ত
প্রাচীন মিথিলার কেন্দ্রস্থল বলিয়া ইহা মাধেপুরে বা মধ্যপ্
নামে থ্যাত। মহারাজ মধুসিংহের চতুর্থ পুত্র রমাপতিদিং
পঞ্চি পরগণা প্রাপ্ত ইহয়া এই গ্রামে বাস করেন। তিহু
ও পুণিয়ার রাস্তার উপর এই গ্রাম অবস্থিত বলিয়া কার্
ইহা ব্যবসায়ের কেন্দ্রস্থল হইতে পারিবে।

বাদদেওপুর--মধুবাণী হইতে ৫ ক্রোশ পুর্বে এই গ্রা অবস্থিত। ইহার পূর্বনাম শঙ্করপুর। পরে ইহার না भक्षत्रभूत शक्षवांत इस, भारष वाञ्चलवभूत वा वामाम**०**९ हरेग्राष्ट्र। **७ मश्रक्ष किश्वन**छी এইরূপ,—এথানে গদ ভৌর নামে ছই ভাতার বাস ছিল: উভয়েই পরাক্রমশার্ণ 'এবং নাম মাতা তিত্তরাজের ভাষীন। ভিল গুৰা পুর্বতীরবতী কতকভানে গদ্ধের অমীদারী এবং করা নদীর দক্ষিণে ভৌরের অধিকার হিল। ত্রিছতরাল তাং দিগকে দমন করিতে না পারিয়া ছই জন বিদেশী খারা তাহা দিগকে বিনষ্ট'কেরেন। হত্যাকারীরা যে যাহাকে হত্যা ^{ক্ষে} দে তাহারই জমীদারী পুরস্কার পায়। গন্ধহস্তার বংশধরে? "গন্ধমারিয়া" ও ভৌরহস্তার বংশীয়েরা "ভৌরমারিয়া আখ্যালাভ করে। 'গদ্ধমারিয়া' বংশ শঙ্করপুরে ও ভৌ মারিয়া বংশ সিংহিয়া গ্রামে বাদ করে। এই হইতে শ^{রুর} পুর **গন্ধবার নামে খ্যাত হয়। মহারাক ছ**অসিং**হ** বি^{বাই} কালে এই গ্রাম যৌতুক পান। মহারাণী ছত্রপতিকু^{মার} এই গ্ৰাম মৃত্যুকালে নিজ মধ্যম পুত্ৰ ৰাহুদেবকে ^{রিয়} যান। ছত্রসিংহের মৃত্যুর পর কুদরসিং**হ রাজা হই**য়া ^{বাই} দেবকে জরাইল পরগণা দান করেন, কিন্ত তিনি এই ^{রার্ক} मारी कत्रात्र विवास वार्थ, श्याद क्यात्र वाच्यास वान्त्राहर প্রস্থা প্রহণ না করিয়া মাজ্বত শঙ্রপুরের নাম পরি-বর্তন ও খনামে অভিহিত করিয়া তথার গিয়া বাদ করেন।

মীজ্ঞাপুর—মধুবারী হইতে ৪ জোশ উত্তরপূর্বে এই প্রাস অবস্থিত। এখানে বালারে নেপাল তরাই হইতে খন্ত আসিরা থাকে। এখান হইতে ৬ জোশ উত্তরপূর্বে বলরালার ধ্বংসাবশিষ্ট ছুর্য আছে। সেই গ্রামের নামও বল-রালপুর। ছুর্গের দৈর্ঘা ৪ শত গল ও বিভার ২ শত গল। হলবালাকে ছিল, তাহা জানা বার না।

অ্যনগর—নেপালনীমান্তর্বর্তী। এথানে এক মৃশ্বর ছর্গের ভরাবশেষ আছে। পাছাড়ীদিগকে শাসনে রাধিবার অভ এক মৃস্বমান এই ছর্গ নির্মাণ করাইরা ছিলেন। ছর্গ নির্মাণের সময় ভূমণো একটা মৃতদেহ পাওয়ায় এইছান অভতকর বলিয়া গণা হয়। সন্তবন্তঃ ১৫৬০ স্থাটাকে বাঙ্গালার শাসনকর্তা আলাউদ্দীন কামরূপ হইতে বেভিয়া পর্বান্ত যে সকল সীমান্ত ছর্গ নির্মাণ করোন, ইহা ভাহারই মধ্যে একটা হইবে নিপোলমুর্বের সময় এখানে ইংরাজের স্কর্মাবার ছিল। এই গ্রামে নীলকুঠিও চিনির কারখানা আছে।

শিলানাথ—জয়নগরের নিকটে কমলাতীরে শিলানাথ প্রাম। বৈশাথে এথানে পক্ষকালব্যাপ্ম এক মেলা হয়। এই মেলায় ত্রিভ্তের শস্ত, গবাদি পশু এবং নেপাল হইতে লৌহণিও, কুঠার, তেলপাত ও মৃগনাভি আসে। মেলায় শিলানাথ শিবদর্শনে পূর্ব্বে অনেক সন্ন্যাসী আসিত, কিছ কমলাগর্ভে সে মন্দির ও প্রতিমা লোপ হয়, সন্ন্যাসীরা আর বড় আসে না।

ক্রোল—দরভালা হইতে ৬ কোশ উন্তরে এই প্রাম। এখানে ত্রিহতীয় যোগা ব্রাহ্মণের বাদ অধিক, কুকিকাপড়ের অভ এই হান খ্যাত। নেপালীরাই এই কাপড় বেশী ব্যবহার করে। হদেনপুর নামক এক পল্লীতে কপিলেখর মহাদেবের এক মন্দির আহে। প্রবাদ—পুরাণোক্ত কাঁপিলম্নির বাদ এখানে ছিল, তিনিই এই শিবপ্রতিষ্ঠাতা। মাঘমাণে এখানে এক মেলা হয়, মেলার কুকিকাপড়, পিতলের বাসন, শহাদি বিক্রীত হয়। অধানকার পুছরিণীতে মোধনা নামে এক প্রকার খাতু ফল অলো ।

দরভাঙ্গা— ত্রিহুতের মধ্যে সর্বাণেক্ষা বৃহৎ ^{*}নগর।
^{ইহাছোট} বাঘমতীর পূর্ব্বতীরে ২৬°১ • ২ " উত্তর অকাংশে এবং
৮৫°৫৬ ৩৯" পূর্ব্ব জাবিমার অবস্থিত। ইহা একটী উপবিভাগীর

শদর ধানা। [দরভাকা শক্ষে বিস্তৃত বিবরণ দেখ।]

জিমচ—দরভালা ছইতে দেড় ক্রোশ পূর্ব্বে কমলাতীরে অফী আম। এথানে কার্তিকী ও মাধী পূর্ণিমার একটা শেলা হর। পুতার্থিনী হিন্দুর্যশীরা এই সমরে আসিরা কমুলার সান করেন। তাহাদের বিশাস, মানে তাহাদের বিদ্যাক্ষাের দুর হইবে। প

লেছরা--এখানে তিন্টী বৃহৎ দীঘী আছে। ঘোড় দোড় নামে এক দীঘী ২ মাইল দীঘঁ। দরভালার এক রাজা শিবসিংহ এই পুকরিণী খুনন করিতে মনত্ব করিয়া এক হত্তে ললপূর্ণ ঝারি লইয়া জল কেলিতে ফেলিতে ঘোড়া ছুটাইয়া
দেন। কথা ছিল, যেখানে ঝারির জলা ফ্রাইবে, দীর্ষিকটো
তত বড় দীর্ঘ হইবে। সেই দীর্ঘিকা এই। এখন তত জল
নাই। এক পার্ঘে সামাল্ল জল আছে, অল্লাল্ল অংশে চাম বাদ
হইতেছে। কমলা নদী হয় ত কোন সময়ে এই দীর্ঘিকার
নিকট দিয়া প্রবাহিত ছিল এবুং ইহার সমস্ত জল বাহির
করিয়া লইয়া গিয়াছে। ইহার নিকটে ১০ বিঘা জমীতে
শিবসিংহের প্রাসাদের ভ্রাবশেষ আছে।

দিংহিয়া—বহেরা ইইতে ৬ জোশ দক্ষিণে দিংহিয়া গ্রামে করাই নদীর তীরে একজোশ দুরে মলল নামক তুর্গ আছে। এই গড়েঁর পরিধি প্রায় দেড় মাইল। ইহার চতুর্দ্ধিকে ৩-1৪-ছিট্ উচ্চ মুগ্রায় প্রাচীর। তাহার পর গভীর থাদ আছে। মললগড়ের ভিতরে এখন কোন অট্টালিকা নাই, লমীতে চায় বাসহয়, তবে >॥ ফিট্ ২ ফিট্ লম্বা ইইক যথেই দেখিতে পাওয়া যায়। ইহার ইতিহাস কিছু পাওয়া যায় না; প্রবাদ এই বে বলরালা এই তুর্গাধিপতি রালা মললকে পরাস্ত ও বিনষ্ট করেন। গড়ের পূর্বাংশে নীলকুঠি হইয়াছে।

আহিয়ারী—কামটোল গ্রামের দক্ষিণপুর্ব্ধে এই বৃহৎ-গ্রাম অবহিত। এই গ্রামে প্রায় আড়াই হালার অধিবাসী। বৈশাধ মাদে এথানে অহল্যান্থান বা দিংহেখর নামক ছানে এক মেলা হয়। মেলা একদিন থাকে। প্রায় ১০ হালার লেকি লড় হয়। এই মেলাল কেনা বেচা কিছু হয় না, কেবল পুণ্য কার্য্যের অমুষ্ঠান হয়। যাত্রীরা এথানে আসিয়া প্রথমে দেবকালী নামে এক পবিত্র কুপ্তে মান করে। তৎপরে একথানি প্রস্তারে এক পদ চিহ্ন দেখিতে আদে। ইহা সীতার (রামের ?) পদচিহ্ন বিলয়া প্রসিদ্ধ। ইহারই উপর এক মন্দির আছে, সেই-মন্দিরকে অহল্যান্থান বলে। রামারণের অহল্যাগোত্রম সংবাদ হইতে এই তীর্থের উৎপত্তি কথিত হয়। এখানে দরতালারাক্ষের নির্শ্বিত এক বৃহৎ উচ্চ ঠাকুরবাটী আছে।

মালীনগর—ছোট গওকের উত্তর তীরে একথানি গ্রাম। এথানে রামনবমীর দিন হইতে পাঁচ দিনবাাপী এক মেলা হয়, তাহাতে ২ হালার হইতে ৪ হালার পর্যন্ত লোক লড় হয়। ১৮৪১ খৃষ্টানে এখানে শিবনন্দির প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, তাহারই নিকট "রামনবমী" নামে উক্ত নেলা হয়। শিব নামে একজন মধাবিত্ত বেণিয়া'ছিলেন। গুরুর উপদেশে তিনি এই দেবমন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। ইহার বংশীয়েরা কালে দনী হইয়া, উঠিল এবং দিপাহী বিজ্ঞোহের সময় এই বংশীয় বাবু নন্দীগংদি'হ গ্রমেণ্টের সাহায়্য করায় 'রায় বাহাছর' উপাধি পাইয়াছিলেন। পুসা জ্মীদারীই ইহাদের। এই বংশের কর্তার মতাজ্সারে শিবের পুরোহিত নির্বাচিত হয়।

পুদার মালীনগর ও বথ্তিয়ারপুর নামে গবমেণ্টের ছইথানি থাদ গ্রাম আছে। মালীনগর পূর্বে দরভাঙ্গারাজের মিলকিয়তের মধ্যে গণ্য ছিল। এথানে পূর্বে গবমেণ্টের ঘোড়ার শাবকাদি উৎপাদন ও পালনের ছান ছিল। কিন্ত ১৮৭২ খুটান্দে উহার কার্য্য বন্ধ করিয়া দেওয়া হয়। এথানে অহিফেন ও কুমুমদুলী আবাদ হইতেছে।

* সীতামাড়ী—*লাথহাণ্ডাই নদীর পশ্চিম তীরে ২৬°৩৫´ উত্তর অকাংশে এবং ৮৫ ৩২ পূর্বে দ্রাঘিনায় এই সহর অবস্থিত। এথানে প্রায় ৬ ছালার লোকের বাস। ইহা সীত্রামাড়ী উপবিভাগের সদর থানা। সর্মপাদি ভৈলকর শস্ত, . ধান্ত, গোচম্ম ও নেপালের জব্যাদিই এথানকার প্রধান বাণিজ্য দ্ৰব্য। সংখালা নামক কাঠ ব্ৰাকালে নদীতে ভাসাইয়া লইয়া আংসে। সোরা ও জনাও নামক পৈতা এদেশের বিখ্যাত। তৈরমাদে এথানে এক পক্ষকাল মেলা হয়। रमलात मर्पा तामनवमीत निनहे पूर उरमर हय। প্রকার পণ্যঞ্জাত আমদানী হয়, তন্মধ্যে সেবারের দ্রব্যাদিই প্রধান। হাতী ঘোড়াও বিক্রয় হয়, কিন্তু যাঁড বিক্রয়ের জনুই এই মেলা প্রদিদ্ধ। সীতামাড়ীর ধাঁড় খুব উৎক্রা প্রবাদ আছে,—দ্বীতামাড়ীই রাজর্ষি জনকৈর কর্ষিত যজ্ঞ ভূমি। এই স্থানেই সীতার জন্ম হয়। লাঙ্গণের যে থানে সীতার উৎপত্তি হয়, তাহা এখন একটা পুন্ধরিণী হইয়া রহিয়াছে। আবার কাছারও মতে নিকটবর্তী পনৌরা নাম ক' স্থানে সীতার অন্ম হয়। সীতামাড়ীতে সীতার মন্দির আছে; এই মুন্দিরের নিকট হনুমান, শিব, দার্ছা প্রভৃতির भात ३ ५ जी मिनित चाहि।

শিওহর ⁴( শিবহর )— পীতামাড়ীর ৮ ক্রোশে দক্ষিণ-পশ্চিমে এই গ্রাম অবস্থিত। এথানে বেতিয়ারাজের এক জ্ঞাতিরালা আছেন। তিনি লক্ষ টাকা ব্যয় করিয়া গ্রামে জ্মনেক গুলি মন্দির প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন।

পনোরা-সীতামাড়ীর ভিন মাইল দক্ষিণ পশ্চিমে, এই

ন্থান সীতাদেবীর জন্মভূমি বলিয়া থ্যাত। এখানে এই বৃহৎ মৃথায় রাক্ষণ ও বানর মৃতি আছে। তাহা হছ্বান, ও রাধণের যুদ্ধ দৃশু বলিয়া থ্যাত। রাক্ষণ মৃতির ছইট্ট মন্তক। এই প্রতিমাধ্যের নিকট এক মোহান্ত বাস করেন। প্রতিবংদর প্রতিকাধ্যের অঙ্গরাগ হয়।

দেবকালী—শিবহর গ্রামের ২ ক্রোশ পুর্বের এই গ্রাহ
অবস্থিত। এখানে ফাল্লন মাদে এক মেলা হর। এখানে
এক বৃহৎ উচ্চ শিবসন্দির আছে। এই শিবের মাধার
অল দিতে বহুদ্র হইতে যাত্রী আদে।

তৈরাগ্নিয়া—উত্তর সীমান্তর্গতী একটী সান। এখানে এক বৃহৎ বাজার আছে। নেপালী ও পাহাড়ী বণিকের এই গ্রামের হাটে আদিরা পণ্যজাত বেচিয়া চলিয়া বায়। ইহার দক্ষিত্ব, নেপালী বা পাহাড়ীরা যায় না।

বেলা মোচপকাউনি—এই গ্রামের নাম বেলা, কিয় এগানকার জল বড় মলয়। এখানে জল পান করিবার সময় গোণে লাগিয়া কাল পোঁণ ধ্বর হইয়া উঠে, এজন্ত গ্রামে নামের সহিত "মোচ পাক।উনি" শক্ষ সংযুক্ত হয়।

হাজীপুর-গওকের উত্তরতীরে ২৫ 8 ০ ৫ ০ % উত্তৰ অক্ষাংশে এবং ৮৫°১৪ হ। পূর্বে দ্রাঘিনায় অবস্থিত। ই হাজীপুর উপবিভাগের সদর থানা। লোকসংখ্যা প্রা २२॥० शक्षात्र। हेश शांग्रेना महत्त्रत्र विश्वत्री छिपित्क अविशः ও তিন দিকে नদी থাকায়, জেলার মধ্যে ইহা একটা বিশেষ প্রোজনীয় বাণিজ্যকেন্দ্র। এথানে একটী ছর্গ, কতকর্ত্ত मताहे, मन्दि । भन्दि एत ज्यावर्भय আছে। इर्पात मश 'একটী সরাই আছে, ভাহাতে নেপালের মন্ত্রী মধ্যে ম্রো আসিয়া থাকেন। সরাইয়ের মধ্যে একটী বিভল বৌদ্ধরণের মন্দির আছে। ইহার স্থোয়া কংগ্রের কারুকার্য্য ও অটা লিকার কার্য্য সমুদয় প্রশংসার যোগ্য। সমস্তমন্দির্টীতে একটা গিলটো করা পেটি আছে। ইহা ৩০ বংগা পুরের নির্মিত হইয়াছে। সোণপুর্ঘাটের নিকট জামিন্স্^{রির} নামে এক প্রস্তুর নিম্মিত মদ্জিদ আছে। হাজীই^{দিয়াম্} নামে এক ব্যক্তি প্রায় ৫ · শত বৎসর পূর্বে এই সহর ও এই মদ্জিদ নির্মাণ করেন। মিনাপুরে গ হাজীপুরের বাজারে আর ছটী মদ্জিদ আছে। মিনাপুরে মস্জিদের প্রতিষ্ঠাতার নাম ইনাম্বক্স। সহরের পশ্চি^{মাংশ} রামমন্দির P প্রবাদ আছে যে, জনকপুর ঘাইবার ফা রাম এইথানে ছিলেন। তাঁহার অবস্থিতিয়ানেই ^{এই} মন্দির নির্দ্মিত হয়। এখন সারণ জেলায় যে শোণপুরে মেলা হয়, তাহা আগে হাঞীপুরে হইত। উক্ত মেলার ব^{ট্টা}

ছাগল ছানা (বলি রূপে) ফেলিরা দিবার বে নিয়ম ছিল, তাহা এখনও গওকের উত্তরতীরে অর্থাৎ হাজীপুরেই হইরা থাকে। পুর্ব্ধে যে ছর্গের ভ্যাবশেবের উল্লেখ করা গিরাছে, তাহাও হাজীইলিয়াল কর্তৃক ৩৬০ বিশালমীর উপর নির্মিত।

১৫৭২ খুটাবে অক্বরের এক সেনাপতি মল:ফর খাঁ আফ্গান বিদ্রোহীদের হস্ত হইতে হাজীপুর উদ্ধার করেন, কিন্তু তিনি নদীতীরে অমণকালে শত্রহন্তে পতিত হন। हुई वर्मत शरत ऋ लगान । कत्रतानित कनिष्ठं श्रुल नाजिन পাটনার তুর্গ ধ্বংস করেন। থাঁ ধানানের উপর দাউদকে ধৃত क्तिवात ७ विदातमांत्रत्न अन्य मिली हहेए आएमम द्या। দাউদ হাজীপুর ছর্গে আশ্রয় লন, মোগল সেনা ছুর্গ অবরোধ করে। অক্বর এই সংবাদ পাইয়া নিজে প্লাটনা অভিমূথে আগমন করেন। তিনি ভিন হাজার সৈক্ত লইয়া হাজীপুর-গড় অধিকার করিতে মনস্থ করেন। হাজীপুরের জমীদার রাজা গলপতি দেনাপতি হইয়া বুদ্ধ করেন। ছুর্গাধিপতি আফগান ফতেখা বাড়া নিহত হন এবং আরও অনেকে বিনষ্ট হয়। সকলের মম্ভক দাউদের নিকট প্রেরিত হয়, উদেখ এই যে তিনি তদারা নিদের পরিণাম বুঝিতে পারিবেন। অক্বর নিজে ছুর্গ দেখিতে যান ও পঞ্পাহাড়ীর উপর উঠিয়া হর্গ দেথিয়া আদেন। হিন্দুরা ইষ্টকবারা এই পঞ্চ-পাহাড়ীর টিলা **৫টা নির্মাণ করেন। ৫দিন পরে দাউদ বাঙ্গালা** হট্যা উড়িয়ার প্রায়ন করেন। সেধানে প্রান্ত হ**ইরা** স্ত্রিক করিতে বাধ্য হন, কিন্তু ১৫৭৭ খুষ্টাব্দে আবার বিজ্ঞাহী হইয়া মোগলদৈভাকে হাজীপুর হইতে তাড়াইয়া দেন, কিন্তু শেষে মজঃফর খাঁ তাঁহাকে বিশেষরূপে পরাজিত করেন। ১৫৭৯ খৃষ্টাব্দে বিজোহী আরব বাহাছর এই ছর্গে আশ্রয় লন। হাজীপুরের দেওয়ান মোলা তানিয়াব কর্তৃক তিনি निक कात्रगीत रातारेमा विटलारी रन। टमाना मकनी ( वाशीन ), शत्रत्थाखम ( वकनी ) । अ नम्रामत ( थानिमा ) আরব বাহাছরের পক্ষাবলম্বন করেন। আরব বাহাছর শেবে পরপোত্মকে বিনাশ এবং প্রায় সমগ্র, বিহার অদেশ হতগত করেন, কিন্তু পাটনার যুদ্ধে পরাজিত হইয়া হাদীপুরত্রে আশ্রয় লন। মহাবা**ল থাঁ একমান** চেটার পর তাঁহাকে এখান হইতে তাড়িত করেন। ১৫৮৪ খুটাসে মহন খার জনৈক দেনাপতি ধবিতা 'এখানে পরাজিত হন। ^{এই হাজীপুরই সরকার হাজীপুরের আংধান সহর ও} ^{তথন} ইহাতে ১১টা প্রগণা ছিল। তাহার করেকটা এখন ^{মুরের} জেলার অস্তর্ভ হ**ইরাছে**।

লালগন্ধ-গণ্ডকের পূর্বভীরে হান্সপ্রের উত্তরপূর্বে 

কু জেশ ল্বে অবস্থিত একটা প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্র ও 
বিখ্যাত সহর। ইহারই কিছু দ্রে সিংহিয়া নীলকুঠি। 
এই কুঠি ত্রিছত জেলার অতি প্রাচীন কুঠি। পূর্বে 
ওলন্ধাজেরা এই কুঠিতে সোরার কারবার করিত। 
ত্রিছতে র্রোপীর কুট্টির মধ্যে ছইটা আদি ও প্রাতন। 
১৭৯১ খুটাকে ওলন্ধাল ইট ইপ্ডিয়া কোম্পানী এই কুঠি 
ও ইহার সংলগ্ধ ১৪ বিঘা লমী লগলাপ সরকার নামক এক 
ব্যক্তিকে একশত টাকায় বিক্রের ক্রেন। এই বিক্রেরের 
দলীল আলিও বর্তমান আছে। লগলাপ সরকারের হস্ত 
হইতে ইংরাল গবর্মেণ্ট কিনিয়াছেন।

শন্তাদি—আম, কাঁঠাল, পেঁণ্ডো, বেল, নেবু, পিচ্, আনারদ, কলা, পেরারা ও আম যথেট। পুক্রিণীতে মোধানাফল জন্মে, পাকিলে ভাজিয়া থার।

ধান্ত অিবিধ—আউশ বা ভাদই, অঘানী বা হৈমন্তিক এবং শাসী বা গামড়ি। গম, ষব, ছোৱা, জই, কোদো, মকা, মাড়ু মা, কাউনি, খ্যামা, চীনা, জনার প্রভৃতি জন্ম। অড়র, থেসারি, রগ, মহুর, আলু, ভিনে, ভিসি, রেড়ি, ভূলা, পান, ইক্, তামাকু, অহিফেন, নীল, কুহুমফুল প্রভৃতি এখানকার লাভকর ক্রষি। ধনিজের মধ্যে দোরার কার্যাই বিশ্বত বি

শাসনবিভাগ।--- বিহত জেলা আপাতত: মজ:ফরপুর ও দরভালা এই ছই জেলায় বিভক্ত হইয়াছে। ইহার প্রভ্যেক জেলায় তিনটী উপবিভাগ আছে। এই ছয় উপবিভাগে বা পূর্বতন তিহত জেলায় স্বতিদ্ধ এখন(১) আহিলবার (২) আহিদ্(৩) অকবরপুর (৪) আলাপুর(৫) বাবরা নং ১ (৬) বাবরা নং ২ (৭) বাব্রা তুকী (৮) বাদে-ভুষারি (১০) বাহাছরপুর (১০) বালাগাছ (১১১) বান্যান (১২) वर्रेजन (১৩) वरनावा (১৪) दिवारे (১৫) छन-বার (১৬) ভালা (১৭) ভরবারা (১৮) ভৌর (১৯) विष्ठोत (२०) .(वाहूहा (२५) हक् मि (२२) धटत्रोत्र (२७) टाएन वांक्या (२८) मिनवांत्रभूत (३८) कथता-বাদ (২৬ু) ফরথ্পুর (২৭) গদেখর (২৮) গড়টাদ (২৯) গরঞ্জোল (৩০) গৌর (৩১) গোপালপুর (৩২) হাজীপুর (৩০) হামিদপুর (৩৪) হাটি (৩৫) হাবিলী দরভাদা (৩৬) হাবি (৩৭) হিরনি (৩৮) জবদী (৩৯) জাহাঙ্গীরাবাদ ( 8 • ) ज्यनभूत ( 8 > ) जायत ( 8 २ ) जतांहेन ( 8 ० )कायता (88) कन्ट्होंनि (84) कन्मा (86) थना (89) धूत्रमा (৪৮) লাছগারী (৪৯) লোবান (৫০) মহিলা (৫১) মহিলা জিলা তুকী (৫২) মহিন্দ (৫৩) মকরব্পুর (৫৪) মড়বা

ধ্যাত্মক কাল।

কলা (৫৫) মড়বা গুর্দ্ন (৫৬) ননপুর (৫৭) নারাদা (৫৮) ন্তন (নোতন) (৫৯) নিজামউদ্দীন্পুর স্থেগরা (৬০) ওবরা (৬১) পচ্ছি (৬২) পছিম (পশ্চিম) ভিগো, (৬০) পদ্রি (৬৪) পরহারপুর জ্বন্দী (৬৫) পরহারপুর নোরাস (৬৬) পরহারপুর রাবো (৬৭) পিগুরুজ্ব (৬৮) পিলি (৬৯) পূর্ব (পূর্কা) ভিগো (২০) রামচান্দ (৭১) রতি (৭২) সহোরা (৭০) সনিমাবাদ (৭৪) সনিমপুর মহবা (৭৫) সরাই হামিদপুর (৭৬) সরেসা (৭৭) শাহ্জহানপুর (৭৮) ভাজপুর (৭৯) ভরা ভাতশালা (৮০) ভরসোন (৮১) ভরিয়ানী (৮২) ভিলকটাদ (৮০) ভিরসত (৮৪) চাকলা নাই—এই ৮৪টা পরগণা।

निशाही विष्णाह।--, १४६१ थुडोटल यथन मःवान चानिन, দিলীবিলোহে উন্মত্ত কভকগুলি বিলোহী দিপাহী অিহতে খনেশে ফিরিয়া আলিয়াছে। এখানকার ইংরাজেরা পূর্ব হ্টতে আশক্তি হাদয়ে রকার উপার খুঁজিতেছিলেন। ধনীলোকেরা ভীত হইয়া স্কল্প পরিবারবর্গকে অন্তত্ত পাঠাই-ৰার ব্যবস্থা করিতেছিলেন। জুনের তৃতীয় সপ্তাহে ওনা গেল, ওয়ারিস্ আলী নামে একজন পাহারাওয়ালা( দিলীর ৰাদশাহবংশে তাহার জনা) পাটনার মুসলমানগণের সহিত 'এ সম্বন্ধে প্রাদি লেখালেথি করিতেছিল। একজন নব্য যুবক **त्रि** जिनियान ७ 8 जन नी नकत्र সাह्य हेशांक ध्रिए ज যান এবং পাটনা ও গয়ার মধ্যবর্তী কোনস্থানের এক বিখ্যাত वनगाहेमत्क এ मयस्क यथन तम िठि निथिए छिन, तमहे সমরে গেই চিঠিওজ ইহারা তাহাকে ধরেন। ওয়ারিস্ আলির ফাঁসি হয়। তৎপর দিন দৈতাগণ প্রাঞ্চিত ক্ষেপিয়া উঠে। জ্রীফ খাঁ ভাহাদের অধিনায়ক হইয়া মুকের ডাক মারে ও কালেক্টরের বাড়ী লুঠ করে, পরে রাজকীয় কোণা-গার আক্রমণ করে, কিন্তু পুলিস ও নাজিবেরা ভাহাদিগকে তাড়াইয়া দেয়। বিজোহীরা অবালীগঞ্জ সেবানে প্লায়ন করে। এতদ্তিদ্ন আর কোন গোল মাল হয় নাই। তবে আশিকানাুনাবিধ হইয়াছিল।

ত্রিহত ও পার্শ্বরতী কয়েক জেলার কিয়দংশই পৌরাণিক দিলিরাল্য। [ বিভতের প্রাচীন ইতিহাস মিথিলাশকে জন্তব্য ] ব্রীশট্ একজনু প্রাচীন বৈদ্যক গ্রন্থকার।

ত্রীষু (তি ) তায় ইববং পরিমাণমত কন্তত লুক্। বাণতায়-পরিমিত স্থান।

ত্রীযুক (ক্নী) তার ইববো যত্ত কপ্। বাণতারযুক্ত ধরু।
"ত্রীযুকং ধর্নজিণা" (কাত্যা শ্রেণ ২৫।৪।৪৭) 'ত্রিভির্ম্ব-ভিক্পেতং ধর্নজিণা' (কাব্যা ) দ্রীষ্টক (পুং) দ্রিত্র: ঋগাদিরপা ইউকা বহা। ঋগিছে।

"সএস ত্রীষ্টকেহিয়ি:। ঋগেকা বস্তুরেকা সামৈকা ভদ্ধা,
কামিত্যাদি" (শতং ত্রাং ১০।৪।২।২১ )

ক্রেটি (জী) ক্রটাতে ক্রেট-ইন্ সচ কিং (ইগুপধাং কিং।
উণ্ ৪।২১৮) ১ স্কৈলা, ছোট এলাচ। ২ আরা। ৩ সংশার।
৪ কালভেদ, ব্যাক্ষরের চতুর্ভাগগ্রহণাত্মক কাল, কা

"অণু বৌ পরমাণ্: ভাৎ অসরেণুস্তর: স্বত: । জালার্করশ্যবগতঃ থমেবাস্কুণতরগাৎ। অসরেণুস্তিকং ভূঙ্কে যা কালা সা ক্রটি: স্বতা ॥" (ভাগা ৩০১১৮)

ছই পরমাণ্তে এক অণু হর, তিন অণ্তে একী আসেরেণ্। গনাক্ষার দিরা ত্র্যক্রিণ গৃহমধ্যে প্রবিষ্ট হইনে তন্মধ্যে এই আসেরেণ্র প্রত্যক্ষ হর, ত্র্যা-কিরণযোগে অভিশন্ন লঘ্ছ হেতু নাহা অভিশন্ন ক্ষুত্র ক্ষুত্র ইইন আকাশগামী হয়, তাহাই আসেরেণ্। ঐরপ তিন আম রেণ্তে যে কাল ভোগ করে, তাহার নাম ক্রটি। ক্রটিরপ কালকে শতভাগ করিলে এক বেধ, তিন বেধে এক লব, তিন লবে এক নিমেষ ও তিন নিমেষে একক্ষণ হয়।

(ভাগ• ৩৷১১ অ•)

৫ কুমারাহতর মাতৃভেদ। ৬ অবস্বাদির হীনতা। ক্রেটিড (অি) ফ্রট-জন। ১ ছিন্ন, কর্তিত। ২ ভগা। ০ খণিট ৪ আহত। ৫ আঘাতিত।

ক্রেটিবীজ (পুং) কচু। (শন্মা॰)

ক্রটিস্বীকার (পুং) ক্রটানাং স্বীকার:। দেবিস্বীকার ন্নতাস্বীকার।

ক্ৰেটিশস্ (অব্য°) ক্ৰটি বীপ্সাৰ্থে শস্। ক্ৰটি ক্ৰটি, অভাৰ ক্টি।

ক্রেটী (ত্রী) করিলা, ছোট এলাচ।
ব্রুষণাদিমপুর (ক্রী) পাঞ্রোগাধিকারে রনেজসার-সংগ্রহার
ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—অইগুণ গোম্বে মঙুর গার্ব করিয়া শোধন করিবে। পরে শুঠ, পিপুল, মরিচ, চিরা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, দারুহরিজা, দেবদারু, বিছর এই সকলের সমান উক্ত মগুর মিশ্রিত করিতে হইবে। তুই তোলা পরিমাণ ঘোঁলের সহিত সেবন করিলে অরী এবং অর্পনি বিশেষে হলীমক, পাঞ্চ, অর্ল, শোধ, উর্ব্ধ কামলা ও কুস্তকামলা আরোগ্য হয়। (রসেজসারসং পাঞ্চি। ব্রুণাদিলোই (ক্রী) শোধাধিকারে রসেজসারসং

হোক্ত ঔষণ ভেদ। প্রস্তুত প্রণাণী—

ভ্রা, পিপুল, মরিচ ও বৰকার সমভাগ লোহ মিশ্রিত ক্রিয়া ত্রিকলার কাথের সহিত সেবন ক্রিলে সহসা শোথ রোগ আরোগ্য হয়। এরিসেক্সসারসং শোধ্চিং)

ত্র্যণাদ্যলোহ (ফ্লী) ছোল্যরোপাধিকারে রবেক্সবার-সংগ্রহোক্ত ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রণাদী—

ভুঠ, পিপুল, মরিচ, ভাল, চই, চিতা, বিট্লবণ, উদ্ধিদলবণ, সোমরাজী, সৈদ্ধবলবণ ও সৌবর্চ্চ লবণ এই সকল
সমভাগে একঅ করিবে এবং এই সকলের ভুলা লৌহচুর্ণ
একঅ মিশ্রিত করিয়া প্রজ্ঞেত করিবে। মধু ও ভাত জয়পানের সহিত সেবন করিলে মেদরোগনাশ, বল, বর্ণ ও জ্ঞারি
বৃদ্ধি হয়। ইহা রসায়ন, মেহ এবং কুঞ্চ প্রভৃতি রোগনাশক। (রসেক্সনায়নণ ছৌলাচিণ)

Cao | (রী) জীন্ ভেদান্ এতি প্রাপ্নোতি বা বিদ্যামিত।
প্রোণ সাধু: । ২ অমি এয়, — দক্ষিণ, গার্হণত্য ও আহবনীয়
এই সমুদিত অমি এয়। বেদবিদ্ধ মুনিগণ অমিকে তিনবায়
প্রণয়ন করিয়ীছিলেন, এই জয় অমি ত্রেতাছ প্রাপ্ত হইয়াছিল।
"ব্রিধাপ্রণীতোজ্বলনা মুনিভিবেণণারলৈ:।

অতল্রেতাত্মাপলো যদেকল্রিবিধঃ কুতঃ॥" (ছরিবংশ ২০৫।৫)

মহারাজ ইলানন্দন একটী অরণী নির্দ্ধাণ করিয়া শমীর্ক হইতে অগ্রিমন্থনপূর্বক ত্রিধা বিভক্ত করেন এবং ঐ অগ্নিতে নানাবিধ হজের অন্ধুর্চান করেন। এই যজে মহারাজ গর্মবর্গণের সালোক্য প্রাপ্তাহন। পূর্বে একমাত্রই অগ্নি ছিল। গর্মবর্গণের বরপ্রসাদে মহারাজ তাহাকে ত্রিধা বিভক্ত করেন; এই অবধিই অগ্নি তিন্ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। (হরিব॰ ২৬।৪৫—৪৬)

ং দৃঁতেবিশেষ, বরাটকের (কজিথেলার) মুধ্যে তিনটী কজি চিং হইয়া পজিলে ত্রেতা হয়।

. বে পাশা ঘারা দ্যতক্রীড়া হয়, তাহার যে পাশার মধ্যে 
তিনী চিক্ত আছে, দেই পাশা উত্তান ভাবে অর্থাৎ চিৎ
ইয়া পড়িলে ত্রেতা হয়। "ত্রেতয়া ছতসর্ক্রম্মং" (মুদ্ধকটিক)
স্পত্তা ও ঘাপর যুগাস্তরবর্ত্তী যুগভেদ, কার্ত্তিক মাসের
য়য়ানবমী তিথিতে ত্রেতা বুগের উৎপত্তি হয়, এইজয়ৢ,কার্তিক
মাসের উয়ানবমী অতিশয় পুণা। তিথি; এই ত্রেতায়ুগে ভগবান, বামন, পরভরাম ও প্রীরামচক্ররণে জয়গ্রহণ করেন।
এই য়ুগে পুণা ত্রিপাদ, পাপ একপাদ। এই সময় পুরুরই
প্রধান তীর্থ। ব্রাহ্মণ সকল সায়িক, প্রাণ অন্থিগত, মানবের
শির্মাণ চত্ত্দশ হস্ত, পরমাত্ম দেশ হাজার বৎসর, ব্যবহার্যা
রৌপা পাত্র, এই য়ুগের পরিমাণ ১২৯৬০০০। এই সময়ে
হর্যাবংশীয় বাহক, সগর, অংভ্যান্, অসময়া, দিনীপ, ভগী-

রথ, অবল, দশরথ, জীরামচক্র ও কুশী লব ইছারা রাজ্যক্রব্যুটা। এই কালে লোক সকল দানধর্মপরায়ণ, আদ্ধান সকল সামিক ও রাজ্যণ যজ্ঞপরারণ হইবে। এই সময় ভারক একানান—

"রাম নারারণানন্ত মুকুন্দ মধুহদন: ।, কন্ধ কেশব কংলারে ছুরে বৈক্ঠ বাষন ॥" (পঞ্জিকা)

ত্তেতাযুগে দিবামান ৩০০০ বংসর, সন্ধ্যামান ৩০০,
সন্ধাংশ ৩০০, মোট ৩৬০০; মান্থুবদিগের পরিমাণ বারা গ্রুপ
করিলে ১২৯৬০০০ বর্ষ হয়, স্কুতরাং ত্তেতাবুগের বর্ষ ১২৯৬০০০।
শ্চমার্থ্যন্ধ: সহস্রাণি বর্ষাণান্ত ক্বতং বুগং।
ভক্ত তাবচ্ছতী সন্ধ্যা সন্ধাশশ্য তথাবিধঃ॥
ইতরের বুসন্ধ্যের স্বন্ধ্যাণ শতানি চ॥
একাপারেন বর্জন্তে সহস্রাণি শতানি চ॥
(মন্ত্র্)

ষেতামুগে রাজা সকল প্রজাদিগকে অপত্য নির্বিশেষে
পালন করেন, এইজক্ত অন্তিমে তাহারা অর্গগামী হন।
ত্রেভাযুগ উপস্থিত হইলেই ধর্মের এক পদ হীন হয়, লোক
সকল অন ক্রেলাহিত, অনেক লোক ল্যাপ্ এবং কেছ
আশ্রম ধর্ম অতিক্রম ক্রেনা, যাগমক্তপরায়ণ, বিষ্ণুধ্যানরত, ক্রিয় সকল ভুমাধিকারী, শুদ্রগণ প্রাক্ষণের প্রোভতৎপর, প্রাক্ষণগণ উদায়চিত্ত, বেদবেদান্তপারগ, প্রভিগ্রহনিরত, সত্যসন্ধ, জিতেক্রিয় ও বিষ্ণুদেবী। সকল স্ত্রী
পতিরতা ও প্রাণ পিত্ভক্তিপরায়ণ ও বস্করাশভ্রশাদিনী।
(পালে ক্রিয়াযোগসার।) মহুর মতে, এই যুগে আয়ুর
পরিমাণ কাল তিন শতবর্ষ।

মহানির্বাণতত্ত্ব নিথিত আছে,—সভাযুগ অতীত হইলে ত্রেভাযুগে মর্ক্যলোক বেলোদিত সকল কর্ম সমাক্রপে সাধন করিতে সমর্থ হইবে না। এই সময় বৈদিক কর্ম্ম বহু ক্লেশকর হইবে, বেলার্থযুক্ত শাস্ত্র সকল স্মৃতিরূপৈ অবস্থিত থাকিবে, দেই সময় ঘোর সংগার সাগরে শিবই একমাত্র ভর্তা, পাতা, উর্ব্তা ও একমাত্র প্রভু।

"ছাং বিনা কোহণি জীবানাং ঘোরসংসারসাগরে। ভর্তা পাতা সমুদ্ধর্তা পিভূবৎ প্রেরক্তৎ প্রভূ॥"

(মহানির্কাণ্ডন্ত্র)

ত্রেতায় (পং) তেতাগাং একোহয়:। দ্যতভেদ, পাশা থেলার
মধ্যে একথানি পাশা বা কড়ি পেলার মধ্যে একটা কড়ি।
ত্রেতায়ুগ (ক্লী) তেতিব যুগং। দিতীয় মুগ। [তেতা দেখ।]
ত্রেতায়ুগাদ্যা (জী) তেতায়ুগছ আদ্যা তিখি:। কার্তিক
মানের ভক্লানবমী, এই দিনে তেতায়ুগের উৎপত্তি হয়।
ত্রেতিনী (জী) তেতা অভ্যতাইনি তীপ্। তেতায়িগাধ্য

ক্রিয়া, দক্ষিণ, গার্হপত্য ও আহবনীয় এই অধিক্রসাধ্য ক্রিয়া। "উর্জা যত্তে তেতিনী ভূতং" ( ধক্ ১ ০ ০ ১ ০ ৫ ৯ ) ক্রেথা ( অব্য ) ত্রিপ্রকারং ত্রি-এখাচ্ সংজ্ঞায়াং বিধার্থে ধা। (পা এতা৪২) ইতি-ধা। (এধাচ্চ। পা এতা৪৬) ত্রিপ্রকার, তিন-বার। "ইদং বিফুর্বিচ্ক্রমে ত্রেধা নিদধে পদং" (ঋক্ ১ ২২ ১১৭)

"একজ্রেধা বিহিতো জাতবেদা;" (অথবর্ধ ১৮।৪।১১) ত্তিংশ (ক্নী) ত্রিংশদধ্যায়াঃ পরিমাণমক্ত ত্রাহ্মণস্ত ও। ত্রিংশ-ুদধ্যায়পরিমিত ত্রাহ্মণভেদ।

বৈত্রককুদ (ক্লী) ত্রিককুদ্নাম পর্বতঃ তত্র ভব অণ্। সৌবীরাঞ্জন।
"ত্রৈককুদাপ্পনোভাবেহত্তদ্।" (কাত্যা শুলা পাহাতঃ)
'ত্রিককুদপর্বতঃ তত্র ভবঃ অঞ্জনং বৈত্রককুদং সৌবীরমিতি যৎ প্রসিদ্ধং' (কুর্ক) ইহার নাম ক্র্মি।

[ काक्षन (मर्थ । ]

বৈকেকুভ (ক্নী) তিকেকুভ্ অণ্। > উদানবায়ুসম্বনীয়। ২ নবরাতিমাধ্য যজ্ঞভেদ।[তিকেকুভ দেখ।]

বৈ কণ্টক ( বি ) ' বিকণ্টক; লব্গর্গমৎস্থ ততঃ পরিমাণে রজতাদিত্বাৎ অঙ্। লব্গর্গমৎস্থের পরিমাণ।

বৈত্রকালভর (ত্রি) ত্রিকালজ্ঞ অণ্। ত্রিকালজ্ঞ সম্মীয়, যাহারা ত্রিকাল বিষয় অবগত আছেন, তৎসম্মীয়।

বৈত্রকালিক (ঝি) আিকালে ভবঃ ঠঞ্। ভূত ভবিষ্যৎ ও বর্ত্তমান কালবর্ত্তী। "বৈত্রকালিকমিদং জ্ঞানং প্রাত্তভূতং তথেপিতঃ।" (ভারত শাণ ৩৪২ অ°)

বৈকোল্য (ক্লী) ত্রিকাল স্বার্থে ষ্যঞ্। ভূতাদি ভিনকাল, ভূত, ভবিয়াং ও বর্ত্তমান কাল।

ত্রৈকৃটক, চেদিরাজ্যে কলচ্রি বংশের সমসাময়িক কালে তৈর্কৃতক বংশ বা ত্রিকৃটক বংশ রাজ্য করিতেন। এ পর্যন্ত এই বংশীয় ধরসেন নামে একজন রাজার নাম পাঙ্মা গিয়াছে। তাঁহার হুল সম্বতে প্রদত্ত একথানি তাম শাসন আবিষ্কৃত হইয়াছে। পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের মতে ঐ অঙ্ক চেদিসম্বংজ্ঞাপক।তাহা হইলে ৪৫৬ খুইান্দে রাজা ধরসেন বর্তমান ছিলেন। (২৪৯ খুইান্দে চেদিসম্বং প্রভিত্তিত হয়।) ত্রিকৃটকরাজাদিগের স্থাপিত একটা অন্ধ প্রচলিত ছিল। ত্রিকৃটকরিজাদিগের স্থাপিত একটা অন্ধ প্রচলিত ছিল। ত্রিকৃটকরিজাদিগের স্থাপিত একটা অন্ধ প্রচলিত ছিল। ত্রিকৃটকরিজানিং প্রহর্তমাহে, তাহাতে "ত্রিকৃটকানাং প্রহর্তমানরাজ্য সম্বতে" এইরপ উল্লেখ আছে, কিন্তু এই বংশীয় কোন রাজ্য সম্বতে" এইরপ উল্লেখ আছে, কিন্তু এই বংশীয় কোন রাজ্য নাম নাই। রাজা ধরসেন অধ্যমধ মুক্ত করিয়াছিলেন বলিয়া তাহার প্রদন্ত তাম্রশাসনে কথিত ইইয়াছে। এতজ্বারা প্রমাণ হয় যে, ত্রিকৃটকবংশীয় রাজ্পণ এক সমরে অতি প্রবল ছিলেন।

ত্তিগর্ত্ত (পুং) ত্রিগর্ত্তো দেশবিশেষ: সোহভিদ্ধনোহন্ত ওছ বা অপ্। > পিত্রাদিক্রমে এই দেশবাসী, বাহারা পুরুষায়ক্তমে, ত্রিগর্তদেশে বাস করে। ২ ত্রিগর্তদেশের রাজা।

ত্রৈগঠক (তি) তিগঠত দেশভেদত অদ্রদেশাদি তিগঠ বৃঞ্। তিগঠ দেশের অদ্রদেশাদি।

ত্রৈশুলিক ( ত্রি ) ত্রিগুণার্থং দ্রব্য একগুণং প্রমাছতি ত্রিগুণ ঠক্। ত্রিগুণ গ্রহণ করিবার নিমিন্ত এক গুণ দ্রব্য প্রয়োজা বার্দ্ধ্বিকভেদ।

ত্রি গুণ্য (ক্রী) ত্রিগুণানাং ভাবেঃ কর্ম বা স্বার্থে যুঞ্। ১ সন্থানি গুণুত্রয়, সন্থ রক্ষ ও তমোগুণের ধর্ম।

"তৈত্তপাৰিষয়া বেদা নিজৈপ্তণো ভবাৰ্জ্ন।" ( গীতা )
"অবিবেক্যাদেঃ সিদ্ধিজৈপ্তণাভিদিপ্তায়ে হভাবাৎ।"(সাংখ্যকা)
ত্তিপ্তণমাগ্লা সংসার, এই সমস্ত সংসারই অর্থাৎ লগতই
ত্তিপ্তণময়। [ত্তিপ্তণ দেখ।]

"ত্রৈগুণাললিতৈক্ষাক্ষরি রুপনীন্ধিতে।'' ( শিবরাত্রিতক্ষা)

ত্রৈ গুণা শব্দ এইছলে শৈতা সৌগদ্ধা ও মান্দা এই অর্থ ব্যবহৃত হইয়াছে।

ত্তৈত (পং) জীন্ বৎসান্ তনোতি য্গপৎ তন বাহণ ড বিঃ
গর্ভভেদঃ তত্ত ভবঃ অণ্। যুগপজ্জনাধারক গর্ভজাত প্র।
"ক্রপেইণবাবককে সৌমাপৌফং তৈত্তমালভেত প্রকামে
বৌ বা" (তৈতিং সং) 'অমাণাং বৎসানাং যুগপজ্জাতানাং তঃ
সমুদায়ন্তিতঃ তত্ত্ত ভবস্তৈতঃ তেষামগ্রতমঃ।' (ভাষা)

ত্রৈতন (পুং) অতাস্ত নির্ঘুণ দাসভেদ। "শিরো যদস্ত ত্রৈতনো 'বিবক্ষাৎ স্বয়ং দাসঃ" (ঋক্ ১।১৫৮/৫)

'বৈত্তন এতন্নামকো দাসোহত্যস্তনির্বা:।' (সাঁমণ)
বৈদেশিক (ক্লী) ত্রিদশা দেবতা অস্তঞ্। দৈর অঙ্গার ক্লপ তীর্থভেদ, অঙ্গুলের অগ্রভাগ ত্রৈদশিক তীর্থ। "ব্রাক্ষোণ বিশ্বস্তীর্থেন নিত্যকালমূপস্প্লেৎ।

কারত্রুদশিকাভ্যাং বা ন বিপ্রেণ কদাচন ॥" (মন্থ ২০৫৮)
বৈরেধ (অব্য) ত্রিপ্রকারং ইভি ত্রিধা ভতঃ ধম্ঞ (ছিভোগ
ধম্ঞ । পা হেওা৪৫) ত্রিপ্রকার । •

"ব্ৰতাশকো বা ত্ৰৈধং তঙ্গানু বিভন্ন।" ( কাত্যা॰ শ্ৰৌ॰ ২৫।৪।৪।

ত্রৈ ধর্ম্মা ( ক্লী ) ত্রমাণাং বেদানাং ধর্মান অর্হতি যুঞ্। ধর্না বেদ সম্মীয় হৌত্র, অধ্বয়্য ও ঔদ্গাতার্হ জ্যোতিটোমাণি য়া কামাকর্ম।

ত্রৈধাতবী (ত্রী) উদবসানীয়াথ্য বজ্ঞভেদ। "ত্রৈধাত্র্ণ সানীয়া সাবেব বন্ধ:।" (শতং আং ১২।৬।২।৭) ব্ৰধাতবীয় (ক্লী) বিধাতবী গৰ্হা ছ। যজ্ঞভেদান্দ কৰ্মজেদ। শুনৰ্মো বা এম যজ্ঞো যইপ্ৰধাতবীন্ধং।"(তৈন্তি' দ' ২।৪।১১।২) বৈধাতৃক (বি.) বিজ্ঞাং ধাতৃতিঃ স্মৰ্গনৌপ্যভাইশ্ৰনিবৃত্তঃ ঠঞ্ । স্মৰ্গাদি ধাতৃত্বন্ধ নিস্পাস্থ।

বৈনিকিক (বি ) বিভি: নিকৈ: ক্রীতং ঠক্। বিনিক্ষারা ক্রীত, যাহা তিন নিক দিয়া ক্রয় করা হয়।

ঠিত্রপার বিক (তি) তিঃ পারারণং আবর্ত্তরতি ঠঞ্।

তিবার বেদপারায়ণকারক, যিনি তিনবার বেদের পারায়ণ
করিয়াছেন।

ত্তিপুর (পুং) তিপুর-খার্থে অণ্। তিপুরদেশ। তিপুরোহ-ভিজনোহস্ত তস্ত রাজা বা অণ্। ২ পিতৃপিতামহক্রমে তিপুরবাসী। ৩ তিপুরের রাজা। তিপুরং পুরত্তরং অন্তাস অণ্।৪ তিপুরস্বামী অস্থরভেদ, তিপুরাস্রর+°

ত্রিফল (ক্নী) ত্রিফলানাং তদাখন্তরাণামিদং অণ্।
চক্রদর্যকে ঘৃতভেদ, প্রস্তুত্ত প্রণালী—ঘৃত ৪ সের।
কাণাথ ত্রিফলা প্রত্যেক ২ সের, জল ৪৮সের, শেষ ১২ সের,
তথ্ব ৪ সের, কলার্থ ত্রিফলা, ত্রিকটু, ডাক্ষা, যষ্টিমধু, কটুকী,
প্ররীককার্ঠ, ছোট এলাচ, বিড়প, নাগেশ্বর, নীলোৎপল,
অনন্তম্ল, শ্রামালতা, রক্তচন্দন, হরিদ্রা, দাক্রহরিদ্রা,
প্রেত্তেক ২ তোলা, এই সকল জ্বাসংযোগে যথা নিয়মে
ঘৃত প্রস্তুত করিতে হইবে। ইহাতে তিমির, কামলা, বিস্প্র

ত্রৈবলি (পু:) ঋষিভেদ। (ভারত স'৪ আ:)

ত্রৈমাতৃর (পং) তিস্থাং মাতৃণামপত্তাং অণ্ মাতৃকৎ। লক্ষ্ণ,
কৌশলা কেকরী ও স্থমিত্রা এই তিনজনের ক্ষেহভাজন
হৈতৃ এবং কৌশলা ও কেকয়ীর চক্কর অংশ ভোজন ধারা
স্থমিতা ইইতে উৎপর বলিয়া লক্ষণের নাম তৈমাতৃর।

্লিক্ষণ দেখ।]
বৈমাদিক (ত্রি) ত্রিমাদং তৃতীয়মাদং তৃত স্বস্ত্রা প্রাপ্তঃ
১ঞ্, ত্রিশক্ষ প্রণার্থকেন সংখ্যাবাচকাছাভাবাং ন দিওছেং
'বিগোন্গনপত্যে' ইতি নলুক্। ১ স্বস্তা ছারা জন্ম হইতে
তৃতীয়মাদ্বাপক, তিন্মাদ বুয়য়।২ ত্রিমাদ ভব।

ত্রৈমাস্থ্য (ক্লী) ত্রিমাস স্বার্থে ঘাঞ্। ত্রিমাস, তিনমাসু।
্ শক্ষমাসমাসকৈমাস্তবাণ্মান্তে চৈকে।" (কাত্যাণ শ্রেণিং২ । ৩ ।৬)
ত্রিয়ম্বক (ত্রি) ত্রিম্বকো দেবতা অক্ত। ত্রাম্বক দেবতার

তিন্দেশে পশুভেদ। "পৃধস্তকৈরম্বকা" (শুক্রমজ্ণ ২৪ ৷ ১৮)

'বিংশে কূপে ত্রিয়মকদেবতাকা: পৃষস্ত।' (মহীধর)

^{২ হোমভেদ।} ৩ ক্লন্তদেবতাক ধমুর্বিভাভেদ। ৪ ক্লন্তদেবতাক

^{বিন প্রভৃতি}, মহাদেবের উদ্দেশে,গুরীত উপহার প্রভৃতি।

ত্রৈয়ত্বকা (জী) গায়তী। "তৈয়ত্বকা তিবর্গা চ তিকাল-জ্ঞানদায়িনী।" (দেবীভাগ ১২।৬।৭৩)

ত্রৈযাহার,ক ( তি ) আহাবে দেশভেদে ভবং ধ্মানি বুঞ্, অত বৃদ্ধিনিষেধাৎ উচ্। আহাবদেশভব।

ত্রৈরাশিক (অি) জীন্রাশীন্ অধিকতা প্রস্তং ঠঞ্। গণিতভেদ, এই গণিতু তিন্টী রাশি অধিকার করিয়া অহপাতরণে সম্পল্লহয়।

তিনটা নির্দিষ্টরাশি অবলম্বন করিয়া সেই তিনটার একটার সহিত সম্বন্ধ অপর একটা চুত্র্থরাশি নির্ণয় করা এই নির্মের উদ্দেশ্য। তিনটা রাশি লইয়া কার্য্য করিতে হয় বলিয়া ইহার নাম তৈয়াশিক (Rule of three)। তিনটা নির্দিষ্ট রাশির মধ্যে একটা আর একটার যতগুণ বা যতভাগ হইবে, নির্ণেয় চুত্র্থটা অবশিষ্ট রাশির ততগুণ বা ততভাগ হইবে। স্তর্গাং তৈরাশিকের প্রক্রিয়া গুণন ও ভাগহার-মূলক। যথা—এক মণ চিনির মূল্য ৭৮০০ আনা হুইলে ধ মণ চিনির মূল্য কত হইবে ম

এই প্রশ্নে ৫ মণ এক মণের যত গুণ, ৫ মণের মূল্য এক মণের মৃল্যের ক্ষর্থিৎ ৭৮/০ আনার ততগুণ হইবে। স্ক্রাং ৭৮/০ আনাকে ৫ গুণ করিলে ৫ মণের মূল্য ৩৮/০ পাওয়া যাইবে। অতএব ভাহাই করা হইল এবং ৫ মণের মূল্য ৩৮/০ হইল। এই প্রশ্নের অক্তুলি অক্তরণে স্থাপন করিয়া ফল হির করা হাইত্তে পারে, যথা—

মণ মণ টাকা।

১ ° : ৫ : १॥०'॰ : অ, অর্থাৎ
নির্ণের রাশি,। এই অঙ্কপাত এইরূপে পাঠ করিতে হয়।

১ যথা ৫এর সম্বন্ধে, টাকা—৭॥০'॰ তথা জ্ঞ এর সম্বন্ধে।
আন্দির্গ করিতে হইলে গাল'৽ আনাকে ৫ দিয়া
ত্তাণ করিয়া ত্তাগকরা আর না কুরা সমান, অতএব ৫ দিয়া
তথ্য করিয়া যে ত্তাক্লা পাওয়া যায়, তাহাই ক্যুএর সমান।
এম্বলে ৫ মণ দিয়া ত্তাণকরা হইল, এরূপ বিবেচনা না করিয়া
আনবচ্ছিয় রাশি ৫ দিয়াই ত্তাকরা হইল, জ্ঞান করিতে
হইবে, অত্যথা ত্তাকিয়া সন্তবে না।

দৃষ্টাস্ত--- যদি ৮ ভরি ম্বর্ণের মূল্য ৪২ ্টাকা হয়, তাহা হইলে ৩ ভরি ম্বর্ণের মূল্য কত হইবে ?

এন্থলে অসংগ্র ১ ভরির মূল্য স্থির করিয়া ভাহাকে তিন দিয়া প্রণ করিলে তিন ভরির মূল্য পাওয়া যাইবে ৷

এক ভরির মূলা স্থির করিতে হইলে ৮ ভরির ৪২১

টাকাকে ৮ দিয়া ভাগ করিতে হর। ৪২ টাকাকে ৮ দিয়া ভাগ করিলে ভাগফল । টাকা হয়। তাহাকে ৩ দিয়া গুণ করিলে ১৫৮০ আনা হয় এবং ইহাই প্রশ্লের উত্তর। এখন এই প্রশ্লের অকগুলি পূর্ব্বমত স্থাপন করিলে এইরপ হয়। যথা—

কিন্ত ৪২কে অগ্রে ৮ দিয়া ভাগ করিয়া ভাগফলকে পরে

ত দিয়া গুণ না করিয়া যদি ৪২কে ৩ দিয়া গুণ করিয়া
গুণফলকে ৮ দিয়া ভাগ করা যার, তাহা হইলে ফলের
ন্নাতিরেক হয় না। অতএব ৪২কে ৩ দিয়া গুণ করিয়া
গুণফল ১২৬কে ৮ দিয়া ভাগ করা গেল, ইহাতে ভাগফল
টাকা ১৫৮০ হইল। এইরূপ প্রান্ত্রে প্রক্রিয়াসকল বিশেষ
মনোনিবেশপ্র্কিক বিচার করিলেই পরবর্ত্তী নিয়ম হির
হইতে পারিবে।

তৈরাশিকের অঙ্গণিতের নিষম তিনটা নির্দিষ্ট রাশির
মধ্যে যে রাশিটা নির্দের চতুর্থ রাশির জাতীয় তাহাকে তৃতীয়
ছানে হাপন কর, পরে প্রশ্নের ভাব বিবেচনা করিয়া দেখ
যে চতুর্থ রাশিটা তৃতীয় রাশি অপেকা গুরু কি লঘু হইবে,
গুরু হইকো নির্দিষ্ট রাশিগুলির অবশিষ্ট হুইটীর যেটী গুরু,
তাহাকে, অথবা লঘু হইকো যেটা লঘু সেইটীকে বিতীয়
ছানে এবং অপরটীকে প্রথম হানে হাপন কর।

প্রক্রিয়াঘটিত নিয়ম—

প্রথম ও বিতীয় রাশি ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীস্থ হইলে তাহাদিগকে আবশুক মত সর্কনিয় বা এক শ্রেণীস্থ কর, এবং
কার্যাকালে ভাহাদিগকে অনবচ্ছিন্ন জ্ঞান কর। তৃতীয়
রাশি মিশ্ররাশি হইলে তাহাকে আবশুক মত সর্কানির
শ্রেণীতে আনরন কর। পরে বিতীয় ও তৃতীয়ের শুণফলকৈ
প্রথম রাশি দিয়া ভাগ করিলে যে ভাগফল হইবে, ভাহাই
উত্তর হইবে। তৃতীয় রাশি যে শ্রেণীতে আনীত হইয়াছে,
উত্তরটী সেই শ্রেণীস্থ হইবে।

পক্ষে আবিশ্রক হইলে তাহাকে তন্ন্ন বা ভাউন্ন ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীতে আনমন করিলে প্রকৃত উত্তর ভিন্ন হইবে। অপর অহু সকল হাপন করিলে বা তাহাদিগকে অন্ত শ্রেণীতে আনিলে যদি প্রথম ও ছিতীমের বা প্রথম ও ভৃতীয়ের কোন সাধারণ গুণনীমক থাকে, তবে ভাহা দিয়া ভাহাদিগকে ভাগ কর এবং ভাগদল লইমা পূর্বাণিথিত কার্য্য কর, ইহাতে কোন কভি হইবে না, এবং প্রক্রিয়ারও স্থবিধা হইবে। কেননা ভাজা ও ভালক উভন্ন রাশিকে কোন এক রাশি দিয়া ভাগ করিলে ভাগদলের ম্যনাভিরেক হয়

না। দৃষ্টাস্ত--- যদি এনঃ সের তৈলের মূল্য ৪২৸৽ আনা হয়, তবে ৪/৮ সেরের মূল্য কত ?

এই প্রশ্নে স্ব্য টাকা নির্ণের ছইমাছে, জাতএব ভজ্জাতীর টাকা ৪২৮০ আনাকে তৃতীর স্থানে স্থাপন করা গেল এবং প্রশ্নের গতিকে বুঝা গেল যে নির্ণের রাশি ঐ তৃতীর রাণি জপ্রেকা লঘু হইবে, এই জন্ত অবশিষ্ঠ তৃইটী রাশির লঘুটীকে দ্বিতীর স্থানে রাধিয়া অপ্রটীকে প্রথম স্থানে রাধা গেল।

মণ মণ টাকা।

৫॥৪ :: ৪/৮০ :: ৫২५০: আ

পরে প্রথম ও বিতীয় রাশিকে সেরে আনিয়ন করিয়া

এবং তৃতীয় মিশ্রাশিকে আনায় আনয়ন করিয়া প্রয়ায়

এই রূপ স্থাপন করা গেল।

সের ' সের জানা।

২২৪ :: ১৬৮ :: ৬৮৪:জ

এখন প্রক্রিয়ার নির্মালুসারে—

৬৮৪ × ১৬৮ ৬৮৪ × ৩

এই স্থলে ১৬৮ ও ২২৪কে সাধারণ গুণনীয়ক ৫৬ দিয়া ভাগ করা গেল। পরে ৬৮৪ ও ৪কে ৪ দিয়া ভাগ করা গেল। এই রূপ সকল স্থলে ব্ঝিতে হইবে।

বৈত্ররূপ্য (ক্রী) ত্রিরূপন্থ ভাবং যুঞ্। ত্রিধারূপ। ত্রৈলিক (ক্রী) ত্রীণি সম্বরজন্তমাংসি পুংস্তীক্রীবরূপাণি ব ্লিকানি যক্ত তক্ষেদং বা অণ্। ত্রিলিক প্রধান কার্য্য।

[ जिनिन (१४।

ত্রৈলোক (পুং) ত্রিলোক স্বার্থে অণ্। ত্রৈলোকা, স্বর্গ মর্চ ও পাতাল।

তৈলোক্য (ক্নী) তিলোকীএব স্বার্থেয়ঞ্। স্বর্গ, মর্বা পাতাল। "তৈলোক্যে যানি রন্থানি সাম্প্রভং ভারি ( গ্রে।"(চণ্ডী)

ত্রৈলোক্য চিন্তামণিরস (পুং) রসেক্সনারসংগ্রাহাত জ্বরনাশক ঔবধভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—অর্প, রৌপা ও বা প্রত্যেকে ছই ভাগ। লোহ ও প্রবাল প্রত্যেক হ ভাগ। লোহ ও প্রবাল প্রত্যেক হ ভাগ, রস্কিল্ব ৭ ভাগ, এই সকল জব্য এই করিয়া স্বৃতক্মারীর রসে মর্দন করিয়া ২ রতি বটী প্রাক্তিরেও ছারাতে ভক করিতে দিবে। এই ঔবধ ছাগ হা অনুপানের সহিত সেবন করিলে কয়, কাস, গুলা, প্রাণ্টিকর ও উন্মাদ প্রভৃতি বিবিধ রোগের শান্তি হর, ' ঔবধ বায়ুর শান্তিকারকং। (রসেক্সনারসং ক্রম্ডিং)

১ত্রলোক্যচিস্তামণিরস ( খং ) রসেক্সসারশংগ্রহোক্ত ঔষধ-(उन। প্রস্তপ্রণাণী-হীরা, প্রর্ণ, মুক্তা, তীক্ষণৌহ, প্রত্যেকে এক এক,ভাগ, অন্ত্র ৪ ভাগ, রদ্দিশূর ৪ ভাগ, প্রস্তর্থলে লোহদতে খৃতকুমারীর রবে মর্দন করিয়া এক দ্ভিপ্রমাণ ৰটকা করিতে হইবে। পার্বভী ও স্থাদেবের পলা দিয়া এই রস সেবনে উহাদের অনুগ্রহে অশেষ প্রকার cain ও অরনাশ হইরা স্থলাভ হয়। এই ঔষণ আলার রস অফুপানে সেবন করিলে শ্লেমানাশ, শ্লেমা শুক হইলে মাক্ষিক, পিতাধিক্যে স্বত 😮 চিনি, বাতশ্লেমায় পিপুল চুর্ণ ও মধু এবং প্রমেতে ছগ্ধ অনুপানে সেবন করিবে। এই ঔষধ কান ও কফবাতনাশক, বল ও অগ্নিবৰ্দ্ধক, আয়ু ও পৃষ্টি-কর, র্যা ও দর্করোগনাশক। (রুদেক্সদারদ বাভব্যাধিচি ) ত্রৈলোক্যডন্থররস (পুং) রুসেক্সপারসংগ্রহোক্ত ঔষধ ভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—পারা, তামু, গন্ধক, পিপুল, জয়-পাল, কটকী, হরীতকী, তেউড়ী, মাকড়া গাব প্রত্যেকে এক তোলা, দিজের আঁটায় মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটকা প্রস্ত করিবে। ইহার অনুপান মধু। এই ঔষধে আভ নবজর প্রেশমিত হয়। (রসেক্সসারসংজ্বরচিং)

ত্রৈলোক্যমল্ল, ১ চৌলুক্যরাজ প্রথম ভীমদেবের পরবর্তী
বালা, প্রথম কর্ণদেবের নামান্তর। [চৌলুক্য দেখা]

২ কালঞ্জররান্ধ ত্রৈলোক্যবর্দ্মদেব কোন কোন ভাষ্ণাসনে বৈলোক্যমন্ত্রেক নামে উক্ত হইয়াছেন।

০ গোগালিগরের কছেপারিবংশ (কছেপাবাত বংশ) জাত
মালবজেতা রাজা কীর্ত্তিরাজের পুত্র মূলদেবের নামান্তর।
রাজা মূলদেবের ভ্বনপাল নামে আরও একটা নাম ছিল।
ইংার পত্নীর নাম দেবব্রতা, উছোর গর্ভে ইছার ঔরদে
রাজা দেবপালের জন্ম হয়।

• গোয়ালিয়বেরর সাস্-বাস্ত্ মন্দিরে ১১৫ • বিজ্ঞমান্তে উৎকার্ণ মহীপালের শিলালিপি হইতে জানা যায় যে কচ্ছপাত বা কচ্ছপারিবংশে লক্ষণ নামে এক রাজা ছিলেন। তাঁহার পুত্র বজ্ঞদামা গাধিনগর বা কান্তক্জরাজকে পরাজিত করিয়া গোপাজিত্র্গ (গোয়ালিয়র ত্র্গ) • জ্ঞাবিকার করেন। বজ্ঞদামার পুত্র মঙ্গলরাজ, তৎপুত্র কীর্তিরাজ মালব জয় করেন এবং সিংহপানীয় প্রামে শিবমন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। ইহারই পুত্র মৃলদেব। ইনি চক্রবর্তী লক্ষণাজান্ত ছিলেন। মৃলদেবই তোঁলোকাম্লানামে ক্পিত হইতেন। ইহার পুত্র দেবপালের পর তৎপুত্র পদ্মপাল রাজা হন। পদ্মপাল মহাবীর ও মৃদ্ধপ্রিয় ছিলেন এবং দক্ষিণভারতেও মৃদ্ধ করিতে গ্রিয়াছিলেন। তিনি বৌবনে

কালগ্রাসে পতিত হন। ইহার পর ইহার জ্ঞাতি প্রাতা স্বাগালপুত্র মহীপাল রাজা হন। কছেপারিবংশ কছেবহ বংশ নামে ইতিহাসে থাতে। [গোদালিরর দেখা]

৪ নেপালের তৃতীর ঠাকুরী বংশীয় জনৈক রাজা। ১৪৭২ খুঠাকে এই বংশীয় রাজা কক্মলের মৃত্যু হর। যক্ষমরের তিন পুত্র ছিল, জােঠ জয়রাবসল ভাটএামে এক অভন্তন্ত্র রাজ-বংশ প্রতিঠা করেন, ইহার রাজ্যকাল ১৫ বংসর। ভংপরে ইহার পুত্র অবর্ণমল, ভংপরে ভংপুত্র প্রাণমল, ভংপরে ভংপুত্র বিখমল প্রত্যেকে ১৫ বংসর রাজ্য করেন, ভংপরে ভংপুত্র বৈশমল প্রত্যেকে ১৫ বংসর রাজ্য করেন, ভংপরে ভংপুত্র ত্রেলাকামল ১৫১৭ খুটাকে রাজা হইয়া সম্ভবভঃ ১৫ বংসর রাজ্য করিয়াছিলেন। [নেপাল দেখ।]

৫ পাশ্চাত্য চালুক্যরাজ আংথম সোমেখনের নামান্তর।
[চালুক্য দেখ।]

তৈত্রে কোক্যমোহন (আি) তৈলোক্যং মোহরতি, মুহ-ণিচ্ পু।
তর্গ্নেক তারাক্বচতেক। এই কবচ ধারণ করিলে বা নিতা
পাঠ করিলে সর্ব্বজ্ঞ ও সর্ব্বদিদ্বিত্রক হয়, তাহার গৃহে লক্ষী
সর্ব্বদি স্থির থাকে, মুখে সরম্বতী সর্ব্বদা বাস করেন, এই
কবচের প্রভাবে কোন প্রকার বিপদে পতিত, হইতে হয় না।
এই কবচ না জানিয়া যাহারা তারাদেবীকে জ্ঞলনা করেন,
তাহারা অলায়, নির্ধন ও মুর্থ হয়। এইজ্ঞ তারাদেবীর
উপাসক মাত্রকেই প্রথমে এই কবচ জানিয়া পরে তারাদেবীর পূলাদি করিতে হর। (তল্পসার) *

ত্রৈলোক্যরাজ (পুং) কাশীরের একজন রাজা।

(রাজভর• ৭৷৯৩)

+"द्वाष्ट्रां ड: (आठुमिन्ह्याम क्वरः मञ्जनिश्रहः। द्विरमाकारमाहमः मात्र अर्खालविनिवातकः ॥ ভৈরব উবাচ। 💊 देवत्वाकारमाष्ट्रमः नाम कवधः व्यवहार श्वरः। मर्क्तविष्ठाभवः (एवि मर्क्षभञ्जभवः अवः । नर्त्वाच्यत्रकत्रः (पवि नर्त्वविनाधिकात्रकः। विषयात्माश्यि यक्षा मर्ज्यः भव्यान्यतः। यकृषा शर्वनामी मदेखाला काविसती विज्ः। धनाधितः कृत्वत्त्राव्ति (श्वाधितः मधौनिति: इ পঠনাদ্ধারণারিত্যং বত: সর্বে দিগীবরা:। नर्कनिष्डियुजाः नष्ठः नदेक्षेत्रकाशानुः 🕈 যক্ত প্রসাদ।দীশোহহং ভৈরবাণাং স্থরেখন্নি। কোধাধিপো মহাভীমে। দেবেদু প্রধিতঃ প্রভু:। हेनः करतः चळाषा छात्राः (या ७०० मतः। অলারুনিধিযোমুথে। ভবতেয়েব ন সংশয়ঃ ∤° ( उज्जनादत जात्राक्रा दिवालाकारनाइमः नाम क्रवहः ) ত্রৈলোকাবেশ্বদেব, জনৈক কালপ্ররাজা। ইহার পিতা পরম্দিদেবের পর ১২০৩ খুটাকো রাজ্যারোহণ করেন। ইহারই সময়ে মুসলমানেরা কালপ্রর আক্রমণ করে। অল্পরাড়ে ইহার রাজধানী ছিল। ১২০০ খুটাকো দিলীর স্মাট্ আলতামাস একবার কালপ্রর লুঠ করিতে আসেন। ইহার পিতার সময় মহোবা প্রদেশ কালপ্রররাজ্যের অধিকার্ল্রই হইলা পূথীরাজের হত্তগত হয়। ইনি চেদীরাল কলচ্রিবংশের হস্ত হইতে রেবাপ্রদেশ লয় করিয়া লয়েন। ইহার সমরে রেবাপ্রদেশের পূর্কাংশে উত্তরে লৌনপুর ও মীর্জ্ঞাপুর জেলা প্রীক্ত ইহাদের অধিকারে ছিল; সন্তবতঃ বাবেলরালগণ প্রবল হইলে দে অঞ্চলে ইহাদের অধিকার নত্ত হয়। ইনি চন্দেল বা চক্তাত্রেরংশলাত।

[ हक्कां खित्रवः म (पथ । ]

বৈত্রলোক্যবিজয়া (ত্ত্রী) তৈলোক্যন্ত বিষয়ো যতাঃ। ভাল, ভাঙ্।

ত্রৈলোক্য হ্রন্দররস ( পুং) রসেক্সনারসংগ্রহোক ঔষধ-ভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—পারদ চারিভাগ, অল্ ৬ ভাগ, লোই আটভাগ, গন্ধক, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, ৬ ঠ, ণিপুল, মরিচু, মোচরস, তালমূলী, গুড়্চী প্রত্যেকে ৫ ভাগ এক জ করিয়া চিতা ও সন্ধিনার কাথে দশদিনে ২০ বার ভাবনা দিয়া পরে অর্কভোলাপরিমিত বটী প্রস্তুত করিতে হইবে। অহপান চিনি ও মধু। ইহা সেবনে উপদ্রব সহ শোথ, পাপু, ক্রম্ ও জ্বাতিসার প্রশ্মিত হয়। (রসেক্সারসং পাপুচিং)

জ্বনাশক ঔষধভেদ। পারা ও গদ্ধকে কজ্জী করিয়া ২ কোলা, কুরচী, তালমূলী, ধুস্তুর, কেন্ডতে, ঘোষা, জয়স্তী, মত্তুকপর্ণী ইহাদের পত্তের রসে মর্দ্দন করিয়া ওফ করিবে। পরে একরতি প্রমাণ বটিকা করিতে হইবে। এই ঔষধ সেবজে জিলোষজ জুর আভিত্বিন্ত হয়। ইহা বিরেচ্ক। শরীরের উত্তাপ অধিক হইলে নারিকেল জল দিয়া প্রেয়োগ করিতে হয়। (রসেক্রসারসং জ্রচিং)

ঠিত্রবণ (তি ) তিবিণক্ষ বনজায়ক্তইদং শিবাদি অণ্। তিবিদ সম্মী।

কৈব্লি (পুং) ত্রিবণস্থ ঋষেরপত্যং ইঞ্। ত্রিবণ ঋষির অপত্য। "ত্রৈবণেক্ষেবণিঃ" (শত॰ ব্রা॰ ১৪।৫،৫।২১)

ব্রৈবণীয় (ত্রি) ^{*}ত্রিবণঃ সোহভান্তি ইতি উৎকরাদি^{*} ছ। ভগ্যস্ত, ত্রৈবণ সম্মনুক্ত।

কৈ বিস্কি ( ি ) তিবিগায় হিতং বাণ ঠঞ্। ধর্মার্থ কামসাধন কর্মাদি। যে কর্মধারা ধর্ম অর্থ ও কাম এই তিন বর্গ সাধিত হয়, তাহাকে তৈবিগিক করে। শিংহাং বিজ্ঞায় সংগ্রন্থ কর্ম ত্রৈবর্গিকঞ্জ যথ।" (ভাগং ২:৪।৫)
ক্রিয়াং ভীপ্, ত্রৈবর্গিকী। ত্রিবর্গে প্রস্তঃ ঠঞ্। ২ ত্রিবর্গ.
রঙ। (ভাগং ৩।৩১।১৪)

ত্তিবর্গা (জি ) জিবর্গে ভব সাধু: শুঞ্। জিবর্গসাধন ধনাদি। তৈবর্ণিক (পুং) জিষু বর্ণেমু বিহিতঃ ঠঞ্। আহ্মণাদিজ্যুদ্ধ দ্বিলাভির ধর্ম। আহ্মণ, ক্ষজিয় ও বৈশ্চ এই জিলাভির ধর্ম। স্বার্থে ঠঞ্। বিদ্ধাতি, আহ্মণ, ক্ষজিয় ও বৈশ্ব।

ত্রৈবর্ষিক (ত্রি) ত্রিবর্ষে ভবিশ্বতি ঠঞ্, 'বর্ষস্থাভবিশ্বন্তি' ইতি উদ্ধরণদ ন বৃদ্ধিঃ। ত্রিবুর্ষে যে বস্তু হইবে।

"কৈবৰ্ষিকং ভাপশ্চিতং ভক্ত সৌম্যং সংবৎস্র:।"

( व्यायः (ज्ञीः >शहाऽर)

অভবিয়াৎ অর্থ বৃষ্ণাইলে উত্তরপদের বৃদ্ধি হইবে, দেই স্থলে ত্রৈবার্শিক হইবে।

ত্রৈবার্মিক ( ত্রি ) ত্রিবর্ষে ভূতঃ ভবতি বা, ঠঞা, অভবিয়াধাং উত্তরপদস্থি: । ১ ত্রিবর্ষসূত, অর্থাৎ তিন বৎসরে হইয়াছে। ২ ত্রিবর্ষে যাহা ছইতেছে।

"যস্ত ত্রৈবার্ধিকং ভক্তং পর্যাপ্তং ভৃতাবৃত্তরে॥" (মহ ১১॥) ত্রৈবিক্রেম ( ত্রি ) ত্রিবিক্রমস্ত ইদং অণ্। ১ ত্রিবিক্রমসংশী। ২ ত্রিবিক্রমানতার বিষ্ণু।

ত্তি বিদ্য (পুং) ত্রিস্রে। বিদ্যাং সমাজ্তাং ঋক্যজ্ংসামরণ ত্রিবিদ্যাং তদধীতে বেদ বা অণ্। ত্রিবেদজ্ঞ, ত্রিবিদ্যাবেতা। "ত্রৈবিদ্যোহেতুকস্তকী নৈক্তেলা ধর্মপাঠক:।" (মমু>২।১১১) তিস্পাং বিদ্যানাং সমাহার: ত্রিবিদ্যং স্বার্থে সণ্।

২ তিন বিদ্যা। ৩ ব্ৰভবিশেষ।

' "স্বাধ্যায়েন ব্রতৈহোঁটেমক্রৈবিল্যেনেজ্যনা স্থতৈঃ।" (শৃষ্থান)
'কৈবিল্যেন তৈবিল্যাথ্যেন বতেন' ( কুলুক)

ত্তিবিধ্য (ক্লী)ত্তিবিধন্য ভাব: যুঞ্জ। ত্রিপ্রকার জ, তিলপ্রকার। ত্রৈবিষ্ট্যপ (পুং) ত্তিবিষ্টপে বস্তি অণ্। দেবতা, যাহার অর্গে বাদ করেন। (শকার্থচিং)

ত্রৈবিষ্টপ্রেয় ( শং ) ত্রিবিষ্টপে বসতি বা ঠক্। দেবতা। (ভাগা দাদাংদা

ত্রৈর্ম্ন (পুং) ত্রির্ম্বস্থ অপত্যং বা অণ্। রাজবিশেন।
"তৈর্ম্যে অথে দশভিঃ সহত্রৈ বৈধানর" ( ঋক্ ৫।২৭) > )
ত্রিবেদিক (ত্রি) ত্রিষ্ বেদের্ তদধ্যমনার্থং বিহিতঃ ঠক।
বেদক্রাধ্যয়নার্থ্রতাদি।

"বট্তিংশদক্ষিকং চর্য্যং গুরৌ তৈবেদিকং ব্রতং।" (মন্ত্^{ডা)} ত্রৈশক্ষব ( পুং ) ত্রিশঙ্কোরপত্যং অণ্। ত্রিশঙ্কুর পুত্র হরি^{দর্ত্রা} [ ত্রিশঙ্কু দেখ।]

ত্রিশাণ (ত্রি) ত্রঃ শানাঃ পরিমাণমস্ত তৈঃ ক্বতং বা জ

বিকরপক্ষে নপুক্। ১ জিশাণপরিষিত। ২ জিশাণ পরিমাণ ছারা জীত।

রৈশোক (क्रो) তিশোকেন খবিণা দৃষ্টং সাম। 'বিশ্বা প্রকা' ইত্যাদি ঋথেদের গের ত্রন্মের শুভিবিষয়ক সামভেদ।

हेडापि संस्थानम एनम यहमा प्राचित्रम नाम्स्य । खिर्मे छ (बि) बिहे न प्रमापि भन्। बिहे स्मानमकीतः। [बिहे स्पन्यः]

ব্রৈদাসু (পুং) তুর্বস্থিবংশীর গোভারপুত্র নৃপতের।

"গোভানোস্ত হুতো রাকা বৈলাম্বরপরাক্তিঃ।" (ছরিব° ২২আঃ)
ব্রৈস্থ্য (ক্লী) বিশ্বর-স্বার্থে যুঞ্। উদান্ত, স্মন্থ্যান্ত ও
প্রিংক্স ভিনস্থর।

ত্রৈহায়ণ (ত্রি) ত্রিহারণক্ত ইদং হারনান্তজাদণ্। ১ ত্রিবর্ষ সুষ্কী। ত্রিয়াং গ্রীপ্। ভাবে অব্। ২ তিন বৎসরকাশ।

সম্বন্ধা বিধার ও প্রতিধি আন্তর্গ বিভাগ বিধান ব

ত্রাটি (জী) তোটাতে ভিছতেহনয়া তোটিই (আচ্ই:।
উণ্ ৪।১০৮) ১ কট্ফল। ২ চঞু। ৩ পক্ষিভেদ। ৪ মীনভেদ।
ত্রাটিহন্ত (পু:) তোটিশ্চঞ্রভাইব গ্রহণদাধনং যক্ত। পক্ষী।
বিল্লাং আতিবাৎ ভীষ্।

ত্রাটা (জা) ত্রোটা তীষ্। [ত্রোটি দেখ।]
ত্রাতল (ক্লী) ১ ত্রোড়লতর (ত্রি) ২ তোতলা, খলহাকা।
ত্রাত্র (ক্লী) ত্রায়তে শিক্ষাতে নিষমান্তেহনেন ত্রৈ-উত্র
(স্পিত্রাহিত্য ইত্রোত্রো। উণ্ ৪।১৭২) গ্রাদি তাড়নদ্ঞ,

পাচনবাড়ী। পর্যায়—প্রাঞ্চন, তোদন, প্রবেষণ। গজের ডোদন
দণ্ড, পর্যায়—বৈণুক, বেণুক। ২ আরা। ৩ আরুপক্রিয়া।
৪ বাধিভেদ।

াংশ (মুং) তৃতীয়েহংশ: । ১ তৃতীয় অংশ। ২ ত্রিগুণিত অংশ।
"ত্রাংশং দায়াদ্হরেছিপ্রো ছাবংশো ক্রিরাস্কতঃ।"(মস্থ:৯১৪১)
ক্রিক্ষ (মুং) ত্রীণি অক্ষীণি নে ত্রাণি,যত ততঃ সমাসাস্কপ্রত্যয়:।
শিব, ত্রিনেত্র। ২ দৈত্যবিশেষ। "ক্লোডো লানবদৈতেয়া
ক্রিক্জাক শ্বর" (ভাগং গাং।৪) (ত্রি) ও নেত্রত্তরবিশিষ্ট।
আর্বিধ্যাগে কোন স্থলে সমাসাস্ত য আ্লোদশ হ্রনা, সেই
বিশে ত্রিক্ষ ত্রা।

खाको (बी) बाक्-श्रेष् । त्राक्षरीहरूमं ।

ক্র্যাকর (প্র:) ত্রীণি অকারোকারসকাররপাণি অকরাণি বস্ত।

> প্রণব। "আদ্যুং বং ব্রেক্সেরং ব্রন্ধ ত্ররী যতা প্রতিষ্ঠিতা।

স অক্ষেত্রতিবেদো বতাং বেদ স বেদবিদ্ধ" (মন্ত্>১।২৬৬)

ত্রাকর প্রণবই ব্রহ্ম, বাহান্তে বেদত্রর অবস্থিত আছে।

(ক্রী) ২ ছন্দোতেদ। "বিষ্ণুক্রক্সেরেণ ত্রীলোকার্য্যকরং"

(শুক্রমক্র ১০০১) 'বিষ্ণুক্রকিরেণ অক্ষরত্রাহ্মকেন ছন্দসা ত্রীন্
ভ্রাদীন্ মন্ত্রান্' (মহাধর) ও ব্রবর্ণাত্মক। তত্রোক্ত মন্ত্রতেদ। (ভন্ত) (ত্রি) ৪ বর্ণত্রর্যুক্ত বার্তা। ত্রীণি অক্ষরাণি
বস্তা। ৬ ব্টক।

ব্রাঙ্গ (রী) ত্রীণ অলানি অলু। সৌবিটিকত হবিস্। "মধাং ভ্রোং বেধা ক্রডাহবদাতাপিমাত্রকের্" (শতং আং এচাএ১৮) ব্রাঙ্গট (রী) ত্রিভিরবৈশ্বটাতে গমাতে ত্রাক্ত-অট্-অপ্, শক্ষা-দিশ্বাদলোপঃ। > শিকাভেদ। ২ ধৌতাঞ্জনী। (পুং) ও ঈশ্বর। ৪ চক্র। (হেম)

জ্যেঙ্গুল (জি) ডিলোংক্ল্য: প্রমাণমন্ত, তিরিতার্থিণ চর-সচ্ তক্ত লুক্লি অচ্ সমাণ। ১ অঙ্গিজয়পরিমিত। ২ অঙ্গিজয়-পরিমিত থাতযুক্ত। জিয়াং টাপ্।

ব্ৰোক্ষ্য ( বি ) ব্ৰাকার হিতং^{*}য়ং। ব্ৰাক্ষাধন জ্বা।
"ব্ৰাক্ষ্যি শ্ৰোণেরথ' ( শতং বাং অ৮।অ১৮ )

ব্রোপ্রন (রী) ব্যাণাং অঞ্চনানাং সমাহারঃ। কালাঞ্চন, রুমাঞ্জন ও পূলাঞ্জন রূপ মিলিত অঞ্চনতার। (রাজনি*)

ব্যঞ্জল (ক্লী) অমাণাং অঞ্জীনাং সমাহার: বাণ টচ্ সমাণ।
সমাহত অঞ্জিবর । বিভি রঞ্জীভি: ক্রীভ: তদ্বিভার্থিগৌতু তদ্বিভার্কি ন টচ্। ব্রঞ্জলি। তিন অঞ্জলি হারা
ক্রীভ। তদ্বিভার্থে হিশু সমাস করিলে টচ্ সমাসাস্ত হইবে
না, সেই স্থলে ব্যঞ্জিল এই রূপ হইবে।

ন্ত্র্যধিপতি (পু:) ত্রন্নাণাং ক্ষধিপতিঃ ৬তুৎ। তিন লোকের ক্ষধিপতি, রুঞ্চ, বিস্থু।

"নৈতাৰতা অঃধিপতেৰ্বত বিশ্বতর্ব্তু:" (ভাগ ৩)১৬।২৪)
ব্রোধিষ্ঠান (পুং) জীণি মনোপ্রক্শরীরাণি অধিষ্ঠানায়ক,
তিক্পাং জাগ্রদাদীনাং অধিষ্ঠানং বা। ১ জীব। ২ জাগ্রদাদি

जिल्लाः कार्यमानीनाः व्यापकानः वा। > कार्य। २ कार्य। २ कार्य। व्यवद्यावत्रमाकी कृषेत्र टिन्छक्क।

ব্র্যধীশ ( গুং ) ত্রয়াণাং অধীশ:। ব্রাধিপতি, তিন লোকের অধিপতি, বিষ্ণু।

ত্র্যথবগা (ত্রী) ত্রিভিরধ্বতি গছিতি গম-ড দ্বিরাং টাপ্। গঙ্গা দ্রোনীক (পুং) ত্রীণি উষ্ণবর্ষনীভাধ্যানি জনীকানি খুণা জন্তু। সংবৎসরাভিমানী দেবভাজেদ।

"ব্ৰানীক: পভাতে মাহিনাবান্" ( ৰক্ ০:৫৯০) 'ব্ৰানীক

ব্ৰিভিক্ষাবৰ্ষণীভাইধাননীকৈ গুঁ গৈৰূপেভঃ ।' ( সান্ধণ) ( গ্ৰী ) ২ হস্ত্যাধানথাক্ৰদেনাডেদ ।

জ্ঞামুত্যোগ (পুং) জয়াণাং তিথিবারনক্ষ্রাণাং অমৃত-তুল্যো বোগং। তিথি নক্ষ্য ও বারবিষয়ক বোগতেল। ত্যামৃত যোগের বিষয় জেগতিষে এইরূপ লিখিত আছে—

त्रित श्र मण्णवाद नमा व्यश् प्राञ्जिम, धकाममी श्र विक्री, पाठी, भठिवा, व्याम, देवरठी, िठ्या, व्याममी श्र मृगा नक्ष्य हहेल, श्र क श्र त्यावाद कमा व्यश् विविद्या, वाममी श्र मश्रमी, उमा, প्रक्षिक मी, उस्त व्याम व्यश् व्याममी, व्यश्नी, उप्त व्याममी, व्यश्नी, प्रवाम कर्षा व्यश्नि, व्यश्नी, व्यश्नी विश्व, उद्यामाण, विभाषा, व्यश्नी, मण्णी, व्यश्नी श्र विश्व, व्यश्नी विश्व, व्यश्नी, विभाषा, व्यश्नी, व्य

(জ্যোতিত্তব)

ত্ত্যৈত্বক (ক্লী) ত্ৰীণি অধকানি নয়নানি যস্ত ত্ৰয়াণাং লোকানাং অধক পিতা ইতি। ১ শিব, মহাদেব।

"ত্রেম্বকং যজামতে স্থান্ধিং পৃষ্টিবর্দ্ধনং ।" ( শুক্লযজু: ৩) ।

 মহাদেবের অংশে উৎপার চক্রশেধর নামে পৌন্ধরাজপুত্র।

"এবং তিস্পামদানাং গর্ভে জাতো যতো হরঃ,।

অতল্পাস্থানাভুং প্রাধিতো লোকদেবরোঃ।"

(কলিকাপু ৪৬ আ:)

এই চিল্রপেথর নরপতি সার্কভৌম রালা হইরা তিলোক বিখ্যাত হইরাছিলেন। ৩ একাদশ রুদ্রের মধ্যে একজন। ত্রোহ্মক স্থ (পুং) তাইকভা স্থা টচ্ স্মাসাস্তঃ। কুবের, তাইকের স্থা। [কুবের দেখ।]

জ্যেন্দ্রকৃ (জী) জীণি অহকানি যন্তা:। ছুর্গা, ষাহার সোম,
স্থা ও অনুল এই তিনটী চকু বলিয়া ক্ৰিড হুইরাছে।
"সোমস্থ্যানলা স্ত্রীণি যন্তা নেজাণি অধিকা।

ভেন সা আঘঝা দেবী মুনিভিঃ পরিকীর্স্তি ভা ॥"(দেবীপু॰ ৪৫ জঃ) ত্যুক্তন ( পুং ) তিরুক্তপুত্র রাজবিভেদ।

ত্তারুষ (তি) ত্রীণি অরুষীণি রোচমানানি ওলাণি করুপ্ পৃষ্ঠপার্যস্থানানি যক্ত। রোচমান ওলপৃষ্ঠাদি স্থানতার-যুক্ত গ্রাদি। "ত্যারুষীণাং দশ গ্রাং সহস্রা" ( ঋক্ ৮।৪৬।২২)

त्ता वत्र (वि) त्रवक्षश्रविमिष्ठे।

ন্ত্র্যবি (পুং) বগাসায়ক: কাল: অবি: ত্রিভোহবরে। 👣 অষ্টাদশ মাস বরস্ক পশু।

"वाविर्वत्र जिष्टे भुष्टमः" ( ७, ऋषष्ट्ः ১८।১० )

'জীন্ লোকান্ অবতি অব রক্ষণাদিষ্ ইন্' ( मही।।
"তথে আবিং রেরিছাণা" ( ধাক্ত।৫৫।১৪ ) 'সার্দ্রবংনার
বয়কো বংস জ্ঞাবিক্লচাতে তৎ প্রমাণমাদিতাং জীন্লোক।
অবতি প্রভেলসা ব্যাপোডি' ( সারণ ) ২ ত্রৈলোক্যব্যাপক।
ত্রেক্ (ক্লী ) জ্রাণাং ক্ষপানাং সমাহারঃ । ১ বর্ষজ্ঞ ।

"আব্দং চরেধা নিম্নভো কটা ব্রহ্মহণো ব্রতং।" (মসু ১১)১১৯ ত্রেরো অব্দাং বরোমানং বক্ত ভদ্ধিতার্থবিশুঃ। (ত্রি) ২ ত্রিবর্ধ ব্রহ্ম। ত্র্যেশীতি (ত্রী) ত্রাধিকা অশীতিঃ কর্মধাণ। তিরাশি সংখ্যা তিন অধিক অশীতি। ২ তৎসংধ্যেম।

ত্ত্যাশীত (ত্তি) আশীতি ততঃ প্রণে ডট্। আশীতিসংখ্যার প্র ত্ত্যাশীতিত্ম (ত্ত্তি) ,আশীতি প্রণে তমপ্। আশী সংখ্যার প্রণ।

ত্র্যেষ্টক (ক্লী) স্থশ্রেজ জগনিক্ষেপণস্থানভেদ। (স্থকঃ)
ত্র্যেষ্টন্ (জি) জিগুণিতাঃ অষ্ট। ১ চতুর্বিংশতি সংখ্যা।
২ তৎসংখ্যেম।

ব্রোক্র (ক্লী) তিব্র: অব্রয়: কোণা যত অচ্সমাণ। বিকোণ। ব্রোক্ (পুং) ব্রয়াণাং অক্ষাং সমাহার: টচ্সমাসাস্ত সমাহার বিশুস্থাৎ ন অক্লেদশং। দিনবার।

উত্তরপদৰিগুসমাসে অফাদেশ হইবে, বসই স্থলে আরু প্রিয় এই রূপ পদ হইবে।

' "আহং প্রাতব্যহং সায়ং আহ মদ্যাদ্যাচিতং।" ("মস্ন)
আহুক্সপুর্শ (পুং) আহং চান্তাদিনঅয়ং ম্পুশতি ম্পুন-জন্
১ তিথিঅয়স্পর্শী এক সাবন দিন, এক দিনে তৃনটী ভিণি ইইলে আহম্পর্শ হয়। ২ দিনক্ষয়।

ত্ৰ্য্য ত্ৰু ক্ষ্ম (ক্ষ্মী) ত্ৰ্যাহং স্পৃষতি স্পৃষ-ক। সাবন দিনতা স্প্ৰমী একটী তিথি।

"একং দিনং যত্ৰ তিথিত্তয়ঞ্চ স্পূদেত্তমাস্তৰ্মুনহো হ্ৰমাধাং। একা তিথিত্ৰীণি দিনানি যত্ৰ স্পূদেত্তদাস্তিদিনস্প্ৰ ।" ((बा।)

ত্তাহিকারিরস (পুং) অরাধিকারে রসেক্সসারসংগ্রহোক্ত শুবধ তেদ। প্রস্তুত্ত প্রশানী—পারা, গন্ধক, তুঁতে ও শুঝ প্রত্যেকের রসে সাত সাত বার করিয়া ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটা প্রস্তুত্ত করিতে হইবে। জীরা ও মৃত অনুপানের সহিত সেবন করিলে ত্যাহিক অর নাশ হয়। (রসেক্সসারসং) ভ্রাহীন (পুং) ত্রিভিরহোভিঃ নির্ত্তঃ খ। ত্রিদিনসাধ্য ক্রচু ভেদ।

ব্রাহৈছিক (ব্রি) দিং বাং চেষ্টারাং ভবং ঐছিকং ধনং ব্রাহে দিনতরে পর্যাপ্তং ঐছিকং ধনং যন্ত। দিনতর নির্বাহে চিত ধনযুক্ত, তিন দিন নির্বাহ হইতে পারে, এরূপ ধনশালী। 'কুশ্লধান্তকো বা ভাৎ কুন্তীধান্তক এব বা। ব্রাহৈছিকো বাপি ভবেদশন্তনিক এব বা ॥ মহ চারি প্রকার গৃহত্তের কথা বলিয়াছেন—কুশ্লধান্তক, কুন্তীবান্তক, ব্রাহৈছিক ও অশ্বতনিক। যে গৃহত্ত তিন দিনের জীবিকা সঞ্চয় করিয়া নাথে, তাহাকে ব্রাহেছিক কহে। এই গৃহত্ব মধ্যম। ইহা বিজ্ঞগণের পক্ষে ব্রিতে হইবে। ব্রাক্ষায়ণ (পং) ব্যক্তক্ত যুবা অপ্রতাং কঞ্ছ। শিশুপাল

ত্র্যাক্ষায়ণভক্ত (পুং) ত্র্যাক্ষারণ: তম্ম বিষয়ে। দেশ: এমু-কাদি: ভক্তল্। ত্র্যাক্ষারণের বিষয়।

হরাদির যুবা অপত্য।

ক্রায়ুষ (ক্লী) অয়াণাং বাদ্যবৌবনস্থবিরাণাং আয়ুষাং সমাহার বেদে অচ্সমাণ। বাল্যাদি আয়ুস্তমঃ, বাল্য, বৌবন ও স্থবিরাদি। "আয়ুষ্য জনদশ্মে: কশ্মপশু আয়ুষ্য।" ( শুক্লয়জুঃ ৩/৬২ )

জ্যার্বেয় (পং) এয়: আর্বেয়া: ঝয়রো বয়। জিপ্রবর গোজভেদ, বৈ গোতের তিনটা প্রবর আছে তালকৈ জ্যার্বেয়
করে। খবে রয়: ঠক্ আর্বেয়: ঋষিধর্মঃ তার আর্বেয়া:
ধর্মা বেষাং। ২ অয়, বিধির ও মুক। ইহাদিগের যাগে অধিকার
নাই। তিন জন ঋষির মধ্যে একজন পুরস্তার দর্শন করিয়া
চক্ষ্ নিমীলন করিয়াছেন, এইজস্ত অয় হন, আর একজন
পরনিলা প্রবণশক্ষা করিয়া প্রোত্তনিগ্রহ করিয়া বধিয় হন,
জন্ত একজন মিধ্যাক্থন শক্ষা করিয়াছিলেন, এইজন্ত মুক
ইইয়াছিলেন। (ভন্তবাধিনী) *

আরাশির্ (ঝি) তিলঃ দ্ধিতক্রপরোরপা আশিয়ঃ বস্ত। অধির ব্যভেদ। িবত মা পরবাঃ শতমুদ্ধরন্ত্রকণঃ।

অখনে শত দানা: দোমা ইব অ্যাশির:।" ( शक् ৫।২৭।৫)
ব্যোহণ ( পুং বী ) বিভি: চঞ্পাদৈ রাহত্তি আ হন-অচ্,
'পূর্বপদার্থ সংজ্ঞামগ' ইতি গম্বং। বিদ্যির পক্ষিতেদ। (পুঞ্জত)
ব্যোহাব (পুং) দেশভেদ। তব তবং ধুমাদিদ্বাৎ বৃঞ্। বৈবাহাবক দেশভেদ।

ত্রাহিক ( অ ) আহে তবঃ ঠঞ্। সার্বস্থাৎ পূর্বাং ন ঐছ।
আহতব স্বরাদি। তিন দিন অস্তর যে স্বর হর, তাহাকে
আাহিক স্বর কহে। [ স্বর দেখ । ] লোকে স্বর্থাৎ সাধারণ
প্রায়োগস্থলে বৃঞ্ প্রভার, পরে ঐচ্ হইবে, সেই স্থলে
আরাহিক এইরূপ পদ হইবে। জৈয়াহিক, আহতব বস্তু।
যে বস্তু তিন দিনে হর।

ক্রেদয় (রী) অিষু সবনেষ্ উদরো গতিরক। সোমাধান্তবা।
"ক্রেদয়ং দেবহিতং যথা বং" (ঋক্ ৪।৩৭।৩)

ক্রেয়ধন্ (পুং) বিভি: রুসভশর দেমতৈ ঋ তৃতি ক্রণে হত অনভ্
ক্রেশ্য। বসন্তাদিক পোধোযুক্ত বংসর কুপ বৃষ্ঠ। বসন্তাদিক্রপ উল্লেখি পোলান যুক্ত বাঁড়ো। "উত ক্র্যুণা পুক্ষ প্রজাবান্"
(ঋক্ ৩) ৫৬। ২) ক্রেয়ণা বসন্তাশর দেমন্তাবৈর ক্রিভিবৃতৃতি করে।
বস্তাস ক্রেয়ণ। বসন্তাশর দেমন্তাবৈর ক্রিভিবৃত্তি করে।
বস্তাস ক্রেয়ণ। বসন্তাশর দেমন্তাবৈর ক্রিভিবৃত্তি করে।

ক্রেষ্ণ (ক্লী) অয়াণাং উষণানাং সমাহার: প্রোণ বা নীর্ঘ:।
নিবিত গুঞ্জী, পিপ্লী ও মরিচ। ইহার গুণ—দীপন; খাস, কাস,
জগামর, গুল্ম, মেহ, কফ, ছৌল্য, মেদ, স্লীপদ ও পীনস-রোগনাশক। (ভাবপ্রণ পূর্বাধণ) ২ চরকোক্ত মুতবিশেষ।

ক্রোষণাদিম শুর (ক্রী) পাপুরোগাধিকারে ঔষধ বিশেষ।
প্রস্ত প্রণালী— ক্রিকট্, ক্রিকলা, মুতা, বিজ্ল, চই, চিতামূল,
লাকহরিক্রা, শুড়কক, অর্থানিকক, পিপুলমূল, দেবনাক,
ইহাদের প্রশুতাকের চুর্ব ং পল, চুর্ব সমষ্টির বিজ্ঞান শোধিত
মগুরচ্র, মগুরের ৮ গুল গোম্ক্র। প্রথমে প্রাম্ক্রে মগুর
লাক করিয়া ঘনীভূত হইলে চুর্ব সকল প্রক্রেম ক্রিছে
হইবে। পরে ডুম্রের জ্ঞার বটিলা প্রস্তুত করিতে হইবে।
পরে উপযুক্ত মাকার তক্রের মুহ্ডিত সেবন করিলে কামলা,
মেহ ও প্রীহা প্রভৃতি নানাবিধ রোগ ভাল, হয়। অজীর্ব
ধাকিরে ভোজন পরিত্যাগ করা বিধের। (ভৈরজারণ)

ক্রেন্স্বাণ্যাদ্যবর্ত্তি (জী) বর্তিবিশেষ, জিঁকটু, জিফ্লা, দাক্ষ্রিচনি, সৈদ্ধৰ, মনছাল এই সমুদর জব্য মিলিত করিয়া বর্তি প্রস্তুত করিতে হইবে, এই বর্তি চক্ষুমধ্যে প্রস্তোগ করিলে চক্ষ্র ক্রেণাদি দ্রীভূত হয়। (তৈবজার নেজরোগাধিকা ) জ্বেচ (ফী) তিস্থাং খচাং সমাহার আচ্ সমা । ঋক্জর, খবেদের তিনটী মন্ত্রিশেষ। "অব্ধ ক্রেচং জ্বপেদ্যাং।" (মন্ত্র)

^{*} বাংগ্রাংগ্রাল্য: ক্রিগ্রাঃ অভ্যব্ধির্ক্ত্রানি ব্রবাং তে ক্রীণাং
• বি পর্যবাধন্নেন ভত্ত রোপোৎপত্তিসভাবনর। চকুনি সীলনেন অভ্যং,
পর্নিকাল্রবপ্শকর। শোক্তবিপ্রহেশ ব্ধির্দ্ধং, সিধ্যাক্থনপ্তর। বাজ্যনংব্যবাস্থ্যে (তত্ত্বোধিনী)

ত্ত্রোণী ( ত্রী ) জীপি এভানি অভ বা জিছু গাদেছু এভঃ কর্রো

হক্ষা: 'বর্ণাদমূলভাং' তীপ্ ভক্ত নঃ, ততো পদং। ভিনহানে

কর্মা ত্রা। "তত্ত্রোণী শলনী ভবতি লোহঃ ক্রঃ সা বা

ত্রোণী শলনী" (শত॰ ত্রাণ ২০৬৪ ৫) 'জোণীভি জির্

হানের এভঃ খেতঃ বর্ণো হচ্চাঃ সা জোনী' (ভান্থ) "জোণা চ

শলনা।" ( আখে॰ গৃ॰ ১০১৪৪) 'ত্রীণোভানি হন্তাঃ সেয়ং

ত্রোণী শলনী' (নারায়ণ)

জু ('ত্রি) তনোতি বিস্তান্ত্রতি তন-কিপ্ অনশ্চ বঃ (তনোতে রনশ্চ বঃ। উণ্ ২।৬৩) ১ জিন, অস্তু, বিভিন্ন । ২ এক। "উত জঃ পশ্চর দদর্শ বাচমূত জ শৃধর শৃণোত্যেনাং।" ( ঋক্ ১০।৭১।৪) 'জ্পস্ম একবাটী।, একঃ উত্ত শক্ষোহ্পার্থে। জু একঃ শৃধ্যুদ্রদানাং বাচং ন শৃণোভি।' ( সারণ)

ছৃং ( ক্রি ) সর্কানাম যুমদ্ প্রথমৈকবচনং। তুমি, ভবান্ আপনি, যুমদ্শক কর্তী হইলে ক্রিরাতে মধ্যম পুক্ব হয়। 'যুমদিমধ্যমঃ'া [যুমদ্দেধ।] '

ত্বক [ বচ্দেধ ৮]

ত্বক্কভুর (পৃং) ঘট: কঞ্: রাভি-রা-ক। ত্রণ, ক্ষত বা। (হারা) ত্বক্কীরা (স্ত্রী) ঘট: বংশঘট: ক্ষীরমন্ত্রের। বংশগোচনা।

· জুকুক্ষীরী (ক্লী) জুকুক্ষীর-গোরা ভীষ্। বংশলোচনা, পর্য্যায়—বাংশী, তুগাক্ষীরী, তুগা, বংশলা, গুলা, বংশক্ষীরী, বৈষ্ণবী। (ভাবপ্রং)

ত্বক্চছদ্ (পুং) ঘগেব ছলো যত। ক্ষীরীশর্ক, ক্ষীরকঞ্কী গাছ। (রক্ষমাণ)

তৃক্চেছ্ন ( ক্লী ) (Circumcision) মুসলমান প্রভৃতি স্লেছ-আভিদিগের সংস্থার বিশেষ, যাহাতে মুসলমান বালকদিগের পুরুষালের অগ্রচম ছেদন করিয়া দিতে হয়।

ত্বক্তরক্স (পুং) ত্রতারক্ষইব।ক্তুপদার্থ। পোর নিঘণ্টু)। ত্বক্তা (ক্লী গঁতিচং আনুষ্তি আ-ক।বর্ম।

ত্বক্পঞ্জ (ক্লী) ঘচাং পঞ্চকং। ম্ব্রেষ, উত্থর, অখথ,
শিরীয় ও প্লক্ষ এই ৫টা বৃক্লের নাম দ্বক্পঞ্চক। কোন
কোন লোকের মতে শিরীয় ও প্লক্ষের ছানে বেতস ও
পারিশ বৃক্ষ হইবে। ইহার গুণ—শীতল, ত্রণ, শোও, বিস্পর্,
বিষ্টম্ভ ও আধাননাশক, ডিক্তা, কষার, লঘু, লেখনং (ভারপ্রাণ)
ত্বক্পত্র (ক্লী) ঘণিব পত্রাণি যক্ত। ১ গুড়ম্বক্, দাক্লচিনি। ২
তেজপত্র। পর্ফায়—স্বক্ট, ভ্লা, ঘচ, চোচ, বরালক। (অমর)
ফুক্পত্রী (ত্রী) দ্বক্ গোরাণ ভীষ্। হিস্পত্রী, রাধুনী।
পর্যার—কারবী, পৃথী, বাল্পীকা, কররী, পৃথা (অমর)
২ তৎপত্রী, কলাগাছ। ৩ তেজপত্রসদৃশপত্র, বাটিরা পাতা।
দ্বক্পত্রিপুটন (ক্লী) ঘচ: পরিপুটনং। চামড়া তোলা।

ত্বক্পাক (পং) ঘটং পাৰে ৰঅ। শৃকলোৰ নিষিত্ত পীড়কারোপ বিশেষ, পিত ও রক্ত কুপিত হইরা যে সকল পীড়কা উৎপর হর এবং বাহাতে অর ও দাহ অনো, তাহাকে ত্ত্পাক্রাদি কহে। (স্ক্রত) [বিশেষ বিবরণ শৃকদোষ দেখ।]

ত্বক্পারুষ্য ( ক্লী ) ঘচঃ পাক্ষাং কঠোরতা। ঘকের কাঠির। "তত্ত পূর্বারপাণি ঘক্পাক্তমকলাং রোমহর্বং" ( সুশ্ত)

ত্বক্পুজ্প (ক্লী) স্বচঃ পুশামিব। > রোমাঞ্চ। ২ কিলান, চর্মরোগ বিশেষ ছুলী।

ত্বকৃপুষ্পিকা ( বী ) চর্ত্মরোগ্রিশেষ, ছুনী।

ত্বক্ষস্ (ক্নী) অক্যতেহনেন জক করণে জন্ন বল। (নিঘটু) "সঞ্জিকা জক্ষা জ্বোদিবশ্চ।" (অক্ ১৷১০০৷১৫) 'জক্ষাবিলেন' (সায়ণ)

ত্বকীয়স্ (জি়) অভিশরেন ছকিছা ঈরহন্ ভূণোলোগ:। দীপ্ত। "মক্তান্ ডকীরদা বর্দা" (ঋক্ ২৷৩৩৷৬) 'ছকীরদা দীপ্তেন' ( দারণ )

ত্বক্সার (পুং) ছচি সারোযজন। ১ বংশ। ও বংশের ছন্ বাঁশের চেচাড়ি। ছগেব সারোযজা। ৩ গুড়ত্বক্, দাফ্চিনি। ৪ শোণবৃক্ষ। ৫ রন্ধুপ্রধান বংশ, তলতাবাঁশ।

ত্বক্সারভেদিনী (জী) ছচঃ সারং ভিনন্তি ভিদ-শিনি ভীগ্। কুজ চঞ্ বৃক্ষ। (রাজনি•)

ত্বক্সারা (জী) ঘক্সারো বংশ উৎপত্তিকারছেনাল্যস্ত। অচ্তত্তীপ্। বংশলোচনা।

**ছক্সগন্ধ (পুং) ছচি স্থান্ধ: সদগন্ধো য**ন্ত । ১ নারালানের্। ২ লবল ।

জুক্ত্ৰণন্ধা (জী) ছচি ত্বগৰো যন্তা:। এলবালুকা নামৰ গন্ধ দ্ৰব্য, স্কৈলা, ছোটএলাচ।

ञ्क्याबी (बी) पि याबी। मार्राति, अप्रवक्।

জগন্ধ (পুং) ছচশ্চশ্বণ: অন্ত্রইব। রোমাঞ্। (হারা') জগাক্ষীরী (জী,) অক্কীরী প্ৰোদরা সাধুঃ। তৃগালীরী, বংশলোচনা।

ত্বপ্ৰস্থা ('পুং) তটি গদ্ধোষ্ঠ । নাগরক, নারাকানেরু। তুপ্তস্ক্রি) অচঃ কাগতে কান্ড। ১ রোম । ২ ক্রি, রক্তা (রাজনিং)

স্থ্যাধাত্মদেহ (পুং) (Mollusca) যাহাদের দেহের আধার, ভাহাদের দেহাবরণ। যথা শদুকাদি।

জুগ্দোষ (পুং) ছটো দোষো দ্যণং যত্মাও। কোঠবো^র, গায়ে চাকা চাকা দাগ হইরা লুকাইরা যার, এইরপ ^{রেপ} বিশেষ। এই রোগ মহারোগ মধ্যে গণ্য। মহাপাতক^{র ৮টী} বোগ কথিত হইরাছে, এই রোগ ভাহার মধ্যে একটী। ^{এই} রোগে যদি কাহারও মৃত্যু হয়, ভাষা হইলে ভাহার প্রার-শিন্ত না হইলে দাহাদি করিতে নাই। যদি কেহ মোহবশে দাহাদি করে, তাহা হইলে ভাহার চাক্রায়ণ করিতে হয়।
( শুক্তিক)

লোধ, নীরাম ও কনকচ্ণ ঈষহ্য করিয়া যে যে হলে ঐ
চাকা চাকা দাগ হয়, ঐ ছলে দিলে ইহা আবোগ্য হয়।

"মনোঞ্লোগ্রনীরামচ্ণত্ত কনকত চ।
তেনোগর্ভিতদেহত হরেৎ গ্রীমপ্রারিকাং।
ত্গ্দোযদৈব সেকণ্ড বর্মদোবন্দ মতাতি॥" (গরুড় ১৯৪ অং)
ত্রগ্দোযাপহা (জী) অগ্দোবং রোগবিশেবং অপহস্তি হনড-টাপ্। বাকুচী, সোমরাল।

তুগ্দোষারি ( পং ) তগ্দোষত অরি:, তরাশকভাৎ তথাতং। হতিকল, ইহা তগ্দোব নট করে।

ত্বপ্লোষিন্ ( আ ) ত্বপ্লোষে ২ তাত ত্বপ্লোষ-ইনি । ত্বপ্লোষযুক্ত, ত্বপ্লোষযুক্তরোগী।

ত্বগ্ভেদ (পুংণ) ঘটো ভেদং ৬তৎ। ছকের ভেদ, চর্মফাটা।

"ঘক্ষো নিজোদনং কুর্যাৎ ঘগ্ভেদং পরিপোটনং।"

(স্ঞাত নিদানস্থাং ১ অং)

তুগ্ভেদক (পুং) ছচো ভেদক:। ছক্ভেদকারী, যে চর্মা বিদ্ধ করে, সমানজাতি মধ্যে যদি কেছ কাহারও ছক্ (চর্ম)ভেদ করে, অথবা রক্ত দর্শন করে, তাহা ছইলে তাহার একশত পণ দশু ছইবে।

"ফগ্ভেদক: শতং দণ্ডো লোহিতস্ত চ দর্শক:।" (ময় ৮।২৮৪)

য়য়ার (পুং) তুমি এই প্রকার বাক্য। গুরুজনদিগকে দ্বংকার

য়মি এইরপ বাক্য বলিলে স্নান করিয়া ভোজন নির্ভত

ইইয়া জীর্থাৎ উপবাস করিয়া দিন শেষে অপমানিতের পাদগ্রহণ ক্রিয়া প্রসন্ন করিতে হইবে।

্^{"হ্মারং} ভাষাণভো<del>জ</del>্ব ছমারঞ গরীয়স:।

রাথা নখনহ: শেষ মভিবাদ্যপ্রসাদ্যেৎ ॥" (মন্থ ১১।২০৫)

१६ (গ্রী) ওচাতে সংগ্রিরতে দেহোহন্না, ওচতি সংর্ণোতি
বা দেহং ওচ কিপ্। ১ বজল। ২ চর্ম। ও ম্পর্লাহক বাজেক্রিরভেদ, এই ওক্ স্কল দেহব্যাপিনী থাকে, ইছা পঞ্চ
কর্মেশ্রস্থের মধ্যে একটা। এই ওক্ বায়্র সন্থাংশ হইতে
উৎপন্ন হইরাছে এবং ইহার অধিষ্ঠাত্রী দেবতা বায়ু।
(বেদান্তসার) ওগিক্রির বারা ম্পর্শ হয়। ওঅনংসংযোগই
এক্মাত্র জ্ঞানের কারণ।

• "উত্তৰ্জাবদূৰ্যং গোচরঃ সোহপি চ ছচঃ। ক্ষপাঞ্চক্ত্ৰো যোগ্যং ক্লপমত্রাপি কারণং। উব্যাধ্যকে ছচো যোগো মনসা কানকারণং।" (ভাষাপরিং) েক্টান বস্তুতে অক্সনংসংবোগ ক্তুবেই জ্ঞান হয়। [বিশেষ বিবরণ চর্মান্দেধ।]

৪ শুড় ছক্, দারটিমি,। পর্যায়—ছচ্, বছল, ভুল, বরাল, মুথলোধন, শকল, সিংহল, বস্তু, স্বরস, কামবলভ, উৎকট, বহুগন্ধ, বিজ্ঞাল, বনপ্রিয়, মটপর্ণ, গদ্ধবদ্ধ, বর, শীত। ইহার গুণ কটু, শীতল, কফ ও কাসনাশক, শুক্র ও আমনোবনাশক, কঠওদ্বিকর ও লঘু। (রাজনি॰) ৫ কঞুক।

স্বচ ( ক্লী ) প্ৰশন্ত। স্বগন্ত্যন্ত, ইতি স্বৰ্শ আ দিবাদক্। ১ গুড়স্বচু, দাক্ষচিনি। ২ স্বগ্পত্ৰ। [মৃচ্ দেখ।]

ष्ठम् (ज्ञी) ४ठ-अञ्चन्। ५६।

স্থাচন্দ্র ( জি ) স্বচনি হিডং যু**ং। স্ব**গিজ্ঞিরের **হিডকর**। "যঙ্গং স্বচন্দ্রং তে বন্ধং" ( স্বথর্ম ২।৩৩।৭ )

স্থচা ( স্ত্রী ) স্বচ্পক্ষে টাপ্ বা স্বচর্তি সংবৃণোতি সর্বশরীর্মিতি ক্ষচ্ততপ্তাপ্। স্বক্।

স্থচাপত্র (ক্লী) ঘটা অক্পএমিব যস্ত। মুগ্পত্র, গুড়স্বক্, দাক্চিনি।

স্থৃচিষ্ঠ ং ি ( অ ) অভিশয়েন স্বথান্ প্ৰথৎ ইঠন, ততো মতুপো লুক্ ( বিশ্বতোলু ক্। পা এ০।৬৪ ) স্থচীয়ান্, অভিশয় স্কৃষ্ক ।

ত্বচিসারঃ (পুং) ত্বচি সারো যন্ত। সপ্তম্যা অলুক্ (হল্দস্তাং -স্থাম্যা: সংক্রায়াং। পা ৬।৩।৯) বংশ, বাশ।

স্চিত্ৰগন্ধা (জী) ঘটি স্থগদ্ধো যভাঃ, স্থমাঃ অস্ক্। কুলৈনা, ছোট এলাচ।

জ্চীয়স (অি) অভিশয়েন জগ্বান্ জচ্ঈয়জন্, মভোলুক্। অভিশয় জক্যুক্ত।

স্বজ্জান (ফী) স্বচা জ্ঞানং। ম্পার্শেক্সিয়ন্ত্রনিত জ্ঞান, স্বাচপ্রত্যক্ষ। স্বজ্জেয়ে ( অি ) স্বচাজেয়ং। ম্পার্শেক্সিয়নারা জ্ঞেয়।

তুং ( ি । তঁন কিণ্ জানোব: তুক্চ। (তানোতেরনশচ ব:।
উপ্ ২০৬০°) ১ ভিন্ন। ২ যুম্দ্শকের প্রথমার একবচনে ত্থ এইরূপ হয়, তোমা হইডে।

ত্বক্ক ( ত্রি ) স্বদীয়, স্বৎ সম্বন্ধীয়, তোমার।

ফুৎক্কুক্ত (আি) স্বয়া ক্বতঃ ৩তৎ। তোমাকর্ত্ক ক্বত, ভোমা-কর্ত্ক অফ্টিত।

ত্বতৃস্ (অবি ) একার্বজে: যুঘদন্তনিল্।, তংসকাশ হইতে, ডোমার নিক্ট হইতে।

ভূদীয় ( ি ) তব ইদং ঘদাদিছেন বৃদ্ধাৎ ছ, ঘদাদেশ:।

একবচনার্থবৃত্তি যুমদশক সম্বন্ধী, ভূবদীয়, তোমার, আপনার। যেম্বলে বছবচন অর্থাৎ তোমাদের বৃষ্ধাইবে, সেই

ম্বলে ঘদীয় এইরূপ হইবে না, যুমদীয় এইরূপ হইবে।

একস্ববিষ্ধে ঘ্যাদেশ হয়, বছ্ছ বিষয় হইলে হয় না।

IIIV

ত্ববিধ ( ত্রি ) তবেব বিধা - প্রকারো বস্ত। স্বংসদৃশ, তোমার তুলা।

ত্ব স্পাদলক্ষ্যার্থ (পুং) ছমিতি প্রদান্ত লক্ষ্যোহর্থ:। 'অজ্ঞা-নাদি ব্যষ্ট্যপৃহিত এবং উহার আধারস্বরূপ অষ্ঠণহিত প্রত্য-গানন্দরূপ তুরীয় চৈতক্ত। • (জ্পানবাচ্যার্থ দেখ।) '

ত্বম্পাদবাচ্য ( আ ) ত্বন্পদত্ত বাচ্যঃ। স্বম্পানভিধ স্বর্থাৎ স্বং, তুমি এক।

"(परापिक: পরিচ্ছিলো জীবস্ত জম্পদান্তিশ:।" (বেদাস্তণ') দেহাদিবারা পরিচ্ছিন্ন জীব জম্পদবাচ্য। বে জীবের দেহাদি জাবরণ নাই, তিনিই জ: এই পদের যোগ্য।

ত্বস্পদ্বাচ্যার্থ (জি) ছমিতি পদন্ত বাচ্যোহর্থ:। অজ্ঞানাদির বাটি, অর্থাৎ অ-জ্ঞান, ক্মাণরীর ও স্থল শরীর বাটি,
এতত্বপহিত চৈতত্ত অর্থাৎ প্রাক্ত, তৈজস ও বিশ্ব,
আর অনুপহিত চৈতত্ত অর্থাৎ ত্রীয় ব্রহ্ম, এই তিন
দগ্ধনৌহণিণ্ডের ত্থায় অবিবিক্ত রূপে 'ছং' এই পদের
বাচ্যার্থ হয় এবং অজ্ঞানাদির বাটিরুপ উপাধির ও তত্বপহিত
প্রাক্ত প্রভৃতি চৈতত্তের আধারভূত অনুপহিত আনন্দ্ররূপ
তুরীয় ব্দুটিতেক্ত 'ছং' পদের লক্ষ্যার্থ হয়।

, (বেদান্তদার) * [ ব্রন্ধ দেখ। ] কুম্পাদাভিধ (পুং) বংপদং অভিধা যন্ত। ক্ষপদবাচ্য কীব,

যাহার 'অহং' ইত্যাদি অভিমান তিরোহিত হইরাছে এবং বোধস্বরূপে অবস্থিত, তিনিই সম্পদাভিধ।

"আলম্বভয়া ভাতি যোহস্মৎপ্রত্যয়শক্ষোঃ।

অন্ত:করণসন্তিন্নবোধঃ স স্বম্পদাভিধঃ ॥" ( বেদাস্তসার )

জুদ্ময় ( আ ) যুত্মং অরুপে মষ্ট। জংঅরুপ। "জআরুং সর্কা লোকানাংরুসং রুসবিদো বিছ:" ( ছরিব॰ )

জুষ্তা (ত্রী) স্বয়া দত্তং পূৰো পাধু:। তেমাকর্ত্ক দক্ত। "সন ইক্র ! অ্যভায়া ইষে" ( ঋক্ ৭।২০।২০) "স্বযতারৈ ইষে স্থা দত্তারৈ ইষে অলায় ( সায়ণ )

ত্বরণ (ক্রী) তার ভাবে পুটে। তারা। তারতে শীতাং গছতে তার পুট। (তি) জ্বলামী শ শ শেলগী শচ বাতেগী শচ তারণাঃ কুপণা শুচ ধাঃ।" (অথক্ষ ১১৮৮৮)

তৃর্ণীয়ু (অি) ছ্র-অংনীয়র্। ক্রতগমনশীল। '

জুর মাণ ( ত্রি ) জ্ব-শানচ্। সন্তব, যে তাড়াতাড়ি ক্রিতেছে। জুরা (স্বী ) স্বরণীমিতি, জ্ব-জঙ্, ততঃ টাপ্। বেগ, **জভী**ষ্ট- লাভের জন্ত বিলব্বের জনহন। পর্যার-সন্তম, জাবের জবি, তুর্ণি, সংবেগ।

"অসককং মরা পূর্কং নির্জিতো জীবিতপ্রির:। মুক্তো জ্ঞাতিরিতি জ্ঞাতা কা ত্রামরণে পূন:॥" (ভারত ৩)২৭৮।২৭)

ভুরায়ণ (অি) ছরা অবলং যক্ত। ততো শৃষং। ছরাস্ক। ভুরাবৃত্ (অি) ছরাতাক্ত ছরা মতুপ্ মক্ত বং। ছরা_{যুক্,} স্থর।

ত্বরি (ন্ধী) স্বরণমিতি স্বর স্থাবে ইন্। স্বরা।
ত্বরিত (ক্লী) স্বর-ক্ষা-শীত্র। স্বরতেক্ষেতি। স্বর 'গত্যধান্ধ ক্ষেতি' কর্ত্তরি ক্ষা, বা স্বরা সঞ্জাতাহক্তা, তারকাদিস্থাদিজ্য তিম্পিটি, স্বরাযুক্ত।

ত্বরিক্তক (পুং) পরিতং কারতি প্রকাশতে কারতে কৈ ক। ব্রীহিভেদ, তোরী। (স্থশত)

ত্বিতিপ্তি (স্ত্রী) ছেলো, ভেদ, এই ছলের প্রত্যেক পানে
দশটী করিয়া অক্ষর থাকে। ইহার পঞ্ম ও দশমবর্ণ গুরু,
তাঙ্কির অফ্সবর্ণ লাসু। ইহার লক্ষণ "ত্বিতিগতিশ্চ নজনগৈঃ।"
উদাহরণ—"ত্বিতিগতির কিযুবতিরস্তরণিস্তোবিপিনগতা॥"
(ছেলোমণ)

ত্বিতা (স্ত্রী) দেবীভেদ, এই দেবী আশুফলদায়িনী। "অগতিধাতে ত্বিতাং ত্বিতং ফলদায়িনীং" ( তত্ত্বসার ) যুদ্ধ জ্বাধির
জন্ত ত্বিতা দেবীর পূজা করিতে হয়, ইহার বিধান অধি
প্রাণে ১৪১ অধ্যায়ে এবং ইহার যন্ত্রাদির বিষয় তম্বসারে
লিখিত আছে।

স্থারিতোদিত (ক্লী) স্বরিতং শীঘ্রং যথা তথা উদিতং কথিতং। শীঘ্রোচ্চারিত বাক্য। পর্য্যায় নিরস্ত। (অমর)

জুল্র ( তি ) ত্লগ প্ষো পাধু:। দলস্প। ( পারস্থ্রনি )

ত্বস্তু (ত্রি) হক তন্করণে জ। তন্কত, অরীকত।

ভৃষ্টি (পুং) মনুকু সঙ্কীৰ্ণজাতিভেদ। "মৎস্থাঘাতোনিবাদানাং ভৃষ্টিভাষোগ্ৰস্ত চ।" (মহু ১০।৪৮)

ত্বস্তীমতী ( ত্রী ) বটা তদস্প্রহোহস্তালঃ মতুপ্প্রো সাধ্।
ত্তার অন্প্রহ্মজা ত্রী।

ত্বস্ট্ (পুং) তেষৰতি দীপ্যতি তিষ দীপ্তে ত্চ্, ইতো ^{অব্ধ} (নপ্ত্নৈতৃ তই হোত্ৰিভি। উণ্ ২১৯৬) ১ আদিভা^{তেৰ}, বাদশ আদিভাৱে মধ্যে ত্তা একাদশ।

"একাদশক্তথা দ্বতী ফাদশোবিফ্কচ্যতে।" (ভারত ১০৬৫)১৫ ইনি চকুর অধিষ্ঠাত দেবতা, বিরাট্ পুরুষের ^{ছুই} চকুর্নোলক পৃথক্রপে উৎপন্ন হইলে লোকপাল ^{দুই} (একাদশ আদিত্য) আপনাম অংশে চকুর সহিত ^{দুই}

^{+ &#}x27;অজানাদিবান্তি: এডতুপহিতারজহাদিবিশিইটেডজং, এডরপুশ-হিতটৈতভাঞ্ডত্রম তথার:পিওবদেকজ্নোবভাসমানং জ্পেদবাচ্যার্থো ভবতি। এডতুপাধাপহিতাধারজ্ভসমুপহিতং প্রভাগানশং জুরীয়ং টৈতজং জ্পেদক্যার্থো ভবতি" (বেদারসার)

দেৰতাম্বৰণে তাহাতে প্ৰৰিষ্ট হন। সেই চকু: হইতেই জীবের জ্ঞান হইয়া থাকে।

শ্নির্ভিলে অকিণী ষ্ঠা লোকপালোহবিশবিভো:।

চক্ষাংশেন রূপাণাং প্রতিপতির্যতোভবেং॥" (ভাগব॰ এ৬।১৪)

বৃক্তি তন্করোতি, কাষ্টাদিকং শিরকার্ব্যথাং দ্বক্ষ্ট্।
২ বিশ্বকর্মা, দেবশিরী, মানেমানে স্ব্যরথে সাত জন পরিভ্রনণ করেন, স্বয়া তাহাদিগের মধ্যে একজন। (বিষ্ণুপু॰
২০১০ অঃ) ও বিশ্বকর্মার প্রবিশেষ। (বিষ্ণুপু॰ ১০১৫।১২২)
৪ প্রজাপতিবিশেষ।

"দ্বঠাপ্রলাপতিই্যাসীৎ দেবশ্রেটো মহাতপা:।" (ভারত ৫।৯।৩)
৫ মহাদেব। "ধাতাশক্রণ বিষ্ণুচ মিত্রত্বটা ধ্রুবো ধর:।''
(ভারত ১৩।১৭।১০৩)

৬ বর্ণদক্ষরজাতিবিশেষ, স্ত্রধার। ৭ জ্বন্ধেরতাক চিত্রানক্ষর, চিত্রানক্ষরের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। (ত্রি) ৮ জক্ষণ-কর্ত্র। ৯ পশু ও মন্থাদির গর্জের অভ্যন্তরম্থিত রেতোক্ষপ বিভাগকারক দেবভেদ। ইনি মন্থ্য ও পশু প্রভৃতির গর্জ-থিত রেত: বিভাগ করিয়া পাকেন। (শুক্রযজু: ২০)২০) ডুক্ট্র্য (ত্রি:) খুট্-অন্ত্রেথে মতুপ্। বীধ্যাধিষ্ঠাত্ দেবভেদ-শ্রু। "জ্ট্যস্তর্গ সপেম" (শুক্রযজু ৩৭)২০) 'জ্ব্রা রেত-

ত কৃষ্থ ( আন) খহ্-অভাবে মভূপ্। বাষ্যাধিটাত দেবভেদ-যুজ। "অষ্ট্যস্তস্থা সপেম'' ( শুক্লযজু• ৩৭।২∙) 'অটা রেজ-সামণিটাতা তংসহিতাঃ মৈথুনার্থোপস্পর্শে বীধ্যাধিটাতাপে-কিতোহত এতহাতাঃ' (মহীধর )

জাংকামা (রী) ডাং কাময়তে কম-ণিঙ্জাণ্ বেদে ধিতী-য়ায়া: ন লুক্। তোমাকে অভিনাধকারিণী, যে তোমাকে অভিলাধ করে ! "অলেগ্ডাংকাময়া গিরা" (ঋক্চা১১।৭) লৌকিক প্রয়োগে ডংকাম এইরপ পদ হইবে।

হাচপ্রত্যুক্ষ (রী) দ্বাচং স্বচ-সম্বন্ধি প্রত্যক্ষং। স্পর্শজ্ঞান, স্পর্ণেক্তিয়লভা জ্ঞান, স্পর্শদারা দ্রব্যাদির অনুভব।

'অণ জ্ঞানমাত্রে ত্ত্ত্বন: সংযোগত কারণত্বং তদা রাসন-চাক্তাদিকালে ভাচপ্রত্যক্ষং তাবে' (দিঞ্চীত্তমুক্তাবলী)

হাদত্ত (ত্রি) দ্বা দত্তঃ বেদে সাধু:। তোমা কুর্ত্তক দত্ত।
"হাদতেভী কন্ত শস্তমেভিঃ'' (ঋক্ ২।৩০)২) 'ছাদতেভিত্তরা
দকৈ:' (সাধণ)

ছাদাক্ত ( ত্রি ) তোমাকর্ত্ক শোধনবার। বিশদীক্ত । "ইক্র-ভাদাত্মিদাশঃ" ( ধক্ ১।১০।৭ ) 'ভাদাতং ভগা শোধনেন বিশদীক্তং' ( সামণ )

য়াদৃত (ত্রি) অং দ্ভো বেষাং। তুমি বাহাদের দৃত । ''বরেণ স্থাদ্তানো মফুবমদেম" ( অংক্ ২।১০।৩ ) 'আদ্তানঃ অং দৃতো ^{বেষাং} তে আদ্তানঃ বা অয়া প্রেরিত। বয়ং' ( সায়ণ )

होतृम् ( वि ) प्रमित मृक्षादछ यूत्रम् मृम् किन्। ट्यामात मन्म,

তোমার জুল্য। এক বচন বুঝাইলে ছাদৃশ এবং যখন বছবচন इहेर युषाদৃশ এই ক্লপ হইবে।

ত্বাদৃশ (ক্লি) ত্মিব দৃখ্যতৈ হংসী যুল্দ দৃশ্-ক এছ (তাদাদির্ দৃশে রমালোচনে কঞা। পা তাং।৬০) তোমার সদৃশা।

"পুরুষা যদি মুক্তি ভাদৃশা দেবনায়য়।

শ্রম এব পরং জাতো দ্বীর্ষমা বৃদ্ধদেবয় ॥" (ভাপ॰ ৪।২০।৪)

ত্বায়ৎ (জি) খানায়ন ইছেতি, স্থপ আয়ন: কাচ্, কাজস্তা-লট: শত্। আআভিলায়ী। "মা খামতো জরিতু:" (ঋক্ ১৫এ৩) 'ছায়ত খানায়ন ইছেতো' (সুয়ণ)

ত্বায়ু ( ত্রি ) তামাত্মন ইচ্ছতি কাচ্যুল্লপত্দাদেশে 'ক্যাচ্ছন্দদি' ইতি উ। তোমাকে কাময়নান, তোমাকে যে কামনা করে। ''স্তা ইমে তামব:" ( ঋক্ ১।৩।৪ৢ) 'তামব তাং কামরমানা বর্তত্ত্ব' ( সামণ )

জ্ববিৎ (অ ) তবেব দশনমত যুখদ মতুপ্ যুশ্মনসভাং ছলসি সাদৃভো ইতি আনেশ:। অংসদৃশ, তোমার তুলা। "ভাবানু অনাথ:" (ঋক্ ১।৫০।১৪) 'ভাবান্ অংসদৃশ:' (সায়ণ)

ত্বাবহা (পং) তং বহা ব্যাপ্রকো ২ছা তাদেশ: বেদে প্রোণ সাধু:। তোমা কর্তৃক ব্যাপ্ত। লোকিক প্রত্যয়ে শ্তরহ এইরূপ পদ হইবে।

ত্বার্ধ ( আ ) স্বরা বর্দ্ধিতঃ। তোমা কর্ত্ক বর্দ্ধিত। "নৃভি রজয়স্বার্ধেভি:'' ( ঋক্ ১০।৬৯।৯ ) 'সার্ধেভি ক্যা বর্দ্ধিতঃ' ( দারণ )

স্বাষ্ঠী (স্ত্রী) হর্গা।

"ত্ব উ্টো স্তো ধাতৃ ওঞ্চ তৃষী নিপাতনে। স্পত্যোষা প্ৰজাস্তী স্বাধী তেন প্ৰকীৰ্তিতা।"

( (परीञ्चः ४० छः)

তুষ ধাতুর অমর্থ তুটি, ইনি প্রেলাদিগকে স্টে করেন, এই জন্ম ইহার নাম ভাষী হইয়াছে।

জ্বাস্ট্র ( ত্রি ) স্বটা দেবতা অভ অবণু। স্বৃদ্দেবতাক আলোদি। স্বটাদেবের উদ্দেশে মৃত প্রভৃতি। ২ ব্রুফ্র।

"উদ্যামন স্বতন্ত্র: নমচ্বল এবচ।'' (দেবীভাগণ cicis)
ত বিশ্বরূপ। (ভাগণ ভাদাহ) জ্বল ক্ষিত্রী দেবভা অভ

हेडाग्। ८ हिजा नक्कजा ( दृह्दमः १।১১ ).

ত্বাষ্ট্রী (জী) স্বটা অধিষ্ঠাত্রী দেবতা অস্ত, স্বষ্ট্র অণ্ জীপ্।
> চিত্রানক্ষত্র। স্বষ্ট্রিশকর্মণ: অপতাং জী। ২ সংজ্ঞানামে
স্বেগ্র পল্লী, বিশ্বকর্মার সর্গাবা সংজ্ঞানামে এক কল্পা হয়,
বিবস্থানের সহিত ইহার বিবাহ হয়। ইহার গর্ভে অথিনীকুমারব্রের জন্ম হয়।

"দারীতু স্বিতু র্ভার্যা বড়বারূপধারিণী।
অক্ষরত মহাভাগা সাস্তরীকেই খিনাবুভৌ ॥"
(ভারত ১০৬৬০৫) ও র্থিকা, কুল্ররধ। (ক্রিকা )
জিষ্ (ক্রী) বিষ দীপ্রে) সম্পদাদিদাদি কিপ্। শোভা, প্রভা,
দীপ্রি।

"চয়ন্তিয়া মিজ্যবধাপরতং পুর-ভতঃ শরীরীতি বিভাবিতাক্তিং ।" ( মাদ ১।৩ )

. ২ বাকা। ৩,বাবসায়। ৪ কিণীখা। (জি.) ৫ দীপ্য মান।"তবা জিযো ফনিমন্রেজ্ত" (ঋক্৪।১৭।২)'হেইজ্র জিযোদীপ্যমান্ত তব' (সায়ণ)

ছিষা (জী) দিয় হলস্তাৎ বা টাপু। দীন্তি। (শন্তর*) ছিষামীশ (পুং) দিবাং ঈশং অনুক্সমাসঃ। ১ সুর্ব্য ২ অর্ক বৃক্ষ।

তিষাম্পতি ( পুং) দিবাং পতিঃ বঠাাঃ অনুক্। ১ হ্রা। ২ অর্করক।

দ্বিষি (জী) দিব'দীথে দুষ্ইন্সচ কিং (ইঞ্পদাং কিং। উণ্ ৪।১১৯) কিরণ। "দ্বিীরধিত স্থান্ত" (ঋক্ ন।৭১৯) দ্বিষ্ঠিত (জি) দিট্ কাতা হল ভারকাদি ইতচ্। জ্লিত। "অমিরিৰ মলো দ্বিদিঃ" (ঋক্ ১০৮৪।২)

স্থিমীমং ( অ ) স্থিমি বিদ্যুতে হস্ত স্থিমি মতুপ্ বেদে দীর্মঃ। দীপ্তিমং, দীপ্তিযুক্ত। 'প্রদ্যুতি স্থিমীমত ইক্লায়' ( ঋক্ ১০১৫ এ) 'স্থিমীমতে দীপ্তিমতে' ( সারণ )

জেষ ( আ ) জিম পচাদাচ্। দীপ্ত। "বেষাসো হথা রমবস্তঃ" (ঋক্ ১০৩৬) (জেষাস: দীপ্তা: জিম দীপ্তো পচাদাচ্' (সামণ) জেষ থ (আ) জিম-জাথচ্। দীপ্ত। "শ্রভোব জেমগাদীমতেবয়ঃ" ( ঋক্ ১০১৪১৮ ) 'তেমগাম্মইন, কভাচিৎ বিক্রান্তভ দীপ্তাৎ তেজন: সুকাসাং' ( সামণ )

িজ্যকু। আন ( আন ) ওেষং দীপ্তং ছামং যক্ত। দীপামান যশো-যুক্ত। "ডেমছামায় শুমিণে" ( ঋক্ ১।৩৭।৪) 'জেমছামায় দীপামান যশদে' ( সায়ণ ) জ্মন্দ্র ( আ ) ডেষং নৃষং ষক্ত । প্রানীপ্রবল । "ৰতো ষক্ত উঞ্জ ডেবনৃষ্য:" ( আক্ ১০) ২০। ১) 'ডেবনৃষ্য: প্রানীপ্রবল্য: (সার্ব) ডেবন্স:" ( আক্ ১০) ১২০। ১) 'ডেবনৃষ্য: প্রানীপ্রবল্য: "দিছাই, ডেবনপ্রতীকা' ( আক্ ১) ৬৬। ৭) 'ডেব প্রতীকা দীপ্রম্থা: 'নার্ব। ডেবরপ ( আ ) ডেবং রথং বক্ত । দীপ্রবণ । "মারুডোগণবের-রথং" ( আক্ ৫। ৬১। ১৩) 'ডেবরপ: দীপ্রবণ: 'নার্ব।

(জুষস্ (রী) থিষ্ অহন্। দীওা। "অভেত্ ভেষদার**র:"** (ঋক্ ১।৬১।১১) 'জেষদা দীওোন' (সায়ণ)

স্বেমণংদৃশ্ ( আ ) ছেব: সংদৃক ষষ্ঠ । দীপ্তসংদর্শন। "ব্যেসংদৃশোনরঃ" ( ঋক্ সাদ্ধান) 'ছেবসংদৃশো দীপ্তসংদর্শনা;
ছিব দীপ্তৌ পচাছচ্, দৃশি প্রেক্ষণে, সংপূর্কাদদ্দ দুশাদি
লক্ষণো ভাবে কিপ্, বছত্রীহৌ পূর্কাপদপ্রকৃতিস্বরহুং' ( সারণ )
স্বৌ ( ত্রী )- দীপ্তা। "ছেবেছাবামপীচ্যেন" ( ঋক্ ৭৬১):১)
'ছেবী দীপ্তাচ ভবভি।' ( সারণ )

ত্ত্ব ( অব্য ) ছচ বা তৈ। ১ বিশেষ। ২ বিভর্ক। (শকাধ্চি) ভৈষ্মীরথী ( পু: ) কুশিক। "কুশিকদৈষীরথি।" (ঋক্সাস্থ্য ভাষ্মে সায়ণ)

ভোত ( আ ) ছয়া উতঃ বেদে সাধু:। ভোমাকর্ক রিছর।
"ছোতাসোন্তর্বতা" (ঝক্ ১৮৮২) 'ছোতাস স্থয়ারক্ষিতা' (সায়।
লৌকিক প্রয়োগে স্বৃত এইরূপ পদ হইবে।

ৎস্কু (পুং) ৎসরতি কৌটিলাং গছতি ৎসর-উ (ভৃষ্ণীভূচরিং সরীতি। উণ্১।৭) ১ ঝড়গমুটি, পর্যায়—মুটিতালতল। ২ সর্গ। "মামাং পত্যেন রপসা বিদৎ ৎষক্র" (ঋক্ ৫।৫•।১) 'ৎসকশ্ছন্মগামী জিক্ষগঃ সর্পঃ' (সায়ণ)

র্পারিন্ (ত্রি) ৎসরণযুক্ত, অত্যস্তভীত। "বাং ৎসারী সসমান" (ঝক্ ১)১০৪। ক) 'ৎসারী ৎসরণবান্ অত্যস্তভীত' (পালে) ৎসাক্ষক (ত্রি) ৎসরৌ ডছ্যদ্ধে নিপ্ণা, আকর্ষা, কন্ডঃ স্থার্থে অণ্। অসিযুদ্ধনিপ্ণ।

"তথাতিপুরুষান্তান্ ৎষারুকো যমজাবৃত্তো।" (ভারত ১।১৩২ ^জ श

বাল্পনবর্ণের সপ্তদশ ও তবর্ণের বিতীয় বর্ণ। ইহার উচ্চারণ হান দন্তমূল, দন্তমূলের বারা জিহ্বাপ্রস্পর্শ, আভ্যন্তর
প্রয়র হেতৃ স্পর্শবর্ণতা। বাহ্য প্রয়র বিবার, খাস, অবোর
ও মহাপ্রাণ। ইহার বাচক শন্ধ— ত্রিবাসী, মহাপ্রাহি,
গ্রহিপ্রাহ, ভয়ানক, শিলী, শিরসিজ, দন্তী, ভজুকানী, শিলোচ্চয়, রুয়, বৃদ্ধি, বিকর্ণা, দক্ষিণাশা, অধিপ, অমর, বরদা,
ভোগদা, কেশ, বামজজ্বা, অলস, অনল, লোল, উজ্জারনী,
পূর্, গুয়, শরচ্চক্র, বিদারক। (বর্ণাভিধান) ইহার লেখন
প্রকার—বাম হইজে দক্ষিণাদিকে কৃষ্ণিত কুগুলী করিয়া
তৎপরে কৃষ্ণিত হইয়া দক্ষিণাধোভাগে আনিবে, তৎপরে
উদ্ধিকে একটা আয়ত রেখা টানিবে। ইহার ধ্যান—

"নীলবর্ণাং জিনয়নাং বড়্ডুলাং বরদাং পরাম্।
পীতবন্ত্রপরিধানাং সদা সিদ্ধি শ্রীদায়িনীম্॥
এবং ধ্যাথা পকারত্ত জন্তরং দশধা জপেং।
পঞ্চদেবময়ং বর্ণং পঞ্চপ্রাণময়ং সদা।
তরুণাদিত্যসঙ্গাশং ধকারং প্রণমামাছম্॥" (বর্ণোদারতন্ত্র)
মাতৃকান্তাদে—বামজ্জনায় থকারের ভাস করিতে হয়।
ইহার স্বরূপ — কুণ্ডুলী সোক্ষরপিনী, জিশক্তি, জিবিক্লু, পঞ্চদেবময় ও সর্বাণ পঞ্চপ্রাণময় বর্ণ এবং নবোদিত স্থেয়র মত।
"থকারং চঞ্চলাপান্ধি! কুণ্ডুলী মোক্ষরপিনী।
জিশক্তিসহিতং বর্ণং জিবিক্লু সহিতং সদা।
পঞ্চদেবময়ং বর্ণং পঞ্চপ্রাণাত্মকং সদা।
অরুণ্ডাদিত্যসন্ধাশং থকারং প্রণমামান্ত্ম্ ।" (কুামধেন্তন্ত্র)
কাব্যাদিতে থকারের প্রথম প্রয়োগে যুদ্ধ ফল। "থস্ত

থ (গং) পুড় সংর্ভৌড। ১ পর্বত। ২ ব্যাধিভেদ। ৩ ভর-চিহ্ন। ৪ ভক্ষণ। (ক্লী) ৫ রক্ষণ। ৬ মঞ্চল। ৭ সাধ্বস। (অ)৮ ভরবক্ষক।

থই (দেশজ) ১ ছপতি, মিন্ত্রী। ২ স্থলী, তল।
থইগরি (দেশজ) স্থপতির কার্কা।
থকা (তবকের অপত্রংশ) ভবক, গোছা।
থকা থকা (দেশজ) গোছা গোছা, ভবকে ভবকে।
থকার (সুং) ও শহরপে কারঃ। ও অরপ্রধণ।
থক্পক্ (দেশজ) ১ আবিল, বোলা। ই ঘন, গাঢ়।
থকারাদি (সুং) ওকার আদির্ভা। বাহার আদিতে ও এই
বর্গ আছে।

পকারান্ত (জিন) থকারো হল্তে বজ্ঞ। যাহার শেবে থ আছে। পক্পকিয়া (দেশজ) ঈবং তরল। পক্পকৈ (দেশজ) ঈবং তরল, ঈবং খন।

প্রভ ( দেশজ ) থাপড়, চড়।

পার, নিমন্ত্রের তৌক্রেলার অন্তর্গত একটা নগর। (সংক্ষত নাম তগর।) ইহার ভিতর দিয়া কতকগুলি গিরিশৈল গিয়াছে। মধ্যে নানাবৃক্ষলতাকীর্ণ ও শক্তথালী উৎকৃষ্ট ক্ষেত্র দৃষ্ট হয়।

थ्डा ( (तभव ) हमकान ।

থিতিয়া, উত্তরপশ্চিমাঞ্চলে ফরুপাবাদ জেরার অন্তর্গত তিরবানপর হইতে ৩০০ কোশ দ্রে অবস্থিত একটা নগর, পূর্ব্বে
এখানে বহু লোকের বাস ছিল। এখনও এখানে হাটবাজার
আছে। কতকগুলি রাস্তা আলিয়া এই নগরে মিলিত
হইরাছে। এখানে গবাদির ব্যবসা, পুলিস, ডাক্দর, ইংরাজী
বিস্থালর, সরাই প্রভৃতি আছে। নগরের দক্ষিণে এক উচ্চ
জমির উপর হুর্গের চিক্ত রহিরাছে। পূর্ব্বে ঐ হুর্গ মধ্যে
ভালপ্রাদের বাদেলা রাজপুত্রগণ বাস করিতেন।

১৮৫৭ খুটাক্ষে এখানকার ছর্গপতি বাবেলা সন্দারও বিজ্ঞোহী হইয়াছিলেন। বিজ্ঞোহের পর তিনি দীপাস্তরিত হন ও ছুর্গধ্বংস করা হয়।

থকুন, ত্রন্ধদেশের তেনদেরিম্ বিভাগের আমহাট জেলার অন্তর্গত একটা নগর। এপন আর এই স্থানের পূর্ব্ধ সমৃদ্ধি কিছুই নাই। তলৈল ইতিহাসে এই স্থান অতি বিথাত। দেশীর ঐতিহাসিকগণের মতে খুইপূর্ব্ধ ১৭শ শতাকীতে এই নগর স্থাপিত হয় এবং বহুকাল এক স্থাধীন রাজ্যের রাজ্যনার প্রাপিত হয় এবং বহুকাল এক স্থাধীন রাজ্যের রাজ্য ধানীরূপে বিথাত ছিল। খুঠীয় ১০ম শতাকো ব্রহ্মরাজ্ঞ অন-ব-র-ত জ্পধিকার করেন। ব্রহ্মপুরার্ভে থকুন ক্ষধিকারের বিষয় অতি বিজ্তভাবে বর্ণিত হুইয়াছে। এই নগরের অনেক বৌদ্ধ দেবালয় দৃষ্ট হয়, কিন্তু তাহার অধিকাংশই এখন ধ্বংসমুধে পতিত।

থপ্ (দেশজ) কোমলবন্তর মৃত্তিকাদিতে পতন-ধ্বনি।
থপ্থপ্ (দেশজ) কেমল বন্তর মৃত্তিকাদিতে পতন-ধ্বনি।
থপ্থপ্ (দেশজ) ক্তী ও ভেকাদির আর্ম মৃত্গতিতে
গমন করা।
থপ্ড়া (দেশজ) থাপড়, চড়, চপেটাঘাত।
থপ্পর (দেশজ) থাপড়, চড়, চপেটাঘাত।

থ্মক (দেশজা) > ধীরভাব। ২ চমকান। থ্মুকান (দেশজা) চমকাইয়া উঠন, ভয় বা আংশচর্য্য হেতু অভিত হওন।

IIIA

পম্থমা, প্রম্প্রিয়া ( দেশৰ ) মন্দীভ্ত, মৃছগতি, ছিরপ্রার, শিবিল।

থ্রু (দেশজ) > অর। ২ মৃতকের দ্ব আংশে কৈশের প্রান্তভাগ পতিত হয়।

থার ও পাকির, সিদ্ধানেশের মধাবর্তী একটা জেলা। জাকা ২৪°১০ ও ২৬°১৫ উ: এবং জাঘি ৬৮°৫১ ইইতে ৭১°৮ পূ:। ভূপরিমাণ ১২৭২৯ বর্গনাইল। ইহার উত্তরে ধ্রেরপ্ররাজ্য, পূর্বে জ্বয়শালনের, মলানি, যোধপুর ও পালনপুর রাজ্য, দক্ষিণে কচ্ছের লবণাক্ত জ্লাভূমি, পশ্চিমে হায়দরাবাদ জ্লো। জ্লোর সদর অমহকোট।

পর ও পার্কর লেলাকে ছই ভাগে বিভক্ত করা যার,—
এক ভাগ 'পট' বা সমতল ভূষাণ এবং 'থর' বা মরুভূমি।
পট ভূষাগ পিছু হইতে ৫০ বা ১০০ ফিটু উচ্চ হইয়া
আছে—ইহার মধ্যেও এক একটা প্রায় ২০০ ফিটু পর্যান্ত
উচ্চ বালুকাশৈল বিদ্যানা। কিছুদিন পূর্বেএই ভূভাগ মরুময় বোধ
হইত, তেমন লালেরও স্থাধা ছিল না। কিছু লালু সরবসাহের
লক্ত রোড়ী নামক খাল কাটা হইলে ক্রমে এই জেলাহ্
নারা নামক ভূভাগ কলল ও জলায় আকীর্ণ হইয়াছে। এই
ভূভাগে পূর্বে নারা ও মিথ্রো নামে ছইটা ঝাল বহিতেছে;
ভাহাতে চোর ও প্রণাল নামে ছইটা ক্রমিম স্রোভ্রাহর
হইয়া প্রায় ৮০ মাইল প্রান্ত গিয়াছে।

থর বামকুময় অংশে নদী বা কোন প্রকার থাল নাই। কেবল ঢেউ-থেলান উচ্চ উচ্চ বালুকাস্তৃপ পড়িয়া আছে।

থরের দক্ষিণ পূর্বে পার্কর নাম ভূভাগ। থর হইতে এই স্থান সম্পূর্ণ বিভিন্ন। এথানে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গিরিমালা রহিয়াছে, কোনটা ৩৫ • ফিটের বেনী হইবে না, ভাহার প্রস্তর অভি কঠিন। ইহার পূর্বাংশ ভেমন উচ্চ নহে; এই অংশ ক্রমে নিম্ম হইয়া শেষে মৃত্তিকাযুক্ত ক্ষেত্রে পরিণত হইয়াছে।

ক্ষেলার নানাস্থানে শুষ্ক নদী-গর্জ পড়িয়া আছে, দেখিলেই বোধ হয় যে, এক সময় সিল্পনদ অথবা তাহার কোন শাখা প্রশাখার স্বোত প্রবাহিত হইত। এখন বেখানে মক সেইখানেই পূর্ব্বে শক্তশালিনী ভূমি ছিল। বিস্তর ইষ্টক ও পাত্রাদি পা্রুয়া গিয়াছে, তাহাতেই জানা যায় যে এক সময় লোকাবাসও ছিল।

পুরাতত্ব। পার্কর ভূভাগে কতকগুলি প্রাচীন দেবা-লব্যের ধ্বংসাবশেষ দৃষ্ট হয়। বিরাবার ১৪ মাইল উত্তর-পশ্চিমে গোর্চা নামে এক প্রাচীন ও প্রাসন্ধ কৈন দেব- মন্দির আছে, এথানকার জিনমূর্ত্তি দর্শন করিবার জ্বার্থন্থ হইতে জৈনবাজীর সমাগম হয়। ইহার নিকট পারা নগর নামে এক প্রাচীন নগরের ভগাবশেষ পড়িয়া আছে তাহা আয়ভনে প্রায় ৬ মাইল হইবে। ধর্ম্মিনিংই নাটে এক ব্যক্তি ঐ নগর ছাপন করিয়াছিলেন, পূর্ব্বে ইহা বিশ্বে সমুদ্ধিশালী ও বহুজনাকীর্ণ ছিল। খুষ্টায় ১৬শ শতাকী হইবে হর্দশা ঘটে। এথানকার প্রাচীন ভগ্ন দেবালয়ের দিয়িনেপুণ্য দেখিলে চমৎক্রত হইতে হয়। থিপ্রা নগরের দিয়েন নারা থালের উপর রভাকোট নামে এক বিধ্বস্ত নগর দেখা যায়। প্রবাদ এইর্নপ্র বিশ্বে, ৯০০ বর্ষ পূর্ব্বে রভানায়ে একজন এই নগর স্থাপন করেন, পাঁচশত বর্ষ হইতে ইহার হর্দশা ঘটিয়াছে। জেলার নানাছানে তলপুরমীর্দ্ধের সময় নির্দ্বিত জনেক গুলি হুর্গ দৃষ্ট হয়, তল্পো ইস্পামকোট, মিত্তি ও সিঞ্চাল প্রধান। এথন সকল গুলিরই ভ্রাবেছা।

ইতিহাস। জেলার প্রাচীন ইতিহাস বেণী কিছু হানা যায় না। এখানকার দোলা রাজপুতেরা বলিয়া থাকেন—উজ্জিনিতৈ তাহাদের পূর্বপূক্ষ পরমার গোলা বার করিতেন। ১২২৬ খৃষ্টাব্দে তাহারা সিন্ধু প্রদেশে আগনক করেন এবং এখানকার শাসনকর্তাগণকে পরাভূত করিছা আধিপত্য বিতার করেন। ইহাদের পূর্বের স্মরাগণ রাল্য করিতেন। কেহ কেহ বলেন, খৃষ্টায় ১৬শ শতাবেদ স্মরাগণ গোলা রাজপুতের হত্তে পরাজিত হইয়াছিল। ১৭৫০ খুটাবে সোলারাও কল্হোরাগণের অধীনতা স্বীকার করিতে বায় হন। এই সময়ে কিছু কাল এই জেলা সিন্ধুরাজ্যের শাসনাধীন ছিল। কল্হোরালিগের অধকারে অধংপতনের পর এই বেলা তলপুরুমীরদিগের অধিকারে আইসে। তাঁহারা ক্লমির উংগ্রা

বহুদিন ধরিয়া থর ও পার্কব জেলা ডাকাতের আছ বলিয়া গণা ছিল। সেই সকল ডাকাতেরা কছ ও নিকট বর্তী লেলায় গিয়া সুঠপাঠ করিত।

১৮৪৩ খুটাকে সিদ্ধানেশ বৃটীশরাজ্যভূক হইলে এই জেলার লোকেরা কচ্ছের শাসনাধীন থাকিতে ইছা করে। তদুস্সারে ১৮৪৪ খুটাকে বলিযারি, দিপ্লা, মিডি, ইন্লামকোট, সিন্ধানা, বিরাবা, পিটাপুর, বোজাসর ও পার্বা কচ্ছের সামিল হয় এবং অমরকোট, গদরা ও নারাই প্রভৃতি কতকগুলি ভূভাগ হায়দরাবাদ কালেইবীর মীরপ্রে তিপুটী কালেইবের) অধীন হইল।

লাথরাজ ও হিন্দ্বিবাহ উৎসবে পাটেল বা প্রা^{ধ্নো}

ে অনুৰ্বক অৰ্থ সংগ্ৰহ ক্রিড, ভাহা উঠাইয়া দেওয়া হুইল। এই সমর সন্দারদিপকে আত্র ব্যবহার করিভেও ' নিষেধ করা হয়। এই সকল কারণে সোলারালপুতেরা কেণিয়া উঠে ও বিজোহী হয়। ১৮৪৬ খুটাবে আল্লেই বিদ্রোহ শান্ত হইল। তথন গ্রমেণ্ট ভারাদের অস্ত্যোধের _{কাৰণ} জানিতে ইচ্ছুক হইলেন। সোদায়া **জানাইলেন**— 'করাড় বণিয়াদিপের অংতি বিবাহে করস্বরূপ ২৬॥∙ টাকা ও ঋণপ্রহণকালে এক টাকা আদায় পাইতে ইচ্ছা করি, কারণ বরাবর পাইয়া আসিতেছি। তাঁহারা যে স্কল নিম্নর জমি ভোগ করিতেন, ভাহা অনেক কমিয়া গিণাছে ও অনেকগুলি তাহাদের হস্তচ্যত করা হইয়াছে; বিশেষতঃ অজন্মার সময় যেন তাহাদের ব্যবহার্য্য অহিফেন বা শস্তাদির ওক রহিত করা হয়। সোদারা বছদিন হইতেই ভ্ৰমণকালে বণিমাদিগের গৃহে উপস্থিত হৈইবামাত্র বিনা বায়ে আহারাদি ও শত পাইয়া আদিতেছেন, তাঁহারা এই প্রথা এখন ও রকা করিছে ইচ্ছা করেন। এ ছাড়া অমরকোট হটতে যে গুল্ধ আদায় হ্ম, তাহার কিয়দংশ তাঁহারা পাইতে পাবেন।'

আবেদন শুনিয়া বৃচীশ গবর্মেণ্ট এই প্রকার বন্দোবস্ত করিয়া দিলেন, —

করাড় বণিয়াদিগের বিবাহে দের করশ্বরূপ সোদারা উক্ত বণিয়াদিগের নিকট হইতে শতকরা ে টাকা হিসাবে ১১০০০ টাকার বার্ষিক হৃদে পাইবেন, নিষ্করে কতকগুলি ভাগ তেগি করিতে পারিবেন এবং অমরকোট হইতে যে শুক দালায়ু হইবে, তাহারও কিছু কিছু তাহাদিগকে দেওয়া হইবে।

১৮৫০ খৃঠাকে সোদা জমিদারের সহিত স্কুমরকোট ও নারা বিভাগের একরূপ বলোবস্ত হয়, তৎপরে ১৮৫৪ খৃঠাকে সিলুপদেশের ক্ষিসনার সর্বার্টিল ফ্রিয়ার এখানে দশ্যালা বন্দোবস্ত চাণাইলেন।

১৮৫৬ স্টাব্দে এই জেলার মক্ষয় ভাগীও পার্কর আবার শিক্ষবেশের সামিল করা হইল।

১৮৫৯ খৃষ্টাবেদ কৃতকগুলি কোলিগৈছা রাণার সহিত নিলুত হইয়া বিজোহী হর, হারদরাবাদ হইতে সৈছা গিয়া বিজোহ দমন করেন। ১৮৬৮ খৃষ্টাবেদ বিচারে রাণার ১৪ বর্ষ ও তাঁহার মন্ত্রীর ১০ বর্ষ নির্বাদন দও হর। তৎপরে এই জেলার আর কোন গোলমাল হয় নাই।

এখানে লোকসংখ্যা ছুই লক্ষের অধিক। তল্পধ্যে শত-করা ৩০ জন স্পল্মান, হিন্দু২১ জ্বন এবং আহিন্দু অস্ভ্য জাতি প্রায় শতক্রা ২০ জন। এ ছাড়া জৈন, শিশ, খুটান, রিছলী ও একজন আদ্ধাছে। বালরা ও ছুট্ট এখানকার লোকের প্রধান উপজীবিকা। এখানে ধরীফ, রবি ও আদাবা এই তিন শক্ত উৎপন্ন হর। তবে ভানভেদে বপন ও কর্তুন করিবার সময়ের কিছু পার্থক্য আছে।

•বাণিজ্য — ধর ও পার্কর হুইতে প্রধানত: নানাবিধ শস্ত, পশম, ঘত, উট্র, গো, মেন, চর্দ্ম, এংক্ত, লবণ এবং পাধা নির্দাণযোগ্য পণ নামক এক প্রকার থাগড়া রপ্তানী হর এবং তুলা, ধাতু, শুক্ষ ফল, রঙ্, থান কাপড়, রেশম, গুড় ও তামাকু আমদানী হয়। এথানে উভ্তম পশমী বনাত ও মোটা কাপাদ বন্ধ প্রস্তুত হইয়া থাকে,।

শাসন — রাজস্ব ও বিচারকর্ত্ত্ব একজন ডেপুটী কমিসনরের হত্তে গ্রস্থ, ভাঁহার উপর জঁজ ও ম্যাজিট্রেট্ট উভরের ক্ষমতা দেওয়া আছে। ভাঁহার অনীনে, ম্যাজিট্রেটের ক্ষমতাপ্রাপ্ত একজন ডেপুটী কালেক্টর ও একজন মুথ্তিয়ারকার আছেন। মুথ্তিয়ারকারদিগের ক্ষমতা ১ম ও ২য় শ্রেণীর ম্যাজি-ট্রেটের ক্রায়।

প্র পক্ষ। দি সিজু প্রদেশের অপর ছানের মত। [সিজু-প্রদেশ দেখ।]

থার্থার (দেশজ) ভয়াদিহিতু কম্পন।

থারবদী, নিমার জার অন্তর্গত একটা বিস্তৃত জৈলা। • ইহার উত্তর সীমা গোম্জেলা, পুর্বে পেগুযোনাগিরি, দক্ষিণে হয়বদী ও পশ্চিমে ইরাবতী নদী। ভূপরিমাণ ২•১৪ বর্গনাইল। লোকসংখ্যা প্রায় তিন লক্ষ্য ইহার প্রাধান সদর ধ্রবতী। সদরের ধার দিয়া ইরাবতী টেট্ রেলওয়ে গিয়াছে।

এথানকার ইরাবতী ও নিতং নদীর অববাহিকা ও পেগুয়েমানৈশৈলের প্রাকৃতিক দৃগু অতি মনোহর। প্রাদান শৈলগৃদ্ধ বর্বেসকন্ ও ক্যোক্পুদদ, উভয়্টীই প্রায় ২০০০ কৈটি উচ্চ। শৈলমালার মধ্যে ক্যোক্ত দ আমুর্থাৎ শৈলনেতু নামে এক বিচিত্র গিরি আছে, এক বৃহৎ ফ্করের উপর দিয়া এই পাহাড় বিস্তৃত স্থতরাং দেখিতে সেত্র ভার বলিয়া শৈলসেতু নাম হইরাছে।

এ জেলার মাটি উর্জরা। ইহার ইতিহাস হেনজদা জেলার সহিত সংশ্লিষ্ট। এখানে এখন অনেক হিন্দুধর্মাবলম্বী হিন্দুমানা, বালালী, উড়িয়া, ডেলুগু ও তামিল প্রভৃতি জাতি গিয়া বাস করিতেছে। অধিবাসীর মধ্যে শতকরা ৯৭ জন বৌদ্ধ। [হেনজদা দেখ।]

থরাড়, থরাড়ও মোরবাড়া রাজ্যের প্রধান নগর। আংকাণ ২৪°২৩´১০´´ উঃ, জাবি॰ ৭১°৩৭´পু:। এথানে রাজা বাস করেন। থরাড় ও মোরবাড়া, বোদাই প্রদেশের পালনপুর এজেসার অধীন একটা দেশীর রাজা। এই রাজা উত্তর দক্ষিণে
প্রায় ১৮ ক্রোল ও পূর্ব্ধ পশ্চিমে প্রায় ১ই ক্রোল। 'রাজপুতনার সীমান্তে গুজরাটের উত্তরাংশে অব্দিত। ইহার
উত্তর সীমা সাচোরের এলাকাধীন মাড়বার জেলা, পূর্বের্ব পালনপুররাজা, দক্ষিণে ভাবর ও ভেরবারা রাজা। এই
রাজ্যের অধিকাংশ জমিই অন্থর্মের ও বালুকাময়, কেবল
গ্রামাদির লিকট অতি অর কালমাটির জমি পাওয়া ধার।
'এধানে মাটির প্রায় ৫০ হইতে ৮০ হাত নীচে জল। স্পত্রাং
জল সরবরাহের স্কুবিধা নাই, এ জল্প এথানকার ব্যবহার্যা
শক্ত অতি সামালই জন্মে, ইচ্ছামত বিভিন্ন প্রকার শক্ত
ভাল জল্পতে পারেনা। এথানে বৈশাগ ও জ্যৈন্ত মানে
দাঙ্গণ গ্রীয় হয়। অপ্লর রোগ বড় একটা নাই, তবে
জরের বড় প্রান্ত্রভাব। পালি হইতে মাগুরী পর্যান্ত বৃহৎ
পাকা রাজা এই রাজ্যের মধ্য দিয়া গিয়াছে।

এথানে বছদিন হইতে বাবেলা রাজপুতগণ রাজস্বিতেন। ১৮১৯ খৃষ্টাব্দে, খোসা প্রভৃতি নুঠনকুারীনিগের মহাউৎপাতে ব্যতিবাক্ত হইয়া এখানকার সামস্তরাক্ত (সন্দার) বৃটীশ গবর্মেন্টের জাশ্রয় গ্রহণ করেন।

• বর্জনান স্পারের নাম ঠাকুর থেকর সিংছ। ইনি • ধরাড় নামক নগরে বাস করেন ও আপন হত্তে রাজকার্য্য নির্বাহ করিয়া থাকেন।

এই রাজ্যের আর ৮৫০০০ । সৈন্যসংখ্যা ৫০ জন অখারেছি ও ৩০ জন পদান্তি। এখানে জ্যেষ্ঠপুত্র রাজ্য পাইয়া থাকে। থরে থারে (দেশজ) স্তবকে স্তবকে, থাকে থাকে। থর্থারী (দেশজ) জীতি।

ক্রেম্বা (দেশজ) অভিপক্ষ মান্ত্রা জ্যান্ত্রাধ্য ক্রিয়াক্ষ জ্যান্ত্রা

থারুসা (দেশজা) অর্জিপক, যাতা আধা রাধা হইয়াছে, অথচ ঝোলা ঝোলা আছে।

थ्ल (एमम) यून।°

থালাকুড়ী (দেশজ) বয়ালাভাতেদ (Hydrocotyle Asiatica.) থালাপানা (দেশজ) ফ্লাপনা।

থলিয়া, থলী, থলে (দেশল) ঝুলি, গুণ, ছালা। থল্যাৎ (দেশল) অপদত জব্যের গ্রাহক, যে চোরামাল গ্রহণ করে।

থলুয়া (দেশজ) স্তবক, প্রচহ, প্রা। থলো (দেশজ) থলুরা। থল্থল্ (দেশজ) মাংসল, মোটা। থস্থসিয়া (দেশজ) কোমল, নরম, হিভিছাপক। থা (দেশজ) স্থিরতা। ২ শৃষ্ণা।

থান, বোষাই 'প্রদেশে কাঠিবাড় রাজ্যের ঝালাবার উপ্ বিভাগে এই সহর অবস্থিত, ইহা লখতর অমীদারীর অন্ধর্যতা বড়বান হইতে রাজকোট পর্যাঞ্জ মেরান্তা আছে, তাহা এই সহরের মধ্য দিয়া গিরাছে। এই সহরে একটা হুর্গ আছে। এথানকার ত্রিনেত্রেখরের মন্দির, কলোলার স্ব্যম্দির ও বাসালীর বাস্ক্রীমন্দির অতি বিধ্যাত। [ ত্রিনেত্রেখর দেশ।]

সহরের নিকটে কামলা ও প্রিতম (প্রির্ভম) নামে ছইটা পুক্রিথী আছে। কথিত আছে, এই ছই সরোবরে লক্ষীনারারণ স্থান করিতেন। ছুর্গটীর নাম কলোলা। এই স্থানেই স্থবিখ্যাত স্থ্যমন্দির। কলোলা ছুর্গের স্মৃত্ত ভাগে পর্বভের উপর সোণগড় ছর্গ। বাস্থকীমন্দিরের ছার্থনিকাবেলি নামক স্থানে বন্দুক নামে আরও একটী সর্পমন্দির আছে। ইহার নিকটে টালা পর্বভ্যালা, এই পর্বভের একাংশকে মাণ্ডৰ পর্বত বলে। ইহার উপর মাণ্ডব ছুর্গের ভ্যাবশেষ আছে।

থানকুনী (দেশজ) ধলকুড়ী।
থানছাড়া (দেশজ) খানচাতি।
থান্থান্ (দেশজ) পও পও, টুক্রা টুকরা।
থানা, বোষাই প্রদেশের একটা জেলা। ইহার উত্তরে পর্ক,
গীজের অধিকত দমান ও হুরাট জেলা, পূর্বেনারিক,
আন্দ্রনগর ও পুণা, দক্ষিণে কোলাবা জেলা এবং পশ্চিবে
আরব সাগর। এই জেলার উত্তরপূর্বে ও প্রবিংশের ভূচার
উচ্চ। সমুলোপকুলবর্তী জমী নাবাল, তবে প্লাবন হর না।
নাসিক জেলার অন্তর্গত আয়ক পর্বেতে বৈভ্রনীনদী উংগ্র

व्यथान । अहे (क्लांत्र निकटि गानरम्हे बीर्ग।

এখানে হল নাই, তবে কুলা ও থানার মধ্যে হোরাই
নগরের ৭৪০ জোণ দ্রে বেহার নামক হানে একটা জলসকর
লগাণর আছে। ইহার পরিমাণ ৪২০০ বিখা। ইহা হইতে
বোখাই সহরে জল সরবরাহ করা হর। তিনটা বাঁধ বাঁধিরা
এই জলাপর প্রস্তুত হইরাছে। ইহার নিকটে কোন হুণ
চার্বাস বা ব্যবসা বাণিজ্য হর না, প্রর্থেকর নিবেশ আছে।
পূর্ব্বে ইহার জল ছিল ভাল, এখন নল গলাইয়। কিছু খারাণ
হইয়া পড়িয়াছে। বোখাইয়ের মিউনিসিপালিটি ইহার জল
ভাল ক্রিবার জন্ত দানা উপার ক্রিভেছেন।

পর্বত প্রায় সর্ব্রেই আছে। সালসেট ছীপের উত্তরদক্ষিণে বিজ্বত পর্বতমাগাই তল্মধ্যে প্রধান। মাধেরাণ ও
দমন পর্বতমালা প্রসিদ। বৈজ্বনীর উৎপত্তি হল হইছে
উত্তরদান্দিণে কতকগুলি পাহাড় আছে। ভাহার কোন
কোনটাতে হল্ট ছর্গ রহিয়াছে। এই সকল পার্বতীয় ছর্মের
মধ্যে মাহলা ও মলনগড় বিখ্যাত। কানাড়া ও থালেশের
বনলাত কাঠের পরই থানার বন্ধ কাঠের সমাদর আছে।
বোহাই নগরের জালানিকার্ধ এথানকার বন হইতে বার।
গুটান, ম্ললমান ও পার্নীরাই কাঠের ব্যবসায় করে।

সমূদ্রে মং ভাধারণও এ জেলার একটা লাভকর বাবসায়। লবণাক্ত ও শুক্ত মং ভোর ব্যবসায়ও বেশ প্রবল।

পেশবার অধিক্তত, রাজ্যের কিয়দংশ শইয়া এই জেলা গঠিত হুইয়াছে। [অভান্ত ঐতিহাসিক বিষয় 'বোখাই' শব্দে জট্টব্য।] **এই (क्लाय ध्याय २ नक > बाकात (लाक्त वाम। मान**-গেট ও বেগিন নামক স্থানের খু**টানেরা ব্যাড়শ শভাকীতে** দেউ ফেভিয়ার ও তদমুচরগণ কর্তৃক ধর্মাস্তর এছণ করে। ইংারা ভাওারী, কুণবী, কোনী প্রভৃতি আতি হুইডে খুদ্ধান ৰয়। গুটান হইয়াও ইয়ারা কাভিডেদ মানিয়া আসিতেছে। এখন ও ইহারা পরিচয় দিবার সময় খুটান ভাতারী, খুটান क्गरी विवश পतिहत्र (एम ७ भन्नात्र क्रांगान अमान करत ना। हेराएवत मरधा शर्ख तील श्रृष्ठीन नाम । व्याद्ध । देदारनत मनक श्रति गिर्व्हात्र (सन्ता इत्र। (सनात् नमत्र श्रहीन वा कीक हिन्सू ও পারদীযাত্রীরও স্মাগদ হয়। ভাহাদের বিখান বে ছালেক গিৰ্জাদ বোগ আরোগ্য হয়, সেই ক্ষম্ব তাহারা আসিমা নানা-विष প्रकाशहात निवा शास्त्र। हेहारमञ्जूषा होन लाहरू ইবের কোট ও লাল টুলি ব্যবহার করে। উক্ত গুটানেরাও ষাবার হিন্দু গ্রাম্যদেবভাকে ভক্তি ক্রে ও পুরা দেই।

 पर (बनाव रक्षत्रा, श्रामा, क्रिंगिक, कम्मान, द्विमन, श्राम-(रन, छेत्रन, क्र्यना, मुहिस ७ क्षत्रनी १०१ स्पृष्ठी व्युशान नृत्र्व । हाउँन, न्दन, क्रांके, हुन ७ क्षत्र प्रश्च श्रद्वम् हृहेह्छ রপ্রামী, আর কাপড়, শঙ্ক, ভাষাজু, দারিকেল, চিনি ও ওড় এনেশে আমনানী হর।

চাবই প্রধান উপজীবিকা। তৎপরে লবণ প্রস্তুভের কার্য গণা। লবণের ২০০ কারখানা আছে। এই সকল কার-ধানার বৎসরে ৪৬১৭০০০ বঁণ বহন প্রস্তুভ হয়। সমুজের জল রৌজে ভকাইরা লবণ প্রস্তুভ করে বাতা। ভৎপরে ধাতুকার্যা, বল্লবরন, বেশ্য প্রস্তুভ ইড্যাদি হয়।

२ थाना (जनात्र ध्यक्षांत नगत्र। विकार नगत्र रहेटफ ১)३ क्लाम डेखत्रभूर्क ১৯° ১১' ७. डेखत अमाश्रम ड १७ > ४० मुर्स छावियात अविष्ठ । नातरमधे बीड़ीड তীরবর্তী বশিরা নগরটা বড় জ্বলর। ছর্গ, পর্জ্বীক্ষ শিক্ষা ও কতকগুলি অলস্ক্য় অলাশ্যু হইছে ইহার পূর্ব্ব ক্ষৃদ্ধি অমুমিত হয়। অয়োদশ শভাদীতে ইহা একটা স্বাধীন बारकात त्राक्यांनी हिन। ১৩১৮ वृष्टारक प्रवातक विनकी এদেশের শাসনকর্তা হন। ১৫২৯ খুটাব্দে কাছে সহয়ের (नोरमना विनष्ठ ७ (विमन छेभकून मध हेरेल थेरे नगन्नाधि-পতি পর্কু গীলদিগের অধীনতা খীকার করেন। পর্কু গীলেরা এই নগর ছুইবারও ওজুরাচীরা একবার লুঠ করে। ১৫৩৩ খৃঃ আব্দে সন্ধি অনুসারে এই নগর পর্জ গীঞ্চলিগকৈ ছেওয়া হয়। ভাহাদের হত্তে ইহার অনেক উর্জি হয়। ১৭৩৯ খুটাকে পর্কুগীলেরা বেসিন অধিকার হারার, তৎসচে থানাও তাঁহানের অধিকারচ্যত হয়। ১৮৭৪ খুটাবে পর্জনীবেরা থানা নগর অধিকারার্থ নোদেনা প্রেরণ করে। ঘোরতর যুদ্ধের পর हैश्त्रादक्त दोहे क्यी हन। এই नगत्त्र त्त्रनश्चार देशन चाह्य। বোছাই ছইতে এক ঘণ্টা পথ দূরে বলিয়া বোছাইয়ের व्यत्तकात्नक हेश्बाककर्यहात्री এथात्न थारकन ।

, ৩ অঘোধার অন্তর্গত উনাও জেলার একটা সহর।
উনাও সহরের ২৪ জোপ উত্তরপশ্চিমেইহা অবস্থিত। অকবরের রাজভ্বালে চৌহান ঠাকুর থানসিংহ ও প্রাণসিংহ
কর্ত্ত্বক এই নগর প্রতিষ্ঠিত। থানসিংহ হর্গ নির্দাণ করেন।
থানা (দেশল) আত্তা, সৈল্পের আত্তা, চৌকর আত্তা।
থানা (পারসী) দারোগা বা অক্ত প্রিশকর্মচারীর কাছারী।

• প্রিশ দেখ।

থানাথানা ( দেশজ ) থও থও।
থানাদার (পারনী) পুলিশকর্মচারী, দাবোগা, জমাদার প্রভৃতি।
থানাদারী ( পারনী ) থানাদারের কার্য।
থানাভবান, উত্তরগশ্চিম প্রদেশের মজঃক্রনগর জ্যোর
একটা প্রাচীন সহর। মজঃকর নগর হইতে ১ জোশ

উত্তরপশ্চিমে ক্ষান্দী তীরে অবস্থিত। ऋকবরের সমর

हश्लोब खरी-डोम" नारम थाउ हिन, ध्यामकात छ्वानीत्मवीत मिन्नत हहें देउ वर्श्वमान नाम ध्यानिक हहेताहा। छ्वानीत्मवी मर्नन क्तिएड ध्यान ज्ञानक यांबी जारम।

সিপাহী বিজ্ঞাহের সমন্ন কাজী মহবুর আলী খাঁও ভাহার প্রাভূপুত্র ইরাবেত আলীর অধিনায়কতার এখানে বিজ্ঞাহ হয়। সেধজানাগণ এই বিজ্ঞোহীদিগের মধ্যে প্রধান। সামলি তহসীল আক্রমণই প্রধান ঘটনা। বিজ্ঞোহের গর নগরের চতুর্দিগের প্রাচীর ও আটটী ফটক ভালিয়া কেলা হয়।

পানী (দেশল) কটক জেলার একপ্রকার প্রজা আছে, তাহা-দিগকে থানী প্রজা কছে। ইহাগা কিরৎপরিমাণে এতদেশীর থোদকতা প্রজাদিগের মৃত।

থানেশ্বর, অধানাজেনার অন্তর্গত একটা পবিত্র নগর ও প্রাচীন হিন্দুতীর্ধ। অন্ধা ২৯° ৫৮'৩০' উ:, দ্রাঘি ৭৬° ৫২'পু:। কুরুক্তেরের ঠিক্ মধান্তলৈ সরস্বতীনদীর তীরে অবস্থিত। ইহার সংস্কৃত নাম স্থায়ীশ্বর, তাহারই অপত্রংশ থানে-শ্বর। মহাভারতে স্থাণুতীর্থ নামে এই স্থানের উল্লেখ আছে।

খৃষ্ঠীয় ৭ম শতাকে চীনপরিত্রাক্লক হিউএন্ংসিয়ং এখানে আগমন করেন। তৎকালে হারীখর একটা খতর রাজ্য বৈলিয়া গণ্য ছিল। চীনপরিত্রাজক লিখিয়াছেন, এই রাজ্য প্রার ৫৮৩ জোশ বিস্তৃত। ১০১১ খৃষ্টাব্দে গজনীর মাকুদ্ এই নগর আক্রমণ করেন এবং এথানকার প্রসিদ্ধ চক্র-খামীর * মৃষ্টি গজনীতে লইয়া যান।

শিথদিণের অভাদয়কালে দর্দার মিঠ সিং থানেশ্বর অধিকার করেন। তিনি আপন ভাতুস্ত্রকে এই পুণাতীর্থ অপণ করিয়া যান। মোগদদিগের আধিপত্যকালে থানেশ্বরের অনেক ভিন্দুদেবমন্দির ভালিয়া ভালার উপর মস্জিদাদি নির্দ্ধিত হয়, শিথেরী আবার সেই সকল মস্জিদ্ অধিকার করিয়া আপনাদিগের ধর্মগ্রন্থপাঠের স্থান করেন।

মিঠ সিংহের বংশ লোপ হইলে এই ছান বৃটীশ সাম্রাজ্য-ভূক্ত হয়। কিছু দিন এখানে জেলার সদর ছিল, অরকাল । এ পরেই ভানান্তর করা হয়।

পূর্ব্বে এথানে বিশুর লোকের বসবাস ছিল। সদর
উঠিলা যাওয়া অবধি এথানে লোকসংখ্যা ক্রমেই কমিয়া
লাইতেছে। এখন প্রায় ৬ হাজার লোকের বাস, ভন্মধ্যে
কুক্লেক্তের পাণ্ডারাই প্রধান। তাঁহারা ভীর্থযাত্রীর উপলক্ষ
ক্রিয়াই ত্রীবিকা নির্বাহ করেন।

[ অপরাপর বিবরণ কুরুকেত্র শব্দে ডাইবা। ]

কেরিভার এই চক্রবামীর মৃর্ত্তি 'লগ্লোম্' নামে উক্ত হইরাছে ।

থাপড় ( দেশৰ ) > চড়, চপেটাবাত। ২ হাডের চেটো। থাব্ড়া ( দেশৰ ) > চড়, চাপড়, করাবাত। ২ বিস্তব্র; ৩ চেন্টা।

থাবা (দেশজ) ১ পশু পক্ষী প্রভৃতির নথ। পশু পক্ষী প্রভৃতি চলিয়া যাইলে পায়ের নথের যে সম্পূর্ণ চিল্ল পড়ে ভাহাকে থাবা কতে। জললে এই থাবা দেখিয়া হিংল্ল জন্তর সন্ধান হয়। ২ মুঠা।

थोवाथूवा ((मनक) पूर्वा पूर्वा। थोम ((मनक) खख, देहेकांनि निर्मिण घ्यवनद। थोमन, थोमा ((मनक) खखन, हित्रद्दन, भाखद्दन, थोवन,

অপেকাকরণ। থামান (দেশক) হিরকরণ, শান্তকরণ, গতিরোধকরণ। থায়েৎমিয়ো (থয়েৎ) নিম্নত্রের পেগুর অন্তর্গত একট জেলা। পরিমাণ ফল ২৩৯৭ বর্গমাইল। লোকসংখা উত্তরে উত্তরত্রহ্ম, পুর্বেই ভৌঙ্গু জেলা, দক্ষিণে প্রোয় এবং পশ্চিত্রম সান্দোরে। জেলা উত্তরত্রশের ঠিক নিঃ ভাগে অনবস্থিত বলিয়া ইহা নিয়ত্তক্ষের দীমান্তপ্রদেশ ম্পূর্ণ করিয়াছে। ইরাবতীর বদ্বীপ অধিকার করার প্র ১৮৫৩ খৃষ্টাব্দে দালহোসী ইহাকে নিয়ত্তক হইতে বিভিন্ন कतिका नीमा निर्फिष्ट कतिका ८एन। थारबर्श्मरका छेल्छ আরাকান হইতে পেগু-যোমা গিরিমালা পর্যান্ত বিল্ড এবং দৈর্ঘ্যে ৯৩ মাইল। এখানে বিভ্তত সমতলকেত ব অকর্ষিত ভূমি নাই। ইহার পুর্বেপেগু-যোমাও পশ্চি আরাকান-যোমা গিরিমালা বিস্তৃত। শেষোক্ত গিরিমাণ অন্ধিক্ ৫০০০ ফিট্ উচ্চ; কারিদল, নাতুদল ও স্বীদল-মৰ-নিংমা নামে ইহার তিন্টী শৃক আছে। এই গিরি দে^{ছিতে} অতি স্থব্দর এবং ইহাতে অনেকগুলি নদী আছে। চারিট গিরিপথ এই পর্বতশ্রেণীর মধ্য দিয়া সান্দোয়ে গুণে গিয়াছে। শ্রীমকাল ভিন্ন এই সমস্ত গিরিপথ দিয়া গ্^{মন} গমন করা যায় না। সর্কাদকিণ গিরিপথটা বেরল-গি-^{রেটার} হইতে আবাকানের নেজালি **গ্রাম পর্যান্ত গি**য়াছে। ^{জার} একটি উত্তরদিকে খাৃ-থিৎ হইতে মিন্-জে পর্যান্ত ৩০ মাইন গিয়াছে। ভৃতীয় ও চতুর্বটা পাশাপাশি অব্যতি ^{এব} মাই নামে অভিহিত।

ইরাবতী এই জেলার প্রধান নদী, থারেৎমিরোর উরা হইতে দক্ষিণ পর্যান্ত বিজ্ঞ। ইহার তীর অভ্যন্ত উর্জ স্থতরাং থারেৎমিরোর কোন স্থানই বঞ্চার ডুবিরা ঘার রা। এই নদীতে সুইটা বীপ আছে,—থারেৎমিরো নগরের বর্ষ হিত বে-বও বীপ ও ভোল-বিন্-সিপ্ বীপ। প্রীম্বাণ बहे नरीत सन प्र क्षित्रा श्रातक क्षिप्रेड के किएँड क्ष

এই জেলায় ত্রনেক গুলি উষ্ণ প্রস্তবণ আছে। থায়েৎমিয়ো
নগবের ৭ মাইল উত্তরপশ্চিমে পদকবিন নগরের নিকট
কেরোসিন তৈল পাওয়া যায়। সেগুন, ইন, সা প্রভৃতি
এই জেলার প্রধান বহাবৃক্ষ।

চিতাবাঘ, বঞ্বিড়াল, হরিণ, হন্তী, গণ্ডার, ব্যাঘ্র ইত্যাদি অধানকার প্রধান জন্ত।

এজদেশের ইতিহাদে থায়েৎমিয়ো নামের খুব কম উল্লেখ আছে। পূর্বে এই **অঞ্চলে প্যুদ্ জাতির বসতি** ছিল। ভারতবর্ষের ধর্মহাজকগণ ষথন এই প্রদেশের লোকদিগকে বৌদ্ধধর্মে দীক্ষিত করেন, তথন সম্ভবত: এই জেলার নিম্নভাগ থরকেত্র (শ্রীকেত্র—এথনকার প্রোম) সহিত স্প্রিষ্ট ছিল। ৪৪৪ খৃষ্ট পূর্বাবেদ দৃৎ-তা-বৌদ্কর্ত্ক প্রেমবংশ ছাপিত হইলে এই প্রদেশ তাঁহারই রাজ্যভূক হয়। প্রোমবংশের পতন হইলে খৃষ্ঠীয় প্রথম শতাকীর শেষভাগে থমন-দ-রেৎ কর্ত্তক পগনে একটা রাজ্য স্থাপিত रव। उँशित वः भ ১১०० वंदमत्त्रत्त त्वभी त्रां अधि करत्त्रन । এই সময়ে থায়েৎমিয়ো পগন রাজ্যের অস্তভ্জি ছিল। তংপর এই ফেলা সান সন্দারগণ কর্তৃক অধিকৃত হয়। ১৮৫२--- १७ थ्होरक १थन ८०७ द्निण ताकाकृत्क इत, उपन পারেৎমিরো প্রোম প্রাদেশের একটা মহকুমা হইল। ১৮৭• अहोत्म ইহাকে পৃথক্ করিয়া একজন ডিপুট্টা ক্মিশনরের •धनाकांधीन कत्रा इहेब्राट्ड।

এই প্রদেশের অধিকাংশ লোক বিশুদ্ধ মগ বা ব্রহ্মবংশ-গরুত। এই প্রদেশের অধিবাসিগণের মধ্যে ভারতীয় ও দেশীয় নিয়নিরিত করেকটা আতি আছে—ক্যিন বা দ্রীন্, তেল্ভ, তামিল, হিলুহানী, নাম, করো, বালালী, চীন দেশীয় ও অঞ্চাল।

এই জেলার প্রধান নর্গর—(১) খারেৎমিরো, (২) আলানমিরো, (৩) থা-তৌল, (৪) কামা, (৫) এমিন্দান। থারেৎমিরোর উৎপন্ন ক্রেরের মধ্যে চাউল, তৈলোপ-যোগী বীজ, তুলা, তামাক, এবং পলাপু প্রধান।

এই প্রদেশের রপ্তানী জবোর মধ্যে ধরের, স্থপারি, তুলা, চাউল, লবণ, অপরিক্বত রেশম ও দুধারপাত্ত এবং আমদানী জবোর মধ্যে অপরিক্বত তুলা, রেশম, নীল, চর্ম্ম ইত্যাদি প্রধান।

থাকে, বেহার ও উত্তর ভারতের এক অসভ্য জাতি। থাকদিগের উৎপত্তিসহকে নানা মত ভেদ আছে। ইহাদের রউতার নামক শ্রেণী বলে যে, তাহার। চিভোরের রাজপুত হইতে উত্ত। কিন্তু ইহার কোন প্রমাণ নাই।

পূর্ণিয়ার অন্তর্গত কুশীনদী হইতে কুমায়ুন ও নেপালের অন্তর্গত স্থারদা নদী পর্যান্ত হিমালেয়ের তরাই প্রদেশে এখানে সেধানে থাকদিগের বাসন্থান দেখিতে পাওয়া ঘায়। গোরখপুর প্রদেশে লালগঞ্জের নিকট বাতকান্ ও দেওগঞ্জ প্রামে অতি প্রাচীনকালে থাকদিগের বাসন্থান ছিল বলিয়া তথাকার লোক বিশাস করে।

থাকরা দেখিতে খোর ক্লঞ্চবর্ণ; তাহাদের কেশগুচ্ছ লখা ও প্রচুর। আকৃতি ও চাল চলনে হিন্দুখানীর মত।

গোরথপুরে থারুরা ছই ভাগে বিভক্ত-পুরবী অর্থাৎ পুর্বদেশীয় এবং পচ্চমী অর্থাৎ পশ্চিমদেশীয়। পচ্চমীয়া আর্গনাদিগকে ছত্রী বলে এবং পুরবীদিগের সহিত্ত আহার বিহার করে না। পচ্চমীয়া আবার ছই ভাগে বিভক্ত-বৃত্তকা ও ছোট্কা। অরোধ্যার গোড়া প্রদেশে কাঠরিয়া ও উল্বিয়া নামক থারুদিগের আরও ছইটী শ্রেণী দেখিতে পাওয়া যায়। বেহারে রউভার শ্রেণী শ্রেষ্ঠ বিলয়া পরিচয় দেয়।

চিতবনিরা বা চিত্রোনিরা থাকরা তাতির কার্য্য করে। ইহারা মৃত ব্যক্তির শ্রাদাদি ক্রিয়া অথবা প্রান্ত বাজের শ্রাদাদি ক্রিয়া অথবা প্রান্ত ইহাদিগের স্ত্রীলোকেরা অশোচপালন করে না। বিবা-হোৎসবে চারি বা পাঁচজন লোক গমন কুরে, কিন্তু শীত-বাছাদি কিছুই হয় না।

বাল্য এবং প্রোঢ় বিবাহ উভয়ই চিতোনিয়া থাক্সদিগের মধ্যে প্রচলিত আছে। নয় টাকা কল্পাপণ লওয়া অনেক দিন হইতেই ভাহাদের মধ্যে প্রচলিত। কিন্তু অবস্থা বিশেষে এই পণের ভারতমা হইতে পারে। নির শ্রেণীর হিন্দুদিগের
বাংগা বেরণ বিবাহপ্রণা প্রচলিত আছে, সেইরপ প্রথাস্থানেরই ইহাদিগের বিবাহক্রিরা সম্পর হর। আন্দেশের বিবাহক
হল কর্যা করে। মর্দনিরা ও চিতেনিরাদিগের বিবাহে
বর পক্ষকেই ক্যাপক্ষীর লোকদিগকে বিবাহের পুর্বে তিন
দিন ধরিরা থাওরাইতে হর। প্রাপ্তবর্গে বিবাহ হইলে পাত্রী
অবিলম্বে স্থানীর নিকটে গ্রন, করে। এই সমরে পাত্রী ও
ভাহার সমন্তিব্যাহারী আ্মীর কুটুবগণের অভ্যর্থনার ক্যা
পাত্রের বাড়ীতে গ্রন্থি-ভভাবন' (বৌভাত) নামক উৎসব
হর। পাত্রী অরব্যক্ষা হইলে পুনরার পিতার আলরে গমন
করে এবং অত্যতী না হওরা পর্যান্ত পিতৃগ্রেই থাকে।

यहविवाह ७ विश्वविवाह हैशामिरगत मर्या श्रीहिना

আছে। বিবাহবন্ধন সহকেই ছিল্ল হয়। এরপ স্থলে পরি-ক্তাক্ত ব্রমণী পুনরায় বিবাহ ক্রিতে পারে। কিন্তু এ বিবাহ বিধবাবিবাহের ফ্রার সম্পন্ন হয়। উত্তর পক্ষেই এরপ বিবা-हिडा खीरनाक्तक 'डेबाबि' खी बर्रन। किछ विजीव चामीत আত্মীরবর্ষের স্কৃতি না দট্রা বিবাহিতা হইলে এবং 'ভতানা' না দিলে এক্লপ স্ত্রী 'হুরৈতিন' বা গণিকা স্বরূপ গণ্য। কেই সমাজচাত হইলেও তাহাকে এই 'ভতানা' দিতে হয়। • আদিম'অস্ভ্য আভিদিগের মধ্যে প্রচলিত প্রাণীপুরা ও • প্রাকৃতিপুলার মিশ্রণই থারুদিগের ধর্ম। বীর ঋক্ষেমর ইহা-बिरमृत अक्षन धार्मान छेशांक रमवडा । पूत्र धारमान गरिवात পূর্বেই হার পূজানা দিয়া কোন থারুই গমন করে না। त्वतिरक्षनात्र थाक्त्रा वनिश्रा थात्क, त्रावहक्कवर्की त्वरावत्र श्रावन-খর বারক্ষ নামে এক পুত্র ছিলেন। রাজা পুত্রের প্রতি জুত্ত হইয়া আন্দেশ করেন যে, তাহাকে সদলে উত্তর দিকে এমন স্থানে নির্ব্বাসিত করা হউক যেন আর ফিরিয়া আসিতে ना शाद्र। ताकारमरम अरक्षयंत महत्व निर्दामिष इहेरवध। ভাহারা পথে ঘ্রিটভ ঘুরিতে যেথানে সেথানে সুটপাট বা बन्ध्रस्तक ही मःश्रह कतिरल नाणिन। जाहारमञ्जूषेत्रस रय পুত্র সন্তান জনিয়াছিল, তাহারাই থারু। খকেশব হিমালবের बत्न व्यक्ति यद्व श्राक्षिशर्कं त्रका कतिशाहित्वन । श्राक्षिरगत বিখাদ রবে বনে পথে ঘাটে এখনও ঋক্ষেশ্বর তাঁহাদিগ্লে कका कतिशा थाटकन। मनटनव (मटनत्र टनवर्छा) ७ धत्रह छी। নামক আর তুইটা দেবতাকেও ইহারা পূজা করে। গৌ, মেষ, শুকর ইত্যাদি যাহাতে নির্বিদ্যে চরিতে পারে, ভব্রম্ভ ইহারা ধরচতীকে পূজা দেয়। 'মরি' থাফদিগের আর এক উপাস্ত দেবতা। কেছ কেছ মরি ও হিন্দুদেবতা কানী উভয়কেই এক মনে করেন। চম্পারণে 'কুরা' ( কুপ ) গ্রামা দেবভাশরণ পৃথিত হব। কিন্তু এখন শিব ও ফানীল্

এই কাতির মধ্যে ক্রমণঃ প্রচলিত হওয়ার উক্ত দেব

সংশের পৃকা ক্রমেই কমিয়া আসিতেছে। থাকরা কালি

দেবীকেই এ কগতের সর্কাশ্রের ধেবতা এবং জীবন মর্ব

কর্ত্রী বলিয়া পৃজা করে। বে সমস্ত জীলোকের সন্তান।

না, তাহারা এই দেবীরই সাহায্য প্রার্থনা করে। গ্রো

প্রদেশের দেবীপাটনে কালিকাদেবীর পৃজাংসব উপল

ইহারা অনেক কল্ক বধ করিয়া নানাবিধ আমোদ প্রয়ে

করে। শিবকে ইহারা ভৈরব, ঠাকুর, মহাদেব প্রভৃতি না

অভিহিত করে ও শিবলিক নির্দাণ করিয়া তাহার প্

করে। থাকদিগের নিকট তিনি স্টিন্থিতিকর্ত্রা। অনে

থাক গৃহক্রের গৃহের সমুবে মাটির তিপির উপর মুধ্র বি

লিক্ষ দেখা বার।

থাক্করা এখন অনেকটা হিল্পের্ম মানিরা চলিলেও তার দের পূর্ববিশাস ভিরোহিত হয় নাই। জ্বর, কাশী, উদরাষ মৃদ্ধি, শিরংপীড়া, উন্মাদ, ছংস্থপ্ল এবং রে কোন প্রকা পীড়া উপস্থিত হইলেই ভাহা উপদেবভার কার্য্য বলিয়ায় করে। কোনকপ পীড়া হইলেই ওঝা ডাকে। ভাহাদে বিশাস, অনেক উপদেবভা ওঝাদের আক্ষাবহ; ওঝায়ায় করিলে পীড়িভের শরীর হইভে ভূত ছাড়াইভে গালে আবার মনে করিলে ভূত চালাইয়া শক্রদিগকে কই দি এমন কি প্রাণ পর্যান্ত বিনাশ করিতে পারে। এল্ফ থাফা ওঝাদিগকে বড়ই জ্বর করে। ওঝারা ঝাড়াইবার ফা বাম হাতে কতকগুলি ঘুঁটের ছাই ও সরিষা লইয়া কালিক দেবীর উদ্দেশে এইপ্রকার মন্ত্র পাঠ করিতে থাকে—

'শুর্ হৈ শুর্ সৈর্ তন্ত্র মন্ত শুর্, লথৈ নিরঞ্জন, ছোক গোট ফুল্কাভার, হম্কা সোহৈ শুন্ বিভা কৈ ভার; বহান্ট বিভা নহিঁ, কমরা কাম কৈ বিভা। ভৈলে বিদ্যা কম্ক কা কৈ লাগৈ, এদে বিদ্যা লাগই মোর।'

থাক্রদিগের অস্তেটিজিয়া নান্বিধ। অনেকের মার্
পূর্ব্বে ইহারা কেবল গোর দিত। কিন্তু এখন হিন্দুপ্রথাহনার
শব দাহ করিতে দেখা যার, কেবল ওলাউঠা বা বসত্তরোর
গোর দেয়। গোর দিবার বা দাহ করিবার পূর্ব্বে শবরের
সিন্দুর মাথাইরা একরাজি গৃহের সমুখ্য মাটির চিপির উলা
ভ্যাইরা রাখে। থাক্রদের বিখাস রাজিকালে মৃত্তের প্রেতার
বস্তু জন্তুনিগ্রেক তাড়াইরা শব রক্ষা করে। গোর বা লাই
কার্য্য প্রামের দক্ষিণাংশে সম্পন্ন হয়। দাহের পর ভব লাই।
নিকটবর্তী নদীতে কেলিয়া আরে। বে প্রথম চিতার জার
প্রদান ক্রে, সে ১০ দিন ক্রেচি হয়। এই সমর ডার্ট্রা

কেই মার্শ করে না, ভারাকে একেলা পাকিতে হয়। হাশ দিন পরে (কোন কোন ছানে ১৩ দিন পরে) মৃত্যের আত্মীরগণ ভাহার বাটাতে আসিয়া ক্লোরকার্যা ও পান ভোজনাদি করে। পানভোজনে মন্ত্রমাংস ব্যবহৃত হয়।

জানী, শীকামে সিছহত, ঐক্তলালিক বা তৈবন্ধাবিং কোন প্রধান বাজির মৃত্যু হইলে তাহাকে নিজ গৃহের মধ্যেই পৃতিয়া কেলে। সেই দিন হইতে সেই গৃহ দেবমন্দির অরপ গণ্য হয়, সে গৃহে জার কেহ বাস, করে না। থারুরা বলে, কেবল মৃতের জাত্মা দৈই গৃহে জাধিন্তিত থাকে ও তাহার পরিবারবর্গকে আশীর্কাদ করে। তিন কিবো ছয় মান পরে মৃতের আত্মীরেরা ও প্রতিবাসীগণ সেই শবমন্দিরে উপস্থিত হয়। এখানে মৃতিকার প্রতিমৃত্তি গড়িয়া ভাহা নানাবর্শে রিজত করে। তাহাই মৃতের প্রতিমা। প্রতিমা প্রস্তুত হইলে তাহার পদপ্রাক্তে রাধা মাংস ও মদ্য রাধিয়া সকলে ধূলায় লুটিত হইয়া বিলাপ করিতে থাকে। তৎপরে কোন নিদর্শন দৃটে তাহারা ব্ঝিতে পারে, বে মৃতের জাত্মা প্রতিমার মধ্যে আসিয়া প্রবেশ করিয়াছে। তথন সকলে আনলেদ নৃত্যু গীত করিতে থাকে এবং অবশেষে সকলে মিলিয়া সেই প্রসাদী মদ্য উদ্বর্গাৎ করে।

হিন্দুরা থারুর হাতে জ্বল স্পর্শ করে না। হিন্দুর নিকট ইংারা অস্থ্য অস্ত্যজ জাতি মধ্যে গণ্য। থারুগণ অতি শাস্তিপ্রিয়। ইহারা কথন হিন্দুর সহিত বিবাদ করে না।

ইংরা জুম্ প্রথায় চাষ বাদ করে। ক্রবিজীবি হইলেও ইংরা সচরাচর ভান পরিবর্ত্তন করিয়া থাকে। ইহারা বৃত্ত ংসী ধরিতে বিশেষ পট়। ইহাদের মধ্যে বিদ্ধুকণ মাত্ত অনেক আছে।

^{থা} করা বা**লা নামক তৃণ হইতে একপ্রকার অতি স্নদর** মাছর প্রস্তুত করে।

বাদালা প্রেনিডেন্সির মধ্যেই প্রার ২০ হাজার থাকর বাদ। থাল (দেশজ) ধাত্মর ভোজনপাত্র, ভাত ধাইবার বাদন, ইংা প্রধানত: পিত্তল ও কাঁদা দিয়া প্রস্তেভ্র। থাল, বিগি, কাঁদি প্রভৃতি অনেক প্রকার। সাধারণত: ভঁলুলোকে কাঁদার থাল ব্যবহার করিয়া থাকেন। স্বর্ণ ও রৌপ্য গ্রভৃতিরও থাল প্রস্তুভ্র।

ধালকুরী ( দেশজ ) ধলকুড়ী গাছ। ( Hydrocotyle Asiatica )

খালা (বেশজ) [ বাল দেখ।] ১ ভারতবর্ষীর ঘনষত্র বিশেষ।
(বৃদ্ধকা )

भानी (त्नमक) > शाकशाज, हाषी। ३ देखनायात्र शाजविद्याय। VIII

প্ৰাসন (বেপৰ) ঠাসদা থাকা ( দেশল ) মন্দিত, ঠাকা। থিতম, থিতাম ( দেশক ) আলোড়িড ক্লানিয় হিন্ত হওন, जन् जतात्र निष्म मनमक्ष्क रूपन। থিক্তি ( দেশৰ )- খালোড়িত জুব্যাদি হিন্দু, হিভি। थिद्रवाः, बन्नदम्भन्नः स्मय ब्याधीनः त्राक्तः । [बन्नदम्भ स्मयः । ] থিরাগড়, কর্ণাট প্রদেশস্থ একটা নগর। थू ( (तमक ) ) थूज् । २ व्यवकाराहक । * পুজান্ (দেশৰ) স্থাপন, অৰ্পৰ।। थूं क् (तम्बा) अथूष्, निष्ठीयन । २ व्ययस्त्रा। थू भी, थू जो (तमक) हिंद्क, अर्छत्र व्यवाछात्र। থুৎ কার (পং) ক্ল-ভাবে খঞ্, ৽থুৎ ইত্যব্যক্তশক্ত কারঃ कत्र ११ यद्य । निष्ठी यन, पूर्व रक्तन । थूरकूड़ी (तमन) थ्यू, निशिवन। थूथू (तमक) > निशीयन। २ निशीयन मन्। थूंथूकुर (जी) थ्थ् हेन्छा राक्त मंत्र करता निष्ठा करता वा वा बादार किপ्। (इनाक्षा। ( शांत्रक्षत्र निष्के ू) থুবড়া (দেশক) অক্তনার, আইবড়, অধিক বয়স পর্যন্ত, অবিবাহিত। थूव फ़ि (तमक) [ थ्वफ़ा तम्थ । ] থুবা ( দেশব ) থোকা, গোছা। থুবাথুবা ( দেশৰ ) গোছা গোছা । পুরণ ( দেশক ) খেওা খেওাকরণ, কুচি কুচিকিরণ। থুরথুর (দেশৰ ) কম্পিত। थूर्द्दन (क्री) पूर्व ভाবে नाहे। इनन, वंधकत्रन। থৃথু (অব্য) •নিটীবন ত্যাগাস্করণ শক্ষ। "থৃথূক্তা বমভির-পুর ধ্বগ জনৈ;" ( স্বক্তিকর্ণামৃত ) থ্র্ত্ত ( ত্রি ) থ্র্ব-জ্ত। বিনাশিত। • থেঁতলা (দেশজ) > মাড়ান। ২ চেপ্টাকরা। থেঁতলান ( দেশজ) দলন, পেষ্ণ। (থঁডুয়া (দেশজ) দলিত, পেৰিত। থেকা (দেশব্দ ).প্ৰতিবন্ধ, বাধা। থেগুরাখেগুরা (দেশজ) গোলমাল, বিশৃত্যল। থেত্যান ( দেশজ ) পেষণ, দলন। থেবড়া (দেশজ) চেপ্টা, বসা (নাক)। (থেবা (দেশৰ) এক প্রকার বৃক্ষ। (Trichosanthes Theba, Buch.) থেবেনো (কনিষ্ঠ) একজন প্রাসন্ধ ভ্রমণকারী।

নগরে অন্তাহণ করিয়াছিলেন, পারন্তের মিদার পরি

১৬৬৭ খুঁৱাকে ১৮ই নবেষর তারিপে ইহার মৃত্যু হয়। ইনি
Petis de la Croiz এর বন্ধ ছিলেন বলিয়া উহার Memioirs
নামক গ্রন্থ সংশোধন করেন। এই গ্রন্থ ১৬৮৯ খুঁৱাকে
তিনপতে মুক্তিত হয়। ,থেবেনো ১৬৬৫ খুঁৱাকে ৬ই
নবেষরে বলোরা নগর হইতে জাহাজে বাত্রা করিয়া পরবর্ত্তী
জাল্মারি মাসের ১০ই তারিপে হ্রেরাটে উপস্থিত হন।
ভরোচের মধ্য দিয়া অগ্রসর হইয়া তিনি আন্ধানাদ, বোদে,
আগরা, দিল্লী, আলাহাবাদ, বহরমপুর, গোয়া, গোলক্তা,
হায়দরাবাদ, মছলিশত্তন, হ্রেরাট, বলর আক্রাস, সিরাজ,
কুম ও ফরসক নগর পরিভ্রমণ করিয়া মিয়ানা নগরে
উপস্থিত হন। ইহার ভ্রমণ বৃত্তাক্তে তথনকার ভারতের অবস্থা
কতক কতক জানা যায়।

থেলুয়া (দেশজ) ১ ছালী, থলি। ২ মূথ থোলা। থৈকোল (দেশজ) উত্তর বঙ্গের এক প্রকার ফল। (.Garcinia pedunculata.)

হৈ থৈ ( অব্য ) বাদ্যাহকরণ শক্ষবিশেষ, থৈ থৈ এই প্রকার অব্যক্ত শক্ষের অহকরণ শক্ষভেদ। ( সঙ্গীতদামোণ ) , হৈথি ( দেশজ ) ১ সঞ্চালিত জলহিলোল। ২ পরিপূর্ণ।

रेथलारेथला ( प्रमंख ) भूर्व्हनी, थनिख्या। रेथली (हिन्सी) थनि।

থে। (দেশজ ) রাথা।

বে (বেশক) > চিবুক। ২ চঞ্, পকীর ঠোট।

পোক (দেশৰ ) সমগ্র, সমূহ, রাশি।
থোক্থাক (দেশৰ ) মোট।
থোক্থাক (দেশৰ) একেবারে, একুনে, কিন্তি কিন্তি।
থোকে বিক্রেয় (দেশৰ) একেবারে বিক্রেয়, একেবারে বেচা।
থোড় (দেশৰ ) ১ কলাগাছের অভ্যন্তরাংশ। ২ ধান্তানির
অফ্টপুলা।

পোড়ন (রী) প্ড-লাট্। সম্বরণ, আবরণ, আছেলে।
থোড়ন এই শক্ত প্রোমাদিক, পুড়ন ইহাই সাধু।
থোড়া (দেশক) > অল, সামাঞ্চ। ২ কাটা।

বোড়া (বোপে) স্বাধান থোড়ান (দেশজ) ১ কাটান, ছেদন। ২ স্থিতিকরণ, ফ্রি করণ। ৩ শাস্তকরণ।

( ( तम्ब ) खष्ट, खरक। ( त्राभूत ( त्रामूल ) रंगाहा ( गाहा।

বেশিনা (দেশৰ) ১ গোছা। ২ চিবুক। ৩ মূপ।

(थांश्रला (तमब) (धावना।

(श्रांभा (तमक) ७५, काँन।

(थावड़ा (समझ) > हिन्ही।

Cथावना (तमक) मूथ, वास्त्र, वनन।

থোবা (দেশব ) গুচ্ছ, স্তবক, থোপা।

থোবাথোবা (দেশজ) স্তবকে স্তবকে, শুচ্ছে শুচ্ছে
থোণেয় (ত্রি) স্থাম হিতাদি ঠক্ প্ষো॰ সাধু:। স্থা
হিতাদি। (শকার্থিটিং)

## V

দকার, বাঞ্চন বর্ণের অটাদশ ও তবর্গের তৃতীর বর্ণ।
ইহার উচ্চারণ স্থান দক্তম্ল। দক্তম্লের সহিত
জিহ্বাগ্র স্পর্ল ইইলে এই বর্ণ উচ্চারিত হয়, এই জ্ঞাইহার
স্পর্লের। এই বর্ণোচ্চারণে বাফ্সেরফ, সংবার, নাদ ও
লোম, ইহা অল প্রাণ। ইহার বাচক শক্ষ অন্তি, উশ,
ধাতকী, ধাতা, দাতা, ত্রাসি, কল্ত্রক, দীন, জ্ঞান, দান,
ভক্তি, আবহনী, ধরা, স্ব্রুমা, যোগিনী, সদ্যঃকুস্তল,
বামগুল্ফক, কাত্যায়নী, শিবা, হুর্গা, অনজনামা, ত্রিকটকী,
স্বন্তিক, কৃটিলারপ, রক্ষ, শ্লামা, জিতেক্রিয়, ধর্মারুৎ, বামদেব, ভ্রমরেহ, স্তঞ্চলা, হরিদ্রাপ্রবেদী, দক্ষণাণি, ত্রিরেথক।
(বর্ণাভিধান) ইহার অধিষ্ঠাতী দেবতার ধ্যান—

"ধ্যানম্ভ দকারন্ত বৃদ্যুতে শৃণু পার্ক্তিঃ।
চতুর্ভাং পীতবৃদ্ধং নবযৌবনসংখিতাং ।
জনেকরত্বটিতহারন্প্রশোভিতাং।
এবং ধ্যাভা দকারন্ত তন্মন্তং দশধা জপেং॥
বিশক্তিসহিতং দেবি ত্রিবিন্দুসহিতং তথা।
আবাদিতবৃদংযুক্তং দকারং প্রথমামাহং॥"

(বর্ণোদ্ধারভন্ত)

দকারাধিষ্ঠাত্রী দেবী চতুত্ঞা, পীতবস্ত্রপরিধানা ও নবযুবতী, নানাবিধ রক্লাদি থচিত হার নৃপ্র প্রভৃতিতে হশোভিতা। এইরূপে ইহাকে ধ্যান করিয়া ইহার মন্ত্র অর্থাৎ দকার দশবার জ্ঞপ করিতে হইবে। পরে ত্রিশক্তি-সংযুক্ত, ত্রিবিন্দু সহিত এবং আত্মাদি তত্ত্বসংযুক্ত দকারকে প্রণাম করিতে হইবে।

'দকারের অরপ কামধেকুতত্ত্ব এইরপ লিখিত আছে—
"দকারং শৃণ্ চার্কালী চতুর্ব্বর্গপ্রদাসকং।
পঞ্চদেবময়ং বর্ণং পঞ্চপ্রাণময়ং সদা ॥

অশক্তিসহিতং দেবি ত্রিবিন্দুসহিতং সদা।
আ্বাদিতত্বসংযুক্তং স্বয়ং পরমকুগুলী॥

রক্তবিহ্যরভাকারং দকারং হৃদি ভাবরেং।"

(কামধেত্বভন্ত )

এই বর্ণ চতুর্ব্বর্গপ্রদায়ক, পঞ্চ দেবমর ও পঞ্চ প্রাণমর, বিশক্তি ও বিশুণযুক্ত, রক্তবিহালভাকার এবং আত্মাদিভত্ত-সংযুক্ত। কাব্যের আদিতে এই বর্ণ প্রবেগ করিলে স্থবাভ হয়। "দোধা সৌধাং মুদং না" (বৃত্তরং টীকা) মাতৃকাভানে এই বর্ণের বামগুলুকে ভাস করিতে হয়। দ ( খং ) দৈপ শুৰো, বা দা দানে দো বাহুলকাৎ হ । ১ অচল, পৰ্কত। ২ দক্ত । ও দাতা। দদাতি আনন্দমিতি দা-ক। (ক্ৰী) ৪,ভাৰ্যা। দো° শশুনে সম্পাদিতাৎ ভাবে কিপ্। (ক্ৰী) ৫ পণ্ডন। ৬ বৃহ্ণ। (মেদিনী)

"नानटनाञ्कञ्कानीमाबाटनार्ननीनटनाः ।

হকাদং দদদে ছকে দৃদাদদদদে। "( মাঘ ১৯।১১৪)
দদাতি দা ক। ( ত্রি ) দাতা, বে দান করে, ইছা
কোন শব্দের পর যুক্ত না হইলে প্রায় ব্যবহৃত হয় না, যথা —
অধিদ, ধনদ প্রভৃতি।

महे ((पन'ष) पि। [पि (पथ।]
महेशा थहेशा ((पन'ष)) नडाएडम। (Achyranthes lanata)
महेशाल (पन'ष) পিকবিশেষ। ∫ पर्यन (पथ।]
प• (भातनी) पकन।

দংশ (পুং) দংশ দংশনে পচাদ্যত্। > কীটবিশেষ,
দাঁশ্। পৰ্যায়—বৃত্তমকিকা, গোমকিকা, অৱণ্যমকিকা,
ভন্তরালিকা, পাংগুর, দংশক, ভূতমুথ, জুর, ক্লিকা, দংশমশক প্রাকৃতি।

"স্বেদজা দংশ্মশকং যুকামক্লিক্মৎকুণম্।

উন্মণশ্চোপজায়ন্তে যচ্চান্তৎ কিঞ্চিদীদৃশং ॥" ( মহু ১।৪৫.। )

বিষ্ঠা, মৃত্র, মৃতদেহ ও পৃতি অও হইতে দংশ প্রভৃতি বিঝিধ প্রকার কীট জন্ম। ইহাদের দংশনে দাহ ও শোফ জারে। ( স্ফুডা) দশতীব শরীরং। ২ বর্ম, সন্নহন। দংশ ভাবে ঘঞ্। ত দংশন, কামড়ান। ৪ দোষ। ৫ সর্পক্ষত। ৬ দস্ত।

"বর্ণছাতির্নলাটে ন লুলিতমঙ্গং ন চাধরে দংশঃ"

( আর্যাসপ্তশতী ৫১১ )

৭ একজন অস্র—মহাভারতে ইহার বিবরণ এইরূপ বিধিত আছে—

সতাযুগ দংশ নামে প্রবেদ পরাক্রাপ্ত এক মহান্তর ছিল, ঐ অস্ত্র ভ্ঞ অপেকা অধিক বয়য়। একদিন এই অস্ত্র ভ্ঞপত্নীকে বলপূর্কক হরণ করেন, ইহাতে ভ্ঞ অতি ক্রোধাষিত হইয়া 'তুই শ্লেম ও মূরভোলী কীট হ' এই বলিয়া অভিসম্পাত করেন।

তথ্ন দংশ শাপে ভীত হইরা বারবার ভৃগুর নিকট কমা প্রার্থনা করিতে লাগিল। তথন ভৃগু দরার্জ হইরা কহিলেন, আমার বংশসন্ত্ত রাম হইতে তোমার শাপ মোচন হইবে। পরে এই দংশ কীটঘোনি প্রাপ্ত হইল। কর্ণ বথন পরভামের নিকট অন্তর্শিকা করেন, তথন একনিন পরশুরাম কর্ণের ক্রোড়ে মন্তক রাখিয়া নিজা বাইতেছিলেন। এমন সমর ঐ কীট কর্ণের নিকট উপস্থিত হইরা উহার

উদ্ধেশ ভেদ করিতে গাগিল। ওকর নিজাতল হয়, এই ভরে কর্ণ বিশেষ ক্লেশ সহ করিরা থাকিলেন। কিলংকণ পরে কর্ণের উক্ল হইতে ক্ষির বিনির্গত হইয় পরওরামের গায় পড়িতে লাগিল, ইহাতে পরওরামের নিজাতল হইল। কর্ণ গুকর নিকটে,এই ব্যাস্ত বর্ণন করিলেন।

পরশুরাম কর্ণের বাক্য শুনিয়া দেই অটাদশ কীটের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন। ঐ কীট অলর্ক লাতীয়, উহার কলেবর শৃকরের ভায়, দংখ্রা তীক্ষ এবং সর্কাল স্থাী সদৃশ লোমলালে সমাকীর্ণ। পরশুরাম দৃষ্টিপাত করিবামাত্র ঐ কীট দেই শোণিত মধ্যে প্রাণত্যাগ করিল এবং শাপ বিম্কা হইয়া রামকে প্রণাম করিয়া ব্ধাহানে প্রহান করিল। (ভারত শাফিপণ ৩ অং)

দংশক (পুং) দশতীতি দন্শ-গুল্। ১ দংশ, দাঁশ, মক্ষিকাভেদ।

र নৃপবিশেষ, ইনি কম্পনদেশের অধিপতি ছিলেন।

"দংশকং কম্পানাধীশং প্রাবৃদ্ধে তত্ত্ব সক্ষা।" (রাজভর ১) ৭৮) ( ত্রি ) ও দংশনকপ্রা ।

দংশন (ক্লী) দশতীব শরীরমিতি দন্শ-লুট্। ১ বর্ম। দন্-শ ভাবে লুট্। ২ কামড়ান, হুলরসান, দস্তাদিবারা থপ্তন। • "দন্তাশ্র দংশনৈ: কান্তং দাসী কুর্ক্তি বোধিতঃ"

( সাহিত্যদ • 🕽

দংশনাশিনী ( জী ) দংশং নাশগতি নাশি-ণিনি ভীপ্। তৈল কীটভেদ। ( রাজনি॰ )

দংশভীর (পুং) দংশাৎ বনমক্ষিকাত: জীরা:। মহিষ। (হেম°)
দংশামূল (পুং) দংশাবছ্ঞাং মূলমন্তা। শিগুরুক্ষ, সন্ধিনাগাছ।
দংশিত (তি ) দংশো বর্ম সঞ্জাতোহতা পরিহিতঝাদিতি, দংশা ভারকাদিথাং ইতচ্। ১ বর্মিত, বর্মবিশিষ্টে। "হস্তাশ্বরথ-পুর্ণেন দংশিতেন প্রভাগবান্।" (ভারত হাহনুহে) দংশীত, দন্শ ণিচ্ ভাবে কৈ।, দই, দক্তে থণ্ডিত, যাহাকে দংশন করিয়াছে।

দংশী ( স্ত্রী ) কুলো দংশ: স্ব্রাথে ভীষ্, বা দশতীতি দংশ অছ্-গৌরা ভীষ্। কুল দংশ, ছোট দাশ।

দংশূক (ত্রি) দন্ধ বাত্লকাৎ উক। দংশনশীল। "ভক্ষাৎ ক্রীবাঃ দলশুকা দংশ্কাঃ" (তৈতি তা সাণাদাৰ)

দংশের ( আ ) দংশ বা এরক্। অপকারক, হিংঅক।
দংষ্ট্র ( পুং ) দন্শ আ। দস্ত, দাঁত। "অসিম্বন্দংট্রে: শিছ্:"
( ঋক্ ২০০৩৪) 'দংট্রেদিট্রে' ( সাম্বণ )

দং প্রা (স্ত্রী) দশুতেহনয় দন্শ করণে ইন্, (দাদ্বীশসেতি
পা অহা১৮২) বা 'সর্ক্ষধাতৃভা ইন্' ইতি ইন্, গৌরাদিপাঠে পিতামহীশক্ত পাঠাৎ বিভাগ জীবোহনিভাদাই টাপ্।

मखिरान्य, वस्र मास्त्र, श्रममख्यान, श्रहेशानि कारकत व्याप्त रमरण हात्रिके मख्यत्र मान मः हो। शक्षात्र माना। ( रहम)

"দং ব্রারাং ধরণীনবে দিতি হস্ত গীশ: পদে রোদ্দী (সাহিত্যদ ১।৩) ২ বৃশ্চিকালী, বিছুটা।

দংষ্ট্রানখবিষ (পুং) দংষ্ট্রায়াং নথে চ বিষং ষক্ত। সার্জায়া মাহাদের দক্ত ও নথে বিব আছে, মার্জার, কুকুর, বান মকর, মণ্ডুক, প্রচলাক, গৃহগোধিকা, পাকমংক্ত, গো শমুক, চতুম্পাদ কীট প্রভৃতি দংষ্ট্রানথবিষ। দংষ্ট্রা, ন মূত্র, পুরীষ, শুক্র, লালা, আর্ডাব, মুধ, সন্দংশ প্রভৃতি বিচ অবস্থান ভূমি। (স্থ্রাস্ত্র)

मः द्<u>धे शु</u>श्च ( पूर ) मः द्वे । व्यायू ५ हेव यत्र । वता ह ।

मः द्वीत्र (बि) मःद्वी ज्वास्ति ह्र्फानिषाय न । अमःद्वीक् में। जान । ('शूर) र त्राक्तनिरामय ।

দংষ্ট্রাবিষ (পুং) দংট্রায়াং বিষমশু। ১ ভৌম দর্প, দ দিগের দক্ষে বিষ। [দর্প দেও।]

দংষ্ট্রাক্ত ( প্রং জী ) দংষ্ট্রাহন্দ্রমিবাস্ত। বরাহ। ( শব্দার্থচি )
দংষ্ট্রিকা ( জী ) দংষ্ট্রা বিভাতেহস্তাং, দংষ্ট্রা-ঠন্ ( ব্রীহাদিলাশ পা ৫।২১১৬) দাড়িকা, দাড়া, দংষ্ট্রা। (জি) দংষ্ট্রাযুক্ত।

দংষ্ট্রিন্ (পুং ত্রী) প্রশন্তা দংষ্ট্রা অন্তান্ত ইতি ইনি। ১ শৃক।

২ সপ্। "বিলানি দংষ্ট্রিনঃ দর্কে সান্নি মৃগপকিণঃ
(রামায়ণ ২।৩৩।২৩)। (ত্রি) ৩ দংষ্ট্রাফুকে।

দংস্না (স্ত্রী-) দংস, চুরাদিজাৎ ণিচ্, ততোভাবে মুচ্। কণ "তরক্রতা তব ভদংস্নাভিঃ" (ঝুক্ ৬৮১৭।৬) 'দংস্নানি কর্ম্মভিঃ' (সাম্প )

দংসনাব্ ( ি । দংসনা বিষ্ণতে হস্ত মতুপ্, ততোঁ মত ।

কর্মাযুক্ত । "সনো হিরণাপথং দংসনাবান্" ( ক্ষক্ ১০০০) ।

দংসনাবান্কর্মবান্" ( সায়ণ )

দংস্স্ (ক্রী) দন্স-কাস্থন্। কর্মা (নিঘণ্টু) "চাফ্ডার্যা দংসং" (ঝক্ ১।৩২।৬)

দংসি (পুং) দন্দ ইন্। কর্মা। "কুৎসায় মন্ত্রন্থ দংস্থ (ঝক্ ১০।১৩৮।১) 'দংস্থঃ কর্মাণি' (সারণ) "দংস্ কর্মাণি দংস্থতেনুমানি" (নিফুক্ত গাংক)

দংসিষ্ঠা ( ি ) দন্স তৃণ্ দংসরিত। অতিশারেন সং ইটন্ ছা লুকি পিলোপা: । ১ অত্যন্ত কর্মকর্তা, যে অতিশর বা করে। "দ্বা দংসিষ্ঠা রগ্যা রগীতমা" ( অক্ ১০৮১২ 'দ্বাস্থা অতিশয়িত কর্মাণো' ( সারণ ) ২ দর্শনীরর ৩ অতিশ্র শত্রাহংস্ক। "বেনা দংসিষ্ঠ কর্মন" ( দ্বারণ কর্মাণা ৮।২৪/২৩ ) বিহু দংসিষ্ঠাতান্ত দর্শনীর ব্যা শত্রাপ্রপ কর্মান ্দং সুজ্ত (আ) দাভ আখবারা স্বচ্পেরিত। "নত্বো দংস্কৃতঃ" (ঋক্ ১৷১২২৷১০) 'দংস্কৃতো দাভৈরতৈঃ স্বচ্চু-প্রিডঃ' (বায়ণ)

দংস্পত্নী (স্ত্রী) দমনপর অস্কেদিগের পতি। "অনোগিক্রঃ
তর্গ্যো দংস্পন্নীঃ" (ঋক্ ৪!১৯!৭) 'দংস্পন্ধীঃ দমনপরা
অস্ত্রাঃ স্বষ্ঠু পতরোযাসাং তাঃ' (সারণ)

দ্ব্র (দেশক) গভীর সকল পক, পাঁক। দক (ক্লী) উদক প্ৰোদরাদিকাৎ সাধুঃ। কল। (ত্রিকা•)

नकात ( प्रे ) न चक्तरथ कातः । म এই वर्ग।

দকারাদি (ত্রি) দকার আদিবিস্ত। যাহার আদিতে দকার।
দকারান্ত (ত্রি) দকারোহতে যক্তা যাহার শেষেদকার আছে।
দকোদর (ক্রী) দকং জলক্ষীতং উদরং যত্রা। স্থশতোক্ত উদরবোগতেদ, স্থশতে এইরূপ শিধিত আছে—

শরীরহু সকল দোষ পৃথক্ ভাকে অথবা মিলিত হই সা প্লীহোলর, বজ্ঞান, আগন্তক ও দিকোদর প্রভৃতি উদররোগ জন্ম।

দকোদরের লক্ষণ—সেহপান ধারা অন্থ্যাসিত হইলো,
ব্যন বা বিবেচন করান হইলে অথবা নিরুত্ব বিত প্রেরোগ
করা হইলে, যদি শীতল জলপান করে, তাহা হইলে দেই
জলবাহিনী নাড়ী সকল দ্যিত হইয়া অথবা পৃর্বের জ্ঞায়
সেই জঠর দেশহ অন্ত্রীসমূহ সেহোপলিপ্ত হইয়া দকোদর
জ্লার। তাহাতে নাভিমণ্ডল স্লিগ্ধ অথচ ক্লুকালরে শীঘ্র
উরত ও জলপূর্ণের ভায় হয়। চর্ম্বণ্ড জলপূর্ণ হইলে যেরূপ
ক্রের, কম্পিত ও শ্বিত হয়, দকোদরেও সেইরূপ হয়।

এই রোগে আধান, গমনে অশক্তি, দৌর্বল্য, শোফ, অঙ্গেব অবসরতা, বায়ু ও পুরীষবদ্ধ হয়। ( স্কুশ্রুত)

৮ একজন প্রজাপতি। ( পুরাণ)

খণেদের অনেক মাত্র প্রাকাপতি দক্ষের ভাতি আছে। কোন কোন মাত্র উাহাকে জ্যোতিকগণের জনক বলা হইরাছে। বধা—"হজোতিবঃ সূর্য্য দক্ষপিতৃননাগাতে স্থমহো ত্রীহি দেবান্।" (ঋক্ ৬।৫০।২)

^{(इ} भाजनमीक्षिभागी प्रयाः मंग यांचारमञ्ज शिष्क्ष्रस्य VIII

স্টে শোভন-জ্যোতিক দেবগণের নিকট আমাদের অনপরাধ কামনা ক্রিও।

দক্ষ অনিতির পিতা আবার অনিতি হইতে জ্যোতিক ও
দেবগণ উৎপন্ন হইরাছে। অক্সংহিতার অপর মত্ত্রে আছে—
"ব্রহ্মণস্থাতিরতা সং কর্মার ইবাধমৎ।
দেবানাং পূর্ব্যে যুগেছসতঃ সদকান্নত ॥
দেবানাং মুগে প্রথমেছসতঃ সদকান্নত ॥
তদাশা অবলান্নত তত্ত্ত্তানপদস্পরি ॥ ৩ ॥
ভূজ্জ্জ্ উত্তানপদো ভূব অপণা অলান্নত ।
অনিতের্দকো অলান্নত দক্ষান্দিতিঃ পরি ॥ ৪ ॥
অনিতিই।জনিষ্ট দক্ষ যা ছহিতা তব ।
তাং দেবা অবলান্নত ভূগা অমৃতবন্ধবঃ ॥ ৫ ॥" (ঋক্ ১০।৭২কু)

দেবগণের উৎপর ইইবার পূর্বের ব্রহ্মণস্পতি কর্মকারের ফায় কার্য্য করিলেন। অসৎ, ইইতে সৈৎ উৎপন্ন হইল। দেবগণের উৎপত্তির প্রথমকালে ( এইরূপে) অসৎ ইইতে সৎ জ্বিল । পরে উত্তান্পদ্ ইইতে দিক্ ক্রিল। উত্তানপদ্ ইইতে ভূ এবং ভূ ইইতে দিক্ ক্রিল। আদিতি ইইতে দক্ষ জ্বিলেন, আবার দক্ষ ইইতে আদিতি ক্রিলেন। হে দক্ষ! অদিতি যিনি জ্বিলেন, তিনি তোমার ক্যা, * তাঁহা ইইতে পরে ভদ্র ও অবিনালী দেবগণ উৎপন্ন ইইলেন।

অদিতি হইতে দক্ষ, আবার দক্ষ হইতে অদিতি উৎপন্ন হইলেন, এ কথার ভাৎপর্য কি ? এ সম্বন্ধে যাম্ব নিরুক্তে লিথিয়াছেন—

"আদিত্যো দক্ষ ইত্যাহরাদিত্য মধ্যে চ স্ততঃ। আদিতি দাকায়ণী। 'আদিতেদকো আলায়ত দকাগু আদিতিংপরি' ইতি চা তৎকথমূপপদ্যেত। সমান্ত্রমানৌ ভাতামিতরেভর-তর্রজী।" (১১।২৩)

তাঁহারা বলেন, দক আদিতাঁ অর্থাৎ অদিতির পুত্র এবং আদিতা বলিয়াই তিনি স্তত হইরা থাকেন। অদিতি দাক্ষারণী অর্থাৎ দক্ষের কঞা। (শুভিতে স্বাহে,) 'অদিতি হইতে দক্ষ, আবার দক্ষ হইতে অদিতি উৎপন্ন হইলেন।' ইহা কিরপে সম্ভব পূহর উভরে সমান জন্ম লাভ করিয়াছেন, অববা দেবধর্মান্থ্যারে উভরেই উভয় হইতে জন্ম ও প্রাকৃতি প্রাপ্ত ইয়াছে।

ৰশাণপণ্ডিত হোথের মতে এখানে দক্ষ Spiritual force ও জানিতি Eternity।

বিশুপুরাণের বভেও অবিতি দক্ষের কলা। (বিশুপু: ৪।২।৫।)

শতপথবান্ধণে লিখিত আছে—

"প্ৰলাপতি হ বা ইদমতো এক 'এবাদ।" (২ ১ ২ । ৪। ১)

"প্রদাপতি ই বা এতেনাতো যজেনেকে প্রকাকানো 'বছঃ প্রজ্বা পশুতিঃ স্থাং প্রিরং গছেরং বশংস্থামরাদঃ স্থামিতি'। স বৈ দক্ষো নাম ইত্যাদি।" (২।৪।৪।১)

প্রস্থাপতিই সর্কাথে কেবল ছিলেন। প্রস্থাপতি
, প্রস্থাকামা হইরা ছথে যজ্ঞ করিরাছিলেন, 'আমি বেন বছ সন্তান সন্ততি ও গ্রাদি পাই, জীলাভ করি, যশসী হই এবং অন পাই।' তাঁহারই নাম দক্ষ।

পুরাণে বেরূপ বিষ্ণু বিখের পালক, শতপথ ব্রাহ্মণে দক্ষ দেই পদ পাইয়াছেন— .

"প্রজাণতিবৈ ভরতঃ স হীদং সর্কাং বিভর্তি।"

( শতপথ ভাচা১।১৪ )

ু প্রজাপতিই ভরত, কারণ তিনি এই সমস্ত জগতের ভরণণোষণ করেন।

হরিবংশে আবার দক্ষকে বিষ্ণুরই স্বরূপ বলা হইরাছে—
"ব্যতিরিক্তেক্সিরো বিষ্ণুর্বোগান্ধা ত্রন্মসম্ভবঃ।

॰ দক: প্রজাপতি ভূষা সভতে বিপুলা: প্রজা:॥

(इतिवः भ २>> णः)

রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণাদিতে দক্ষযজ্ঞের বেরূপ প্রশল আছে, বেদে তাহার কোন উল্লেখ না থাকিলেও তৈত্তিরীয়সংহিতার ২য় কাণ্ডে ৬ঠ প্রপাঠকে রুজের প্রভাব প্রস্তাবে তাহার কতকটা আভাস পাওয়া যায়।

মহাভারত ও পুরাণাদির মতে—একার দক্ষিণাসুষ্ঠ হইতে
দক্ষ জন্মগ্রহণ করেন।

"শরীরান্ধ বক্যামি মাতৃহীনান্ প্রকাপতে:। কুজ্ঠাদকেণাদকে: প্রকাপতিরকায়ত।" (মংস্তপুং এ৯)
"যথা সস্জ চৈবাদৌ তথৈব শৃণুত্বিকা:।
যদা তু প্রকৃতস্ত দেব্ধিগণপর্গান্॥

ষদা তু প্ৰেতন্ত্ৰ দেবাষ্ণ্ণপল্পান্। নবুদ্ধিমৃগ্মলোকভদানৈথুন্যোগভঃ।

पकः প্রসহস্রাণি পাঞ্চরস্তামজীজনং ॥" (মংস্তপুং ৫।৩-৪)

ইহার পূর্বে মানস স্টে হইত, দক্ষ প্রজাপতি যথন দেখিলেন, মানস স্টে হারা প্রজাবৃদ্ধি হর না, তথন তিনি প্রথমে মৈথুনহারা প্রজা স্টে করেন, সেই অবধি মহাত্য, পশু ও পকী প্রভৃতি মৈথুন হারা স্টে হর।

দক্ষোৎপত্তির বিষয় গরুজপুরাণে এইরূপ লিখিত আছে— বিধাতা প্রজা স্পষ্ট করিতে অভিলাষী হইরা ধর্ম, ক্ষা, মহু, সনক, ভৃত্ত প্রভৃতি প্রজাকর্তা মান্সপুত্র পরে দক্ষিণা-কুঠ হইতে দক্ষকে এবং বামাকুঠ হইতে দক্ষপৃথীকে স্পষ্টি

করেন। দক্ষ ঐ পত্নীতে অনেক কলা উৎপাদন করিনেন ৮ ব্রদার মানসপুত্রদিগকে অর্পণ করেন। ক্সা দক্ষের সঞ্জী नामी कञ्चारक धार्श्व इन। क्रांस क्रांस वनः वा महानः পুত্র হইল। কোন সময়ে দক হয়মেধ ব**ফ ক**রিয়াছিলে_ই ভাহাতে সকল আমাভা নিমন্তিত হইয়া আগমন করেন কিন্তু সতী অনাহুতা হইয়া এই যজ্ঞে আদেন ও 🕫 কর্ত্ত অপমানিত হইরা দেহ পরিত্যাগ করেন। ই_{হাটে} মহাদেব কুল হইয়া দক্ষত ধৰংস করিয়া 'তুমি ঞ্বের বংৰে উৎপন্ন হইরা মহুয়াত্ব প্রাপ্ত হও,' এই অভিশাপ দেন। পরে ঞ্ববংশোৎপন্ন প্রচেতাগণ কর্ফার তপ্তা করিয়া প্রজাপ_{তি}। थाथ रहेरन मात्रियात शर्ड नक उँ ९ भन रहेरनन । भारत मा চতুর্বিধ মানম প্রকা সৃষ্টি করিলেন। কিন্তু এই মানস্থা थाका दिक्कि थ्याश हरेग ना, उपन रेमधूनकांत्रा थाका सह ক্রিভে ইচ্ছা ক্রিয়া তিনি বীরণ প্রজাপতির তনয়া অসিক্লীনে विवाह कतिरमन धवः देशांत मर्देख भूख छेरशांतन कतिरमन এই পুত্র হইতেও প্রজা বৃদ্ধি হইল না। পরে অসিকীতে ৬০টা ক্ষপৰতী কন্তা হইল। তাহার ছইটী কন্তা অলিরাকে, ছইটী ক্লাখকে, দশটী ধর্মকে, ত্রোদশ কশুপকে এবং সুপ্তবিংশতি ठलाटक थ्रामान करत्रन। ब्लाट्स हेहारमत बाता ठताठत बगः সৃষ্টি হইল এবং দেই হইভেই মৈথুন বারা সৃষ্টিকিয়া প্রবর্তিঃ **ब्हेब्राइड । ﴿ शक्**ष् पू॰ ८।५ **घः** )

কালিকাপুরাণে এইরপ লিখিত আছে—এই বগং আদি সৃষ্টিকালে ব্রহ্মা অর্থনীরে পুরুষ ও অর্থনীরে নারী হইরা সৃষ্ট নারীর গর্জে বিরাট পুরুষকে উৎপাদন করে। ও তাঁহাকে বলেন, 'তুমি প্রকাণতি সৃষ্টি কর।' অনরা বিরাটপুরুষ তপজা করিয়া সায়ভুব মহুকে সৃষ্টি করিবেন। সায়ভুব মহুকে সৃষ্টি করিবেন। সায়ভুব মহুকে পরিতৃষ্ট হইয়া সৃষ্টির জক্ত দক্ষকে উৎপাদ করেন। দক্ষ উৎপন্ন ইইয়া মহু ও বিধিকে দশনা প্রণাম করিলেন। তথন ব্রহ্মা মহু ও বিধিকে দশনা প্রণাম করিলেন। তথন ব্রহ্মা আরও দশলন প্রভাগতি করিবেন। দক্ষ বছতর প্রধান প্রধান দেবর্ষি, মহর্ষি ও সোমা প্রভৃতি পিতৃগণকে উৎপাদন করিয়া সৃষ্টি প্রবর্তিত করেন ইহাই দক্ষের প্রতিস্বর্গ। (কালিকাপু ১৯ অং)

দক্ষপ্রভাপতি বোগমারার উদ্দেশে কঠোর তপতা করে বোগমারা পরিত্ত ইছরা প্রত্যক্ষগোচর হন এবং দক্ষে বলেন, তোমার তবে পরিত্ত হইরাছি, তুমি অভিনিধি বর প্রার্থনা কর। দক্ষ কহিলেন, বদি আমাকে বর বে ভাহা হইলে এই বর দিনু বে, আপনি আমার করা হা মহাদেবের পরী হইবেন। মহামারে । এই বর কেবন আমা

न(इ, अका विक् ७ महस्यत्त्रत कानित्न। महामात्रा এই ভুৱা ভূনিয়া 'তথাস্ত', এই কৰা বলিলেন ও ভা**হাকে** ক্রিলেন, আমি অবিশব্দেই তোমার পত্নীর গর্ভে ভোমার ক্রারণে অবতীর্ণ হইয়া শঙ্রের সহধর্মিণী হইব। কিন্তু यथन ज्ञि व्यनानत कतिरत, छथन व्यामि छरक्रभार राह-ত্যাগ করিব। আর বদি আদরশেধিলা না হয়, তাহা इहेरन চির্নির থাকিব। আমি প্রতি স্টিতেই ভোমার ক্লা হইরা মহাদেবের পত্নী হইব' এই বলিরা মহামায়া অন্তর্হিত হইলেন। অনন্তর দক্ষ জীনক ব্যতিরেকেই সঙ্কল, **অভিস্কি, মানস এবং চিস্তার সাহাব্যে প্রজা উৎপাদন** করিলেন। এই সকল পুত্রগণ নারদের উপদেশে পৃথিবী প্রাটন করিতে লাগিলেন। ইহাতে প্রজার্ত্তি হইল না দেখিয়া মৈথুন ধর্মে বীরণতনয়া অসিক্লীকে বিবাহ করিলেন। দক প্রজাপতির সঙ্কর হইল, অর্থাৎ ইহার গর্ভে স্থান হউক এইরূপ প্রথম অভিসন্ধি হইলেই তাহার গর্ডে মহামায়া প্রাত্ন-ज् रहेरनन । हेराबरे नाम नजी । स्विगरनब याप्त महास्तरवित्र সহিত সভীর বিবাহ হইবা। প্রজাপতি দক্ষ একটী মহাযজ্ঞের আরম্ভ করিলেন। এই যজ্ঞে অষ্টাশীতি সহস্র পাত্তিক হোতৃ-কাৰ্য্যে ব্যাপৃত, চতু:ষষ্টি সহস্ৰ দেবৰ্ষি উল্পাতা, মারদ প্রভৃতি বহুতর ঋষিই অথবর্গু ও হোতা। সকল দেবতার সহিত विकृ এই यस्क्रत अधिशेष्ठां, श्रमः बन्धा देशत (प्रविधि-अमर्गक। এই रास्क मकन निक्भानगण बात्रभान । अक्का এই ছলে মৃর্তিমান্ ষজ্ঞ আংখং উপস্থিত। ধরামগুল আংখং যজ্বেলী হইলেন। প্রজাপতি দক্ষ এই যজের বরণ করেন নাই এমন কেহ ছিল না। মহাদেব কপালী, স্বতরাং তিনি यकाई नाइन, এই বিবেচনা করিয়া দক্ষ দে यस्क क्रियन তাঁছাকে নিমল্লণ করেন নাই। সতী প্রিয়তন্যা ছইলেও ৰণালীর ভার্যা, এইজভ তিনিও আহ্ত হন নাই। স্তী ইহা জানিয়া দক্ষের প্রতি অবতিশয় কুল হইলেন এবং मत्कत थहे निमाक्रण कर्च चत्रण कत्रिया त्यांत त्रायात्याः ৰণিয়া উটিলেন। এই সমূর কোপরকানরনা সভী যোগ-বলে সকল ছার রোধ করিরা কুস্তক করিলেন, এই মহা-কুম্বকে তাঁহার প্রাণবায় ব্রহ্মরন্ধ ভেদ করিলা নির্গত হইল। ইত্যবসরে শিব মানস্মরোবরে সন্ধ্যা সমাপন করিয়া কৈলালে জাসিতে আসিতে পৰে সতীর দেহজাগ সংবীদ পাঁইয়া শীঘ গৃহে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন এবং গৃহে আসিয়া সতীকে মৃত দেখিয়া ও বিজয়ার মূথে সকল কথা ওনিয়া অভিশন্ন কট হইলেন। वरे नमत महाकटलत हकू, क्री, नानिका ও प्रकृश्त হইতে অভিকণোদ্যারী প্রতিবৃত্ধীসভিত অলভ উল্কা

गक्न निर्भेष्ठ हरेट्ड नाभिन। एक वि यूर्ण वक्क क्तिएडिएन, মহাদেব তৃথার গমন করিয়া যজ্ঞ হানের বহির্জাগে অবস্থান করিবেন। মহারুজ দুর হইতে সেই সমুক্তন যজ্ঞহান भवरनीकन कतिया मचत्र वीत्रक्षेत्रक उथात्र तथात्रण कति-বেন। বীরভদ্র ৰছপণ পরিষ্ত হুইবা মহাত্মা দক্ষের यक स्वःम कतिरा वर्षेत्य इटेरनन। वीत्रक्रमाक यक ধ্বংস করিতে দেখিয়া দেবগণের সহিত বিষ্ণু ভাছাকে নিবারণ করেন। বীরভদ্রকে নিবারিত হইতে দেখিয়া মহাদেব त्रियनत्रत्न वळक्रत्न व्यविष्ठे इट्रेनिन धैवः चत्रः वक श्वःन করিতে লাগিলেন। তিনি সমস্ত দেবতাদিগকে তাড়া-ইয়া বিলা মৃগক্ষপে প্ৰায়নপ্র ুবজ্ঞের অন্স্রণ করিতে नांशिरनन, यक चाकांनशर्थ बक्रांनारक श्रविष्ठे हरेरनन। महारात्व उथात्र अमन कतिरानन, क्षत्रकोठ रक्क उन्नारनाक হইতে অবতরণপুর্বক "নিজ মায়াবলে সতীশরীরে প্রবিষ্ট হইলেন। তথন যজাত্বামী রুদ্র মৃত সতীর সমীপে গিয়া তাহাকে অবলোকন করিয়া যজ্ঞের কথা ভূলিয়া গিয়া সত্তী-শেকে ব্যাকুল হইয়া রোদন করিতে লাগিলেন।

( क्रिकार्यू ५--->৮ व्य॰) [ मुडी (मूथ । ] ' দক্ষোৎপত্তির বিষয় হরিবংশে এইক্লপ লিখিত আছে---मभ अन अटिकांत्र मानरम मातियात गर्छ ७ त्यामरमद्वत ष्परम एक धवां पठि উर्भन्न हन, व्यनखन्न हेनि द्वारन, व्यन्स প্রভৃতি বিবিধ পদার্থ স্থাষ্ট করিয়া কতকগুণি মন:ক্লিড क्ञांत रुष्टि करतन। এই नकन क्ञांत मर्पा मणी पर्यरक, ১৩টা কখ্যপকে, অবশিষ্ট নক্তানামে ২১টা কস্তা গোমদেৰকে ध्यमान करत्रन। हेशास्त्र शार्ड (गा, शक्ती, नाग, देवछा, मानव প্রভৃতি নানাজাতির সৃষ্টি হইল। এই সমন্ন হইতে जी शूक्य महितारा धानारहि भावछ हत। हेरात भूटर्स মনন, দৰ্শন ও স্পূৰ্ণ বারা প্রকা সৃষ্টি হইয়া আসিতেছিল, তাহা রহিত হইয়া গেল। একার দকিণ অকুষ্ঠ হইতে দক, वामाकृष्ठं रहेरज जल्मिकी ममजूर्वे रहेगाहिल, हेरा शानाखरत ক্ষিত হইরাছে, কিন্তু এই স্থানে দক্ষ প্রচেতাগণের পুত্র विनम्न कृषिङ इहेन ও সোমদেবের দৌছিত্র ছইনাও কিরুপে তাহার খণ্ডর হইলেন, জনমেজয়ের এই সন্দেহ নিরাকরণের क्य दिनम्लामन विनातन, 'উৎপত্তি নিরোধ অর্থাৎ জন মৃত্যু প্রাণিমাত্তেরই নিয়ত ধর্ম। ইহাতে ঋৰি 📽 জ্ঞানিগণের কোন মোহের বিষয় নাই। প্রতিযুগেই দক প্রভৃতি নৃপতিগণের একবার উৎপত্তি আবার লয় হইয়াছে। পূর্ব্বে জ্যেষ্ঠত কনিষ্ঠত কিছুই ছিল না, একমাত্র তপোবলই छे एक व अन कर्रात कात्र हिन। धानाविधाका नक

বিধাতা কর্তৃক আদিই হইয়া ভূতসমূহ সৃষ্টি করিতে প্রবৃত্ত ছন, দক্ষ প্রজাপতি প্রথমে ঋষি, দেবতা, গৃন্ধর্কা, অন্তর, রাক্ষ্য, যক্ষ, ভূত, পিশাচ, পশু, পক্ষী ও মৃগ প্রভৃতিকে थाधरम मानतम रुष्टि कर्दान, किन्छ भरत रमधिरमन मानम-স্ট প্রকা আর বৃদ্ধি পাইতেছে না, তথন তিনি প্রকাস্টির উৎকট বাদনা স্ত্রীপুরুষ সহযোগে বিবিধ প্রাণীর সৃষ্টি করাই ্রের:কল্ল ছির কুরিলেন, তণন তিনি বীরণ প্রজাপতির অসিক্লী নামে এক কল্পাকে বিবাহ করিলেন। পরে প্রজাপতি দক্ষ এ অসিকীর গর্ভে পঞ্সহত্র বীর্যাবান্ পুত্র উৎপাদন করেন, ইহারাও প্রকাস্টির জন্ম অতিশয় বাতিবান্ত क्हेरलन । हेबाजा बन्तात मानमभूख नाजरमत्र উপদেশে निक्र-क्तिष्ठे इत। एक এই वृखान्त स्नातिश नांत्रमत्क मश्हात करत्रन। ব্ৰহ্মা তাহা জানিতে পারিয়া স্বয়ং দক্ষের নিকট আদিয়া পুত্র প্রার্থনা করেন। ভাহাতে দক্ষ কহিংলেন, আমি এই নিজ কয়া कंत्रिकीरक धारान कतिरुहि, देशत गर्डिं नातरमत्र পুনর্কার জন্ম হইবে। অতএব ইহাকে লইয়া ক্রভাপকে প্রদান করুন, এইকথা বলিয়া ত্রিনি ব্রহ্মার হস্তে এই ক্যাকে অপ্লব্ন করেন। অভিদন্দাত ভয়ে কখাপ এই কলা গ্রহণ . করেন এবং ইহার গর্ভে নারদকে পুনরায় উৎপাদন করি-লেন। তৎপরে প্রজাপতি দক্ষ ধর্মপত্নী বীরণতনয়াতে ষ্ঠিসংখ্যক ক্ষ্ণার সৃষ্টি করিয়া ধর্মকে দশ, ক্ষাপকে जार्यापम, त्मांमत्क मश्रविःमिड, व्यतिष्टेरनिमत्क ठात्रि, বস্থ পুত্রকে ছই, অঙ্গিরা ও কুশাখকেও ছই চারিটী क्रिया कञ्चामान क्रिलिन। अक्सुक्ी, वस्, यांगी, नश्, ভাহ, মরুত্তী, সংক্লা, মুহ্রতা, সাধ্যা ও বিশা এই দশটী কল্লা ধর্ম প্রতিগ্রহ করেন। পরে বিখা হইতে বিখদেবপ্রণ, সাধ্যা হইতে সাধ্যপণ, মরুজতী হইতে মরুজংগণ, বস্থ ইইতে বস্থাণ, ভাতু হইতে ভাতু, মুহুর্তা হইতে মুহুর্ত্থাণ, লম্বা इहेट एवाय, याभी इहेट नागवीथी, अक्स की हहेट भार्थिव পদার্থ সকল, সংকল্প হইতি সর্বাত্মরূপ সংকল এবং যামিনী নাগ্রীথী হুইতে বুধৰ সমুভুত হন। এইরপে ক্রমে এক দক্ষ প্রজাপতি হুইতে চরাচর জগৎ স্প্র হুইতে লাগিল। ( হরিবংশ ২--৩ অ॰)

শ্রীমন্তাগবঁতে দক্ষের বিষয় এইরূপ দিখিত আছে— প্রজাপতি দক্ষ ব্রহ্মার আত্মরু, মহুকস্থা প্রস্তির সহিত ইহার বিবাহ হয়। এই প্রস্তির গর্ভে ১৬টা ভনরা উৎপর হয়, এই ১৬টা ক্যার মধ্যে ১৩টা ধর্মকে, একটা আয়িকে ও একটা পিতৃগণকে প্রদান করেন। সন্থী নামে অন্ত একটা ক্যা মহাদেব বিবাহ করেন। প্রসাপতি দক্ষ অভ্যন্ত ছহিত্বৎসল ছিলেন। কিন্তু কোন সমরে বিশ্বস্তাঃ একটী বৃহৎ যজের অনুষ্ঠান কুরেন। এই যজে স্ব দেবতা উপস্থিত ছিলেন, প্রজাপতি দক্ষ ফার্থন এই বা আগমন করেন, তথান সকলেই তাহাকে দেখিয়া উল্লিট্রিলন, কেবল একা ও শিব ইহারা ছইজনে উলিং না। দক্ষ আসন গ্রহণ পর্যান্ত মহাদেব নিজাসনেই উপ্রিরহিলেন, দক্ষকে কোনরূপ সম্মান প্রদর্শন করিলেন না দক্ষ ইহাতে কোপে উন্মন্ত প্রথম হইরা শিবের নিজা আর করিলেন। মহাদেব ক্ষত্ত হইলেন না, সভার মধ্যেই ব্রিয়

पक्र cकरन भिवनिन्ता कतियाहे कांख हहेता_{न ग} এমন কি কোধে জলম্পর্শপূর্কক এই অভিশাপ দিনে 'এই দেবাধম শিব, ইক্স ও উপেক্রাদির সহিত যেন যন্ত্রণ প্রাপ্ত নাহয়।' এই শাপ দিয়া ক্রোধভরে এই খান চঠা গৃহে প্রত্যাগত হইলেন। এদিকে - গিরিশামুচর নদান শাপের বিষয় অবগত হইলেন ও অভিশয় কুছ হয় যাহারা দক্ষের বাক্য অনুমোদন করিয়াছিল, ভাহাদিগৰে প্রতিশাপ দিয়া কহিলেন, 'মহাদেব কথন কাহারও অপকা করেন না। ভাহার প্রতি যাহারা বিষ্ঠি হইবে, ভাহানে কোন কার্যামিক হইবে না। এই দক্ষের বৃদ্ধি দেলং আত্মা বলিয়া ধ্যান করে এবং সে আত্মতত্ত্ব বিশ্বত হইগাছে দক্ষ পশুর সমান নিভাস্ত স্ত্রীকামী হউক এবং প্রি ইহার ছাগলের ভায় মুধ হউক । বস্ততঃ এই দক্ষের ছা^ছ তুল্য বদন হওয়াই উপযুক্ত, কেননা এ অবিভাকে ত্ৰনিয় বোধ করিয়া থাকে, এইবাল এ ৰস্তই ছাগ !' এই বিবা অভিশাপ দেন।

খণ্ডর দক্ষ এবং ঝামাতা শিব সর্বাদা এইরণে গ্রেশা বিবেষ চলিতে লাগিল। কিছুকাল পরে পরনেগী ^{বৃদ্ধ} দক্ষকে সকল প্রজাপতির আধিপত্য প্রাদান করি^{বেন} ইহাতে দক্ষের চিত্তে অহকার আরও প্রাদীপ্ত হুইরা উটিল।

তথন তিনি বৃহস্পতি নামে উৎকৃষ্ট বজ আরস্ত করিলে।
এই বজ্ঞে তিলোক নিমন্ত্রিত হইল। কেবল মহাদেব ও দ্রীর্
নিমন্ত্রণ হইল না। সতী যক্ত বৃত্তাস্ত শুনিতে পাইরা দ
ত্বলে ঘাইবার জন্ত মহাদেবের নিকট বার্মার প্রাধ্ করিতে লাগিলেন। মহাদেব সতীকে যক্তরতে বার্মার করিতে অহমতি করিলেন না। সতী কিল্ক বিনা নির্মার পিত্রালয়ে গমন করিলেন এবং সেই যক্তর্থনে পিতৃষ্টি ক্ষপমানিতা হইরা প্রাণুপরিত্যাগ ক্ষরিলেন। মহাদ্ নার্মা মুধ্য স্তীর প্রাণ্ডাগের ক্রা শুনিরা অতিশ্র

विठ हरेतान धवः छंदन्तांद मछक हरेत्छ धक्छी कां। · উৎপাটন করিয়া ভূমিতে নিঃকেপ করিলেন, ইহাতে বীর-ভদ্রের উৎপত্তি इहेन। वीत्रष्ठम वस्त्रक्ष्यःन कतिए वाजा করিলেন; তিনি ভ্রুর শাল্র ও পুষার দত্ত উৎপাটন করিয়া দক্ষের বক্ষঃস্থল আক্রমণ করিলেন ও জীক্ষধার অন্তরারা তাহার মত্তক ছেদন করিতে লাগিলেন। কিন্ত পুন: পুন: অস্ত্রাঘাত করিয়াও শিরশ্ছেদ করিতে পারিলেন না৷ পরে তিনি বিক্ষিত হইয়া প্রণিধানপূর্ধক দেখিলেন, যজ্ঞত্বে কণ্ঠনিষ্পীড়নাদিরূপ পশুমারণোপায় একটা যদ্র ছিল, তথন তিনি দক্ষকে ঐ যন্তে ফেলিয়া তাহার মুগু দেহ इटेट पृथक् कतियां फिलिटननः भरत के छिन्नमछक দক্ষিণাগ্নিতে হোম করিয়া যজ্ঞালাকে দগ্ধ করিয়া ফেলি-लान। এই करि मक्तरक अरक वादत स्वः म हहेन। ताक-পিতানহ একা দক্ষের **এইকপে নিধনসংবাদ ভনিয়া অভাভ** দেবগণের সহিত মিলিজ হইয়া কৈলাসে উপস্থিত হইলেন এবং নানা প্রকার স্তবে মহাদেবকে তুষ্ট করিয়া দক্ষ প্রভৃতির জীবন প্রার্থন। করিলেন। মহাদেব তুষ্ট হইয়া বলিলেন, দক্ষের ভাষ বালকদিগের অপরাধ আমি কথন গ্রহণ করি না। যে সকল ব্যক্তি দেবমায়ায় বিমোহিত, আমি কেবল তাহাদের দণ্ড দিয়াছি। প্রজাপতি দক্ষের মৃণ্ড দগ্ধ হইয়াছে; এখন ছাগের মুগু ভাছার মুগু হউক এবং এই জগদেব ও মিত্র নামক দেবতার চকুৰারা স্বীয় যজ্ঞভাগ দর্শন করুন। পূरा यगः भिडेटडाङी इडेन। हेनि यक्षमात्नत्र पञ्चवाता যজীয়.দ্রব্য ভক্ষণ করিবেন এবং যাহাদের আক একেবাদের নষ্ট হইনাছে, তাহারা অধিনীকুমারৰমের বাছৰারাণবাছবিশিষ্ট এবং পু্বার হস্তবারা হস্তবান্ হইবেন *। আমার ছাগের শু শু ভ ভ র শু শু ভ ইবেক । পরে একরা দেবগণের সহিত মহাদেবের বাক্যামুদারে দক্ষের মন্তক প্রভৃতি ঐ প্রকারে সংযোজিত করিলেন। তথন দক্ষ মথাবিধানে যভা সমাপন করিলেন এবং মহাদেবকে নানাপ্রকারে ওঁব করিতে ^{লাগিলেন।} (ভাগবত, ৪।১-৭ অং°) [রুজ ও সৃতীশব্দে ^{বিস্তৃ} বিবরণ জ্রন্তব্য। ]

় ৯ উশীনরপুত্র নৃপভেদ। (ভাগবত ৯।২৪।৮) ১০° দক্ষিণ-ভাগ। ১১ বিষ্ণু। ১২ বল। (নিশ্বন্টু) "সদক্ষাণাং দক্ষপতি বঁত্বি" (অক্ ১।৯৫।৬) 'দক্ষাণাং বলানাং' (লায়ণ)(ক্লী) >७ वीदा । "देवर्गटेकर्गक शिष्ठश्तीम (प्रवानाः" ( छक्रवङ्क् >८।०) 'टेवर्गटेकः वीदेदाः नागटेदाः नइ मक्रमस्यास्य वीद्यार्थः । ( गहीयत )

দক্ষকভা (ত্রী) দক্ষত করা ৬৩৫। দক্ষের করা। দক্ষের
অসিকী নামী পদ্মীতে ৬০টী করা করোঁ। এই ৬০টীর মধ্যে
১০টী ধর্মকে, ১০টী কর্মীপকে, ২৭টী চক্রকে, ভৃগু, অদিরা ও
কুশার্ম এই তিনজনকে ছুই ছুইটী ও তার্কাকেও ৪টী করা
সম্প্রদান করেন। (ভাগু ৬০৬ অং) মহক্রা প্রস্তুরে গর্মে
১৬টী করা জন্মে, এই ১৬টীর মধ্যে ১৩ ধর্মকে, একটী
অয়িকে, একটী মিলিত পিতৃগণকে ও একটী মহাদেবকে
প্রদান করেন। (ভাগু ৪০১ অং)[দক্ষ দেখা]

দক্ষক্র তু (পুং) দক্ষত ক্রত্: ৬তং । দক্ষের যজ্ঞতেদ, প্রজাণ পতি দক্ষ শিবকে বাদ দিয়া যে যজ্ঞের অনুষ্ঠান ক্রিয়া-ছিলেন। [দক্ষ দেখা ] দক্ষা: কুশলা: ক্রতবো সংক্রা যেবাং। ২ চকুরাদি ইক্রিয়েরপ প্রাণ।, "যে দেবা সনো-জাতা কনোযুকো দক্ষক্রতবত্তে ।" (শুক্রবজু ৪০১১)

'যে দেবা ঈদৃশা: দীব্যক্তি দ্যোতত্তে ইতি দেবাশুকুরাদী-ব্রিরক্তপ: প্রাণা: ।' (মহীধর)

দক্ষক্রে তুধবং সিন্ (পুং) দক্ষক জং ধ্বংসরতি ধ্বংস-ণিচ্ ণিনি।
> মহাদেব। ২ মহাদেবের অংশে আবিভূতি বীরভজ। মহাদেবের জটা হইতে ইহার উৎপত্তি হয়। [দক্ষ দেধ।]

দক্ষজা (ত্রী) দক্ষাৎ কায়তে জন-ড। দক্ষকস্তা, স্তী, ছ্র্গা, অখিনী প্রভৃতি।

**দক্ষজাপত্রি (পুং)** দক্ষলানাং দক্ষকস্থানাং পতিঃ। চন্দ্র। মহাদেব প্রভৃতি।

দৃক্ষতনয়া (ব্রী) দক্ষত তনরা। দক্ষপ্রজাপতির ছহিতা, অখিনী প্রন্থতি হুর্গা। প্রস্থতির গর্চ্ছে প্রদা, নৈব্রী, দরা, শান্তি, ছুটি, পুটি, ক্রিরা, উন্নতি, বুদ্ধি, নেধা, মৃন্তি, তিভিন্না, হী, খাহা, খধা ও সতী এই বোড়শক্তা অংম। [দক্ষ দেখ।]
দক্ষতা (ব্রী) দক্ষত ভাব: ভাকেতল্টাপ্। নৈপুণ্য, পট্তা, ক্যতা, কুশলতা।

দক্ষতাত্তি (ত্রী) মানদিক শক্তি।

"জীবাতৃং তে দক্ষভাতিং ক্লণোমি।" ( অথব্য ৮।১।৬ )

**দক্ষনিধন (** क्रो ) नामरङ्ग ।

দক্ষপ্তি (পুং) দক্ষাণাং বলানাং পতি:। বলাধিপ্তি, বলের মধ্যে যে প্রধান বল, তাহার অধিপ্তি। "সু দক্ষাণাং দক্ষপতি বঁজুব।" (ঋক্ ১৯৫।৬) 'দক্ষাণাং বলানাং দক্ষপতি-বঁলাধিপ্তিবঁজুব।' (সারণ)

नक शिकु ( प्रः ) नकः नक श्रवांशिकः शिका छै०शांनरको वक्र,

কৃষ বলুর্বেদে একটা মত্রে ইহার আভাস আছে। বধা—
 ^{*}পুব। প্রাক্ত লতোহরূপৎ ভলাৎ পুবা প্রণিটভাগোহনভকো হি
 ^{টা} দেবা অক্তবন্...ছা স্বিভূঃ প্রস্বেহবিনো বিহ্ভাং পুলো হভাভাং
 ^{মতিপু}হানীভারবীৎ।" (ভৈডিরীয়স[®]হালাঙাহ-৬)

সমাসাম্ভবিধেননিত্যভাৎ ন কপ্। দক্ষ প্রজাপতিজ্ঞাত প্রাণাভিমানী দেব। "বে দেবা মনোজাতা মনোযুলঃ স্থাদকাঃ দক্ষপিতার তেনঃ।" (তৈতিং ১।২।৩) ) লোচক তু কপ্। লৌকিক প্রয়োগে কপ্ প্রত্যুয় হইবে, সেই স্থলে দক্ষপিতৃক এইরূপ পদ হইবেন ২ বীর্য্যোৎপাদক। (ন্ত্রী) ও অখিনী প্রভৃতি, ইহাদের উৎপাদক দক্ষপৃত্র জন্ত ইহাদের নাম দক্ষপিতৃকা।

দক্ষয়তন্ত্র (ক্রী) দক্ষতী যজ্ঞং বাদক্ষেণ অষ্ট্রতং যজ্ঞং। দক্ষ প্রজাপতি দারা অষ্ট্রত যজ্ঞবিশেষ। [দক্ষ দেখ।]

দক্ষয়তন্ত ভক্স (পুং) দক্ষয়ত্ত ভক্ষ:। বীরভদ্র কর্তৃক দক্ষ-যত্তের বিনাশ।

দক্ষয়জ্ঞবিনাশিনী (স্ত্রী) ছগা। ছগা অর্থাৎ সতী দক্ষয়জ্ঞ ভবের প্রতি কারণ, এই জন্তুই ছগাকে দক্ষয়জ্ঞবিনা-শিনীকহে।

্ "দক্ষজ্জবিনাশিকৈ মহাবোরারৈ যোগিনীকোটিপরি-বুভাবৈ ভদ্রকালাৈ ছুগাবৈ শম:।" ( ছুগাপুলামন্ত্র ).

দক্ষযাগাপহারী (পু:) মহাদেব। (ভারত ১৩।১৭।৫১)

দক্ষবিহিতা (স্ত্রী) দক্ষেণ বিহিতা গীতিকা। ১ গীতিকাভেদ,
শ্বক্রাথা পাণিকা দক্ষবিহিতা ব্রহ্মগীতিকা।

গেরমেতত্ত্বভ্যাদকরণান্মোক্ষসংক্তিতং।" ( যাজ্ঞবন্ধ্য ৩)১১৪ )
দক্ষবিহিতা গীতি প্রভৃতি অধ্যাত্ম ভাবের সহিত মিলিত
হইয়া গান করিতে হয় এবং এই গান অভ্যাদে মোক্ষলাভ
হয়। ( ত্রি ) ২ দক্ষকৃত।

দক্ষর্ধ্ (তি) দক্ষতার বৃদ্ধিশীল বা আননিশত। (ুবেদ)
দক্ষস্ (ক্ষী) দক্ষ করণে অস্থন্। বল। "বৃষণাদক্ষণে" ( ঋক্
১০১৫১০০) 'দক্ষণে বলায়' ( সারণ)

नक्त प्राप्त (वि) मकुछ प्राप्तः। वनपापक । ज्भविष मक्त प्राप्ता (मृद्व छा:।" (अक् ৯।२०।১) 'नक्त प्राप्तः मृद्का वनः यद्य प्राप्तः।' (प्राप्तः)

দক্ষসাবলি (পুং) মন্থভেদ, নবম মন্থ। ভাগবতে ইহার বিষয় এই করণ দিখিত আছে, বরুণ হইতে ইহার উৎপত্তি হয়, ভৃতকেতু, দীপ্তিকেতু প্রভৃতি ইহার পুত্র। এই ময়য়রে ময়ীচি গর্ভ প্রভৃতি দেবতা, অভ্তুত ইহাদের ইক্র এবং ছাতিমান্ প্রভৃতি ঋষি আয়য়ান্ হইতে অস্থায়ার গর্ভে ভগবান্বিফু ঋষভদেব নামে অবভীণ হন। ইনি অভ্তুত নামক ইক্রকে সর্কামপার্থি, ইনি উপয়োকের পুত্র, ভ্রিবেণ প্রভৃতি ঐ ময়য় য়য়ান। এই ময়য়রে হবিয়ান্ প্রভৃতি আয়ণ অর্থাৎ হবিয়ান্, সুক্ত, সত্য, অয়, মূর্তি ইত্যাদি ঋষি। আয়

ত্মরদেন, তানিস্থাদি দেব এবং শব্ধ দেবরাল। এই ম্বর্রে ভগবান্ বিভূ বিশ্বস্ক বিপ্রের গৃহে বিস্তৃতির অংশাংশে লয়। এই ক্রেন্ডর বিপ্রের গৃহে বিস্তৃতির অংশাংশে লয়। এইণ করেন এবং ইনি বিত্তক্রেন নামে বিখ্যাত হন। এইং কালে দেবরাল শব্ধুর সহিত সথিত্ব হয়। (ভাগণ ৮/১০ অং) দক্ষসাবর্ণির সময়ে পুলহপুত্র হবিয়ান, ভৃতাতনয়, স্কুরি, তাত্রিপুত্র আপোম্র্ডি, বশিষ্ঠতনয় অইম, পুলত্তাপুত্র প্রমিরি, কশ্রপপুত্র নভোগ ও অক্রিরাপুত্র সত্য এই ৭ জন মহিনি। ইহারাই অধিমন্ত্রের অধিতীয় লক্ষ্য বিলিয়া কথিত। স্বত্ত, উত্তমোজা, বীর্যাবান্, ক্লিয়ঞ্জ, শতানীক, নরমিত্র, ব্যব্যন, অয়য়ও, ভূরিছায় ও স্বর্চা এই ১০টা দক্ষসাবর্ণির পুত্র।

(হরিবংশ ৭ অবং) (মার্কভেরপুং৯৪ অং)

দক্ষ হৃত (পুং) দক্ষত হৃতঃ। দেবতা। (শকাথচি ) প্রধাণিত দক্ষের পূঁত্র সকল নই হইলে পুত্রিকা উৎপাদন করেন, তাহাদের হইতে দেবতা প্রভৃতি জন্মগ্রহণ করেন। এই পুত্রিকাদের পূত্রহেতু দক্ষের পুত্রত্ব দিছ হয়। বিধাতা দক্ষকে প্রজাস্টির আদেশ করিলে মনঃপ্রভাবে ঋষি, দেবতা, হর, গদ্ধর্ম প্রভৃতি সৃত্তি করেন। ২ হর্যাখাদি পূত্র, দক্ষপ্রভাগিতির হ্যাখ প্রভৃতি পূত্র জন্ম। ইহারা সকলেই প্রভার্থি করিতে বিশেষ সচেই থাকেন, কিন্তু নারদের উপদেশে তাহারা পৃথিবীর পরিমাণ জানিবার নিমিত্ত চতুর্দিকে প্রস্থান করেন, আর প্রত্যাগত হন নাই। (হরিবংশ ০ জণ)

দক্ষা (স্ত্রী) দক্ষতে বর্দ্ধতে ভারধারণে সমর্থা ভবতি দক্ষ হ ক্রাপ্। পৃথিবী। (মেদিনী)

দক্ষাধ্বরধ্বংস্ক (পুং) দক্ষণ্ড অধ্বরং ধ্বংসরতি ধ্বন্দ নিচ্ খাল্। ১ শিব। ২ শিবজাটোৎপন্ন বীর্ভজা।

मक्काध्यत्रश्वरमङ्गर्थः (পूः) मक्काध्यत्रश्च श्वरतः कर्द्रोणि, व किপ् कृशांशमः। मक्कास्क्रनामक नित, वीत्रख्छ ।

দক্ষায় (পং) দক্ষতে কার্য্যের সমর্থো ভবতি দক্ষ্যা (অনকিপৃথি গৃহিভা আবা:। উণ্ত।৯৬) > গৃহড়। ২ গ্রপকী। দক্ষ বৃদ্ধো আবা। (, জি ) ত বর্জক। "মিরো দক্ষাযোঁ। অর্থামেবাদি সোম" (ঋক্ ১৯১০) 'দ্কাগো সর্বেধাং বর্জকঃ' (সায়ণ) ৪ পুজনীয়।

দক্ষারাম, ( জাক্ষারাম ) গ্রোদাবরী জেলার অন্তর্গত স্বিধারি আর্তিতীর্থ, ক্রোটাফলী নামক প্রসিদ্ধতীর্থের ৭ মাইল পূর্বদিরে এবং রামচক্রপুরের ৪ মাইল দক্ষিণে অবস্থিত। এধানে তীরে খরের একটা অতি বৃহৎ দেবালর আছে; ইহার লিক ^{জ্বি}উচ্চ, এমন কি বিতল ভেদ করিয়া ছই কিট্ উচ্চ হইরারে। পূজার সময় পুরোহিত বিশ্বলে ধাকিয়া লিজের জলাভিবের্গা

করিয়া থাকেন। প্রধান মন্দিরের মধ্যে ছোট ছোট আরও
শ্বন্দির আছে। প্রধান মন্দিরটী স্থানরকপে চিত্রিত। এথানে
ওলদালদিগের স্থানর ছাইটা গোর আছে। ভীমেখরের
মন্দিরে খৃষ্টীর বাদশ শতান্দীতে উৎকীর্ণ অনেকণ্ডলি

ন্ফি ( তি ) দহনশীল। ( সামণ )

নিদ্ধিণ (ত্রি) দক্ষতে ইতি দক্ষ ইনন্ (ক্রেদক্ষিভ্যামিনন্। উণ্ ২।৫০)
১ দক্ষিণোড়ত, দক্ষিণদিক্ষব। ২ পরছন্দামুবর্ত্তী, পরাভিপ্রায়ামুবর্ত্তী, যাহারা পরের অভিপ্রায় অনুসারে চলে।
ত দক্ষভাগন্থ। ৪ অবাম, অপসব্য, দেহভাগভেদ, ডাহিন।
প্রতিগ্রহ করিতে হইলে ওঁকার উচ্চারণপূর্কক দক্ষিণ
হস্তবারা করিবে এবং পরে স্বস্তি এই বাক্য বলিবে।

তিজার মৃচ্চরন্ প্রাজ্ঞো জবিণং শক্ত নোদকং।
গুরু যাদ কিংল হতে তদতে অতি কীর্ত্রেং । (আদিতাপুং)

েনায়কভেদে, যে নায়কের আনেকগুলি নায়িকা আছে,
এবং যিনি সকল নায়িকার প্রতি সমান অফ্রাগ প্রদর্শন
কবেন, তাহাকে দকিগনায়ক কহে। "এষু অনেকমহিলাহ সমরাগো দকিগং কথিত:।" (সাহিত্যদং ৩।৪০)

"অন্তঃপুরে কুরতি প্রাদৃশাং সহস্র-স্কির্য়ং কথ্য কুত্র নিবেশগামি। ইত্যাকল্যা নয়নাস্কহে নিমীল্য রোমাঞ্চিতেন বপুষা স্থিতমচ্যুতেন॥" (রসমঞ্জরী)

সতঃপুরে সহজ সহজ রমণী রহিয়াছে, আমি কাহার দিকে নারন ফিরাইব। অচ্যুত ইহা বিবেচনা করিয়া চক্: ধর নিনীলনপূর্বক রোমাঞ্চিত শরীরে অবস্থান করিয়া ছিলেন। এইস্থলে ক্লফ কাহাকেও দেখিলেন না, এইজন্ত সকল নারিকার প্রতি সমান অনুরাগ প্রদর্শিত হইল। অত্রব এন্থলে প্রীক্লফ দক্ষিণনারক।

৬ প্রদক্ষিণ। (ভাগে ১।১৪।১৩) ৭ তজ্ঞাক্ত আচার বিশেষ, শৈবাচার হইতে দক্ষিণাচার শ্রেষ্ঠ, দক্ষিণ হইতে বামাচার উৎকৃষ্ঠ।

^{"স্কুরেভ্যশ্চোত্তমা বেদা বেদেভ্যো বৈঞ্চবং মহৎ। বৈঞ্বাহত্তমং শৈবং শৈবাক্ষিণমূত্তমং ॥}

^{দকি}ণাহতমং বাসং ৰামাৎ সিদ্ধান্তমুত্তমং।"(কুলাৰ্ণবত॰ **৫**৩°)

৮ বিফু। (বিফুসণ) ৯ দক্ষিণামি। "দ্ধক্ষিণাপদ্বিদ্ধ দক্ষিণা।" (আখ গৃণ ৪।২।৩) ব্রাহ্মণনিধের দক্ষিণ কর্ণে বন্ধা, বিফু, ক্ল, সোম, ক্ষা ও অনল বাস করেন, এই জন্ত ক্ষ্ড, নিষ্ঠীবন, দক্ষোভিছেই, অন্ত ও পতিত-দিগের সহিত আলাপে দক্ষিণ ধ্বাবণ, স্পর্ণ ক্রিতে হর। ( भन्नाभन ) + > • छेनत, अक्शेष्ठ, नतन । >> नमर्थ, मक्स्, निश्र्ष । > २ छेर्जंदित विभन्नी छ, मक्सिश्ति ।

এই শক্ষণিক্ দেশাদি ব্যবস্থাতে সর্বনাম অর্থাৎ শক্ষরণে সর্বন্ম শক্ষের স্থায় রূপ হইবে। অক্সত্র, অর্থাৎ বেখানে বিশ্বনাম শক্ষের স্থায় রূপ হইবে। ক্ষিণা এই অর্থ সেই স্থলে আকারান্ত শহলর স্থায় রূপ হইবে। দিকিণকালিকা (ত্ত্বী) ক্ষিণা অস্ত্র্লা কালিকা। আভাশক্তি, যিনি শিবের হলবে দক্ষিণচরণ গুত করিয়াছেন, শিবহানের দক্ষিণপাপণশীলা কালিকাদেশী। [গ্রামা ও দশং মহাবিত্যা দেখা]

দিক্ষিণগোল (পুং) দক্ষিণ: গোল:। বিষ্বরেখা হইতে
দক্ষিণস্থিত তুলাদি ৬টা রাশি। তুলা, বিছা, ধহু, মকর,
কুন্ত ও মীন এই ৬টা রাশির নাম দক্ষিণগোল। ইহারা
বিষ্বরেধার দক্ষিণদিকে অবস্থান করে।

"नरमां भारतारनां अपनः यमाणः

যাম্যোহপরং সামনভাগভানো:।" (সি॰ শি॰) . দক্ষিণ্তস্ (অব্য) দক্ষিণ অভস্ত্ (দক্ষিণোভরাভ্যামতস্ত্। পা ৫।২।২৮) দক্ষিণদিকে। দক্ষিণ-ভসিল্। ২ দক্ষিণভাগ।

"পুনর্দকিণত: কুর্য্যাৎ পূর্ব্বৎস্থরপূজিতে।"

(মহানির্কাণত ৩।৪৮)

দক্ষিণ্ডস্কপৃদ্ধ (অি) দক্ষিণতঃ শিরসো দক্ষিণে ভাগে কপর্দশচুড়া যন্ত। দক্ষিণভাগ চূড়াযুক্ত। "খিত্যঞো মা দক্ষিণতস্বপর্দাঃ" (ঋক্ ৩৩।১) 'চূড়াকর্ম্মণি দক্ষিণভো বশিষ্ঠানামিতি ক্ষ্মাতে।' (সায়ণ)

দক্ষিণতার (ক্রী) দক্ষিণং তীরং। দক্ষিণতীর। দিক্ শব্দের উত্তর তীর শব্দের হানে বিক্রো তার আদেশ হয়। দক্ষিণ-তারং দক্ষিণতীরং, উত্তরতীরং উত্তরতারং' ইত্যাদি (পাণিনি) দক্ষিণতীর (ক্রী) নদী প্রভৃতির দক্ষিণ্য তীর।

দ ক্ষিণত্র। (ত্রী) দক্ষিণ বেদে নিপান্তনাং তা। দক্ষিণভাগাদি। "ধিষবজ্ঞং হস্ত আ দক্ষিণতাভিঃ" ( ঋক্ ৬।১৮।৯)

দক্ষিণিদিক্ (জী) দক্ষিণন্থ দ্বিক্। মেক্স হইতে বিপ্রকৃষ্ট দিক্। পূর্ব্ব প্রভৃতি দশদিকের অন্তর্গত এক দিক্। উত্তর-দিকের নিপরীত দিক্। এই দিকের অধিপতি ভৌম।

"হুর্যাঃ সোমঃ ক্ষমাপুত্রঃ সৈংহিকেয়ঃ শূনিঃ শুশী। সোমাজিদুশমন্ত্রী চ প্রাচ্যাদিদিস্থীখরাং∖ু/ক্যোভি॰ ভ॰)

"ফুতে নিষ্ঠাবনে চৈব দভোচ্ছিতে তথানুতে।
 পতিতানাক সন্তাবে দক্ষিণং জ্বৰণং স্পৃদেধ।
 ক্রমাবিকুক্ত ক্রফ্রত সোরং সূর্ব্যাহ্নলন্তব।।
 তে সংক্রি চালি তিওঁতি কর্ণে বিপ্রক্র দক্ষিবে।"(পর্যাশর)

পূর্ব্বে স্থ্যদেব যথাবিহিত যজ্ঞান্ত্রীন করিয়। এই দিক্
শুক্ত কণ্ডাপকে দক্ষিণাশ্বরূপ প্রদান করেন, সেই অবধি
এই দিক্ দক্ষিণ নামে প্রিসিদ্ধ হুইয়াছে। [দিফ্ দেখ।]
দক্ষিণদেশ [দাক্ষিণান্ত্য দেখ।]
দক্ষিণপুরীণ (ঝি ) শকট্রে দক্ষিণভাগের ধুরাযুক্ত।
দক্ষিণপুরী আতি, পরস্তা পশ্চাদাদেশঃ। নৈশ্বিকোণ।
দক্ষিণপুর্মিণ আতি, পরস্তা পশ্চাদাদেশঃ। নৈশ্বিকোণ।
দক্ষিণপুর্মিণ (য়ী) দক্ষিণভাঃ পরায়াশ্চ দিশঃ অন্তরালা
দিক্, ততঃ পুর্ব। নৈশ্বিকোণ।

"কথা ভূরতশার্ক শু দিশাং দক্ষিণপশ্চিমাং।" (ভারত মহাপ্রস্থান ১ আং ) (আি ) তদেশবাসী, বাহারা নৈশ্তিকোণে বাস করে।

"দক্ষিণপৃতিমে দক্ষিণং।" (আরণ গৃং ১।২।১৩)
দক্ষিণপৃথ্য কি (তি) দক্ষিণপঞ্চাল সম্বন্ধীয়। [পঞ্চাল দেখা]
দক্ষিণপূর্বা (ত্রী) দক্ষিণভাঃ পূর্বভান্চ দিশোহস্তরালং ইতি
সমাস: (দিঙ্নামান্তরালে। পা ২।১।২৬) ১ পূর্বদক্ষিণকোণ,
আর্মিকোণ। (ত্রি) ২ অগ্নিকোণছিত। "দক্ষিণপূর্ব উদ্ভান্ত
আহবনীরং নিদধাতি" (আর্মণ গৃং ৪।২।১১)
দক্ষিণমান্স (ক্রী) গ্রাহিত ভীর্থবিশেষ।

"তক্ত দক্ষিণভাগে তু তীর্থং দক্ষিণমানসং।
দক্ষিণে মানসে চৈব তীর্থকেম্দান্তবং॥" (বার্পু॰ গ্রামা॰)
তাহার দক্ষিণভাগে দক্ষিণমানস ভীর্থ, এই দক্ষিণমানস
তীর্থে তিনটা তীর্থ আছে।

দক্ষিণমার্গ (পু:) > তল্তোক আচারতেদ। ২ পিত্যান নামক মার্গভেদ। শনির্বিগ্লোহ্র: দক্ষিণমার্গেণ গতানত লক্ষণেন" ( স্পোপনিষদ্ভায়া ° )

দক্ষিণ্মের (পুং) দক্ষিণ কেন্দ্র। (The south-pole)
দক্ষিণরাড় (ত্রী) রাচের মকিণাংশ। [রাচ দেখ।]
দক্ষিণরাড়, স্কারবনের প্রদিদ্ধ বনদেবতা, বালালার দক্ষিণাংশ বেধানে বন জলল অধিক, যেধানে বাবের ওয় বেশী,
সেইধানেই এই দক্ষিণরায়ের পূজা হয়। ইনি ব্যান্তলাতির
অধিষ্ঠাত্রী পেবতা বলিয়া গণ্য। মললী, মউল্যা, বুনো
প্রভৃতি নীচ জাতি দক্ষিণরায় ও কালুরায়ের বড় ভক্ত।
ব্নোরা যধন স্কার বনে কাঠ কাটিতে যায়, দক্ষিণরায়ের
পূজা না দিয়া কেহ বনে প্রবেশ করে না। ভায়মঞ্ছারবার
ও মাতলা অঞ্চলে যেধানে ঘেধানে আবাদ আছে, সেইধানে
দক্ষিণরায়ের পূজা হইতে দেখা যায়। উচ্চ শ্রেণীর হিন্দুর

মধ্যে ইহার পূলা সেরপ প্রচলিত না থাকিলেও বহা হৈতে দক্ষিণরায়ের পূলা নিয়প্রেণীর হিন্দুর মধ্যে আচার আছে। বাজালার দক্ষিণাঞ্চলের মুসলমানেরাও कै। গালির ভার দক্ষিণরায়কে বিশেষ ভরভক্তি করে সমরে সমরে স্মরে পূলা দের।

মাধবাচার্য্য, ক্রফরাম প্রভৃতি অনেক বাদালা হা দক্ষিণরাবের লীলা অবলম্বন করিয়া অনেক প্রম বিধি গিয়াছেন, তল্মধ্যে নিমভাগ্রামনিবাসী ক্রফরামদানের রা মঙ্গল উল্লেখযোগ্য, «এখনও অনেক স্থানে এই রারম্মণ্র পালা গান হইতে শুনা যায়। রায়মঙ্গলের প্রারম্ভে দ্দি-রায়ের এইকাপ স্তব আছে—

"করবোড়ে মহাকায়, বন্দিলাম দক্ষিণরায়, ঠাকুরের চরণক্ষণ। সঙ্গে নীলাবতী রাণী, পঞ্চপাত্র সাথে আনি, **डे**त्रघटि ङक्ज्वरम्ग ॥ . তোমা विना প্রভূকেই, যারে যাহা কর এই, আমল আঠারভাটী। वरह होता वाच रचाड़ा, शतिधान मिवारबाड़ा, উড়নী যুড়নী পরিপাটী ॥ বেদবার ভাড়বালা, কনকের কণ্ঠমালা, कु थन डेब्बन इहेकारन। ঐরিদন্ত অচিরাৎ, কঠিন কামান হাভ, ভরকচ পরিপূর্ণ বাণে॥ পরিসর পিঠে ঢাল, করে থর ভলআর, . काठाति (कामस्त्र करत्र ছूति। স্তবে যার কোপী বাগে, হ্বনি ভনি ভাগে ভাগে, মনোহর মুকুভার ঝুরি॥ সোণার বরণ তমু, অখিনী ডাগর জামু, নিশামণি আননবিজয়। বিশাল লোচন জোর, প্রবণ অবধি ওর, চাহনি চমকে রিপুচর ॥ नग नाग मधु व्यात, "त्रवी कृता व्यक्तिता, . यडेना मनकी करत (नवा। यक खवा हरण नाम, वाहि नं छान याम, त्रांग् विना वत्र (एव क्वा। পূজা ক'রে এক মনে, কাঠ কাঠে গিয়া বনে, বাউল্যা বউল্যা কড ঠাঞি। পাইলে নাহিক খার, বাবেরা বিষুধ যার ভোষার ঐপায় ভর নাঞি॥

ডিলা কল গোটে আর নৌকা কত পরকার যথায় তথায় কারথানা। क्षेत्रम श्कारण रह, नहित्य किहूरे नह, অহুভব ক্তঠাঞি জানা॥ अवस्य वानारे मात्न, जान मरू (म त्य जातन. কর্মভোগ সকলের গোডা। কুম্বীরেতে ধরে গালে, কিবা কোপে ঘাড় ভালে, क्रविया हैं। किया (म ७ (घाए)। বড় গাঁ গাজির মাথেঁ, মহায়ুদ্ধ থনিয়াতে. দোস্তানি হইল তার পর। কালুরায় বন্ধ বটে, সোয়ার ঘোড়ার পিঠে, এক মনে পুজে কত নর॥ त्रान परन त्राक्षशात, मन्छ व्यानन गरने, তোমার দেবকে ছথ কিবা। বলে কবি ক্ষায়াম, নারকের পুর কাম, গায়নে রায়নে বর দিবা ॥" তংপরে কবি ক্লফরাম দক্ষিণরায়ের মুখে তাঁহার এইরূপ পরিচয় দিয়াছেন-

> "মুনি মুথে গুনিয়া নূপতি প্রভাকর। সদাশিব সেবিয়া পাইল পুত্রবর ॥ আপনি হইতু গিয়া ভাছার নন্দন। বদাইল নবরাজ্য কাটিয়া কানন॥ বিবাহ করিত্ব ধর্মকৈতুর কুমারী। দম্পতি কৈলাসে গেন্থ যোগে তমু ছাড়ি n হর বরে দক্ষিণের ঈশ্বর হইয়া। 'প্রথমে লইমু পূজা পাটনে ছলিয়া। কালুরায় পাঠাইল হিজলী সহরে। না মানে আমার তরে নরসিংহ নরে॥ মারিয়া তাহার পুত্র দিছ বিষাইয়া। यञ्जल शृक्षिण वह विनिधा । विष्पर्द (प्रवृष्ठ नाम म्राशंत्र। বছদিন বন্দী ছিণ তুরঙ্গ সহর॥ পুষ্পদত্ত তার পুত্র আমার বচনে। সাত ডিকা লইয়া গেল পিতা অংশ্বংণে॥ পথেতে ছলনা দেখি রাজারে কহিল। . না জানিয়া নরপতি কাটিতে লইল॥ मत्रत पात्रन टेकन माध्य सम्मन। সকটেতে আমি গিরা করিত্ব রক্ষণ॥ वाच गहेशा व्याशनि नचरत्र निरू हाना।

বিহু স্থাত রাজা আর যত সেনা ।
রাজারাণী আসিরা অনেক কৈল তব।
বিরাইনা দিছ আমি কুপা অহতব।
রস্থাবতী তনরা সাধুরে বিভা দিল।
পিতাপুরে ছইজনে দেশেরে আইল।
করিয়া আমারে প্রী আমার মন্দির।
যতনে প্রিল পুস্পান্ত মহাধীর।
এমনি প্রকারে কর আমারণ্মকল।
এতেক বলিয়া রায় গেল নিজ্বল।"

উপরে দক্ষিণরায়ের যে সমস্ত কথা উচ্ত হইল, তাহাতে এই বোঝা যায়, যে প্রভাকর নামে এক রাজা ছিলেন, তিনি বন কাটাইয়া রাজ্য হঃপন করেন। তিনি মহাদেবের পূজা করিয়া দক্ষিণরায়কে প্রাপ্ত হন। দক্ষিণরায়
আঠায়ভাটীর রাজা হইয়াছিলেন। কালুরায়ের কথায় তিনি
হিজলীতে গিয়া নরসিংহকে শাসন করিয়াছিলেন। খনিয়া
নামক স্থানে বড়গাঁ গাজির সহিত তাঁহার মহাযুদ্ধ হইয়াছিল,
তার পর উভয়ে বন্ধতা স্থাপিত হয়।

বড়খা গাজির প্রসক্ষ থাকায় জানা যায় যে, যে সময়ু वानावात निक्रिवाक्षरण मूननभारनता श्रावन हिंग, त्मरे ममय দক্ষিণরায় আনবিভূতি হইয়াছিলেন। তিনি বেখানে রাজভ क्तिएजन, जाहाँ हातिनिटक वार्षत्र वक उर्शां हिन, কিন্তু তাঁহার প্রতাপে বাঘে কাহারও অনিষ্ট করিতে পারিত না, এই জন্ম নীচলোকেরা তাঁহাকে ব্যাঘারোহী ও ৰাঘের রাজা বলিয়া অভিশয় ভয় ভক্তি করিত। কবি কৃষ্ণরাম লিথিয়াছেন, বড়গাঁ গাজির অনুগত ফ্কিরেরা দক্ষিণরায়ের স্মধিকারে গিয়া তাঁহার প্রজাদিগকে উৎপীড়িত করেন, ভাহাতে দকিণরায় কুক হইয়া বড়খা গাঞির সহিত যুদ্ধ করিতে যান এবং মহাযুদ্ধে দক্ষিণরায়ের মাথা কাটা यात्र, † किन्तु देनववत्न काठीमूख स्वाप्ता नार्था। स्मरव মহাদেব আসিয়া উভয়ের বিঝাদ মিটাইয়া দেন এবং উভয়ে পূর্ববং বন্ধুত্বত্তে আবন্ধ হন। (সেই হইতে বালালার मिक्निगंबध्रानात्र निम्राञ्जनीत हिन्सू मूननमारनता वर्ज्या शास्त्रि । দক্ষিণরায়ের কাটামুভের পূজা করিয়া আঁসিতেছে।) যথা---

"কপালে বাজিল গিয়া বজ্ঞসম ঘায় ।
পড়িয়া পীরের ঘোড়া গড়াগড়ি যায়॥
দাঁড়াইল বড়খা বাহন গেল গেরা।
সজোরে ডাকিল বাঘ অরে আও দেরা॥

[†] সাংবাচাৰ্য্য ও কৰিকুক্ষমান লিখিয়াছেন, এই বুদ্ধে উভয় দলে বাঘ ও বাহিনীপৰ আসিয়া সেনায় কাৰ্য্য কৰিয়াছিল।

ক্ষয়ো বড়খা গাজি কসিলা কামান। এড়িলা বিষম বড় বজ্বভুল্য বাণ ॥ অগ্নিবাণ এড়িলেন মহাক্রোধে পীর। পলায় সকল বাঘ পোড়য়ে শরীর॥ হীরাবাঘ অস্থির পুড়িল তার গোঁপ। দেখিয়া দক্ষিণরায় ঠাকুরের কোপ ॥ ১৯ ॥ মহা ভয়কর শেল, ফালা ভার গব্দ বেল, প্রভাপে প্রায় দিবাকর। मिक्निगरमध्भेत्र পতि, शब्धन कतिया चिंछ, এড়ে বাণ পীরের উপর॥ (ইত্যাদি) भियाद्यान त्राचात्र. द्यां वार्व नाहि यात्र, क्रूत्रधां इ नित्रभग्न यम । মারিতে দক্ষিণরারে, ধায় গাজী অনিবারে, বলবস্তা সাহস অসম ৷ (विष्णिक निया गांछ, यांग्रेशंकांत्र वांच कांछे, ফুটারেছে অপর প্রলয়। আকাশে দেখিল দবে, সন্মুথে আসিয়া তবে, হানে কোপ রায়ের গলায়॥ ' কিঞিৎ না করে কার, উপজিয়া তল আর, তথাচ মহিমা তার এই। নেইক্ষণে কিতি পড়ি, মারামুগু গড়াগড়ি, যেমন দক্ষিণরায় সেই। অকালে প্রলয় পড়ে, ঢাল থাড়ায় হহে নড়ে, সাজোয়ার কোপ ঝল ঝল। ক্তি করে টল্মল, হেন বুঝি যায় তল, विकल मकल (प्रवर्ग ॥ ক্রি ক্লফারাম ভণে ছই সিংহ যেন রণে কারে না করিহ অল বোধ। শুন অপ্রপুক্থা ঈশ্র আসিয়াতথা উত্তরিলা ভাঙ্গিতে বিরোধ॥ ২• ॥ অক্লেক মাথায় ফণা একভাগে চূড়া টানা বনমালা শেল শিলি হাতে। ধ্বল অর্দ্ধেক কায় অঙ্গলীল মেঘপ্রায় ু কোরাণ পুরাণ ছই হাতে॥ এইরূপ দর্শন পাইয়া সে ছইজন ধরিয়া পড়িল ছই পায়। তুলিয়া অধিলনাথে বুঝাইয়া হাথে হাথে হইজনে দোন্তনি পাতায়॥ এই ভাঁটি অধিকার সকল দক্ষিণরার

इए। इफ़ि (कन कत्र भीत। কেবা ভোমা নাহি মানে ব্যক্ত স্কল থানে ডাকপাক ছনিয়ার জ্বাহির॥ যেই তুমি সেই রায় বর্কর লোকেতে ভায় ভেদ ক'রে হু:থ পায় নানা। একমাত্র সবে সার যত কিছু দেখ আর সকল এ মিথ্যাকার থেলা॥ বড়খার মায়াকার গোরে কেরামত তার হইবেক লোকে ধ কাম ফতে। रिष्पारन शीरतत नाम वानान मकाम थान যত ফয়তালা নামেতে॥ মায়ামুও এইরূপ मिक्किनरमस्मित्र जुन পুজা করিবেক যত জন। 'বারা' তার থ্যাতি হবে ঠাই ঠাই এই ভবে কোনখানে ম্রতিমোহন ॥" (রায়মগল) পৌষ-সংক্রান্তির দিন দক্ষিণরায় ও কালুরায়ের সহিত তাঁহাদের বাহন ব্যাভ্র ও কুম্ভীরের মৃথায়-মৃঠিরও পুঞা হয়। তাঁহাদের উদ্দেশ্তে ছাগ, মোরগ প্রভৃতি বলি দেওয়া হয়। কোথাও দক্ষিণরায় ও কালুরায় ক্ষেত্রপালরূপে পুঞ্জিত হন। কেছ কেছ বলে, মহাদেব ব্রহ্মার মাথা কাটিলে সেই মাথা হইতে কালুরায় ও দক্ষিণরায়ের উৎপত্তি হয়। पिक्शभाह्यां अश्वतः सम्मा नतीत साहानात्र अकृति शेषः বাধরগঞ্জ জেলার একটা মহকুমা। ১৮৪৫ খুষ্টালে ইহাকে পুথক্ মহকুমা করা হয়। ভোলা ও বরণ উদ্দীন হালদার নামক চুইটা থানা ইহার অন্তর্গত। ভূপরিমার ৬১৫ বর্গ মাইল। ইহাতে ৪০৮ থানি গ্রাম আছে। কথিত আছে যে ১৮৭৬ খুষ্টাব্দে ৩১শে অক্টোবঁর তারিং যে ভন্নকর ঘূর্ণীবায়ু প্রবাহিত হয়, তদ্বারা ললিত থা নামক এই মহকুমার প্রায় সমস্ত লোক বিনষ্ট হইয়াছিল। দক্ষিণ্সদ ( অ ) দক্ষিণভাগে স্থিত বা উপৰিষ্ট । দক্ষিণসমূদ্র (পুং) দক্ষিণ: সমুদ্র: কর্ম্মণ । দক্ষিণদিক্রিট नमूख, नवननमूख। দক্ষিণ্যন্ত ( অ ) দক্ষিণে ভাগে ভিঠতি স্থা-ক। ১ সার্থি। ২ দক্ষিণভাগস্থিত। मकिना (बी) पक्निन-छान्। > पक्निनिक्। नर्धात अवाति, শামনী, যামী, বৈবস্থতী। (রাজনিং) "निक्निक्शी शक्कदरः मूर्यन वानीक्रियात्रियारमण्डिः"

( কুমার অং৫ )

मिक्कि पिरक त्रा वा अ - विष्कृतम् अ, हक्त विष्क् वि

বনবৰ্দ্ধক, রক্ত শিন্ত নাশক, স্থা, কান্তি ও বৃদ্ধিৰ বিক, শক্তনাশক, বিদাহী, অল্প ও বায়ুবৰ্দ্ধক। পাঙ্গুণদ প্ৰভৃতি কীটজনক। (ক্ৰবান্তণ) এই দিকের অধিপতি বৃহ, কলা ও
সক্ররাশি। (জ্যোতিস্তন্ধ) ২ যজ্ঞানিবিধি দান। ০ প্রতিষ্ঠা।
৪ যজ্ঞানিক প্রাবসানে আন্ধানিগকে যে বিহিত দান করা হয়;
শ্বিকের পারিশ্রমিক, পূজা প্রভৃতি সমাপন করিলে
প্রোহিতকে অল্ডে যে দান করা যায়, তাহাকৈ দক্ষিণা
কহে। দানযক্ত ব্রত প্রভৃতির দক্ষিণা না দিলে, তাহা ভ্লে
স্বাহতির শ্লার নিফল হয়। এই জ্লে প্রত্যেক কার্যায়সানে
দক্ষিণা দেওয়া কর্তব্য।

"অদন্তদ্দিশং দানং ব্রতকৈব নূপোত্তম।
বিফলং তছিকানীয়াজনীব হৃতং হবি: ॥" (ভবিষ্ণপুশ্ )
ভচি হইয়া ভজিপুর্বক দক্ষিণা দিতে হয়। যদি কোন
গতিকে দক্ষিণা না দেওয়া হয়, তবে দক্সই নিজ্ল হয়।
দানের মধ্যে সুবর্গই শ্রেষ্ঠ, এই কাষ্ট সকল দানেই স্বর্ণ দক্ষিণা
দেওয়া কর্তব্য।

শুবর্ণং পরমং দানং সুবর্ণং দক্ষিণা পরা।
সর্কেরামের দানানাং সুবর্গং দক্ষিণেয়তে॥" (ব্যাস)
কতকগুলি দানে গোবস্তাদি দক্ষিণার বিধান আছে,
কিন্তু সেই সেই স্থলে গোবস্তাদিই দক্ষিণা দিতে হইবে।
বেখানে কোন উল্লেখ নাই, সেই স্থলেই স্থবর্ণ দক্ষিণা প্রশন্ত। সকলের মধ্যে স্থবর্ণ শ্রেষ্ঠ, এই জন্তু স্থবর্ণং
দক্ষিণেয়তেও ইংলিখিত হইয়াছে।

" স্বৰ্ণং রজতং তাম্রং ত গুলং ধান্তমেব চ।
নিত্যপ্রাদ্ধং দেবপূজা সর্কমেব দ দক্ষিণং ॥" ( কলপূং)
নিত্যপ্রাদ্ধং দেবপূজা প্রভৃতি স্বর্ণ, রজত, তাম, ত গুল, ধান্ত
প্রভৃতি সঁকলই দক্ষিণা হইতে পারে। দের দ্রব্যের তৃতীরাংশ
দক্ষিণা দিতে হয়। আবার বে দানের দক্ষিণা উক্ত হয় নাই,
তাহার দশাংশ বা শক্তি অফুসারে দক্ষিণা উিতে হইবে।

"দেরজবাত্তীরাংশং দক্ষিণাং পরিকরমেং।

অম্বরু দক্ষিণে দানে দৃশাংশং বাণি শক্তিত: ॥" (ছলপুণ)
তুলাপুরুষ প্রভৃতি দানে দক্ষিণা শতাংশ বা তদক্ষ প্রদান

করিবে এবং ঋত্তি দক্ষিণ দেনিক প্রদান করিবে।

বিজ্ঞান দক্ষিণার সহিত কর্মিদিগকে ফল প্রদান করে। কার্য্যা-

* "যজে। দক্ষিণরা সার্দ্ধং পুরোণ চ্কুলেন চ ।
কর্মিণাং ক্লবাতা চেতোবং বেদবিদো বিচ্নঃ।
কৃষা কর্ম চ তাজৈব তুর্ণং ব্যাক্র দক্ষিণাং।
তৎকর্মকলমাগ্রোতি বৈদেক্সক্রমিদং মুনে।
ক্রী কর্মিণ পূর্ণে চ তৎক্ষাং ব্যি দুক্ষিণাং।

गण्नम रहेरणहे पिक्रणा पिरत, ना पिरण ध्यां कर वृद्धि हत । कर्य मुन्तृ हरेल मूहर्खकान यापा ना नितन विश्वन त्रिक, একদিন স্বতীত হইলে শত গুণ, তিম দিন স্বতীত হইলে তাহার দশগুণ, একমাদে লৃক্ণণ ও এক বংসর গত रहेरण जिरकां रिश्वण वृद्धि रह विषय स्वभारतत रहे कर्म নিফল ও কর্মকর্তা। ত্রদ্রাপহারী হয়। লক্ষী শাপ দিয়া তাহার গৃহ হইতে চলিয়া যান। তিনি দরিদ্র ব্যাধি-যুক্ত হইয়া কণ্টে কালাভিপাত করেন এবং তাহার দও শ্রাদ্ধতর্পণাদি তৎপিতৃগণ গ্রহণ করেন না। যঞ্জমানের দক্ষিণা দিতে বিলম্ব হইলে পুরোহিত দক্ষিণা চাহিবেন। नटहर छे**ड स्त्रत्रहे नत्रक मार्ड इम्र। एकिना हाहित्म श**त्र यिन यक्रमान ना (एन, जाहा हहेटन • जिनि बक्तवाशहाती जुना পাতকী এবং নিশ্চন্ন তাহার কুম্ভীপাক ভ্রমণ ঘটে এবং তথায় যমদুতের তাড়না সহু করিয়া লক্ষবর্ধ বাদ করিতে হয়। তৎপরে চণ্ডাল হইয়া জ্লাইতে হয় এবং সর্কা ব্যাধিযুক্ত ও দরিক্ত হইতে হয়। তাহার পাপে সপ্তম পুরুষ পর্যান্ত নিরয়গামী হন। (ত্রহ্মবৈবর্ত্ত)

দক্ষিণা ঘজ্ঞের পত্নী, কার্ত্তিকী পূর্ণিমার রাস্ মহোংস্বের । দিনে আফ্রিফের দক্ষিণাংশ হইতে ইহার উৎপত্তি হয়, এই জন্ম ইহার নাম দক্ষিণা।

> নাদখ্যাদ্রাক্ষণেভ্যক দৈবে জানভোহণবা। মৃহুর্ত্তে সমতীতে ভু বিশুণা দা ভবেদ্ধবং। একরাত্রে বাভীতে তুভবেৎ শভগুণাচ সা। বিহাতে তদ্শগুণা সপ্তাহে বিগুণা ততঃ। मारम् गक्त छ्वार शास्त्र। जाक्रवामाक वर्ष र उ। সংবংসরে ব্যতীতে তুসা আমেকাটিওণা ভবেৎ वर्षा छन् यवमानानाः मर्सकं मिचनः छत्वर । म ह अक्रवागहाती न क्यार्टिश्चितितः। प्रतिक्षा व्याधिषुक्षक (ठन भारभन भाउकी। ভদ্যুহাদ্যাতি লক্ষীক শাপং দতা হাদারণং। পিভরো নৈৰ গৃহান্তি তক্ষতং আত্মতর্পণং। এবং সুরাক্ত তৎপূঞ্জাং ডক্ষন্তামরিরাহতিং। দাতাৰ দীয়তে দানং এহীতাচৰ ঘাচংত। छि**छो (छो नइकः वाछिन्छित्रअक्टः यथा घ**छै: । মাৰ্ণয়েদ্যলয়।মশ্চেৎ ৰাচিভায়ক দকিণাংঁ। क्टबम्बक्षयागरात्री क्षीगामः ब्रह्मम्अनः । বর্ষসক্ষং বলেভত্ত বসপুতেন তাড়িত:। ভতো ভবেৎ স চাতালো বাংবিবৃত্তো ছরিভ্রক: । भारतार भूक्यान् मध भूकाः क मधक्यायः ॥"

( उष्मदेशनर्ख श्रकुष्टिशः )

"কার্ত্তিকী পূর্ণিমায়াত্ত রাবে রাধামহোৎসবে।
আবিভূতা দক্ষিণাংশাৎ কৃষ্ণতা তেন দক্ষিণা ॥" ( একাবৈবর্ত্ত )
দক্ষিণার অপর নাম দীকা, ইনি সকল কংলেই পূজিত
হন। এই দক্ষিণা ব্যতী্ত বিখের সকল কর্মা নিম্মল।
(ভাগবত্ত)

নায়িকাবিশেষ। নায়ক অস্ত নায়িকার প্রতি আসক
হইলে যে নায়ী পৃর্পের ভায় নায়কের প্রতি গৌরব, ভয়,
'প্রেম, সম্ভাব প্রভৃতি পরিত্যাগ করে না, তাহাকে দক্ষিণা
নায়িকা কহে।

"যা গৌরবং ভরং প্রেমসভাবং পূর্বনায়কে। ন মুঞ্ত্যন্তশক্তোহিপ সাঁ জেলা দক্ষিণা বুবৈ:॥" (বিষ্ণুপ্রাণটীকার খামী)

দি ফিণাংশাব্র শিন্ (পুং) দক্ষিণাংশে দক্ষর কে বণোহত্যত ইনি। দক্ষিণস্ক হিত ব্রণ্যুক্ত, যাহার দক্ষিণস্ক কে ব্রণ (ক্ষত) কাছে। পিতৃত্ব কুগমন করিলে এই রোগ হয়, এই রোগ হইলে অজাদান ধারা ইহাধ শাস্তি করিবে।

পিতৃত্বস্রভিগমনাৎ দক্ষিণাংশ্রণী ভবেৎ। তেনাপি নিৃষ্ঠি: কার্য্যা অঞ্চাদানেন শক্তিত: ॥" ( পরাশর ) দক্ষিণাকপদ্দ (পুং) বৃষষ্ঠি। (বেদ)

দফিণাকাল (পুং) যে সময় দক্ষিণা দিতে হয়।

দি ক্ষিণ্ঠির (পুং) দক্ষিণোহয়িঃ। যজ্ঞানিবিশেষ, দি দিকে যে অগ্রিস্থাপন করা হয়, তাহার নাম দক্ষিণাগি।

দিক্ষিণাতা (পুং) দক্ষিণস্থাং অগ্রমন্ত। দক্ষিণ দিগ্ভাগস্থিতাগ্র কুশাদি, যে কুশাদির অগ্র দক্ষিণ ভাগে অবস্থিত থাকে। "অথ যান্তম্মুলীচীনাগ্রাণি তুণানি ভবস্তি দক্ষিণাগ্রাণি তানি করোতি।" (শতং বাং ১২। ৫। ১। ১২) '

দক্ষিণাচল (পুং) দক্ষিণা দক্ষিণভাং দিশি দক্ষিণে দক্ষিণ-প্রাদেশে বা স্থিতোহ্চলঃ পর্বান্ত। মলর পর্বান্ত।

দক্ষিণাচার (পুং) দক্ষিণ: অপ্রতিক্ল: আচার:। তল্পেক আচারভেদ। অধ্যনিরত্ত হইয়া পঞ্চত হারা পুঝা করিবে, এইরূপ আচরণ করিবে দক্ষিণাচার হয়, এই আচারে অয়ং শিবস্থরূপ হুইয়া শিবাকে পুঞা করিবে। •

> "অধ্যোনিরতোভূষা পঞ্তত্তেন পুক্রেং। সূত্র দীক্ষণাচার: শিবো ভূষা শিবাং য**কেং**॥" ( **আচার**ভেদত্ত )

ইহাতে এই মাত্র বিশেষ, মল্ভহানে বিজয়ারস দিতে হইবে। বিজয়ারসও পঞ্চমকারের একটা। "চতুর্মকারা: সজ্যেব পঞ্চমোবিজয়ারস:।"

(জাচারভেদভর)

এই আচার বামাচারীদিগের স্থায় অভি কঠোর ন। ইহা বিশুদ্ধ বৈদিকাচার সদৃশ।

> "ৰক্ষিণাচারভয়্রোক্তং কর্ম্মভচ্ছুছবৈদিকং।" ( দক্ষিণাচারভন্ত )

দক্ষিণোহ্মুক্ল: সাধুরাচারো ব্যবহারো যস্ত। (। ২ শিষ্টাচারবিশিষ্ট। দক্ষিণা দক্ষিণস্তাং দিশি চারো গভিত্র ও দক্ষিণদিশ্ গভিশালী, যাহার গভি দক্ষিণ দিকে।

দক্ষিণাজ্যোতিস্ (পুং) দক্ষিণা দক্ষিণভাং জ্যোতিরঃ পঞ্চোদন ছাগভেদ। "যোহজং পঞ্চোদনং দক্ষিণা জ্যোভি দদাতি।" (অথক্ডি। ৫ । ২২)

দক্ষিণাত ( অবু) দক্ষিণভাং দিশি, দক্ষিণভা দিশং দক্ষি বা দিক্ দক্ষিণা আতি ( উত্তরাধরদক্ষিণাদাতিঃ। পা ৫।০০৯ ১ দক্ষিণ দিক্'। ২ দক্ষিণদিকে। ৩ দক্ষিণ দিক্ হইতে। দক্ষিণাভিকা ( ত্রী) বৈতালীয় ছন্দোভেদ, ইহা মাআর্ বৈতালীয় মাআর্ক্ত প্রথম ও তৃতীয় চরণে ১৪ মাআ, দিৱাঁ ও চতুর্ধ চরণে ১৬ মাআ হয়।

শ্রজ্বিষমেৎটো সমে কলান্তাশ্চ সমোস্থানো নিরন্তর। নস্মাত্রপরাশ্রিতা কলাবৈতালীয়েৎন্তে রলৌ গুরু:॥"
(বন্তর্তাণী

কিন্ত, ইহার মধ্যে প্রভেদ এই যে, যদি দিতীয় ও চ্চা মাজার মধ্যে একটা গুরু হয়, তাহা হইলে এই দক্ষিণ গুরুকা মাজার্ত্ত হইবে, আর আর সকল পুর্ব্বোক্ত বৈতানি কের ভাষা। "তৃতীয় যুগ্দক্ষিণান্তিকা" (বৃত্তরত্বাণ)

'যদি তৃতীয়যুক্ দ্বিতীয়মাত্র। তৃতীয়মাত্রাভ্যামেকো ওক্তে শেষং নৈতালিয়বৎ তদা দক্ষিণান্তিকানামছক্ত্র:। (বৃত্রণটিলা দক্ষিণাপথ (পুং) দক্ষিণা প্রছা: অচ্ সমাস্তান্তঃ। দেশতে অবস্তী ও ঋষ্য পর্বত অতিক্রম করিয়া দক্ষিণাপথে অনেক ওি পথ গিয়াছে, এই বিদ্ধা পর্বত ও সমুদ্রগামিনী পয়েফি নবী এই হলে মইঘিনিগের আশ্রম ও বিদর্ভনিপের পর, ইয় কোশলনিকে গিয়াছে, ইয়ার পর দক্ষিণনিকে যে দেশ, তায়া নাম দক্ষিণাপথ। (ভারত ৩/১৬ অং)। [দাক্ষিণাত্য দেখা]

"এব পদা বিদর্ভাগামনী গচ্ছত্তি কোশলাং। অক্তংপরঞ্চ দেশোহরং দক্ষিণে দক্ষিণাপথং॥"(ভারং ৩^{)১৬ বা)} ২ দক্ষিণান্থিত মার্গমাত্ত, দক্ষিণদিকে অবস্থিত পণ। "কৃষণান্ধিনানি ধুষত্তঃ অয়মেব দক্ষিণা পণং যান্তি" (আমুণ শ্রেণি ৫ । ১৩ । ১২)

मिक्यां शिक्षक ( वि ) मिक्यां गर्था रुख वासिएन आवार एवन वा ठेन्। > मिक्यां श्वाप्त वा त्री, मिक्यां श्वर प्रदान हो वी मिक्यां श्वर स्वाप्त स्वाप्त । "ब्राटक हारक ह नरहनी स्थितीशिधिकान् श्री है" ( स्त्रिवरण ১১ ख॰)

দক্ষিণাপরা (ত্রী) দক্ষিণারা অপরারা দিশোহন্তরালা বিক্।
১ নৈর্ভ কোণ। "নক্ষিণপূর্বভাগে দিশি দক্ষিণপরভাগে বা"
(আবণ গৃণ ৪।১৩) (ত্রি) ২ তৎসংছিত। দক্ষিণারাং পরঃ।
হক্তপূর্ত্তির অন্ধ প্রয়াদানরূপ দক্ষিণা ক্রিরাভংপর।
দক্ষিণাপ্রবণ (ত্রি) দক্ষিণা দক্ষিণতাং প্রবণং নিরং। উত্তর
অপেকা করিরা দক্ষিণদিকে নির্মা, প্রাথাদি প্রদেশ।
দক্ষিণপ্রবণ হান প্রাথাদি হার্যে প্রশত্ত।
শতিদেশং বিবিক্তর্ক গোমরেনোপনেসরেও।
দক্ষিণাপ্রবণকৈর প্রয়ামেরেনোপনেসরেও।
দক্ষিণাপ্রবণকৈর প্রয়ামেরেনাপনাদরেও।
প্রাথাদিক্র করিরা ভাষা গোমর হারা উপলিপ্ত করিবে।
বেই হানটা যদি স্থাবতঃ দক্ষিণাদকে ক্রমানত না হর।
ভাষা হইলে যর সহকারে ভাষাকে দক্ষিণাননত করিতে হইবে।
"দক্ষিণাপ্রবণং" (কাত্যাং প্রৌণ ২২। ৩। ৩) 'দক্ষিণাপ্রবণং/
দেব্র ফনং ভবতি।' (কর্ক)

দিক্ষণাপ্রস্থি ( গং ) ধ্ব্যাপেক্ষর প্রকৃষ্টং দেশমন্ত্রোতি প্র-জন্দ কিচ্ দক্ষিণা দক্ষিণভাগে প্রাষ্টঃ বাফঃ। ধ্র্য মধ্য দক্ষিণ দিক অথডেদ। প্রাক্ত ও প্রকৃষ্ট দেশস্থিত অথভেদ। "দক্ষিণাপ্রাষ্টং কবো বস্ত ইভি।" (কাত্যাং প্রৌং ১৪ ১৯ ১৮ ) 'রণে তৃতীয়ং অথং ব্নক্তি ধ্র্যাপেক্ষরা প্রকৃষ্টং দেশং আলো-তীতি প্রাষ্টির্বাহ্যায়াং" ( সং ব্যাং )। ২ দক্ষিণস্থিত প্রাষ্টি সদৃশ অথ। "অথ দক্ষিণাপ্রস্তিং ব্নক্তি স্বাপ্রস্তিং বা" (শৃত-প্রবাং , ৫।১।৪।৯) 'প্রেষ্টির্নাম পাদ্রব্রোপেতেরু ভোক্ষন-পার্রাধিকাধারঃ।' (ভাষ্যুং)

দিক্ষণাব্দ্ধি (পুং) দক্ষিণাগাং ৰদ্ধং অন্তবন্ধঃ। গৃহস্থপাভৃতির
দক্ষিণাম্বদ্ধিদ, যাহারা অভিমানপূর্বাক দক্ষিণা প্রদান
করেন এবং যাহারা কাম মোহ প্রভৃতিতে অভিভৃত, এই
প্রকার গৃহত্ব, ব্রহ্মচারী, ভিক্ ও বৈধানস্দিশের সম্বদ্ধই
দক্ষিণাবদ্ধ কথিত হইরাছে। "দক্ষিণাবদ্ধোনাম গৃহত্বক্ষচারিভিক্ বৈধানসানাং কামমোহোপচেত্সাং অভিমানপূর্বিকাং
দক্ষিণাং প্রবহৃতাং দক্ষিণাবদ্ধ ইত্যাচাতে" (ভ্রসার) বদ্ধাবহা, অর্থাৎ বাহাদের অভিমান ভিরোহিত হর নাই, ভাহাদের সম্বদ্ধই বদ্ধাবদ্ধা জানিতে হুইবে।

কিণামুথ (তি ) দক্ষিণা দক্ষিণভাং মুধং যত। দক্ষিণাদি
অ্থ, দক্ষিণাভ। বাহার মুধ দক্ষিণ দিকে থাকে। পূর্ক মুধে
ভোজন করিলে আরু বৃদ্ধি হয় ও দক্ষিণমূপে ভোজন করিলে

নশোলাভ হয়।

"बाइवार खांब्र्टबाक्ब्टक वनकर हिन्तामूबः।" ( मझ )

ক্ষিত্র বাহালের পিতা জীবিত আছেন, ভাহাদের সহজে এ বিধি নেহে। জীবংপিতৃক বলি হক্ষিণমুখে ভোজন করেন, তাহা হইলে তিনি পিতৃহাতী হন। অমাশ্রাদ্ধ, গরা-প্রাদ্ধ ও বক্ষিণামুধ ভোজন, জীবংপিতৃক করিবে না।

"অনাশ্রাজং গরাশ্রাজং দৃক্ষিণামুর্বভোজনং।
ন জীবংপিড্ক: কুর্ব্যাৎ হ্লতে চ পিড্হা ভবেং ॥" (ভিথিতত্ব)
দক্ষিণমূধে পিড্দিগকে তপ্ন ক্রিতে হয়। দক্ষিণ্ডাং

मुष्रः।(क्री) मिक्क्मिनिदक मुथ्।

দক্ষিণামূর্ত্তি ( গং) দক্ষিণা অমুক্লা মৃষ্টি রভ সংজ্ঞাছাৎ ন পুষৎ। শিবমূর্তিভেদ, সাধকশ্রেষ্ঠ প্রতিদিন শিবের দক্ষিণা-মূর্তি ধ্যান করিবে এবং এক বুৎসর ঐ মূর্ত্তি ধ্যান করিলে শাস্ত্রবাধ্যানে সামর্থ্য লাভ হর।

"নিত্যশো দক্ষিণামূর্তিং ধ্যারেৎ সাধকসন্তম:। শান্তব্যাধ্যানসামর্থ্যং লভন্তে বংসরাত্তরে ॥" (তহ্মসার)

ইহার ধ্যান—

"প্রোদ্যচ্ছাধমহাবটজনতলে বোগাসনত্বং প্রভুং
প্রত্যক্তরবৃভূৎস্থভিঃ প্রতিদিশং প্রোহীক্সমানাননং।
মুদ্রাং তর্কময়ীং দধানম্মশং কর্পুরগৌরং শিবং

•

হাদ্যক্ত কলয়ে ক্রম্ত মনিশং শ্রীদক্ষিণামূর্ত্তিকং ॥"

ইনি মহাবট ক্রমতলে যোগাসনে অবস্থিত, অধ্যাত্ম তত্ত্ববিজ্ঞান্থ সকল চারিদিকে তাহার আনন অবলোকন
করিতেছেন এবং তিনি তর্কমুলা ধারণ করিয়া আছেন,
তাহার বর্ণ কর্প্রবং ভল্ল; তিনি সর্কাণা দীধি পাইতেছেন।
এবস্থৃত দক্ষিণাম্ভি মহাদেবকে সভত ধ্যান করিবে। (তল্পার)
সমাস বিষয়ে কপ্ হয়, দেই হলে দক্ষিণমৃভিকে এইরূপ
হইবে।

দক্ষিণামূর্তিমুনি, উদারকোষ বা কোষধ্যাননির্ণয় নামক সংস্কৃত গ্রন্থ প্রবেশ্য।

দ্ফিণায়ন ( রী ) দক্ষিণা দক্ষিণভাং দক্ষিণে গোলে বা অয়নং রবে:। ১ স্থোঁয়ের দক্ষিণাগতি, রবির নিজ অধিষ্ঠিত স্থান অপেক্ষা করিয়া দক্ষিণদিক্ গমন। ২ দক্ষিণ গোলরণ তুলাদি ৬টা রাশিতে গমন।

"ঋতুত্ররঞাপায়নং ছে অয়নে বর্ষগংক্তিতে । কর্কটাদিখিতে ভানৌ দক্ষিণায়নমূচ্যতে ॥" (মলমাসভভু)

হুৰ্ব্য গগনস্তলে প্ৰতি বৰ্ধে আবাচ্নাদের শেষে উদ্ভৱ-দিকে যে কাল পৰ্যান্ত গমন করেন, সেই সীমার নাম উভর ক্রান্তি এবং উদ্ভৱক্রান্তি হইতে বে পর্যান্ত দক্ষিপদিকে গমন করে, ভাহার নাম দক্ষিপকান্তি। এই ছুইপ্রকার গড়ির নাম

IIIV

দক্ষিণায়ন ও উত্তরায়ণ। অর্থাৎ প্রাবণ হইতে পৌৰ্যাস পর্যাত पूर्वा छेखत्रदावा इटेटल मिन्द्रवात शमन कदतन। देशात নাম দক্ষিণায়ন এবং মাখ্যাস হইতে আঘাঢ়মাস প্ৰাস্ত ल्या पिक्वरतथा स्ट्रेट উउत्रद्रिया भर्यास गमन करतन, তাহার নাম উত্তরারণ। এই ছইটা সীমার মধ্যে পৃথিবীর त्य चर्म পण्डिक इय, जांशांत्र नाम मधावंखः। এই वृद्धः ১২ রাশি ও ভাহার অন্তর্গত ১১১৬টা নক্ষত্র দেখিতে পাওয়া . বার। গুগনমগুলের মধ্যথতের উত্তরে যে অংশ তাহাকে উত্তরধণ্ড বলে। তাহার মধ্যে ৩৫ রাশি অর্থাৎ পুঞ্জ তদ্তর্গত ১৪৫৬ নক্ত অবৃহিতি করে। ইহা যুরোপীর জ্যোতির্বেত্তারা নির্দেশ করিয়া থাকেন। ঐ মধ্যপত্তে যে সমুদর অচল নক্ষর আছে, তাহাদিগের ক্তক্তল করিয়া এক একটা আফুভি নির্দিষ্ট করিয়া পূর্বাকালে জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিতগণ বাদশভাগে রাশিচক নামে সীমা চিচ্ছিত করিয়াছেন। ঐ चान्नणी রাশির নাম-মেব, বৃষ, মিপুন, কর্কট, সিংহ, কঞা, তুলা, বিছা, ধয়, মকর, ক্ত ও মীন।

মেষ রাশির প্রথমাংশেই ক্রান্তিপাত হয়। যে ছই দিন ক্রা ঐ রেথায় থাকে, সেই ছেই দিন দিবাও রাত্তিমান সমান হয়।

ি বিষ্বরেধার উত্তরদিকে ৬টা রাশি অর্থাৎ মেব, ব্রব, মিথ্ন, কর্কট, সিংহ, কল্পা ও দক্ষিণদিকে আর ৬টা রাশি অর্থাৎ তুলা, বিছা, ধহু, মকর, কুছ ও মীন তির্যাক্ভাবে অবস্থিত আছে।

পুথিবী স্বীয়ককে ভ্রমণ করিতে করিতে বৈশাধমাদে যথন মীন ও মেষরাশির মধাক্ষলে আসিরা ওপত্তিত হয় অর্থাৎ যে অংশে রাশিচক্রের সহিত বিষ্কুরেথার মিলন হইয়াছে, সেই অংশের সহিত তথন স্থ্যের সমস্ত্রপাত হর এবং মীন ও মৈষরাশি ঠিক ক্রোর সন্মুধবর্তী হয়। এই সময়ে পৃথিবীর নিরক্রত্তের উপর স্থ্রিকি সোলা হইয়া পড়ে। এজন্ত পৃথিবীর সকল স্থলেই সেই সময়ে দিবা ও রাতিমান সমান হর। অর্থাৎ যথন বিষ্বরেধাতে অবহান করে, তধ্ন ভাহার ক্রান্তিশৃত্ত এবং তথন একমের হইতে অসপর মেরু অসবধি গোলকার্দ্ধ আলোকমর হয়। প্র্যোর উত্তরকাত্তি শৃত বৃদ্ধি হইতে থাকে, ততই উত্তরমেক অতিক্রম হইরা সুর্য্যের আলোক বিস্তারিত হইতে থাকে ও দক্ষিণমের আলোক-विहीन इस ध्वर मूर्यात यह मिनकां दि दिक हरें एवं थारक, ভত্ত দক্ষিণমের অভিক্রম করিয়া সূর্ব্যের আবোক বিতা-विड, हत, উভत्रमक कारनाकनृष्ठ इहेशा थारक। एरबान

জান্তির পরিমাণ ২৩° ২৮ । বৈশাধ্যাসে কুর্যা মের বাদিন প্রবেশ করিয়া নিজ্য এক অংশের কিছু ন্যুন গমন করি জৈ।ঠমাসে বৃষ রাশিতে প্রবেশ- করে_। মের _{রাখি} কিঞিৎ পশ্চিম ও ঈবৎ উত্তরে ব্যরাশি **অ**বস্থিত। স্থ নিত্য এক অংশের ন্যুন গমন করিয়া আবচিমা মিথুন রাশিতে প্রবেশ করে। মিথুন রাশি বুর _{রাখি} উত্তরপশ্চিম দিকে ভাবস্থিত। স্থা মিধুনরাট উত্তীৰ্ণ হইয়া প্ৰাৰণমাদে কৰ্কট রাশিতে প্ৰবেশ _{করে} বে স্থানে রাশিচজের সহিত উত্তরক্রান্তি রেথার মিল **ब्हेबाट्ड, त्नहे ज्ञान के निवटन ठिक एर्ट्याब नम्ब**थरही হয়। ইহার পর আবার স্থা উত্তরদিকে গমন করেন এইজন্ত ঐ সময়কে অনুনান্তকাল কছে। স্ব্য এই রাখি: ৩.০ অভিক্রম করিয়া ভালমাদে সিংহ প্রবেশ করে। এই রাশি কর্কট রাশির দক্ষিণপদিঃ ভাগে অবহিত। ইহার পর ক্র্য আমিনমানে কর রাশিতে প্রবেশ করিয়া থাকে। মেষ রাশিতে বিযুষ রেথার সহিত রাশিচক্রের সংযোগ আছে, দেইর তুলারাশিতেও সংযোগ জানিবে। মেষরাশি তুলারাশি হই। ১৮০ পূর। এই কারণে মেষাদি ৬টা রাশি রাশিচজে আছেকভাগ এবং ভুলাদি ৬ রাশি ঐ চক্রের অপরার্দ্ধ খণ স্ব্য কার্ত্তিকমানে তুলারাশিতে প্রবেশ করিয়া থাকে ইহার পর বুশ্চিকরাশি, স্থা এই রাশিতে অগ্রহায়ণ নায প্রবেশ করে। তৎপরে ক্র্য্য ধ্যুরাশিতে পৌষ্মাদে । মাঘমাদে মকর রাশিতে প্রবেশ করে। যে ^{জংগ} রাশিচকের সহিত দকিণকাস্তিরেথার মিলন হুইগাছে ঐ অংশ ঐ দিকে তথ্যের ঠিক, সমুধবর্ত্তী হর এব এই স্থান হইতে স্থ্য আর দক্ষিণদিকে গমন করেনা এই অফ্র এই সময় দক্ষিণায়নাস্তকাল। এই রাশির পর ক্ त्रांभि, कास्त्रनमारम पूर्वा এই त्रांभिटङ श्राटवम करत्। हेश भन्न रुधः टेडबमारम मीन न्नामिरङ **अरवम कर**न्न।

এইরপে পুনরার বৈশাধমাসে পৃথিবী মীন ।
নেবরাশির মধ্যস্থলে আসিরা, উপস্থিত হয়। বির্বরেগা
সহিতৃ যে অংশ রাশিচজের মিলন হইরাছে, বে
অংশ স্ব্যমগুলের সল্পুথবর্ত্তী হওরার সর্পজ্ঞ দিবা ও রাজিরা
সমান হয়। প্রাকৃতপক্ষে স্ব্যাই যে এক রাশি হইরা
অক্ত রাশিতে প্রোক্তরূপে ভ্রমণ করিরা থাকে এমন নরে
সচল পদার্থে অব্যিত হইরা অচল পদার্থের প্রী
দৃষ্টিণাত করিলে ঐ পদার্থের গতিভ্রম হয়। সেই রা
বশতঃই উদ্ধিপ দেখায়।, কলে পৃথিবী উপরোক্তর্কা

এক এক রাণি ছইভে অগর রাশিতে গিরা উত্তরারণ ও
•দক্ষিণায়ন ক্রমে হাদশ রাশিভোগ করিয়া এক বংসরে
পূর্বাকে একবার প্রদক্ষিণ করে। [স্বা, সৃথিবী ও অয়ন
দেখা] দক্ষিণারনে স্ণ্যকর্ম, প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি করিছে নাই।

"বিবাহত্রতবন্ধাদি চূড়াসংকারদীক্ষণং। যজগৃহ প্রবেশাদিদানার্চন প্রভিষ্ঠনং॥ পুঝানি যানি কর্মাণি বর্জহেৎ দক্ষিণায়নে।"

(মলমাসভন্থ)

বিবাহ. : ব্ৰত, চূড়াদিসীংখার, নীকা, যজ, গৃহগ্রবেশ, দান, পূজা, প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি বর্জন করিবে এবং ৰদি মোহ প্রযুক্ত করে, ভাহাতে ফল্লাভ হইবে না।

"দেৰতারামৰাপ্যাদি প্রতিষ্ঠোদলুবে রবৌ। দক্ষিণাভিম্বে কুর্কন্ ন তৎফলমবাগুরাওঁ॥" (স্বতি)

দেবতা, বাপী ও আরাম প্রতিষ্ঠানি উত্তরারণে করিবে, দকিণায়নে ক্রিবে না, করিবে তাহার ফল পাইবে না। কিব দক্ষিণায়নে মাতৃ, তৈরব, বরাহ, মরসিংহ, তিবিক্রম ও মহিষাস্থরহয়ী ইহাদিগের প্রতিষ্ঠা হইতে পারে, ইহা বিশেষ বিধি জানিবে।

"মাতৃতৈ রববারাহনরসিংহ তিবিজমা: 1 মহিবাজ রহন্তী চ স্থাপায় বৈ দক্ষিণারনে॥"

(कानमा॰ देवथानम॰)

দক্ষিণায়ন দেবতাদিগের রাজি। এই জস্ত ত্র্গোৎ-সবের সময় সায়ংকালে দেবীর উবোধন করিতে হয়। ২ দক্ষিণায়নাভিমানী দেবতাভেদ। ও দক্ষিণভাগহিত প্রাণ্, প্রাণ যে সময় দক্ষিণ ভাগহিত হয়।

"निक्तिनद्धनं वता व्यानखनाकाककिनात्रमः।

প্র্কান্তর হ্রমাং পঞ্চোদয়ন্তি বৈ n" (প্রায়োগসায় )

🌃 ণারণ্য ( ङ्रो ) দক্ষিণস্থং অরণ্যং। অরণ্যভেদ।

কিণারুস্ (পং) দক্ষিণে দক্ষিণভাগে অক্সর্ত্রণং বস্ত। ব্যাধিক্ত্রিক দক্ষিণাল ব্রণিত মৃগ, ব্যাধ বাণ মারিলে যে মৃগের দক্ষিণাক্ষ কতে হয়, ভাহাকে দক্ষিণাক্ষস্কতে । ব্যাধ কর্ত্ব দক্ষিণ দিকে আহত মৃগ।

কিণার্হ (পুং) দক্ষিণাং অর্হতি দক্ষিণা-অচ্ (অর্হ:। পা অং১২) দক্ষিণাযোগ্য, দক্ষিণার উপযুক্ত। পর্যার — দক্ষিণীয়, দক্ষিণ্য। (অমর)

किगांवर ( जि ) निक्रण खंडार्थ मञ्जूष मञ्जदः । निक्रणायुकः । किगांवर्क ( जि ) निक्रण खांवर्कर खां वृज्ज्ञाहः । ५ निक्रण ^{खांवर्क}युक्ज, वांशा निक्रण निर्देश वृक्तिशाहः । ५ निक्रणिय, दि मस्यत्र मूप निक्रण निरंक स्थाना । শৃংক্তবাৰ্কারজ্পিধানরচনেচ্ছয়।
দক্ষিণাবর্ত-শশ্মোধ্যং হস্ত চুর্গীক্তোনরা ৪° ( সাহিত্যদ॰ )
দক্ষিণা, দক্ষিণভাং বর্ততে বৃত্ত-মত্। ৩ দক্ষিণদিক্ স্থিত।
দক্ষিণদেশ। [ দাক্ষিণাত্য দেশ। ]

"দক্ষিণাৰৰ্ত্ত আদিত্য-এডকে মনদি হিতং।" (ভারত ৬।১২০অং) দক্ষিণাবর্ত্তবতী (জী) দক্ষিণে আবর্ততে আ-বৃত্ত-। ন্, গৌরাদিয়াৎ তীয্। বৃশ্চিকানি, বিচুটা।

দক্ষিণাবছ (পুং) দক্ষিণা দক্ষিণদিক্ছো বহতি বছ-জচ্ । দক্ষিণানিল, দক্ষিণদিক্ হইতে প্ৰবাহিত্বায়ু, মলয়বায়ু।

দক্ষিণার্থ ( ত্রি ) দক্ষিণা আবর্ততে বৃত্ত-কিপ্ । দক্ষিণাবর্ত্ত । "তত্মাদিমং লোকং দক্ষিণার্থ সমৃত্য।" ( শতবাং ৭।১।২।১১২ )

দক্ষিণাশা (ত্রী) দক্ষিণা আশা দিকু। দক্ষিণ দিকু। দক্ষিণাশাপতি (পুং) দক্ষিণতা দিশ: অধিপতি:। ১ ব্যা, ব্যা দক্ষিণদিকের অধিপতি। ২ ভৌমগ্রহ।

मकिनानम् [ विक्निनम् तैवथ । ]

मिक्किशोहि ( व्यवा ) मिक्किश मृतार्ष् व्याहि। मृतिष्ठि मिक्किश कांश । मिक्किशिष्ट ( व्यवा ) मिक्किशोष्ट ( व्यवा ) मिक्किशोष्ट ( व्यवा मिक्किशोष्ट । मिक्किशोहित वा भावित्वनः" ( क्षक् दारक्षेत्र ) मिक्किशोहित ( व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्तिशाक्ष । व्यव्यक्ति । व्यवक्ति ।

"বজ্ঞতো দক্ষিণীরো বাসতেয়ো ভবতি য এবং বেদ"

( অথব্য ৮/১০:৪ )

দক্ষিণেতর ( বি ) দক্ষিণাদিতর:। দক্ষিণ হইতে ইভর, বাম। উত্তর দিক্।

দক্ষিতেশন (অব্য) দক্ষিণ-এনপ্। দক্ষিণদিকে। এই শক্ষের যোগে বিভীয়ুবিভক্তি হয়।

• "निक्तित्व इतिः ऋत्या" ( भूद्रत्वां ।

দক্ষিণেন এই শক্ষযোগে 'ছরিং' ইইাতে বিভীয় বিভক্তি হইল। কিন্তু কোন ছলে বিভীয়া ভিন্ন অন্ত বিভক্তিও দেখাযায়, তাহা আৰ্বপ্ৰহোগ।

শিক্ষিণেন সরস্বভ্যা দ্যবভ্যতেরেণ চ। " (ভারত ৩৮০।৪)
দক্ষিণেমুন্ (পুং) দক্ষিণে ঈর্মাং এবং যন্ত ওভোইনিচ্
(দক্ষিণেমুন্বিযোগে। পা হা৪।১২৬)। ব্যাধ কর্তৃক দক্ষিণপার্বে আহত মৃগ। " মৃগমুমিব মৃগোহর দক্ষিণেম্মা" (ভটি ৪।৪৪)
দক্ষিণেম্মর, জেলা ২৪ পরণণার অন্তর্গত একটা গ্রাম, ভ্রমণী-নদীর উপর অবহিত। কলিকাভার কিছু উত্তর। এবানে বাক্র প্রস্তুত্তের কার্থানা, সাহেঘদের ক্তিপ্র বাড়ী, বাদশ্রী মনোহর শিব্দক্ষির এবং একটা স্থক্ষর কালীমন্দির আহে।
দক্ষিণোক্তর (বি) দক্ষিণ ও উত্তর বিক্ষে অবহিত। দক্ষিৰোন্তরিম্ ( নি ) [ বৈ ] দক্ষিণভাগের উপর অবহিত। দক্ষিণ্য ( নি ) দক্ষিণাং অহঁতি দক্ষিণা-মং । দক্ষিণার্য ।

জ্বেক্ষেম্মরলিক (ক্রী) কাশীহিত গক্ষ প্রজাপতিরাপিত লিজতেল। দক্ষপ্রজাপতি ব্রহ্মার আদেশে কাশীতে শিবলিক
কাপন করেন। ঐ কানে অনম্ভতিত হইরা ঐ লিকের
পূরা প্রভৃতি করিতেন। মহাদেব ইহাতে সম্ভই হইরা দক্ষকে
বর দিরা কহেন, তোমার সকল অপরাধ ক্ষমা করিলাম
এবং তোমাকে আরও একটা বর দিতেছি, তুমি বে এই
শিবলিক অপন করিরাছ, ইহা দক্ষেম্মরলিক্ষনামে বিখ্যাত
হবৈনে। যাহারা এই লিকের সেবা করিবে, আমি ভাহাদের
সহস্র অপরাধ ক্ষমা করিব। তুমিও এই লিকের
পূর্বা ক্ষম্ম সক্রেব। তুমিও এই লিকের
পূর্বা ক্ষম্ম সক্রেব। মহাদেব দক্ষকে ইহা বলিরা ঐ লিক
মধ্যে অন্তর্হিত হইলেন। (কাশীবং ৯১ অং।)

দথল ( আরবী ) অধিকার, কোন বিষয়ে হন্তার্পন, কোন স্থানে অবেশ।

দ্ধল্কার্ (পারসী) অধিকারী, প্রবেশাধিকারী, বাহার প্রবেশের ক্ষতা আছে।

मध्या (भावनी) अधिकाती।

দ্রখলীদার (পারদী) অধিকারী, যে অপরকে দখল দিতে পারে।

দৃগড়—আর্থিদিগের একপ্রকার আনদ্ধ হর বিশেষ। ইহা দগড়া নামে প্রাসিদ্ধ।

দদলি, বালালা দেশে অন্তর্গত সিংহত্ম জেলার সরইকলা বিভাগের একটা 'পির' বা প্রাম সমষ্টি। ইহাতে ৪৩ থানি আম আছে।

मग्रत्, गांत्र्ड वाचानगरनत अक्षे टानी।

দগশাই, পঞ্চাবের 'মন্তর্গত সিমলা জেলার একটা পার্বত্য হান। এথানে সৈম্ভদিগের একটা ছাউনী আছে। ইহা সিমলা হইতে ৪২ মাইল দক্ষিণে, ৩০°৫০' ৫" উত্তর অক্ষাণ ও ৭৭° ৫ তি পুর্ব্ব জাঘিমার মধ্যে অবহিত। ১৮৪২ খৃঃ অক্ষে স্থাপিত। দ্যা (পার্মী) শঠতা, ছলনা, বিশাস্বাত্কতা।

দ্গার্গলে (ক্রী) দক্ত জলবাররোধত অর্গলমিব, গমধ্য পাঠেতুপ্যোদ্রাদিছাৎ গকারত ককার: দকার্গলং। নির্জ্বল-দেশে জলোপলবি সাধন উপার ভেদ, বে দেশে জল কাই সেই দেশে জলবিষয়ক জ্ঞানের উপার।

"ধর্ম্যাং যশস্তঞ্চ বভাম্যতাহ্হং দ্বার্গলং বেন অলোপলবিঃ। পুংশাং যথালেমু শিরাক্তবৈধ ক্ষিতাবশি ধ্যোয়ত্তিরসংখাঃ ॥"

( ZECA. 4812 )

ইবার বিষয় বৃহৎসংহিতার এইরপ কিরিজ লা।

মহন্তবিগের আলে বেরূপ শোণিতপ্রবাহিনী শিরা জ

সেই প্রকার পৃথিবীতেও উন্নত ও নিরুসংহিত জলবা।

শিরা সকল বিভ্যান। একবর্ণ ও এক রুসমূজ

আকাশ হইতে পতিত হইরা মৃত্তিকা বিশেবে নানারপর

নানারিধ রুস মৃক্ত হয়। এইলক্ত জল সৃত্তিকা ছারা পর

করিতে হইবে! ইক্রে, অমি, যম, নিগতি, বরুপ, প্রন্।

শক্তর প্রতিত দেবগণ ক্রমশঃ প্রদক্ষিণক্রমে প্রাদি।

সকলের অধিপতি হন্। আট দিকে প্রবাহিত ৮টা শিরাং

দিক্ পতির সংজ্ঞা লাভ করে।

পৃথিবীর মধ্যে বে শিরা প্রবাহিত আছে, ভাহা মহা নিমে প্রসিদ্ধ এবং ইহা বাতীত অস্তান্ত আরও শত শত । নানাপ্রকাঠক বহির্গত হইয়া নানা নামে খ্যাত আছে।

চারিদিকে **অবহিত ও পাতাল হইতে** উ বে সকল উৰ্দশিয়া আছে, ভাৰা গুভলনক। বোণ্ व्यर्थार व्यक्ति, देन अप्त, वाशू के जिलान करें होति विक्रहें উথিত শিরা সকল শুভজনক নহে। যদি নির্জন খ বেডদ বুক থাকে, ভাহা হইতে ভাহার ভিনহাত প্র नार्क श्रुक्य शतिमान निष्य * शिक्षमञ्च भित्रा कन श्रवाति করে। তাহার অর্দ্ধপুরুষ পরিমিত নিম্নে পাঞ্রবর্ণ মঙ্ পীতবৰ্ণ মৃত্তিকা ও পুটভেদক পাষাণ এই চিয়ে निष्म अन थारक। निर्म्धन धाराटन यनि अधुत्कशाः তাহা হইলে ভাহার উত্তরে ভিনহাত দূরে ছুই পুরুষ নি পূর্ববাহিনী শিরা অব্দিত আছে। এই ছলে এক গুৰ নিমে লোহগদ্ধিকা মৃত্তিকা ও পাঙ্রবর্ণ মণ্ডুক গাবে जच्रुद्रक्तत्र भूर्समिक यमि मभीभव वेनीक शांक, श হইলে তাহার দক্ষিণ পার্যে পুঞ্বছর দুরে ও নিয়ে খ निन चाहि। মৃতিকা ধনন সময়ে অর্দ্ধপুরুষ নিমে ^{মং} भातावक अपृण भाषांग अवः हेहात मृद्धिका नीनवर्ग हहे। দীর্ঘকাৰ পর্যান্ত অল থাকে। উত্তর বৃক্ষের ভিন্না পশ্চিমে পুরুষ পরিমাণ নিম্নে শুক্লবর্ণ আছি, অঞ্চন ^{স্থা} প্রান্তর, ইহার নিমে অর্মপুরুষ দূরে উত্তম জলযুক ^[4] আছে। অর্জুনবুকের তিন হাত উত্তরে ধদি বন্ধীক গা^{ৰে} তাহা হইলে তাহার নিমে পশ্চিমদিকে অর্থপুরুষ ^{দুরে ক} থাকে। মৃত্তিকথানন সময়ে তাহা হইতে অৰ্থপুৰুৰ্^{গা} মাণ মধ্যে খেড পোধা থাকে, পুরুষ পরিমাণ নিমে ^{ধুসুর্ধ}

পুরুষ পলে টাকাকার ভটোংপলের সভে ১২০ অলুনি।
 প্রুষশক্ষে বাজেগ্রিকা পুরুষে। জেরঃ, সচ বিংশভাবিকার্বার্থ
ভবতীতি সর্বার্থ
ভবতীতি সর্বার্থ
ভবতীতি সর্বার্থ
দিল্লীৎপল
)

ध्यं कृषि देवर ज्ञवा र्यम भित्रात मध्या ध्याद्यभ कतिएक भीटत. এই কারণ স্বকৃত মাংস প্রাকৃতির মধ্যে প্রবেশ করিরা শীল मरन करता । अरे अर्थ किर स्वता बाता मध स्टेरन कालिनत (वन्ना इत, धरे अधिनक छात्रिथाकात, मृहे-क्रिक, नमाक् দ্ধ এবং অতি দ্ধ। বাহাতে আলা করে ও বিবর্ণ হয়, তাহাকে গুষ্ট; বাহাতে দক্ষ স্থানে কোট (ফোস্কা) উचित रद এवः तिरे हान व्यक्तिमत्र উक्का, नार, ब्रक्कवर्ग, शांक ७ दिननाविभिष्ठे ध्वर घांहा निनाम चाद्राभा हत. তাহাকে ছৰ্দ্ধ; দগ্ধ স্থান গভীর নাু হইলে ও পক তাল-करनत छात्र वर्ग इहेरन, ब्यात यनि शूर्व्याख्न नक्कनोद्धाख इत्र, जारा रहेरन हेराटक मनाकामध बरन। अञ्चि मध इहेरन मध द्यारन मारत स्निता भएए ; मंत्रीत निथित, निता, वायु, সন্ধি ও অন্থির বিনাশ এবং অতি মাত্র, জর, দাহ, পিপাসা, মুদ্ৰ্য প্ৰভৃতি উপদ্ৰব ৰূমে। ইহাতে ক্ষত স্থান বিলয়ে প্রিয়া উঠে, প্রিয়া উঠিলে বিবর্ণ হইয়া বার। এই চারি প্রকার দথ্য বারা অধিকর্মের সাধন হইয়া'থাকে। অগ্রি কর্তৃক প্রাণিগণের রক্ত কুপিত হইরা শীজই বেগবিশিষ্ট হয়।

রক্তের সেই বেগ কর্ত্তক শিক্তও বেগবান্ হইরা উঠে।
অধি ও শিক্ত উভয়ে প্রায় একজাতীর দ্র'ব্য এবং একই
রসবিশিষ্ট, সেই জন্ম অধিদগ্ধ নিমিত্ত তীত্রবেদনা, স্বভাবতঃ
আলা ও ক্ষোই হইরা থাকে এবং অর ও তৃষ্ণা বৃদ্ধি হয়।

দম্মটিকিৎসা—পুষ্ট দয়ে অবির তাপ এবং উষ্ণ ক্রিয়া ও উষ্ণ ঔষধ প্ররোগ করিবে। তদ্বারা শরীর ঘর্মাক্ত **হটলে** . রক্তও তরল হয়। শীতল জল বারা স্বভাবত:ই রক্ত স্থানিত হয়। এ কারণ প্রষ্ট দথের উষণ ভিন্ন শীতল ক্রিয়া কথনই रूथकत इत्र ना। क्ष्य एटन डेक धवः नीउन উভরপ্রকার ণক্রিয়া করা কর্ত্তব্য। দথাস্থানে স্থত আলেপুন ও শীন্তল ज्या त्रहम कता छिहिछ। त्रमाकू मध्य इटेटन दः नाहम, পাঁকুড়ছাল, চন্দন, গেরিমাটি এবং গুলঞ্চ ম্বত মিল্রিত ক্রিয়া ल्यानिश निर्द । अपथेवा आदिम अपथेवा अन वाहना त्नरम् (द সকল পশুহয়, সেই সকল পশুর অথবা জলু জন্তর মাংস পেবণ করিয়া প্রলেপ দিবে। পিতত্ত্ত বিদ্রধি হইলে খেরুপ নিরস্তর উষ্ণ ক্রিয়া করিতে হয়, ইহাতেও সেইরূপ করিতে इटेरव । चिक मध्येत्र परन रव मकन माश्म नीर्न इटेश যায়, সেই শুলিকে তুলিয়া দেখিতে হইবে ও ভাছাতে শীতল ক্রিয়া করিবে। তাহার পর শালিধাঞ্জের ভূত্-হীন ততুল পিশিয়া ও মুত্যুক্ত করিয়া অথবা গাবগাছের কাথ প্রস্তুত করিয়া অথবা গাবছাল পিশিরা ভাহাতে স্বভযুক্ত कतिरव अवः देश पद्म कारन आरम्भ पिछ इंदेर । अन्तकत

মৃত্তিকা ও নিয়ক্তনে পীত, সিভ ও সিক্তাস্থ্যিত মৃত্তিকা ৰাকে এবং ভরিয়ে অপরিমিত জল পাওয়া বার। বজীক উপ্চিত নিশুভীবৃক্ষের তিনহাত দক্ষিণে স্পাদ পুরুষদ্ম নিয়ে অশোয় ও খাছ জল থাকে। ইহার নিয়ে অর্থপুরুষ পরিমাণ দুরে রোহিতমংখ্য ও ভরিয়ে ফপিলবর্ণ, ভাহার নীচে মণ্ডুরবর্ণ, তৎপরে সিক্তা ও শর্করা থাকিবে এবং ত্রিমে উত্তম জল পাওরা বাইবে। যদি বদরী বৃক্ষের পুর্বে বলীক দৃষ্ট হয়, ভাহা হইলে ভাহার পশ্চাৎ ত্রিপুরুষ পরি-মাণ নিয়ে লল আছে। বলি পলাশ সমৰিত বদরীবুক থাকে, ভাগ হইতে সপাদ পুরুষতার পরিমাণ নিম্নে পশ্চিমে জন থাকে। ইহাতে এক পুরুষ নিমে হুন্দুভি চিহ্ন থাকে; বিব ও উত্তর বুক্সের যোগ হইলে দক্ষিণে তিন হস্ত ছাড়িয়া তিন পুরুষ পরিমিত নিমে জল থাকে, তাহাল অর্থপুরুষ পরি-मांग नित्म क्रकाम अन्य थात्म, कात्मा इत्र वृत्मत निक्षे বলীক দৃষ্ট হইলে সপাদপুরুষজ্ঞ পরিমাণ নিমে পশ্চিম দিগাহী শিরা প্রবাহিত হয়। ইহাতে অর্দ্ধ পুরুষ নিমে। ঈষং পাণ্ডুবৰ্ণ ও পীতাভ মৃত্তিকা, ছগ্মবৰ্ণ পাষাৰ এবং কুমুদ সদৃশ মৃষক দৃষ্টিপথে পতিত হয়। অসহীন দেশে रम्थात्न कल्लिझक वृक्ष पृष्टे इम्न, **उथाम পूर्वामरक जिन इस** পরিমাণে প্রথম দক্ষিণবাহিনী শিরা প্রবাহিত হয়। এই খলের ভূমি থনন করিলে নীলোৎপলবর্ণ ও কপোতবর্ণবিশিষ্ট मृতिका पृष्टे हरेरत। এই शान हरेरा रखाखरत व्यवनि মংখ ও ক্ষীর সম্বিত জল বাহির হইয়া থাকে। শোণাক-রক্ষের পশ্চিমোত্তর দিকে ছই হস্ত অতিক্রম করিয়া যে শিরা খাছে, সেই কুমুদ নামী শিরা তিন পুরুষ পরিমাণ নিমে প্রবাহিত প্লাকে। যদি বিভীতক বুক্ষের দক্ষিণ পার্ষে বিশ্লীক ণাকে, "ভাহার পুর্ব্ব দিকে অদ্ধপুরুষ নিমে শিরা প্রবাহিত জানিবে। যদি ভাহার একহাত দুরে পশ্চিমদিকে বঙ্গীক থাকে, ভাহা হইলে, ভাহার সার্দ্ধ চারি পুরুষ পরিমাণ নিমে জল প্রবাহিণী শিরা। ধনন করিলে প্রথম পুরুষ পরিমাণ নিম্নে (पंड मृखिका ७ कूडूम नमृण आञावूक श्राक्त शांकिरन, वारा তিন বর্ষ অতীত হইলে 🚱 অলবাহিনী শিরানট হইবে। रेडांनि। ( दृह्दमःहिडा ८८ चर)

শিম ( ি বি ) দহ ক । > কতবাহ, ভন্নীকৃত, বাহা প্ডিমা গিয়াছে।

"দুশা দগ্ধং মনসিজং জীবয়কৈ দুলৈব বাং।" (সাহিত্যদ॰)

্ শরীরের অগ্নিদাহভেদ, পুড়িরা বাওরা, শরীরের কোন হানাদি পুড়িরা যাইলে নিয়লিধিতরণে প্রতিবিধানাদি করিবে। অগ্নিয়ত তৈলাদি স্নেহবিশিষ্ট অথবা নীরস জব্যকে আশ্রয় করিয়া দহন করে। অগ্নি কর্মুক সম্ভপ্ত হইলে হুত তৈল প্রধার অথবা জলে বে দক্ল গাছ জন্মে, তাহাদের মধ্যে কোন একটা গাছের পত্র ধারা ক্ষত ছান আচ্ছাদিত করিয়া স্থাধিতে হইবে। পিত জন্তা বিদর্শরোগে বে দক্ল ক্রিয়া করিতে হয়, ইহাতেও তাহা প্রযোজা। মোম, ষ্টিমধু, লোধগাছের ছাল, ধুনা, মঞ্জিটা, চল্লন এবং মুর্বামুল, এই সমুলর এক্তা পিরিবে এবং দেই পিষ্ট ক্রব্য ধারা স্থত পাক ক্রিতে হইবে। এই স্থত ধারা সকল প্রকার অধিদর্শক্ষিত ত্রণ উত্তমরূপে প্রিয়া উঠে। স্লেহ ক্রব্যসংখাগে দক্ষ ছইলে ক্লক্ষিয়াই বিশেষ রূপ বিধেয়।

উষ্ণ বাষু ও রৌদ্র কর্তৃক দগ্ধ হইলে শীতন ক্রিয়া করিবে।
আতিশগ্ধ তেজঃ হারা দগ্ধ হইলে কোন প্রতিকারেই শাস্তি
হর না। বস্থাগ্রি হারা দগ্ধ হইলা জীবিত থাকিলে স্থত
তৈলাদি কেহ জব্য সর্বালে মর্দন ও দেবন করিবে এবং
পূর্বোক্ত অগ্রিদগ্ধের প্রেলেপও প্রয়োগ করিবে।

শার্কিকিৎসার মধ্যে অগ্নিকিয়া প্রধান। পীড়িত ভান অগ্নিবারা দ্বা করাক্ষে আগ্নিকিয়া কছে। অগ্নিকর্মের বিধানমতে দ্বা করিলে সে রোগ প্নর্কার আর উৎপত্তি হল্প না। বে সকল রোগ শার বা ক্ষার বারা আরোগ্য না ইয়, তাহাঁ অগ্নিকর্মে আরোগ্য হইয়া থাকে। পিপ্রণী, ভাগীবিষ্ঠা, গোলন্ত, শার, শালাকা, জাল্বেষ্ঠ অথ্বা অভ্য প্রকার লোহ, মধু, গুড়, ঘুড়, তৈল ও বদা প্রভৃতি মেহজ্বাণীড়িত ভান অগ্নিদ্বা করিতে হইলে এই সকল জ্বোর সংযোগে করিতে হয়।

কোন প্রকার অক্রোগে দগ্ধ করিতে হইলে পির্রকী, ছাগীবিঠা, গোদন্ত, শর এবং শলাকা দ্বারা, মাংসীগত রোগে দগ্ধ করিলে জাম্ববেটি অথবা অন্থ কোন, প্রকার লৌহ দারা; শির্গত, মাযুগত, সন্ধিগত অথবা অন্থিগত রোগে দগ্ধ করিতে হইলে গুড়াঁ, মুমু অথবা অন্থ কোন প্রকার মুত তৈলাদি মেহ দ্রবাধারা দগ্ধ করিতে হইবে।

শন্তং ও গ্রীম ঋতু ভিন্ন সকল ঋতুতেই রোগ বিশেষে পীড়িত স্থান দগ্ধ ক্রা যায়। কিন্তু দগ্ধব্যতীত যদি সে রোগ আারোগা নাহয়, তবেই দগ্ধ করা যাইতে পারে, নচেৎ নতে।

রোগীর পীড়িত স্থান দগ্ধ করিতে ছইলে রোগীকে পিচ্ছিল অন্ন আহার কুরাইয়া পীড়িত স্থান দগ্ধ করিতে ছইবে।

কোন কোন পণ্ডিভের মতে ইহা হুই প্রকার— पক্ষর

এবং মাংসদগ্ধ। কিন্ত কুশ্রভের মতে শিরা, দাদ্ধ, সন্ধি

এবং অস্থিয়ানেও এইরূপ দগ্ধ করিবার নিবেধ নাই।

তক্ দগ্ধ করিলে চট্চট্ শব্দ, তুর্গন্ধ এবং স্বক্ষের সন্ধোচ
ভাষ্থান হয়। মাংস দগ্ধ করিলে দগ্ধস্থান স্বংগভিবর্গ, আরু ক্ষীত,

८वरमाविभिष्ठे, ७क, मक्तिल अवर क्ल स्ट्रेश बाट সিরা ও লায়ু দথ করিলে দথায়ান কৃষ্ণবর্ণ ও উন্নত 🚁 विभिष्ठे अवर त्रख्नानित्र व्याव वक्ष स्त्र। मिक्क अवर क्ष मध्य कतिराम मध्यक्षांन सम्म, अक्रमन्तर्भ ଓ कर्कम इत धानः (स्रो দক্ষপনিত ক্ষত্ত শীল্ল আরোগ্য হর না। ভাহার _{বাং} শিরোরোগে এবং অধিমস্থ রোগে জ, লগাট এবং ল্যাটে অবিভ দথ্য করিবে। বর্তুরোগে চকুর দৃষ্টি ভানে অন্_{জাই} আচ্ছাদন দিরা বস্ত্র হানের রোগ দথ্য করিবে। রোগে: श्वान(करण क्यिकार्या हात्रिश्यकात्र--- वनम्, विन्तू, विरामा ও প্রতিসারণ। বালার স্থায় গোলরেধার আকারে _{দং} कतारक वनम्र करह। विन्तृत आकारत्र पश्च कतारक विन বলা যায়। শরীরের ত্বক মাতে দথ্য করার নাম বিলেখন **উक्ष प्रज रैजनानि जत्रन प्र**वा नः स्थार्थ (य नद्म कत्राया এবং যাহাতে দগ্ধের উপকার দ্রবাটী শরীরে বিস্তুত হটা পড়ে, তাহাকে প্রতিসারণ কহে। ইহাতে বিলম্বে আরোগ হয়। ( সুঞ্জ ) [অগ্নিদগ্ধ দেখ । ] (ক্লী) ২ কত্ব। ( রত্নালা ৩ মান। (অমরুশতক ২৪) ৪ তিথিভেদযুক্ত চক্রাশ্রিত রাণি

"মৃগদিং ছো ভূ জীয়ায়াং প্রথমায়াং তুলামৃগো।
পঞ্চম্যাং ব্ধরাণী ছো সপ্তম্যাং চাপচক্রতে।
নৰ্ম্যাং সিদ্ধান্ত ভাটাখ্যাবেকাদ্যাং পুরো গৃছে।
ব্যমীনৌ অয়োদ্যাং দক্ষদংখ্যাত্তমী গৃহাং।
দক্ষদ্যানি যংক্রা কুতং সর্বাং বিন্যাতি ।" (জ্যোতিস্তর)

कर मध्य श्रंह त्व त्कान कार्याति कता यात्र, छाहा विनहे इस । वात्र छन्यू क नक्क छछन्।

मञ्जाक ( थ्र वो ) मध्येष काकः। छानकाक। । मञ्जा ( थ्र ) मध्यः मध्यः कर्षथा। छन्नात्तांक अञ्चलन। "वस्तित्त्रमाय् का यस्य मुक्ति।

সপ্তধা দৃশ্রতে তন্ত দগ্ধমন্ত: প্রচক্ষতে॥" (তন্ত্রদার)
যে মন্ত্রের "মূর্জা প্রদেশে বহিন ও বারুষ্ক্ত থাকে এই

সাত বার গৃষ্ট হয়, তাহাকে দগ্ধান্ত কহে।
দগ্ধান্ত (পুং) দগ্ধ: রঝ: যতা। চিত্ররথ গলকের একনী
নামান্তর, এই গলকে ইল্লের একজন সার্থি। ইহার প্রার্থন বার্থা নাম অলারপর। ইনি ইল্লের সার্থির কার্যা করিতেন এবং ইহার নিজের একথানি বিচিত্র রথ ছিল, এই জন্ত ইহার নার চিত্ররথ হয়। কোন সমর পাণ্ডবর্গণ একচক্রা হইতে প্রার্থি গমন করিতেছিলেন, সেই সময় সোমান্তরণতীর্থে প্রার্থি ইনি রমনীপ্রিবৃত হইয়া বিহার করিতেছিলেন, এই স্বার্থিক প্রার্থিক পাণ্ডব্লিগকে আসিতে দেখিয়া রক্তরাজ্বান করিছে করিতে অর্কুনের স্মুখীয় হইয়া স্বার্থেক ব্লিকেন, জারী

वशान क्वाविशंत क्रिएक्टि, धेर नमन द्ववाताक वस्त ্আসিতে শব্দিত হন, তোমরা মানৰ হইয়া কোন সাহলে এই খানে আসিলে। এইকপে অর্জুনের সহিত অভ্যন্ত বিবাদ इम, পরে পরস্পরে তুমুল সংগ্রাম হইল। আর্ক্ন আলোয়াল্ল-क्षांत हेशंत तथ मध कतित्रा एमन अवः अहे ममत्र इहेटड हिन मध्रतथ नामে প্রসিদ্ধ হইলেন। ইনি অর্জ্রের সহিত मधाजा शांशन करतन धावः व्यक्तिक हांकृशीविष्ठा धानान করেন। ( মহাভারত আদিপ > ১৭০ অ॰ ) [অঙ্গারপর্ণ দেব।] ন্গ্ৰপাত্ৰতায় (পুং) ভাৰভেদ, পত্ৰ দ্ৰকল দথ হইয়া ৰাইলে বস্তুত: দগ্মপত্তের আমার পত্তম থাকে না, কিন্তু পূর্ব্বাকার ৰারা তাহার অবস্থান জ্ঞানমাত্র থাকে। [ভার দেখ।] াগ্ধরুহ (পুং) দথা অপি রোহতি রুহ-ক। তিলয়ক। । ক্ষুত্র ( ত্রী ) দগ্ধক হ টাপ্। বৃক্ষবিশেষ, কুকুই গাছ। শ্ববর্ণক (পুং) রোহিষ:নামক তৃণ। न्द्रता (बि) मरू-उदा। मारू, मर्नीय। 🖄 (জो) ১ স্থাবিছান দিকু, স্থা যে দিকে অবভান करत, त्मरे निरकत नाम नक्षा। २ तृक्वविष्मव, भर्याम---কুক্হ, দগ্ধকহা, দগ্ধিকা, স্থলেক্সহা, রোমশা, কর্কশদলা, ভশারোহা, স্থদায়িকা। ইহার গুণ-কটু, কষায়, উষ্ণ ও কফ-বাতনাশক, পিত্তপ্রকোপক, অঠরাগ্নিকারক। (রাজনি॰) ০ রাশিভেদযুক্ত তিথিভেদ।

বৈশাথ মাদের গুক্লা ষঞ্জী, আবাঢ়ের গুক্লাইমী, তাজের গুক্লা দশনী, কার্ত্তিকর গুক্লা বাদনী, পৌবের গুক্লা বিতীয়া ও কার্ত্তনর গুক্লা চতুর্থী; প্রাবণের ক্ষঞাবন্ধী, আবিনের ক্ষণাইমী, অগ্রহারণের ক্ষণা দশনী, মাবের ক্ষণা বিদ্যা পরের ক্ষণা বিতীয়া ও জ্যৈতের ক্ষণাচতুর্থীতে দগ্ধা বিদিয়া প্রেলিক ঐ গকল মাদের ঐ গকল তিথি নিম্মলা এবং ঐ দ্যাকে মাসদ্ধা কহে। এই দ্যা তিথিতে যদি কেই যাত্রা করে, ইক্রতুল্য ইইলেও ভারার মৃত্যু হরী এই দ্যাতে বিবাহ ইইলে বিধবা, ক্ষমিকর্ষে ফলের অভাব, বিভারত্তে মুর্থতা, গ্রীদক্ষমে গর্জপাত ও বাণিজ্যে মূল্যনের নাশ হর, এইলকু দ্যা তিথিতে কোন গুভ্জকর্ষা করিবে না।

"বিতীয়া মীনধন্তবোশ্চতৃথী ব্ৰক্তবো:। "
নেষকক'টলো: ষটা কলা মিপুনকেছটমী।
দশমী বৃশ্চিকে নিংছে বাদনী মক্রে তুলে।
নিম্পে দিনেশে নৃৰ্গে ধন্তহে বৃকে মুগেকে কলনে চ শুকা।
ক্ণীর কলালিমৃগাল মীন ব্যেষ্ ক্ফান্তিথয়: প্রদিশ্ধা।
এতির্জাতো ন জীবেত যদি শক্তো সমোভবেং।
বিবাহে বিশ্বা নারী ষ্যাকাশ সকুণং কবং দ

কন্তারতে ফলং লাতি বিভারতে চ সূর্যতা।

পালনে গর্তপাতঃ তাৎ বানিজ্যে মুলনাশনং ।

ততকর্জানি সর্বানি নৈন কুর্যাবিচক্ষণঃ।" (জ্যোতিতত্ব)
কুবিবারে বাদশী, লোমবারে একাদশী, মুলন্বারে দুশমী,
বুখনারে ড্তীয়া, বুহুন্পতিবারে বল্লী, প্রক্রনারে ক্ষান্তর ও
পূর্ণিমা এবং শনিবারে সপ্তথী হইলে দুখা হর, ইহাকে দিনদুখা
কহে। এই দিনদুখাতেও কোন প্রকার ওড কার্যাদি
করিতে নাই।

"यात्रा कला नित्यात्रामाः बहेशकम्नुनद्रख्या । नव्यख जिल्हाः नश्चन्यारेषाः मश्चनश्रकः॥"

( স্যোতিঃসারদংগ্রহ )

मधीव्य ( ११ ) कांत्र श्रेशान तृक्विश्वाम, ভূষোড়া।

"দথাক্ষ:স্থানীক্ষপত্র: কুপক্র: কুমনীরক:।" (জবাজিধান)
দিখ্রিকা (জী) কুৎদিতা দথা কন্ (কুৎদিতে। পা ধাতাৰঃ)
টাপ্। দথার_{কে}পোড়াভাত। কেহ কেহ দথার শব্দে চাঁচী এই
অর্থ করেন। পর্যার—ভিদ্দটা, ভিদ্দিটা, ভিন্নিটা, ভিন্নিটা, ভিন্নিটা,

मटक्षरिका (खी) मध देहेका। सामक, सामा, हे छ छाछ প्रिया पारेटन गनिया यात्र এवः छाहा भटत सामा हत। • मटक्षान्त (झी) नदः উनतः। हट्छान्त, ट्याज़ाट्य ।

"অন্ত দংগ্রাদরতার্থে ক: কুর্যাৎ পাতকং মহৎ॥" (হিতোপণ)
দক্ষোনি (দেশল) রক্ষবিশেষ, ডানকুনী।
দক্ষা (দেশল) মারামারি, লাঠালাঠি।
দক্ষাবাজ্য—হে সর্বানা দক্ষা করিতে চার, বিজোহিথির।
দক্জালা (কাঁরবী) > মিথ্যাবাদী, ধ্র্তা। ২ বিচক্ষণ, নিপ্ণ।
ত কড়া। "কেহ বা আছিল দ্রে সমাচার পেরে।
রালার হকুম দড় সেলে এল ধেয়ে॥" (প্রীধ্মামণ ২০১৪)
দড়কা (দেশল) আতিশবা, আবেশ (A paroxysm)।
দড়বড়ি (দেশল) শীঘ্র দৌড়ান। "তীরগুলি শন শনি, গলঘণী
ঠনঠনি, ঝড় বহে আখ দড়বড়ি।" (বিভাফ্যার)
দড়া (দেশল) খুল ও বৃহৎ রজ্জু, কাছী, বড় বড় ফোকার
ভাবাল প্রভৃতিতে ব্যবহৃত হয়। ইহা গ্রই প্রকারে প্রভাত হয়, কাতা ও পাট (কোটা), এই ত্রর একটা খ্র মোটা
করিয়া পাকাইরা লইলে দড়া প্রভ্ত হয়।

দ্ড়াম্ (দেশৰ) > ৰোৱে গুরু বস্তর পতনধ্বনি, কোন ভারি লিনিস উচ্চ হান হইতে পড়িয়া বাইলে 'দড়াম্' এইরূপ শব্দ হয়। ২ আবিয়াল।

দ্ভাস্ (দেশক) ঋদ বস্তর পতনশক।

দড়ী (বেশৰ) রক্ষ্, গুণ।
দড়া (বেশৰ) গড়ি প্রস্তেকারী।
দণ (বেশৰ) পরিমাণ ভেল, ৎ দের।
দণ্ড (পুংক্লী) দণ্ড-বঞ্জ, বা দামাতে হনেন দম-ড (ভুমস্তাৎ ডঃ। উন্১১১২),১ লগুড়, গাঠি, যটি।

"यथा দগুৰ্ত: সর্পো দগুকোর: প্রজারতে।" ( হটযোগপ্রাদী ত্রাস্থ

কণ্ড ধারণ করার গুণ —পড়িরা বাইলে ধরিরা উঠা যার, শক্ত আক্রমণ করিলে তাহার হাত হইতে উদ্ধার পাওয়া যার, ইহা আযুদ্ধর ও ভয়নাশক।

"भगठ: त्रःथा विष्ठांनः भज्नांक निरंतर्यनः। च्यत्रहेळ नमायुकः जग्नः प्रख्यात्रगः॥" ( देवक के)

ব্রাহ্মণের প্রতি দও ওচাইলে কুচ্ছু বা অতিকৃচ্ছু আচরণ করিবে।

২ ব্রহ্মচারিধার্যা কাষ্ট্রময় স্বাক্ত ভাকার, পদার্থ। ব্রাহ্মগাদি বর্ণজন্মের উপনমনকালে দণ্ড ধারণ করিবার বিধি
আছে, তদমুসারে ব্রাহ্মণ বিষ ও পলাশের, ক্ষজিয় বট
ও থদিরের এবং বৈশ্র পিলু ও উত্ত্বর কার্চের দণ্ড
ধারণ করিবে। ব্রাহ্মণের দণ্ড কেশান্ত পর্যান্ত, ক্ষজিরদিগের
দণ্ড ললাট পর্যান্ত ও বৈশ্রাদিগের নাসিকা পর্যান্ত হইবে অর্থাৎ
ঐ পরিমাণে দণ্ড প্রস্তুত করিবে।

"ব্রাহ্মণোবেৰপালালো ক্ষজিয়ো বাটথাদিরোঁ। পৈলবোড়্মরো বৈখ্যো দণ্ডানইন্তি ধর্মতঃ ॥ কেশান্তিকোব্রাহ্মণশু দণ্ড: কার্য্য: প্রমাণতঃ। কলাটদন্মিতো রাজ্য: শুন্তে নাসান্তিকো বিশঃ ॥ ক্ষত্বন্তে তু সর্কেন্সারব্রণাঃ সৌমাদর্শনাঃ।, ক্ষত্বন্ত্রকা নুগাং স ঘটো নাগ্নিদ্বিতাঃ॥ প্রতিগ্রেশিতঃ দণ্ডমুপ্রায় চ ভাষরং। প্রদক্ষিণং পরীত্যাগ্নিং চরেন্তক্ষং যথাবিধি॥" (মন্ত্র্যান্তিগের দণ্ড গ্রহণে একট্ বিশেষত্ব আছে।

কুটীচক, বছলক, হংস ও পরমহংস এই সন্ন্যাসিগণের

প্রথম অপ্রেকা পরবর্ত্তিকে উন্নত বা শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিব। কমলাকর লিথিয়াছেন, কুটাচক ও বহুদক ত্রিপ্রক্ত, জ্ঞান এক বৈণব দও এবং পরমহংস একদও রাথিবে। (বিশ্বসিং) মেণতিথি লিথিয়াছেন—

"বাবমস্থান্তবো দণ্ডান্তাবদেকেন বর্তমেৎ।" ু বতদিন না তিদণ্ডী হইতে পারু, তৃত্দিন একটাও ্ধাকিতৰ। কিন্তু এধানে ত্রিদণ্ড বৃষ্টিপর সংস্কৃত্ধাগৃ_{ষ্ণ} সমনপর।

"বাগ্দভোহণ মনোদ ওঃ কারদ ওতথৈব চ।
বিজ্ঞতে নিয়তা দ ওাঃ স ত্রিদণ্ডীতি চোচ্যতে ॥" ( মৃত্বু)
পূর্বে কে পরমহংসের এক দতের কথা বলা হইল, ও
অবিধানের পক্ষে, পরমজ্ঞানীর পক্ষে নহে। মহোপনি।
লিখিত আছে "ন দ্ভং ন শিখাং নাচ্ছাদনং ন ভৈদং চা
পরমহংসঃ।" "জ্ঞানমেবাত দ্ভঃ" জ্ঞানই পর্মহংসের ॥

ত ব্ছেভেদ। অধিপুরাণের মতে মণ্ডল ও অসংহত বে
নানা প্রকার দণ্ড আছে, যথা তির্গ্রেন্তি, বৃত্তি, সর্বভার্
প্রগ্র্তি।ইহাদের আবার এইরপ নাম আছে—প্রদর, দৃ
অসহু, চাপ, বৈকুন্দি, প্রতিষ্ঠ, স্প্রতিষ্ঠ, শ্রেন, বিজয়, দ্
বিশাল, স্চী, স্থাকণ, চমুম্থ, সর্পম্প, বলয়, অভিজ্ঞা প্রতিক্রান্ত, বিপর্যায়, স্থাপক্ষ, ধহুংপক্ষ, বিস্তুণ, উর্দ্দিণ্ড, চতুর্দণ্ড, গোম্তিকা, স্কারী, শকট, মকর ইভা ছর্জ্জয় দণ্ড বা বৃহে বলিয়া স্থির করিবে । [বৃহে দেখ ভাবে অচ্। ৪ দমন। ৫ শরণাগতত্ত্রাণ, সর্কভৃতে অহিংমা দানরূপ কর্মত্রয়।

শারণাগতসন্ত্রাণং ভূতানামপ্যহিংসনম্।
বহিবেদি চ দানঞ্চ দ গুমিত্যভিধীয়তে ॥" (ভারত মোদংগ্
দণ্ড ইবাচরভি দণ্ড-ক্রিপ্ ততোভাবে ঘঞ্। ৬ দণ্ডুদ্
স্থিতি। দণ্ড-করণাদৌ অচ্। ৭ প্রকাণ্ড। ৮ অখ। ১ বেগ
১• মছন। ১১ দৈয়া। ১২ ভূমির পরিমাণ্ডেদ। চারিগ্রি
এক দৃণ্ড। শহুবৈত চুর্ভিভিবতীহ দণ্ড: ।" (দীলাব্তী।
১৩ স্থ্যির একজন পারিষদ্ধ্ ১৪ যম্দণ্ডক্রা। ১

- মতলাসংহতে ভাগে। দতাতে বছণা দৃণু।
  তিবাগ্রুতিয় দত: ভাগ ভোগে।হয়। রুভিরেব চ।
  মতল: সর্পতোর্তি: পৃথগ্রুতিরসংহজ:।
  আদরো দৃঢ্কোহসফ: চাপো বৈক্ষিবেব চ।
  অতিঠ: ক্শতিঠক ভোনো বিজ্ঞানয়য়ে।।
- * বিশালো বিজয়: স্চো খুণাকণ্চযু মুখৌ ।

  সপাতো বলয়কৈব কণ্ডেলাক প্ৰক্ৰা:।

  অভিক্ৰান্তঃ প্ৰভিক্ৰান্তঃ কক্যান্ত্যাকৈ পক্ষতঃ।

  অভিক্ৰান্তঃ পক্ষান্ত্যাং কক্যান্ত্যাকৈ পক্ষতঃ।
  - পশ্লোরাকৈ নিজাবি একোইতে ভাষণানুরে।
    পশ্লোরাকৈ নিজাবি একি একি একি একি এক বিশ্বাস ।
    বিশ্বাহর্তিকার প্রকাহত বিপর্যরঃ।
    বিভ্রুতি ইত্যেত জ্বো লক্ষণত ক্ষাবে।
    বিশ্বাহ্যিকা হি সঞ্চর্য প্রক্টো ব্রুত্ত বাব্ ।
    বাব্ জিলা হি সঞ্চর্য প্রকৃতি বিদ্যুত্ত ।

- **44** 

অভিমান। ১৬ ন্তাক্তর অহতেন। [ অহ্পুলাটক কেথ।] ১৭ ইক্বাক্রাবের একপ্তে, ইহারই নামান্ত্রারে দওকারন্যের নাম হয়। (হরিবংশ-১০ আঃ) ১৮ বাট্পল পরিমাণ কাল। [ঘটাবল্ল দেখ।]

"বারিদ গুাত্মিকারাক ভিবেনিক্ মধং থরে।
দক্তিক রজনীবেশসঃ।" (ভিথিতত্ব)

১৯ বিষ্ণু। (ভারত ১৩/১৪৯/১০৫) ২০ শিব। (ভারত ১৩/২৮৬ জঃ) ২১ দণ্ডাকার অব্দু ক্রের পরিবেবজেল। "পরিধিস্ত প্রতিক্রোর্নিগুরুদ্ধিক্রন্তোপনিজঃ।" (বৃহৎসং ১৯ জঃ) ২২ দণ্ডবংশ্বিত ক্র্যাদিকিরণের সংঘাত। "রবিকিরণজনদমক্রতাই ক্র্যাতো দণ্ডবংশ্বিজো দণ্ডঃ। স বিদিক্সিতো নৃপাশামণ্ডতো দিক্স বিজ্ঞাতীনাম্। শস্ত্রভাতক্রকরো দৃষ্ট্য প্রাঙ্মধ্যসন্ধিষ্ দিন্তা। ভ্রাত্রে বিপ্রাদীন্ বদ্ভিমুধ্তাং নিহ্নি দিশ্ব।"

( वृह्दम्स् ७० पाः )

২০ রাজগণের রাজ্যক্রকার্থ চ্ছুর্থ উপায়। সাম, দান, তেজ ও দও এই চারিটা উপায়। ইহার মধ্যে অনদেশ ও পর-দেশ ভেদে দওের অভত্রতা আছে। রাজা অদেশে অর্থাৎ নিজ বাল্য মধ্যে প্রজাশাসনার্থ যে দওবিধি প্রচলন করেন, তাহা আদেশ দও। অগ্রিপ্রাণে লিখিত আছে, পরদেশে প্রয়োজ্য দওাদি প্রকাশ ও অপ্রকাশভেদে বিবিধ। সুঠন, প্রামন্থাত, শর্বাত, অগ্রিলীপন, বিষ, অগ্রিও বিবিধ পুরুষ সহায়ে বধ এই কয়টা প্রকাশ দও। সাধুদ্ধণ ও উদকদ্ধণ ইহাদের নাম অপ্রকাশ দও। (অগ্রিপ্রণ ১৭৪ জঃ)

প্ৰকাশাসন দণ্ড সম্বন্ধে মহাভাৱত ও হিন্দু-ধৰ্মশাল্পাদিতে বেরুপ বণ্ডি আছে ভাহারই সারসংগ্রহ কথিত হইতেছে।

কোন কোন অগরাধে রাজা কিরূপ দণ্ড বিধান করিবেন, তাহার বিষয় এইরূপ লিখিত আছে।

ঝণাদান—উত্তমর্থ কর্জ দিলে যদি অধ্বর্থ পরিশোধ না করে, পরে উত্তমর্থ রাজার নিকটে নালিশ ক্লরিলে এবং অধ্বর্ধ ধণ দের বলিয়া স্থীকার করিলে অধ্বর্ধকৈ একশত পণে ৫ পণ দশু করিবেন, ক্লিছ অধ্বর্ধ বলি ঝণ অস্থীকার করে ও তাহা যদি অপ্রাথাণিত হর, তাহা হইলে তাহার শতপণে ১০ পণ দশুবিধান করিবেন। উত্তমর্থ বছক দুইয়া ঝণহানে বৃদ্ধি গ্রহণ করিবেন, অর্থাৎ প্রতিমানে শতকরা অনীতিভাগের এক ভাগ তুল প্রত্থি করিবেন। যদি কোন ভোগার্থ বছ বা বাস দাসী উত্তমর্থের নিকট বছক রাখিয়া অধ্বর্ণ টাক্লার বার বার করিবেন মার বিজ্ঞা অধ্বর্ণ টাক্লার আর

কণ্ডনীয় হইবেন। মিঞাসাক্ষ্য লোকানীয়, নিখাসাক্ষ্য দিশে বালার পণ কণ্ড হইবে। মেহনিবদ্ধন মিথাসাক্ষ্যে আড়াইপড পণ, ভর দিনিভক মিথাসাক্ষ্যে হালার পণ, ক্ষেত্র ছালার পণ, ক্ষেত্র ছালার পণ, ক্ষেত্র হালার মিথাসাক্ষ্যে ক্ষিত্রাপনি মিথাসাক্ষ্যে ডিন্ইালার পণ, ক্ষেত্র হালার মিথাসাক্ষ্য হিন্তু এক পণ কণ্ড হইবে। বালা সভ্যবর্গের পালন কল্প ও অধর্ণের দালানক্ষ্য মিথাসাক্ষ্যে এই সকক্ষ্য কণ্ড বিধান করিবেল। কিছ ক্ষাত্রির, বৈশ্ব ও শুল্ল এই জিনবুর্গ বিদ বারংবার মিথাসাক্ষ্য দেশ, ভাহা হইলে ভাহাদিগকে পুর্ব্বোক্ত ক্ষণ্ডিবিধান করিবেল। ক্ষিত্র বাল্যবের অর্থাক্ষ্য করিয়া দেশ হইতে ভাড়াইরা সিবেল। ক্ষিত্র বাল্যবের অর্থাক্ষ্য করিয়া নির্বাসন মাত্র করিবে।

নিংকেণ—যদি কোন বাজি বিধারপূর্কক একজনের নিকট ধন গজিত রাখে এবং ঐ বাজি যদি গজিত ধন আর প্রত্যপণি না করে, তাহা হইলে রাজা ডাহাকে ছব্ণাদি চোরের ভার দশুবিধান করিবেন। যে ব্যক্তি মিথ্যা ও প্রভারণাদি বারা প্রথম হরুণ করে, রাজা ডাহাকে ও ভাহার সাহাধ্যকারিদিগকে বধদ্যও করিবেন।

সমানিবিজ্ঞসালনে অধানী হইরা স্বানীর অনুমতি ব্যক্তিক্রকে তাহার দ্রব্য বিজ্ঞাকরে এবং ঐ ব্যক্তিবদি দ্রব্য-স্থানীর বংশস্থ কেই হয়, তাহা ইইলে তাহাকে ৬ শতপণ দও করিবে। আর যদি দ্রব্যস্থানীর সহিত কোনরূপ সমন্ধ না থাকে, তাহা ইইলে ভাহাকে চৌরদত্তে দণ্ডিত করিবেন।

সন্থান—অনেকে মিলিত হইরা একতা কার্য্য করি-বেন, তাহাদের পরস্পরের অংশও যথানিরমে বিভাগ করিরা শ্বীবেন, বুলি মোহবশে কেই ইহার অঞ্চথা করেন, তাহা হইলে রাজা তাহাকে চৌর্ব্যের নিমিক্ত এক জুবর্ণ দণ্ড করিবেন।

ক্রমবিক্রদান্তশন করে বা বিক্রম করিয়া বে পশ্চাৎ অন্তর্গপ করে, সে সেই ক্রব্য দশ দিনের মধ্যে ফিরিয়া থিতে বা ফিরিয়া লইতে পারে। কিন্তু দশ দিনের পরে ক্রম্রেপ ফিরিয়া বিতে বা লইতে পারে না। যদি বলপুর্কক ক্রিয়া দেয় বা লয়, তাহা হইলে ভাহার ৬ শত প্র দশু হইরে।

দোষবিশিষ্ট কভাদান—দোষবিশিষ্টা কুভার কথা না বলিয়া যদি উহাকে সম্প্রদান করে, তাহা হইকে রাজা ভাহাকে ৯৬পণ দশু করিবেন। যে ব্যক্তি বেৰপ্রযুক্ত কোন কভাকে কভবোনি এবং কুমারী নহে' ইভাদি বলিয়া লোখ দেয় এবং তাহা প্রমাণ করিতে না পারে, রাজা ভাষাকে শতপণ ক্ষ করিবেন।

VIII

স্বাদিপালবিবাদ—পশুবিধরে স্বামী এবং পালকের নিরম ব্যতিক্রম হইলে রাজা বিচারপূর্ত্তক দশুবিধান করিখেন। বদি কর্বকের দোবে শশুহানি হর, যত শশু রংজার প্রাপ্য তাহার দশশুণ রাজা তাহাকে দশু করিবেন। স্বামী, এবং পশুণালের পরস্পার, রক্ষণ ব্যতিরেকে এবং পশুকর্তৃক শশু ভক্ষণে রাজা ঐ প্রকার ব্যবস্থা ক্রিবেন।

বাৰ্পাক্য—আক্লাকে গালাগালি দিলে ক্ষত্রিরর এক 'শত পণ, বৈখ্যের দৈড়শত পণ বা ছইশত পণ এবং শৃজের বধ, অর্থাৎ পূর্বোক্ত, দশবিধ শারীরিক দণ্ডের মধ্যে কোলক্ষপ দণ্ড হইবে।

ক্ষত্তিয়কে গালি দিলে ত্রাক্ষণের ৫০ পণ, বৈশুকে গালি
দিলে ২৫ পণ ও শুক্তকে পালি দিলে ১২ পণ দও হইবে।
বিজ্ঞাতিদিগের মধ্যে সমবর্ণে পরস্পর অপভাষণ হইলে বাদশ
পণ দও হইবে। আর যদি অকৃথা গালি গালাক হয়,
তাহা হইলে পুর্বোক্ত দণ্ডের বিগুণ হইবে।

একজাতি অর্থাৎ শুদ্র যদি বিজাতিদিগের প্রতি কঠিন বাক্য প্রেরোগ করে, তাহা হইলে শুদ্রের জিহবাছেদ দও করিবে। দর্শিত ভাবে শুদ্র যদি আন্ধানকে ধর্মোপদেশ দের, তাহা হইলে রাজা তাহার মুথে ও কর্ণে তপ্ত তৈল নিঃক্ষেপ করিবেন। আর যদি একজন একজনের বিভা, দেশ, জাতি, সংস্থার ও কর্ম সম্বদ্ধে দর্শ করিরা অভ্যথা বলে, রাজা তাহাকে দুইশত পণ দও করিবেন।

মাতা, পিতা, পত্নী, ত্রাতা, পুত্র অথবা গুরু ইহাদিগকে যে গালি দের ও গুরুকে বে পথ ছাড়িয়া না দের, তাহার একশত পণ দণ্ড হইবে।

দগুণারুত্য-জর্থাৎ মারামারি, অস্তাজ্ব ত্রেথাং শুদ্র বে কোন অক্ বারা শ্রেষ্ঠ জাতিকে মারিবে, রাজা তাহার সেই অব ছেণন করিরা দিবেন। শুদ্র যদি শ্রেষ্ঠ জাতিকে মারিবার জন্ম হত্ত বা দগু ভোলে, তাহা হুটলে রাজা তাহার হত্তচ্ছেদ এবং পাদ্ধারা প্রহার করিলে পাদছেদ করিবেন।

শুল ব্রাহ্মণের সহিত একাদনে উপবেশন করিলে রাজা তাহার কটিদেশ লোহমর তপ্তশলাকার অন্ধিত করিরা দেশ হইতে নির্কাসিত করিবেন অথবা বেন না মরে, এইর্নপে তাহার পাছা কাটিয়া দিবেন। দর্প করিয়া শুল ব্রাহ্মণের গারে থ্তু ফেলিলে রাজা তাহার ওঠাধর ছেদন, প্রস্রাহ্মণের করিয়া দিলে লিকচ্ছেদ, অধোবায়ু ত্যাগ করিয়া দিলে অহদেশ ছেম্মন্দ এবং অহলারপ্রক্ষিক যদি হত্তবারা ব্রাহ্মণের কেশ ধরিশ করে বা হিংসাজ্জ তাহার পাদবর ও দাড়ি ধরে, তাহা হইলে রাজা তাহার হত্তবার হেদন করিবেন। ল্যান কাতি

মধ্যে বৃদ্ধি কৈছ কাছারও চর্মক্তের করে, কার্যা রক্ত করি, তাহা হইলে তাহার একশত পণ দও হইবে। বাংন ভেলকারীর ৬ নিকলও হইবে। কারিতেল করিলে বেল নির্কাসন রূপ দও হইবে। মহন্য কিছা পণ্ডদিগকে প্রহারার পীড়া দিলে ক্লেণাস্থ্যারে রাজা প্রহারকারীকে দলকারিকে আহত ক্রিকেন। অঙ্গতেল, ক্ষত বা রক্তপাত ক্রিলে প্রহারকারীকে আহত ব্যক্তির ক্ষত্ত হইবার ক্ষত প্রথম প্রধারিক আহত হবৈব। না দিলে রাজা ঐ ব্যবের উপস্থ

চৌর্যাদি— দ্রব্যক্ষামীর সমক্ষে বলপুর্বাক বে আহ্ব তাহাকে সাহস বলে ও অসমক্ষে গোপন ভাবে অপহরণ নাম চুরি। কেহ কাহারও নিকট দ্রব্য লইয়া রা তাহার অপর্ক্ত করে অর্থাৎ অস্বীকার করে, তাহা হই তাহাকেও চুরি বলে। চোর বে যে অল্বারা পর ধন অগ্ হরণ করে, পুনর্বার আার করিতে না পারে, এজন্ত রার উহার সেই সেই অল্ ছেদন করিয়া দিবেন। পিতা, আচার্য ভার্যা, প্রোহিত প্রভৃতি সকলই দঙ্গনীয়। রাজা যদি নি অপরাধ করেন, তাহারও দঙ্গ হইবে, রাজা নিজে বে জ

চৌর্বোর গুণদোষজ্ঞ শুদ্র চুরি করিলে অষ্ট গুণ, এতাদৃ বৈশ্র চৌর বোড়শগুণ এবং ঐরপ ক্ষত্রিয় চোরের ৩২ খ দণ্ড হইবে।

চৌর্যোর গুণদোবজ্ঞ ব্রাহ্মণ-চোরের বিহিত দণ্ডাপেকা। গুণ দণ্ড হইবে। ভদপেকা গুণবান্ ব্রাহ্মণচোরের শতগুণ দ এবং তদ্পেকা ব্রাহ্মণচোরের ১২৮ গুণ অধিক দণ্ড ইইবে।

স্ত্রীসংগ্রহ ও প্রদারসংভোগে লোক মধ্যে বর্ণসহর বা এবং তাহা হইতে নানাবিধ অধর্ম ও সর্ক্রনাক্ষ উপছি হয়। এই জন্ত প্রদারসম্ভোগে প্রস্তুত লোকদিগকে রা নানাবিধ উজ্জেজনক নাশাকর্ণছেদাদি কঠোর দওবিধ করিবেন। অগন্ধমাল্যাদি প্রেরণ, পরিহাস, আলিজন, জ হার স্পর্ল বা বন্তধারণ, একশ্যার শ্রন ও একত্র ভোষ প্রভৃতি পরস্ত্রীর সহিত এ সক্ল ব্যবহার করিলে স্ত্রীসংগ্রহ রূপে পণ্য হইবে। স্ত্রীলোকের অস্থান ক্ষিপ্রক্রে স্পর্শ র অথবা স্ত্রীলোক বদি প্রক্রের অস্থান স্পর্শ করে এবং ভাষ্য পুরুষ যদি কৃষ্ট না হয়, তাহা হইলে এই দোষ সামুষ্ত স্ত্রীন গ্রহপদ্বাচ্য হইবে।

শূত যদি অকামা আগনীতে উক্ত প্রকার সংগ্রহ^{ৰ কা} তাহা হইলে তাহার প্রাণাত লগু হইবে। চারিবর্ণেই^ই সর্বানা ভাগ্যা অত্যত্ত রক্ষণীয়া। ভিক্ষালীবী, বন্দী, ধ্রি এবং পূপকারানি কাক্ষর ইহারা পরস্ত্রীর সহিত জনিবারিত ভাবে কথা কহিতে পারে, কিছ খানী কর্তৃক নিবিদ্ধ হইলে ভাহারা ভাহার স্ত্রীর •সহিত সম্ভাবণ করিবে না। নিবিদ্ধ হইরাও বে ঐরপ কথা কহে, ভাহার এক স্থবৰ্ণ লগু হইবে।

পূর্ব্বে যে বিধি হইল, উহা নট, নর্ত্তক, কিছা ভার্য্যোপ-জীবী নীচলোকদিগের জী সক্ষে খাটিবে না। তথাপি ঐ সকল লোকের জীর সহিত বা দানীর সহিত গোপনে ব্যভিচারকর্তার কিঞিৎ দশু হইবে।

অকামা কল্পা পমন করিলৈ সন্তঃ শারীরিক দণ্ড হইবে।
সমানলাতীর অকামা কল্পাগমনে শারীরিক দণ্ড নাই।
অপরুই লাতীর বীলোক যদি আপন অপেক্ষা উৎক্রই লাতীর
পুদ্বকে ভলনা করে, তাহা হইলে উহার কিছুই দণ্ড হইবে
না। যে পুরুষ দর্প করিরা বলপুর্যাক সমান জাতীর পরন্তীর
ঘোনিতে অসুলি প্রক্ষেপ করে, তাহার তৎক্ষণাৎ অসুলিবর
ছেদ করিতে হইবে এবং ৬০০ শতপণ অর্থান্ড হইবে।
সকামা সমানলাতীরা স্ত্রাতে যদি এরিপ অসুলি প্রক্ষেপ
করে, তাহা হইলে ভাহার অসুলি ছেদ হইবে না। কিন্তু
অত্যাসক্তি নিবারণ অন্ত তই শত পণ দণ্ড হইবে। আর যদি
কোন কল্পা অন্ত কল্পাকে অসুলি প্রক্ষেপ বারা নাই করে,
ভাহা হইলে ভাহার সুইশতপণ দণ্ড হইবে এবং বিশ্বপ
তর্ম ও দশবেত হইবে।

'ক্তৈৰ ক্যাং বা কুৰ্য্যাৎ ভন্তা: ভাদিশতোদম:। ভন্ক বিগুণং দভাৎ শিকালৈচবালু রাদ্দশ॥' (মহু ৮০৩৯)

यनि वयत्रा क्वी कञ्चादक केन्नर्भ मड़े करत, ভारात मछक मुचि उ के द्विमा व्यक्ति (इमन कतित्व धवः शर्मा व्यक्ति इमा वासमार्थ देवादक ज्ञान क्याहरू हहेरव। धनिर्हादक क्या **এই मर्लि अथवा त्रीन्मर्यामराम मख इहेन्ना य खौरनाक निय-**পতি পরিত্যাগ করিয়া পরপুরুবে গমন করে, তাহাকে বছ-নোক সমাজে শইরা গিরা কুরুর দিরা ধাওয়াইবে। পাপকারী ^{জার} পুরুষকে ত**গু লোহমর শরনে শরান করাই**রা দাহ कतिरव, वावर के शांशिष्ठं खन्नगार मा इस, खांवर कार्ड धारान করিবে। একবার দভিত হটুরা পুনর্কার বংসরাতীতে যদি পরত্রী গমনদোবে দ্বিভ হর, ভাছা হইলে সেই ছটের বিশুণ ^{দণ্ড হইবে।} ব্ৰাত্য**ৰা**ত স্ত্ৰী ও চাণ্ডালী স্ত্ৰীগমনেও ঐ দণ্ড। রকিতা বা অরক্ষিতা পাকুক, পুঞ বিলাতীয় লী গমন করিলে के कि जा श्रमान मृत्यात्र निकारका थ नवीं बहतन में अ अंदर छाई প্ৰভিতি রক্ষিতা জীগমনে ৰধ ও স<del>ৰ্বাহ্নরণ দও</del> হইবে। বৈশ্র দি রক্ষিতা আক্ষণী গমন করে, ভাহা হইলে ভাহার একবংসর कांत्राद्यांव '७ नर्सवस्त्रव मध्य स्कूटन ध्वतः कवित्र विश्व व

বাদ্দী গমন কলে; ভাষা হইলে ভাষায় সহলপণ দও ও গৰ্মত সূত্ৰমান সভক মুখন হইবে।

रेवड 🕶 क्वाबन वित्र बेकारीमा बाक्ती श्रमम करत, छारा व्हेरमु উवाता म्जर पश्चनीत व्हेरन, अथना वर्ष ना मनवाता উহাদিগকে আছোদিত করিরা দথ করাইবে। আত্মণ **ব**দি রক্ষিতা ত্রান্ধণীতে বলপুর্ত্তক গমন করে, তাহা হইলে ত্রান্ধ-ণের সহস্রপণ দও, আর সকামা আক্ষা গমনে উহার ৫০০ পণ দও হইবে। প্রাণাত্তিক দও লাহইয়া বাল্ণের মতকং মুখন দও হইবে। আদাণ স্কলপাপব্যুক্ত হইলেও ভাহাকে সমস্ত ধনের সহিত অক্ষত শরীরে নির্বাদন করিবে। বৈশ্র-রক্ষিতাক্ষতিয়া জী গমন করিলে এবং ক্ষত্তির যদি ঐক্সপ বৈশ্রস্তীতে সঙ্গত হয়, ভাহা হইলে, অরক্ষিতা ব্রাক্ষণীগমনে বে ए ७ उन्दार हो प्रश्ने प्रश्ने क्रिक्त । त्रांक्रिण प्रति क्रिक्त क्रिक्त । বা বৈখ্যা স্ত্রীগমন করে, ভাহা হইলে ব্রান্ধণের সহস্র পণ দও হইবে। বৈশ্য যদি অরক্ষিতা ক্ষত্তিয়া গমন করে, ভাহা হইংল বৈভের e • পণ দণ্ড হইবে। ক্ষত্রির ঐরপ গমন করিলে গৰ্মভূত্ৰারা মন্তক্ষুপ্তন, অথবা ৫০০ পণ দশু হইবে। অরকিতা ক্ষত্রিয়া বা বৈখ্যাগমনে ত্রাহ্মণের সহজ্র পণ দণ্ড रुरेटर । ठेकानानि जीगमत्मक बान्तर्गत के नर्छ । (व ब्राम्नाव^{्र} রাজ্যে দও ভরে চৌর্ব্য, পরত্রী গমন, বাক্পারুল্ম, সাহস; मध्याक्य প্রভৃতি কেছ<u> चाहत्र</u> करत्र ना, সেই রাজা ইছে-তুল্য প্রভাবসম্পর।

কৰ্মকম ঋষিক্কে যে যজমান জকারণ ত্যাগ করে এবং নির্দোষ যজমানকে যে পুরোহিত অকারণ পরিত্যাগ করে, এই উভয়েরই একশত পণ দণ্ড হইবে।

"ঋতিদং যন্তাদুলদ্ যাজ্যো যাজ্যকার্তিক্ তালেছদি। সক্তং কর্মণাত্তক তথােদিঞঃ শতং শতং ॥" ( মহু ৮০৮৮ )

পিতা, মাতা, ত্রী ও পুত্র ইহাদের যদি পাতিভা না থাকে, অথচ মোহপূর্বক কেহ পরিত্যাগ করে, তাহাকে ৩০০ পণ দত করিবেন।

বিজাতিদিগের গার্হখাদি আশ্রমঘটিত শাল্লাফুটান সম্বন্ধে যদি পরস্পার কোন বিবাদ ঘটে, তাহা হইলে আত্মহিতভাষী রাজা তৎক্ষণাৎ কোন দও ভির করিবেন না। এই ছলে হে যে প্রকার সন্ত্রমের যোগ্য, তাহাকে সেইরূপ পূজা করিবা সান্ধনা বারা তাহাদের জোধের উপশম করিবা বান্ধণগণের সাহায়ে ধর্মব্যবস্থা বুঝাইরা দিবেন। কোন গৃহস্থ মাজ্যদিক কার্যে ২০ জন প্রান্ধ ভোজন করাইতে হইলে প্রতিবেশী জথবা তদনভ্রবর্তী অস্থ্যেশী ভোজনার্হ বান্ধণকে অতিক্রম করিবা অস্ত্র বান্ধণ ভোজন করান, ভাহা হুইলে

নাকা কাৰাৰ একমাৰা কোণ্য ৰও করিবেন। নিজে লোকির হইরা প্রতিবেশী বা অন্তবেশী আোকির সাধুকে বলি কেই বিবাহাদি ভূতিকার্বো ভোজন না করান, তোহা হইলে ভাহাকে ভোজনের বিশুণ ভোজা প্রবা দিতে হইবে, এবং ভাহার এক মাৰা, শ্বর্ণ দও হইবে।

সে সকল পণ্য ক্ষয় রাজার নিজের বলিয়া বিখ্যাত, অথবা যে সকল জব্য দেশান্তকে লইরা যাইতে রাজা নিংবধ করিরাছেন, থে ব্যবসারী লোভে ঐ সকল জব্য বিক্রের বা দেশান্তরে লইরা যায়, রাজা ভাহার সর্ববহরণ করিবেন। রাজা পণ্য জব্যের লভ্যাংশের বিংশভিতাগের এক ভাগ লইবেন। যদি কেহ'এই শুদ্ধ পরিহার কল্প উৎপথে গমন করে, রাজ্যাদি সময়ে জ্বয় বিক্রের করে, কিংবা বিজ্যের জব্যের সংখ্যা মিথ্যা করিয়া বলে, রাজা উহাদিগকে অপলাপিত রাজনেরের অইগুণ দণ্ড করিবেন।

ব্রাহ্মণ বিধি প্রাভ্ত্য এবং লোভে অনিচ্ছুক ব্রাহ্মণকে
পাদধোত প্রভৃতি দাত কর্মে নিযুক্ত করেন, তাহা হইলে
রাজা তাহাকে ৬০০ পণ দণ্ড বিধান করিবেন। (মহ ৮ অং)
যাজ্ঞবন্ধাসংহিতার দণ্ডবিধি সহদ্ধে এইরূপ লিখিত আছে—

 রাজা জোধ ও লোভশ্ত হইরা ধর্মশাল্লাহ্মসারে বিহান্
ত্রাহ্মণদিগের সহিত ব্যবহার বিশেষক্ষপে পরিজ্ঞাত হইরা
দণ্ডবিধান করিবেন।

দশুপাক্ষ্য-আঘাত চিহ্ন ও প্রয়োজনাদি পর্য্যালোচনা ध्वर क्रम ध्ववारमत डेभव निर्खन कतिया माक्नीतिहरू विवारम विरमय भर्गारमाठना कतिया एक निर्दन। शास्त्र छन्द्र, भक्र, किःवा ध्वि नित्व मम्भग मुख्य इहेटव । व्यभविध वच्छ, भान-ধৌত ও নিষ্ঠাবন অল ম্পর্ল করাইলে পূর্ব্বোক্ত দঞ্চ অংশকা विश्वन मृत्रु स्टेर्टा সমবাজির প্রতি এই নিরম। উৎকৃষ্ট वाकि वा शब्दीई धिक्रि अहे कश क्रिए विश्वन मण्ड। शैन ব্যক্তির প্রতি এই রূপ করিলে অর্দ্ধ দণ্ড। চিত্তবৈক্লা বা মত্ততাদিবশে ঐ রূপ করিলে দণ্ড হইবে না। অঞাতিকে প্রহার করিলে বা তছদেশে পাতৃলিলে দশপণ দও হইবে। পরস্পর হননার্থ শল্প উত্তত করিলে উত্তম সাহস দণ্ড হইবে। शम, त्कम, क्ष्य किश्वा इष्ट श्रह्ण कतिया चाकर्षण कतिला मण्या मख्रहरत । वळवाता वक्त, शाहमध्य धवः चाक्रन-পूर्तक পानधात कतिरन, भछ्पन मध स्टेरन। कांश्रीन প্রহারে আহত ব্যক্তির রক্তপতি না হইলে ঐ প্রহর্তা ব্যক্তির २२ ११, आत त्रक्रभाक **इंदेरन हेहात विश्वन अर्थ एक इंदेरन**। रुख, शांप किश्वा पर छानिया पितन, कर्न वा माना दहपन कृतिरण, शूर्व यण अधिक वाफादेश निरम, जात बाद्याटक माध्य

মৃতক্ষ হয়, গেইছপ জাতুন করিলে মধ্যম সহিদ হত হইবে। প্ৰমন, জোলন এবং কথা করা বছা করিলে, চুহ ও লিহবা ফুডিয়া দিলে এবং গ্রীবা, বাহু, কিংবা উক্ত ভারিয়া দিলে মধ্যম সহিস্ক ভ হইবে।

যে অপরাথে এক জনের যে দণ্ড হইরাছে, বছজলে দিনিত হইরা এক জনকে প্রহার করিলে সেই অপরাথে জনগেল বিভিন্ত দণ্ড জানার জিলে স্থানার জিলে স্থানার বিভাগ করিতে হইবে। পরের জিলি স্থানার করিলে জানার অভিহত, বিদারিত, বিধাক্ষত এবং ভূমিশারিত করিলে জানার যথাক্রমে পাঁচ দশ ও বিংশতিপণ দণ্ড হইবে এবং গৃহস্থানীরে প্রাক্ষেম পাঁচ দশ ও বিংশতিপণ দণ্ড হইবে এবং গৃহস্থানীরে প্রাক্ষেম পাঁচ দশ ও বিংশ জিল বের করিল বিংক্ষেপ করে, বিষ সর্পাদিপ্রাণহর ক্রব্য কেনির দের, ইহাদের মধ্যে প্রথমাক্ষ ব্যক্তির ২৬ পণ ও বিলীর ব্যক্তির মধ্যম সাহ্দ দণ্ড হইবে। ছাগাদি ক্ষুত্র পণ্ডর ভারন, রক্তপাত, শৃক্ষাদিজেদন এবং করচরণাহি অক্ষজেদন হানে যথাক্রমে ভৃইপণ, চড়ুস্পাধ এবং অইপণ দণ্ড হইবে। উন্নাদিপের নিলচ্ছেদন কিয়া হান্তা করিলে মধ্যমনাহন্তা ছইবে। গ্রাদিমহাপণ্ডর এই সকল করিলে উহার বিশাদ্ত হইবে।

বে সাধারণ বস্তুর অপলাপ করে এবং দাসীর গর্ত্ত বিন্দ করে, ভ্যাগের উপফুক্ত কারণ ভিন্ন পিতামাতা প্রভৃতিবে ভ্যাগ করে, ভাহার শতপণ দণ্ড হইবে। রক্ষক শোধনার্থ সমর্শিত পরকীর বস্ত্র পরিধান করিলে ভিনপণ দণ্ড, বিক্রা করিলে, ভাড়া দিলে, বন্ধক রাখিলে বা বাদ্ধবদিগকে পরিতে দিলে দশপণ দণ্ড হইবে।

আয়ুর্কেদ না জানিয়া কেবল জীবিকা নির্কাহার্থ বেন পশুপকীকে মিথ্যা চিকিৎসা করিলে, চিকিৎসকের প্রথম সাংস দণ্ড, সাধারণ মহায়কে ঐ রূপ করিলে এখ্য সাংস দণ্ড এবং রাজপুরুষকে ঐ রূপ করিলে উত্তম সাংস্থ হউবে। (আজ্ঞব্যাং ২ অং)

এমন আর ঐ সকল দগুবিধি প্রচলিত নাই। বুটা গবর্মেন্ট এখন নৃতন নৃতন দগুবিধি আইন চালাইরাছেন।

•২৪ কৌরব পক্ষীর এক্জান বীর। ইহার দ্রাতার নাম বুড় ধার। দগুধারের মৃত্যুর পর ইনি অর্জুনের হতে নি হন। (ভারত কর্ণ ১৯ আং ) ২৫ হাপরের একজন রাল।

(ভারত আদি' ৬৭ বি

২৬ ইক্ষাকুর একশত গুরুমধ্যে একটা পুত্র, ইনিকা চার্ঘের শিশ্ব ছিবেন। ২৭ ধর্মের পুত্র, ক্রিবাণ্ডন্ট ২৮ দশুমতি কর্ডার জচ্। রাজা, দশুবিধানকর্ডা। দশুকে (পুং ক্লী) দশুইদ,কার্মি কৈ-ক। ১ ছলোকে ্লের প্রত্যেক পালে ২৭টা করিরা অক্ষর হইবে। ইইরার নক্ল-শ্বনিত নর্গনং তভা সপ্তরেকাতলা চওবৃটিপ্রপাতো চবেদভক:।" (বৃভরত্বাকর)

এই ছলের প্রত্যেক চরণের প্রথম ষ্ট্ডে ৬, ৮, ১১, ১৪, ১৭, ২০, ২০ ও ২৬ বর্ণ নতু, এডডির অঞ্ভবর্ণ গুরু।(১) উদাহরণ—

লর্ঘন্দ্রিমহারম্ভবেষালী চপ্তর্তিপ্রপাতাকুলং গোকুলং সপদি বলোক্য সব্যেন হতেন গোবর্জনং নাম শৈলং দধলীলয়া। লন্মনরক্রক্তেতি গর্জকসন্মুখ্নগোপালনালিকনানিকতো দ্ভিন্বধাত্ধারাবিচিআল্রালো মরারাভিরম্ভ প্রমোদার বং ৪" আরও এক প্রকার দশুক হন্দ আছে, ইহার প্রভ্যেক চরণেও ২৭টা করিয়া চরণ থানিবে, কিন্ত ইহাতে বিশেষ এই—প্রথম হইতে ৬, ৭, ১০, ১৩, ১৬, ১৯, ২২, ২৫ এই কয়টী বর্ণ লঘু, এভডিয় অক্ত সকল বর্ণ শুরু।

"প্রচিতক্সমভিধো ধীরধীভিঃ স্বতো দপ্তকো নৰ্যাহভাৱে: গুডিথো:।" ( বৃত্তরস্থাকর )

२ हेक्। क्तारकत्र श्वरकतः।

"দওকোন্পতিঃ কামাৎ কোধাচ জনমেজয়ঃ" (কামলকী)
ইনি ওকাচার্যের শিশ্ত ছিলেন। ইনি কোন সমরে
ওক্তভার কৌমার্যাধর্ম নাই করেন, ওকাচার্য্য জানিতে
পারিয়াইহাকে শাপ দেন, এই শাপে প্রীর সহিত দথা হন,
পরে ইহার রাজ্য ভারণ্য হইরা যায় এবং ভাহা দওকারণ্য
নামে রিখ্যাত হয়। (রামাং)

ত বাভরোগ বিশেষ, এই রোগে পাণি, পাদ, শির, পৃষ্ঠ, শ্রোণি প্রভৃতি স্থানে দশুদারা আঘাত প্রাপ্ত হলৈ বেরপ বোধ হয়, সেইরপ বায়ু ঐ সকল স্থান স্তব্ধ করিতে থাকে, এইরপ হলৈ ভালাকে দশুক বলে।

"পাণিপাদশিরঃ পৃষ্ঠশ্রোণিস্বস্তাতিমারুতঃ।

দত্তবংজকগাত্তত দত্তক: সোহত্বক্রম: ॥" (জাবপ্রত)

উক্লক (পুং) দত্তবৎ কলোমূলং যত। ধরণীবৃক্ষ, ভূমিক্ষা। (রাজনিং)

সকর্ম (তি ) সম্ভাৱ কলোম স্কুলিধান্ত কিনি মুক্ল কিন্তু

उक्क् (बि) म**७७ कर्छा। म७**विधात्रक, विनि म**७**विधान करत्रन।

७वर्षान् ( क्री ) मथक कर्षा। मथविषाद्यक कार्यहाः . । ७कल् (-ग्रेर) इत्कारकत्रः।

ণ্ডকা (ত্রী) দওক ব্রীলিক্ষাদ্ধ টাপ্। নাগবলালভা। ণ্ডকাক (পুং) দভো ব্যদ্ভইব কাক:। অস্কলস্চক্দাৎ অভ তথাদং। ক্রোল্কাক, বাঁদ্ধকাক ৮

দ্ধ কারণা ( রী ) দওকং দান অরণাং। অনহান, দওকাবন, দেবন, দুৰ্ঘান কাৰ্যান, দেবন, দিবন, দিবন,

"কাবোধ্যারাঃ প্নক্লপগনো দশুকারাবন্দে বঃ।" (উত্তরচরিত) দশুক্তি (ত্রী) দশুর্থং কাঠং। দশুর নিমিত কাঠ, দশু স্থানীয় কাঠ। [দশু দেখাঃ]

দশুরোরী (জী) অপরোভেদ। শউর্মশী মিশ্রকেশী চ দশু-গৌরী বক্থিনী।" (ভারত বনণ ৪৩ অ॰)

দশু এই প্রি) দশু ত এই পং। সন্তাসাপ্রম অবস্থন, এই আশু মীদিগের হতে আশু ম চিহ্বরপ এক এক গ্রাছি দশু পারে।

দশুপ্রাস্থ ( আ ) দশুং গৃহ্লাতি গ্রহ-অণ্। দশুণারক।
দশুপু ( আ ) দশুন দেহেদ হস্তি হন-উক্। দশুণারম্মকর্তা,
যিনি দৈহিক দশুবিধান করেন।

"বস্থ ডেনঃ প্রে নান্তি নাঞ্জীগো ন ছইবাক্।
ন সাহসিকদগুমে স রাজা শক্রলোকভাক্॥"(মন্তু ৮০০৮৬)
যে রাজার রাজ্যে চোর, পরস্তীগামী, দগুপারুশ্বকারী
প্রভৃতি লোক না থাকে, সেই রাজা ইক্রভুলা।

দশুচক্রে (পুং)> পুরোণোক্ত অন্তভেদ। ই সৈক্সবিভাগভেদ।
দশুচক্রে (পুং) ভারভেদ, একধর্মাবিচ্ছির ঘটদানির
প্রতি যেমন দশুচক্র প্রভৃতির কারণতা আছে।[ভার দেখ।]
দশুটক্রা (ন্মী) দশু। তাড্যমানা ঢকা। বাভবিচ্দাব, দামামা,
নাগরা। পর্যায়—নালী, ঘটা, যামনালী, যমেককা, যামঘোর,
দক্ষম, হৃদ্দ্ভি, হৃদ্দু, গভীরিকা। (শক্ষরণ)

দগুতাত্রী (স্বী ) দণ্ডেন তাড্যমানা তামী তামনির্শিতবাস্থং। তামীবাস্থতেদ। (শব্দরং) ক্লম্ড্রী।

দশুত্ব (রী) দশুত ভাব: ভাবে দ। দশুতা, দশুর ভাব।
দশুদাস (পুং) দশুদি ধনশুরার্থং দাস:। মালকত দশু
ভূত্তির অন্ত যে দাত বীকার করে। রাজা অর্থনিশু করিয়াছেন অথচ দিবার ক্ষমতা নাই, এই অন্ত বাহারা দাসম্ব বীকার করে, ভাহাদিগকে দশুদাস কহে।

শ্বৰাহতো ভজনাসো গৃহত্ব: ক্ৰীভদ্তিমো। গৈতিকোদগুদাসক সংগতে দাসবোদয়: ॥" ( মছ ৮/৪১৫ ) [ দাস দেখ । ]

IIIV

मश्रद्धमयक्त (क्री) मश्रदमयञ्जूनः यव । धर्माधिकतनः, श्रूनिम न्यामान्छ ।

দৃশুধ্র (পুং) ধরতীতি ধর: পচাদ্যচ্দগুত ধর:।১ ব্য।
২ রাজা, রাজা লোক সকলের হিতির জন্ত দগুধারণ করেন,
এইজন্ত রাজার নাম দগুধ্র।

"জিশো দপ্তত বৰুণো রাজাং দতধরো হি স:।" (মজু) ( অ ) ৩ লপ্তড়ধারক।

দিওধার (পুং) দওংধরতি ধু-অণ্। ১ যম। ২ রাজা। ৩ খনাম-খ্যাত এক নৃণতি ৮ ইনি জোধবর্দ্ধন অহারের অংশে জ্যা-এইণ করেন।

"ক্রোধবর্দ্ধন ইত্যেব যত্তঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। দশুধার ইতি খ্যাতঃ সোহভবনু মহুজেখারঃ॥"

( ভারত ১।৬৭।৪৭ )

ইনি কুক্পাঞ্চৰ-সমরে গুর্বায়ধনের বিশেষ সহায়তা করেন এবং অর্জ্নের সহিত তুমুল সংগ্রাম করিরা অর্জ্নের হতে নিহত হন। ইহার আতা দণ্ডও এই যুদ্ধে নিহত হন। (ভারত কর্ণ ১৯ অং) ৪ পাগুৰপক্ষীর একজন বীর, ইনি পাঞ্চালবংশীর। জোণ ও কর্ণের সহিত অনেক যুদ্ধ করিরা অবশেষে কর্ণের হতে নিহত হন। (ভারত কর্ণ ৫০ অং) ৫ ধৃতরাষ্ট্রের এক পুত্র। (ভারত ১ । ৬৭ । ১০২)

(वि) ७ मध्यात्रक, भागक।

দশুধ্রেন (ক্লী) দশুক্ত ধারণং ৬-ডং। ১ দশুগ্রহণ। ২ সন্যাসা-শ্রম অবশ্বন।

দশুধারিন্ ( অ ) দশুং ধরতি দশু-ধূ-ণিনি। ১ দশুধুর। ২ দশু-্শ্রমী, ঘাহারা সন্নাস অবলখন করিয়াছেন।

मखश्रुम् ( प्रः ) मखशाती ।

চাণক্যাদি প্রণীত নীতিশাল্ল।

"সর্ক্রাম্পিতাদেশঃ সপ্তবীপৈকদশুধৃক্।" (ভাগ ৪।২১।১২)
দশুন (ক্লী) দশু-লুটি। 'দশু দেওবা, শাসন।

দশুনায়ক (পুং) দশুং রাজ্ঞাং চতুর্থোপারং নরতি নী-ধুস্।

> দেনাপতি, চতুরল বলাগ্রাক । ২ দশুপ্রণেতান্প। ও দশু

দিবার অধিকারী বিচারপতি। ৪ স্র্যোর একজন অস্চর।

দশুনিপাতন (ক্নী) দশুভ নিপাতনং। দশু দেওন।
দশুনীতি (জী) দশুন নীরতে যা বা দশুনীরতেহনরা, নী
কর্মণি করণে বা জিন্। অর্থপান্ত, রাজনৈতিক লীজ,
যাহাতে রাজ্যপাসনসংক্রান্ত যাবতীয় নিয়ম ও উপদেশ ক্রিই

"নতেন নীয়তে চেদং দঙং নয়তি বা পুন:।
দঙ্গনীতিয়িতি থাতা ত্রীন্ লোকান্তিবর্ততে।" (ভারত)
শূএকৈব দঙ্গনীতিত্ব বিজেত্যোলনমী, হিজিঃ।

তভাৰ সৰ্কবিভানামারভাঃ সমুদাহভাঃ # *

"লমো দও ইতি খ্যাতভাৎহ্যাদভোমহীপতিঃ 
ভঙ্গ নীতি ৰ্বভনীতি ন্বনামীতিক্চাতে # ( কাঞ্চন্ম)

এক দওনীতিতেই ঔশনসী প্রভৃতি বিভা ভব্_{হিচ}
এবং তাহাতেই সকল বিল্যার আরম্ভ কবিত হইরাছে। দননই
একমাত্র দণ্ড, :সেই দণ্ডে রাজা অবস্থান করেন, এইন্ত রাজার নামও দণ্ড। রাজা লোকদিগক্ষে বাহা দারা সংস্থাপিত করেন, তাহার নাম দণ্ডনীতি।

মহাভারত শান্তিপঁর্কে লিখিত আছে—

ভগৰান কমলবোনি ব্ৰহ্মা লোকভিতির অস্ত দওনীতি শাহ প্রণায়ন করেন। ঐ নীতিশারে এই সমত্ত আছে—ধর্ম, অর্থ, কাম, মোক এবং মোকের সম্ব, রজ ও তম নামে তিন্বর্গ वृद्धि, क्षत्र ७ नमानक नाटम मध्य विदर्श, हिछ, एम् কাল, উপার, কার্য ও সহায় নীতিল বড়্বর্গ, কর্মকাও, कानकाथ ७ कृषिवांनिकानि .कौषिकाकाथ, व्ययांकातकार নিযুক্ত চর ও ৩৪৪চরগণের বিষয়, রাজপুজের লক্ষ্ **চরগণের বিবিধোপার, সাম, দাম, ভেদ, দত্ত, উ**পেক্স, **८७ हकात्रन, मञ्चना ७ विज्ञम, मञ्जनिक्ति ७ अनिकित कन**, ७३, সংকার ও বিভাগ্রহণার্থ অধ্য মধ্যম ও উত্তম এই তিনপ্রকার मिक्क, क्रकृक्षिय योखाकान, खिवर्शित विखात, धर्मयुक विवर, অর্থবারা বিশ্বর ও আহুরিক বিজয়, অমাত্য, রাষ্ট্র, হর্গ, কা ও কোষ এই পঞ্বর্গের জিবিধ লক্ষণ, প্রকাশ্র ও অপ্রকাশ त्मनात्र विषत्र, व्यष्टेविध शूष्ट्र विवत्रश्रकाम, रखी, व्यत्र, त्रप, •পদাতি, ভারবহ, চর, পোত ও উপদেষা এই অইবিং त्मनाम, वद्यामि ७ अज्ञामिए विषयांश, अकिठांत्र; अति, भिव ও উদাসীনের বিষয়, প্রথমনের প্রত্ন করাদিজ্নিত স্ক্র গুণ, ভূমিগুণ, আত্মরকা, আখাস, রথাদি নির্মাণের ^{অনু} সন্ধান, মহুত্য, হস্তী, অখ ও রণসজ্জার উপার, বিবিধ বৃষ্ট বিচিত্ৰ যুদ্ধকৌশল, ধুমকেতু প্ৰভৃতি গ্ৰহণণের উংগাড, উকা প্রভৃতি পতন, স্থপানীক্রমে যুদ্ধ, পলায়ন, অৱশরে भागश्रामान, अञ्चल्छान, रेम्छवामम, त्याहन, रेमरक्रव श्रीरः পাদন, পীড়া, আপদ্কাল, পদাভিজ্ঞান, খাড়খনন, প্^{ভাকাৰি} आपर्गम्भूर्यक् भक्तत्र असःकत्रत्व अवन्यात्रव, त्वात्रं, वेश्ववकार, অরণ্যবাসী, অধিদাতা, বিবপ্রবোক্তা, প্রতিরপকারী, ^{প্রধান} वाक्तित्र (क्षत्, वृक्षाध्यमन, मञ्जूष्ठांतिकादा रविविश्ति বলহাস, শহা উৎপাদন, অনুরক্ত ব্যক্তির আরাধন, विधान अनन पाता शत्रताद्धे शिकाधमान, तांवा हान दृषि ७ नमछा, कार्यानामध्य, बाह्रदृषि, नाकमधा^{र्थ} विराजक गरवार, बनवारमञ्जीकम ७ विमान-गावम, द्रव होरे

हात, बरनत जेम्मूनन, वातिम, मान, खवानरवाह, चाहुछ वाक्तित · ভরণপোবণ, कृष्णवाकित পর্বাবেক্ষণ, वशाकाल व्यवहान, ৰাসনে অনাসক্তি, ছুণভির ৩৭, সেনাপভির ৩৭, জিবর্গের ভারণ ও গুণ, দোব, অসৎ অভিস্ত্তি, অসুগতদিগের খ্যবহার, সকলের প্রতি আশকা, অনবধানতা-পরিহার, অলকা বিবরের লোভ, লব্ধ বস্তুর বৃদ্ধি, প্রাবৃদ্ধ ধনের বিধানালুসারে সংপাত্ত हान, धर्म, व्यर्थ ७ काम ध्वरः वामन विनात्मत्र निमित्त व्यर्थ-দান, মৃগরা, অকক্রীড়া, স্করাশান ও নীসম্ভোগ এই চারিপ্রকার কামজ, আর বাক্পারুল্ম, উত্রতা, দশুপারুবা, নিগ্রহ, আত্ম-ত্যাগ ও অর্থদ্বণ এই ৬ প্রকার ক্রোধল, এই সর্দারে দশ-थकांत रामन, विविधमञ्ज ७ कार्यायज्ञ, हिक्किटलांभ, देहजारक्तन, অবরোধ, ক্রয়াদি কার্বোর অন্ত্রাসন, নানাপ্রকার উপ-করণ, যুদ্ধাতা, যুদ্ধোপার, পণব, আনক, শৃত্য ও ভেরী सरवार्गार्थकत्नत वहे ७ थाकात स्वा, नक त्रात्मा भाविष्यानन, গাধুলোকের পূজা, বিধান্ লোকের সহিত আত্মীয়তা, দান ও হোমের পরিজ্ঞান, মাললা বছর স্পর্ল, শরীরসংখার, মাহার, আন্তিকতা, একপথ ধরিয়া উরতিশাভ, সভ্য ও মধুর বাক্য, সামাজিক উৎসব, গৃহকার্য্য, চত্তরাদিহানের প্রত্যক ও পরোক ব্যবহারের অনুসন্ধান, প্রাক্ষণের অনুতঃ-নীয়তা, যুক্তাহুদারে দণ্ডবিধান, অহুজীবিগণের মধ্যে জাতি ও গুণগত পক্ষণাত, পৌরজনের রক্ষাবিধান, বাদশ রাজ-মঙ্গ বিষয়ক চিস্তা, দিস্প্রতি প্রকার শারীরিক প্রতীকার, দেশ, জাতি ও কুলের ধর্ম, ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোকের উপায়, धर्म्पृर्, क्यानि अञ्चि मृनकार्यात अवानी, मात्रारवात्र, নৌকা-নিমজ্জনাদি ছারা নদীর পথরোধ প্রভৃতি। এই শাস্ত্রবারা জগতের যাবতীয় লোক দণ্ডপ্রভাবে পুরুষার্থ कननार्ड नमर्थ इहेरन, धरे क्छ हेशद्र नाम मधनीिछ। এই দণ্ডনীতিতেই ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক এই চতুর্ম্বর্গ নিহিত আছে। **ত্রন্ধা প্রথমে লক্ষ্যার দ্ওনীতি প্র**ণয়ন করেন, পরে প্রজাবর্গের আয়ুর অরতা ব্রিতে পারিয়া বংকেপ করিতে প্রবৃত্ত হন। মহেখর ইহাদশ সহত অধ্যারে थकांग करतन। थे नःक्लिश्च नीश्विमाख देवमानाक नारम অসিদ্হইন। পরে ইজা ভাহাকে ৫ হালার অংখ্যাজর বর্ণন ৰরেন, ইহা বাছদগুক ৰামে বিখ্যাত হয়। বৃহস্পতি এই বাহ-रेक श्रेष्ठ जिन महत्व काशादिक ध्यकात करतन खुनः होहा वार्ड-স্থানামে প্রসিদ্ধ হয়। পরিশেবে শুক্রাচার্য্য এই শাল্পকে এক ব্রুত্র অধ্যারে রচনা করেন। এইরূপে করতে প্রচারিত হর। ^{थर १७}नीजिश्र**णात्रे सन्तर्शत्य नीजि ७ ४८**पंत्र थातात्र बहेबाह्य ।

म खनीत्र ( बि ) मथ-मनीतत् । बटकतं द्यांगा, बका, मधाई । দশুনেভূ (অ) দশুং নরভি দশু-দী-ভূচ্। দশুবিধাতা, দশুের

मखभ'(गू:) मरखन भाषि भी-ए। मख वाता भागक ताला। विनि मखबाता भागन करतन।

मख्यारखंश (पूर) मटखँन मख्यात्रत्यन भारवनः नीहः। चात्रः भाग, त्मोवादिक, बाबी, मदबाबान ।

मराशानि ( पूर ) मखः यष्टिः भारती यक । ) यम, देनि नर्याना দও হতে বিরাজমান থাকেন। ২ কাশীভিত ভৈরবভেদ। পূर्वछ्य नारम এक्कन यक महारम्यतत्र आत्राधमा कतित्रा একটা পুত্র লাভ করেন, এই পুত্রের নাম হরিকেশ। হরিকেশ বাল্যাবধি মহাদেবের প্রতি জাতিশর আহুরতে ছিলেন। পরে মহাবেবের উদ্দেশে কঠোর তপভা আরম্ভ করেন, এই करण चरनक हिन चडीफ ट्टेन। महाराग्य हेराज जनछात्र প্রীত হইয়া নন্দীয় হস্তধারণপূর্বক পার্বভীর সহিত ছরি-কেশের • তপজাহলে উপস্থিত হইলেন এবং হরিকেশের গাত্ত-न्त्राम कतिरानन, हेहारछ छाहात कारनामत्र हहेन अवः हतिरकम সমূৰে অভীট দেবতাকে দেখিতে পাইরা আনন্দ বিহ্বৰূ हरेता महारमदत्त्र छव कतिर्छ नाशिन। महारमय हेहारक বলিলেন, যজা! তুমি এই ছানে দওধর হও, আল হইতে তুমি এই কালীত হুটের শাসন ও শিটের পালক হও এবং তুমি আল হইতে লঙপাৰি নামে বিখ্যাত হও। আমার আক্তার সম্ভ্ৰম ও উদ্ভ্ৰম নামে গণৰয় সৰ্বনা ভোমায় অস্থগামী ছইয়া थाकित्व। এই कांगैनानिशत्वत्र शत्न स्तीन त्र्रथा, रुख नर्भवनम्, छान् लाहन, পরিধানে ক্লভিবাস, মন্তকে পিকল জটা, সর্বাচে বিভৃতি, কপালে চক্ত্ৰ-কুলা এবং বাহনাৰ বুৰ প্ৰদান ক্রিয়া অন্তিমকানীন বেশ নির্মাণ করিয়া দিবে। ভোমার অধীন এই ক্লেঅমধ্যে তোমার আরাধনা না করিরা কেহই মুক্তিলাভ করিতে সম**র্ হটবে না। যিনি আনাতে ভঞ্জিনান্ হটবেন, তিনি অথ্ঞা** তোমার পূ**জা** দিবেন। দেবগণ ও মানবসমূহের মধ্যে তুমিই আনান প্ৰনীয় হও, তুমি ছটের দণ্বিধান এখং ছঞ্জ-দিপকে অভয় প্রদান করিয়া আমার সমূধে দক্ষিণ্*নিকে* भवशांन कत्र। महाराज्य म अगागिरक अहेत्रराभ वैत्र निता आनस्त-कांनरन बारवण कतिरननः। एक्षणानि नवारमरवत्र जारमरण এইরণে কাশীপুর শাসন করিতেছেন। (কাশীখা ৩২ আং) ० चनामंत्रां इखदानीत नृगविद्यम्। ( TYTY # 0169 ) ৪ বুৰ্ম্বৃত্তিভেদ।

্ৰত্ৰ হৈ এই লাহত জীয়াপুৰ ১৯ আৰু ) দিওপাত (পুং) দওত পাতঃ। সন্ত্ৰিপাতরৌপৰিলেব। ইহার

লক্ষণ — "নজং দিবা ন নিজামুপৈতি গৃহাতি মুড়ধীর্নভদঃ। উপান দশুপাতো অমাতুরো সর্বভো অমতি॥" (ভাবপ্রাং)

এই রোগে দিবারাত্তের মধ্যে নিজা হয় না, রোগী সর্বাদা ক্রমাতৃরের ফার ক্রমণ করে এ ডাহার বৃদ্ধি বিচলিত হয়। দশুপাত্তন (রী) দশুত পাত্তনং। দশুনিঃক্ষেপ। দশুপারুষ্য (রী) দশুন যৎ পার্কয়ং পরুষতা দশুতেহনে-নেতি দশ্বোদেহস্তেন যৎ পার্কয়ং বিক্ষাচরণং। > ব্যবহার বিষয়ক্ষেদ, তাড়নাদি।

"পরগাত্রেষভিজ্ঞোহো হস্তপাদাযুধাদিভিঃ। ভন্মাদিভিশ্চোপবাতো মণ্ডপাক্ষয়মূচ্যতে ৪° (নারদ)

পর গাত্রে হত্তপাদ ও অন্ত্র প্রভৃতি হারা যে হিংসা এবং বিঠা মূল প্রভৃতি নিংক্ষেপ করা যার, তাহাকে দওপারুষ্ম করে অর্থাৎ দেহের প্রতি বে কিছু বিরুদ্ধাচরণ করা যার, তাহারই নাম দওপারুষ্ম। দৈহিক দওবং যাহা কইজনক তাহাকেও দওপারুষ্ম বলা যার। ২ রাজাদিগের সপ্রপ্রকার ব্যসনের অন্তর্গতি ব্যসন বিশেষ। ৮ জ্ঠাদশ বিবাদের অন্তর্গত বিবাদ বিশেষ, তাড়নাদি। [দও দেখ।]

"অতউর্জ্বং প্রবক্ষ্যামি দশুপার্কয়নির্বরং।" (মহ ৮।২৭৮)
দশুপাল (পুং) দশুং শরীরং পালরতি পালি-অণ্। ১ মংস্তভেদ, অর্দ্ধশক্র মংস্ত, ডাড়িকোণামাছ। দশ্ভেন পালরতি
পালি-অচ্। ২ বারপাল।

দশুপালক (পুং) দশুণালাৎ কারতি কৈ ক। শক্লমংভ, শোলমাছ।

দশুপাশক (পুং) > প্রধান দশুদাতা, প্রধান পুলিশ কর্মচারী।

र বাতৃক, জনাদ।

দশুপাশিক (পু:) জনাদ, খাতৃক, ফাঁস্থড়ে।

দগুপিক লক (পং) দৃশুঃ দেহঃ পিকলোহতা। উক্তরত্ব দেশভেদ। দশুবধ (পুং) দণ্ডেন বধঃ। প্রাণদণ্ড।

দশুবালধি (পুং) দশুইব বালধির্যন্ত। হত্তী, হতীদিগের
নাসুন দশুকার।

দশুবাত্ (তি) দশুইব বাহুৰ্ম্ভ। > দশুকার বাহুৰ্দ্ধ। ২ একজন কুমারাস্থ্যতর।

দশুভীতি (বী) দশুভ জীতিঃ ৬ তং। দশুত হইবার ভর।
দশুভূত্ (পুং) চক্রভামণার্থং লগুড়াদিকং ভ্রমতি ভূ-কিপ্
ভূগাগমণ্ট। ১ কুস্তকার। দশুং দমনং বিভর্তি। (বি.) ২

দশুমহস্ত (পৃং) দশুইৰ মংস্তঃ। দশুকার মংস্তভেদ, শকুর্দী মংক্ত, শোলমাছ। ইহার গুণ-ভিক্ত, পিত্তরক্ত ও ক্ষ-মাশক, শুক্ত ও বলবর্জক।

শদশুমংকো রসে তিক্তঃ পিত্তরক্তং ক্কং ব্রেছ।
বাতসাধারণঃ প্রোক্তঃ শুক্তনো বলবর্জনং ৪° (রাজবল্লভঃ
দশুমা(প)নব (পুং) দশুপ্রধানো স্মানবঃ স্থালো কর্মা।
দশুপ্রধান ক্লন, বালক।

দ্ভমাতক (পুং) পিওতগর। (পারকর নিষ্টু)
দশুমাথ (পুং) দশুমাথে মাথ: পছা:। প্রধান পথ।
দশুমাথিক (পুং) দশুমাথং ধাবতি ঠক্। প্রধান পৰে ধারমান ব্যক্তি।

দশুমুদ্রা (জী) দশুকারা মুদ্রা। তরসারোক মুদ্রাকে।
"উত্তানোর্কমুখা মধ্যা সরলা বন্ধমৃতিকা।
দশুমুদ্রা সমাধ্যাতা॥" (তরসার)

মুষ্টি বৃদ্ধ করিয়া মধ্যাকুলী উত্তানভাবে **উর্দ্ধ** করিলে এই মুদ্রা হইবে।

দশুষাত্তা (জী) দশুষ শত্ৰুদমনায় যাতা যা যাতা প্ৰয়াণ:।
> দিখিজয়। ২ সংযান মিলিত, হইয়া গমন। ও বর্ষাতা।
দশুযাত্ম (পুং) দশুং যচ্ছতি যম-অণ্। ১ যম। ২ দিন। দশু ইক্ৰিয়দমনে যাম: সংযমো যক্ত। ও অগত্যাত্মনি।

**एक्ट्यांश** (श्रः) एक्टियान, माखिक्यान।

দশুরী (স্ত্রী) দশুং তদাকারং রাতি রা-ক গৌরা গুর্। ওলরীবৃক্ষ, এক প্রকার কাঁকুড়।

দশুব্ (এ) দখা বিভাতে হন্ত দখ-মতুপ্ মক্ত বং। ১ দখবিশিং, দখধারী। ২ অভিবাদন, নমন্বার।

দশুবাদিন্ (পুং) দভেন বদতি বদ-ণিনি। > ৰারণাল।
(ত্রি) ২ দশুবক্তা, যিনি শাতি দিবার ভর প্রদর্শন
করেন।

मश्चवार्का (क्रो) व्यवदान छन ।

मखवामिक ( पूर ) बातवान् ।

দশুবাসিন্ (পুং) দখেন বসতি বস-পিনি। ১ ৰার্ণান। ২ এক গ্রামাধিকত জন, এক গ্রামের শাসনকর্তা।

मध्योहिन् (११) मधः यहाँ यह-गिनि। मध्यात्रकः। विनि मध्य यहन करतनः।

দ শুবিক ন্ত (পুং) দশুঃ মন্থানদশুং বিক্জুতি নিবর্গনি বৃত্ত, বি-কৃন্ত অধিকরণে বৃত্ত, ততোৰখং। বে বান আক্রণথি রক্ষ্মারা মন্ত্রদশু আবিদ্ধ থাকে, খোলনগা খুটি, পুর্যায় কুঠর।, খোলমন্ত করিবার অভা।

দশুবিধি ( পু: ) দশু: বিধীৰতেহলিন্ বি-ধা-কি। দশুবিধা দশুবিধারক আইন। ( Criminal law )

मश्रद्धकः (श्रः) प्रश्नाकातः श्रवामिशीनकार त्रकः। वृहीर्ग मनगाशाह, निक्ताह, (Epphorbia) वार्ष-कृत्। वश्वत्रम এই বৃক্ষের পাতা প্রাকৃতি বাই, দখের সভস অবস্থিত থাকে, वह बज हेरात नाम एखतून रहेशाह ।

দশুবাহ ( পুং ) দশুসংক্ষকোবাহং। ব্যুহভেদ, দশুকারে রচিত বাহবিশেষ।

"দওব্যুহেন ভকার্গং বারাজু শকটেন বা।" ( মছ ৭।১৮৭ ) দ্ভাকৃতিবৃাহরচনাদি দওবৃাহ: এবং শকটাদিবৃাহ অপি ভতাতো বলাধ্যকো মধ্যে মালা পশ্চাৎ সেনাপতিঃ পার্ময়ো-**র্ত্তিনতংস্মীপে বেটিকা: ততঃ পদাতমঃ ইভ্যেবং কৃত-**ब्रहाना मीर्चः नर्खाङः नमविद्यारमा मध्यप्रादः' (कून्क)

এই বাহ দণ্ডাকারে নির্দাণ করিতে হর এবং ইহার সঞ ভাগে দৈকাধ্যক্ষ, মধ্যে রাজা, পশ্চাৎ দেনাপতি, উত্তরপার্থে **হন্তী, তংসমীপে ঘোটক ও ভাহার পর পদাভিগণ অব**-স্থিত থাকে।

দও্রতধ্র (পুং) দণ্ডঅন্নতং ভস্ত ধরঃ। ১ দণ্ডরূপ ব্রভধারী রাজা, ঘিনি সর্বাদা ওখারণ করিয়া আছেন। ২ দওধন যম। (बि) ७ मध्यभात्रकः।

"দ্ভব্রতধ্বে রাজ্ঞি মুনয়ো ধর্মকোবিদা:" (ভাগ ৪।১৩।১৯) দ্ওসংহিতা ( ত্রী ) দণ্ডভ সংহিতা শাস্ত্রং। দণ্ডবিষয়ক শাস্ত্র, ফৌজনারী আইন। (Penal code.)

দণ্ডদহায় (পুং) দঙ্গে দহার:। হুই দমন প্রাভৃতিতে রাজার সহায়।

म अस्म ( प्रः ) > भूकवश्मीय विषक्रमनभूज नृभर्छन । (ह्रिवः भ २० व्यः)

২ দাপরযুগের এক নৃপতি। ( ভারত আদিপ › অ ) দণ্ডস্থান (ক্রী) দণ্ডস্ত স্থানং ৬তং। দণ্ডের স্থানবিশেষ, মহ नत्थत रंगी जान निर्वय कतियात्हन,—डेभक्, डेनैंत, बिस्ता, रुष्ठदर,,शानवस, हक्, नांत्रिका, कर्ग, धन ও म्ब ; त्रांका ज्ञान রাধামুদারে এই দ**শ ভানে দওবিধান করিবেন।** 

> "দশস্থানানি দণ্ডত মহ: সায়জুবোহুরবীৎ। উপত্যুদরং खिस्ता इटली भारनी ह शक्षमः ॥ চকুর্নাসাচ কণৌ চধনং দেহতথেব চ।"

• ( মহু ৮/১২৪—২৫ ) [ লখ্ড, দেখ । ]

मध्रुष्ठ (क्रो) मध्रुरेव राखा वृक्षकाला यका जनवर्णा (রাজনি॰)

मक्षाक (क्री) जीवर्डन, वहे जीव हम्भानमीत मगौर्भ, वहे ा योनमानामि कविरम श्लोमस्य मारनव कर्मणाण्यम् । "তথা চম্পাং সমাসাম্ভ ভাগীরধ্যাং ক্তোদকঃ। দঙাক্ষভিগমৈৰ গোসহস্ৰফলং লভেৎ ॥"

(ভারত বনগ ৮৯ বা )

मश्चीचिक ( भूर) मध्यम जानाका कार । मथवाता बाह्यक ষ্টিৰায়া আৰাভ।

म्क्षांक्रिन (ज्ञी) वश्यक क्षाबनक परवाः जनावावः । ३ विकिर्दर्शव দও ও মুগদর্ম। ভচ্চলেন ধার্যভন্ন অভ্যক্ত কার্। ২ শঠভা, কণটতা, কণটীরা বাহিরে লণ্ডাজিন প্রভৃতি ধারণ করে, কিন্ত অন্তঃকরণ শঠতার পরিপূর্ণ, এইক্স্ত ক্তাজিল শক্তে শঠতা বুঝায়।

प्रशास्त्र (बी) पश्च काळा। प्रशासन्, माखि विरात सङ्ग्। मश्चोप्तश्चि ( चरा ) मरेक्षण मरेक्षण व्यवका व्यवका मुक्तः, हेह् সমাসাতঃ পূৰ্বপদদীৰ্ঘ:। (ইচ্ কৰ্মৰাভিছাৰে। পা ৫।৪।১২৭) লাটালাটি, পরস্পর বটিবারা যুদ্ধ। দতে দতে প্রভার করিয়া বুদ্ধ। দণ্ডাদি (দ্লী) দণ্ড আদি ৰ্যক্ত। পাশিস্থাক্ত গণতেক। "ৰণ্ডা-দিভ্যো বং" অর্ছ অর্থ বুঝাইলে দুঁওাদি শক্তের উত্তর ব**ং এড্যের** हत्र। एख, मूजन, मधुशर्क, कभा, व्यर्थ, स्वर्थ, छेएक, বধ, যুগ, গুহা, ভাগ, ইভ ও ভল ইহারা দণ্ডাদিগণ। (পাণিনি) म्खां विभ ( भूः ) म्ख्य व्यविभिक्तः ५७९। म्खां विभक्ति त्रासा। দশুধিপতি (পুং) দশুক্ত অধিপতিঃ ৬তং। দখের অধি-পতি, রাজা।

দশুপতানক (রী) বাতরোগ বিশেষ, বাহু ক্লাঞ্জিত হটুটা. যে সমলে ধমনীতে অবস্থান করে এবং দশুবৎ অস্কৃত करत, छथन छाहारक मधानछानक विनन्ना वानिएछ हरेरव ध्वर हेटा कडेगांशा।

"কফার্তো যদাবাযুর্ধমনীবেব ভিষ্ঠভি।

সদত্তবংক্তমতি কচ্ছে। দ্ভাপতানক: ॥" (ভাবতাং) দণ্ডাপুপত্মায় ( পুং ) দণ্ডে দণ্ডাকর্বে অপুণত্ত তংগদক্ত কর্বঃ তৎপ্রতিপাদকভার:। ভারভেদ, পিষ্টকসংলগ্ন দণ্ডের একদেশ ইন্দুর কর্ত্ক ভক্তিত হইলে পিটক থানিও যে ইন্দুর ভক্ষণ ক্রিয়াছে ইহা সহজেই বুঝিতে পারা বার। কোন প্রহ গৃহের এক ছানে একটা দৰ্ভে একথানি পিষ্টক রাধিয়া कार्यास्टरत भ्रमन कतिबाटक, भटत व्यामित्रा त्विन, वक्ती ইন্দুরে থাইরা ফেলিয়াছে; ইন্দুর কর্তৃক দণ্ড ভক্ষিত দেখিরা তৎসন্নিবিষ্ট পিষ্টক ইন্দুরে খাইয়া কেলিয়াছে, 'ইহা সহজেই উপলব্ধি হইতে পারে। কারণ দও কৃঠিন পদার্থ, यथन हेस्त्र এত कठिन एक थाहेरक शांत्रिम, जथन ऋरकामन मिहे ণিষ্টক অত্যে না ধাইরা যে বওষাত্র তক্ষণী করিয়াছে, ইহা क्षमहे मुख्य नरह। व्यक्त विकास हरेग, रेणून बिक्तन পিষ্টক ভক্ষণ ক্রিয়াছে। এইরূপ কোন ক্লেশসাধ্য কার্য্যের সিদ্ধি দেখিয়া তাহার আহুসদিক অসাধ্য কার্ব্যের সিদ্ধি:অন্ত-मान क्यां करे नथान्त्रजात्र वना वार्टिक नाटन । [जात त्यव ।] দণ্ডার (পুং) দণ্ডং ঋদ্ভতি ঋ-অণ্। > বাহন । ২ মন্তহন্তী।
৩ কুজ্ঞকার চক্রন। ৪ যন্ত্রন্তেদ, শর্নিক্লেপ যুদ্ধবিশেষ, ধৃত্বক্র
দণ্ডার্ক (ক্রী) চল্পানদীর সমীপত্ব, তীর্থভেদ, ইহার পাঠান্তর
দণ্ডাক্ষ এইরপ আছে। [দণ্ডাক্ষ দেখ]।

দগুাসন (क्री) আসনভেদ। • ( হেম• )

দগুহিত (ক্রী) দথেন আহতং। ১ তক্র, ঘোল। (বি) ২ দগু বারা ভাড়িত।

দৃ ( কি ( পুং ) দণ্ডোহতাত দণ্ড-ঠন্। ( অত-ইনি-ঠনৌ পা হাংচি১০ ) ১ দণ্ডধারক, ছড়িবরদার, আসাবরদার। ২ মংক্তবিশেষ, ডানিকোণামাছ। ইহার গুণ—তিক্ত, কফ, বায়ু ও পিত্তনাশক, লবু। (রাজনিং) ( ি এ ) ০ দণ্ডদাতা, নিযামক। শন তত্র রাজা রাজেক্ত ন দণ্ডোন চ দণ্ডিকং। "(ভাগ্ডা১৯।০৬) দণ্ডিকা ( ত্রী ) দণ্ডিক-টাপ্। ১ হার বিশেষ। ২ রক্তু।

দিশুক (ি বি ) সঞ্জাতো হস্ত, দশু—ভারকাদিয়াদিতচ্। ক্বতদণ্ড, বে দশু পাইয়াছে। পর্যায়—দাপিভ, সাধিত। (হেম॰)
দিশুনু (পুং) দশু হস্তাস্ত দশুইনি। ১ যম। ২ নূপ।
ত বারপাল। ৪ মঞ্ঘাস। ৫ ক্রোর পার্যার ভেদণ ও জিনদেব। ৭ দমনক বৃক্ষ। ৮ চতুর্থাশ্রম বিশিষ্ট, দশুশ্রমী,

• বাহারো সংস্থাস অবলখন করিয়াছেন। ৯ দশুধারক। ১০
মহাদেব। ১১ ধৃতরাষ্ট্রের প্রভেদ।

১২ সংস্কৃত সাহিত্য জগতের একজন প্রধান কবি। কেই কেই ইহাকে ব্যাসের পরই আসন দিতে প্রস্তুত। একটী উন্তুট শ্লোক আছে—

"লাতে জগতি বান্মীকে কবিরিত্যভিধীয়তে। কবী ইতি ততো ব্যাসে ক্রয়ন্ত্রি দণ্ডিনি॥"

বালীকি হইতেই "কবি" এই শক্ষী হইয়াছে অর্থাৎ বালীকির পূর্বে কেহ কবি এই আগ্যা পান নাই, ভারার পর ব্যাস জন্মগ্রহণ করিলে 'কবী' ছই জন কবি হইল, ভাহার পর দণ্ডী হইতেই 'কবয়' তিন জন কবি হইলেন।

কেছ কেছ ঐ শোকটা মহাক্বি কালিদাসের রচিত বলিয়া প্রকাশ ক্রিয়াছেন, কিন্তু উহাকে মহাক্বি কালি-দাসের শ্লোক বলিয়া এহণ করা যায় না, কারণ মহাক্বি কালিদাসের বহুপুরে দণ্ডী প্রাহ্ভূতি হন। তবে কালিদাস-নামধারী পরবর্ত্তী কোন ব্যক্তির রচনা হইলে আপত্তি নাই।

উক্ত শ্লোকটা দেখিবাই কালিদাস অপেকা দণ্ডীকে শ্রেষ্ঠ কবি বলিতে পারা বার না। দণ্ডীর রচনা অপেকা কালিদাসের রচনা অনেকাংশে উৎকৃত্ত। তবে দণ্ডীর অমধ্র, অনিভিত্ত ও উত্তম ছন্দোবিস্তাস দৃত্তে জাহাতে সহাকবি বলিয়া গ্রহণ করা বার।

সংস্কৃতবিৎ পণ্ডিতগণ বলেন, স্থা তিন্থানি প্রছ বৃদ্ধান করেন, তরাখ্যে দশকুমারচরিত ও কাব্যাদর্শ এই ছইথানি প্রছ পাওরা যার। বেশীদিনের কথা নর, অধ্যাপক পিস্চেন্ন্র্নাহেব প্রকাশ করেন 'শুদ্রকরচিত মৃচ্ছকটিকা নামে দেনাটক আছে, তাহাই দখীর রচিত তৃতীর প্রছ। তাঁহার বিখান দখী কাব্যাদর্শে (২০৬১)

"নিম্পতীৰ তমোহলানি বৰ্বতীবাঞ্চনং নভঃ। অসংপুৰুষদেৱেৰ দৃষ্টি বিকলতাং গতা।"

এই বে শ্লোকটা লিখিয়াছেন, উহা মৃদ্ধকটিকের প্রথমাঃ
হইতে উদ্ভ হইরাছেঁ। দণ্ডী কথন অস্তের শ্লোক উদ্ভ করেন নাই। এজন্ত মৃদ্ধকটিক দণ্ডীগই রচিত। মৃদ্ধকটিকে থেকপ মানব-জীবনের ঘটনাবৈচিত্র্য বর্ণিত হইরাছে, দণ্ডীর দশকুমারও তক্ষণ •।"

পণ্ডিত মহেশচক্র স্থায়রত্ব ইহার উত্তরে প্রমাণ করিয়া ছেন 'উক্ত লোকটী দণ্ডীর নিজের রচিত নহে, অভার অলহার শাল্তেও ইহার উল্লেখ-আছে। দণ্ডী কাবাদর্শে মহাভারত, শকুস্থলা, শিশুপালবধ হইতেও কোন কোন লোক মূলত: বা সামায়ত: উদ্ত করিয়াছেন।

"পূর্বশাস্তানি সংহত্য প্রয়োগান্থপদভা চ। যথাসামর্থামস্থাভিঃ ক্রিয়তে কাবালক্ষণম্ ॥"

পূর্ব্বশাস্ত্র হইতে সংগ্রহ করিয়াছেন, এইবচন দারা পাই প্রমাণিত হইতেছে। এরপ স্থলে মৃদ্ধিকটিকের বচন কাব্যাদর্শে থাকায় মৃদ্ধকটিক দণ্ডীর রচিত বলিয়া কিছুতেই গ্রহণ করা যায় না। বিশেষতঃ দশকুমারচরিতের আড়ম্বর্ক ভাষা ও মৃদ্ধকটিকের সরল ভাষা পর্যালোচনা করিলে কিছুতেই এক ব্যক্তির লেখা বলিয়া বোধ হয় না। মৃদ্ধকটিকের রচিয়িতা শুদ্রক বে দণ্ডীর বহুপূর্বে প্রাছ্র্ভূত হইয়াছিলেন, তাহার অনেক প্রমাণ আছে †।" [শুদ্রক দেখ]।

অনেকের মতে—দণ্ডী খৃষ্টার ৬ ঠ শতাব্দে আবিত্ত হইয়াছিলেন। কৈহ বলেন, কাব্যাদর্শে (১০১২) "হলে। বিচিত্যাং সকলন্তৎপ্রপঞ্চো নিদর্শিতঃ।" এই বচনে বে 'ছলোবিচিতির' উল্লেখ আছে, ভাহাই দণ্ডীর ভৃতীয় প্রহ। আবার কেহবলেন, দশকুমারের উত্তরাহ্বন্ধীর রচিত নহে।

১৩ সংস্কৃতভাষায় অনাময়স্টোত্ররচয়িতা।

১৪ কাব্যপ্রকাশের একজন টাকাকার।

১৫ নাম্মালা নামক সংস্কৃতকোষরচয়িতা।

Pischel's edition of Rudrata's Cringaratilaka and Rayyaka's Sabridayalila.

[†] Proc. of the Asiatic Society of Bengal, 1887, p. 18

দণ্ডিমন্ (পুং) ৰঙ্ভ ভাবঃ কৰ্ম বা ইমনিচ্। দঙ্ভাব, দঙ্কৰ ।

দ্থী, (দণ্ডিন্) হিন্দুদিগের একট উপাসকস্থানায়। ইহারা
নত (বংশদণ্ড) ও কমওলু লইবা ভ্রমণ করেন বলিয়া দণ্ডী
নামে অভিহিত। আমাণ ভির অভ কাহারও দণ্ডী হইবার
অধিকার নাই। আবার পিতা, মাতা, পুত্র, কল্পা ও ভার্য্যা
বিদ্যমান থাকিতেও দণ্ডী হওরা যার না, কেননা তাহাতে
প্রাধার আছে।

শিহতারাং ফৌবনবুতকাস্তারাং পরমেশ্রি।
সর্কং হি বিফলং তত্ত যং কুর্যাদ ওধারণম্।
বিভাতে পিতরৌ দেরি! যং কুর্যাদ ওধারণম্।
সন্ত্রাসং বিফলং তত্ত রৌরবাধাং গমিছাতি ॥
বিভাতে বালভাবেন যত্ত কাস্তা স্থত তথ্য।
সন্ত্রাসধারণং তত্ত বুণা হি পরমেশ্রি।
স্প্রক্লচাপি শিক্ষণ বৌরবাধাং প্রপ্ততে॥
"

নিৰ্কাণতন্ত্ৰ ১৩শ পটল।

পিতা, মাতা ইত্যাদি বিহীন হইয়া ত্রাহ্মণ যথন সন্ন্যাসাপ্রম গ্রহণ করিতে নিতান্ত উৎস্ক হন, তথন তিনি কোন
দণ্ডী প্রক্রে নিকট গমন করেন। দণ্ডী প্রক্র তাঁহাকে
বিশেষকপে পেরীক্ষা করিয়া জ্ঞাতব্য বিষয়প্রলি জানিয়া
লয়েন এবং তিনি যথার্থই উৎস্ক হইয়াছেন ব্ঝিতে
পারিলে তাঁহাকে মন্ত্রপান করেন।

মন্ত্রপানের নিয়ম এই;— শুক্র প্রথমে শিস্ত্রের শারীরে বংকার দিয়া প্রাণপ্রতিষ্ঠা করেন ও তৎপরে অন্ধাশনাদি সাম্বারগুলি পূন: সম্পাদন করেন। তৎপরে দশাক্ষর মন্ত্রপান করেন। শিশু এই মন্ত্রকে মূলমন্ত্র বলিয়া জপ করিতে থাকেন: মন্ত্রগুহণের সমন্ব শিশা ও যজ্ঞোপবীত পরিত্যাগ করিয়া ভত্মীভূত করা হয় এবং পূর্বে নাম পরিত্যাগ করিয়া ন্তন নাম গ্রহণ করিতে হয়। এইরূপে য়থাবিহিত ক্রিয়াদি নম্পন করিয়া মন্ত্রগুল করা হইলে পরে শিশু গুকুর নিকট শুড, কমগুলু ও গেরুরা বল্প প্রাণ্ড হন। এই দশুই দিখিনিগর অত্যন্ত আদ্বেরণ জিনিস, কেননা তাঁহারা ইহার উপর মহামান্ত্রর করুনা করিয়া পূজা করেন।

দ্ভিগণ গেরুরা বস্ত্র পরিধান, ভদ্মবিলেপন, রুজাক্ষমালা-ধারণ ও মন্তক মুঞ্জনাদি করেন'। অগ্নি, ধাড়ু বা ধাতব গাআদি স্পর্শ করেন না, ভ্রুতরাং রন্ধন কদ্মিরা থাওরা ইহাদের পক্ষে অসম্ভব। সঙ্গে যদি কোন ব্রন্ধচারী থাকেন, ভবে তাঁহা ঘারাই রন্ধন করাইরা ভোজন করেন, অঞ্জ্যা কোন আদ্ধের বাটাতে প্রস্তুত অর গ্রহণ করেন। শ্রনের জন্ত ইহাদের একথানি ছোট সাত্মর ও উপাধান থাকে। ইংবার বিভোজন, বাজনেতর জাতির জনতক্ষণ বা জন্ত কোন রূপ গাতালিরৰ ব্যবহার করেন না। বাদশবংসর পর্যন্ত এই সমত্ত নির্ম পালনপূর্বক ডংপুরে দও জলে নিক্ষেপ ক্রিরা পর্মহংস আশ্রম গ্রহণ করিবার বিধি জাছে।

> "ৰাদশাকত মধ্যে ছু বৃদ্ধি মৃত্যুৰ্ন জায়তে। দঙং তোৱে বিনিক্ষিণা ভবেং প্রমহংস্কঃ ॥"

কিছ কেহ কেহ এই নির্দিষ্ট সমরের অগ্রে দঙ্গ পরিত্যাগ করেন, কেহবা কিছু দিন পরু পর্যান্তও এ আশ্রমে থাকেন। দণ্ডিগণ সাধারণতঃ বিশুদ্ধানারী হইলেও তান্ত্রিক দণ্ডীদের গোপনে মন্ত্রমাধ্যাদি ব্যবহার করিবার ব্যবহা দেখা বার;—

"পঞ্চতত্বং সদা সেবাং গুপ্তভাবে জিতেক্সিয়:।" প্রাণভোবিশী।
কিন্তু এরূপ ব্যবস্থা থাকিলেও তান্ত্রিক দভীদের অনেক্সে
মন্ত মাংসাদি ব্যবহার করেন না। বাহারা করেন, তাঁহারাও
অতি গুপ্তভাবে করেন।

নিশুণ ব্রক্ষোপাসনাই দণ্ডীদের প্রধান ধর্ম। তবে বাঁহারা একপ উপাসনা করিতে পারেন না, তাঁহারা শিবাদির উপাসনা করেন।

এই ধর্মসম্প্রদায়ের অনেকে বেশ বিধান; ভাঁহারা অনেক সময় অধ্যয়নাদিতে ক্ষেপণ করেন। ভাঁহারা মীমাংসা, ভাম, বেদান্ত ও অন্তান্ত শান্তগ্রন্থ অধ্যয়ন করেন। অনেক ব্রাহ্মণ পণ্ডিত তাঁহাদের নিকট শিক্ষালান্ত করিতে আগমন করেন।

মৃত্য হউলে দঙীদের শব দাহ হয় না। মৃত্তিকাতে প্রোপিত বা নদীতে নিকিপ্ত হয়।

কাশীতে এখনও অনেক দণ্ডী দেখিতে পাওরা বার।
আর এক শ্রেণীর দণ্ডী আছে, ইছারা অরবাড়ী দণ্ডী বলিয়া
পরিচয় দেয়। ইহারা স্ত্রীপুত্র লইয়া বিষয় কর্ম করে। দশনামীদের 'তীর্থ, 'আশ্রম' প্রভৃতি উপাধি লয়। আবার মধ্যে
মধ্যে দণ্ড, কমগুলু ও গেরুয়া কাপড় লইয়া তীর্থমাঝাও করিয়া
বেড়ায়। কাশীজেলার অনেক স্থানে এই সম্প্রদারের অনেক
লোক দেখা যায়। ইহাদের নিজ সম্প্রদারের মধ্যে বিবাহ
চলে, কিন্তু নিজ মঠের দণ্ডীর ঘরে বিবাহ করিতে নাই।

খরবাড়ী দণ্ডী এ কথাটাও খেন সোণার পাথর বাটার মন্ত বোধ হর, কিন্দ এ কথার উপর একটু রহন্ত আছে। অনেক সন্ন্যাসীর মূথেই শুনা বার, কোন স্থরসিক দণ্ডী শ্রীলোকের রূপে মুগ্ধ হইরা তাহাকে লইরা সংসারী হন। সেই হইতে খরবারী দণ্ডী নাম চলিরা আসিতেছে। বৈক্ষব দণ্ডী নামে জার এক শ্রেণীর দণ্ডী জাছে, ইছারা জিদণ্ডী অর্থাৎ তিন গাছি দণ্ড একজ বাধিরা সদে রাথেন।
ইহারা চত্ত্র নারায়ণের উপাসক। শিধা, ভিন্ন সমস্ত
মন্তক মুগুন, গৈরিক বান পরিধান, গলদেশে তুলনীকাঠ ও
কমলবীজের মালা, এবং যজ্জোপবীত গ্রহণ করেন। ইহারা
বড়ই শুদ্ধাচারী। মথাসমরে বেলাধায়ন ও নিত্য ক্রিয়ার
অষ্ঠান করিরা থাকেন। তাহাদের ভোজন, অ্থিমপর্শ,
কৌপীন ও ক্ষমগুর্ধারণ এবং উর্জনেহিক ক্রিয়া সমস্তই শৈব
মণ্ডীদেরই অন্তর্মণ,। কিন্তু কুলাচারী শৈব দণ্ডীদের মন্ত কেহ
মন্ত্রমাণ্য গ্রহণ করেন না।

দেওোৎপাল (ক্লী) দওমুজ্ঞাং উৎপদমিব। বৃক্ষভেদ,
(Canscorda decussata) দীর্ঘর্ম পুলকুপ। ভানিপোলা বা
ভানকুনী। দঙোৎপল একপ্রকার শাকজাতীয় কুপ, ইহার
উৎপলের ভায় কুক্মিছিত বৃস্ত দঙাবৎ দীর্ঘ, এই জন্ত
কুহাকে দঙোৎপল কছে। পীত, বৃক্ত ও খেত পুলভেদে
ইহা তিবিধ। দঙোৎপল সম্বন্ধে নানা মত ভেদ দৃষ্ট হয়।
কেহ কেহ বলেন, ইহার নাম দঙকলস।

ইহার চলিত কথা .ডানিকোনা বা ডানকুনী, 🌤 উহাঁকে রাঢ়ে মউরোলা কহে। বিশেষ বিবেচনা করিয়া ' দেখিলে এই উভয় মত সম্বন্ধে দোষ দৃষ্ট হয়। প্রথমত: দেখিতে হইবে, দভোৎপলের প্রাকৃতিক সংজ্ঞা যদি দও-কলস বলা যায়, তাহা হইলে জোণপুলী সম্বন্ধে ব্যাখ্যার বিদ্ন হয়। জোণপুশীকে কোন দেশে ঘলবসে, কোন ন্থলে হলকদে এবং কোন ছলে দণ্ডকলস্ভ বলে। যে হেতৃ দ্রোণ অর্থাৎ কলন তত্তুলা ফলের গাত্ত্ কুল কুল ভদ্লবৰ্ণ এক দলমুক্ত পুশা বৃহির হয়, এজন্ত ইহাকে স্রোণপুশী বা ফলেপুশা এবং উক্ত ফলটী •ঠিক গোশীৰ্ষকাকৃতি, সেইল্স উহাকে গোশীৰ্ষকও কহে। উড়িয়ার গোঁইচঙ হিন্দৃহানে গোঁমা নামে প্রসিদ্ধ। যদি এইরূপ জাপত্তি করা যায় যে, দওকলদে ও ঘলখসিয়াতে কিঞিৎ পার্থক্য আছে। তাহাঁতে এইরূপ বলা বাইতে পারে যে এৰজাতীয় খলখদেকে দ্ৰোণপুন্দী এবং দণ্ডকলসকে महाद्वाणी अर्थाए मध्यकनम्बन कटह। अञ्चल हेरातम् (७१ निष्पदृशासन। [उछ९ मझ (१४।] काहा ब्हेरन वस्काद-পলের অপত্রংশ হইতেছে না। দভোৎপলের অপ্রথশ ভানীপোলা বা ডানীকোনা এই সংজ্ঞাবদ দৃষ্ট হয় এবং শ্মপুন্পী শদের অপত্রংশ ডানকুনীও দেবা বার, কিছ শ্র পুন্দী দত্তোৎপল হইতে পৃথক্ ৰাতীয় বৃক্ষ। বোধ হয়, তিন बृश्वीत मरखारशरनत मरसा क्रम्भूम मरखारभन छानकूनी,

भीजनूना मर्स्कार्यम स्वावती मामक क्र्म, देवात अववाव (शाविमानी । अकर्णभूम मरकार्थन जरहम, किंड देश वृक्ति স**লত হইতে পারে না। কারণ উক্ত তিনলাতি প্ল্**ই কুকুরসোঁকাজাতীয়। ভাবপ্রকাশে ভানীপোলাকে হুকু ন্দরসূক, ভাহার অপত্রংশ কুকুরসোঁকা লিখিত। রন্ধনানায় কুকুরসোঁকা ভূকদম, গোবরী ও গোচ্ছাল নামে অভিছিড; ইহাতে প্ৰতিপন্ন হয় বে এই তিন জাতীয় বৃক্ষই ৰঙোংশন নহে এবং ইহাদিগের পুলাগত বৃস্ত দওবদীর্ঘ ও পুল উৎপল সদৃশ নহে। এখন দেখা আবশুক, কোন ৰাডীঃ ভক্তে দভোৎপল বলা যাইতে পারে। যথন পুর্বে বল হইয়াছে, দীৰ্ঘবৃত্তযুক্ত উৎপদ সদৃশ পুশা দঙ্গেৎপদ, ডান গাঁতাজাতীয় পুশাশাককে দণ্ডোৎপল বলিয়া বেখ हरेटलटहा. कांत्रण हेहात भूम खेरभनवर **धवर दृ**ढ तीर्व বটে, তাহা হইলে সচরাচর প্রাচীরের উপরিভাগে বছজ গ্যাদা আভীয় একরূপ কুজ বৃক্ষ দেখা যার। উহার পত্ত। সেফালীদল সদৃশ, কিন্তু ভদপেকা স্থুল ও অগ্রভাগ বিভাগা-ঘিত। উহার অগ্রভাগ হইতে একটা দওবং বৃত্ত বাহির হয়, তাহা লার্ড আক্ড়া সদৃশ এবং ঐ বুজোপরি অর দলযুক চক্রমলিকা পূলাফুতি একরূপ পূল করে। ইহা প্রস্টুট হইরা ৩ ক হইলে উজ কুত্মম মধ্য হইতে শৃকবং ত্লা ছড়াইয়া পড়ে। ইহাই প্রস্কৃত খেতপুশা দণ্ডোৎপল এবং ইহার অপত্রংশ ডানিপোলা। বছদলযুক্ত গঁয়াদাকে পীঃ দভোৎপল বলা ঘাইতে পারে। ঐ ভাতীর অরণবর্ণে পুষ্পকে অরুণ ছড়োৎপল বলা যার। পীত দঙ্গেৎপ্রের नामाखत्र (शाविमानी ७ शक्तवज्ञी। हेरात ७१— कर, बात e (রাজনিণ) काननांभक এवः ष्विषीपन ।

দেশেং প্রা ) খেতপুপদি থেবিপ্র। "দঙাংশা সিতে: পুল্পা: বিখদেবাহকণা তু সা"। ( দ্রব্যাভিধা ) দণ্ডা ( দি) দণ্ড কর্মণি যং। ১ দণ্ডনীয়। দণ্ডমর্হতি দণ্ডাদিগো

यर। मृश्वार्ट, मरश्वत्र द्यागा।

स्ट (प्रः) मस प्रदानतानिः नाश्वः। > मसः। नन् वार्विः

विकृष्टिः भरत्र वाकिरन मसमसं सारम नर् सारमण हरः।

[ मश्व सर्वा]

দতি ওর, বোঘাই প্রেসিডেলির ক্ষর্গত থানা জেলার নাবি উপবিভাগের একটা বন্দর। মাহিম হইতে > নাইল ট্রা পূর্বানিকে, ১৯° ১৭' উত্তর অকাণ ও ৭২° ৫০' পূর্বা রাবিনি মধ্যে অবস্থিত। এই বন্দরের নিকট সভবতা নি নি কিলেগের নিসিত একটা ছর্পের ক্ষানোন্দের ভাছে। দতিয়া, ব্রেশ্যথতের অন্তর্গত একটা নেশীর ক্ষান্দ্রি

२६ ०८ इहेट २४ > १ छेख स क्यां मर्पा ध्वर १४ > १ इहेट १४ ६६ पूर्व जाविमात मर्पा क्विहिए। भित्रमान क्या ४०४ वर्गमाहेगा है हेरात भूर्व्य सान्ती व्यापम ध्वर क्यांत्र जिन्तिएक शोत्रानिवत त्रांत्रा ।

১৮০২ খুটান্সের বেসিনের সদ্ধি অন্থসারে ব্লেলখণ্ডের অন্তান্ত প্রেলের সহিত দতিরারাল্য পেশোবা কর্তৃক ইংরাল হয়ে সমর্শিত হর। ১৮০৪ খুটান্সে ইংরাজেরা তথনকার দতিরারাল পরীক্ষিতের সহিত পরম্পর পরস্পরের রক্ষাবিধান করিয়া এক দদ্ধি করেন। রালা পরীক্ষিতের পর উহার পোয়্যপ্ত বিজয় বাহাছর সিংহাসনে অধিরোহণ করেন। ১৮৫৭ খুটান্সে রালা বিজরের মৃত্যু হইলে উহার পোয়্যপ্ত ভবানী সিং রালা হন। ইনিই বর্ত্তমান রাল্যাধিপতি। ইনি ব্লেলা রালপ্ত; ১৮৪৫ অনে ইহার জন্ম।

এই রাজ্যের রাজ্য প্রায় ১০০০০০ । সৈনিক্বিভাগে ৯৭টা কামান, ১৬০ জন গোলনাজ, ৭০০ জ্যারোহী ও ৩০৪০ প্রতিক সৈক্স আছে। রাজসম্মানার্থ ১৫টা তোপ হয়।

২ বুলেলথণ্ডের দতিয়ারাজ্যের প্রধান নগর। আগরা ছইতে সাগর পর্যান্ত যে রাজা গিয়াছে, তাহার উপরে আগরা হইতে ১২৫ মাইল দক্ষিণপশ্চিম, এবং সাগর হইতে ১৪৮ মাইল উত্তরপশ্চিম, ২৫° ৪০ উত্তর অক্ষাণ ও ৭৮° ৩০ পূর্ব্ব দাঘি মধ্যে একটা ছোট পাহাড়ের উপর অবস্থিত। সহরের মধ্যস্থলে নানাবিধ ফলর্ক্ষ ও প্রমোদ উভানস্থলিত রাজপ্রাসাদ আছে। এথান হইতে প্রায় ৪ মাইল দ্রেকতকগুলি জৈনমন্দির দেখা যায়।

দন্ত (অি) দীরতে ইতি দা-জঃ। > রক্ষিত। •২ ফুডদান;
পর্যার,—বিস্টে, বিশ্রাণিত। (শব্দর•) "অহতদতে মুনিমাসনে
মুনি-চিরস্তনন্তাবদভিস্তবিবিশৎ॥" (মাঘ ১।১৫) দা ভাবে
জঃ। ০ দান।

"দতং সপ্তবিধং প্রোক্তমদন্তং বোড়শার্ত্মকং।
পণাম্লাং ভৃতিন্ত্তীয় দেহাৎ প্রভূপকারত: i
ত্তীত্তাস্থাহার্থন্চ দক্তং দানবিদো বিহ্ন: " (মিডাক্সরা)
দত্ত সপ্তবিধ। [দত্তাপ্রদানিক দেখ।]

৪ একজন ধবি, অতির প্র বিশরা দত্তাতের নামে বিগাত হন। ভাগবত মতে বিক্র বাবিংশ অবতারের বর্চ অবতার। এই অবতারে ইনি অলুর্ক ও প্রুক্তাদের নিকট । আম্বিভা বর্ণন করিয়াছিলেন। ইহার প্রের নাম নিমি। গ অভিনিংহনক্ষন জিনভেদ। ৬ একজন নৃপতি।

(ভারত ১২।২৯৬।১৫)

^{৭ বছবংশীর দ্বালাধিলেবের পুঞার} (ছরিবংশ ওদাং) VIII ৮ देवअमिरशत खेशाबिरखम ।

ঁ "শর্মা দেবশ্চ বিপ্রস্থ বর্মা আতা চ ভূত্র:। ভূতিদ্তশ্চ বৈশ্বস্থ দাস: শূজ্য কার্রেং ॥" (উরাহত্র)

• ৯ আক্ষণদিগের শর্মান্, ক্ষুত্রিয়দিগের বর্মান্, বৈঞ্চের দক্ত ও শ্লের দাস ঐ কর্টী সাধারণ উপাধি। ১০ অধুনা কারত প্রভৃতি কাতির উপাধি। গৌড়ে মরিকদিগের দক্ত এই উপাধি আছে। (কুল্দীপিকা) ১১ পুরুভেদ।

দত্তক (পুং) দত্তএব স্বার্থে কন্। ধার্দশবিধ পুত্রের অন্তর্গত পুত্রবিশেষ। ধাদশবিধ পুত্রের মধ্যে একবিধ। চলিত নাম— পোষ্যপুত্র।

দত্তকবিষয়ক অনেক গ্রন্থ আছে বধা-কুবেরা-চার্য্য, কোলপ্লাচার্য্য, নন্দপশুত ও রামপশুত রচিত চারিখানি দত্তকচল্রিকা, ব্যাসাচার্য্যের দত্তকদর্পণ, অনস্ত-রামের দত্তকণীধিতি,, তাত্যাশাল্লী ও বিখনাথ উপাধ্যারের দত্তকনির্ণয়, অনস্তদেবের দত্তকপুত্রবিধান, নৃসিংহ চটের দত্তক্রিধান, শ্লপাণির দত্তকপুত্রবিধি, নন্দপণ্ডিত, মাধ্বা-চার্য্য ও রামক্বি প্রণীত ভিন্ন ভিন্ন দত্তক্মীমাংসা, **म्ग**णाणित पंखकवित्वक, पंखकत्रग्छा, अनग्रतात्त्व पदः কৌস্তভ, ধর্মরাজের দত্তরত্বাকর, মাধ্বপণ্ডিতের দত্তাদর্শ, शक्राप्त वाक्र शिव प्रक्रिक नार्शाकी करहेत्र प्रक्र কৌজভ, কৃষ্ণমিশ্রের দত্তকভাষণ, শ্রীনাথভট্টের দত্তনির্বর, দত্তকতিলক প্রভৃতি গ্রন্থ প্রচলিত। ইহার মধ্যে নন্দপতি-তের দত্তক্ষীমাংসা এবং দেবানন্দ ভট্ট বা কুবের ক্বত দত্তক-চক্রিকা স্কাপেকা মাজা। এই ছই গ্রন্থ ভারতবর্ষের প্রায় সকল দেশেই তুল্যরূপে প্রামাণ্য ও স্মাদৃত হইয়া থাকে। দত্তক বিষশ্যে শাস্ত্রে তেমন মতভেদ না থাকিলেও যে যে ছলে দক্তক্ষীমাংদার ও দত্তকচক্রিকার নতে অনৈক্য, সে ছলে দত্তকচঞ্জিকার মত রালালাও দক্ষিণ প্রদেশের ম্বানে স্থানে আদৃত এবং দত্তক্ষীমাংসার মত মিথিলা ও কাশী অঞ্চলে মুখ্যরূপে গণ্য।ু

পুত্র না হইলে পিতৃথাণ হইতে উদার কুওয়া যায় না এবং প্র্যাম নরক ভোগ হইয়া থাকে, এইজয় অপুত্র ব্যক্তি পুত্র গ্রহণ করিবে।

"অপুত্ৰেণ স্থতঃ কাৰ্য্য: বাদৃক্ তাদৃক্ প্ৰবন্ধতঃ।
পিণ্ডোদকজিরাহেতোনামসংকীর্ত্তনার চ ॥
অপুত্ৰেণৈৰ কর্ত্তব্যঃ পুত্রপ্রতিনিধিঃ সদা।
পিণ্ডোদকজিরাহেতো বঁমান্তমাৎ প্রবন্ধতঃ ॥" (মৃষ্)
অপুত্রক ব্যক্তি প্রাদ্ধ তর্পণ প্রভৃতি ও নামরকার জন্ত
অতিশর বন্ধ সহকারে পুত্র গ্রহণ করিবে অর্থাৎ বন্ধ সহ-

কারে প্রপ্রতিনিধি দত্তকাদি গ্রহণ করিবে। প্র ভিন্ন আছা কোন প্রকারে নাম রক্ষা হয় না এবং পিতৃগণ প্রাদ্ধ ভর্পণাদির অভাবে নিতান্ত অবসর হন, এই র্মন্ত দত্তকাদি প্রতাহণ অপ্রবাক্তির অব্য কর্তব্য। প্র অনিয়া নমরিয়া বাইলে পিতৃথণ হইতে মৃক্ত, হওয়া যার, কিন্ত প্রাদ্ধতর্পণাদি কিছুই সম্পন্ন হর না, এই জন্ত মৃক্তপ্র ব্যক্তির অর্থণি যাহার প্র হইয়া মরিয়া গিয়াছে, এরপ ব্যক্তিরও প্রত্থহণ অব্য কর্তব্য।

"অপুতো মৃতপুতো বা পুতার্থং সম্পোশ্য চ। অনুষ্ঠেন জাতমাতেল পুত্তী ভবতি মানবঃ। পিতৃণামন্ণলৈচৰ স তম্মালঁজুম্ছতি॥" (শৌনক)

'মৃতপ্রো বা' এই াদবারা মৃতপ্র ব্যক্তির প্রার্থণ অবশ্রকর্ত্তবা মধ্যে পরিগণিত, কিন্তু যাহার প্রের মৃত্যু হইরাছে, পৌর বা প্রশোর জীবিত আছে, এবংবিধ হলে ভাহার দত্তকাদি প্রত্যাহণের উদ্দেশু নামরক্ষা, পিতৃগণের শাদতেপাণি কার্য্য সম্পন্ন হওয়া। পৌর বা প্রপোর থাকিলে এ উভয়ই তাহাদের বারা সম্পন্ন হইতে পারে। এই জন্ম তাহার প্রার্থণে হলৈ বারা সম্পন্ন হইতে পারে। এই জন্ম তাহার প্রার্থণ হইতে পারে না। অপ্র ব্যক্তি প্রপ্রতিনিধি করিবে। প্রতিনিধি শক্ষে ক্ষেত্রজ্ব প্রভৃতি একাদশ্বিধি পুরু ব্যার।

"ক্ষেত্ৰজাদীন্ স্থতাৰেতানেকাদশ্যথোদিতান্।" পুত্ৰপ্ৰতিনিধীনাছঃ ক্ৰিয়ালোপান্মনীষিণঃ ॥" (মস্ছু)

ক্রিয়ার লোপহেতু মনীধিগণ ক্ষেত্রজ প্রভৃতি একাদশবিধ প্রকেই প্রপ্রতিনিধি কহেন। বেমন ছত ভিন্ন সতের প্রতিনিধি তৈল কথিত হইয়াছে, সেইজাপ ঔরস প্র ভিন্ন এই একাদশবিধ প্র প্রপ্রপ্রতিনিধি বুলিয়া গণাঁ। ঔরস প্র লইয়া প্র দাদশবিধ—ঔরস, ক্ষেত্রজ, দত্তক, ক্রিম, গৃঢ়োৎপদ্ধ, অপবিদ্ধ, কানীন, সহোঢ়, ক্রীত, পৌন-ভব, স্বয়ংদত্ত ও শৌজু। প্র দেখ। প্রপ্রপ্রতিনিধি জনক প্রকার হইলেও কলিস্গে শক্তিহীনতা প্রস্কু অপ্রক ব্যক্তি এই সকল প্রকার পুর গ্রহণ করিতে সমর্থ হইবেনা।

"অনেকধা রুতাঃ পুত্রা ঋষিভি হৈ গুরাতনৈঃ।
ন শক্যেন্ডেংধুনা কর্জুঃ শক্তিহীনত্যা নবৈঃ॥"
দতপুত্র ভিন্ন কলিতে অঞ্চবিধ পুত্র প্রভিত্রই করিতে
পারিবে না। কলিযুগে ইহা বহ্লিভ হইরাছে।

"ইমান্ ধর্মান্ কলিযুগে বর্জানাত্র্যনীবিশঃ।"
ফলিকালে অপুত্র ব্যক্তির নামরকা ও প্রান্ধ ভর্ণশাদির

জন্ত একমাত্র দত্তক পুত্রই উপার স্বরূপ। প্রত্যেক স্বপূত্রক ব্যক্তিরই দত্তক গ্রহণ স্ববস্তা কর্ত্তব্য।

জন্মপরিপ্রহ করিরা তিনটা ঋণ হইতে নিমুক্ত _{ই ওয়া} हिन्दू माटजबहे कावणक । अक्र हर्या बाबा अधिनिरशत, बळाबावा দেবতাদিগের ও পুজোৎপাদন দারা পিতৃদিগের ঋণ হইতে বিমুক্ত হওয়া যায়। এইজয়ত পুত্রোৎপাদন আৰম্ভ বিধেয়; কিন্ত যাহাদিগের পুত্র হয় নাই, তাহারা পিতৃঋণ হইতে মুক্ত हहेए शारत ना, कारक कारबहे छाहारमत श्वशाबिनिधि চাই। একাদশবিধ 'পুত্রপ্রতিনিধির মধ্যে দত্তক _{ভিয়} পাস্তবিধ পুত্রপ্রতিনিধি কলিতে লওয়া যাইতে পারা _{যাব} না, অভএব কলিভে অপুত্রক ব্যক্তিদিগের দত্তক _{প্রত্}ৰ ভিন্ন অস্ত্ৰ উপায় নাই। 'অপুত্ৰ ব্যক্তি দত্তক গ্ৰহণ করিবে' ইহাদারা জীদিগের দতক প্রহণ করিবার ক্ষমতা নাই; স্বামীর অফুমতি ভিন্ন কোন বিধবা স্ত্রী দত্তক নুইত্তে পারে না এবং জী স্বামীর অসুমতি ভিন্ন দতক দিতে বা এছণ করিতে সমর্থ হইবেনা। স্বামী মৃত্যুকালে যদি অনুসতি দেন, তাহা হইলে পরে ঐ বিধবাস্ত্রী দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবে। স্বামী যে কয়টা দত্তকগ্রহণের অনুমতি দিয়া ঘাই-বেন, ঐ স্ত্রী সেই কয়টী দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবেন।

"ন স্ত্রী পূত্রং দ্যাৎ প্রতিগৃত্বীয়াদ্বা অন্তত্তাম্প্রানাষ্ট্র রিতি। অনেন বিধবায়া ভত্তাম্প্রানাসম্ভবাৎ অনধিকারে গম্যতে। ন চ সধবায়া অর্ডত্তম্প্রাপেক্ষা পারতয়াং" (দত্তক্মীমাংসা)

. সধবা স্ত্রী স্বামীর অন্ধ্রজা লইয়া দত্তক গ্রহণ করিতে পারে কিনা ? এস্থলে সধবা স্ত্রীগণ নিজে কোন কংগ্র করিছে পারে না, কিন্তু স্থামীর সহিত শিলিত হইরা সকল কার্যাই করিতে পারে। স্থামী দত্তকগ্রহণে অনুমতি না দিয়া মৃত্র হৈলে বিধবা স্ত্রীর দত্তক গ্রহণ করিবার আবশ্রুকতা নাই, কারণ স্থামীর মৃত্যুর পর এক্ষর্য্য অবলম্বন করিয়া অনায়াসেই সকল প্রেকার পাপ হইতে বিমৃক্ত হইয়া স্থালোকে গ্রুব

"মৃতে ভর্তরি সাধনী স্ত্রীণ বন্ধচর্য্যব্রতে স্থিতা। ব্দর্গং গচ্ছত্যপুর্বাপি বথা তে বন্ধচারিণঃ ॥

ইতি মহানা ব্রহ্মচর্ষ্যেইপুর তৎপরিহারাভিধানাদিতি স্বাধান মকলকঃ" (দতক্ষী মাংসা) 'অপুত্রেণ' অপুত্রক ব্যক্তি এই এক বচন নির্দেশ করার চুইন্সন বা তিনক্ষন মিলিত হার এক দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবে, এমত নহে। কারণ দত্তক প্রভৃতির ছামুখ্যারণত শ্বরণ বিরুদ্ধ হইরাছে, এইক্স ভার্য পারিবে না। "ৰাম্বাারণকা যে স্থাদিত কক্ষীতকালয়:।

· (शाळवरत्ररुशास्त्रवारः अव्यत्निवित्रतार्यका॥" (वक्तक्रोमाःत्रा) দ্বক্ৰিধি--ব্ৰাহ্মণৰ্যণ স্পিও হইতে পুত্ৰ সংগ্ৰহ ক্ৰিবেন, অধাং স্পিতের পুতাকে দত্তক লইবেন। স্পিতের পুতা হদি না পাওয়া যার, তাহা হইলে অসপিও, অসপিওের পুত্রের অনাভে সগোত্তের পুত্র দক্তক গ্রহণ করিবেন। যদি সগোত্তের পুত্র না পাওয়া যায়, ভাহা হইলে অন্সোত্তের পুত্র প্রহণ **इतिरावन, किंग्र मंडकधर्श मिलिए त भूखरे मर्सारभक्ता** শ্রেষ্ঠ, এইজন্ত স্পিতের পুত্তিক দত্তক করিবার জন্ত বিশেষ न्राहरे हहेरवन। नश्चम शुक्रम शर्माष्ठ काञित्क नृशिश करहू। গণিও পুত্র না পাইলে সমানোদক পুত্র, সমানোদকের পুত্র না পাইলে সাক্লাপুত্র, সাকুলোর পুত্র না পাইলে স্গোতের পুত্র দত্তক গ্রহণ করিবেন। ইহাও ঘদিনা পাওয়া যায়, তাহা হইলে ভিন গোত্রের পুত্র গ্রহণ করিবেন। এত গুলি বিধি বারা দত্তকের অবশুক্রত্বাতাই ক্থিত হইয়াছে, কিন্ত দৌহিত্র, ভাগিনের ও মাতৃত্বস্পুত্রকে কথনই দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবে না।

'ব্ৰহ্মণানাং সপিণ্ডেষু কর্ত্তব্য পুত্ৰসংগ্ৰহ:। তদভাবেহসপিণ্ডে বা অক্তত জুন কারয়েং॥'

রান্ধনাদি সপিও, বা তদভাবে অসপিও পুত্র গ্রহণ করিবে, কিন্তু অন্তর্জ করিবেনা, 'অন্তর্জ নতু' অন্তর্গুল করিবেনা, ইহার অভিপ্রায় রাহ্মণ ক্ষত্রির বৈশ্র প্রভৃতির পুত্র দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবেনা। কিন্তু 'অন্তর পুত্র গুলে এই শব্দের অর্থ সপিও ও অসপিও ভিন্ন অন্তের পুত্র গ্রহণ করিতে পারিবেনা, এইরূপ অর্থ করিলে বচনাস্তরের সহিত্যবিবাধ হয়, কারণ বচনাস্তরে সপষ্ট লিখিত হইয়াছে—

"দণিতাপতাককৈৰ সপোত্ৰজমথাপি বা। অপুত্ৰকোৰিজোযুদ্ধাং পুত্ৰজে পৱিক্লয়েও। সনানগোত্ৰজাভাবে পালয়েদভগোত্ৰকং। গৌহতং ভাগিনেয়ঞ মাতৃস্বস্ক্তং বিনা॥

অপ্তক বিজ সপিওাদির পুত্র গ্রহণ করিবে, তাহা না পাইলে সগোত্র পুত্র এবং সগোত্র না পাইলে জন্ম °গোত্রজ্ব পত্র পরত গ্রহণ করিতে, ভাগিনের ও মাতৃংবপুত্রকে কথনও দক্তক গ্রহণ করিতে পারিবে না। এই জন্ম 'অন্থাত এই শব্দের অর্থ সবর্ণাতিরিক্ত বুঝিতে হইবে অর্থাৎ বান্ধণ ব্রহ্মণ করিতে পারিবে, ক্তরিয়াদির পুত্র পারিবে না। ক্তরিয়াদির সহক্ষেও এইরূপ জানিতে হইবে। মুসুও বৃদ্ধ যাজ্ঞবন্ধা ইহাই বিলিয়াছেন —

"নাডা পিতা বা দভাতাং বমডিঃ পুত্রমাপদি। সদৃশং প্রীতিসংযুক্তং স জেরো দরিষঃ হুড: ॥" ( ষহু ) "সঞ্চাতীয়ঃ হুডো গ্রাহঃ পিওবাতা স রিক্থভাক্।

• প্রানাদ্যান্দ্রমাত্রত্ব স সংস্কৃত ভদৃক্থিন; #''

( দত্তক্ষীমাংসা )

প্রতিগ্রহীতার পুত্র না হইলে পিতা ও মাতা সম্ভটিতে সম্প্রতীয় পুত্র তাহাকে দান করিবেন, তাহারই নাম দ্রিম বা দত্তকপুত্র। সেই সম্পাতীর দত্তকপুত্র পিশুতর্পনাধি করিবে, এইমন্থ গ্রহীতার ধনভাগী হইবে। দেছিত্র, ভাগিনের প্রভৃতিকে ব্রাহ্মণ, ক্ষরিষ ও বৈশ্ল দত্তক গ্রহণ করিতে পারিবে না। কিঁছ শুল ইহাদিগকে দত্তক গ্রহত পারিবে।

"ক্ষিত্রিয়াণাং অব্লাভী চ গুক্সগোত্রসমেছিল বা। বৈশ্যানাং বৈশ্যুক্ষাভেত্ত শ্রাণাং শ্যুক্ষাভিষু ॥ সর্কেষামের বর্ণানাং ক্ষাভিষের ন চাম্বতঃ। দৌহিত্রো ভাগিনেয়ক শ্লৈস্ত ক্রিয়তে স্ততঃ। ব্যাহ্মণাদিক্রয়ে নাস্তি ভাগিনেয়: স্তঃ ক্ষ্তিং।"

( দত্তক্ষীমাংসা )

ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, বৈশ্র ও শুদ্র ইহারা নিজ নিজ বর্ণ ইইটি ক্ষত্ত প্রহণ করিকেন, কিজ ইহার অতিক্রম করিকে পারিবে না। কিজ ত্রাহ্মণাদি তিনবর্ণ ভাগিনেয়াদিকে দভক প্রহণ করিতে পারিবে না, এক মাত্রই শুদ্র ভাগিনেয়াদিকে দত্তক লইতে পারিবে। শুদ্রের সম্বন্ধে ইহা বিশেষ বিধি জানিতে চইবে।

দত্তকদাঁতা—একপুত্র ব্যক্তি দত্তক দিতে পারিবে না, বাহার অনেকগুলি পুত্র আছে, এরপ ব্যক্তি পুত্র দান করিবেন। বাহার ছইটা পুত্র আছে, তিনিও পুত্রদান করিতে পারিবেন না, কারণ ছইটা পুত্রের মধ্যে একটাকে দত্তক দিলে এবং একটা থাকিলে, পরে যদি ঐ পুত্রের মৃত্যু হয়, তাহা হইলে তাহারও নাম লোপ হইবে, পিগুতর্পণাদি কার্য্য সম্পন্ন হইবে না ও সম্ভতি অভাবে পিতৃগণ অবসর হইবেন; এই অভাবিপুত্র ব্যক্তিও পুত্রদান করিতে পারিবে না।

"নৈকপুত্ৰেণ কৰ্ত্তব্যং পুত্ৰদানং কলাচন।
বছপুত্ৰেণ কৰ্ত্তব্যং পুত্ৰদানং প্ৰযন্তত্য ॥
বিপুত্ৰস্থাপি পুত্ৰদানে অপরপুত্ৰনাশে ৰংশবিভেদ্মাশক্যাহ বছপুত্ৰেণেতি।" (দত্ত্কমীমাংদা)

এক পূত্র বাজি কথনও পুত্রদান করিতে পারিবে না, বছপুত্র মাজি পূত্র দান করিবেন। 'বছপুত্র বাজি পুত্র দান করিবেন' এই বিধান মারা দিপুত্র বাজিরও পুত্রদান নিবিদ্ধ হইণ। জীগণ স্বামী জীবিত থাকিলে জধবা প্রোধিত বা মৃত হইলে স্থামীর অন্ত্রমতি লইরা পুত্রদান করিবেন, নচেৎ পুত্রদান করিতে পারিবেন না

नित्रशिक मान--

শিষান্মাতা পিতা হা যং স পুত্রো দত্তকো ভবেং।"
মাতা ও পিতা হাহাকে দান'করেন, তাহাকে দত্তক বলে।
বে ছলে মাতা ও পিতা প্রীতিপূর্বক একজনের বংশ
নাশ হইতেছে দেখিয়া তাহার প্রতি দ্যাপ্রবশ হইয়া পুত্র
দান করেন, তাহাকেই দত্তক বলা বার।

অর্থানি নিয়া পিতামাতাকে সম্বোষপূর্বক যে ছলে পুত্র গ্রহণ করা হর, তাহাকে দত্তক বলা যার না। জ্রুপ পুত্র-গ্রহণ ক্রীতপুত্র বলিয়া গণ্য। এইরূপ ক্রীত পুত্র গ্রহণ করিতে নিবেধ, ইহা পুর্বেই বলা হইয়াছে।

পুত্রপ্রতিগ্রহবিধি—থেদিন পুত্র গ্রহণ করিবে, তাহার পুর্ক্তিন উপবাস করিয়া পুত্রগ্রহণ-দিনে স্থবেশে স্থসজ্জিত হইরা বেদপারগ আচার্য্যের সহিত মধুপর্কাদি বারা রাল্ক ও বিলাতি দিগকে পূলা করিবে, সকল আত্মীয়, স্বলন, বন্ধু বান্ধব প্রভিকে আমন্ত্রণ করিতে হইবে এবং তাহাদিগকে স্থমিষ্ট ভোজনাদি বারা পরিতোষ করাইবে।

পরে বন্ধনিগের সহিত দাতার সমক্ষে গমন করিয়া 'পুত্রং
দেহি' আমাকে পুত্র দান করুন, এই বলিয়া পুত্র প্রার্থনা
করিবে। দাতা যদি পুত্রদানে সমর্থ হন, তাহা হইলে
গ্রহীতা পুত্রদান প্রমোগবিধি অহুসারে পুত্র গ্রহণ করিবেন।
'দেবত ছাদি' মন্ত্র দারা পুত্রকে গ্রহণ করিতে হয়, ঋক্ত্রয় জপ
করিয়া শিশুর মন্তক আছা দ্বি করিবেন, পরে নৃত্যগীত প্রভৃতি
মালনিক কার্য্য করিয়া তাহাকে প্রহে আনম্বন করিবেন।
"শৌনকোহহং প্রবক্ষ্যামি পুত্রসংগ্রহকারণং ৮
অপ্ত্রো মৃতপুত্রো বা পুত্রার্থং সমুপোল্ল চ ॥
বাসসী কুণ্ডলে বন্ধা উন্ধীবং চাকুলীয়কং।
আচার্যাং ধর্মসংযুক্তং বৈষ্কবং বেদপারগং ॥
মধুপর্কেন সংপ্রা রাজানশ্চ দ্বিজান শুচীন্।
'লাতু: সমক্ষং গল্পা চ পুত্রং দেহীতি যাচরেব্।
দানে সমর্থো দাঁতা হক্ষৈ যো বজ্ঞেনেতি পঞ্জি: ॥"

( वयुक्यीमाः मा )

পরে আচার্য্যকে দক্ষিণা দিতে হইবে। রালা দত্তকগ্রহণ করিলে রাল্যার্দ্ধ অর্থাৎ বে পরিমাণ আয়, তাহার আর্দ্ধেক দক্ষিণা দিবেন। বৈশ্রানি বথাশক্তি দক্ষিণা দিবে। গ্রহীতা সত্তক গ্রহণ করিয়া স্থশাথোক্ত বিধি বারা ঐ দত্তকের পিছকর্ত্ব কোন সংবারকার্যাদি সম্পন্ন করিবেন। যদি সংস্কার হইরা থাকে, তাহা হইলে দত্তকগ্রহীতার প্রশ্ন।
ভার সেই সংস্কারকার্য্য করিতে হইবে না। যদি হোঃ
সংস্কার কার্য্য না হইরা থাকে, তাহা হইলে সে সমন্ত স্পা
করিতে হইবে।

বে বালকের চ্ডাকরণ সংস্কার পর্যন্ত পিতৃগ্হে সশা হইরাছে, তাহাকে আর দত্তক দিতে পারিবে না। এই হয় বালকের পঞ্চম বর্বের পূর্কেই দত্তক গ্রহণ করা উচিত। "পিতৃর্গোত্রেণ বং পুরুং সংস্কৃতঃ পৃথিবীপতে। আচ্ডান্তং ন পুরুং গ পুরুতাং বাতি চাল্লতঃ । চ্ডান্তা বদি সংস্কারা নিজ গোত্রেণ বৈ কৃতাঃ। দ্ভান্তাক্তনরাক্তে কা রক্তথা দাস উচাতে । উর্দ্ধির প্রুমার্বাং ন দ্ভান্তা কৃতা।" (দত্তক্মীমাংসা)

দত্তক কর্ত্ব প্রাথনির্ণয়-নদত্তকগ্রহণের পর যদি গ্রহীনার প্রে হয়, তাহা হইলে এবং উহার মৃত্যু হইলে সপি শীকরণার বোড়শ প্রাথ্ধে দত্তকের অধিকার নাই । ইহাতে লোর, কনির্চ নিয়ম রক্ষিত হয় না, দত্তক লোর্চ হইলে ঔরস প্রস্থে সপিশীকরণান্ত যোড়শ প্রাথ্ধ করিতে পারিবে না। অক্সান্ত করিতে পারিবে না। অক্সান্ত করিতে পারিবে।

দত্তকাশোচ—দত্তকের জননকুলে কেছ মরিলে তাহার আশোচ হর না। কেবল গ্রহীতৃকুলে জনন ও মরণে ত্রিরাঞা শোচ, অর্থাং গ্রহীতা প্রভৃতি ব্যক্তিগণের ঘণাস্তুব, জনন ও মরণ হইলে দত্তক, দত্তকপদ্ধী ও তংপুত্রাদির ঘণাস্তুব জনন ও মরণ হইলে গ্রহীতা প্রভৃতির তিন দিন অশোচ হইবে।

দত্তক যদি সপি গুহয়, তাহা হইলেও অংশৌচ তিনদিন, সম্পূৰ্ণশেষীত হইবে না।

"ভিন্নগোত্রা: পৃথক্ পিণ্ডা: পৃথক্বংশক্রা: শ্বৃত্যু:।

অননে মরণে চৈব ত্রাহাশোচন্ত ভাগিন: ।

ভিন্নগোত্র: সংগাত্রো বা নীতঃ সংস্কৃত্য চেচ্ছরা।

অননে মরণে তন্ত ত্রাহাশোচং বিধীরতে।" (দত্তক্মীমানো

দত্তক সপিও, সংগাত্র বা ভিন্নগোত্রের হউক না কেন,
ইহার জনন ও মরণে তিন দিন, অশোচ হইবে। দতকের
বেমন তিন দিন, দতকগুহীতারও সেইরুপ তিন দিন, জানির
হইবে। কিন্তু খামুয়ারগ-দতকের জনকক্ষা ও গ্রহীকৃষ্
এই উজয়কুলেই তিনদিন করিরা অশোচ হয়। ক্লা
বেরপু আল্লেপঞ্চমে, সাপিও্য নির্ভি হয়, দতকেরও সেইরুপ
আল্লেপঞ্চমে, অর্থাৎ আপনাকে ধরিরা চতুর্থ পুরুষ পার্টি
সাপিও্যানিবন্ধন তিন দিন অশোচ হয়। দতকের পার্ক
পুরুষ হইতে দশম পুরুষ পর্যান্ত একদিন অশোচ হয়। বার্
পুরুষর উর্ভে খানমাত্র ভিত্তি হয়। দত্তকার বার্
পুরুষরের উর্ভে খানমাত্র ভিত্তি হয়। দত্তকার বার বার্

গ্রহীতৃকর্ত্ব দক্তক উপদীত হইলে প্রহীতার মৃত্যুক্তে দশ্রকের
দশ দিন অপৌচ হইবে। কিছু এই সভ বলবেশে ক্রেল না
এবং এইসভও সমীচীনু বোধ হর না।
শ্রেরপ্রেভন্ত শিক্তক গিতৃমেধং সমাচরন্।
প্রেভহাবিঃ সমং তল দশরাকেণ শুদ্ধতি॥

ইতি মরীচিবচনেন শিশ্বস্থ গুরুপেতকার্য্যকরণনিমিত্ত দশাহাশৌচমুক্তং ভবতি, অত্র গুরুশক্ষাচার্য্যাদিকণ:। গুরুসমত্রাপাতি, উপনয়নাদিকর্ত্ত্বাৎ তত্তচ
দত্তকভ প্রতিগ্রহীভূতিকরাক্ষণ এব দশরাত্রাশৌচং সিদ্ধতি,
অত্রথা ত্রিরাতমেব।" (দত্তক্ষীমাংসা)

দত্তক্মীমাংসায় এই ছলের টীকায় এইরূপ লিথিত হইয়াছে, 'অফ তু বলদেশে ব্যবহারো নাজি।' বলদেশে ইহার ব্যবহার নাই।

সাগ্রিদত্তক সাম্বংসরিক আদ্ধ একোদিট বিধানে করিবে।
নির্গ্রিদত্তক অমাবস্থা বা প্রেতিপ্রক মৃত হইলেও সাম্বংস্থিক
শ্রাদ্ধ একোদিট বিধানে করিবে, কিন্তু পার্দ্ধণ বিধানে
করিতে পারিবে না।

দত্তকের বিবাহাদি—দত্তকের বিবাহাদিতে পরিবেদন দোব হয় না, অর্থাৎ অক্তভদার জ্যেষ্ঠ সহোদর সত্ত্বে দত্তকের বিবাহ হইতে পারে এবং দত্তক অক্তভদার থাকিলেও কনিষ্ঠ সংগদেরের বিবাহ চলিতে পারে: দত্তকের বিবাহ ছলে এহীতৃক্লে দত্তক চতুর্গী কয়া বিবাহ করিতে পারিবে, কিন্তু বলদেশের প্রধান নিবন্ধকার স্মার্গ্ত রঘুনন্দন ও শ্লপাণি উভয় মতেই প্রহীতৃ পিতৃক্লে সপ্রমী কয়া পর্যান্ত এবং গ্রহীত্তী মাভার পিতৃপক্ষেপ্রমী কয়া পর্যান্ত বিবাহ চহিয়াছে।

দতকৈর মাতামহপক্ষ—গ্রহীতার অনেকগুলি পদ্ধী আছে, কিছু গৃহীত দত্তকের বৃদ্ধি উপস্থিত হইলে দত্তকগ্রহীতার কোনু স্ত্রীর পিত্রাদি মাতামহ পক্ষ হইছে? শাস্ত্রে প্রথমা পদ্মীই ধর্মপন্তী, বিত্তীয়া প্রভৃতি পদ্মী কামপ্রদ্ধী বলিরা কথিত হইরাছে, স্থতরাং প্রথমা পদ্মীর পিত্রাদি মাতামহ পক্ষ ইইবে। যে স্থলে পত্তির অনুমৃতি অনুসারে বিধবা স্ত্রীগণ দত্তক গ্রহণ করে, সেই স্থলে, স্বামী স্ত্রীর মধ্যে যাহাকে অনুমৃতি বিরা যাইবেন এবং যিনি দেই অনুমৃতি অনুসারে দত্তক প্রহণ করিবেন, তাহার পিত্রাদিই দত্তকের মাতামহ পক্ষ হইবে।

দত্তকদার্বিভাগ--দত্তক গ্রহণের পর ঔরস[®] পুত্র জ্বিলে ঐ ঔরস প্র তিনভাগ পাইবে, দত্তক পুত্র একভাগ পাইবে, ইচা বল্দেশে চলে না---এই দেশে সমস্ত সম্পত্তি ভিনভাগ করিয়া ঔরস পুত্র ছইভাগ ও দত্তুক এক ভাগ পাইবে 1 " "উৎপালে ছোরলে পুজে ছভীরাংশহর। স্ভা: ।
্ববর্গ অস্ব্রিভ গ্রাসাক্ষ্যনভাগিন: র

চত্ত্বিস্থান সাম ইতি বিজীব সময় স্থিতি বি

চতুৰ্গাংশহরা: ছতা ইচ্ছ বিতীয় চরণে কচিৎ পাঠ:।" (বতকচজ্রিকা)

দত্তক কথা এহণ করা বাইতে পারে, ইহা
দালাহনোদিত, পুরাণ প্রভৃতিতে ইহার উদাহরণ পাএরা
বার। দশরথ শাতাকে দক্তক কথারণে এহণ করিয়াছিলেন। ইত্যাদি।

শ্বকতদারের দত্তকনিষেধ—অক্কর্তনার অর্থাৎ দিনি বিবাহ করেন নাই, তিনি দুত্তক গ্রহণ করিছে পারিবেন না, দারপরিগ্রহ না করিবে অপুত্র বলা যার বটে, কিছু ভাহার পুত্রছ সম্ভাবনা আছে, এই স্বস্তু দত্তকগ্রহণ করিতে পারিবেন না।

অনেক ত্রীসবে যদি স্বামী ত্রীকে দন্তক গ্রহণের অনুমতি দেন এবং ভদস্সারে প্রত্যেকের দন্তক গ্রহণ হয়, তাহা হইলে এমত হলে শাল্লাম্সারে সিদ্ধ হইলেও প্রথম গৃহীত দতকের ধনাধিকার এবং এক সময়ে অনেক দত্তক গৃহীত হইলে কোন দত্তকেরই ধনাধিকার হয় না।

বীর্মিন্তোদ্যের মতে—খামী মৃত্যুকালে দতকের আজ্ঞা না দিরা যদি মরিয়া যান, তাহা হইলে তাঁহার মৃত্যুর পর আজ্ঞা না থাকিলেও স্ত্রীগণ দতকে গ্রহণ করিতে পারিবে। এই মত বলদেশে চলে না, ইহা পুর্বে বলা হট্য়াছে, কিন্তু এই মত পাশ্চাত্য প্রদেশে চলিত।

ত্রী কিংবা শুদ্র দত্তক গ্রহণ করিতে হইলেও অগ্রে ব্রাহ্মণ বারা হোম স্পাদন করিয়া পশ্চাৎ দত্তক গ্রহণ করিবেন। ক্রাহা না করিলে দত্তকত্ব সিদ্ধ হয় না। ব্রাহ্মণাদি বারা আবশুক মন্ত্রাদি পাঠ করাইবেন। ন্যন্ত্র পাঠ না হইলেও জ্রী ও শুন্তাদির দত্তকত্ব সিদ্ধ হইতে পারে, কিন্তু হোম ব্যতীত কথন দত্তকত্ব সিদ্ধ হইবে না। উত্তরকালে কোন অনর্থ না ঘটে, এই জ্লা বন্ধু, বাদ্ধর ও রাজপুরুষের সন্নিধানে দত্তক গ্রহণ করা সক্ষত। (দত্তকচন্ত্রিকা, দত্তক্মীমাংসা) [পোষ্যু-পুত্র দেখা।

দত্তকগ্রহণপ্রয়োগবিধি—গ্রহীতা দত্তক গ্রহণের প্র্কাদিনে উপবাস করিয়া থাকিবেন, পর দিন প্রাতঃকৃত্য সম্পন্ন করিয়া আচমন করিবেন, তাহার পর বিষ্ণুকে শ্বরণ করিয়া নারায়ণকে গ্রুপ্রপূর্ণ দিয়া শ্বিতাচন করিবেন—"ওঁ কর্ত্তব্যে হিম্মিন্ প্রপ্রতিগ্রহকর্মণি পুণাহং ভবস্থো ক্রবন্ধ, ওঁ পুণাহং" এই মন্ত্র তিনবার বলিতে হইবে।

এইরূপ খুতি ও ঋতি তিনবার করিবা বলিতে হইঃব। কিন্তু পুদ্রগণ 'খুতি ভবকো ক্রবন্ত' বলিলেই হইবে।

সামবেদীরা 'ওঁ অভি সোমোহয়ং' এই মন্ত্র পৃ यक्ट्र्सिनীরা
'ওঁ প্রাঃ সোমো যম: কালঃ' এই মন্ত্র পড়িবেন।

তাহার পর 'এতে গর্মপুল্পে ও আদিত্যাদি নবপ্রহৈছেন্ডা
নম:' বলিরা পূলা করিতে হইবে। গণেশাদি পঞ্চদেবতা,
ইক্সাদি দশদিক্পাল, শুরু ও প্রাক্তিকে পূলা করিতে হইবে।
তাহার পর স্বল্প করিতে হইবে 'শ্রীবিষ্ণুরোং তৎসদত্ত
অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক্তিথো অমুক্পোত্র:
শ্রীঅমুক দেবশর্মী (শুল্প হইলে) অমুক্দানঃ অপ্রজাজ
শ্রেষ্কুপেতৃক্থনাপকরণপুরামনরক্রাণ্ডারা শ্রীপরমেখরশ্রীত্যর্থ আয়্রংশরক্রার্থ নহুবৃহস্পতিবিশিষ্ঠদৌনকপরাশরাদ্যবিবাক্যান্থ্যাবেন স্থাথোক্তবিধিনা প্রঞ্গতিগ্রহ্মহং করিয়ে এইরূপে স্বল্প করিবে। সামবেদী হইলে
'দেবোবো' ইত্যাদি, যুদ্ধেদী হইলে 'ব্লাগ্রেণা ইত্যাদি
স্কল্পক্ত পাঠ করিতে হইবে। পরে বিঘ্নাশের জ্লা
গণেশপুলা করিতে হইবে ও ব্লম্, হোতা, আচার্য্য ও
সদক্তকে বরণ করিতে হইবে।

• দত্তকগ্রহীতা বলবেন, 'ওঁ সাধু ভবানান্তাং' রাক্ষণ

•বলিবে, 'ওঁ সাধ্বহ মাসে।' কর্তা বলিবেন, 'অর্চ্চয়ন্তামো

ভবস্তঃ,' রাক্ষণ বলিবেন, 'ওঁ অর্চ্চর।' তাহার পর রাক্ষণকে

ধস্ত অল্বার প্রভৃতি দিয়া দক্ষিণ কাম্ গ্রহণ করিয়া বলিবেন,
'বিষ্ণুরোং তৎসদত্ত অমুকে মাসি অমুকে গক্ষে অমুক তিথে

মৎসঙ্করিত শৌনকাত্যক্তবিধিনা পুত্রগ্রহণকর্মণি ব্রক্ষকর্মকরণার অমুকগোত্রং প্রীঅমুক দেবশর্মাণং এন্ডিং পাভাদিভিরভ্যার্চ ভবস্ত মহং বৃণে' রাক্ষণ 'বৃত্তোহন্মি' বুলিবে। তাহার

পর 'যথাবিহিতং ব্রক্ষকর্ম কুরু' ব্রাক্ষণ বলিবেন, 'নথা

জ্ঞানং করবাণি।' ওইরপে হোতা, আচার্য্য ও সদস্তকে
বরণ করিতে হইবে। পরে হোতা প্রভৃতি বেদীতে

উপবেশন করিয়া পঞ্চাব্য হারা অশাথোক্ত যথাবিহিত

মন্ত্রারা পঞ্চাব্য শোধন করিবেন। পঞ্চাব্য শোধন

করিয়া প্রণব হারা পঞ্চাব্য এক্ত করিয়া এই মন্ত্রে বেদী

শোধন করিতে হইবে।

'ওঁ বেলুবেলি: সমাপ্যতে বর্ষিষা বর্ষিরিজিরং যুপেন বুপ জাপ্যায়তে প্রণীতো হ্যিরিয়িনা।' তাহার পর বেদীর উপর চল্রাতপ বস্তবারা এই মল্লে বন্ধ করিতে হইবে, 'মল্ল 'ওঁং উর্ক্তবণ উভরে তহাদেবো ম: সবিতা। উর্কোরাজ্য সবিতা যথেঞ্জিবিগাভিবিহ্বরাম্ছে।'

ুপরে বেদীর পূর্বে পঞ্চবট আরোপিত করিয়া ঘটছা-

পলোক্ত মত্তে পঞ্চট ছাপন করিতে হইবে। পরে দেবীর ঈশানকোপে শান্তিকলস ছাপন করিবে।

ঐ শান্তিকলস স্ইথানি বস্ত্ৰ দিয়া আচ্চালিত ক্রিয়া 👍 বৃদ্ধতোতিভান্মসি বৃদ্ধত স্তুস্ক্নীত্বকৃণভাষ্ত স্থানি বয়ণত ঋত দদন্মদি বয়ণত ঋত দদনী মাদীদ' এই যা শাব্দিকুন্তে অংশ পুরিতে হইবে ৷ তাহার পর বেদীর _{মধো} পঞ্চৰৰ্ণের শুণ্ডিকা দ্বারা সর্বভোভজমণ্ডল, অথবা অইন্_{সপ্ত} প্রস্তুত করিতে হইবে। ইহার মধ্যে শালগ্রামশিলা সংখাপুর করিয়াপুলা করিতে হুইবে। এগথমে সামাক্রার্থিও ভূতওভা_{ৰি} করিতে হইবে। তাহার প্রথম ঘটে গণেশ, বিতীয় ঘটে সৃষ্ ভূতীয় ঘটে বিষ্ণু, চতুৰ্থ ঘটে শিব ও পঞ্চম ঘটে হুৰ্গা পূ_{ছা} করিতে হইবে এবং আদিত্যাদি নবগ্রহ ও ইস্রাদি দশ্দিক পালকে পৃথক্ পৃথক্ ভাবে আবাহনাদি করিয়া পূজা করিতে হইবে, পরে শান্তিকলদে বরুণকে আহ্বান করিয়া যথাশকা মুসারে পূজা করিবে। । পরে গণপতি, প্রজাপতি, বিষ্ণু । ধর্মকে ষোড়শোপচারে পূজা করিবে। এই প্রকারে পূল ক্রিয়া পিতৃগণকে আবাহন ক্রিয়া শক্তামুদারে পুরুষ ক্রিবে: 'ওঁ পিতৃভ্যোনম:, ওঁ কুলদেবতাভ্যোনম: ওঁ গুরুভ্যো নম; खं काश्रद्धा नमः, खं क्यानाविदेखा नमः, खं वाद्यद नमः, धं र्श्राप्त नमः, ७ व्यक्षां প्रवस्त नमः, ७ त्यां मात्र नमः ७ दित नमः, ७ পৃথিবৈর नमः, ७ जूर्नमः, ७ जूर्नमः, ७ जुर्नमः, ७ जुर्नमः, ७ ভূর্ব: স্বর্ন: ও অগ্নরে সিষ্টিকতে নম: ইহাদিগকে প্ল ক্রিয়া স্বগৃহ্যোক্ত বিধিবারা কুণ্ডে বা স্থতিলে বহিন্থাপন ক্রিয়া হোম করিতে হইবে। যজুর্বেদীরা যজুর্বেদোক্ত ও সামবেদীরা সামবেদোক বিধানামুদারে কুশগুকা সমাপন করিবে। আচাৰ্যাও আক্ষণাদির সহিত, গমন করিছ গ্রহীতা দাতার নিকট 'ওঁ পুত্রং দেহি' আমাকে পুর দান করুন, বলিয়া পুত্রভিক্ষা চাহিবেন। পরে পু^{রু} मांछा काठमनः कतिया विकृतक व्यवनशृक्षक नातायन, धर, গণেশ ও নবগ্রহ প্রভৃতি পূ**লা** করিবে। পরে **খ**ণ্ডি^{বাচন} করিবেন—'ওঁ কর্তব্যহিন্দ্রি পুত্রদানকর্মণি ওঁ পুণাইং ভৰত্তো ক্ৰবন্ধ ও পুণাহং' ইহা ভিনবার পড়িতে ^{হইনে,} পরে অন্তিশব্দি পাঠ করিতে হইবে। পরে ^{বর্তনা} ইক্রো' এই মন্ত্র, 'ক্র্যাঃ সোমো বনঃ কালঃ' এই মা পাঠ করিবে। পরে নারায়ণকে গন্ধপুষ্প দিয় প্^{রা}ব্ ্করিরাসকল করিবে। 'শ্রীবিকুরোং তৎসদত অনুতে মা^{রি} অমৃকে পক্ষে অমৃকে তিথো অমৃক গোতাঃ শ্ৰীঅমৃক দেবাৰী প্রত্যাধ্য প্রদানকর্মাহং করি**ছে**' এইরা স্কর করিয়া স্কর্মকে পৃড়িবে। তাহার পর গণেশ এছ^{রিম্}

[ 61b ]

भाषानि वाता प्रेमा कतिया भूववान कतिरव । 'विकृत्तार তংসদত অমুকে নাসি অমুকে পক্তৈ অমুকে তিথো অমুক গোত্ৰ: শ্ৰীঅমুক দেৱশৰ্মা চতঅগ্লিষ্টুপ্ প্ৰাম্টুপ্ প্ৰাণানে বিলে যজেন দক্ষিণরা সমপরিষ্জ্ঞিরে ইতি পঠিয়া বে চ ষ্জেডাাদি পঞ্চ পচশ্চ পঠিছা ইনং পুরং তব পৈতৃক্রণাণ-করণ প্রামনরক্তাণবংশরকাসিছার্থং আয়নশচ পরমেখর-লী চার্থং অমুক গোতার অমুক পোবরায় জী অমুকার তুল্তা-মহং সম্প্রদদে।' এই ৰলিয়া উৎসর্গ করিবে, ভাহার পর 'মম প্রিগ্রাভু পুজা ভবান' ইহা পাঠ করিয়া 'প্রতিগ্রী-युरख' हेरा विनिया अक्ट जत महिङ अन निरंद; जाहांत शत দকিণা দিতে হইবে। 'বিষ্ণুরোং তৎসদন্ত অমুকে মাসি অন্কে পক্ষে অমৃকে ভিৰে অমৃকগোতঃ প্ৰীমমৃক দেবশৰ্মা প্রমেশ্র প্রী তকামন্যা যাচতে তৎপুত্রদানকর্মণ: সাক্তার্থং দকিগামিদং কাঞ্চনং তল্পুল্যং বা প্রীবিষ্ট্রবতং অমূক গোরার অমুক প্রবরার এ অমুকার তৃত্যমহং সম্প্রদেশ ইহা ৰলিয়া গ্ৰহী তাঁর হতেও দিঁবে। এই সময় দাতা বালককে প্রতিগ্রহী তাকে দিবে। এই সময় দত্তকগ্রহীতা 'ওঁ দেব-ভয় স্বিতঃ প্রস্বৃধিনোর্কান্ড্ড্যাং পুঞ্চোহস্তাভ্যাং হন্তং গুরামাসৌ' এইমল্ল বারা বালককে হস্তবন্নবারা গ্রহণ করিবে তাহার পর ঐ বালককে ক্রোড়ে বসাইয়া 'ওঁ অসাদলাং সম্ভৰ্গ হৃদয়াদধিজায়দে আত্মাইৰ পুত্ৰনামাসি সংজীৰ শরদ: শতং' এই মন্তবারা বালকের মস্তক আভাণ করিবে এবং পরে 'নর্মার ছা পরিগৃহামি ও সম্ভানার ছা পরিগৃহামি।' এই মন্ত্র পাঠ করিবে। ভা**হার পর 'ওঁ বস্ত্রাণি পরিধৎস্ব' এই** মর ছারা বস্ত্র পরিধান করাইবে। পরে উফীয় ও কুছুমাদি ষারা তিলক, করিয়া দিবে। 'ওঁ হিরণারূপমবদে রুমুধ্বং' এই मञ्जाता "अनक्ष्ठ कतिया वानकत्क त्कार्फ् कतिया नहेट्य। ভাহার পর 'ওঁ অভিনো মিমিতা মখিনীভাাং অভি.তে বাাদিভি বনর্মণ: অভিপুষা অরোদধাতু ন্ত অভি বাছাবা পৃথিবী স্চেতনা অন্তরে বার্মুপঞ্চবা মহী সোমং অকি ভূবসং-^{ৰশেতি:।} ও বৃহম্পতিং সর্কাগণ স্বস্তবে স্বস্তবে আদিত্য সোমা ভব্দ্ধ ন: বিখেদেবা নোভৌ ত্বস্তব্দে বৈখানর। ৰহুরঞ্জিভান্তবে দেবা° অভবরভব: বততের বততের বাবিনো রুজণাছংহস: ৰতি মিতাবরুণা **ৰতিপথ্যোরেবতী পতি ন** ইক্সেটাইশ্চ ্ৰভিনোহদিতরেভ্বধি। অভিপত্ত মন্ত্রেম স্থাচিত্রম্সী চ পুনদ্ধতা ক্ষতা আলতা সকৰে মরি পাল্রের নৃত্যারিউনেমি রিক্মরিটনেমি মহতুতং বরুসং দেবতানাং অসুরুদ্ধ ই<u>ক্র</u>স্থং শনিংবৃহান্তনোনামিবাক্লত্মে আহেং হোমুচমালীরসকরঞ্ সন্মা-ৰেবং মনসাচ ভাৰ্কং **এখন্তপানি অৱশং প্ৰপদ্যে অভি** সম্বা-

বৈশ্বত্যরন্ত ভবত মিত্রাধর্মণা ভদ্পরে সংবোরভাগত স্তং অধীনহি গাধক্তঃ প্রতিষ্ঠিকা না দিবে বৃহত্তে সাধনার গৃহাবৈ প্রতিষ্ঠাক্তকং তৎপ্রতিষ্ঠিতং মরা বাচা সংক্তব্যং ভত্মাদেতা বিদ্রে পুবং শহতে গৃহাবে বৈ নানাজিগমিষতি পশুনাং প্রতিষ্ঠা।

এই মন্ত্র পাঠ করিষ্কা জীধর পশ্চিমদিকে উপবেশন করিবে এবং অধির পশ্চিমদিকে ও নিজের দক্ষিণে বাল-ককে রাথিয়া আচার্যোর দক্ষিণদিকে গ্রন্থীতা নিজে বসিবেন। তাহার পর আচার্যা হোম করিবেন।

ওঁ যকাল্পাব্যারিণাম্ভ মামোমর্ভ্যং মাল্যালোহবীংবি-জাত বেলোযশোহসাস্ধোহি প্রজাভিরগেরমৃত্তমস্তাং খাহা। अ वटेमकाः ऋकटक कांक्टत्वन खेटनाकमटशक्तृनवटकांनः অধিণং সপুত্রিণং ধীরবভং গোসত্তং যি নলতে আহা । ২। ওঁ জং জামধে পৰ্যাবহন্ স্বাাং বহতুনাসহ। পুনঃ পতিভোগ-জায়ালা অংশ প্রজাসহ বাহা। ৩। ও সোমোহদদ্গদক্রির शक्तर्व्वार्ननमधात्तः। विशिषां भूखान् ठानरम नरधर्म हो समरक्ष हेमाः খাহা। ৪। ওঁ ইতৈবজ যারিয়ৌজং বিখনায়ুক্পুতং। ক্রীড়তৌ পুरे बर्नश् छिर्पानमारनी ची चीरव शृंदर चाहा। ৫। ও आनः প্রকালনমূত প্রকাপতি বালরসায়মানত্র্যাম আয়ুম্পনীর 🛩 পতিলোক্মাবিশ সল্লোভব্ৰিপদেশং চতুম্পদে আহো।৬। ও অথোরচাক্রপতি কাধিগিরা পঙ্ভা: অ্মনা: স্বর্চ:। বীরস্পেরকামাজেনৌ শলোভব বিপদেশং চতুস্পদে বাহা । १ । ওঁ ইমাং ছমিজ্রমীয়া সুপুতান্কগু। দশাভাং পুতানাধেহি পতিমেকা দশংক্ষধি খাহা ৷৮৷ সুমাজিখণুরেডৰ ওঁ সুমাজিখ-শ্রবাংভব।' ননন্দরি চ সম্রাজ্ঞিতব স্মাজ্ঞি অধিদের্যু স্বাহা । २। ७ नमक्षक् विष्यत्वता नमात्भाक्षवग्रानित्नो । नव्याजित्रधाः ফকাতাসমূদে<mark>টীদধকুনৌ খাহা।১•। এই দৃশ্টী মত্ৰবারা</mark> প্রত্যেক চক্রোম করিয়া প্রজাপতি হোম করিবে। মন্ত্রধা, ওঁ প্রজাপতে নম্বদেতার্স্যন্যোবিশ্বলাতানি পরিতাবভূব। যত্কামাত্তেজুত্মন্তরোহস্তবয়ংক্তাম পতবোরদীণাং বাহেতি-মক্তেণাষ্ট্রেরশতং আজাপারস হোমং কুর্বাং।

প্রার্শিত হোম সমাধা করিয়া দক্ষিণাস্ত করিতে হইবে।
অভ্যেত্যাদি অমৃক গোত্র: শ্রী অমৃক দেবশর্মা। অমৃক গোত্রছ অমৃক দেবশর্মাণ: সম্বরিত প্র প্রতিগ্রহাদহোম কর্মনি ব্রহ্মকর্ম প্রতিগ্রহার বিশ্বরিক প্রতিগ্রহাদ বিশ্বরিক প্রতিগ্রহাদ বিশ্বরিক করিবে। ভাষার পর ক্ষেত্রটানি মংসম্বরিক প্রতিগ্রহাদ হোম করিব। প্রতিগ্রহাদি মংসম্বরিক প্রতিগ্রহাদ হোম করিব। গোত্রাদিকর্ম প্রতিগ্রহাদ হোম করিব। গোত্রাদিকর্ম প্রতিগ্রহাদ হোম করিব। গোত্রাদিকর্ম প্রতিগ্রহাদ হাম করিব। গোত্রাদিকর্ম প্রতিগ্রহাদ হাম করিব।

শ্রীবিজ্নেরতং অমুক গোত্রার শ্রীজরুক কেরণর্গণেকেরেজ্ন স্থান্দ।' ইত্যাদি রূপে দক্ষিণান্ত করিবে। পরে রাক্ষণ, আত্মীর অজন প্রভৃতিকৈ ভোজন করাইয়া মহোৎস্ব করিবে। [পোত্যপূত্র দেখা]

দত্তকপুত্ত (পুং) দত্তক এবঁ পুত্র:। বাদশ প্রকার পুত্তের মধ্যে একপ্রকার পুত্ত।

"দদ্যান্মান্তা পিতা বা যং স পুত্রো দত্তকো ভবেৎ।" (বাজ্ঞবন্ধ্য)

• মাতা বা পিতা বে পুত্রকে দান করিরাছে, তাহাকে দত্তকপুত্র বলা যায়। [দত্তক শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দেও।]
দত্ততীর্থকুৎ (পুং) গত উৎসর্পিনীর ৮ম অর্হন্ ভেদ।

'বিমশ: সর্বাহ্নভৃতি: শ্রীধরো দত্ততীর্ধকং।' (হেম ১।৫১)
দত্তনৃত্ত্যোপহার ( ক্রি ) নৃত্য দারা ক্রত-অভিবাদন।
দত্তপ্রাণ ( ক্রি ) যে আপনার শ্রীবন উৎসর্গ করিয়াছে।
দত্ত্বসার্গ ( ক্রি ) পথ ছাড়া, গতিরোধ না করা।
দত্ত্বর ( ক্রি ) ১ বর দেওয়া হইয়াছে যৎকর্ত্ক। ২ যে বর
প্রার্থনা করিতে দেওয়া হইয়াছে।

"পূর্মাং দক্তবরা রাজ্ঞা বরাবেকাব্যাচত ।" (রামাণ ১।১।২২) দত্তশক্ত, দক্তশর্মন্ (পুং) রাক্লাধিদের শ্রের পুত্তভেদ। ( হরিবংশ ০৯ অঃ)

দিত্ত শুক্ষা (গ্রী) যে কস্থার জন্ত শুক্ষ বা পণ দেওয়া হইয়াছে।
দিত্ত ক্সে (জি) অবলব্যের জন্ম যে হাত দেওয়া হইয়াছে,
রক্ষিত।

দ্ভাত্মন্ ( আ ) বাদশ প্রকার পুজের মধ্যে এক প্রকার।

"দ্ভাত্ম। তু স্বরংদত্তো গর্ভে বিলঃ সহোঢ়লঃ॥"

( যাপ্তবিকা ২।১০৪)

আপনা কর্তৃক দত্তককে দত্তাত্মা বুলা যায়। মহ লিথিয়াছেন—

"মাতাপিত্বিহীনো, ষস্তাকো বা ভাদকরণাং।
আআনং স্পর্শরেদান্ত স্বয়ং দত্ত স্বতঃ।" (মহ ৯০১১৭)
যাহার পিতা মাতা নাই অথবা পিতা মাতা কর্তৃক বে
অকারণে, পরিত্যক্ত, সেই প্র স্বয়ং যদি আপনাকে দান
করে, তবে উহা গ্রহীতার দত্তাআ বা স্বয়ংদত্পুর বিশিরা
গণ্য হইবে। বীরমিতোদেরে লিখিত আছে—

'অকারণাৎ পাতিত্যাদিকারণমন্তরেবৈব ছতিকানো পোষণাখ্যদামধ্যাদিনা মাতাপিতৃত্যান্তকে: খতত্ত ইত্যর্থ:।' দত্তাত্তেয়, বিষ্ণুর অবতার ঋষিডেদ। মহাভারত, হরিবংশ, ভাগবত, বিষ্ণুপ্রাণ, মার্কণ্ডেয়পুরাণ প্রভৃতি প্রাচীন প্রছে দত্তাত্তেয় সম্বদ্ধে অলাধিক প্রস্ক আছে। ইহার উৎপত্তি সম্বদ্ধে মার্কণ্ডেয়পুরাণে এইরূপ বিবরণ পাওরা বার—

कृषिकवर्षीत्र (कांग कुंग्रेरवात्री बाक्षेत्र शुर्वे व्यक्तित পুরে বাদ করিতেন। তাঁহার পত্তিত্রতা ভার্কা অংশব্রি। কট সহু ক্রিয়াও প্রাণপণে পতির সেবা ওঞাৰা ক্রিটেন ও তাঁহার মন বোগাইয়া চলিতেন। এমন কি সেই আছ এক দিন কোন এক ফুলবী বেখ্যাকে দেখিয়া কামণ্যে পীড়িত হন ও ভাহার নিকট লইয়া ঘাইতে পদ্মীকে আদে করেন। সাধ্বী আক্ষণপত্নী বোরা ঘনঘটাচ্ছর-রজনীয়ে প্রিয়ত্ম পতিকে স্কল্পে করিয়াও কএকটী মূলা সঙ্গে নইঃ দেই বেখাগৃহে ঘাইবার অভ বহির্গত হইলেন। প্রিম্থে শ्नविद क्यीमाखवा अधि हिल्लन। क्यसकाद्य तिथिए न পাইয়া ঘাইতে ঘাইতে ঋষির গায়ে ব্রাক্ষণের পা লাগিন মহর্ষি মাগুব্য তৎক্ষণাৎ ক্রুক হইয়া অভিশাপ দিলেন, '৫ নরাধম পা, দিয়া আমাকে ঠেলিয়া দিল, কুর্ব্যাদর মা নিশ্চয় সে বিনষ্ট হইবে।' ব্রাহ্মণপত্নী সেই দারুণ অভিশা প্রবণ করিয়া নিভাস্ত ব্যথিত হইয়া কহিলেন, 'স্ব্যের কা উদয় হইবে না।' সতীর কথা মিধ্যা হইবার নহে। স্বভয় পূর্ব্য উদয় না হওয়াতে জবং ধ্বংস হইবার উপক্রম হইব ভখন দেবগণ মহাচিন্তিত হইয়া ব্রহ্মার নিকট স্র্যোদ্যভা যুক্তলোপের কণা জানাইলেন। ত্রকা কহিলেন, 'ভের ধারা তেকের ও তপ্সা ধারাই তপ্সার উপশম হইয়া থাকে যথন পতিব্ৰতার মাহাম্য প্রভাবে স্থ্য উদয় হইতেছে ন পতিব্ৰতা রমণী ছারাই স্ব্রের উদয় সাধন করিতে হইবে ব্রহ্মার আন্দেশমত দেবগণ মহাসাধনী অতির সহধর্মিণী অ সুরার নিকট গিয়া সুর্য্যোদয়ের উপায় বিধান করিতে ফা রোধ <mark>করিলেন। দেবগণকে সম্ভ</mark>ষ্ট করিবার জার্ম আনস্থ ব্রাহ্মণপদ্মীর নিকট গমন করিলেন এবং তাঁহাকে, মু বচনে প্রীত করিয়া কহিলেন, "তোমার কথায় স্থোর উন না হওয়ায় যজ্ঞলোপ ও সৃষ্টিলোপ হইবার উপক্রম হুইয়াছে পেই জন্ম স্থা উদয়ে ভোমার মন্ত চাই। সংর্য্যাদয়ে ভো^{মা} পতির মৃত্যু হইলেও আমি তাঁহাকে অবিলখে পূর্কবং দেহ্য ও নবকলেবর করিব।" অন্ত্রার কথার রাহ্মণভার্বা। সং হইবেন। সুৰ্ব্য উদদ হইল। অনুস্বাও মৃত বাহ্মণকে ^{বাচাই।} मिलान । (मवर्गन अहे कार्या महामञ्जूष्टे इहेगा अन्तर्वाद व দিতে আসিবেন। অনস্য়াবর চাহিবেদ, 'ব্রহা, বিষ্ মহেশব যেন আমার গঠে জলপ্রহণ করেন।' একা^{রি বে} वब्रहे मिल्न ।

বথাকালে অনস্মার গর্ডে একা নোমরশে, বিষ্ণু ^{বি} ত্রের রূপে এবং মহেশর ত্র্বাসারূপে ক্ষপ্রত্থ ক্^{রিক্রি} হৈহ্যপতি উদ্ধত বভাবে অতির অব্যালনা ক্রিতে ^{প্রা}

statferen, wieles Walter wellen wieren wiere हरेश मध्य निवेदन जनक्षांत्र मेर्ड हरेर्ड विनिर्वेख हरेरनम । ् वर्षात्वत्र अत्नक देवकावन्त्र । निरहेत्र नीनन अर्थर अञ्च বর্ষেই বোগছ ছইয়া বিষয়ভোগ পরিভাগে করেন। जिनि नर्वनारे अधिक्यांत्रशाल (विडिंड स्टेबा वांशनाधम করিতেন। এক সময় ভিনি সংসারসঙ্গ পরিভাগে করি-वात हेळ्या वहकान महत्रावत मनिरन पुविता बारकन। কিন্ত খ্যিকুমারেরা কেহই সরোবরভীর পরিভাগ করিলেন না. তাঁহার অপেকার রহিলেন। ভাঁহাদিগকে ছলনা করি-বার অসু দতাতোর অক্ররী রমণী লট্ডা জল হইতে উঠিলেন। দেই রমণীর সহিত মন্তপান ও নৃত্যাণীত আরম্ভ করিলেন, কিত্ব ঋষিকুমারেরা তথাপি ভাঁহাকে পরিভ্যাগ করিলেন না। তাঁহারা ভাবিলেন, দভাত্তের মহাপুরুষ, যোগিগণেরও নিয়ন্তা, কোন ক্রিরাতেই তাঁহার আসক্তি-নাঁই। **স্থ**তরাং মছপান ও স্ত্রীসঙ্গে তাঁহাকে দোষ স্পর্শিতে পারে না। যিনি যোগবিৎ ও বোগীখন, বোগীরাও মুক্তিকামনার তাঁহার विश्वा कतिया थाटकन ।

এক সময়ে অস্তাহ্মরের সহিত দেবগণের খোরতর যুদ্ধ **হয়। তাহাতে অনুরেরাই জয়লাভ করে। বৃহস্পতির** আদেশে দেবগণ দভাতেরের আশ্রমে জাসিরাবছ প্রকারে তাঁহার তৃষ্টি সম্পাদন করেন। দ্তাত্তেয়ের কথার দেবগণ নৈতাদিগকে যুদ্ধে আহ্বান করেন। কিন্তু দৈত্যগণের প্রবল আক্রমণে ভীত হইয়া দেবগৰ সাহায্যের জক্ত আবার দন্তা-অংশ্রে আশ্রমে উপস্থিত হইলেন। দৈত্যেরাও তাঁহাদিগকে প্রহার করিতে করিতে সেধানে প্রবেশ করিল। দেখিল, মহাবল দ্ভাত্তের ও উাহার পার্ছে লগতের ব্রণীল লক্ষী বিরাজ করিতেছেন। লক্ষীর হ্মপ দেখিরা দৈত্যগণের মোহ হইন।-তাঁহারা দেবগণকে পরিভ্যাগ করিয়া নেই রম্ণীর্ত্পকে শিনিকার তুলিয়া লইয়া প্রাহান করিব। তথন দত্তাবের হাত করিয়া দেবগণকে বলিলেন, সৌজাগাবলে ভোময়া विज्ञी हरेटन। दकनमा यथन नची देमकागद्भन मशास পরিত্যাগ করিয়া মাধায় উঠিয়াছেন, তথন নিশ্চরই উহা-^{দিগকে} পরিভ্যাগ করি**রী অপরকে আগ্রর করিবেন্দ। দত্তা**-জেলর কথার প্রোৎসাধিত হইরা দেবগণ দৈতাগণকে বিনাশ कतित्वतः नन्ती । जन्ती अवस्तित्व माथा स्ट्रेट्ड श्रिका मखात्वत्वत শ পাৰ্যৱৰ্তনী হইলেন।

রালা কার্ত্রীধ্যার্জ্ন প্রথমে বিবেকের বশবর্তী হইরা ^{*রাজপদ} গ্রহণ করেন নাই। শেবে বভাজেরের উপদেশ গ্রহণপূর্মক সিংহাদনে আহোহণ করিলেন। অলক প্রাভৃতি स्त्रम नाम् । श्री वार्मास्य क्षेत्र (वार्मान्तिन नाक कतिशाहित्सम । श्रीकृति श्रीकृति । [ एव त्रम । ] ' वेखात्वत्वन नात्म अर्थ कथवामि स्रवासनाम अवन्तिक सारक्--

. অমৃতগীতা, অবধৃতগীতা, দম্ভগীতা, বোগদান্ত্ৰ, ধৰ্ণপ্ৰবোধ, বিভাগীতা, স্বাত্মসন্বিভূগেদেশ, দ্তাব্রেরগোরক ও দ্তা-व्यद्मार्थानवरः। এভব্দি पर्शाव्यत्रञ्ज, प्रचारवत्रविका, দভাবেরপটন, দভাবেরসংহিতা, দভাবেরহনর প্রভৃতি ভাষিক গ্ৰন্থ দেখা বাদ। 'দভাতেরমহাপূজাবর্ণনা' নামফ गःइ ७ প्रक्षिकात मखाद्यदात श्वामि वृति इहेताइ । देवन-मिरगत निक्षेष पंखारकत्र भूका शाहेता बारकन। मिगपता-হুচর রচিত দত্তাজেয়মাহাজ্যে এ সহত্তে অনেক কথা আছে। पर्कारखंश रेप्यस्क-विवारकृष्यनामक मः कृष्यध्यस्था । मखाधानिक (क्री) मख्य मखानाः श्रह्णमखाय मखा-धारान-र्ठन्। च्यहोत्रम विवात भनाव्यर्गक विवासिभाविरमञ् । चडीनम ध्यकात वावश्रेत शरमत मरशा मखाधानिक शक्म, চারিপ্রকার দানমার্গেই দ্তাঞ্চানিক পদার্থান্তর্গত আদের, राव, गर्ड ७ व्याप्त व्यर्थ हात्रियाकात्र मानमार्गरे मखायामानिक বলিয়া কথিত হইয়াছে।

"দভাজবামসমাক্ষ: পুনরাদাভূমিচছডি'।

দভাঞাদানিকং নাম ব্যবহারণদং হি ডং ॥" ( নারদ.)

বিনি দান করিরা পুনরার অভাররণে এহণ করিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহার নাম দডাপ্রদানিক এবং ইহা ব্যবহার পদের অন্তর্গত। ইহার বিবর বীরমিজোদরে এইরপ নিধিত আছে। স্থাবর বস্ত প্রতিগ্রহ প্রকাঞ্চরণে করিতে হইবে। দান সম্বন্ধে বাহা প্রতিশ্রুত হয়, তাহা অবশ্রুত দিতে হইবে এবং বাহা দত্ত হইরাছে, তাহা অপহরণ কর্তব্য নহে। গ্রহীতার গ্রহণ না হইলে তম্ব দানমাজে দত্ত বস্তুতে দাতার সম্ব্ধবংগ হয় না।

ত্যাগ দ্বন্ধ দাতার খব নিবৃত্ত হইলেও গ্রহীতা গ্রহণ না করিলে অসম্পূর্ণতাপ্রযুক্ত তাহার অদান প্রতিহেতু দাতার খব পুনরার উৎপন্ন হর'। অসম্পূর্ণ রূপ দান করিবা পুনর্কার বে গ্রহণেজ্ঞা করে, সেই গ্রহণ দভাপ্রদানিক ব্যবহার নামে বিখ্যাত। দভ হইলেই ইনি গ্রহণ করিবেন, এরূপ নিশ্বরভাপুর্কক ভছদেশে দাতা ত্যাগ করিলে তাহার খনোদর হর। কিন্ত প্রতিপ্রহে বিমূপ সানিতে পারিলে ঐ খন জন্মে না। বাজবন্ধ্যসংহিতার এইরূপ লিখিত আছে, পরিবার প্রতিপালনের অবিরোধে আত্মির দ্রবাদান করিতে পারিবে স্বর্ধাৎ বাহাতে উত্তম রূপে পরিবারাদি প্রতিপাদিত হয়, এইরূপ ধন রাধিরা ছবে দান করিছে, পারিবেন, নচেৎ পারিবেন না। প্র পৌনাদি থাকিতে সর্বাহ্য দান করিতে পারিবেন না এবং পুর্কে অপরকে যাহা দান করিতে প্রতিপ্রত হইরাছেন, তাহাও দান করিতে পারিবেন না। প্রতিগ্রহ প্রকাশ্র ভাবেই করিতে হইবে। বাহা দান করিতে প্রতিপ্রত হইরাছে, তাহা দান করিবে। দান করিয়া প্নর্কার গ্রহণ করিতে পারিবেনা।

শ্বং কুটুমারিরোধেন দেরং দারস্থাদৃতে। নাবরে সতি সর্কারং যজান্তবৈ প্রতিশ্রতং॥ প্রতিগ্রহঃ প্রকাশ: ভাৎ মাবরভ বিশেষতঃ। দেরং প্রতিশ্রতকৈব দ্বারাপ্রবেৎ পুনঃ ॥''

( बाळवदा॰ २।>१৮-->१৯ )

দত্তবন্ত অণাত্রে ফ্রন্তহেত্ অথবা ক্রোধাদিপূর্বক গ্রহণ করার নাম দত্তাপ্রাদানিক।

দন্তানপকর্মন্ (রী) দত্ত অনপক্ষ আদানং যত্ত। দত্তা-প্রদানিক।

দ্বামিত্র ( পুং ) সৌবীর নৃগভেদ। (ভারত আদি° ১৩৯ অ°) কোন কোন প্রাত্তত্ত্ববিদের মতে, গ্রীকদিগের নিকট এই শদ ∴ Demitrius নামে খ্যাত।

प्रजादशान (जि) पछः व्यवधानः त्यन। व्यवहिन्न, मत्नात्यांशी। प्रजामन (जि) पछः व्यामनः त्यन। व्यवजामन, याहात्क व्यामन त्यवशा हहेशाह्य।

দক্তি (স্ত্রী) দা ভাবে জিন্। দান। "অপশোকমনাঃ কুটু-বিনী মহুগৃহীঘনিবাপদভিভিঃ ॥" (রঘু ৮৮৮৬)

म जिक ( वि ) चातानकः र्रक्। व्यत्रनकः।

দন্তেয় (পুং) দত্তায়াং অপত্যং পুমান্ দত্ত-তক্। ইস্ত্র । (জিকাণ) দক্তোৎনিষদ (জী) উপনিষদ্ভেদ।

मरक्ति (र्थः) भ्रष्ठाम्नि । (विक्र्भः)

দত্রে (ক্লী) দা-বাহ॰ কঅনু। ১ ধন। "ইতাৰতে মাহিনং দঅং" (ঋক্ ৩।৩৬।৯) 'দতাং ধনং' (সারণ) ২ হিরণ্য। (নিঘটু)

"যো দত্ৰবা উষ্পোন প্ৰতীকৃষ্" ( ঋক্ ৬)৫০।৮)

দত্তিম (আঁ) দানেন নির্ভঃ দা-ক্তি ক্রেমণচ্। > দান নির্ভি, দানবারা বিশার। ২ দতকপুত্ত।

শাতা পিতা বা দছাতাং যমজিঃ প্রমাপদি।
দদৃশং প্রীতিসংবৃক্তং স.কেরো দ্বিমঃ প্রকঃ ॥" ( মহু )

नम (जि) ना वाङ्मा नाष्ठा। सनुन (क्रो) नन छारव नुष्हे। नान । (भंचकः) स्मि ( वि ) ना कि । पाका दिनक महत्र हिरामा प्रेष्टिकेट (व अक्ष्मान) 'पूर्वा प्राप्ति प्रतिक्रियाका' ( महिन्

দ্দিতৃ ( পুং ) ৰাতা। "রারস্পোষত দ্দিতারঃ ভাষঃ" ( ভরুষ্তু; ৭৷১৪ ) 'তে তব দ্দিতারঃ লাতারঃ ভাষঃ' ( মহীধর )

দদৃশানপবি ( জি ) অমি, দর্শনীর আলামি। "দদৃশানপবের্ছ হমানম্ম" ( ঋক্ ১০।৩৬) 'দদৃশানপবে র্দর্শনীরবালামে: ( সারণ )

দদ্দ, ভরুক্ছের প্রক্ররংশীর ক্রক্জন রাজা এই নামে
পরিচিত। তাঁহালের জাজ্ঞার খোদিত ক্রকখানি ভাষ্ণাসন
পাওয়া গিয়াছে। কাহারও হতে, ইহারা বলভীরাজগণের
সামস্ত বলিয়া গণা। ১ম দদ্দের নাম ব্যতীত জার কিছু লানি
বার উপার নাই। ইনি ভরুক্ছের ১ম প্রক্রেরাজ বলিয়া
খাতে। প্রার ৪০০ পৃষ্টাকে ইনি রাজ্যশাসন করিছেন।
ইহার প্রেরুনাম জয়ভট বীতরাগ। এই জয়ভটের প্রকে
২য় দদ্দ প্রশাস্তরাগ জয়গ্রহণ করেন। ইহার সমর্বার
৪০০, ৪১৫ ও ৪১৭ শহক উৎকীর্ণ ভিন্থানি ভাষ্রশাসন
পাওয়া গিয়াছে। ইনি একজন জ্ঞানী ও স্বিবেচক রাজা
ছিলেন, ইনি দার্শনিক গ্রন্থ প্রণয়ন করেন এবং নানা
ভানে; মঠাদি নির্মাণ করিয়া ভাহার ধ্র্মত ও শালীয় উপদেশ প্রচার করিবার জল্প প্রাক্ষণ নিযুক্ত করেন।

ইহার পর ৩৪০জনবংশীয় কোন কোন রাজা রাজ্য क्तिएजन, छाहात्र कान विवत्रण अथन । भाष्या यात्र नाहे। তামশাদনে (০য়) দদের উল্লেখ আছে। ডাব্ডার বৃহণ্রের মতে ইনি ৫৮০ খৃষ্টাবেদ রাজত্ব করিতেন। খোণিতণিপি इटेट जाना यात्र, हेनि विशक्त नागवः गैत्र मिगटक (श्रवासः করেন ও বিদ্ধাশৈল পর্যান্ত আক্রমণ করিয়াছিলেন : তাঁহায় উত্তরাধিকারী ( ২য়) অর্জট বীতরাণ। ুইহার পুত্রের নাম। (৪র্ব) দদপ্রশান্তরাগ। থেড়া হইডে ৩৮∙ ও ৩৮♠ (৫১দি) সমতে উৎকীৰ্ণ ছইখানি ভাত্ৰশাসন পাওয়া গিলাহে ज्याता व्याना शाम (व ( वर्ष ) मक ७२৮ हहेटक ७०० युडीव পর্যান্ত রাজ্যশাসন করেন। ইনি পরম সৌর ছিলেন এবং সমাট और्राप्तरत अन्य आक्रमण रहेरक दनकीतांवर व রক্ষা করেন। তিনি বলজীরাজ্কে ইক্ষা করিলেও এই ^{মিত্রভা} टवनी निन शांत्री इस नाहे। वक्कीतांक (२स) अव्यक्ति ७८৮ पृष्टीत्व अर्थ्कतत्रावयांनी अक्टक्स वह कतियां वर्षात ভাত্রশাসন অর্পণ করেন। কিন্তু গুর্জারচাল বে^{নী বিন}্ भवनक 'हिर्देशन ना,' वशकीदांख (वर्ष) श्वरगटनद बृङ्दि गई ( वर्ष ) एक अभावतान जातात अवन इहेवा छैर्छन । हेराहरू অরকাল পরে চালুকারাত্ব ওর্জররাজ্যের হক্ষিণাল ক্ষি

কার করেন। এই বার্কেই প্রেক্ত ক্ষিত্র আর্কাট । অংপুরু (৫ম) দক্ষ বাহুস্থার । বলতী ও চালুকা রাজগুরের সহিত ইংকি অনেকবার বৃদ্ধ করিতে হয় । ইংার পুরের নামও অর্কট । ইংার ৪৫৬ ৩৪ ৪৮৬ (১৮৫) স্থতে প্রান্ত হই বানি ডাফ্রশাসন পাওরা বার । শেষ আছ ধরিলে ৭৩৪-৩৫ বৃষ্টাস হর । ইংার পর এই শুর্জেরবংশীর আরু কোন রাজার নাম পাওরা বার না ।

দ্রত (পুং) ১ কছেপ। (সংক্ষিপ্তসার উপা•)

২ দলতি কণ্ড্ৰিভি দল-বালু কঃ বা দরিজাভি হর্গক্তানেন দরিজা কুপ্রভারাজেন সাধু:। অগ্রোগবিশেষ,
লাল। পর্যায় দক্রক, দক্রণ, দক্র। এই রোগ কুর্তরোগের অস্ত্পীড়কা মওলাকারে উদগত হইলে, তাহাকে দক্র করে।
ইহার চিকিৎসা কুড়, বিড়ল, চক্রমর্দ, হরিজা, সৈন্ধর ও
সর্বপ, এই সকল কাজির সহিত পেবল ফরিরা থেলেপ
দলে লাল্ও কুর্তরোগ নাই হর। দুর্বা, মবা ( ঔবধবিশেষ ),
সৈন্ধর, চক্রমর্দ্ধ ও নন্দীর্ক্ষ এই সকল সমভাগে লইরা
কাজির সহিত পেবল করিরা থেলেপ দিবে। ভিন্দিন
থালেপ দিলে দক্র ও কুর্তরোগ আরোগ্য হর।

গণ্ডিলক তুণ, খেতসৰ্যপ ও সিম্পাতা এই ভিন্টী সম-ভাগ এবং চক্রমর্দি পত্র সমস্ত ক্রব্যের বিশুপ একতা কুটিতনাকরিয়া অস্টেশ্তণ প্রাভকে নিম্প্র করিয়ারাখিবে। ভিন্দিন পরে ঐ সকল একজ পেষ্ণ করিয়া বন্যুটিয়া ৰাম্দক্ত হান বৰ্ষণ করিয়া সাত দিবস প্রলেপ দিলে দক্ত বিনট হয়। (ভাৰপ্ৰাণ)। কুঠসৰ্বপ, জ্ঞীনিকেত (ভারপীন े उन ), ह्रिज़ा, जिक्टू, ठळभर्ष्य वीज ও भूनक वीज अकत एक गर्यार भिविद्या मद्धार जिल्ला कारिया मुक्क कार्यात्रा रहः। रेन्स्रव, ठळम्बर्स् वीच, भक्ता, नागरकभत्र ७ कृष्णांचन ক্পিপ রসের সহিত প্রকেপ দিলে শীঘ্র দক্ষরোগ বিনষ্ট হয়। वर्गभोती, वाधिषां (त्रांशान), नित्रीय, निय, भान, कृष्ठेक, ^{নতাসান}, একতা কল্প প্রস্তুত করিয়া দানের পর দক্ততে বর্ণ করিয়া লেপন করিবে। ইহাতে শীজ দক্ত আহোগ্য ^{হর। ( স্ফ্রন্ড কুষ্ঠাধিকার )। গ্রন্ধপুরাণের মতে একপ্রকার} ৰণ দতিীয়রোগ বিশেষ, ছরিজা, হরিভাল, দুর্মা, গোমুত্র ও ^{নৈদ্ধৰ} একতা পেষণ ক্রিয়া প্রলেশ দিলে আরোগ্য হয়। ्रीक्ष्प्र १३३८ व्यः )

ফ্রক (পং) দক্রবের বার্থে কর্। দক্রবের গা।
ফ্রিবু (পং) দক্রং দক্রবের গাং হব্য হন টক্। চক্রম দক্র,
শালমদ্র

ক্ষেত্ৰপত্ত বৈষয়পন্ধ বিভিন্ন প্ৰকৃতি ক্ষিত্ৰ (ভাৰ প্ৰাণ)
ক্ষেত্ৰ (জি) কজ প্ৰজাত বজ ব (কোনাবিপানাবিপিছাবিভাগ পৰেলচঃ ।'(পা ধায়১০০) বজাবোদী, ক্ষেত্ৰাগবুজ।
ক্ষেত্ৰাশিনী (জী) বজাহ নাশন্তি। নাশ-বিহ্-বিনি-ভীপ্।
তৈলিনীকীট। (প্লাজনিশ্)

দক্রেরাগিন্ ( বি ) দক্রবোগেছিতাত দক্রবোগ ইনি। দক্র-বোগবিশিই।

দক্রে (পং) দরিজাতি হর্গছত্যে মনেনেতি দরিজা উ:, রকা-রেকারাকারাণাং লোপত (দরিজাতের্বাধোপত । উণ্ ১।৯২) । দক্ষ।

मळत्त्र्यू ( १११) मजः रुखि इन हेक्। मज्जः, नान्। मळत् ( जि ) मजःनः। मज्जः। '

स्थञ्च ( वि ) पि मञ्जू त्वाम जिलाजनार स्थनात्मा मण वः। प्रिविभिष्ठे।

"बाव्हिज्ञ मथब्दः स्पर्वज मध्य हः" ( बक् ७।८৮।১৮ ) 'नश्चकः मधिमकः' ( नात्रण ) দ্ধালিয়া,,বোঘাই প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত মহীকাছার একটা রাজ্য। এখনকার ঠাকুর একজন করদ সন্দার। তিনি বর-দার গাইকোবাড়কে বার্ষিক ৭০০ টাকা করিয়া 'ঘাসদানা' वित्रा अवः अनत्र तामादक वार्षिक ७००० होका कंत्रिमा किंह्नि (देशस्त्र ब्रम्म) विनद्यां कव निवा थारकन । महीकाशास्त्र তাঁহার বংশস্বাপিত হওয়া অবধি তিনি কতক স্বাধীনতা ভোগ করিয়া আসিতেছেন। ইহারা শিশোদিয়া রাজপুত। ইহারা প্রথমে রাজপুতানা হইতে আগমন করিয়াছিলেন। পোরা-পুত্ৰ লওয়া সম্বন্ধে ইহাদের কোন বাধা নাই। জোঠ পুত্ৰই রাজ্যভার প্রাপ্ত হরেন। ১৯৭৪ পুটাব্দে প্রথম ঠাকুর এদররাজের চাকরী গ্রহণ করেন, ডক্জয় ৪৮ থানি গ্রাম উপहात थाथु इन । किन्त भटत छिनि मात्रवाटतत्र.ताकक्मात-দিগের চাক্ষী করিতে অস্বীকার কুরার তাঁহার এই বৃত্তি क्याहेबा एम बबा इब।

দ্ধি (ত্রি) দংগতীতি ধা-কি (ভাষায়াং ধাঞ্কুস্গমিজনি নমিভাঃ। পা ৩২১১৭১)। ছথ্বিকার বিশেষ, দই। পর্যায় কীরজ, মললা, বিরল, পরত। ইহার গুণ উষ্ণবীর্যা, অধিদীপ্রিকারক, দিখা, ক্যায়, গুরু, অম্বিপাক, ধারক, রক্তপিত্তকারক, শোধজনক, মেনোবর্ষক, ক্ষুপ্রনামক, বল-কারক, গুরুবর্ষক, মৃত্রক্ষ্ম, প্রতিভায়, শীতকনামক বিষ্য-জ্বর, অভীসার, অরুচি ও কুশতার পক্ষে জভ্যন্ত উপজারী। দ্ধি পাঁচ প্রকার, প্রথম মন্দ্র, বিভীয় স্থার, ভৃতীয় ক্ষাছ্ম, सम्बद्धि देव इस विक्रष्ठ हरेश क्षिक्ष गाँव हरें, अवह अवाक तम अवीर ममाक विकास गतिगढ हर नारे, अवह आगना हरेटाउँ चीत तमिहीन हम, जाहाटक नेमापि करहा और ममापित अग-मण अ मृत्यिमात्रक अवश जित्यायकनक।

খাহদধি— কে হ্থ স্মাক্ গাড় হইরা অভিশর মধুর রস-যুক্ত হর, অন্ন রস অহভব হর না, ভাহাকে খাছ কহে। ইহার শুণ অভ্যন্ত অভিযুক্ষী, শুক্তজনক, মেদোবর্জক, কফকারক, বার্নাশক, মধুরবিপাক এবং রক্তপিভের দোবনাশক।

আগমণধি— বে হথ গাঢ় হইরা জীবং ক্যায়সংযুক্ত মধুর অসাআদ হর, ভাহাকে আবসু দ্ধি কহে। আবসুদ্ধির ওণ দ্ধির সামান্ত ওণের ভার।

আমদধি—যে দধি নধুরতাবিধীন হইরা আয়রস পাওয়া যার, তাহাকে আমদধি কহে। ইহার গুণ—অগ্নিনদীপক, রক্তপিত্তবর্দ্ধক ও কফ্বর্দ্ধক।

, অত্যস্ত্রদধি – যে দধি বারা দত্তহর্ব, রোমহর্ব এবং কঠা-দিতে দাহ উৎপন্ন হয়, তাহাকে অত্যস্ত্রদধি কৃত্ত। ইহার গুণ—অমিদীপ্রিকারক এবং রক্তপিত্রদক্ষ।

গ্রাদ্ধি—মধুর রস, বলকারক, ক্ষচিজনক, পবিজ, অধিদীপক, স্লিয়, পৃষ্টিকারক এবং বাছুনাশক। সকল প্রকার দ্ধির মধ্যে গ্রাদ্ধিই অধিক গুণবিশিষ্ট।

মহিষদধি—অভিশন্ন স্নেহ্যুক্ত, ক্ফকারক, বাহুও পিত-নাশক, মধুরবিপাক, অভিয়ন্দী, শুক্রবর্ত্ধক, গুরু এবং রক্ত-দ্যক।

ছাগীনধি--অভিশর সংগ্রাহী, লঘু, ত্রিলোবনাশক, অগ্নিদীথিকারক এবং খাস, কাস, অর্শ, ক্ষয় ও কুশরোগে হিতকর।

পকত্থ দধি—পকত্থ হইতে বে দধি হয়, ভাহার ওপ—
কচিকারক, থিও, অত্যস্ত ওপকারী, পিত,ও বায়ুনাশক
এবং ধাত্মিসমূহের বলকারক।

নি:সার ছগ্ধ-দৰি— অসার ছগ্ধ অর্থাৎ বে ছগ্ধ হইতে মাধন তোলা হইমাছে, সেই ছগ্ধজাত দধি ধারক, শীতবীর্যা, বায়ু-বর্জক, বাঘু, বিষ্টজী, অগ্নিদীপ্তিকারক, ক্ষচিজনক ও গ্রহণী-রোগনাশক।

গালিতদ্ধি—বে দ্ধির মাত বাহির হইয়া গিরাছে, সেই
দ্ধি অভাত ইয়য়, বার্নাশক, কফকারক, গুরু, বলকারক,
পুটিঅনক, ফচিঅনক, মধুর রস এবং অভিশর পিতজনক নহে।

শর্করাযুক্ত দধি —(চিনিপাতা দই), এই দধি দৰির মধ্যে তেওঁ গুণদারক, ইহাতে শিপাসা, রক্তপিত ও লাহ বিনঃ হইরা থাকে। গুড়যুক্তদধি—বায়ুনাশক, গুজুবুর্কক, শরী-

রের উপচর্কারক, জুবিকর এবং অক । উল্লেখনে র ভোলন করিবে না, একাত ভোলন করিছে বৃহতে লগ, র চিনি, সুলা, ত্পা, বধু অথবা আনগকী ইহালের কোন এরা দ্বির সহিত নিপ্রিত করিয়া ভোলন করিছে হইবে। ঠা করিয়াও রাজিতে ভোলন করা ঘাইতে পারে। দ্বি রাজি নিবিভ হইলেও শ্বত প্রভৃতি সংস্কু করিয়া সেবন করিছে ভাহা দোবাবহ হর না। কিন্তু রক্তপিত ও ক্লোভবরোধ জল বা শ্বতসংস্কু দ্বিও অপ্রশন্ত।

হেমন্ত, শিশির ও বর্ধা এই তিন বাত্তে দ্বি সের করিলে শরীরের হিত সাধিত হর এবং শরৎ, এীয় ও বর এই তিন বাতুতে দ্বি ভোজন করিলে প্রারই অহিতর হইরা থাকে। দ্বিপ্রিয় ব্যক্তি হিদি নিয়ম অভিক্রম করিয়ার্থ সেবন করে, তাহা হইলে অর, রক্তপিত, বীসর্প, কুঠ, পাং প্রম এবং উপ্রকামলারোগ কর্তৃক আক্রান্ত হইরা থাকে দ্বির উপরিহিত মেহসম্বিত হনীভূত পদার্থকে দ্বির স্বলা বার এবং দ্বির মন্তকে মৃত্ত বা মাতে, বলে। দ্বির স্মধুর রস, গুরু, গুরুকক এবং বায়ু ও অয়িপ্রণাশক। এস অয় রসাবিত হইলে বতিশোধক এবং পিত ও ক্ষর্থ হইয়া থাকে। দ্বির মাত ক্লান্তিনাশক, বলকারক, আলাল্যাক্লনক, প্রোতংসমূহের শোধনজনক, আক্লান্তনক্ষম্ম, শিপাসানাশক, বাতাপহারক, অর্ব্য, প্রীতিবন এবং শীত্রই স্থিত মলবিরেচক। (ভাবপ্রকাশ)

কুঞতে দ্বির বিষয় এইরপ লিখিত আছে—দ্বি হি প্রকার মধুর, আর ও অতায়, পশ্চাৎ ক্ষার। ইহা গিছ উষ্ণ এবং পীনস, বিষমজ্ঞর, অতিসার, অরুচি ও মূর্যকর রোগ:শান্তিকর, তেজকর, প্রাণকর ও মল্লুলুনক। দ্বির রুস হইলে চকুরোগ জ্ঞার এবং ক্ষ ও মেদ রুষ্ণরে। অরুরস হইলে পিড্রেলার বৃদ্ধি করৈ, অর্থ হুইলে রক্ত দ্বিত করে। মল্লাভ হুইলে অর্থাৎ ভ করিরা না ব্রিলি বিদাহী হয়, গলা আলা করে ও ত্রামল, মূর্ব, বারু, পিত ও ক্ষ বৃদ্ধি হয়।

গ্রাদ্ধি—লিও, মধুর, অগ্নিকর, ক্ষচিকর এবং ^{প্রি} ভাগন্ধি—লতু, কন্ধ, পিতের শান্তিকর, বাযুজনিও ^ব রোগের নিবৃত্তিকর, অর্শ, খাস ও কাসরোগের ^{ছিড়া} এবং অগ্নিকর।

्र माहियमधि-मध्य, वृत्ता, वाब्शिएखंब नाविवन, रे विक्रम ध्यार निषा।

ঔট্টদবি---পাকে কটুরস, ক্ষারস্ক্ত, গুরুপাক ও ভের্ন এবং বাড, অর্ল, কুই, কৃষি ও উন্ধীরোপে শান্তিক্র। আবিক দৰি—মেবছজের দৰি বাত, প্লেমা ও অর্ণ বৃদ্ধিক, ব্যার ও পাকে মধুর, চকুরোগকর এবং দোববর্জক।
বোটকীর দৰি—অধিকর, চকুরোগ ও বাতবর্জক, ক্লক,
উঞ্চ, করার এবং কক ও মৃত্যনাশক।

নারীদধি—মিশ্ব, বিপাকে মধুর, বলকর,;ভৃপ্তিকর, ভার, চকুর হিতকর এবং দোবশান্তিকারক।

हिंतिनीत मिर्य-गणुशांक, क्षण्य, उक्षितीर्वा, अजीर्वकत अवः মলবর্দ্ধক। পৰা প্রভৃতি যে সকল দ্ধির বিষয় এস্থলে বলা sहेन, তাহার মধ্যে গবাদধিই শ্রেষ্ঠ। গবাদধি স্বাছ ও বল্ধ-পত বা এত্তে ছাঁকা হইলে শরীরের পুষ্টিদাধন করে, ৰাযুর শান্তি করে, শ্লেমা বৃদ্ধি করে, কিন্তু ভাহাতে পিত্ত কুপিত ছর না। দধির সর তারুপাক, ব্যা, বায়ুর শাস্তিকর, অধি-कत्र धवः कक ७ एउक्दर्ककः। मधि ज्यमात्र इहेटन जार्थाः व्यर्खां ना शांकित्व क्रक, मनतांधक, वाधुवर्कनकत, अधि-কর, লপু, কষায় ও ফ্রচিকর হয়। শরৎ, গ্রীম্ম ও বসস্তকালে দ্ধি প্রায়ই ক্মপ্রশস্ত। **হেমস্ত, শিশির ও বর্ধাকালে দ্**ধি ভক্ষণ প্রশন্ত। দধি-মন্ত অর্থাৎ দধির মাত বা নিঃস্ত জল তৃঞা ও ক্লান্তিনাশক, লঘু, শরীরের মারশোধনকর, অস্ন, ক্ষায়, মধুর, বাতশ্লেমার শাস্তিক্র, কিন্তু তেজোবর্দ্ধক नरह। श्रीह्लां एकत, जृति, तन उ ऋ ठिकत ध्वरः मन एक एक। এই দধিবর্গে যাহা বর্ণিত হইল, তাহা সপ্তপ্রকার দধির অভত্তি জানিতে হইবে। স্বাহ্ন, অস্ত্র, অভ্যস্ত্র, মন্দলাত, প্রুড়ভাত, দ্ধিরস এবং অসার এই সাভ প্রকার দ্ধি। ইহাদের মস্তও দধির স্থার গুণকারী।

শরংকালে দধির গুণ--গুরু, অম ও রক্তপিত্তবর্ত্তক, শোফ, তৃয়ুগা, জর, শুল ও বিষমজ্জরকারক।

(६म खक्रंल मिथ्यं न खक्र, सिद्ध, मधुत, क्फक्क् ७ वनत्रक्र, त्या, त्मधा, भूष्टि, जूष्टि ७ त्किनां तक।

শিশিরে দধিপ্তণ---অস, মধুর, শুরু, বৃহু, বলকারক, শিক ও শ্রমনাশক।

वनारक निर्धश्य-स्थान, त्रिक, किह्न काम, कककांत्रक, वन व वीर्यानामक।

থীমে দধিগুণ-- লঘু, আর, উঞ্চ, রক্তপিত্তকারক, শোষ, ব্য ও পিপাদাকারক।

বর্বার দ্ধিগুণ—শীতল, শোষ, বাত, শ্রম, শ্রম ও 'অতিসারনাশক।'(রাজবল্পত) পীনস, অতিসার, শীতক, বিষমজ্ব, অফচি, প্রাকৃত্ব, ও ক্বশতারোগে হিতকর।
(হারীত ৮ অং)

२ वजा। (दम)

IIIV

দ্ধিকৃত্ম (পুং) দ্বিসংখারকং কর্ম। দ্বিসংখারক বৈদিক কর্মজেদ। "দ্বিকর্মেণ চরন্তি প্রবর্গাবাংশেওং" (আখণ প্রো^ত হাস্তাস) দ্বিকৃত্ম নাম কর্মবিশেষঃ।" (নারারণ) দ্বিকৃত্মিকা (ত্রী) দ্বিলাভা কৃত্যিকা, বা অর্জোদকোফ-হয়ে স্বায়সংযোগাৎ ভাতা। ছয়ুবিকারভেদ, ছানা।

"দিয়া সহ পদ্মঃ পকং যৎ ভাং সাদ্ধিকুর্চিকা।" (বৈত্বকরন্ধনালা)
পক্তর্ম দ্ধির সহিত্য মিশ্রিত হইলে, অর্থাৎ গ্রমত্থে
আম মিশ্রিত হইলে যাহা হয়, তাহাকে দ্ধিকুর্চিকা কহে।
ইহার গুণ—বাতনাশক, গ্রাহক, ফক ও ইন্জর। (রাজবল্লভ)
দ্ধিক্রো (পুং) দ্ধিঃ দ্ধদভং ধারমন্ সক্কামতি, ক্রম-বিট্
অস্ততাং। ১ অখন্নপ অন্যাত্মক দেবভেদ, আশ্রমণী অগ্নিস্ক্রপ দ্বেতা। "দ্ধিক্রামদকত্যবিশ্বক্তিং" (ঋক্ ৪০৮।২)
২ অশ্ব। "আ দ্ধিক্রাঃ শ্বসা পঞ্চ ক্রীঃ" (ঋক্ ১০।৩।২)

দ্ধিক্রাবন্ (পুং) দধিঃ দধৎ ক্রামতি ক্রম-বনিপ্ অস্ক্রভাৎ।
অখরপ অগ্নায়ক দেবভেদ। "দধিক্রাব্ণো অকারিষং
জিফোরখন্থ বাজিনঃ" (তাগ্যা বাং ১।৬।১৭) "দধিঃ দধ্ধ ধারমন্ ক্রামতীতি দধিক্রাবা, ক্রমের্বনিপি বিভ্নো রহনাসি-ক্রাদিতি। মকারভাকারঃ, তন্ত দধিক্রাব্ণঃ এতৎসংজ্ঞ-ক্রমাক্রপদেবস্তুল (ভাষ্যুত)

দধিপ্রাম, আঁক্ডের একটা লালান্থান। (আর্ন্দাবনলীলা ) স্দধিচার (পুং) দধি চারয়তি চালয়তি চর-ণিচ্-অণ্। মন্থান্দ ও, দধিমন্থনদণ্ড। পর্যায়— বৈশাধ, তক্রাট, কর্মধণ।
(হারাবলী)

দধিজ (ক্নী) দধো জারতে জনত। নবনীত।
দধিথ (পুং) দধিবর্ণো জবাতিষ্ঠত্যামিন্, স্থাক, প্রোদরাদিবাৎ সাধুঃ। কপিখ, কতবেল। [কপিখ দেখ।]
দধিথাথ্য (পুং,) দধিখং আথ্যাতি কপিখন্তবাং অনুক্রোতি

ব্যা-প্যা-ক। সরলজব, লোবান।

দিধিধেকু (ত্রী) দিধিনির্মিতা ধেন্তঃ! দীনার্থকরিত দধিক্তঃনির্মিত ধেন্তজেদ। ইহার বিষয় হেমাজির দানথতে এই
কপ লিথিত আছে—যে স্থানে এই করিত ধেন্ত প্রস্তুত করিতে হইবে, সেই স্থান ভাল করিয়া গোময়ে উপলিথ করিবে। পুলাবারা শোভিত একথানি গোচর্ম রাথিবে,
পরে মাটীতে কুশ বিস্তীর্ণ করিয়া ক্ষঞান্তিন আতীর্ণ করিতে হইবে এবং ধান্তের উপর দধিক্ত স্থাপিত করিতে
হইবে। ইহার বৎসও কর্না করিয়া তাহার মুথ স্বর্গময় করিবে। পরে ধেন্তর প্রশন্ত পত্রহারা শ্রবণ, মুক্তাফলহারা
চক্ষ্, চন্দন ও অগুরু বারা শৃল, শর্করা বারা জিহ্বা, শ্রীথতে
ভাণ, ফলম্বেল দক্ত, ভাষবারা পৃষ্ঠ, দর্জহারা রোম, স্ক্রমর দ্ধিপায়স্ (রী) দ্ধি চ পয়শ্চ। দ্ধি ও পয়, এই শব্দ দ্বিচানায়। 'জাভিরপ্রাণিনাং' পাণিনির এই স্কুত্তে ইহাদের সমাহারছন্দের প্রাপ্তি ছিল অর্থাৎ সমাহার দ্বন্দ হইতে পারিত, কিন্তু 'পায় আদীনি' এই স্ত্তে পয়ঃ প্রভৃতির নিষেধ হইল অর্থাৎ সমাহার দুন্দে একবচন হইতে পারিত, কিন্তু ভাহা না হইয়া দ্ধিপায়স্ প্রভৃতি দ্বিচন হইবে।

দ্ধিপার আদি (রী) যধিগর আদির্বত। সমাহারবদ্ নিবেধ নিমিত্ত শক্ষর পণতেদ। এই পণের সমাহার বদ্ধনিধে হইরাতে। দ্ধিপরদ্, মধুস্পিদ্, ক্রক্সপ্রভাগতি, শিববৈপ্রবর্গ, ক্রন্দবিশাধ, পরিপ্রাট কৌশিক, প্রবর্গা উপসদ, ভরত্ত্ব, ইধাবির্হিদ্, দীক্ষাতপদ, প্রভাতপদ, মেধাতপদ, অধ্যরনতপদ, উদ্ধল মুদল, আদি অবদান, প্রভাবেধা, অক্-দাম, বাভ্যনদ, ইহারা দ্ধিপার আদিগণ। (পাণিনি)

দধিপুঞ্জিকা (ত্ত্ৰী) দধীব শুভ্ৰং পুষ্পমস্তাঃ ৰুণ্, টাদি অতইত্বং। খেতাপরাজিতা। (রাজনি°)

দ্ধিপুষ্পা (স্ত্ৰী) দধীৰ পুস্মিসাঃ, জাতিৰাৎ ঙীহ্ন ১ ৰোদ , শিৰী। ২ খেতাপরাজিতা।

দধিপূপ (পুং) দধিপক: পূণ:। অপূপডেদ, পিটকবিশেষ।
প্রস্তত প্রণালী—শালিত পূল চূর্ণ করিয়া দধিতে মর্দন করিবে,
পরে উহা শ্বতে পাক করিতে হইবে। পরে প্রথপের
সহিত গোলাকারে প্রস্তুত করিতে হইবে, এইরূপ করিনে
দধিপূপ হইবে।

"শালিপিষ্টং যুতং দপ্প মর্দিয়িষা মৃত্তে পচেৎ।
বেইয়েৎ পরুধণ্ডেন স্থর্তং দধিপূপকং॥
দধিপূপো গুরুর্ম্ম: বৃংহনোহনিলপিত্তহা।
হুছোহিমিজননশ্চিব বিশেষাদ্রুচিকারকঃ॥" (পাক্শার)
ইুহার গুণ গুরু, বলকারক, বৃংহণ, বায়ু ও পিত্তনাশ্ব,
অমিজনক ও কুচিকর।

पिश्विष्यं (प्रः) पिश्विष्यः प्रश्य छ। पिश्य । [पिय्यं (परः) पिश्य (परः) पिश्य (परः) पिश्य (परः) पिश्य (परः) पिश्य (परः) पिश्य व्या (परः) विश्व व्या व्या (प्रः) विश्व व्या व्या (प्रः) पिश्य प्रः। पित्र प्रः। प्रः।

দধিমুখ • (পুং) দধিবৎ শুলং মূখং যক্ত। এক বানর, হঞ্জী বের মাজুল। এই বানর মধুবনের রক্ষক ছিল, হন্মান্ প্রভৃতি বানরগণ সীভার সংবাদ পাইয়া এই বনে উৎসব করে। দি মুখ প্রথমত: বানরদিগকে নিষেধ করে, কিন্তুমানরে ইহার কথা না শুনিয়া ইহাকে নানাপ্রকারে নাঞ্চিত করে।

(রামায়ণ ১।৬২, ৬৩, ৬৪ সম্মা

দধিবক্ত^{্ৰ}(পং) দধিবৎ বক্ত্ৰং যক্ত। দধিমুধ। দধিবৎ (ত্ৰি) দধি অন্তাত মতুপ্ৰেদে মক্ত বঃ। দ^{থিমুক।} "অপ্পৰান্ দধিবাংশ্চক্তবেষসীদতু" (অৰ° ১৮/৪/১৭) দৌ^{বিৰ}

 [&]quot;मिश्रिद्धरमाम हात्राक विथानः मृग् माल्यं छर। অনুলিপ্তে মহাভাগে গোময়েন নরাধিপ 🛭 গোচর্দ্মাত্রে ভূ প্ন: পুজপ্রকরশোভিতে। কুলৈরাভীব্যবহুধাং কৃঞাজিনকুলোতয়াং ৪ দ্ধিকুত্তং সুসংছাপ্য সদা ধান্তচয়োপরি । চতুৰ্বাংশেন ৰংসজ্জ সৌৰ্ণমূখমণিতং ৷ আচ্ছাদ্যবন্তবুগোন পুলগালৈন্ত প্ৰিডাং। 'ব্ৰাহ্মণায় কুলীনায় সাধুৰ্ভায় ধীমতে। 🕐 कमानिश्वगयुक्ताय ननाखाः विध्यक्षाः। পুচ্ছদেশোপবিষ্টার মৃত্তিকা কর্ণমাতকৈ: । পাত্কোপানহৌ ছবং দখা মন্ত্র সকুরারে । ু ৰধিজাবে বাভি মতেণ ৰধিধেকং প্ৰদাপরেং & अवः पश्चिमशीः (थसूः प्रका त्रांसर्विमखम। এकाहारत। पिनः ভিঠেৎ पश्चा ह नृপनमन । যজসানো বলেক্রাজন্ তিরাত্রঞ্ছিজোত্স। ৰীয়মাৰাং প্ৰশক্ত তে বাজি প্রমাং গতিং। যত কীরবহা নদাঃ বতা পারসক্ষমাঃ। মুনর ব্যয়: সিদ্ধান্তত পদ্ধি থেকুটা: । व इपः आवरबङ्ख्या पृनुवादानि मानवः। সোহধ্যেধ্যুলং প্রাণ্য বিজ্লোকং স গছেতি।" (বরাহপু॰)

"অতিকুজং বিচক্তক নবীননীরদোপমং। দ্বিবামনকং জেয়ং গৃহিশাঞ্চ স্থপ্রদং॥"

(ব্ৰহ্মবৈ প্ৰাক্তৰিখা)

ইহার আকৃতি কুজ, বিচক্রবৃক্ত ও নবীন নীরদ তুলা
বর্গবিশিষ্ট। এই মূর্ত্তি গৃহীদিগের স্থেজনক, অর্থাৎ
গুলী ক্ষি এই মূর্ত্তি পূজা করে বা গৃহে প্রতিষ্ঠিত করে,
তাহা হইলে স্থ লাভ হয়। (পুং) ২ দ্ধোদন দারা
হবনীর বামনভেদ, বামনকে দ্ধোদন দারা হোম করিলে
সকল প্রকার দুর্গতি হইতে মূক্ত হওয়া বার।

শিংধ্যাদনেন ওজেন ছতা মৃচ্যেত হুৰ্গতঃ।
পুতা তৈবিক্ৰমং ক্লণং জপেনাল্লখনভাষীঃ॥

(ভন্তসার দ্ধিবামনপ্র•)

দ্ধিবারি (ক্রী) দর: বারি ৬তং। দ্ধিমস্তা, দ্ধির মাত্। দ্ধিবাহ্ন (পুং) অঙ্গনামক রাজার পুত্র। (হরিবংশ ৩১ অং) দ্ধিশোণ (পুং) বানর। (ত্রিকাণ)

দ্ধিষ্যা (পুং) দ্ধিস্ততি দো-আ্বাষ্য, ততোষত্বং নিপাণ সাধুং (দ্ধিষ্যায়:।উণ্ডা৯৭) মুত।(উজ্জন)। সিদ্ধান্তকৌমুদীর বৃত্তিতে 'দ্ধাতেরাষ্য' ধা-ধাত্ আ্যায়, বিস্কৃত্বাগ্য এইরূপে দ্ধিষ্যা পদ সাধা হইয়াছে।

দ্ধিস্ক্তবু (পুং) দধুপেসিক্তাং স্ক্তবং। দধুপেসিক্ত স্ক্ দ্ধিমিশ্রিত ছাতু। এইশব্দ বছবচনাত হয়।

"কল্পকানি তৈলেন পায়সং দধিসক্তব:।" (ভিথিত্য কুর্মপুণ)

দিধিস্বু ( পুং ) দधः সর:। দধিস্হে ।

मिभिनात ( पूर ) मधः नातः । मिभिनात, नवनीठ ।

मिधियन्त ( श्रः ) डीर्थरङ्ग ।

দধিন্দেহ (খং) দধঃ জেহং। দধির সর, দইরের সর। পর্যায়— দ্ধিসর, সর, দধ্তেরপ, কটুর। [৩৩ণ দধি শক্ষে দেখ।]

मिरियम ( ११: ) मध्रः (च्यम्हेव । ८घान ।

দ্ধীচ (পুং) দ্ধীচিম্নি। (শক্তেদপ্রণ) শুক্রাচার্যোর এক পুডা (বৃদ্ধাগুপুং উ॰ ১৯১১)

দ্ধীচাস্থ (পুং) দ্ধীচন্ত অস্থি। ১ বক্স। ২ হীরক।
শ্বিটি, একজন পৌরাণিক ঋষি। বেদে দ্ধাঞ্ এবং মহাভারতে দ্ধীচ ও দ্ধীচি এই উভর নামে খ্যাত। বাঙ্কের
নিক্তের মতে, ইনি অথকার পুত্র, সেই জন্ত আথকাণ নামে
শ্বাদি বেদে পরিচিত। (নিক্তে ১২৩০) ব্রহ্মাপ্তপ্রাণের

মতে, দ্বীটি শুক্রাচার্বোর পুত্র, সরস্বতী হইতে দ্বীচির সারস্বত নামে পুত্রগণ অসপ্রহণ করেন। (বন্ধাঞ্চপু উ॰ ১ম আ:)কোন কোন পুরাণুমতে অথর্কের ঔরসে কর্দমক্তা শান্তির গতে ইহার অসা। অক্সংহিতার ছইটা অকে দ্বীত স্বক্ষে এইরূপ আছে—

শিধাঙ্হ বল্পবাথৰ্বণো ৰামখয়ত শীক্ষণি এই বদীম্বাচ॥" (১।১১৩৮)২২)

যে অথবার পূত্র দধীচ অখনতক ধারণ করিলা তোমা-দিগকে (অখিবয়কে) মধুবিভা শিথাইলাছিলেন।

"আথর্কণায়াখিনা দধীচেহখাং শিরং প্রতৈতাররভম্। স বাং মধু প্রবোচদৃতায়স্বাষ্ট্রং বদ্পাবাপিকক্ষ্যং বাম্॥" ( পাক্ ১۱১১৭।২২ )

হে অখিনুগল । আপনারা আথক্রণ দ্বীচির (ছজে)
আখের মন্তক যুড়িরা দিয়াছিলেন। তিনিও সত্য পালন
করিয়া ছষ্টার * নিক্ট হইতে লক মধুবিভা ভোমাদিগকে
শিধাইয়াছিলেন; হে দত্রবয়। সেই বিভা আপনাদিগের
আপিকক্ষুক্রপ † হইয়াছিল।

সারণ প্রথমোক্ত ২২ ঋকের ভারো শাট্যায়ন ও বাজ-সনেয়-প্রণঞ্চ হইতে এইরূপ উপাধ্যান উদ্ধৃত করিয়াছেন—

'ইক্সো দ্বীচে প্রবর্গবিভাং মধুবিভাং চোপদিশ্র ফ্রান্নামন্তব্য বক্ষাসি শিরতে ছেৎস্থামীত্যবাচ। ততোহখিনাবখ্য শিরশ্বি দ্বীচঃ শিরং প্রভিন্তন্ত্র নিধার তত্রাখ্যং শিরং প্রত্যাধ্রাং। তেন চ দ্বাঙ্ ঋচঃ সামানি যঞ্ষি চ প্রবর্গবিষয়াশি মধুবিভাগ্রতিপাদকং ব্রাহ্মণং চাখিনাব্ধ্যাপ্রমাস। তদিক্রো জ্ঞাতা বক্তেণ তচ্ছিরোইছিনং। অথাখিনো তত্ত ক্রীয়ং মানুষং শিরং প্রত্যধ্তামিতি।'

ইক্স দধীচিকে প্রবর্গ্যবিভা ও মধুবিভা উপদেশ দিয়া
নিলিয়াছিলেন, 'বদি এ বিভা আর কাহাকেও প্রকাশ কর,
ভাহা হইলে ভোমার শিরশেছ্দন করিব। অধিযুগল
দধীচের শিরশেছদন করিয়া অক্তর রাণিয়া দেই হানে ঘোড়ার
মাথা পরাইয়া দিয়া ঋক্, সাম ও যক্ত্ এই তিন প্রবর্গাবিভা
ও মধুবিভাপ্রতিপাদক রাহ্মণ অধ্যয়ন করিলেন। ইক্স
ভাহা জানিতে পারিয়া ভাহার পর সেই মাথা কাটিয়া ফেলিলেন। অনস্তর অধিযুগল উাহাকে প্নয়ার ভাহার নিজের
মান্তবের মাথা পরাইয়া দিলেন।

ঋথেদে অপর হই খনে দধীচির মন্তকান্তি সম্বন্ধে এইরূপ লিখিত আছে—

मात्रन अवात्म 'इडा' नत्मत्र व्यर्व 'हें ख्य' निविद्यादृष्ट्य ।

⁺ नावन 'व्यनिकका' भरमव वर्ष कविवाद्यम, 'श्वन्त्रीविवाध प्रदक्ष'।

"ইজো দ্বীচো অন্ততির্ত্তাণ্যপ্রতিক্ঠ:।
জ্বান নবতীন্ব।" ( ১৮৪।১৩ )
"ইচ্ছেম্মত যচ্ছির: পর্বত্ত্বপশ্রিতং।
তবিদ্দুর্যণাবতি॥" ( ১৮৪।১৪ )

প্রতিক্ল শক্ষরহিত ইক্স দ্ধীচির অক্স্থারা •নবঙ্গ নবতিবার (৯৯বারু) বৃত্তগণকে বধ করিয়াছিলেন। পর্বতে লুকায়িত দ্ধীচির অখ্যতক পাইবার ইচ্ছা করিলে ইক্স গেই মন্তক শ্র্যাবতে প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন।

উক্ত ঋক্ষয় দুষ্টে শট্যায়নির এক ইতিহাস আছে—

"আথর্বণক দুনীচো জীবতো দুর্শনেনামুরাঃ পরাবভূবুঃ।
অথ ত্ত্মিন্ স্থাতিহ্নুইরঃ পূর্ণ পৃথিবাভবং। অথেক্সতৈর্মুইরঃ সহ যোদ্ধু শক্ত্মুইবিমহিচ্ছন্ স্থাং গত ইতি
তথাব। অথ পপ্রাছ্ক ত্ত্ততালেছ কিমন্ত কিঞিং পরিশিষ্টমদমন্তীতি। তথা অবোচন্ অন্তোতদাখং শীর্ষং যেন শিরসাখিত্যাং মধ্বিছাং প্রারবীং। তত্ত্ব ন বিল্ল য্ত্তাভবদিতি
পুনরিজোহত্তবিং তদ্ভিছতেতি। তদ্ধাইষ্যাং। তচ্ছ্র্বণাবত্যমূবিছা জতুঃ। শর্ষণাবদ্ধ বৈ নাম ক্রাক্ষেত্রভূ জ্থনাদ্ধে
সরঃ ভানতে। তথা শিরসোহন্তিভিরিজ্ঞাহ্নুরাঞ্জ্বানেতি।"

অথর্কার পুত্র দ্বাচিকে পুনলায় জীবিত দেখিয়া অস্তর্গণ দৈবতাদিগের নিকট পরাভূত হইমাছিল। পরে দ্বাচি অর্গগত হইলে ঐ অস্তর সকল পৃথিবীতে পরিপূর্ণ হইয়াছিল।
অনস্তর ইক্স ইহাদের সহিত যুদ্ধ করিতে অশক্ত হইয়া দ্বাচিকে অবেষণ করিতে লাগিলেন, এইছানে দ্বীচিকে না
পাইয়া অর্গে গমন করেন এবং সেই ছানে সকলকে জিজ্ঞাসা
করিয়াছিলেন, 'দ্বীচির অর্থশিষ্ট অল কোথায় ?' তাঁহারা
বিলয়াছিলেন, দ্বীচির অর্থলে অল ছোঁ, যে মন্তক
ঘারা তিনি অবিধ্রুকে মধুবিলা উপদেশ দ্বিয়াছিলেন। ইন্ত বলিলেন, আমি তাহারই অবেষণ করিতেছি। সেধানকার
লোকেরা কহিল, তাহা কোথায় আছে, আমরা বলিতে
পারি না। ইন্ত তাহাদিগকে উহা অবেষণ করিতে বলেন,
তাহারা অবেষণ করিয়া শ্রুণাবিৎ নামে কুক্লেজ্বের ক্ষ্
নার্গে ইহা প্রাপ্ত হইয়াছিল। পরে ইন্ত এই মন্তকের অহি
ঘারা অস্তর্বাগকে হনন করিয়াছিলেন।

মহাভারতে বিধিত আছে,—দক্ষ যে সময় হরি**ছারে শি**ব-হীন মজের অন্ঠান করেন, সেই সময় **ইনি তাঁহাকে অনেক** 

त्याहेताहित्नन, किन्न एक ठाँहात कथात्र कर्नणां ना कतात्र क्रम्बञ्ज प्रशिव्धि राष्ट्रमञ्जा ज्याग कतित्रा व्यात्न। हेहात भिन्न नमी हेहात निक्षेट भिनमद्य पीक्षित हहेन्न भिन्नशर्वनक्रद्रभ भतिविज्ञ हन।

এক সময় দণীচি তপোহঠান করিতে আরম্ভ করেন।
ইক্স তাহাতে ভীত হইয়া অলম্বা অপ্সরাকে ইহার বোগছছ
করিতে পাঠান। যে সময় ইনি সরস্বতীতীর্থে ওপ্র
করিতেছিলেন, সেই সময় অলম্বা তাঁহার সম্প্রে উপ্রি
ইইলেন। অলম্বাকে দেখিয়া দ্বীচির রেডম্বালিত হইল।
তাহাতে এক পুদ্র জ্বা, এই পুজের নাম সারস্বদ্ধ্র দেব্রন
র্জাস্থরের ভয়ে উৎপীড়িত হইয়া জানিতে পারিলেন দে
দ্বীচির অহিনির্মিত বক্স না হইলে র্জের বিনাশ হইবে না।
তথন দেবরাজ ইক্স ইহার নিকট গিয়া অফিডিফা চাহিলেন।
যে ইক্স দ্বীচির ঘোরতর শক্রতা করিয়াছিলেন, দ্বীচি এখন
তাহারই উপকারের জ্বন্ত দেহ ত্যাগ করিলেন। অয়ি
প্রাণের মতে, শুধু বক্স নয়, দ্বীচির অ্রিতে বছ বর্ব
নির্মিত হইয়াছিল।

দধীচ্য কি কৌ) দধীচেরছি। ১ দধীচি মুনির অছি। এই মুনির অহিতে বজ্ব নির্মিত হয়। ২ বজ্র। ৩ হীরক। [দধীচি দেখ।] দধীমুখ (পুং) বানরভেদ। [দধিমুখ দেখ।]

দধ্য্ (জি) ধৃষ্ণোতীতি, ধৃষ-কিন্, বিতাদিকঞ নিপাতনাং সিদ্ধং (ঋত্বিক্ দধ্গিতি। পা তাং।৫৯) ১ ধৃষ্ট, নিৰ্লদ্ধ, বেহায়া। ২ ধৰ্ষক। "বাজেষু দধ্যং কবে" (ঋক্ ০)৪২।৬) 'দধ্যং শক্ৰুণামভিভাবকং' (সায়ণ)

দৃধুষ্নি (অি) দধ্গিবাচরতি দধ্য্কিপ্, ততো বাহনকাং বনি। ধর্ষক, অভিভাবক। "সাহসি মধ্তং চুতু দধ্যনিং (শক্চা৫০)০)

দ্ম (পুং) দধতে জীবেড্যঃ পাপপুণ্যকলাফলং দ্বীতীতি দ দানে-বাহুলকাৎ ন। যম, চতুর্দশ যমের মধ্যে একলদ।

"ঔত্ শরাম দধায় নীলায় পরমেটিনে ॥" (মমতর্পণমর)
দধ্যক (পুং) দিং ধারকং অঞ্তি অন্চ-কিপ্। অবর্ধ
শ্বির পুতা দ্বীচিম্নি। "দ্বাঙ্হ যয়ধ্বাথবঁণো বামশ
দীফ্রণ প্রাবদীমুবাচ" (অবক্ ২০১৬)১২)

ইন্দ্র দ্বীচিকে প্রবর্গাবিছা ও মধুবিছা উপদেশ দি বলিয়া দিয়াছিলেন, তুমি যদি এই বিছা কাহাকেও উপদে দাও, ভাহা হইলে ভোমার মন্তক ছেদন করিব। প অখিবর দ্বীচের মন্তক ছেদন করিয়া তাহাতে অথের মধ সংযুক্ত করেন এবং দ্বীচের মন্তক আঞ্চল্প রক্ষা করি এইরূপে ইহার নিক্ট প্রবর্গাবিছা ঋক্ সাম ও ষকু: প্রধ্ নিক্লা করিতে থাকেন। ইক্র ভাছা জানিতে পারিরা অখের মন্তক বক্রবারা ছেদন করেন। অবিষয় ভাহাকে পুনরার ভাহার নিজের মন্তকু সংযোজিত করিয়া দেন।

(बक् >1>>७।>२ नायन) [ मबीहि (मब । ]

দ্ধ্যক্স (ক্লী) দধ্যপসিক্তং অলং। দধিমি শ্রিত আল । "দধ্যলং পায়সকৈব গুড়পিটং সমোদকং।"

(योख्डवद्या )।२৮৮)

দধাকির (পং) দগ্ধ: আকর: ইব। দধিসমূদ্র। (শব্দার্থক)
দধানী (গ্রী) দধিবং উত্ততাঃ আনমতি আনী-কিপ্।
স্বদ্ধনা, স্বদর্শন গুলঞ্চ, কেহ কেহ ইহার নাম দঞ্ধএ,
কেহ বা পুরাতি বলে। হিন্দীতে মদনমন্ত।

দধ্যাশির্ (অি) দধাতি পুফাতি ইতি দধি শৃণাতি হিণান্তি ইত্যাশী দধ্যেব আশীর্যস্ত। দোষঘাতক। "সোমাদো দধ্যা-শিরং" (ঋক্ ১।৫।৫) 'দধ্যাশীর্দোষঘাতকং' (সায়ণ)

দধ্যতের (ক্রী) দরঃ উত্তরং শেষজাতং। দধিলেহ। দধ্যতের গ (ক্রী) দরঃ উত্তরং চরমাবস্থাং গচছতীতি গম-ড। দধিলেহ। (রহমালা)

দধ্যদ (পুং) দধিবছদকং য**ভ উদকভ উদাদেশ:।** ববিসমূজ।

দধ্যোদন (পং) দধ্যপসিক্ত: ওদন:। দধিমিশ্রিত ওদন। দনাগোধা, ত্রিপুরার অন্তর্গত সাচার নামী নদীর তীরস্থিত একটা গ্রাম। এধানে বেশ বাণিজ্যোর স্থবিধা আছে।

দনায়ুস্, দক্ষের কন্তা, কভাপের পদ্মী, ইহার চারিটী পুত্র,
ভাগাদের নাম বিক্ষর, বল, কীর ও র্ত্ত। (ভারত আদি ৬৫ আং)

"দক্ষেচ দনাযুশ্চ মাতেৰ চ পিতেব চ পরিব্রুগ্রুগ্
ভিশাদানব ইত্যান্তঃ" ( শতং ব্রাং ১।৬।৩।৯ ) দনাযুদের পুত্রগণ
দানব নামে বিধ্যাত।

দমু (বী) > দক্ষের এক কন্তা। কশ্যপের পদ্মী, ইহার বিপ্রচিতি,
শরর, নমুচি, প্লোমা, অসিলোমা, কেনী, কুর্জন্ব, অয়:শিরা,
অম্বশিরা, অম্বশঙ্ক, গগনমুদ্ধা, অর্ডান্ত, অম্ব, অম্বশিরা,
গরা, অজক, অম্বতীব, ক্লা, তৃহত্ত, একপদ, একচক্র, বিরশাল্, মহোদর, নিচন্ত্র, নিকুত্ত, কুপট, কপট, শরত, শলত,
হর্গা, চন্ত্র, একাক্ষ, অমৃতপ, প্রলম্ব, নারক, বাতাপী, শঠ,
ক্রায় ও দীর্যজ্বিহ্ব এই ৪০টা পুত্র হয়। ইহারা সকলেই
দানব নামে বিধ্যাত। দমুপুত্র চন্ত্র ক্র্যা, ক্লেবতা চন্ত্রক্র্যা
ক্রিতে স্বতন্ত্র। (ভারত ১০৩৫ অং)

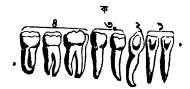
२ এक्छन मानव, श्रीमानत्वत्र शृंख। म्यूक (श्रः) मत्नाकांग्रर्ड कन-छ। क्षश्चन। म्यूकमलनी (जी) मञ्जन मननी । अञ्चननामिनी, ह्वा। দক্ষে বিষ্ (পুং) দহৰানাং অহ্বাণাং বিট্ শক্ষঃ বা দহ-আন্ বেটি বিষ্ কিপ্। দেবতা। (ত্রি) দহৰাশক্ষ। দক্ষাকি (পুং) দহৰাভ অবিঃ,৬-তং। দহৰাশক, দেবতা। দকুষ (পুং) বাক্ষা।

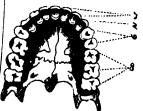
দত্সংভব (পুং) সম্ভবত্যস্থাৎ সংভূ-মৃপ্ দনো: সম্ভব:। দম্ব পুত্র, দানব।

দমুসূমু (পুং) দনোঃ সৃষ্টা। দমুর সন্তান, দানব।
দন্ত (পুং) দম-তন্ (হসিমৃগ্রিণিতি। উণ্ ৩৮৬)। ১ আঞ্রিকটক। ২ কুঞ্জ। ৩ পর্বতিনিতম্ব। ৪ সাম্থ। ৫ মৃথের মধ্যে
চর্বণসাধন অন্থিভেদ, দাঁত, ইহার সংখ্যা ঘাত্রিংশং।
পর্যায়---রদন, দশন, রদ, বিজ, থকু। (শক্ষরদাবদী)

আহার করিবার নলী হইতে আরম্ভ করিয়া মুখাভাস্তরে সংলগ্ধ কঠিন পদার্থগুলিকে দস্ত বলে। প্রাণীমাত্রেরই দস্তোদাম হয়, কিন্তু আহার্যা দ্রব্যের ও অভ্যাদাদির পার্থক্য অমুসারে দস্তেরও পার্থক্য দৃষ্টে প্রাণীতত্ত্ববিদ্ পত্তিভগণ প্রাণীগণের শ্রেণীবিভাগ বিষরে অনেক সাহা্যা প্রাপ্ত হন।

শারীরতত্ত্বিদ্ পণ্ডিতগণের মতে দন্তের তিনটা ভাগ ।
আছে—(১) একটা মন্তক (Crown), (২) একটা শিক্ত
(Root), (৩) একটা গ্রীবা (Neck)। প্রত্যেক দন্তাভাস্তরে একটা ধমনী ও একটা স্নায়ু প্রবেশ করে এবং
প্রত্যেকটার মধ্যস্থলে একটা ছোট গর্জ দেখা যায়।
এই গর্জের ভিতরে পাল্প (Pulp) অর্থাৎ দস্ত কর
এক কোমল রক্তপূর্ণ ও সচেতন পদার্থ দেখা যায়।
দস্তকে লম্বভাবে ছেদ করিলে দেখা যায় যে ইহাতে ৪টা
পদার্থ আছে—(১) ডেন্টাইন (Dentine), (২) দিমেন্ট্
বা কুটা পিট্রোসা (Cement or Creysta petrosa), (১)
এনামেল (Enamel) ও (৪) পাল্প (Pulp)





ক—আংশ্বিক চোয়ালে পৃথক্ ভাবে থেকণ দল্প থাকে। থ—উপর চোয়ালের দল্প— (১) ইন্সাইজার, (২) কাানাইন্, (৩) বাইকাম্পিড, (৪) নোলার। ১। ডেণ্টাইন—ইহা দত্তের প্রধান অংশ। ইহা তিন ।
ভাগে বিভক্ত—(১) দৃঢ় বা গুদ্ধ ডেণ্টাইন (hard or true dentine), (২) ভাগো ডেণ্টাইন (Vaso-dentine),
(০) অষ্টিও ডেণ্টাইন (Osteo dentine)। ডেণ্টাইন দিমেণ্ট ও এনামেলোন ধারা আবৃত গাকে, ইহাতে বহুসংখ্যক অতি স্কু স্কু নল ও গহরর এবক মৃগ্র কণিকাসকল দৃষ্ট ভ্রা এই স্কু স্কু নল ও গহরর চুর্বিগণ্ডক কণিকাসকল (Calcareous particles) এবং একরূপ বর্ণহীন তরল পদার্থ গাকে। ডেন্টাইনের মধ্যম্বানে পাল্প নামক গহরর দৃষ্ট হয়। স্কু স্কু নল ও গহররগুলির মৃণ এই পাল্প গহররে মৃত্য গাকে।

ইহাদিগের প্রত্যেকের এক একটা বহিরাবরণ আছে, ভাহাকে ডেণ্টাল্সিদ্ (dental sheath) বা দম্ভাবরণ বলে।

শুন্ত কোষময় (Cellular basis) রক্তবহা নাড়ীর (Vascular canals) চতুর্দিকে সমকেন্দ্রিক স্তরে যথন সজ্জিত থাকে, তথন ডেণ্টাইনের একটু রূপাস্তর হয়। এই অব-স্থার ডেণ্টাইনকে অষ্টিও ডেণ্টাইন (Osteo dentine) বলে।

- >। সিমেণ্ট্বা কুটা পিট্রোসা, অর্থাং দন্তের কঠিন পদার্থ— ইংা দত্তের ম্লদেশ আবৃত করিয়া থাকে,। হত্তী এবং অন্ন কতকণ্ডলি অন্তর দত্তে সিমেণ্ট বেশী পরিমাণে থাকে।
- ৩। এনামেল—দন্তের বৃাহতস্তর (Tissue) মধ্যে এই টী সন্ত্যাপেক্ষা কঠিন। ইহা দন্তের মন্তককে (Crown) আর্ত করিয়া গাকে।
- ৪। পাল্প—ইহা ডেউ।ইনের মধ্যস্থান অধিকার করিয়া
  গাকে। ইহাতে রক্তবহা নাড়ী, স্বায়ু ও সংযোগতস্কু দৃষ্ট হয়।

তেন্টাইন ও ভাসো ডেন্টাইন সম্পন্ন দম্ভ মংজ্ঞেই সাধা-রণতঃ দৃষ্ট হয়। মুম্ম্য এবং মাংসাসী জন্তুদিগের দন্ত দেখি-নেট ডেন্টাইন ও এনামেল সম্পন্ন বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু ভাহাদিগের দিন্তের মন্তকে. (Crown) সিমেন্টের একটী পাত্লা আবরণ থাকে।

মঞ্লোর দক্ত তুইবার বহির্গত হয়— ১ ছগ্পলম্ভ ( এই দক্ত অলকালম্বারী হয়)ও ২ দীর্ঘকালম্বায়ী দক্ত।

ত্র্যুদস্ত—ইহা তুই বংসর ব্রুসের মধোই নিয়লিথিত

- ২ । উপর চোরালের মধ্যকার ৪টী ইনসাইআর বা তোটক—৮ হইতে ১০ মাস ।
- । নিয় চোয়ালের ছইদিকের ইন্সাইজার এবং ৽য়ি
   মোলার বা চর্কাণদস্ত-->২ হইতে ১৪ মাস।
  - ৪। ৪টা ক্যানাইন বা শৌবনদন্ত—১৮ ছইতে ২০ মাদ।
  - ৫। ৪টী পশ্চান্তাগের মোলার—২০ হইতে ২৪ মাস।

দীর্ঘকাল স্থায়ী দস্ত--ছয় বৎসর বয়সের মধ্যেই হয়দয়
পড়িয়া যায় এবং তথন দীর্ঘকালস্থায়ী দস্ত বাহির হইটের
পাকে। বার তের বৎসরের মধ্যে প্রায় সমস্ত দস্তুই বাহির
হয়। ২১ বৎসরের সময় আকেল দাঁত বা জ্ঞানদস্ত (Wisdom tooth) বাহির হয়। এই সময় দস্তের সংখ্যা পূর্ণ অর্থাং
৩২টী হয়। নিয়লিখিত প্রণালীক্রমে এই সকল দাঁত বাহির
হয়।

ত্থাদন্তের মোলার দন্তের স্থানে স্থানে বাইকাম্পিড দর ও মোলার দন্তের পশ্চাতে ৩টা করিয়া স্থায়ী মোলার দর 'বাহির হয়। ৩২টা দন্তের মধ্যে প্রত্যেক মাড়ীর, অর্ক্রেড ভাগে ২টা ইন্দাইজার, ১টা ক্যানাইন, ২টা বাইকাম্পিড এবং ৩টা মোলার, স্বত্রাং মোট ৮টা ইন্শইলার, ৪ টা ক্যানাইন, ৮টা বাইকাম্পিড ও ১২টা মোলার দস্ত। ইহাদের মধ্যে ৮টা ইন্দাইলার দস্ত ছই মাড়ির সমূবে থাকে। ইহাদের প্রত্যেকের এক একটা লখা মূল এবং চাপিটা ধার থাকে। এই ধার থাকার জন্ম আহার্যা দ্বা কাচিয়া

মাজির ইন্সাইজার দর্ভের পাশেই ৪টা ক্যানাইন ^{নয়} থাকে। ইহাদের শিক্ত (Fang) লয়া এবং এক^{পারে} চ্যাপ্টা।

ক্যানহিন্দত্তর পরেই ৮টা বাইকাম্পিড দত্ত থাকে।
এই দত্তকে প্রিমোলার ( Premolar ) দত্তও বলে; ইন
দের শিক্ডের অগ্রভাগ হুইবঙ্গে বিভক্ত। ইহাদের পার্চ
দিকে থাল, উপরিভাগ চ্যাপ্টা ও ছুই পাশে ২টা ভাট্র

নিম্ন চোয়ালের মধান্থিত ২টী ইন্সাইজার — ৬ চইতে ৮ माम ।

সকলের পশ্চাতে ১২টা মোলার দপ্ত থাকে। ইহাদের একটা বা ছুইটা করিরা শিক্ড আছে। ইছাদের উপরিভাগ প্রশস্ত বৰিয়া আহোষ্য দ্রব্য পিষিয়াভক্ষণ করা যায়। ভ্রান বা আকেল দন্তের একটা অসমান শিকড় থাকে।

দত্তের রাদায়নিক পদার্থ---

मश्राविए ५ শতকরা ৩৩ ভাগ জান্তব পদার্থ কুটা পিট্ৰোদা বা সিমেণ্ট ৩০ ভাগ দেণ্টাইন ২৮ ভাগ এনামেল ৩ ৫ ভাগ

भट्य (र थनिक भनार्थ मुद्दे इश्व, उन्नाद्या का। निक कटक है, मानिमक कार्यस्मिन, काल्मिक् क्षुरतात्राहेड अदः माग् দিবিক ফক্টে প্রধান।

দত্দেথিয়া কোন্জন্তোন্ শ্রেণীর এবং ভাহার মলাধাদি কিরূপ তাহা নির্ণয় করা যাইতে পারে। আমরা विशिष्ट शाहे (य, भाश्मामी अञ्चितिशत भागात पछ श्रियन-দরের ভাষ না হইয়া তীক্ষধারবিশিষ্ট হয়। কীটভুক্ জন্দিগের মোলার দক্ষের উপর তাহা গুটিবিশি**ট ও** থুব স্কু হয়।

ফপভৃক্ জন্তুদিগের মোলার দস্তে গোলাকার গুটি থাকে এবং পাকভোজী জন্তদিগের মোলার দন্তের উপরিভাগ প্ৰশস্ত ও অসমান হয়।

দর্ভোগেমফল।—বালক সদস্ত জানিলে পিতৃ ও মাতৃ; ^{ছম্ব।} •জাত বালকের প্রথমমাসে দস্ত উঠিলে• পিতার মুগুংখ। দ্বিতীয়মাদে দক্তোৎগ্য হইলে মাতা ও তিন্মাদে উঠিলে সহোদর বিনষ্ট হয়। চারিমাসে দত্তোৎগম শুভ-জনক। পাচমাদে দম্ভ উঠিলে মিইভোকী ও স্থী, भगारत डेबिल পণ্ডिত, १ मारत वनवान्, १ मारत पतिल, ন নালে বীর ও দশন মালে দজোৎগমে মৃত্যু হয়। 'একাদশ ও গাদশ প্রভৃতি মাদে দক্ষোৎগম শুভজনক। যদি পৃর্বেলিজ ষণ্ডজনক মাসে দস্তোৎগম হয়, তাহার শাস্তি করা আবৈশ্রক। শান্তি করিতে হইলে প্রথমে ৮টা পুতলিকা করিয়া স্থান্ধ ^{পুরবারা} অমুনিপ্ত_ুকরিবে, পরে স্লোভ বা সংক্রমে শুরু পূষ্ণ গাবা সাপিত করিতে হইবে এবং বালাপপু**লা₃ও হো**মাদি ন্ধুরিতে হইবে। •

রতিক্রীড়াতে দস্তাঘাতের স্থান — ব্যবায় সময়ে স্তন, গণ্ড, ওঠ ও অধর এই মুকল হানে দন্তাঘাত স্নীগণের সুখন্তন । " खनर्यार्ग ७ स्माटेन्टव ७ ६ ईटेटव ज्यांभरत् । দন্তাগাত: প্রকর্ত্তব্য: কামিনীনাং সুধাবছ: ॥" (কামশাস্ত্র) গভাবিধি সপ্তমমাসে বালকের দক্তম্বের প্রাত্তবি হয়।

**म्खका** छ

পঞ্চমাত্রা প্রভেদ। দন্তক (অি) দত্তে দন্তমার্জনে প্রসিতঃ কন্। ১ দন্তমার্জন-প্রসিত। দম্ভ ইব কন্। ২ শৈলশৃক্ষ। ৩ পর্বত হইতে ১ বহিনিপত পাষাণভেদ। স্বার্থে কন্। ৪ দস্তু। म्खकर्षन ( प्रः ) म्हान् कर्षि कृष-मू । बन्नीत्र । দস্তকাষ্ঠ (ক্লী) দম্ভধাবনার্থং কাঠং। দম্ভধাবন কাঠ, দাঁতন।

দস্তকাঠের বিষয় বৃহৎদংহিতায়ু এইরূপ লিথিত আছে,— বলী, লতা, ওলা ও তরুগণের প্রভেদ হেতু সহস্র সহস্র প্রকার দম্ভকাষ্ঠ হইতে পারে; এই জন্ত কোন্কোন্ বুকের দস্তকাঠ ওভজনক বা কোন্ কোন্ বৃক্ষ অওভ, তাহাব কথা বলাহইতেছে। অজ্ঞাতপূর্ব, কাঠেব বা প্রসম্বিত, যুগাপৰ্ক, পাটিভ, উৰ্কণ্ড ও অক্ৰিহীন দত্তকাঠদকল ধারা দভ্তধাবন করিবে না। ব্রৈক্তত, শ্রীফল ও কামারী সুকে দস্তকাষ্ঠ করিলে ব্রহ্মসম্বন্ধিনী ছাতিঃ লাভ হয়। পৈন্ত রু⇒ বুকে উত্তমা ভার্য্যা প্রাপ্তি, বটবুকজাত দম্বকাঠে বুদি, অর্ক' বৃক্ষে তেজোবৃদ্ধি, মধুকবৃক্ষে পুত্রলাভ এবং ককুভ বৃক্ষে সকলের প্রিয়ত্ব লাভ হয়। শিরীয় ও করত্তে দত্তকার্চ চইলে ল্মী, প্লক্ষে সমাক্রপে অভীপ্সিত অর্থসিদ্ধি, জাতিবুকে মহুয়া হ প্রাপ্তি, অখ্য বুকে প্রাণাক্তণাভ, বদরী ও বুহতী বুকে আরোগ্য ও আয়ু, বিব ও খদির বুক্ষে ঐখর্য্য বৃদ্ধি হয়। ষতিমূক্তকে চেষ্টিত জবোর লাভ ও কদম্বর্কে দকল প্রকার ভাভ হয়। নিষেদস্তকাষ্ঠ করিলে অর্থপাপ্তি, করুবীরে অন্ন লাভ, ভাণ্ডীর বৃক্ষে এই স্কল্লাভ ও অর্জুন্সুকে শক্রনাশ হয়। শাল, অখকর্ণ, ভদ্রদারু ও আনট্রুবক বুক্ষে গৌরব প্রকাশ এবং প্রেয়য়ৄ, অপামার্গ, জয়ু ও দাড়িম বুকে দস্তকার্ছ করিলে সকল প্রকার স্থ্যলাভ হয়। পূর্দ্ম ও উত্তরমূথে, বৃদিয়া দক্তকার্চ ব্যবহার করিতে হইবে। দন্তক। ছবারা দন্তধাবন করিয়া মুখধৌত করিয়া শুচিপ্রদেশে

ज्ञांशिकः चार वनवान् छानात्था मात्मश्रीम (बज्योधिविहोनः । হরপ্রতাপী নবমে মৃত্যুক্ত দশমে তথা। একাদশে দাদশে চ হুখী চ হুভগো ভবেং 🛭 অপ্টো পুতলিকাং কৃতা হুগলৈগৰকৈতথা। আেতঃহসংক্রমে চাপি স্নাপরেৎ শুকুপুত্দি:। यानः मरक्रमाणायः मरकार्यन्त्रमञ्जूतः। रहामः विधार्कमः हिवमखर्ख एक्सर्नम् ॥" ( (बााक्रिक्य )

^{🕈 &}quot;লাড: সদত্ত: পিতৃমাতৃহত্তা তাতং বিহভাৎ এখনে তু মাসে। অধাং বিতীয়ে সহলং ভৃতীয়ে মাসে চতুৰ্বে শুভকারক: ভাং। মিটায়ভোজী হভগ: হতাখো বর্ডে হথী পতিত্ত জন্ছি:।

দক্তকাৰ্দ্ধ পরিত্যাগ করিবে। উক্ত দক্তকাৰ্দ্ধ প্রশাস্ত দিক্স্থিত অভিমুখে পতিত হইলে শুভকর এবং যদি উন্ধা উর্দ্ধে সংস্থিত হয়, তাহা হইলে অথিক শুভজনক জানিতে হইবে। ইহার অঞ্জা হইলে অশুভকর জানিবে। (রহৎসং ৮৫ অং) প্রাতঃকালে শৌচাদি সমাধা করিয়া দক্তকার্চ্বারা দক্তবিষ্ধান করিবে। তিক, 'কটু, কুষায়, স্থান্ধি, কণ্টকযুক্ত ও ক্ষীরিকার্চ দক্তধাবনে প্রশাস্ত।

"ভিজেং কংৰাং কটুকং স্থাদ্ধিকত কাৰিবং।
কীরিণোর্ক ভুলাভান্ ভক্ষেদেভাগাবনে ॥" (আছিকতন্ত্র)
নিষ্দিকাঠ—ভাবাক, তাল, হিস্তাল, ভাড়ী, কেতকী,
বর্জুর ও নারিকেল, এই সকল বৃক্ষ তৃণরাত্ম নামে ব্যাত।
এই সকল বৃক্ষে দস্তকাঠু করিবেনা।

"গুবাকতালহিস্থালা তথা তাড়ী চ কেতকী। থর্জুরনারিকেলো চ সইপ্তেতে তৃণরাজকা: ॥ তৃণরাজনিরাপত্রৈ র্য: ক্র্যাদস্তধাবনং। তাবস্তবতি চাণ্ডারী যাবং গাং নৈব পশুতি ॥"

(আহিকতম্ব)

বিহিতকা**ঠ**, ধনির, কদস্থ, করঞ্জ, বট, ভিস্তিড়ী, বেণুপ্ঠ, শুআঁম, নিম, অপামার্গ, বিব, অক্ত ও উজ্ন্তর এই সকল বৃক্ষ দিওকোঠে প্রশাস্তা।

দত্তকাঠের পরিমাণ— বৈশুদিগের বাদশাসূল, শ্তাদিগের ছয় অসুল এবং নারীদিগের পক্ষে চারি অসুল। "বাদশাসূলঞ বৈশ্যানাং শ্তাণাত্ত বড়সূলং। চত্রসূলমানেন নারীণাং বিধিকচাতে॥" (মরীচি)

[দপ্তধাবন দেখ।] ১৯০১ - দক্ষধাবনযোগাং

দন্তকাঠক (ক্রী) ব্রখং কাঠং কাঠকং দন্তধাবনযোগ্যং কাঠকং। আহণ্যবৃক্ষ।(রাঞ্নিং)

দ ন্তকুর (পুং) দস্তা: কুরং অন্ধমিব চর্বাহাৎ যত্ত্ব। সংগ্রাম, যুদ্ধ। দন্তক্রের (পুং) দস্তা: ক্রা: যত্ত্ব। ১ দেশবিশেষ। ২ দস্ত-ক্রের দেশের রাজা। (,ভারত দ্রোণ ৬০ অং)

দন্ত গ্রাহিন্ (আ) দন্তং গৃহাতি গ্রহ-ণিনি। যে দাঁত ধরে,: যে দন্ত নষ্ট করে।

দ্দুত্বর্ (পুং) দুরুত ঘর্ষ: ৬তৎ। দুরু সকলের পরস্পর ঘর্ষণ-ভেদ, দারু কিড়মিড়ি।

"বহা বৈ ভূকমাত্রহা হৃদয়ং বাধতে কুধা।

কারতে দক্তঘর্শত দ গতায়ু: স্মৃতো বুবৈ: ॥" (মার্কণ পুণ)

যাহার ভোজন করিলেও হৃদয় কুবা বারা পীজিত হৃদ

এবং দক্তঘর্ষ হয় অর্থাৎ গাঁত কিড়িমিড়ি করে, ভাহার আয়ু:
শৌষ হইয়াছে, ফানিতে হইবে।

দস্তবাত (পুং) দস্তত বাতঃ দস্তেন বা। দস্ত বারা আবাত।
দস্তচাল (পুং) দস্তানাং চালশ্চলনমত্ত্র। আত্রোপত্তবংৰ্
দাত নড়া, বৃদ্ধ হইলে আপনা হইতেই দাঁত সকল নড়িয়া বার।
"নেত্রস্তঃ নিমেষঞ্জ্ফাং কাসং প্রস্থাবং।

লভত্তে দম্ভচাল্ঞ তাংস্তানস্থাস্পদ্রবান্।" ( স্থঞ্জ )
দম্ভচ্ছদ (পুং) দম্ভান্থ্যভোগ্রহনেন ছদি-পিচ্ ঘ, তভার্য্য (পুংসি সংজ্ঞারাং ঘ্রপ্রায়েণ। পা এএ১১৮)। ওঠ। "দম্ভচ্টদর্মধাব্যাভিচিক্তৈ

ন্ত নৈশ্চ পাণ্য গ্রন্থ ভিলেইখ:।" ( ঋতুসংহার হেমন্তবং ১২)
দুক্ত চ্ছে দোপমা ( জী ) দক্ত ছিল ভ ওঠন উপমা দাদ্ধাং দ্বা
বিশীলতা, তেলাকুচা, ইহার সহিত ওঠের উপমা দেলঃ
কবি প্রসিদ্ধ, এইজন্ত ইহার নাম দক্ত ছে দোপমা।

দস্তজাতে (ত্রি) জাতো দস্তোহত, নিষ্ঠান্তজাৎ পরনিগান্ত:। জাতদন্ত, যাহার দস্তোৎগম হইরাছে।

শিক্তভাতে হত্নভাতে চঁ কুতচ্ডে চ সংস্থিতে।" (মহ ৫ ৪৮)
দক্তভাত শব্দে দক্তভাননযোগ্য কালও ব্ঝায়। গর্ভাদ
নিবদে সপ্তমমাদ দক্তভাননযোগ্য কাল। যদি সপ্তমমাদে দহ
ভান না হয়, তাহা হইলে দক্তভান যোগ্যকাল হেতৃ লাও
দক্তের অশৌচের ক্রায় অশৌচাদি হইবে। "দক্তভাননং ডছ
ননযোগ্যকালশ্চোভয়মণি দক্তভাতশব্দেনোচাতে, গ্রেপনিষ্দি সপ্তমমাদে দক্তভানকালক্তোকভাং, তত্র বৈবাং
দক্তান্তপত্তাব্দি ভাতদক্তকালত্তাং দক্তভানন ইব অংশীঃ
নিমিত্তা" (ভারিতং)

নস্তজাহ ( ক্লী ) দন্তানাং মূলং কণাদিত্বাৎ আছে। দন্তমূল।
দন্তদেশনে ( ক্লী ) দন্তানাং দর্শনং দৃশ-গিচ্-লাট্। অংকের প্রথবে
যোক্ পুরুষ সকল প্রতিযোজার আতি নিজ দন্ত বাহির করিয়া
দেখান, দাঁত দেখান, দাঁতঘামুটি। যুদ্ধের প্রথমে দন্ত দুশন,
ভাহার পরে শন্ধ এবং পরে যুদ্ধ করিতে হয়।

"मञ्जनमंत्रावञ्चरायुक्तः व्यवर्कतः ।" ( ভात्रञ वन ११ वः मञ्जभावे (क्री ) मञ्जानाः शावनः। अमञ्जन । महानः शावनः यात्राः। २ मञ्जकार्धः।

প্রাতঃকালে উঠিয়া সর্কলের দক্তধাবন করা আবস্ত দক্তধাবনে মুখের তুর্গন্ধ প্রভৃতি নাশ ও দক্ত পরিষ্কৃত হর এবং দক্ত বহুদিন স্থায়ী হয়, ইত্যাদি কারণে দক্তধাবন প্রভাবের অবক্ত কর্ম্বর।

দস্তধাবনের বিষয় আহিকতত্ত্বে এইরূপ লিখিত আছে। মূথ প্যাথিত হইলে ফুর্গন্ধ হয়, এই লভ যতুসহকারে দ্বধার করিবে।

"মুখে পথ্য বিভে নিভাং ভবত্যপ্রবতো নরঃ।

তত্মাৎ সর্বা প্রবাদেন ভক্ষরেৎ দক্তধাবনং ॥" ( ভাহ্নিত ) श्राजःकारन यथाविथि (नोहकार्या मण्णव कतिया प्रस्थावन-পূর্মক ল্লান করিবে । দস্তধাবন করিতে হইলে দস্তকাষ্ঠ (দাতন) ব্যবহার করিয়া পরে জলে মুখ ও দ্**তথা**বন করিতে হইবে। দক্ত পরিকার করিতে হইলে দক্তকাঠই একমাত্র প্রশন্ত। এই জন্ত দস্তধাবনের জন্ত দস্তকার্চ আহ্-রণ অবশ্র কর্তব্য। কোমল অমথচ কটু ক্যায় বা ভিক্তরস্-যুক্ত দস্তকার্চ থারা যাহাতে দক্ত মাংসের পীড়া না হয়, এই-ৰূপে দুসূধাবন করিতে⊿হইবে। ,করবীর, আঞা, করঞ্জ, বকুল, সকল প্রকার কণ্টক বৃক্ষ এবং ক্ষীরযুক্ত বৃক্ষ, যাুহা কটু, কষায় ও তিক্ত বা স্থান্ধি, ভাহা হইতে দক্তকাৰ্চ সংগ্ৰহ করিবে। [দক্তকাষ্ঠ দেখ।] দকিশ ও পশ্চিমমুধী হইয়া দখধাবন করিতে নাই। কেহ মোহপ্রসুক্ত गैकिनम्बी इहेग्रा দরধাবন করিলে আযুক্ষর ও পশ্চিম্মূথে রোগ হর এবং এই উভয়দিকেই नुत्रक ভোগ হইয়া থাকে।

"দিজিণাভিমূথোভূত্বা পশ্চিমাভিমূথন্তথা। ন দস্তধাবনং কুৰ্য্যাৎ কুৰ্য্যাচেৎ নারকী ভবেৎ॥"

(আফিকতর)

পুল ও উত্তরমুখী হইয়া দস্তধাবন প্রশাস্ত । দস্ত উর্জাবিতাবে ঘর্ষণ করিয়া মুখ জলপুণ করিয়া ও চক্ জল ঘারা ধোত করিলে দৃষ্টি প্রসন্ন হয় । অমাবস্থা, ষষ্ঠা, নবমী, প্রতিপদ্, একাদশী এবং উপবাদে, প্রাদ্ধবাদরে ও রবিবারে দস্তধাবন জন্ম দস্তকার্চ ব্যবহার করিবে না, এই সকল নিষিদ্ধ দিনে এবং যদি দৈবাৎ এমন কোন স্থানে যাওয়া বায়, যে স্থান দস্তকার্চ সংগ্রহ কঠিন, সেইস্থানে বস্তমারা দস্ত ও রমনী ঘর্ষণ করিয়া ঘাদশ গওুষ জালে মুখ শুলি করিবে। অর্দ্ধিত, কর্ণশ্রপ্রতা, দস্তরোগী, নবজ্রী, শোষরোগী, কাশরোগী এবং মুছ্ণি ব্যাধিযুক্ত ব্যক্তি, ইহারা দস্তধাবনে দপ্তকার্চ ব্যবহার করিবে না।

"वर्षिटा कर्गम्ली ह मखदानी नवस्त्री।

শোষী কাসী চ মৃচ্ছািত্তে দস্তকাঠং বিবৰ্জনে ॥ (রাজবং)
দত্তধাবনের গুণ-—প্রতিদিন দস্তধাবন করিলে মুথবিরসতা
ও জিহলা দস্তাশ্রিত, মল বিনষ্ট এবং মুথের ক্রচি হয়।
য়য়্বর্গণে কলাচ তুর্জুনী ব্যবহার করিবে না, মধ্যমা, জ্বনামিকা বা ব্রাস্ঠ্রামা দস্তবর্গণ করিবেন স্থেগিদক্রের পূর্বে
ভব্ধাবন করিতে হইবে। যিনি স্র্যোদর হইলে দস্তধাবন
করেন, তাহার সকল ক্রিয়া বিনষ্ট হয়। যিনি স্থানকালে
দক্ষাবন করেন তাহার পিতৃগণ নিরাশ হইরা গ্রমন করেন
এবং দেবতা প্রস্তুতি তাহার পূর্ণা গ্রহণ করেন না। যিনি

মধ্যাক ও অপরাত্ন সমরে দত্তধাবন করেন, তাঁহার প্রতি দেকতা ও পিতৃগণ সকলই কট হন।

"স্ব্যোদ্বে বিজ্ঞেষ্ঠ যা ক্র্যাদ্ভধাবনং।
নিত্যক্রিয়াফলং তক্ত সর্ক্মেব বিনপ্ততি ॥
বা সানসময়ে ক্র্যাৎ জৈমিনে দক্তধাবনং।
নিরাশাঃ পিতরো ঝান্তি তক্ত দেবাঃ স্বর্ধয়ঃ॥
দক্তত ধাবনং ক্র্যাৎ যো মধ্যাল্পিরাত্বয়োঃ।
তক্ত পূসাং ন গৃহুন্তি দেবতাঃ পিতরো জলং॥
**

( शस्त्र किशायांशमात्र )

দস্তধাবনে দস্তকাঠ কনিঠাঙ্গুলির অঞ্জাগবং স্থুল এবং বিপ্রের ঘানশাস্ত্র পরিমিত হওয়া উচিত। ক্ষত্রিয়ের নয়, বৈখ্যের অইও শুদ্রাদির ছয় অঙ্গুলি পরিমিত হওয়া আবশুক।

দস্তধাবনের বিষয় ভাবপ্রকাশে এইরূপ লিখিত আছে—
মহয়গণ স্বায়ারকার নিমিত্ত বাক্ষমূহুর্তে জাগিবে। পরে
শৌচকার্য্যাদি সম্পাদন করিরা হত্ত ও পাদ প্রফালন
করিবে।, ইহার পর দস্তধাবন করিবে। দস্তধাবনে বাদশ
অঙ্গুলি দীর্ঘ, কনিষ্ঠাঙ্গুলির অগ্রভাগের ছায় হুল, সরল, গ্রন্থিবিহীন ও অক্ষত দস্তকাষ্ঠ বারা দস্তধাবন বিধেয়। দস্তক্ষির
অগ্রভাগ কোমল ক্র্কাকার প্রস্তুত করিয়া তন্থারা দস্তশোধন চুর্ণ দিয়া দস্তবেষ্টিত মাংসে আঘাত না লাগে, এই
ভাবে এক একটা করিয়া দস্তবর্ধণ করিবে।

মধুর, ত্রিকটু, সার্ধপতৈল, দৈশ্ধবলবণ, তেজ ও বন্ধলচুর্ণ বারা প্রত্যন্ত দক্তশোধন করিবে। মধুর কাঠের মধ্যে মৌল-কাৰ্চ প্ৰশন্ত, কটুরসমূক কার্চের মধ্যে করঞ্জ ও তিক্তরসমূক कार्छ लहेरव । धहेक्ररण मण्डभावन कतिरण मूख्यत वित्रमुखा, দন্তগতবোগ, "জিহ্বাগতবোগ ও মুধবোগ উৎপন্ন হয় না এবং ক্রচি, ৰূথের নির্মাণতা ও লঘুতা উৎপাদন হইয়া থাকে। व्याकन्मकार्ष्टं मञ्जभावन कत्रित्न वीर्यानाष्ट्र, वर्षेचात्रा मत्री-রের কান্তি, করঞ্জে জার, পাকুড়ে অর্থসম্পত্তি বৃদ্ধি, থদির-কাঠে অংগন্ধি, বিষয়কে ধন, ক্জড়মুরে বাক্সিনি, আএ-কার্ছে নিরোগী, কদমকার্ছে ধারণাশক্তির বৃদ্ধি, চঁম্পকরুকে দৃঢ়মতি, শিরীষ বৃক্ষে কীর্ত্তি, সৌভাগ্য, ও পরমায়ুলাভ, অপাক্তব্যেক ধারণাশক্তির বৃদ্ধি, দাড়িছ, অর্জুন ও কৃটক বৃক্ষবারা দম্ভধাবন করিলে ত্রুর আক্তিসম্পার হয়। জাতী, তগর ও মন্দারপুষ্পকাঠে তঃস্বপ্ন বিনষ্ট হইয়া থাকে। গুৰাক্ প্ৰভৃতি কাৰ্চ্চ দস্তকাৰ্চ্চে ব্যবহার করিবে না, তাহা পুর্বেই কথিত হইয়াছে। গলরোগী, ভালুরোপী, ওঠরোগী, बिस्ता ७ पसरवाती, मूथ ७ मूथरणाथरवाती पस्थापन कतिरव না এবং বে ব্যক্তি হর্মান ও ঘাহার ভুক্ত জব্য পরিপাক হয়

দস্তধ†বন (পুং) ধাবয়তানেন ধাবি লা্ট্। ১ থদির বৃক্। ২ ৩৪ছক্রঞ্জ। ত বকুল। (শক্চ°)

দস্তধাবনক (পুং) দন্তধাবন-স্থার্থে কন্। দন্তধাবন। দন্তপত্র (ক্রী) দন্তাইব পত্রাণি অস্ত। (Earing) কর্ণাভরণ-বিশেষ, কুরল।

"কর্ণাবসক্তামলদস্তপত্রং মাতা ভদীরং মুথমূরমধ্য। (কুমারণ। ২২) ২ গঞ্জনস্তানির্মিত পত্রাকার কর্গভূমণভেদ।

দিঁস্তপত্তক (রৌ) কুন্দপুষ্প, কুঁদফ্ল, কুঁদফ্লের পাণড়ী দস্তের ভাষা, এইজভা ইহার নাম[°]দস্তাত্তক।

দন্তপ্রন (ক্লী) দন্তং পুনাতি অনেন পুকরণে লা্ট্। ১ দন্ত কাষ্ঠ। ভাবে লা্ট্। ২ দন্ত্দীবন। [দন্তধাবন দেখা] দন্তপাত (পুং) দন্তত পাতঃ ৬তং। ১ দন্তের পতন। ২ অম-দিগের যে সময় আপনা হইতেই দন্তবিশেষ পড়িয়া যায়, এইরূপ বর্ষ। বৃহৎসংহিতায় এইরূপ লিখিত আছে—

শ্বেতাভ ৬টী দক্তযুক্ত হইলে অমকে শিশু জানিতে इटेरि । 🗗 मकन मन्छ कषाय वर्ग इटेरन व्यव्यंत इटे वरगत বন্ধন জানিতে হইবে। মধ্যম ও অস্ত দস্ত পতি,ত বা সমূদিত হইলে অখের তিন হইতে পাঁচ বৎসর বয়:ক্রম নির্দেশ করা যায়। দক্ত মধ্যে যে দাগ পড়ে, তাহার নাম সক্ষংশ, অুথবা কষের ছই দিকে এক সঙ্গে যে ছইটী দওঁ উৎপন্ন হয়, ত। हाहारक अन्तरभ करहा व्यायंत्र এই मनरभ यनि काल, क्रेयर भीज, खक्र, काठ मनृन, माध्किक मनृन ও नच्च मनृन दश, তাহা হুইলে ষ্থাক্রমে উত্তরোত্তর তিন তিন বর্ষ অধিক वयः क्रम इहेमा थात्क, अर्थाए मन्मः न कान वर्तन शहेल অখের বয়:क्रम ৮ বৎসর হইবে, পীতবর্ণ হইলে ১১ বৎসর ও ওক্লবৰ্ হইলে ১৪ বংসর ইত্যাদি। তাহার পর অধ্যের দক্ত মধ্যে ছিদ্র হইলে চতুর্বিংশতি বংসর, দস্তচালিত হইলে সপ্তবিংশতি বৎসর ও দন্ত পতিত হইলে জিংশৎবর্ষ অংশের বয়:ক্রম হইয়া থাকে। (বৃহৎসংহিতা ৬৬ আবং) नस्त्रभानो ( क्षो ) ५३७ भागो ७७९। मसाधा।

"তাধোষ্ঠদস্তপাণী কিহ্বানেতান্তপায়ুকরচরণৈ:।" ( বৃহৎসংহিতা ৬৮।৯৭) তালু, ওঠ, আধর ও দস্তাগ্র প্রভৃতি রক্তবর্ণ ইইনে বহুতর সুধ, বণিতা, অর্থ এবং সম্ভৃতি লাভ হয়।

দস্তপুর টক (পুং) দস্তরোগভেদ। [দস্তরোগ দেখা]
দস্তপুর (দস্তপুরী) বৌদগ্রের মতে প্রাচীন কলিন্দরাদ্ধার
একটা নগর। বৌদধর্মের প্রাধান্তকালে এই নগর প্রানিদ্ধান্তকাল করে। বৌদধিকারের প্রের ইহার কি নাম ছি
বলা যায় না। কলিন্দরাল ক্রমণন্তের সময় এই স্থানে বুরে
দস্ত স্থাপিত ও তত্পরি মন্দির নির্মিত হয় বলিয়া ইহার না
'দস্তপুর' বা 'দস্তপুরী' হয়। "

. দত্তপুরের বর্ত্তমান স্থাননির্ণর লইয়া পুরাতজ্বিদ্গণে
মত ভেদ দেবা যায়। ডা: রাজেন্দ্রলাল মিত্র তাঁহার উড়িছা।
পুরাতকে লিবিয়াছেন যে, কলিঙ্গনগরীতে প্রথমে বৃদ্ধাঃ
স্থাপিত হয়'। তথা হইতে পিপলির নিকট এক য়ায়ে
মন্দির নির্মাণ করাইয়া তন্মধ্যে দত্তপ্রতিষ্ঠিত করা হয়
রাজেন্দ্রলাল উত্তে স্থানের নামোল্লেথকালে একবারেই
দত্তপুর বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।

ফার্জুপন সাহেব শিংহলী বৌদ্ধগ্রন্থ দাঠাবংশের দোহাই দিরা প্রমাণ করিয়াছেন যে, প্রাচীন দম্ভপুরী নগরীই এখন কার প্রীনগরী। প্রীতে জগলাথদেবের মন্দির যে বেদীবং স্থানের উপর নিশ্মিত, তাহা ফাগুসনের মতে বৌদ্ধদিগে परशास्त्रत थात्र **এবং উ**रात গঠনভঙ্গীও তজাপ, <del>ছ</del>ত্তাং क गन्ना त्थेत सन्मित्र हे म स्थमित ७ भूती हे म स्थभूती नगती। কিন্তু দাঠাবংশ পাঠে জানা যায়—কেম নামে বুছণিয় *বুদ্ধদেবের চিতা হইতে দাহকালে একটা দক্ত সংগ্রহ করেন। তিনি এই দক্ত কলিকরাজ ব্রহ্মদক্তকে প্রদান করেন। ত্রহ্মদত ইহার উপর মনিং নির্দাণ করাইয়া ভাষাব অভাস্তর ভাগ স্বৰ্মণ্ডিত ক্রিয়া দেন। এক্সদত ^{মৰিঃ} নির্মাণ করানু, দহগোব নির্মাণ করান নাই। এক্সডের ^{বংশে} ৩৭০ হৃইতে ৩৯০ খৃষ্ঠান্দের সমকালে শুহলিব নামে এই রাজাহন। শুহশিব ত্রাহ্মণ্যধর্মের শ্রেষ্ঠতা **দ্বীকা**র ক^{রি} তেন। তিনি ত্রাহ্মণের শিষ্য এবং ব্রহ্মাবিষ্ণুশিবাদির প্^{র্ব} ছিলেন। একদিন রাজধানী দস্তপুরে দস্তোৎসব দেখিয়া ^{তিনি} মুগ্ধ হইয়া বৌদ্ধ হন। আক্ষণেরা কুণ্ধ হইয়া পাটনী^{পুর} রাজ পাণ্ডুরাজকে ভাগন করেন। পাণ্ডুরাজ ^লৈ অধীম নৃশীত ধর্মান্তর গ্রহণ করিয়াছে ভূনিয়া তাঁছাকে ^{বৰী} করিবার নিমিত্ত চৈত্ত নামক জনৈক সামস্ত বৃণ্ডি^র সবৈজ্ঞে প্রেরণ করেন। চৈতক্ত দত্তপুরে পিরা দত্তম^{নিরাহি} দর্শন করিয়া মুগ্ন হইয়া বৌদ্ধ হন, কিন্তু পাঞ্রাজের আ^{নুন্} অমাক্ত মাক্রিয়া বুঁজে রাজা গুছলিবকে পরাত ও বনী

ভ্রিরা দস্তপুর **হইতে দস্তটিও লইরা পাটলীপু**ত্রে। উপনীত হব।

वृक्षमञ्ज नावेनीश्रात डेशिविक इहेरन बारका नानाविध আশ্চর্যা ঘটনা ঘটিতে লাগিল। পাণ্ডুরাজ বিস্মিত হইয়া পড়ি-্লন। ব্রাহ্মণেরা তাঁহাকে নারায়ণের সর্বব্যাপৃতত্ত্ব ও অসংখ্য অবতাবত্বের কথা ব্ঝাটয়া আহবোধ দিতে চেটা করিলেন; কিন্তুফল হইল না, পাতুও বৌদ্ধ হইলেন। পাতু কলিক্স-_{ৰাজ} গুহশিবকে স্বরাজ্বো আন্টেক করিয়া রাথিয়া দন্তের নিলির নির্মাণ করাইয়া দেনী। পাঞুর মৃত্যু হইলে ভাহশিব নম্ব লইয়। অংরাজ্যে প্রত্যাগমন করেন। কীর্ধার নাুমে এক রাজা তাঁহাকে আফ্রমণ করেন, কিন্তু তিনিই যুদ্ধে থিনট্টন। ক্ষীরধারের ভাতৃস্তাএকে একে রাজা হইয়া ৩ ঃশিবকে বাতিবাস্ত করিয়া তুলেন। উজ্জানীর রাজপুত্র ⊤তুকুমার রাজা গুহশিবের কভা হেমমালার পাণিএহণ কবিষাছিলেন্। গুহশিব বিপদ্ব্ঝিয়া জামাতাকে বলেন, त यिन गुरक जामात सृङ्ग रुप्त, **उत्त कृशि नग्र नरेग्रा निःरुत्न** াইও। ঘটনা তাহাই ঘটল। মুদ্ধে গুহশিবের মৃত্যু হয়, ালপুর দত্তকুমার সন্ত্রীক দত্ত লইয়া সিংহল ঘাইবার ইন্দেশে তামলিত্তি (তাত্রলিপ্তি)নগরে উপনীত হন ও उथा २३८० (পাতারোহণে সিংছল গমন করেন। এই ার্ণনায় ব্ঝা যায় হে, দন্তপুর জগলাপপুরী নছে। াহিয়ান্ যথন খুষ্ঠীয় ৫ম শতাদ্দীতে পুরীতে আসেন, ১খন প্রীই একটী বৃহৎ বন্দর ছিল এবং দক্ষিণে ঘাইবার श्च **बुहे वन्मदिहे পোতারোহণ করিতে হইত।** দত্তকুমার ^{হাহা} না-করিয়া সিংহলে যাইবার জন্ত যথন ভমোলুকে গ্রাছিলেন, তথন স্বীকার করিতে হইবে, উহারই কোন नेक्षेवर्जी शास्त्र मञ्जूत हिल।

র্ডাঃ রাজেক্সলাল তাঁহার উড়িয়ার প্রত্নতত্ত্বে বলিয়া-ছন যে, মেদিনীপুরের ফাস্তর্গত জলেখরের ৬ কোল দকিণে তিন নামক ভানই এই প্রাচীন দত্তপুর। ইহা তমোলুক ইতে ২৫ কোল মাত্র দুৱে ফাবস্থিত।

এই দাতন সম্বন্ধে জগলাথের পাগুরো বলেন, যে জগলাথ বন দক্ষিণে আসিতেছিলেন, তথন তিনি এই স্থানে দস্ত-াবন করিয়া দস্তকার্চ নিক্ষেপ করেন। পাগুরো যাত্রীদিগকে কিরে একটা রৌপোর দাঁতন দেখাইয়া-থাকেন >

, পুরাবিদ্ কনিংহাম্ শ্বপ্রণীত প্রাচীন ভূবিবরণের e১৭ ।

াঠার রোমকপণ্ডিত প্লিনির ভারতীয় জানসমূহের জাননির্বা

াণে বলিয়াছেন, যে প্রাচীন কলিকরাজা কলিকন্ অন্তরীপ

ইতে দক্তঞ্জ নগর পর্যাক্ত বিশ্বিত ছিল। এই কলিকন্

আন্তরীপ বর্ত্তমান করিকাপজনের নিকট এবং দন্তগুড়া নগর গ্লিনির মতে গলার মোহানা হইতে ৫৭৪ মাইল দ্রে। বর্ত্তমান রাজমহেক্সী নগরের দ্রতা গলামোহানা হইতে প্রায় ঐ পরিমাণ হইবে, স্ত্রাং কনিংহামের মতে রাজ-মহেক্রীই গ্লিনিক্ষিত দন্তগুড়া বা দ্রপুর নগর। তিনি প্রমাণস্বরূপ বলেন, যে, বর্ত্তমান করিকাপত্তন হইতে রাজ-মহেক্সীবা প্রাচীন দন্তপুরের দ্রতা ১৫ ক্রোল মাত্র।

রাজনহেন্দ্রী যে দন্তপুর নহে, তাহা বিশ্বকোষের 'কলিঙ্গ' শব্দে অপ্তব্য। দাঁতনই সন্তবতঃ দন্তপুর।

মেদিনীপুর জেলার মধ্যে দাতন নামে একটা প্রগণা আছে, ইহার ভূপরিমাণ ঠ ১০০ বর্গ মাইল। ইহার রাজস্ব ১০৯০ । ৩৪ থানি জমিদারী ও ৩৩৭ থানি গ্রাম এই প্রগণার অস্তর্গত। এই প্রগণার প্রধান গ্রাম দাতন, এথানে জগন্নাথদেবের মন্দির আছে। প্রধান আছে, অভিরাম চৌধুরীর বহুপূর্ব্বে এথানকার মন্দিরের দেবদেবার জন্ম সমস্ত প্রগণার আয় নির্দিষ্ট ছিল। ময়ুরভ্ঞ্নের তৈয়ারি রেশন ও কার্পামিশিশ্রত এক প্রকার বন্ধ দাতনের প্রধান প্রা। এথানে ভাল চাউণ ও ইক্ষু আমদানী হ্য়।

पछ পুष्भ (क्री) पछ देव ७कः পूष्म यञ्च। ऽक ठक कर्नी। र कुचा।(मक्ष5°)

দন্ত প্ৰকালন (ক্ৰী) দন্তস প্ৰকালনং। ১ দন্তধাৰন। ২ দন্ত-কাঠ। [দন্তধাৰন দেখ।]

**দন্ত**ফেল (ক্লী) দ**ত**ইৰ শুভং ফলং যভা। ১ কভকফল। (পুং)২ কপিখ।

पछक्ना (जो) पछक्न-हान्। निश्रमो।

দন্ভক (পুং) দিস্ত ভল:। দাঁতভাগা।

দস্ত ভাগ ( १६) দওসংহিতোভাগ:। গ্লাগ্রভাগ, গলের মূথ হইতে স্কল পর্যান্ত যে অগ্রভাগ, তাহাকে দস্তভাগ কহে। হস্তীর মূথ হইতে স্কল পর্যান্ত।

**দস্তম**য় (ত্রি) দস্তস্থ বিকারঃ দস্তময়ট্। ১ দস্তনিশ্রিত। ২ দস্তস্বরূপ।

"को मयह्यामृत्रामामविषयमग्रज्ञ ह।

শুদ্ধিবিশানতা কার্য্যা গোমুত্রেণোদকেন বা॥" (মহু ৫।৩২১)

শৃত্য, পণ্ড সৃঙ্গ, পণ্ডর অধি.বা দস্তনির্মিত জুবা এ সকল কোমবলের ভার গোমূত্র বাজলগুকু খেতসর্বপ চ্ণিরার। বিশুক হয়।

দন্তমল (ক্রী) দন্তলগং দন্তত বা মলং। দন্তলগকেদ, প্র্যায় প্লিকা।

मस्त्रभारम (क्री) वस्त्रमानवर मारमः। वस्त्रमानव मारम।

দস্তমূল (রী) দত্তত মৃশং। > দত্তের মৃশ, দাঁতের গোড়া।

২ দস্তরোগভেদ। [দস্তরোগ দেখ।] 

দস্তমূলিকা (রী) দম্ভবৈ শুরুং মৃশং যতাঃ, কণ্, টাপি
অতইজং। দত্তীবৃক্ষ।

দন্তমুলীয় (পং) দৃত্তম্লে ভব: ছ। তবর্গাদি, এই বর্ণ দন্ত-মূল হইতে উচ্চারিত হয় বলিয়া ইহার নাম দন্তমূলীয়। দন্তরোগ (পং) দন্তভা রোগ: ৬তং। মুখরোগান্তর্গত দন্তমূল সম্বনীয় রোগভেদ, দাতের পীড়া। ইহার বিষয় স্ক্রুত, ভাব-প্রকাশ প্রভৃতি ক্লৈত্রগ্রেছে এইরপ লিখিত আছে—

দস্তরোগ--- শীতাদ, দস্তপুপ্প টুক, দস্তবেষ্টক, শৌষীর, মহাশৌষীর, পরিদর, উপকুশ, দস্তবৈদর্য্য, অধিমাংস এবং
প্রেকার নাড়ী (নালীয়া) এই পঞ্চদশ প্রকার রোগ দস্তমূলে হইয়া থাকে। দস্তমূল হইতে অকস্মাৎ হুর্গস্তক্ষরের ও ক্লিয় শোণিত অল্পে অল্লে নি:ক্ত হইলে এবং
দিস্তের মাংস সমস্ত শীর্ণ হইয়া পরম্পর পাকাইয়া তুলিসে
শীতাদ নামক রোগ বলাশ্যায়। এই রোগ কফ্লুও শোণিত
হইতে অন্ম।

দস্তপুপুটক— ছই কি তিনটী দস্তম্লে অতিশয় বেদনা উত্তুক্লাজনিলে দস্তপুপুটক রোগ কহে। ইহাও কফ ও রক্ত কর্তৃক জনো।

দস্তবেষ্টক—দস্তমূল হইতে পূ্য ও শোণিত নি:কত হইতে থাকিলেও তদ্বারা দস্তচালিত হইলে অর্থাৎ নড়িলে দস্তবেষ্টক রোগ বলা যায়। ইহা দ্যিত শোণিত কর্তৃক জন্মে।

শৌষীর—দন্তমূলে ফুলা, বেদনা, লালাপ্রাব এবং কণ্ডু এই সকল উপদ্রব জন্মিলে শৌষীর নামক রোগ বলা যায়।

মহাশোষীর—দন্তমূল হইতে দন্ত সকল চালিত হইলে তাল, ওঠও দন্তমূল অবদীন হইলে (কাটিয়া গেলে) এবং দন্তমূলের মাংল পাকিয়া মূথে যন্ত্রণা হইলে মহাশোষীর রোগ বলা যায়।

পরিদর—দন্ত মাংদ দকল শীর্ণ হইলে, নিষ্ঠাবনকালে ( থৃতু 'ফেলিতে গেলে) ও তাহা হইতে রক্ত নিঃদর্গ হল পরিদর্রোগ বলা যায়। এই রোগ পিতরক্ত ও কফকর্তৃক জন্মে।

উপকুশী—দস্তম্ল জালা করিলে ও পাকিয়া উঠিলে তদারা দস্তমকল চলিত হইলে, ঈষৎ ঘর্ষণে তাহা ছইতে শোণিত প্রাব হইলে, রক্তপ্রাবের পর ফুলিয়া উঠিলে এবং মুথে হুর্গন্ধ হইলে উপকুশরোগ্ধ বলা যায়। ইহা রক্তপিত হইতে জানো।

मखदेवनर्गा—वसम्ग cकान धाकादत विविध वहेदन व्यक्ति- ।

শর যাতনা বোধ হর, স্থারা উঠে, পাকে এবং দ্ব স্ক্র চলিত হয়। এই বৈদর্যা রোগ কোন প্রকার আঘাত করু। বর্দ্ধন বাযুক্ত্ক স্বাভাবিক দত্ত অপেকা অধিক দত্ত করে। সেই দত্তের উৎপত্তিকালে অভিশর তীত্রবেদনা হয়, কিছু ঐ দত্ত অগ্নিলে যাতনার শাস্তি হয়।

অধিমাংসক—হত্তর গহ্বরের (গালের ভিতরের) শেই ভাগের দত্তে অর্থাৎ যাহাকে ক্ষের দাঁত কহে, তাহাতে অতিশয় কুলা ও বেদনা জয়িলে এবং তাহা হইতে লালাবার হইতে থাকিলে অধিমাংসক রোগ বলে। ইহা ুক্ষকর্তৃক জন্ম।

দস্তম্লে পাঁচপ্রকার নালী জন্মে বথা—দালন, কৃষ্টি দস্তক, দস্তহর্গ, ভঞ্জনক, শর্করা, কপালিকা এবং হয়ুমোছ।

দালন-থাহাতে দত্ত সকল বিদীর্ণ হওয়ার ঝায় তীর যাতনা বিশিষ্ট হয়, তাহাকে দালন রোগ কছে। এই রোগ বায়ুক্তৃক কলে। °

কুমিদস্ত-দন্ত কৃষ্ণবর্ণ ছিদ্রেযুক্ত ও চলিত হইলে, তাহা হইতে লালাপ্রাব হইতে থাকিলে এবং অকারণে অর্থাং না টিপিলেও অভিশয় কট্ কট্ করিলেও যাতনা হইলে তাহাকে কুমিদস্ত কহে। এই কুমিদস্ত রোগ বায়ু কর্ঠক অন্যে।

দস্তহর্য— দক্তে শীতল বা উষ্ণ স্পর্শ স্থানা হইলে দত্তর রোগ বলা যায়। এই রোগও বাযুক্তৃক ক্ষত্মে।

ভঞ্জনক— মুধ ও দক্ষ ভক হইলে এবং অভিশয় যাওন হুইলে ভঞ্জনক বলা যায়। ইহা কক ও বাতকৰ্তৃকু লুলে।

দত্তশর্করা—মলস্থিত হইয়া শর্করার ফ্রায় ক্রিন হইনে
দত্তের গুনের হানি হয়। ইহাকে শৃস্তশর্করা ক্রেছে। এই দর
শর্করার সহিত দস্তম্লের মাংস নিম্ন হইয়া পড়িলে ভাহাবে
কপালিকা কহে। এই রোগ হইলে দস্ত নই হয়। শৈণিও
মিশ্রিত পিতাকর্ত্ক দস্তদ্ধ হইয়া শ্রাম অথবা নীলবর্ণ হইনে
শ্রাবদন্ত কহা যায়। বায়ুকর্ত্ক উপদ্রব ক্রায়া হয়ৢয় স্থিবিশি।
হইলে ভাহাকে হয়ুমোক্র বলে, এই রোগে অর্থিত বায়া
লক্ষণ দৃষ্ট হয়। ( স্ক্রেড মুধ্রোগনিং)

দন্তরোগের চিকিৎসা—শীতাদ নামক রোগে রক্তমোল করিয়া সর্বপ, ত্রিফলা ও মৃত্যা এই সক্লের কাথ রসাধ্ব মিশ্রিত ক্ররিয়া কুবলগ্রহণে প্রয়োগ করিবে। প্রিয় ত্রিফলা ও মৃত্যা লেপন এবং যৃষ্টিমধু, উৎপন, গা ও ত্রিফলার কাথ সংযোগে নম্ভ প্রয়োগ করিবে। দন্তপুপ্লুটক রোগে প্রথমাবস্থার রক্তমোকণ করিবে। পরে পঞ্চলবণ ক্ষোয়া সহযোগে প্রভিসারবে প্ররোগ করিব।

শিরোবিরেচন, নভ ও মিথ ভোজনও ইহাতে হিতকর। ्रमञ्जादहेदतारा वन मकन शनिया लाख, ब्रक्क हन्मन, यष्टिमधु ७ লাকা ইহাদিগের চূর্ণ মধু, স্থত ও শর্করা সংযোগে ষজ্ঞভুমুরের काल গণুবে প্রায়োগ করিবে। শৌষীর রোগে রক্তমোকণ করিয়া লোধ, মুস্তা, রদালন ও মধু একতা করিয়া লেপার্থে বাবহার করা যাইবে। যজ্ঞসূরের কাথ গণ্ডুষে প্রয়োগ করিবে। পরিদর রোগে শীতাদরোগের ভায় প্রতীকার क्तिएं इहेर्द। मरस्रांशकूम द्वारंग वमन, विद्वहन अ শিরোবিরেচন করিয়া কাঁকডুমুরে বা গোজিয়া পত্রে শোণিত বিশ্রাবিত করিবে। পরে লবণ ও ত্রিকটু মুধু সংযোগে প্রয়োগ করিয়া প্রতিসারিত করিবে। পিপ্লনী. স্বাণ, ভুগী ও নিচুল ফল এই স্কল জালে সিদ্ধ कतिया श्रेयहरू शांकित्न शंखुत्य आत्रांश कंत्रित। श्रीवक সহ্যত পাক করিয়া কবল ও নস্ত প্রয়োগ করাও হিতকর। দম্ভবৈদর্ভ-রোগে শক্ষধারা দম্ভমূল সংশোধিত किया कात शर्या गर्भ के नी उन किया कितरा अधिक দন্ত (জ্ঞানদন্ত) জন্মিলে তাহাকে উদ্ধৃত করিয়া অগ্নিপ্রয়োগ করিবে এবং ক্লমিদস্ত অধিকারের অপরাপর প্রভীকার করিবে। দস্তমূলে অধিমাংস রোগ **জিনালে তাহা ছেদন** করিয়া বচ, গঞ্চপিপ্পলী, পাঠা, সর্জ্জিকা (সোহাগা) ও যব-কার ইহাদিগের চূর্ণ মধু সহ প্রয়োগ করিবে। মধুর সহিত পিপ্লীর কাথ কবল করিবে। পটোল, তিফলা ও নিম্ব हेशानिरात कथात्र मस्त्रभूनभावत्न धारमात्र अवः भिरताविरत्रहन ও ∤ধ্মবিরেচনে প্রয়োগ হিতকর।

দন্তমালীর চিকিৎসা— যে দন্তমূলে নালী জন্মে; সেই দন্ত তুলিয়া কেলিতে হইবে। শন্ত হারা মাংস ছেলন করিয়া ক্লার বা অগ্নিদারা শোধন করিবে। নালীরোগে দন্ত উদ্ভ করা না হইলে হন্থ দেশস্থ অস্থি ভেদ করিয়া নালী জন্ম। অভএব নাণীরোগে দন্ত বা ভগান্থি সমূলে উদ্ভ করিবে।

বে দত্তম্লের বন্ধন হির পাকে, তাহাতে দন্তশ্ল জান্মিলে উক্ত করা কর্ত্তর নহে। তাহা উৎপাটন করিলে অতিশয় রক্ত্রাব ও তজ্জ্ঞ অন্ধ্রতা বা অদ্বিতনামক বায়ুরোগ প্রভৃতি গুরুতর রোগ জান্ম। দন্ত নজিলে জাতীপুলের কাষে মদন, স্বাহ্ন, কন্টক ও ধদির ইহাদিগের কাথে বিষ্কৃত্ব ধাবন ক্রিবে। দন্তম্লে নালী জান্মিকে নালীপথ 'ছেদন ক্রিবে ও জাতী, মদন, ক্ট্ক, স্বাহ্নক্টক, ধ্দির, ব্রিমধু, রোগ্র ও মঞ্জিটা ইহাদিগের ক্যারে তৈল পাক ক্রিয়া শোধনার্থ নালী স্থানে প্রয়োগ ক্রিবে।

দত্ত হ্বরোগে স্নেছ ( ছ্ত বা তৈলা) বা তৈর্ত স্বত, বাতম VIII মবেরর কাথ কবলগ্রহণে প্ররোগ করিবে। মেহ প্রবেরর ধ্ম রা নক্ত অথবা নিম্ম জবা ভোজনও হিতকর। মাংসরস, যবাত্ত, হয়, সন্তানিকা, ছাত্ত, শিরোবন্তি ও বাতত্ম অভাক্ত প্রতীকারও হিতকর। দক্তপর্করা রোগে দক্তমূল আহত না হয়, এইরূপে শত্রপাত করিয়া শর্করা উদ্ধার করিবে। দন্তহর্ধরোগে যে সকল প্রতীকার করিতে হয়, সেই সকলও এইয়ানে প্রযোজ্য। কপালিকা রোগ অভিশয় করসাধ্য হইলেও পূর্বোক্ত প্রতীকারে হিতকর। ক্রমিদন্তরোগে দন্ত চলিত না হইলে স্বেদ প্রযোগ করিয়া (রসরক্তাদি) প্রাবক্রাইতে হইবে।

বাতম অবপীড়ন ও দেছ গণ্ডুব এবং ভদ্রদার্ব্যাদিগণস্থ দ্রব্য ও বর্ষাভূ এই ছইটা দ্রব্যের লেপ বিধান করিবে। চলিত দস্ত উক্ত করিয়া দস্তম্লের গহরের কারে বা অগ্রি দারা দগ্ধ করিবে। তাহার পর বিদারী, যষ্টিমধু, শৃঙ্গাটক ও কেশুর এই সকল সহযোগে দশগুণ হুগ্ধে তৈল পাক করিয়া নত্ত প্রের্গা করিবে। হন্মোক্ষরোগে অগ্রিতনামক বায়ু-রোগের ভায় প্রতীকার করিবে। অস্ত্রফল ও শীতল জলে দস্তবাবন এবং অতিশয় •কঠিন দ্রব্য ভোজন দস্তরোগীর হিতলনক নহে। যে সকল দস্তরোগ সাধ্য, তাহাদের ক্রিম্

ভাবপ্রকাশে ইহার বিষয় এইরূপ লিখিত আছে---

নাগরমুথা, হরীতকী, ত্রিকটু, বিড়ক্ষ ও নিম্বপত্র এই সকল গোমুত্রধারা পেষণ করিয়া বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে; ঐ বটিকা ছায়াতে শুফ করিতে হইবে। এই বটিকা মুখে রাথিয়া রাত্রিতে শয়ন করিয়া থাকিবে, তাহা হইলে নি চয়ই চলিত দস্ত দৃঢ় হয়।

ৈ তৈল ব্লা ঘত /৪ সের, ককার্থ ছরালভা, থদিরকার্চ, বিট্-থদির, আমহাল, আমহাল, যষ্টিমধু ও নীলোৎপল প্রত্যেকে এক এক ছটাক। কার্থার্থ নীলমিন্টী লাড়ে বার সের। জল সা৪ সের, শেষ।ও সের। এই তৈল বা ঘৃত পাক করিয়া মুথে ধারণ করিলে দম্বরোগ নই হয়।

করালদন্ত — সংশ্রিত বাযুকর্তৃক দন্তুসমূহ ক্রমে ক্রমে ভয়ানক বিকটাকৃতি হইলে তাহাকে করালদন্ত কহে। প্রায় সকল প্রকার দন্তর্যোগ লাক্ষান্ত তৈল উপকারী। তৈল /৪ সের, করার্থ লোধ, কট্ফল, মঞ্জিটা, পল্ল-কেশর, পল্লকার্ট, রক্তচন্দন, নীলোৎপল ও যাষ্ট্রমধু এই সকল প্রত্যেকে এক পল। কাথার্থ ঐ কর ক্রব্য মিলিত /থা। সের, লল ১॥৪. একমণ চবিবশ সের, লেব ।৬ সের। লাক্ষারস /৪ সেরও ত্র্য /৪ সের। এই তৈল পাক করিয়া

মূথে ধারণ করিলে দালন, দম্ভহর্, দম্বমোক্ষ, কপালিকা, শীতাদ, পৃত্তিবক্তু, অফটি ও মুধবৈরত নষ্ট হইয়া দ্যু স্কল দ্বিহয়। (ভাবপ্রকাশ)

দস্তলেথক ( জি ) দস্তান্ লিথতি জীবিকার্থং লিথ-গুলু নিত্য-সমাস:। দস্তলেথকরপ জীবিকাযুক্ত, যাহারা দস্তলেথন ধারা জীবিকা নির্বাহ করে।

দন্তকোথন (ক্রী) অন্ত্রবিশেষ, দন্তশর্করা রোগ হইলে এই
' অন্ত্রবারা দন্তমূল ছেদন করিয়া দন্তশর্করা বাহির করিতে

ইবে। এই অন্ত্র একদিকে ধারাল এবং চতুদ্দোণযুক্ত,
অন্তদিকে প্রব্রাকৃতি। এই অন্ত্রে দন্তশর্করা শোধিত করিবে।

"একধারং চতুদ্দোণং প্রবৃদ্ধাকৃতি চৈকতঃ।

দস্তলেথনকং তেন খোধয়েদস্তশর্করাং 🛭 " ( অত্রিসং )

দস্তবক্র (পুং) নূপবিশেষ, ইনি পৃথুকীর্ত্তির গর্ভে ও বৃদ্ধশর্মার ঔরদে জ্বন্মগ্রহণ করেন। ইনি করুষ দেশাধিপতি
, অতিশন্ন প্রবল পরাক্রান্ত এবং দস্তবক্র নামে প্রসিদ্ধ ছিলেন।
(হরিব॰ ৩৪ অং)

ক্লফ শ্বারকায় অবস্থান কালে ইহাকে বিনাশ করেন।
(ভাগ°) ইনি শিশুপালের ভাতা। শিশুপাল নিহত হইলে
শিক্তিহা নামক গ্রামে ক্লফের সহিত যুদ্ধ করিয়া ক্লফের গদায়
নিহত হন। (খ্রীরন্ধাবনলীলামৃত)

দন্তবৃত্ (ত্রি) দক্ষ: বিহাতে হস্ত দক্ত-মতুপ্ ততো মস্ত ব:। দক্তবিশিষ্ট। দক্তবৃক্ষ (ক্লী) দক্তস্ত বন্ধনিব। দক্তবিরণ চর্মাত্মক মাংসভেদ।

"দলস্তি দস্তবন্ধানি যদা শর্করয়া সহ।" ( স্কেশ্রুত)
দস্তশর্করা রোগ হইলে দন্তের আবরণ চর্মা যে মাংস তাহা
বিদ্নিত হইতে থাকে।

দন্তবৰ্ত্তি (স্ত্ৰী) দন্তনিশ্বিতা বৰ্ত্তি। চক্ৰদন্তোক্ত বৰ্ত্তিকাভেদ।
"দন্তৈত্ব ক্ৰিব্ৰোহাষ্ট্ৰপৰাশাৰ্ত্তবে হৈ ।
সশস্থামৌক্তিকাভোধিফেনৈ মিনিচপাদিকৈঃ॥
ক্ষতশুক্ৰমণি ব্যাধিং দন্তবাৰ্ত্তি নিবৰ্ত্তবেং।" (চক্ৰদন্ত)

ক্ষতশুক্রমণি বাাধিং দম্ভবার্ত্ত নিবর্ত্তয়েৎ।" (চক্রদন্ত ) , [বর্ত্তিকা দেখ।]

দন্তবন্ত্র (ফ্রী) দন্তানাং বস্ত্রং আচ্ছাদকত্বাং। ওঠ। দন্তবাসস্ (পুং) দন্তস্ত বাসঃ বস্তমিব আবরকত্বাং। ওঠ, দন্তহিদ।

"চিরোস্খিতা**লও**কপাটলেন তে় তুলাং যদা রোহতি দস্তবাসসা।" ( কুমার ৫।৩৪)

দন্তবিঘাত (পুং) দন্তত বিধাতঃ। দন্তাবাত, কামড়ান। দন্তবিদ্ৰেধি (পুং) দন্তবোগভেদ। [দন্তবোগ দেধ।] দন্তবীক্ষ (পুং) দন্তাইব বীকানি বন্তু। দাড়িম। স্বার্থে কন্। দন্তবীণা (স্ত্রী) দন্তে ঠেকাইয়া বাজাইবার উপযোগী বীণা। प्रस्ट (खी) म्हज (वमना ७०९। प्रस्तामा क्रिक्ट

দন্তবেষ্ট (পুং) দন্তবেগেভেদ। ন্থার্থেকন্। দন্তবেষ্ট্রন্ [দন্তবেগেদেখা]

पखरिपार्छ ( श्रः ) पखरतागर्छम । [ पखरतागर्पथ । ]
पखराग्न ( क्रो ) पख्य वागनः । पखरानि, पखनाम ।
पख्यम् ( श्रः ) ख्यार्जाक खद्धरम, এই खरतात मूथ वर्णव गम्म, এवः खाहतरम व्यमन्छ ।

"বড়িশো দন্তশঙ্কান্তাতো তীক্ষকণ্টক প্রথম যুক্তপত্তমূদে।" ( ক্ষত্ত

দন্তশাট (পুং) দন্তেষু শট ইব গ্লানিজনকত্বাৎ। দন্তশাঠ। দন্তশাঠ (পুং) দন্তেষু শঠ ইব। ১ জগীর। ২ কণিখ। ১ কর্ম্মরক্ষক। ৫ অন্ন, যাহা থাইলে দাঁত টকিয়া যায়, তাহাই দন্তশাঠ।

एन्छ×ঠ। (खो) नरव्यत् শঠा। ১, চাংকরী।, ২ কুডারিকা। (রাজনি∗)

দন্তশার্করা (স্ত্রী) দন্তত শর্করেব। দন্তরোগ বিশেষ। २०, বায়ু ও শোণিত কর্তৃক দন্তগত মল, পাথুরি। "শর্করেব স্থিনীভূতো মলো দন্তেযু যস্ত বৈ।

সাদস্তানাং গুণদ্বী তু বিজ্ঞেদ্বা দস্তশকরা ॥" (গরুড়পুণ ১৯০ জণ)

যাহার দস্তসমূহে মল শর্করার ভাদ হিরীভূত থাকে,
তাহাকে দস্তশর্করা কহে। এই রোগ দস্তের সকল গুণ নাণ
করে। ইহার ঔষধ গোরক্ষকর্কী মূল পেষণ করি।
ভালের সহিত তিন দিন পান করিলে দস্তশর্করা নাই হয়।
"গোরক্ষকর্কীমূলং পিইং বাস্তোদকেন বা।"

( गक्रफ्पू॰ ১৯॰ ख॰ ) [ मखरताग (म्वः । ]

দৃস্তশাণ (পুং) দস্তানাং শাণ ইব। চিক্কণতাজনকরাং। নিশ্চুকণ, চুণভেদ, মিষি। ইহা ব্যবহার করিলে ^{দর} পরিষার হয়।

দন্ত শিরা (ত্রী) দন্তানাং শিরা যত্র। মাড়ী, দাঁতের মাড়ী। দন্ত শুদ্ধি (ত্রী) দন্তত শুদ্ধি: ৬তং। দল্ভের বিশ্ব^{দিতা,} দাঁতের শুদ্ধি।

मस्यभूवा (प्रः) पर्यक्ष म्यहेर, म्यादाननरए दिवानां विश्वास्य प्राप्त विश्वास्य प्राप्त विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विष्य विष्य विश्वास्य विश्वास्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य

দন্তশোফ (পৃং) দন্তত শোকইব। দন্তরোগবিশেব, দরা ক্দ, নাতের আব। পর্যার—দন্তশ্ল, দত্তশোক, বিৰুত্তন। প্রাক্তি स्तिनः सर्व (পুং) দক্ত সংঘৰ্ষ:। দীতের ঘর্ষণ, দীতে দীতে ুঘ্যা: দক্তসংঘর্ষ করিতে নাই, করিলে অভ্নত হয়। শন কুর্যাদিরসংঘর্ষ: নায়নো দেহতাড়ন:।"

( मार्कः शृः ७८।१२)
प्रस्त्र ( श्रः) प्रवानाः हर्दा यद्माः। प्रस्तांत्र विष्यः।
प्राधात प्रस्तांने उ उ उस मस्य क्रिया भारत ना, उ हात प्रस् श्रात हरेत्राह, क्रानिष्ठ हरेत्। [ प्रस्तांत्र राष्ट्र ।
प्रशानि, यहात मान माज क्षमं क्रिया भीष्ठ ज्वः
प्रशानि, यहात मान माज क्षमं क्रिया भीष्ठ ज्वः
प्रशानि, यहात मान माज क्षमं क्रिया क्षानिष्ठ हरेत्।
प्रशानि व वाजमाज्य क्षमं भीष्ठाट ज्ञाः।
क्षायः प्रस्तेष्ठ रूपः भारति क्षानि ।
क्षायः प्रस्तेष्ठ रूपः भारति क्षानि ।
क्षायः प्रशानि हर्पंत्र क्षिः भ्रानि ।
क्षायः प्रशानि हर्पंत्र क्षिः भारति ।

দন্তাগ্র (ক্রী) দ্রক্ত অগ্রং, দর্তের অগ্র । দন্তাঘাত (পুং) দন্তান্ আহন্তি আ-হন-অণ্। ১ নিম্ক। ২ দশনাঘাত, দক্তের আঘাত।

"দস্তাঘাতবিদারিতারিকধিরৈ: সিন্দ্রশোভাকরং।"

(গণেশধ্যান)

দন্তাদ (পুং) স্থশ্রতোক্ত দন্তথাদক ক্রমিরোগ ভেদ, এই সকল কীট রক্ত হইতে ক্লমে, ইহারা কেশ নথ ও দন্ত ভক্ষণকরে।

"কেশরোমনথাদাশত দস্তাদাশিতকণাত্তথা।" ( হুক্রত )
দ্বাদক্তি ( তি ) দইস্কল্ট দেইগুল প্রকৃত প্রকৃত যুদ্ধ ইচ্
শ্বাদান্ত: পূর্কাণোদীর্ঘ:। প্রস্পর দস্ত প্রহার দারা
প্রবৃদ্ধ।

কিচাকৃচি যুদ্ধানীদ্ দন্তাদন্তি নধানথি।" (ভারত কর্ণ ৪৯অ০) দন্তানা, মধ্যভারতের পশ্চিম মালব একেন্ত্রি অধীন একটা শামাতা সন্ধারের রাজ্য। এখানকার ঠাকুর (সন্ধার) শিক্ষিয়ার নিকট হইতে ১৮০১ ক্রিয়া তথা প্রাপ্ত হন।

मिखास्त (क्री) मस्त्र व्यक्त श्रा मरस्त स्था, मारक स्था।

"न अक्षिन शकास्त्र का मस्त्र स्था श्रिक्ष हरें।" (स्रू १।२६२)

प्रक्षाम सूच सर्था व्यविष्ठे हरेंग का कि कि हरे क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष विद्या स्थान स्थ

^{के खा}र्थ ( शः) मख এव व्यासूधः यञ्च । मृक्त्र । खिमाः व्याखि-वार क्षीत् ।

मेखार्क्त् म ( ग्रः क्री ) मखन्न व्यर्क् मिन । मखरतांत्रं (छम । गर्नाक-मखन्न, मखरनांक, विव्यत्न। ( तांवनिः ) **দস্তালিক। (జী)** দস্তান্ অলভি পর্যাপ্রোতি অল-ধুল্, টাপি অতইছং। বলা লাগাম।

"नखानिकाधत्रगिकनभानिय्गाः।" (वहाडभान) नखानी (जी) नखान् व्यन्डि व्यनव्यन्-(गोत्रानिषाद डीव्। वज्ञा, नागाम।

দন্তাবল (পৃং) অভিশন্তি দন্তী যক্ত দন্ত বলচ্ (দন্ত শিথাং সংজ্ঞানাং। পা ৫।২।১১০) তভোদীর্ঘ:। হন্তী। দন্তিকা (আটী) দম-তন্ গৌরাং তীষ্, আর্থেকন্ তভো হ্রম:। ' দন্তীক্ষ।

দন্তি জা ( জী ) দন্তিকা প্ৰো' সাধু। দন্তিকা। ( শক্রণ)
দন্তিদন্ত ( পুং) দন্তিনাং দন্ত: ৬৩৫। হন্তিদন্ত।
দন্তিন্ ( পুং) প্রশন্তৌ দন্তৌ ন্ত: অ'ক দন্ত ইনি। হন্তী।
"মন্ত্রিপুত্র: স্থিতন্তত্ত্ব: কাপ্যামাস দন্তিন:।" (দেবীভাণ হা৯।৪৯)
দন্তিনী ( লী ) দন্তন্ত্রাকারে হিন্তু ক্রান্ত ক্রান্ত্রাক্র ।

দন্তিনী ( লী ) দন্তন্ত্রাকারে হিন্তু ক্রান্ত্রাক্র ।

দন্তীবৃক্ষ।

দক্তিমদ ( থং ) দন্তিনাং মদ:। হত্তিমদ নামক গদ্ধ ক্রতাভেদ।
দক্তিমূলিকা ( ত্রী ) দন্তি গল্পত ফুকমিব মূলমভা: কপ্ কাপি অতইছং। দক্তীবৃক্ষ।

परो (खी) नामाजानमा नम-जन् जरका रशोनानिचार डीव् (হিস মৃত্রিণ বেতি। উণ্ ৩।৮৬) স্থনামধ্যাত বৃক্ষ। (Croton polyandrum or Baliospermum montanum) हेरात मूल वताहमसाकृष्ठि, এই मस्त्री तृक्ष विविध मध् ও বৃহৎ; যাহার পত্র উড়ম্বর সদৃশ, তাহার নাম লঘুদস্তী এবং যাহার পত্ত ,এরও সদৃশ তাহার নাম বৃহৎ দস্তী। পর্যার — শীঘা, শ্রেনঘণ্টা, নিক্জী, নাগম্োতা, দভিনী, উপচিত্তা, ভ्या, क्या, त्रहमी, अञ्क्ला, निःमला, हळक्छी, विभना, মধুপুষ্পা, এরওফলা, তরণী, এরওপ্রিকা, অনুরেবতী, वित्माधनी, क्छी, উড़्यत्रमना, निक्छमनिका, व्याकाक्शनी, উদ্ধরপণী। (অনর রাজনি॰)। ইহার ৩৪ণ--কটু, উফা, শূল, व्याम, एक्रांच, व्यर्भ, ज्ञा, व्यथाती अ भनानाभक । (ताखवल्लक) লঘু দন্তীর ফল মধুর রস, মধুর বিপাক, শীতবীর্য্য, মল ও মৃত্রনি:সারক, এবং গরদোষ, শোধ ও কফরাশক। দস্তীধ্র সারক, কটুরস, কটুবিপাক, অগ্নিপ্রদীপক, তীক্ষ্ণ, উষ্ণবীর্য্য; গুদাসুর (বলি), অশারী, শ্ল, অর্গ, কণ্ডু, কুন্ন, বিদাহ, পিত, রক্তদোব, কফ, শোগ, উদর ও ক্রমিবিনাশক। (ভাবপ্র॰) वर्खमान ब्राताशीय हिकिश्नकितात्र मण्ड मखीबीत्मत्र श्वन---অতি বিরেচক, কিন্তু মাত্রাধিকা হইলে অতি উগ্র বিধাকা; কোন স্থানে অন্নপালের পরিবর্তে দ্তীবীক ব্যবহৃত হয়। ইহার রসে লৌহ কতকটা দ্রব হইয়া থাকে।

দ্ধীত্রীত্কী (ত্রী) শুলাধিকারের ঔষধ তেল। প্রস্ত প্রণালী—

লপপোট্লীবন হরীতকী ২৫টা, দ্বীমূল ২৫ পল, জল ৬৪ দের
লেষ ৮ দের। এই কাথ জলে ২৫ পল পুরাজন গুড় শুলিয়া

লাকিয়া লইয়া উহার সহিত পুর্বোক্ত হরীতকী ২৫টা দিয়া
পাক করিতে হইবে। আসয় পাকে তেউড়ীচুর্ল ৪ পল,
তিলতৈল ৪ পল, পিপুলচুর্ল ৪,তোলা ও ৬ ঠ চুর্ল ৪ তোলা
প্রক্রেপ দিয়া উত্তমরূপে আলোড়িত করিয়া নামাইবে।
শীতল হইলে মধু ৪ পল, শুড়স্বক্, তেজপত্র, এলাইচ ও নাগেশ্বর প্রত্যেক ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া লইবে। সেবনের
মাত্রা ২ তোলা ও একটা হরীতকী। ইহাতে বিরেচন
হইয়া গুলা, প্রীহা ও শোধ প্রভৃতি অনেক রোগ নপ্ত হয়।
(তৈষ্কার শুলাধিণ) ৭

দক্তরে (জি) উল্লাদন্তা: সম্ভাক্ত দক্ত-উরচ্(দক্ত উল্লুত উরচ্। পাংবাস-৬) উল্লেচন্ত, দেঁতো, যাহার দাঁত উচ্, শৃক্র নারিলে পরজনোদক্তর হইয়াজনাহয়।

"শৃকরে নিহতে চৈব দন্তরো জায়তে নর:।" (শাতাতপ) সামুজিক মতে দন্তর ব্যক্তি কদাচিৎ মূর্য হয়। "কদাচিদ্দন্তরো মূর্য: কদাচিলোমশং স্থাী।

্রিক্লাচিং তুন্দিলো ছংখী কদাচিচ্চঞ্চলা সভী ॥" (সাম্জিক) দস্তরক (পুং) দেশভেদ। এইদেশ পূর্বদিকে অবস্থিত। (বৃহৎসং ১৪.৬)

দন্তর চন্ত্র দ (পং) দন্তর উন্নতানত চনো যত। বীজপুর, টাবানের।
দন্তেবার, নদাপ্রদেশের বস্তার রাজ্যের অন্তর্গত একটা
গ্রাম। অক্ষা ১৮ ৫৪ উ: ও জাবি ৮১ : ২০ ৩০ পৃঃ
মধ্যে। দক্ষানি ও লক্ষানি নদীর সক্ষমস্থানে এবং বেলা দিলাজ
নাম পাহাড়ের পশ্চিমে অবস্থিত। এখানে দন্তেখরী নামী
কালীর প্রদিদ্ধ মন্দির আছে।

দন্তোচিছ্ন (ক্নী) দৰ্ভেন উচ্ছিষ্টং। দন্তৰারা উচ্ছিষ্ট। দন্তোৎপাটন (ক্নী) দন্তস্ত উৎপাটনং। দন্তের উৎপাটন, লাতভোলা।

দক্তোদ্রেদ (পুং) দম্ভত উদ্ভেদ:। দম্ভোৎগম, দাঁত বাহির হওন।

দক্তোল্থলিক (পুং) দত্তইব উল্থল: দোহতাতি ইতি ঠন্।
(অতইনিঠনৌ। পা ধাহা১১৫) বাণপ্রস্থবিশেষ। এক
প্রকার সন্নাসী, যাহারা দত্তবারা ছিন্ন করিয়া ভক্ষণ করে
অর্থাৎ দত্তবারা ধাতাদির তঞ্চল বাহির করিয়া ধার।

°অমিপকাশনো বা স্থাৎ কালপকোঁড়গেব বা। অশাক্ষীে ভবেৰাপি দতোল্থলিকোহশি বা।" (মছ ৬।১৭) ইহায়া অমিপক ভিন্ন অন্ন ভক্ষণ করিবেন, বা কালপক ফলাদি ভোজন করিবেন, কিছা পাবাণৰার। চূর্ণ করিয় লইবেন অথবা আপনারা দস্তকেই উদ্ধলম্বলের কার্জে নিয়োগ করিবেন।

দক্তে ঠি (ক্রী) দত্তাশ্চ ওঠোশ্চ তেবাং সমাহার:। দত্ত ও ওঠের সমাহার। সমাস বিষয়ে ওঠ শক্ষ পরে থাকিলে দত্ত শ্বের বিকরে অকারের লোপ হয়, এইজন্ত দত্তোঠ ও দত্তোঠ এই রূপ পদব্য হইবে।

দত্তেতি (পং) দত্তেতি ভব: শরীরাবরবভাৎ বং। দত্ত ওচ বারা উচ্চারণীয় বর্ণ, দত্তাবকার। "বকারস্ত দত্তেতি।" . "দত্তেতিয়া ব: শুভোবুধৈ:" (শিক্ষা)

দস্তঃ ( ত্রি ) দস্তেমু ভব: দস্ত-যৎ (শরীরাবয়বন্ধাচ্চ। পা ৪৩৫৫) দস্তোম্ভব ় দস্তমুগদ্ধয় হইতে জাত তবর্গাদি।

"হামুর্বণা ঝটুরসা দস্তাালৃতুলসাং স্থতাং ॥" ( শিকা ১৭) দস্তেভো হিতঃ যৎ। ২ দস্তের হিতজনক।

"দন্তোহি গিমেধা জননোহলমূত্র

জভোহণ কেখোহনিলহা গুরুশ্চ।" ( সুফ্রত ১।৪৬) দন্তবর্ণ (পুং) দন্তোন্তব বর্ণ, দন্তবারা উচ্চারিত বর্ণ, ড, ধ, দ, ধ, ন, স, ব, ১কার।

দশদশুক (পং) গহিতং দশতি দন্শ ষঙ্উক: ( যজ লগ দশাং যঙ্:। পা অং। ১৬৬ ) ১ সর্প। ২ রাক্ষ্। "চক্:এগ দশশ্কোগৃঢ়পাৎ পরগোরগা:।" (বৈক্তকরণ) (ত্রি) ১ হিংল্র।

দক্রমামাণ (অি) জম-যঙ্ শানচ্। কৃটিল গতিবৃক্ত। দপ্ট (দেশল) দর্প, অহঙার, আক্ষালন।

দপ্দপ্ (দেশজ) অগ্নিপ্রজ্বনধ্বনি, আগতুণ আনিবার দ্ব দপ্দপ্ এইরূপ অব্যক্ত শব্দ।

দফলা, আসামের অন্তর্গত দরক ও লক্ষীপুর জেলার একটা অসভ্য জাতি। ইহারা সাধারণতঃ লক্ষীপুরের নিবটার পর্বভ্রমন্ত, বাস করে। ১৮৭২ খুটাকে দরকের অন্তর্গ আমত্যোলা নামক স্থানের অধিবাসী দফলাগণ পার্বভ্য দফলাগণ কর্তৃক আক্রান্ত হুটাশ গবর্মেন্ট উহাদিগতে ক্ষন করিবার জন্ম প্রথমে প্রশিশ প্রহরী প্রেরণ করিরা দফলাগের বাসন্থান আক্রমণ করেন; কিন্তু ভাহারা অক্তকার্থা হুইরা প্রভ্যাগমন করিলে ১৮৭৪।৭৫ খুটাকে সশস্ত্র একদল কৈরি প্রত্যাগমন করিলে ১৮৭৪।৭৫ খুটাকে সশস্ত্র একদল কৈরি প্রেরিভ হয়। ইহারা বিনা বাধার দফলাবন্দীদিগতে উরীন করিয়া আন্যন করিরাছিল।

দফলাপুর, নাতারার পলিটিকেল এজেন্সীর জ্বীন এ^{ইনী} জারগীর। অক্ষা ১৭° ০´ উ: ও জাবি ৭৫° ৭´পু: মধ্যে জ্ব বিভ ইহা প্রকৃতপক্ষে জাঠরালোর একটা অংশ। দফলাপুর গ্রা^{র্থি} এক পাটেল বা গ্রামাদলপতি এই জাঠ জারগীরের হাগি^{নিরা}। এই প্রাদের নামাস্থ্যারে তাঁহার আর এক নাম দকলা

হর্য়ছিল। ১৮২০ খুটান্দে ইংরাজেরা বর্ত্তমান স্লাঠপতির

পূর্বপুক্ষরগণের সহিত এক সন্ধি করেন, এই সন্ধি অনুসারে

এই জাঠপতিগণই তাঁহাদের রাজ্যে খায়ী অধিকার প্রাপ্ত

হন। ১৮৭২ খুং অবল জাঠপতির ঝণশোধকরণার্থ

সাভারারাজ এই জাঠরাজ্যকে তাঁহার রাজ্যভুক্ত করিয়া

নমেন এবং ঝণশোধ হইয়া গেলে ১৮৪১ খুটান্দে উহা প্রত্যা

প্রিয়া দিবার জন্ম ইংরাজেরা অনেকবার ইহার শাসনকার্য্যে

হস্তক্ষেপ করেন এবং নানারূপ অত্যাচার হওয়ায় ১৮৭৪

গুটান্দে জাঠরাজ্যাধিপতির পক্ষে তাঁহারা মহন্তে রাজ্যভার

গ্রহণ করেন। লক্ষীবাই দক্ষণা নামী এক বিধ্বা এথন

দক্ষণাপুরের শাসনকর্মী।

দফলাপুর রাজ্যে ৬টা পৃথক্ পৃথক্ গ্রাম আছে। পরিমাণ-ফল প্রায় ৯৪ বর্গমাইল।

রাজস্ব প্রায় ৯০১০ ্ টাকা। বাজ্রা, জোয়ার, তুলা, গম ইত্যাদি এথানকার প্রধান উৎপন্ন জ্ব্য। এথানে তিন্টী বিভালয় আছে।

দ্ফা ( আরবী ) হিসাবাদির পৃথক্ পৃথক্ বিষয়।

प्रकानका ( आतरों ) श्नः श्नः, भृथक् शृथक्कारण।

দফাদার (পারসী) কর্মচারী।

দফাসারা ( দেশজ ) দফারফা করা, ধ্বংদ করা, মারিয়া ফেলা। দুফে (আরবী) পুনশ্চ, পুনরায়।

দফ্তর (পারসী) পুস্তক হিসাব, হিসাবাদির তাড়া বা পুলিনা।
দফ্তর্থানা (পারসী) আফিস ঘর, যে ভানে হিসাবের
কাগলপত্রাথা হয়।

দফ্তরী শারসী) যে ব্যক্তি পুত্তকাদি বাদ্ধে ও যাহার। আফিসে লিখন সামগ্রী যোগায়।

দভাই (দর্ভবতী) বন্ধে প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত গাইকোরাড় রাজ্যের একটা নগর। অক্ষা ২০° ১০ উ: ,ও জাঘি ৭০° ৭৮ পূ: মধ্যে। বরদারাজ্যের ১৫ মাইল দক্ষিণ-পশ্চিমদিকে অবস্থিত। লোকসংখ্যা ১৪৫০৯। এখানে কাষ্ট্রম হাউস, পথিকদিকের ডাক বালালা, রেলওয়েষ্টেশন, ঔষধালর, জেলখানা, অনেকগুলি স্কুল এবং তুলা হইতে বীজ ছাড়াইবার কল আছে। মিরাগ্রাম, বরদা ও চলোড়ের সহিত ইহা রেলওয়ে ছারা সম্বদ্ধ। ইহাই খুইার ১১শ শতাকীর প্রসিদ্ধ দর্ভবতী নগরী।

ভা (জি) দভে অচ্ ততো বং। হস্তব্য, হননীয়। "নাহং তং বেদ দভাং দভংন" (পাক্ ১০।১০৮।৪) 'जः हेल्क्षः म्हाः इसवाः' ( नावन )

দ্র ( এ ) দড়োজীতি দন্ত রক্ ( স্থারিতঞ্চীতি । উণ্ ২।১৩ )
১ অর । ( নিব টু ) কাহন্, হবে, নির্দ, মায়ুক্, প্রতিষ্ঠা, রুধু,
বল্রক, দল্লী, অল্রক, ক্রক, অর. ইহার এই একাদশটী নাম।
"অসিদল্র চিদ্র্ধঃ" ( ঋক্ ১৯৮১।২ ) ২ অরযুক্ত । (পুং )
৩ সমুদ্র । ( খ্রী ) ৪ উত্তরদিক্,।

দম (পুং) দম ভাবে ঘঞ্। ১ দগু, দমন। "নিক্ষেপস্থাপহ-র্তারং তৎসমং দাপরেৎ দমং।" (মহু ৮০০১) লোকদিগক্ষে দমনহেতু দণ্ডের নাম দম। [দগু দেখ।] পর্যার দান্তি, দমধ, দমন। ২ বাহেক্তিয়নিগ্রহ।

> "কুৎসিভাৎ কর্মণে, বিপ্র বচ্চ চিন্তনিবারণম্। স কার্ত্তিভা দম: প্রাক্তে: সমন্তত্ত্বদশিভি: «"

> > (পালে ক্রিয়াযোগসার)

কুৎসিত কর্ম হইতে চিত্তের প্রত্যাবর্তনের নাম দম
অর্থাৎ যাহাতে কুৎসিত কার্য্যে আরু চিত্তের প্রবৃত্তি না হয় বা
চিত্ত কোন কুকার্য্যে ধাবিত হইতেছে যে শক্তি বলে
সেই থারাপ কার্য্য হইতে চিত্তকে প্রত্যাবর্ত্তিত অর্থাৎ ফিরাইয়া আনে তাহাকে দম বলে।

ত কর্দম। ৪ গৃহ। (নিঘ্টু) "অংগ্র যক্ষি খং দমং" বিশ্ক্
১।৭৫।৫) ৫ মহর্ষিবিশেষ। (ভারত ১০)১৬।৫) ৬ মক্তরাজের
পুরা। (ভাগ নাং।২৯) ৭ মক্তরের পৌরা, ইনি ছুইদিগকে
অশেষ প্রকারে দমন করিতেন এবং অতিশয় বলবান্ও
দয়াদাক্ষিণাদি সকল প্রকার সদ্গুণে বিভ্ষিত ছিলেন।
ইনি বক্রতনয়া ইন্দ্রেনার গর্ভে অন্যগ্রহণ করেন। দমঅননী কঠরে নয় বংসর অবতান করিয়াছিলেন, ঐ রূপে
অঠরে থাকায়, জননীকে যে দম অবলম্বন করিতে হইয়াছিল
এবং ইনি নিজেও দমশীল হইবেন, ইহার পুরোহিত তাহা
আনিতে পারিয়া ইহার নাম দম রাবিয়াছিলেন। মহারাজ
দম ব্রপর্কার নিকট ধয়ুর্কেদ শিক্ষা এবং দৈত্যরাজ
দুশুভির নিকট নানাবিধ অস্তাদিও শিক্ষা করেন এবং
বেদবেদাক প্রভৃতি শাক্তরেতা ছিলেন। (মার্কণ্ডেয়পুণ ১৩৩—
১০৪ অং) ৮ ভীম রাজার এক পুরু, দময়ন্তীর এক ভাই।
(ভারত ৩৫০)৯) ১০ বিষ্ণু। (ভারত ১৩/১৪না১০৫)

>> বুদের এক নাম। (ললিতবি )
দমক ( ত্রি ) দমরতীতি দম নিচ্গুল্। দমনকর্তা, শাসনকারী।
*হন্তিগোহখোষ্ট্রদমকো নক্ষত্রৈর্যন্ত জীবতি।" (মহু ৩)১৬২)
দমকলে, অমি দাহ হইতে গৃহাদি রক্ষা করিবার জন্ম উদ্ভাবিত
যদ্রবিশেষ। দমকল ছই প্রকার, ১ম হত বারা চালাইবার উপযোগী ও ২য় বাজ্পীয় ব্য সংযুক্ত। নগ্রাদিতে

গৃহ দাহ নিবারণের জন্ত বছকাল হইতে নানাবিধ চেটা হইরা আসিতেছে। খৃষ্ট জন্মের কয়েক শত বংসর পূর্বেও শ্রীস ও রোমে এসম্বন্ধে করেক প্রকার বন্ধানি উত্তাবিত ও প্রচলিত ছিল।

ইতিহাস।—জুভনেল, ও প্লিনি হামা ( Hama') নামে এক প্রকার যন্ত্রের কথা উল্লেখ করিরা গিরাছেন। অনেকে ইহাকে এক প্রকার অলকুপী বর্ণিরা ব্যাখ্যা করিরাছেন, কিন্তু হোলটেন বলেনু, বে ইহা অলকুপী নহে, ইহা এক প্রকার বৃহৎ হক বা বক্রমুখ লোহ একটা দীর্ঘ দণ্ডাগ্রে বছ থাকিত। বোধ হয়, ইহা হারা অগ্রিবিশিষ্ট অব্যাদি টানিরা আনিরা নিবাইবার চেটা করা হইত।

প্লিনি (Pliny the Younger) নল বা সাইফনের সাহায্যে অগ্নি নিবাইবার কথা উল্লেখ করিয়াছেন।

যাহাকে কল বলা যাইতে পারে, তাহা খুইজন্মের ১৫০ বংসর পূর্ব্বে উদ্ধাবিত হয়। দিবিদ্ধাস (Ctsibius) নামক প্রসিদ্ধ গ্রীক যন্ত্রতম্ববিৎ টলেমি ফিলাডেল্ফাসের রাজত্বলৈ মিশরে থাকিতেন, আলেকজাপ্তির্মাণ অবস্থিতি কালে তাঁহার হিরো (Hero) নামে এক ছাত্র ছিল। এই বাজি নিজ স্পিরিটেলিয়া (Spiritalia) নামক গ্রন্থে এক প্রকার কলের বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। তাহাতে এক প্রকার জলোজোলন যন্ত্র (Forcing pump) ও ছইটা বৃহৎ নল (Cylinder) ছিল। এই যন্ত্রের উন্নতি হইয়াই এখনকার হস্তচালিত দমকলের উৎপত্তি হইয়াই এখনকার হস্তচালিত দমকলের উৎপত্তি হইয়াইে এখনকার হস্তচালিত দমকলের সমস্থাপ্ত গুলির বৃত্তি, কেবল দিন দিন জ্ঞানোল্লতির সঙ্গে দলে সেই গুলিরই উন্নতি করা হইয়াছে।

সমাট্ টুজনের (Emperor Trojon ) আটালিকাকার আপোলোডোরাদ্ (Apollodorus) এক প্রকার বদ্ধের কথা উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। এই যত্ত্বে চর্ম্মকুপীতে জল ও চর্মাকুপীর সহিত নল সংযুক্ত থাকিত। চর্মাকুপীতে চাপ দিলে নলম্থ দিয়া অগ্নি স্থানে জল-নিশিপ্ত ইত ।

১৫১৮ খুটাপে জন্মনীর অগ্স্বর্ণনগরে অগ্নিক্রিপনের জন্ম নির্কাপনের জন্ম পিচ্কারীর ভার এক প্রকার কল ছিল, ইহাকে Instrument of fire বা Water-syringe বলিত।

ক্যাম্পার সট (Caspar Schott) এক প্রকার জারি-নির্মাণন্যন্ত্রের কথা বণিয়া গিয়াছেন, ভাহা ১৬৭৫ খৃষ্টাব্দে সুরেন্বর্গে ব্যবহুত হইত। ইহাও প্রায় হিরোর উলিখিত

কলের স্থার। ইহা ছইটা বোড়ার টানিরা শইরা _{বাইর} ইহার সহিত একটা বৃহৎ জলাধার থাকিত। এই কল _{চাল} रेट १४ वन लाटकत शासन हरेंड। रेहा हरेट १ है। মোটা অলধারা ৮০ ফিট উর্দ্ধে গিয়া'পড়িত। ১৭শ শতারী আরও শেষভাগে এই কলে বায়ুককে ( Air-chamber) ক্যাশিসের মোটা নল (Hose ) ব্যবহৃত হয়। ১৬৮। थुष्टीत्म এই मकन अवा-मश्युक कन वावक्छ हहेछ। (भरते (Perrault) তাহার উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। ১৬৭, थृष्टोटक ভाषात्र हारेष्ठ (Vander Hide) मकनन नाहे। (Sauction Pipe) " আবিকার করেন। ইংলতে ১৬৭ ·শতাকীর শেষ পর্যা**ত্ত হস্তচালিত দমকলে**র বা_{বচার} ছিল। [অগ্নিসম্ভন দেখ।] এগুলি পিতলে নির্দ্দিত চইন ছইটা জলের বৃহৎ পাত্রের মধ্যে ছইটা ভার লম্বিভ থাকিড তুই জন লোকে এই ভার জলের মধ্যে ঠাসিয়া ধরিলে বল পাত্রদ্বরে পার্যদেশস্থ ছিদ্র দিয়া জল বাহির হইয়া উভা পাত্রের অবল একটা উদ্ধ মুখ নতা দিয়া বাধির হইয়া পড়িত। শখিত ভার হুইটী একবার চাপিয়া দিয়া আবার টানিয়া তুলিয়া আবার চাপিয়া দিতে হইত। প্রতি চাপের সময় নব দিয়া থাকিয়া থাকিয়া ভক্ ভক্ করিয়া কভকটা দশ বাহির হইত মাত্র। তৎপরে বাযুকক ও ক্যান্বিসের মোটানন ব্যবজ্ত হইয়া ইহার উক্ত অভাব দূর হইয়াছে। এখন জলের উপর বন্ধ ঘনীভূত বায়ুর চাপে ও জলোভোলন ময়ের कियात्र करनत (देश देशांदेश ममान शास्त्र, जात बरवत जेवि অবনতিতে ক্লাধার লোপ হয় না বা ত্রন্থবেগ হয় না।

তৎপরে ইহার উপর বহু উরতি সাধিত হইরাছে। নাম্ যাহাতে কর্দম বা ঢেলা পাট্কেল যাইতে না পারে, তাহার প্রতিবিধান হইরাছে। জলাধারের জল ফুরাইরা গোনে এখন পুদ্রিণী বা নদীতে নল ফেলিয়া জল ভূলিবার কৌশনঃ হইরাছে। এখনকার ছোট কলগুলি একটা ঘোড়ার টানিয়া লইয়া যাইতে পারে, তুই চারিজন লোকেও ঠেলিয়া লইয়া যাইতে পারে। বড় গুলিতে তুইটী বা চারিটী ঘোড়ার প্রয়োজন হয়। এখন কাছিদের বা চাফ্ ডার নল বাবহাত হয়; আমেরিকার তুলা জমাইয়া এক প্রভাগ নল প্রস্তুকরে। এখন বৃহৎ কল গুলিতে বালীর টা ঘোগ করিয়া প্রথমাবস্থায় ২৮ জন মান্থ্যের পরিশ্রম করাইনা দিয়াছে।

লওনের দমকলের আফিসের কলগুলিতে প্রতি মিনিট ৯০ গালন জল ছড়াইতে পারে। একজন কলপরিচান্র একজন অগ্রিরক্ষক ও অক্সক্তে অব্যাদিশহ ইছার এক এইটি কলের ওজন ৪০।৫০ মণের অধিক হইবে না। ছইটী বোড়ায় কাজেই ইহাকে টানিয়া ২ ঘণ্টায় তিন ক্রোপ দুরে দইয়া গোইতে পারে। বৃহৎ অগ্নিকাণ্ডে এই কলের ছইটী এক আ কুড়িয়া দেওয়া বাইতে পারে, তাহা হইলে প্রতি মিনিটে ১৮০ গালেন জল নিতে পারা বার।

১৮০০ খুইান্দে বধন লগুনের আর্গাইল্ রুম্স্ নামক বাটাতে অধি লাগে, তখনই মর্কপ্রথম এই কল বাল্পীর বন্ধের সাহায়ে চালান হর। টেম্সের উপর কতকগুলি ভাসমান দমকল প্রস্তুত করা হয়, তাহাপ্ত বাল্পীর ব্য়ের সাহায়ে পরিচালিত হইত। এই কল গুলিতে প্রতি মিনিটে ১৪ শত গালেন জল বিতে পারিত। যথন পার্লামেন্টেন্র বাড়াতে আগুন লাগে, তখন ইয়াছিল। কিছু লগুনসেতুর নিকটক্ত কারখানায় ১৮৬১ খুঠাক্বে যে আগুন লাগে, তাহা নিবারণ করিবার ক্ষমতা এই সকল কলের কোনটা ঘারাই হয় নাই। অধিকাংশ ভল্মাবশেষ হইলে তবে সে আগুনকে নিকাশিত করিতে পারিয়াছিল।

সামান্ত সামান্ত অগ্নিকাণ্ডে হস্তচালিত কল গুলিতে বিশেষ উপকার হয়, কারণ বাম্প সংগ্রাহে রহৎ কলে বে বিলম্বহয় তাহাতেই হয়ত কুন্দ্র অগ্নিকাণ্ডে সে স্থানের সর্বনাশ হট্যা যাইতে পারে। হস্তচালিত কলগুলি ইচ্ছা মাত্র কার্যো নিস্কু করা যাইতে পারে, কিন্তু বৃহৎ অগ্নিকাণ্ডে ঘেখানে ছোট কলের ক্ষমভায় কুলায় না, সেখানে বড় কল প্রয়োজন, তবে যতক্ষণ বড় কল কার্যায়েন্ত করিতে না পারে, ইচক্ষণ ছোট কল লইয়া চতুম্পার্ম রক্ষা করিতে চেটা করা উচিত।

দনকর সহদে একটা সন্দেহ এখনও আছে। অতি বহং অমিকাণ্ডে কলে করিয়া জল দিতে গেলে অমি নির্বাণিত হয় কি বৃদ্ধি পায় ? কলে যতই জল পড়ুক না কেন অমি তৃলনায় তাহার পরিমাণ জর। দেবা যায় যে অমি জলবার সময় অলার-জল মধ্যগত অমুজানের সহিত মিশিয়া অলারায় বাল্প (Carbonic Oxide Gas) উৎপাদন করে। এই বালাও জল হইতে অমুজান বিষ্কু উদ্ধান রাশি ও অভান্ত দাহা পদার্থ, স্প্তরাং অমিতে জর পরিমাণে কলি দিলে তহুৎপদ্ম এই তুই জবা জলিয়া অমি আরও বাড়াইয়া ভূলে। জলকে, বালাভারে পরিণত করিতে অমির উত্তাপ যত্টুকু নই হয়, উক্ত হুই বালা জলিয়া তাহা অপেকা অনেক অধিক উত্তাপ সঞ্চিত করে। এ বিষয়ে এখনও বিশেষ আলোচনা বা মীমাংলা হয় নাই।

দৰকল চালাইবার অস্ত এক দল শিক্ষিত লোকের প্রারোজন। ইহাদের মাধার দৃঢ় শিরস্তাণ ও ধাতৃনির্ন্তিত ককলোঁণ থাকে। এই উভর থাকিবার ক্ষম্ভ লব্য গৃহের ভয়াংশ বা কড়ি. ধরনা পড়িয়া কিছু হানি করিতে পারে না। ইহাদের মাহসও বথেই, কলপতনের নল লইয়া ইহারা বেরূপ সাহসের সহিত অগ্নিক্ষেত্রে বিচরণ করে, এপ্রজ্ঞানত গৃহ হইতে লোকের জীবন ও ধন রক্ষা করে, তাহা অতীব বিশ্ময়কর। এখন র্রোপের সর্ব্বাই লগুনের নিয়মে দমকলের লোককে শিক্ষা দেওরা হয়। লগুনের দমকল আফিসে যে কেহ অগ্নিকাণ্ডের সংবাদ দেয়, সেই পারিভোধিক প্রাপ্ত হয়, এজন্ত লগুনে অতি অরেই অগ্নিকাণ্ডের সংবাদ দমকল আপিনে পৌছায়। ভাড়াটিয়া গাড়ীর গাড়োয়ানেয়াই প্রায় এরূপ সংবাদ দিয়া থাকে।

এখন প্রায় সকল প্রধান সহরেই অগ্রিকাণ্ড লক্ষ্য রাখিবার জন্ত গিজ্জার চূড়ার প্রায় উচ্চ কাইময় গৃহ নির্মিত হয়।
এই গৃহে দিবারাত্র এক একজন প্রহরী থাকে, সে কেবল
সহরের চ্ছুর্দিকে দৃষ্টি রাখে। যদি কোথাও অগ্রি দেখিতে
পার, তবে দে তৎক্ষণাৎ নিমে আসিয়া দমকল আফিসে
জানাম।

কনন্তান্তিনোপলে স্বৰ্ণ অন্তরীপের উভন্ন পার্ছে চুইটী. উক্ত প্রকার অগ্নিদর্শনগৃহ আছে। সেথানে প্রহরী আছে। সেই প্রহরী কোণাও অগ্লিকাও দেখিয়া সঙ্গেত করিলেই প্রহরীরা সমস্ত নগরময় "অম্ক স্থানে আগুন লাগিয়াছে" বলিয়া চিৎকার করিয়া মাটিতে বেত্রাঘাত করিতে থাকে। ম্হূর্ত মধ্যে, সমস্ত নগরে এই সংবাদ ব্যাপ্ত হইয়া পড়ে। এমন কি যদি বদ্ফরদের অপর পারেও অধি লাগিয়া থাকে, তবু সহরের লোককে ঐ রূপ সংবাদ দিয়া আকুলিত করা হয়। 'প্রহরীরা নগরবাদীদিগকে বাধা করিয়া অঘি निर्काशन नियुक्त करत । हेरात्रा अधिमः शिष्टे श्रुराणि मम-ভূমি করিয়া ভাঙ্গিয়া ফেলিয়া অধি নির্বাপণ করে। আগুন য্দি এক ঘণ্টার অধিক কাল থাকে, তবে স্বয়ং স্থলতানকে অগ্নি স্থানে উপস্থিত হইয়া লোকদিগকে উৎসাহিত ক্রিডে হয়। নগঁরবাসীরা এই প্রথার স্থলতানকে দেখিতে পার বলিয়া সময়ে সমরে ইচ্ছা করিয়া অফিকাণ্ড ঘটাইত এবং স্থলতান উপস্থিত হইকে তাঁহার নিকট আপনাদের অভ্যাচার, অবিচার বা চঃথ কটের কথা জানাইত। বর্তমানকালে আর সুবতান আদেন না, তত্তৎ হানের পাশা উপস্থিত হন।

বালালা দেশের সকল জানে দমকল নাই। কলিকাতা ও তাহার উপকৃষ্ঠত কয়েক ছানে আছে মাত্র। অঞ্চলানে আয়ি লাগিলে অধিবাসীরা অগ্নিসংলিট গৃহাদি ভালিরা ফেলিয়া আগুল নিবাইবার চেষ্টা পার।

দম্বোষ (পু:) চক্তবংশীয় একজন রাজা। ইনি চেদিদেশের অধিপতি শিশুপালের পিতা এবং ইহার জ্ঞানর নাম প্রত্তর্পা। দম্বোষ্ঠ্ ত (পুং) দ্যুবোষ্ঠ্য স্কৃতঃ। দম্বোধের পুত্র,

দম্থ (পুং) দম উপশ্মে দম অথচ্ (বাহুলকাৎ দৃশ্মিদমি-ভাশচ। উণ্গু১১৪) দম, দওঃ।

मञ्जू ( पूर) नग छात्व अथु। नम, नमन।

দমন (পং) দাখাতীতি দম-লা। ১ দও। ২ ইব্রিরাদির
বাফ্র্স্তি নিরোধ। ৩ পূজা বৃক্ষ বিশেষ, দোনা, দমনক বৃক্ষ।
৪ কুন্দপুপর্ক্ষ, কুঁদফ্লের গাছ। ৫ ঋষিবিশেষ। (ভারত
তাহয়ও) ৬ দমরাজার এক পুত্র, মহারাজ দম দমন
ঋষির আরাধনা করিয়া পুত্র দকল লাভ করেন, এই জন্ত পুত্রের নাম দমন রাধিয়াছিলেনণ (ভারত তাহতাক) ৭ বিষ্ণু।

(ভারত ১০া১৪৯া০৪) ৮ মহাদেব। (১০া১৭া১৩৬)

দমনক (পুং) দমন এব স্বার্থে কন্। বৃক্ষবিশেষ, দোনা।
পর্যায় দমন, দাস্ক, গদ্ধোৎকটা, মুনি, জটিলা, দস্তী, পাণ্ড্রাগ,
বৃক্ষজটা, পুগুরীক, তাপসপত্তী, পবিত্রক, দেবশেশ্বর, কুলপত্ত,
বিনীত, তপস্থিপত্ত, মুনিপত্ত, তপোধন, গদ্ধোৎকট, ক্রন্ধজটী, কুলপত্তক। (ভাবপ্রং) ইহার পুশ্প স্থান্ধ জটাক্তি।
ইহার গুণ — শীতল, তিব্রু, ক্ষায়, কটু, কুঠদোম, বিষ,
বিস্ফেটি ও বিকারনাশক। (রাজনিং) হৃত্য, বৃষ্ট ও স্থান্ধি,
গ্রহণী, অস্ত্র, ক্লেদ ও কণ্ডুনাশক। (ভাবপ্রাং) (ক্লী) ২ ছন্দোবিশেষ, এই ছন্দের প্রত্যেক চরণে ৬টা সক্ষর থাকিবে। লক্ষণ—

"বিগুণনগণমিহ বি**ত**কুহি।

দমনকমিতি গদতি গুচি হি ॥'' (চিস্তামণিধৃত বুচন)
এই ছুন্দের সমস্ত বর্ণই লঘু হইবে। ৩ একদিশ অক্ষরপাদক
ছন্দোবিশেষ, এই ছুন্দের প্রত্যেকপাদে ১১টা করিয়া অক্ষর
থাকিবে এবং শেষবর্ণ ছাড়া আর সকল বর্ণ লঘু হইবে। লক্ষণ—

"দ্বিধর গুণযুগমর্শনং তদন্ত চ কলয় করতলং। ফ্রিপভিবর পরিগদিতং দমনক্ষিদমতিললিতং ॥"

( চিন্তামণিধৃত বচন )

দমনকারোপানে পেনে প্রান্ধনক আন্তর্গণ বিধ্য উৎসব: । প্রীকৃষ্ণকে দমনক অর্পণার্থ মহাপ্রারণ উৎসব বিশেষ। শ্রীকৃষ্ণের দমনক দানোংসব বিধি হরিভক্তি-বিলাসে এইরূপ লিখিত আছে—

চৈত্রমানের গুরুষ্যাদশীতে প্রীকৃষ্ণকে দমনক দান করির। উৎসব করিবে। তি ভ্রেষ্ট শুরুষা দখাং দমনারোপণোৎসবং।" (হরিছজি দি)
মধুমাসের শুরুষা একাদনী তিথিতে প্রাতঃকৃত্য সমাপন
করিয়া দমনক বনে গমন করিবে এবং সেই স্থান এই
ময়ে প্রার্থনা করিতে হইবে।

"অশোকায় নমস্তভ্যং কামস্ত্রীশোকনাশন। শোকার্ত্তিং হর মে নিত্যং আনন্দং জনরত্ব মে। নেস্থানি কৃষ্ণপুর্বার্থং ত্বাং কৃষ্ণপ্রীতিকারকং।"

এইর্নেথ প্রার্থনা ও প্রণাম করিয়া দমনক গ্রহণ ক্রিবে। পরে পঞ্চগব্যদ্বারা প্রকালন করিয়া পূজা করিবে এবং বস্ত্রে আচ্ছদিন করিয়া বৈদপাঠ করিতে করিতে পৃহে জানিবে।

পরে দমনকাধিবাস করিতে হইবে।

অধিবাসবিধি — জীক্তফের অপ্রেইহাকে রাথিয়া স্করে। ভদ্রমণ্ডল, করিবে, তাহার উপর এই দমনক সংস্থাপি। করিয়া এই মল্লে অধিবাস করিবে। মন্ত্র—

শ্পুজার্থং দেবদেবস্থ বিষ্ণোর্লন্দীপতেঃ প্রভো:।
দমন ! অমিহাগচ্ছ সালিখ্যং কুরু তে নম:॥"
পরে সবীজ কামদেবকে পূজা করিতে হইবে এং
অষ্টোত্তরশত কামগায়ত্রী জপ করিয়া আমন্ত্রণ ক্রিনে
পূজাঞ্জি দিয়া এই মন্ত্রে বন্দনা করিতে হইবে । মন্ত্র—

শনমোহস্ত পূজাবাণায় জগদাহলাদকারিণে।
মন্মথায় জগদোত্তে রতিপ্রীতিপ্রদায়িনে॥"
পরে প্রীক্ষণকে এই মন্ত্রে আমন্ত্রণ করিতে হইবে।
"আমল্রিতোহিদি দেবেশ। পুরাণপুরুষোত্তম।
প্রাত্ত্যং পূজ্যিক্সামি সালিধাং কুরু কেশব॥
নিবেদ্যামাহং তুভাং প্রাত্দিমনকং ভূডং।
দর্মণা সর্মণা বিক্ষো নমন্তেহস্ত প্রসীদ্ মে॥"

এই আমন্ত্রণাদি করিয়া নৃত্যগীতাদি বারা এই রার্থ আগরণ করিবে। পর দিন প্রাতঃকালে প্রাতঃক্তরাদি মন পন করিয়া, দমনক আরোপণের নিমিত্ত মহাপূজা সমগ্র করিবে। তাহার পর দমনককে ভক্তিপূর্বক গ্রহণ করিয় এই মন্ত্রে ঐক্তকে অর্পণ করিবে। মন্ত্র—

"দেব দেব জগলাথ বাঞ্ছিতৃথি প্রদায়ক।
কংলান্ প্রয় মে ক্ষণ কামান্ কামেশ্রীপ্রিয় ।
ইদং দমনকং দেব গৃহাণ মদস্প্রহাৎ।
ইমাং সাংবৎসরীং পৃশাং ভগবল্লিছ প্রয় ॥"

ভাহার পর দমনকপুশের মালা অর্চনা করিরা ^{প্রির্কার} এই মন্ত্রে অর্পণ করিতে হইবে— "মণিবিক্রমমালাভিশ্বলারকুস্থমাণিভিঃ।

हेम् गाःवरमती श्रृण खवाच ग्रहण्या ।

বনমালাং বথা দেব ! কৌততং সভতং জ্বদি। তহ্দামনকীং মালাং পূজাঞ্চ জ্বদের বহা॥"

পরে নৃত্য গীত প্রভৃতি ও আক্ষণাদি ভোজন করাইয়া _{মহোংস}ব করিবে।

চৈত্রমাসে দমনক আবোপণে কোন বিছাদি ঘটিলে
বৈশাধ বা প্রাবণমাসে করিতে পারিবে।
"ন ক্বঞে দমনারোপঃ স্থান্মধৌ বিছতে। যদি।
বৈশাধ্যাং প্রাবণে মাসি কর্ত্তবয়ং বা তদর্পণং॥"

গিনি এই দমনক আবে জাণার্থ উৎসব করেন, তিনি সকল কামনা প্রাপ্ত হন এবং সমস্ত তীর্থে সানাদি করিলে যে ফল দমনকে সেই ফল হইয়া থাকে। (হরিভক্তিবিলাস ১৪ বি॰) দমনী (স্ত্রী) দম্যতে হয়িরনয়া দম-লাট্, স্ত্রিয়াং ভীপ্। আফি-দমনীরুক। (রাঞ্নি॰)

দম্যন্ত্রী (স্ত্রী) দমন্বতি নাশন্তি অমললাদিকমিতি দম-ণিচ্
শত্ ত্রীপ্। ১ ভদ্রমল্লিকা। ২ নলরাজার পত্নী, বৈদর্ভরাজ
ভামের ক্র্যা। ইনি অলোকদামাল্লা রূপবতী ছিলেন।
নিষধরাজ নল ইহার রূপের কথা শুনিয়া ইহার প্রতি অমূরক্ত
হন এবং এই অমূরাগের বিষয় এক হংস দারা দময়ন্তরীর
নিকট বলিয়া পাঠান। দময়ন্ত্রী হংসের নিকট নলের রূপ ও
শুণাদির কথা শুনিয়া নলের প্রতি অমূরক্ত হন। এই সময়্ব
বিদভরাজ দময়ন্ত্রীকে বিবাহ্যোগ্যা দেখিয়া স্বয়্রর উত্যোগ
করেন। এই স্রয়্মন্তর স্থলে নানা দিপেশ হইতে অনেক নূপতির
আগমন হইল, এমন কি ইস্রাদি লোকপালগণ্ড এই স্বয়্ন

দেবুগণ আদিবার সময় নলকে দেখিতে পাইয়া তাঁহাকে
দ্ত করিয়া দময়স্তার নিকট প্রেরণ করিলেন। নল দেব
গণের বরে সকল লোকের অদৃশ্য হইয়া দেবগণের অভিপ্রায়
দম্মতীকে কহিলেন। দময়ন্তী ইহার উত্তরে বলিলেন, আমি
প্র্মেই নলকে পতিতে বরণ করিয়াছি, কল ভিন্ন অহা কেহ
আমার স্বামী হইবে না।

দেবগণ তাহা জ্ঞানিয়া স্বয়্রত্ব স্থলে নলকপ ধারণ,করিয়া পাকিলেন; দময়ন্তী অনজ্ঞাণায় হইয়া দেবগণের স্থাতি করিতে লাগিলেন। পরে দময়ন্তী দেবগণের স্বেদবিরহিত স্তর্কানে করি দিব্যমালাধারী দেহ হটুতে নলকে চিনিতে পারিয়া ইহার গলদেশে মাল্য অর্পণ করিলেন। দময়ন্তী নলকে বর্মাল্য দিয়া কিছুদিন স্থাথ অভিবাহিত করিলেন। পরে নল দ্যতক্রীজায় সর্কার্মত হইলে বনগমন করেন। ইহাতে পতিব্রতাদময়ন্তী তাহার অমুগামিনী হন। শ্রীল্রই হইলে ময়্য্যের ব্রিক্রংশ হইয়া থাকে। নলয়াঞ্জ পতিপরায়ণা নিফ্রিতা

পদ্মীকে নিবিদ্ধ আবন্য মধ্যে পরিত্যাগ করিয়া আয়ু বনে গমন করেন। পরে দমর্থী কতকগুলি পথিক বণিক্ কর্তৃক পরিবৃক্ষিতা হইয়া পিত্তালয়ে আসিলেন।

দময়ন্ত্রী পতিবিরহে নিভাক্ত অধীর হইলেন। দময়ন্ত্রীর পিডা নলকে অবেষণ করিবার জন্ম সর্বতে চর প্রেরণ করিলেন, কিন্ত কোন স্থানেই নলের অয়েষণ পাইলেন না। তথন দময়ন্তী অনম্ভোপন্নি হইয়া এক অদ্ভুত উপায় অবলম্বন করিলেন। তিনি জানিতেন যে রাজানুনল ঐতিষ্ট ও অপ-মানিত হইয়াই আত্মগোপন করিয়া আছেন। কোন অসামান্ত ঘটনা ভিন্ন লকে গোপন স্থান হইতে বীহির করা অসম্ভব। এই জন্ত ঘোষণা করিয়া দিলেন, যে নল রাজা বছকাল অজ্ঞাতভাবে থাকার তদীয় পত্নী দময়ন্তী পুনরায় স্বয়ম্বরা रहेरा मानम कतिशारक्त । **এ**हे मः वाम खाश हहेवामाळ मर्ख-সহিষ্ণু নল আর স্থির থাকিতে পারিলেন না। তিনি এত দিন অযোধ্যাধিপতি ঋতুপর্ণের নিকট ছন্মবেশে অতি হাঁন व्यथेत्रीत्वत्र कार्या नियुक्त हित्तन। व्यत्याधाधिनिक वर्षाध्र ম্বলে উপস্থিত হইতে ইচ্ছা ক্রিলে কৌতুহ্ন প্রযুক্ত তিনিই উঁহোর সারথি হইয়া বিদ্র্ভরাজ্যে আগমন করেন। দমগ্রতী দাসীমুথে এই সারথির অলোকিক রূপ প্রণাদির কুণা শুনিয়া সন্দিশ্ধচিত হৈইয়া অখশালায় উপস্থিত হন। তথায় অশ্বপালকে আপন ক্দয়বলভ নল বলিয়া জানিতে পাবিয়া তাহার চরণে পতিত হইলেন ও স্বয়ম্বর ঘোষণারূপ ধুইতাজ্ঞ ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন। দময়ন্তী এইরূপে স্বামী লাভ করিয়া পুনরায় ভর্তুরাজ্যে রাজমহিয়ী হন।

[नन (मथ।]

দমদম[,— > বাজালা প্রদেশের জেলা ২৪ পরগণার একটী মহ-•কুমা। অক্লা° ২২° ৩৪´ ও ২২° ৪১´ উ: এবং জাঘি° ৮৮° ২৬´ ও ৮৮° ৩১´ পু: মধ্যে অবস্থিত। পরিমাণফল ২৪ বর্গমাইল। ইহার ভিতর দিয়া মধ্যবজ রেলপ্থ গিয়াছে।

২ উক্ত মহকুমার একটা নগর। অকাং ২২° ৩৭' ৫২' উ:
এবং দ্রাঘি ৮৮° ২৭' ৫১' পু:, কলিকাতা হইতে ৪
মাইল উত্তরে অবস্থিত। এখানে মিউনিসিপালিটা এবং
সৈনিকাবাস আছে। এই সৈনিকাবাস ইউকনির্দ্রিত
এবং প্রাণস্ত। ১৭৮০ খৃষ্টান্স ইইকে'১৮৫০ পর্যান্ত এখানে
কামান ইত্যাদি রাখিবার স্থান ছিল। ১৮৫০ খৃষ্টান্দে
উহা মীরঠে উঠাইয়া লওয়া হয়। সেই সময়ে এখানে একটা
অক্তাগার, সৈনিকাবাস, সাহেব এবং দেশীয়দিগের জল্প
হাঁসপাতাল, বৃহৎ বাজার, অনেকগুলি পরিকার জলপ্র
দীবী ও প্রটেষ্টান্ট্রিগের গির্জ্জা ছিল। যে সন্ধি অনুসারে

বালালার নবাব ইংরাজদিগের স্বার্থ স্থিরীকৃত করিরা কণি-কাতা, কাশিমবাজার ও ঢাকা পুন: প্রদান করেন, সেই সিন্ধি এখানেই সাক্ষরিত হয় ( ধুই ফেব্রুয়ারি ১৭৫৭ থুঃ জঃ)। এখানে পূর্ববিদ রেলওয়ের একটা টেশন এবং একটা ইংরাজী কুল আছে।

দময়তৃ ( অ ) দম-ণিচ্-তৃচ্। ১ শাসনকর্তা। (পুং) ২ বিকু।
দমলচেরি—মান্তাজ প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত উত্তর আর্কটের
একটা গিরিপথা অক্ষা ১৩ ২৫ ৪০ উ: ও জাঘি ৭৫ ৫
৫ পু:। এই পথ দিরা মহারাষ্ট্রবীর শিবাজী ১৬৭৬ খৃষ্টাকে
প্রথম বার কর্ণাটিক আক্রমণার্থ গমন করেন। এথানেই ১৭৪০ খৃষ্টাকে নবাব দোক্তআ্লি মহারাষ্ট্রীয়দের সহিত যুদ্ধে
হত হন। ১৭৮০-৮২ খৃষ্টাকে হায়দর আলির সৈক্তগণ যথন
কর্ণাটিক আক্রমণ করে, তথন এই পথ দিরাই থাডাদি
সরবরাহ হইয়াছিল।

দমলিক (দবলিক)—প্রঞাবের অন্তর্গত বসহর রাজ্যের একটা আম। অক্ষা ৩১° ৪৫ উ: ও দ্রাঘি ৭৮° ৩১ পূ:। সম্দ্রপৃষ্ঠ হইতে ৯৪০ কট্ট উচ্চে অবস্থিত। এখানকার অধিবাসীদিগকে দেখিতে চীনতাতারদিগের স্থায়। ইহারা বৌদ্ধ

দমা (দেশজ) ১ এক প্রকার বাজী। ২ বাধা, আটকান।
দমান — পঞ্চাবের অন্তর্গত একটী উচ্চ জেলা। অক্ষা॰ ২৮॰
৪০ ও ৩০ ২০ ডি: এবং দ্রাঘি॰ ৬৯ ৩০ ও ৭১ ২০ পু: মধ্যে
অবস্থিত। সলিমান পর্বতের পূর্বপাদদেশস্থিত প্রদেশ ও
দেরা ইন্মাইল্থার অন্তর্গত সিদ্ধনীর দক্ষিণতীর এই
জেলার অন্তর্গত। এথানকার ভূমি অনুর্বর এবং প্যাদিবিহীন।

দমান, (দম্ন) -- বল্বে প্রেসিডেন্সীর গুলরাট প্রদেশের অন্তর্গত পর্জু গীজদিগের অধীন একটা নগর। বল্বে নগরের ১০০ মাইল উত্তরে। অক্ষা॰ ২২° ১৫ জি: ও জাঘি॰ ৭২° ৫০ পু: মধ্যে অবস্থিত। ইহার উত্তরে ভগবান্নদী, পূর্ব্বে ইটাশরাজ্য, দক্ষিণে ক্লেম নদী এবং পশ্চিমে কালে উপসাগর। মগর হাবিলি প্রগণার সহিত ইহার পরিমাণফল ৮২ বর্গুমাইল।

নিজ দমানের ছইটা বিভাগ—> পরগণা নায়ের বা দমান গ্রাাতী এবং ২ পরগণা কলন পবোরি বা দমান পিকেনো। এ ছাড়া ৫ ছইতে ৭ মাইল প্রশন্ত হাবিলি পর-গণার একটা পৃথক্ অংশ আছে।

দমান নগর ১৫৩১ থৃঃ অব্দেপর্জ্ গীজগণ কর্তৃক পৃষ্ঠিত হয়। এখানকার অধিবাসীগণ ইহার পুনঃসংস্কার করে। পরে ১৫৫৮ খুটাব্দে পর্জ্ গীকেরা পুনরায় অধিকার করিয়া এখানে হারীরপে বসবাস করিবার বন্দোবত করেন। নিজ হয়। নের পরিমাণফল ২২ বর্গমাইল, ইহাতে ২৯ থানি গ্রাফ্ আছে। লোকসংখ্যা প্রায় পঞ্চাশ হাজার।

এই স্থান কাষে উপসাগরের মুখে অবস্থিত এবং দ্বনগলানামক নদীবারা দমান গ্র্যান্তি (বৃহৎ দমান) ও দ্বান
পিকেনো (ক্ষুদ্র দমান) নামক এই বিভাগে বিভক্ত।
দমানগ্র্যান্তি দক্ষিণদিকে থানানামক বৃটীশাধিকত ক্লোয়
কংলগ্র এবং দমান পিকেনো উত্তর্গিকে স্থরাটের সীমার
প্রেদেশে অবস্থিত। শেষোভা ভাগ ভম কন্ট্যান্টিনো ভি
ব্যাগাঞ্জার অধীনে পর্জুগীলগণ কর্তৃক ১৫৫৯ খুটাফে
হরা ক্ষেক্রগারি ভারিথে অধিকৃত হয়। নগর-হাবিলি পরগণার
পরিমাণ্টল ৬০ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা ২৭৪৬২।

১৭৮০ 'খুটাজের ৬ই জাহ্যারি তারিখে পুণা নগরের সন্ধি অহসারে এই পরগণা মহারাষ্ট্রীয়েরা পর্ভূ গীলগণের হতে সমর্পণ করেন। °

দমানের প্রধান নদী—> ওঁগবান্, ২ কলেম্, ৩ নদক থাল বা দমনগলা, এ সমন্ত নদীই কালে উপসাগরে পতিত হইয়াছে। এথানকার জলবায়ু স্বাস্থ্যকর। এথানে বৃহং বৃহৎ বন স্বাছে।

এধানকার জমি উর্জ্বরা। চাউল, গম ও তামাক এধান কার প্রধান উৎপদ্ধ দ্বরা। চালের স্থ্রিধা থাকিলেও এথানে সর্ক্তিক ২ জমির আবাদ হয়। সমস্ত জমির উপরই একটা ট্যাক্স নির্দ্ধানিত আছে। এই ট্যাক্স হইতে প্রায় ৮০০০ টাকা রাজস্ব আদায় হয়।

পর্জ্ পরিজাদিগের ক্ষমতা হাস হইবার পূর্বে, আফিবার উপক্লের সহিত দমানের বিস্তৃত ব্যবসা চলিত। ১৮১৭ হইতে ১৮৩৭ খুটারু পর্যান্ত চীনরাজ্যের সহিত এখানবার আফিমের ব্যবসা ছিল। কিন্তু ইংরাজ কর্তৃক সিন্তু পের জ্ব হইরা হার এবং তদবধি দমানের আফিমে ব্যবসা উঠিয়া গিরাছে। পুরাকালে বস্ত্র বয়ন ও রঞ্জিত ক্রণের জ্বন্ত দমান বিশার ছিল। ব্নন কার্য্য এখনও কডকটা চলিয়া থাকে। মাত্র ও বেজ্রপাতার কুড়ি অনেক প্রস্তুত হয়। এখানে গ্রীর সমুদ্রে মৎত্য ধরিবার কার্য্য বেশ চলিয়া থাকে।

শাস্নকার্যোর স্কৃবিধার জন্ত দমানকে একটা প্রাণে ধরিলা লওরা হইমাছে। এথানে একটা মিউনিসিপানিট আছে। গোলার গ্রথর জেনারেলের অধীন একলন শাসন কর্তা কর্তৃক দমান শাসিত হর। বিচার বিভাগ একলব জ্লের কর্তৃত্বাধীনে জাছে; তাঁহার অধীনে একলব এটা ্রেনারেল এবং ছই ভিনম্পন করণিক আছে। এ**ধান হইতে** প্রার লক্ষ টাকা রাজস্ব আদায় হয়।

ত্বিধানে তুইটা তুর্গ আছে। প্রথমটীতে গ্রণবের প্রাসাদ, গৈন্তের আবাস, ইাসপাতাল, মিউনিসিপাাল আফিস, আদালত গৃহ, জেল, তুইটা সির্জ্জা এবং অভ্যান্ত অনেক আবাসাদি আছে। ছোট তুর্গটী সেন্ট্ কিরোমির সাহাযো পর্কু গীকালা কর্ক স্থাপিত হইরাছে। ত্মধ্যে একটা গির্জ্জা ও একটা গোরস্থান আছে।

দমিতৃ (পু:) দম-তৃচ্। শাস-কর্ত্তা।
দমিত (জি) দম্যতে স্থ দম-জ্ঞ। (বা দান্ত শান্তেতি। পা
াব্যব্দ) স্থাসিত, বশীক্ষত। ২ ক্লেশসহিষ্ণু, ভারবহনাদি
ক্লেশসহিষ্ণু। ইটের বিকল্পবিধান হেতু পক্ষে দাস্ত এইরূপ পদ হইবে।

দ্মিন্ ( ি ) দমোহ ভাস্তীতি দম-ইনি । ১ দমনবিশিষ্ট, দমনশীল। ( ক্লী ) ২ সাগর ও সিদ্ধু পদ্দমের দক্ষিণস্থ ভীর্থভেদ।
০ এই তীর্থপ্রবর্তক ঋষিভেদ। এই তীর্থ সকল পাপনাশক,
এই তীর্থে ব্রহ্মাদি দেবগণ মহেশবের উপাসনা করেন।
এই তীর্থে ব্রান ও দেবগণ দারা পরিবৃত ক্রভকে পূজা করিলে
জ্মাবিধি সকল পাপ বিনষ্ট হয়। অশ্বমেধ ষজ্ঞ করিলে যে
ফল হয়, কেবল এইখানে স্নান করিলে সেই ফল লাভ
হয়। * (ভারত ওা৮২ অং )।

मभीमात्रिथ ( प्रः ) व्राक्षत्र नामास्तर ।

দয়ু(য়ৄ) নস্(পুং) দম্নস্, 'অভেষামপি দ্খতে' ইতি পকে
দীর্ঘ: রা দম-উনস্ (দমেরুনসিঃ। উণ্ ৪।২৩৪) > আমি ।
২ ভক্রাচার্মা। (অ) ৩ দময়িতা। "দম্না গৃহপতি, দম আঁ"
(অক্ ১।৬০।৪) 'দময়তি রাক্সাদিকমিতি দম্নাঃ' (সায়ণ)

দমে (অব্য) দম-বাত্লকাৎ-কে। গৃহ। (নিঘণ্টু)
দম্ (দশল্প) ১ অফুকরণ শক্ষ। ২ ৩৪ক বস্তর পতনংবনি।
৩ প্রতারণা, ঠকান। ৪ নিঃখাদ, প্রাণবায়। ৫ স্কীতে
ব্যপ্রদর্শনপূর্কক ফ্রের দীর্ঘ ক্ষায়িতের নাম দম্। °

দিপাতী (পুং) জায়া চুপতিশ্চ ৰব্বে জায়াশকত পকে

 দমাদেশ:। মিনিত আরাও পতি। দম্পতী এই শক্
নিত্য বিবচনাত, বৃদ্দমাদে আরাপতী, দম্পতী ও অস্পতী
এই তিনটা পদ হর। আরারা: অমতাবো দ্যাবশ্চ। আরা
শক্ষানে বিকরে অম্ ও দম্ আদেশ হয়, ছইটা বিকর
বিধান হইলে তিনটা পদ হয়, এই অফ্র ঐ তিনটা পদ হইল।
"তৌ দম্পতী বশিষ্ঠ প্ররোজ্যাকুরাশ্রমং।" (রঘুব° ১ অ°)

দম্কল (দেশৰ) আগগুন নিবাইবার যত্ত্ত। [দমকল দেখ।]

দৃষ্বাক্ত (পারসী) প্রভারক, ভ্রাচোর। দৃষ্বাক্তী (পারসী) প্রভারণা, ভ্রাচুরি।

দক্ত (পুং) দভাতে ইতি দক্ত-ঘঞ**্। ১ কপট।** ২ শাঠা। অধর্ম হইতে ভ্ৰার গর্ভে দক্ষের জন্ম।

শৃষাহধর্মজ ভার্যাদীক্তং মারাঞ্পক্তন্।

অহত মিথ্নং ততু নিশ তিৰ্জগৃহেই প্ৰলা: ॥" (ভাগ ।।।২)

অধর্ম ব্রহ্মার পূত্র, অধর্মের পত্নী মিথা। এই মিথার গর্ডে মারা নামে এক কঞাও দন্ত নামে এক পূত্র জারে। ঐ মারা ও দন্ত ত্ইলন পরস্পার সোদর হইলেও অধর্মাংশদন্ত বিলিয়া পরস্পার মিথুন অর্থাৎ জীপুরুষ হইয়ছিল। এই দন্ত ও মারা হইতে লোভ ও নিশ্বতি (শঠতা) নামে একটী পূত্র ও কলা হয়। (ভাগণ)

ত নিজে অধার্দ্মিক অথচ বাহিরে ধার্দ্মিক বলিয়া জানান।.
৪ লোভ ও বঞ্চনা দারা বিহিত কর্মানুষ্ঠান। ৫ পূজা প্রাথি
ও সম্মান লাভের জন্ত স্বধার্ম্মিকত্ব থ্যাপন। "কপটেন ধার্ম্মিকত্মাদিনা স্বোৎকর্ম্থাপনেচ্ছা দন্তঃ।" (গৌতমর্ণ ৪।৩)

প্রকৃত ধার্মিক নয়, অথচ কপটতাপূর্বক লোকদিগকে
ধার্মিক বলিয়া প্রতিপাদন করিয়া নিজের সমান লাভের যে
ইচ্ছা, তাহার নাম দস্ত। প্রত্যেক ব্যক্তিরই বিশেষ যত্নপূর্বেক দন্ত প্রিহার কর্তব্য।

"বেষং দন্তঞ্চ মানক ক্রোধং তৈক্ষাঞ্বর্জীরেও।" (মনু ৪।১৬০) ৬ ধর্ম প্রতি অনুৎসাহ।

দস্তক (পুং) দন্ত ধুল্। প্রতারক। "ধর্মধন্দী সদালুক-শ্হামিকো লোকদস্তক:।" (মৃত্ ৪।১৯৫)

যাহার। সদা লুক, অর্থাৎ যাহাদের অন্তরে ধনলোভ নিরস্তর জাগরুক রহিয়াছে, যাহারা ধর্মের চিক্ত প্রভৃতি ধারণ করে ও জনসমাজে আপনার ধার্মিকুতার পরিচন্ন দেয়, তাহারা বৈড়ালপ্রতিক।

मञ्जूठर्शा ( जो ) मठें डा, প্রতারণা।

प्रञ्जन ( पूर ) पन्ड ভाবে ना्षे। ) पछ। १ स्माहन।

"ব্ৰতেন পাপং প্ৰচ্ছাদ্য কুৰ্মন্ স্ত্ৰীশুক্তদভানং।"

( मञ् ४।३,२৮)

पश्चिम ( कि ) मन्छ गिनि । पष्ठकर्छ। "पश्चिटेहकूक शाय ७-वकवृत्तीः मह वर्कारप्रर ।" ( शास्त्रवद्धा ১।১৩० )

मग्रा

माञ्चाह्य ( पूर ) गार्स छोम नृपछम । এই नवपछि अछि-শয় দান্তিক ছিলেন। নর নামে একজন ঋষি, ইহার গর্ব বিনষ্ট করেন। (ভারত উদ্মোগ ৯১ জা।)

"(नाङारेननस्र ताषर्थि वीजाति ईर्वरजारस्त्रः। भागरका बाकरमा मानार मनाकरकाखरवा नुभः॥

প্রযাতা নিধনুং ছেতে শক্রবড়্বর্গমাশ্রিতাঃ ।" (কামন্সক)

( ত্রি ) দন্ত: উদ্ধবো যক্ত। ২ দন্ত হইতে জ্ঞাত কর্মাদি। (र मकल कार्या मख्भू तंक कता हत्र।

দক্ষে†লি (পুং) দম্ভ ভাবে অস্থন্, দম্ভদি প্রেরণে অলতি পর্যাপোতি অব-ইন্। বজা।

দম্য (পুং) দম্যতে ইতি দম-যং। ১ প্রাপ্ত ভারবহনযোগ্য-বৎসতর, যে বৎসতর ভারবহনযোগ্য অবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছে।

(ত্রি) २ দমনীয়। ৩ দমনীর্হ। (পুং) ৪ অন্ডান। "শকটং দম্যসংযুক্তং দত্তং ভবতি চৈব হি।" (ভারত ১৩।৬৬।৪)

দ্যু (পুং) দয়-বাত্লকাৎ অপ্। দয়া।

म्या (जो) मत्र जिनामाध्, जङ्गश्रीम्। क्रम्भा, इः थिउ कीर्यत्र 🕳 এতি অর্থকম্পা, অর্থাৎ এক ব্যক্তি অতিশয় ক্লেশে পড়িয়াছে, · ভাহার ঐ ক্লেশ দেখিয়া নিজের জুংথাফুভব হইয়া ভাহার প্রতি সহাত্মভূতির নাম দয়া।

"যত্নাদপি পরক্লেশং হর্ত্তং যা হৃদি জায়তে। ইচ্ছাভূমিস্থরশ্রেষ্ঠ সা দয়া পরিকীর্ত্তিতা॥ আত্মবৎ দৰ্বভূতেষু যো হিতায় শুভায় চ।

বর্ত্তে সততং হাই: ক্রিয়া ছেষা দরা স্মৃতা 🖟 (ক্রিয়াযোগসাণ) পরক্রেশ নিবারণের জন্ম হৃদয়ে যে বলবতী ইচ্ছা হয়, ঐ ইচ্ছারই নাম দয়া। যিনি সর্বাভূতের প্রতিমঞ্চল ও হিত কার্যোর জন্ম আপুনার স্থায় যে সকল কার্য্য অনুষ্ঠান করেন, ঐ ক্রিয়ার নামই দয়া। দয়া এক মাত্র প্রধান ধর্ম।

"অহিংসা প্রমোদর্মো বিপ্রাণাং নাত্র সংশয়ং। দয়া, দৰ্বত কৰ্তব্যা ব্ৰাহ্মণেন বিজ্ঞানতা॥ যজ্ঞাদক্ষত বিপ্রেক্ত ন হিংসা যাজ্ঞিকী মতা।" (দেবীভাগণ) সকল স্থানে অহিংসা পরমধর্ম বলিয়া কথিত এবং সকল ভূত্তে দয়া করা উচিত। দয়া মোহের পত্নী, দয়া বাতীত এ জগতে সকল কাৰ্য্যই নিম্মণ।

২ দক্ষের এক কন্তা, ধর্মের সহিত ইহার বিবাহ হয়। ৩ দয়া শান্তিরদের ব্যক্তিচারিভাব।

"রোমাঞ্চাতাঃ স্বাসুভাবান্তথাস্থার্যাভিচারিণঃ। ন নির্বেদ্ধব্মরণমভিভূতদয়াদয়ঃ ॥" (সাহিত্যদ ৩ আ ) मग्नाकुर्छ (पूर) मग्नाग्राः क्र्रहेरेव । वृद्ध ।

'সমস্তভজ্ঞ: সংগুপ্তো দয়াকুর্চো বিনায়কঃ।' ( হেম ২০৯) मग्रानम्म मत्रश्रुकी बटेनक अनवारी देवनास्टिक गिर्हर् ধর্মত প্রচারক। ইনি নিজ জীবনচরিত হিন্দী ভাষাঃ निष्य विथिया अकथानि हिन्सी मश्राम्भरख ध्यकान करान তাহারই ইংরাকী অমুবাদ থিয়ঞ্ফিট নামক প্রিকায় গুড়া শিত হয়। অধ্যাপক মোক্ষমূলর তদ্বলম্বনে সংক্ষিপ্_{জীবনী} (Biographical Sketch) নামক পুস্তকে ইহার জীবনী লিধিয়া গিয়াছেন।

দয়ানন্দ গুজরাটের কাঠিয়াবাড় ভূভাগের অন্তর্গত মোর্বির রাজার অধীন একটা নগরে এক উত্তরপ্র_{দেশীর} ত্রাহ্মণবংশে জন্মগ্রহণ করেন। দয়ানন্দের প্রকৃত নাম্বা পিতামান্তার নাম তিনি প্রাকাশ করেন নাই, কালেই তাহা জানিবার উপায় নাই। প্রকাশ না করিবার কারণ তিনি নিজেই লিথিয়া'গিয়াছেন, 'আমি ধর্মামুরোধে আমার পিতামাতার নাম প্রকাশ করিলাম না। আমার আর্থায়ের। व्यामात्र मः वान शहरन व्यामाटक गृट्य कित्राहेश नहेशा को বেন, তাঁহাদের সহিত আবার দেখা হইলে, আবার তাঁহায়েং সহিত বাস করিতে হইবে, তাঁহাদের অভাব দূর করিবায় জন্ত চেষ্টা করিতে ও তজ্জন্ত অর্থস্পর্শ করিতে হইবে, জা হইলে আমি যে কার্য্যের জন্ত জীবন উৎসর্গ করিয়াছি তাহার বিষম ব্যাঘাত উপস্থিত হইবে।'

**मग्रानम পূ**र्व পांठ वर्पत्र वश्च हहेट ना हहेछी নাগর বর্ণমালা শিক্ষা করেন এবং জ্বাতি ও বংশের নিয়ম स्मात्त, जथन इटेरजरे जांहारक अरनक श्राम रेविक म কণ্ঠস্থ করিতে হইয়াছিল। আট বৎসর বর্ত্তন ভাঁহার উগ নয়ন হয়। উপনয়নের পর তিনি গায়ত্রী, সন্ধ্যা, বলনা ৪ কুদ্রাধ্যায় হইতে আরম্ভ করিয়া যজুর্বেদসংহিতা শিশ করিতে আরম্ভ করেন।

ইহার পিতা শৈব ছিলেন। সেই জস্ত অতি অন্ন বয়নেই তাঁহাকে শিবপূজা শিথিতে ও মৃত্তিকার শিবলিক গড়া^{ইরা} পূর্বা করিতে হইত। ঔশবোচিত উপবাদ ব্রতা^{রি} তাঁহাকে অভ্যাস করিতে হইয়াছিল। ইহার মাতা ^আ বয়স্ব পুত্রের উপবাস সমন্ধেও বিশেষ আবাপত্তি করেন, ^{ক্রি} भारत कृत्वधर्य भागतन वाधा इटेबाहित्सन। अटे गहेवा हैश्व পিতামাভার মধ্যে বচনা হইত।

এই সময়ে দরানন্দ সংস্কৃত ব্যাকরণ শিথিতেন, বৈ^{ন্তি} শ্লোকাদি কণ্ঠত্ব করিতেন এবং প্রস্তাহ পিতার সহিত ^{বিং} भूकार्थ निवमित्राद्ध वाहेश्डन। टोक्सवरमञ्ज वज्रतम्त्र भूवि

সমত যজুর্কেদসংহিতা, অন্তান্ত বেদের কতকাংশ ও "শক্ষরপাবলী" নামে ব্যাকরণ কণ্ঠস্থ করিয়াছিলেন। ইহার ব্রেণীয়েরা ইহাতেই তাঁহার শিক্ষা সম্পূর্ণ হইয়াছে বলিয়া মনে করিত।

ইহার পিতা মহাজনী করিতেন এবং নগরের জমাদার हिल्न वर्थाः त्राक्षय व्यानात्र ७ मालिट्डिटित कार्या कतिरजन, ञ्ज्याः ऋष्य चष्ट्रात्महे हैहारमत्र मः नात निर्वाह हहेछ। मन्नानन বিলিয়া গিয়াছেন, যে 'পিতা যথন আমাকে পার্থিব লিকপ্রায় দীকিত করেন, তথন হইতে ই আমার প্রাণে কেমন একটা কট হইতণ' দীক্ষার দিনেই তাঁহাঁর মত পরিবর্ত্তিত হয়। দীকার দিন তাঁহাকে সমস্ত দিন উপবাস করিতে হইয়াছিল এবং রাত্রিতে জাগরণ জাতা পিতার সহিত মনিদরে গমন করেন। অর্দ্ধরাত্রিতে তিনি দেখিলেন, মন্দিরের পৃক্তকেরা, ভূত্যেরাও কতকগুলি উপাদক মন্দিরের বাহিরে আদিয়া নিদ্রিত হইল, তৎসক্ষে তাঁহার পিতোও ঘুমাইয়া পড়িলেন। **দ্যানন্দ সন্দেহীকুলিত্চিত্তে শিবের ঈশ্বর্ত্ব বিষয়ে চিত্তা** করিতে লাগিলেন। সল্দেহ বাড়িল, পিতাকে জাগাইয়া গুল কবিলেন। তাঁহার পিতা **জিজ্ঞা**সা করিলেন, এ কথা কেন জিজাসা করিতেছ ? দয়ানন বলিলেন,—এই দেব-ষ্টিই যে পরমেশ্বর তাহ। আমার ধারণা হইতেছে না, ইহার উবৰ দিয়া মৃষিক সকল চলিয়া যায় অথচ সৰ্কাশক্তিমান্ ^{দেবতা} কিছু বলেন না। তথন তাঁহার পিতা **তাঁহাকে** র্বাইতে চেষ্টা করিলেন যে, ঐ প্রতিমা শুদ্ধসত্ম বাদ্ধণাদি দারা প্রভিষ্টিত হওয়ায় উহা দেবত্ব লাভ করিয়াছে। তিনি আবও বলিলেন যে, বর্তমান কলিযুগে কেহ শিবেরু সাক্ষাৎ পায় না, ভক্তেরা এই প্রতিমাতেই ভক্তিবলে তাঁহার সভা क्ष्रमा क्ष्यम ।

এ সুকল কথায় দয়ানন্দের তৃপ্তি হইল না। শ্রান্তি ও কুধা-বোধ হওয়।য় পিতার অনুমতি লইয়া বাড়ী চলায়া আনেন। উপ্রাস ভঙ্গ করিতে তাঁহার পিতা বিশেষরূল্পে বারণ ^{করিয়া} দিলেও তিনি বাড়ী আসিলে **তাঁহার** মাতা তাঁহাকে ^{ধাইতে দিলেন}, তিনিও নাঁ খাুইয়া থাকিতে পারিলেন না। ^{পর্দিক ঠাহার} পিতা তাঁহাকে উপবাস ভঙ্গের পাপ বুঝাইতে ^{(চিটা করেন}, কি**ন্ত** দয়ানন্দের দেবতাভক্তি চলিয়াগিয়াছিল বিলিয়ানে সমস্ত কথা তাঁহার ধারণাঁহইল না। তিনি তথন ৰ্মত গোপন করিয়া•বিজ্যোপার্জ্জনে কালকেপ করিতে মনন ^{ক্রিলেন।} এ সময় ডিনি বৈদিক কর্ম্মকাণ্ড, নিঘণ্ট_{ু,} নিরুক্ত ও পূর্ঝমীমাংসা পড়িতেছিলেন।

न्त्रानत्कत त्वाष्ट्रम बरमत वृद्धाम औहात मर्का कनिर्व VIII 86

প্রতার জন্ম হ্য। তাঁহার আবে ছই ছোট ভগীও একটা ছোট্ ভ্রাতা ছিল। একদিন রাত্তিতে তাঁহার চতুর্দশ ব্রীয়া একটা ভগিনীর মৃত্যু হয়।. এই তাঁহার প্রথম শোক। এই শোকের সমরেই তাঁহার মনে মৃত্যু ও মুক্তি চিন্তা প্রথম উপ-ন্থিত হয়। এই চিস্তার ফলে তিনি প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হইলেন যে, সর্কম্বত্যাগ ও সর্কবিধ ক্লেশ স্ক্ত করিয়াও আমি মুক্তির পথ নির্ণয় করিব। এই সময় হইতে তিনি উপবাস প্রায়-শ্চিত্তাদি পরিত্যাগ করেন, কিন্তু কাহারও নিক্ট মনোভাব . প্রকাশ করিলেননা। ইহার পরই তাঁহার এক সুপণ্ডিত থুলতাতের মৃত্যু হয়। ইনি দয়ানলকে অত্যক্ত ভালবাসি-তেন। ইহাকে হারাইয়া দ্যানন্দ অত্যন্ত কুজ হইতে লাগি-লেন এবং জাবনের নঋরতা ব্ঝিতে পারিলেন। তদবধি তিনি নিজের প্রতিজ্ঞাপালনে তৎপর হইলেন।

এই সময় ইহার পিতা ইহার বিবাহ দিবার চেষ্টা করেন। কিন্তু বিবাহ করিতে তাঁহার আনৌ ইচ্ছাছিল না। অনেক কটে পিডাকে অনুরোধ করিয়াএক বংসর বিবাহ বন্ধীরাথিলেন্ এবং কাশীতে গিয়া সংস্কৃত শাল্ল ভাল করিয়া পড়িবেন বলিয়া পিতার অমুমতি চাহিলেন, কিন্তু দয়ানন্দের পিতা তাহাতে সম্মত হইলেন না। পী🌤 পলাইয়া যান, এই উদেখে দয়ানন্দের পিতা নিজ বাটী হইতে তিন ক্রোশ দ্রে এক বৃদ্ধ যাজকের নিকট দয়ানন্দকে রাথিয়া দিলেন। কিছু দিন পরে আবার উাহার বিবাহের সমস্ত আয়োজন হইল, তিনিও আৰার বাড়ী আসিলেন। এ সময়ে তাঁহার বয়স ২১ বংসর। এবার আনর অন্ধ্রোধ চলিবে না বৃশ্ধিয়া দয়ানন লুকাইয়া বাড়ী পরিত্যাগ করিলেন, দয়ানন্দের পিতা প্রক্ষণে জানিতে পারিয়া কয়েকজন অখা-রেছী পাঠাইয়া উাহাকে ধরিয়া আনিবার চেষ্টা করেন; কিন্ত তাহা ঘটে নাই, অখাবোহীরা ওাঁহার সন্ধান পায় নাই।

দয়ানন্দ অখারোহীদিগের দৃষ্টি এড়াইয়া পদত্রন্দে চলিতে লাগিলেন। পথে একদল ভিকুক আহ্মণ তাঁহার ম্থাস্ক্স হরণ করিল এবং বলিল, 'সংসারে যতই দান করিবে, ভদ্মসারে পরকালে মজল হটবে।' কিছুকাল পরে দ্যানন্দ শৈল নামক ভানে উপস্থিত হইলেন। এথানে লালা ভকত নামে এক স্থপণ্ডিত আঁকাণছিলেন। তাঁহার কণা পূর্বে হইতেই দয়ানন্দের জানা ছিল। এথানে আহার একজন ব্ৰন্ধচারীও ছিলেন। দয়ান-দ আদিয়াই তাঁহার দলে প্রবিট হইয়াসল্ল্যাসী হইলেন। এই সময়ে দীক্ষাকালে ভাঁহার নাম [#]শুদ্ধতৈতক্ত" রাথা হইল। সন্মাসীবেশে শুদ্ধতৈতক্তক্ষশী

আন্ধানাবাদের নিকটবর্তী কুথালাবাদ নামক ক্ষুদ্রবাজ্যে গমন করিলেন। সেধানে হর্ভাগ্যক্রমে দয়ানদ্দের পুরিবার-বর্গের সহিত এক সন্ধানীর দেখাহয়। তিনি কথায় কথায় ভূত্ততভ্তৰামী সিত্তপুরের মেলায় যাইতেছেন; আত্মীয়েরা তাহা জানিতে পারিয়া তাঁহার পিতাকে সংবাদ দিলেন। শুদ্ধ-হৈতভাষামী ও অভাভা'ছাত্রবূর্গ দরদীমামীর সহিত যথন নীলকঠের মন্দিরে বাদ করিতেছিলেন, দেই সময়ে দয়া-নদের পিতা আসিয়া তাঁহার সমুধে উপস্থিত হইলেন। দয়ানক আবে ুসংসারে ফিরিবেন না জ্বানিয়া তাঁহার পিতা প্রথমে তাঁহাকে মিষ্ট কথায় ফিরাইতে চেষ্টা করেন, তাহার পর অনেক অমুরোধও করেন। দয়ানন্দ পিতার অমুরোধ রকা করিতে পারিবেন না জানাইয়া অনেক অফুনয় বিনয় করেন। তথন তাঁহার পিতা কুদ্ধ হইলেন, তিনি সমভিব্যা-হারী দিপাহীদিগের হত্তে পুত্রকে কয়েদীর স্থায় অর্পণ ক্রিলেন। বাহা হউক কৌশলৈ দ্যানন্দ সে বন্ধনও ছাড়াইয়া আবার পলাইয়া আক্ষদাবাদে ফিরিয়া আসিলেন। সেধান হইতে পলাইয়া কিছুকাল বরদারাজ্যে ^{*}বাস করেন। বরদার চেতনমঠে কতকগুলি ব্রস্কারী ও ব্রস্কান-শ্বামীর 🕶 সঁহিত তাঁহার পরিচয় হয়। এই স্থানেই তিনি প্রথমে ट्रवाखणाञ्च भिक्का करत्रन। खक्कानस्याभीत छेशरारण्डे নীবত্রক্ষের একত্ব বিষয়ে তাঁহার স্থন্দর শিক্ষা হয়।

তাহার পর তিনি কাশী যান। সেথানে প্রধান প্রধান প্তিতের সহিত আলাপ করেন। স্চিদানক প্রমহংস তাঁহাকে নর্মদাতীরবর্তী চানোড়-কঞ্চালিতে যোগশিকার্থ যাইতে উপদেশ দিলেন। তিনিও তদমুসারে তথায় উপ-স্থিত হইলেন ; দীক্ষিতদিগের সহিত পরিচিত হইয়া প্রমানস্ পরমহংদের শিষ্যত্ব গ্রহণ করেন। ইহার নিকটেই তিনি বেদাস্কসার, বেদাস্কপরিভাষা প্রভৃতি অধ্যয়ন করেন। তৎপরে যোগশিক্ষার্থ দীক্ষিত হইলেন। অল বয়স বলিয়া প্রথমত: দীকা সম্ভে কিছু বাধা হইলেও তাঁহার আগ্রহ দেখিলা প্রমানন্দ প্রমহংস উাহাকে দীক্ষা দিয়া দণ্ডগ্রহণ कराहेरलन। এই नीकाकारण डीहात अहरेह्छ स्रामी नाम পরিবর্তিত হুইয়া দয়ানন্দ সর্পতী নাম হুইল। কিছুপরে দয়ানন্দ থানোড় পরিভ্যাগ করিরা ব্যাসাশ্রমে গমন করেন। বোগানন্দ নামে যোগীরাজ তাঁছাকে বোগশিক। দেন। কিছুকাল যোগাভ্যাসের পর যোগের উচ্চতম **শিক্ষালাভা**র্থ আন্ধাণাবের নিকটবর্ত্তী একস্থানে গমন করেন i এথান-কার চুইজন যোগী তাঁহাকে যোগবিভার শেষ শুপ্ত বিষয় 'শিক্ষা দিলেন। ভাষার পর দরানন্দ যোগের আর কোন

ন্তন প্রণালী শিথিবার অস্ত রাজপ্তনার **অন্তর্গ**ত খা_{ন্} পর্বতে গমন করিলেন।

১৮৫৫ পৃষ্টাব্দে হরিবারের সহামেলার দরানক উপনী হন। সেইস্থানে কিছুকাল থাকিয়া ভাইদি নামক _{যানে} গমন করেন। এথানে মাংসাহারী বাহ্মণ ও ভরণাত্ত দেখিল তাঁহার বিরক্তি করে। তৎপরে তিনি এনগরে গমন হিলা কেদারবাটে একটা মন্দিরে বাস করেন। এথানে গদাগিত্তি নামক একজন দার্শনিক সাধুর নিকট ভিনি দর্শনশার অধ্যয়ন ও তাহা লুইয়া বিচার করিতেন। ছইমাস পরে তিনি সন্ন্যাসীদিগের সহিত ক্লপ্রপ্রাণে আদিলেন। उश হুইতে তিনি অগস্ত্যাশ্রমে যাত্রা করেন। তাহার পর তাহাঃ উত্তরবর্ত্তী শিবপুর নামক স্থানে শীতকাল অভিবাহিত করিয়া 'কেদাবঘাট ও গুপ্তকাশীতে আগমন করেন৷ চানোড়ে অবস্থানকালে সকলোবে তাঁহার গঞ্জিকানের অভ্যস্ত হইরাছিল। একদিন রাজিতে নেশা হাঙে পরিত্রাণ পাইবার জন্ত দিয়ানন্দ এঁক শিব্যবিংয়ে বারাভায় আত্র গ্রহণ করেন। বারাভায় ব্র ও প্রদার নন্দীমূর্ত্তি ছিল। দয়ানন্দ ব্যের পৃঠে পুত্তক ও বয়য়াণি রাণিয়া বসিলেন। বৃষমৃত্তি শৃত্তগভ। হঠাৎ তাঁহার ह পড়ার তিনি দেখিলেন, তাহার মধ্যে এক ব্যক্তি নুকায় আনছে। তিনি তথন দেবদেহের কল খুলিবার অক্ত ফেন हां वाज़ाहेरनम, अमिन अजाखत्र वाकि नक पित्रा वाहित পড়িয়া পলাইয়া গেল। দয়ানৰ প্ৰান্তরমূর্ত্তির মধ্যে এবে করিয়া রাত্তির অবশিষ্টাংশ নিজার কাটাইলেন। প্র^{হাতে} একজুন বৃদ্ধারমণী আসিয়া ব্যম্তির প্**জা**করিল। প্^{রা} সময় দ্যান্দ বৃষ্ণতেই ছিলেন। কিছু প্লায়ে বৃছা দি ⁶ গুড় আনিরা ব্যকে ভোগ দিল ও তন্মধ্যে দরা<del>নস</del>কে দে^{রি} নররূপী বুষজ্ঞানে প্রণাম করিয়া আহার্য্যন্তব্য সন্মূণে রাণি দয়ানন্দ কুথার্ব ছিলেন, তিনি সমস্ত আহার করি^{ছেন।} দ্ধি পালে তাঁহার সমস্ত নেশা দূর হইব। এখন ^{হাঁহ} তিনি নর্মদার উৎপত্তিস্থানে যাত্রা করেন।

দরামন্দ শেষ দশার হগ্র ও অর ব্যতীত আর কিছু ^{আছি} করিতেন না; অবশেষে অরও ত্যাগ করেন।

সন্ন্যানীবর্গের স্থান তাঁছার দেহ কশ বা লীণ ছিন্^{র।} তাঁছার শরীর স্থার্নির, স্থানর ও বিলক্ষণ সবল ছিল। বানির মহারান্ত্রীর পণ্ডিত তাঁছার সম্বন্ধে বলিরাছিলেন, দ্যান্ত^{হিন্} পালোরানের বল ও পাঁচ জ্বন পণ্ডিত্তের বিহা^{া বানি} ক্রিয়াছেন।

দরানন্দ পৌত্তলিক্ষতার বিবেৰী ছিলেন, ভিনি ^{জানী}

মত প্রচারাধ সর্ব্ব অধ্বিদ্ধা বেড়াইতেন। বেথানে বাইতেন,
দেইথানেই আর্থাসমাজ নামে সমিতিছাপন ও অমতাকুষানী ভাষ্ম সহিত থাখেদ প্রকাশ করিতেন। ভাষ্ম তাঁহার
নিজের রচিত। এই ভাষ্মে তিনি পৌত্তলিক মতপ্রতিপাদক
প্রোক গুলির ভাষ্মের অন্ত রূপ ব্যাথ্যা করিয়া একেশ্বরবাদ
তিবাদন করিয়াছিলেন। দ্রানজ্যের ভাষ্ম স্ব্রিত্ত আদৃত
নাই।

দমানক কলিকাতার আসিয়াছিলেন। সকলেই তাঁহার

য় আগ্রহাষিত হইয়াছিল। কেশবচন্দ্র সেন তাঁহাকে
লারে রাথিয়া ছিলেন। তাঁহার বাড়ীতে এক প্রকাশ্র
লায় দয়ানকের বক্তৃতা হয়। দয়ানকের ভাষা সরল ও
তেজ ছিল। সংস্কৃতেই তাঁহার কথাবার্তা হইত।
দিনি হিন্দী ভাষাতেও বক্তৃতা করিতেক। বোদাইয়ে
ারব সাগরের কূলে তাঁহার আশ্রম ছিল। তিনি
রাণের গল গুলি একবারে বিশাস করিতেন না। কেহ
দি "রূপক" বলিয়া সে গুলিকে ব্যাথ্যা করিত, ভিনি
মনি সভেজে প্রতিবাদ করিয়া বলিতেন, 'সব্ বুট্ বাত্
ায়।' বোদাইরে অবস্থান কালে তিনি গৈরিক ছাড়িয়া
লগেড়ে ধৃতি ব্যবহার করিতেন।

তাঁহার বোদাই আগমন সম্বন্ধে একটা ব্যাপার ঘটে।

গার ষ্টেশনে তিনি উপস্থিত হইরা দেখিলেন, বহুলোক

তীক্ষা করিতেছে। কতকগুলি লোকে তাঁহাকে হাওদা

থেয়া হাতীতে করিয়া লইতে আসিয়াছে। আবার তাঁহারে

গেইরো একটা গর্দভ সাঞ্চাইয়া আনিয়াছে। তাঁহাকে

তাঁতে চড়িয়া বাইতে অনুরোধ করিলে, তিনি বলিলেন,

মামি গরীব সয়্লাদী, হাতীতে চড়া আমার সাজে না। রাজ
থে শত শত লোক পদব্রজে যাইতেছে, আমিও যাইব।

জ্বানে চড়িলে লোকে বড় হয় না, তাহা হইলে বৃক্ষবাসী

াকেরা সমধিক মাস্তা।

দয়ানল লাহোরের বক্তা শেবে বলেন, প্রাণায়ামধারা াগমার্গ অবলম্বন ব্যতীত ব্রহ্মলাভের অক্ত উপার নাই। হারা বোগের ভিতরে প্রবেশ করিতে পারে নাই, তাহারা শ্মিলিরের বাহিরে শ্রমণ করে।

দরানক আঞ্চনীর নগরে ৩০এ অক্টোবর শনিবার সন্ধাটার সময় উন্ধাট বৎসর বরসে ইহলোক পরিত্যাগ করেন। হলোক তাঁহার শবের পশ্চাতে পশ্চাতে গমন করিরাছিল। ই মণ চক্ষন কঠে, আট মণ সামাল্য কঠিও আড়াই সের। প্রিচিডার দেওরা হয়।

मत्रानच इटेर्डि वाकानीत, मर्था "आर्या" मरकत रहन

ব্যবহার ও "কার্যামীর" ধ্রা উরিরাছে। তিনি পৌত্ত-লিকতাবেবী ও একেশরবাদী ছিলেন বলিয়া আক্রো তাঁহাকে একজন অদশভুক্ত বলিয়া প্রচার করেন; কিন্ত তাঁহার দীর্ঘলীবনে ঈশরলাভের যে পছা স্থপরীক্ষিত হইরাছে আক্রেরা তাঁহার সেই যোগাছার ও প্রাণারামের কথা অফ্ন মোদন করেন না।

দরাপাল, > রুণসিদ্ধি নীমে শাকটারনের মতানুসারী সংস্কৃত ব্যাক্রণরচয়িতা। ২ অল দেশের এক্সুন রালা।

( **ভ॰ ব্ৰহ্মধ॰** ২•।৪• )

দ্য়াময় (পুং) দ্যা-মষ্ট । অতিশন্ধ দ্য়ানুঁ।
দ্য়ারাম, ১ একজন বিখ্যাত আর্ত পশুত। ইনি দানপ্রদীপ, পদচন্ত্রিকা, স্থতিসংগ্রহ প্রভৃতি নামে সংস্কৃত ভাষার
ক্রকথানি ধর্মশালীয় গ্রন্থ প্রকাশ করেন।

- ২ শালগ্রামশিলামাহাত্মরচয়িতা।
- ত দেবকীনন্দনের'পুত্র, ইনি 'রসমানস' নামে একথানি সংস্কৃত বৈশ্বকগ্রন্থ রচনা করিয়াছেন।
- ৪ কাশ্মীরবাসী সাহেবরামের পুরা, ইনি নিজপুরাণের টীকারচনা করেন।

দরারাম বাচস্পতি, মুর্ববোধের একজন টীফাকার। । , , , দরালু ( জি ) দরতে ইতি দর আসুচ্ ( ম্পৃহি গৃহীতি। পা তাবা>৫৮) দরাযুক্ত। পর্যার কাকণিক, কুপালু, হুরত। (অমর) "দরালুমনস্পৃত্তং পুরাণমজরং বিহুঃ।" (রঘু ১০।১৯)

দয়ালুশর্মন্, গোপালসহস্রনামভূষণরচয়িতা। দয়ালুমিশ্রা, কবীস্তচ্চোদয়ধৃত কবি।

দয়াব (আমি) দরা বিদ্যতে ২০০, দরা-মতুপ্ মত ব:। দরাযুক্ত, দরালু।

দয়াবীর (পুং) দয়য়া বীর: ৩তৎ। > দয়ায়ুক্ত বীর, যে ব্যক্তি পরছ:খে জীবন বিসর্জন ক্রিতে উদ্যত।

२ नत्रायुक्त नामकराजन, वीत्रज्ञास्त्र नाम्मरण ठात्रि ध्यकात्र नामराकत उद्याश च्यारक्--- नानवीत, धर्मवीत, नमावीत ७ युक्तवीत। क्षीमुख्याहन ममावीरमत्र जेनाहत्रण धरे ऋण निमारकून---

্শিরামুধৈ: ভলত এব রক্তং অন্যাপি দেহে মম বাংসমন্তি। তৃপ্তিং ন পশ্চামি তবাপি তাবং

কিং ভক্ষনাখং বিরতো গরুখান্॥" (জীমৃতবাছন)
দয়াশঙ্কর, ১ একজন বিখ্যাত ধর্মশান্তবিৎ পণ্ডিত, ধরণীধরের প্ত; ইহার বিরচিত শাখারনীর প্তরীকক্রত্
প্রোগপাঠে জানা যার বে ইনি ১৭৬৯ খুটাজে জীবিত ছিলেন।
ইহার ক্বত এই কর্থানি সংস্কৃত গ্রন্থ পাওরা নার—

অধ্বরপদ্ধতি, আধানপৃদ্ধতি, উপাক্রমবিধি, ঔর্দ্ধদেহিকপদ্ধতি, জাতকর্মাদি সমাবর্ত্তনান্তপ্রদাস, তিথিনিপর,
দর্শপ্রাদ্ধপ্রয়োগ, দানপ্রদীপ, নীতিবিবেক, পৌগুরীক্ত্রত্ প্রয়োগ, প্রয়োগরত্বাকর, বাল্লচন্দ্রিকা, বৃদ্ধিশ্রাদ্ধিধি, ব্রতোভাপনকৌমুদীপ্রকাশ, ভৃদ্ধিরত্ব, শ্রাদ্ধপদ্ধতি, শ্রাদ্ধ-প্রয়োগ, দীক্ষাবিধানতন্ত্র, আত্মজ্ঞানোপনিষ্ট্রীকা, আত্ম-লামনস্ত্রবৃত্তি, শাঝায়নগৃহস্ত্রের প্রয়োগদীপ, সামতম্ব টীকা প্রভৃতি।

২ অমুবন্ধথগুনবাদরচয়িতা।

৩ গ্রহদীপিকা, প্রশ্লমনোরম্টীকা ও মলারিপদ্ধতি-টীকাপ্রণেতা।

৪ চিকিৎসাক শিকা নামে বৈশুক গ্রন্থকার।
দিয়াশীল ( বি ) দ্যা এব শীলং যক্ত। দ্যালু, দ্যাবান্।
দিয়িত ( পুং ) দ্যাক্ত। ১ পতি। ( বি ) ২ প্রিয় পাত।
দ্য়িতা ( বী ) দ্যিত টাপু। ভার্যা, পত্নী। "দ্যিতা দ্যিতাননাদ্বং দ্রমীলর্মনা নিরীক্ষাতে।" ( বসগ )
দিয়িতাধীন ( পুং ) দ্যিতাঘা: অধীন:। স্ত্রীর বিশীভ্ত,
বৈলা।

मधिज्ञू (जि) मग्न-रेक्। मग्नीन। मग्रु (जि) स्वर-किপ् উট्। स्वनकर्छा।

দিয়েল (দেশজ) একপ্রকার পাখী। ভারতের সর্ব্ এই দয়েলপাখী দেখা যায়। এই পাখী এক একটা চা৯ ইঞ্চি পর্যান্ত বড় হয়। ইহাদের মাথা, গলা, বক্ষ, দেহের উপরি-ভাগ ও ডানা রক্ষবর্গ, ডানা ছাড়া ঐ সকল স্থানেই উজ্জল নীলবর্ণের আভা; উদর, পুক্তের নিম্নভাগ ও তুই পাশের পুক্তের ৪টা পালক খেতবর্গ। স্ত্রীজাতির রং পুরুষের মত তেমন গাঢ় রক্ষবর্গ নিয়, ইহাদের বক্ষঃ ভল অনেকটা ধুসর বুর্গ। আবার শাবকের 'বক্ষঃ ভল তেমন উজ্জ্বল নহে, মধ্যে মধ্যে লাল বিন্দু এবং শরীরের উপরিভাগ বাদামী হইতে প্রায় গাঢ় ধুসর।

যে প্রাম বা নগরের ধারে বৃক্ষরাজিশোভিত উত্থান দেখা যায়, সেইথানেই প্রায় দয়েল উচ্চ বৃক্ষচ্ডে বাসা করিয়া থাকে, নিবিড় ধন জঙ্গলে ইহারা থাকেনা। কথন গৃহের সমুথে, কথনু বা গুইটা মিথুন একত্র কীট পতক্ষ খুঁজিয়া বেড়াইতেছে, সহজেই দেখিতে পাওয়া যায়। সয়্কাাকালে বাসায় বিদিয়া দয়েল মিষ্ট করে গান করিতে থাকে। বৃক্ষচ্ছা, গুলা গুছু বাতীত কথন কথন গৃহাদির সমুচ্চ ছোট গর্জি মধ্যেও এই পাথী বাস করে। কেবল গাছের শিক্ত ও ঘাস দিয়া ইহাদের বাসা প্রস্তুত হয়। এই পাথী এককালে ৪টা

ডিম্ব পাড়ে, ডিম্ব গুলি খেত বর্ণের হইলেও প্রথমাবয়ার দেখিতে অনেকটা নীলাভ, মধ্যে পাশুটে দাগ দেখা যার।

অনেকে ইহাদের স্থমিষ্ট শবের জন্ত আদর করিয়ান পোবে। নেপালে ধনী লোকেরা দ্যোলের লড়াই দেখিবার জন্ত প্রিয়া থাকে।

ভারতমহাসাগরীয় খীপপুঞ্চ, স্থাম, চীন প্রভৃতি স্থানেও দয়েল পাথী দৃষ্ট হয়।

দর (অব্) দৃ-ভয়ে অপ্। ১ ঈষদর্থ। ২ ভয়। ০ গর্ৱ। (ক্রী) ৪ শঙা। ৫ কন্দর। পুং ক্রী) ৬ পর্কড ভ্রা। ক্রিয়াংডীয্।

"म উচ্চকাশে ধবলোদরো দরো-

পুরেক্রমভাধেরশোণশোণিমা॥" (ভাগ॰ ১০১১২) দর (দেশল ) দ্রেবার মূলা।

দর ওয়ানী, বাদালাদেশের অন্তর্গত রঙ্গপুর জেলার একী গ্রাম। অক্ষাংহত তেওঁ ১৫ জালং ৮৮ ৫৫ ১৫ প্র মধ্য অবস্থিত। এখানে প্লিশের একটী থানা আছে। প্রতি বৎসর মেলা হয়। এই মেলায় গোমেষাদি ও অখ বিক্রীত হয়। দরক ( অি) দর ভয়ে "কুঞাদিভ্যো বৃন্" ইতি বৃন্। ভীক:

দরকণ্টিকা (জী) দর ঈষৎ কণ্টো বস্তা: কপ্, টাপি আভ ইবং। শতাবরী। শতমূলী। (রাজনিং) দরকার (পারশী) প্রয়োজন, আবশ্রকঙা। দরকারী (পারশী) প্রয়োজনীয়, আবশ্রক।

प्रत्थे खु ( शावनी ) चारवनन, चक्रवाध ।

দরক্ষ, আসাম প্রদেশের অন্তর্গত ব্রহ্মপুত্র নদীর উপত্যকার অংশ লইরা একটা কেলা। অক্ষাং ২৬ ১২ ১৩ প ও ২৭ ২০ ৩০ উ: এবং দ্রাঘিং ৯১ ৪৫ ও ৯৩ ৫০ পুরু মধ্যে অবন্ধিত। ইহার উত্তরে ভূটিরা, অকা ও দফলা শাহাড়, পূর্ব্বে মঙ্গলদই নদী, দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র এবং পশ্চিমে কামরণ। পরিমাণফল ৩৪১৮ ২৮ বর্গমাইল।

ভৈরবী ও ব্রহ্মপুত্র নদীর স্ক্রমে অবস্থিত। ভেরণুর এই জেলার সদর।

অনেকগুলি বৃহৎ ও কুল নদী এই প্রাদেশের উপর নির্বা চলিয়া গিয়াছে। এথানে ২০০ হইতে ৫০০ কিট্ ভুঁচ কতকগুলি কুল কুল পাহাড় আছে। এ প্রদেশ বন ও জললমর। এথানে সকল প্রকারের 'হিংস্লে জন্ত আছে। এখানে একটি ব্যাঘ্র শীকার করিতে পারিলে ২০০ টাকা, চিতাবাঘ মারিতে পারিলে ৫০, ভরুক মারিতে পারিলে ১০০ এবং হারেনা মারিতে পারিলে ২৪০ পর্যান্ত দেগা _{হর।} ব**ন্ত হতী এখানে সমরে সমরে শক্তের জ্ঞান্ত** জনিষ্ট করে।

ব্রদ্পুত্র দরদের সুর্ব্ধিথান নদী। ইহার ৫টা প্রধান দাধা আছে— > ভৈরবী, ২ ঘিলাদারী, ও ধনেশরী, ৪ নোনাই এবং ৫ বড়নদী। এতব্যতীত এথানে ২৬টা ছোট নদী আছে। এথানে ত্রদ আদে নাই। চাষের স্থবিধার অস্ত্র বন্ধানিবারণকরণার্থ এথানে হইটা বাঁধ আছে।

আসাম হইতে পৃণক্ ইতিহাস সরলের নাই। পুরাত ব এবং স্থানীয় পরম্পরাগত প্রবাদ হইতে জানা ধায় বে, পুরাকালে এক্ষপুত্র নদীর উপত্যকার অনেক দূর পর্যান্ত হিন্দ্সভাতা বি**ত্ত হইরাছিল। তেজপুর নগরের চতুর্দিক**ত্ব পাशफ़ नम्टर जनगाउँ मिनत ७ थानोनीनित द्य नमछ ধাপাবশেষ আছে, তাহা হইতে দেখা যায় যে এই সমস্ত মলিরাদি কোন বিশিষ্ট ক্মতাপল আনতি ধারা নির্মিত रहेशाहिन। এश्वनि य कान चाकमनकाती कर्ड्क विनष्टे इरेग़ाहिन, जाहा महस्खादे अञ्चलिक हन्न । (कह (कह वालन ষে, বাঙ্গালার অধিপতি স্থলেমানের সেনাপতি কালাপাহাড় কর্তৃক্ট এই সমস্ত ধর্মবিঘাতক কার্য্য সম্পন্ন হ্ইয়াছিল। খাবার কেহ কেহ বলেন যে, ইহা বাণরাঞ্চার সহিত জীক্ষের যুদ্ধের ফল। ছিন্দুরাজ্যের পতনের পর আনামের মরার প্রদেশের ফ্লার দরক পুনরার অসভ্যহন্তে পতিত হয়। **ওলদেশের পাহাড় হইতে আগত সান বংশোড়ত আহ্ম** দাতি খুষ্টীয় ত্রয়োদশ শতাকীতে ব্রহ্মপুত্রের উপত্যকায় প্রবেশ ক্রিরা ক্রমে ক্রমে নিমাভিমুখে অগ্রসর হইয়াছিল। ইংরাজ-^{দিগের} আগমন পর্যান্ত ইহারাই এই স্থান অধিকার করিয়া রহিয়ছিল। উত্তরদিকের পর্বতশ্রেণীর পাদদেশের একটা প্রদেশ আহমরাজ প্রতি বৎসর ৮ মাসের জন্ম ভূটিয়াদিগকে थाञ्चानि ठाव कतिएंड श्रामान कतिएंडन धावः ^{*}हेहात शतिवर्र्स्ड ভাহাদিগের নিকটে প্রতিবংসর উৎপন্ন দ্রব্যের কভকাংশ প্রাপ্ত হইতেন। বৎসক্ষের অবশিষ্ট ৪ মাস আযাঢ় হইতে আখিন sিনি নিজেই এ প্রদেশের উপর কর্তৃত্ব করিতেন। ইংরাজ वर्ड्क আসাম বিজয়ের পরও কিছুদিন এই বলোবতত ^{ছিলিয়া} ছিল। কৈন্ত ১৮৪**॰ খুটালে** ভূটিয়াদিগের স্থান क्माहेबा निवा बार्विक ६००० कत्रिबा एन छत्रा हुटेल्। এटे ^{বিবাদী} জমী হইতে ইংরাজ প্রমেণ্ট প্রতিবংসর ৫১৮৫• রাজস প্রাপ্ত হন।

^{বে ভূটিরাদের কথা উদ্দিধিতি হইল, তাহারা ভোটান বাবের অধীন নর, জানা প্রমেক্টের অধীন। তাহারা}

ing news of the first of

ভিক্ৰতীয়দিগের মহিত বিজ্ঞ ব্যবসা চালাইরা থাকে।
ভূট্রিয়া ব্যতীত, পূর্কদিকে জকা বা ভূগোনামক একটী
কূসলাতি বাস করে। •ইহারা বার্ষিক ৭০০১ করিয়া করস্কলপ পার। এমন কি ১৮৮০ গৃষ্টাকেও জ্ঞারা একটী
প্রদেশের দাবি করিয়া বৃটীশ অধিকার আক্রমণ করিয়াছিল।
[ ক্ষকা দেখ। ]

আরও পূর্বে দক্ষণা নামক একটা জাতি আছে। ইহার।
১৮৭২ খৃটাকে আমতোলা প্রাম আক্রমণ্ট করিয়া করেকজন
লোককে বন্দী করিয়া লইয়া যায়। ১৮৭৪।৭৫ খুটাকে
একদল সৈস্ত গিয়া তাহাদিগকে উদ্ধার করে। [দক্ষণা দেখা]
অধিবাদী লোকসংখ্যা—২৭৩৩৩৩।

দরক্ষের অধিবাদিদিগের মুধ্যে অসভ্য জ্বাভিই প্রধান।
ইহাদের মধ্যে কাছারী, রাভা ও কোচের সংখ্যাই বেশী।
এ ছাড়া আহম, ছটিরা, ভূটিরা, দফলা, গারো, মেচ, সাঁওতাল
প্রভৃতি আরও কতকগুলি জাতি আছে। এখানকার মুদলমানেরা সকলেই স্থানি। ইহাদ্বের অনেকেরই অবস্থা ভাল।
কাছারীদের মধ্যে অনেকে খুষীর ধর্ম অবলম্বন করিয়াছে।
এখানে একটা গির্জা আছে। মিশনরী সুল গুলির ব্যয়নির্জাহার্থ গ্রমেণ্ট বার্ষিক ১৫০০ দিয়া গাকেন। ১৮৭২ ফুটাসে
ভেজপুরে একটী বার্ষসমাজ ছাপিত হয়।

তেজপুরই এ জেলার সর্বাপেক্ষা বৃহৎ নগর। মলল-লৈতে একটী মহকুমা আছে। এ ছাড়া বিশ্বনাথ, হাবালা, মোহনপুর, নলবাড়ী এবং কুরুয়াগাঁ নামক কয়েকটী বাণিজ্যপ্রধান প্রাম আছে।

এথানে চাউলই প্রধান শহা। চাউল তুই প্রকার—
১ নালি বা আনমন, ইহা শীত কালে কাটা হয়, ইহাই প্রধান
থাল্য। ২, আউস—ইহা গ্রীম কালে কাটা হয়। এই
ধান্ত কাটা হইলে সরিষা, মটর, কলাই ইত্যাদির চাষ হয়।

এখানকার হৃদি ভিন শ্রেণীতে বিভক্ত--- ১ বন্ধি বা বাস্তব্যাস্থ্য ক্রি--- ২ রুপিত বা আ্রেড্মি ও ও ফরিংঘাট।

এখানকার কৃষকদের অবহা মন্দ নয় । অধিকাংশ লোকেরই বড় ঋণ নাই। কৃষকেরা সকলেই গ্রমেণ্টের খাস জামি দখল করে। জামি হস্তাস্তর করিবার ক্ষমতা তাহাদের আছে। যাহাদের জামি নাই বছখাজানা করিয়া লইবারও ক্ষমতা নাই, তাহারাও সাধারণতঃ মজুরি করিতে যায় না। মাস মাহিনাতে বা চালান ইত্যাদি কাজা করিয়া কিছু সঞ্চয় করিতে পারিলেই ছইটী বলদ ও জামি খালানা করিয়া লইয়া কৃষিকার্য্য জারক্স করে।

দরক বভাকলেও গাবিত হয় না বা বৃটির জ্ভাবেত

কঠ পার না। গুর্তিক এখানে এক রক্ষ নাই বলিলেও হর। অর্থনাল শতাকীর অথমভাগে এখানে একবার শক্ত কট ছইয়াছিল। তাহাও একদেশবাসিগণের আক্রমণের কারণ, অঞ্জার জন্ম নর।

রেশম বুনানই এধানকার একমাত্র শিল্পকর্ম। রেশম
ছই প্রকার—এড়িরাও মুগা। এখানে অনেকেই স্তা কাটে,
বুনে এবং রং করে। এই রেশমী কাপড়ের কতক কতক অতি
শ্বন্ধর হয়। রেশমবস্ত্র বুনান ছাড়া কোন কোন স্থানে
পিত্তর ও মুগারগা্রাদি প্রস্তত হয়।

চা-ক্লবি এখানে সাহেবদিগের দারাই প্রধানতঃ চালিত হর। এখানে প্রার ২০০টা চাংবাগান আছে।

এধানকার রপ্তানী দ্রব্য মধ্যে চা, সর্বপাদি ও রেশম বন্ধই প্রধান। তেজপুর, মঙ্গলদৈ এবং বিশ্বনাথ এই তিনটা বাণিজ্য প্রধান স্থান। চা-বাগানের নিকটত্ব স্থান সমূহে সপ্তাহে সপ্তাহে হাট বসিয়া থাকে। কোন কৌন স্থানে বার্ষিক মেলাও হইয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে উদলপ্তরির মেলাই প্রধান। এখানে ভূটিরারা ছোট ছোট ঘোড়া পেনি), কম্বল, লবণ, সোম, স্বর্ণ, লাক্ষা প্রভৃতি বিক্রিয় করে।

বৃদ্ধপুত্র নদীবারা স্থানার সকল সময়েই যাতায়াত করা যায়। এছাড়া এখানে যাতায়াতের অফ উপায় বড়ই কম। আসাম রাস্তা (Assam Northern Trunk Road) নামক একটা প্রাপ্ত রাস্তা দরকের এক প্রাপ্ত ছইতে অফ প্রাপ্ত পর্যান্ত প্রায় ১৪৩ মাইল গিয়াছে। আসাম-বল-রেলপথে (Assam Bengal Railway) এ প্রাদেশে যাতায়াতের কতকটা সুবিধা ছইতেছে।

এখাদে ৬টা থানা আছে। তেজপুরে জেলার গদর,
ম্যালিষ্ট্রেটের আদালত ও অতাফ কর্মচারীর কার্যালয় আছে।
বালালার অতাল প্রদেশের ফায় এখানে শিক্ষার বিস্থার
হয় নাই। তেজপুরে একটা গবর্মেন্ট ইংরাজী বিদ্যালয় এবং
মিশনবিশের একটা নর্মালকুল আছে।

স্বিরাম জ্বু, আমাশয় প্রভৃত্তি এথানকার সাধারণ পীড়া। বসস্তরোগ প্রায় প্রতি বংসরই হইয়া থাকে। এখানে ২টী শাত্তব্য ঔষধালয় আছে।

দর্কিরি, আসাম প্রদেশের গারো পাহাড়ের অন্তর্গত একটা গ্রাম। সোমেশরী নদীতীরে, অক্ষা ২৫°, ৪৬ উ: ও জাঘি ৯০° ৫৬ পৃ:, ইহার নিকট ১০ মাইল দীর্ঘ ও ও মাইল প্রস্থ একটা স্থানর ক্রনার ক্রমি আছে। এখান হইতে বিশ্বর ক্রনা উৎপদ্ধ হয়।

দর্কা ( আমবী ) বার, কণাট। দরকী ( পারসী ) স্চীকর্মজীবী।

দরঠাত্রণ (দেশজ) বিজের জবেরর মৃল্যানিরপণ।
দরি (পুং জা) দু বিদারণে জনি (দৃণাতেরপানি:। है।
২০০৩) কুল জল, ভালন, নদীর তীর ভালিয়া যাঞা।
পর্যার কুলহও, কুলতওুল। (ভ্রিপ্রযোগ)

দর্থ (পুং) দু-বিদারণে অথ। > দিক্সমূতে অসরণ। ২ পর্_। (উজ্জন)

দরদ্ (খ্রী) দৃনাতি দু-বিদার্থ আদি শ্লতস্ হিন:। উণ্ ্১।১২৯) ২ অজি, পর্বত। ২ প্রপাত। ৩ ভর। ৪ রেছ-জাতি। ৫ দেশবিশেষ। ৬ তীর।

দরদ (রী) দর দিবং দায়তি শুধাতীতি। দৈ-ক। হির্দ্
পর্যায় দরদ; স্লেচ্ছ, চিআদ ও চুর্ব পারদ। দরদ তিন ভাগে
বিভক্ত—চর্মার, শুক্তৃগুক ও হংসপাদ, ইহারা উল্লোড্রর ব্রধাক্রমে শুণদায়ক, অর্থাৎ চর্মার অপেক্ষা শুক্তৃগুক
গুণদায়ক, শুক্তৃগুক অপেক্ষা হংসপাদ অধিক গুণদায়ক।
চর্মার খেতবর্গ, শুক্তৃগুক পীতবর্গ, এবং হংসপাদ লবাপুল
সদৃশ লোহিতবর্গ। হংসপাদ হিঙ্গুলই সর্কোৎকট। ওবং
দরদ (হিঙ্গুল) ব্যবহার ক্রিতে হইলে হংসপাদই প্রদর্গ
শোধিত হিঙ্গুলের গুণ—তিক্তা, ক্রায়, কটুরস এবং চ্ছ্
রোগ, কফ, পিত্ত, জ্লাস, কুন্ঠ, জ্বর, কামলা, প্রীহা, আম্বার
গুগরদোধনাশক। হিঙ্গুল মারিয়া উর্জ্পাতনের নিয়্মান্সারে
ডুমকুবল্পে পাক ক্রিয়া যে রস প্রস্তুত্ত হয়, তাহা স্বভাবরই
বিশ্বজ্ব—স্থতরাং তাহা শোধন ক্রিবার আবশ্রক নাই।

শরদ শোধন বিধি—মেনী হ্রা ও অন্নবর্গ দারা ব্যার গারিব সাতবার ভাবনা দিলে হিঙ্গুল শোধিত হইবে। হিঙ্গুল হইবে রস বাহির করিতে হইলে কাগজীনের অথবা নিষ্ণরে রস দারা এক প্রহর কাল হিঙ্গুলকে পেষণ করিবা গারিবে ন্তায় উর্জ্পাতন করিবে। অনস্তর উপরিস্থ গার্মারণার গ্রহণ করিবে। ইহা শুদ্ধ ও হিতজ্ঞাক, স্প্রস্থাং বৃদ্ধ কার্যাই প্রয়োগ করা যাইতে পারে। (ভাবপ্রাং)

রসেজসারসংগ্রহে এইগ্রপ হিলুল হিলুল, তবত্ত^{ব ব}রসগ্রক নামে বণিত আছে। রসেজসারসংগ্রহের মার্চ শোধনপ্রণালী—হিলুল, অমবর্গে পেষণ করিরা ধূর্ব হুরে, সান্তবার প্রেষণ করিলে শোধন হর। প্রকারাজানির হুরের সাত্তবার ও অমবর্গে সাত্তবার ভাবনা হিলেও বিশাধন হয়। অনারপ—ভাষীর নেবুর রসে হোলবর হুর পাক করিয়া অমবর্গে সাত্তবার ভাবনা হিলে বিভাগীর সাক্তবার আভাবন্ধ বিভাগীর সাক্তবার আভাবন্ধ বিভাগীর

পেকা শ্রেষ্ঠ। বিশুদ্ধ হৈছে ও কুঠহারক, কটিকর, ব্যুপ্তার, মেধা ও অধিবর্জক। (রসেক্সারসংগ্রহ)

[श्चिम (मथ।]

(জি) দরং ভরং দদাভি দা-ক। ২ ভরদারক। ও দেশবিশেব; এই দেশ ঈশানকোণে অবস্থিত। (রৃহৎসং ১৪ অং)
দরদ: দেশবিশেবং, সোহভিজনোহস্ত, তম্ম রাজা বা অণ্,
বচ্বু অণোলুক্। ৪ দরদদেশবাসী। ৫ দরদদেশের রাজা।
দরদ দেশবাসী অর্থে দরদ শব্দ বহুবচনাস্ত, কিন্তু আর্থপ্রেরোগে
কোন কোন স্থলে একবচনাজ্ঞ দেখা বার। যথা—
শোবরালী দ্বদেশ বিদেহাধিপভিত্তথা।" (ছরিবং ৯১ অং)
৬ সেড্জোভিভেদ; এই জাভি প্রথমে ক্রির ছিল, পরে
বুবলর প্রাপ্ত হারাছে। [দারদ দেখা]

শনকৈন্ত ক্রিয়ালোপাদিমা: ক্রিয়কাত্র:।
ব্রলজং গতা লোকে ব্রাহ্মণাদর্শনেন চ ॥
পৌগুকান্টোডুক্রবিড়া: কাবোলা: জবনা: শকা:।
পারদাপহুবাশ্টীনাং কিরাতা দ্রদা: থশা:॥"

( মহু ১•।৪৩-৪৪ )

পৌপুক, ঔডু, দ্রাবিড়, কাষোল, জবন, শক, পারদ, পক্ব, চীন, কিরাত, দরদ এবং থশ এই সকল দেশোম্ভব ক্ষরিরেরা উপনয়নাদি সংস্থারাভাবে এবং যাজন, অধ্যাপন প্রভৃতি অভাবে ও ব্রাহ্মণদিগের দর্শন না পাওয়ার জন্ত ক্ষমশং শুদ্রত্ব লাভ করে।

দরদ্(পারণী) > বাতনা। ২ সহাযুভূতি। দরদর (দেশজ ) ঝর ঝর।

দরদা^{°(} পারসী) সহাস্তৃতিসম্পন্ন। ব্যথার বাধী। দরধ্রণ (দেশজ) বিজেয় জবোর মূল্য হির করা, দাম করা। দরপেশ্^{°(} পারসী) সমূথে উপস্থিত।

দরবর (পুং) দরেষু শতেষ্যুর বেরঃ শোঠঃ। পাঞ্জকত শকা। "নগোদরবরং তেবাং বিযাদং শময়লিব।" (ভাগং ১৷১১৷২)

দরবাজা (পারসী) বার।

म्द्रवान् (शादनी) **चात्रत्रक्**रः (चौवादिकः।

দর্বার (পার্নী) রাজকীয় • সভা, মজলিস্, রাজা পাত্রমিত্র া^{ট্রী।} যে হলে বসিরা রাজকীয় কার্য্য সমাধা করেন, তাহার শাম দর্বার ।

দর ভাঙ্গা ( বারভাঙ্গা) বাঙ্গালা প্রেসিডেন্সির পাটনা বিভাগের শত্তপত একটা জেলা। পুর্বেইহা তিহত জেলার অস্তভূক্তি হিল। ১৮৭৫ খুইাফে জানুরারী মাসে তিহত জেলাকে বিভাগ করিরা অভন্ত হুইটা জেলা করা হয়, সেই সময় তিহত জেলার পুর্বাংশহিত দুরভান্য, মধুবুনী ও ভালপুর এই উপ- বিভাগ দইরা দরভাকা কেলা গঠিত হয়। এই কেলার উদ্ভারে
নেপাল রাজ্য, পূর্বে ভাগলপুর, দক্ষিণে মুক্লের ও গদাসদী
এবং পশ্চিমে নজঃকরপুর,জেলা। ইহার দৈব্য ৪৮ জোল।
লোকসংখ্যা ২৬০০৪৪৭। এখানে সুসলমান অংগজা
হিন্দুর সংখ্যাই অধিক। এই জেলার ভূভাগ নদীমাভূক,
স্থানে স্থানে বসতি আছে। আমবন 'ও বালবাগান বথেই,
এতভিন্ন বহবিভূত ধাক্তক্তেও দেখা বায়।

বাঘমতী, গওক, ছোট গওক, করাই, কমলা, তিলজুগা প্রভৃতি নদীই প্রধান। ২০ বর্গমাইল পরিমিত ভালবড়েলা এই जिनाइ ध्रमान इप वा विन। अहे जिनाइ करइक প্রকার দীর্ষর্ম্ব ধান্ত হট্রা থাকে। তল্মধ্যে এবারিয়া ও সিক্ড়া প্রধান। ইহার বিচালী ৯ হইতে ১২ হাত পর্যা**ত লয়। ब्यु, अथारन राष्ट्रार्थरावव्य मर्था (कर्न मध्**रे क्ष्यान। अहे खनाय थाम, ভिनि, नीन, नर्षभ, ভाমाकू, कनाई ७ माँक· আৰুৰ ভাষ মূলাদি জলো। আ্লীপুর পরগণায় সর্বাপেকা ধাঞ্চের চাব অধিক হয়। নীলের ব্যবসায় যুরোপীয়গণের একচেটিয়া, আর চিনির ব্যবসায় দেশীয়দিগের একচেটিয়া। তালপুরের অন্তর্গত পুসা নামক স্থানে তামাকুর কুঠি স্থাপিত হইরাছে। মুরোপীর ও আমেরিকা ক্লবিপ্রণারী অন্ত-সারে এথানে তামাকুর চাষ ও চুরুট তৈয়ারি হয়। এই জেলার মধুবনীতে একটা সংস্কৃত বিভালয় আহাছে। জল ছাওয়া মাঝামাঝি। জ্বই এথানকার প্রধান ব্যাধি, এক প্রকার লাগিয়াই থাকে। ৪।৫ বৎসর অস্তর ওলাউঠার প্রাহ্রজাব হয়। বসস্ত বড় একটা হয় না।

দরভালা উপবিভাগে একটা দেওয়ানী ও ৫টা কৌজদারী আদালত এবং তিনটা থানা আছে। দরভালা সহর
১২০০ ১০ হ' উ: অক্ষাণ ও ৮৫° ৫৬ ৩৯ পুর্ব্ধ জাষিমার,
ছোট বাঘমতী নদীর পুর্বতীরে অক্ষতিত। বিহার প্রদেশের মধ্যে ইহাই তৃতীয় সহর। এই সহরে লোকসংখা
৭৩,৫৬১; হিন্দুই বেশী। সহরে মিউনিসিগালিট আছে।
এখানে অনেকগুলি বড় বড় মনোহর পুক্রিণী আছে।
তন্মধ্যে তিনটা একস্ত্রে অবস্থিত, একতা তিনটার দীর্ঘ্তা
প্রায় ৪ হাজার হাত।

দরভালা সহরটী সন্তবতঃ মুসলমানু নগরী ছিল।
কেহ কেহ বলেন, দরভালা বাঁ কর্তৃক ইহা হাপিও হয়।
কেহ কেহ বলেন, বারবদ শক হইতে বারভালা হইরাছে।
অসংথা পুদরিণী দেখিরা আনেকে বলেন, সেনানিবাস
ভাপনের অন্ত প্রচুর মৃত্তিকা তুলিয়া ক্রমায় এই সকল
পুদ্রিণী হইরাছে। সহরের চতুর্দিকে জমী বড় নাবাল,

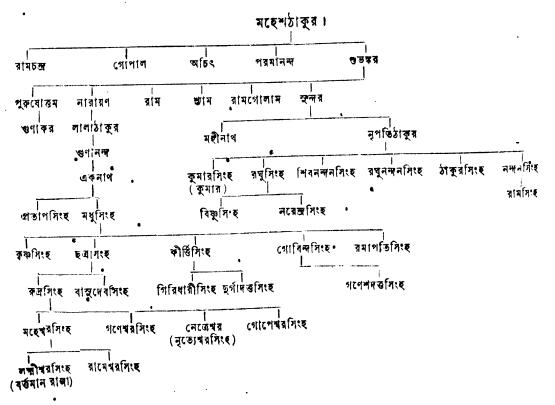
ৰাধ্যতী ও ক্ষণার প্লাবনে ডুবিয়া যায়। বাজার খুব বড়।
ছাট প্রভাহ হয়। ত্রিছত টেট রেলভুয়ে গলাভীরবর্তী
ৰাজিতপুর হইতে আসিয়া দরভালা সহরে মিশিয়াছে।
বাজিতপুরের সম্প্রে ইট ইভিয়ান রেলওয়ের বাড় নামক
টেশন। দরভালা ষাইতে গইলে লোকে বাড় হইতে জাহাজে
বাজিতপুর যায়। তাই সহর হইতে সর্বপাদি তৈলকর বীজ,
মুত ও কাঠ রপ্তানী হয়।

ইতিহাস।—আহেশ ঠাকুরের পিতার নাম ছবে ঠাকুর ও পিতামহের নাম টাদ ঠাকুর। ইনি মধ্য ভারতের খণ্ডবালা কুলোছব শ্রোত্রিষ বান্ধণ। ইনি তীরহুতে আসিয়া ভবসিংহ দেববংশীয় রাজগণের পৌরোহিত্যে করেন। ভিবসিংহ দেবের বিবরণ মিথিলা শব্দে দুইবা।

রঘুনন্দন রায় নামক একজন মৈথিল আহ্মণ মহেশ ঠাকু রের ছাত্র ছিলেন। দরভাদার অন্তর্গত গৌড় পরগণার মধাগত রামপুর গ্রামে রঘুনন্দনের বাস ছিল দি দিলীর স্ত্রাট্ অক্বর সকল ধর্মের কথাবার্তা শুনিতেন। সেই হতে রঘুনন্দন অক্বরের সভায় উপস্থিত হন। রঘুনন্দন অক্-বরের সভায় শাস্ত্রীয় তর্কে জয়লাভ করেন। অক্বর সম্ভই হইকা ৯৬৫ কসলী ২৪এ চৈত্রে (১৫৬৮ খুটাকো) রঘুনন্দনকে

পঞ্জিত বেতাৰ ও ভীরহুভের অন্তর্গত হাতী পরগণায় <u>:ম্বর্</u> দারী প্রদান করেন। রতুনন্দন পণ্ডিত দিখিলরে ব্_{রিপ্ন} इहेशाहित्नन, कारकहे जिनि सभीमात्री त्रांशिष्ठ हेस्कू क हहेता । না। তিনি দেশে আসিরা মছেশঠাকুরকে গুরুদক্ষিণাখরণ क्यीतादी आतान करतन। मर्हन अध्ययकः नानश्रह करत নাই, শেষে বাধ্য হইয়া শিষ্যের বাসনা পূর্ণ করেন। _{বিশ্ব} विषय निर्मां हिलन विषय किन विषय किना विषय রঘুনন্দনকে প্রভ্যপ্র করেন। ইহার পরই ১৫৫৮ খুটাছে मत्हरणत मुक् इत्र । त्रपूनसन निधिकास वहिर्गठ हरे_{ही}. ছিলেন, তিনি আর গুরুদত্ত ধনজোগের জন্ত ফিরেন নাই. কাজেই মহেশের বিতীয় পুত্র গোপাল ঠাকুর পিডার নামীয় দানপত্র বলে সম্রাট্ দরবারে হাতী পরগণার বন্দোবস্ত করিঙে निल्ली यान । , निल्ली मत्रवाद्यत विवादत मट्टरमत चक मानाव হয়। গোপাল অংমীদারী বন্দোবস্ত লাভ করিয়া আদিবায় সময়ে (১৫৮৫ খুষ্টাব্দে) কাণীতে স্বৰ্গলাভ করেন। এই সময় টোডরমল 'আসল জমা তুমারী রকবা' প্রস্তুত করেন। গোপালের সময়েই দিল্লী হইতে দরভাঙ্গার একজান ফৌক দার নিযুক্ত হন।

দরভাকার প্রকাদিণের প্রথম ভূদম্পতি হাতী প্রগণার



পরিমাণ ২১৭৩৪১ বিখা। এই পরগণার ভবারা গ্রামে মছেশ ঠাকুরের বংশধরেরা বাস করিতেন। অক্বরের সমর এই ভবারা গ্রামে বালালার স্থবেদার অলালুদ্দীনের নির্মিত এক মদলিদ বর্তমান আছে।

দরভাকা জেলার প্রায় ঃ স্থান এখন দরভাকারাজের অধিকারভূক হইরা আছে।

মহেশ ঠাকুর অমীদারী প্রাপ্তির সঙ্গে সংকেই 'সাত্ই' কর গ্রহণের অধিকার প্রাপ্ত: হুন; কিন্ত ১৭৮৯ খুটান্দে কালে-টার সাহেবের শিথিত বিবরণে জানা বার যে, তথন ১৭২৭ খুটান্দ পর্যান্ত মহেশের বংশধরেরা ঐ রূপ করগ্রহণে অধি-কারী ছিলেন না, কিন্ত ১৭২৮ খুটান্দে মহন্বতজ্ঞকের স্থ্বা-দারীর সমর্থ করগ্রহণক্ষমতা ইহাদিগকে দেওয়া হইরাছিল।

১৫৫৮ খুঠালে মহেশ ঠাকুর পাঁচটা পুত্র রাথিয়া পরলোক গমন করেন। জ্যেষ্ঠ পুত্র রামচক্র ঠাকুর অবিবাহিত অবহায় কালগ্রাসে পত্তিত হন। বিতীয় গোপাল ঠাকুর কিছ্দিন অমীদারী ভোগ করিয়া কাশীবাসী হন ও ১৫৮৫ খুঠালে অর্গত হন। তৃতীয় অচিৎ ঠাকুর (অজিত বা অচ্যত ?) অপ্ত্রক মৃত হন। চতুর্থ পরমানল ঠাকুর মধ্যম লাগর পর অমীদারী ভোগ করেন, কিন্তু অপ্ত্রকাবহায় ইংলীলা সম্বর্গ করেন। তৎপরে পঞ্চম শুভঙ্কর ঠাকুর অমী-দারীর অধিকার প্রাপ্ত হন; ইহার ১৬০৭ খুটালে মৃত্যু হয়। দরভালার বর্ত্তমান রাজগণ এই শুভক্রের বংশোৎপর। প্র প্রায় ইহাদিগের বংশাবলী প্রদেত্ত হইল।

ুভভকরের মৃত্যুর পর পুরুষোত্তম পিতৃসম্পত্তি প্রাপ্ত হন। ১৬৪২ খৃষ্টান্দে তাঁহার মৃত্যু হইলে তাঁহার সর্বাক্তি ভাতা স্নর ঠাকুর সম্পত্তি অধিকার করেন। ২০ ব**ংসর রাজ্য**-ভোগের পর অ্বনর ঠাকুরের ১৬৬২ খুষ্টাবেদ মৃত্যু হয়। ইহার মুহার পর ইহার জ্যেষ্ঠ পুত্র মহীনাথ ঠাকুর রাজ্যাধিকার করেন। ১৬৮৪ খুষ্টাবেদ মহীনাথ অপুত্রক অঁবস্থায় মৃত হইলে, কনিষ্ঠ ভাতা নুপতি ঠাকুর রাজ্যাধিকার প্রাপ্ত হুন। ১৭০০ খুটালে নৃপতি ঠাকুরের মৃত্যু ছইলে, ভাঁহার বিভীয় পুত্র বিগুলিংহ রাজ্যাধিকার করেন। তদানীস্তন স্থাদার মহব্বত-জনকে উপযুক্ত নজর দিয়া রঘূসিংহ 'রাজা' উপাধি লাভ ^{ক্}রেন এবং বার্ষিক লক্ষ টাকা ক্রেরে সরকার ত্রিহতের মক-ররি জমা গ্রহণ করেন। নবাব মহক্তের দেওয়ান রাজা ধরণী-• धर्रिक आंत्र ८० होस्रांत्र ठीका नस्त्रांशा निर्देश निर्दिश सभी-^{দারী} ভোগের ব্যবস্থা করিয়ালরেন। রঘুন্তন জমীদারী ও রাজা উপাধি পাইয়া তাঁহাদের বংশগত "ঠাকুর" ^{উপাধি} ত্যাগ ক্রিয়া রালকোধক 'সিংহ' উপাধি গ্রহণ

করেন। কিছুদিন পরে রাজা রঘুসিংছের পিতামহ স্থদর-ঠাকুরের বিতীয় ভাভা নারায়ণ ঠাকুরের প্রপৌত্র একনাথ ঠাকুর ইহার শত্রুভাগাধনে প্রবৃত্ত হইলেন। ভিনি নবাব गरुक्क जनक जानाहेलन (य, ताजा तपूजिः रू न्क ठाका করে যে সরকার ত্রিস্ত ভোগ করিতেচ্ছেন, এখন ভাহাতে १ ७। जात्र त्कि स्टेजारकः। वास्त्रविक ১৬৮৫ शृहीरकः সরকার ত্রিছত ইইতে ৭৬৯২৮৭ টাকা রাজত্ব আদার হইত। নবাব এই সংবাদে তৎক্ষণাব বিছতে উপশ্বিও হইলেন ও রাজা রঘুর সম্পত্তি অধিকার করিয়া তাঁহার পরিবারবর্গকে বন্দী করিয়া পাটনায় দইয়া গেলেন। রাজা রঘু প্রায়ন ক্রিলেন। নবাব তাঁহাকে ধ্রিতে লোক নিযুক্ত করিলেন। কিছু দিন পরে তিনি নিজেই আসিয়া ধরা দিলেন ও ক্রমে ন্বাবের প্রসাদ লাভ করিয়া পুনরায় স্বরান্ধ্যে প্রতিষ্ঠিত হইবেন, কিন্তু এবার তাঁহার সকল ক্ষমতা লুপ্ত হইল। তিনি সরকার ত্রিছতের তহসীলদার মাত্র হটুয়া त्रशिलन, তবে कामकथानि काम 'ननकत्र' भारेलन এवः मत्रकात जिल्ला विवासी कार्या कतित्वन, श्रकात कहे न्व করিবেন ও দেশের উন্নতি করিবেন স্বীকার করায় 'সাহুই' কর গ্রহণে অধিকার পাইলেন। রাজা রঘু জীবনের 🗪 ব-শিষ্টকাল এই সকল স্বত্ত প্রতিপালন করিয়াছিলেন। ১৭৩৬ খৃষ্টাব্দে তাঁছার মৃত্যু হয়। তাঁহার জোর্চ পুত্র বিষ্ণু-সিংহ পিতৃ **অধিকার প্রাপ্ত হন, কিন্তু** অপুদ্রকাবস্থায় ১৭৪• খুষ্টান্দে পরলোক গমন করেন। ইহার ভাতানরেজ্রসিংছ পৈতৃক সম্পত্তি অধিকার করেন। ১৭৫৪ খৃষ্টান্দে নবাব আলীবৰ্দী থাঁ তাঁহাকে কয়েকটী বিষয়ে "দল্ভরাৎ" আদায় कतिवात कथिकात श्रामान करतन।

• নরেক্সুনিংহ এই অধিকার পাইয়া প্রতি আসল মৌজার

'দেরিহ্ দিহ্' অর্থাৎ ১৪০ টাকা, প্রত্যেক কর্লিয়তের
প্রত্যেক টাকায় এক আনা, প্রত্যেক কর্লিয়তের টাকায়
শতকরা ২ টাকা হল এবং নিজ জমীদারিতে শতকরা
১০ টাকা মালিকানা আদায় করিতেন। ১৭৬০ খৃষ্টাকে
রাজা নুরেক্রের অপুত্রকাবয়ায় মৃত্যু হয়। তিনি পুর্কোক্ত
একনাথ ঠাকুরের জোর্চপুত্র প্রতাপকে দত্তক প্রহণ করিয়া
য়ান। এই সময় পর্যান্ত মধুবনীর নিকট্ট ভাবরা নামক্
য়ানে রাজপ্রানাদ ছিল। এখনও সেখানে মুগায় হুর্লের
ভয়াবশেষ আছে। এই হর্গ রাজা রঘু প্রস্তুত করাইরাছিলেন।
প্রতাপ রাজা হইয়া ১৭৬২ খুটাকে দরভালায় প্রানাদ
নির্দাণ করান। এখনও সেই প্রানাদ বর্ত্তমান আছে ও
দরভালারাজপরিবার এখনও সেইখানে বাস করিতেছে।

নবাব কাদিম আলী বাঁ রাজা প্রতাপদিংহকে "দাছইকর" গ্রহণের অধিকার প্রদান করেন, কিন্তু ইংরাজ পাবর্মেণ্ট ১৭৩২ খুষ্টাব্দে "ননকর" আমগুলি, "দস্তরাৎ" গ্রহণের অধিকার ও মালিকানা আদায়ের অধিকার ফিরাইয়া লয়েন এবং রাজা নরেক্তের রাণীকে গ্রাসাচ্ছাদনের জন্ত ১০ খানা গ্রাম, রাজা প্রতাপের ভ্রতি মধুনিংত্রে জন্ত ২ থানা গ্রাম ও वाबादक मानिक > हाबाव हाका मान करवन। ১११७ • খুষ্টাব্দে রাজা প্রতাপের অপুত্রকাবস্থায় মৃত্যু হইলে, তাঁহার ভ্রাতা মধুদিংহ ,রাজা হন। ৬ বৎসর পরে তাঁহার সহিত সরকার ত্রিছতের অধিকাংশ বন্দোবস্ত করা হয়। মধুসিংহ এতে বড় রুহৎ জমীদারী শার্দনে সম্পূর্ণ সমর্থ ছিলেন না। রাজা মধুসিংহ রাজ্যলাভ করিয়া ইংরাজরাজের নিকট দস্ত্রাৎ আদায়ের ক্ষমতা ফিরিয়া পাইবার অভ্য আবেদন করেন। তিনি বলেন, তাঁহার নিকট প্রাপ্য টাকা বাকী পড়ায় ইহা কাড়িয়া লওয়া হইয়াছে, স্থপ্রীম কাউন্সিল ইহার অন্থ मस्तान कतिएक চाहित्म. बाका मधु मननामि तप्थाहेत्क অন্বীকার করেন। তিনি বলেন, কামুনগোর হিসাব দেখি-লেই ইহার সমস্ত মীমাংশা হইবে। এতত্তির তিনি দস্তরাৎ জাদীয়ের ক্ষমভালোপের বংশর হইতে এ পর্যান্ত তাঁহার ' যত টাকা ক্ষতি হইয়াছে, তাহার একটা তালিকা দিয়াছিলেন। যাহাত্টক ইংরাজ গ্রমেণ্ট তাঁহাকে ৮ বংসরের বাকী দ্স্তরাৎ হিসাবে পাটনার কোষাগার হইতে ১৯৩০০০ টাকা প্রদান করেন এবং ১৭৭১ খৃষ্টাব্দে গবর্ণর মিঃ ভ্যাক্সি-টার্ট দস্তরাৎ আদায়ের ক্ষমতার পরিবর্তে মাসিক ১ হাজার টাকা দিবার ব্যবস্থা করেন; কিন্ত ঐ বৎসরই নবেম্বর মাসে শুনা যায় যে, রাজা মধুসিংহ দস্তরাতের বন্দোরত্ত লিখিত কোন সর্ত্ত প্রতিপালন করিতেছেন না ( অর্থাৎ দেশের স্থবিচার करत्रन ना, रमत्भत्र केंद्रे मृत करत्रन ना ও रमर्भत्र जेत्रिक करत्रन ना), वतः श्रकात निक्रे इहेट क्या क्यी काष्ट्रिया नहेत्रारहन, এভদ্তিম তিনি বন্দোবস্তী সরকার ত্রিছতেও শৃঙ্খনার সহিত শাসন পালুন করিতে পারিতেছেন না। এই সকল ভানিয়া তাঁচাকে বলী করা হয়, কিন্তু পর বংসর আবার তাঁহারই স্থিত সরকার ত্রিছত বন্দোবস্ত করা হয়। এ সময়ে সর-কার ত্রিভতের কর°২৯৫১৮১_২ টাকা নিরূপিত হয়। রাজা মুক্ত হইয়া রাজ্যে আসিলেন, কিন্তু রাজ্বের কিন্তির টাকা বাকী পড়িতে লাগিল। কালেক্টর রিপোর্ট করিলেন। ১৭৮৯ খুপ্তানে স্থির হইল যে রাজার সহিত বন্দোবত রহিত করা হইবে। এই সময় দশশালা বন্দোবকৈর আয়োজন হইতেছিল। রাজা মধুসিংছ সে ৰন্দোবত্তের কর্ত্তব্য

সাধনে পরাব্ধ হইয়া এক আবেদন করিলেন যে, বঙ দিঃ ইংরাজ-রাজ তাঁহাকে সরকার ত্রিছতের মকরির বলো_ই এবং মালিকানা ও দস্তরাৎ जानाष्ट्रित क्रमका ना निर्वन, छत দিন তিনি কিছুই করিবেন না। কাজেই গ্রণ্_{রজেনারেন} ১৭৯ थृष्टीत्य तालात अभीनाती श्रीन क्रत्य छेकीन् १ वन কৎ-উল্লা থার সহিত বন্দোবন্ত করিলেন। অব্_{শেষ} त्वार्ष्डत विहादत त्राका मधु मानिकाना ও प्रस्तुतार याहा. রের ক্ষমতা ফিরিয়া পাইলেন, কিন্তু অমীদারী _{ফিরিয়া} প।ইবার অভ ষড়যর করিতে লাগিলেন। ১৭৯১ গুটাকে . नटवचत्र मारत करम्ब-जेकीन् निवाश्य ছाजिया निराम । हिन वरनन, तांका मधूनिः एइ अर्तताहनाम कान धका शाबना मिटक চাटर ना । काटमरे काटमकेत वांधा स्टेशा क्राइत উদ্দীনের পরিত্যক্ত অংশ রাজা মধুর সহিত বন্দোবত্ত করি বেন স্থির করিলেন। বরকৎ-উল্লাখাও এই সময় বাটার চার হইতে পড়িয়া গিয়া মৃত্যুমুথে পতিত হওয়ায় ও তাঁল্ল উত্তরাধিকারীরা অমীদারী রাথিতে স্বীকার না করার জন भिष्ठे अभीनात्री अ ताका मधुत महिल वत्नावर कतिवात कथा হইল; কিন্তু রাজা আলীপুর পরগণা ও সরকার তিত্তে मकत्रति समा ना शाहरन वत्नावछ कत्रिक अधीकुछ इहेरनम কালেক্টর কাজেই ১৭৯৩ খৃষ্টাব্দে কতকগুলি ঠিকাদারের সহিত ৭ বৎসরের জন্ত বন্দোবস্ত করিলেন। তংগ্রে কালেক্টর পুদরায় রাজার সহিত তাঁহার মালিকানা ঃ मखता पारत ३७५००७ होकांत्र समीनाती वरनावरत्वत्र वर्ष ুপাড়িলেন। **রাজা প্র**থম**তঃ আরও ৬ হাজার টাকা কু**মাইবার চেষ্টা করেন, কিন্তু শেষে ১০ হাজার টাকা বৃদ্ধি দিয় জমীদারীর ভার গ্রহণ করেন।

১৮০৮ খুণ্ডাকে ৫টা পুত্র রাখিরা মধুদিংহ প্রবাদি গমন করেন। ব্লোষ্ঠপুত্র ক্ষণ্ডাংহ অপুত্রকাবহার মৃত্ হন, বিতীয় ছঙাদিংহ রাজা হন। ১৮০৯ খুণ্ডাকে ছত্রসিংহা মৃত্যু হয়। ইনিই সর্বপ্রথমে মহারাজ উপাধি বাবহার করেন। ছত্রসিংহ জীবদশার সমৃত্য সম্পত্তি জ্যেষ্ঠ পুত্র হয় সিংহার হত্তে সমর্পণ করেন এবং কনিষ্ঠ বাস্থদেবকে জ্যাদি প্রগণা, ৪ খানি বাজা, ২টা হত্তী ও রাজপ্রাসাদে করেনী গৃহ প্রদান করেন। ছত্রসিংহ স্বীর ত্রাভূপণের মধ্যে কীর্ত্রিক পর্যণা জ্বদী, গোবিন্দকে প্রগণা পাহাজ্পুর এবং রত্তু বির্বাণ তিনি জীবিদ্ধার করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন করেন। তিনি জীবিদ্ধার করেন নাম বসাইর দিয়া যান। পিতার মৃত্যুর পর বাস্থদেব অর্থ্রেক রাজা পানিবার জ্বল্প ক্রেন, বিশ্বার বিশ্বার স্থান করেন, বিশ্বার বিশ্

মোকদ্মার পরাক্ত হল। পরে আপীল করেন, তাহাতেও হারেন। মহারাজ ক্তুসিংহ ১৮৫০ খুটাকে অর্গ গমন করেন। ব্রাহার পূত্র মহেশর সিংহ রাজা হন। ১৮৬০ খুটাকে ব্রার্গরের মহেশরের সূত্র হর। এ সময় মহেশরের পূত্রহর লল্লীখর ও রামেখর নাবালক ছিলেন; কাজেই সম্পত্তি কোর্ট অব্ ওয়ার্ডসের অধীন হয়। এ সময় অমীদারীতে আয় ১৬ লক্ষ টাকা, কিন্তু দেনা ৭০ লক্ষ টাকা ছিল, বন্দোবন্তও ভাল ছিল না।

দরভারার জমীদারী ত্রিছেড, মুলের, পূর্ণিরাও ভাগলপ্রে অবস্থিত। ত্রিছেড জরাইল, হাটিও আলীপুর পরগণীর,
ভাগনপুরে বাচৌর, ত্রিছেড ও নারাদিগা পরগণার, পূর্ণিরার
ধর্মপুর পরগণার ও মুলেরে হাবিলী ওড়গপুর পরগণার দরভালারাজের জমীদারী আছে। ধর্মপুর পরগণা ১৭৭৬
গৃষ্টাকে সন্ত্রাট শাহআলম্ রাজা প্রতাপসিংহকে দান করেন।
১২ বংসরে কোট অব্ ওয়ার্ডস্ ৭০ লক্ষ্ণ টাকা দেনা শোধ
করিয়া রাজ্যের আয় আয়েও ৪ লক্ষ্টাকা বৃদ্ধি করেন। এই
সন্ম লক্ষ্মীর্মিংহ সাবালক হইয়া অরাজ্যের ভার গ্রহণ
করেন। ইনি এখন গ্রণ্রজনারলের মন্ত্রীসভার সভা।
দর্মা (হিল্লী) ১ নল নির্ন্তিত মাত্রের, চাঁচ। ২ একপ্রকার নল।

নরমা (হিন্দী) ১ নশ নির্শ্বিত মাছুর, চাঁচ। ২ একপ্রকার নশ দরমাত্য (পারধী ) মাসিক বেতন।

নরমিয়ান্ (পারসী) মধ্যবর্জী।

नत्त्त्राङ्ग (भात्रमी) व्याङिमिन ।

নরবেশ, (দর—বার, বিহ্তান্ ভিকা করা)। মুসলমানদিপ্রের-ভিকোপজীবী ধন্মসম্প্রদার বিশেষ। প্রথমে এই
সম্প্রদার ধানশ শ্রেণীতে বিভক্ত ছিল। পরে, আর্ও বাড়িয়া
গিয়াছে। মুসলমানদের মধ্যে প্রবাদ আছে যে, ওবাইস্বিন্
আমার এই সম্প্রদারের প্রবর্তক। কিন্তু দরবেশের বর্তকান
বে সম্প্রদারগুলি সমগ্র মুসলমান রাজ্যে বিচ্ছিল ভাবে
বিহ্রাছে, ভাহারা বলেন বে, মস্ন্ধি-স্রিকের গ্রন্থক্তা
মোনবী-সম্প্রদার-প্রবর্ত্তক জালালউদ্দীন্ ক্রমি হইতে এই
সম্প্রদার প্রবর্ত্তিত হইয়াছে।

হৃদদ প্রদেশের দরবেশগণ ৬০ শ্রেণীতে বিভক্ত। ইহারা দেবানে অনেকটা প্রভুত্ব লাভ করিয়াছে। কনন্তান্তিনীপালর 'বতান্থি' বা 'বেক্তান্থি' নামক সম্প্রদার কোরাণের নিদিষ্ট নিরমায়সারে চলে না এবং মহম্মণকৈও ঈথর-প্রতিত বলিয়া দৃঢ়বিখাস করিতে চার না। তুক্তের রক্ষই মিক দরবেশগণ অত্যম্ভ আত্মনির্বাতন করেন। তাহারা দানিয়া নামে অভিহতে। ভারতবর্ষের অনেক দরবেশই চি বংশোত্তব ও অসক্তরিতা, ইহাদের অধিকাংশই বে-শরা

সম্পাদার জুক।, ইহারা সমরে সমরে হলেরির পশ্চিম প্রদেশ পর্যান্ত গদ্ন করিরা থাকেন। ভারতীয় ক্ষিরদের অবশিষ্টাংশ বা-সরা সম্প্রদার ভুক্ত। ইহাদিগকে স্লিক বলে।

विति-जेकीन्नाह सानादतत नामाक्ष्मादत क्त्रदरमञ्ज धक मञ्जादत सन्दिता नाम हरेत्रादकः विति-जेकीन् सानाद्यदक दक्र दक्र काम्मभा सानात्र अवनित्रा शादकः।

নক্সাবদিদ দরবেশগণ উছোদের ধর্ম ক্রম ছাব দিয়া বুঝাই-বার চেটা করেন। মেব্লেবিরে বা নর্ক দরবেশগণ অনেকটা শিক্ষিত। বে পর্বাস্ত তাঁছারা সাথা খ্রিয়া না পড়েন, সে পর্বাস্ত তাঁছারা খ্রিয়া খ্রিয়া নৃত্য করেন।

রটেরা দরবেশগণ ছুরিকাবারা তাঁহাদের শরীর ছেদন করেন, অলত অলার ভক্ষণ করেন, কাচ চিবাইরা থাকেন এবং এইরূপ অস্থাত উন্মন্ত সদৃশ কার্য্য করেন। তাঁহারা মনে করেন বে, এইরূপ কঠোর, কার্য্য করিলে ঈশ্রের সহিত পুনর্মাণিত হইরা বাইবেন্।

গুল্দীনিয়া দরবেশগণ সন্মূথে ও পশ্চাতে মন্তক দোলান এবং যে পর্যান্ত মূর্জিত চ্ইয়ানা পড়েন, সে পর্যান্ত আলা আলা করিয়া চিৎকার করেন।

দরসান (পং) দূ-বিদারণে দূ-অসানচ্। বোত। (উজ্জ্ব.) দরা (দেশকা) ছাতাপড়া, সড়া, বিশীর্ণ হওয়া।

मद्रारथ् ( भारती ) दृक्त विश्वय ।

দরাজ (পার্সী) বিস্তৃত, দীর্ঘ।

দরায়ুস্, মিসরের ফেরোরা শব্দের স্থায় দরায়ুস্ শব্দ ব্যক্তিগত নয়, উপাশ্লিগত। অনেক গুলি সম্রাট্ এই নামে অভিহিত। দরায়ুস্ (প্রথম) [অনভাষায় দার্যবুদ্] সাধারণত: Darius Hystaspes নামে অভিহিত। ইনি হয়ত্তাম্প নামক পারত্যের অনৈক সম্ভাত্ত লোকের প্রা

কথিত আছে, পারস্করাজ কাঁইরস্-পুত্র কামবাইসিসের মৃত্যুর পর আরদিস্ নামক পারস্তের একজন মত্ম (Magus) অভ্যারপুর্বক পারস্তের সিংহাসন অধিকার করেন। দরাযুস্ আর ছয়জন পারস্তের সন্ধান্ত লোক দলবন্ধ হইয়া এই আর-দিস্কে ইত্যা করেন। এই হত্যাকান্তের পর প্রশ্ন উঠে — পারস্তরাজ কে হইবেন । অই হত্যাকান্তের পর প্রশ্ন উঠে — পারস্তরাজ কে হইবেন । অই হত্যাকান্তের পর দিরীক্ত হয় বে, পরদিন স্থোটালয় কালে সাতজনই অখারাচ্ছইয়া একটা নির্দিষ্ট জানে উপন্থিত হইবেন। তথায় বাহার অখ প্রথম ছেবারব করিবে, তিনিই সিংহাসনাধিরাচ্ছইবেন। দরাযুসের ইবারিস্ নামে একজন বিশ্বন্ত ও বিচক্ষণ ভ্তাছিল। তাহারই কোশলে দরাযুসের অখই প্রথম শক্ষ করে। ঠিক এই সময় পরিকার আবাশে বিহাৎ প্রকাশ পাইল এবং

মেছগর্জন হইল। এই ঘটনা অবলোকন ক্রিয়া অন্তছ্মজন অবিলয়ে অর্থ হইতে অবতরণ করিয়া দরায়ুদের পদতলে গতিত হইয়া তাঁহাকে সমাট্ বলিয়া স্বীকার করিলেন।

এইরপে (৫২১ খুইপুর্বাঙ্কে) দরামুদ্ পারক্ত সিংহাসনে অধি-রোহণ করিলেন। 'আরবীর ব্যতীত এদিয়ার যে দমন্ত আতি কাইরস্ ও কামবাইসিদের বঞ্চতা স্বীকার করিয়াছিল, তাহারা সকলেই দরামুদের প্রভুত্ব স্বীকার করিল। সিংহা-সনাধিরোহণের পরই তিনি প্রথমে অতোষা ও অভিস্তোন নামী কাইরদের ক্সাভ্মকে বিবাহ করেন। তৎপরে কাইরস্-প্রাস্থারদিদের ক্সা প্রমিদ্ এবং ওটানিদ্ নাম্ক আর এক ব্যক্তির ক্সাকে বিবাহ করেন।

নিজ প্রভূত স্থাপন করিয়াই দরায়্ন্ প্রথমে একটা অধ্যুত্তি প্রস্তুত করাইয়া ভাছার উপর এইরপ লিখিয়া রাখিলেন—'হয়ভাস্পের পুত্র দার্যবুদ্ উহার অধ্যের চতুরভা এবং ইবারিষ নামক ভ্তোর তীক্ষ বুরিবলে পারস্তের দান্তাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।'

ইহার পর তিনি পারস্থ সাম্রাজ্ঞাকে ২০টা প্রদেশে বিভক্ত করিয়া এক একজন শাসনকর্ত্তার অধীনে প্রত্যেকটার নাম ক্ত্রপী (Satraphy) রাথিলেন। এই শাসনকর্ত্তাদিগের নাম ও ক্ষল্রপ হইল। প্রত্যেক ক্ষ্রপকে যে কর এবং সৈম্মদিগের ও রাজপরিবারের জন্ম যে সমস্ভ দ্রব্য দিতে হইবে, দরায়ুদ্ তাহাও নির্দেশ করিয়া দিলেন।

সারদিদের শাসনকর্ত্তা ওরিটাস্ বিনা কারণে কতকগুলি
সম্ভ্রান্ত লোককে নিষ্ঠুরভাবে হত্যা করায় দরায়ুস্ তাহাকে
শান্তি দিতে ক্ষতসঙ্কল হয়েন। ওরিটাসের বিরুদ্ধে সলৈত্তে
যাত্রা না করিয়া তিনি কৌশলে কতকগুঁলি লোক হারা
ওরিটাসকে বিনাশ,করেন।

ইহার কিছুকাল পরেই দরায়ুস্ একটা শিকারে বহির্গত হইয়া অখ হইতে অবতরণ করিবার সময় পড়িয়া যান এবং তাহাতে তাহার গোড়ালি ভগ্গ হইয়া যায়। ডিমবসিডিস্নামক এক জন চিকিৎসকের চিকিৎসায় তিনি আশ্চর্য্য রূপে আরোগা লাভ কুরেন।

দরাযুদ্ যথন কাম্বাইদিদের শরীর রক্ষক ইইয়া মিশরে গমন করেন, সেই সময় স্থামদের ছর্ত শাদনকর্জা পণিত্রিটিদের আতা দিলোদোন নামক এক বাক্তির গাত্রে এক থান ফ্রন্সর গাত্রাবরণ দেখিয়া তাহা ক্রয় করিতে অভিলাষ করেন। কিন্ত দিলোদেন মূলা না লইয়া দ্বাযুদ্ধেক তাহা প্রান করেন। পরে দরাযুদ্ পারত্তের দিংহাদনে অধিবাহণ করিনে দিলোদোন তাহার নিক্ট গমনপুর্কক পুর্ব

কণা স্থান করাইরা দেন। দরায়ুস্ প্রচুর পরিমাণে স্থান রোপ্যমুলা প্রদান করিতে চান। কিন্ত সিলোদোন স্থান করিতে চান। কিন্ত সিলোদোন স্থান করিতে আমাকার উলার প্রকি তাঁহাকে প্রদান করিবার জন্ম প্রথমিনা করেন। দরায়ুম্ চ্ছোহাতেই সম্পত হইরা ভাষস্ উলারার্থ ওটানিস্কে একান সৈন্ত সহ প্রেরণ করিলেন। ওটানিস্ সহজেই ভাষস ক্ষিকারপ্রকি তাহা সিলোদোনকে প্রদান করিলেন।

ठिक এই সময়ে বাবিলনের অধিবাসিগণ বিজোহী हत। দরায়ুদ্ এই সংবাদ পাইবামাত প্রভৃত গৈত গঁইয়া তাহা-निरंगत विकरक याजा कतिरमन धनः उथात्र উপन्दि हहे॥ নগর অবরোধ করিলেন। দিনের পব দিন ষাইতে লাগিল। কিন্ত বাবিলোনীয়দিণের বখতা স্বীকারে কোন চিহু দেখ যাইত না। এইরপে এক বংসর আটে মাস কাটিয়া গেন। म्यायुरमत সমস্ত কৌশলুই সতর্ক বাবিলোনিয়দিগের নিক্ট বার্থ হইতে লাগিল। অবরোধের বিংশক্তিমাদে যোপিয়াদ নামক দরায়ুদের একজন কর্মচারীর বুদ্ধিকৌশলে বাবিলন অধিক্ত হইল। য়োপিরাস্ তাঁহার নিজের নাসিকা ও ক **८इन्न कतिया वाविष्णानीयनिष्ठात निक्रे शमन करत्न अस** मत्रायुम् कर्ञुक उाहात এই एर्फ्ना ब्हेशाट्ड, এই कथा वरणना বাবিলোনীয়গণ তাঁহার কথা বিশাস করিয়া ভাঁহাকে ভাগ-দের ভার প্রদান করেন। যোগীরাম তথন স্বিধা বৃষিধ বিশাস্থাতকতাপুর্বকে দরায়ুসের হত্তে নগর সমর্পণ করি লেন। দরায়ুদ্নগর অধিকারপূর্বক ৩০০০ সম্রান্ত লোককে •নিহত এবং ছুর্গাদি ভূমিদাৎ করিলেন ( ৫১৬ খৃঃ পুঃ 🖫

বাবিলন অধিকত হইল; দরাযুদ্ স্কিদিয়া রাজা আফ্রাণার্থ উল্লোগ করিতে লাগিলেন। প্রায় ৭।৮ লক নৈর সংগৃহীত হইল। বন্দোরাদ্ উপসাগরের উপর একটা বাদ্ নেতৃ নির্মিত হইল। দরায়ুদ্ এই প্রভৃত দৈল্ল লইয় য়য় হইতে যাত্রা করিয়া কাঠদেতু লারা বন্দোরদ্ পার হইনের এখানে এই দেতৃনির্মাতা সামিয়াধীপের অধিবাদী মাণ্ডেলিক্ যথেষ্ট পুরস্কার প্রদান করিয়া প্রেসের মধা বাল গমনপূর্বক লানিয়ুব নদী পার হইয়া ভন নদীর দিকে গ্রন্থ করিতে লাগিলেন এবং অবদেবে স্কির্মার অভারর প্রবেশ করিলেন। স্কিনিরানেরা সম্মুধ্ যুদ্ধে প্রত্তুল নির্মা করিতে লাগিল। দরায়ুদ্দের থাত্তালি ক্রমেই রাগ বিলিত লাগিল। দরায়ুদ্দের থাত্তালি ক্রমেই রাগ বিলিত প্রত্তুল করিবার উল্লোগ করিতে লাগিলেন। তিনি তথন প্রত্তাশিক করিবার উল্লোগ করিতে লাগিলেন। শীক্তিত ও বিলিবার স্কিন্তির পরির্ত্তাপ করিতে লাগিলেন। শিক্তিত ও বিলিবার স্কিন্তির পরিত্তাপর করিবার উল্লোগ করিতে লাগিলেন। শিক্তিত পরির্ত্তাপর করিবার একারিন নিশাবোলের স্কিন্তির পরিতাপর পরির্ত্তাপর করিবার একারিন নিশাবোলের স্ক্রিকার করিবার করিবার স্কিন্তাপর পরির্বাধি একারিন নিশাবোলের স্ক্রিয়ার একারিন নিশাবোলের স্ক্রিয়ার একারিন নিশাবোলের স্ক্রিয়ার একারিন নির্বাধারের স্কর্মা

নিত ভাবে প্রভাবর্জন করিলেন এবং কাঠনেতু দারা
গদকোরাস্পার হইরা প্রেসের মধ্য দিরা ক্রমে ক্রমে এসিয়ার
দ্বভারত্তির প্রবেশ করিলেন। তিনি সমস্ত সৈম্ভ লইরা না
দ্বাসিয়া ৮০০০০ সৈভা মেলাবিজাসের অধীনে রাথিয়া এই
সৈত্তাধ্যক্ষকে প্রেস বিজ্ঞারের আদেশ দিরা আসেন। মেলাবিদ্বাস্ এ বিষয়ে কভকটা সফল হইরা ছিলেন। এইরুপে
ভারে ফিদিয়া-বিজ্ঞায়ের উভ্তম বিফল হইল।

পারতে প্রত্যাগমন ক্রিয়া দরাযুদ্ পূর্কদিকে সিদ্ধনী প্রাত তাঁহার প্রাধান্ত বিভার করিলেন।

৫০১ খৃষ্টপূর্বান্দে নক্সন্ দীপে গোলমাল ছইলে সন্ধান্ত লোকগণ এই প্রাদেশ পরিভাগে করিতে বাধ্য ছইয়া মিলিটি সের শাসনকর্তা অরিইলোরানের সাহাযাপ্রামী ছয়েন। অরিইলোরাস্ সার্দিশের শাসনকর্তা দরায়্সের ভ্রাতা আর্তাফারনিরের সাহাযা চাহিলেন। আর্তাফারনিস্ পারক্ত সমাটের সম্প্রিপ্রহণপূর্বক মেলাকেটিসের অধীনে তুই শত য়য় আহাজ প্রদান করিয়া মিলিটসে যাইয়া অরিইলোরাসের সৈত্ত লইয়া যাইতে আদেশ করিলেন। চারিমাস অবরোধের পব অরিইলোরাস্ যথন দেখিলেন যে তাঁহার খাদ্যাদি ক্রমেই ক্রাইয়া আসিতেছে এবং তাঁহার শোধ দিবার সাধ্য নাই, তথন তিনি আইয়োনীয়গণ বিজ্ঞাহী হইয়া সার্দিস্ নগর দ্যা করিলেন। আইয়োনীয়গণ বিজ্ঞাহী হইয়া সার্দিস্ নগর দ্যা করিলেন এবং মিলিটস্ দীপ শক্ত হন্তগত হইল (৪৯৪ খৃঃপুঃ)।

আথেন্দের অধিবাদীগণ এই বিদ্রোহে অরিষ্টলোরাদ্কে সাহাদ্র- করায় দরামূদের ক্রোধবহ্নি জলিয়া উঠিল। তিনি ডেটিদ্ ও আর্থানারনিসের অধীনে একদল সৈল্প আটিকাগীপে প্রেরণ করিলেন। স্থাসিদ্ধ মারাথন যুদ্ধক্ষেত্রে 
পারস্ট্রন্থ মিলটাইডিসের অধীনত্ব আথেন্সবাদী কর্তৃক 
সম্প্রিপে পরাজিত হইয়া এসিয়াতে প্রত্যাগমন করিল। 
(৪৯০ খৃ: পু:) দরামূদ্ আর একবার আথেন্স আক্রমণের 
অন্ত উল্লোগ করিতে লাগিলেন। কিন্তু যুদ্ধ আরম্ভের পূর্বেই 
তিনি ইহলোক হইতে অধন্যত হইলেন (৪৮৫ খৃ: পু:)।

দ্রাযুদ্ পারভারাজ্যের অন্নক উনতি বিধান করেন।
রাজকীয় সংবাদাদি প্রেরণ করিবার জায় তিনি নির্দিষ্ট
দ্র্গতান্সারে সমস্ত রাজ্যেই লেচক ধারা ডাক বসাইবার
ব্যবদ্ধা করেন।

• রাজা হইবার পূর্বে তাঁহার তিন পুত্র ছিল। রাজা ^{ইইবার} পর তাঁহার আর চারি পুত্র জলগুগুহণ করে। রার্স্ (হিতীর) ইনি সাধারণতঃ দরার্স্ অকাস্ বলিরা অভিহিত। ইনি **আর্ডা জরকেশের আরজ পুত্র। হিতী**র জরকেশ নিহত হওয়ার অব্যবহিত পরেই ইনি যাতক সল্-দিয়ানাস্কে সিংহাসন্চুতি করিয়া নিজেই পারস্ত সিংহাসনে অবিরোহণ করেন (৪২৩ খৃ: পূ:)।

ইহার ছই পুত্র ছিল। প্রথমটার নাম আর্ত্তা জরকেশ ও বিতীরের নাম কাইরস্ (Cyrus)। ইনি সম্পূর্ণরূপে খোরা-সান এবং ইহার জী পারিসেটিস কর্তৃক পরিচালিত হইতেন বলিয়া ইহার রাজ্যশাসন অ্চারুরপে ক্রিকাহিত হর নাই। অনেক ক্ষত্রপ রাজ্যবিদ্যোহী হয়। ইহাদের অধিকাংশই পরাস্ত হইয়া বস্তুতা স্বীকার করেন। ১০ বর্ষ রাজ্য করিয়া পরে ইনি ৪০৪ খুং পূর্বে পরলোক গুতু হন। ইহার পর ইহার পুত্র আর্ত্তাজরকেশ পারস্ত সিংহাসনে অধিরোহণ করেন।

দরায়ুস্ ( ভৃতীয় ) ইনি বিতীয় দরায়ুসের প্রপৌক্ত এবং এই
বংশীয় শেষ পারক্ত সমাট । ইনি ভৃতীয় আর্ত্তা জরকেশের পর
সিংহাসনে অধিরোহণ করেন (৩০৬ খুঃ পূঃ)। ইহার রাজবের
বিতীয় বর্ষে আলেক্সান্দার হেলেস্পন্ট পার হইয়া এসিয়ার
মধ্যে প্রথেশ করেন । দরায়ুসের সহিত আলেকসান্দারের
কয়েকটী য়ৃদ্ধ হয় এবং প্রত্যেকটীতে দরায়ুস্ পরাজিত হন ।
পঞ্চাশ বংসর বয়সে ইহার পরলোক হয় (৬১০ খুঃ পূঃ)।
ইনি ছয় বংসর কাল রাজত করেন।

**म्**त्रांव (हिन्मी) (थानक।

দর্ম (দেশজ) দর।

দরাল্ডা (দেশক) বৃক্ষভেদ। (Hedysarum Alhagi)
দরি (রী) (ত্ত্রী) দুবিদারণে ইন্ ভীষ্। > কন্দর।
২ তক্ষককুনুদাত সপভেদ। (ভারত আদি ৫৭ অং)
দরিত (ত্রি) দরো ভয়মতা সঞ্লাতঃ, দর-ভারকাদিশাৎ ইতচ্।
ভীতে।

দরিদ্র (পু:) দরিক্রাতি হুর্গজ্জতি দরিজা-অচ্ । নির্ধন।
পর্যায় — নিঃস্ব, ছবিধ, দীন, হুর্গত, কীকট, হুন্থ, অন্তমিত।
(দানধর্ম)

প্রপ্রাণের মতে, যাহারা আনবজন্ম পরিগ্রহ করিয়া তিন দিনও উপবাস করে নাই, অর্থাৎ কোন বুঁতনিয়মাদি অনুষ্ঠান করে নাই এবং কোন তীর্থে,গমন ও ক্রবর্ণ, গো প্রভৃতি দান করে নাই, ভাহারাই দরিত হইয়া জন্ম গ্রহণ করেন।

"অম্পোয় ত্রিরাত্রাণি তীর্থাক্সনভিগমা চ। অদরা হেমখেন্শ্চ দরিত্রো কারতে নর:॥" (পালে ভূমিধণ) যাহারা কোন শুভ কার্য্যাদির অমুষ্ঠান করেন নাই, ভাহারাই দরিত্র হুইরা ক্লয় গ্রহণ করেন। "ত্রীবালোয়াত্রহুহানাং দরিত্রাণাঞ্চ রোগিণাং।

VIII

**

শিকাবিদলরজ্ঞাতৈত্বিদধ্যার পতির্দমং॥ (মহ ৯।৩০)

ন্ত্রী, বালক, বৃদ্ধ, উন্মন্ত ও দরিজ্ঞদিগের ধনদত্তের স্থলে শিকা (লতা), বেতা প্রভৃতি ধারা রাজা দণ্ড বিধান করিবেন। দরিক্তো (ত্রী) দরিজ্ঞ ফ্লাবং দরিক্ত-তল্। দরিক্তসং ক্ষকি-ক্ষনতা, নির্ধনতা ৮

দরিদ্রে (ক্রী) দরিদ্র । দরিদ্রে ।
দরিদ্রোণ (ক্রী) দরিদ্রের অবস্থা, দারিদ্রা।
দরিদ্রোয়ক (ত্রি) দরিদ্রাতীতি দরিদ্রা-খুল্। দরিদ্রে, দীন।
দরিদ্রিত (ত্রি) দরিদ্রা-ক্রণ দরিদ্রে, দারিদ্রায়ক।
দরিদ্রিত (ত্রি) দরিদ্রা-তৃণ্ বা তৃচ্। দরিদ্রায়ক, দারিদ্রায়ক।
দরিন্ (ত্রি) দূ-ভ্রে বিদারে বা ইনি। ১ ভীকা। ২ বিদার্বদীল।

ल तिया ( পারদী ) नही, ममूज ।

দরিয়া, আফগানিহানের অন্তর্গত একটা ছদ। অকা তথ্য ৩৫ উ: ও জাহি ৬৪ ৩ পৃ:। সিয়াকো হইতে ৪০ মাইল দক্ষিণে অব্হিত।

দরিয়া-ই-নেরিজ নামক এব পারভের অন্তর্গত সিরাজ নগুরের ১০ মাইল পূর্কে অবস্থিত। ইহা দৈর্ঘে ৩০ মাইল। দ্রিয়াগ্রাপ্র, সারণ জেলার অন্তর্গত একটা প্রধান বাণিজ্যস্থান। দ্রিয়াপ্রাপ্রন (পার্দী) এক প্রকার বক।

দরিয়াদাসী, এক সম্প্রদায়। প্রবাদ আছে যে, ইহারা আধা হিন্দু, আধা মুসলমান। ইহারা নির্গুণ উপাসক, কোন দেব প্রতিমৃত্তির অর্চনা করে না এবং আপনাপন উপাসনা মন্দিরে দেবপ্রতিমারও প্রতিষ্ঠা করে না।

দিরিয়াপুর, বরারের অন্তর্গত এলিচপুর জেলার একটা তালুক বা মহকুমা। পরিমাণ কল ৫০৫ বর্গমাইল। মোট রাজস্ব ৫৭০৭০০ টোকা। এথানে ৭টা দেওয়ানী এবং ০০টা ফৌর্লদারী আদালত, এতহাতীত ২টা থানা আছে।

দরিয়াপুর, বরাবের অন্তর্গত এলিচপুর জেলায় দারিয়াপুর তাল্কের প্রধান নগর ও দদর। অকাং ২০ ৫৬ উ: ও জাবিং ৭০ ২২ ৩০ পু:। এলিচপুর নগর হইতে প্রার ৩৬ মাইল দক্ষিণপশ্চিমদিকে অবস্থিত। এথানকার অধিরাসীর মধ্যে কুন্বীর সংখ্যাই বেশী। এথানে কৌজদারী ও দেওরানী আদালত ছংড়া, থানা ও ছইটা কুল, নগরের বহিদ্দেশে অনেকগুলি মন্দির ও মস্জিদ আছে।

पतियाकद ( शावती ) त्वाध, कान।

मितिशां वाम, व्यायाधात व्यक्ष्मं विकृति विकास अक्षेत्रे भारती अक्षेत्र भारती अक्षेत्र भारती अक्षेत्र भारती अवश् मिल्लिंग वरमाति भवगमा। भित्रमानकम् २३८ वर्शमारेम, এই পরগণা হিন্দুদিগের সংনামী নামক সম্প্রদারের প্রধান আজ্ঞা। এখানকার উৎপন্ন প্রবোর মধ্যে চাউস, গম, हेनू, কোরার ইজ্ঞানি প্রধান।

দরিয়াবাদ, অ্যোধ্যার অন্তর্গত বড়বাঁকি জেলার এইট্ন লগর। অক্ষা ২৬° ৫০ উ: ও জাবি ৮১° ৩৬ পৃ:। নাছা হুইতে ফরজাবাদ যাইবার প্রধান রাজার সমীপে, নবাবগ্রের প্রায় ২৪ মাইল পূর্কে অবস্থিত। প্রায় ৪৫০ বংসর পূর্কে স্থলতান ইবাহিন্ স্রুকির একজন স্থাদার কর্ষ স্থাপিত। পূর্কে এখানে এই জেলার সদর ছিল, কিছ 'এখানকার জলবায় খারাণ বলিয়া নবাবগ্রে উঠিয়াবায়। এখানে রামপ্রের তালুকদারের একটা বাড়ী আছে। এখানে ছুইটা বাজার এবং একটা গ্রমেণ্ট ইংরাজী স্থল আছে।

म्त्री (खो) मंत्रि-छीय्। পর্বতের গুহা।

দরীমুথ (ক্রী) দর্যাঃ মূপুং ৬তৎ। গিরিগুহার মুধ। দরীবৃৎ (অি) দরী বিষ্ণতে হল, দরী-মতুপ্ নজ বঃ। জ্ঞা বিশিষ্ট পর্বত।

দরোড, বোমে প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত কাঠিয়াবাড় প্রদেশ ঝালাবার বিভাগের একটা সামান্ত রাজ্য। ইহাতে একী মাত্র গ্রাম আছে। এই গ্রামে ছই জন করদ স্বাধীন জ্মীদার আছে।রাজস্ব প্রায় ১১৮০ টাকা। বৃটীশ গবর্মেন্টকে ৩৬৬ এবং জুনাগড়ের নবাবকে ৫০০ টাকা কর স্বরূপ দেওয়াহা। দরৌতি, বালালার শাহাবাদ জ্লোর একটা গ্রাম। রাম-গড়ের ৫ মাইল উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। এপানে শ্রাম্

দরোদর (পুংক্লী) দরো ভয়ং তজ্জনকং উদরং য়ঃ,র ছরোদর পৃষো সাধু:। ছরোদর, পাশকক্রীড়াঁ, শুতক্রীড়া। "আপ্রিভ্য ছর্গং গিরিকন্সরোদরং

ক্রীড়স্তামুম্মিন্ সততং দরোদরং।" (উণ্ ৫।১৯ বৃতিইউ)
দরে বিল, সার্গ কোনার অন্তর্গত চানবাড়া বিভাগের একট প্রধান গ্রাম। এথানে হিন্দ্রিগের ক্ষুদ্রাক্রভি হইটা মনিরে ধ্বংসাবশেষ আছে। এতহাভিরিক্ত হইটা স্থার ব্রাধ ও একটা বৃহৎ ভূপ দৃষ্ট হয়"।

मर्क् (बि) पू-विनारत पू-छ्ठ ्त्या है इंग्डावः। नात्रिकः, विनात्रगकर्छा। "गजकः मर्का शार्या ज्ययः द्वा" (क् ११७३४) 'नर्का, नात्रिका' (गात्रण) त्नोकिक व्याद्यारण नती (वि) वी करेत्रण व्याद्याण स्टेट्व, त्कवन त्वदन्हे पर्क् वहेत्र^त स्टेट्व।

पर्क ( १९१) प-ताबः क ठेएकां म्हास्तरः। पात्रमः। "पर्वा पर्क गात्रः" ( सक् भरः। ७) 'पर्क प्रमुक्तः' ( नात्राः)

एए (तु ( पूर ) ए-वड् पार्ट् पृथ्वा नांबूर । ५ भक्ता । २ मेवन ভগ্রভালন, যে পাতা অর পরিমাণে তথ হইয়াছে। দ্দিরান্ত্র (পুং) ব্যঞ্জন বিশেষ। পর্ব্যান্ত্র—শীনাত্রীণ। (শক্ষমালা) मम तीक (क्री) नांत्रवंशीय करणी नृ-निष्ठ् क्रेकन् ( कर्षत्रीका-महम्ह। डेग् ८।२०) > अवस्थाकात्र वाष्ट्र। २ ८७का मर्कत ( शः ) मृगां कि करणे निस्मतिक मृ खेतह (सक्तमर्क द्वी। উন্১।৪১) ইতি নিপাতনাৎ সাধুং। ভেক। "छप्रः इष्ठः इष्ठः स्मोनः द्वाकिरेनर्कनमानस्य । দৰ্দুৱা বত্ত বক্তারন্তত্ত মৌনং হি শোভনং ॥" (উভট) ২ মেঘ। ৩ বাছাভেদ। ৪ পর্বতভেদ। মলম পর্বভের নিকট। [ দাকিণাত্যের মানচিত্র দেখ ] "স্মীপে স্ভ্মলয়ে । দৃদ্র্ব মহাগিরিং।" (ভারুত ৩।২৮১।৪৭) েরাক্সভেদ। ও অভ্রক ধাতুভেদ। "পিনাকং দদ্রং নাগং বজ্ঞতে ভু চভুর্বিধং। দর্দ্ধনং অধিনিক্ষিং কুরুতে দর্দ্ধনিং॥" (ভাবপ্রণ) नर्भू तः পर्स्त ङः मिक्क हे छ या **च छ। छ छ । १ नर्भ्नृत भर्स्त छ**-সলিক্ট দেশ ভেদ। এই দেশ দক্ষিণদিকে অবস্থিত। ( বুহৎদ * ১৪ আ • * ) দদ্রক (পুং) দদ্রায় কায়তি দদ্র ইব কায়তি শকায়তে

দর্বক (পুং) দর্মায় কায়তি দর্ব ইব কায়তি শকায়তে বা কৈ-ক। ১ বাছাভেদ। ২ ভেক, ইহারা শক্করিলে মেঘধ্বনি বলিয়া জম হয়। আবেধিকন্। দর্মুলকার্থ। দর্মুর চহাদা (আই) দর্মুর ইব ছদো যভাঃ। আকৌ। (পারস্কর নিষ্টু)

मर्म् द्वभ्रनी (जी) वृक्टरणमः।

দৰ্বা (জী) দৃণাতি দাররতি বা অব্যান্ দু-উরচ্° প্রতায়েন নিশাতনাৎ সাধু:। তত্তাপ্। চণ্ডিকা।

দর্দ_ু (পুং) দরিজাতি ছর্গচ্ছত্যক্ষনেন দরিজা **উ রকারেকার** ^{যকারাণাং লোপক্ষ। (দরিজাতে বালোপ:। **উণ্**১৷৯০) দক্ষরোগ।}

দক্ত (পং) দরিতা বাহু উ:। দক্তরোগভেদ।

দক্ত বু (পুং) দক্তং হস্তি দক্ত-হন্-উক্। চক্তমৰ্দ্দক। (শব্দরুং)

দক্ত বু (বি) দক্তরভাতীতি দক্ত-ন, ততো গবং (লোমাদি

পামাদিপিভিলাদিভ্যঃ শনেলচঃ। পা থাবাস্ত ) দক্তরোগী।

দক্তি নাশিনী (স্থী) দক্তং নাশ্মতি নশ-ণিচ্ পিনি ভতো
ভীপ্। তৈলিনীবৃক্ষ।

দর্প (পং) দ্পাতে ইতি দৃপ ভাবে বঞ্। ১ পদের অবধারণ হেতু ভক ও নৃপ প্রভৃতিকে অতিকামক চিত্তবৃত্তি ভোগ। ২ অহবার। পর্বার—গর্ম, অহছতি, অবলিপ্রভা, অভিমান, মমতা, মান, চিভোছতি, অর । (হেম*)

সনেক ধনাদি হইনে স্পারের প্রতি যে স্ববক্তা তাহার নাম দর্প।

দর্প ধন ও বিভাদি আন্ত হইয়া পাকে। একমাত্র দর্পই সর্জনাশের মূল। এ জগতে যত দিন লোকের দর্প না হর, ততদিনই তাহাদের উন্নতি হইয়া থাকে। এ অগতে বধনই যাহার দর্প হয়, তধনই ভগবান্ তাহার প্রতিফল প্রদান করেন। ক্ষুদ্র কি মহৎ সকলেরই দর্প হইলে তাহা চূর্ণ হইবেই ইইবে। এমন কি ব্রহ্মা, বিক্রু, মহেখর, ধর্মা, বম, গরুড, বহি, জয়, বিজয়, স্কর ও অহার প্রভৃতি যাহারই দর্প হইবে, তিনি তৎক্ষণাৎ প্রতিফল পাইবেন; এইজন্ম প্রত্যেক উন্নতিকামী ব্যক্তির দর্প পরিহার করা অক্ত কর্ত্তব্য। (ব্রহ্মবৈ প্রকৃত ) ও মৃগমদ। ৪ উল্লা। ৫ উচ্চু আল্ড। ৬ ধর্মমর্যাদাতিক্রম। ৭ উৎসাহ।

"তেজোবিহীনং বিজহাতি দর্পঃ'' (কিরাতার্জ্ণু) পুর্পার্ক উৎসাহঃ' (মলিনাথ) ৮ কন্তুরী। (মেদিনী)

দর্পক (পুং) দর্পয়তি হর্ষয়তি মোহয়তি বা দৃপ ণিচ্ খুল্।
> কামদেব, ইনি সকলকেই মোহিত করেন, এইজয় ইহার
নাম দর্পক। (ত্রি) ২ অহস্কার ও মোহকারক।

দর্পন্ (ক্লী) দর্পয়তি সন্দীপয়তি দৃপ-ণিচ্-ল্যা ১ চকু।
ভাবে ল্যাটু। ২ সন্দীপন। (পুংক্লী) দর্পয়তি দৃপ-ণিচ্-ল্যা
(নন্দিগ্রহীতি। পা ৩।১:১৩৪) রূপদর্শনাধার, আর্শি,
আ্যানা। পর্যায়—মুক্র, আ্যাদর্শ, আ্যাদর্শ, নন্দর, দর্শন,
আ্রাতিবিশ্বাদ, কর্ক, কর্কর।

• (জ্টাধ্র)

"যত্ত নাত্তি স্বয়ং প্রজ্ঞা শাস্ত্রং তম্ভ করোতি কিং। লোচনাস্ত্যাং বিহীনতা দর্পণং কিং করিয়াতি॥" (চাণক্য)

ইহার গুণ—আয়ু: শ্রীকারী,ও পাপনাশক। (রাজব॰) প্রাত্যকালে উঠিয়াই দর্পণে আপনার মুধ দেখিলে সেইদিন শুভ হর । ৪ নেতা। ৫ পর্বতভেদ। ও নদ ভেদ। এই পর্বতের বিষয় কালিকাপুরাণে এইরূপ লিখিত আছে—

দর্পণ নামে একটা প্রাসিদ্ধ পর্মত আছে, এই পর্মতে 
যক্ষণণের সহিত কুবের সর্মানা বাস করেন। ইহার মধ্যভাগে রোহিত মংস্তের স্থার আফুতিবিশিষ্ট রোহণ নামে 
একটা পর্মত আছে, বাহার স্পর্শে লৌহাদি ভংক্ষণাং 
ক্ষরণত প্রাপ্ত হয়। ইহার অনতিদ্রে দর্শণ নামে একটা 
নদ আছে, এই নদ হিমালয় হইতে প্রস্ত এবং ফ্লানে

লৌহিত্যের তুলা। লোহিত্য উৎপন্ন হইলে আক্রম সকল দেবগণের সহিত এবং সকল তীর্থোদক দারা সান করিয়া ছিলেন। এই স্থান হইতে তাহার পাপ ও দর্প একেবারে উৎপাটিত इहेबाছिन, এই अछ हेहा पर्भगःनास अधिक हेहेन। "ভভা স্থানসমুদ্ধত পোপদর্শভা পাটন:।

তেনাহয়ং দর্পণো নাম পুরা দেবগাঁণৈ: কৃত: ॥"

(কালিকাপু ৮১ অ )

যাহারা কার্ত্তিকমাদের শুক্ল প্রতিপদ্ তিথিতে এই নদে মান করিয়া দর্পণাচলে কুবেরকে পূঞা করে, ভাছারা শত ঐশব্যযুক্ত হইয়া ত্রহ্মদদনে গম্ন করে। এই দর্শণাচলের পুর্বদিকে অগ্নিমান্ নামে একটা পর্ব্বত আছে, ইহার আকার সর্পের মত; দীর্ঘতা, উচ্চতা এবং বিস্তৃতিও এরপ।

(কালিকাপু ৮১ অ)

मर्श्व ( a ) मर्शः मनां जि ना-क । ) शर्यानां ग्रक भनार्थ। ( পুং ) ২ বিষ্ণু। ( ভারত ১৩:১৪৯:৮০ )

দপহিন্ ( অ ) দর্পং হস্তি হন-কিপ্। ১ গর্কহারকঃ যিনি দর্প বিনাশ করেন। (পুং) ২ বিষ্ণু। (ভারত ১৩)১৪৯।৮৯)

• দর্পারস্ত (পু:) দর্শস্ত আরম্ভ: ৬তৎ। অহলারের আরম্ভ। প্র্যায়—মদক্ষটি। (জাটাধর)

দ পিতি ( ত্রি ) দৃপ কে। অহঙ্কত, গর্বিত। प्रिन् ( वि ) पृथ-हेन्। पाछिक, अहक्षाती।

দ ﴿ পুং) দূণাতি বিদারয়তি দৃভ (দুদলিভ্যাং ভঃ। উণ্ তা১৫১) কুশ। পর্যায়—উলপত্ণ, কাশ। ( শনর ) দর্ভ ছই প্রকার—ইহার মধ্যে একটীর পর্যায় কুশ, দর্ভ্য, বর্হি, স্চাগ্র ও বজ্ঞভূষণ। অসেরটীর পর্যায়— দীর্ঘপতাও ক্রপতা। এই ছই প্রকার কুশই তিলোষনাশক, মধুর, কষায় রস, শীত-বার্য্য এবং মৃত্রক্বচ্ছু, অশারী, তৃষ্ণা, বস্তিগত রোগ, প্রদর্ষ ও রক্তদোযনাশক। (ভাৰপ্র॰) যে কোন ধর্ম কার্য্য করা যাউক না কেন, দর্ভ তাহাতে নিতান্ত প্রয়োজন। প্রান্ধাদি করিতে হইলে দর্ভময় ত্রাঙ্ক্ষণ প্রস্তুত করিতে হয়। বিষ্টরাদি (আসন)ও কুশ ধারা প্রস্তুত করিবে। কাশ, কুশ,

বৰল, তীক্ষ, রোম্শ, মৌঞ্জ জ শাঘল এই ৬ প্রকাদ দর্ড।

"কাশাঃ কুশা বৰজাশ্চ তথাত্তে তীক্ষরোমশাঃ। মৌঞাত শাৰলালৈচৰ ষড্দৰ্জা: পরিকীর্ত্তিতা: " ( বায়ুপু: ) কুশ অরত্নি প্রমাণে গ্রহণ করিতে হয়।

বৰ্জনীয় দৰ্ভ -পণ, যজ্ঞভূমি, আব্তরণ, আসন ও পি ও ন্থিত দৰ্ভ বৰ্জনীয়। পিতের নিমিত্ত যে দর্ভ আছত হয়, সেই দর্ভ ধারা যদি কেহ পিতৃদিগের তর্পণ করে, তাহা হুইলে দেই ভর্পণ নিফল হয়।

"পথি দৰ্ভাশ্চিতে দৰ্ভা যে দৰ্ভা যজ্ঞভূমিৰু। স্তরণাসনপিতেষু ষড়্দর্ভান্ পরিবর্জ্বেং 🛭 পিগুৰ্থিং যে ভূতা দৰ্ভা হৈ: ক্বতং পিতৃতৰ্পণং। মূত্রোচিছ্ট প্রলিপ্তে চ ত্যাগক্তেবাং বিধীরতে ॥" ( হারীত। সাত, পাঁচ বা নয় সংখ্যক দৰ্ভ দারা ব্রাহ্মণ, বন্ধার

বিষ্টর প্রস্তুত করিবে। ব্রাহ্মণাদিতে প্রস্তেদ এই—ব্রাহ্মণ ৫ ব্ৰহ্মা প্ৰস্তুত করিতে হইলে অগ্রের সহিত আড়াই _{বেছ} দিয়া অগ্রভাগ উর্ক করিয়া দিতে হইবে। বিষ্টর ক_{রিষ্টে} इहेरल के त्वहेन मिक्नावर्स्ड ना कतिया वामावर्स्ड कतिए থবং অগ্রভাগ উর্দাকে না দিয়া অধোভাগে দিতে হইরে। "উৰ্দ্ধকেশো ভবেৎ ত্ৰহ্মা লম্বকেশস্ত বিষ্টরঃ।

मिक्निगावर्द्धको बका मध्यक्रमञ्ज विष्ठेतः॥ সপ্তভি ন্বভিবাপি সার্দ্ধ বিভয়বেষ্টিভং। ওঁকারেণৈব মস্ত্রেণ বিজঃ কুর্য্যাৎ কুশবিজং॥"

, ( শ্রাদ্ধতক) [ কুল দেখ]

দৰ্ভট (ক্লী) দৃভ সংদর্ভে বাহু অটন্। নিভ্ত গৃহ, গুপ্তাগার। দ্রভপত্ত (পুং) দর্ভস্তেব পত্রমস্ত। কাশ। (রাজনিং) पर्छ भूष्य ( पूर ) नर्भ ( खार , षश । [ पर्की कत (पश । ] দ্রভন্য (তি ) দর্ভাত্মক: দর্ভ শরাদি ময়ট। কুশনিবিত ব্ৰাহ্মণাদি।

पर्छमूला (खो) पर्ज्छय मृगमणाः छीर्। ঔष४ (छन। प्रकृत (वि) पर्वच मित्रकेट्टें मित्र प्रकृति मर्जामित्र व्यम्त (मर्गामि ।

দর্ভসুপ (পুং) দর্ভপ্রচুরোহন্প: সংজ্ঞান্ত্রেংপি • ক্রুঞ্জি পাঠাৎ পিকে পূর্বাপদাৎ ন গতং। দর্ভপ্রচুর অনুপাদেশ তেন। দর্ভাহরেয় ( পুং ) দর্ভং আহরেরতে সাদৃখ্যাৎ আ-হেরুশ। 👯 তৃণভেদ। (রাজনি°)

দভি ( পুং ) একজন ঋষি। এই ঋষি ব্ৰাহ্মণদিগের উপকারে জক্ত অৰ্দ্ধকীল নামে তীৰ্থ স্থাপন করেন। এই ^{তীৰ্থে} চারি সমূদ্র অবস্থিত। যিনি এই স্থানে সান করেন, ^{তিনি} সকল প্রকার ছুর্গতি হইতে নিছ্পতি লাভ করেন।

(ভারত বনপ ৮০ জ)

দর্মাণ, পঞ্চাবের অন্তর্গত গুরুদাসপুর জেলার শকরগড় ^{তর্ব} সীলের একটা নগর। এখানে একটা সামাল মিউনিসি^{গানিনী} আছে , খাহাড়ী মহাজনেরা এথানে বাস করিয়া ^{থাকে ।} দর্বা, বরারের ব্ন জেলার একটা তালুক। পরিমাণ^{র্} ১০৬২ বৰ্গমাইল। ইহাতে ৩২৩ থানি গ্ৰাম আছে। ^{এথানকাৰ} त्रावय मर्वाचक २७৯२०० होका। अथात्म अक्ति (मध्यांकि **इ**हेंगे टकोबनाती व्यानागठ e b ने थाना व्याद्ध।

দর্বা মধ্যভারতের বরার প্রদেশের অন্তর্গত বৃন কেলার দর্বা নামক তালুকের একটা নগর। অক্ষা ২০০ ১৮ ৩০ " উ: ও জাঘি ৭৭ ৪৯ পু:। ব্ন জেলার সদর হইতে ২৪ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। এখান হইতে সদর পর্যান্ত একটা পাকা রাস্তা আছে। এখানে একটা থানা, একটা ডাক্ঘর, পথিকদিগের অস্ত এক্থানি বাঙ্গলা এবং এক্টা কুণ আছে। ইহা অতি প্রাচীননগরী।

प्तर्या ( a ) मृ विनादत वाङ्भा नात्रक। "भूताः मर्द्या অপামজ:" ( ঋক্ ৩।৪৫।২ ) •

पर्यान ( श्रे ) मू विनादत वाष्ट्र मनिन्। नातक। "नर्या नर्वे हे विश्वतः" ( अक् ১। ১०२।७)

দর্ঘ্য ( ত্রি ) দরস্থ হিতং গ্রাদিত্বাৎ যং। দর্হিত, ভর্মাধন। पर्कत् ( प्रः ः पूरािक विमात्रमञीिक पृ-व ( कृ गृ•्भू पृ (खाा वः । উণ্ ১।১৫৫) ১ রাক্ষ্স, হিংস্র। ২ জাতি বিশেষ।

"কৈরাতা দরদা দর্কা: শ্রা বৈষামকাত্তথা।

উত্থরা ছবিভাগা: পারদী: সহ বাহলিক: ॥" (ভা বার ১।১৩) ৩ দর্ব ভাতির নিবাসভূত জনপদ বিশেষ। বর্তমান পঞ্জাবপ্রদেশের উত্তরাংশে অবস্থিত ছিল।

[ व्यार्गावर्खंत्र मानिहत्व (प्रथ । ]

শ্বিরাং টাপ্। ৪ উশীনরের পত্নীভেদ। (হরিব ত১।২২) দৰ্কটি (পুং) দৰ্কায় হিংসায়ৈ অটতি আংট-আংচ্শককাদিস্বাৎ দলোপ:। দওবাদী। (হারা॰)

परितीक (पूर) पृतिपादत पृत्रेकन् ( कर्कतीकापत्र मा उन् ^{৪।১}•) ১ हेन्द्र । ২ বায়ু। ৩ বাদ্য বিশেষ। (উজ্জ্ল)

पर्ति ^{(("}जौ) पृगां ि विपातमञातन पृ-विन् ( तृपृञ्जाः विन्। উণ্৪।৫০) কাঞ্জনাদি কারক, হাতা, পর্যায় কন্ধি, স্বজাকা,

^{দব্রী}, ক**ধী, স্বজ্ঞাকজ**। ২ সর্পের ফণা। ( শব্দ॰ ) नर्सिक ( पूर) पर्सि चार्थ कन्, अधिधानाद पूरवर । पर्सी । र्गितका (ब्री) मर्ति चार्थ कन् छान्। मार्किका। चकाका। ^{ক জ্জুলভেদ}, শিলা বা তৈ**জন পাত্রে মৃতাদি সংফুক্ত** করিয়া দীপ বহিতে ধরিলে যে অঞ্জন প্রস্তুত হয়, তাহাকে দর্কিকা

^{কহে।} ইহা সকল দেবতা ও দেবীকে দান করা যায়।

ঁস্ধ্। নিষ্পান্ত চৈতানি শিলায়াং তৈজদেহথবা। প্রদেষ্টেরিভা দেবীভাশ্চাপি পুত্রক ॥ युडिरेडनामिरशैरिशन छाञ्चारमी मौभविक्सिना। ^{য়দঞ্জনং} জায়তে•তু দৰ্ব্বিকা পরিকীর্ত্তিতা ॥"

(কালিকাপুণ ৬৮ অণ)

२ গোৰিহ্বাৰতা, হিন্দী গোৰিয়াৰতা। কিছোম (পুং) দর্ক্যা: ছোম: ৬তুৎ। দর্কীসাধন ছোমভেদ। দক্বীছোম (পুং) [ দর্কিছোম দেখ।] IIIV

"नर्की (श्वामाञ्रभानात्र नर्कान् तः व्यास्त्रु एक क्रकृन् ॥'' ্ (ভারত সভা• ১২ অ•)

पर्तिरहामिन् (बि) पर्सिरहारमारु छाछी । हेन। प्रसी-হোমকারী।

पदर्वी ( जी ) पर्दि वाह धीष्। मैकिं, हाजा। [ पर्दि (पथ। ] "व्यात्नाहा हक्त्रा त्वानी धर्मानावानि मर्खना। (यांश्रः बन्ना न जानिष्ठ मक्कीभाकत्रमः यथा॥"

**৺উত্তরগীতা** ২৷৩৭ <del>)</del>

দক্তীকর (পু:) দক্ষী ফণাং করোভীতি ক্ল-ট, বা দক্ষী ফণা কর ইবাস্তা। সর্পা। দব্বীকর সর্পের বিষয় স্থঞ্জে এই প্রকার লিখিত হইয়াছে—•

দর্প বছবিধ, দাধারণতঃ অনুতি প্রকার; তাহার মধ্যে দব্বীকর, মণ্ডলী, রাজিমণ্ড, নির্বিষ ও বৈকরঞ্জ এই পঞ্চ শ্রেণী।

ইহাদিগের মধ্যে দক্তীকর ষ্টুবিংশতি প্রকার। কুন্ত-দর্প, মহাকৃষ্ণ, কুফোদর, খেতকুপোত, মহাকুপোত, বলা-হক, মঁহাসর্প, শঙ্খপাল, লোহিতাক, গবেধুক, পরিস্পঁ, থওফণা, ককুদ, পল্ল, মহাপল্ল, দর্ভপুষ্পা, দধিমুধ, পুত্রীক, ক্রক্রীম্থ, পুষ্ণাভিকীর্ণ, গিরিদর্প, ঋজ্দর্প, খেওঁলের, মহাশির, অলগদ এই ২৬ প্রকার সর্প ফণাবিশিষ্ট, এই এই দক্রীকর নামে থ্যাত এবং যে স্কল সর্পের মন্তকে রণাঙ্গ, লাঙ্গল, ছত্র, স্বত্তিক অথবা অঙ্গুশের চিহ্ন থাকে, তাংগ-দিগকে দকীকর সর্প কছে। এই সর্প ফ্ণাবিশিষ্ট ও শীঘ্র-গামী। ইহারা দিবাভাগে বিচরণ করে। দকীকর সর্পের विषक वृंक चैक, ठकू, नथ, मख, मृज, भूजोब ও मः भञ्चान কৃষ্ণবর্ণ হয় এবং শরীরের কৃষ্ণভা, মন্তকেরভার, সৃদ্ধি খানে বেদনা, কটা, পৃষ্ঠ ও গ্রীবার হর্বলতা, জুস্তণ, কম্প, বাক্যের অবসন্নতা, গলার বড়বড়ানি, শরীরের অভ্তা, শুদ উল্গার, কাস, খাস, হিকা, বায়ুর উর্দ্ধগতি, বেদনা, বমনের हेष्टा, ज्या, नानाञात, क्लानिः मत्रन, हेल्लिव कार्तात অবরোধ এবং অক্ত প্রকার বায়ুজক্ত যাতনা কলো 』

(হ্রুড) [বিশেষ বিবরণ দর্প দেখ।] দব্বীসংক্রেম্ব (ক্রী) একটা ভীর্থ। এই ভীর্থ জিম্বগতে প্জিত এবং ইহাতে স্নানদান্দি করিলে अधारमध यास्त्रत ফল ও স্বৰ্গলোক লাভ হয়।

"দৰ্কীদংক্ৰমণং প্ৰাপ্য তীৰ্ধং ক্ৰৈলোক্যপুঞ্জিতং। ় অখনেধমবাপ্লোতি স্বৰ্গলোক ঞ্গচ্ছতি 🕊

(ভারত বন ৮৪ অ )

দর্শ (পুং) দৃশ্রতে উপর্যাধোডাবাপরসমস্ত্রপাতভারেন রাজৈ
ভাংশাবছেনেন সহাবস্থিতে চক্রস্থার্গ রব বর, দৃশু, অধি
ভরণে ঘঞ্। অমাবস্থা। স্থ্য ও চক্রের সঙ্গম কাল,
ভ্যমবস্থা তিথি।

"অস্থোহন্তং চক্তক্ষোঁ তুদর্শনান্ধ উচ্যতে।" (মৃৎক্ষপুং) সমরাশিতে চক্ত ক্রেগিও দর্শনু হয় বলিয়া দর্শ এই নাম হইয়াছে। [বিশেষ বিবরণ অমাবস্তাদেও।]

স নিমিত্তকা অত্যক্ত অচ্। ২ দৰ্শকাল কৰ্ত্ব্য যাগভেদ। ভাবে ৰঞ্। ০ দৰ্শন, চাকুষ জ্ঞান।

দর্শক (পুং) দর্শরতি নৃপাদিসমীপগমনপথমিতি দৃশ-ণিচ্গুল্। ১ থারপাল, থারপালগণ স্মাগত লোকদিগের
বিষয় রাজাকে নিবেদন, করিয়া তাহাদিগকে রাজদর্শন
করায়, এইজস্ত ইহাদিগের নাম দর্শক হইয়াছে। (অ)
২ জন্তা। ৩ প্রধান। ৪ নিপুণ। ৫ দর্শয়িতা। তুমর্থে গুল্।
দেখিতে।

"অবভিমলিতোহপি নুগচেছত যজ্ঞং গচেছত দৰ্শকঃ।" (ভারত অফু[®] ১০৪ অং°)

'দৰ্শক: দ্রষ্টুমিত্যর্থ:।' ,দর্শক দৃশ্ ধাতৃ-ধৃল্ এই কং
প্রেডায় বেগগৈ কর্মে ষষ্ঠী হইতে পারে, কিন্তু তুমর্থে ধূল্
• হওরায় কর্মে ষষ্ঠী হইবে না, এইজয় যজ্ঞ এই কর্মকারকে
দিতীয়া বিভক্তি রহিল। তুম্ প্রত্যয় পরে কর্মে ষষ্ঠী
বিভক্তি হর না।

দর্শকি গঙ্গাহার, বালালা দেশের মালদহ জেলার একটা রাজত্ব বিভাগ। ইহার পরিমাণকল ১৭·২৯ বর্গমাইল। অমির রাজত্ব ২০৮ । এখানে নদী নাই, কিন্তু অসংখ্য জলাশর, ঝিল ও নালা আছে। এখানে করেকটা জলাভূমি থাকার এই তান অভ্যন্ত অত্বাস্থ্যকর। এখানে অর ও গাতি-বেদনা সকল সময়ই হইয়া থাকে। এখানকার ভূমি উর্ব্বরা। এখানে প্রচ্র পরিমাণে চাউল, গম, সরিষা ইত্যাদি অত্মিয়া থাকে।

দর্শক্ত (পুং) দৃখ্যতেহসোঁ দিবি দৃশ কর্মণি অতচ্ (ভূমুদৃশীতি। উণ্ ৩১১০) ১ স্থাঃ। ২ চক্ত । (জি) ৩ দর্শনীয়। "দর্শতো রধঃ সংদৃষ্টো পিতু মাইবক্ষয়ঃ ॥" ( ধাক্ ১১৪৪। ৭)

দর্শত শ্রী (অৃ) দর্শনীয়বিভূতি। "স দর্শত শ্রীয়তি থিগু হৈ পৃহে" ( ঋক্ ১০১১) 'দর্শত শ্রীঃ দর্শনীয়বিভূতিঃ' (সামণ)

দর্শনি (ক্রী) দৃশুতে হনেনেতি দৃশ করণে সৃট্। ১ নরন।
২ পথা ০ বৃদ্ধি। ৪ ধর্ম। ৫ দর্পণ। ৬ শাল্প। ৭ ইব্যা।
৮ বর্ণ। ৯ চাক্ষ জ্ঞান, দেখা। পর্যায় নির্কর্ণন, নিধ্যান,
জালোকন, ঈক্ণ, নিভালন। (কটাধর)

"বেৰাঞ্চ দৰ্শনে পুণ্যং পাপঞ্চ বন্ত দৰ্শনে। ভংনৰ্বং বদ সৰ্বোশ শ্ৰোভুং কৌতৃহলং হি মে ।"

( ব্ৰহ্মবৈৰৰ্ত শ্ৰীকৃষ্ণদন্মণ)

याहा त्मिश्ल भूगा ७ याहा तमिर्ण भाग हर्ग, छाहाह विषय अक्षदेववर्कभूतात এই क्रश निधिक आहरू---

श्रुवात्राण, डीर्थ, देवकाव, त्मवश्राज्या, डीर्थश्राही नर ত্র্য, সভী লী, সর্যাসী, যতি, বন্ধচারী, গো, বি গুরু, গ্রেক্স, সিংহ, খেতাখ, শুক, পিক, খন্ধন, হংয় মযুর, সবৎদা ধেয়ং, পভিপ্রত্রবতী নারী, তীর্ধবাতী ন अपूर्व वा मनिमन्न अमील, मुक्ता, शीतक, मानिका, ज्नती, ভক্লপুষ্পা, ভক্লধান্ত, স্বত, দধি, মধু, পূর্ণকুন্ত, লাজা, রাবেন্ত্র, मर्भन, सन, अक्रभूष्मभाना, त्याद्यांहना, कर्भ्व, वबह সংগাবর, পুলিভ পুলোদ্যান, দেবপুত্তার নিমিত ব ঘট স্থাপিত হইয়াছে সেই ঘট, শঝ, হৃদ্ভি, কলুগী, कूक्म, ७ कि, श्रेवान, कांटिक, कूमम्न, शकामृिकना, इन, তাম, বিশুদ্ধ পুরাণ পুস্তক, সবীল বিফুমন্ত্র, রত্ন, তণাী, সিদ্ধ মন্ত্র, কৃষ্ণসার, ষজ্ঞ, মহোৎসব, গোম্অ, গোমা, ছবা, গোধ্লি, গোষ্ঠ, গোম্পদ, প্ৰশ্ভযুক্ত ক্ষেত্ৰ, খানাৱী ক্ষেমকরী বেশ্রা, গন্ধ, দ্ব্যাক্ষতযুক্ত তণুল, সিদ্ধার ও প্রমায় এই স্কল দর্শন করিলে পুণ্য হয় এবং অমলল স্কল নাং হয়। কার্ত্তিকী পূর্ণিমাতে রাধিকা, আখিনাইমীতে হুর্গা, জন্মাষ্টমী দিনে বিশ্বমাধ্ব, পৌষ মাসের শুক্লাডিণিঙে পন্মা এবং কাশীতে অরপূর্ণা প্রভৃতি দর্শন করিলে খংগ পুণ্যলাভ হয়। (ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্ত শ্ৰীকৃষ্ণজন্মণ )

দৃশ্রতে যথার্থতত্তমনেন দৃশ করণে সূচ্। ১৯ শার, ক্ষধ্যাত্মনেদক শারভেদ, ঘাহা ছারা তত্ত্বজান যথার্বরণ জানা যার, তাহার নাম দর্শন।

জ্ঞান লাভ করিতে হইলে দর্শনই তাহার একমাত্র প্রধান উপার। দর্শন শাত্র অধ্যয়ন না করিলে প্রকৃত তব বোর রূপেই, জানা যার না। এই দর্শনশাত্র নাজিক, বৌর, বৈ, বৈক্ষব ও আজিকাদি মত ভেদে নানাবিধ। উপনিবদ ম্বার্থিক প্রকৃতিত হইরাছে। অধ্যায়ত্রদি অধ্যাগ বহদর্শিতাবার। যে তব প্রকাশ করেন, তাহাই দর্শন বেদের সংহিতা, ত্রান্ধণ ও উপনিবদ অবলবন করিয়াণ্য মার্থসংক্রান্ত কএকটা র্যত প্রচারিত হয়; তাহার নাম দর্শন পরমার্থতিক অমুসন্ধানই আর্যান্ত্রশন শাত্র সম্বারের ক্রান্ত্র উল্লেখ্য। এই স্কল দর্শন শাত্রেই জগতের কারণ বিশ্ব ও মান্ত্রবার মুক্তি বা পারনোক্রিক উর্ত্তি গাঙ্কি

ৰজ্ দৰ্শনই প্ৰধান গাখ্য, পাড্ৰছন, স্থার, বৈশেবিক,
দ্বীনাংলা ও বেলান্ত এই ছরখানি বজ্দর্শন নামে খ্যাত।
নাধবাচার্গ্য সর্বনেশনসংগ্রহ গ্রন্থে বজ্দর্শন, এ ছাজা চার্কাক,
বৌদ, আর্হত, নকুলীশ পাগুপত, শৈব, পূর্ণপ্রজ্ঞ, রামান্ত্র্যা,
রনেরর, পাণিনি ও প্রত্যাভিজ্ঞা এই ১৬ খানি দর্শনের সংক্ষিপ্ত বিবরণ লিধিরাছেন। এই সকল দর্শনশাত্র স্ত্রপ্রপাণীতে লিধিত হইরাছে।

मर्मन भारत धारवण कतिएक इट्टा 'जन्न' 'अमार्थ' ख 'কারণ' প্রভৃতি শব্দের তাৎপর্যা কানা আবশুক। স্থায়, বৈশেষিক, সাঝা প্রভৃতি দর্শনশাল্তের প্রারম্ভে কভিপর পৰাৰ্থ বা তত্ত্ব অকীকৃত হইয়াছে। যথা--ক্ৰায়শালে বেড়িশ भगार्थ. देवरमंबिटक मश्च भगार्थ, मारशामर**७ भक्क**विश्मिक ত্ত্ব ও পাতঞ্লে ষ্ড্বিংশতি তত্ত্বীকৃত। , বৰ্ত্তৰান সময়ে পদার্থ শব্দের প্রচলিত অর্থ কেবল কভিপর ইচ্ছিয়গোচর বন্ধ মাত্র। ধেমন জল, স্বর্ণ, পারদ, মৃত্তিকা ইত্যাদি। কিন্ত দর্শন শাস্তের ব্যবহৃত পদার্থ সকলের সেরূপ অর্থ নতে। ব্যাকরণাদি পাঠ করিতে হইলে প্রথমেই বেমন কতিপর খত: গিদ্ধ সংজ্ঞা শিক্ষা করিতে হয়, সেইরূপ দর্শন শাল্পের মদীয়ত তক্ত পদার্থ সেই প্রকার ধাতু বা সংজ্ঞামাতা। দর্শনশাল্ত মতে, কার্য্য মাত্রেরই কারণ আছে; স্থার ও বৈশে-विक मर्गात अक ध्वकांत्र शात्रिकांविक मन बात्रा अवर द्वाराख-দৰ্শনে অন্ত প্ৰকার পারিভাষিক শব্দ দারা ভিন্ন ভিন্ন প্ৰকার কারণের নামকরণ হইয়াছে। যথা ফ্রায় ও বৈশেষিক সন্মত কারণ তিন প্রকার—সমবারী, অসমবারী ও নিমিত্ত কারণ। বৈদান্তিকগণ আরও একটা সাঙ্গেতিক কারণ স্বীকার করেন। তাঁহারা কছেন, যে কারণ অক্ত উপাদানের সাহায্য ना नहेश कार्या উৎপन्न करत अवश्व आश्वान कार्याकार प्रति-^{ণত হয়} না, তাহার নাম বিবর্<mark>ড উপাদান কারণ। যেমন</mark> রজ্তে দর্পত্রম হইলে রজ্জুই ঐ মিথ্যা দুর্পজ্ঞানের প্রতি বিবর্ত উপাদান কারণ হয় অবর্থি রক্ষু স্বরং, সূপ হয় না ^{অবচ} অপর উপাদানের সাহায্য ব্যতীত মিখ্যা সর্পের ভাণ উৎপন্ন করে।

মাধবাচার্য্যের সর্বনর্শনসংগ্রহের মতামুসারে—নাত্তিকাদি ক্রমে দর্শনসমূহের বিবরণ বধাক্রমে আদন্ত হইতেছে।

চার্মাকদর্শন—নান্তিকের মধ্যে চার্মাকই শ্রেষ্ঠ। এই দর্শনের মতে মাহুদ্ধ বতকাল জীবিত থাকিবে, তঁতবিন কেবল স্থিবে উপায় চিস্তা করিবে।

"वावच्यीत्वर स्वयः जीत्वमृगः कृषा चुठः नित्वर। छत्रीष्ठ्ठत्र त्वरुत्र भूनताशयनः कृषः ॥" ( मर्समर्गनमः ) চার্কাক মতে দেহই আত্মা, দেহাভিরিক্ত আত্মা
নাই, প্রভাক মাত্রই প্রমাণ, অহমানাদি প্রমাণ নহে।
কামিনীস্ভাগ, উপাদের জব্য ভক্ষণ ও উত্তম বসন পরিধানাদি বারা সমুৎপর স্থই পরম পুরুষার্থ। স্থাবেবণ ভির
আর কিছু প্রয়োজনীর দাই। এই মতে চারিটী ভূত।
চার্কাকমতাবলবীগণ ভাকাশকৈ ভূত বলিরা স্বীকার
করেন না। [বিশেষ বিবরণ চার্কাক শব্দে দেখ।]

বৌদ্দর্শন। এই দর্শন চারি শ্রেণীতে বিভক্ত - মাধ্যমিক; त्यांगांठात्र, त्योवांखिक ७ देवछाविक । सांधांसिकनिरंगत्र মতে-- कि हुई नाई, मकनहे मृष्ट। द नकन वस्त्र चक्षांवर्शन দৃষ্ট হইয়া থাকে, জাগ্রভাবস্থায় ভাষার কিছুই দেখা যায় না, এবং যে সকল বন্ধ জাঞাতাবছায় দৃষ্ট হইয়া থাকে, স্বপ্লাবস্থায় তাহার কিছুই দেখা বার না এবং অ্বৃত্তি অবভারও আর কিছু উপলব্ধি হয় না। ইহাতে বিলক্ষণ প্ৰতীয়মান হয় যে वज्रजः कान वज्रहे मुक्ता नहा । अत्र इहेरत व्यवश्रहे मकन অবস্থার দৃষ্ট হইত। যোগাচার মতে, বাহু বস্তু মাত্রেই অলীক, কেবল ক্ৰণিক বিজ্ঞান রূপ আৰাই সভ্য। ঐ বিজ্ঞান ছই প্রকার-প্রবৃত্তিবিজ্ঞান ও জালরবিজ্ঞান। কাগ্রৎ ও সুবৃধি **অবস্থার যে জ্ঞান:জন্মে, তাহাকে প্রারুত্তিবিজ্ঞান, আর**ণস্মুরুপ্তি ' অবস্থায় যে জ্ঞান জন্মে ভাহার নাম আলয়বিজ্ঞান। क्विन व्याचारकरे व्यवनयन कतिया थे कान हरेशा थारक। সৌত্রাস্তিকেরা বাহ্ বস্তুকে সত্য ও অফুমানসিদ্ধ বলিয়া থাকেন। বৈভাষিকদিগের মতে বাহ্ন বস্তু সকল প্রত্যক্ষিত্র। এक माज छ भवान वृद्ध द्योक धर्मात छ भए हो हहे । एवं नम्ट्र नज्डल अनुद्धाविज नट्। यहानि दकान वाक्ति কহে স্ব্য জান্তমিত হট্যাছে। এই বাক্য গুনিলে লপ্ট श्वतमात्रहत्रत्वत, नाधूगग नक्तावन्यनावित्र ও उद्धत भवधनाथ-हतरात मर्मन উপविष्ठ (वांध करतन। • धहेन्द्रान वका धकी কথা বলিলে শ্রোভ্বর্গ অভিপ্রারাম্নারে এক বাক্যের পৃথক্ পুথক্ তাৎপর্যা প্রহণ করিয়া থাকে। এই মতে পঞ্চ জ্ঞানে-ব্রিষ ও পঞ্কর্মেক্সিয়, মন ও বুঁদ্ধি উভয়েক্সিয়, এই বাদশ हेक्कित्यत आंत्रजन बनिया त्महत्क बामभायजन करह। द्वीक-দিগের মতে—দেবতা অগত, অগৎ ক্ষণভদুর, প্রত্যক ও অসুমান এই ছই প্রমাণ এবং লংগ, আয়তন, সমুদর ও মার্গ এই চারি তব। বিজ্ঞান, বেদনা, সংজ্ঞা, সংখ্যার ও রূপক্ক এই পঞ্চক হংগতৰ। পঞ্চ ইঞ্জিয় এবং क्रश. त्रम, शंक, म्लार्भ ७ मंत्र এই शाँठ विषद्र अवः मून छ ধর্মায়তন অর্থাৎ বুদ্ধি এই দান্দটী আয়ুত্তন-তত্ত। मञ्चानिरात असःकत्रा पकावणः त्य तान्रवानि सत्म,

ভাহাকে সম্পর-তব কহে। সকল সংকারই কণমাত্রকায়ী। এইরপ যে ভির বাসনা, ভাহার নাম মার্গভব।
এই মার্গভব্ই নির্মাণ। চর্মাদন, কমগুলু, মুগুন, চীর,
পূর্মাহুভোক্তন, সম্হাবতান ও রক্তাম্বর এই ক্রেকটা
বৌদ্ধ যতিধর্মের অঙ্গ। [বিশেষ বিবরণ বৌদ্ধ শলে দেখ।]

चाई छ मर्सन। - चाई छिता मिशवत। देशाता तोक मिटशत ক্ষণিকবাদ থণ্ডন করিয়াছেন। বৌধ্বমতে সকল বস্তই • ক্ষণিক অর্থাৎ তাপন কলে উৎপত্ন ও বিতীয় কলে বিনষ্ট হয় এবং আ্যাও ক্ৰিক ও জ্ঞানস্বরূপ, ক্লিক জ্ঞানাভিরিক স্থিরতর আত্মা নাই। আহতেরা এই মত থওন করিয়াছেন। আহতগণ বলেন, যদি প্রতি শ্মীরে এক এক আত্মা নিরন্তর অবস্থান নাকরে, তাহা হুইলে ঐহিক ফল সাধনের নিমিত ক্ষবিবাণিজ্যাদি কর্ম্মে কোনমতেই লোকের প্রবৃত্তি হটতে পারিত না। কারণ আপনার ফলভোগের নিমিত্তই সকলে উপায়াত্র্ঠান করে, ঝদি উপায়াত্র্ঠানকর্তা বে আব্রা সে ফলভোগ কালে উপস্থিত না থাকে, তাছা ছইলে একের ফল্ভোগের নিমিত্ত অপরের পার্ত্তি কি প্রকারে সন্তব হইতে পারে 📍 আর্হতমতে, আল্লা চিরন্থায়ী, জীবের পরিমাণ দেহঁ সদৃশ, আহতিই প্রমেশ্বর, তিনি স্ক্জিড ও রাগদেযাদি 'শৃতা। স্মাক্দর্শন, স্মাক্জান ও স্মাক্চারিত এই তিন রত্নত্রয়। জিনোকত ক বিষয়ে বিপরীত জ্ঞান ও সংশ্যাদির নিবারণাদি রূপ সমাক্ শ্রহাকে সমাক্দর্শন ; সংক্ষেপে বা বিস্তারিতরণে জৈনোক তবের যে জ্ঞান, তাহা সমাক্জান এবং নিশিত কর্ম ত্যাগকে সম্যক্চারিত্র কছে। ঐ চারিত্র পাঁচ প্রকার। অহিংসা, অস্তেয়, স্থন্ত, বন্ধার ও অপরিগ্রহ। কি স্থাবর কি অংকম কোন প্রকার জীবের বিনাশ না করাই অহিংসা, দত্তাতিরিক্ত বুক্তর অঞ্চণ অন্তেয়, সতা ও হিতকুর অথচ প্রিয় ঈদৃশ বাকা কথন স্নুত, কাম ক্রোধাদি পরিত্যাগের নাম ব্রহ্মচর্য্য এবং স্কল বিষয়ে মোহত্যাগ পরিগ্রহ। এই ৫টা মহাব্রত। ইহার সাধনাতে পরমপদ প্রাপ্তি হয়। আহতিদিগের মধ্যে অনেক মতভেদ দৃষ্ট হয়। কোন মতে তক্ত ছইটী জীবুও অজীব। জীব বোধাত্মক, অবজীব অবোধাত্মক। আবার কোন মতে পঞ্চ কৰ, কোন মূতে সপ্ততত্ত্ব ও কোন মতে নবতত্ত্ত কথিত হইয়া থাকে। আহতিদিগের মধ্যে সম্প্রদায় বিশেষের নাম জৈন। ইহারা জিনোক্ত তথাতু-সারে চলে। হৈলনদিগের মধ্যে ঘাহারা সাধু তাহাদিগের লক্ষণ এই--লব্ধ অরভক্ষণ; শুক্লবক্ত পরিধান ও লুঞ্চিত কেশ ধারণ। জিনবিরা অভ্যন্ত ক্মারীল ও নি:সঙ্গ। ইহারা চলিবার সময় জীবহত্যা-ভয়ে শিক্ষিকা ধারা বারে পণ হইতে জীব সকল অপসারিত করিয়া পদ্দহি পার প্রকেপ করেন। তাঁহারা জল পারে ব্যবহার করেননা হন্ত ধারাই জলাপান করিয়া থাকেন। তাঁহারা এফার্গ আহার করেননা।

রামায়ল দর্শন। এই দর্শনে আর্হত মত পণ্ডিত হইরাছে।
রামায়ল তর্কাদিবারা প্রমাণ করিরাছেন, আর্হত মত অ্রা
মাণিক ও অপ্রক্ষের। ঐ মত গ্রহণে কাহারাও প্রা
ইতে পারেনা। যেহেতু 'উহাতে পঞ্চত্তব্দ, সপ্তত্ত্ব ও
নবতবাদি নানা বিষয় প্রকটিত হইরাছে। প্রথমতঃ স্ব
লোকের এই সন্দেহ উপস্থিত হইতে পারে, সপ্তত্ত্ব, নবতবং
পঞ্চতত্ব প্রভৃতি কোন্ তত্ত্বের উপর নির্ভর করিব। পরে
অব্যবস্থিত নেতাবলম্বনের আবশুক্তা কি দেপিয়া লোও
সকল ঐ মত গ্রহণে নির্ত্ত হয়। আর্হত মতে দিবিঃ
আহে যে, দেহের পরিমাণামুরূপ ঝীবের পরিমাণ, এইমতঃ
থণ্ডিত হইয়াছে। ইহাতে নানাপ্রকার স্থানির প্রিমাণ
হইলে ঘটাদি জড় বস্তর ভায় জীবও পরিমিত হইত। পরি
মিত বস্ত্ত কথনই নানাস্থানে থাকেনা, স্ক্তরাং জীবেরং
এককালে নানাদেশে থাকা অসম্ভব ইত্যাদি।

অধৈতমত প্রবর্ত্তক শক্ষরাচার্য্যের মতাবলম্বীরা কলেন একমাত্র বন্ধই সভা এবং শ্রুতিপ্রতিপাম্ব। জগংপ্রণঃ কিছুই সভা নহে। সকলই মিথাা। যেমন ভ্ৰমবশেরজু মিথাা সপ কলিত হইয়া থাকে এবং পরে রজজুলানি ভ্রম নিবারণ হইলে ঐ কলিত সপেরও নিবৃতি ফ্ নেইরপ অবিভাষারা এই জগংপ্রপঞ্চ ব্রন্ধে ক্রিত হইভেছে ব্ৰহ্মজান হইলেই ঐ অবিদ্যার নিবৃত্তি হইয়া স্বৰ্গৎপ্ৰণঞ্চে निवृद्धि इहेटवः अविना आंव भनार्थ, किन्छ पर वी अम পদের বাচা হটতে পারে না বলিয়া উহাকে সদসদনির্বাচনী करह। 'विना। अर्था९ बक्क छान हहेरन के व्यविनाद ना হয়। কিন্তু এই বিষয়ে যে উপনিবদ্বাকাও অনু^ত প্রমাণরূপে অবৈতমতাবলম্বরা উদ্বত করিয়াছেন, ভদ্য উল্লিখিত ভাবস্বরূপ অবিদ্যা সিদ্ধ হইতে পারে না। রাঁ^{নার্} এইরূপে শঙ্করাচার্য্যের অবৈত্মত থগুন করিয়াছেন। 📽 দর্শনের মতে পদার্থ তিনপ্রকার, চিৎ অচিৎ ও ঈবর। চি জীবপদবাচ্য, ভোকা, অস্কুচিত, 'অপরিচ্ছিন, ^{নিৰ্} জ্ঞানস্বরূপ ও নিত্য এবং অনাদি কর্মরূপ অবিদ্যা^{বেট্ট} ভগবদারাধনা ও তৎপদপ্রাপ্তাদি জীবের স্বভাব। ^{বী} অতি স্ক্র। অচিৎ ভোগ্না ও দৃখ্যপদবাচ্য, অচেডন ব্র'

ৰড়াত্মক লগং এবং ভোগাত্ব প্ৰভৃতি অভাবশালী। ঐ অচিং গদার্থ ভিদ প্রকার-ভোগ্য, ভোগোপকরণ ও ভোগারতন। বাহাকে ভোগ করা বার, ভাহাকে ভোগা কংহ°, বেমন জরপানীয়াদি। যাহাছারা ভোগ করা বার, छाहारक (छार्शियकत्रम करह, देशी (छान्ननभावाति। বাহাতে ভোগ করা বার, ভাহাকে ভোগারতন কহে, যথা দরীরাদি। ঈবর সকলের নিরামক, জগতের কর্তা এবং चनतिष्टित खान, धेचरी ६ वीरीमक्गोबिमण्येत्र। हि९, অচিং সমুদর বস্তুই উহার শরীর স্বরূপ এবং পুরুষোভ্য, ৰাস্থদবাদি তাঁহার সংজ্ঞা। তিনি পরম কারুণিক, এই*লভ* উপাসক্দিগকে বথোচিত ফল প্রাদান করিবার আর্শরে নীলাবশে পাঁচ প্রকার মৃতি ধারণ করেন। প্রথম অর্চা অর্থাং প্রতিমাদি। বিতীয় রামাদ্যবভারুকরপ বিভব। তৃতীয় ৰাজ্নেৰ, সংকৰ্ষণ, প্ৰান্তায় ও অনিকৃত্ধ এই চারি সংজ্ঞাক্রান্ত বৃহ্ছ। চতুর্থ ক্ষম ও সংপূর্ণ মৃত্ত্তণ বাহ্মদেব নামক পরব্রহ্ম। পঞ্চম আরগুর্যামী সকল জীবের নিয়স্তা। এই পাঁচ মৃর্ত্তির মধ্যে পূর্বে পূর্বের উপাদনাদারা পাপক্ষয় হয় এবং উত্তরোত্তর উপাসনার অধিকার কলো। এইমতে षां अर्थान, देवा, चांशांत्र ও यांशांकरत देशांनां अ পাঁচ প্রকার। দেবমন্দিরের মার্জন ও অমুলেপন প্রভৃ-তিকে অভিগমন কতে এবং গদ্ধপুষ্ণাদি পুজোপকরণের भाशाक्षनरक छेशामान, शृकारक हेकाा, व्यश्चिमकानशृक्तक ময়, জ্বপ, স্তোত্রপাঠ, নামসংকীর্ত্তন ও শাস্তাভ্যাস প্রভৃতিকে স্বাধ্যায় এবং দেবতাত্ম্মদানকে যোগ করে। এই ষণ ক'পাসনাদিবারা ভক্গণ নিতাপদ প্রাথ হয় এবং ভগবানের স্কুরপ জানিতে পারে, তখন আবে পুনর্জনাদি হর না। -চিৎ ও অচিতের সহিত ঈশবের ভেদ, অভেদ ও ভেনাফেন তিনই আছে। শ্রুতিতে যেখানে ঈশার নিশুন ৰণিয়া অভিহিত, সেম্বলে তাহার তাৎপর্য্য প্রাক্ত কনের স্থার बागव्यानि श्वन क्षेत्रं नारे, बरेमाख । आतृ दय ऋता পদার্থের নানাত্ব বিষয় নিষেধ করিয়াছেন, ভাহার ভাৎপর্য্য এই বে, ঈধর চিংও অচিংুসমূদর বস্তর আহা; স্করাং সকল, বত্তই ঈশরাস্থাক, জবর হইতে পৃথক্তুত পদার্থ নাই। এই সকল ভ**ত্তাহুস্কান ক**রিয়া রামা**ত্ত শারী**রক্স্তের र्ভोग कत्रित्रारक्ष्म व्यवः द्योधित्रनां हार्यः मरहाशनिष्टापत्र ^{ষতা ছ্}বারে শারীরবহুত্তের এক বৃত্তি করেন, ক্রিছ এই ^{কৃতি} নিতাম্ভ বিস্তৃত। এইজন্ত রামামূল ঐু বৃত্তির মতামু-বারে সংক্ষেপে এক ভাত্ত করেন। [রামাত্র দেব।]

প্ৰিজন্দ্ৰ-প্ৰথক আন্ত্তীৰ্ভত ভাষের মতাছ-

नारत निस वर्णन महत्तन कवितारक्षन । अहेमरण कीव नृष्य 😻 লব্রনেবক, বেদ অপৌরবের, নিভার্থবোধক ও বতঃগ্রমাণ প্রভাক, অনুমান ও আগম এই ভিন আমাণ। প্রণক সভা, এই বিবরে পূর্ণপ্রজ্ঞ ও রামান্তবের মতের ঐক্য আছে, কিছ রামানুর ভেদ, অভেদ ও ভেদাভেদ এই তিদ ভব স্বীকার করিরাছেন। পূর্ণপ্রজ্ঞ ভাছা বীকার করেন দা। পূর্ণপ্রজ্ঞ বলেন, রামাল্ল বিক্র তিন্টা তম্ব বীকার করিরা শহরা-চার্য্যের মতের পোষ্কভা করিয়াছেন। ত্থাই মত অঞ্জের । খান্দতীর্থকৃত শারীরক্ষীমাংসার ভাত্তের আহতি দৃটিপাভ कतिरण राम्या यात्र, कीव । अ क्षेत्रंदत्रत रव शतन्त्रत्र रक्षण कारक, তাহাতে আর সন্দেহ থাক্লেনা। ঐ ভাবে নিথিত আছে---"স আ্যা ত্রমসি খেতকেতো" এই শ্রুতির **জীব ও ঈশ**-বের পরস্পার ভেদ নাই, এইক্রপ তাৎপর্ব্য নহে, কিন্তু ভঙ্ক দং' অর্থাৎ তাহার ভূমি এই বল্গদমাদ দারা উহাতে 'জীব ঈশবের দেবক' এই অর্থই ব্রাট্রবে। এই মতে ভত্ত হই প্রকার, স্বতন্ত্র ও অস্বতন্ত্র। ইহার মধ্যে ভগবান্ সর্ককোষ-বিবর্জিত অশেব সদ্ভাগের আশেরত্বরূপ বিষ্ণুই ততম ভত্ত এবং জীবগণ আমতজ্ঞত্ত অর্থাৎ ঈশ্রায়ত। এইমতে ঈখরের সেবা তিন প্রকার—অহন, নামকরণও ভদ্ধন। ইহার মধ্যে অঙ্কনের পদ্ধতি সকল সাকল্যসংহিতাপরিশিত্তে বিশেষরূপে লিখিত আছে এবং উহার অবশ্রকর্তব্যভা তৈত্তিরীয়ক উপনিষদে প্রতিপাদিত হইরাছে। নারায়ণের শঅচক্রাদি চিক্ত যাহাতে অংক চিরকাশ বিরাজিত থাকে, তাছাই করিবে। অঙ্কনের প্রাক্রিয়া স্কল অগ্লিপুরাণে লিখিত ভাছে। বিতীয় সেবা নামকরণ, নিজপুলাণির কেশবাদি নাম রাখিবে, তাহা হইলে কথায় কথায় তগ-বানের নাম কীর্ত্তন হইবে। তৃতীয় সেবাভজন। এই ভজন ত্রিবিধ কারিক, বাচিক ও মান্সিক। তদ্মধ্যে কারিক ভলন তিন शकांत्र मान, পরিত্রীণ ও পরিরক্ষণ। বাচিক চারি প্রকার—সত্য, হিন্ত, প্রিয় ও স্বাধ্যার। মানসিক্<del>ও</del> তিন প্রকার--- দয়া, স্পৃহাও শ্রন্ধা। যেমন---

"সম্পূঞ্জা আক্ষণং ভক্তা। শুলোহপি আক্ষণোভবেং।"

এই বাক্যবারা শ্রেও ভক্তি সহকারে রাহ্মণের পূজা করিলে রাহ্মণের ফ্রায় পবিত্যতাদি গুণাৰিশিষ্ট হয়, এই ক্ষর্থই ব্যায়। সেইরূপ "বন্ধবিদ্ বহৈন্ম ভবিতি" এই শ্রুতিবাক্য বারা ব্রহ্মজ্ঞ ও বন্ধের অভেদ না ব্যাইয়া এই ক্ষর্থ ব্যাইবে যে, ব্রহ্মজানী ব্যক্তি বন্ধের স্থায় সর্বজ্ঞাদি গুণসম্পন্ন হন। শ্রুতিতে মারা, ক্ষরিভা, নিয়তি, মোহিনী প্রকৃতি ও বাসনা শ্রুতিতে মারা, ক্ষরিভা, নিয়তি, মোহিনী প্রকৃতি ও বাসনা শ্রুতিতি দক্ষের প্রয়োগ লাছে। ভাহার ক্ষর্থ ভগবানের

ইছে। মাত্র, অবৈতবাদিনিগের করিত অবিস্থা নহে। আর বে প্রপঞ্চ লক উক্ত হইরাছে, তাহার অর্থ প্রকৃত পঞ্জেদ। সেই পঞ্চ এই, যথা জীবেশর ভেদ, অভেশর ভেদ, অভ্নীব ভেদ ও জীবগণের এবং জড় পদার্থের পরস্পর ভেদ। ঐ প্রপঞ্চ সত্য ও অনাদি সিদ্ধ। ব্রহ্মের সর্ব্বোৎকর্ষ প্রতিপাদন করাই সকল শাস্ত্রের উদ্দেশ্ত। ধর্মা, অর্থ, কাম ও মোক্ষ এই চারিটী প্রক্রার্থ। তর্মধ্যে মোক্ষই নিত্য; অপর তিন প্রক্রার্থ দৈইহা অস্থায়ী। বৃদ্ধিনান্ ব্যক্তি শাত্রেরই প্রধান প্রক্রার্থ নোক্ষলাভে যত্র করা সর্বভোতাবে বিধের। কিন্তু উপর প্রসর্ম না হইলে মোক্ষলাভ হয় না। জ্ঞান ভির উপর প্রসর্ম হন না। জ্ঞান শব্দে বিক্রুর সর্ব্বোৎকর্ম জ্ঞানকে বৃধার।

ক্ষম ও অক্য প্রভৃতির সমাক্ জ্ঞান হইলে বিষ্ণুর সহিত সহবাস হয়, সমুদ্য হঃথ দূরে যায় এবং নিত্য স্থেবের উপভোগ হয়। শ্রুভিতে লিখিত আছে — এক বস্তর অর্থাৎ ব্রহেমর তত্ত্তান হইলে, দকল বস্তুকেই জানিতে পারা যায়। ইহার তাৎপর্য্য এই — যেমন গ্রামন্থ প্রধান ব্যক্তিকে জানিলে গ্রাম জানা হয় ও পিতাকে জানিলে পুত্র জানা হয়। সেইরূপ এই জগতের প্রধান ভূত ও পিতার স্বরূপ যে ব্রন্ধ তাঁহাকে 'কানিতে পারিলেই সমুদর জানা হয় অংগাং অভাকে জানিবার আর অপেকা থাকে না এইমাত্র; নতুবা বাস্তবিক এই শ্তিতে অভেদ বোধ হয় না। অধৈতমতাবলমীরা যে বাাসক্বত বেদাস্তস্ত্তের কৃটার্থ করিয়া থাকেন, সে কিছু নছে, ঐ স্তা সকলের মধ্যে কএকটা স্তাের তাৎপর্যা লিখিত হইতেছে যথা "অথাতো ব্ৰহ্মজিজ্ঞাসা" এই • প্ৰস্থ "অথ" শব্দের আনস্তর্য্য, অধিকার ও মঙ্গল,এই তিন অর্থ। আর "অতঃ" এই শবের হেত্বর গরুড়পুরাণে ব্রহ্মনারদ-সংবাদে লিখিত আহিছে। যথন নারায়ণের প্রাসন্তা ব্যতি-রেকে মোক হয় না, এবং তাহার জ্ঞান ভিন্ন প্রাসয়তা হয় না। তথন অক্ষলিজাসাক্ষণি অক্ষকে জানিতে ইচ্ছাক্রা অব্যাক্তির। ইহাই এই ক্রের অর্থ। "অব্যাদ্য সতঃ" এই স্ত্রে প্রহ্মের লক্ষণ কথিত হইয়াছে। ঐ স্ত্রের অর্থ এই 'যাহা হইতৈ এই জগতের উৎপত্তি, স্থিতি ও সংসার क्हेबा शांटकु, निजा निर्फाय व्यामय मन्खना अब, स्मिहे নারায়ণই ব্রহ্ম। তাদৃশ ব্রহে প্রমাণ কি ? এই জিজ্ঞানায় কহিরাছেন, "শাস্ত্রোনিছাৎ" শাস্ত্র সকলই নিক্লক ত্রন্ধের প্রমাণ, যে হেতু ব্রহ্মই শাস্ত্র স্কলের প্রতিপান্য; শাস্ত্র সকলের উপক্রমে ও উপসংহারে ত্রন্সই প্রান্তিপাদিত হইরাছে। जानसञीर्थंत ভাষে সমুদার বিষরণ বিস্তারিভরণে गिथिত

আছে, পূর্ণপ্রকা ঐ ভাষ্টের মতাফ্লারে এই সমত है। উভাবন করিরাছেন। পূর্ণপ্রকার আর ছই সংক্ষা মদ দলির ও মধ্ব। পূর্ণপ্রকা নিজ মাধ্বভাষ্টে লিখিয়াছেন তিনি বায়ুর তৃতীয় অবতার। বারুর প্রথম অবতার হন্দা এবং বিতীয় অবতার ভীম। [পূর্ণপ্রকাদেধ। ব

নকুলীশ-পাওপত-দর্শন-এই দর্শনাবশ্বীরা পরম্কারুরি महारावरक हे भारमधात अवः कीवशंगरक गण करहत । कीर অধিপত্তি বলিয়া পরমেশ্বরকে পশুপতিও বলা বায়। বে কো বিষয় সম্পাদন করিতে হইল্লে অস্মদাদির যেমন অস্ততঃ হয় পদাদির ও সহায়তা করিতে হয়, সেইরূপ অন্ত কোন বছ "সহায়তা অবলম্বন না করিয়াই জগদীশ্বর জগজ্জাত সমুদয় নির্ণ ক্রিয়াছেন, এই জন্ম তাহাকে স্বতম্বক্তা বলিয়া নির্দেশ ক যাইতে পংরে এবং অস্মদাদি বারা যে সমস্ত কার্য্য দশ করা হইতেছে, ভাহারও কারণ পরমেশ্বর, এই নিমিত্ত তাঁহা मुर्खकार्यात्र कात्रण वना आह्र। এই দর্শনের মতে মুক্তি इ প্রকার, ছঃখ সকলের অত্যন্ত নিবৃত্তি ও পরিমৈখণ্য প্রারি ছঃথাত্যস্তনিবৃত্তিরূপ মুক্তি হইলে আর কোন কালেই ছঃ জবের না। এইজভা ঐ মুক্তিকে চরম হংখনিবৃত্তি ক। দৃক্শক্তি খারা কোন বিষয় অবিজ্ঞাত খাকে না, ষত হ যত ব্যবহিত বা যত দুরস্থ হউক না কেন, সুল অব্যবহিত অন্রবর্তী বস্তর ভার দৃষ্টিগোচর হয়, এবং যে বস্তর বে খ বা যে দোষ আছে, ভাহাও জানা ৰায়, ফলতঃ স্কল বিষ্ দৃক্শক্তিমান্ ব্যক্তির জ্ঞানপথের পথিক হয়। ক্রি^{য়াশ}ি हहेरन यथन त्य विषया व्यक्तिमात्र इत्र, ख्यनहे छाहा स्वन হইয়া থাকে। ক্রিয়াশকি মুক্ত ব্যক্তির কেবল হৈছা^{য়} অপেকাকরে। মৃক্ত বাক্তির ইচ্ছা হইলে অন্ত কোন কা অপেকা না করিয়াই অবিলয়ে উাহার মনোর্থপূ^{র্} ল এইরূপ দৃক্শব্দি ও ক্রিয়াশব্দিরূপ মুব্দি প্র^{মেখ্}ে তত্তৎ শকি দুদৃশ, এ জন্ম উহাকে পার্মেখাগ্য মুক্তি কা পূর্ণপ্রজন্দনে কথিত ভগবদাসত্ব প্রাপ্তিকে মুক্তিবলা জ माख। मूक वाक्तिक यनाणि नामखन्न अधीनजान्धान । হইতে হইল, তবে তাহাকে কি কপে মুক্ত বলা যাইডে ^{পা} ইত্যাদি রূপে পূর্ণপ্রজ্ঞ দর্শনের মত **ধণ্ডিত** হইয়াছে। ^৫ मट्ड, ध्रथान धर्मगाथनटक हवी।विधि कटह । हवी। वृहे वह ত্ৰত ও ৰার। তিসন্ধা ভক্ষকণ, ভক্ষশ্বার শর্ন ও ^{ইন্} এই তিনকে ব্রভ'কহে। হ, হ, হা•করিয়া হাতরণ ^{হলি} शक्षर्यभौजाञ्जनादत महाराष्ट्रवत्र खनगान क्रम श्रीड, नांगेणी সম্মত নৃত্য, পুলবের চীৎকারের স্থার চীৎকার রূপ হ্^{র্ম} প্রণাম ও লপ এই ছয় কর্মকে উপহার বলে। এর^{গ্র}

জনসমালে না করিয়া অতি গোপনে সম্পাদন করিতে হর। बांत्रज्ञ हर्गा-कार्थन, न्यंक्यन, मस्त्रन, म्यात्रन, प्रविख्यक्रम ও অবিভৱাষণ ভেদে ছব প্রকার। স্থানা হইরাও স্থের ভার প্রদর্শনকে ক্রাথন, বায়ুসম্পর্কে কম্পিতের ভার महीतांनित कम्लानरक म्लानन, अश्व बाक्तित अञ्चल्न श्रम-নকে মন্দন, পর্ম রূপবতী জী সন্দর্শনে বাত্তবিক কামুক না হইয়াও কামুকের ভার কুৎসিত ব্যবহার প্রদর্শনকে শৃলারণ, কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য পর্যালোচনা পরিশুক্তের স্থার বিগ্রিছিত কর্মাতু-গ্রানকে অবিভৎকরণ এবং নির্থক বাধিতার্থক শক্ষোচ্চারণকে अविज्ङीयन करहा **এই म**र्क ज्वानह मूक्तित नाधन। শান্তান্তরেও তথজান মুক্তির সাধন বলিয়া কথিত হইয়াছে বটে, কিন্তু শাস্ত্ৰান্তর ধারা মুক্তিভব্জ্ঞান হইবার স্ক্রাবনা নাই বলিয়া এই শান্তই মুমুক্লগণের এক্মাত অবলম্বনীয়। বিশেষরূপে যাবতীয় বস্তু জানিতে না পারিলে তত্তজান হয় না। এই শাল্পে পারমৈখব্য অপাপ্তি ও ছঃথ নিবৃত্তি এই উভয়রপ মৃত্তি এবং ঐ উভয়ই যোগের ফল। এই মতে কার্য্য সকল নিত্য এবং পরমেশ্বর শ্বতম্বকর্তা।

[নকুলীশ পাশুপত দেখ।]

रेमवनर्मन-- वरे नर्मरनद मर्ड मिव भद्ररमधंद्र ७ कीवशन প্র বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে। নকুলীশ-পাশুপত-দর্শনের মতে, পরমেশবের কর্মাদি-নিরপেক্ষ-কর্তৃত্ব নির্দিষ্ট হইয়াছে। কিম্ব এতন্মতাবলম্বীরা ভাহা স্বীকার না করিয়া যে ব্যক্তি যে রূপ কর্ম করিরাছে, প্রমেশ্বর তাহাকে তদ্মুরূপ ফল প্রদান করিতেছেন বলিয়া পরমেখরকে কর্ম্মাদিসাপেক কর্ত্তা কংহা। অস্থাদি ভিন্ন একজন জগৎকত্তা পরমেশ্বর আছেন ইহা অনুমনে সিদ্ধ। অসমবাদির ফ্রায় প্রমেশ্বরের প্রাকৃত শ্রীর নাই, পঞ্চমন্ত্রাত্মক শক্তিই তাঁহার শরীর। ঈশান, তৎপুরুষ, অংশার, বামদেব ও সদ্যোজাত এই পাঁচটী মল্ল যথাক্রমে ঈশ্রের মন্তক, বদন, হৃদয়, গুহু ও পাদস্ক্রপ এবং ষ্থাক্রিমে সম্প্রহ, তিরোভাব, প্রালয়, স্থিতি ও সৃষ্টি রূপ প্রঞ্চলতোরও কারণ। আগস ৰারা আপাততঃ বোধ হয় যে অক্সদাদির ভার ঈখরের নরনাদিবিশিষ্ট প্রকৃত শরীর আছে, কিন্তু উহা বান্তবিক নছে। ঐ সকল আগমের তাৎপর্য্য এই যে, নিরা-ু^{কার} বস্তুর চিন্তা অরূপ ধ্যান হইতে পাল্পে না বলিয়া, ভক্ত-^{বংসল} পরমেশ্বর ভক্তদিগের 🕹 সকল কার্য্য সম্পাদনার্থ ^{করুণা} করিয়া কথন কথন তাদৃশ আকার ধারণ করেন। এই মতে পদার্থ ভিন প্রকার পভি, পশু ও পাশ। পভি ^{পদার্থ} ভগবান শিব এবং ষাহারা শিবদ পদ প্রাপ্ত ^{इहेबाह} जाराजा **नक, ज्यात्र** नियम्नभन व्याखिनाधन नीकानि ।

उभाव मकन भाग । भक्ष भनार्थ की वास्ता । वे की वासा महद क्ष्विकांति श्वताहा, स्वराविकित्र मर्वाराशिक, निका, অপরিভিন্ন, ছত্তের 😕 কর্তী বরুণ। [জীবাত্মা দেখ।] পাশ পদার্থ মল, কর্ম, মারা ও বোধ শক্তিভেদে ভারি প্রকার। বাভাবিক অভচিকে মল করে; বেমন তভুল তুৰবারা আচ্ছাদিত হইয়া- থাকে, দেইরূপ ঐ মল **हृक्णिक ७ किशांणिकटक चाव्हानन क्**तिशा थाटक। ধর্মাধর্মকে কর্ম ; প্রালয়াবস্থায় যাহাত্তে, কার্যা সকল লীন इम अवः भूनर्सात रुष्टिकारन वाहा हहेरछ छ । पत्र हम छाहारक মায়া এবং পুরুষভিরোধারক বে পাশ তাহাকে রোধশক্তি কতে। জীব পশুপদার্থ বাচ্য। ঐ পশুপদার্থ তিন প্রকার; বিজ্ঞানাকল, প্রালয়াকল ও সকল। একমাত মলক্ষরপ পাশযুক জীবকে বিজ্ঞানতিল: মল ও কর্ম রূপ পাশবর যুক্তকে প্রব্যাকল, আর মল, কর্ম এবং মায়া এই পাশতয়বদ্ধকে সকল কছে। সমাপ্তকল্য ও অসমাপ্ত कन्य (छटम विकानाकन भीवत दिविध। शानगांकन জীবও 'বিবিধ প্ৰুপাশ্বয় ও অপক পাশ্বয়। প্ৰু পাশ-ৰমের মৃক্তিপদ প্রাপ্তির। অপক পাশবরকে পূর্যাইক দেহ ধারণ করিয়া অকর্দান্সারে তির্যাক্ মন্ব্যাদি বিভিন্ন ষোনিতে অসমগ্রহণ করিতে হয়। এই মতে-মন, বুদ্ধি ও অহকার, চিত্তশ্বরূপ অন্তঃকরণ, ভোগদাধন কলা, কাল, নিয়তি, বিদ্যা, রাগ; প্রকৃতি ও ঋণ এই স্প্রতভঃ পঞ্মহা-**ज्**ड, श्रक खनाज, श्रक खानि खित्र ७ श्रक कर्णा खित्र ग्रमारत এক বিংশতিভবায়ক স্ক্স দেহকে পূর্বাষ্টক দেহ কছে। 🐠 ज्यानक भारतम्बद्ध कीरवद्ध मर्द्धा वाहानिरावत्र भूगाञ्चिमत्र मक्किन्छ আছে; মহেশ্বর তাহাদিগকে পৃথিবীপতিত্ব প্রদান করেন। ুসকল স্বর্গ জীবও বিবিধ--প্র কল্য ও অপ্র কল্য। মহাদেব পঁককলুষ্দিগকে মহেখন পদনী ও অপককলুষ্দিগকে मः नात्रकृत्भ निः त्क्रभ करत्रन । [ देभव (मथ । ]

প্রত্যভিজ্ঞানর্শন—এই দর্শনের মতে মহেশর জগনীশর,
তিনিই একমাত্র সকল জগপ্তের কারণ। যে প্রকার রহ্রূপী ব্যক্তিরা শ্রেচ্ছাক্রমে কথন নৃপতি কথন ভিক্লুক,
কথন ত্রী প্রভৃতি নানাবিধ রূপ ধারণ করিয়া থাকে, সেই
রূপ ভগবান্ মহেশরও স্থাবরজলমানি নানারপে অবস্থান
করিতে ইচ্ছা করিয়া স্থাবর ও জলমাত্রক জগও নির্মাণ
করিতেছেন এবং ঐ ঐ রূপে অবস্থান করিতেছেন।
এজন্ত এই জগৎ যে ঈশরায়ক তাহাকে কোন সম্ভের।
পরমেশর জানন্দশরূপ, জ্ঞাতা এবং জ্ঞান্শরূপ, স্পুরাং
ক্ষমানির ঘটপটানি বিষয়ক বে যে জ্ঞান্শরূপ, স্পুরাং

সক্লই প্রমেখরের অরপ। এইমতে মৃক্তিঅরপ প্রাপর সিদির উপায় একনাত্র প্রত্যভিজ্ঞা, অন্তমতের ভার এইসভে भूका, शान, स्त्र, यांग ७ (यांगानित अर्शतित जावश्रक्छ। নাই। প্রত্যভিত্তা হারা স্কল সিদ্ধ হইতে পারে, "স এবেখরোহহং" 'সেই জখরই আমি' এইরপ পরমেখরের সহিত জীবাত্মার অভেদ জ্ঞানকে প্রত্যভিজ্ঞা কছে। এই প্রত্যভিজ্ঞ। স্বীকার করায় এই দর্শনের নাম প্রত্যভিজ্ঞা , मर्भन इहेब्राटइ ⊾थकीकृति वाकित्य वामन करह, धहेक्र भूक् डेनिवंडे वाक्तित्र वक्तिक्रिक भूक्ष पृष्टिशाहत्र रहेला, "(সাहशः वामनः" (महे धहे वामन धहेक्रश ब्लान हम, নৈয়ারিক প্রভৃতিরা ইহাকে প্রভাভিজ্ঞা করেন। শাস্ত্র ও অফুমানাদিবারা ঈখরের খরপ ও শক্তি জানিয়া সেই শক্তি দীবাত্মাতেও আছে। এইরূপ জ্ঞানলাভ করিতে পারিলে "স এবেখবোহছং" সেই ঈশ্বরই আমি এইরূপ জ্ঞান হয়। এইমতে জীধাত্মার সঞ্জিত পরমার্ত্মার ভেদ নাই, এইমতে প্রমাত্মা অভঃ প্রকাশমান, অর্থাৎ প্রমাত্মা আপনিই প্রকাশ शाहेटल हा । द्यमन आलाक मः द्यांगानि ना इटेल शृह-দ্বিত ঘটপটাদি বস্তার প্রকাশ হয় না, সেইরূপ প্রমেখরের প্রফ্লানে কোন কারণ অপেকা করে না। তিনি সর্বাত্ত -প্রাকাশমান রহিরাছেন। কিন্তু যথন গুরুবাক্য প্রাবণ করিয়া नर्सछा इकि क्रिश के बरत्र धर्म व्यामाटिश व्याह, अक्रिश छात्नत छेन्द्र इय, ज्थन भूर्ग जात्तत आविर्धाव इरेड थात्क এবং আ্যাপ্রপ্রভাভিজ্ঞা জ্যো, তথন আর কোন প্রয়োজন [ প্রতাভিজ্ঞা দেখ। ] थारक ना।

রসেশরদর্শন—পদার্থ নির্ণরাংশে প্রত্যন্তিক্স। দর্শনের সহিত রসেশর দর্শনের প্রায় ঐকমত্য আছে। প্রত্যন্তিক্সা দর্শনে পারদপদার্থের বিষয় কোন স্থানে উলিখিত হর নাষ্ট্র। এই দর্শনে উলা বিশেষর পে নির্দিষ্ট হইয়াছে এই মাজ বিশেষ। বেমন প্রত্যন্তিক্জা-দর্শনাবলম্বীরা মহেশ্বরকে পরমেশ্বরক্ষণে নির্দেশ এবং শীবাল্মা ও পরমাল্মার অভেদ শীকার করিয়া থাকেন। সেইরূপ এই দর্শনাবদম্বীরা মহেশ্বরই পরমেশর এবং শীবাল্মাই পরমাল্মা এইরূপ শীকার করিতে পরাশ্ম্পন্তেন। কিন্তু ইহারা প্রত্যন্তিক্জা-দর্শনাবলম্বীদিগের অক্সপেল করিছা পরমাল্মা প্রস্থাকি করিছা পরমাল করিয়া পরমান্তির প্রাপক অক্স এক পথ অবলম্বন করিয়া থাকেন। ইহারা ক্রেন বে, মুমুক্ষু ব্যক্তিন্দিগকে প্রথমতঃ দেহের হৈন্ত্য দন্শাবনে মন্ধ করিছে হয়, ভর্মানে ক্রমণা যোগাভ্যাস করিতে করিতে বধন জ্ঞানোদ্য হয়, ভর্মানে মুক্তির ক্রমণা যোগাভ্যাস করিতে করিতে বধন জ্ঞানোদ্য হয়, ভর্মানে মুক্তির আমণাং যোগাভ্যাস করিতে করিতে বধন জ্ঞানোদ্য

मर्गात्व मुक्तित नाथन अक अक नथ आवर्गिक इहे_{सीक} **এবং ভত্তৎ পথাবলখনেও পরম্পদ মৃক্তি পাইবার সম্ভা**ৰন चाहि, जाहा हरेला के नकन भर्प लादक अकृषि हरे। भारत ना। किन्छ अरे मर्भरन भातम त्रम्बाता प्रमुख्य হৈথ্য সম্পাদন করিয়া ক্রমশঃ বোগাভ্যাসে নিরত হৃত্তি পারা যায়, ভাহা হইলে পর্মকাঞ্লিক প্রমেশর প্রিড়া इदेशा शांतिरভाषिक चक्रश नर्सश्यम मुक्तिशन धारान करतन। विषय मुक् वाकितिशदक ध्रांधवकः प्रवृश्व সম্পাদন করিতে হর, ভাহা জ্বার বলবার আবিশ্রক নাই। দেহের হৈর্ঘ্য সাধনোপার পারদরস ব্যতীত আর খোন भेमार्थ नाहे, के भातमत्रमधाता त्य ऋभ त्मत्वत्र देवहा मण्याम क्तिएक इम्र, व्यञ्चात्र पर्मात हेहात खेलाथमांव अनाहे। এই দর্শনের মতে, পারদরস বারা দেছের হৈব্য সম্পাদন कतिराम राष्ट्र मुक्ति इब, এই मुक्तिरक भीतकृष्टि কছে। প্রথমতঃ এই - দেহ খাসকাশাদি নানারোগেয় আখ্র, বিনশ্র, স্কুতরাং সমাধিকরণ-ক্লেশ-স্থনে নিডার व्यम् द्वः विजीवजः वान्यावश्चाव धीमक्ति बत्य ना, योवनावश्चा विषय त्रमाचारम वाध इटेग्रा भन्नकारणन निमिख कर्गकान চিষ্কা করিতে প্রাকৃতি হয় না এবং বৃদ্ধাবস্থায় বিবেকশকি थारकना, उर्पात्रहे राम्ह्लाङ्ग हरेग्रा बाग्न ; खुडताः वहे रारह সমাধি নিষ্পার হইতে পারে না, এজক্ত প্রথমতঃ পারদর্গ चात्रा निया त्वर मण्यानन कतिए रुव, खारा रहेत्वरे व्यमनः ষোগাভ্যাদাদিবারা পরমতত্বের ক্রি ছইবার সম্ভাবনা। তল্লিমিত্তই এই দৰ্শনে দেহদৈহগাদাধনপথ আদৰ্শিত হইলাছে: এই পার্দরস সামাক্ত ধাতুনহে, কারণ মহাদেব পা<del>র্ব</del>তীকে স্থাং বলিয়াছেন যে 'পারদরস আমার স্থরুপু ইহা আমার প্রাত্ত কর্ম ভাষ্ট্র বিষয় বিষয় বিষয় সংস্থান বিষয় टाउ यद्यशंनिवृद्धि चक्रेश । शांत्र धानान कटत विवा 'शांतर' এই নাম হইয়াছে। পারদ আমার বীল এবং অল্ক ভোগা वीक ; अरे इरे वीटकत वर्षाविधाटन विजन मुलाब विविध পারিলে মৃত্যু ও দারিজ্য যত্রণা এককালে দ্রীভৃত হা পারদ নালা প্রাকার। ত্রুদ্ধে এক এক পারদের এই একটা অসাধারণ গুণ আছে। বন্ধ পারদ্বারা শৃত্যা^{র্থে} গতিশক্তি এবং মৃত পারদ্বারা কীবিত হওরা বার ইতা^[চ] একমাত্র পারদই ধর্ম, আইবঁ, কাম ও মোক এই চ্র্র^{ইরি} প্রদান °করে। পার্যদ ব্যতীত দেক্তে নিত্যতাস^{ন্দার্হ} উপায়ান্তর নাই এবং উহার দর্শন, ম্পর্শন, ভক্ণ, বংগ পূলন ও দানে সকল অভীট সিদ্ধি হয়। পারদরস অগ রস অপেকা উত্তম বলিরা ইহার নাম রসেখর। ইহাতে ^{ররে} খুঁ

শুণ বিশেষরূপ বর্ণিত আছে বৃদিয়া এই দর্শনের নাম লুসেখর দর্শন হইরাছে। [মুসেখর দেখ।]

প্রনুক্যদর্শন। মহর্ষ্ট্রি কর্ণাদ এই দর্শন প্রণয়ন করিয়াছেন। डोहाँत अभव अक मांभ छेनुक, अवज्ञ अहे मर्ननत्क कार्गाप ७ छेन् कापर्यन करह। धहे पर्यत्न ष्मश्राञ्च पर्यत्न व्यन्तियङ বিলেষ নামে একটা খতম পদার্থ খীকৃত হইয়াছে এইজঞ ইहার নাম বৈশেষিক দর্শন। এই দর্শন ষ্ডুদর্শনের মধ্যে একথানি। এইমতে অত্যস্ত হংধনিবৃত্তির নাম মুক্তি। যে হংধ নিবৃত্তি হইলে আর কোন-কালেই ছ:খ না লয়ে, ভাহাকে অতার হ: থনিবৃত্তি কৰে। ঐ মৃত্তি আত্মসাক্ষাৎকার স্বরূপ তৰ্জান বাতীত অংশে না। কিন্তু ঐ তত্ত্তান সহজ সাধ্য নতে। শ্রবণ, মনন ও নিদিধ্যাসন ছারা তত্ততান ক্ষমে। ভগবান কণাদ শিশ্ব প্রার্থনামুরোধে মননের, অছিতীয় সাধন সক্ষপ দশ অধ্যায়াত্মক এই শাস্ত্র প্রণয়ন করিয়াছেন। এই দর্শনের সকল অধ্যায়েই হুই ছুইটা আছিক নামক বিরাম স্থান আছে। এই দর্শনের মতে প্রত্যক্ষ ও অফুমানা-তিরিক প্রমাণাম্ভর নাই। অক্সাঞ্চ দর্শনে যে সমস্ত প্রমাণ খীকৃত হইয়াছে; সে সকলই অনুমান স্বরূপ, অনুমানাতি-রিক নহে। এইমতে পদার্থ দিবিধ ভাব ও অভাব ; তন্মধ্যে जना, खन, कर्मा, खांजि, वित्मव ও সমবার এই ষড়্বিধ जात शनार्थ। हेरांत्र मर्सा ज्वाभनार्थ नव श्रकात-शृथिवी, দল, তেজ, বায়ু, আকাশ, কাল, দিক্, আত্মা ও মন:। গুণ পদার্থরূপ--রস, গন্ধ, স্পর্শ, সংখ্যা, পরিমাণ, পৃথকৃত্ব, সংযোগ, বিভাগ, পরত্ব, অপরত্ব, বৃদ্ধি, ত্ব্ধ, ছঃখ, ইচ্ছা, ংষ, পিত্র, গুরুত্ব, দ্রব্যত্ত, স্লেহ, সংখ্যার, ধর্ম ও অধর্মভেদে ^{२8} প্রকার। নীলপীতাদি বর্ণকে রূপ কছে। রূপ ঐ ঐ বর্ণ ভেদে নানাবিধ। যে বস্তুর রূপ নাই, তাহা ^{দৃষ্টি}ঝোচর হয় না। আমার যাহার রূপ আনছে, ভাহা দৃষ্টিগোচর ^{হর}, এইজন্ত রূপ দর্শনের কারণ বলিয়া**ুখী**কার করিতে ^{হয়।} রস ষড়্বিধ কটু, কষায়, ভিক্ত, অস_সু লবণ ও মধ্র। গদ্ধ হারভি ও জাহারভি ভেদে বিবিধ। বৃদ্ধি শক্ষে জ্ঞান বুঝায়। জ্ঞান বিবিধ পুথমা ও ভ্ৰম। যাহার-যে ৩৩ণ বা দোষ আছে, ভাষাকে ভত্তৎ গুণ বা দোষশালী বলিয়া জানাকে যথাৰ্থজ্ঞান বা প্ৰেমা কতে ঋবং যাহার যে যে चन वा त्माव नाहे, जाहात्क त्मेंहे त्महे खन ख त्मावभागी ৰলিয়া আনাকে অনুষ্থাৰ্থ জ্ঞান এবং এম কঁহো বেমন পণ্ডিডকে মুর্থ ও রজ্জুকে সর্প বিলিয়া আনা। নিশ্চয় ও সংশয় ভেদে জান দিবিধ। এই ভবনে মহয় আছে আর এই ভবনে महरा चाट्य कि ना, अहेक्क्ष कानदत्र यथाकरम निम्हत्र छ

गःभन्न करह। माभन्न नाना कान्नर्भ स्ट्रेटक शास्त्र। विराभन मर्जुन स्टेटन अश्मादात्र निवृत्ति स्त्र । विद्यान भारत दय वस्तत नः नव र्व, छाराव वालाटक व्याव । दय वक्त ना थाकिटन रि वज्र थोटकना, ভाहांत्र वाांशा त्महे वज्र हम । यथा वहिः ना थाँकित श्म थात्कना विना वैक्तित व्याभा ध्म, ऋखताः वछ-क्मण ना ग्य प्रभीन इत्र, अख्यक्मण वस्ति गर्भन्न थात्क, किस थ्म पृष्ठे रुरेश च्यात विक्ति मः भन्न थारकना। इर्थ ७ इः ध ধর্মাধর্ম বারা হইয়া থাকে। তুথ সকলের অভিপ্রেড এবং হংব অনভিপ্রেত। আনন্দ ও চমংকারাদি ভেদে সুধ, আর क्रिमानि एक एक इस्थ नानाविथ। कालिनावरक है छ। करहा यक्र जिन व्यकात व्यवृद्धि, निवृद्धि ध सीवनत्यानि । त्य विवत्य যাহার চিকীর্ষা থাকে, সে বিষ্দ্রে ভাহার প্রাবৃত্তি অংশা। স্মার यांशांत दय विवदम (बय थांदक, दम छविषम इहेटल निवृष्ठ इम । এজন্ত প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তির প্রতি যথাক্রমে চিকীর্বা ও বেব कातग। य यत्र थाकाँत स्रीविक श्लोका यात्र, जाहारक स्रीवन-त्यानि करह। खीरनत्यानि यत्र ना शांकित्न बख नकन कन-कान 9 की दिल थारकना। धे यन बाताह शानिभागत चान প্রাখাদাদি নির্কাহিত হুইভেছে। গুরুত্ব প্রনের প্রতি কারণ এবং দ্রবদ্ব করণের কারণ। ইহা স্বাভাবিক ও নৈমি-ত্তিক ভেদে বিবিধ। সংস্কার ত্রিবিধ—বেগ, স্থিতিস্থাপক ও ভাবনা। বেগ ক্রিয়াদি বারা উৎপর হয়। রুক্ষের শাখা আকর্ষণ করিয়া মোচন করিলে যে গুণের সম্ভাবে উহা পূর্ব্ধ-স্থানে স্থিত হয়, ভাহাকে স্থিতিস্থাপক সংস্থার করে। যে সংস্কার বারা পূর্কাহভূত বস্তু সকলের অরণ হয়, তাহাকে ভাবনাসংস্কার কহে। ধর্ম শুভাদৃষ্ট ও পুণ্যাদি পদবাচ্য। देश शकायान ७ याशानि धर्मकनक। व्यथमातक इत्रमृहे ७ थान करह, देश करेवय कर्याच्छात करम ववः वात्र किलानि वाता विनर्ह इय। भन्न विविध-ध्वनि ও वर्ग। मृत्रकानि मक उद्यान हम्र, जाहाटक वर्ग कटह। यी वर्गाञ्चक मक স্বর ও ব্যঞ্জন ভেদে বিবিধ। ওণপদার্থ জব্যমাতে আবৰ-शांन करता कियारक कर्य करहा कर्य शर्मार्थ डे॰रक्रभन, অবক্ষেপ্ণ, আকুঞ্ন, প্রসারণ ও গমন ভেদে পঞ্বিধ। উর্দ প্রক্ষেপকে উৎক্ষেপণ, অধোবিক্ষেপকে অব্ক্ষেপণ ও বিস্তৃত বস্তু সকলের বিভারকে প্রসারণ করে। ভ্রমণ, উর্জ্বলন, তিহাক গমন প্রভৃতি গমনের মধ্যে গণ্য। ভাতি পদার্থ নিত্য ও অনেক বস্তুতে থাকে। পর ও অপর ভেদে কাতি বিবিধ। বে জাতি অধিক স্থানে থাকে, তাহাকে পর জাতি, आत यांश अब बादन थादक, छाहादक अश्वत काछि करह।

যাহার চৈতন্ত আছে সে আত্মপদৰাচ্য, আত্মা স্কল ইস্তিয় ও শরীরের অধিঠাতা, আত্মা ন্য থাকিলে,কোন ইস্তিয় বারাই কোন কার্য হইত-না।

আত্মা বিবিধ শীবাত্মা ও পরমাত্মা [ শীবাত্মা দেখ ]। এই দর্শনের মতে বিশেষ পদার্থ নিত্য। আকাশ ও পরমাণু প্রভৃতি अक अक्षे निजा स्वत्र अक अक्षे विश्व भार्य आहि। यि वित्मव नमार्थ ना थाकिछ, खाहा हहेरन क्थनहे नक्षमानू • সকলের পরস্পদ্ধ বিভিন্ন রূপতার নিশ্চয় করা যাইত না। যেমন অবরবী বস্তবয়ের পরস্পারের অবরবগত বিভিন্নতা দর্শনে বিভিন্নরপতা নিশ্চয় করা যাইতেছে, সেইরূপ এই পরমাণু অক্ত পরমাণু হইতে ভিন্ন এবং অক্ত পরমাণুতে যে বিশেষ আছে, ভাহা অপর প্রমাণুডে নাই, এক্সন্ত অন্ত প্রমাণু অপর প্রমাণু হইতে পৃথক্ এই রীতিক্রমে যাবতীয় প্রমাণুর পরস্পর বিভিন্নরপতা নিশ্চর করা যাইতে পারে। দ্রব্যের সহিত ৩৩ণ ও কর্ম্মেক্র সহিত জাতির, নিত্য দ্রব্যের সহিত त्य मण्ड, काहारक ममनाम्र भनार्थ करह। काँकान विविध (७४ ७ मः मर्गाखाव। गृह हूदेख भूछक किन्न, भूछक পুহ°নহে, ইত্যাদি স্থলে যে অভাব প্রতীয়মান হয়, তাহাকে • ভেদ কছে। সংস্থাভাব তিবিধ প্রাগভাব, ধ্বংসাভাব ও অত্যন্তাভাব। পূর্বের যে সপ্তবিধ পদার্থের উল্লেখ করিয়াছি, তদতিরিক্ত আর পদার্থ নাই। ইহাদিগের মধ্যেই ভাবৎ পদার্থ অন্তর্ভুত হইবে। অন্ধকারাদি স্বতম্ব পদার্থ নহে, যে হেতু আলোকের অভাবকেই অন্ধকার করে। ওদতি-রিক্ত অন্ধকার পদার্থে আর কোন প্রমাণ নাইন

[ देवरमधिक ७ क्लाम रम्थ । ]

অক্ষণাদ দর্শন ( ভারদর্শন )—এই দর্শনপ্রণেতা মহুর্ষির
নাম অক্ষণাদ ও গোতম, এজন্ত ইহাকে অক্ষণাদ ও গোতমদর্শন কহে। ইহাতে ভার ও তর্কপার্য বিশেষরূপ নির্দিষ্ট
হওরাতে ইহার ভার ও তর্কপার্য এই হুইটা নাম হইরাছে
এবং এই দর্শনে অর্থ্যানের রীতি সবিশেষ নির্দাণত
থাকার ইহাকে আরীক্ষিকী শাস্ত্র বলা হইরা থাকে। এই
ভারশান্ত স্কল শাস্ত্রেই উপযোগিতা আছে, যে হেতু
ভারশাত্র ব্যতিরেকে কোন শাস্ত্রেরই যথার্থ তাংপর্য্যাহ
হর না। এইজন্ত ভারশান্ত স্কল শাস্ত্রেরই হার-অর্থা।
এই শাস্ত্রে অব্যাবিতীরং ইত্যাদি অনেকানেক ভারবিক্রম ক্রতি আছে, ইহা অনেকে বলিয়া থাকেন, কিছ্
আদ্যোগাত্র বৌদ্যাধিকার বিবৃত্তি দেখিলে ঐ স্কল ভাগতি
জ্বোধ বিল্পিত বলিয়া বেশ্ব হুইরে। মহামহোশ্রার

রঘুনাথ শিরোমণি ঐ সকল শ্রুতির সময়ত্ব করিয়াতেন धारे शांत्रमर्थन e अशांदत विश्वक, देशांत वारकार অধ্যারেই ছুইটা করিয়া আহিক আছে। এই মতে প্রার্ त्यांग ध्यकांत्र-ध्यमांग, धारमम्, मश्मम्, धारमासन, महोव मिकाल, व्यवस्त, कर्क, निर्वस, वान, अज्ञ, विकश्ना, (क्षाकात, ছল, জাতি ও নিগ্ৰহ হান। যাহা দারা ধ্থার্থক্সপে বুর সকলের নির্ণর করা যায়, ভাহাকে প্রমাণ পদার্থ _{করে} প্রত্যক্ষ, অমুমান, উপমান ও শব্দ ভেদে চারি প্রকার। 🜡 চারিটী প্রমাণ হইতে বৃণাক্রমে প্রত্যক্ষ, অসুমিতি, উপ্রিতি ও শাক্ষবোধ এই চারিটা প্রমিতি জন্মে। নম্নাদি ই ক্রিয় বার ষ্ণার্থ রূপে বস্তু সকলের যে জ্ঞান হয়, ভাহাকে _{প্রভাষ} প্রমিতি করে। প্রত্যক্ষপ্রমিতি ৬ প্রকার—ভাগল, রাসন চাকুষ, ছাচ, প্রাবণ ও মানস। ব্যাপ্য পদার্থ দর্শন করিয়া वााभक भनार्थत्र त्य ख्वान छाहारक अञ्चलिक करह। (व পদার্থ থাকিলে যে পদার্থের অভাব থাকেনা, ভাষাকে তাহার ব্যাপ্য এবং যে পদার্থ না থার্কিলে যে পদার্থনা পাকে, তাহাকে তাহার ব্যাপক করে। যথা কোন খানে বহিং ব্যতিরেকে ধুম থাকেনা বলিয়া ধুম বহিংর বাাপা এন যেহানে ধুম থাকে, সেহানে বহুতর অভাব থাকেনা বিনা विक् भ्रात वाभिक। এই अन्त भर्तातिक धूम मन्त्री क्तिया विक्ति **अस्मान इहेया शांदक । अस्मान** विविध-१% বং, শেষবং ও সামান্তভোদৃষ্ট। কারণ দর্শনে কার্গো অনুমানকে পূর্ববিৎ অর্থাৎ কারণলিক্ষক অনুমান কা বেমন মেবের উন্নতি দর্শন করিয়া বৃষ্টির অহুমান। কার্ঞ দর্শন করিয়া কারণের অহুমানকে শেষবৎ অর্থীৎ কাঞ লিক্সক অনুমান কহে; যেমন নদীর অভ্যুত্ত বৃদ্ধি গ্র ক্রিয়া বৃষ্টির অমুমান। কারণ ও কার্য্য ভিন্ন কেবণ নাগ य বস্ত ভাহাকে দর্শন করিয়া যে অনুমতি হয়, ভাহাকে गार्ग ভাতোদৃষ্ট অনুমান কহে, যথা গগনমগুলে সম্পূৰ্ণ ^{দৃশ্য} সন্দর্শনে শুরুপক্ষের অন্থান ক্রিয়াকে হেতু করিয়া ধ্রা অহমান এবং পৃথিবীত জাতিকে হেতৃ করিয়া দ্রবাত ^{বারি} অন্নান। কোন কোন শক্ষের কোন কোন ^{আর্থ শকি} পরিচেছদকে উপমিতি কহে। এই শক্ষারাবে রো^{ছ বা} ভাহাকে শास्त्रदांध करह। এই শस्त्रश्रमान विविध होत्री ও অদৃষ্টার্থক। যে শকৈর অর্থ প্রত্যক্ষসিত্ব ভাষা^{কে} দু^{নার্থ} আর' বহিার অর্থ অদৃশ্র ভাহাকে «অদৃষ্টার্থক শব কা धारमञ्जनार्थ आचा, भन्नीत, हेळित्र, अर्थ, दृष्कि, वन, वर्ष দোৰ, প্ৰেভ্যভাৰ, কৰ, হঃৰ ও অপবৰ্গ ভেৱে ৰামণ ^{একা} ইব্রিস হুই থাকার বহিরিব্রিস ও অভরিক্রিন। বো^{র ই}

দেৱ ও মোহভেবে ত্রিবিধ। কাম, মংসর, ম্পুহা, ভৃষ্ণা, লোভ, प्राप्ता ७ मञ्जानि (खरन दांश श्रमार्थ नानाविध । दमर्गस्कारक কার, নিজ প্রয়োজনু ব্যতিরেকেই পরের অভিযত বিষরের निवार्तराम्हारक मश्मत, त्व विवरंत्र कान शत्त्रंत्र वानि व्य ना, এমত বিষয়প্রাপ্তির ইচ্ছাকে স্পৃহা, আরু আমার সঞ্চিত বস্তুর কঃ না হউক, এতাদৃশ ইচহাকে তৃষ্ণা কহে। কাৰ্পণ্যাদি **८७८**ए ज्याव नानाविष । উচিত वाह ना कतिहा धनतकरण-চ্চাকে কার্পণ্য কছে। বাহা ছারা পাপ হইতে পারে, এরূপ বিষয়ের প্রাপ্তীক্ষাকে **লোভ ব্যুহে। পরবঞ্চনাকে মা**হা কংছ। ছলক্রমে নিজের ধার্মিকছানি প্রকাশ করিয়া খকীয় উংকৃষ্টত্ব ব্যবস্থাপনেচ্ছাকে দক্ত কৰে। ক্ৰোধ, ঈৰ্বা, অসুরা, দ্রোহ, অমর্থ ও অভিমানাদি ভেদে বেষও নানা প্রকার। বিপর্যায়, সংশব, তর্ক, মান, প্রমাদ, ভয় ও শোকাদি ভেদে মোহও নানা প্রকার। বারংবার উৎপত্তিকে অর্থাৎ একবার मत्। चात्र এक रात्र अन्याधार्ण धौरः भूनतात्र मत्रण ७ छ एन स्वत জনগ্রহণ রূপ জরগ্রহণের আবৃত্তিকে প্রেত্যভাব ক**হে**। य उमिन ना मूक्ति इम, छ उमिन नकन की बरक है এই প্রেত্তা-ভাব হংথে হংখিত হইতে হয়। মুক্তি ব্যতীত এই প্রেত্য-ভাব হঃধ হইতে নিবৃত্তি হয় না। অত্যন্ত হুঃখনিবৃত্তি क्ष मुक्तिक कार्यवर्श करहा धारे कार्यवर्श मकरणव शार्थ-नीय ७ थारबाकन। थारबाकन मुश्रा ७ शोग एकरम विविध। चित्रवाश्वीय विवयाखात्रत्र मण्णानिक विवया विवय चित्रवा चित्रवा चित्रवा ণীয় হয় তাহাকে গৌণ, আরে তদতিরিক্ত কেবল অভিলয়ণীয় विवत्रदक मुथा अद्योजन करह । अद्याकत है मुथा अद्योजन হণ ⁹ ছ:ুথ নিবৃত্তি। বে ক্লোন ব্যক্তি যে কোন বিষ্টে প্রবৃত্ত হয়, • সকলেরই প্রধান উদ্দেশ হথ বা হঃধনিবৃত্তি, ঐ স্থাঁ ও ছংখ নিবৃত্তির সম্পাদক বলিয়াই অতি ক্রেশ্কর বিষয়ও প্রার্থনীয় হয়। ফলতঃ সকল বিষয়েরই অধান উদ্দেশ্য স্থা বা ছঃখনিবৃত্তি বলিয়া প্রথ ও ছঃখ নিবৃ-জ্ঞিকে মুখ্য প্রয়োজন আর উহাদিগের সাধন ৰলিয়া ধনো-পাৰ্জনাদিকে পৌণ প্ৰয়োজন কছে। অনিশ্চিত বিৰয়ের শাষাম্পারে নির্ণয় করাকৈ দিলান্ত কতে; ব্লা-- কি হইলে ^{মৃকি হয়} ? এইরূপ লিজাসা উপহিত হইলে ও শাল্লাদি দারা ^{টুরজান} হইলে মুক্তি হর এইরূপ নিশ্চর হর। সিদ্ধান্ত চারি ^{প্রাকার}--সর্ক্তর্ত্তী, প্রতিত্তর, অধিকরণ ও অভ্যুপগম। विहातांक वाकाविष्णवादक व्यवद्वव करहे। व्यवद्वव द थाकांत्र--^{তা}তিজা, হেতু, উদাহরণ, উপনর ও নিগমন। আগাতি ^{বিশেষকে} ভৰ্ক কছে। পন্নস্পন্ন জিগীৰু না হইয়া কোন প্ৰাকৃত ^{বিবরের} তত্তনির্ণরার্থ বাদী প্রাক্তিবাদীর বিচারকে বাদ কতে।

একত বিষয়ের বাত্তবিক সাধক না হইলেও আপাততঃ প্ৰকৃত বিৰয়েয় সাধক বলিয়া বাহাকে বোধ হয়, ভাহাকে হেৰাভাস্ কৰে। ৰক্তা বে অৰ্থতাংপৰ্ব্যে বে শাৰ প্ৰৱেগ করেন, সে শক্ষের সে অর্থ গ্রহণ না করিয়া ভবিগয়ীত অর্থ क्यनाशृक्षक मिथा। (य द्यावादमान क्या वाव, छाहादक इन करह । थालिकांक विवद्धा थालिवांनी दनांव निरंत तमहे दलारवत्र উদারে অশক্ত হইরা প্রতিক্রাত বিষয়ের পরিত্যাগালি রূপ পরাজ্যের বে কারণ ভাহাকে নিগ্রহত্বান ক্রে। স্থায় মতে-৮ বোড়শ পদার্থের তত্ত্তান হইলে আত্মত্ত্তান লয়ে। তথন বস্তুর স্বরূপ উপলব্ধি হয় এবং আত্মা শরীরাদি হইতে পুথক তাহা স্পষ্ট প্রতীরমান হয় ৷ স্বতরাং শরীরাদিতে আত্মত্ব বুদ্ধি রূপ আরে মিথাজ্ঞান জন্মুনা। এইরপেরাগও ছেবের भाর উৎপত্তি হয় না। যদি রাগও বেষ্ট নির্ভ হইল, তবে উহাদিগের কার্য্য স্বরূপ ধর্ম ও অধন্মাত্মক প্রাবৃত্তির পুনর্কার সম্ভাবনা থাকেনা। ^{*}ধর্ম ও **স্**ধেন্ট যথন জন্মগ্রহণের भूगीज्ज, जधन धर्षाधर्ष निवृद्ध हुहेरन चात्र समापि हहेरव ना, তথন আমার অব্যায়তাক্রপ ক্লেশ ভোগ করিতে হইবে না এবং नकन इश्व निवृद्धि हहेग्रा याहै (व। उथनहे मृक्ति हहे (व। ৰীবাত্মাতিরিক যে একজন প্রমেশ্বর আহিন, ভবিষরে প্রমাণ অফুমান ও শ্রুত্যাদি। ফীবাত্মা দেখা] ভায় ও देवत्मविक मर्मन এই উक्कत्र मर्मात्मत्र मर्था अथन दकान भारत्वत्रहे मृन ऋरव्यत्र नमाक् असूनीनन नाहे, रक्रवन उँछन्न শাল্রসমত সংগ্রহ ও টীকা সকল সাধারণতঃ ভায়শাল্ল নামে অভিহিত। পারমার্থিক মত বিষয়ে এই ছই দুর্শনে কোন একভেদ নাই, এ উভয়ই বুক্তিপ্ৰধান শাৱা। অপর অপের যে যে বিষয়ে মতভেদ আনহে, তাহা অবতি সামাল। देवत्मविक मश्च भवार्थ ७ देनमान्निक त्याक्रम भवार्यवानी এই माज বিশেষ। এই উভেয় দর্শনই প্রমাণ্বাদী। [अराह দেখ।]

সাংখ্যদর্শন—এই দর্শনপ্রণেতা মহর্ষি কপিল। মহর্ষি
কপিল বথন দেখিলেন, এই জগন্মগুলে সকলই জিতাপে
তাপিত, যে দিকে দৃষ্টি নিঃকেপ করা যার, চারিদিকেই তুঃখমর, তুঃখ ভিন্ন আর যেন কিছুই নাই। তাই তিনি দরা পরবশ হইরা নিতারের উপায় অরুণ এই অধ্যাত্মশাল্প প্রচার
করেন। এই দর্শনে পঞ্চবিংশতি তত্ত্বের সংখ্যা অর্থাৎ
গণনা করিয়াছেন বলিয়াই ইহাকে সাংখ্যদর্শন কহে।
মূল প্রকৃতি, মহৎ, অহত্বার, একাদশ ইল্লির, পঞ্চ তত্মাত্র,
পঞ্চ মহাতৃত ও পুরুষ এই পঞ্চবিংশতি তত্ত্ব। প্রকৃতির
পরিণানে এই চরাচর জগৎ উৎপ্তি হইরাছে, এবং
পুরুষ প্রকৃতির মানার বিমোহিত হইরা প্রতিবিদ্ধ ক্রমে

ছঃখ ভোগ করিতেছে। পুরুষ নিত্য ও অপরিণামী। ইনি কাহার প্রকৃতিও নহে বিকৃতিও নহে এজন্ত অনুভয়, অর্থাৎ না প্রকৃতি না বিকৃতি। মূল প্রকৃতি জিপ্তণাত্মিকা অর্থাৎ সমভাবে অবস্থিত যে স্ব রক্ষঃ ও তমোগুণ ভাহাদিগের পদ্মপ। সন্ধ রঞ: ও তম ইহারা বৈশেষিকোক গুণ পদার্থ নহে, দ্রব্য পদার্থ। পুরুষ পশু বন্ধন করে বলিয়া ইহাকে শুণ বলিয়া উক্ত হইয়াছে। এই প্রকৃতি সঞ্জিয়, নিতা, অনাশ্রিত ' অর্থাৎ কোন আীশ্রয় অবশয়ন না করিয়া অবস্থিত, অসংযুক্ত, ব্দবিভক্ত, স্বভন্ন অৰ্থাৎ অহস্বারাদি তত্বাস্তবের দাহায্য ব্যতি-রেকেই প্রকার্যাকরণে সমর্থ। অচেতন অড়াত্মক এবং পরি-ণামী। মহত্তৰ অবধি এই দৃশ্যমান্ মহতী মহীমগুলী প্রভৃতি মহাভূত পর্যান্ত বাবতীয় পদার্থ মূল প্রকৃতির সাক্ষাৎ পরস্পরার পরিণাম কিশেষ। এই গুণতার পরস্পর মিলিত হইরা জগৎ কার্য্য সম্পাদিত হয়। সম্বশুৰ স্থ স্থ সক্ষাপ্ত প্রকাশক, রুজঃ ছঃথ শক্ষপ এবং উপষ্টম্ভক অর্থাৎ সত্ত ও তমঃ যে নিজ নিল কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়,ভাছার প্রবর্ত্তক। তমেশগুণ মোহ স্বরূপ, গুরু এবং আবরক। বধন প্রাকৃতির বিরূপ পরিণাম हत, उथन श्राकु इहेट महत्त्व, महर हहेट अहबात विर অংকীর হইতে একাদশ ইব্রিয় ও পঞ্চনাত্র এবং পঞ্চনাত্র ' হইতে পঞ্চ মহাভূত এইরূপে সকল সৃষ্টি হয়। এতদাতিরিক জাত্ত কোন পদাৰ্থ নাই। মহন্তৰ বুদ্ধি স্বরূপ । বুদ্ধিতৰ দারাই যাবদ্বিষয়ের কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যতা নিশ্চয় হয়। ঐ নিশ্চয়কে অধ্য वनात्र कट्ट। व्यथावनात्र वृक्षित धर्मा। शूक्ष्य निजा, नवानि ত্রিগুণশৃক্ত, চেতন স্বরূপ, সাক্ষী, কৃটস্থ, দ্রষ্ঠা, বিবেকী, স্থ্ হঃখাদি শৃত্য, মধ্যস্থ ও উদাসীন পদবাচ্য। পুরুষ শরীরভেদে নানা প্রকার অর্থাৎ এক একটা শরীরের অধিষ্ঠাতা আত্মা বরণ এক একটা পুরুষ আছেন। ঐ শরীর দ্বিধ সূক ও প্ল । সুল শরীর মাঁতা পিতা হইতে উৎপন্ন হয়। মাতা হইতে লোম, শোনিত ও মাংস এবং পিতা হইতে সায়ু, অস্থি ও সজ্জা জন্মে। এই মাতাপিতৃত শরীরকে ষাট্কৌশিক শরীর কছে। এই শরীরই রস্তি, ভশান্ত বা বিঠাত হয়। স্ক শরীর, বৃদ্ধি, অহম্বার, একাদশেন্ত্রির ও পঞ্চতশাতা এই অষ্টাদশ তবের সমষ্টি, ইহা নিত্য অর্থাৎ প্রালয় পর্যাস্ত স্থায়ী এবং অব্যা-হত অর্থাৎ অপ্রতিহঁত গতি ৷ স্কু শরীর শিলামধ্যে প্রবেশ করিতে পারে এবং ইহলোক ও পরলোকগামী। এই স্বন্ধ শরীর, নর, পশু, পক্ষী, শিলাও বৃক্ষাদি অরপ স্থল শরীর ধারণ করে। এই শরীরেরই স্থ ছ:খ ভোগ হর; এই শরীরের বিনাশ হয় না। প্রকৃতি সর্বের আদিতে এক একটা হল শরীর নির্দাণ করিয়াছেন। প্রকৃতি পুরুষের বিবেক থ্যাতি পর্যান্ত পুরুবের সহিত সংযুক্ত থাকে। বিবেদ थां छि इहेर नहें अक्ष निवृष्ठ इत्र। दमन नईकी नि দর্শনরূপ অকার্য্য সম্পাদন করিয়া নির্ভ হয়, সেইছে প্রকৃতিও পুরুষকে সংসারক্ষপ রক দেখাইয়া ভাষ হইতে নিবৃত্ত হয়। ইহারা অন্ধপর্ক্ত স্কার্থ্যপানন সমর্থ হয়। একর প্রকৃতি পুরুষসাপেক, পুরুষও প্রকৃতিগ_{ট।} স্থুপ হঃথকে আত্মগত বিবেচনা করিয়া ভন্নিবারণাভিনাহে मुक्ति धार्थना करत । धे मुक्ति धाक्रित महिल भूक्ता অভ্যথাতি অর্থাৎ ভেদজান স্বরূপ তত্ত্জান বাতীত ব্রে না। এই তত্ত্তান প্রকৃতি বারাই সম্পাদিত হঁয়। এমঃ পুরুষও প্রকৃতিসাপেক। প্রমাণ তিবিধ প্রত্যক, অনুমান ও শক্ষ। এই মতে, সকল কাৰ্য্যই সং অৰ্থাৎ সকল কাৰ্য্য উৎপত্তির 'পূর্বে স্থ স্থ কারণে স্ক্ষরূপে সংযুক্ত থাকে, পরে যথন আবিভূতি হয়, তথন ভাষাকে উৎপন্ন কৰে; আর মান তিরোভূত হয় অর্থাৎ পুনরায় নিজ কারণে বিলীন হয়, তথন তাহাকে বিনষ্ট কহে। বস্ততঃ কোনই কাৰ্য্যই উৎপাৰ বিনষ্ট হয় না। ত্রিবিধ ছ:থের অত্যস্ত নিবৃত্তিই পরম পুক্ষার্ধ বা মোক্ষ। যাহাতে এই ছঃধের নিবৃত্তি হইতে পারে, জি ষয়ই এই দর্শনে বিশেষরূপ আলোচিত হইয়াছে।

[ मारथा ७ कशिन (नर। ]

পাতপ্রল-দর্শন—এই দর্শনপ্রণেতা ভগবান্ প্রপ্রনিষ্ঠ নামান্ত্রনারে এই দর্শনের নাম পাতপ্রল দর্শন ইইনাছে। এই দর্শনে যোগের বিষয় বিশেষ রূপ নির্দিষ্ট থাকার ইহাকে যোগশান্ত্র ও পদার্থনির্বাংশে সাংখ্যদর্শনের সহিত একমঃ থাকার, ইহাকে সাংখ্যপ্রবচন শব্দেও নির্দেশ করা মার। ভগবান্ কপিল যেরপ পঞ্চবিংশতি তত্ব খীকার করেন, ভগবান্ পতপ্রলিও তাহা খীকার করিয়াছেন। ইহার মতে, প্রক্যাতিরিক্ত পরমেশর আছেন, এই মাত্র প্রভেদ। এবর কেহ কেহ স্কঃংখ্য শান্ত্রকে সেশর সাংখ্য ও নিরীশ্বর সাংখ্য ক্রিয়া থাকেন। সেশর সাংখ্য পাত্রকা ও নিরীশ্বর সাংখ্য ক্রিয়া থাকেন। সেশর সাংখ্য পাত্রকা ও নিরীশ্বর সাংখ্য ক্রিসান্থ্য শান্ত্রক করেন কি না জাই। নিতান্ত ছবেধ্য এবং অনালোচ্য, এজম্ব ভবিষয়ক বিচার্মান্তি প্রস্তু ছবিষয়ক বিচার্মান্ত্রিক স্বার্মান্ত্রক হবন কি না জাই।

এই দর্শন পাদচত্ট্রে বিভক্ত। এই পাদচত্ট্রে গোঁ শাজ করিবার প্রতিজ্ঞা, বোগের লক্ষ্ণ, বোগের উগা সরপ যে অভ্যাস ও বৈরাগ্য ভাষাদিগের স্বরূপ ও শে, সপ্রজ্ঞাত ও অসম্প্রজ্ঞাত ভেলে সমাধি বিভাগ, স্বিশ্লী যোগোপার, ঈশবের স্বরূপ, প্রমাণ উপাসনা ও ভাগে চিত্তবিক্ষেপ হঃথাদি, চিত্তবিক্ষেপের ও হ্যুথাদির শিল

ভরণোপার সমাধিভেদ, জিরাবোগ, ক্লেশ কর্মের প্রভেদ, ভवळान, यत्र निवसांति, शान, शावना, त्रसांति, तिक्किशकक, বিজ্ঞানবাদ নিরাকরণ প্রভৃতি প্রদর্শিত হইয়াছে। পতঞ্জি মতে, বড়বিংশভিত**ত্ব°বীক্বত হ্**ইয়াছে। এই বড়্বিংশভি ভবেই যাবতীর পদার্থ অস্তর্ভূতি আছে। এতদভিরিক্ত পদার্থা-স্তর নাই। চতুর্বিংশতিভত্ত ও পুরুষ ইহার বিষয় সাংখ্য দর্শনে বর্ণিত হইয়াছে। বড়্বিংশতি তত্ত্ব ঈশ্বর। প্রমেশ্বর ক্রেশাদিরহিত, জগরিম্মাণার্থ স্বেচ্ছামুসারে শরীর ধারণ-পুর্বক সংসার প্রবর্তক এবুং সংসারানলে সম্ভপামান ব্যক্তি সকলের অমুগ্রাহক, অসীম, রূপার নিধান এবং অন্তর্গামী রূপে সর্কত দেদীপামান রহিয়াছেন। যোগ ছারা তাঁহাকে জ্ঞানা যার। চিত্তরতির নিরোধকে অর্থাৎ বিষয়স্থপে প্রবৃত্ত চিত্তকে বিষয় হইতে বিনিবৃত্ত ও ধােয় বস্তুমাত্রে সংস্থাপিত করিয়া **ज्यात्वत धानिवित्मस्य स्था करहा अन्यः कत्रशंक किन्छ** কংছ। ক্ষিপ্ত, মৃঢ়, বিক্ষিপ্ত, নিরুদ্ধ ও একাগ্র ভেদে চিত্তের चवश शक्षविष । চিত্তের • चवश विद्मव्य हिन्दुन्छ करह । চিত্তবৃত্তি পাঁচ প্রকার—প্রমাণ, বিপর্য্যয়, বিক্ল, নিজা ও মৃতি। প্রতাক, অনুমান ও আগমভেদে প্রমাণ তিবিধ। মিণ্যাজ্ঞানকে বিপর্যায় কছে। কোন বিষয় বাস্তবিক অভ্যস্ত অসম্ভব বলিয়া স্থির থাকিলে ও তদর্থ-প্রতিপাদক শব্দ শ্রবণ মাত্র আপাতত: ত্রিষয়ের ধে জ্ঞান জ্বনে, তাহার নাম বিক্র। নিদ্রাশব্দে সাধারণ নিদ্রা ও শ্বরণকে শ্বতি কছে। এই পাঁচ প্রকার চিত্তবৃত্তিই চিত্তের পরিণাম বিশেষ বলিয়া চিত্তের ধর্ম্ম. ষায়ধর্ম নছে। পরিণাম ত্রিবিধ ধর্ম, লকণ ও অবস্থা। যোগ-খরণ উত্তবৃত্তি নিরোধ অভ্যাস ও বৈরাগ্য বারা সমুৎ্পল্ল হল । বছকাল নির্ম্ভর আদরাতিশয় সহকারে কোন বিষয়ে য়ড় করাকে জভ্যাস, আর বিষয়-তথ-বিভৃষ্ণাকে বৈরাগ্য কছে। ^{যাহার}. বৈরাগ্য উপস্থিত হয়, সে বিবেচনা করে, স্থতু:খ-খনক বিষয়ের বশীভূত আমি নই, আমারটু বশবর্তী সংখ-इःश्वाति-स्वतं विषय्, এ कात्रण देवत्राशादक वभीकृति भटन निर्फन करा यात्र। विवयं विविध मृष्टे ও আছ अविक। हेइ-লোকে উপভূজামান বিষয়কে দৃষ্ট, আর পরলোকে ভোকতব্য বিষয়কে আরুশ্রবিক কছে। জ্ঞানবোগের অধিকারী সকলে नर्ड ; बारामिरशत हिन्छ श्रमस स्रेमार्ड, जारामिरशतरे खान-বোগের অধিকার আছে। যাহাঁদের চিত্তপ্রসাদ না হই-वाहि, जारामिशतक अरथमजः किवाराश केत्रित र्वेत्र। भारत्रत গংশ্বার দশ প্রকার—জনন, জীবন, তাড়ন, বোধন, অভিবেক, বিষণীকরণ, আপ্যায়ন, তপ্ণ, দীপন ও ওপ্তি। ইত্যাদি ক্রিরাবোগের অফ্টান ক্রিলে ক্লেশ স্কল ক্রীণ হয়। বোগাল

আইবিধ—বন, নিরম, আলন, প্রাণায়াম, প্রভাহার, ধারণা, ধান ও সমাধি। প্রাণবায়্র আভাবিক গতিবিচ্ছেদকে প্রাণায়াম কৈছে। প্রাণায়াম তিবিধ রেচক, প্রক ও কৃত্তক। যথাবিধ বেলায়্রাম কিরেল নির্দ্ধি হয়। নিরি নানাপ্রকার, তর্মধ্য অণিমা, লবিমা, মহিমা,, গরিমা, প্রাকামা, ঈশিষ, বশিষ ও কামাবশায়িষ এই ৮টী সিরিকে মহাসিরি কহে। সকল ব্যক্তিরই সংলারের কারণ একমাত্র প্রকৃতি-পূক্ষর-সংযোগ। ঐ প্রকৃতি-পূক্ষর-সংযোগ অবিভাব্শতই জন্ম। ঐ অবিভার বিনাশক কেবল বিবেক্ধ্যাতি, এতত্তির অবিভার উন্মূলক উপায়ান্তর নাই। যেরুপ চিকিৎসাশাত্র রোগ, রোগতেত্, আরোগ্য ও ভেষকভেদে চতুর্গৃহ, সেইরূপ যোগশাত্রও হয়, হেয়হেতু, মোক ও মোকহেতু ভেদে চতুর্গৃহ। ছ:ধময় সংসারকে হেয়, প্রকৃতি-পূক্ষ-সংযোগকে হেয়হেতু, আভাত্তিক প্রকৃতিপূক্ষ-সংযোগ-নির্ত্তি স্বরূপ কৈবল্যকে মোক্ষ এবং বিবেক্থ্যাতি স্বরূপ দর্শনকে মোক্ষ কহে।

পিতিঞ্জ ও সাংখ্য দেখ। ]

मीमाश्नामर्णन- এই मर्गनथातां महर्षि देवमिनि, এইজञ्च हेरात नाम टेकमिनिमर्गन रहेबाट्य। हेराट ट्यापत विषय नकन भीभाः निত हहेबाटक, अहेबक हहात नाम भीभाः नामन्त । মীমাংসা ব্যতীত কোন বিষয়েরই সিদ্ধান্ত হয় না। এই कन প্রত্যেক কার্য্যেরই শীমাংসা প্রয়োজন। যে ছলে বেদের তাৎপর্যার্থ নিশ্চয় করা স্থকঠিন, সেইদ্ধপ শ্রুতি ও স্বত্যাদির পরস্পর বিরোধভঞ্জনপূর্ব্বক ঐ উভয়ের মান্ততা সংস্থাপন করাও সামাত্ত কঠিন নতে। এইজত মীমাংসার প্রয়োজন, মীমাংসা করিতে হইলে একমাত্র মীমাংদাদর্শনই উপার শ্বরূপ। அতি नकरनत्र मर्पा रव रय ऋरन कम्लिष्टेजा ७ পत्रम्लात्र विरत्नां हिन. অথ্বা ভাদৃশ ঐতির সহিত যে যে ছলে কল্লশাল্প ও মহাদি স্থতির বিপ্রতিপত্তি ছিল, মহর্ষি লৈমিকি এই দর্শনৈ ভাহারই মীমাংসা করিয়াছেন। এই দর্শনাত্মারে বেদ অপৌরুষের এবং বেদই ত্রহ্ম, ঈখর এবং মানব কেছই তাঁহার কর্তা নছেন। উহা নিত্য। থাঁহারা বেদকে ধারণ ও বৈদিক কর্মাচরণ করেন. उांशात्री बाक्षण। (वन यनि दकान वाक्कि कर्डक प्रतिष्ठ इहेज, তাহা হইলে কথনই বেদোক যাব্যব্যর স্তাতা থাকিত না. কোন অংশ অবশ্ৰই মিথ্যা হইত সন্দেহ নাই। ইভ্যাদি ক্লপে বেদের অপৌরুষেয়ত্ব প্রতিপাদিত হইয়ছে। এই দর্শন দ্বাদশাধ্যায়ে এবং সহস্র সংখ্যক অধিকরণে বিভক্ত। ভাত্তার এক এক অধিকরণে এক এক প্রকার বিরোধের মীমাংসা আছে এবং প্রত্যেক অধিকরণে পাঁচ পাঁচটা অল-বিষয়, व्यविवय, भूर्स ७ ७ छत्रभक्त धवः निर्वय।

"বিষয়োহবিষয়দৈতৰ পূৰ্ব্ধপক্ষতথোত্তরং। ' নিৰ্থয়দেতি পঞ্চালং শালেহধিকরণং স্কৃতং॥" (মীমাংসা)

যেমন এক শ্ৰতিতে আছে, বৃক্ষ স্বঁকীয় কুশ্ৰরি৷ যজ্ঞ করিবে এবং পর শ্রুতিতে আছে উল্বর বৃক্জাত কুশ ষারা উহা করিবে। এছানে কুশ্বারা যজ্ঞ করার ব্যবস্থার নাম বিষয়। কিন্তু সক্ল প্রকার বৃক্কের কুশ দিয়া যজ্ঞ হইবে কি উছ্যর বৃক্ষ স্থনীও কুশ দারা যজ হইবে, এই ক্রপ সন্দেহেরুনাম অবিষয়। সিকাভ বিক্ল তর্কোপ্রাসের নাম পূর্বপক্ষ, দিছাস্তাত্ত্বকৃষ বিচারের নাম উত্তরপক্ষ, নির্ণয় শব্দে সঙ্গতি অর্থাৎ দিদ্ধান্তদিদ্ধ বিচার্য্য বাক্যে তাৎপর্য্যাব-ধারণ। দেবগণ শরীরী বা সচেতন নহে, যে দেবের যে মন্ত্র বেদে নির্দিষ্ট হইয়াছে, সেই দেব সেই মন্ত্রস্থান, মন্ত্রাতিরিক্ত দেবতার সত্ত্বে কোন প্র'নাণ নাই। বরং তবিরোধী প্রমাণই বহুতর আছে। দেপ, যদি মন্ত্র ভিন্ন একজন শরীরী দেবতা থাকেন, সেই দেবভারই পুঞ্জা করা যায় এবং তিনিই আবা-· হনাদি ছারা করুণাপুর্কক ঘট ও প্রতিমাদিতে অনিষ্ঠিত হ্**ইয়া পূজা**দি গ্ৰহণ 'করেন, তাহা হইলে **ঘ**ট কি মূণায় প্রতিমাদি ঐরাবতের সহিত ইক্রদেবের ভারবহনে অশক্ত হুইলা চুর হইয়া ঘাইত সলেছ নাই। আন কি প্রকা-্রেই বা অল পরিমিত ঘটে, তাদৃশ বৃহদাকার ঐরাবতের সহিত ইন্দ্রদেবের সমাবেশ সম্ভবে ? কিন্তু দেবতাকে মন্ত্রাত্মক বলিলে এ প্রকার দোষ ঘটে না। বেদ অপৌরুবের ও শতঃ প্রমাণ। এন্থলে নৈয়ায়িক প্রভৃতি পণ্ডিতগণ কহিয়া পাকেন, বেদোক বিষয়ের সত্যতা আছে বলিয়া যে বেদের নিতাত স্বীকার করিতে হইবে, এমন কি নিয়ম আছে, ঘট কুন্তকার কর্তৃক ক্বত, এই বাক্যার্থের যাণার্থ্য আছে বলিয়া যেমন ঐ বাকোর অভান্ত পুরুষোক্তি আছে, সেইরূপ বেদ অভ্ৰান্ত পুক্ষ ক্ৰাৰ্ক প্ৰণীত এইমাত্ৰ, নতুৰা বেদ ৰ্ঘে কোন বাক্তি কর্তৃক নিশ্মিত এমন নহে। বৈয়ায়িক পণ্ডিতেরা এইরূপ অনেক স্কাফুস্দ্ধান করিয়া বেদের ঈশ্ব-নির্ম্মিতত্ব প্রতিপাদন করিরাছেল, কিন্তু এদিকে প্রমেখ্রের শরীরাদি কিছুই স্বীকার করেন না। ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয় যদি পরমেশ্বরের শরীরাদি নাই, ভবে তিনি বেদ রচনা করি-লেন কি প্রকারে ? ইত্যাদি প্রকারে স্থায়ের যুক্তি সকল ৰণ্ডিত হইয়াছে। [মীমাংসা দেখ।]

বেদান্তদর্শন—ইহার স্ত্রেরচয়িতা বেদবাস। শক্ষরাচার্য্য এই স্ত্র অবশ্বন করিয়া এই দর্শন প্রণয়ন করেন, এইজন্ত ইহার নাম শাক্ষরদর্শনও কহে। বেদব্যাদের স্ত্রেগুলি একপ অক্ট যে, কোনজনেই ইহার তাৎপর্যা গ্রহণ করা

ষার না। বরং বাহার বেরূপ অভিপ্রার, সে দেইবৃদ্ধ অর্থ করিতে পারে। একারণ বেদান্ত হতের নানা প্রশান, আর্থাৎ ঐ হতের রামান্ত কত ব্যাধ্যান্ত সানের রামান্ত প্রহান, মধনচার্যা কত ব্যাধ্যান্ত সামের প্রথান হ ইয়ছে। প্রতিক্তির আরও অনেক প্রায়ান্ত সাহে, অধুনা ভাহার প্রচন্দ নাই। শকরাচার্যা অসাধারণ প্রভিতানলে ইহাতে অবৈহনঃ সংভাপন করিয়াছেন। উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানে প্রভাগে। এই উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানে প্রভাগে। এই উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানে প্রভাগে। এই উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানের প্রভাগে। এই উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানের প্রভাগে। এই উপনিষদ শাস্ত্রই ভারতীয় ব্রহ্মজানের প্রভাগের। এই উপনিষদের বিষয় বলাকর্ত্রা। উপনিষদের বিষয় বলাকর্ত্রা। উপনিষদের বিষয় বলাকর্ত্রা। উপনিষদের বিষয় বলাকর প্রতিক বিষয় বাহাল আর জীর ও জগং আছে। কেবল আপাততঃ এই টুইন মতকে স্বত্র বলিয়া বোধ প্রাকেনা।

শক্ষরাচার্য্য এই দর্শনে অবৈত্যতই বিশেষকপে মান্ত্র্যান করিয়াছেন। এই বেলাস্কর্লন চারিপাদে বিভক্ত, ই সকল পালে ব্রহ্মের জগৎকর্ত্ত্বাদি অক্ষুটার্থ শ্রুতির সকলে প্রাক্তর নিরাকরণ, অবৈত্য মত বিক্ক শ্রুতির সময়য়াদি, আকাশের নিতাত্ব পণ্ডন ও জাল্ড মার্গান, জীবের সংসারগতি, ক্রমাদি জগতের অবস্থাভেলাদি ও বেলা প্রতিপাদ্য ব্রহ্ম, ইত্যাদি বিষয় প্রদর্শিত হইয়াছে। এই দ্বানের নতে একমাত্র ব্রহ্মই স্ত্যাদি বিষয় প্রকল জগওই মিন্ত্র করে শ্রুতি, স্থৃতি ও যুক্তি প্রদর্শন বারা প্রতিপর্ধাণি হা বিষয়ে সকল প্রায়ে ত্র্যাছে। ইহাতে অধিকারী হওয়া প্রয়োজন। যাইরা অধিকারী না হইয়া সর্কোপাত্র নিগুণি ব্রক্ষোপাসনাম, উদাত ম্বানাকে ভ্রানাইনের কংশ অর্থাৎ কেবল জ্ঞানশালে আলোচনা করিলে নরক হয় ইত্যাদি শ্রুতির অনুসারে ক্রেনারকী হইতে হয়।

বাত্তবিক প্রকৃত ফলের অণুমাত্রও লাভ হয় না। বি
জ্ঞানের অধিকারী হওয়াও সহজ নহে। যিনি অধায়নর্গি
অন্ত্যারে বেদ ও বেদান্ত সকল অধ্যয়ন করিয়া বেদ্ধি বদ

একপ্রকার হৃদয়ক্ষম করিয়াছেন, ইহজ্পের বা ৰুষ্টা
কাম্য ও নিধিদ্ধ কর্মা হইতে নিবৃত্ত ক্ষ্ট্রা কেবন কা
বন্দনাদি রূপ নিত্য নৈমিত্তিক ক্ষ্মা প্রাকৃতিত ও ক্ষ
সনা অর্থাৎ শাণ্ডিল্য-বিদ্যান্ত্যারে সভাশ ব্রহ্বরিশ
মানস উপাসনা প্রভৃতি অন্ত্রান ছারা চিত্তকে বিশ্বল

इहेरवन, त्रहे वाक्किरे बान्नकारनत्र व्यक्षिकाती। **উ**न्निश्विक প্রকারে ত্রান্মজ্ঞানে অধিকারী হইরা জ্ঞানকাণ্ডের আলো-চনা করিলেই অচিরাৎ ব্রন্মভাবপ্রাপ্তিম্বরূপ মুক্তিভালন इहेट शादा। उमा अप वर्षां मरचक्राभ, हिर वर्षार टिङ्कुर्णहराहा, खानखक्ता, भेदम **आनन्मखक्त**ा, **अथ ७ अर्था**९ অপরিচিছন, অধিতীয় এবং নিধর্মক অর্থাৎ ত্রন্মে জ্ঞান বা मूर्यामि (कान धर्षारे नारे, अक्षरे खरा छान ७ सूर्य खरान। যদিও ঘটজ্ঞান হইতে পটজ্ঞান ভিন্ন এবং তোমার জ্ঞান इइटड आमात छान पृथक्, এই तथ एक पावश्व मर्भन ক্রিয়া জ্ঞানের নানাত্বই ^{*}সাধারণত: প্রতীয়মান হয় এবং জ্ঞানের ব্রহ্মস্বরূপতা বা স্কল জ্ঞানের একতারূপু কোন যুক্তি আপাততঃ দৃষ্টিগোচর হইতেছে না, ভাহা इहेरलंड विरमयके विरवहना कविशा एमिएल द्याम इहेरव যে বিষয় স্বরূপ উপাধির নানাত্ব লইয়াই জ্ঞানের নানাত্ব ভ্রম হর মাত্র, বাস্তবিক জ্ঞান নানা নহে, একমাত্র। যেরূপ-এক মৃণ্ট তৈলে প্রতিবিধিত হইলে একরপ, আর জলে গুতিবিধিত হইলে রূপাস্তররূপে দৃষ্ট হয় বটে, কিন্তু বাস্ত-বিক ঐ ঐ স্থলে একই মুখ, মুখের ভেদ নাই। তৈলাদি কপ উপাবির ভেদ লইয়াই ভেদ ব্যবহার হয় মাত্র। ',সেই-কণ জ্ঞানের ঐক্য থাকিলেও ঘটণটাদি বিষয় স্বরূপ উপাবির ভেদ লইয়া জ্ঞানের বিভিন্নতা প্রতীতি হয়। পরত্রকোর গতিবিষযুক্ত সতু, রজঃ ও তমোগুণাত্মক ও সদ্বা অসদ্রূপে খনির্ণেয় পদার্থ বিশেষকে অজ্ঞান কহে। এই অজ্ঞানই নগতের কারণ, এই অজ্ঞানের আবরণ ও বিক্ষেপভেদে তুইটা শক্তি স্থাছে, যেরূপ মেঘ পরিমাণে অল হইয়াও দর্শকের নয়ন শাহ্ন ক্রিয়া বহুযোজনবিস্থত সুর্য্যমণ্ডলকেই যেন আচ্ছাদিত ক্রিয়াছে বেশি হয়, সেইরূপ অংজান পরিচিছর হইয়াও যে শক্তি দাবা দর্শকের বৃদ্ধিত্তি আচ্ছাদিত করিয়া যেন অপরি-环 সায়াকেই তিরোহিত করিয়া রাথিয়াছে, 🝳 শক্তিকে স্বরণশক্তি কহে। আর যে শক্তি স্ইকারে অজ্ঞান ^{डेनामान} कात्रन**क्राल क**शब्स्ष्टिकत्त्र, ঐ मक्तिक विस्कर्न-শক্তি কংহ। এই অজ্ঞান নাস্তবিক এক হইলেও অবস্থা ভেদে বিবিধ, মারা ও অবিস্থা।

বিশুক অর্থাৎ রক্ষ: বা তমোগুণ ধারা অনভিভূত সন্ধ্রণপ্রথান অজ্ঞানকে অবিল্ঞা কহে। ঐ মায়াতে যে পরত্রক্ষের
প্রতিবিধ্ব হয়, ঐ প্রতিবিধ্বই ঐ মায়াকে স্বায়ত্ত কবিয়া কগং
স্পৃষ্টি করেন, এ কারণ ঐ প্রতিবিধ্বই সর্ব্বজ্ঞ, সর্ব্বশক্তিমান্
উত্তর্গ পরবাচ্য, আর অবিল্ঞাতে যে পরত্রক্ষের প্রতিবিধ্ব
প্রিত হয়, ঐ প্রতিবিধ্বই ঐ অবিল্ঞার বশীভূত হইয়া

মন্ত্রাদি বাবৎ জীবপদবাচ্য হয়। অবিদ্যা নানা, স্কুতরাং তংপতিত প্ৰতিবিশ্ব নানা বলিয়া শীবৰ নানা। শীবের नानाषुरात मकन. देवताखिटकता श्रीकात करतन ना धारः একদ্বাদই ুর্ক্তিবারা সংখাপিত করিয়াছেন। মারা ও व्यविम्। दिक्ट यथा करम क्षेत्र अ की दिवत स्वृधि, व्यानमञ्ज কোৰ ও কারণশরীর কহে। এই কারণ শরীরে অভিমানী क्षेत्रंत अ कीव मशाकृतम् हुन्संब्क '७ थांक भनवाहा इन। জীবের উপভোগের নিমিত্ত পরমেশ্বর জীবগণের পূর্ব্বক্তত অকত ও হছত অমুদারে অপরিমিত শক্তিবিশিষ্ট মায়া • সহকারে নামরূপাত্মক নিথিল প্রপঞ্কে প্রথমতঃ বৃদ্ধিতে কলনা করিয়া "এই রূপ করাই কর্ত্তব্য" এই প্রকার সঙ্কল करतम, পরে সেই মায়াবিশিষ্ট আত্মা হইতে আকাশ, আকাশ হইতে বায়ু, বায়ু হইতে ক্রেজ: ও তেজ: হইতে অল, জল হইতে পৃথিবী উৎপন্ন হয়। এই আকাশাদি পৃথিবী পর্যাস্ত পাঁচটী পদার্থকে পঞ্চস্কুত, পঞ্চীকৃতভূত ও পঞ্চ তন্মাত্রও কহে। কারণ যে গুণ থাকে, ভদত্রপ গুণ কার্যোও উৎপন্ন হনু এই ভাষাত্মারে কারণের দত্ত, রজ ও তম আদি গুণ ও আকাশাদি পঞ্ভুতে সংক্রাম্ত হয়। ঐ পঞ্ভুতের এক একটী সত্বাংশ হইতে ক্রমশঃ জ্ঞানে ক্রিয়পঞ্চক জ্ঞা।

আকাশের স্বাংশ হইতে শ্রোত্র, বায়্র স্বাংশ, ইইতে অক্, তেজের স্বাংশ হইতে চকু, জলেব স্বাংশ হইতে রসনা ' এবং পৃথিবীর সন্থাশ হইতে আণেজিয়ে জন্মে এবং ঐ পঞ্জুতের সন্থাংশ মিলিত হইলে তাহা দারা অন্তঃকরণের উদ্ব হয়। আন্তঃকরণ অবভাভেদে বিবিধ বৃদ্ধি ও মন। যংকালে অন্তঃকরণের নিশ্চয়ায়ক বৃত্তি হয়, তৎকালে ভাহাকে বৃদ্ধি, আর যথন সংকল্প বিকলায়ক বৃত্তি হয়, তথন অন্তঃকরণকে মদ কহে। প্রত্যেক পঞ্জুতের রজোঅংশ হইতে য়ণাক্রমে বাকু, পাণি, পাদ, পায়ু ও উপস্কল, পঞ্কর্মে-ক্রিয় জ্লে এবং ঐ পঞ্ভুতের সুমুদিত রজোঅংশ-পঞ্ক হইতে প্রাণবায়ু জন্ম। পূর্বোক্ত বুদি জ্ঞানে ক্রিয়পঞ্কের সহিত বিজ্ঞানময় কোষ এবং মন কর্মেন্ডিয় সহ মনো-ময়কোষ, আর কর্মেঞ্জিয় সহিত প্রাণ প্রাণময়কোষ হয়। এই जिन दकारवत मर्पा विद्यानगत्रकाय छानमस्मिमान्; कर्ड्य-भक्तिमण्णन्न मत्नामग्रत्काय हेष्ट्रांभिकिनीन করণস্বরূপ; আর প্রাণময়কেয়ে ক্রিয়াশক্তিশালী ও কার্য্য-यक्तर। शक्षकाति विषय, शक्ष कर्णा सिय, शक्ष थान, वृद्धि उ মন এই সপ্তদশ স্ক্ল শরীর। ঐ স্ক্ল শরীরকেই লিক্লরীর करहा निक्रमंत्रीत हेश्राक ও প्रताक्शामी अवः मुक्ति প্র্যান্ত স্থায়ী। এই এক এক বিঙ্গপরীরের অভিমানী

জীবকে তৈজন, আর সকল লিঙ্গণরীধেরর অভিমানীকে हित्रगुज् करहा जेश्रत कीरवत डेशरजान-मल्लामक शून বিষয়ের সম্পাদনার্থে পঞ্চ পঞ্চ স্কু ভূতের পঞ্চীকরণ करतन, जाहात अलानी अहेत्रण। भत्रस्यत आकामानि প্রত্যেককে প্রথমত: তুই অংশে বিভক্ত করেনু। পরে প্রত্যেক ভূতের ঐ এক একটা অংশকে চারি চারি থণ্ড করিয়া পুর্বাক্তত আকাশের ছই খণ্ডের যে এক খণ্ড আছে, ভাহাতে वायु, उडक, अल ७ পृथिवीत हाति हाति थएछत मध्या नक-লেরই একটী থণ্ড দিয়া স্থুলাকাশের এবং পূর্বস্থিত বায়ুর এক অনংশে আনকাশু, তেজ, জল ও পৃথিবীর ঐ চারি চারি খণ্ড হুইতে এক এক থণ্ড দিয়া স্থলবায়ুর এবং ঐ রীতিক্রমে ় সুলতেজ, জাল ও পৃথিবীরও স্টি করেন। এই পঞ্চীরুত **१क्ष**कृठ (कहे १क्ष्रह्र मृज् करहा এই স্থ न जुर छहे में सामि শুণের অভিব্যক্তি হয়। এইরূপে পঞ্চীকৃত ও ত্রিবৃংকৃত কুল হইতেই যথাসম্ভব ভূ:, ভূব, স্ব, মহ, জন, তপঃ ও সত্য এই সপ্তলোক এবং «সভল, বিতল, স্কুতল, রুসাতল, তলাতল মহাতল ও পাতাল উৎপন্ন হয়। স্থল শরীরও অন্ন পানীয়াদি দারা উৎপত্তি হয়। স্থূল শরীর চতুর্বিধ জরায়ুজ, অওজ, স্বেদজ ও উদ্ভিজ্জ। এই স্থলনেধের কাস্তি ও পুষ্টির কারণ থেয়াও পানীয়াদির ভক্ষণ। অসর উদরত্ব হইলে তাহার चूनाःरम পूतीय, मधाम चारम साम এवः एकाःरण मरनत পৃষ্টি হয়। পীত পানীয়াদি বস্তুর স্থুল মধ্যম ও ক্লাংশ যথাক্রমে মুত্র, রক্ত ও প্রাণের পৃষ্টিরূপে পরিণত হয়।

যদিও বাস্তবিক পরত্রন্ধ ভিন্ন সকল বস্তুই মিথাা, এই জগতে যে কিছু বস্তু দৃষ্ট হইতেছে, তৎসমুদায়ই রজ্জু সর্পের স্থায় অজ্ঞান কলিতমাত্র এবং জীবাত্মার সহিত পরমাত্মার ভেদ নাই, জীবাত্মাই পরমাত্মা এবং পরমাত্মাই জীবাস্থান অতএব এই জগতের সৃষ্টিক্রম এবং জীবাস্থা ও প্রমাত্মার বিভাগ ক্রা বন্ধ্যার পুত্তের নামকরণের ভাষ উপহাসাম্পদ। যেরূপ মায়াবী ইক্সজাল বিভালারা ঐক্রজালিক বস্তু সক্ল প্রকাশ করিয়া জনগণের দর্শনৌৎ-স্থক্য নিবারণ করিয়া পুনর্কার ঐ সকল বস্তুর সংহার করে, দেইরূপ প্রমেশ্বর অচিন্তা শক্তিশালী মায়া সৃহকারে জগৎ স্ষ্টি করিয়া জনগণের স্কৃত ও হৃদ্ধতের ফল প্রদানাত্তে পরিশেষে লগতের প্রলয় ,করেন। প্রলয় চারি প্রকার-নিতা, প্রাক্বত, নৈমিত্তিক ও আত্যস্তিক। ব্রহ্মজ্ঞাননিমিত্তক পরম মুক্তিপ্রাপ্তিকে আভাত্তিক প্রণয় কছে। ব্রশ্বজ্ঞান ছারা সংসারের মূল কারণ মূল অজ্ঞান নিবৃত্ত হইলে আর भःभात्र-विভि वा भूनअप्रभिष्ठ इत्र ना। धानात्त्रत्र व्यम धहे রূপ, প্রথমতঃ পৃথিবীর লয় জলে, জলের লয় তেজে, ডেলে।
লয় বার্তে, বার্র লয় আকাশে, আকাশের লয় জীনে,
জীবের অহঙ্কারে, তাহার লয় হিরণাগর্ভের অহঙ্কারে এবং
তাহার লয় অজ্ঞানে হয়।

এই মতে প্রমাণ, প্রত্যক্ষ, অনুমান, উপমান, জাগ্র অর্থাপত্তি এবং অমুপল্দি ভেদে ষড়্বিধ। এই ষ্ড্_{বিধ} প্রমাণ বারা যাবতীয় পদার্থের সিদ্ধি হয়। এই ষ্ড্রি প্রমাণ ছারা বৃদ্ধিমান্ জনগণ ঐতিক ও পার্ত্তি সুথসভোগাদির অভিরত্বাদি দোষ দর্শন করিয়া পর্ম মুক ম্বরূপ পরাৎপর পরব্রক্ষপ্রাধির নিমিত্ত তৎসাধনীভূত হয় জ্ঞানেচ্ছু হইয়া উহার উপায় অরূপ প্রবণ, মনন, নিদিধাাদন ও সমাধির অমুঠানে প্রবৃত্ত হয়েন। সবিকল্প ও নির্দিক্ত Cकटार ममाथि विविध। ब्लान, टब्डम এवः ब्लाडा हेडापि विकालत विनाम नितालक, जात जरमालक भन्न का वहा নিবিষ্টচিত্তের স্থিরতাকে যথাক্রমে সবিকল্পক ও নির্মিক্রক সমাধি কছে। নির্কিক্রক সমাধি অবস্থায় চিত্তবৃতি নির্দাং দেশস্থিত প্রদীপ শিথার স্থায় নিশ্চল হয়। এই নির্বিকর मगाधि मिक इटेरन उच्छानी इटेश क्रमन: कीरनूक व প্রমমুক্ত হওয়া ধার। তথন সকল অজ্ঞান তিরোহিঃ হ্য। [বেদাস্ত ও শকরোচার্য্য দেখ।]

ষড় দুর্শনই হিন্দুদিগের প্রধান গৌরবের বিষয়। এই ষড় দুর্শনবেতা মুনিগণ বিষয়াশক্তি হ্রাস করিয়া পরমণদ প্রাঞ্চিবিষরে বিশেষ যত্নশীল ছিলেন। এক একটী দুর্শনের জনের জনেক গ্রন্থ আছে; কোন কোন দুর্শনের কত গ্রন্থ আছে, তাহা প্রত্যেক দুর্শনের নামের স্থলে যথাসম্ভব প্রদৃদ্ধ ইইবে।

এতত্তির আরও একথানি দর্শন আছে, এই দর্শনে নাম পাণিনিদর্শন। এই দশন পাণিনি মুনির প্রণীর। পাণিনি ব্যাকরণই পাণিনিদর্শন। ইহাতে যাবতীয় সংগ্র শক্ষই সাধিত ও বাংপাদিত হইরাছে। এই পাণিনিদর্শন অধ্যয়ন করিলে সংস্কৃত ভাষার বাংপতি অব্যা। সংগ্র ভাষার বাংপতি অব্যা। বাংগ্র ভাষার বাংপতি থাকিলে নানা উপকার দর্শে। বেদানি শাল্পের রক্ষাহয় ইত্যাদি।

এই দর্শনের মতে, শর্ক ছই প্রকার নিতা ও খনিল।
নিত্যশন্ত একমাত্র ক্ষেণ্ট। তত্তির বর্ণাত্মক শন্তম্ম ক্ষিন্য।
বর্ণাতিরিক্ত ক্ষোটাত্মক যে একটা নিতাশন্ত আছে, তার্বাল আনেক স্কেল প্রদর্শিত হইরাছে। তুরাধ্যে প্রধান বৃধি এই, ক্ষোট না থাকিলে কেবল বর্ণাত্মক শন্ত ধারা অর্থাণ হইত না। ইহা সকলই স্বীকার ক্রিয়া থাকেন, ব্রা গকার নকার ও ইকার এই চারিটা বর্ণ এরণ, ত্রার

অগ্নির বোধ হয়। কিন্তু তাহা কেবল ঐ চারিটা বর্ণ দার। मल्लानिक हरेएक शादत ना, कांत्रण यनि के हातिहै। वर्षित প্রত্যেক বর্ণ ধারা বহ্নির বোধ হইত, তাহা হইলে কেবল অকার কিংবা গকার উচ্চারণ করিলেও বচ্ছির বোধ না **ভর কেন ? এই দোষ পরিহারের নিমিত্ত ঐ চারিটা বর্ণ** একত্র করিয়া বহ্নির বোধ জন্মাইয়া দের, এই কথা বলাও বালকতা-প্রকাশ মাত্র। বেহেতু বর্ণ সকল আগভ বিনাশী। : পর পর বর্ণের উৎপত্তিকালে পূর্ব্ব পূর্ব্ব বর্ণ সকল বিনষ্ট इहेग्रा यात्र। স্কুতরাং অর্পুবোধের কথা দূরে থাকুক, তাহাদিগের এক আবস্থানই সম্ভবে না। অতএব বলিতে হইবে, ঐ চারিটা বর্ণ ধারা প্রথমতঃ ক্লোটের অভিব্যক্তি অৰ্থাং কুটভাজনেম । পরে কুটকোট বারা অধির বোধ হয়। এ ভলে কেহ কেহ আপত্তি করিয়া থাকেন, প্রত্যেক বর্ণ ধারা ক্ষোটের অভিব্যক্তি স্বীকার করিলে পূর্ব্বোক্ত প্রত্যেক বর্ণ দারা অর্থবোধের দেশেষ ঘটে এবং সমুদায় বর্ণ দারা অভিবাঁক্তি স্বীকার করিলেও, সেই দোষ ঘটে, যথন উভয়পকেই দোৰ দেখা যায়, তথন এই কোট वीकारतत थारमञ्जन कि ? हेशत निकास धरे, रामन धक-বার পাঠধারাই পাঠ্যগ্রন্থের তাৎপর্য্য সম্দায় অবধারিত श्य ना, किन्छ वातःवात आलाहना बाता छेटा मुह्काल মবধারিত হয়। সেইরূপ প্রথম বর্ণ অকারের ছারা ক্লোটের কিঞ্নি নাত ক্টতাজনিলেও সম্পূর্ণ ক্টতাজনে না। পরে বিতীয় ও তৃতীয়াদি বৰ্ণবারা ক্রমশঃ ক্রতৈর ও ক্রতৈম হইয়া क्षित्र (वांधक इम्र । नजूवा किक्षित्राख कृष्ठे इहेटनहे (य শোট অথবোধক হয়, এমত নহে। যেমন নীল পীত ও রক্তাদি বর্ণের সারিধাবশতঃ এক ক্ষৃতিক মণিই কথন নীল, কথন পীত, কথন বা রক্তরূপে প্রতীয়মান হয়। ভিন্ন অর্থের বোধক হয়। এই মতে স্ফোটকেই সচিচ্দা-নন্দ এক বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন, স্থতরাং শেক শাস্ত্র আলোচনা করিতে করিতে ক্রমশঃ অবিভা নিবৃত্তি হয়; ^{ওদন}শুর মুক্তি। ব্যাকরণ শাল্ল মুক্তির খার অরপ।•

পাণিনি ও ব্যাকরণ দেও।]
তথাচীন আর্যাদিগের ন্থার আচীন গ্রীস ও চীন দেশে
এবং মুসলমানদিগের মধ্যে দর্শনশাল্পের বিশেষ চর্চ্চা
ছিল। এখন মুরেশণে এবং আমেরিকার ইহার বিপুল
চর্চা হইতেছে। দেশভেদে দর্শন শাল্পের শ্রেণী বদ্ধ
করিকে আর্যাদর্শন, মুসলমান ও চীনদিগের দর্শন প্রাচ্য
এবং মুরোপ ও আমেরিকার দর্শনশাল্প পাশ্চাভ্য নামে

আবাত করা বার । আবার পাশ্চাত্য দর্শন সমর ভেদে শ্রেণীবদ্ধ করিলে প্রাচীন ও আধুনিক এই ভিন শ্রেণীতে ভাগ করা যায়, ভন্মধ্যে গ্রীস দেশীর দর্শনই প্রাচীন। পাশ্চাত্য দর্শন এবং রোমের দর্শনশাক্তও প্রাচীন গ্রীক্দর্শন শাক্তের অন্তর্ভুত হইতেছে। দর্শনশাল্রের ইতিহাস-লেথকগণ প্রাচীন গ্রীক্ দর্শনশাল্ল আয়ুবার পতিনভাগে বিভক্ত করিরাছেন। তাঁহারা থৈলিস্কে (Thales) গ্রীক দর্শন শাল্রের প্রবর্তক স্থির করিয়াছেন। সক্রেটস্ হইতে সক্রে-্ টিদের পূর্বতন দার্শনিকগণকে প্রথম সময়ের এবং স্ক্রেটিস্ ( Socrates ), প্লেটো ( Plato ) এবং আরিদ্টটলকে (Aristotle) বিতীয় সময়ের এবং আরিইটল্ হইতে নব প্লেটোনিস্ম ( Neo-Platonism ) নামক দর্শনের শেষ পর্যান্ত দার্শ-নিকগণকে তৃতীয় অর্থাৎ শেষ স্মত্যের অস্তর্ত করিয়াছেন। সক্রেটিসের পূর্ববর্ত্তী দার্শনিকগণ হিলিসিষ্ট ( Hilicist ), পিথাগোরিয়ান্ ( Pythågorean ), এলিয়াটক্ ( Eliatic ) আটমিষ্ট্ (Atomist) ও স্ফিষ্ট (Sophist) এই পার্চ প্রধান প্রেণীতে বিভক্ত হইরাছেন। থেলিস্ই (Thales ) প্রথম শ্রেণীর প্রথম দার্শনিক। স্থানামূলারে শেষোক্ত দার্শ-নিককে প্রথম শ্রেণীর আইওনিক ( Ionic ) দার্শনিকও বুলা হয়। পরিদৃশ্রমান জ্বগৎ কিরপে কি মূল উপাদান হইতে. হইল, ইহাই নিরূপণ করা তাঁহাদিগের দর্শনের মূল উদ্দেশ্য বিশিয়া বোধ হয়। উাহাদিগের মধ্যে কেছ অলল, কেহ বায়ু, কেহ তেজ প্রভৃতি জগতের আদি কারণ বণিয়া স্থির করিয়াছেন। থেলিস্ ( Thales ) ৬৪০ খৃ: পৃ: জন্ম গ্রহণ ও ec • খৃ: পৃৎ অকে পরলোক গমন করেন। তিনি ক্রিসাস্ ( Cræsus ) ও সোলনের ( Solon ) সমসাময়িক ছিলেন। তাঁহার মতে জলই সমস্ত পদার্থের আদি কারণ। আনাকি-मन्तात (Anaximander) ও आनांश्विटमनिम् (Anaximenes) এই উভয়েও আইওনিক (Ionic) দার্শনিক। আনাক্ষিমলারের মতে শীতোফ অর্থাৎ তেজ ও তেজের অভাব এবং শেষোক্তের মতে মর্কুৎই বিখের কারণ। এই তিন জনই আইওনিক দার্শনিকের মধ্যে বিশেষ বিখ্যাত।

পিথাগোরাস্ পিথাগোরিয়ান্ (Pythagorian) নামক দর্শনশাল্লের প্রবর্তক। পিথাগোরাস্ জামস, নগরে ৫৪০ খঃ পুঃ অবদ অন্মগ্রহণ করিয়া ৫০০ খঃ পুঃ অবদ পরলোক গমন করেন। তাঁহার প্রবর্তিত দর্শনাম্পারে সমসন্ধিবেশ ও সমাম্পাত (harmony and proportion) এবং এই উভয়ের পরিণতি সংখ্যাই (number) পদার্থের কারণ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। এই প্রেণীর দর্শন্মত ফিলোলস্ (Philolaus)

সর্বপ্রথম প্রচার ফরেন। সিমিয়াস্ (Simmias), দিবিস্ (Cebes), ওকেলাস্ (Ocelus), টাইমিয়াস্ (Timacus), একেকেটিস্ (Echecrates), একেও (Achrio), আরেকিটাস্ (Archytas), লাইসিস্ (Lysis) এবং ইউ-রিটাস্ (Urytus) ইহারাই পিথাগোরিয়ান্ 'দার্শনি-দিগের মধ্যে থ্যাওনামা কইয়াছিলেন।

পিথাগোরিয়ান্গণ আত্মার অন্তিত্ব স্বীকার করিতেন। তাঁহাদিগের মতে, আত্মান্ত হারমনি (harmony) মাত্র এবং শরীর ইহার কারাগার স্বরূপ।

কলোফন দেশীয় (Colophon) জেনোফনিস্ (Xenophones) এলিয়াটিক (Eleatic) দর্শনের প্রবর্ত্তক। পূর্ব্ব পূর্ব্ব দার্শনিকেরা পদার্থের বছত্ব স্থীকার করিতেন; কিন্তু ইহারা পদার্থের একত্ব থাকা দ্বির করিতে প্রয়াদ পাইয়াছেন। তাহাদিগের মতে ঈশ্বরই স্ব্বনিয়স্তা। ইহাদিগের মধ্যে পারমিনাইডিস্ (Pagmenides), জেনো (Zeno), মেলিসাদ্ ইহারাই ইহাদিগের মধ্যে থ্যাতনামা। একমাত্র সংই পদার্থ। অসম কোন পদার্থ নাই; ইহাই পারমিনাইডিসের মত। [অপরাপর বিশেষ বিবরণ পাশ্চাত্যদর্শন ও প্রোচাদর্শন শব্বে দেখ।]

· मर्भन अथ ( ११) मर्भन छ १ । ७७९। मृष्टि १४। দর্শনপ্রতিভূ (পুং) দর্শনায় প্রতিভূঃ। প্রতিভূ ভেদ, হাজির জামিন, যে ব্যক্তি কোন লোককে হাজির করিয়া দিবার জান্ত জামিন হয়। ইহার বিষয় যাজ্ঞবক্ষ্যসংহিতায় এইরূপ লিখিত আছে--ভ্ৰাতৃগণ স্বামী স্ত্ৰী পিতা পুত্ৰ ইহাদিগের ধন যতদিন অবিভক্ত অবস্থায় থাকে, ততদিন পরস্পর অনুমতি বাতীত ইহাদিণের মধ্যে কেহই প্রতিভূ ( জামিন ) হইতে পারিবে না। আপনি ইহাকে ছাড়িয়া ষ্ট্রিউন, আবশুক মত ইহাকে দেথাইয়া দিব, ইহাকে আপনি अधृमान क्त्रिएक शास्त्रन, ज्ञाशनात्क ठेकाहेत्व ना, लाकहा বিখাসী, ঐ ব্যক্তি ইহা না দিলে জামি দিব, জাপনি স্বচ্চ্দে, ঋণ দিন্, এইরণে দানের ত্রিবিধ প্রতিভূত ্ঞামিন ) বিহিত আছে। দর্শনের এবং বিখাসের প্রতিভূব মৃত্যু শ্বইলে তৎপুত্রগণ উত্তমর্ণের ঐ ঋণ গরিশোধ না করিলে পালী হইবে। যদি অনেক ব্যক্তি অংশ নির্দেশ করিয়া একজনের প্রতিভূহয়, তাহা হইলে যে ধের্মপ অংশের প্রতিভূ সে সেইরপ দিবে। আর যদি এক ছায়াশ্রিত অর্থাৎ বিশেষ আংশ নির্দেশ না করিয়া সকলে মিলিয়া অধমর্ণের সদৃশ হয়, তাহা হইলে প্রতিভূগণ উত্তমর্ণের অভিপ্রায়সারে অর্থ দিতে বাধ্য। প্রতিত্

সর্ব্বজন সমক্ষে উত্তমণ্ডে বাহা দিবে, অধনণ প্রতিভূকে ভাহার বিগুণ অর্পণ করিবে। ধাজের অধনণ প্রতিভূকে তিন গুণ ধালা, বল্লের অধনণ চতৃগুণ বল্ল এবং রদ্য অধনণ আট গুণ রদ দিবে। [ যার্জ্ঞবিভাদং ২ আং । ব

[ প্রতিভূ দেখা

দর্শনা (স্ত্রী) নদীবিশেষ। (পদ্মপুণ)।
দর্শনী (দেশজ) ১ নজর। ২ চিকিৎসকের রোগীদর্শনার্থ
আবাগমন জয়ত পুরস্কার। চিকিৎসক রোগী দর্শন ক্রিডে
আবাসিলে তাহাকে যে পারিক্রমিক টাকা প্রভৃতি দেওরা য়য়,

দৃশিনীয় ( ি । দৃশুতে ইতি দৃশ-জনীয়র । মনোঙ, দশনবোগ্য।

मर्भाताश्विष्ठम् ( श्वी ) উপनिषास्त्रमः ।

ভাহাকে দর্শনী কছে।

দর্শপ (ত্রি) দর্শেন দর্শনেন পিবন্তি পা-ক। দর্শনমারেই পাতৃ দেবভেদ। "নবৈ দেবা অস্ত্রতি পিবন্তি এতদেবায়ঃ দৃষ্ট্য তৃপ্যন্তি" (ছান্দোগ্য উণ্টা

দর্শবামিনী (জী) দর্শতেব বামিনী। তমিশা, অর্কার রাজি। দর্শত বামিনী। অমাবতারাজি।

দর্শায়িত ( ত্রি ) দর্শয়তীতি দৃশ্-ণিচ্দর্শি-তৃচ্। ১ দর্শক, দর্শন কারক। ২ প্রতীহার, ঘারপাণ।

"প্রসাদয়েডামতুলপ্রভাব

पः নো গতির্দশিয়িতা চ ধীর: ॥" (ভারত ভাগভ>১)
দর্শবিপদ্ (পুং) দর্শে অমাবস্থায়াং বিপদ্ প্রণাশোহদর্শ যস্ত । চক্র ।

দ শিতি, ( আ ) দৃশ-ণিচ্ ক্ত। > বাহা দেখান হয়। ২ প্রীকাশির।
দ শিন্ ( আ ) দৃশ-ণিন। ১ অথ। ২ বিবেচক। ৩ সালাং
কারক। "তদ্দিনমুদাসীনং ছামেব পুরুষং বিছঃ।" (কুমার)
স্কিয়াং তীপ্। এই পদের অতন্ত প্রয়োগ হর না, বধা দৃশ্দিন্ প্রভৃতি।

দ শিবিন্ ( তি ) দৃশ্ "অফেষপি দৃশ্ভতে" ইভি ইবণিণ্। ফ্রা।
"কুক্রণাং পাওবাণাঞ্চ ভবান্ প্রত্যক্ষদশিবান্।"

(ভারত,আ' ৬ম')

কেহ কেহ এই শব্দ দশিবন্না বলিয়া দশিবস্বনির্থাকেন, ইহা অত্যন্ত প্রামাদিক।
দশী, মাস্কাজ প্রেসিডেন্সীর অন্তর্গত নেলুর জেলার একী
ভামিদারী তালুক বা মহকুমা। পরিষাধকল ৬১৬ বর্গনার।
প্রধান নগর দশী।

দর্শী, যাজাজ প্রেসিডেনীর নেরুর জেলার দর্শী নাম্ব রুগি কের প্রধান নগর। সক্ষ্ ১৫° ৪৮ জঃ ও জাবি ৭৯° ^{৪৪ পু} মধ্যে অবস্থিত। এখানে থানা, ডাক্ষর প্রভৃতি ও সাধারণতঃ
ধে সমস্ত রাজকীর কার্যালয় থাকা উচিত তাহা আছে।
দর্ম্য (জি) দৃশ্-বং। দর্শনীয়। "ইতি চিত্রা রূপাণি দর্শ্যা"
(ঝক্ রেবেঃ)১) 'দর্শ্যা শ্বযাপারের্দর্শনীরানি।' (সায়ণ)
নল (ক্লী) দলতীতি দল-অচ্। ১ উৎসেধ। ২ খণ্ড।৩ পত্র।
৪ ধন।৫ তমাল পত্র। ৬ জর্জ। ৭ অক্সচ্ছদ, থাপ। ৮ অপদ্রব্য। ১ সমূহ, সম্প্রদায়। (দেশজ) ১০ কাঠ ফলকাদির
স্থাত্ব। ১১ জলজ তুণ বিশেষ।

্ল, শলের কনিষ্ঠ ভাতা [শলু দেখ]। ইনি বামদেবকে বিনাশ করিতে এক বিষাক্ত বাণ ক্ষেপীণ করিলে বামদেবের শাপে ঐ বাণে ইহার পুত্র শ্রেনজিং বিনষ্ট হয়।

(ভারত বন ১৯২ অ॰) [ বামদেব দেখ।]
লইলামা, বৌদেরা ইংকে একজন জীবিত, বুদাবতার
বলিয়া বিখাদ করেন। তিবতের রাজধানী লাদা নগরের
বহিচ্চেশে বৃদ্ধলা নামক মন্দিরে ইনি বাদ করেন। ইংার
শিষাগণকে সংশোধিত বা সংস্কৃত বৌদ্ধ বলে। [ লামা শব্দে
বিস্তুত বিবরণ জ্ঞবা।]

লকোষ (পুং) দলাক্সেব কোষো ষভা। কুৰুপুপা বৃক্ষ, কুন্তুলের গাছ।

লগোমা, আসামের গোয়ালপাড়া প্রদেশের একটা প্র ম।

ত্বাং ২৬ ৬ উ: ও জাবি ১০ ৪৯ পূ: মধ্যে অবস্থিত।

এখানে প্রতি বংসর জামুয়ারি মাসে একটা বৃহৎ মেলা হয়।

এখানে এ প্রদেশের প্রধান জমিদার বিজ্নী রাজার একটা

জমিদারী কাছারী আছে।

লজ ( ত্রি ) দল-জন-ড। একদলস্থিত।

ल्ज् ( बि ) मन, वारु प्यक्न्। विधाकांत्रक ।

লথিথা, ২৪ পরগণার অন্তর্গত বসিরহাট মহকুমার একটা গ্রাম। • এখানে একটা ভাল বাজার আছে।

লনিৰ্মোক (পুং) দলতীতি দলং বন্ধলং নিৰ্মোকইৰ ৰস্ত। ভূৰ্জণতবৃক্ষ।

ননী (ত্রী) দল্যতেহনয়া দল-করণে লুট্ে-ডীপ্। ১ লোই, ^{ডেলা।} ২ ভেদকর্তা।

"প্রতিপক্ষপক্ষনসনী বাস্থাফলোক্সাসিনী।" (বিষয়োগতরং)
নপুং (পুং) দল্যতেহসৌ দল্যতে অনেন বা দল-কপন্।
(উধিক্টি দলি কটি ধলিজ্যা:। উণ্তা১৪৩) ১ অর্থা ২ শল্পতি।
প্রব্যা তিবিদারক ক্ষাত্র। দলং বুবং পাতি পা-ক। ৪ দলপতি।
নপিতি (পুং) দলভ পতি: ৬তৎ। দলের প্রধান ব্যক্তি, সন্দার।
নপুষ্পা (ত্রী) দল্যনি পত্রাণীব পুষ্ণাণি ষভাঃ। কেতকী,
ক্ষোক্ন গাছ।

দলদা, সিংহলের কাণ্ডী নগরে অকিত বৃহদেবের সচিত্র

শস্ত। পর্কুগীলগণ কর্তৃক ১৫৬ গুরাকে আসল দস্ত

বিনষ্ট হয়; এথন বে দস্ত দেখান হর, তাহা প্রায় ছই ইঞ্চ লঘা একথও বিবর্ণ হতী দস্ত ভিন্ন আর কিছুই নর। ইহা
দেখিতে অনেকটা কুন্তীরের মুস্তের স্থার। সিংহলের
বৌদ্ধাণ ইহাকে অত্যস্ত ভক্তি করে।

দলবাই সেতুপতি, রামনাদের এক রাজা। ইনি ১৫৭১
শকাকে প্রসিদ্ধ রামেশর মন্দিরের পূর্কদিকের গোপুর নির্দাণ করিয়াদেন। ইহা এখনও অসম্পূর্ণ অবস্থার রহিয়াছে। ইনি ভৃতীয় প্রাকারের পূর্বোত্তর কোণের দভাপতি নামক মন্দিরও নির্দাণ করাইয়াছেন।

**एल्या, वानाना (एट्नेंड मानजूम (अनांड अखर्नेज एनमा नामक** পাহাড়শ্রেণীর প্রধান পাহাড়। ৩৪-৭ ফিট্ উচ্চ। ইহা পার্খনাথের প্রতিঘন্টী স্বরূপ বলিয়া বর্ণিত। কিন্তু পার্খ-নাথ পাহাড়ের উচ্চ শৃকের স্থায় ইহার একটী শৃকও নাই। ইহার ক্রমনিয় অংশগুলি নিবিড়বনাঁকীণ। মহয় ও পভ বোঝা লইয়া ইহার উপর উঠিতে পারে। ধরিয়া ও ঝরিয়া নামক হুই'অসভ্য জাতি প্রধানতঃ এই পর্কতে বাস করে। मलामी > व्यविधात त्राविद्यानी व्यविधात व्यक्ति একটা পরগণা। ইহার উত্তরে রায়বরেলী পরগণা, পূর্ব্বে স্লোন, দক্ষিণে ফতেপুর জেলা এবং পশ্চিমে থাইরোন ও শরেনী পরগণা। পরিমাণ ফল ২৫০ বর্গমাইল। পূর্বে এই প্রদেশে ভর নামক জাতি বাস করিত। দিল্লীর সমাট অক্বর ইহাকে পরগণা করেন। এই প্রগণায় ১০টী গ্রাম আছে; ইহার মধ্যে লালগঞ্জই প্রধান। প্রত্যেক গ্রামেই এক একটা বান্ধার আছে। এথানকার আমদানী জব্যের মধ্যে ফরজাবাদের চাউল ও চিনি এবং ফতেপুরের তুলাই প্রধান। পুর্বের এথানে বছ পরিমাণে সোরা প্রান্তত হইত। কিন্তু এথন কেবল ছইথানি গ্রামে অল্ল পরিমাণে প্রস্তুত হয়। এধানে বংসর বংসর ছুইটী বুহৎ মেলা হইয়া থাকে।

২ দলমৌ প্রগণার প্রধান নগর ও সদর। রার্বিরেণী নগর হইওে ১৬ মাইল দক্ষিণে গলনেদী তীরে, জ্বৃকাণ ২৬০ ০০ এ উ: ও জাঘিও ৮১০ ৪ ২০ পু: মধ্যে।

ক্থিত আছে যে, প্রায় ১৫ • বংসর পূর্বে কনোজের কোন রাজা এই নগর স্থাপন করেন। এই স্থান অনেক দিন ভরদিগের অধিকারে ছিল। ইহার চতুর্দ্ধিকস্থ প্রাদেশে ভরদিগের সহিত মুসলমানদিগের অনেক কাল ধরিয়া বিবাদ চলিয়া ছিল। আহুমানিক খুটীয় ৪০০ অক্তেড্রো স্থাতান ইত্রাহিম সর্কি কর্তৃক সম্পূর্ণরূপে বিন্তু হয়।
এথানে অনেকগুলি মস্লিল্ও ভড়দিপের ছর্গের ধ্বংশাবংশব দেখা যায়।

এখানে মহাদেবের একটা মনোহর মন্দির, মুসলমানদের করেকটা মসজিদ্ এবং একটা সরাই আছে। পদা হইতে আরম্ভ করিয়া, রায়বরেলীর মধ্য দিয়া লক্ষ্ণে) পর্যান্ত একটা পাকা রাজা গিয়াছে। এখানে ভিনটা বি-সাথাহিক হাট বসে। থানা, ডাকঘর, গবর্মেণ্টের ইংরাজী বাঙ্গালা বিস্থালয় এবং শাধা ঔষধালয় আছে। কার্ত্তিক সংক্রান্তিতে এখানে প্রতি বৎসর 'একটা বৃহৎ মেলা হয়। সমস্ত দলমৌ পরগণা একজন মুস্পেদের অধীন।

দলন (রী) দল-করণে লাট্। ১ ডেলা, লোট্র। ২ মর্দন।
দলসারিণী (স্ত্রী) সাধ্যোহস্তাভাঃ সার-ইনি ভীপ্চ, দলে
সারিণী। কেমুক, কেউগাছ।

সারিনী। কেমুক, কেউগাছ।
দলস্চি (পুং) দলভ স্চিরিব। কণ্টক, কাঁটা।
দলস্চি (পুং) দলভ স্চিরিব। কণ্টক, কাঁটা।
দলস্থ (তি) দলে তিঁছতি হা-ক। দলভুক্ত।
দলক্রাসা (ত্রী) দলভ অসা ৬তং। পত্রশিরা।
দলাক্রাস্ত (তি) দলে আক্রান্ত:। দলস্থ দলভুক্ত।
দুল্লাঢ়ক (পুং) দলৈরাঢ়ক ইব। ১ স্বয়ংজাত তিল বৃক্ষ।
২ পৃন্নী, গৈরিক, গিরিমাটি। ৩ নাগকেশরপুপাবৃক্ষ,
নাগেশ্বর। ৪ কুন্পপুপাবৃক্ষ, কুঁদফ্লা। ৫ করিকর্ণ বৃক্ষ,
হস্তিকর্ণ পলাশ। ৬ শিরীয বৃক্ষ। ৭ বাত্যা। ৮ মহন্তর।
১ ফেন। ১০ ঘাতক। ১১ মাত্ত। ১২ কুন্তিকা, জালের পানা।

प्रलापित (एमक) शक्कांशक विवाप।
प्रलाब (एमक) मर्फन, भणवाता (भयग, माँफान।
प्रलाम (को) अराजन खमनः। > मक्रवक वृक्क, मक्रवी स्न।
र प्रमनक वृक्क, दिना।। ७ मप्तन वृक्क, मयना शाहः। (मक्षतः)
प्रलाम (क्री) परानम् खामा तरमा यद्यः। ठ्कमाक, ठ्कणानाः,

मलाहा ( प्ः ) मरनन (खरमन आहा:। अक, कर्वह, मन्मरन

পাতলা কাদা।

দল হিন্দ্র (क्रो) দল ইতি আহ্বরো যস্ত। পত্তক, তেজপাতা। দলি (পুং-ত্রী) দলাতে ইতি দল-ইন্। (সর্বধাতৃতা ইন্। উণ্৪।১১৭) লোষ্ট্র, ডেলা।

দলিক (রী) দলাতে ভিছতে দল-ইন্ সংজ্ঞারাং কন্। কার্চ।
দলিক্সকোট, খাধীন সিকিমের দক্ষিণে নেচুও দেচু নদীর
পশ্চিম, ডিস্তানদীর পূর্বভাগে অবস্থিত একটা পার্বভা উপবিভাগ। ১৮৬৪ খুটাকে ভূটানের যুদ্ধাতার ফলস্ক্রপ এই প্রদেশ ইংরাজেরা প্রাপ্ত হন। এখন ইছা দার্জিলিং প্রদেশের জন্তভূকি **হইয়াছে। এই স্থানের নাম এখন কা_{ণিমুশ্ন}** হইয়াছে।

অধুনা এই মহকুমা তিনভাগে বিভক্ত হট্_{রাছিন} ১ ক্লবক্দিগের অভ্য একভাগ'। ইহার ৩০০ছ০ একর অমি জরিপ হট্রা দশবৎসরের অভ্য বন্দোবস্ত হট্_{রাছে}। ২ একটা বন ও সিন্কোনা চাষের অভ্য গবর্মেটের বান অমি। ৩ চা চাষ ক্রিবার জভ্য ১০০০ একর জমি।

কালিমপঙ্গে (দলিজকোটে) ছোট একটা বাজার এবং
মহকুমার কার্যালয়াদি আুছে। তিতা নদীর উপর একট
সেতৃ নির্মিত হওয়ায় সকল ঋতুতেই পশ্চিমদিক্ হইটে

' এখানে যাতায়াতের হৃবিধা হইয়াছে বলিয়া লোকসংগ
ক্রমেই বৃদ্ধি হইতেছে। পরিমাণফল ৪৮৬ বর্গমাইল।
দলিত (, ক্রি) দলমস্ত জাতং দল-ভারকাদিখাদিভচ্।১ প্রফ্
টিত, প্রাফ্রা ২ খণ্ডিত, কর্তিত। ০ বিদীর্গ, ছিয়।

"দলিতকুচনধালমজপালীং রচয় মমান্ধমুপেতা পীবরোক।"
(প্রাবোধচ্জোণ থাকা

৪ ডাউল।

দলিন্ (তি) দল মুখাদিখাৎ মহর্থে ইনি। দলমুক্ত। ত্রিয়াং ঙীণ্ দলিল (পারসী) সভাসভনির্দেশক পত্র। মোকদ্মাসংক্রাঃ
থাগক পত্র।

দলীপসিংহ, পঞ্জাবকেশরী রণজিভের কনিষ্ঠ গৃত্ত ১৮৩৮ খৃষ্টাব্দে তদানীস্তন গ্রব্যব্দেনারল লর্ড অক্লাণ্ডে সহিত মহারাজ রণজিতের সাক্ষাতের প্রায় তিন মাস প্রে দলীপ ভূমিষ্ট হন। মহারাজ রণজিভের মৃত্যুর পর পঞ্চার রাজ্য প্রভূত্তপ্রয়াসী অর্থগৃধু পিশাচদের তক্ষণ্ডব ন্যে বিতীষিকাপূর্ণ হইয়া পড়ে। রণজিৎ ১৮৩৯ খুষ্টাব্দে মৃত্যুন্রানি শয়ন করেন, আর দলীপ ১৮৪০ খৃষ্টাব্দে সিংহাসনে লাফ্রে হণ করেন, এই ৫ বৎসরের মধ্যে রাজ্যশাসনক্ষমতা ৫ মনে হত্তে ক্রন্তে হইয়াছে। দলীপ বলিতে গেলে ভারভের বেন আধীন ভূপতি। দলীপের জীবনীর প্রারম্ভে দলীপ বনি সিংহাসনে আরোহণ করেন, তথন পঞ্জাবের কির্মণ কর্মা ভাহার পর্যালোচনা করা উচিত।

রণজিতের মৃত্যুর পর তাঁহার জোর্চ পুর গুজারিং রাজাসনে উপবেশন করেন, কিন্তু অকর্মণাতা ও কিয়া প্রযুক্ত নিজ রাজ্যভার বিজ্ঞ ধাানসিংহের হত্তে না রাগি চৈওসিংহ নামক জনৈক মৃর্ধ, দান্তিক্ত চাটুকারের করে করে পূল করেন। থড়াসিংহের পুল্ল নবনেহাল সিংহ জ্বলা পিতার কর্মান্ত পুলা। তিনি ধাানসিংহের সহিত মিনিহ ইয়া চৈতসিংহের কবল হইতে পিভাকে রক্ষা হার,

_{অত:পর} কার্যাত: নবনেহাল সিংহই পঞ্চাবের রা**জা ছিলেন**। ধ্রুসিংহের শবদাহ করিয়া নবনেহাল গৃহে প্রত্যাবর্তন-ভালে বিখাস্থাতক চক্রীর চক্রেই হউক বা পঞ্চাবের অনুষ্ঠ চক্র পরিবর্ত্তিত হইবে বৃলিয়াই হউক পথিমধ্যে নিহত হন। ভাহার নিধনে নবনেহাল সিংহের জননী চাঁদকুমারী রাজ্য-ভার আপন করে গ্রহণ করেন। ধ্যানসিংহ তাঁহার অধীনে বাজোর শাসন-সচিব পদে স্থাপিত হইলেন। ভাহাতে কারার মন উঠিল না। তিনি সেরসিংহের সহিত বড়বল্লে প্রবৃত্ত হইলেন। সেরসিংছ এণজিৎ সিংহের পুত্র, কিন্তু রণ-ক্লিং কথন তাঁহাকে ঔরস পুত্র বলিয়া স্বীকার করেন নাই। ধ্যানসিংহের ভ্রাতা গোলাব সিংহ ও স্থচেত সিংহ এই ষড়যঞ্জৈ লিপ্ত ছিলেন। তাঁহারা সেরসিংহের পৃষ্ঠপোষক ছিলেন বৰিয়াই রাণী টাদকুমারী সিংহাসন পরিত্যাগু করিতে বাধ্য *চ*ইলেন। সেরসিংহ রাজ্য হাতে লইয়া বিপ**ল্ল হইলেন।** তাঁহাব জোয়ালাসিংহ নামে একজন প্রিয় সন্দার ছিলেন। রাজা প্রাপ্তি-বিষয়ে সহায়তা করায় জোয়ালা দিংহ দেরসিংহের আবও প্রিয়পাত্র ছইলেন, স্মৃতরাং তিনি কূটনীতিবিশারদ প্রভূত্বপ্রাসী ধ্যানসিংহের কোপদৃষ্টিতে পড়িয়া নিহ্ত হই-গেন। সেরসিংহ লেহনাসিংহ নামক একজন সিন্ধনওয়ালা দদারকে বন্দী করিয়া তাহার সম্পত্তিশ্বরাষ্ট্রভুক্ত করেন।কিছু কাল পরে লেহনাসিংহকে মুক্তি দান করিলে ভাহার ভ্রাভা উত্তরসিংহ ও ভাতৃপুত্র অজিতসিংহ রাজদরবারে সম্মানিত ১ইলেন। এথন এই উত্তরসিংহ ও অবিভিসিংহ কমতা মজন ও প্রতিশোধ প্রয়াসী হইয়া ধ্যানসিংহ ও সের-দিংহের মধ্যে অবিখাদের বীজ বপন করিতে লাগি-ণেন। চেষ্টা ফলবতী হইল। সেরসিংহ নিজ কক্ষে শ্বিয়া মন্ত্রদিগের ক্রীড়া কৌতুক দেখিতে ছিলেন, অবিত भिः र॰ এक है। वन्तृक त्मथा हेवात हत्न शृहर धारवण करतन। দেরসিংহ বন্দুক গ্রহণাভিলাষে হস্ত বিস্তার কুরিবামাত্র ছিনা-ণিক বন্দুকের গুলি আসিয়া তাঁহার বক্ষঃস্থলে প্রব্লেশ করিল, তিনি তৎক্ষণাৎ ভূশায়ী হইলেন। পরে লেহনাসিংহ সের-শিংহের অুপ্রাপ্তবয়স্ক পুত্র প্রতাপদিংহকে হত্যা করিল। ^{ধ্যানসিংহ} চক্রাক্তঞ্জালে জড়িত হইয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। ^{ধুননসিংহে}র হত্যার সময়ে শেহনাসিংহ উপস্থিত ছিলেন না। তাঁহার ইচ্ছা ছিল, ধ্যানসিংহের স্থযোগাপুত হীরা-^{সিংহ ও} স্থচেতসিংহকে রালধানীতে আনাইয়া এককালে তিনজনের বধকার্য্য সম্পাদন করিবেন। সে আশার নিরাশ হইয়া এখন ডিনি ভিন্ন প্রণালী অবলম্বন করিলেন।

^{হীরাসিংহ} তৎকালে নিজ সেনাবাদে অবস্থিতি ক্রিতে

ছিলেন। হীরাসিংহের নিকট সংবাদ প্রেরিড হইল যে, মহারাজ সেরসিংহের মৃত্যু হেতু পরামর্শ করিবার জভারাজা ধ্যানসিংহ স্থচেভসিংহ প্রভৃতিকে আহ্বান করিয়াছেন। ভাঁহারা ধানসিংহের হস্তলিখিত অফুজাপতা ভিল যাইতে অস্বীকার করিলেন। ভাহাতে বন্দপ্রয়োগে লইয়া যাইতে প্রায় ৫০০ সৈক্ত উপস্থিত হইল। হীরাসিংছও নিজ দলবল লইয়া উপস্থিত হইলেই ভাহারী পলায়ন করিল। দেরসিংহের হত্যার কথাই হীরাসিংহের কর্ণগোচর হুইুয়াছিল, ধ্যান-সিংহের নিধনবার্ত্তা তিনি স্বানিতেন না। একঘণ্টা পরে এ সংবাদ তাঁহার নিকট পৌছিল। তিনি তথন শিথ স্দার-দিগকে আহ্বান করিয়া পিতৃনিধনবার্তা জ্ঞাপনপুর্বাক তাঁহাদিগের সাহায্য প্রার্থনা করিলেন্। সেরসিংহের সময় হইতেই শিথদৈত প্রভুত্ব প্রীয়াদে অন্তাসর হইয়াছিল। वाकामानन ७ পরিচালন বিষয়ে निथ সর্দারগণ পঞ্চায়েৎ করিয়া যথেষ্ট সহায়তা করিত। এই চ্র্দমজনয় উচ্চুখল জাতিকে নিয়মে আবদ্ধ করিতে পারে, এমন ব্যক্তি তগন কেহই ছিল না। রণজিতের মৃত্রুর পর থজাসিংহের পরি বর্ত্তে যদি নবনেহালসিংহ ুরাজসিংহাদনে বসিতেন, ভাহা हरेल पक्षार्वत अनृष्टेठक हम्रड जिन्न निरक परिवर्धि उ हरेड, পঞ্জাবের দারুণ অংধাগতি ঘটিত না। হীরাসিংহ বৃঝিয়া. ছিলেন, থালদাদৈজই এখন পঞ্জাবের প্রাভু; ভাহাদিগেব অসিবল যাহার স্বপক্ষে আছে, সেই রাজা: সেই জন্মই তিনি শিথ সন্ধারগণের সহিত পরামর্শ করিলেন, সেই জন্মই থালসা-সৈত্যের হন্তে আত্মসমর্পণ করিলেন।

থালসাদৈত এ পর্যান্ত স্থব্দিপরিচালিত হইয়। কার্যা করিয়াছে। অকর্মণ্য সেরসিংহের মৃত্যুতে তাহারা বিশেষ ক্তুতি গণনা করে নাই, কিন্তু কার্য্যদক্ষ মন্ত্রী ধ্যানসিংহের হত্যাতে তাহারা সিদ্ধনওয়ালা সন্দারদিদের উপর বিশেষ ক্র্দ্ধ হইয়া হীরাসিংহের সহায়তা করিতে অঙ্গীকার করিল।

ইত্যবসরে অজিতসিংহ পঞ্চমবর্ষীয় শিশু দলীপকে রাজা বলিয়া প্রচার করিয়া আপনি উলীর হইয়া বসিলেন। হীরাসিংহ করাসী সেনাপতি ভেঞুরা ও আবেটাবেলির সাহায়ে লাহার অবরোধ করিবার আয়োজন করিলেন। লেহনাসিংহ ও অজিতসিংহ দলবল সহ নিহত হইলেন। কেবল উত্তরসিংহ দলবল সহ শতক্র পার হইয়া ইংরাজরাজ্যে গিয়া প্রাণরক্ষায় সমর্থ হইয়াছিলেন। যুদ্ধ জয় করিয়া হীরাসিংহ সৈক্সগণকে একমাস মাহিনা বকশিস্ করিলেন ও ভবিষ্যতে তাহাদের মাহিনা বৃদ্ধি করিবেন স্বীকার করিলেন। লাহোর অধিকারের পর চতুর্থ দিবদে শাসন ও সৈনিকবিভাগের ধাবতীয়

সম্ভ্রাস্ত ব্যক্তির সমক্ষে ও অনুমতিতে মহারাজ রণজিতের একমাত্র জীবিত পূত্র পঞ্চবর্বীর শিশু দলীপের রাজ্যভারপ্রহণ বিবোষিত হইল। হীরাসিংহ উজীর হইলেন।

মহারাণী ঝিন্দন দলীপের গর্ভধারিণী। 'পদ্বীগণ মধ্যে ঝিন্দনই মহারাজ রণজেতের প্রিশ্বতমা মহিনী তিনি ইহাকে 'মা: বুবা অর্থাৎ, 'স্বামীর আদরিণী' বলিয়া অভিহিত করিতেন। চরিত্র-দোবে তাঁহাঁর চরিত্র কলজিত ছিল সভা, কিন্তু তিনি ফ্লে বীর্যবতী তেজাম্বনী ছিলেন, এ কথা কেহই অস্বীকার করিতে পারিবে না। ইংরাজ ইতিহাস-লেথকের লেখনী বলে ইনি অয্থা কলজিত হইয়াছেন।

স্থানেত সিংহ মহারাণী ঝিন্দানের প্রিম্নপাত্র ছিলেন। হীরাসিংহ উলীর থাকিবে, হুচেডসিংহ তাহা সহ্য করিতে না পারিয়া মহারাণীর জোঁষ্ঠ জাতা জবাহিরসিংহের সহিত পরামর্শ করিতে লাগিলেন। মহারাণীও তাহাতে যোগ আদিলেন। কিন্তু বেতন বৃদ্ধি করিয়া দিয়া হীরাসিংহ দৈলগণের প্রিয় হইয়ছিলেন, কাজেই তাঁহারা 'দহলে কিছু করিরা উঠিতে পারিলেন না। একদিন জবাহিরসিংহ মহা-ব্লাজকে হস্তগত কৰিয়া সৈম্ভদিগের সমুথে দলীপ ও তাঁহার মাতা হীরাসিংহ কর্তৃক বিশেষরূপে নিগৃহীত হইতেছেন, এ कथा जानाहरणन ও मजुद हेहाद श्री जितिशान ना हहेरण जिनि বালক মহারাজকে লইয়া ইংরাজের আশ্রে গ্রহণ করিবেন এ কথাও বলিলেন। মহারাজ রণজিতের মৃত্যুর পর হইতে ইংরাজেরা লাহোর দ্রবারের সহিত ভাল ব্যবহার করেন নাই। ১৮০৯ খুটাকে ইংরাজ গবর্মেণ্টের সহিত মহারাজ রণব্বিতের প্রথম সৃদ্ধি হয়। ১৮৩৭ খুটাব্দে জুনমাদে ইংরালরাজ, রণজিতসিংহ ও আফগানিস্থানের অধিুপতি শাহস্ত্জার মধ্যে এক সন্ধি স্থাপিত হয়, এই সন্ধিতে সিন্ধ দেশের আমীরগণের বাধীনতা স্বীকৃত হয়। ইংরাজরাজ স্কার পক্ষ অবলম্বন করিয়া সিদ্ধদেশ আত্মসাৎ করিলেন। আফগানুবুদ্ধ শেষ হইলৈ ইংরাজনৈত পঞ্চাবের ভিতর দিয়া প্রত্যাগমন করিবার অসুমতি চাহিল, তথন নবনেহালের করেই কর্তৃত্ব সমর্পিত। লাহোর দরবার অন্থগ্রহ করিয়া সে বারের মত অফুজা প্রদান কুরিলেন। অরকাল পরেই শাহ স্কার রক্ষার্থ পুনরায় আফগানিস্থানে রসদ ও সৈক্ত প্রের-ণের আবশুক হইল-লাহোর দরবারের সম্পূর্ণ অনভিমতে পঞ্জাব প্রদেশ দির। সৈক্ত প্রেরিত হইল। এই সময়ে লাছো-রের হুরু তি জত প্রকৃতি রেসিডেন্ট ওয়েড সাহেবের ব্যব-হারে শিথকাতি ক্রমেই উত্তেজিত হইতেছিল, গ্রপ্র জেনা-

রল নর্ড অক্লাণ্ড তাঁহাকে স্থানাস্তরিত করিয়া শিৰ্দিগত শাস্ত করিলেন। পরে পেশাবর লইরা গোল্যের वाँधिन । ১৮०৮ चुँहारसत मिक्तिरात रमनावरत त्रमनिता অধিকার সাব্যস্ত হয়। এখন শাহস্তমা পেশাবর দাবি क_{रि} লেন. ইংরাজ তাঁহারই পোষকতা করিলেন। এই স্থা শাহস্কার পুনরায় বিপদ্ উপস্থিত, ইংরাজকে _{উটোর} সাহায্যার্থ দৈয়া প্রেরণ করিতে হইল, পঞ্লাবের ভিতর দিন পুনরায় বাহিনী চলিয়া গেল। সেরসিংহ তথন সিংহাগনে অধিরত, কিন্ত শিথ দৈলগণের উচ্চ্ত্রলতা দমন হর তাঁহার সাধ্যারত ছিল না। এই সমরে গবর্ণী জেনারনের 'এজেণ্ট সেরসিংহকে বলিয়া পাঠাইলেন যে, ডিনি _{লাফ} সহস্র সৈতা লইয়া অবাধ্য শিথদিগকে দমন করিতে ইচ্ছৰ কিন্তু তিথিনিময়ে তাঁহাদিগকৈ নগদ চলিশ লক মূলা ৭ শতক্রর দক্ষিণস্থ প্রদেশগুলি দিতে হইবে। সেরিদঃ সম্মত হইলেন না। কিন্তু একথা গোপন রহিল না। ইয়া লাহোর দরবারের সহিত তাঁহারা আবে কোন রূপ দ্ধি স্ত্রে আবন্ধ নহেন, এবং তাঁহারা পেশাবর দখল করিবেন। কথামত কার্য্যও হইল। ইহার কয়দিন পরেই শাঃ ফুজার পরিবারবর্গ কাবুলে যাইভেছিল, মেজর বজ্ট তাঁহাদিগের রক্ষক হইয়া ষাইভেছিলেন। তাঁহাদিগের স্থায়তা করিতে কতকগুলি শিশ্বসৈম্ম প্রেরিত হয়, ঘটনা ক্রমে তাহারা মেজর সাহেবের সংশব্দের কল্যাণে ^{শক্} বলিয়া বিৰেচিত হয়। সৌভাগ্যক্রমে ইহার ফল युज्त ঋকতর হইবে স্থিরীকৃত হইরাছিল তাহা হুইন, বাাণা≀ অলেই মিটিয়া গেল। গোলংবাগ মিটিল বটট, কিৰ ইংগ্রহ শিথদিগের অধিকতর ঘুণাভাজন হইলেন। ই**ই**ার কর্মিন পরেই ইংরাজ আফগানস্থান হইতে ভাড়িত হইলেন গিং দৈভের আক্ষৃক্লোই ও গোলাবসিংহের সহায়তার ^{ইরোহ} পুনরাক আফগানিস্থানে প্রবেশ করিতে পারিরাছিলে। পূর্ব সন্ধিমতে নিষিত্ব হইলেও ইংরাল ফিরোলপুর প্র^{কৃতি} অনেক স্থানে সৈভসমানেশ করিরাছিলেন) हेंश्तारकत रकोनन कान रमिक, त्रिक, कात हेशावा প্রতি তাঁহাদের মুণা বিখুণ পরিবর্দ্ধিত হইত।

এই সকল কারণে শিথলৈও অবাহিরসিংহের প্রথা বড় ভাল বলিয়া বৃঝিল না। সমত রাজি ধরিরা গরান হইল, হীরাসিংহের অভ্চরেরাও সৈন্তদিগকে অনেক বর্ব বৃঝাইল। পরামর্শ ছির হইল যে, অচেডসিংহ ও বর্মার সিংহ রাজ্যের শতা। হীরাসিংহ প্রাভাবেই অবাহির কিরে

নিকট হইতে বালক মহারাজের উদ্ধার সাধন করিয়া মহোৎ-সবে নগরে প্রবেশ করিলেন। অবাহিরসিংহ কারাগারে নিকিপ্ত হইলেন-মহারাজের মাতৃল বলিয়া তাহার প্রাণদও इइन नी। গোলাবসিংহ লাহোরেই ছিলেন। স্থচেডসিংহ ও হীরাসিংহে কথ্নও মিল বা একমত হইবে না ব্ঝিয়া, তিনি হুচেতসিংহকে সঙ্গে লইয়া অস্থাতা করিলেন। प्रशास त्रंगिक काणीत्रांतिः । अ त्रामात्रांतिः नात्म আর এইটা পুত্র ছিল, কিন্তু তাঁহাদিগকে তিনি নিজ ঔরদ পুত্র বলিয়া স্বীকার করেন•নাই। এই সময়ে তাঁহার। লাহোর দিংহাদন অধিকার করিবার মানদে অগ্রসর হইলেন। হীরাদিংহ ও গোলাবদিংহ উভয়ে মিলিয়া তাঁহাদিগকে শিগালকোটে অবরোধ করেন। থালদাদৈক্ত রণজিতের নামেই এত ভক্তিকরিত যে রণকিতের পুত্রের বিল্লকৈ যুদ্ধযাত্রা ভাহাদিগের মন:পুত হইল না, হীরাসিংহের এক্লপ যুদ্ধযাত্রা ববং তাহাদিগের মনে তাঁহার প্রতি[®] অশ্রনার উদ্রেক করিল। পরে হীরাসিংহ উভয় ভাতাকে নিরাপদে যাইতে দিলেন, ঠাহারা পঞ্চাবে চলিয়া গেল। এই সময়ে জবাহিরসিংহ কারাগার হইতে পলায়ন করেন, স্থচেত্রিংহ অবশ্র গোপনে এ বিষয়ে সহায়তা করেন। ১৮৪৪ খৃষ্টাবেদ সহসা রচেতিসিংহ অভীষ্ট সাধনার্থ রাজধানীতে উপস্থিত হইলেন। शेवानिश्ह मठर्क हिल्मन, थानमारेमछत्क भूबस्राव स्रशीकांव করিলেন, তাহারা হীরাসিংহের বশ হইল, স্থচেতসিংহ যে ভরদায় আদিয়াছিলেন, তাহা দম্লে নির্মূল হইল, তিনি অন্তগতি হইয়া একটা মসজিদে আখ্র গ্রহণ করেন ও শিখনৈত কুর্তৃক সদলে বিনষ্ট হয়।

নিষ্কনওয়ালা উত্তরসিংহ শতক্রর পরপারে পলাইয়া

হীরাসিংহের ক্রোধ হুইতে আত্মরক্ষা করিয়াছিলেন। তিনি

এখন সুযোগ বুঝিয়া শতক্র পার হুইয়া বিদ্রোহী বাবা বীর

সিংহের সহিত মাঞ্চায় মিলিত হুইলেন। বাবা বীরসিংহ

ঘাষণা করিলেন যে, পঞ্জাব রাজ্য বস্ততঃ লিখগুরু গোবিন্দেন

ই রাজ্য, দলীপ এখন রালক; হীরাসিংহ রাজ্মমিন্তিত্বপ

উচ্চপদের সম্পূর্ণ অযোগ্য, আর সিক্ষনওয়ালা উত্তরসিংহ সে

সাবী সম্পূর্ণ উপযুক্ত। এই সকল কথা তুলিয়া থালসাসৈজ্যের

নিউট গ্রাদি প্রেরিত হুইতে লাগিল। কাশ্মীরাসিংহ ও

পশোরা সিংহও এই বিজ্ঞাহে যোগ,দিলেন। বিজ্ঞাহ
মনার্থ লাহোর হুইতে সম্ভর সৈক্ষ প্রেরিত হুইল। উভয়

ক্রেন্স লাহার হুইতে সম্ভর সৈক্ষ প্রেরিত হুইল। উভয়

ক্রেন্স লাহার উত্তরসিংহ, কাশ্মীরাসিংহ প্রভৃতি বীরশব্যায়

রন করিলেন। উপায়াত্তর না দেবিয়া পেশোরাসিংহ

লাহোর দরবারে আসিরা আত্মসমর্পণ করিলেন। এইরূপে হীরাসিংহ নিজ্টুক হইলেন। তাঁহার শক্রকুল দমিত হইল, বিজ্ঞাহ প্রশমিত হইল, যে-প্রভূত্বের প্রভ্যাশার তিনি আপন পিতৃবা স্থচেতসিংহকেও বিনষ্ট করিয়াছিলেন, এতদিনে সেই প্রভৃতা তাঁহার করায়ন্ত বলিয়া বোধ হইল।

অন্তর্বিল্রোছ রাজ্যনাশের একটা প্রধান কারণ। এই
সময় যদি আর অন্তর্বিল্রোছ উপস্থিত না হইত, বিপদ্ পরিশৃত্য হীরাসিংহ ও তাঁহার অন্তর্বর্গ যদি এই সময় ক্ষমতা •
মদে মত্ত না হইরা ধীরচিত্তে সকল দিক্ পর্য্যালোচনা
করিয়া কার্য্য করিতেন, তাহা হইলেও হয়ত নীঅ পঞ্জাব
ইংরাজকরায়ত্ত হইত না। • বাহা ঘটিল, তাহা হীরাসিংহ
ও তদম্ভবের ক্বত কর্শ্বের ফল।

পণ্ডিত জালা হীরাসিংহের বাল্যগুরু। জালা উদ্ধত-স্বভাব, ক্ষমতাপ্রয়ানী, ক্রুরকর্মা। হীরাসিংহ এই ব্যক্তির करत की जाश्रवणी मां बिर्लिन। शैतानिः रहत अञ्चानस्यत् সহিত ইহারও মাক্ত বৃদ্ধিত হয়। তিনি বে পরিমাণ কামতা পরিচালনা করিতেন, ভাহার চতুও'ণ হঠকারিতা প্রদর্শন করিতেন। তাঁহার বিরুদ্ধে থালসালৈয় অনেকবার হারা-নিংহকে সতর্ক করিয়া দেয়, কিন্তু হীরাসিংহ তাহা গ্রীফ করেন নাই, বা তৎসহদ্ধে কোনরূপ নিরাকরণ করা তাঁহার ক্ষমতার বহিভুতি ছিল। যে কারণেই হউক, হীরাসিংহ প্রতিবিধান করিলেন না দেখিয়া, তাঁহার প্রতি শিখনৈত্ব-গণের বিভৃষ্ণা অবিয়তে লাগিল। আলো দরবারে বসিয়া तुकम्कात अमामखतास्थात्वत व्यवमानना कतिराजन। এह-রূপ অব্মানিত হইয়া বৃদ্ধ মালিতিয়া স্পার লেহনাসিংহ হরিশার যাত্রাব স্পদেশে লাহোর ত্যাগ করিলেন। মহা-तानि विन्मतनत (कार्ष्ठ लाजा क्याहित्रनिःरू এখন अमृजनहत्त्र থাকিয়া হীরাসিংহের বিরুদ্ধে ভাই, . অকালী প্রভৃতি রুণচও मध्यमाप्रतक উত্তেজিত করিতেছিলেন। লাহোর-দরবারে এক লালসিংহ বাজীত অঞ্চ ক্ষমত্বাশালী ব্যক্তি ছিল্না। त्म क्यां के शैवामिश्ट्य पछ नट्ट, वानी विकास नाम-निःश्टक स्वर कतिराजन, मिट मिक्किराजरे नानिनिःश मिकि-মান ছিলেন।

জবাহির সিংহ অমৃতসহরে আভিলাষাত্মবারী কার্ব্য শেষ করিয়া লাহোরে প্রভাগেমন করিলেন। এথানে উত্তাক্ত থালসাসৈক্ত তাঁহার সাহায্য করিতে অলীকার করিল। মহারাণী ঝিন্দন ও লালসিংহও হীরাসিংহের সর্কানাশের চেঠার জাল পাতিয়া স্থাগের অনুসন্ধান করিতে লাগিলেন। স্থাগে মিলিল। মহারাণী ঝিল্লন প্রের মঙ্গলকামনায় একদিন দান করিতে ছিলেন, এই সময়ে জালা, উাহাকে, অপদন্ত ও লাঞ্চিত করেন। জবাহিরসিংহের মুনরামনা পূর্ণ হইল। তিন সৈঞ্জললে মিলিত হইয়া হীরাসিংহের নিকট জালা পণ্ডিতকে প্রার্থনা করিলেন। হীরাসিংহ পণ্ডিত জালাকে পরিত্যাগ করিতে অখীকার করিলেন। গোল-যোগের সন্তাবনা থাকিলেও বিশেষ কিছু ঘটিল না, কিন্তু হীরাসিংহ প্রিলেন, তাঁহার কালপূর্ণ হইয়াছে; এখন পলায়ন ব্যতীত উপায় নাই, লাহোরে থাকিলে তাঁহাকে প্রাণ হারাইতে হইবে। তিনি সদলে লাহোর ত্যাগ করিলেন। জবাহিরসিংহ সংসত্তে তাঁহার অন্সরণ করিলেন। ১৮৪৪ খুষ্টাকে হুংসালের পর জবাহিরসিংহের মনকামনা পূর্ণ হইল, তিনি উজীর হইলেন।

হীরাসিংহ তাঁহার পিতা ধ্যানসিংহের মত সর্বাগুণে গুণবান্ না হইলেও বৃদ্ধিমান্, রিচকণ ও কণঠে ছিলেন। নানা গোল-যোগের মধ্যেও যে, তিনি তাঁহার ক্ষমতা এতদিন ধরিয়া অপ্রতিহত রাখিতে পারিয়াছিলেন, ইহা সাধারণ ক্ষমতার পরিচায়ক নহে। তাঁহার ধর্মলাভেচ্ছা প্রবল ছিল। রণজিতের মৃত্যুর পর গোলাবসিংহ গাড়ী বোঝাই করিয়া धनतानि अनुष्ठ नहेशा यान। शैतानिःश উजीत इहेशाहे আবার চল্লিশলক মুদ্র। গোপনে রণজিতের কোষাগার হইতে আত্মদাৎ করেন। ধ্যানসিংছের মৃত্যুর পর যদি সিহ্ধন-ওয়ালাদিগের হাতে রাজ্যভার থাকিত, তাহা হইলে এই ধন কোষাগারেই থাকা সম্ভাবিত ছিল, শিথমুঁদ্ধের সময় এই অর্থ ধারা অশেষ উপকার সাধিত হইত। আরও নানা অত্তবিপ্রহে অর্থকৃতি ও দৈতৃক্ষ ইইতনা।, খালসাক্সভের অবিমৃষ্যকারিতায় হীরাসিংহ উজীর হইলেন, আর রাজ্যে विष्मां , यज्यस, नाना शानायां किना नातिन। ज्य এই থালদাদৈক্সের ভায়ে হীরাদিংহকে সতর্ক হইয়া চলিতে হইত, নহিলে তাঁহার প্রভুষ প্রয়াদিতা ও অথগৃধূতা হ্রা-শার স্কোচ্ছ শিপরে অধিরোহণ নাকরিয়া,ক্লাক্ত থাকিত না। বলিতে গেলে, এই বংশের প্রভুত্বই পঞ্চাবরাজ্যের স্ক্রাশের অক্তম হেতু !

জবাহিরসিংহ এ কথা ব্রিয়াছিলেন। উজীর হইয়াই তিনি গোলাবসিংহের নিকট তিনলক টাকা ও মৃত হচেত-সিংহ ও হীরাসিংহের সম্পত্তি দাবি করেন। গোলাব-সিংহ গতান্তর না দেখিয়া খালসাসৈক্তের শরণাপল হন ও প্তাহাদিগকে অকভিরে মর্থ দান করেন। কিন্তু তিনি সহজে নিছুতি পাইলেন না, তাঁহাকে লাহোরে আফিন হইল। এখানে তাঁহাকে দণ্ডবরূপ ৬৮০০০০ টাকার তাঁহার ভাষা জারগীর ব্যতীত অভ্যুসকলই ফিরাইরা বিং হইল। এইরূপে নানাবিধ ক্ষতি সহু করিয়া তাঁহানে জমুতে ফিরিতে হইল।

গোলাবসিংহের কমতার হাস করিয়া এখন মৃণ্ডান শাসন অবশ্য কর্ত্ব্য হইয়া পড়িল। মূলভানের এই ইতিহাস দিতে হইতেছে, কারণ এই মূলতানে যে আ প্রথম প্রধ্মিত হয়, সেই অধিতেই পরে পঞ্জাব ভশ্মীভূত हा মৃলতান পূর্বে মুসলমান শাসনকর্তার অধীনেই ছিন ১৮০২ খৃষ্টাবেদ রণজিত ইহা প্রথম আক্রমণ করেন, বি বিফল প্রায়াস হইয়া প্রত্যাবৃত্ত হন। অনেক চেটার গ রণজিৎ ১৮১৮ খৃষ্টাব্দে মূলতান অধিকার করেন। 👌 সময়ে বিখ্যাত প্রকাও কামান জম্জমা এইখানে ব্যব্ধ করা হয়। জমজমা এখন লাহোর মিউজিয়দের সহুর রক্ষিত আছে। মূলতান অধিকার করিয়া শিথরাঞ্জ ্র ব্যক্তিকে নবাব নিযুক্ত করিয়া খদেশে প্রত্যাবৃত্ত ল এই সময় হইতে প্রতিবংসর নিয়মিত কর লাছো: প্রেরিত হইত। ১৮২১ খৃষ্টাব্দে সেবানমল মূলভানে নবাব হন। তিনি বিচক্ষণ শাসনকর্তা হইলেন। ১৮ss थुष्टीत्य रमर्ल्डेयतमारम रमवानमन निरुष्ठ रहेरन, के পুত্র মূলরাজ মূলতানের শাসনকর্তা হইলেন। ইনি নাংগ मत्रवादत्र यथात्री ि नकत्र-ष्याना (श्वत्रम कत्रित्तन ना, क् কল্প দরবারের দাবি অগ্রাহ্ম করিলেন। এত দিংল लारहात मत्रवारत रेमछ मञ्जिक इहेल, अमःवारि म्नाः ভীত হইয়া ১৮৪৫ খৃষ্টাবেদ অষ্টাদশ লক্ষণীকা নজর বান প্রেরণ করিতে বাধ্য হন।

এদিকে অপমানে ও অর্থবারে গোলাবসিংই লার বিসিয়া লালজিড়িত সিংহের ন্যায় আপন ক্ষরতাপে আগনিই দগ্ধ হুইতেছিলেন। তিনি ল্ববাহিরসিংহের উপর প্রাধিশাধ লাইবার মানদে পেশোরাসিংহের মৃত্যুর পর লার্যেকরিতে লাগিলেন। কাশ্মীরাসিংহের মৃত্যুর পর লার্যেকরিতে লাগিলেন। কাশ্মীরাসিংহের মৃত্যুর পর লার্যেকরিতে লাগিলেন। কাশ্মীরাসিংহের মৃত্যুর পর লার্যেকরিত লাগিলেন। কাশ্মীরাসিংহের মৃত্যুর পর লার্যেকরি ইলা, অন্ত কোন দণ্ড না দিয়া কেবল তাঁছাকে লাহাের ইলা, বিশ্বের করিয়া ওজলরান্বালার বাস করিতে অন্থমতি প্রাবিশ্ব করেন, তিনিও তথার শাস্তভাবে অবস্থান করিতেছিল। গোলাবসিংহের পরামর্শে তাঁছার রাজ্যলালসা বর্ত্তি হিলা সৈভগণের ভ্রমার ও বাধ্যতায় নির্ভ্র করিলা তিনি লাহাের সভ্রমান করিলেন। থানী খিন্দন তাঁছাকে সাম্বে হল

कवित्तन। रेमञ्जनत्तव शकारविकागपुर काहाब क्षकि वर्षहे সন্মান প্ৰদৰ্শন করিল। ইহাতে জৰাছিলসিংহ চিস্তিত হুইরা टेमञ्जन वहन मूखांत लाख (मथाहेन। थाननाटेमञ्च এখন অথের বশ, তাহারা অর্থে বশীভূত হইয়া পেশোরা तिःहत्क चामा धार्यावर्खन कत्रिष्ठ वनिन । वाश्य हहेवा পেশোরাদিংহ লাহোর ভ্যাগ করিলেন। এই সমরে গোণাবসিংহ পেশোরাসিংহকে হত্যা করিতে জবাহির-সিংহকে পরামর্শ দিতে **আরম্ভ করিলেন। কিন্তু ভাছা সহসা** ঘটিল না। পেশোরাসিংহ সহসা আটক্র্র অধিকার করিয়া রাজোপাধি গ্রহণ করিলেন। লাহোর হইতে দৈল প্রেরিড হইল, কিন্তু তাহারা রণজিতের পুরের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিতে স্বীকৃত হইলনা। পরিশেষে উভয় পক্ষে সন্ধিত্বাপিত হইল। সন্ধির পরেই • পৈশোরাসিংহ গোপনে ধৃত, কারারুদ্ধ ও হত হন। এ সংবাদ লাহোরে शीहिलारे खवारित्रिनः श्वानत्मे **उरम्त हरेलन**। **छारात्र** वक्रवर्ग डौंशांटक व्यानमञ्जैकान कतिएक निरम्ध कतिन, किन्न विश्वन् माधन छे छी । इहेग्राहे अवाहित्रमिश्ट्त आगा प्डिल। शिलाविनिः रहत्र छत्र अलिमानिश्दक াহরের বিরুদ্ধে উত্তেজিত করিতে লাগিল। পঞ্চায়েত জ্বাহির্সিংহকে দ্রবারে উপস্থিত হইতে আহ্বান ব্রিল। অনেক ইতন্তত: ক্রিয়া জ্বাহিরসিংহ মহারাজ দ্লীপসিংহের সহিত একই হাতীতে আরোহণ করিয়া দৈলু-গণের সমুখীন হইলেন। সৈভাগণ উছোর নিধনে ক্লভনিশ্চয় হইয়াছিল, সহসা দলীপসিংহকে পটমগুপে স্থানাস্তরিত করা ^{इहेन} ७ भूतभूहार्ख वन्मूरकत शिनाटक अवाधित्रिनिः एव जीवन-^{বানা} শেব হইল। রাণী ঝিল্লনের বিলাপের অবধি রছিল ना। देनेश्वराण अवाहिरतत मृज्या उहे मस्टे हहेन, अस द्वान-রূপ অহিতাচরণে এবার তাহাদের ক্ষমতা কলজিত করিল ना। जनाहित्तत मृठ्य हरेन वर्छ, किन्त एक्हरे चात्र छेकीत হইতে চাহিল না। গোলাবসিংহ, তেজসিংহ প্রভৃতি সক-^{(गहे थान}मारेमरकात वावहारत छोछ हहेन्रा मिवनम आयी-কার করিলঃ। শেষে স্থির হইল লালসিংহকে মন্ত্র-সটিব ও ভেলসিংহকে প্রধান দেনাপতিরূপে বরণ করিয়া, মহারাণী কিন্দনই রাজাচালনা করিবেন। এইরবেপ পঞ্চাবকেশরী বণলিতের সমৃত্ব লাল্য ছইলন কাপুরুব, অকর্মণা চকীর र अर्थि अर्थित रहेन।

ধালদা-দৈক্তের প্রভাপ এই সময়ে উচ্ছ্ খলতার সর্বোচ্চ শিশরে আরোহণ করিয়াছিল। লালসিংহ ও ভেলসিংহ উত্তরেই ব্রিয়াছিলেন, বত্দিন প্রালস্টেস্কের অভিদ্ আছে, ভতদিন তাঁহারে কোনজমেই নিরাপদ নহেন। থালসা-সৈঞ্চ তাঁহারের বিলাস্থিরতার সাহায় করিবে না। রুটাশরাজের নৈম্ন বাতীত অন্ত কেহই এই দোর্দগুপরাজম থালসার বিনাশসাধন করিতে পারিবে না। কিন্তু মনে মনে ইংরাজের আশ্রয় গ্রহণ করিবার দারণ ইচ্ছা সন্তেও তাঁহারা সেকথাতে উচ্চবাচা করিলেন না— ক্বাহিরসিংহের নির্ভি তাঁহাদের চক্র সন্ত্রে জীড়া করিতেছিল। বীরকেশরী রণজিংপ্রকে যে থালসা সহজে ইংরাজের বশুতা খীকার করিতে দিবে না, তাহা নিশ্চয়। তজ্ঞাই যত গহিত হউক না কেন, কোন উপায়ে থালসালৈঞ্যের বিনাশই তেজসিংহ ও লালসিংহের উদ্দেশ্য হইল। তাঁহারা তাহারই স্বযোগ অনুস্কান করিতে লাগিলেন।

যদি ধালসাসৈত্য এরপ উচ্ছ্রাল না হইত, যদি তাহাদের উদ্ধৃত প্রকৃতি হেতৃ তাহারা পঞ্চনদের কার্যাপর রাজনীতিকুশল বাক্তিগণের উচ্ছেদ্দাধন না করিত, তাহা হইলে
বোধ হর পঞ্চনদ এত শীঘ্র বৃটীশরাজ কর্তৃক কবলিত হইত
না, হয়ত এখনও আমরা মহারাজ দলীপদিংহকে পঞ্চনদের
সিংহাদনে অধিষ্ঠিত দেপ্লিতাম। যেমন রোমক-সৈন্তের
উচ্ছ্রালতা রোমরাজ্যের পতনের অক্ততম কারণ হইয়াছিল,
পঞ্চনদের অদৃত্তিও তক্রপই ঘটিল।

र्य मक्न कांत्ररा निथमिरगत तारका है : ताक विराम शायन हरेगा डिटंग, डाहात जातक अनि शृद्ध अनिर्मंड हरेगाहि। ইভিমধ্যে স্থাবার একটু কুদ্র কার্য্য হইয়া গিয়াছিল। অভীষ্ট সাধনে অক্তকার্য্য হইয়া স্থচেতসিংহ ফিরোজপুরে পলায়ন করেন; মৃত্যকালে তথায় তিনি পঞ্চলশ লক্ষ মূলা মৃত্তিকা-ভাস্তরে প্রোণিত রাখিয়া যান। তাঁহার অনুচরবর্গ এই কর্মে আত্মদাৎ করিয়া পলায়ন করিতে গিয়া ধৃত হয়। লাহোর দরবারের নিয়ম ছিল যে নি:সন্তান ব্যক্তির সম্পত্তি রাজকোষভুক্ত হইবে। রাজবিদ্রোহীর সম্পত্তিও লাহোর দরবার বাজেয়াপ্ত করিতেন। এই নিয়মামুঘায়ী লাহোর দরবার স্থচেতসিংহের ঐ অর্থ দাবি করিলেন। এখারপরারণ বুটাশরাস্থের মতে স্থির হইল, যে স্পচেতিসিংহ রাজজোছী বলিয়া ভাহার সম্পত্তি বাজেয়াপ্ত হইতে পারে না, আর नारहोत्र पत्रवात्र रय व्यर्थ मार्डि कत्रिरछ हत, जाहारछ पत्र-বারের অম্ব বৃটীশ আদালতে প্রকাশ্তভাবে বিচারিত হইবে। এরপ নীতিবহিভূতি আদেশও শিধগণ অহুমোদন করিয়া-ছিল। বিচার হইল এবং ভারতীয় রীতিনীতি অফুসারে হুচেত সিংছের অর্থে শাহোর দরবারের দাবিও সম্পূর্ণরূপে প্রমাণিত হইল। কিন্তু অর্থ আর প্রভ্যপিত হইল না। তৎপ্রে,

नीमास्थापान क्रमनः देश्वास चीत्र वनवर्षत कतिएक লাগিলেন। ওঁছতো ও ছলে তাঁহারা ফিরোলপুর ক্রক্ষিগত कतिशाहित्वन ; मुरिशाना, मिवाधू, ज्यात्रामा धारमरभेष দৈলদংস্থাপিত হইয়াছিল। সিন্ধুদেশও তাঁহাদের কবলগত इरेब्राहिल। **১৮**०৮ थुः ज्यस्य मीमाख्यापाम हेरद्रारक्त ২৫০০ দৈন্ত ছিল, তাহা ক্রমে ৩২০০০ দৈল্পে বৃদ্ধিত হয়। আবার মিরাটেও প্রায় ১০০০ সৈতা রক্ষিত ছিল। ইহা-তেই শিবদিগের মনে সন্দেহ বর্দ্ধিত হয়, যে শ্বরাষ্ট্রক্ষণ ইংরাজের অভিপায় নহে, নিকটম্থ রাজ্যগুলি গ্রাস করাই তাঁহাদের অভিপ্রায়। ইহার উপর আবার রণজিৎ রাজ্যের ভবিষ্যৎ লইয়া প্রকাশভাবে বাদামুবাদ হইত। সার উইলিয়ম মেক্টন প্রকাশ করিয়াছিলেন যে রণজিভের পৌত্রের মৃত্যুর পর পেশাবর শাহম্বজ্ঞাকে অর্পিত ছইবে। ১৮৪৬ খৃষ্টান্দে মেজর অভফুট সীমান্তদেশে বৃটাশ প্রতিনিধি ্নিযুক্ত ইইলেন। ভিনি ঘোষণা করিলেন যে পাতিয়ালা প্রভৃতি লাহোরের অধীনস্থ সামস্ত রাজ্যগুলি ইংরাজের আশ্রয়গ্রহণ করিল, স্থতরাং ঐ গুলি দলীপদিংহের মৃত্যুর বা রাজ্যচ্যতির পর বৃটীশাধিকারে আসিবে। এই সমহে শতক্রর উপরে নৌদেতুনির্মাণার্থ যে নৌকাগুলি প্রস্তৃত হইয়াছিল, সেই নৌকাগুলি সশস্ত সৈতারক্ষিত হইয়া ফিরোজ-পুরাভিমুথে প্রেরিত হইল। মূলতানের শাসনকর্তা মূলরাজের সহিত্ত ব্রডফুটের গোপনীয় ভাবে চিঠিপত চলিতেছিল। সিদ্ধবিজেতা সার চার্লস নেপিয়রও বলিয়াছিলেন যে हेश्त्राव्यक पक्षांव व्यविंग कतिएउहे हहेत्व। এहे नकन কারণে শিথজাতি বৃঝিল, ইংরাজের সহিত সমর অবশ্রস্থাবী হইয়া পড়িয়াছে। দাসত্বকামী বিশাস্থাভক সচিব্ৰয় এই অগ্নিতে মতসংযোগ করিতে লাগিলেন। এই সময়ে সীমান্ত-প্রদেশে তদানীম্বন গ্রবর্ণরক্ষেনারল লর্ড হার্ডিঞ্জের জাত আগমনবার্তা শুনিয়া সকলেই স্তম্ভিত হইল। ष्यनिवार्या वित्वहनाम, ११३ नत्वमत्र निथमाछ देश्त्रात्मत বিরুদ্ধে গ্রণঘোষণা করিল। ১১ই ডিসেম্বর তাঁহারা শতক্র পার हहेबा ১৪ই ডি্সেম্বর ফিরোজপ্রের নিকট সেনাদমাবেশ कतिन। এই ऋत् अथेश् मिथ्यूक चात्रछ रहेन।

মৃদ্ধি ফিরোজসহর, বদোরাল, আলিবাল, ও সোব্রাহান কেত্রে কতকগুলি ভীষণ যুদ্ধ হইল। শিধসেনাপতিগণের ষড়যন্ত্রে মহাবীর শিধগণ পরাস্ত হইল। ইংরাজ সৈত্র
শতক্রর অপর পারে ধাবিত হইলেন। গ্রণরিজনারল
হার্ডিয় কম্বর হইতে যে ১৪ই ফেব্রুয়ারী (১৮৪৩ খৃঃ আঃ)

বোষণা করিলেন, বে অবধি শিধগণ ইংরাজরাজের সহিত

ভাষাদের সন্ধি-ভক্ত নিমিত্ত সমূচিত কণ্ড না দিবে, তত্তি। পঞ্জাব ইংরাজের অধিকারে থাকিবে।

সোব্রাহানে জয়লাভের পরই যে ইংরাজ এত শীষ্ত্র উত্তীর্ণ হইয়া লাহোর অভিমূবে উপস্থিত হইবে, ভাঠা _{শিৰ্গ} স্বপ্নেও ভাবে নাই। এখন বড়লাটের ঘোষণা ভ্_{নিয়} লাহোর-দরবার অভিশয় চিস্তিত হইলেন। যাহাতে ইংরাচ দৈশ্য সহসা বাহোরে না আসিতে পারে, তজ্জ গোলান সিংহ শীঘ কমুরে প্রেরিত হইলেন। কিন্তু বড়লাট গোলাৰ সিংহের কোন অফুরোধ রকানা করিয়া কহিলেন, 'লালো ব্যতীত অন্ত কোন স্থানে তিনি শিথ দরবারের সহিত দ্ধি कत्रित्वन ना।' त्शानावितिः ह विकल मत्नात्रथ इहेश कि शिव আসিলেন, তিনি ভাবিলেন, হয়ত শিশু দলীপদিংহতে ইংরাজ শিবিরে উপস্থিত করিলে লাহোরে ইংরাজ আগ্রন রহিত হইতে পারে। এই ভাবিয়া তিনি দলীপকে ন্রা চলিলেন। তথন ইংরাজ দৈতা কম্মর পরিত্যাগ করিয়া लिया পার হইয়া আসিয়াছে, তথায় দলীপসিংহ বড়লাটে সন্মৰে আনীত হইল। মহামনা হার্ডিঞ্জ সাদরে দলীপ্দিংহকে গ্রহণ করিয়া বলিয়াছিলেন, 'যে নরপতি তিশ্বর্ধ ফার অবিচিছয় ও পবিতা সন্তাব রক্ষা করিয়াছিলেন, তাঁহাঞ বংশধর পঞ্চনদ শাসন করিবে, ইহা এথনও তাঁহার অভিগ্রাণ

**७९कारन वफ्रनाठे मर्फाद्रशंगरक मरमायन क**दिया विशास, 'मनीभक्त उांशांत्र त्राब्दा चा चिष्ठिक कत्र हरेल : हिर् বিপাশা ও শতক্রর মধ্যন্ত সমুদ্র প্রদেশ বিজেতার রালা कुक हहेरव ७ मामजिक वाग्र चन्नभ हेश्नाक गवर्र्सकेरक हरू কোটি টাকা দিতে হইবে।' অনেক বাগুবিতভার গ শিপ সামস্তগণ অনিচ্চার বড্যাটের প্রস্তাবে সম্মত হ^{ই বেন} किन्छ राष्ट्रगाँउ वित्र कतिरामन, निथ तास्रधानीर छैरे मिश्व স্বাক্ষরিত হইবে। কাজেই শিথসর্দারেরা দর্শী^{প্রিংহা} সহিত লাহোঁরে ফিরিয়া আসিলেন। ২০এ ফে্রুগা ইংরাক্সৈশু শিধরাক্ষধানীতে উপস্থিত হইল। সেই ^{রিন্} भवर्षत्रत्यनात्रत्यत चारमाण मत्, त्हन्ति गात्रका, मृत् (इस्ती) तिक् कति ও উই नियम् এए बगार्धम् मनी शतक श्रनता मिला সনে প্রতিষ্ঠিত করিতে আসিলেন। মহাসমারো^{হে ন্নীন} সিংহ পঞ্চাবের সিংহাসনে অভিষিক্ত হইলেন। প্রি^{রিকার} व्यामाति । अक पत्रवात हरेन, अथात्म मनील ७ डीहाँ भगा বর্গ সাদরে ও সম্ভমে গবর্ণর জনারলকে সভাব ক্রি তাঁহার সদয় আচরণের যথেষ্ট প্রশংসা করিলেন। ^{এই} मत्रवादत वज्नाठ स्वविधां उत्तरिम्त (मिश्क गिरिम) গোলাবসিংহ आश्वनि शहे मिन, आमिन्न नर्ड शांकिर

দেশাইলেন। শতাধিক ইংরাজ রাজপুরুষ সবিশ্বরে ঐ অভুল চীরক দেখিরা তাহার প্রশংসা করিলেন। ৯ই মার্চ, শিখ দরবার ও ইংরাজের সৃহিত প্রথম সদ্ধি হয়। ঐ সৃদ্ধি অফু-সারে হির হয়, শিথ মহারাজ শতক্রের দক্ষিণস্থ প্রদেশ গুলির _{প্}র এককালে ত্যা<mark>গ করিবেন। বিপাশা ও শতক্র মধ্য</mark>স্থ लाम श्री हे दोर अंद इंटर । सिथ मत्रवात मामतिक বায় স্বরূপ ইংরাজ গবর্মেণ্টকে দেড় কোটা টাকা দানে অসমর্থ হওয়ার এক কোটী টাকার পরিবর্তে আপাততঃ কাশীব ও হাজারাসমেত বিপাশা,ও সিন্ধুনদের মধ্যবর্তী সমূদ্য প্রেদেশগুলি এবং বক্রী পঞ্চাশ লক্ষ টাকা শীঘ পরি-শোধ করিয়া দিতে স্বীকৃত র**হিলেন। তথন শিথরাজের** অধীনে ১২ হাজার অখারোহী ও ২০ হাজার পদাতি সংখ্যা-বন্ধ হইল। বৃটীশ গ্রমেণ্টের ইচ্ছা ব্যতীত এই সংখ্যা-আর বাড়াইতে পারিবে না। ইংরাজগবর্মেন্ট শিপ দর-বারের আভান্তরিক রাজকার্যো^{*} হন্তক্ষেপ করিবেন না। তবে यमि कान विषयात मंग्रहण श्रामान हम, जाहा हहेला রুটীশগবর্মেণ্ট শিধরাজের মঙ্গল হেতু তাঁহার পরামর্শ দানে শিখ দরবারের সাহায্য করিবেন।

অন্ননি মধ্যেই শিথদরবার সামরিক বায়ের বক্রী
পঞ্চাশ লক্ষ টাকা পরিশোধ করিলেন, এই সময় মহারাণী
ঝিলন উদ্ধন্তবাৰ শিথদিগের কার্যাবলীতে ভীত হইয়া
গ্বর্ণরজেনারলকে জানাইলেন, তাঁহাকে ও তাঁহার তনয়
দলীপকে শিথদিগের হত্তে না রাথিয়া উভয়কে বৃটীশ সীমানাম কিছা তাঁহার সহিত কলিকাতা গ্বর্মেণ্ট হাউসে লইয়া
গ্রেম্বর্গ উভয়ের মঙ্গলজনক। শিপ দরবারের প্রধান
রলেপুরুষণ মহারাণীর অন্ধ্রোধ মত লর্ড হার্ডিঞ্জকে অন্ধ্রুরোধ করিলেন, যেন লাহোর দরবারের রক্ষার্থ কিছুদিন রাজধানীতে বৃটীশ সৈক্ত অব্ধিতি করে।

নই মার্চ্চ গবর্ণরজেনারলের শিবিরে এক "মহাসভা হইল, ঐ সভায় দলীপসিংহ ও প্রধান প্রধান শিবস্দারগণ উপস্থিত হিলেন। বড়লাট সকলকে সংখাধন করিয়া বলেন, বৃটীশ গবর্মেন্ট শিবরাজকার্য্যে হস্তক্ষেপ করিতে ইচ্ছুক নন, বৃটীশসৈক্ত সকলেই চলিয়া যাইতে প্রস্তুত, ভবে শিব দর-বার্ত্রের বিশেষ অলুরোধে আমি লাহোরে কিছুদিন বৃটীশ সৈল্প রাধিতে সম্মৃত হইয়াছি। গুরুত্রর রাজকার্য্য সংশোধন ব্যাপারে ভাল মন্দ শিব দরবারের হস্তে নির্ভর করি-তেছি। আমি ব্রধাসাধ্য সহায়তা করিতে প্রস্তুত্ত আছি, কিন্তু শিবস্থারগণ অবহেলা করিলে ভাঁহাদের রাজ্য রক্ষা করিতে বৃটীশ্রবর্মেন্ট কিছুত্তের সমর্ম্ম হইবেন না। লর্ড হার্ডিমের সহুপরেশ ভ্রিরা সন্ধারপণ স্ক্রেই মুক্তকঠে কৃতজ্ঞা আকাশ করিবেল।

পর দিন বড়লাট রাজপ্রাসাদে গিরা মহারাজ দলীপ-সিংহের সহিত সাক্ষাং করিলেন।

১১ই তারিথে এক দল্পি হইল যে, শিথ দেনার সংশোধন ও সংস্করণ জন্ত বৃটীশগবর্দেণ্ট বর্তমান বর্ষের শেষ পর্যান্ত মহারাজ ও লাহোরবাসীগণের রক্ষার্থ বৃটীশসৈত্ত লাহোরে রাথিবেন।

শিধরাজ্য রক্ষা হইল বটে, কিন্তু নবীন নরপতি দলীপসিংহের প্রতিনিধি স্বন্ধপ কে রাজ্যশাসনভার গ্রহণ
করিবে। এ সময় যদি গোলাবসিংহ মন্ত্রীত্ব পাইতেন, তাহা
ইইলে বিশেষ গোলবোগ ঘটিত না, কিন্তু শিধরাজমাতার
স্নেহবর্দ্ধিত লালসিংহ মহারাণী ঝিন্দনের প্রভাবে প্রধান
সচিব-পদ প্রাপ্ত ইইলেন। তিনি মন্ত্রী ইইলেন বটে, কিন্তু
তিনি সকলের অপ্রিয় ও শিথ সাধারণের ঘণার পাত্র ইইয়া
উঠিলেন। তাঁহার জ্ঞাতিবর্গ ও চাটুকারগণ অভিজ্মত্য
উপায়ে প্রজার রক্ত শোষণ করিতে লাগিলেন। যাহা ইউক
শীত্রই লালসিংহের অধঃপতন, ইইল। [লালসিংহ দেখ।]

দরবারের প্রধান সভাগণ শিথরাজ্যরক্ষণের জন্ম শ্লিভ मगौरभत्र प्राथाश्वतत्रम भगास तृतिम भवार्यन्तेत्व भक्षात्वत । শাসন ভার গ্রহণ করিতে আবেদন করিলেন। মহামনা হার্ডিঞ্ল সেই ক্ষমুরোধ রক্ষা করিয়াছিলেন। ১৬ই ডিসেম্বর এক সন্ধি হইল, ভাহাতে স্থির হয়, গবর্ণরজেনারলের প্রতি-निधि अत्र नाहात अक्षन हे ताल त्रिति ए विक्तिन। প্রত্যেক রাজকীয় কার্য্যে তাঁহাব পূর্ণ ক্ষমতা থাকিবে, কএক-क्षन पक्ष वास्ति (त्रिमिर्डिंग् महकाती शरप नियुक्त हहेरव। যাহাতে পঞ্চাববাদীগণের জাতীয় প্রথাও আহার ব্যবহার রক্ষা হয়, যাহাতে সম্দধ লোকের স্তায়মত সভ্য বজায় থাকে; **७९९८क दृत्रेम** शवर्याल्डे विस्मय मत्नारयां शे इटेरवन। রেসিডেন্টের পরামর্শ অফুসারে সভ্যগণ রাজকার্য্য পর্যা-লোচনা করিবেন মহারাজের রক্ষা ও রাজ্যের শ্বান্তির জ্ঞ গবর্ণরজেনারল যত ইচ্ছা দৈত লাহোরে রাখিতে পারি-বেন। তজ্জন্ত শিখদরবার বাৎসরিক ২২ লক নৃতন নানক শাহী টাকা রুটীশগবর্মেণ্টকে দিবেন। মহারা**জ** দলীপ-সিংছের জননী ও তাঁহার পরিচারিকাবর্গের ভরণপোষণ জন্ম বাৰ্ষিক দেড় লক্ষ টাকা দেওয়া হইবেক। যে পৰ্যান্ত মহাবাজ मनीभित्राश्च नावानक थाकित्वन, डेडब भक्ताकहे वह मिक्क পত্তের ধার। অমুসারে চলিতে হইবেক। ১৮৫৪ খুঃ অ্সে abi সেপ্টেম্বর মহারাজ দলীপসিংহ বোড়শবরে পুদার্পণ

করিলে, এই সহিধারা হইতে উভয়পক মুক্ত হইলেন। ইতিহাসে এই সহি ভৈরবাল সহি নামে থাতে।

এইরূপে শিশু দলীপ বৃটীশ গবর্মেণ্টের আপ্রিত হইলেন। লর্ড হার্ডিঞ্ল যতদিন ভারতে ছিলেন, ততদিন তিনি শিধরাজের উপর যথেষ্ট উদারতা দেখাইয়াছিলেন। মহামতি সর হেন্রি লরেন্দ ঐ প্রমর পঞ্নদের শাসনভার ও শিশু ममीरियत त्रक्रगारवक्रराय छात्र शहर करत्रन । এই মहाश्रात यर्फ निथवात्यात नाखि जानिष्ठ इत्र। हेनि मनौनरक यर्थहे ক্ষেত্ও যত্ন ক্রিলেও মহারাণী ঝিন্দন ভাহার প্রতিনিধি-সভার রিরোধী ছিলেন। অনেক সময় তিনি রেসিডেপ্টের মতের বিক্লাক করিলেও লরেকা তাঁহার বিরোধী হন नाहे। व्यवस्थित नर्ज शांकिंक मशांत्रांगीत व्याहतरात मःवान পাইয়া দলীপকে তাঁহার মাতার নিকট হইতে পৃথক্ রাথিতে चारित कतिरानन। मनौभ माजा इहेरल पृथक् इहेरल व हेश्त्राक कर्याताती मिगढक शृक्षियर नम् डा अ निष्ठातात मिथाहे. লেন। বাস্তবিক লর্ড হার্ডিঞ্ল ও সর হেন্রি লরেন্স জনকের भाग्र मनौभाक स्मर् कतिराजन ও यह रमधारे जन; किन्न দুলীপের হুর্ভাগ্য যে অল্লিন প্লেরই উক্ত ছুই মহাত্মা ভারত-ফুনি পরিত্যাগ করিয়া বিলাত যাত্রা করিলেন।

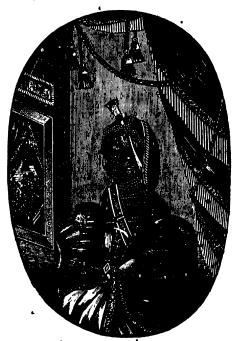
লর্ড হার্ডিঞ্জের স্থলে পররাষ্ট্রনোলুপ মার্কু ইন্ অব্ দাল্হৌসি
এবার গবর্ণরাজনারল হইয়া আসিলেন। এ সময়ে সমস্ত ভারতে
পূর্ণশান্তি বিরাজ করিতেছে। তথন সর এফ্ করি লাহোরের
রেসিডেণ্ট এবং সর হেন্রি লরেন্সের ভাতা জন্ লরেন্স
বর্তমান রেসিডেণ্টের সহকারী হইয়া কার্য্য করিতেছিলেন।

তথন মূলরাজ মূলতানের শাসনকর্তা ছিলেন। তিনি শিপ দরবারের আচরণে বিরক্ত হইয়া বিজোহা হইলেন, এ সময়ে যদি রেসিডেণ্ট কালবিলম্ব না করিয়া সৈত্র পাঠাইতেন, তাহা হইলে সহজৈই গোলযোগ মিটিয়া বাইত, কিন্তু তিনি বিজোহদমনে বিলম্ব করার পঞ্জাবরাজ্যের ভাবি অনিই-পাতের হচনা হইল।

এই সময়েই মহারাণী ঝিক্লনকে শেণোপুর ছুর্গে
নির্বাসিত করা হয় এবং ছত্ত্রসিংহ নামে শিবসাম্রাক্তার
এক অতি সঁল্লান্ত সর্দারের কন্তার সহিত দলীপনিংহের
বিবাহের প্রস্তাব রেসিডেও কর্তৃক উপেক্ষিত হয়। এতভিন্ন
উক্ত ছত্ত্রসিংহের প্রতি ইংরাজগণ অভিশন্ন ছুর্ব্যবহার
করেন। [সেরসিংহ দেখ।] উক্ত কারণে ১৮৪৮ খুটাকে
ভিতীয়বার শিবযুদ্ধ ঘটে। বৃটীশগবর্মেন্টের অনবধানভার
শিবযুদ্ধ ঘটিলেও গবর্গরক্ষেনারল এইবার শিবরাক্ষ্য প্রাস
ক্রিভে অগ্রসর হইলেন। যুক্তের স্থচনা দৈবিয়া প্রধান

সেনাপতি লর্ড গাফ্ পঞ্জাবে আগমন করিলেন। । সিংহের সৌজন্ত দর্শনে তিনি মুগ্ধ হইলেন।

রামনগর, সাছলাপুর ও চিলিনওয়ালার ফুছে শিখ নৈ গণের অন্ত রণনিপুণা ও অন্তের বৃটিশলৈক্তের পর্যনি দর্শনে বৃটীশগবর্মেণ্ট ও সমস্ত ভারত বিচলিত হইবালি ইংলণ্ডে এই সমাচার প্রেরিত হইবে কোর্ট অব্ ভিরেইন্তার সিন্ধবিজ্ঞাত নেপিয়ারকে প্রধান সেনাপতি পদে বা করিতে অভিলাবী হইয়াছিলেন। বাহা হউক মহাবীর স্পাকের অন্ত রণুকৌশলে গুলরাটের ফুছে শিথসৈ অলোকিক বীরস্ব দেখাইয়া পরালর স্বীকার করিল। বিশিষ্তে লাহোর দরবারের অধিকাংশ সন্দার বোগদান করিলেও এবং এ সময়ে পঞ্চনদ সম্পূর্ণরূপে বৃটীশের করা ধীন থাকিলেও লার্ড দালাহাসি দলীপকে রাজাচ্যত করি পঞাব বৃটীশ শাসনাধীন করিলেন।



मनीপनिः इ।

১৮৪৯ খৃষ্টাব্দে ২৯এ মার্চ্চ লাহোর রাজন্ববারে
শেষ অধিবেশন হর, ঐ দিন মহারাজ রুণজিং সিংহের শিব
অভিভাৰক ইংরাজের রক্ষণাধীন মহারাজ দ্ণীপ্রিন্দ পৈতৃক সিংহাসনে শেষবার অধিবেশন করিলেন। শা
শিথ সন্দারগণ দীন হীন বেশে সভার উপস্থিত হলৈ
দলীপসিংহের কর্মনাশ সাধিত হইতে চলিল। ইংরাজ জরি
নিধি দলীপের রাজাচাডি-সন্ধিপতে তাঁহাকে আক্ষর ব্রি আদেশ করিলেন। দেওয়ান দীননাথ শিশু নৃপতির প্রতি
অত্যাচার নিবারণের জন্ম আর একবার প্রয়াস পাইলেন।
কিন্ত ইংরাজ রাজপুরুষগণ তাঁহার কথা গ্রাহ্ম করিলেন
না। অজ্ঞান শিশু দলীপসিংহ অভিভাবক ইংরাজারাজের
আদেশক্রমে তাঁহার সর্কনাশ পত্রে স্বাক্ষর করিলেন। সদ্ধিপত্রে
এইরপ লিখিত হইল—

- ১। মহারাজ দলীপিসিংহ তাঁহার ও তাঁহার উত্তরাধি-কারিগণের হইয়া পঞ্চাবের সমুদয় দাবি দাওয়া পরিত্যাগ কবিলেন।
- ২। ° লাহোর দরবারের ঋণ পরিশোধার্থ দরবারের সমস্ত সম্পত্তি ইটইন্ডিয়া কোম্পানীর অধিকারভুক্ত হইল। শ
- ০। কোহিন্র ইংলণ্ডের রাণীকে প্রদত্ত হইবে এবং
  মহারাজ দলীপসিংহ নিজের, তাঁহার জ্ঞাতি ও অফুচরবর্গের
  ভরণপোষণ চালাইবার জ্ঞা, কোম্পানির নিক্ট হইতে
  বাংসরিক অন্ধিক পাঁচ লক্ষ ও অন্যন চারি লক্ষ টাকা
  রতি পাইবেন।
- ৪। শিথরাজ আজীবন মহারাজ দলীপিসিংহ বাহাছর এই পদবী ব্যবহার করিতে পারিবেন। গ্রবর্জনারল যেথানে মনে করিবেন সেইথানেই মহারাজ দলীপিসিংহকে বাস করিতে হইবে।

অন্তায়রূপে শিশু মহারাজ দলীপসিংহ আপনার পৈতৃক সম্পত্তি হইতে বঞ্চিত হইলেন। [দাল্হোসি দেথ।]

১৮৪৯ খৃঠান্দে শিশু দলীপ অভিভাবক কর্তৃক সর্বস্থান্ত হইলে জন লোগিন্নামক একজন ডাক্তার তাঁহার শিক্ষক ও তত্ত্ববিধায়ক রূপে নিযুক্ত হইলেন। দলীপের প্রাসাদের নিকটেই তাঁহারও বাসস্থান নির্দিষ্ট হইল, তথনও দলীপের ঘাদশবর্ষ পূর্ণ হয় নাই। এই বয়সেই তিনি বেশ পারভা ভাষা শিথিয়েও তাঁহার যথেষ্ট আগ্রহ ছিল।

লোগিনের সদয় ব্যবহারে দলীপ অয়দিন মধ্যেই তাঁহার
শক্ষপাতী হইয়া উঠিলেন। তিনি সর্ব্যাই লোগিনের সহিত
থাকিতে ভালবাসিতেন। জোগিনের সদ্ধ ব্যতীত তিনি
কথনও বাহিরে বেড়াইতেন না। বাস্তবিক লোগিন্ও
দলীপকে অভ্যস্ত ক্ষেহ করিতেন। বালক দলীপ অয়বয়সেই
থেজপ ধীশক্তির পরিচয় দিয়াছিলেন, লোগিনু স্বীকার
করিয়া লিখিয়াছেন—যে ইংরাজ বালকেরা এই বয়সে ঐরপ
দেখাইতে অক্ষম। আমোদ প্রমোদের মধ্যে দলীপ বাজ্ঞশনীকার ও চিত্রপটানি অস্কন করিতে ভালবাসিতেন।
১৮৪৯ খুটাকে ১১ই ডিসেম্বর, গ্রণরজেনারল দলীপ-

নিংহকে পঞ্চাব হইতে ফতেগড়ে স্থানান্তর করিতে আদেশ করিবেন। এই সমর বড় লাটের আদেশমত রাজা সের-নিংহের একমাত্র সার্দ্ধ ছর বংসরের শিশু কুমার শিবদেবও দলীপের সহিত স্থানান্তরিত হইলেন। ১৮৫০ খুটান্দে কেন্দ্রমারী মাসে দলীপ শিবদেব ও তাঁহার মাতা রাণী দণ্মুর সহিত ফতেগড়ে আসিয়া পৌছিলেন।

গঙ্গার নিকট ফতেগিড়ে এক সামান্ত প্রাসাদে দলীপের বাসন্থান নির্দিষ্ট হইল। দলীপের শিক্ষক মহান্যা লোগিন্, বাটীর নিকটবর্তী বাঙ্গলাগুলি ক্রয় করিয়া উাঁহার জন্ত একটা উদ্যান প্রস্তুত করাইলেন। এবানে দলীপের সহিত শিবদেবের বড়ই সৌহার্দ্ধি, জন্মে। ১৮৫০ খুষ্টান্ধে লোগিন্ দলীপের বিবাহের প্রস্তাব উত্থাপন করেন। কিন্তু দলীপের মত না থাকায় বিবাহ স্থগিদ হইল। লোগিনের শিক্ষাগুণে দলীপ ইংরাজী শিক্ষা ও ইংরাজী রীতিনীতির অম্করণ করিতে ভালবাসিতেন। অরদিন পরেই তাঁহার খুষ্টধর্ম-গ্রহণে অভিলায় জ্মিল।

১৮৫ই খুটান্দে দলীপ হিন্দু ছানের প্রধান প্রধান স্থান দর্শন করিতে অভিলাষ করিলেন। তিনি প্রচছনভাবে অলমাত্র লোকজন সঙ্গে লইয়া ফতেগড় হইতে ধার্হির হইলেন। কেবল শিবদেবের মাতা তাঁহাদের সহিত না-গিয়া কিছুদিনের জন্ম পিত্রালয়ে আসিলেন।

দলীপ গুপ্তভাবে গমন করিলেও তাঁহাকে দেখিবার জন্ত পথে বহুলোকের সমাগম হইরাছিল। দিল্লী, জাগরা, মীরঠ, ক্ষড় কি, সেকক্রা প্রভৃতি স্থান দর্শন করিয়া হিন্দুর পবিত্র তীর্থ হরিষার দর্শন করিয়েত তাঁহার ইচ্ছা হইল। এই সমর হরিষারে, নানাস্থান হইতে বহুসংখ্যক নানাজ্ঞানী যাত্রীর সমাগম হওয়ায় দলীপের প্রকাশভাবে, গমনে গব্দেণ্টি শক্তিত হইলেন। দলীপ অতি গুপ্তভাবে হরিষারে পৌছিলেও কএকজন শিও তাঁহাকে চিনিতে পারিয়া তাঁহার মকল উদ্দেশে চীৎকার করিয়াছিল। পাছে কোন গোলমাল ঘটে, এজন্ত শীঘ্রই তাঁহাকে ইংরাজ-শিবিরে লইয়া যাওয়া হইল। বর্ষার প্রারম্ভে তিনি মুস্থরিতে উপস্থিত হন। এথানে তিনি প্রতিদিন পদত্রক্রে ৪াও ক্রোশ পথ হাটিতেন। বসম্ভকাল মুস্থরিতে অতিবাহিত ক্রেয়া স্বাদ্ধবে কতেগড়ে প্রত্যাগমন করেন।

১৮৫৩ খুটান্দে ৮ই মার্চ্চ, তিনি নিজ ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া খুটধর্মে দীক্ষিত হইদেন। জ্বর্ডন নদীর জ্বনের পরিবর্ত্তে গলালন সিঞ্চনে তাঁহার ধর্মান্তর-গ্রহণ কাগ্য সম্পন্ন হইল। এই সমন্ন অনেক ইংরাজ ও এদেশীয় খুটান দলীপের মন্ত্রকামনার তাঁহাকে পত্র লিথিরাছিলেন। পূর্ক হইতেই দলীপের বিলাভ যাইতে ইচ্ছা হইয়াছিল, লোগিন্ এ বিষয় লর্ড দালহোগিকে জানাইলেন। ১৮৫৪ খুঠান্দের প্রারম্ভে কোর্ট অব্ ডিরেক্টারের মত পাইয়া গ্রন্রজনারল দলীপকে বিলাভ যাইতে অনুমতি দিলেন। শিবদেবও দলীপের সহিত বিলাভ ফাইতে প্রস্তুত হইয়াছিলেন।

১৮৫৪ খুঁষ্টাব্দে গ্রীম্মকালে দলীপ বিলাত যাইবার জন্ত কলিকাতায় আসিয়া পৌছিলেন। গবর্মেন্ট হাউদে গবর্ণর-জেনারল তাঁহাকে নিমন্ত্রণ করিয়া যথেষ্ট আদর ও অভ্যর্থনা করিলেন। এই সময়ে শিবদেবের বিলাত যাইবার বিরুদ্ধে তাঁহার জননীর করুণ আবেদনপত্র গবর্ণরজেনারলের হস্তগত হইল। কাজেই শিবদেবের বিলাত যাওয়া হইল না।

১৮৫৪ খুষ্টাব্দে ১৯এ এপ্রেল দলীপদিংহ বিলাত যাইবার জন্ম জাহাজে উঠিলেন। লোগিন্ও পণ্ডিত নেমিয়াগোরে নামে এক ব্রাহ্মণ ফাতীয় খৃষ্টার্ন তাঁহার সহযাত্রী হইলেন। দলীপসিংহ ইংলতে জাতীয় পরিচহদে বিভূষিত থাকিতেন। কাশীরি কৃত্তায় মথমলের উপর স্থবর্ণথচিত কোট এবং পাল্নে স্বর্ণমণ্ডিত পেণ্টুলেন তিনি সর্ব্বদা ব্যবহার করিতেন। ভাহার উষ্ণীষে রত্নজড়িত শিরপেচ, কাণে পালার বীরবৌল ' ও গলায় তিন নল মুক্তার মালা শোভা পাইত। মহারাণীর স্বামী প্রিন্স আলবার্ট তাঁহার সহিত সর্ব্বদাই আলাপ করি-তেন। এমন কি তাঁহাকে প্রায় বকিংহাম্ প্রাদাদে লইয়া গিয়া তাঁহার প্রতিমূর্ত্তি আঁকাইতেন। একদিন এইরূপ চিত্র লই-ৰার সময় মহারাণী ভিক্টোরিয়া বিবি লোগিন্কে জিজাসা করেন, 'মহারাজ কি কোহিন্র সম্বন্ধে কখন কোন কণা বলেন। এসম্বন্ধে মহারাজ যাহা বলেন, সৃকল কথা আমাকে বলিও। পুৰিধা মত বিবি লোগিন্ এক দিন দলীপকে বলিলেন, 'আপনি কি কোহিন্র দেখিতে ইচ্ছা করেন ?' তাহাতে দলীপ উত্তর করেন, 'হাঁ, আমি আর একবার হত্তে ধারণ করিতে ইচ্ছা করি।'

একদিন দলীপ রাজপ্রাসাদে চিত্রকরের পার্শ্বে স্থিরভাবে বসিয়া আছেন, সেই সময় মহারাণী ভিক্টোরিয়া অহতে
কোহিন্র লইঁয়া দলীপের নিকট উপস্থিত হইলেন। দলীপ
আশ্চর্য্য ও চমৎকৃত হইয়া কোহিন্র হতে লইলেন।
কংলতেশ্বরী দ্লীপকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "আপনি
কংগ্রুহা পূর্ব্বাপেকা উত্তম হইয়াছে বলিয়া বিবেচনা করিতেবিতীয়ব। দলীপ ধীরভাবে সেই মহামণি আলোকে ধরিয়া
শিধয়ুদ্ধ ঘাত্রিয়া দেখিয়া বলিলেন, 'ইহার জ্যোতি বাড়িয়াছে
করিতে অগ্রস্কার আকংর ছাট হইয়াছে।' এই বলিয়া নম্র-

ভাবে মহারাণীর করে কোহিন্র অর্পণ করিয়া চিত্তকরের পার্শে আসিয়া বসিলেন। এই সময়ে তাহার মুখের ভার কিছুমাত্র পরিবর্তিত হয় নাই। মহারাণী ও আর আর সকলে তাহার শাস্তভাব দেখিয়া চমৎক্ত হইয়াছিলেন।

মহারাণী দলীপের আচরণে এতই প্রীতি হইয়াছিলে যে তিনি লোগিনকে দলীপের ইতিহাস লিখিতে অনুমার করেন। মহারাণীর পুত্রগণ ও রাজকুমারীগণও দণীপের স্হিত অনেক সময় নানা প্রকার খেলা করিতেন। জ্ব রাজকুমারগণের সহিত দুলীপের সৌহার্দ জ্বিয়াছিন। মহারাণী দলীপিদিংহের জন্মদিন উপলক্ষে বইমৃশ্য উণ হার প্রদান করিতেন। এইরূপে ইংল্ডীয় রাজ্পরিবায় গণের স্নেহে দলীপ অতিস্থথে কালাতিপাত করিতে নাগি লেন। এই সময়ে কুর্ণ রাজকুমারীর সহিত তাঁহার দানাং হয়। এক সময়ে লোগিন্ তাঁহার সহিত দলীপের বিলাং দিতে ইচ্ছুক ছিলেন। দেলীপ ঐ রাজকুমারীর গুণের পক পাতী হটলেও তাঁহাকে কথন বিবাহ করিতে ইছ্র ছিলেন না। এই সময়ে লর্ড হার্ডিঞ্জ ইংলত্তের প্রধান দেন পতি। তিনি দলীপকে কেণ্টনগরে নিমন্ত্রণ করি। আনেন। তথায় দলীপ ৭ দিন মহানন্দে অবস্থান করেন। বাস্তবিক ইংলপ্তের লোকেরা তথাকার উচ্চ রাজ-পরিবারের স্থায় দলীপসিংহকেও সম্মান করিতেন।

এতদিন দলীপ নাবালক ছিলেন, শীন্তই সাবালক হই বেন, সাবালক হইলে ভবিষ্যতে তাঁহার প্রতি কিরণ বন্দোবস্ত হইবে তাহা জানিবার জন্ম ব্যত্র হইলেন। লোগির এ বিষয় জানিবার জন্ম ১৮৫৪ খুইান্দে হৈত্র মাসে না দাল্হোসিকে লিখিলেন, মহামাজের ইচ্ছা ভবিষ্যতে তাঁহাকে বেন কোন ভূসম্পত্তি না দেওয়া হয়। ১৮৪৯ খুইান্দে সিরিধারামত তাঁহাকে লেকের ভিতর টাকা দেওয়া হা তাঁহার পরিনারবর্গের যদি কাহার মৃত্যু হওয়ায় বে বৃত্তির টাকা বীতিয়াছে, ভবিষ্যতে তিনি যেন পাইতে পারেন লভ দাল্হোসি উত্তরে লেখেন যে, অপবের বৃত্তির টাকা তাঁহাকে দেওয়া হইবে না ৯

ইহার পর দলীপ বিভাচর্চায় ও সংকার্য্যে মন দিলে।
তিনি অমৃতসহরের নিকটবর্ত্তী বিভালরের ছাত্র সম্ভূর্যর্ক পারিতেত্বিক দিবার জন্ত বাংসরিক এক হাজার চাকা,
বিলাতে নিংখার্থপরোপকারীর সভার ১০০০ হাজার চাকা,
ইংলণ্ডের দরিদ্রদিগকে ৫০০০ পাঁচ হাজার টাকা এন
তাহার অবস্থানকাল পর্যান্ত বাংসরিক ২৫০০০ হাজার টাক্
দানের বন্দোবস্ত ক্রিলেন। ইহার কিছুকাল পরে স্কট্লণ্ডের মেঞ্জিস্ হুর্গে কোর্ট অব্ ডিরেক্টারপণে পরিবৃত হইয়া আমোদে বাস করেন। এথানে অনেক সম্রান্ত মহিলা আসিয়া তাঁহার সহিত আলাপ করেন। দলীপ বিলাতী ললনার প্রশংসায় মুগ্ধ হন নাই, রমণীর কুটজালে তাঁহার চরিত্র কলুষিত হয় নাই। ইহাই দলীপের মহত্বের পরিচয়।

দলীপ ছই বংসর বাস করিবার জন্ম ইংলণ্ডে আসেন।
১৮৫৬ খুটান্দে ডিসেম্বর মাসে জেনোয়া ও ফোরেন্স হইরা
ইতালীর রাজধানী রোমনগারে যাইয়া উপস্থিত হইলেন।
মহারুভব পোপ দলীশের সন্মানার্থ রাজপ্রাসাদে যেথানে
স্থলর প্রতিমূর্ত্তি সকল স্থাপিত আছে, সেইয়ান আলোকিত
করিতে বলিলেন। রোম হইতে দলীপ নেপলস্, পশ্পির
আগ্রেমগিরি বিস্থবিয়াস্ দর্শন করিয়া পরে জেনিভা নগর
হইয়া ইংলণ্ডে ফিরিয়া আসিলেন।

ইংলতে আসিয়া তিনি ভন্তিলেন, অবোধ্যা বৃটীশাধীন हरेबारह। अर्थायात नगांव अव्यक्तिम् व्यानीभारस्त वार्षिक ১৫ লক্ষ টাকা বৃত্তি স্থির হইয়াছে, এ ছাড়া তাঁহার পরিবার-বর্গের ভরণপোষণ জক্ম বৃটীশ গ্রমেণ্টকে আরও অনেক টাকা দিতে হইবে। স্বাধীন শিখরাজ্যের অধিপতি মহাবীর রণজিৎসিংহের পুত্র ও পরিবারগণের মোট পাঁচ লক্ষ টাকা ্তি হইবার পর অনলদ সামস্তরাজের বিলাদের জ্ঞা বৃটীশ ণবর্মেণ্ট ১৫ লক্ষ টাকা বন্দোবস্ত করিলেন, ইহা মহারা**জ** ^{দ্রীপের} পক্ষে অপমানজনক ও অস্থ বলিয়া বোধ হইল। ভবিষ্যতে তাঁহার প্রতি স্থব্যবহা হইতে পারে, এই আশায় তিনি ক্লীরিজ হোটেল হইতে ১৮৫৬ খুটান্দে ৯ই ডিসেম্বর ফোট অব্ডিরেক্টরগণের সভাপতিকে লিথিলেন, 'দশ বর্ষ-^{বয়নে} অভিভাবকের আদেশমত পঞ্জাবরাজ্য ইংরাজকে অর্পণ করিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। তথন অভিভাবক ও মস্ত্রিগণের পরামর্শে সন্ধির সর্কাঞ্চলি ভাল বলিয়াই বোধ_রকরিয়াছিলাম। এখন ভরদা করি, আমার পূর্বপদ ও আমার বর্ত্তমান অবস্থা ^{বিবেচনা} করিয়া আমার সম্মানযোগ্য ভায় বন্দোবস্ত করা ^{চয়।}' সভাপতি প্রত্যুত্তরে জ্ঞানাইলেন, ভারতবর্ষ হইতে **নান্মি। তাঁং**কৈ উত্তর দেওয়া হইবে, তবে সন্ধির ধারাহুসারে ⁵লির ইচ্ছামত বাসন্থান সম্বন্ধে যে প্রতিবন্ধক ছিল, তাহা ^{।ইতে} তিনি মুক্ত ইইলেন। মে মাস অবেধি অপেকা করিয়া ^{ানীপ} আবার কো**ট অ**ব্ডিরেক্টারগণকে তাঁহার বিষয় গীনাইবেন মনে করিয়াছেন, এমন সময় (জুন মাসে) ^{াবাদ} আদিল—ভারতে ভীষণ দিপাহীবিদ্রোহ উপস্থিত ^{ইয়াছে।} স্বতরাং আর তাঁহার পুত্র লেখা হইল না।

এ সময়ে উইওসর্ও অস্বরন্রাজপ্রাসাদে দলীপের প্রায়ই নিমন্ত্রণ ছইড। যুবরাজ ও রাজকুমার আল্ফেড্ আলবারটনে ছই তিনবার আসিয়া দলীপের সহিত ক্রিকেট থেলা করিতেন ও তাঁহার ফটোগ্রাফ লইতেন।

১৮৫৬ গৃঠীকের শেষভাগে • দণীপের নাম জ্বাল করিয়া
বিলাত হইতে কতকগুলি লোক ট্রাহার মাতাকে পত্র লেখেন।
তথন দণীপের জননী নেপালে ছিলেন। [বিন্দন দেখা]
ঘটনাক্রমে সেই পত্র জ্পবাহাছরের হস্তপ্ত হয়। তিনি
সেই পত্র নেপালের বৃটীশ বেসিডেন্টের নিক্ট পাঠাইয়া
দিলেন। পরে সেই পত্র গবর্গরজনারলের নিক্ট হইয়া
বিলাতে ডিরেক্টরগণের নিক্ট আসিল। দলীপের হইয়া
সর্জন লোগিন্ গবর্মেন্টকে লিখিলেন, 'পত্রগুলি দলীপের
নয়, জাল।'

এই সময় হইতে দলীপ মাতার বিষয় কিছু চিস্তিত হইলেন। নেমিয়াগোরে ভারতে আদ্বিতে ছিলেন। তাঁহাকে মাতার নিকট যাইতে অহুরোধ করিলেন। কিন্তু নেমিয়া নিজে না গৈয়া এক উদাসীকে দিয়া রাণী ঝিন্দনের কাছে পত্র পাঠাইলৈন, এ সংবাদ পাইয়া দলীপ অতি হঃথিত হন। সর্জন্ লোগিন্ দলীপের হইয়া নেমিয়াকে পত্র লেখেন, এক জন অপরিচিত লোককে মহারাণীর কাছে পাঠান মহারাজের ইছা নয়। আপনি স্বয়ং গিয়া মহারাণীয় সহিত দেখা করিবেন ও তাঁহাকে ব্রাইয়া বলিবেন যে কি রূপে তিনি থাকিতে ইছো করেন, মহারাজ কি রূপে তাঁহার কার্য্যে আদিতে পারে। নেপালে থাকাই তাঁহার পক্ষে এখন মঙ্গলন্জন । যাহাতে ভবিস্থাতে তিনি আস্বীয় ও পরিবারবর্গে পারব্র হইয়া স্থেথ কাল্যাপন করিতে পারেন, মহারাজ ভারতে গিয়া তাঁহার চেষ্টা করিবেন।

দিপাহী বিজেবের সময় মহারাজ দলীপের ফতেগড়স্থ বাটীও বিজোহিরা লুঠন করে, তাহাতে দলীপের ভারতে ঘাহা কিছু সম্বল ছিল, সমস্তই নষ্ট হয়, দলীপ এ সংবাদে অতাস্ত কাতর হইয়াছিলেন। ইংরাজের তত্বাবধানে থাকিলেও ইংরাজ প্রমেণ্ট তাহার ক্তিপুরণ করিয়া দেন নাই।

১৮৫৭ খুটাকে ২৯এ ডিসেম্বর, দলীপ লোগিনের শিক্ষা-ধীনতা হইতে নিস্কৃতি পাইলেন। যে বয়য়ে হিন্দুরাজ-কুমারগণ সাবালক হন, তদপেক্ষা দলীপের এখন তিন বংসর অধিক হইলেও অথবা মুরোপীয় রাজপুত্রগণ যে বয়সে স্/-লক হন, তদপেক্ষা এক বর্ষ অধিক হইলেও কোর্ট অব্ ডিরেক্টরগণ জানাইলেন, 'মহারাজ এখনও নাবালক, তিনিকোন বিষয় কার্য্য সম্পাদনে অক্ষম।' দলীণ তাঁহাদেব

কথায় কিছু বিশ্বিত হইরাছিলেন। যাহা হউক এই সময় ভারত গ্রমেণ্ট লোগিনের বেতন বন্ধ করায়, দলীপ নিজ বৃত্তি হইতে লোগিন্কে মাসিক ৪০০।/৪ দিবার জভ কোম্পানীর সেকেটরীকে জানাইলেন। কিন্তু কোর্ট অব্ভিরেক্ট-বেরা তাঁহার প্রভাবে দশত হইলেন না।

দলীপ এখন নানাদেশ দর্শনে অভিলাধী হইলেন। তিনি মহারাণী ভিক্টোরিয়া ও তাঁহার স্থানীর নিমন্ত্রণ রক্ষা করিয়া ইংলও পত্রিভাগে করিলেন। রোম, কনন্তান্তিনোপল প্রভৃতি স্থান দেখিয়া অতিশয় প্রীত হইলেন। রোমে কুর্গ রাজকুমারীর সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। বিবি লোগিন্ ভাবিয়া ছিলেন, কুর্গরাজকুলাই দলীপের মনোহরণ করিতে পারিবেন; কিন্তু দলীপ একদিন কথায় কথায় বিবি লোগিন্কে বলিলেন, 'কেবল ইংরাজরমণীই তাঁহার পত্নী হইবার যোগ্যা। এ সম্বন্ধে তিনি কএকজন লও ক্লার পাণিতাহণের আশা পাইয়াছেন।' এীয়কালে দলীপ ইংলতে ফিরিলেন।

কুমার শিবদেব খুল্লভাতকে এক পত্র লেখেন, 'তাঁহার জননীর বৃত্তিভেই এখন অতিকটে তাঁহার জাঁবিকানির্বাহ হইতেছে।' দলীপ শিবদেবের বৃত্তি বৃদ্ধি করিয়া দিবার • জীক্ত ভারতগ্রমেণ্টেকে আবেদন করিলেন। অনেক বাদায়-বাদের পর শিবদেবের বাৎস্বিক ৮০০০ টাকা মাত্র বৃত্তি হির হইল।

১৮৫৯ খৃষ্টাকে ২০০০ মে দলীপ শুনিলেন, ইংরাজি 'আইনাফুসারে তিনি সাবালক হটলে বৎসরে ২৫০০০ পৌও বা
প্রায় সার্দ্ধ ছই লক্ষ টাকা মাত্র বৃত্তি পাইবেন। তৎপরে শুনিলেন, 'তন্মধ্যে ১৫০০০ পৌও তাঁহার জীকিভাবস্থায় দেওয়া
হইবে, অবশিষ্ট ১০০০০ পৌও নাধ্যে তাঁহার জীর জন্ত বাৎসরিক অন্দিক ৩০০০ পৌও রাধিয়া অবশিষ্ট ইংলুওের
আইনামুসারে 'তিনি তাঁহার উত্তরাধিকারিগণের মধ্যে
বিভক্ত করিয়া ঘাইতে পারিবেন। কিন্তু তাঁহারে উত্তরাধিকারী না থাকিলে যে টাকার স্থদ হইতে তাঁহাকে বাৎসরিক দশহাজার পৌও দেওয়া হইবে, সে সমস্ত টাকা
গ্রমেণ্টের হইবে।' কিন্তু সিপাহীবিজোহের সময় তাঁহার যে সম্পত্তি নিষ্ট হইয়াছিল, তাঁহার ক্ষতিপুরণ স্বরূপ কিছুই
পাইলেন না।

>লা নবেষর দলীপ লোগিন্কে এক পত্ত লেখেন,

্'গবর্মেন্ট এখনও আমার প্রতি কোন বন্দোবন্ত করিলেন

না, আমি অন্তির হইরাছি। আমার ভয়, পাছে আমি

ঋণজালে জড়িত হইয়া পড়ি। সত্তর গবর্মেন্টকে এ বিষয়

জানান উচিত।'

ক্রমে অর্থের অনাটনে দলীপ ব্যাকুল হইয়া পড়িনে।
আনেক লেথালেথির পর গবর্মেন্ট দলীপের সকল দারী
মিটাইবার ক্লপ্ত ১৮৬০ খুটাকে ২০০০ জাহুয়ারী উাহার নিরঃ
হইতে এইরূপ এক স্বাক্ষরিত পর্ত গ্রহণ করিলেনু—'নিন
জীবদ্দশায় বাৎসরিক ২৫০০০ পৌতঃ, এ ছাড়া তিনিনা
২০০০০ পৌতঃ প্রার্থনা করিতেছেন। উত্তরাধিকারী
অভাবে এই মৃদ্রা ভারতের সাধারণ হিতকার্য্যে বায় করিতে
তাহার ক্ষমতা থাকিবে। ইহাতে তাঁহার সমুদ্র দারী
পরিশোধ হইবে।'

ভারত সভা ঐ স্বাক্ষরিত পত্র পাইরা ২৩এ মান্দ্রীপকে জানাইলেন, '১৮৪৯ খৃটান্বের সদ্ধি অমুসারে র্রির যে অংশ মহারাজ পাইতে পারিতেন, ভাহাতে আর উদ্বে অধিকার নাই।' বাস্তবিক বৃত্তি হইতে এ সময় প্রায়ং ক্রুটাকা বাঁচিয়া ছিল। তরা এপ্রেল, দলীপ প্রত্যুত্তরে জানাইলেন, 'সর্ চার্লস উদ্দের সহিত সাক্ষাৎকালে তিনি মেপ্রে স্বাক্ষর করিয়াছেন, ভজ্জ্য চিনি অভিশব্ধ হংখিত। রুদ্ধি ভোগীর মৃত্যুত্তে এ প্র্যাস্ত কন্ত টাকা জমিয়াছে, ভাহান জানিয়া তিনি তাঁহার দাবী ছাড়িতে পারেন না।' প্রায় দেড় বৎসর কাটিয়া গেল, দলীপ তাঁহার শেষ প্রের আয় কোন প্রভ্যুত্তর পাইলেন না।

১৮৬० चृष्टीत्म जित्मचत्र मात्म मनील स्ननीत वान चात्नत वत्नावस्त्र ও व्याध-निकात्तत्र हेस्साय जात्रव श्रा कतित्ना

গবর্ণরজেনারল দলীপের ভারত আসা সম্বন্ধ কো আপুত্তি করিলেন না, তবে পঞ্চাবে পদার্পণ কাইতে নিংম করিলেন।

১৮৬১ খৃষ্টাব্দে জামুরারী মাসে দলীপ তারতে আদি লেন। লোগিন্কে তাঁহার বিষয় কর্ম সম্বন্ধে লো^{ট্রা} ডিরেক্টরগণ্যের সহিত কথাবার্ত্তা দ্বির করিবার ভার নি আদেন। কিন্তু কোর্ট অব্ ডিরেক্টর তাঁহার ক্ষমণার্থ গ্রাহ্য করেন নাই।

' দলীপ কলিকাতার সোজেস হোটেলে অবস্থান করে। এখানে কুমার শিবদেবের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। দাঁশ গবর্মেন্টের নিকট আবেদন করিয়া মাতাকে আবামভারে আনিল্লেন। বহুদিন পরে রণজিৎ-বনিতী পুত্রমুব দর্শন করি। বলিয়া ছিলেন, 'তিনি আর পুত্র ছাড়া হইবেন না'

দলীপের ভারতবর্ষ ভাল লাগিল না। কেব্রারী ^{রান} তিনি লোগিন্কে এক পত্র লেখেন, 'ভারত অতি ^{র বৃত্তানি} আমি এখানে আসিয়াছি বলিয়া অনুভাপ করি। ^{রান} লোকের তাড়ার আমার এক মুহুর্ত বিশ্রাম নাই। বৃদ্ধ অনুচরেরা পুরাতন কথা তৃলিয়া আমাকে বড়ই আলাতন করিতেছে। ভারতবাসী দারুণ মিধ্যাবাদী, প্রবঞ্চক, আমার ঘুণার পাতা। ইংলতে যাইবার জন্ত আমি সর্কার দিতে প্রস্তাণ

এই সময় একদিন কতকগুলি শিখসেনা চীনরাজ্য 
ইতে কলিকাতায় ফিরিয়া আসে। তাহায়া রণজিতের 
পুলের আগমন সংবাদ পাইয়া আনন্দে উৎফুল হইয়া 
হোটেলের চারিদিক্ বেটন করিয়া উচৈচ:ম্বরে দলীপকে 
অভিবাদন করিল। তাহাদের রাজভুক্তি দেখিয়া ইংরাজ 
রাজপ্রুষণণ বিচলিত হইলেন। গ্রণরজেনারল দলীপের 
পশ্চিমাঞ্চলে যাওয়া বন্ধ করিলেন এবং অবিলম্থে বিলাভ 
যাত্রা করিবার নিমিত্ত প্রেস্ত হইতে ত্রাঁগাকে আদেশ 
দিলেন। দলীপের আর ব্যাঘ্রুণয়া হইল না। তাঁহার 
জননীও বিলাত চলিলেন।

জুলাই মাদে সকলে বিলাতে আসিয়া পৌছিলেন।
ল্যান্থাইর গেটের নিকট এক বৃহৎ প্রাসাদে দলীপ ও
কালার জননীর বাসভান হইল।

ভূলাই মাসে সরু চার্লস্ উডের নিকট হইতে পত্র পাইর: দলীপ অবগত হইলেন, ১৮৫৯ খৃষ্টাব্দে ৪ঠা সেপ্টেম্বর পর্যান্ত বৃত্তিভোগী কোন কোন ব্যক্তির মৃত্যুতে মোট ৭৬৪২৬০ টাকা বাঁচিয়াছিল। কিন্তু ঐ হিসাবে প্রায় একলক্ষ টাকার ভ্রম থাকার আর একথানি সম্পূর্ণ ও প্রকৃত্তু হিসাব পাঠাইতে লিখিলেন। কএকমাস অতীত ছইল, কিন্তু কোন উত্তর আসিল না।

জননীর প্রভাবে দলীপের ধর্মভাব কমিতে লাগিল। এখন আর তিনি প্রতি রবিবার গির্জায় যাইতে চাহিতেন না। উচ্চপদত রাজপুরুষগণ মাতার নিকট থাকিলে দলীপ বিগড়াইতে পারে, এই আশেকা করিয়া উপহার জননীর জন্ম এক পৃথক্ বাটী ভাড়া করিয়া দিলেন।

দলীপ ব্ঝিলেন যে ইংরাজ সহজে তাঁহার প্রতি কোন ফ্রাবহা করিতে প্রস্তুত নহেন, এমন কি বিনাদােষে তাঁহার মাতাকেও স্থানাস্তর করিলেন;—এই সকল কারণে আর তিনি নির পাকিতে পারিলেন না। মাতাকে ভারতে পাঠাই-বার জন্ত অধীর হইলেন। তাঁহার ভাবী জীব্দনের নিরানন্দ-নম দৃশ্য দর্শনে মন্ত্রাহত হইয়া উপস্থিত শান্তিলাভাশায় ইংল্ডের মোহিনী রম্বীস্মাজেচরিত্র কল্যিত করিলেন।

১৮৬১ খৃঠাকে 'টার অব্ইভিরা' উপাধির সৃষ্টি হইলে দ্বীপও এই উপাধিতে ভূষিত হইতেন। ১৮৬০ খুটানে মহারাণী ঝিল্পন লগুন নগরে প্রাণত্যাগ করেন। মাতার শোক যাইতে না যাইতে ছই মান পরেই তাঁহার স্নেহ জনকোপম দলীপের শিক্ষাগুরু লোগিনের মৃত্যু হইল। এই উচ্চল্লর ব্যক্তির মৃত্যুতে দলীপ অভিশর কট অহভব করিরাছিলেন। কিছু দিন বিবি লোগিন্কে সান্ধনা করিবার জন্তু অপেক্ষা করিয়। ১৮৬৪ খুটাকে দলীপ জননীর মৃত দেহ লইছা বোঘাই নগরে উপন্থিত হইলেন। জননীর শবদাহ করিয়া ভন্মাবশেষ নর্মাণার পবিত্র স্বিলেন বিস্ক্তিনপূর্বক ইংলঙাভিম্বে বাত্রা করিলেন।

পথে ইজিপ্টের রাজধানী আলেক্সাজিয়া নগরে অবতরণ করেন। এখানে ,বোখাম্লার নায়ী এক সরলা
মার্কিন-বালার সহিত তাঁহার বিবাহ হইল। সরলা বোড়ণী,
মহারাজ দলীপের মহিষী হইরাও আপনার পূর্ববং ধীর ও
শাস্ত প্রকৃতি বিশ্বত হন নাই। তিনি ইংলণ্ডের উচ্চ রমণী
সমাজেও মিশিতে ভালবাসিতেন না; নিভতে পতি-সোহাগে
কাটাইতে ভালবাসিতেন। তিনি আরবী ভাষা ভিন্ন আর
কিছুই জানিতেন না। প্রতরাং দলীপ প্রথম প্রথম স্ত্রীর
সহিত কথোপকথনে বিশেষ অস্থবিধা অমুভব করিতেন।
তিনি পত্নীকে ইংরাজী শিধাইবার জন্ত এক বিবি নিমুক্ত
করিয়া দিলেন। মহারাণী ভিক্টোরিয়া দলীপকে স্ব্রীক,
আহ্বান করিয়া তাঁহার মহিষীর শাস্ত শ্বভাব ও সদ্ভণে
প্রকৃতই আনন্দ অমুভব করিয়াছিলেন।

এখন মহারাজ দলীপ আপনার পরিবারবর্গের জন্ত চিস্তিত হইলেন। ১৮৬২ হইতে ১৮৮২ খুষ্টাবা পর্যান্ত গবর্মেন্ট দলীপের প্রতি কোন বন্দোবন্ত করিলেন না। কেবল কুটতর্কে অত্বাহিত হইল। দলীপ আর উপায়াস্তর না तृत्रिश्रा नत् सन् नरतरन्तत छे भत्र । विषयत्र गीमाः नात्र ভার দিতে অমুরোধ করিলেন। সৃধ্যান্ লরেন্স ১৮৪৯ খুষ্টান্দের সন্ধির প্রকৃত মর্ম জানিতেন; তাঁহারই যজে ঐ সৃদ্ধি হয়। সর চার্লস্ উড্ দলীপের প্রস্তাবে সম্মত হইয়া সরু ফ্রেডারিক করিকে লৈরেন্সের সাহায্য করিতে विनातन। त्रविष् शक्षनापत्र त्राका रहेवात शृंदर्व डाँरात কতকণ্ডলি শৈত্ৰিক সম্পত্তি ছিল, শ্মহারাণী ঝিন্দন যথন দলীপের অভিভাবক ছিলেন, তিনি তৎকালে ঐ সম্পত্তি হইতে কর আগায় করিতেন। এখন লোগিন্ ঐ সকল সম্পত্তির বিষয় বুঝাইয়া দিবার জন্ত দলীপের পক্ষে নিযুক্ত হইলেন। কিন্তু হুংখের বিষয় অনেক চিস্তার পর লবেন্ড করি যাহা হির করিবেন, ভারত-সভা তাহাতে সমত হইলেন না।

সন্ধির সর্ত মীমাংগিত হইল না, এমন কি দলীপের পূর্ব্ব পৈতৃক সম্পত্তি ও সিপাহীবিদ্রোহে নষ্ট তাঁহার ফতেগড়স্থ স্থাবর সম্পত্তি সম্বন্ধেও কোন বন্দোবস্ত হইল না। জনেক লেখালেখির পর ফতেগড়স্থ প্রায় ছই লক্ষ টাকার সম্পত্তির ক্ষতিপূরণ স্বন্ধণ তিনি প্রায় ৩০০০০ টাকা পাইলেন।

এই সময় তিনি শুনিলেন বৈ, তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার এলভেডন ক্রমিদারীও বিজীত হইবে। স্বতরাং তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার পূজ্ঞগ কোথার দাঁড়াইবেন, এই ভাবনায় তিনি ব্যাকুল হইলেন। তিনি শুনিলেন, তাঁহার মৃত্যুর পর জ্যেষ্ঠ রাজকুমারের ভর্পণোষণ জ্বত গ্রমেণ্ট কেবল মাত্র ৩০০০ পণিও দিবেন। দলীপের পুজ্রের পক্ষেইহা নিতান্ত অযোগা।

দণীপ এখন নিরূপায় হইয়া ইংলগুবাসীগণের স্বিচার প্রত্যাশায় ১৮৮২ খৃষ্টান্দে ৩১এ আগেও 'টাইম্স্' প্রিকায় লিখিলেন--

'ভৈরবাল দক্ষি অনুসারে ইংরাজ গ্রমেণ্ট ভাঁহার রক্ষণ ও রাজাশাসন ভার গ্রহণ ক্রিয়াছিলেন। ইংরাজ মল-ত্থানের বিজ্ঞোহ দমনে বিলম্ব করাতেই সমস্ত পঞ্জাবে ন বিজোহানল প্রজ্ঞানত হইয়াছিল। বিজোহ দমনের পর লর্ড मान्होिंग (चायना क्रियाहित्नन, याहाता वित्ताह निश्च नह **जाशामिशरक रकानक्रम भाखि (छाश कर्तिर इहार ना।** এরপ ঘোষণার পরও তিনি শান্তিস্থাপন করিয়া এক অসহায় শিশুকে পাইয়া লোভ সম্বরণ করিতে পারিলেন না। ভৈরবাল-সন্ধি অফুসারে কার্য্য না করিয়া তিনি পঞ্জাব বাজেয়াপ্ত এবং সমুদায় সম্পত্তি বিক্রয় ক্লরিয়া লইলেন। বিক্রম করিয়া যে ২৫০০০০ পৌও উঠিল, তাহা বৃটীশ-পালিত দৈভদিগের প্রতি বিভরিত হইল। আমি নির্দোষ, আমার কনিষ্ঠাপুলি কথন র্টীশগবর্মেণ্টের বিরুদ্ধে উঠে নাই. কিন্তু দোষীর সহিত আমাকেও শান্তি ভোগ করিতে হইল। স্থামি অভায়ক্রপে রাজ্য হইতে বঞ্চিত হইয়াছি। শর্ড দাল্থৌদির মতে ১৮৫০ খৃষ্টাব্দে আমার রাজ্যের আয়ে পঞ্চাশ লক্ষ টাকাছিল, এখন বোধ হয় আয় আরও অনেক বাড়িয়াছে। , আমি নাবালক, অবস্থায় অভিভাবকের আদেশে রাজাচ্যতির সন্ধিপত্তে স্বাক্র করিতে বাধ্য হইরাছিলাম, জামি ঐ দক্ষিপত্র আইন বিরুদ্ধ বলিয়া বিবেচনা করি। সেই জন্ম এথন ও আমি পঞ্চাবের অধিপতি। যাহাছউক, সে কথায় আর প্ররোজন নাই। আমি আমার দয়ালু ইংলওেখরীর প্রকা হইয়া থাকিতে ইচ্ছা করি। ১৮৪৯ খুটাকের সদ্ধি অমুসারে আমার ভ্সম্পত্তি বাজেয়াপ্ত হর নাই। ।
সম্পত্তির রাজস্থ এখন ১০০০০০ পৌও, কিন্তু দয়ামর বৃত্তীন
গবর্মেণ্ট আমার যাবজ্জীবন ২৫০০০ পৌও বৃত্তি দিয়াই সহা
হইলেন। এছাড়া আমার মৃত্তার পর আমার জ্মিদারী
বিক্রেয় করিবেন, এই দারুল পণে ভবিষ্যতে আমাকে আরও
২০০০ পৌও বৃত্তি দিবেন বলিয়াছেন। স্তরাং দেখিতেছি
আমার অবর্তুমানে আমার প্তাদগের মানসন্ত্রম রক্ষা হইনে
না। আমি স্পর্বরের কাছে প্রার্থনা করি, এই সভ্য পৃথান
কগতে যদি একজন্ত ভারপেরায়ণ ব্যক্তি থাকেন, ভিনি,
আমার পক্ষ হইয়া ইংরাজ পার্লিয়ামেণ্টে আমার পক্ষ সমর্থন
করিবেন। নত্বা আমার স্বিবিল্ ব পাইবার আশা কোলার।

দলীপের কাতরোজিতে কেই কর্ণণাত করিল না।
১৮৮০ খৃষ্ঠানৈ জুলাই মাদে একদিন তিনি বিবি লোগিনকে
আদিয়া বলিলেন, 'তিনি ইংলও ও তাঁহার শঠতার সহিত্ত
সকল সংশ্রব ত্যাগ করিলেন।' বিবি লোগিন্ দলীগের
অবস্থা সর্ হেন্রি পন্সন্বি ছারা মহারাণী ভিক্টোরিয়াকে
আনাইলেন। মহারাণী ভারত-সচিবকে দলীপের বিষয়
বিবেচনা করিতে অহুরোধ করিলেন। কিন্ত প্রায় বংসরা
ধিক অতীত হইল, ভারতসভা কোন প্রতিবিধান করিলেন
না। ১৮৮৪ খৃষ্টাকে ২৫এ জুলাই দলীপ বিবি লোগিন্কে
আনাইলেন, 'আমি শীঘ্রই ভারত্যান্তা করিব। ক্ষান্তির
আগত প্রায়, ভারত বিপদ্ অভিত, এ সমত্যে আমি বিহ
বৃটীশগবর্মেন্টের কোনক্রপ সাহায্য করিতে পারি, ভাষা
হইলে গ্রমেন্ট হয় ত আমার উপর সদয় হইতে পারেন।'

ইহার পর দলীপ আরও এক বৎসর ধৈর্যাধারণ করি।
রহিলেন। তৎপরে ১৮৮৫ খুটালে মার্চ্চ মানে তথনকার
ভারতসচিব লর্ড কিম্বালিকে লিখিলেন—'বদি বুটীশগবদের
শাঁত্র আমার প্রতি কোন ব্যবস্থা না করেন, তাহা হইকে
আমি চিরকাণের নিমিত্ত আমার ভূসম্পতি ও ইংলওে বাস
পরিত্যাগঁ করিতে বাধ্য হইব। আমায় বে বৃত্তি দেওা
হইতেছে, তাহাতে আমি মর্য্যাদা রক্ষা করিতে অক্ষা
ভারতসচিব কোন উত্তর দিলেন না। তথন দলীপিন্ধি
আর সন্থ করিতে না পারিয়া গ্রুমেন্টের হত্তে এল্ভেচন
অমিদারী অপ্ন করিয়া ভারতবর্ধে আমিবার আর্রেন
করিলেন। সেকেট্রী অব্ টেট্ কথনও বিশাস করেন
নাই যে দলীপ প্রকৃতই ইংলও ছাড়িয়া ঘাইবেন। দলীয়
সাউদম্প্টন্ পরিত্যাগ করিবার উপক্রম করিতেছেন, এবন
সময় সেক্রেটরী অব্ টেট্ তাহাকে আনাইলেন, 'তিনি দানীর
বিশ্নেন স্বিধিন করিবার উপক্রম করিতেছেন, এবন
সময় সেক্রেটরী অব্ টেট্ তাহাকে আনাইলেন, 'তিনি দানীর

ইংলণ্ড পরিত্যাগ করিলেন। অনেক উচ্চদ্রদর ইংরাজ তাহাকে ইংলণ্ড পরিত্যাগ করিতে নিষেধ করিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি যদি সে কথা ভানিতেন, তাহা হইলে ভবিষ্ণুতে তাহাকে হুদ্দা ভোগ করিতে হইত না।

আনেক অফুনয়ের পর দ্বীপ ভারতাগমনের অফুমতি পাইলেন বটে, কিন্তু পঞ্চনদ দর্শনের ক্ষমতা পাইলেন না। । বাহা হউক তিনি আহাজে উঠিবার পূর্কে স্থদেশীয়দিগকে এই মধ্যে এক পত্র লিখিবেন—

প্রিয়ত্ম অংদেশীয়গণ! আমি মে ভারতে গিয়া বাস করিব, আমার কথন এ ইচ্ছা ছিল না। কিন্তু অদৃষ্ট গুণে আবার আমায় ভারতে যাইতে হইবে। আমি নিজ পূর্বে-পুক্ষগণের ধর্ম ছাড়িয়া বিজ্ঞাতীয় ধর্ম গ্রহণ করিরাছি, সেই জন্ম তোমাদের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করি। অস্ম বোধাই এ পৌছিয়াই আবার 'পাহল' গ্রহণ করিব। কিন্তু পঞ্জাবে গিয়া আর আপনাদের সহিত মিলিত হইতে পারিব না।'

मनोश्यत चरमभवाभी रैंकहरकर महासूज्ि झानाहेग्रा ছাবিলম্বে পত্রেব উত্তর পাঠাইলেন। যাহা হউক এ পত্র পৌছিবার পূর্বে হইতেই দলীপের অবস্থা সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তিত इरेग्नाছिল। তিনি এডেনে পৌছিয়াই শিথ দৰ্ম গ্ৰহণ করিলেন। উঁহোর পতা ও শিথগণের মনোভাব দুর্শনে ৰ্কিত হইয়া ইংরাজ গ্রুমেণ্ট তাঁহার ভারতাগ্মন বন্ধ ক্রিলেন। দলীপ মহারাণী ভিক্টোরিয়ার নিক্ট তার্যোগে অপাশ্র বিচারের অহুমতি প্রার্থনা করিলেন এবং ক্রোধাক ুহইয়া ঘোষণা করিলেন যে, 'একাদশ বর্ষ বয়:ক্রম-কালে তাঁহার অভিভাবক বলপূর্বক তাঁহার রাজঃচ্যুতির শ্রিপত্রে সাক্ষর করিয়া লওয়ায় তিনি সেইস্থি অগ্রা**হ্** কারতেছেন।' যাহা হউক দলীপ অবিলয়ে বন্দীরূপে পুনবায় ইংলতে আনীত হইলেন। এই ব্যাপারে তিনি ইংরাজকে মহাশত্রুরপে জ্ঞান করিতে লাগিলেন। বাস্ত-বিক উপ্যুগির নিরাশার দংশনে দলীপের এক প্রকার ৰ্দিলংশ ঘটিয়াছিল। ধৈ,গাধারণ বাচিত্তসম্বরণের ক্ষমতা য়হিলনা। ১২স্দমের যাতনায় ও ক্রোধে আছে হইয়া তিনি ^{গ্ৰমে}ট দত্ত বৃত্তিও পরিভ্যাগ করিলেন। কিছুদিন ভিনি দর্ভি কটে ইংলত্তে থাকিয়া ছন্মবেশে ফ্রান্সে আসিলেন।

দলীপ ভাবিষাছিলেন তাঁখার প্রতি অত্যাদ্ধেরের কথা টুনিয়া হর ত ফরাসী গবমেণ্ট ইংরাজের বিরুদ্ধে সাহায্য দরিবেন। এই ছ্রাশার তিনি ফরাসী গবমেণ্টকে সৈপ্ত গাহায়ে তাঁখাকে পুঁনিচারী পাঠাইবার জক্ত পত্র দারা দাবেদন করিলেন। ফ্রাসী গ্রমেণ্ট, এই অবিবেচকের পত্রে কোন উত্তর দিলেন না। দলীপ ভারতে নিরাশ হইরা ছয়েবেশে আয়র্লপ্রদেশীর পাট্রিক ক্যাসি নাম ধারণ করিয়া ছাড়পত্র সংগ্রহ করিলেন এবং ফ্রান্স হইতে জ্বর্দ্দীর রাজধানী বর্ণিন্ নগরে উপস্থিত হইলেন। এখানে দলীপের সমস্ত নগদ টাকা ও ছাড়পত্র চুবি যাওয়ায় তিনি মহাবিপদে পড়িলেন। জ্বর্দ্দী ছাড়িয়া রুষ রাজ্যের সীমান্তে উপস্থিত হইলেন, কিন্তু সদ্দে ছাড়পত্র না থাকায় রুষ রাজ্যে প্রবেশ কর। তাঁহার পক্ষে কইসাধ্য হইরা পড়িল। দলীপ আর কোন উপায় না দেখিয়া মকোগেলেটের সম্পাদক কাট্কফুকে তারবাগে আপনার প্রকৃত নাম ও ছরবস্থার কথা জানাইলেন। দ্বীগ যাহাতে বিনা ছাড়পত্রে ক্রিয়ার প্রবেশ করিতে পারেন, তত্ত্ব্র কাট্কফ্ তারযোগে সীমান্ত কর্ম্মচারী ও প্রিস্কে জানাইলেন এবং দলীপকে আনিবার জন্ম একজন দৃত পাঠাইলেন।

১৮৮৭ খৃষ্টাব্দে এপোল মাসে দলীপ রুষ রাজ্যে প্রেশ করিলেন। মহ্মোনগরে উপস্থিত ছইলে কাট্কফ্ প্রম্ ক্রীনাদ্রে দলীপকে অভার্থনা করিলেন।

নলীপ মস্তোনগরে অবস্থান কালে ইংলণ্ডের প্রতি যথেষ্ট অবজ্ঞা ও বিদ্বেষ ভাব প্রকাশ করিতেন। তিনি সর্ব্বদাট বলিতেন, ক্ষিয়ার অধীনতা স্বীকার করা তাঁহার প্রাধান কর্ত্তবা, তিনি মধ্য এদিয়ার ব্যাপারে ক্ষের অক্স আ্যোৎ-সর্গ করিতে প্রস্তত্ত্ব।

দলীপের ইংরাজ বিহেষ শুনিয়া রুষগণ আহতি সম্ভর্ হইতেন। ১১ই জুন মঙ্গোর গ্রণ্রজেনায়ল প্রাকাখ্যে দণীপের অভার্থনা করিয়াছিলেন।

ইহার কঁএক মাস পবে দলীপ শুনিলেন যে, তাঁহার প্রিয়তমা মহিনী তাঁহারই শোকে কাতর হই যা ইংলতে প্রারত্যাগ কুরিয়াছেন। তাঁহার মৃত্যুতে দলীপ আরও বাাকুল হইলেন। তাঁহার মন্তিক বিক্বত হইবার উপক্রম হইল। তিনি ভারতবর্ধর প্রধান প্রধান সংবাদ পত্রে এই রূপ ঘোষণা করিলেন—'এডেনে অবরোধ করায় তাঁহার ইংরাজ ভক্তি দারুল ঘুণায় পরিণত হইয়াছে। ইংরাজরাজ অন্তায় রূপে তাঁহার রাজ্য হরণ করিয়াছেন। এই লম্ভ তিনি ক্ষবের আজ্যাধীন হইয়া কর্ম্ম করিতে প্রস্তুত ইইয়াছেন।' আবার ১৮৮৯ পৃষ্টাকে আগষ্ট মাসে ভারতবাদীকে সংখাধন করিয়া ঘোষণা করিলেন, 'ভিনি ভারতের পাঁচিশ কোটা লোকের প্রত্যেকের নিকট হইতে মাসিক এক প্রসা ও প্রাবের প্রত্যেক অধিবাসীর নিকট মাসিক এক প্রসা ও প্রাবের প্রত্যেক অধিবাসীর নিকট মাসিক এক আনা প্রার্থনা করিতেছেন। তিনি ক্ষবিয়ার সাহাষ্যে মুরোপীর সৈপ্ত লাইয়া শীঘই ভারতে পদার্পণ করিতে প্রতিজ্ঞাবছ হুইখাছেন।'

যাহা হউক দলীপের অদ্বদর্শিতার নিমন্ত রুব সম্রাষ্ট্র তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিলেন না। তিনি আশাহরূপ সহায়ভূতি না পাইরা ১৮৯০ খুষ্টান্দে ফরাসী রাজ্ধানী পারিনগরে
ফিরিয়া আসিলেন। এখানে ভোগবিলাসে তাঁহার চরিত্র
আরপ্ত কলুষিত হইল; তিনি শীঘ্রই সাংঘাতিক রোগে
আক্রান্ত হইলেন। গীড়ার, সংবাদ পাইরা তাঁহার পুত্র
ভিক্টর দলীপ দেখিতে আসিলেন। ১৮৯০ খুষ্টান্দে
এই অবস্থীয় দলীপ ভারত-সচিব লর্ড ক্রেশকে এক পত্র
লিখিলেন, 'ঝামি মহারাণী ভারতেশরীর নিকট ক্রমা প্রার্থনা
করিছেছি। যদি তিনি ক্রমা করেন, তাহা হইলে ভবিম্বতে
তাঁহার ইচ্ছাধীন থাকিব অলীকার করিলাম।' ১লা আগপ্ত
ভারিখে লর্ড ক্রেশ দলীপ্কে জানাইলেন যে 'মহারাণী তাঁহাকে
ক্রমা করিলেন।' ইহাতে দলীপ আশ্বন্ত হইলান। তিনি
অতিশয় অক্সন্থ হওয়ায় তাঁহার পুত্র পিতার হইয়া মহারাণীকে
ধত্যাদ জ্ঞাপন করিলেন।

১৮৯৩ খৃষ্টাব্দে ২ওএ অক্টোবর পারিনগরের এক হোটেলে সন্ন্যাসরোগে দলীপের মৃত্যু হয়। ২৯এ তারিখে তাঁহার মৃত দেহ এল্ভেডন প্রাদাদে আনীত ও সমাহিত হইল। में ली प्रशं ( प्रः ) वित्न भग्रत्य वीष्ट श्राविति भव । দলেগন্ধি (পুং)দলে গন্ধো যতা, সমাসান্ত ইৎ, সপ্তম্যা অলুক্। সপ্তপণীবৃক্ষ, ছেতেন গাছ। म्हां सुर्व ( बि ) मनाक्षवि छ म्- ज्रूष्ण । मनसाल मध्राज्य। "ছিদিনেহপ্রশমনং মধু রূকং দলোত্তবং।" (সুশ্ত) এই মধু ছদি ও মেহনাশক। দল্ভ (পুং) দশতি বিশীণভবত্যনেন দল-ভ (দুদলিভাাং ড:। উণ্৩।১৫১) ১ প্রভারণা। ২ পাপ। ৩ চক্রন। ৪ মুনিভেদ। प्रल्**डा** • [ प्रान्डा (पथ ]। দল্মি (পুং) দলতি বিদারয়তি অহুরানিতি দল-মি (দলিয়:। উণ্৪।৪৭)। ১ हेक्स । प्रनाटिक्टनन । २ विक्र দিল্মিন্থ ( তি ) দিলা বিভাতে ২ন্ত দলিন মতুপ্। বজ্রযুক্ত। मला ( ( वि ) मनस्य व्यम्बदममानि मनवनानिषा १ य। मत्नत অদ্ব দেশাদি, অর্থাৎ সন্নিহিত দেশ। দ্ব (পুং) ছনোভি পীড়য়তি ছ-অচ্। ১ বন। ২ বনায়ি। "দৃষ্ণ গঙা নির্ভিমত সুর্বে গঞ্চাদ বার্তা ইব গাল্যমন্ত:।" (ভাগ দে ৮।১০)। ও অধি। হ-অপ্।৪ উপতাপ। কোন কোন কোষকার দব শব্দের উপভাপ এই অর্থ করেন। দবধু (পুং ) ছ-ভাবে অথ্চ্ ( ট্বিভোহথুচ্। উণ্ **এএ৮৯** )।

১ পরিতাপ, হঃধ, উবেগ। দ্যতেহনেন করণে অপুচ্।

🔎 ২ চকুরাণি দাহ, চকুর্জালা।

प्रविषय क्षा । परवन मधः पर काविष्ठ धाकाम् ह दे ह रविषय क्षा । (वाक्षिनः) प्रविषय क्षा । (वाक्षिनः) प्रविषय स्था । (वाक्षिनः) प्रविषय स्था । (वाक्षिनः) प्रविषय क्षा । (विष्ठे ) प्रविषय क्षा । वाक्षि । प्रविषय क्षा ।

সংখ্যাবিশেষ, ১০ সংখ্যা, দ্বিশুণিত পঞ্চ।
"দিশোদশোক্তাঃ পুরুষ্ঠ লোকে সহস্রমাত দশপূর্ণং শতানি।
দশৈব মাসান্ বিভ্রতি গর্ভবত্যো দশৈরেকা দশদাশা দশালা।
(ভারত ৩।১০৪/১৭)

नत्नान (प्रन्भ परभटन नत्नानः। छन् ১।১৫७ উच्छनपद)।

দশবাচক শব্দ--হন্তাকুলি, শস্ত্বাছ, রাবণমন্তক, রুংলা তার, দিক্, বিশ্বদেব, অবস্থা, চক্রাশ্ব, পংক্তি। (ক্রিঞ্চ লতা)। এই দশন্ শব্দ নিত্য বহুবচনাস্ত।

ক্রব্যের দশবিধ গুণক্রিয়া। ১ শৈত্য—ইহাদারা হ্লান স্তস্তন, মৃত্রী, তৃঞা ও দাহের উপশ্ম হয়। ১উছ-ইহা শৈত্যের বিপরীত, কিন্তু পাচক। ও নিয়—ে^{মেই গ} মার্দিবকর, বলকর এবং বর্ণকর। ৪ রুক্ষ—লিয়ের ^{বিষ} রীত, বিশেষতঃ শুস্তনকর ও থর। **ু**পিছিল—^{জী} নীর, বলকর, সন্ধানকর, শ্লেমল ও ভাক। ৬ ^{বিশ্}ন পিচ্ছিলের বিপরীত, ক্লেদশোষক ও রোপণকর। ৭ তীছ-দাহপাক ও আ্বাবকর। ৮মূত্—তীক্ষের ^{বিপরীর।} ৯ গুরু—জাবলম্বতা, উপলেপ, বলড়গ্তি ও পু^{টুরুর্ব।} ১০ লঘু—ভক্তর বিপরীত, লেপনকর ও রো^{প্রকা।} जरवात्र ममविध १७०। > जव-- क्रिमकत्र। २ महिह्न ওঁ বন্ধনকর। ৩ শ্লকু—পিচিছ্যবৎ। ৪ কুর্কশ^{– বিৰয়ং}ং সুথা হুবন্ধী ও স্ক্র। ৫ সূগন্ধ—ক্রচিকর ও মৃত্। ^{৪ চুবন} স্থগদ্ধের বিপরীত ও জুলাসক, অরুচিকর, সারক, ^{জিন্নো} कांत्रक, मलकता १ वावात्री--- नमूनत त्नह वाश हो। পাক করে। ৮ বিকাশী—প্রফুল্ডাসম্পাদনপূর্ব গৃং বন্ধন শিধিল করে। ৯ আগুকারী—ক্রতগামী ^{বরু বৃদ্ধ} তৈলবৎ দেহে সম্বর্ট ব্যাপ্ত হয়। ১০ পুলা স্ব^{লু বিরাইট} গমন করে। (. দ্রব্যঞ্গদর্পণ)

দশই, প্রতি মাসের দশ তারিখ।
দশই, গোয়ালিয়র (সিজিয়ারাল্য) রাজ্যের অন্তর্গত একটা
নগর। ইহা মধ্যভারতের ভোপাবর এজেন্সার অধীন
দশই নামক জায়গীরের প্রধান নগর। আমঝিরা হইতে
১০ মাইল উত্তরে এবং সর্দারপুর হইতে ১২ মাইল দূরে
অব্ভিত। এই জায়গীরের রাজ্য ২৪০০০।
দশক (ক্রী) দশ পরিমাণমক্ত কন্। ১ দশসংখ্যা, দশতি।
শুতি: ক্ষমা দমোহত্তেয়ং শৌচরিক্রিয়নিগ্রহং।
ধীবিত্যা সত্যমক্রোধাে দশকং ধর্মলক্ষণং॥" (মহু)
ধৃতি, ক্ষমা, দম, অভের, শৌচ, ইক্রিয়নিগ্রহ, ধী,
বিত্যা, সত্য, অক্রোধ, এই দশটী ধর্মলক্ষণ। ২ দশগণ্ডা।
দশকেণ্ঠ (পুং) দশ কণ্ঠা গলা যক্ত। রাবণ।
দশকেণ্ঠ জিৎ (পুং) দশকণ্ঠং জয়তি জি কিপু। রাবণজেতা, রাম।

দশকরূর (পুং) দশ ক্ষরা গ্রীবা যন্ত। রাবণ, পৃষো দ্বাদি স্ত্রারা রলোপ কুরিলে দশকর এইরপ হইবে। দশকর্ম্বাজিৎ (পুং) দশক্ষরং জ্মতি জি-কিপ্। রাম। দশক্সাজীর্থ (ক্রী) তীর্থভেদ। দশক্মান্ত্র (পুং) দশক্ম জ্ঞা-ক। দশক্মারে মন্ত্রাদি বিষয়ে

শিক্মাস্তির (পুং) দশকমা জ্ঞা-ক। দশকমারে মন্ত্রাদি বিষয়ে অভিজ্ঞা

দশকর্মান্ (ফ্রী) দশবিধং কর্ম। গর্ভাধানাদি দশবিধ
সংস্নারকর্ম। গর্ভাধান, পুংস্বন, সীমস্তোল্লয়ন, জাতকরণ,
নিক্ষান, নামকরণ, অলপ্রাশন, চূড়াকরণ, উপনয়ন ও
বিবাধ। এই দশটী সংস্কারকার্য্যকে দশবিধ সংস্কার কহে।
দশকর্মাপার্টু (পুং) দশকর্মণি পটুং। দশকর্মবিষয়ে পারদর্শী।
দশকর্মাপার্টু (স্ত্রী) দশকর্মণাং পদ্ধতিং। দশকর্মবিষয়ক
পদ্ধতি, যে পুস্তকে দশকর্মাণাং পদ্ধতিং। দশকর্মবিষয়ক
আছে, তাহাকে দশকর্মাপদ্ধতি কহে। সাম, অক্ ও
ব্রুর্কেদীয় তিনখানি দশকর্মাপদ্ধতি আছে। তাহার মধ্যে
ভবদেবভট্ট সামবেদীয়, পশুপতিভট্ট যজ্কেদীয় এবং
কালেশি অক্বেদীয়দিগের দশকর্মাপদ্ধতি প্রায়ন করেন। এই
পদ্ধতি অন্থানে এখন সর্বল স্ংস্কারকার্য্য নির্কাহ হয়।

শশক্র্যান্থিত (প্ং) দশক্র্যজি: অধিত:। ১ দশক্র্ম দারা
বৃক্তু যিনি দকল কার্য্যাদি করেন, তাহাকে দশক্র্যান্থিত
করে। ২ দশক্র্যাভিজ্ঞ ত্রাহ্মণ, যিনি দশক্র্যাবিষয়ক ও
অভাত দক্লপ্রকার পৌরোহিত্যাদি কার্য্য উত্তয়রূপ স্থানেন,
ভাগকে দশক্র্যান্থিত করে।

^{রশকামজব}্যসন (ক্লী)কাম হইতে উৎপন্ন দশ প্রকার ব্যসন। মৃগ্যা, দ্ভেক্তীড়া, দিবানিলা, প্রনিন্দা, প্রমদা- ্সকিং, নৃত্য, গীত, ক্রীড়া, ব্থাল্রমণ ও মছণান এই দশ প্রকার ব্যসন কামল। [ব্যসন দেখ।] নশকিংয়া (দেশল) নামতা প্রভৃতির গণনাক্ষের পুত্তক, ধারা-

দশকিঁয়া (দেশক) নামতা প্রভৃতির গণনাঙ্কের পুত্তক, ধারা-পাত। ১ গণ্ডায় ১ দশক।

দশকুমারচরিত (রী) মহাকবি দণ্ডিপ্রণীত গল্প গ্রন্থবিশেষ।
ইহাতে দশটা রাজকুমারের চরিত বর্ণিত, হইরাছে, এইজন্ত ঐ গ্রন্থের নাম দশকুমীরচরিত। ইহা অতি আশ্চর্যা উপন্তাস গ্রন্থ, কবি ইহাতে আলোকিক কবিছ শক্তির পরিচয় দিয়াছেন। এইগ্রন্থ গুইভাগে বিভক্ত-পূর্বা ও উত্তর ভাগ। কোন কোন পণ্ডিত বলেন, দশকুমারের পূর্বা ভাগই দণ্ডী প্রণীত, উত্তরার্দ্ধ অন্ত কবি কৃত। এই প্রকার কিংবদন্তীর কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না।

দশকুলার্ক্ষ (পুং) দশগুণিতঃ কুঁশর্ক্ষ:। তদ্রোক্ত কুশর্ক্ষ দশক, তন্ত্র কথিত দশটা কুলর্ক্ষ।

"শ্রেষাতকঃ করঞ্চ বিশ্বাধ্থকদম্ভা:।

নিখো বটোত্মরের চ ধাত্রী চিঞা দশ স্বৃত্তা: ॥" (তম্মরার)

শ্লেমাতক, করন্ধ, বিষ, অম্বর্থ, কদম, নিম্ব, বট, উত্তম্বর, ধাত্রী, চিঞা এই দশকুল রুক্ষকে প্রণাম করিবে।

দশক্ষীর (ক্রী) দশবিধং ক্ষারং। দশবিধ হ্মা, গো, ছাগী,
উন্ত্রী, মেবী, মহিবী, অমিনী, নারী, হন্তিনী, মৃগী ও
গদিত্রী, এই দশবিধ জন্তর ক্ষারকে দশবিধক্ষীর কহে।

শগবামাজন্তথা চৌত্রুমাবিকং মাহিষঞ্জ যং।

অম্বায়াশৈচব নার্য্যাশ্চ করেপুনাং তথৈব চ॥" (ক্লেক্ত্ত)

[ ছ্মা দেখা ]

দশথান ( দেশজ) দশথও। দশ্তুন ( ত্রি ) দশার্ত্ত, দশবার।

দশ্রাম (রী) দশবানি প্রাম্ফু প্রগণাণ।
দশ্রামপতি (পুং) দশানাং গ্রামাণাং পতিং, উত্তরপদ্ধিগুদ্। দশ্রামের অধ্যক্ষ, দশ্রাম্যুক্ত পরগণার অধীশর।
যাহার আজ্ঞার দশ্বানি গ্রাম শাদিভ হয়, তাহাকে দশ্রাম-পতি কহে। ইহার বিষয় মহতে এইরপ লিখিত আছে—
রাজা রাজোর স্বরক্ষাবিধানার্থ বিস্তৃতি অফুসারে তুই, তিন,
দশ, বা শত গ্রামের মধ্যে একদল সৈত্ত সংস্থাপনপূর্বক
এক এক অধিনায়কের উপর ঐ প্রামের বিচারাদির ভার
অর্পণ করিবেন। রাজা প্রথমতঃ প্রত্যেক গ্রামে এক এক
অধিপতি, পশ্চাৎ ক্রমশং অধিক প্রতাপবিশিষ্ট দেখিয়া
দশ্রামের একজন, বিংশতিগ্রামের একজন, এবং সহস্রগ্রামের একজন, অধিপতি নিযুক্ত করিবেন। গ্রামে

কোনরপ চোর্যাদি জন্তায় কার্য্য সংঘটিত হইলে গ্রামাধিপ ক্থাং তাহার বিচারাদি করিবেন, যদি তিনি করিতে
অসমর্থ হন, তাহা হইলে দশগ্রামপতির নিকট দিবেন,
তিনি তাহার বিচারকার্য্যাদি সমাধা করিবেন। তিনিও
বদি অসমর্থ হন, উত্তরোজর প্রধান অধিনায়কের নিকট
অর্পন করিবেন। (মৃত্ব ৭৯০)। এখন যেরপ এক
একটী কেলা ম্যাজিট্রেটের শাসনদত্তে শাসিত হয়, প্রের্থ
ঐক্যপ গ্রামপ্রতি, দশগ্রামপতি প্রভৃতির আজ্ঞাধীনে একটী
গ্রাম বা দশটী গ্রাম শাসিত হইত।

দশ্রামিক (তি) দশগ্রামা অধিকৃতত্বেন সম্ভান্ত ঠন্।
১ দশগ্রামাধিপ, দশগ্রামের অধিপতি। ২ দশগ্রামাধিপের
অব্বদেশাদি।

দশ্রামিন্ (পুং) দশগ্রামা অধিকৃতত্বেন সম্ভাত ইনি। দশ-গ্রামের অধিপতি।

"স্বদীয়ি দভাৎ গ্রামস্কু পদং বা ব্র গচ্ছতি।

পঞ্জামী বহি:কোশাং দশগ্রামাধ বা পুন:॥" (বাজ্ঞবর্কা ২।২৭৫)
দশগ্রীব (পুং) দশ গ্রীবা অগু। ১ রাবণ। ২ অস্তরবিশেষ। (ভারত বন ১ অং)। ৩ দমঘোষের পুত্র ভেদ,
শিশুপালের ভ্রাতা। ৪ একাদশ ময়স্তরে ইন্দ্রের শক্তভেদ,
এবং ইহার অপর আর এক নাম ব্য। (গরুড়পুং ৬৭ অং)
দশক্যোতিস্ (পুং) স্ভ্রাজের জ্যেষ্ঠ পুত্র। ইহার দশ
সহস্র পুত্র হইরাছিল। (ভারত আং ১ অং)

দশ্ (স্ত্রী) দশ পরিমাণমস্ত অভি। দশবর্গ, দশক, দশসংখ্যা।

দশতিয় ( ি ) দশ অবরবা যন্ত, দশানাং অবরবা বা সংখ্যায়াঃ
আবরবে তরপ্। ১ দশসংখ্যা। ২ দশসংখ্যাবিত। ব্রিয়াং
ভীপ্। "তদেকমেব জাতবেদসং গায়বাং ভূচং। দশত্রীযু
বিভতে।" ( শিক্তিক )

দশতি (স্ত্রী) দশাবৃত্তা দশ নিপাতনাং সাধু:। শতসংখ্যা,
দশাবৃত্তদশক। "কালেন মহতা কজ্ৰবণ্ডানাং দশতীদশা।
ক্ষনমামাস বিপ্রেক্স ৫৮ চাণ্ডে বিনতা তথা।" (ভারত
১০১৬) দশাবৃত্তা নব নবতিঃ তথা দশাবৃত্তা দশ
দশতিঃ শত্রিত্তাথাঁ।' (নীলক্ষ্ঠ)

দশদশিন্(অটি) দশার্ভা দশ পরিমাণ্মক্ত ডিনি। শত-গুণিত। ফ্রিরাংভীপ্। '

দশদিক্পাল (পং) দশদিশ: পালয়তি, পাল-অচ্। দশদিকের অধীখন, এই সকল দেবগণ পূর্বাদিক্রমে দশদিক্পালন করেন-ইন্ত পূর্বদিক্ পালক, অগ্নি অগ্নিকোণ,
নম দক্ষিণ্ দিক্, নির্মাত বৈশ্বতি কোণ, বরুণ পশ্চিমদিক্,

মকং বায়ুকোণ, কুবের উত্তরদিক্, কীশ দীশানকোণ, বছা উর্দ্ধিক্ এবং অনস্ত অধোদিক্পালক। উক্ত এই হণ দেবতা দশদিকের রক্ষা বিধান করিয়া থাকেন। বে কোন পূজা করিতে হইলে এই ইস্তাদি দশদিক্পালের পূল করিতে হয়।

দশদিক্ [শ্] (স্ত্রী) পূর্কাদি দিক্সমূহ। यथা--পূর্ক, পদিন, উত্তর, দক্ষিণ, অগ্নি, নৈথাজি, বায়্, ঈশান, অধঃ ৬ উর্ এই দশটী দিক্।

দশ্ধা (অব্য) দশানাং প্রকার:। দশ্ধা (সংজ্ঞারাং বিধার্থে । পা হাতা৪২) দশপ্রকার, দশবার।

"সর্বাং বা রিক্থ জাতত্ত্ব দশ্ধা পরিকল্পা চ।" (মহু ৯০১২১)
দশন্ (ত্তি) দন্শ বাতৃ কনিন্। সংখ্যাবিশেষ, ১০, দশ্ধা, দ্বিগুণিত পঞ্চ। ২ দশসংখ্যাযুক্ত। [দশ্প দেখা]
দশন (ক্লী) দিপ্ততে হনেন শরীরং দন্শ করণে লাট্ দদ্দেতি নির্দেশাৎ কচিৎ কিত্যপি ন লোপং। ১ ক্রঃ।

(পুং) ২ শিবর। ও দস্ত।

"উবাচ বাগ্মী দশনপ্রভাভিঃ সংবর্দ্ধিতোরংস্থলতারহারঃ।' ( রঘু ধারং

দশনচছদ (পুং) দশনান্দস্তান্ছাদয়তি ছাদি খঞ্ রবঃ। ওঠ।

দশ্নপদ (ক্রী) দশনত দশনকত তা পদং। দশনকত যান, যে তলে দত্ত কত করা যায়।

"দশনপদং ভবদধরগতং মম জনমতি চেত্রি থেদং।" (পীতগো^{রিদ}

मभानवात्रम् (क्री) मभनानाः वामहेव आम्हामकफार। स.

দশনবীজ (পুং) দশন ইব নীজনত। দাড়িববৃক্ষ। (পারবর্ত্তা দশনাংশু (পুং) দশনত অংশুঃ ৬তৎ। দশনজোতি দত্তক্তি, দত্তশোভা।

দশনাক (পুং) দশনত দশনকতত অবঃ। দশনকত, লান ঘাত চিহ্ন, দাঁত বসানর দাগ।

দশনাট্যা (ত্রী) দশনঃ আট্যো যন্তাং, এতং সেবনেনি দিয়ন্ত দার্ট্যাৎ অন্ত তথাত্বং। চুক্রিকা, চুকাগান্ত্^{নাই,} দিরপান্ত শাস

টকপালঙ্ শাক।
দশনামী, অবৈতবাদপ্রচারক স্থালির শহরাচার্ব্যের চারির
প্রধান শিষা ছিলেন—পদ্মপাল, হন্তামলক, মণ্ডন ও ভোটা
এই চারিশিয়ের আবার প্রত্যেকের শিশ্ব ছিল। পর্নান্তি
তুই শিষ্য তীর্থ ও আশ্রম; হন্তামলকের ছুই শিশ্ব
ও অন্তব্য তিন শিশ্ব—গিরি, পর্বাত ও বার্গ্র

এবং ভোটকের তিন শিশ্ব-সরস্বতী, ভারতী ও পুরি। এই प्रमुखन इहेट इह प्रमनामी मन्नामीत छे०पछि इहेग्राह् । ণ্ত্ৰিবেণীদঙ্গমে তীৰ্থে ভৰ্মখাদিলকণে। লায়। বুরার্থভাবেন তীর্থরামা স উচাতে। আশ্রমগ্রহণে প্রোট আশাপাশবিবর্জিত:। ষাভাগাতবিনিশাঁক এতদাশ্রমলকণম্ । चत्रा निर्वात पार्म वान वामः काबा वि यः। আশাপাশবিনিশ্বজেগ বননামা স উচাতে॥ আরণো সংস্থিতো নিতামানন্দমন্দনে বনে। তাজ্ব। সর্কুমিদং বিশ্বমরণালকণং কিলা॥ বাদো গিরিবরে নিভাং গীতাভ্যাদে হি তৎপর:। পঞ্চীরাচলবৃদ্ধিত গিরিনামা স উচাতে॥ वरमः शक्त अभूरलम् द्योरणं त्या शानशावनः। সারাংসারং বিজ্ঞানাতি পর্বতঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥ 😲 বদেং সাগরগন্তীরো বনরত্বপরিপ্রহ:। মধ্যাদাশ্চ ন বুব্তেত সাগর: পরিকীর্ত্তিতঃ। স্বরজ্ঞানবশোনিত্যং স্বরবাদী কবীশবঃ। সংসারদাগরে সারাভিজ্ঞো যোহি সরস্বতী। বিভাভারেণ সম্পূর্ণ: সর্বভারং পরিত্যজেৎ। ছ:থভারং ন জানাতি ভারতী পরিকীর্ত্তিতঃ ॥ জ্ঞানতত্ত্বন সম্পূর্ণ: পূর্ণতত্ত্বপদে স্থিত:। পরবন্ধরতো নিতাং পুরিনামা স উচ্যতে ॥"

( প্রাণতোষিণী — অবধৃত প্রকরণ।)

বিনি ত্রমসি প্রভৃতি লক্ষণবিশিষ্ট, ত্রিবেণীসঙ্গমতীর্থে ত্বার্থস্থাবে স্নান করেন, তিনি তীর্থ নামে অভিহিত। যিনি আশ্রম গ্রহণে সমর্থ এবং কামনাবিবর্জিও হইয়া ৰন ও মৃত্যু^{*}হইতে নিমুকি হন, তাঁহার নাম আশ্রন। ^{যিনি} কামনাপরিশুভ হইরা রমণীয় নির্কর সলিহিত বনে ^{ৰাস} করেন, ভাঁহার নাম বন। যিনি আরণাত্তত গ্রহণ করিয়া সমস্ত সংসার পরিত্যাগপুর্বক আনী-ল-দায়ক বনে চিরকাল বাস করেন, ভাঁহাকে অরণ্য বলে। যিনি স্ক্লি। গিরিমধো বাস করেন, গীতাভ্যাসে কুশল, অবিচলিত বুদ্ধি ও গ্ডীর, • তিনি গিরি নামৈ খ্যাত। যিনি পর্কতম্লে বাসুকরেন, ধ্যান ও ধারণ করিতে সমর্থ এবং সারাৎসার বৰ্মকে জানেন, তিনি পৰ্বত .নামে অভিহিত। ধিনি শাগর দৃশ গভীরভাবে অবস্থিতি করেন, ফলম্ণাদি, আহার ^{ক্রেন} এবং আত্ম**র্য্যাদা লভ্**ঘন করেন না, ভাঁছাকে সাগর वता। विनि नर्सना चत्रळानविनिष्टे, चत्रवानी, क्वीचत ও সংসার সাগরমধ্যে সারজ্ঞানবিশিষ্ট, তাঁহাকে সরস্বতী বলে। বিনি বিষ্ঠাভারে পরিপূর্ণ হইরা সকল ভার ত্যাপ করেন ও ছংধভার ভানেন না, তাঁহার নাম ভারতী। বিনি জ্ঞানতকে পূর্ণ, পূর্ণতত্বপদে অবস্থিত এবং সর্কাদা পরব্রেফানিরত, তিনিই পুরি।

শক্রাচার্যা প্রতিষ্ঠিত চারিটী মঠে, তাহার উক্ত দশলন প্রশিষ্যের শিশ্বপরস্পনা চলিতেছে, তর্মধ্যে পুরি, ভারতী ও সরস্বতীর শিশ্বেরা শৃঙ্গণিরির মঠে, তীর্থ ও আশ্রমের শিষ্যেরা শারদামঠে, বন ও অরণ্যের শিশ্বেরা গোন্ধনন মঠে এবং গিরি, পর্বত ও সাগরের শিশ্বেরা জ্বোধীমঠের অন্তর্গত। এতহাতিরিক্ত অন্তের প্রতিষ্ঠিত আ্রপ্ত অনেক গুলি আথড়া নামে ক্তু মঠ আছে। প্রত্যেক দশনামী উক্ত মঠ চতুইয়ের কোন না কোনটীর অন্তর্গত।

প্রত্যেক মঠের পৃথক্ পৃথক্ অধাক্ষ আছে, তাঁহাকে মহস্ত বলে। প্রত্যেক মহস্তই উাহার অধীনস্থ মঠ ও তৎসংলগ্ন ভূসম্পত্তির উপর সম্পূর্ণ কর্ত্ত্য করিয়া থাকেন।

দশনামীদিগের মধ্যে অরণা-সম্প্রদায় একরপ দেখা যার নাবলিলেই হয়। সাগর ও পর্বত,সম্প্রদায়ও অতি অর ।

দশনামীরা নিশুণ উপাসক বশিয়া পরিচিত। কিন্তু অনেকেই প্রথমে শিবমন্ত গ্রহণ ও শিবস্থাত পাঠ করেন। ইহাদের কতকশুলি লোক বাস্তবিক নিশুণ উপাসক বা আযুক্তানী।

দশনামী সন্নাদীদিগের অনেকেই স্বধর্মোচিত নিরম প্রতিপালন করেন না। ইংগদিগের কার্দ্যকলাপ দেখিলে বাধ হয় বে, তীও্ত্রমণ ও গঞ্জিকা-দেবন ভিন্ন ইংগদেব আর কোন কাল নাই। বেদান্তের তত্ত্বাস্থালনই ইংগদের প্রধান ধর্ম; কিন্ত ইংগার তন্ত্র ও যোগশান্ত্র অন্থালন করিয়া তদম্ক্রপ কার্য্য করেন। অনেকে আবার বৃদ্ধক্তি দেখাইতেও চেটা করেন। ইংগার ভিক্ষোপদীবী ংইলেও ইংগদের কেন্ত্রে বাণিজ্যাদি করিয়া থাকেন।

দশনামী সয়্ঞাসীদিগের মধ্যে অনেক অপ্রিত, গ্রন্থকার ও অধ্যবসায়শীল পর্যাটক দেখা গিয়াছে। শঙ্করাচার্য্যের শীবনীবিষয়ক একথানি গ্রন্থ প্রথমন করেন এবং তাঁহার ক্ষত্র স্ত্রভান্ত গ্রন্থভির টাকা প্রস্তুত করেন। অপ্রসিদ্ধ নাধ্বাচার্য্য সয়্ঞাসধর্ম গ্রহণকরণান্তর বেদভান্ত প্রস্তুত করেন। কর্প্রসিদ্ধ নাধ্বাচার্য্য সয়্ঞাসধর্ম গ্রহণকরণান্তর বেদভান্ত প্রস্তুত করেন এবং বিদ্যারণান্ত্রামী নামে থ্যাত হন। এই সম্প্রদান্ত্র অনেকে এখনও সেতৃবন্ধ, বদরিকাশ্রম, কেদারনাথ, কৈলাদ পর্বত্রত থানস-স্বোবর, এমন কি বেলুচিস্থান পর্যান্ত স্থান সমূহে ভ্রমণ করিয়া থাকেন। পুরাণপুরি তিব্বত ও ক্ষিয়ায় গিয়াছিলেন।

हैशाता कोशीन शातन करतम, हैशातत मुकूा इहेरन नव

দাহ করা হর না, হয় নদীতে নিকেপ করা হয়, না হর মৃত্তি কাতে প্রোথিত করা হয়। কাশী মির্জ্জাপুর অঞ্চলে প্রত্তর-পোটকা স্থাপিত করিয়া সমাধি প্রস্তুত করিয়া দেখ_র।

ইংরা ভিন্ন ভিন্ন পদা ও বৃত্তি অবলম্বন করিয়া দণ্ডী, পরমহংস প্রাভৃতি নামধারণ করেন। [সন্নাদী ও দণ্ডী দেখা] দশানোচিছ্ফট (ক্লী) ১ নিখাস। দশনেন উচ্ছিটঃ। ২ অধ্র চুম্বন।

"রেবতীদশনোচ্ছিটপরিপৃতপুটে দৃশৌ।" (মাঘ ২ স॰) ৩ দঝোচ্ছিট, দফতাকা।

দশপ (পুং) দশ গ্রামান্ পাতি রক্ষতি পা-ক। দশগ্রামরক্ষক, রাজনিযুক্ত পুক্ষভেদ। মেরাজপুক্ষের উপর দশখানি
গ্রামের রক্ষণাবেক্ষণের ভারণঅর্পিত আছে, ভাহাকে দশপ বা
দশগ্রামপতি কহে। রাজা কাহাকে এক গ্রামের, কাহাকে
দশ, বিংশতি বা শত গ্রামের আধিপত্য প্রদান করিবেন।
দশপঞ্জেপস্ (পুং) দশর ইক্রিয়েষ্ পঞ্জ বহিষ্ তপো যতা।
ইক্রিয়েজ্যপুক্ষক পঞ্চায়িতপশ্চারী, যাহারা পঞ্জানেক্রিয় ও
পঞ্চক্ষেক্রিয় জয় ক্রিয়া পঞ্চায়িসাধ্য তপ আচ্রণ করেন।
"অব্ভক্ষো বায়ুভক্ষত দত্যোল্থানিক তথা।

অমাকুটো নিরশন: দশপঞ্চপাশ্চ যে॥" (হরিবংশ ৪৫ অ॰)
দশীপার্মিতাধ্র (পুং) দশ পার্মিতা ধরো যেন। বুজ।
(হেম॰)

দশপালা, উড়িয়ার করদমহলগুলির মধ্যে একটী কুজরাজ্য।
ইহার উত্তরে অঙ্গুল রাজ্য, নরসিংহপুর রাজ্য ও মহানদী,
দক্ষিণে মান্দ্রাজ প্রদেশের অন্তর্গত গুম্সর্ রাজ্য, পুর্বের্থ থণ্ডপাড়া ও নয়াগড় রাজ্য এবং পশ্চিমে বোদ রাজ্য। এই
কুজ রাজ্য পর্বতময়। ইহার প্রধান পর্বতের নাম গোয়ালদেশ, ২৫০৬ ফিট্ উচ্চ। প্রধান নগরের নাম দশপালা।

এই সহরে প্রায় ৪২ হাজার লোকের বাদ। হিলু এবং অসভ্য নিবাসীর মধ্যে কয়জাতির সংখ্যাই বেশী। রাজার আয় প্রায় ৪ হাজার টাকা, তন্মধ্যে ইংরাজরাজকে ১৫০১ টাকা কর দিতে হয়। এই রাজ্যটী হই ভাগে বিভক্ত। মহানদীর দক্ষিণ থওকে দশপালা আর মহানদীর উত্তর খণ্ডকে যুত্ম বা জোরেমুহা বলে। শেষ অংশ জয় করিয়া দশপালা রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করা হইয়াছে। এই অংশ প্রের অস্কুলরাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করা হইয়াছে। এই অংশ

এথানকার রাজবংশ স্থাবংশীয় ক্ষেত্রিয়, উপাধি ভঞ্জ, বাজচিচ ময়ব। বোদরাজোর রাজার এক পুত্র ৫ শত বংসর পুন্দে এই রাজা স্থাপন করেন। ময়ুরভঞ্জের রাজার ভাষ এই বংশের আদিপুরুষ ময়ুর্ডিম হইতে উদ্ভূত বিলিয়া থ্যাত। বর্ত্তমানকালে এই রাজার ২২১ সৈপ্ত ও ২১১ বন পুলিস প্রহরী আছে। রাজার নিজ স্থাপিত একটা বিদান আছে। [মর্বভঞ্জ ও বোদ দেখ।] দশাপিত (পুং) মৃত্যুর পাধ যে দশটা পিণ্ড দেওরা হয়। দশাপুর (ক্লী) দশ দিশং পিপর্ত্তীতি পূ-ক। ১ কৈব্তীব্যুক, কেউটে মুখা। ২ দশ পুরো যতা। দেশবিশেষ, এই দে

"পাত্রীকুর্বন্দপ্রবধ্নেত্রকৌত্হলানাম্।" (মেবদ্ভ ৪১)
দশাপুরুষ (পুং) দশগুণিভঃ পুরুষ:। অজনকাবধি পুরু দশক, আপনাকে ধরিয়া দশপুরুষ। "বে মাতৃতঃ পিঃুরু দশপুরুষং সমন্তিতা বিভাতপোভ্যাং পুলাৈচ কর্মভিঃ" (আয়াং শ্রৌং ১।৩১১)

মালব দেশের অন্তর্গত, বর্ত্তমান নাম মন্দ্রোর।

দশপূর (ক্লী) দশ দিশঃ পূর্মতি পূর-অণ্। দশপূর্_{নর} বিশেষ[†]় [দশপূর দেখ।]

দশপুর্ববিথ (পুং) দশপুর্ক: রথ: यস্য। দশরথ।
দশপেয় (পুং) দশভি: পুরু বৈশ্ব সমং পেয়: য়য়। য়য়৻য়।
"সংস্পেষ্টিভিশ্বরিত্বা দশপেয়েন য়য়েত" (আছে শ্রেণ ৯০১)।
'দশপেয়ে নাম ক্রত্র: ' (নারায়ণ)

দৃশ্বল (পুং) দশবলানি ষস্ত। বৃদ্ধ। দান, শীল, ক্ষা,বীং, ধ্যান, প্ৰজা, বল, উপায়, প্ৰণিধি ও জ্ঞান বৃদ্ধের এই ৰক্ষী বল ছিল এই জন্ত দশবল এই নাম হইয়াছে। "দানশীলক্ষমাবীয্াধানপ্ৰজ্ঞাবলানি চ।

উপায়: প্রণিধিজ্ঞানং দশ বুজবলানি বৈ ॥" (বৌজশায়)
দশবাত্ (স্ত্রী) দশ বাহবো হস্তা:। দশভূজা, ছগা। (ফি দশবাত্যুক্ত।

দশবাস্ত্ত গুলি (দেশজ) বৃক্ষবিশেষ। (Pardanthus Chinens)
দশভুজা (স্ত্রী) দশ ভূজা বাহবো যতাঃ। হুর্গা, ত্রেরার্গ্রাজ্ব মহস্তরে দেবতাদিগের হিতের নিমিত্ত মহামারাল ভূজা হইরা প্রাহ্নভূতি হইরাছিলেন, এবং দেবী নির্দে দৈত্যদিগকে নাশ করিয়াছিলেন।

"ইতিবৃত্তং প্রাক্রে মনো স্বায়স্কুবে হস্তরে। আবিভূতি। দশভূজা দেবী দেবহিতায় বৈ ॥" (কাঁলিকাপু• ৫৯ অ•) [ ইুর্গা দেখ। ] ( ত্রি)•দশবাল্বিরি। দশভূমিগ (পুং) দশস্থ ভূমিষ্ দানাদিবলের গছতী ভূবে ড। বৃদ্ধ।

দশভূমীশ (পুং) দশস্ভ্মিরু দানাদির কটে প্রভ^{ার নি} অচ্। বৃদ্ধ। (ত্রিকাণ্ড) দশম (ত্রি) দশানাং পূরণঃ পূরণে ডট্, তভো নার্বাং^ই (নাস্তাদসংখ্যাদেশ্বট্। পা হাহা৪৯) দশসংখ্যার প্^{রুণ)} শিশমন্তমদি" (বেদান্তপরি॰) তুমিই দশম, অর্থাৎ দশের পূরণ।
দশমভাব (পুং) জন্মল্যাংশবিশেষ। তথাদি বাদশ ভাবের
মধ্যে দশম ভাব, অর্থাৎ জন্মলগ্যাংশ রাশিচক্রের দশম
ভাব, লগ অবধি ধার॰ পর্যান্ত বাদশটা রাশির তম্ব প্রভৃতি
বাদশটা সংজ্ঞা নির্দিষ্ট আছে। ইহার মধ্যে দশম গৃহে মান,
আজ্ঞা এবং কর্মবিষয়ক শুভাশুভ চিন্তা করিবে। এই দশম
হানে যদি শুভগ্রহাদি থাকে, তাহা হইলে শুভ এবং অশুভ
গ্রহ থাকিলে অশুভ হইবে। তম্ব প্রভৃতি ভাবের ক্টুটগণনা
স্যাতীত ফলাফল প্রায় ঠিক হয়ুনা। [বাদশভাব দেখ।]
শেমহাবিদ্যা (স্থা) শাক্তগণের উপাশ্র দশ ইইদেবমূর্জি।
চাম্প্রভিন্তের মতে—

"কালী তারা মহাবিছা ধোড়শী ভ্বনেশরী।
তৈরবী ছিলমস্তা চ বিছা ধ্মাবতী তথা ॥
বগলা সিদ্ধবিছা চ মাতঙ্গী কমলাপর্বারিণী ॥
এতা দশমহাবিছা: সিদ্ধবিছা: প্রকীস্তির্বী।
কালী, তালা, যোড়শী, ভ্রনেশরী, তৈ ।
ধ্যাবতী, বগলা, মাতঙ্গী ও কমলা এই দশ মহাবিছা সিদ্ধবিধা নামেও থাতে।

এই দশমহাবিভার উৎপত্তি সম্বন্ধে মতভেদ দৃষ্ট হয়।

এদেশের সাধারণের বিখাদ,—সতী দক্ষযজ্ঞে গমন করিতে

ইছা করিলে মহাদেব তাঁহাকে নিবেঁধ করেন, তাহাতে

ভগবতী প্রথমে কালীমূর্ত্তি দেখাইয়া শিবের ভরোৎপাদন

কবেন, তাহাতে ভোলানাথ ভীত হইয়া পলাইতে উভত হন,

কিন্তু মহামায়া দশ দিকে দশ মূর্ত্তিতে আবিভূতি হইয়া

চাহার পণীরোধ করেন। যে দশ মূর্ত্তিতে মহামায়া আবিভূতি

১ইয়াছিলেন, তাহাই দশমহাবিভা। মহাভাগবতপ্রাণে এ

সম্বন্ধ এইক্সপ বিবরণ পাওয়া যায়—

সভাুবাচ।

সহসং বদ দেবেশ তথাপি পিতৃরালরে।
গমিয়ামি মহাযজ্ঞং দ্রষ্ট মিচ্চুরহং প্রভা ॥
ময়ি তত্ত্ব গতায়াং স সম্মানং কুরুতে যদি।
তদোকা পিতৃরং তৃভাং দাপয়িয়ৢতি চাহুতিম্॥
মমাতো যদি তে নিন্দাং করোভাতিবিমৃঢ্ধীঃ।
তদাশতন্ত মহাযজ্ঞং নাশয়ামি ন সংশ্রঃ॥

শিব উবাচ।
ন ডত্র গমনং যুক্তং ক্লাচিদপি তে সতি।
বিনাপমানং সম্মানং ডত্র তে ন ভবিষ্যতি॥
মন্দ্রিন্দনমসহত্তে করিয়তি পিতা তব।
প্রাণান্ হাস্ততি তচ্চুত্বা তম্ভ কিং,ত্বং ক্রিয়তি॥

IIIV

স্কুগৰাচ। বাজাম্যের মহাদের স্তাং মংপিত্রালয়ে। ত্বমাজাপর বা নো বা স্তাং স্তাং ব্দামি তে ॥

শিব উবাচ।

মধাকামুল্লজ্যা পুন: পুন: কিং
বিবীধি গন্ধং পিতৃরালয়ে চ।
প্রয়োজনং তক্ত কিমন্তি তে সতি
কৈছি ক্টং তৎ কথমেতত্ত্তরম্ ॥
অসম্মানং ভয়ং যেষাং বিভতে ন হুরাত্মনামু।
তএব তক্ত গছেন্তি যক সম্মানভাবনা ॥
মাজৈঃ কদাচিল্লো গছেদপুক্ষকগৃহে সতি।
অপুজকভ্য যা.পুজা ন সা পুজেতি ভভ্ততে ॥
মলিক্দনশ্রতৌ মেনে প্রীতিত্তে জায়তে সতি।
মরিক্দকগৃহে ক্মাদভ্যথা গন্তমিছিলে ॥

স্ত্যুবাচ। •

ষরিক্ষনজ্ঞতৌ শস্তো ন প্রীতি জায়তে মম।
তচ্ছাত্ মিচ্ছুনো বাপি তত্র গন্তঃ সমুৎসহে ॥
যদৈব খাং পরিতাজ্য সর্বানাইয় দৈবতান্।
সমারভন্মহাযজ্ঞমসন্মানং উদ্বৈ হি ॥
জাতং তব খনেতত্ব ন সমালোকসে প্রভো।
যদ্মেবং স মহাযজ্ঞ সম্পাদয়তি মৎ পিতা ॥
খামনাদৃত্য দর্পেণ তদা তে কাপি নো জনঃ।
আহুতিং শ্রুরোপেতং সম্প্রদাস্ততি ভৃতলে ॥
তদহং তত্র মাস্তামি খ্যাজ্ঞাপর বা নবা।
প্রাপ্রামি যজ্ঞভাগং বা নাশার্ম্মামি বা মথং ॥

শিব উবাচ।

অবারিতাসি দেবি তং যণেচ্ছং কুক সর্ক্ষী।
অপকর্ম তথাং কৃত্যা পরং দ্বয়তে ক্ষী: ॥

আনামি বাঘহিত্তিং তামহং দক্ষকভকে।

যথাকতি কুক তথা মমাজ্ঞাং কিং প্রতীক্ষেন।

এবমুকা মহেশেন তদা দাক্ষায়নী সতী।

চিন্তমানাস সংক্ষা ক্ষণমারক্তলোচনা ॥

সংপ্রার্থ্য মামস্প্রাপ্য পত্নীভাবেন শঙ্কর: ।

মামবজ্ঞায় বচনং ভাষতে হতি ক্ষাক্ষম্॥

ত্যকৈন্মণি দর্শিষ্ঠং পিতরঞ্চ প্রজাপতিম্।

সংস্থাতামি কিয়ৎকালং স্থানং নিজ্পালামা॥

ততশ্চ প্রার্থিতানেন ভ্যা হিমবতঃ স্বতা।

শঙ্কোঃ পত্নী ভবিত্যামি ভ্রোহং স্বয়নেব হি ॥

এदः मुक्किन्द्रा यनमा क्रमः नाकायनी मूटन । खत्रानरेकञ्चि जिंदि र्याश्यामान भक्त्रम्॥ শৃষ্কঃ সমীক্ষ্য তাং দেবীং ক্রোধবিক্ষ্র**রিভাধরাম্।** • कालाधिकूलानग्रनाः खकाकः मगकृत्र्त ॥ • এবং সমীক্ষ্যমানা সা শুস্তুনা ভীতচেতসা। সংসা ভীমদংষ্ট্রান্তা সাট্টহাসং সদাকরোৎ ॥ তলিশম্য মহাদেবো মহাভীতে: বিমুগ্ধবং। करष्टेरनात्रीना निवानि जाः ननर्ग खरानकाः॥ এবং সমীকামানা সা সহসা তেন নারদ। তाका रेश्मी कि कि थानी **क्षाननमळाडा**॥ निगयत्री गन**्रक्ना लानकिस्ता ठ**कूक्**का**। কামালসলসদেহা স্বেদাক্তত্ত্বকৰণা ॥ মহাভীমা ঘোররাবা মুঙমালা-বিরাজিতা। উন্তৎ প্রচণ্ডকোট্যান্ডা চক্রাৰ্দ্ধকৃতশেপরা। উন্তদাদিত্যসন্ধাশকিরীটোজ্জলমস্তকা ॥ এবং স্মাদায় বপুর্ভীয়ানকং কাজ্বল্যমানং নিষ্ণ ওেজদা সতী। কুড়াটুহাসং সহসা মহাখনং সোত্তিষ্ঠমানা বিররাজ তৎ भेषः॥ তথাবিধাকারবতীং নিরীক্ষ্ণ তাং বিহায় ধৈর্যাং স মহেশব তদা। চকার বৃদ্ধিং প্রপলায়নে ভরাৎ সমভাধাবচ দিশোতি মুগ্ধবং ॥ তং ধাবমানং গিরিশং বিলোক্য সা দাক্ষায়ণী বার্ঘিতুং পুন: পুন: । চকার মাভৈরিতি শব্দমুচ্চকৈঃ সাট্টাট্রাসং স্থমহাভয়ানকম্॥ নিশম্য তথাকামতীব সংভয়াৎ তত্বৌ ন শস্তু: ক্ষণমূপ্যমূত্র বৈ। দিগস্তমাগস্তমতীৰ বেগত: সমভাধাবত্তমবিহ্বল গুদা॥ এবং পতিং বীক্ষ্য ভয়াতিভূতকং দয়াবিতা তৎপ্রতিবারণেচ্ছয়া। স্কান্থ দিকু কণমাত্র মধ্যত: হিতা চ ভূড়া দশমূর্ত্য স্তদা। সন্ধাৰমানো গিরিখোতি বেগতঃ প্রাপ্রোতি যাং যাং দিশমেব ততা তাং। ভয়ানকাং বীক্ষ্য ভয়েন বিক্ৰতো দিশং তথাক্তাং প্রতি চাভাধাবত।

ন প্রাণ্য শস্তুস্ক ভরাবিতো দিশং
তবৈর সংমুদ্রিতচকুরান্থিত:।
উন্মীল্য নেত্রাণি দদর্শ তাং পুরঃ
ভামালসংপক্ষসন্মিভানদান্॥
হসন্মুথীং পীনপরোধর্দ্ধরাং
দিগম্বরাং ভীমবিশাললোচনাম্।
বিমুক্তকেশীং রবিকোটিসন্নিভাং
চতুভূজাং দক্ষিণসংমুখস্থিতাম্॥
এবং বিলোক্য তাং শস্তুর্মুহাভীত ইবারবীং।
কা দং ভামা সতী কুত্র গঙা মৎপ্রাণবন্ধভা॥।

সভ্যুবাচ।

ন পশুসি মহাদেব সতীং মাং পুরতঃ দ্বিতা:।
কথং তৃবেদৃশী বৃদ্ধিঃ কিং মাং দ্বং লক্ষ্যসেহকুণা।

'L দশপুর দে ভাব উবাচ।

ত্বং সা^{ংথ (পুং)} দক্ষিকুলা মৎপ্রাণবল্পতা। কথং^{। (পুং}কুষ্ণবর্ণা কথং বা ভূর্তমপ্রদায় • সর্ব্বাহ্নি দক্ষ্ এতাঃ কা দৈব্যোতিভরদায়িকাঃ। ত্বঞ্চাসাং কতমা দেবি বদ মাং ভর্যবিহ্বলং॥

পত্যুবাচ।

অহন্ত প্রকৃতিঃ স্না স্টিসংহারকারিণী।
অভবংগুর্নিভারে গ্রহ্ পর্থে গৌরদেহিকা॥
সামের লিপ্সু: পুরুষং প্রাক্ত্মীরুতবশাদ্ধির।
সাহং পিতুর্ম হাযক্তবিনাশায় ভয়ানকা॥
অভবংগ্রন্ত মা ভীতিং কুরু মন্তো মহেশর।
দশ দিক্ষু মহাভীমা যা এতা দশমূর্ত্তয়ঃ॥
সর্ব্বা মনৈর মা শন্তো ভ্রমং কুরু মহামতে।
তং মংপ্রাণসমো ভর্তা ভবাহং বনিতা সভী॥
সাং দৃষ্ট্রাহং মহাভীতং ধারমানং দিশো ভয়াং।
পরিবার্য্য দিশঃ সর্বা স্তবাহং দশধা স্থিতা।

শিব উবাচ।

ত্বং মূলপ্রকৃতিঃ হক্ষা সৃষ্টিস্থিত্যস্তকারিনী।
জামজ্ঞাত্বা মোহামোহাত্ত্বাপ্রিরতমং বচঃ।
ময়োক্তং তন্মহাদেবি ক্ষমস্থ প্রমেশরি।
মহাত্যানকা এতা মূর্ত্তরস্তব ষাঃ শিবে।
আসাং নামানি মে ক্রিছি প্রত্যেকং ভীমগোচনে।

ে দেব্যবাচ। এ

এতা সর্বাঃ মহাদেব মহাবিদ্যাসমপ্রতাঃ।
আসাং নামানি বক্ষ্যামি শৃণু তানি মহেশবঃ॥
কালী তারা মহাবিদ্যা বোড়নী ভূবনেশরী।

ভৈরবী ছিল্লমন্তা চ স্থান্দরী বগলামূদী॥
ধুমাবতী চ মাতলী নামাজ্ঞলানি বৈ শিবে।
শিব উবাচ।
কন্তা: কিল্লাম দেবিত্তং বিশেষী চ পৃথক্ পৃথক্।
কথ্যব জগদ্ধাতি স্পাসনামি মে যদি॥

(प्रवावाह। ষেয়ং তে পুরতঃ কৃষণ সা কালী ভীমলোচনা। স্থামবর্ণা তুষা দেবী স্বয়মূর্ছে ব্যবস্থিতা।। দেয়ং তারা মহাবি**ভা মহাকালস্বর**পিণী। দক্ষে সহব্যতরেয়ং যা বিশীর্ষাতিভয় প্রদা। हेबः (नवी छिन्नमन्छ। महाविना। महामा । বামেতবেয়ং যা দেবী সেয়ং তু ভুবনেশ্বী॥ পৃষ্ঠ उत्तर तराया वर्गना भक्त रहन्ती। विक्रिकार्गि उद्ययः या विधवाक्र श्रेषाति ॥ সেরং ধুমাবতী দেবী মহাবিদ্যা মহেশ্বরী। নৈধ ত্যান্তরে যা দেবী দ্বেয়ং ত্রিপুরস্থন্দরী। বায়েী যা তুমহাবিদ্যা দেয়ং মাতঙ্গনামিকা। ঐশান্তাং ষোড়শী দেবী মহাবিদ্যা মহেশ্বরী॥ অহন্ত ভৈরবী ভীমা শভোমা ঘং ভয়ং কুরু। এতা: দর্কা: প্রস্তান্ত মৃতিমু। ভক্তা। সংভন্ধতাং নিত্যাং চতুর্বর্গফলপ্রদাং। नर्काजीहे अनाष्ट्रियः नाधकानाः মহে धतः ॥ মারণোচ্চাটনক্ষোভমোহনদ্রাবণানি চ। বখ্যস্তমনবিধেষাদাভিপ্রেতানি কুর্মতে। हेगाः नर्का (गाननीया न व्यक्तांशा कनाहन। আসাং মন্ত্ৰ: তথা যন্ত্ৰং পূজাহোমবিধিং তথা ॥ পুরশ্চর্য্যা বিধানঞ্চ স্থোত্রঞ্চ কবচং তথা। আচারনিয়মঞাপি সাধকানাং মহেশ্বর। তদেবাগমশাস্তম্ভ লোকে থ্যাতং ভবিষ্যতি। অহং তব প্রিয়তম। ত্বঞ্চ মে হতিপ্রিয়পতি:॥ পিতৃ: প্রজাপতের্দর্পনাশায়াভ ব্রজামাহম্। पमाळाशूत्र (मर्दाम पः न श्रङ्क्ति (हम्यमि॥ ইতি দেব মমাজীষ্টং স্বটেয়বান্থগতাপ্যহম্॥ ীচ্ছামি যজ্ঞনাশায় পিতুর্দক্ষ প্রজ্ঞাপতে:। ইতি তম্ম বচ শ্রুজা মহাভীত ইব স্থিত: । প্রোবাচ বচনং শভু: কালীং ভীমাং বিলোচনাং ॥ ^{জানে} ডাং পরমেশানি পূর্ণাং প্রকৃতিমৃত্তমাম্। অজ্ঞানতা মহামোহাল্যহুতেং ক্ষম্ভ মহিসি ॥ ^{ৰ্মাদ্যা} প্ৰমা বিদ্যা স্বস্তৃতে <mark>খ</mark>ৰস্থিতা।

चित्रा भव्यामिकः कर्षः विधिनिद्यथकः ॥ ছঞ্চেদগমিষ্যসি শিবে দক্ষবজ্ঞবিনাশনে। কান্যে শক্তিত্বাৎ নিষেদ্ধুং কথং তত্তান্মি বা ক্ষমঃ। যচ্চোক্তমতিমোহেন মডেম্বানং পতিং তব। তৎক্ষমশ্ব মহেশানি যথাকৃচি তথা কুরু। এবমুক্ত্বা মহেশেন তদা সা জগদখিকা॥ ঈষৎসহাভাবদনা বচনক্ষেদমত্রবীৎ। ত্বং তির্চ সর্বাপ্রমধি রক্ত দেব মছেশার॥ যাম্যহং মৎপিভূগৃহি সাম্প্রভং যজ্ঞদর্শনে। ইত্যুক্তা সা মহাদেবং তারাপূর্ণ্ধব্যবন্ধিতা ॥ একরপা সম্ভবৎ সহ্সাতত নারদ। অভাশ্চ মৃত্রিশ্চাটো সহসতি হিঁত। তাদা।। অথ শস্তু: সমালোক্য গন্ধমিচ্ছুং স্থরেশ্বরীং॥ প্রমথানাহ ভগবান্ রথমানর চোত্তমম্। যুতাঞ্চাযুতসিংহেন রক্সালবিরাজিতম্॥ তচ্ছ ছা তৎক্ষণাদেব প্রমথাধিপর্জিঃ স্বয়ং। রথং সূলানয়ৎ সিংহৈরযুহৈত্যু ক্তমাশুলৈ:॥ তাং সমারোপয়ামান প্রমধানিপতিঃ স্বয়ং। তিমিন্রথে স্থিতা কালী বিহ্বলা ভীমরূপিণী ়া

(মহাভাগবত ৮ম অ )

মহাভাগৰতপুরাণের মত গ্রহণ করিয়া ভারতচক্ত অরদামললে এইরূপে দশমহাবিদ্যার আবিভাবের পারচয় দিয়াছেন—

"নিবেদন শুনহ ঠাকুর পঞ্চানন। यक्ष (पश्चितादत्र याव वाशांत्र क्षवन ॥ **मक्**त कर्ट्न वर्षे वाश घरत्र यादा । নিমন্ত্ৰণ বিনাঁ গিয়া অপমান পাবে ॥ যৈজ্ঞ করিয়ীছে দক্ষ শুন তার মর্ম। 😱 আমারে না দিবে ভাগ এই তার কর্ম। সতী কন মহাপ্রভু হেন না কহিবা। বাপ ঘরে কন্তা মেতে নিমন্ত্রণ কিবা ॥ যত কন সতী শিব না দেন আড়েয়া। 😘 কোধে সতী হইলা কালী ভয়ন্তর বেশ 🖫 মুক্তকেশী মহামেঘবরণা দক্তরা। শবারুটা করকাঞী শবকর্ণপুরা॥ গলিভক্ষিরধারা মুগুমালা গলে। গলিত রুধির মুগু বামকরতলে॥ আর বাম করেভে কুপাণ ধরশান। ছুই ভূজে দক্ষিণে অভয় বরদান।

(नानिष्क्रिका उक्तभाता भू(अत क्लाटन। क्रिनश्न व्यक्तिम ननार्षे विनारम ॥ ॥ দেখি ভরে মহাদেব ফিরাইল মুথ। তারা রূপ ধরি সতী হইলা সমুখ ॥ नीवदर्ग (नानिकस्ता कत्रान्यमना। সৰ্প বান্ধা উৰ্ক এক কটা বিভূষণা। অর্দ্ধচন্দ্র পাঁচথানি শোভিত কপাল। ত্রিনয়ন লখোদর পরা বাঘছাল। नौनभन्न थड़नकाछि ममूख धर्भन् । চারি হাতে শেচভে আরোহণ শিবোপর ॥ ২ ॥ দেখে ভারে পলাইতে চান পশুপতি। রাজরাজেখরী হবে দেখা দিলা সভী n ব্রক্তবর্ণা ত্রিনয়না ভালে স্থধাকর। চারিহাতে শোভে পাশাস্থ্য ধরুংশর। বিধি বিষ্ণু ঈশর মহেশ রুদ্রপঞ্চ ১ • পঞ্চপ্রেত-নিরমিত বর্দিবার মঞ্চ॥ ৩॥ দেথিয়া শঙ্কর ভয়ে মুথ ফিরাইলা। रहेशा जूरानयंत्री मठी राष्था निना ॥ রক্তবর্ণা স্বভূষণা আসন অমুর্ক। পাশাঙ্গ বরাভয়ে শোভে চারি ভুজ। जिनग्रन **अर्फ**हन्त ननारहे ऐब्दन। মণিময় নানা অবকার ঝলমল ॥ ৪ ॥ দেবী ভয়ে মহাদেব গেল এক ভিতে। ভৈরবী হইয়া সভী লাগিলা হাসিতে 🛭 রক্তবর্ণা চতুত্রিলা কমল-আসনা। মুগুমালা গলে নানা ভূষণ-ভূষণা। অক্সালা পুথী বরাভয় চারি কর। विनयन अर्फिटक बनाउँ छे भर् ॥ ८॥ দেখি ভয়ে বিখনাথ হইলা কম্পিত। ছিন্নতা হইলা সতী অভি বিপরীত। বিক্সিত পুগুরীক ক্রিপার মাঝে। তিন গুণে विकास मंद्रन ভान नास्य ॥ বিপরীত রতে রভ রুভিকামোপরি। काकनमन्द्रना विश्वकां मिशयूत्री P নাগ্যজ্ঞাপবীতমু গ্রন্থিমালা গলে। থড়েগ কাটি নিজ মুণ্ড ধরি করতলে। কণ্ঠ হৈতে ক্ষির উঠিছে তিন ধার। এক ধার নিজ মুথে করেন আহার। इरे पिरक इरे मशी जाकिनी वर्तिनो ।

ছই ধারা পিয়ে তারা শব-আরোহিণী। চক্র সূর্ব্য অনল শোভিত ত্রিনরন। অর্দ্ধ চন্ত্র কপাল ফলকে স্থাভাল॥ ৬॥ **(मिथ खरा जिल्लाहन मुर्तिमा लाहन।** ধুমাবতী হয়ে সভী দিলা দরশন ॥ অতি বৃদ্ধা বিধবা বাতাসে দোলে তন। কাকধ্বজ রথারটো ধুমের বরণ চ বিস্তার বদনা কুশা কুধার আকুলা। এক হন্ত কম্পবান্ আর হন্তে কুলা॥ १॥ ধুমাবতী দেখি ভীম সভয় হইলা। ' হইয়া বগলামুখী সতী দেখা দিলা॥ রত্নগ্রহে রত্ন-দিংহাসন-মধ্যবিতা। পীতবর্ণা প্রীতবন্ধাভরণভূষিতা॥ এক হন্তে এক অস্থরের জিহবা ধরি। আর হত্তে মুলগর ধরিয়া, উর্ক করি॥ हञ्ज रुर्या व्यनग উष्ट्रग विनयन,। লগাটমণ্ডলে চন্দ্ৰ থণ্ড সুশোভন । ৮ । দেখি ভয়ে ভোলানাথ যান পলাইয়া। পথ আগুলিলা সতী মাতলী হইয়া ॥ রত্বপদাসনা খ্রামা রক্তবন্ত্র পরি। চতুভুজা থড়গ চর্ম পাশাঙ্কুশ ধরি ॥ ত্রিলোচনা অদ্ধচক্ত কপাল ফলকে। চমকিত বিশ্ব বিশ্বনাথের চমকে॥ ৯॥ মহাভয়ে মহাদেব হৈলা কম্পমান। महान्सीक्राप मछी देवना व्यक्तिन ॥ স্থবৰ্ণ স্থবৰ্ণ বৰ্ণ আসন অনুস। হুই পদ্ম বরাভরে শোভে চারি ভূবা। চতুর্দন্ত চারি খেত বারণ হরিষে। রত্ন ঘটে অভিষেক অমৃত বরিষে॥ ১ ।॥ পলাইতে না পেয়ে ফাঁফর হৈল হর। কহিতে লাগিলা কম্পমান কলেবর ॥ তে মরা কে মোরে কহ পাইয়াছি ভয়। কোথা গেল মোর সতী বলহ নিশ্চর॥ कानीमूर्खि कहिएल नाशिना महास्तर । পূर्व नर्व बान दकन भानतिना अदर ॥ পরমা প্রকৃতি আমি ভেবে দেখ মনে ধ প্রসবিমু তুমি বিষ্ণু বিধি তিন কনে॥ তিন জনে তোমরা কারণ জলে ছিলা। তপ তপ তপ বাক্য কহিছু গুনিলা।

তিনজন পরস্পর লাগিলা জপিতে। _{লব ক্র}পে আইলাম ভাসিতে ভাসিতে॥ প্রাগ্রে উঠি গেলা বিষ্ণু ভাবি হথ। বিধি হৈলা চতুর্মাপ ফিরি ফিরি মুখ॥ ত্রি ঘুণানা করিয়া করিলা আসন। প্রকৃতি রূপেতে তোমা করি**তু ভল্ন**। পুরুষ হইলে তুমি আমার ভলনে। সেই আমি সেই তুমি ভেবে দেখ মনে॥ এত শুনি শিবের হইল চমৎকার। প্রকাশ করিলা তন্ত্র মন্ত্র স্বাকার॥ লুকাইয়া দশমূর্ত্তি সভী হৈলা সঁতী। তারা মূর্ত্তি ছাড়ি হৈলা কালীর মূর্তি॥ মোহিত মহেশ মহামারার মারায়। যে ইচ্ছাকরত বলি দিলেন বিদায়॥ রথ আনি দিতে শিব কহিলা ননীরে। রথে চড়ি গেলা সভী দক্ষের মন্দিরে ১"

উপরে দশমহাবিদ্যার উৎপত্তি সম্বন্ধে যে বিবরণ লিখিত ংইল, তাহা মহাভাগবতপুরাণ ব্যতীত আর কোন পৌরাণিক া তান্ত্রিক গ্রন্থে পাঁওয়া যায় না।

তল্পে মহাবিদ্যার উৎপত্তি ভিন্নরূপ বর্ণিত হইয়াছে। কুজিকাভয়ে ১ম পটলে লিথিত আছে— "কলৌ কৃষ্ণবমাদাদা শুক্লাপি নীলরূপিণী। লীশয়া বাক্প্রদাচেতি তেন নীশসরস্বতী॥ তারকছাৎ দদা ভারা ভারিণী চ প্রকীর্ত্তিতা। সুবনানাং পালকছান্তবনেশী প্রকীর্ত্তিতা॥ স্টিছিডিকরী দেবী ভূবনেশী প্রকীর্ত্তিতা। শ্ৰীদাত্ৰী চ সদা বিদ্যা শ্ৰীবিভাচ প্ৰকীৰ্তিতা। নিও গাচ মহাদেবী যোড়শী পরিকীর্ত্তিতা। তৈরবী হঃধদংহল্লী যমহঃধবিনাশিনী॥ কালভৈরবভার্য্যা চ ভৈরবী পরিকীর্ত্তিতা। ত্রিশক্তি কালদা দেবী ছিঁনা চৈব স্থরেশ্বরি॥ विक्षना क महारमवी स्माहिनी स्माक्तमा अवः। प्रावको महामाया धुआञ्चतनिरंतनी ॥ ध्यक्रभा महारमकी हजूर्वर्भक्षमामिनी। জগনাতা জগদাত্ৰী, জগতামুপকারিণী 🛭 ^{বকারে} বারুণী দেবী গকারে সিদ্ধিদা স্থতা। শকারে পৃথিবী চৈব চৈতন্তা মে প্রকীর্ত্তিতা। भाउत्री भन्नी नदाग्र उनाञ्च त्रनानिनी। সর্কাপতারিণী দেবী মাতদী পরিকীর্তিতা ॥

বৈকুঠবাসিনী দেবী কমলা চ প্রকীর্ত্তিতা। পাডালবাসিনী দেবী লন্দ্রীরূপা চ স্থলরী॥ এতা দশমহাবিদ্যাঃ সিদ্ধিবিদ্যাঃ প্রকীর্তিতাঃ॥"

महारानी एका हहरान कान्य कान्य खाद हहेगा नीनक्रिंभी इरेश्राहितन, अवनीनाज्यस वाक्रभक्ति धानान করেন। এই জন্ত নীলসক্ষণতী নামে খ্যাতি লাভ করেন এবং ইনি সকল ভূতকে তারণ করেন, এই জঞ্জ ইহার নাম তারা বা তারিণী। সকল ভুবনকে পালন করেন এই ৰস্ত ভ্ৰনেশ্বী নাম হইয়াছে এবং স্টিও স্থিতিকারিণী বলিয়াও ভ্ৰনেশী নামে বিখ্যাত। মহাদেবী শ্ৰীশান করেন বলিয়া জীবিদ্যা এই স্বাধ্যা প্রাপ্ত হন। মহাদেবী ত্রিগুণতীতা এইজন্ত ইহার নাম ষোড়শী। এই দেবী সকল প্রকার হঃখ नाम करत्रन अयम-यञ्जना विमृत्रिक करत्रन व्यवः टेक्टरवत्र कार्या, এইজন্ত ভৈরবী নামে খ্যাতি লাভ করিয়াছেন। এই দেবা विশक्তिक्रिशिंग, रेरात मछक हिन्ना, हैनि माहिनी ও माक्र-দারিনী, এই জন্ম ইহার নাম ছিল্লমস্তা। এই মহামায়া ধুস্রাত্মর বিনাশ করিয়াছিলেন। ইহার বর্ণ ধূম এবং ইনি ধর্ম, অর্থ, काम ও মোক প্রদান করেন, এইজন্ত ইহার ধুয়াবতী নাম हरेगारह। वकात भरम वाक्रि (पवी, श भरम मक्न धार्काव निकिनांत्रिका. न भरक शृथिवी এवः चत्रः टेडज्ज्जनिनी, এই अञ्च वर्गमा नाम इरेग्राष्ट्र। महास्त्री व्यञास्त्र मन्नीनाः তিনি মতক অসুরকে বিনাশ করিয়াছেন এবং স্কল আপদ হইতে উদ্ধার করেন, এই সকল কারণে তাঁহার নাম মাতর্গা हरेग्राष्ट्र। महारमवी नर्समा देवकूर्छ वान करवन, अटेक्स हेश्व নাম কমলা এবং পাতালে অবস্থিতি হেতু লক্ষী নামেও বিখ্যাত। এই দশমহাবিদ্যাও সিদ্ধবিদ্যা বলিয়া প্রাকীর্ত্তিত হন।

নারদপঞ্জীরাত্তে ( ৩।০ আ: ) শিখিত আছে— °

শিক্ষণেহে সমূত্তা যা সভী লোক বিঞ্জা।
কুপিয়া দক্ষ রাজবিং সভী ভ্যক্তা কলেবরং॥

অস্পৃহ্ চ মেনায়াং জাতা ভ্যান্ত সাতা ভাগা ভাগা।
কালী নামেতি বিখ্যাতা স্কাশাত্তে প্রতিষ্ঠিতা॥ "

সতী দক্ষণ্যে উৎপন্ন হইয়া রাজর্ধি দক্ষের প্রান্তি কুপিত হইয়া কলেবর ত্যাগ করেন, পরে অমুগ্রহ করিয়া মেনকার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন এবং eসই সময়ে সতী কালী এই নামে বিধ্যাত হন, ইহা সকল শান্তে বিধ্যাত আছে।

আবার স্বতন্ত্রতন্ত্রের মতে—
"মহারাত্রিদিনে হ্বস্তাং নগর্যাং লাতমেব তৎ।
কালীরূপং মহেশানী সাক্ষাৎ কৈবল্যদায়কং॥"
মহেশ্রী অবস্তী নগরীতে মহারাত্রি দিনে কালীরূপ হইয়া-

ছিলেন, এই লক্ত ইহার নাম কালী হইরাছে। ইনি সাক্ষাৎ কৈবল্যদায়িনী।

নারদপঞ্চরাত্তে ( ৩)২ অঃ ) লিখিত আছে —

"দক্ষণেহে চ যোৎপন্না সতী নামেতি কীর্ত্তিতা।

কৈবল্যদান্ত্রিনী যক্ষান্তক্ষাদেকজটা স্থৃতা ॥

তারকজ্বাৎ সদা তারা দীল্যা নাক্ঞাদা যতঃ।

নীল্সরস্থতী প্রোক্তা উগ্রস্থাছগ্রতারিণী ॥

উগ্রাপন্তারিণী যক্ষান্ত্রতারা প্রকীর্ভিতা।"

যিনি দক্ষপৃথে উৎপন্ন হইরাছিলেন, তাঁহার নাম সতী, কৈবল্যগায়িণী এই হেতু তাঁহার নাম একজ্ঞটা। তিনিই সকল ভূতকে তারণ করেন, এইজ্ঞ তাঁহার নাম তারা বা লীলার বাক্দান করেন, এই জ্ঞা নাম নীলসরস্বতী এবং উগ্রস্থ হেতু উগ্রভারিণী বলিয়া কীর্ষিত হন।

আবার শতমত জের মতে —,

"কালরাত্রি দিনে প্রাণ্ডে নিশারাং মধ্যভাগকে।
উগ্রাপত্তারণার্থন্ত উগ্রতারা শ্বরং কলা॥

কেরোঃ পশ্চিমকূলে তু চোলনাথ্যো হ্রদো মহান্।
,তত্র জজে শ্বরং দেবী মাতা নীল্সরশ্বতী॥

তত্র জপ্যন্ত প্রজ্পং স্ত্রিযুগং সমবর্তত।

মহোর্জবক্তা লিঃস্ত্য তেজোরাশির্বিনির্গতঃ।

হলে চোলে নিপত্যেব নীল্বর্ণা ভবতদা॥"

কালরাত্রি দিনে নিশীথ রাত্রে স্বয়ং উগ্র আপদ্ ইইতে তারণ করেন বলিয়া উগ্রতারা নাম হইয়াছে। মেরুর পশ্চিমকুলে চোলনামে একটা মহায়দ আছে, এই য়দে মাতা
নীলসরস্বতী স্বয়ং জন্মগ্রহণ করেন এবং এইখানে ত্রিয়ুগ্
ধরিয়া ক্ষপ করিতে থাকেন। উর্জবর্জ্ঞ ইইতে তেজোরাশি চোলয়দে নিপতিত হইয়া নীলবর্ণ ইইয়াছিল বিলয়া
নীলসরস্বতী নামে খ্যাত।

ষোড়শীর উৎপত্তি — নারদপঞ্চরাত্তের মতে —

'ভূর: শৃণু মৃনিশ্রেষ্ঠ রুহজং পরমাতৃত্তম্ ।

বেন কালী মহামায়া স্থলারীত্বমুপাগতা।

কৈলাসশিখনের রমো বসমানে চ শহরে।

ইন্দ্রণ্ট প্রেষ্যামাস সর্বশ্লান্সরসো মুদা।

আগতাতা মহাদেবং তৃষ্ট্র্তং মহেশবং।

ইত্যেব বচনং শ্রুষা তাসাং স ব্যভ্ধবেঃ।

আভাষ্য শ্রুষ্যা বাচা করণামৃত্যা ততঃ ॥

পুরুষপ্রাতিথিজে র: পুরুষো নাজ সংশর:। স্ত্রীণাং স্ত্রী চাভিথিজে রা তমাদগদ্ভ কালিকাং।

ঈশর উবাচ।

ইত্যুক্তা তৎপুরং রম্যং বিবেশ পরমেশ্বরঃ। উবাচ কালীং ভগবানীশ্বরং পরমেশ্বরীং। জা অপ্যবাপু: পরমাং প্রীতিং পরগছল ভাং॥ ততো দেবী মহাকালী চিস্তয়িত্বা মৃত্মু হ:। এতজ্রপমপোহায় শুদ্ধগোরী ভবাম্যহং। যম্মাৎ কাণীতি কালীতি মহাদেব: সমাহৰয়েৎ। ইতি সঞ্চিন্তা মনসা অন্তর্জানং গতা পরা। মহাদেবোহপি কালেন গতোহস্তঃপুরং শিব:। নাপখ্যক্ত তদা কালীং তত্থে তিমান্ পুরে হর: ১ অথ কালে কদাচিত্তু আগতন্তত্ত্ত নারদঃ। প্রাণম্য শিরসা দেবং মহাদৈবং মহেশ্বং। ক্বতাঞ্জিপুটস্তস্থে ততো দেবাগ্রতো মুনি: ॥ মহাদেবাইপি বামেন পাণিনা মুনিসভমং। উপস্পৃত্য সমাখাস্ত চক্তে পুণ্যবতীং কথাং॥ কালেন কিয়তা তত্ত্ব কথান্তে, মুনিসত্তম। **উবাচ সাদরং বাক্যং প্রথম্য জগদীখরম্।** নারদ উবাচ।

ক গতা খাং পরিত্যজ্য কালী কালবিনাশিনী।
প্রত্যুবাচ মহাদেবতাং মুনিং নারদং ততাঃ ॥
অন্তর্ধানং গতা দেবী মাং হিছা মুনিসত্তম ॥
ইতি প্রোক্ত্যু বচন্তত্ত নারদো হর্ষমাগতাঃ।
বিবাদনময়শ্চায়ং মহাকাল্যাশ্চ শ্লিনঃ ॥
ইতি সঞ্চিন্তা মনসা ধ্যানমান্ত্রিত্য নারদাঃ।
দদর্শ তাং মহাকালীং ধ্যানচক্ষু: সমান্ত্রিতাঃ ॥
স্থান্যাক্রন্তরে পার্বে হিতা সা প্রমেশ্বরী।
প্রথম্য প্রয়া ভক্ত্যা উপত্তে জ্পান্মীং ॥
দেব্যুবাচ।

বিদ্রেণ মদীয়েন কিং করোতি মহেশর:। তঠৈত্ব কুশলং দর্কাং কথয়শ্ব মুনীশর॥ নারদ উবাচ।

উত্তোগং পরমং চক্রে বিহারার্থং মহেশর:।

দেবদেবো গিরিস্থতে তং নিবারয় স্থত্তে ॥

ইতি শ্রুষা বচন্তপ্ত সক্রেধা পরমেশরী।

আজ্জলামানা রক্তাকী রপমস্তদ্ধে পরা॥

যনান্তি ত্রিষ্ লোকেষ্ সৌন্দর্যমপি ক্রেচিং।

দেখো তক্রপমতুলং সর্কেবামধিকং পরং॥

যত্রান্তে ভগবান্ দেবো দেবদেবো মহেশ্বর:।

সমাগতা কণেনৈব ভতঃ সা পরমেশ্বরী।

দদশ হ্রদ্যে শক্তাঃ শক্রায়াং পরমেশ্বরী।

ভবাচ সা মহাদেবং কোবেন মহতার্তা।
ক্রতমুদ্ধ মহাদেব ময়া মং সময়ঃ ক্রতঃ।
তং তা লাজ্যতবান্ দেবা কিমর্থ পরমেশর।
ক্রতা বিবাহং ক্দয়ে স্থানং দত্তং ময়া নিব।
ক্রতং শ্রুণা বচন্তক্ষাং প্রহন্ত পরমেশরঃ।
ভবাচ স প্রিয়াং স্বাধ্বীং প্রেম্বালয়া গিরা॥

**ঈখর** উবাচ।

নাহং কৃত্যো কলাণি নাহং সুময়লজ্ফক:।

সন্ধ্য মে-জ্যা দৃষ্টা স্পদ্ধা নাত্ৰ সংশীয়:।

গানং কুক মহাভাগে পশু তং জ্ঞানচকুষা ॥

স্কায়া সৈব দেবেশি ততঃ হুঁগুভিবং প্রা।

উবাচ প্রমেশানং দেবদেবং মহেশ্বং।

প্রেণ প্রমভাবেন কাণ্টাশং ক্যান্তরং।

কা ক্যো হৃদি দৃষ্টা সা তন্মে ক্রাই ক্যাংপতে ॥

• ব্ৰন্ধোৰাচ। ইতি শ্ৰম্থা মহাদেবং কালিকাৰচনং প্ৰং। উবাচ প্ৰেম্ভাবেন দেবদেবং স্নাত্তনঃ॥ ঈশ্বর উবাচ।

যম্মাজিভুবনে রূপং শ্রেষ্ঠং রূতবতী শিবে। তশাং স্বর্গে চ মর্জ্যে চ পাতালেহক্তর পার্ব্বতি। হুন্দরী গঞ্চমী শ্রীশ্চ থ্যাতা ত্রিপুরস্থন্দরী। সদা ষোড়শবৰীয়া বিখ্যাতা ষোড়শী ততঃ। যাং ছায়াং হৃদয়ে মেহ্ছ দৃষ্টা ভীতা সুরেশারি ॥ তত্মাৎ পা ত্রিযু লোকেষু খ্যাতা ত্রিপুরভৈরবী। গাৰন্তা ভগৰত্যাশ্চ স্কন্ধচিন্তা ক্ৰপাময়ী। ওতত্তাং ভূবনেশানীং রাজরাজেশ্বরীং বিছ:। ^{বা চোুগ্রভারিণী} প্রোক্তা যা চ দিকরবাসিনী। ^{হৈয়া} ললিভকাস্থাখ্যা থ্যাতা মঙ্গলচণ্ডিকা। कोषिकी (नवपृञी চ यान्ठाञ्चामूर्खन्नः यूजाः। যা খ্যাতা ভূবনেশানী তহ্যা ভেদা হুনেকধা। जिल्हो अवर्गा ह वनहर्गा विकण्डेकी। কাত্যায়নী মহিষ্মী হুৰ্গা চ বনদেবতা। জীবামদেবতা বজ্ঞ প্রতারিণীচ শ্লিনী। গৃহদেবী গৃহারুদ্ধ মেধা রাধা চ ক্পলিকা॥ ক্থিতাক সমাসেন তাসাং ভেদাক নারদ। ^{*বিন্তারে}ণ ভূ কেনৈব শক্যতে গদিতং মূনে ॥"

তে মুনিশ্রেষ্ঠ, পরমাশ্চর্যাঞ্জনক ও অতিগোপনীর বৃত্তান্ত শ্রুবণ কর, যে কারণে মহামায়া কালী স্বন্দরীত প্রাপ্ত হইয়া-ছিলেন। যে সময়ে শহর র্মনীয় কৈলাস্পিশরে বাস

করিতেছিলেন, সেই সময় ইক্স মহাদেবকে তাব করিবার জন্ত অপলবাদিগকে পাঠাইরাছিলেন, তাহারা আসিয়া মহা-प्तरवत्र खन, कतिशाहिन। महारान जाहारान खरव मार्ड হইয়া বিশিষ্ছিলেন, 'পুরুষের অতিথি পুরুষ, স্ত্রীলোকের অতিথি ত্রীলোক, এইজন্ত তোমরা কালিকার নিকট গমন कत्र।' महात्तव अश्रवाविकारक धेरे कथा विलिया त्रमणीय शृत মধ্যে প্রবেশ করিয়াছিলেন এবং ঐ অপ্সরাগণ পরম-ছর্লভপ্রীতি প্রাপ্ত হইয়াছিল। মহাদেব কালীকে এই বিষয় वित्राहित्तन। काली देश छनिया शूनः शूनः हिन्छ। कतिया কালীরূপ পরিত্যাগ করিয়া শুরূগোরী হইয়াছিলেল। মহা-प्रिक्त किला काली काली वैलिया छाकिया थाटकन, हेरा महन भटन ठिखा कतिया महामात्रा व्यख्धान कतियाहित्तन। महात्तव च खः भूत यारेगा काली क (प्रविष्ठ भारे लग ना, (प्रहे-थात्मरे खरवान कतिरलन्। (कान प्रमात्र नात्रम अर्थात्न মাসিরা উপস্থিত হইলেন। মহাদেব নারদের গাত বাম-ছত্তে ম্পর্ক করিয়া সাদরসন্তাষণপূর্বক নানাবিধ কথা वितालन । नात्रम महारमवरक बिखाना कतिरलन, 'काल-বিনাশিনী কালী আপনাকে পরিত্যাগ করিয়া কোথায় গিয়া-ছেন ?' महाराव वरणन, 'काली आमारक পরিত্যাগ করিয়া ষ্মন্তর্হিত হইয়াছেন।' নারদ মহাদেবের এই কথা গুনিয়া অত্যম্ভ দ্বপ্ত হইলেন। তিনি কালী ও মহাদেবের এই বিবাদ চিন্তা করিয়া ধ্যান অবলম্বন করিলেন। তিনি ধ্যানচক্ষে দেখিয়াছিলেন, স্থামকর উত্রপার্ষে মহাদেবী অবস্থান করিতে-ছেন। নারদু মহামায়ার নিকট উপস্থিত হইয়া প্রণাম করিয়া সেই স্থানে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। মহাদেবী নারদকে জিজ্ঞাসা করিলেন, 'মহাদেব আমা ছাড়া হইয়া কেমন আছৈ, উাহাত্র সকল কুশল সংবাদ বল।'ু নারদ সহাদেবীকে কহিলেন, 'হে গিরিস্থতে ৷ দেবদের মহাদেব পরম বিহারার্থ উন্থোগ করিতেছেন, আপনি তাঁহাকে নিবারণ করুন।' .দেবী এই কথা শুনিয়া অভাস্ত ক্লোধাৰিতা হইলেন এবং চক্ষুরক্তবর্ণ হইল। তথন দেবী অভ্যরূপ ধারণ করিলেন; তিন लारकत रकान छटन रमज्ञेश रमोन्सर्ग नाहे, जिनि रयज्ञेश त्रोक्षांशात्र कतित्वत । अञ्चनीय त्रहेक्र शात्र कतिया যেথানে ভগবান মহেশব অবশ্বান করিতেছেন, সেই ভানে গমন করিলেন। মহাদেবী শস্তর হৃদয়ে অভায়া দেখিয়া অত্যন্ত ক্রোধান্বিতা হটয়া মহাদেবকে কহিলেন, 'ছে কৃত্য, তুমি আমার দহিত প্রতিজ্ঞাপাশে বদ্ধ আছু, কি জ্ঞ তাহা লজ্মন করিয়াছ। তুমি বিবাহ করিয়া জ্লুয়ে আমাকে স্থান দিয়াছ।' মহাদেব কালীর এই কথা

ভানিয়া ঈয়দ্হাত করিয়া কহিলেন, 'হে কল্যাণি, আমি রুতম্ব নহি এবং প্রতিজ্ঞাও লজ্মন করি নাই, আমার হৃদয়ে যাহা দেখিতেছ, তাহা তোমারই ছায়া, এ বিষয়ে সন্দেহ নাই। ইহা বরং তুমি ধান অবলম্বন করিয়া দেখিতে পার।' পরে কালী উহা আপনারই ছায়া অবগত হইয়া স্বস্থ হইলেন এবং মহাজ্বতক কহিলেন, 'ছায়া কে ? তাহা আমাকে বলুন।'

মহাদেব এই কথা গুনিয়া কালীকে বলিলেন, 'হে শিবে! তুমি জিত্বনে শ্রেষ্ঠ রূপ ধরিয়াছিলে, সেই জন্ত স্থার্গ, মর্প্তো ও পাতালে স্থানরী, পঞ্চমী, শ্রীজিপুরস্থানরী বলিয়া থাতি লাভ কর এবং সর্বাল ষোড়শবর্ষীয়া বলিয়া ঘোড়শী নামে বিথাতে হও। অলা আমার হলয়ে ছায়া দেখিয়া ভীত হইয়াছিলে, সেই জন্ত ইহা তিনলোকে জিপুর-ভৈরবী নামে থাতে। ভগবক্টীর ক্রপাময়ী স্থাছিতা যে অবস্থা, তাহাকে 'ভ্বনেখরী বা রাজরাজেখরী বলিয়া জানিবে; যিনি উপ্ততারিণী, দিকরবাসিনী, ললিতকান্তা, মঙ্গলচিঙকা, কোষিকা, দেবদ্তী প্রভৃতি নামে বিথাত। বিনি ভ্বনেখরী নামে ধ্যাত হইয়াছেন, তাঁহার ভেদ আনেক,—জিপুটা, জয়ত্র্গা, বনহ্র্গা, জিকণ্টকী, কাত্যায়নী, মহিষ্মী, ত্র্গা, বনদেবতা, শ্রীয়ামদেবতা, বজ্পপ্রারিণী, শ্রিনী, গৃহদেবী, সেথা, রাধা, কালিকা ইত্যাদি তাঁহার ভেদ জানিবে।

ছিন্নতার উৎপত্তি—নারদপঞ্চরাতের মতে— "একদা পার্বতীদেবী স্নানার্থং গভবত্যপি। मार्कः महहती छात्र मन्ता किन्ना भरत मूना॥ তত্র স্নাত্বা কামবাণপীড়িতা চ অগন্ময়ী। বভূব রুষ্ণা সাদেবী জগদানন্দকারিণী ॥ • অপ কালে কদাচিতঃ তাভ্যাং পৃষ্টা মহেশ্বী। দেহি ভক্ষাং কুধার্ত্তাভ্যামাবাভ্যাং পরমেশ্বরী॥ অত্র তে চ প্রদাস্তামি,কুরুতাং মে প্রতীক্ষণং। ক্ষণাৰ্দ্ধিং পুন: পৃষ্টা দেহি ভক্ষ্যমথাবয়োঃ॥ প্রতীক্ষণং প্রকুক্তাং কিঞ্চিৎ কালং শ্মরামি চণ ক্ষণাৎ পরমূচভূত্তে দেহি ভক্ষামথাবয়োঃ॥ মাতা তং স্ক্রিলগতাং মার্তরং প্রার্থয়েচিছেওঃ। মাতা দদাতি সর্বেষাং ভোজনাচ্ছাদনাদিকম্ অতত্তং প্রার্থয়ে জক্ষাং ভক্ষার্থং করুণাময়ি। ইতি শ্রন্থা মহেশানী মধুরং বচনং তয়েঃ।। গৃহে গৰা প্ৰদাক্তামি ইত্যুচে বচনং তয়ে:। উচতুত্তে পুনস্তাং বৈ ভাকিনী বর্ণিনী পরে।

জয়া চ বিজয়া যে তু আবাং ক্ৎপরিপীড়িতে।
বেহি ভক্ষঃ জগনাতর্যথা তৃপোর রুণামরি॥
তথা কুরু জগনাতর্বরকৈ দেবি আঞ্ডিম্।
ইতি ক্রমা বচঃ প্লক্ষং কুপামরী শুচিমিতা॥
নথাপ্রেণ চ চিচ্ছেদ বামেন স্থানিরস্তা।
ছিল্লমাত্রত্ত তংশীর্ষং বামহত্তে পপাত চ॥
কণ্ঠাবিনিঃস্তং রক্তং ত্রিধারেণ তপোধন।
বামদক্ষিণভেদেন যে ধারে চ বিনির্গতে॥
স্থীমুথে তু সংযোজ্য মধ্যারা স্কাননে।
এবং রুত্বা তু তা তার গতাঃ স্র্র্বা যথাগতম্॥
ছিল্লং তত্তা যতে। মৃত্যং ছিন্দ্রমতা ততঃ স্বতা।"

একদিন পাৰ্বতী দেবী সহচরীদিগের সহিত মনাতিনীয়ে স্থান করিটত গিয়াছিলেন এবং এই নদীতে স্থান করিয়া কামাতুর হইলেন। সেই সময়ে **জ**গদানন্দকারিণী _{দৌ} ক্রফা হইয়াছিলেন। অনন্তর কোন সময়ে স্**চ**িন্ন মহেশরীকে জিজ্ঞানা করিল, 'হে মহেশ্বরি ৷ আমরা অভিনয় কুধার্ত্ত হইয়াছি, আমাদিগকে কিঞ্চিৎ ভক্ষ্য প্রদান করুন মহেশ্বরী বলিয়াছিলেন, 'কণকাল প্রতীকা কর, আমি ভল দিতেছি।' ক্ষণকাল অতীত হইলে আবার তাহারা কুধার 🔯 জানাইল। তথন জগন্মাতা তাহাদিগকে কহিলেন, 'কিচুকাৰ অপেকা কর, ভক্ষ্য দিতেছি।' পরে কিছুকাল অভীত ংইত তাহারা আবার বলিতে মারম্ভ করিল, 'তুমিই ফল জগতের মাতা, শিশু মাতার নিকটেই ভক্ষ্যাদি প্রার্থনা করে মাতা সকলকেই ভক্ষাদি দিয়া থাকেন, হে কঞ্চাম্চি ট জ্ঞ 'তোমার নিকট ভক্ষ্য প্রার্থনা করিতেছি°।' মহেশন প্রদান করিব।' ডাকিনী বর্ণিনী জয়া বিজয় পু^{নরা} সুধাতুর হইয়াবলিয়াছিল, 'হে জগনাতঃ কুপাময়ি! ^{আয়া} যেরূপ তৃপুহিই, আমাদের দেইরূপ থাতা দিন।' কুপা^{হট} দেবী ভাহাদের এই বাক্য শুনিয়া ঈষদ্হাভ করি^{র। বার} নথাগ্র দারা কঠচেছদ করিলেন। ম**তক** ছিল ^{হইনেই} বামহত্তে পতিত হইল। কঠ হইতে ত্রিধারে রক্^{নিট্ড} হইতে লাগিল। বাম ও দক্ষিণদিকে যে গুইট_{ি ধ্য} নিৰ্গত হইল, সেই ছেইটী ধারা ছই স্থীমূৰে ^{সংগ্} জিত কঁরিলেন অবং মধ্য ধারা নিজু মুথে ধরিলেন। ^১ রূপে মুও ছিল হইয়াছিল,—এই**লয়** ছিলমতা ^{এই ন্যে} প্রসিদ্ধি লাভ করেন।

স্বতম্বতন্ত্ৰে লিখিত আছে—
"ছিলোৎপত্তিং প্ৰবেক্ষ্যামি তানা সৈব চ কালিকা।

পুরাক্তর্গে চৈব কৈলাসে পর্বভোত্তরে ।

মহানারা মরা সার্ধং মহারতপরারণা।

উক্রোংসারণকালে তু চ এম্র্তি ভূতদা ।

তদা পদেহসভূতে বেশকী সম্পূবতুং।

ডাকিনী বর্ণিনী নায়া সব্যো তাভ্যাং সহাম্বিকা ॥

পুলাভ্যানদীকৃলং ক্যাম চণ্ডনারিকা।

মধ্যাকে চ ক্ষার্থে চ চণ্ডিকাং পৃক্তেন্ততঃ॥

ভক্ষণং দেহি তৎশ্রুতা বিহস্ত চণ্ডিকা শুভা।

চিচ্ছেদ নিল মূর্জানং কবজোপরি পার্কাতী।

নিল মূর্তিং সমাসাদ্য যা পুরা পরিকীর্তিতা॥

বিবর্ণাং তান্ত দৃষ্ট্রিং সহসা ক্রোধমাগতঃ।

অন্তেং ক্রতমিদং মন্ত্রা ততঃ শুশ্রাব ভ্রমণা।

তপাতৃৎ ক্রোধলো দেবী মদংশং ক্রোধভৈরবং ।

বীররাত্রিদিনে জাতা দিনান্তে পর্মা কলা॥

সবীত্যাং সহ নেবেশি নদ্যাং তন্তাং প্রচণ্ডিকা।"

ছিলার উৎপত্তি বলিতেছি, সেই কালিকা ও তারাই ছিলমন্তা। পুর্বে সত্যযুগে পর্বতশ্রেষ্ঠ কৈলাদপর্বতে মহামারা আমার (শিবের) সহিত মহাস্থরতপরায়ণা ছিলেন, ভুক্রোং- সারণকালে মহামারা চওমুর্ত্তি ধারণ করেন এবং সেই সময়ে বদেহ হইতে হুইটা শক্তি সন্তৃত হয়, সেই হুইশক্তির নাম হাকিনী ও বর্ণিনী, ইহারা হুইলনে পরস্পর স্থী হইল। অধিকা তাহাদের সহিত পুস্তভ্রা নদীক্লে গমন করিয়াছিলেন। মধ্যাহ্নকাল উপস্থিত হুইলে ঐ হুইলন কুধার্ত্ত হয় হিলেন। মধ্যাহ্নকাল উপস্থিত হুইলে ঐ হুইলন কুধার্ত্ত হয়রাছিল, আমারা কুধার্ত্ত হয়রাছিল, আমারা কুধার্ত্ত হয়রাছি, আমানিগকে থালা দিন। তথন চতিকা ঈষদ হাস্ত করিয়ানিল নত্তক ছেলন করিলেন।

নাতঙ্গীর উৎপত্তি নারদপঞ্চরাত্তে এইরপ লিখিত আছে—
"কৈলাসনিখরে রম্যে নানারদ্ধবিভ্ষিতে।
উপবিষ্টা মহাদেবী শস্তোরকে প্রিয়া সতী॥
উবাচ প্রেমভাবেন স্বপতিং পর্মেশ্বরী।

(म्बाबाह ।

তংপ্রসাদা জ্বসন্নাথ ন কিঞ্চিদ্র্র্গভং মম। ^{যত}্ত্বং সর্ব্বদোহনীতি সর্ব্বেষাং প্রিয়কারক: a কিত্তং গন্ধমিছামি মাতাপিত্রো: শুভালরে।

ক্ষমর উবাচ।
প্রিরং মনৈতদেবেশি মমাপি গমনং শিবে।
সন্দেহং কিন্ত মে দেবি গন্তাসি হুনিমন্ত্রিতা ॥
ইতি শ্রুষা বচং পত্যুবাচ মিত্যাই ক্ষটবং।
গতারাং মরি তকৈব ততো গন্তাশি শহর॥

क्षेत्रं खेवां ।

खंड व्हें नमझः चित्रं कृष्ठवानचाहः निद्यं ।

शंजाशः चित्रं शंक्षांत्रं खनानझन्दर्जना ॥

खंड चित्रं स्वता हकाद्वांदनवसूत्र्वसम् ।

क्रिकेमात्व्यस्यामान् यव त्मवः नमानिवः ॥

खंड मुद्दा महात्मवः क्रिकेश चः ध्वतीशंकः ।

वात्मन शानितांथाशा नमानिका शिद्यः स्वरं ॥

हुत्य च्या मृद्धां क्रिकेश क्रिकेन् ।

चात्क निद्यभग्नामान शृद्धां क्रिकेमव्याः ॥

•

যদি তে হস্তি ক্লপানাথ ময়ি দালে জগংপতে। হিমালয়স্থতাং গৌরীং তত্ত্ব নেতৃং সম্ৎসহে॥ শক্ষর উবাচ।

ক্ৰৌঞ উবাচ।

উবাচ শ্লক্ষা বাচা কিম্পমিছ্মাগত:।

শীঘ্রং গচ্ছ বরারোছে ক্রেক্টেন সহ পার্বতী :···· भूनः व्यवसा मा (परी (पराप्तः माइचनः ॥ कटल्ड् ग त्रथमाक्रस्थ रेमनाकिना नमः यर्यो। ক্ষণাৎ পিতৃগৃহং প্রাপ্য উত্তীর্য্য চ রথাত্তত: ॥ জগাম বায়ুবেগেন ক্রৌঞ্চেন সহ সম্বরা। যতাতে হিমবান্রাকা মেনাচ বরবর্ণিনী॥ এবং স্থথোষিতা তত্ত্ব পার্ব্বতী পিতৃমন্দিরে। উবাস কতিচিমাসান্ তেষাং হর্ষপ্রবর্দ্ধ চ ॥ এত স্মিরস্তরে শস্তু: শব্দাদায় দেবরাট্। শঙ্থকারত বেশেন জগাম হিমবদ্গৃহং॥ বিক্রেতৃকাম: শঙ্খানাং ছলেন ত্রিপুরাস্তক:। नात्रीजाः अन्ति गब्धः भाक्तेटेजा न मनाजि ह॥ পর্বিতী প্রণমাবিষ্টা ক্রতা তম্ম চ সম্মতিং ১ দাস্তামি তে মহাভাগে চারুশত্থং মহেশ্বরি॥ ময়া ফ্লাচিতং ভজে দাতব্যং মূল্যমেৰ তৎ। , বাঢ়মুক্ত্বা জগদাতী পুরিধায় স্থনির্ফলম্॥ দিব্যং মনোহরং শঙ্খং চারুরপং স্থােভনং। শহাকারভদাপ্রাহমূলাং দেহি পতিব্রতে॥ •

দেব্যবাচ।
পিতা মে হিমবানজিউর্তা শস্তু: ইপাময়:।
পুত্রা মে গণনাথাজা ভাতা মৈনাক এব চ॥
ভাতৃপুত্র: স্বয়ং ক্রোঞো মাতা চ মম মেনকা।
যৎ পার্থরিদি ভদ্তস্তে ভদ্দাস্যামি ন সংশয়:॥

শশকার উবাচ। পীড়িতঃ কামবাণেন হয়া সাহ্বং বরাননে।

VIII

শীত্রং বরয় মাং ভত্তে নাতাৎ পণ্যং মমেপিসভং॥ ইতি শ্রুতা বচন্তস্ত শঙ্থকারস্ত পার্বভী। মামেবং বচনং কৃকং কঃ শক্তোতি জগল্মে॥। গদিতৃং হুইভাবোহসে শধ্যুং চক্রে মনস্ততঃ। ততো ধ্যানং সমাস্থায় ধৈৰ্ঘ্যমালয় পাৰ্বতী। দদর্শ চেষ্টিতং শস্তোঃ প্রহন্ত পরমেশ্বরী। উবাচ শুঝুকারং তং স্মিভপূর্মাননা ততঃ॥ অধুনা গচ্ছ ভড়জে পুরয়ামি মনোরথম্। দিনান্তরে মহাবাহো বিস্ফ্রা সা জগদ্ধিতা। কিরার্ডবেশমান্থায় স্থীভিঃ পরিবারিতা। জগাম ধতা দেবেশঃ সন্ধ্যাং চক্রে মহেশবঃ॥ न्ठाभीटेजः कामरवरेनः 'शानरकाकनविखदेतः। উবাস তত্ত্র রমণাবেশেন পরমেশ্বরী॥ এত শিরস্তবে শভু: সন্ধ্যাং কর্ত্তু, জগাম স:। माननाथा मञ्जीत्त्र गया मस्ताः मट्यदः ॥ मनर्भ जाः नथीखि क कामत्तरमाञ्चनाः शताम् । त्रक्रवर्गाः त्रक्रवत्रवर्षत्रीधानाः स्वनिर्मगाम् ॥ ু তথীং বিশালনয়নাং পীনোরতঘটস্তনীং। আগত্য সলিধৌ তস্তা: প্রাহ দেব: রূপামর: ॥ ঈশর উবাচ।

কা ত্বং স্থক্ত বরারোহে কিমর্থমিহমাগতা। মনোরথং তে দাস্যামি সত্যং সত্যুং কৃপাং কুরু॥ চাণ্ডাল্যুবাচ।

চাণ্ডালাম্মি স্থবশ্রেষ্ঠ তপোর্থমিহমাগতা।
নেবত্বমভিলাবং মে মা বিঘং কুরু পণ্ডিত।
ঈশর উবাচ।

শিবোহহং দেও দেবেশি তপলিফলদায়ক: ।
অধুনা পাৰ্ব্ধতী তুলাাং করিব্যে নাত্র সংশয়: ॥
তদেব কামভাবেন তৎকল্যাণি ভল্প মাং।
কথঃ বিলম্বসে দেবি দেবত্বং যদি বাঞ্সি॥
চাণ্ডাল্যবাচ।

তপোহর্তনাগতা অত্ত দেবদেব জগৎপতে। দেবতাত্ব্যবাধাং বৈ মা বিমং কুরু ধর্মরাট্॥ ঈশ্বর উবাচ।

ভবিষ্যতি ন তে বিষং কারক্রেশেন কিং তব।
অধুনা ভব দেবীজং মহাক্যং বিফলং নহি॥
ইত্যক্রা হত্যাদার হত্তেন প্রমেশ্রঃ।
উপবিটো মহাদেব ততা আসন্মৃত্যং॥
তরা সাজিঃ মহাদেব সমালিব্য চ তাং শিবঃ।

চুচ্বে বদনং ততা মৈণুনাবোপচক্রমে ॥
রমমাণ তরা সার্দ্ধং কালেন কিয়তা হর: ।
চ্ণালবেশনগমন্তত: প্রাম্থ প্রিয়া-সতী ॥
নাহং বা ছলিত্ং শক্যা কেনোপায়েন কুল্ল চিং।
বং হি দেব শুরুদেব দেবদেব জগংপতে ॥
এবং নানাপ্রকারেণ তরোস্ত রমমাণর্য়ো ।
অভবক্ত তরো: প্রীতিরত্লা মুনিসন্তম ॥
রত্যন্তে চোপবিটো তু তত: প্রাহ পরং সতী ।
জপং কুরু জগরাণ দেহি মে বাঞ্ছিতং বরং ॥

স্বির উবাচ ।

"ৰন্ধান্ধ গুলবেশেন মাদেবং সমুপাগতা।
তন্মান্ম বিরিষং ভত্তে ভবিশুতি ন সংশয়: ॥
উচ্ছিইচা গোলিনী থাতা সর্বাশাস্তেষ্ গোপিতা।
ক্ষতায়াং তব পূলায়াং পূলাস্তে পরমেশরি ॥
সালা ভবিশুতি লিবে অঞ্জা নৈব পার্বাভ়।
মাতলী নাম মৃর্তিন্তে ভবিশুতি ন সংশয়: ॥
সিদ্ধবিভা মহাবিভা যথা তিপুরস্কলারী।
তিপুরতিরবী দেবী যথা চ ভ্বনেশরী ॥
কালী তারা মহাবিভা যথা তে উত্তমে তন্।
ভৈরবী ছিল্লমন্তা চ তথা ধুমাবতী তন্ঃ।
বগলা সিদ্ধবিভা চ মাতলী তে তন্রিয়ং॥"

নানারত্ববিভূষিত রমণীয় কৈলাস শিপরে মহাদেবী ক্র্
আছে উপবেশন করিয়া আছেন, এমন সময় পার্বতীয়ে
ভাবে মহাদেবকে কহিলেন, 'ছে প্রভা! আপনি, সকল মান
লার্য প্রদান করেন এবং আপনার অন্তগ্রহে আমার নির্নার
ফুর্লভ নাই, আমার পিতৃভবনে ষাইতে একাস্ক ইছা হইয়ায়ে
মহাদেব পার্বতীর এই কথা শুনিয়া কহিলেন, 'ইয়া আমা
আনিছা নহে এবং আমারও ষাইবার ইছা আহে, ক্রি
আনিমন্ত্রত ইইয়া যাওয়া উচিত নহে।' পার্বতী এই ক্র
শিনিয়া কহিলেন, 'আমি গমন করিলে আপন্তিক্রমন করিলে।'
ভাহাতে মহাদেব বলিলেন—'আমি প্রভিক্রা করিভেছি মুন্
যাইলে আমি তোমাকে আনিতে যাইব।' '

এই সময়ে মেনকা মহোৎসব করিরাছিলেন, তুর্গান পার্কাভীকে আনিতেণ ক্রোঞ্চকে পার্কাইরা দেন। ক্রোক্ত মহাদেবকে প্রণিপাত করিরা নিবেদন করিল। মহাদেব তাহাকে সাদর সন্তাবণ করিলেন। ক্রোঞ্চ মহাদেবকে করি 'হে জগৎপতে! বদি আমার প্রতি আপনার কণা গাইত ইছা করি। তাহা হইলে গোরীকে পিকালের সইরা যাইতে ইছা করি। মহাদেব এই কথা শুনিরা পার্কাভীকে কহিলেন, 'হে গার্কাই।

শীঘ্র ভূষি ক্রোঞ্চের দহিত গমন কর। পার্কাতী মহাদেবকে ল্রণাম করিয়া রথে আরোহণপূর্বক মৈনাকীর সহিত বেধানে রাজা হিমবান ও মৈনাক ছিখেন এবং বেধানে পার্কত্ম হুথে প্রতিশালিত হইয়াছিলেন, নেই পিতৃভবনে গমন করিলেন। এই অবসরে দেবপতি শস্তু শব্দ লইয়া শব্দকারের .বেশ ধারণ করিয়া হিমালবের গৃহে পমন করিলেন এবং শঙা विक्राप्तत इन कतिया नातौषिशतक मध्य प्रश्नाहित्य नाशितन। তিনি সকলকে শৃত্য দিলেন, কিন্তু পাৰ্বভীকে দিলেন না। পার্মতী শত্র চাহিলে শত্রকার বলিলৈন, 'হে মহেশবি, আমি যাহা স্লা চাহিব, তাহা বদি দাও, তোমাকে মনোহর ঋতা मिव।' शार्क्ष **'डाहाहे हहेंदि' এहे कथा विनाम मध्यका**त मताहत मध्य भवाहेबा पिटनन, এवर मृता চाहित्न भार्सकी বলিলেন, 'আমার পিতা পর্বভাগ্রেষ্ঠ হিমবান, কুপাদাগর মহাদেব আমার স্বামী, গণপতি প্রভৃতি প্রা, ভ্রাতা মৈনাক, লাচুপুত্র ক্রোঞ্চ, মাভা মেনুকা, অভএব আমার নিকট যাহা हाहित, जामि छाहाइ भिव।' भद्यकात हेहा छुनिया कहित्नन, 'হে বরাননে ! স্বামি স্বতাস্ত কামপীড়িত হইয়াছি, অভএব শীঘ আমাকে বরণ কর, ইহা ভির আমার আর অন্ত পণ্যে অভিনাষ নাই।' পার্ব্ধতী এই কঠোর বাক্য শুনিয়া 'ত্রিজগতে মানাকে এইরূপ বলিতে কাহার শক্তি ?' ইহা ভাবিয়া শাপ मिवांत्र अन्त मरन स्वतं कतिरामन ; शरत शांन अवगधन করিয়া তাহা মহাদেবেরই কার্য্য বুঝিতে পারিলেন।

ज्यन महामाम्रा नेयन हाल कतिया कहिरलन, 'अथन यांड দিনাম্বন্ধে ভোষার মনোরথ পূর্ণ করিব।' পরে পার্ব্যঙী किता इति । व्यवनयन कतिया मशीमिरशत महिर्ड (यशास्न দেবপতি, মহাদেব সন্ধাা করিতেছিলেন, নৃত্যগীত প্রভৃতি কামবেশবিভূষিতা হইয়া দেইখানে গমন করিলেন, এই भवनत्त्र भक्षु मक्ता कतिरङ मानम मरत्रावरत भभन कतिरमन। সেইখানে কামবেশোজ্জলা রক্তবর্ণা রক্তব্রপরিধানা পীনোরভপদোধরা স্থীপরিবৃতা গৌরীকে দেখিয়া, তাঁহার নিকটে আসিয়া বলিলেন, 'হে হুক্ত তুমি কে, কি জন্ত এখানে আসিয়াছ, ভোমার মনোরণ পূর্ণ করিব, আমার শ্ৰি কৃপাকর !' মহাদেব এইরপে জিজাসা করিলে ঐ স্থা কছিলেন, 'আমি চাণ্ডালী, তপভার নিমিত্ত এথানে আদিরাছি, আমার অভিনাষ দেবত লাভ। আমার उटिशाविक कतिरवन ना।' महारमव विनामन, 'आमि रमवडा শিব এবং আমিই তপশ্বিদিগের ফল এপদান করিয়া থাকি, **মধ্না ভোমাকে পার্বভীতুল্যা করিব; ভারতে কোন সংশর** নাই। হে কল্যাণি। এখন আমাকে কামভাবে ভল্ন।। कत्र, विम (नवक्ष हैक्स) कतिया थाक, छाहा हहेता (कन विनक्ष कतिक्छ ?' डांशांक ठांखांनी वनिन, 'तह त्मयत्मव सर्गर्भात ! আমি তগভার নিমিত্ত আসিয়াছি, দেবৰ প্রাপ্ত হুইব, আমার বিদ্ন করিবেন না।' মুহাদেব বলিলেন, 'ভোমার जभजात विष्र इहेरव ना अवः कान्नरक्रमाहे वा आस्त्रासन कि ? এখনি দেবীত প্রাপ্ত হও, আমার বাক্য নিক্ল হইবার নহে।' এই কথা ৰলিয়া প্রমেশ্র হস্ত ৰাবা ভাহার হস্ত धार्ष कतिया जाशास्क छेखम जामरन बमाहेरनन । महास्त्र ভাহার সহিত আলিখনাদি করিয়াক্রীজার নিমিত্ত উপক্রম করিলেন এবং কিছুকাল ভাহার সহিত ক্রীড়া করিয়া চঙাল-दिम ध्याश हरेतन । जाहीत भन्न मडी विगतन, 'आभनादक । কোন উপারে আমি ছলনা করিতে সমর্থ নহি। আগানি **रिनरान्य अगर्थि।' এই প্রকারে উহাদের অভিশয়** প্রীতি হইয়াছিল। ভাহার পর রতাত্তে উপবিষ্ট হইয়া দতী বলিয়াছিলেন, 'ছে জগরাথ জিপ কলন এবং আমাল অভিলয়িত বর প্রদান করুন।' ।

মহাবেব কহিলেন, 'চাঙালবেশে' আমাতে উপগত হই রাছ, এই জন্ত তোমার এই মূর্তি হইবে, ইহাতে সন্দেহ নাই। সকল শাস্ত্রে গোপিতা উচ্ছিইচাঙালিনী নামে ভূমি থাতি লাভ করিবে। হে দেবি! প্লাস্তে তোমার পূলা করিলে সকল পূলা দিক হইবে, নচেৎ হইবে না। তোমার এই মূর্তি নিশ্চরই মাতলী নামে প্রদিক হইবে। যে প্রকার দিক্বিদ্যা, মহাবিদ্যা, ত্রিপুরতৈরবী, ভ্রবনেখরী, কালী, তারা, ইহা তোমারই তহু, ভৈরবী, ছিলমন্তা, ধ্মাবতী, বগলা প্রভৃতি দিক্বিভাও তোমারই তহু।

আবার অউন্ধতরের মতে—
শ্বিণোডিইচা গুলিনীং বক্ষ্যে শৃণ্ছ সাবুধানতঃ ।
নারদঃ পৃষ্টবান্ বিষ্ণুং গীতজ্ঞানং ক্ষা প্রতা ॥
তমুবাচ হরিঃ পূর্বাং গতোহহং শহরং প্রতি ।
তর দৃষ্টং শিবং শাস্তাং মারীচগণমুছ্পুদ্ ॥
অনেকরসংযুক্তং বিবিধাআদনৈযু তম্ ।
সামরস্তাং তদা আতমুদ্দিষ্টং গলিতং মুদা ॥
অনেকপ্রণসম্পানা প্রত্যুৎপরা কুমারিকা ।
উল্লিইং দেহি দেহীতি পার্বাক্তী শহরেণ চ ॥
উভান্তাং দত্তমুদ্দিষ্টং প্রসাদং প্রীতিপূর্বাকম্ ।
শিবশক্তী উচতু স্তাং কল্পে দাং প্রভল্পি যে ॥
অপহোমাদিভিত্তেবাং দিহান্তি চ মনোর্থাঃ ।
তদা প্রভৃতি চোচিইসাত্দীতি নিগদাতে ॥
*

উদ্ভিটাপ্রালিনীর বিষয় বলিডেছি, সাৰ্ধান হইরা

শ্রবণ কর। একদা নারদ বিষ্ণুকে এই বিষয় জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন। বিষ্ণু নারদকে কহিলেন, একদিন আমি শেবদর্শন করিতে গিরাছিলাম, সেইখানে মহাদেবকে শান্ত ও মারীচগণ-সংযুত এবং অত্যন্ত হর্বে গলিত ও উচ্ছিষ্ট জাত হইতে দেখিয়াছিলাম, সেই 'টুচ্ছিষ্ট দাও দাও' এই কথা বলিলে শঙ্করের সহিত পার্ক্ষতী প্রীতিপূর্ক্ষক উচ্ছিষ্টপ্রসাদ পরস্পরে গ্রহণ করিরাছিলেন। শিবশক্তিষর বলিয়া ছিলেন, 'তোমাকে যে ভজনা করিবে, জপহোমাদিবারা তাহারই সকল মনোরও গিছি হইবে।' দেই অবধি তিনি উচ্ছিষ্টমাতলী বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া থাকেন।

উক্ত বিবরণের পর স্বতন্ত্রভান্তের স্বার একস্থলে শিথিত আছে—

"অথ মাত দিনীং বক্ষো জুৰুত্ত ভয়ৰরীং।
পুরা কদখনিপিনে নানাবৃক্ষ্যাকুলে।
বঙ্গার্থং সর্কাতৃতানাং মতকো নামতো মুনিঃ।
শতবর্ষদহস্রাণি তপোধ্তণাত সন্ততম্।
তত্ত তেজাসমুংপল্লং স্কল্মীনেত্রতঃ শুভে।
ততজোরাশিরভূত্ত স্বাং শ্রীকাণিকাধিকা।
গ্রামলং ক্ষ্পমান্তায় রাজমাতিদিনা ভবেৎ।"

ক্রভ্তভয়য়য়ী মাতিদিনীর বিষয় কথিত হইতেছে।
পূর্বে নানার্কসমাকুল কদম্বিপিনে সকল ভূতবশের
নিমিত্ত মতক নামে মুনি সহত্র বৎসর ধরিয়া তপস্থা করিয়াছিলেন, সেইবানে অন্দরীনেত্র হইতে তেজ সমুৎপদ্ধ
হইয়ছিল, সেই তেজোরাশিই প্রীকালিকা, বা অম্বিকা,
পরে তিনিই শ্রামণক্রপ অবলম্বন করিয়া রাজমাতিদিনী
নামে বিধ্যাত হইয়াছেন।

ধুমাবতীর উপপতি সম্বন্ধেও এইরূপ ভিন্ন রূপ বিবরণ পাওরা যায়। নারদপঞ্চরাত্তের মতে--"একদা বসমানস্ত কৈলাসশিধরে হরঃ। অঙ্কত্বা গিরিকা তত্ত পশ্রেচ্ছ ব্যভ্ধবন্ধম্। কুধ্রা পীডামানাশ্মি দেহি ভোক্ত্যুং যথোচিতম্। জীখর উবাচ।

কণং প্রতীক্ষা ভক্তং তে ৰাস্থামি ভোজনং ভভঃ। ইত্যুক্তু বিররামাভ দেবদেব বৃ**ধ্ধক**ঃ॥

দেব্যবাচ।

পেহি ভক্ষাং মহাদেব ক্ষুধিতান্মি কগৎপতে।

বিশ্বিত্ং ন শক্তোমি প্রীড়িতান্মি মহেশ্ব ।

ইতি প্রতা প্রিয়াবাকাং পুনঃ প্রাহ ক্ষুপানিধিঃ।
কণং প্রতীক্য দাসানি তক্ষণং চাতি বাহিতং ।

পুন: প্রত্যক্ষ্য সা দেবী পুন: প্রাহিদিং বচ:।
দৈহি ভক্ষ্য: জগরাধ ন শক্ষেমি বিশক্ষ্য ॥
ইক্যুক্য পতিমাদার মুখে বিকেপ সা ভদা।
কণেন তপ্তা দেহাত ধুমনজ্যে ব্যক্ষরত ॥
ততাে দেহে সমুৎপরে শভুক্ত নিজ মায়য়া।
উবাচ পরমেশান: স্বাং প্রিয়াং শৃণ্ শোভনে।
পশ্চ ভদ্রে মহাভাগে পুক্ষো নাজি মাং বিনা।
দিল্লা বনিতা নাজি পশ্চমং জানচক্ষা॥
বিধবাসি কৃষ্ণ ত্যাগং শহাসিন্দ্রমেব চ।
সাধবাং লক্ষণং দেবি কৃষ্ণ ত্যাগং পতিব্রতে॥
এবা মৃত্তিত্ব পরা বিখ্যাতী বগলাম্থী।
ধুমব্যাপ্তশুরীরাত্ব ততাে ধুমাবতী স্বতা॥" (নারদ্প ১০ জ্ব

একদিন মহাদেব কৈলাসশিথরে অবস্থান করিচে ছেন, সেইখানে ক্রোড়স্থিতা গিরিজা বুষভধ্বলকে জিলা कतिशाहित्वन, 'त्र त्मराम्य महात्मर ! आर्थि क्रुशं निजाः পীড়িত হইয়াছি, আমাকে যথোচিত ভক্ষ্য প্রদান করন? মহাদেব কহিলেন, 'কণকাল প্রত্রাক্ষা কর, তোমাকে ধার দিতেছি।' ইহা বলিয়া মহাদেব বিরত হইলেন। পুনরায় দেৱ বলিলেন, 'হে দেবদেব জগংপতে ! আমি কুধায় নিতান্ত কাত্যা হুইয়াছি, বিলম্ব করিবার সামর্থ্য নাই, শীঘ্র মুখোচিত পাদা প্রদান করুন।'মহাদেব প্রিয়ত্মা পত্নীর এই ক্থা ওনিয় বলিলেন, 'ক্ষণকাল প্রতীক্ষা কর, বাঞ্ছিত থাদ্য দিডেছি' সতী আবার বলিলেন, 'হে জগন্নাথ! বিলম্ফ করিবার স্মি নাই, শীঘ্ৰ খাদ্য দিন।' এই কথা বলিয়া সেই দেঝী প^{ডিকে} গ্রহণ করিয়া মুথে নিঃক্ষেপ করিলেন। ক্ষণকাল মথে তাঁহার দেহ হৃইতে ধুমরাশি উৎপন্ন হইতে লাগিল। ^{তাহার} পর মহাদেব নিজ মায়া ভারা দেহ উৎপন্ন করিয়া ^{খা} পত্নীকে বলিয়াছিলেন, 'অয়ি শোভনে! জ্ঞানচক্ৰারা জন লোকন কর, আমা ভিন্ন পুরুষ নাই এবং ভোষা ^{ভিন্ন ত্রী} নাই, এথন তৃমি বিধবা হইয়াছ, শ**অ**সিম্পুর ^{পরিভাগ} কর,। হে পতিব্রতে, পাতিব্রত্য^{*}চিহ্ন ত্যাগ কর, ভো^{মার ঐ} মুর্ভি বগলামুথী নামে থ্যাত হইবে। সমত শরীরে ^{গুর} পরিব্যাপ্ত হইয়াছিল বলিয়া তোমার ঋপর আর ধুমাৰতী হইবে।'

খত ছাত ত্রের মতে—

"দক্ষ প্রজাপতের্যক্তে দর্মসংহারচঞ্চলা।

কুলা দেহং বিনিক্ষিপ্য ততোধুমোভবন্ মহাব্।
তত্মান্ধুমাবতী জাতা দর্মাক্তবিনাশিনী।

কাদী কালা কালবক্তা ভামবারে নিশ্

লাগ্রেহক্ষরভূতীরারাং জাতা ধ্**মাবতী শিবা ॥**"

দক প্রজাপতির যজে সতী সকল সংহার বিষয়ে চঞ্চল দেহ পরিত্যাগ করিরাছিলেন। পরে সেই দেহ হইতে মহা ধ্যুরাশি উথিত হইরাছিল, সেই জন্ত ধ্যাবতী ইইরা ছিলেন। মকলবার অক্ষা ভৃতীয়ার সন্ধ্যাকালে শিবা ধ্যাবতী হইরা জন্মিয়াছিলেন। এই মৃত্তি স্ক্শক্তবিনাশিনী।

শ্বতম্বতরে বগলাম্থীর উৎপত্তি এইরূপ বর্ণিত আছে—
শ্বেপ বক্যামি দেবেশি বগলোৎপত্তিকারণম্।
পরা কৃত্যুগে দেবি বাতক্ষোক্ষউপস্থিতে ॥
চরাচরবিনাশায় বিক্লুশ্চন্তাপরায়ণঃ।
তপশুবাচ সন্তথা মহাশীত্রিপুরাম্বিকা ॥
হরিদ্রাথাং সরো দৃষ্টা জলকীড়াপরায়ণা।
মহাপীতহদখান্তে সৌরাষ্ট্রে বগলাম্বিকা ॥
শ্রীবিভাসন্তবং তেজা বিজ্জতি ইতত্ততঃ।
চত্র্দনী ভৌমযুতা মকারেশ সমন্বিভা ॥
কুলঞ্জনসমাযুক্তা বীররাত্রিপ্রকীর্তিতা।
তভামেবর্দিরাত্রৌ তু পীতহদনিবাসিনী ॥
ব্রকান্তবিদ্যাসংজ্ঞাতা তৈলোক্যন্তন্তিনী পরা।
তত্তেজা বিক্লমং তেজো বিদ্যামু বিদ্যোর্গতিম ॥
শ

হে দেবেশি! বগলার উৎপত্তির কারণ বলিতেছি, গৃৰ্ফে সভাযুগে চরাচর বিশ্ব বিনাশের নিমিত্ত বাতক্ষোভ উপস্থিত হইলে বিষ্ণু অভিশয় চিস্তিত হইয়াছিলেন।

পরে ত্রিপুরাধিক। তপ্রভা বাক্যে সন্তুষ্ট হইরা হরিদ্রাধ্য সরোবর দেখিরা জলক্রীড়াপরায়ণা হইরাছিলেন। এই দেবী মহাপীতহুদের মধ্যে শ্রীবিভাসম্ভব তেজ ইতস্ততঃ বিভূতন করিরাছিলেন, মঙ্গলবারে চতুর্দলী এবং তাহাতে কুলনক্রতথাগ ও মকার সমন্বিত হইলে বীরয়াত্রি হয়। এই বীর রাত্রিদিনে অর্দ্ধ রাত্রি সময়ে ত্রৈলোক্যন্তন্তিনী পীতহুদনিবাদিনী দেবী উৎপন্ন হইয়াছিলেন। এই তেজ বিষ্ণু হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল।

মহালন্ধীর উৎপত্তিও শৃতস্ত্রতেরে এইরপ—
"অথ প্রীভুৰনাং বক্ষো তৈলোকোগেপতিমাতৃকাং।
প্রা একা অগংস্রইং তপোহপাত দারুণম্॥
তপুনা তক্ত সন্ধরী লক্তিং না পারমেশারী।
ৈচিত্রতক্র নবমান্তে উৎপন্না তারিণী শ্বরং॥
কোধরাত্রিং সমাধাকা সর্বাশক্তিমন্নী দিবা।
ারোদার্থবস্ত্রা মধনাত্দধেং প্রা॥
াকোর্থকংখ্লস্থা চ প্রাসন্ধতা রমা।
কাইম্যাং ভাত্রপদে কোলাপুরনিক্তিনী॥
VIII

ততাং তিথো সমুংপরা মহামাতজিনী কলা। কাৰনৈকানশীব্ৰু ভূগো ভোমে চ বা ডিথি: ॥ লাতা ততাং মহাননী: সৰ্বনোভাগ্যনাবিনী॥"

অনন্তর 'তৈলোক্যের উৎপত্তি বিষয়ে মাতৃত্বরূপ প্রীতৃবনার বিষয় বলিতেছি। পূর্বে ব্রদ্ধা লগৎ স্পষ্ট করিবার লক্ত্র
লাকণ তপভা করিয়াছিলেন, তাহার তপভার পরমেশরী সেই
লক্তি সন্তটা হইরাছিলেন, আত্তর চৈত্র শুরু নরমীতে
ভারিণী ত্বরং উৎপত্র হইয়াছিলেন, ইনি সর্বাশুক্তিমরী এবং
কোধরাত্রি বলিয়া বিখ্যাতা; ইনি পূর্বে সমুদ্রমহনকালে
কীরোদ সমুদ্র হইতে উভ্ত হইয়াছিলেন; ইনি বিফ্র বক্ষঃহলহায়িনী ও পদ্মাসনগতা। ইনি ভাত্রমাসের ক্রফাষ্টমী
তিথিতে কোলাক্রকে বিনাশ করেন এবং ঐ তিথিতে
মহামাতলিনী-কলা উৎপত্র হইয়াছিল। ফান্তন মাসের
একাদনী তিথি, অথবা শুক্র ও মললবারে যে তিথি হণ,
ভাহাতে সর্বাসোভাগ্রদারিনী মহালন্ধী জনিয়াছিলেন।

প্রত্যেক মহাবিদ্যার স্বাবার ভৈরব নির্দিষ্ট আছে। · ভোড়নতঃশ্বর মতে— ·

"শুণু চার্কাঙ্গ স্থরভে কালিকায়াশ্চ ভৈরবম। यहाकानः पिक्नात्रा पक्ष छात्रौ व्यञ्बरादः। महाकारनन रेव मार्क्तः प्रक्रिगा त्रमरङ महा ॥ তারায়া দক্ষিণে ভাগে অক্ষোভ্যং পরিপুর্বয়েও। তেন সার্জ্য মহামায়া তারিণী রমতে সদা ॥ महाजित्रव्यक्तर्या। प्रकिर्ण श्रुवरत्र विषय्। পঞ্চবক্ত্রং ত্রিনেত্রঞ্চ প্রতিবক্ত্রে স্থরেশরি॥ তেন সার্জং মহাদেবী সদাকামকুতুহলা। অতএব মহেশানি পঞ্মীতি প্রকীর্ত্তিতা॥ প্রীমভূবনস্থার্গ দক্ষিণে ত্রাম্বরুং যজেৎ। रेखंद्रवा प्रक्रिंश ভাগে प्रक्रिगामृहिंमः छक् सू। পুজারেৎ পর্যজেন পঞ্বজ্ঞ তমেব হি ॥ ছिन्नमञ्जा मिक्किशारम क्वसः श्रृक्रायः भिवः। 'ক্ৰন্ধপুৰনাদেৰি সৰ্ক্ষিদীৰব্বা ভয়বৎ ॥ ধুমাবতী মহাবিদ্যা বিধবারূপধারিণী। वननात्रा प्रक्रिकारन धक्रवक्तुः व्यन्नवारः । মহাক্ষদ্রেভি বিখ্যাতং অগৎসংহারকারকফ্। माजनी प्रक्रिगाःत्म ह मजनः श्रृक्तस्य मिवम् ॥ তমেব দক্ষিণামৃতিং অগদানস্কারকম্। क्रमनाग्रा प्रक्रिगारम विक्रुज़भः नपानियम् । शृक्रदि९ शत्रामानि मित्रिका नाव मःभवः। भुक्दब्रम्ब्रभूनीयां मिक्ननाः एक व क्रिक्म्॥

মহামোকপ্রদং দেবং দশবজাং মহেশরম্।
তুর্গায়া দকিশে দেশে নারদং পরিপ্রয়েৎ॥
অন্তান্থ সর্ববিদ্যান্থ ঋষয়ঃ পরিকীর্তিতা।
স এব তত্তা ভর্তা চ দকভাগে প্রপ্রয়েৎ॥
"

কালিকার তৈরব, মহাকাল, কালীর দক্ষিণভাগে তাঁহার পূজা করিবে। এইরূপে তারার দক্ষিণে অক্ষোভ্য, মহা-ত্রিপুরস্থলরীর দক্ষিণে পঞ্চানদ শিব, ভ্বনস্থলরীর দক্ষিণে ত্রান্থক, ভৈরবীর দক্ষিণে দক্ষিণাম্র্ডি, ছিলমস্তার দক্ষিণে কবন্ধ নামক শিব, বগলার দক্ষিণে মহাক্ষর নামক একবক্ত্, মহাদেব, মাভঙ্গীর দক্ষিণে মভঙ্গনামক শিব, কমলার দক্ষিণে বিফ্রুপী স্লাশিব, অন্পূর্ণার দক্ষিণে দশম্থ মহেখর এবং হুর্গার দক্ষিণে নার্দ ইত্যাদি ভৈরবম্র্তির পূজা করিতে হয়।

ইতি তে কথিতং দেব্যবতারং দশমেব হি। এতাপাং পৃজনাদেবি মহাদেবসমো ভবেৎ ॥"

হে দেবেশ-জগৎগুরো! আমাকে দশাবভারের বিষয় বিভারিতর্মণে বলুন, এই বৃত্তান্ত ভূনিতে আমার বিশেষ কৌতৃহল হইরাছে। কোন্ কোন্ দেবী কি মূর্ত্তিতে আবিভূতি। হইরাছিলেন, ভাহা বলুন। মহাদেব পার্ম্ম-জীর এই প্রদ্রে বলিরাছিলেন, ভারাদেবী মৎস্থাবভার, বগলা কুর্ম, ধ্মাবভী বরাহ, ছিন্নমন্তা নৃসিংহ, ভূবনেখরী বামন, মাতলী রাম, জিপুরাস্থলরী আমদগ্রা, ভৈরবী বলভ্রু, মহালন্দ্রী বৃদ্ধ, ছ্বা কহি ও কালী ক্ষম্তি পরিগ্রহ করেন। এই ভোমাকে দশাবভারের বিষয় বলিলাম, ইহাদের পূলা করিলে সাধক মহাদেব সদৃশ হয়। [দশমহাবিভার ধান ভত্তৎ শব্দে এবং অপরাপর বিষয় বন্ধ ও মন্ত্র

দশমান (পং) জনপদবিশেষ ও তজ্জনপদবাসী। সম্বন্ধ দশমাল শব্দেরই পাঠান্তর।
দশমাল (পং) জনপদবিশেষ, দশমালিক দেশ।

দেশমালিক (পং) ১ দেশভেদ। ২ দশমালিক দেশ।
বালা। ০ দশমালিকদেশবাসী।
দশমাস্থা (পং) দশমাসান্ গর্ভে স্থিতঃ যৎ। দশমা
ব্যাপিমাঁ গর্ভে স্থিত বালক। গর্ভস্থিত বালকের গর্ভ ইইবে
স্থেম জন্ম জন্ম এই তিনটী ঝক্ দর্শিত হইমাছে।

"যথা বাতঃ প্রক্রিণীং সমিংগয়তি সর্ব্জঃ। •

এবা তে গর্ভ এজতু নিরৈতু দশমাস্থা॥ •

"যথা বাতো যথা বনং ম্থা সম্জ এজতি।
এবা ত্বং দশমান্ত সহবিধি জরামুণা॥ 
"দশমান্তিছ্মানঃ কুমারো অধিমাতরি।
নিরৈতু জীবো অক্ষভোজীবো জীবস্তা অধি॥ 
"

( প্রক্ ভাবদার—৮-১)।

বায় যেরপ জলাশয়কে পরিচালিত করে, তদ্রণ রোম গর্ভ সঞ্চালিত হউক, এবং দশমাস পরে গর্ভস্থ জীব নির্দ্ধ হউক। বায়ু স্বয়ং কম্পমান হইয়া বনকে কম্পিত হয় সমুদ্র বায়ু কর্তৃক চালিত হইয়া নিজে চালিত হয়। তয় গর্ভস্থিত জীব দশমাস পর্যান্ত গর্ভে থাকিয়া জরায়্বেয়া হইয়া পতিত হউক। জীব দশমাস পর্যান্ত জননী হয়া অবস্থিত হইয়া জীবিতা অক্তণারীরা জননী হইতে নিয়্ম হউক। দশমাস স্থে জননী জঠরে বাস করিয়া জয়য় হউক। দশমাস স্থে জননী জঠরে বাস করিয়া জয়য়য় জীব নির্গত হও এবং জননীও জীবিত থাকুক। (সায়৸) অর্থিনীকুমারহয় গর্ভিণীদিগের স্থেপ্রস্বেরয় নিমিত এইয়া স্তত্ত হইয়াছিলেন।

দশমিকভগ্নাংশ, অন্ধাত্তের একটা প্রকরণ। হার্য ভগ্নাংশ মাত্রকেই অথও আকারে রাখিতে পারা বার, তারা নাম দশমিকভগ্নাংশ। যথন ভগ্নাংশের হর দশ কিংবা হবে কোন গুণিতক হয়, তাহাকে দশমিকভগ্নাংশ করে। রুর অথবা অধিক ভগ্নাংশ তুলনা করিতে হইলে তাহানিবং প্রথমে সমান হরবিশিপ্ত ভগ্নাংশ পরিবর্তন করিতে হা, আর ভিন্ন ভিন্ন হরবিশিপ্ত ভগ্নাংশ অপেকা সম্পন বি বিশিপ্ত ভ্যাংশের প্রশ্ন সহজে কলা যান্ত্র। কিন্তু বে বেল সংখ্যা লইরা অনারাসে কলা বাইতে পাবে, তাহার। গ্র ১০০, ১০০০, ১০০০ ইত্যাদি, কারণ ১০০র পর বেল শ্লু যোগ করিলেই হয়। প্রিক্তন অন্তকে হলমিক ক কহে। একটা অবশু রাশিকে দশসিকে বিবার করি দশমিককে আর একটা দশমিকে অনারাসে পরিবর্ত্তন করা বাইতে পারে। বেমন ৭৪ = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 180 = 18

এইরপে সামান্ত ভ্যাংশকে দশমিকভ্যাংশে পরিবর্ত্তন করা বার। মনে কর, ত্রুকে দশমিকভ্যাংশে পরিবর্ত্তন করিতে হইবে। ঐ ভ্যাংশের উভয় লব ও হরকে ক্রমান্ত্রন করিতে হইবে। ঐ ভ্যাংশের উভয় লব ও হরকে ক্রমান্ত্রন করিতে হইবে। ঐ ভ্যাংশের উভয় লব ও হরকে ক্রমান্ত্রন ক্রমান্তর ত্রাক্তন ক্রমান্তর বিভাগ করিলে কোন অবশিষ্ট থাকে না, এবং ভাগফলগুলি ১০, ১০০, ১০০০ ইত্যাদি দশমিক আছ হয়। তবে বদি ঐ ভ্যাংশগুলির মধ্যে কোন ভ্যাংশটীর উভয় লব ও হর ১৬ দারা বিভাল্য হয়, তাহা হইলে সেই ভ্যাংশটীর উভয় লব ও হর ১৬ দারা বিভাল্য হয়, তাহা হইবে। এক্ষণে ৭০, ৭০০, ৭০০০, ৭০০০০ ইত্যাদির মধ্যে কোন প্রথম সংখ্যাটীকে ১৬ দিয়া ভাগ করিলে অবশিষ্ট থাকে না।

ঐ সকল সংখ্যাগুলিকে ১৬ দিয়া ভাগ কর।

তবে দেখা বাইতেছে যে ৭০০০০ই ১ম রাশি, বাহাকে ১৬ দিয়া ভাগ করিলে কোন অবশিষ্ট থাকে না। কিন্ত প্রত্যেক ভাগহারগুলি রাধা অনাবশুক। বেহেতু শেষের ভাগহারটাতে সকলগুলির প্রক্রিয়া রহিরাছে।

धर्यात (व्यम १००० - > × 809 € ।

তবে এক সামান্ত ভগ্নাংশকে দশমিকভগ্নাংশে পরিবর্জন করিতে হইলে লবে শৃক্ত যোগ করিবে, এবং যতক্ষণ না অবশিষ্ট শৃত্য হইবে ততক্ষণ ভাগ করিবে থাকিবে; যে ভাগফল উৎপন্ন হইবে, সৈইটী আবস্তুক ভগ্নাংশের লব করিবে এবং যতগুলি শৃত্য লবে যোগ করিবে, ততগুলি , শৃত্য ১এর পর যোগ করিয়া হর কবিবে।

দেখিতে পাওয়া যায় যে, আনেক ভয়াংশের লবে শৃত্য যোগ করিলেও তাহা হরের ছারা বিভাজ্য হয় না। যেমন ধকে দশমিকভয়াংশে পরিবর্তন কর

আমর। দেখিতে পাইতেছি যে ভাগফলে যথাক্রমে
১৪২৮৫৭ এই কয়টী অঙ্ক উদয় ইইতেছে তল্লিমিত ১৫০
দশমিকডমাংশে পরিবর্তন করা যায় না। সে যাহাহউক
যদি আমরা ১৪২৮৫৭ ১৪২৮৫৭ ইত্যাদির মধ্যে কতকগুলি
অঙ্ক লইয়া লব করি ও ঘতগুলি শৃত্য যোগ করিয়া ঐ দুকল
অঙ্ক হইয়াছে ততগুলি শৃত্য ১এর পর যোগ করি, তাহা হইলে.
যে ভয়াংশ হইবে তাহা ১ অপেকা অতি অল্ল ভিল্ল হইবে।

প্রথম শ্রেণীতে যে ভয়াংশগুলি রহিয়ছে তাহাঁ । অপেক্ষা লবু। অতএব যদিও আমরা । রে সমান দশমিকভয়াংশ রাথিরা বাহির করিতে না পারি, তথাচ এমন দশমিক বাহির করিতে পারি, তাহা । অপেক্ষা অত্যক্ত লবু।

ভাগফলে কতকগুলি অভের পুনঃ পুনঃ উদ্য হইবার কারণ। এই মনে কর খেন কুমি ১০০০কে ২৪৭ দিরা ভাগ করিবে, এই ভাগহারের প্রত্যেক ভাগদেষ ২৪৭ অপেক্ষা লঘু হইবে। ইয় • ইইবে না হয় ২৪৭এর মধ্যে কোন

ন্টী রাশি হইবে, যদি ভাগশেষ শৃষ্ঠ না হয়, তাহা হইলে ক্রমাগত ভাগ করিয়া যাও, তাহা হইলে একটা ভাগশেষ कृहेवात ब्हेर्र, मान कन्न २८७ है। छार्गामय मकर्रगहे छिन्न ভিন্ন হইবে। যেমন ২৪৭ ভাপশেষ ২৪৭ অপেশা গুরু হইতে পারে না, তরিমিত যদি সামরা ক্রমাগত ভাগ করিরাই বাই, তাহা হইলে একটা ভাগুদেষে পুর্বের কোন ভাগুদেষের সমান হইবে। তবে স্পষ্টই ° দেখিতে পাওয়া বাইতেছে যতগুলি ভাগশেষ সমান হইবে, ভাগফলে পুনরায় ভতগুলি সমান অঙ্ক উদয় হইবে। একণে विकास हहेट পারে, যে অনেক সীমাতা ভগ্নাংশ দশমিকভগ্নাংশে পরিণত হয় না, তথুন দশমিকের আবশ্রকতা কি ? ইহার উত্তর এই (य, मुन्यिक ख्याः रामत्र मुक्रमन, वावक मन, खुनन ७ खांगहात्र সামাক্ত ভাগাংশ অপেকা অভিশয় সহজ, যদিও সকল সামাক্ত ভগ্নাংশ সমান দশমিকভগ্নাংশে পরিণত হয় না, তথাপি উহার এমন নিকট দশমিক বৃণহির হইতে পারে, যে যদি সেই সামাক্ত ভ্যাংশের পরিবর্ত্তে সেই দশমিকভ্যাংশটী বসান যায়, তাহা হইলে অতি সামাত ভুল হয়।

দশ্মিকভ্যাংশ স্কল সামাস্ত ভ্যাংশের আকারে ৰিখিত হয় না, তাহা এইরপে চিহ্ন খারা লিখিত হয় यथा—हरत यङश्रीन मृश्र शांकिर्द, मर्द्र उङ्खीन श्रक ভানদিক হইতে লইয়া একটা বিন্দু খারা চিহ্নিত করিতে इहेर्द। स्थमन 2840.50 ; 284050 = 284.050 ; 284050 = 28.40501 বিন্দুর বামদিকের অঙ্কগুলিতে ঐ দশনিকে কতগুলি অবত্তরাশি আছে, আর ডানদিকের অক্তে কত-ভগ্নংশ (যাহাদের হর দশ) আছে প্রকাশ হয়। যুধা-প্রথমটার ডার্নদিকের অঙ্গে একটা ভগ্নংশ যাহার হর দশ বিতীয়টীর ১০০ শত ব্ঝায় ইত্যাদি। দশমিক সকল পূর্ণাকারে লিখিত হয় नা। '१ লিখিলে १ '०१ লিখিলে १ । ইত্যাদি বুঝায়। দশমিকের ভার্নদিকে শৃক্ত দিলে মানের কোন পরিবর্ত্তন হয় না। যেমন ৩ ও ৩০ । প্রথম দশমিকটা ত্র ও বিতীয়টী তিত্র সমান। স্থামরা দেখিতে পাই তেছি যে বিতীয় দশমিক্টা প্রথমটার উভর লব ও হরকে ১০০ দিয়া গুণ করিয়া হইয়াছে। অতএব উভয়ের মান সমান।

ত্ইটী দশমিককে সমান হরবিশিষ্ট করিতে হইলে যে দশমিকটাতে অপার দশমিক অংশকা অর আহ আছে,

ভাহাতে যতগুলি অহ কম আছে ততগুলি শৃষ্ট বসাও। মান কর ৫৪ ও ৪·৩২৯। প্রথম দশমিকটী — 🥵 গাঃ তেছি যে উভরের হর সমান, কিন্ত 💴 🗷 🗷 🗢 🖰 वाभिष्ठ पर्भागक विन्यू (भाष विशाहिष्ठ इत्र, यथा )_{२२=} ১২৯-। কিন্তু শেষের বিন্দুটী লিখিতে হয় না। ইহা খুরু রাখিও যে ১২৯ ও ১২৯ • উভয়ই সমান, বেহেতু প্রধানী ১২৯ আর বিভীয়টা, ^{১২৯০ ব}। কিরুপ সামায়ু ভ্যাংশুকু , বিশুদ্ধরূপে দশমিকভগ্নাংশে পরিবর্ত্তন করা যাইতে পারে. আর কিরূপ ভগ্নাংশকে বা পরিবর্ত্তন করা যাইতে পারে না তাহা এই স্থানে জানা আবিশ্রক। যে ভগাংশের हর মৌলিক অংধ ২ ও ৫ ব্যক্তিরেকে অন্ত কোন মৌলিক মঃ দারা বিভাজা হয়, সেই ভগাংশ সম্পূর্কপে সামান্ত দশমিকে পরিণত হয় না। আরে যে ভয়াংশের হর ঐ হইটা মৌনিক অঙ্ক দারা বিভাজা হয়, সেই ভ্যাংশকে সামাপ্ত দশ্মিং পরিবর্ত্তন করা যাইতে পারে।

দশমিকের সঙ্কলন, ব্যবক্লন, গুণন ও ভাগহার হয়।
পৌন:পুনিক দশমিক সকল ভগ্নাংশকে বিগুদ্ধরূপে দশ
মিকে পরিবর্ত্তন করা যায় না। সেইরূপ ভগ্নাংশের ভাগ
ফল শেষ হয় না; ভাগফলে কতকগুলি আহু পুন: পুন: উল্লা ইইয়া থাকে। ঐ ভাগফলকে পৌন:পুনিকদশমিক কহে।

পৌন:পুনিকদশমিক ছইপ্রকার—বিশুদ্ধ ও মিন্তা বেদশমিকের প্রথম সঙ্ক হইতে কতকগুলি আন্তপ্ন:পুন উদয় হয়, দেই দশমিককে বিশুদ্ধ পৌন:পুনিকদশমির কহে। যথা—৫৫৫০ ও ৩২৩২৩২০০। দেশ মিক প্রথম অঙ্ক হইতে পুন: পুন: উদর না হইয়া কতকগুরি আঙ্কের পর হইতে উদয় হইতে থাকে, ভাষাকে মিশ্রপৌন: পুনিকদশমিক কহে।

ভিন্নংশ ও পৌনঃপুনিকদশমিক দেব।
দশমিন্ (ত্রি) নবতে কর্জং দশমী সা অবস্থাতেদে। অবল প্রণস্তাং ইনি। নবতার্জবিষ্ণ অভিবৃদ্ধ, যাহার ব্রন্ন-শ বংসরের অধিক।
দশমী (স্ত্রী) দশম-ভীপ্ । > তিথিবিশেষ। চল্লের হণম্বনা ক্রিয়াক্রপী এবং তত্পলক্ষিত কালপুর। ২ বিমুক্তার্থা ৩ মরণাবস্থা। ৪ অভিশেষ ব্রোহ্বস্থা। নোনার্থ টীকা ভর্মী "প্রোত্রং স্বক্ চকুষী জিহ্বা নাসিকা চৈব পঞ্মী।

"শ্ৰোৱং তৃক্ চকুষা জিবৰা নামিকা তেওঁ বিদ্ন বিদ্নাস

দশমীয় ( ি ক ) দশমাং অবস্থায়াং তিওঁতি য়া-ক। ১ অতি
সৃদ্ধ, ৯০ বংসরের অধিক বয়য়। ২ কামুকদিগের কামকৃত দশ-দশার মধ্যে নাশেরপ শোপ্রাপ্ত।
দশমুথ (পুং) দশ মুধানি যক্ত। রাবণ।
দশমুথ বিপু (পুং) দশমুধস্ত অন্তক:। রাম।
দশমুথ বিপু (পুং) দশমুধস্ত বিপু: ৬তৎ। রাম।
দশমুত্রক (ক্লী) দশানাং মৃত্রকানাং সমাহার:। হত্তী,
মান্তর, উষ্ট্র, গো. অজ, মেষ, অম্ব, গদিভ, মাহ্ম্য ও মাহ্ম্যী
এই দশবিধের মৃত্র। এই স্কল মূহত্রর বিষয় স্ক্রান্ত এইকপ লিখিত আছে—

গো, মহিষ, অজা, মেষ, ছন্তী, অশ্ব, গৰ্দভ ও উ টু ইহা-দিগেব মৃত্র ভীক্ষ, কটু, উষ্ণ, ভিক্ত, পশ্চাৎলবণ রস, লঘু, শোধনকর, কফ, বাত, ক্লমি, মেদ, বিষ, গুলা, খুর্শ, উদররোগ, কুড়, শোফ, অরুচি ও পাঞ্রোগের শান্তিকর, জ্লা ও মগ্রিকর। এত ডিল অপরের মৃত্র কটু, তীক্ষা, উষণ, লঘু, শোধনকর, কফ ও বায়ুশান্তিকর, কুমি, মেদ ও বিষ্নাশক। খন, জঠররোগ, গুলা, শোফ, অফচি ও পাঞ্রোগছারী, ভেদক, জনা, অগ্লিকর ও পাচক। [বিশেষ বিবরণ মূত্র শব্দে (দ্ধ।] দশনুল (জী) দশানাং মৃলানাং সমাহার:, পাতাদিত্বাৎ ন ছীপ্। পাচনবিশেষ, দশম্লপাচন। বিশ্বছাল, শোনা-ছাল, গান্তারিছাল, পারুলছাল এবং গণিয়ারি একত্ত এট পঞ্চ দ্রব্যকে বৃহৎপঞ্চমূল বলা যায়। শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী, গোকুর এই পাঁচ জ্রব্যের নাম ষরপঞ্মুল, এই উভয়বিধ পঞ্মুল মিলিত হইলে দশমূল. ^{কহা যার।} এই দশমূলের কাণে পিপুলচুর্ণ **অর্দ্ধ**তোলা মিশ্রিত ক্রিয়া সেবন করিলে সন্নিপাত, জ্বর, কাস, খাস, উন্না, পার্মশূল, এবং কণ্ঠ ও হৃদয়ের বেদনা নিবারিত হয়। (टेड्य अपातः अद्राधिः)

শানুলগুড় (পুং) ঔষধবিশেষ, দশম্ল মিণিত ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কাথে পুরাতন গুড় ১২॥০ সের ও আদার রদ চারি দের, একত্র করিয়া মৃহ অগ্নিতে পাক করিবে। ইহা কাই মতন ঘন হইলে পিপুল, পিপুল-মূন, মুরিচ, ভুঠ, হিন্দু, ভেলারমুটী, বিড়ল, বন্যবানী, যব-ফার, দাচিক্ষার, চিতামূল, চই ও প্রকারণ এই সকল জব্যের প্রত্যেকের ১ পল করিয়া নিক্ষেপ করিবে। পাই উত্তম-রূপে আলোড়ন করিবে। পাক সমাপ্ত হইলে লিয়া ভাওে মধ্যে রাখিবে। ইহা সেবনের মাত্রা একতোলা। ইহাতে অগ্রমান্য, আমল গ্রহণী, প্রীহা ও জর প্রভৃতি রোগ সকল আত প্রশমিত হয়। (ভৈষ্ণারৎ)

দশম্লয়্ত (ফ্লী) চক্রদত্তোক অরনাশক স্বতভেদ। দশ মূল ৮, সের, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেব ১৬ সের। পিপুল, পিপুলম্ল, চই, চিতাম্ল, ওঠি ও ঘবকার প্রত্যেকে ৮ তোলা। ছগ্ধ ৪ সের। এই সকল কল্পার্থ দিতে হইবে। গুত ও দশমূলীর কাথ একতা পাক করিয়া পরে করন্তব্য পাক করিবে। অনস্তর স্বত ছুঁাকিয়া লইয়া হুদ্ধের সহিত পাক করিবে। পরে পূর্ববংকীর করিয়া ছাঁকিয়া ঘৃত শইবে। ইহাতে বিষম জ্বাদিরোগনট হয়। (তৈষ্কারণ জ্বাধিণ) * দশমূল তৈল (জী) চক্রদত্তাক্ত বধিরতারাশক তৈল ঔষধ-ভেদ। প্রস্ত প্রণালী—কটুতৈল ৪ সের, কালার্থ দশম্ণ ১২॥ • সের, জাল ৬৪ সের, মিদিন্দাপতা রদ ১৬ সের, কাণার্থ দশমূল ১ দের। এই তৈলে স্বিপাত, শিরোরোগ ও আফে-সিদ্ধি আংশু অংশমিত হয়। অন্তবিধ—কটুতৈল ৪ সের, দশম্লের কাথ ১৬ সেরু, কজার্থ দশস্ল ১ সের। এই তৈলের নভা লইলে কেশের অক্রলপক্তা নিবারণ এবং অভ্যন্ধ, শ্রিঃশ্ল প্রভৃতি রোগ দ্র হয়।

অন্ত প্রকার—কটুতৈল ৪ সের, দশমুলের কাথ ১৬ সের, ছগ্প ৮ সের, করার্থ জীবক, ঋষভক, মেদ, মহামেদ, কাঁকলা, ক্ষীরকাঁকলা, ঋদি, র্দ্ধি, প্রভ্যেক ৮ ভোলা; ইছার ব্যবহারে বাতশ্ল, পিত্তশ্ল, কফশ্ল, শিরোরোগ প্রভৃতি নত হয়।

न मम्बरेडन — चन्न, दृहर **९ मधाम (**ভেদে তিবিধ।

স্বরদশম্লতৈল— কঁটুতৈল ৪ দের, দশম্লের কাঞ ১৬ দের, ক্রাথ দশম্ল ১ দের। ইহাতে সালিপাতিক জব, খাস ও কাসবোগ ভাল হয়।

মধামদশম্লতৈল—কটু তৈল ৪ সের, কাথার্থ দশম্ল, করজবীল, নিদিলাপতা, জয়স্তীপতা, ধুত্রাপতা প্রত্যেক ৪৬ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬, সের। ক্লার্থ কাথ্য-দ্রা সকল প্রত্যেকে ৬ তোলা। ইহাতে শিরোরোগ প্রভৃতি আরোগা হয়।

বৃহদ্দশম্লতৈল—কটুতৈল ৪ সের, কাথার্থ দশম্ল প্রত্যেক ১০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ৮ সের, আদার রস ৪ সের, ক্রার্থ পিপুল, পিপুলম্ল, চই, চিতাম্ল, শুঠ, ক্রিকটু, জীরা, রুফ্ডজীরা, খেতসর্গুণ, সৈরুব, যুবঞ্চার, তেউড়া, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা প্রত্যেক ২ তোলা। পাকের জল ৮ সের। এই তৈল অভ্যান্ত ও নস্থার্থে প্রযোজ্য। ইহাতে শিরোরোগ ও উর্জ্জক্রগত নানাবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

অস্ত্রিধ বৃহদশম্লতৈল—কটুতৈল ১৬ দের। কাগার্থ দশম্ল ১২॥• সের, শেব ১৬ সের। ধুতুরাপত্ত ১২॥• সের, নিসিন্দাপত ১২৪০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের।
কলার্থ বাসকম্লের ছাল, বচ, দেবলাক, শটী, রামা, যষ্টিমধু,
মরিচ, পিপুল, শুঠ, কৃষ্ণজারা, কট্ফল, ক্রঞ্গীজ, কুড়,
ঠেতুলছাল, বনশিম, চিতাম্ল প্রত্যেক ৮ ভোলা। ইহা
ব্যবহার করিলে কর্ণশ্ল, শিরঃশ্ল ও নেত্রশ্ল প্রভৃতি
আশু প্রশমিত হ্য়।

মহাদশমূলতৈল—কটুতৈল ১৬ দের, কাথার্থ দশম্ল ১২॥ সের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের, গোড়ানেব্র রস ১৬ দের, আদার এল ১৬ দের, ধুত্রার রস ১৬ দের, করার্থ পিপুল, কট্কী, করজবীজ, কঞ্জারা, খেডসর্বপ, বচ, ভাঠ, চিতাম্ল, শটী, দেবদারু, 'বেডেলা, রামা, হুড্হড়ে, কট্ফল, নিসিন্দাপত্র, চই, গেরিমাটি, পিপুলম্ল, শুদম্লা, বমানী, জীরা, কুড়, বন্যমানী, বিদ্ধান্তক্ষ্ণ প্রত্যেক ১ পল। এই তৈল ব্যবহারে, কফ, কাস ও শিরোরোগ প্রভৃতি পীড়ার উপশ্র হয়। ইহা প্রত্যক্ষ ফলপ্রদ। শিরোরাগে রাগে ইহা একটা প্রধান তৈল। (ভৈষজ্যর শিরোরোগার্ধিণ) দশ্মূলশুঠী, জ্বরম ঔষধ ভেদ। প্রস্তুত প্রণালী—দশম্ল ২ তোলা, লল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা, প্রক্ষেপ্যর্থ শুর্গিন বোগান্ধ হয়। (ভৈষজ্যর ও শোথ সহিত গ্রহণী-রোগান্ধ হয়। (ভৈষজ্যর ও)

দশমূলাদিকাথ (পুং) জরনাশক ঔষধবিশেষ। প্রস্তুত প্রণালী—বেলছাল, গান্ডারী, পারুল, শোনাক, গণিয়ারি, জয়স্ত্রী, গোক্ষর, কণ্টকারী, বৃহতী, চাকুল্যা, শালপানী, রামা, পিপ্পলী, পিপ্পলীমূল, কুড়, গুলী, চিরতা, মুথা, গুলঞ্চ, বেড়েলা, বালা, ডাক্ষা, ছরালভা ও শতমূলী। এই সকল দ্রব্যের কাথ সেবন করিলে বাতজনিত জর ও তদ্বটিত উপদ্রব নই হয়। 'ভাবপ্রুণ)

मभग्ना तिस्छ ( श्रः) वाकी कर्रवाधिकार उस्थ (छन।
अञ्च अवानी—मभग्न अर्जिक व वन, िष्ठाम्न २० वन,
कुछ २० वन, ताव २० वन, खनक २० वन, कामना २० वन,
कुछ २० वन, ताव २० वन, खनक २० वन, कामना २० वन,
कुज, मिंडिंग, त्वनांक, विष्ठक, रिष्ठम, वाम्नवांने, कर्ज्यवन,
कुछ, अर्थांने, हरे, अर्होमाःनी, श्रियम, वाम्नवांने, कर्ज्यवन,
कोता, उज्जें, तत्वकं, तामा, निव्न, स्वादि, मणि,
वित्रमा, स्वान, विष्ठकं, नार्वांत्र, मुजा, हेस्स्यव, कंकिणामृत्रो, सौवक, अर्थकं, तमा, महारमन, कंकिना, कीरकंकिना,
सिक्ष वृद्धि श्राज्यकं २ वन, वाकार्थं मम्नारम्य ५ खन कन,
त्वर कुष्ठाःन, जाका ७० वन, खन ०० त्वत, त्वर २२॥०
त्वर । अरे छन्य कार्थ अरुज कवित्रा मृत्यम्न वार्णं वािष्मा

ভাহাতে মধু ৪ সের, গুড় ৫০ সের, ধাঁইকুল ৩ পল, কান্ধার বালা, রক্তচন্দন, জায়ফল, লবঙ্গ, গুড়ত্বক্, এলাইচ, রের পত্র, নাগেশ্বর, পিপুল পত্রেক, ২ পল ও মুগলাভি। ভোলা মিশ্রিত করিয়া ঐ পাত্র একমাস মাটিতে গ্রিন রাখিতে হইবে। পরে ইহা তুলিয়া নির্মালীফল ফেরি ঐ রসকে নির্মাল করিতে হইবে। এই অরিষ্ট প্রহণী, জর্ম বাভবাধি, খাস, কাস, ধাতুক্ষ ও মেহ শ্রভৃতি বিরি রোগে প্রযোজ্য। ইহা অভিশয় পৃষ্টিজনক, বলকর, ভুত্রহি ও কামোদীপক। (ভৈষ্কার ও)

দশমুলীতৈল (ক্লী) বাধির্যানাশক তৈল ঔষধভেদ। প্রন্থ প্রণালী—ভিল তৈল ৪ লের, কাথার্থ মিলিত দশম্ল ১৪ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, কন্ধ দশম্ল ১ দের এই দশম্শীতৈল বধিরতানাশের অতি উৎকৃষ্ট ঔষধ। দশযোগভঙ্গ (পুং) দশানাং অলানাং যোগাং দশযোগাং ৪ ভঙ্গঃ। সংস্কারকার্য্যে নক্ষত্রবেধবিশেষ। বিবাহাদি কে সংস্কার কার্য্য দশযোগ ভলে করিতে নাই। হর্বায় নক্ষত্র অর্থাৎ যে নক্ষত্রে সংস্কারাদি কার্য্য হর্ব এবং কন্ম নক্ষত্রকে অর্থাৎ যে নক্ষত্রে সংস্কারাদি কার্য্য হর্ব সেই নক্ষত্র এই ছই নক্ষত্রকে একত্র করিয়া যদি পঞ্চ চারি, একাদশ, উনবিংশ, সপ্তবিংশ, একাদশ, অটাদশ বিংশ সংখ্যা হয়, তাহা হইলে দশযোগ ভঙ্গ হইবে।

"ভিথ্যকবৈদৈক দশোনবিংশ ভৈকাদশান্তাদশবিংশসংখা৷ ইন্টোজুনা স্থ্যযুতোজুনা চ যোগাদমুশ্চেৎ দশযোগভন্ন: । ( জ্যোভি: সাঞ্চ

এই দশযোগ ভঙ্গে কেহ কেহ প্রতিপ্রসৰ খাৰ করেন। এই প্রতিপ্রসৰ অগত্যাপক্ষে শীকার্য। যে নক্ষ দশযোগ বিদ্ধ হইবে, তাহার আদ্যপাদে শ্র্যা থাকিলে গ্রাংশ দ্যিত হয়, দিতীয় পাদে শ্র্যা থাকিলে তৃতীয়গা চতুর্থপাদে 'স্ব্যা থাকিলে প্রথম পাদ এবং শ্র্যা প্রথম তৃতীয় পাদগত হইসে দিতীয় পাদ ছই হয়। ঐ সক্ল য়য় পরিত্যাগ করিয়। অন্তান্ত পাছে ক্যায়াদি সকল করা মান শ্রাদ্যপাদে স্থিতে স্ব্রা জুরীয়াংশং বিবর্জ্জন্মেং।

দ্বিতীয়ফে তৃতীয়ঞ বিপরীতমতোহস্তথা ॥" (লোটুবরণ এই দশযোগভলে গর্ভাধানাদি বিবাহ পর্যার দর্শ

সংস্থার কার্য্য বিশেষ রূপে নিধিত্ব হইরাছে।
দশর্থ (পুং) দশন্ত দিকু রুথ: রুথগতির্বত। ১ ইকার্ন একজন রাজা। ইনি অংঘাধাধিপতি, রামের ^{বিত্} পদ্মপুরাণের উত্তরধতে দশরথের উৎপত্তি বি^{হরে এই।}
নিধিত আছে। সৌরাইদেশে ভিকু নামে এই ^{রা}

ছিলেন, তাঁহার পদ্মী নর্কাদা তাঁহার সহিত ক্লছ করিত, পরে কলহ করিয়া একদিন জীবন পরিত্যাগ করে, এই পাপে প্রেড হয়। বিরূপত্নী প্রিড অবস্থার ভ্রমণ করিতে করিতে একদিন ধর্মদত্ত লামে কোন ব্রাহ্মণ দেখিয়া ভাছার সমীপে গমন করে এবং ঐ বান্ধণের হস্ত হইতে তুলগী পত্রের জল বিজপদ্ধীর গামে পড়ে; ইহাতে বিজপদ্ধীর পাপ ভার কিছু লঘু হয়। দ্বিজপত্নী গ্রাহ্মণকে প্রণাম করিয়া কহিল, 'আপনি আমার প্রতি কুপা করিয়া বলুন, আমি কি করিলে পাপভার হইতে বুক্ত হই।' এইরূপে ভাহাকে অফ্নয় করিয়া কহিলে ধর্মদত্ত তাহাকে কহিলেন, 'তুমি অনেক পাপ করিয়াছ, তোমার কোন পুণাকর্মে অধিকার নাই। তুমি যথন আমার শরণাপর হইয়াছ, তথন তোমাকে আমার উদ্ধার করা অবশ্য কর্ত্তব্য ।. আমি আলম ধরিয়া যে কার্ত্তিকত্রত করিয়াছি, তাহার অর্দ্ধেক তোমাকে দান করিলামু।' এই কথা বলিয়া ভাহাকে তুলসী মিশ্রিত कन श्राम कतिरमन वर्षे चामभाकत्रमञ्ज अवग कताहै-লেন; তাহার পর এই বিজ্ঞপদ্ধী দিবারূপধারিণী হইল। দেই স্থলে বিষ্ণুদ্ত দিবারণ লইয়া উপস্থিত হইল, এবং দ্বিজপত্নীকে এই রথে তুলিয়া লইল। ধর্মদত্ত তাহা দেখিয়া অতিশয় বিশ্বিত হইল। বিষ্ণুদ্ত তথন তাহাকে বলিল, আপনার বিশ্বিত হইবার আবিশ্বক নাই এবং আপনার মত পুণাবান কেহ নাই, আপনি এই জন্মান্তে ভাগ্যার সহিত বৈকুঠে প্রমন করিবেন। সেইখানে বছদিন বাস কুরিয়া পুণাক্ষয় হইলে স্থাবংশে দশর্থ নামে রাজা इरेरान । • এই क्छारक नहेग्रा खालनात्र जिन्ही भक्की हरेरा । ময়ং ভগবান্ বিষ্ণু আপনাকে পিতা বলিয়া স্বীকার করিবেন। (পদ্মপু উত্তর থ )

দশরণ স্থাবংশীর মহারাজ অজের পুত্র। ইহার অনেক গুলি পরী ছিল, তল্পগে কৌশল্যা, কেক্সী ও স্থমিতা। এই তিনজন প্রধানা মহিবী ছিলেন। ইনি নৃত্ন যৌবরাজ্যে অভিবিক্ত হইরাই একদিন শক্ষবেধী বাণ পরীক্ষার জল্প অভ্নাত্তি শমনে করেন এবং তথায় শক্ষ শক্ষাতি শময়ে যমুনাতীরে গমন করেন এবং তথায় শক্ষ শক্ষাতি শময়ে যমুনাতীরে গমন করেন এবং তথায় শক্ষ শক্ষাতি করিয়া বাণ নিংক্ষেপ করেন। সেই বাণে অজমুনির প্রের মৃত্যু হয়়। তাহাতে অজমুনি দশরথকে এই বলিয়া শাপ দেন—"আমি যেরূপ পুত্রশোকে কাতর হইয়া প্রেণ পরিত্যাগ করিলাম, তোমাকেও এইরূপ পুত্রবিরহে কাতর হইয়া মরিতে হইবে।' দশরও ব্যক্ষণপুত্র বধ করিয়া ছংখিতচিত্তে গৃহে প্রত্যাগত হইলেন। অনেক দিন পর্যান্ত পুত্র না হওয়ায় অতিক্রেশে কালাতিপাত করিতে জাগিলেন। পরে বশি-

ঠের পরামর্শে বারালণা বারা অব্যস্তকে আনাইরা পুত্রেটি वळ क्रातन। ध्रे वळीत्र ठक (कोनना। ४० (कक्ब्रोटक एनन । কেক্য়ীও কৌশলা ঐ চক্ল হইতে হই থও স্থমিতাকে প্রদান করেন। এজন্ত কৌশল্যা রাম, কেক্য্নী ভরত, হুমিতা ৰক্ষণ ও শক্ৰন্ন নামে পুত্ৰ'গ্ৰস্ব করেন। কৌশল্যার শাস্তানামে এক কঞাজ্লো। দশর্থ এই ক্ফা লোমপাদ রাজাকে পোষাপ্তিকা প্রদান করেন। রাম উপযুক্ত হইলে রামকে যৌবরাজ্যে অভিষেক করিবার জ্বন্ত সমস্ত . আয়োজন হইতে লাগিল। রাম কলা রাজ্যে অভিধিক হইবেন, এই সময় কেকয়ী রামের বনবাস ুও ভারতের রাজ্যাভিষেক এই ছইটা রুর প্রার্থনা করেন। দশর্থ সভ্য প্রতিজ্ঞা পালন হেতু ইহাতেই স্বীকৃত হন। রাম বন-গমন করিলে রাজা দশর্থ রাম-শোকে নিতান্ত কাত্র হইয়া ব্দর্করাত্রি সময়ে প্রাণ পরিত্যাগ করেন। পরে ইহার মৃতদেহ তৈলদ্রোণীতে রিকিত হয়, পরে ভরত আসিয়া জ্বস্তোষ্ঠিক্রিয়াদি সম্পন্ন করেন। [রাম দেখ।]

২ বালিকের পুত্র ইহার পুত্রের নাম ঐড়বিড়ি। (ভাগ॰)

৩ সম্রাট্ অশোকের পুজ্র। [প্রিয়দর্শীদেখ।]

দশর্থস্ত (পুং) দশর্পত স্কুতঃ ৬৩৫। রাম। 🐪 দশ্রশ্মিশ্ত (পুং) দশর্শি শতানি অভা। সহস্করণ, হুর্যা।

"দশর স্মিশতোমপছা ভিং যশসা দিক্ দশত্ব পিশ্রতং। (রঘু)
দশরাত্র (পুং) দশভি রাত্রিভি নিঁবুত্তঃ ঠঞ্, তশু লুকি ত কিতার্থ দিগৌ অচ্সমাণ। ১ দশরাত্রসাধা যাগভেদ, এই যজ্ঞ
দশ দিন ধরিয়া করিতে হয়। (ক্লী) দশানাং রাত্রীনাং সমাহারঃ। রাত্রিদশক, সংখাবৈচক শক্রের পর রাত্রি শক্ষ
থাকিলে সমাহারে বিগু সমাসে ক্লীবলিক হয়।

্বপ্রতিষেধ্য় সমং তত্ত্ব দশরাত্র মণ্ডয়তি। যচ্ছেষং দশরাত্রস্থা তাবদেবাশুচির্ভবেং ॥ ।

দশরপক (ক্লী) দশ রূপকাণি দৃষ্ঠকাব্যানি প্রতিপাদ্যত্বেন সম্ভাত্র অচ্। নাটকাদি লক্ষণ প্রতিপাদক গ্রন্থভেদ; এই গ্রন্থে দৃষ্ঠকাব্যের লক্ষণ ও নায়ক নায়িকার প্রভৃতির লক্ষণ, নাটকের দোষ গুণ প্রভৃতি বিশেষ রূপে ক্ষিত হইয়াছে।

দশরপভূৎ (পুং) দশ-মংস্তর্ম্বরাহাদীনি ,রপাণি বিজ-জীতি ভ্-কিপ্-তৃগাগমশ্চ। বিফ্ । [দশাবতার দেখ । ] দশালক্ষণক (পুং) দশ লক্ষণানি যতা। ধর্ম, ধর্মের দশটা লক্ষণ এইজন্ত ধর্মকে দশলক্ষণক কছে। ধৃতি, ক্ষমা, দম, অন্তেয়, শৌচ, ইক্রিয়নিএই, ধী, বিদ্যা, সৃত্য, অক্রোধ এই দশটী ধর্মের লক্ষণ।

িধৃতিঃ ক্ষমাদমোহস্তেরং শৌচমিক্সিরনিগ্রহঃ। धौर्विमा। नजामत्कार्या मणकः धर्यनक्रगः॥" ( मञ् ) দশবক্তু (পুং) দশ বক্তু । বিষয় । রাবণ। দশবাজিন্ (পুং) দশ বাজিনোর থে যখ। চক্স। "দশাখং শ্বেতপদ্মস্থং বিচিন্ত্যোমাধিদৈবতং ॥" (চক্ৰধ্যান) দশবার্ষিক ( তি') দশস্থ বর্ষেস্থ ভবঃ ঠঞ্, উত্তরপদর্কিঃ। দশবর্ষভব, যাহা দশ বৎসরে হয়। স্তিয়াং ভীপ্। "পরেণ ভূজীয়মানায়াধনস্থ দশবার্ষিকী॥" (যাজ্ঞ°) দশবাহ্ (পুং) মহাদেব। (ভারত ১৩।১৭।৪০) দশবিধ 🖟 🗓 ) দশ বিধা প্রকারা যতা। দশ প্রকার। "ভেদস্তমদো অষ্টবিধঃ দশবিধঃ মহামোহঃ।" ( সাংধাকা॰ ) মহামোহের ভেদ দশ প্রকার। দশবীর (क्री) দশ বীরা যত্র। সত্তভেদ, যজ্ঞবিশেষ। "তদেত-চছাক্তাানাং দশবীর মেষাং দশবীরা জায়ত্তে য এতত্বস্বস্থি ় ( তাণ্ডা॰ বা॰ ২৫।৭।৪১) 'তদেতত্তং সতং শক্ত্যানাং দশবীরং বীরয়স্তমিত্রানিতি ৷' ( ভাষা ) দশ্বজ (পুং) ঋষিভেদ। "যাভিঃ কথং মেধাতিথিং যজ্ঞং যাভিব্ৰং দশব্ৰজং" ( ঝক্ ৮৮৮২০ ) দশ্শত (ক্রী) দশগুণিতং শতং। ১ সহস্র সংখ্যা। ২ তৎসংখ্যের। দশ্শতনয়ন (পুং) দশশতং নয়নানি যভ। ইক্স। দশশতরশ্মি (পুং) দশশতং সহত্রং রশারোহত। ত্র্যা। (ছেম*) দশশভাক্ষ (পং) দশশতং অকীণি যভা। ইকা। দশশতাভিয় (স্ত্রী)দশশতং অভ্যুগো যভা। ১ শতম্লী। ২ শতাবরী। ( পারস্করনি° ) দশ্দপ্তা (স্ত্রী) দশ চ দপ্ত চ জিদ্যাং বিষ্ণু ভৌ । সামনেদের বিশ্বাস ভেদে বিষ্টু তি ভেদ। দশসাহত্র কৌ) দশগুণিতং সহত্রং পরিমাণমৃত্র অণ্ উত্তরপদ বুদি: । ১ দশগুণিত সহস্র, অযুত, দশ হাজার । ২ তৎসংখ্যের। "ভূতানাং দশদাহঅং পরিথেন সমাজতং।" (হরিব॰ ২৫২ অ॰) দশসাহ্সিক (জী)দশসহস্লাণাং প্রমাণং অণ্ততাে ঠঞ্ উত্তরপদ্বুদিঃ। অযুত্পরিমিত ভাগাদি। দশ্হর। (अो) দশ অদত্তোপাদানহিংসাদি দশ্বিধানি দশ-জমাফুডানি বাঁপাপানি হরঙীতি জ-অচ্ ত্র্টাপ্। জৈয় মানের শুরুষদশনী, জৈাষ্ঠী শুক্রা দশনীর নাম দশহরা, এই দিন গঙ্গার জন্ম দিন। "জৈটে মাসি কিভিন্নভদিনে গুরুপকে দশমাং हत्य रेननावित्रगम्पियः कारूवी म**र्कालाकः**। পাপান্তভাং হরতি চ তিথে সা দলেত্যাত্রার্ঘ্যাঃ পুণ্যং দদ্যাদিপি শতঞ্জণং বাজিমেধাযুতক্ত ॥" (ভিথিতত্ত্ব )

জৈ চি মাসের শুক্লালশমী মঞ্চলবার হস্তালকজে গ্_{যা স} হইতে মর্ক্তাবেক আগমন করেন, এইজন্ত এইদিন জ্বি পুণ্যস্কলক, এই ভিণি নানাবিধ পাপ নষ্ট করে, _{এই} এই তিথিতে স্নানদানাদি করিলে বাজিমেধ যজে_{র ফ} লাভ হর। এই তিথিতে জাহ্নী দশকিধ পাপ ও দশ্_{ৰই} র্জিত পাপ হরণ করেন বলিয়া এই তিধির নাম দশহরা হা রাছে। ক্লদত্তের উপ্থাদান, ক্ষবিধি পূর্বক হিংসা ও পরনারনে এই ত্রিবিধ কায়িক পাপ*;* পারুম্ব, অনৃত, _{পৈওয়} অসম্বন্ধ প্রালাপ এই চতুর্বিধ বাবার পাপ; প্রদ্রাচিয়া ्रमत्न भटन পরের अवस्त्रका ८० छ।, मिश्राक्तित्वम व ত্তিবিধ মানস পাপ। এই দশবিধ পাপ গঙ্গা হরণ করেন, এ জার্ম ক্রেটি ক্রোদশমীর নাম দশহরা হইয়াছে। "অम्डाना्डेभामानः हिःमा देवराविधानछ:। **शतमारत्राभरमवा 5 कांत्रिकः जिविधः युज्रः ॥** পারুত্যমনৃতক্ষৈব পৈণ্ডগ্রহাপি সকাশ:। অসম্বন্ধ প্রলাপশ্চ বাজ্মরং স্থাচ্চতুঁর্বিধং॥ পরদ্রবোম্বভিধ্যানং মনসানিষ্টচিন্তনং। বিতথাভিনিবেশশ্চ ত্রিবিধং কর্ম্মানসং॥ এতানি দশ পাপানি প্রশমং বাস্ত জাহ্ববি। স্নাতভাষম মে দেবি জলে নিষ্ণুপদোধ্বে॥ বিষ্ণুপাদার্থসভূতে গঙ্গে ত্রিপথগামিনি। ধর্মদ্রবীতি বিখ্যাতে পাপং মে হর জাহ্নবি॥ শ্রদ্ধরা ভক্তিসম্পন্নে শ্রীমার্দেবি জাহ্নবি। অমৃতেনাস্না দেবি ভাগীর্থি পুনীহি মাং ॥" ( কুছুাত্র ' দশেহরার দিন প্রসালান করিবার সময় এই মন্ত্রপ্রি লান করিতে হয়। যদি এই দশমীতে হস্তানক্ষতের গে হয়, তাহা হইলে দশজকাজিজিত দশবিধ পাণক্ষ হয় ^{এব} ঐ তিথি যদি মঞ্লবারে হয়, তাহা হইলে দশবিধ পাণক পূর্বক শতক্ষমেধ যজের ফললাভ হয়। লৈচিমাস গ্র মলমার্গ হয়, তাহা হইলেও জোঠমানের শুক্লালশনী ছি তেই দশহরা হইবে। এই স্তবে তিণিমাহান্ম্যই প্রবন "জৈতে মাসি সিতেপকে ধশমাং হস্তযোগত"। দশক্ষনা মহাগল। দশ পাপহরা স্ভা। শুকুপক্ষ দশনী জৈছে মাসি বিজেভিন্। হরতে গশ পাপানি তস্মাদশহরা স্বতা **।** क्षिक्रं क्षक मनगाःक् रुख्यात्रान बार्र्स्यी। হরতে দশপাপানি তক্মাদশহরোচ্যতে 🗗 (ডিৰিটার) रुपि मनमी जिथि উछत्र निनदािशिनी इत्र धरः पूर्वास्त यिक रुखा नक्ष्य हुन, खादा इंडेटन शूर्विविन व्यवस्त्र होरि,

छिथि উভয় দিন পাইলে পরদিনেই দশহরা হইবে এবং डेल्ब मिनवािशिनी जिथिश्रद्भ भूर्समिन यमि ममनवात इत्र, जाह्य इहेरन भूर्विमिनेहे मर्भहता इहेरव, भत्रमिन । दक्वन ভিথিতে মান করিতে হইবে। यদি এই দিন গলামান না করা বার, তাহা হইলে যে কোন নদীতে অর্থদান ও তর্পণাদি ঁ করিলেও মহাপাতক সদৃশ পাতক হইতে বিমৃক্তি হয়। "गाःकांकि९ मतिष्ठः श्राभा मन्तामश्राः जिल्लान्कैः। সুচ্যতে দশভিঃ পাপেঃ স মহাপাতকোপমৈঃ ॥" ( ऋम्मপू∙) দশইরা তিথিতে গলামৃত্তি প্রস্তুত করিয়া গলাপুলা করিতে হয়; দশহরাতে গঙ্গাপুঞা অবশু কর্ত্তব্য এবং ঐদিন মংখ, কছেপ, মঞ্ক, মকরাদি জলচর, খর্ণ, রজত প্রভৃতি ছারা প্রস্তুত করিয়া গঙ্গায় নি:ক্ষেপ করিতে হটুবে। ইহাতে অসক হইলে পিট্টবারা (পিটুলী) প্রস্তুত করিয়া দিতে হইবে এবং গঙ্গাতে ঘৃতপ্রদীপ জালাইয়া ভাসাইয়া मिटव এवर এই मिन इय कान लाक "छैर नमः निवादेश নারায়ণ্যৈ দশহরাথে গঙ্গাথৈ নম:" এই মন্ত্র দিবারাত্র জপ करत, जाहा हरेला भक्षमहत्र मनधर्म कन नाफ करत। দশহরার দিন গঙ্গাজলে থাকিয়া যিনি গঙ্গার স্তোত্রপাঠ করেন, তিনি অক্ষম বাদরিজ হন না। এইজভা দশহরার দিন দশ্বিধ পাপক্ষরের নিমিত্ত গঙ্গাম্বান অবশ্য কর্তব্য। দশা (স্ত্রী) দশতীতি দন্শ-ক ততো নলোপঃ বা দখতে ইতি অচ্তত টাপ্। ১ অবস্থা। ২ দীপবর্তি।

"অপেক্ষতে ন চ স্বেহং ন পাত্রং ন দশান্তরং। পর্বোপকারনিরতা মণিদীপা ইবোত্তমা॥" (উন্তট) ত চিত্ত এ ৪বস্তান্ত, বস্তের শেষভাগ। এই দশাশক বহুবচনান্ত।

শংবার দশদশা গর্ভবাসাদি রূপ অবস্থা, এই দশা দশটা।
মংবার দশদশা গর্ভবাস, জন্ম, বাল্যা, কৌমার, পৌগও,
যৌবন, শ্বিরতা, জরা, প্রাণরোধ, মৃত্যু, এই দশটা মহুব্যের
অবস্থা সকলেই এই দশার অধীন (মোক্ষধর্মে নীলকঠোক্ত)
কামকৃত্র বিরহীদিগের অবৃত্থা ভেদ। এই অবস্থাও দশটা।
ন্যনপ্রীতি, চিস্তা, সকল, নিজাচ্ছেদ, তহুতা, বিষয়নিবৃত্তি,
পজ্জানাশ, উন্মাদ, মৃদ্র্যা ও মরণ এই দশটা অনকদশা।
প্রথম নারক দর্শন, তাহার পর তবিষয়ক চিস্তা, চিস্তা করিতে
করিতে নারককে পাইবার সকল, এই সকল হইতে নিজা
ভাগ, নিজা ছাস হইলেই শরীর ক্ষীণ হয়, তথন আরে উপভোগাদি কোন বিষয়ই ভাল লাগেনা, তথন আপনা
ইইতেই লক্ষানাশ হয়; ভাহার পর একেবারে উন্মন্ত হইতে
হয়, উন্মাদ হইতে মৃদ্র্যা। এই মৃদ্র্য হইতে মৃত্যু পর্যান্ত

হইতে পারে। বিরহবর্ণন করিতে হইলে এই দশটা দশার
মধ্যে ৯টা বর্ণন করিতে হয়, মৃত্যু বর্ণন করিতে নাই।
"দ্বান: গঙ্গসন্ধা: জাগর: কুশভারতি:।
জীত্যাগোন্দাদ মৃত্যু বিভা ইতানস্থদশা দশ॥
নয়নপ্রীতি: প্রথম: চিস্তাসক্ষতেহেথ স্কল:।
নিজাচ্ছেদস্তম্ভা বিষয়নির্ভিত্রপানাশ:।
উন্মাদো মৃত্যু মৃতিরিত্যেতা: শ্বর দশা দশৈর হ্য:।"

(জনকারশাত্র°) ৭ গ্রহগণের স্ব স্থাকল বিপাক কাল-ভেদ রূপ অবস্থা; ক্যোভিষে এইরূপ লিখিত আছে।

সভাযুগে লাগ্নিকী দশা, তেত্তাযুগে গৌরী দশা, দ্বাপর-যুগে যোগিনী দশা ও কলিযুগে নাক্ষত্তিকী দশা দ্বারা মহুয়ের শুভাশুভ নির্ণীত হয়। এইকশা অপ্টোত্তরী নাক্ষত্তিকী দশার বিবরণ বলা যাইতেছে।

স্থোর দশা ৬ বংসর, চক্রের ১০ বংসর, মঙ্গলের ৮ বংসর, বুধের ১৭ বংসর, শনির ১০ বংসর, বৃহস্পতির ১৯ বংশর, রাত্র ১২ বংসর ও শুক্রের ২১ বংসর দশাভোগের কাল। ইহার মধ্যে প্রত্যেক দশারই অন্তর্দশা আছে।

একটা চতুদ্ধোণ-ক্ষেত্র অন্ধিত করিয়া তাহাতে পূর্বাদি • অষ্ট দিক চিহ্নিত করিবে, অনম্বর ঐ ক্ষেত্রের আর্টদিকে পূর্ব হইতে আরম্ভ করিয়া ক্বভিকাদি নক্ষত্র স্থাপন করিবে। পূর্বাদি চারিদিকে তিন তিনটা করিয়া ও অগ্যাদি চারি কোণে চারি চারিটা করিয়া নক্ষত্র বিভাশ করিবে। যথা; - পূর্ব্বদিকে - ক্বত্তিকা, রোহিণী ও মৃগশিরা এই তিন নক্ষ্য জলিলে রবির দশা; অগ্নিকোণে-আদ্রা, পুনর্বস্থ, পুষা ও অলেধানকত এই চারি নকতে জন্মিলে চল্লের দশা; মখা, পূর্বকিন্ত্রণী ও উত্তরকন্ত্রণী নক্ষতে জিনালে মঁপলের দশা; হস্তা, চিত্রা, ক্ষাতী ও বিশাথা নক্ষত্তে জিবালে বুধের দশা; অন্তরাধা, জ্যোষ্ঠা ও মূলানকত্তে জিবালে मनित्र ममा ; शूर्वायाणा, উত্তরাযাতা, অভিজেৎ ও এবণা-নক্ষত্রে জালিলে বৃহস্পতির দখা; ধনিষ্ঠা, শতভিষা ও পূর্বভাদ্রপদনক্ষতে জন্মিলে রাহুর দশা ; উত্তরভাদ্রপদ, রেবতী অবিনী[®]ও ভরণীনকাতে জানিলে ৩০কের দশাহর। স্র্যু রাত্, মঙ্গল ও শনি ইহাদের দশাতে মহুয়োর ক্লেশ; বুছ-म्लाजि, तूप, हक्क ७ एक हेहाँदेन व मनाटक मन्न हहेगा थाटक। বর্ত্তমান শকাকান্ধ হইতে জন্মকাণীন শকের আছে বিয়োগ ক্রিলে যত বৎসর অ্বশিষ্ট থাকিবে, ভাহার প্রতি বৎসরে ৫ দিন ১৫ দণ্ড ৩১ পল ৩১ বিপল ২৪ অবসুপল বৈাগ করিলে যত ইইবে, তত বৎসর বয়স ধরিয়া দশা নির্ণর করিতে इहेर्द, हेशांकहे जावन छिक्क करह।

জন্মকালে নক্ষত্রের যত দণ্ড পল অতীত হইরাছে এবং যত দণ্ড পল অবশিষ্ট আছে, তাহা জানিরা অমুপাত ছারা দশাকালে কত অংশ অতীত হইরাছে এবং কত অংশ অবশিষ্ট আছে, তাহা নির্গর করিতে হইবে। যেমন রোহিণী নক্ষত্রে কোন ব্যক্তির জন্ম হইলে ২ বংসর অতীত হইরাছে জানিতে হইবে, অবশিষ্ঠ চারিবংসর আছে, অবশিষ্ট চারি বংসরের মধ্যে রোহিণীনক্ষত্রের যত দণ্ড পল গতে জন্ম হইরাছে তাহাঘারা অমুপাত করিয়া কত অংশ অবশিষ্ট আছে তাহা ছির করিতে হইবে। অন্মের প্রথমে যে গ্রহের দশা হইবে তাঁহার ভোগকালের পর তংপরবর্তী গ্রহের দশা ভৌগ হইবে। যদি জন্মনক্ষত্রের পরিমাণ ৬০ দণ্ড হয়, তাহা হইলে দশার ভুক্ত ও অবশিষ্ট আনিতে অমুপাত না করিয়া নিম্নাধিত নিয়্মামুসারে ভুক্তাবশেষ ছির করিতে পরা ঘাইবে।

জন্মসময়ে নক্ষত্রের যত দণ্ড ও পল গত হইয়াছে, শুড গ্রহ দশা হইলে তাহাকে ১॥ গুণ করিয়া, পাণ্টাহের দশা হইলে দিগুণ করিয়া, গুণফলকে পুনর্কার দশা পরিমাণের অ্লু দিয়া পুরণ করিতে হইবে।

পরে ঐ গুণফলকে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে মাস এবং
মাসকে ১২ দিয়া ভাগ করিলে বংসর হইবে। এইরূপে দশার
ভূকে অংশ জানিয়া দশা পরিমিত কাল হইতে বিয়োগ
করিলেই অবশিষ্ট অংশ জানিতে পারিবে। জন্মনক্তের
পরিমাণ ৬০ দত্তের ন্নাধিক হইলে অফুপাত করিয়া
দশাকালের ভূক্ত ও অবশিষ্ট অঙ্ক স্থির করিবে।

নক্ষত্রাহ্বদারে দশাভোগের কালবিভাগ—ক্তিকা, রোহিণী ও মৃগলিরানক্ষত্রে জন্ম হইলে প্রথমে রবির দশা
হয়, এই দলার ভোগকাল ৬ বংসর। ইহার প্রতি নক্ষত্রে
হই বংসর, প্রতি নক্ষত্রের পাদে ৬ মাস, নক্ষত্রের চারিভাগের একভাগের নাম পাদ, এবং প্রতি দশে ১২ দিন ও
প্রতি পলে ১২ দণ্ড ছইয়া থাকে। আদ্রা, পুনর্বাস্থ ও
প্র্যানক্ষত্রে জন্ম হইলে চল্কের দশা হয়, এই দশার ভোগকাল ১৫ বংসরণ। ইহার প্রতি নক্ষত্রে ৩ বংসর ৯ মাস।
প্রতিপাদে ১১ মাস ৭ দিন ৩০ দণ্ড, প্রতি দণ্ডে ২২ দিন
৩০ দণ্ড এবং প্রতিপলে ২ই দণ্ড ৩০ পল জানিবে। মঘা,
প্রক্ষেত্রণী ও উত্তরক্ষ্মণীনক্ষত্রে জন্ম হইলে মললের দশার
জন্ম জানিতে হইবে, এই দশার পরিমাণ ৮ বংসর, ইহার
প্রতি নক্ষত্রে ২ বংসর ৮ মাস, প্রতি নক্ষত্রের পাদে ৮ মাস
এবং প্রতি দণ্ডে ১৬ দিন ও প্রতি পলে ১৬ দণ্ড হয়।

হস্তা. চিত্রা. স্বাতী ও বিশাধানক্ষত্রে ক্ষম হইলে বুধের

দশার অন্ম হর। এই দশার পরিমাণ ১৭ বংসর, ইয়ার প্রতি নক্ষত্রে ৪ বংসর ৩ মাস, প্রতি নক্ষত্রের পাদে ১ বংসর ২২ দিন ৩০ দণ্ড, প্রতি তিও ২৫ দিন ৩০ দণ্ড ও প্রতি প্রায়ে বংলা ২৫ দণ্ড ৩০ পল হর।

অন্তরাধা, জ্যেষ্ঠা ও মুলানক্ষত্রে জন্ম হইলে শনির নশা হয়, এই দশাভোগ্যকাল ১০ বৎসর। ইহার প্রতিনক্ষরে ৩ বৎসর চারিমাস, প্রতি নক্ষত্রের পাদে ১০ মাস এবং প্রতি দত্তে ২০ দিন ও প্রতি পলে ১০ দণ্ড ভোগ হয়।

পুর্ব্বাষাঢ়া, উত্তরাষাঢ়া, অভিজিৎ ও শ্রবণানকরে জন হইলে বৃহস্পতির দশা হয়, এই দশার পরিমাণ ১৯ বংরা ইহার প্রতি নকরের পানে ১ বংসর ২ ঘাস ১৫ দিন, প্রতি দত্তে ২৮ দিন ৩০ দও ও প্রতিপ্রে ২৮ দণ্ড ৩০ পরা হয়।

অগ্রপ্রকার—বৃহস্পতির তুল্দশা ১৯ বংসর। এই দশা পরিমিত কালকে চারিভাগ করিয়া একভাগ পূর্বাধান্ননকজের ও অবশিষ্ট তিন ভাগের সমষ্টি অর্থাৎ ১৪ বংসর তিন মাসকে হুইভাগ করিয়া একভাগ অর্থাৎ ৭ বংসর ১ মাস ১৫ দিন উত্তরাবাদানকজের ও ৭ বংসর ১ মাস ১৫ দিন উত্তরাবাদানকজের ও ৭ বংসর ১ মাস ১৫ দিন উত্তরাবাদানকজের ও ত্বার্থা করিয়া একভাগ পূর্বাধাদানকজের ও অপর তিনভাগের সমষ্টির অর্কেক উত্তরাবাদানকজের এবং অবশিষ্ট অর্কেকের অর্কেক অভিনিং নকজের ও অপর অর্কেক শ্রবণানকজের বিভাগ লানিতে হুইবে। যথা পূর্বাধাদার ও বংসর ৯ মায়, উত্তরাবাদার ৭ বংসর ১ মাস ১৫ দিন, অভিজ্ঞিতের ০ বংসর ৬ মাস ১২ দিন ৩০ দণ্ড ও শ্রবণায় ০ বংসর ৬ মাস ১২ দিন

থনিষ্ঠা, শতভিষা ও পূর্বভাত্রপদনকতে জন্ম ইইলে এখা রাত্রদশা হয়, এই দশার পরিমাণ ১২ বংসর। ইহার প্রতি নক্ষতে ৪ বংসর, প্রতি নক্ষতের পালে ১ বংসর, প্রতি গতে ২৪ দিন ও প্রতি পলে ২৪ দণ্ড হইবে।

উত্তরভাত্রপদ, রেবতী, অখিনী ও তর্গনিকরে বি হইলে প্রথমে শুক্রের দশা হয়। এই দশা ভোগাবান ১১ বংসর। ইহার প্রতিনক্ষত্রে ৫ বংসর ৩ মাস, প্রতিনক্ষ ত্রের পাদে ১ বংসর ৩ মাস ২২ দিন ৩০ দশু এবং প্রতিন দখ্যে ১ মাস ১ দিন ৩০ দশু ও প্রতি পলে ৩১ দশু ও বা ভোগ হয়। প্রথমতঃ ক্ষরনক্ষত্র হইতে দশা নির্ণাব্য বাইতেছে।

44

क्य नक्ष	पना	ভোগ্যকাৰ
৩ ক্বন্থিকা	) .	
৪ রোহিণী	}∙ द्रिव 🖁	৬ বংসর
_{৫ মৃগশিরা}	,	1
৬ ৰাজা	)	•
ণ পুনর্মস্থ	528	> ६ वर्मक्र।
৮ পুষা		1,11,1
৯ অলেষা	j	
১০ নীৰ্যা	) '	
১১ পূর্বকন্ত্রণী	} মঞ্ল	৮ বংসর।
১> উত্তরফ <b>ন্ত্র</b> ণী	,	
১৩ হস্তা	1	
১৪ চিত্ৰা		
>ং স্বাতী	} ব্ধ	১৭ বংসর।
১৬ বিশাধা .	}	
১৭ অফুরাধা	) `	
১৮ <b>ৰোষ্ঠা</b>	} শনি	>• বৎসর।
৷ <b>৯ মূলা</b>	y	
·• পূ <del>ৰ্</del> কাষাঢ়া	)	
১ উত্তবাধাঢ়া	। } বৃহস্পত্তি	১৯ বৎসর।
• অভিবিৎ	34 119	ו אראר הנ
⇔ শ্রবণা	j	
ু ধ <b>নিষ্ঠা</b>	)	
^{১৪} শতভিষা	🕨 রাছ	১২ বৎসর।
[∤] েপৃর্কভান্ত্রপদ	•	
^{১৬} উত্তরভাত্রপদ	1	
^{১৭} ব্লেবজী		
> <b>অধিনী</b>	ু <del>ক</del>	২১ বৎসর।
২ ভরণী	j	

এই সকল নক্ষত্তামুসারে যে নক্ষত্তে জন্ম হইয়াছে সেই ^{নক্ষ}ত্র ধরিয়া দশা নিরূপণ ক্রিতে হইবে।

দশাক্ষণ করির দশাতে চিদ্রের উবেগ, পরিতাপ, এন-গানি, ক্লেশ, বিদেশগমন, রোগভর, অনিষ্টপাত, ছংখ, দীবনহানি, বৃদ্ধন ও রাজপীড়া হইরা থাকে।

চল্ডের দশাতেঁ—মহুছোর ঐশ্বা, ঘোটকাদিবাহন, রাজপুলা, রম্ম, ছত্ত্ব, সম্পলা, প্রতাপ, বীর্যাইছি, মিটারভোজন, শানীয়ণান ও উদ্ভয়শয়া লাভ হয়।

মন্ত্রের দশার—চ্টুলোক হইতে আয়বিনাশ, বন্ধন, ভর, চিন্তা, জর, বিকলতা, চৌরতীতি, আগ্রিভর, বিবাদ, রোগ, অকীঠি, প্রতাপহানি ও ধন বিনাশ হয়। ব্ধের দশাতে—উত্তমাকামিনীসভোগ, ধনাগম, অতিশয় অ্থনাত, বিবিধঐবর্গা, কোষাগার বৃদ্ধি ও মনোরথ পূর্ণ হয়।

শনির দশাতে—অপবাদ, বং, বন্ধন, আশ্রেরবিনাশ, চৌরভয়, অগ্নি, সর্প ও রাজভয়, আশাভন্ধ ও কার্য্যহানি হয়।

বৃহস্পতির দশাতে—রাজ্যপ্রান্তি, ধনাগম, পুত্রনাভ, বিবিধ বন্ধ ভোগ, স্থধ ও ধন, ধাষ্ঠবৃদ্ধি, বিভা, স্থাতি এবং লন্ধীলাভ হয়।

রাহর দশাকালে — মহুদ্মের পদ্ধীর অপরাধ নিমিও বিবাদ, বন্ধন এবং অন্তাঘাতের ভর, অরপরাক্রম, অভ্যস্ত কট, ধন ও কান্তিবিহীনদেহ হয়।

শুকেরদশার সময়—মন্ত্রনিধি, প্রমদাসকলাভ, অভিলাব, পূর্ণ, বদাক্তরা, রাজপুলিত, হস্তী ও, আর্থ প্রভৃতি যানারোহণে গমন, মনোরথ সিদ্ধি, অর্থসঞ্চর ও রাজলন্দ্রী লাভ হইরা থাকে। স্থলদশাফলের বিষয় বলা হইল কিন্ত প্রভাক দশার মধ্যে অন্তর্দশা আছে। অন্তর্দশার ফল অন্তর্দশার কালাভুসারে হুইরা থাকে।

অন্তর্গলা—রবির স্থুল দশা ও বংসর, তাহার মধ্যে রবির
নিজ দশান্তর ৪ মাস, চল্লের ১০ মাস, মললের ৫ মাস, বুধের
অন্তর ১১ মাস ২০ দিন, শনির অন্তর ৬ মাস ২০ দিন, বুহস্পতিরু
অন্তর ১ বংসর ২০ দিন, রাহর অন্তর ৮ মাস, গুক্তের অন্তর
১ বংসর ২ মাস। রবির দশামধ্যে রবির অন্তর্দশার রাজদণ্ড,
মনন্তাপ, বন্ধন, বিদেশগমন, শরীরপীড়া ও নানা প্রকার
ছঃথভোগ হয়। রবির দশাতে চল্লের অন্তর্দশার মন্ত্রের
শক্রনাশ, রোগশান্তি, বিভ্রনান্ত ও নানাবিধ হুও হইয়া
থাকে। মভান্তরে রবিরদশাতে চল্লের অন্তর্দশার রোগ,
শক্রা, ত্রাস, ইচ্ছাহানি, মনঃপীড়া প্রভৃতি হইয়া থাকে।
রবির দশাতে অল্লের অন্তর্দশার মন্ত্র্যুগণ প্রধান হইয়া
মণিরত্ব ও প্রবাল প্রভৃতি লাভ করে। রবির দশাতে বুধের
অন্তর্দশার মন্ত্র্যুগ দারিক্ত ও ছংগী হয় এবং স্কাগাত্রে বিচটিকা প্রভৃতি রোগে আক্রান্ত হয়়। আর নানা প্রকার
শরীরের উপস্তব হওয়াতে ক্লেশ পায়।

রবিদশানত শনির অন্তর্জনায় মহন্ত রাজভয় প্রাপ্ত ইইরা
শীয় শজিবহিত ও ধৈর্যাহীন হয় এবং তাহার সকল
কার্ব্য বিকল হইয়া যায়। মতাল্ডেরে—রবির দশাতে শনির
অন্তর্জনায় মহন্ত্যের সন্তাপ, বিত্ত বন্ধুনাশ, পরাজয় ও
সকল কার্যা নই হয়।

রবির দশতে বৃহস্পতির অন্তর্দশার মনুবোর সম্পত্তি বৃদ্ধি, রোগ শান্তি, লোকের নিকট বিশাস ও ধর্ম লাভ হয়। মতান্তরে—রবির দশতে বৃহস্পতির অন্তর্দশার মনুবোর ধর্ম অর্থ ও সূথ লাভ হয়। এবং কুটাদিরোগের শাস্তি হইরা সূথ ভোগ হয়।

রবির দশাতে রাত্র অত্তদিশায় মহুবোর রোগ, শোক, ভয়, মৃত্যু, বিত্তনাশু ও নানা প্রকার অভ্তত হইরা থাকে।

রবির দশাতে ও জের অন্তর্দশার মহুব্যের শিরংপীড়া, উদরাময়, জার, অন্তীসার ও শৃশ প্রভৃতি রোগ হইয়া শীঘ শরীর নুট হয়।

চত্তের সূল দশারকাল ১৫ বৎসর। ইহার মধ্যে দুই বৎসর ১ মাস নিজ্ঞের অন্তর্দশা এই সমরে সম্পত্তি র্দ্ধি, স্বর্ণভূষিতা ত্রীকাভ ও অভিশয় যশোর্দ্ধি হয়।

চক্রের দশাতে ১ বংদর ১ মাস ১০ দিন মঙ্গলের অন্তর্গদার কাল। এই সমরে সর্কাদা কাল ও চৌরভয় এবং শরী।
বের ক্লেশ প্রভৃতি বিবিধ উপদ্রব হইয়া থাকে। মভান্তরে
চক্রের দশাতে মঙ্গলের অন্তর্গশায় মহুষ্যের রক্তপিত পীড়া
ও চোরের ভয় হয়।

চক্রের দশাতে ২ বংসর ৪ মাস ১০ ছিন বৃধের অন্ত-দিশার ভোগকাল। এই সময়ে প্রভুত্ব, স্থ্যসম্পত্তি, হন্তী, ঘোটকাদিবাহন ও গোধনাদি লাভ হয়।

চব্দের দশাতে ১ বংসরে ৪ মাস ২০ দিন শনির অন্তর্গদশার কাল। এই সময়ে বুদ্ধিক্ষয় স্মন্তব্দে বিপদ্ প্রভৃতি
নানাবিধ অমঙ্গল হয়। মতান্তরে চন্দ্রের দশাতে শনির
অন্তর্গদশায় কেশ, রাজভয়, বিপদ্দ, শোক ও সম্পতিনাশ
হইয়া থাকে।

চক্রের দশাতে ২ বংসর ৭ মাস ২০ দিন বৃহস্পতির অন্তর্দশার কাল। এই সময়ে মহুষ্য ধন, ধর্ম, হুখ, বস্তু ও অলকার লাভ করে।

চঁজের দল্লাতে ১ বংসর ৮ মাস রাজ্র অন্তর্দশাঁর কাল। এই সময়ে সকল থাকার রোগ, বন্ধুনাশ এবং উক্ত দশা বিশিষ্ট ব্যক্তি কিঞ্ছিৎক।লের নিমিত্তও প্রথী হইতে পারেনা। মতাস্তরে অগ্রিভয়, ১০:খ, শোক, বন্ধুবিচ্ছেদ ও ধনক্ষয় হুইয়া থাকে।

চক্রের দশাতে ২ বংসর ১১ মাস ওক্রের অন্তর্দশার কাল। এই সময় মহুষা উত্তমান্ত্রীসঙ্গম, ধন, ধান্ত, মুক্তা, মণি প্রভৃতি লাভ করিয়া সুখী হয়।

চত্ত্রের দশাতে ১০ মাস রবির অন্তর্দশার কাল। এই সময়ে মস্থা রাজার অনুগ্রহ, সুথ ও অতুল ঐখর্যালাভ করে।

মঙ্গলের স্থলদশা ৮ বংসর। তাহার মধ্যে মঙ্গলের নিজ দশা ৭ মাস ৩ দিন ২০ দণ্ড। মঙ্গলের এই নিজদশার সময় বন্ধুর সহিত কলহ, আলিনাহ ও শারীরিক শীড়া প্রভৃতি হয়। মললের দশাতে ১ বংসর তমাস ২০ দশু বুধের আই পা কাল। এই সময়ে নুপ, চৌর, শতা ও শুলিজার हो है। এ এবং নানাবিধ মনস্তাপী এবং অরাদি হয়।

মললের দশাতে ৮ মাস ২৬ দিন ৪০ দও শনির বর্দ শার কাল। এইকালে ধননাশ, মনন্তাপ, হৃদয়পীড়া এর্ নানাবিধ হংধ হয়।

শৈক্ষপের দশাতে ১ বংসর ৪ মাস ২৬ দিন ৪০ দা বৃহস্পতির অন্তর্দশার কালা। এই কালে মহয় তীর্থনারা, দ আহ্নপূজা প্রভৃতি সংকার্যাকারী হয়। কিন্তু এই দ্ব রাজভয় হইবার সন্তাবনা।

মঙ্গলের দশাতে বৃহ্তপতির অন্তর্দশার — মহুদা পূশ্ গ্ অরব্দ্রাদি থারা দেবতা ও ব্রাহ্মণের অর্চনা করে এই রাজতুন্য সম্মান প্রাপ্ত হয়।

মক্সলের দশাতে,১০ মাস ২০ দিন রাহর অন্তর্দশার করে। এই সময়ে অস্ত্রভয়, অধি, টোর, শত্রভয় ও বিত্তনাণ এন্। নানা প্রকার অমক্ষল হইয়া থাকে।

মঞ্চলের দশাতে ১ বংসর ৬ মাস ২০ দিন ভুক্রের দ দিশার কাল। এই সময়ে ধননাশ, রোগ, শক্তর নার উপদ্রব ও রাজভয় হইয়া থাকে।

মঙ্গলের দশাতে ৫ মাস ১০ দিন রবির অন্তর্দশার কা এই সময়ে মফুবোর অতুল ঐত্বর্গ, রাজস্থান ত্রীলাচ। পদবৃদ্ধি হয়।

মললের দশাতে ১ বংসর ১ মাস ১০ দিন চল্লোক দিশার কাল। এই কালে নানাপ্রকার সম্পত্তি, স্বথ, ফুলা মণি প্রভৃতি ভূষণ লাভ হয়।

বুধের স্থলদশা ১৭ বৎসর তন্মধ্যে ২ বৎসর ৮ মাস^{ার বি}
২০ দণ্ড তাহার নিজাস্তর্দশার কাল। এইকারে মধ্য ^{ব্}
উপার্জন করে, বুদ্ধিবৃদ্ধি, ধনলান্ত, সৌভাগ্য ও ^{জ্বা}
শীর্ষ্য প্রাপ্ত হয়।

বুধের দশাতে ১ বংসর ৬ মাদ ২৬ দিন ৪০ দও শ্লি ফান্ত দশার কাল। এই দমটে মন্ত্রোর বাত্রেমাণীছা, বছ দিগের সহিত বিবাদ ও বিদেশ গমন প্রভৃতি ফেল ইয়া থাকে।

বুধের দশাতে ২ ৰৎসর ১১ মাস[®] ২৩ দিন ৪০ নও দ স্পতির অন্তর্দশার কাল। এই সমলে মহুষা রোগ ^{হইতে ফি} শক্তভয়, বিনাশ, ধনাগম ও স্থপুত্ত লাভ করে।

বুধের দশাতে ১ বংসর ১০ মাস ২০ দিন বাহন বাইন শার কাল। এইকালে মন্তব্যের অকক্ষাৎ অগ্নিভঃ টেই বন্ধন, বিজনাশ ও মহাক্রেশ ব্য়ঃ। বুধের দশাতে ও বংসর ও মাস ২০ দিন শুক্রের অন্তর্জশার কাল। এইকালে মহুবা ধনাঢা, পুরবান্ ও ধার্ম্মিক হয়।
বুধের দশাতে ১১ মাসু ১০ দিশী রবির অন্তর্জশার কাল;
এইকালে। মহুত্য স্থবর্গ, প্রবাল ও বিপুল যশোলাভ করে
এবং শ্রীমান্ ও প্রধন প্রাপ্ত হয়।

বৃদেব দশাতে ২ বৎসর ৪ মাস ১০ দিন চক্তের অভ্রেদশার কাল। এইকালে মহয়োব শত্রু ও শৃঙ্গিজভ হইতে ভুন্ন উপ-ভিত্তন ও নানাপ্রকার কট হইনা থাকে।

বুণের দশাতে ১ বংসর ৩ নাস ৩ দিন ২০ দণ্ড মঞ্চলের অন্তর্দশান কাল। এইকালে মন্থায়ের শিরোরোগ, হৃদয়পীড়া, দহা ও ভত্কর হইতে ভন্ন এবং অভ্তবা ও পাদে পীড়া হইয়া থাকে।

শনির সুল দশা ভোগের কাল ১০ বংসর। তাথার মধ্যে 
১১ মাস ও দিন ২০ দণ্ড শনির নিজান্তর্দ্ধা। বৈই সময়ে 
মন্থা থলরত্তি অবলম্বন করে এবং স্ত্রী ও পুত্রের নিকট 
নিগ্রহ, অর্থক্ষর, বন্ধবিনাশ, বিদেশগমন ও মিথাপবাদ 
প্রভৃতি প্রাপ্তর্য।

শনির দশাতে ১ বংসর ৯ মাস ৩ দিন ২০ দণ্ড বৃহস্পতির ষম্ভ দশার কাল। এইকালে মহুষা দেবতার প্রতি অফুরক্ত ওশাস্ত প্রকৃতি হইয়া বিবিধ সম্পত্তিলাভ করে এবং তাহার কুনাশ হয়।

শনির দশাতে ১ বংসর ১ মাস ১০ দিন রাত্র অন্তর্দশার গল। এই সময়ে মহুষোর বিদেশগমন, বন্ধুবিধেষ, মিত্রভন্ন ও কিলাৎ অগ্নিচ প্রভৃতি নানাপ্রকার উপদ্রব হইয়া থাকে।

শনিব দশাতে ১ বংসর ১১ মাস ১০ দিন শুক্রের অস্ত-শার কাল; এইকালে মনুষ্টোর বন্ধুসমাগম, ভার্য্যা ও বিত্ত-ভি, অংশস্পত্তি ও সৌভাগ্য বৃদ্ধি হয়।

শনির দশতে ৬ মাস ২০ দিন রবির অবস্তর্দশার কাল। ইকালে মহয়ের ধন পুত্র বিনাশ হইয়া তঃখবুদ্ধি হয় এবং বিন ও বল নষ্ট হয়।

শনির দশাতে ১ বৎসর ৪ মাস ২০ দিন চল্লের অন্তর্জ-র কাল। এইকালে মহুষ্যের বন্ধবিচ্ছেদ, জীবিনাশ, কণহ নানা-প্রকার পীড়া হইয়া থাকে।

শরির দশাতে ৮ মাস ২৬ দিন ৪০ দণ্ড মঙ্গলের অন্ত-শার কাল। এইকালৈ মহুযোর দেশত্যাগ, পীড়া,ও নানা কার ছংথ হইয়া থাকে।

শনির দশাতে ১ বংসর ও মাস ২০ দিন ২০ দও বৃধের বৃদ্দার কাল। এইকালে মহুয় ভাগাবান্ও সম্মানভাজন আ পুত্র-পৌত্র লাভ করে। রহম্পতির স্থল দশার পরিমাণ ১৯ বংসব। ভাহার মধ্যে ত বংসর ৪ মাস ৩ দিন ২০ দণ্ড বহস্পতির নিজাত্তদিশা। এই সমরে মহুদ্যের সংপ্তা, তপস্তা, ত্বথাতি, পৌরুষ, ত্বধ ও গজাবাদি বাহন লাভ হয়।

বৃহস্পতির দশাতে ২ বংসর ১ মান ১০ দিন রাহর আছে-দিশার কাল। এইকালে অকন্মাৎ ভেষ ও রাজপীড়া প্রভৃতি উপদ্রব এবং বন্ধন ও মনস্তাপাদি শারীরিক ক্লেশ হইয়াথাকে।

বৃহস্পতির দশাতে ও বংসর ৮ মাস ১০ দিন প্রক্রের অবস্ত দিশার কাল। এইকালে শক্রভয় ও বন্ধুনাশ হইয়া নানা-প্রকার রোগে এবং স্ত্রীবিরোগ প্রভৃতিতে নানাপ্রকার হংপ্পায়।

বৃহস্পতির দশাতে ১ বংসর ২০ দিন রবির অন্তর্দশার কাল। এইকালে মিত্রশাভ, ধনাগম, উত্তমান্ত্রীলাভ এবং রাজার প্রিয়পাত্র হয়।

রহস্পতির দশাতে ২ বংসর ৭ মাস ২ দিন চক্তের অন্তর্দশার কাল। এই সমরে উত্তমালীলাভ ও শক্তভর হয় এবং সকল প্রকার রোগমুক্ত হইয়া রাজতুলা সন্মান লাভ করে।

বৃহস্পতির দশাতে ১ বংসর ৪ মাস ২৬ দিন ৪০ দ ।
মললের অন্তর্দশার কাল। এইকালে মহয় অতিশয় ক্রোধী,
শক্রনাশক ও হস্তীর ভাষে ভীমদর্শন হয় এবং সৌভাগ্যযুক্ত
হইয়া স্থাপে কাল যাপন করে।

বৃহস্পতির দশাতে ২ বংশর ১১ মাস ২৬ দিন ৪০ দণ্ড বুদের অন্তর্দশার কাস। এই সময়ে মহয় কথন স্থা ও কথন অস্থ হইয়া কথন স্থাও কথন অস্থা ভোগ করে; এই সময়ে শক্ত বৃদ্ধি হয় ও দেবপুদায় অম্রাগ করে।

র্হুস্পতির দৃশাতে ১ বংসর ৯ মাস ৩ দিন ২০ দণ্ড শনির অন্তর্দশার কাল। এইকালে মন্ত্যা বেখা সহবাসে অ্থডোগ করে এবং বিত্তবিহীন হইয়া সর্বদা অধ্য কার্য্যে লিপ্ত হয়।

রাছর স্থলদশা ১২ বংসর। তাহার মধ্যে রাছর নিজের ১ বংসর ৪ মাস ভোগ কাল। এই সমুয়ে জীবিযোগ, রুজুনাশ, শত্তভর ও অর্থনাশ হইয়া পাকে।

রাত্র দশাতে ২ বংসর ৪ মাস শুক্রের অফুর্দশার কাল। এই সমরে ব্রাহ্মণের সহিত মিল্লা, ক্রীলাভ, বিত্তস্ক্র ও বন্ধগণের সহিত সেহবৃদ্ধি হইরা পাকে।

রাত্র দশাতে ৮ মাস রবির অন্তর্দশার কাল। এই কালে শক্তভয়, ভয়ানক রোগ, অর্থনাশ, রাজভয়, অভিশয় ব্যথা ও শিরোরোগাদি নানাপ্রকার কট উপস্থিত হয়।

রাছর দশাতে > বংসর ৮ মাস চক্রের অন্তর্দশার কাল।

এই সময়ে স্ত্রীবিনাশ, ফলহ, ক্লেশ, পাপে অমুরাগ, কুভোজন, বন্ধুবিচেছন ও রিপুভয় উপস্থিত হইয়া থাকে।

রাহর দশতে ১০ মাস ২০ দিন মঙ্গলের অর্ন্ত্র্পার কাল। এইকালে মন্থ্রের বিষভয়, অন্তন্ত্র, অধিভিন্ন, চৌরভন্ন এবং নানাবিধ ক্লেশ হয়।

রাছর দশাতে ১ বংসর ১০ মাস ২০ দিন বৃধের অস্ত-র্দশার কাল। এই কালে মৃত্যোর কফ ও বাতঘটিত রোগ এবং ভয়াবহ শিরঃপীড়া হইয়া থাকে।

রালর দশাতে ১ বৎসর ১১ মাস ১০ দিন শনির অন্তর্জ-শার কাল। এইকালে মহয়ে বেশুসেহবাসে নিযুক্ত থাকিয়া বিত্বিহীন ও ধর্মভ্রষ্ট হইয়া থাকে।

রাহর দশতে ২ বংসর ১ মাস ১০ দিন র্হস্পতির অফুর্দশার কাল। এইকালে মতুষা রোগমুক্ত ও শক্রভয়-বিহীন হইয়া দেবতা ও আহ্মণপূজাতে তৎপর থাকে এবং নানাপ্রকার ধর্ম উপার্জন করে।

শুক্রের সুণদশা ২১ বৎসর। ভাষার মধ্যে ৪ বৎসর ১ মাস শুক্রের নিজ অফুর্দশার কাল; এই সমর্যে স্থনীতি শিক্ষা করিয়া কীর্তিলাভূ করে এবং স্ত্রীধারা স্থব্দি ও ্র অর্থলাভ হইয়াথাকে।

শুক্রের দশাতে ১ বংসর ২ মাস রবির অন্তর্দশার কাল; এইকালে মহুধোর চকুরোগ, বন্ধন, মহাভয় ও সকল বিষয়ে অম্পুল হইয়া থাকে।

ভুক্রের দশতে ২ বংসর ১১ মাস চচ্ছের অন্তর্দশার কাল। এইকালে মহুষোর নথে, দত্তে ও মন্তকে পীড়া হয় এবং বর্দ্ জনের সহিত সর্বাদা বিবাদ হইয়া থাকে।

শুক্তের দশাতে ১ বংগর ৬ মাস্ত্র দিন ম**দলের অন্ত** দদার কাল। এইকালে মহুষোর উত্তমা স্ত্রীলাভূ ও ভূমি পাত হইয়া থাকে এবং শরীরের বীর্যাহানি হয়।

শুক্রের দশাতে ৩ বংসর ৩ মাস ২০ দিন বুধের অন্তঃ দশা হয়। এই দশাতে মহ্যা উত্তমা স্ত্রীলাভ, ধনধান্তাদি সন্মান, শরীরের পুঠিও স্থরণশক্তি বৃদ্ধি হয়।

শুক্রের দশাতে ১ বংসর ১১ মাস ১০ দিন শনির অন্ত-দশার কার্গ। এই সময় মন্থ্য উত্তম নগরে, অতিমনোহর গৃহে, স্থলারী স্ত্রীর সৃহিত ক্রীড়াকোত্ক প্রভৃতি আমোদ করে এবং শক্রনাশ ও মিত্রাভ হয়।

শুক্রের দশাতে ০ বংসর ৮ মাস ২০ দিন বৃহস্পতির অন্তর্দশার কাল। এই দশাতে মনুষ্য উত্তমান্ত্রী ও ধনধান্ত লাভ করে এবং দর্মদা বন্ধগণে বেটিত হইয়া স্থাধ কাল-বাপন করে। ভাজের দশাতে ২ বৎসর ৪ মাস রাছর অন্তর্দশার কার এইকালে বিদেশ গমন, তঃথ, অন্তঃজাতির সহিত স্কর ও পাপকার্যো অফুরাগার্হয়।

) এই সকল গ্রহগণের অন্তর্দশাম্সারে স্থলাফ্র হিছা থাকে এবং দশাকালীন গ্রহগণের বলাবলে है। ফলাফল নির্ভর করে।

ছরগোরীদশা—হরগোরীদশা গণনায় স্থা, চন্ত্র, ফারাহ, বৃহস্পতি, শনি, বৃধ, কেতু ও গুক্র এই প্রদানী প্রহের গণনা ক্রিতে হয়। এই দশাতে সমস্ত গ্রেক্টেল কালের সমষ্টি ১২০ বংসর। এই দশী পার করিতে হইলে কুর্ত্তিকা হইতে পূর্বাফস্ত্রনী পর্যায় নয় ফার্ স্থাাদি নবগ্রহের দশার আরম্ভ হয়, তৎপরে উর্বাহ্টি হইতে নয় নক্ত্রে এক এক প্রহের দশার আরম্ভ হইয়া থাকে। গুরুপক্ষে জাত্রাক্লি স্থান্ধে এইরূপে ক্তিকানক্ষ্রে গণনা করিয়া দশার মার্ নির্ণয় করিবে। ক্ষম্পক্ষে জাত্রাক্তির স্থানে মধ্য হইতে গণনা করিয়া কোন নক্ষত্রে জন্ম হইতে গণনা করিয়া কোন নক্ষত্র

হরগোরীদশাতে ৬ বংসর রবির দশা, তংপরে ছে
১০ বংসর, মঙ্গলের ৭ বংসর, রাত্র ১৮ বংসর, বৃহল্
১৯ বংসর, শনির ১৭ বংসর বুবের ১৬ বংসর, কেয়
বংসর ও শুক্তের ২০ বংসর দশাভোগ হয়। রেয়
দশাতে যে গ্রহের অন্তর্দশা নির্ণয় করিতে হইবে, এয়
গ্রহের দশাবর্ব সংখ্যাকে প্রস্পর শুল করিয়া ভগদন্দেশ
দ্য়া ভাগ দিলে যত ভাগফল হইবে, তত্মিস এবংক
শিস্তাঙ্গকে ৩০ দিয়া শুল করিয়া দশ দিয়া ভাগ করিয়ে
ভাগফল হইবে, তত্দিন অন্তর্দশা ভোগক কাল বানির
হইবে, এইরূপে এই দশার অন্তর্দশা নিরূপণ করিরে ধরির

বিংশোন্তরী দশা—এই বিংশোন্তরী দশাতে প্রথম স্থা,
তৎপরে চন্দ্র, মঙ্গল, রাহ্, বৃহস্পতি, শনি, বৃধ, কেতৃ ৪ গ
এইরপ ক্রমে পর পরবর্তী প্রহের পরপর দশা ভাগ বা
এই বিংশোন্তরী দশা মতে রবির ৬ বংসর, চুল্পের ১০ বংসর,
মঙ্গলের ৭ বংসর, রাহ্র ১৮ বংসর, বৃহস্পতির ১৬ বংসর
ব্ধের ১৭ বংসর, কেতুর ৭ বংসর, শুক্রের ২০ বংসর
ভোগের কাল। এই সকল প্রহের দশাকালের স্থা
বংসর, যাহার রাশিতে সমস্ত প্রস্কর দশাভোগ হা, বিং
বাক্তি ১২০ বংসর জীবিত থাকে

এই দশাতে ও ক্বন্তিকা নক্ষ্ম হইতে দশার ^{আরু ইই} থাকে, তন্মধ্যে বিশেষ এই, ব ব্যক্তির কিংবা উত্তরাবাচা নক্ষত্রে জন্ম হর, তাহার প্রথমে রবির দশা। এইরূপে রোহিণী, হস্তা বা প্রবণা নক্ষত্রে জন্ম হইলে চল্লের দশা। বৃগশিরা, চিত্রা ও ধনিষ্ঠা নক্ষত্রে মললের, আদ্রা, স্বাতি বা শতন্তিবা নক্ষত্রে রাহর, পুনর্জন্ম, বিশাথা বা পূর্কভাত্রপদ নক্ষত্রে রহস্পতির, পুষাা, অনুরাধা ও উত্তর-ভাত্রপদ নক্ষত্রে শনির, অংশ্রমা, জ্যেষ্ঠা বা রেবতী নক্ষত্রে ও মূলা বা অথিনী নক্ষত্রে কেতৃর, পূর্কক্ষ্তনী, পূর্জাবাঢ়া বা পূর্কভাত্রপদে বৃধের এবং মদা বা ভরণী নক্ষত্রে জন্ম হইলে ভক্রের দশা প্রথমে হইবে। তৎপরে উপরিলিখিত ক্রমানুস্বরে পর পরবর্ত্তী গ্রহের দশা পরে পরে হইবে।

বিংশোত্তরী দশাতে এইরপে অন্তর্জশার কাল নিক্সপণ করিতে হয়। বে প্রহের দশাতে যে প্রহের অন্তর্জদা ছির করিতে হইবে, সেই ছই গ্রহের দশাভোগের বর্ষসংখ্যাকে প্রক্ষর গুণ করিয়া ১২০ দিয়া ভাগ করিলে যত ভাগফল লব্ধ হইবে, তাহাই অন্তর্জশার বর্ষ। অবশিষ্ট অন্তর্কে ১২ দিয়া গুণ করিয়া ঐ গুণ ফলুকে ১২০ দিয়া ভাগ করিয়া ভাগফল খাহা হইবে, তাহা মাস, এইরপে দণ্ডাদিও স্থির করিতে হইবে।

আজাদি অষ্টোন্তরী দশা—অষ্টোন্তরীদশা গণনার প্রণালী প্রায় প্রেকে নাক্ষত্রিকাদশার ক্যায়, ইহান্তে এই মাত্র প্রভেদ, বে নাক্ষত্রিকাদশান্তে ক্ষত্তিকা হইতে আরম্ভ করিয়া শ্যাদি গ্রহের দশা নিশ্য করিতে হয়। এই দশাতে আজা নক্ষত্র হইতে আরম্ভ করিয়া দশা স্থির করিতে হইতে । যথা—

অ	াজাদি অষ্টোত্তরী দশা।	
জ্বান্ <b>ক্</b> ত্ৰ	<b>म</b> भ1	দশভোগ্য ক <b>লে</b>
আদ্ৰা	}	•
<b>প्</b> नकाश्च	, } রবির	७ ४९मत्र ।
পুষা		
অপ্লেষা	j	•
মঘা	)	•
পূর্বাফজ্ঞনী	<b>চল্ডের</b>	১€ व९मत्र।
<b>উ</b> ड ऱ्यू <b>स</b> नी	• ).	•
• হস্তা	}	•
চিত্ৰা.	पुत्र (गंद	৮ বৎসর।
শাতী •		•
বিশাখা •	} .	-
অহুরাধা	)	
<b>জ্যে</b> ষ্ঠা	रू वृद्धन्न	১৭ ৰৎসর।
মূলা	<b>)</b> , "	

পূৰ্ব্বাধাঢ়া উত্তরাধাঢ়া অভিনিৎ ' • শ্ৰবণা •	} } শৰির }	>• व९मत् ।
ধ-নিষ্ঠা শতভিবা পুৰ্বভাজপদ	্বুহ <b>ু</b> শতির .	<b>२२ व</b> ९मद्र ।
উত্তরভাক্রপদ রেবতী অধিনী ভরণী	} } बाह्ब	• >२ वश्त्रव ।
ক্কব্যিকা রোহিণী মৃগশিরা	<b>ওরে</b> র	२> वदमन्न ।

এইরপে অস্টোত্তরীদশা হির করা ঘাইবে, অন্তর প্রতান্ত-র্দশার কাল নাক্ষত্রিকীদশার স্থীর। কেবল স্থানে স্থানে ফলাফলের বিভিন্নতা আছে।

জিংশোন্তরীদশা গণনা করিতে হইলে এইরূপে করিতে হয়। অস্টোন্তরী নাক্ষজিকী দশার স্থান পর্ম নক্ষ নাজ্য গোলের প্রথমতঃ দশা নিরূপণ করিতে হইবে। কেবল দশাভোগের কালের বিভিন্নতা আছে, নাক্ষজিকীদশাতে রবির ৬ বংসর, চল্লের ১৫ বংসর ইত্যাদি। এই দশাতে যে কর্মটী নক্ষত্রে জ্য় হইলে যে গ্রহের দশা হইবে, সেই গ্রহের দশাভোগের কালকে সেই ক্রমটী নক্ষত্রহার। ভাগ কারণে যত বংসর যত মাস হইবে, তত্ত বংসর তত মাস সেই গ্রহের দশাভোগের কাল কানিতে হইবে।

যথা রবির ২ ৰংসর, চক্তের ৩ বংসর ৯ মাস, মঙ্গণের ২ বংসর ৮ মাস, বুধের ৫ বংসর ৩ মাস, শনির ৩ বংসর ৪ মাস, বৃহস্পতির ৪ বংসর ৯ ফাস, রাজ্র ৪ বংসর, শুক্রের ৫ বংসর ৩ মাস ভোগ কাশ।

এই সকল দশ্বার সমষ্টি ৩০,বৎসর। স্থাতরাং ৩০ বৎসরে সমস্ত এছের দশাভোগ শেষ হয়। দশাভোগ শেষ হইলো পুনর্কারি সেই সেই এছের দশাভোগ হইয়া থাকে।

তিংশোন্তরী দশাফল— বাহার যে নক্ষতে জন্ম হইবে, সেই নক্ষতাবধি দশাকে জন্মদশা, জন্মনক্ষতা হইতে দশম নক্ষত্তের দশাকে কর্মদশা ও জন্মনক্ষতা হইতে যোড়শ নক্ষ-তের দশাকে আধান দশা বলে। যাহার বে বংগরে জন্ম দশার রবি বা বৃহস্পতি, কর্ম্ম দশার রাহ্ বা রবি ও আধান দশার বৃধ বা শনি অধিপতি হর, সেই বংগর ভাহার মৃত্যু হইবে।

কোন বাজির কৃত্তিকা নক্ষত্রে জন্ম হইলে প্রথম ২ বংসর রবির দশা, তৎপরে ৫ বৎসর ৯ মাস পর্যাস্ত চল্রের দশা, তৎপরে ৮ বৎসর ৫ মাস পর্যান্ত মঞ্চলের দশা, তৎপরে ১২ বংসব ৮ মাস বধের দশা, ভাছার পর ১৬ বংসর পর্যান্ত শনির ममा, **उ**९भरत २• व९मत २ माम भर्यास तूश्म्भाज्य म्मा, তৎপরে ২৪ বৎসর ৯ মাস পর্যান্ত রাজ্র দশা, তংপরে ৩٠ বংসর পর্যান্ত শুক্রের দশা হইবে। এইরূপে ৩০ বংসর পর্যান্ত গ্রহণণ দশাভোগ করিবে, তৎপরে অর্থাৎ ৩ বংসর পরে পুনর্বার ঐ সকল গ্রহের দশাভোগ হইবে।

যাহার যে জন্মনক্ষত্র হইবে, তিনি তদ্মুসারে এইরূপ দশার কাস ও গ্রহনির্ণয় করিয়া লইবেন। পরে ঐ ব্যক্তির কর্মনক্ষত্রের দুখা গণনা করিতে হুইবে। ষ্থা--্যাছার ক্রুত্তিকা নক্ষে লক্ষ হইয়াছে, ভাছারকেশ্মনক্ষর ১২ উত্তরফল্পনী, প্রথমে মঙ্গলের দশা এবং দশাভোগের কাল ২ বৎসর ৮ মাস. তৎপরে ৪ বৎসর ৩ মাস পর্যান্ত বৃধ্বের দশা বৎসর যোগ করিলে েও বৎসর ১১ মাস হয়। তংপরে ১০ বংসর ৩ মাস শনির দশা, তৎপরে ১৫ বৎসর পর্যান্ত বৃহস্পতির দশা। ভাহার পর ১৫ বংসর পর্যান্ত রাভ্র দশা, তৎপরে ১৯ বংসর পর্যান্ত রাভ্র দশা, তৎপরে ২৪ বৎসর ৩ মাস শুক্তের দশা, তৎপরে ২৬ বংসর ও মাস পর্যান্ত রবির দশা, তৎপরে ৩০ বংসর পর্যান্ত हिट्स त मर्भा।

পরে ঐ বাক্তির আধান অর্থাৎ যোডশনক্ষতের দশা গণনা করিতে হটবে।

কুত্তিকানক্ষত্তে জাত্ব্যক্তির জোষ্ঠানক্ষত্ত আধান নক্ষত্র, এই নক্ষত্তে প্রথমে ৩ বংসর ৪ মাস শ্নির দৃশা, তৎ-পরে ৮ বৎসর ১ মাস পর্যান্ত বুহস্পতির দশাভোগের কাল। তৎপরে ১২ বৎসর ১ মাদ পর্যান্ত রাজর দুশা, ভাহার পর ১৭ বংগর '৪ মাস প্র্যাস্ত শুক্তের দুখা, তংগরৈ ১৯ বংগর ৪ মাস পর্যান্ত রবির দশাং তৎপরে ২৩ বৎসর ১ মাস পর্যান্ত চল্লের দশা, তাহার পর ২৫ বৎসর ৯ মাদ পর্যাস্ত মঙ্গলের দশা, তৎপরে ৩ বৎসর প্রযান্ত বুধের দশা ভোগ হইবে।

এইরপে প্রতিনক্ষত্তে জাতব্যক্তির জন্ম, কর্ম ও আধান নক্ষত্রের দশা গণনা করিয়া দেখিবে। যে কোর্ন বাজির ষে বর্ষে জন্মনক্ষত্রের দশাধিপতি রাভ কিংবা রবি ও আধান-নক্ষের দশাধিপতি বুধ বা খনি হইবে, ভাছা হইলে সেই ব্যক্তির দেই বৎসরে এই গণনাতুদারে মহৎ রিষ্ট জানিতে হইবে। এই দশা গণনায় অভিজ্ঞিং নক্ষয়েরও দশা গণনা হয়।

**এই जिः (माउदी प्रमात शननामि महत्य कतिवात वश्च** 

একটা চক্র অহিত করা গেল, ইহা দেখিয়া অক্তান্ত নক্রে গণনা করিলে কাছার কভ বয়সে কোন গ্রহের দুখা इहेर

						•			<b>ত</b> া
•			四四日						হাজা [:] }
	ঘাহার ক্তিকানকতে জনম ছইবে তাহার কিংশোক্রী দশা গণনার দূটাক	নক্তে জ্য	हहेत्व जी	হার জিংশে	াভেয়ী দশা	গণনার দু	\$ 1 <b>3</b> 1		ৰা যাই
(समानकता तना	রবি	<u>100</u>	हि इस इस	<u>ज</u> स	#	(0) (0)	ক্ষ	Fg ₽	. <b>4</b> )
(० कृष्डिका।	A A	<u>е</u> 9	<u>~</u> <del>7</del>	9 - •	∞ - 9	æ ,		9 - •	١;
किष्मिक्द समी	ं सं स	ক	<b>1</b>	100 100 100 100 100 100 100 100 100 100	রাজ	<b>(</b> 5)	ন্নবি	<b>P.3</b>	•
( १२१ डेख्नक्ष्मी।	<u>~</u>	9 - -	œ - 9	π — ω	<b>6</b>	9	n'	^ - 9	•
(कांशाननक्षत तभा	* (I	ior Ior	<u>18</u> 19,	, <b>₽</b>	প্র	<b>15</b>	তা কা ম	जें जे	
( se caugh !	80 - 9'	љ — Ф	<b>œ</b>	9	~	R - 9	» ·	9	••

নিভাদশা গণনা—যে দিনেতে নিভাদশা গণনা ক্যিক সেই দিনের তিথি, বার ও নক্ষত্র ইহাদিগের আ্ফু দশা গণনা করিবে, তাহার ধানা নক্ষতাঙ্ক, এ धके व योग कतिया । निया जांग कतिरव। করিলে যাহা অবশিষ্ঠ থাকিতে, ভাছা দারা ফলু অবশিষ্ঠ > थ्रकिटन त्महे मित्न त्रवित्र मुना, २ थ मभा, ७ थाकित्न मझत्नत मभा, 8 थाकित्न वृद्ध_न শনির, ৬ থাকিলে বুহস্পতির, ৭ থাকিলে রাল থাকিলে শুক্রের দশা হইবে। এই দশা প্রতিদিন প্রতিদিনের শুভাশুভ নির্ণয় করিবে।

. p.f. 88

c₹41 V.

वर्ष क्रिए।

fa:11 5131

e effett.

1. v 1 1.

शना क्षी

উক্ত রূপ গণনার যে দিন স্থেরির দশা হইবে, সেই দিনে বিত্তনাশ এবং চজের দশার ধর্ম ও অর্থলান্ত, মদলের দশার অস্ত্রাঘাত, বুধের দশার সম্পাদুলান্ত, শনির দশার মন্দবৃদ্ধি, বৃহস্পতির দশার সম্পত্তি, রাহর দশার বন্ধন ও শুক্তের দশার সর্ব্ধ প্রকাবে স্থাব্য। গর্গ প্রভৃতি এই দশার ফল এইরূপ নিরূপণ করিয়াছেন।

প্রকারান্তরে দিনদশা গণনা।---

জন্মনক্ষত্রক চারি গুণ করিয়া ভাহাতে যে দিনে দশা গল্না করিবে, সেই দিনের ^{*}তিথি গু বারাক্ষ যোগ করিবে।

পরে ঐ যুক্তাককে ৯ দিয়া ভাগ করিলে অবশিষ্ট স্লব্ধ দারা দিনদশা স্থির করিতে হইবে। এক অবশিষ্ট থাকিলে রবি, ২ অবশিষ্ট থাকিলে চক্র, ৩ থাকিলে মলল, ৪ পাকিলে রাহ, ৫ থাকিলে বুহস্পতি, ৬ থাকিলে শনি, ৭ ৰাকিলে বুধ, ৮ থাকিলে কেতৃ, ১ বা শৃন্ত থাকিলে শুক্র দিন-দশার অধিপ্রতি হইবে। এইরূপে প্রতি দিনদশা গণনা করিয়া প্রতিদিনের শুভাশুভ ফল নির্ণয় করিবে। যে দিনে व्यवित्र मना रहेरत, त्मरे मित्न त्नाक व्यथवा क्रम रहेरत, এह রূপ চল্রের দশাতে শৌর্যা ও মনোবাঞ্চা সিদ্ধি, মঙ্গলের দশাতে অন্ত্র ও অগ্নিভয়, রাজ্র দশাতে অর্থক্ষয়, বুহস্পতির দশাতে জীলাভ, শনির দশাতে ধনক্ষর, বুধের দশাতে পুণ্য-কার্য্য, কেতৃর দশাতে কার্যানাশ, শুক্রের দশাতে লাভ ও পুণ্য সঞ্য হইয়া থাকে। যে ভিথিতে দশা গণনা করিবে, যতকণ त्मेर जिथि थाकित्व, जज्रक्न तम ममाञ्चाग्री कन हरेत्व। जिथि পরিতর্রগে আর দেইরূপ ফল হইবে না। তথন পুনর্কার গণনা ক্রিয়া ফল দেখিতে হইবে।

যোগিনী দশা— স্বীয় জন্মনক্ষত্তে তিন যোগ করিয়া ৮
দিয়া ভাগ দিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, দেই অজাত্দারে
যোগিনী দশা জ্ঞাত হইবে। > অবশিষ্ট থাকিলে মঙ্গলার, ২
থাকিলে পিঞ্গলার, ৩ থাকিলে ধ্যার, ৪ থাকিলে ভায়ুরীর, ৫
মাকিলে ভদ্রিকার, ৬ থাকিলে উন্ধার, ৭ থাকিলে সিদ্ধার,
ক্ষিপাকিলে শক্টার দশীয় জন্ম জানিবে।

মলনরি দশাভোগের কাল ১ বংসর, পিঙ্গলার ২ বংসর, বির ৩ বংসর, ভামরীর ৫ বংসর, ভট্তিকার ৫ বংসর, বির ৬ বংসর, সিদ্ধার ৭ বংসর এবং শঙ্কটার ৮ বংসর বা থাকে।

ব্যনক্তাহসারে যোগিনী দশা নিরপণ—ক্ষান্তা, চিত্রা ও বানক্তে জন্ম হইলে প্রথমে মক্লার দশা; প্নর্কস্থ, বিধানিকতে জন্ম হইলে পিক্লার; প্রা, বিশাধা বিভিয়ানকতে ম্ক্লার; অধিনী, অলেষা, অম্রাধা ও প্রভাজপদনক্ষত্তে ত্রামরীর; ভরণী, মহা, জোঠা ও উত্তরভাজপদ নক্ষত্তে ভাজিকার; ক্কজিকা, প্রক্ষন্ত্রনী, মূলা ও
রেবতীনক্ষ্তে উন্ধার; রোহিণী, উত্তর্মন্ত্রনী ও প্র্রায়াচা
নক্ষ্তে সিন্ধার; মৃগশিরা, হস্তা ও উত্তরায়াচা নক্ষত্তে জন্ম
হইলে প্রথমে শক্টা যোগিনীর দশা জানিবে। প্রথমে জন্ম
নক্ষত্রাহ্যার দশা নির্ণয় করিয়া জন্মনক্ষত্তের মানদণ্ড হির
করিবে। পরে ঐ নক্ষত্রের যত দণ্ড ভূক হইয়াছে এবং যত
দণ্ড অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা জানিয়া ভদ্মারা অমুপাত করিয়া ও
ভাগের কাল নির্ণয় করিবে। মঙ্গলায়ার্মী সর্ব্বদা মন্ত্রের
মঙ্গল করেন, তাহার দশাতে প্রণম্ম, যশলাভ এবং সকল
বিবরেই শুভ হইয়া থাকেশ।

পিঙ্গলাবোগিনী সর্বাদ। মন্ত্র্যার নানাপ্রকার অভত বৃদ্ধি করেন, ইহার দশাতে মন্ত্র্যের হৃঃথ ও ধনাদি নাশ হইরা থাকে।

সর্বকল্যাণকারিণী ধন্তাবোগিনীর দশতে সুধ, ছু:ধ শ্রীর্দ্ধি, প্রণয়, সম্মান ও ধনধান্তাদি লাভ হইয়া থাকে।

আমরীবোগিনী সর্কাণা মহুধাকে নানাবিধ ছ:থ প্রাণান করেন, তাহার দশাতে বিধেশ গমন, ছ:থ, কা্র্যানাশ, মন:-পীড়া প্রভৃতি নানাপ্রকার ক্লেশ হয়।

ভ क्रिकारमाणि नोत्र मनाटि स्वय, नास्त, धर्मारकार्य, खो, পুর ও সম্বোষ হয়।

উকাথোগিনী সকল সময় মহুযোর শোকর্ছি করেন, ভাহার দশাতে নানাবিধ রোগ, ছঃখ, ভয়, শোক, ধননাশ, শফ্ভয় ও মনস্তাপ হইয়া থাকে।

সিদ্ধার্থে।গিনীর দশাতে ধন, ধান্তা, যশ, ধর্মা, সুথ, রাজ-পূজাও লোকের নিকট সমাদর লাভ হয় এবং স্কল কার্য্য দিদ্ধি হইয়>থাকে।

শঙ্কটাবোগিনীর নশাতে জীবন সংশয় হয়, যদিও জীবন থাকে, তাহা হইলে সর্বাদা রোগ, শোক, মনঃপীড়া ও নানা-প্রকার শঙ্কট উপদ্বিত হয়।

যোগিভাত্ত দিশা— যাহার যত বর্ষ স্থল দশা হই গৈ, তত পরিমিত আহকে সেই অকলারা গুল করিয়া ,গুলকলকে ৩৬ দিয়া
ভাগ করিলে যত ভাগতল হয়, সেই পুরিমাণ বৎসরাদি সেই
সেই যোগিনীর অন্তর্দশা-কাল্ট জানিবে। যেঁ সকল বোগিনী
ভাততল দেয়, অন্তর্দশার ভাহারাও ভাততল দিয়া থাকে।

লাগ্রিক দশা—দশাজ্ঞান হারা সকল প্রাণীর শুভাশুত ফলের সময় নির্ণয় হইয়া থাকে। এই জন্ত দশা নির্ণয় করা আবক্তক। আযুদ্ধার গণনাপ্রণালীতে গণনা করিয়া যে এছের ষত বর্ষাদি নির্ণীত হইবে সেই গ্রহের ডত বর্ষাদি দশাকাল জ্ঞানিবে। গ্রহণণ অবস্থাস্থসারে স্থীয় স্থীয় দশাকালে শুভা-শুভ ফল প্রদান করেন। লগ্ন, রবি ও চক্স এই ভিনের মধ্যে যে বলবান্ হইবে, ভাহার দশা অগ্রে হইবে। তংপরে প্রথমতঃ যাহার দশা হইবে, ভাহার কেক্সস্থানে যে গ্রহ থাকিবে, ভাহার দশা জানিবে।

কেন্দ্রখানে ছই তিন' এই থাকিলে তাহাদের মধ্যে যে এহ বলবানু তাহারই দশা অথ্যে হইয়া ক্রমশ: বলবানের দশা হইবে।

প্রথম যাহার দশা হইবে, তাহার কেন্দ্রখনে কোন গ্রহ না থাকিকে কিংবা কেন্দ্রখনত্ব দশাভোগের পরে পণফরে অর্থাৎ বিতীয়, পঞ্চম, অষ্টম ও একাদশ স্থানে যে গ্রহ থাকিবে, তাহার দশা জানিবে। পণ্ফর গৃহে ছই তিন গ্রহ থাকিলে অতো বলবান এহের দশভোগ হয়, তাহার পর বলহীনের দশাভোগ হইয়া থাকে। এক্দা ছুই তিন গ্রহের বল সমান . इहेरन रा গ্রহের প্রদক্ত আয়ুর সংখ্যা অধিক হইবে, অগ্রে তাহার দশা হইবে। তৎপরে ক্রমশ: গ্রহপ্রান্ত আয়ুর সংখ্যাধিক্য অনুসারে দশার পূর্ব্ববর্তিত্ব জানিবে। ছই তিন গ্রহের বল ও আয়ুর সংখ্যা সমান হইলে যে গ্রহের প্রদীত্ত আয়ুর সংখ্যা অধিক হইবে, অগ্রে তাহার দশা হইবে, তংপরে ক্রমশঃ গ্রহপ্রনত আয়ুর সংখ্যার আধিক্য অফুসারে দশার পূর্ববর্ত্তিজ জানিবে। ছই তিন গ্রহের বল ও আয়ুর সংখ্যা সমান হইলে যে গ্রছ পূর্বের উদিত হইবে, ভাহারই দশা পূর্বে জানিবে। এইরূপে পর পর উদিত গ্রহের দশা পর পর হইবে।

গ্রহণণ অক্ষেত্রে বা অহোরাদিতে কিংবা মিত্রক্ষেত্রে বা মিত্রহোরাদিতে থাকিলে দশাফল শুভ জানিবে। অক্ষেত্র হোরাদিন্তিও ও মিত্রহোরাদি স্থিত গ্রহণণের নীচ হইতে উচ্চাভিমুখে গমনকালে তাহাদের দশাফল অতি শুভ জানিবে।

 নিস্পিকী দশা—বৃহজ্জাতকে নৈস্পিকী দশা এইরূপ লিখিত আছে—চল্রের ১ বংসর, মঙ্গুলের ২ বংসর, বুধের ১ বংসর, 'শুক্রের ২ বংসর, বুহস্পভির ১৮ বংসর, রবির ২ বংসর ও শুনির ৫০ বংসর নৈস্পিকী দশা। স্বীয় স্বায় দশাকালে গ্রহ্গণ শুভ হইলে দশাফল শুভ এবং গ্রহণণ অন্ত ভ হইলে দশাফল শুভ এবং গ্রহণণ অন্ত ভ হইবে।

গ্রহদশার অন্তে লগের দশা।—যবনাচার্য্যের মতে লগদশাতে মকুষ্যের শুভদদল হয়। জ্যোতির্বিদ্বলেন, লগ্গদশায় অশুভ ফল হয়। লগ, চক্র ও স্ব্য এই তিন্টা যদি পূর্ণ বলবান্ হয়, তাহা হইলে সত্যাচার্য মতে প্রথমে লগ্গদশা হইবে। আর সমবলী না হইলে তিনের মধ্যে ধে বলবান্ হইবে, তাহার দশা প্রথমে

कानित्व। ममाधिशिक नीठ द्वार मळग्रे हिक्स के बाहित निहान के कि का का कि का का कि का

রবির দৃশাকালে মহুষ্য নথ, দস্ত, চর্ম, স্বর্ণ, কুরুষ্ণ, পথ ও রাজা এই সকল ছারা ধনলাভ করে এবং তের, ধৈর্য্য, উত্তম, কীর্ত্তি ও প্রতাপ বৃদ্ধি হয়। ভার্য্যা, পূত্র, ধন, অস্ত্র, অগ্রিও রাজা এই সকল হইতে আপদ হইয়া থাকে এবং পাপকর্মে অনুরাগ, স্বীয় ভৃত্যের সহিত কলহ, হ্লয় ও ক্রোড়স্থানে পীড়া হয়।

চক্ষের দশাকালে মহুষ্য মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ দ্বারাধননাচ করে; নিজা, আলস্থ ও মূহতা বৃদ্ধি হয়; ব্রাহ্মণের প্রতি ভক্তি জন্মে। কীর্ত্তি বৃদ্ধি হয়, অর্থোপার্জ্ঞন ও অর্থব্যয় চ্ইয়া থাকে এবং আত্মীয়ের সহিত শক্রতা হয়।

মঞ্লের দশাতে মন্ধ্য শক্রনমন, রাজা, ভাতা, মহী ।
উণাবিশিপ্ত পশু এই সকল হইতে ধন প্রাপ্ত হয়। মান গ্রহ শুত হইলে এই সকল ফল হয়, অশুভ হুইলে পুত্র, মির, স্ত্রী ও ভাতা ইহাদিগের সহিত শক্তরা এবং প্রিড ও শুরু ইহাদের সহিত অপ্রণয় জ্বান্ম। পরস্ত্রীলোভ, প্রাণি রাদি জনিত পিপাসা, রুধিরভাবি, জ্বান্ত পিত্রিকার প্রভৃতি রোগ, পাপকার্যো আসক্ত ব্যক্তিদিগের সহিত প্রাণ, অধর্মে প্রবৃত্তি ও উগ্রস্থভাব হয়।

বুধের দশার বুধ গ্রহ শুভ হইলে সৌথা, দৌত্যকার্যা বানা মিত্র, শুরু ও গ্রাহ্মণের নিকট ধনলাভ 'এবং পৃত্তির প্রশংসা ও কীর্ত্তিভাজন, কাংস, সুক্রি, অব, মুরিনী, সৌভাগ্য ও স্থুখ লাভ করে। বুধগ্রহ মুগুড 'হইলে মর্গ উপহাস, পরসেবা, পরিশ্রম, বন্ধন, শাক ও পীড়াগ্রন্ত হা।

বৃহস্পতির দশাকালে—বৃহস্পৃতিগ্রহ শুভ হইলে মার্গ বিভাদি গুণ, সম্মান, প্রাহ্ভাব, ক্রি, কান্তি, প্রভাণ, মার্গ ও উন্তমাদি দারা ধনলাভ; সুর্ব, অম্ব, প্র, হর্গী বল্ল লাভ এবং গুণজ্ঞ রাজাম সহিত প্রণয় ও গার্গ

্মেছের পাত্র হয়। বৃহস্পতি অণ্ডত হইলে সুদ্মবস্তুর অনুসন্ধানে পরিশ্রম, কর্ণপীড়া ওুঅধার্মিকের সহিত শক্তা 🗝 নো। শুক্রের দশতে শুক্রশুভ হ 🚀 লে মহুয়োর গীতাহুরাগ, হর্ষ, प्रशिक्त जैवा, अज्ञ, भानीय, वज्र, ज्ञी, त्रज्ञ, भत्रीत्रकाश्चि, पाछि-नवित ज्वा, स्टान, व्यिष्ठरण्ड । वसू अहे मकरनत तृक्षि इस এবং ক্রম্বিক্রমে কৌশল ও ক্র্যিকার্য্য ধারা ধনলাভ হয়। ভুকু অণ্ডভ হইলে রাজা, ব্যাধ ও অধার্শ্বিক ইহাদের সহিত শক্রতা এবং প্রিয় ব্যক্তির বিনাশে শোক্প্রাপ্তি इब ज्यानिवामिक यनि खँड हहेरैन सब्द्य शक्त छ हु है, পকী ও বৃদ্ধান্ত্ৰী লাভ এবং গ্ৰাম, নগৰ ও পুৰী অধিকাৰ করিয়া সন্মান লাভ করে। "শনির দশায় শনি অভভ **হ**ইলে শ্লেমা, বায়ুকোপ ও মোহ প্রভৃতি বিপদ্হয়, তস্ত্রা, निमा, चानछ ६ পরিশ্রমাদি বারা ফ্লেশ ও ভ্তা, সন্তান, স্তী, ইহাদের নিকট অপমান এবং **অঙ্গচ্ছেদ ও পীড়াজনিত** কেশভোগ হইয়া থাকে। বৈ গ্রহ **অন্মকালে ভড থাকিবে,** मिर धर मनाकारण ७७ कनश्रमान कतिरत, अ७७ हरेरन অণ্ড ফল প্রদান করিবে এবং মিশ্র হইলে মিশ্রফল প্রদান করিবে। লগাবিপতি গ্রহের দশাফুরূপ লগদশারও ফল হয়। গ্রহদিগের দশাকালে দশাধিপতি ও অন্তর্দশাধিপতি

এংদিণের দশকালে দশাধিপাত ও অন্তদ্শাধিপাত উভয়ই ফল প্রদান করে, কিন্তু অন্তদ্শাধিপতি গ্রহপ্রদত্ত ফলই মহয় ভোগ করিয়া থাকে। যোগিনী বার্ধিকী, নাক্ষজিকী, লাগিকী, মুকুন্দা, বিংশোত্তরী,

যোগিনী, বার্ষিকী, নাক্ষত্রিকী, লাগ্মিকী, মুকুলা, বিংশোন্তরী, ত্রিংশোন্তরী, পতাকী, হরগৌরী ও দিনদশা এই দশটী দশা আছে, ইহাদের মধ্যে সত্যযুগে লগ্নদশা, ত্রেতাতে হরগৌরী দশা, দাপরে ব্যাগিনী দশা এবং কলিতে একমাত্র নাক্ষত্রিকী দশাই প্রধান । এই সকল দশা যথাসন্তব কথিত হইল। প্রোতিশ্বীগণ বলেন, পূর্ব্বোক্ত বিবরণ দেখিয়া দশাফলগণনা করিয়া শীবনের শুভাশুভ নির্ণন্ধ করিতে পারা যায়।

পাকর্য (পুং) দশরাবর্ত্তা আকর্ষতি তৈলাদিক মিতি আরুষ্-অচ্। ১ প্রদীপ। ২ বস্তাঞ্চল।

^{শা ক}র্বিন্ (পুং) দশায়াঁ আবের্যতীতি দশা-ক্লয-গ্লিন। অদীপু।

শাক্ষর (রী) দশ অক্ষরাণি থাদেছতা। ১ পঙ্কি নামক ছলোভেদ। "বরুশোদশাক্ষরেণ বিরাজমুদলয়ৎ" (ভরুষজু ১০৬) (ত্রি) ২ দশাক্ষরযুক্ত মন্তলেদ। স্তিরাং টাপ্।

^{• "দশাক্ষরাবৈ বিরাট্" ( শত• ব্রা• ১৷১৷১৷২২ ) অর্শ আদি-শাদ্চ, ততোতীপ্। ৩ ল্লীদেবতামন্ত্র।}

^{"এষা দশাক্ষ}রীবিভা সর্বসম্পদ্পাদারিনী ॥" (তন্ত্রসার) শিগুগ্গুলু (পুং) ভাবপ্রকাশোক ঔষধভেদ। প্রস্তুত প্রণালী— ত্রিকটু, চিতা, ত্রিফলা, মুক্তক এবং গুণ্গুলু এই সমত রমভাগে লইয়া পাক করিয়া মাত্রাহ্বায়ী ভক্ষণ করিলে মেছোলোব এবং কফ ও আমবাতজ্ঞ সমত রোগ লই হয়,। (ভাবপ্রণ)

দশাসধুপ (পং) > অবগ্রহ পিশাচাদি নাশক ধ্পবিশেষ,
এই ধ্প ত্রিদোষনাশক। • [ধ্প দেখ। ] ২ পূজাদানের
পর দেবতাদিগকে দীরমান ধ্পবিশেষ। মধু, মুন্ত, মৃত, গন্ধ,
গুগ্গুলু, অগুরু, শৈলজ, দরল, সিহল ও সিনার্থ এই দশটী
জব্য একত্র করিরা চুর্গ করিবে; ইহাতে দশালধ্প প্রস্তুত হয়।
"মধুমৃত্তং স্তং গল্পা গুগ্গুষ্গুক্টশলজং।

সরলং সিহলসিদ্ধার্থং দশাকৃষ্ণী উচ্যতে ॥" ( স্মৃতি )

আর এক প্রকার — কর্প্র, কুঠ, অন্তরু, গুগ্গুলু, চন্দন, কেশর, বাসক, পত্তা, অক্, জাতীকোব এই সকল জবা চূর্ণ করিয়া ঘতের সহিত, মিশ্রিত করিয়া প্রস্তুত করিলে দশাক্ষ্প হয়।

"কর্পুরং কুষ্ঠমগুরুগুগুগুম্মরোন্তবং। কেশরং বাদকং পত্রং জাতীকোষ্ঞ্টত্তমং॥

সর্বমেন্ডল খত্রতং দশাক্রপ্রিকিঃ ॥" (শ্বতি) [ ধ্প দেখা। ]
দশাক্রলেপা (পুং) প্রলেপ বিষয়ে দেয় দশাক্ষ্যোগবিশেষ ;
শিরীষ, ষষ্টিমধু, তগরপাদিকা, রক্তান্দন, এলাচি, অটামাংসী, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, কুড় ও বালা এই সকল পেষণ করিষা খতসংযোগে প্রলেপ দিলে বিসর্প, কুষ্ঠ, জর ও শোথ নষ্ট হর। (ভাবপ্রং)

দশাস্থ্ল (ক্লী,) দশ অস্থ্য ইব শিরা চিহ্ননি ফলত্ত্তপরি সন্তাভ অচ্। ধর্মুল, ধর্মুল। (ভাবপ্র*) এই ফলের উপর অস্থার নত শিরা চিহ্ন থাকায় এই ফলের নাম দশাস্থা ইইর্মাছে। দশ অস্থ্য: পরিমাণমন্ত ইতি তদ্ধিতার্থবিগো: ঠঞ্তভ পুক্ সমাসাত্ত: অচ্প্রভায়:। ২ দশাস্থাপরিমিত।

"সভ্মিংসর্কতোর্ছাত্যতিষ্ঠদশাঙ্গুলং"। (ঋক্ ১০।৯০।৯০)

• 'দশাঙ্গুলং দশাঙ্গুরিপরিমিতং দশ্বং অত্যতিষ্ঠং অতিক্রম্য ব্যবস্থিতঃ।' (সাধণ)

দশাধিপতি (পুং) > জ্যোতিষোক্ত দশাপতি রব্যাদিগ্রহ, রবি প্রভৃতি গ্রহ দশাদিগের অধিপতি। দশানাং পদাতীনাং অধিপতিঃ। ২ দশ পদাতির অধ্যক্ষ, রাজনিষ্ক দৈয়া ভেদ, ইহাদিগকে ক্ষমাদার ক্রাযায়।

"সমানাসনপানাতে কার্যা বিশুণবেতনা:।

দশাধিপতর: কার্যা: শতাধিপতরত্তথা ॥" (ভারত শা॰ ১০০ অ॰)

দশানন (পুং) দশ আননানি বদনানি যক্ত। রাবণ। দশ
আননানি। দশবদন। এইরূপ সমাসে ক্রীবলিক হয়।

"বৃহাৎ কৃতে পঞ্জনগঞ্জনাকি ! শিরো মণীয়ং যদি যাতি যাতু।" ' শুনানি নৃনং জনক।অ্জার্থে ' দশাননেনাপি,দশাননানি॥" (উভট) •

দশানিক (পুং) অভতে ইতি ভাবে ঘঞ্ আনোজীবনং তিমিন্ হিত: আনিক: দশায়াং অবভাবিশেষে আনিক:।
দতীবৃক। (শক্চং)

দশাস্ত্র (পুং) দশায়া: অন্ত: ৬তং। ১ বার্কিয়। ২ বর্ত্তিকান্ত। দশামুর (পুং) দশ আময়া যন্ত্রাং। কলে।

দশাপরিত্র (ক্নী) দশা বস্তাঞ্চলং পবিত্রমিব। আদাদিতে দেয় বস্ত্রথপ্ত। আদাদিতে বর্ত্তপ্ত দান করিতে হর।

"দৃশা পবিত্রনামকে। যো বস্ত্রথও জেনোকাডোডোণ-কলশমূলমধ্যে বিলভাগান্ মন্ত্রগতৈ স্ত্রিভিঃ শোধ্যেৎ।"

( ভাণ্ডা॰ ব্রা• ১৷২ )

দিশার, বোদাই প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত কাঠিবাড়ের ঝালবার বিভাগের একটা সামান্ত রাজা। ইহাতে ল থানি গ্রাম আছে। রাজস্ব প্রায় ৬০০০০, ইহার মধ্যে ১২৯৬৮ বৃটীশ প্রমেণ্টকে করস্বরূপ দিঁতে হয়। ইহার পরিমাণফল ২৬৫ বর্গমাইল।

দশারুহা (স্ত্রী) দশস্থ দিকু আরোহতি অকৈর্বাপোডীতি আরুহ-ক টাপ্। কৈবর্ত্তিকা।

দশার্গ (পং) দশ ঋণানি ছুর্গভূময়ো অলধারা বা ষত্ত ততো বৃদ্ধি:। (এত্যেধ ছুট্ইছ। পা ৮।৪।৬৫) ইত্যক্ত 'প্রবংসর কম্বল বসনার্গ দশানামূণে।' ইতি বার্তিকোজ্যা বৃদ্ধি:। দেশ বিশেষ, এই দেশ বিদ্ধাপর্কতের পূর্কদক্ষিণদিকে অবস্থিত। বর্ত্তমান দশান নদী প্রবাহিত ছান। টলেমী এই ছান দোসার্গন্ (Desaron) নামে বর্ণনা করেন। মেঘদ্ত পাঠে জানা বার ফে, বিদিশা নগরী এই দশার্শের রাজধানী।
'[বিদিশা দেখ।]

"কিঞ্জিকণ্টকস্থলনিসাদেরাষ্ট্রাণি পুরিকদশার্ণাঃ।" ( বৃহৎস° ১৪।১• )

(তি) ওদহাভিঞ্জনঃ তহা রাজা বা অণ্। ২ দশার্থ-দেশবাসী। ০ দশার্গদেশের রাজা। দশ অর্থানি বর্ণানি যত্ত্ব। ৪ দশাক্ষরমন্ত্রবিশেষ।

"দশানামপি তত্তানাং সাক্ষীবেক্তা তথাকরং।
দশাক্ষর ইতি ঝ্যাতো মন্ত্ররাজঃপরাৎপরঃ॥
লুপুরীজন্মভারতাৎ দশার্ণ ইতি কথ্যতে।"

(গোতমীয়তম ২ মা )

(की) ब नगीवित्यमः। वर्डमान नाम मणानः।

দশার্পক [ দশার্ণ দেখ। ] দশার্পেয়ু ( পুং) পৌরব বুরীজাখন্পের পুত্রভেদ।

দিশান্ধি (ক্রী) দশানাং অব্ধং। ১ পঞ্চ সংখ্যা। ২ তংসংগ্রা।
দশ-বলানি ঝথোতি ঋধ-অশ্। তদশবল বৃদ্ধ। (জিলাঙ)
দশার্ছ (পুং) ১ জোট্বংশীয় ধৃষ্ট নৃপের পুত্রভেদ। ২ক্ছি
নূপণীক্র। তবৃষ্ণি বংশীয়। ৪ বৃষ্ণি বংশীয়দিগের আদি
ক্রত দেশ। (পুং) ৫ বিকুণ।

"বিজয়েরজয়য়ত্যসন্ধা দশাই: সাছতাং পতি: 4" ( रिक्रून ।
দশাবতার, বিফুর অসংখ্য অবতারের মধ্যে দশট ছব
তার অতি প্রসিদ্ধ । এই দশটার নাম মৎস্ত, কুর্ম, বরার,
ন্সিংহ, বামন, পরশুরাম, দাশরথী রাম, বলরাম, বৃদ্ধ ও করী।
অবতারসম্ভের মধ্যে এই দশটা অবতার জগতের ছি
সয়টকালে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন বলিয়া দশ-অবতার বিলি
এই দশটাকে বুঝায়।

ভগবান্ বিষ্ণু ষথন যেথানে বেরপে যে জন্ম এইল মুর্স্তিতে দশবার ভূতলে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন, নিমে আন সংক্ষিপ্ত বিবরণ প্রদত্ত হইল।

১ম মৎস্তাবভার।—পৌরাণিক কাল গণনাম্**শা**রে বা মান্সময়ে খেতবরাহ নামক কল চলিতেছে। ইহার প্র ক্ষেক্টী কল্ল অতীত হইয়া গিয়াছে। প্রতি ক্রের্ম সান সময়ে এক একটা মহাপ্রলম্বটে। সৃষ্টিকর্নাঞ তথন যোগনিজার অভিভৃত হন। প্রা**ল**য়ে ভ্রানি চর্^{দা} ভুবন জলমগ্ন হয় এবং বেদাদিও বিনষ্ট হয় ৮ খেওনা কর্নের পুর্বেবি যে কল্ল ছিল, সেই কলপ্রবৃত্তি সমলে ^{বে প্রন} चरहे, त्मरे ममस्य निक्ति उन्नात मूथ रहेर द्वनानि ^{निज्ञा} যায়। হ্য়গ্রীব নামক জ্বলৈক দানবপতি দেই স্ক^{ল রো} হরণ করিয়া লইয়া যায়। এই প্রলয়ের অব্যবহিত ^{গুর} জঃবিড় দেশৈ সভাবত নামে অভিতেলখী ^{বিষ্ণুগাৰ} এক রাজর্ষি রাজ্য করিতেন। ইনি ^{বলবিক্রের} ত্পস্তার স্বীয় পিতৃপিতামহাদি অপেক্ষাও শ্রেট ছিলেন বর্তমান্ খেতবরাহকলে এই সভাবতই বিব্যংগ্র গ্রাদ ८ विकास अन्याधारण करत्रन। खनवान् हेरा (कहे विकास অভিষ্কু করেন। ত্রক সময়ে নৃপতি গ^{তারত বিশ্ল} वनती नामक द्यान थक शतन छक्कवाह इटेश उभन्न कि আরম্ভ করেন, পরে অধোমন্তকে অনিমের নরনেও ভা^{নুর} করেন। এইরূপে সভারতের অব্তবর্ষ অভীত ^{হরৈ। শে} অনম্বর এক দিন সভাবত কুতমালা নদীতে (^{কোন দৌ} পুরাণ মতে তমসা নলীতে) আর্ম্বরে পিডুলোলে ব

ভর্পন করিতেছিলেন। তর্পণ করিবার অস্থা তিনি যে অল ভূনিতেছিলেন, তাহার মধ্যে হঠাং এক অঞ্চনিতে অন্দের সহিত একটা কুল সক্ষরী মংস্থা (প্রটীমাছ) উঠিল। জাবিড়ে-ধর জল্পানির সহিত মংস্থাটিকে পুনরায় নদীতে ফে লিয়া দিলেন। মংস্থাটী তথন কর্ণায়রে বলিল, রাজন্। আপনি নানবংসল ও পরমকার্কণিক, আমি অতি ভ্র্মাল, আপনার ধরণাগত হইয়াছি। মকরকুন্তীরাদি হিংল্লেজ্বগণ আমার জ্ঞাতিবর্গকে বিনাশ করিয়াছে, আমি সেই ভরে ভীত হইয়া আপনার আশ্রম লইলাম, তবু আপনি আমাকে এই নদীতেই ফেলিয়া দিলেন ১"

দ্রাবিড়েশ্বর সভাত্রত ভথন করণার্দ্র ইয়া পুনরায় তাহাকে তুলিয়া লইয়া রক্ষার্থ খীয় কল্সীর জলে রাখিয়া দিলেন, তৎপরে তর্পণাদি সারিয়া মংস্থ সহিত কলসীটা লইয়া নিজ আশ্রমে গেলেন। সেই দিন রাত্রিতে মংস্তটী এত বাড়িয়া উঠিল যে, তাহার দেহ আর দৈই কলদীতে ধরিল না। তথন সে কাতরভাবে রাজাকৈ জ্ঞানাইল যে, আনমি আর ইহাতে অচ্ছনে অবস্থান করিতে পারিতেছি না, আমাকে কোন একটী বিস্তৃত স্থানে রাখিয়া দিন। রাজা তথন ডাহাকে মণিকচছকলে (অভাপুরাণমতে কৃপে) নিকেপ করিলেন। মংস্টী মণিকচ্ছজলে পড়িয়াই মুহুর্তমধ্যে তিনহ'ড পরিমাণে বাড়িয়া উঠিল এবং কাতর হইয়া বাজার নিকট বিস্তৃত স্থান প্রার্থনা করিল। রাশাও ডাহাকে গরোবরে নিক্ষেপ করিবেন, কিন্তু সেথানে পড়িয়াই তাহার ^{দেহ বাজি}ুতে লাগিল ও কল পরেই সরোবরের আয়তন পরিমাণে ভাষার দেহ বাড়িল। তথন সে আবার,কাতর তাবে রাজাকে বৈলিল, মহাত্মন্ ৷ আপেনি আনার রক্ষাভার গ্রহাছেন, অথচ যে সকল জলাশয়ে আমাকে ফেলিতেছেন, ভাহাতে আমার দেহ বর্দ্ধিত হইলে আছেনে থাকিতে ণারিতেছি না, অতএব আমায় এমন কোন জন্মশয়ে নিক্ষেপ ^{করান, যাহার জ্বলে আমি বর্দ্ধিত-দেহ হইয়া সংখে বাস} ₹রিতে পারি।

বজিবি সন্তারত ব্যাপার দর্শনে বিশ্বরাপর হইলেন এবং চাহাকে লইয়া এদ হইতে এলান্তরে বেড়াইতে লাগিলেন। শবে কোণাও তাহার স্থান সংকুলান না হওয়ায়, তিনি চাহাকে লইয়া সাগরে নিক্ষেপ করিতে, চলিলেন। তথন সেই অলৌকিক সফরী রাজাকে বলিলেন, রাজন্! আমায় বিশুল জলে ফেলিবেন না, তাহা হইলে নিশ্চয়ই আমায় বলান্ সামুদ্রিক জন্ধতে বিনষ্ট করিবে। আমি প্রাণভয়ে ভীত ইয়ই আপনার আশ্রম কইয়াই, অনুপনি এখন আশ্রম

দেওয়া দ্বে থাকৃ, যেথানে আমার আগনাশের সম্পূর্ সভাবনা, সেই স্থানেই ফেলিভে যাইতেছেন ?

রাজা সফরীর বাক্যে হতবৃদ্ধি হইলেন এবং কিয়ৎকাল মৌনভাবে থাকিয়াই বৃন্ধিলেন যে, এই মংশু কথনও সামান্ত মংশু নহে। ভগবান বাতীত এরূপ অলৌকিক দেহধারণক্ষনতা কি কোন জীবের সম্ভরে ? ইহা ভাবিয়া রাজা মংশুকে জিজ্ঞাসা করিলেন, আপনি কে ? আপনি আমায় এরূপে বিমোহিত করিতেছেন কেন ? আপনি একদিনের মধ্যে সমস্ত দ্রুলনেরেরের অপেকাও দেহারতনবৃদ্ধি করিলেন! ইহা ঐশী মায়া ভিন্ন অন্ত কিছু সম্ভব নহে। আপনি বোধ হয় শবং নারায়ণ, জীবগানের কোন মললোদেশেই এই জনচররূপ ধারণ করিয়া থাকিবেন। অতএব হে প্রুয়োভম আমি আপনার দাস, আমাকে এরূপে মায়া প্রদশন করিতেছেন, কেন ? এখন কি জন্ত আপনি এই অন্ত দেহ করিয়াছেন, তাহা আমাকে বলুন। আপনার লীলা অবগত হইলেই চরিতার্থ হইব।

তথন মৃৎস্কুপী কৰিলেন, 'রাজন্! আমিই নারারণ, জীব-রক্ষার্থ উপদেশ দিবার নিমিত্ত তোমার নিকট আসিয়াছি। অত হইতে সপ্তমদিবলৈ স্থাবর অসমাদি সমন্তিত এই জঙ্ প্রলয়পরোধিজলে নিমগ্ন হইবে। অতি ভীষণকাল আদিয়াছে, এখন আমার উপদেশামুদারে কার্য্য কর। কি ছাবর, কি अन्नम, कि अष्, कि टिडन मकरनत्रहे विनाम हहेगा यथन জ্বাৎ প্রশায়লশে নিমগ্ন ছইবার উপক্রম দেখিবে, তখন তুমি नमख अविधि, नकन वीज, नकन धानी-मिथून अ श्विमिश्क লইয়া আমার অপেকা করিবে ৷ প্রলয়ের ভীবণ তরকমুথে আমি এক বৃহৎ-নৌকাপ্রেরণকরিব। তুমি সম্ভ লইয়া সেই, বিশাল নৌকার আরোহণ করিবে। তথন চতুর্দিক্ অন্ধকারে পরিব্যাপ্ত হইবে। মৃহ্রিগণের তেজোবণে সেই নৌকাসেই আলোকহীন প্রলয়জনে ভ্রমণ করিবে, তাহার বিনাশ নাই। যথন প্রচণ্ড বায়ুবেলে ভরণী আনন্দো-লিত হইতে থাকিবে, তখন আমি শৃক্ষুক্ত অলৌকিক শৃলী মংশুকুপে উপস্থিত হইব। তুমি তথন মহাসূর্ণ রজ্ছারা আমার সেই শৃঙ্গে নৌকাবন্ধন করিও। কন্ল-त्यानित निजावमान भर्याख ट्यामानिश्वत रमहे क्लोका नहेगा প্রলয়জনে ঘ্রিয়া বেড়াইব। সেই সময় তুমি আমার ব্রহ্ম নামের মাহাত্ম জানিতে পারিবে। আমিই তাহা বর্ণন করিয়া তোমায় আমার স্বরূপ জানাইয়া দিব।' এই বলিয়া **म**९ ऋती ভগবান্ অস্তর্হিত হইদেন।

তৎপরে রাজ্যি সভাত্রত হরির বাক্যাত্রসারে স্মৃত্ত সংগ্রহ

করিয়া সম্প্রতীরে কুশাসন বিস্তারপূর্বক সময় প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন। তৎপরে প্রলম্বনারী মেন্সমূহ মুবল ধারে বারিবর্ষণ করিয়া সাগরের অল বর্ষিত করিয়া তুলিল। ক্রেম স্বের্যাদয় বন্ধ হইয়া গেল, সাগরের অলে পূর্বতপ্রশাণ তরক উঠিল এবং বেলাভূমি প্রাবিত করিয়া সমস্ত ভূতাগ ভূবাইতে ছুটিল। এই ব্যাম ত্রক্লমুধে একথানি বিশাল তর্মী আসিয়া উপস্থিত হইল। রাজ্যর্ষি তথন হরিচরণ অয়ণ করিয়া মহর্ষিগণের সহিত সমস্ত সংগৃহীত বস্ত ও প্রাণী লইয়া নৌকারোহণ করিলেন। এ দিকে পৃথিবী ভূবিয়া গেল। নৌকা ভাসিতে ভাসিতে ছুটিল। কিছু পরে অমৃত যোজনবিভ্ত শৃক্ষমৃক্ত স্থবর্গম এক মহামংশ্য সম্মুধে আবিভূত হইল। রাজ্যি ভগবানের আদেশ মত মহাসর্পের রক্ত্রারা সেই মংস্থের শৃক্তে নৌকা বন্ধন করিয়া মধুসুদনের স্তব্ করিলেন। নৌকা বন্ধন করিয়া মধুসুদনের স্তব্ করিলেন। নৌকা বন্ধন হইলে মংশ্য মহাবেগে ঐ নৌকা আকর্ষণ করিয়া বেড়াইতে লাগিলেন।

এইরপ ভ্রমণের সময়ে মৎশুমুধে রাজর্ষি সভাবত মংশুপুরাণ, সাংখাযোগ ও আত্মতত্ত্ব শুনিলেন। [মৎশুপুরাণ দেখ।] এইরূপে কিছুদিন অভিবাহিত হইলে, নৌকা হুমালয় পর্বতের নিকট উপস্থিত হইল। প্রাণম জলে চরাচর বিশ্ব ভূবিয়া গেলেও অভ্রভেণী হিমালয়ের একটী শ্লের কিয়দংশ বিষ্ণুমায়ায় ভূবে নাই। মৎশু সেই শৃল্প দেখাইয়া রাজর্ষি সভাবভাকে সেই শৃল্পই নৌকা বাঁধিতে বলিলেন, রাজ্যিও ভাহাই করিলেন। এই শৃল্প ভদবিধি নৌবন্ধন নামে খাতে হইলে। মংশুরুপী নারায়ণ ক্ষর্যাহিত হইলেন।

অনন্তর প্রলয়াবসানে বিধাতা যোগনির্দ্র। ইইতে উথিত ইইলেন এবং দেখিলেন, ভগবানের কুপায় ব্লগতের বীজ রক্ষিত. ইইয়াছে বটে, কিন্তু বেদ অপহৃত ইইয়াছে। ব্রহ্মা বেদ-বিরহে কাতর ইইয়া বিষ্ণুর শরণাপল ইইলেন। ভগবান্তথন দানবেক্স ইয়গ্রীবকে সংহার করিয়া ব্রহ্মাকে বেদ

ভংপরে ভগবান্ মংশুরূপ পরিত্যাগ করিয়। ঋষিবর্গের
নিকট শ্বরূপ ব্যাথ্যা করিলেন এবং বলিলেন, এই সতাত্রত
মফুরূপে আবিভূতি হইয়া স্কর, অস্কর, নর প্রভৃতি পদার্থের
স্পাষ্ট করিবে। ইহার ভীত্র তপোবলে জগত্ৎপাদনশক্তি
ভাবিবে। এই বলিয়া তিনি অন্তর্হিত হইলেন।

এই সতাব্রতই শেষে বর্তমান্ করে বিবস্থংপুত্র প্রাদ্দেব নামে প্রায়ভূতি হন এবং বিষ্ণুর প্রসাদে বৈবস্বত নামে বর্তমান কল্লের সপ্তম মন্ত্ ইইয়াছিলেন।

২য় কুর্ম-অবতার। এক দিবস ছক্রাসা মূনি সম্ভানক

বলে ত্রমণ করিতেছিলেন, সেই সমর বিস্তাধরবর্গণ উল্লি পারিজাত ফ্লের মালা দিরা সহর্জনা করেন। মহর্বি হর্মিন সেই মালাধারণ করিয়া খাইতে রাইতে পথে দেবরাছ বৈরে দৈখিতে পাইলেন এবং তাঁহাকেই সেই পরিজারার প্রদান করিলেন। ইক্স মহর্ষিপ্রদত্ত মালা কঠে ধারণ হ করিয়া ঐরাবতের কুন্তের উপর রাখিলেন। ঐরার পারিক্সাত গল্পে প্রমন্ত হইয়া সেই মালা তত্ত হারা নামার গিয়া ফেলিয়া দিল। মহর্ষি ছর্স্পাসা নিজ দত্ত মালার এইর অমর্য্যাদা দেখিয়া কুনিত ইইয়া ইক্রকে বলিলেন, বাস্থার্ত্র গর্মিত হইয়া আমার প্রদত্ত মালার এইরপ অব্যাননা করিল অভএব অভ হইতে ভূমি প্রতিত্ত ইইবে, ভোমার ক্র প্রীহীন হইবে। ছর্স্বাসার বাক্য মিধ্যা ইইবার নহে। ক্র দেবী তিৎক্ষণাৎ স্থর্গ ও ইক্রকে পরিত্যাগপুর্মক পার্যা

দেবতারা এই শ্রী হওয়ায় যজাদি কার্যা বিন্পু हो।

কারিল। অস্ত্ররণ প্রবল পরাক্রান্ত হইয়া উঠিল। য়ে

তারা যুদ্দে পরাক্রিত হইলেন। অনেকানেক দেবতা কর

যুদ্দে প্রাণত্যাগ করিলেন। তথন ইস্ত্র, চস্ত্র, বায়, য়
প্রভৃতি প্রধান দেবতারা বিষম সন্ধট উপস্থিত দেখিয় য়
রক্ষার্থ পরামর্শ করিতে লাগিলেন, কিন্তু কিছু হির হিরি
না পারিয়া স্থানক্ষিথবাদীন ব্রহার নিকট উপস্থিত হইয়ে

তাঁহারা ব্রহ্মাকে ভাব করিয়া সমস্ত ঘটনা নিবেদন 👫 লেন। ত্রহ্মাও সমস্ত শুনিয়া বলিলেন, এ বিপদে হরি রি গতি নাই। চল সকলে তাঁহার শরণাপর হই। এই ^{র্নি} সকলে বিষ্ণুর নিকট উপস্থিত হইয়া স্তৱে তাঁহা^{তে প্র} করিলেন। ূবিষ্ণু বলিলেন, আমি তেমাদিগের বিগ্র করিব। এখন একটী কার্য্য কর। যতদিন না^{র্মা} উপস্থিত হয়, ততদিন ভোমরা দৈতাগণের সহিত ^{দ্}ৰা^{তাগুর} কুর। এখন জগতের যে অবস্থা, ভাহাতে অমৃত লিখ কিছুতে ইহার বিপদ্ দ্রীভূত হইবে না, অতএ^{র রোটো} সৃমুজমন্থন বারা অমৃত উংগলহয়, তাহা করি^{তে হাল}। এই অমৃতদেবনে মৃতেও জীবন পাইয়া থা**হ**জ। ^{স্টুয়ন} সহজ ব্যাপার নহে। কীরোদসাগরে যাবভীয় _বঁতা^{ৰ্যু} ওবধি নিকেপ করিয়া মলারপর্বত্কে মধানণ ^{এই} বাস্থিকৈ রজ্জুকরিয়া সাগর মন্ত্র করিতে ^{হইবে। ইয়ে} प्तराञ्चरत देवत्रजाव थाकितन कार्या इहेरव ना। सामा একঘোগে ঐ কার্য্য সমাধা করিতে হইবে। অতএব শে অসুরগণের সহিত সন্ধি করিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত ^{হও। ।} মন্থনে মন্দরপর্কতের বেগ পৃথিবী সহ করিতে পারি ই ক্রমণাই রসাতলে ঘাইতে থাকিবে, তথন আমি ক্র্রিরপে 
মলরকে পৃঠে ধারণ করিব। এই মছনে নানারত্বসমূৎপর

হইবে; তাহাতে লোভ করিও না, দৈতাদিগের অসম্মতিতে 
কোন কার্য্য করিও না এবং কালকুট উৎপন্ন হইটুল ভীত 
হইও না। এই বলিয়া নারায়ণ অস্তহিত হইলেন।

তথন বলি দৈতাগণের অধিপতি। দেবগণ তাঁহার
নিকট সন্ধির প্রভাব করিলেন। বলিরাল ইল্পের নিকট
সম্ভ্রমন্থনের কর্ত্তবাতা ও উপকারিতা বুঝিয়া অরিষ্টনেমি
প্রভৃতি দানবেক্সগণের সন্থিত পরামর্শ করিয়া সন্ধিন্থাপন
করিলেন এবং সাগরমন্থন করিয়া অমৃতোৎপাদনে ব্যথ্য
হইলেন।

তংপরে স্থাস্থর উভয় পক্ষ সাগরমন্থনে ক্রতসংকল হইয়া
মন্দরপর্বতকে উৎপাটন করিয়া লইয়া ক্ষীরোদসাগরাভিম্থে চলিলেন। কিয়দ্র গমন করিয়া তাঁহারা ভার সহ্
করিতে পারিলেন না, পথেই মন্দরকে ত্যাগ করিলেন।
মন্দরগিরি পতিত হইয়া অনেকানেক স্থরাস্থর চূর্ণ করিয়া
ফোলিল। এদিকে গরুড্বাহন বিষ্ণু স্থরাস্থরদিগকে প্রক্
ক্রাবিত করিয়া মন্দরপর্বতকে তুলিয়া গরুড্ের পৃঠে স্থাপন
করিলেন। গরুড় পর্বত বহন করিয়া ক্ষীরোদ তীরে
নামাইয়া প্রস্থান করিল।

তৎপরে দেবগণ সমুদ্রকে প্রসন্ন করিবার উদ্দেশে বলি-লেন, বারিধে ৷ আমরা অমৃত উৎপাদনের নিমিত ভৌমার क्षण मन्त्र करित, ज्ञि व्यक्षमिक कत्र । कीरताममागत कहि-रगन, यनि ट्रायता आभारक अमृरजत अश्म ध्वनान कतिर्ज সমত হও, ভাহা হইলে আমি মন্দ্রাদি ভ্রমণক্রিত ক্লেশ সহ্ করিতে শৌকার করি। দেবগণ তাহাতে সম্মত হই-লেন। তৎপরে উদ্ভোগ হইল। বাফুকিকে রজ্জু স্বরূপ ক্রিয়া দেবগণ তাঁহাকে মন্দ্রগাত্তে জড়াইয়া দিলেন। নারা-^{য়ণ} দেবগণকে বাস্থকির মুখভাগ ও দৈত্যগণকে লাঙ্গুলের ^{দিকে} ধারণ করিতে বলিলেন। দৈত্যেরা বলিল, সে কি, আমরা বেদাধায়ন করিয়াছি, অস্ত্রবিস্থায়ও আমাদের পটুতা আছে, আমাদের জন্মকর্মাও মপ্রশাস্ত নছে: আমরা সর্পের বাছুব ভাগ ধরিব কেন 📍 শাস্ত্রে লিখিত আছে, সর্পের ^{বাঙু}ল ধরিলে অমঙ্গল হয়, অত এব আমরা তাহা ধরিব না। ^{ক্রিও} ঈষ্কাস্ত ক্রিয়া তাহাই অনুমোদন ক্রিঞ্লন। দেব-^{্গণ নাসু}লদেশ ও দৈত্যেরা মুখদেশ ধারণ করিয়া মন্দরকে मभूषकता शाभन कतिरागन। .

মছনকার্য্য আরম্ভ হইল। মন্দর দেবদৈত্যের বলে আক্ষিত হইতে লাগিল। মন্দরের বেগ সফ্ত করিতে পারে জলে এরপ কোন আধার ছিল নাবা দেবাহ্যরের বাহবলও
মন্দরকে ধরিয়া রাখিতে পারিল না। মন্দর ক্রমশংই সাগর
গর্জে প্রোথিত হইরা ঘাইতে লাগিল। তথন সকলেই বিষয়
মুখে বিষ্ণুর মুখাবলোকন করিতে লাগিলেন, বিষ্ণুও ছর্ব্বিপাক
বুঝিরা বৃহৎকার ক্র্মরপ ধারণ করিয়া সাগরজলে প্রবিষ্ট ইয়া আমামাণ মন্দরকে পৃষ্টে ধারণ করিয়া সাগরজলে প্রবিষ্ট মুর্ত্তিত মন্দরের উর্দ্ধে অবস্থান করিয়া তাহাকে উর্দ্ধে আক্র

মছনের বেগে ক্রমে বাস্থকির সহজ্ ফণা হইতে অধিশিখা ও ধ্ম নির্গত হইরা দৈত্যদিগকে আছের ও হীনবল
করিয়া ফেলিল। ভগবানের ক্লপায় মেঘ সকল বারি বর্ধণ
করিয়া তাহাদিগকে কতক্টা শান্তি প্রদান করিল।

তৎপরে প্রথমেই সধ্ম অধির স্থার মহাবিষ কালক্ট (অন্থ প্রাণের মতে সর্বলেবে) উৎপর হইল। এই বিবের আজাণে দেবাস্থর ও অগতের প্রাণী হতচেতন হইরা পড়িল; ইহা দেখিয়া এক্ষা মহাদেবের শরণাপর হইরা বলিলেন, প্রতো! এখন আপেনি রক্ষা না করিলে চলে না, তিত্বন ধ্বংস হয়। শিব অগতের.ভঙ কামনায় সেই কালক্ট পান করিয়া ফেলিলেন। বিষ্প্রভাবে তাঁহার কঠলেশ কীলবর্ণ ধারণ করিলে তিনি নীলক্ষ্ঠ নামে বিধ্যাত হইলেন।

मिवक्रभाव कानकृष्ठे अखर्शिङ इहेरन रापवरेमङा टिङ्झ-লাভ করিয়া পুনরায় সাগরমন্থনে প্রবৃত্ত হইলেন। এবার व्यथरम ऋतं की नामक गांकी छेदभन हहेगा वक्तवांनी अधिगन তাহাকে গ্রহণ করিশেন। দেবতারা শ্রীভ্রন্ত হওয়ায় তাঁহা-দের যক্ত বিনষ্ঠ হইয়াছিল, এখন সুরভীর মতে সেই যজা উদ্ধার করিবার অন্ত মহর্ষিরা তাহার দেবা করিতে লাগিলেন, पुरमात व्यवत्र प्रेटिक: अवा उथि छ हरेग। हेस ७ विन प्रेड-(यहे जाहात्क नहेटल ८५८ कहेरनन। विकृत भनामार्ग हेळा আপাততঃ ভাছার লোভ ত্যাগ করিলেন। তৎপরে গলরত্ব ঐরাবত উখিত হইল। ঐরাবত চতুর্দম্ভ হস্তী। ইন্স এই हर्खीत्क धर्ग क्रिंग्ना। भर्त घटेनिश्शक, घटेकतिशी, পদ্মরাগ ও কৌস্কভমণি উৎপদ্ম হইল। কৌস্কভমণিটা বিষ্ণু चग्रः वत्क थात्रण कतिरामन। ७९भरत चग्रः मन्त्रीरमवी छेठि-रान, उर्शाद व्यानिक क्रमावगावकी क्रमानम्मा भवम-রমণীয়া আর একটা কামিনী উঠিলেন, ইহার নাম বাহ্নণী বা यमित्रा। नाताग्रत्भत्र व्यादम्दल देम्दङ्गता এই कक्षा शहन कत्रि-**लान। ७९भात अमृडक्छहाङ ध्यञ्जति छेडिलान। एन**व-দৈতা অমৃত গ্রহণে বাগ্র হইলেন এবং দৈত্যেরা বলে তাহা श्रद्ध क्रिन। नात्रात्रण उपन स्माहिनी जीमृर्खि श्रद्ध क्रित्रा

নৈভাগণের নিকট অমৃতক্স চাহিলেন। তাহারা মুগ্র হইয়া কুস্ত প্রদান করিলে, বিষ্ণু ওৎসহ অন্তহিত হইলেন। ইতি মধ্যে শিব সেই মোহিনীমূর্ত্তি দেখিয়া আসক্ষণিপার মুগ্র হইয়া তাহার পশ্চাতে পশ্চাতে ফিরিভে লাগিলেন। শেষে নারায়ণ তাহার ভ্রম ভার্মিয়া দিয়া বলিলেন, যাহা হউক ভূমি যথন মুগ্র হইয়াছ, তয়ন আমি তোমাকে উপভোগার্থ দেহার্দ্ধ দান করিলাম। এই বলিয়া উভয়ে দেহার্দ্ধ মিলাইয়া হরিহর মূর্তিতে প্রকাশিত হইলেন।

এ দিকে দেবলৈতো অমৃত হত হইয়াছে দেখিয়া যুদ্ধে প্রস্তু হইলেন। বাহকে-নিখাস-অর্জ্জিরিত দৈতোরা পরাঞ্জিত হইল। দেবগণ জায়ী হইয়া বিষ্ণুলোকে গমন করিলেন ও অজর, অমর হইবার উদ্দেশ্যে অমৃত পান করিতে লাগিলেন। দিংহিকানন্দন রাহ নামে এক দৈত্য গোপনে তাঁহাদিগের সহিত অমৃত পান করিল। চক্ত স্থা তাহা দেখিতে পাইয়া প্রকাশ করিয়া দিলেন। বিষ্ণু তৎক্ষণাৎ রাহ্ম মন্তক স্থাননি হেলন করিলেন। অমৃত তথন তাহার কণ্ঠদেশ প্র্যুক্ত গমন করিয়াছিল, কাজেই তাহার মৃত্যু হইল না। তদব্ধি তাহার সেই ছিল্ল মন্তক গগনপথে ঘ্রতেছে এবং স্থান কালামুসারে চক্তর্যুকে গ্রাস করিয়া থাকে।

এইরূপে ভগধান কৃশ্মমূর্ত্তিতে অংগতের হতা লক্ষী উদ্ধার করেন।

পুরাণান্তরে ক্র্যাবতারের বিবরণ এইরূপ,—জগবান্
কারণজনে শ্যান থাকিয়া স্থীর গাজ্ঞমন হইতে এক রম্মী
কৃষ্টি করিলেন। এই রম্মীই আত্যাশক্তি। ভগবান্ ইহাকে
অবলম্বন করিয়া ইহারই গর্ভ হইতে ব্রহ্মা, বিষ্ঠু ও মহেশ্বর
এই জিম্রিতে আবিভূতি হইলেন। আত্যাশক্তি তথন
শবরূপে জাসিতে ভাসিতে ব্রহ্মার নিকট গ্রমন করিয়া
তাঁহার সহিত মিলিত হইতে চাহিলে তিনি চতুর্দিকে মুথ
ফ্রিরাইয়া চতুর্মুথ হইলেন। তৎপরে তিনি বিষ্ণুর নিকট
উপন্থিত হইলে তিনি একবারে প্রত্যাথ্যান করিলেন। অবশেষে মহাদেবের সহিত মিলিত হইবার প্রার্থনা করিলে
তিনি বলিলেন, আপনি শতবার দেহ পরিবর্জন করিতে
পারিলে আনি আপুনার সহিত মিলিত হইব। আ্যাশক্তি
ভাহাই করিলে শিবশক্তির দ্বিলন হইল।

এইরূপে শক্তি স্থাপিত হইলে, বিষ্ণু ব্রহ্মাকে পৃথিবী
স্থান্তি করিতে বলিলেন। ব্রহ্মা পৃথিবীর বীজ না পাইরা
নিশ্চেট রহিলেন। তথন বিষ্ণু কর্ণনল হইভে মধুকৈটভ নামে
দৈত্যদ্বয়কে উৎপাদন করিলেন। তাহারা জন্মিরাই
ব্রহ্মাকে বধ করিতে ছুটিল। ব্রহ্মা জীত হইরা বিষ্ণুরই শরণ

লইলেন। বিষ্ণু দৈত্যকে বধ করিয়া তাহারই মেন মাংদি পৃথিবী স্থাই করিতে বলিলেন। এক্ষা বীল পাইয়া মেনিনী স্থাই করিলেন, কিন্তু জলের উপর পৃথিবী ভাসিয়া বেড়াইটে লাগিয়া। এক্ষাকে দ্বির করিবার জন্তু ধরাধর, পর্বাত্ত স্থাই করিলেন, কিন্তু পর্বাত্তর ভারে পৃথিবী ট্নমল করিত্তে লাগিল। এক্ষা তথন বাস্কীকে পর্বাত্ত ধারণ করিত্তের লাগিল। এক্ষা তথন বাস্কীকে পর্বাত্ত করিয়া বিষ্ণুর শরণাপর হইলেন। বিষ্ণু তথন মহা ক্র্মুম্বি পরিগ্রহ করিয়া বাস্কীকে পৃঠে ধারণ করিলেন। পর্বাত্তমহ পৃথিবী দ্বির হইল। এক্ষা জ্বাবার স্থাবর জন্ম ক্রিডেন।

ত্রন্ধা মন্ত্র মুথে পৃথিবীর জলমগাবন্ধা পরণ করি।
ভাবিলেন, পৃথিবীর উদ্ধার করে কে ? বিনি জামানে
ক্ষিকার্য্যে নিলুক্ত করিয়াছেন, সেই ভগবান্ নারাগ কি
আর কাহাকেও একার্য্যে সমর্থ বিলয়া বোধ হয় না। ত্রন্ধা
এই চিস্তাকালে তাঁহার নাসারদ্ধ ইইতে একটা অসুষ্ঠ প্রমাণ
বরাহ বহির্গত হইল। ত্রন্ধা তাহা দেখিয় বিশ্বনা
হইলেন। ঐ শ্কর ক্ষণকাল আকাশে থাকিয়াই এক বং
ভতীর ভায় বর্দ্ধিত হইয়া উঠিল। ত্রন্ধা এই অলোকি
শ্কর দেখিয়াই ব্রিলেন যে, নারায়ণ এই মায়াময় দেহ ধার
করিয়া উপনীত হইয়াছেন। এই সমর্ম শ্করক্ষী নিল দে
পর্মতিশাণ বাড়াইয়া বজ্ঞধানির ভায় গর্জন করিলেন
ত্রন্ধানি তথন তাঁহাকে নারায়ণ বলিয়া নিশংস্বিত্রা
ব্রিতে পারিয়া বেদ্ধান উচ্চারণপূর্মক তাঁহার ভ

করিলেন। বরাহ দেব তথন তাঁহাদিগকে আখান দিবার ছলে পুনরার গর্জন করিয়া জল মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন।

বজ্ঞবরাহ তগবান সাগেরে প্রীবিষ্ট হইরা প্র বারা জলধির একদিক্ হইতে অপরদিক্ বিদারণপূর্বক দেখিলেন, গুলার কালে তিনি কারণ সলিলে শয়ন করিয়া যে পৃথিবীকে ক্রোড়ে ধারণ করিয়াছিলেন, সেই ধরণী তথন রসাতলে রহিয়াছে। আদিবরাহ ইহা দেখিয়া স্বীয় বিশাল লস্তাতো ধরণীকে বসাইয়া জল হইতে উথিত হইলেন।

এই সমুদ্ধ এক দিন স্থ্যীন্ত সময়ে মনীচিনন্দন কল্পপ হোনকার্যা সমাপন করিয়া অগ্নিগৃহে উপবিষ্ট ছিলেন, দেই সময়ে তাঁহার পত্নী দিতি কামশীড়িতা হইয়া তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলেন। মহর্ষি কহিলেন, মুহুর্ত্তকাল অপেক্ষা কর. এই সময়ের নাম রাক্ষসী বেলা, এ সময় ভগ্বান্ ভূতপতি ভৃতগণের সহিত সর্বাত্ত বিচরণ করেন ও ত্রিনয়নে সর্বাত্ত দৃষ্টি নিক্ষেপ ক্রিয়া থাকেন, এ সময় ভগবানের নাম স্বরণ ভিন্ন অন্ত কর্মা করিতে নহি, করিলে শুভ হয় না।' দিতি কহিলেন, নাথ আমি পুত্রবতী সপত্নীগণের সৌভাগ্য দর্শনে निठास काठत रहेगा आहि, ठाहाट व्यक्त मननदनना छेन-হিত হইয়া বড়ই যাতনা দিতেছে, অতএব আপনি ত্ৰ:খিনীকে উদ্ধাৰ কক্ষন। কশুপ পুনরায় সাস্ত্রনা করিতে চেষ্টা পাইলেন, কিন্তু দিতি তাহাতে কর্ণপাত না করিয়া লজ্জা পরিত্যাগপুর্ব্বক পতির বসন আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। কশ্রপ পত্নীর এইরূপ আগ্রহ দেখিয়া ভগবান্কে স্মরণ করিয়া পত্নীর অভিলাষ পূর্ণ করিলেন। কশুপের সায়ংকালীন নিয়ম ভঙ্গ হইল এবং দিতির মন অনুতাপে জনিয়া উঠিল। কশুপ প্রিয়াকে চিন্তাকুল দেখিয়া বলিলেন, প্রিমে ! তোমার আপন চিত্তের অক্তরি, মুহ্তুদোষ, আমার নিয়ম ভঙ্গ এবং রুদ্রের অব-মাননা এই দোষ চতুষ্টয় জন্ম তোমার এই গর্ভে ছইটা অপ ক্রষ্ট সম্ভান জ্বনিবে। তাহারা লোক ও লোকপালদিগের পীড়াকর হইবে, অনর্থক প্রাণীহত্যা ও স্ত্রীদিগকে উৎপীড়ন कतिरव এवः महर्विगरनत्र काल छेरलामन कतिन्ना छगवारमत्र राउ विनष्टे ब्हेटव। टामात धक लोख अन्तिरक, तम हित-^{পরার্}ণু হইবে। দিভি শতবর্ষ গর্ভধারণ করিয়া হিরণ্যাক্ষ ও হিরণ্যকশিপ্দ নামে ছই যমজ পুঞ্জ প্রসৰ করিলেন। ইহারা পূর্বে জর বিজ্ঞর নামে বৈকুঠের ছারী ছিল। একদা সনকাদি ৰ্বি চত্ট্য নারায়ণ্দর্শনে উপস্থিত হইলে ইহারা তাঁহা-দিগকে বিবন্ধ দর্শন করিয়া উপহাস ও বেজ প্রহার করে। সেই অবিদিগের শাপে কর বিজয় হিরণ্যাক ও হিরণ্যকশিপু-ক্ষণে দিভিত্র গর্ডে অক্মগ্রহণ করিল। .

অন্ধলন মধ্যে ঐ ছই প্র মহাবলশানী হইরা দেবভাদিগের উপর আধিপতা হাপন করিল এবং উত্তর প্রভা ব্রহ্মার আরাধনা করিরা বরলাভ করিল। হিরণ্যকশিপু প্রিভূবনাধী-শর হইল এবং হিরণ্যাক্ষ পৃথিবী জয় করিরা অর্গে গমন করিল। দেবভারা ব্রহ্মবরে বলগুরু দৈত্যরণে পরাজিত হইলেন। হিরণ্যাক্ষ তথন জয়াভিলাবে দাগর মধ্যে বক্ষ-পের বিভাবরীপুরীতে উপনীত হইলেন। বক্ষণ উছার সহিত যুক্ষ না করিয়া বলিল, আপনি অহুত বলশালী, দৈতা-শ্রেষ্ঠ ও রণপণ্ডিত, স্মত্রাং পৃক্ষবোভ্যম ব্যতীত কেহ আপনাকে রণে সক্ষই করিতে পারিবে না। আপনি তাহার নিকট গ্যান কক্ষন, তিনিই আপনার দর্পচ্ব করিবেন। হিরণ্যাক্ষ কট্ভিতে কর্ণপাত না করিয়া বিফ্র অফ্সদ্ধানে প্রশান করিল। নারদ তাহাকে বলিয়া দিলেন বে, বিফু এখন রসাতলে অবস্থিতি করিতেছেন।

হিরণাক্ত ভনিয়াই রসাতলে উপত্বিত হইল,—বিফুকে দেখিতে পাইল না, কিন্তু দেখিল, এক বৃহৎকায় বরাহ দশ-নাগ্রে পৃথিবী ধারণ করিয়া উর্দ্ধে উঠিতেছে। তথন এই অভূতকর্মা বরাহকে দেখিয়া, বিশ্বিত হইয়া দৈত্য-শ্রেষ্ঠ তৎপ্রতি কটৃক্তি বর্ষণ করিতে করিতে ধাবমান হই 🞳 । আদিবরাহ কটুক্তি শুনিয়া তাহার প্রতি ভীম দৃষ্টিতে চাহি- ' লেন, তাহাতেই ভাহার তেজ বিনষ্ট হইল। তৎপরে হার পৃথিবীকে তুলিয়া জলোপরি স্থাপন ও আপন আধার শক্তিতে তাহাকে স্থির রাধিয়া অর্দ্ধ বরাহ ও অর্দ্ধ বিষ্ণু মূর্ত্তিতে দৈত্যকে আক্রমণ করিলেন। উভয়ে যুদ্ধ চলিতে লাগিল। একা ष्य खती त्या विषया विषयान, 'इंडे देवजा व्यामात्र निकंछ वत লাভ করিয়া দেবতারও অজেয় হইয়াছে, কিন্তু এখন লোক নাশকারী অভিজিৎ নামে মুহুর্তে অতীত হয়, অতএব আপনি উহাকে বিনাশ করুন।' নারীয়ণ স্থাই অন্ভ কালরূপী, ব্রহ্মা তাঁহাকে মুহুর্ত্তের উপদেশ দিতেছেন দেথিয়া তিনি ঈषकाष्ठ कतिया स्मर्गन बाता देनठाटक विनाभ করিবেন। বরাহ অবতারে ভগবান এইরূপে ধরিকীর উদ্ধার ক্রিয়াছিলেন।

কাণিকাপুরাণে এই বরাহ সম্বন্ধে একটা বেশ নৃতন
কথা পাওয়া যায়। ভগবানু বরাহমূর্দ্তি পরিএই
করিয়া হিরণ্যাক্ষ বিনাশ ও পৃথিবী উদ্ধার করিয়াও শাস্ত
ইইলেন না। মহাবরাহ তথন পৃথিবীতে উপরত হইয়া
বহুসংখ্যক সন্তান উৎপাদন করিতে লাগিলেন। দেই সকল
মহাশুকর পৃথিবীতে মহাউৎপাত আরম্ভ করিল। দেবভারা
ইহাদের অভ্যাচারে উৎপীড়িত ইইয়া পুনরার বিফুর তাব

করিয়া তাঁহাকে কহিলেন, 'আপনার এই মহাবরাহম্র্ডি
সংহার কক্ষন ও এই সকল উৎপ্রীড়ক প্রাণিদিগকে
বিনাশ কক্ষন।' বিষ্ণু কহিলেন, একবার যে শক্তি
তাঁহা হইতে নির্গত হইয়া পড়িয়াছে, আর তাহাকে তিনি
সংহার করিতে পারেন না। সে শক্তি-দমনের জন্ম তদপেক্ষা অপর কোন মহাশক্তির আবিশ্রক। মহাদেব এজন্ম
অমুক্ষর হইলেন। দেবতারাও তাঁহাকে অধিকতর শক্তিসমষিত করিবার জন্ম আপন আপন শক্তি তাঁহাতে সমিবিষ্ট করিলেন্। মহাদেবও তথন অষ্টপদ মহাকার শর্ভমৃত্তি প্রিগ্রহ করিয়া মহাবরাহ ও তরংশকে বিনাশ করিয়া
পৃথিবীকে শান্ত করিলেন। • [হিরণাক্ষ দেব।]

৪র্থ নৃসিংহাবতার ৷—হিরণ্যাকের ভাতা হিরণ্যকশিপু ব্ৰহ্মার নিকট কি দেবতা কি মানব কিংবা কোন স্বষ্ট প্রাণী তাহাকে বিনাশ ক্রিতে পারিবে না অথবা জলে **च्रत चर्ता वा व्याकारन जाशांत्र मृ**क्रु हरेरत प', এই রূপ বর-শাভ করে। এই বর্প্রভাবে সে আপনাকে অমর জানিয়া দেবতাদিগকে উপেকা করিতে ও তাহাদের প্রতি মহা অভ্যাচার করিতে আরম্ভ করিল। সে ইন্দ্রাদি দেবতা কাহা-🖒 কও গ্রাহ্ম করিত না, বিষ্ণুর সহিত সর্বাদা স্পর্দ্ধা করিত। ইহার একপুত্র প্রহলাদ অতি শৈশব হইতেই হরিপরা-মুণ হইয়া উঠে, এজন্ত হিরণাকশিপু তাহার উপর অতিশর वित्रक हिन। श्रक्लारमत्र रतिज्ञि ছাড়াইবার অভ্য **হিরণ্যকশিপু** ভাহাকে অগ্নিভে নিকেপ, বদ্ধহস্ত কলে নিক্ষেপ ও হস্তিপদতলে নিক্ষেপ করে, किन्दु ज्यातात्र कृषात्र ति मकन विषत् जैकात्र पारेगा-ছিল। দৈত্যপতি বিরক্ত হইয়া জিজ্ঞাসা করিল যে এরূপ विभाग- (म किकार तका शाहेरलाइ ?. वानक धारलाम ভাহাকে বলিল, ভগবান্ বিষ্ট্ ভাহাকে উদ্ধার করিয়া থাকেন। তিনি সর্বব্যাপী, সর্ববর্শী ও সর্বজ্ঞ।' দৈত্যপতি বলিল, সে কি ? তোর হরি সর্বব্যাপী ? ভবে কি সে এই •মর্মরপ্রস্তর ভাস্তেও আছে? প্রহলাদ দৃঢ়তা সহ-कारत विनन, 'निक्तग्रहे छशवान् উहार् खाइहन।' उथन দৈতাপতি দে কৃথায় অবিখাদ করিয়া পুত্রকে মিথ্যাবাদী বলিয়া ভাহাকে হরি-উণাদনা হইতে নির্ত্ত করিবার জ্ঞ विनन, 'আছে। এই স্তম্ভ আমি दिश्ध করিডেছি, কৈ দেখি, তোর হরি উহাতে কেমন করিয়া আছে।' এই বলিয়া দৈতাপতি ৰজাৰিতে ব্ৰস্ত বিশ্বত করিয়া ফেলিল। আশ্চ-র্ব্যের বিষয় এই জগবান ভক্তবাকা, ভক্তবিশাস ও ভক্তের আগ রক্ষার্থ তৎক্ষণাৎ অইসিংহ ও অইনরাকার দেহ খারণ করিরা সেই বিশ্বিত শুস্ত মধ্য হইতে আবিভূত হইনের
এবং আর উপেকা না করিয়া দৈতাপতির কেশাবর্দ্দ
পূর্বক স্বীর উরুষরের উপর ফেলিয়া নথরদারা তাহার রুদ্ধি
বিদ্বারণ করিয়া তাহাকে বিনাশ করিলেন। তথন ম্বদ্ধানার
দৈতাপতি এইরপে তথনকার অস্টে এক অভিনর নীয়া
কার মূর্তির উরুতে সন্ধ্যার সময় প্রাণত্যাগ করিল। বৃদ্ধ

ভগবান্ এইরূপে চতুর্থ অবতারে নৃসিংহ মৃতি ধারণ করিয়া ভক্তপ্রাণ রক্ষা ও পৃথিবীকে দৈত্যের কুক্বন হুইটে উদ্ধার করেন।

৫ম বামনাৰভার।—নুসিংহাবভারে কথা বলা হইয়াছে, তাঁহার পৌত্র বলি অভিশয় ধার্বির ছিলেন, জাঁহার ধর্ম বুদ্ধিতে প্রীত হইয়া ভগবান তালাক ত্রিলোকের আধিপত্য প্রদান করেন। এই আধিপ্য লাভ করিয়া তিনি অতিশয় দানণীল হইয়া উঠেন। জায়া নিকট কোন অৰ্থী বিমুধ হইত না। তাঁহার রা সুশাসক ও সুপালকও আর বিভীয় ছিল না। এ সদগুণ স্বত্বেও তিনি এতদুর গর্বিত ছিলেন যে, তিনি দেক ব্রাহ্মণের প্রতি দৃক্পাত করিতেন না। দেবতারা এল মহাত্মসস্তুট হট্য়া বিষ্ণুর শ্রণাপল্ল হন। বিষ্ণুও তাঁচ দিগকে আখাসিত করিয়া কশ্রপের ঔরসে অদিভিগটে বামনরূপে জন্মগ্রহণ করেন। উপনন্ধনের পর বামন বিগ নিক্ট দানলাভাশায় গমন করেন। বলি কুড়কায় ^{রাধ} সম্ভানকে প্রার্থীরূপে উপস্থিত দেখিরা জিজাসা করিলে, विकारकामात्र कि अरमाजन ? वामन विवादन, 'विवादणीः মিত ভূমি, আনুমি ছত্ত্ৰদণ্ড স্থাপন করিয়া তথার ভণলা আসন করিব।' বলি হাসিরা বলিলেন, এত সামার শ আমার পক্ষে উপহাসকর, তুমি গ্রামনগরাদি প্রার্থনা ^{বর।} वामन विवादनन, आभात अधिक धारतासन नाहे, याहा शिर ভাহা দিলেই সম্ভট হইব, অধিক লোভ নাই। বলি ^{হাগি।} দানাৰ্থিক অহণ ক্রিলেন।. দৈত্যগুরু ভুক্রাচা^{র্য বি} त्नंन, महात्रास विशन "घणिन, हेनि चत्रः नातात्रन। वि বলিলেন, যিনিই হউন, যথন দান করিব প্রতিবৃত্^{ইরাহি} তথন অন্তথা হইবে না। দান করা হইল। নামন ^{জহর।} বিরাট্স্তি ধারণ করিয়া একপদে উর্জলোক অপর ^{পদে জান} লোক আবরণ করিয়া নাভিদেশ হইতে আর এক পর বি করিয়া তাঁহার স্থান • প্রার্থনা করিলেন। বনি ^{গুল্লী} कुछवारम विनामन, छशवान् भामात नर्गहर्ग हरेगाएँ। এখন ও পদ আমার মন্তকে রাধুন। নারারণ

ভাহাই করিলেন এবং তাঁহার দান ধর্মের প্রকার অরপ অধোলোক তাঁহাকে পুনঃ প্রভাপন করিয়া পাভালে তাঁহার বাসস্থান নির্দেশ করিয়া দিলেন এবং নিজে তাঁহার ভক্তিতে প্রীত হইরা তাঁহার হারে চতুর্জ মৃর্ত্তিতে হারী হইয়া রহিলেন।

্রই অবভারে ভগবান্মহা দান্তিকের দম্ভ বিনাশ করিয়া দেবজ:ধ দ্র করেন।

৬ৡ অবতার পরভরাম। ভৃত্তবংশলাত জমদ্মি নামক শ্বিরু ঔরসে তাঁহার রেণুকানালী ক্লেতিয়া পত্নীর গভেঁরাম জনাগ্রহণ করেন। অমদ্যার অভান্ত প্তাও ছিল। কোন্ত কারণে জমদগ্রি পত্নীর প্রতি বিশ্বক্ত হইয়া তাঁহাকে কাটিয়া ফেলিতে পুদ্রদিগকে বলেন। রাম মাতৃহত্যা অপেকা পিতৃ-আজ্ঞালজ্বনকে গুরুতর পাপ বলিয়া বিবেচনা করিয়া পর্য দারা জননীর শিরশ্ছেদ করেন। এই পরশু তিনি মহাদেবের নিকট লাভ করিয়াছেন। জ্ঞান্যি রামের কার্য্যে প্রীত হও-যার তাঁহাকে বর দিতে চাহিলেন। রাম অননীর প্নজীবন এবং নিজের দীর্ঘনীবন ও যুদ্ধে অজেয়ত্ব প্রার্থনা করিলেন। জমদগ্রি বর দিলেন। মাতৃহত্যার পাপে তাঁহার পরভ ওাঁহার হাতে লাগিয়া রহিল, খুলিল না, রাম মাতৃহত্যার পাপ দুর করিবার জন্ম কৈলাসে তপস্থার্থ গমন করেন। হৈহর- (म्याधिপाङ कार्खवीया अर्ड्यून এই সময় এক দিন अमिपात्र ঘাশ্রমে গিয়া ইল্লেখ গচ্ছিত ধন কামধেত নামক গাভী প্রার্থনা করেন। জনদ্বি ভাহা দিতে অস্বীকার করায় রাজা বলপুর্বক গোহরণে উন্নত হইলে, দেব-গাভী অকসাৎ শরীর বৃদ্ধি করিয়াক্ষতিয়েসৈক্ত বিনাশ করিতে আরেষ্ট করি-লেন। রাজা কাজেই পলাইলেন। এই সময় রাম তপস্থা হইতে ফিরিয়া আসিয়া সমস্ত বিবরণ শুনিয়া রাজা অর্জুনের বিরুদ্ধে বাত্রা করিয়া তাঁহাকে যুদ্ধে বিনাশ এবং আবার কৈলাদে গমন করিলেন। অর্জ্জুনের পুত্রগণ তৎপরে क्यनियर्क कांग्रिया रक्षनिरनन । असनिय मृज्यकारन त्रामरक हेरात्र व्यक्तिविधात्मत्र क्यारम्भु निम्ना मतिरलन्। यथन क्यमनिमत চিতা জনিতেছে, ভখন রাম উপস্থিত হইলেন এবং পিভূব্ধের প্রতিশোধার্থ প্রভিজ্ঞা করিলেন যে, যথন ক্ষতিয়গণ এতই ^{প্ৰিত} ও অন্তারকারী হইরাছে, তথুন পৃথিবী হইতে সমস্ত ক্রির বংশ নষ্ট ক্রিব। এই প্রতিজ্ঞাবৃশে তিনি একু শবার পৃথিবীকে নি:ক্জির করেন। ইহাতে সমস্ত পৃথিবী তাঁহার অধিকত হয়। এইরূপে পৃথিবী নৃপতিহীন হওরায় ^{অরাজকতা} বাড়িল। কশুপ ইহা দেখিয়া পৃথিবীর মললের ^{নিনিছ} রামের নিক্ট উপস্থিত হইলেন। রামও পৃথিবীর

যাবন্থা লইয়া বড়ই ৰাজ ছিলেন, তিনি গুকুকে উপস্থিত দেখিরা উছোকে সম্ভ পৃথিবী দান করিলেন এবং তপ-ভার অন্ত কৈলাদে গমন করিতে উন্মত হইলে কল্পপ বলি-লেন, তুমি বাহা দান করিয়াছ, তাহা লইলে প্রত্যাহারী হইবে। রাম তথন সমুজ্রতীরে গিয়া বরুণকে বলিলেন, আমি সমস্ত পৃথিবী কল্পপক্তে দিয়া আসিরাছি, আমার দাঁড়াই-বার স্থান নাই। ভূমি আমার স্থান দাও। আমি ধরু হইতে শর নিক্ষেপ করিলে যেখানে শরটা পড়িবে, ভৌমায় ততদ্র जनबाभि नवारेया नरेया न्छन ভृति जाशारेया मिट्ड रहेट्य। বরুণ এরুণ অমুরোধ শুনিয়া ইহা বৈঞ্বীমায়ুা জানিয়া रमरगरात्र अत्राव्य नहेराना एमरगर अत्राव्य निरामन অভ রাত্তিতে যম উইপোকাুহইয়া রামের ধহর ছিলা कांग्रिया त्राथिया मिर्टात्न। कना नत्र निरक्ष्णकारन ভাহা ছিড়িয়া যাইবে ও ্শরের বেগ অতি অল হইয়া পড়িবে। তাহা হইলে আর তোমার বেশীদ্র সরিয়া যাইতে হইবে না। ভাহাই হইল। মলুবার উপক্লের লোকের মধ্যে প্রবাদ এইরূপ যে পরশুরামই মলবার উপক্লে সমুদ্র প্লাবন বন্ধ করিয়া নিন্দে তথায় আজিও আছেন।

ভগবান এই অবতারে মাতৃহত্যা করিয়া পরতসংশ্কে হস্ত হইয়াছিলেন বলিয়া পরত্রাম আধ্যা পাইয়াছিলেন। ছন্দান্ত ক্ষত্রিয় বিনাশ ও সমুজ বেগ রোধ করিয়া দক্ষিণ ভারতের রক্ষা এই অবতারের কার্যা। [পরত্রাম দেধ।]

৭ম রাম অবতার'৷--লকার রাবণ নামক রাক্সরাজ অতি দর্পিত হইয়া ত্রিলোক পীড়িত করিলে দেবগণের আর্থ-নায় ভগবান নারায়ণ রাম, লক্ষণ, ভরত ও শক্রম নামে চারি অংশে উত্তরকোশলের রাজা দশরবের পুত্ররূপে জন্মগ্রহণ করেন। লক্ষীও সীভারণে মিথিলারাজের কভা হইরা অনিলেন। তারকানামী এক রাক্ষীর উৎপাতে অধীর হইয়া বিখামিতা নামক ঋষি আসিয়া ভগবানের অবভার রামের সাহায় প্রার্থনা করেন। রাম ও লক্ষণ উভয়ে গিয়া তাড়কাকে বিনাশ ওঁযজ্ঞদর্শন ছলে মিপ্লায় গিমা হরধমু ভঙ্গ করিয়া সীতাকে বিবাহ করেন। পরশুরাম এই ধরু গভিতে রাথিয়া গিয়াছিলেন। তিনি ক্ষত্রিয় কর্তৃক ধহুর্ভঙ্গ বিবরণ ভূনিয়া রামকে বিনাশার্থ আহ্বান করিলেন। রাম হাসিরা ভার্গবের অর্গগমন পথ রুদ্ধ করিলেন, পরশুরাম হাসিরা চলিয়া গেলেন। তৎপরে বিমাতার চক্রাস্তে পড়িয়া রাম লক্ষ্প ও সীতাসহ পঞ্বতী বনে গমন করেন। সেখানে রাবণভন্নী অর্পণ্ধা শক্ষণকে দেখিয়া কামুকী হইরা তাঁহাকে প্রার্থনা করেন। লক্ষণ জানিজে পারিষা তাহার নাসাচছেদন

ক্রেন। সূর্ণথার রক্ষক ধরত্বণ যুদ্ধ করিতে আসিলে त्म चनत्न इष्ठ इहेन, उथन क्र्मन्था त्रावनत्क मक्न विवतन বলিলে রাবণ আসিয়া সীভাকে হরণ করিয়া লইয়া গেল। মারীচ রাক্ষস অর্ণমৃগ হইরা রামকে অংলুক্ক করিয়া দূরে লইয়া গেলে রাবণ যোগীবেশৈ সীতাকে হরণ করেন। পথে शक्तीत खेठारू बावशदक वांधा नितन बावश डाहादक विनाम করিয়া লয়ার প্রস্থান করিলেন। সীতা ভাহার রথে থাকিয়া কাঁদিতে বাঁদিতে ও গাতালভার ফেলিতে ফেলিতে গেলেন। রাম তৎপরে মারীচকে রাক্ষ্য জানিয়া বিনাশ করিয়া ফিরিয়া আসিয়া গৃহে সীতাকে না দেখিতে পাইয়া অম্বেষণ করিতে করিতে মৃতপ্রায় পতিত লটায়ুর নিকট সমস্ত বিবরণ শুনি-লেন এবং ঋষ্যমুগ পূর্বতে বাণরাজ্বের ভ্রাতা স্থগীবের নিকট সীতার এক অলঙার পাইলেন। স্থাীব সীতা উদ্ধারের লোভ দেখাইয়া রাম দারা বানররাজ বালিকে वंध क्रान । निष्क बाका अधिकांत्र क्रिया त्रामरक रानत-সেনা ভারা সাহায্য করেন। হতুমান্ সাগর পারু হইয়া সীতার সংবাদ বইয়া লঙ্কার রাজোতান নষ্ট করিয়া আসিয়া সংবাদ দেন। নল নামক এক বানর অন্তুত কৌশলে সাগরে দেতু শক্ষন করেন। দেই দেতুবারা রাম সদৈত্তে লক্ষায় গিয়া রাবণকে অবংশে ধ্বংস করিয়া সীতার উদ্ধার করেন। রাজ-ভাতা বিভীষণ যুদ্ধের মধ্যেই আদিয়া রামের সহিত যোগদান করেন। বিভীষণই শেষে লঙ্কার রাজা হন। তৎপরে রাম, সীতা ও শক্ষণসহ অযোধ্যায় আসিলে ভরত তাঁহাকে রাজ্য ছাড়িয়া দিলেন। সীতার বহুদিন প্রগৃহবাসজনিত একটা নিন্দা উঠিল। রাম দীতাকে বাল্মীকির তপোবনে পরিত্যাগ করিয়া আসিতে লক্ষণকে আদেশ দিলেন। আদেশ পালিত হইল। সীতা তথন গর্ভবতী ছিলেন। ৠষির আশ্রেমে কুশ ও লব তাঁহার হুই পুত্র ভূমিট হইল। ইহারা ঋষিবালকের ক্রায় গীতাদি ও ক্ষতিয়েয় ক্রায় ধনুকৌদও শিথিয়াছিল। वानीकि हेशांनिशत्क यथार्थ পরিচয় বলেন নাই, किछ তাঁহার রচিত রামায়ণ গান সীতাবর্জন পর্যান্ত শিপাইয়া ছिলেন। এদিকে কিছুদিন পরে রাম অখ্যমধ্যজ্ঞ আরম্ভ করিয়া সমস্ত ঋষিকে নিমন্ত্রণ করেন। বাল্মীকি স্থাপিয়া পরিচয়ে ফুশলবকে লইয়া যজ্ঞ ছলে উপনীত হইলেন। সভা-স্থলে রামায়ণ গান হইল। ক্রেমে ঋষি পরিচয় করাইয়া नित्नन। मीडा जानीक इहेरनन, किन्द बायहन्त जांशांक অগ্নিপরীকা ব্যতীত পুর্নগ্রহণ করিবেন না বলায় তিনি পরীক্ষা দান করিবার পুর্বেই পাড়ালে প্রবেশ করিলেন। তৎপরে কিছুদিন পরে রাম যথন কালপুরুষের সহিত কথোশকথন করিতেছিলেন, সেই সমন্ন কল্প উপ_{থিও} ছওরার রাম নিয়মামুসারে লক্ষণকে পরিত্যাগ করিতে বাদ ছন। লক্ষণ সরবৃতে থাণত্যাগ করেন ও তাহার কিছুদিন পরে রাম, ভরত ও শত্রুদ্ধ এবং অক্সান্ত আফুগত ভোক নইন সরবৃপ্রবেশপূর্কক ক্ষণ গমন করেন। [রাম দেখ।]

৮ম বলরামাবতার।—মধুরার রাজা উপ্রসেনের _{ওরনে} এক দৈত্য কংস নামে জন্ম গ্রহণ করেন। কংস বাছা হইয়া বৃদ্ধ পিতা উগ্রসেনকে কারাবদ্ধ করেন। ইয়া অত্যাচারে ও পৃথিদ্বী অন্তৰ্ণন্ত রাজগণের অসম্ভব বৃদ্ধিন ্শাস্তিদূর হওয়ায় দেবগণের তার্থনায় ভগবান্ পৃথিবীকে ভারমুক্ত করিবার জন্ম, আবার অবতীর্ণ হইতে খালা ক্রিলেন। দৈবকী কংসের এক পিতৃব্যক্তা। রুক্তি तः नीय वंश्वहम त्वत्र महिल कांशांत्र विवाह रुप्त । कःम कांनिए পারেন যে, দৈবকীর অষ্টমগর্ভদাত সস্তান তাঁহার প্রাণ ক্ষি করিবে। তিনি তাহাতে ক্র হইয়া দৈবকীকে পায় সহিত কারাকৃত্ধ করিয়া রাখেন ও তাঁহার ৬টা সন্তান্ত বিনষ্ট করেন। ৭ম গর্ভ হইলে বস্তুদেব তাহা রোহিণী নাক। অন্ত এক পত্নীতে সঞ্চারণ করিয়াদেন। রোহিণীকে, ন্ রার নিকটবর্ত্তী গোকুলপতি গোপরাজ নন্দের নিকট রাগ্রি আনােন। ৮ম গর্ভে এক বালক ভূমিষ্ট হইলে বয়াল ভাহাকে লইয়া সেই রাত্তিতে প্রহরীরা নিজাগত হা গোপনে জল ঝড়ের মধ্যে নন্দালয়ে রাথিয়া আসেন। নন্দের সেই দিন এক কলা হইয়াছিল, বস্থদেব স্তিকা গৃহে গি ক্সাটা লইয়া স্বীয় পুত্র রাখিয়া আসেন। প্রদিন ^{কং} কল্পানীকে বিনাশ করিতে উত্তত হইলে কৃষ্ণানী হবল হইয়া উদ্ধে উঠিয়া গিয়া বলিল, ডেমার বিনাণ ব গোকুলে বিদ্ধিত হইতেছেন। কংস ওনিয়া ^{গোকুলো} সমস্ত বালক ও জীবস্তান বিনাশের জন্ত আদেশ দিলেন ন্লালয়ে ওরাহিণীর গর্ভজাত সস্তান বলরাম ও দৈংগী সন্তান শ্রীকৃষ্ণ নামে রক্ষিত হইল। শিশুকালে তাঁহারা ^{বংগে} ভবে লুকামিত ছিলেন, তৎপতের ঘধন গোচারণে ^{ঠারায়} अंतृत्व इहेरनन, उथन दिन्छानन कःम कर्ड्क निर्मुक हरेगाणी দিগকে বিনাশ করিতে আসিত। বলরামহতে (^{ধরুর হ} প্রলম্ব নামে ছই অস্তুর বিনষ্ট হয়। বলরাম কালে ^{ছর চ} মদিরাপক হইয়া উঠেন। কংস উভর লাভাকে ^{রিনা} করিবার জয়ত নানা চেষ্টা করিয়া জিক্সম হ^{ট্রা এক হ}ে নিমন্ত্রণ করেন। নন্দ কংলের অধীন রাজা, কার্লেই গ্রে উপস্থিত হইলেন। এই বজ্ঞ খলে শ্রীকৃষ্ণ ও বলরা^{র করে} বিনত্ত করিয়া উত্তাসেনকে কারাসুক্ত করিয়া গিংহাগনে গ্^{নাম}

রেন। তৎপরে তাঁছারাই মথুবা রাজ্যের সর্কের্পরা রাজ্যের সংক্রেপ্রা রাছিলেন। কালে জারাল্য (কংসের খণ্ডর) তাঁছালিকে মথুবা হইতে তাড়িজু করিলে, তাঁহারা ছারকার মন করেন। বলরাম রেবতী নায়ী কল্যাকে বিবাছ ফরেন। ধন ক্ষপুত্র শাস্ব হুর্গোধন-কল্যা লক্ষণাকে হরণ করিয়া বারাজ্য হন, তথন বলরামই যুক্ত করিয়া ভাহাদের উদ্ধার রেন। ছিবিদ নামক বানররাজ্যও ইহার হুর্গে বিনষ্ট ন। ইনি একবার ক্রেন। ছিবিদ নামক বানররাজ্যও ইহার হুর্গে বিনষ্ট ন। ইনি একবার ক্রেনি হোগাবলগনে ক্রফের পূর্বেই প্রাণভ্যাগ করেন। তাই অবভারে ভগবান প্রীক্রফের সহিত একত্র অব্বরের কর্ত্রবা সম্পার করেন।

্ন অবতাব বৃদ্ধ। কপিলবাস্ত নগরে রাজা ওদোদনের বলে মাধাদেবীর গর্ভে দিকার্থ, নামে এক কুমার জন্ম। নি অবশেষে শাকাসিংছ নামেও কথিত হন। ইহার । व এक नाम शोलम। वानाकान शहरत्वे हेनि की ज़ा ाटण, निष्कनवामिथिय ७ धानधातवाभन्नाय ছिल्लन। ব্ধাণির ক্লা গোপার সহিত ইহার বিবাহ হয়। সংসারী টলেও গৌতম বলিতেন, "জগতে স্থায়ী কিছু নাই, কিছুই তা নাই, কাৰ্চ ঘৰ্ষণে উৎপন্ন অগ্নিকণার ভায় এই জীবন, গ জলিয়া উঠে, আবার নিভিয়া যায়। আমরা জানিনা श काशा इहेटल आरम, काशा यात्र। हेश वीशाध्वनिवर, ঙিতেরার্থা ইহার আভিত অহুস্কান করেন। এমন कान क्षक महामक्ति चारक, साशांद्र व्यागता विद्राम नाउ কবিতে পারি ৪ আমি যদি ভাহার অমুসন্ধান করি, আমি মচ্যাকে তাহা দেখাইতে পারি। যদি আমি স্বাধীন হই, ^{সংমি} পুণিবীকে মৃক্ত করিতে পারি।" গৌতমের এইরূপ ^{াব্যাভা}ত চিন্তা দ্র করিবার জন্ম নানা চেষ্টাহয়, কিন্তু সম্ভত রুগা হইয়া যায়। একদিন তিনি নগর ভ্রমণে গিয়া এক জরাতৃর বুদ্ধ, এক রোগপীড়িত ও এক ভিক্ সন্ন্যাসীকে পেথিয়া তাহার মনে জীবন যোবনধনের পরিণাম ভাবিয়া অংকুল ২ইটোন, তাঁহার মনে বৈরাগ্য পূর্ণমাত্রায় আধিপতা ভাপৰ করিল। তিনি এক রাত্তিতে একমাত্র অসুচর লইয়া গোপনে অবীবোর্ণে রাজ্যতালে করিয়া প্রস্থানুকরিলেন। ^{এই সময়} রাজল নায়ে, এক পুত্র হইয়াছিল। প্রত্যুবে তিনি ^{ক্রলফার}, পরিচ্ছদ ও অখ অভ্চরকে দান করিয়া ভাহাকে বিজ্ঞা ফিরিতে বলিলেন। তৎপরে গৌতম প্রথমে বৈশালী নানক স্থানে গমন করিয়া এক বিজ্ঞ বান্ধণের নিকট আব্যা ^{তর শিক্ষা} করেন। তাঁহার জ্ঞানকুণা অপরিসীম। তিনি

বৈশালীতে শিক্ষা সমাপন করিয়া রাজগৃহের এক বিখাতি শ্রেষ্ঠ, পণ্ডিতের নিকট গমন করেন। এপানেও তাঁহার তৃপ্তি হইল না। তিনি উক্লবিষ গ্রামে গিয়া পাঁচলন সহপাঠীর ষ্ঠিত তপভায় প্রার্ভ হন। তুপভার পর তাঁহার স্কীরা তাঁহাকে নান্তিক বোধে ত্যাগ করে। অনশেষে তিনি বহু সাধনার পর যথার্থ জ্ঞানদাভ করিয়া তৃপ্ত হন। এই স্ময় তিনি বুদ্ধ নাম গ্রহণ করেন এবং মায়ামোহিত অংগতের জন্ত এক নৃত্ন জ্ঞানালোক প্রকাশ করেন। তিনি সমত প্রচারার্থ কাণীতে উপস্থিত হইয়া তাঁহার'সহাধ্যায়ী পাঁচলন সন্ন্যাসীকে স্বমতে আনয়ন করেন। তৎপরে ঐচার কার্য্যে বঙী হইয়া তিনি রাজগৃহে রাজা বিশ্বিদারের সভায় আহত হন। রাজা **তাঁহার উপদেশ•ভানিয়া তাঁহার বা**সের *ভা*ত তাঁছাকে কালান্তক নামক মঠ প্রদান করেন। এথানে থাকিয়া তিনি উপদেশখান করিতে আরম্ভ করেন। এই খানেই তাঁহার প্রধান শিশ্ব দারিপুত্র কাত্যায়ন ও মৌদা ল্যায়ন তাঁহরে নিক্ট উপস্থিত হ'ন। রাজা বিষিদার পুত্র कर्क्क निरुष्ठ रहेला तूक तामगृर जाग कतिया आवछी नगरत গমন করেন। অংযোধার^{*}রাজা প্রদেনজিং তাঁহার<u>ে</u> মঙ গ্রহণ করেন। দ্বাদশ বৎসর পরে তিনি পিতার সহিত, সাক্ষাৎ করিতে গমন করেন। তিনি স্বরাজ্যে কতক ভাগ অমানুষী কার্য্য করিয়া সমস্ত শাক্যকে বৌদ্ধ করেন। তাঁহার পল্লী ও পিতৃব্যপল্লী জ্লীজাতির মধ্যে প্রথম ব্রুমত গ্রহণ করেন। १० বৎসর বয়সে তিনি আবার রাজপুত্ ফিরিয়া আদেন ও পিতৃহ**ন্তা রাজা অজাতশ**ক্তক বৌদ্ধ করেন। **उ**९्भार देवणानी धनः उथा इहेट क्वीनगरंत्र गमन করেন। এই সময়ে তিনি বুঝিতে পারেন যে তাঁহার দিন ফুরাইয়া আসিয়াছে। বৈশাথী পূর্ণিমার দিন এক শালরুক भूति शानव रहेग्रा जिनि निकीण गांड करत्रन।

প্রাণায়্সারে এই বৃদ্ধ ও নারায়ণের অবতার। প্রাণে
বিজ্ঞান্তে, দৈতোরা ইক্সকে ক্সিজানে করে যে, কি উপায়ে
তাহারা স্থামিভাবে কগতে রাজ্য করিতে পারিবে। ইক্স
তাহাদিগকৈ পবিত্রভাবে যাগমজ্ঞে ও বেদবিহিত আচারের
অন্তবর্ত্তী হইতে বলেন। তাহারা এক মহাযুক্তের অম্ভানে
প্রবৃত্ত হইলে, অভাভ দেবতা বিষ্ণুর শরণাপদ্ধ হইলেন।
বিষ্ণুও যজ্ঞকলে ত্রিলোকের আধিপতা দৈত্য কর্ত্তক দলিত
হইবে বৃষ্ণিয়া এক সন্নাদী মৃত্তি ধারণ ক্ষিমা অপবিত্র
বেশে হল্পে এক ঝাঁটা লইবা যজ্ঞান্তান্তী দৈত্যগণের নিকট
উপন্তিত হইলেন। তাহারা তাহার অপবিত্র বেশভূষা দেখিয়া
জিক্সাসা করায় তিনি অভ উত্তর না দিয়া যজে দেব-

কার্ষ্যে প্রাণীবধ করা অতীব অন্তার এই কথা বৃশ্বাইরা বলেন। আমি পবিত্র ইইব বলিরা অপরের প্রাণবধণ করিব, ইহা অন্তার। পাছে আমার পদদলিত হইরা কোন ক্ষুত্র প্রাণী বিনষ্ট হয় বলিয়া আমি এই বাঁটা দারা সন্মুখ্য ভূমি গরিকার করিয়া তবে পদক্ষেপ করি। দৈত্যেরা এইরূপ হাদর-মোহকরী দরা-উদ্দীপক কথার শ্রব হইরা আরক্ষ যজ্ঞ পরি-ভাগে করিল ও "অহিংদা পরমোধর্ম" এই মত অবলম্বন করিয়া বেদমার্গ ভাগে করিল। ত্রিভ্বন দৈত্যপ্রাদ হইতে রক্ষা পাইল। নারায়ণের অবভার হওয়া সফল হইল।

১০ম অবতার করী। করী অবতার এখনও হয়:নাই।
ইহার পর হইবে। ইহা বর্তমান কলিযুগের শেষভাগে
ঘটিবে। কলির অত্যাচারে পীড়িত হইয়া দেবগণ
বিষ্ণুর নিকট প্রার্থনা করিলে, তিনি শভল প্রামে বিষ্ণু
যশানামক ব্রাহ্মণ ঔরিংদ জন্ম গ্রহণ করিবেন। পরশুরাম উহাকে বেদাদি শিধাইবেন এবং মহাদেব অন্ত্রনিমা এক সর্ব্বগামী খেতাখ, এক অক্ষর অসি ও এক শুক্পক্ষী
দান করিবেন, তৎপরে তিনি পৃথিবী স্থ যাবতীয় মেছছ ও বিধ্ ঘীকে বিনাশ করিয়া পুনরায় সনাতন ধ্রের প্রতিষ্ঠা ও

এই দশ অবভারের মধ্যে মৎস্থা, কুর্মা, বরাই ও বামনের কথা বৈদে পাওয়া যায়। মৎস্থা ও কুর্ম্মের উক্তি শতপথ বাজনে; কুর্মা, বরাই ও বামনের কথা তৈত্তিরীয়বাজনে আছে। মৎস্থা অবভারে যে প্রালয়ের কথা বলা ইইয়ছে, ভাহা গৃঠানদিগের বাইবেলের লিখিত নোয়ার সময়ের জলালাবনের ইতিহাসের সহিত মিলে। ভগবানের আদেশে সভারত বৈরূপে নৌকাশ্বারা সর্কাবীজ রক্ষা করেন, খুঁঠানদিগের নোয়াও ভগবানের আদেশে সেইরূপ করিয়াছিলেন। মন্তু ও মুবা নোয়া শব্দ পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের মতে এক ব্যক্তিবেধিক। তাহারা বলেন, পাশ্চাত্য শাল্মের ইতিহাস দেশ ভেদে রূপান্তরিত হইয়া বেদে আন পাইয়ছে। প্রল্যের জলপ্লাবনকে পণ্ডিত মোক্মন্লার বর্ণেন যে, ইহা নাধিক হৈন্ত্তিক অথবা প্রান্তের বৃষ্টিজনিত দেশ বিশেষের ধল প্রাবন ভিন্ন আর কিছুই নহে। প্রল্য দেখা ] *

ভূতৰজেরা বলেন যে, এই দশ অবতার ব্যাপারে পৃথিবীতে ভাবস্প্তির ক্রমবিকাশ-কথাই বর্ণিত হইয়াছে। তাঁহারা বলেন যে, যথন ভূস্টি হয় নাই, তথন জলচর জীব ভির অভ কিছু ছিল না, সেইকালে ভগৰানের শ্বা

বুঝাইবার জন্ম তাঁহার মংশুস্তি করনা করা হইরাছে তৎপরে যথন সাগর মধ্য চুইতে অর পরিমাণ ভূমি জারির উঠিল, তথন উভচর ক্র্ম বা কছেপ্র্যুক্তি করিত হইরাছে তাহার পর ভূমি ভাগ বৃদ্ধি পাইল. জল সরিয়া আনক দ্বে গিয়া পড়িল, কিন্তু ভূমি তথন কর্দ্ধি মাত্র, সেরপ জনীয়ে বরাহের প্রায় জীবই বাস করিতে পারে, তাই সেই ক্রুডেগবানের বরাহাবতার করিত হইরাছে। তাহার পর ভূমি শুকাইল, বরাহ ভির অন্ত জীব থাকিবার উপযোগী হইল, এই সময়ে নর ও পশু জারিল, কিন্তু তথনও নরে ১৯৯০তে যে ভিরতা তাহা ঘটে নাই, তাই নর ও পশু স্টির প্রথম যুগে ভগবানের নরপশু মৃত্তি (নৃসিংহ মৃত্তি) করিত হইরাছে। তাহার পর বামন ও পরশুরাম মহন্দ্রসমাজের উর্নিতর ক্রমবিকাশ ও রামচন্দ্রে তাহার প্রবিকাশ দেখান হইরাছে। বলরাম, বুদ্ধ ও ক্রিতে মহন্দ্রসমাজের বিভিন্ন অবস্থার বর্ণনা ও তত্বপযোগী অবতার করনা আছে।

বান্তবিক দেখিতে গেলে প্রথম চারিটী অবভারের ভিনটী যেরূপ বৃহৎকার্য্যের হইয়াছে, শেষ করেকটী অবভারের কার্য্যের তত বিশালভা দেখা যায় না। এই সকল অব-ভার যেন পাশ্চাভ্য জগতের Hero-worship রূপাস্তর বিশ্ব বোধ হয়।

এথন উড়িয়া প্রভৃতি হানে দশাবতারের যে মৃর্তি দেখা যায়, তাহাতে বুদ্ধ ফানে চতুর্জ জগয়াথ মৃর্তি ছার্তে হইয়াছে। [ভাস শব্দে দশাবতারের ছবি দেখ।] এবর জনেকে জগয়াথদেবকে বুছেরই রূপ বলিয়া বর্জনা করিয় থাকেন। কিন্তু জগয়াথদেবের মাংছিয়া-প্রকৃষ্পক স্বন্পুরাণিয় উৎকলথতে দশাবতার হইতে জগয়াথম্তি. স্বতম্ভাবে বর্ণিত হইয়াছে—

"অতো দশাবতারাণাং দর্শনাস্থৈস্ত যৎকশম্।
তং ফলং লভতে মর্ত্তো দৃষ্ট্রা প্রীপুরুষোত্তমম্॥"
(উৎকলধ ৫১ জঃ)

দশার্থ (পুং) দশ অখা রবে যক্ত। চক্ত।
"দশাখং খেতপক্ষতং বিচিত্তোমাধিলৈবতং।"
জলপ্রত্যধিলৈবক স্থ্যাখ্যাহ্বরেতথা।"
( গ্রহণাত্ত্র সোম্ধান)

২ ইক্ষুক্র দশম পুত্র। (ভারত ১০।২।৬)
দশাশ্রমেধ (ক্রী) কাশীস্থিত তীর্থভেদ। একা রাজনি
দিবোদাসের সাহাযা প্রাপ্ত হইরা কাশীতে দশটী অধ্বেদ
যক্ত করেন। যে হানে এই যক্ত অফুটিত হয়, সেই গ্রা দশাশাস্থ নামে বিধ্যাত হইরাছে। পুরাকারে এই তী রুসরোবর নামে বিখাত ছিল, ত্রন্ধার হজাবধি দশাখ নামে বিথাত হইরাছে। এই স্থান অতীব পুণাজনক, ব্রন্ধা হজাতে এই স্থানে দশাখনেধেখর নামে শিবলিঙ্গ প্রতিষ্ঠা করিয়া সেই স্থানেই অবস্থান করিলেন। দশাখনেধে তীর্থ সকল তীর্থের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, এই তীর্থে দ্বান, দান, জপ, হোম, বেদপাঠ, দেবপূজা, সন্ধ্যোপাসনা, তর্পণ এবং শ্রাদ্ধ প্রত্না করিয়া থাকে। দশাখনেধে স্থান করিয়া থাকে। দশাখনেধে স্থান করিয়া থাকে। দশাখনেধে স্থান করিয়া থাকে। দশাখনেধে স্থান করিয়া থাকে। ইলাই মানের স্থান প্রতিপদ্ তিথিতে দশাখনেধে স্থান করিলে আজন্মকত পাপ দিনই হয়। ক্রৈচেইর স্থানা করিলে আজন্মকত পাপ দিনই হয়। ক্রৈচেইর স্থানা করিলে তৎক্ষণাং জন্মধন্ন ক্রত পাপ বিনই হয়। থাকে। আছিমানের স্থানা করে, সে তিথিসংখ্যা পরিমিত জনসঞ্চিত পাপ্ ইইতে নিজ্বতি লাভ করিয়া থাকে।

দশজনার্জিত পাপসংহারিণী দশহরা তিথিতে যে বাকি দশাখনেধ তীর্থেলান করে, তাহাকে বমযন্ত্রণা ভোগ করিতে হয় না। দশহরা তিথিতে দশাখনেধেখরকে দর্শন করিলে দশজনার্জিত পাপ বিনষ্ট হয়। দশটী অখনেধ ফজ কবিয়া অবভ্ত লান করিলে যে ফললাভ হয়, দশহরা তিথিতে দশাখনেধে লান করিলে নিশ্চয়ই সেই ফল লাভ হয়। গলার পশ্চিম তটে অবস্থিত দশহবেখরকে নমস্কার করিলে মানব কথন হর্দশাগ্রস্ত হয় না। (কাশীথণ ৫২ অং) কিশী রেখ।

দশাখ্মেধিক (ক্লী) [ দশাখ্মেধ দেখ। ] দশাস্ত (পুং) দশ আভানি যভা। রাবণ। .

দশাস্তিকু (পুং) দশাস্থা জয়তি দশাস্তাজি-কিপ্। শ্রীরাম।
দশাহ (পুং) দশানাং অংকাং সমাহারঃ টচ্ সমাপাস্তঃ সমাহারহাং নাহাদেশঃ। দশ দিন।

^{*}দশাহং শাব মশৌচং সপি**ণ্ডেষু বি**ধীয়তে।

অতিক্রান্তে দশাহে তু ত্রিন্নাত্রমণ্ডচি ভবেও ॥" (মন্ত ৫।৬৯)

শপিওদিগের শব নিমিত্ত অংশাচ অর্থাৎ মৃত্যাশোচ দশদিন ক্ষা। দশদিন অতিক্রাস্ত হইয়া গেলে অশৌচের কথা
চনিবে তিনী দিয়া অ্লাশাচ হয়।

দশিন্ ( আ ) দশ সংখ্যাঃ যেষাং ভিনি । ১ দশ[্]সংখ্যাযুক্ত। দশ সংখ্যা গ্রামাঃ অধিক্বতত্বেন সন্তাস্ত ভিনি । ২ রাজ ^{কর্তুক} নিযুক্ত দশগ্রামাধিপতি ।

^{"দৰী} ক্লন্ত ভূঞীত বিংশী পঞ্চকুলানি বৈ।" (মহু) ^{(জি) দশ} সংখ্যা: প্ৰমাণং বেষাং ডিনি ১০ দশ সংখ্যপ্ৰমাণক। "তাং দশিভিঃ ধাষ্ঙ্ক।" ( শত॰ বা॰ ১৩।১৪।২ )

দশব্রিকা বস্তাঞ্চলং বা অন্ত্যক্ত ইনি। ৪ দশাযুক্ত দীপ। ৫ সদশ বস্ত্র, যে বস্ত্রের দশা আছে।

দশীবিদর্ভ (পুং) দশিণ হ দেশভেদ। (ভারত, ভীম ৯ অং)
দশেন্ধন (পুং) দশা বর্তিকা ইন্ধনং কাঠমিব যন্ত। প্রদীপ।
দশের (পুং) দশতীতি দন্শু এর ক্ (পতিকঠিক্ঠিগড়ি গুড়ি
দংশিতাঃ এরক্। উণ্১া৫৯) হিংল্ল জ্বন্ধ।

দশেরক (পুং) দশের সংজ্ঞারাং কন্। ১ মরুভূমি, তৃণ জলাদি-শৃত্ত প্রদেশ। ২ তদেশস্থ। ৩ জনপদ্বিশেষ, বৃর্তমান মাড়বার। "আবস্ত্যান্ দাক্ষিণাড্যাংক পার্ক্তীয়ান্ দশেরকান্।"

(ভারত ৭৷৯৷১৬)

দশেরক: সোহভিজনো হলু তক্ত রাজা বা অণ্বছষ্ অংণোলুক্। ৪ দশেরকদেশবাসিগণ। ৫ দশেরকদেশের রাজসমূহ। ইহা বছবচনাতঃ।

দশের ক (পুং) দশতি ছংখানি দদ্যতি দন্শ এরক্ ততো কন্। মঞ্চদশ। (ভ্রিপ্রণ) হেম্চক্রে দশের ক এইরূপ পাঠান্তর দেখা যায়।

দেশেশ (পুং) দশানাং ঈশ: ৬জং। ১ দশাপতি রবি প্রভৃতি।
দশানাং গ্রামাণাং ঈশ:। ২ রাজ কর্তৃক নিযুক্ত আদশগ্রামাধিপতি।

"শংসেদ্ প্রামো দশেশায় দশেশো বিংশতী শিনং।" (মনু)
দিশৈকা শিক (জি) একাদশার্থন্ত একাদশবস্ততো দশ
যে দত্তা দশ একাদশ শুবিষান্তি তে দশেকাদশাঃ নিপার্তনাৎ
সমাসান্তোহকারঃ। যাহারা শতপ্রতি দশকরপ বৃদ্ধি গৃহীতা
বাদ্ধ্যকি ভেঁদ, যাহারা শতকরা দশভাগ হৃদ গ্রহণ করে,
তাহাদিগকে দশৈকাশিক কহে।

দ শেবি ( পুং,) দশ বহবং উণয়ে যত। বহুহ্বিক্ষ, যাহার
আনেক হবি ( মৃতাদি) আছে। "দশোণয়ে কবয়ে তর্কনাতৌ" ( অক্ ৬।২০।৪) 'দশোনয়ে বহুহ্বিকাৎ কবয়ে মেধাবিনঃ পঞ্চয়ের্থে চতুর্থী' ( সায়ণ )

म्रामानि ( थः ) दिलाक मर्भाउन ।

দশৌষধকাল (পং) দশবিধ ঔষধকাল: মধ্যলো কর্মধা। দশপ্রকার ঔষধের সময়। ইহার বিষয় স্থশতে এইরূপ লিখিত আছে,—নির্ভক্ত, প্রাগৃতক্ত, অধোভক্ত, মধ্যভক্ত, অন্তর্যভক্ত, সভক্ত, সামুল্য, মৃহ্মুহ, গ্রাস ও গ্রাসাম্বর এই দশবিধ ঔষধ সেবনের কাল।

কেবলমাত্র ঔষধ সেবন করিলে নির্ভক্ত বলা যায়। অন্নহীন ঔষধ অর্থাৎ ঔষধ সেবন করিয়া কিছুমাত্র ভোজন না করিলে ঔষধের বীর্য্যের আধিক্য হয়। তাহাতে শীঘ্র রোগ শাস্তি হয়। বালক, বৃদ্ধ, যুবতা ও কোমশাক ব্যক্তির পক্ষে এরপে ঔষধ দেবন করা অতিশয় গানিকর ও ব্যক্ষকর।

প্রাগ্ভক - আহারের পূর্বে ঔষধ সেবনের নাম প্রাগ্ ভকা। এরপ ঔষধ সেবনে শীঘ্র পরিপাক ও বলের হানি হয়, সৃদ্ধ, শিশু, ভীক্র এবং জীগণের এইরূপ ঔষধসেবন বিধেয়। অধোভকা ভোলনাকে, ঔষধ সেবনের নাম আধোভক। ইহাতে শরীরের উর্জ্ঞাগন্থ বছবিধ রোগের শান্তি হয় এবং বলংজনা।

ন্ধা ভক্ত — ভোজনের মধ্যে ঔষধ সেবন করাকে মধ্যভক্ত কংহ। ইহাতে ঔষধের বীর্ণ্য সকল দেহে প্রসারিত হয় না। দেহেব মধা ভাগস্থ সকল বোগের শাস্তি করে।

অন্তরাভক্ত—ভোজনের পূর্ব্ব এবং পরে দেবন করার নাম অন্তরাভক্ত। ইহা হৃদ্য, বলকর এবং অগ্নিকর।

সভক্ত — ঔষধ সহযোগে অর প্রস্তেত করিয়া দেবন করাকে সভক্ত কছে। অবলা, বালক ও রুদ্ধের পক্ষে এই ওবৰ লেবনীয়।

সাম্কা—ভোজনের প্রথমে ও শেষে ঔষধ সৈবনের নাম সাম্কা। উদ্ধি ও অধঃ উভয়দ্বিকে দোষের গতি থাকিলে প্রক্রপ ঠোবন করা বিহিত; এজন্ম ইহাকে সাম্কা কহে।

মৃত্যু ত্ — অরের সহিত হউক বা অর রহিত হউক সর্কাণ সেবনের নাম মৃত্যু তি । খাস, কাস, হিকা ও বমনরোগে এইরূপ সেবন করা কর্তব্য।

গ্রাসান্তর — পিঙের সহিত মিশ্রিত করিয়া দেবন করাকে গ্রাসান্তির কছে। বমণীয়, ধুম এবং খ্রাসাদি রোগে লেহনীয় । এই দশবিধ ঔষধেয় কাল।

দ ফ্ট ( বি ) দন্শ ক। দংশিত, যাহাকে দংশন করা হইয়াছে।
দ্স্ ( পুং । দ্স উপক্ষেপে বেদে ভাবে অচ্। উপক্ষেপ। "মহুং
চক্রপরং দ্যায়"। (ঋক্ ৬।২১।১১)

'দসায় শত্নামুপকেপায়' (সায়ণ) লৌকিক প্রয়োগে
দস হইবে না, সেইত্বে ঘঞ্করিয়া দাস হইবে, ইহা কেবল
েবদেই রাবহৃত হয়।

দস্যা প্রাবের হুশিয়ারপুর জেলার অন্তর্গত একটা তহসীল।

ক্ষা ৩১° ৪৪ ইইতে ৩২° ৫ উ: এবং দ্রাঘি ৭৫° ৩৪

২ইতে ৭৫৯ ৫৭ পু:। ক্ষেড়া পাহাড়ও বিশালা নদীর

নগ্যে অবস্থিত। ভূপরিমাণ ৩৮৪ বর্গমাইশ। লোকসংখ্যা
প্রায় হুই লক।

ত্শিয়ারপুর জেলাস্থ একটা নগর এবং দক্ষা তহসীলের সদব। ত্শিয়ারপুর নগব হইতে ২৫ মাইল উত্তরপশ্চিমে অবস্থিত। প্রবাদ আছে যে, বিরাটরাক্ষ এখানে রাজধানী ছাপন করেন। আইন্-ই-অক্বরীতে নগরের উত্তরাংশে প্র তন গড়ের উল্লেখ আছে। ১৮৪৮ খুইালে এই ছুর্গের অধিবা: ভালিয়া কেলা হয়। অধন ছুইটা মাত্র বুক্তল খাড়া আছে অ্থানে শহা ও তামাকের বাবসা হয়। অধানে নিম্ন আ লত, থানা, ডাক্ঘর, সরাই, বিদ্যালয় ও স্থানর জ্লাব

দদের কু (পুং) দশেরক: মকদেশ সোহ ভিজনোহন্ত, ভ রাজাবা অণ্। > দাসেরক, দসেরকদেশবাদী ও এই দেশে রাজা। বহুষ্ অণে লুক্। ' ২ দসেরকদেশবাদী ব্যুক্ষ ও এই দেশের রাজসমূহ। দাসেরক পুষো সাধু:। ৩ গদ: "যান্তিষ্ঠায়ঃ প্রমেহন্তি কথৈবোষ্ট্রদসেরকা:।"

(ভারত কর্ণপ ১০ জ

দস্তক (পারসী) ১ ছাড়, দ্রব্যাদি লইয়া যাইবার অনুম্প পত্র। ২ পরওয়ানা, দ্ওনীয় ব্যক্তিকে ধরিবার জন্ম দ্র পত্র, গ্রেপ্তারি পরওয়ানা।

দস্তখ্ ( পারণী ) হাতের লেখা, স্বাক্ষর। দস্তব্স্তু, পারণী বদ্ধাঞ্জলি, জোড়হাত।

দ্স্তা, মূল অটপাতুর মধ্যে দ্স্তা একটা। থনিতে বাটি দ পাওয়া যায় না। ইহার সহিত গদ্ধক, অসুজান প্রভৃতি যিতি থাকে। ভিন্ন ভিন্ন দেশে ইহার বিভিন্ন নাম এইকপ.—

জিক্ ( Zinc ) ইংল ও ও ফ্রাস্ জিক্ ( Zink ) জর্মণী।  স্পেল্টার হলপু।  চিক্, জিল্পে ইটালি, স্পেন্  ভপাটের (Schpaater) রিম্রা।  দন্তা ( Impure Calamina ) বাঙ্গালা, হিন্দুরান  মদল তুত্রম, তুতানগম্ তামিল।  দ্তা নেপাল।  কলপুবরী ( Oxide of Zinc ) পারস্থ।  জন্তা, জম্ন, স্কেদ মিশি পার্ম্ব।  ক্রেম্ বুস্রি, স্কেদ তুঁত (Sulphate of Zinc) দাকিশাতা  ব্লে তুত্রম্ তামিল ও  তৃত্রম্ সংস্কৃত।  থান হইতে গন্ধকস্ত বে দন্তা পার্মা বার, তার্যা	নাম	•••	•••	(मिंग)
শেপল্টার হলপ্তু।  চিক্ল, জিল্লো ইটালি, শেননা  ভপাটের (Schpaater) ক্ষিয়া।  দস্তা (Impure Calamina) বাঙ্গালা, হিন্দুগানী  মদল তুত্তম, তুতানগম তামিল।  কলথুবরী (Oxide of Zinc) পারভ।  জস্তা, কাম্দ, সফেদ মিশি পারভ।  স্ক্র্ বৃদ্রি, সফেদ তুঁত (Sulphate of Zinc) দাকিশাভা ব্লে তুত্ম তামিল •  তৃত্য তামিল •  তৃত্য তামিল •  তৃত্য তামিল •  তৃত্য তেলভা  তৃত্য তেলভা  তৃত্য তামিল •  তৃত্য তেলভা  নালয়।  নালয়।  নালয়।  নালয়।  নালয়।  নালয়।  নালয়।  নাল্য সংস্কৃত।  নাল্য সংস্কৃত।  নাল্য সংস্কৃত।  নাল্য সংস্কৃত।	বিহু (Zinc)	•••	हे'	লোভ ও ফাসি
চিন্ধ, জিলো   ভপাটের (Schpaater)   দস্তা (Impure Calamina )   নালল তুত্তম, তুতানগম্   দ্প্ত    নেপাল।  কলথুবরী (Oxide of Zinc )   কলথুবরী (Oxide of Zinc )   কলথুবরী (Oxide of Zinc )   কলথুবরী (তxাক তুঁত (Sulphate of Zinc) দাকিশাতা ব্লে তুত্তম্   ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম    ত্তম     ত্তম     ত্তম	জিকু (Zink)	•••	·•· <b>છ</b>	म्बंगी।
ভপাটের (Schpaater) ··· ক্রিয়া।  দস্তা (Impure Calamina) ··· বাঙ্গালা, হিন্তানী  মদল তুত্তম, তুতানগম্ ··· তামিল।  দ্স্ত · ··· নেপাল।  কলথুবরী (Oxide of Zinc) ··· পারভ।  জস্ত, কদ্দ, সফেদ মিশি ··· পালাব।  স্ক্র্র্দরি, সফেদ তুত (Sulphate of Zinc) দাকিশাভা বল্লে তুত্তম্ ··· তামিল •  ত্তম ··· তিলভা  তম্বা পুটি ··· মালয়।  লোট ··· বন্ধ  মশদ ··· সংস্কৃত।	স্পেল্টার	•••	€	<b>ग</b> णु ।
দন্তা (Impure Calamina)   নাল তুত্রম, তুতানগম্   দন্তা   নাল তুত্রম, তুতানগম্   নাল তুত্রম  নাল	চিক্, জিফো	•••	ই	টালি, স্পেন
মদল তৃত্য, তৃতানগম্ ··· তামিল।  দ্স্ত ··· নেপাল।  কলথুবরী ( Oxide of Zinc ) ··· পারভ।  জস্ত, জস্দ্, সফেদ মিশি ··· পালাব।  স্প্র্স্রি, সফেদ তৃত (Sulphate of Zinc) দাকিশাভা বল্লে তৃত্য ··· তামিল •  তৃত্য ··· তিলভা  তম্ব পৃটি ··· মাল্য।  লোট ··· বন্ধ  যশদ ··· সংস্কৃত।	শুপাটের (Schpaat	er) ···	ব	য়েয়া।
দৃস্ত নেপাল। কলথুবরী (Oxide of Zinc) পারস্থ। জন্ত, জস্ন, সফেন মিশি পাঞ্জাব। ক্ষু বুস্রি, সফেন তুঁত (Sulphate of Zinc) নাজিশাতা ব্লে তৃত্য ডামিল • ত্ত্য ডেলগু । ডম্বরণ পুটি মাল্য। লোট বন্ধ	দন্তা ( Impure Ca	ılamina)	∙∙∙ বাঙ্গা	লা, হিন্দুখানী
কলথুবরী (Oxide of Zinc) পারস্থ। জন্ত, কন্দ্, সংকদ মিশি পাঞ্চাব। স্থাপ, বৃদ্রি, সংকদ তুঁত (Sulphate of Zinc) দাকিশাডা বল্লে তুত্য ডোমিণ ও ত্ত্য ডেলপু । ডেলপু । ডেলপু । দোট মালস্থ। বাশদ সংস্কৃত।	মদল তুতম, তুতানং	গম্…	ত	[মিল ।
জন্ত, জন্ন, সংকল মিশি · · · · পাঞ্জাব। স্থাপ, বুদ্রি, সংকল তুঁত (Sulphate of Zinc) লাকিণাতা ব্লে তুত্র · · · · তামিণ • ত্তম · · · · · তামিণ • তত্বম · · · · · · · · তামিণ • তত্বম · · · · · · · · · · · মাল্র। বেণাট · · · · · বাল্ব যাশ্দ · · · · সংস্কৃত।	দৃস্ত •	•••	••• (	নপাল।
স্ক ব্দ্রি, স্ফেল তুঁত (Sulphate of Zinc) লাকিণাতা ব্লে তৃত্য তামিণ • তৃত্য তেলপু । তৃত্য তেলপু । তৃত্য মাল্য । গোট বৃদ্ধ	कंशथूवती (Oxide	of Zinc)	পা	রুক্ত।
ব্লে তৃত্য তামিণ ।  তৃত্য তেলপু ।  তৃত্য তেলপু ।  তৃত্য মাল্য ।  ংগট প্রশ্ন সংস্কৃত ।				
ত্তম হেলও । তত্তম মালর। েণাট বন্ধ যশদ সংস্কৃত।	<b>স্প</b> ্বুস্রি, সফেদ	ছু ত (Sulpl	nate of Zin	rc) দাকিণাতা
তম্বগ পুটি মালয়। ০েণটি অন্ধ যশদ সংস্কৃত।	ব্লে ভূতম্	•••	••• उ	চামিণ •
ণোট এক · যশদ সংস্কৃত।	<b>তৃ</b> ত্ম	• •••	g (	উল্ভ ।
रामान ' मःऋड।	ভস্গ গৃটি      •	•••	:	মালয়।
med.	८भो हे	•••	•••	ব্ৰহ্ম •
থলি হুইলে গুলুক্সৰ যে দুয়ো প্তিয়া বা ^র , ^{ভাষ}	ग <b></b> भाग	·	3	
The fact of the fa	থনি হইতে গ্	<b>ক্ৰমহ বে</b>	দস্তা পাঙ্	•

रे:वाजो श्रञ्जरच Sulphide of Zan

হিমা Zink blende নামে পরিচিত এবং অন্ধলানের সহিত মিশ্রিত যে দত্তা পাওয়া যায়, তাহা Zincite নামে থ্যাত । ভারতবর্ষের মধ্যে মাস্তাল, বাঙ্গাণী, রাজপুতানা, হিমালয়, প্রাব প্রভৃতি প্রদেশে এবং আফিগানিস্থান প্রভৃতি দেশে দত্যা পাওয়া যায়।

মাল্রাজের মহরাজেলার যে গন্ধকমিশ্রিত দন্তা (Blende)
লাওরা যার, তাহার সহিত ঈর্বং স্বর্ণ বা রৌপাও পাকে।
কর্ণ জেলার বদবপুর গজুপল্লী থনি হইতে অস্তান্ত ধাতৃ ও
গ্রাধি শ্রিত দন্তাও পাওয়া যায়।

বার্লালার হাজারীবাঘ জেলায় মহাবাক্ক ও বড়গুও গনি হইতে ও সাঁওতাল পরগণায় বৈক্ষকি নামক স্থানেও যে গন্ধ এবং মিশ্রিত দক্তা (Blende) পাওয়া যায়, তাহার সহিত গীয়া এবং তামা মিশ্রিত থাকিতে দেখা যায়। . •

রাজপুতানায় উদয়পুর রাজ্যে জওয়ার নামক ছানে পুর্বেদ্য উঠিত। টডের রাজস্থান পাঠে জানা যার যে, এক সময়ে এই স্থানের থনি হইতে ২২০০% টাকা রাজস্ব আদায় হইত, কিন্তু রাজপুতানা গেজেটিয়ার একথা অস্থীকার করেন।

কাপ্তেন ক্রক বলেন, থনিতে ৩।৪ ইঞ্চি মোটা ধাতুশিরা দেখা যায়। দেশীয় লোকেরা উহা সংগ্রহ করিয়া প্রাভৃতিরা বান দিয়া দন্তা প্রস্তুত করে। ৮।৯ ইঞ্চি উচ্চ মুচিতে ঐ ফল প্রত্তা পুরিয়া মুখ আটিয়া দেয় এবং নিম্মুখ করিয়া মারি দিয়া কয়লার আগতনে গলাইতে থাকে। ২।৩ ঘণ্টা উবাপ দিলে ঠিক হয়। ১৮১২।১৩ খৃষ্টাবেশ ছভিক্ষের সময় এই সকল থ্নির কার্যা বন্ধ হইয়া গিয়াছে।

হিমালয়পঞ্জাবে—শিগরী নামক স্থানে যথেষ্ট দ্ব্যা পাওয়া ইয়ে। আন্টিমনি (অঞ্জন) থনির নিকটেই দ্ব্যা থাকে। গাড়বালের বৈলার তাম থনিতে, সিমলার স্বাথু সীসা ধনিতে ও কাশীরে ইহা পাওয়া যায়। জোনসার প্রদেশে গ্রুকিনিপ্রিত দ্বার থনি আছে।

আফগানিস্থানে খোরবন্দ উপত্যকার উত্তর অঞ্চলে ইহার খনি মণেপ্ট আছে। স্থানীয় লোকেরা ইহাকে জাক Sulphate of zinc) বলে। ইছা কিছুতে ব্যবস্ত হঁয় কিনা জীনা যায় না।

^{বসদেশের অধীন টাভয় ও মার্ভ ই দ্বীপে দন্তা পাওয়া যায়, ^{কি}ষু উত্তরব্রেদ্ধে পাওয়া যায় কিনা এখন জানা যায় নাই।}

 গিরাছেন। উ: প: প্রাদেশের হিন্দু হাকিমেরা পুরাতন জর, গৌণ উপদংশ, পুরাতন মেহ, প্রদর প্রভৃতি রোগে দন্তা ব্যবহার করেন। মুসলমান হাকিমেরা, ঘা, ক্ষত, দগ্ধ ক্ষত বা ব্যথা-ফুলায় রুরোপীয় ভাক্তারদিগের স্থায় দক্তা ব্যবহার করেন। তামিল কবিরালেরা মাটির মুচিতে মনসা জাতীয় একপ্রকার, রুক্ষের (Euphorbia nerrifolia) পাতা দিয়া দন্তা আল দেয়। উভয় প্রব্য গিলিয়া গোলে অগ্নিতে জলিয়া উঠে। তাহার ভক্ষ ক্ষই তিনবার অগ্নিতে শোধন করিয়া লইয়া মেহ, শুক্রক্ষয় ও অর্শরোগে বাবহার করেন। ভাবপ্রকাশে আছে,—

"বশদং রঙ্গ সদৃশং রীতি হেতৃশ্চ তন্মতম্। বশদং ত্বরং তিজেং শীত্রগং কফপিত্রহং। চক্ষ্যং প্রমং মেহান্পাঞ্ং খাস্ক নাশ্রেং॥"

দত্তা ধাতুর আক্ষতি ও শোধনমারণাদি সমস্ত রদের ভার। জারিত দত্তা ক্ষার, তিক্তবুস, শীত্রীর্যা, চক্তর হিতকর, কফ, পিত্ত, প্রমেহ, পাপ্ত ও খাসরোগ নাশক।

ডাঃ ওরাট তাহার Dictionary of Economic . products of India নামক গ্রন্থেপর অর্থে দন্তা ( Impure calamine) বলিয়াছেন এবং ভাবপ্রকাশে তাহার উল্লেখ আছে বলিয়া লিখিয়া গিয়াছেন, কিন্তু "খৰ্পর" ধাতু ভাবপ্রকাশ মতে উপধাতৃ মধ্যে গণা। [থর্পর দেখ।] কবিরাজ সিদ্ধেশর গুপ্তের দ্রবার্থচিক্রিকা নামক আয়ুর্বেদীয় অভিধানে ইহাকে ইংরাজীতে a collyrium extracted from the Amomum Authorbiza বলা হইয়াছে। বঙ্গদেশীয় কবির**ংজেরা** সংনামক ধাতৃকে থর্পর বলিয়া থাকেন। এই সংধাতৃতে মুসলমান রমণীরা এদেশে 'থাড়ু' নামক গছনা প্রস্ত করে। কাংস্তকারেরা ইহাকে 'দৎ দন্তা' বলে ও দন্তা ধাতু হইতেই উৎপন্ন বলিয়া থাকে। কাঁদারীদিগের মতে দস্তা দিবিধ রূপদস্তা, ইহা পরিষ্কৃত ও বিশুদ্ধ এবং সদস্তা বা পাটা দন্তা, ইহা ধাত্তর সংযোগে প্রস্তুত হয়। আয়ুর্কেদশাস্ত্র মতে যশদ ধাতৃ বিশুদ্ধ দন্তা আঁর ধর্পর তীন্মশ্রিত কোন ধাতৃ। থর্পর গল্পতে সহিত মিলিত হইলে 'থর্পরীতুঅ' হয়, ইহার নামান্তর 'রদক'। এই 'রদক' বা থপরী তুঁথ ইংরাজীতে Sulphate of zinc এবং হিন্দু হানী ভাষায় 'পপ্রিয়া' নামে থ্যাত। 'রদক' বা ধপরিয়া কাশ্মীরবাসী সওদাগরেরা এদেশে বিক্রয় করিয়া পাকে। তাহা দেখিতে পিগুবৎ সর্বপ থোলের ভাায় ধ্দরবর্ণ ও কঠিন, ভাঙ্গিলে 🤫 ডাইয়া যায়। [রসক দেখ।] রসকের প্রকার ভেদকে এদেশে 'রসমাণিক' বলে। রদক চুর্ণ করা যায়, কিন্তু থর্পর চুর্ণ

করা বার না। "থপ্রং পতলাক্তবা" অর্থাৎ "থপ্রকে পাত করিয়া"—ইহা হইতে ধপ্রকে সংদক্তা বা পাটাদন্তা বলিতে আপত্তি হয় না। যে ধাতৃ আঘাত সহিতে পারে অর্থাৎ পিটিলে গুড়াইয়া বার না, পাত হইরা যার, তাহাই মৃদ্ধ ধাতৃ ও মৃল ধাতৃ দ ভাবপ্রকাশ মতে "বর্ণং রূপ্যঞ্চ ভামঞ্চ রক্ষং যশদ্মেবচ। সীদং লোহঞ্চ সংপ্রতে ধাত্রো গিরিস্ভবাং।" অর্ণ, রোপ্য, ভাম, রক্ষ, হশদ (দন্তা), সীদ, লোহ এই সাত্রী গিরিস্ভব মৃলধাতৃ। এতত্তির যেগুলি ঘা সহিত পারে না, পিটিলে গুড়াইয়া যায়, দেগুলি কঠিন ও উপধাতৃ।

দন্তা ইংরাজী ধাতুশান্তাসুসারেও মূল্থাতু। ইহা দেখিতে
নীলাভ বেতবর্ণ। ইহার বহির্ভাগ রূপার স্থার উজ্জ্ল, ইহা
কঠিন, ভালিলে স্তর্বৎ সংস্থান দেখা যার। ইহার আণেক্ষিপ প্রকৃত ৬৬৮ প্রণ। সামান্ত উত্তাপে ইহা ভালিয়া যার,
কিন্তু ২০২০ উত্তাপে ইহা নরম হইয়া ঘাতসহ হয় ও তাহা
হইতে তার বা পাত প্রস্তুত হইতে পারে; কিন্তু ৪০০০
উত্তাপে ইহা আবার ভঙ্গপ্রবণ হয়। ৭৭০০ উত্তাপে গলিয়া
তরল হয় এবং বহু উত্তাপে ইহা উহায়ুও হয়। দন্তা উহায়্
ভইয়া যে বাপারাশিতে পরিণত হয়, তাহাতে বায়ু লাগিলে
আলতে থাকে, আলোক অতি উজ্জ্ল হয় ও পুড়িয়া Oxide
of zinc নামক মিশ্রধাতু উৎপন্ন করে। দন্তা যদি থোলা
পড়িয়া থাকে, তবে বায়ু লাগিয়া তাহার উজ্জ্লতা নই হয় ও
সীসার মত রং হইয়া যায়। লেইছে পিত্রলে বা তামায় মরিচা
ধরিলে যেমন ধাতুর হানি হয়, দন্তার তাহা হয় না।

বিক্রমার্থ যে দন্তা পাওয়া যায়, তাহাতে সীসা, লোহা, অলার, সেঁকোও তামা মিশ্রিত থাকে। দন্তা হইতে অম্নান নোগে দেখিতে পশমের স্থায় Protonide of zinc বা ক্লণতা (Flowers of zinc), ক্লারখাত্যোগে দেখিতে কাচকভার স্থায় Hydrated oxide of zinc, Sulphate of zinc (খেতত্তে), Carbonate of zinc, Chloride of zinc (Butter of zinc বা মাথনবং দন্তা), গদ্ধকের সহিত বোগে (Sulphate of zinc-blend), তামার সহিত (Brass) বা পিত্রল, রূপদত্তা (German silver) প্রভৃতি প্রস্তুত্র ।

এই. বাতৃতে লোহের পাত কলাই করিয়া গৃহাদির ছাদ কবে । জ্বের কলের নল, টেলিগ্রাফের তার প্রভৃতিও ইহা লারা কলাই করা হয়। ইহা পলাইয়া নানা বাসন, প্রেজনীয় দ্রবাদি, মৃত্তি, পুত্তিকা প্রস্তুত হয়। ইহা দারা লোগ্রাদির বস্তুতে দিবার জক্ত খেতবর্ণ ভৈলাক্ত রক্ষ প্রস্তুত হয়। এদেশে মুদলমানগণের ব্যবহার্থ অর দানের

শুড় গুড়ি, রেকাব, গেলাস, বাটা ইত্যাদি প্রান্তত হয়। শেল.
টার বা দক্তার বড় বড় পাত বা চাদরে বাড়ীর ছাবে নর্দমার নল, বেড়া, বা⁴যে যে কার্যোটিন বাবছত হয়, তরং. স্থলে বেলী দিন স্থানী করিতে হইলে, স্পোলটার বা দ্যা ব্যবহৃত হয়। ইহাতে জাহাজের তলা মোড়াই করা হয়। ইহা পলাইরা ছাঁচে ঢালিয়া নানাবিধ জ্ববা নির্দিত হটতে পারে। আমেরিকার যুক্ত রাজ্যে, য়ুরোপের প্রদিয়া বেলজিয়ম ও হলতে সর্বাপেকা অধিক দক্তা উৎপন্ন হয়।

যুরোপে ১৮শু শতাকীর পূর্ব্বে দন্তা উৎপন্ন হইত না।
ট্রাবোর প্রান্থে (False silver) নামক এক ধাতৃর উন্নেগ
আছে। অনেকে ইহাকে দন্তা বলিয়া অনুমান হয়ে
মাত্র। ১৮শ শতাকী পর্যান্ত পর্কু গীবোরা ভারতবর্ষ ও চীন
হইতে কেপালটার ও তুতেনাগ নামে দন্তা লইরা মুরোগে
বিক্রের করিত। তথন পিন্তল প্রন্তুত ভিন্ন ইহার আর কো
বাবহার ছিলনা বা দন্তা যে একটা মৃতন্ত্র ধাতু, তাহার
জানিত না। ১৮০৫ খুটাকে দিলভিটার নামে এক ব্যক্তি প্রথা
দন্তার পেটেণ্ট প্রাপ্ত হন। আমেরিকার নিউলারদি নাম
শ্বানের Red zinc বা রক্তবর্ণ দন্তাথনিই ভ্রমবিধ্যাত।

দন্তার সাহায়ে Zincograph নামক এক প্রদা ছবি প্রস্তাতের প্রণাণী উদ্ভাবিত ইইমাছে, ইহা হারা কাল্ল ফটোগ্রাফের স্থায় ছবি প্রস্তুত হয়। লিথোগ্রাফে ফো পাণরে ছবি আঁকিতে হয়, ইহাতে তেমনি বিষয়েট আঁকিতে হয়। Zinc Ethyl নামক এক প্রকার ওল ধাত্ত ইহা হইতে উৎপন্ন হয়। ইহা বায়ু লাগিলে বিলা উঠিও অতি কড়া গন্ধ বাহির হয়। ফুলকিলাও নামক এক ব্যক্তি ইহা প্রথম প্রস্তুত করেন।

দন্ত। হইতে ডাক্তার মহাশরেরা নানার্ত্রণ তরন, চূর্ব।

ঘুতবং পদার্থ প্রস্তুত করিয়া নানারূপ রোগে ব্রিহার করেন

দন্তার রোগোপশমতা সর্কদেশের চিকিৎসাশারেই দেখা বা

দন্তানা (পারসী) হন্তাবরণী, অঙ্গুলিঅ, হন্তে পরিধের ^{পরিছা}
বিশেষ।

দস্তর (পারসী) রীতি, ধারা, নিষম, পছতি।
দস্তরী (পারসী) নগদ মূল্য প্রদান জন্ম প্রাপা টাকু, দানানী,
দ্রব্য বিক্রেয়কালীন, ক্রেতার ভূত্য বিক্রেতার নিকট গার্ পায়, তাহাকে, দস্তরী কহে।

দম্ম (পুং) দশুতি উৎক্ষিপতি "দক্ষিণাদিক্ষিতি ^{রস্ক্ষি} (ইবিষ্থিকিদসিস্তৈতি। উণ্ ১1>৪৪) > উপক্ষেণ^{ক।} "পুরণি দম্মো নিরিনাতি বাজকৈ:" (অক্ ১1>৪৮৪) ^ম উপক্ষপরিতা' (সামণ) দস দর্শনে কর্মণি সক্। ২ ^{র্মনী}। "রাজেব দক্ষ মিবদোহিবি বর্ছিবি" (ঋক্ ১•।৪৩।২) 'ছে দক্ষ দর্শনীয়েজ্ঞ' (সায়ণ) ও যজামান। ৪ চৌর। ৫ হতাশন। (মেদিনী) ৬ খল। (শক্ষর⁸)

দুস্যুৎ (ত্রি) দিসি দংসন দুর্শনিরোঁ:, ততো মক্ দুস্মিত্যতা মকারস্থ বর্ণব্যাপত্যা তকার:। দুর্শনীয়। "বীত্তরে দুস্থং কুণোরীধ্বরং।" ( শুক্ ১।৭৪।৪) 'যুক্তঃ দুসুৎ সুইর্জ্মশনীয়ং' ( সার্গ )

प्रमुवर्क्ठम् (जि) प्रयः वर्कः यद्यः । प्रभिनेत्राद्यः । "क्ट्रावाव-पिट्याप्तयवर्काः"(अक् )। १०। १) प्रयावर्काः पर्मनीत्राद्याः (प्राप्तभ) प्रया (जि) प्रयः पाद्यं यदा पूर्णनीत्र। "ब्राक्तात्र प्रयाः वर्कः" (अक् ৮। २८। २०)

দস্যবেসহ (পুং) উপদ্রব হেতু চোরের অভিভাবক। ^{*}র্ছ-দুণং তৃর্কীতি দস্তবেসহং" ( ঋক্ ১।৩৬।১৮) 'দস্তবেসহং আস্ম-চপদ্রবহেতোশ্যোরস্থাভিভবিতা' ( সারণ )

দন্তা (পু:) দহাতি পরস্থান্ নাশয়তীতি দশ'যুচ্ (যজি মনি ক্ষিদসিজনিভোগ্ড্। উণ্°তা২∙)। ১ মহাসাহসিক, ডাকাইত। °২ ধল। ৩ চৌর।

"বিকোশস্যো ষত্ম রাষ্ট্রাদ্ধি মতে দহাভিপ্রকা:।

সংপশ্রত: সভ্তান্ত মৃত: সন্তু জীবতি॥" (মহ ৭।১৪০) বাহ্মণাদিবণ চতুষ্টমের মধ্যে ক্রিয়ালোপাদিকারণে যাহারা বাহ্জাতি বলিয়া পরিগণিত হয়, সাধুভাষীই হউক, আর মেছভানীই হউক, উহারা দয়্য আখ্যা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। দয়ত জাতি কর্তৃক আয়েরাগব স্ত্রীগর্কে যে সম্ভান উৎপাদিত হয়, ইহারা সৈরিদ্ধুনামে থাত হয়; এই আতি কেশরচনাদি কার্যো মহতুর, ইহারা প্রকৃত দাস নহে, তথাপি দাসকার্যোপ্রীবী এবং পাশরারা মুগাদি বধ করিয়া জীবিকা নির্বাহ করে। (মহ ১০০১) ৫ কর্মবর্জিত। "গর্মতে দয়াজ্তার স্তবান্" (বক্ ৬।২৪।৮) দেয়াজ্তার কর্মবর্জিতৈ: প্রেরিতার" (সারণ) (ত্রি) ৬ উপক্ষেপক। (প্রু) ৭ অম্বর।

"চেডন্তে দস্থা ভৰ্ষণা" ( ঋক্ ৯।৪৭।২ )

াৰ। ঋক্সংহিতার অনেক মন্ত্রে দস্যু শব্দের উল্লেখ আছে।
কোন কোন কলে দস্য •শব্দ পাঠে বোধ হয়, আর্থ্য হইতে
ভিন্ন কোন জাতি দস্য বা দাস নামে অভিহিত ছিল, তাহারা
আর্থা জাতির পুর্বে ভারতের নানাস্থান অধিকার করিয়া বিসরা
ছিল, বহুসংখ্যক প্রাম নগরাদি পত্তন করিয়াছিল, তাহাদের
বাহুবলে আর্থাগণ অনেক সময়ে বিপদ্পক্ত হইয়াছিল,
অনেক সময় ভাহারাই অস্থর প্রভৃতি নামে পরিচিত হইয়াছিল;—ইক্স যেন ভাহাদেরই উচ্ছদ করিবার অক্স অবতীর্ণ
ইইয়াছিলেন। আর্থাগণের প্রভাবে সেই 'অনাস' দস্থাগণ

পরাজিত হইয়া কেছ বন জললে দ্র দেশে পলায়ন করিয়া প্রোণরক্ষা করিয়াছিল, কেছ বা আর্ব্যগণের অধীনতা স্বীকারপূর্বক আর্ব্যার সংস্রবে ক্রমে আর্ব্যসমাজভূক হইয়াছিল'। নিয়লিখিত মজে দক্ষ্যর সহিত আর্ব্য জাতির কির্মণ সম্বছ ছিল, জানিতে পারা বায়।

"বং হ হ তাদ্ অদময়ো দহ্মীরেক: কৃষ্টীরবনোরার্য্যার।" ( অক্ ভাস্চাত )

হে ইক্স! তৃমি দক্ষাদিগকে শীত্র স্বৰ্ণে আনিরাছ;
তৃমিই আর্বাদিগকে প্রদানাদি দিরাছ।
"বিখনাৎ সীমধ্মানিক দক্যন্ বিশো দাসীরক্ষণোরপ্রশন্তাঃ।"
• (৫।২৮/৪)

হে ইক্স! তুমি এই দফাদিগকে সমন্ত (সদ্ওণ) হইতে
বঞ্চিত করিয়াছ। তুমি দাস মঁমুন্যদিগকে নিদ্দনীয় করিয়াছ।
"অন্তব্যতং অমানুষং অধ্বানং অদেবযুম্।

জব অ: সথা ছধুবীত পর্কাতঃ অন্ধান্ত দস্থাং পর্কাতঃ ॥" ( অক্ ৮০১০১০)

আমীদের মিত্র পর্বত কঠোর আবাতে উর্ক হইতে দহাকে
নিপাতিত করুক, যে ভিন্নতাবলধী, যাহার মহুষ্যত্ব নাই,
যে যাগযজ্ঞানি করে না, অথবা দেবতাদিগকেও মানে না।
"আ ন ইন্দ্র পৃক্ষদে অমাকং ব্রহ্ম উন্থতম্।
তৎ তা যাচামহে অবং শুফং যদ্ হর্মামূষম্॥
অকর্মা দহারভি নো অমন্তরক্সবতো আমাম্যং।
তং তভামিত্রহন্ বংগাসভাদন্তর ॥" ( ঋক্ ১০৷২২।৭-৮ )

হে ইক্ত! আমরা এই যজের সামগ্রী প্রস্তত করিরাছি,
যতক্ষণ না তৃপ্তি হয়, ভক্ষণ কর। আমরা ভোমার নিক্ট
অয় প্রার্থনা করি, আর এরূপ বল চাই, বাহাতে অমাম্বক্
বিনাশ করিতে পারি। আমাদিগের চতুর্দিকে দস্যু আছে,
তাহারা বাগযজ্ঞাদি করে না, কিছু মান্দে না, তাহাদের কার্য্য স্বতয়, তাহারা মাম্বের মধ্যেই নয়। হে অমিত্রহা! ভাহাদিগকে বধ কর। সেই দাসকে হিংসা কর।

"প্র অন্তচকেমর্ছ: ক্র্থাস্ত কুৎসাক্ষত্ম বরিবো যাতবে হক:।
আনাসো দক্ষন্ অমৃণো ব্ধেন নি হুর্বোণে আর্ণঙ্মু এবাচ:॥"
( পাক্থা২ন)১০)

হে ইক্স! তুমি পূর্বে সুর্বোর একথানি রথচক্র ছেদন করিয়াছিলে, অপর এক ধন লাভের অন্ত কুংসকে দিয়াছিলে, তুমি বক্স দারা মুধ্যৌন্দর্যাহীন অর্থাৎ নাসিকারছিত দক্ষ্য-দিগকে হতবৃদ্ধি করিয়া যুদ্ধে বধ করিয়াছিলে।

"নি অক্তৃন্ গ্রথিনো মুধুবাচ: পণী রশ্রনী অবৃধী অবভান্। প্রপ্রে তান্দক্রিরমিবিবার পূর্বশ্চকারাপরী অবজ্বান্।"(গ্রুক্ ৭।৬।৩) যজ্ঞহীন, জন্নক, হিংদিতবাৰ্ক, শ্ৰেছাহীন, বৃদ্ধিপৃত্ত, পণি
নামক যজ্ঞরহিত দহাগণকে দ্ব কফন্। অধি প্রধান
হইয়া যাহারা যজ্ঞ করে না, তাহাদিগকে হের্ম কফন। '
"ইলাগ্রী নবতিং প্রো দাসপ্তীরধন্তম।

"ইক্রাঘী নবতিং পুরো দাসপদ্ধীরধৃষ্ণতম্। সাক্ষেকেন কর্মণা।" ( প্রক্ ৩।১২।৬ )

হে ইন্দ্রায়ি !, ভোমরা এক উত্তোগেই দাসগণের নবতি সংখ্যক পুরী কম্পিত করিয়াছিলোঁ।

"হং শতাক্তর শমরক্ত পূরো ক্বান্থান্তীনি দক্ষো:।"
তুমি দক্ষা শমরের শতাধিক ক্ষপ্রতিম পুরীধ্বংস করিরাছ।
"প্রতি যদন্ত বক্তং বাহেবা ধুঁ ইন্ধী দক্ষান্পুর আরসীনিতারীং।"
(২৷২০৮)

যথন তাঁহার হতে বজু দেওয়া হইয়াছিল, তথন তিনি তাহা দিয়া দক্ষাগণকে বিনাশ করিয়াছিলেন। "উত দাসং কৌলিতরং বৃহতঃ পর্বতাদধি। অবাহলিক্ত শম্বরম্। (৪।৩০।১৪)

হে ইক্ত ! তুমি কুলিতরের অপত্য দাস শহরকে বৃহৎ পর্কতের উপরে নিয়মুথ করিয়া বিনাশ করিয়াছিলে। "অত্ত দাসক্ত নমুচে: শিরো যদবুর্ক্তরো মনবে গাতুমিচছন্।"

ভূমি এই বুজে মহুব্যের হুপ্রর্জনার্থ দাস নমুচির মন্তক চুর্ণ করিয়াছ।

"প্রিয়োহি দাস আয়ুধানি চক্রে কিং মা করন্ত্রবলা অস্ত সেনা:।
অন্তর্হি অথাহুছে অস্ত ধেনে অথোপ প্রেদ্ যুধ্যে দস্থামিস্তঃ ॥"
( ৫।৩০।৯।

দাস স্ত্রীদিগকে নিজের অস্ত্র শ্বরূপ করিয়ংছিল, ইহার অবলা সেনাগণ আমার কি করিবে ? (এই ভাবিয়া) ইস্ত্র ভাহার ছইটা প্রিয়তমা স্ত্রীকে অন্তঃপুরে আবন্ধ রাণিয়া পশ্চাৎ সেই দম্মার সহিত যুক্ত করিতে গিয়াছিলেন।

বৃত্র, শবর ও নমুচি প্রভৃতির দাস, দক্ষা ও অক্সর এই তিন আথাারই বেদে বর্ণিত হইরাছে, ইহাতে ঐ তিন শব্দই বৈদিক যুগে এক জাতিবোধক ছিল বলিয়াই বোধ হয়। *
[নমুচি, শবর ও বৃত্র দেখ।]

ছানোগ্যোপনিষ্ঠান দ্বা বা অস্ত্রজাতিসম্বন্ধ লিখিত আছে— "তথ্যাদপি অতেহ অনদানং অপ্রদ্ধানং অবজ্ঞানং আহ রাস্ত্রো বতেতি। অস্ত্রাণাং হেষোপনিষ্ণ প্রেত্তভ শরীরং ভিক্ষা বসনেন অলম্ভাবেণেতি সংস্ক্তিয়তেন হ্যুং লোকং কেয়ান্তে৷ মন্তন্তে৷" সেই জয় আজাও যে ব্যক্তি দানহীন, শ্ৰন্ধাহীন ৰা যক্ত হীন, তাহাকে আহ্বর বা অহ্বরধর্মা বলা হইয়া থাকে। অহ্বরদিগের ইহাই সনাতা, ধর্ম—তাহারা শবদেহ অর্ধ, বসন ও অলকার বারা সাজাইয়া থাকে; তাহারা মনে করে যে এইক্রপ কার্য্য করিতে পারিলেই বৃঝি এই লোকের পুরুষার্থ সিদ্ধ হইল।

বাস্তবিক ভারতীয় অসভা ও স্লেচ্ছ জাতির মধ্যে উঠ্ঠ প্রণা এখনও প্রচলিত আছে।

ঐতরেরবান্ধণে শিথিত আছে—
"অস্তান্ বঃ প্রঞা ভক্ষীষ্টেতি ত এতেহদু।
পুঞাঃ শবরাঃ পুলিন্দা মৃতিবা ইত্যানস্তা বহবো ভবন্তি।
বৈখামিতা দক্যনাং ভূমিষ্টাঃ !" ( গা১৮ )

তোমার বংশীরগণ এই হইবে। ইহারাই অক্. প্তু, শবর, পুলিন্দ এবং মুভিব ইত্যাদি উত্তর দিগ্বাসী অনেক জাতি। বিখামিত্র হইতেই দক্ষাগণ উৎপন্ন হইরাছে।

মহৃদংহিতার (১০।৪৫) মতে-
"মুথবাহুরূপজ্জানাং যা লোকে জাতয়ো বহি:।

ু স্লেচ্ছবাচশ্চার্য্যবাচ: সর্কেতে দক্তব: স্থৃতা:॥"
কুলুক টীকায় লিথিয়াছেন—

"ব্ৰাহ্মণক্ষতিয়বৈশ্বশুদাণাং ক্ৰিয়ালোপাদিনা যা ভাতলো বাহা ভাতা মেছভাষাযুকা আৰ্য্যভাষোপেতা বা তে দভবঃ সৰ্কে শ্বতঃ।"

বান্দণ ক্ষতির, বৈশ্ব ও পূত কাতির মধ্যে ক্রিয়ালোণাদি হেতৃ যাহার। কাতিচ্যুত হইয়াছে, স্লেছভাষীই হউক, আর আর্যাভাষী হউক, তাহারা সকলে দহা বলিয়া গণ্য।

মহাভারতে সভাপর্কে লিখিত আছে— •

"দরদান্ সহ কাথেটেজরজয়ৎ পাকশাসনিঃ।
প্রাণ্ডতরাং দিশং যে চ বসস্তান্ত্রিত্য দক্তবঃ॥"

অর্জুন দরদ্দিণের সহিত কাছোজ ও উত্তরপূর্বে বে সকল দেখ্যজাতি বাস করিত, ভাহাদিগকে জায় বরিয় ছিলেন।

ट्यांगनरर्व भाव्ययुक मञ्जा कांजित উत्तय चाहि"मरानाः न नित्रज्ञादेगः नित्रांजिन् नम्कदेवः।
मीर्धक्रेर्ठिमंशी कीर्गा विवदेर्द्र अदेकतिव॥"

মহাভারতে শান্তিপর্কে ১৬৮ অধ্যতির দুর্চদ্দর এই ক্লপ ইতিহাস আছে—

> জীন্ম উবাচ। তিত্তিকাল

"হস্ত তে বর্জরিয়েছহমিতিহাসং পুরাতনম্। উদীচ্যাং দিশি যযুক্তং মেচ্ছেয়ু মরুস্বাধিপ ৮

সারণ কিছ দাস শব্দের এইরপ ব্যাখ্যা করিরাছের,—'দাসং বর্ণং
শ্লাদিকং বরা দাসমূপক্ষপ্রিভারং অধরং নিকৃট্টমন্থরর।'

ব্রান্ধণো মধ্যদেশীয়ং কশ্চিদ্বৈ ব্রহ্মবর্জিভম্।
ব্রামং বৃদ্ধিযুতং বীক্ষা প্রাবিশদ্ ভৈক্ষকাংক্ষয়া॥
ক্রি দক্ষার্থনযুতঃ সর্ব্ববিশেষ ছিং।
ব্রন্ধণাং সভ্যসন্ধশ্চ দানে চ নিরক্তাহন্তবং॥
ক্রিল ক্ষমুপগাম্য ততো ভিক্ষাম্যান্ত।
গৌভম: সনিকর্ষেণ দক্ষাভি: সমতামিষাং দ
ভূপা তৃ বসতন্তক দক্ষাগ্রামে ক্ষ্পং তদা।
কিমিদং ক্রুষে মোহাদ্বিপ্রান্থং হি কুলোবহং॥
নধ্যদেশপরিজ্ঞাতো দক্ষাভাবং,গতঃ ক্ণম্।"

ভাম কহিলেন, আমি তোমাকে একটা প্রাতন ইতিহাস বিনতেছি, উত্তরদিকে স্লেছদিগের মধ্যে যাহা ঘটিয়াছিল। মধ্যদেশীর এক রাহ্মণ রাহ্মণহীন অপচ সমৃদ্ধিশালী এক গ্রাম দেখিয়া ভিকার আশায় তপায় প্রবেশ করেন। তথায় দকল বর্ণের সম্মানজ্ঞ, ধর্মণীল, সত্যবাদী ও দাননিরত এক ধনী দয়া বাস করিত। রাহ্মণ তাঁহার নিকট আসিয়া ভিকা প্রার্থনা করিলেন। (সেই ব্রাহ্মণ) গৌতম দয়াদিগের নিকটে প্রাকিষা ক্রমে তাহাদের মত হইয়া পড়িলেন। এইরূপে স্থাব তিনি দয়াগ্রামে বাস করিতে থাকেন, ইতাবসরে আর এক ব্রাহ্মণ আদিয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করেন, ত্মি নোহার হইয়া একি করিতেছ । উত্তম মধ্যদেশীয় ব্রাহ্মণ তোমার জয়। তুমি কিরপে এই দয়াভাব প্রাপ্ত ইইলে ।

উক্ত বিবরণ পাঠে বোধ ছইতেছে, দস্মজাতি স্লেছ্ বিলয় গণ্য ছিল, তাঁহাদের সহিত বসবাস আক্ষাণের পক্ষে নিভান্ত হেঁয় বলিয়া গণ্য ছইত।

শান্তিপর্কে ৯৫ অধানে দস্থাদিগের কর্তব্য এইরূপ নিদ্ধারিত হইয়াছে—

শাতাপিত্রোহি শুশ্রমা কর্ত্তবা সর্বাদ্যাভি: ।
আচার্যাপ্তরুশুশ্রমা তথৈবাশ্রমবাসিন: ॥
তৃমিপানাঞ্চ শুশ্রমা কর্ত্তবা সর্বাদ্যাভি: ।
বেদধর্মজিয়ালৈচব তেষাং ধর্ম্মো বিধীয়তে ॥
পিত্যজ্ঞান্তপা: প্রপাশ্চ শন্তনানি চ ।
নার্মন চ যথাকালং বিজেভ্যো বিস্তল্পে সদা ॥
মহিংসা সতামক্রোধো বৃত্তিদায়াম্পালনম্ ।
তরগং পুশ্রদারাণাং ক্রোচমদ্রোহএব চ ॥
দক্ষিণা সর্বাহজানাং ক্রাতব্যা ভৃতিমিজ্তা ।
পাক্ষরা মহার্হান্চ দাতব্যা: সর্বাদ্যাভি: ॥
এতান্তেবস্থাকারাণি বিহিত্তানি পুরাহ্নঘ ।
সর্বানেকস্ত কর্মাণি কর্ত্বব্যানীহ পার্থিব ॥

মান্ধাতোবাচ।

দৃশুত্তে মাহুবে লোকে সর্ব্বর্গেরু দক্তবঃ। শিকাঞ্জরে বর্তুমানা আশ্রুমেরু চতুর্ব পি ॥"

মাতা, পিতা, আচার্য্য, শুরু ও ভূমিণালের দেবা সকল
দহারই কর্ত্তব্য। বেদাহদারে ধর্মকার্য্য করাই তাহাদের
ধর্ম বিলিয়া বিহিত। পিতৃযজ্ঞ, কুণ, জলদার, শমন এবং যথাকালে রাহ্মণিলিকে দান, আহিংসা, সত্য, আক্রোধ, বৃদ্ধি,
জ্ঞাতিপালন, পুল্রভার্য্যাদির ভরণপোষণ, শৌচ, অন্দোহ,
সকল যজ্ঞে দক্ষিণাদান ও পাক্যজ্ঞাদি সকল দহারই দেয়।
পুরাকালে এইরূপ বিধিবদ্ধ হইয়াছে, সকল লোকেরই
এইরূপ কর্ম কর্ত্তব্য। মাদ্ধাতা কহিলেন, সকল বর্ণের মাহ্ম্য
মধ্যে দহা দেবা যায়, ভিন্ন ভিন্ন বেশ ধারণ করিয়া চারি
আপ্রমেই বর্ত্তমান আছে।

দক্ষ্যজুক্ত ( ত্রি ) দহাভি জুতিঃ। দহা কর্ত প্রেরিড, যাহারা দহাদিগের দারা কুকর্মে প্রের্ড হয়।

"ন শর্ধতে দহ্মজৃতায় তবান।" ( ঋক্ ৬।২৪।৮) 'দহ্মজৃতায় কর্মবিজ্জিতিউ প্রেরিতায়।' (সায়ণ)

্দস্থ্তেইন (অ ) দস্যদিগের দম্নকর্তা।

"কর্জা চেততে দেহাতেইণা।" (ঋক্ ১/৪৭।২) ` 💃 দেহাভুম (পুং) দহানাং ভয়ঃ। চৌরভয়, ডাকাইতের উপদ্ৰব।

দস্যুবৃত্তি (জী) দস্যনাং হৃতিঃ। চৌধ্য, ডাকাইতি।
দস্যুবৃত্তি (অবা) দস্যনামধীনং ভবতি সম্পন্ধতে বা সাতি।
তম্বাধীন।

"অস্তাশ্চাকান এবস্থা র্লোকোহয়ং দস্যাসাভবেৎ। পতেয়ু র্নরকং ঘোরং যদি রাজা ন পালয়েৎ।"

(ভারত শান্তিপ' ৬৮ অ')

দস্যাহত্য (ক্ষী) দস্যনাং হত্যা যত । দিস্থাদিগের হনন ধারা যুক্ত সংগ্রাম, যে সংগ্রামে দস্থা হত হয়। "গ্রা-ঋজি খানং দস্থাহত্যেজাবিথ" (ঝক্ ১০৫১০) দিস্থাহত্যেষ্ দস্থনামুপক্ষপিয়িতৃণাং হননেনী যুক্তেষ্ সংগ্রীমেষ্। যথা দস্যনাং
হননে নিমিত্ত্তেষ্ (সায়ণ)

দস্যাহন্ (অ) দস্তাং হস্তি হন্-কিপ্। অস্ত্রীবিঘাতক ইক্ত।
"স বজ্জভ্দস্থাহা ভীমঃ" ( ঋক্ ১০১০ । ১২) দস্তাহা দ্বানাং
উপক্ষপ্যিতৃণাং অস্ত্রাণাং হস্তা' ( সায়ণ )

দত্ম (পুং) দশুতি উৎক্ষিপতি পাংশূনিতি দদ-রক্ (ক্ষারি ভঞ্চীতি। উন্২া১৩) ১ ধর, গর্দভ। ফ্রিয়াং জাতিত্বাৎ ভীষ্। দশুতি রোগান্ ক্ষিপতি দদ উপক্ষেপে রক্। ২ অখিনী-কুমারদ্বয়, এই অর্থে এই শক্ষ ধিবচনাস্ত। ৩ বিদ্ধাসংখা। ৪ দ্বিত্ব সংখ্যের। ৫ অধিনীনক্ষতা, ইহার অধিষ্ঠাতী দেবতা হেতৃদত্র শব্দে অধিনীনক্ষতকে ব্ঝায়। ৬ দর্শনীয়।

"দ্রা জঠরং পূণেতাং" (ঝক্ ডাঙ্মাণ) 'দ্রা হৈ দুশ্নীয়া বিক্রাবিষ্টু' (সায়ণ) অখিনীকুমারছয়ের 'মধ্যে বিশেষ-বাচী হইলে এই শক্ষ একবচনাস্ত হয়।

"নাসত্যাদৈতৰ দ্বস্ত্ৰণ্ড স্মৃতি স্বাৰ্থিনীস্মতো॥" (হরিব° ৯।৫৩) ৭ হিংস্র। (ক্লী) ৮ শিশির।

দ্রেদেবতা (স্ত্রী) দ্রো অধিনৌ অধিষ্ঠাত্দেবতা যতাঃ। অধিনীনক্ষত্র। (হেন্থং২)

দত্রসূ (ঝী) দ্রৌ অখিনো হতে হৃ-কিপ্। সংজ্ঞা, ইনি কুর্যোর পদ্ধী, ইহার গর্ভে অখিনীকুমারদম জন্ম গ্রহণ করেন। দহ (দেশজ) ১ নদীর অভি গভীর হান। ২ দগ্ধ হওয়া। দহকামল, বৃন্দাবনের একটা গ্রাম। এইহান প্রীক্ষের লীলাহান। (প্রীবৃন্দাবনলীলামৃত)

দহদহ। (জী) কুমারাল্পচরমাত্তিদ। (ভারত শান্তি ৪৭ অং)
দহন (পুং) দহতীতি দহ লা। ১ অগ্নি। ২ চিত্রক বৃক্ষ।
৩ ভরাতক। ৪ তৃষ্টভেজা (পুং জী) ৫ কপোঁত। (ত্রি) ৬
দাহকমাত্র। (পুং) ৭ কজভেদ। (ভারত ১৮৬৮০)
কৈ ক্তিকানক্ষর। "দহনবিধিশতাখা মৈত্রভং সৌমাবারে"
(জ্যোতিস্তর্ব) দহ ভাবে লা্ট্। (ক্রী) ৯ দাহ, ভক্ষ করা,
পোড়ান।

শী ত্রো দহনে অকআণাং বর্তে জ্ঞানমরেন বহিনা।" (রঘু ৮।২০)
দহনকেত্ন (পং ক্লাঁ) দহনত কেতনং ধ্বজইব। ধ্ন। (হেম)
দহনপ্ল ফৈ ( জি ) দহনাদিব প্লুটং প্লোবণং যআছে। বৈত্যক
আসিদ্ধ পদার্থ, বেলেন্ডারা ( Blister ), ইহা দেহে প্রাদান
করিলে অধিব ভার প্লোবণ অর্থাৎ ফোস্কা পড়ে।

দহনপ্রিয়া (স্ত্রী) দহনতা অথে: প্রিয়া ৬তং। স্বাহাদেবী, অগিপ্রিয়া।

দহনবত্ল (পুং) অগ্নি। 'বহিল্যোতিদহনবত্লো হব্যবাহো হনলোহগ্নিং' (হেম ৩১৬৫)

দহনবিটপী (জী) লাঙ্গিলিকা, ইষ-লাঙ্গলাগাছ।
দহনক্ (জী) দহনং নাম ঋকং। ক্তুতিকানক্ত্ত্ত।

"দদা বিশাথামু নহেন্দ্ৰমন্ত্ৰী মৃতশ্চ ভানোৰ্দ্হনক বাতঃ।"

(বৃহৎসং ১০।১৬)

দহনসারথি (পুং) দহনস্থ সারথি: ৬তং। বায়ু।
দহনাগুরু (ফ্রা) দহনায় অগুরু। দাহাগুরু, তুগিন্ধ দ্রবাবিশেষ।
দহনারাতি (পুং) দেহনস্থ অগ্নে: অরাতি শক্রং। জল,
অগ্নিতে জল দিলে অগ্নি নির্বাণ ধ্য়, এইজন্ম ইহাকে দহনারাতি কহে।

দহনীয় ( ি ক ) দহতে দহ অনীয়র্। দাহং, দহনার্ছ।
দহনোপল (পুং) দহনায় বহু গুণাদনায় ব উপলং প্রত্যুথগু:। স্থাকাস্ত মণি। ে এই মণিতে স্থোর কিরণ প্রিভ হইলে আগ্রুৎপতি হয়, ৫ এই জগুইহার নাম দহনোপন হই.

য়াছে। কোন ভলে দহনোপম এই রূপ পাঠ দেখা যার,
দহন উপমাবভা। ইহার ও অর্থ স্থাকাস্তমণি।

দহনোক্ষা (ফী) দহনস্থ উকা ৬তং। অবির বিক্_{ণিয়} রূপ উকা।

দহর (পুং) দহ-অর। ১ মুবিকা, মুচি। ২ অর। ৩ ভাজ, ভাই। ৪ বালক। (ক্লী) ৫ অতি হক্ষ। ৬ ছবেছি। "ছ৫ * যদিদং দহরং পুওরীকং বেশা দহরো হস্মিনস্তরাকাশ ভসিন্" (ছান্দোগ্য উং) ৭ নর্ক। ৮ বস্ধা।

দহরপৃষ্ঠ (ক্রী) তৈভিরীয় সংহিতার অংশবিশেষ। দহরসূত্র (ক্রী) বৌদ্ধগের গ্রন্থ বা হতাবিশেষ। দহরম্ মহরম্ (দেশঞ্চ) বন্ধুতা, প্রণয়। দহরাকাশ (পুং) দহরং অংকাশঃ কর্মধাং। চিদাকাণ,

দহ্মান ( অ ) দহ কর্মণি শানচ্। যাহা দগ্ধ হইতেছে।
দহ্ম ( পুং ) দহতীতি, দহ-রক্। ( ক্ষায়িতঞ্চীতি। উণ্ ২০১০
দাবানল, দাবাগি। ২ আগি। ০ নরক। ৪ বরুণ। ৫ হদরাকাশ
"আধীক্ষিকী এগীবার্ত্তা দণ্ডনীতিস্তবৈধ্বচ।

এবং ব্যাস্ত্যুশ্চাসন্ প্রণবো হস্ত দহত: ॥" (ভাগ° ৩)২।৪৪
'দহত: হৃদ্যাকাশাং' (খ্রীধরস্বামী) ৬ জঠর। (ভাগ° ৪।১)২৬।
দহাগ্নি ( পুং ) দহস্ত অগ্নি:। জঠরাগ্নি।

দা (ন্ত্ৰী) দা-কিপ্। ১ দান। ২ রক্ষা। ৩ ছেদ ি ৫ উপভাগ, উত্তাপ। (দেশজ) ৬ গৃহক:ব্যে বাবষ্ঠ অন্তৰিশেষ, কাটারি।

माई (एमन) धाळी।

দান্তি (আরবী) > আয়া (Milk-nurse)। ২ ধাতী।
দাউক, জলচর পক্ষীবিশেষ। (Gallimula Madraspatana)
দাউদ (দেশজ) > দক্রেরাগ। [দক্ত দেখ।] ২ বাইবেলেকি
দেভিদ (David.) [দায়ুদ দেখ।]

দাউদ্থাঁ, (দায়্দশা) যথন সেরশা-বংশীয় ইস্লামশা দিরীর স্থাট, সেই সময় বাজালার স্থ্রবংশীয় শেব নবাব পার্ফ উদ্দীন্তক ১৫৬০ গৃষ্টাবেল বিনাশ দেরিয়া স্থলমান নাম করাণীবংশীয় পাঠান বাজালার অধিপতি হন। ১৫৫ পৃষ্টাবেল স্থলমান করাণীর মৃত্যু হয়। তাঁহার মৃত্যু পর তাঁহার বেল্লফ পুক্ত বয়াজিদ রাজা হন। পর বংগি বয়াজিদকে বিনষ্ট করিয়া পাঠান-স্থারেয়া বয়াজিদে

ক্রিষ্ঠ দাউদকে বাঙ্গালার সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন। _{দটেদ} রাজ।ভার লইয়াই দেখিলেন ১,৪•,০০০ পদাতিক, ৪০.০০০ অখারোহী, ২০,০০০ কামান ও ৩,৬০০ হস্তী আছে। এই সময় গৌড়নগরের পরস্থারে ভাহার রাজধানী ছিল। काउँ निक रेमछवन प्रतिशा विदाद मर्क्छ निक नारम _{ধংবা} পড়িতে আদেশ দিলেন। প্রথম যুদ্ধযাত্রা **ৡরিয়াই দাউদ গাজিপুরের সলিহিত জমানিয়া নামক** মোগল হুর্গ অধিকার করিলেন, এ সময়ে দিল্লীভে অক্বর _{স্}রাটু ছিলেন। দাউদের বিবরণ শুনিয়া অক্বর **তাঁহার** বিক্টির প্রধান সেনাপতি মুন্ইম্ খাঁও রাজা টোডরমলকে পাঠান। মুনইম পাটনা অধিকার করিয়া বাঙ্গালায় প্রবেশ करतन । मार्छम উড़ियाय भनायन करतन । भरथ मिनिनैभूत ও জণেখরের মধ্যবতী মোগলমারী ( তুকারো ) নামক স্থানে মোগল ও পাঠানবৈদভোর যুদ্ধ হয় (১৫৭৫ খৃ: জঃ:); প্রথমে পাঠানদিগের জয়ের সম্ভাবনা ছিল, কিন্তু টোডরমলের গুণে শেষে মোগলেরা জয়ী হয়। দাউদ উড়িয়ায় পলায়ন করেন। নোগলেরা অনুসরণ করিলে কটকের নিকট দাউদ আত্মসমর্পণ করেন। মোগলেরা তাঁহাকে কটকের শাঘনকর্তা নিযুক্ত করেন। মূন্ইম্ খাঁ ফিরিয়া আসিয়া তাতা হইতে গোড়ে বাজধানী পুনরায় তুলিয়া আনেন। মূন্ইম্নিজে বাঙ্গালা শাসন করিতে লাগিলেন। এই সময় গৌড়ে মারীভয় হয়। পেই নারী ভয়ে মুন্ইম্ খার মৃত্যু হইল । বাঙ্গালা মোগলরাজ্য-इक रहेन, शोড়नগরও অরণ্যে পরিণত হইতে লাগিল। মুন্ইমের মৃত্যু শুনিয়া দাউদ কটক হইতে বাঙ্গালা আক্রমণ করিলে। মোগলসমাট্ হোসেন কুলিথাকে সেনাপতি कतिया ताँका , टोफ तमलात माम माछे एतत विकर्ण (श्रात) করিলেন.। রাজমহলের নিকট ঘোরতর যুদ্ধ হয়। দাউদ বিনষ্ট হন। যুদ্ধে মোগলেরা জয়ী হইয়া (১৫৭৫ খু: অবেদ) ^{नाउँ दि}त्र हिन्नमञ्जक व्यक्तरत्रत्र निक्ठे शाठीहेश नित्नन । হোদেনকুলি থাই বালালা, বিহার ও উড়িয়ার শাসনকর্তা इहेलन।

দাউদনগর, গয়া জেলার আরম্বাবাদ উপবিভাগের প্রথান
মহর। ইহা ২৫° ২'৩৯" উত্তর অক্ষাংশে এবং ৮৪° ২৬'৩৫"
পূর্ব দাঘিমায় শোণনদীর তীরে অবস্থিত। সহরের পথঘাট
ভাল নহে। দাউটু বার প্রতিষ্ঠিত ও তাঁহার নামে থ্যাত
মরাই এই সহরের প্রধান অট্টালিকা। সন্তবতঃ ইহা হুর্গরূপে
বাবহারের জন্তই নির্মিত হইয়াছিল। ছোট একটা ইমামবাড়া
ও ব্যবসায়ের উপযুক্ত চৌতরা নামক চকবাটা বিধ্যাত।
অথানে কাপড়, মোটা কার্পেট (গালিচা) ও ক্ষল প্রস্তুত

হয়। দাউদনগরের ৪ মাইল দ্রে গয়ার রাস্তার উপর একটা অন্দর কারুকার্যথোদিত মন্দির আছে।

ভবিষা ব্রহ্মথন্ড এই নগরের এইরূপ উল্লেখ আছে :---"শোণনদপার্মভাগে গ্রাদেশে বিজ্ঞান্তমা:। দাহণনগরং ভাবি কলিকালে বিশেষতঃ ॥ ২১ ॥ माहमाथाम बराना भाषा अहेम कीकरहे। তেনৈব স্থাপিতবাশ্চ গ্রাক: স্ক্রিনাম্প্র: ॥ ২২ ॥ यूगमात्रः माह्तम ह यूक्तः ভावि পরস্পরং। স তের্যবলৈ: শাকং বিপ্রা: সংবৎসরাবধি: ॥ ২৩ ॥ কীকটৈল্প প্রার্থনায়াং সমতা ভাবিনীদ্বয়ো: ৭ শোণস্থ তোয়ং পাশুন্তি সততং দাহুদ**প্রকা: ॥ ২৪**.শ দশবর্ষ সহস্রাণি গমিয়ান্তি কলের্যদা। ভবিষ্যতি দাহদাথাং নগরভৈব নাশনং॥ ২৫ ॥ ভবিষ্য বৃদ্ধথতে কীক টান্তর্বন্তী গ্রাদেশবর্ণনে ষ্টু জিংশোধ্যার। (भागनाम्बर शास्त्र अग्राद्या किलान मास्त्र नात्र প্রতিষ্ঠিত হইবে। শাপ্রষ্ট দাছে নামক ঘবন কর্তৃক ঐ নগর স্থাপিত হইবে। সংবৎসরাবধি দাত্দনগরে হিন্দু मुन्नमात्न युद्ध हहेत्व, शत्त्र की कहेवानिशत्त्वत्र व्यार्थनात्र मास्टि স্থাপিত হইবে। দাত্দনগরের প্রজারা শোণনদের अनह ব্যবহার করিবে। কলির দশদহত্র বংসর অতীত ইইলে माङ्गनगत ध्वःम इहेर्य।

দাউদনগর গয়া হইতে ২০ কোশ উত্তরপূর্বে অবস্থিত।
আক্ষণগঞ্জ লইয়া ইহা একটা রহৎ গণ্ডগ্রাম। প্রায় ৮০০০
হাজার বাড়ী আছে। দাউদ খাঁর সরাই বাড়ীতে
ফুইটা প্রকাণ্ড ফুটক আছে। দাউদের পুজের নাম আক্ষদ,
ইহারই নামানুসারে আক্ষদগঞ্জের নাম হইয়াছে। চৌতরা
বাড়াটা বিতল। প্রত্যেক তল ক্রমশং ক্ষুদ্র। প্রত্যেক তলে
ঢালু ছাদের বারাণ্ডা আছে। ইহার প্রাচীর মৃত্তিকার,
খুটি কাঠের, ছাদ খোলার। এখানে এখনও দেশীবস্ত্র
প্রতহয় ও দেশবাসীরা তাহাই ব্যবহার করে। বিলাতী
কাপড়ের বছল ব্যবহারেও এদেশের লোকে এখনও দেশী
কাপড় ছাড়ে নাই। এখানকার ভাতীদিগকে ত্তিক্ষের
সময়ও শীরকারী রিলিফ কার্যোর সাহান্দ্র লইতে হয় না।
মোটা গালিচা ও কম্বলও এখানে প্রস্তুক্র।

দাউদপুত্র, সমাট অক্বরের মৃত্যুর পর ও নাদিরশাহের অভ্যদ্যের মধ্যকালে (১৬০৫—১৭৩৯ থৃ: আ:) দাউদ থার পুত্রগণ অতিশয় প্রবল হইয়া উঠে। ইহারা দাউদপুত্র নামে ধ্যাত হইয়াছিলেন এবং ইহাদের বংশীয় সকলেই 'দাউদপুত্র' নাম গ্রহণ করিয়াছিল। দাউদপুত্রগণের বন্ধবন্ধন ও দৈনিক

वृखिहे छेभसीविका। निकातभूत व्यक्तता रेहात्पत श्रधान জ্বাড্ডা ছিল। ভ্রমণশীল জ্বাতির ক্রায় ইহার। খাঁপুর, তরাই, সক্ষর প্রভৃতি স্থানে অতিবাহিত করিত।

মহরদিগের সহিত অনেক যুদ্ধের পর দাউদপুজেরা উত্তর সিকুপ্রদেশে প্রাধান্তলাভ করে। এই সময় ইহারা এক প্রকার পুরুষাত্ত্ত্রমে সিন্ধুপ্রদেশের শাসনকর্তৃত্ব ভোগ করিতে কিন্তু নিকটবর্ত্তী এপেদেশের শাসনকর্তাদিগের স্হিত তাঁহাদের স্কাদাই যুদ্ধবিগ্রহ উপস্থিত হইত। এই (शानरमान निवादरभद क्य काराकीत निक्थरमर्ग प्रकारी রাজপ্রতিনিধি নিযুক্ত করেন। তৎপরে দাউদপুত্রেরা ১৬৫৮ इहेट >१४० थृष्टीच भवाख निक्धातम मानन कतियाकितन। माउनि भूत, প্রতাপগড় ब्यनात 'একটা গ্রাম। এখানে माউদর্থা ' कर्ड्क निर्मिंड जानक देष्टेरकत उधक्र मृष्टे रम्र। कथिड जाएक, আলাউদীন্ থিলিজীর সময় এই সকল হুর্ণ প্রস্ত হয়। माजिन मर्फन (तमक) नक्तमर्फन शाहा (Cassia alata) माछिलिया (एनक) में अवर्छनकाती। দৃঁ। ও ( দেশজ ) সুযোগ, সুবিধা। দাওয়া (আরবী) ১ অধিকার, অত্। ২ থোলার খরের

সন্মুপস্থিত চালার মধ্যস্থ ভূমিপঞ্চ।

, দাঁড় (দেশজ) > নৌকাদণ্ড, বহিত্ত। ২ পক্ষী রাধিবার জন্ত ধাতুবা কাঠময় দণ্ড।

দাঁতকাক (দেশব) ভোণকাক।

माँ एचता (तमक) शैकवाश बस मिल्दित निक्रे ठकू एकांगा-কার লায়গা বা মগুপবিশেষ।

দাঁড়া (দেশজ) ১ রীতি। ২ প্রধা। ৩ ব্যবহার,। ৪ আচরণ। ৫ মেরুদণ্ড। ৬ শির্দাড়া। ৭ দণ্ড।

দাঁডাঞ্জি ( দেশৰ) কাষ্ঠনিশ্বিত ক্রীড়াযন্ত্রবিশেষ, ইহা হুইটা च उद्य भर्गार्थ, धारमणे এक अनिजनीर्घ चून कांश्रेम छ, रेहाँ तरे नाम गंडिं। विठी प्रति कार्धमय कन्तूक, ইशाय नाम छानि।

দাঁড়াগোপাল (দেশস) স্ত্রীলোকদিগের একরূপ ব্রত বা মানত বিশেষ। স্বামী বা পুত্রগণ কোন দেশে পলাইরা গেলে তাঁহারা এইরূপ দাঁড়াগোপাল মানিয়া থাকে। পুত্র বা স্বামী আসিলে প্রথমেই তাহাকে বসিতে নী দিয়া পান ও স্থপারি ঘারা জীলোকেরা দাঁড়াগোপাল ব্রক্ত করিয়া থাকে।

माँ छान ( तम्ब ) मखायमान रखन।

माँ 🕒 (तम्ब ) > त्नोकाताहक। २ व्यक्टलाक। ७ जूना-দণ্ডের কাষ্ঠ। ৪ পূর্ণছেদবোধক (।) এই প্রাকার চিছ্ন।

দাঁডোসাপ বা দাড়াশ (দেশজ) এক প্রকার দর্প (Coluber bæformis)

माँ जिला (तमन) ज्नानख, मानयता। माँ जि दिका है (तम्ब ) अकटाकात्र की फ़ारित्मव। अहे (श्वा একপারে যাইতে যাইতে পেলিতে হয়।

দাঁত ( দেশজ ) দন্ত, দশন, রদন ।

দ্ভিক্ডা (দেশৰ) দন্তরোগবিশেষ, দন্তশ্ল, দাঁভেঁর গোড়া (कानारत्राध्रा

দাঁতিকপাটী (দেশৰ) পীড়া ও দৌর্বল্যাদিৰনিত দম্ভরে। দাঁতথামাটা (দেশজ) ক্রোধবাঞ্জক অধর দংশন। দাঁতন ( দেশক ) দক্তধাবন, ুদক্তমার্জন। ২ মেদিনীপুরে; আন্তর্গত এক অতি প্রাচীন গ্রাম। [দন্তপুর দেখ। 🦫 দাঁতনকাটি (দেশজ) দস্তধাবনার্থ ব্যবহৃত কুজশাধা।

দাঁতল্সা (দেশৰ) দন্তরেগিবিশেষ।

দাঁতশুল ( দেশজ ) দন্তরোগবিশেষ।

मॅंकाल ( अंभक ) मखयूक, तृहदमखिनिष्टे, मखता

দাঁতি (দেশজ) > লঘুবল্গা। ৭ বৃহৎ দস্তবিশিষ্ট।

मॅं कुत्रा ( रमम अ ) त्र ९ म खिवि मिट्टे ।

(मँएक) ( (मण्य ) मखत्र, त्र्र मखिविष्ठ ।

দাক (পুং) দ্বাতি দক্ষিণামিতি দা-ক, (কু দা ধা বার্চিক্লিভা

ক:। উণ্৩।৪০) ১ যজমান। ২ দাতা।

দৃ†ক্ষ (তিঃ) দক্ষেত্ৰং অণ্। ১ দক্ষসম্বনীয় যজ্ঞাদি। দাকীণা স্তবঃ অকোলকণং বা ইঞ্স্তাৎ অণ্। ২ দাকিস্মুদায় ৩ তদক। (ক্লী) ৪ তল্লকণ। দাকে: ছাত্রা: 'ইঞ্চ' ইং অণ্। ৫ দাকিব ছাত্রসমূহ, দাকিব ছাত্র অর্থে এই শ বছবচনাস্ত। দাক্ষেরাগতঃ অণ্। (ত্রি) ৬ দাকি ^{হইং} আগত। ৭ দাক্ষির দণ্ডপ্রধান মানবের অস্তেবাসী (শি^{ন্তা)।} দাক্ষক (পুং) দাক্ষেরিদং গোত্রচর: ie বৃঞ্,। ° ১ দও প্রধান মানবাস্তেবাসি, ব্যতীত তৎসম্বন্ধী। দণ্ডপ্ৰধান মানবাস্তেবাগী বুঝাইলে অবণ্ প্রত্যের হইবে, বুঞ্ হইবে না।

माकीशाः विषया तमः ताजगानिकाः त्कः । माकित विष দাক্ষণয়ণ (পু: স্ত্রী) দক্ষত গোতাপত্যং ইঞ্, যুনি ^{হত্}। দক্ষের যুবাগোতাপত্য। দক্ষতাইদং দাকং ভচ্চ অরনঞ্_{তি।} २ स्वर्गानि व्यवकात्र। "नाकात्रनः नकिना।" (कालावन (আ॰ ৪।৪।२৮) 'দাক্ষারণং স্থবর্ণমূচ্যতে' ( কর্ক )। ও ভূ^{র্ণ।} "(या विछर्डि नाकामणः श्तिणाः।" (खज्ञयक् ७८।६८) 'नोकान मत्कारु मुद्रादार्थः।' (देवन नीप) 🚶

৪ দক্ষকৃত যজ্ঞভেদ। এই মজের কথা শতপ্রার্ণ উল্লেখ আছে।

"ভন্তদনেন সোহ্যকত তকাদ দাকায়ণোৰজোনাম।" ( শতপথবা ২৪।৪।১) দাক্ষায়ণভক্ত (পং) দাক্ষায়ণভ বিষয়ে দেশ: এবু কার্যাদিছাং ভক্তল্। ভদীয় দেশরণ বিষয়!
দাক্ষায়ণ্যভ্ত (পুং) দাক্ষায়ণভ বিজ্ঞা। দক্ষায়ণ্যভ্ত (পুং) দাক্ষায়ণভানি। হ্বর্ণ্যুক্ত।
দাক্ষায়ণিন্ (ত্তি) দাক্ষায়ণ-ইনি। হ্বর্ণ্যুক্ত।
দাক্ষায়ণ ব্রহ্ম ত্তি বিশ্বান্ সকম ভলুং।" (যাজ্ঞবদ্ধা)
দাক্ষায়ণ স্বর্ণং ভদভাতীতি ইনি, দাক্ষায়ণী। (মিভাক্ষরা)
দাক্ষায়ণী (স্ত্রী) দক্ষভ অপুতাং ত্রীদক্ষ-ফিঞ্ছ, গোরাং ভীব্।
তর্গে বিশিনক্তা। ৪ দক্ষক ভাস মাত্রা। ৫ দঞ্জীবৃক্ষ। ৬ অদিতি,
কন্ত্রপপন্নী। ৭ কন্তা। ৮ বিনভা। (ভারত ১৷২২৷৫)
দক্ষণ তেরামারভা প্রজাং সম্যাধ্বির্কিতাং।
ভত্ত দাক্ষায়ণীপুত্রাং সর্কে দেবাং স্বাস্বাঃ।" (ব্রাহ্পুণ)

দাফায়ণীরমণ (পুং) রময়তীতি রম-ল্যু। দাক্ষায়ণীনাং রমণ:চক্রম

দাক্ষায়ণীপতি (পুং) দাক্ষায়ণীনাং অখিছ্যাদি নক্ষজাণাং

দাক্ষায়ণ্য (পুং) দাক্ষায়ণ্যাং অদিতৌ ভবং যৎ। আদিত্য।
দাক্ষায় (পুং) দক্ষায় এব স্বার্থে অণ্। গৃধ।

নাক্ষি (পুং লী) দক্ষত গোতাপতাং ইঞ্। দক্ষের অপেত্য। ঘোষাদি পরে থাকিলে এই দাক্ষি শব্দের আমাহাদান্ততা হয়। যথা দাকিঘোষ, দাক্ষিকজ্ঞা ইত্যাদি।

দাক্ষিকস্থা ( স্ত্রী ) দাক্ষীণাং কম্বা, ( সংজ্ঞায়কম্থোনীনরেষু। পা ১৪০১০) ইতি উশীনরত্বাভাবাৎ ন ক্লীবতা। বাহলীক। (ভরত) দাক্ষিকর্ম ( পুং ) গ্রামবিশেষ।

দাক্ষিকৃল ( ফ্রী ) এক গ্রামের নাম।

প্তি: ৬তং। চক্রা

দাক্ষিণ (অি) দক্ষিণা প্রায়েজনমস্ত অণ্। ঝতুগ্রহাক হোমহেদ। "অধ প্রতিপর্যেত্য গাইপত্যং দাক্ষিণানি জ্যোতি।" (শতং বাং ৪।৩৪।৬)

দাকিণক (গং) দকিণায়াং কর্ম্মনাপ্তৌ , জব্যদানরপায়াং ক্রিয়ায়াং প্রস্তুতঃ, দক্ষিণমার্গেণ চক্রলোকং গচ্ছতি বা বৃঞ্। ১ দক্ষিণাতৎপর। ২ চক্রলোকগামী। ৩ বন্ধবিশেষ, বন্ধ তিন প্রকার—প্রাকৃতিক, বৈক্ততিক ও দাক্ষিণক। [বন্ধ দেখ।] দাক্ষিণশাল (ত্রি) দক্ষিণশালায়াংভবং। দক্ষিণবারী গৃহ। দাক্ষিণাতঃ (ত্রি) দক্ষিণা দক্ষিণভাং দিশি ভবং দক্ষিণা ত্যক্ (দক্ষিণা পশ্চাৎ প্রস্তুত্র । পা ৪।১।৩৮) > দক্ষিণদেশো
ত্ব। ২ নারিকেল। (রাজনিং) ৩ দক্ষিণদিক্স্থ। ৪ দক্ষিণদেশবাসী। ৫ দক্ষিণদেশের অক্স্ক্র্তী। ৬ দক্ষিণরাজ্য।

। •। ভারতবর্ষের দক্ষিণাংশকে সাধারণতঃ দাক্ষিণাত্য বলে। বিদ্যাপর্যন্তমালা ভারতবর্ষের ঠিক মধান্থলে পূর্ব- পশ্চিমে বিস্তৃত থাকার ভারতবর্ষ উত্তর ও দক্ষিণ থণ্ডে ম্বভাবতঃ বিভক্ত হইরা গিরাছে। উত্তরপণ্ডকে আর্থাবর্জ [ আর্থাবর্জ দেখা ] ও দক্ষিণথণ্ডকে দাক্ষিণাত্য বলা হয়। যে কাছ উত্তরপণ্ডের আর্থাবর্জ নাম হইরাছে, সেরুপ কোন কারণে দাক্ষিণাত্য নাম হয় নাই, কেবল দক্ষিণাদগবন্থিত বলিয়াই ইহাকে দাক্ষিণাত্য বলে। এক সময়ে নশ্মদা নদী হইতে ক্ষা নদীর অন্তর্গত ভূপ্তমাত্রকে দাক্ষিণাত্য বলিত, কিন্তু কালে তাহা পরিবর্ত্তিত হইয়া গিরাছিল।

দাক্ষিণাত্য-ভারত একটা বৃহৎ উপদীপ, ইহার পশ্চিমে আরব সাগর, দক্ষিণে ভারত মহাসাগর ও পুর্বের বঙ্গোপসাগর, কেবল উত্তরে বিদ্ধাপর্বভিষালা ও আগ্যাবর্ত্ত নামক উত্তর-ভারত। এই উপদীপটী তিকোণাকার, ইহার শৃংকর নাম কুমারিকা বা ক্যাকুমারী অন্তরীপ সর্বাদকিণাংশে ভারত মহাসাগরে প্রবিষ্ট হইয়াছে এবং ইহার ভূমিভাগ বিস্কা-পৰ্বতমালা। এই তিভূজাকৃতি দাকিণাত্য খভাবত: একটা ছতেজি ছর্গবৎ রক্ষিত। ইহার উত্তরে যেমন বিদ্যাপক্ষত-মালা পূর্ম্পশ্চিমে এক সমুদ্রকৃল হইতে অপর সমুদ্রকৃল পর্যান্ত বিভ্ত, সেইরূপ পাশ্চমপার্থে সমুদ্রতীর হইতে কিছু দূরে উত্তরদক্ষিণে বিষ্ঠত গড়ে ৪ হাজার ফিট্, উচ্চ পশ্চিমঘাট বা সহু পর্বতিমালা। এরপ পুর্বেও পূর্বঘাট পর্বতমালা এবং দক্ষিণে উভয় পর্বতের মিলনভূলে নীলগিরি ও মলয়পর্বত। পশ্চিমঘাটের পশ্চিমে একবারে সমুদের কুলে যেমন অপ্রশন্ত ভূথও উত্তর দক্ষিণে বিভৃত আছে, সেইরপ পূর্ববিটের পূর্বেও পশ্চিমাপেকা কিছু অধিক বিস্তৃত ভূথ্ও আছে এবং নীলগিরি ও মলয়ের দক্ষিণেও আছে। দাকিণাত্যের পশ্চিমোপকুলকে মলবার (মলয়বর ?) উপকৃল এবং পূর্বাউপকৃলকে করমঙল উপকৃল বলে। যত নদী সমস্তই পূর্বাভিমুবে পূর্বঘাটের মধ্য দিয়া বঙ্গোপ-मागतत्र পড़िতেছে। धार्यान धार्यान नगीत गर्या नगान, তান্ত্রী, গোদাবরী, ক্বঞা, পেন্নার (পোলৈয়ার) ও কাবেরী • বৃহৎ ও শ্রেষ্ঠ। ইছার মধ্যে প্রথম জুইটী মাত পশ্চমমূথে প্রবাহিত হইয়া আরবসাগরে পড়িয়াছে। পূর্বোপকুলের ভূমি নদীবাহিত পলিমৃত্তিকায় উৎপন্ন, কিন্তু পশ্চিমোপকুলের ভূমি সেরূপ নহে। ইহা ভানে ভানে সমুজপৃষ্ঠ হইতে সাতিশয় উচ্চ এবং পশ্চিমঘাটের এক একটা শাখা পর্বত একবারে সমুদ্রোপকৃল পর্যান্ত বিস্তৃত, কোন কোনটা বা একবারে সমুদ্রের কলের মধ্যে নামিয়া গিয়াছে।

ভারতের প্রাচীন ইতিহাস আর্যাবর্ত সম্বন্ধে যতটা পাওয়া যায়, দাক্ষিণাত্য সম্বন্ধ আবার ততটা পাওয়া যায় না। পৃষ্টীয় ত্তরোদশ শতাকীতে মৃদ্দমান অধিকার বিস্তৃত হইবার পুর্বে প্রক্রত্ববিদ্গণের গবেষণায় এবং প্রাচীন মন্দির ত্র্গাদির অভিষ্ঠ ইউতে এখানকার যাহা কিছু ইতিহাস জানিতে পারা যায়। হিন্দু প্রাণাদি ও বৌদ্ধ ধর্মগ্রহাদি 'হইতেও গল্প বিজড়িত কতক্টা ইতিহাস পাওয়া বায়। রামায়ণোজ্য রাম-কর্তৃক দান্দিণাক্রাবিজয়ের পুর্বের্ণ দান্দিণাত্য সম্বন্ধে বড় বেশী কিছু জানা যায় না। রঘ্বংশেরঘুর দিখিলয় উপলক্ষে নান্দিণা-তার যে বিবরণ পাওয়া যায়, তাহাকে ঠিক রামের পূর্বে-বজীকালের অবস্থা বিদিয়া না ধরাই যুক্তিসকত, তাহা রঘ্-বংশের গ্রন্থকার কাণিদাসের সমসামন্ত্রিক অবস্থা বিলিয়া ধরিলেই ভাল হয়। রামায়ণ মহাভারতাদির সময়ে দান্দিণাত্যের সমস্তাংশে যে লোকবাস ছিল না, তাহার প্রমাণ আছে।

খৃষ্ট জন্মের সময় ছইওে আরম্ভ করিয়া এবিষয়ে বিচার করা স্থিধালনক। খৃষ্টীয় এয়োদশ শতান্দীর পূর্ব্বে দাক্ষিণাত্য সম্বন্ধে যাহা কিছু জানা যায়, তাঁহাই হিন্দুশাস্ত্র, বৌদ্ধশাস্ত্র, চীনপরিব্রাজকদিগের অমণবৃত্তান্ত, প্রাচীন থোদিত লিপি ও প্রাচীন গ্রীকদিগের শিথিত বিবরণাদির উপর নির্ভর করিতে হয়।

ু গ্রীকদিগের বর্ণনা হইতে খুঠ জন্মের পরবর্তী ব্যাপার কিছু কিছু জানা যায়। খুঠীয় ৮০ হইতে ৮৯ বংসর মধ্যে "পেরিপ্লাস্" নামক গ্রীকদিগের বাণিজ্ঞা বিবরণ পুত্তক লিখিত। স্ক্রে গ্রীকেরা ভারতে আসিতে হইলে গ্রীস হইতে বাহির হয়। মিশর, আরব, আফ্রিকা, পারভ, বেলুচিস্থান প্রভৃতি দেশের কোন কোন স্থানে জাহাল লাগাইত, এই গ্রন্থে ভারতোপকুলেযে সকল স্থানের উল্লেখ আছে, তাহার বিবরণ নিমে ধারাবাহিক মেণে সংক্রেপ আছে, তাহার বিবরণ নিমে ধারাবাহিক মেণে সংক্রেপ উল্ত হইল। তাহা হইতে খুঠীয় প্রথম শতালীতে দাক্ষিণাত্যের অবস্থা কি ছিল, তাহা উপলিজ হইবে।

১। স্বাইথিয়া (Skythia) (শক) দেশের উপকূলীবর্ত্তী দিস্থদ্ (Senthas) নদীর মোহানা—ইহাই দিল্প নদীর
মোহানা। পারস্তের (Pasirees) অন্তর্গত পার্দিরা (Pasira)
নামক ক্লু, সহরের কিছু দুরে বগিদর (Bagisara) নামক
বন্দর ছিল। ইহা বর্ত্তমান উর্মারা বা অরবা নামক অন্তর্গপের উপবে ছিল। এই স্থান হইতে গ্রীকণোত দিল্পনোহানায় প্রবেশ করিত। এখানকার জল খেতবর্ণ। খেতবর্ণ জল দেখিলেই নাবিকের। সাবধান ইইত, কারণ এধান-

কার সমুদ্র জলে অজন্র দর্প ভাদির। বেড়াইত এবং একট্ দ্রে পারস্তের দিকে একপ্রকার বিভিন্ন জাতীর 'গ্রাই' (Graai = গ্রাহ) কুন্তীর দিখিতে পাইত। নদীর মধ্য মুধ্ ব্যক্তীত আর সাতিটী শাধা ছিল। মধ্য মুধ্বের উপর 'রুর্ক্রিকন' (Barbarikon) নামক একটা বিখ্যাত বাণিজ্যবন্দর ছিল।

২। মীননগর (Minnagar) উক্ত বন্দরের সমূপে একটী কুড়খীপে এই নগর অবস্থিত ছিল। এই নগরই তথন শকরাজ্যের (Skythia) রাজধানী ছিল। তথন পারদরাজগণ (Parthian princes) এথানে রাজ্যু করি. তেন। ইহাদের কুড় কুড় রাজ্যে সর্কাদাই যুদ্ধবিগ্রাহ চলিত।

ত। আরিয়কি (Ariake) 'মোঘরোদ' (Mombaros)
প্রাদেশের 'আরিয়কি' (Ariake) একটা বিভাগের নাম।
'আরিয়কি',টলেমির মতে 'লারিকি' নামে থ্যাত। 'লারিকি'
ইয়ুলের মতৈ 'লাট' বা 'লার' দেশ, গুজরাট প্রদেশের
অধিকাংশ প্রাচীনকালে লাট নামে থ্যাত। ছিল। পণ্ডির
ভগবান্লাল ইশ্বন্ধীর মতে 'আরিয়কি' সংস্কৃত 'অপরায়িক শক্ষের গ্রীক নাম। পশ্চিম সমুদ্রপৃষ্ঠবর্তী প্রদেশ প্রাচে 'অপরাস্ত' নামে বর্ণিত হইয়াছে। "মোঘরোদ" হইরেই
বর্ত্তমান 'মুছই' বা বোঘাই শক্ষ উৎপন্ন।

৪। আবিরিয়া (Aberia) মোম্বরসের পরে দেশে অভান্তর ভাগে কাইথিয়ার এই অংশ অবস্থিত। ইংলি সংস্কৃত "আভীর" দেশ। এই আভীরদেশের সমুখবর সমুদ্রোপক্ণই 'অরম্বেণে' (Surostrene) ইংট সংস্কৃত স্থাট অরাষ্ট্রদেশের রাজধানীর নামও তথন মীননগর ছিল। এ মীননগর হইতে বহু পরিমাণে বস্ত্র বিক্রেয়ার্থ বরুগর্মী (ভরুক্র সহরে আসিত।

৫। অপ্টর্ক প্র (Astakapra) ইহা বরুগজ সহরে।
(Barugaza বর্ত্তমান ভরোচের) বিপরীত দিকে অবিষ্ঠি
এই নগরের সংস্কৃত নমে ইয়ুলের মতে 'হস্তকবপ্র' বিশ্ববিশান ভাউনগরের নিকটবর্ত্তী 'হাধ্যা নামক স্থান।

৬। মই (Moais) অষ্ট্রকপ্রের পর এক ন্দী, এই ননী বিস্তৃত্ত মূথ ও তন্মধ্যে বামদিকে 'বইওনিদ' নামে একবীদ "মইদ্" নদী বর্ত্তমান 'মহী' এবং ঐ বীপটী সম্ভব্ত 'পেরম্' বীপ †।

^{*} Indian Antiquary, Vol. VIII. 1879, pp. 107-108.

^{*} Indian Antiquary. Vol. VIII, pp. 138-161.

[†] Indian Ant. Vol. VIII, 1879, 141 'পেরিয়ানে'বে কার্য দক্ষিণমুখে অপ্রসর হইবার বর্ণনা দেখা বাইতেতে, তাহাতে নর্য উত্তরবত্তী তান বোধ হর; তাহা হইলে 'নইস্' 'নহী' হর না। তবেই সভব, বহী প্রত্যত তুরিয়া আসিরা আহাত তথন নর্মধার প্রবেশ করি

१। নয়দীঙস্ (Namnadios)—উক্ত বীপ হইতে পূর্ব্ব দিকে অগ্রসর হইয়া এই নামে একটা নদীর মধ্যে প্রবেশ করিয়া বরুগজ সহরে বাওয়া বায়। এই নদীই বর্ত্তমান নর্মনা নুদী।

৮। বরণজ (Barugaza) সহর। ইহাই নর্মনাতীরত্থ প্রাচীন বিধ্যাত বলার। ইহার বর্জনান নাম ভরোচ। অধ্যাপক উইলসনের মতে 'ভ্শুক্ষেত্র' বা 'ভৃশুক্ষেত্র' শক্ষের অপ-রংশ। বৃহৎসংহিতায় ভরুক্ষেত্র নামে উক্ত ইইয়াছে। ভৃশুবংশীয়েরা বেছলে বাস ক্রিতেন, তাহাই ভৃশুক্ষেত্র। শুলুরাটি, ক্ষেত্র প্রদেশে ও ভরোচ জেলায় এখনও অনেক ভার্গব আক্ষণ বাস করেন। ইহারা এক্ষণে দরিজ ও মুর্থ। মুর্থের মুথে "ভৃশুক্ষেত্র" ক্রমশঃ 'ভৃশুহৃত্র' 'ভৃশুক্ষন্ত' 'ভৃশুক্ত কছ' 'ভরুক্ছ' হইয়া পড়িয়াছে। প্রীক্দিগ্রেক মুথে এই ভঙ্কিক্ছ "বরুগজ" নাম হইয়াছে।

৯। দথিনাবদ্দ্ (Dakhinabads) বরুগল হইতে দক্ষিণমধে বে দেশ তাহারই নাম । ইহারই সংস্কৃত নাম 'দক্ষিণাপগ'। এই দেশের অভ্যন্তরভাগ মরুময়, পার্বত্য এবং
ব্যাঘ্রাদি খাপদ, ভীষণ সর্প ও বানরাদি পূর্ণ। ইহার
অপরদিকে গদাভীরবর্তী জনপদ।

১০। 'পৈঠান' (Paithan) বক্ষণজ হইতে দক্ষিণে

১১ দিনের পথ দ্রে এই সহর অবস্থিত এবং ইহার পূর্ব্বে

দশদিনের পথ দ্রে 'তগর' (Tagara) সহর অবস্থিত।

এই হুই সহর দেশের মধ্যে সর্বাপেক্ষা প্রধান বাণিজ্য স্থল।

এই 'পৈঠান' প্রতিষ্ঠান শক্ষের অপল্রংশ এবং তগুর বর্ত্তমান

'গ্নার' । এই ছুই স্থানে বস্ত্রশিল্পের বড়ই প্রাত্র্ডাব

চিল।

১১। ° নিমারিক বা দিমারিক (Limurike or Dimurike) বা দমিরিক দাকিণাত্যের পূর্ববর্তী একটী বিভাগ। দন্তবতঃ ইহাই তামিল বা জাবিড় দেশ। [ ত্তামিল দেখ।]

১২। কলিএন (Kalliena) বর্ত্তমান 'কল্যাণ' ইহা এখন বোষাইয়ের নিকট অবস্থিত। এক সমরে ইহা বিধাত ছিল। অনেক থেমনিতলিপিতে ইহার উল্লেখ আছে। এতব্যতীত নৌসরিপ (Nausaripa) 'বর্ত্তমান স্বাটের ১৮ মাইল দক্ষিণে অবস্থিত নৌসরি নামক স্থান। সৌপ্পর (Soupporta) বসাইর নিকটবর্তী স্থপারা নামক গান, পৌরাণিক স্পারক দেশ। এখানেতামা ও তিল উৎপন্ন ইইত ও পোষাকের কান্ত বন্ধ প্রস্তুত্তইত।

১৩। দেমুল (Semulla) ইযুলের মতে ইহা বর্ত্তমান বোলাই হইতে ২৩ মাইল দক্ষিণে চেন্বল বা চৌল নামক বন্দর, কিন্ত পণ্ডিত ইক্রজীর মতে ইহা বর্তমান 'চিম্লা,' জনেক খোদিত্লিপিতে ইহার উল্লেখ আছে।

ঐ ভাবের পর দমিরিকের নিকট পর্যান্ত করেকটা কুল ভানের উল্লেখ আছে, সেগুলি বর্তমান গোয়া হইতে বোম্বাইরের মধ্যে অবস্থিত ছিল। তন্মধ্যে কতকগুলি এই— हिश्रात्राहकोत्र (Hippokoura) वर्खमानः '(वाष्ट्रावनमत्र', মলগর (Mandagar) বর্ত্তমান 'রাজপুর', পলৈপতম্ (Palaipatm) বর্ত্তমান 'বঙ্কুট', মেলিজেইপর (Melizeigara) वर्खमान अव्रगण, त्कानिविषम् (Buzantium) वर्खमान বিজয়ত্বৰ্গ, ভোগবোন (Togaron) বৰ্ত্তমান দেব গড়, (ইহা বিজয়ত্র্বের নিকট), তুরলোদবোয়া (Turonnosboa) ইয়ুলের মতে ইহাই বর্ত্তমান বলা বা তিরকল্ নদী। এতদঞ্চলে মালবনের (Malwan) নিকটে ভীরের কাছে প্রেপম বীপের নাম সিকুত্র্। ইহারই পর একটী কুদ্র দীপকে ইংরাজীতে এখন বারট ুআইল্যাও্দ্ (Burut Islands ) বলে। ইহারই মধ্যে ভিলোলা (Vingorla) পর্বত বিশেষ খাঁত। পেরিপ্লাসে এই পর্বত সেসিক্রিরেনই ( Sesikrienai ) নামে বর্ণিত হুইয়াছে।

১৪। ঐগিদিওন্ (Aigidion) গোয়ার নিকট্প্রতী ঐগিধিয়াই দীপ, কিন্ত ইয়ুল বলেন যে সদাশিবগড়ের । দক্ষিণবর্তী 'অঙ্গদীপ।'

>৫। নৌর (Naura) ইহা দমিরিকের অন্তর্গত। বর্ত্তমান হোনবর কথন কথন ওনোর রূপেও লিথিত হয়। ইহা শরাবতী নদীর মোহানার নিকট অবস্থিত।

১৬। নিঅ (Nitra) দমিরিকের প্রথম বলর। মূলরের মতে বর্ত্তমান মিরজান বা কোমতা, কিন্তু ইয়ুলের মতে ইহা মঙ্গল্ব। এই স্থানের আর কয়েকটা স্থান এই স্মুজরিস (Muziris) নামক নগরে আরিয়িক ও মিশর হইতে আগত জাহাল দাড়াইবার স্থান ছিল। ক্যাল্ড্হয়েলের মতে ইহাই বর্ত্তমান মূইরিকোট্টা (muyire-kotta)। কেরো-বোঅসের (Kerobotros) রাখ্যে ইহা অবস্থিত,। তুণ্ডি (Tundy) এই রাজ্যের রাজধানী ও বলর ছিল। ইহা বর্ত্তমান তুণ্ডিও নেলকুঙা (Nelkunda), তথনকার একটা প্রধান বলর, ইহা বর্ত্তমান কিন্তা নামক স্থান্। কেরো-বোঅসের সংস্কৃত নাম কেরলপুত্ত। কেরলপুত্ত-রাজগণ যে ভূতাগে রাজত করিতেন, সেইস্থানে এখন মলয়ালম্ ভাষা প্রচলিত ও তাহাই প্রাচীন কেরলরাজ্য। করৌর (Kuroura) নগর (বর্ত্তমান করুর' নগর) তাহাদের রাজধানী ছিল। নেলকুঙা পাও্য রাজগণের অধিকারে ছিল। মহুরা

(তামিশ) বা মধুরা (সংস্কৃত) সহরে ইহাদের রাজধানী ছিল। এই বলরের নিকটে নদীর মোহনার বেধানে জাহাজাদি থাকিত, তাহা বকরি (Bakare) বা বেকার (Becare) নামে থাতে ছিল; ইহার বর্তমান নাম মুল্লরের মতে মকরি। সেকালে বরুগজ ও নেলকুণ্ডার ভারে বৃহৎ বাণিজ্যস্থান দাকিণাতে। আর ছিল না।

১৭। পরলিরা (Paralia) ইহা একটা প্রদেশের নাম।
ইহা বর্তমান কালে দক্ষিণ তিবাকোড়ুও দক্ষিণ তিরেবেলী।
এখানে কুইলন্ (কোলম্ব) নগরের দক্ষিণে যে রক্ত পর্বত
আছে, পেরিপ্লান্ন্ গ্রন্থে তাহা পুরোহস (Purrhos) নামে
উক্ত ইইয়াছে। ইহার নিকটে সেকালেও মুক্তা উত্তোলিত হইত। পাও্যরাজ্গণ এই ব্যবসায়ের অধিকারী
ছিলেন।

১৮। কোমার (Komar)বা কুমারিকা অন্তরীপ, ছর্গার "কুমারী" নাম হইতে ইহার নামকরণ হইয়াছে। এখনও এথানে প্রতিমাসে ভগবতীর উদ্দেশে লোকে একটা বিশেষ नित्न ज्ञाननानानि कतिया थात्क, उत्व आहीन कात्न हेहांद्र যতটা আগ্রহ ছিল, এখন আর তত্তা নাই। তখন এখানে ্রকটী হুর্গ ছিল। প্রিপ্লাদের লিখিত গ্রীকনাবিকদিগের বর্ণনা হইতে জানা যায় যে, তথনই এই স্থান সমুদ্রের গর্জশায়ী হইবার উপক্রম হইয়াছিল। আবদ কাল তাহার চিহ্নও নাই, কেবল অন্তরীপ হইতে দুরে সমুদ্রগর্ভে অর্দ্ধলাগরিত একটা পর্বতের উপর একটা পানীয়ের উপযুক্ত পরিষার জটোর কুপ আছে। পেরিপ্লাসে কোলথোই বা কোলকেই (Kolkhoi) নামে আর একটী স্থানের উল্লেখ কুমারিকার পরে পাওয়া যায়, তাহা 'কয়াল' নামক প্রাচীন নগর। ইহাই পাণ্ডারাজগণের প্রথম রাজধানী। এখন ইহাু সমুদ্র হইতে ৩ মাইল' দূরে আনছে। ইহার তলদেশ হইতে সমূদ্র সরিয়া গেলে ইহারই অভাবে পর্ত্ত্তীকেরা আর একটী নৃতন বন্দর তুঁতকুড়ি ( Tuticorin ) নির্দ্ধাণ করিয়াছে।

১৯। করালের পার উপক্লে আরগলুনামক প্রদেশের নাম পাওয়া যায়। ইহার একটা অন্তর্গীপের নাম ছিল কোক (Koru)ও তাহার উপর আরগের (Argeirou)নামে একটা নগর ছিল। ইহাই প্রাচীন ভূবেতাদিগের কোনিস্নগর, ইহার বর্তমান নাম রামেশ্বর। তৎপরে প্রতিক্র উপক্ল ঘ্রিয়া উত্তরমুখে যাইতে এই কয়টা বিধ্যাত বাণিতা হান ছিল—কামর (kamara) টলেমী ইহাকেই শস্তবতঃ (খাবেরিস্নদী তীরবর্তী) বলিয়া গিয়াছেন, ইহাই বর্তমান কাবেরীতীরবর্তী কাবেরীপ্তান; পছকী

(Poduke) ইহাই পুত্তেছরি বা 'নৃতন নগর', वर्षनान কালে ইহাই পুলিচেরী।

২০। তৎপরে সিংহল বা তাদ্রপর্ণী দ্বীপের বর্ণনা আছে।
মগধ হইতে একদল ঔপনিবেশিক এই দ্বীপের তামুপর
নাম প্রাদান করে। তিল্লেবেলী জেলার এই নামে একট নদী আছে। মুলর অহুমান করেন যে, প্রথমে এই নারী
ভীরে মাগধগণ উপনিবেশ করে, তৎপরে তাহারা সিংহ্রে
উঠিয়া যায়।

২১। মদলিন্ (Masalin) গোদাবরী ও ক্লফার মধান ভূভাগের নাম। টলেমী ইহাকে মদোলিয় বলিয়াছেন সংস্কৃত নাম মৌদল। সম্ভবতঃ মদলিপাটন ইহারই ক্লগান্তর।

২২। ইহার পর এক থাঁড়ি উত্তীর্ণ হইয়া আর এক;
প্রদেশের নাম দোশারিণ ( Doserene ) বলিয়া কণিত হই
য়াছে। ইহা দদান নদী ও গোদাবরীর মধ্যগত ভূচায়ে
নাম। ইহাই সংস্কৃত দশার্ণদেশ। টলেমী এই জনে
অধিবাসীর কথা লিখিবার সময় বলিয়া গিয়াছেন যে, এখা
নানাজাতির বাস, তন্মধ্যে এক জাতির নাম কিরায়
( Kirradai ), সংস্কৃত "কিরাড"।

পেরিপ্লাসে তৎপরে গলার মোহনান্থিত একটা বাঁপ। গালে (Gange) নামক একটা নগরের নাম মাত্র কথি আছে। তারপর ভারত সম্বন্ধে আর কোন কথা নাই।

ইহা হইতে আমরা দেখিতেছি যে, সে সমরে দাকিণতে যথেপ্ত সভ্যতা ছিল, অনেকগুলি রাজ্য, নগর, বন্দর ইত্যাদিল। . স্থাপুর মুরোপের সঙ্গেও দাক্ষিণাত্ত্যের নানালনগথে বাণিজ্য সম্বন্ধ ছিল।

খুষ্ঠীয় প্রথম শতাকীতে দাক্ষিণাত্যের এই অবহা ছিল এখন দেখা ঘাউক, খুষ্ট জন্মের পূর্বের হাও শত বংসরে মধ্যে এদেশের অবহা কি ছিল। খুষ্টের হাও শত বংসর পূর্বের বুদ্ধের, কাল। তাঁহার সমকালে দাক্ষিণাত্যের করব কতক পরিচয় পাওয়া যায়।

মহাবংশ পাঠে জানা যায় যে বিশ্ব নামক শেবপ বাচ ক্রার সিংহলে প্রথমে গিয়া রাজা হন, তাঁহার জন্মও বৃদ্ধ দেবের নির্বাণলাভ একদিনেই হয়। এই বিশ্ব বর্ষ শক্তর পশ্চাকাবিত হইয়া দক্ষিণাভিমুখে গ্রামান করেন, তবং তিনি লোল' দেশের উপত্যকা ও পর্বভ্রমালা অভিন্ত করিয়া অগ্রসর হন। তিনি নর্মাদার উত্তরে সুহগিরি, ত্বর্মা (প্রপারক • ) দেশের মালীগিরি (মলয়গ্রিরি) ও দিশে পাঞ্গিরি অভিক্রম করেন।

মহাভারত্যেত (দশ।

(वोक अरहत मर्या महायःन, त्राव्यत्रप्राकती, त्राव्यावनी, মিলিলপ্রার, সম্বর্মালকার, কারবিরতিগীত ও অনেক বৌদ-লাতক গ্রন্থাদি, কাহিয়ানের ৩ হিউএন্ৎসিয়দের অমণ, ন্নিত্বিস্তর, সম্প্রপুঞ্রীক ইত্যাদি গ্রন্থ এবং পাশ্চাত্য পত্তিজ্ঞানের গবেষণাপূর্ণ পুত্তকাদি আলোচনা করিলে, আনা যায় যে বৃদ্ধের সমকালে দাকিণাত্য প্রধানত: ক্লফানদীর উত্তরখণ্ড ও দক্ষিণ থণ্ড এই উভয় থণ্ডে বিভক্ত ছিল। উত্তর ধতে (১) উড়িয়া ও ( ২ )·ক নিঙ্গ এই ছই রাজ্য, পূর্বাংশে (৩) লাল দেশ (লাট) নর্মদার উভয় কুল ব্যাপিয়া গুলুরাট প্রান্ত, বিস্তৃত ছিল। (৪) **স্থনাপরাম্ভক (ম্বণাপরাম্ভক**) বা অপরাস্ত, (৫) অবস্তি এবং (৬) নবভূবন এই কয়টা পশ্চিম কুলে নর্ম্মদার মোহানার নিকট এর্জমান ছিল। আর দক্ষিণ-ধণ্ডে (৭) রক্তচন্দনের দেশ (৮) জাবিড় (৯) পা**ওঃ ও** মলয় ্. • ) মহিক্ত, ( ১২ ) নাগোদীপো ( নাগৰীপণু এবং ( ১২ ) মহিলারট্ঠ এই কয়টী রাজ্য ছিল। ্রাজাবলীতে বৌদ্ধর্মান বিরোধী রাজ্যগুলির মধ্যে চোলরাজ্যের নামও আছে।

গোদাবরীর অববাহিকায় দক্ষিণাত্যের সাধারণ নাম
দক্ষিণাপথ বলিত। উত্তর-পূর্বে রাজ্যগুলির দক্ষিণাংশকে
হারকক্ষেত্র বলিত। ক্ষীরনদী বা পালার নদীর অববাহিকাই
দাবিড় নামে খ্যাত ছিল। ইহা পূর্বেঘাট পর্ব্বতমালা ও
পেলার নদীর দক্ষিণ অববাহিকা হইতে চোলরাজ্যের দক্ষিণ
দীমা পর্যান্ত হিল।

এই সময়ে রাজ্যাদির মধ্যে নর্ম্মনা নদীর উত্তরতীরে কোছণ প্রদেশ হইতে (বেণ) গলা নদীর কুল পর্যান্ত নাগরাজ্বের রাজ্য ছিল। শ্রাবন্তী হইতে প্রত্যাবর্ত্তনকালে। কুল এই রাজ্যে উপস্থিত হইরাছিলেন। কাদে উপসাগরের পশ্চিমাংশে নর্ম্মনার খাঁড়ীর উপর লাল (লাট) দেশ ছিল এবং আর একটা লাল বঙ্গরাজের অধীন ছিল । নর্মানার উত্তর মববাহিকার নিকট উজ্জ্বনী বা অবন্ধি রাজ্যের উল্লেখ আছে। এই রাজ্য আর্থ্যাবর্ত্তান্তর্গত হইলেও দাক্ষিণাত্তার সহিত ইহার ঘনিষ্ঠতা ছিল।

গোদাবরীর উত্তর অববাহিকার অশাক ও মূলক রাজ্য হিল, গুহালিপিতে ইহার উল্লেখ আছে। 'মূলক' রাজ্যই পোর্মিণিক 'মৌলিক' রাজ্য। গোদাবরীর উভয় তীরে এবং ব-বীপে কলিক রাজ্য। ছিল। ক্রহ্মানদীর পূর্বাংশের উত্তর-তীরে বর্ত্তমান বিদর্গত গোদাবরীর মঞ্জিরা নামক শাখা-নদীর ক্ল পর্যান্ত মঞ্জ্যিক নামক নাগরাল্য ছিল। বৃদ্ধ এই দেশের নাগরালকে দর্শন দিয়াছিলেন। '

* Turner' Mahavamso, p. 44-45.

দক্ষিণাংশে পাঙারাজাই একমাত্র পরাক্রান্ত স্থব্যবহিত রাজ্য ছিল। ইহা বর্তমান মহরা ও তিলেবেলী জেলা ব্যাপিয়া ছিল।.

সিংহল্টীপেও ভিনটী নাগরাজ্য ও ভিনটী যক্ষরাজ্য ছিল। সিংহল্টীপের নিকটে মণিটীপেও নাগাধিকার ছিল। খুগীর সপ্তম শতানীর প্রাহৈ ওড়, দক্ষিণ কোশল, মহারাট্র, আরু, প্রাচীন কলিক, মালব, ভরক্ত, (ভ্তত-কছে বা ক্ষেত্র), ধনকটক (রক্ষানদীর দক্ষিণাংশে অবস্থিত), জাবিড় (রাজধানী কাঞ্চীপুর), মালক্ট (রাজধানী কোহণপুর) প্রভৃতি রাজ্যে বুছের ভ্রমণের কথা বুণিত আছে।

এই সময়ের নগরাদির মধ্যে লালদেশে সিংহপুর (সিংহয়্বর বা সিংহবপুরয়্রর), স্থনাপরাস্তদেশে সাগলস্থবের, ভরুকছে (ভরোচ), উজ্জয়নী, অলক, প্রতিষ্ঠান, গলন্দী (গ্রাম), স্পারক নগর, মল্যারাম (গ্রাম); কলিল দেশে অশ্বক ও মৌলিক, দক্ষিণাপথে মাহিয়তী », মালক্ট রাজ্যে কোষণপুর, জাবিড্রাজ্যে কাঞ্চপুর ও দক্ষিণ মথ্রা (মছরা)ছিল।

বন্দরাদির মধ্যে ভক্কছে, সিংহপুর (বন্দরাজপুত্র বিজয় এই নগর হইতে সিংহল খাত্রা করেন), সাগল (বিজয়ের আতৃপুত্র ওাঁহার মৃত্যুর পর সিংহাসনলাভাশার এই খান হইতে সিংহল যাত্রা করেন), স্পারক +, (এই হানে সিংহল-যাত্রাকালে বিজয়ের আহাজ থামিয়া ছিল), কলিজ দেশে আজিত্তা (Adzeitta ব্রহ্মদেশীয় বৌদ্ধ এছ আছে।

জলবানের মধ্যে "জনকজাতক" গ্রন্থে একথানি জাহাজ-ভঙ্গের কথা আছে, ভাহাতে মাঝীমালা ও আরোহী ছিল প্রায় ৭ শত জন। স্পারকবোধিসন্থ যে জাহাজে বাণি-জর্মর্থ গিয়াছিলেন, ভাহাতে তিনি বাতীত আরেও ৭ শত বণিক্ ছিল এরপ লিখিত আছে। মেঘবাহনজাতকে এক-থানি জাহাজে ৫ শত লোকের কথা বণিত আছে। বুদ্ধ-শিয়া পূর্ণের ভ্রাতা তিন শত লোক লইয়া এক জাহাজে গিয়াছিলেন ইত্যাদি। ইহা হইতে জানা যায় যে সেকালে অতি বৃহদ্ধাকার জাহাজাদি ছিল ও দাক্ষিণাত্যের বন্ধরে যাতায়াত করিত। এগুলি সমস্তই বায়ুবেগে যাইত।

পণ্য দ্রব্যের মধ্যে স্পারক বোধিদত্ত্বে বিবরণে আছে, তিনি সর্বস্থান হইতে সকল প্রকার দ্রবাই সংগ্রহ করিয়া-

মহাভারতোক্ত রাজা নীলের রাজধানী।

[†] ইহাও সহাভারতোজ দেশ। ইহা আধুনিক বেদিন ন্পরের নিকট বর্তনান হিল।

ছিলেন। রক্কচন্দন, শেতচন্দন, মণিমাণিক্যাদি, সিংহলের মুক্তা প্রভৃতি দ্রব্য সাধারণ পণ্যের সহিত সকলেই কিছু কিছু আনিত। সদল বজরাজকুমার বিজয়কে কুবেণী যথন আহার্য্য দান করেন, তথন জাহাল হইতে চাউল সংগ্রহ করিয়া দেন, স্থতরাং চাউলের আমদানী রপ্তানীও, ছিল। সময়ে সময়ে দেনীর দ্রব্য লইয়া বিদেনীয় দ্রব্যের বিনিময় করা হইত, তয়াধ্য চাউল, ধাল, রক্কচন্দন, শেতচন্দন, ধ্না, স্থগক্ষরা, ঔষধ, কড়ি, শহা, অর্ণ, লৌহ, তরিন্মিত দ্রাদি, কার্পাস, রাক্রব বল্প প্রভৃতিই প্রধান।

বৃদ্ধের সময়ে যথন দাকিণাত্যে এতটা বাণিক্য বাাপার থাকার প্রমাণ পাওয়া যাইতেছে, এতগুলি রাক্য থাকার প্রমাণ পাওয়া যাইতেছে, তথন সহক্রেই বলা যায় যে বৃদ্ধের পূর্বে অন্ততঃ ৫ শত বংসুর আগেও দাকিণাতো সভাতা বিভ্ত এবং রাক্যাদির কতকটা শৃষ্ণলা ছিল। এইরপে খৃষ্টীয় সহস্রাধিক বংসর পূর্বেও দাকিণাতো যে সভাতা ছিল, তাহা কতক প্রমাণিত হইল । ইহার পূর্বে মহাভারতের কাল।

মহাভারতের সময়ও দাকিণাত্যে আর্থাসভাতা বিভৃতি
লাভ করিয়াছিল। সে সময় কলিক, মাহিন্মতী, বিদর্ভ,
জাবিড় প্রভৃতি স্থানে ক্ষত্রিয় রাজগণ আধিপত্য বিস্তার
করিয়াছিলেন এবং দাকিণাত্যের অনেক স্থান আর্থাগণের
নিকট পুণাক্ষেত্ররূপে গণ্য হইয়াছিল। বনপর্ব্বে তীর্থ্যাত্রা
পর্ব্বাধাায়ে ইহার বিলক্ষণ প্রমাণ পাওয়া যার।

কিন্ত দেই ভারতীয় যুগেও দাকিণাত্যের অনেক স্থান বনজ্পলে পরিবৃত ছিল। আর্যাসভাতা বিস্তৃত হইয়া তথন অনেক বনজ্পল প্রাম নগরাদিতে পরিণত হইতে ছিল। ইহার পূর্ব্বে আমরা রামায়ণ ও তৎপূর্ব্বে বৈদিক যুগে আসিয়া উপস্থিত হই।

বৈদি ধ্যুগে দুক্ষিণাতো কেবল অনার্য জাতিরই বাস ছিল, তথনও দাক্ষিণাতো আর্যাসভাতা বিস্তৃত হয় নাই। অগস্তা ঋষিই প্রথম দক্ষিণাপথে আর্যাধর্মপ্রচারের ক্রপাত করেন এবং পরগুরাম ,ও রামচক্রের, যত্নে অনার্য জাতির মধ্যে আর্যাসভাতা প্রসারিত হয়। রামারণপাঠে জানা যায়, যম্নানদীর দক্ষিণ হইতেই দগুকারণা ও সমন্ত গোদাবরী প্রদেশ পর্যান্ত এই অরণ্য বিস্তৃত ছিল এবং রাক্ষ্য প্রভৃতি অনার্যজাতি এ অঞ্চলে আধিপত্য করিত। তৎকালে রাক্ষ্য, বানর প্রভৃতি অসভ্য জাতিগণ নানা ফলব্ক্ষ্যমান্ত্রী গ্রাম ও গিরিদরীবেষ্টিত কুঞ্জমমন্তিত গুছা মধ্যে বস্বাস করিত। তাহাদের মধ্যেও রাজা ছিল, সামন্ত ছিল, তাহাদের রাজ্যপরিচালনোপ্রাণী বিধিবাবস্থাও ছিল।

ভাহাদের বলবিক্রমে আর্য্য শ্ববিগণ বিলক্ষণ ভর পাইং আর্য্যাবর্ত্তবাদী ক্ষত্তিরগণের সাহায্য লইভেন। ক্ষত্তির গণও দাক্ষিণাভ্যরাজগণকে, নিভাস্ত উপেক্ষা করিভেন্ রাজর্বি জনক সীভাস্বয়ম্বর্কালে, দাক্ষিণাভ্য রাজগণ আহ্বান করিয়াছিলেন—

"দাক্ষিণাত্যান্নরেন্দ্রাংশ্চ সর্বানানর মা চিরম্।" (রাম॰ ১)১২ দাক্ষিণাত্যবাসী অনার্যাক্ষাতির উপদ্রবের কথা রাঃ এইরূপ নিখিত আছে—

"দশ্যস্তাতিবীভংগৈ: ক্রেডীবণকৈরপি।
নানার্নপির্বির্বিশ্চ • রূবৈর্জ্বিদল্লা ॥
, অপ্রশক্তৈরশুচিভি: সংপ্রযুজ্য চ তাপদান্।
প্রতিম্বস্থাপরান্ হিংদামনার্যা: পুরুষর্বভ ॥
তেমু তেমাপ্রামহানেম বুদ্ধবনীয় চ।

রমত্তে তাপুনাংস্তত্ত নাশরত্তে।হলচেতসং । (রাম হা১১৬
কাহারও মতে, ঐতরেরত্রাক্ষণে বিখামিত্রপুত্র ব
উল্লেখ আছে, এই অনু হইতে দাক্ষিণাত্যের আনু বা
ক্ষনপদের নামকরণ হইরাছে। ইহাতে কেহ কেহ ত
করেন, ঐতরেরত্রাক্ষণের সময় হইতেই দক্ষিণাপ
আনার্যাক্ষাতির সহিত আর্যাক্ষাতির সংস্ত্র হইয়াছিল।
রণে দাক্ষিণাত্যের অন্তর্গত পাখ্যে, চের ও চোল এই
প্রধান ক্ষনপদের উল্লেখ পাখ্যা, কেরল, কোল ।
য্যাতির পুত্র ত্র্কস্থর বংশে পাখ্যা, কেরল, কোল ।
এই চারিজন ক্ষরগ্রহণ করেন।

উপরোক্ত প্রমাণ বারা বোধ হয় অরু, পাওা, প্রভৃতি 'ক্ষতিরুগণই সংস্কারন্তই, জাতিচ্যুত ও সম হইয়া' দাকিণাতো প্রবেশপূর্বক অনার্যসমালে আ বিস্তার করেন এবং চিরদিন বহুসংখ্যক অনার্যা সংশ্রবে থাকিয়া অনার্য্যধর্ম ও অনার্য্যভাষা গ্রহণ ব তাঁহাদের বংশধরেরা পৈত্রিক আর্য্যভাব ও আর্য্যভাব কালে বিস্কৃত ইইয়াছিলেন।

পাশ্চাত্য গ্রন্থ হইতে গৃষ্টার ১ম শতালীতে দাগি
কিরাপ সম্বি ও সভ্যতা ছিল, তাহার আভাস গি
কৈ সমরে দাক্ষিণাত্যে শাঁহ, অরু, কার প্রভৃতি
আধিপত্য করিতেছিলেন। ইহাদিগের অধংগতন
নল, মৌর্যা, কদৰ, দেক্সক, কল্মুরি, গল, অরুণ
মালব, 'গুর্জর, গলব, চালুকা, রাইক্ট, হ্রনাল
প্রভৃতি বংশীর রাজগণ রাজত্ব করিতেন। কো
করাড়ে শিলাহার, সৌন্দত্তির রট, হাললে ও গোরা
বেলবুর্গার সিন্দা, গুত্তে গুরু, মহিস্করে কোলু,

গণপতি প্রভৃতি সামস্ত রাজগণও এক সমর প্রবল হইরা উটিরাছিলেন।

शृहीय २०म भडाको পर्वास नमक माकिनाका हिन्दूता**ल**-

গণের শাসনাধীন ছিল। ১২৯ হইতে ১৩০০ খৃষ্ঠাক মধ্যে नित्रीयत थानाउकीन् विनश्नी महाताहे, **टेडनक** ७ क्यांठे আক্রমণ করেন। ১৩৩৮ খৃষ্টাব্দে মহম্মদ তোগলক দাক্ষিণাতো ্ছিদুপ্রভাব থর্ক করেন। ইহার কিছুদিন পরে বাহ্মণী-वःरभत উভাদয় হয়। ইহাদের প্রবল প্রতাপে ঠতেলকের हिन्दां ( २०७० थृ: घः ) ध्वर विक्रम्नशंत वा कर्ना हिन् हिम् अध्यात व्यवमान इत्र। किছ्मिन भरत्रहे भृहविवास বান্ধণী রাজ্য বিজয়পুর, আন্ধাননগর, গোলকুণ্ডা, বিদর পু বেরার এই ে গড়ে বিজ্ঞ হইয়া পড়ে। ১৬৩০ খৃষ্টাব্দের পূর্নেই শেষ ছইটা রাজ্যের অন্তিত্ব লোপ হয়। বাকি তিনটা শাহজাহান ও অরঙ্গলেবের যত্তে দিল্লী সামালের অধীন হইল। ১৭৬০ পৃষ্টাব্দে মরাঠাগণ দাক্ষিণাত্তো চৌথআদায় করিবার অধিকার পাইয়াছিলেন। মহারাষ্ট্রনায়ক সাতারা রাজ্য পত্তন করেন। পরে সাতারারাজের প্রকৃত শাসনশক্তি পুণার পেশবার করায়ত হয়। শীঘ্রই মহারাষ্ট্রদিগের পরাক্রম কিছু হ্রাস হইল। দাক্ষিণাত্যের মুসলমানগণের চেষ্টায় হায়দরাবাদে নিজামত রাজ্যের স্ত্রপাত হর। এই সময় তৃক্তজার উত্তরবর্তী রাজনা ও সামস্তগণ পেশবার এবং দক্ষিণবর্তী বাজগণ নিজামের অধীনতা স্বীকার করিতেন। প্রথমে মহিম্বর উভয় শক্তির অধীনভা স্বীকার করিত, শেষে ৰায়দরআলীর করায়ত হয়। এ সময় কেবল ত্রিবা-েলড়ের, হিন্দুরাজ স্বাধীনতা ভোগ করিতেছিলেন। খৃষ্টীয়-১৮শ শতাকে দাকিণাত্যের এইরূপ অবস্থা ছিল। এই নময় পর্ত্তীজ, ওলন্দাজ, ফরাসীও বৃটীশজাতি দাকিণাত্যের উপকূলে বাণিজ্য করিতেছিলেন। যে সময় মহারাষ্ট্র ও নিলামে যুদ্ধ বাধে, সেই সময় ফরাসীও বৃটীশ উভয়পকে ^{বোগদান করিয়া} দাক্ষিণাত্যে স্ব স্ব প্রভূতা বিস্তারে প্রয়াস পান। যথাকালে বৃটীশের ভাগ্যে হুদিন উদয় হইল। এখন অতি অৱ ভ্ভাগ ব্যঙীত প্রায় সমস্ত দাকিণাত্য, বুটীশ-জাতির শাসনাধীন।

অথন দাক্ষিণাত্য প্রধানতঃ মাস্ত্রাজ প্রেসিডেন্সি, বোম্বাই ^{প্রেসিডে্}সির অধিকাংশ, হারদরাবাদ, মহিস্থর, ত্রিবাক্ষোড় ও আর ক্রকটি শেনীয় রাজ্যে বিভক্তণ

• [মহাভারত, রামায়ণ ও পৌরাণিককালের দাক্ষিণাত্য জনপদস্থ্তর নাম ও বর্ত্তমান অবস্থান দাক্ষিণাত্যের প্রাচীন মানচিত্রে জ্ঠব্য।]

দাক্ষিণাপথক (ত্রি) দক্ষিণাপথে দেশে ভবঃ ধ্মাদিদ্বাৎ বৃঞ্। मिक्नाभयत्मकाङ । দাক্ষিণ্য (রী) দৃক্ষিণ্ড ভাবঃ দকিশ-যুঞ্। ১ অনুক্লতা, উদারতা, সর্শতা। ২ পরছনামুবর্তন। "ত অুদাকিণার ঢ়েন নামা মগধবংশকা। পত্নী স্থলক্ষিণেত্যাদীদধরক্তেব দক্ষিণা ॥" ( রঘু ১।৩১ ) ৩ সাহিত্যদৰ্পণোক্ত নাটুকলক্ষণভেদ। • "দাক্ষিণ্যং চেটয়া বাচা পরচিন্তামূবর্ত্তনং।" (সাহিত্যদ॰ ৬।৪৫৭) চেষ্টা এবং বাক্যদারা পরচিত্তের অসুবর্ত্তনের নাম मिक्नाः উनाह्र्य-"প্রদাধর প্রীং লক্ষাং রাজা ডং হি বিভীষণ। আবোণামুগ্হীতভান বিলঃ সিদ্ধিমন্তরা॥" (সাহিতাদর্পণ) হে বিভীষণ! তুমি লকাপুরীর রক্ষা বিধান কর এবং তুমিই রাজা, এ স্থলে এই বাক্যদারা বিভীষণের চিত্ত অমুবর্ত্তিত হইল, এই জন্ম ইহা দাক্ষিণ্য হইল, এই প্রকার Cbটা বারাও हरेत्रा थात्क। ८ मिक्किगाठांत्रक्रश क्रावित्मव, मानानरेख्यव ও উএতারা প্রভৃতি দেবীকে বামাচার ও দকিণাচারে পূজা করিতে হয়। ঋষি, দেবতা, পিতৃ, মহয়া, ভূতগমূহ এই পঞ্চবিধ যজ্ঞ ছারা সকল প্রকার ঋণ পরিশোধ করিয়া यिनि विधिभूर्त्तक ज्ञानमानामि चात्रा मत्रहस्त भूका व्यव्तन, এরপ পূজাকে দাকিণা কছে। "ঋষীন্দেবান্ পিতৃংশৈচৰ মহয়খান্ ভূতসঞ্যান্। যোযজন্পঞ্ভির্যক্তৈ ঋণানি পরিশোধয়ন্॥ विधिवः ज्ञानमानाजाः क्रांन् यविधिश्कनः। ক্রিয়তে সরহস্তম্ভ তদাক্ষিণ্যমিহোচ্যতে॥ দেবী চ দক্ষিণী যত্মান্দাক্ষিণামূচ্যতে।" (কালিকাপু ৭৭ অ॰) ( তি ) ৫ দকিণাई। দকিণে ভবং দাকিণ-ঠঞ্। ७ मिन्छर, मिन्गितिक् मध्यो। माकिशलम्, माकिश्रष्ट (११) बनगमविस्मव। দাক্ষিত্রদ (পুং) একটা ছদের নাম। দ্বাক্ষী ( ব্রী) দক্ষ ব্যুপতাং দক ইঞ্। ১ দকের স্থী অপতা। ২ পাণিনি মুনির মাতা। [পাণিনি দেখ।] দাক্ষীপুক্ত (পুং) দাক্ষ্যাঃ পুত্তঃ ৬তৎ। পাণিনি মুনি। দাক্ষেয় ( পুং ) দাক্ষা অপত্যং পুমান্ দাকী-ঢক্ (স্ত্রীভ্যোতক্।

পা ৪।১।১২০) দাকীপুত্র, পাৃদিনি মুনি। ( ৻ৼম॰)

না হইয়া কাৰ্য্যে প্ৰবৃত্তির নাম দাক্ষ্য।

माक्का ( क्री ) मक्क **कारः कर्चधा मक्क-ग्र**क्ष । मक्का, निश्नाका,

কৌশল, হঠাৎ বিপদাদি হইলে উপস্থিত কার্য্যে বিচলিত

"শক্তিং চাবেক্য দাক্ষাঞ্চ ভূত্যানাঞ্চ পরিগ্রহং।" (মাহা)

দাখিল (আন্রবী) > প্রবেশ করা। ২ অর্পণ করা। ৩ উপস্থিত ছওরা। ৪ জনাকরা।

দাখিল্থারিজ ( আরবী ) কালেক্টরীর রেঞ্চোরীতে প্রাতন অধিকারীর নাম বদলাইয়া নৃতন অধিকারীর নাম লেখান। माथिल्मात ( शांत्रजी) (स वाकि हाका वा खवां तथात्र करत्। माथिला ( आत्रवी) > असम्बन्ध आनारमत त्रिमन, अमामिरणत নিকট থাজনা- আদায় ক্রিবার সময় দাখিলা দিয়া থাজনা নইতে হয়। ২ কোন দ্রব্য বা টাকা প্রদান করার স্বীকার-পত্ত। দাথিলী (পার্দী) মোগল সমাটের স্থায়ী দৈত্ত। मार्ग् ( পারসী ) > চিহু, अक, कनक। २ ছি**छ।** দাগ্বালা ( দাগ্ওয়ালা ) চিহ্নিত, অৱিত, কলৱিত। দাগরাক্তি (পারসী) ইপ্টকালয়ের ভগতান সংস্কার করা, কোটার েকোন স্থান ভালিয়া যাইলে সেই স্থান সারানর নাম দাগরাজি। দাগব্যায়নি ( পুং ) দপ্তর গোতাপত্য। দাগা (পারসী) ১ পীড়ন, ক্লেশ। ২ বিবাদ, ঝগড়া। ৩ ঠকান, প্রভারণ করা। ৪ ছোড়া, কেপণ করা। ৫ ছেঁকা দেওয়া। দাগাবাজ (পারদী) প্রভারক, প্রবঞ্চক, জ্যাচোর। मां गांवाकी ( পात्रमी ) প্রভারণা, প্রবঞ্চনা, জ্যাচ্রী। দাগী (পারদী) দাগফুক, চিক্লিড, অন্ধিড, কলবিড, যে দোষ क्त्रिमा मण शाहेबाटह।

' দাগুড়া (পারসী) শক্ত, কঠিন।
দাগোব, বৌছদিগের এক প্রকার শ্বরণার্থ গুন্ত। ইহা
সংস্কৃত 'ধাতৃগর্ভ' শব্দের অপত্রংশ। পালি ভাষার "ধাতৃগন্তা,"
তামিল "দাগোব" (Dagob)। খেমন হৈত্য স্কল আদি
বৌদদিগের নামে প্রতিষ্ঠিত বা উৎস্গীকৃত হয়, সেইরূপ
মৃত ব্যক্তির ভশ্ম লইয়া যে স্কল গুন্ত বা শ্বতিচিত প্রতিষ্ঠিত
হয়, ভাহাকে দাগোব বলে।

দাগোৰ মধ্যে নানা প্রকার কাক্স-কার্যাযুক্ত ধাতু ও প্রস্তরনির্দ্ধিত পাত্র থাকে; প্রায় প্রভ্যেক দাগোবে এক একটা অর্থ বা রৌপ্যনির্দ্ধিত বাক্স থাকে, তাহা নানারপ। শিখবেষ্টিত গৌতমের ধর্ম্মোপদেশক মূর্ত্তি এই বাক্স পাত্রে অন্ধিত আছে; ঐ বাক্সিটি নানারত্রে মণ্ডিত ও নানা চিত্র-বিচিত্রযুক্ত। কোথাও কোথাও ঐ সকল বাক্সে দন্ত, অন্থি ও ভ্রুপ্তপত্রে লিখিত অনেক পূথি দৃষ্ট হয়, কিন্তু ঐ সকল পূথি এখন পাঠ করা ছঃসাধা, কারণ এরপ জীণ যে, ভ্লিতে যাইলেই গলিয়া যায়। সিংহলের অনুরাধাপ্রে অনেক দাগোব আছে, বৌদ্ধপ্রাধীগণ তাহার চতুপার্য প্রদক্ষিণ করিয়া থাকে। ঐ চৈত্যসম্বন্ধে প্রবাদ আছে— কোন সময়ে সিংহলরাজ এলোরা শকটারোহনে যাইতে ছিলেন, পথে তাঁহার গাড়ীর চাকার আঘাতে দাগোনের একথানি প্রস্তার ভালিয়া যার, তৎপরে রাজা দেখিলেন রে, সেই স্থানের ১৫ থানি প্রস্তুম স্থানচ্যত হইরাছে, রাজা ছরে, পাপের প্রায়শ্চিত হেতু ১০০০১ টাকা দান করেন।

ভারতবর্ষের নানায়নে নানাপ্রকার দাগোর দৃষ্ট हर, তর্মধ্যে অমরাবতী, অজন্টা, ক্লয়াণবেল্লী, কার্লি, অভমুগিরি, লক্ষারাম এবং কল্পমধু দাগোব প্রধান। এতব্যতীত আরও অনেক দাগোব দেখিতে পাওয়া বায়, তাহা ব্রহ্মবাদী বৌদ্ধ গণের উপাসনা-মন্দিরের (পাগোড়ার) মত।

দাঘ (পুং) দহ-ভাবে ঘঙ্ জ্বাণ কু। দাহ।
দাঙ্গ, বোষাই প্রদেশের থান্দেশজ্বোর পলিটিকান এলেণ্টের
অধীন একটা বিস্তীর্ণ ভুজার। ইহার উত্তরসীমা বর্গারি
নামক ক্ষুদ্র সামস্তরাল্য, উত্তরপুর্বে থান্দেশ ও নারিক
জেলা এবঃ পশ্চিমে বাস্দা রাজ্য। অক্ষাণ ২০° ২২ হইতে
২১০ ৫ উ: এবং জাখি ৭০০ ২৮ হইতে ৭০০ ৫২ পুঃ পর্বার
বিজ্ত। ভূপরিমাণ উত্তর-দক্ষিণে ২৮ জোল এবং পুর্ক্ষ-পশ্চিমে ১৪ জোল। লোকসংখ্যা প্রায় ৫০ হাজার।

এই ভূভাগ ১৫ ভাগে বিভক্ত, তাহার প্রতেকাট এক জন সর্দারের অধীন। এই ১৫টা বিষয়ের নাম দাস্পিম্প্রি, বড়বান, কেতককত্পড়া, জমালা, চিঞ্চলি, পিল্পান্দেবী, পলাশবিহার, ঔচর, দেরভৌতি, গার্বি, শিববারা, কির্লি, বাস্থণা, ধুড়ে (বিলবারি) ও স্করগানা। এই ১৫টার মধ্যে ১৪টী ভীলসন্দারগণের এবং ১টা এক কুণবির অধীন। প্রকৃতপ্রভাবে ইহারা সকলেই স্বাধীন, তবে বুদ্ধবিপ্রায়ের সময় সকলেই গার্বিসন্দারের অধীনে কার্ব্য করিতে বাধা। পুর্বে, এই সন্দারগণ মলহারের এক দেশমুখতে বার্ষিক ৭০০১ টাকা কর দিত। কিন্তু এই কর আলারের সময় দেশমুখের সাহত সন্দারগণের গোলমাল হইত। এখন গবর্মেন্ট গোলমাল নিবারণের জন্ম সন্দারদিবগর প্রাপ্য টাকা হইতে ক্টিরা লইরা দেশমুখের বঃশধরকে দিয়া থাকেন।

দিনার দিগের মধ্যে একমাত্র জ্যোষ্টপুত্রই উত্তর্ধিকারী হয়। এথন সমস্ত দাঙ্গ ভূত্যগই গবর্মেণ্ট সন্ধারদিগের নিকট হইতে জমা করিয়া গ্রহ্মাছেন। এথারকার ক্লবার্ অবাস্থাকর।

দাঙ্গলি (দল্গলি) এক সন্ধানী সম্প্রদান। এই সংসারে অর্থলি কোন কর্ণ্যাই সম্পন্ন হয় না এবং অর্থের বল সর্বাপেক্ষা অধিক। এই অক্ত এই সন্ধানিগণ ভিক্ষাবৃত্তি পরিভ্যাগ, করিয়া বাণিলা অবলম্বন করিয়া থাকে। হায়দরাবাদ, পুণা, সাভারা এর্ডি অনেকানেক প্রসিদ্ধনগরে ইহাদের মঠ কুঠী বিভ্যান আছে। পূর্বে কলিকাতারও ইহাদের মঠানি ছিল। এই সম্প্রারীদিগের মধ্যে এক এক জ্বন মঠাধ্যক্ষ অর্থাৎ মহন্ত গাকেন। ইহারা বছবিভূতে বাণিজ্য অবলম্বন করিয়া বিপুল-সম্প্রির অধীশর হন। এমন কি এই সম্প্রদায়ী অন্তেক মৃহত্তের কোটা কোটা টাকার সম্পত্তি আছে।

মঠাখ্যক মঠে অবন্ধিতি করিয়া মঠের কার্য্য সম্পাদন করেন। তাঁহার শিয়েরা দেশদেশান্তরে গমনাগমনপূর্ব্বক রাণিজা বাপার নির্ব্বাহ করিয়া থাকে। এইরূপ বাণিজ্যে যে সকল, অর্থ সংগৃহীত হয়, ঐ শ্বর্থ সন্মাসীভোজন, দেবমন্দির নির্মাণ ও প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি সংকর্মে ব্যয় হয়।, দাঙ্গলি মহস্তেরা বালক ক্রয় করিয়া শিশু অর্থাৎ চেলা করেন, য়য়পূর্ব্বক তাহাকে প্রতিপালন ও শিক্ষাদান করিয়া থাকেন। কিছুদিন এইরূপে প্রতিপালন করিয়া থাকেন। কিছুদিন এইরূপে প্রতিপালন করিয়া যদি মঠাখ্যক হইবার উপযুক্ত হয়, তাহা হইলে ব্রাবর রাথিয়া দেন, নচেং ঐ শিশুদিগকে দশনামী সয়্যাসীকে অর্পণ করেন।
নাসা (দেশজ) কলহ, বিজোহ, মারামারি।

দাজল, পঞ্চাবের দেরাগাঞ্জী থা জেলার অন্তর্গত জৈনপুর
হনীলের অধীন একটা নগর; অক্ষাণ ২৯° ৩০ ২২ জি: ও
াঘি ৭০° ২৫ ২১ পু:। নাহিরদিগের আধিপত্যকালে এই
গর প্রসিদ্ধি লাভ করে। তাঁহাদের নিকট হইতে গান্ধী থা
মধিকার করেন। তৎপরে এই স্থান থেলাভের থান্দিগের
মধিকারভূক্ত হয়। পুর্বে এথানে বছবিস্থৃত বাণিজ্যাদি
ছল, এখন আর সেরপ নাই। লোকসংখ্যা প্রায় ভ হাজার।
ডুক (পুং) দালয়তি মুখাভ্যন্তরস্থ্রবাং বিচুলী করোভীতি
দন-পিচ্থুল, লক্ষ ড়। দক্ত, দাড়া।

ড়িকাক (দেশজ') জোণকাক। [কাক শব্দ দেখ।]
ড়িব, গ্রামবিশেষ। কানীদেশের পশ্চিমে ছই যোজন
ল্বে এইখান।

"কাশীদেশপশ্চিমে চ যোজনম্বয় ব্যত্যয়ে।" দাড়বগ্রামমুখ্যশচ ভবিস্থাতি সুধাম্পদঃ॥"

ত্বিষ্য ব্রহ্মণ ৫৭।১৪৭) ,
ভবিষ্য ব্রহ্মণ প্রক্রের মতে—ক্ষি অবভার হইরা অসিধারা

াধ্র্মপ্রক্রন লোকদিগকে বিনষ্ট করিয়া এই দাড়ব প্রামে

াবে বাস করিবেন। দাড়ব প্রামের পার্ছে ভারচ্ড নামক

ানে ব্রন্দিগের আধিবাস হইবে, কলির অর্ক্ডাগ গত

ইলে এই গ্রাম নষ্ট হইবে। (ভি ব্রহ্মণ ৫৭ আ )

ড়া (দেশজা) ১ দাত। ২ চিক্লড়ীমংগ্রের দাড়। ৩ কাঁক
রি দাড়।

ড়ান (দেশজ) দগুরমান হওয়া।

দাড়ি (দেশক) ১ মুখাবয়ববিশেষ, অধরের নিমভাগ, বেখানে
শাশ্রু উদ্যুত হয়, চিনুক ১ ২ শাশ্রু।
দাড়িম ( ত্রি ) দুলনমিতি দাল, তেন নিবৃত্তঃ ভাবপ্রতায়স্তাদিমপ্, ডলুয়োরেক্তং। ১ এলা। ২ ফলবৃক্ষবিশেষ।

ইহা রক্তবর্ণ কুত্মম, বছবীজ, মধুরামযুক্ত কলবৃক্ষ। সংস্কৃত পর্যায় করক, পিগুপ্লুলা, লাড়িছা, পর্বরুক, আছম, পিগুনির, ফলশাড়ব, শুকবলভ, রক্তপুলা, লাড়িমীসার, কুটিম, ফলসাড়ব, রক্তবীজ, ত্রফল, দস্তবীজক, মধুবীজ, কুচফল, বেরাচন, মণিবীজ, ক্রফল, বুডফল, তুনীলা, নীলপত্ত।

वानानाय नानिम, नाजिम, जानिम, जानाय; शिक्मांकरन जानिम, जातिष, जाताय का राज्य, द्वाना, श्वान का राज्य ; जेजिया नानिम, नानिष ; निक्का ज्वान, जाविष् मानरेन, भानिम, मिक्का जित्र मराने, देजनरेन निक्म, नानिम, नानिष ; कर्गीरे नानिष्य निना; द्वाषा अकरन ज्वान, नानिष ; ज्वारे नाज्य, श्वारे न

পারস্ত, কৃদিন্তান, আফগানিস্তান, বল্চিন্তান ও ভারতের প্রায় সর্বতেই দাড়িমগাছ অর্ম। কোণাও ছোট খাট আবার কোণায় বহুশাখা প্রশাথাবিশিষ্ট বড় গাছ দেখা যায়।

বহু পূর্বকাল হইতে দালিম ভারতবাসীর নিকট আদৃত হইরা আসিতেছে। ইহার ফ্লে ফিকা অস্থায়ী লালারঙ্ হর, তাহাতে অনেকে কাপড় রং করে। ফলের খোসার ধারক গুণ থাকার চর্মারং করিবার সমর ইহার কস্ ব্যবহৃত হর, হরিছা ও নীলরঙের সহিতও সর্বাদা মিশান হর। পশ্চিমাঞ্চলে দালিম ছালে একপ্রকার কাপড় রং হর, তাহাকে ক্রেজী বলে। এরপ স্লে সেই খোসা জলে সিদ্ধ করিয়া বারআনা জল মরিয়া গেলে লইয়া ব্যবহার করে। গাছের ছালেও চামড়া রং করা হর। এইজন্ত উত্তরপ্তিম প্রদেশ হইতে প্রতিবর্ষে বিশুর রপ্তানী হয়। ইহার মূল্য টাকায় দেছে সের হইতে দশ সের পর্যান্ত।

দাভিমফল বহু পূর্মকাল হইতেই ঔষধ শ্বরপ ব্যবহৃত হইত। হিন্দুদের প্রাচীন বৈদ্যকগ্রন্থে, প্রামদিগের বাই-বেলের আদিভাগেও দাভিমের উল্লেখ আছে। ইঞ্চিন্ট, পার্নি-পোলিস্ ও আসিরীয়ার স্থাপতাশিলৈ ও প্রাতন কীর্ত্তিস্তে দাভিমের চিত্র দেখা যায়।

অজীর্ণরোগে দাড়িমের রস অভিশর হিতকর। ডাক্তার ক্রন্সুর মতে,—বড় বড় ক্লমি জনাইলে ইহার শিক্ডের হালে বিশেষ উপকার পাওয় যার। বীজ ও মজ্জা যথা-ক্রমে পাকস্থলী ও হৃদ্পিতের হিতকর, সংস্থাচক ও শৈত্য- কারক, ফুল ও কুঁড়ি রক্তরোধক ও অগুৎপাদক। দাড়িখমুলের বি ক্রমিয় গুণ আছে, তাহা পূর্ব্ধে মুরোপীয়েরা কেই জানিতেন না। ডাক্তার বুকানন বদদেশ হইতে ইহার ক্রমিনাশক গুণ অবগত হইয়া প্রকাশ করেন। তৎপরে ডাক্তার ঐন্পুর, ক্রেমিং প্রভৃতি মুরৌপীয় চিকিৎসকগণ বাবহার করিতে থাকেন। একন মুরোপ ও ভারতে দাড়িখমুল বাবহৃত হয়। ইহার মাত্রা আধ ছটাক হইতে এক ছটাক। কঠশোণ বা মৃত্রালী সংক্রীয় রোগেও ইহার কাথ প্রয়োগ করা যায়।

অন্ত্ৰীৰ্ণ ক্ৰমিরোগে কোথাও কোথাও দাড়িমপাতার রস ও কচি দাড়িমফল উপকারী। ফ্লের কুঁড়ি বাটিয়া ৪।৫ গ্রেণ মাত্রায় প্রয়োগ করিলে বায়ুন্লী প্রদাহে (bronchitis) উপকার দর্শে।

দাড়িস পার্কাতীয় প্রাদেশেই ভাল জানো। বালালায় বে সকল দাড়িম হয়, তাহা হোট ও বীজপূর্ণ থাকে; এলভ আফগানিস্তান ও প্রেভের জার ও ক্সে বীজযুক্ত বড় বড় দাড়িম এ দেশে বিক্রমার্থ আনীত হয়। তাহা বাঙ্গালার দাড়িম অপেকা থাইতে ফ্সাত্ ও নরম।

বৈজ্ঞক মতে, — দাড়িল রসভেদে তিন প্রকার মধুর, মধুরার

ও কেবল অম। তমধ্যে মধুর রস্ফুক দাড়িম বায়্ পিত,
কক্ষ, পিপাসা, দাহ, অর, হুদ্রোগ, কণ্ঠগত রোগ, মুধরোগনাশক, তৃপ্তিকারক, শুক্রবর্দ্ধক, লঘু, ঈবং ক্বায় রস, ধারক,
রিশ্ব এবং মেধা ও বলবর্দ্ধক। মধুরায় দাড়িম অয়িদীপ্তিকারক,
কুচিকারক, কিঞিং পিত্তবর্দ্ধক ও লঘু। অয়দাড়িম পিত্তবর্দ্ধক, কফ ও বায়্নাশক। (ভাবপ্র*)

বলদেশে যে দাড়িম জন্মে, তাহা বহুবীজ ও অমুরদায়ক।

পাটনা প্রদেশ হইতে যাহা আসে, তাহা মধুরাম রদায়ক,

ইহাকৈ মস্কটু কহে। কাবুল প্রদেশ হইতে যাহা আসে

তাহা কৈবল মধুর, রদায়ক, ইহাকে আনার বা বেদানা কহে।

এই কএকজাতি ভিন্ন আর এক জাতি দাড়িমবৃক্ষ আছে,

তাহার ফল দেখিতে পাওয়া যায় না। ঘোর রক্তবর্ণ বুহুদলে

পরিপূর্ণ এবং ইহাতে কেশর নাই। ইহাকে কেহ কেহ মোলার করে। কেহ কেহ বা রোহিতক কহেন, ইহার

অপর নাম দাড়িমপুপ্রক। বিল্লাং গৌরাং ভীষ্। দাড়িমী।

সরক্তবন্তা ভবিশ্বতি দাড়িমী কুসুমোপমাঁ (দেবীমাং)

অমরকোষে পুংলিক প্রায়িক উদাহরণ দেখিয়া মেদিনী তিলিক নির্দেশ করিয়াছেন।

দাড়িমপত্তক (পুং) দাড়িমক্ত পত্তমিব পত্তমক্ত কপ্। ব্যোহিতক বৃক্ষ।

<del>া িল কলা । পাং \ দাভিমজ প</del>পমিব **পুপমস্ত । ১ রোহিতক** বৃক্ষ।

দাজিনফ্লের ন্তার এই অক্ত ইহার নাম দাজিম পুলা হইরাছে, রোহিতকের চলিত নাম রোহড়াগাছ। (ক্লী) দাজিমক পূলা ৬তং। ২ দাজিমের ফুল।

দাড়িমপ্রিয় (পুং) দাড়িমফলং প্রিরং বস্তা, কীরণকী, শুকপকী, এই পক্ষী দাড়িম ধাইতে ভালবাদে।

দাড়িমভক্ষণ (পুং )ভক্ষয়তীতি ভক্ষি-লা, ভক্ষণো ভুষ্কঃ, দাড়িমস্ত ভক্ষণঃ ৬তৎ। ১,কীরপক্ষী। (আি) ২ দাছিন ভক্ষা

দাড়িমাদিচুর্গ (ক্রী) বৈজ্ঞ কোক চুর্গ ঔষধভেদ।
দাড়িমাদ্য স্থান্ত (ক্রী) স্থান্তৌষধভেদ, প্রস্তুত প্রশানী— দুর

৪ সের। কথার্থ দাড়িমবীজ, বিড়ল, হরিজা, চই, জীরা,
ক্রিফলা, শুঠ, পিপুল, গোক্ষুরবীজ, ষমানী, ধনিয়,
অমবেতদ, পিপুলমূল, কুলশুঠ, দৈন্ধবলবণ প্রভাব ২
তোলা। পাকের জল। ৬ সের। স্থতপাক প্রশানীতে বংগাণ
যুক্ত রূপে পাক করিতে হইবে। এই স্থত উপযুক্ত মানায়
ব্যবহার করিলে প্রমেহ, শুক্রাবাত, অশারী ও মুক্ত দ্ব

আর হই প্রকার দাড়িমাত ঘত আছে, মহাদাড়িমাত বৃহদ্যাড়িমাত ঘত। মহাদাড়িমাদ্যের প্রস্ততপ্রণালী—ঘত। সের, কাথার্থ দাড়িমবীজ /২ সের, জল ।৬ সের, শেষ /৪ বে যবতপুল /২ সের, জল ।৬ সের, শেষ ৫ সের, ক্লথখনার ৪ সের, জল ।৬ সের, শেষ /৪ সের। শতমূলীর রস /৪ মে, গবাহার /৪ সের, করার্থ জাকা, পিশুথর্জ্বর, ত্রিফলা, রেণুর, জীবক্ষ, ঝবতক, কাঁকলা, কীরকাকলা, মেদ, মহামেদ, গা বৃদ্ধি, দেবদাক্ষ, হরিদ্রা, দাকহিরিদ্রা, মঞ্জিছা, কৃড, এগাই ভূমিকুয়াত, বেড়েলা, শিলাজত, ত্রুড়ত্ব, বেণার্থ, ক্ষাত্র, প্রত্যেক চুর্ব ও তোলা, ঘত পাকের নির্মাহ্যা পাক করিতে হইবে। এই ঘত পান করিলে সকল প্রদা মেহ বিনাই হয়, মেহরোগের ইহা এক উৎকৃষ্ট ঔষধ।

বৃহদ্দাভিমান্তত্বত — ত্বত /৪ সের, কাথার্থ পহণারি । ৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। করার্থ দাভিমনী চই, জীরা, বিড়ক, হরিড়া, দাক্ষহরিড়া, দ্রাক্ষা, পিওার্থ ফ্রাত (অভাবে তালের মাতী), নীলোৎপল, গ্রন্থার বন্যমানী, মহানিছ, কাঁকলা, ভাঠ, বচ, লেবদাক, চই, ই গার্ডারীমূলের ছাল, যিষ্টমধু, আন্তম্মল, রাধানশার র মুর্কা, বংশলোচন, কাঁকড়াশৃন্দী, ধনিয়া, কুল্লাক্ষার ম্বা, বংশলোচন, কাঁকড়াশৃন্দী, ধনিয়া, কুল্লাক্ষার মেদ, নিমছাল, বৃহতী, কণ্টকায়ী, ডানক্নী, ঞিছলা, য়াছাল, ছাতিমছাল, নিসিন্দামূল, এই সমুদ্র মিলিড । এই লাক ১৬ সের, মথাবিধি এই স্বভ পাক করিবে। এই

পান করিলে সকল প্রকার প্রমেহ বিনষ্ট হয়। প্রমেহের ইহা প্রভাক্ষকল প্রথ। (তৈবজ্যর প্রমেহাধিকার)
দাড়িমাফীক (পৃং) লাড়িমফলের জগাদিযুক্ত চূর্ণ প্রথভেদ।
দাড়িমীরস (পৃং) রসভেদ, দাড়িম ঘতে সম্বপ্ত করিয়া
একটা পাত্রে নিক্ষেপ করিতে হইবে। এইরূপে পঞ্চ ইবল
বল্লে ছাকিয়া লইলে যে রস হয়, ভাহাকে দাড়িমী রস বছে।
দাড়িমং ঘতসন্তব্যং ভত্র পাত্রে বিনি:ক্ষিপেং।
ভতঃ পকপটে পৃত ইতি ভাদাড়িমীরসং॥"
দাড়িমীসার (পৃং) দাড়িমীং দাড়িমীশকং সরতি প্রাপ্রোভীতি ক্তাণ্ দাড়িম।
দাড়িম্ব (পৃং) দাড়িম।
দাড়িম্ব (পৃং) দাড়িম।
দাড়িম (পুং) দাড়িম।
দাড়িম (পুং) দাড়িম।
দাড়িম (পুং) দাড়িম।
দাড়িম (পুং) দাড়িম।

দাঢ়া (স্ত্রী) দৈপ-শোধনে দা-কিপ্, দে ভদ্ধৌ দানায় বা ঢৌকতে ঢৌক-ড। ১ দংট্রা, দম্ভভেদ। ২ প্রার্থনা। ৩ সম্হ। (শব্ধকিং) দাঢ়িকা (স্ত্রী) দাঢ়াদ্ধৈ • কেশসমূহায় প্রভবতীতি ঠক্ ভত টাশ্। ১ শাশ্রু, দাড়ী।

শোদরো দাঢ়িকারাশ্চ গ্রীবারাং ব্যণেরুচ।" (মসু ৮।২৮২)
দাঢ়া আর্থে কপ্ কাণি অত ইন্ধং। ২ দং ষ্ট্রিকা। (হেম॰)
দাশু (পুং স্ত্রী) দগুভ ইক্ষাকুপত্রভেদভ অপত্যং শিবা॰ অণ্।
১ দগু নৃপতির অপত্য। দ্রিরাং গ্রীপ্। দগুভ ভাবং অণ্।
(ক্রী) ২ দগুভাব। ৩ আয়ুধ্নীবিস্ভভ্ভেদ। দগুানাং
সমূহ: অঞ্। ৪ দগুসমূহ।

দাগুকি ( ত্রি ) ত্রিগর্ত্তর্ধ আয়ুধন্ধীবিস্ত্রভেদ।

"আঁছন্ত্রিগর্ত্বফাংশকোণ্ডোপরথদাগুকী।

কোটুকির্জালমালিশ্চ ব্রহ্মগুপ্তোহ্থ জালকিঃ ॥"

( পাণিনি থৈ৩৷১১৬ কাশিকা )

দাওকীয় ( আ ) দাওকি স্বার্থে-ছ। দাওকি, দাওকি স্থলে দাওকী এইরূপ প্রয়োগ দৃষ্ট হয়।

দাওগ্রাহিক (পুং) দওগ্রাহম অপত্যং দওগ্রাহ-ঠঞ্ (রেব-জ্যাদিত্যন্ত্র । পা ৪।১।৪৬) দওগ্রাহের অপত্য।

দাণ্ডপাতা (ত্রী) দণ্ড পাতো হসং তিথো ইতি ঘঞ্চন্তাৎ ঞ:
দাণ্ডপাতা (ত্রী) দণ্ড পাতো হসং তিথো ইতি ঘঞ্চন্তাৎ ঞ:
দাণ্ডপায়ন (ত্রু) দণ্ডপত্ত অপতাং দণ্ডপাতা করে।
দাণ্ডপায়ন (ত্রু) দণ্ডপত্ত অপতাং দণ্ডপ অপতা ফক্
ক্লিডাং ফক্। পা ৪।১।৯৯) দণ্ডপের অপতা।
দাণ্ডমাথিক (ত্রি) দন্তমাথং ধাবতি ঠক্। (মাথোএরপদ্পদ্রাহ্পদং ধাবতি। পা ৪।৪।৩৭) দণ্ডবারা মহন যোগা।

मिथांकिनिक (वि) मथांकितन मार्फान मरकन वा क्यानिब-

ছতি দণ্ডাজন ঠঞ্। কুহক, মারাবী, বাহারা শঠভাপুর্বক দণ্ডাজন ধারণ করিয়া অর্থাবেষণ করে, কপট ধার্ম্মিক। দাণ্ডায়ন (পং) দণ্ডছ গোত্রাপত্যং নড়াদিছাৎ ফক্। দণ্ডের গোত্রাপত্য।

দাণ্ডিক (আ) দণ্ডেন দণ্ডধারণেন জীবতি বেতনাদিদ্বাৎ ঠঞ্।
দণ্ডধারণোপজীবী, বাহারা দণ্ডধারণ করিয়া জীবনধারণ করে।
"নৈব রাজ্যং ন রাজাসীর চন্দণ্ডেন'দাণ্ডিকঃ।"(ভারত১২।২১।০৫)

সভাযুগে রাজা, রাজা, দও এবং দাণ্ডিক কিছুই ছিলনা। দাণ্ডিকা (ক্লী) দাণ্ডিকল ভাব: যং। দাণ্ডিকের ভাব।
দাণ্ডিন্ (পুং) দণ্ডেন প্রোক্তং অধীয়তে শৌনকা পিনি।
দওপ্রোক্ত করস্তাধ্যারিসমূহ। এই দণ্ডিন্ শক্ষ রহবচনান্ত।
দাণ্ডিনায়ন (পুংলী), দণ্ডিনো গোতাপতাং নড়াদিছাং ফক্,
দাণ্ডিনায়ন ভোগিনা টিলোপাভাব:। দণ্ডীর পোতাপতা। প্
দাত (বি) দাপ কর্মণি ক্ত। > ল্ন, ছিল। দৈপ কর্তরিক্ত। ২ শুদ্ধ।

দাতিতা ( দেশজ ) মংছবিশেষ। ( Perca Datnia. )
দাতব্য ( জি ) দাতব্য । দানবোগ্য, দেয়।
দাতব্য চিকিৎ দালয় ( গং ) বে ঔষধালয়ে বিনামূল্যে ঔষধ
ও ব্যবস্থা দেওয়া হয়।
দাতা [ দাত্ত দেও । ]

দাতাগঞ্জ, ১ উত্তরপশ্চিম প্রদেশের একটা তহসীল।
ভূপরিমাণ ৪৩০ বর্গমাইল। ২ উক্ত তহসীলের সদর ও
একটা নগর। ব্দাউন সহর হইতে প্রায় ৮ ক্রোশ পুর্বের
অবন্থিত। এথানে তহসীলের কাছারী, নিম্মআদালত,
বিভালয় ও ঔষধালয় প্রভৃতি আছে।

দাতানা, পশ্চিম মালব এজেন্সীর অধীন একটা ক্ষুদ্র দামস্ত রাজ্য। দিনিয়া হইতে ১৮০১ টাকা তথা স্বরূপ পাইয়া থাকে। দাতারাম, ছলোমস্বরীর একজন টাকাকার। দাতি (স্ত্রী) দৈপ শোধে-ক্তিচ্। ১ শুদ্ধি। ২ ছেদন। দা-ক্তি।

ও দান। ৪ দত। "মক্ডো দাভিবার" (ঋক্১া≱৭া৮) 'দাভিবার প্রদেরজ্লঃ

দত্বরণীয় হবির্গকণধনো বা' (সায়ণ)
দাতু (ক্নী) দা-ভাবে তুন্। ১ দান। "কর্ত্ত দাতু শ্বসো
ব্যুটো" (ঋক্ ১০।৯৯।১) 'কদ্দাতু কিং দানং' (সায়ণ)
(ত্রি) ২ দাতা। "সহত্র দাতু পশুমন্ধিরণাবেং" (ঋক্ ৯।৭২।৯)
দাতু (ত্রি) দা-ভূচ্। ১ দানকর্তা। ২ দানশীল। "কামো
দাতা কাম: প্রতিগ্রহীতা কামৈতত্তে" (যকু ৭।৪৮)

স্ত্রিরাং ভীপ্। শীলার্থে তৃচ্ প্রত্যর বোগে কর্মকারকে ষষ্ঠা বিভক্তি হইবে না।

দাতৃতা (স্ত্রী) দাতৃর্ভাব: ভাবে তল্। দাতৃত্ব, দানশীলতা, বদায়তা।

দাকুত্ব ( क्रो ) माञ्-ভাবে च । माञ्डा ।'

দাত্তামিত্রীয় (তি) দতামিত সম্ধীয়।

দ।ত্যুহ (পুং স্ত্রী) দাপ-ক্তিন্ দাতিং মারণং উহতে দাঁতি-উহ-অণ্ বা দো-ক্তিন্ দিতিং বহতি বহ-ক-উট্ দিতৃাই স্বার্থে অণ্ ততো আজং। পফিবিশেষ। ডাকপাখী, পর্যায়—কাল-কণ্টক, অদ্ধাহ, দাত্যোহ, কালক্ঠ, মাসন্থ, শিতিক্ঠ, কচা-টুর, কাকমদ্গু। (জিকা) ইহার গুণ বার্নাশক, ব্যু, শুক্তব্রিকারী, শ্রমনাশক, তুষ্টিপ্রদ ও বাহনাশক।

(হারীত ১১ আব•)

"প্রার্ট্কাটে স্থীভূষা কোবা কুত্র ন গছতি।
ইতি বদতি দাভূচং কোবা কোবা কবা কবা ॥" (উদ্ভট) .
এই পক্ষীর মাংদ ভক্ষণ মম্বাদি সংহিতায় নিষিদ্ধ হইয়াছে।
"কলবিহুং প্লবং হংসং চুক্রাফ্বং গ্রাম্যকুরুটং।

সারসং রজ্জ্বালঞ্চ দাতৃ। হং শুক্সারিকে॥" (মহু ৫।১২)
চড়ুই, জলকাক, হংস, চক্রবাক, গ্রাম্যকুরুট, সারস,
রজ্জ্বাল (জলচর পল্ফিবিশেষ), ডাক এবং শুক ও সারিকা
এই শুকল পক্ষী ভক্ষণ করিবে না। ২ জলকাক। ৩ চাতক।
. (মেদিনী) ৪ মেঘ। (শক্ষরণ)

দাত্যাহক (পুং) দাত্যহ স্বার্থে কন্। দাত্যহ।
দাত্যোহ (পুং) দাত্যহ প্ৰোণ সাধুং। দাত্যহ পকী।
দাত্র (ক্রী) ছাতি দাতি বানেন দো অবধণ্ডনে ট্রন্(দামি
শদেতি ৭ পা তাহা১৮২) ছেদনসাধন অস্বভেদ, দা, পর্যায়—
লবিত্র, ধজ্গীক। (শক্রণ) দা ভাবে তান্। ২০ দান। "তদ্
বাং দাত্রং মহিকীর্বেজিং।" ( ঋক্ ১০১৬৬) 'তদাত্রং দানং'
(সায়ণ) দা-কর্মণি তা। ও দাত্র্য। "দাত্রং যত্তোপদশুত্রু"
(ঋক্ ৮৪০০৩) 'দাত্রং দাত্রবাং' (সায়ণ)। ও দানকর্ত্রা।
"সামস্ত দাত্রম্যি" ( যকুণ ১০০৬) 'দাত্রং দানকর্ত্র' (বেদদীপ)
দাত্রী (স্ত্রী) দাত্তীপ্। ১ দানকর্ত্রী। হ গঙ্গা।

"দীনস্ভাপুশমনী দাত্তী দ্বপু বৈদিশী।" (কাশীথ ১.৮১)
দ†ফু (পুং) দ্বাতীতি দা অন্(জানি দা চ্যু প্রতি। উণু ৪।১০৪)
১ দাতা। ২ যজ্জেশ্ম।

দাথা (দাঠা) বোষাই প্রদেশে কাঠিয়াবাড় জেলার অন্তর্গত একটা ক্ষম্ববাজা। ২৬ থানি প্রাম এই রাজ্যের অধীন। আন প্রায ২৫০০০ টাকা, তন্মধ্যে ৫০৯৯ টাকা বরদার গাইকবাড়কে এবং ২৯৯ টাকা জুনাগড়ের নবাবকে কর-সরপ দিতে হয়। ভূপরিমাণ ৫১ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা প্রায়েদশ হাজার। माम ( पूर ) मन-छारव चळ्। मान।

"তত্ত দৰা বহুন্দাদান্ বিপ্ৰান্সংপ্ৰা মাধবঃ।" (ভারত শ° ৪০ অ॰)

দাদ ( পারদী ) প্রতিশোধ, ঐতিহিংদা।

দাদ্ধিনি (দেশজ) দক্রোগ।
দাদ্ধানি (দেশজ) উৎকৃষ্ঠ তণ্ডুলবিশেষ, এই তণ্ডুল রক্ষ্ণ করিলে অতিশয় স্থাক বাহির হয়।

দাদন্ (পারনী) চুক্তিতে বাধ্য করিবার জ্ঞা মৃল্যাদির জ্ঞান্দান। কোন লোক কৃতক্তালি জ্বা কর করিবে, যাহার কাছে কিনিবে, তাহার সহিত দরদান চুকাইয়া জ্বা না কহিয়া অগ্রিম বে টাকা দেওয়া যায়, তাহাকে দাদন কহে।

দাদন্দার (পারদী) যে দাদন দেয়।
দাদা (দেশজ), ১ জােঠ জাতা। ২ পিতামহ। ৩ মাতামহ।
৪ এই নামে এক বাক্তি দতার্ক নামে ধর্মান্ত রচনা করেন।
দাদাজি কোণ্ডদেব, একজন প্রাসিদ্ধ দক্ষিণী আক্ষণ। মহারাজ্বনায়ক শাহজি পুণায় রাজধানী-স্থাপন করিয়া দাদাজিকে
ইহার শাসনভার অর্পণ করেন। দাদাজি বিচক্ষণ, ভাষপর,
রাজনীতিকুশল ও প্রজাপ্রিয় ছিলেন। তাঁহার স্থশাসন
স্তেণে অল্লনিন মধ্যেই রাজ্যের বিলক্ষণ উন্নতি হইয়াছিল।
তিনি প্রজাদিগের উপর রাজ্যের হার কমাইয়া দেন;
পুণার নিকটবর্জী পাহাড়ীদিপকে ব্যাঘ্রাদি হিংক্রজন্ত মারিয়া
পথিকদিগের অনেক স্থবিধা করেন।

লিলিবাই ও তৎপুত্র বিখ্যাত শিবালির থাকিবার জ্ঞ দাদালি লালমহল নামে এক বৃহৎ প্রাসাদ নির্মাণ করেন। এখন এই প্রসাদ অম্বর্থানা নামে খ্যাত।

শাহলি দাদালির উপরই শিবালির শিক্ষাভার অর্পণ করেন। তাঁহার শিক্ষাগুণেই শিবালি ব্রাহ্মণভক্ত, হিন্দু ধর্মাহ্মরাগী, সমরকুশল ও রাজনীভিজ্ঞ হইয়া ভারত বিখ্যাত হইয়াছিলেন। শাহালির মৃত্যুর পর দাদালিই শিবালির হতে পিতৃরাজার শাদনভার অর্পণ করেন। শিবালি দাদালিকে অতিশয় প্রনকরেন। তিনি অক্তিমকালে শিবালিকে জননী লম্ভুমির স্বাধীনতা, গো-ব্রাহ্মণ রক্ষা এবং হিন্দুধ্র্মীর জয়পতাকা উঠাইবার উপদেশ দিয়া যান। শিবালি আলীবন গুরুর উপদেশ বিশ্বত হন নাই। [শিব্ লি দেখ।] দাদ্ডা—তিন মাত্রার তাল—বোল—

 গ্রাধ্য মাধ্ব, ইনি কির্ণাবলী নামে ত্র্যসিদ্ধান্তের এক ধারি বিকাও ত্রীয়বস্ত রচনা করেন।

দাদাভাই নৌরজী [নৌরজী দেখ।] দাদি (দেশজ) পিতামহী, মাতৃশহী।

मानिशक्ति (तिमञ्ज) नान्यात्री, नक्तव द्रक्तविश्मय, श्टेशांत्र वात नक्त लान हम ।

দাতুপন্থী, এক বিধ্যাত বৈষ্ণবধর্মসম্প্রদায়। দাতুপন্থীদিগকে রামানন্দী সম্প্রদায়ের একটা শাখা বলা যাইতে পারে।
দাত্ এই সম্প্রদায়ের প্রবর্ত্তক, এইজন্ত ইহার নাম দাত্পন্থী
হইয়াছে। এইরূপ জনশ্রুতি আছে, তিনি এক কবীরপন্থীর
শিল্প ছিলেন। কারণ কবীরপন্থীদিগের গুরুপ্রণালী মইধ্য
তিনি ষষ্ঠ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছেন, যথা—> কবীর, ২ কমাল,
ত্রমাল, ৪ বিমল, ৫ বুজন ও ৬ দাত্। রাম নাম জপই এই
বৈষ্ণবাদিগের একমাত্র উপাসনা। ইহারা স্বীয় উপাস্ত দেবতার নাম রাম বলিয়া থাকেন বটে, কিল্ক বেদান্ত-মতদিদ্ধ পরব্রশ্বের ভায় তাহার নিগুণি স্বরূপ বর্ণন করিয়া
থাকেন এবং তাহার মন্দির ও প্রতিমৃর্ত্তি নির্দ্ধাণ করা অমুচিত
ভাহা স্বীকার করেন।

দাত্ আক্ষদাবাদের একজন ধুমুরি ছিলেন, তিনি ১২ বংসর বয়সের সমরে এই নগর পরিত্যাগ করিয়া অজমীরের অন্ত:পাতী শস্তর নগরে অবস্থান করেন। তথা হইতে কল্যাণ-পুরে যান। অবশেষে ৩৭ বৎসর বয়সে শম্ভর হইতে ৪ কোশ ও অসপুর হইতে ২০ কোশ দূরে নরৈন নামক খানে গিয়া বাস করেন। জনশ্রতি আছে, ত্ণায় অন্তরীক रहेरफ रेनिववानी हहेन, जूमि शत्रमार्थ नाधरन छात्रुख हुछ। এই দেববাক্য প্রবণ করিয়া তিনি নরৈন হইতে ৫ জোশ দ্বে বহরণ পর্বতে গমন করিলেন, তথায় কিয়ৎকাল অবস্থান করিয়া একবারে অন্তর্হিত হইয়া গেলেন, জার ভাহার কোন চিহ্ন রহিল না। ইহাতে দাগুপন্থীরা বলে, তিনি প্রমেখনে লীন হইয়া গিয়াছেন। দাবিস্তানেণ্লিখিত আছে, অক্বরের সময়ে দাছ্ দরবেশ অর্থাৎ উদাসীন ^{হইয়াছিলেন।} দাতৃপন্থীরা তিলকদেবা ও মালাধারণ না করিয়া কেবল জ্বপমালা সঙ্গে রাণেন এবং মন্তকে **এক** ^{প্রকার} টুপি দিয়া থাকেন, ঐ টুপি চতুকোণাক্বতি, অথবা গোলাকৃতি খেতিকা এবং তাহার পশ্চান্তাগে একটা গুচ্ছ ^{নম্মান} থাকে। ইহাদিগকে এই টুপি স্বহস্তে প্রস্তুত ক্রিয়া লইতে হয়।

দাছপছীরা তিন শ্রেণীতে বিভক্ত--বিরক্ত, নাগা এবং বিজ্ঞরণারী। যাহারা বিষয় রাগশুভ হইয়া পরমার্থ দাধনে কালকেপ করে, তাহাদিগের নাম বিরক্ত। ইহাদিগের অলে কেবল অলর্কিণী ও সজে জলপাত্র থাকে, মন্তকে আবর্ধ থাকে না। নাগারা অল্পারী, বেতন পাইলে যুদ্ধ-বৃত্তি অবল্যন করিয়া থাকে। ইহারা যুদ্ধকার্য্যে বিশেষ দক্ষ। অনেক রাজাদের নাগা দৈয় পাকে।

বিস্তর্ধারীরা সাধারণ লোকের ভায় নানা ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া থাকে ৷ এই'তিন শাথা পুনরায় বিভক্ত হইয়া বছতর প্রশাথায় প্রধানত: ছড়াইয়া পড়িয়াছে, তন্মধ্যে ৫২ প্রশাধা প্রধান। ঐ ৫২ প্রশাধার পরস্পর কি পার্থক্য আছে, তাহা জ্ঞাত হওয়া হৃষর। দাহপন্থীরা উষাকালে শব দাহ করেন, কিন্তু ইহাদের মধ্যে ধর্মত্রত লোকেরা অনেকে শব দাহ করিলে সৈই সঙ্গে অনেক পতঙ্গের প্রাণ নষ্ট হয় বলিয়া আপনাদিগের মৃতদেহ পশুপক্ষীর আহারার্থে প্রান্তরে বা কান্তারে পরিভ্যাগ করিতে অনুমতি করিয়া যান। দাবি-ন্তানেও লিখিত আছে, কাহারও লোকান্তরপ্রাপ্তি হইলে দাহপন্থীরা পশুপৃষ্ঠোপরি তাহার শব সংস্থাপন করেন এবং এই কথা বলিয়া প্রান্তরে প্রেরণ করেন যে, ইহা ছারা হিংস্রক ও অপরাপর জ্ঞার পরিতোষ হওয়াই সর্কাপেকা শ্রের। অজ্ঞমীর ও মাড়বার দেশে বত্সংথ্যক দাহুপছী व्यवसान करतन। नदेत्रनशास्य এই मध्येषायपिरातत व्यथान् দেবস্থান বিভাষান আছে। তথায় দাছর শ্যা ও দাছপন্থী। দিগের প্রামাণিক শাস্ত্র সকল রক্ষিত হইয়াছে এবং विहिष्ठ विधारन औ क्षेट्रावर भूका हहेगा शास्त्र। नदेवरनत পর্বতোপরি একটী কুজ গৃহ আছে, সাধারণে বলিয়া থাকে তথা হইত্তে দাহর অন্তর্দান হয়। এই স্থানে প্রতি বৎসর ফাল্কনমাদের শুক্লপক্ষীয় প্রতিপদ্ অবধি করিয়া পৌর্ণমাসী পর্যান্ত এক মেলা হইয়া থাকে। এই সম্প্রদায়ের বিবরণ হিন্দীভাষায় অনেক গ্রন্থে লিথিত আঞ্চ। তাঁহাদের ধর্ম-গ্রন্থে অনেক স্থাপে কবীরপন্থীদিগের ভূরি ভূরি বচন উদ্ভূত আছে।

"লাদ্র বিষাক কা অন্ধ" নামে এক গ্রন্থ আছে, ইহার ক্তিপর শ্লোক ও বালালা অন্ধান দিলাম। "লাদ্ সহকৈ হোইগা লৈ কুছ রচিয়া রাম। কাহৈকৌ কলপে মরৈ দ্বী হোইব কাম ॥" রাম যাহা করে, তাহা সহজেই হইবে। অতএব তুমি কেন শোকে প্রাণত্যাগ কর, এ অতি হয় কর্ম। "দাদ্ কহে যে তৈকিয়া স্বাহহ রহা জেতুং করৈ করণ করাংবণ এক তুজ লানাহীং মুহোইকোই॥ সোহ ইসারা সাংইয়াং যে সবকা হাণি বিচার॥

मामू करह, अनमोधन जूमि याहा कतिबाह, छाहाँहै तहि-শ্লাছে, তুমি যাহা করিবে, তাহাই হইবে। তুমি কর্তা, তুমিই কার্য্যিতা, আর কেহ দিতীয় নাই। ধিনি সকল বস্তুকে স্থুন্দর করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন, তিনিই আমার ঈশ্বর। জীবন মরণের বিচার তাঁহারই হ্তগত; তাহাকেই চিস্তা কয়। माञ्चक्ति ( ८५ मुंब ) मक्तमक्ति, माजनम्बत । माञ्चाती ( प्रमञ्ज ) माजिममाती । দাধিক (িত্র) দরি দরাবা সংস্কৃতং দরা চরতি দধি-ঠক্। (চরতি। পা ৪।৪।৮) ১ দধিতে সংস্কৃত দ্রব্য। ২ দগ্গচারী। ৩ দধিবারা সংস্ঠ। ৪ দধ্যোপসিক্ত। (ক্লী) ৫ ঘতৌষধভেদ, প্রস্তুত প্রণালী-বিট্লবণ, এলাইচ, সৈম্বর, চিত্রক, ত্রিকটু, জীরক, হিঙ্গু, দৌবর্চন, যবর্কার, আদ্রাতক ও অমুবেতস 'এই সকল জ্রব্যের টক দেবুর রুসে চতুগুণ দধি সংযোগে ঘৃত পাক করিবে। এই মৃতের নাম দাধিক মৃত। ইহা ৰারা গুল, প্লীহা ও শূলের শাক্তি হয়। (স্ঞাত উত্তরতস্ত্র 8२ 🗷 ) দাধিক্র ( তি ) দধিকাসম্বনীয়। দাধিত্থ (ক্লী) দধিত্ত বিকার অস্পাত্তাদিত্বাৎ অঞ্। ১ কণিুথের বিকার। (ক্লী) তক্ত পরিমাণং অঞ্। ২ কপিখ-. পরিমাণ। দাপুবি (ত্রি) ধবি মুঙ্ লুক্ ততো ইন্। ধরিত্রী। পুতা যাংশ্চোত্র দাধ্বিভরধ্যে" (ঋক্ ৬।৬৬।৩) 'দাধ্বিঃ ধরিত্রী' (সায়ণ) দাধৃষি (অ) ধৃষ্ যঙ্লুক্ ততো ইন্। ১.ধৰ্ষক। ২ অত্যস্ত ধৰ্ষক। "ব্ৰহ্মণাথামি স্বনেষু দাধ্যিः"(ঋক্২।৭।৭)'দাধ্যিঃ ধর্ষকঃ'(সায়ণ) मान (क्री) मा मारन रमा अवथ छरन देनल रमाधरन जावारमी লা্ট। ১ গজমদ । ২ পালন । ৩ ছেদন ।৪ ৩ছিন । ৫ বৃক-কোটর-কীটজ মধু। ইহার গুণ--কৃক্স, দীপন, কৃফ, ছর্দি ও মেহনাশক। (রঞ্জিব॰) ৬ দেব বাক্ষণাদি সম্প্রদানক উব্য-মোচন, স্ব স্বত্ত্যাগার্কুল ব্যাপারভেদ। পর্যায়—ত্যাগ, বিহাপিত, উৎসর্জন, বিসর্জন, বিশ্রাণন, বিতরণ, প্পর্শন, প্রতিপাদনু, প্রাদেশন, ধনর্ম্বপণ, অপবর্জ্জন, অংহতি, দায়, প্রদান, দদন, দক্তি, উৎদর্গ, অভিদৰ্জ্জন, স্পর্শ, বিদর্গ, কণন, প্রদেশন ি (শক্তরণ) দানের লক্ষণ— ''অ্থানাম্দিতে পাত্তে শ্ৰন্থ। প্ৰতিপাদনং। দানমিত্যভিনিদিষ্টং ব্যাণ্যানং তক্ত বক্ষাতে॥" (ভ্ৰিত্ৰ) সংপাত্ৰ উপস্থিত হইলে শ্ৰদ্ধাপূৰ্মক তাহাতে দ্ৰব্য সকল অর্পণের নাম দান। দানের ৩টা অস। "দাতা প্রতিগ্রহীতা চ শ্রদ্ধাদেরঞ্চ ধর্মযুকু।

দেশকালো চ দানানামলাকেতানি যৰিছ: ॥" ( শুদ্ধিত )

দাতা, প্ৰতিগ্ৰহীতা, শ্ৰদ্ধাদের, ধৰ্মযুক্ত, দেশ এই ৬টা দানের অংক। দান করিতে হইলে মনে ম_া স্থির করিয়া অর্থাৎ অমুকাকে দান করিব, এইরূপ _{অং)} করিয়া ভূমিতে জল নিঃফকণ করিবে, मिट्फ इहेटव। এইज्ञाल मान ट्यार्ट, यमिछ मांगरजुज পা্ওয়া যায়, তথাচ এইরূপ দান-ফলের অস্ত নাই। "মনসাপাত্রমুদ্দিশু ভূমৌ তোয়ং বিনিঃক্ষিপেৎ। বিহুতে পাগরস্থান্ত: দানস্থান্তো ন বিহুতে ॥" ( ভূদিত ) পরোকে কলিত দান। যদি সেই পাতা পাওয়া না যায়, তাहা हरेल जाहा शांजबिनिगंदक मिटल हरेदर ; जाहा ना बाकित यञ्जू এবং তদভাবে অঞ্চাতি, তদভাবে অলে নিংক্ষেপ করিবে। "পরোক্ষে কল্লিভং দানং পাঁতাভাবে কথং ভবেং। গোতকেভা তথা দছাৎ তদভাবেহ স্থ বন্ধু ॥ যদা তুসসকুলা: ভান চ সম্বিধান্ধবা। দপ্তাৎ স্বজাতিশিয়েভ্যস্তদভাবেহপ্সু নিঃক্ষিপেং॥" (শুদিত) দান করিবার সময় স্নান করিয়া বিশুদ্ধ স্থান গোময় ধারা উপলিপ্ত করিয়া সেই স্থানে বসিয়া দান করিবে এবং পরে मान क्या मिक्ना मिट्ड इटेर्ट ।

প্রয়োজন অপেক্ষা না করিয়া অর্থাৎ কোন প্রকার উপ-কারের প্রত্যাশাদি না করিয়া কেবল বৃদ্ধিতে প্রণোদিত হুইয়া সংপাত্তে যে দান করা যায়, তাহাকে ধর্মদান কহে। "পাত্তেভ্যো দীয়তে নিত্যমনপেক্ষ্য প্রয়োজনং। কেবলং ধর্মবৃদ্ধ্যা য়দ্ধর্মদানং প্রচক্ষতে॥" ( শুদ্ধিত )

এই দান অভিশন্ন প্ণাদান্তক; দানের মধ্যে ধর্মদানই শ্রেষ্ঠ। যাহাকে দান করিতে হইবে, তাহার নিকট গদন করিয়া দান করিলে অনম্ভ গুণ এবং আহ্বান করিয়া দান করিলে সহগ্র গুণ কল লাভ হয়। প্রার্থনা করিলে পরে দান করিলে অর্থ্ধেক ফল হয়। যিনি আশা দিয়া দান করেলে দান না করেন, তাহার ব্রশ্বহত্যার পাতক হয়। যিনিশ্দান করিয়া পশ্চাৎ তাপগ্রস্ত হন, তিনিও নিরম্বগামী হইয়া থাকেন।

উক্ত বিধানে যিনি দান ও প্রতিগ্রহ করেন, এই ছই অনেরই স্বর্গনাভ হয়। ইহার বিপরীত হইলে নরক এই রা থাকে। দান প্রকৃতি অনুসারে সাবিক, রাজনিক ও তামিনিক ভেদে ত্রিরিধ।

"দাতবামিতি যদানং দীয়তেহ্মপকারিশে।

দেশে কালে চ পাত্রে চ তদানং সাবিকং স্বৃতং॥

যত্ প্রত্যাপকারাথং ফলম্দিশ্র বা পুনঃ।
দীয়তে চ পরিফ্রিইং তদানং রাজসং বিছঃ॥ FIFT

শকালে যদানমপাত্রেভ্যান্ড দীয়ভে ৷ 17143 ত্বভাবজাতং ভত্তামসমুদাহতং ॥" ( গীতা ১৭।২০-২২ ) वानि ভুপকারক ব্যক্তির প্রভাপকীর মানসে নহে, কিন্তু কেব**ল** ব্য মাত্র বোধে যে উপযুক্ত হদশ, কাল এবং পাত্রামুদারে ন কর। যায়, তাহাকে সাত্তিক দান কহে। প্রভ্রাথকার মনায় কিংবা ফল-কামনায় মন:কষ্ট সহু করিয়া যে ছান ক্রা যায় তাহাকে রাজস দান কহে এবং দেশকাল পাতাদির বিচার না করিয়া যে কোন দেশে যে কোন কালে যে কোন পাত্রে অসংকার ও অবজ্ঞা সুহকারে যে দান করা যায়, ভাহার নাম ভামস দান। যাহাদের প্রকৃতি সান্ত্রিক ভাবে গঠিত, তাহারা সাত্ত্বিক দান করিয়া থাকে, তাহাদের নিকট _{রাজস} ও তামস॰ দান হেয়। এই দান নিতা নৈমিতিকাদি ভেদে চারি প্রকার। নিতা, নৈমিত্তিক, কামা ও,বিমল এই চারি প্রকারের মধ্যে চতুর্থ দান সর্বন্দেষ্ঠ। ইহার মধ্যে কোন উপকার প্রত্যাশা না করিয়া প্রতি দিম ব্রাহ্মণাদি সৎপাত্তে य मान कता यात्र, खाशांद्रक निका मान करह। य मान পাপাদি শান্তির নিমিত হইয়া থাকে, অর্থাৎ কোন প্রকার নিমিত জন্ম সংপাত্তে দান করা হয়, তাহাকে নৈমিতিক দান কছে। অপত্য, ঐখর্য্য ও স্বর্গাদি কামনা করিয়া যে দান করা যায়, ভাহাকে কাম্য দান এবং ঈশবের প্রীভির ক্ত ব্রহ্মবিদ্ ব্রাহ্মণদিগকে যে দান করা যায়, তাহাকে বিমলদান কহে। এই দান সর্বাপেকা শ্রেষ্ঠ। "নিতাং নৈমিত্তিকং কাম্যং ত্রিবিধং দানমুচাতে। চতুর্থং বিমলং প্রোক্তং সর্বাদানোত্তমোত্তমং॥ অহন্তহনি যৎকিঞ্চিৎ দীয়তে হসুপকারিণে। অফুদিশ ফলস্তঃ স্থাদ্ আহ্মণায় চ নিত্যকং ॥ যতু, পাশ্মেপশাস্তার্থং দীরতে বিছ্যাং করে। অপতা বিষ্ণতৈশ্ব্য স্থার্থার যৎ প্রদীয়তে। নৈমিত্তিকমন্থদিষ্ঠং দানং সম্ভিরম্পত্তমং॥ দানস্তৎকাম্যমাথ্যাতমুঘিভি র্ধর্মটিস্তকৈ:॥ ^{যদীশ্ব}রপ্রীণনার্থং ব্রহ্মবিৎ**স্থ প্রদী**য়তে। ⁽⁵³সা ধর্মাযুক্তেন দানং তল্পিলঃ শিবং #" ( ক্র্মপু ) °

অু হলে শালগ্রামশিলা অবস্থান করেন এবং গলাদি তীর্থ भरिहिष्ठ, এই मकन शांनहे मानित शब्क श्रामखः। मकािकात्न नान कतिरा नाई, रिशं अखिमिछ हहेरन मान कृतिरव ना, विक (कर करत, जार्री रहेरन अरे मान निकन रहेरत। यारात শামধ্য আছে, এইরূপ লোকের নিকৃট যদি আহ্মণ বিপদ্গ্রস্ত ইইরা প্রার্থনা করে এবং তিনি উপেক্ষা করেন, তাহা হইলে জনম্ভ নরক হয়।

কীবন অনিত্য, আয়ু অত্যস্ত চঞ্চল, কথন মৃত্যুর মূণে পতিত হইতে হইবে, তাহার নিশ্চয়তা নাই, এই সকল ভাবিয়া गर्सना भानानि भूगा कार्या सीवन অভিবাহিত করিবে। ভোজন করিয়াদান করিবে না। অভুক্ত হইয়াদান করিতে হয়। ^{*}যিনি পতন হইতে উদ্ধার করেন, তাহাকে দানপাত্র कटर। याहाता विका ७ ज्लावतन् वनीयान्, छाहातारे पारनत উপযুক্ত পাত্র এবং ইহাদিণকে দান করিলে পতন হইতে

"পতনাৎ ত্রায়তে যম্মাৎ পাত্রং তত্মাৎ প্রচক্ষতে ॥"(বিষ্ণুধর্মোত্ত॰)

যে বকল আক্ষণ শুদ্রের অর্থাদি বারা জীবিকানির্বাহ করেন, তাহারা দানের অপাত। দানের তাহারাই পাত্র, যাহাদের উদরে শ্রাল্ল নাই। একজনের পিণ্ডাদি লোপ দেখিয়া দয়াপরবশ হইয়া পুত্রশীনের নাম দত্তক, এই দান मार्टनत्र मर्था ८ अर्छ । [ मञ्जूक रमथ ।]

স্মীপত্ত শাস্ত্রজ্ঞানসম্পন্ন ব্রাহ্মণকে পরিত্যাগ করিয়া অপের ব্রাহ্মণকে যদি কেহ কিছু দান করে, ভাহা হইলে তাহার সংখ্য কুল পর্যান্ত বিনষ্ট হয়।

"সন্নিক্টমধীয়ানং ব্ৰাহ্মণং যো ব্যতিক্ৰমে**ং**। ভোজনে চৈব দানে চ দহত্যাসপ্তমং কুলং ॥" ( শাতাত্র')

মন্ত্রপূর্বক দান যদি অপাত্রে ক্রিত হয়, তাহা হইলে • দাতার নিরয়ভোগ **হ**ইয়া থাকে। দেবতা, অগ্নি ও বান্ধ-ণকে দান করিতে যদি কেহ নিষেধ করে, শতবার তির্গুগ্ যোনি প্রাপ্ত হইয়া পরে চাণ্ডালকুলে জন্মগ্রহণ করে।

"ন দৎশ্বেতি যো ক্রয়াৎ দেবাগ্নৌ ব্রাহ্মণেষু চ। তিৰ্যাপ্ৰোনিলতং গছা চাণ্ডালেছভিজায়তে ॥" ( শাতাত্তপ )

স্থৰ্ণ, রজত ও তাম যতিদিগকে দান করিবে না, এবং ষ্দিকেছ দান করে, তাহার ফল হইবে না। বাক্য ধারা যাহা স্বীকার করা হয়, তাহা কার্য্যে করা না হইলে ঋণ বলিয়া পরিগৃহীত হইবে।

এই লোককে দান করিব, এই কথা বলিলে সর্বাত্রে ঠাহা দেওয়া উচিত।

যে ধন পরের পীড়া দিয়া উপার্জিত হয় নাই, এবং পরি-শ্রমাদি যত্ত্বারা উপার্জিত হইরাছে, এইরূপ ধন অল্লই **इ**डेक वा अधिक इंडेक, हेशहे (हुम अर्थार नात्न केश्यूकः। "ब्बन्धवादाधमङ्क्रमः श्रवाङ्गनार्क्कितः धनः।

অল্লং বা বিপুলং ৰাপি দেয়মিতাভিধীয়তে ॥" (দেবল)

যে পরস্ব হরণ এবং পরে দান করে, এইরূপ ব্যক্তি স্বর্গে श्यम करत ना এवः मारनद रकान कनए छात्री रुप्त ना। अक्, অন্ধ, বধির, মৃক, এবং ব্যাধিপীড়িত অর্থাৎ মহাপাতক

বোগগ্রস্ত এই সকল লোকদিগকে দান করিবে না, কিন্তু ইহাদিগকে প্রতিপালন করিবে, অর্থাৎ অরবস্ত্রাভাবে বদি রেশ পায়, তাহা হইলে তাহা দিয়া তাহাদের উপকার করিবে। ধন সাত প্রকার বিশুদ্ধ, এই ৭ প্রকার ধন দান করিতে পায়া যায়। 'অধ্যয়নাদি হায়া যে ধন লাভ হয়, শৌর্যা অর্থাৎ অয়াদি করিয়া যে ধন লাভ হয়, অলাগত ধন, ক্লার সহিত আগত শাল্রু আদি হায়া লক্ষ যে ধন, শিল্পাত অর্থাৎ গুরুদ্দিশাদি হায়া প্রাপ্ত যে ধন, যাজ্যাগত অর্থাৎ গুরুদ্দিশাদি হায়া প্রাপ্ত যে ধন, যাজ্যাগত অর্থাৎ গুরুদ্দিশাদি হায়া প্রাপ্ত যে ধন, যাজ্যাগত অর্থাৎ গুরুদ্দিশা করিয়া যে ধনলাভ হয়, অয়য়াগত অর্থাৎ জ্ঞাতিদিগের নিকট হইতে যে,ধনলাভ হয়, এই সাত প্রকার ধন বিশুদ্ধ। এই সাত প্রকার ধনকে সাত্রিক ধন বলা যায়। শিল্পার্যাগ্রাহয়াগতং।

ধনং সপ্তবিধং শুদ্ধং মুনিভি: সমুদাঙ্গতং ॥" (রত্নাকর)

রাজিদিক ধন—কুণীদ, কৃষি, বাণিজ্য, শুক, শালানুর্ত্তি অর্থাৎ দেবা চাকুরী ও উপকার করিলে কুতোপকার ঘারা লক্ষ ধন রাজদিক। তামসিকধন—দ্তেক্রীড়া, চৌর্য্য, পার্শ্বিক, পরপীড়া, সাহস, সমুদ্রযান্ত ও গিরি আরোহণ, ব্যাক্ত অর্থাৎ শুটাদি হইয়া রাজ্মণাদির বেশ ধারণ করিয়া যে সকল অর্থ উপার্জিত হয়, তাহাকে তামস ধন কহে। দানে সাল্বিক্ ধনই শ্রেম, রাজদিক ও তামসিক ধন নিন্দনীয়। দানে এই-রূপ ধন পরিত্যাগ করিবে। পূর্ব্বোক্ত বিশুদ্ধ যে সপ্তবিধ্ ধন, তাহাই দানের পক্ষে প্রশস্ত। যে কোন দান করা যায়, দেই সেই বস্তর এক একজন অধিষ্ঠানী দেবতা আছেন। তাহার নাম উল্লেখ করিয়া দান করিতে হইতা।

পেয় প্রব্যের দেবতা।—ভূমি দান করিতে হইলে ইহার দেবতা বিষ্ণু, ক্লাদানে দেবতা প্রজাপতি, গ্লুগাদানে দেবতা প্রজাপতি, গ্লুগাদানে দেবতা থকা পতি, গ্লুগাদানে দেবতা থকা, একশফ পশু মাত্রেই মনদৈবত, ধেমু দানে দেবতা ক্রু, মহিষ দানে দেবতা যা, ছাগদানে দেবতা অগ্নি, মেষদানে দেবতা বক্লণ, বরাহদানে দেবতা বিষ্ণু, এতন্তির্ন্ন বল্লণ মাত্রেই বায়ু দেবতা ও জলজ লগ্ন অধিষ্ঠানী দেবতা প্রজাপতি, প্রকাদি বিভাঙ্গদানে দেবতা প্রায়, শুলানে দেবতা প্রজাপতি, প্রকাদি বিভাঙ্গদানে দেবতা বর্মা, গুলানে দেবতা প্রজাপতি, প্রকাদি বিভাঙ্গদানে দেবতা বর্মা, গ্লুগা, রথ, আসন ও পাত্রু দানে দেবতা প্রজাপতি, সকল প্রকার ব্রভোপকরণের দেবতা বিষ্ণু, ব্যুগাত রাহাদির দেবতা অগ্নি ইত্যাদি। যে কোন ক্রবাদার দেবতা অগ্নি ইইলে সেই সেবার অধিষ্ঠানী দেবতার নামোলের করিয়া উৎসর্গ করিবে ও দান করিতে হইবে। দাতা দান করিবার সময় যাহাকে দান করিবেন, তাহার নাম

গোত্র উল্লেখ করিয়া এবং ক্রব্যের ক্ষধিষ্ঠাত্তী নামে উৎদর্গ করিয়া দান করিবেন।

"নামগোত্তে সমুচ্চার্য্য প্রদিস্তাৎ শ্রন্ধান্তিতঃ। পরিভূটেন ভাবেন ভূড্যং সম্প্রদদে ইতি॥" (বিষ্ণুধর্মোতঃ) দানের পাত্ত—যাহাদের ক্ষান্তি, দয়া, সভ্য, শীল, তপ্তা ও শাস্ত্রজ্ঞান প্রাভৃতি আছে, তাহারাই প্রকৃত দানের পাত্ত।

সর্বদাই বত্র সহকারে গো, তিল, ভূ, হিরণ্য প্রভৃতি পাত বিশেষে দান করিবে। পুণ্যকারী লোক আর্ত্তিদিগতে অন্নদান, কুটুম্বকে গোদান, গ্লাজ্ঞিককে স্থবৰ্ণ, অনপতাদিগতে পুত্র কন্তা, ক্ষত্রিয়কে যুদ্ধোপকরণ দ্রব্য, বৈশ্বকে প্রেয়াপ্রোগ [®] দ্রব্য ও শূলকে শিলোপযোগী জব্য দান করিবে। _{যে} वस्र त्य वर्षत्र छेन्द्रसाती, त्महे वस्र त्महे वर्गत्क नित्न विस्थ পুণ্য হইয়া,থাকে। ব্ৰহ্মচারিদিগকে দণ্ড, রুঞ্চাজিন ও ক্মণ্ডন, দান করিলৈ বিশেষ পুণ্য হইয়া থাকে ৷ গৃহত্বকে বস্তু, শ্রা, আসন, ধান্ত, গৃহ ও গৃহপরিচছদ দান করিলে অতিশয় পুণা इत। वान शास्त्र की वात, भाक, फन ७ इद्ध मान করিবে। গন্ধ, মাঙ্গলা দ্রবা, তাখুল ও অলক্তক বহানি क्वीमिशंदक मान कतिर्द, किन्न क्वीमिशंदक मान कतिराज इहेरा তাহার স্বামীর নিকটে দিতে হইবে, নভুবা পারিবে না বালকদিগকে ক্রীড়নক (খেলিবার পুভূষ) দান ক্রিনে অতিশয় পুণাহয়। এরূপ ছই লোক অভিশয় পুণাবা, যিনি ছর্ভিকে অন্ন এবং স্থৃভিকে ছেম ও বস্ত্র দান করেন। "ঘাবিমৌ পুরুষৌ লোকে সূর্য্য মণ্ডলভেনিনৌ। দাতারুত চ হভিকে স্থভিকে হেমবন্তদ: ॥" ( অগ্নিপু )

্অন্তায় কার্য বারা প্রাপ্ত অর্থ দান করিলে তাহার হ হয় না।

প্রবানক্ষত্রযুক্ত শুরুবাদনী, আখিনমাসের বাদনী, এবং প্রানক্ষত্রযুক্ত কান্ত্রনমাসের বাদনী, হৈত্রমাসের ত্রোদনী, হৈত্রমাসের ও প্রাবণেকী শুরুচভূর্দনী, বৈশাধমাস ও কার্ত্তিকমাসের পূর্ণিমা, এই দকল ভিণিতে দান করিলে অক্ষর পুণা হয়। বাভিপাত, যুগাদি, অমাবস্থা, অবম সংজ্ঞান্তি, চক্ত ও স্থাগ্রহণ প্রভৃতি পুণাকালে দান করিতে ইয়। দানের নিষিক্ষাল—সন্ধ্যাকালে দান করিবে না এবং রাত্তিতে দান করিবে না। রাত্তিতে যদি কেহঁ দান করে, ভাহা নিক্ল হয়।

"রাত্রী দানং ন কর্ত্তবাং কদাচিদ্পি কেনচিদ্। হরন্তি রাক্ষসা যত্মাৎ তত্মাদাতৃর্ভরাবহং॥
বিশেষতো নিনীথে তুন শুভং কর্মা শর্মণে।
অতো বিবর্জারেং প্রাজ্ঞো দানাদিরু মহানিশাং ॥" ( স্কল্পুণ)

মহাপ্তর নিপাত হইলে প্রথম বর্ষে দান করিতে নাই।
চক্রহর্ষ্যাদি গ্রহণেও রাজিতে দান করিতে পারিবে এবং
ক্যাদান রাজিতে প্রশস্ত।, এ সকল বিশেষ বিধান জানিতে
হইবে।

"গ্রহণোধাহসংক্রাস্তিযাত্রাদি প্রসবেষুচ। দানং নৈমিত্তিকং জেয়ং রাত্রাবপি তদিয়তে ॥" (র্দ্ধ বশিষ্ঠ )

গ্রহণ, উবাহ, যাত্রাদি-প্রস্ব এই সকল নৈমিত্তিক দান। রাত্রিতেও এই দান নিষিদ্ধ নহে। অট্রহাস, গঙ্গাদাগরসঙ্গম, কুরুক্তের, গয়া, গঙ্গা, বারাণসী প্রভৃতি তীর্থসমূহে যাহা দান করা হয়, তাহা অক্ষয় ফলপ্রদ হয়। নণীতীর, গোষ্ঠ, ত্রাহ্মণের বাটী ইত্যাদি প্রাত্তলে যাইয়া দান করিতে হয়; এইরূপ দানই বিশেষ প্রাপ্রপৃদ্। দান করিতে হয়; এইরূপ দানই বিশেষ প্রাপ্রপৃদ্। দান করিতে হইলে সর্বাত্রে প্রদা প্রায়ে, তাহাও অনুনস্তপ্রদান করা যায়, তাহাও অনুনস্তপ্রদান করা যায়, তাহাও কিফল হইয়া থাকে। প্রক্রম প্রদান করা যায়, তাহাও কিফল হইয়া থাকে। প্রক্রম প্রদান করা যায়, তাহাও কেবল দান বলিয়া কেন, শ্রনা ভিন্ন কোন কার্যাই সম্পন্ন হইতে গারে না। দানের সময় দাতা ও প্রতিগ্রহীতা উভয়ই মানাদি করিয়া গুচি হইবেন, প্রে দাতা দান করিখেন ও গ্রহীতা গ্রহণ করিবেন।

"ম্নাত: দুমাগাচান্ত: কুউসন্ধ্যাদিক ক্রিয়:। কামকোধবিহীনীক পাষ ওস্পর্শ বর্জিত:॥ জিতেন্দ্রি: সভ্যবাদী পাত্রং দাতা চ শস্ততে।" (বরাহপু•) দানকালে 'ওঁ' এই শক্ষ উচ্চারণ করিয়া দান করিবে। গুহীতাও প্রণব উচ্চারণ করিয়া গ্রহণ করিবে। "ওঁকারেণ দ্যাৎ প্রতিগৃহীরাচ্চ" (কাত্কর্ণা) প্রাণবই একমাত্র জগতের বীজাও বেদের আদি, এই জান্ত প্রাণব উচ্চারণ করিয়া লান দানাদি শুভ কার্য্য করিতত হইবো •

প্রশ্নপ্রক যে আহ্মণকে দান করে (প্রশ্নপ্রক শব্দে 'তৃমি' এইরপ, বেদপাঠ করিলে এতদিব ইত্যাদি রূপে) তাহার নরক হয় এবং যে আহ্মণ এইরপ্ দান গ্রহণ করে, তাহারও নরক হয়।

"প্রশ্নপূর্বন্ত যো দভাং ব্রাহ্মণায় প্রতিগ্রহং। . সং পূর্বাং নরকং যাতি ব্রাহ্মণস্তদনস্তরং।" ( শাতাতপ )

অপমান করিয়া যিনি দান করেন এবং যিনি এইরূপ দান গ্রহণ করেন, এই ছই অনেরই বছদিন ধরিয়া নিরয়গামী হইতে হয়। কোন কার্যা প্রত্যাশা করিয়া যিনি দান করেন এবং এইরূপ যিনি গ্রহণ করেন, ইহারা ছইজন নরক ভোগ করিয়া থাকেন।

যে কোন বস্তু দান করিতে ইইলে মন্ত্রপুর্বক দান করিতে হয়, অমন্ত্রক দান নিফুল, এইজন্ত কতকগুলি দ্রব্য দানের মন্ত্র লিথিত ইইল। দেয় দ্রব্যের দানমন্ত্র হেমাদ্রির ব্রতথণ্ডে এইরূপ লিথিত আছে।

ক পিলাদানের মন্ত্র—
ক পিলে সর্ব্বভূতানাং পৃজনীয়াসি রোছিনি।
সর্ব্বতীর্থময়ী যত্মাদতঃ শাস্তিং প্রযজ্জ মে॥
শত্মাদানের মন্ত্র—
পুণাব্বং শত্ম পুণানাং, মঙ্গলানাঞ্চ মঙ্গলং।
বিষ্ণুনা বিধৃতো নিতামতঃ শাস্তিং প্রযজ্জ মে॥
বৃষ্ণানের মন্ত্র—
ধর্মবিং বৃষ্করপেণ জগদানন্দকারকঃ।

অন্তর্গবিষ্ঠানমত: শান্তিং প্রযক্ত মে॥
তর্গদানের মন্ত্র—
হিরণ্যগর্ভ গর্ভন্থং হেমবীলং বিভাবনো:।
অনস্তপুণাফলদমত: শাস্তিং প্রযক্ত মে॥
পীতবন্ত্র দানের সন্ত্র—
পীতবন্ত্রমুগং যুমাদাস্থদেবস্তু ব্লভং।
প্রদানাত্ত্র মে বিষ্ণুরত: শাস্তিং প্রযক্ত্রা
শেতাখদানের মন্ত্র—

খেতাখনানের মন্ত্র— যত্মাধিফুগুরুপেন যত্মাদমুতসন্তবঃ। চন্দ্রাকিবাহনং নিত্যমতঃ শান্তিং প্রাযক্ত মে॥

ধেস্পানের মন্ত্র— যশাবং পৃথিবী সর্কা ধেসুঃ কেশবসন্নিভা । সর্ক্রপাপহুরা নিভামভঃ শাস্তিং প্রেযছে মে ॥

লোহদানের মন্ত্র-यत्रानाग्रमकर्त्यानि चनधीनानि मर्द्यमा । লাঙ্গলাভাযুধাদীনি ততঃ শাস্তিং প্রযন্ত মে'॥ ছাগদানের মন্ত্র-যন্ত্ৰাবং ছাগ্যজ্ঞানামঙ্গতেনু ব্যবস্থিত:। যানং বিভাবদোর্নিভামতঃ শাস্তিং প্রয়চ্ছ মে ॥ **খেতবন্ত্রদানের মন্ত্র—** ' भंदगाः मर्स् (माकानाः मञ्जामा त्रक्रगः भदः। ত্মবেশধারি তং যন্মাদাস: ! শাস্তিং প্রয়েচ্ছ মে ॥ রক্তবন্ত্রযুগদানের মন্ত্র---রক্তবস্ত্রযুগং যশাদাদিভাক্ত প্রিয়ং সদা। প্রদানাদত্ত মে সূর্য্যো হৃতঃ শাস্তিং প্রয়ন্ত মে॥ कुरुवज्रनात्नत्र मञ्ज-ধর্মরাজেন বিধৃতং কৃষ্ণবন্ত্রং স্থাশোভনং। সর্বকেশবিনাশায় ক্রফবন্তং দদামগ্হং॥ অরদানের মন্ত্র---অন্নমেব যতো লক্ষীরন্নমেব জনার্দন:। অরং ব্রন্ধাথিলতাপ মস্তমে জন্ম জন্মনি 🛭 -८्माशनः मधान-माटनत मञ्ज---**ठळ्म ७ नम्भारः ठळापूजममध्यकः।** দধ্যরং ভক্ত দানেন প্রীয়তাং বামনো মম। मधात्रः (माभमश्यक उक्तविकृत्मिवाञ्चकः। প্রীয়তাং ধর্মরাজোহি তদানামম সর্বুদা। ক্রসনান (থিচুড়ী) দানের মন্ত্র সর্কাত্মা সর্কলোকেশ সর্কব্যাপী সনাতন:। নারায়ণ: প্রসন্নতাৎ ক্রসরান্ন প্রদানতঃ ॥ পায়দারদানের মন্ত্র---পায়সং পরমারঞ্জ •সর্বাদানোত্তমোত্তমং। সর্কাদৈবতযোগ্যক শ্রের: পুষ্টিং প্রযক্তৃ ॥ ' অপুপারদানের মন্ত্র— আদিত্যভেষ্ণা ভক্তং কাতিশ্রেষ্ঠকরং•পরং তদলং মম বিপ্র ছং প্রতীচ্ছাপুপমুত্তমং। সক্তুদানের শন্ত্র---প্রাজাপত্যা যত: প্রোক্তা: সক্তবো য**ত কর্ম**ণি। তখাৎ সক্তৃন্ প্রথছামি প্রীয়তাং মে প্র**ভাগতিঃ।** রজতদানের মন্ত্র-অমুরেষু সমুদ্ধতং রজতং পিতৃবরভং। তত্মানত প্রদানেন কন্তঃ সম্প্রীরতাং মম । তামদানের মন্ত্র---

পরাপবাদপৈশৃত্যাদভক্ষ্যন্ত চ ভক্ষণাৎ। তৎ প্ৰজা ভঞ্ যৎপাপং ভাষ্ৰপাত্ৰং প্ৰশামাভু ॥ স্বর্ণার্ডভিলপাত্রদানের এছ— **(प्रत्य क्राजांश वाक्षिकार्थाम्बर्धाः** তিলপাত্রং প্রানান্তামি তবালে সংস্থিতে রহং ॥ मर्भनमारनत्र मञ्ज--मर्भरान प्रमामम् नृगाः मक्रमायकः। শৌর্যাদৌভাগাসংকীর্তিনির্মলজ্ঞানদো ভব ॥ মুক্তাদানের মন্ত্র--তামপর্ণবোৎপন্না বর্ণান্তা করবর্ণিতা:। ।মুক্তা: ওক্যুত্তবা: সন্ত ভক্তিমুক্তিপ্রদা মম॥ অ্বর্ণপাদানের মন্ত্র-षश्रदवा अगल्यहे त्वंधरमा रहमश्रकः। भग्नावाम इटंबर्नाङ काटा माः भाहि मर्कना ॥ অঙ্গুলীয়দানের মল্ল---हित्रगागर्जमञ्जू उर भोदर्गमञ्जूनीयकुर । ধর্ম প্রদং প্রবছামি প্রীয়তাং কমলাপতিঃ 🛭 বলয়দানের মন্ত্র-কাঞ্চনং হন্তবলয়ং রূপকান্তিভূথপ্রদং। विভূষণং व्यमाञ्चामि विভূষরভূ মাং সদা । কুণ্ডলদানের মন্ত্র---ক্ষীরোদমধনে পূর্বাযুক্তং কুগুলম্বাং। শ্রিয়া বহ সমুভূতং দলৌ শ্রী প্রীয়তাং মম អ তুলসীদানের মন্ত্র— मिक्किनभूष्राणि मिष्युकामहानि ह। তুলসীপত্রদানস্থ কলাং নাইস্তি ধে ড়েশীং ॥, ' তুলসীপত্রদানাধা ব্রহ্মণঃ কায়সম্ভবং। পাপপ্রশমনং যাতু সর্বে সন্ত মনোরধা: ॥ ত্থদানের মন্ত্র— অলক্ষীহরণং নিত্যং নিত্যং সৌভাগ্যবর্দ্ধনং। ক্ষীরং মঙ্গলমাযুষ্যং তত: শাস্তিং প্রায়চ্ছ মে। •नवनी जनारनत म<del>ड</del> — , कांगरधनाः मभूडुङः विस्त्वा जुष्टिकतः भतः। नवनीजः व्यवाञामि वनः शृष्टिकः त्विह त्य ॥ ঘৃতদানের মন্ত্র— ' কামধেহুসমুভুতং দৈবানামুক্তমং হবিঃ व्यावृर्विवर्क्तनः माजू ताब्गुः शाजू मरेमव माः । তৈলদানের মন্ত্র— তৈবং প্টিকরং নিত্যমায়্ধ্যং পাপনাশনং।

অমাললাহরং পুণামতঃ শাব্তিং প্রবচ্ছ মে॥ পাতৃকাদানের মন্ত্র---क्लेटकाव्हिष्टेभाषानवृष्टिकोनिनेवात्रनः। পাচকাং সম্প্রদান্তামি বিপ্র প্রীত্যা প্রগৃহতাং ॥ हामजनात्मत्र मञ्ज---ল্পাত্করসকাশ হিমহিগ্ডীরপাণ্ডুর। প্রোৎসার্যান্ত ছরিতং চামরামরবরভ ॥ **ठमनथ७ मारनद्र मह** — हमनावामयनावः मध्य वृत्मावनार्किछ। _{চলন} বিৎপ্রসাদান্মে সাজ্রানন্দোপ্রদোঁ ভব 🛚। কন্ত্রীদানের মন্ত্র — সমন্তেভ্যোহশি বস্তভ্যঃ সংস্বতানি স্থরাস্থরৈঃ। বিভান্তালেষু কন্তুরী স্থলাহন্ত সদা মম॥ কর্পুরদানের মন্ত্র-কন্দর্পদর্পদোয়স্মাৎ কর্পুরস্তাণতর্পণ। । শ্রমমাত্রভবন্তাপক্ষানাদপ্রপত্ 🛚 ধারুণানের মন্ত্র---ধক্তং করোষি দাভারমিহলোকে পরত চ। তত্মৎ প্রদীয়তে ধাক্তমতঃ শাস্তিং প্রবছ্ত মে। (গাধ্মদানের মন্ত্র-रचानत्रमदत्रा असृ बीटमा त्राश्ममञ्चरः । গান্ধর্মসৌখ্যধনদঃ অতঃ শাস্তিং প্রায়চ্ছ মে॥ মুলাদানের মন্ত্র---मुकारीकानि देव यन्त्रांश खित्रानि शत्रदम्हिनः। তত্মাদেশাং প্রদানেন প্রীতিঃ সিদ্ধতু মে সদা। চণকদানৈর মন্ত্র---পুরা গোরদ্ধনোদ্ধাবসময়ে হরিভক্ষিতাঃ। ^{চণকা}ং সর্বাপাদ্রা অতঃ শাস্তিং দদত্বনী ॥ नवनमारनत्र यञ्च ---রসানামগ্রজং শ্রেষ্ঠং লবণং বলবর্জনং। অপণা নির্মিতং সাক্ষাদতঃ শাস্তিং প্রেষচ্ছু। ষ্বদানের মন্ত্র---ণামুরাজা 🗗 মাঙ্গল্যা বিজ্ঞীতিকরা যবাঃ। **चर्यातियाः अनात्मन ममाविक्यिकः कनः॥** তিল্পানের মন্ত্র— जिनाः भाभस्त्रा निकाः वित्कारेर्मसम्प्रदेशः। ডিল্লানেন সর্বাং মে পাপং নাশর কেশব # শর্করাদানের মন্ত্র---षम्बद्ध करनार्श्वाः हेक्सात्राव्यक्ता ।

স্বাপ্রীভিকরা নিভাষতঃ শাস্তিং প্রবচ্ছ মে 🛚 ইকুপওদানের মন্ত্র---मन्त्रिक्षर्भशाष्ट्रहुष्ठः भक्तताबनिः। তত্মদিত্য প্রদানেন মম সৃদ্ধ মনোরধা:॥ গুড়দানের মন্ত্র— व्यगवः मर्समज्ञानाः नाज्ञीनाः भार्स्वज्ञी यथा । তথা त्रमानाः श्रावतः मरेमरेवक्त्ररंमायजः। মম তন্ত্রাৎ পরাং লন্ধীং দদন্ত গুড় সর্ব্রদ়া 🛭 मबूगारनत्र मञ्ज---যন্মাৎ পিতৃণাং প্রাদ্ধে বং পীতং মধ্বমৃভোৱবং। তক্ষান্তব প্রদানেন রক্ষমাং ছ:খদাগরাং 🖠 অলকুন্ডদানের মন্ত্র— ' वातिभूर्गचरहोरभजः रत्नवजन्नमग्रः यजः। প্রীয়তাং ধর্মরাজোহস্ত দানেনানেন পুণাদ: । উপানহদানের মন্ত্র—' উপানহৌ প্রদান্তামি কণ্টকাদিনিবারণে। नर्तकात्मेषु स्थान जाजः माखिः श्रवक्तः । राजनशास्त्र मञ्ज--भूविजा नर्सबस्नाः निजाननकती ७७।। পিতৃণাং ভৃপ্তিদা নিভাষতঃ শাস্তিং প্রথচ্ছ মে। **लिविक्रमात्नेत्र मञ्ज**— শিবশক্ত্যাত্মকং যত্মাৎ জগদেতচেরাচরং। তত্মাদনেন সর্বাং মে কুরোতু ভগবান্ শিবং । কৈলাসবাসী গৌরীশো ভগবান্ ভগনেত্রভ্ব। চরাচরাত্মকোলিঙ্গরূপী দিশতু বাঞ্চিতং ৪ মরকতলিঙ্গদানের মন্ত্র— ইদং মারকতং লিঙ্গং রৌপ্যপীঠসম্বিতং। ধাজৈৰ দিশভিযুক্তমেকাদশ ফলাবিতং ॥° मच्छानष्ठाः विधातन यत्नाखाः कनमश्च तम । পুস্তক্লানের মন্ত্র---' সর্ববিভাশ্রমং জ্ঞানকরণং ললিতাকরং। পুস্তকং সম্প্রয়হামি প্রিয়া ভবতু ভারতী। পুষ্ণাদীনের মন্ত্র— षाञ्चत्रस्य मत्ना राष्ट्राद क्षा स्टूबनमः ब्रंडाः। मखा नमञ् स्य निष्णमणास्त्रामयुष्टाः **अन्न**ः । তামুলদানের মন্ত্র-ভাদৃশং শ্রীকরং ভদ্রং বন্ধবিষ্ণুশিবাত্মকং। অস্ত প্রদানাৎ ব্রস্বাস্থ্যঃ শিবং দদতু পুরুলং ॥ তামুশকরম্বানের মন্ত্র-

পুরিতং পুগপুরেণ নাগবলীদলান্বিতং। পূর্বেন পূর্বপাত্তেণ কর্পুর-পূর্কেণ চ।। मभूगथखनः मिवाः गद्यक्तात्मत्रमाः अग्रः। कत्रक्रवः श्वनावातः ष्ट्रश्रमानाट क्रूच माः॥ . হরিক্রাদানের মন্ত্র—ূ नक्षी थिया या नक्षीना नक्षी यन्दमन थिया। সৌভাগ্যকুৎবরস্ত্রীণাং হরিলা শ্রীপ্রদাস্ত মে। যজ্ঞোপ্রীত দানের মন্ত্র---ব্রহ্মস্ত্রং মহাদিব্যং ময়া যত্নেন নির্দ্দিতং। ব্ৰহ্মং জন্মাহন্ত মে দেব ব্ৰহ্মস্তাসমৰ্পণাৎ।। শ্যানানের মন্ত্র---যস্মাদশ্ভাং শয়নং কেশবভা শিবভা চ। ' শ্যামবাপ্য শৃ্থাস্ত তত্মাজ্জন্মনি জন্মনি ৫ ছত্রদানের মন্ত্র---ইহামূত্রোভয়ত্রাণং কুরু কেশব ৫ম প্রভো। ছত্রং ত্বংপ্রীতয়ে দত্তং ত্রীন্ধণায় ময়া শুভং । (হেমাদ্রিত্র• ৭•) মহাপাতকজ রোগ হইলে বা কোন কঠিন •ণীড়া হইলে সেই রোগ জন্ত বিহিত দ্রব্য যথাবিধানে দান করিয়া চিকিৎসা করিতে হইবে। রোগজন্ত দানের বিষয় হারীত-সংহিতায় এইরূপ লিখিত আছে---

গো, ভূমি বা স্থবর্ণদান করিয়া দেবভাদিগকে পৃজাপূর্বক রোগের প্রতীকার করিবে। কুষ্ঠ ও পাঞ্ রোগের শান্তির নিমিত্ত গো, ভূমি বা হিরণ্য দানু করিবে। মেহ, শূল, খাদ, ত্বগল্ব, অর্শ ও কাশ রোগে স্থবর্ণ ও অন্নদান করিতে হইবে। জ্বরেরাগে কজেকাপ, মতি, আর বৃা শাক্ত দান कतिरव । शुन्त्र ७ श्रविमान्तारतार्श कञ्चामान कतिरव । মেহ ও অশারী রোগে লবণ দান করিতে হইবে। শূলরোগ হইলে প্রভৃত অন্নদান করিয়া চিকিৎসা করিলে আবোগাঁলাভ হয়। রক্তপিত্রোগে • মত ও মধু দান করিবে। গ্রহণী ধোগে গো, হিরণা, ভূমি ও অন্ন এই চতুর্বিধ দান করিবে। কুনথী ও খ্রাবদন্ত রোগে, স্থবর্ণ দান, শ্বিতা ও কুঠরোগে রৌপ্ট भाग, शिश्रेणरत्रारंग जिल्लान, रहम्राज र्गामान, निजरत्रारंग ম্বত, নাদিকারোলে স্থগন্ধ ত্রবা, কণ্ডুরোগে তৈলদীন, জিহুবক রোগে রদদান ও পিত্তরোগে উষ্ট্রদান করিয়া রোগের চিকিৎসা কবিতে হইবে। এইরূপ দান করিয়া চিকিৎসা করিলে আভবোগ উপশমিত হয়। (হারীত দ্বি<mark>তীয় স্থান ১ অ</mark>ধ্যায়) গ্রহণণ গোচরে অষ্টবর্গে বা দশতে বিক্লব্ধ হুইলে দানাদি

ৰারা শুভ হইয়া থাকে।

রবিগ্রহের দান—মাণিক্য (অভাবে মূল্য), গোধুম,

স্বৎস ধেমু, কুমুস্তরঞ্জিত বস্ত্র, গুড়, স্বর্ণ, তাত্র, রক্তচন্ত্র রক্তবন্ত্র ও আতপতভুগ দক্ষিণার সহিত দান করিলে _{রবিগ্রচ} कथन मन्तरण (मनना।

চন্দ্রের দান-রজত পথেত্র তঙ্গ, কর্পুর, মুক্তা, ভর্না **रत्रो**ला, यूरगानयूक त्व, घडनूर्व क्छ ७ वज्र ।

় মঙ্গলের দান — প্রবাল, গোধ্ম, মস্তর, কলাই, অঙ্গ_{বর্ণ} ব্য, ৩৩ ড়, স্বৰ্ণ, রক্তবক্তা, করবীর পুষ্প ও ডাফ্র মঙ্গলের _{ইন্স} দান করিতে হয়।

त्र्यत्र मान-नीनवञ्च, खूर्न, काःश्च, मूर्गकनारे, शीख्वनं পুষ্প, দ্রাক্ষা ও হত্তিদন্ত বুধের জন্ত দান করিবে। 🦜

 বৃহস্পতির দান—চিনি, দারুহরিক্রা, অম্ব (অভাবে ২৫ কাহন কড়ি), পীতধার্ম, পীতবন্ধ, রক্তপুস্প, লবণ ও খৰ্ণ বৃহস্পতির জন্ত দান করিতে হইবে।

ভক্তের দান—বিচিত্র বস্ত্র, খেতাখ, ধেহু, বস্ত্র, রৌগ্য স্বর্ণ, সুগন্ধি ও তণ্ডুল শুক্রের জন্ম দান করিতে হইবে।

भनित्र मान-सायकलाहे, टेजुल, नीलवळा, करफेडिल, नीत মৰি, মহিষ, লৌহ ও সবস্ত দক্ষিণা।

রাছর দান---গোমেদ, রক্স, অস্ব, নীলবন্ত্র,কম্বল, রুঞ্ডিল, সবল্প দক্ষিণার সহিত দান করিতে হইবে।

কেতুর দান —বৈহুর্যমণি, রক্স, মৃগমদ, ভিল, ভিলভৈন, কম্বল ও থড়া স্বস্ত্র দক্ষিণার সহিত দান করিতে হইবে। এই সকল গ্রহ সম্বন্ধীয় সকল দানই স্বাস্থ্য উচ্চারণ ও রে স্হিত উৎসূর্গ করিয়া দান করিবে। দান দ্রব্যাদি গ্রহাচার্যাকে দান করিবে, অভাগা নিক্ষণ হইবে। যদি কোন এঞ্ জ্ঞান কিংবা অজ্ঞানে লোভ করিয়া গ্রহণ করে, জাহা হইনে সেই ত্রান্ধণের ইহলোকে দারিতা ও মৃত্যুর, পর চণ্ডাল্যোনি লাভ হয়। (ঞ্চোতিষ)

"গ্রহদেয়ানি দানানি গ্রহে দেয়া চ দক্ষিণা। গ্রহবিপ্রায় দাতব্যং অন্তথা নিক্ষলং ভবেৎ॥ লোভাৎ গৃহাতি যো বিপ্রো জ্ঞানভোহজ্ঞানভোহণি বা। ইহলোকে দরিত্র: স্থাৎ মৃতে চাণ্ডালযোনিজ: ॥" (জােডিয় . প্রাহ সম্বন্ধে কোনরূপ, দানাদি গ্রহাচার্য্য ভিন্ন ^{প্র} ব্রাহ্মণের গ্রহণ করিতে নাই।

সকল ধর্মশান্ত ও পুরাণে দানের মাহাত্মা বর্ণিত আছে: এতত্তির সংস্কৃত ভাষায় দান সম্বন্ধে বিভিন্ন এছকার র^{চিট} বিস্তর গ্রন্থ পাওয়া যায়। তন্মধ্যে এই গুলি উল্লেখ্যা^{র।} যথা---কমলাকর রচিত দানকমলাকর, রতুনলন কৃত^{ছান} कन्नडक, शांविनानम ब्रहिड मानटकोम्मी, अनुस्रा রচিত দানকোন্তভ; গৌতম, জন্মরাম, দিবাকর ও ^{ব্রা}

বনের দানচন্দিকা, দিবাকরের দানদিনকর, ভবদেবভট্টের দানধর্মপ্রফ্রিরা, নররাজ ও রত্বাকর ঠকুরের দানপঞ্জিকা, রামদন্তের দানপদ্ধতি, নীলকঠের দানপরিভাষা
ও দানময়্থ, প্রীধরমিশ্রের দানপরীক্ষা, অনস্তভট্টের দানপারিজাত, মিত্রমিশ্রের দানপ্রকাশ, দয়ারামের দানপ্রদীপ,
ক্বেরনন্দের দানভাগবত, ব রাজের দানমঞ্জরী, চত্তেখর
ও রাজভট্টের দানরত্বাকর, নররাজ ও বিভাপতির দানবাক্যাবলী, দানবিবেক, মদ্নসিংহদেবের দানবিবেকোভ্যোত,
দিবাকরের দানসংক্রেপচন্দ্রিকা, অনস্তভট্ট, কামদেব ও
রাজা বল্লালসেনের দানসাগর, এ ছাড়া অ্প্রসিদ্ধ হেমান্তির
দানবও ও অপরার্কের দানাপরাক্ষ আছে।

দানক (ক্লী) কুংসিতং দানং দান কন্। কুংসিত দান, নিলিত দান।

দানকর্ম্ম (ক্রী) দানমেব কর্ম। দানক্রিয়া। পর্যায়—দাতি, দাশতি, দাসতি, রাতি, রাসতি, পূনার্ত, পূনাতি, শিক্ষতি, তৃঞ্জতি, মহত। (নিঘ্টুত অধ্যায়)

দানকাম (ত্রি) দানং কাময়তে কম-স্বার্থে নিঙ্ অণ্। দাননীল। "গোতমভোমেন যদীচ্ছেদানকামা মে প্রকাভাং।" (আখলায়নশ্রেণ ৯।৩।১৪)

मानकूला। (खी) रखीत ममकन।

নানকেলী, শ্রীরপগোস্বামী কত ভাণিকালকণাক্রান্ত দৃশুকাব্য।
নানকোণা (দেশজ্ব) মৎশুবিশেষ। (Cyprinus harbigar)
নানগড়,এই স্থানে শ্রীকৃষ্ণ দানলীলা করেন। (শ্রীর্ন্দাবনলীলাণ)
নানঘাটি,• গোবর্দ্ধনিহিত শ্রীকৃষ্ণের লীলাস্থান। (ভক্তমাল)
নান্চুতে (শং জ্বী) গোত্রপ্রের শ্বিভেদ।

ানিধর্ম (পুং) দানাথ্যো ধর্মঃ দানকপোধতর্মাবা মধ্যলো ।

দানের ধূর্ম, দান, দানশীল্ডা, দানাত্মক ধর্ম।

^{*অথাত}: সংপ্রবক্যামি দানধর্মমন্ত্রমং।

জর্থানামূদিতে পাত্রে শ্রন্ধা প্রতিপাদনং ॥"(গ্রন্থ জুপু ৫১জঃ)
পুণ্য কার্য্যের মধ্যে দানই সর্ব্বোন্তম, দানের ফল অনস্ত।
[দান দেখ । ]

নিনিবর্তুনকুঁগু, গোবিন্দকুণ্ডের নিকট অবস্থিত কুণ্ডভেদ। ^{(ভক্}নাল, <u>আ</u>র্নাবনগীলা )

ানপতি (পুঁং) দানে পতি: শ্রেষ্ঠ: ৭তং। ১ সতত দাতা,
বিনি সর্কাণ দান করিরা থাকেন। ২ আকুরের নামান্তর,
শঙ্ধনা ভ্রমন্তক মণি হরণ করিরা ইহার নিকট গচ্ছিত
রাখেন, ইনি প্রতিদিন এই মণির প্রভাবে বহুদান
করিতেন, এই জন্ম ইহার দানপতি নাম হর। (ভাগ°)

^{ও দৈত্যভোদ।} (হ্রিবংশ ২৩২।৭) মান দানপত্র (ক্রী) দানত পত্রং। ভ্যাগপত্র, ভ্যাগ করিলাম অর্থাৎ ভোষাকে ইহা দান করিলাম বলিয়া যে পত্র লিখিয়া দেওয়া হয়।

দানপদ্ধতি (ত্রী) দানস্ত প্রভৃঃ। দানবিষয়ক প্রভৃত,
দানের প্রণালী, দানের নিয়ম।

দানপাত্ত্র (ক্লী) দানভ গাকং। 'দানযোগ্য বান্ধণভেদ, যিনি দানের উপযুক্ত। [দান দেখ।]

দানপ্রতিভাব্য (ক্লী) ঋণ পরিশোধার্থ স্থামিন।

দানফল (রী) দানত ফলং ৬তং। দান জভাফল, দানের ফল, দানজভাধর্ম্মঞ্চয়।

দানফলের বিষয় অগ্নিপুরাণে এইরপ লিখিত আছে—
দাতার নিকটে গমন করিয়া ছক্তিপূর্বক দান করিলে তিনী
অবস্থায় অক্ষয় ফল লাভ হয়, ভয় বা ক্রোধপূর্বক দান
করিলে গর্ভাবস্থায় ইহান ফল ভোগ এবং ঈর্ষা ও ক্র্
হইয়া দন্ত ও অর্থের জন্ত বিজ্ঞতিদিগকে দান করিলে,
বাল্যকালে ইহার ফলভোগ হয়।

যাহার। বৈশু ও বেদবিহীন সন্ধ্যাদি-উপাসনাবজ্জিত ব্রাহ্মণকে দান করে, সে ইহার ফল বৃদ্ধকালে প্রাপ্ত হয়।,

চারিপ্রকার জন্ম ও ষোড়শ প্রকার দান দিফল— অপ্র বাজি, বক ধার্মিক, পরারভোজী ও যাহারা সর্বান লোকের পীড়া দিয়া থাকে এই চারি প্রকার লোকের জন্ম নিফল। ১ দেবপিড্বিহীন, ২ ঈশরের প্রতি দোষারোপী, ৩ দন্তামুকীর্ত্তন (দান করিয়া বলা), ৪ বেদ, অগ্নিও ব্যুক্তন্তাগী, ৫ অক্সার হারা উপার্জিত বস্তদান, ৬ ব্রহ্মঘাতী, ৭ মিথ্যাবাদী ওফ, ৮ চৌর, ৯ পতিত, ১০ ক্রতম, ১১ সর্বাদ যাহারা বাহ্মণের প্রতি হেষ করিয়া থাকে, ১২ যাচক, ১৩ বুষলীপতি, ১৪ পরিচারক, ১৫ ভ্তা, ও ১৬ মিথ্যারাদীকে দান করিলে নিফল হয়, এই ষোড়শ প্রকার দান করিলে দান জন্ত কোনই ফল হয় না *।

শগতা যদীয়তে দানং ভজ্যা পাতে বিধানতঃ।
তদমন্ত্ৰকাং বিদ্ধি অবস্থাতিতয়ে নৃপঃ ।
তমাবৃতত্ত বো দল্যাৎ ভয়াৎ কোধাওথৈৰ চ ।
নুপদানাত তৎসর্কং ভূঙ্কে পর্তস্থাতিব ভূ ।
ঈর্বা সম্প্রমানিকের দল্তার্থং চার্পকারণাং ।
বো দলতি বিভাতিভাঃ স বাল্যে ভূ তদমুতে ।
বৈভাদেববিহীনক সংজ্যাপাসমবর্তিকঃ।
বন্দানং দীয়তে তবৈ বৃদ্ধকালে ভদমুতে ।
বুবা জয়ানি চন্ধারি বুধা দানানি বোড়েশ।
তাল্ভহং সপ্রক্যানি ব্বাবদ্মুপ্র্নাঃ।

দানব ( পুং ) দনোরপতাং দহু-অণ্ (তন্তাপত্যং। পা ৪।১।১২) দহুর অপতা, কশুপের ঔরসজাত ও দমুগর্ভক্র পুত্রগণ, অহুর। "নি মারিনো দানবস্ত মায়া অপাদয়ৎ।" ( ঝকু ২।১১।১০)

ইক্স অভিযুত সোম পান করিয়া মারাবী দানরদিগের মারা সকল নিপাতিত করিয়াছিলেন। ভাগবত মতে ইহাদের সংখ্যা একষটি তাহাদের মধ্যে—বিমুদ্ধা, শম্বর, অরিষ্ট, হয়গ্রীব, বিভাবস্থ, অয়েম্থ, শঙ্কু শিরা, অভিন্থে, কপিল, অরুণ, পুলোমা, ব্রপর্মা, একচক্র, তাপন, ধ্মকেশ, বিরপাক্ষ, বিপ্রচিত্তি ও ছর্জর এই ১৮ জন দানবের মধ্যে প্রধান। মহাভারতের মতে—চডারিংশৎ দহর পুত্র।

"চত্বারিংশদনোঃ পুত্রাঃ থ্যাতাঃ সর্ব্বত্র ভারত। তেষাং প্রথমকো রাজা বিপ্রচিত্তিমহাযশাঃ॥" (ভারত ১৷৬৫৷২১)

पक्षकश्ची प्रश्न विलाकिविक्षं उ उद्यादिः भः भ्रं था था व कित्रप्राहित्तन, जांशात्तत्र मर्था दिश्चिति त्रां वा हरे त्राहित्तन । भवत, नम्हि, भूत्नामा, प्रतित्नामा, त्रक्षी, इब्ह्रं त, ष्राः भित्रा, ष्रवित्ता, वीर्याना, ष्रवेश्व, गंगनम् ह्री, त्रग्याना, त्रज्ञाना, व्हांस्, ष्रवं, ष्रवं । व्हांस्, ष्रवं, प्रवं । व्हांस्, व्हांस्, विक्र्ष्त, विक्र्ष्त, व्हांस्, विक्र्ष्त, क्षिं, भवा, भना , स्र्यं । उ हस्त हेशा प्रस्तर मान्य प्रवं । प्रवं विद्या विशां उ हरे त्राहिन । प्रानत्त्र मर्था हस्त अर्था । त्रवं विद्या विशां उ हरे त्राहिन । प्रानत्त्र मर्था हस्त व्हे विद्या हरे । व्हां । व्हां विद्या विशां व

মফুসংহিতার মতে—দানবগণ পিতৃগণ হইতে উৎপন্ন ভূইয়াছে।

"ঋষিভাঃ পিতরো জাতাঃ পিতৃভাো দেবদানবাঃ।
দেবেভাস্ত জগৎ দুর্স্কাং চরং স্থায়সূপ্র্সাঃ॥" (মন্ত ৩২০১)
মরীচ্যাদি ঋষিগণ হইতে পিতৃলোক উৎপন্ন হইয়াছে।
পিতৃলোক হইতে দেবদানব এবং দেবতা হইতে এই চরাচর

অপ্রত বৃধা লয় ধর্মবাহা: নরা: সদা।
পরপাক: সদায়তি পরতাপরতাল যে ।
দেবপিত্বিহীন: বং ইবরেজ্য: সদোবত: ।
দরাস্কীর্তনাকৈর বেদাগ্রিত্ত্যাগিলে ।
অভাযোপার্জিত: দান: বার্থ: ব্রহ্মান তথা ।
তরবে হন্তবক্তে চ ভেনার পতিতার চ ।
কৃত্যার চ বন্দ্রা স্কাল বন্দ্রিবরে।
বা চকার চ সর্বাভ্যার স্কাল বিদ্রে ।
পরিচারকার ভ্তাার স্কাল বিশ্বার চ ।
ইত্যেজানি তুরাক্তের বুধা দানানি বেভ্লাং " (অপিশ্রাণ)

জগৎ আমূপুর্ব্বিক ক্রমে উৎপন্ন হইরাছে। দানবভেদং জ্বন্ (ত্রি) দানব সম্বন্ধীয়। ত্রিয়াং তীপ্।

দানবপ্তর্ত (পুং) দানবানাং গুরু: ৮তৎ। দানবদিগের 🤫 শুক্রাচার্য্য।

দানবজ্র (পুং) দানে বঞ্জইব। বৈশুলাতিক অখবিশেষ ইহারা দেবতা ও গন্ধর্ক্ত্রিগকে বহন করে। ইহাদে বার্দ্ধক্যানেখা নাই এবং কদাপি বেগহীন হয় না। ইহাদ মনের স্থায় বেগশালী। (ভারত ১০১৭১ আ:)

দানবিধি (পুং) দানজ বিধিঃ ৬তং। দানু করিবার বিধা বা নিয়ম।

দানবীর (পুং) ১ অতাস্ত দাতা, যে বাজি দর্মবাদা করিতেও কুটিত নুহে। ২ বীররস ভেদ। ৩ নারকভো "স্চদানধর্মুইছ দর্মাচ সম্বিতশ্চভূজাস্থাং।

স চ বীর:। দানবীর:, ধর্মবীর: দয়াবীর:, য়ৢয়বীরজে চতুর্ব্বিধ:। তত্ত্ব দানবীর: পরশুরাম:।

"ভাগাং সপ্তসমুদ্রতমহী নির্ব্যাক দানাবধিং॥"

( সাহিত্যদ তাংগ

দানবীরের স্থলে ত্যাগবিষরে উৎসাহ স্থায়িতা ব্রাহ্মণদিগকে সম্প্রদান আলম্বনবিভাব, সত্ত অধ্যবসায় দারা উদ্দীপন বিভাব, সর্বস্বত্যাগাদি দারা অম্ভাব, হর্ষ ধৃতি প্রভৃতি সঞ্চারীভাব। স্থায়িতাব প্রভৃতি দারা পৃষ্টি প্র হইয়া দানবীরতা প্রাপ্ত হয়। 'ত্যাগঃ সপ্তসমূদ্র' এই শ্লে দারা প্রস্তুরাম এম্বলে সম্পূর্ণ দানবীর।

িবিশেষ বিবরণ বীররস দেও।
দানবেয় (পুং) দখা: অপত্যাং দহু জিলাং উঙ্, ততো ঠিং
দক্ষকভা দহুর অপত্য।

"দৈত্বেয়া দানবেয়াশ্চ কিমিচ্ছস্তি পরাক্রমাৎ।" (ছরিব^{ং ২২১ ।} দানব্রত (রী) দানমেব ব্রতং । দানরূপ ব্রত।

দ্বান্ধান্তি (স্ত্রী) দানস্থ শক্তি:। দান করিবার ক্ষতা, ^{দার্ছ} দানেচ্ছা।

দানশীল (ত্রি) দানে শীলং স্বভাবো ষ্টা । দাতা। পর্বাহ বদাত্য, বদতা। (হেম ৩।১৫)

দানশূর (পুং) দানে শ্র: বীর:। দানবীর, শাকারনি।
দানশোও (ত্রি) দানের শোগু: অতিদক্ষ:। বছপ্রদ, কর্ম বদান্ত, অতিশয় দাতা।

"নিভ'ণোহপি বিমুখোন ভূপতে দানশৌভমনসঃ পুরোহভবৎ ॥" ( মাঘ ১৪।৪৬ ) আঘাত।

দানসাগর (পুং) দানানাং সাগর ইব। মহাদানবিশেষ,
বাহাতে যোড়শ দান করিতে হয়ৢ। গৌড়দেশ প্রসিদ্ধ ভূমি,
আসন প্রভৃতি যোড়শ পদার্থের প্রত্যেক বস্ত ১৬ থান করিয়া
বথাক বিধানে দান করিলে দানসাগর হয়।
"য়: কশ্চিৎ কুরুতে দেবি গ্রহণে দানসাগরং।
ব্রোৎসর্গং মহাদানং যৎ কিঞাৎ পৃথিবীতলে॥"

_{নীনা} (দেশজ) > দানব, জাহুর। ২ প্রেন্ত। ও কণ্ঠাভরণবিদেষ। ৪ শভা। ৫ কুন্দ্রবীজ।

নানাপ্রস্ ( জি ) দানকর্ম। "তা ত ইক্স-দানাপ্রস: আক্ষাণে"
( ধক্ ১০ ৷ ২২ ৷ ১১ ) 'দানাপ্রস: দানকর্মণ:' ( সারণ )
নানাদার, ১ দানাযুক্ত । (পারসী ) ২ শত্রযুক্ত ।
নানাদার পাথর, প্রস্তরভেদ ( Granite.)
নিন্ ( জি ) দানম্ভাতি দান-ইনি । দানযুক্ত ।

শ্বনম্বং তপোষজ্ঞ বাধ্যায়ত্রতদানিন:।" (ভাগবত ৭।২।১০)
ানীয় ( ত্রি ) দীয়তে হলৈ দা সম্প্রদানে অনীয়র। দানের
বোগ্য, দানপাত্র।

াকু (পুং) দদাতীতি দা-ছ (দাধাভাগি ছ:। উণ্ ০০০২)
> দাতা। ২ বিক্রাস্ত। ৩ বায়ু। ৪ হৃথ, শর্মা। ৫ দানব।
"দাহং শুয়ানং স জনাস ইক্র:" (ঋক্ ২০২০১১) 'দাহং
দানবং' (সায়ণ) (ক্রী) ৬ দান। ৭ বর্ষণ। "যবঃ ন বৃষ্টিদিবোন দাহনা" (ঋক্ ১০৪০) 'দাহনা দানেন বর্ষণেন
বা' (সায়ণ) ৮ দেয় ধন। "ক্রতিলো মথবা দাহু চিক্রাঃ"
(ঋক্ ১০১৪) 'দাহুভি দেঁ দৈমধনৈশিচ্জাঃ' (সায়ণ)

ািমুদ ( অি ) দাহং দদাতি দাহ দা-ক। ধনদাকুা। "প্রদাহদো দিবো দাহপির" ( ঋক্ ৯৷৯৭৷২৩) 'দাহদ: দাত্ত্যং ধনা-দীনাং দাতা' ( সায়ণ )

াকুমৎ ( কি ) দাহ: বিভতে ইভ দাহ-মতুপ্। হিংসাযুক্ত। "পর্কতে দাহমদ বহু" ( ঋক্ ৫১।৪ ) 'দাহমৎ দাহমতো হিংসাযুক্তভঃ যথা দহ•রহুর মাধা দৈব দাহ: তথত:।' (সাদ্ধ। ানৌকস্ ( ত্রি ) দ্বের এক নিলয়।

ं वीदः नात्नोकमः वन्नदेशु" (अक् )।७)। (नात्नोकमः नानानात्मकनिनद्रः' (मात्रन)

াস্ত (অি) দম-কর্ত্তরি জ্ঞা ১ বহিরিজিয় নিগ্রহকর্তা, তপঃ ক্লেস্ব্র "শান্তোদান্ত উপরতন্তিতিক্: শ্রহাবান্ সমাহিতোভূপা আ্যানুভাত্মানমবলোক্ষেৎ" ( বেদান্তনার )

ং দমিত। ও শিক্ষিতবৃক্ষ। ৪ মদনকবৃক্ষ। ৫ বিদর্ভরাক্স ভীমপ্রেনের বিতীয় পুত্র, দময়ন্তীয় প্রাতা। (ভারত ৩০৫৩ অং) দক্তেন নির্বতং দন্ত অণ্। ৩ দন্তনির্দ্ধিত। ৭ দানা। দান্তা (ত্রী) অপ্সরোবিশেষ্।

"বিহাতা প্রশমী দাস্তা বিজ্ঞোতা রভিরেব চ।"(ভারত ১২।১৯।৪৫) দাস্তকড়া (দেশজ) দাঁভের গোড়ার বাথা, দাঁভ কন্কনানি। • (Toothache)

দান্তি (ত্রী) দম-কিন্। ১ তপ:ক্রেশাদি সহিষ্ণুতা। ২ বাহেক্তির নিগ্রহ। ৩ বস্তুতা। ৪ নম্রতা, বিনয়। দান্তিক (ত্রি) গলদস্তনির্শ্বিত। দাপ (দর্প শব্দের অপভ্রংশ) ১ দর্শ, গর্কা, অহঙার। ২ জোরে

দাপনীয় ( ি ) দণ্ডার্হ।

দাপয়িত্ব্য ( ি ) দণ্ডের বোগ্য।

দাপটি ( দেশল ) প্রভাব, প্রভাব, গ্রহার, গর্ম।

দাপান ( দেশল ) দর্শকরণ, প্রভাব প্রদর্শন, প্রভাপ প্রকাশ।

দাপিত ( ি । দা-ণিচ্কর্মণি ক । ১ সাধিত। ২ ক্ষণ্ডিত।

ত দাপিতধনক প্রভিবাদী প্রভৃতি। ৪ ধনাদি বারা আয়ত্তী বি ।

কত। ৫ শোধিত প্রব্য। কলিল ও প্রব্যোত্মের মতে

দাপিতের পাঠান্তর দায়িত। দর্প।

দাপু (দেশজ) লতাভেদ (Polypodium proliferum.)
দাপোলি, > বোষাই প্রদেশের রত্মগিরি জেলার অন্তর্গত
একটা উপবিভাগ। ইহার উত্তর সীমা জলিরা ও কোলাবা,
পূর্ব্বে কোলাবা ও থেড়, দক্ষিণে বাশিলী নদী চিপ্লুন্ হইতে
দাপোলিকে পৃথক্ রাখিয়াছে এবং পশ্চিমে স্থারবসাগর।
ভূপরিমাণ কমবেশ ৫০৫ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা প্রার দেড় লক্ষ। এখানে অপরাপর জাতির মধ্যে কুণবি, মাল,
মহার ও ভলিজাতি অনেক। শেষোক্ত তিন জাতির
অবত্থা অতিশয় মন্দ।

সমৃত্যের ধারে দাপোলি প্রায় ৩ মাইল বিভ্ত । সমৃত্যের নিকটবর্তী গ্রামসমূহ অন বালুকাযুক্ত । সমৃত্যের ধারে অথচ সাবিত্রী ও বাশিষ্ঠী নদীর সঙ্গমে বাঙ্কোত ও দাভোল নামে ছইটা গগুগ্রাম আছে । এথানকার গ্রামসমূহে আম ও কাঁঠাল গাছ যথেষ্ট জন্মে । এথানকার অল হাওয়া আয়েকর ।

২ উক্ত উপবিভাগের সদর: সমুদ্র হইতে প্রার আড়াই ক্রোশ দূরে অবস্থিত। কোকণের মধ্যে এই স্থান অভিশর স্বাস্থ্যকর। দাভি, গুজরাটের রাজপুত জাতির মধ্যে এক প্রধান শ্রেণী।
ইহাদের মধ্যে প্রবাদ আছে যে, পূর্বকালে গজনী, এদর,
ভীলড়িগড় ও বেড়গড়ে দাভিদিগের বাস ছিল। দাভঝবি
ইহাদের আদিপুরুষ। দাভঝবির উৎপতি সম্ব্রে এই
কবিতা শুনা বায়—

"বড়ী সতী ঘনবাস দেব শ্রীরামূ দীখো। मोठाकी हालीयाः कनश्रमवारमा कीरधा ॥ পুরা মার্গজ পেট এ কুংবর লব আয়ো। অশো কুংবর অবতার অশোপত পুনম জায়ো # হ্রংপে কুংবর রথীয়াং সতী সীতা ধুবণনে চালীয়াং। বনং চরী দেথ পাছাং বলাং হেত করে লব লীয়াং # পল ধোলী রূথী দেব তহাং বালক নহীং দীশে। मार्या कार्रे मःसात्र मौश्र भीयान क भरम ॥ ( (क) धरत त्रशी हत धान छा इत्रशि नाम (नतारम)। ७थ वरह व्यावीशाः वाष्ट्र सम नीत्म वीत्सा বাত কুণ তেড় বে শগতী তেয়ো॥ মাস জেঠ পথ শাম ক্লত জগতণো অধতাম সোম স্ববার শ্বজ্জে দরঝানা ক্রথ ডাভ। 🏮 হৈক ভড় লোধ উপায়ো চোরাসী রথ্ আম্বেনর ডাভীনে পায়ো পঞ্চবেগর ভুঙ্গর গণা হেক পত জুব্ধয়ো॥ সমসর পংদর চোরাসী এ মহাজোধ পেদাস হুয়ো।"

Cra औताम मी शांक वनवाम पिरमन । भी शां विकास तिन গিয়া বাদ করিতে লাগিলেন। 'দশমাদ পূর্ণ হইলে তিনি পূর্ণচক্রের ফ্রায় কুমার অবতার লবকে প্রস্ব করিলেন। ( একদিন ) সীতা ঋষির নিকট পুশ্রুকে রাশিয়া স্নান করিতে গমন করেন। কিন্তু এক বনচরীকে দেখিয়া ফিরিয়া আদিয়া नवरक क्रेशा यान। अमिरक स्विधानार मसूर्य वानुकरक crिथटि ना शहिशा मतन कतित्वन, त्वांध दश विज्ञान, वा শৃগাল অথবা কোন শশক ভাহাকে মারিয়া ফেলিয়াছে। এই ভাবিয়া তিনি দাভ (দর্ভ) হইতে একটী মূর্ত্তি প্রস্তুত कतिरलन । यङ्गर्दन सैति कितिया छैं। हात्र मर्छ स्थि वा नाज-রথি নাম রাখিলেন। সীতা ফিরিয়া আসিয়া দেখিলেন, ণেন ঠিক ভাহার পুজের স্তায় আর একটা রহিয়াছে। ( শ্বি ক হিলেন), হে শ কি । কথায় আর কি হইবে ? এ হুইটাকে তোমার আপন পুত্র বলিয়া জানিও। এইরূপে কৃত্যগোৰ অৰ্থেক গত হইলে জ্যৈষ্ঠমানে কৃষ্ণপক্ষে সোম-বারে হুর্নাসা ঋষি মহাবল দর্ভকে সৃষ্টি করিলেন। গলবেগর শর্মতে ৮৪ জন ঋঘির সমকে সেই মুগের ১৫৮৪ বর্ষ গত हरेल पाछि छे: पन्न हरेग्राहित्यन। पर्छथि**यत व्यथ्यन २०**ण পুরুষে অমরসেন অন্থার্থণ করেন। তিনি পাসোকত হইতে যাত্রা করিয়া চোহানিনিগুকে ভাড়াইয়া প্রমাণগড় অধিকার করিয়াছিলেন। অমরসেন হইতে ১২শ পুরুষ স্বরণান। ইনি প্রমাণগড় পরিত্যার্গ করিয়া কিছুদিনের অন্ত কানীর অধিকার করেন। স্বরপালের ১৬শ পুরুষ পরে ঘোধা কাশীর ছাড়িয়া পড়িয়ারদিগকে পরাত্ত করিয়া ভবোল অধিকার করেল। তাঁহার ১০ম প্রুষে অধিরাজ যান্বদিগের নিকট হইতে শক্রেম ছর্গ অম করিয়াছিলেন। দেভা (ডেডা) অথিরাজ হইতে শক্রেম ছর্গ অম করিয়াছিলেন। দেভা (ডেডা) অথিরাজ হইতে ৬ পুরুষ অধন্তন। ইনি ১৯৭২ সন্তে কোরস্ভাদিগকে ভাড়াইয়া থেড়গড় অধিকার করেন।

বেজ্গড়ে দাভিরা রহদিন হিলেন। তৎপরে রাটোরদিগের হত্তে নির্যাতন ভোগ করিতে হয়। তাঁহাদের মধ্যে
শালদাভি কোনরপে আত্মরক্ষা করিয়া ভিন্মালে (ভিন্নাল)
আসিয়া বসবাস করেন। শালদাভির অস্টম প্রথবর্তী
ছদার সময়ে দাভিরা কছেবাহতীলের নিক্ট হইতে ভীল্ডী
গড় জয় করেন। এথানে বহদিন তাহাদের রাজ্ঞধানী ছিল।
ছদার পাঁচ প্রথব পরে সোমেশর দাভি জন্মগ্রহণ করেন।
ইনি মেহরাজ কবিকে সোভায়া গ্রাম দান করেন। এখনও
কবির বংশধরেরা ঐ গ্রাম ভোগদথল করিতেছেন ।

শালদাভির প্রপৌত্র আদলদাভি গৃহবিবাদে ভিন্নার ছাড়িয়া এদরে আসিয়া আত্রয় গ্রহণ করেন। এথানে এদর রাজ তাঁহাকে দশ হাজার অত্থারোহীর পদে নিযুক্ত করিলেন। ক্রমে তিনি অনেকগুলি গ্রাম দখল করিয় ভীলড়িগড়ে বাস স্থাপন করেন। আসলদাভির পুর এই ভীলফর্দারের কস্তার রূপে মুখ্থ হইরা ভাহার পাণিগ্রহণ করেন। ক্রিয়া আবৃশিধরের নিকট চোভোরলা পাহাড়ে গিরা ভাটেরী দেবীর কঠোর আরাধনা আরম্ভ করিলেন। দেবী তাঁহার পূজার সম্ভব্ধ হইয়া তাঁহাকে শিরোহীয়ান্দের নিকট হাইতে আদেশ করেন। শিরোহীরাজ তাঁহাকে সম্মানিত করেন। ভাটেরীর ক্রপায় তিনি সম্মান লাভ করেন, এইলস্থ তিনি ভাটেরীয় নাম গ্রহণ করেন। ভাঁহার বংশধ্রের। এবন প্রান্ধিরার স্থান বান্ধ্রের। এবন প্রান্ধিরার বংশধ্রের। এবন প্রান্ধিরার বংশধ্রের। এবন প্রান্ধিরার বংশধ্রের। এবন প্রান্ধিরার বংশধ্রের। এবন প্রান্ধিরার বংশধ্রের।

ব্যতি বুল দান-স্থলে এই হুৱা প্রচলিত জ্লাছে—
 ক্রবাহা কাড়ে তেল হুদে লই তেলড়ী
 সাছে অসী এব তপেরো অমর ঃ
 দান লথ হুদো দুএ কেছ্যালনে সোভাবলু—
 সমতে সোমের, স্বাপেরো ১°

ভাটেখরীর নামে বিখ্যাত এবং এখনও উক্ত স্থানে বসবাস | করিতেছে। *

দাভী (স্ত্রী) অনিষ্টজনকণ (নৈ)

দাভ্য (ত্রি) > বাধ বা বাধার যোগ্য। ২ শাসনযোগ্য। । দাম (দেশজ ) > মূল্য। ২ জলজ তুণবিশেষ।

(ক্নী) লো ও এনে বা করণে মন্ দামন্। ১ পখাদি বন্ধনরজ্জু। যে দড়িতে অনেক গোঁক বাঁধা যায়, দৌকা, পর্যায়—সন্দান, রজু।

"গোপীাদদে ছায় কভাগদি দামভাবৎ

যাতে দশাশ্রুক বিলাঞ্জনসম্ভ্রমাকং ॥" (ভাগণ ১৮৮০১) •

( বি ) ২ • দাতা। "শগ্গন্ত বিশগ্গতে রায়ে দাতা
মতীনাং।" (ঋক্ ৬।৪৪।২) 'রায়ে ধনশু দামা দাতা ভবতি।'
(সায়ণ) দা ভাবে মন্। ৩ সন্ধান। ৪ মালা। ( মাঘ ৪।৫০)
দমাতে অফুশিস্তাতে দম কর্মণি ঘঞ্। ৩ লোক, বিশসংসার।
দামকণ্ঠ (পুং ) গোতাপ্রবর্তুক ঋষিভেদ।

দামক্তি (পুং) দামকণ্ঠ সূবা গোত্রাপত্যং দামকণ্ঠ ইঞ্।
দামকণ্ঠের যুবা গোত্রাপত্য। বহু এই অর্থ বুঝাইলে
অপত্যার্থেযে প্রতায় হয়, তাহার লুক্ হয়। 'দামকণ্ঠাঃ'
দামকণ্ঠের বহু যুবা গোত্রাপত্য।

দামগ্রন্থি (পুং) মংখ্যরাজ বিরাটের সেনাপতি। (ভারত বিরাটপং ৩১ অং)

দামচন্দ্র (পৃং) জ্রপদ নৃপের প্রভেদ। (ভারত দ্রোণপণ ১৪৮ অং)

নামজাতভী (পুং) স্থরাষ্ট্রের এক শাহরাজ।

[ भार-त्राज्यरः भ रेत्रथ । ]

नीमड़ा ( ८५ मध्य ) हिन्नमूक वृष, थानी, वनम ।

নামন্ (ফ্রী, স্ত্রী) দো থণ্ডনে দীয়তে ইতি দা-মনিন্ (সর্ক্রিণ্ডলা মনিন্। উণ্৪।১৪৫) দোহনকালে পখাদির পাদবিদ্ধান রজ্জু, ছাদন দড়ি। ২ মালা। ও রজ্জুমাতা। ৫ যে
দড়িতে অনেক গোক বাধা যায়।

ামনপর্বন্ (ক্রী) দমনো দম্নরক্ষত্তেদমিত্যণ্ প্রতায়ে
দামনং তত্ত্বলমন্ধি পর্ব যিনিন্। ১ দমনভঞ্জন তিথি,

ৈচত্ত উক্লচভূপনী। ২ চৈত্রমাসের শুক্লবাদনী আদি করিয়া।
শিতীর্থেইকবিষ্প্রাসেঁ তত্ত্বদামনশর্কণোঃ।" (ন্রসিংহপুণ)

[দমনক দেখা]

দামনি (পুং) দমনভাপত্য ইঞ্। > দমনের অপেত্য। ২ আয়ুধজীবি সভযভেদ।

দামনী (জী) দামৈৰ প্ৰজ্ঞানি॰ স্বাৰ্থে অণ্ অনি নলোপঃ ভীপ্। প্ৰবন্ধন-রজজু।

"দামনী দামসারৈ "চ কেচিৎ কারাবলম্বিভি:।" (হরি ও৬ আবং) দামনীর ( ত্রি ) দামনি রাজ্জাদি "ছ। দমনের অপত্য।

দামন্যাদি (পুং) ছ প্রতায় নিমিত্ত পাণিনি গণোক্ত গণভেদ।
দামনি, ঔলপি, বৈজ্পায়ি, ঔকদি, ঔদাঙ্ক, আচ্যুতস্তি, শাকুস্তব্দি,আকিন্দতি, ওড়বি, কাকদন্তকি, শাক্তপি, সার্বসেনি,
বিন্দু, বৈন্দবি, তুলভ, মৌঞ্লায়ন, কাকন্দি, সাবিত্রীপুত্র,
এইগুলি দামগ্রাদি। (পাণিনি)

দামলিপ্ত (ক্লী) তমোলিপ্তনগর, ভমোলুক্। [তমোলুক্ দেখ। ] দামলিহ্ (পুং) দাম-লেঢ়ি লিহ-কিপ্। দামলেহক।

मार्गा (खो) मार्गन् छाश्। (मार्ग (पथ। ]

দামাঞ্জন (ক্রী) দামাঞ্চলং প্যোদরটিদ্বাং লভ্তনঃ। অখাদির পাদবন্ধন শ্বভত্।

দামাঞ্চল (ক্লী) দান্ধ: অঞ্চলমিব। অখাদি পাদবন্ধন রজ্ঞ্। শসক্র সরোষপরিচারকবার্যানা

দামাঞ্চনখনিতলোলপদং ত্রকা:।" ( মাঘ ৫।৬১ ) দামাদ ( পারসী ) কামাতা, ছহিতার পতি ।

দামান (দেশল) জাহাজ বা নৌকার যে দিক্ বায়ু আঘাত করে, তাহার প্রতিকূল দিক্।

দামামা ( দেশজ ) > হিন্দুদিগের একপ্রকার আনন্দ যক্তে, ইহার অপর নাম দগুড়া। ২ বাভযন্ত্রবিশেষ, ডক্কা।

मांगांही ( शांत्रमी ) क्वनिर्वत । अन व्वित्र ।

দামিনী (জী) দামা স্থদামা নগঃ স একদেশতেন অন্তাক্ত ইনি তীপ্। (সংজ্ঞায়াং মন্মাভ্যাং। পা ধাৰাত্ৰত )।

' त्रोनामिनी, विश्वाद।

দামোদ (পং) অথব্ধবেদের এক শাথা।
দামোদর (পুং) দামণ বন্ধনসাধনং উদরে যক্ত, বা দমাদি
সাধনেন উদারা উৎকৃষ্টা মতিবা তয়া গম্যতে ইতি দামোদর:।
যশোদানন্দন কৃষ্ণ, যমলার্জ্ন ভঙ্গ সময়ে ভগবান্ কৃষ্ণ উদরে দাম বন্ধন প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন, বিল্য়া গোপীগণ তাহাকে দামোদর বলিয়া আহ্বান ক্রিত। তদবধি তিনি ক্রগতে দামোদর নামে অভিহিত ইইয়াছেন। (হরিব॰ ৬৩ অং)।

"দামানি লোকনামানি তানি যভোদরান্তরে। তেন দামোদরো দেবঃ শ্রীধরস্ত রমাশ্রিতঃ॥"

(বিষ্ণুর সহস্রনামভায়ে শঙ্কর) দামপদে লোক বুঝায়, এই স্কৃষ লোক যাহার উদরে

^{*} রালপ্ত-ইতিহাসলেথক কর্ণেল টড়্বা ফরবেস্ এই আতি সবজে বিশেষ কিছুই লেবেন নাই, এই জাতি সংধ্য এথন যে কিবসভী আছে, ভ্রম্সারে লিখিত হুইল।

ভাহার নাম দামোদর। যাহার উদরে বিশ্বকাণ্ড ভিনিই দামোদর বলিয়া প্রাসিক। "দমাদানমাদরং বিহু" ,( ভারত ) বহিরিজিন্ন নিগ্রহের নাম দম, অত্যস্ত দমসাধন অভ্য দামোদর এই নামে খ্যাত। ২ অতীত অহৎ ভেদ। ওশাল্থাম-মৃর্তিভেদ, ইহার লকণ---

"স্লোদামোদরো জের্মঃ স্ক্রচক্রো ভবেজু সং। চক্রে তুমধানেশেহতা পুলিতঃ অ্থন: স্না ॥" ( প্রপু ) দামোদর শালগ্রাম স্থল ও ইহার চক্র স্ক্র, এই শিলা मञ्द्याय, ञ्च्थर।

"विष्ठव्यक्तृष्ठेमञ्ज्ञस्यः एक्षयः मारमान्त्राञ्जिसः।" ( बक्षदेवः )। ছুইটা চক্রযুক্ত ও স্থুল শালগ্রাম শিলার নাম দামোদর। 🍧 "বিখক্দেনমতিস্থলং লঘু•দামোদরং স্বৃতং।" ( মৎশুস্ক ) মৎস্কুক্তের মতে দামোদর লঘু। "উপৰ্য্যধশ্চ চক্ৰে খে নাতিদীৰ্খং মুখে বিলং।

मर्त्या ह त्रथानदेशका न ह नात्मानतः स्रुडः ॥" ( उन्नां ७४ : ) অনতিদীর্ঘ উপরি ও অধোদেশে হুইটী চক্ষ, মুখে বিল, অব্যাৎ গর্ক্ত ও মধ্যদেশে লম্বমান একটী রেথা থাকিলে জাহাকে দামোদর বলিয়া জানিতে হইবে।

[ শালগ্রামশিলা ও নায়ায়ণ দেখ। ] দামোদর ১ কাশীরের একজন রাজা। ইনি কাশীররাজ প্রথম গোনর্দের পর রাজা হন। ইনি গান্ধার-রাজকভার স্বয়ন্বরে দেই কন্তাকে হরণ করিতে গিয়া ঐক্তিষ্টের চক্রে নিহত হন। ২ কাখীরের আর একজন রাজা। ইনি মহারাজ करनारकत পत्र तिःशामनाधित्र ए हन। हैनि वृक्छन छक रेनव ছিলেন, যক্ষাধিপতি কুবেরের সহিত ইহার মিত্রভা ছিল। ইহার আজ্ঞানুসারে যক্ষেরা একটা জ্বলাভূমির উপর বৃহৎ সেতৃ নির্মাণ করেন। ইনি তত্বপরি একটা নগর নির্মাণ করিয়া ভাহার নাম দামোদরত্ব রাথেন। ইনি ফুধাতুর আহ্বণ-'গণের প্রার্থনা পূর্ণ না করায় তাহারা ইহাকে সপ্যোনি প্রাপ্ত হইবার শাপ প্রাদান করেন এবং পরে ইনি ভাষা-मिशरक व्यमन कत्रारेशा अरे तत शान, य अकमिरन ममछ রামায়ণ শুনিভে পারিলে শাপমুক্ত হইবেন। (রাজতর•)

দামোদর, এই নামে অনেক সংস্কৃত গ্রন্থকারের নাম পাওয়া যায়। তন্মধ্যে এই কয় জনের নাম বিথাত।

১ মহানাটক-দক্ষণয়িতা।

২ কাশীরের একজন গ্রন্থকার। [ দামোদরগুপ্ত দেখ। ] ৩ পদ্যাবলী, সহ্ক্তিক্ণীমুত ও ভোজপ্ৰবন্ধত একজন মহাক্বি।

৫ পদ্মনাভের শিশু, ইনি ১৪১৮ খুটালে আর্থাভট্ডনা করণগ্রন্থ করণপ্রকাশদীকাপ্রণয়ন করেন।

৬ কংসবধ-নাটকরচয়িতা। ।

৭ লঘুকালনির্গর নামে জ্যোতিগ্রন্থকার।

৮ জাতকর্মপদ্ধতি ও দামোদরপদ্ধতি নামে জ্যোতিগ্র'। রচয়িতা।

৯ শীলাবতীর পাটাগণিতের একজন বিখ্যাত দীকার। ১০ ভক্তিচন্ত্রিকাপ্রণেতা।

>> মাধববোগীর শিশু-ইনি 'মীমাংদানমবিবৈকালভাও , রচনা করেন।

১২ বাণীভূবণ নামক ছিলোগ্রন্থরচরিতা। ইনি আপনাকে দীর্ঘবোষ্বংশীয় বলিয়া পরিচয় দিয়াছেন।

১৩ নিবৈকদীপক নামে ধর্মণান্ত্রসংগ্রহকার।

১৪ একজন বিখ্যাত বৈদ্যক গ্রন্থকার, ইনি বৈদ্যনীবন, वाधिर्भाग । इतिवन्तन नास्म देवताक श्रेष्ट क्रमा करतन।

১৫ শতপ্ৰীয়াত্মবাকদংখ্যা ও হৌত্ৰাবলোকপ্ৰণেতা।

১৬ শ্রাদ্ধপদ্ধতিরচয়িতা।

১৭ অষ্টাক্ষদয়ের সঙ্কেতমঞ্জরী নামী চীকাকার।

১৮ সমরদার নামক জ্যোতিষের এক টীকাকার।

১৯ শক্ষীধরের পুত্র, সঙ্গীতদর্পণ-রচয়িতা।

২০ বিষ্ণুভটের পুত্র, আরোগ্যচিস্তামণি-প্রণেতা।

২১ ইটিকাল রচ্মিতা।

২২ জাত সংগ্রহকার।

২০ সিকাস্তল্য নামে জ্যোতি**গ্রন্থার**। •

২৪ হোরাপ্রদীপরচন্নিতা।

২৫ গঙ্গাধ্বের পুত্র, যন্ত্রচিস্তামণি নামে ভাল্লিক গ্রন্থকা

২৬ বিশ্বনাপের পুত্র, ভগবৎপ্রসাদচরিতরচরিতা। मार्याम् द्र्वायानात अक व्यनिक नम। ८ हाउँ नाभग

পাহাড় হইতে উৎপন্ন হইয়া এই নদ দকিণপুর্বাজি ०৫० मारेल शंगतनत शत विथाज अनमाति (शामगी (,Tames and Mary sands ) নামক চোরাবালির বি উত্তরে কলিকাতা হইতে ২৭ মাইল দক্ষিণে ভাগীরধী^{র সা} মিশিরাছে। এই সঙ্গমন্তলের অকা॰ ২২° ১৭ উ: এবং আ ৮৮° ৭´ ৩০´´পৃ:। কলিকাভা হইঠে উত্তরপূর্বে মধাভার পার্ব্বভাপ্রদেশের' সীমা পর্যান্ত বিস্তীর্ণ ভূভাগে ^{দামো} ও ইহার বহুসংখ্যক উপনদী প্রবাহিত হইয়াছে।

त्नाहार्डागा नगरंत्रत महिक्टि मारमामत्र नरमत्र ^ब ৰাহিকা শোণনদের অববাহিকা হইতে পূথক হ^{ইরাহে} একদিকে জ্বলবাসি পর্কমিকে জাসিয়া দামোদরে ^{প্রিট}

অপ্রদিকের বলরাশি উত্তরাভিমূবে বিহার প্রদেশস্থ সর্বা अधान (भाग नाम शिव्रा পতिए) हम। देशात्र छे९ शिक्ष सान প্রায় অক্ষা॰ ২৩° ৩৫´ হুইতে ২৪° উ: এবং জাঘি॰ ৮৪° ৪•´ इहेर्ड॰ ৮৪° ৩ र পৃ:। ছইটী সরিৎষোগে এই নদ উৎপন্ন। জন্মধ্যে দকিণত্ব সরিতের উৎপত্তি স্থান লোহার্ডাগান্ত তোরি শ্বগণায় এবং উত্তর্গিকের স্বিৎটীর উৎপত্তিস্থান হার্মারি: বাগ জেলার উত্তরপশ্চিম কোণে। এই ছইটা পার্মতা সরিৎ প্রার ২৬ মাইল গমনের পর হাজারিবাগ জেলার পশ্চিমে মিলিত"হুইয়া ঠিক পূর্বাভিমুথে কুণার অমৃত্যা প্রভৃতি উত্তরছ ह्य अपनित प्रकार के स्थाप के स्याप के स्थाप के स ৯৩ মাইল গমন করিয়াছে। ৩ৎপরে মানভূম জেলার মধ্য দিয়া পূর্বমূথেই বর্দ্ধমান জেলার প্রাস্তভাগে আদিয়া উপস্থিত इहेग्राट्छ। এই স্থানে দামোদরের সর্ব্বপ্রধান উপনদ বরাকর ইহার সহিত মিলিত হইমাছে। এই স্থান হইতে ইহার স্লোত मिक्निमिटक नेतर वक्त रहेशा वर्षमान दलनात अरुर्गे त्रामीशक्ष উপবিভাগ ও বাঁকুড়া জেলা উভয়ের মধ্যসীমা দিয়া বর্দ্ধনান खनाव शाराम कविवाह अवः ति अखिमू (थरे वर्षमान নগরের কিছু দক্ষিণে আসিয়া উপনীত হইয়াছে। তৎপরে দামোদর ঠিক দক্ষিণাভিমুখে বর্জমান ও ত্রগলীজেলার মধ্য দিয়া প্রবাহিত হইয়াছে। এই স্থানের নিকট হইতে বছদুর পর্যান্ত পার্বিতা প্রানেশে ইহার স্রোতবেগ প্রথর, কত নদ नमी देशांट अवाहिक; अथारन देशांत्र वदीर्शाहिक छात, গতি মুহল, অন্ত নদীর জল আসিয়া ইহাতে পড়া দুরে ধাকুক • সমতল ভূমে প্রবাহিত বলিয়া ইহার আনেক জল শাখা প্রশাখারুপে বহির্গত হইয়া গিয়াছে। তর্মধ্যে কাণা ननौ अधान । এই শাখা वर्षमान स्वनात मिनमावारम छेरशन **হইয়া কুঞী নদী নামে নওয়াসরাই গ্রামের নিকটে ভাগী**-ৰথীতে পতিত হইয়াছে।

পূর্বে দামোদরের প্রধান স্রোত কণিকাতার সনেক উত্তরে ভাগীরথীর সহিত মিলিত হইত। এখন ঐ স্রোত হাস হইরা গিয়াছে, যে সামান্ত স্রোত আছে, লোকে ভাহাকে কাণ্দোণার থাল' বলে।

ভারতবর্ধের অন্তান্ত নদীর ক্রায় দামোদর নদেরও গতি প্রথম প্রথম প্র শৈষে অতি মাদ। ইহার উৎপত্তিহান সম্প্রপৃষ্ঠ হইতে ১০২৬ ফিট্ উচ্চ।' ঐ উচ্চ হান হইতে আরম্ভ করিয়া এই নদ হাজারিবাগ জেলার প্রতি মাইলে প্রায় ৮ ফিট্ নিয়াভিমুখে প্রাবাহিত হইয়া ৯০ মাইল মাত্র আনিতে ৭৪৪ ফিট্ নিমে উপনীত হইয়াছে। অবশিষ্ট ২৫০ মাইল পথে ইহার স্ক্তিছ অবসতি কেবল ৫৮২ ফিট্

মাত্র। এইরপে প্রথমে ভীষণবেগে প্রবাহিত হওরাতে মৃত্তিকারাশি স্রোভারোগে নীত হর এবং শেবে স্রোভবেগ মন্দীভূত হইলে প্রলম্পে সমতলে পতিত ও সঞ্চিত হয়।

मानजूम (क्लाटिक नारमान्द्रत द्वा वज् कम नरह। বর্দ্ধমান জেলায় ঐ বেগ অ্পনেক কমিয়া গিয়াছে, এজ্ঞ ড প্রায়ই তথায় বৃহৎ বৃহৎ বালের চড়া পড়িয়া থাকে। বর্দ্ধ-मारनत पिकरण धरः छशनी दबनात्र हेशद शकि मन्त, चुछताः ভূরি পরিমাণে স্রোভানীত মৃত্তিকারাশি এই প্রদেশে এবং পল্তার অপরদিকে ভাগীরথীর সহিত সক্ষত্তো ক্রমশঃ সঞ্জিত হয়। আবার এই সলমভানের কয়েক মাইল দক্ষিণেই রূপনারায়ণ (দারিকেখর) নদীর সঙ্গম। স্থতরাং ভাগীরথীর স্রোভ প্রভিহত হওুয়াতে এই স্থানে বিস্তর চত্ন পড়িতে থাকে, স্থতরাং যানাদি যাতায়াতের বিশেষ বিপদা-শকা উৎপাদন করে। পুর্বে বধন দামোদর কলিকাতার উত্তরে ভাগীরথীর সহিত মিশিজ, তথন সমস্ত জলরাশি প্রবাহিত হুইয়া নদী মোহানা পরিষ্কার থাকিত, চড়া পড়িয়া বন্ধ হটবার আশঙা ছিল না। গতি পরিবর্তিত হওয়ায় কলি-কাতার উত্তরে ভাগীরথীকুণে ললপথে বাণিলোর অনেক ङाम ब्हेग्राष्ट्र।

মোহানা হইতে অনেক দ্র পর্যান্ত দামোদরে নৌকাদি বাতায়াত করিতে পারে। বর্ধাকাদে রাণীগঞ্জের উপর পর্যান্ত বড় বড় নৌকা বাইতে পারে। অন্ত সময়ে হুগলীর আমতা পর্যান্ত নৌকাদি যায়। পূর্ব্বে রাণীগঞ্জ হইতে বিন্তর নৌকা পাথরিয়া কয়লা বোঝাই লইয়া হাবড়ার অন্তর্গত মহেশরেখার যাইত। তথা হইতে ঐ সকল কয়লা উল্বেড়িয়া থাল ও ভাগীরখী দিয়া কলিকাতায় আসিত। এখন রেল হইয়া কয়লা রপ্তানীর সহজ উপায় হুইয়াছে দ

দানোদরের হঠাৎ বস্তা বড় তয়ানক। ইহাকে দেশের
লোকে হড়্কা বাণ বলে। বহুদংখ্যক প্রাম, শক্তক্ষের,
মহন্তাও গবাদি ঐ বল্পা বারা একবারে বিনষ্ট ইইয়াছে। ১৭৭০
গৃইাকে ঐ রূপ এক বস্তায় বর্জমান নগর প্রায় বিধ্বস্ত এবং
নদীতীরে বাধ ভালিয়া একবারে নই হইয়া যায়। ইহার
পরিণামে এক ভয়ানক ছভিক্ষ উপস্থিত হয়। ১৮২০ ও
১৮৫৫ খৃইাক্ষেও ঐরূপ বস্তায় বিত্তীর্ণ জনপদের গৃহ, বৃক্ষ,
মহন্তা, পশু কীটাদি একবারে ভাসিয়া বিনাশ প্রাপ্ত হয়।
শত শত ভয়গৃহ, বৃক্ষাদি, মৃত মহন্তা, পর্যাদির দেহ, গাড়ী,
পাকী প্রভৃতি ঐ বস্তায় ভাসিয়া যায়। ক্রবক্দিগের জমির
আলি প্রভৃতি ঐ বস্তায় ভাসিয়া যায়। ক্রবক্দিগের জমির
আলি প্রভৃতির চিহ্ন বিলুপ্ত হয়। তক্ষপ্ত বহুকাল পর্যাস্ত

পর বর্দ্দানের মধ্য দিরা অনেক দ্র রেল পথ স্থাপিত হওমার লাইন রকার জন্ম রেলওয়ে কর্কৃপক্ষগণের যত্ন এবং ১৮৫৫ খৃষ্টাব্দে গবর্দেণ্ট বাঁধ সক্ষার ভার অবং, এহণ করিবার পর আর হর্ঘটনা ঘটে নাই। নদীর উত্তরদিক্ এখন একরূপ রক্ষিত হইরাছে, কিন্ত ইহাতে সমন্ত জল একদিকে প্রবাহিত হওঁরাতে দক্ষিণদিকের অবস্থা আরও শোচনীয় হইয়া পড়িরাছে। প্রায়ই দক্ষিণদিকের উর্ব্বর শশুপুর্ণ জনপদে বন্ধা বারা সমূহ ক্ষতি উৎপন্ন হয়।

সঙ্গমন্থল হইতে অনভিদ্রে দামোদর ও রূপনারায়ণ নদের মধ্যবর্ত্তী প্রায় ৮ বর্গমাইল পরিমিত ভূমি সময়ে সময়ে ৮ হইতে ১৮ ফিট্ গভীর বস্তা জলে ভূবিয়া যায়।

'দামোদর আচার্য্য, একদ্ধন বিখ্যাত উপনিষ্ডাষ্যকার। ইহার রচিত ঐতরেম, কঠ, কেন, তৈতিরীম, প্রশ্ন ও মুও-কোপনিষ্যদের ভাষ্য পাও্মা যারা।

দামোদরগার্গ্য, একজন বৈদিক পণ্ডিত। ইনি পারস্করাস্থ সারিণী প্রয়োগপদ্ধতি রচনা করেন। ইনি, কর্ক, বিষ্ণু, গুলাধর ও হরিহুরের নাম উদ্ধৃত করিয়াছেন।

দামোদর গুপ্তা, কাশীরের একজন প্রদিদ্ধ কবি। ইনি
শক্তীনত বা কুট্নীমত নামে কাব্য রচনা করেন। রাজতর্জিণীতে ইনি জয়পীড়কবি নামে আথ্যাত হইয়াছেন।
জয়পীড় ৭৭৯ হইতে ৮১৩ বৃষ্টাজের মধ্যে কাশ্মীরে রাজভ
ক্রিতেন।

দামোদরঠকুর, একজন প্রসিদ্ধ সার্ত্ত পণ্ডিত। সংগ্রামশাহের রাজস্থকালে 'দিব্যনির্ণয়' রচনা করেন। দানুমযুথে অনেক স্থানে ইহার মত উদ্ধৃত হইয়াছে।

দামোদর ত্রিপাঠী, বালকরতক্ত ও. যন্ত্রচিক্তামণিরচয়িতা। দামোর দৈবজ্ঞ, সভাবিনোদ ও ষট্পঞ্চালিকা-টাকাকার। কেশবের দাতকপদ্ধতিতে শেষোক্ত গ্রন্থ উদ্ভ হইয়াছে।

দামোদরপণ্ডিত, কীর্ভিচন্তোদর নামে ধর্মণাস্তকার। ইনি অক্বরের সমরেচ্ড্মল্লের সাহায্যে গ্রন্থ রচনা করেন। • দামোদরভিট্ট, > জগনাথানন্দের শিশু ও মৌনভটের পুত্র; ইনি তর্করত্বাক্রনেত্ ও মুমুক্সর্পাস্বরচনা করেল। ২ মাংস-

্টনি তর্কর্জাক্তরদেতুও মুমুক্সর্কাশ্বরচনাকরেন। ২ মাংস-বিবেক্রচিরিতা।• দোল্যাদ্রক্রিকা কর্পর্যাঞ্চিম্ফ্রিয়ান্ত্র স্ভাপ্তিক। ইনি

দামোদর্মি প্রাক্ত কর্ণপুররাঞ্চ হেমন্তসিংহের সভাপণ্ডিত। ইনি কিরাভার্জ্নীরের গৌরবদীপনী নামে এক টীকা রচনা করেন।

দামোহতীয় (পুং) প্রবর শবিভেদ। (ভারত সভা ৪ অ )
দামোহ, ১ মধ্যপ্রদেশের চিফ্ কমিশনারের শাসনাধীন কবেশ

হইতে ২৩°৩•´উ: অকা॰ এবং ৭৯°৫´ হইতে ৮₀° গু: দ্রাঘি॰ পর্যায় বিস্থৃত। ⁶ইহার উত্তরে বুদ্দেলখণ্ড, পূর্ম্ জব্বলপুর, দক্ষিণে নরসিংহুপুর এবং পশ্চিমে সাগর। পরিমাণ ফল ২৭৯৯ বর্গমাইল। প্রধান নগর দামোহ এই নগরীই _{শাসন} বিভাগের সদর। এই জেলার চতুর্দিকে পর্বতথে বিরাজিত, তজ্জা সীমা নির্দ্ধারণে বড়ই বিশৃঝলা খীট। দক্ষিণনিকে বালুকা-প্রস্তরময় উচ্চ পর্বতশ্রেণী, শাধার্যশাধা विखत। नतिशरुभूत ७ अव्यवभूत (जना श्रेटि हेहारक পৃথক্ করিতেছে; পুর্বাদিকে ভোদলা পাহাড় ক্রমীশ: উখিও , হইয়া অবশেষে ভাঁড়ের পর্বতে মিশিয়াছে। পশ্চিম্_{ণিকৈ} বিশ্ব্যাচলশ্রেণী সীমাস্ত প্রদেশের বছদূর ব্যাপিয়া অব্যান করিতেছে। অধিক উচ্চ না হইলেও এই পর্বত্রেণীঃ জেলার মাধ্যে পরম রমণীয় এবং প্রাকৃতিক দুখ্রের দৃষ্ট मिर्मा वर्षन कतिराज्य । मार्था मार्था नाजि जिल गढीत জদলপরিপূর্ণ পর্বতের উপ্তাকাভূমি বিরাজমান। এই সকল উপত্যকার কতক অংশ সাগর জেলার অন্তর্গত। এইরপে তিনদিকে পর্বতশ্রেণীবেষ্টিত দামোহ জেলার মান ভূমি উত্তরদিকে ক্রমনিয় হইয়া চলিয়াছে; অবশেষে উত্তর সীমার ভূভাগ সহসা অবনত হওয়ায় তাহার উপর দিয় বুন্দেলথণ্ডের স্থাদ্র বিস্তীর্ণ সমতল ভূমি দৃষ্টিগোচর হয়। দক্ষিণ ও পূর্বাপ্তে পার্বত্য বন্ধুরভূমি ব্যতীত দেশায় অধিকাংশ সমতল ও উর্বার, কেবল স্থানে স্থানে তুই এইটা ছত্রভঙ্গ পাহাড় আছে। জেলার মধ্যভাগই সর্বাপেকা উর্ব্যা ভূভাগের মৃত্প্রবণতা হেতু জলনিকাশের কোন ক্তিয় না, অথচ পর্বত সকলের সচ্ছিত্রতা নিবন্ধন ভূরি পরিমাণ বৃষ্টিবারি সঞ্চিত হইরা যায় এবং ক্রমশ: উৎসূত্রপে বাহি হইয়া অধিবাসীগণের অশেষ হিতসাধন করে। ^{কেলার} স্মস্ত নদী দক্ষিণ হইতে উত্তরাভিমুখে প্রবাহিত; ত্^{নুখো} প্রধান সোনরি ও বৈরমা নদীবন্ধ বিশ্বাস, কোপ্রা, ভারাইরা প্রভৃতি উপনদীর সহিত মিশিতে মিশিতে প্রবলবেগে উর্ব সীমায় উপনীত হইয়াছে। এই স্থানে সোনার পুর্বা^{রিকে} ফিরিয়া বৈরমার সহিত মিলিত হইয়াছে এবং তংণুরে ^ঐ মিলিত নদী দামোহ হইতে বহিগত হইয়া প্ৰি^{ম্ণো কেন} নদীর সৃহিত মিলিয়া অবশেষে যমুনার পতিত হ^{ইরাছে ।} नमी ररेटल मञ्चामाजामित्क समामान्य स्विधा पाव व পর্য্যন্ত তাহার কোন বিশেষ ব্যবস্থা নাই।

পূর্বকালে বর্তমান দামোহ এবং সাগর জেলা মহোব নগরের চন্দেল রাজগণের অধীন বাহ্লিমী নগরৰ প্রতি নিটি কর্তক শাসিক চতক। তবেকটা প্রাচীন মধিরে

ভগাবশেষ ব্যতীত চন্দেল রাজগণের আর কোন কীর্ত্তি _{এখন} বিদ্যমান নাই। খৃষ্ঠীর ১০শ শভাকীর শেষভাগে চন্দেলরাজগণের অধঃপতন হইলে বুন্দেলথভের থাতোলা-বাসী গোওগণ ইহার অধিকাংশ অধিকার করে, পরে প্রায় ১৫٠٠ थृः व्यक्त विथाां वृत्मनात्रां वैतिवत वज्निः इ (मव গোগুদিগকে পরান্ত করিয়া দামোহ অধিকার করেন। हहाর পর দামোহ মুসলমানদিগের অধিকারভূকে হয়। এখনও তথায় মুসলমান শাসনকর্তাদিগের বংশধরগণ বাস করিতেছেন, কিন্ত ইহাদের সংধ্যা অত্যন্ত্ব এবং অবস্থাও তু:স্থ-ভাবাপল। মহারাষ্ট্রীয়দিগের অভ্যুত্থানকালে যেমন মুসলমান প্রভাপ থর্ম হইতে লাগিল, অমনি পারাবাসী মহাবীর রাজা চত্রশাল দামোহ ও সাগর নিজ রাজ্যভূক্ত করিয়া লইলেন। ^টহারই সম**য়ে হটা হুর্গ নির্মিত হয়। ১৭৩৩, খুঃ অকে** क्तकारात्त्र नरार मार्मार व्याक्तिमण करत्रन ; तांका इक्नान ভাষাকে বিভাজিত করিবার জন্ত পেশবার সাহাঘ্য প্রার্থনা করেন। ঐ সাহাযোর প্রতিদান হেতু ছত্তশাল নিজ রাজ্য াতন সমান অংশে বিভক্ত করিয়া ছুই ভাগ নিজ ছুই পুত্রকৈ ও এক অংশ পেশবাকে অবর্পণ করেন। বর্ত্তমান দামোহ জেলা ঐ তিন অংশেই অল্লাধিক পড়িয়াছিল। যাহা হউক, মহারাষ্ট্রীয়গণ শীঘ্রই সমস্ত রাজ্য অধিকার করিয়া ফেলিল।

তদবধি দামোহ জেলা সাগরস্থ মরাঠাশাসনকর্তার অধীনে ভিল। মরাঠাদিগের দৌরাজ্যে ইহার অনেক স্থান অরণ্যে পবিণত হয়। অবশেষে ১৮১৮ খৃষ্টাকে দামোহ ইংরাজ-দিগকে অপিত হয়। তদবধি ইহার দিন দিন শীর্দ্ধি ইইতেছে। ভূমির মূল্য বৃদ্ধি হইয়া ত্রিশ-সনি পর্য্যস্কু দরে বিজীত হইতেছে ।

হিন্দির্গের মধ্যে ব্রাহ্মণ ও ক্ষব্রিয়দিরের সংখ্যা প্রায় র হাংশ। অন্তান্ত হিন্দুলাতীরের মধ্যে কুর্মিগণই উৎকৃষ্ট কৃষক। ইহারা লিয়া এবং রাজভক্ত। অপরাপুর ক্ষমিলীবি-গণের মধ্যে লোধিগণ প্রাধান, ইহারা কৃষিকার্য্যে কুর্মিদিগের অপেকা হীন নহে, কিন্তু ইহারা বড়ই হর্দান্ত, প্রতিহিংসাগির এবং সহুজেই যে কোন বিপ্লবে যোগদান করে। ইহানের গংখ্যা সকল জাতি অপেকা অধিক। ইহারা উৎকৃষ্ট সৈন্ত, হইবার উপযুক্ত। অবশিষ্ট জাতির মধ্যে গোও, কাছি, চামার, ধীমাল, চঙাল প্রভৃতি অধিক। বস্লুমানিদিগের সংখ্যা অভ্যান, ইহারা প্রায় সকলেই স্থানিস্প্রদান্তিগর সংখ্যা অভ্যান, ইহারা প্রায় সকলেই স্থানিস্ক্রান্তিগর সংখ্যা অভ্যান, ইহারা প্রায় সকলেই স্থানিস্ক্রান্ত্র

^{এই} জেলায় দামোহ ও হটা কেবল এই ছইটী মাত্র সহরে ^{পঞ্চসহস্রাধিক লোক বাস করে।}

১৮৮১-৮২ খৃষ্টাব্দে লামোহ্ জেলার সমগ্র ২৭৯৯ বর্গ মাইল ভূমির মধ্যে কেবলমাত্র ৮১• বর্গ মাইল পরিমিত चान कृषिकार्या इहेग्राहिल, के बर्सई ७৮৪ वर्गमाहेल कृषि-कार्यााभरवाती'वनित्रा निर्क्तिष्ठे इत्र। कृषिकां छ छ त्वात्र मर्पा গোধ্য দর্কশ্রেষ্ঠ, অভাভ শভের মধ্যে তওুল ও দর্বপাদিমাল উলেথবোগ্য। কার্পাদ দামাক্ত পরিমাণে • উৎপদ্ধ হয়। প্রধান ক্রমক কুর্মিগণ প্রায় ২৫০ বৎসর পুর্বের গঙ্গা যমুনার অন্তর্বেদী হইতে আদিয়া এখানে বাস করে। ইহারা কিন্ত্ৰী কি পুরুষ সকলেই ক্ষেত্ৰে গিয়া কাল করে, এবং ইহাই ইহাদের উন্নতির মূলকারণ। কুর্ম্মিগণ শান্তি-গ্রির ও রাজভক্ত এবং বিষম দায়ে না ঠেকিলে কদার পৈতৃক ভূদম্পত্তি বিজ্ঞানি দারা হতাত্তর করে না। কুর্শিনিগের পরই লোধিগণ কৃষিকার্ব্যে বিশৈষ পটু। ইহারা প্রায় তিন শতবর্ষ পূর্বের এই জেলায় আসিয়া বাস করে। গোও-গণ পার্বত্যপ্রদেশে হীনভাবে চাষ বাদ করিয়া থাকে এবং অনেকে নিমে আসিয়া কুর্মিও লোধিদিগের শক্তকেত্রে মজুরি করে।

জেলার অধিকাংশ ব্যবসা বাণিজ্য প্রধানতঃ কুণ্ডলপুর ও বন্দকপুরের ছইটা মেলাভেই হইয়া থাকে। কুগুলপুরের মেলা চৈত্রমাসে হোলীপর্কের পরই আরম্ভ হয় এবং চুইপক্ষকাল থাকে। কুওলপুরে নেমিনাথের মন্দির নিকটে এই মেলা হয়; বহু সংখ্যক জৈন সমবেত হইয়া নেমিনাথের উপাসনা করে এবং সামাজিক বিঝাদ বিস্থাদের মীমাংসা করে। এই भीमाः माकारण व्यत्नरकत्र व्यर्थत् छ हम्र, वे व्यर्थ मिल्दित्र वाह-निर्काशर्थ ध्रमञ्ज रहेया थाटक। वन्नकशूरतत रमना माघ उ ফার্ম্বন মাসে বসস্তপঞ্মী ও শিবরাত্রি উপলক্ষে হইয়। থাকে। ঐ সময়ে নানা দিপেশ হইতে ভক্তগণ মূনস্বামনা দিদ্ধির জন্ম যাগেশর মহাদেবের নিকট মানও শুধিতে আইদে এবং গন্ধা ও নর্ম্মণা হইতে জল আনিয়া মহাদেবের মাথায় ঢালিয়া থাকে। এইরূপ পূজায় মন্দিরের বার্ষিক আর্য প্রায় ১২০০০ টাকা হয়। দামোহনিবাদী মহারাষ্ট্রীয়, পণ্ডিত নাগলী-বল্লালের পিতা ১৭৮১ খুষ্টাব্দে এই মন্দির নির্মাণ করেন। প্রবাদ এইরূপ যে, তিনি এক রাত্রি স্বপ্নে ভূগর্ডে প্রোথিত ঐ শিবলিকের বিষয় অবৃগত হন এবং স্ক্লাদেশক্রমে ঐ স্থানে মন্দির নির্দ্মিত হইলে মহাদেব আপনিই ভূমি বিদীর্ণ করিয়া উত্থিত হন। তদবধি এথানে বিস্তর যাত্রীর সমাগম हहेर्छ लाशिल। এখন প্রায় লক্ষাধিক যাত্রী সমাগত হয়। ব্তুসংখ্যক ব্যবসায়ী সভদাগর প্রভৃতি এই মেশায় আসিয়া क्रम विक्रमानि कतिमा थाकि । नानाविध वज्र, वामन, त्थनना প্রভৃতিই মেলার প্রধান বাণিল্য জবা। পূর্বাদিক্ হইতে বহু পরিষাণে বিলাতি ও দেশীয় বস্ত্র, ডামাক, পাণ, স্থপারি, নারিকেল, নানাবিধ মদলা, চিনি, গুড় প্রভৃতি এবং ধাতৃ-নির্মিত নানাবিধ বাদন এই জেলায় আমদানী হয়। পশ্চিমে রাজপুতানা হইতে লবণও আদিয়া থাকে। কিন্তু ঐ সকল জবাজাত জ্বোর মধ্যে অরই বায়িত হয়, অবিকাশেই জেলার মধ্য দিয়া খানাজরে বিক্রম জন্ত নীত হইয়া থাকে। রপ্রানীর মধ্যে গোধ্ম, ছোলা, তপুল, মৃত, কার্পাস, মোটা কাপড় ও পশুচর্ম প্রধান।

সাগর হইতে অবলপ্রের রাজপথ, সাগর হইতে জোকাই পর্যান্ত রান্তা, হটা দিয়া নাগোদ পর্যান্ত রান্তা এবং আর একটী রান্তা দামোহ দিয়া গিয়াছে। তত্তির বঞ্জারাগণ লবণবাহী বলদের পার্ল লইয়া আর হুইটা পথে এই জেলায় গ্যনাগ্যন করে।

১৮৬১ খৃটাকে দামোহ মধ্যপ্রদেশের একটা পৃথক্ জেলারণে পরিগণিত হয়। একজন মৃরোপীয় ডেপুটা কমি-সনার একজন সহকারী কমিসনার ও তহসীলদার সাহায্যে ইহার শাসনকার্য্য সম্পর করেন।

দামোহ জেলার জলবায়ু মোটের উপর স্বায়্টকর।
নশ্দণাতীরবর্তী ভূভাগ এবং উত্তর ভারত অপেক্ষা এথানে
গ্রীয়ের প্রায়্ভবি অয়। শীতকালে প্রায় সামাল্ল রৃষ্টি হয়,
রৃষ্টির পরই ভূহিনপাতাদি ঘটয়া থাকে। গড় বার্ষিক
রৃষ্টিপাত ৫৬ ইঞ্ছ।

িজেলার মধ্যে মধ্যে ওলাউঠা, বসস্ত প্রভৃতি রোগে বহুদংখাক অধিবাদীকে প্রাদ করে। • টাকাদিবার প্রথা হইয়া বসস্তের প্রাহৃত্যির অনেক কমিয়া গিয়াছে। চকু উঠা বিরল্ নহে।

উপরোক দামোহ জেলার একটা সবভিভিন্ন বা তহ-সীল। পরিমাণ ফুল ১৭৯২ বর্গনাইল। সদর সমেত ইহাতে মোট ৪টা দেওয়ানি ও ৭টা ফৌলদারী আদালত আছে।

ও উপরোক্ত দামোহ জেলার প্রধান নগর ও সদর। অক্ষাণ ২০০ ৫০ তি:, জাঘি ৭৯ ২৯ ৩০ পু:। সাগর হইতে জবল পুরের উচ্চ রাজপথ এবং সাগর হইতে জোকাই দিরা আলাহান্দ বাদ পর্যন্ত রাজপথ এই নগর দিয়া গিয়াছে। অধিবাসীর বিশ্বা ১৯৭৫০। নগরের ভিত্তি বাল্কাপ্রস্তরের উপর করে প্রি এজন্ত রৃষ্টিবারি পুক্রিণীতে সহজে স্কিত থাকে না, দামোহ সমান্থ্যাও, বেশী নহে। ফুটেরাতাল নামে একটা সমান্থ্যাও, বেশী আছে, তথাপি বিশুদ্ধ পানীর জল দামে ব্যা ক্ষিত্র স্বাক্ত প্রতি সকল হইতে তাপ্ত

বিকীরণ জক্ত দামোহ নগরের উত্তাপ বর্দ্ধিত হয়। এই নগরে উল্লেখযোগ্য মন্দিরাদি নাই। ক্ষেক্টী প্রাচীন হিন্দু দেব মন্দির ছিল, মুসলমানেরা উহা ভালিয়া ছর্গ নির্দ্ধাণ করেন, ১ হর্গের ভ্যাবশেষ মাত্র প্রাছে।

দাশপ্তির (ক্রী) দম্পরোরিদং পতাতত্তাৎ, যক্। ১ দৃশ্_{তি} দ্সন্ধনী অগ্নিহোত্রাদি। ২ দম্পতিব্রের পরস্পারের বা_{তি} প্রস্পারের ভালবাসা।

"বিস্তাকামস্ত গিরিশং দম্পত্যার্থমুমাং সতীং।" (ভাগ ২০০৮) দাম্পত্যপ্রার্থ (পুং) বিহাহিত স্ত্রীপুরুষের প্রাণা ৪ স্ত্রীর প্রস্পর অধ্বর্গ।

দান্ধালে (দেশজ) অধ্রিচিত্ত। দামাল। এই শক্ত মনে শিশুর প্রতি প্রয়োগ করা হয়। ধণা, দান্ধাল ছেলে। দান্ত্রিক পুং স্ত্রী) দন্তেন চরতীতি দন্ত-ঠক্। (চর্তি।শ ৪।৪।৮) দন্তমুক্ত, অহঙ্কত, কপটা, প্রবঞ্চক, কীর্তি প্রস্তি

"পাপরোগাভিশন্ত*চ দান্তিকো রসবিক্রয়ী।" (মহু ৩৮৫)
দায় (পুং) দা-দানে ঘঞ্, ততো বুক্ (আতো বৃক্রে কুতো:। পা ৭।৩।৩৩) > যৌতুকাদি দেয় ধন। ক্যাধানকার জামাতাকে ব্রতভিক্ষা দিতে ব্রাহ্মণাদিগকে যেধন দেওলায়। "দায়ন্ত ত্রিবিধং তবৈ শুণুমে গদতো মম।

খ্যাপনের নিমিত্ত ধর্মচারী বৈড়ালব্রতী।

यख्डार्थः ताक्रिक्तिः सहार्षः धननक्षत्रः ॥" (खात्र र स्तः) २ हत्तन, विकाशाई शिक्षानि धनः। [नात्रकाश तः।] नीक्ष् करत्र काटव चळ्। ० नत्र। त्नां-थ खटन चळ्। ३ वला ৫ दन्ता धनानि। ७ मीत्रमान धनः। १ नानः।

্অস্বামিনা কতো যন্ত দায়ো বিক্রম এব বা। অকতঃ সত্ বিজেগঃ ব্যবহারে যথা স্থিতিঃ ॥" (মস্চাজা ৮ দাতা।

দায়ক ( ত্রি ) দদাভীতি দা-ধুল্। > দাতা।
"তাবতাঃ গোসহস্রাণাং ফলং প্রাপ্রোতি দায়ক:।"
(ভারত অ)১০০০।

দো থওনে গুলু। ২ গওক। দাবেন ধনেন কার্ডি কৈ-ক। ও দাবাদ। °

দায়বস্থু (পুং) দানে বন্ধ:। ভ্ৰাতা।
দায়ভাগ (পুং) দানুত ভাগ: বা দ্বারত সম্বিভির্ভাগে ব ধনবিভাগ, পৈতৃক ধনবিভাগ, অষ্টাদশ বিবাদার্থ বি পদভেদ, সম্বিদ্ধিনাতে সম্বিদ্ধিন বিভাগ।

বঙ্গদেশে জীমৃতবাহন ক্বত দায়ভাগ বিশেষ ^{আহি।} এই গ্রন্থ ধর্মরত্বের একভাগ। জীমৃতবাহন এক এ^{ক বিয়ো} তর্ক বিতর্ক, বিশেষ বিবেচনা ও ষধাৰোগ্য প্রমা^ৰ প্রা

প্রক পরমত থপ্তন করিয়া স্থমত সংস্থাপন করিয়াছেন।
পরে এতদেশে দারনিবন্ধন আর যে সকল গ্রন্থ রিচিত
ছইয়াছে, তাহার সকলই জীমৃতবাহনের অন্ত্রামী ইইয়াছে,
সকলেই স্থমতের প্রামাণিকতা ও পোষকতা নিমিত্ত
ভাহার মত স্থরণ করিয়াছেন এবং অনেকতলে তাহান্ধ বাক্য
অবিকল উক্ত করিয়াছেন। দায়ভাগের সঙ্গে দায়ত্রবা,
প্রীক্ষা তর্কালয়ার কত্ দায়ভাগাটীকা ও দায়ক্রমসংগ্রহ
বিশেষ মান্তা। মহামহোপাধ্যায় রঘুনন্দন কত দায়ত্রম নিতায়্ত
সংক্রিপ্ত হইলেও বিশেষ উপকারী। ইহাতে প্রায়্ম সকল
বিষয়, জীমৃতবাহনের মতাম্মত তদপেক্ষা সংক্রিপ্ত বাক্যে
প্রকাশিত ইইয়াছে। কেবল কোন কোন বিষয়ে য়ঘুনন্দন
দায়ভাগ ইইতে ভিন্ন মত প্রকাশ করিয়াছেন এবং কোন
কোন স্বলে দায়ভাগের ক্রিট পূরণ করিয়াছেন। দায়ক্রমসংগ্রহ প্রীক্ষা তর্কালয়ারের মূলগ্রন্থ, এই গ্রন্থ দায়ভাগের
স্বসংগ্রহ এবং ইহার মত দায়ভাগেটীকার অনুরূপ।

রামনাথ বিদ্যাবাচক্পতি ক্বত দায়রহস্থ বা স্থৃতিরক্লাবলী বদদেশের কোন কোন স্থলে আদৃত ছিল, কিন্তু কোন বিষয়ে তাহার মত জীমৃতবাহন ও রঘুনন্দনের মত হইতে ভিন্ন, কিন্তু কোন আবশুক বিষয়ে তাহাদের ব্যবস্থাপিত মত সন্দেহজনক স্থলে দায়ভাগের বিক্লান্ধ চলে না।

দায়ভাগের কতিপয় টীকা আছে, তাহার মধ্যে শ্রীনাথ আচার্যা চূড়ামণি ক্বত টীকা অতিশয় প্রাচীন, এই টীকার মনেকস্তল শ্রীক্লঞ্চ তর্কলেকার কর্তৃক উপেক্ষিত, থণ্ডিত ও সংশোধিত হইলেও ইহা একথানি উত্তম টীকা বলিয়া স্বীকৃত চইয়াছে। অচাতচক্রবরী নামে আর একজন দায়ভাগের এক টীকা প্রস্তুত করেন, এই টীকায় তিনি অনেকভলে **इड़ामगित উল্লেখ कत्रिग्नाह्मन এবং ইনি आंफ्रियित्यक्त्र ७ এक** টীকা প্রণয়ন করেন। অচ্যুত ও চূড়ামণির পরে মহেশ্বর ভট্টাচার্য্য আর এক টীকা প্রস্তুত করেন। এই টীকা এক্রিঞ ওর্কালন্ধারের কিছু পূর্ব্ববর্ত্তী বা প্রায় তৎসনকালীন। শীক্তঞ ভর্কালন্ধার একজন প্রধান নৈয়ায়িক পণ্ডিত ছিলেন, ইনি বিশেষ বিরেবচনাপূর্ব্বক এই চীকা প্রণয়ন করিয়াছেন। এই চীকা বিশেষরূপ আদৃত ও বিখ্যাত। এই চীকা দায়ভাগ ও ^{দায়তবে}র পরেই পামাণা। র্যুনন্দন নামে আর একজন পণ্ডিত দায়ভাগের এক টীকা প্রাণয়ন করেন। কেহ কেহ · এই রঘুনলনকে স্মৃতিসংগ্রহকন্তা রঘুনলন বলিয়া নির্দেশ করেন, কিন্তু ইহা ভ্রমাত্মক, কারণ স্মার্ত রঘুনন্দন এরূপ অকর্মণা টীকা লিখিয়াছেন, তাহা কোন ক্রমেই সম্ভব হইতে পারে না। কোন পণ্ডিত এই টীকা বিশেষ আাদৃত ছইবে বলিয়া রঘুনন্দনের নামে প্রচার করিয়াছিলেন।
দায়রহস্তকর্ত্তা রামনাথ বিদ্যাবাচস্পতি একথানি টীকা করিয়াছেন। কানীরাম 'ভট্টাচার্য্য নামে একলন পণ্ডিত দায়তব্বের এক টীকা প্রস্তুত করেন। এই টীকার আনেকত্বল
দার্যভাগটীকার সহিত প্রায় একসত।

দারশাক্তের মত পরস্পার ভিন্ন হইলেও ভিন্ন ভিন্ন দেশে ভিন্ন ভিন্ন নিবদ্ধকারী দৈগের মত প্রচলিত। গৌড় অর্থাৎ বঙ্গদেশে ধর্মারত্ব অর্থাৎ দারভাগ, প্রীকৃষ্ণ তর্কালকার ও প্রীনাথ আচার্য্য চূড়ামণিকৃত দারভাগটীকা, স্মতিভব, দারতব্ব, বিবাদাব্বদেতু, বিবাদদারাণ্য ও বিবাদভঙ্গাণ্য এই সকল গ্রন্থ আদৃত এবং ইহাদের মতাকুসারে বঙ্গদেশে দায়বিষয়ক সকল বিচার নিস্পত্তি হইয়া থাকে। মিথিশা অঞ্চলে মিতাক্ষরা, বিবাদক্রিয়াকর, বিবাদচিস্কামণি, ব্যবহারচিস্তামণি, বৈতপরিশিষ্ট, বিবাদচন্ত্র, স্মতিদারসমূচ্চর ও মদনপারিজাত প্রভৃতির মত প্রচলিত।

কানী প্রদেশে মিতাক্ষরা, বীরমিজোদয়, মাধবীয়, বিবাদ-তাগুব⁹ও নির্থাদিদ্ধ এই সকল গ্রন্থের মত প্রচলিত।

মহারাষ্ট্রপ্রদেশে মিতাক্রা, ময়ুণ, নির্গদিক্, হেমাজি, স্মৃতিকৌস্তভ ও মাধ্বীয় ইহাদের মত চলিত।

জাবিড় প্রদেশের জাবিড় ও কর্ণাটকভাগে মিতাক্ষরা, মাধ্বীয় ও সরস্বতীবিলাস এবং অন্ধৃভাগে মিতাক্ষরা, মাধ্বীয়, স্বৃতিচক্তিকা ও সরস্বতীবিলাসের মত প্রচলিত!

মিতাক্ষরা গ্রন্থ কানা প্রদেশে প্রচলিত মতের সংস্থাপক এবং অভাভ নিবন্ধ গ্রন্থ হইতে অনেক সংশে প্রামাণ্য। কাণীপ্রদেশ হইতে ভারতবর্ষীয় অন্তরীপের দক্ষিণ সীমা প্র্যান্ত মিতাক্ষরা আদৃত এবং এই গ্রন্থ প্রধান নিবন্ধ বলিয়া গণ্য ও বিশেষ মান্ত। এই দেশে প্রচলিত অন্তান্ত গ্রন্থনিচয় দকল বিষয়েই প্রায় মিতাক্রার অহমত এবং ঐ স্ক্**ল** গ্রন্থে মিতাফারার উক্তি প্রমাণস্করণ ধৃত হইয়াছে। কেবল কোন কোন স্থলে মিতাক্ষরার অলিথিত অথবা বিরুদ্ধ মত লিখিত হইয়াছে, ইংা মিতাক্ষরার লোব ধরিবার জন্ত বা উহার মত থণ্ডন করিবার জন্ম নহে—তৎপ্রতি সন্মানপুর্বাক স্বমত ব্যক্ত করিবার জ্ঞা এইরূপ ভাবে লিথিত। এইরপ মতদম্হের বিশেষ মতের বাবহার ও তত্তং মতঃ প্রকাশক গ্রন্থের বিশেষ আদর করার ভিন্ন ভিন্ন প্রেদেশে বিশেষ বিশেষ বিষয়ে কানী হইতে বিভিন্ন মত দৃষ্ট হয়। কানী প্রদেশে পরাশরমাধব, ব্যবহারমাধব, মিত্রমিশ্রকত বীবনিতোদয়, বীরেশব ভট্ট ও বালম্ভট্ট প্রণীত মিতাকরা টীকাৰ্য এবং ক্মলাক্র ক্বত বিবাদতাগুৰ

মিতাক্ষরার সহিত বিশেষ আদৃত ও ব্যবহৃত। ঐ প্রাদেশ ঐ সকল পুস্তকের মতাস্থারে দায়বিভাগ সম্পার হইরা থাকে।
'ভারতবর্ষ ইংরাজরাজের শাসনাধীন হওয়াবিধ পাংস্কৃতে
তিনথানি নিবন্ধ প্রস্তুত ইইয়াছে, প্রথমে বিবাদার্থবসেতৃ ওয়ারেন্ হেষ্টিংস্ সাহহবের অমুজ্ঞাক্রমে বিরচিত হয়।
পরে লর্ড কর্ণঞ্জালিসের সময় আর হইথানি বিরচিত
হয়, তল্মধ্যে বিবাদসারাণ্য ও বিবাদভঙ্গাণ্য নামে ছইখানি। ইহার প্রথমথানি মিথিলাবাসী স্মার্ড সর্কোক্র
তিবেদী কর্তৃক লিখিত, বিতীয়্থানি ত্রিবেণীনিবাসী জগঙ্গাথতর্কপঞ্চানন কর্তৃক সংগৃহীত। কিন্তু এই উভর প্রস্তুই
সের্ উইলিয়ম জোলা সাহেবের আদেশ ও উপদেশাস্থসারে
রচিত হইয়াছে।

দায়বিভাগের বিষয় দায়ভাগে এইরূপ লিখিত আছে, পুত্র সকল পিতৃধনের যে বিভাগ করেন, তাহার নাম দায় ভাগ, এই বিভাগ ব্যাপারু যে ধনে হইয়া থাকে, সেই ধনকে ঋষিরা বিবাদপদ বলিয়াছেন, অর্থাৎ এই ধন লইয়া নানাপ্রকার বিবাদ উপস্থিত হয়।

"বিভাগোহর্বস্থা পিত্রাস্থা পুতৈত্ব্বত প্রকরাতে। দয়িলাগ ইতি প্রোক্তং তরিবাদপদং বুদৈঃ॥" ( দায়ভাগ)

পিতৃ হইতে আগত ধনের নাম পিতাধন, পিতার মরণোত্তর সেই পিতাধনকে পুত্রস্বত্ব বলা ষায়। পিতা ও পুত্র এই তুইটা পদ উপলক্ষ মাত্র, ইহা ছারা সম্পর্কীয় সমস্ত অধিকারীকে বুঝায়। কেননা সম্পর্ক মাত্রেই সমস্ত সম্পর্কীরের ধনবিভাগেও দায়ভাগপদ প্রয়োগ আছে। এইজন্ম দায়ভাগ বিবাদপদ উপক্রম করিয়া মাতৃপ্রভৃতিরও ধন বিভাগ নির্দিষ্ট হইয়াছে। 'দীয়ত ইতি বাংপত্তাা দায়শব্দা, দদাতি প্রয়োগশ্চ গৌণঃ।' দান করে যাহা এই বাংপত্তিতে দায় শিক্ষ নিম্পন্ন হইয়াছে, কিন্তু মৃতাদি ধনে তাহা ঘটে না, স্বতরাং দাধাতু প্রয়োগ গৌণ, লক্ষণা শক্তি ছারা যেমন দানাধীন স্বত্বাশ ও পরস্বত্বাংপত্তি জ্বন্মে, তেমনি মরিলে বা পতিত হইকে কিংবা স্বান্ধীর স্বত্ব করেলে তদ্ধনে তাহার স্বত্ব নির্ভি হইয়া পুত্রাদির স্বত্ব জ্বন্ম।

পূর্ব্বামীর অভ্নাশ হইলে পর তৎসন্ধানাধীন যে জবো অভ হয়, সেই ধনে দায় শষ্টী প্রসিদ্ধ। প্রথমে দায় নিজ-পণ করিয়া তাহার বিভাগ নিজপণ করা প্রয়োজন। প্রথম দেখা উচিত, দায়ের বিভাগ, কি অবয়বের বিভাগ, কিংবা দায়ের সহিত বিভাগ, এই সকল পক্ষের কোন্পক্ষ শ্রেষ্ঠ, প্রথম পক্ষকে শ্রেষ্ঠ বলা যায় না, কেন না ভাহা হইলে দায় বিনাশ পায়, দ্বিভীয় পক্ষও ঘটে না, সংযুক্ত জবো ও ইহা আমার নহে, ইহা আমার ভাতার বিভক্ত ধন, এইরপ ব্যবহার হইয়া থাকে। সম্বন্ধের বিশেষ নাই এইরপ সামৃ দায়িক অন্থ জারিলে পর এ অন্তের জব্য বিশেবে বে ব্যবস্থাপন তাহার নাম বিভাগ, ইহাও বলিতে পার না। এক সম্বন্ধ একের সামুলায়িক অন্থ জ্বাইয়া দিতে গেলে আন এক তুল্যবলস্থন্ধ তাহার প্রতিবন্ধক হয়, স্বতরাং তাহা না পারিয়া এইকক অংশ অন্থ জ্বাময়া দেয়, পরে বিভাগই তাহার ব্যঞ্জক জানিবে। আর সমগ্র পিছ-ধনে সকল প্রের সামুলায়িক অন্তের উৎপত্তি প্রবিনাশ-কল্পনায় কেবল গৌরব মাত্র।

' ভূমি, স্থবৰ্ণ প্ৰভৃতি ধৃনে একদেশোপাত অৰ্থাৎ তত্তদংশে উৎপন্ন অন্তের এই দ্রবা অমুকের, ইহা অমুকের
নহে, এইরূপ অবধারণ অবিভক্তাবস্থায় না থাকায় হৈশেধিক ব্যবহারের অনুপ্যুক্ততা বিধায় থাকা না থাকায় ভূল।
আংশিক অন্তের গুটিকাপাতাদি বারা যে ব্যক্তীকরণ, তাহাকে
বিভাগ বলা যায় অথবা বিভাগ খন্দের যৌগীক অর্থ এই ফে
বিশেষক্রপে ভাগ অর্থাৎ অন্ত জ্ঞাপন, ইহার নাম বিভাগ।

পিতার মৃত্যুর পর পুত্রেরা ধনবিভাগ করিয়া লইবে, এই কথা বলায় বিভাগের পূর্বে তাহাতে তাহাদের স্বন্ধ নাই বোধ হয়, এবং বিভাগকেও স্বন্ধের কারণ বলা য়য় না। কারণ উদাদীন ব্যক্তি, অসম্পর্কীয়ের ধন, ঋটিকাপাতারি ছারা বিভাগ করিয়া লইলে স্বন্ধবান্ হইতে পারে, তাহাও অসঙ্গত, এইজভ এইরূপ সিদ্ধান্ত হইয়াছে, পিত্রাদির মৃত্যুর পরই এই ধন আমাদের এইরূপ পুত্রগণ ব্যবহার করিয় থাকে এবং একপুত্রাদি স্থলে বিনা বিভাগই স্ক্ হইয় থাকে, তথন পিত্রাদির মরণই পুত্র প্রভৃত্তির স্বন্ধের প্রাতি কারণ, ইহাতে পূর্বেজিত কোনক্রণ অসক্তি ছটে লা।

পূর্বস্থানীর নরণকালে উত্তরাধিকারীর জীবনই তংশিত্বর প্রতি কারণ। জীবন পদে সন্থানের গর্ভপ্রবিশ্বরি ব্যার্থী, কেবল গর্ভপ্রের ভূমিন্ট হওয়া অপেকা থাকে। উপার্জ্জকের উপার্জ্জন ব্যাপারকে অর্জ্জন বলে, এই অর্জ্জন হারা যে উপার্জ্জিত ধনের স্থামী হয়, তাহার নাম অর্জ্জক, এজন্ম উত্তরাধিকারিতা হলে পুত্রের, লাই অর্জ্জন পদবাচ্য, ইহাতে পিতার জীবক্ষপাতেই পুত্রের পিতৃধনে যেত হউক না কেন, ইহা বলিলে পিত্রাধিক মরণাপেকা নাই। এইজন্ম কোন কোন গ্রন্থের ক্ষিত্র হট্ট রাছে, জন্মই অর্জ্জন, যেরূপ পিতৃধন পুত্রের, ইহা বলিলে মহু প্রভৃতি স্থৃতিশান্তের সহিত বিরোধ ক্ষেত্র। ময় বলিয়াছেন, পিতা ও মাতার মরণান্তর পুত্রেরা একত্র হট্ড

_{পৈতকধন} সমান করিয়া ভাগ করিয়া লইবেন, পিতা-মাতার জীবদশার পুজেরা বিভাগ করিতে পারে না। পিতা-_{মাতা} জীবিত থাকিতে পুত্রগণের বিভাগ হয় না। পত্নী, পুত্র ও ক্রীতদাস এই তিনধন অধন বলিয়া উক্ত আছে। ইহারা যাহা, উপার্জ্জন করে,, তাহারই সেই ধন হয়। দিছাত হইল যে পিতা ও মাতা জীবিত থাকিলে পুত্ৰ-গণের স্থামিত জন্মে না। কিন্ত লোকান্তরগত হইলে দামিত্ব হয়। মৃত্যুপদে কেবল মরণমাত্র বিবক্ষিত নহে, কিন্তু পুতিতত্ব প্রবিশিত্তাক্ষির বোধুক, যেহেতু ত্বত্ব বিনা-শক রূপে কি মরণ, কি পাতিভা, কি সর্যাস সকলই সমান। নারদ বচনাত্মারে মাতার রজোনিবৃত্তি হইলে ও ভগিনী সকল পাত্রসাৎ করা হইলে পর, পিতা পতিত হইলে বা গৃহস্থাশ্রম রহিত হইলে স্থাপবা একেবারে বিষয় বিরক্ত হইলে পর পুত্রেরা পিতৃধন ভাগ করিয়া লইবে। তক্মধো পতিতের সর্বাস্থ দানাদি প্রায়শ্চিত্তশাস্ত্রে বিহিত থাকায় প্রায়ন্চিত্তবিমুখ পিতার প্রাতিতাই স্বন্ধবিনাশক। কিন্ত প্রায়শ্চিত্ত প্রবৃত্তি থাকিলে স্বন্ধ নাশ হইবে না।

"মাতৃনিরতে রজনি দতাক ভগিনীযুচ। বিনটে বাপশরণে পিতযুগিরতম্পৃহে॥" (দায়ভাগ)

পিতার মৃত্যুর পর জ্যেষ্ঠই সর্বধনাধিকারী হইবে, অভেরা অধিকারী নহে, এরূপ ব্যবস্থা না হইবার কারণ কি ? বেহেতু মহ বলিয়াছেন, জ্যেষ্ঠই সমস্ত পিতৃধন পাইবে, অবশিষ্ঠ ভাতৃগণ পিতৃবৎ সেই জ্যেষ্ঠের অফ্লীবী হইবে।

"জ্যেষ্ঠ এবতু গৃহীয়াৎ পিতাং ধনমশেষতঃ।

শেষাঠ পুণুজীবের্ষ্বিধব পিতরং তথা॥" (দায়ভাগু,)

এই বচনের জোষ্ঠণদে পিতার প্রাম-নরকনিবর্ত্তক প্রই অভিপ্রেপ্ত, বর্ত্তমান জীবিতদিগের মধ্যে জোষ্ঠ নহে, যে হেত্ মহ্বচনে অন্তহ্নত স্পট্ট উক্ত আছে। জোষ্ঠ জাতমাত্রে মানব প্রবান এবং পিতৃলোকের ঋণ হইতে মুক্ত হয়, সেই হেত্ জোষ্ঠ পিতৃধন লাভ করিবার বোগ্য ও যাহাতে ঋণশোঁধ ও বছারা অর্গের আননস্ভালাভ হয়, সেই জোষ্ঠই ধর্মাঞ্জ প্র, অন্ত প্রদিগুকে কামজ বিশ্বা ব্যাথ্যা করেন। ইহার ভাষপুর্ব প্রক্রপ নহে, কায়ণ সকলের ইচ্ছাধীনই জ্যেষ্ঠাধিকার শ্রুত হয়, জোষ্ঠলাতা পিতার ভায় অন্তগত সকল লাভাকে ভরণপোঁষণ করিবেন, তিনি যদি অসমর্থ হল, এবং ক্রিষ্ঠ ঘদি শক্ত হয়, ভাছা হইলে সেই কর্ত্তা হইবে। সংসার প্রভৃতির রক্ষণাবেক্ষণ-ক্রমতাসাপ্রেক্ষ কনিষ্ঠ ক্ষমতাবান্ ইইনে সকলের ইচ্ছাধীন সেই কনিষ্ঠই সকলের ভরণ-পোষণ করিবে। এল্লপ্ত জোর্ডছ সকল ধনাধিকারের

दिष्ट्वांध इत्र ना, कातन असू खा खात अक वहत्त वित्रा
हिन त्य, खाष्ट्रान मिनिङ हरेग्राहे वान कक्रक वा धर्म
त्रिक्क कामनाम भूशक्रें अत्मि वाज कक्रक, हेश हेष्कांत्र खेनत्र

निर्धित कर्ता, हेड्यामि कांत्रण त्याक्षं खांछा नकन धनाधिकाती

ना हरेग्रा नकन खांछा छून्याः नक्तरण विखांग कित्रत्रा नहेत्।

धरेकार्म भिजात चष्नाम कांन क्रकी, खात विखांगत्र कांन

खात किछी, भिजात चष्नाम ना हरेत्म भिजात हेष्क्रिमीन

विखान हम् । करेक्रम भिज्यन विखारंगत छ्रेष्ठी कांन, भिजात

मत्रभाखत कर्षी ७ भिजात विषय देवनाम अ माजात तर्मानित्रिक्ष

ना हरेत्म भत्र खात कर्षी। माजात तर्मानित्रिक्ष

ना हरेत्म क्रां भिजा विषयास्त्रक थाकित्मक उत्कानित्रिक्ष

हरेग्राह्म, जांश चानत्रनीम नह्यं। कांत्रण माजात तर्मानित्रिक्ष

हरेग्राह्म, जांश चानत्रनीम नह्यं। कांत्रण माजात तर्मानित्रिक

কেহ কেহ বলেন, বাৰ্দ্ধকাপ্ৰযুক্ত পিতা কাৰ্য্যাক্ষম হইলে পুত্রদের পিতৃধনবিভাগে ক্ষমতা জ্বমে, কিন্তু এই বচনের এরূপ অভিপ্রায় নহে, পিতা জীবিত থাকিলে পিতৃধনের গ্রহণ বা দান কিংবা গচ্ছিত কেরা কিছুতেই পুত্তের ক্ষমতা নাই। পিতা অত্যম্ভ বৃদ্ধ বা প্রবাদী কিংবা স্লেগগ্রস্ত হইলে পর পৈতৃক অর্থ চিস্তা করিবে অর্থাৎ ধনাদি ব্যব-হার কার্য্য নির্বাহ করিবে। অথবা তাহার অনুমতিক্রমে কার্য্যদক্ষ অশুপুত্রও সকল কার্য্য নির্বাহ করিতে পারে। কিন্তু পিতা বৃদ্ধ বা উন্মন্তই হউন কিংবা অত্যন্ত রোগগ্রন্তই হউন, জোটপুত্রই পিতার ভাষ অপর ভাতার অর্থ পালন कतिरवन, किन्न जारा विनिधा विज्ञां कतिराज शांतिरवन ना এবং তাহার বিভাগ করিবার ক্ষমতাও নাই। ধন-বিভাগের ছইটী কালই যুক্তিযুক্ত বলিয়া স্বীক্লত হইল, একটা পিতার মৃত্যু ও আর একটা তাঁহার ইচ্ছা। তিনি ইচ্ছা করিলে যে কোন সময়ে পুত্রদিগঁকে ধনবিভাগ করিয়া দিয়া যাইতে পারেন। পিতামাতার মরণাশুর পুত্তের। পিভূধন বিভাগ করিয়া শইবে, গার্হীয় আশ্রম ধন ভিন্ন চলে না, এই কারণই প্রেরা পিতামাতার জীবদ্দায় স্বাধীন হইতে পারে না। সকলে ইচ্ছাক্রমে বায় করিলেও সমগ্র ধনক্ষ পাইলে গৃহস্থাশ্রম চলেনা, এইজ্ঞ পিতামাতার জীবন থাকিতে পুত্রেরা স্বাধীন হইতে পারেনা। অতএব পিতামাতার জীবদ্দশায় পুত্রগণের একত সহবাদ বিধেয়। ঐ উভয়ের মৃত্যুর পর তাহারা বিভক্ত হইলে পৃথক্ পৃথক্রপে ধর্ম কর্ম্ম বৃদ্ধি পায়। এই জন্ম জীবৎপিতৃমাতৃকের বিভাগ নিবিদ্ধ হইয়াছে ৷ এই বিভাগ পুত্র, পৌত্র ও প্রপৌত্রের

সমান জানিতে হইবে। বেছেতৃ পুত্র, মৃতপিতৃক পৌত্র ও
মৃতপিতৃক শিতামাতাকে প্রপৌত্র এই ভিনেরই পার্ক্ণাবিকারে ধনিপিও ও ধনিভোগ্য পিওবর দানের কোঁন বিশেষ
নাই, বেমন পক্ষিগণ অখথবৃক্ষবাদের আশা করে, দেইরূপ
পিতা পিতামহ ও প্রপিতামহ ইহারা জাতসন্তানকে উপাসনা
করেন ও আশা করিয়া থাকেন, বে, এই সন্তান মধু. মাংস,
শাক, তৃথা ও পারস বারা বর্ধার নবোদকোপনক্ষে এবং
মুবার আমাদিগকে প্রাদ্ধ করিবে।

"পিতা পিতামহদৈতৰ তবৈৰ প্ৰপিতামহ:।

জাতঃ পুত্ৰং প্ৰদাংসন্তি পিপ্লবং শকুনা ইব।

মধুমাংসেন থজোন প্ৰসা পাদসেন বা।

এব দাহুতি ন স্থৃপ্তিং ব্ৰাষ্ট্ৰ মধাস্থ চ॥" (দাৰ্মভাগ)

এই বচনে প্রণিতামহগ্রহণহেতু প্রপদ প্রণৌত পর্যান্ত লাক্ষণিক বিধার, প্রপিতামহের পর্যান্ত পার্বণপ্রান্তকারী বলিয়া প্রণৌত পর্যান্তের তুল্য ধনাধিকার। এমস্ত মীবং-পিতৃক পৌত্র ও প্রপৌত্রের পার্ক্ষণে অনধিকার প্রযুক্ত পিশু প্রদান না করায় দায়াধিকার হইবে না।

তাহাদের পিতৃপ্রাপ্ত ভাগই উত্তরকালে তাহাদের হইবে। আরি যে স্লে এক পুত্র বিশ্বমান ও আর এক পুত্রের কতক-খুলি পুত্র আছে, সে হলে সেই পুত্রের এক ভাগ আর একভাগ মাত্র সেই সকল পৌত্র ভাগ করিয়া লইবে। তাহার কারণ এই যে, পিতামহ ধন সম্বন্ধের মূলকারণ, স্ব পিতৃধীন জন্ম, স্বতরাং সেই পিতার বতটুকু ধনস্বামিত্ব ষোগাতা ছিল, তত ধনেই তাহাদের সকলে মিলিয়া অধিকারী হইবে। আর যে 'অনেক পিতৃকানা'র পিতৃতো ভাগকরনা' এই বচনের অভিপায় এরপ নছে, এস্থলে যদি এক বচনের প্রয়োগ করা যায়, তাহা পিভূব্যের পিতারই সেই সরুল ধন ছিল বলিয়। পিতৃব্যেরই সকল হইতে পারে, ভ্রাতৃপুত্তের কিছু ়নাত হয় না। আনর 'পিতৃতো ভাগকরনা' এই বাক্যের পিতা পুত্রবৎ ভাগব্যবভা অবর্থ করিলে যেমন পিতার ভাগব্র প্রাপ্তি হয়, সেইরূপ পৈতৃবোর ছুইভাগ ও তদ্লাভূপুত্রদের এক এক ভাগৃহয়, ইহাও কিন্তু শিষ্টাচারবিকৃদ্ধ। অতএব যেখানে এক লাতার অল্লমংখ্যক পুত্র ও অপর ভাতার অনেকগুলি পুত্র, সেহলেও পিত্রহুসারে ভাগ করনা করিবে। সিদ্ধান্ত _ইইল যে, পৈতৃক ধন বি**ভাগে প্ৰবৃত্ত হইলে সক**ল পুত্রেরা তুল্যাংশে বিভাগ করিয়া লইবে; ন্নাধিক করিবে না।

যাজ্ঞবন্ধ্য বলিয়াছেন, পিতামাতার মরণে পৈতৃক ধন ও ৰণ প্তেরা সমান ভাগ ক্রিয়া লইবে। পিতার মরণান্তর সহোদর প্রতারা পিতৃধন বিভাগে প্রবৃত্ত হইলে মাতাকে পুঞা সমানাংশ দিবে। কিছু সংহাদর ও বৈমাত্রের উভরক্ত বিভাগেছলে দিবে না। 'স্মাংশ হারিণীমাতা' ইত্যাদি বচনে মাতৃপদের মুখ্যার্থ খননী, বিমাতা নহে।

থদি মাতার ভর্ত ও শশুরাদি দত্ত কিছু ত্রীধন না থাকে, তাহা হইলে প্রের সমানাংশ প্রাপ্য। আর যদি ত্রীধন প্রবৃদ্ধ হইয়া থাকে, তাহা হইলে অর্নমাত্র প্রাপ্য, ইহা প্রমাণ্ডির ব্রিতে হইবে। বেছলে পিতা প্রগণকে সমান ভাগ দেন, সেহলে প্রহীনা সকল ত্রীকেই ত্রীধন না থাকিলে প্র সমানাংশ দিবেন। বচন বিশেষে ইহাই প্রমাণিত হইয়াছে, বে পিতা প্রহীনা পত্রীদিগকে প্র সমতাগিনী করিবেন। কির্প্রবৃত্তীদিগকে নহে। পিতামহ ধনবিভাগকালে পৌরের প্রহীনা পিতামহীকে সমানাংশ দিবেন, কারণ শাত্রে পিতাম মাতার তুল্যা বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে।

অবিবাহিতা কলা বিবাহখোগা ধন পাঁয়। কেহ (का বলেন, অবিবাহিতা কল্পা ভ্রাত্ভাগের চতুর্বাংশ পাইবে "সমাংশামাতরত্বেষাং ভুরীয়াংশাশ্চ কল্পকা:।" (বৃহস্পতি এই বচনাত্রদারে মাতা তুলাংশ ও ক্ঞা চতুর্থংশভাগিনী হুইবে। অর্থাৎ পুত্রের তিনভাগ এবং অবিবাহিতা ক্যা একভাগ, কিন্তু স্বল্লধন স্থলে পুত্রগণের স্বামিত, অর্থাং পুত্রেরাই সমগ্রভাগ করিয়া লইয়া আপন আপন ভাগ হইছে किकि किक वाकर्ग कतिया क्यादी क ठ वृशीः म निरत् অর্থাৎ ভ্রাতারা অসংস্কৃতা ভগিনীদিগকেও নিজ অংশ হইছে চতুর্থাংশ দিয়া সংস্কার কর্ম করিবে। এই বালো তাৎপর্য এইরূপ—ভূগিনীদিগের সংস্কারকর্ত্তব্যতাই নিধিত **হ্**ইয়াছে, অধিকারিতার কথা নাই। বছতীর ধন ^{ছবে} ভগিনীকে তদীয় বিবাহযোগ্য ধনই দিবৈ, দেন নির্দিষ্ট অংশ, দিবার ব্যবস্থা নাই। সকল স্থলে চতুর্থাণে নিয়ম করিলে **ঘেখানে চারি পাঁচ পুত্র ও ক**লা এ^ইট সেইখানে ক্সার বহুতর প্রাপ্তি হয়, আমার যেখানে চারিটী কুমারী ও একটী পুত্র, পেই স্থলে পুত্রের সুবই যার, ভাগ উচিত নহে, যেহেতু পুত্রেরই প্রাধান্ত। এই সক্রুঞ্^{রাণ} ভগিনী কোন নিৰ্দিষ্ট অংশ না_নপাইয়া ছাহার ^{বিবাং} যোগ্য দন ভাহাকে দিতে হইবে। অবিৰাহিতা ভগিনী^{দিগ্ৰ} अञ्चली हरेवात शृर्व्यरे लाहारमत विवाह मिरल हरे(वहे, हें। অবশ্য কর্ত্তব্যের মধ্যে গণ্য। এইজয় অংশাদির ^{কোন} विराभव निषम नारे, किछ के मश्यात कार्या विश्व मर्स्व हो হয়, ভাহাও দোবাবহ নহে।

দ্রীধন-বিভাগ।—প্রথমতঃ জীধন নিশ্নপণ করিতে हहेरव। विकृतनास्मारत शिष्ट्रमख, माष्ट्रमख, भूजमख, লাত্দত্ত, অধ্যাপুপাগত অর্থাৎ যৌতুকধন, অধিবেদন লব্ব, মাতৃলাদি দত্ত, শুক্ষ ও অহাবেয় এই গুলি স্ত্রীধন। বিবা-হের পর ভৃতৃকুল ও পিতৃমাতৃকুল হইতে এবং ভর্কা ও পিতামাতার নিকট হইতে জীলোক বেধন প্রাপ্ত হয়, সেই ধনকে অম্বাধেয় ধন কছে এবং পিতাও মাতার সম্পর্কে সম্পর্কীয়দিগের নিকট ও পিতামাতার নিকট বিবাহের পর ষাহা প্রাপ্ত হয় এবং ভর্তার নিকট ও ভর্তৃক্ল অর্থাৎ খশু-वाति इटेट याहा नंस हम, छाहात नाम ३ व्यवारभम्। विवाह সময় লব্ধ যৌতুক ধনে সন্তানসন্তুতির অভাবে ভর্তার অধি-कातः नातम अधाधि, अधाधारिनक, छईमछ, लाज्मछ, পিড়ও মাতৃদত্ত এই ছয় প্রকার ধন জীধন ৰশিয়াছেন। विवाहकारण व्यथि मिल्लिशारिक खीरणांकरक याहाँ मान कता ষায়, তাহাই অবাধিনামক স্ত্রীধন। ক্সাকে যথন পিত্রালয় হইতে পতিগৃহে লইয়া ধায়, তথন ঐ কলা পিতৃকুল ও মাতৃকুণ হইতে যাহা প্রাপ্ত হয়, তাহাকে অধ্যাবাহনিক श्वीधन करह । ভर्जुनाय भरक ভर्जुनख धन त्याय, সংক্রাস্ত धन বুঝায় না। পতির মৃত্যু হইলে স্ত্রী ইত্ছারুদারে ভর্তুদায় বায় করিবে। কিন্তুপতি বিঅমানে মুক্তহন্ত হইয়া বায় করিতে পারিবে না।

যাজবদ্ধা বলেন, পিতৃদত্ত, মাতৃদত্ত, পতিদত্ত, ভাতৃদত্ত, অবাগ্যাপাগত ও আধিবেদনিক এই ছয়টা স্ত্রীবন। বিতীয়পক্ষে বিবাহ করিবার নিমিত্ত স্থামী প্রথম স্ত্রীকে য়াহা পারি-তোষিক দেন, তাহার নাম আধিবেদনিক। (অবিবেদ্ন শব্দের অর্থ অধিক বিবাহ তত্ত্পলক্ষে যাহা দত্ত, এই ব্যুৎপত্তিতে আধিবেদনিক শব্দ নিজ্ঞার।) বৃত্তি অর্থাৎ প্রাসাচ্ছাদনাবশিষ্ঠ বন, অবঁহার, শুক ও স্থদ এই সকল স্ত্রীধন। স্ত্রী ইচ্ছামুসারে এই সকল ধনের দানবিক্রয়াদি করিতে পারের। স্ত্রীধনের প্রকৃত লক্ষণ এই—স্ত্রীলোক ভর্তার কোন অপেক্ষা না করিয়া স্বয়ং যে ধন দান বিক্রয় ও ভোগ করিতে পারে, সেই ধনকে স্ত্রীধন বলা যায়।

ত্তীলোক শিল্পকর্ম করিয়া যাহা প্রাপ্ত হয়, পিত্মাতৃ ও ভর্তুক্ল ভিন্ন অন্ত কোন ব্যক্তির নিকট হইতে যাহা লব হয়, তাহাও স্ত্রীখন। কাত্যায়ন ঋষি বুলিয়াছেন, যথাবিবা-হিতা, বা কুমারী হউক, অথবা পতির গৃহে বা ভর্তার নিকটেই হউক যাহা প্রাপ্ত হয়, তাহাকে সৌলায়িক নামক স্ত্রীখন কহে, এই সৌলায়িক খনে স্ত্রীলোকের সম্পূর্ণ প্রভুত্ব আছে। ভর্তা যদি ভ্রিকাদি সহুটে পুড়িয়া স্ত্রীখন গ্রহণ না

ক্রিয়া অন্ত কোন প্রকারে জীবিকানির্বাহ করিতে সমর্থ না हन, जाहा रहेरन जीपन नहेरड পाরিবেন। अञ्चला পারিবেন না। ছভিক্স সময়ে, আনভাক ধর্মকার্য্যে ও রোগঞ্জ হইলে এবং+উত্তমৰ্থণ আদায় জন্ত কারারোধ করিলে পর খামী বিপদ্গ্রন্ত হইরাবে স্ত্রীধন গ্রহণ করেন, ভাহা পুনর্কার স্ত্রীকে না দিলেও দিতে পারেন। কিন্ত পুর্ব্বোক্ত ছুৰ্ঘটনা ব্যতীত যদি গ্ৰহণ কঁরেন, তাহা হইলে পরে ভাহাকে **এই धन পরিশোধ করিতে হইবে, অক্তপা রাজার নিকট দণ্ড**-নীয় হইবেন। স্বামী স্ত্রীধন লইয়া যদি অন্তন্ত্রীর সহিত বাস করেন এবং পূর্বস্ত্রীকে অবজ্ঞা করেন, তাহা হইলে রাজা **जारात्र निक**ष्ठे रहेरा वनश्का क्षेपन नहेन्ना क्षोरक'रम अन्नेह-रतन। अपननी পরলোকগভা হইলে সংহাদর লাভুগণ এবং ভগিনীরা সকলে মিলিয়া মাতার অযৌতুক ধন সমান ভাগ कतियां गरेटव । श्वीधान उमीय व्यापठामित्यत्र व्याधिकात्, कञ्चा অবিবাহিতা হইলে দেও অংশভাগিনী হইবে। কিন্তু বিবাহিতা হইলে আর মাতার অঘৌতুক ধন পুঁত্র থাকিতে পাইবে না।

দারাধিকারক্রম। অথকারণ।—পূর্বে আমীর মরণকালে উত্তরাধিকারীর জীবনই তৎস্বত্বের প্রতি কারণ, এই ছলে জীবন অর্থে গভাবস্থাও ব্ঝায়, কেবল গভিঙ্গের ভূমিষ্ঠ হুওলনর অপেকাথাকে মাত্র। গভিত্ব ভূমিষ্ঠ হইলে তাহার প্রাপ্য যে . ধন, তাহা তাহার বন্ধু বা মিত্রের হত্তে হাত থাকিবে।

উদ্দেশরহিত ব্যক্তির ( যাহার কোনরূপ উদ্দেশ পাওরা যায় না ) এবম্বিধ লোকের দাদশ বৎসর গতে তাহার ধনে ততুত্তরাধিকারীর স্বত্ব হয়।

মরণণাক্তিতা, আশ্রমান্তর গমন এবং উপেকা ধারা ধনীর ব্রন্থনাশ হইলে তর্জনে পুত্রের অধিকার। ঔরসপুত্র জান্মবার পূর্বের গৃহীত দত্তক ঔরসপুত্রের সহিত বিষয়- ভাগী। সকল ঔরসপুত্র পিতৃধন তুলার্গ্রণে বিভাগ করিয়া লইবেন। জ্যেষ্ঠপুত্র অধিক ধন লইতে পারিবেন না। পুত্রাভাবে পোত্রের ও তদভাবে প্রপৌত্রের অধিকার। যে পোত্রের পিতা মৃত ও যে প্রপৌত্রের পিতৃপিতৃামহ মৃত ভাহারা (ধনীর) পুত্রের সহিত ব ব পিতৃযোগ্যাংশ ভাগ করিয়া লইবেন। পৌত্র সকল পিত্রুগীরে ভাগ প্রাপ্ত হইবেন, স্ব সংখ্যাহুদারে ভাগু পাইবেন না।

পদ্মীর অধিকার—পূত্র, পৌত্র ও প্রপৌত্রের অভাবে পদ্মী ধনাধিকারিণী। পদ্মী ব্যভিচারিণী হইবে অধিকারিণী হইবে না। যে ধন পতির অধিকৃত ছিল, পদ্মী সেই ধনের অধিকারিণী হইবে, পতি ভবিষ্যতে যে ধনে উত্তরাধিকারী হইত, সেই ধনে পদ্মী অধিকারিণী হইবে না। সুই কিংবা

অধিক পদ্দী থাকিলে সকলেই তুল্যরূপে বিভাগ করিয়া লইবে। পত্নীপণের মধ্যে কাহারও মৃত্যু হইলে ভদ্ধিক্বত পতিধনে 'বিভ্রমানা অপরা পত্নীদিগের অধিকার জানিতে হইবে। পত্নী পতির ধন ভোগ করিবে, দান বিশ্রুয় করিতে বা ৰন্ধক দিতে পারিবে না। অপুতা পত্নী বিশুদ্ধভাবা হইয়া পতিগৃহে বাস করিয়া যাবজ্জীবন ধন ভোগ করিবে, পরে তাহার মৃত্যুর পর পতির উত্তরাধিকারী ধন গ্রহণ করিবে। ৰদি দৌরাখ্যাদি কারণে পদ্মীর পতিগৃহে বাস করা কঠিন হয়, ভাহা হইলে পিতৃ প্রভৃতি কুলে বাস করিয়া পতিধন পাইবে, কিন্তু ব্যভিচার প্রভৃতির জন্ম বাদ করিলে পতিধর্ন পাইবে না। জীসংক্রান্ত ধন মাত্রে তৎপূর্বেশ্বামীর मात्राम्हे अधिकात्रो र उत्राट्ड भन्नीभरम अधिकात्रिनी खीमाजरक বুঝায়। স্ত্রীরা পতিসংক্রাস্ত ধনের উপভোগমাত ফল-ভোগিনী, তাহারা কোনক্রমে পতির ধন অপব্যয় করিবে না। এম্বলে উপভোগ পদে বিলাস নহে, দেহধারণোপযুক্ত অর वज्र ; अञ्चवत्ज्ञ बच्च प्रदे धन इहेट नहेटव । পতित धन यनि জীবনধারণ করিতে অসমর্থ হয়, তাহা হইলে পতির বিষয় বন্ধক দিতে পারে, ভাহাতে না চলিলে বিজয় করিতে পারে এবং পতির পারলোকির ক্রিয়ার জন্ম যদি দান বিক্রয় करत, তाहा इटेरन जाहा । त्रिक हहेरव।

পতির ঋণশোধ, কন্সার বিবাহ, অবশ্র পোক্ত পরিবার-বর্গের প্রতিপালন, অথবা অত্যাবশ্রক হিত্কার্য্যে দানাদি করিলে তাহা সিদ্ধ হইবে।

ভবিশ্বৎ উত্তরাধিকারিগণ যদি পত্নীর অল্লাচ্ছাদনের এবং অবশু কর্ত্তরাধিকারিগণ যদি পত্নীর অল্লাচ্ছাদনের এবং অবশু কর্ত্তরাধার্য্যর বায় দেয় বা দিতে, স্বীকার করে, তাহা হইলে সেপতির বিষয় বিক্রয়দি করিতে পারে না। যদি করে, তাহা হইলে দিল্ল হইবে না। পতির উপকারার্থ দান ও ডোগ ভিন্ন তদ্ধনের যে দানাদি তাহা অসিদ্ধ। সর্ব্বে বিক্রে ব্যতিপ্রেকে যদি জীবন ধারণ ও পতির ঋণ শোধাদি অবশু কর্ত্তব্য কার্য্যে সম্পন্ন না হয়, তাহা হইলে তাহাও শান্ত্রসমত। কিন্তু পার্রাণাকিক কাম্যক্রিয়ার্থে কিয়দংশ মাত্র দানাদি অভিমত, সর্ব্বে নহে। পদ্ধী যদি শান্ত্রবিক্রন দানাদি করে, তাহা হইলে তাহার পতির উত্তরাধিকারিগার তাহাতে প্রত্বিক্রক হইতে পারে, কিন্তু মুধ্য অবিকারী যে তিনিই প্রতিবন্ধকতা করিতে পারিবেন, যাহারা গৌণউত্তরাধিকারী তাহারা কোন অপিত্যি করিতে পারিবেন না।

ধনস্বামীর উপকারার্থে পত্নী অর্থান্থরূপ দানাদি করিলে তাহা ভবিষ্যুৎ উত্তরাধিকারীর সন্মতি বিনাও দিল হইবে। পত্নী যেমন হাবর ধন অপহার করিবে না, তজ্ঞপ জন্তার ধন অপহার করিবে না, যেহেতু উভয়রূপ ধনেই জবিশেরে পতির উপকার হইতে পারে; এতদ্দেশে প্রচলিত দার ভাগাদি গ্রন্থে জীর অধিকাত সংক্রাস্ত হাবর অহাবর ধনে বিশেষ নাই।

 ধনস্বামীর অন্থপকারে পত্নীকৃত যে দানাদি, তাহা ভ্রিয়ং উত্তরাধিকারীর সম্মতি বিনা অসিদ্ধ ।

পত্নী পতিসংক্রাস্ত ধন অভিযোগাদি ধারা উদ্ধার করিয়া
লইলেও তাহাতে তাহার পৃষ্ধাপেক্ষা অধিক ক্ষমতা করে না।
পত্নী যেরূপ পতির সংক্রাস্তধন দানাদি করিবে না, দেইরূপ
তত্বপ্রতে উপার্জিত সম্প্ত ধনও দানাদি করিতে পারিবে
না। পত্নীরুত সংক্রাস্ত ধনের দানাদি অসিদ্ধ হইলে এ ধন
পত্নীর দথলেই থাকিবে। (যদি সেই পত্নী ব্যভিচারাদি কোন
অভার কার্য্য না করে।)

উত্তরাধিকারীকৈ বঞ্চনা করা উদ্দেশে যে কোনরণে জ্বী পতির ধন হস্তান্তর করুকনা কেন, তাহাঁ অসিদ্ধ হইবে। পত্নী পতির পিতৃব্যাদির অসুমতিক্রমে নিজ পিতৃমারু কুলেও দান করিতে পারিবে, কিন্তু দানাদি বিষয়ে বিধ্যা পতিকুলের অধীনা জানিবে।

পত্নীর মরণকালে জাবিত নিকট সম্পর্কীয়েরাই তংপরে অধিকারী। পত্নীর অভাবে ছহিতা অধিকারিণী হয়। দয়
ও অদতা ছহিতা থাকিলে অদতা কঞাই ধনাধিকারিণী হয়।
অবিবাহিতা ছহিতার অভাবে পুরেবতী ও সম্ভাবিতপ্র।
ছহিতা তুলারূপে অধিকারিণী। বন্ধা ও পুরহীনা ছহিত।
অধিকারিণী নহে।

যে ছহিতার পুত্র নাই পৌত্র আছে, ধাহার পুত্রের মূর্ হইরাছে এবং যাহার কল্প। মাত্র আছে, ভাহীরা বন্ধান হইরাও ধনাধিকারিণী হইবে না।

অধিকারপ্রাপ্তা ছহিতা বন্ধ্যা কি বিধবা হইলে ধ্বনা ক্ষামাত্র প্রস্ব করিলে, তাহার শ্বন্ধনাশ হয় না।

দায়াধিকার হইতে অযোগা ছহিতার জীবিকা না থাকিনে
সঙ্গতি অনুসারে ভাহাকে অন্নাচ্ছাদন দিবে। অধিকারবোগ্যা ছহিতা অনেক থাকিলে ভাহারা সকলে ভুলারণে
বিভাগ করিয়া লইবে। ভাহাদের একের মভাবে ভর্নি
কৃত ধরে অভ্যের অধিকার। ছহিতা সংক্রান্তধন শান্ত্রেক নিয়ম ভিন্ন দানবিক্রেয় বা বন্ধক দিতে পারিবেন না, এন বিধ এইরূপ করেন, ভাহা সিদ্ধ হইবে না।

অধিকারযোগ্যা ছহিতার অভাবে দৌহিত্তের ^{অধি} কার। 'ছহিতার অভাব এইপদ এই স্থলে কুমারী, ^{গ্র} ৰতী ও সম্ভাবিত পূজা ছহিতার অভাবজ্ঞাপক। যেহেছু
বন্ধা ও পূত্রহীন বিধবা ছহিতা থাকিতেও দৌহিত্তের অধিকার দুষ্ট হয়।

মাতামহের ধনাধিকারী ক্ইয়া দৌছিত্র মরিলে তৎ-সংক্রান্ত ধনে তাহার পুত্র প্রভৃতি অধিকার পাইবে, ঐ,মাতা-মহের দায়াদেরা অধিকারী হইবে না। অনেক দৌছিত্র থাকিলে সকলেই মাতামহ-ধন বিভাগ করিয়া লইবে, ঐ ভাগ তাহাদের নিজ সংখাম্সারে সমান হইবে। তাহা-দের মাতৃসংখ্যাম্সারে সমান, হইবে না।

চুহিতার দত্তক মাতামহের ধনে অধিকারী হয় না। দৌহিত্রের অভাবে পিতা ধনাধিকারী হয়। পিতার অভাবে माठा धनाधिकातिनी रन। विभाषा अधिकातिनी नटर। মাতা ঐ শাজোক্ত নিমিত্ত ভিন্ন দানবিক্র্যাদি করিতে পারিবেন না। মাতার অভাবে ভাতার অধিকার, সংহা-দর ভাতার অভাবে বৈমাত্রেয় ভাতার অধিকার। অবি-ভক্ত স্থাবর ধনে সংহাদর ও বৈমাত্রেয় ভ্রাতার তুল্যাধি-कात्र। खनवान मखक यनि खेत्रम भू व्वत्र व्यर्थार धनीत মাতৃ কর্ত্ব গৃহীত হয়, তাহা হইলে সেও সহোদর রূপে গণা, আর যদি ধনীর মাতা তাহাকে দত্তক গ্রহণ না করিয়া থাকেন, তাহা হইলে সে ধনীর বৈমাত্রেয় রূপে গণ্য। ভাতার ধন প্রাপ্ত হইয়া ভাতা মরিলে তাহার নিজ পুতাদিই তদ্ধনাধিকারী হইবে। যদি সহোদর ও বৈমাত্রের ভ্রাত। উভয়ই মৃত ভ্রাতার সংস্টি না হয়, তাহা হইলে সহোদরের धन मरहामत्रहे शाहेरव । ८य ज्ञारन देवभारत्वय मश्क्रूष्टि ७ मरहा-দর অসংস্টে, তথায় উভয়ই দায়াধিকারী।

যদি সহাদর ও বৈমাত্র উভয়ই সংস্টি হয়, তাহা হইলে কেবল সহোদরই ধন প্রাপ্ত হইবে। সহেদিরের মধ্যে এক-জন সংস্টি হইলে সেই অধিকারী হইবে। কেবল বৈমাত্রের আতারা থাকিলে তল্মধ্যে যে মৃতের সহিত সংস্টি ছিল, প্রথমে সেই তদ্ধনাধিকারী, তদভাবে অসংস্টি অধিকারী।

বাতার সহিত্ব বাতুপুত্র এককালে অধিকারী নয়।

বৈমাত্রের বাতার অভাবে সহোদর বাতার পুত্র অধিকারী।

শহোদর বাতার পুত্রাভাবে বৈমাত্রের বাতার পুত্র অধি
কারী। যদি সহোদর বাতার কোন পুত্র সংস্টি ও কোন
পুত্র অসংস্টি থাকে, তাহা হইলে যে সংস্টি, সেই তদ্ধনাধি
কারী। যদি বৈমাত্রের বাতার কোন পুত্র সংস্টি থাকে

এবং কোন পুত্র অসংস্কৃষ্টি থাকে, তাহা হইলে বৈ সংস্কৃষ্টি সেই অধিকারী হইবে। বদি সহোদর ও বৈমাজের প্রাতার পুত্রেরা সংস্কৃষ্টি অধিবাণ অসংস্কৃষ্টি হয়, তাহা হইলেও উভয়া-বস্থাতেই সহোদর প্রাতার সংস্কৃষ্টি পুত্র অধিকারী।

বাঁডুপ্তের অভাবে বাতার পৌতের অধিকার। বাড়ি পৌতের অধিকারেও সহোদর ও বৈনাতের ক্রম এবং সংস্টিও অসংস্টি এই নির্ম থাটিবে। মৃতপিতৃক বাড়ু-পুত্র ও মৃতপিতৃপিতামহক বাড়পৌত্র অনেক থাকিলে দোদর ও বৈনাতের সংস্ট ও অসংস্ট ক্রমান্ত্রসারে অধিকার ও বিভাগ হইবে। পরন্ত এই বিভাগ ভাহাদের স্ব সংখ্যান্ত্র-সারে হইবে, পিতৃসংখ্যান্ত্রসারে হইবে না।

ত্রাভূপৌত্রের অভাবে পিভূদৌহিত্রের অধিকার। সংহা-দরা ও বৈমাত্রেরা উভয়রপ শ্রণিনীপুত্রের ভূল্যাধিকার।

পিত্রাদির যে দৌহিত্রগণ ধনীর অথবা তত্ত্তরাধিকারীর পত্নী প্রভৃতির নিধনকাবে জীবিত বা গর্ভন্তিত, তাহারাই তদ্ধনাধিকারী। তৎপরে গর্ভস্কো অধিকারী নহে। পিতৃ-দৌহিত্রের অভাবে ভ্রাতৃদৌহিত্র অধিকারী।

লাত্দৌছিত্রাভাবে পিতামুহ ধনাধিকারী। পিতামহের অভাবে পিতামহী অধিকারিনী। পিতামহীর অভাবে পিতার সহোদরের অভাবে পিতার বৈমাত্তের লাতা অধিকারী। পিতৃবৈমাত্তেরের অভাবে পিতৃব্রমাত্তেরের পুত্র অধিকারী। পিতৃসহোদরের পুত্রের অভাবে পিতৃবিমাত্তেনের পুত্র অধিকারী।

পিতৃবৈমাত্র প্রাতৃপুত্রের অভাবে পিতৃসংহাদর্যের পৌত্র অধিকারী । পিতৃবৈমাত্র প্রাতৃপুত্রের অভাবে পিতৃসংহাদরের পৌত্র অধিকারী । পিতৃসংহাদরের পৌত্রাভাবে পিতৃবৈমাত্রের প্রাত্রিকারি । পিতৃবৈমাত্রেরের প্রাতৃপৌত্রাভাবে পিতামহের দৌহিত্রের অধিকার।

পিতামহের দৌহিত্রাভাবে পিতৃব্যের দৌহিত্র ধনাধি-কারী। পিতৃব্যের দৌহিত্র না থাকিলে প্রপিতামহৈর অধিকার। প্রপিতামহের অভাবে প্রপিতামহী ধন্যধিকারিণী।

প্রশিতামহীর অভাবে শিতামহের সহোদর, বৈমাত্তের ভ্রাতা ও তাহাদের পুত্র এবং পৌত্তেরা বর্থাক্রমে অধিকারী।

পিতামহের ভাতৃপৌতের, অভাবে প্রপিন্ধামহের দৌহিত্র ধনাধিকারী।

প্রপিতামহের দৌহিত্রাভাবে পিতামহের আত্দৌহিত্র
ধন পাইবেন।

পিতামহের ভ্রাতৃদৌহিত্রাভাবে মাতামহ ধনাধিকারী। মাতামহের অভাবে মাতুদের অধিকার। মাতৃলের অভাবে মাতৃণপুত্র অধিকারী।

মাতৃলপুত্রাভাবে মাতৃলের পৌত্র অধিকারী।

• মাতৃলপৌত্রাভাবে মাতামহের ' দৌহিত্র ধ্বাধিকারী

হইবেন *।

•

মাতামহের দৌহিলাভাবে প্রমাতামহ অধিকারী। প্রমাতামহের অভাবে তাহার পুত্র অধিকারী। প্রমাতামহের পুত্রাভাবে তাহার পোঁত্র অধিকারী। তাহার অভাবে প্রপৌত্র। প্রমাতামহের প্রপৌত্রাভাবে তাহার দৌহিত্র অধিকারী। প্রমাতামহের দৌহিত্র না থাকিলে বৃদ্ধপ্রমাতামহ ধনাধি-কারী হইবেন।

বৃদ্ধপ্রমাতামহের অভাবে তাহার পুত্রের অধিকার। বৃদ্ধপ্রমাতামহের পুত্রাভাবে পৌত্রের অধিকার। বৃদ্ধপ্রমাতা-মহের পৌত্রাভাবে প্রপৌত্রের অধিকার। বৃদ্ধ প্রমাতামহের প্রপৌত্রাভাবে দৌহিত্তের অধিকার। ধনীর ভোগ হয় এরপ পিশু দানকর্তার অভাবে সকুল্য অধিকারী। সকুল্য-দিগের মধ্যে প্রথমে প্রতিপাত্তের পুত্র অধিকারী। তাহার পর প্রপোত্তের পৌত্র অধিকারী। তংগরে প্রপোত্তের প্রপৌত্র অধিকারী। তদভাবে বৃদ্ধপ্রপিতামহাদি উর্দ্ধতন সকুল্যের ও তাহাদের সম্ভতিদের যথাক্রমে অধিকার। অর্থাং প্রথমে বৃদ্ধপ্রপিতামহ, তদভাবে তৎপুত্র, পৌত্র, প্রপৌত ও দৌহিত্র ক্রমে অধিকারী। ইহাদের অভাবে অতিবৃদ্ধ প্রণিতামহ, তৎপুত্র, পৌত্র, প্রপৌত্র ও দৌহিত্র ক্রমে অধিকারী। তদভাবে অত্যতিবৃদ্ধ প্রাপিতামহ, তৎ-পুত্র, শোত্র, প্রপৌত্র ও দোহিত্র ক্রমে অধিকারী। বহুজ্ঞাতি সকুল্য ও বান্ধব থাকিলে ভাহাদের মধ্যে যে, অধিক নিকট সম্পর্কীয়, সেই অপুত্র ব্যক্তির ধনাধিকারী হইবে। এইরূপ স্কুল্যের অভাবে স্মানোদক ধনাধিকারী।

**ठ** ठूर्फं भ পूक्रयण्यद्य खा जित्क ममारनामक करह।

সমানোদকের ও সকুলোর ভার আসক্তি ক্রমে অধিকার ধইবে, অর্থাৎ পুত্র, পৌত্র ও প্রপৌত্রাদি ক্রমে ধনাধিকারী।

সমানোদকের অভাবে আচার্যা অধিকারী। আচার্য্যা-ভাবে শিশ্ব। শিশ্বাভাবে সংবেদাধ্যায়ী ব্রহ্মচারী ধনাধি-কারী। তদভাবৈ স্থানস্থ সংগোত্র অধিকারী। তদভাবে স্থানস্থ স্মান প্রাবর অধিকারী। এই সকলের অভাবে বেদজ্ঞ গুণযুক্ত সেই গ্রামস্থিত ব্রাহ্মণের অধিকার। তদ-ভাবে ব্রাহ্মণ ব্যতিরেকে অস্তোর ধনে রাজা অধিকারী। গুণবান্ রাহ্মণের অভাবে রাহ্মণের ধনে ভিন্ন প্রাহ্মণ রাহ্মণের অধিকার। স্বগ্রামন্থ গুণবান্ রাহ্মণের জভাবে ভিন্ন গ্রামন্থ গুণবান্ রাহ্মণের অধিকার। সন্ত্রাহ্মণের অভাবে রাহ্মণের ধনে সাঘান্ত রাহ্মণের অধিকার। সন্ত্রাহ্মণের অভাবে রাহ্মণের ধন সামান্ত রাহ্মণের অধিকার। প্রথমে স্বগ্রামন্থ সামান্ত রাহ্মণ, তদভাবে ভিন্ন গ্রামণ্

সামাক্ত বাহ্মণ অধিকারী।

শার্ত্তারে আচার্য ধনাধিকারী; কিন্তু ওফ নং। ধনী আহ্মণ না হইলে উত্তরাধিকারীর অভাবে তুাহার ধন রাজগানী হয়।

শুত্রধনীর ঔর্কদেহিক ক্রিয়া করিতে হইবে, মৃত্রাক্তির বিনি ধন পাইবেন, তিনিই তাহার ঔর্কদেহিকাদি লাগ্ করিবেন। ্যদি একজন ধনাধিকারী হয় ও অন্ত জার একজন ঔর্কদেহিক ক্রিয়াধিকারী হয়, তাহা হইলে দেই ধনা-ধিকারী ধন দিয়া ক্রিয়াধিকারী হায়া তৎক্রিয়া করাইবেল।

বাণপ্রস্থাদির ধনাধিকার—ব্রহ্মচারীর ^{*}ধনে সাচাধ্য অধিকারী।

বাণপ্রতের ধনে এক তীর্থবাসী অথবা একাশ্রমবাসী ধর্ম ভাতা অধিকারী। তদভাবে একত্র বাসী অথবা একাশ্রম অধিকারী। নৈষ্ঠিক ব্রহ্মচারীর ধনে আচার্য্য ধনাধিকারী হন।

উপকুর্বাণ ব্রহ্মচারীর ধনে তাহার পিআদি অধিকারী কুলাচারাদি—যদি কোন দেশে অঞ্চলে গ্রামে বা সমারে জাতিতে বা কুলে কোন আচার চলিয়া আসিয়া থাকে, তাহা হইলে পুর্বোক্ত সকল নিয়মাপেক্ষা মান্ত। কিন্তু বে আচার বছকাল বা বছপুরুষ হইতে একাদিক্রমে চলিয়া অসিয়াছে, তাহাই পুর্বোক্ত নিয়ম অপেক্ষা বিশেষ মান্ত হইবে। যে আচার বছকাল হইতে ক্রামক চলিয়া আহিনে নাই, তাহা তাদৃক্ মান্ত নহে। কিন্তু বলে বা অধর্মাচরণে আচার ব্যব্দে হইলে তাহাকে আচারভঙ্গ বলা যাইতে পারে নাই জীবিকাবিষয়ক মৃত ধনীর ত্যক্ত বিষয় হইতে তাহার অবশ্য পোয়বর্গ অন্তর্ম্ম পাইতে, অধিকারী।

মৃত ধনীর ভাক্ত বিশ্য হইতে ভাহার অ^{বিবাহিচ} ভগিনী বা কক্সা বিবাহোচিত ধন পাইতে অধিকা^{রিণী}

পত্নী বা অধীন পরিবার কেহ আফুচিত কারণে দ্রীভূত হইলে পরিবার কর্ত্তার স্থানে এবং তাহার মৃত্যুর পর তত্তার্ক বিষয় হইতে অর বস্ত পাইবে। যে পোয়্বাক্তি ভাষা কারণে পরিবারের মধ্যে থাকিতে এবং আহারাদি করিতে পারে না, সেই ব্যক্তি পূথক্ থাকিয়া প্রাসাহ্যাদন পা^{ইবে।} মৃত ধনীর অর্থাস্নারে জীবিকার পরিমাণ অবধারণ করিতে

মিতাক্ষরা মতে মাতামহ দৌহিজের পর মাতৃলপুত্র কবিকারী।
 কিজ দারক্ষসংগ্রহ মঙে এবং বঙ্গদেশগ্রচণিত অভাত গ্রেছর মতে
মাতৃলের পরেই মাতৃলপুত্র অধিকারী।

_{हইবে।} কেবল গ্রাসাচ্ছাদন মাত্র দাতব্য এমন নহে, কিন্তু বিষয় থাকিলে আর আর আবিশুক এবং ধর্মকর্মার্থ ধন _{দিতে} হইবে।

যদি কোন স্ত্রী বাভিচারেশ্ব মানস বিনা পিতামাতার বা তংকুট্ন্তের গৃহে আশ্রয় লয়, তাহা হইলেও সে প্রামা ছাদন পাইতে অবিকারিণী। পতির যদি এরূপ আদেশ থাকে, যে পতিকুলে বাস ক্রিলে গ্রামাচ্ছাদন পাইবে, তবে সে বিনাকারণে যদি অন্ত কোন স্থানান্তরে বাস করে, তাহা হইলে সে গ্রামাচ্ছাদন পাইতে ক্রমিকারিণী নহে।

প্তিত তিল বিভাগে অন্ধিকারী ব্যক্তির। মৃত্ধনীর বিষয় হইতে অলাচ্ছাদন পাইতে অধিকারী। দায়াধিকারী উক্ত ব্যক্তিগণকৈ যদি অল বস্ত্ব না দেন, তাহা হইলে রাজাধনীর নিকট হইতে দেওয়াইবেন।

অন্ধিকারী ব্যক্তিদের ক্লারা যে পর্যাস্ত বৈবাহিতা না হয়, ততদিন তাহারা গ্রাসাক্ষাদন পাইকে।

তাহাদের অপুত্র স্ত্রীগণ সদাচারী হইলে গ্রাসাচ্ছাদন পাইবে, ব্যভিচারিণী বা প্রতিক্লা হইলে দ্রীক্রতা হইবে।

পিতৃক্ত বিভাগ কাল।—পিতার স্বোপার্জিত ধনে তাহার যথনই ইচ্ছা হইবে, তথনই তিনি বিভাগ করিতে পারি বেন। কিন্তু পৈতামহ বিবরে মাতার রজোনিবৃত্তি হইলে যথন পিতার ইচ্ছা হয়, তথনই তিনি বিভাগ করিতে পারি-বেন। (মাতা পদে বিমাতাও বুঝিতে হইবে।)

বস্তত: মাতা ও বিমাতার রজোনির্ভির পর কিংবা পিতার রুতিশক্তি রোধ হইলে যথন পিতার ইচ্ছা হয়, তথনই পৈতামহ ধনু বিভাগ হইতে পারে। পিতা কর্ত্তক বিভক্ত ব্যক্তিরা বিভাগেঁর পর উৎপন্ন ভাতাকে ভাগ দিতে বাধ্য।

পিতৃ কঁপ্ক সোপাজিজত ধন বিভাগ।—সোপার্জিত ধনের বিভাগ পিতার ইচ্ছামুসারেই হইবে। সোপার্জিত ধন পিতায়ত ইচ্ছা গ্রহণ করিতে পারেন।

কোন প্রের গুণিত্ব হেতু সন্মানার্থ কিংবা কোন পুঁত্রের অনেক পরিবার প্রতিপালন করিতে হয় এইজন্ম, অথবা কোন প্র জ্বোগ্য এবং কুপাঁ, ভক্তি প্রভৃতি কারনে যদি পিতা ন্নাধিক বিভাগ অর্থাৎ কোন প্রকে অধিক এবং কোন প্রকে অল্ল দেল, তাহা হইলেও এই বিভাগ ধর্মতঃ সিদ্ধ হইবে। কিন্তু গুণিত্বাদি কারণ ব্যতীত স্থোপার্জ্যিত ধনের বিভাগ করিলে তাহা ধর্ম নহে।

প্রভাস্ত বাধি, ক্রোধাদিজ্ঞ আকুণচিত্তভায় কিংবা কামাদি বিষয়ে অভ্যস্ত আশক্ত হইনা, যদি এক পুত্রকে মধিক ও অভ পুত্রকে অলভাগ দেন, অথবা কিছুনা দেন,

তাহা হইলে সেই বিভাগ অসিদ্ধ অর্থাৎ পিতা যদি গুণি-ছাদি কারণে ন্নোধিক ভাগদেন, তাহা হইলে সেই বিভাগ ধর্মসঙ্গত ও পিছ। যদি রোগাদিতে আকুলচিত্ততায় বিষয় বিভাগ করেন, অলথবা কোন পুত্রকে ভাগদূত্য করেন, তাহা হইলে ভাহা অসির। গুণিয়াদি কারণ বিনা অপচরোগাদি জন্ত অস্থিরচিত্ততা ভিন্নকেব্ল ইচছাতে যদি ন্নাধিক বিভাগ করেন, তাহা হইলে তাহা ধর্মসঙ্গত নছে, কিন্তু সিদ্ধ। যদি পুত্রেরা এককালে বিভাগ প্রার্থনা করে, কিন্তু ভক্ততাদি কারণে পিতাবিষম বিভাগ করিবেন না; পুত্র সকলকে সমান অংশ দিলে পুত্রহীনা পত্নীদিগকেও পুত্রের সমান ভাগ দেয়। ভর্তা প্রভৃতি জীধন নাদিয়া প্রীকেও সমান অংশ দিতে হয়। জীবন দত্ত হইয়া থাকিলে रय खीमिशरक यरशितिमिछ खीमन मछ इहेगाएह, शिछा छ रमम ধন অপুত্রা পত্নীদিগকে দিবেন। তাদৃশ স্ত্রীধনের অভাবে পুত্তের সমান অংশ দিবেন। কিছুত্ব পুত্রিগকে ন্তন দিলে ও স্বয়ং অধিক গ্রহণ করিলে পিতা পুত্রহীনা পদ্দীকে নিজ অংশ হইতে পুত্রের সহিত সমান অংশ দিবেন। জ্রাধন দত্ত হইলে অপুত্রা পত্নীকে অর্দ্ধেক দেয়।

ভার্য্যা মাতা কিংবা পিতামহীর লব্ধ অংশ যদি ভেটোরারা ক্ষম হয়, তাহা হইলে ভাহারা পুনর্ব্বার জীবিকা পাইতে অধিকারিণী। যদি ভোগাবশিষ্ট থাকে ও ধনীর গৃহীত ধন ভোগে ক্ষয় হয়, তাহা হইলে পুরাদিবৎ ভার্য্যাদি হইতেও লইতে পারেন।

পথ্নী বিভাগে প্রাপ্তধন ভাষ্য কারণ বিনাদানবিক্রয় করিতে অথশা বন্ধক দিতে পারিবেনা। তিনি ঐ ধন ভোগ করিবেন মাত্র, তাহার পর পূর্কস্বামীর উত্তরাধিকরিবাপাইবে।

স্বোপাৰ্জ্জিত ও পৈতামহ-ধন-নির্বাদ-যে ধন আদিতে পিতা কর্ত্ক উপার্জিত, তাহা তাহার প্রকৃত স্বাজ্জিত। পিতামহের ধন সত হইলে পরে পিতা নিজ শ্রমাদিতে উদ্ধার করিলে তাহা তিনি স্বোপার্জিত ধনের মত ব্যবস্থা করিতে পারিবেন। পৈতামহ স্থাবর ধন থাকিলে অস্থাবর পৈতামহ ধনে তিনি স্বোপার্জিত ধনের মৃত ব্যবহার করিতে পারিবেন। পিতা নিজ পিতা হইতে সম্বন্ধ জন্ম যে ভূমি নিবন্ধ ও দাসাদি প্রাপ্ত হন, তাহাই ব্যবহারে প্রকৃত্ত পৈতামহ ধন বলিয়া গণ্য। ক্রমাগত যে ধন, তাহাই পৈতামহবৎ ব্যবহার্য।

মাতামহাদির মৃত্যু হইলে যেধন পাওয়া যায়, জীহ। স্বোপার্জিতের ভায়-ব্যবহার করা যাইতে পারে। পিতৃক্কত পৈতামহধন বিভাগ।—পৈতামহ ধন পিতা বিভাগ করিলে পুত্রদিগকে এক এক অংশ দিবেন ও নিজে হই অংশ লইবেন, তদধিক লইতে গারিবৈন না। পুর্ব্বোক্ত গুণবন্ধানি কারণে পিতা পৈতামহ ধন ন্মেধিক বিভাগ করিতে পারিবেন না, এবং এইকপ বিভাগ করিবার ক্ষমতাও নাই। পিতা যেকপ পুত্রকে তদ্যোগ্যাংশ দিবেন, সেইকপ পিতৃহীন পৌত্রকে ও পিতা-পিতামহহীন প্রপৌত্রকেও তত্তৎ পিতৃপিতামহ যোগ্যাংশ দিবেন।

পুত্রার্জ্জিত ধনে পিতার অংশ।—পুত্রার্জ্জিত ধনেও পিতার ছই ভাগ। পিতৃ দ্রব্যের উপঘাতে পুত্র কর্তৃক অর্জ্জিত ধনের অর্ক্কেক'পিতার এবং এইরূপে যিনি উপার্জ্জন করেন, তিনি ছই অংশ গাইবেন। অপর পুত্রের এক এক অংশ।

পিতৃদ্বোর উপঘাত বিনা অব্জিত ধনে পিতার ছই
আংশ, অব্জিক পুত্রেরও তাহাই। অহাস্ত পুত্রগণ এই ধনে
আংশ পাইবে না।

বিস্থাবিহীন পিতা জনকতা মাত্র ছই অংশ পাইবেন।

যদি কোন পুত্র নিজ শ্রমে ও কোন লাতার ধনের উপ-ঘাতে উপার্জন করে, তাহা হইলে তাহাতে পিতার হই অংশ, গ্রু পুত্রহয়ের এক এক অংশ, আর যদি কেহ লাতার ধনদারা ও নিজ্ঞাম ও ধনদারা ধন উপার্জন করে, তাহা হইলে তদর্জকের হই অংশ ও পিতার হই অংশ, ধনদাতার এক অংশ, উভর অবস্থাতেই আর আর লাতার অংশ নাই।

যে পৌত্রের পিতা জীবিত ও কদজ্জিত ধনের ভাগ পিতান্মহ ধাইবেন না। কিন্তু তৎপিতাই লইবেন। পৈতামহ ধনের উপ্বাতে অজ্জিত হইলে উপ্বাতিত ধনাম্সারে পিতামহ এক অংশ পাইবেন।

মাতামহের ধনোপঘাতে দৌহিত্র উপার্জন করিলে উপঘাতিত ধনীমুসারে মাতামহ অংশ লইবেন, মাতুলাদি অংশ পাইবেন না। কিন্তু মাতামহের ধনোপঘাত ব্যতীত বিদি দৌহিত্র ধন উপার্জন করে, তাহা হইলে মাতামহ অংশ পাইবেন না।

ভাতৃ কর্ত্বক বিভাগ—মরণাদিতে পিতার অভধ্বংশ হইবে অথবা অত্ব থাকিতেও তাহার ইচ্ছা হইবে বিভাগ করণে প্রদের ক্ষধিকার জন্ম।, তদবধি ভাতৃগণের বিভাগ কাল। কিন্তু মাতা বিভামানে বিভাগ ধর্মসঙ্গত নহে। যদি মাতার অমুমতি লইয়া বিভাগ হয়, তাহা হইবে ধর্মসঙ্গত হইবে।

ভাতৃগণের অংশের পরিমাণ।—সংহাদর ভাতৃগণ সমান

ওরদ ও দত্তক পুত্তের মধ্যে বিভাগে ওরদ পুতের ছই ⁾

আংশ দত্তকের এক আংশ। অধিকারী আতৃগণের বাং। কেহ প্রপৌত্র পর্যান্ত না রাধিয়া মরিলে তাহার আঞ্চ বে হেই উত্তরাধিকারী থাকে, সেওঁ বিভাগে তদ্যোগ্যাংশভাগী।

পিতৃহীন পৌত্র ও পিতৃপিতামহহীন প্রপৌত্র ক্রমে । বৃ পিতার ও পিতামহের যোগ্য অংশভাগী, বৃষ সংখ্যাহ্নারে । অংশী নহে।

সাধারণ ধনের উপঘাতে উপার্জিত বিষয়ভাগ।—সাধারণ ধনের উপঘাতে অজিত ধনে অর্জকের ছই ভাগ, অন্তের এক ভাগ। অবিভক্ত দায়াুদ্দিগের মধ্যে কাহারও শ্রেদ সাধারণ ধন বৃদ্ধি হইলে ভাহাতে তাহার ছই অংশ প্রাপ্য।

সাধারণ ধনের উপদাত হইলে যাহার যৎপরিমিত ধনের উপদাত হয়, তদমুসারে তাহার ভাগ করন কর্ত্তর।

দায়াদৃগণের মিশ্রিত ধনে ও শ্রমে কোন বিষয় উপা জিত হইলে যদি তদ্দত ধনের ও শ্রমের পরিমাণ জানা যায়, তাহা হইলে তাহারা তদ্মুসারে অংশভাগী, নতুবা সমভাগী।

দায়াদদিগের একের ইচ্ছাতেও বিভাগ হইবে। বহি 
দাননী বিদ্যমানে বিভাগ হয়, তবে তিনি পুত্র তুলাধে 
লইবেন। জাননী বা পিতামহীর ইচ্ছাতে বিভাগ হইবেন।

স্বামী প্রভৃতি যদি স্ত্রীধন না দেন, তাহা হইলেই জননা সমভাগ প্রাপা, কিন্তু স্ত্রীধন দিলে অর্দ্ধেক প্রাপা। বা পুত্রেরা জননীর অংশ দিতে না চাহে, তাহা হইলে ডিনি অভিযোগাদি দারা লইতে পারিবেন। যে স্থলে এক প্রক ব্যক্তির ভার্যা থাকে, সে স্থলে গ্রাসাছবদন মাত্র দাতবা।

সংগাদর ও বৈমাত্রেয় ভাতাদের মধ্যে পরম্পর বিলগ

হইলে মাতারা অংশভাগিনী নহে। কিন্তু সুহেদির ভালার

যদি ধন বিভাগ করিয়া লয়, তাহা হইলে ভাহাদের জননীকে
ভাতৃত্ল্যাংশ ভাগ দিবে। বৈমাত্রেয় ভাভাদের গাহ্য
বিভাগ কালে যদি সহোদরেরা অথবা তাহাদের মধ্যে এই

জনও যদি আপন অংশ পৃথক্ করিয়া লয়, তাহা হইলে
ভাহার জননী ও পুত্র তুলা অংশ লইতে অধিকারিণী।

পৈতৃক ধনের উপবাতে, অর্জিত বিষয়ের অংশ ^{পাইছে} লাতা যেরূপ অধিকারী, সেইরূপ মাতাও অধিকারি^{নী।}

জননী যদি কোন মৃত পুলের উত্তরাধিকারী হুন, রাষ্
হইলে তদ্বোগ্যাংশ পাইবেন, প্লুথচ মাছুত্ব হেড় পূর
তুল্যাংগ্ল পাইবেন। জননী বেকেবল এর্কপুত্রের অংশ পরিনি
আংশভাগিনী, তাহা নহে। স্বয়ং পুত্রগণের বিভাগের মা
বেমন, পুত্র ও পৌত্রগণের বিভাগেও ক্রিক্রপ ভাগ পাইবে

পিতামহের ধন পৌত্রেরা বিভাগ করিলে পি^{তাম্ট।} পৌত্র তুল্যাংশভাগিনী। পিতামহী যদি কোন মৃত ^{পৌত্রি}

উठ्याधिकातिये स्टबन, छारा स्टेटन छदचल्ला छाराज বোগ্যাংশ পাইবেন, অথচ পিভামহী বলিয়া বিভাগে নিজ (वाशास्म शाहेरवन । अपि (शोकासत बर्धा तकह अथवा तकान मूड दशोखात माताम आम नत, छाटा हटेरन निजामही द তাহার নিকট হইতে অংশ পাইতে অধিকারিণী। স্থাবর ও অস্বাবর মধ্যে একরূপ ধন বিভক্ত হইলেও পিতামহী তাদৃশ शत निक व्यथ्म शहरवन्त्र

মাতার ভার পিতামহীও শালীর কারণ বিনা বিভাগে প্রাপ্ত বনু দান বিক্রমাদি করিতে পারেন না।

বিভালা নির্ণর—শৈতামহ ও পিতার অর্জিত এবং সাধারণ ধরের উপবাতে আর্জিড এই তিন প্রকার ধন বিভালা। অভের ব্যাপারে অজ্জিত ধন ঐ ব্যাপারকারীর সহিত্**ই কেবল বিভালা। পূর্বাহত ভূমি গুকলন শ্রম**ধারা উদ্ধার করিলে ভাহাকে চারি ভাগ্নের এক ভাগ দিরা অক্ত मायात्मत्रा त्यांगारिन विष्ठांग कतित्रा नहेंदवन ।

বিদ্যা উপাধি বারা প্রাপ্ত ধন সাধারণ ধনের উপঘাতে অজিত নাহইলেও সমান, আবে অধিক বিখানের সহিত विভাজা, नानविष्ठा अवश्विष्ठाशीन वाजिन्तत्र महिल नही উপঘাতে অজ্ঞিত বিদ্যাধনে সকল দায়াদই অংশী।

কুণ হইতে বা পিতা হইতে শিকিত ভাতাদের উপা-জিত ও শৌর্যারা প্রাপ্ত ধন বিভাস্তা। পিতা ও পিতৃ-ব্যাদি ভিন্ন অর্থাৎ অন্ত হইতে শিক্ষিত যে কোন বিদ্যাদারা অজিত তাহা সমবিধান ও অধিক বিধানের সহিত বিভালা। न्। निविद्यान् ७ विषाशित्ततः त्रहिङ विङाशं हहेत्व भा।

যদি বিদ্যার্জনকালে ভাহার পরিবারকে অস্ত প্রতা নিল ধনে প্রতিপালন করে, তাহা হইলে তিনি ত্রিদ্যার্জিত ধনে ভাগ পাইবৈন। ছই অথবা জিন মূর্থ লাভা ভাহার ত্রীকে প্রতিপালন করিলে ভাহারা সকলেই ভাগী। ধনার্ক্তনার্থ ^{গত} ভাতার পরিবার রক্ষণাবেক্ষণভারার্পিতু ভ্রাতা ভাহার উপার্জনতাগী। **বেছলে ভাগের পরিমাণ নির্দিট** না থাকে, ^{(महे हरन} मगान छात्र **मानिर** हहेरव।

অবিভাল্লা নির্ণর—অনুপর্ণাতে অভ্যিত ধন অর্জকেরই, वस्त्रुत नत्ह, हेहा निष् ।

শাধারণ ধনের জ্বিপাতে অর্জিত ধনে অক্ত লাতার ভাগ নির্দিট হওয়ায় অনুপ্ৰাতে অজিত ধনে ভাগ না থাকা ^{সুংবা।} পিতাদির **অব**িসাহায্য নালইয়া যাহা উপাৰ্জিত ^{হয়,} ভাহা **অনিচহার বিভালা নহে, বেহেতু তাহা** নিজ (ठिष्ठीय नका

^{গৈতৃক ধনের উপৰাভাভাবে জুবাৰারা অক্ত ভ্রাভার I}

व्याभाव नारे, दक्वम चर्चात्कवः निबः छोडोएक. छारा नक **হটরাছে, ভাহা ভাহার অসাধারণ ধন**। এই ধন বিভাক্য নহে। পিছতবোর কর বিনা অন্ত বাহা বরং উপার্কান করে এবং মিত্র হইতে লব্ধ, আর বাহা ঔবাহিক, স্পর্থাৎ লামাতৃত্ব হেতু খণ্ডরাদি হইতে লব্ধ, বিদ্যা ঘারা প্রাপ্ত. শৌর্যাবারা উপার্জিত • এবং বাহা সৌনারিক, এই সকল धन विख्वां नहि।

ক্রমাগত বিষর অতে হরণ করিলে বদি দারাদদিগের একজন সাধারণ ধনের উপঘাত বিনা এবং অস্তের সাহায্য বিনা উদ্ধার করে, ভাহা হইলে এইরপ ধন অঞ্চের সহিত বিভাক্য নহে। অর্থাৎ বিভক্ত বা অবিভক্ত কর্তৃক সাধারণ ধনের অফুপঘাতে এবং অপুরের সাহায় বিনা ভূমি সম্পত্তি वाजीव याहा चर्कित हत्र, जाहा व्यक्कत्वरहे, जाहाटक चरनात ভাগ নাই।

পিতৃপিতৃবাদি ভিন্ন অন্য হুইতে প্রাপ্ত, বে কোন বিভা ৰারা সাধারণ ধনের অবস্পৰাতে যাহা অভিনত হয়, তাহার छांश न्।निविधान् वा अविधान् शाहेरव ना, किन्छ त्रमान विधान् বা অধিক বিধান ভাগ পাইখে।

শৌৰ্যাৰারা অর্জিত ধন, ভার্যাধন ও বিভার্জিত ধন এই তিন প্রকার ধন এবং পিতা ছেহপ্রযুক্ত ৰাহা দেন, এইরপধন বিভাজানয়। পিভামহ বা পিভা ক্লেছপূর্কক বাহা দিরাছেন, অপবা মাতা হইতে লব্ধ যে ধন, ভাহা विखाया नरह।

বস্ত্র, পত্র, অর্থাৎ অখাদি বাহন, অলফার, উদক, কুতার (লড্ডুকাৰি), ত্ৰীগণ, যোগকেম, অৰ্থাৎ অ অ বাবহার-रवांगा भयामन, ट्लाबनभाळानि, वाका, वांगहान वा वांग-প্রতিমা অর্থাৎ দেবোত্তর, এই সকল বিভাল্য নহে। 🥞 "বল্তং পত্ৰমলকারং ক্লভারমূদকং লিয়:।

বোগকেন প্রচারঞ্ব বিভাজাং প্রচক্তে॥" (মৃত্)

গোরুর পণ, গাড়ীর পণ, পরিধের বস্ত্র, প্রযোজ্য ও শিল্পার্থ अवा विडाबा नरह । थाराबा कैर्य-याहात श्वाहा थारा-লনীয়, যুণাশত প্রভৃতির গ্রন্থাদি, ইং। মুর্থের সহিত বিভাল্ নহে। মূর্থে পুত্তক লইবে না, ভাহা কেবল পণ্ডিভের গ্রহণীয়, কিন্তু তদন্তৰ্গত নিজ অংশেক তুল্য মূল্য অধবা অস্ত দ্ৰব্য পণ্ডিতের স্থানে তাহা প্রাপ্য।

পিতার জীবদশায় যে বস্তুতে যে পুত্র গৃহোন্তানাদি করে, তাহা ভাহার বিভাজা নহে। এ হলে পিভা ভাহাকে নিষেধ না করায় ভাহার অনুমভিক্রমে ইইয়াছে, বলিতে

বিভাগের পর গর্ভন্থ প্রেরে ভাগ—যদি পিতা প্রেদিগকে ভাগ করিরা দিরা আপনিও বর্ণাশান্ত, ভাগ লইরা প্রেদের সহিত অসংস্টাবস্থার মরেন, ভাহা হইলে বিভাগের পর লাতপুর পিতৃধনই লইবে, তাহাই ভাহার অংশ।

বদি ধনীর অজ্ঞাত গর্ভাবস্থার পুজেরা বিভক্ত হর, তাহা হইলে তাহার পর লাভ পুজ আভাদের খানেই ভাগ নইবে।

ধনীর জীর গর্ভ প্রকাশ পাইলে যদি তদ্গর্ভছের ভাগ পূর্বে রাখিরা দেওয়া হইয়া খাকে এবং বিভাগের পর প্রোৎপর না হইলে, পিতার অংশ সকলেই ভাগ করিয়া লইবে। .প্রাদিগকে বিভাগ করিয়া দিরা কোন পুজের সহিত সংস্টাব্যার আর এক পুরে উৎপর করিয়া পিতার মৃত্যু হইলে ভদ্ধনে বিভক্তদিপ্রেরই অধিকার।

পিতা বদি জীর গর্জ নিশ্চর করিয়া ও প্রাভুদ হেতু পুত্র দিগকে ভাগ দেন, তাহাতে প্রেদের স্থামীদ ক্ষাইবার কারণ, তাহাতে পর্জন্মে ক্ষিকার নাই। পিতৃধনেই কেবল ভাহার ক্ষিকার। বিভাগের পর পুত্রোৎপর হইলে তাহার সহিত সে তুল্যাংশভাগী হইবে। যদি ভূম্যাদি পিতামহ ধনও বিভক্ত হর, তাহা হইলে বিভক্তক ভদ্ধনের ভাগ ভ্রাভৃগণ হইতে পাইবে।

ৰিভাগ হইরাছে কি না, এইরূপ সন্দেহ উপস্থিত হইবে আনতি বা বন্ধুগণের অথবা অপরের সাক্ষারার কিংবা লিখিত বারা ভাহা নিপর করিতে হইবে। যদি কোন নিদর্শন বা সাকী না থাকে, ভাহা হইলে আফুমানিক প্রমাণ প্রামাণ্য।

বিভাগের পর জাগত দায়াদের ভাগ—বিভক্ত ছউক বা
না হউক, দায়াদ উপস্থিত হইলে সাধারণ বৈষ্মের ভাগ
গাইবেন। ঋণ, কেলে, গৃহ ও লেখ্য যাহা ঘাহা পৈতামহ হয়,
চিরকাল প্রবাদে থাকিয়াও দায়াদ আগত হইলে ভ্রাগী
হইবে। কেবল সেই যে ভাগ প্রাপ্ত হইবে, ভাহা নহে,
কিন্ত ভৎসন্তানেরা ভাগহারী হইবে।

কোন ব্যক্তি অবিভক্তাবস্থায় দেশান্তরে গিয়া বছকাল পরে সহাগত হইলেও সে এবং সপ্তম পুরুষ পর্যন্ত তৎসন্ততিরাও পুরুষাছ্ক্রমে তদ্দেশবাসী বা প্রতিবাসীদের পরচ্পরা পরিচিত হইলে পর বর্ধাশাল্প অংশ পাইবে। কিন্ত দেশে থাকিলে চারি পুরুষ পর্যন্ত তদ্ধনভাগী। অবিভক্তা-বস্থায় যত ধন বৃদ্ধি বা যত বার হইরা থাকে, তৎসমুদার মিলাইরা ঘাহা দৃশ্ব বা বিশ্বমান, তাহারই বিভাগ কর্কবা।

ঋণ পরিশোধাদি—পিতৃ ঋণ পরিশোধ করিরা বে ধন অবশিষ্ট থাকে, তাহাই বিভাজা। পিতামহের পিতৃব্যের অথবা অপরের দায়রূপ ধন প্রাপ্ত হইবুল ভাহার ঋণ পরিশোধ

ক্রিরা দার প্রহণ করিতে হইবে। উত্তরাধিক্রমে বাহার দা পাওরা ঘাইবে, তিনি ভাষাদ এণ পরিশোধ করিতে বাধা কিন্তু বক্ষদেশে পিতার বা পিতামহের অথবা অভ বোন পূর্বে খামীর দাররূপ ধনাধিকারী না হইলে ক্ষেত্ ভাষার রুব , পরিশোধ করিতে বাধ্য নহে।

পূর্কবামীর ঝণ পরিশোধ তাহার তাক্ত ধনের পরিম্পান্ত্র করেব। মৃত ধনীর তাক্তধন অনেকে গ্রহণ করিবে ভাহা প্রত্যেকর নিজ অংশ পরিমাণে পূর্কবামীর ঝণ পরি
শোধনীয়। শিতামহের অবনকালে পৌত্তের কৈপেডার ঝনাধিকারী হইলে প্রথমে শিভামহের ঝণ পরিশোধ করিবে, এই ঝণ শোধ দিরা যদি ধনে অবশিষ্ট থাকে, তাহা হইকে শিভার ঝণ ও পরিশোধ করিতে হইবে। অনধিকারী শিভার ঝণ ভাহার জীবনকালেই পৈভামহ ধনাধিকারী প্রদের পরিশোধ কর্ত্তর। ঝণপ্রাইী ব্যক্তি ২০ বংসর পর্যান্ত প্রবাসী হইলৈ তৎপুত্র, পোত্ত, অথবা ধনহারী ব্যক্তি বংশতে বংসরের পর তাহার ঝণ দিবে।

পিতা যদি পুত্রদিগের মধ্যে নিজ ধন ও ঋণ বিভাগ করিয়া দেন ও আপনি নিজ অংশ গ্রহণ করেন এবং পরে বদি তাহার অপর পুত্র হয়, তাহা হইলে ঐ আত পুত্র পিতার ঋণ পরিশোধ করিবে এবং দায় পাইবে। অবিভক্ত দায়দিগের মধ্যে একজনের পরিবারের নিমিত্ত ঋণ করিলে, ভাহা সকলে শোধ দিবে, অথবা সাধারণ বিষয় হইতে শোধ ঘাইবে। অবিভক্তদিগের ফুক্ত ঋণ তাহাদের মধ্যে একজন উপস্থিত থাকিলেও ভাহাকে দিতে হইবে এবং আতারা অবিভক্ত থাকিলেও ভাহাকে দিতে ইবরে এবং আতারা অবিভক্ত থাকিলে পিতৃ ঋণও এই য়লৈ দিবে।

অসংস্কৃত পুত্র কঞ্চার সংস্কার — যে প্রাজাদের সংস্কার হইরাছে,
তাহারা পিতৃ ধন বারা অসংস্কৃত প্রাক্ষা ও জ্ঞানীর সংগ্রা
অবস্থা করিবে। ধনীর ক্ষবিবাহিতা কঞ্চা প্রভৃতির বিবাহারি
সংস্কার অধিকৃত ধনাত্মনারে করিবে। পিতৃধন না থাকিলেও
প্রাতাদের সংস্কার করা কর্তব্য।

'কথাপ্ত ব্যবহার বিষয় ৮—বল্লেশে প্রচলিত শালাম্নারে
পঞ্চলশ বংসরের শেষ * পর্যান্ত অপ্রাপ্ত ব্যবহার কার্ন করিতে অবোগ্য। ঐ বাবক বলি কোনরূপ করে, ছার্ন অসিছ ও নির্কার্তনীয়। বালকের প্রাপ্ত ধন বিনা মারে ভাষার বরংপ্রাপ্তি পর্যান্ত ভছজু বা মিজের হতে ভতাধানির।
আপনাকে এবং আপন ধন রক্ষণাবেক্ষণে অসমর্থ বাজিবির্ধ

বর্ত্তমান আইনাত্সারে ১৭ বৎসরের শের পর্যক্ত।

রালা সর্বাধাক। অধ্যক্ষরণে রাজা বালকের ধন, তাহার ব্য:প্রাপ্তি পর্বান্ত রক্ষণাবেক্ষণী করিবেন। রাজা আত্মীর ব্লনের মধ্যে বাহাকে-বোগা, বিবেচনা করিবেন, তাহার উপর ক্ষপ্রাপ্ত ব্যবহার বালকের সকল ভার অর্পণ করিবেন। তিনি বালকের ও তাহার অবস্তপোষ্য পরিবার্বর্গের প্রান্তাহান নিমিত আবস্তুক হইলে অথবা অনিবার্থ্য কার্য্য নির্মাহ নিমিত ব্যরূপ ধ্রচাদির আবস্তুক হইবে, তিনি সেইরূপ দিবেন এবং ঐ বালক ব্যবহার প্রাপ্ত হইবে তাহাকে তাহার ক্ষিব্রের আম্ব ব্যর্গ্রাস ও বৃদ্ধির নিকাশ দিতে হইবে এবং যদি তিনি কোন রূপ ক্ষতি করিব। থাকেন, তাহা হইলে তাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ত্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের তাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ত্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ত্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ভ্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ভ্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের ভ্রাহার ক্ষিত্রণ, ক্ষিব্রের হবৈব।

বলদেশে প্রবান্ প্রেষ পৈতামহ বা খোণার্জিত ছাবরা-ছাবর বিষয় প্রেষের সম্বতি বিনা দানবিক্রদ, প্রভৃতি যথা ইছা করিতে পারেন। ধনী নিজ মুরণোত্তর অধন বিভক্ত হইবার নিয়ম (অর্থাৎ উইল) করিয়া ঘাইতে পারেম।

দায়াদদিশের মধ্যে এঁকে বা অননেকে সাধারণ বিষয়ে
নিল প্রাপ্য অংশ দানাদি করিলে ভাষা বৈধ ও সিদ্ধ।
অবিভক্ত দায়াদ সকল নাবালক বিধায় দায় প্রাপ্ত না

ইইয়াই, বিশেষ আবিশ্রক কার্য্যে বিক্রেয়াদিতে সক্ষতি দিলে
ভাষা সিদ্ধ হইবে।

যে হলে সম দারাদের। প্রাপ্ত ব্যবহারাদি প্রস্তুত সম্বতি দানে সমর্থ, অথচ অনুপত্তিত নহে, সে হলে উক্ত কারণাদিতে দানাদি ক্লত হইলেও তৎসিদ্ধি নিমিত্ত তাহাদের সম্মতি 
আবপ্তক। ব্যবহারে দান সিদ্ধির নিমিত্ত দাতার ক্ষমতা, ও তদান, ভাহার চিত্ততিহাবস্থার তৎকর্তৃক ক্ষমত হওরার 
প্রমাণ দাত্ত প্রশ্লেকন।

দান লৈখ্য ও বাক্য দারা হইরা থাকে। এইতা এইণ না করিলে ওছদান মাজে দত্ত বছতে দাতার ক্ষম ধ্বংস হর না। কোন নিরমপূর্বক দানে ঐ নিরম পালিত না হইলে দাতার ক্ষমার না এবং প্রাহীতারও ক্ষম হর না।

দানে প্রাপ্ত বলিয়া ছুইজনে এক বছর প্রার্থী হইলেও কাহার আগ্রম পূর্বকার তাহাগ্রাক্ত না হইলে হাহার ভূকি প্রমাণ হর, তাহায়ই অধিকার। কিন্তু কাহারও আগগম পূর্বকার প্রমাণ ইন্টুলে তাহার ভূকি না থাকিলেও সেই অধিকারী। বেঁবে বিষয় দানবিষয়ক, বিজ্ঞার ও বছক প্রভৃতিতে সেই নিরম থাটে।

আনের প্রকরণ-নিক্ষেপ, স্থানু, গজ্পিত, বন্ধক, বাচিত ও ভারাকারণ বিনা নিজের অভাতিরিক্স সাধারণ ধন আর অনাগংকালে ত্রীধন দারালি ক্ষ্যিক। পুড়াদি থাকিতে সর্কাশ দান এবং শারসক্ষত কারণ বিনা সাধারণ বিষয়ের নিজ কংশ দানাদি সিভ, কিছ জ্ধর্ম।

দত্তক পূত্র করণার্থ পূত্রদান, পরিক্ষন ব্যাপ্ত বিপদে পরিক্ষন পালনার্থ এবং আবশুক ধর্মকর্মার্থ অবিভক্ত বিষয়ের অকীর অংশাভিন্নিক ও বিকক্ত অকীর সমুদারের ও ত্রীধনের দানাদি সিভ ক্রথচ ধর্ম।

দের প্রকরণ।—উত্তমরূপে পরিবার প্রস্তৃতির প্রতিপাশন হইরা বাহা অতিরিক্ত হর, সেই স্থাবর অঁতাবর ধনের দানাদি সিদ্ধ এবং অধর্মসূক্ত নহে।

পরিবার পালনের ব্যাঘাতে বেছাপূর্কক জুপবা কাম্য ধর্ম কাম্যার কৃত যে দান্দি তাহা সিদ্ধ হইলেও ধর্ম নহে। কিন্তু যদি সর্বাধিক্রমাদি বিনা বিপদ্ধ ইতে আন, পরিব্রার পালন, অথবা অবশু ধর্ম কর্ম নিস্পাদন না হয়, তাহা ধইলে বিবেচনা অহুসারে যাহা,কৃত হইবে, তাহাই সিদ্ধ হইবে। রক্ষণাবেদ্দণে অপজ্ঞতাদি ছাত্র্যকারণে কদি কোন জী তাৎকালিক মুধ্য দায়াদকে আধিক্ত সংক্রোস্ত ধন দেয়, তাহা হইলে এই দান সিদ্ধ ছাইবে।

त्रावा व्यविखांबा, त्यांगा । इटेटन द्वाईट त्रावाधिकाती, द्वाई व्यवाधिकाती, द्वाई व्यवधार्मा इटेटन व्यक्त वाला भारेटव ।

দতপ্রকরণ—ভৃতি, দ্রব্যের মৃশা, বা শুকরণে অর্থাৎ' বিবাহে, তৃষ্টিতে বা প্রভাগকাররণে, দেহে, অমুগ্রহে, বা প্রদান সহকারে বাহা দত, তাহা অপ্রতাহার্যা। ভৃতিতে বা অভ্যন্ত বাাকুলতাপ্রযুক্ত অভ্যধিক ধন দিতে স্বীকৃত হইলে ভাহা দাতব্য মর। বস্ততঃ গৃহদাহাদিতে ও পুত্রের রোগাদিতে কেই বদি প্রভাবে সর্কাম দিতে স্বীকার করে, ভাহা হইলে ভংমীকার অনিছ। কিছ উপকারাম্নারে অধিক দেওরা উচিত। অভ্যন্ত অধিক ধন দিতে প্রতিশ্রুত হইলে ভাহা দত্ত না হইলে বা অভ্যধিক দত্ত হইলেও উপ্রেক্ত যুক্তিতে পুনপ্রহিণীর।

অদত প্রকরণ।—ভয়াষিত, কোধাষিত, কামাদ্ধ, মোহ-প্রবৃক্ত, উদ্ধান্ত, বা অপ্রকৃতিয়াবছায়, অথবা উৎকোচ-রপ্রে, পরিহাসে, ক্রীড়ায়, ত্রমে বা প্রভারণায়, কিংবা বালক অম্বঞ্জ বা অপর্কিত কর্তৃক অথবা প্রতিলাভেচ্ছায় কিংবা অপাত্রকে পাত্রবাবে অথবা অতি র্ছ, অতি ব্যাকুল, নিঃসম্বদ্ধ, বা অতি ষ্ট কর্তৃক কিংবা পাণকর্মে বাহা দত্ত, ভাহা আদভার্হ। বস্ততঃ দোবযুক্ত লান অসিদ্ধ, কিন্তু কারণমূলক দান সিদ্ধ। আর্ত্রের ক্বত ধর্মার্থ লান সিদ্ধ। বালক কর্তৃক দত্ত ধর্মার্থ লান সিদ্ধ। বালক কর্তৃক দত্ত ধর্মার্থ লান দক্ষিণাদি সিদ্ধ।

দারভাগ সহকে বাহা লেখা হইল, এখন বর্তমান আইনও

প্রার এইরূপ, কিন্তু কোন কোন ছলে বংসামাল্ত পরি-বর্ত্তিত হইয়াছে। দার সম্বন্ধে মিতাক্ষরার মত লি্থিত হর নাই, মিতাক্ষরাশক্ষে এই বিষয় লিথিত হইবে।

দারভাগের ছানে ছানে তানেক বিষয় মত ভেদ আছে এবং টীকাকারগণ সেই সৈই ছল আরও ছরছ করিয়াছেন, এই সকল কারণে বিচারাদি নানিরা কেবলমাত্র দায় সম্বদ্ধ বাবস্থা সকল প্রদত্ত হইল।

দায়বিভাগ (পুং) দায়ত বিভাগ:। দায়ভাগ, দায়ের বিভাগ। [দায়ভাগ দেখ।]

দায়াদ (পুং) দারং বিভলনীরং ধনং আদতে আ-দা-ক; দারং অতি অদ-অণ্, দারত আদে: প্রাক্ক:। > দারগ্রাহী, বাহারা ধন প্রাপ্ত হন, সপিও। ২ পুত্র।

"ভূঞ্জীতা মরণাৎ ক্ষাস্তা দায়াদা উদ্ধনাপুরু:।" ( কাত্যা )

উত্তরাধিকার স্ত্রে যাহার ধূন গ্রহণে অধিকার আছে, উত্তরাধিকারী জ্ঞাতি। (-িলি) ও দারাধিকারী, ধনাধিকারী। বিমাং টাপ্। ক্সা। কিন্ত মুগ্ধবোধের মতে বণুস্তের উত্তর ভীপ্ হর, সেই ছলে দারাদী, এইরূপ পদ হইবে। কিন্ত প্রায় সাধারণ ছলে দারাদা এইরূপ ব্যবহার দেখা যায়।

দায়াপ্তত্ত্ন (ক্লী) দায়ত অপবর্ত্তনং। উত্তরাধিকারিছ 'নোপকরণ।

দায়াদ্বং ( তি ) দায়াদ: বিদ্যুতে ২স্ত, দারাদ-মঙুপ্ মস্ত ব:।
পুত্র। "ছয়া দায়াদ্বানন্দি ছং মে বংশকর: ছত:।"

• (ভারত ১৷৭৫ ঋ•)

দায়াদী (বী) দারং জ্ঞাতি জন জণ্, ব্রিরাং ভীষ্। কলা। দায়াদ্য (ক্লী) দারাদ্ভ ভাবং ব্রাঙ্গণাদি শুঞ্ ১ সাণিশু। দায়কুপং জাদ্যং। ২ সাণিশু নিৰন্ধন ধন।

"স এয: পাঞ্চোর্নান্যং বদি প্রাপ্নোতি পাওব:।" ( ভারত আ' ১৪১ অ')

দায়াদ্যতা (ত্রী) দায়াদ্যত ভাবং ভাবে তল্, তভো টাপ্। দায়াদ্যের ভাব।

দায়িত ( বি ) দার-দানে গিচ্কে। দীপিত, কুতদান, যাহা দেওয়া হইয়াছে।

দায়িন্ ( জি ) দার নিন । দাতা, কিন্তু দান অর্থে ইতন্ত প্রয়োগ নাই, অর্থাও দায়ী এইরপু ইতন্ত ভাবে প্রয়োগ হর না, উপপদপূর্বক প্রয়োগ হইয়া থাকে, বেমন প্রভংদারী' ইত্যাদি। কিন্তু কর্মোপপদে বিতীরা বিভক্তির হানে কৃদ্ বিভক্তির ঘোগে কর্মে বলী হইতে পারিত, কিন্তু পাধিনির ২০০৭০ ক্রে বল্লী নিবেধ হইরাছে।

দায়ী ( দেশৰ ) ১ দায়গ্ৰস্ত, বিপন্ন। ২ বুংগা । ৩ ঘাহার উপন্ন

ঝুকী বা ভার থাকে, বাহাকে ক্তিপুরণ করিয়া দিতে। , , বেমন আমি এই বিষয়ে দামী রহিলাম।

माञ्चल ( विक Daud ) अन्तर नाम त्मिक्ड ( David = विका ইস্রারেলের বিতীয় রাজা। ইনি **জ্**ডা জাতিভূক্ত _{এয় •} देवंशनम् निवानी स्विमित्रं नवम ७ नर्स क्निडे भूछ। _{महिश} বাল্যকালে পিভার মেষ্পাল রক্ষা করিতেন, ঐ _{স্থ্রে} পঞ্চল ত্রষ বর:ক্রমকালে সাসুরেল তাঁছাকে ইআরেনেঃ রাজপদে মনোনীত ও অভিষিক্ত করেন। ইপ্রায়েলের _{রাছা} সল তথনও জীবিত' ছিলেন, সম্ভবতঃ তথনু বিভিনি এই अख्रिदरकत विषय आनिएड शास्त्रम नारे। मायूरमत तीना-वानत्व व्यत्नोकिक मक्ति हिन, मन मत्या मत्या जेवान्याउ ছইত্তেন, দায়ুদ তাঁহাকে সুমধুর বীণাধ্বনি প্রবণ করাইয়া তাঁহার উন্মৃত্তা দূর করেন। ইহার পর ইপ্রায়েলাইট্দিগের সহিত ফিলিটাইনদিংগের ভরানক সমর বাধিলে সল খগৈছে युक्त यांका कतिरनंत। उक्षत्रभक्त युक्तत्करक व्यवजीर्व हरेल किनिष्टोहेनिरिशंत मत्था छ्रईर्व वननानी महाकांत्र शानित्रान नामक वीत्र हेव्यादिनाहितिनादक बच्चयूद्ध व्यास्त्रान कतितन। কেহই অগ্রসর হইতে সাহস করিল না। অবশেবে দায়ুদ গোলিয়াথের সমুখীন হইরা উপলথত নিংকেণে এখন ভাহার লনাটে আঘাত, ভাহাকে ভূপাতিত এবং পরে ভাহাই অসি বারা ভাহাকে নিহত করিলেন। এই অলৌকিক वीत्राच हेव्यादिनाहिष्ठेशन नकटनहे मायूप्तत शक्रशाठी हहेत ধক্ত ধক্ত করিতে লাগিল। সলও যুদ্ধ করে করিয়া প্রথমে पाश्रापत ब्यां श्री श्री इस्त्राहित्यन वर्षे, कि खु पाश्रात সর্ব্যঞ্জন প্রিয়তার তাঁহার প্রীতি শীঘই উৎকট, হিংসার পরি ণত হইল। আবার দায়ুদ সলের সিংহসিনে বি^{রে এই} চিন্তায় ঐ প্রধ্মিত হিংসান্ধ অবিয়া উঠিন। ডিনি দায়ুদের প্রাণবিনাশ করিতে ক্বতসভল হইলেন। विह কিছুতেই কুতকাৰ্য্য হইতে পারিলেন না, অনেক কটেও দার্যুদের কোন জনিষ্ট করিতে না পারিয়া তাঁহাকে নির क्का निर्दालत निरुष्ठ दिवार निता आशाख्यः विवान विहेर वार्त (ठहें। कतिरमन। किन्छ (य मेर्नानम, डाहात मन অংশিয়া ছিল, কিছুতেই তাহা নিকাপিত হইল না ৮° ডিনি পুনরায় দায়দের বিনাশ সাধনে বঙ্কপারিকর হউলেন। উরা পকে বেরেতর মূল চলিতে লাগিল। দাযুদ যণাসাধা পা রক্ষা করিতে লাগিলেন। এই বুৰ সমলে দায়ুদ চুট্বাট সলকে হাতে পাইয়াও **ড়াঁহাকে বিনাশ ক**রেন নাই। ^{বাং} (मार्थ प्रम निरुष्ठ स्हेरन यूर्यत व्यवनान स्हेन। তংপরে দাবুদ জুড়ার সিংহাগনে অধিরোহণ করিবেন হেবরন নগরে তাঁহার রাজধানী ছাপিত হইল। ছুডা _{বাতীত} অপরাপর অনেক জাতি সলের পুত্র ইশ্বোশে**ধ**কে আপনাদিগের রাজা বলিয়া প্রচার করিল। ইশ্বোশের निरु हरेल पायून भम्य ब्रांस्कात क्योभन हरेलन **এ**वः ১০৫ হৈটতে ১০১৫ খৃষ্ট পূর্বান্দ পর্যন্ত রাজত্ব করিয়া গভাস্থ इन। बाजनात काशीन रहेबार डिनि धानाम (क्यूनारेह-দিগের সহিত বুদ্ধে প্রবৃত্ত হন এবং ভাহাদিগকে পরাস্ত করিয়া তাহাদের আধান নগর জেফ্সালেম হত্তগত এবং ত্রায় আপনার বাসস্থান স্থাপিত করেন। এই নগরেই क्रमनः विक्निस्टर्मन ध्रासन चाउँछा हरेन। हेरात भन मायुन फिनिखारेन, चारमनकारेंगे, এডোমাरेंगे, सामानुरिंगे, আমোনাইট এবং দিরীয় প্রভৃতি জাতিকে যুদ্ধে পরাস্ত করিয়া এক্দিকে ইউফ্রেভিদ্ হইতে ভূমধাসাগর পর্যান্ত ও অপরদিকে দিরীয় হইতে লোহিভদাগর পর্যান্ত ৫০ লক্ষ প্রজাপুর্ণ বিস্তীর্ণ সাত্রাজ্যের অধীশব হন। কিন্তু তিনি বাথদেবাকে হরণ ও তাহার আমীকে বিনষ্ট করিয়া নিজ বিজয় গৌরব কলঙ্কিত করেন। তিনি বাণিজ্যের উৎকর্ষ সাধনে উৎসাহ এবং ত্তমতিকল্পে বিশেষ মনোযোগী ছিলেন। তাঁহার রাজত্বে রিত্দীগণ শিল্প, বাণিজ্য, ধর্মনীতি, রাজনীতি, সমা**জনী**তি, কাবা, ইতিহাস, সঙ্গীত প্ৰভৃতি সকল বিষয়েই বহু উন্নতি লাভ করিয়াছিল। তিনি রাজ্যশাসনের জন্ম সর্কাণা একদল দৈত রাধিতেন এবং **খাদশ জন শাসনকর্তা নিযুক্ত করি**য়া ইস্রায়েলের বিভিন্ন জাতির উপর কর্তৃত্ব প্রাদান করেন।

যাহা হউক, দায়ুদ নিরবচ্ছির রাজ্যস্থ লাভে সমর্থ হন নাই, জাহাকে অনেক বিজোহাদি অভিক্রম করিতৈ হইরাছিল। উাহার পুত্রই বিজোহী হইয়া হত হয়। ইহাতে দায়ুদের অব-শিই জীবন নৈরাভো কালিমাময় হইরাছিল, সন্দেহ নাই।

দায়্দ যে কেবল যুদ্ধবীর, রাজনীতিবিদ্ ও রাজা ছিলেন তাহা নহে; তাঁহার কবিছণক্তিও প্রশংসনীয়। তাঁহার রচিত স্বতিগীতি পুস্তক (Book of psalm) খুষ্ঠীয়, জগতে অতুলনীয়। এই পুস্তকের অধিকাংশ গীতিই দায়ুদের রচিত।

দার্দের জীবন নিপাপ ছিল না। ছর্দম্য ইক্রিয়গণের বশীভূত হইয়া তিনি অনেক সময় পাপে লিপ্ত হইতেন। এই সঁকল ছঙ্কত স্মৃতিরূপ বিষকীট দংশনে তাঁহার হৃদয় সর্বাদাই জর্জারিত হইতে এবং তাঁহাকে ব্যাকুল করিয়া তুলিত। তিনি বলিতেন, গতপাপ আমার হৃদয়ে স্দাই কাপ্রুক রহিয়াছে। কিন্তু এত পাপের মধ্যেও এত অমসক্ল তামসিক কার্য্য কলাপের অন্তরালেও দার্দের অকপট হৃদয়াবেগ ইতিহাসে অত্ননীয়। ছ্দাস্ত রিপুগণ তাঁহাকে উন্মার্গামী করিলেও

তাঁহার হুদরবন্তা লোপ করিতে পারে নাই, অত্যভাপানলে তাহার হৃদয় দগ্ধ হইরা পৰিত্র হুইত। কোন পাপকার্য্য করিলে দায়ুদ অন্তাপ পরিহারার্থ, ঐ কার্ব্যে নির্দ্ধেবিভা গুভিপাদন করিতে নানাক্রপ ছল উদ্ভাবন করিয়া জাত্ম-वश्रमा कतिराजन ना। माबूरमत ब्रह्मिक धर्माणिक जनमा भार्वे করিলেই বৃঝিতে পারা যায়, কিরুপে এই রাজক্বির সরল আ্যা ভবিশ্বতের ভীষণ বিভীষিকার ভীত নিবিড় তমসাচ্ছর সন্দেহদোলার আন্দোলিত ও অজ্ঞাত আপিৎ-পাতের আশভায় আত্তিত হইয়া বিঘূর্ণিত হইভেছে,ী অবশেষে কিরূপে দেই মহা অন্তর্বিপ্লবের ভীষণ স্বাটকা অপ-গত হইলে ছ:ধ, শোক, সম্ভাপ, মৰ্ম্মপীড়া ৰাব্বা বিশোধিত क्षेत्रंद्रत्थाम नांबुरनद क्षत्रज्ञ ममूनिङ इटेबार्कः। क्षेत्रंद्रक्षा অটন ও ঐকান্তিক ভক্তিস্চুক এক্নপ গীতি বাইবেলে ন্মতি বিরল। দায়ুদের স্থেত: থমর বছ ঘটনাপূর্ণ জীবনের ছত: প্রণোদিত হৃদয়োজ্বাস, তাঁহার গীতিতে পরিক্ট হওয়াতে সংসারজালাব্যথিত খুষ্টানদিশের পক্ষে ঐ সকল স্থোত্র অতি 🕉 পাদের করিয়া তুলিয়াছে। অনেক খৃষ্টীয় ধর্মবিদ্গণ দাযুদকে যীশুখৃষ্টের এক প্রতিরূপ বলিয়া স্বীকার করেন। बाहेरवरन माबूरमत्र विखीर्ग है जिहान वर्गिक चारह ।

দায়ের (আনবী) মোকদ্মা রুজুকরা।
দায়ের (আরবী) ১ মণ্ডলী। ২ কৃদ্ধা ও ঢকা। ৪ ধান্কা,মঠ।
ধ বিচারক্মণ্ডলী। ও বছলনের ধারা বিচার।

দার (পুং) দারস্থতি ভাতৃন্দু-ণিচ্ দারে কর্ত্তরি আচ্। ১ ভার্যা, পন্নী. স্ত্রী। দারাদেনিভাং, এই স্ত্রাহ্নদারে দার শব্দ নিভা বহুবচনাতঃ, এই দার শব্দে একবচন প্রয়োগ হয় না, নিভা বহুবচন ইইয়া থাকে।

"পাণিগ্রহণিকা মন্তা নিয়ঙং দারলকণং।" (মহু)

পাণিগ্রহণাত্মক মত্রই দারলফণ। পাণিগ্রহণভার মত্র
পাঠ মাত্রেই দারাত্মক জ্ঞান জন্ম। দৃ-করণে বঞ্। ২ ঔবধভেদ। ভাবে ঘঞ্। ৩ বিদারণ।

দার ক ( তি ) দার্যতি নাশ্যতি পিতৃণং দু-ণিচ্ধুল্। ১ পুত্র। "কঠন্তে দার্কী রাজন্ দেবপুরেলাপ্যাং ভারাঃ।

বৰ্চসু। ৰূপভলৈচৰ সদৃশা মে মতান্তৰ ॥" (ভারত সচত ১০ )

২ বিদারক। ত বালক। ব্রিয়াং টাপ্। ৪ কন্তা।
দারকর্মন্ (ক্রী) দারাণাঃ তভাবত প্রতিপাদকং কর্ম।
ভার্যাত্মস্পাদক জ্ঞান বিশেষরপ বিবাহ, যে ক্রিয়াতে
ইনি আমার ভার্যা, এইরপ জ্ঞান অব্যে, তাহাকে দারকর্ম বলা যায়। "সাপ্রশন্তা বিজাতীনাং দারকর্মণি মৈধুনে।"

(डेबाइडब)। [विवाह (मथ।]

দারকাচার্য্য (পুং) শাকাব্দের শিক্ষাগুক।
দারক্রিয়া (প্রী) দারাণাং ক্রিয়া। দারকর্ম, বিবাহ।
দারগুঞ্জ, আলাহাবাদ নগরের উপকণ্ঠস্থ, একটা সহর। অক্ষাণ্
২৫ ৪৪ উ:, জাঘি ৮০ ২৫ পূর্বে। এই সহর গলার
দক্ষিণকূলে অবস্থিত এবং ফলে আলাহাবাদ নগরেরই অংশ
বলিয়া পরিগণিত। আলাহাবাদের মাজিট্রেটই ইহার
শাসনকার্য্য সমাধা করেন, মোলাহ্বাদের পুলিস ইহার শাস্তি
রক্ষা করে এবং এই নগরও আলাহাবাদ মিউনিসিগালিটার
অন্তর্গত। আলাহাবাদের কেক্সন্থান হইতে ইহার দ্রতা
হুই মাইল মাত্র।

দার প্রহণ (ক্রী) দারাণাং গ্রহণং। পত্নীগ্রহণ, বিবাহ।
দার (ক্রী) দারয়তি নাশয়তি জলমলং অনেন দুণিচ্করণে
কুট্। > কতক্ষল, নির্মাণীজুল, এই ফল জলে দিলে জলের
মলা বিদ্রিত হয়। দুণিচ্ভাবে লাট্। ২ বিদারণ, দারকমাত্র। ও বিদারণ সাধন অস্তাদি। ৪ ব্রণাদি ক্টেনিন সম্পাদক ঔষধ বিশেষ। [ বল দেখ।]

করঞ্জ, ভলাতক, দণ্ডী, চিতা, অখনারক, কণোক বিঠা, কাকবিঠা ও গৃধিনীর বিঠা, ইহার যে কোন একটী পক এণে লেপন করিলে এণ বিদারিত হয়। ক্ষার জব্য (অপাক্ষারান্তি) অথবা যবক্ষার প্রভৃতি প্রয়োগ করিলেও এণ ভিন্ন ইইয়া থাকে, কিন্ত ইহা অভিশয় কইদায়ক। (ভাবপ্রণ) দারদ (ক্রী) দরদি দেশভেদে ভবং স্লিগ্রাদি অণ্। ১ দরদ দেশোভব বিষভেদ। ২ পারদ। ৩ হিঙ্গুল। ৪ সমুদ্র। দারদ (দার্দ) লাদক প্রদেশের পশ্চিম ভাগে সিন্ধনদের ক্লারদ (দার্দ) লাদক প্রদেশের পশ্চিম ভাগে সিন্ধনদের ক্লারদ (দার্দ) কর্মানী একজাতি। ইহারা আর্য্যংশসভ্ত; নানাশাথায় বিভক্ত হইয়া নানাস্থানে বাদ ক্রিতেছে। অনেকে বছকালাবধি মুসলমান ধর্মে দীক্ষিত হইয়াছে। মন্ত্রমারভারি গ্রন্থে এই জাতি সংস্কারভাই রাত্য ক্ষাত্রিয় ব্রিয়া বণিত আছে।

এখন ইহারা তিন বিভিন্ন ভাষায় কথাবার্ত্ত। কহিয়াথাকে।
তিন ভাষাতেই লিথিবার সময় পারত অক্ষর ব্যবহৃত হইয়া
থাকে। ঐ তিন ভাষার নাম শিনা, থছুনা ও অর্ণিয়া। আন্তর,
গিল্বিট, এবং আরও দক্ষিণে চেলা, দারেল, রোহলী এবং
পালা প্রভৃতি সিন্ধ্নদের উভয় ক্লবর্তী প্রেদেশে শিনা ব্যবহত হয়। হুণ্লো ও নাগর নামক স্থানে থছুনা এবং চিত্রলে
ও ইয়াশানে অর্ণিয়া ভাষাপ্রচলিত। কাশ্মীয়ীগণ ইহাদের
মধ্যে বাল করিলেও নিজ ভাষায় কথাবার্ত্তা কছে। কিউ
কাশ্মীয়ী ও দার্দ্দ ভাষায় বিশেষ সৌগাল্ভ আছে।

গিলঘিট, আন্তর ও বল্ভিছানে দার্ণগণ রোণু, শিন,

রক্ষ্ন, ক্রেমিন ও ডোম প্রভৃতি শ্রেমীতে বিভক্ত। ইন্থানি বিষয় মধ্যে দিন ও মৃক্ন কাতিই প্রধান, ক্রেমিনগণ বিশ্ব কাতি। ডোম ও ঢোকরা নীচতম। অনেকের মঙ্গে, এই দার্দ কাতিই প্রীক প্রতিহাসিক হিরোদোভাগ্ বিশ্ব দার্দিরি ( Dadicæ ) কাতি। কিন্তু সার্জন বেলু ( Bellew ) গার্হেব বলেন, কাকর আতির সহিত আফগানিকানে 'দার্দি' নামক এক জাতি বাস করে; ইহারাই হিরোদোভীন্ প্রোক্ত কাদিরি আতি হওয়া সম্পূর্ণ সম্ভব । প্রিনিও কাশ্মীর সীমান্তে হিন্দুকুশন্ত দারদ প্রদেশের উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন। প্রাণেও দরদ ও এই জনগদবাসী, দীরদগণের উল্লেখ আছে।

দারদ্গণ থুব মছাপ্রিয় িইহারা আপনাদের ব্যবহার্থা
মছা নিজেই প্রান্তত করে। শহ্মসার সিদ্ধ করিয়া ভাহার
সহিত লাদক প্রদেশ হইতে আনীত প্যাপন্ নামক একরপ
দ্রব্য মিশাইয়া স্বেল্যাভাপে অথবা অগ্নির নিকট মৃৎপাত্রে
১০০২ দিন রাথিয়া দেয়। উহা ছাঁকিয়া লইলেই মছা হইবে।
ইহাতে ছই ভিনবার ফাল মিশাইয়া মো নামক মছা প্রস্তুত্র আজ্বর, শিন ও গিল্বিট্বাসিগণ এই মছাপান করে।
নাগরে দ্রাক্ষা হইতে মছা প্রস্তুত হয়।

দারদগণ জীপুরুষ একত আহার করে। পুরুষগণ একত দুঝপান করিলে, তাহারা চিরকালের জক্ত বন্ধুস্থতে আবি হইল এইরূপ অঙ্গীকার করা হয়।

দার্দগণ চৌঘানবাজি অর্থাৎ অশ্বপৃষ্ঠে চড়িয়া ভাটা তাড়না থেলিতে ভালবাদে। এইরূপ থেলাকে পোলে। থেলাও বলল। আন্তরে ইহাকে তোপি এবং ুগিলিখিটে ইহাকে বুলা কহে। এই থেলার জন্ম গ্রামের প্রান্তে বিজীপ মাঠ পড়িয়া থাকে। [চৌখানবাজি শক্ষ দেখ।]

শিকার করিতে ইহাদের বিশেষ আগ্রহ। ধমুর্কীণ শিকার সকলেই মনোযোগী। শীতকালেই শিকারের ঘটা অধিক।

ইহারা বন্দুক ব্যবহার করে। ঐ সকল বন্দুক টুণি দার বিলাতী বন্দুক নহে। উহাতে অগ্নিসংযোগে ঋণি ছুড়িতে হয়। বন্দুকের গুলি শুদ্ধ সীসার না করিয়া প্রভাৱ থতে দীসা মুড়িয়া প্রভাত হয়। শার সন্ধান ও বন্দুক ছুড়িতে ইহাদের লক্ষ্য অব্যর্থ।

ইহারা আমোদ প্রমোদের সময় বাস্ত সংযোগে ন্তা করিয়া থাকে। অসি চর্মাদি শইয়াও নানাপ্রকারে দ্বে দলে নানারূপ ক্রীড়া প্রদর্শন করে।

দারেলবাসীরা মৃত ব্যক্তির পার্বে বসিরা **লাকা স্থ^{ণারি}** 

^{*} Bellew's Ruces of Afghanistan.

প্রভৃতি ভক্ষণ করে। এই কাতি খনেক সমর মৃতিকার নিয়ে থার দ্রব্য প্রোধিত করিয়া রাথে। কথন কি আক্ষিক বিশংপাতে খাদ্যাচাব হয়, এই আশহায় বোধ হয় এয়প করিবার উদ্দেশ্য। সন্তান ক্রিলেল যে খাদ্য প্রোধিত করা হয়, ভাহা ঐ সন্তানের বিবাহকালে উন্তোলিত করিয়া বয় বায়বের মধ্যে বিতরিত হয়। খাদ্য দ্রব্যের সহিত গৃত্ত প্রোধিত হয়। এই দীর্ঘকালে ঐ মৃত বিশাদ ও লোহিত বর্ণ হইয়া য়ায়, কিন্তু দার্দগণ মনে কলে, এই বর্ণ ফ্রন্সর ও ফ্রন্সরি সৌভাগাস্চক।

मावल (माद्रवन) निक्नारमत शिन्धम क्नावली अकति आहोन अलम। वह थातीन कात्न हेरांत मात्रननशत छेमान রাজ্যের রাজধানী ছিল। দারদগণ এই প্রদেশের প্রাচীন अधिवात्री, এই দারদগণ হইতেই ইহার নাম নারেল হই-য়াছে। বৌদ্দিগের প্রাছর্ভাব কালে দ্বারেল বিশেষ সৌভাগ্যশালী ছিল। চীনপর্য্যটক দ্মা-হিয়ান এবং হিউএনৎ সিয়ং উভয়েই এই স্থান পরিদর্শন করিতে আদেন। ফা-হিয়ান দারেলকে তো-লি বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। তিনি এথানে ১০০ ফিট্ উচ্চ মৈত্রেয় বোধিসত্বের কান্তনির্শ্বিত এক প্রকাও মৃত্তি দেখিয়া ছিলেন। হিউএন্ৎসিয়ং ইহাকে উজ্জ্ল चर्न वर्त्न त्रक्षिक धवः कारलोकिक खनमण्यम विविधा निर्मान করিয়াছেন। প্রবাদ আছে যে, মাধ্যান্তিক নামক জনৈক বোধিসত্বের তত্ত্বাবধানে এই প্রকাণ্ড ও অত্যন্তুত মূর্ত্তি নির্মিত ংয়। নির্মাতাকে ভাবী বোধিসত্ব মৈতেয়ের আকার প্রকার <u> বৃদ্ধর পে দেথাইবার জন্ম মাধ্যান্তিক ভাহাকে ভিনবার</u> ত্ৰিত ন্যুমক চতুৰ্থ স্বৰ্গে লইয়া গিয়াছিলেন। স্থপীত ঐ স্থানে নৈত্রেরের মূর্ত্তি দেখিয়া সেইরূপ দীর্ঘ ও আকারুপ্রকারাদি युक् थे कार्ष्ठमशौ मृर्खि निर्माण करता

দারপরি এই (পং) দারাণাং পরিগ্রহং গ্রহণং। দারকর্ম,
বিবাহ। "অতঃপরং সমাত্তঃ কুর্যাদারপরিগ্রহং।" (মহ)
দারপরি গ্রহিন্ (তি) দারপরিগ্রহ ইন্। দারপরিগ্রহযুক্ত।
দারবলিভূজ্ (পং) দারেণ চঞ্চ্যাতজ্ব বিদারণেন বলিং
ভূজ্তি ভূক্তিপ্। বক্পকী। (তিকাও)

দারব ( ি ) শারুণা: বিকার: রঞ্জাদিছাৎ অঞ্। দারু-বিকার কাঠমর পদার্থ। "অভীষ্টং পৃথিবীগোলং কার্যিছা তু দারবং।" • ( স্র্নিক )

দারসংগ্রহ (পুং) দারানাং সগ্রহঃ। দারগ্রহণ। 
দারা, > হিন্দিগের এক থাকার আনান্ধ যন্ত্র। ২ (দেশজ) ত্রী।

দার শন্দ নিত্য বত্বচনান্ত, এই জন্ত দার শন্দের প্রথমার

বহবচনে 'দারা:' এইরূপ প্রেরোগ হর, কিন্তু বৃদ্ভাবার

'দারাঃ' বিস্থান্ত শব্দের প্রেরোগ নাই। অভএব 'দারা' এইরূপ শক্ষ দেশল বলিতে হইবে। [দার দেখ।] দারা, > পারভের ফৈন্সান বংশের ৮ম রালা। রাণী-হমা-উর গর্ভে জন্ম গ্রহণ করেন। ইহার রাজভ্বনালে পারভ্রে অন্দেকগুলি যুদ্ধবিগ্রহ হয়, তল্লুধ্যে মাকিদনরাল ফিলিপের সহিত যে যুদ্ধ হয়, তাহাই প্রধান। ইনি ১২ বর্ষ মাত্র রাজত্ব করেন। তৎপক্রেইহারুপুত্র দারা বা দারাব (২য়) রাজাত্বন।

২ অপর নাম দারাব, গ্রীক ঐতিহাসিকগণ ইহাকেই
Darius Cadomanus নামে বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। ৩৩১
খঃ পূর্বাব্দে মহাবীর আলেকসান্দারের সহিত এফুদ্ধে নিহত
হন। ইনিই কৈআন্ বংশের শেষ নরপতি।

দারাঙ্গী (দেশজ) একপ্রকার মংভ: (Cyprinus Bunta)
দারাড়, কছপ্রদেশবাসী এক প্রেণীর মুসলমান। ইহারা পুর্কে
হিন্দু ছিল।

দারাধিগমন (ক্লী) বিবাহ। "শারাধিগমনকৈণ বিবাহানাক লক্ষণম্ ও" (মন্ত ১০১২) 'দারাধিগমনং বিবাহঃ' (কুলুক) দারাধীন (অি) জীর বশীভূত, জৈণ।

দারাশেকা, ভারতবর্ধের মেগিল সমাট্ শাহকাহানের ক্রেট পুত্র। ইনি পিতামাতার তৃতীয় সন্তান; কিন্তু পুত্রগণের মধ্যে সর্ব্য ব্রেষ্ঠ। ইহার মাতার নাম অলিয়া-বেগম। এই अनिशं-८वंगमहे 'मूमलाल महन' नारम थाल हन *। हैहात्रहे সমাধিমন্দির স্থাসিজ ভাজমহল। অর্মি সাহেব মুসলমান ঐতিহাসিকদিগের বিবরণ হইতে যে বিবরণসংগ্রহ করেন, তাহাতে লিখিয়া গিয়াছেন যে, শাহলাহান্ আসফ্ঝার (নুরজাহানের ভাতার) কলা মমলাজা জমা-नीरक विवाह करत्रन अवः हैशत्रहे नमाधित जञ्च जाजमहनु নিৰ্মাণ ও ইহারই গর্ভে দারাশেকো স্থলা প্রভৃতি প্রতাৎ-शानन करत्रन । टकान् मारण मात्रात्मरकात्र अन्य स्त्र, ভাহা স্থির জ্ঞানা যায় না। বিভারিজ সাহেব উা্হার ভারতবর্ষের ইতিহাসের একস্থলে লিথিয়াছেন ‡ বে, ১৬৫१ शृहीत्म मात्रात वम्रम हर वरमत रहेमाहिन धवः তিনি অবেদ্ধের অপেকা ছই বংসরের বৃড় ছিলেন। তাহা হইলে দারার জন্মকাল ১৬১৫ খুটাস; কিন্তু অরদজেবের সমকালবন্তী কাফিখা ক্লণ্ড সুন্তথব্ উল্ লুবাব নামক

^{*} Elliots' History of India, Vol. VII. p. 27, and note.

[†] Historical Fragments of the Moghul Empire, p. 187-88.

[†] Beveridge's History of India, I. p. 28.

हेजिहारम जाउल खारव व समकान २०२४ हि जिया ( जर्बार र २०५२ वृष्टीक ) त्म उद्या जात्य । छाहा हरेतन मात्रात्र जम्मकान २०५१ वृष्टीक हत्र । वाममानामात्र म्यः । २०२६, हि जिया २० मण्ड (१७५८ वृष्टीत्म २० मार्कः) मात्रात्र जम्म हत्र । मात्रात्र मत्रात्म जाला जात्रिण छ प्रणी छ मी हिना त्म मज्ञान त्यात्म प्रमाप ८० वरमत वत्रतम जाना त्यात्म प्रमाप ८० वरमत वत्रतम जात्रात्म वत्रतम । १०६० वृष्टीत्म १ भवत्माक गमन करत्म । १०६० मात्रात्म व्याप्त वत्रम २० वरमत मात्रा । माह्याहान् छथन । व्याप्त मात्रात्म वाम व्याप्त व्

কাশীর হইতে লাহোরের পথে বধন ১০৩৭ হিজিরায় ( ১৬২৭ খুडोक्स ) काहां शिरतन मृज्य हहेन, खबन नातार महिल महत्त्वत ख्वा थवः खत्रम्यत नृत्वाहात्तत्र निक्टिहे हिल्लन। ন্রজাহান্ বদিও এ সময়ে নিজক্জামাতা শাহরিয়ারের জভা দিলীর সিংহাদন হস্তগত পরিবার চেষ্টার বাস্ত ছিলেন এবং ওজ্জ শাহদাহান্ আতুপুত্রী দামাতা হইছেও তাঁহার বিক্লাচরণ করিতেছিলেন, কিন্ত আতুপুতী সন্তান বলিয়া भाङ्कारात्मत्र मद्यानितरक "निष्डत मरूल निष्डत निकारे রাথিয়ীই লালন পালন করিতেন। এ সময় দারার বয়স ১০ বংসর মাত্র। জাইাগীবের মৃত্যুর সমরে শহিলাহান্ আগ্রার ছিলেন না, দাকিণাত্ত্যে ছিলেন। শাহরিয়ারই बाकामाक कतिरवन अकथाकांत्र दित रहेन, किन्छ पूर्श শাহরিষ্বার দেই সময় আগ্রা ত্যাগ করিয়া লাহোরে পিভার धन त्रज्ञ व्यक्षिकातः कत्रिएं शिरामा। धामिरक मञ्जी देताम् छ था ও সেনাপতি ইয়ামিন্ উদ্দোলা আস্ফ্ খা ( ন্রঞাহানের 🚅 লাতা ) রাজ্যের বিশৃষ্থলা নিবারণ উদ্দেশে ধসকর ( জাইাগী-বের জ্যেষ্ঠ পুত্তের্) পুত্র ব্লাকিকে সিংহাসনে বসাইবার জন্ম নুরজাহানের স্বীয় স্বভিপ্রায় দিল্ল করিবার একদিন আ্বােগ আগ্রার উপস্থিত হইলেন এবং সর্কাঞ্চে শাহজাহানের পুত্রগণকে রাজ্ঞীর অধিকার হইতে উদার করিয়া সাদিক খা নামক এক সেনাপতির হত্তে অর্পণ করিলেন। দৌহিত্র-দিগকে নিরাপদ করিয়া আসফ্থা আমাতার অভ সিংহাসন রকার্থ মন্ত্রী ইরাদভের পরামর্শে বুলাকিকে সিংহাসনে বসা-ইয়া দাক্ষিণাতো জামাতাকে আনিতে পাঠাইলেন। ৪ মাস পরে (১৬২৮ খৃষ্টানে) * শাহজাহান্ আসিয়া সিংহাসনাধিরোহণ করিলেন। শাহজাহান্ রাজ্যলাভ করিবার

७ वर्त्रज्ञ शरत कार्बार ১७०० चुडेारच ( ১०৪० हिविसात) ১৩ वरनत यत्रतम मात्रात्र विवाद स्त । आहात्रीत्तत्र विहेत পুত্র কুমার পরবেজের ক্ষা নাদিরার সহিত দারার বিবাচ हत्र। এই विवादित श्राप्त धूमधाम वेिज्यू र्या कात हत्र नाहे। উাহার গর্ডে স্থলেমান শেকো ও শিপেহর শেকোনামে চুঃ • পুত জন্ম। ১৬৫১ খৃষ্টাবে (১০৬২ ছিলিবার) ফুল্টান শাহলাহানের আনেশে কুমার অরলজেব বাহাছর মৃল্টান इटेट कामाहात अन कतिवात जा भगन करत्रन, काव्र_{सिर} পথে অলামী শাহলা খাঁ নামক সেনাপতি কালাহার জ্বে क्त्रमान ७ दृहर रेनर्छंदन नहेत्रा छाँहात गहिल मिनि हन। উভর সৈভদল একত করিয়া অরম্বজেব কালাহার হুর্গ व्यवरताथ करतन। कुर्नल प्रमृष् अ व्यव भारत भूर्व हिन। ভিতর হইতে অঞ্জ বর্ষণ ছওয়ায় মোগল সেনার দাঁড়ান নাঃ हहेता छेठि**ता।** व्यवस्थारवत व्यथीरन रय हरे कामान हिन. অনবরত ছুড়িতে ,ছুড়িতে ভাহার ছইটা ফাটিয়া গেন। অলামী শাছলা খাঁর দেনাদলে মীর-ই-আক্রিস কাসিম গাঁব অধীনে ৰে পাঁচটা কামান ছিল, তাহা হইতে ধদিও অফি क्रुड (शांना वर्षन इटेडिइन, उथांनि विस्मव कान कर करें मा। अनर्थक वांक्रन ७ (शांना क्रम हहेटड नांशिन, विद विभूमाज ७ पूर्वस्वरत इटेन ना । त्रःवान भारकाशास्त्र निकृत পৌছিল। আরও একটা বিপদের স্ত্রপাত হইল। গদ मीत्र निक**हेरखीँ উजर**दक **ও অनमान जा**डीव आफगात्त्र विट्यांही इहेबा महा अनिहे आंत्रक कतिन, कारबहे स्वागंत ১৬৫২ খুটাব্দে অরক্তবেবকে অবরোধ উঠাইয়া ফিরিয় আসিতে ইইল।

অর্জ্বের ফিরিয়া আসিলে, কুমারু বুসন্দ ইব্বাল দারা-শেকো দৃত্তে। সহকারে জানাইলেন যে তিনি কালায়র নিশ্চয়ই জয় করিতে পারিবেন। শাহজাহান জােট প্রের কথায় বিশাস করিয়া তাঁহাকে সেই বৎসরেই অধিক সংখাই সেনা এবং কঠবল ও মূলভান প্রদেশের শাসনকর্ত্ব প্রান্তির পাঠাইলেন। দারা লাহোরে পঁছছিয়াই য়য়ের আয়োজনে এত ব্যক্ত হইলেন, বে আয়োজন করিতে এই বংসর সময় লাগিতে পাবে, তাহা ভিনি ও মাসের মায়ে করিয়া ফেলিলেন। তাঁহার সজে 'কিশাবয়-কুশা' (শেশবয়ী) ও 'গড়-ভয়ন' নামে ছই অতি বৃহদ্যাকার কামান চিল্লা এই ছই কামানে হে পোলা দেওয়া হইত, তাহার ওজন ১/৮ এক মণ আট শের। আর একটা কামান ছিল, ভাগা পোলার ওজন ১৮৬ এক মণ বোল সের। এতরিয় তিনিঃ হাজার মণ বারুদ ও ২৫০০০ মণ দীসা সকে লইলেন। মার্

১৬২৭ গৃষ্টান্দের অক্টোবর মাসে জাইগিয়িরের মৃত্যু হয় এবং ১৬২৮
খৃষ্টান্দের ফেব্রুগারি মাসে শাহঞাহান্ শিংহাদন লাভ করেন।

আরেজন করিরা তিনি ধাআর দিন হির করিরা পিতার অসমতি নইলেন, ম্লডানের পথেরসদ ও বাসের স্থাধি। বলিরা সৈক্সদল সেই পথে, চলিল। ১৬৫৩ খুটান্দে (১০৬৩ ছিজিরার) দারা কান্দাহার অবরোধ করেন ও বুল্ডের ত্র্গ অধিকার করিয়া লবেন।

অবরোধে ৫ মাস কাটিয়া গেল। বারুল, সীসাঁ, গোলা গুলি কুরাইয়া আসিল। আকগানিত্তানের পর্কতমালাসমাজ্য প্রদেশে শীতের প্রকোশে শীতবন্ত্রহীন মোগল সেনা মহা বিরক্তি, হইয়া উঠিল। প্রশানান শাহলাহান্ সংবাদ পাইয়া নিধিয়া পাঠাইলেন যে, যদি এখন হুর্গজন সম্ভব বিলয়া বোধ হয়, আর অতি অয়দিনের মধ্যে সে কার্য্য সমাধা হয়, হউক, নজুবা বুধা সময় নই করা উচিত নহে, চিলয়া আসাই শোরহর। দারা কর্জুক নবনিত্ত্বক নব্রিজ্ঞা সমলে আসিয়া দারার সহিতে মিশিত হুইলেন। তিনি সঙ্গে সংক্ষের কারধানা পর্যন্ত উঠাইয়া আনিলেন। দারা কিরিবার কথা প্রভাব করিলে সমস্ভ মোগল সেনাপতিই তাহাতে সম্পত হইলে ঐ বংসরের শেষ মানে অবরোধ উঠাইয়া স্কলৈ হিল্পুরানে প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন।

জাইণীরের সমর নিরূপিত হইরাছিল বে, অতঃপর চিতো-রের আর কোন রাণা চিতোর-ছুর্গ সংস্কার করাইতে পারি-বেন না। ১৬৫০ খুঠানে রাণা জগৎসিংহ সে আদেশ লজ্জন করিয়া জীর্ণহান সকল ভালিয়া স্থাচ্চ করিয়া পুনর্নির্মাণ করিত্বে আরম্ভ করেন। শাহজাহান্ এই সংবাদ পাইয়া ৩০ হাজার নৈক্ত সহ অলামী শাহলা থাঁকে চিতোর ধ্বংস করিতে গাঠাইলেন।

দারা শাহজাহানের সকল পুত্র অপেক্ষা প্রিয়পাত্র ছিলেন, সর্বনাই কাছে থাকিতেন, এমন কি মতবৈধ হইলেও তিনি দারার কথামত কার্যা করিতেন। সম্রুটের এই পুত্রবশ্ভার কথা সর্ব্বব্রু প্রকাশ ছিল। রাণা জগৎসিংহও,
ভাষা জানিতেন। শাহুলা খাঁ থলিলপুরে গিয়া ছাউনী করিবামাত্র রাণা জগৎ গোপনে দারার নিকট বিশ্বস্ত লোক পিচাইলেন এবং অমুরোধ করিলেন যে, তিনিই মধ্যস্থ হইয়া স্বভানের এই ক্রোধ নিরারণ করিয়া দিন। দারাও সমাট্রেক রাণা জগভের অমুরোধ স্বস্থনর বিনর বিশেষরূপে জানাইলেন। সমাট্ ভানিয়া নিজ দ্ভকে পাঠাইয়া জানাইলন যে, রোণা শীয় জোঠ প্রকে মোগল দরবারে রাখিয়া দিবেন ও একদল সৈম্ভ রাণারই একজন আত্মীয়ের অধীনে দাক্ষিণাত্রে থাকিয়া মোগল স্মাট্রের কার্যা করিবে। রাণা

ইংতে বীক্ত না হইলে ভিনি চিভার ধাংস করিবেন।'

রাণা পুনরার দারাকে সংখাদ দিলেন বে, ভিনি যদি উছার দেওরানকে পাঠাইরা দেন, ভাছা হইলে ভিনি ভাঁহার সহিত পুরকে মোগল দর্বারে পাঠাইরা দিতে পারেন। দারাও সম্রাট্কে বলিয়া সেইরূপ আদেশ লইলেন ও নিজ দেওরান সেও আবহল করিমঁকে চিভোরে পাঠাইলেন। ইভিমধ্যে শাহলার সেনা চিভোর আক্রমণ করিয়া মুরচা প্রাচীর প্রভৃতি ভালিতে আরম্ভ করিল। রাণা জ্বাৎসিংহ প্নরার প্রভিনিধি পাঠাইতে হির করিলেন। ইভিমধ্যে দায়ার দেওয়ান আসিয়া পৌছিলেন।

রাণা তৎকণি আপনার জোর্গপ্রকে তাঁহার সক্ষে প্রেরণ করিলেন। দারার মধ্যস্থতার এবং রাজকুমারকে প্রতিভূম্বরণ পাইরা স্থলতান শাহজাহান্ রাণাকে ক্ষা করিলেন।

১৬৫० थृष्टीत्कत्र मधाकार्रेन भारकाशास्त्र तात्का ১०७৫ হিথিয়া অতীত হওরার এক উৎসব হর। এই উৎসবে নানা দিপেশ হইতে রাজস্তবর্গ নিমন্ত্রিত হইরাছিলেন। এই मक्निटम माहकाहान् त्कार्डभूव पात्रादक अक्षी विटम्ब (थनार দিয়া সম্মানিত করেন। এই খেলাতের সর্হিত যে জামা দেন, তাহার আত্তীনে ও মগনীতে যে কারচোপের কার हिन, जन्मत्था मुख्यां अ मनिमानिकापि गाँथा हिन। देहान ম্লা 🔹 হাজারের উপর নির্দারিত হইরাছিল। একথানি শিরপেঁচ (শেরফর্না) দিয়াছিলেন, তাহার এক্সানি চুনি ও ছইটী মুক্তার দাম > লক্ষ ৭০ হাজার টাকা। এতত্তির নগদ ১৩ লক টাকাও প্রদান করেন। এই অবধি দারা পাছ বুলন ইক্বার দারাশেকো' নামে অভিহিত হইলেন। ১০১ই 'উপাধি ও সন্মান শাহজাহান্ জাহাঁগীরের নিক্ট পাইরাছিলেন। দরবারে সমাটের ভক্ত ভাউদের সমূথে এভদিন দারার বসিবার আসন ছিল, এখন হইতে তক্ত তাউলের দক্ষিণে এক স্বতম্ভ স্বৰ্ণ সিংহাসন স্থাপিত হইল।

১৬৬৮ খৃঠান্দে শাহলাহানের একবার পীড়া হয়। এই সময় দারালেকো রাজ্যের সমপ্ত কার্য্য চারাইতে থাকেন। এই সংবাদে তাঁহার ভাতৃবর্গ কিছু চমকিতে হইয়া উঠেন। বিতীয় ভাতা মহম্মদ ম্বলা এ সমর্যে বাদালার, তুঁতীয় ভাতা মহম্মদ ম্বলা ভালাতে ও চতুর্থ মুরাদ বক্স্ ভালাটে শাসনকর্ত্তা ছিলেন।

দারাকে শাহজাহান বড় ভালবাসিতেন, কারণ তিনি পারসী, আরবী ও সংস্কৃত ভাষার বিশেষরূপে বৃংপর ছিলেন, এতডির তিনি সাহসী, সরল ও বৃদ্ধিমান, কিন্তু বড়

অপরিণামদর্শী ছিলেন। এডত্তির তাঁহার আরও একটা দোষ ছিল, বে তিনি যখন যে কার্যা করিতে প্রার্ত্ত, হই-তেন, তাহাতে আর কিছুমাত্র কাল বিলম্ব করিতেন না, মনে উদিত হইবামাত্রই ক্রিয়া ফেলিতেন। শাহলাখান্ তাঁহাকে এত ভালবাসিতেন যে, সমরে সমরে তাঁহার পরা-মূর্ণমত তুএকটা অভায় কার্যাপ্ত করিরী ফেলিতেন। দারাকে সমাট চকুর আড় করিভেন না। দারার আরও একটা বিশেষ গুণ ছিল, তিনি অক্বরের স্থার মুসলমান ও হিন্দুধর্মের সার্মত সংগ্রহ করিয়া নিজ ধর্মমত সংগঠন করিরাছিলেন। বে সময় তিনি কান্দাহার জয়ার্থ গমন করেন (>•৫• হিজিরা), সেই সময় কাশীরে মোঁলানা শা নামক একজন ফর্কীরের সহিত পরিচিত হন। • এই ব্যক্তিই তাঁহাকে হিন্দু, খুটীর ও মুসলমান ধর্মের সময়র করিয়া আহৈতবাল শিক্ষা দেন। ইহার কাছেই তিনি হিন্দুশারের রহস্ত পাঠ করিয়া চমংকৃত হন এবং তদৰ্ধি তাঁহার ধর্মমত পরিবর্ত্তিত হয়। তিনি অকবরের ভাষ সর্কাণা মুসলমান ফকীর ১৪ হিন্দু স্ব্যাসী, গোঁসাই প্রভৃতিতে পরিবৃত হইয়া ধর্মালোচনা করিত্ন। তিনি আলা শক্ষের পরিবর্ত্তে উপাসনাকালে 'প্রান্ত্র' শুল ব্যবহার করিতেন, আংটার উপর ওঁকার খোদা ইরা পরিতেন এবং রোজা, ন্যাজ কোরাণাস্সারে করিতেন না। এই স্কল কারণে মুস্লমান-স্মাঞ্চ উাহার উপর অভিশন্ন বিরক্ত ছিলেন। তিনি নিক্সে ব্লিভেন বে, হিলুধর্ম তু মুদলমান ধর্মের উদ্দেশ্ত এক এবং বনল জাতার ভার এক সত্য হইতেই উছুত। তিনি আপনাকে গোঁড়া মুসলমান বলিয়া পরিচর দিতেন না বা আচার _ব্যবহারে সেরপ আচরণও করিতেন না। এই সকল কারণে যথন সমাটের পীড়ার সমর তিনি নিজে রাজ্য-শাসন গ্রহণ করেন, তথ্ন রাজ্যের সন্ত্রান্ত লোক অনেকেই চম্কিয়া উঠিলেন। সকলেই ভাবিল বে, যদি সমাটের মৃত্যু হয়, আরে দারা যদি রাজা হন, তাুহা হইলে মুসলমান ধন্মের মূলোচছেল হইবে। মূসলমান ঐতিহাসিকেরা তাঁহাকে একস্ত আকৃষ্ণা ভাষার নিন্দা করিয়া গিয়াছেন। শাহলাহান্ দারাকে, ভালবাসিতেন বলিয়া ইতিপুর্কেই তাঁহাকে উত্তরাধিকারী বলিরা প্রচার করিয়াছিলেন। স্থলা, অরদ্ধের প্রভৃতির মনে মনেও রাজালিকা ছিল, কিন্তু কেই এতদিন ফুটিতে পারেন নাই। দারার ভ্রাতৃগণের মধ্যে ত্বা ত্ৰটাচারী বিলাদপ্রিয়, কিন্তু যুদ্ধিং ও বুদ্ধিলীবি ছিলেন, সুরাদ কেবল আনন্দপ্রিয় ও অতিমাত্রার স্থরাদেবী ছিলেন। मात्रा পূर्व रहेट हरे महक हरेना निष्ठात्क भिन्ना खाक्शनटक

অতি দ্রবেশে শাসনক্রী নিযুক্ত করিরা রাশধানী হইছে বহুদূরে পাঠাইরা দিরাছিলেন, সেই বস্তু সম্রাটের পীড়ার সুষর ব্ধন তিনি শ্বং রাজ্ঞার গ্রহণ করিলেন, ডখন সাক্ষাৎ, সমালে কোন গোলমাল হইল না, কিছ পরশারের অন্তর্ক ধারা প্রত্যেকেই দ্র দেশে থাকিরাও এ বিষয়ের मःवान शहिरणन। वानानात्र क्यां ७ शाक्तनावारम मुत्राव বাধীনতা প্রছণ করিয়া আপন আপন নামে মুদ্রা প্রচলিত করিলেন ও খুংবা পাঠ করাইতে লাগিলেন। স্থলা কাল विनव व्यविद्यंत्र द्वार्थ त्राकार्यकत व्यक्तिश्राहन शिवना क বিহার প্রদেশ বালালার অধিকার ভ্তুক করিরা লইরেন। দারা অরদবেবের কৃটবুদ্ধি ও তীক্ষ দৃষ্টিকে ভর করিতেন মাত্র এবং <u>দক্ষিণে</u> ভিনি যেরপ বলবিক্রমাদি প্রকাশ করিরা প্রশংসাধিত হইরাছিলেন, তজ্জভও তিনি স্পরিত ছিলেন। শাহলাহান্ গুর্ক হইতেই দারাকে ভালবাসিতেন ও তাঁহার পক্ষণাতী হিলেন, এখন স্বাবার শ্রাগিত হইরা আরও তাঁহার নিদেশামুবর্তী হইরা পড়িলেন। অরলবের ঠিক এই সমরে বিজাপুর অবরোধ করিরা বসিয়াছিলেন। উাহার সাহায়ার্থ তথ্ম দক্ষিণে অনেক সৈত্ত ও সেনাণতি উপস্থিত ছিলেন। এ সমঙ্গে অরক্তকেবের অধীনে এও বন রক্ষা করা দারা অকর্ত্তব্য বোধ করিলেন, কিন্তু তাঁহার খভাবসিদ্ধ হঠকারিভাবশতঃ তাহা কৌশলে দ্র করিবার সমর অপেকা না করিয়া সম্রাটকে দিয়া আদেশ পাঠাইলেন, বে বিজাপুরের অবরোধ ত্যাগ করিরা সমস্ত সেনাপতি খু আমীর ওমরাহ্বর্গ একবারে রাজধানীতে প্রভাবর্তন कक्रन। व्यवस्थान धरे आरम्पन मर्च वृद्धिमन धरः একা অববোধ রক্ষা করা আসম্ভব ব্ঝিরা বিলাপ্রণ^{ভি} সেক্ষর আদিলশার প্রভাব মত সৃদ্ধি করিয়া ১ কেটি টাকা রাজ্য ও সন্ধির মূল্য অরূপ নানারূপ ধন রুও নইরা जरदाथ উঠाইहा चुक्छा-विनेतान সहदत (जादनावाद) প্রস্থান করিলেন। এখানে পঁতছিরাই সংবাদ পাইলেন, দারা দিলী ত্যাগ করিয়া আগ্রাদ্ধ পিতৃকোষাগার অধিদার করিতে গিয়াছেন।

১৬৫৭ খুটাব্দের শেষ ভাগে মুজা বৃহৎ এক দল দৈল লাগা বালালা হইতে দিলীর দিকে অগ্রসর হইতে আরম্ভ করে। শাহলাহান ভথন কতকটা মুহ ছিলেন। তিনি মুলাকে ছ করিতে নিষেধ করিয়া পত্র লিখিলেন, কিছু তিনি ভনিলেন মুজা যুদার্থ অগ্রসর হইতেছেন। কাজেই দারা সংবাদ পাইরা রাজা জরসিংহ (মিজা) ও মুলেমান শেলো অধীনে একদল সৈত্ত প্রেরণ করের। রাজা ভারিষ रिमार्ड प्रवाजाय गरेवा वथन कानीत निकंत श्रमाजीतवर्जी बाहा চুরপুর প্রামে পঁছছিলেন, উখন মুলা দেড়ফ্রোশ দুরে থাকিয়া বুদ্ধের অভ অভত হইতে লাগিলেন। পর বিন দুর্ব্যোদ্দের পূর্বের রাজা জর্সিংছ দুর্বৈন্তে অগ্রস্কর হুইরা অগ্রন্তত অবঁহার অ্লানৈক্ত আঁক্রমণ করিলেন। উবা-কালের তৃত্তি প্রদ মধুর নিজ্ঞা ত্যাগ করিয়া তথনও বার্মত-मक সুলা বা তাঁহার সেনালীবর্গ পাজোখান করেন নাই। অত্তের ঝনঝনার ভাঁহারা জাগিরা উঠিয়া দেখিলেন, স্ব ভুৱাইয়া পিয়াছে, তাঁহার ধনমুদ্ধ, কামান পোলাবাক্ল শক্রবরগত, বতকভালি লোকও বন্দী হইয়াছে। তথন আরু काल विलय नां. कतिया शांभाष्म त्नोकारबाहरन करवक লন অসূচরমাত্র শইয়া ক্ষলা পলায়ন করিলেন। ভিনি খরাজ্যে গেলেন না, কাজেই সমস্ত দেশ দারার অধিকার-इक रहेश পड़िन। वन्तीनिशत्क नहेश श्रामा क्यानिःह আগ্রায় উপস্থিত হইলে, দারা তাহাদিগকে নগরের চতুর্দিকে युवरिया जानारेतनन ध्वर करत्रकल्यानत धान्यम ७ करत्रक बारत इस व्हार्क्सन कतिया निरमन ।

যে দিন দারাপুত্র স্থলেমান শেকোও রাজা জয়সিংহ স্থজার विकास बाजा कार्यन, त्रहे मिनहे आत अकमन देवन नहेंगा मश्त्रां वयानाव जिल्ह १० कानिय थी मिक्ति वाळा करत्न। धरनकार ७ भूतान निकार कि कतिरहाहन ७ कि कारहात चारहन, छारांत्र मध्यांत ना शहिया तांत्रा ध्यक्क व्यवद्या দানিবার জম্ভ একবারে এই চরম ব্যবস্থা করিলেন। সুরাদ-वस विम आक्रानाबान পরিভাগে করিয়া কোন নিকে अर्थ-দর হন, তরে তাঁহাকে আক্রমণের ভার কাশিম বাঁর উপর ^{(म ९ द्रा} व्हेन ७ महादाक संभावक कावता वृत्रिया बावता করিবেন এই রূপ হির হইয়া সৈঞ্চদল প্রস্থান করিল। ইতি-পূর্বে বর্থন যোগল সম্রাট্ মহারাজ যশোবত্তের রাজ্য জয় ক্রিতে অগ্রসর হইরাছিলেন, সেই সময় বশোবুস্ত নিজ বলাবল ব্ৰিয়া দারাশেকোর নিকট লোক পাঠাইয়া দেন; তহিায়া ^{मात्रात} निक्ठे (शैंहिमा मुम्छ जानाहेल मात्रा ताजाटक ^{দাহায়} করিত্বে প্রস্তুত হইলেন। সম্রাট্ দারাকে বুঝীইয়া ^{কতক}, তিরস্বার কতক আখাস দিয়া এক পুত্র পাঠাই-^{লেন।} য**়োবস্ত পঁত্রের বিভাবাত্মক মর্দ্দ** ব্রিয়া আরও ভীত হইরা দারার উপাসনা ত্যাগ করেন ও দ্বিজা রাজা ^{মরসিংহের} সহায়তায় সম্রাটের নিকট[°] ক্ষমা প্রাপ্ত হন। मबाहे डांशांटक **आयंख कतित्रा आन्नागांटन अवागां**त्री অদান করেন এবং ভজ্জন্ত এক ফরমাণ ও ধেলাৎ পাঠাইরা ^{দেন। দারা এই সময়ে মালর প্রাদেশ নিক বশে রাখিরা} ভাষার সমস্ত রাজস্ব ধারা সৈক্তগণের বেডনালি চুকাইরা নিরা ভাষালিগকে স্বস্তু করিলেন এবং ভাষারাও মালঞ্জর ধনরত্বালি দ্বেখিরা আশুর্বায়িত হইরা প্রাভূকর্মে উৎসাহ প্রকাশ করিতে লাগিল। ইতিমধ্যে দারাশেকো অর্জনেবের উকীল ইসাবেষ্কে বন্দী করিয়া ভাষার বাটী সূঠ করেন।

এদিকে মুরাদ বন্ধ আক্ষণবালে নিজ লামে মুলা প্রচলন করিরা ও খুংবা পাঠের আদেশ দিরা খাধীনতা অবলয়ন করিরাই থালা শাবাল নামক একজন থোলার অধীনে এক দল সৈত্ত পাঠাইরা স্থরাটের স্থর্গ অধিকার করেন এবং বন্দরের সমস্ত বণিকের নিকট ১৫ লক্ষ টাকা দাবী করেন। অনেক তর্ক বিতর্কের পর বণিক্ দল ওলক্ষ টাকা দিতে বীক্ষত হয়।

धिनत्क यथन व्यवहरूव कांकत्रांवान । अक्नांग धारमन জর করিয়া বিজাপুর অবরোধ করিয়া ছিলেন, সেই সময় नुसार्वे भारकाशान् मीत्रक्ष्मनारक (•छन्तार-छन् ननाजनर-छन् ক্তির মুরাজ্জন খাঁকে) উহার নাহাবার্থি পাঠাইরা দেন। মীরজুম্লাও তাঁহার সহিত একমত হইরা কার্য করেন। আলম্গীর নামার মতে দারালেকো এই সময় গোপনে विकाপ्रवर्गात व्यामिन याँ ७ ठाँशांत व्यञ्चा व्यामीत ध्रमतादक অরলজেবের কথামত কার্য্য করিতে নিবেধ করিয়া পত্ত निर्धित। देहाँ उद्यासन्न शहिना व्यक्तिमा व्यन्नहरू वरक অগ্রাহ্ করিতে লাগিলেন। ইহার পর দারা অরদ্ধেবকে বলহীন করিবার জম্ভ স্ত্রাট্কে দিয়া মীরজুম্লাকে সলৈভে আগ্রায় ফিরিয়া আসিতে আদেশ দেওয়াইলেন। মীর-सूत्रना जनस्त्रादव जावनावादमञ्ज शट्य गरेगटक स्वितिदङ প্রস্ত হইলেন। অরদলেব জোটের কৌশল বুঝিভে পাণিলেন এবং তিনিও এ সময়ে মীরজুম্বার কার ত্রক নেনাপভিকে রুহৎ দেনাদল লইরা আগ্রায় জ্যেচের পক্ষে থাকিতে দেওয়া যুক্তিসক্ত বোধ করিবেন না। তিনি मानात छे भत दरोमन तथिनानन, भथ हटे एक मीत्र क्म्नार्क হুঠাৎ বন্দী করিয়া দৌলভাবাদের 'ছুর্নে রাথিয়া দিলেন। भीतक्ष्म्नात भूत महत्त्व काभीन थी अहे नमात्र सत्रवादत मीत्रवक्नी शान नियुक्त हिल्लन । मात्रा मीत्रक्म्नारक वन्ती করার সংবাদ পাইবামাত্র জাত্মীন খাঁকে বলী করিলেন, কিন্তু ৩৪ দিন পরে যথার্থ ঘটনা অবগত হইরা তাঁহাকে মুক্ত করেন। (ইনারেড খাঁর দিখিত) "শাহভাহান্নামার" মতে, ইহার কিছু পূর্বে আদিল থার মৃত্যু হর ও তাঁহার পুত্র মত্তৰ ইবাহি উত্তরাধিকারী নির্ণীত হন। অরভ্তের এই সমর থা জাহানু সামেতা থা নামক তাঁহার মাতুল পুত্রকে

দৌলতাবাদের ভার দিরা প্রেরণ করেন। এতত্তির জমাদংটল্-মূল্ক দুরাজ্ঞন খাঁ (মীর জুদ্লাঃ), শাহ নবালু খাঁ সর্কী
(সারেন্তা খাঁর কনিষ্ঠ লাডা), মহন্বত খাঁ, নিলবেন্ত খাঁ,
রালা রারসিংহ প্রভৃতি সেনাপতিগণ প্রায় ২০ হালার জ্ঞারোহী লইরা তাঁহার সহিত বিলাপুরের অবরোধ রক্ষার্থ
রহিলেন। মুরাজ্ঞন খাঁ (মীগজুম্লা) ইহার কিছু পুর্বে
(আদিল, খাঁর লীবিত কালে) শাহ বুলন্দ একবালের (দারাশেকোর) প্রেরিত চ্ইলন জীতদাসের আনীত গুপ্ত আদেশ
মত হীরামণি চুনি পারা হারা সজ্জিত কতকগুলি যোড়া,
কণাটল্লরের ধনরত্নাদির কির্দংশ এবং জীতদাসহরকে
আদিল খাঁর নিক্ট প্রেরণ করেন। আদিল খাঁ এই উপহার ও দ্তগণকে গ্রহণ করিবার অব্যবহিত পরেই অর্গাত
হন। নবভূপতি গ্র ছই জীতদাসের হল্তে প্রোত্র ও
উপহার দিয়া পুনং প্রেরণ করেন। ইহারা প্রায় লক্ষ্ টাকার
উপহার লিয়া পুনং প্রেরণ করেন। ইহারা প্রায় লক্ষ্ টাকার

আমল্ই-সালি নামক ইতিহাসের মতে লারা কেবল মীরজুম্লাকেই ফিরিয়া আসিতে আদেশ দেন নাই, অরল-লেবের অক্তাক্ত সেনাপতিকেও প্রত্যাবর্তন করিবার জন্ত আদিশ পাঠান। তদক্ষারে মহবত থাঁ, রাও ছ্ত্রশাল ও আরও হুই চারিজন অরলজেবের আদেশের অপেকা না করিয়াই ফিরিয়া আসিলেন।

অর্গজেব কৌশল করিয়া কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে হত্তগত করিবার অভিপ্রায়ে সর্বাদা প্রাদি লিখিতেন এবং ভারতের ভবিশ্বৎ সমাট বলিয়া সংখাধন করিতেন। তিনি লানিতেন বে স্কলা একা বঙ্গে আছেন; যদি উত্তরাধিকারিত শইয়া লাভায় লাভায় যুদ্ধ বাধে, ভবে তাঁহারা উভয় লাভা একঅ দক্ষিণ হইতে যুদ্ধ করিতে উপস্থিত হইলে একা দারা ঝ একা ञ्चा वाशा निएक शांतित्वन ना, ञ्चा प्रस्त वा कारामप्रदे ছইবে। তৎপরে কণ্টকে নৈব কণ্টকবৎ স্থরাপায়ী অপরিণত বুদ্ধি মুরাদ্কে অপক্ত করা বিশেষ কটকর ছইবে না। এই বিবেচনার তিনি পরে মুরাদকে লিখিলেন, 'জামি ফকীর, প্রবঞ্নাপূর্ণ সংসারে থাকিতে বা রাজকার্য্যে হতকেপ করিতে আমার বিলুমাতা ইচছা নাই, তবে অধার্দ্মিক দারা যে রাজ্যলাভ করে, ইছাং আমার ইচ্ছা নছে। তুমি বীর, ধীর, রাজ্য তোমাকেই সাজে। অধান্মিক দার। ইতিমধ্যে পিতাকে একপ্রকার নিলাধীনে রাধিয়া নিজেই যথেচ্ছাচার করিতেছে ও আমাদের উপরেও ছকুম চালাইতেছে। এ সময় আমাদের একবোগে কার্ব্য করা উচিত ও রাজ্যের विभूचना मूत्र कता छेडिछ। शिष्ठा, कीविक चारहन, बनि আমরা এইরপে তাঁহার রাজ্যে শৃথলা স্থাপদ করিয় है।
কার্য্য হইতে পারি, তাহা হইলে তিনিও সন্তই হইবেন এম
কথন আমরা তাঁহার নিকট দার্মার জন্ত ক্ষমা প্রার্থনা করিব
ও তাঁহাকে মকার পাঠাইবার ব্যবস্থা করিব। তথাপানতঃ
মালব দিরা মশোবন্ত তোমার পথ রোধ করিতে উপনিত
হইতেছে। তুমি তাহাকে রীতিমত শিক্ষা দিবে। তথা
তোমার আফাবহ জানিবে এবং শীঘ্রই আমার স্বর্থ হৈ,
দল ও বহুসংখ্যক কামান লইরা নর্ম্মাতীরে তোমার পাবে
উপন্থিত হইব। ইহাতে তুমি নিশ্চরটু জারী হুইবে। পর্যে
খ্রের নামে শপ্প করিরা বলিতেছি, আমার স্বেহ
করিও না।

১৬৫৮ খুটান্সে অরক্ষেবে ব্রহান্পুরে উপস্থিত হইবেন।
মহারাজ খণোবস্তাসংহ পূর্বে সে সংবাদ কিছুই পান নাই
শেষে অরক্ষেবের সৈন্ত যথন উজ্জারনী হইতে ৭ জোন
মাত্র দুরে উপস্থিত হইল, তথন ভিনি সংবাদ পাইলেন। মান
অধিপতি রাজা শিবরাজ অক্বরপুরের নিকট শক্রান্তর
শিপ্রাউত্তরণ সংবাদ পাইয়া মহারাজ যশোবস্তকে নির্দ্ধি
পাঠাইলেন। ওদিকে কাশিদ খাঁ মুরাদের আন্ধানান
পরিত্যাপ শুনিরাই অগ্রসর হইলেন, কিছু পথে শুনিবেন বে
ভিনি অন্তপথ দিরা অরক্ষেবের সহিত সিলিত হইবা
জন্ত প্রায় ১৮ জ্রোশ পথ চলিয়া গিয়াছেন। কারেই হলা
ছইয়া ভিনি ক্রুত ফিরিলেন। ধার-ত্রের নিকট অরল্পরে
ও মুরাদের সৈন্ত মিলিত হইল। ধার ত্রের্প দারাশেরো
বে সৈম্পুদল ছিল, ভাহারা ভীত হইরা তুর্প ভ্যাস করিয়া মা
রাজ, যশোবস্তের দলে আসিয়া মিশিল এবং কাশিম খা
আসিয়া মিলিলেন।

মহারাঞ্জ বশোবত সমবেত সৈতা লইরা অরল্পের ।

ম্বাদের সমবেত সৈত্তের দেড় ফোল দ্বে চীরা হার্টা
করিলেন। কুটবৃদ্ধি অরল্পের এই সমরে কবি নারা
একজন রাফাণকে দৃতরূপে বশোবতার নিকট পাঠাইলেন
কবি বাক্যকুলল হিন্দী করি। তিনি পিরা অরল্পের
আদেশমত বলিলেন থে আমি পিতৃদুর্গনে যাইতেছি
অতএব তৃমি আমার সহিত একতা যাইতে পার ব্রাণ্ডারা
পথ হইতে সলৈভে দ্বে যাও, কেননা একটা গোলা
বাধিছে, পারে। বশোবতা এই চাড়রী শুনিরা অভি ক্
ভাবে তাহার উত্তর দিলেন। পর দিন (২০এ এপ্রেল) আ
প্রাক্তে মৃদ্ধ বাধিল। রাজপ্তকলক যশোবত এর
কাশিম থার দল পরাত হইরা পলারন করিল। অরশ্বি

এই সমর অবতাত গ্রম পড়ীয় সমাট শাহলাহান ঈষং ভারোগ্য হওয়ায় আগ্রা ত্যাগ ক্রিয়া দিলী গমন করেন। _{দারা} বছ • আপত্তি করেন। ইহার উপর আবার বধন হশোবস্তের পরাজয় ভনিলেন, তথন স্ফ্রাট্কে নানা অভ্যোগ করিয়া শীঘ্র আগ্রায় আসিতে লিখিলেন। তৎপরে দারা ৬০ চাতার সৈতাও শ্রেষ্ঠ সেনাপভিগণকে লইয়া যুদ্ধার্থ অংগ্রসর हरेतन । मञाहे भारकारान् जारांक विखन निरम् कतितन, व्याहेलन (य, जिनि वधन अभीविज बहिन्ना एक, वधन व াদ্ধের ফল কি হইবে। কেবল ভাত্বিবাদ বাড়িবে মাত্র, 🖡 ারং আমার যাতারে আহোজন কর। আমি গিয়া বরং মরলজেব ও ম্রাদকে বুঝাইয়া এ বিষয় হইতে নির**ত** ঃরিয়া আসি। দারাশেকো এই পরামর্শ গ্রাহ্য করিলেন না ারং খাঁ জাহান্ শায়েন্তা খাঁর মধ্যস্তার সম্রাচ্কেও এ উদ্দেশ্য গাগ করাইবার • চেষ্টা করিতে লাগিলেন। সায়েন্তা খাঁ মাটের খালক, তিনি সকল ভাগিনেয়কে ভালবাসিতেন াবং অরম্বজেবের বৃদ্ধি ও গুণের প্রশংসা করিতেন। মাটু পুত্রগণের মনোভাব বুঝিয়া অরঙ্গজেবের নিকটে গিষ্ঠি হইয়া তাঁহাকে বুঝাইতে চাহিলেন এবং ভজ্জ্ঞ র্মনা সায়েন্তাথার পরামর্শ জিজ্ঞাদা করিতেন। যুশোবন্তের রাজমের সংবাদ আদিবার পূর্বে সায়েস্তার্থার সহিত াবিষয়ের যথেষ্ট পরামর্শ করিতেন, কিন্তু সারেস্তার্থা তাঁহাকে ^{ারণ} করিতেন। অরঙ্গজেবের বুদ্ধির উপর তাঁহার বিখাস ^{হ্ন}, তিনি অর**লজেবকে ব্**ঝাইবার কোন আব্দ্রকতা रिंदिलन ना। " जुरुभारत यथन यामावास्त्रत भत्रास्त्र प्रश्वान ^{পরিত হইনু,} তথন সম্রাট্ সায়েক্তা খাঁর উপুর বিষম ্ছ হইলেন্। তিনি রাগ সামলাইতে না পারিয়া হস্তের ড়ি ছারা সায়েন্ত। খাঁর বুকে মারিলেন ও ২।৩ দিন তাঁহার ধ দর্শন করিলেন না। তৎপরে আবার ডাকাইশ্বা তাঁহাকে ^{नदात्र थे} कथारे जिल्लामा कतिरनन, किन्छ मारत्रछ। थी র্পবং পরামর্শ দিলেন। সমক্ত উ্দেঘাগ প্রস্তুত হইলেঞ্ াষেতা খা সমটিকে পুত্রদিগের সহিত দেখা করিতে 'লেন নী।

বংশাবস্ত সিংহৈর • পরীজ্ঞরের পর ° ১৬৫৮ খুটাজে মে ত্বের প্রথমে দারাশেকো ধলীল-উল্লা থা ° নামক একজন নাণিতির অধীনে কতকগুলি সৈক্ত ঢোলপুরে পাঠা-রা দিলেন। চমল নদীর পার্ঘাটগুলি রক্ষার্থ ইহার উপর াদেশ ধাকিল। দারা নিজে আগ্রা সহরের বাহিরে পেকা ক্রিতে লাগিলেন। স্থ্জাকে জর ক্রিরা প্রলেমান াকো আসিরা উাহার সহিত মিলিত হইবেন, ইহাই তাহার আশা ছিল, কিন্ত ভাহা । ঘটিল না, যথা সমরে ক্লেমান ।
আসিয়া পৌছিলেন না। দারা বাধ্য হইয়া অগ্রসর হইলেন।
সামৃগড় নীমক স্থানে উভয়পক্ষের সৈত্ত্ব অর্জক্রোশ ব্যবধানে
ছাউনি করিয়া রহিল। থলীল-উলা থা ঢোলপুরে, থাকিয়াও
কোন বাধাই দিতে পারিলেন না।

পর দিন প্রাতে ( १ই রমজান ১০৬৮ হিজিরার ) দারাশেকো দৈলসংস্থানে নিযুক্ত হইলেন। সে দিন ভীবণ
গরম পড়িরাছিল। রৌজের উত্তাপে বর্দ্মাদি উত্তপ্ত হওরার
গরমে এবং জলাভাবে অনেক দৈল মারা পড়িল। অর্থাজেব
অভিমুখী কামানের গোলাপতনের স্থান ব্যবধান রাধিয়া
বিপক্ষের আক্রমণ প্রতীক্ষা করিতে ভাগিলেন। দারা কিন্তু
সন্ধ্যা পর্যান্ত আক্রমণ করিলেন না। অর্গজেব সেই ভাবে
সেনাদিগকে বিশ্রাম করিতে আদেশ দিলেন, কেবল
প্রাতঃকাল পর্যান্ত অতি সতর্ক থাকিতে বলিলেন। রাত্রি
কাটিয়া গেল, প্রত্যান্থ উপাসনার পরই অর্গজেব মৃদ্ধার্থ
প্রস্ত হইলেন। মহম্মদ মুরাদ বক্স তাঁহার স্থবিধ্যাত
সন্ধারগণকে লইয়া বামভাগে রহিলেন। বাহাছর খা দক্ষিণ
পার্থে অর্গজেবের প্র মহম্মদ আজ্রম হন্তীপৃষ্ঠে
পশচান্তাগ রক্ষার্থ নিযুক্ত হইলেন।

দারার পক্ষে তাঁহার বিতীয় পুত্র সিপেহরশেকো দৈগুদলের সমুথে ছিলেন, আঁহার সাহায্যার্থ রক্তম থা দক্ষিণী হাদশ সহত্র অখারোহী দৈক্ত লইয়া উপস্থিত ছিলেন। ইংশারা প্রথমেই অরক্জেবের শৃক্ষীয় ভোপ দধল করিবার চেটা করিতে লাগিলেন। **অরঙ্গলেবের পক্ষে তৎপুত্র ম**হত্মদ স্থলতান সন্থভাগ রক্ষার্থ উপস্থিত ছিলেন। হুর্ভাগ্যক্রমে निक शकीय कामान्त्र शाला नाशिया त्रसम यात्र हरी विनष्टे হইল। সে সময় যুদ্ধের অস্বস্থা বড়ই ভীষণ। রস্তম খা মধান্তলে আর থাকা যুক্তিসঙ্গত নহে বুঝিয়া শক্রর দক্ষিণপার্ছে • বাংশছর থাঁকে আক্রমণ করিলেন। রাংছের থাঁ র্স্তমের আক্রমণ সহু করিতে পারিলেন না, ক্রমশঃই হটিতে লাগিলেন। ঘোরতর যুদ্ধের পর বাহাছর খাঁ নিজে আহন্ত হইয়া যুদ্ধ हरेट पृष्ठ अपर्मन कति एक रोधा हरेट्नन। मैकिन पाई शाह ছত্রভঙ্গ হইয়া উঠিবার উপক্রম হুইল। ইহা দেখিরাই ইদলাম ধাঁ, দেখমীর প্রভৃতি দেনাপতিরা দক্ষিণ পার্ম त्रकार्थ नववल नहेग्रा छूणिया आिमत्तन। नववत्तव महिल রস্তমের পরিপ্রাস্ত দেনাদল অধিককণ মুঝিতে পারিল না। রত্তম থাঁ প্রায় পরাত হইলেন ও সিপেহরশেকো পলায়ন कतिरनन ।

দীরো সংবাদ পাইয়া রক্তমের সাহায্যার্থ ২০ হাজার

অখারোহী নিযুক্ত করিলেন, এবং নিজে পশ্চাৎ হইতে ভোপ চালাইতে লাগিলেন। দারা আনং অগ্রসর হওরার অরলজেব আদলের সমস্ত বন্দুকধারীকে সন্মুথে আপিত করিলেন ও এককালে সমস্ত ভোপ চালাইতে আদেশ দিলেন। দারা হঠাৎ এত গোলাগুলির আক্রমণ সহিতে না পারিয়া হিসরা আদিলেন। সে দিন যুদ্ধ ইহাতেই শেষ হইল।

**गत्रिन मात्रा मूत्रामटक आक्रमण कत्रिटनन। थलील**-উल्ला খা এইদিন দারার্দলে সমূধভাগে নায়ক ছিলেন। তিনি नियुक्त कतिरमन। मूत्रारमत देमञ्चमम ७ रखी এकवादा সহল্ল ধামুকীর আক্রমণ সহিতে পারিল না। হস্তীটা পनारेया यारेटाहिन, किन्त मुत्रान छारात भनवत्र मृद्यानारक করিয়া রাথিতে বলিলেন। রাজপুতসন্দার রাজারাম সিংহ এই সময়ে স্বীয় পীভবসনধারী সৈক্তদল লইয়া অগ্রসর হই লেন। তিনি মুরাদের প্রতি ভীষণ বর্ষা নিকেপ করিয়া বলিলেন 'তুমি দারাশেকোর সহিত সিংহাসন লইয়া স্পর্কা ক্রিতে আদিয়াছ ?' মুরাদ নিজ হত্তে তীর মারিয়া তাঁহাকে িবিনষ্ট করেন। তাঁহার অধিকাংশ পীতবাস সেনা প্রমন্ত হস্তী কর্তৃক বিনষ্ট হয়। আলমগীর-নামার মতে, অর্জ্জেব এই সময়ে সবৈত্ত অতাসর হইয়া মুরাদকে সাহায়্য করেন, কিন্ত মুন্তথৰ উল্-ল্বাবের গ্রন্থকার স্বীয় পিতার (তিনি ,এই যুদ্ধে অরক্জেবের পার্ছে উপস্থিত ছিলেন তাঁহার) মুধে ভ্ৰিয়াছিলেন যে অৱলজেব সাহায্য করিতে ইচ্ছা क्तिशाहित्वन वर्षे, किन्तु चित्रा छेर्छ नीहै।

এই সময়ে রাঠোররাজ রূপিসিংহ রাজপুত্রেনা লইরা অর্গ্রন্তবের দৈত্তের মধ্যস্থান আক্রমণ করিবেলন। মধ্যভাগে অরক্তবের নিজে সেনাপতি ছিলেন। রূপিসিংহ যুদ্ধে প্রবেশ করিরাই তরবারী হস্তে বিপক্ষসেনার মধ্যে প্রবেশ করিবেল এবং শীর অস্ত্র ত্যাগ করিরা বিপক্ষ•বিনাশ করিতে করিতে অরক্তমেবের হস্তী লক্ষ্য করিরা চলিতে লাগিলেন। কেহই তাঁহাকে বাধা দিতে থারিল না। শক্র-রক্তে শান করিরা তিনি হস্তীপার্শ্বে উপস্থিত হইলেন এবং হাওদার দত্তি কারিরা হাওদা ফেলিরা দিবার চেটা করেন। অরক্তমের বিশ্বিত হইরা এ হেন সাহলী বীরকে জীবিত বনী করিবার আন্দেশ দেন, কিন্তু সৈক্তগণ তাঁহার আদেশ ব্রিতে পারিবার পূর্কেই এই ছর্ক্ব বীরকে থও থও করিরা কাটিরা ফেলিল।

রন্তম থাঁ এই সময় আসিয়া যুদ্ধের ভীষণতা আরও

হন। দারা এক বুদ্ধৈ এতগুলি সেনাপভিত্তে _{দ্রিষ্ট} पिथिया आद्र इखत्कि इहेन्स शिष्टानन। आहे ममात वन्हे শুলি আসিরা তাঁহার হাওদার পড়ার জিনি চ_{কিড}্ব ভীত হইয়া নিরস্ত্র অবস্থায় একটা বোড়ায় উঠিয়া প_{ছিলেন} हेहाटल आत्र अनिष्टे चंडिन। जाँहात रेमछपरनत केरनान उँशिक्त राजनात मत्या रमिथिट मा भारेमा रुवा होत পড়িল ও কতকাংশ তাঁহাকে নিরক্ত অবস্থার যোগা চড়িতে দেখিয়াঁ বুঝিল, তিনি বুঝি [°]পলাইডেচন তাহারা যুদ্ধ ত্যাগ করিয়া পলাইবে কি থাকিবে এইবং বিবেচনা করিতেছে, ইতিমধ্যে আরও এক ছর্বটনা ব্রিন। একজন দৈনিক এই সমরে দারার পৃঠে একটা শ্লু তৃণ বাঁধিয়া দিতেছিল। সে দক্ষিণ হতে তৃণী ধরা বাম হস্ত ৰারা যেমন বাঁধিবার ফিতা ঘুরাইরা মানিয়ে অমনি একটা কামানের গোলা আইসিয়া তৃণসং আয়া দক্ষিণ হস্তটী উড়াইয়া লইর। গেল এবং সে লোকী। মারা গেল। ইহাতে নিকটবর্তী চতুর্দিক্স সেনা একা ভীত হইয়া পলাইতে লাগিল। তাহাদিগকে পলাইডে নি ও দারাকে হত্তীপৃঠে না দেখিয়া যুদ্ধে নিযুক্ত অভাভ দেনা দারার মৃত্যু আশবা করিয়া যুদ্ধে ভঙ্গ দিল। দায় ব ভগ্নদেনাকে নানা চেষ্টা করিয়াও আর ফিরাইতে গাঁজি না, তথন শক্তর কামানের মুপে দাড়াইয়া সিংলদে আশা করা অপেক্ষা প্রাণরকার্থ পলাইতে প্রস্তুত होনে। সিপেহরশেকো ৩০ ৷ ৪০ জন অমুচর লইয়ৢ ঠায়য় বি মিলিত হইলেন। **ণরে আরও সহলু অশা**রোহী ^{তার্না} সঙ্গ লৃইল। পিতাপুতে তথন জ্ঞতপদে আঞা ^{দান্য} भगाहेरणन । भक्तमण आनत्म विवादमारमाव मह सेमा

অরল্যের যুদ্ধে জনী হইরা জানদে প্রথম লাক্র করিলেন। সুরাদ শরীরের নানা স্থানে ও মূর্ব দি করিলেন। সুরাদ শরীরের নানা স্থানে ও মূর্ব দি শরাঘাত পাইরাছিলেন। "অরল্যের সর্বপ্রেপমে সেইবল ঔবধ প্রেলেপের বাবন্থা করিয়া তাঁহীর বীরবের ল স্থাতি করিলেন। অবশেষে, তাঁহাকে জীব্য ম বলিয়া স্থোধন করিয়া মূর্থ অভিমানী রাজপ্রতে এবি ফ্লাইরা তুনিলেন। সুরাদের হাওদার পারে গাঁ ঘন হইরা লাগিয়া গিয়াছিল বে, বেন একটা বৃহৎ স্থা মত বোধ হইতেছিল। শরলিপ্ত এই হাওদা বৃদ্ধি বীরভের নিদর্শন অরপ বছকাল (ক্রক্কিলিয়ারের স্বার্গি মোগলরাজভাণ্ডারে সুর্ক্তিত ছিল।

সপুত্ৰ দারা সন্মাকালে বিনালোকে বাসৰে পৌৰ

লক্ষায় তিনি আর পিতাঁকে মুখ দেখাইতে পারিলেন না।
সন্ত্রাট্ শুনিয়া আখাস দিয়া পরামর্শ করিবার ফল্প তাঁহাকে
কাকিয়া পাঠাইলেন, তবুও তিনি আসিতে পারিলেন না।
সেই রাজিতেই তিনি তৃতীর প্রহরের পর আগ্রা ত্যাগ করিরা
লাহোর হাইবার উদ্দেশে দিল্লী অভিমুখে প্রস্থান করিলেন।
সলে সিপেহরশেকো; পদ্মী, কল্পা ও কতিপদ্ম অফুচর মাত্র
লইলেন। তাঁহারা হত্তিপ্ঠে এবং উট্টে ধনরদ্বাদি চাপাইরা
লইয়া চলিলেন। পথে তিন দিন পরে প্রায় ৫ হাজার
অখারোহী তাঁহার সহবাত্রী হইল। এই সমর কম্বেক জন
আমীর সন্ত্রাট্কর্ক প্রেরিত হইয়া তাঁহার নিকট আসিল।

জয়লাভের পর অরমজেব সমস্ত ঘটনা আযুপুর্বিক বিবত করিয়া এবং পরমেখারের ইচ্ছার ঘটিরাছে এইরপ निधित्रा এकथानि পত चीत्र भिजारक भाग्रीहेश मिरनन। এই সময়- মাতৃল খাঁ আহান সায়েতা খাঁ ও তংপুতা মহম্মদ আমীন থা আসিরা অর্গজেবের সহিত মিলিত হইলেন। ১০ই রমজান, অরলজেব সামুগড় ত্যাগ করিয়া আগ্রা বাতা क्तिलन এবং नगत वाहित्त निवित्र चाशन क्तित्रा त्रहिलन । এই হানে সমাট্ তাঁহাকে সাম্বনা করিয়া স্বহস্তে এক পত্র লিখিলেন। এই সময় সমাট্কল্ঞা বাদ্শা-বেগম পিতার অমুমতি লইয়া ভ্রাতাকে দেখিতে আদেন এবং সেহছলে ত্এক কথায় অনুযোগ করেন। অরপজেব সে অনুযোগ অতি কুভাবে গ্রহণ করিয়া কোষ্ঠা ভগ্নীকে তীব উত্তর প্রদান করেন। বাদশা-বেগম ভাতার ব্যবহারে কুল হইয়া ফিরিয়া আসেন। পরদিন সমাট্ একথানি তলওয়ারে "আলুম্গীর" শব্দ থোদাইয়া ও একথানি প্রশংসাস্চক পরের সহিত নিজ বিশ্বস্ত অফুচরকে দিয়া অরক্জেবের নিকট পাঠাইয়া দেন। অরকজেব "আলম্গীর" অর্থাৎ "বিখলেতা" নাম পাইয়া মহা আনন্দিত হন এবং স্বীয় পুত্র মহম্মদ স্থলতানকে নগর মধ্যে শাস্তিত্বাপনার্থ প্রেরণ করেন। এই. সমর অনেক সন্তান্ত লোক তাঁহার সহিত দেখ্লা করিতে भारतना अत्रम्हास्त उाहारमत शमत्र्कि कतिया धनत्रमान छे पहांत्र व्यक्तान करत्रन।

১৭ই রুমন্ত্রনি (৮ই জুন-ভারিথে) অরম্বর্গের পীর পুত্র
মহন্দর স্থলতানকে বলিয়া পাঠান বে, প্রথমে তিনি আগ্রা
ছর্গে বাইবেন ও ছুর্গের প্রভ্যেক হারে নিজ বিশ্বস্ত অন্তর্গ চরগণকে প্রহরী নিমুক্ত করিবেন। পরে তাঁহার পিতা-মহের নিকট পিরা তাঁহার রাজকার্য্য হইতে অবসর প্রহণের প্রতাব করিবেন। বাহিরের খোন সংবাদ বৃদ্ধ স্ক্রাটের নিকট পৌছিতে না পারে, ভাহার বিশেষ ব্যবহা করিবেন। মহ্মদ অ্লভান, পিতৃনিদেশে পিতামছের হন্ত হইতে সমত ক্ষতা, কাড়িরা লইরা তাঁহাকে নির্জনে বাস করিবার থক্ষোবন্ত করিয়া দিলেন। তৃৎপরে অরল্পের দারাশেকোর আয়ণীর মেবাত অধিকার করিবার অন্ত মহম্মদ আফর থাঁকে পাঠাইলেন। 'রালকোযাগার হইতে মুরাদকে ২৬ লক টাকা ও রালার প্রয়োলনীর অন্তাল্প সামগ্রী দান করিয়া তথনও তাঁহাকে বশীভূত করিয়া রাখিলেন এবং ১২ই রমলান নিজে সংসাদেশ আগ্রার প্রবেশ করিয়া দারাশেকোর অট্টালিকার বাস করিতে লাগিলেন।

अमिरक मात्रा गाएँगारत अरवभ कतिरक भातिरमन मा। তিনি ভাবিলেন যে হয়ত স্ময়দ্বলেবের সেনা গোপনে তাঁহার পশ্চাদাবিত হইয়াছে। নগরে প্রবেশ করিলেই ভাহারা তাঁহাকে নগর মধ্যেই অবক্ত করিবে। তিনি বাহিরে থাকি-য়াই অর্থ ও বল সংগ্রহ করিতে লাগিলেন এবং স্থানেমান শেকোর আগমন প্রতীকা করিতে লাগিলেন। স্থলেমান **भारका प्रकारक श्रदांछ कदिया विहाद्य प्राथका कदिएछ-**ছিলেন। তিনি অরশক্তেবের অয়বার্তা ভনিয়া পিতার সহিত त्यांश पित्वन किना, देहारे देखखंडः क्रिक्ट हित्ने। पात्रा পুত্রের অনর্থক বিলম্ব দেখিয়া নিজে আর নিশ্চেষ্ট থাকিতে পারিলেন না, ভর হইল, কোন দিন অরক্ষেবের সেনা व्यानिया दुमी कतिरव। कार्ष्करे जिनि १६ महस्य व्यथारतारी ল্টয়া পঞ্জাবের দিকে অতাসর হইলেন। দায়ে এই সময় কাতরোক্তিতে নিজের বিপরাবস্থার কথা জানাইয়া পুত্রের নিকট বিহারে এবং নিজের ছদিশা হেতু বুদ্ধিত্রংশতার কথা স্থানাইয়া পিতার নিকট স্থাগ্রার প্রত্যহ পত্র বিধিতেন।

অরল্যন্তব এ দিকে নিজে গিয়া, পিতার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিবেন এবং সমস্তই, ঈর্থরেচ্ছার ঘটয়াছে বলিরা প্রবাধ দিবেন বলিরা মনে করিতেন, কিন্তু দারার প্রতি সমাটের অত্যধিক ক্ষেহ শ্বরণ করিয়া আর নিকে বাইতে সাহস পাইলেন না, মধ্যম প্র মহন্দ্রক আজিমকে পাঠাইরা দিলেন। তিনি গিয়া পিতামহকে ৩০০ আসরকী ও ৪ হাজার মুলা নজর দিলেন। সম্রাট্ পোকে হংগে জোধে চক্ষ্র জলে আগ্লুত হইরা পোজকে আলিকন করিলেন। তৎপরে আজিম পিতার হইয়া পোজকে আলিকন করিলেন। তৎপরে আজিম পিতার হইয়া পিতামহের নিকট পিতৃবক্ষরা নিবেদন করিলেন। সম্রাট্ হাঁনা কিছুই বলিলেন না। তৎপরে অরল্যনেব জোঠ পুত্র মহন্দ্রদ স্থলতান ও ইস্মাইল খাঁকে বৃদ্ধ সম্রাটের প্রহরিতার রাধিয়া জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার অস্ক্রনান প্রস্তুত্ব হইলেন। বাঁ ছয়ান্ আলাহাবাদ অধিকারার্থ প্রেরিভ হইলেন।

এদিকে শাহজাহান্ কাব্লের শাসনকর্ত্তা মহব্বত থাঁকে এক পত্র গোপনে লিধিয়া জানাইলেন যে দারাশেকো লাহোরে যাইতেছেন। দেখানে অর্থ ও লোকের অসন্তাব নাই এবং মহব্বত থাঁর ভায় সাহসী বীরও আর বিতীয় নাই। অতএব তিনি খীয় সৈভ লইয়া দায়ার সহিত মিলিত হইয়া আসিরা এই, ছই অবাধ্য ছদিত্তে প্ত্রেকে শাসন করিয়া সম্রাট্কে উদ্ধার কর্মন।

মুরাদ ও অরক্ষজেব দারার অফুসন্ধানে মধুরায় আসিরা শিবির করিরা থাকেন। এই সময় একদিন (৪ঠা শওরাল) অরক্ষজেব আর বুথা ভার বহিয়া বেড়ান অসহুবোধে রাত্রিতে নিজ তাল্তে মুরাদক্ষে আহারার্থ নিমন্ত্রণ করেন এবং অত্যক্ত মন্ত্রপান করাইরা অচেডনাবস্থার বন্দী করিয়া হল্তিপৃষ্ঠে সালিনগড় হুর্গে পাঠাইরা দেন। অপরের সন্দেহ নিবারণার্থ সেই সময়ে আরওঁ তিন্টা হন্তী সাজাইয়া আরও তিন দিকে পাঠাইয়া দেন। পরে উাহার সমস্ত ধনাদি হরণ করিয়া লইলেন।

ইতিমধ্যে দারা লাহোরে পঁছছিয়া রাজকোষাগারে প্রায় কোট টাঁকা প্রাপ্ত হইলেন ও আমীরদিগের নিকটেও সাহায়। পাইলেন। জিনি এখন সৈক্ত সংগ্রহ করিতে লাগিলেন। এদিকে ১০৬৮ হিজিয়ায় >লা জেলকদে (১৬৫৮ খুটাক্ত ২২এ জুলাই ভারিখে) অরলজেব শুভমুহুর্তে দিলীতে হিন্দু-ছানের সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। কিন্তু অনামে মুদ্রা প্রচলন, বিভিন্ন দেশীয় রাজগণকে উপহার ও অনামে খুবো পাঠাদি এখন স্থগিত রহিল।

পি পি বি ক্লেমান-শেকো পিতার পত্র পাইয়া পিতার সহিত মিলিত হইবার অক্ত ও অরল্জেবের হাত এড়াইবার অক্ত হরিবারের নিকট সন্দৈতে গলাপার হইয়া লাহোর অভিস্থি চলিলেন। অরল্জেব সে সংবাদ পাইয়া বাহাছর বাকে তাহার গতিরোধ করিবার অক্ত পাঠাইলেন এবং নিকে লাহোর অভিমুখে চলিলেন। অলেমান গলাপার হইয়া ভানিলেন, তাহার বিরুদ্ধে সেনা আসিতেছে, অমনি তিনি কাশার ঘ্রয়া ঘাইবেন বলিয়া শ্রীনগরের পাহাড়ের পথে উঠিলেন। শ্রীনগরের রাজা তাহাকে সাহায়্ম করিতে পারেন ইহাও তিনি আশা করিয়াছিলেন, কিন্ত তাহা হইল না; বয়ং তাহার নিজের সৈঞ্চলও তাহাকে তাগে করিয়া চলিয়া আসিল, কেবল হ শত মাত্র অখারেহী তাহার সহিত রহিল। ভখন ভানি আলাহাবাদে ফিরিয়া আসিলেন এবং পীড়িত হইয়া পড়িলেন। তখন আরও কতক অক্তর তাহার নজ করেছে।

পড়েন, এই ভয়ে আলাহাবাদ ছাঁড়িয়া পুনরায় শ্রীনগয়য়াজেয় আশ্রের গমন করিলেন। পঞ়ে বাদশাবেগমের লায়নীরেয় মধ্য দিয়া যাইবার সময় ভিনি ভাহার দেওয়ানের নিকট হইতে ২ লক টাকা লইলেন ও তাঁহার বাড়ী লুট করিলেন। শেষে তাঁহাকে বিনাশ করিলেন। এই ব্যবহারে কুছু ইয়া সমস্ত অস্চর তাঁহাকে ভ্যাগ করিলে। কেবল মহলদ শা কোকা একা তাঁহার সলে রহিল। তিনি পরে শ্রীনগরে উপস্থিত হইলে তথাকার রালা তাঁহাক ধনাদি লইদা তাঁহাকে একপ্রকার বলীদশায় রাখিলেন, বাহাত্র খাঁ এই সংবাদ পাইয়া রালাকে লিখিয়া পাঠাইলেন বে বলীকে সৈয়্য়ের রক্ষকভায় তাঁহার নিকট পাঠাইয়া দিয়া ভিনি আগ্রায় গ্রমন কর্ষন।

আমল্ই-শালি পাঠে জানা যার, প্রীনগররাজ স্বীর প্রের সমভিব্যাহারে স্থলেমান শেকোকে বন্দী করিরা পাঠাইরা দিলেন এবং বাহাত্র থাঁ ত্ইদিন পরে তাঁহাকে নব সমাটের স্মুথে উপস্থিত করিলে তিনি তাঁহাকে গোয়ালিয়র তুর্গেরাথিয়া কল্পর (পোত্তর সরবৎ—মৃত্ বিষ) থাওয়াইতে বনেন।

এই সময় আলীনকির প্রগণ মুরাদ্বক্সের নামে তাহাদের পিতৃহত্যার নালিশ করে। সমাট তাহাদিগকে রক্তের পরিবর্ত্তেরক্ত গ্রহণ করিতে গোয়ালিয়রে পাঠাইয় দেন। মুরাদ এ সময়ে গোয়ালিয়রে বন্দী ছিলেন। কাজীগণ মুরাদের দোয়ামুসদ্ধানে প্রবৃত্ত হইলে মুরাদ বলেন, 'আমায় বাঁচাইলে রাজ্যের কোন ক্ষতি ভনাই। কিন্তু বন্দীকৈ যদি বাঁচাইতে সমাটের ইচ্ছা না,থাকৈ, তবে আর এ সকল অর্ড্রুরের প্রেরোজন কি ? আমার, অদ্টে যা আছে, তাই হউক।' আলীনকির প্রবৃত্ত আলুতে তাহার প্রাণ বিনাশ করে। তৎপরে মৃত্ বিষের প্রভাবে স্বালার শেকোর মৃত্যু হইলে পিতৃব্য ও ভাতৃপ্র উভয়বেই সেই ছর্ণে প্রোথিত করা হইল।

লাহোর ও তরিকটবর্তী ফান ইইতে দারা নানা লোভ দেখাইয়া প্রায় বিশহালার অখারোহী সংগ্রহ করিলেন। পরে ক্ষলকে হস্তগত করিবার জন্ত নানা প্রতিশ্রতিত বন্ধ হইয়া এক পত্র লিখিলেন। ক্ষলাও ল্যেটের সাহায়ার্থ ঢাকায় সৈত্র সংগ্রহ করিতে লাগিলেন। এদিকে দারা লাহোরেই আপনাকে সমাট্ বলিরা প্রচার করিতে ও ক্ষনামে মূলা ঢালাইবার ও খংবা পাঠের ব্যবস্থা করিতে মন্ত্র করেন, কিন্তু তাহা ঘটিয়া উটিল না। ইতিম্বো অরক্ষেবের সিংহাসন্প্রহণের কথা লাহোরে পৌহিশ্য ক্ষমনি অনেকে ভয়ে দারার পক্ষাগ্র ক্ষিত্র। ভালিকে অরলজেবের সহিত সামুগড়ের বৃদ্ধে পরাজিত হইরা মহারাজ বশোবিত পরাজো পলারন করেন। রাজা হরশালের কন্তা তাঁহার তথাবা মহিবী ছিলেন। স্বামী বৃদ্ধে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করিয়া ফিরিয়া আসিয়াছেন শুনিয়া মহারাজ বশোবত পত্নী কর্তৃক তিরস্কৃত হইয়া অরলজেবের কাছে ক্ষমা প্রার্থনা চাহিলেন। সম্রাট্ তাঁহার প্রার্থনা প্রার্থনা চাহিলেন। সম্রাট্ তাঁহার প্রার্থনা প্রার্থনা চাহিলেন। সম্রাট্ তাঁহার প্রার্থনা প্রার্থনা করিলেন, তিনি দরবারে উপস্থিত হইলে তাঁহাকে ধ্নাদি ঘারা সংবর্ধিত করিলেন ও তাঁহার মনস্ব (অখারোহী গৈল্পের নায়কড়) তাঁহাকেই প্রদান করিলেন।

অরক্ষরের পঞ্জাবের দিকে অগ্রাসর ছইলে দারাশেকো ভীত হইলেন। একে তাঁহার অনেক সৈশু অরক্ষরের নামে ভর পাইয়া তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছে, তাহার উপর প্নরায় সৈশু সংগৃহীত হইতে না হইতে দিলীর বৃহৎ দৈশুদলের সহিত্য মুদ্ধ ঘটিবার সম্ভাবনা হইল দেখিয়া তিনি এক সহস্র অখারোহী ও কএকটা কামান লইয়া ঠট্টা ও মূল্ভানের দিকে প্রস্থান করিলেন। তাঁহার সেনাপতি দাউদ গা অরক্ষরেকে বাধা দিবার জন্ম লাহোরেই রহিলেন। দাউদের উপর আদেশ দিয়া গেলেন যে, দিলীর সৈশু যাহাতে নদী পার হইতে না পারে, তাহার উপায়ার্থ তাহাদের উপ্রতির পূর্বের্ক তিনি যেন নদীস্থ সমস্ত নোকাগুলি ড্বাইয়া প্রভাইয়া নই করিয়া ফেলেন। কিছুদিন পরে অরক্ষরেব মূল্ভানের নিকট ইরাবতীতীরে শিবির স্থাপন করিয়াছেন ভনিয়া দারা ভক্তর নামক স্থানে সরিয়া গেলেন।

ইতিমধ্যে সংবাদ আসিল বে মুরাজ্জম থা স্থলতান ফ্রাকে পরান্ত করিয়া আসিরাছেন ও স্থাট্পুল মহম্মদ ফলতান . তাঁহার পশ্চাদম্সরণ করিয়াছেন। এই সময় দারার আরও অনেক সৈন্ত ছাড়িয়া গেল। তিনি বাধ্য হইয়া ধনরভানির কতকাংশ ভক্করে রাখিয়া মরুভূমির মধ্য দিয়া শিবিয়ান নামক স্থানে প্রস্থান করিলেন। সেখ মীর তাঁহার পশ্চাদম্সরণ করিয়া আতি নিস্কুটবর্তী হইলে তিনি মহল্প অধারেই লইয়া আফ্রানাবাদ উদ্দেশে যাত্রা করিলেন। সেখ মীরের সৈক্তলভ জ্বলাভাবে পথকান্তিতে বলহীন হইয়া পড়িল। ভারবাহী ও অধ্যের মৃত্যুই অধিক হওয়ায় অধিকাংশ সৈত হাটিয়াই যাইতে লাগিল।

জরদ্বের এই সময় শুনিলেন, দারাশেকো কচ্ছের মধা দিরা আন্দাবাদের অভি নিকটে পঁত্ছিয়াছেন ও পথে ৩৪ হাজার অখারোহী সৈক্ত সংগ্রহ করিয়াছেন। সেথ নীর আর তাঁহার অক্সরণ করা,বিফল বোঁধে পঞ্চাবের পথে জুরিলেন এবং লাহোরের শাসনকর্তা আর্মীর খাঁ সমাটের আদেশমত এই সময় সেলিমগড় হইতে মুরাদ বক্সকে তাঁহারু সঙ্গে গোঁমালিয়ার ছর্গে পাঠাইয়া দিলেন। সেখানে তাঁহার ভাগ্যে যাহা ঘটিয়াছিল, তাহা ইতিপুর্কেই বলা হইয়াছে।

প্রদিকে দারা কছের জ্মীদারকৈ অর্থনানে বশীভূত করিয়া তাঁহার কঞার সহিত্র নিশ্ব পুত্র সিপেইর (সফীর) শেকোর বিবাহ দিবার জাখাস দেন। কছের জ্মীদার তাঁহাদিগকে লোক দিরা আন্ধানাবাদে প্রেরণ করিলেন। সেথানে উপদ্বিত হইলে অরম্পন্তেরের খন্তর শাহনবার্ল বাঁ তাঁহার সহিত দেখা করিয়া মুরাদ বক্সের পরিত্যক্ত প্রায় দশলক টাকার অর্থ রৌপা প্রটাহাকে প্রদান করেন। এই অর্থ পাইরা দারা আবার বল সঞ্চয় করিতে আরম্ভ করেন। দারার নব নিযুক্ত সেনাপতিরা একে একে ক্রেরাট, কাছে, বরোচ প্রভৃতি বন্দর অধিকার করিয়া তাহাদের চতুর্দিক্ছ প্রেদেশও হস্তগত করেন। পাঁচ সপ্তাহের মধ্যে তাঁহার আবার ২৯ সহস্র অখারোহী সংগৃহীত হইল। তিনি তথন বিজ্ঞাপুর ও হায়দরাবাদের শাসনকর্তাদিগকে অর্থ ও সৈত্র পাঠাইতে লিথিলেন।

ইতিমধ্যে মহারাজ যশোবস্ত আবার বুদ্ধিলোষে মোগল দরবার হইতে ভাড়িত হন। স্থলার সহিত যুদ্ধ করিতে গিয়া তাহার পক্ষাবলম্বন করেন। অভ্যা পরাঞ্চিত হইলে তিনি অপমানিত হইয়া দকিণদিকে পলায়ন করেন। দারার আশা হইয়াছিল যে এই অপমানিত রাজপুত্বীর সংবাদ পাইলে তাঁহার সহিত যোগ দিতে পারেন। কিন্ত তিনি মোগল দরবারে পুন:প্রতিপত্তি লাভাশার আবার এক নুতন বিখাস্থাতকার কার্য্য করিতে প্রস্তুত হইলেন। দারা यथन निकर्णत नवगठिक देमछान नहेशा अधामत हरेलन, उथन यालावस अधिमाश अखबाता खानाहरणन य जिन তাঁহার সহিত মিলিত হইবেন। অরদ্ধেব এই সংবাদ পাইয়া আক্ষমীরাভিমৃথে অগ্রসর হইলেন। মির্জা রাকা জনসিংহ এই সময় রাজা যশোবত্তের অপরাধ ক্ষীর জ্ঞ व्यत्रम् एवरक एएथ्डे व्यष्ट्रताथ करतन। मुखाहित रम कथा রক্ষা করেন। রাজা যশোবস্ত দারার সহিত মিলিত হইবার জন্ত যোধপুর হইতে ২· ক্রোশ চলিয়া গিয়াছিলৈন, মির্জা-রাজ এই সংবাদ পাইয়া পথ হইতে স্বরাজ্যে ফিরিয়া গেলেন। দারা তাঁহাকে অপক্ষে আনিবার অভ দেব-টাদ নামক জনৈক ত্রাহ্মণকে তৃইবার ও সফীরশেকোকে একবার রাজার নিকট পাঠাইলেন, কিন্তু রাজা বাক্জাল বিস্তার করিরা তাঁহাদিগকে ভোক দিরা ভূলাইলেন।

সাহায্য-বিরহিত হইয়া তিনি আজমীরের পর্বত্র্যালা ্ভাবলখন করিয়া চতুর্দিকে স্থ্রক্ষিত রাখিবার ব্যবস্থা কীরি-⊦ লেন। পার্বত্য পথ সকল পাথর ফেলিয়া বন্ধ করিয়া ब्रांबिए जारमण मिरलन। भर्पा भर्पा वस्तूक्षांत्री अ कामान বাধিয়া আপনাকে স্কর্মিত করিয়া নিম্পে মধ্যস্থলে রহিলেন। अबुक्टब्बर नश्यान शहिया तिक मत्यत्र कामान शाठीहेया দারার এই বাহ ভাঙ্গিতে আদেশ দিলেন। তিন দিন ভীষণ যুদ্ধ হুইল, কিন্তু দারার সৈঞ্-সমাবেশ অতি নিপুণভার স্হিত হুইয়াছিল, স্থুতরাং বিপক্ষদল বিশেষ কোন ক্ষতি করিতে পারিল না। দারার ল্রুটিড সৈত হঠাৎ সন্থীন হইরা আক্রমণকারীদিগকে ছিন্ন ভিন্ন করিয়া আবার স্বস্থানে · शिवा लुकारेल। भव पित कात्रकाखन निस्न रमनाभि उत्नरक ডাকিয়া উৎসাহিত ও সন্মান সংবর্ধনার লোভ দেধাইয়া যামনের জ্মীদার রাজা রাজরপকে প্রথমাক্রমণের ভার দিলেন। রাজা রাজস্প এক দল সাহসী পদাতি লইয়া দারার সৈম্ব্রাহের পশ্চাতে এক কুন্তু ন পর্বতিশিখরে গিয়া মোগল-সমাটের পতাকা উঠাইলেন। দারার সেনা-পুতিরা ভাবেন নাই যে, এই স্থানে আসিয়া শত্রুরা কোন্দিন তাঁহাকে আক্রমণ করিবে। যাহা হউক, রাজা রাজরুপ এইরূপে পশান্তাগে উপস্থিত হইয়া শাহ নবাল থাঁকে আক্র-মণ করিলেন। শাহ নবাজের দলের সলুথভাগ সেথমীর ও আফগান বীর দিলীর থাঁ কর্তৃক যুগপং আক্রান্ত হওয়ায় তিনি পরান্য হইলেন এবং জামাতৃযুদ্ধে পরাস্ত হওয়ার অপমানে যদ্ধকেত্রেই প্রাণ বিসর্জন করিলেন।

দারা পরাজয় ও শাহ নবাজের পতন শুনিয়া একবারে ভয়হৃদয় হইয়া পড়িলেন ও পুল সফীরশেকো, ফিরোজ মেবাতী
ও কর্তিপয় অন্তঃপুরচারিণীকে লইয়া পলায়ন করিলেন।
কতকগুলি অন্তরার বহু মূল্য মনিমানিকা ভিন্ন তিনি আর
সমস্তই ফেলিয়া আক্ষদাবাদের দিকে পুনরায় অগ্রসর হইলেন। রাত্রি ৩ ঘটা অতীত হইয়া গেলে অরঙ্গজেব শুনিকেন
দারা পলাইয়াছেন। তখনও দারার অগ্রবর্তী সৈন্যের কোন
কোন দল য়য় করিতেছিল। রাজা জয়সিংহু ও বাহাছর
বা একদল সৈনা লইয়া দারার পশ্চাদ্ধাবিত হইলেন।
দারা পাঁচ কোল চলিয়া গেলৈ তাহার ভ্তাবর্গ পরস্পর বিবাদ
করিয়া দারার পরিভাক্ত ধনরাশির মধ্যে যে যাহা পাইল, সে
তাহাই লইয়া সরিয়া পড়িল। যে সকল খোলা জীলোকদিগের
রক্ষার্থ ছিল, তাহারা লুঠনকারীদিগকে বলে না পারিয়া
কেবল জীলোকগণকে রক্ষা করিষার জন্য চেটা পাইল।
লুঠকেবা কিন্তু জীলোকদিগের মনিমানিক্যাদি ও গাত্রাভরণ

অপহরণ করিয়া তাঁহাদিগকে হস্তীতে চড়াইয়া দিয়া ভাঁহাদে উट्टेखिन नरेश मझक्षित मधा निया भनाइन क_{रिन।} থোজাগণ হতীসহ রমণীদিগকে লইয়া দেড় দিন পরে দারার সহিত মিলিত হইল। ভ্তাৰিরহিত, জ্বাদি লাভিত্ত অপদস্থ দারা একদল কুর, বিষয়, ক্লিষ্ট, অভ্যাচারপীতিত স্ত্রীলোক লইয়া মকুভূমি উত্তীর্ণ হইয়া ৮ দিনে আৰু_{টা} বালে ,উপস্থিত হইলেন। সহরের প্রাধানগণ অৱদলেবতে সমাট বলিয়া খীকার করিয়া দারাকে নগর প্রবেশ ক্রিছে বাধা দিল। ভাগাতাড়িত দারা প্রেথানেও এই ব্লে প্রত্যাখ্যাত হইয়া নগরাধিকারের আশা বিসর্জন দিয় সহরের ছইক্রোশ দূরে কারি নামক স্থানে প্রথান করিদেন। এই স্থানে দুর্দান্ত কোলস্দার কাঞ্জি তাঁহার সহায়তা ক্রি এবং তাঁহাকে সঙ্গে লইয়া গুজারাটের ভিতর দিয়া কছে। नीमात्र **পঁত্ছা**ইয়া দিল। কচ্ছের अभीनांत्र ইতিপ্রে मातात्क त्यक्रभ माहाया कत्रियाहित्नन, ध्रवात्र छाहा की লেন না। পুর্বেষ তিনি দারার ভাগ্য পরিবর্ত্তনের সংখ্যাং नित्यत ভবিষ্যৎ এ বৃদ্ধির আশা করিয়াছিলেন, কিয় এন ভাগ্যহীন দারার নিকট কোন আশা নাই দেখিয়া ওঁয়া সহিত সাক্ষাৎ পর্যাস্ত করিলেন না। দারার চকু বিগণিত হইল ; তিনি অশ্রপূর্ণ লোচনে ভক্করে প্রস্থান করিলেন।

ষে এতদিন এত হৰ্দশায়ও তাঁহার সঙ্গে ছায়ায়গা ছিল, সিন্ধু প্রদেশের সীমায় পৌছিলে সেই ফিরোজ মেনা দেখিল, হর্ভাগ্য আর দারাকে ছাড়িবে না। দেও গ্র তাঁহাকে ত্যাগ করিয়া দিল্লী প্রস্থান করিল। দ্বারা কেন পুত্রমাত্র সহায় হইয়া জাবিয়ান নামক স্থানে প্রস্থান কঃ লেন। সেথানকার মরুত্মির দহারা তাঁুহাকে ব कतिरव विश्वा **काँशांत्र भ**थरताथ कतिल। हेराहु व महि যুদ্ধ করিয়া দারা মকাশি জাতির দেশে উপস্থিত **হ**ইবের। ঐু জাতির কর্দার মির্জামকাশি তাঁহাকে আন্তর দিন ^{এন} তাঁহাকে লোক দিয়া ১২ দিনের পথ দুরে কান্দাহারে পাঠাইন দিতে চাহিল। মিৰ্জা মৃকাশি তাঁহাকে ইরাণ (পার্ডে) যাইবার জন্য পীড়াপীড়ি করিল, কিন্তু তথনীও দারা নিরীয সিংহাদনের স্থপ্ন ত্যাগ করিতে প্রারিলেন না^{গাঁৱিব} কচ্ছের অন্তর্গত দাদকের জমীদার মাঁলিক জিঁবানের নি^{ক্} কুতজ্ঞ ছিল। দারা উপন্ধিত **হইলে এই অ**তিথিহ^{নন্ধ্রী} নরপত তাহাকে বালয়ে লইয়া গেঁল। এখানে ^{ছইনি} অবস্থিতির পর তাঁহার পত্নী নাদিরাবৈগম ও করা বুরা পরবেক ছর্দশার অ্তিত জু আমাশর রোগাজাও হা

কালকবলিত হইলেন। এইবার কচ্ছে প্রবেশকালে তাঁহার নিম্নের নিমৃত্ত গুল মহম্মি নামক স্থনাট ও বরোচের শাসনকর্তা ৫০ জন 'অখারোহাঁ ও আড়াইশত বন্দুকধারী লইরা দারার সহিত মিলিত হন ও বরাবর এপর্যান্ত সঙ্গে ছিলেন। এখন ছংথের পর ছংখ, বিপদের পর বিপদ্দ 'নিরাশার পর নিরাশা ভোগ করিয়া দারা পাগলের মত হইয়া উঠিলেন। তাঁহার বৃদ্ধি লোপ হইয়াছিল। তিনি ভবিঅদ্টিবিরহিত হইয়া এই গুল মহম্মদের হত্তে জীকস্তার মৃত দৈহ সমর্পন করিয়া লাহোরে পাঠাইয়া দিলেন। বিপদের সমর এক মাত্র বিশানী বন্ধকে দ্বে পাঠাইয়া ক্রেক জন্ত ভতা ও অকর্মণ্য খোজামাত্র লইয়া দারা সেই ছানেই রহিলেন।

প্রদিন প্রাতে মালিক জিবানের সহায়তার তিনি ইরাণে ৰাইতে প্ৰস্তত হইলে মালিক উদেযাগুকরিল, কিন্তু ক্বতজ্ঞতা বিদর্জন দিয়া সে ত্রীবৃদ্ধির আশা আপাততঃ গোপন রাবিয়া শারার সহিত অতাসর হইল। কিয়দুর গিয়া সামাত অছিলা कतिया चीत्र खाळात च्यशैरन এकमन वमगारतम रनाक ताथित्रा চৰিয়া আদিল। এই ব্যক্তি দারার সহিত কিয়দূর গিরাই হঠাং তাঁহাকে আক্রমণ ও বন্দী করিল। তৎপরে সফীর-ल्याका व्यवस्थाना लाकरक वन्ती कत्रिया कार्ष्टेत्र निकरे ন্দানিয়া দিল। মালিক জিবান এই সংবাদ রাজা জয়সিংহ ও বাহাছর থার নিকট পাঠাইয়া দিল। বাহাছর যাঁ ভক্তরের শাসনকর্তাকে এই সংবাদ শীঘ্র অরম্বজেবকে লি্থিতে বলি-लन, चकरत्रत्र भामनकर्छ। वादकत्र या यथाकाल मञारहेत निक्छ मःवीत भाष्ट्राह्मन, वाहाइत थीं अ भाष्ट्राह्मन । अत्रन-**বেব উভ্যু স্থান হইতে সংবাদ পাইয়া বিশ্বাস - করিলেন এবং** णिन नाकाहेया এই मःताम त्राङ्के कतित्वन। माधात्रण **শৃক্ষেট মালিক জিবানের বিশ্বাস্থাতকভার চটিয়া নিন্দা** ক্রিতে লাগিল, কিন্তু দ্রবার হইতে সে ২০০ অখ উপধার पनः धक हाकाती मनमन्तृत्तत्तत्र अन खाश हहेन।

এই সময় প্রলেমানশেকো জীনগররাজের আশ্রায়ে ছিলেন। বালা রাজরপ সমাটের আদেশবর্তী হইয়া শ্রীনগররাজকে শিখ্যা পাঠাইলেন, যে তিনি স্থলেমানকে আশ্রয় দেওয়াতে শৃত্রাট্ ক্র হইয়াছেন, অভএব তাঁহাকে রাজ্য হুইতে বহিন্ত করিয়া দিবে। ইহার পরিণাম যাহা হইয়াছিল, তাহা ইতিপুর্কেই বিবৃত হুইয়াছে।

১৬৫৯ খুটাকের সেপ্টেম্বর মাসের প্রথমে বাছাত্র থা বারাশেকে। ও স্কীরশেকোকে লইয়া স্থাটের নিকট উপহিত হইবেন। স্থাট্ আদেশ দিলেন যে পিতাপুত্রকে শৃথ্যপাবদ্ধ করির। হাজীতে চড়াইরা লগরের সমত বাজারে দুরাইরা পুরাতন দিলীর থিজিরাবাদ নামক ছানে বন্দী করিয়ারাথিতে হইবে। বাহাছর থা বন্দীব্যকে লইয়া আসার যথেট সন্মান ও প্রস্থার পাইলেন।

মালিক জিবান ইহার পর বক্তিয়ার থাঁ নাম লইরা
দিলীতে উপস্থিত হইলেন। পথে চলিবার সমন্ন যাহারা মনে মনে দারাকে ভালবানিত, তাহারা ও সাধারণ লোকে দলবদ্ধ
হইয়া তাঁহার গাত্রে কালা চেলা মারিতে লাগিল, গালি দিতে
লাগিল, পেষে তাহাকে খুন করিতে উন্তত হইল। প্রস্তার্যা
ভাতে তাঁহার অহচরেরা অনেকে মারা পড়িল। মালিক
গতিক ব্ঝিয়া ঢাল চাপা দিয়া ভিড়ের মধ্যে মিশিয়া গোলেমালে রাজপ্রাসাদে গিয়া আশ্রম লইয়া প্রাণ বাঁচাইলেন।
কোত্রাল আসিয়া তাঁহার অহচরবর্গকে উদ্ধার করিল।
অহসেনানে প্রকাশ পাইল বে, হৈবত থাঁ নামক একজন
আহলী বিক্লক) এই গোলমালের স্ত্রপাত করে। ভাহার
পিরশ্ভেদ হইল।

১৬৫৯ খুটানে সেপ্টেম্বরের শেষে (১০৬৯ , হিজিরার জেলহজ্জ) দারাশেকোর বিনাশের আদেশ হইল। ব্যবহারজীবীদিগের মতে তিনি ধর্মবিহিত্তি, অনাচারী ও কাফেরদিগের সহবাদী ও তাহাদের আচারাফ্টাতা বলিয়া মুসলমান
শারাফ্দারে অপরাধী, বলিয়া ছির হইল। উাহার শিরশেহদ
হইলে উহোর ছিল্লদেহ হস্তীপৃঠে হাওদার মধে স্থাপিত
করিয়া নগুর ভ্রমণ.করাইয়া ভ্রমায়ুন বাদশাহের কবর পার্শে
সমাহিত কবা হইল। স্কীরশেকো গোয়ালিয়র ছর্গে বন্দী
রহিলেন।

ঁ হিন্দুবন্ধ মোগল সিংহাসনের প্রক্রত উত্তর্ধিকারী দারা-শেকোর এইরূপে অস্ত হইল।

পূর্বেই লেখা হইয়াছে, দারাশেকো একজন বিলক্ষণ
পিন্তিত ছিলেন। কাব্যজগতে তিনি 'কাদিরি' নামে থাতে।
তিনি 'স্ফানং উল্ আউলিয়া' নামে মহম্মদের সংক্ষিপ্ত জীবনী, হিন্দু ও মুসলমান ধর্ম একীকরণ মানসে 'মজ্মা উল্ বহরইন্' নামে একথানি উৎকৃত ধর্মগ্রহ, ১০৬০ হিজরার 'মৃত্থব্ শাহনামা', 'হস্নাং উল্ অরিফীন্', 'রিসালা হক্নামা' প্রভৃতি কয়েকথানি উংকৃতি পার্মী গ্রহ রচনা করেন। তিনি ফকীর মৌলানার মুধে বেদের সার উপনিবদের পরিচয় পাইয়া কাশী হইতে সাধু, স্র্যামী ও প্রধান পণ্ডিতদিগকে আনাইয়া তাঁহাদের মুধে উপনিবদের বাাধাা ভ্রিয়া ৬ মাস জনবরত পরিশ্রম করিয়া ১০৬৭ হিজিয়ায়

(১৬৫৬ খুৱাবে ) টিপ্পনীসহ পারত ভাষার সমস্ত প্রধান উপ-নির্ধন্ অমুবাদ করিয়া প্রচার করেন।

ফরাসী পণ্ডিত মুসো আঁক্তাই ছপেঁরো উক্ত অহবাদিত উপনিষ্পৃত্তি আবার ফুরাসী ভাষার প্রকাশ করেন। এই ফরাসী অহবাদ দেখিয়াই উপনিষ্দের উচ্চ তত্ত্ব মুরোপীয়দিগের নিকট স্মান্ত হঁর। দারার পক্ষপাতশৃত্ত ধর্মানত ভানিয় হিন্দৃগণ তাঁহাকে হিন্দু বলিয়াই মনে করিবিল। কাজে (Catrou) লিখিয়াছেন, মে দারা মৃত্যুকালে খুটীয় মতাবল্যী ছিলেন। উপনিষ্পৃত্তির ভূমিকায় দারা বেদের ও কোরাণের আলোচনা করিয়া অতি স্কর কথা লিখিয়া গিয়াছেন ৬।

দারা নিজে প্রাক্তত তথকান পাইবার জয় কেবল কোরাণে নির্জন করিতেন না, তিনি হিন্দুর বেদোপনিষদাদি, খুষ্টানের বাইবল প্রভৃতিও পাঠ করিতেন। উপনিষদের ভূমিকার তিনি তাহাও খাঁকার করিয়া গিয়াছেন †। তিনি এই ভূমিকার জয় ধর্মকে নিনা করা বা খুণা করা যে কোরাণেরও অনভিমত তাহা স্বীকার করিয়া গিয়াছেন :। তাঁহার প্রণীত পারস্ত ভাষার রীচিত অথব্ধবেদোক ক্ষমত্তব্দী অতি স্থন্দর।

माति (बि) मृ्शिष्ट्रेन्। मात्रकः। मातिका (बी) मात्रक ग्रेशि व्यवहेषः। कन्ना।

"অরিষ্টং বৃষভং কেশিং পৃতনাং দৈত্যদারিকাং।" ( হরিবংশ ৪১/১৫১ )

দারিকাদান (ক্লী) দারিকারাং দানং। ক্সাদান, ক্সাকে সংপাত্তকরণ।

দারিকেশ্বর বাকালার অন্তর্গত বাকুড়া ও বর্জমান কেলার একটী নদ। মানভূম জেলাস্থ তিলাবনি পহিছের নিকট এই নদ উৎশন্ন হইয়া পুর্বাদকিণাভিমুথে বাঁকুড়া, বর্দ্ধান । हशनी (बनाई मध्य पित्रा ভागीत्रधीत (माहानात्र পতिত हहे-য়াছে। বাঁকুড়া জেলা দিয়া প্রবাহিত হইবার সময় ইয়ায় লোত পূর্বন্থে এবং ছই শাধাস বিভক্ত ইইয়া পুনরায় মিলিত হইয়াছে। ইহার প্রধান উপনদী গন্ধেখরী বাঁকুড়া ুসহরের ৩ মাইল পূর্বে দারিকেখরের সহিত মিলিত হট श्राष्ट्र। वर्षमान स्वना निया भमनकारन नात्रिरक्षत्र छात्र। कृति ও আমোদর নামক আরও ছইটা উপনদের সহিত মিলিত হ্টয়া বিষমতরকে প্রধানতঃ দক্ষিণপূর্বাভিমুবে গমন করিরাছে। তাহার পর ইহা ছগলী ও মেদিনীপুর বেলার মধ্যসীমা দিয়া মোহানা পর্যন্ত গিয়াছে। বর্দ্ধনান বেলা হইতে বহির্গত হইবার পর ইহার নাম পরিবর্জিত হইরা রশ-নারায়ণ ছইয়াছে। প্রতি মাইলে ইহার প্রবণ্ডা ^{পামোনর} चाराका किकिए नान श्रेरण अ रेशांक नारमामात्रव अन অনেক সময় হড়্পা বাণ পড়িয়া থাকে। এই €ড়্পা^{বাণ} প্রায় ৪।৫ ফিটু উচ্চ জলের প্রাচীরের স্তায় নদী ও ক্প পূর্ণ করিয়া ভীষণ বেংগ সহসা আগমন করে এবং মহয়, ^{গ্রু}, পান্ধী, বোড়া প্রভৃতি বাহা সম্মূপে পড়ে সমস্ত ভাসাইরা ^{নইরা} যায়। কামিনীগণ সলিল পার্বে বালুকোপরি কলদ রাগিন স্থান করিতেছে, এমন সময় প্রসা কল কল গুড়ীর নিনাং ভীষণ বেগে হড়্পা আসিল, রমণীগণ শশবাতে কুছু ৰট্যা তীয়ে উঠিতে না উঠিতে বাণ আসিয়া, পড়িণ, , কুন্ত সহিচ তাহারা ভাসিয়া চলিল,—এরূপ ঘটনা আনৈকবার ঘটয়াছে। বৰ্ষাকালে কথন কথন ইহাতে ছই তিন দিন প্ৰা<del>ৱ</del> এ^{ম্ভ} বন্তা থাকে, যে যাতায়াত বন্ধ হইরা বাদ্ধ। নদী সংধ্য বাবে शास रफ रफ भाषत्र चारह। छेरारक् तोकांवि नाजित

^{*} ইংৰাজী অনুবাদ প্ৰদত্ত ইবল—"Happy is he, who having abandoned the prejudices of vile selfishness, sincerely and with grace of God renouncing all partiality, shall study and comprehend this translation which is to be denominated 'mighty secrets', knowing it to be a translation of the words of God, he shall become unperishable and without dread and without solicitude, and eternally liberated."

⁽a) 'And whereas the views of this seeker of plain truth were directed to the origin of the being, in Arabic language, and the Syriac, and the Chaldaic, and the Sanskrit, he was desirous to comprehend these Opnskhats, which are a treasury of monotheism and in which the proficients, even among that tribe, were become very rare by translating without any worldly motives in a clear style word for word."

mysterious, and at the present day the understanders thereof are very rare, by (Dara) was desirous to collect into view all the heavenly books, that the very word of God itself might be its own commentary; and if in one book it be compendious, in another book it might be found diffusive, and from the detail of one, the other might be comprehensible, he had therefore cast his eyes on the books of Moses, and the Gospels, and the Psalms and other holy pages."

t "And it is also known out of the holy Koran that there is no tribe without a prophet and without a Bible and from sundry pressages therein it is, proved, that God inflicts no punishment on any tribe until a Prophet hath been sent to them and that there is no country wherein a religion accompanied with prophecy hath not been placed."

See "Historical Fragments of the Moghul Empire",
pp. 240—250.

ভালিয়া যায় । বর্ষা ভিন্ন অন্ত সমন্ন ইহাতে অধিক জল থাকে
না । গ্রীয়কালে নদীর অধিকাংক ছানই বালুকামন্ন গর্জে পরিণত হয় । বালুকা খননু করিলে পর জল পাওয়া যায় ।

তবে ইহাতে অনেক ছানে বক্সার সময় স্রোভ-বেগে বালুকারাশি অপস্তত হওয়ায় গভীর ও বহুদীর্ঘ দহ উৎপন্ন হয় ।

ঐ সকল দহে গ্রীয়কালেও প্রচুর জল থাকে । দারিকেম্বরে
নৌকাদি ঘারা প্রান্ন বাণিজ্যাদি হয় না । ছই চারিটা বড়
বড় কাঠ সময় সময় বর্ষাকালে মানভ্ম হইতে ভাসাইয়া পূর্বেদিকে আলা হয় মালু । ইহার তীর অতিশন্ন উর্বরা । বর্জমান ও হগলীজেলায় বল্পা-ভয়নিবারণার্থ ইহার তীরে
বাধ আছে ।

দারিত (ত্রি) দার্যাতে মেতি দু-পিচ্ ক্ত । ক্বতদারণ । পর্যায় ভিন্ন, ভেদিত, বিদারিত, তাড়িত ।

'অংভমানেব মুক্তস্ত সগরেণ মহাত্মনা।

গাম ছ:খাং তং দেশং যত্র বৈ দারিতা মহী॥"(ভারত ৩০১ • ৭।৪৯) বিদ্রো (ক্লী) দরিদ্রস্থ ভাবং দরিদ্র-স্থঞ্। দরিদ্রতা, অকি-ফনতা, ধনাদিরাহিত্য।

শ্বথং হি ছঃথাস্তর্ত্য শোভতে ঘনান্ধকারে দিব দীপদর্শনং। স্থাতু যোযাতি নরো দরিদ্রতাং

ধৃতঃ শরীরেন মৃতঃ স জীবতি ॥" (মৃচ্ছকটিক.)

হংগায়ভব করিয়া স্থথ শোভা পায়, যাহারা স্থথ হইতে দরিজত। প্রাপ্ত হয়, তাহারা মৃতকর হইয়া জীবন গারণ করে। এক দারিজ্য অনস্ত হংথদায়ক, গুণবান্ লোকসমূহও দারিজ্য দশা প্রাপ্ত হইলে তাহাদের সকল গুণরাশি বিনষ্ট দইয়া থাকে।

•

রিল, বৎস শর্মার প্রাপৌতা। ইনি অথর্কবেদ্বীয় কৌশিক-ংতের টাকা রচনা করেন।

রী (ত্রী) দারমতি পদতলমিতি দৃ-ণিচ্-ইন্ ( সর্কাধাত্তা বি। উণ্ ৪।১১৮) ততো ভীষ্। ক্ষুদ্রোগ নিশেষ, এই মাগের বিষয় ভাবপ্রকাশে এইরূপ লিখিত আছে, যাহারা দিউকে অবিক গমন করে, তাহাদের বায়ু কুণিত হইয়া মতাত্ত কক্ষ হয় পএবং পরে পাদতল বেদনার সহিত বিদারিত বি, এইবীপ হইলে তাহাকে দারীরোগ কহে।

^{প্}রিক্রমণশী**লখ্য বায়ুরতীয়র্থরুক্রয়োঃ।**•

পাদরো কুক্তে দারীং সক্ষাং তলসংশ্রিতাং।" (ভবিপ্রণ)
দারী চিকিৎসা—পাদদারীরোগে দিরাবেধপুর্বক রক্তনাক্ষণ এবং স্নেহ স্বেদ ও প্রলেপদারা চিকিৎসা করিতে

ইবে। মোম, ছাগাদির বসা ও মজ্জা, ঘত ও যবক্ষার এই
কল মিশিত করিয়া তদ্বারা মুহ্মিছ প্রবেশে দিতে হইবে।

বিশেষ কিছু উক্ত না থাকার বসা ও মজ্জা হলে ছাগাদিরই গ্রহণীয়। মদন্পালের মতাহসারে মেদ, বসা ও
মজ্জা, অমুক্ত হলে গ্রামা ও অন্পজাতির গ্রহণ করিবে।
ধ্না, কৈন্ধব ও লোহ এই সকল ঘত ও মধুর সহিত মছন
করিয়া সার্ধণ তৈল মিশ্রিত করিয়া পাদবরে দ্রুক্তণ করিলে
দারীরোগ নই হয়। মোম, শিলাদেতু, ঘত, ওড়, ওগ্ওলু,
ধ্না ও গেরিমাটি, এই সকল এক্ত পেষণ করিয়া প্রলেপ
দিলে পাদদারী দ্র হয়। ধুত্রাবীজের মৃল, কর এবং
মানকচ্র কার জল দিয়া সার্ধণ তৈলে পাক করিয়া পাদবরে
দ্রুক্ত করিলে পাদদারী ভাল হয়। (ভাবপ্রং)

"অবটামালী চাউহাসোঁ দারুকো লালনী তথা।" (বারুসং ২০১০।৪) দারুক চছে (পুং) দেশভেদ। (ত্রি) তত্ত্ব ভব: কচ্ছোত্তদেশ-বাসিখাৎ বৃঞ্।" দারুক চহক, দারুক চহুদেশভব।

দারে কদলী (আটী) দারুবং কঠিনা কদলী। ১ বনকদলী। • ২ কাঠকদলী। কাঠকলা। (রাজনি॰) •

দাক্তকা (ন্ত্ৰী) দাকণা কাৰ্চেন কায়তি কৈ ক, টাপ্। কাঠময়ী ন্ত্ৰী, কাঠের পুতুল। পৰ্য্যায়—পত্ৰিকা, দাক্ত্ৰী, শালভঞ্জিকা, আ শালভঞ্জী, শালাকী, দাকপুত্ৰিকা,ক্ক্নন্তী, দাকগৰ্ভা। (হারাবলী) দাক্তিকাবন (ক্লী) বন্ময় তীৰ্থভেদ।

দারুক ( পৃং ) দারুক ভ অপত্যং ফিঞ্। দারুকের অপত্য । দারুকেশ্বর ( পৃং ) শিব লিকভেদ। (শিবপুণ)

मात्रात्क खत्र को थ (की) मिन प्रवादन के की थर छन । *

দারুগ্রা (ভাী) চীড়ানামক গন্ধজ্ব্য। (রাজনি )

मार्क्जार्ड्डा (ब्री) माक्रमस्त्रा गर्ट्डा यथाः। माक्रमम ब्री।

দারে চিনি (ত্রী) স্বনামধ্যাত গুড়ত্বক্ । ভাবপ্রকাশের মতে—ইহার পর্যায় ত্বস্থাত্ন ও দারুনিতা। শস্বর্দাবলী মতে—পর্যায় স্তক্ট, ভ্স, ত্ত্পত্র, বরাক্ষক, ত্বক্, চোল, পত্র, হৃত্ত, স্থরভিবৰুল, উৎকট, চোচ, শুড়ত্বক্। বালালার

• ডালচিনি, পঞ্জাবে কির্কা বা দারচিনি, বোছাই অঞ্চলে
তাল্প, দলচীণি বা তিথি, তৈলকে নার্নিলদ, লবন্ধপত্তা,
সরলবন্ধপত্তা, দ্রাবিড়ে করুবা, কর্ণাটে দলচিনি বা লবন্ধপত্তা,
সিংহলে রস্মু, কুরুন্দ্, আরবী দারসীনি, কির্কাহে, শৈলানিরা;
পারসী দারীচিনি বা তলিথাকে। [শুড়ত্বক্ দেখ।]

সিংহলের বনজঙ্গলে দাকুচিনির গাছ আপনাপনি যথেষ্ট জন্মে, সিংহলের পশ্চিম উপক্লেও এই গাছের চাষ আছে। দাক্ষিণাত্যে ও তেনসরিম প্রাদেশেও দাকুচিনি গাছ হইতে দেখা যার। (Cinnamonum zeylanicum) বাইবেলের আদি প্তকে এই দাকুচিনি Kinnemon নামে বর্ণিত হইন্যাছে (Exodus XXX, 20.)

বাণিজ্য কেতে ছই শ্রেণীর দারুচিনি প্রচলিত, সিংহলের দারুচিনি ও চীনের দারুচিনি। চীনের দারুচিনি অভি নিরুষ্ট।

সিংহল, চীন, ভাম, কোচীন চীন ও ব্যবদীপ হইতে প্রধানতঃ দাক্ষচিনি রপ্তানী হয়। এতন্মধ্যে সিংহলের দাক্ষচিনিই বছ প্রাচীনকাল হইতে বিদেশে রপ্তানী ও আদৃও 
হইরা আসিতেছে। ১৭৬৯ খুটাকে (ওলনাজনিগের আধিপত্য কাল পর্যান্ত) সিংহলে সর্ক্রভানে বক্তাবস্থায় দাক্ষচিনি
গাছ জন্মিত, তথনও কেই দাক্ষচিনির চাষ ক্রিত না। নরম
জমি হইতে যে দাক্ষচিনি পাওয়া যাইত, তাহাই উৎক্ট এবং
তাহাই গরম মসলার জন্ম মুরোপ প্রভৃতি স্থানে রপ্তানী হইত।

গাছের ছালই বন্দদেশে দারুচিনি বা দালচিনি নামে থাতে। সিংহলে ও দান্দিণাত্যে ঘাহারা ওক্ সংগ্রহ করে, তাহারা সচরাচর ৯ প্রকার দারুচিনির কথা উল্লেখ করিয়া থাকে—> নাগ, ২ কপুর অর্থাৎ কপুর্যুক্ত, ৩ কাহতে বা ধারক, ৪ সবেল অর্থাৎ আটাল, ৫ ডব্ল অর্থাৎ ডম্ফ. ৬ নিকা অর্থাৎ বন্তু, ৭ মাল অর্থাৎ ফ্লওলা, ৮ ভৌপৎ অর্থাৎ তেপাতা এবং ৯ বে ক্রুক্ষ্ম অর্থাৎ উইধরা দারুচিনি।

দারুচিনিগাছের শিকড়ে কর্পুর এবং ভিতরের ছাল, প্র ও মূল এই তিন স্থান হইছে তিনপ্রকার হৈল পাওয়া যায়। দিংহলে ও ইংলণ্ডে ছাল টোয়াইয়া শতকরা অর্দ্ধ বা এক ভাগ তৈল প্রস্তুত করেঁ। এই তৈল দেখিতে সোণার মত, তাহাতে দারুচিনির মিষ্টতা, স্থান্ধ এবং অল্ল পোড়া গ্রদ্ধ থাকে। ইহা স্থানি জবো বাবহাত হয়। পাতায় তৈল হয়, তাহার গ্রদ্ধ লবলের মত। দিংহল হইছে তাহা 'লবল-তৈল' বলিয়াই রপ্রানী হয়। ইহা দেখিতে কটা ও আটাল। মূল হইতে বে তৈল হয়, তাহা দেখিতে পীতবর্ণ, ইহা জল অংশকা হাল্কা। ইহা কর্পুর ও দাক্ষ্টিনির গছৰিশিই এন উতা কর্পুরাখাদযুক্ত। এই গাছের ফল হইতেও পূর্বনান এক প্রকার তৈল হইত, এখন আর এ তৈল পাওয়া বার না

যুরোপীর চিকিৎসক্দিগের মতে দারুচিনির ঙা বৃদ্ধু উত্তেজক, বায়ুনাশক, 'উদরাধান, উদরশুল, অন্তের আছেদ, 'জনক পীড়া, বলহারক উদরামর, পাকত্থলীর প্রদাহ, বল্লা। ধিকা প্রভৃতি রোগে বিশেষ উপকারী। দত্তশূল ও জিলার পকাঘাতে ইহা অতিশয় তেজকর। আমাশর রোগেও ২০ বেণ দারুচিনির ও ডা প্রহেরাগে অনেক সময় উপকার দর্শে। দাকুজ ( ত্রি ) দাকুণো জায়তে জন-ড। ১ মর্দল বাগতে, মাদল। ২ কাঠনির্মিত্ত। "আসনং প্রথমং দত্তাং পৌশং দাকুজমেব বা।" (কালিকাপুণ ৬৭ অং)।

माञ्जल ( श्रः ) मात्रश्र की ि मृ- निष्- केनन् ( कृत्मात्रिका केनन्। উণ্তা৫০) ১ চিত্রক বৃক্ষ, চিতা গাছ। ২ ভয়ানক বৃদ্ ৩ ভয়ানক, ভীৰণ, ছ:সহ। ৪ ভয় হেতু। "হ্নর্কুর্যু শোষী দারুণ: দীর্ঘশোক: ।""(সাহিত্যদ")। ৫ রৌলুন্ত্রঃ নক্ষত্রগণ। ৬ বিদারক। ৭ বিষ্ণু। (ভারত ১৩।১৪৯।৭৪) দাব্ৰণক (ক্লী) দাৰুণবৎ কায়তীতি কৈ-ক। মন্তক্লাত কৃষ্ট द्वागविटमय, थुन्की, हिन्ती क्रनी। वायु ও কফ কুণিত हरें। মন্তকের কেশস্থল আশ্রের করে, ইহাতে কেশভূমি কণুর্ক কৃষ্ণ ও কর্মশ অর্থাৎ উপরিভাগের ওক্ শুক হইয়া টা এইরূপ হইলে তাহাকে দারুণক কহে। ইহার চিকিংগ-शिवानवीक, यष्ठिमधू, कूफ़, मायकनात्र ७ रेनस्व धरे नम মধুর পহিত মিশ্রিত করিয়া মস্তকে প্রলেপ দিলে দাংগদ রোগ নই হয়। আন্ত্রীক ও হরীতকী সুমভাগে হয় গা ८भवन कतिया व्यात्मभ मिल्न माक्रनक देवांग नहे हव। धाः ফলের কঁক এবং ভৃঙ্গরাজের রস বারা ভৈনপান করি। প্রায়েগ করিলে কণ্ডু ও দারুণক কুর্ন্তরোগ নই ইয়। (ভার্মা) দারুণতা (স্ত্রী) দারুণস্ত ভাব: দারুণতল, ছিয়া^{ং টাণ্} দারুণের ভাব, কঠোরতা।

দারেণা (স্বী) তিথিভেদ, অক্ষয়ত্তীয়া। "তৃতীয়াক্ষমংজ্ঞা যা দাঁকণা সাপ্রকীর্ন্তিতা।" ^(মুডি) ২ নর্ম্মণাথপ্রাধিষ্ঠাত্দেবীভেদ। (শ্বার্থচি^{*}) °

দারুণাত্মন্ (ত্রি) ছুরাছা, কঠোছ হৃদর।
দারুণ্য (ক্রী) কার্ক্তা। ২ উগ্রভা, কঠোরচা, ভীণারা
দারুতীর্থ (ক্রী) শিবপুরাণোক্ত তীর্থভেদ।
দারুনশা (ত্রী) দারুণ্যধানা নিশা হরিজা। দারুহিন্তা
দারুপত্রী (ত্রী) দারুণ: দেবদারুণ: প্রমিব শুরাস

ঙীপ্। হিঙ্গুপদ্ধী।

দারুপাত্র (ক্লী) দারুণ: পাত্রং, বা দারুনির্দ্মিতং পাত্রং। কাঠকলাধারাদিপাত। দ্রুরুপাত্ত যতিগণের ব্যবহার্য। "অলাবুং দারুপাত্রঞ্চ মুগ্রয়ং বৈদলং তথা। এতানি যতিপাতাণি মহ: খায়স্ত্বোহত্রবীং ॥" ( মহ ) দারুপীতা (স্ত্রী) দারুণা ক্লাচেন পীতা, কার্চপ্রধানতাৎ তথাতং। দারুহরিদ্রা। দারুপুত্রিকা (ত্তী) দারুময়ী পুত্রিকা। কার্চপুত্ত লিকা, দারুকা। দারুফল (পুং)ফল ও রুক্তেদ। (Pistachio) माङ्गद्धका, क्र^{श्रमाथ}। [क्रशमाथ, दम्स।] माक्त्रार्श ( a ) माक्तिर्मिखः माक्र-मग्रहे। कार्धनिर्मिखः। দারুমেদ, বৃক্ষবিশেষ। (Tomex sebifera) দারুমুখ্যাহ্বয়া (জী) দারুমুখ্যং আহবয়তে স্পর্দ্ধতে আ-হেব অচ্। গোধা। দারুমূষা (জী) দারুপ্রধানা মূষা। দারুমৌচাথ্যা বিষ। দারুহাক্ত্র (ক্রী) দারুময়ং যত্রং। ক্রাঠনির্নিত যত্তভেদ। "অস্বতস্তোহি পুরুষঃ ক∔র্যতে দারুযন্ত্রবৎ। কেচিদীখরনির্দিষ্টাঃ কেচিদেব যদৃচ্ছয়া ॥"(ভারত উ॰ ১৫৮ অব॰)। मां त्रन्तर्थू ( जौ ) मांक्रमश्री वश्ः वश्थि जिमा माक्रमश्री वश्त्रिव द्वा। > কাঠপুত্তলিকা। ২ কাঠময়ী স্ত্রীপ্রতিমা। "জলবিন্মিন্মণিদারুবধৃং" (মাঘ) मां त्रव्य ( वि ) मांक्र वहिं वह-व्यव्। माक्रवाहक, या कार्ध বহন করে। দারুসার (পুং) দারুষু সার: শ্রেষ্ঠ:। চন্দন। ( শর্কার্থচি ) দারুসিতা (জী) দারুণি সিতেব। দারুচিনি, গুড়ত্বক্। "জ্ঞেয়া দাৰুসিতা স্বাধী তিক্তা চানিলপিত্তন্ত ।" ( ভাৰপ্ৰণ )। দারুহরিনে (জী) দারুপ্রধানা হরিনা অনাম্থ্যাত বুক্ বিশেষ, (Curcuma xanthorrhiza) পর্যায়-পীতজ, कार्रेण इक, इतिष्क, मार्क्वी, अठम्अठा, अर्ज्जनी, ओजिका, ओज-मांक, श्वित्रतांशा, कामिनी, कठकटिती, পुर्व्छका, পीठा, मांक-নিশা, কালীয়ক, কামবতী, দারুপীতা, কর্কটিনী, দর্যুক, নিশা, হরিদ্রা। ( শব্দব• ) ইহার গুণ—তিক্ত, কটু, উষ্ণ, ত্রণ, মেহ, ক্তু, বিস্প্, তৃগ্লোষ 🕏 চকুলোষনাশক। ("রাজব°)। 'দুফিহরিজা হরিজার তুলাপুণযুক্ত, বিশেষত: ইহা নেত্র-রোগ, ক্রণরোগ 😠 মুখরোগনাশুক। (ভাব-21°) দারুহস্তক ( পুং) হস্ত ইব প্রতিক্বতিঃ কন্ (ই**র্বে প্রতিক্রতৌ**। • ^{পা ধাতা৯৬})। দারুণো হস্তক:। কার্চনির্দ্মিত হস্ত, কাঠের হাতা, পর্যায় তদ্ধি। पिटिव्रांशा (शांत्रज्ञी) भाखित्रक्षक कर्यानाति विटमेय, थानांगांत्र,

প্লিশ আমলা।

দার্ঘসত্রে ( বি ) দীর্ঘসত্রে ভবঃ দীর্ঘসত্র-অণ্ ততো আছচ আৎ ( দেবিকাশিংশপেতি। পা ৫।৩।৯৬) দীর্ঘসত্রেমাগোৎপল্ল, বছদিন ধরিলা যে ৰজ্ঞ করিতে হয় তৎসম্বনীয়। দার্জিলিক্স, > বলের লেফ্টেনাণ্ট্ গ্রণরের শাসনাধীন রাজ-

জিলিক্স্, > বলের লেফ্টেনাণ্ট্ গ্রব্রের শাসনাধীন রাজশাহী-কোচবিহার বিভাগের উদ্ভরভাগত্ব একটা জেলা। অক্ষাণ
২৬ ৩০ ৫০ ইইতে ২৭° ১২ ৪৫ উ: এবং দ্রাঘি॰ ৮৮০ ১ ৩০ শ ইতৈ ৮৮০ ৫৬ ৩৫ পুই, নেপাল ও ভূটান রাজ্যের মধ্যে সিকিমরাজ্যাভিমুবে বিভ্তা। ভূপরিমাণ ১২৩৪ বর্ম মাইল, লোকসংখ্যা ২২০৩১৪। তন্মধ্যে হিলু ১৭১১৭১, মুসলমান ১০০১১, বৌদ্ধ ৪০৫২০, খুটান ১৫০২, জৈন ৮০, শিধ ২৭, পারসী ও জন। ইহার মধ্যে ভূইটা নগর ও ১৩১৭টা গ্রাম আছে।

এই জেলা ছইভাগে বিভক্ত—এক ভাগ পার্বাতীয় ও অপর ভাগ তরাই। তরাই বা পর্বাতের তলদেশকে এথানকার লোকেরা মোরদ বলে। তরাই প্রদেশ অস্বাস্থ্যকর।

এই জেলার সমতলঁকেত্র সম্জপৃষ্ঠ হইতে ৩০০ ফিট্ মাত্র উচ্চ, কিন্তু তাহার পার্ম হইতেই গিরিমালা উঠিয় ৬০০০ হইতে ১০০০০ ফিট্ উচ্চ শৃক্ষ বিস্তার করিয়াছে। তাহার পার্মভূভাগ সম্জ্বল তুষারমুভিত। পৃথিবীর মধ্যে সর্ক্ষোচ্চ গিরিশৃক্ষ ধবলগিরি ও কাঞ্চনজ্বতা ঐ তুষারময়ু প্রাদেশের সহিত সম্মিলিত। এই পার্ক্ষতীয় প্রাদেশে ১২ হাজার ফিট্ উচ্চ পর্যান্ত স্থানে শ্রামল তুণাদি দৃষ্ট হয়। তাহার উপক্ষ তালীশপত্র জ্বানে শ্রামল তুণাদি দৃষ্ট হয়। তাহার উপক্ষ তালীশপত্র জ্বাত্র নিক্ট মূল্যবান্ শাল্বক্ষ জ্বান।

তরাই অংশে পুর্বে ন্যালেরিয়া অবের বিশেষ প্রাত্তাব ছিল, মেচ, ধীনাল ও কোচেরা অবলন পোড়াইয়া জনি পরিকার করিয়া চাষবাস করিত। এথন চাও ক্র্যির জন্ত অধিকাংশ বন অবল পরিকার করা হইয়াছে।

বৃটীশাধিক্বত ভূভাগের মধে এথানে সি**লালীল।**পাহাড়টীই সর্ব্লোচ্চ, ইহার অনেকগুলি উচ্চ শৃ**ল আছে,**তন্মধো ফলালুম্ ১২০৪২ ফিট্ উচ্চ, স্থবরগা ১০৪০০ ফিট্ ও তল্প ১০০৮৪ ফিট্ উচ্চ।

ইতিহাস। পূর্ব্বে এই জেলা সিকিমরাজ্যের অন্তর্গত ছিল। গোর্থারাজ পৃথীনারায়ণ যে সময় প্রভৃত বিক্রমে নেপাল অধিকার করিয়া শ্বরাজ্য বিস্তারে অগ্রসর হইরা ছিলেন, সেই সময় সিকিমরাজ রাজ্যচাত হইয়া বৃটীশ গব-র্মেন্টের আশ্রয় গ্রহণ করেন। তাহার কএক বর্ষ পরে নেপালের সহিত ইংরাজরাজের যুদ্ধ ঘটে। ১৮১৬ খৃঠাকে নেপালরাজ পরাস্ত হইয়া বৃটীশ সেনাপতি সর্ ডেভিগ্ অক্টরলনির সহিত সদ্ধি করেন। ঐ সদ্ধিক্রমে সিকিম ও

छाहात पिक्तारम वृत्रीम माननाधीन हत्र। वृत्रीम श्वर्मणे সিকিমরাজ্য প্রকৃত স্বত্বাধিকারীকে অর্পণ করিলেন। এই সময় হইতে দিকিম ইংরাজের মিত্রোজা বিলিয়া গণ্য इहेन। ১৮৩৪ चुट्टीट्स त्रांका भीमा नहेवा निशान ७ निकित्य আবার বিবাদ উপস্থিত হয়। মেলর বয়েড গবর্ণর জেনা-রলের প্রতিনিধি অরপ বিবাদ মিটাইয়া দেন। এই সময় वरम् नारह्व निकिमन्नाकरक कानाहरनन त्य, भवर्गन त्यना-- রল দার্জিলিকের জলবায়ুর গুণের পরিচয় পাইয়াছেন, তাঁহাকে দার্জিলিক অর্পণ করিলে তিনি প্রীত হইবেন। তদতুদারে ১৮৩৫ খুষ্টাব্দে দিকিমরাজ मार्জिनिट द পাर्क्क हो बार में व्यर्थाय वर्ष तक्षिक निषेत्र मिन्नि, को नियान, কৃষী (বলাসন) ও ছোট রঞ্জিত নদীর পূর্ব্ব এবং त्रःनायू ७ महानना नतीत्र शिक्तम এই हजूःनीमावर्जी ভূভাগ ইষ্ট ইঞ্চিয়া কোম্পানীকে প্রদান করেন। উক্ত বয়েড সাহেবই দার্জিলিলে পাহাড়কাটা পথ প্রস্তুত করিয়া যাতা-য়াতের স্থবিধা করিয়া দেন। রেলপথ হইবার পূর্ব্বে এই পথ দিয়াই ·লোকে দার্জিলিক ঘাইত। শিলিগুড়িঁ হইতে मार्किनित्र चानियात (तनशर्धद्व धारत छेक शाहा एकाँछ। शर्ध দেখা যায়। এখন ভূটীয়ারাই কেবল ঐ পথ ব্যবহার করে।

উক্ত পথ প্রস্তুত করিয়া বয়েড সাহেব সিঞ্চল পাছাড়ে रेम्निक भिवित निर्मान, ज्ञानित वरमावछ ও विठातानदानि স্থাপন করেন। তৎপরে উহিরে ফক্রে ১৮৩৮ খুটাব্দে নেপালরাজের নিকট হইতে বৃটীশ গ্রহর্মণ্ট বলাসন ও ছোট ব্দ্ধিত নদীর পশ্চিমাংশ ও মেচী নদীর পূর্ব্বাংশন্থিত ভূথগু প্রাপ্ত হন। অর দিন মধ্যেই দার্জিলিক বলের রাজপুরুষ-গণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিল এবং অকর্মণ্য মুরোপীয় সৈনিক-গণের আভানিবাদ বলিয়া গণা হইল। এই সম্তুর অনেকেই গুরাদি নির্মাণ কারণ অমি বন্দোবস্ত করিয়া লইলেন। তথনও দার্জিলিকে চার চাষ প্রচলিত इयं नाहे। ১৮৪२ थुडी स्म जायात्र इकात तृतिम गर्दामणे ও দিকিমরাজের আদেশ गইয়া দার্জিলিকের অপারিণ্টেওণ্ট ডাক্তার ক্যান্বেলের সহিত সিকিমরাজ্যে গমন করেন। তাঁহারা রাজমন্ত্রীর ষড়যাত্র ধৃত ও বন্দী হন। তাঁহাদের অপমানের প্রতিশোধ লইবার জন্ত একদল বৃটীশ সৈত্ত প্রেরিত হইল। বৃটীশ গ্রমেণ্ট সিকিমরাককে বর্বে বর্ষে টাকা পাঠাইতেন, তাহাও বন্ধ করিলেন। এই সময়ে দিকিম তরাই লইয়া, প্রায় ৬৪০ বর্গমাইল অমি বুটীশ भामनाधीन रहेन। आवात ज्हान सुरक्षत्र शत्र ১৮७৪ शृष्टीएक ভিত্তানদীর পূর্ব পার্যন্থ সমুদায় পার্বভীয় ভূভাগ দার্জিলিলের সামিল হয়। এখন সিকিমরাজের সহিত বৃটীশ গ্রমেন্টের বেশ মিত্র ভাব। সিকিমরাজ দার্জিলিকের ডেপ্ট ক্ষিন্দররের মত লইয়া সকল কর্মা করিয়া থাকেন। বৃটীশ গ্রমেন্ট রাজার বার্ষিক বৃত্তি বাড়াইয়া এখন ১২০০০ চালা ছির করিয়াছেন।

স্বাস্থ্যবিস বলিয়াই দার্জিলিলের লোকসংখ্যা জমশংই বৃদ্ধি হইতেছে। বিশেষতঃ নর্দারন্ বেলল টেট্ রেলওরে হওয়া অবধি বলবাসী য়ুরোপীয়দিগের নিকট সিমলাদৈন অপেকা দার্জিলিলের আদের বাজিয়াছে। এখন কেই মনে করিলে ২৪ ঘণ্টার মধ্যেই কলিকাতা হইতে দার্জিনিক ঘাইতে পারেন।

১৮৫৬ খৃষ্টাব্দে দার্জিলিকে প্রথম চা বাগান হয়। আয়দিন মধ্যেই অঞ্চানকার চা সর্বত্ত আদৃত হওয়ায় চা বাগানের
সংখ্যাও বৃদ্ধি হইয়াছে। তাহাতে লোকসংখ্যাও অনেক
বাজিয়াছে।

বালালার অপরাপর ছানের ভাষে এখানেও আমন ব হৈমস্তিক এবং স্বাউদ্বা ভাদই শস্ত উৎপন্ন হয়। তরাই 🕰 দেশে দিন দিন ধান্তের চাষ বৃদ্ধি হইতেছে। বাঙ্গানী ও त्निशाणीत्राहे अथात्न व्यथानञः हलहालना कतित्रा थाकः। পুর্বেব বনজলল দগ্ধ করিয়া 'জুম' প্রণালীতে শস্তোৎপাদন অসভাজাতির মধ্যেই প্রচলিত ছিল। এথন এই প্রথা প্রায় উঠিয়া যাইতেছে। পর্বত ও তরাই উভয় প্রদেশে 'হাল' ও 'পাটি' এই চুই প্রকার ভূমির মাপ প্রচলিত। বে পরিমাণ অমিতে যেরপ হল বা বলদ ব্যবহৃত হয়, তাহাকে হাল এবং,বে পরিমাণ বীজ যত জমিতে বোনা হয়, তাহাকে পাটি কহে। এখন ভানে ভানে ইংরাজীমান প্রচণিত হইতেছে। তরাই অঞ্লে এক একর অমিতে প্রায় ১২ মণ শস্ত উৎপন্ন হয়। ভিন্তানদীর পশ্চিমে গ্রমেণ্ট ধার্গমহণে প্রতিগৃহের উপরু 🔍 টাকা করিয়া কর ধার্ব্য করিয়াছেন। किन्द मार्जिनिक महत्र मार्जिनिक मिडेनिमिशानिषित कर्ष्या थीरन चाटा। अधिवानी मिशदक यत्थेष्ट टिक्स मिटल रम।

তরাই প্রদেশে ধান্তের মূল্য অনেক সম্ভা হইলেও
দার্জিলিক সহরে ১১, । ১২, টাকার কম ভাল চাউল পাওরা
যায় না। এই জেলায় এখন চা কৃষি ও চা বাণিকাই প্রধান
হইয়া পড়িসাছে।

এথানকার সমস্ত চা-বাগানই মুরোপীর তত্বাবধানে এবং মুরোপীয়দিগের মুলধনে চলিতেছে।

রেলপথে স্থবিধা থাকার এথানকার্ক্ অধিকাংশ চাই কলিকাডায় বিক্রেয়ার্থ, সানীত হয়। এই জেলার ১৮৪টী চাকেত্র আছে। প্রায় ১৪ লক বিঘা জামিতে চা আবাদ হয়। ১৮৯০ খ্টাকে এই জ্বেলায় প্রায় ১৩২২৭০ মণ চা ভইয়াছিল।

১৮৬২ খৃষ্টাক্স হইতে এখানৈ সিন্কোণার চাম আরম্ভ হয়। এই ব্যার ওষধির আদর বৃদ্ধি হওয়ায় এখন চামও আজিয়া গিয়াছে। অনেক স্থানে কুইনাইনের পরিবর্তে সিন্কোণা ব্যবহৃত হওয়ায় প্রতিবর্ষে এই সিন্কোণা হইতেই গ্রম্তির লক্ষাধিক টাকা লাভ হইয়া থাকে।

বক্তা•বা ঝড়ঝাপটে দার্জিলিকের বিশেষ ক্ষতি হয় না।

এখানে ছর্ভিকের স্ত্রপাত হইলেই পাহাড়ীরা এক স্থান

হইতে অক্ত স্থানে পলাইয়া গিয়া, আত্মরকা করে। যে বার

পৌষনাসে ধাক্তের মূল্য বৃদ্ধি হয়, সে বারই লোকে ভাবী

ছর্ভিকের আশকা করে।

বাণিজ্য। এখন চাই এখানকার প্রধান বাণিজ্য দ্রব্য। এখানকার লেপ্চারা একপ্রকার মোটা কার্পাদ বন্ধ বয়ন করিয়া থাকে, জেলাম্ব নিম শ্রেণীর লোকেরা ভাহাই ব্যব্দার করে। পাহাড়ীরা নানাম্বান হইতে বিক্রেয়র্থ চীনের পেয়ালা, প্রবাল, অকীকের বাটী ও প্রতির মালা, ঘণ্টা প্রভৃতি লইয়া আদে। এখানকার ভূটিয়াদের প্রস্তুত্ত দা ও লেপ্চাদের ছুরিকা বিখ্যাত। দার্জ্জিলিক সহরে মুরোপীয়নিগের ব্যবহার্য্য ও বিলাসাম্বরূপ বিস্তর দ্রব্য পাওয়া যায়। ভবে ম্ল্য অপর ম্বান অপেকা মহার্য্য। খনিক দ্রব্যের মধ্যে এই ক্লোম্ম কয়লা, লৌহ, তাম ও অনেক স্থানে চূপ পাওয়া বায়।

তিব্বত্বে যাইবার পথে তিতা নদীর উপর এক্টী স্থলর গৌহনিশ্বিত দেতু আছে।

এখন দাৰ্জ্জিলিকে বিভার চর্চাও বেশ। দার্জ্জিলিক সহরে তিরত ও ইংরাজী ভাষা শিথিবার জ্বন্ত গবর্মেন্টস্ক আছে। লেপ্চা প্রভৃতি জাতিকে রীতিমতু শিক্ষা দেওয়া ইইতেছে।

২ উক্ত দার্জ্জিলিক জেলার প্রধান নগর ও বলাগত মুরো-পীয়গণের এইমুকালের স্বাস্থ্যবিদ। অক্ষা ১৭° ২ ৪৮ জঃ, ডামি ৮৮° ১৮ তভ পু:।

এই হানের উৎপত্তি সধ্বন্ধে মতুভেদ আছে। এথানকার কোন কোন বৌদ্ধের মতে ইহার প্রাচীন নাম 'ফর্জেলামা'। দুর্জে নামে এক লামা এথানে বাস করিতেন। তাঁহার অনেক অলৌকিক ক্ষমতা ছিল বলিয়া ভূটিয়ারা তাঁহাকে বিশেষ ভক্তি শ্রদ্ধা করিত, এখনও তাঁহাকে দেবতা বলিয়া মনে করে। সেই দর্জেলামা হইতে দার্জিলিক নাম হই-

^{রাছে।} আবার কোন কোন হিন্দুর মতে, হর্জ্জর**লি**ঙ্গ নামক **मि**टवेत्र नाम हेटेल्डे वर्खमान नामकत्रेण हेटेग्रा थाकिट्य । কালিকাপুরাণে । এক হজ্জগগিরির উল্লেখ আছে। বর্ত্তমীন দার্জিলিক হইতে কামরূপ পর্যন্ত গিরিমালা স্ভব্তঃ কালিকাপুরাণে হুর্জয়গিরি নাফে বর্ণিত হইয়াছে। কেহ আবার দার্জিলিক শক্ষের এইরূপ বাুৎপত্তি, করেন, দ= প্রস্তর, রজে = শ্রেষ্ঠ, লিক্ষ = স্থান বা প্রদেশ অর্থাৎ পবিত্র গুহাবালামাদিগের: চিহ্নিত ছান। দার্জিলিলের বর্ত্তমান কাছারীর কিছু দূরে একটা গুহা ( গুম্দা ) আছে, ভূটিয়ার: মধ্যে মধ্যে দেখানে আদিয়া মহাকালের পূজা করে। অনেক मन्नामी अ मर्पा मर्पा এथान चामित्रा थारकन। * ভृটिशाता বলে যে ঐ গুদ্দা দিয়া তির্বতের রাজধানী লাদানগরী পর্যান্ত যাওয়া যায় ও লামাগণও ইহার মধ্য দিয়া যাতায়াত করেন। এথানে একটা প্রবাদ আছে যে, নেপালের ফুন্সোলাম্গে নামক এক রাজার রাজত্বকালে এখানে লামাসরাই বা গুল্ফা নিশ্মিত হয় এবং লামাগণই 'দাৰ্জিলিক্ল' নামে অভিহিত করেন। এই নামেই এখন সমগ্র জেলা প্রসিদ্ধ। এক সঙ্কীর্ণ পাহাড়ের উপর দার্জিলিক সহর অবস্থিত। তিনটী শৃঙ্গ ইহার সহিত সংলগ্ধ; উহা হইতে নিম্নভাগ অতিশয় তাহাই ৭১৬৬ ফিট্ উচ্চ। কোন কোন ইংরাজের বিখাস দাৰ্জিলিক সহরে ও লগুননগরে প্রায় একভাবেই শীত গ্রীম (मधा (मम् । •

भार्किनित्त्र कनवायु जान विनया धर्यात निन निन लाकमःथा। दुषि इटेटजिल्ल । ১৮৮১ धृहीत्स १०১৮ जन लाक्त्र वाम हिन, किन्ह गठ ১৮৯১ धृष्टीत्स्व गणनाय १८९८ व सन् लाक चित्रीकृठ हटेयाल्ल, टेलात मत्या हिन्सू ५०८५, द्वोक १ ७७६९, मूमनमान ১৮৯৮, थृष्टीन ६२८, निष ६२, देवन २৮।

এখানকার এডেন্ সানিটোরিমন্, কোচবিহার মহা-রাজের বাড়ী, ছোট লাটের প্রমোদ ভবন প্রভৃতি উল্লেখ-'যোগ্য, এ ছাড়া অনেক বড় বড়, গির্জ্জা ও মাঝারি বাড়ী এবং বোটানিকাল গার্ডন প্রভৃতি উন্থান আছে।

দার্জিলিকের আশে পাশেও উল্লেখবোগ্য অনেক স্থান আছে। ৭৮৯৬ ফিট্ উচ্চ জল্মপাহাড়ে অন্দর সৈন্তনিবাদ, মহাকাল পাহাড়ের গুন্দা, ভূটিয়াবস্তিতে ভোটগ্রন্থসজ্জিত বৃদ্ধনিদর, লিবলে নৃতন সৈন্তন্তাস্থ্যাবাদ, এবং নগরের মধ্যে কাকঝোরা জলপ্রপাত দেখিবার জিনিদ। এই প্রপাতকে ইংরাজেরা ভিক্টোরিয়া ফল (Victoria fall) বলেন। প্রবাদ আছে, যে এখানে গোরীদেবী আসিয়া সান করিতেন। খাস্থ্যরকার জন্ম এখানে যেমন অনেকে আসিয়া থাকেন,
এখন ব্যবসার উপলক্ষেও অনেক বণিক ও সামান্ত দোকানদার সর্বাদাই যাতারাত করিতেছে। \ ছোট বড় অনেক
দোকান বসিরাছে।

এখানে প্রতি রবিনারে হাট হয় । এই দিনই সকলে
সাত দিনের ব্যবহারোপযোগী বিদ্নিস পত্র থরিদ করিয়া
রাথেন । এখানকার বিদ্নিস পত্র মহার্য্য । ভাল চাউলের
মণ ১১১কি ১২১ টাকা, এক সের ভাল মাধনের দাম ২॥০
টাকা, মংস্তের সের ১১ টাকা, কার্টের করলার মণ ১০,
কোককরলার মণ ১৮৮০। এখানে ভাল মিটার পাওয়া
যার না । এখানকার গোল আলু বড়ই স্থাত্য

দার্চ চুক্তে (পুং) > দৃত্চ তের অপত্য। ২ সামভেদ।
দার্ত্য (ক্লী) দৃত্ত ভাব: দৃত্-যুঞ্ (বর্ণদৃত্দিন্তঃ: যুঞ্চ।
পা ১০১০২৩)। দৃত্তা। "বাক্যাক্লিপি যথাপ্রজ্ঞং দার্চারোদাহরন্তি যে।" (পঞ্চদী ৬) ১ ও )

দার্ত্তের ( বি ) দৃতে ভব: ঠঞ্। ১ দৃতিভব। ২ দৃতিভবছিত।
দার্দ্দর ( পুং) দর্দর: মৃৎপাত্তেল ন্তদাকারে। তাত প্রজ্ঞান
দিছাৎ । ১ দক্ষিণাবর্ত শৃত্তাতেদ, যে শাঁথের দক্ষিণদিকে
আবর্ত্ত থাকে। ( ক্লী ) ২ লাক্ষা, লা, জৌ। ৩ জল। ( বি )
দর্দরতোদং অণ্। ৪ দর্দর সম্বন্ধী। ব্রিয়াং ভীপ্।
"চালিতোক্তরপ্ত্রেণ ভার্গবোহদিরসেন বৈ ।
প্রবিশ্বী দার্দ্ধির চকার হ ॥" ( হরিবংশ ) এই

স্থলে দার্দ্বী শবের রাক্ষনী।
দার্দ্দ্বিক (তি) দর্দ্ধর: মৃৎপাত্রভেদ: শিল্পমন্থ ঠঞ্। মৃৎ-

পাত্র ভেদকারক, কুলাল, কুমার। দ্বিরাং উপে। দার্ভ (তি ) দউভেদং অণ্। কুশ সম্বনী।

'দার্ভায়ণ (পুং, স্ত্রী) দর্ভন্ত গোত্রাপত্যং দর্ভ-ফক্। দর্ভ, বির গোত্রাপত্য ় '

দাব্ভি (পুং, স্ত্রী) দর্ভত গোত্রাপত্যং ইঞ্। দর্ভ ব্যয়র 'গোত্রাপত্য।

দার্ভ্য (জি ) দর্ভে ভব: কুর্বাদি গ্য। দর্ভভব, দর্ভোৎপন্ন।
দার্ব্ব (পুং) দেশভেদ, এই দেশ কুর্মবিভাগের ঈশান দিকে
বর্তমান কাশারে অবস্থিত ছিল। [আর্যাবর্তের মানচিত্র
দ্রবা।] (স্ত্রী) ২ তত্ত্বর ন্দীভেদ।

দার্কক ( তি ) দার্কেষু দার্কজনপদেষু ভব: । বছবচনার্পে বুঞ্। দার্কজনপদ ভব।

परिद्धि (क्रो) पाक्कृत निक्तनाउमा निकापनीयविषयनिक्तमार्थः व्यवेखाळ व्यवे पक्करर्थ-क। : ठिखाशृंह, मञ्जशृंह, ठिखा क्यार मजान क्षित्रात स्वक्ष शृंह।

দার্বিণ্ড (পুং) দারুবৎ কঠিনং অওং যক্ত। মর্র। (শ্রুরুণ)
দার্বাঘাট (পুং) দারু কাঠং আহস্তীতি আ-হন অণ্ টদারা
দেশ: (দারাবাহনোহণস্কক্ত চ টঃ সংজ্ঞারাং। পা তাহারু১)
শতপত্রক পক্ষী, কাঠঠোকিরা পাথী। সংজ্ঞা না ব্যাইছে
অস্তব্যানে ট হইবে না। ক্রিরাং জাতিখাৎ শ্রীষ্।

দাৰ্ক্বাঘাত (পুং) দাকৃণি আঘাতো যন্ত্ৰাং। ১ দাৰ্কাখ্ট পক্ষী। (ত্ৰি) ২ কাঠাঘাত্ৰ ।

দার্ব্বাদি (পুং) ঔষধভেদ, দারুহরিন্তা, রসাঞ্চন, বাসক্দ্রন্থ ছাল, মৃতা, চিরাভা,বেলভাঠ, ভেলার মৃটী, মিলিভ ২ ভোলা, জল অর্দ্ধসের। শেষ অর্দ্ধপোরা। একটু মধু প্রক্ষেপ দিয়া এই রাধ্ পান করিলে প্রদর রোগ ভাল হয়। (ভৈষ্ক্রারং জীরোগাধিং) দার্ব্বাদিলোহ (ক্লী) রসেক্রসারসংগ্রহাক্ত ঔষধভেদ, প্রস্বত প্রণালী—দারুহরিন্তা, হরিন্তা, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, ভাঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ক এবং ইহাদের সমভাগ লোহ একর মিশ্রিত করিবে। পরে ইহা মধু ও ম্বতের সহিত দেহন করিলে পাঞু ও কামলারোগ সাল হয়। (রসেক্রসারসং) দার্বিকা (জ্লী) দারয়তি দৃ উলাদিখাং সাধুং ভীপ্। দার্মী, দারুহরিন্তা, ভবিকারো হিপ দার্ব্বী অভেদোপচারাং মাধ্ কন্টাপ্। > দারুহরিন্তা কাথোত্তব তুথ। ২ রসারন। ৩ গোজিহ্বারুক্ষ।

দার্বিপত্রিকা (স্ত্রী) দার্ক্যাঃ পত্রমিব পত্রমভাঃ ততঃ ক্ টাপু, অত ইত্থং। গোজিহ্বাবৃক্ষ, গোজিয়াগাছ।

দাব্বী (স্ত্রী) দারয়তি দৃ-ণিচ্ উণ্ স্তিয়াং দারণস্থ অবর্ববিভাগ রূপত্বেন শুণবচনত্বাৎ ভীষ্। ১ দারুহরিছা। ২ গোনিস্কা। ৩ দেরদারু। ৪ হরিছা।

দাব্বীকাথোদ্ধ (ক্লী) রসাঞ্জনবিশেষ, দারুহরিদার হাও ও হ্রগ্ধ সমভাগে পাক করির! পাদাবলিট থাকিতে নামাইনেই এই ঘনীভূত দাব্বীকাথকে রসাঞ্জন কহে। ইহা অভিশঃ চক্ষ্র হিতজন্ক। প্র্যার—তার্ক্যদৈল, রসগর্ভ ও ভার্কার। ইহার গুণ—কটু, তিক্তরস, উষ্ণবীর্যা, রসায়ন, চেদন এবং কফ, বিষ, নেত্ররোগ ও ত্রণনাশক। (ভারপ্র*)

দাব্বী তৈল (ক্রী) তৈল ঔষধভেদ, তিল তৈল / । ^{প্রে}, ক্রার্থ দারুহরিন্তা, তুলদী, বৃষ্টিমধু, হরিন্তা, দার্ক^{রিন্তা,} মিলিত /১ সের। পাকের জল ⁹৬ দের।" এই ^{তৈলে} মেদ্ররোপ প্রাশমিত, হয়। (ভৈষ্কার শুক্দোবাধি)

मार्क्यामि ( श्रः ) खेषधिति । मान्य हिन्ना, हेन्यव, मिर्क्षे, वृह्णी, त्यवान, खनक, ज्यामनकी, त्याजनान, खनक, ज्यामनकी, त्याजनान, विकास । विकास

হাড়ভালা, চিরাভা, ভেলার মৃটি, আকনাদি, কুশম্ল, কটুকী, 
শিপ্ল, ধঞা এই সকল অব্যু একত্র করিরা কাথ প্রস্তুত করিছে হইবে, পরে ইহাতে মধু মিশ্রিত করিয়া এই 
করার পান করিলে বাতিক, পৈতিক, শ্রৈত্মিক, সারিপাতিক, বন্দল, সভত প্রভৃতি ছালাকণ বিষমজর, অক্তম্ব, 
রহিঃল, ধাতৃত্ব ও দৈর্ঘরাত্রিক এই সকল জর, শীত, কম্প, 
দাহ, কার্ল্য, ঘর্মনির্গম, ব্মি, গ্রহণী, অতীসার, কান, খান, 
কামলা, শোব, শোধ, অগ্রমাল্য, অক্রচি, অইবিধশ্ল, বিংশতি 
প্রকার প্রমেহ, শ্রীহা, অগ্রমাংল, বরুৎ, হলীমক ইত্যাদি নানাবিধ রোগ বজাহত বৃক্লের স্তায় নই হয়। (ভৈষ্ক্রার জ্বাধিণ)
দার্শ (ত্রি) দর্শে ভবং আর্ধপ্রোগে ঠঞ্ বাধিত্বাণ অণ্।
১ দর্শতব। "দার্শমন্থলয়ন্ পর্বা পৌর্ণমাগঞ্চ বোগতঃ।" (মন্থ)
(ত্রি) দৃশি নেত্রে ভবং অণ্। ২ নেত্রভব্।ণ

দার্শনিক (তি) দর্শনশাস্তবেন্তা, যিনি উত্তমর্মণ দর্শনশাস্ত্র অবগত আছেন।

দার্শপৌর্ণমাসিক (অি) দর্শে পৌর্ণমাভাং চ ভবঃ ঠঞ্। দশপৌর্ণমাসভব, যাহা অমাবভা ও পুর্ণিমার হয়।

"দার্শপৌর্ণমাসিকেতি কর্ত্তব্যতা।" (কাত্যাণ শ্রোণ ৫।৬।৩১)
দার্শিক (ত্রি) দর্শে ভবঃ দর্শ ঠঞ্। দর্শভবঃ, আর্থপ্রেরাগে দার্শ হয়, অর্থাৎ ঠঞ্না হইরা অণ্ হয়। দর্শপৌর্ণমাস সম্বনীয়। দার্শ্য (ত্রি) দার্শিক।

দার্ষদ ( বি ) দ্যদি পিট: অণ্। প্রস্তরে পিট স্কু প্রভৃতি।
দার্ষ্বত ( ক্রী ) দ্যব্ত্যা নগান্তীরে কর্ত্ব্যং অণ্। স্তভেদ,
এই যকু দ্যব্তী নদীতীরে করিতে হয়।

"দার্ঘণতমৃত্বিগাচার্য্যয়ো রক্সতরস্থ গা রক্ষেৎ সংবৎসরং।" ( কাত্যাণ স্লোণ ২৪।৬।৩০)

দান্ত (ি ) দৃষ্টান্ত অণ্। দৃষ্টান্ত মৃত দিয়া বুঝান। দান্ত পিন্ত ক (ি ) দৃষ্টান্তেন যুক্ত: ঠঞ্। দৃষ্টান্ত মৃক্ত। "স্বাপস্ত দাৰ্ষ নিন্ত কংখন বিবহ্নিক হং।" (বুহদারণাক, শাহ্ম জায়া )

দাল (রী) দলেতা: সঞ্চিতং দল-অণ্। বস্তু মধু, ইন্ধনীলদলাকার হক্ষ মন্দিকোবপর বৃক্ষকোটরান্তরভব মধু, করিত
হুইরা পর্যোগরি পতিত হুইলে, তাহাকে দালমধু বলা যার।
ইহীর গুণ—মধুর, অন্নকবান্তরদ, (কিন্তু ক্যায়রদ অল, মধুররদ
অধিক), ল্যুপার্কী, অগ্নিদীপ্তিরারক, ক্ফন্ন, ক্লে, ক্রিকর,
বিমিও প্রমেহনাশক, নিয়েও শ্রীরের উপচন্ত্রকর। (ভাবপ্রণ)
"শংক্তা পতিতং পুশাং যন্তু প্রোপরিষ্ঠিং।

मध्वाप्तकवात्रक्ष मन्त्र नार सबू की खिलः ॥" (जावश्रः) [सबू (मथ ।]
( ११ ) मटन खालः मन खन्। २ (को खव थान्न छात्व वान् । ७ मनन ।

मालिठिनि (प्रमुख) [ माक्रुविनि (मथ। ]

দালন (গুং) দালয়তি দল-ণিচ্ লু। দস্তগত রোগভেদ। [দস্তব্যোগ দেখ∰] •

দালব ( পুং ) • দলতি দল-উণ্ ত ভারং অণ্। স্থাবর বিবভেদ।
দালবুকাক, (Don Alphonzo Dalboquerque) আলবুকাক
নামে থাতে। পর্তুগীজারাজের একজন বিথাতে সৈভাধ্যক।
তিনি ১৫০৪-১৫০৮ খুটাকের মধ্যে ভারতাভিমুথে প্রেরিভ
হইরাছিলেন। অল্মিডার পর ভারতে পর্তুগীজারগার অধ্যক্ষতা
প্রাপ্ত হন। তিনি আরব সাগরের উপকৃলে ময়ট প্রভৃতি স্থান
অধিকার ও ১৫১০ খুটাকে নবেম্বর, ছইবার গোয়া আক্রমণ
করেন। পর বর্ষে তিনি মালাকার ছর্ম ও অর্মজ্বীপ দথল
করিয়াছিলেন। ১৫১০ খুটাকে ১৮ই কেক্রয়ারী আদেন বন্দর
দথল করিবার জন্ত ২০ থানি জাহাজে ১৭০০ জন পর্তুগীজাও
২০০০ ভারতীর দৈল্ল লইরা গমন করেন, কিন্তু তাহার উদ্দেশ্ত
দিল্ধ হয় নাই। যাহা হর্জক ঐ বর্ষে তিনি পেরিম ছীপে
প্রবেশ করেন। ১৫১৬ খুটাক প্রান্ত তাহার ক্ষমতা ছিল।
তাহার যুদ্ধে পর্তুগীজানিগের ক্ষমতা অনেক বাড়িয়াছিল।
ঐতিহাসিক ডি বারেস্ তাহারু দলী ছিলেন।

मालट्रोजी [ जान्द्रोजी (नव । ]

দ†ল† (আটী) দল্যতে দল কৰ্মণি বঞ্। মহাকাল নামক লতা। (ভাবপ্ৰকাশ)

দালাদ পিক্ষরা, সিংহলবাসী বৌদ্ধদিগের একটী উৎসব।
এই উৎসেবে বৃদ্ধের দস্ত যাত্রীদিগকে দেখান হয়। কাণ্ডীরাজভবনসংলগ্ন বিহার মধ্যে এই দস্ত দাগোবাকার এবং ইহা
কএকটী খাতুনির্শিত রত্নখচিত বাল্পের মধ্যে অবস্থিত। এই
দন্তের বিষয় দাঠবংশের হিতীয় ও তৃতীয় অধ্যায়ে এই রূপ
দিখিত আছে—

ক্ষেম নামে একজন বৃদ্ধের শিশ্ব শাঁকাসিংহের নির্সাণের পর (৫৪৩ থঃ পূর্বাকে) তাঁছার দত্ত কুণীনগর হইতে আনমন কবিয়া কলিলদেশের রাজা এজদতকে প্রাদান করিয়াছিলেন। এজদত এবং তাঁহার পূত্র প্রোত্র করী ও জনন্দের রাজ্যশাসন হইতে অপর রাজগণের শাসন পর্যান্ত প্রায় ৮০০ শত বংসর এই দত্ত গাদরে রক্ষিত হয়। প্রথমে দত্তপ্রাধিণতি গুহশিব এই দত্তের বিষয় কিছুই জ্ঞাত ছিলেন না, পরে তিনি এই বিবরণ জানিয়া বৌদ্ধর্ম গ্রহণ করেন। ইনি বৌদ্ধর্মে দীক্ষিত হইয়া রাজ্য হইতে অভ্য ধর্মাবলম্বীদিগত্তে দ্ব করিয়া দিলেন। হিন্দুগণ অতিশ্ব বিপর হইয়া পাটলিপ্তেম্বর পাঞ্র আশ্রম গ্রহণ করিল। পাঞ্ গুহলিবের বিক্তম্ব একদল সৈভ্

প্রেরণ করিলেন, তাহারা যাইয়া ঐ দক্ত আনয়ন করিলে রাজা পাঞ্ অনেক চেষ্টা করিয়াও তাহা নষ্ট করিতে পারিলেন না। অবশেষে পাঞ্ বৌদ্ধর্ম প্রহণ করিলেন।
দক্ত দক্তপুরে পুনর্কার প্রেরিত হইল। সেই স্থান হইতে ঐ
দক্ত দিংলে অনুষ্ঠাদপুরে আনীত হয়। ১৫৬০ থঃ অবদ পর্কুগীজ যুদ্ধের সময় কনিষ্টান্তাইন ভি ত্রাগেঞ্জা এই দক্ত নষ্ট করেন। কিন্তু সিংহল্রাসী বৌদ্ধগণ এই কথা স্বীকার করেন না। তাহারা বলেন যে সময় ঐ মন্দির ভগ্ন হয়,
সেই সময় ঐ দক্ত সজ্বারামে ছিল। অনেক পুরাতত্ত্বিদ্
পতিত ও সিংহল্বাসী মৃত্তুমারস্বামী বলেন, এখন যাহা
বুদ্দক্ত বলিয়া প্রদর্শিত হয়, তাহা কথনই নরদক্ত নহে।

দালান (পারসী) ইষ্টকনির্মিত প্রশস্ত গৃহ, প্রাসাদ।

দ্ংলাল (আরবী) যে ব্যক্তি ক্রেডাও বিক্রেডার মধ্যবর্ত্তী হইয়া কার্য্য করে, ক্রয় বিক্রয়ের মধ্যহতা করে, অথবা কোন একটী কার্য্য সম্পন্ন করিতে হইলে তাহার মধ্যবর্ত্তী হইয়াযে কার্য্য নিম্পন্ন করে।

দালালি (আরবী) ক্রয় বিক্রয়াদি কার্য্যে মধ্যস্থতাক্রম্ভ প্রাপ্য অর্থ, দস্তরি।

দালি (জী) দল ইন্। দাল, শমী ধান্ত। মৃণ, মহর
প্রভৃতিকে ভালিয়া তুষ নিজাশিত করিলে দাইল বা দালি
প্রস্ত হয়, দালি ও দালী এই ছইটী সংস্কৃত পর্যায়। এই দাল
কল দিয়া সিদ্ধ করিয়া লবণ, আদা ও হিন্তু মিলিত পূর্ব্বক
পাক করিলে তাহাকে হুপ কহে। ইহার গুণ—বিইজী,
কক্ষ এবং শীতবীয়া। তুষরহিত শমী ধান্ত (দাল) ভালিয়া
সিদ্ধ করিলে তাহা লঘু হইয়া থাকে। (ভাবপ্রশু অয়বর্গ)
দাড়িং ড়স্ত লং। ২ দাড়িয়। জীঘাৎ ভীপ্। ৩ দেবদালীলতা।
দালিকা (জী) দালৈব স্বার্থে কন্টাপি অত ইত্বং।
মহাকালস্যা।

দালিম ( পুং ) দাড়িমঃ ডৃষ্ঠ লঃ। দাড়িম।

দাল্ভ (পুং) দণ্ভক্ত দণ্ভগোত্তক ছাত্রাঃ অণ্ যলোপঃ। দাণ্ভ্যের ছাত্র সকল। ৃএই শব্দ বহুব্দনান্ত।

দাল্ভ্য (প্রং স্ত্রী) দল্ভভ মূনে গোরাপত্যং যঞ্ (গর্গা-দিভ্যো যঞ্। পা ৪।১০০০) দল্ভ ঋষির গোরাপত্য বক নামে মুনিবিশেষ। •

"বকো দাল্ভাঃ সুলশিরাঃ কৃষ্ণ ধিপায়ন: শুকঃ।" (ভারত ২।৪।১১)

একজন ঋষি। ইক্স ইহার বন্ধ ছিলেন, এই ঋষি চক্সসেন রাজার গর্ভিণী পত্নীকে পরশুরামের ক্রোধ হইতে রক্ষা
করেন। ইহার গর্ভে ৻ পুত্র জন্মে, সেই দাল্ভ্য কামস্থদিগের
আদিপুরুষ।

माल्डारचाय ( प्रः ) प्रगासमक्र पठीर्थ एक ।

( ভারত বনপ• ৯_{০ খ• )}

দাল্ভ্যায়ণি (পং) দল্ভাজ যুক্তপতো ফিঞ্। দাল্ভা _{ছবির} যুবা অপতা।

দাল্মি (পুং) দালয়তি অক্ষরান্ দল-ণিচ্ বাছঃ মি । ইস্তা। দাবে (পুং) ছনোতি উপতাপয়তি ছ-ণ (ছণ্যোরণুপদর্গে। পা

তা১।১৪২) ১ বন । "ইদমিক্রঃ সদা দাবং থাওবং প্_{রিধ} ক্ষতি।⁵ (ভারত ১।২২৪।৬) ২ বনবহিদ, বনের মধ্যে _{বি} অনুষ্ঠি উৎপন্ন হয়, তাহুাকে দাব ক্ছে।

"উৎস্কা দময়স্তী তু নলোৱাল। বিশাংপতে।

-দদর্শ দাবং দহস্তং মহাস্তং গৃহনে বনে ॥" (ভারত ৩৬৬।১) ৩ অধি । ছ ভাবে ঘঞ্ । ৪ উপতাপ ।

দাবন্ (পং) দা-কর্মজাবাদৌ বনি । > দেয় । ২ দান । "দাবনে বায়ে মথতা দাবনে" ( শক্ ১ ) ২০৪। ১ ) 'দাবনে দাতবার হবিষে তৎস্বীকারার পুনঃ কিমর্থং দাবনে অস্মজ্যং অভিমন্ত দানার' ( সায়ণ ) । 'দাবনে' এই স্থলে ছান্দ্স প্রয়োগ (ৼয়ূ উপধার লোপ হইল না, কিন্ত লৌকিক প্রয়োগাদি স্থলে 'দাবেনু' এইরূপ পদ হইবে ।

দাবপ (পুং) দাবং বনবহিং পাতি পা-ক। পুহুবভেদ। "অগণ্যায় দাবপং" ( শুক্লযকুং ৩০।১৬)

দাবস্থ (পুং) অঙ্গিরা মুনির পুত্র। (পঞ্চত্রাণ ভাষ্য)

দাবাগ্নি (পুং) দাবোজবোহয়িঃ মধ্যলো॰ কর্মধাণ বনোজব অগ্নি, কাঠে কাঠে ঘর্ষণ হইয়া বনমধ্যে যে অগ্নি উৎপন্ন হইয়া বন দাহ করে।

দাবাগ্নিযোচনবন, বন বিশেষ, এই বনে শ্রীকুঞ্চ দাবাগি ভক্ষণ করেন। (ভক্তমাল)

দাবানলকুণ্ড, কুণ্ডবিশেষ, এই কুণ্ড দাবাগ্নিটানবন অবস্থিত। (ভক্তমাল)

দাবানল (পুং) দাবোদ্তবোহনল:। দাবাগি।

দাবিক (ত্রি) দৈবিকায়াং ভবঃ অণ্, ততো আছচো আং
(দেবিকা শিংশপেতি। পা ৭।৩১) দেবিকানদীসভব,

যাহা দৈবিকা নদীতে হয়। '

দাবিককুল ( আ ) দেবিকাকুলে ভবঃ। অণ্ আছচো ^{আই।} দেবিকাকুলোডৰ।

मार्ती (बारही) প্রার্থনা, बारतमन, चन्द, बिधकांत्र। मार्तीमात (পারদী) প্রার্থনাকারী, আবেদনকারী, ^{हरू} খাস্তকারী। • ∮

দাবীজুরী, বৃক্ষ বিশেষ ( Kyris Indica )∳ দাশ (পুং) দশতি হিনতি মংভান্দশ ট, নভ আচ (বংশে^চা हिन् (1>>)। बीबब, स्वटन, वाहाता मश्छ धतिवा जीविका निर्वाह करत।

শাসানাং ভ্রাবেগেন নদ্যাঃ স্বোগোলবেন চ।
বায়ুনা চায়ক্শেন ভূপং পাল্পনাগ্নুরাং ॥" (ভারত আা)
শ্নিবাদো ভাগবং হতে দাসং নেইকর্মজীবিনং।"
১০বর্জমিতি যঃ প্রাভ্রাবাধিক্তিনিবাদিনাঃ॥" (মহু ১০।৩৪১)

নিষাদকর্ত্ক আবোগৰ জীগর্ভে সমুৎপাদিত সন্তানের নাম ভাগ্র বা দাশ, ইহারা নৌনির্মাণকর্মোপজীবী এবং আর্থা-বর্ত্তবাদীরা ইহাদিগকে কৈবর্ত্ত বিদিয়া থাকে। জিরাই ভীপ্। দাখতে ভুতি রুজৈ। ২ ভ্তা, চাক্র। রেমানাথ) দাশ্ত (গং) দাশ আহিব-কন্। দাশ।

শিগ্রাম (পুং) দাশপ্রধানের আমৃ:। ধীবর প্রধান প্রাম, কে
গ্রামে ধীবর দিগের প্রাধান্ত আছে।

শিথামিক (অি) দাশগ্রাম-ঠঞ্। দশগ্রামেক সন্নিক্ট দেশাদি।

াশ(স)তয়ী ( তি ) দশ-অবরবা যত তরপ্ততঃ স্বার্থে-প্, ব্রিরাং ভীপ্। দশাবরব ঋথেন সংহিতা।

[म(त)निक्तनी (खी) पामच निक्ती। शैरवक्छा, यात्र-माठा, त्रठावठी।

|শ(স)পুর (পুংক্লী) দাশান্ধীবরান্পুররতি প্র-অণ্। কৈবর্তম্প্রক, একপ্রকার মৃতা ঘাস।

াশ(স)ফলা (স্ত্রী) দাশপ্রিয়ং ফলং যন্তাঃ, ভীপ্। ওষধি-ভেদ। (শন্বার্থচি*)

|শ্(স্)মেয় (পুং) দেশভেদ, এই দেশ উত্তরদিকে অব-হিত। (বৃহৎস॰ ১৪।২৮)

শের্প (প্ং.) দশরপজেদং অংশ্। > জীরামচন্ত্র। ""প্রাণী-য়ডাং দাশরপায় মৈথিলী"। (মহানা*) দাশর্থে: জীরামজে-দংঅংশ। (তি) ২ দাশর্থ সম্বনী।

শর্থি (পং) দশর্থস্থাপত্যং অত ইঞ্। দশর্থের অপত্য, রামাদি চারি প্রান্তা, রামচক্র। "শ্বরত্যদো, দাশর্থিত্বন্ ভ্রান্" (মাঘ ১সং)

শির্থি রায়, (দাওরার নামে খাত) বলদেশের একজন বিখাত কবি। প্রেসকল কবিদিগের বন্ধে মুসলমান রালককালে বালনি সাহিত্য রক্ষা পাইয়াছিল, সেই ক্রতিবাস, কাশীদাস যে ছব্দে বে ভাষার, খে উপারে বালালাভাষার স্বাভত্তা রক্ষা করিয়াছিলেন, দাশর্থি রায়ও ইংরালাধিকারের প্রথমাব্যার বর্ত্তমান ১৯শ শভাষীর প্রবেশ সমরে জন্মগ্রহণ করিয়া দেই উপারেই বালালা বাহিত্যকে জাগরক রাধিয়াছিলেন। ইতিবাস কাশীদাস্থ পাঁচালী প্রবন্ধে কাব্য রচনা করিয়া

গিরাছেন, তবে ক্লবিবাসাধির সহিত দাশরধির বর্গ মর্ত্য ভেল। ক্লবিবাসাদি পাঁচালী প্রবন্ধে বাহা লিখিরা গিরাছেন, তাহা প্রকৃতপক্ষে কবিত্বপূর্ণ মহাকাব্য আর দাশরধি পাঁচালী প্রবন্ধে রাহা লিক্সিনা লিবাছেন, তাহা প্রকৃতপক্ষে কাব্য নহে, দীর্ঘ ছড়া বাঁধা গান মাত্র। ক্লবিবাসাদির কাব্য গীত স্ববের অপেক্ষা রাধে না। দাশরধির প্রবন্ধ গীত না হইলে ভাল্শ ভাল লাগে না।

১৭২৬ শকে (১৮০৪ খুঠাঁকে) দাশরণি রারের কর হয়।
ইহার পিতার নাম দেবী প্রসাদ রায়। ইহারা রাটার আক্ষণ।
বর্জমান ক্রেলার অন্তর্গত কাটোরার নিকট বাদমুড়া নামক
থ্রামে ইহার পৈতৃক বাদ ছিল। দাশরণি বাল্যকাল হইতে
পাট্লির নিকটবর্ত্তী পীলা নামক গ্রামে বীর মাতৃলালয়ে
বাস করিতেন। মাতৃলের যদ্ধে গ্রহণত বালালা ও
যৎকিঞ্চিৎ ইংরাজী শিথিরা সাকাই প্রামের নীলকুঠিতে
তিনি প্রথম জীবনে কেরানীগিরি করিতেন। তাহার
মাতৃলই তাহাকে এই কর্মে নিযুক্ত করাইয়া দেন। দাশরথির বাল্যকাল হইতেই গীতবার্ছে বিশেষ অস্থরাগ ছিল।
এই সমর পীলাগ্রামে অক্ষয় কটোনী (অকাবাই) নামে
নৃত্য-গীত-বাবদারিনী এক নীচলাতীয়া রমণী ছিল। গীত
বাদ্যের আস্তিতে ক্রমশঃ দাশরণির সহিত এই র্মণীত্র
প্রণর হয়।

কিছুদিন পরে অকাবাই এক ওতাদী কবির দল করে।
দাশরথি রায় এই দলে বাঁধনদার ছিলেন। সে কালে
কবির লড়ায়ে প্লানে উভয় দলে গালাগালি হইত। একদিন
দাশরথি এক সলীতসংগ্রামে প্রতিপক্ষ হইতে অতি কটু
গালাগালি খান। ডদবধি তিনি প্রতিজ্ঞাপূর্বাক কবির
দল ত্যাগ করেন। কবির দলের সথে তিনি ইতিপূর্বাই
বিষয় কর্মা পরিত্যাগ করিয়াছিলেন। এখন এই আলভ্যের
অবসরে ছড়া ও পালা করিয়া গান বাঁধিতে লাঁগিলেন।
ক্রেমণ: বয়ভবর্গে পরিবৃত্ত হইয়া সেই, সকল ছড়া ও গান
লইয়া এক পাঁচালীর দল করিলেন। পরে এই দলই তাঁহার
জীবিকা ও "দাশুরায়" নামে খ্যাতির কারণ হইয়া উঠিল।
ক্রমে তাঁহার সৌভাগ্য ও দেশব্যাপ্ত যশঃ এই পাঁচালী
হইতেই হয়ঁ।

দাওরারের অনেকগুলি পালা, আছে। তর্মধা, আপাততঃ
কতকগুলি বটতলার দশ খণ্ডে পুস্তকাকারে প্রকাশিত
হইরাছে। ১৭৭৯ শকে (১৮৫৬ খুটারে) ৫৩ বংসর
বিষ্ঠে তাঁহার মৃত্যু হর। মৃত্যুর পূর্বে, তিনি অনেকগুলি
পালা রচনা করেন, ভাহার অনেকগুলি তিনি নিজেই

নিজের দলে গাওরাইয়া ঘাইতে পারেন নাই। তাঁহার পুত্র হর নাই। এক কম্পা ছিল, তিনিও অনেক দিন নিঃসন্তান বিধবাবভার গত হইরাছেন। তাঁহার পত্নী 'প্রসন্তমনী দেবী অনেক দিন জীবিত ছি\গুন।

দাওরায়ের ছড়াগুলির প্রধান গুণ সেগুলি অতি স্থান্দর সরল ভাষায় লিখিত।, তাহাতে কবিছও নিতান্ত বিরল নহে। রামপ্রসাদের গানের স্থার তাঁহার গান ও গানের স্থর এখন লোকে আগ্রহ করিয়া লিখেঁ। সেকালের প্রাচীনের মধ্যে দাওরামের গান জানে না এরপ লোক নাই বলিলেই হয়। এখনও অনেক ভিথারী মধ্যাহ্নকালে গৃহত্ব প্রাচীনাকামিনীগণের ফরমায়েস মত দাওরায়ের "ঠাক্রণ বিষয়" গাহিয়া জীবিকার সংখান করে। ক্রতিবাস কাশীদাস দেবলীলা লিখিয়া যেমন বালালার অগিমের সাধারণের ভক্তিভালন হইয়াছেন, দাওরায় 'সেইরপ বালালার আবালারক্বনিতাকে আনন্দ লগু সহল্প ন্তন রূপ সলীতামোদ প্রদান করিয়া সকলের প্রীতিভাল্পন হইয়াছেন। কি ইতর, কি ভক্ত, কি ব্রী, কি প্রথম সকলেই দাওরায়ের গানের পক্ষণাতী, এরপ ভাগ্য কয় কনের হয়।

ইহার পত্নী ১৮৭৪ খুটাবে সমস্ত গ্রন্থক বেচিয়া, •ফেলিয়াছেন।

দাভরায়ের কবিতার অন্থাস বড় বেশী। স্থানে স্থানে অন্থাসের শব্দ মিলাইতে গিয়া তিনি অতি কইকরনার আত্রর লইয়া কবিতা গাঁথিয়াছেন, অনেক স্থলে অতি কটেও স্পষ্ট অর্থ হর না। তবে তাঁহার, রহস্তোদীপনক্ষমতা অতি চমৎকার; বৈরাণীর ভণ্ডাচারের উপর, গোঁড়ামীর উপর তাঁহার বিশেষ বিবেষ ছিল। যে স্থলে কদাচায়ের—কুৎসিত ব্যাপারের উদাহরণ দিতে হইয়াছে, সেই স্থানে প্রায়ই তিনি এই সকল ভক্ত বিটলগণের উপর আক্রোশ প্রকাশ করিয়া গিয়াছেল। তাঁহার বর্ণনাশক্তি বড় স্থাভাবিক ছিল। প্রভাসমজ্ঞে নিমন্ত্রিত বীরভ্মের মূর্থ বাহ্মণগণের আকুলভার বর্ণনা, প্রভাসমজ্ঞে প্রস্থিত হিজপত্নীকে প্রতিবেশিনীগণের পরামর্শ দান, কল্মিণীর বিবাহে নাম্বদের রসভাষ, ক্ল্মিণীর বিবাহে নাম্বদের রসভাষ, ক্ল্মিণীর ব্রাহ্মণের অবস্থা প্রভৃতি পড়িয়া তাঁহার রহস্তোদ্দীপনী ক্ষমতার অতি উক্তল শৃষ্টান্ত পাওয়া যায়। নিয়ে দাভ্রমারের একটা স্থলর ও স্বর্জনপরিচিত, গাঁত উক্ত হইল—

রাগিণী সিন্ধু—তাল কাওয়ালী।
বলে করিছে রণ, কে রমণী হে রাজন্,
ভোমারে নিদরা বামা কি ফাঞা।
এলোকেনী, করে অসি বোড়ণী কুলকভোঃ

বিবাদ ঘটিণ কেনে, কি বাদ বামার সনে, করেছ নিদরা মেরে, সাধিল প্রাণে। চলহে রাজন চলু, প্রাণভরে প্রাণাকুল, অকুল সাগরে আর কুল ঘেথিনে। ধরি চরণে করি মিনতি, ঘদি হে দানবপতি, দাশর্থি গতি পার অতি বতনে।

দ**ংশরান্তর** (অি) দশানাং রাজ্ঞাং ইদং তদ্ধিতার্থদিগো_{, অণ্,} উপধালোপঃ। দশরাজা সম্বন্ধী।

লাশরাত্তিক ( তি ) দশরাতের্ণ নির্ভ: ঠঞ্। দশরাত্তনাধ্য যজ্ঞভেদ। দশরাতত্ত্বদং ঠঞ্। ২ দশরাত্ত সম্বন্ধী ১ "দেবেছো দশরাত্তং দিগ্ভো দাশরাত্তিকং পৃষ্ঠাং" (শভংগ্রাণ ১২/১/২)০) দাখার্প ( পুং ) দশার্প আণ্। ১ দশার্পদেশ। সোহতি অনোহস্ত তত্ত রাজা বা আণ্। ২ পিতাদি ক্রমে দশার্পদেশ বাসী। ৩ দশার্প দেশের রাজা। স্বার্থেক। "তত্ত্ব দাশ্রিদ্ রাজা স্থান্থা লোমহর্পং।" (ভারত স্তাণ ২৮ আং)

দাশাই (পুং) नवांई छ গোত্রাপত্যং শিবাদিবাং-অণ্। য বংশ মাত্র, যত্বংশীয়, ক্লফাদি। দশাই ত'বাচক শলে। ২য অধ্যায়ে অসুবাকে বা অণ্। ২ আযুধলীবি সক্তভেদ। ৩ য বংশীর রাজা মাত্র।

দাশিখনেধ (পং) দশাখনেধ-অণ্। দশাখনেধ সম্ধীয়।
দাশু (ত্রি) দাশ দানে উন্। ১ দাতা। ২ দত্ত। "বংষ্
দাখধননায়" (ঋক্ ৬,৬৮।৬) 'দাখধননায় দত্ত হবিদায়' (সাঞ্চল শেশুরি (ত্রি) দাশ হিংসনে উরিন্। হিংসক। "স্বং চিং
মন্ততে দাভরি" (ঋক্ ৮।৪।১২) 'দাভরিদাখান্' (সাঞ্চল শাশেয় ক্লি প্রাণ্ডিল শাল্য ধীবর্ধ্যা অপত্যং ঠক্। ধীব্যী
অপত্য়। জিলাং ত্রীপ্। ব্যাসের মাতা স্ত্যুব্তী। "অভি
গম্যোপসংগৃহ্ণ দাশেয়ীমিদমক্রবন্।" (ভারত উ॰ ১৩২ মা)
দাশের (প্ং জী) দাভা অপত্যং ক্ল্ডাদিছাং ভূক্। ধীব্

দাশৈরক (পুং) দাশেরপ্রধানঃ দেশং সংজ্ঞায়ং কন্।
১°মরুভ্দেশ, মাড্বার। ২ মরুভ্দেশের রাজা। ৩ পিজাদিজনে
মরুদেশবাসী সকল। এই অপ্রে এই শব্দ বছরচনার।
দাশৌদ্মিক (পুং) দশ ওদনা যত্ত যতে তথ্য ব্যাধ্যানো এই:
ঠঞ্। > দশৌদন যজ্ঞ ব্যাধ্যান গ্রন্থ, বে গ্রন্থে নালান
যক্তের বিষয় আছে। দশৌদন যক্ত্রন্থ দশিরা যন্তাগ্রিং
ঠঞ্। ১২ দশৌদন যজ্ঞের দক্ষিণা।

দাশ্য (ত্রি) দশ-ক দশতা দংশকতা অনুরদেশাদি সহাশা গা দংশকের অনুর দেশাদি। দাশ্য (ত্রি) দাশ বনু বাহুং ইড়ভাব:। দ্বাতা। (জটাব্র) দার্যস্ ( অ ) বার্ট্-দানে কয় ( দার্যান্ সাহ্বান্ মীচ্ছাংক। পা
৬)১)২২) ইতি প্রেণ নিপাতনাং সাধু:। > দত্তবং, বাহা
দেওয়া হইয়াছে। ২ হিংসিডবং, হিংসা করা হইয়াছে।
"পীবরোদার্যাংসং" (অক্ ৪।২।৮) 'দার্যাংসং হবির্দত্তবন্তং" (সারণ)
দাস ( অ ) দসতীতি দসি-ট, নহুঁচ আং ( দংসেইণ্টনৌ। উণ্
৫)১০)। ইজ্ঞাতাত্মা। ২ শুদ্রা ০ ধীবর। স্তিরাং জীব্।
দাসতে ভৃতি রবৈ দাসতি দলাতাকং আমিনে উপচারার বা
দাস-অচ্। ৪ চাকর, ভৃত্য। পর্যার—দাসের, দাশের,
গোপাক, চেটক, নিবোল্য, কিকর, প্রৈয্য, ভ্রিয়, পরিচারক, " প্রেয়, পুগ্রন, প্রৈর্ধ, পরিক্র্মা, পরিচর, সহার,
উপহাতা, সেবক, অভিসর, অহুগ। ( নারদ) ৫ শুজ্দিগের
নামান্ত প্রযোল্যা উপাধি বিশেষ্ক।

"শর্মান্তং রাক্ষণতা তাৎ বর্মান্তং ক্ষত্রিয়ত চ। গুওদাদাম্মকং নাম প্রশক্তং বৈশুশ্রেয়োঃ ॥" (উূর্বাহতর)

ত্রাহ্মণদিগের নামের শেবে শর্মানু, ক্ষত্রিয়দিগের নামের শেবে বর্মানু, বৈশ্বদিগের গুপ্ত এবং শৃপ্তদিগের নামের শেবে দাস এই শব্দ প্রয়োগ করিতে হয়। দাস দানে সম্প্রদানে বঞ্। ব দান মাত্র।

"সতম্বত্তাত্মনোদানাদাসত্তং দায়বস্ত্ গুঃ।" (কাত্যা॰)
যাহারা স্বতন্ত্র আত্মা পরার্থে দান করে, তাহাদিগকে দাস
কহে। হিন্ধর্মণাস্ত্রে দাস সম্বন্ধে অনেক কথা লিখিত আছে।
ক্রান্ধণ ভিন্ন ক্রিয়াদি তিনবর্ণ দাস হইতে পারে।
"বিষু বর্ণেষু বিজ্ঞেয়ং দাত্তং বিপ্রস্থান কহিং।" ( স্বৃতিচ॰)
বর্ণত্রের দাসত্বের বিষয় বৃথিতে হইবে। ত্রান্ধণ নবর্ণের
নিকটপু দাসত্ব স্বীকার করিবে না এবং যদি স্বীকার করে,
তাহা হইকে কথন হীনকর্ম করিবে না।
"সবর্ণোহপি হি বিপ্রং তু দাসত্বং নৈব কারয়ের্।" (কাত্যায়ন)

যদি কোন আহ্মণ লোভহেতু সংস্কৃত বিজকে দাসত্বে নিয়োগ করে, তাহা হইলে রাজা তাহাকে দণ্ড দিবেন।

"দাভত্ত কারয় লোভাৎ বাহ্মণ: সংস্কৃতান্ ছিল্বান্। অনিচ্ছত: গুভাবজালাক্তা: দাপ্য: শুভানি ষট্॥" ( মুফু )

কিন্ত শুলাদিকে দাওকর্মে নিযুক্ত করিলে দণ্ডনীয় ছইবে না। "শুল্ল একমাত্র দাসত্বের অক্স স্ট ছইবাছে। এই দাস পঞ্চদশ প্রকার।—গৃহজ্ঞাত, অর্থাৎ যাহারা নিজ গৃহে দাসীর গণ্ডে উৎপুর ছইবাছে, ক্রীত, দারে উপাগত অর্থাৎ বহুধগ্রাহিত্বরূপে যাহাকে লাভ করা যায়, প্রীরাকালভূত অর্থাৎ যাহাকে ছভিক্ষ সমরে প্রতিপালন করিয়া রক্ষা করা যায়, আহিত, ঝণ দাস, যুদ্ধপ্রাপ্ত; পণে জিত, অয়ং উপাগত, অবজ্যাবসিত অর্থাণ্ড বাহারা প্রব্রক্যা হইতে চ্যুত ছইরাছে,

ফত, অধীৎ এতদিন তোমার দাস হইব এইরপে উপাগত, ভক্তদাস, বড়বান্ত, (গৃহদাসীর নাম বড়বা, তাহার লোভে আগত, অর্থাৎ ভাহাকে বিবাহ করিয়া দাসম্বর্গে অব-হিতকে বড়বাক্ট কছে), ও আত্মবিক্রেতা।

" গৃহ্জাততথিকীতঃ লক্ষো দায়াত্পাগতঃ।
আয়াকাল ভ্তত্ত্বদাহিতঃ স্থানিন চ য়:॥
মোক্ষিতো মহতশ্চণিং যুদ্ধে প্রাপ্তঃ পণে জিতঃ।
তবাহমিত্যুপগতঃ প্রভাগবিস্তিঃ ক্লতঃ 
ভক্তদাসশ্চ বিজ্ঞেরতথৈব বড়বাহতঃ।
বিক্রেতা চাত্মনঃ শাল্রে দাসাঃ পঞ্চলশ স্থতাঃ॥" (নারদ)

দাস সকলের মধ্যে যে প্রভুকে প্রাণসংশরকর বিপদ্ হইতে মোচন করিতে পারে, ভাহারা দাসত্ব হইতে মুক্ত হর এবং ভাহারা পুত্রবৎ প্রভিশালনীয়।

"যদৈতনাং স্বামিনং কশ্চিমোর্চয়েও প্রাণসংশ্রাও। দাসস্বাৎ দ বিমুচ্যেত পুত্রভাগং লভেত চ ॥" ( স্বৃতি )

বে আত্মবিক্রেতা অর্থাৎ কিছু টাকা নইয়া আপনাকে বিক্রেয় করিয়াছে, সে অতি অব্যাত্তম দাস। এই আত্ম-বিক্রেতা আমীর প্রসাদ ভিন্ন অর্থাৎ প্রভূর প্রসন্নতা ব্যতি-রেকে কথনই দাসত্বইতে মুক্ত হয় না।

"বিক্রীনীতে স্বতন্ত্রঃ সন্য স্বাস্থানং নরাধ্ম:। , ' সঙ্কবন্তুত্রমন্তেবাং সোহপি দাস্থান্ন মুচাতে এ" (স্বৃতি )

শুল স্বামী কর্তৃক বিম্কু হইলেও দাদত্ব হইতে বিম্কু হয় না। দাসত্ব কর্ম তাহার স্বাভাবিক, এই জয় । ঐ কার্য্য হইতে তাহাকে কেহ বিম্কু করিতে পারে না।

মহ সাত প্রকার দাস নির্দেশ করিয়াছেন—ধ্রুজাত্মত, অর্থাৎ যুক্তে ক্লয় করিয়া যাহাকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, ভক্তদাস, যাহায়া ভাতের দায়ে দাসত স্বীকার করে, গৃহজ অর্থাৎ গৃহস্থদাসীর পুত্র, ক্রীত অর্থাৎ যাহাকে মূল্য দিয়া ক্রয় করা হইয়াছে, দত্রিম অর্থাৎ অত্য কর্তৃক দত্র, দণ্ডদাস অর্থাৎ রাজক্রত দণ্ডভারির জত্য যে দাসত স্বীকার করে।

"श्वकाहरका जलनारमा श्रकः की उनकिरमो।

পৈতৃকো দওদাসশত সীপ্তৈতে দাসখোনয়: ॥" (মহ ৮।৪১৫)

এই দাস সকল যে ধন উপার্জন করে, সেই ধন ভাহার
প্রভু গ্রহণ করিবেন। মহার মতে, গ্রাহ্মণ বিজ্ঞজ্জান
পুল্লের ধন গ্রহণ করিতে পঞ্রন, কারণ শৃজ্রের নিজ্ঞাল
কিছই নহে।

এই দাস প্রাভৃতি যদি অভায় কার্য্য করে এবং প্রাভৃত্ব আজ্ঞা প্রতিপাদন না করে, তাহা বৃষ্টুলে তাহাকে শাসন করিতে হইবে। মহুর মতে, স্ত্রী, পুত্র, দাস, শিক্ষ এখং রজ্ঞাদি থারা শরীরের পৃষ্ঠদেশে আখাত করিবে, কদাপি উত্তমাদে প্রহার করিবে না। বদিও অধ্যস্ত জোধী হইরা এইরূপ অক্সায়রূপে প্রহার করে, তাহা' হইলে সে চোরের ভায় রাজদতে দণ্ডিত হইবে। (মহু ৮।২৯৩—৩০০) বলপুর্বক আহাকে দাভেকর্মে নিমোগ করা যায় এবং চোর চুরি করিয়া যাহাকে দাভের নিমিত্ত বিজ্ঞায় করে, ইহারা পুর্বোক্ত কারণ ভিন্নও দাস্থ হইতে সুক্ত হইতে পারে।

"বলাদাসীক্ততেশীরে বিফীতশ্যাপি মৃচ্যতে।" ( যাজ্ঞবন্ধা )
এই দাসদিগের ছই প্রকার কর্ম উক্ত হইরাছে শুভ ও
অন্তত্ত, ইবার মধ্যে গৃহবার, অন্তচি স্থান, রখ্যা ও অবকর প্রান্তির শোধন, গুছাল স্পর্নন, উদ্ভিট বিশ্বুত গ্রহণ
ও পরিত্যাগ এই সকল দাসদিগের সঞ্ভক্ম, এডভির অন্ত
আর সকল কার্যা শুভ।

"কর্মাণি বিবিধং ফেরমুগুডং ভূডমেব চ।
আঞ্ডং দাসকর্মোক্তং গুডং কর্মফুতাং মৃতং ॥
গৃহ্বারাশুচিছানরখাবদ্ধরশোধনং ।
গুহালস্পর্শনোচ্ছিধৈয়া অগ্রহণোজ্মনং ॥
জিলুড়ং কর্মবিজ্ঞেরং শুভ্মগুলতঃপরং।" (মিডাক্লরার নারদ)
আন্দাণেরে দাস ক্রিয়ে, ক্রেরের দাস বৈশ্র এবং শূলু
সকলেরই দাস।

৭ নিজ গোতে সংস্থার ব্যতীত গৃহীতদন্তক, বে বালকের পিতৃগোতে চ্ডাদি সংস্থার কার্য্য সম্পন্ন হইরাছে, পরে সেই বালককে যদি কেহ দত্তকরণে গ্রহণ করে ভাহাকে দাস কহে।

"চ্ডাদ্যা যদি সংস্থারা নিজ গোত্রেশ বৈক্ততাঃ। দত্তাস্থাক্তনয়ান্তেল্য ৰঞ্জণা দাস উচ্যতে ॥" ( দত্তক্চ ),

দ্বিয়াং ভীপ্। দাসী। (আ) দাস উপক্ষেপে অচ্। ৮ উপক্ষেপক। (পুং) ৯ বৃআহ্ব। ১০ দহা। [দহা দেখ।] ১১ বদ ও উৎকদের নানাম্বাতির মধ্যে প্রচলিত উপারভেদ। দাসক (গুং) দাস-স্বাধে ক। ১ দাস। ২ গোত্রপ্রবর্তক ক্ষিভেদ।

দাসকায়ন (পু: ত্রী) দাসকভ গোত্রাপত্যং অখাদিখাৎ কক্। তদ্গোত্রাপত্য, দাসক ঋষিষ গোত্রাপত্য।

দাস্ত্র (রী) দাসত ভাবঃ দাস স্বত্রো ভাবে ইতি স্ব।
দাসের ভাব, দাসের কর্ম বা অবস্থা, বেতন লইরা অপরের
কর্মক্যা, ভৃত্যভা, (রাধীনতা, গোলামী।

मांगमांभी (प्रमण) ह्राक्त हाक्त्रानी।

मांगनिमनी (खी) मांगण शैरवाण निमनी। गणामणी,

দাসপত্নী (ত্রী) দাসরতি দাস উপক্ষেপে অচ্ দাসী ব্রাহ্য:
পতির্যাসা: ১ অপ্, জল। "দাসপত্নী রহিলোপা জতিন্তি,"
(অক্ ১০৩০১১) 'দাস: বিখোপক্ষণণতেত্ত্ব ত্র: পড়ি: খামী,
যাদামপাং তা দাসপত্নী:।' (সামণ) জল এই অর্থে দাস
পত্নী শক্ষ বহুবচনাত্ত। দাসত পত্নী। ২ দাসের ত্রী।

দাসপুর ( ङ्रो ) কৈবর্ত্তমৃত্তক, এক প্রকার মৃতাদাস।

লাস্মিত্র (ক্লী) লাস্ভ মিতাং ৬৩৫। দাসের মিতা। আন্ত দেশাদৌ কাভা ঠঞ্। দাসমিত্রিক—দাসমিত্রের আন্ত দেশাদি।

দাঁসমিত্রি (পুং জী) দাসহিত্রত অপত্যং ইঞ্। দাসমিত্রের অপত্য। ততঃ ঐবুকাদিখাৎ ভক্তন্। দাসমিত্রিভক্ত ভদীঃ বিষয় দেশা ।

দাস্মীয় (অি) দশনে দেশভেদে ভবং, বা দাসং শৃক্তং নিমতে মানরভি নৈপুনার্বিছঃ তা দাসমাতাত্ব ভবং ছ। ১ দসমদেশ ভব। ২ গৃহস্বশুতাভিয়ত ত্রীলাভ।

"ব্ৰাজ্যানাং দাসমীয়ানাং বাহীকা নাম যক্ষনাং।" (ভায়ত কৰ্ণ ১৪ অং)

দাসমেয় (পং) প্রাণোত্তৰ জনপদ্বিশেষ।
দাস্র, (দাস জাতি) কর্ণাটক প্রদেশবাসী জাতিজেন।
ইহারা কব্লিগর বা কৈবর্তজাতির একশাখা বলিয়া গ্রান ইহারা কব্লিগর বা কৈবর্তজাতির একশাখা বলিয়া গ্রান

কণ্টিক প্রদেশের বিজ্ঞাপুর অঞ্চলে অনেক দাদর দৃষ্ট হর। ইহারা তৃই শ্রেণীতে বিজ্ঞাক, ভিরমলদাদুর ও গদদাদর ৮ উভরশ্রেণী মধ্যে আহারাদি চলে, বিকাহ চলে লা। ভিরমলদাদরের। তাহাদের রমণীদিগকে বেখ্যার্ভি, নৃত্যালীতাদি করিতে দেয়, তাহাতে আপত্তি করে না, কিছ গদদাদরদিগের মধ্যে এ কুপ্রথা প্রচলিত নাই। এই লাভিরমধ্যে ২২টী উপাধি আছে। ব্থা—বিদি, বব্দ, চিন্মবদ, চিন্তাকালবক ইত্যাদি।

ইহাদের আচার বাবহার অনেকটা কব্লিগর বা ধীবন দিগের ভাষে, তবে ইহারা কতকটা বেশী অসভা ও অধিক ^{পরি} অমী। ইহারা কবাড়ী ও তেলুগু উভর ভাষা বাবহার ^{ইরে}।

ইহারা গ্রামের বাহ্যির অন্থারী বঁর কুরিয়া' বাস করে।
ইহারা হিন্দু হইলেও মহরমানি মুস্লমান পর্কে হাসন
হোসেনের উদ্দেশে হাস বলি দের। কিন্তু কেহ গোমাংস ভব্ন
করে না। সকল ধর্মকর্ম্ম ব্রাহ্মণ বারা সম্পন্ন করে। মার্গতি
ইহাদের প্রধান উপাত্ত দেবতা। নাসপ্রকারী, দশেরা, প্রণ

চতুর্থী এই শুলি ইহাদের প্রধান পর্ম। ইহাদের বিবাহপর্কতি ঘিসাড়ি ও কর্ণাটকের কৈবর্জজাতির ন্যার।
দাসবেশ (পুং) দাসভ দভোর্বেশ: ৬৩৫। দহ্যানাশ, দহ্মাকর। "পৃক্ষে চ দাসবেশার "চাবহং।" ( এক ২০০০৮)
'দাসবেশার ঘাসানাং দহ্যানাং বেশার নাশার' ( সারণ ) ।
দারিকা ( ত্রী ) দাসতি দদাতি আ্থানমিতি দাস দানে শুল্,
টাপ্ অত ইত্বং। দাসী।
দাসী ( ত্রী ) দাস পৌরাদি " ত্রীষ্। > দাসের পত্নী, নীচ জাতি
ত্রী। ১৯পরিচারিকা, পরিচর্কার নিমিন্ত যে প্রীলোককে
নিস্ক করা বার, কর্মাকরী, চাকরাণী। ৩ শুল্র ও কৈবর্জের
ভার্যা, তজ্জাতীয়া স্ত্রী। ৪ ধীবরী।
"ন গতা চ বধ্তুত্তা প্রেখ্যা সংপ্রেষিতা তরা।
তভাঞ্চ বিহুরো আতো দাভাং ধর্মাংশতঃ শুভঃ ন"

(দেবীভাগ ১৷২০৷৭২) : কাকজজ্ঞা। ৬ নীৰাম্লান। ৭ নীৰ্বাঞ্চী। ৮ প্ৰীত্বিক্টী। ৯ বেদী। নাসীত্ব (ক্লী) দাভা: ভাব: দাসী ত্ব। দাসীর ভাব, দাসীর কার্য্য। ात्रोशान ( वि ) नाष्ट्राः शानहेव शासा यथ, हस्त्रानिषां নাভালোপ:। দাসত্বা পাদযুক্ত। জিলাং ভীষ্। পাদভ पम् जात्रकः । मानी भनी अहेक्क् भाग स्टेट्व । াসীভারাদি (পুং) পাণিনিউক্ত শন্ধগণ বিশেষ, দাসীভার, দেব-সূতি, দেবভীতি, বস্থনীতি, ওষধি, চক্সমদ্। (পাণিনি ভাং।৪২) ানীসভ (ফ্রী) দাসীনাং সভা ততো ক্লীবলিশ্বন্থ:। (অশালাচ।পা২।৪।২৪) দাসীর সভা, দাসীসমূহ। দৈয় (পুং) দাস স্বার্থে ঢক্। ১ দাস। ২ কৈবর্ক্ত। দাসভা উৎপন্নং ইতি, ফক্। (ত্রি) ৩ দাসোৎপন্ন। नारमग्री (खो) नारमञ्जलकाः छोप्। मञावञी। "দমীকা রাজা দাসেয়ীং কাময়ামাস শাস্তফু:।"(ভারত ১।১০০।৪৯) দাদের (পুং) দাভা অংপত্যং ডুক্। ১ দাস। ২ কৈবর্তঃ। ^{নাস} বাহলকাৎ এরচ্। ৩ উষ্ট্র। ( **ত্রি** ) ৪ দাস্থিকাপত্য। मारमञ्जक ( प्रः ) मारमञ-चार्थ कन्। छेड्डे।

^{"নাসে}রক: সপদি সংবলিতং নিষাদৈ ^{বিত্রং} পুরা প্রতগরাড়িব নির্জগাঁর।" ( মাঘ ৫।৬৬:) ^{বং আ}সীমৃত। ও জাতিভেদ। (ভারত ৬।৪৭।৪৬) ভা (জী) সমস্য সংক্রিক

দাস্ত (ক্নী) দাসভ ভাবি: দাস-যাঞ্। ভক্তিলকণ নর প্রকার, তন্মধ্যে দাভ এক প্রকার—

ंचर्छनः वन्तनः मञ्जलभः त्यवनत्मव ह । यद्रशः कोर्श्वनः मयः खन्यवन्धीश्विजः ॥ नित्वननः यण माण्यनवन्धा छक्तिककः।

( बक्देववर्ख श्रक्का ( किंकि दिन्थ । ]

দাস্তমান ( আ ) দা কশ্বণি জমান: । ভবিশ্বদান সহদ্ধি বন্ত, বে বন্ত পরে দান করা বাইবে, ভাহাকে দাস্তমান কছে । দাস্তাদি ( প্রং ) ক্রিবল্যারদ্বাবল্যক্ত পাচন ঔবধ ভেদ । প্রস্তুত প্রণালী—নীলনিলী, দেবদারু, ইক্রবর, মল্লিটা, জামলভা, আকনাদি, দাঠা, ভটি, বেণারমুল, চিরতা, গল্পপিপ্লী, বলাডুমুর, পল্লকার্চ, হাড্জোড়া, ধনে, ভাঠ, মৃত্যা, সরলকার্চ, সলিনার ছাল, বালা, কণ্টকারী, কেংপাপড়া, কুশমূল, কটুকী, অনন্তমূল, গুড়ক, কুড়, মিলিভ ২ ভোলা, জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা, ইহা এইরূপে প্রস্তুত্ত করিয়া আধতোলা মধুর সহিত সেবন করিলে ধাতুত্ব বিষমজ্বর, ত্রেদোমজনিভ জ্বর, প্রমাহিক ও হাহিক জ্বর, কামজ্বর, শোফজনিভ জ্বর, বমি সহিত জ্বর, জ্ব জনা জ্বর, প্রত্তক, চাতুর্থক প্রভৃতি সকল প্রকার জ্বর আগু প্রশমিত হয়। ( ভৈষ্ত্রারণ জ্বরাধিণ ) দাক্র ( ক্রী ) দল্লো দেবতে হল্ত অণ্। জিমিনীনক্তর। দাহে ( প্রং ) দহ ভাবে বঞ্ছ। দহন, ভশ্বীকরণ, প্রোড়ান।

মৃত্যুর পর শবদেহ দাহ করিতে হয়। তাহার বিধান শুদ্ধিতত্বে এইরূপ লিখিত আছে, মৃত্যুর পর পুঞাদি সকলে মিলিত হইরা দাহত্বলে শবদেহ লইরা যায়। সেই তলে শবদেহ রক্ষাপুর্বক পুঞাদি সান করিয়া পিণ্ডের নিমিত্ত আর পাক করিবে। পরে শবদেহকে সান করাইয়া নৃতন বিদ্রে শবের সকল শরীর আচ্ছাদন করিবে। সেই তলে কুশ হড়াইরা শবের মন্তক দক্ষিণদিকে করিয়া রক্ষা করিবে; পরে শবদেহ ত্বত মাখাইয়া এই মজে সান করাইতে হইবে। মস্ত্র—ওঁ গ্রাদীনি চ তীর্থানি যে চ পুণাঃ শিলোচ্যাঃ।

কুক্দকেরঞ্জ গল্পাঞ্চ যমুনাঞ্চ সরিদ্বরাং॥
কৌশিকীং চক্সভাগাঞ্চ সর্ব্বপাপপ্রণাশিনীং।
, ভদ্রাবকাশাং গগুক্যাং সর্যুং পনসাং তথা॥
, বৈনবঞ্চ বরাহঞ্ তীর্থং পিগুরেকং তথা।
পৃথিবাাং যানি তীর্থানি সরিতঃ সাগরাং তথা॥
**

এই সকল পূণ্য তীর্থের বিষয় শ্বরণ করিয়া অর্থাৎ ইহাঁ
পাঠ করিয়া শবকে মান করাইবে, পরে আর একথানি বস্ত্র
পরিধান করাইয়া উপনীত ও উত্তরীয় দিতে হইবে, পরে
চন্দনাদি ছারা শবশরীর উপলিপ্ত করিয়া কর্ণ, নাসিকা,
নেত্র ও মুও এই ৭টা ছিচ্ছে ৭, ওও স্থবর্ণ দিলা একথানি
বস্ত্র ছারা আচ্ছাদন করিবে। (ইহার পর বান্ধব সকলে
শবদেহ বন্ধন করিয়া দাহতলে লইয়া যাওয়া উচিত, কিন্তু
ব্যবহার এইরপ নহে, দাহ স্থলে শব্য লইয়া বাইয়া এই
সকল করা হইয়া থাকে।)

পরে অয়িদাতা চিতাভূমিতে গম্ন করিয়া পিও প্রেদান

করিবে, দেই স্থলের ভূমিতে কিঞ্চিৎ গোময় প্রক্ষেপ দিয়া ভূমিতে বাম**লাহ** পাতিয়া প্রাচীনাবীতি **হইয়া কুশম্ল ঘা**রা 'ওঁ অপহতাস্থ্রারকাংসি বেদিসদ' 🍕 মন্তে দকিণাগ্র রেথা করিবে। তাহার উপরি কুশ ছড়াইয়া দিবে এবং 'ওঁ এহি প্লেড সৌম্য 'গন্তীরেভি: পথিভি: পূর্ব্বিণেভির্দেছ-স্মভাং জবিশেহ ভক্তং রয়িঞ্ন: সর্ববীরং নিযচহ' এই মল্লে আবাহন করিয়া সতিল জলপাত্র বামহস্ত হইতে দক্ষিণ হল্তে গ্রহণ করিয়া 'ওঁ অদ্য অমুক গোত্র প্রেত অমুক দেবশর্মন্ অবনেনিকৃ' এই মল্পে আন্তীর্ণ কুশোপরি অবনে-জয় অর্থাৎ জল প্রক্ষেপ দিবে। পরে সতিল পিও গ্রহণ করিয়া 'ওঁ অদ্য অমুকগোত্র প্রেত অমুক দেবশর্ষন্ এতত্তে-় হয়মুপতিষ্ঠতাং' এই মল্লে পিণ্ড কুশোপরি দিতে হইবে। পরে পিণ্ড পাত্র প্রকালন করিয়া তাহাতে বল দিবে। সামবেদী ভিন্ন অস্ত বেদীরা আবাহন করিবে না। পরে প্তাদি 6िতা तहना कतिर्दे, তাহারা শবকে ছইথানি বলের সহিত চিতার উপর দক্ষিণদিকে মস্তক করিয়া তুলিয়া नित्त, भूक्ष इहेरन अर्धामूर्य এवः जी इहेरन छेछान ভাবে চিতার উপরি স্থাপন করিবে। সামবেদিদিগের, "শব্ উত্তরদিকে মন্তক করিয়া চিতায় সাজাইতে হইবে। ইহার পর অগ্নিদাতা অগ্নি গ্রহণ করিয়া 'এনং দহস্তু' অগ্নি ইহাকে দগ্ধ করুক, এই চিন্তা করিয়া—

"ওঁ কৃষা তু ছ্করং কর্ম জানতা বাণ্যজানতা। মৃত্যুকালবশং প্রাণ্য নরং পঞ্চ্যমাগতং॥ "ধর্মাধর্মসমাযুক্তং লোভমোহসমাবৃতং। দহেয়ং সর্বগাত্তাণি দিব্যান্ লোফান্ স গুছতু॥"

এই মন্ত্র পাঠ করিয়া তিনবার অগ্নি প্রদক্ষিণ করিতে হুটবে এবং দক্ষিণামুথ হুইয়া মন্তক স্থানে অগ্নি, প্রদান করিবে।. পর্বের দাহ সম্পন্ন হুইলে প্রাদেশপ্রমাণ সপ্তানিকান্তিকা অর্থাৎ সাতথানি কাঠ গ্রহণ করিয়া চিতাগ্নি ৭বার প্রদক্ষিণ করিয়া ক্রমে ক্রমে চিতাগ্নিতে নিক্ষেপ করিবে। তাহার পর কুঠার হারা 'ক্রবাগায় নমস্তভ্যং' এই মন্ত্র পড়িয়া প্রজ্ঞলিত চিতার উপর বংশ দণ্ড হারা ৭বার প্রহার করিবে। তাহার পর ঐ চিতাগ্নি অবলোকন না করিয়া বামদিক্র দিয়া স্নান' করিবার জক্ত নদীতে গমন করিতে হুইবে। শব সম্বন্ধীয় বল্লাদি শ্রশানবাসী চাণ্ডালি সকলেই পাইবে। স্তিকা এবং রজম্বলা অবস্থায় ব্রীদিগের মৃত্যু কুইলে 'আপোহিষ্ঠীয় বামদেব্যাদি' মক্তে আবাহন করিয়া দাহ করিবে এবং গর্জবতী নারীর মৃত্যু হুইলে স্থানাস্তরে গর্ভ নিংসারিত করিয়া ভাহার

দাহ করিতে হইবে, গর্ভবতী স্ত্রীর গর্জ নিংসারিত না ক্রিয়া দাহ করা বিশেষ দোষাবহঞ্জ অধর্মঞ্জনক।

ভাষার পর সকলে জল স্মীপে গমন করিয়া প্রাদি
অর্থাৎ যিনি অগ্নি প্রদান করিয়াছেন, তিনি ভাষার প্রগোগা,
ফিল্ল স্থালকাদিকে ক্রিজাসা করিবেন, 'উদকং করি
ন্তামাং' জলকার্য্য করিতে পারি, তিনি ইহার অমুমতি, দিরে
বৃদ্ধদিগকে অগ্রে করিয়া জলে অবতরণ করিতে হইবে।
ভাষার পর বস্ত্রাদি পরিধান করিয়া প্রাচীনাবীতী হইয়
দক্ষিণমুথে প্রেতের, উদ্দেশ্য তর্পণ করিতে হইবে। সামবেদীরা আচমন করিয়া 'ওঁ অমুক্রগোলং প্রেতং অমুক্
দেবশর্মাণং তর্পয়ামি' এই মন্ত্রে তর্পণ করিবেন। ফ্ররেদীরা 'ওঁ অমুক্রগোল প্রেত অমুক্র দেবশর্মান্তেন্তে তিনোদকং তৃশাল্প' এই মন্ত্রে তর্পণ করিবেন। তর্পণ তিনবার
করিলে ফ্লাতিশয় জানিতে হইবে, নচেৎ একবার করিলে
চলিবে। তর্পণেক্র পর প্ররায় স্নান করিয়া সকলে একর
হইয়া বালককে অগ্রে করিয়া জলাশয় হইতে উটিবে।
ভাহার পর তৃণক্ষেত্রে উপবেশন করিয়া এইরপাচিন্তা করিবে।

"মানুয়ে কদলীস্তম্ভনি: সারে সারমার্গণং।
য: করোতি স সংমৃঢ়ো জলবৃদ্দদিভে॥
পঞ্চধাসন্ত্ত: কায়ো যদি পঞ্জমার্গত:।
কর্মাভ: মুদরীরোইখন্তক কা পরিদেবনা॥
গন্ধী বস্তমতীনাশমুদ্ধিদৈবতানি চ।
ফেণপ্রথা: কথং নাশং মর্ত্তালোকো ন যাস্থতি॥
শেল্পাশ্রাশ্রবাদ্ধ বৈমুক্তং প্রেভোভূঙ্কে যতোহ্বশ:।
আতো ন রোদিতব্যং হি ক্রিয়া কার্য্যা বিধানত:॥

এই জগতে মহুয়া সংল কদলীতান্তের ভার নিংসার, জীবন বিতার্থৎ চঞ্চল, সকল বস্তাই ক্ষণছারী, ইহাতে সার কল্পনার মৃঢ়ের কার্য্য, সকলই স্ব স্থ কর্ম্মভাগ করির দেহ পরিভ্যাগ করিবে, ইহাতে পরিদেবনার বিষয় কি ? গুথিবী, সমুদ্র, দেবতা ইহাদেরও নাশ হইবে, তথন আর মর্ত্যের বিষয় চিস্তনীয় কি ? এইরপ চিস্তা করিরা গৃহ-র্থারে গমন করিয়া নিম্বর্ণাত্র দত্ত বারা কাটিয়া 'শমী পাগংসময়ত্' এই বলিয়া শমী স্পর্শ করিবে। আহ্বর পাল্যাব হিরোভ্রাংসং' এই বলিয়া প্রস্তির, পাদ্বারা শর্মা করিয়া গ্রেমার 'অয়িরন: শর্মায়ভত্তু' এই বলিয়া আয়ি স্পর্শ করিয়ে। গো, হোগ, গোময়, উদক্ত গোরসর্মপ স্পর্শ করিয়া, গৃহ প্রবেশ করিতে হইবেন।

দিবাভাগে দাহ করিতে যাইলে **র** ত্রিতে এবং রাজি^{তে হাই} করিতে যাইলে দিবাভাগে ফিরিয়া আদিবে। ইহাতে ^{অপ্র} ছ্টনে প্রাজণের অহমতি লইরা দিবারান্তি এই উভর সময়ে বাইয়া ঐ উভয় সময়েই ফিরিয়া আসিতে পারে। ( শুদ্ধিতম্ব ) [অস্টোট দেব।]

২ কুপিত পিত্তল দৈহসভাপভেদ, ব্যাধিবিশেষ, এই দাহরোগৈর বিষয় ভাব প্রকাশে এইরূপ নিথিত আছে।

দাহরোগ সাত প্রকার। তাহার মধ্যে পিত্তক্ত দাহ-রোগে পৈত্তিক অরের ভায় লক্ষণ হর, প্রভেদ এই যে পিত-অরে শরীরের মানি ও আমাশর দ্বিত হয়, এই রোগে তাহা হয়না। ইহারও পিত্তক অরের ভায় প্রতিবিধান করিতে হইবে।

রক্ত লাভ লাহ — রক্ত লভ দাহরোগে সমন্ত শরীরের রক্ত প্রকৃপিত হইয়া দাহ উৎপাদন করে। রোগী দাহ কর্ত্তক এত পীড়িত হর যে, তাহার সমন্ত শরীর যেন নিকটম্ব প্রজন্তিত অগ্নি কর্তৃক তাপিত হইডেছে, এইরূপ বোধ হয়, অতিশয় পিপাসা উপস্থিত হয়, শরীর ও চকুর্ম তাত্রবর্ণ হয়, য়্বেও গাত্রে রক্তের ভায় গন্ধ হয় এবং সমন্ত শরীরে অগ্নিকণা প্রকিপ্ত ইইলে যেরূপ, হয়, সেইরূপ বোধ হয়।

রক্তপূর্ণ কোঠজ দাহ—শস্ত্রাদি কর্ত্ক ক্ষত হইলে দেই কত স্থল হইতে স্কল্প্রাব হইয়া কোঠদেশ রক্তপূর্ণ হইলে সার এক অতি কপ্তকর দাহ উপস্থিত হয়, ভাহাকে রক্তপূর্ণ কোঠজ দাহ কছে।

মত্তন দাহ—মত্যপানজনিত উন্না, পিত্ত ও রক্তের সহিত মিলিত ও বর্দ্ধিত হইয়া চর্মকে আশ্রম করিলে বোরতর দাহ-রোগ উৎপন্ন হয়। ইহাকে মত্তন দাহ কহে। পিত্ত কুপিত হুইলে যেরপ প্রতিবিধান আবশ্রক, তদ্রপ ইহার প্রতিবিধান করিতে হুইবে।

তৃষ্ণানিরোধন্ধ দাহ—যে অবোধ মন্থ্য পিপানা হইলে জনপান না করে, তাহার রসধাতু ক্ষীণ হইয়ও পিত্তের উল্লাব্দিত হয় এবং ঐ পিত্তোলা শরীরের অভ্যন্তরে ও বহিদ্দেশে নাই উৎপাদন করে,, এই রোগে রোগীর গলদেশ, তালু ও ওঠ তক হয় এবং জিহ্বা বহিনির্গম ও কম্প ইইয়া থাকে।

ধাতৃক্ষরজ দাহ—ধাতৃক্ষর জন্ত দাহরোগে মৃদ্ধা, পিপাসা, ব্রভদ ও কার্য্যকরণে অক্ষতা হয়। যদি রোগী দাহ কর্তৃক সভাধিক পীড়িত হয়, ভাহা হইলে এই রোগে তাহার মৃত্যু হইয়া থাকে ।

মর্মাভিবার্ত্তক দাহ--মন্তঠ হৃদয় ও বল্তি প্রভৃতি মর্মারানে

অবাত প্রাপ্ত হইলে তৎকর্ভৃক যে দাহ উপস্থিত হয়, তাহাকে

মর্মাভিবাতক দায়াকহে। এইরূপ দাহরোগও অসাধ্য।

অসাধ্য দাহ কিল প্রকার দাহ রোগীরই যদি গাত্তের বিহিদেশ শীতল এবং অভ্যস্তরে দাহ হয়, তাহা হইলে এইরূপ

রোগীকে চিকিৎসা করিবে না, এইরূপ দাহরোগ অসাধ্য। ইহার প্রতিবিধানে কোন ফল হইবে না।

দাহরোপের ডিকিৎসা---শতধোত খত ও ধবের ছাত্র একতা করিয়া অক্তি লেপন করিলে দাহরোগ বিনষ্ট হয়।

কুলৈর আঁটির শাঁস ও আমনকী একতা কাঁজি ধারা
পেষণ করিয়া নেপন করিলে অথবা কাঁজি-সংসিক্ত আর্করত্ব
ধারা সর্বশিরীর আবৃত কয়িয়া ঝাথিলে দাহরোগ আরোগ্য
হয়। বেণার মূল ও রক্তচন্দন কাঁজির সহিত পেষণ করিয়া
অক্ষে লেপন করিলে দাহ নই হয়। পল্পতা বা কদলীপত্তনির্মিত শ্যায় শ্রন করাইয়া চন্দনাক্ত জ্বল-সিঞ্চিত ব্যক্ষন
ধারা বায়ু সেবন করাইলে দাহ বিনই হয়।

তৃষ্ণা ও দাহ প্রাশমনের নিমিত্ত জলদেচন, জাবগাহন ও ব্যজনানিল দেবন ক্রিতে হইল্পে তৎস্থলে শীতল জলই প্রাশস্তন

প্রিমৃত্যু, লোধ, বেণারমূল, বালা, নাগকেশর পত্র এবং কৈবর্ত্তমুক্তক এই সকল কানীয়ক কাঠের কাণের সহিত পেষণ করিয়া শরীরে লেপন করিংল দাহ নষ্ট হয়।

বালা, পদ্মকার্চ, বেণারমূল, রক্তচন্দন এবং পদ্ম পেষণ করিয়া জলের সহিত মিলিত করিবে, পরে ঐ জল দারা এক ডোণী পূর্ণ করিয়া তাহাতে অবগাহন করিলে দাহরোগ নষ্ট হয়।

প্রক্টিত প্রসম্বিত বাপী, জল্মন্ত গৃহ (কোয়ানের ঘর)
এবং চলনচর্চিতালী কামিনী, এই সকলে দাহ জ্বল দীনতা
দ্র হয়। প্রনিমধজল, চিনি মিপ্রিত জ্বল, চিনি মিপ্রিত
হ্য ও ইক্রসু দেবন করিলে দাহরোগ বিনষ্ট হয়।

রক্তচন্দন, ক্ষেত্রপাপ্ড়া, বেণামূল, বালা, মুথা, পল্মনূল, পল্মনূণাল, মৌরি, ধনিয়া, পল্মকাষ্ঠ এবং আমলকী এই সকল দ্রব্য দিয়া অর্দ্ধাবশিষ্ট কাথ প্রস্তুত করিয়া শীতল হইলে মধু মিশ্রিত করিয়া পান করিবে, ইহাতে অতিশর প্রবল্ দাহও নিবারিত হয়।

তিলতৈল /৪ সের ৬৪ সের ক্ঁ। জির সহিত মৃত্ অ্যার উত্তাপে পাক করিয়া ইহা শরীরে মর্দন করিলে দাহ্জ্রর ° ভাল হয়। (ভাবঞাকাশ দাহাধিকার)

পান षश्च उँक्छ। भिखत्रक कर्ज्क त्रक्षि हरेश। चक् ष्मान्त्र कत्रिया (पात्रजत नार क्याय। এक्षण श्रःन भिख्यश्च मार्ट्स नगाम श्वीजिविधान कृतिर्द। न मम्क्षिणानी व्यक्तित्र এইक्षण नार रहेरन जन्मनर्गण, निनिर्द्यापक, नीजनसन, रकामन भया, कामिनीमः स्थानि हिज्कत।

পিতজন্য দাহ উপাহত হইলে পিতজ্বরের নাায় প্রতি-বিধান করিতে হইবে। তৃফার্ত ইয়া পান না করিলে লগীয় রস ধাতু কীণ হইয়া তেক: উথিত হয়, তৎকর্ত্তক দেহের অন্তর্বাহে দাহ উপস্থিত হইয়া গল, তালু, ওঠ ও জিহবা বড় শুক হয় ও রোগী কাঁপিতে থাকে। এরপ ক্লে

তেজের শাস্তি করিয়া জলীর ধাড়ুর বুদ্ধি করিবে। শর্করা সহযোগে প্রচ্র পরিমাণে শীতলজল, ইপুরুস ও মছ প্রদান করিলে ইছার প্রতীকার হয়। কোঠদেশ রক্তপূর্ণ হইলে অন্তর্দাহ উপস্থিত হয়। ধাড়ুক্ম জন্ম দাহ উপস্থিত হইলে মৃত্র্ব ও তৃষ্ণা জনো, ক্ষরক্ষীণ'হয়, ক্রেয়াশক্তিরহিত ও শরীর অবসর হয়। সে হলে রক্তপিতের নায় প্রক্রিয়া, সিল্প এবং বায়ুশান্তিকর ক্রিয়া সকল হিতকয়। অনাহায়, শোক প্রভৃতি অনেক কারণে অন্তর্দাহ জন্ম; অভীট বিষয় প্রাপ্তি হয় শান্তি হয়। মর্মান্তন অভিযাত জন্ম যে দাহ জনো, তাহা অনাধ্য। বাহিরে শীতল ও অন্তরে দাহ থাকিলে তাহা অনাধ্য। (স্ক্লেড)।

महिक ( वि ) महिंड मन-बृन्। ) महिक्छी।

"ক্ষেত্রবেশ্বনপ্রামবিবীতখলদাহকাঃ।" ( বাজ্ঞ । ২।২৮৫ )

(পুং) ২ চিত্রক বৃশা। ৩ রক্তচিত্রক। ৪ অগি।
দাহকার্চ্চ (ক্লী) দাহায় যৎকাঠং। দাহাগুক, অগুক্চন্দন।
দাহত্ম (ক্লী) দাহং হস্তি হন-টক্। দেহদাহনাশক ঔষধাদি।
[দাহ দেধ।]

দাহজ্র (পু:) দাহপ্রধানোজর:। গালজালাযুক্ত জাররোগ।
প্র্থিত জলের সহিত বৃশ্চিকম্ল পান করিলে এই জার প্রশমিত হয়।

"পীতং বৃশ্চিকমূলস্ক পর্যাধিতজ্ঞলেন বৈ। . সার্দ্ধঃ বিনাশরেৎ দাহজ্বরঞ্চ প্রমেশ্ব ॥" (গরুড়পু॰ ১৯৩ জঃ)

[ ष्वत (पथ । ]

দাহন (স্ত্রী) দহ-পিচ্ ভাবে সূট্। ওলীকরণের নিমিত্ত প্রেরণ। দাহকরান, পোড়ান।

দাহনাগুরুঁ (রী) দাহনত দাহনার অগুরু। দাহাগুরু নামক গন্ধজ্বাভেদ। (রাজ্নি )

দৃশ্হময় ( জি ) দাহেন প্রচুরঃ দাহ ময়ট্। দাহপ্রধান জরাদি,
বে জরাদিতে প্রচুর দাহ,উপস্থিত হয় ।

দাহসর (পুং) দাহার্থং প্রেয়তে গম্যতেহিন্ ক-জ্প।
শান, শ্বদাহ স্থান।

দাহত্রণ (কুী) শহৈ। ছিয়াত হনেন হ-লা্ট ণিচ্কওরি লাকা। বীরণমূল, বেণার মূল। ইহা দাহনাশক।

দাহাগুরু (ক্লী) দাধার যদগুরু। স্থগদ্ধি গদ্ধজ্বা বিশেষ;
প্র্যায়—দাধনাগুরু, দাধকার্চ, ধ্পাগুরু, ভৈলাগুরু, পুর, বনবল্লভ। ইহার গুণ—কুটু, উষণ, কেশবর্দ্ধন, বর্ণপ্রসাধক, কেশদোষ বিনইকারক, সর্বাদা সৌগদ্ধবিত্তারকারী। (রাজনিং)

माहिन् (बि) महिंछ गर-निन। महिन् महिन्छ। माहिकांमाख्डि (बी) महुरू-बियाः छीन्। भड हेन् महन कतिवात मख्नि।

দাত্ক ( অ ) पर-वाहनकाः উকন্। पाहक। "নাস্যাযিদাহকো ভবতীত বিজ্ঞানতে।" ( আয়ুখ গৃ^ই বাচাঠে, দাহ্য ( অ ) पर কর্মণি গাং। > परনীয়, দক্ষ্য, দাহার্ দহনযোগ্য।

"অক্টেল্যাইয়মলাফোমক্লেছাইশোষ্য এবচ।"(গাডা ২ৰ:)
দিউ (বীপ) পশ্চিম ভারতে পর্কু গীজাধিকত একটি হাণ।
আকা ২০° ৪০ ২০ ত উ: এবং দ্রাঘি ৭১ ২ ২ ৩০ পূ:।
কাঠিয়াবাড়ের দক্ষিণসীমান্ত এক বিত্তীর্ণ বাঁড়িয় পর পারে
এই বীপ অবস্থিত। ইহার পূর্বপশ্চিমে দৈর্ঘ্য ৭ মাইন ও
উত্তরদক্ষিণে ২ মাইল মাত্র। উত্তরসীমান্ত বালে নামার
লেলেডিনি ও ক্রে নৌকা যাভায়াত করে, এই বাঁডি
থাকায় গুজনাট্ হুইতে এই বীপ পৃথক্ হইয়া পড়িয়ছে।
দক্ষিণপার্ঘে বালুপাধরের পাহাড় উঠিয়াছে, ভাহারই পাদ
দেশে স্থাতীর সমুদ্র জল প্রবাহিত হুইডেছে।

এই শীপের পাহাড় গুলি ১০০ কিটের অধিক উচ্চ নয়। শীপের নানাস্থানে নারিকেল বাগান দৃষ্ট হয়। এখানে ছোট হইলেও উত্তম বন্দর আছে; তথায় ২ বাঁও ফলে ফাহাজ নজায় করিয়া থাকিতে পারে।

এথানকার জলবায়ু শুক ও উষ্ণ, জ্বমি অনুর্বার, ভাগ জল তুর্গভ। কৃষিকর্মেরও ডেমন আয়োজন নাই। উংপ্র জব্যের মুখ্যে গম, কাহ্নি, বাজরা, নারিকেল ও আন্রাধি ফল পাওয়া যায়। লোকসংখ্যা প্রায় সাত হাজ্যি।

ছাঁপের পূর্ব্বকোণে দিউন্গর অবস্থিত। ইহার মধ্যে ছর্গ আছে, নববলার হইতে তাহা প্রায় ৫ মাইল দ্রে হইবে। এক সময় এই নগর বাণিজ্ঞা ব্যবসামে বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ছিল, তৎকালে এথানে প্রায় ৫০০০ লোহকর বসবাস ছিল। এখন সেই পূর্ব্বসমৃদ্ধির কিছুই নাই। বেশীদিনের কথা নর, মোজান্বিক ও ভারতের নানাম্থানের সহিত এখানকার বাণিজ্ঞা চল্লিত। নগরেব অনেক গৃহত্ত্বের এক একটা বৃহৎ জলকুও আছে। স্বীর

পৃথ্বে এই নগরে অনেক অ্নর ও বৃহৎ অটানিকা
ছিল, এখন ভাহার অভি অরই আছে। তন্মগে টে
মাত্রিজ গির্জা (এখানে জেস্ট্রগণ ৬০০ খুটাকে বিব
বিভালন অপন করেন) উরেখ্যেশ্য। সেট্ডানিগ্
আশ্রম (এখন সৈনিক হাঁসপাভাল), সেটজন নাম্ব

গোরন্থান প্রভৃতির ভ্রাবন্ধা। এখানকার টাক্সালে প্রের সকলপ্রকার মুদ্রা প্রাক্তত হইত, এখন আর ভেমন হর না। এ ছাড়া পর্ত্ত্তীক গবর্ণরের প্রাসাদ, কারাগার ও বিগ্লালয় আছে।

এখন ১০টা হিল্পেবালয় ও ২টা মুসলমান মসুজিদ্
দৃষ্ট হয়। পর্কু গাঁজাগমনের পূর্বে এখানে কএকটা হিল্পুভীর্থ ও বৃহৎ দেবমন্দির ছিল, পর্কু গীজেরা সেই সকল
নাই করে।

দিউ নগর ছাড়া এই দ্বীপে তুনধানি গ্রাম আছে,— উত্তরাংশে বচবারা, দক্ষিণে নগবা ও পশ্চিমে মোনক-বারা। শেষোক্ত হই গ্রামে কেলা আছে।

বজ্ঞ বয়ন ও বজ্ঞ রং করাই এখানকার লোকের প্রধান উপজীবিকা। এখানকার জিনিষ বিদেশে খুব আদুত্ত ইয়া থাকে।
অধিবাসিগণের অনেকেই মংস্যজীবি হইয়া পড়িয়াছে।
বার্ষিক প্রায় ৪০০০০ টাকা রাজস্থ অন্তানায় হয়।

আরব ও পারস্থোপদাগরে বাণিজ্যের অতি স্থবিধা হইবে ভাবিয়া পর্ত্ত্তীজেরা এই স্থান আক্রেমণ করেন। কিন্ত প্রথমে তাহাদের চে**টা ব্যর্থ হই**য়াছিল। মোগল_ত স্থাট্ ছ্মায়ূন্ যে সময় গুজরাটাধিপতি বাহাছর শাহকে আক্রমণ করেন, সেই সময় (১৫০৫ খুটাবেদ) বাছাত্র শাহ পর্জুগীজদিগের সহিত সন্ধি করিয়া এই দ্বীপে ছর্গ নির্মাণ করিতে আদেশ করেন। ১৫৩৬ খৃষ্টাব্দে উভয় পক্ষে ষ্ড্-যর চলিতেছিল। ঘটনাক্রমে (১৫৩৭ খৃ: অকে) পর্জুগীজ জাহাজ হইতে প্রত্যাগমনকালে গুজরাটাধিপত্তি নিহত হন। এই বর্ষে রাহাছরের ভাতৃপুত্র (৩য়) মহমদ পর্ত্তুগীঞ্জ তুর্গ আক্রমণ করেন। কিন্তু তাঁহার উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় নাই। ১৫৪৫ প্টাব্দে মহম্মদ আবার একবার আক্রমণ করেন। এবার ডম্জোঁয়াও ডি-কাষ্ট্রো প্রভূত সৈঞ্বল লইয়া দীলে উপ-ষ্ঠিত হইয়া মুসলমান সৈঞ্চলিগকে পরাজুয় করিয়া বীপ-বাসী পর্ত্গীঞ্জদিগের রক্ষাবিধান করেন। কাঞ্জোর 'বীরত্বে ^{শমন্ত} দীপ চিরতরে পর্ত্তীঞ্চিগের অধিকারভ্ক হইল। ^{১৬৭}০ খুষ্টাব্দে মস্কট হইতে কতকগুলি সশস্ত্রী শালিয়া দ্বীপ আক্রমণ করে ও লুটপাঠ করিয়া চলিয়া योत्र । ज्वलाद्य च्यांत्र टकान रशानमान इत्र नाहे ।

বর্তমান ছুর্গটী মুদ্রদান অব্রোধের পর ডিকাষ্ট্রো
কর্ত্ক নিশ্বিত হয়। ইহার সংস্থান স্থান, গঠন স্থানার,
অনেকগুলি পিত্রকার কামান বারা স্থরক্ষিত। সেতৃপার
ইইয়া তোরণবার দিয়া এই ছুর্গে প্রবেশ করিতে হয়।
ভোরণবারে পর্কুরীক ভাষার খোদিত, লিপি আছে।

এথানকার গবর্ণর ফৌজদারী ও দাওরানী উভর শাসন বিভাগের কর্তা। ভিনি গোয়ার গ্রুপরক্ষেনারলের অধীন। पि ওদোরাস্, বিকিউলাস্ ( Diodorous, Siculus ) একজন প্ৰসিদ্ধ গ্ৰীক্ ঐতিহাসিক। ইনি দিসিলী দীপে আজিরিয়াম্ নামক স্থানে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার লিখিত পৃস্তক ব্যতীত অক্ত কোনরূপে তাঁহার আথায়িকা জ্বানা যায় নাই। তিনি জ্লিয়াস্ও অগ্ঠুস্ সিঁজারের সমকালে বিভয়ান ছিলেন। এসিয়া ও য়্রোপের নানা ছানে পরিভ্রমণ এবং রোমনগরে বহুকাল বাস করিয়া তত্তৎ স্থানের প্রাচীন ও তংকালীন ঐতিহাসিক বিবরণ সংগ্রহ করেন। এই সমস্ত সংগৃহীত বিবরণ হইতে তিনি ত্রিশবংসর পরিশ্রম করিয়া চলিশ পণ্ডে সম্পূৰ্ণ 'বিব্লিওণেকা' (Bibliotheca) অর্থাৎ পুন্তকাগার নামক এক প্রকাওঁ ইতিহাস রচনা করেন। ইহার প্রথম ৬ থাঙে ট্রোজান্ যুদ্ধের পূর্বে পর্যন্ত গ্রীদ ও অভাভ দেশীয় দেবদেবীবিষয়ক আখ্যায়ুকাসমূহ বর্ণনা করেন। তং-পরের একাদশ থণ্ডে ১১৮৪ খৃষ্ট পূর্ব্বান্দ হইতে আলেকদান্দারের সময় প্যাঁত ইতিহাস লিখিত আছে। অবশিষ্ট ত্রয়োবিংশ খণ্ডে ৬০ খুষ্ট পূর্ব্বান্ধ পর্যান্ত যাবভীন্ন, ঘটনা বর্ণিত। এই চন্বারিংশ পণ্ডাত্মক বিরাট ইতিহাদের অধিকাংশই কালক্রমে লুণ্ড হই-য়াছে, এখন কেবল প্রথম ৫ পাচখণ্ড এবং একাদশ হইতে বিংশ পর্যান্ত দশ খণ্ড এই পনর থণ্ড সম্পূর্ণ পাওয়া যায়। ৫ম হইতে ১০ম খণ্ড একবারেই লুপ্ত হইয়াছে, অবশিষ্ঠ ধত সকলের নানা অংশ স্থানে স্থানে বাহির হইয়াছে।

দিওদোরাসের ইতিহাস হইতে প্রাচীনকাথের প্রভৃত বিবরণ জানিতে পারা নায়। সাধারণতঃ তাঁহার রচনা কলনাচাত্র্য্য ও অতিরঞ্জনদোষবর্জিত এবং সরল ও প্রসাদ জ্বাসম্পান, কিন্তু তাঁহার তাদৃশ প্রথর মেধাশক্তি ছিল বলিয়া বোধ হয় না। তাঁহার ইতিহাসে স্পৃত্রলা নাই। তিনি যে সকল বিবরণ শুনিমা অথবা অশুনা ঐতিহাসিকের নিকট প্রাপ্ত ইইয়াছেন, সে সকলের সত্যাসত্য নির্দারণে তাদৃশ বিচারশক্তি প্রদর্শন করিতে পারেন নাই। তাহা হইলেও তিনি এমন বহু বিষয় গিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন, যাহা অন্যত্র কোথাও পাওয়া যায় না। কিন্তু হুংবের বিষয় তাঁহার প্রকের সর্বাপেক্ষা প্রয়োজনীয় থওগুলিই লুপ্ত হইয়া গিয়াছে। ঐ সকল থও পাকিলে নি:সন্দেহে অতীতকালের নানা তর্ব, যাহা এখন সন্দেহের ঘোর অন্ধকারে বিলীন হইয়া রহিয়াছে, প্রকাশ হইয়া পড়িজ্।

দিক্ (আরবী) ত্যক করা, বিরক্ত করা। (সং) দিক্। [দিশ্দেধ।] দিক্ক (পুং) দিকু কারতে কৈ-ক। বিংশভিবর্ষবয়স্ক করি-শাবক, করভ। (শব্দর*)

দিক্ক সা ( জী ) দিশ এব কভা: । দিক্রপ কভা। দিশ কভা এব। দিক্ সকলই কভা। দিক্ সকল একার কভারণে উৎপদ্ধ হইয়াছিল, তাহার বিষয় বরাহপুরাণে এইরপ লিখিত আছে—

ত্রন্ধা যে সময়ে প্রথম এই জগৎ স্পষ্ট করেন, সেই সময় একদিন চিন্তা করিতে লাগিলেন কে এই জগৎ সৃষ্টি করিবে ? এই প্রকারে অতিশয় চিস্তিত হইলে তাহার কর্ণ হইতে মহাপ্রভাবশালিনী দশটী কন্তা আবিভূতি হইল। তাহাদের মধ্যে পূর্বা, পশ্চিমা, প্রতীচী ও উত্তরা এই চারি কন্সা পরমশোভনা এবং অতিশ্র গম্ভীরা, তাহারা স্কলে वक्षारक ज्याम कतियां करिल, रह रनवरनव काश्या ! আমাদিগকে অবকাশ প্রদান করুন্, যেথানে আমরা ভর্তার সহিত স্বথে অবস্থান করিতেঁ পারি। ব্রহ্মা ইহা ভূনিয়া কহিলেন, তোমাদের অভিলাষ সিদ্ধ হউক, এই ব্রহ্মাণ্ড বছবিস্থত, ইহার অস্তভাগে তোমরা ইক্টার্যুদারে বাদ কর, বিশ্ব করিবার প্রায়েজন নাই। তোমাদের জ্বন্ত তশ্বী ও নিম্পাপ ভর্জিগকে স্টে করিব, তাহাদের महिल ऋष्य व्यवद्यांन कतिरत। এथन यिमिरक याहात्र অভিকৃচি হয়, সেই দিকে গমন কর। এইরূপে এদ্ধার আদেশে অভিকৃতি অমুসারে এক এক দিকে এক জন গমন করিল। ব্রহ্মা এইরণে ভাহাদিগকে বিদায় " করিয়া মহাবলশালী লোকপালদিগকে শীঘ্র সৃষ্টি করিলেন, পরে তিনি লোকপালদিগকে দেখিয়া সেই দশটী কন্তাকে আহ্বান করিলেন। তাহারা উপস্থিত হইলে লোকপিতামহ একা লোকপালদিগের সহিত ইহাদের বিবাহ দিলেন । ইব্ৰু, অগ্নি, যম, নিশ্বতি, বৰুণ, ৰায়ু, ধনদ ও ঈশান এই অষ্টদিক্পালকে ঐ আট কলা প্রদান করিলেন. বাবস্থিত, করিলেন। • ইহার পর 'হইতে এই দেবীগণ ইক্রাদির সহিত কীর্ত্তিত হইয়া থাকেন। (বরাহপু•)

দিকর (পুং) দিশং আদেশং করোতি বা দিশং স্ত্রীমুখদংশনং করোতি কু-দ্র্। ১ যুবা। ২ মহাদেব। (কালিকাপুং ৮২ আঃ) দিকর বাসিনী (স্ত্রী) দিকরে শিবে বসতীতি বস-ণিনি, ভীপ্। দেবীবিশেষ, দিকর অর্থে মহাদেব, যিনি তাহাতে অবস্থান করেন, তাহার নাম দিকরবাসিনী।

"এবং দিকরবাসিন্তা: কথিত: পূর্ব্ববং ক্রম:। মংশ্রমা নাওভং ফিঞানাপ্রোতি শ্রবণে ব্রভ:॥ দিকরত্বনণঃ প্রোক্ততথা শস্ত্রু দিকর:। তিমিলধ্যবিতা দেবী তত্মাদ্দিকরবাসিনী॥"

(কালিকাপু ৮২ মঃ)

দিক্তরিকা (ত্রী) দিক্তরিণঃ দিগ্গজন্ত সকাশাৎ কারতে শেভিছে,
ইতি দিক্তরিন্ কৈ ক, তভপ্তাপ্। নদীবিশেষ; নাটক পর্বঙে
মননস্সরোব্যের ন্তায় একটা সরোব্য আছে, মহাদেব হুর্গার
সহিত এই সরোব্যে প্রায় জল্জীড়া করেন। ইহার পন্তাং
পূর্বে ও মধ্যভাগ হইতে তিনটা নদী প্রবাহিত হইয়াছে,
ইহার পশ্চিমভাগে • প্রবাহিত নদীয় নাম শিক্তরিকা,
দিগ্গজ্পিগের ক্ষেত্র হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, এইজন্ত ইহার
নাম দিক্তরিকা হইয়াছে। • (কালিকাপু ৮২ মঃ) ইহার
বর্ত্তমান নাম দিক্রাই। [কামরূপ দেথ।] দিক্ ছয়
দংশনং করিকা নথকত্রেধা চ যন্তাঃ। ২ যুবতী।

দিকরিন্ (পুং) দিকু স্থিতঃ করী। ঐরাবত প্রভৃতি দিগ্গদ,
দিক্হতী।

"ঐরাবত: পৃগুরীকো বামন: কুমুদোইঞ্জন:। পুষ্পদন্ত: দার্কভৌম: স্প্রতীকশ্চ দিগ্গলা:॥" ( অমর )

ঐরাবত, পুগুরীক, বামন, কুমুদ, অঞ্জন, পুষ্ণাদত্ত, দার্ক। ভৌম ও স্থপ্রতীক এই ৮টী হস্তী দিগ্গল নামে খ্যাত। স্তিরাং ত্রীপ্।

দিকরী (স্ত্রী) দিশ: বর্জুলাকারা দস্তক্ষতরেথা করী চনধক্ষ বর্ণা চ যক্ষা: সংজ্ঞাতাৎ ন কপ্, বা দিকর: যুবা, ভাষে দ্রীষ্। যুবতী স্ত্রী।

দিকান্তা (ত্রী) দিশা এব কান্তা:। দিক্তা।
দিক্কামিনী (ত্রী) দিশ এব কামিত:। দিক্তপত্রী।
দিক্মার (তাং) কৈন মতে ভবনাধিণতি। (হেম)
দিক্চক্র (ক্রী) দিগেব চক্রং। চক্রবাল।
দিক্তট (পুং) দিক্চক্র।

निक्नात ( शातृशी ) वित्रक्तिबनक । निक्नाती ( शातृशी ) वित्रक्ति ।

দিক্পৃতি (পুং) দিশাং পতিঃ।' দিগধীখর, পূর্বাদি অটা দিকের অধিণতি, শুক্র অগ্রিকোণের, কুল 'দক্ষিণ্দিকর,

"অন্তি নাটকলৈলে তু সরো মানসসন্ধিতং।

যক্র সার্দ্ধং শৈলপুত্রা জলগুলিং। সদা হর।

কুলতে নরশার্দ্ধ্ ল বর্ণপদ্ধরশোভিতে।

তক্ত পশ্চামধাপুর্বভাগেভ্যক্ত সরিভ্রং।

অবতীর্ণং প্রধাত্যের দক্ষিণং সাগরং প্রতি।

তক্ত পশ্চিমভাগে তু নদী দিকরিকাহ্বর।।

দিগ্পলক্ষেত্রসংজাতা তেন দিক্রিকা স্থতা।" ( কালিকাপু ৮২ জঃ)

রাছ নৈশ্বতকোণের, শনি পশ্চিমদিকের, চন্দ্র বায়ুকোণের,
ব্ধ উত্তরদিকের ও বৃহস্পতি ঈশীনকোণের অধিপতি।
শুর্যা: শুক্র: ক্ষমাপুত্র: সৈংহিকেয়: শনি: শশী।
নামান্ত্রিদশমন্ত্রী চ প্রাচ্যাদিদিগ্ধীখরা: ৪" (জ্যোভিন্তক্ত্র)
২ দিক্সম্হের পতি ইক্রাদি। [দিক্তা দেখ।]
দিক্পাল প্র: ) দিশাং পাল্যভি পালি অণ্। প্রাদিক্রীমে
দশ দিক্ পালনকর্তা। প্রদিকে ইক্র, অ্যাকোণে
অয়ি, দক্ষিণদিকে যম, নৈশ্বিকোণে নির্মাৱ, পশ্চিমদিকে
বরুণ, বায়ুকোণে মুরুৎ, উত্তর্গদিকে ক্বের, ঈশানকোণে
ঈশ, উর্জাদকে ব্রহ্মা ও অধোদিকে অনন্ত অবস্থান করিয়া

দিকবিভাগ ( পুং ) দিক্।

দিক্শূল (ক্লী) দিশি দিগ্তেদে গতে শ্লমিব, প্রাদিদিকে গমন বিষয়ে নিষিদ্ধ বারভেদ, কোন দিকে যাত্রা করিতে হইলে দিক্শূল পরিত্যাগ করিয়া যাইতে হয়। শুক্র এবং রবিবারে পশ্চিমদিকে, মঙ্গল ও ব্ধবারে উত্তর দিকে, মোম এবং শনিবারে প্রাদিকে এবং বৃহস্পতিবারে দক্ষিণে শ্ল হয়, অর্থাৎ যে বারে যে দিকে শ্ল সেই বারে সেই দিকে গমন করিতে নাই। যে মহয়ে বিভলাভাশায় দিক্শূল লজ্মন করিয়া গমন করে, ইক্রভুল্য প্রভাবশালী হইলেও তাহার মনোর্থ সিদ্ধ হয় না।

"ভজাদিতাদিনে ন বাক্লণিশং ন জ্ঞে কুজে চোত্তরাং। মন্দেলোশ্চ দিনে ন শক্রক কুভং যাম্যাং গুরৌ ন ব্রন্তেং॥ শ্লানিতি বিশভ্যা যাস্তি মন্থলা যে বিত্তলাভাশয়া।' ভ্রাশাং প্নৱাপত্স্তি যদি তে শক্রেণ তুল্যাঅপি॥"

(জােুতি:দারদংগ্রহ)

কাহারও মতে, বুধ ও বৃহস্পতি বারে দক্ষিণে, স্থরাচার্য্য অর্থাৎ বৃহস্পতিবারে ঈশান, অগ্নি, নৈঝ্তি ও বায়ুকোণে এবং রবি ও শুক্রবারে পশ্চিমদিকে শ্ল হয়।

"বৌধে শুরৌ দকিণাং।
সিশানে জলনে চৈব নৈর্ম তে মাকুতে তথা।
ন গস্তব্যং স্থাচার্যো প্রতীচ্যাং রবিশুক্রমোঃ ॥" ( স্থববাধ )
দিক্স্পারী (ত্রী) দিশু এব স্কর্ম্যা। দিক্রপ স্করী, দিক্ক্সা।
দিক্সাধন (ত্রী) দিশু সাধ্যন্তে জ্ঞানার্থং অনেন। দিক্জানসাধন উপায়ভেদ। বহু প্রাচীনকাল। হইতে ভারতীর
জ্যোতির্সিদ্যাণ অতি স্ক্রমণে দিক্ সকল নির্ণর করিবার উপায়
বিন্যা গিরাছেন। সংস্কৃত জ্যোতিঃসিদ্ধান্তশালের যন্ত্রাধারে
বিষ্ঠি ও শক্ক্ প্রভৃতি দার্য দিক্নির্নপণের অতি স্ক্র উপার বর্ণিত
আছে। স্থাতঃ বে দিকে স্ব্রোদ্য হর, তাহাই প্র্কি, আরু

যে দিকে স্থ্য অন্ত যায়, তাহাই পশ্চিম দিক্। এইক্লপে পূর্ব পশ্চিমদিক্ অবধারিত হইলে মংভাচিক্ * ছারা উত্তর •ও দক্ষিণ দিক্ সাধন করিতে হয়। আর সমগ্র ভূমগুলের উত্তর-ভাগে «भक्त । উनग्रकाल स्र्यांत निरक मूथ कतिया দাঁড়াইলে সমুথে প্রাক্ বা পূর্ব দিক্, পশ্চাতে পশ্চিম, দক্ষিণে দক্ষিণ এবং বামভাগে উত্তর দিক্ হয় ি কিন্তু স্ক্ষ-রূপে ধরিতে গেলে স্থ্য প্রতিদিন পূর্ব্বদিকে উদয় ও পশ্চিমে অস্ত হয় না। ৫ বংসয়ে কেবল ছইদিন মাত্র অর্থাৎ বিধুব সংক্রাস্ত ছইদিন কুৰ্য্য প্রায় ঠিক পূর্বের উদয় হইয়া পশ্চিমে অন্ত যায়। যাহা হউক, অভা সময়েও স্থ্য হারা সুক্ষরেপে দিক্ নির্ণয় হইতে পারে। প্রাচীন স্থ্যসিদ্ধান্ত গ্রন্থে ইহার প্রণালী নিম্নলিথিত ক্লপ বর্ণিত আছে। যথা---স্লিল ৰারা সংশোধিত কোন সমতল শিলাতলে অথবা কোন প্রকার দৃঢ় প্রলেপযুক্ত কোন সমতল ভূমে ইচ্ছাত্রপ অঙ্গুলি-ব্যাসার্দ্ধ লইয়া একটা সম্বৃত্ত অভিত কর। এই বৃত্তের ক্ষেদ্রখনে নির্দিষ্ট ধাদশাঙ্গুলপরিমিত একটা শঙ্কু স্থাপন কর; তাহার পর উহায় ছায়াগ্র পূর্বাহ্ন ও অপরাহে যে যে হানে বৃত্তের ঠিক পরিধির উপর আদিয়া পড়ে, ঐ इहे शान इहेंगे विम् हिल्डि कता थे इहेंगे विमूर्क পূর্ব ও পশ্চিম বিন্দুবলা যায়, অভঃপর ইহাদের ছইটীকে পৃথক্ পৃথক্ কেন্দ্র করিয়া তিমিচিহ্ন ছারা মধ্যহলে উত্তর দক্ষিণ রেথা অ্কিত কর। এইরূপে উত্তরদক্ষিণ রেথার মধান্তলে তিমিচিক্ বারা পূর্বপশ্চিম রেথাও অন্ধিত্ব কর। এই ছইটা রেখা বারা উত্তর দকিণ ও পূর্বপশ্চিম দিক্ ক্ল্ম-ক্রপে সাধিত হঁইলে পুনরায় মংস্ত চিহ্নরারা উক্তরূপে বিদিক অর্থাৎ মধ্যবন্তী দিক্ সকল নিরূপিত হইবে ‡।

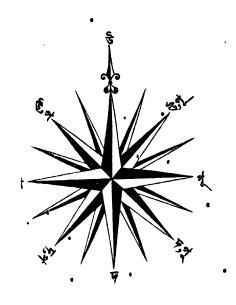
- * পূর্বে ও পশ্চিমে ছইটা বিন্দু লইয়া ঐ ছইটা বিন্দুকে কেন্দ্র ও উহাদের পরশ্বর দ্রতের সমান ব্যাসার্দ্ধ লইয়া ছইটা বৃত্ত অভিত করিলে পরিধিছরের ছেদজনিত যে অসম্পন্ন মংভাকার চিহ্ন উৎপন্ন হয়, ইহাট মংস্তিহিল। তিমি প্রভৃতি ইহার অপর নামও আছে। ঐ পরিধিছয়ের ছেদ বিন্দুয় যোগ করিলে সংযোজক রেখা উত্তরদক্ষিণদিক্ স্থৃচিত করিবে।
  - † "যনোদিতোহকঃ কিল তত্র পূর্বা,
    তত্রাপরা যত্র গতঃ প্রক্রিটাং।
    তত্মৎস্ততোহস্থে চ ততোহস্পিলানামুদক্সিতো মেন্দরিতি প্রসিদ্ধঃ।" (গোলাধ্যার)
  - "শিলাতলেংখুদংগুদ্ধে বজলেপেংপি বা সম্ব।

     তত্ত্ব শঙ্কুলেরিটে: সমং মওলমালিখেং ।

     তত্মধ্যে ছাপরেচছ্ছুং কলনাদ্বাদশাকুলং।

     তচ্ছারাথং স্প্শেক্ত বৃত্তে পুর্বেগিরার্ছরোঃ ।

নির্মিত গোলকোটার একদিকে ধাতুময়, আবরণ অপরদিক্
কাচ বারা আবৃত থাকে। ধাতুময় আবচণের ভিতর দিকে
দিক্-নির্দেশক রেথা বারা বিভক্ত কাগজের উপর চ্ছকত্টী
য়াপিত হয়। কাগজের উপর উত্তর দক্ষিণ পূর্ব পশ্চম এই
চারিটা প্রাথান দিক্ এবং ঈশ্গন অগ্নি নৈর্মাত বায়ু প্রভৃতি
চারিটা কোণ। ইহাদের মধ্যবর্তী দিক্ সকলও রেথাবারা
নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। এই রূপে সচরাচর ১৬ বা ৩২টা
দিক্ কম্পানে ব্যবহৃত হয়। উত্তর পূর্বে দক্ষিণ ও পশ্চিম
দিক্, প্রথমত: উ, পূ, দ ও প সক্ষেত বারা চিহ্নিত
ফরিয়া উহাদের সম্মিলনে, ফ্রের কৌশলে যাবতীর
মধ্যবর্তী কোণ স্ভিত হইয়া থাকে। যথা—উত্তরপ্রক্রেণ
ব্যাইতে উ পূ, দক্ষিণ পশ্চিম কোণ ব্যাইতে দ প
ইত্যাদি। উত্তর দিকে ক্রাগজফলকে সচরাচর পূলা বা
ভারা চিহ্ন অন্ধিত থাকে। তদ্বারা উত্তর দিক্ সহজেই
প্রভাক্ষ হয়।



•िं प्रवर्गन यश्च।

জরিপ প্রভৃতি কার্যো দিক্ নির্দেশের পরিবর্ত্তে উত্তর হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ত বৃত্তের পরিধি ৩৬০ সমান অংশে বিভক্ত থাকে। উত্তরের রেথায় ইহার শৃষ্ণ এবং তথা হইতে ক্রমাণ্ডত পশ্চিম দিকে একাদিক্রমে ৩৬০ পর্যান্ত আরু লিখিত থাকে। ঠিক পশ্চিমে ৯০, দক্ষিণে ১৮০, পূর্বের ২৭০ ইত্যাদি। স্থবিধার জন্ত কোন কেলান কম্পানে ঐ

থাকে, স্থতরাং ইহার কাগল স্চীর সহিত ঘুরিয়া • চিছিড ছান সর্বাদা উত্তর দিকেই দাঁড়ায়। কৌটার গাত্তে পরশার বিপরীত দিকে সংলগ্ন ছইটা চিত্তের ভিতর দিয়া দ্রছবছ উত্তর দিকের সহিত কতে কৌণিক দ্রে অব্যিত, তার্ম পঠিত হয়।

এখন চুমকস্চীর নিত্য ধর্মবারা ইহার এক আর নিয়তই উত্তর দিকে অব্দিত থাকে। [চুম্বক দেব:] স্তরাং কাগমের টেতরনিশ্জাপক চিহু স্চীর ৢ এ প্রারের नित्य जानित्न এकवादबहे नमछ निक्निनिष्टे इहेन। विद চুম্বকের কাঁটা সর্বত্ত ভৌগোলিক উত্তর অর্থাৎ বাম্যোত্ত রেথার সহিত ঠিক থাকে না, এমন কি একই স্থানে বিভিন্ন সমরে ইহার উত্তর প্রাস্ত ভৌগোলিক বা প্রকৃত উরু मित्कंत्र शृद्कं वा शिक्टाम (इलिया थाटक। देशांक पृश्कः অপস্তি (Declination of the needle) বলে। প্র দিকে কাঁটা হেলিলে উহাকে প্রাচ্যপক্তি ও পশ্চিমদিকে হেলিলে উহাকে প্রতীচ্যপস্থতি বলা ঘাইতে পারে পৃথিবীর প্রায় স্কল প্রধান স্থানেই অপস্তি প্রায় স্বরু ব্ছবিধ পরীক্ষা **ৰা**রা নির্দ্ধারিত হইয়াছে। কম্পাস ৰারা ^{টুর} निक् निक्र भन कतिए हरेटन এই देवसमा वान निम्ना नहेरा হয়। বান্তবিক এইরূপেই দিপদর্শন ধারা দিক্ নির্ছা^{রিছ} হইরা থাকে। সামাপ্ত পর্য্যবেক্ষণাদি বারা এই বণক্ষি অসনায়াদে বাহির করিয়া লওয়া যায়। পৃথিবীর ^{বাংকী} স্থানের চৌম্বকীয় অপস্তি-নির্দেশক স্থলর মানচিত্র গ্রহ হইয়াছে, প্রত্যেক নাবিক নিজ নিজ জাহালে ঐ মান^{চিন} वाथिया निकर्मन माहात्या निक् निक्रमन केविया नय।

তত্তিই প্রত্যেক কাহাজেই যে ত্রি পরিষাণ লোই বিলামান থাকে, উহা প্রায়ই অলাধিক চুম্বক ধর্ম প্রায়ই বার। জাহাজেই এই লোই কম্পাস যন্ত্রের জতি সারিছে বিধার পার্থিব চুম্বক-শক্তি সম্পূর্ণ কার্যাকারী হর না, বুরা কম্পাসের কাঁটার নির্দিষ্ট উত্তর দিকের জনেক ইত্তর বিশে ইইয়া থাকে। এই অপ্তরায় নিরাক্তরণ ক্লান্ত নাবিকাণ বই বিধ উপার অবলয়ন করে। জাহাজের জ্প্রভাৱিকাণ করে সন্ত্রিক বৃহৎ বৃহৎ লোইদেও হাপন করিলে লাহাজের জ্প্রভাৱিকা ক্লান্ত কাইবি বার । কথন কথন জাহাজের জ্প্রভাবিকাণ বহ পরিয়াল বিক্তে উচ্চে মাস্তমের উপরিভাগ্রে কম্পাস স্থাপন করিল আহাজের চুম্বকশক্তি ভ্রতানিবর্কন তত্ত্বর কার্যানী বিজ্ঞান করে। কর্তানিবর্কন তত্ত্বর কার্যানী বিশ্বেকা করে। কিন্তু জনেক সমন্ত্র এই স্কেল ইন্যার্টে

নিতৃলি দিক্ পাওয়া বায় না। প্রশান্ত মহাসাগরে স্থাপীর্থ জনহাত্রার সময় এইরূপ সামান্ত ত্বের জন্ত মহান্ অনিষ্ঠ ছাটতে পারে। নাবিকগণ তুথার আকাশন্ত কোন ভারকা প্রভৃত্তির প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া আহাজকে এক চক্র প্রাইয়া কল্পাদের কাঁটার গতি পরীক্ষা করে, ভদ্বারা আহাজের চ্বকশক্তিজনিত কাঁটার অপস্তির পরিমাণ বাহির হইয়া পড়ে। স্তরাং নাবিকগণ সেইরূপে কল্পাস দির্দিষ্ট দিক্ সংশোধন করিয়া অভিল্বিত দিকে গমন করিতে সমর্থ হয়। বলা বাহম্য কল্পাস্থারা বিশুদ্ধরপে দিক্ নির্দিষ্ট না হইলে উপলারের কথা দ্বে থাকুক, ইহা সমূহ বিপলেরই কারণ হইয়া উঠে।

ত্বতাগেও জারপ প্রভৃতি কার্য্যে কম্পানের ব্যবহার জাতিশয় উপকারী। ভূগতে ধনি এবং স্থড়সালৈ ধননে ইহার ব্যবহার সম্প্রধাত্তার ব্যবহার অপেকা কোন অংশেই হীন নহে। যেরপ কার্য্যের জ্বন্ত ব্যবহৃত হইতে পারে, দিক্ষনি ভাহার উপযোগী করিয়া নির্দ্মিত হয়। স্বতরাং ইহার আকার ও গঠনপ্রণালী বিভিন্নরূপ হইয়া থাকে। এক কার্য্যের উদ্দেশে নির্দ্মিত কম্পানে অপের কার্য্য স্থচারু সম্পন্ন হয় না। ২ অভিজ্ঞতা, বহুদর্শিতা।

দিগদাহ (পুং) দিশাং দাহ:। উৎপাত বিশেষ, আকাশের অম্বাভাবিক অগ্নিবৎ লোহিতবর্ণ, দিগ্দাহ উপস্থিত হইলে নানা প্রকার অভত হইয়া থাকে।

"দাহো দিশাং রাজভয়ায় পীতোদেশশু নাশায় হতাশবর্ণঃ।

বশ্চাঞ্চণঃ ভাদণসব্যবায়্থ: শশুভ নাশং স করেনিভ দৃষ্টঃ ॥"

( বৃহৎসং ৩১।১ )

দিগ্দাহ পীতবর্ণ দৃষ্ট হইলে রাজভঙ্কের কারণ ও অগ্নি
বর্ণ দৃষ্ট হইলে দেশ সকল বিনষ্ট হয়, এই সময় যদি দক্ষিণ
বায়ু অরুণবর্ণ হয়, তাহা হইলে শক্তসমূহ বিনষ্ট হয়। যে
দিগ্দাহে অতীব দীপ্তি এবং ক্রের ক্রায় ছায়া প্রকাশিত
হয়, এইরূপ দাহ রাজার মহাভয় ও শক্ত প্রকোপ ক্রনা
করে। পুর্কাদিকে দিগদাহ হইলে নৃপ ও ক্ষরিয়গণের,
অ্নিকোণে হইলে শিল্লী ও কুমারগণের, দক্ষিণে উত্তাপ্রক্র,
বৈশ্য, দৃত্যাণ, পুরুত্ এবং প্রমানগণের, পশ্চিমে শ্রেও
ক্রিনীবিগণের, বায়ুকোণে তুর্ক সহিও চৌরগুণের, উত্তরদিকে বিপ্রগণের, ঈশানকোণে পাষ্তী ও বণিকগণের
পীড়া হয়। যদি আকাশ প্রিকার হয়, নক্ষ্ম সকল
নির্দাণ হয় এবং প্রদক্ষিণভাবে বায়ু প্রবাহিত হয়, ভাহা
হইলে স্ববর্ণ দিগ্দাহে লোকসমূহ ও রাজার মঙ্কল
হইয়া থাকে। (য়হৎসং ৩১ আঃ)

দিশেবতা ( ত্রী ) দিশাং তন্মর্ব্যাদানাং দেবতা সাক্ষীভূতেব।
দিক্ সকলের মর্ব্যাদা ও সাক্ষীভূত দেবতা।
দিশ্ধ ( প্ং ) দিহেতে নিপাতে স্ম বিবাদিনা দিহ-জে। > বিবাক্ত
বাণ, বিব মিশ্রিত বাণ, পর্ব্যাদ্ধ— নিপ্তক। ২ স্নেহ। ও অ্যা।
৪ প্রবন্ধ। ( ত্রি ) ৫ নিপ্ত।

"সচন্দনোশীরমূণালদিয়ঃ রশাকারিনাগাদ্জানিবাসভ্যং।" (ভটি ৩২১)

দিগ্নগর, বর্জনান জেলাফ একটা গ্রাম। জফাণ ২৩° ২২´ উ: এবং জাবি॰ ৮৭° ৪৫´ পূ:। এক সমরে এথানে জনেক বর্জিঞ্লোকের বাস ছিল। এখন এথানে শভাভ চিনির হাট হয়। এথানকার শিক্তণ কাঁসার বাসন স্থার।

দিখল (রী) দিঙ্নিমিতঃ গ্রহাণাং বলং। লগাদিতে বিভ গ্রহগণের বল।

"লগে সৌমাস্থরাচার্ব্যে কুজাকে লিখন তথা।

দ্যুনে সৌরশ্চতুর্থে তু সিতেন্দ্ দিখলাবিতে।।" (জ্যোতিস্তত্ত্ব)

মঙ্গণ ও রবি লগের দশম স্থানে থাকিলে দকিণদিখলী,
শনি লগের সপ্তম স্থানে থাকিলে পশ্চিম দিখলী এবং শুক্র ও
চক্র লগের চতুর্থ স্থানে থাকিলে উত্তর দিখলী হয়। ইহা

ছারা দিক্ নির্গয় ও নানা প্রকার গণনা হইয়া থাকে ।

দিথলিন্ (পুং) দিগ্বলং অন্তান্ত ইনি। ১ দিঙ্নিমিন্ত বলযুক্ত গৃহ।২ তাদৃশ রাশি ভেদ।

দিখদন (ক্রী) দিগ্ভেদে বদনং যক্ত। পৃর্কাদি দিক্ ভেদাছ-সারে ঐ সকল দিকে বিত রাশিভেদ।

"নেষাভাত্তিভ্রমাৎ ক্লেরা: প্রাগাদি দিব্র্থাখনী।" (লোভিন্তর)
নেষরাশির পূর্ব্বদিকে, ব্যরাশির দক্ষিণে ও কর্কটের
উত্তরে মুধ, এই প্রকার যথাক্রমে সিংহাদিরও জানিতে হইবেন।
দির্গ্ভাগ (পুং) দিশাং ভাগ:। দিগ্বিভাগ, দিক্ সকলৈর বিভাগ।
দিগ্রস, বেরারের ব্ন জেলান্ত নগুর। অক্লান্তন্ত ভিঃ,
জাবিং ৭৭° ৪৫ পুং। কার্পাস বল্লের ব্যবসান্তরর জন্ত এই
হান বিখ্যাত।

দিথস্তা (পুং) দিক্রপং বল্তং বস্ত। ১ মহাদেব। ২ জৈনতেদ। (ত্রি) ০ লয়।

দিখারণ (পং) দিকু ফিতো বারণ:। গুরাবতাদি দিগ্গজ।
দিখাসস্ (পং) দিকুকুণং বাস: যক্ত। ১ মহাদেব। (ভারত
১৩।১৭।৪১) ২ জৈনভেদ। (ত্তি) ও লগ্ধ, উল্লা

দিখিজয় (পুং) দিশাং তৎস্নৃপলোকানাং বিজয়:। বিজয় বা যুদ্ধ দারা চতুর্দিক্ জয়করণ। যথা শঙ্করদিগ্বিজয়, পাশুব-দিগ্বিজয় ইত্যাদি।

ু দিখিজয়গঞ্জ, রাম্বরেনি জেলার অন্তর্গত একটা তহদীল বা

উপবিভাগ। ইহার মধ্যবর্ত্তী দিগিলয়গঞ্জ গ্রামে তহসীলদার ও 'পুলিস ইনম্পেক্টর থাকেন। এই গ্রামের নাম হইতেই তহসীলের নামকরণ হইয়াছে। এই তহসীল অক্ষা ২৬° ১৭ তি৽ ইইতে ২৬° ৩৬ উ: এবং জাঘি ৮১° ১ ৩ হইতে ৮১° ৩৭° পু: পর্যাক্ত বিভ্ত।

দিখিজায়ী (তি) দিগ্বিদের ইর্ন্। বিদ্যা বা বাছবল ধারা সকল দেশ জরকারক। যে দিক্ বিজয় করিয়াছে, যেমন দিখিজায়ী রাজা, অর্থাৎ যে রাজা নানাদেশ মুদ্ধে জয় করিয়া সেই সেই দেশে আপন আধিপত্য ছাপন করিয়াছেন। যেমন, দিগ্বিজায়ী পঞ্জিত অর্থাৎ যে পশুতি নানাদেশীয় পশুত্তমগুলীকে বিচারে পরাস্ত করিয়া সেই সেই স্থলে আপন পাশুত্তাখ্যাতি প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন।

দিখিদিক্ (ন্ত্রী) > সকল দিক্, অনিশীত দিক্, দিক্ ও দিকের
মধ্যবর্তী দিক্ অর্থাৎ সকল দিক্। (দেশজ) ২ গুরু লঘু,
হিত অহিত, ভার অর্জার বিবেচনার অভাব প্রদর্শনস্থলে
প্রযুক্ত হইরা থাকে, যথা তাহার দিগ্বিদিক্ জ্ঞান নাই।
দিখিদিক্স্থ (ত্রি) দিগ্বিদিক্ স্থা-ক। নানাদিকে স্থিত।
দিখিভাগ (পুং) দিশাং বিভাগ:। দিগ্ভাগ।
দিখিলোকন (ক্রী) দিশাং বিলোকন:। শৃশুদৃষ্টি।
দিগ্ভ্রম (পুং) দিশাং ভ্রম:। দিক্ ভূল।
দিক্ক (পুং) ম্টেটনকালে দিঙ্ ইতি ক্রপা কারতে শকারতে
কৈ-ক। উৎকুণ ডিম্ব, ছোট উকুন্, নিকি, ইহার ক্ষোটন
সময়ের ধিলঙ্গ এইরূপ শক্ষ হইয়া থাকে।

দিঙ্নক্ষত্র (ক্রী) দিশি দিগ্ভেদেন খিতং নৃক্জঃ। দিক্ ভেদে খিত নক্জা।

"কবিকান্তান্ত পূর্বাদে সপ্তসপ্তোদিতা: ক্রমাৎ।

যদিখাং যত নক্ষকং তত্ত তত্ত শুভং গৃহং॥" (স্থোতিতান্ত)

কবিকাদি করিয়া সাভটী নক্ষত্র পূর্বাদি দিকে উদিত

হয়, যাহায় নক্ষত্র যদিখা, অর্থাৎ যে দিকে হয়, সেই নক্ষত্রে

তাহার গৃহ শুভ হয়।

দিঙ্নাগ (পং) দিশি হিতো নাগ:। > দিগ্গজ।

"দিঙ্নাগানাং পথি পরিহরন স্থলহস্তাবলেপান্।" (মেঘদুত)

২ এক বিথাতি বৌদ্ধ নাগ্রকার। ইহার রচিত প্রমাণসমুচ্চর গ্রন্থ পাঠে বৌদ্ধমতের অনেক নিগৃত কথা জানিতে

পারা যার। মলিনাথ মেঘদুতের টাকার লিখিয়াছেন যে,

দিঙ্গাগ কালিদাসের একজন ঘোর প্রতিদ্বনী ছিলেন।

বাচস্পতিমিশ্র ইহার মত উদ্ভুত করিয়াছে। বল্লভদেবের

স্থভাবিতাবলীতে দিঙ্নাপের একটা কবিতা উদ্ভুত হইরাছে, কিন্ধ থৈ কবিতাটা মহাভারতে পাওয়া যার।

দিঙ্মগুল ( তি ) দিশাং, মগুলং। দিক্সমূছের মগুল দিক্চক্র, দিক্চক্রবাল।

দিঙ্মাতক (পৃং) দিশি ঝিতো মাতক:। দিগ্পজ।
দিঙ্মাত্র (ক্লী) দিশেব মাত্র । একদেশ। (শলাধিচিং)
দিঙ্মৃত (ত্রি) দিশি মৃত:। দিগ্লাভিষ্ক, দিঙ্নির্গ অসমর্থ, বাহার দিগ্লম জানিয়াছে।

দিঙ্মোহ (পুং) দিশি মোহ:। দিক্ ভ্রম।
দিণ্ডি (পুং) ডিভি পুষোদরাদিষাৎ সাধু:। বাজভেদ।
দিন্ডির (পুং) হিভিন্ন প্ৰোদরাদিষাৎ সাধু:। বাজভেদ।
দিণ্ডীর ('পুং) হিভীন, সম্জফেশ।

দিত ( ত্রি ) - দীয়তে স দো অবপগুলে দৌ ক্র, ইতি ইছ ( ছতিছাত্তী হিচ । পা ৭।৪।৪• ) ছিন্ন, বৈধীক্বত, বিদীর্ণ।

দিতি (স্ত্রী) দৈ স্থামাতা, ইনি দক্ষের ক্ঞা, ক্খপের পরী ইহার গর্ভে যাহার বু জন্মগ্রহণ করিয়াছিল, তাহারাই দৈতা। বিষ্ণুপ্রাণে লিখিত পূজাছে, সমন্ত পুত্র নীষ্ট হইলে দিছি আসিয়া কশুপের নিক্রুট ইক্সকেও দমন করিতে পারে এরপ ক্ষতাশালী এক পুর্ত্ত প্রার্থনা করেন। কশুপ তাঁহা व्यक्ति। पूर्व कतिरमन, िल्ख विषय पिरमन, 'पूरि गठ বর্ষ গর্ভধারণ করিবে, এই সম্মা অতি শুচি থাকিবে, জনেও কথন অধর্মাচরণ করিবে না।' দ দিভিও অভি সাবধানে धर्माशानन कतिराज नाशिरनन। अमिर के हेस आश्रनात छाते। বিপদের আশঙ্কা করিয়া দিতির ছলা খুঁজিতে লাগিনেন। একদিন রাত্রিকালে দিকি পানাধুইয়া 🦫 মূল্যন করিতে যান। ইব্রু সেই অবসরে বজ্রবারা তাঁহার জ্বায়ু সা করিয়া ফেলেন। গর্ভন্থ শিশুর রোদনে ই হইয়া পড়িলেন। তথন আবার তিনি সেই সাত থণ্ডে বিভক্ত করিয়া ফেলেন। ভাহারাই খ্যাত।[মরুৎ দেখ।] দো-ভাবে কিন্। ২ থঙা (পুং) ৩ রাজবিশেষ। ( শকার্থক॰) ( ত্রি ) ৪ দা "রায়েচনঃ অপভ্যায় দেব দিভিঞ্রাস্বাদিভি মুক ৪।২।১১)। 'দিভিং দাতারং চ রাম্বদেহি' ( সায়ণ জিয়াং ঙীপ্। দিতী, দৈত্যমাতা।

দিভিজ ( পুং) দিতেজায়তে জন ড। দৈতা, দিং কুর, বহুর।
"একএব দিতেঃ পুত্রঃ হির্মণ্ডকশিপুঃ স্বতঃ" (ভার্মির ১৮৬৫ জা)
দিভিত্তনয় ( পুং ) দিতেজনয়: । দৈতা।

দিতিনন্দন (পুং) দিতে; নন্দনঃ। দিঙিপুত্র বৈদ্যালী দিতিস্ত (পুং) দিতে: ন্মতঃ। দৈত্য। দিত্য (পুং) দিতে ভবঃ যৎ। ১ অস্কর দিতিঃ

यप्र। (वि ) २ ८ इपनार्ट, (इपनर्याग्रधाञ्चापि।

দিত্যবাত্ (পুং) দিত্যং ছেদনার্হং ধাঞ্চাদিকং বছজি বছ-পি।
বিষ্ব্বস্থ পশু। "দিত্যবাট্ যো বিয়াট্-ছেন্দঃ" (শুক্রমজু ১৪।১৪•)

'নো-অবথগুনে জিন্ প্রত্যয়া দিতিং ধাওনমর্থতি দিত্যং
ধার্যং বছতি দিত্যবাট, যক্ষা বিষ্ব্বপশুদিত্যবাট্ (ভাষ্য)।
বিশ্বীং জীপি বাহ ঔট্। . দিত্যোহা, বিষ্ব্বস্থা গো।

"দিত্যবাট্ত মে দিত্যোহা চ মে" (শুক্রমজু ১৮।২৬) 'বিকংসরো
বৃষং দিত্যবাট্ তাদুনী গৌদিত্যোহাঁ" (বেদদীপ)

দিংসা (ত্রী) দাতু-মিচ্ছা দ-সন্ভাবে অ। দানেচ্ছা, দান ক্রিত্রে ইচ্ছা।

দিৎসু (আি ) দাউ্ষিচ্ছা দাসন্ততো উ:। দানেচ্ছু, দান ক্রিতে অভিগামী।

দিৎস্য ( তি ) দান করিবার যোগ্য।

দিদ্দা লোহর ত্র্গাধিপতি সিংহরাজের কন্তা। কাশ্মীরের রাজাকেমগুপ্রের মৃত্যু হইলে দিকা অভিমন্থা নামে শিশু পুত্রকে সিংহাদনে বসাইয়া মন্ত্রিগণেক সাহায্যে নিজে রাজ-कार्या निर्मार्ट करतन। •हेनि ताजकार्या निरम शहर कति-গেন বটে, কিন্তু তাঁহার রাজ্যশাসনোপ্যোগী বৃদ্ধির অভাব ছিল, এইজন্মন্ত্ৰী ফাল্পন প্ৰভৃতি কএকজন প্ৰধান-ব্যক্তির উপর অভ্যাচার করেন, ভাহাতে তাঁহারা দিদার বিরুদ্ধে ঘড়যন্ত্র করিবার চেষ্টা করেন। অবশেষে ইনি ব্রাহ্মণ-मिश्रक উৎকোচ मिश्रा कोमाल विवास मिछारेश फल्नन। কিছুদিন পবে আবার গোলযোগ উপস্থিত হয়। এইবার ইনি বিবাদ না মিটাইয়া সমৈত্তে তুর্গাশ্রম করিয়া যুদ্ধ করেন, भताभारत विष्णाहीत! भताञ्चित हम । जाहारनत, मर्या क्ट व व की हश, भटत व की दिन त्र मत्या आधि म करन दिन है हश। কিছুদিন পরে অভিমন্তা ১৩ বংসর ১০ নাস রাজতা করিয়া ম্মারোগে মৃত্যুমুথে পতিত হন। তাহার পর দিদা স্বীয় পৌত (অভিমন্তার পুত্র) নন্দী গুপ্তকে রাজা করেন, পরে ইনি সীয় পুত্তের স্মরণার্থ অভিমন্থাপুর নামে একটী নগর গাপন এবং ঐ গুলে অভিমন্থামানী নামে একটা দেবীমৃত্তি প্রতিষ্ঠা এবং নিজের নামেও দিদাপুর ও দিদাখামী ^{নামে} নগব**ুও দেবমৃতি স্থাপন করেন। এইরূপ** ্কোর্য্যা করিয়া প্রজাগণের নিকট কিছু প্রিয় হন। কিন্ত একবংসরের মধোই ই্ছার পুত্রশোক শেষ হয় এবং স্বীয় পৌতকে বিনাশ কঁরেন। পরে দিতীয় পৌত জিভ্বনগুপ্ত ^{াঞ্জা} হইলেন, কিন্তু দিন্দা <mark>তাঁহাকেও মারিয়া ফেলিলেন।</mark> ^{5ংপরে} কনির্দ্ত পৌত্র ভীমগুপ্তকে রাজা করেন। ইহার ^{দীবনে} এতই পাপের রেখা অক্কিত হইরাছিল, বে তাহা ^{[गुना} कता यात्र मा । वाष्ठितात हेरात चलाव प्रयाहिन,

উপপতি নির্বাচনে নিতান্ত হীন জাতিকেও উপেক্ষা করিতেন না। ক্রমে সকল লোকের অশ্রদ্ধা বর্দ্ধিত হইতে লাগিল। ভীমগ্রপ্ত ক্রুম অণিনার মাতার উপদেশে স্কল ব্যাপার বৃঝিতে পারিলেন। তিনি নিতান্ত ধার্মিক ছিলেন, পিতামহীর এইরূপ বাবহার দেখিয়া অতিশয় মর্মাহত হইলেন, তাঁহার চরিতা সংশোধনের উপায় করিতে লাগিলেন, রা**লকার্যে**র স্মৃত্যলা স্থাপনে মনোনিবেশ করিলেন। পাপিষ্ঠা দিদা তাহা জানিতে পারিয়া তাহাকে প্রকাশ্র ভাবেঁহত্যা করিয়া निष्करे त्राकामन अधिकात कतिरामन । हैशत श्राधान छेन-পতিতৃক প্ৰধান মন্ত্ৰী হইল। এই ব্যক্তি পূৰ্কে থশকাতীয় মহিষপালক ছিল; পরে রাণীর অনুগ্রহে ৫ ভ্রতির সহিত রাজাকার্যোনিযুক্ত হয়। অভাত মন্ত্রীরাবাধ্য হইয়াতৃকের অধীনতা স্বীকার করিল, কিন্তু ভিতরে ভিতরে রাঞ্চের উচ্ছেদ কামনা করিতে লাগিল। তুঙ্গ ইহা জানিতে পারিয়া কএক জনের প্রাণবধ করিল। তৎপ্লরে দিকা নিজ ভ্রাতৃপুত্র সংগ্রামরাজকে সিংহাদনে অভিষিক্ত কবিলেন। ইহাব কিছুদ্ন পরে রাণীর মৃত্যু হয়। সংগ্রামবাজ সিংহাসনে অধি-রুড়থাকেন। (রাজতরঞ্জিণী)

দিদ্দাপুর, কাখীরের একটা নগর, দিদ্ধানিজনাম *চিরশ্বর নীয় করিবার জন্ত নিজের নামে এই নগর প্রতিষ্ঠিত করেন। (রাজত*)[দিদ্ধাদেখা]

দিন্দাস্বামিন্ (পুং) দিদা কর্ত্ক প্রতিষ্ঠিত দেবমূর্ত্তি। দিদা দিদাপুরে দিদাসামী 'নামে দেবমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠিত করেন। (রাজতর*) [দিদা দেখ।]

দিদন্তিসু ( জি ) দন্ত পন্ততো উ । ঠকাইবার ইচ্ছা ।

निमि**ट्य** ( वि ) हाष्ट्रिया मिनात हेळा।

मिमि, ( दिन्सल ) स्काष्टी छिनि ।

मिनिवि ( श्: क्री ) त्याम, आकाम।

দিদৃক্ষমান (তি) দৃশ-সন্দিদৃক শানত্। যে দেখিতে ইচ্ছা করিতেছে।

দিদৃফ্লা (স্বী) জটুমিছে। দৃশ-সন্ভাবে অন্। দশনেছা, দশন করিবার অভিলাষ।

দিদৃফু (অি) এট মিজু: দৃশ-সন্ততোট। দুশন করিতে ইজুক।

দিদৃক্তে (তি ) উষ্ট্ৰেষ্টবাঃ দৃশ-সন্ কেন্তা। দশন ক্রিতে অভিলৰ্ণীয়।

"দিদৃকেণ্য: পরিকাষ্ঠাহ্ম জেন্ত:" ( ঋক্ :১১৪৬০ )

निमृत्क्य ( অ ) निमृक्षाः भर्राज निमृक्षा वाष्ट्रः ठेक् । नमनीय । "निमृत्क्यः ज्नद्व" (ঋक् ৩।১।১২) 'निमृत्क्यः नर्देसर्मनीयः' (नायन) দিত্য (পং) দিহাৎ প্ৰোদরাদিছাৎ সাধু: । ১ বন্ধ । (নিঘণ্টু)

"ন্জনন্তা ধ্বতা দিহা মন্মৈ" (ঋক্ ১।৭১।৫) ২ বাণ।

"ক্ৰাণাং ক্ৰ পতিৱেধাতি দিহান্ পাহি।" (শুক্রফ্রুং ১০।১৭)

'দো অবথগুনে দ্যতি থগুরতি দিদ্যবো বাণা:।' (ভাষ্য)

দিত্যুৎ (ত্রি) হাত কিপ্ নিপা॰ সাধু:। ১ দীপ্রিশীল।

(পুং) ২ বজ্ব। (নিঘণ্টু,)

কিন্তি কিন্তু কিন্তু নিকান চিকানেটি দেখ।

দিত্যে হি। জী) বিবর্ষবয়স্কা ধেসু। [দিত্যবাট্ দেখ।] দিধক্ষমাণ (আি) দিধক শানচ্। দাহনেচ্ছু, যে দাহ করিতে ইচ্ছা করিয়াছে।

দিধক্ষা(আী) দগুমিছো। দহ সন্ততো আন। দগুকরিবার ইছো।

দিধক্ষু (পুং) দগ্ধুমিচ্ছুং দহ-সূন্ ততো উ । দগ্ধ করিতে ইচ্ছা। দিধি (পুং) ধা-কি । ১ ধৈৰ্য্য । ২ ধারণ ।

দিধিষায় (পুং) দধাতি আনন্দমিতি ধা-আয়া, ধাতোদ্ধিবং ইত্বং যুক্চ (দিধিষায়া,। উণ্তানণ) ১ আরোপিত বন্ধ, মিথাবেন্ধু। (ত্রি) ২ ধারক।

"মিত্রইব যো দিধিধাযোভিদ্দেব।" ( ঋক্ ২।৪।১) , 'দিধিধান্যো ধার্মিতা অভূৎ।' ( সায়ণ )

উচ্ছলদত্ত "দিধিষাযাং" এই স্তের স্থলে 'দধিষাযাং' এই স্ত্র কল্পনা করিমাছেন এবং ইছার ব্যাথ্যাস্থলে 'দধি পূর্বাং ভতে রাষ্য ষত্বং চ দধিষায়াং স্বতং' এইরপ লিথিয়াছেন।
দিধিয়ু (পুং) দিধিং ধৈর্যাং ভাতীতি সো বাছলকাৎ কুং বা দিধিয়ং আত্মন ইচ্ছতি স্প্পাত্মনাকাচ্, ততোঁকিপ্, বাহুং ছস্মঃ।
১ বিক্চাপতি, ছইবার বিবাহিতা স্ত্রীর শেষ স্থামী।
২ গর্ভাধানকর্ত্তা। "হস্তগ্রাভভা দিধিযোজ্বেবং পত্য জনিজং"
(ঋক্ ১০১৮৮) 'দিধিযোগর্ভভা নিধাতুং' (সারণ)

দিধিষু ( ত্রী ) ব্রাতি পাপং যথা দিধিং ধৈর্যাং ইক্রিয়ভৌর্বল্যাৎ
ত্রতি তাজতীতি দা বা সো ক্প্রতায়েন সাধুং ( অন্দদ্
, ক্লিম্ভি । উপ্ ১ ৯৫ ) ১ ছিরুঢ়া, বারহম্বিবাহিতা ত্রী,
যে ত্রীর ছুইবার বিবাহ হইমাছে । ২ জোঠা ভগিনী অ্বিবাহিতা থাকিতে বিবাহিতা কনিঠা ভগিনী, জোঠা ভগিনীর
বিবাহ হয় নইে, কিন্তু কনিঠা ভগিনী বিবাহ করিয়াছে,
তাহাকে দিধিষু কহে ।

"জ্যেষ্ঠানাং বিশ্বমানারাং কঞ্চারা মৃহতেৎক্ষা।
সা চাণ্ডো দিধিষ্ঠ্জেয়া পূর্কা চ দিধিষ্ঠ স্থতা ॥" (উবাহতম্ব)
( ত্রি ) ৩ ধারক। "ধীতিমাদিদর্যো দিধিষো বিভ্রাঃ।"
( ক্ষ্ ১।৭১।৩)

দিধিষুপত্তি (পুং) দিধিষু ছিক্কঢ়া ভ্ডা: পতি: স্বামী। হিক্কঢ়া-পতি, যে স্তার ছইবার বিবাহ হইন্নছে, তাহার পতি।

"দ্রাত্মৃতি ভার্যায়াং বোহ ছ রজ্যেত কামতঃ।

ধর্মেণাপি নিযুকায়াং স জ্যেরা দিধিবৃপতিঃ ॥" (মছ ৩)১৭৩)

প্রোৎপাদনার্থ ধর্মতঃ প্রতি ঋতৃতে এক এক বার গমন
না করিয়া বে বাজি নিম্ন ধর্ম অতিক্রমপূর্কাক কামতঃ
মৃত্ত লাতার পত্নীতে জাসক্র হয়, তাহাকে দিধিবৃপতি করে।
মৃত্যান্তরে পরপূর্কার পতিকে দিধিবৃপতি বলা হয়। ধৃতরায় ও
পাপুর জানকত্ব হেড় বাাসকেও দিধিবৃপতি বলা হায়।

দিন (ক্লী) ভতি থওরতি মহাকালমিতি দো ছেনেইনঃ
(বহুলমন্ত্রাপি। উল্২।৪৯) স্ব্যাক্রিক, প্রকাশিত সময়,
স্ব্যের উদয় হইতে অন্ত প্র্যাত্বর, প্রকাশিত দা ৬,
দিও পরিমিত কাল, এক স্র্যোদ্য হইতে প্রকার স্ব্যা

পর্যায়—খ্রু, অহন্, দিবস্, বাসর, ভাস্বর, দিবস্, বার অংশক, ছা। (শক্ষরণ) স্থাকিরণাবহিন্নকাল, ইহার বৈদিক পর্যায়—বল্লে ছা, ভাস্থ্, বাসর, স্থসরাণি, অংস, দ্র্ম্, ঘ্ণ, দিন, দিবা, দিবে দিবে, অবিভবি। (নিঘ্টু) চাক্তভিথিরপ কাল ও মায়

দরের পূর্বকেণ পর্যান্ত সমর, ষ্টিদণ্ডাত্মক মাত্র অংহারাত্ত

দিন অর্থাৎ এক চাক্সতিথি একদিন। এই সময় সর্বাদা পরিবর্ত্তনশীল বলিয়া জ্যোতির্বিদ্যণ এ আহোরাত অর্থেই দিন শব্দ ব্যবহার করেন। আহিকগ্রি নিবন্ধন পৃথিবী প্রায় ২৪ ঘণ্টার মধ্যে একবার নিজ মের দত্তের উপর আবর্ত্তন করে। এই আবর্ত্তনই দিবারাত্রি কারণ। পৃথিবী গোলাকার বলিয়া একবারে ইহাব অহাত স্থাালোক পড়ে, অণরার্দ্ধ স্থতরাং অন্ধকারে নিমগ্ন থাকে যে অংশে আলোক তথায় দিবা এবং যে **অং**শৈ অঙ্গ তথায় রাত্রি হইয়া থাকে ' পৃথিবীর আহিক আবর্তন জ মেক্ষয় স্মিহিত প্রদেশ বাতীত **অভান্ত স্কল**স্থানেই ^{প্রা} দিন একবার এইরূপ আলোক ও একবার অদ্ধৃতার হা বলা বাহুল্য সুর্যাই দিবারাত্রির কর্তা। দিবাভাগে ^{সুর্} চক্রবালের উপরিভাগে এবং নিশাকালে উহার ^{নিয়ে থাকে} স্তরাং দৃষ্টিগোচর হয় না। স্থা পরিদৃভামান আকা মণ্ডলের কোন স্থান হইতে পশ্চিম দিকে স্বিরা ^{জাবা} যথন সেই স্থানে আসিয়া উপস্থিত হয়, ^{ভাুহা}ই ^{এ।} দিৰারাতি অংখবা দিনের পরিমাণ^{়।} একণে কথা ^{হুট্ডেটে} কোন্ সময় হইতে দিবস গণনা আরম্ভ ^{করা হাইবে} এ বিষয়ে নানা **আভীয় ও** নানা সম্প্রদায়ের ^{লোকে} ^{এাক} আপেন ইচ্ছা ও হৃৰিধা অফুসারে দিবস গণনা ^{করেন} প্ৰধানতঃ স্ৰোগন্ধ, স্থাতি, দিবা বিগ্ৰহৰ ও গুটি विश्वहत्र अहे हात्रिण कानहे मिन्टमत आवस्त्रमा विश्वहरू [ 400 ]

বাবহাত হয়। দিবাভাগই জীবগণের কার্ব্যের উপযুক্ত এবং अक्षकात्रमञ्ज निनाकानरे विज्ञास्मत्र উপযোগী; कार्यात्र পর বিশ্রাম ইহাই খাভাবিক⁶; স্বতরাং স্র্যোদর হইতে দিবস আরম্ভ করিয়া নিশিশেষে শেষ করাই সহজসিদ্ধ ও ্লুকৃতিমূলত। বোধ হয়, এই অস্তুই এদেশীয় জ্যোতি বিদি পণ্ডিতগণ স্থৈয়াদয় হইতে দিবস গণনা করিবার প্রথা প্রচলিত করেন। এখনও এদেশে ঐরপেই দিন খর। হট্যা থাকে। প্রাচীন প্রায় সমস্ত জাতিই স্র্য্যাদুয় হইতে দিনমান গণনা করিত। কেবলমাত্র আরবেরা মধ্যাক এবং মিদ্রীয়গণুমধ্যরাত্তি হইতে দিবদ গণনা করিত। বর্তমান কালে এসিয়ার অধিকাংশ জাতি এবং যুরোপের অট্ট্রিয়া, ত্রুক ও ইটালীবাসিগণ স্ধোদয় হইতে দিবস ধরিয়া থাকে। চীনেরা মধ্যরাত্তি হইতে, আরবেরা মধ্যাক্ত হইতে এবং মুলোপীয় অভাভ জাতি মঞ্রীতি হইতে দিন গণনা করে। ত্র্যোদরকাল তুক্ষরূপে প্রত্যক্ষ করা অপেকাকৃত অনিশিত ও ছুক্সই বশিয়াই জ্যোতির্বিদ্গণ সম্ভবত: মধ্যদিবা বা মধ্যুরাত্তি হইতে দিন গণনা করিয়া থাকিবেন। যুরোপের অধিকাংশ স্থানে মধ্যরাত্তি হইতে দিন আরম্ভ হইলেও, জ্যোতির্বিদ্যাবিষয়ক অধিকাংশ. পর্যবেক্ষণাদি রজনীযোগেই হইয়া থাকে বলিয়া একরাত্তে প্রতার্থীকত নানাবিধ ঘটনা অনেক সময় ভিন্ন ভিন্ন তারিখে পড়িয়া যায় এবং তাহাতে নানাবিধ অসুবিধা উৎপাদন করে, সেই হেতু জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিতগণ দিবা দিপ্রহর **হইতেই দিবস গণনা করেন। স্থবিধার জন্ত দিবসকে পূর্ব্বাহ্ন** ১২ ঘুটায় ভাগ না করিয়া একবারেই ২৪ ঘটা পর্যাস্ত গণনাকর। হ্য়। এইরূপে জ্যোতির্বিদ্পণ্ডিতগণের যথন मक्रमवात २५ वर्षी नमग्र, लोकिक अ त्राक्रकीय वावशाद्र उथन वृक्षवात्र शृद्धांक २ घणी; ब्ल्यार्डिर्विम्श्रायत्र यथन ব্ধবার ২টা, লৌকিক ব্যবহারে তথন বুধবার অপরাহু ২টা অর্থাৎ ক্যোতির্বিদ্গণের তারিও লৌকিক,বাবহারের তারি-থের ১২ ঘণ্টা পরে আরম্ভ হইয়া থাকে। খুষ্ঠীয় ধর্মবাজকগণ স্থ্যান্ত হইতে স্থ্যান্ত শ্র্যান্ত দিবস গণনা করিতেন।

পূর্বে বি সকল দিনের কথা বলা হইল, তার্যর আরস্ত কাল কিছু ভিল্প ইইলেও সময় পরিমাণে এক। জ্যোতি-বিদ্পত্তিগণ্ড স্পষ্ট তিন রিভিন্ন প্রকার দিনমানের উল্লেখ করিয়াছেন—(১) নাক্ষত্রদিন (২০) কচুট সীবন বা সৌর দিন এবং (৩) মধ্যম সাবন বা সৌরদিন।

কোন একটা নক্ষত্র বে সময় যাম্যোত্তর রেথার আসিয়া পড়ে, ঐ সময় নির্দিষ্ট করিয়া রাথ; অনস্তর আযার ঐ সক্ষত্র বধন সেই রেধার আসিবে, ঐ সময়ও নির্দিষ্ট কর। এই উভরের মধ্যবর্তী বে কাল ভাহাই নাক্ষত্র দিন। থাম্যোভর রেধার উপর দিয়া পতির পরিবর্তে, নক্ষত্রের একবার উদর হইতে প্রনরায় উদর হো সময়, তাহাকেও নাক্ষত্র দিনমান ধরা যাইতে পারে, কিন্তু পুর্বেজিক উপারই বল্লাদি দারা পর্যাবেক্ষণ স্থবিধালনক। এই নাক্ষত্র দিনের মধ্যে পৃথিবী নিজ মেরুদণ্ডে ঠিক একবার আবর্তন করিয়া আসে। ইহার পরিমাণ সর্বাদাই সমান অথবা যদিই পরিবর্তনশীল হয়, তবে তাহা এত অয় বে তুই এক যুগে বিশেষ কোন পার্থক্য লক্ষিত হয় না। নাক্ষত্রদিনের এই নিতা সমতা জয় ইহা জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিতগণের বিশেষ আদরণীয় এবং বছ সংখ্যক জ্যোতির্বিক্লাল এই নক্ষত্রমানে উক্র হইয়া থাকে। কিন্তু তারার উদয়ান্ত লইয়া মহুয়ের কাজকর্মের কিচুই আসিয়া যায় না।

পুথিবী নিজ মেরুদত্তে ঠিক একবার আবর্ত্তন হইল কিনা সে বিষয়ে মহুয়োর তত সংস্রব নাই; আলোক ও অন্ধ-কারের পর্যায় লইয়াই ভাহাদের দিন। ইহার সৌরমান গৃহীত হহঁয়া থাকে। সংঘার উপযুগপরি ছইবার বান্যো-ন্তর রেথা দিয়া গতির মধ্যবঙ্গী যে কাল, তাহাই প্রব্রুত বা ক্ট দৌরদিন। এই সৌরদিন নাক্তদিন অতপকা প্রায় ৪ মিনিট দীর্ঘতর। কি কারণে এই বৃদ্ধি সংঘটিত হয়, . ভাহা লিখিত হইতেছে। মনে কর একদিন দিবা বিপ্রহ[্] রের সময় এক নক্ষতা ও স্থ্য যুগপৎ যাম্যোত্তর রেথায় আসিয়া উপস্থিত হইমাছে। তৎপর দিবস পৃথিবীর ঠিক একবার আবর্ত্তন হইলে ঐ নক্ষত্র যাম্যোত্তব রেথার আসিবে, কিন্তু ঐ সময়ে স্থ্য দৃশ্রতঃ ১॰ এক অংশ পরিমিত আকাশে পুর্বাদিকে সরিয়া গিয়াছে। স্কুতরাং স্থ্য পুনর্বার সেই ম্বানে আসিতে পৃথিবীকে আরও প্রায় ৪ মিনিট ঘুরিঙে হয়। রাশিচক্রে ক্র্যের এইরূপ পূর্ব্বগতি যদি সমবেগ-मल्लान हरेल, जाहा हरेल भोत्रियन ও नाक्ष्यितिन छात्र সুম্পষ্ট হইয়া পড়িত। কিন্তু ভাহা নহে। ক্রান্তিবৃত্তের সহিত নিরক্ষরভের ছেদন অভ্তত্তয়ের বৃক্ষতা সর্বাদা সমান থাকেনা, স্থভরাং ক্রাস্তিপথে দৃখ্যতঃ স্থ্যের গতি সম হইলেও নিরক্তৃতে ইহার সংঘাত গতি সমান হয় না। পুথিবীর ককা স্থা হইড়ে অসমদ্রবর্তী এবং পৃথিবীর গতিও বংসরের সকল সময়ে সমান নছে, এই সকল কারণে দৃশ্রত: ক্র্যের পূর্ব্বগতি বড়ই বৈষমাভাবাপর। **७ छन्छ भारतिमञ्ज मर्जना भतिवर्शनमान। यनि এक** है। ছড়ি যথাবিধি প্রাকৃত সৌরদিনাছ্যায়ী সময় রাখিবার জঞ্জ বিশ্বস্ত করা যায়, তবে প্রায় সপ্তাহ না যহিতে যাইতেই
দেখা যাইবে যে উহাতে আর স্থাবিজর সহিত ঐক্যভাবে
সময় দিতেছে না, হয় কম কিখা বেশী সময় নির্দেশ করিতেছে। ইহার কারণ আর কিছুই নহে, ঘড়ি ঠিকই চলিতেছে, তবে ইতিমধ্যে স্থেরির দৃশ্বমান গতি পরিবর্ত্তি
হইয়া সৌরদিনের বৈশম্য ঘটয়াছে, কিন্তু স্থাবিজ্ঞ সর্বদা
সেময়ই নির্দেশ করে। এই সকল গোলযোগ পরিহারার্থ জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিতগণ সৌরদিনের একটা পরিমাণ
নির্দিত্ত করিয়া দিয়াছেন। সম্বংসর্গত কালকে দিন সংখ্যা
দিয়া ভাগ করিলে যে কাল পাওয়া যায়, তাহাই গড় বা মধ্যম
সৌরদিন। ইহা ২৪ ঘণ্টা বা ৬০ দণ্ডে বিভক্ত।

শৃতি ও পুরাণ মতে এক চান্দ্রমাসে পিতৃলোকের এক দিন, এক সৌর বংসরে দেবতা ও অফুরদিগের একদিন এবং ৮,৬৪,০০,০০,০০০ বংসরে ব্রহ্মার একদিন ইছয়া থাকে। ৩ জ্যোতিস্তব্যোক্ত রাশিভেদ।

দিনকর (পুং) করোতীতি ক্ল-অচ্, দিনস্থ কর:। ১ স্থ্য।

"দিনকরপরিতাপাৎ কীণতোয়াঃ সমস্তাৎ
বিদধতি ভয়মুটেচবীক্ষমাণা বনাস্তাঃ।" (ঋসুসং ১৷২২)

২ অর্কবক্ষ।

দিনক্রে, ১ প্রবেধস্থাকর নামে সংস্কৃত বৈদান্তিক গ্রন্থর বিবার ।

২ এক বিথাত নৈয়ায়িক। ইহার প্রকৃত নাম
মহাদেব দিনকর। ইনি এবং ইহার পিতা বাদক্ষণ উভয়ে
দিল্লান্তমুক্তাবলীপ্রকাশ নামে দিল্লান্তমুক্তাবলীর টাকা
রচনা করেন। ঐ টাকা দিনকরী নামেও খাতে। এতব্যতীত ভবানন্দ যে তক্ষচিপ্রামণির টাকা লিধিয়াছেন, দিনকর
ভাহারও এক বৃত্তি করিয়াছেন।

৩ মাদপ্রবেশদারণী নামে ব্যোতিগ্রস্থিকার।

৪ রুস্তরঙ্গিণী-টীকারচয়িতা।

দিনকর্তন্য (পুং) দিনকর্ত তন্য: ৬তৎ। অর্কনন্দন,
স্ব্যপুত্র, ১ শনি। ২ খন। ৩ কর্ণ। ৪ স্থাবি। স্তিয়াং টাপ্।

তেপতী। ৬ যমুনা।

भिनकत्राभव ( प्रः ) स्यारमव।

দিনকরভট্ট, ১ একজন বিধ্যাত স্মার্স্ত পণ্ডিত। রানেখর-ভট্টের প্তা ও বিখেখর ভট্টের পিতা। ইনি ছত্রপতি শিবের আশ্রয়ে দিনকরোক্ষেতে নামে এক বৃহৎ স্থতিনিবন্ধ রচনা আরম্ভ করেন। এই গ্রন্থ তিনি সম্পূর্ণ করিতে পারেন নাই, তাঁহার পুত্র বিখেখর সমাধা করেন। এ ছাড়া দিনকর ঋগর্থসার, কর্মবিপাকুদার, শান্তিদার এবং ভাট্টিদিনকর নামে শান্ত্রণীপিকার এক টাকা রচনা করেন। ্ বারেশ্যবাসী মোড্বংশীর এক্সন জ্যোতির্বিদ্। है। ১৫০০ শকে থেউসিদ্ধি এবং চক্রাকী নামে জ্যোতির্ব্ব প্রণয়ন করেন। ও পদ্মকিরভট্টের পুত্র, ইনি তর্ককোষ্ট্র নামে তর্কভাষার টীকা রচনা করিয়াছেন।

দিনকররা ও, গোয়ালিয়ারের দেওয়ান্ বা প্রধান রাজম্মী ১৮৫২ খুটাবে গোয়ালিয়ার-রাজ সাবালক হন এবং উাহা বিজ্ঞান নির্বাহ করিবার জন্ম বৃটীশ গবর্মেন্ট মুবক দিনকর রাওকে দেওয়ান নিযুক্ত করেন। তাঁহার স্থাদান গুলে গোয়ালিয়ার রাজ্যে প্রভূত উন্নতি সাধিত হয়। তিনি বে সকল সংস্কার করেন, ইংরাজরাজপুর্বগঞ্জ মুক্তবংগ্রুত তাহার প্রশংসা করিয়া গিয়াছেন। অস্থায় রূপে বে সকল কর আলায় হইত, দিনকর তাহা রহিত করেন। তাহাতে স্পনেক রাজকর্মটারীর স্বার্থহানি হওয়ায় তাহাদের উত্তেজনায় দিনক্র রাওকে পদ্যুত করিয়া রাজা নিজে রাজকায় বেদিবতে থাকেন, কিন্তু হিতে বিপরীত হইল। স্থায়া স্পাহালা স্থাপনের জন্ম আবার দিনকর নিমুক্ত হইলেন। দিপাহা বিজ্ঞোহের সময় ইনি প্রাণপণে বৃটীশ গ্রমেন্টেই সাহায়্য করিয়াছিলেন। ১৮৫৯ খুটাকে ডিসেম্বর মাসে তাহার স্থানে বালাজী চিম্নাজি দেওয়ান হইলেন।

দিনকর্ত্ ( পুং) দিনং করোতি ক্ব-ভূচ্। ১ স্থা। ২ অর্ক্র দিনকরাজ্মজা ( স্ত্রী ) দিনকরস্থ স্থাস্থ আত্মজা। স্থাক্স, যমুনা, তপতী।

দিনকুৎ (পুং) দিনং করোতি দিন ক্ল-কিপ্ ভুকাগমভা ১ স্থা। ২ অর্কুক্ষ।

দিনকেশার (পুং) দিনত কেশার ইব। অন্ধকার। (শালারণ)
দিনক্ষয় (পুং) দিনত তিথেং ক্ষয়ং। তিথিক্ষরী
"একক্ষিন্ সাবনেস্থ তিথীনাং ত্রিত্রং যদা।
তদা দিনক্ষয়ং প্রোক্তন্ত ব্ সাহব্রিকং ফলং॥" (মলমাসত্র)
[তিথিক্ষয় দেখ।]

দিনচুর্য্যা (স্ত্রী) দিবদের কর্ত্তব্যকর্ম, প্রতিদিন কিরণ আচরণ করিলে স্ক্রু শরীরে কালাতিপাত করা যায়, তং সম্বন্ধে ভাবপ্রকাশে এইরূপ লিখিত হইয়াছে—
"মানবো যেন বিধিনা স্বস্থ স্তিষ্ঠতি সর্বাদা।
তমেব কারয়েইছদ্যো যতঃ স্বাস্থাং সদ্বেশিতং॥
দিনচ্ব্যাং নিশাচ্ব্যাং শ্রুচ্ব্যাং ম্থোদিতাং।
আচরন্ পুরুষ: স্বস্থ: সদা তিষ্ঠতি নাম্রথা॥"

যেরূপ আহার ও আচরণাদি হারা মানবগণের সর্বনি স্বাস্থ্যবক্ষা হয়, বৈদ্য তদ্মরূপ আদেশ করিবেন। বাহা সকলের অভীপ্সিত, স্বাস্থ্য ভাল না থাকিলে শী^{রন} ধারণই বিষবৎ হইরা উঠে। এই স্বায়ালাভের উপায়
স্বরূপ দিনচর্ব্যা, রাজিচর্ব্যা ও ঋতুচর্ব্যা লিখিত হইরাছে।
এই বিধি অফ্সারে আহারাদির নিয়ম প্রতিপালন করিলে
নিশ্চয়ই শরীর স্কর্মধানিতক পারে, ইহার অক্তথা হয় না।

খদি বৃায়্, পিন্ত, কফ, আয়ু, ধাতু ও মলের সমতা থাকে, শরীরায়রপ ক্রিয়াসমর্থ হয়, এবং আয়া, ইন্দ্রিয় এ মনের প্রসন্ত ভা থাকে, তাহা হইলে তাহাকে স্বাস্থ্য বলা যায়। মানবগণ স্বাস্থ্য কলা ইইলে তাহাকে স্বাস্থ্য বলা যায়। মানবগণ স্বাস্থ্যকলের জন্ত ত্রাহ্মা মুহুর্তে অবঁণিং স্বর্যোদ্য় কালের প্রথম ছই দণ্ডের মধ্যে গালোখান করিয়া আধ্যাত্মিক, আধিনৈ বিক ও আধিভৌতিক এই ত্রিবিধ ছঃথশান্তির জন্ত দ্বরের নাম গ্রহণপূর্বক শ্যা পরিস্থাগ করিবে। পরে দিন, ঘৃত, দর্পণ, খেতসর্বপ, বিব, গোরোচনা ও মাল্য দর্শন এবং স্পর্শ করিবে। প্রত্যহ ঘৃতের হুরায়া স্বকীয় বদন দর্শন করিতে পারিলে আয়ু বৃদ্ধি ইইয়া থাকে। ঐ উবাকালেই মলম্ত্রাদি পরিত্যাগ, করিতে হইবে। এই নিয়ম প্রতিপালন করিলে অয়ক্রন অর্থাৎ পেট ভাকা, আগ্রান ও উদরের গুরুতা উপাস্থত হইতে পারে না। মলম্ত্রাদির বেগ কথনই ধারণ করিবে না, কারণ ইহাতে নান্ধারার প্রি গিড়া হইয়া থাকে।

মলবেগ ধারণ করিলে উদরে গুড়গুড় শক্ষ এবং নানা প্রকাব বেদনা ও গুঞ্দেশে কর্ত্তনবং পীড়া প্রভৃতি, বাযুবেগ ধারণ করিলে মলমূরনিরোধ, উদরাগ্মান ও শরীরের ক্লাস্তি প্রভৃতি; মূরবেগধারণ করিলে মূরাশয়ে ও শিশ্পদেশে বেদনা, মৃবক্ষভু, শিরংশুল, শরীরের নম্ভা এবং বক্ষণ দেশে আকর্ষণবং পীড়া হয়। এইজন্ত মল মূরাদির বেগ উপস্থিত গঠলে বিশেষ কার্যান্ত্রোধেও ঐ বেগধারণ করিবে না এবং বেগ উপস্থিত না হইলেও বলপূর্ব্বর্ক স্ফালি ক্রারা ভাহা নি:সারণ করিতে চেটা করিবে না। মলমূর্জাদি বিসক্ষনাত্তে গুঞ্ প্রভৃতি মলপ্রসমূহ জললারা প্রকালন করিবে, ইহা হারা শরীরের ক্লাস্তি বল ও দেহ পবিত্র হয় এবং অলক্ষী ও কলিকাল্ব্রোত পাণ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পরে হস্ত ও পদ প্রকালন করিবে, ইহাতে শাঁরীরিক ইন্টিনাধন ও চকুর হিত হইয়া থাকে। পরে দক্তকাট গ্রহণ করিয়ামুগুপ্রকালন করিবে।[দন্তধাবন ও দক্তকাট দেখা]

দত্তধাবন ও জিহবা নির্লেখনের পর পুনং পুনং শীতশক্ষণ গুড়্ব ধারণ করিবে। ইহাতে কক, তৃষণা ও মুথগত মল নিবারিত এবং মুখের অভাত্তর বিশোধিত হইমাথাকে। গুডাহই কটুতৈলাদির নম্ভ গ্রহণ করিতে অভাাস করিবে।

কিন্তু কফ শাস্তির নিমিত্ত প্রাতঃকালে, পিত শাস্তির

নিষিত্ত মধ্যাক্ষ সময়ে এবং বায়ু নিবারণের অন্থ সাধংকালে
নক্ষ গ্রহণ করিতে হইবে, এইরূপ নক্ষ গ্রহণ করিলে মুধ্
মুগদ্ধ, স্বর রিশ্ধ কুইন্সিল্প সকল শান্ত হর এবং বলি, পলিত ও
ব্যক্ষরোথ বিনত্ত হইরা পাকে। পরে সৌবীরাঞ্জন নয়নে
প্রায়োগ করিবে, ইহা দারা চক্ষুংদ্ধ স্কলর ও স্ক্র পদার্থ
দর্শনে ক্ষমতা হয়। কিন্তু যাহারা রাত্রি জাগরণ করিয়াছে,
পরিশ্রান্ত, ব্যান্যার্গান্ত্র, ভূঁক্ত এবং শিরন্ত্রান্ত এই স্কল
বাক্তি নেত্রাঞ্জন ব্যবহার করিতে পারিবে নাং।

পাঁচ দিন অন্তর নথ, শাশ্র. কেশ ও রোম কর্ত্তন করিবে। কারণ কেশাদির কর্ত্তন শোভাজনক, পৃষ্টিকারক, ধন ও পরমায়্বর্দ্ধক। নাসিকার রোম উৎপাটন করিবে না, এই রোম উৎপাটন করিলে অভি সত্রই চকুর বলহানি হইয়া থাকে। প্রত্যহ চিক্লি বারাচুল আঁচড়াইবে। প্রতিদিন ব্যায়াম করা অবশ্য কর্ত্তব্য। ব্যায়াম দ্বারা শ্রীরের লঘুতা, কর্মসামর্থা, বিভক্ত ঘন গালতা (অর্থাৎ শরীরের যে যে স্থানে সক্ষ মোটা হওয়া উচিত পৃষ্টির সহিত ভাহা সম্পন্ন হওয়া), লোবের নাশ ও অগ্নিবৃদ্ধি হয়। বসস্ত ও শীত ঋতুতে বাায়াম করা রিশেষ উপকারী, এতদ্ভিন্ন অর্থাৎ গ্রীমাদিতে যাহার যেরাপ বল, তিনি তাহার অক্সাংশ শক্তি পর্যান্ত বাায়াম করিবেন। যংকালে জনয়ন্তিত বায় মুথরক দারা মুত্রুতি বহির্গত হইবে এবং ম্থশোথ উপস্থিত হইবে. কণাল, নাসিকা, গাত্রসন্ধি ও কক্ষর্যে ঘর্ম্মোদ্গম হইবে. তথন অৰ্দ্ধিকি পৰ্যবন্ধ ব্যায়াম হইল বলিয়া জানিতে হইবে। ভোজনান্তে, শৃঙ্গারান্তে, রূশ ব্যক্তির পক্ষে এবং কাদ, খাদ. ক্ষয়, পিত্র, রক্তপিত্ত, ক্ষত ও ধাতুশোণ ইত্যাদি রোগাক্রাস্ত नाज्जित भटक नात्राम निविक्ष।

শরীর প্রাষ্টর নিমিত প্রতাহ ধর্কাকে তৈল মুর্জন করিতে হইবে, কিন্তু মন্তকে, কর্ণবয়ে ও পদস্বমে বিশেষ করিয়া তৈল মর্জন হিতকর।

অভাঙ্গ বিষয়ে সর্যপতিল, গন্ধতিল ও পূজাবাদিত তৈল প্রাণস্ত। অভাঙ্গদারী বায়্, কফ"ও প্রান্তি দ্র হয় এবং বল, ক্রথ, নিজা, শরীরের কোমলতা, পরমায় রুদ্ধি ও শরীরের পৃষ্টিনার্থন হইয়া থাকে। মন্তকে ত্রৈলভাঙ্গ করিলে সমস্ত ইক্রিয়ের তৃত্বি, দর্শনশক্তি রুদ্ধি ও শরীর পৃষ্টি হয় এবং শিরোগত রোগ সকল বিন্ত হয়।

প্রভাহ কর্ণে তৈল প্রণ করিলে কোনরূপ কর্ণরোগ হয় না। এইরূপে তৈলমর্জন করিয়া অবগাহনপূর্ক্ক স্নান করিবে। ইহাতে লোমকূপ, শিরাজাল ও ধমনী বারা শরীরভাষ্তরে তৈল জলাদি প্রবিষ্ট হইয়া দেহের ভৃতিঃ সম্পাদন এবং বৃদ্ধি করে। যেরপ বৃদ্ধের মূলে অল সিঞ্চন করিলে নৃত্ন পল্লবাদি বর্দ্ধিত হয়, তজ্ঞপ স্নেহসংসিক্ত গালে অবর্গাইদ ধাদ করিলে মহয়েরর রুসরকাদি ধাতুসমূহ পূই ইইলা থাকে। শীতল অলাদি পরিবেচন বারা বাহ্য উলা প্রতিহত হইনা শরীরাভ্যন্তরে প্রবিষ্ট হয়। উক্তল বারি, শিরংলান করিলে চক্র দীপ্তি বৃদ্ধি ইইলা করিবে, ইহাতে শরীরের কান্তি, কপ্তৃ ও অগ্লোষ বিনষ্ট হয়। গাল্রনানন্তর ব্থাবোগ্য অহলেপনাদি কর্ত্ব্য। অহলেপনের পর শরীর নিশ্ধ হইলে বন্ধ পরিধান করিবে। লানানন্তর ব্থাবোগ্য অহলেপনাদি কর্ত্ব্য। অহলেপনের পর ব্যা বিধানে শরীর ভূষিত করিবে। তৎপরে আহারের সমূর উপস্থিত হইলে তথন মললজনক সামগ্রী গ্রহণ করিবে। প্রাক্র ক্রিলে পর্মায়ু ও শুভাদ্ঠ বিদ্ধিত হয়। ব্যাহ্মণ, গো, অগ্লি, প্রশহার, মৃত, স্বা, জল এবং রাজ্য এই ৮টী মললজনক।

ভোজনের পূর্বের এবং পরে সর্বরণা পাছকাধারণপূর্বক গমনাগমন করিবে, ঘেহেতু পাছকাধারণ করিলে পদগত ব্যাধি দুর হয় এবং চক্ষুর হিত•হয়।

र्मानहगरनत चलावल:हे ठातिष्ठी म्लूहा वनवली हहेग्रा 'থাকে—-আহার, পান, নিদ্রা এবং হারতেচছা। কুধার সময় यनि आहात ना कता यात्र, जाहा इहेटन अक्रिंह, आख्रितांध, ভন্তা, চক্ষুর হর্বলভা, রস রক্তাদি ধাতুর জীর্ণভা এবং বলহানি হয়। পানেছা প্রতিঘাত করিয়া জল না থাইলে কণ্ঠশোথ, মুখণোথ, অতিশক্তির হাস, রক্তপোষ এবং হৃদয়দেশে পীড়া উপস্থিত হয়। নিদ্রাবেগ ধারণ করিলে জ্ঞা, মন্তক ও চক্র গুরুত্ব, শরীরের বেদনা, তন্ত্রা এবং ভুক্ত দ্রব্যের অপাক হইয়া থাকে। বাহ্য অগ্নি যেরূপ দাহ্য বস্তুর অভাবে মন্দীভুত হয়, সেইরূপ কুষিত ব্যক্তির আহার্য্য বস্তুর অভাবে শারী-রিক পাচক অবিও কীণ হইয়া পড়ে, জঠরামি প্রথমত: ভুক্ত দ্রব্য পরিপাক করে, তাহার অভাবে কফাদি দোষ সম্হকে, তাহার অভাবে রস রক্তাদি ধাতুকে এবং ধাতুর অভাবে প্রাণ পর্যান্ত পরিপাক করিয়া থাকে। এই জন্ত ক্ধা হইলেই ভোজন করা কর্ত্রা। প্রভাহ ভোজনের প্রাক্কালে লবণার্ত্রক অর্থাং লুণ ও আদা ভোলন করিবে। ভোজনের প্রথমে ঘত ও কঠিন দ্রব্য ভোজন করিবে, ভাহার थर (कामन ज्वा (ভाकन এवং **आहारतत (भग अवस्त ज्व** দ্রব্যপান করিবে। এই নিম্নে আহার করিলে বলও খান্য রকা হয়। ভোজা বস্তর মধ্যে যাহা যাহা যথাক্রেম স্বাহ, তাহাই উত্রোত্তর ভোজন করিবে। এক বস্ত

ভোজনের পর অক্ত যে বস্তু ভোজন করিতে প্রিচার इत्र, ভाहारकटे এ दरन याद्य तुना हहेगारह । अखिनत कुत या विनय कतिया (जानन कतिरव ना। सनाधियुक वाकि ত্রিবিধ শুরুজব্য পরিভাগি করিবেন। মাতা শুরু, খভাবর: श्वकः अ मःकात श्वक वह विविध श्वक्रभनार्थ। . मावी श्वकः मूनाक्षेत्रि, देशांत्रा चलावजः खक्र नरह, পরিমাণাত্ম नात्त खक्र हव। মাষকলায় প্রভৃতি স্বভাবতঃ গুরু, পিইকাদি সংস্কার গুরু। গুরু ও লঘু দ্রব্য যে পরিমাণে ভোঁজন করিলে ভৃপ্তিবোধ হয়, সেই পরিমাণ ভোজন, করিতের অর্থাৎ মাধকলায় পিটক প্রভৃতি অর্মাতায় এবং মুদ্যাদি স্বভাবত: দীঘুতাপ্রযুক্ত পূর্ণমাত্রায় দেবন করা যায়। পেয়াদি তরল দ্রা তক্র প্রভৃতি অতিশয় তরণ দ্রব্য এবং মিখ্রিত ভক্তাদি व्यक्षिक माळाडू थाইला ७ छाहारक अक्षक वना बाब ना। কারণ পেয় সর্বপ্রকারে লঘুগুরুযুক্ত। শুক্ষ ক্রব্য চিপিটক প্রভৃতি, বিরুদ্ধ দ্রব্য ক্ষীর মংস্থাদি এবং বিষ্টম্ভি দ্রব্য ছোলা প্রভৃতি ইহার। জঠরংগ্রিকে মন্দীভূত করে। ভোজনের উপযুক্ত সময় অভীত করিয়া বাকুধা নাহইলে ে ভোজন করিবে না।

উদর গহ্বরের চারি অংশের ছই অংশ ভোজা দ্রবা বারা এবং এক অংশ জল ছারা পুরণ করিবে, অবশিষ্ট এক অংশ বায়ু গমনাগমনের নিমিত্ত অপূর্ণ রাখিবে। অভান্ত জলপান করিলে ভুক্তজ্ব্য পরিপাক হয় না এবং একেবারে জলপান না করিলে ভুক্ত দ্রু পরিপাকের প্রতিবন্ধকতা ক্ষে। এই জন্ম সোহারের গময় জঠরাগ্নি উদ্দীপিত করিবার নিমিত পুন: পুন: অল পরিমাণে অলপান ক্রিনে শরীর কুশ এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হয়, ভোজনাত্তে জলপান করিলে नतीरतत यूनडा ७ कक वृद्धि इहेबा थारक, 'এই वन ভোজনের মধ্যভাগেই জলপান করিতে হইবে। °তৃষাতুর বাকির ভোজনুও কুধিত বাকির জনপান এই উভয়ই ^{বিশেষ} নিবিদ্ধ ; বেংছেতৃ তৃষ্ণাতুর ব্যক্তি ভোজন করিলে ওলরোগ হয় এবং কুধিত ব্যক্তি জলপান করিলে জলোদর উৎপন্ন ^{হইরা} থাকে। এই নিয়মে ভোলন শেব হইলে গ্লিকা ^{এইন} পূর্ব্বক আচমন করিবে। আচমন করিবার সময় ^{বর} প্ৰভৃতিতে বে সকল দত্তের মল থাকৈ, ভাষা ^{বৃত্ত্ত} বাহির ক্রিয়া পুনরার আচমন করিবে। কারণ দ্রু^{ন্ত্র} পদাৰ্থ দ্রীকৃত না হইলে মুখে অত্যক্ত হৰ্ণক হ^র, এইব^র অল্লে অল্লে উহা বাহির করিরা কেলিবে, কিন্তু ^{বৃদ্ধি কোন} পদার্থ দৃঢ়ক্রণে দস্ত লগ ইইয়া থাকে, ভাষা দল বরণ য়াব করিয়া বাহির করিবার অন্ত প্রভান্ত চেটা করিবে না।

আচমন ক্রিরার পর অলসিক্ত হত্তবারা চক্তৃ ক্রাপ্তিরে, আহারের পর চক্তৃতে অলু দিলে তিমির বিনষ্ট হয়।
পরে ভূজার হৃথ পাকের অস্তু আগত্ত্যাদি মহাত্মগণের নাম
পরণ করিতে হইবে। আলারক, আগত্ত্যা, বৈখানর, স্থ্য
এবং অশিনীকুমারবার ইহাদের নাম অরণ করিয়া উদরে
হাত বুলাইবে। ভোজনাক্তে অপ্তর্ক প্রভৃতির ধুম বারা
কল নির্হরণপূর্বক হল্প অথচ কটুতিক্ত ক্রাম রুদবিশিষ্ট ফল
চর্মন করিয়া মুথের নির্মানতা সম্পাদন ক্রিবে। পর্বের স্থানির
দ্ব্যাদির সুহিত তামূল চর্মন ক্রিবে। তিামূল দেখ।

তাহার শর ধীরে ধীরে একশন্ত পদ গমন করা কর্ত্তবা। ভোজন করিয়া ধে ব্যক্তি উপবেশন করে, কানার তুল অর্থাং ভূঁড়ি হয়, যে শয়ন করে, তাহার শরীরের মুক্ত ক্রে, অধাং দীরে ধীরে এক শন্ত পদ গমন করে, তাহার দীরুলায় বিদ্ধিত হয়। যে ব্যক্তি অভিশয় ক্রত্তবেগে গমন করে, তাহার নানারূপ উৎকট ব্যাধি অল্মে। পরে অইখাস পরিমিত কাল, উত্তানভাবে, তাহার বিশুণিতকাল দক্ষিণপার্শে, এবং তাহার বিশুণকাল বামপার্শে শয়নায়র তৎপরে স্বেচ্ছামত শয়ন করিবে। ভূক্ত বস্ত জীর্ণনা হইলে বামপার্শে শয়ন করা বিধেয় নহে। এইরূপ ভাবে প্রতিদিন চলিতে পারিলে শরীরে কোন প্রকার ব্যাধি উপহিত হয় না। (ভাবপ্রকাশ)

[ त्रांबिहर्या भय (मथ। ]

নিজ্যোতিস্ (ক্নী) দিনস্ত জ্যোতিং। আহতপ, কৌজ। নন দিন (দেশজ) প্ৰতিদিন।

ান্ডুঃথিত (পুং স্ত্রী) দিনে দিবসে ছ:থিত: দিবাভাবে ^{বিয়োগিছাত গাছিং।} চফ্রবাক্ পক্ষী। স্তিয়াং ঙীপ্।

দিনপ (পুং) দিনং পাজি পা-ক । ১ হর্ঘ°া•২ অকর্ক। ু র্যাদি বারাধিপতি।

দিনপত্তি (পুং) দিনস্ত প্তিঃ। ১ স্থা। ২ অর্কর্কন। ৩ বারা-ধিণতি স্থাাদি।

দিনপাত (সং) দিনস্ত চাল্লদিনস্ত তিথেঃ পাতঃ করঃ। ১ দিনকর।

"ছাধুনাদে দিনপাতে ধহৰি রবৌ ভাসুলজ্বিতে মাদি। চিক্রিনি হুপ্টে কুর্ব্যারীধাঙ্গল্যং বিবাহঞ্চ॥" (জ্যোতিন্তক্ ) (দেশজ) ২ দিনবাপন।

मिन भिश्व ( শ্ং ) দিনক পিণ্ড: ৬তং। ক্যোতিবোক অর্হগণ। দিনপ্রণী ( শৃং) দিনং প্রণয়তি করেঃতি প্রাণী-কিপ্। ১ স্বা। ২ অর্কবৃক্ষ।

দ্নপ্রবেশ (পুং) ভাজকোক মাদগ্রবেশের ভার বর্ণাদ

मक्की नित्नत्र व्यद्भं, हेहात्र विवेषं (क्यांजिर्द अहेक् ने निश्ज क्यांक् । दर नमरत्र वर्ष व्यद्भं कानित्व । वर्ष व्यद्भं मान व्यद्भं कानित्व । वर्ष व्यद्भं कानित्व विकार के त्राक्षं विकार । व्यद्धं विकार विक

কণী কৃষার্কগত্যাপ্তং দিনাদ্যেন মৃত্তাহ্বিতং॥ তৎপত্ ক্তিছং বারপূর্কং মাসার্কেহ্ধিকহীনকে। তহারাত্মে মাস্বেশো ছাবেশোপ্যেক্মেব চ॥" ( ডাজক )

धरेक्कण त्यांग वा वित्यांग कित्रमा ये जिनमण्डामि हरेति, उठ मिन मण्डामि नमत्य मान श्रादम हरेति। मिनश्रादमाख धरे निम्नत्म हरेति। त्य नमत्म मिन श्रादम हरेति, त्मरे त्मरे नमत्यत्र नमेख श्राहक्ष्णे, जात, मिक्क वनामि निक्रमण कित्रमा करनत्र विठात कित्रत्।

मिन-श्रेर्यमकारम वर्ष-श्रेर्यमानित छात्र स्थानि शह छ बानम छात नाथन कतित्रा ठळ ७ नवाःमाधिशिक बात्रा छाछछ कन निर्णत कतिर्देश म्दाधिशिक, स्नामधाधिशिक, जित्रामिशिक, निनताजित स्विशिक, मिननधाधिशिक, मान-मधाधिशिक ब्रव्यधिधिशिक हेहानिर्णत मर्था यिनि वनवान् हहेत्रा निन मधरक मृष्टि करत्न, राहे शहरे निनाधिशिक हहेर्दन। यिन मिनश्रेर्दम मध्य वा ठळ हहेर्ड जिस्कान, रक्छ वा जकानम हान वनवान्, छाश्च यहै, छ्जीत वा जका-नम हारन भाश्च स्वाहिक करत्न, जहर राहे निन स्थ, मान, स्वर्ष ७ यम माछ हत्न।

বর্গ, অন্তম বা বাদশ স্থানে যদি পাপযুক্ত দিরাধিপতি, বর্গাধিপতি বা মাসাধিপতি অবছিতি করেন, তাহা হইলে রোগ, মান ও বশোহানি হইলা থাকে এবং উক্ত গ্রহণণ কেন্দ্র ত্রিকোণ বা একাদশ স্থান দ্বিত হইলে রুপলান্ত হয়। দিনপ্রবেশ নবাংশ শুভগ্রহযুক্ত হইলা যদি চক্র কর্তৃক মিত্র দৃষ্টি বারা দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে নীরোগ, রাদ্যালাক্ত ও শরীর পৃষ্টি হয়। ইহার বিপরীতে পূর্কবং বিপরীত কল জানিবে। দিনপ্রবেশকালে বে ভাব নবাংশ শুভগ্রহ কর্তৃক ক্ষেত্র দৃষ্টি বারা দৃষ্ট বা শুভযুক্ত হয়, তাহা হইলে সেই ভাবের

শুভফণ হইবে। ইহার বিপারীতে অর্থাৎ যদি পাপযুক্ত বা পাপ এহ কর্তৃক শক্ত দৃষ্টি দারা দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে সেই ভাবের ' এশুভ ফল জানিবে। ষঠভাব নুবাংশ মদি শুভযুক্ত হয়, তবে রোগ ও পাপযুক্ত হইলে শুভফণ' হইবে। বয়ভাব নবাংশ শুভযুক্ত বা শুভদৃষ্ট হইলে স্থায় পত্নী হইতে সন্ধায় ইববে। জায়াভাব নবাংশ শুভযুক্ত বা শুভ দৃষ্ট হইলে স্থায় পত্নী হইতে স্থা এবং 'পাপ দৃষ্ট বা পাপযুক্ত হইলে গৃহবিরোধ হয়। পাপদ্ধের মধাত হইলে মৃত্যু হয়।

नश्चमञ्चाव नवाः भ खञ्च मया ए इहेरल व छविष कामिनौ सूथ হয়, উক্ত নবাংশে বুহম্পতি থাকিলে শীয় স্ত্ৰাতে ও অস্তু গ্ৰহ থাকিলে পরস্ত্রীতে রতিসম্ভোগ হয়। অইমভাগ নবাংশ দিনপ্রবেশ লগ্নের অষ্টম স্থান শুভগ্রহকর্ত্তক দৃষ্ট বা যুক্ত হইলে রণে মৃত্যু হয়। শুভাশুতবুক বা দৃষ্ট হ**ইলে শুভাশু**ভ ফল এবং পাপ দৃষ্ট বা পাপযুক্ত হইলে স্থ্, দিনপ্রবেশ-লগ্নের দ্বিতীয় ও দাদশ স্থানে পাপগ্ৰহ থাকিলে হানি, শুভগ্ৰহ থাকিলে স্বায় এবং পাপগ্রহজ্ঞ কর্ত্তরীযোগ ছইলে রোগ এবং শুভগ্রহঘটিত কর্ত্তরীযোগ হইলে শুভ হয়। ক্ষীণচন্ত্রলগ্রে বা অটম স্থানে স্থিত হইয়া পাপদৃত বা পাপমুক্ত হইলে মৃত্যু ত্রগণা রোগ ও শত্রু হইতে অস্ত্রু হইরা থাকে। মঙ্গল্যুক্ত চক্র ষষ্ঠ বা অষ্টম স্থানে থাকিলে শত্রু হইতে অক্সভয় এবং চতুর্থ স্থানে পাপগ্রহ থাকিলে গজাঝাদি হইতে পতন ও শরীরে নানাপ্রকার রোগ হইয়া থাকে। সপ্তম স্থানে শুভ-श्र शांकित्न जग्न, विजीव खात्न स्थ, नर्म शांत धर्म, অথাথম ও রাজসমান লাভ হয়। দিনপ্রবেশ সময়ে চক্র रग्राप अवज्ञान करत्रन, रमहेक्रपू कल श्रामान कतिया থাকেন। চক্রফ ুটের রাশি পরিত্যাগ করিয়া আবশিষ্ঠ ভাগকে २ निम्रा अन कतिया अनकनरक । निम्रा ভাগ कतिरल **চट्ट्युर्व अवश्राश्यालिक इहेरव। हट्ट्युत अवार्मीवशा**त्र মহুয়োরও প্রবাস, নৃষ্টাবস্থায় বিত্তনাশ, মৃতাবস্থায় মৃত্যুক্তয়, • অমাবস্থায় জয়, হাজাবস্থায় জীবিলাসাদি সুথ, ক্রীড়াবস্থায় স্থ, সুপ্তাবস্থায় নিজা, ভুক্কাবস্থায় দেহপীড়া, ভয় ও তাপ প্রভৃতি হইয়া থাকে। (নীলকণ্ঠোক্ত ভালক)

দিনব্রু (পুং) দিনতা বন্ধ: । ১ স্থা । ২ অর্কর্ক।
দিনবল (পুং) দিনে বলং যতা। বিপদরাশি, পঞ্ম, ষষ্ঠ,
সপ্তম, অইম, একাদশ ও খাদশ রাশি, দিনবলী । (রহজ্জাতক)
দিন্মণি (পুং) দিনতা মণিরিব । ১ স্থা ।

"দিনমণি-মণ্ডল মণ্ডন ভব-থণ্ডন" (গীভগোবিন্দ)

२ व्यर्कवृक्षः। "

দিনম্ল (ক্লী) মাস।

দিনমসূথ (পুং) দিনে ময়্থো যক্ত। ১ ক্রা। ২ ৠৠৡ नित्रभात (क्री) नितल मानः। স্থাদর্শনকালের মান । খাদশ মাদের প্রতিদিবসীর দিনমান নিয়লিখিত নির্মায়ুদ স্থির করা যায়, প্রাথমতঃ রবিশ্চুট করিতে হইবে, আরু: এ রবির কুট কারনাংশযুক্ত হর, ভাহা হুইলে ভাচা _{হুই} ু অব্যনাংশ হীন করিবে, তাহাতে শৃক্ত সময়ের অব্ধাং বি সংক্রান্তির রবির ক্রুট হইবে ।'ঐ বিষুষ্সংক্রান্তি হইতে আ করিয়া ক্রমশঃ ৬ মাসের ৬ শংক্রান্তি দিবসের অর্থাং বৈশ মাদে বিষুবসংক্রান্তি-দিবদীয় • শৃক্ত জৈছি মাদেরুর সংক্রানি দিবদীয় ৩০ ত্রিশ, আধাচ় মাদের সংক্রাস্তি দিশ্দীয় ৫৪. খ্রা मारमत मरकाखि भिवमीत ७८, छाछ मारमत मरकाखि भिवमी ৫৪. আখিন মাদের সংক্রান্তি দিবসীয় ৩০ এই ৬টা জয় ৰিষ্বের মুধ্যাক্ত ছায়া ৫।১০ ছারা পূর্ণ করিয়া ৯০ দিয়া ভ नित्न (य' ভাগফল नक इहेर्त, ভাছাতে ৩ । रोश क्_{तिरा} অঙ্ক হইবে, সেই দণ্ডাদিই ধণাক্রমে উক্ত বিষুব্দ:জা প্রভৃতি ছয় সংক্রাস্তি দিবসের দিনমান হইবে। আর যে 🤄 সংক্রান্তি অবশিষ্ট থাকিল, ভাছাদের দিনমান এইরে काना वाहेर्त, यथा- त्व इत्र मः काछि निवरमत्र निनम ৬০ হইতে বিযুক্ত করিলে যাহা অবশিষ্ট পাকিবে, তাগ যথাক্রমে কার্ত্তিকাদি ৬ মাসের সংক্রাম্বি দিবসের দিনসা হইবে। যে যে দেশে বাদশ অঙ্গুলি পরিমিত শঙ্র 🕪 পঞ্জুল দশ বাজুল মধ্যাক্ত ছায়া হয়, সেই দেশেৰ দিনমান এইরূপে আনেয়ন করিতে **হ**র। যথা—বৈশাণ भारतत्र विष्वत्रशःकाः खि-निवनीय निनमान ०० न७, ३ ৩০ দশুকে ৬০ দণ্ড হইতে হীন করিলে যে ৩০ অবশি থাকিবে, তাহাই কার্ত্তিক মাসের সংক্রাপ্তি দিবসের দিনমান হইবে। ক্রৈষ্ঠ মাসের সংক্রান্তি-দিবসীয় দিনমান ^{৩১৪৩} পল, ঐ অঙ্ক ৬০ হইতে হীন করিলে ২৮।১৭ •পল ধার্কে, উহাই अश्रहांत्रण मारमज मःकान्ति निवरमज निवमान हु। জাষাচ় মাদের সংক্রান্তি-দিবসীয় দিনমান ৩০।৬ ^{প্র, ৬}০ हहें एक अपन की न थाकि एन २७। ८८ शन व्यवसिंह शाहन, তাহাই পৌষ মাসের সংক্রান্তি দিনের পুরিমাণ^{় প্রাবণ} মাদের সংক্রাস্তি দিনের দিনমান ৩০।৪০ ^{পল}্ড ^{দও} হইতে উহা হীন করিলে ২৬া২∙ **ওল অ**বশিষ্ট ^{গাকে, ইহাই} মাঘ মাদের সংক্রান্তি 'দিবদের দিনশান। ভার মাদেব সংক্রাম্ভির দিনমান ৩০।৬ পল, ঐ আলভ ৬০ ছইডে ^{বাছ} मिरन २७। १८ शन श्रुविमेष्ठे थारक, डाहारे साइन माहन সংক্রান্তি দিবসের দিনমান। আখিন মাসে^{র সংক্র¶} দিৰসীয় দিনমান ৩১/৪০ পল, উহা ৬০ হইতে বিশ্

कतिरन २৮। ३१ भन इटेब्रा बाटक, এই २৮। ३१ भन हिन्द मःक्रांखि-निवनीय निनमान रहेया थाटक। अहे दर मकन দিনমান লিখিত হইল, প্রত্যেক ৬৬ বৎসরে রবির এক অয়ন দিন হয়, এই নির্মাস্ফারে এখন ১০ই চৈত্র দিবলে ल्या विष्वद्वधात्र चारमन, अहेबल अ मिवनीय मिनुमान ৩ । तथ इत्र, आंत्र आंत्र मश्कास्ति त्मरे तमरे मात्मत् ১ । मिन्दान चिटिल्डा है नानी खन शक्किका द्वारित काना यात्र व अ मियरमरे डेक मिनमीन दम्बिट शावता गाँत। शृद्ध (करन पुःकांखि पिटनंत्र पिनमान छेक् हहेन ; हेहात मधावर्जी দিনগণের দিনমান দির করিতে হইলে মাসের সংক্রান্তি দিবদীয় দিনমান ছির করিয়া তাহার পর দিবস হইতত আরম্ভ করিয়া পরবর্তী সংক্রান্তি দিনের পূর্ব্ব দিন পর্যান্ত গণনা করিয়া যত দিন দণ্ড হইবে, তাহা দারা পুর্বে সংক্রান্তি हहे**ि शत मः क्वांखि भर्याख (य मधानि वृक्षि है**ग्न, **छाहाटक** ত্রৈরাশিক ধারা পর পর দিবদের দিনমন্ত্রি স্থির করিয়া লইবে। वः॰ वाशी ७० यूर्गभात्रतको ८८ यूरात्रत्मी ७८ त्वतम्बनः ८८ वाश्वतः। ছায়া al>• খ্লা ধনবোঃ ৯• ছু তাঃ ধদহনৈ ৩• যু ক্তা ছামানানি ষ্টু u স্পন্তার্কাদয়নাংশযুক্তবিযুক্তাৎ শৃক্তক্রমাৎ ষষ্টি ৬০ তল্চেৎ। ভূদাঅপরাণি ষ্ট্তদ্পরাণাত্রাহুপাতাৎ পুন: n" ( সিদ্ধান্তর• ) দিনমুখ (ক্লী) দিনজ মুখং। অহমুখ, প্রভাত। দিনমূর্দ্ধন্ ( পুং) দিনতা মৃদ্ধা ইব আত্মনাবাৎ। উদয়গিরি। দিন্যোবন (ক্লী) দিনশু যৌবন্দিব। মধ্যাহ্ন। দিনবুড় (রী) দিনজ রত্মিব প্রকাশকভাং। ১ স্থ্য। ণ সর্করুক্ষ। দিনরাশি (পুং) জ্যোতিষোক্ত অর্হগণ। "যথা স্বভগণাভীতো দিনরাশিঃ কুবাদরৈ:। বিভালিতো মধ্যগত্যা ভানবাদি গ্রহো ভবেঁৎণা" ( সুর্য্যসি• ) २ निनमः छक वृषांनि वाभि । [ वाभि ८ नथ । ] দিনব্যাস (পুং) দিনস্ত অহোরাত্রাত্মক কালজ্ঞাপকর্ত্তস্ত ^{বাবিং।} স্থাসিদান্তোক্ত অহোরাত্রব্রত্তব্যাসের অর্দ্ধ ব্যাস। "ক্রান্ডৌ ক্রমোৎক্রমঞ্চে,ধে রুত্বা তত্তোৎক্রমজ্যরা। হীনতিজ্যা দিনব্যাসদলং তদীন্দিণোত্তরং ॥" ( স্থাসি )। • 'ফিনব্যাসদ**লং অহোরাত্রবৃত্তত ব্যাসার্জং।' (রঙ্গনাথ**) দিনাংশ ( পু:ু) দিনগু•অংশ:। ১ ত্রিধাবিভক্ত দিনের প্রাত ^{ম্ধাক} সারাক ভাগ, দিবসের প্রাতঃ, মধাকে ও সারাক্রপ विविध काल। २ शक्षशा विकक्त मिरनेत्र मक्तरामि काल।

স্বের্যাদরের পর তিন মুহূর্ত প্রাক্ত:, তাহার পর তিন মুহূর্ত্ত সঙ্গব, তাহার পর তিন মুহূর্ত্ত মধ্যাহ্ন, পরে তিন মুহূর্ত্ত অপরাত্র:
তদনস্তর তিন মুহূর্ত্ত: সাহাহ্ন কাল। দিন এই পাঁচ অংশে বিভক্ত, ইহাদিগের মধ্যে প্রাত্তরাদি কালকে দিনাংশ কছে। সারাহ্নে পিতৃগণের উদ্দেশে কোন কার্য্যাদি করিবে না।
দিনাই, উ: প: প্রদেশে হামীরপুর জেলার অন্তর্গত একটা প্রাচীন প্রাম। কুলপাহাড় হইঙে ও ক্রোশ পশ্চিমে অবস্থিত। এখানে ছোট পাহাড়ের উপর চন্দেলরান্ধদিপের সময়কার এক শিবমন্দিরের ধ্বংশাবশেষ পড়িয়া আছে। ইহার কালকার্য্য অতি হৃদ্দর। এই পাহাড়ের নিমে জৈনতীর্থক্বর শান্তিনাথের এক অতি বৃহৎ মূর্ত্তি পড়িয়া আছে, তাহার গাঙ্গে ১১৯৪ সন্থ খোদিত।
দিনাগম (পুং) দিনত আগমান। প্রভাতকাল।

দিনাগম ( পুং ) দিনত আগম । প্রভাতকাল।
দিনাজপুর, বাদালার ছোটলাটের শাসনাধীন রাজসাহী
বিভাগের পশ্চিমাংশবর্তী একটী জেলা। অক্ষাং ২৪° ৪৩′৪০″
হইতে ২৬° ২২´৫০″ উ: এবং জাঘি ৮৮° ৪΄ ছইতে ৮৯° ২১´
৫´পুং প্রীয় বিস্তৃত। ইহার পূর্ব্বে করতোয়া এবং পশ্চিমে
মহানন্দা নদী অনেকদ্র প্রায় জেলার সীমান্তে অবস্থিত।
পরিমাণফল ৪১১৮ বর্গমাইল, অধিবাসীর সংখ্যা ১৫,১৪৬।
পুনর্ভবা নদীতীরস্থ দিনাজপুর নগর জেলার সদর।

উত্তর বঙ্গের অব্যান্ত জেশা অপেকা ইহার ভূমি বন্ধুর। হিমালয় হইতে গঙ্গাজীর পর্যাস্ত ভূমি 'বিয়ার' নামক এক-প্রকার আঁটাল মৃত্তিকাময়, তাই নদীকুল সহজে কয় হয় না। स्मात प्रक्रिगारम এবং वायुकारण कृतिक नेमीत श्रीत वर्षी প্রাদেশে ভূমি তরকায়িত হইয়া স্থানে স্থানে ১০০ ফিট্ পর্যান্ত উচ্চ পাহাড়ে পরিণত হইয়াছে। বহুসংখাক নদী জেলার মধ্যে নিজ নিজ পথে প্রবাহিত। বর্ধাকালে ইহারা বন্তা প্লাবনে কুল অভিক্রম করিয়া তীর্টদেশে পলি সঞ্চিত करत । विशाय ७ शनि मृखिकांत्र शक्तिमार्गत উপत्रहे ध्वधानछः स्मात कृषिकार्या निर्जत करत। वर्षाकारम् नही मक्**म** ফুলিয়া উঠে, কিন্ত[®]গ্রীমকালে ওরথাকারে প্রিণত হয়। वर्षाकारण द्वारन द्वारन नगीयण इरे मारेण भगान विकृत द्वान প্লাবিত করিয়া যায়, কিন্তু সে জল কোন উল্লেখযোগ্য श्विन, ক্ষনা প্রভৃতিতে সঞ্চিত থাকে না । দক্ষিণদিকে নাটির পাহাড় অফুচ্চ গভীর অঙ্গলে পরিপূর্ণ এবং অগণিত বস্তু পশুর আবাস मान। ঐ मकन समन स्टेटिं वश्रमां व्यवहे छे ९ भन्न हर्।

দিনালপুর জেলার সমস্ত নদী প্রধানতঃ ত্ইশ্রেণীতে বিভক্ত; এক শ্রেণী দক্ষিণাভিদুথে আসিয়া মহানদা নদীতে পড়িয়াছে, অপর শ্রেণী দক্ষিণপূর্কাভিমুথে বঙ্ডা ও রাজ-

^{"প্রাতঃকালো মুইুর্ন্তাংস্তীন্দদ্দরভাবদেব তু।}

শাবাহুত্তিমূহুর্ত্ত: ভাৎ প্রান্ধং তত্র ন কারবেৎ॥" (তিথিতত্ব)

^{মধ্যাক্}স্থিস্হুর্ত: ভাদপরাক্তত: পরং॥

দাহী জেলাত্ব তিন্তানদীর ( বিজ্ঞোতার ) পূর্বতন গর্ভে দলিল বিদর্জন করিতেছে। মহানন্দা নদী পশ্চিম সীমান্তে প্রায় ত মাইল স্থানে প্রবাহিত। নাগর, টালনে ও পূন্র্ভবা ইহার উপনদী, সকল গুলিতেই বর্ষাকালে নৌকাদি যাতায়াত করিতে পারে। আতরাই ( আতেরী ), যমুনা ও করতোয়া নদী পুরাতন তিন্তায় পড়িয়াছে। বিগত শতান্দীতে তিন্তার প্রোত্ত সহদা পরিবর্ত্তিত ইইয়া বিহ্নপুত্রনদে পতিত হইয়াছে, এজন্ত ঐ দক্ল উপনদীতে বাণিজ্য সমাক্ হ্রাস ও বিশ্র্মান ঘটিয়াছে।

জেলার সর্বাত্র বিশেষতঃ করতোয়া নদীভীরে বহ-সংখ্যক শালবন দৃষ্ট হয়। এই সকল অবণো অমিদার-দিগের বেশ লাভ হয়। কিন্তু অনেক সময় অকালে ঐ সকল গাছ কাটিয়া ফেলা হয়; স্থতরাং কাষ্ঠ ততদ্ব উৎकुष्टे इस नाः अवराश मधू, अनस्मृत, भठमृती, এवः বতা ফুল পাওয়া যায়। বতা জাত্তর মধ্যে ব্যাঘ, চিত্রক, বক্সবরাহ, বহুমহিষ, নানাজাতীয় মৃগ, বক্সমার্জার, শৃগাল, नकून, शक्तशाकून, मझाझ, छतक् वदः नमीर कुछोत्र पृष्ट হয়। ব্যাঘ ও চিত্রক গভীর জঙ্গলে ও কাশবনাদিতে বাস কারে এবং প্রতি বৎসর বছসংখ্যক মহয় গবাদি বিনাশ করে। বভ্রমহিষ, শৃকর ও শৃগালাদি ইকু ও ধান্তকেত্রে আসিয়া বিস্তর ক্ষতি করিয়া যায়। এ জেলায় শিকার ও অক্তান্ত ভাকল পকী পর্যাপ্ত, নানা প্রকার মংস্তুত পাওয়া যায়। জেলার অনেক ফানে বিস্তীর্ণ প্রান্তর পড়িয়া আছে, পশু-পালকাণ ঐ সকল স্থানে বিনা করে নিজ নিজ গোমেষাদি পশুচারণ করে।

দিনাজপুরে অসভ্যজাতির সংখ্যা অধিক, এই সকল অসভ্যজাতি সন্তবন্ত: নিতান্ত নীচভাবে হিন্দুধর্মে থাকা অপেকা বিজেতী মুসলমানদিগের ধর্মের আশ্রমই শ্রেমন্বর বিবেচনা করে এবং তেজভাই তথায় মুসলমানের সংখ্যা এত অধিক। ছোটনাগপুর হইতে ভূমিজ, সাঁওতাল, কোল, ধরবার, ভূইয়া প্রভৃতি জাতীয় বহুসংখ্যক লোক এথানৈ রাজপথ নির্মাণে ও জন্মলাদি কাটিতে আসিয়া বাস করিতেছে। প্রকৃত হিন্দুর সংখ্যা অপেকা হিন্দুসম্প্রদায়ভক্ত অর্দ্ধ হিন্দু শ্রেণীয় সংখ্যা অপেকা হিন্দুসম্প্রদায়ভক্ত অর্দ্ধ হিন্দু শ্রেণীয় সংখ্যা প্রাম বিশ্বাত। ব্রাহ্মণগণ এদেশে অয়কাল আসিয়া বাস করিতেছে, এইরূপ প্রবাদ আছে। অল্লান্ত জাতিয় মধ্যে রাজপ্ত, কামন্ত, কৈবর্দ্ধ, বেণিয়া, নাপিত, তাঁতি, কুমার, লোহার, গোয়ালা, জেলে, দোসাধ, হাড়ী, চণ্ডাল ইত্যাদি। দিনাজপুর

সহরে প্রাহ্মসমাজ স্থাপিত হইরাছে, কয়েকজন রাজজর্মিটারী
মাত্র ইহার উপাসক। কুরেকটী জৈলপরিবারও আদিরা
বাস করিতেছে। ভিক্ষাজীবী বৈরাণী বৈক্ষবের সংখ্যাও
অর নহে, অনেক পালি এই স্প্রাণারভূক্ত। মুসলমানেরা
অ্থিকাংশই কুবিজীবী জ্মিদার বা ব্যবসারীর সংখ্যা অর শৃত্যসংগ্রহকালে অরাধিক লোক এই জেলার আসিরা ধারে,
কিন্তু দিনাজপুর হইতে লোক বড় অন্ত স্থানে বার না।

এই জেলায় নগরের সংখ্যা অতি আয়। কেবল দিন। পর নগরে দশসহস্রাধিক লোক বাস করে, আর কোন সানে পঞ্চ সহস্রের অধিক লোক থাকে না। অধিকাংশ আধিক বাসীই ক্রমিজীবী এবং পল্লীপ্রামে বাস করিতে ভালবাসে। দোকানদার এবং শিল্লজীবিগণও গৃহত্তের থ্রচ অমুঘারী চাষ করিয়া থাকে। ধান চাষই বেশী, তবে কেহ কেহ উপর্ক জমি থাকিলৈ সামান্ত পরিমাণে শাক, ফলম্লাদি আবাদ করিয়া থাকে।

কৃষকেরা সামান্ত ভাবে ক্লীবন্যাপন করে। ইছানের অবস্থা অন্তান্ত স্থাভা কেলার কৃষকদিগের অপেকা সঙ্কনা এথানে কৃষকদিগের অধিকাংশই একাধিক বিবাহ করে, কৃষক মাঠে চাষ করে, আর রমণীগণ বাড়ীতে থাকিয়া কেছ কাপড় বুনে, কেছ স্থা কাটে, কেছ বা শণ পাট ছইছে চট থালিয়া প্রস্তুত করে। শেষোক্ত কাল প্রায় স্ত্রীনোর দিগের একচেটিয়া। এই সকল দ্রব্য গৃহত্বের ব্যবহার বাদে অবশিষ্ট সন্ধিতি হাটে বিক্রীত হয়। নদীভীরে বছ বড় গোলা আছে। তথার ধান্তাদি শহ্ত সঞ্চিত হয় এবং বর্ষারস্ত্রে নৌকাযোগে স্থানাস্তরে প্রেরিত হয়।

তপুলই এ জেলার প্রথান শস্ত, তপ্রধ্যে অধিকাংশই হৈমস্তিক এবং নিম্নভূমিতে জ্ঞান্তরা থাকে। উচ্চভূ^{মিতে} আশুধান্ত এবং নদী ও বিল প্রভৃতির ধারে ধারে বোরো ধান্য সামান্য পরিমাণে জ্ঞান্তরা থাকে। তত্তির ভূটা, বঙ্গরা, নানাবিধ কলার, তামাক, পাট, শণ, সরিবা, ধুলা প্রভৃতি মাল, ইক্ষু ও পাণ প্রভৃতি উৎপন্ন হয়।

শারের মধ্যে গোমর, থিষার ও পলি উভর জমিতেই দেওয়া হয়। থিয়ার কথন পড়িয়া থাকে না, কিন্তু পু^{লিভ্রির} উর্করাশক্তি বাড়াইবার নিমিন্ত ৪ ইংসর পুরে এক বংসর ফোলয়া, রাখিতে হয়। এক জমিতে বংসর বংসর এক আবাদ না করিয়া ভিল্ল ভিল্ল ফসল চাম করিলে বে অ^{বিক} লাভের সন্তাবনা তাহা কেহই জানে না। জেলার ^{মধ্যে} কর্মণযোগ্য বিস্তর কমি পভিত্ত অবস্থায় আছে। ^{(গা.} মহিষ, মেষ, ছাগাদি পশু এবং ভাহাদের চারণযোগ্য মার্টের অভাব নাই। ধিরার জানিতে বংসরে একবার মাত্র ধান্য হর, পলিজামিতে আউস ধান্য কাটিলে কলার, গম, ঘব, সর্বপ প্রভৃতি আবাদ হইয়া থাকে।

দিনাজপুরে অতির্ট্টি বা অনার্টি প্রভৃতি দৈববিড্ছনা

'যেন একবারেই নাই বলিলেই হয়। বর্ষাকালে নদী সকল
উচ্ছলিত হইয়া বহুদ্র জলপ্লাবিত করে বটে, কিন্তু তাহাতে
উপকার বই শস্তের অপকার হয় না। কেবল একবার মাত্র
১৮৭০ খৃষ্টাব্দে অদীর্ঘ অনাষ্টিতে এই জেলার আমন ধান্য
আদৌ হয় নাই। প্রজামগুলের এই প্রধান শন্য বিনষ্ট
২ওয়ায় দার্কণ ছর্জিক উপস্থিত হয়। গ্রমেণ্ট রিলিফ
কার্য্য খুলিয়া ছর্জিক অনেক্টা নিবারণ করেন।

নর্গরণ বেঞ্চল ষ্টেট রেলপথ এই জেলার মধ্য দিয়া গমন করিয়াছে, ইহার একটা শাধা-রেলপথ দিনাজপুর সহর দিয়া গিয়াছে। জেলার সর্বাত্ত সকল দিকে পাকা বাস্তা আছে। নদী দিয়াও যাতায়াত বাণিজ্যাদি চলে বটে, কিন্তু অনেক নদীতে বংসল্পে ৩। ৪ মাসু মাত্র বড় বড় নৌকা যাতারাত করিতে পারে।

পূর্ব্বেই বলা হইরাছে, এখানকার অধিবাসিগণ অধিকাংশই ক্ষিন্ধীবী। তজ্জনা শিলের উন্নতি অত্যন্ত। নীলকৃঠি বা বেসম কুঠি আদৌ নাই, চিনির কারবারও ক্রমশ: কমিরা আদিতেছে। স্থানীর ব্যবহারের জ্ঞনা মোটা কাপড় ক্রিয়ং-পরিমাণে প্রস্তুত হইরা থাকে। মেকলী নামে বক্ত তৃণজাত একরূপ দীর্ঘরী মাত্র স্থানে স্থানে নির্মিত হয়।

জেলার উত্তরভাগে কোচ-রম্ণীগণ বিস্তর চট থলিয়া প্রভৃতি প্রস্তুত করে।

বেলপথ খুলিবার পূর্বেন নদী দিয়াই দিনাঞ্চপুর জেলার বাণিজ্য সম্পন্ন হইত, এখন রেলপথ হইয়া ব্যবসায়ের আরও স্বিধা হইয়াছে। তওুল, শণ, পাট, তামাক, চিনি, চট এবং চর্ম অন্তান্ত স্থানী হয়। আমদানীর মধ্যে লবণ ও বিলাতী কাপড় প্রধান। জেলার পশ্চিমার্ক হুইতে তঞুলাদি মহানন্দা নদী দিয়া বেহার ও উত্তর প্রেদেশে প্রেরিত হয়, পূর্বাংশের বাণিজ্য জব্য তিন্তরে উপনদী এবং নদারণ বেলল টেট রেলপথ দিয়া একবারে কলিকাতার জানীত হয়। গ্রীয়্রার্কালে গোরুর গাড়ী ও বলদ দারা ব্যাপারীরা সমস্ত জেলা ঘ্রিয়া তওুল সংগ্রহ করে এবং নদীতীরস্থ আড়তে জমা করিয়া রাধে। বর্ষাকালে নদীযোগে প্র সংগৃহীত তওুল সানাস্তরে নীত হয়। এইয়প গোলার মধ্যে য়য়য়য়য়, নিতপুর, চাদগঞ্জ, বিরামপুর ও পতিরাম প্রধান। নেকমর্দ নামক বানে জনৈক মুসলমান ফ্কিরের স্থানার্থ প্রতিবংসর একটা

মেলা হইরা থাকে। এই ঘেলার প্রার ১,৫০,০০০ দেড় লক্ষ লোকের সমাগম এবং গো মেবাদি ও জারতের নানা প্রাদেশ হইতে আনীত বিবিধ পণাদ্রব্যের ক্রয় বিক্রম হইরা থাকে। শাস্তপ্র, ঢালদীঘি, অলবার থাওয়া প্রভৃতি তিনটী হানেও সামান্ত মেলা হইরা থাকে।

মধ্যবৃত্তি ও পাঠশালা সকলে সরকারী সাহায্য-লানের ব্যবস্থা হওরার করেক বৎসরের, মধ্যে এথানে বিভালিক্ষার বহু বিস্তার হইয়াছে। ইংরাজী শিক্ষার জন্মও নানাস্থানে সুল স্থাপিত হইয়াছে।

নিম্বক্ষ অপেক্ষা দিনাজপুরের জনবায়ু শীতল। এস্থানে বসস্তকাল শেব না হইলে গ্রীম পড়ে না, বৈশাথু মাসের ১০।১৫ দিন পর্যান্ত রাজ্যিতে বেশ শীত থাকে। শীতকালে রাত্রে অত্যন্ত তুহিনপাত হয় ,এবং প্রভাতে কুহেলী রাশিতে দিরপ্রতল আছের থাকে, স্ব্যা উদিত না হইলে উহা দূর হয় না। দেখা গিয়াছে গ্রীম্মকালে এস্থান বিদেশীদিগেব পক্ষে শাস্থ্যকর নহে, কিন্তু অধিবাসিগণ বর্ষার শেষেই অধিক পীড়িত হয়। বার্ম্বিক গড় বৃষ্টিপাত ৪৪ ইঞ্চি। গড় তাপাংশ ফাণ্ডতংগ্র

नानाशकांत्र खत्र, कानाखत्र, श्रीश, উन्तराभव्र, अनार्छेश, বসস্ত প্রভৃতি রোগ সচরাচর হৈইয়া থাকে। ম্যালেরিয়ার প্রাহর্ভাব এথানে অত্যস্ত অধিক, বহুসংখ্যক অধিবাঁদী এই त्रारंग व्यागल्यांग करत्र। >৮११ थृष्टोरम (करन ७३) ম্যালেরিয়া রোগেই ৩০,০০০ এর অধিক লোক গভাস্থ হয়। এরপু ত্র্কংসর কেহ কথনও দেখে নাই। ইংরেজ কর্মচারিগণ পুন: পুন: অব্যক্তান্ত হইয়া পুণাইতে বাধ্য হয়। রাজকার্য্য-পরিচালন ছর্ঘট হইয়া উঠে। কর্তৃ-পক্ষগণ এই ব্যাপারে দিনাঞ্চপুরের স্বাস্থ্যোঞ্জি বিধয়ে মনোনিবেশ করিলেন। পরীক্ষায় নির্দ্ধারিত হইল, প্রায় শক্তকরা ৭৫ জন রুগ, তন্মধ্যে ৫৪ জনের, প্রীহারেশগ। মৃত্যু-मः था तिकिहोति कतिवात कन्न वित्मव वर्तमावछ इहेन। দেখা গেল, দিনালপুর মিউনিসিপ্যালিটিতে মৃত্যুসংখ্যা প্রতি সহত্রে বার্ষিক প্রায়ু ৪২ জন অর্থাৎ লগুন দগরের প্রায় विश्वन। জেলাসমূহে মৃত্যু আরঁও অধিক। দিনাজপুর नগরের अतिकार এবং অভাস্থ স্থানে अन निकान, सक्न কর্ত্তনাদির ব্যবস্থা এবং অফাস্থা বিষয়ে বিশেষ সত্তর্কতা ও দাতব্যচিকিৎসালয় সংস্থাপন' ছারা ইহার আস্থোরতি করিবার অক্স বিশেষ চেটা হইতেছে। বলা বাহুলা ক্রমশঃ দিনাজপুরের অবস্থা প্রাপেকা অনেক স্বাস্থ্যকর হইয়াছে। দিনাজপুর নগর, রারগঞ্জ, চুড়ামন, স্হাদেবপুর, বালুর্ঘাট প্রভৃতি স্থানে দাতব্য চিকিৎসালয় আছে।

ইতিহাস। দিনাঞ্জপুরের প্রাচীন ইতিহাস নিতান্ত অস্পর। পৌরাণিককালে এই স্থান জ্যোতিবিক নামে ব্যাত ছিল। তৎপরে ইহার কতকাংশ নির্ভি ও কতকাংশ বরেক্রভুমের অন্তর্গত হয়। প্রবাদ অমুসারে, এই ক্ষেলার অধিকাংশ প্রাচীন মৎস্থাদেশের অন্তর্গত ছিল এবং বিরাট্রান্ত্র এখানে রাজন্ব করিতেন। অনেকে এই মৎস্তকেই মহাভারতেকি বিরাট্রান্তের থাজা বলিয়াই কীর্ত্তন করিয়া পাকেন। কিন্তু মহাভারত পাঠে স্পষ্টই জানা যার যে বিরাটের মৎস্ত উত্তরপশ্চিমাঞ্চলে অবস্থিত, এ অঞ্চলে নহে। [আর্যাবর্ত্তের মান্চিত্রে মৎস্তের অবস্থান ও মৎস্ত শক্ষ জ্বরা।] প্রবাদ আছে—দিনাজপুরে এক সমন্ত্রে বাণ রাজা রাজত্ব করিতেন, এই জ্বোর নানাস্থানে বাণ কীর্ত্তির 'ভ্যাবশেষ পড়িয়া আছে। ত

বছদিন হইল, পরাক্রাস্ত বৌদ্ধরাজ্বগণ এখানে আধিপত্য করিতেন। জেলার নানাস্থানে বৌদ্ধপ্রভাবের প্রকৃষ্ট নিদর্শন পাওয়া যায়। বৌদ্ধধর্মামুরাগী পালরাজ্বগণ এ অঞ্চলে রাজত্ব করিতেন,—তাঁহাদের কীর্ত্তি এখনও দিনাজপুরের নানা স্থানে ছড়াইয়া রহিয়াছে। পুরাতত্ত্ব প্রসদ্ধে আলোচনা করা যাইবে। '[পালবংশ দেখ।]

পঁলেবংশীয়দিগের পরাক্রম ধর্ক হইলে এই জেলা সেন-রাজগণের করায়ত্ব হইরাছিল। পালবংশীয়দিগের স্থায় এখানে কোন সেনরাজ বাস করিতেন কি না ভাহার প্রমাণ পাওয়া যায় না। তবে এখানকার তপণিদীঘি হইতে লক্ষণসেনের ভামশাসন পাওয়া গিয়াছে। সেনদিগের পর এই জেলা গৌড়ের মুসলমান অধিপতিগণের অধিকারভুক্ত হয়। দিনাজপুরের নানাস্থানে উৎকীর্ণ পারসী ও আরবী শিলালিপ ছারা ভাহার প্রমাণ পাওয়া যায়। বুকানন সাহেব লিথিয়াছেন, য়াজা গণেশ নামে এব্দ বাক্তি এখানে বিশেষ প্রবেশ হইয়াছিলেন। আইনই-অক্বরীতে ইনিই কাঁস বা কংস নামে বর্ণিত হইয়াছেন। ইনি এক সময় সমস্ত বঙ্গের অধীশর হইয়াছিলেন। কিন্ত বিনি বঙ্গের অধীশর হইয়াছিলেন, সেই স্কংসের আবাস রাজসাজী জ্লাফু ভাতুরিয়া নামক স্থানে ছিল, দিনাজপুরে নহে।

দিনাজপুরের বর্তমান রাজবংশের এইরূপঃ ইভিহাস পাওয়া যায়।

উত্তরবাঢ়ীয় কায়স্থবংশসন্ত্ত বিষ্ণুদত্ত নামে এক ব্যক্তি নবাব-সরকারে কায়নগো হইয়া দিনাঞ্পুরে আগমন করেন। এখানে ভাগালন্দ্রী তাঁহার প্রতি স্থপান্ধা হন। তাঁহার পুত্র শ্রীমস্ত দত্ত বাহালার স্থবাদার শাহস্থাব নিকট প্রতি-পত্তি লাভ করেন এবং চৌধুরী উপাধি প্রাপ্ত হন। তাঁহার

এক পুত্র ও এক কন্তা জলো। শ্রীমত্তের মৃত্যুর পর ভংগু হরিশ্চক্র মজুমদার পিতৃসুম্পত্তি লাভ করেন। _{তাঁহা} ভাগিনের ওকদেব মাতৃল সম্পত্তির তত্বাবধান করিতেন অপ্তাকাবস্থার হরিশচক্র চেটুধুরীর'মৃত্যু হইলে ১৫৬৬ শ্ৰাভ **७ करनव সমछ মাতৃन मण्लित अधिकाती ह्**रेलन। उन् রাজমহলে বালালার রাজধানী। শুকদেব রাজমহলে গিয় , শাহস্তজার নিকট ফরমাণ গ্রহণ করেন। অরদিন মধো _{তিনি} ৰিপুল ° সম্পত্তির অধীশ্বর হইয়ং পড়িলেন; সকলে তা_{হাবে} রাজা শুকদেব বলিরা ভাকিত_ু। শুকদেব শুক্সাগর নামক এর वृह ९ नीर्षिका धनन कताहेबाहित्नन। • छाहाक व्यथमा भन्नीव ু গর্ভে রামদেব ও জন্মদেব নামে ছই পুত্র এবং বিভীন্ন পদ্মীর গর্ভে প্রাণনাথ জন্মগ্রহণ করেন। ১৬০০ শকে ভকদেবের মূরা হইলে জোঠ রামদেব তিন বর্ধ ও তৎপরে তাঁহার _{কনিট} জয়দেবও বৃত্তন বর্ষ সম্পত্তি সম্ভোগ করেন। এই সময়ে বোড়াঘাট প্রগণা• তাঁহাদের অধিকারভূক্ত হয়। ১৬০১ শকে প্রাণনাথ বৈমাত্তের ভাতৃসম্পত্তি পান্ত করিনেন। তাঁহার বিরুদ্ধে দিল্লীর দরবারে অভিযোগ উপস্থিত হইয়া ছিল, সেই অভা তাঁহাকে দিলী যাইতে হয়। ১৬১৪ শবে তিনি বাদসাহ আলম্গীরের নিকট উপস্থিত হন এবং আপনার নির্দ্ধোষিতা প্রমাণ করিয়া বাদশাহের নিকট হইতে 'রাজা' উপাধি পাইলেন। পথিমধ্যে বুন্দাবনধামে বম্নার জলে রাধাকৃষ্ণ মৃত্তি পাইয়াছিলেন, ঐ মৃত্তি দিনালপুরে আনিয় নিজগৃহে স্থাপন করেন। ঐ মৃর্ত্তির নাম ক্রিণীকায়। তাঁহারই যদে কান্তনগুরের হুপ্রসিদ্ধ মন্দির নির্দিত হয়। मिलादात्र मर्था अकथानि भिनाभरहे मिलादानियानकान नगरह এই কবিভাটী উৎকীৰ্ণ আছে---

"শাকে বেণাক্রিকালকিভিপরিগণিতে ভূমিপ: প্রাণনাথ: প্রানাদঞ্চাভিরম্যং স্থরচিতনবরত্বাধ্যমন্মিরকার্বীং। . ক্ষমিণ্যা: কাস্তত্টৈ: সমুচিতমনদা রামনাথেন রাজ্ঞা দত্তঃ,কাস্তায় কাস্তত্ত ভূ নিজ নগরে ভাতসহরসিলৈ। "

[কাস্তনগর দেখা]

এ ছাড়া প্রাণনাধ নানাস্থানে আরও কতকগুলি দেবানর ও প্রাণসাগর নামে এক বৃহৎ সরোবর প্রতিষ্ঠা করেন।
কান্তনগরের মন্দির তিনি সমাধা করিরা বাইতে পারেন
নাই; তাঁহার মৃত্যুর পশ্ধ ভাঁহার দত্তকপুত্র রামনাধ সল্প্
করেন।

রামনাথকে কেছ কেছ রমানাথ নামেও উলেধ ^{করেন।} ১৬৪১ শকে রাজা প্রাণনাথের মৃত্যু হইলে রমানা^{থ পিতৃ} বিষয় লাভ করেন। প্রবাদ এইরূপ বে, তিনি বাণ্রা^{রের}

ভগ্ন বাটী হইতে প্রভূত নিধি প্রাপ্ত হন, ভাহাতেই ভাঁহার **এবিত্র হইয়াছিল। এই সম্মুদালবাড়ী পরগণার জমিদার** রাজখনা দেওয়ায় নকাৰ মুশীদ কুলী খাঁ রামনাথকে সাল-• বাড়ী অধিকারের আদেশ করেন। তাহাতে সালবাড়ী জমিদারের সহিত রামনাথের ছইবার যুদ্ধ হয়। **প্রথ**ম बुक्त ब्रामनाथ अवनाज अविद्या नानवाज़ी हहेट कानिका ও চামুগুাদেবীর মৃত্তি আনেয়ন করেন। বিতীয় বার যুদ্ধে সালবাড়ীর জমিদার সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত হন এবং সালবাড়ী পরগণাঁরামনাথের অধিকত হয়। রামনাথ নবাবের নিকট আপনার বিজয়বার্তা ও রাজত্ব পাঠাইয়া দিলেন। নবাব मब्रुष्टे रहेम्रा •जाँराटक कत्रपष्टि श्रत्रांशा मान कत्रिटनन। ১৬৬৭ শকে তিনি কাশী, প্রয়াগ, বৃন্দাবন প্রভৃতি দর্শনাস্তর দিল্লীতে উপন্থিত হন। দিল্লীর দরবারে তিঁনি 'মহারাজ' উপাধি, রাজোচিত খেলাত এবং নিজ রাজধানীতে ছুর্গ ও দৈল্পরকার আদেশ পাইয়াছিলেন। তিনি বৃন্দাবন হইতে এক গোপালমূর্তি আনিয়াছিলেন। ১৬৭৬ শকে গোপাল-গঞ্জে এক পঁচিশ রত্নমন্দির নির্মাণ করিয়া সেই বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন। বঙ্গদেশে এরূপ স্থন্দর মন্দির অতি বিরল। " **এই মন্দিরে শিলাফলকে এই শ্লোকটা উৎকীর্ণ আছে**—

> "শাকে হক্ষভূমিধর তর্ক স্থাংশুসভ্যো প্রীতক্ষ নিদরমসৌ নৃপরামনাথঃ। ভক্তা দদৌ পরময়া সহ রাধিকারৈ ক্ষার তচ্চরণপক্ষ লল্ভি কামঃ।"

ইত্রিপূর্দের শুকসাগরের তীরে পিতার স্থাপিত শুকেশ নিঙ্গেরও এক স্থানর শিবালয় নির্মাণ করিয়াছিলৈন ;— সেই মন্দির মধ্যেও এই শ্লোকটী উৎকীর্ণ আছে—

"শকালে শশান্ধবিকালেনুসঞ্যে শিবায়াতিজ্জী দদৌ সৌধগেহন্। অকেশায় রম্যাং রমানাথভূপে নুগ্ঞাণনাথস্য সংস্থাপিতায়॥"

এ ছাড়া রামনাথ আঁারও আনেক সংকীর্ত্তি করিয়া গিয়াছেন। ভুনা যার, এক সময়ে ইনি করতক হইয়া ছিলেন।

তৎকালে সৈত্রদ মহম্মদ নধনে এক ব্যক্তি রক্প্রের সীমান্তরকার জন্ত ফৌজদার নিযুক্ত ছিলেন। মহারাজ রাম-নাথের অত্ন ঐখর্যের পরিচর পাইয়া হাই ফৌজদার একদিন ইঠাং রামনাথের বাড়ী আক্রমণ ক্রিয়া তাঁহার সর্জ্য পূঠন ক্রিলেন। রামনাথ জীপুত্রসহ গোবিন্দনগরে পলাইয়া গিয়া আ্যুরক্ষা করেন, পরে প্লামানের ছল ক্রিয়া মূর্নিধ্রা- বাদে উপছিত হইয়া হ্বাদারের নিকট কোজদারের অত্যাচারের কথা জানাইলেন। হ্বাদার দৈরদ মহম্মদকে ধরিয়া আানিবার জুক্ত একদল দৈক্ত দিলেন, সেই দৈক্ত সাহাব্যে রামনাথ কোজদারকে বিনাশ করিয়া তাঁহার অধিকৃত বাতাশনাদি পাঁচথানি প্রগণা অধিকার করেন এবং হ্বাদারের নিকট নগদ সাড়ে চারি লক্ষ টাকা ও বিশুর মুক্তা অহবতাদি পাঁচাইয়া তাঁহার প্রীতিভাজন হইলেন। রামনাথের চারি বী, চারি প্র, চারি ক্তা ও চারি জামাতা ছিল। এই জক্ত তিনি সমস্ত দ্বো ৪ চিহু অক্ষিত করাইতেন। এখনও রাজবাড়ীর সকল দ্বো এই ৪ চিহু ব্যবহার দৃষ্ট হয়।

১৬৮२ मॅंटक द्रामनांथ मानवनीना मध्द्रण करत्रन। कैंशित कीरमभाष्टिरे कैंशित, बार्छभूरतात मृजा हरेताहिन। অপর তিন পুত্রের মধ্যে সম্পত্তি লইয়া বিবাদ উপস্থিত হয়। রামনাথের ২য় পুত্র কৃষ্ণনাথ পিতার প্রাদ্ধাদির পরই সনন্দ আনিবার জ্বন্ত দিলীয়াত্রা করেন। কিন্তু ছর্ভাগ্যক্রম দিলী হইতে ফিরিয়া আসিয়াই করদাহের বাড়ীতে সহসা অবরোগে মৃত্যু হয়। এখন তাঁহার ৩য় ভ্রাতা देवश्वनाथ निर्खिवारम ममन्त्र मम्मन्ति व्यक्तिकात कविहा विमित्नन। তাঁহার সময় মীর কাসিম বাঙ্গালার নবাব। তিনি বাঙ্গালার সকল রাজা ও জমিদারগণের প্রতি রাজন্ম রুদ্ধির আনেশ করেন। বৈভানাথ রাজক বৃদ্ধি দিতে অস্বীকৃত হওয়ায় কাসিম কৌশলক্রমে মুঙ্গেরে আনিয়া তাঁহাকে বন্দী করিলেন। এই স্থোগে তাঁহার কনিষ্ঠ কাস্তনাথ ইষ্ট ইণ্ডিয়া জ্বোম্পানীর निक्रे निक नारम मनम পाইবার প্রার্থনা করেন। বৈছ-नाथ इर्गवक्रकैरक উৎকোচ निम्ना निनामभूरत भगाहेमा आस्मिन এবং কান্তনাথের তুরভিদন্ধি জানিতে পারিয়া তাঁহাকে-পৃথক করিয়া দেন। তাঁহার যত্নে ত্যানল্পাগর নামক স্বোবর, আনন্দ্রাগর ও মাতাসাগরের স্থিত সংযুক্ত রাম-দাঁড়া নামক বৃহৎ থাল এবং ১৬৯৭ শকে নিজ রাজধানীজে -কালিয়ালীউ বিগ্রহের, বিশ্রাম মন্দির নির্শিত হয়'। শেষোক্ত मिनदा निनाभाष्टे वहे दशक्ती उदकीर आह्य-

"যং কারিয়েতি সততং ব্রন্ধরাজপত্নী প্রেম্বা জগাদ নিথিল শ্রুতিমৃগামীশম্।' তবৈ হয়াক নূপতে) হরতে শকান্ধে বিশ্রামমন্দিরমদান পবৈক্ষনাথঃ b"

देवनानात्थत नमत्र निर्माणभूदतत अधार्यात हत्रमावस् ।

বৈশ্বনাথের পুত্র সম্ভান হর নাই, এই মান্ত তিনি এক জ্ঞাতিপুত্রকে দত্তক লরেন। তাঁহার নাম রাধানাথ। বুটাশ
গবর্মেন্টের নিকট রাধানাথ 'রাজা বাহাছর্র' উপাধি লাভ
করেন। তাঁহার সমরেই দিনাজপুররাজ্যের অবনতির স্ত্রপাত হর। স্থাসনের অভাবে এই সময় বিজ্ঞানগর পরগণা
ভিন্ন প্রায় সমন্ত সম্পত্তিই বিক্রীত হইল। মনোকপ্তে রাধানাথ ইহলোক ত্যাগ করিলেন। তাঁহার দত্তক পুত্র গোবিন্দ
নাথ উত্তরাধিকার পাইলেন।

ইনি বৃন্দাবনে ক্ঞানংযুক্ত একটা মনোহর মন্দির নির্দাণ করিয়া রাধাপ্রামরায়ের নামে উৎসর্গ করেন। ১৭৬০ শকে গোবিন্দানাথের মৃত্যু হইলে তৎপুত্র তারকনাথ রাজা হইলেন। মহারাজ তারকনাথ দিনাজপুর জেলার নানাস্থানে পাকা রাজা এবং দিনাজপুর সহরে ও রায়গঞ্জে দাতব্য ইাসপাতাল নির্দাণ করাইয়া দেশের প্রভূত মলল সাধন করিয়া গিয়াজেন। ১৭৮৭ শকে অপুত্রক অবস্থায় উহার মৃত্যু হয়। এই সময় তাঁহার মহিষী প্রামামোহিনী সম্পাত্তর রক্ষাভার প্রাপ্ত হন। তিনি ১৮৭৪ খুইান্দের ময়স্তরের সময় প্রভূত অর্থ বিতরণ করিয়া দীন প্রজাগনকে রক্ষা করিয়াছিলেন। তাঁহার এই উচ্চ দয়ার গুণে বৃটাশ গবর্মেণ্ট তাঁহাকে 'মহারাণী' উপাধি প্রদান করেন। ইহার য়ের দিনাজপুরে ইংরাজী, বালালা ও ব্যায়াম শিক্ষার্থ বিজ্ঞালয় স্থাপিত হয়। ইনিই দিনাজপুরের বর্ত্তমান মহারাজ গিরিজানাথ রায় বাহাদ্রকে দত্তক গ্রহণ করেন।

পুরাতব। এই জেলার নানাস্থানে প্রাচীন হিন্দু ও বৌদ্ধরাজগণের প্রাচীন কীর্ত্তি এবং পুণাস্থান পড়িয়া আছে।

বীরগঞ্জ থানার মধ্যে কান্তনগরের চারিপার্শ্বর ভূভাগকে এথানকার লোকেরা উত্তরগোগৃহ বলে। তাহাদের বিশাস, এথানে বিরাটরাজ গোধন চরাইতেন। বীরগজ্ঞের ২ কোল পুর্বে আজেরী নদীর তীরে সনকা নামক স্থানে প্রাচীন ধ্বংসাবশেষ দৃষ্ট হয়।, প্রবাদ এথানে চাঁদসওদাগরের মাহীর তুর্গ ছিল। কান্তনগর ও প্রাণনগরে দিনাজপুর রাজগণের প্রাসাদের ভয়বশেষ আছে।

রাণী শৃহলথানার মধ্যে গোরথনাথ নামক স্থানে এক অতি প্রাচীন শিব ও কালীমন্দির দৃষ্ট হয়। এথানে পাথর দিয়া ঘেরা একটা প্রস্তবণ বা কুপ আছে। যতই জল লওয়া হউক না, কিছুতেই তাহার জল থালি হয় না। শিবরাজির দিন এথানে মহাধুমধাম হইয়া থাকে। ইহার নিকট রামরায় ও শ্রামরায়ের প্রাচীন কীর্ত্তির ভ্রাবশেষ পড়িয়া আছে।

পীরগঞ থানায় তক্ষনদীর বামধারে ইইকরাশির স্তৃপ

দেখা যার। প্রবাদ আছে, এখানে বিরাটের স্মসামরিছ
মহাদেবের এক গড় ছিল। হেম্মতাবাদের নিকট মধ্চ্
দোকরপোস্ নামক এক মুসলমধন সাধুর দরগা আছে,
সহত্র সহত্র মুসলমান এখানে সাধুর পূজা দিতে আইন।

দোকরপোদের মস্জিদ্ স্থলতান্ হোসেন শাহ নির্দাণ করাইয়া দেন। মস্ঞিদ্গাত্তে ৯১৬ হিজারী আছিত আছি। হেল্মতাবাদের পশ্চিমাংশে মহেশ নামে এক রাজা রাজ্য क्रिटिंग । এथानकांत्र लाट्क्त्रा वर्णन, वमक्रकीन् नामक वक মুসলমান পীরের উৎপাতে মহেশ ঢাকায় চলিয়া দ্রান। এখানে ,একটা উচ্চ প্রাচীর আছে, সাধারণে ভাহাকে হোসেনশা_{হের} 'তথ্ত' বা সিংহাসন বলে । বংশীহারী থানার উত্তরপূর্বাংশে त्राचा महीशात्वत्र कीर्ति महीशानमीचि नारम श्राप्त व्यक्तिकान ব্যাপী এক[•]বৃহৎ সরোবর আহে। জগদল থানায় তদন ও পুনর্ভবা নদীর পলি পড়িয়া এক দীপ হইয়াছে, এই গীপের মধ্যে একটা সরোবর ও এক প্রকাণ্ড ইটের স্তুপ দেখা যায়। এ অঞ্চলে লোকের বিশ্বাস, স্থ্যবংশীয় মায়ারুদ্র রাজা এখানে রাজত্ব করিতেন। গঙ্গারামপুর থানায় দমদমা নামক হান হইতে প্রায় তিন ক্রে।শ দক্ষিণে বিস্তর প্রাচীন কীর্ত্তি ধ ধ্বংসাবশেষ পড়িয়া আছে। লোকেরা ঐ সকল বাণরালায় কীর্ত্তি বলিয়া ঘোষণা করিয়া থাকেন। এথানে তর্পণদীদি নামে এক স্থর্হৎ পৃষ্ণরিণী আছে। চুয়ান্তর সালের ময়ন্তরে সময় ইহার নিকট একটা কুদ্র ডোবা কাটাইবার সময় তর্গো মহারাজ লক্ষণদেনের এক থও তাম্রশাসন আবিষ্কৃত হয়।

প্রবাদ এইরূপ এখানে বাণরাজ তর্পন করিতেন, সেই জন্ম উপনিদীয়ি নাম হয়। ইহার আনতিদ্রে থাণেশবরনটি ও মুসলমানগণের প্রাচীন রাজধানী দেবকোট অব্দিত। দেবকোটে মুসলমান রাজগণের সময়কার কয়েকথানি থোটি লিপি আছে। এই নগরের অনতিদ্রে এক রহৎ ধ্বংসাবশেষ প্রতিত আছে।

হাবড়া থানার মধ্যে বিরাটপাট নামে ইউকের ত্ণবিশিষ্ট এক প্রাচীন স্থান্ত আছে। এখানকার নোকেরা
ইহারই কিছু দ্বে বিরাটসেনাপতি মদনের বাটার ভ্যাবণের
দেখাইয়া থাকে। ইহার খানিক দ্রেও অনেক প্রাচীন ত্ণ
পড়িয়া আছে, তাহার •মধ্যে কেহ কেহ কীচকের বাড়ী
নির্দেশ করে। হাবড়া থানার মধ্যে করভোরাতীর্থ
অবস্থিত, কোন যোগ উপলকে মহল্র সহল্র হিন্দু এখানে
করতোরা নদীতে স্থান করিতে আইসে। এ অঞ্চরের
মুসলমানেরাও মাল্য উৎসর্গ করিয়া করতোরার প্রাচি
ভক্তি প্রাদর্শন করিয়া থাকে। এ ছাড়া বোড়াবাট ধানার

করতোরার **ক্ষিতীর্থ বিভয়ান। হিন্দু ও মুসল**মান কীর্তি বাতীত এই জেলায় বৌদ্ধপ্রভাঞ্বর নিদর্শন ও বৌদ্ধ ধ্বংসা-বশেষের অভাব নাই। দিনাঞ্চপুরের দক্ষিণপুর্বাংশে বিস্তর ে,বৌদ্ধকীর্ত্তির ধ্বংসাবশেষ ইতন্ত্রীতঃ বিক্লিপ্ত রহিরাছে। এ অঞ্লে পৌত্রপর্ধনের প্রাচীন রাজধানী বর্ধনকুটী অবস্থিত। পাৰরাজগণ এখানে রাজত করিতেন। গোবিন্দগঞ্জের ১৬ ক্রোশ পশ্চিমে পাছাড়পুর নামক গ্রামে বৌদ্ধন্ত পূল্ট হয়। ইহার প্রায় আড়াই ক্রোশ পশ্চিমে 'যোগীগুফা' নামক विथा । च्या व्यक्ति स्थल क्षेत्र मात्राद्य मुर्खि দেখিতে পাওরা যার। বৌদ্ধদিগের এই পবিত্র স্থানে পর-বর্ত্তী কালে বৈষ্ণবেরা চতুত্ জ, নারায়ণ মৃত্তি প্রতিষ্ঠিঙ क्तिशाष्ट्रन । अथारन दोक्तिमार्गत रमयरमयीत मूर्छ । निज्ञ-নৈপুণ্য দেখা যায়। থেতল পরগণায়ও ঐরপ অনেক আছে। পাচবিবি থানার উত্তরপুর্বে ও পাহাড়পুর হইতে প্রার ৫॥• কোশ উত্তরে তুলদীগলার ধারে নিমাইশাহ নামক পীরের चालानात्र, निक्षे त्रोक्षल्यु श मृष्टे इत्र । हेशत चर्कत्काम मृत्त्र বৌদ্ধরাজ মহীপাল স্থাপিত মহীপুর অবস্থিত। যোগীগুফার **धांत्रिमित्क विखन स्वःमावर्मिय व्याद्धः अवाम रय के छात्न** प्तिवर्णान, प्तिवर्णालय माजा जीमात्त्रवी, हळ्ळान, मशैनान প্রভৃতির প্রাসাদ ছিল। এথান হইতে তিন ক্রোশ দ্রে প্রসিদ্ধ বুদলন্তন্তে নারায়ণপালের সময়কার শিলালিপি উৎ-কৌর্। বাস্তবিক যোগীগুফার নিকটবর্ত্তী প্রাচীন স্কুপ উদ্ঘাটন করিলে পালরাজগণের অনেক কীর্ত্তি আবিষ্ণত হইতে পারে। দিনাগু (ক্লী) অন্ধকার।

দিনাদি ( পু: ) দিনস্ত আদি:। প্রভাতকাল। দিনাধীশ ( পুং ) দিনস্ত অধীশঃ। ১ সূর্য্য। ২ অর্কর্ক। দিনাস্ত (পুং) দিনস্ত অন্তঃ। দিবাবসান, সায়াহ্ন।

"কডাদিনাডে নিলয়ায় গৰং" (রঘু)

দিনাস্তক (পুং) দিনং অস্তয়তি অন্ত-ণিচ্-থূল। অন্ধকার। (ত্রিকাণ) নিনাপুর (দানাপুর), > বঙ্গের ছোট লাট বাহছিরের শাসনাধীন পাটনা জেলার অন্তর্গত একটা মহকুমা। ইহার প্রকৃত নাম পানাপুর, সাহেবেরা দিনাপুর বলে। অক্লা ২৫০ ৺ং ছইতে ২৫ ৪৪ উ:; জাঘি ৮৪ ৫٠ ১৫ ছইতে ৮৫° ৭´ পুঃ। পুরিমীণ ফল ১৪৩ বর্গমাইল। এই মহকুমাতে घरें है। थाना, अक्ही (पश्चानी आपाणक, अ जिनहीं को अपाती ব্দালত আছে।

২ আলাহাবাদ সামব্রিক বিভাগের অন্তর্গত পাটনা জেলার (मनानिवाम । मामिक मनव व्याउँ। এই नगव गला नतीव ^{দকিণ} ক্লে অবস্থিত। অক্ষা ২৫°,৩৮´১৯´´উঃ; ক্রাঘি°

৮৫° c b পৃ:। সেনানিবাসের মাজিট্রেট বাহাছুর সমস্ত দানাপুর মহকুমার উপর কর্ভৃত্ব করিয়া থাকেন। দানাপুর ইইতে বাঁকিপুর তিন ক্রোণ দ্রবর্তী; স্বতরাং দানাপুর বাঁকিপুর এবং পাটনা সহর সংশগ্ন থাকা প্রযুক্ত একটা নগরের তিনটা অংশ বলিরা গণ্য করা যাইতে পারে 🗸 ইহাদের উত্তরে গলা-नती এवः प्रक्तित्व देहें हे छित्रा द्रतन अदह द्याल्यानित द्रतन असे। जिन्ही नगरत्रहे द्वनश्वत्र रहेमन 'आह्व। ১৮११ शः अहस পাটনা জেলাতে যে সিপাহী বিজ্ঞোহ হয়, তাহার স্ত্রপাত এই দানাপুরের সেনানিবাস হইতেই হইয়াছিল। ঐ সালের জুলাই মালে এখানকার তিন দল সিপাহী বিজোহী হইয়া নিজ নিজ অল্ল শল্ল লইয়া সেনানিবাস হইতে বহিৰ্গত হয় এবং দলবদ্ধ হইয়া শাহাবীদে গমন করে। ভাহাদিগকে বাধা দিবার কেহ না থাকার, তাহারা তথা হইতে গিয়া আরা আক্রমণ করে। ইহার পুর্বেই দানাপুর হইতে এক দল গোরা পণ্টন আমারারকার্থ প্রেরিত হইয়াছিল: উক্লয় দলে ভরানক যুদ্ধ উপস্থিত হইল। সুরোপীয় গোরা সৈম্পগণ বিলক্ষণ পুর্টুতা ও সাহসের সহিত যুদ্ধ করে, কিন্তু শেবে निर्भाशीमिश्वबंद अवनाफ हव।

দিনারস্ত (পুং) দিনভ আরম্ভ: ৬৬৫। প্রভাতকাল। দিনার্দ্ধ (পুং) দিবসের অর্জভাগ, মধ্যান্ত। 'দিনাবসান (ক্লী) দিনত অবসানং। দিনাস্ত, সন্ধ্যা:। দিনাক্ত ( क्री ) মন্ত্রভেদ।

দিনিকা ( জী । দিনং কৃত্যহেতৃতয়া অন্তাত ইতি দিন-ঠন্। একদিন ক্বত কর্মমূলা, একদিন কার্যোর বেতন, একদিন कर्म कतिला, यांश भी अत्रा यात्र । ( त्रज्ञाना )

मिर्नियात्र, एज्यार्क (मर्मत अधिवात्री, हेः त्राभीत हेशामित्रक ডেনু ( Danes ) কছে। [ডেনার্ক দেখ।] খুষ্টার সপ্তদশ শতাব্দীর প্রথম হইতেই দিনেমারগণ ভারতবর্ষে বাণিজ্য कतिराज व्यात्रष्ठ करत्र। ১৬১२ न्थृष्टीरम निरममात्रनिरगत ध्यथम देहे देखिया (काम्लानि, এवः ১७१० थृहोर् क जाहारतैत ৰিতীর ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানি স্বাশিত হয়। ১৬১৬ খুটাকে ট্রাঙ্ট্বার ও শ্রীরামপুরে দিনেমারগণ কুঠি স্থাপন করেন। এই হুই স্থান এ পর্যান্ত উহাদিগেরই অধীন ছিল, অবলেধে ১৮৪৫ थृडीरम देश्तारमता एउन्नीरम् त निक्र •हहरू के कृहे স্থান ক্রের করেন। মাজ্রাজ প্রেসিডেন্সির পোর্টন্ত, এবং মলবার উপকুলে ইন্দোভা ও হোল্চেরি প্রভৃতি স্থানেও मित्नभात्रमित्शत कुठि हिन।

ডেকার্কের রাজার সহায়তার এদেশের প্রথম খুটার ধর্মের প্রটেটাট মত প্রচারিত হয়। জিজেনবাল্গ্ও প্লচু

(Plutschau) ১৭০৫ খুটাকে দিনেমারদিগের আশ্রর টুাকুইবারে প্রটেটাণ্ট মক্ত প্রচার আরম্ভ করেন। ইহারাই প্রটেটণ্ট মতে তামিল ভাষার সমস্ত বাইবেল অফুরাদ করেন।

বাঙ্গালা দেশে কেরি, মার্সমান, ওয়ার্ড প্রভৃতি খুষ্টার প্রচারকদিগের নাম নহবিথাত। ইহারা সকলেই দিনে-মার উপনিবেশ প্রীরামপুরে থাকিয়া নানাবিধ ভাষার বাই-বেল অফ্রান করেন। 'বলা বাছল্য, ইহারা নানাবিধ পুত্তক প্রণায়ন এবং বিদ্যাশিক্ষার নৃত্ন প্রণালী প্রবর্ত্তনাদি বারা এদেশের উন্নতি করিয়া গিয়াছেন। বাঞ্চালা ভাষার পুত্তক ছাপিবার জন্ত ইহারাই প্রথম বলীর অক্ষর প্রস্তুত করেন।

দিনেশ ( পুং) দিনভ ঈশ:। ১ হঠা। ২ অক্তৃক। ৩ হঠাদি ্বারাধিপতি।

দিনেশাস্থ্ৰজ (পুং) দিনেশিক্ত আত্মক্তঃ। ১ শনি। ২ যম। ৩ কৰ্ব। ৪ স্থাীৰ। স্তিয়াং টাপ্। তপতী, যমুনা।

দিনেশ্বর (পুং) দিনভা স্বৃশ্বর:। > দিনেশ, ত্র্য্য। ২ অর্কর্ক। ৩ ত্র্যাদি বারাধিপতি।

দিন্দিগল, (দিপুকল), ১ মান্ত্রাজ প্রেনিডেন্সির অন্তর্গত মহরা জেলার একটা ত্রালুক বা মহকুমা। পরিমাণফল ১১৩১ বর্গমাইল। ১৭৯২ খৃঃ অলে এই মহকুমা ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানির হত্তগত হয়। কোদবর, মাগেরি প্রভৃতি কতিপর ক্ষুদ্র কৃত্র নদী এই স্থান দিয়া প্রবাহিত, তডির প্রচ্র মংস্পূর্ণ বহুসংখ্যক দীর্ঘিকা আছে। শুনা যায়, ঐ সকল পুক্রিণীতে পূর্বের মুক্তা ও শুক্তি জন্মিত। 'পণ্যজব্যের মধ্যে জয়পাল, সালসা ও সোণামুখীর পাতা উল্লেখযোগ্য। এই মহকুমার অন্তর্গত শুতম এবং ক্রধমপত্তি, নামক স্থানে লোহের কারখানা এককালে অতি সমৃদ্ধিশালী ছিল।

ং উপরিউক্ত দিন্দিগল মহকুমার প্রধান নগর; ইহার প্রকৃত নাম দিঁপুকল অর্থাৎ দিপুকনামক দানবের দৈল। অক্ষা ১০ ২১ তি উট, জাবি ৭৮ ০ ১৭ পূ:। এই নগর বিষ্কুপ্র ইংতে প্রায় ৮৮ ০ ফিট্ উচ্চে অবস্থিত এবং পলনী পর্বতম্ব, কোদাইকানাল স্বাস্থ্যনিবাস হইতে ৫৪ মাইল ও মহরা হইতে ৩২ মাইল দ্রবর্তী।

অধিবাদীর সংখ্যা ২০,২০৩ জন, তর্মধ্যে হিন্দু ১৪৫৮৯, মুদলমান ১২৫১, খৃষ্টান প্রভৃতি ৩৩৬৩ জন। পূর্বের খৃষ্টানগণ সহরের এক পৃথক্ পল্লীতে বাদ করিত, প্রত্যেক খৃষ্টানের গৃহচ্ডায় কুশ চিহ্ন স্থাপিত থাকিত। অধিবাদিগণের মধ্যে শতকরা প্রায় ১৫ জন তত্ত্বায়, ১৮ জন ব্যবদায়ী এবং ১৩ জন ক্ষিজীবী।

দিন্দিগল মাক্রাজ প্রেসিডেন্সির' সমস্ত বড় বড় স্থ্রের

সহিত রেলপথ বারা সংযুক্ত। তামাক, কফি, এলাই।
পশুচর্ম প্রভৃতি এ স্থান হইছে চতুর্দিকে রপ্তানী হইরা থাঃ
পূর্ব্বে এখানকার পট্রস্ত্র ও উৎকৃত্ত মস্লিন প্রভৃতির
সমাদর ছিল, করুশ্বা নীনক উণাজাত কম্বন্ধ আদ বিক্রীত হইত। সব্ভিভিজনের সদর ক্লিয়া দিন্দি
সহরে সমস্ত কাহারী, পোষ্ট টেলিগ্রাফ আফিস, ভাক্রাক্র্য

পূর্বেল দিন্দিগল নগর মহরারাজের নামে মাত জনী একটা পৃথক রাজেঃর রাজধানী ছিল। ইহার ছর্প নগরে পশ্চিমদিকে সমুদ্র পৃষ্ঠ হইতে ১২২৩ ফিট্ উর্জে এক ছ্রারো শৈল শৃলের উপর অব্যায়ত এবং চতুর্দিকে বহুদ্র হইন দৃষ্ট হইরা থাকে।

অতাপি ঐ হর্গ সম্পূর্ণবিস্থায় বিষ্ণমান আছে, এই হুর্গে অবস্থান অভাবত: হুরাক্রম্য ও স্থান্চ, পরস্ত ইহা মহুরা ও কোইম্বাডোরের স্থাবর্তী গিরিবত্ম সকলকে রক্ষা করিভেছে এই কারণে এই হুর্গ লইয়া অনেক যুদ্ধ বিগ্রহ হুইয়া গিয়াছে

১৬২৩ হইতে ১৬৫৯ খৃষ্টান্দ পর্যান্ত এই ভান মরাঠ মহিশ্র ও মছরা সৈত্তগণের রণকৌশলের লীলাভূমি হইর ছিল। ঐ সময়ে দিন্দিগলের পলিগার অর্থাৎ দর্দারগ প্রায় ১৮ জন কুড় স্দারের উপর আধিপত্য করিত। চাঁ। সাহেব, মহারাষ্ট্রগণ ও মহিশ্বের সৈভাবল যথাক্রমে এই श्रो অধিকার করে। ১৭৫৫ খুটাকে হায়দর আলি এই চুর্গে দেন সরিবেশ করিয়া নিজ ভাবী রাজ্য ছাপনের স্ত্রপাত করে। দক্ষিণ দিক্ হইতে কেইখাতোরের পরে অবস্থিত বুলিয়া হায় দরআলীর সহিত যুদ্ধে এই ছুর্গ ইংরাজ্বনিগের পঞ্ वित्मव अञ्चिविषा कात्र रहेशाहिन। ১१७८ वृष्टीत्म हेरा ইংরাজের অধিকৃত হয়, কিন্তু ১৭৬৮ খুটালে ইওচাত হয়, পুনরায় ১৭৮৩ খৃষ্টাব্দে অধিক্বত এবং ১৭৮৪ খৃষ্টাবে মল পুর সৃদ্ধি অফ্সারে মহিশ্র রাজাকে প্রণত হব। ১৭৯ - খৃষ্টাব্দে আবার মুদ্ধের স্চনা হওয়ার ইংরাজগণ উয়া অধিকার করেন। পরিশেষে ১৭৯২ খুষ্টাব্দের সন্ধি বারা হ^{গ্টী} ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানিকে প্রদত্ত হয়। শৈলের সর্মোচ শৃলে হর্গের মধ্যন্তলে কএকটা ধ্বংসাবশিষ্ঠ প্রাত^{ন দ্বেন} মন্দির বিস্তমান আছে। ু ইহার পাদদেশে ভিত্তির চতু^{দিকে} বেড়িয়া *: ৪৬০ শকান্ধিত বিজয়নগরের রাজা অচ্াত্রের রাম্বের সামধিক একটা শিলালিপি দৃষ্ট হয়, তাজি দিনিগ^{নৈর} ছই একজন ব্রাহ্মণের নিকটও প্রাচীন ভাত্রশাসন ^{আছে।} দিন্দিবরমু (তিভিবর্ম) মাল্রাজ প্রেসিডেলির ^{দ্রিণ} আৰ্কট জেলার একটা তালুক বা সৃষ্ডিভিন্ন। ^{পরিমাণ}

কল ৮৪৪ বর্গমাইল। দক্ষিণভারতীর রেলপথ এই তালুক দিরা গিরাছে। ইহাতে তিনুটা ষ্টেশন আছে। প্রধান স্থান দিনিবরম্ও গিঞ্জি।

২ উপরোক্ত দিনিবরম্ব সবিভিজ্ঞনের প্রধান সহর।

দিনেশারী, বোদাই প্রেসিডেন্দির অন্তর্গত নাসিক জেলার

একটা সব্ভিভিজন্। ইহার উত্তরে কল্বান ও সপ্তশৃঙ্গ পর্বতে,

পূর্বে চান্দোর ও নিকাদ; দক্ষিণে নাসিক সব্ভিভিজন;
পশ্চিমে সহাজি ও পেনই পরিমাণফল ৫২৯ বর্গনীইল।

ুই উপবিভাগের অধিকাংশ পর্কতময়, তজ্জন্ত শকটাদি বাতায়ান্ডের স্থবিধা নাই। কেবল সাবল গিরিপথ দিয়া বল্গার পর্যান্ত এবং আইবান গিরিপথ দিয়া কল্বান পুর্যান্ত রাজপথ ছইটী স্থাম। বৃষ্টি পর্যাপ্ত পরিমাণে হইয়া থাকে। বৈশাধ কৈট্রমাণে জলবায়ু স্বাস্থ্যকর, তন্তির অভান্ত সময়ে জররোগের প্রাহ্রতাব হয়।

২ উপরোক্ত দিন্দোরী সব্ডিভিজ্ঞানের প্রধান নগর। এই নগর নাসিক হইকে, ১৫ মাইল উত্তরে অবস্থিত। এই ভানে সবডিভিজন সংক্রাস্ত কাছারী, ডাক্ঘর, দাত্রা-চিকিংসালয় প্রভৃতি আছে।

দিন্না গ্রাম (পুং) কাশ্মীরের একটা গ্রাম। (রাজ্বরং ৪।৩০১৮)
দিপ্স (প্রি) দন্ত সন্ উ ছান্দস: ন ভষ্। দন্তেচ্ছু। "ন যং
দিপ্সন্তি দিপ্সব:" (ঝক্ ১৷২৫।১৪) লৌকিক প্রারোগে
দিপ্স হইবে না, সেই স্থলে ধিপ্স এইরূপ হইবে, বৈদিক প্রারোগে কেবল 'দিপ্স, দিপ্সতি' এইরূপ প্রয়োগে ছইবে।
দিপাল পুর, ১ পঞ্জাবের অন্তর্গত মন্টগমারী কেলার একটা তহসাল। পরিমাণ্ডল ৯৫৬ বর্গমাইল। ইংগর প্রায় ৩ ক্লাল ক্ষিকীর্যা হয়, অবলিষ্ট প্রিত ও অমুক্রি।

২ পলাবের অন্তর্গত মন্টগমারী জেলার একটা প্রাচীন ও
ধ্বংসাবশিষ্ট নগর ও উপরোক্ত দিপালপুর তহসীলের সদর।
এই নগর ওপারা ষ্টেশন হইতে ১৭ মাইল এবং পাকপন্তন
ইইতে ২৮ মাইল ঈশানকোণে প্রাচীন বিপাশা নদীর
উটে অবস্থিত। এই নগর এক্ষণে হুর্দশাগ্রস্ত হুইলেও
পূর্ব্বে দিল্লীর পাঠান স্মাট্গণেব সময়ে ইহা স্থসমূদ্ধ উত্তর
প্রাবের রাজধানী ছিল। গৃষ্ঠীয় যোড়শ শতাব্দীতেও
বাবর দিপালপুর নিগরকে লাহোরের সমকক্ষ বলিয়া উল্লেখ
করেন। অনেকৈ অনুমান করেন, এই নগর সম্ভবত:
,দেবপাল নামক কোন রাজা কর্ত্বক লাপিত হইয়া থাকিবে
এবং সম্ভবত: দেবপাল হইতেই দেবপালপুর বা দিপালপুর
ইইয়াছে। কিন্তু তাহার কোন বিশেষ প্রমাণ পাওয়া যায়
না। প্রবাদ আছে, ইহার আদি নাম শ্রীপুর, বিশ্বরাদ

নামে কোন ক্ষতিয় এই শগর ছাপন করিয়া নিজ পুতের नारम हेरात नामकत्रण करत्रन। स्थनारत्रण कनिःशाम नाट्स वटनन, এই शानहे मखवडः हेटनमी वर्निङ देमनीनगंत **ছ্ট্**বেঁ। ুঞ্চীন নগরভিত্তির স্থানে স্থানে **অ**ূপাকার ভয় ইটকাদির সহিত শকরাজাদিতুগর মূজ। পাওয়া গিয়াছে। ফিরোজ ভোগলক খৃষ্টীয় চতুর্দশ শতাকীতে এই নগর পরি-দশন করিয়া নগর বাহিরে একটা মদ্বিদ্ নির্মাণ করেন এবং শতজ্ঞ হইতে থাল কাটিয়া নগর সন্নিধান পর্যা**ন্ত জল** আনিয়ন করেন। তৈমুবলঞ্চের আক্রেমণকালে এই নগর সমৃদ্ধিতে মূলতান ব্যতীত আর সকল নগর অনপেকা শ্রেষ্ঠ ছিল, তৎকালে এখানে ৮৪টা বুরুজ, ৮৪টা মস্ক্লিল ও ৮৪টা কুপ ছিল। প্রাচীন নগর-প্রাকার প্রায় ২১ মাইল দীর্ঘ হইবে। ইহার বাহিরেও •বছদ্র পর্যান্ত ভম ইটক অতুপাদি দৃষ্টে বোধ হয় প্রাচীরের বাহিরে বহু লোকের বসতি ছিল। এক্ষণে এই বিস্তীৰ্ণ নগরের ধ্বংস্মাত অংবশিষ্ট আছে। বর্ত্তমান দিপালপুর নগর প্রাচীন নগরের ঈশানকোণে নদীর পরপাংখে অবস্থিত। নদীর উপর তিন্টী থিলানযুক্ত একটী সেতৃ আছে। কি কারণে এই নগর পরিতাক্ত ও বিনষ্ট হয় তাহা ঠিক জানা যায় না, তবে অহমান হয়, বিপাশা নদীর পুরাতন স্রোত শুথাইয়া যাওয়ায় ইহার অফুতম কারণ হইতে পারে। ইংরাজ রাজগুভূকে হইলে থান বা থাক সংস্কার করা হয়, ভাহাতে দিপালপুরের প্রাচীন বাণিজ্যের কথঞিং পু্ৰক্ষরার হুইয়াছে। এখানে তহুণীলের যাবতীয় কাছারী, থানা, সরাই প্রভৃতি আছে।

দিপালপুর, মধ্যানেতের অন্তর্গত ইন্দোর অর্থাৎ হোলকর রাজ্যের একটি সহর। অক্ষা ২২° ৫১ উ: ও জাঘি ৭৫° ৫৫ পু:। এই সহর মৌ হইতে নীমচের পথে অবস্থিত। সহরের পূর্বভাগে একটা বৃহৎ পুক্রিণী আছে।

দিমাপুর, আসাম প্রদেশের অন্তর্গত নাগাপাহাড় জেলার একটা গ্রাম। এই গ্রাম সমাপ্তিটিং হইতে ১২ মাইল উত্তরে ধনেখরী নদীতটে অবস্থিত। পুর্বের এই স্থান কাছাড়ের রাজগণের রাজধানী ছিল, ঐ রাজধানী বহুকাল অললে পরিণত হইরাছে। অভ্যাপি গভীর অরণ্টোর মধ্যে বৃহৎ পৃক্ষরিণী ও চুর্গপরিথাদির ধ্বংদাবশেব দেখিতে পাওরা যায়। অতি অরকাল পুর্বের যথন এখানে দিমাপুর গ্রাম ও বাজার স্থাপিত হয়, তৎকালে এখানে জনপ্রাণীও ছিল না। এফানে অনেকগুলি নির্মাণ সলিলপুর স্বন্ধের বিভ্যমান আছে, এবং বিস্তীর্গ তুর্গ প্রাকারের স্থেপত টিক্ল আল্যাপি পরিলক্ষিত হয়। ঐ প্রাচীর উৎকৃত্ব ইইকনির্মান্ত এবং অন্যুন ৮, হাত

উচ্চ ও ৪ হাত বিভূত ছিল'বলিয়া অসুমান হয়। ইপ্টক-নির্মিত অনূঢ় ভোরণদার এবং ভাহার পাধরের চৌকাঠ অণ্যাপি দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু কাষ্ঠনির্মিত কপাট প্রভৃতি বছকাণ লোপ পাইয়াছে। প্রাচীর হুইতে ইপ্লক খদিয়া থদিয়া উভয় পার্স্কে পাকার হইয়াছে এবং ওত্নপরি নানা জাতীর তক্লতা জ্মিয়াছে। ত্র্গের পরিসর প্রায় তুই **मिटक्रे ৮** • • शक्ष, रेहाद व्याधात व्यत्नक्षे। ममहजूतव्य **त्करत्वत्र अत्र। नतीत्र पिटक व्याठीरत्रत्र निक्**षे शानरतर्म পরিথা নাই, কিন্তু নদীর বিপরীত দিকে গভীর পরিথার চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়। ছৰ্গ মধ্যে তিনটী কুল পুষ্ক-রিণীর গ্রন্থমাত্র বিদ্যমান আছে। ইহাদের একটীতে দোপানমালা-শোভিত একটা ঘট্ট এবং তাহার পশ্চাতে সোপানযুক্ত এক উচ্চ ভগ্নন্ত পদিবতে পাওয়া যায়। ঐ ভগত্যপ সম্ভবতঃ কোন দেবালয় কিমা ঘাটের টাদনী ছিল। দুরে দক্ষিণদিকে কভকগুলি করিয়া শ্রেণীবন্ধ, এক এক থও প্ৰস্তৱনিশ্বিত স্তম্ভ বিঅমান আছে। বলা ৰাহুল্য এই অভুত ভভগুলিই এখানের প্রাচীন কীর্ত্তির মধ্যে সর্বাপেকা কে তুহলোদীপক ও বিশ্বয়ঞ্জনক। বামভাগের ভম্ভনিচয় প্রভ্যেক শ্রেণীতে ১৫টা করিয়া চারি শ্রেণীতে দণ্ডায়মান ; ছই পংক্তিন্থ স্তম্ভসকলের উপরিভাগ গোলাকার, কতকটা ছত্তকের ভাষে এবং সর্বাঞ্গ অনল কারুচাতুর্যাপরি-চারক বতাপুসাদিবারা পরিশোভিত ৷ ইহাদের দর্ব্বোচ্চ শুস্ত > धिष्ठे बादः मकरनत्र हाउँ है। फिर्छ ६ हेक छेक्त। जानत শুলির উচ্চতা সাধারণতঃ ১২ হইতে ১৩. ফিট এবং পরিধি ১৮ इटेट्ड २० किट्डेन मधावर्जी। देहारतन माधान्न गर्छन-গ্রাণালী এক হইলেও কোন ছইটী তত্ত একরূপ নহে, প্রত্যেকের গঠন ও থোদকতা প্রভৃতিতে একটু বিশেষত আছে। অপর হুই পঙ্জির ভম্ভ চতুরত্র এবং অম্ভুতাকার, ইছাদেরও গাঁত্তে কারুকার্ব্যের অভাব নাই। কি উদ্দেশে এই সকল স্তম্ভ নির্মিত হল, তাহা অসুখান করা স্কটিন। ইহাদের অসম উচ্চতা এবং মস্তকের উপরিভাগেও কারু-কার্য্য থাকাতে, এ ওলি প্রাসাদাদির তম্ভ বলিয়া মনে रत ना। रहकान रहेए अञ्चान अनम्छ रहेबाह् अरः এখানকার রাজ্বংশ নানাস্থানে ছড়িয়া পড়িয়াছে, স্থভরাং এই मक्ल थाहोन कीर्खि मध्दत्र द्वानक्रभ विद्यामधाशा ध्वाप छ নাই। কোথাও খোদিত লিপিও পাওয়া যায় না। সম্প্রতি ভভ কর্টীর নিক্টবর্ত্তী স্থান মাত্র জলন কাটিয়া পরিষ্ঠার क्वा रहेवारक, अञ्चल क्र्यम अवना हरेवा विद्वारक। এहे

সকল পরিষ্কৃত হইলে হয়ত ইহার মধ্যে অবেনক গৃঢ়তত্ব বাহির হইয়া পড়িবে।

দিমাপুরে সম্প্রতি একটা পুলিস আউট পোষ্ট হইরাছে। ধনেখরী নদী দিয়া নৌকাদি যাডায়াতের স্থবিধা গাকার এখানে নাগাদিগের সহিত কিয়ৎ পরিমাণে ক্রেয়নিক্রাদি হইর্যা থাকে।

দিয় ( অ ) দের পৃষো॰ সাধু:। দের । "ভূবদম র্দিরানাং পত্তিঃ"
( পক্ ৮।১৯।৩১)

मिति পক ( प्रः ) कम् क । ( किका )

मिल ( पात्र ने ) > यन, कें खार कर । २ नाहम । ० छे ९ माह ।

मिल ( पात्र ने ) ) इः थि छ, यनः भी छि छ ।

मिल ( ने ते हो ( पात्र ने ) इः थ, यनः भी छ ।

मिल ( हि हो ( पात्र ने ) मत्नार्या ।

मिलात थाँ, यांहा मी दिवस इहें बन रमना पछ । वक्ष सन हर्सन स्था असन हर्सन ।

দিলাল, মেঘনামোহানাস্থ সন্দীপুনামক দীপের মুস্বমান দক্ষ্যরাজ। ইহার দক্ষ্যরুত্তি করিবার জন্ত কতকগুলি বেতন-ভোগী দৈশ্য ছিল। দিলালের মতে বিভিন্ন জাতীয় ত্ত্রীপুরুরের মধ্যে বিবাহ হইলে সন্তান সন্ততিসকল ও দৃঢ়কার হয়। এই ধারণা অন্থারে তিনি নিজ অধিকারে এবং সৈনিকদের মধ্যে সকল জাতির মধ্যে পরস্পর আদান প্রদান প্রচলিত করিয়াছিলেন। তিনি আরও ভাবিতেন, হিন্দুদিগের মধ্যে কেবল এক মাত্র জাতির মধ্যে আদান প্রদান আবদ্ধ থাকাতেই তাহারা ক্রমান হর্পল ও ক্রীণকার হইতেছে। বালালার নবাবের সৈত্ত কর্প্রক দিলাল ধৃত হইয়া মুর্লিদাবালে আনীত হয় এবং তথায় লোহপিঞ্জতে ক্রিছকাল জাবিত্ব থাকিয়া

দিলাবর খাঁ, মালব প্রদেশের মুসলমান রাজবংশের আদি
পুরুষ। ইহার মাতা স্থলতান সাহাবৃদ্ধীনের 'বংশীরা'। হিন্দু
রাজগুণের শোঁষ্য অবসানকালে ১৩১০ খুটান্দে দিলীপতি
গিরাস্-উদ্দীন্ বল্বনের সময়ে মুসলমানগণ মালব আক্রমণ
করিন্ধা অধিকার করে। "তদ্বধি মালব দিলীসমাটের
অধীনতা স্বীকার করিল। অবশেষে ১৩৮৭ খুটান্দে মুহর্দ্দ
শাহ তোগলকের রাজজ্বালে দিলাবল খা মালবের শাসন
কর্তা নিমুক্ত হইলেন। ১৩৯৮ খুটান্দে তৈর্বল্প দিলী
আক্রমণ করিলে স্থাট্ মাক্র্দশাহ পলায়ন করিলা প্রার ও বংসরকাল প্রথমে গুজুরাটে ও পরে মালবদেশে বাস করেন। ১৪০১ খুটান্দে স্থাট্ দিলী প্রত্যাবর্তন করিলে
দিলাবর নিজ্প স্ভাস্থান্ত মালবর্জ্য বিভাগ করিলা হিলা ভাহাদিগকে সামস্ত রাজা করিলেন এবং নিজে বাধীন-ভাবে রাজস্ব করিতে লাগিলেনু। ধারানগরে তাঁহার রাজ-ধানী ছিল। তিনি মাণু নগরেও অনেক সময় যাপন করিতেন।

দিলাবর বা রাজা হইরা করে কর্বর্থ পরেই ১৪০৫ খুইাজে গতার হইলে তৎপুত্র আরু বা নিংহাসনে আরোহণ করিবেল। দিলাবর বা হইতে তাঁহার বংশীর ১১ জন রাজা মালবের সিংহাসনে রাজত্ব করিলে পর হুমায়ুনপুত্র বীরবর অক্বর মালব অধিকার করিয়া দিলার মোগল স্থান্তাভ্রুক্ত করিলেন। দিলাবার, পঞ্চাবের অন্তর্গত বহাবলপুর রাজ্যের একটা হুর্গ। আই হুর্গম হুর্গ পঞ্চাবের বামতীর হইতে ৪০ মাইল দ্রে মরুভ্মির মধ্যে অবহিত। ক্ষিত আছে, ৮৪০ খুটাজে ধেড়া স্লিভটাট ইহা নির্দাণ করেন। ১৭৪৮ খুটাজে পর্যান্ত এই হুর্গ জর্মান্তরের রাজাদিগের অধিকারে ছিল, ঐ বংসর লায়ুদ্পুত্রগণ হুর্গ অধিকার করে।

দিলবারা, রাজপুতানার অন্তর্গত উদয়পুর রাজ্যের একটা
সহর। এই নগর উদরপুরের ১৪ মাইল ঈশানকোণে আরাবলী
পর্কতের পূর্বাংশে অবস্থিত। উদয়পুরের জনৈক সামস্ত
সন্দার এই নগরে বাস করেন। নগরের দক্ষিণে একটা
দৈলের উপর ভাঁহার প্রাসাদ নির্দ্ধিত, আরও প্রায় ২১ মাইল
দক্ষিণে নগর তল হইতে প্রায় ১০০০ ফিট্ উচ্চ, একটা
স্চীবং হ্রারোহ আবু নামক গগুলৈলের উপর জৈনদিগের
বিখ্যাত দিল্বারা মন্দির অবস্থিত। ইহা জৈনদিগের পবিত্র
স্থান। পূর্ব্ব এখানে শিব ক্লফাদির মন্দির ছিল বিলয়া
অস্মান হয়, কিন্তু তাহার এখন বিশেষ কোন চিহ্ন নাই।
চ্ছুর্দিক্ত্ব বহদ্রত্ব প্রদেশ হইতে গিরিশুক্ত্ব মন্দির দৃষ্ট হয়।

मिलां प्रांति । भारत में एक प्रांति । प्रांति । भारती । भारती

ইহার প্র মহারাজ দিলীপ। এই দিলীপ রামচজের আপতিামহ, ইহার প্র রখু, রখু নিজের বাছবলে অবোধ্যার রাজধানী ভাগন করেল। (হরিবংশ ১৫ আ:)

নিসপ্রাণের মতে অসমঞ্জের পুত্র অংশুমান্, অংশুমানের পুত্র দিনীপ, দিনীপের পুত্র ভগীরধ। পরে এই বংশে ঐবিলি নামে রাঝার ঔরসে দিনীপ জন্মগ্রহণ করেন। ইনি ধটাল নামেও বিধ্যাত ছিলেন, ইনি মুহুর্জকালের অন্ত আর্গ হইতে আসিরাছিলেন। ইনি সত্য ও বুদ্ধিবলে তিমলোক ও তিন অলি অয় করিয়াছিলেন। ইহার পুত্র রলু, ইনিই রামের প্রশিতারহ। (লিলপুণ ৬৬ অঃ)

মহাকবি কালিদাস রঘুবংশে এই দিলীপের বিবরণ বিভ্তদ্পপে বর্ণনা করিয়াছেন। একদা ইনি রাজীর পড়ু-লোপাশস্বায় স্বর্গ হইতে প্রত্যাগিষন করিতেছিলেন, আসি-বার সমর অনবধানতাবশত: অর্গীয় গাভী স্থাভির পুলা করিতে বিশ্বত হন, স্থরভি এই অপরাধে রাজা দিনীপকে षाडिभाभ ध्यमान अध्यन ८४, ष्यामात्र निमनीत रेमरा ना করিলে তোমার পুতা হইবে না। রাজা দিলীপ এই জয় অনপত্যতা হেতু হুংখে কালাতিপাত করিতে থাকেন, পরে পত্নীর সহিত কুলগুরু বশিষ্ঠের শরণাপল্ল হন। ঋষি বশিষ্ঠ ধাানে ভুরভির অবমাননা অবগত হইরা রাজাকে নন্দিনীর সেবা করিতে বলেন, দিলীপ অনক্তকর্মা হইয়া স্থরভিতনয়া निमनीत रम्या करतन। निमनी देशाल मुख्छे हरेया त्राकारक বর প্রদান করেন। এই বরে ইনি পুত্রলাভ করেন, এই পুত্রের नाम त्रचू, फाँहाबरे नारम त्रच्यः म विशां छ हरेबार ह । मिनौत्यव পত্নীর নাম স্মৃদক্ষিণা°। রমু বয়োপ্রাপ্ত হইলে দিলীপ ভাহার উপর রাজ্যভার প্রদান করিয়া সংসার ত্যাগ করেন। (রঘুবংশ) मिलीश्रुता है ( श्रः ) निनीश अव बाह बाजा। मिनीश द्वाचा। क्तितीत (क्री) निनीक्षक। शामत एव, शानरतत एांज, কোঁড়ক ছাতি।

मिल्ली ( पिर्नी ), > শঞ্চাবের অন্তর্গত একটা বিদ্যাগ। উত্তর আক্ষা ২৭০ ৩৯ ইইতে ৩০০ >> 'এবং পূর্বজাবিং ৭৬০ ১০ ইইতে ৭৭০ ৩৫ পর্যান্ত বিভ্ত। এই বিভাগে দিলী, শুর্গাঙ এবং কর্ণাল এই তিনটা কেলা আছে। পরিমাণ কল ৫৬১০ বর্গমাইল।

২ পঞ্জাবের ছোটলাটের শাসনাধীন উক্ত দিল্লী বিভাগের একটা জেলা। উত্তর অক্ষা ২৮° ১২´ হইডে ২৯° ১৩´ এবং পূর্ব্যাদি ৭৬° ৫১´ ১৫´´ হইডে ৭৭° ৩৪´ ৪৫´´ পর্যান্ত বিস্তৃত। পরিমাণ ফল ১২৭৭ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা (১৮৮১) ৬,৪৬,৫১৫ জন। এই জেলা দিল্লী বিভাগের মধ্যভাগে অবস্থিত। ইহার উত্তরে কর্ণাল জেলা, পশ্চিমে রোহতক, দক্ষিণে গুর্গাও জেলা এবং পূর্বের বম্না নদী, যম্নার উত্তরপশ্চিম প্রদেশান্তর্গত মীরটু ও বুলন্দ সহর জেলা। মোগল রাজধানী প্রাচীন দিলীনগম শাসুন বিভা-

मिली / जनात अकारिक यमूना नमीत व्यवहिकांविड প্রশম্য উর্বরা প্রান্তর, অপরদিকে রাজপুতানার পর্বতশ্রেণীর উপকণ্ঠশ্ব শৈলমালা, স্থতরাং ইহার ভূমির প্রাকৃতিও বিচিত্র। উত্তরভাগ শতক্রর দক্ষিণতীরবর্তী। নিম্নপ্রাম্বর প্রায় জল-मुख ७ व्यक्तंत्र, उत्व हेहात मधा निया यमूना थान काठी हहे-श्रार्ह्, उब्ह्रे उपरात (यथान कन किया शिन ना करत , অথবা ভূমি হইতে লবণ উঠিয়াঁ একবারে সমস্ত উদ্ভিদ্ বিনাশ না করে, সেই সমুদার স্থানে প্রচুর শস্ত জ্বনো। এই জংশে কেবলমাত্র যমুনাতীরবর্তী ভূমি স্বভাবতঃ অতিশয় উর্বরা। এখন যমুনা নদী যে ভাবে, পূর্বকালে যমুনা ভাহার ৫ জোশ পশ্চিমে প্রবাহিত হইত, এখনও তথায় উচ্চ নদীতট ম্পষ্ট বিঅমান আছে। কাল সহকারে তথা হইতে সরিয়া সরিয়া ষমুনা বর্ত্তমান স্থানে আসিয়াছে এবং বৃহৎ চর বা মানা, উৎপন্ন করিয়াছে। এই বিস্তীর্ণ মানা ক্রমশ: স্বপ্রশস্ত হইয়া দিল্লী নগরের এক মাইল মাত্র উত্তরে মেবাট শৈলের একটা শাখার পাদমূলে প্রতিহত হইয়া প্রবাহিত হইতেছে। এই প্রন্তরময় শৈল প্রায় যমুনার গর্ভ পর্যান্ত বিস্তৃত। আরাবলী গিরি শ্রেণীর একটা শাখা দিলী জেলার দকিণ-मिटके **' अत्रगां अ इटे**टल প্রবেশ করিয়া অদুরেই তিন মাইল প্রশস্ত মালভূমিতে পরিণত হইয়াছে এবং দিল্লী নগরের ১০ মাইল দক্ষিণে ছই ভাগে বিভক্ত হইয়া একভাগ উত্তর-মুখে, দিলীর পশ্চিম দিয়া অবশেষে যমুনাতীরত্তান্তরে বিলীন হইয়াছে, অপর শাথা দক্ষিণপশ্চিমাভিম্থে ফিরিয়া পুনরায় গুরগাঁও জেলায় প্রবেশ করিয়াছে। এই মালভূমি কোথা দ সমতল হইতে ৫০০ ফিটের অধিক উচ্চ নহে, কিন্তু উহাতে কোথাও জল নাই। কচিৎ ভূমি সমতল হইলেও জলাভাবে তথায় কোনরূপ শহ্যাদি জন্মিবার সম্ভাবনা নাই। তথাপি ভূমাধ্কারিগণ নিজ নিজ গ্রামের দীমাভুক্ত এই মালভূমির অংশ লইয়া, ঘোরতর বিবাদ বিসম্বাদ করে। উহাতে সামার পরিমাণে তৃণাদি অবিমা থাকে, স্থতরাং কিয়ৎ পরিমাণে পশুচাবণ বাতীত আর কোন ব্যবহারে षाहरम ना। वर्धाकारन शाहारড়त खनतानि शिविषती निता বেগে নিম্ন দিকে সমতল প্রাস্তবে আদিয়া পতিত ও সঞ্চিত হয়, তাহাতে তত্তৎস্থানের উর্বরতা বৃদ্ধি করে। জেলার

দক্ষিণপূর্বে নাজফগড় নামে এক বিতীর্ণ অগভীর বিদ্
আছে, ভাজ আখিন মাসে, ঐ জলা প্রার ৪০।৪৪ বর্গমাইন
ভান ব্যাপিয়া থাকে। দিল্লী জেলার প্রবেশ করিবার পূর্বেই
পূর্বে ও পশ্চিম থাল দিল্লা যমুনার অধিকাংশ জল বহিলা
ব্যার; স্কৃতরাং এই স্থলে যমুনা শুল্ক প্রান্ধ এবং বর্ষাকাল
ক্যতীত অপর সকল সমরেই প্রায় সর্বেত্ত ইনিয়া পার হওলা
যার; আবার দিল্লীর নীচে ওথলা সহয়ের নিক্ট বমুনার
অবশিষ্ট জলরাশি নৃতন আগরা থাল দিল্লা প্রবাহিত হয়।
ঐ সকল থাল দিল্লা যেরপে জল বার, তাহাত্তে যমুনা শুল
হইয়া পড়িত, তবে বাঁধ ও বালুকারাশির নিম্পদিয়া অধিকাংশ
শ জল ঝরিয়া আইদে, তাহাতেই স্বোত কথিকিং ব্রুলায় থাকে।

এই জেলার ইতিহাঁস প্রধানতঃ দিল্লী নগরের ইতিহানেই পূর্বাবিত, স্তরাং তাহা যথায়ানে লিখিত হইবে।
অতি প্রাচীন কাল হইতেই এই ছান ভারতবর্ষীর
মহাবল পরাক্রান্ত এক রাজচক্রবর্তীর স্থাসমূদ্ধ রাজধানী
হইয়া আসিতেছে। বর্ত্তমান, দিল্লী নগর যে ছানে অবহিত তাহার চতুর্দিকে প্রায় ১•০১২ মাইল ছানের মধ্যে প্রসকল রাজধানী একের পর একাদিক্রমে নানা সময় ছাপিত
হয়। অভাপি ভূরি ভূরি ভয়ত্তপাদি ঐ সমস্ত ছান বাাপিশ
পতিত রহিয়াছে এবং প্রাচীন রাজধানীর সৌভাগা ও সমৃ।
ঘোষণা করিতেছে। ইহার অতি প্রাচীন নাম ইক্রপ্রছ
পাত্তবর্গ এথানে আসিয়া বাস করেন। কুরুপাত্তবে
যুদ্ধের পর এই ইক্রপ্রস্থ নগরই ভারতবর্ষের অ্রতিটার রাষ
চক্রবর্তী যুধিষ্টিরের রাজধানী হয়। [ইক্রপ্রস্থ দেব]।

্যুধিষ্ঠিরের পর বংশপরম্পরার তাঁহার অধ্তাদ জিংশ পুর্ণ পর্যান্ত ইন্দ্রপ্রাহ্ম কবেন, তৎপরে পাণ্ডব রাজ্যর বিসর্কা সিংহাসন অধিকার করেন। বিসর্কোর বংশধরগ বংশধরগ বংশধরগ বংশধরগ বংশধরগ বংশধরগ বংশধরগ করেন। এই জেলার সহিত সমাজার্যাবর্ত্ত ইথাক্রেমে হিন্দু, পাঠান, মোগল ও অবশেষে মহারাষ্ট্রানিগের হস্তগত হয়। ১৮০৩ খুটান্দে লর্ডলেকের বিলয়ে পার দিল্লী ইংরাজদিগের ইন্তগত হইল, সদ্ধিধারা তাৎকালিং মোগল রাজ্যধানী দিল্লীনগরের উত্তর দক্ষিণ যম্নার পশ্চিম তীরন্ত বিস্তীপ ভূপশু ইংরাজদিশাকৈ প্রান্ত হয়। ইংরাজ গরমেন্ট সমাট্ শাহআলম্কে মরাঠাদিগের হস্ত হইতে মোগকরেন এবং তাঁহার ব্যয়নির্কাহার্থ বর্তমান দিল্লী ও হিসাবজ্ঞার অধিকাংশ অর্পণ করেন। ইংরাজ কর্মাচারিগণ সমাটোলনে, কেবল বর্চত গড় প্রভৃতি ক্রেক্তানের রাজা স্বাধীনভাবে নিজ নির

রাজ্যশাসন করিতে থাকেন ১ কিন্তু এইরূপ শাসনকার্য্যে বড়ই বিশৃথালা ঘটিতেছিল। অবশেষে ১৮৩২ পৃষ্টানে এক আইন বারা দিলীর রেসিডেম্ট ও চিফ্ ফমিশনরের পদ উঠাইয়ী দেওয়া হইল এবং শাসনভার একজন কমিশনারের হাতে দিয়া আসিরা-ছাইকোটের জ্বীনত্ত করা হইল। ইুহার পর হইতেই দিল্লীপ্রদেশ প্রাকৃত প্রস্তাবে ইষ্ট ইন্ডিয়া কোম্পা-নীর শাসনভুক্ত হয়। তদ্বধি ঐ প্রদেশ ১৮৫৭ খৃঃ অকে দিপাহী-বিজোহের সময় পর্যাক্ত উত্তরপশ্চিম প্রাদেশের অন্তঃ ভূকি পাকে। ১৮১৯ খৃষ্টাবেদ দিলী জেলা প্রথম গঠিত হয়, তংকালে বর্ত্তমান রোহতক জেলার কতক ভাগ ইহার জালু-র্বত ছিল। ভাহার পর কর্ণা**ল** জেলার **অ**স্তর্গত পাণিপ্থ তহসীলের অনেকাংশ ও বলভগড় রাজ্য ক্রমশৃঃ ইহার অন্ত-ভূকি করা হয়। সিপাহীবিজোহের সময় সমস্ত জেলা বিদ্রোহীদিগের হস্তগত হয়, এবং উত্তর্ভাগ ইংরাজেরা পুন-রধিকার করিলৈও যতদির দিলীনগর সম্পূর্ণ ইংরাজ করায়ত্ত না হইয়াছিল, ততদিন ইংরাজেরা দক্ষিণভাগে পুমরাধিপত্য श्रापन कतित्व भारतन नाहे। >৮৫৮ थृष्ठात्म त्रिभाही वित्याह मिक हरेल मिन्नी स्थला हेः तास श्वरम् छित्र न दाशार्किङ **पक्षाव व्याप्तरभन्न एकाविमारवेन व्यक्षीन व्हेम। वज्ञान्तरा**ज्ञ রাজা রাজন্তোহিতা অপরাধে দণ্ডিত হইলে তাঁহার রাজত্ব এकती न्डन छश्मीनकार निझी (बनात अञ्जू क स्हेन; মার যমুনার পূর্বভীরস্থ পূর্বাপরগণা নামক ভূভাগ উত্তর-পশ্চিম প্রদেশের অস্তর্গত হইল। কিছুদিন পরে সিংহাদনচ্যত দিলীর শূমাট্কে রেকুণে নির্বাসিত করা হয়, স্ভাট্ তথায় ১৮৬২ খুঠাকে' প্রাণভ্যাগ করেন। সমাট্কে স্থানাপ্তরিভ করিবার পর হইতে দিল্লী জেলায় এক'রূপ শান্তি বিরাজ ক্রিভেছে।

এই জেলার অধিবাসীর সংখ্যা (১৮৮১ খৃ: ञ:) ७৪৩,৫১৫, ঐ বর্ষে প্রতি বর্ম সাইলে লোকসংখ্যা গড় 💰 ৪ জন 🕩 সমগ্র षिर्वाभीत मर्सा हिन्तू , ८,५०,००२, मूननभान ১,८৯,५००, ^{मिथ} २१•,, देजन १००५, शीतनी २१, थृष्टीन २०३१ ख**र**ः শুস্থাত ধর্মাবেশধী ৩ জন। ১৮৮১ গৃহাবেদ এই জেলার ১২৭৬ বর্গনাইল ভানের কৈধা ৭০১টা গ্রাম ও নগর ছিল। তলাধ্যে ১৪০টাতে ছই ইইতে পাঁচশর, ১৯২টাতে পাঁচ, হইতে দশ .শত, ১১টাতে এক হাজার হইতে গুই হাজার ; ২৬টাতে গুই ^{হইতে} ভিন হালার, ৮টাতে ভিন হুইতে পাঁচ হালার ; ২টাতে পাঁচ হইতে দশহাজার এবং ১মিতে দশ হইতে ১৫ হা**লা**র পর্যান্ত লোক বাস করিত।

गर्सार्णका वहनाचाक अवः ध्यमानः निम्नीत उत्तरंत्र व्यथ-কাংশ ভূমি ইহাদের অধিকৃত, তবে অনেকৃত্বে বাদ্ধৰ भः भी मात व्यक्ति । अञ्चास शादनत स्मार्कशत्वत स्नात है हाता अ পরিশ্রমী, কৃষিকুশল এবং নির্নিত্ত সময়ে রাজত্ব প্রাদান করে বলিয়া বিখ্যাত। যমুনাতীরবর্তী উর্বরা ভূমি অপেকা মধ্যভাগে উচ্চভূমিতেই অধিক সংখ্যক আঠ বাদ করে। দিলীর নিকট ইহারা গ্রাধানতঃ হুই শ্রেণীতে বিভক্ত যথা---দেশবাল বা দেশত ও পঢ়াদে বা পাশ্চাত্য, শেষোক্ত সম্প্রদায় পরবর্তীকালে পশ্চিম হইতে আসিয়াছে। উভয় সম্প্রদায়ের মধ্যে বিশেষ পার্থক্য किছूरे नारे। रेशामित मध्य अधिकाः मरे भित ,मस्थामाय-**ज्**कं हिन्द्धप्रावनश्री, ज्ञातिक मूगनमान निथ टाज्ि धर्माखन পরিতাহ করিয়াছে। অভাষ্ঠ জাতির মধ্যে রাজপুতগণের मःथा। अधिक, देशास्त्र अवः आक्रानिश्त्रि अस्तरक मूर्यन-মান ধর্মে দীক্ষিত হইয়াছে। ভত্তির ত্রাহ্মণ, বেণিয়া, শোহার, চামার, ধোবি, যোগি, গুজার, ছুরা, নাই প্রভৃতি হিন্দু এবং বেণুচি, দেখ, দৈয়দ, মোগল, পাঠান, ফকির প্রভৃতি মুদলমান বাদ করে। এখানে তগা নামে একশ্রেণীর ত্রাহ্মণ আছেন, ইহার। গৌড়দেশীয়। প্রবাদ আছে, তক্ষককুলের विनाभ अन्न हैशन्ना अल्ला चाइक इत्सन। चात्क অমুমান করেন, এই প্রবাদোক্ত ভক্ষকবংশ, সম্ভবত: বৌদ্ধ धर्यावनश्री मक त्राक्र शंवे हहेर्द । (विनियाशन स्क्रनात्र मर्व्हक राप्त करत अवः माकान व्यथवा वानमात्र कतिया सौविका निर्सारं करत । निष्ठीनगरत मञ्जागतनिरगत मर्द्य व्यरनरक বেণিয়া। গুলার জাতি স্বভাবত: অলদ ও শঠ, ইহারা অধিকাংশ দকিণদিগের উচ্চ মালভূমি ও পাহাড় সকলে পশুচারণ ও সামাক্ত ক্রবিকার্য্যাদি বারা জীবিকানির্বাহ करत। हेहाता अधिककान अक्षारिक नाम करत मा। ইহাদের প্রাদি অগ্ররণের অপব্যদ আছে। গোণালক অর্থাৎ আহীরগণ হিন্দুসমাজে নিডান্ত নিমন্তান অধিকার करत ना। मुनलमञ्जलिरशत भरता दक्वनमार्ज পঠिकशनह বিশুদ্ধ মুসলমান বংশোন্তব। দিলীকেলায় নিমলিথিত চারিটা भाज मगरेत्र প्रकार खाधिक लाक वान करत, यथा मिली, সোণপত, করিদাবাদ ও বল্লভথড়।

এই জেলার অনেক অংশ উচ্চ প্রস্তরময় অমুর্বর এবং কোন কোন স্থান লবণময়, স্মতরাং ক্ষবিকর্মের সম্পূর্ণ অঞ্প-যোগী। অবশিষ্ট অনেক ভূমি জলাভাবে পতিত রহিয়াছে। গ্ৰমেণ্ট থাল কাটিয়া অনেক স্থানে জলদেচনের স্থ্রিধা ও তজ্জন্য ক্লবির উন্নতিদাধন করিতেছেন। উত্তরভাগে ^{এই} মেলার যে স্কুল কান্তি বাস করে, ভন্মধ্যে লার্চ্চগণ্ট[া], ব্যুনার পশ্চিমতীরবতী থাল থাকার শকাদি কলিয়া থাকে। কার্পাস, ইক্লু, ধান্য, বাজরা, জোরার, ভূটা, গোধ্ম, যব, 'ছোলা প্রভৃতি প্রধান উৎপন্ন দ্রব্য।, ভাষাক ও পর্যাপ্ত হইরা থাকে। কিন্তং পরিমাণ নীল সর্ধণাদি জুরে । যমুনার পশ্চিমকূলে বিস্তীণ প্রতিমন্ত 'থাদার' বা মানাতে জ্বল-দেচনের অভাব না হইলেও তথার থালের তীরের মত শস্তাদি উৎপন্ন হয় না।

এ বিষয়ে ক্তিম উপায়ে সিঞ্জিত ভূমি যমুনাতীরবর্তী ভূমি অপেকা উৎকৃষ্ট। থালের ধারে যে সকল শশু জন্ম, ঐ সকল শশু থাদারেও হইয়া থাকে। কয়েক হাত থনন করিলেই স্থাত্ জল পাওয়া যায়। দিলীর দক্ষিণভাগের প্রকৃতি স্বভাবত: অমুর্কর ও পর্বতময় এবং যদিও আগরা খাল এই স্থান দিয়া কাটা হইয়াছে, তথাপি ঐ খাল এত নিম যে উহায় জলে উচ্চ ভূমিতে জলস্ঞ্চন করিবার উপায় নাই। নাজফগড় ঝিল বর্ষাকালে পূর্ণ হয়, একটী খাল দিয়া যমুনাতেই জল ফৈলিয়া পরে কতক পরিমাণে ঝিল ভক্ষ করিলে জলে ডুবা জমিতে আবাদ হয়। ৽যাহা হউক এ জেলায় রৃষ্টিপাত বড় অয়, তজ্জ্প থাল প্রভৃতি স্বত্বেও কৃষ্কার্যের সমাক্ উন্নতি ইইতেছে না।

দিনী বছকাল পর্যন্ত উত্তরপশ্চিমপ্রদেশের অন্তর্গত ছিল, স্তরাং এই জেলার জোত জমি প্রভৃতির বন্দোবস্ত অনেকাংশে উত্তরপশ্চিম প্রদেশের ক্যায়। ভারাচারা নামক এক প্রকার জোত খুব চলিত। অধিকাংশ প্রজারই দখলী বছ নাই। জমির উৎপদ্ম শস্ত অসুসারে থাজনার হার ভিদ্ন ভিদ্ন।

বাণিজ্যাদি প্রধানতঃ দিল্লী নগরেই সম্পন্ন হইরা থাকে,
তিত্তির সোণপত, ফরিদাবাদ ও বল্লভগড়ে স্থানীর ক্রের বিক্রের
জন্ম হাট আছে। কেলার শিল্লাদিও দিল্লী নগরেই সীমাবন্ধ। তথাকার স্থপ ও রৌপ্যের বহুবিধ অলস্কার, তথাকার
নকাশি ও অরির চিকণ কাল সর্বাক্ত বিখ্যাত। এথানকার
কাচমণ্ডিত চিক্রণ মাটির বাসন গ্লেশাবরের সম শ্রেণীর
বাসন বাতীত ভারতবর্ধের মধ্যে সর্বাশ্রেষ্ঠ। কালকা পর্যান্ত
বেলপথ দিল্লী হইতে দ্রে যমুনার পরপার দিন্না শমন করিরাছে, স্ক্তরাং এই পথেই অধিকাংশ বাণিজ্যসম্পন্ন হইভেছে। যাহা হউক, তর্জ্বল্ল সামাল্ল অস্থবিধা হইলেও
নদী, স্থলর রাজপথ এবং রেলপথ প্রভৃত্তি শারা দিল্লী
প্রধান বাণিজ্যস্থানের সহিত সংলগ্ন থাকার, ইহার তত্ত
ক্ষতি হয় নাই। গালিয়াবাদ জংশন হইতে যমুনার
উপর লোইদেত্ দিয়া দিল্লী সাঁহর পর্যান্ত ইট ইণ্ডিয়া
কোল্পানীর একটী শাধা রেলপথ আছে, এই শাধা প্রাব্

রেলপথের সহিত সংলয়। রাজপুতানা টেট্ রেলপথ
দক্ষিণভাগে কিয়দুর এই জেলার ভিতর দিয়া গুরুগাঁও
অভিমুখে গিয়াছে। বর্ধকালে বড় বড় নৌকা য়ম্নার
যাতায়াত করে। দিল্লী ইইতে লাহোর, আগুরা, অয়পুর ও
হিসার পর্যন্ত প্রস্তরময় উৎক্লাই রাজপথ আছে; তুরির
ব্যবসায়ীদিগের গমনোপ্রোগী বহুসংখ্যক রাজা প্রত্যেক
সহর ও প্রধান প্রধান ঘাট প্রভৃতিকে পরম্পার সংযুক্ত করিয়া
রাধিয়াছে। ভাগপত, ছানা, মনিয়ায়পুর ও রুলপুরে
ভাসমান নৌসেতু আছে। দিল্লীর নিকট য়ম্নার উপরিস্থ
রেলপথ সংক্রান্ত বেস্তুকে রেলের নিমে এক পৃথক্ পথ দিয়া
সাধারণ শকটাদি যাতায়াত করে।

শাসন্ ও রাজত্ম বিভাগে এথানে ১ জন ডেপ্ট কমি
পনার, ১ জন সহকারী আসিষ্টান্ট্ ও ২ জন অভিরিক্ত

সহকারী আসিষ্টান্ট্ কমিশনার, ১ জন ত্মল কল কোটের

জল, ২ জন মুনদেফ, ৩ জন, তহুসীলদার এবং ডিরে,
শাস্তিরক্ষা, ত্মান্থা ও রাজত্ম-আদার প্রভৃতির জন্ম আবশ্রকীর

অপরাপর কর্মচারী আছে। এই জেলা ৩টা তহুসীলে এবং

শাস্তিরক্ষার অবিধা জন্ম ১৩টা থানার বিভক্ত। প্রায় ১১৮টা

সুলে এবং একটা কলেজে থথারীতি ইংরাজী শিক্ষা দেওয়া

হয়। ঐ সকল বিদ্যালয়ের মধ্যে সরকারী সাহাযাপ্রাপ্ত 
মিসনরী কলেজ, জেলা স্কুল, আংলো আরবী স্থল এবং

মিসনরী দিগের অন্তান্ধ বিদ্যালয় প্রধান। দিলীর গব
মেনিরী দিগের অন্তান্ধ বিদ্যালয় প্রধান। দিলীর গব
মেনিরী দিগের অন্তান্ধ বিদ্যালয় প্রধান। দিলীর গব
মেনিই কলেজ করেক বর্ষু হইল উঠিয়া গিয়াছে।

যমুনানদীর অববাহিকান্থিত অন্তান্ত জেলার সহিত দিল্লীর জলবায়ুর বেশী প্রভেদ নাই। জাৈঠ নাদে দারণ গ্রীজ্যের সমন্ত হায়াতে উত্তাপের পরিমাণ ফাণ সঙ্গ পর্যান্ত হইয়া থাকে, শীতকালে পৌৰমাদে নিম্ন সংখ্যা ফাণ ৪৬% পর্যান্ত হয়। বার্ষিক গড় বৃষ্টিপাত ২০ হইতে ৩০ ইঞ্চি মাত্র। সচরাচর পশ্চিম ও বায়ুকোণ হইতে বায়ু বহিন্না থাকে। জন ও উদরামর পীড়া সচরাচর হয়, অনেক সমন্ন বসন্তরোগ দেশকাপক হইরা বহু প্রাণীণ বিনাশ করে। ১৮টী দাত্রা-চিকিৎসালয় আছে।

ত দিলী জেলার সদর তহসীক। পরিমাণফল ৪৩৪ বর্গমাইল। দিলী সহর এই তহসীলের অন্তর্গত। দিলী সহরেই কাছারী প্রভৃতি আছে।

৪ উক্ত দিল্লী বিভাগের অন্তর্গত দিল্লী জেলার প্রধান নগর। পুর্বে এইখানে মোগলসমাট্দিগের রালধানী ছিল। এখন ইহা ইংরাজদিগের দিল্লী বিভাগের সদর। স্কুলা ২৮ ৩৮ ৫৮ উটা, জাবি ৭৭ ১৬ ৩০ পুঃ। লোক-

भ्रांशा ১,३२,६१३। **खन्नार्था** हिस्सू ১०৮,०६৮, मूनलमान aa, २०b, श्रृंडीन ১१.., देखन ७२৫७, निस २४a, शांत्रत्री ় ৩১ এবং গ্রিছ**দী ৬ জন**। দিল্লী[®]নগর কলিকাতা হইতে ৯৫৪ মাইল, আগ্রা• হইতে ১১৩ মাইল এবং আলাহাবাদ হইতে ৩৯৪ মাইল দ্রবর্তী। ইহার অপক্রনাম শাহলাহানাবাদ। ইহার উত্তর, পশ্চিম ও দক্ষিণ দিক্ সমাট্ শাহজাহান নির্দ্মিত অত্যুক্ত প্রান্তরময় প্রাচীর দারা বেটিত এবং পর্মদিকে প্ণাতোয়া যমুনা নদী প্রবাহিত। উক্ত প্রাচী-রের পরিমাণ ৫ ই মাইল। বর্ত্তমান উনবিংশ শতাকীর প্রারম্ভ সময়ে ইংরাজদিগের নিধাত পরিখায় নগরটা আরও ছর্গর্ম হইরাছে। ইহার দশটী সিংহ্বার, তম্মধ্যে উত্তরে কাশ্মীর ও মোরি বার, পূর্বেক কাবুল ও লাহোর বার এবং দক্ষিণে আজমীর ও দিলীবার প্রধান। মোগলসমাট্দিগের রাজপ্রাসাদ নগরের পূর্ব্বাংশে যমুনানদীর তীরে অবস্থিত; এখন ইহা গুর্গরূপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে, ইহার তিনদিকে লোহিতবর্ণ বালুকাপ্রস্তরনির্মিত উচ্চ প্রাচীর এবং निक् । अभिन्दा अक्षी निःश्वात चाहि। ১৮৫१ युष्टीत्व দিপাহীবিজোহের পরে প্রাসাদের কিয়দংশ ভূমিদাৎ করিয়া গোরা দৈত্যের জ্বন্ধারিক নির্দ্মিত হইয়াছে। উক্ত ছর্ণের 🗠 দক্ষিণে দরিয়াগঞ্জ নামক স্থানে দেশী সিপাহী সৈভাগণের জন্ত একটা দেনানিবাদ আছে। যমুনার পরপারে খুষ্টীয় ষোড়শ শতাকীতে দলিম শাহ কর্তৃক নির্দ্মিত দলিমগড় নামক একটা তুৰ্গ আছে ; এখন ভাহান্ত ভগ্ন দশা, এই দলিম-গড়ের এক কোণ দিয়া ইষ্ট্ভিয়া রেলওয়ে কোম্পানির রেলপথ একটা প্রম্য লৌহসেতু ছারা যমুনা পার হইয়া দিলী নগরাভাস্তরত্ব ষ্টেশনে পৌছিয়াছে। তৎপরে উক্ত दिन १४ 'ताक भूजाना (ष्टेंहे दिन १७ दिन नाम नगदित छेखत-শশ্চিম কোণে প্রাচীর ভেদ করিয়া বাহির হইয়া গিয়াছে। নগরের উত্তরপূর্বকোণে কোষাগার ও অত্যান্ত সর্কারী ষাফিদ। দরিয়াগঞ্জের দ্রেনানিবাস ও ত্র্গের পশ্চিমদিকে কোম্পানির ঝাগান। এই দেনানিবাস, হুর্গ, রেলপথ ও বাগ্বাৰে নগরের প্রান্ন অর্দ্ধাংশ পরিপূর্ব। এই অংশে লোক-শ'খা বিরল, কিন্তু অপীর অংশে লোকসংখ্যা অত্যস্ত অধিক। দিলীর স্থাপত্য শিলের গোরব জগবিখাতে; এম্বারন তাহার ^{সমুর্ণ} বিবরণ দেওয়া অসম্ভব। বাস্তবিক দিল্লীর প্রাকাণ্ড অকাণ্ড হর্ম্মাবলীর অত্যন্তত নির্মাণকৌশল ও বিশ্বরোৎ-শাদনকারী পরম রমণীয়তা বর্ণনা দাব্রাসম্পূর্ণ প্রকাশ করা ^{বার না}। মি:ফাভেসিন্ তাঁহার ভারভীর ও প্রাচ্য স্থপতি-বিভার ইতিহাস ( History of India and Eastern Archi-

tecture) নামক পুত্তকে এই সকল আসাদের অভি স্থশ্র বর্ণনা ক্রিয়াছেন। শাহজাহানের রাজপ্রাসাদ আগেরার রাজপ্রাসাদ অংশকা হয়ত চিত্রবৈচিতে ও আড়েখরে হীন হইলেও ইহার গঠনপ্রণালী অনেকটা সমভাবাপর এবং ভারতীয় সর্বপ্রধান অংপতিপ্রিয় স্মাট্ ছারা নিশিতে। **এই প্রাসাদের দৈর্ঘ্য উত্তর দক্ষিণে ৩২০০ ফিট এবং** বিস্তার পূর্ব্বপশ্চিমে ১৬০০ ফিট্; প্রাসাদের চারিদিকে রক্তবর্ণ প্রস্তরনির্দ্মিত উচ্চ প্রাচীর, ভাহার স্থানে ম্বানে বুরুদ, প্রবেশবার অতি স্থন্দর, তাহার পরই ৩৭৫ ফিট্ দীর্ঘ সারি সারি বিচিত্র কারুকার্য্যথচিত • ক্তম্ভা-বলী-শোভিত আশেও হর্মাতল। মি: ফার্ডুসন বলেন, এই প্রবেশহার জগতের যাবতীয় প্রীসাদের প্রবেশহার অপেকা অধিকতর মনোহর। এই প্রাসাদ বন্তুসংগ্যক উল্পান, ফোয়ারা প্রভৃতি ধারা অবস্কৃত এবং নাট্যশালা, সঙ্গীতশালা প্রভৃতিনানা অংশে বিভক্ত। অক্ত স্কল হর্মাাদির কথা ছাড়িয়া দিলৈও একমাত দেওয়ানি খাদ অর্থাৎ সম্রাটের মরণাগার শাহলাহানের নির্মিত অভাভ সমস্ত অটালিকা অপেকা অ্লার নাহইলেও যে সর্বাপেকা অধিকতর কাক কার্য্যসম্বলিত ভাহাতে সন্দেহ নাই। যমুনার ঠিক উপরেই এই বাটী অবস্থিত, ইহার অভ্যস্তরত্ব স্ক্র খোদকতা কৌশন এবং উহাদের ফলপুষ্পাদির চিত্র প্রভৃতির করনাচাভুর্য্য অতীব প্রশংসনীয়। এই দেওয়ানিথাসেরই ছাদের চতু-र्फित्क रनथा च्यारह, 'यमि পृथिवीर चर्न थारक, उक्ष्य छाहा এই !' বান্তবিক একাপ অফুপম সৌন্দর্যাময় কক্ষ পৃথিবীয় यावजीव बाब'श्रामारम क्वालि नाहे विलिल खड्डांकि इव ना।

প্রায় ১০০০ ফিট্ পরিমিত স্থানে সম্রাটের অন্তঃপুর ছিল।
এই অন্তঃপুরের পরিসর যুরোপের বৃহত্তম রাজপ্রাসাদের ও
বিশুণ। প্রাসাদন্ত অধিকাংশ কক্ষাদিই ধ্বংস হইয়া গিয়াছে,
এখন যে সকল বিশুমান আছে;, তাহাদের নাম যথা—
প্রবেশকক্ষা, নৌবতথানা, দেওয়ানি আম, দেওয়ানি থাস,
এবং রঙ্গমইল। তভিন্ন আরও ছই একটা গৃহ বিশ্বমান
আছে। বলাবাছল্য এই কয়েকটা গৃহই প্রায়াদের মধ্যে
সর্ব্বোংকুট, কিন্ত তথাপি ইহাদের সম্মুখন্ত প্রালণ এবং
পরপারকে সংলগ্ন করিবার পথ প্রভৃতি লুগু হওয়াতে ঐ
সমন্ত অনেকটা প্রীহীন হইয়াছে। এখন ইংরাজদিগের
বারিকে ঐ সকল অভ্লনীয় হর্ম্যাবলী বিচিত্রকাঞ্চনখনিত
কাক্ষকার্য্য হইতে চ্যুত এবং সামান্য প্রাচীর গাত্তে স্থাপিত
হুমণির ন্যার বিদ্যমান রহিয়াছে।

महरत्रत रव च्यः स्म रमनी विमाश्यत वाम, जलाव च्यहे। निकासि ইটক নির্মিত, স্থানর ও স্থাত। অধিকাংশ গলি এবং কুদ্র ক্র রাজা বক্র এবং অনেকগুলি একদিকে ক্রম, কিন্তু ছোট बाछ। बाताश क्रेट्स अ जात्रजन्दर्यत अञ्च (कान महत्त क्रिजीत মত উৎকুট ৰড় রাস্তা নাই। ইহার প্রধান প্রধান ১০টা बुहर बाज्ञ १४ व्यन्त ब्रह्म भाषत्र निया वैश्वान, क्रम निकारमृत षण नर्भगात वावषा व्यवः त्राटक चाटनाकनारमत्र वस्नावछ ষতি উৎকৃত। টাদনীচক বা রজতরথাা ইহাদের মধ্যে অধান; এই পথ ৭৪ ফিটু প্রশন্ত এবং তুর্গ হইতে লাহোর ভোনেণৰার পর্যান্ত প্রায় ৩ মাইল বিস্তৃত। ইহার মধ্যন্তিত অল্পালীর উভয় পার্ষে চুই শ্রেণী নিম ও অখথ বৃক্ষ আছে: शृद्ध वह टारानी पित्रशिकशानात छन जानवन कता হুইড, এখন এই ফলগুণালীর উপর উচ্চপথ প্রস্তুত হইয়াছে। টাদনীচকের কিছু দক্তিণে এক খণ্ড উচ্চভূমির উপর বিধ্যাত অমা-মন্জিদ্। সম্রাটু শাহজাহান তাঁহার রাজত্বের ৪র্থ বর্ষে ইহার নির্দ্ধাণ আরম্ভ ও দুর্শম বর্ষে শেষ করেন। ইহার সমুখে, ৪৫ - বর্গ ফিট্ প্রশন্ত চত্তরভূমি, 'উৎকৃষ্ট আণিট্ ও মর্থর প্রস্তরে বাধান এবং চতুর্দ্ধিকে ষ্মানিদময় প্রাচীরযুক্ত। এই স্থান হইতে উত্তরদিকে দৃষ্টিপাত করিলে সমস্ত দিল্লী নগর একবারে দৃষ্টিপথে পতিত হয়। ৰস্কিলের দৈর্ঘা ২৬১ ফিট্, ইহার তিনটা গুৰজ খেতমর্ম্মর অন্তরে নির্মিত। নিমু হুইজে প্রস্তর্মর সোপানভোগী ৰদ্ধিদ পর্যান্ত উঠিয়া গিয়াছে। ছাদের উপর সম্মুখভাগে ष्टे क्रांप्य छ्टेने खेळ हुए। चाह्यः। मन्स्यिपत चाडा छत সমস্ত খেতবর্ণ মর্থার প্রস্তার মণ্ডিত। দিলীর আরও ছুইটা মস্বিদ উল্লেখযোগ্য। তলাধ্যে একটীর নাম কালা মস্বিদ। প্ৰবাৰ—কোন' আফগান সমাট **এই मिलद निर्दा**श करतम। ইहात नर्व कालक्राम काल इहेबाए विला हेशास्त्र कानामम्बिम नान। अभवती ब्रञ्जिकोनाद यम्बिए। आधूनिक दृहर अछि। विकास मध्य मिल्लोत गर्वर्न মেণ্ট কলেজ, রেসিডেলি এবং প্রাটেইণ্ট দিরের গির্জা, এই जिन्ही अधान । करान दिनाव नकाधिक मूमा वीरत जेनाताल तिकी निर्माप करवन। है। हनी ६३८७ यमूनात्र विदक कर्मभाव অকটা ঘড়ির স্তম্ভ এবং উহার সন্মুথে দিল্লীকলেজ ভবন ও মিউ জিয়ম বা যাত্বর। চাঁদনীচকের উত্তরে মহারাণীর উত্থান তাহার পর উত্তরে পাহাড়ের মূল পর্যান্ত নগর মীমা বিস্তৃত। এই শর্মাতের শৃঙ্গ হইতে দিলীসহর ও টেস্নের দুখা অতি মনোহর। নগরের পশ্চিমে প্রাচীতরর বাহিরে বছ সংখ্যক नहीं पृष्ठे रुप्त, **এই नकरनम्न मस्याः अक नजीर**ङ नशाहेनिर्द्धन

স্মাধিখান আছে। ভ্ৰমধা স্ভাট হ্মালুনের স্কর আনিট প্রস্তরনির্দ্দিত এবং অভাত্তরে^ত মর্ম্মরখচিত সমাধিম্দির সর্ক শ্রেষ্ঠ। নগর হইতে আর গৃইমাইল দুরে এক বিস্তীর্ণ উদ্ধানের। ,চতুর্দিকে প্রাচীর এবং অভ্যন্তরে নানাম্বানে স্থানর জ্বাশ্র ,ও বত্সংখ্যক মন্দির আন্তে। মধ্যভাগে ২০ কিট্ উচ্ছে ২০০ ফিট প্রশন্ত চত্তরের উপর স্থলার তম্ভরাশি স্থাণাভিত এবং খেত স্পুর প্রভারের প্রশ্বজন্ত হুমার্নের স্মাধিমনির জাব-ষ্ঠিত। ইহা অদ্যাপি প্রায় সম্পূর্ণবিস্থায় বিদ্যমান আনহে। আরও পশ্চিমে আর এক মাইলদ্রে আর একটা সমাধি মলির আছে. ^ ইহার মধোও অনেকপুলি হৃক্র সমাধিম্দির এবং কুর মদ্জিদ বিভ্যান; তক্মধ্যে মুদলমান ফ্কির নিৰাম উक्षीत्नत्र, सभावि ও धर्मभाना अधान। तिशाशैविद्धाद्दत পূর্ব্ব পর্যাস্ত দিলীর শেব সমাট্গণ সকলেই এই কলিবের সমাধির চতুর্দিকে সমাহিত হইতেন। প্রত্যেক সমাধি ক্ষেত্র প্রাধান স্থান্দর ঝাঝরি কাটা মর্শ্বর প্রাক্তরের খেরার মধ্যে অবস্থিত। এই সকল গোরস্থান ব্যতীত দিলীতে কুত্রমিনার, লোহস্তম প্রভৃতি আরও বছতর প্রাচীন কীর্ত্তি বিদামান আছে, ভাহা ক্রমশঃ ষ্থাস্থানে বর্ণিত হইভেছে।

সমৃদ্ধ আমীর ও অন্তান্ত ধনকুবেরদিগের হর্মাবেনী নিঃসন্দেহে পূর্বেন নগরের প্রভৃত শোভা বর্দ্ধন করিত, বিদ্ধা ঐ সকল স্থানর সৌধমালার একটাও এক্ষণে বিদ্যমান নাই। উহাদিগের স্থানে বর্ত্তমান সম্মান্তব্যক্তিগণের অপেকার্বত কীন তথাপি মনোহর অট্টালিকাশ্রেণী নির্ম্মিত হইয়াছে। এই নগরে পরিষ্কৃত জল প্রচুর পাওয়া যার। স্থাতিত ইহার পরিচ্ছনতা ও স্বাস্থ্যোল্লতি বিষ্কে সকলেরই বিশেব মনো-যোগ আরুই হইয়াছে।

১৭৯২ খুঠাকে এখানে দিল্লীকলেক স্থাপিত ইর। ১৮৭৭ খুটাক পর্যন্ত ইহাই প্রধান বিভালয় ছিল। প্রথমে ইহাতে কেবলমাকে দেশীয় ভাষা সকলই শিক্ষা দেওয়া হইত। দেশীয় ভাষা সকলই শিক্ষা দেওয়া হইত। দেশীয় সমান্ত মুগলমানগণ চাঁদা দিয়া ইরার কার্র্যানলী পরিদর্শন করিতেন। ১৮২৯ খুটাকে ঐ কলেকে ইংরালী শিক্ষারিভাগ থোলা হয়। ১৮৫৫ খুটাকে 'উহা স্ক্রকারী শিক্ষারিভাগ বিভাগের অন্তর্গত হইল। ভাষবধি দিল্লী কলেক হইতে অনেকে শিক্ষালাভ করিয়া ক্রতবিদ্যাহন। ১৮৫৭ খুটাকের সিগাহীবিদ্যোহের সময় এই কলেকভ্রন বিদ্যোহীদিপের বারা ভায় এবং ইহার ছ্প্রাপ্য প্রোচ্য প্রছ্ সমূহ নর্গাত উৎক্রট প্রক্রালয় কৃত্তিত হয়। ১৮৫৮ খুটাকে আগর বিক্রা বিদ্যাল করিয়া উহাতে কলেক প্রান্ত বাণিত বিজ্ঞান বিশ্বাল করিয়া উহাতে কলেক প্রান্ত বাণিত

হয়, ঐ কলেজ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীন হইল। অবশেষে ১৮৭৭ খুটালে ফেব্রেয়ারি মাসে পঞ্জাব রাজধানী লাহোর নগরন্থ কলেজে ঐ প্রদেশের শিক্ষা কেব্রৌভ্ত করিবার জন্ত দিলী কলেজের অধ্যাপক প্রভৃতি তথায় দ্বানান্তরিত হইয়াছে।

ুৰে দিন হইতে প্ৰাচীন আৰ্যাগণ ভারতভ্ষিতে আধিপ্তা विखात्र शूर्वा के भूगामिना र्यम्माजीत्त व्यवसान कतित्व नागिः লেন, সেই দিন হইতে এই স্থানৈ কন্ত কন্ত রাজা ও রাজচক্রবন্তি-_{গণের} উত্থান ও পতন হইয়া গোল। ুক্ত ক্ত রাজার পর রাজা, সমাটের পর সমাট এই স্থানে ন্তন ন্তন রাজধানী খাপনপূর্বক রাজত্ব করিয়া কালের করালকবলে কবলিত হইলেন, পর পর কত রাজধানী স্থাপিত এবং কালজমে ধ্বংস প্রাপ্ত হইয়া গিয়াছে। স্তরাং বর্তমান কালে দিলী সহর যে স্থানে অবস্থিত, তাহার চতুর্দিক্ যেন একটা প্রকাও ধ্বংদক্ষেত্র। বিদ্প হিবর দাহেব এই অধুনাতন দৃভোর এইরূপ বর্ণনা করিয়াছেন, "দৃশুটী যেন একটা অভীব ভয়ানক ধ্বংদক্ষেত্র, ভগ্নস্থার পর ভগ্নস্থা, সমাধির পর সমাধি, **उद्म शृह्दत ७ इ हेहेक ७ नानाविध क्षास्त्रत ४ ७ हर्जुमित्क** তরলতাদি-পরিশ্র কঠিন মরু তুলা ভূমির উপর সর্বত বিক্লিপ্ত হইয়া আছে।" এই ধ্বংসাবশিষ্ট ভগ্ন স্তৃপরাশি वर्डमान भारकारानावान नगत्र रहेटल शक्षटकां मृत्रवर्की बाग्न-পিথোরা এবং ভোগলকাবাদের (পরিত্যক্ত) ছর্গ অবধি বিভৃত। যুতদুর পর্যন্ত উক্ত ধ্বংসাবশিষ্ট রাজধানীসমূহ দৃষ্ট হয়, তাহার পরিমাণ ফল ৪৫ বর্থমাইল। ব্রুমান নগর-প্রাচীরের ২ মাইল দক্ষিণে যে স্থানে ইন্দরপথ বা পুরাণকিলা নামক গ্রাম এবং হুর্গ আছে, পূর্বের তথায় পাঞ্চবদিগের ইন্দ্রপথ নগর প্রতিষ্ঠিত ছিল।

এখন দেখা যাউক, দিলী এই নামটার উত্তব কিরপে ইইন? খৃষ্টের জন্মের প্রায় ৫০ বংসর পূর্ব ইইতে দিলী অথবা দিলীপুর এই নামটার উৎপত্তি ইইয়ছিল। ফেরিস্তার মতাফুসারে জেনারল কনিংহাম বলেন যে, রালা দিলু ইউতে প্রথমে দিলীর নামকরণ হয় এই দিলু ইক্তপ্রস্থের গৌতমবংশীয় রাজগণের পরবর্তী ময়ুরবংশীয় শেষ রাজা। তথন দিলী বর্তমান সহরের ৫ মাইল দিলি অবস্থিত ছিল। কিন্তু এ সম্বন্ধে যতগুলি প্রাচীন ইতিয়ন্ত জানা গিয়াছে, তল্মধ্যে গৃষ্টীয় তৃতীয় কিংবা চৃত্র্ব শতাকীতে রাজা ধাব কর্তৃক স্থাপিত বিধ্যাত গৌহত্তম্ভ ইইতে বাহা জানা গিয়াছে, ভাহাই প্রমাণরূপে গ্রাহ্

वााम ১७ हेंक जबर देनचा ६० किए। हेहात्र खात्र कार्यस्टकत উপর মৃত্তিকায় দৃঢ়প্রোথিত। স্তস্তের পশ্চিমদিকের গাত্তে সংস্কৃত অহুশাসন গভীরত্নপে থোদিত আছে। একমাত্র এই, লিপিই ইহার প্রাচীন ইতিবৃত্তের কথঞিৎ পরিচার্মক বলিয়া আদরণীর। প্রতৃত্তভামুসদ্ধিৎসু প্রিন্দেপ সাহেব সর্ব্ধপ্রথম এই অফুশাসনের পাঠোদ্ধার করেন, উহার মর্ম এইরূপ-- 'রাজা ধাব বিনি নিজ ভুজবলে বঁছকাল সমগ্র ধরার অধিতীয় অধীশব হইয়াছিলেন, তাঁহার কুীর্তি স্বরূপ এই স্তম্ভ ত্বাপিত হইল। এই দক্তল খোদিত লিপি তাঁহার শাণিত অসিধারাঙ্কিত শত্রুগণের দেহের গভীর ক্ষতাঙ্কের ভার তাঁহার কীর্ত্তি চিরকাল ছোষণা করুক।' কুনিংহাম্ সাহেব অনুমান করেন, এই ধাব রাজা সম্ভবত: ৩১৯ গুষ্টান্দে বিদ্যমান ছিলেন। ঐ সময়ের গুপ্তবংশের অনুশাসনের অক্ষরগুলির ছাঁদ পর্যালোচনা করিলেও ঐ অক্ষর গুপ্ত-দিগের সাময়িক বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু বংশপরম্পরাগত প্রবাদ অনুসারে ঐ লৌহস্তম্ভ তোমরবংশের স্থাপয়িতা অনঙ্গানের প্রভিষ্কিত বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া থাকে। তাহা হইলে ইহার প্রতিষ্ঠাকাল খুষ্টীয় অষ্টম শতাব্দীতে আসিয়া পড়ে। কথিত আছে, বাাস রাজাকে ঐ শুন্ত ভূগতে দুঢ়-क्राप्त (श्राधिक क्रिक्त ब्यारम्म रमन, এवः विद्या रमन हेरान्न দৃঢ়তার উপর তাঁহার রাজ্যলন্দ্রীর অচলতা নির্ভর করিবে। छम्यूनाद्य के खन्न त्थापिक रहेग । त्यान काराक विगलन, ন্তম্ভ ঘণাস্থানে, বিহিত হইয়াছে, ইহার পাদমূল ভূগর্ভে বাস্ত-কির মন্তকে গিয়া ঠেকিয়াছে, স্তরাং স্তম্ভ অচুল এবং বাজার রাজলক্ষীও,অচল। কিন্তু স্তন্তমূল বাহ্নকির মাথায় ঠেকিয়াছে, রাজার তাহা বিখাস হইল না। তিনি স্তম্ভ থনন क्ताहरू खात्रस क्तिरामन। थनन इट्टा उँशत शामरमान বার্ফুকির শোণিত দৃষ্ট হইল। রাজা ফাঁক্রে পড়িলৈন এবং নিজ সন্দিশ্বতার জন্ম অমুতাপ করিতে লাগিলেন। যাহা-হউক ব্যাদকে পুনরায় আহ্বান করিয়া গুন্ত পুন:ছাপিত 'করিলেন। কিন্তু এবার আর কোন মতে 'ক্তভ সেরপ অটল ভাবে প্রোণিত হইল না, 'ঢিলা' অর্থাৎ আল্গা রহিয়া গেল, সুভরাং তোমরবংশের রাজলন্মীও অচিরে পরহস্ত গত হইল, এই ঢিলি অর্থাৎ ঢিলা স্তম্ভ হইতে নগরের নাম ঢিলি **हरेग ∗। এই अवा**रितं अनानाक्रण मङ्ख्य चाहि,

"কিলিতো ঢিলি ভই
 ভোমর ভয় মত হিন।"

কিনি অর্থাৎ করে টিনি অর্থাৎ চিলা হইসাছে, তোমরের ইচ্ছা পূর্ণ ছইবে না। যাহা হউক সকলেরই মতে ইহা তোমরবংশীর রাজগণের অভ্যুথান কালে ছাপিত হয়। কিন্তু স্তম্ভে যে লিপি আছে, তক্রারা প্রবাদের সভ্যভা অপ্রমাণিত হইয়া যায়।

জেনারল কনিংহাম বলেন, দিটী নগর বছকাল ভগাবশিষ্ট হইয়া পভিত থাকিলে পর অনন্দাাল ৭৩৬ খৃষ্টাব্দে তথায় রাজধানী ভাপন করিয়া নগর পুনরায় নির্মাণ করেন। 'তাঁহার বংশীয় পরবর্তী রাজগণ দিল্লী হইতে কনৌজুবা কান্তকুকু নগরে গিয়া রাজধানী ভাপন করেন।

রাঠোর-বংশের স্থাপরিতা চন্দ্রদেব খুষ্টীয় একাদশ শতাকীর মধাভাগে কান্তকুজ হইতে ভোমরদিগকে বিভাড়িত করিয়া দিলে ঐ বংশীয় ২য় অনশপাল দিল্লীতে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া তথায় আর একবার তোমর-রাজধানী ছাপন করিলেন। ' তিনি দিলীনগর পুনর্কার গৃহপ্রাসাদাদি দারা স্থাভিত এবং পরিশা প্রাচীর দারা স্থানু করিলেন। অভাপি কুতব-মিনারের চতুষ্পার্শ্বে ঐ হুর্গ প্রাচীরাদির ভগাবশেষ পড়িয়া আছে। রাজা ধাব-প্রতিষ্ঠিত লৌহস্তন্তের গায়ে অপর এক পংক্তি অমুশাসন লিথিত আছে, তাহার মর্ম এইরূপ-'১১০৯ সংবভে (১০৫২ খৃষ্টাব্দে) অনঙ্গপাল দিলীকে জনপূর্ণ করেন।' এই লিপি বারা অনলপালের দিল্লীতে পুনরীগমনের কাল অসুমান করা যায়। ইহার প্রায় এক শত বর্ষ পরে তোমর বা তুয়ার বংশীয় শেষ রাজা ৩য় অনজ-পালের রাজত্কালে আজমীরাধিপতি চোহানবংশীয় বিশল-८५व भित्ती व्यक्षिकात करतन। याहा शुंखेक, विश्वनादित তোম্ররাজকে সামস্তভাবে দিলীতে রাজত্ব করিতে দিলেন। ক্রমশ: উভয় বংশ বিবাহস্তে বন্ধ হুইল। এইরূপে পরি-ণীত দম্পতি হইতে অবশেষে আৰ্য্যাবৰ্ত্তের শেষ স্বাধীন ভূপতি মহারাজ পৃথীরাজ জন্মগ্রহণ করিলেন। পৃথীরাজ ভুষার ও চেহোন উভয় বংশেরই উত্তরাধিকারী হই-লেন। ইনি রায় পিথোরা নামক তুর্গ এবং অনঙ্গপালের ূ হর্গপ্রাকারের বহির্ভাগে স্মার একটা প্রাচীর নির্মাণ করিয়া मिली नगैतरक आंत्र ऋष् कि कि किता । अमानि वहरूत ব্যাপিয়া এই প্রাচীরের ভগাবশেষ দেখিতে পাওয়া যায়। ইহার পর মুসল্মান ঐতিহাসিকগণের নিকট হুইতে দিলীর অপেক্ষাক্বত হুস্পাষ্ট বিবরণ পাওয়া যায়। ১১৯১ খুষ্টাব্দে সাহার্দীন্বামহমদ হোরী প্রথমবার আন্যাবর্ত আক্রমণ করেন। পৃথীরাজ প্রভৃত পরাক্রমে নিজ রাজ্য রক্ষা করি-লেন, এবং প্রসিদ্ধ থানেখরের যুদ্ধে মহম্মদ ছোরীকে সম্পূর্ণ-ক্ষণে পরাজিত ও বিতাড়িত করিয়া ৪০ মাইল পর্যাস্ত তাহার অনুসরণ করিলেন। ছই বৎসর পরেই পরাক্রান্ত হবনদন্তা

পুনরার ভারত আক্রমণ করিলেন। এবার দৈবছর্মিণাকে
পূণীরাজ যুদ্ধে পরাজিত হইলেন। ছর্দান্ত ববন-দেনাপতি
বন্দীক্রত বীরবর পূথীরাজকে নিরক্স নিঃসহার অবস্থার হত্যা
ভরিল। ভারতের সৌজ্ঞাগারবি সেই দিন অন্তমিত হইল,
হিন্দুর গৌরব সেই দিন অবসান হইলু। পরাধীনতার
তমাময় ঘনজালে সেই ভীবণ দিনে ভারতের ভাবী অদৃষ্টা
কাশ আচ্ছের করিল। বিধন্মীর বিজাতীয় শাসনশেল সেই
দিন হইতে হিন্দুর বক্ষে প্রোধিত হইল।

মহম্মদঘোরীর প্রতিনিধি কুতবউদ্ধীন্ আইবন্ধ পৃথীরাজকে পরাজয় করিয়া যে পর্যাস্ত দিল্লী অধিকার করেন, সেই সম্মু रुटेट पित्री मूननमानिपात्र त्राव्यधानी रुटेन। ১২०७ हिहास মহম্মদ্বোরীর মৃত্যুর পরে কুত্ব আপনাকে স্বাধীন বালা विशा (चाषणा करतन। निझीत नाम तासानिश्वत मध्य जिनिहे 'अधम। ইहामिरगत शांभिक व्यत्नकश्चाम कीहि এখন ধ্বংসপ্রায়ু। কুতবের মসজিদ্ ১১৯৩ খুটাজে দিল্লী আক্রমণের পর হইতে আরম্ভ চুইয়া তিন বংসরে সম্পূর্ণ হয়। পরে তাঁহার জামাতা আল্তামাস্ ইহার আনেকাংশ বর্দ্ধি करतन। मनकिरानत इहें जै थाक्रन चारह। এक न वाहिए এবং অন্তটী ভিতরে। ভিতরের প্রাঞ্গণটী চতুদ্দিকে নান কারুকার্যাথচিত স্তম্ভশ্রেণীবিশিষ্ট বারান্দা দারা বেষ্টিত ঐ অভগ্রেল প্রাচীন হিন্দু দেবমন্দির ভগ্ন করিয়া সংগৃহীত হইয়াছিল। প্রথমত: ঐ সমুদয় গুস্তে থোদিত দেবদেৱীৰ প্রতিমৃতিগুলি চুণাদিবিশিষ্ট একপ্রকার স্থুল আববণে আর্ত ছিল; কিন্ধু সম্প্রতি ঐ আবরণ থদিয়া পড়াতে মূর্ত্তিগুলি স্পষ্টরূপে নয়নগোচর হইয়া হিন্দুর্দিগৈর প্রাচীন শিল্পারিব সম্পূর্ণরূপে প্রকাশ ক্রিতেছে। ইব্ন বভুতা নামক একজন মুম্লমান ভ্রমণকারী মস্জিদ নির্মাণের দেড্শত বংসর পরে উহাদশন করিয়া বলিয়াছিলেন যে, ভৌমস্থিদ্ সৌন্দর্য্যে এবং বিস্তারে অতুলনীয়। মসঞ্চিদের বহিঃপ্রাঙ্গণের বৈশ্বত কোঁণে কুভবের আর একটা কীর্ত্তিম্ভ ^{আছে}; তাহারই নাম দিলীর কুভুব-মিনার। [ইহার বিভূত বিৰরণ কুতবমিনার শধ্যে লিখিত হইয়াছে ৷ ু কুতবমিনারের প্রান্ধণের মধ্যন্থলে রাজা ধাব প্রভিত্তিত লৌহতত বিগ্রামান আছে। এই মিনারের চতুর্দিকে •ভূরিপরিমাণে ভগ ন্ত্ পতিত স্থাছে, তন্মধ্য'১৬১১ খৃষ্টাস্তে আরম আলাউদীনের व्यमम्पूर्व ऋ छित्र स्वः मावत्मय क्षरान ।

দাসরাজগণের সময়েই দিলীর সিংহাসনে একজন মুস্ন মান-রমণী অধিরোহণ ক্লরেন। অনুচরবর্গ ইহাকে স্থলভান রজিয়া এই পুরুষোচিত উপাধি দিয়াছিল। ১২৯০ ধুটার পর্যান্ত দাসরাজ্পণ রাজ্জ করিলে জলালউদ্দীন্ থিলজী দিল্লী অধিকার ক্রেন। ইহার আডুপুত্র আলাউদ্দীনের রাজজ্কালে মধ্য-এসিরা হইতে মোগলগণ ছইবার দিল্লী আক্রমণ করে।

১৩২১ ध्डोटक ट्लॉंगनक तः म मिल्लीत निःहान्तन चारता-* হণ করিলে এই রাজবংশের অগ্দিপুরুষ গ্রাস্উদীন্তাং-কালিক দিলীর ৪ মাইল পুর্বে এক নৃতন রাজধানী ভাগন করেন। এই তৃতীয় রাজধানীর হুর্গ, অট্টালিকা, রাজপুথ প্রভৃতির স্থাপার্ট ভগাবশেষ বিস্তীর্ণহানে অন্যাপি পড়ির। আছে। ১৩২৫ थृष्टास्य श्वाम्डेक्नोन् भत्रत्नाकगं इटेरन ভংপুত্র মধন্মদ ভোগলক দিল্লীর সম্রাট্ হইলেন। এই ব্যক্তি 📤 নবার সমস্ত দিল্লীবাসীর সহিত নিজ রাজধানী দাক্ষিণাভ্য-দ্ভিত প্রায় ৮০০ মাইল দ্রবর্তী দেবগিরি বা দৌলতাবাদ নগরে লইয়া যাইবরি চেটা করেন। স্থীর্পপ্র যাভারাতে দিলীবাসিগণের কি কট হইয়াছিল, ভাহাঁ বর্ণনাতীত। जाक्षियार्ग निवामी हेवन् वजुजा ১৩৪১ शृष्टीत्क मिल्ली পরিদর্শন করেন। তিনি এই পরিতাক্ত পুরীয় প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড শৃক্ত শুক্ত অট্টালিকাদির স্থল্পর বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। তৎপরে ফিরোজশাহ তোগলক নামে অপর একজন স্মাট আরু একবার দিল্লী রাজধানী স্থানাস্তরিত করেন। ভ্মায়ুনের সমাধি ও পাছাড়ের মধাবতী স্থানে এই রাজধানী স্থাপিত হয়। এই নরপতির প্রাসাদের ভগ্নত্বসমধো বর্তমান দক্ষিণ তোরণছারের বাহিরে অশোকনির্দ্মিত স্তম্ভ আছে। এই স্তম্ভ 8२ कि हे উচ্চ এবং **कि** द्वां जगाहित ना हे व्यर्था ९ स्ट उनिया খাত। গোশাপীরঙের এক থও প্রস্তরে এই স্তস্ত গঠিত। हेहार् आनि जावात्र এक निशि उरकीर्ग आहে। शिस्मश সাহেব বছ্বত্বে ও পরিশ্রমে ভাহার পাঠোদ্ধার করিয়াছেন। এই স্তম্ভ আদৌ দিল্লীতে প্রতিষ্ঠিত হয় মাই, ফিরোজশাহ थिकित्रावाम इहेरळ हेहा व्यानाहेत्रा निक नव त्राक्यशामारम স্থাপন করেন।

১০৯৮ খৃষ্টাব্দে মহন্দ্রদ ভোগলকের রাজ্বকালে বিথ্যাত তৈমুরলক দিল্লী আক্রমণ করেন। মহন্দ্রদ গুজরাটে পলায়ন করেন, দিল্লীট্রেক প্রাচীরের নিকটেই তৈমুর কর্ত্ক পরাজিত ধূর, তৈমুর অর্ক্ষিত নগরে প্রবেশ করিলে ক্রমাগতঃ পাঁচ দিবস ধরিয়া লোমহর্ষণকারী হত্যাকাও চলিতে লাগিল। দিল্লীর রাভাঘাট মৃতদেহে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিল। ক্রবশেষে নর্মাণিতলোলুপ তৈমুরের উৎকট নরহত্যা লালসা পরিত্প্ত ক্র্যা তিনি বহুসংখ্যাক নরনারী বৃন্দী করিয়া এবং প্রভৃত ক্র্যা ক্রিয়া প্রস্থান ক্রিলেন। প্রায় ছইমাস দিল্লী এইরূপ বিভীবিদায় হইরা রহিল, অবশেষে মহন্দ্রদ ভোগলক আসিয়া

পুনরায় দিলীসাম্রাজ্য কথঞিৎ অধিকার করিলেন। ১৪•২ थृष्टेात्म महत्त्वम व्यागजााश कतिता रेमग्रमवः म मिल्लो त ठकूर्षिक्छ नामास्त्रमात्व अर्रमान ১८८८ थुः अक वर्षास्त्र ताक्षक करवेन। তৎপরে রোদিবংশ রাজ্যাধিকার করিলে আগরা নগরে রাজধানী স্থাপিত হয়। ১৫২৬ প্র্টান্দে ভারতব্যীয় মোগল সমাট্দিগের আদিপুরুষ বাবর অরসংখ্যক শিক্তি সৈভ লইয়া ভারতবর্ষ আক্রমণ কল্পেন এবং লোদিবংশীয় শেষ রাজা ইত্রাহিম লোদিকে পানিপথের ঘূদ্ধে পরাস্ত করিয়া দিল্লী অধিকার করেন। ইনি অধিকাংশ সময় আগ্রান্ডেই वांन कतिराजन। ১৫৩० शृष्टीरम वावरतत मृजू। इहेरन उर्भुख হুমায়ুন দিল্লীতে প্রত্যাগমন করিদেন এবং প্রাচীন ইন্দ্র-প্রস্থের ভিত্তিতে পুরাণ্কিলা নামক হুর্গ নির্মাণ কিছা मःकात कताहरणन। ১**८८** थृष्टीरक स्त्रतमार स्माय्नरक বিতাড়িত করিয়া দিল্লী নগর প্রাচীর দারা বেষ্টিত করেন। ইহার নির্মিত লালদরজা নামে একটা তোরণ অভাপি **टबन**शानात मन्द्रच तालात धारत माँ ज़ाहेश चाह्य। तमतभारहत পুত্র সেলিমের নির্দ্মিত সেলিমগড় নামক ছুর্গ অল্পাণি विनामान चाह्न। ১৫৫६ थृष्टोत्म हमायून निल्ली भूनत्रधिकात করেন, কিন্তু ছয়মাস মধ্যে তাঁহার মৃত্যু হয়। ইহুার সমাধি মন্দির বিখ্যাত। তৎপরবর্তী অকবর ও জাহাঙ্গীর আগরা, লাহোর অথবা আজমীরে বাস করিতেন। স্থতরাং দিলী कि हूकांग शैननभात्र त्रहिग। व्यवस्थित मञाहे भार्काशस्त्रत সময়ে দিল্লী •বর্ত্তমান ,সৌধম গুলীতে স্থােভিত ২ইয়াছিল। ইনি নগরকে বর্ত্তমান পরিথাপ্রাচীরাদি ধারা• সুরক্ষিত করেন এবং নিজ্ঞ নামাত্সারে ইছার নাম শাহলাহানাবাদ রাথেন। 'প্রসিদ্ধ অমা মস্জিদ ইহারই নির্মিত, তারের ইনি যমুনা নদীর পশ্চিম থাল সংস্কার করেন। অরক্ষকেবের সমীয় দিলী উন্তির পরাকাটা প্রাপ্ত হইয়াছিল। ঐ সময়ে ইহার যশ:সৌরভ দিঅওল পরিপৃরিত ক্রিয়া যুরোপথতেও বিস্তৃত হুইয়াছিল। অরঙ্গজেবের রাজসভার অলৌকিক বৈভব। ও গৌরবরাশি ভ্রমণকারীদিগের মুথে শতগুণ বর্দ্ধিত হইয়া উপক্তাদের ভার দ্রদেশে জনগণের ভর-বিশ্বয়-কৌতুহলোদীপ্ত কর্ণকুহরে গীত হইত।

অরক্ষেবের মৃত্যুর পদ্ন গৃহবিবাদে ,শীঘই মোগক সামাজ্যের পতন হইতে লাগিল। ১৭২৬ খুঠাকে মহম্মদ শাহের রাজত্বালে মহারাষ্ট্রীয়গণ দিল্লীর নিকট আগমন করে। তিন বৎসর পরে নাদিরশাহ সদর্পে এই নগরে প্রবেশ করেন। তৈমুরকুত হত্যাঝাজের আরে একবার অভিনয় হইল। পূর্ণ আটার দিন নাদির দিল্লীতে থাকিয়া

धनी प्रतिक मक्नारक र ममर्खार मुर्धन करत्रन, यछिनन এक क পर्फ क काथा । हिन, ७ छ मिन छाहात नूर्धन यक्ष हम नाहे। অবশেষে নাদির প্রায় সর্বাসমেত ৯ কোটী টাকা এবং বিখ্যাত ময়্রাসন লইয়া প্রস্থান করেন। ১৭৬০ খৃষ্টাকে প্রায় ছয়মাসকাল ধরিয়া দিল্লীর রাস্তার মধ্যেই ঘোরতর যুদ্ধ বিপ্রাহ্ হইয়া হতভাগা রাজধানীকে শীঘ্র শীঘ্র অবং:-পতনের চরম সীমায় আনয়ন করিল। এই সময় আহ্মদশাহ-ত্রাণী হইবার দিল্লী আক্রমণ করেন, আবার হর্দান্ত বর্গিলৈন্ত কর্তৃক ইহার উৎসন্নের পূর্ণতা সাধিত হয়। ১৭৬০ খৃষ্টাজে স্মাট্ আলম্গীর নিহত হইলেন। তাঁহার পর শাহ व्यानम् कार्य माज मुआहे हरेरनन वरहे, किन्तु उँ। हात्र किहूरे ক্ষমতারহিল না। আফগান ও মরাঠাগণ ক্রমায়য়ে দিলী আক্রমণ করিতে লাগিল। অবশেষে ১৭৭১ খুষ্টাব্দে মরাঠাগণ भार्यानमरक पिलीएक द्वांभन कतिन। किन्न ১१৮৮ धृष्टीएक তাহারা দিলীত্র্প অধিকার করিল। সমাট সিদ্ধিয়ার হতে वन्गे त्रहित्वन ।

১৮০৩ খৃষ্টান্দে লর্ড লেক মরাঠাদিগকে পরান্ধিত ও দিল্লী
অধিকার করিয়া শাহত্যালমকে মুক্ত করিলেন। পর বৎসর
হোলকর দিল্লী আক্রমণ করেন, কিন্তু রেসিডেন্ট অক্টরলোনি
অল্পথাত্র দৈল্ল হারা নগর রক্ষা করেন, অবশেষে লর্ড লেক
গিয়া আক্রমণকারীদিগকে তাড়াইয়া দেন। এই বিনিত
প্রাদেশ প্রাসাদ ব্যতীত সমস্তই সম্রাটের নামে শাসিত হইত।

ইহার পর পঞ্চাশ বৎসরের মধ্যে দিল্লীতে বিশেষ কোন ঐতিহাসিক ঘটনা ঘটে নাই। তৎপরে ১৮৫৭ খুটাব্দে দিপাহীযুদ্ধের সময় দিল্লীতে আর একবার পতনোমুখ মোগলাধিপতা ভাপিত হইল। ১০ই মে সঁন্ধ্যার সময়ে মিরাটের সিপাহীগণ বিজোহী হইরা উঠে এবং পরদিবস প্রাতঃকালে মুমুনীপার হইয়া দিল্লীপ্রবেশের চেষ্টা করে। তচ্চ বলে রক্ষি সৈভের জ্বধিনায়ক, কমিশনার এবং কালেটর 'দাহেব লাহোর ফটকের সমীপে উপস্থিত হইলে বিজোহিগণ তাশাদিগকে থণ্ড থণ্ড করিয়া কাটিয়া ফেলিল, তৎকার্লে অধিকাংশ যুরোপীয় কর্মচারী নগর মধ্যে বাস করিত। তথন গৃহে গৃহে হত্যাকাণ্ড ও লুগ্ঠন ব্যাপার চলিতে লাগিল। বেলা ৮ ঘটকার মধ্যেই অস্ত্রাগার এবং ছর্গ ব্যতীত সমস্ত সহর তাহাদিগের করতলগত হইয়া গেল। এই সংবাদ শীঘ্ৰই নগর বহিঃস্থ সেনানিবাসে প্তছিলে তৎক্ষণাৎ তথা হইতে এক দল সিপাছী সৈম্ভ বিজ্ঞোহিদিগের বিক্লে প্রেরিড হুইল। কিন্তু দিলীতে প্রছিবামাত তাহারা বিজোহীদিগের সৃহিত যোগদান করিয়া সেনা

বিভাগের প্রধান প্রধান কর্মচারীদিগকে হত্যা করিল। त्नल्डेनाचे উहेरनाहि अभव क्यांगे अन ब्र्रवाभीत्वत माहारकः বিলকণ সাহসের সহিত অল্লাগার রক্ষার নিষিত্ত বছক্ষণ ८ छ। करतन ; व्यवस्थार इन्डाम क्या विकास वाक्रम রাশিতে অগ্নিসংযোগ ক্রিয়া পলায়ন ক্রিলেন । মুহুত্ত মধ্যে বারুদরাশি প্রজ্লিত হওয়ায় ভীষণ শব্দে অস্ত্রাগার উড়িয়া গেল। পাঁচজন ইংরার এই ব্যাপারে বিনষ্ট হইন অবশিষ্ট চারিজন পলায়ন করিয়া প্রাণরক্ষা করিল। তুর্গ ও সেনানিবাসের সিপাহীদৈল মিরাট হইতে গোব্লা পণ্টন আসিবার আশকায় এ পর্য্যস্ত নিশ্চেট ছিল। সন্ধার সমূদ্রে তাহারাও বিজোহী হইয়া উঠিল এবং য়ুরোপীয়দিগের পুরুষ, বাল, বৃদ্ধ, যাহাকে সন্মুখে পাইল, তাহাকেই বধ করিতে লাগিল। অতি অর মূরোপীর পলায়ন করিতে সম্থ হইয়াছিল, 'কিন্তু ভাহাদিগেরও অনেকে অনাহারে প্রাণভ্যাগ করে। ঐ দিবস, সস্ক্রার পরে দিল্লীতে ইংরাজশাসনের সমস্ত চিহ্ন একবারে বিলুপ্ত इहेन्।

এইরপে মোগল সাম্রাজ্যের আর একবার অভ্যথান
হয়। কিন্তু এই দৈবাগত স্বাধীনতা স্মাট্কে অধিক দিন
ভোগ করিতে হইল না। ১৮৫৭ পৃষ্টান্দের ৮ই জুন তারিথে
ইংরাল সৈতা বদলি-কা-সরাইয়ের যুদ্ধে সিপাই।দিগকে পরাত্ত
করে। ঐ দিবসেই সন্ধ্যার সমর্য তাহারা বিজ্ঞোই।দিগকে
সেনা-নিবাস হইতে তাড়াইয়া নগরবহিঃস্থ উচ্চভুমিতে ছাউনি
স্থাপন করে। তিন মাস অবরোধের পর ইংরালসৈত্ত পুনরায় দিলী হস্তগত করিল। স্মাট্ পলায়ন করিয়া হ্মায়্নের
সমাধি মন্দিরে আশ্রয় লয়েন, কিন্তু পরদিবস ইংরাল হতে
আত্মনর্মর্পণ করিলেন। সামারিক-আইনে তাহার বিচার
হইল এবং বিটারে বিজ্ঞোহের উত্তেজনা অপ্রাধে দোষা
সাবাস্ত হওরায় তিনি চিরকালের জন্ত রেকুণ নপরে নির্বাসিত হইলেন। তথায় ১৮৬২ খুপ্টান্দে তাহার মৃত্যু হইলে
দিলীর মোগলীস্মাটের নামও অবসান হইল।

দিলী পুনরার ইংরাজাধিকত হইলে কিছুকাল উহা সামরিক বৈভাগের শাসনাধীনে রহিল। ঐ সমুদ্রে দিলীবাসিগণ স্থযোগ পাইলেই মুরোপীয় সৈনিকদিগকে হত্যা ক্রার্ডিত
আরম্ভ করিল, প্রতিকারের জক্ত দিলী হহঁতে বহিছত করিল।
ক্রিলেন। হিন্দুগণ অল্লাদন পরেই নগর প্রবেশ করিতে স্থান্দ মতি পাইল বটে, কিন্তু মুসলমানগণ ১৮৫৮ খুটান্দের ১১ই
আহমারি পর্যান্ত পূর্বক্রশ কঠোরভাবে বিভাজিত রহিল। ঐ
তারিপে দিলীনগর সামরিক-শাসন বিভাগ হইতে সাধারণ লাসন বিভাগের অন্তর্গত হইল। তদবধি দিল্লীতে একরপ লান্তি বিরাজ করিতেছে এবং ইহাঁর সুধ সমৃদ্ধি বৃদ্ধি হইতেছে। ১৮৭৭ খুটাকে ১লা জামুন্মারি মহারাণী ভারতেখনীর ঘোষণা • পত্র পাঠু করিবার জক্ত এই দিল্লীনগরেই দরবার হর এবং ক্র দরবারে ভারতীয় সমস্ত প্রধান প্রধান রাজ্ঞ্রবর্গ উপস্থিত ছিলেন।

দাধারণ গৃহ সকলের মধ্যে নিম্নলিথিত করেকটা প্রধান।

দিলী ইন্টিটিউট—ইহা সাধারণের নিকট সংগৃহীত চাঁদা

ধারা গবনৈটি সাহায়ে নির্মিত। ইহাতৈ দরবারহল, যাত্বর,
প্রকাগার, পাঠাগার, ষ্টেসন সংক্রান্ত ঘর, বক্তা দিবার

রক্ষম ও বলনাচের ঘর, এই কয়েকটা বিভাগ আছে।

মিউনিসিপাল সভা ও, অনররি মালিষ্টেটগণের বৈঠক উক্ত

দরবার হলে হইরা থাকে। সরকারী আফিস লকল, জেলা
আদালত, কোষাগার, তহসিলী পুলিস আফিস, ডিট্টুক্ট জেল,
পাগ্লা গারদ, হাঁসপাতাল ও দাতবাওবধালয় আছে। সদাবতগৃহ সাধারণের প্রদন্ত চাঁদা ও মিউনিসিপালিটীর সাহায় ঘারা
পারচালিত হয়। এথানে ৪টা গির্জ্জা আছে। দিল্লী কলেজ

১৭৯২ খুটাকে স্থাপিত হয়, সাধারণের চাঁদার ইহা চলিত।

১৮২৯ খুটাকে লক্ষোয়ের নবাব ফললআলি গাঁ এককালীন

ইহাতে ১,৭০,০০০ টাকা দান করেন। এখন দিল্লীতে
বহুসংখ্যক ছাণাধানা হইরাছে।

দিল্লীনগরে ইষ্ট ইভিয়া, পঞ্জাব ও রাজপুতানা ষ্টেট্ এই তিনটা রেলপথেরই ষ্টেসন আছে।, গ্রাও ট্রাক্রোড এবং অভাভ অংনকণ্ডলি মুন্দর রাজপথ দিলী হইতে চতুর্দিকে ल्यान ल्यान शादन शिवाहि। उडिव यमूना निवास दैनोकानि যাতারাত করে। স্থতরাং দিলীতে কি জ্বপথ কি ভ্রপথ कि (उन्नेश मकन निया वानिकात श्रुविधा श्राटह । श्रमाशि এয়ান কলিকাতা, বোখাই, রাজপুতানা প্রভৃতির সহিত विकोर्ग वानित्यात अवि (क्वाइन । आमानीत अत्था ণীলবড়ী, রাসায়নিক নানাবিধ ঔষধাদি, তুলা, রেসম, হত্ত্র, গোধ্ম, সর্ধপাদি শশু, স্বত, লবণ, নানাবিধ ধাতু, শৃদ, চর্ম बदः विनाजी काशक व्यथान । बहे त्रकन सरवात व्यथिकाः न আবার তথা হইতে • নানাখানে রপ্তানি হয়; অধিক্ত ভামাক, চিনি, ভৈল, স্বৰ্ণবৌপোই বিবিধ অলফার ও করি অভতিও রপ্তানি হইয়া থাকে। ঝিনী, কাবুল, অল্বার, विकानीत, क्युशूत और भाषाव ७ शक्षात्वत সমस्त नगरत দিল্লী সভদাগরগণ বাণিজ্ঞা করিয়া, থাকে। বেল্ল এও ^{দিল্লী} ব্যাক্ষ মূরোপীয় মূলধনে স্থাপিত। তুলার লওদাগরদিগের भारतरकत्र अथारन अटमण्डे आदि। है। मनी हक कांत्रवादृत्रत्र প্রধান আড্ডা, এখানে সারি সারি নানাবিধ পণা পরিপূর্ণ বহুসংখ্যক আপণ্শ্রেণী দর্শকের মনোহরণ করে। শিক্লকাডের •মধ্যে দিল্লীর অর্ণরেণিগাদির স্ক্রভার নির্মিত প্রশান্তি প্রধান। কিন্তু এখন বিলাতী জব্যের অফুকরণ অতিশর প্রবল হওয়ার ঐ সকলোর করানা-চাত্র্য ও সৌক্র্যা অনেক কমিয়া ঘাইতেছে। মোগলরাক্রবংশের লোপ হওয়াতেও এই শিল্ল উৎসাহহীন হইয়া পড়িয়াছে। পঞ্জাবের মধ্যে দিল্লীনগরে সর্ব্বাপেক। স্কলর মস্লিন প্রস্তুত হয়, তভির এখানে উৎকৃষ্ট শাল, নানাবিধ খোদাই ও চিকনদান্তি, কাচমন্তিত মালির বাসন প্রভৃতির বহুসংখ্যক স্থাণার আছে। দিল্লীর মিউনিসিপালিটা প্রথমশ্রেণীর মধ্যে গণনীরে।

দিলীর প্রত্যেক প্রাচীন সৌধমন্দিরাদি এবং অভাত স্থানের বিবরণ সংক্ষেপে লিখিতে গেলেও এক প্রকান্ত বহি হইয়াপড়ে, ফুতরাং এছলে প্রধান প্রধান স্থান ও অক্সাত্র কীর্ত্তিকলাপের নামের কেবল এক তালিকামাত্র দেওয়া (शन। यथा--- (काशनकावान, (काशनकात ममाधि, काळाव-मञ्जन, व्यापिनावाप, यन्तित्रककी, त्राप्तन वित्रांग, स्नाजान वहरताल रनानित्र नमाधि, नाउभाष्ट्रा वैधि, थिएकिन्मन्बिन, मर्गा यूक्क (कांटान, मर्गा त्मथ मनाडेकीन, भीठ बूक्क काकन मताहे. नक्त्रचात्र मभाधि, विख्वाडेष्. थिक्टितत श्रम अकना, वफ् शाला, चान्हेर्गानात्नत नमाधि, नील खदक, हमांयूरनत সমাধি ও তন্মধাস্থ অপর একটা কবর, আরব কি সরাই, **पत्रका मन्ति, हेना थाँत नमाधि ७ मन्किल, पर्गा निकामुकीन्.** थिकत थात मिन्किन, निज्ञीत (भव मुखाईशापत म्यापि, नर्ना আমীর খুসক, রাজার্থার সমাধি, চৌষ্ট্রখা, লালমহল, সৈয়দ व्याविद्यात्र ममाधि, नानकात्रना, भूबानिकह्मा, शामम्हन, नीन-ছ্ত্রি, সিরমন্দিল, কিল্লাকোণমস্ঞিদ, কাবুলফটক, ফিরোজ-শাহের কোতেলা, অশোকের তত্ত, কুশাক-শিকার, চৌবুরুজী, •ভৃভূলিক, ফিরোঝশাছের কোতেলার দক্ষিণে নিশিযুক্ত একটা মস্ঞ্জিল, প্রাণ্কিল্লার স্লিকট নগরতোরণ ও ইহার নিক্টবর্ত্তী निशियुक अम्बिम, (कानमिनात, अम्बिम क्छर छेल् हेम्नाअ, লোহস্তম্ভ, অসম্পূর্ণ মিনার, বৃহৎ্মিনার বা লাট, কুশাক সবুঞ্জ, चान्ठामात्तत नमाधि. चानाडेकीन् थिनकीत नमाधि, चानाइ नत्रका, देमाम् कामिटनत नमाधि, महत्त्रक्^{रिन}शैति नमाधि, त्राखन का वहन, (मोनाना क्रमात्नत नमाधि ७ मन् किए, श्वाम् छेकीन् वनवरनत्र ममाधि, नामनि रहोक अनिक छेव मनित्र, मृत्री कूछवडेकीन्, वश्छिप्रांत्र कांकि ও मन्स्त्रिम्, मि मन्स्त्रम्, आहमश्रीत नमाधि, यांगमात्रा, अनक्ष्मारनत नानरकां छ

आगाउँकीन् कुछ উरात्र विखात, किला तात्र शिरशाता, राश्विवावा ,রোদেবির সমাধি, স্থলতান গারির স্মাধি, হৌজ খাস, কিরোজশাহের গোর ও সন্নিহিত ইদ্গা, পাহাড়ের উপরিভ স্থলতান গারির সমাধির ভগাবশেষ, কিন্তু বারেন, মহীপালপুর, মাল্চা, বদি-মঞ্জিল বা বিজয়মন্দির, মস্জিল বেগনপুর, মঠকি मन्बिन, जित्रहान्या, प्रातकशूत कार्जना नमापि, त्क्ब, काना रकत्र कर्जना, शरतत्रभूरत नमाधि ७ मन्किन, সেকলর লোদির সমাধি, যন্ত্র-মন্ত্র, কদম শরিকী, মহল ভূলি ভাতিয়ারি, মদ্বিদ সর্হিন্দি, নিগমবোধখাট, দিলীতুর্গস্থ (नौरमाना, अमा मन्खिन, काना वा कनान मन्खिन, नर्गा नाह पूर्वमान, मन्बिन व्यक्तत्रवाष्ट्री, त्नानानी मन्बिन, बिन९ • छन् मन्बिन, नातिक উत्कोनात मन्बिन, कटलन्ती मन्बिन, পঞ্চাবী কাট্রা মস্ভিদ, ফক্র-উল্-মস্ভিদ, গাজিউদ্দীনের মাজাসা, লোণালী মস্জিদ কোজোরালী, ঔকপুর ও স্থা-কুণ্ড, সেলিমগড় ও ছর্ক মধ্যবন্তী সেতু, জাহাঁপানা, দিলী শির্দা, ফিরোজাবাদ, সিরি, কিলোকড়ি ইত্যালি।

দিব্ (জী) দীব্যস্তাত দিব বাছ আধারে ভিব্। ১ স্বর্ণ।
২ আকাশ। ও দিন। "দিবীব চকুরাততম্" (ঋকু সং২া৫)

नित (भी) नीराख्याचिन् निर प्यार्थ अधिकत्राय क । > अर्ग। २ आकाम । ৩ निन । ৪ বন ।

मिरकम् (बि) > चर्गीत्र । (श्:) २ हेळा । ्

দিবঞ্চম (অি) দিবং আকাশং স্বৰ্গং বা গুছুতি দিব ৰাছণ পচ্মুম্। ১ আকাশগামী। ২ স্বৰ্গগামী। "দিবজ্বমং রুলো-ধার্থ মার্গং ভীমতা কারণাও।" (ভারত বনং ১৪৬ আছ:)

দিবন্ (পুং) দীব্যত্যস্থিৱিতি দিব-কনিন্ (কনিন্ধু র্বীতি। • উণ্ ১।৫৬) দিন।

দিবস (পুংক্লী) দৌবাত্যতা দিব অসচ্' কিচ (দিবংকিং। উণ্ ৩০২২১) দিন।

"দ্রাষয়তাদিবদানি স্থদীয় বিরহেণ ভীব্রতাপেন। গ্রীমেণেব নলিক্সা জীবনমন্ত্রীকৃতং চুচ্চাঃ ॥"

( আর্য্যাসপ্তশতী ৬৩৯ )

দিবসক্র ( শং ) করোভীতি রু-অচ্ দিবসভ কর:। ১ স্বা। ২ অর্কুক।

দিবসক্ত্[®] (পুং) দিবসং করোতি ক্ব-কিপ্তুগাগম:।
> স্থ্য। ২ অর্কুক্ষ।

দিবসনাথ (পুং) দিবসম্ম নাথ:। স্ব্যা,।

দিবসভর্ত্ত্ ( পুং ) দিবসক্ত ভর্তা। ক্র্যা।

मित्रम्थ (क्री) मित्रण म्थर। खडाड, खाड:कान।

क्तियमभू भी (खी) धक्तित्व (वजन।

দিবস্বিগম ( গং ) দিবস্ত বিগমঃ। দিবাৰসান, দিবসাভার, সারংকাল, সন্ধাকাল। *

দিবসাস্তর (আ) অন্তৎ দিবসং। অক্তদিন। "গর্জহো বা প্রস্তো বাণ্যথবা দিবসাস্তর:।" (ভারত ১১১৯৮) দিবসেশ্বর (পুং) দিবসাত ঈশবং। দিবসের প্রভু, স্বা।

দিবস্পৃতি (পুং) দিবং পত্তি অপুক্সমাস:। আবেদশ মৰতানের ইক্স।

দিবস্পু জ্ৰ ( পৃং ) দিব আকাশ্বস্ত পুত্ৰবং প্ৰিয়: বা দিব: পৃঞ্ ত্ৰায়তে ত্ৰৈ ক, পৃষোঁণ সাধু। ১ ছ্যালোকপ্ৰিয় । ই ছ্যালোক পালক স্থ্য।

"দিবস্পুত্রার স্ব্যার শংগতঃ।" ( শুক্ল যজু॰ ৪।৩৫ )

'দিৰম্পুত্ৰার ছালোকস পুত্রবৎ প্রিরার ছালোকছি ক্র্যো কার্মতে দিব পুরু ত্রায়তে স ইতি দিবম্পুত্রায় দিব: পালকায়।' (দেবদীপ)

मिता (अता) मित-का । मितन।

শিশিক্তি স্থানীনো সলং হস্তি দিবাকৃতং।" (১মছ )
দিবাই, উত্তর পশ্চিম প্রদেশাস্তর্গত ব্লন্দরহর জেলার একটা
বিশ্বিষ্ণহর ও বাণিজ্যস্থান! অক্ষা ২৮° ১২ উ:, জাবিং
৭৮° ১৮ ৩৫ পূ:। এই সহর ব্লন্দসহরের ২৬ মাইল উত্তরে
অবস্থিত। কথিত আছে, ধুন্ধগড় লামক একটা প্রধান
য়াজপুত রাজধানীর উত্তরে ১০২১ খুটাকে এই সহর স্থাপিত
হয়। সম্প্রতি অবোধ্যা ও রোহিলথও রেলপথ এই খান
দিলা গমন করাতে ইহার দিন দিন উন্নতি হইভেছে। কালের
দিবাই নামে উক্জ রেলপথের একটা টেসন আছে। প্রতি
সোমবার দিবাই সহরে একটা হাট ক্সিনা থাকে। এ হাট
জেলার মধ্যে স্ক্রাপেক্ষা বৃহৎ।
দিবাকির (পুং) দিবা দিনং করোতীতি ক্ব-ট। (দিবাবিভেতি।

পা এং ২২১) ১ স্বা। ২ অর্কর্ক। ও কাক। ৪ পুলবি^{নৈর।} দিবাকর, এই নামে ভুনেক সংস্কৃত প্রস্থকারের নাম পা^{ওরা} যায়, তন্মধ্যে এই কর**লন উল্লেখ**যোগ্য।

> मिनकटत्रत्र भूख, ब्रांनविनकत्र-व्रहित्रिकाः

২ বৃত্তরছাকরের টীকাকার, মলিনাথ শিশুপালবধের টীকার ঐ চীকা উদ্ভ করিয়াছেন।

ত প্রসিদ্ধ জ্যোভির্মিণ, কোন কোন গ্রন্থে ইহার নামান্তর

'দিনকুর' লিখিত আছে। ইনি নৃসিংহের পুত্র, রুঞ্চ
দৈবজ্ঞের পৌত্র এবং দিবাকরের প্রপৌত্র। ইনি তত্ত্বচিন্তামণি নামে গণিত জ্যোভিষ, লাতকপদ্ধতি, লাতকপদ্ধতিপ্রকাশ, পদ্মলাতক, কেশবপদ্ধতির প্রোচ্মনোর্মা নামে
টীকা, মকরন্দর্ভ্বাবন, রুপোদ্ধতা নামে বর্ষগণিতপদ্ধতি,
বর্ষতন্ত্র, শ্রীপতিপ্রকাশ, গণিতার্গৃতসারণী, জাতকপদ্ধত্যানাহরণ, রামবিনোদপ্রকাশপদ্ধতি, দিবাকরী এবং ১৬২৭
গৃষ্টান্দে গোপীরাজ্মতথণ্ডন নাবে জ্যোতিগ্রন্থ প্রণয়ন করেন।

৪ একজন প্রাস্থিত দার্গ্রন্থিত। মহাদেবভট্টের পুত্র
ও গলার গর্ডজাত। ইহার পিতামহের ক্রম বালক্ষ্যু,
প্রপিতামহের নাম মহাদেব এবং বৃদ্ধপ্রতিামহের নাম
নারারণ। ইহার পুত্রের নাম বৈল্যনাও।

ইনি ১৬৮০ খৃটাকে ধর্মণাক্সস্থানিধি নামে এক বৃহৎ
প্রতিনিবন্ধ (আচারার্ক, তিথার্ক প্রভৃতি ইহার অন্তর্গক্ত), প্রায়শিতমুক্তাবলী ও প্রায়শিত্তমুক্তাবলীপ্রকাশ, মন্ত্রমার্ক্তএ,
প্রান্ধচন্দ্রকা এবং ১৬৮৪ খৃটাকে বৃত্তরত্বাকরাদর্শ রচনা করেন।

থ মহাদেবভট্টের প্র ও রামেশ্বর ভট্টের পৌত্র, ইহার
উপনাম 'কাল'। ইনি পৃর্কোক্ত দিবাকরের মাতা গলার খুলপিতামহ। ইনি দানচন্দ্রিকা ও স্মার্ক্তপ্রায়শিত্ত রচনা করেন।
৬ পদ্যাবলীধৃত একজন বিধ্যাত কবি।

দিবাকর দত্ত, হক্তিকণামৃতধৃত একজন সংস্কৃত কবি।
দিবাকরবপ্স, কক্ষামালাভোত্র এবং বিবেকজন নামে
সংস্কৃত গ্রন্থ রচিয়তা। শেবোক্ত গ্রন্থ অভিনবগুণ্ডের ঈশরপ্রতাভিজ্ঞান্ত্রবিমর্শিনীবৃত্তিতে উচ্চ হইরাছে।
দিবাকরস্থত (পুং) দিবাকরক্ত হতঃ। হর্যাপুত্র শনি,
ব্য, কণ্, স্থ্রীব। জ্রিয়াং টাপ্। য্যুনা, তপতী।
দিবাকীর্ত্তি (পুং) দিবা দিবসে এব কীর্ত্তিবক্ত, রাজৌ কৌরকর্মনিবেধাং। ১ নাপিত।, ২ চাণ্ডাল।

"ब्राट्को न विरुद्धश्रुष्ट श्रारमयू नश्रद्धश्रु हः।

দিবা চরেয়ু: কার্যাধার চিহ্নিতা রাজশাসনৈ: #"(মসু > 108)
নাপিতগণ - রাজার শাসনাস্নারে গ্রাম এবং নগরে
কার্যোর নিষিত্ত দিবাভাগে বিচরণ করিবে, রাজিতে কদাপি

কার্যের অস্তু গমক করিবে না। নাপিত, চাঙাল প্রভৃতিকে

শর্প করিলে দান করিতে হয়।

^{"দিবা}কীর্ত্তিমূদক্যাঞ্চ পতিতং স্তিকাং তথা। ^{শব্ৰুং} স্টিনজৈব স্পৃত্তী দ্বানেন তথাতি ॥" ( ময়ু ৫।৮৫ ) দিবা অকীর্জির্যন্ত। উলুক, পেচক। দিবসে ইহাদিগের নাম উচ্চারণ করিলে ইহাদের জক্তরতা তিব্দ হর, এইরূপ লোক প্রাবাদ, আছে; এইজন্ত দিবাভাগে ইহাদের নাম করিতে নাই।

দিবাকীর্দ্তা (ক্লী) দিবা দিবসে ব্র্বজ্ঞাং কীর্ত্তনীরং। ব্র্বজ্ঞাধ্য গ্রানরন যজে ছই মাস্বৃট্বের মধ্যে বিষ্কৃ নামক দিনে গো সামভেদ, অর্থাৎ বর্ষসাধ্য গ্রানরন যজে বিষ্কৃসংক্রোভির দিন বে সাম গান করা যায়, তাহার নাম 'দিবাকীর্ত্তা। "দিবাকীর্জ্যসামা ভবতি" (তাপ্তারা ৪৮৮১২)

'দিবাকীর্ন্তানি গুক্রিয়ানি সামানি তত্মিন্ প্রযুক্তান্তে ইতি দিবাকীর্ন্তাসামা অরং বিষুবান্ দিবাকীর্ন্তামা কার্য্যুট (ভাষা) দিবাকর ( পুং ) দিবা চরতীতি চর-ট। > পক্ষী। ২ চঞালু। দিবাকারিন্ ( জি ) দিবা চরতি চর-দিনি। দিবসস্ঞারীভূত। "সর্ব্বেভাঃ ভূতেভাঃ দিবাচারিভাঃ" ( আখলায়নগৃহ্ছ ১৷২৯ ) দিবাতার ( ক্লী ) অভিশয়েন দিবা প্রকাশকং তরপ্। অতাস্ত প্রকাশক দিবা। "যঃ স্মৃত্র্গতরো দিবাতরাৎ প্রায়ুবে দিবাতরাং" ( ঋক্ ১৷১২৭)৫ )

দিবান্ধ (পুং জী) দিবা দিবকে অন্ধ:। > পেচক । ২ দিবসান প্রাণিমাত্র।

"দিবাদ্ধাঃ প্রাণিনঃ কেচিৎ রাজাবদ্ধান্তথা পরে।"(দেবীমাণ) • (স্ত্রী) ও বস্কুলাপক্ষী।

मितासको (खो) मितास वार्थ-क शोता डीव्। इड्ने हो।

मिवाशृष्ठ (११) १र्ग।

দিবাপ্রদীপ (পুং) কুৎদিত মহযা।

দিবাভীত ( পুং স্ত্রী ) দিবা দিবসে ভীতঃ। ১ পেচক

র্গলীনং দিবাভীতমিবান্ধকারং'' ( কুমার )

স্তিয়াং জাতি**তাং ঙী**ষ্। (পুং) ২ কুমুদাকর[ঁ]। ৩-চৌর। (মেদিনী) দিবাভীক্তি (**স্ত্রী:)** দিবা দিবসে ভীতির্ভন্নং যন্ত। ১ পেচক। , (ত্রি) ২ দিবস ভীতিযুক্ত।

দিবাভূত ( তি ) দিবার স্থায় আলোকযুক্ত।

नियामि (११) निर्वा नियमक मनितिय । ३ एथा । २ व्यक्त्क ।

क्तिवास्था (क्री) किवा क्वित्रक मधार । . मधारू ।

দিবাবস্থ (পুং) দিবা বস্থা কিরণো যন্ত। ১ পুর্যা। ২ অর্ক-বৃক্ষ। দীবাতি দিব-কিপুডৌ: আবস্থা হবিবন্ত বা দিব-মাবসতি বস্-উন্। ১ দীপ্তহবিক। ২ ছালোকবাসী ইস্তা। "দিবং য্য দিবাবসো" (ঝক্চাওঃ।১ )

দিবাশায় ( পুং ) দিবা দিবসে শেতে শী-জচ্। ১ দিবাখাপ-যুক্ত, যাহারা দিনে শয়ন করে। ২ দিবসে অঞ্চলাশযুক্ত। "ন মে দিবাশয়াঃ পুজা ন রাত্রৌ দধিভোজিনঃ।
্গুর্কিনীং নামুগচ্ছতি ন স্পুশতি রজস্থলাং॥" (কৈমি॰ ভারত)
দিবাস্কার (জি) দিবা দিবসে সঞ্চরতি সমূচর-টন দিবস্
চারী প্রাণিভেদ, পর্যায়—শ্রামা, শ্রেন, শশম, বঞ্লুন, শিণী,
শ্রীকর্ণ, চক্রবাক, চার, অণ্ডীরক, ধঞ্জরীট, ওক, ধ্রাজ্ঞক,
জিবিধ কপোত, ভারদাল, কুলান, কুলুট, ধর, হারীত, গৃধ,
কপি, ফেণ্ট, পূর্ণকূট ও চটক এই সকল পক্ষী দিবাচর।
(রুহৎসংহিতা ৮৮।১)

দিবাস্থপ্ন (পুং) দিবা দিবদে স্বপ্ন:। দিবানিজা। "দিৰাস্বাপং ন কুৰ্বীত যতোহসৌ স্থাৎ কফাবছ:। গ্ৰীৰবৰ্জেষু কালেষু দিবাখাপো নিষিধ্যতে ॥ উচিতো হি দিবাম্বপ্লো নিত্যং যেষাং শরীরিণাং। বাতাদর: প্রকুপাতি তেষামম্বপতাং দিবা ॥"( ভাবপ্র• ) मिराम निजा याहेरव नां, कांत्रण मिरानिका कककात्रक। কিন্তু গ্রীমকালে দিবানিজা ছারা কোন দোষ হয় না। গ্রীম কাল ভিন্ন অপর ঋতুতে দিবানিত। নিষিদ্ধ যাহাদের প্রত্যহ দিবানিদ্রা যাওয়া অভ্যাস, তাহারা দিবানিদ্রা পরি-ত্যাগ করিলে বারু, পিত্ত 🕏 কফ এই ত্রিদোফ কুপিত হয়। যে সকল বাক্তি বায়াম বা স্ত্রীপ্রদঙ্গ দারা অথবা পথ পর্যাটনে ক্লান্ত, এবং অভিসার, শূল, খাস, পিপাসা, হিকা, বায়ুরোগ, মদাত্যয় ও অজীর্ণ এই সকল রোগে আক্রাস্ত, অথবা কীণদেহ, ক্ষীণ কফ, শিশু, বৃদ্ধ ও যাহারা রাত্রিজ্ঞাগরণ করিয়াছে, তাহাদের পক্ষে দিবানিদ্রা হিতকারক। যে দিবানিলা ও রাত্রিকাগরণে অভ্যস্ত, তাহার দিবানিলা ও রাত্রিজাগরণে কোন দোব হয় না। (ভাবপ্রণ) [ নিজা দেখ। ] **मिरानिजा कामक रामन मर्था श्रा** ।

"মৃগরাকো দিবাস্থা: পরিবাদ: ত্রিরোমদ:।
ত্রোর্যান্তিক: বৃথাটা। চ কামজো দশকোগণ:॥" (মফু)
দিবাস্থাপ (পুং) দিবা দিবসে স্থাপ: ৭তৎ। দিবানিজা।
[দিবাস্থা দেধ। ]

দিবাস্থাপা (স্ত্রী) বল্গুলা পক্ষী। (রাজনিণ)
দিবি (পুং) দীব্যুতীতি দিব্যু ক্রীড়ায়াং দিব-ইন্সচ কিং।
(ইগুপধাং কিং। উণ্ ৪০১১৯) চাষ পক্ষী।
দিবিক্ষয় (বি ) স্বর্গবাসী।
দিবিক্ষিণ্ড (বি ) দিবি ক্ষয়তি ক্ষি-ক্ষিপ্তুকাগমাং, অনুক্

সমাসশ্চ। স্বৰ্গবাসী। "স্ব্যামাসাবিচরস্তা দিবিক্ষিতা" ( ঋক্ ১০৮২৮২) 'দিবিক্ষিতা দিবি বসস্তৌ' (সায়ণ) দিবিপ্ত (অি) দিবি গভঃ অনুক্সমাসঃ। স্বৰ্গত। "স্হিতো

দিবিগত ( অ ) দিবি গতঃ অনুক্ সমাসঃ। স্বর্গণত। "সহিতো তত্ত রংস্থাবো যথা দিবিগতো তথা।" ( হরিব ) দিবিচর ( ত্রি ) দিবি আকাশে চরতীভি চর-ট। আকাশচারী, অর্গচারী। স্তিরাং ভীষ্।

দিবিচারিন্ (অি) দিবি চুরতি চর ণিনি। আকাশচারী, অর্গচারী।

দিবিজ (পুং) দিবি জায়তে জন-ড, অনুক্ সমীস:। ছালোক জাত, অৰ্গজাত, বাহাৱা অংশ জিলায়াছেন।

"বাবা আবো দিবিলা খতে নাবিল্লখানা।" ( ঋক্ ৭।৭৫।১ ) বিকরে অলুক্ সমাস হয়, কিন্তু বিকর স্থানে অলুক্ না হইলে ছাজ এইরূপ পদ হইবে।

দিবিজ্ঞাত (ত্রি) দিবিজাত: অলুক্ সমাস:। সুর্গজাত, আকাশলাত।

দিবিকা (জী) দীপ বাহ° ইতচ্পুষো: সাধু:। দীপ্তি। "প্রাবাণো বাচা দিবিতা দিবিত্মতা।" (ঋক্ ১০।৭৬॥৬) 'দিবিতায়া: দীপ্তিমন্তায়া:।' (সায়ণ)

দিৰিত্ম ( ি ) দীপ্তিমৎ পূৰোদরাদিত্বাৎ সাধু:। দীপ্তিযুদ্ধ "মহারারে দিবিত্মতে" ( ঋক্ ৪।০১।১১) 'দিবিত্মতে দীপ্তিমতে ( সায়ণ )

দিবিষজ্ (পং) দিবি ছালোকে হিতান্ ইক্রাদীন্ যজতে যজকিপ্, অনুক্ সমাস: । ছালোক হিত দেবধাজী, যাহার।
অর্গলোকে থাকিয়া দেবতাদিগের যাগ করে । "হোতায়ে
ন দিবিষজোমন্তমা: ।" (ঋক্ ৯৯৯৭।২৬) 'দেবনিক্রাদীন্
ভবজ্যেবং দিবিষজো দিবি ছালোকে হিতান্ ইক্রাদীন্দেবান্
যজকঃ' (সায়ণ)

मितिरशर्मि (जि) वर्शक्या। किर्माता

দিবিরও (পুং) ১ পুরুবংশে ভূমন্তাপুত্র নূপণ্ডের। (ভারত ৯৪ জা) ২ জন্দেশাধিপতি দধিবাহনের পুত্র। (হরিবংশু ৩১ জা) দিবিশ্রিশ্রে (ত্রি) অর্গে বাসকারী।

দিবিষদ্ (পুং) দিবি সীদতীতি সদ-বিপ্ সপ্তমা। অনুক্ যত্ত্বা দেকতা, যাহারা অর্গে বাস করেন। "পৃথিবীসদং অাস্তরিক্ষসদং দিবিসদং দেবসদং নাকসদং" (গুরুষজু: ১০২)

मिविष्ठेख ( कि ) चांर्ग हाननीय ।

मिविष्टि (क्री) यांग, यब्छ।

দিবিষ্ঠ ( তি ) দিবি অর্গে তিষ্ঠতি হো-ক অনুক্ সমান:
ততো যত্ত: ১ অর্গত্ত, মহোরা অর্গে অবস্থান করে। ২ অত্ত
রীক্ষণ্ডিত। কোন কোন হলে অকৃত্যত্ত, অর্থাৎ যত্ত্ব হর নাই
এইরূপ প্রয়োগ দেখা যায়, সেই হুলে নিবিস্থ এইরূপ হয় 
নিষা দিবিস্থাং জিদশাংজি: পরীত্য

विद्यम विरु धाप्रजी ভর্পাদং।" (ভাপবত গংগংং)
দিবিদৃদ্ [ দিবিষদ্ দেশ। |

मिविष्ण्राम् (बि) निवि न्यूनिक किन्, न वषः। ছालांक-লানী, যাহারা অর্গলোক লানী করিয়া থাকে। "আহি म्नार्था निविन्त्रीमः।" ( सक् 818७18 )

'भिती (ब्री) मिर राष्ट्र' में। উপनिष्टिका की है। मिर्तिमर्द्य (भेता) मित तोङ्गकार विष्क । मित्न। ° मिट्रा कम् (प्रः) प्लाः चर्तः चाकौरमा वा अटका रखः। ১ দেবতা। ২ চাডক পক্ষী। ,( ত্রি ) ৩ আকাশবাসী ় দিবোজা ( ত্রি ) দিবো জারতে জন-ড, বাহুণ অনুক্ সমাসঃ। पारनाक हरेर्ड कांक, याहाता वर्गानीक हरेरड समाधहन করিয়াছে।

"এरा दाना इंडिजा निरवाकाः।" ( श्रक् ७।७८।১ ) मिर्तामाम ( श्रः ) मिनः चर्गाए मारा मानः यटेच । > वक्षरचन्न

उन्नर्षि हेखरमनात्र वश्य नारम अन अत्राक्तमनानी भूव हत्र, **এই বঙ্গ - इटेंट्ड स्मिनकात গর্ভে ছ**ई यम्**न সন্তান क**र्या, একটা পুত্র ও অপরটা কন্তা, পুত্রের নাম রাজবি দিবোদাস, কভার নাম যশবিনী অহল্যা। দিবোদাসের মহর্ষি মিত্রযু সামে এক পুত্র হয়। (হরিবংশ ৩২ জঃ) ২ মফুবংশীর রিপ্রয়াধ্য নুপভেদ, মহামতি রিপুঞ্জর অবিষ্কৃক্তের কাশীধামে কঠোর তপঃসাধন করেন, ত্রন্ধা ইহার তপ্রভায় সম্ভষ্ট হইয়া ইহার নিকট উপস্থিত হইয়া সন্মানপ্রদর্শনপূর্বক বর দেন এবং ইনাকে সম্বোধন করিয়া বলেন, 'রিপুঞ্জয় ভূমি এই পৃথিবী भागन कह, नागद्राक अनक्षरमाहिनी नारम क्छा ध्यनान করিতেছেন; ইনি তোমার পদ্মী হইবেন। পেবভাগণ ভোমাকে স্বৰ্গ হটুতে কুসুম এবং রত্ন স্কল প্রদান করিবেন। এই জন্ত ভূমি দিবোদাস নামে বিখ্যাত হইবে। "দিবোহুপি দেবা দাশুস্তি র্ত্বানি কুস্থ্যানি চ।

প্রজাপাননসম্ভর্টা মহারাজ। প্রতিক্ষণং।

^{দিবোদাস} ইতি খ্যাত মতো নাম স্বমাশ্যসি।;"

'আমার বরপ্রভাবে তৃমি,অভিশয় বল**শালী হট্**বে।' लाकि विज्ञा कर क्रिया चर्चान करवन, ^{দিবোদাস}ও কাশীতে, অবস্থান করিয়া অপভানির্কিশেষে विषा भागन कितिराज्ञ शास्त्रमा । [मानी राष ।]

(কাশীৰও ৪৭ জঃ)

গিবোদাস চন্ত্রবংশীয় ভীমরণের পুত্র, ইহার পুত্রের নাম विनेत्र ७ ७। ७६न । हैनि हेट्यत डेशानक हित्नन । हेळ भवत নামক অহুরের ১০০ শস্ত পুরীর মৃধ্যে ৯৯টা বিনট করিরা वे अवनिष्ठ भूती जित्यानामरक नाम करत्रम । हेनि कामीत বাৰা ছিলেন। মহাভারত মতে ইহার পিতার নাম হুদেব।

ইহার পিতার মৃত্যু হইলে ইনি য়ালা হন। ইহায় পিতৃশক্ত ৰীডহব্যের পুত্রগণ আসিয়া ইহার সহিত বৃদ্ধ করেন, ভাহাতে দিৰোদাস প্ৰবাজ্যিত হন। পৰে ইনি ভরবাজ মুনির আশ্রন্ন গ্রহণ करतन , खत्रवीय देशात बच्च रस्कात व्यक्तान करतन, त्मरे रक्क-প্রভাবে ইহার প্রভর্মন নামে এক এবল পরাক্রমশালী পুত্র হয়। এই প্রতর্দন বীভহ্বোর প্রগণের বিনাশ সাধন करतन। महाराव देशांत्र निक्रे हहेरछ कानी श्रहन करतन। (ভারত অমুশাসন ৩০ জ:)

৩ দিবোদাসপ্রকাশ নামক ধর্মণান্ত প্রণেভা। মির্ণরসিদ্ধ ও শ্ৰাদ্যবৃথে এই গ্ৰন্থ উদ্ভ হইয়াছে।

৪ চিকিৎদাদর্পণকার। ত্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণ ও স্থ্রুত ঐ গ্রন্থের উল্লেখ আছে।

मिरवाष्ट्र ( a ) मिरवाधूक, वर्ग इहेरा इक् क्रिड । দিবোদ্ভব (অি) দিবে সর্গে উত্তবতি উদ্-ভূ-অচ্। ১ স্বৰ্গলাভ, আবিশিলাত। (জী)দিবি বনে উভবোষভাঃ। ২ এলা। पिटवांऋह् (बि ) चाकारम बोखिनीन ।

দিবেক্ষা (জী) দিবা জাতা উকা। দিবসজাত আকাশ হইতে পভিত উদ্ধা, যে উদ্ধাদিবাভাগে আকাশ হইতে পতিত হয়।

"সধ্যাস্থপতৎ সাচিদি।বাদা নভস্চ্যতা।" (ভারত উ॰৩• অ:)। দিবৌকস্ (পুং) দিবং স্বৰ্গ আকাশোবা ওকোহৰস্থানং যত। ১ দেবভা। ২ চাভক। (আন) ৩ স্বৰ্গবাসী।

"দাতু বিধৰতবৈপুষঃ কমালাভিহতারূপ ! দদর্শ পথি গচ্ছবী বস্ন্ দেবান্ দিবৌকসঃ ॥" (ভারতী ৷৯৬৷৯) मिर्तोकम ( शूर ) ७क्म मत्मा चनत्वारगाख निवः ७करमा

হস্ত। দেবতা। "वळ्डानिह मध्धारेखः मरेखंदबव मिरवोक्टेमः ।" (इतिव १२०० पः) मित्र (बि.) मिति **खतः य९। > चर्नछत्। र चाकामछत्।** ७ উৎপাত ভেদ। ৪ বম। ৫ গুগ্গুলু। ৬ তাব্রিক আচার বিশেষ, हेशांटक मिवाखांव करहा, जनन छात्रिक कार्या जिने खांदर हत्र, দিব্য, পশু ওবীর ভাব। সত্য ও তেভার প্রথমার্ক পর্যান্ত দিব্য ও বীর ভাবে তাত্রিক কার্য্য সম্পন্ন করিবার বিধি নির্দিষ্ট আছে। পঞ্মকার সাধন, খাশান সাধন ও চিতাুসাধন দিবা ও বীব ভাবাতুসারে হয়, পশুভাবে এই সকল আচরণ ছরিবে না ৷ * [ उद्घ (१४। ] १ नात्रक (७४, এই नात्रक शिवा ७ व्यक्तिया

 "শৃণু ভাবত্রয়ং দেবি দিব্যবীয়পগুক্রমাৎ। দিব্যস্ত দেববং প্রায়ো বীরস্চোছভমানসঃ #> সভ্যত্ৰেভাৰ্ধপৰ্যস্তং দিব্যভাৰবিনিৰ্ণয়:। ত্ৰেভাৰাপরপৰ্যন্তং বীরভাব ইভীরিভং ।

"গলাতোরমুপস্পৃত্য মিথা যদি বদেজন:।
স ষাতি কালস্ত্রঞ্ যাবলৈ ব্রহ্মধোনর:॥" (ব্রহ্মবৈণ প্রণ ওণ)
গালাজল স্পর্ল করিয়া দিব্য করিবে না, যদি কেই বলপূর্বক গলাজল স্পর্ল করাইয়া দিব্য করে, তাহা হইলে
উভরেরই নরক হ্য়।

গলোদক, তাম, গোমর, গোরজ ইহা ম্পর্ল করিরা যদি কেহ সত্য বা মিথা শুণুথ করে, তাহা হইলে যিনি করেন বা যিনি করান, উভরই নিরয়গামী হইরা থাকেন। "তথা গলোদকং তামং গোমরং গোরজন্তথা। সতাং বা যদি বাসত্যং মদি দিবাং করোতি য:॥ 'কর্ত্তা চ রৌরবং যাতি তথা কার্মিতা প্রিয়ে। উভরো: পুনরার্ত্তির্বাদ্রশ্বর্যানির্॥ দিবাং কর্ত্তু: কার্মিত্ র্লপপুজা র্থা তথা। গায়ত্রীরহিত্ত্যাপি নরকঞাত্ররোত্তরং ॥" (গায়ত্রীতক্স ৫ পণ)

>> ব্যবহারভেদ। এই ব্যক্তি দোষী কৈ নির্দোষ ইহা
পরীক্ষা করিবার নিষম। প্রতিজ্ঞাত অর্থ সাধনের নিমিত্ত
বাদী ও প্রতিবাদীর কর্ত্তব্য তুলাদি পরীক্ষাভেদ, যে হুলে
বাদী ও প্রতিবাদীর লৌকিক ও লেখ্য প্রমাণাদি না থাকে,
সেই হুলে তুলা প্রভৃতির বিধানাম্পারে দিব্য করিতে হয়,
এই সকল দিব্য করিলে বিচারক ধর্মাম্পারে বিচার করিবেন। বৃহস্পতির মতে এই দিব্য নর প্রকার—

" "ঘটোহ মিকদক কৈব বিষং কোষস্ত পঞ্চম:।

বিষয় তথুনা: এপাক্তম: সপ্তমং তথুমাষকং 
অস্তমং ফলমিত্যুক্তং নবমং ধর্মান্ধং স্কুতং।

দিবাত্তেতানি স্কাণি নির্দিষ্টানি স্বয়স্ত্বা॥" (বৃহস্পতি)

ঘট, অবি, উদক, বিশা, কোষ, তঞুল, তথুমাষক ফল ও

ঘট, আমা, উদক, বিন্ধ, কোষ, তপুল, তপুমায়ক ফল ও ধর্মাজ এই নয় প্রকার দিব্য, বিধাতা স্বয়ং বিধান করিয়াছেন।

মদ্যং মৎস্তং তথা মাংসং মৃদ্রাং মৈধুনমেব চ। গ্রশানসাধনং ভক্ত চিতাসাধনমেব চ ॥ এততে কথিতং সর্বাং দিব্যবীরম্ভং প্রিদ্ধে। দিব্যবীরম্ভং নাতি কলিকালে স্বলোচনে ॥" ( কারীবিলাস্ত্র ) এই দিব্য ব্রাহ্মণাদি বর্ণভেদে ভিন্ন প্রকার; বাহ্মণের দিব্য করিতে হইলে ঘটবিধি অমুসারে, ক্ষত্তির হতাশন, বৈশ্ব সলিল ও শুদ্র বিব প্রয়োগামুসারে দিবা করিবে।

"বান্ধণভা ঘটোদেয়: ক্ষতিয়ভ হতাশন:।

· ৰৈখ্য সলিলং দেয়ং পৃদ্ৰস্ত বিষমেব জু॥ * ( নারদ )

বালক, বৃদ্ধ, আছুর ও খ্রী ইহাদিগের ঘটবিধি অনুসারে দিবা করিতে হইবে, কিন্তু স্থাদিগকে কথন বিষ দিবে না। বিষ্ণুসংহিতার বচনান্ত্সারে শ্লেশ্বরোগী, ভীক্ত, খাসকাসরোগী ও অনুসেবীকে হেমন্ত ও শিশিরকালে অলদিব্য করিতে দিবে না। কুঠরোগীদিগের অগ্রি দিব্য নিষিদ্ধ হইরাছে। মদ্যপারী, স্থাব্যসনী, কিতব ও নুর্ন্তিক ইহাদিগকে, কোবদিব্য করিতে দিবে না।

ধর্মপ্র' দিব্য এবং ঘট ধারণ সকল ঋতুতে হইতে পারে। বর্ষা, হেমস্ত ও লিলিরকালে বহিং, গ্রীমে সলিল এবং শীত-কালে বিষ দিব্য করিবার নিরম। শীতকালে তোর, গ্রীমকালে অগ্নি, বর্ষাকালে বিষ এবং' প্রভাত সময়ে তুলা ধ্যি করিবে না।

পূর্বাছে অগ্নি, ঘট ও কোব, মধ্যাকে জল এবং রাত্রির পশ্চিমভাগে বিষদিব্য করিবার নিরম। বৃহস্পতি যখন সিংহঃ বা মকরত্ব এবং ভৃগু যথন অন্তমিত হন, সেই সময় দিব করিতে নাই। মলমাসে অষ্টমী ও চতুর্দ্দী, ইহাতে দিব করিবে না।

যজ্ঞে অধ্বুর্য্য অর্থাৎ যাজ্ঞিকত্রাহ্মণ থেক্কপ সকল কার্ছ নির্ব্বাহ 'করেন, দিব্যবিষয়ে বিচারক সেইক্রপ রালার আদেশে সকল কার্য্য করিবেন। (বীরমিত্রোদর)

১২ তত্ববেন্তা। (ত্রী) ১৩ আমলকী। ১৪ বন্ধা কর্কেটিকী। ১৫ শতাবরী। ১৬ মহামেদা। ১৭ ব্রান্ধী ১৮ খেতদ্র্বা। ১৯ হরীতকী। ২০ পুরা। ২১ গন্ধবতী (পুং) ২২ স্থলজীরক। (ক্রী) ২৩ দৈবদিন। ২৪ দৈব দিনের পরিমাণ। ২৫ হ্যালোকজাত। ২৬ মনোজ্ঞা ২৭ দ্যোকাতীত।

দিব্যক (পুং) ১ সর্পভেদ। ২ জন্ধভেদ। দিব্যকট (ক্লী) প্রভীচীয় পুরভেদ।

"ক্ৎমং পঞ্চনদক্ষৈব তথৈবামবপর্কতং। উত্তরজ্যোতিবকৈব তথা দিব্যকটং পুরং॥" (ভা॰ সভা॰ ৩১ আঃ) দিব্যকুণ্ড (ক্লী) দিব্যং পুণাপ্রদন্ধাৎ স্কাতৃাৎকটং কুণ্ডং। কাম-ক্লপে ক্ষোভফশৈলের পূর্বভাগন্থ পুক্রিণী বিশেব, কামরণে হর্জন্ন পর্বতের দক্ষিণপূর্বকোণে বরাসন নামে এক নগর আছে, ঐ নগরেম্ব দক্ষিণে কোভকশৈল কাবহিত। এই পাহাড়ে রক্তশিলাপৃঠে স্বয়ং দেবী বিরাজিতা আছেন এবং এই
পর্বতের উপত্যকা ভূমিতে দিব্যক্ত আছে। এই কুতে সান
করিয়া দেবীকে পূজা করিছে হয়। যে সৌভাগ্যশালী মন্ত্র
দিব্যকুতে সান করিয়া পঞ্চ পুকরিণী দেবীকে পূজা করে,
তাহার আর পুনর্জন্ম হয় না।
শিল্যকুতে নরঃ সাড়া পৃঞ্চপুকরিণীং শিবাং।

শিদবাকুঙে নর: লাভা পৃঞ্পুক্রিণীং শিবাং। ব: পৃভবেন্ মহাভাগ স বৌনৌ নহি জারতে॥"

(कानिकाशुः ৮) चः)

দিব্যগন্ধী (পুং) দিবাগন্ধ: বঁজা। গ গন্ধক। দিব্য: গন্ধ:। ২ মনোহর গন্ধ। (ক্লী) ও লবল।

দিব্যগন্ধা ( জী ) দিবাঃ গদো ষভাঃ। ১ স্থলৈলা, বড়এলাচ। ২ মহাপঞ্চাক।

দিব্যগায়ন ( পং ) দিবাঃ অগীরঃ গারনঃ। গদ্ধর্ম, অর্থগারক।
দিব্যচক্ষুস্ ( ত্রি ) দিবাং অলোকিকং, চকুর্যন্ত। জ্ঞানচকু।
"নমন্তভাং বিরুপাক নমন্তে দিব্যচকুরে।" ( নীলকঠতোত)
জ্ঞানাত্মক চকু, জ্ঞানর্মণ চকু, অলোকিক পদার্থ দর্শনবোগ্য নেত্র।

"নতু মাং শক্যতে দ্রষ্ট্র মনেনৈব অচক্ষা।

দিবাং দদামি তে চক্ষ্ণ পশ্চ মে বোগমৈশবং ॥" (গীতা ১১।৮)

হে অর্জ্বন! তুমি এই চর্মাচক্ষারা আমার ঐশরিকরপ
প্রত্যক্ষ করিতে পারিবে না, তোমাকে দিবাচক্ প্রদান করিলান, এই দিবা চক্ষ্ ছারা আমার ঐশরিকরপ ও প্রভাব
দর্শন কর। দিবাং অর্গীয়ং মনোজ্ঞং বা চক্ষ্য। ও অর্গীয় চক্ষ্য।
৪ ফ্লয়লোচন। ৫ উপচক্ষ্, অর্থাৎ চস্মা। ৬ মর্কট। (বি)
৭ ফ্গম ভেদ। দিবো আকাশভূতে চক্ষ্মী যন্তা। ৮৮ আর।
দিব্যুতা (ব্রী) দেবভাব।

দিব্যতেজ্নসূ(স্ত্রী) দিব্যং তেকো যতাঃ। ব্রাক্ষীশাক, ইহা দেবন করিলে স্বর্গীয় লোকদিগের ফ্রায় তেজ হয়, এই জফ্র ইহার নাম দিব্যতেজ্বস্। (ত্রি) দিব্যং তেজো যতা। অলৌকিক তেজকঃ।

मिराप्तर्मिन् ( बि ) निराः चारणोकिकशनार्थः পশ্রতি দৃশু-ণিনি । অতীক্রির পদার্থ-দর্শক।

मिरापृभ् ( তি ) निराः পশ্চতি দৃশ-किপ्। অতীব্রিয় পদার্থ
मर्শক, निराभनार्थनर्भी।

निवारमाङ्म (क्री) निवार पर्शीयर माहनर व्यक्तिनादा यव। 'উপयाहिত, व्यक्तीहेनिकित्र निमिन्छ म्वकानिगरक मात्र वन्छ।

"यभीत्ररू छू (मर्ट्यरख्डा बरना ताकाख्य निकरत्र। डेभवाठिङकः मित्रारमाहमः छविङ्द्र्याः॥" (हात्रावनी) मित्रानमी (खी) मित्रा नमी। जाकामगना। **मित्रानाती (खी)** मित्रा खी, व्यक्षता, व्यर्तका।

দিব্যপঞ্চায়্ত (.जी.) পঞানাং অমৃতানাং তত্ত্বাত্তগেবদ্বাপাং সমহার:। পঞামৃত ; দধি, হগ্ধ, ছত, চিনি ও মধু
এই পাঁচটা ক্রম মিশাইলে দিবাপঞামৃত হয়।

দিব্যপুষ্প (পুং) দিবাং মনোজং পুষ্পং বছা। ১ করবীর।
(ক্লী) ৩ মনোহর কুত্ম ৮

দিব্যপুষ্পা ( ত্রী ) দিব্যানি পুষ্পানি ষস্তাঃ। মহাজোণা। দিব্যপুষ্পিকা ( ত্রী ) দিব্যপুষ্প সংজ্ঞায়াং কন্টাপ্, অভইত্বং। লোহিভবর্ণ অর্কর্ক।

দিব্য প্রশ্ন (পুং) দিবাঃ প্রশ্ন:। অনাগত জ্ঞাপক প্রশ্ন।
"উচ্চাবচং দৈব্যুকং রহ্জং দিব্য প্রশা: মৃগচক্রা মুহুর্জা:।"
(ভারত উ॰ ৪৭ আ॰)

দিব্যমান (ক্লী) দিব্যং মানং। দৈব মান।

দিব্যযমুনা (জী) দিব্যা যমুনা তত্ত্বাফলপ্রদ্রাং। নদী বিশেষ, এই নদী কামরূপে দমনিকা নদীর পূর্বদিকে অব্ফিতা। দমনিকা নদীর পূর্বোত্তরকোণে যমুনা সদৃশ ফলদায়িনী দিব্যযমুনা নামে এক মহতী নদী আছে। এই দিব্যযমুনা দক্ষিণ পর্বত হইতে উৎপন্ন হইরা দক্ষিণসমুজাভিমুধে পতিত হইরাছে। যে কোন মাসে একমাসকাল এই স্থানে স্নান করিলে মৃক্তিও নানাবিধ অধ সোভাগ্য লাভ হর। বিশেষতঃ কার্তিকমাসে এই নদীতে স্নান করিলে মোক্ষ হর। (কালিকাপ্ ৭৯ আঃ) [কামরূপ দেখ।]

निरातञ्ज (क्रो) निराः ठिखामावः छनर्थश्यनात्रकषुाः चारनीः किकः त्रप्रः। ठिखामनि।

দিব্যর্থ (११९) দিব্যং স্বর্গীয়ং অন্তরীকং বা রথ:। ব্যামধান, দেববিমান।

দিব্যরস (পুং) দিবাঃ রসঃ নিতাকর্মধাণ। প্রণারদ। ২ মনোজ্ঞারস। দিবাঃ রসঃ যক্ত। ৩ মধুর রস্যুক্ত।

দিব্যলতা (জী) দিব্যবন্তবা লতা। ১ মুর্কালতা। ২ মনোজ , লতামাল্ল।

দিব্যবন্ত্র (পুং) দিব্যং বস্ত্রমিব, অভিধানাৎ পুংস্কৃ: ১ স্ক্যু-শোভা,, স্ক্যপ্রকাশ। (অি) দিব্যং স্ক্রং বস্তু: ২ স্ক্রু বস্তুত্র (ক্লী) দিব্যং বস্তুং। ৩ মনোহর বস্ত্র।
দিবি ভবং যৎ, দিব্যং বস্তুং। '৪ দিবিভব বস্তু

मित्र (क्यों क्व (क्री) (व कारण त्रव खना वात्र।

দিব্যদরিৎ (জী) দিব্যা সরিং। আকাশগলা।

দিব্যসামু (পুং) দিবা: সামুৰ্যন্ত। ১ বিৰ্দেৰ্ভেদ। ২ দিব্য-সামুক গিরি।

দিব্যসার ( পং ) দিব্যঃ সারোবভ। শানরৃক্ষ।

দিব্যসিংহ, প্রীহট্ডেলার উত্তরপশ্চিমাংশ ব্যাপিয় স্থাম
গল সব্ভিভিসন। স্থনামগলে লাউড়ের জলল বিখাত।

এই 'লাউড়ে' এক সমরে একটা ক্র ছিলুরালা হিল। ৪০০

শত বংসর পূর্ব্বে এই স্থানে বিনি রাজত্ব করিছেন, উাহার

নাম দিব্যসিংহ। ইনি প্রান্ধাক্তেল লামগ্রহণ করেন।

কাবৈত প্রভুর পিতা কুবের ইবের মন্ত্রী ছিলেন, এই কারণে

দিব্যসিংহ অবৈত প্রভুর বালাচরিত সকল অবগত ছিলেন।

কালে অবৈত প্রভুর বালাভ চতুর্দিকে ব্যাপ্ত ইইরা পঢ়িল। তথন

বৃদ্ধ রালা দিব্যসিংহ প্রেহতে রাল্য সমর্পণ করিয়া শান্তিপ্রে

অবৈত প্রভুর কাছে আসিয়া বাস করেন। তাহার বৈরাগা
দর্শনে অবৈত তাহাকে 'কৃফলান' এই ন্তন নাম দেন।

বৈষ্ণব অগতে তিনি এই নামেই পরিচিত। অবৈতপ্রকাশ

গ্রেহে আছে—

"সেই হৈতে রাজার নাম হৈল রক্ষণাস।" অবৈতলাধার চরিতামূতে ও ইক্ষণাস নামে প্ররিচিত— "পুরুষোত্তম ব্রক্ষচারী আর রক্ষণাস।"

ু এই রাজা দিব্যসিংহ" (কৃষ্ণদাস) সংস্কৃতে আইবতের বাস্যাধীলা রচনা করেন। ইহাই সকলের আদিপ্রছ। বধা---"ভক্তিবলে হৈলা তিবো প্রভুম কুণাপাত্র।

সংশ্বতে রচিলা প্রভুর বাল্যলীলাম্জ ॥" ( জ' জ')
দ্ব্যক্তী ( জী ) দিব্যালনা, জন্মরা।

দিব্যাজ্বাম (পুং) প্ণ্যাশ্রমবিশেষ, বলদেব কুদক্তে দর্শন করিরা দিব্যাশ্রমে গমন করেন, এই পবিত্র আশ্রম মধুক, আয়, প্লক্ষ, ভবোধ, বিষ, পনস গ্রন্থতি সুংক্ষ সমাকীণ।
পূর্ব্বলে ভগবান বিষ্ণু এই আশ্রমে তপোষ্ঠান করিরা বথাবিধি সমুদার সনাভন যক্ত সমাধান করেন। এই ছলৈ বন্ধচারিনী কুমানী শান্তিলাচ্ছিতা জীলোকের ছকর তপতা করিরা সিদ্ধি প্রাপ্ত ইন। মহাত্মা বলদেব অ্যাধিদিগের সুথে এই ব্রোথ অবগত হইরা তথার সৃদ্ধাদি কার্য্য সমাপ্ত করিরা হিমানরে আরোহণ করেন। (ভারত শল্য ৫৫ আই)
দিব্যাংশ্রু (পুং) সুর্ব্য।

हित्रा (जो ) निकि खरा मरमाक्कषशावषाय निराय । > थाजी।

२ वक्षाकर्तकारिको । ० मछावत्री । ८ महास्मिना । ६ जाकी।

७ प्रमेशीयक । १ स्थित्रहर्ता । ४ इत्रीखकी। > नात्रिकारकन ।

[निया स्मय ।]

দিব্যাদিব্য (গুং) দিবাঃ স্বর্গীরঃ স্বনিবাদ। > নারকভেদ।
(ত্রী) ২ নারিকাভেদ।

मित्रादिमान ( मी ) द्वीक अवमानं खेद दुकेन ।

দিব্যাসন ( जो ) আসম ভেদ।

"অব দিব্যাসনং বন্দ্যে পৃষ্ঠই হতেন বন্ধরেং।

একহত্তমধ্যদেশং ভূমিহত্তক নাসরা ॥" ( কল্লভাষন )

দিব্যেলক (পুং ) সর্পভেদ। "জন্মাণাং বৈ কর্মভানাং পুনর্দিব্যে, ।

গকলোএপুপাকরাবিচিত্রিকাঃ।" ( স্কুঞ্চত ) "

দিব্যাদক (ক্লী) বিবাং আন্তরীকং উদকং। আকাশ ধন।
পর্যায়ত ধ্বারি, আকাশসলিল, ব্যোমোদক, অন্তরীক ধন।
ইহার গুণ—জিদোঘনাশক, মৃধুর, পথাদ, পরম কচিবর,
অরিকারক, তৃকা ও মেহনাশক। সভ্যেত্মিঠ অনের গুণ—
কলুব ও দোবদায়ক। (রাজনিং)

দিব্যোপপাতৃক (তি) দিবি ভবং বিষ-বং (ছাপ্রাগণাধ-দকপ্রতীচো যং। পা ৪।২।১০) উপপদ উক্ঞা। (লব গত গদ ভোত। গা অ২।১০৪) দিবাশ্চাসৌ উপপাছ্কশেচতি। দেবতা। বে সকল দেবতা মাতৃ ও পিআদি অপেকা না কল্পিয়া অদৃষ্টসহক্ষত হইতে অন্মে, সেই দেবতাদিগকে দিব্যোপপাতৃক কহে। (শকার্যচিং)

দিব্যৌল (পুং) দিব্যানাং অর্গীর গুণানাং ওবং সমূহোবত্ত। গুরুবিশেষ।

"মহাদেখো মহাকাল ত্রিপুরদৈতৰ ভৈরব:।"
দিবো)বা: শুরব: প্রোক্তা: সিছে)বান্ কথরামি তে॥"
( শক্তির্দ্ধাকরতর)

বেধানে মহাদেব, মহাকাল, ত্রিপুরতৈরব বিব্যোগ ওর, সেই ত্বে আঞ সিদ্ধি লাভ হয়। "অথ তারা ওক্ষন্ বক্ষাে সৃষ্টালৃষ্টকলঞালান্।

উद्धरूपा त्यामरक्षा नीनक्छीत्वस्तवः॥ वित्योचान् त्रिक्षिनन् तथ्त मृत्याविह्या मृत्राः।"

( শক্তিরত্বাকরত )

দিব্যৌষ্ধি (জী) निवाः ওৰধি:। মনঃশিলা। ( শৰ্মাৰ্থিচি:)
দিশু (জী) দ্বিশতি অবকাশং দৰাতি বা নিশ্কিন্ প্রভারেন
সাধু:। (ঋত্বিগদধূলিভি। পা ৩২০০২) আলা, পূর্ব পশ্চিম
দক্ষিণাদিরপা। পর্বার—কৃত্প্, ভাঠা, আলা, হরিং, নিবেশিনী, দিশা, ককুভ, হরিভ, গো। ( শক্ষরণ) বৈদিক মতে
দিকের নাম।

"कृदेखनमन्दिर जन्नाविष्टर,शृद्धक शन्तिमः । देखिनमान्दिर जन्माविष्टर । देखिनमान्दिर । देखि

অবধি অর্থাৎ নিরম করিয়া তুরি পূর্বা, তুমি গাঁচন এইরূপে নির্দিষ্ট হইরাছিল বলিয়া 'দিশ্' এই দক্ষ হইরাছে। এই দিকের সংখ্যা দশ—পূর্বা, পদিসা, আমেনী, দশিনা, বৈশ্বী, গাঁচনা, আমেনী, বাৰ্থা। নৈশ্বী, গাঁচনা, আমেনী, উর্দ্ধ ও অধ্য।

স্থার মতে, এই দিক্ সর্বগতত্ব ও পরম মহৎ পরিমাণ দ্রান্তিকাদি ধীহেত্, অর্থাৎ ইহা অতি দ্রে এবং এই বস্ত অতি নিকট এইরূপ জ্ঞানের কারণ। দিক্ এক, কিন্তু এক কুইলেও উপাধিভেদে পূর্ব্যাদি সংজ্ঞা হইরাছে, যথার্থত: কোন সংজ্ঞা নাই। ইহার গুণ—সংখ্যা, পরিমাণ, পৃণক্ত্, সংযোগ ও বিভাগ।

প্রভাগ।

"দ্রান্তিকাদিধীহেত্রেকানিতাাদিশুচাতে।
উপাধিভেদাদেকাপি প্রাচ্যাদিবাপদেশভাক্ ॥" (ভাষাপণ ৪৬)

তর্ককৌম্দীতে দিকের বিষয় এইক্লপ নিধিত হইয়াছে,
দ্বন্ধ সন্নিহিত্ত জ্ঞানাধীন অর্থাৎ ইহা দ্র ইহা নিকট

এইরপ জ্ঞানের অ্থীন পরত্ব এবং স্থাপরত্বাহ্যেরের নাম দিক্

অর্থাৎ যাহার ধারা পরত্ব ও অপরত্ব অহ্মিত হয়, তাহাই

দিক্। এই দিক্ এক নিত্য ও বিভূ, তাহা ইইলেও উপাধির
ভেদাহদারে চত্র্বিধ পূর্কা, পশ্চিম, উত্তর্গ ও দক্ষিণ প্রধানতঃ

এই চারিটী দিক্। ইহার মধ্যে যে দিক্ উদ্যাচলের সনিহিত অর্থাৎ যে দিকে স্থাগভাদিত হন, তাহাকে প্রকিক্
কহে। অস্তাচনের সন্নিহিত দিক্কে অর্থাৎ যে দিকে স্থা
অস্তানিত হন, তাহাকে পশ্চিম বলে। স্থামক্লর সন্নিহিত

দিক্ উদীচী অর্থাৎ উত্তর এবং ধে দিকে স্থামক্লর সারিহিত

দিক্টনীটী অর্থাৎ উত্তর এবং ধে দিকে স্থামক্ল ব্যবহিত,

২ দস্তক্ষত। ও দশসংখ্যা। ৪ দশ সংখ্যায়িত। ৫ শ্রোতা-গিট্টত দেবতাতেদ

তাহার নাম দকিল। (তর্ককৌমুদী) *

°দিক্ বাতার্ক, প্রচেতোহ্সি ব্রন্ধেন্দ্রে বৃত্যুকা:।"

( শার্দাতিলক)

দিক্তে, আসামের লক্ষীপুর জেলার দক্ষিণাংশস্থিত একটী, নদী।

দিক্তগড় নগরের নিকট ব্রহ্মপুতানদে পতিত হইয়াছে।

পুইনদী হইতেই তীর্স্থ দিক্তগড় নগরের নাম হইয়াছে।

দিক্তগড়, ১ আসামের অস্তর্গত লক্ষীপুর জেলার সদর সব্ভিবিজন। পরিমাণ্ফল ২০৩৮ বর্গমাইল।

২ দিক্ত নদীতীবের গড় অর্থাৎ হুর্গ। আসামের আয়ৢর্গত শৃলীপুর জেলার প্রধান নগর এ সদর। আক্ষা ২৭° ২৮ ৩০ % উ:, দ্রাঘি ৯৪৯৫৭ ৩০ % গৃ:। ইহা দিক্ত নদীতীবে, ব্রহ্মপুত্র গৃহিক্তর সৃদ্ধস্থল হুইতে ৪ মাইল দূরে আসবস্থিত। লোক-

* "দূর্বনিহিত্ত্বজ্ঞানাধীনপরত্বাপরত্বাসুমেয়া দিক্। সংখ্যা পরিনাগর্পক সংযোগবিভাগ ওপশক্তবতী। সাপ্যেকা বিভ্নিত্যা চ।
উপাণ্যাধিতেলাজত্বিধা, প্রাচী, প্রতীচী, উদীচী, দক্ষিণা চেতি, উনরাচল সরিহিতা দিক্ প্রাচী। অধ্যাতলসারিহিতা দিক্ প্রতীচী। প্রমেজনীরিহিতা দিক্ প্রাচী। স্বমেজবারহিতা দিক্ জ্বীচী।" (তর্ককৌমুদী)

সংখ্যা ৯৮৭৬ জন, তন্মধ্যে হিন্দু ৭১০১, মুসলমান ২৩৯৫, খুটান ৯০, জৈন ৪৭ এবং বৌদ্ধ ৪ জন। এক্ষপুত্র দিয়া দীমার দিত্রমুখ অর্থাৎ দিক্রনদীর মোহানা পর্যান্ত গিরা থাকে। হতবাং দিক্রগড়ই জলপথে বাণিজ্যের শেষ সীমা। এখান হইতে চাও কুচুক নামক একপ্রকার বৃক্ষনির্যাস বিদেশে রপ্তানী হইরা থাকে। আমুদানীর মধ্যে বস্ত্র, তুণুল, লবণ ও তৈল প্রধান। এখানে একটা সেনানিবাস আছে।

দিশাস্ (ত্রী) দিশতীতি দিশ ক হান্। দিক্।

দিশা (ত্রী) দিশ্ কিপ্টাপ্। > দিক্। ২ ক্রেণহীভেদ।

দিশাগজ (পুং) দিশারাং হিতো গল:। দিগ্গল।

দিশাচকুস্ (পুং) গরুড়া অক্তেদ।

দিশাপাল (পুং) দিশাং পালয়ভি পালি অন্। > দিক্পাল ।

২ ব্রহ্মাকর্ত্ত নিয়োলিত বৈরালাদি প্রজাপতি পুত্র, ইহারা

দিক্ সকল পালন করিয়া থাকেন। ইহার বিষয় হরিবংশে

এইরূপ লিথিত আছে,—লোকপিতামহ ব্রহ্মা সমুদয় কর্গৎ
বিভাগ করিয়া দিক্পালদিগকে জাপন করিলেন, প্র্কিদিক্

পালনার্থ বিরাটতনয় স্থধয়া, দক্ষিণদিক্-রক্ষার্থ কর্দম

প্রকাপতিপুত্র শৃত্রপাদকে প্রজাপতি পর্জ্জভনয় রাজা
হিরণারোমা অভিবিক্ত হইলেন। এইরূপে গণপতি ও

দিক্পালগণ কর্ত্বক স্থাধিকত প্রদেশ সমুদয় মথাবিধি আবহন্

মান কাল হইতে অন্যাপি পালিত হইতেছে। (হরিবংশ ও আঃ)

দিশাহারা (দেশজ) দিগ্লন্যুক্, ব্রান্ত, হতব্দি।

দিশোদ ও (পুং) দিশং অনাদৃত্য দওঃ। অনাদর বারা দিও।
দিশু (ত্রি) দ্বিশি ভবমিতি দিশ্যৎ (দিগাদিভো যৎ।
পা ৪০০৪৪) দিগ্তব, দিগ্জাত। "যে দিবাা যে দিখা
তেত্তাইমং বলি মহার্ষ:।" (আখণ গৃহ্ ২০১৯)
দিষ্ট (ক্রী) দিশতি ইপ্তানিপ্রকলং দদাতি দিশ-কে (ক্তিচ্কে)

চ সংজ্ঞারাং। পা গাগাগাগাগ ) ১ ভাগা । "ভততে নিধনং প্রাপ্তা: সর্পে সম্ভবান্ধবাং। ন দিইমিভাভিক্রান্ত: শক্যং বুদ্ধা ধলেন লা॥" (ভারত ১৪।৫গা১৬)

(বি ) দিশ-কর্মণি জা। ২ উপদিটা (পুং) দিশতি দিশ
সংজ্ঞায়াং কা। ৩ কাল। ৪ বৈবসত মহুর পুত্রবিশেষ।
৬ দারহরিজা। (বি ) ৭ প্রদর্শিত। ৮ দত। •
দিফীন্ত (পুং) দিইন্ত ভাগ্যন্ত অস্তোয্ত্র। মরণ, অস্তিম
কাল, মুহা।

"মোক্ষিতা তৃত্তগান্ সর্পদতাজিলে জ্বার । জগাম কালে ধর্মাত্ম দিটাতং পুত্রপৌত্রবান্ ॥" (ভারত সংলাহণ) দিক্তি (জী) দিশ-কিনু সংজ্ঞাং ক্তিচ্বা। সহর্ব। ২ পরি-

ton '

মাণ। ৩ কথন। এ উপদেশ। ৫ উৎসব। "তথাচাত দিষ্টিবৃদ্ধি-মিব শুক্সাব।" (কাদ॰) ৬ ভাগা।

দিষ্ট্যা (অবা) দিশ সম্পদাদিখাৎ তারে কিপ্-দিশং দেশনং স্থ্যায়তি স্থৈ-কিপ্ নিপাণ সাধু:। ১ হর্। ২ মক্র। জাগ্নার্থ কিটি শব্দের তৃতীয়ার একবচনে দিষ্টা। হর, ইহান্ন অর্থ 'ভাল্যানু' অর্থাৎ ভাগ্য দারা।

দিফু ( তি ) দদাতি দা বাহণকাৎ সিফু। দাভা:

দিন্তা (পারসী) ২৪টা কাগজে এক দিন্তা হয়। ২ কাপড়ের ত্তুত্ব সরিয়া ফাঁক্ হওয়া।

দিস্তাপিড়া (দেশব্দ) ক্তামরা, বে কাপড়ের ক্তা সরিয়া গির্মাছে এবং বে স্থলের ক্তা সরিয়াছে, সেই ক্লা।

· লিছ, অথোধ্যার অন্তর্গত রাম্বরেলী জেলার একটা ক্রয়। ইহা সাইনদীভীবে বরেলী নগর হইতে ১০ নাইল দ্রে অবস্থিত। এখানকার বাজার উৎক্লই।

मिरुक्, व्यानात्यत अव्यर्ग निमी श्र क्रिकात अकि निमी। त्य जिनी निमी निश्चाल उक्ष श्र निम छे ९ श्र हु है झा रह, निश्क छत्त त्या नर्क श्रेषान। हेश बाता है नर्की त्यका अधिक भित्न सांग जनतानि जानिया नीरक। जिक्क छत्तरण मान्ता नार्थ त्या निमी चार्छ, नकत्वत है विचान तमहे निमी हिसानत्यत ज्ञां जानिया निश्च है हो ति छत्त निमान तम् व्यापत भिक्क विचान तम्ब गस्तत भाष विहर्ण है है बार्छ अदर क्ष वरमत्य क्षांनात्म क्षांनिया निश्क नाम थान्न कित्राह्छ।

দিহিক, আসামের অন্তর্গত লক্ষীপুর জেলার ছইটা নদী এই নামে পরিচিত-নোয়া (নব) দিহিন্ধ ও বুড়ী দিহিন্ধ। এই इंटेंगे ननी ७ निरंत्र ननी এक व मिनिया अकार्य नन छे ९ भन्न হইয়াছে। নোয়া দিহিক পূর্বভাগে সিংপো পর্বতে উৎপন্ন रुरेश्वा प्रक्तिमां क्षिप्रथ प्रमिश्रा प्रश्तत कि इ छे भरत ब्रह्म प्रकार মিলিত হইরাছে। বুড়ীদিহিক লক্ষীপুর জেলার অগ্নিকোণে পাটকাই পর্বতে উৎপন্ন হইয়া পশ্চিমাভিমুখে অয়পুন সহরের নিকট নিয়া অবশেষে শিবসাগর ও লক্ষীপুর জেলার মধ্য দীমাপথে গমনপূর্ব ধ ব্রহ্মপুত্রনদে পতিত হইয়াছে। বর্ধাকালে বুড়ী ডিহিল দিয়া অস্থ্র পর্যান্ত হীমার গভারাত করে। বিশগাঁও নামক গ্রামের নিকটে একটা কুলিম খাল কাটিয়া इटें पिटिक नमी मरव्क कता इटेबाए । व्की निर्देश मंगीत তীরে বছবিন্তীর্ণ স্থানে পাধরিয়া কয়লা ও মেটে তৈলের (কেরোসিন) থনি আছে। এখানকার কয়লা খুব উৎকৃষ্ট এবং জলপথে রপ্তানী করিবারও 'বেশ উপার আছে। ১৮৬৬ युष्टीरम हैहात कमना ও কেরোসিনের ধনি একবার (थांगा रुप्त, किन्त शद्य चादक किन वंद्य थींदक। क्यार्थ्य छ।

ৰাকুম দাৰক হাবে সম্প্ৰতি ধনি খোলা হইরাছে। খাগ ৰেলওয়ে ও ট্ৰেডিং **৫ফাম্পানি স্বালিড** ছইবাছে। ্ কোম্পানি মাকুমের করলা দুঝানীর অভে দিক্রণড় টানা খাট হইতে দমদমা পৰাধি প্ৰায় ৪৫ ৰাইল বেলপৰ খুলি · राम । समन्मा हरेट चावात विहित्न श्राप्ति के के प्रश • মাকুমের কর্মা থনি পর্যন্ত রেল আছে। मीक्क क ( a ) मीकार मीक-शृत् । उनातही, निक्क । मीक्र ( हो) मीक्ष ভाবে मृष्ट्रं। बखानित निमिष्ठ नित्रमण्डन। "बक्तामाक्षत्रथमीक्षरभक्षति।" ( त्राक्षताः ) দীক্ষণীয় (ক্লী) দীক্ষণার হিতং হিতাদিভাও ছঃ দীক্ষাধন रुविटर्फन। "त्या मीक्रटक व्याधादिक्त्रः कृत्ना बीक्तीतः হবির্ভবন্ডি।" ( শত॰ ব্রাণ ৩।২।৪।২১ ) मीकगीतं। (जी) नीकभैत्र-गिश्। देष्टिर्छन, रखर्छन। "मोक्नीज़ा खाष्ट्रगिज़ाडिथा (सवडा ।" ( कांडार cखो e1815.) 'দীক্ষণীয়াদীনাং'দকলানাষিষ্ঠীনাং স দেবতাকাদামুপাংভ্ছা ( কর্ক ) ও সৌমিক যজ্ঞভেদ^ও। ৪ বাজপেয়াকভূত যজ্ঞভেদ্। मोक्क भी दश्रष्टि (जो) नीक भीत्रा हे हि:। वळ विटमव, भर्याव সৌমিক। এই যজে দেবতাদিগকে বিশেষতঃ বিষ্ণু ধ অ্যাকে আবাহন করিয়া একজনকে সূর্যাক্সপে অপর্বে নিজরপে যজ্ঞকারীর পাপমৃজ্জির জ্ঞাপুলা করা হয়, ভাহায় পর তাহাকে বস্ত্র ও তত্ত্পরি ক্রফাদার চর্মাধারা আবৃত করিয়া অভাভ যজ্ঞকার্য্য সম্পন্ন করা হয়। তাহার পর তাহার আবরণ মোচন করিয়া তাহাকে অবভূত স্নানার্থ ৫ করা হয়। অভঃপর ভাহার নব জন্ম হইল দ্বির করা হয় मीका (खी) नीक खादव व्य खित्राः छाप्। > कुलन। २ प्र ৩ ব্রক্তসংগ্রহ। ৪ নিয়ম। ৫ উপনয়ন সংস্কার। 🤏 🖽 निक्र उद्याक देष्ट्रेमञ्जाहन।

"দীয়তে বিষশং জ্ঞানং ক্ষীয়তে কর্ম্মধাসনা। তেন দীক্ষেতি সা প্রোক্তা সুনিভিদ্যম্প্রবেদিভিঃ। দদাতি দিব্যতাং তাবং ক্ষিণুবাৎ পাপসস্ততিঃ। তেন দীক্ষেতি বিখ্যাতা মুনিভিদ্যম্পার্থাং॥ দিবাং জ্ঞানং যতো দ্যাৎ কুর্যাৎ পাপস্ত সংক্ষাং। তত্মাদীক্ষেতি সা প্রোক্তা মুনিভিক্সবেদিভিঃ॥

প্রোত্মীর তা
বাহাতে রিমল জান লাভ হর, কর্মবাসনা সকল ক
হয়, তাহার নাম দীক্ষা এবং যাহাতে দিব্যুদ্ধ লাভ ও গা
সমূহ কর প্রাথ্য হয়, তাহার নাম দীক্ষা। দীক্ষা এইণ বন
কর্তব্য। দীক্ষিত না হইলে সেহ প্রিত্ত হয় না, এই ব
প্রেত্ত্যক বর্ণেরই দীক্ষা প্রহণ আব্যুক্ষ। পিতা, মাধ

মহ, কমিষ্ঠ-সংহাদের ও শত্রুপক্ষের নিকট হইতে মন্ত্রগ্রহণ করিতে নাই।

পিতৃপ্তাং ন গৃহীবাং তথা মাতামহত চ।
দোদরত কনিষ্ঠত বৈরিপক্ষাশ্রিতত চ॥" (যোগিনীতত্ত্ব)
আমী পদ্মীকে, পিতা প্রেক্ডাকে ও ভাতা আতাকে
দীক্ষিত করিতে পারিবেন দা। পতি সিদ্ধান্ত করিতে পারিবেন দা।

শন পদ্ধীং দীক্ষরেউর্জান পিতা দীক্ষরেৎ প্রভাং। ন প্রেক তথা ভাগো ভাতরং ন চ দীক্ষরেৎ । নিজনত্রো যদি পতিত্তদা পদ্ধীং স দীক্ষরেৎ।" (ক্রেযানন)

ষতিদিগের নিকট হইছে, পিতা ও বনবালীর নিকট হইতে এবং বিবিক্তাশ্রমী অর্ধাৎ সংসারত্যাপীর নিকট চুইতে দীক্ষা গ্রহণ করিলে সেই দীক্ষা কল্যাণদারিকা হর না। "বতের্দীক্ষা পিতৃষীক্ষা দীক্ষা চ বন্বাসিনঃ। বিবিক্তাশ্রমিণাং দীক্ষা ন লা কল্যাণদারিকাঃ॥"

( गर्मिविमर्सिगी )

এই সকল নিষেধ বচন থাকার ইহাদের নিকট হইতে দীকা গ্রহণ নিষিদ্ধ হইরাছে, কিন্তু ইহা সিদ্ধেতর বিষর জানিতে হইবে অর্থাৎ ঐ সকল নিষিদ্ধ বাক্তিগণ যদি সিদ্ধ হন, তাহা হইকে তাহাদের নিকট দীকা গ্রহণ অন্তত হইবে না, বরং কল্যাণদায়িকা হইবে। বেহেতু শক্তিনামলে 'সিদ্ধান্তা ন অন্তাভি এবং

"যদি ভাগ্যবশেনৈব সিদ্ধবিষ্ঠাং লভেৎ প্রিয়ে।

তদেৰ তান্ত দীক্ষেত ত্যক্তা গুরুবিচারণং ॥"• ( সিদ্ধবামল )

যদি, ভাগাছিলারে সিঙ্গবিদ্যা লাভ হয়, ভাহা ইইলে ভরবিচার না করিয়া দীক্ষা গ্রহণ করিবে। যদি কেই প্রমাদ বা অফ্রানতা হেতু পিতার নিকট মন্ত্রগ্রহণ করে, ভাহা ইইলে পরে প্রায়শিচত করিয়া প্নরায় দীক্ষা গ্রহণ করিতে ইইবে।

"এমাদাচ্চ তথাজ্ঞানাৎ পিতৃদীক্ষাং সমাচরন্।

প্রার্শিন্তং তত্তঃ কৃত্। পুনন্দীকাং সমাচরেৎ॥" (গণেশবিম্বিণী)

এই স্থলে শিতৃপদ উপলক্ষণা ক্ষানিতে হইবে অর্থাৎ
নাভামহ প্রভৃতি পূর্বে ধে যে নিষিদ্ধ হইমাছে, জারাদের
নিক্ট হইতে মন্ত্র গ্রহণ করিলে প্রায়শ্চিত করিরা প্রায়
দীক্ষা গ্রহণ করিতে হইবে।

' এইরপ দীক্ষা প্রহণ করিলে, ভাহার প্রায়শিচন্ত ^{দশ}হাঝার সাবিত্তী জ্প।

"नगरास्य प्रत्येन मृत्रीकव्ययनातिनो ।" ( मन्य ) कवसमारण सञ्जित निकडेल सीका वहेतात विधान चारह,

কিন্ত এ সহকে লিখিত আছে,—ভীৰ্থাচারমূক্ত, মন্ত্ৰভন্তবিশা-त्रम, कानी, সংঘতে जित्र ७ निका कार्या उद्देश दक्त वर् अत्र प বতিকে শ্বরু করিতে পারা যার। পিডার মন্ত্র নিবীর্যা অ্থণি পিতার নিকট দীব্দিত হুইলে সেই মন্ত্রারা অপপূজাদি कतिरम दक्षान करमत आकामा कता गरिए भारत ना। किन्छ देशव ७ शास्त्र मन विवदन दकान माह नाहे। 'शिष्ठांत्र निक्छ मीकि इटेरव ना' अटे वहन दकोन मोकाशत व्यर्थाए কৌলাচার বিহিত দীক্ষাতে পিতার নিকটেও মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। ভত্তির সর্বাত্ত নছে। কারণ বোগিনীভত্তে भंख्यानि विशा नका कतिबारे निवाधि बरेटक गौका निविध ब्हेगाह्य । ज्यथवा 'टेमरव भारक न इच्चि' वेहे चारनव শास्क भाषि क्वनमाज फात्रामिविनाविष्य वृत्रिष्ठ व्हेटव অর্থাৎ তারাদির মন্ত্র পিতাদি হইতে গ্রহণ করিতে পারা যায়। সংস্কৃতকে এইরণ বিধিত আছে,--পিড়া জােঠ পুজকে দীক্ষিত করিতে পারের, ইহাতে কোম দোব নাই। পক্ষা ও কাশী প্রভৃতি মহাজীবে এবং চক্র পূর্বা গ্রহণকালে পিঅাদি হইতে মন্তগ্রহণে কোন দোষ বিচার করিবে না। অপ্লব্য ও জীপ্রণত মন্ত্রপুনর্কার সংখ্যার করিলেই শুদ্ধ হয়। স্ত্রীলোকের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিতে ছইলে তাহার এই সকল গুণ থাকা আবিশ্রক,—সাধ্বী, সদাচারতৎপরা. গুরুর প্রতি ভক্তিশীলা, কিডেন্ডিয়া, সর্ব্বমন্ত্রার্ডব্ডা, সুশীলা श्रभामि कार्या अञ्जला वर्षार এই मकन श्रमणना जीत নিকট দীকা গ্রহণ করা যাইতে পারে, কিন্ত বিধবা এই স্কল গুণদম্পলা হইলেও তাহার নিকট হইতে দীকা গ্রহণ করিবে না। স্ত্রীপ্রকার নিকট দীক্ষা গ্রহণে শুভ ফল হয়। ৰিশেষ মাতার নিকট দীক্ষিত হইলে অষ্ট গুণ ফল লাভ হুয়। যদি মাতা ভাহার উপাসিত মন্ত্রদান,করেন, ভাহা इहेरन बार्ड खन कन, नरहर एड कन। रकान रकान फन्नविष् वरणन,---निष्मयञ्ज धारुरा अन्न विठात नारे। विथवा सीत महा निवात अधिकात नारे, देशात প্রতিপ্রসবে এইরপ লিখিত আছে, বিধবা ত্রী পুরের অহজা লইয়া, কন্তা পিতার আজা ও সধবা ত্রী সামীর আজাত্সারে দীকা मित्व, नरह९ देशामत चाण्डा नारे। ११ क्वे छोत्र निकरि मीका शहन (नायावह नरह ; किन्ह ननम मात्र गर्डवडी खीत निक्र मीक्कि हरेल (त्रोत्रव नत्रक हरेता थारक।

মন্ত্র যদি স্বপ্নে লাভ হয়, তাহা হইলে ঐ মন্ত্র সদ্গুক্তর নিকট হইতে পুনরার গ্রহণ করিবে। বদি সদ্গুক্ত লাভ না হয়, তাহা হইলে জলপূর্ণ কলসে গুকুর প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিয়া এটপত্তে কুছুম দিয়া মন্ত্র লিধিয়া উজ্জ কর্মে . ঐ পত্র নিঃক্ষেপ করিবে।পরে ঐ বটপত্র সহিত মন্ত্র উত্তোলন করিয়া অফ সেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে। অপুনন্ধ, মন্ত্র মন্ত্রপরীক্ষা অনাবশুক।

দীক্ষার আবশুকতা—দীক্ষাব্যতীত মন্ত্রকণ দ্বিত, হয়, এই অন্ত প্রথমে দীক্ষার নিরপণ করা আবশুক। দীক্ষা মহয়কে দিব্যক্তান প্রদান এবং পাপরাশি ক্ষর করে, এই হেতৃই ব্রন্ধচর্যাদি সকল আশ্রমেই দীক্ষার আবশুক্তা আছে, করেণ দীক্ষাই লপ, তপশু প্রভৃতির মূল। দীক্ষা ব্যতীত অপতপশুদি কোন কার্যাই হইতে পারে না। এই অন্ত সকল আশ্রমেই দীক্ষিত হইয়া বাস করিবে। দীক্ষিত না হইয়া যে ব্যক্তি অপপৃত্রাদি কার্য্য করে, তথের সেই সকল কার্য্য পা্যাণে রোণিত বীজের স্থায় নিক্ষণ হয়।

দীক্ষাবিহীন ব্যক্তির সিদ্ধি বা সদগতি কিছুই হয় না।
অত্তর্ব অভিশয় যত্ত্প্রিক গুরুর নিকটে অবশু দীক্ষিত
হইবে। যথাশাস্ত্র দীক্ষিত হইলে সেই দীক্ষা ক্ষণ্,কাল মধ্যে
লক্ষ্ণ উপপাতক ও কোটি মহাপাতক দগ্ধ করে, যাহারা গুরুর
নিক্ট দীক্ষিত না হইয়া প্রস্থে মন্ত্র দর্শনপূর্প্রক ঐ মন্ত্র গ্রহণ
করে, নেই নরাধম সহত্র মন্তর্গেও নিক্তি পায় না।
অদীক্ষিত ব্যক্তির তপত্তা, নিয়ম, ত্রত, ভীর্থগমন এবং
শারীরিক পরিশ্রম দ্বারা কোন কার্যাই সিদ্ধ হয় না।
দীক্ষা গ্রহণ না করিলে এই সকল দোষ ঘটিয়া থাকে।
অদীক্ষিত ব্যক্তির অল বিষ্ঠাসম, অল মৃত্র তুল্য এবং তৎক্ষত শ্রাধাণিও নিক্ষণ। (তন্ত্র)

শ্দের দীক্ষা বিষরে প্রভেদ এইরূপ। প্রপ্র ও প্রণববটিত মন্ত্র শৃদ্ধকে প্রদান করিবে না। যে ব্রাহ্মণ শৃদ্ধকে
আত্মন্তর, গুরুর মৃত্র, অজপামন্ত্র, স্বাহা ও প্রণবদংযুক্তনমন্ত্র
অর্পণ করে, গৈই ব্রাহ্মণের অধোগতি হয় এবং মন্ত্রগৃহীতা
শৃদ্ধও নির্মাণামী হইরা থাকে। লক্ষী মন্ত্র (প্রী) জীও
শৃদ্ধের অধিকার নাই। শৃদ্ধকে গোপাল, মহেশ্বর, হুর্গা,
স্বা এবং গণেশের মন্ত্র প্রদান করিবে। কারণ শৃদ্ধ ইহাদের মন্ত্রগণে ক্ষিকারী। ইহার অন্তর্গা করিলে শৃদ্ধ
পাপভাগী হইবে। যে যে দেবতার মন্ত্রগহণে অধিকার
আছে, তম্মণা হইতে অহকুল মন্ত্র গ্রহণ করিবে। দীক্ষার
সম্ম তারাচক্র, রাশিচক্র এবং নামচক্র বিচারে যদি মন্ত্র
অম্কুল হয়, তাহা হইলে সেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে এবং
ক্ষাধিনী ও কুলাকুল্ প্রভৃতি চক্র বিচার ক্রিতে হইবে।

প্রপান মন্ত্র, স্ত্রার নিক্ট হইতে গ্রা**নীত্র্য মন্ত্র, মালামন্ত ও** জ্যাক্ষরমন্ত্র এই দকল বৈদিক মন্ত্রগ্র্তিক নি**ভা**দি বিচার করিবে না। নপুংসক মন্ত্র, সুর্যোর অষ্টাক্ষর, পঞ্চাক্ষর, একাক্ষর, ঘাক্ষর এবং ত্রাক্ষরাদি মন্ত্রের সিদ্ধান্ত বিচার করিবে না। বে মন্ত্রের অন্তে 'হুঁফুটু' থাকে, ভাহাকে পুং মন্ত্র, থাহার অন্তে 'আহা' থাকে, ভাহাকে ত্রীমন্ত্র এবং যাহার অত্তে 'নমঃ' আছে, ভাহাকৈ নপুংসক মন্ত্র কহে। অভ্যাং মন্ত্র'ভিন প্রকার।

যে যে মহাবিত্যা পৃথিবীতে দোষপরিশ্রা, ভাহার বিষর এইরূপ লিখিত হইয়াছে। কালী, নীলা, মহাহ্গা, দ্বরিতা, ছিলমন্তা, বাগাদিনী, প্রস্পূর্ণা, প্রভালিরা, কামাধ্যাধাদিনী, বালা, মাতলী, শৈলবাসিনী প্রভৃতি দেবীগণ কলিকালে সাধকের পূর্ণফল প্রদান করিয়া থাকেন। এই সকল দেবতা সিক্ষয়, স্তরাং ইহাদিগের উপাসনায় কলিকালে অধিক পরিশ্রম করিতে হয় না অর্থাৎ কলো সংখ্যাচত্ত্রগং ইত্যাদি শাস্ত্রাহ্পারে কলিকালে অপপৃঞ্জাদির চত্ত্রণ সংখ্যা নির্দিষ্ট আছে, তাহা করিতে হয় না, কার্ণ এই সকল মহাবিদ্যাগণ কলিদোষ্ট্টা নহেন।

দশমহাবিদ্যা মন্ত্ৰগ্ৰহণে সিদ্ধাদি বিচার, নক্ষত্ৰচক্ৰাদি
"বিচার, বগলাদি শোধন ও অরিমিত্রাদি বিচার করিতে হয়
না। দীক্ষাকালে ইহাদের মন্ত্র গ্রহণ করিলে সকল প্রকার
ভূত হইয়া থাকে। কেহ কেহ বলেন, ইহা প্রশংসা বাক্য,
সর্ব্বিতই বিচারের আবিশ্রক। কেননা ত্রদৃষ্টক্রমে যদি
কথন স্বপ্নে বৈরিমন্ত্র পাওয়া যায় এবং ভদ্বারা দোষ দৃষ্ট হয়,
এই সকল কারণে বিচারের আবিশ্রক।
•

मीकाकात नामग्रहणे थानानी।—मीकाग्रहत्व ममग्र शिकाः মাতা যে নাম নির্দিষ্ট রাথেন, সেই নামের দেবল্লমা প্রভৃতি উপাধি ও শ্রী পরিত্যাগ করিয়া অক্যান্ত বর্ণ সকল গ্রহণ করিবে। নামগ্রহণ সম্বন্ধে পিঞ্লাতত্ত্বে লিখিত আছে -- যাহার খে श्रीमह्मनाम शास्त्र, अथवा अनाकारण (य नाम तक्षिक हेत्र विवे ষতিগণের সম্বন্ধ গুরু পুষ্পপাত বারা যে নাম গ্রহণ করেন, ভাহাই গ্রহণ করিতে হইবে। রুদ্রমানলে লিখিত হইরাছে, ষে নাম বারা সংখাধন করিলে মিজিত ব্যক্তি জাগিয়া উঠে, দুর হইতে প্রভাতের করে এবং যে নাম প্রহণ করি^{র।} শাহ্বান করিলে অসমনত্ব অবস্থার পু্জুতের দান^{• করে}, সেই নাম গ্রহণ করিয়া দীক্ষাকার্যোর সমস্ত অর্ছান করিবে। কোন দেবভার মন্ধ্রহণে কোন কোন চক্র আবশ্রক ! विक्मात्रशहरण नक्काठक, भिवमात्र द्रकाष्ट्रिक, जिश्वाना রাশিচক্র, গোপালমন্ত্র ও রামমন্ত্রে অকড়মচক্র, গণে^র-মত্ত্রে হরচক্র, বরাহমত্ত্রে কোষ্ঠচক্র এবং মহাললী^{মত্ত্রে} কুণাকুলচক্র বিচার করিয়া দীকা গ্রহণ করিতে হইবে।

চিক্রবিচারের জ্ঞাতব্য বিষয় ভত্তৎ চক্র শব্দে বিশেষ [दवत्रम अष्टेंबा १]

দীকাপ্রকরণ। দীকার নির্দিষ্ট দিবদে গুরু শিশ্বকে আহ্বান করিরা পবিত্র কুশ শব্যাতে বলাইরা নিজামত্ত্রে শিথের দিথাবন্ধন করিবেন এবং শিষা শুলুনকালে এই নিজামনু তিনবার পাঠ করিয়া উপবাদী ও বিভেক্তির হইরা প্রীপ্তকর, পাত্কা ধানিপূর্বক শরন করিত্বন। নিতামল্ল—"ওঁ হিলি হিহি শ্লপীণয়ে খাতা" অথবা "नत्मा अप्र जित्नजाप्र निक्रनाप्र मेक्स्यान । রামার বিশ্বরূপীয় স্বপ্রাধিপতত্ত্বে নমঃ ॥ यात्र कथग्र स्म जनाः मर्सकार्याचरमयजः। কিয়াসিদিং বিধান্তামি তাৎ প্রসাদান্মহেশার ॥"

এই মন্ত্র পাঠ করিরা নিজিত হইবে, পরদিন প্রাতঃকালে খন শিষ্যের নিকট স্বপ্রদৃষ্ট শুভাশুভ জিজাসা কঁরিবেন। শিষা যদি অংগ্রে কন্তা, ছত্তা, রথ, প্রদীপ, অট্টালিকা, পদ্ম, নদী, হস্তী, বৃষ, মীলা, সমুদ্র, মুর্জ, বৃক্ষ, পর্বাত, ঘোটক কোন পৰিত্ৰ দ্ৰা, আমমাংস, মদ এবং আসৰ ইহাদের মধ্যে কোন একবস্ত দৃষ্টি করেন, ভাষা ষ্টলে ভাষার মন্ত্র সিদ্ধি ষ্টবে।

नीकामघरक कानमिर्वत्र। टेठखमारम मौका धार्य कत्रिरन পুরুষার্থ দিন্ধি, বৈশাধ মাদে রত্মশাভ, জৈন্ত মাদে মৃত্যু, মাষাঢ়ে বন্ধনাশ, প্রাবণ মাসে পুণীয়ু:প্রাধি, ভাতসমাসে বন্ধ-गण, व्याधित तङ्गमक्षम, कार्छिक ও व्यवशासण मञ्जनिक, গৌৰে শত্ৰপীড়া, মাঘে মেধাবৃদ্ধি এবং ফাল্কনে সকল কামনা দিন হয়। যদি উক্ত বিহিত মাস মলমাস হয়, তাহা বৰ্জন গরিবে। কথনও মলমাদে দীক্ষা গ্রহণ করিবে না। চৈত্র মানে যে দীক্ষার বিধান বলা হইরাছে, তাহা গোপাল মন্ত্র গ্রহণ বিষয়ে জানিতে হইবে। কারণ কোন তন্ত্রের মতে, চৈত্র মানে দীকাতাহণ করিলে মৃত্যুও হংথ হয়। ভাজেও নক্ষত্ত-মানে দীকণ গ্রহণ করিবে না। এই জাত দীকা সম্বন্ধে সৌরমাস গ্রাছ।

দীকাসম্বন্ধে বারনির্ণয়। রবিবারে দীক্ষা গ্রন্থে বিভস্ঞয়, श्मियादत मास्त्रि, मननवादत आयुःकव, त्र्य मामका आर्थि, ^{বৃহস্পৃতি}ত্তারে জ্ঞানলাভ, শুক্রবারে সৌভাগ্য এবং শনিবারে ^{ম্প} নাশ হয়।

^{দীকা সম্বন্ধে} ভিথি নিরূপণ। প্রতিপদে দীকা • গ্রহণে ^{জান}্যাশ, দিতীয়াতে জ্ঞান, তৃতীয়ায় পবিত্রতা, চতুর্থীতে বিত্ত-নাশ, পঞ্মীতে বৃদ্ধি বৃদ্ধি, ষষ্ঠীতে অনুননাশ, সংমীতে ক্লখ, ष्टेगोटल द्किनाम, नवगीटल मंत्रीत्रयम्म, नमगीटल ब्राइनद দৌভাগ্যলাভ, একাদশীতে পবিত্ৰতা, বাদশীতে সর্বাসিদি,

बरवानमीरक ^बनविक्रला, ठजूकमीरैंक जिर्गाक्रवानिक्यांसि, অমাবস্তার মানহানি এবং পূর্ণিমা তিথিতে ধর্মর্ভি হইয়া থাকে। কিন্তু এই সকল তিথির মধ্যে ক্ষরাধ্যার তিথি বর্জন করিতে হইবে। যে দিনে সন্ধাগর্জন, ভূমিকল্প ও উকাপাত[°] হয়, সেই দিন অংখাধায় বিলয়া পরিগণিত। হুতরাং দেই সমত্ত দিন এবং বেলেকে অভাক্ত অংবাধাায় দিন দীক্ষাকার্য্যে বর্জন করিবে। বিভীয়া, পঞ্চী, বঞ্চী, দাদলী এবং অয়োদশী তিথিতে দীক্ষা গ্রহণ করিবে। এই चरन रा वधी ও बासामनी जिथि विहिज हरेसारह, हेहा विकृ মন্ত্রগ্রহণ সম্বন্ধে বৃঝিতে হইবে। বন্ধী তিথিতে শিবমন্ত্রগ্রহণ উক্ত হইরাছে। কিন্তু দশমী ও সপ্তমী নিবিক হইরাছে। यथा—- শুক্ল পক্ষের দশমী ৩° ষ্ঠী বিদেশ্যক্রণে নিন্দনীয়। ইছা শৈৰতত্ত্বে প্ৰতিপাদিত হইয়াছে।

দীক্ষাবিষয়ে নক্ষত্তনিৰ্ণয়—অখিনী নক্ষত্তে দীক্ষাগ্ৰহণ ক্রিলে হুধ, ভরণীতে মৃত্যু, ক্বত্তিকার হৃ:থ, রোহিণীতে বাক্-পতিত্ব, মৃগণীর্বে হৃথপ্রাপ্তি, আর্দ্রার বন্ধনাশ, পুনর্কস্থতে ধন সম্পত্তি, [®] পু্যায় শক্তনাশ, অলেষার মৃত্যু, মহায় .হ:ধনাশ, এবং পৃৰ্জকন্তুনীতে পোলগ্যপ্ৰাপ্তি, উত্তর-ফরনীতে জ্ঞান, হস্তার ধন, চিত্রার জ্ঞানসিন্ধি, স্বাতীতে : শক্তনাশ, বিশাধার স্থপ, অন্ত্রাধার বন্ধুবৃদ্ধি, জোঠার ইত-श्नीन, मृत्रात्र कीर्डिवृद्धि, शृक्तीयाण ও উত্তরাযাणात्र कीर्डि. শ্রৰণায় হঃথ, ধনিষ্ঠায় দারিজ্য, শতভিষায় জ্ঞান, পূর্বভাচে স্থ, উত্তরভাজে হঃথ এবং রেবতী নক্ষতে কীর্ত্তিবৃদ্ধি হয়। এই খলে আল্লাও কৃতিকার যে নিষেধ বিধান করা হইল, ইহা শিব ও বহিলে ইউর বিষয়ে জানিবে অর্থাৎ শিব ও বহ্নিত্ৰ গ্ৰহণে উক্তে নক্ষত্ৰয় দোষাবহ নহে। কারণ কোনস্থলে শিব ও বহ্নিমন্ত্রগ্রহণ বিষয়ে আর্ত্র। ও ক্বত্তিকা धामस विनिद्या डिक्ट इहेबाट्छ।

অবিনী, ভরণী, স্বাতী, বিশাখা, হস্তা,,স্বোচা, উত্তরভাত্র-भन, উउद्रशस्त्रनी **এवः উउदाया**हात्र मौक्या श्रह्म **७उक्**नक, এই হলে যে জোটাও ভদ্মণী নক্ষতে দীকা বিধান আয়াছে, ইহা কেবল মাত্র রামমন্ত্র গ্রহণে ক্ষানিতে হইবে।

मीका मधरक रवागनिर्वय्र-७७, मिक, व्यायुवान, अव, প্রীতি, সৌভাগ্য, বৃদ্ধি এবং হর্ষণযোগ দীক্ষাকার্য্যে শ্বভাবহ। রত্বাবলীতে লিধিত আছে—প্রীতি, আযুমান্, সৌভাগ্য, শোভন, धुकि, तुक्ति, ध्रुव, श्रूवन्यी, माध्य, कुक्त, दुर्शन, वृत्तीयान, निव, निक এवः हेस श्रहे (सफ्न (वागहे भीकाकार्या अख्यनक ।

क्रवण मिर्वत्र---वव, बामव, दक्कोनव, टिंडिन ও विविद्य **এই সকল করণ দীক্ষাকার্য্যে ७७।** 

VIII

লমনির্ণয় — বৃষ, সিঁংহ, কল্পা, ধছা ও মীন এই সকল লয়ে এবং চক্সভারা ভূদ্ধিতে দীক্ষাকার্য্য করিবে। বিফু-মন্ত্রগ্রহণে হিরলম অর্থাৎ বৃষ, সিংহ, বৃশ্চিক ও কুম্ভ এই লয় চতুইর প্রশস্ত।

শিবমন্ত্রগ্রহণে চরলগ্ন অর্থাৎ মেব, কর্কট, তুলা ও মকর এই চারি লগ্ন এবং শক্তিমন্ত্রদীকাতে স্থাত্মক লগ্ন অর্থাৎ মিগ্ন, কন্তা, ধন্ত ও মীন এই লগ্ন চতুইর প্রশন্ত। লগ্নের তৃত্তীয়, ষষ্ঠ ও একাদশ স্থানে পাপগ্রহ এবং লগ্নের চতুর্থ, সপ্তম, দশম, নবম ও পঞ্চমন্থানে শুভগ্রহ থাকিলে দীকা গ্রহণে শুভ হইবে। কিন্তু দীকাকার্যের বক্রগ্রহ অনিষ্টকারী, এই অন্ত তাহা পরিত্যাগ ক্রিতে হইবে।

পক্ষ নির্ণর-শুকুপকে 'দীকা শুভফল প্রদান করে এবং क्रक्ष शक्त वे पश्चिमी 'भर्याख मीक्नाकार्या (मायावह नहह। সম্পত্তিকামী ব্যক্তি শুক্লপক্ষে এবং মুক্তিকামী ব্যক্তি কৃষ্ণ-পক্ষে দীক্ষা গ্রহণ করিবেন। পুর্ব্বোক্ত নিষিদ্ধমাসে ও তিথি-বিশেষে মন্ত্রগ্রহণ করিতে পারে, এই বিষয়ে রত্নাবলীতে এই-রূপ লিধিত আছে--ভাত্রমাদের ষষ্ঠী, আর্থিনমাদের ক্লফাচতু-দণী, কার্ত্তিকের শুক্লানবনী, অগ্রহারণের ভৃতীয়া, পৌষের कुक्राहजूबी, काञ्चत्वत्र कुक्रानवयी, टिव्यमारमत्र कामहजूर्वभी, देवनात्थत व्यक्त प्रकृतिया, देवार्कत ममस्त्रा, व्याघार्वत अला-भक्षमी ও आवर्णत क्रका भक्षमी **এ**ই मक्न स्विभक्त, हेहारि দীক্ষা গ্রহণ করিলে তীর্থস্থানে দীক্ষা গ্রহণের স্থায় কোটাগুণ ফল হয়। এই সকল দেবপর্কে মন্ত্রগ্রহণে মাস, তিথি, বার ও নক্ষতাদি কিছুই বিচার করিবে না। **শহর স্ব**রং ব**লি**য়া-(इन, त्ववश्रव्य मञ्जाश्य क्रिया क्रिय, नक्ष्य, मात्र ७ जिथानि-ाांच **এবং যোগ क्यु**णांनित **मायामाय विठात क्**तिर्छ रहेटर ना। काहात्र अकाहात्र अमरण, टिटव्यत्र शक्राव्यत्रापनी, বৈশাথের ভিক্লাএকাদশী, জৈচ্চির ক্লফাচতুর্দশী, আযাঢ়ের नाग्राश्कमी, जाद्रावत এकामनी, ভাজের बन्नाहेमी, व्याचित्तत्र মহাষ্ট্রমী, কার্তিকের শুক্লানবমী, অগ্রহারণের শুক্লাষ্ট্রী, প্রেষের চতুর্দলী, নাঘমাদের শুরাএকাদনী, ফাস্কুনের শুরুষিষ্ঠী, এই সমস্ত তিথি দীকাকার্য্যে প্রাশস্ত। উত্তরারণ ও দকি-ণায়নাদি সংক্রান্তিদিন, চক্ত স্থাগ্রহণ, যুগাঁছা তিপি ও মন্থ-खता (छिथि वेदः महाभूजापिन मीकाकार्या ७७थम । ह्यूपी, **लक्ष्मी, ठजूर्फ्मी ७ कष्ट्रेमी এই সকল ভিথিও দীক্ষাকার্য্যে** প্রানত। এই বচনে চতুর্দনী ও অষ্টমী বিধান শক্তিদীকার এবং চতুর্থী গণেশমন্ত দীকা-বিষয়ে কানিবে। দীকাবিষয়ে স্থাগ্রহণের আর উভন সমর আর নাই। চক্র স্থা अक्षाकारन वात्रिक्शामित्र निषेष माहे। एषाधारणकारन

শক্তিদীকা এবং চন্দ্রগ্রহণকালে বিক্লীকা করিবে ন ক্রন্তবামলের বচনামূল্যে শ্রীবিদ্যা ভিন্ন ক্রন্ত বিদ্যা স্থ কানিবে অর্থাৎ স্থাগ্রহণে শ্রীবিদ্যার মন্ত্র এবং চন্দ্রগ্রহণকাল গোপাল মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারিবে। গোড়মীরতত্ত্বে উ: হইরাছে, পর্কবোগে ও চন্দ্রগ্রহণ কালে সুকল প্রকার দীকা প্রশস্ত। নীলতত্ত্বে তারামন্ত্রের বিষয় এইরপ নিধিত হা রাছে—ক্রক্ষপক্ষের অইমী ভিথি, শুভলয়, পূর্কভাত্রপদ নক্ষ্

চন্দ্র ও স্থাপ্রহণকালে দীকাকার্য্যে অন্ধ্র কিছুই বিচা
করিবে না। স্থাপ্রহণকালে জীবিছা ও ছুগামত্ত প্রহ করিলে মনুষ্মের মুক্তিলাভ হর। সোমবারে জমাবজ মললবারে চতুর্দশী ও রবিবারে সপ্রমী তিথি হইলে শত ক্র গ্রহণের সমান হর, ইহাতে দীকাদি কার্য্য অতি প্রশত্ত কুলার্ণবৈ লিখিত আছে, রবিবারে সপ্রমী, সোমবারে অমা বজা, মললবারে চতুর্থী ও বৃহস্পতিবারে অইমী তিথি হইলে দেবতুলা পর্বা হয়, এই জন্তু ইহাতে দীকা অতি প্রশত্ত।

গলাদি পুণাতীর্থ, কুরুকেত্র, পীঠন্থান, প্রয়াগ, কৈচ্চ্য পর্বান্ত ও কালীক্তের এই সকল দ্বানে মন্ত্রগ্রহণে কালাকা শুদ্ধির আবশ্রকতা নাই। বিক্র্যামলে লিখিত আরে দেবীর বোধন হইতে মহানবমী পর্যান্ত যত তিথি ওায়া প্রত্যেক তিথিতেই দীক্ষা গ্রহণ করিলে সকল অভীই সির্যাহয়। আবিলমাসের শুক্লাইমী তিথি দীক্ষাকার্য্যে বিশেষ প্রশান্ত। কারণ এই সময়ে কাগদন্ধা গৃহে গৃহে আবিভূতি হন, অভএব এই, সময়ে দীক্ষা গ্রহণ করিবে, ইহাডে মান্ত্রপ্রমানির বিচার করিবে না। অশ্রুর লিখিত হইয়াছে হুর্গাদেবীর বোধনে, অশোকাইমীতে; রামনবমীদিনে এবা শুক্রর আক্রাক্রমে মন্ত্রগ্রহণ করিলে কালাকালাদি বিচার করিতে নাই।

ইহাতে ধে কোন লগ বা যে কোন তিথিতে দীলাগ্রহণ

করিতে পারা যায়। অন্দোকান্তমী, রামনবমী এবং ওল
আজাক্রমে মন্তগ্রহণ করিবে কালাকালাদি বিচার করিবে

ইইবে না।

ইহাতে যে কোন লগ্প বা বে কোন তিথিতেই দীৰ গ্ৰহণ করিতে পারা যায়। মৰুল্পানে চতুর্গী হইলে এবং এই স্পর্ম দিবসে লগ্নাদি বিবেচনা না ক্রিয়া দীক্ষা গ্রহণ করিবে সম্মাচারতত্ত্বে লিখিত আছে, যুগাদ্য তিথি, অন্ধরিব এবং উত্তরায়ণ ও দক্ষিণায়ন সংক্রীভিতে দীক্ষাগ্রহণ করিব কিছুই বিচার করিতে হয় না। শুক্লবে নিশ্যকে আহা ক্রিয়া ক্রপাপুর্কাক যদি দীক্ষিত করেন, তাহা হইলে স্থাতি কিছুই বিচার করিতে হইবে না। যথন মন্ত্রজ্ঞ গুরু শ্বরং উপহিত° হইরা শিশুকে দীক্ষিত করেন, তথন সকল বার, সকল গ্রহ, সমস্ত নক্ষত্র ও সকল রাশিই শুভফল প্রদান করেন।

দীক্ষাদান নির্মণণ—গ্রোশালা, গুরুর ভবন, দেবালয়, ভানন, প্ণাক্ষেত্র, উন্থান, নদীতীর, আমলকী ও বিষ্তৃক্ষের সমীপ, পর্বতিত্রা, পর্বতিগুল ফল লাভ হয়। গয়া, ভায়রক্ষেত্র, বিরজাতীর্থ, চট্টগ্রামে চক্রপর্বত, মতলদেশ ও কলাগ্রহ এই সকল স্থলে দীক্ষা গ্রহণ করিবে না। বারাহীতিত্রে উক্ত হইয়াছে, যদি গুক্র অন্তগত কিংবা বৃদ্ধাবদ্ধার পাকেন, অথবা গুরু ও রবি একগৃহত্ব হন, তাহা হুইলে মেষ, বৃশ্চিক ও সিংহে মত্র গ্রহণে দোষ হয় না। কালী, ভারাদি মহাবিদ্যার মত্রগ্রহণে কালাদি নিচার নাই। এই বিষয় মুগুমালাভত্রে লিখিত আছে, মহাবিদ্যার মত্রগ্রহণে কালাদি বিচার ও অরিম্রাদি দোব বিচারের আবশ্রক হইবে না। (ত্রস্ক্রসার) [অক্তাক্ত বিবয়ণ মন্ত্র শব্দে কলাবতী দীক্ষার বিষয় কলাবতী শব্দে শ্রহর।]

পঞ্চারতনী দীক্ষা—এই দীক্ষার বিষর যামলে এইরূপ নিথিত হইয়াছে, পঞ্চারতনী দীক্ষাতে শক্তি, বিষ্ণু, শিব, স্থ্যা এবং গণেশ এই পঞ্চ দেবতার পঞ্চ যন্ত্র অন্ধিত করিয়া তাহাতে ঐ পঞ্চ দেবতার পঞ্চ যন্ত্র অন্ধিত করিয়া তাহাতে ঐ পঞ্চ দেবতার পূঞা করিতে হর। ইহার মধ্যে বিশেষ এই যে—গুরু যদি এই পঞ্চদেবতার মধ্যে শক্তিচক্র প্রধান বিলয়া জাবনা করেন, তবে তাহা যন্ত্র মধ্যে অন্ধিত করিয়া পূলা করিবেন এবং ঐ যন্ত্রের জ্পানকোণে বিষ্ণু, অগ্নিকোণে শিব, নৈশ্বতিকোণে গণেশ এবং বায়ুকোণে স্থেয়ির যন্ত্র নির্মাণ করিয়া ইহাদের পূলা করিতে হইবে। আর ধনি মধ্যভাগে বিষ্ণুর অর্জনা করেন, তাহা ইইলে ঈশানকোণে গণেশ, নৈশ্বতিকোণে স্থ্য ও বায়ুকোণে অন্ধিকার যন্ত্র অর্জনা করেন, তাহা হইলে ঈশানকোণে গণেশ, কর্মা ইহাদের পূলা করিবেন। যদি মধ্যভাগে শহুরের অর্জনা করেন, তাহা হইলে ঈশানকোণে বিষ্ণু, অগ্নিকোণে স্থ্য, নৈশ্বতিকোণে গণেশ এরং বায়ুকোণে পার্ম্বতীর পূলা করিতে হইবে ইত্যাদি। (তন্ত্রসার ।) [পঞ্চায়তনী দীক্ষা দৈখ।]

. • শংক্রেপ দীক্ষা—সর্বতোভদ্রমণ্ডলের উপর ন্তন কুন্ত বাপন কুরিরা জন দিরা পূর্ণ করিবে, তাহার পর গদ্ধ ও পূক্ষ বারা ঐ কুন্তে অর্চনী করিরা বল্লসংয়ুক্ত কুন্ত মধ্যে 

শংকীষ্ধি ও নবরত্ব ক্রেপণ করিবে। তাহার পর কুন্ত মুবে পঞ্চলর দিরা ব্যাশক্তি দেব্তার পূকা করিরা হোমবিধি 
অফ্সারে অষ্টোভ্রেশত হোফ করিবে। পরে অলম্কত 
শিবাকে বেদির উপরে অধির সমীপে উপবেশন করাইরা

প্রোক্থীপাত্তম কল ও শাতিকৃত কলে অটোভরশত মূলমন্ত্র দ্রপ করিয়া সেই বল বারা অভিবিক্ত করিবে। তৎপরে निरामखरक ऋखशान कतिया मृनमञ्ज धानान कतिरव। তাহার পর 'নমোহত্ত' এই মত্তে আতপতপুল বারা শিব্য গুরুঁকে অর্চনা করিবে। প্রকারান্তর বধা-জন্তযুক্ত শহ্ कन बात्रा পूर्व कतिया ভाहाटि दनवेडात कार्कना कतिरव। পরে শঝন্ত জল বারা শিষ্যকে অভিবিক্ত করিয়া শিষ্যের মন্তকে হস্তার্পণ করিয়া গুরু শিব্যকর্ণে অটরার মন্ত্র জপ कत्रिरवन, देशहे उद्ध डेंक श्हेत्राट्य। विच्छ मीकाथानानी অফ্টানে অশক্ত হইলে অক্তযুক্ত শব্দ অর্চনা করিয়া সেই খল বারা মূলমন্ত্রে অষ্টবার শিব্যকে অভিষিক্ত করিয়া কর্ণে অষ্টবার মৃশমন্ত ৰূপণ করিবেন। বিশ্বসারতত্ত্বে এইরূপ ণিখিত আছে-চক্র কিংবা স্থাগ্রহণকালে, তীর্থহানে, কাঞাদি পুণ্য কেত্রে কিংবা লিবালরে গুরু লিয়াকে মন্ত্র বলিয়া पित्नरे मीका रहेन। धरे ममछ इतन भूकानि व्यनावश्चक। विचेत्रात्रज्ञ निधिज स्टेबार्ड (य, अञ्चान यूर्ण महामीका, मीका है छेशरमण मिरव; क नियुर्ग क्विन छेशरमण कति-লেই কার্য্য হইয়া থাকে। (ভূত্রদার) উপনন্ননাদি সংস্থারকেও मीका करह। [जाहात्र विवत्रण छख्ड भरक सहेवा।] ६ ष्यपूर्वान । ७ ध्ववुखकद्रम्, ध्ववर्षना । १ वळामि कर्षा प्रश्वादे ।

मीकां कर्तु ( पूर ) मीकाखक, **উ**পদেहा।

দীক্ষান্তত্ত্ব (ক্লী) দীক্ষায়াঃ তবং। দীক্ষাবিষয়ক তব্ব, দীকা সম্বন্ধে অবশ্ব জ্ঞাতবা বিষয়।

দীক্ষাপ্তরু (পুং) দীক্ষারাং প্রকরণদেষ্টা। মন্ত্রাদি উপদেষ্টা, যিনি দীক্ষা দেন।

দীক্ষান্ত (পুং) দীক্ষারাঃ প্রধান বাগত অন্তঃ অন্তোপদক্তিন্
যক্তঃ। অবভূত সানরপ বাগতেদ অর্থাৎ অনুষ্ঠিত যক্ত সমাপনাস্তে নানদাদি দোষ শান্তির ক্ষা হে যক্ত করা হয়। প্রধান যক্তের নাম দীক্ষা, প্রধান, যক্ত অবসান হইলে প্রধান যক্তের দোষাদি শান্তির ক্ষা যে যক্ত করা যায়, তাহার নামু অবভূত বাদীক্ষাক্ত। [অবভূত দেখ।]

দীক্ষাপতি (পুং) দীকায়া: পতি: ৬তং। দীকাপালক সোম "দীকাং মে দীকাপতির্মস্থতার্মসু" (শুরু যজু" ৫।৬) 'দীকায়া: পতি: পালকো সোম:' (বেদদীপু)

मीकाशाल ( भूः ) मीकाताः भानः । मीकाशिकः

দীক্ষাযুপ (পুংক্লী) দীকালং যুপঃ। দীকাল পশাদি মারগার্থ কাঠমর পদার্থভেদ, হাড়িকাট। যজ্ঞাদি হলে যজ্ঞীর পশুহত্যার নিমিত্ত কাঠের হাড়িকাট প্রস্তুত করা হইত, তাহাকে
দীকাযুপ কহে।

দীক্ষিত্ত (ত্রি) দীক্ষ কর্ত্তরি জং, বা দীক্ষা সঞ্চাতা হৈত্য, তারকাদিখাদিতচ্। ১ ব্রতাদিক যজ্ঞাদি কর্ম্মে সম্বর্গুর্কক
প্রবৃত্ত, যাহারা সোমাদি যজ্ঞ সংকলপূর্কক অফ্টান করিয়াচেন। ২ তল্প্রোক্ত গৃহীতমন্ত্র, যাহারা তত্ত্রশ্বিসারের গুরুর
নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিয়াছেন।
"অদীক্ষিতা বে কুর্কান্তি জপপুলাদিকা: ক্রিয়াঃ।
ন তবন্তি প্রের্গে তেবাং শিলায়াম্প্রবীলবং।
দেবি দীক্ষাবিহীনতান সিদ্ধিন চ সদগতিঃ।
তত্মাৎ সর্কপ্রমন্তেন গুরুণা দীক্ষিতোভবেং॥
অদীক্ষিতোহিশি মরণে রৌরবং নম্বকং ব্রন্থেং॥" (তত্ত্বসার)

অদীক্ষিত ব্যক্তি লপপূলানি যে সকল কার্য্যের অন্তর্ছান করেন, তাহা সমস্তই নিজল হয়। [নীক্ষা দেখ।] ৩ কাম্পিল-নগরছ যজ্ঞনত নামক আক্ষা। কাম্পিলনগরে সোমযাজীকুলে যজ্ঞনত নামে বেদবেদালবিশারদ এক আক্ষাণ ছিলেন, ইনি রাজমান্য ও বহুধন সম্পত্তির অধীশ্বর ছিলেন। ইনি সামিক ও বেদাধ্যদনে কালাভিপাত করিতেন।

"আসীৎ কাম্পিলনগরে সোমষাজিকুলোন্ডন:।
দীক্ষিতোযজ্ঞদন্তাঝ্যো যজ্ঞবিভাবিশারদ:॥" (কাশীথ ১৩ অঃ)
৪ স্বীকৃতদীক, যিনি দীক্ষা স্বীকার করিয়াছেন।

় "ততঃ পরীজিতাঃ পার্থা বনবাসায় দীক্ষিতাঃ। ক্ষজিনাহ্যজ্ঞীয়াণি জগৃহশ্চ বথাক্রমং॥" (ভারত ২।৭৯।১) দীক্ষিতা|য়ুনী (জী) দীক্ষিতঃ অনামধ্যাত আক্ষণ এব অয়

দীক্ষিতায়নী (স্বী) দীকিতঃ খনামধ্যাত ব্রহ্মণ এব অয়নং গতির্যভাঃ ক্রিয়াং টিড়াৎ তীপ্। কাম্পিলনগর্দ্তে দীকিত নামক ব্রাহ্মণের স্বী। (কানীধ*১০ অঃ)

দীক্ষিতৃ (পুং) দীক্ষ (স্বদীপদীক্ষত। প্লা এ২।১৫৩) ইতি স্বলেণ যুক্তং বাধিছা শীলার্থে ভূচ্। দীক্ষাশীল, দীক্ষাবিশিষ্ট। ংফ কেহ ইহাকে সোমষাজী এইরূপ অর্থ করেন।

मीचल (तभीक) मौर्क, नशाः

मीची ( तमक ) मीर्चका मृत्कत व्यवलम, तृहर खनामत्र।

্রনীতি (স্ত্রী) দীপ্, জিন্বেদে পলোপ:। দীপ্তি। "স্দীতি রন্ধাদিত্যভা:" (তাপ্তারা ১৯০১)। 'স্দীতি: স্দীপ্তিরিদি' (ভাষা)

দীদি (পুং) দীপ ^{*}বাছ^{*} দি পৃষো^{*} সাধুং। দ্যোতমান।
"অখিনা পিবৃতং মঁধু দীদ্যন্ধী শুচিত্রতা" (ঋক্ ১০১৫০১০)
'দীদ্যনীদ্যোতমানাগ্নিযুক্তৌ' (সাধুণ)

দীদিবি (পু:-ক্নী) দিবান্তানেনেতি দিব-কিন্ অভ্যাসত চ দীর্ঘণ্চ (দিবোৰে দীর্ঘণচাত্যাসত। উপ্ ৪।৫৫)। ১ অর। ২ বৃহস্পতি। ও অর্গণ ৪ ভক্ষান্তব্য। (জি) পুনঃ পুনঃ ভূশং বাদীবতি দিব-যঙ্লুক্ ইন্ন গুণঃ অভ্যাসদীর্ঘঃ। পুরঃ পুনঃ वा खडाउरागांडक । "त्राब्द्धमस्त्रतांगाः शामामृत्य मितिः" (बक् ১।১।৮) 'मीनिविः शोनः श्रूत्मम छूमः वा त्मांडकः (नात्रत) मीथिजि (बी) मीथीट मीथाट हेडि मीथी मःख्वाताः किछ् हेष्ठे (यीवर्गतांमीथीटवटवाः। भी 'ठ।८।৫०) हेडि मृद्धम खस्त्राज्य तमांगः। कित्रत्य।

"পুপোষ বৃদ্ধিং হরিদখদীধিতে-

রম্প্রবেশাদিব বালচক্রমা:।ট (রম্বুতা২২)

জলমর চল্লে স্থাের কিরণ পতিত হইয়া নৈশ আনকার বিদ্রিত হয়। ২ নৈয়ায়িকপ্রবর রঘুনাথশিরোমণি চিলা-মণির এক টীকা প্রস্তুত করেন, এই টাকার নাম দীধিতি। এঅসুলি। (নিঘণ্টু)

দীধিতিকৃৎ (পুং) দীধিতিং করোতি ক্ল-কিণ্। চিন্তামণি
টীকাকারক রবুনাথ শিরোমণি। [ রবুনাথশিরোমণি দেথ।]
দীধিতিম্ব (পুং) দীধিতয়ঃ ভূমা সন্তান্ত মতুণ্। স্বর্গ।

দীন (জি) দীরতে '(শতি কর্ত্তরিক্ত ততো নিষ্ঠা তক্ত নঃ
(ওদিতৃশ্চ। পা ৮।২।৪৫) > জ্বঃপ্রত। ২ দরিজে। "চরেযুঃ
পৃথিবীং দীনাঃ সর্বাধর্মবহিষ্কৃতাঃ।" (মন্ত্র ৯।২৩৮) ৩ কাতর।
৪ শোচ। ৫ হীন। ৬ ক্ষুত্র। ৭ সম্বস্তা। ৮ ভীত।
(ক্লী) > তগরপুষ্ণ।

मीम कुश्कामान, **छेरकरनत अक्जन** विश्वाछ देवश्चव कवि। ইনি খুষ্টীয় পঞ্চদশ শতাস্কীর শেষভাগে ও ষোড়শ শতাকীয়া थ्रथमखारा कीविष हिरलन। मीनकृरक्षत सम्ब-विवत् तर्थ-मय। हेहात माठा खीळी ৺ क्शनाथरनर्दत मन्तित नन्नानिनी ভাবে বাস করিতেন। মুহ্দা একদিন প্রভাতে তিনি একট नवक्मात्र अनव कतियां विग्रालन। लाक चामीसीना धरे রমণীর পুঁত্র প্রস্ব দেথিয়া কংণাকাণি করিতে লাগিল। সন্ন্যাসিনী তাহাতে উত্তর দিলেন, একদিন তিনি রঞ্জনীযোগে প্রভু অগরাথের আরাধনায় নিযুক্ত ছিলেন, এমন সময়ে জগ-न्नाथ उँ। हात्र व्याजि श्रीज रहेगा मञ्चारमरह जाँहारक मनेन দেন • এবং তাঁহী হইতেই এই পুত্র অনিয়াছে। এই অপুর্ক গল अश्रनाथरमरवत्र উপর অটল ভক্তিযুক্ত আপামর সাধারণ সকলে গুই মনে বেশ লাগিল। শীঘট ইহা দেশুমর ছড়া^{ইরা} পড়িল। দীনকৃষ্ণ ৮ অগলাধদেবের পুত্র বলিয়া সর্বত খাত ভাঁহার অনৈস্থিক জন্ম এইরূপে হইতে লাগিলেন। माज्रामाय श्वानन कत्रिन। ° °

দীনকৃষ্ণের অন্মবিবরণ যাহাই হউক, তিনি সকল শ্রেণীর লোকদারা সমাদৃত হইয়া মূন্দিরেই বাস ^{*}করিতে লাগিলেন। এই সমরে চৈতক্তদেব-প্রার্থিত অভিনব কৈঞ্বধর্ম ভারত-বর্ষে সর্বাত্ত বিভ্ত হইডেছিল। উৎকলে ভ্রম ভারত পূর্গ প্রভাব। দীনকৃষ্ণ সেই বৈষ্ণবংশ্রণী মধ্যেই পরিগণিত

ইইলেন এবং বৈষ্ণব-ক্ষিবিদিগের স্বাভাবিক প্রির কৃষ্ণলীলাবিব্যুক্ত উপাদের, স্থাণিত, ভাষার রচিত এবং উৎকল
ভাষার একটা অলম্বার স্বরূপ। রসকলোল ব্যতীত দীনকৃষ্ণ আয়ুর্মেদ প্রভৃতি বিষয়েও সর্মান্ত প্রার ১০ ধানি গ্রন্থ
রচনা করেন। দীনকৃষ্ণের জীবনে কোন বিশেষ ঘটনা
ঘটে নাই। ইনি পুরীয় তাংকালিক রাজা পুক্ষোত্মদেবের (১৪৭৮—১৫৫৩ খুট্যুন্সে) প্রাণ্ডাস্ট্রক ক্রেকটা
ক্রিতা লেখেন; প্রি সকল ক্রিতা অদ্যাণি বর্তমান আছে।
ভাষারার অন্থ্যান হয়, দীনকৃষ্ণ খুষীর পঞ্চদশ শভানীর শ্রেষ
ভাগে রসকলোল রচনা করিরা থাকিবেন।

দীনকৃষ্ণলাস, বালালার একজন প্রাচীন পদক্রা,। অনেকে উহার রচিত পদশুলি কৃষ্ণলাস কবিরাজের পদ বলিয়া ্লুল কয়েন।

দীনতা (স্ত্রী) দীনত ভাবঃ দীন-তশ্ততো টাপ্। ১ দৈত, দারিত। ২ কাতবভা। ও কোভ। ৪ সম্ভাপ।

দীনদয়ালু (পৃং) দীনে দয়ালু। ছঃথিতে দরালু, বাহারা
ভঃথিত লোকের প্রতি সর্কানা দরাশীল।

দীনদয়ালু পাঠক, মহততিভরণ নামে সংস্কৃত জোতিতাছিল ক্ষেত্ৰা

দীনদ্যালু বাজপেয়িন্, বস্বরসংহিতা নামক সংস্কৃত প্রছ-অংশতা।

দীননাথ ( পুং ) দীনানাং নাথঃ। ছঃশ্বিতজনভর্তী। দীননাথ ( ১) শীর্কাণবোধ নামে সংস্কৃত কাব্যরচয়িতা।

২ পর্বেদংগ্রহ নামে সংস্কৃত জ্যোতিষ রচয়িতা।

দীননাথ পালি কু, (রাজা) পঞ্জাব-কেশরী মহারাজ রণজিৎ

দিহের-রাজস্ব সচিব। ইহার পিতা ভক্তমল দিল্লীনগরে

একজন উচ্চণদন্ত সরকারী কর্মচারী ছিলেন। পঞ্জাবের

দেওরান গলারামের সহিত দীননাথের নিকট সম্পর্ক হিল।
১৮১৪ খুটান্দে গলারাম দিল্লী হইতে দীননাথকে লাহোরে

জাহ্বান করেন। এই সমন্দে গলারাম লাহোর রাজ-সর
কারের হর্তাকর্তা ছিলেন, তাঁহার অম্প্রাহে দীননাথ তথার

একটা পদ প্রাপ্ত কর্ম, শীঘ্রই তাঁহার অসাধারণ ধীশক্তি ও

জ্যাবসায় সর্প্রিক প্রকাশ হইয়া গড়িল এবং ১৮২৬ খুটান্দে

গুদক্ষ দেওরান গলারামের মৃত্যু হইলে তৎপদে দীননাথ
শতিত রাজকীয় মৃদ্রীধাক্ষ ও সৈনিক বিভাগের প্রধান কর্মন
চারী পদে নিযুক্ত হইলেন। তৎপুরে তিনি ১৮৩৪ খুটান্দে

দেওয়ান ভবানীদানের মৃত্যুর পর প্রধান রাজস্বাচিব পদে

নিযুক্ত হৃত। রণজিংসিংহের পরও ভিনি অনেক দিন
শিধরাজ্যের প্রধান দেওয়ান ছিলেন। ইনি অবজ্ঞা,
কর্মাক্শল, কুটনীতিবং, স্ক্রদর্শী ও পরিশ্রমী।

দীননাথ সূরি, গুওকজন সংস্কৃত গ্রন্থকার। ইনি রাষ্ট্রক্টবংশীর
ভৈরবলাহের আদেশে 'ভৈরব-নবরস-রদ্ধ' নামে সংস্কৃত গ্রন্থ রচনা করেন।

দীন ভবানন্দ, একজন আচীন পদকর্তা। ইহার স্থলর বাদালা পদগুলি বৈঞ্চবগণের বড় প্রির।

দীনব্যু মিত্র, বঙ্গের বিখ্যাত গ্রন্থকার ও কবি। চৰিবশ পরগণার অন্তর্গত বেলিণী গ্রামে দীনবন্ধ মিত্রের পৃর্বপৃক্ষৰ-গণ বাস করিতেন। তাঁহার পিতা কালাটাদ মিত্র কাঁচড়া-পাড়ার ক্যক্রোশ দ্বে, যম্নাবেষ্টত চৌবেড়িরা গ্রামে মাতৃলালয়ে প্রতিপালিত হইয়া তথার বাস করেন। এপানে দীনবন্ধর অন্য।

সন ১২০৬ সালে তৈ অমাসে তাঁহার জন্ম হয়। তাঁহার পিতা তেমন সঙ্গতিপর ছিলেন না। কোন প্রকারে দিনপাত হইত মার দীনবন্ধুর পিতৃদক্ত নাম গন্ধর্কনারারণ। তাঁহারই অপত্রংশে লোকে তাঁহাকে 'গন্ধ' বলিরা ভাকিত। দীনবন্ধুর চরিত্রে যে সকল মহন্বের লক্ষণ ছিল, তাুহার অধিকাংশই তিনি শীয় জননীর নিকট হইতে পাইথীছিলেন।

বাল্যকালে তিনি প্রাম্ত্ব পাঠশালার লেখা পড়া আরম্ভ করেন এবং তাহা সমাপন হইলে তাঁহার পিতা তাঁহাকে অমীদারী সেরেন্তার অতি সামায়া বেতনে নিযুক্ত করিরা দেন। কিন্তু বালক দীনবন্ধর কিছুতেই চাকুরীতে মন টিকিল না। তিনি পিতা ঠাকুরের কথার অবাধ্য ইইরা চাকরী পরিত্যাগ করিলেন এবং কলিকাতার আদিতে কত্রকের হইলেন। তখন বাহির-সীমূলিয়ায় পিতৃব্যের বাটী আদিয়া খুড়তুতা-ভাইগণের আশ্রয়ে, ইংরাফী শিথিতে আরম্ভ করিলেন। এখানে তাঁহাকে পালাক্রমে রন্ধন কার্যাও করিতে ইইত।

কলিকাভার আদিরা প্রথমে তিনি তাঁহার ভাবী নীলদর্পণ নাটকের ইংরাজী অন্থাদক মহান্মা লঙ্ সাহেঁবের অবৈতনিক ইংরাজী বিদ্যালয়ে ভর্তি হইলেন। লঙ্ সাহেব বালক
দীনবন্ধকে প্তক ও অর্থ দিয়া সাহায্য করিতেন। কলিকাভার
ইংরাজী শিথিতে আরম্ভ করিয়া দীনবন্ধ পিতৃদত্ত 'গল্পক নারায়ণ' নাম পরিভাগে করিয়া 'দীনবন্ধ' নাম গ্রহণ করেন।
তথন হইতে দীন্বন্ধ নামে পরিচিত হইয়াছেন।

লঙ্ সাহেবের স্থল চইতে তিরি ছেয়ার স্থলে, পরে জুনিয়ার স্থলারসিপ্ বৃদ্ধি পাইরা হিন্দু কলেকে অধ্যয়ন ক্রিয়া

VIII

সিনিরার স্থলারসিপ্ (Senior Scholarshing) **পরীকার** উত্তীর্ণহইলেন।

পঠদশাতেই তিনি বাদালা রচনা আরম্ভ করেন এবং সত্তরেই তথনকার বলসাহিত্যের নেতা প্রভাকরসম্পাদক ঈশরচক্রপ্তথের মনাক্রণ করেন। ঈশরপ্তথ দীনবন্ধ্র কবিতার প্রক। দীনবন্ধ্র অনেক কবিতা ঈশরপ্তথের কবিতার হাঁচে ঢালা।

কলেজ পরিত্যাগ করিবার পূর্বেই ১৮৫১ খুটাজে তগলি জেলান্থ বাশবেড়ে গ্রামে দীনবন্ধুর বিবাহ হয়। তাঁহার স্ত্রীর উচ্চ চরিত্রগুণে একদিনের জন্মও তাঁহাকে সাংসারিক কট ভোগ করিতে হয় নাই।

উচ্চ ছাত্রবৃত্তি পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইরা তাঁহার আইন
*শিথিবার ইচ্ছা হইরাছিল, ক্রিস্ত ভরণপোষণাভাবে তাঁহার সে
আশা পূর্ণ হর নাই। তিনি পরীক্ষা দিয়া ১৮৫৫ খুঠাকে
অক্টোবর মাসে পোষ্ট আফিসের কর্মে নিযুক্ত হইলেন।
অপ্রথমে ১৫০ বৈতনে পাটনার পোষ্ট মান্টার হইলেন।
রাজকার্য্যে নিযুক্ত হইরাও সাহিতাচর্চ্চা ত্যাগ ক্রবন নাই।

পাটনার তাহার কার্য্যের দক্ষতা দেখিয়া সাহেবগণ
একবংসরের মধাই তাঁহাকে স্থপারিন্টেণ্ডেণ্ট পদে উন্নীত করেন
এবং বৈতান রুদ্ধি করিয়া দেন। ঐ পদে থাকিয়া তিনি
বালালা প্রেসিডেন্সীর অধিকাংশ স্থানই ভ্রমণ করিয়াছিলেন এবং সলে অসাধারণ বহুদর্শিতা লাভ করিয়াছিলেন এবং সলের মুখে গমন ক্রিয়াছিলেন। এখান
হইতে ফিরিয়া আসিয়া 'কমলেকামিনী' প্রকাশ করেন।
কার্যোপলক্ষেক্সফ্রনগরেই তাঁহাকে অধিককাল থাকিতে হয়।
তাঁহার কার্যাদক্ষতাগুণে তিনি ১৮৭০ খুটাকে মে মাসে
কলিকাতার পোষ্ট মান্টার জেনারলের প্রধান সহকারী পদে
নিযুক্ত হইলেন।

কলিকীতার থাকিয়াও তাঁহাকে মধ্যে মধ্যে মফংখণে গমন করিতে হইত। লুসাই যুদ্ধ হইতে প্রত্যাগমন করিলে তিনি ১৮৭১ মেন্সাসে 'রায় বাহাছর' উপাধি প্রাপ্ত হয়েন। কলিকাতার অবস্থান কালে তিনি বিষম বহুমূত্র স্থোগে আক্রান্ত হন এবং রোগের' ছর্মিসহ যন্ত্রণা সহু করিয়া ১লা নবেষর ১৮৭০ খৃষ্টাব্দে অগদাত্রীপূলার ভাসানের দিন ইহ্নিবন পরিত্যাগ করেন। তাঁহার বয়ুস তথন ৪২ বৎসর ৮ মাস মাত্র হইয়াছিল। ভাহার যথাক্রমে আটটী পুত্র সন্তান ও একটা করা হইয়াছিল।

প্রায় ৩২ বংসর হইল, ওঁছোর মাত। ৮ প্রাণাভ করিরাছেন। দীনবন্ধ তুখন কার্যোপলকে কটকে প্রন করিরাছিলেন এবং মৃত্যুকালে জননীর সেবা হইতে বঞ্চিত হরাছিলেন। এই ঘটনা, তিনি কখন ভূলিতে পারেন নাই। সেইজন্ত আক্ষেপ করিয়া বাদশ কবিতায় প্রবাসীপ বিলাপে লিখিয়াছেন—

"ভিক্ষা করি থাব দেশে'বদি মাতা পাই। 'বিদেশে বিবাদে মরি ধদশে চলে বাই॥"

বন্ধদেশে এমন ছান নাই, বেধানে দীনবন্ধু বন্ধু মিলে
না। তিনি যথন যেধানে গিয়াছেন, সেধানেই ভন্তলোকের
, তাহার বন্ধ্রেণী মধ্যে গণ্য হইয়াছেন। সকলেই ওাঁহাকে
আপনার বলিয়া জ্ঞান করিতেন।

দীন্বন্ধ বন্ধ বিষম বাবুর জীবনের একটা বিশেষ ঘটনা। 'সেই ভালবাসার চিক্ত অরপ দীনবন্ধ 'নবীন ভপ্রিনী' বিষমচন্দ্র উৎসর্গ করিয়াছেন এবং পক্ষান্তরে বিষমচন্দ্র দীনবন্ধকে 'মৃণালিনী' উপহার দিয়াছেন। কির ভাহাদের ভালবাসা ভর্ষু ইহকাল লইয়া নহে। তাই দীনবন্ধর মৃত্যুর পর আনন্দমঠে বিষমচন্দ্র দেখাইরাছেন বে অর্গে ও মর্ত্যে সম্বন্ধ আছে এবং সেই সম্বন্ধ দেখাইবার অন্তর্গ আনন্দমঠের নৃতন রক্ষের উৎসর্গ পত্র লিখিত হইয়াছে, ভাই সেই চিরকালের বন্ধ দীনবন্ধকে উদ্দেশ করিয়া বিদ্যান কর্মার বিভাগ কর্মার বিভাগ ইত্যাদি কুমারসভ্যের স্লোকটা উদ্ধৃত করিয়াছেন।

দীনব্দুর জীবন , আলোচনা করিলে বলিতে পারা যার, তাঁহার ন্থার স্থী পুরুষ চুর্লভ। যদিও প্রথম জীবনে দরিজ্ঞার ক্ষী কেন্দ্র তাঁর কর ভাগি করিরাছেন, তথাপি উদ্ভর জীবনে তাঁহার প্রায় ক্ষী কেন্দ্র তাঁহার প্রয়োজনাতিরিক্ত অর্থগেম, সংসারে অবিচ্ছির আনন্দ, সমাজে বিপুল খ্যাতি, সাহিত্যে প্রভূত সন্মান, রাজকার্য্যে সমধিক উন্নতি, ব্যুবর্গের অক্র সৌহার্দ্য, ব্যোক্ষাইগণের সাদর সন্তাষণ, কনিষ্ঠগণের অক্রিম স্থান, তিনি একাধারে সকলই ভোগ করিয়াছিলেন।

•ঈখর ঋথ-সম্পাদিত 'সাধুরঞ্জন' পত্রিকাম দীনবদ্ধ সম্প্রথম মানবচরিত্র নামক কবিতা প্রকাশ করেন। তংশবে স্বর্ধনীকাবা, ছাদশকবিতা, ছুই বার জামাইবটা এবং প্রভাকরে বিজয়কামিনী' নামে একক্ষে কাব্য প্রকাশ করেন। এই কাব্যের সহিত তাঁহার দশবর্ষ পরবর্তী 'নুবীন তপশ্বিনী' নাটকের নামক নামিকার নাম ও চরিত্র সম্পর্ক বিল আছে। নানাম্বানে অমণকালে নীলক্ষ্মদিগের দৌক্ষ্মা বিশেষক্ষপ অবগত হইয়া তিনি নীলদ্পণ প্রকাশ ক্রেন।

এই গ্রহে তাঁহার লাম ছিল না। লঙ্ সাহেব এই গ্রছ ইংরাফী ভাষার অন্থাদ করায় কারারদ্ধ হন। পরে এই গ্রহ র্রোপীর অপরাপর অনেক ভাষার অন্থাদিত হইরাছিল। এই গ্রহ্বারা দীনবস্থু বঙ্গের প্রজা সাধারণের যথেই উপকীর করিরা গিয়াছেন। নবীনতপিনিরির পর তিনি বিরেপাগলাব্ডো এবং তৎপরে সধ্রার একাদশী রচনা কর্বন। এ সমরে বঙ্গাদেশ সর্কারই তাঁহার খ্যাতি বিভ্ত হইয়াছিল। তৎপরে তাঁহার বিশেষ যক্ষের ধন লীলাবতী প্রকাশিত হয়। ইহার পর দীনবন্ধ কিছুদিন বিশ্রাম লাভ করেন, তৎপরে স্বর্ধুনী, ভামাইবারিক ও ঘাদশকবিতা শীল্প শীল্প প্রস্থানিত হল। স্বর্ধুনী কাব্য বছপুর্বে লেখা হইয়াছিল, এ গ্রন্থ তেমনভান না হওয়ার অনেকই এ গ্রন্থ প্রকাশ করিতে নিষেধ করিয়াছিলেন। সেই অক্সই প্রকাশে বিলম্ম ঘটয়া ছিল। তাঁহার মৃত্যর অরকাল পুর্বে ক্মলে কামিনী' প্রকাশিত হর।

বিষমবাবু লিথিয়াছেন, "দীনবন্ধুর অনেকগুলি গ্রন্থ প্রকৃত ঘটনামূলক এবঃ 'অনেক জীবিত ব্যক্তির চরিত্র তাঁহার প্রণীত চরিত্রে অফুকুত হইয়াছে। নীলদর্পণের অনেকগুলি ঘটনা প্রকৃত, নবীনতপশ্বিনীর বড় রাণী• ছোট রাণীর বুতান্ত, প্রকৃত। সধবারএকাদশীর প্রায় সকল নায়কনায়িকাগুলি জীবিত ব্যক্তির প্রতিকৃতি, তহর্ণিত ঘটনাগুলির মধ্যে কিয়দংশ প্রাকৃত ঘটনা। জামাই বারিকের ছই জ্রীর বুতান্ত প্রকৃত। বিদ্নে পাগলাবুড়োও জীবিত বা্ক্তিকে লকা করিয়া লিখিত হইয়াছিল।" বৃদ্ধিন চক্র আর একস্থানে লিথিয়াছেন, গবিশ্বয়ের বিষয়, বাঙ্গালা সমাজ সম্বন্ধে দীনবন্ধুর বহুদর্শিতা। সকল শ্রেণীর বাঙ্গালীর रिनिक कीरानेत मकन थवत त्रार्थ, এমন वानानी राव्यक ষার নাই। দীনবন্ধু অনেক সময়েই শিক্ষিত ভান্ধর বা চিত্রকণ্ণের ভায়ে জীবিত আদর্শ সমূধে রাথিয়া চরিত্রগুলি ^{গঠিতেন।} যেথানে থেটী সাজে, তাহা বসাইতে জানিতেন: ^{দীন বন্ধুর} এই ছটী ৩৪ণ—(১) তাঁহার সামার্কিক অভিজ্ঞতা, (२) डांहात्र धावन धवः श्वाष्ठाविक मर्खवााशी महासूज्ि । ^{(गृहेश्वारनहें} छाहात्र कविच निकल हहेत्राटह । याहात्रा छाहात व्यमान नामक नामिका, जाहामित्रात हित्रक द्य त्जमन मत्नाहत ^{इद्र} नारे, टेहारे **डीहात्र** कात्रण।"

, বাজবিক দীনবৰু বাহা একবার দেখিরাছেন, তাহা বেরুপ চিত্রকরের তুলিতে আঁকি,রাছেন,—তাহাতে যেরুপ দক্ষ হইরাছেন, বাহা তিনি কথন দেখেন নাই, ক্রনাবলে গে চিত্র আঁকিতে ধিরা সেরুপ রুতকার্য হন নাই।

मीनवार्जन, भावना (बना वानी अक्बन व्यक्ति बाँडेन। हैराइ व्यक्त नाम (गानकिटक वत्नागाधामः। हैराइ मूंहड वाडेन नःभीड्खान बाँड क्षत्रशारी ७ मर्सकाश्यमः। मीनम्थिक (प्रः) मरात्मवः। (खात्र ১०)११।०१) मीना (जी) मीन-छान्। मूक्तिः। (जी) मित्रणा। मीना (प्रः) मीम्राट हेडि,। (मीनी खास्ट्रेट। डेन् ०)१८०।) हेडि खात्रन स्ट्रेट। > चर्च्वां २ चर्ममूखा, त्मार्वः। ० निक् भावमान। ८ स्वर्गकर्ववमः।

দীনার, এসিয়া ও যুরোপের নানাস্থানে প্রচলিত প্রাচীন মুদ্রা
বিশেষ। ইহা দেশতেদে বর্ণ ও রৌপ্য উভর ধাতৃতেই
প্রস্তুত হইত এবং মুদ্যোও নানাস্থানে নানার্মপ ছিল।
এখন ভারতবর্ষে কোণাও দীনার প্রচলিত নাই, কিন্তু মুক্তলমানদিগের এদেশে আগমনের বহুপুর্বের এদোশ দীনার নামে
বর্ণমুদ্রা প্রচলিত ছিল, তাহার বিস্তর প্রমাণ পাওয়া যার।
হরিবংশ, মহাবীর চরিত প্রভৃতিতে দীনারের উল্লেখ আছে।
সাঞ্চিত্র প্রকাও টোপ বা বৌদ্ধত্বপের পূর্বহারে সম্রাট্ চক্তরভ্রের উৎকীণ যে লিপি আছে, তাহাতে দীনারের নামোল্লেখ
পাওয়া যার। অপেকাক্ষত আঞ্নুনিক অমরকোষেও দীনারের
নাম আছে ।

পারভদেশেও দীনার নামে স্থান্তর্গা চলিত ছিল। আনেকে অনুমান করেন. পারত ও ভারতবর্ধের দীনার মুলা সন্তবতঃ রোমকদিগের দিনারিয়াদ্ হইতে আথাতে হইয়া থাকিবেক। 'রোমকদিগের দিনারিয়াদ্ একরূপ রৌপ্যান্ত্রা, কিন্তু স্থানের দিনারিয়াদ্, তামের দিনারিয়াদ্ অভৃতি মুলাও চলিত ছিল, যাহা হউক রোম হইতেই এ দেশে দীনার নাম চলিত হয়, কি এদেশ হইতেই রোমে দিনারিয়াদ্ প্রাচীন হয়্মত গ্রহা নিশ্চয় করিয়া বলা যায় না। য়থন অতি প্রাচীন সংস্কৃত গ্রহে দীনার নাম পাওয়া যাইতেছে, তথন খ্র সন্তব ঐ নাম এদেশীয়।

हो (११) हो भारत हो ने प्रांति वा चार भवत्क हि है। वा हो भी है। विश्व क्षण हो निया । देख हा हि वा हि वा है। विश्व क्षण हो है। विश्व क्षण है। विश्व क्षण हो है। विश्व क्षण हो है। विश्व क्षण ह

^{*} কোবকার অনবসিংহের মতে দীনারের পরিমাণ ১ নিছ অর্থাৎ কুই তোলা। রঘূনন্দনের মতে দীনারের পরিমাণ ১ রতি হবর্ণ। অকবরের সমরে দীনার নামক বর্ণসূজার পরিমাণ ছিল ১,মিফাল অর্থাৎ প্রার অর্থ্প তোলা। সম্প্রতি পারস্তদেশে দীনার শব্দে মূজার ভর্গাংশ মাত্র ব্রায়। তথার ১০০০ দীনার –১ ট্রাউন (প্রার আটি আনা)।

"वाजिमक्रिमाध्योजि स्थमक्रवामद्याः । जिनश्रमुः श्रामाधिष्ठाः मीगम्कक्रस्याः ॥" (मस् ३।२२२)

ভলদাতা ভৃতি, অন্নদাতা অক্ষর হুখ, তিলদাতা মনোমত সন্তান সন্ততি এবং দীপদাতা উত্তম চকু'লাভ করেন।
কার্ত্তিকমালে দীপ দান অভিশন্ন পুণাজনক। ইহার
বিষয় পদ্মপুরাণের উত্তর্গতে এইরপ লিখিত আছে ।
চক্র সূর্যা গ্রহণ এবং নর্মাণা ও কুরুক্তেত্তে তুলাপুরুষ দান
করিলে যে পুণা হর, কার্ত্তিক মাসে দীপ দান করিলে তাহার
অধিক পুণা হয়। কার্ত্তিক মাসে দীপ দান করিলে তাহার
অধিক পুণা হয়। কার্ত্তিকমাসে বিষ্ণুর অগ্রে যাহারা দীপ
দান করে, তাহাদের অখনেধ যক্ত নিজারোজন এবং এক
দীপ দানে সকল যক্তের ফললাভ হয়। যাহারা কার্ত্তিক
মাসে বিষ্ণুর অগ্রে দীপদান না করেন, তাহাদের প্রতি সকল
পাপ গর্জন করিতে থাকে এবং যাহারা দীপদান করেন,
তাহাদের সকল প্রকার পুণা হয়। কার্ত্তিকমাসে কেশবাপ্রে
দীপদান বিষ্ণুর বে প্রকার তুটিপ্রদ্দ, গরার পিওদানে বিষ্ণুর
ভাদুশ প্রীতি হয় না।

"মন্ত্রীনং ক্রিয়াহীনং শুদ্ধিনং জনার্দন। ব্রতং সম্পূর্ণভাং যাতৃ কার্তিকে দীপদানতঃ॥"

এই মদ্রে বিষ্ণুর অথ্যে দীপদান করিতে হইবে।
বিল কার্ত্তিক মাসে বিষ্ণুর আয়তনে বিধিবৎ দীপ দান
করিয়া সকল পাতক হইতে বিমুক্ত হন এবং অর্গলোকে
পমন করেন। দীপ স্পর্শ করিয়া কোন বৈধকর্ম করিতে
নাই, দীপ স্পর্শ করিয়া দেবোদ্দেশে কোন কার্যা করিলে
ভাহাতে পাপ হয়।

°দীপং স্পৃষ্ট্ । তু যো দেবি মম কর্মাণি কাররেও । ভজাপরাধানৈ ভূমে ! পাপং প্রাপ্নোভি মানবং ॥ (বরাহপুং)

দীপূর্থে শ্বেহাদির নিয়ম—স্থত ও তৈল দিয়া দীপ প্রস্তুত ক্রিবে, অফু কোনক্রপ স্বেহ পদার্থ হারা দীপ করিবে না।

* "স্থাএছে কুককেতে নর্মনারাং শশিএছে।
তুলাদানত বৃং পুণাং তদুর্ছে দীপদানতঃ ।
দ্বানে নীপকং যন্ত ভিলতৈনেন বা পুনঃ।
আলদেং মুনিশার্দ্দ অধ্যাধেন তক্ত কিং ।
তেনেইং ক্রুভিঃ সর্কং কুতং ভীর্যাবগাহনং।
দীপদানং কুতং যেন কার্তিকে কেশবার্যতঃ ।
তাবংগর্জন্তি পাপানি দেহে হিদ্দন্ মুনিসন্তম।
বাবং কার্তিকমুনে ন নীপদানং কৃত ভবেং ।
তাবদ্সজ্জন্তি পুণাদি বর্দে মর্ত্রে রমাতৃলে।
বাবহু অলভে দীপঃ ভার্তিকে কেশবার্যতঃ।" (পালোভন্ম")

"ঘৃতং তৈলঞ্চ দীপার্থে সেহাম্মজানি বর্জারেও।" ( আরিপু৽)
"ঘৃতপ্রদীপঃ প্রথমন্তিলতৈলাভবন্তত:।

সার্বপঃ ফলনির্গাসজাতোবা রাজিকোন্তবঃ।

দ্বধিজ্বানুষ্ঠিতবি প্রদীপাঃ সংগ্রনীর্তিতাঃ ॥" ( কালিকাপু৽)

, দীপ দারা লোক জয় হয়—ইহা তেকোময় ঔচভুক্র. প্রদ, এই নিমিত্ত বত্ন, সহকারে দীপবারা দেবভার পুরা করিতে হয়। দীপ ৭ প্রকার—ছিত প্রদীপ, তিল তৈলযুক্ত প্রদীপ, সার্যপ তৈলযুক্ত, ফালনির্যাসজাত, রালিকালাত. দ্ধিজাত ও অণুজ্ঞ পদ্পুত ভব, দর্ভ, গাঠপুত্তত । শণজ, বাদর ও কোবোত্তব এই পাঁচ প্রকার বাঙি भी भकार्या वावश्र हत्र। देखना, मासम्ब, मोहिनिविष्ठ. মৃত্যর এবং নারিকেল জাত এই সকল দীপপাত্র প্রশস্ত। প্রদীপের আধার তৈজসাদির নির্মাণ করিতে हहेरव अपर्वा वृत्कात छेशत मोशनान कतिरव। कथन**७** ভূমিতে দীপদান করিতে নাই। পৃথিধী সকল সহ করিতে পারেন, কিন্তু হুইটা সহু ক্মিতে পারেন না; অকার্যাের নিমিত্ত পদাঘাত এবং দীপতাপ। এই জ্ঞ পৃথিবী ষাহাতে ভাপ না পান, এইক্লপ দীপদান করিতে ছইবে। বদি কেহ এইক্লপ দীপদান করে, তাহা হইলে তাহার ভাষ্তাপ নরক হয়। শোভন বুভাকার বর্ত্তিযুক্ত, ক্ষেহ, অভগ্নপাতে খিড, अपृष्ठ, अष्ट्राय, अरेक्रभ दुक्रकार्य यज्ञभूक्षक मीभ मान क्तिए इटेरव। य मीरभन्न छाभ छज्नजून प्र इटेरड পাওয়া যার, ভাহা দীপ **নহে, ভাহা পাপব্<del>ছি</del>। মে**ত্রা^{দির} আহলাদক্র, শোভন, অর্চিযুক্ত, ভূমি ভাপবিবর্কিত. स्र्मिथ्, भस्रभृष्ठ, ध्मत्रहि**छ, अ**निख्य, खवः विक्रावर्धः वर्खियुक्त मीलमानहे मक्तमधायक। मील बाँमे वृक्त विक হয়, এবং পার্ত্ত যদি স্নেহ ছারা পুরিত থাকে<del>ন</del>, বর্ত্তী বৃদি मिक्निगोरार्ख व्यविष्ठ बहेम्रा उच्छन छाटा व्यान, छाहा बहेरन এই দীপই সকলের শ্রেষ্ঠ এবং এইক্লপ দীপ সকল দেবভার ভূটিপ্রাল হইমা থাকে। যদি ঐকপে দীপ বৃক্ষে না ^{থাকে}. তাহা হইলে তাহাকে মধ্যম, দীপ কচছ। **বলি দী**পপাত্তে ভৈল না পাকে, তাহা হইলৈ অংধম দীপ বুলিয়া অভিহিত হয়। শণস্ত বা বৃক্ষের ছক্ নির্ম্মিত কিংবা দীর্গ ^{জ্ববা} শক্ত বা মলিনবল্ল সলিতা নিশ্বাণের অন্ত গ্রহণ করিবে না। প্ৰীবৃদ্ধিৰ নিমিত সৰ্বাদি তুলা বাবা সাদিতা প্ৰস্তুত কৰিছে ছইবে। স্থত ও তৈলাদি মিশাইরা দীপের স্নেহ স্বরিবে ^{না,} त्व वाक्ति चुठ ७ टिनांति विभादेश श्रीतिश (प्रद गांत वर्त. সে ভাষিত্ৰ নৱকে প্ৰথমন কৰে। ৰসা, সক্ষা এবং গৃহি নিৰ্বাস প্ৰভৃতি প্ৰাণীয় অবসমূহৰ বেহু হায়া দীণ আনিং না। একপ ছেহবারা দীপ আলিলে নরক হয়। প্রীবৃদ্ধির অভিলাধী ইইরা আছিনির্মিত পাতে অণ্যা পচা তুর্গন্ধির পাতে দীপ স্থাপন করিবে না। বত্তপূর্থক কথনও লক্ষণযুক্ত এবং দেবতার নিমিত্ত করিত দীপ নির্মাণ করিবে না।
জ্ঞানপূর্থক অথবা লোভাদির ক্ষীভূত হইরা কথনও দীপ
হরণ করিবে না। কারণ দীপ হরও করিলে অন্ধ হয় এবং বে
দীপ নির্মাণণ করে, সে কালা হয়। (কালিকাপুণ ৭৯ আঃ)

পুক্ষের দীপ নির্বাণ কুরিতে নাই। "দীপনির্বাপণাৎ পুংসঃ কুমাওচৈছদনাৎ লিমা:। অচিরেণের কালেন বংশনাশো ভবেৎ ধ্রবং॥" (ভিধিত°)

পুরুষ দীপ, নির্বাণ করিলে এবং স্ত্রীসকল কুমাও ছেদ্ন ক্বিলে নিশ্চয় বংশ নাশ হয়। পুরুষ দেবদত্ত দীপ নির্বা-পণ করিতে পারে।

"ষয়ং নির্বাপিতং দীপ মাজিছতি স্থান্ন;। ডলান্নির্বাপয়েদ্দীপং দেবানাং াণ্ডুইয়ে"॥" (বিধান পারি॰)

কার্ত্তিকমাদের রুক্ষা টকুর্দশী তিথিতে নরক নিবৃত্তি জন্ত দীপ দান করিতে হউবে। দেবতাকে দীপ দান করিবার সময় ঘণ্টানাদ করিতে হয়।

"লানে ধ্যে তথা দীপে নৈবেদ্যে ভূষণে তথা। ঘন্টানাদং প্রাকৃষ্কীত তথা নীরাজনেহপি চ॥"

(বিধানপারিজাত)

একাদশীতত্ত্বয়ৃত কালিকাপুরাণের বচনাছ্সারে দেবতার নিমিত্ত কল্লিভ দীপও নির্ব্বাপণ করিতে নাই। "নৈব নির্বাপয়েদ্দীপং দেবার্থমুপক্লিকং।

দীপহঠাভরেদক্ষ: কাণো নির্ব্বাপকো ভবেৎ ॥" ( একাদশীত )
দেবার্থ উপক্রিত দীপ নির্ব্বাপণ করিতে নাই, নির্ব্বাপণ
করিলে চকু অক হয়। রহৎসংহিতায় দীপ লক্ষণ এইরপ
লিখিত আছে;—বামাবর্ত মলিন কিরণ ফুলিক যুক্ত ও অল্লমৃত্তি দীপ বিমল ক্ষেত্র ও বর্ত্তিকারিত হইলেও শীঘ্র নাশ প্রাপ্ত
হয়। যে দীপ কম্পমান ও শক্ষ্তুত হয়, বিশেষ রূপে তাহার
প্রানিত শিখা হইলেও শলত বা মুক্ত হয়, বিশেষ রূপে তাহার
প্রানিত শিখা হইলেও শলত বা মুক্ত বিহীন হইয়া শীঘ্র নাশ প্রাপ্ত
হয়। এইরপ দীপ পাপ ফল প্রকাশ করিয়া থাকে। দীপাদি
সংহত্ত মৃত্তি, আয়ত তত্ত্ব, কম্পনহীন, দীপ্রিমান্, নিংশব্দ, স্থলর
প্রদক্ষিণ গতি অর্থাৎ যাহার গৃত্তি দক্ষিণ দিকে, বৈহুর্য্য ও
বর্ণ সদৃশ হাতিমন্ন এবং ক্ষতির ও উদ্যুত হইয়া দীপ্রি পায়,
গ্রহর্প দীপ অভিশ্ব ভুত্তবানক। ( বৃহৎসংহিতা ৮৪ আ: )
প্রদীপ দেখ। ]

দীপক (ক্লী) দীপরতি দীপ-ণিচ্ধুদ্। > বাক্যালভার। ^{ইব্যি} শক্ষণ দাহিত্যদর্শনে এইরূপ দির্গিত আছে— শ্বীপ্ৰস্ততপ্ৰস্তভাৱালীপক্ত নিগৰাতে। অথ কারক্ষেকং ভাদনেকাস্থ ক্ৰিয়াস্থ চেৎ॥" (গাহিতাদ' ১০।৬৯৬)

বে হলে অপ্রস্তুত এবং প্রস্তুতের শুণক্রিয়ারূপ ধর্ম একত হর এবং অনেক ক্রিয়ার এক কারক হয়, সেই ছলে দীপকালভার হইয়া থাকে। অপ্রস্তুত অর্থে অ্বর্ণনীয় বিষয়, প্রস্তুত অর্থে বর্ণনীয় বিষয়। উদ্বিহনণ

> "বলাবলেপাদধুনাপি পূর্ব্ববং প্রবাধাতে তেন জগজ্জিগীবুণা। সজী চ যোধিং প্রকৃতিক নিশ্চলা পুমাংসমভোতি ভবাক্তরেষপি ॥" (সাহিত্যালা)

অগজ্জিগীয়ু সেই শিশুপাল পুর্বের স্তায় (অর্থাৎ পুর্ব ৰূমে হিরণ্যকশিপু প্রভৃতি রূপে ষেরূপ অগংকে পীড়া দিত) অধুনাও দেইরূপ অহম্বারের সহিত এই জগতের পীড়া উৎ-পাদন করিতেছে। সতী স্ত্রী ও নিশ্চলা প্রাকৃতি জন্মান্তরেও দেই পুৰুষকে প্ৰাপ্ত হয়। নিশ্চলা প্ৰকৃতি ও সভী স্ত্ৰী পরজন্মেও তাহাকে পরিত্যাগ করে না এবং তাহার আশ্রয় গ্রহণ করে, এইছলে বর্ণনীয় বিষয় শিশুপাল জগতের পীড়া উৎপাদন कतिराउट, शूर्सकत्य यथन हित्रगाकिन न तावनामि রূপে অব্য গ্রহণ করিয়াছিল, তথনও যেরূপ জগৎকে ' পীড়া দিত, এই শিশুপালরণে দেইরণ জগতের পীড়া উৎপাদন করিতেছে। হিরণাকশিপু রাবণাদির পরপীড়া-রূপ নিশ্চলা প্রাকৃতি এই শিশুপালরূপে জন্মগ্রহণের সময়ও পরিত্যাগ করে নাই অর্থাৎ ইহাই এই স্থলে বর্ণনীয় বিষয়। এ স্থলে অব্যবিষ বিষয় সতী স্ত্রী জনাস্তবে তাহাকে পরিজ্ঞাগ করে না। এই ছয়ের বর্ণনীয় ও অবর্ণনীয়ের একধর্মান্তি-সম্বন্ধহেতু দীপক অলম্বার হইল। অনেক ক্রিয়ার এক কারক इहेटन नी পক व्यनकात हम । উनाहत्र – 🕒 🛕

> "দ্বং সমাগতবতি ত্বি জীবদাথে ভিন্না মনোভবশরেণ তপস্থিনী সা। উত্তিঠিত স্বপিতি বাসগৃহং খনীন মায়াতি যাতি হসতি স্বসিতি ক্ষণেন্॥" ( সাহিত্যদ° ) দয়নাথ তুমি দ্বে গেলে সেই দীনা কামশরপীড়িতা

হাদয়নাথ তুমি দূরে গেলে সেই দূীনা কামশরপীজিতা হইয়া কথন উঠিতেছে, কথন নিজা ঘাইওেছে, হাক্ত ও দীর্ঘাস ত্যাগ করিতেছে। এই স্থলে এক নায়িকার উত্থানা-দির অনেক ক্রিয়া সম্বন্ধ হেতু দীপক অলম্বার হইল।

'সোহধ্যেট বেদান্ ত্রিদশানবট' ইত্যাদি ছলেও দীপকালছার হইতে পারে, কিন্তু অলভারের বিচিত্রতাই প্রধান লক্ষণ, কিন্তু এই ছলে বিচিত্রতা নাই বলিয়া দীপক অলভার, হইল না।

অপ্রস্তুত এবং প্রস্তুতের এক ধর্মান্তিসবদ্ধ উুলাবোগিতার ুসহিত এক হইরা উঠে, যেহেতু তুল্যযোগিতার লক্ষণ---"भवार्थानाः श्रञ्जानामरक्रयाः वी यता कृत्यः। একধর্মাভিস্থন: ভাতদা তুলাযোগিতা ॥" ( সাহিত্যদ ) প্রস্তুত বা অপ্রস্তুত পদার্থের একধর্মাভিসম্ম হইলে जुनारगंतिका जनकात हत ।

এই হলে প্রভেদ এই 'প্রস্ততানাং অক্তেষাং বা' প্রস্তুত বা অর্ক্সের অপ্রস্তুতের এই কথা বলায়, যেন্থলে প্রস্তুতের সহিত অপ্রস্তুতের এবং অপ্রস্তুতের সহিত প্রস্তুতের এক ধর্মাভি-সম্বন্ধ হইল, সেই ছলে তুল্যযোগিতা এবং যে ছলে প্রস্তুত ও অগ্রন্ততের সহিত একধর্মাভিসম্বন্ধ হইবে, সেই স্থলে ুদীপক হইবে। (সাহিত্যদ ১০ প॰)

(ত্রি) ২ দীপ্তিকারক। (পুং) দীপরতি অঠরামিনিতি দীপি-গুল্। ৩ যমানী, জোয়ান। ৪ লোচমস্তক। (শবর ) ৫ রাগবিশেষ, দীপক রাগু। হনুমন্মতে এই রাগ ষড়্রাগের মধ্যে বিতীয়। এই রাগ স্থানেত হইতে নির্গত হয়। ইহার কাতি সম্পূর্ণ, গৃহ বড়্জ স্বর, গ্রীম ঋতু ও মধ্যাক সময়ে এই রাগ গান করিতে হয় । ইহার রূপ বক্তবর্ণ, বস্ত্র পাটলবর্ণ, র্গলভূষ্ণ বৃহন্দুকাম্লা, এই রাগ মন্তহন্তীমারত এবং বছ স্ত্রীপরিবৃত। ইহা সম্পূর্ণ। ইহার গ্রহ, অংশ ও ভাস ষড় অ, শ্র দীপকর 🗐 জ্ঞান অতিষ্ একজন বিখ্যাত বৌৎষ্তি। ইনি ইহার মূর্ত্তি---

"বালারতার্থং প্রবিলীনদীপে গৃহেহন্ধকারে শুভগং প্রবৃত্তঃ। তত্তাঃ শিরোভূষণরত্বদীপৈ: কজ্জাং দধৌ দীপকরাগরাজঃ॥"

কহিার কাহারও মতে, এই রাগ লজ্জাহেতু গৃহ অস্ত্র-কার করিয়া বালারত ছিলেন, তাহার শিরোভূষণ রত্নদীপ चाता नड्डाव्याश हम। देशांत शक शक्नी तम्मी, कारमानी, নাটিকা, কেদারী ও কানাড়া এবং অষ্ট পুত্র কুগুল, কুমল, কলিন্দ, চম্পাক, কুমুন্ত, রাম, লহিল ও হিমাল। ভরত মতে ইহার পত্নীগণ-কেনরো, গৌরী, গৌড়ী, গুর্জন্বী ও কজাণী ্ৰ এবং পুত্ৰগুণ---কুস্থম, টঙ্ক, নটনারায়ণ, বিহাগরা, ফিরোদন্ত, রভসমঙ্গলা, মঙ্গলাষ্টক ও আড়ানা।

স্বরগ্রাম — সৃষ্ধ গুমুপুধ নিস। মতান্তরে দীপকের ভাগ্যা দেশী, कार्यामी, रक्नाता, काफी, नारिका ७ कान्छा। দীপকের পুত্র নট, কানড়া, বারোঞা, গারা, থাযাল, ইমন, কেলার, স্থা, খ্রামকল্যাণ। অক্ত মতে ইমনকেলার, কেদারকল্যাণ, জয়েৎকল্যাণ, কামোদকল্যাণ, হাম্বির কল্যাণ, ভামকল্যাণ ও স্থাষ্ট্। কল্লিনার্থ মতে--স্থানায়ক, আড়ানা, महत्रा, कीनड़ा, द्वहांगड़ा, नहेंदकमात्र। भूववध्-मिक्यांत्रत्मालात, शत्रती शकी, याचात्रती, यानीदशीता, यानावछी,

भगानी, मधी, र्रूश्ती। मछाखदत श्तित्राधान औ, cbiaise ख्यात्री, मनदर्श, कान्या, ब्याखीत्री, खंड नथी, खीमनन्त्री (সঙ্গীতরণ) ৬ এবদীপ।

"विकृत्वभानि या म्छां क्रिक मात्रि मीनकः। ন্মগিটোমসহলক কলমাপোতি মানব: ॥" ( একাওঁপু• ) । ৭ পক্ষীবিশেষ, শিক্ষরা, বাজপাখী। ৮ ভালবিশেষ। "প্লুতোলখু: প্লুতলৈব ভালে দীপকনামনি।" ( সঙ্গীতদা ) मीशक्रमाना (खी) मनाक्षत्रक् इत्नाखन, देशात २।०।१।३ वर्ग नच्, उडिहवर्ग छक । "मीशकमाना स्मामकाकाता] ( ছ्ट्यांम ) ॥, ॥, ॥, ॥, ॥

দীপকলিকা (ত্রী) দীপত্র কলিকেব। ১ দীপশিধা। ২ শূন্ পাণিকৃত যাজ্ঞবন্ধ্যসংহিতার প্রসিদ্ধ টীকা।.

দীপ্কিট্র (রী) দীপত কিটং। দীপলাত কজন। मी श्रुकृती (जी) मी शक्क क्लीव देखनशातकचार। मी भवर्स, मनिजा, भर्याय-रेजनभानी, मीभक्तीती, विमाहिका। (मन्मा) দীপুথোরী (স্ত্রী) দীপং থোরর্মতি গত্যাঘাতং করোতি দ্বিন্নী করোতীতি থোর গত্যাঘাতে ণিচ্অচ্ গৌরাদিখাৎ ভীষ্। দীপকৃপী, শলিতা।

मीशक्कत्र. वृक्षावजारत्रत्र मरभा এकति। [वृक्ष रमथ।] ৯৮০ খুষ্টাব্দে গৌড়রাজ্যাস্তর্গত বিক্রমপুর নগরে জন্মগ্রহণ করেন। ইহার আদিনাম চন্ত্রগর্ড, অবধৃত জেতারির निक्र हेनि भिक्ना थाश रुएवन। हेनि होनयान वारकः দিগের তিপিটক, বৈশৈষিক দর্শন, মহাযান মতাবলদীদিগের তিন পিটক, মাধ্যমিক ও যোগাচার সম্প্রদায়ভুকু বৌদ্দানের তুরাই ক্রায়দর্শন এবং চারি তাত্র বিশেষরূপ ব্যুৎপর ইইয়া-ছিলেন এবং তীর্থিকদিগের শাল্লে সমাক্ পার্দর্শিতা লাভ করিয়া একজন ত্রাহ্মণকে বিচারে পরাস্ত করেন। অবশেষে ইনি সাংসারিক স্থভোগ বিস**র্ক্তন**, ধর্ম, ধানি ^ও অধীাত্মজানসম্বলিত ত্রিশিক্ষা নামক বৌধ্বিগের তৰ্গ্রই काशवरन मरनानिरवन करतम এवः ভिष्यस উপদেশ লাভার্থ ক্রফাগিরির বিহারত্ব রাহল গুণ্ডের নিকট গ্রন করেন। এই স্থানে তিনি বৌদ্ধদিগের গুভ্মত্রে শী^{রিত} হইয়া গুজ্জানবজ্ঞ নাম প্রাপ্ত হইলেন। ইনবিংশ বর্ষ বয়:ক্রমকালে দ্তুপুরীর মহাসালিক কাচাব্য দীলর জিড তাঁহাকে পবিত্র বৌদ্ধমত্রে দীক্ষিত ক্রিয়া দীপ**দ**র প্রী**ভা**ন উপাধি धानान करतन। এक विः नवर्ष প্রীজ্ঞান উচ্চতম ভিকু পদবী প্রাপ্ত হইলেন এবং ধর্মরাক্ত তাঁহাকে বোধিসত মৃত্ত প্রহণ করাইলেন। ইনি সেই সম্বরে

ন্বন প্রসিদ্ধ বৌদ্ধপতিভগণের নিক্ট শিক্ষা লাভ করেন এবং অবংশবে নানাবিধর শিক্ষাহেত্ সর্বানা মনের চাঞ্চল্য নিবারণ এবং ধর্মে ঐকৃষ্টিকতা লাভার্থ স্থবর্ণনীপত্ব বৌদ্ধ-়ু ধর্মের প্রধান আচার্য্য চক্তাগিরির নিকট প্রমন করিয়া শিকা লাভ করিতে উপদিষ্ট হন। ও ভদম্পারে ভিনি একটা ৰ্গ্লিকপোতে আরোহণ ক্লিয়া স্কুৰ্ণ্ছীপে উপস্থিত হুইলেন এवः छथात्र बालमवर्वकानं विशुक्त द्योक्तथर्त्र निका कत्रित्रा ব্জাসন্ত ( ৰোধ গ্লা ) মহাবোধির মঠে আসিয়া বাস করিতে লাগিলেন। [অতীব দেখ ১]

मौ भक्षक ( भूर ) मौ भक्त सबहेद । कब्छन । मीপন (পুং) শীপ্যতে ইভি দীপ-ক্ষু। ১ তগরমূল । ২ কুছুম°। ৩ মব্রশিথাবৃক্ষ.। ৮ শালিঞ শাক । ৫ কাসমর্ক । ৬ পলাওু। ( वि ) १ मौপক মাত্র, দীপরিতা।

"স্বাসিতং হর্ম্মতলং মনোরমং প্রিয়ামুখোচছ্বাস্বিক্রিতং মধু। স্ত্রিগীতং মদনত দীপনং

ভচৌ নিশীপে হম্ভবস্তি কামিন: ॥" ( ঋত্দংহার ১৷৩ ) ৮ এাফ্ মস্ত্রপারভেদ, মন্ত্রগ্রহণ করিলে তাহার সংস্থার করিতে হয়, দীপন তাহার মধ্যে একটা। মন্তের দশপ্রকার भःकात कतिरात स्मिट मा मिकित्ताती रुप्त। कनन, कीवन, (ठाफ़न, दांधन, श्रष्टित्यक, विभनोकत्रन, श्रापात्रन, छर्पन, দীপন ও গুপ্তি মঙ্কের এই দশবিধ সংস্থার।

"মৱাণাং দশকুথান্তে সংস্থারাঃ সিন্ধিদায়িনঃ" ( শারদাতিশক ) [मञ्जलिया] २ व्यकानन।

পিনী (জী)ু দীপাতে *অ*ঠরবহিংরনয়া দীপ-ণিচ্লুটে জিলাং होल्। > टमथिका, टमथि। [टमथिका (नथा] २ यमानी। ^{৩ পাঠা।} (রাজনি•)

দীপনীয় (পুং) দীপাতে জঠরৰ(ক্রনেন দীপ-ণিচ্অনীয়র্। ेषमानी। (जि) २ मीशनत्याना। ० खेवस वर्ग विस्मय, শিপ্তলী, শিপ্তলীমূল, চব্য, চিত্রক ও কয়টা নাগর, এই দ্রব্য गरेया मीलनीय वर्ग। देश कष अ वास्नामक।

"निश्रनो निश्रनीम्नः চব্যচিত্রকনাগরः।

^{मोधनी}षः युट्डावर्गः क्यानिनगमाथरः ॥" (ठकम्छ)

मीललाम्ल (न्पूर) मीलक लामल हेव। मीलवृक्षः। मोलासात्र, পিল্ফুল।

मीभन्ष्य ( गूर) मीभ हेव भूष्यर यञ्च । ठम्मक दृक्य ।

^{দীপভা}জন (ফ্লী) দীপভা ভাজনং ৬তং। দীপপাত্র।

^{"वामनार्कितिय मौशञ्चासनः"} ( ब्रेष्)

^{দীপ}মালা (ত্রী) দীপানাং মালা ৬তং,৷ ভেণীভ্ত প্রদীপ,

দীপশ্রেণী," এককালে জনেক প্রদীপ স্বালিরা দিরা লগছাত্রী বা ছগার প্ৰা করিতে হয়, এইরপ দীপদালা দান विस्थिय जनमात्रकः।

"छेन्द्राक अंगकाजीः প्*ब*टबर नीशमानवा।" ( छिथिङच ) দীপবৎ (অি) দীপ অন্তাৰ্থে মতুপ্ মঞ্চ ব ৷ ১ দীপযুক্ত গৃহাদি। দীপবতী (ত্রী) দীপবং ত্রিরাং ঙীপুঃ কাম্থাছিত নদী-विटमश। मामञी नतीत शृद्ध मीशवजी नाहम এक नती चाहि, এই ननी हिमानव পर्वाउ इटेड उर्वाद। ইছা দীপের স্থায় অন্ধকার নষ্ট করে, এইজস্থ দেব-মস্থ্য সমাজে ইহার নাম দীপবতী হইয়াছে। দীপ-वछी ननीत भूर्सनिटक भृतां नाम এकने श्रामि भर्सछ আছে। (কানিকাপু॰ ৮২।১-৩)

नी शत्क ( ११) नी भछ वृक्त हेव व्याधातः। नी शाधातः। निन-হুজ, পর্যায়--দীপতক, জ্যোৎসার্ক, দীপপাদপ। (শক্ষার্ক)

"वर्षा श्रामीखः भूत्रजः श्रामीतः

প্রকাশুমক্ত করোতি দীপ্যন্।

তথেহ পঞ্চেক্সিয়দীপবৃহ্ণা

कानवानीथाः भन्नवस्व व ॥" ( ভারত ১২।२ •२।৯ )

দীপশক্র (পুং) দীপস্ত শক্ররিব। কীটভেদ, জ্লানাকী পোকা।

দীপশিখা(স্বী) দীপক্ত শিখা কারণত্বেন অন্তাক্তা: অচ টাপ্। ১ কজ্জল। দীপস্ত শিখা। প্রদীপজালা।

"मकातिनी मीशमिर्धित दारको

যং যং ব্যতীয়ায় পতিংবরা সা ।" ( রঘু ৬।৬৭ ) मी भगुष्यला (ब्बी) मी भानाः मृष्यत्वर। मी भागी।

দীপাস্থিত ( তি ) मोरेপরবিত:। मीপর্জ।

দীপানিষ্বতা (জী) দীপৈরম্বিতা। গৌণচান্ত্র কার্তিরে মাদের भगावष्टा, कार्षिक मारमत स्थावष्टात मिन धारमध मन्त्री-পূজা করিতে হয় এবং এই ভিথিতে যথাশক্তি পথ, আপণ, শ্মশান, নদীতট ও পর্বতিসাহতে দীপমালা বিভূষিত করিতে হর। সূর্যা ^{*}ভূলারাশিতে * গমন করিশে অর্থাৎ কার্ত্তিক মাসে অমাবভা তিথিতে নানাবিধ উপকরণ বারা পার্কণ আছি করিবে এবং অপরাহু সুমরে রাজা নগরে चायना कतिरवम, 'मकरनहे नची शूझा कत्र धर्नः हातिनिरक উকাদান কর' এইরূপ ঘোষণার পর দকলে দল্গীপূঞা ও উহা-मान कत्रिद्व।

"তুলারাশিগতে ভানৌ অমাবভাং নরাধিপ। সাঘা দেবান্ পিজুন্ ভক্ত্যা সংপ্ৰ্যাথ প্ৰণ্ম্য চ ॥ क्षा जू भार्तनवादः मधिकीत्रभुगानिनः।

ততোহপরাহুসমরে ধোষরেরগরে নৃপঃ। লক্ষী: সৃস্পুত্মতাং লোকা উন্ধাভিন্চাপিবেষ্ট্যতাং ॥" (ভিধিত॰) অমাবস্তার দিন প্রদোষ সমর্যে সন্ধীপুঞা করিবে।

লক্ষীপুঞ্জা ব্যবসা।—যদি অমাবস্তা উর্তন্ধ দিন্ব্যাপিনী হর, তাহা হইলে প্রদোষ ব্যাপ্তি বারা সমর নির্ণন্ধ করিতে হইবে অর্থাং বে দিনে অমাবস্তা প্রদোষ সমর পাইবে, সেই দিন লক্ষীপুঞ্জা হইবে। ইহার প্রমাণ— "তুলাসংস্থে সহস্রাংশী প্রদোষে ভূতদর্শরোঃ উবাহস্তা নরাঃ কুর্গুঃ পিতৃণাং মার্গদর্শনং॥" (তিথিত")

কিন্ত বলি ছই দিনে প্রদোব পার, অর্থাৎ জ্বসাবভা ছই দিনেই প্রদোয পাইরাছে, এরুপ স্থলে পরদিনে লক্ষী -প্রা হইবে। ইহার প্রমাণ--

"উভয়তঃ প্রদোষপ্রাত্থে পরদিন এব যুগাৎ। দত্তৈকোরজনীযোগো দশাস্থ স্থাৎ পরেছছনি। তদা বিহায় পূর্বেল্যঃ পরেছস্থি স্থারাজিকা॥" (তিথিতক)

উভয় দিনে প্রদোষ প্রাপ্তি ইইলে পর দিলে লক্ষী পূজা ইইবে, জমাবভা যদি পরদিবদ একদণ্ড রাত্রি প্রাপ্ত হয়, ভাহা ইইলে পূর্বাদিবদ পর্দিরভাগে করিয়া পরদিন লক্ষীপূজা করিতে ইইবে। ইহার নাম স্থ্যাত্রিকা। যদি উভর দিনে প্রদোষ প্রাপ্তি না হয়, অর্থাৎ অমাবভা উভয় দিনের কোন দিনেই প্রদোষ না পায় এরপ স্থালে পার্বাণ প্রাদ্ধের অস্বোধে পর দিনে উরাদান এবং পূর্বাদিনে লক্ষীপূজা ইইবে। ইহার প্রমাণ—

"উভয়ত্ত প্রদোষপ্রাপ্তাবিশি উর্জাদানং পর্দিনে পুর্ব্বোক্ত-পার্ব্ববায়ংং,

ভূতাহে যে প্রকৃষ্ধন্তি উন্ধাগ্রহমচেতসং।
নিরাশাঃ শিতরো যান্তি শাপং দলা স্থদারুণং॥ 
ইতি জ্যোতির্মাচনাচ্চ। অতৈবে লন্ধীঃ পূর্বাহে রাত্রৌ পূল্যা।
"অমাবস্থা যদা ধাত্রৌ দিবাভাগে চতুর্দশী।

পৃজ্বীয়া তদা লক্ষীর্মিজেয়া স্থ্যাত্রিকা ॥" (তিথিতত্ত্ব)
উপ্তয় দিনে প্রদোষ না পাইলে উন্ধাদান পার্মণ
আদ্রের অম্বোধে পরদিন করিতে হইবে, ভূতচত্র্দিশীর
দিন যে সকল ত্র্ জি লোক উন্ধাদান করে, ভাহাদের
পিতৃগণ নিরাশা হইয়া ভাহাদের স্থদারুণ শাপ দিয়া গমন
করেন, দশনের অন্তই উন্নাদানের অবশ্রুকর্ত্রতা। যে দিন
পিতৃদিগের উদ্দেশে পার্মণশ্রাদ্ধ করা হইবে, সেই দিনই
উন্নাদান করিবে। এই কারণে পর দিন পার্মণ শ্রাদ্ধত্ত
হইবে সেই দিনই সায়ংকালে উন্নাদান করিতে হইবে এবং
পূর্মদিনে শন্তীপুলা করিবে, কারণ এই বচনে যদি মাজি-

কালে অমাবস্থা হয় এবং দিবাঙাগে চড়ুদ্দী থাকে, তাহা হইলে সেই দিন রাত্রিতেই শন্ত্রীপূকা করিতে হইবে এবং তাহারই নাম স্থরাত্রি। পিতৃক্তাহেতু দক্ষিণ দিকে প্রাচীনা বীতি হইরা উদ্ধানা করিতে হইবে। উদ্ধান্তহেণের মন্ত্র—

- শিক্ষাশক্ষরতানাঞ্চ তৃতানাং ভূতদর্শয়েঃ 
   উজ্জলকার্যক্ষিক প্রক্রণ ব্যাসকলিব
- উজ্জ্বশ্বোতিষা লেহং দহেরং ব্যোমবহিংনা॥" উল্লাণানের মন্ত্র—

"অগ্নিদঝাক যে জীবা বেইপাদঝাঃ কুলে মম। উজ্জলজ্যোতিষা দঝান্তে যান্ত প্রমাং গতিং ॥॥ উকাবিসর্জনমত্ত্র—

"ষমলোকং পরিত্যন্তা আগতা যে মমালুরে। উজ্জ্বনন্ত্যোতিষা বল্প প্রপঞ্জার ব্রন্থ তে॥"

এই মুখ্রে উকাগ্রহণ, দান ও বিসর্জন করিতে ইইবে।
এই অমাবভার দিন বাল ও আতুর ভিন্ন কার্য়েও দিবাকালে ভোলন করিতে নাই। প্রদোষ সমরে যথাবিধানে
লক্ষীপুলা করিয়া দেবতার গৃহছে দীপবৃক্ষ প্রদান করিবে
এবং পরে চতুক্ষাথ, শ্মশান, নদী, পর্বত, সাহ্ম, বৃক্ষমূল, গোঠ,
চন্ধর, গৃহ ও ক্রের বিক্রেয় ভূমি প্রভৃতি সকল হল দীপাবলী
প্রদান করিবে এবং বস্ত্রপূজাদি দারা স্থাভিত করিতে
ইইবে। এইরূপ আলো দেওয়ার নাম দেওয়ালী। উত্তর
পশ্চিয়াঞ্চল প্রদেশে ইহার অভিশর ধুমধাম হয়।

দীপাষিতা অমাবস্থার দিন লক্ষীপুঞ্জাপ্রয়োগ।—গৃহমন্ধি উত্তরমুখী হইরা লক্ষীপুঞ্জা করিতে হইবে। প্রথমে ছাত্র-বাচন করিয়া সঙ্করা করিবে। 'ওঁ তদসদ ও অদ্যেত্যাদি অমুক গোত্র অমুক দেবলক্ষা পরম বিভূতিলাভকাম: লক্ষীপুজনমহং করিস্তে', এইক্রণে সঙ্কর করিয়া লালপ্রাম বা ঘটাদিত্র জলে ভূতগুদ্ধাদি করিয়া লক্ষীপুঞ্জা করিবে। পোলাক্ষণ ইত্যাদি মন্ত্রে ধ্যান করিয়া যথালক্তি দল বা বোড্লোপচারে পুঞ্জা করিবে। ভাহার পর

"ও নমন্তে সর্বাদেবানাং বরলাদি হরিপ্রিয়ে।
যা গতিত্বং প্রপন্নানাং সা মে ভূমাত্বদর্চণাং॥"
এই মত্ত্রে পুলাঞ্চলিত্রের দিয়া এই মত্ত্রে প্রণাঞ্চ করিবে।

"ও বিশ্বরপক্ত ভার্ব্যাসি পলে প্লালরে তভে। 
সর্ব্বতঃ পাহি মাং দেবি মহালন্দ্রি নমোহত তে।"
পরে কুবেরাদিকে পূজা করিতে হইবে। পূজা বা
গৃহাদিতে দীপ দিতে হইবে।

मीशमात्मत्र मज्ज---

"অধিন্যোতিঃ রবিন্যোতিশ্বস্থান্তিত্তবৈর চ। উত্তয়ঃ সর্ব্ধ ক্যোডীনাং দীপোহরং প্রতিগৃষ্ডাং।" পরে ত্রাহ্মণ ও বছ্মিপিকে ভোজন করাইরা অরং ভোজন করিবে।
তাহার পরী প্রাভাবে ভবিব্যাক্ত কর্ম, গোরোচনা, ভিলক ও
প্রদীপ বন্ধন করিরা লক্ষ্মীকে এই মত্রে ভিনবার পূজা করিবে।
ও বিশ্বরূপক্ত ভার্য্যাসি পদ্মে পদ্মালরে শুড়ে।
নীহালক্সি নমস্বভাং স্থবাতিং কুরুব মে॥
বর্বাকালে মহাবোরে যদ্ময়া হছতং রুতং।
স্থবাতিপ্রভাতেংভ ত্রে কন্মীর্ব্যোহত্য।
বা রাত্রিং সর্বভ্তানাং বা চ দেবেছবহিতা।
সহংসরপ্রিয়া বা চ সা ম্যাভ স্মুক্তনা।
মাতা ওং সর্বলোকানাং দেবানাং স্টিসভ্তবা।
আধ্যাতা ভূতলে দেবি স্থবাত্তি নমোহস্ত তে॥
ও লব্দ্মান্মঃ এইরূপ তিনবার পূজা করিবে।

[नक्षीश्वा (नव।]

কালীকুলসভাব নামক তান্ত্রিক ঐত্তর মতে—এই দিন মহানিশায় কালীপুজা ক্রমিতে হয়। [খ্রামা শব্দে বিভ্ত বিবরণ ডাইবা।]

(ভিপ্লি ক্বভাতৰ)

দীপালী ( ত্রী ) দীপানাং আলী । দীপশ্রেণী, দেওয়ালী ।
দীপাবক্তী, রাগিণীবিশ্বে । দীপক ও সরস্বতীযোগে উৎপন্ন ।
দীপাবলি ( ত্রী ) দীপানাং আবিলঃ ৬তং । দীপশ্রেণী ।
দীপিকা ( ত্রী ) দীপরতি প্রকাশরতি দীপ-ণিচ্ গুল্ টাপি অত
ইংং । সহিস্তাপনীয় শ্রীনিবাস কত জ্যোতিপ্রস্থি । ২ রাগিণী
বিশেষ, হিলোলরাগের পত্নী । ইহার রূপ—
প্রদোষকালে গৃহসম্প্রবিষ্ঠা প্রদীপহভারণগাত্তরতা ।
সীমস্তাসম্পুরবির্জিমানা স্বক্তমাল্যা কিল দীপিকেরম্॥"

को त्रिक दिलायकारन रिवा ।

को भिकारिक त्र (को ) देवन खेवस रखन, खेखक धानानी—

बहर भक्षम्र त्र प्रस्तु के खब्र का खेवछ मकन र हिन्ना

महर भक्षम्र त्र प्रस्तु के खब्र का खेवछ मकन र हिन्ना

में विद्या दिल्लिक छ देक त्र मिक्क किन्ना खब्र मिक किन्ना

हे हो कि एवं मकन देक निक्स भिक्त किन्ना

हे के शिक्त कि शिक्त किन्ना किन्ना

हे भे भी कि एवं से सिक्त किन्ना

हे के खिल के किन्ना

हे के खिल किन्ना

हे के खिल किन्ना

हे के खिल किन्ना

हे किन

দীপ্ত ( বি ) দীপ-কা। ১ প্রকাশাবিত। ২ সম্ভাসিত। ( ক্লী )
ত স্বৰ্ণ। ৪ হিন্ধু। ৫ নিমুক, নেরু। ৬ সিংহ। ৭ নাসিকাগত
রোগবিশেষ, এই রোগে নাসারদ্ধু হইতে ধ্যের ভার বায়্
নিগ্ত হয়, এবং নাসারদ্ধু প্রদীপ্তের ভার জালা করে।

"আবে ভূশং দাহসম্বিতে তু"
বিনিঃসরেছ্ম ইবেহ রাষ্ট্র।
নাসা প্রাণীপ্রেব চ যক্ত জরোব্যাধিস্ত তং দীগুমুদাহমন্তি॥" (স্থাত উত্তর্গত ২২ আ:)
৭ উজ্জন। ৮ আবোক্ষর।

দীপ্তক (ক্নী) দীধ্যমেব স্বার্থে কন্। স্বর্ণ।
দীপ্তকিরপ (পুং) দীধ্যা কিরণাঃ যন্ত। ১ প্রবৃদ্ধ। ২°অর্কর্ক।
দীপ্তকীর্ত্তি (জি) দীধ্যা কীর্ত্তিগত। ১ প্রকাশমানযন্ত্রক,
যাহার মশ প্রকাশিত হইমার্ছে। ২ কার্তিকের।
"আর্মেইশ্চব স্কলশ্চ দীধ্যকীর্ত্তিরনাময়ঃ।" (ভারত বন ২৩১জঃ)
দীধ্য কীর্ত্তিঃ কর্মধা। দীধ্য এইরূপ যশ।

मोश्चरकड़ू ( प्रः ) > न्१एडम । ( ভाরত সং चः )

২ দক্ষসাবর্ণি মহুর পুত্রভেদ। "নবমো দক্ষসাবর্ণি মহুর্বরুণসভ্যঃ।

ধৃষ্টকেতুর্নিপ্তকেতুরিভ্যাদ্যান্তৎস্থতা নূপ ॥" (ভাগণ ৮।১৩।৯ )

দীপ্ত: কেতৃ বৃত্ত। (তি ) ২ দীপ্তথ্যজ্জ, যাহার ধ্বল প্রাণীপ্ত, তাহাকে দীপ্তকেতৃ কহে। (পুং) দীপ্ত: কেতৃ:
কর্মধা। দীপ্ত এমন ধ্বল।

मी शुं जिस्ता (बी) मीश्रा बिस्ता यष्टाः। উद्धाप्ती मृशानी, गांविभागा। (दाताः) ইदारात बिस्ता हदेख त्रीविकारन चढारे व्यक्तिकृतां रुव, এरेक्नम श्रामिक व्याद्ध, এरेक्नम देशरात्र नाम मीश्रिक्ता रहेबाद्ध। (वि) र श्रमीश्र विस्ता। "नीश्राक्तिमीश्रिक्तिक मश्रामीश्रमहाननः।" (ভातक ) १२२२।०१) मीश्रिमिक्रन (ग्रः) मीश्रमिक्तम्क मीश्रः चर्नः उद्दर निक्र-राता ता। निरह। ब्रिकाः बाजिषां श्रीष्

দীপুর্কি (জি) দীপা মৃতির্বস্ত । ১ প্রকাশারিত মৃতিক, যাহার মৃতি অভিশন্ন উজ্জল। ২ বিশ্ব।

"বিখমৃতি মহামাউ দীপুর্মৃতিরমৃতিনান।" (ভারত ১০)১৪৯।৯০)
দীপ্রস্ (শং) দীপ্ত উজ্জল: রনো যতা। কিঞ্লক, কেঁচো, রাজিকালে ইহাদের নাম দীপুরস হইনাছে।

দীপ্তরোমন্ (পুং) বিখনেবভেদ।
"জিতাক্মা সুনিবর্ধক দীপ্তরোমা ভয়ন্বর:।"(ভারত অস্থ ৯১ অ:)
দীপ্তলোচন (পুং) দীপ্তে লোচনে নমনে যত। বিড়াল।
দ্বিয়াং জাতিবাং গ্রীষ্

मीপ্তলোহ (क्रो) मीथः नोहोंभव। > কাংস্ত। २ व्यं निज्याहे। দীপ্তবর্ণ (ত্রি) मीथः বর্ণমিব বর্ণো যক্ত। > স্থবর্ণ তুল্য বর্ণ-বুক্ত, যাহার বর্ণ সোণার মত। (পুং) ২ কার্ত্তিকের।

(ভারন্ত ৩।২৩১ খাঃ)

দীপ্তশক্তি (ত্রি) দীপ্তা শক্তিবস্ত। ১ প্রকাশমান সামর্থ্য, যাহার সামর্থ্য প্রকাশিত হইরাছে। ২ কার্ত্তিকেয়।

(ভারত বন ২৩১ আ:)

দীপ্তা (আঁ) দীপ্ত টাপ্। ১ লাললিকা বৃক্ষ, লাললাগাছ। ২ জ্যোতিয়তীলতা, লওয়া ফটকী। ৩ সাতলা, সেইছভেদ। (রাজনিং)

मी श्राः स्वं (प्रः) मीश वः भारत रुष्णा। ५ प्रद्या। २ व्यक्तृकः।
मी श्रांकः (प्रः) मीश व्यक्ति यक्षः। ५ विष्णान। विवाः
बाजिषाः छीत्। २ मीशः व्यक्ति छेष्ण ठक्ति छि।
मीशाशि (प्रः) मीशः व्यक्ति । ५ वश्याम्ति। धरे मूनि
वाजानि ७ प्रमुखरक बीन कताव हेराव नाम मीशि ।
हरेवाहः। [व्यवसार व्याः। २ मीशकंति विष्णुः। मीशः

দীপ্তাক (অি) দীপ্তং অবং বছ। ১ দীপ্তিযুক্ত দেছ, প্রভা-বিশিষ্ট সক। ২ ময়ুর। জিয়াং কাতিখাৎ ভীষ্।

দীপ্তি (ছী) দীপ-ক্তিন্। দীপন, পর্যার—প্রভা, রুচ্, রুচি, জিষ, ভা, ভাস, ছবি, হাতি, রোচিস্, শোচি। (অমর) ২ ব্রীদিপের অযুত্তর গুণ। (হেম ২০১৩)

"কান্তিরেব বয়োভোগদেশকালগুণাদিভিঃ।

देशीर्भेडािविस्नातः श्राक्षा क्रमीक्षिक्रगरण ॥"

বয়স ভোগ, দেশকাল ও গুণাদিবারা যে কান্তি অভিশয় উদ্দীপিত হয়, তাহাকে দীপ্তি কহে; বয়: প্রভৃতি অনুসারে স্ত্রীদিগের শারীরিক কমনীয়তা জন্মে, তাহার নামই দীপ্তি। সাহিত্যদর্শণেও ইহার লক্ষণ এইক্ষণ—

"কাস্তিরেবাভিবিস্তার্ণ। দীপ্তিরিভাভিধীয়তে ॥"

( সাহিত্যদ• ৩৷১৩১ )

অতি বিস্তীৰ্ণ কান্তির নাম দীস্তি। সাহিত্যদৰ্পণে ইহার উদাহরণ---

"তারুণ্যন্ত বিলাস: সমধিকলাবণ্যসম্পদোহাস:।
বরণিতলভাতরণং যুবজনখনসো বনীকরণং।" (সাহিত্যদ॰)
২ অভিব্যক্তি, জ্ঞানাভিব্যক্তিরপ দীপ্তির কারণ পাতঞ্জলে
এইরূপ লিখিত আছে।

"যোগারাহ্ঠানান্ত্রিক্ষয়ে জ্ঞানদীপ্তিরাবিবেক্থাতে:।" ( পাতঞ্চল ২।২৮)

विषय ज्ञान मः त्यांश ना इटें । शासित विरंतत्त्व त्रज्

অর্থাৎ কারণ হর। বম নিরমাদি বোগাল সকল অনুষ্ঠান করিলে অগুদ্ধি কর এবং বিবেদকর প্রতিবদ্ধক সকল নাশ হর, তথন জ্ঞানে দীপ্তি হর অর্থাৎ জ্ঞানালোক প্রদীপ্ত হইরা উঠে। দীপ সংজ্ঞারাং ক্রিচ্। ও লাকা। ৪ কাংস্ত।

( शूः ) € विश्वत्मवरक्षमः। ०

"উশীনাভো নভোদশ বিশার্ দীপ্তিরেবচ।"(ভারত অম ১১ জ্বঃ) দীপ্তিক (পুং) দীপ্তা কারতীতি কৈ-ক। হগ্পণাবাণবৃদ্ধ, শিরশোলা।

দীপ্তিকেশ্বরতীর্থ (ক্লী) দীপ্তিকেশ্বরং নাম তীর্থং। ঐর্বভেদ।
দীপ্তিম্ব (পং) দীপ্তি বিঅতে হন্ত, দীপ্তি মঁতুপ্। ই দীপ্তিযুক্ত।

২ সত্যভামার গর্ভনাত শ্রীক্ষেত্র এক পুত্র। (হরিবংশ ১৬২ জঃ)
দীপ্তোদ (ক্লী) দীপ্তং উদকং যত্র উদকল উদানেশ:। ১ তীর্ধভেদ। এই তীর্থে বধ্সর নামে একটা নদী আছে। ইহাতে
স্থান করিয়া দানাদি করিলে পাপবিস্কুক্ত হওয়া যায়। এখানে
ভ্রুনন্দন রাম অবগাহন করিয়া আপনার হৃতত্তের পুনঃ
প্রাপ্ত ইয়াছিলেন। দেবযুগে ভ্রুত্ত এখানে কঠোর তপোক্ষান
ক্ষিয়াছিলেন। (ভারত বন ১৯ জঃ)

দীপ্রোপল (পুং) দীপ্ত: হুর্যাকরণসম্পর্কাৎ জ্বলিতঃ উপল:। হুর্যাকান্তমণি।

দীপ্য ( তি ) দীপ্তার দীপনার হিতং গবা॰ যং। দীপ্তিহিত।
(পুং) দীপার অগ্নিদীপনার হিতং অপুণাদিদাং পদে
যং। যমানী, জোরান, ইহা অতিশর অগ্নিকারক, এই বর্ব ইহার নাম দীপ্য। ২ জীরক। দীপ তত্ত্ব সৃাধু ইতি বং।
ত ময়ুরশিথা। ৪ কৃদ্রজন্তা।

দীপ্যক.(ক্নী) দীপায় হিতং সাধুরিতি বা। দীপ-বং খ্রঃ
খার্থে কন্। ১ অজ্নোদা, বন্দোয়ান। ২ বমানী, জোয়ান।
৩ ময়ুরশিথা ৪ লাচমন্তকর্ক, ক্রজেটা।

मीপ्रा (जी) निखधर्क्ती, निखिषक्त ।

দীপ্র (ত্রি) দীপ্যতে ইতি দীপ-র (নমিকম্পাতি। পা এং।১৬৭) দীপ্রিনীল, দীপ্তিবিশিষ্ট।

"ক্চিৎ ক্চিচ্চিতান্যোতির্দীপ্রদীপপ্রকাশিতং।" ( কথাসরিৎমাগর ২৫।১৩৫)

मोग्नमान (बि) मीनाल देखि मा कर्मान मानह। अर्थनान मान महिस तस्त, यांदा (मधना इदेखाई । "विवादशंदमवरस्कृत् स्वयनाम्बर्म्ह्यकः।

পূর্ব্বসন্ধরিতং জবাং দীরমানং ন হঠতে ॥" (তিথিতর) ।
দীর্ঘ (ত্তি ) দৃণাতীতি দৃ-বিদারণে বাছং বিশ্ব । আরত, না,
পরিমাণতেদযুক্ত । কণাদ বলেন, 'দীর্ঘরী পরিমাণতেদযুক্ত । কণাদ বলেন, 'দীর্ঘরী পরিমাণ ভেদই দীর্ঘতু । সাংধামতে মহত্তে সবস্থাতরতেশ। [ পরিমাণ দেখ। ] ২ গতাশালবৃক্ষ। ৩ ইংকট, ওকড়া। ৪ মাড্বৃক্ষ, কোৰণদেশে মাড্বিন্য ৫ উট্র। ৬ নল থাগড়া। ৭ পঞ্চম, ষষ্ঠ, সপ্তম ও অষ্টমরাশি, অর্থাৎ সিংহ, কম্কা, তুলা ও বৃশ্চিকরাশি, দীর্ঘরাশি।

"একমাত্রো ভবেকু খে। বিমাত্রো দীর্ঘ উচাতে।
ত্রিমাত্রন্ধ প্রতাভেরো ব্যঞ্জনগুর্দিমাতৃকং ॥" ( ব্যাকরণ )

দীর্ঘকণা (জী) দীর্ঘ কণা নিত্যকর্ম্মণ । গৌরজীরক, গাদীরে।

नीर्घक के (পুং) मीर्घः क के का यश्च । वर्स्त बतुक्त, वावनाशाह । नीर्घक श्रे (পুং জী) भीर्घः कर्छायश्च । ১ वरू शक्ती । जिन्नाः बाতি ছাং ভীষ্ । ২ দানব ভেদ। (ত্রি) ও আরত কণ্ঠমাত্র, বাহাদের কণ্ঠদেশ দীর্ঘ। ৪ আরত এইরূপ কঠ।

गैर्घकर्थक ( १९) मीर्घकर्थ-कम्। वक्मकी।

ौर्घकन्प (क्री) मीर्थः करनायञ्च। मृनक।

ौर्घकम्क (क्षो) नीर्घकम-कण्। म्नक।

र्थिक स्मिका (श्वी) मीर्घक स्मक छान् छानि अन्त हेन्द्रः। युवनी, जान मूनी।

र्घकाश्चा ( ब्रो) > পাতাनপক্षीनठा, ছেওড়া हिन्नीভाषा। २ ठिकामा। ( तामनि॰)

র্ঘকায় (পুং) দীর্ঘঃ কালঃ যক্ত। আনতশরীরী, ঘাহার শরীর দীর্ঘ।

र्ष्काम (क्री) मीर्घः कामाः। व्यत्नकमिन।

र्वकौत् (पूर्ः) नीर्षः कीनः माथानत्था यद्य । व्यत्काठवृक्तः । ना व्याकणा । २ नीर्ष बहेन्नम कीन ।

ंकीलक ( পুং ) नीर्षकीन चार्स्य कन्। बद्धार्ठ दुक्त । ंक्ला। ( ত্ৰী ) গ্ৰুপিপ্লনী ।

ंकृतक (क्री) भीर्षः कृतकः अतः । त्राबात, आस्, त्माणात

দীর্ঘ কেশ ( श्रेং জী ) দীর্ঘ: কেশইব লোম অন্ত । ১ ওলুক।

২ দেশভেদ। (রুহংস° ১৪।২৬) এই দেশ কুর্মবিভাগের
পশ্চিমোন্তর দিকে অবস্থিত। ( আ ) ও আয়তকেশযুক্ত,

ঘাহার কেশ দীর্ঘ। জিয়াং জাতিছাং ভীষ্। স্বাক্ষাং বা ভীষ্।

"বিশোন্তী চাক্লনেতা গলপভিগমনা দ্বীর্ঘকেশী স্ক্ষাধা।"

( महानाठेक ১৯১ )

দীর্ঘকো(ম)শিকা (জী) भीष কো(বো)শো येष्ठाः कन्, কাপি অত ইবং। ঝিনারিকা, ঝিণুক, পর্যায়—ছর্ণামা, শুকি। দীর্ঘগতি (পুং) দীর্ঘ: গতির্যন্ত। উট্ট, ইহারা দ্বে দ্বে পাদ নিংকেপ করে, এই অক্ট ইহাদিগকে দীর্ঘগতি কহে।

দীর্ঘগমন (অি) দীর্ঘং গচ্ছতি দীর্ঘগম-ণিনি। যাহারঃ দীর্ঘ বাজত গমন করে।

দীর্ঘ এছি (পুং) দীর্ঘোগ্রছিঃ পর্ক বক্ত। গলপিরনী, গল-পিপুন। (রাজনি*)

দীর্ঘ এীব (পুং) দীর্ঘা গ্রীবা যত। ১ উট্ট। ২ নীলক্রোঞ্চ। জ্রিলাং লাতিঘাৎ ভীষ্। ৩ দেশভেদ, এই দেশ কুর্মবিভা-গের দক্ষিণ শিচমদিকে অবস্থিত। (বৃহৎস° ১৪।২৩)

• नीर्चचार्षिक ( श्रः, बो ) भोषा चाह्य च्यान्ति र्वन् । छेड्ने । नीर्चित्रकृ ( श्रः ) नीर्षा हक्ष्य । शिक्षात्र । ( शात्र प्रत निचन्ते रू) नीर्चित्रकृ ( श्रः ) नीर्षान्त्रना यञ्च । > हेक्न् । ( बि ) २ नीर्षक्रम क, नीर्चशव्यकु । ७ नीर्ष बहेक्क्ष शवा ।

मीर्घछन्मम् (क्री) हत्नावित्नव, वक् इनः।

দীর্ঘজঙ্গল (পুং) দীর্ঘং যথা তথা অঙ্গলো গতিশীল:। ভঙ্গান মংস্ত।

দীর্ঘজন্তব (পুং) দীর্ঘাঞ্চনা যন্ত । ১ বক । ২ উট্র। (ত্রি) ৩ আরতকার্যুক্ত । (ত্রী) ৪ দীর্ঘ এইরূপ অজ্ঞা।

দীর্ঘকারুক (পু') দীর্ঘ জাত্মগুত ততো কপ্। দীর্ঘজন ।

দীর্ঘজিহ্ব ( পুং ) দীর্ঘ। জিহবা যক্ত। ১ সর্প । ২,দানববিশেব। "গরিঠশ্চ বনাযুশ্চ দীর্ঘজিহ্বশ্চ দানব:।" ( ভারত ১।৬৫।৩০)

দীর্ঘজিহবা (ত্রী) দীর্ঘজিহব-টাপূ। ১ রাক্ষ্যাভেদ। (ভারত • ১ অং৮।৪৪) ২ কুমারাস্ক্রমাত্গণভেদ।

দীর্ঘক্রিইনী ( পং ) > কুরুর। "দীর্ঘক্রিন চহন্দদি" (পারস্বরনি ) এই শক্ত পুংলিক হইলেও বৈদিক প্রয়োগাস্সারে ভীপ্ হইল।

मीर्घकोविन् ( बि ) मीर्थः वहकानः बीविज बीव-निनि । वह-कानभीवी, याहाता व्यत्नक मिन वैक्तिः। थाटकन, जाहामिशटक मीर्घकीवी करहा '

"যত্ত বৰ্জয়তে রাজা পাপকুতো ধনাগমং"। তত্ত কালেৰ জায়তে মানবা দীৰ্ঘজীবিনঃ ॥" ( মৃতু ৯।২৪৬ ) রালা বধন স্থারপূর্কক দণ্ড ধারণ ধরেন, বেদপারগ ব্রাহ্মণ সকল যধন প্রভু হন এবং রালা মহাপাতকীর
নিকট ধন গ্রহণ করেন না, এ সমর্য সকলেই দীর্ঘলীবী
হয়। দীর্ঘলীবন লাভ করিতে হইলে বিশুদ্ধাচার আবশ্রুক।
বিশুদ্ধাচারী ও অধর্মপরায়ণ হইলে নিশ্চরই দীর্ঘলীবন
লাভ হয়। যথেচ্ছাচারই অকাল মৃত্যুর প্রতিকারণ,
এই জন্ত মহাদি সকল পাল্লেই বিশুদ্ধাচারীর প্রশংসা দেখা
যার এবং অকাল মৃত্যুর উদ্দেশ হলেও এইরূপ লিখিত
আছে। বিহিতকর্ম্মের অনহন্তান, নিন্দিতের সেবন, ইক্রিয়ের
অনিগ্রহ, আলত্ত এবং অর্নােষই একমাত্র অকাল মৃত্যুর
কারধ। যাহারা এই সকল অন্তান করেন না, অর্থাৎ অধর্মন
প্রায়ণ হইয়া অবস্থান করেন, তাহারাই দীর্ঘলীবন লাভ
করিয়া থাকে।

"বিহিতক্তাদহুষ্ঠান াৎ নিন্দিতক্ত চ সেবনাৎ। অনিগ্রহাচেক্রিয়াণাং নরঃ প্তনমিচ্ছতি ॥" ( মৃত্যু )

দীর্ষ্ তস্ত্র (পুং) দীর্ঘান্ত রবং স্তত রো যন্ত। প্রভৃত-স্ততিক দেবাদি, যে দেবাদির অনেক স্তব আছে। "দীর্ষতন্তর্ব হছক। যময়িঃ" (ঋক্ >•।৬৯।৭) ই দীর্ষকালব্যাপিসন্তানক। (ভাষা) এ • পুনীর্ষ এইরুণ তন্ত্র।

দীর্ঘত পৃস্ ( বি ) দীর্ঘং ৰহকালব্যাপকং তপোষস্থা। বহকাল-ব্যাপক তপত্ত আয়ুবংশীয় নূপভেদ, ইনি অনেক দিন ধরিয়া তপস্থা করিয়াছিলেন, এইজন্ম ইহার নাম 'দীর্ঘতপৃস্' হইয়া-ছিল। (হরিবং ২৯ অং )

দীর্ঘত্রসূ (পুং) > কাশীরাজের পুত্র ধরম্ভরির পিতা। উতথাপুত্র। ইহার বিষয় মহাভারতে এইরূপ শিখিত আছে—উতথ্য নামে এক ধীসম্পন্ন মুনি ছিলেন। তাঁহার প্রিয়তমা মমতা নামে এক ভার্যা ছিল। মমতা যথন পূর্ণ গর্ভবতী, এমন সময় উত্তথ্যের ক্রিষ্ট ভ্রাতা দেবগণের পুরোহিত বৃহস্পতি, মমতায় উপগত হইলেন, ইহাতে মমতা বৃহস্পতিকে কহিল, আমি ভোমার জ্যেষ্ঠ ভ্রাভা হইতে গর্ভধারণ করিয়াছি, স্বতএব তুমি বেরত হও, আমার এই সস্তান গর্ভন্থ হইয়াই বড়ঙ্গবেদ অধ্যয়ন করিয়াছে, তোমারও বীর্য্য অমোঘ, এক কুক্ষিতে ছই সস্তানের অবস্থান অস-ম্বৰ, অভএৰ ইহাতে বিশ্বত হও। বুহম্পতি অভিভেশসী হইয়াও কামবলে আপনার চিত্তকে সংযত করিতে পারিলেন না। বৃহস্পতি মমতার অসম্মতিতে তাহাতে উপ-গত ইইলেন। অনস্তর ব্রেড:পাত-করণোক্তত বুদ্মপ্রতিকে গর্ভ বালক কহিল, তাত ! কাম হউন, এই গর্জ মধ্যে উভয়ের খিতি হইতে পারে না। বৃহস্পতি ভাষার বাক্যু না শুনিয়া

রেভ:পাত করিলেন। গর্ভত্ব সেই মুনি <del>ও</del>ক্ষভ্যাপের স্মন্ত বুঝিতে পারিয়া শুক্রপ্রভেশের পথ চরণ্যারী ক্লব্ধ করিয়া রাখিলেন। তথন ঐ রেড: প্রতিহত হইরা ডংক্ষণাং ভূ_{মিতে} পতিত হইল। ইহাতে ভগবান্ বৃহস্পতি কৃষ হইরা 🎍 গুর্ভত্ব পুত্রকে শাপ দিলেন, 'তুমি এতাদৃস মনীরেম সময়ে .আমাকে এরপ বাকা কহিলে, এ কারণে তুমি দীর্ঘতাম্যে প্রবিষ্ট হইবে অর্থাৎ অন্ধ হইবে।' বৃহস্পতির এই শালে थे अर्थि जन्मश्रहन कतिया नीपंडमा नाटम विश्रां हहेतन। প্ৰৰেষী নান্নী আক্ষণতনক্ষর সহিত ইহার বিবাহ হয়। তাঁহার গর্ভে ইহার গৌতন প্রভৃতি পুত্র জন্ম। & গৌতমাদি পুত্র সকলই লোভ ও মোহে অভিভূত ছিল। দীর্ঘতমা স্থরভিসন্তান কামধের হইতে গোধর্ম শিক্ষাপুর্যক তাহাতে अकाविक रहेवा अवाध रेंग्यूनांनि कवित्व अवुद হইলেন। আশ্রমবাসী সুনিগণ দীর্ঘতমাকে মর্যাদা অতি-ক্রম করিতে দেখিয়া সকলেই তাঁহার প্রতি বিদিষ্ট হইলেন। প্রবেষীও নিভাস্ত বিরক্ত হইলেন। একদিন দীর্ঘতমা পদ্দীকে অসম্ভষ্ট দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, তুমি কি নিমিত্ত আমার প্রতি বিবেষাচরণ কর ? প্রবেষী কহিলেন, স্বামী ভার্যার ভরণপোষণ করেন, এই নিমিত্ত তাঁহাকে ভর্তা বলা বায় এবং পালন করেন বলিয়া তাছাকে পতি কছে। তোমার জনাদ্ধতাপ্রযুক্ত আমি চিরকাল তোমার ও তোমার পুত্রগণের ভরণপোষণ করিয়া শ্রান্ত হইয়াছি, এখন দার ভরণপোষণ করিতে পারিব না।

দীৰ্ঘত্ৰা ইহাতে কুন্ধ হইয়া কহিলেন, আনমি অভ হইডে **এইकृ** लाक्यर्गाना हालन क्रिनाम । नात्रीतैन अक्याब পতিতেই অমুরক্ত থাকিবে, শামী জীবিত থাকুন বা মৃত হউন, পত্নী পার অন্ত পতিকে আশ্রয় করিতে পারিবে না। য**গুপি কোন নারী অ**ক্ত পতিকে গ্রহণ করে, ভাহ^{৷ হইলে} পতিতা হইবে। ব্রাহ্মণী তাহার এই বাক্য শুনিয়া অতি^{শয়} কুপিতা হহীয়া পুত্রদিগকে কহিল, 'তোমরা অন্ধ পিতাকে বন্ধনপূর্বক গলায় ফেলিয়া দিয়া আইস।' পুত্রগণ দীর্ঘতমাকে বর্মন করিয়া ভেলার উপরৈ চড়াইয়া গলায় ভাসাইয়া ^{দিয়া} আসিল। দীর্ঘতমা গ**লার জ**লে ভাসিতে ভাসিতে বছত্বে ^{বৃট্রা} পড়িলেন। বলি নামে একরাজা গলান্নান করিতে আনিয়া ^{এই} व्यवश्राप्त श्रविष्क (प्रविश्वा हैशास्क निल व्यानात गहेंगा शहें। লেন। পরে ইহাকে তেজখী জানিতে পারিরা ইহার ট্রি^{কট} প্রার্থনা করিলেন, 'হে,মহাভাগ! আমার বংশরকার নিমিও আমার ভার্যাতে ধর্মার্থকুশল, সম্ভাম উৎপাদন করুন।' তেলখী ঋষি বালাুর ঐ কথার সমত হইলে ^{রাজা}

ন্থদেকা নামে স্বীয় পদ্মীকে প্রেরণ করিলেন। কিন্তু রাজ-মहिरी स्राप्तका जीहारक अकि ও वृद्ध मिथियां व्यवका कतियां তাঁহার নিকট খীর দাসীকে প্রেরণ করিলেন। ঋষি শৃদ্র-বোনিতে কান্দীবান্ প্রভৃতি একাদশ পুত্র উৎপাদন করিলেন। রালা ভাষা স্থানিতে পারিয়া পুনরায় স্থেদ্ফাকে ভাঁহার নিকট ৫প্ররণ করিবেন। তথ্ন দীর্ঘত্সী ঋষি স্থদেয়লা দেবীর অঙ্গ সকল স্পর্শ করিয়া কহিলেন, 'তোমার অতি চেক্তমী পুত্র हहेरव, ভाहारमंत्र नाम चन्न, वन, कनिन्न, भूखु ও चन्न हहेरवी अहे स्माखान जाहारित नार्य अक अक रमन हहेरव। अरमत नारम अमरमम, वरमत नारम वमरमम, कनिरमंत्र नारम कनिकातम, शुर्खुत नाम श्रृखुतम এवः ऋष्कत्र नाम সুন্দেশ হইবে।' (ভারত আদিপ ১০৪ অ:) নীতি-মঞ্জীতে লিখিত আছে—বৈতন প্ৰভৃতি ভ্তামণ দীৰ্ঘতমাকে প্রথমে অগ্নিতে নিংকেপ করে, কিন্তু সেথানে ইনি অখিনী-কুমারের প্রসাদে রক্ষা পান। ভাহারা আবার জলে নিঃকেপ করে, এথানেও ইনি একপে রক্ষা পান। ত্রৈতন ইহার মন্তকে, বক্ষে ও বাহুযুগলে আঘাত করিয়াছিল। শেষে আপনি অমৃতপ্ত হইয়া নিজ দেহে সেইরূপ আঘাত করিয়া প্রাণত্যাগ করে। मीर्च छ द्रः ( प्रः ) मीर्घः ७ इरः । > जानत्रकः । २ मीर्घ दृक्तमात्ता । मौर्घठा (खी) मीर्घण **खादः मीर्घ-**जन्। छात्र। व्याव्रकि, देवर्षा, नीर्घष ।

नीर्घ তিমিষা ( ত্রী ) नीर्घ তিম বা কিষন্। কর্কটা, কাঁকুড়। नीर्घ कुछा ( ত্রী ) नीर्घः कुछः यञा। > ছুছুন্দরী। ( ত্রি ) ২ नीर्घ-তুওমুক্ত গজাদি। ( ক্রী ) ৩ নীর্ঘ এইরূপ কুঞা

দীর্ঘত্ণ (পুঃ) দীর্ঘং তৃণমিব, অবভিধানাৎ পুংস্থং ৷ ১ পলিবাহ ্ছণ ৷ (রাজনিং ) (ক্লী) ২ দীর্ঘ এইরূপ তৃণ ৷

দীৰ্ঘদণ্ড (পুং) দীৰ্ঘোদণ্ড ইব কাণ্ডাৰচেছদেন। এরও বৃক্ষ। (ভাবপ্ৰ•) আন্তে কন্।

नीर्घन श्री (श्री) नीर्घन ७ গোরাদিছাৎ গ্রীষ্। গোরুকী। (রাজনি)

দীর্ঘদর্শিক্তা (স্তী) দীর্ঘদর্শিনোভাবঃ দীর্ঘদর্শিন্ ভল্ অন্তনাসিকলোপঃ তভোটাপ্। বিদ্যুদর্শিকা, অনেক দেখিয়া যে
জ্ঞান জনো।

দীর্ঘদিনি (পুং) দীর্ঘ; দীর্ঘাৎ বা পশ্যতি ণিনি। ভাবিকার্যাল্ল, ভবিষ্যক্তে যাহা ঘটিবে ভাহা যে বিদিত আছে,
বিজ্ঞ, বিচক্ষণ, পণ্ডিত। ২ ভলুক। '(ত্রি) ও দ্রদর্শক।
"গঁহি ধর্মাং পুরস্কৃত্য শীর্ঘদর্শী পরং হিতং।" (ভারত ১৪৮৮৪৩)
দীর্ঘদৃষ্টি (পুং) দীর্ঘা দৃষ্টির্দর্শনমন্ত। '১ পণ্ডিত। দীর্ঘা দ্রতো
দৃষ্টি বেন। ২ দ্রবীক্ষণ নামক যন্ত্রকে।
দীর্ঘান্ত (পুং) দীর্ঘান্টানো ক্রন্তেভি। ভালবৃক্ষ।

দীর্ঘদ্রের (পুং) দীর্ঘোজ্য:। শাল্পনিবৃক্ষ, শিম্ল। দীর্ঘদ্পার, বৃক্ষপণ্ডোক বিশালদেশান্তর্মতী একটা জনপদ। বৃক্ষপণ্ডের মতে, এই জনপদ গগুকীতটে অবস্থিত এবং ইহাতে স্থাসহত্র গ্রাম ও তিশটা নগর ছিল।

দীর্ঘনথ, ব্ৰের সামরিক জনৈক অক্ষারী। ইনি 'দীর্থনথ-পরিপ্রাজক-পরিপূজ্যা'নামক গ্রন্থ রচনা করেন বলিয়া বিখ্যাত। দীর্ঘনাদ (পুং) দীর্ঘ: দ্রগামিতাং বিত্তীর্ণ: নাদ্যেতা, ক্জা-দিতাং ন প্তং। ১ শৃথা। (জি) ২ বহুকাল্যারি শৃস্ক ঘণ্টাদি।(পুং) ৩ আরত শৃত্ব।

দীর্ঘনাল (পুং) দীর্ঘং নালং বজ ৷ ১ যাবনাল ৷ ২ ৩৩ তৃণ।
(লী) ৩ দীর্ঘরোছিছ।,

দীর্ঘনাস (জি) দীর্ঘানাসা যক্ত। দীর্ঘনাসিকাযুক্ত।

"বক্ষাতী দীর্ঘনাসো দদ্যাৎ গাংধবলপ্রভাং।" (শাতাতপ)
(জী) দীর্ঘনাসিকা।

দীর্ঘনিদ্রো (জী) দীর্ঘা নিজা। মৃত্যু। "লোহদঃ মংকার্মুকাকেপবিদীপিতদিগস্তরে:।

শরৈবিভিন্নসর্কান্দো দীর্ঘনিত্তাং প্রবেক্ষাতি ॥" (মার্কণপু॰ ৭।১৩) ২ দীর্ঘকালব্যাপিনী নিজা ।

দীর্ঘপক্ষ (পুং) দীঘৌ পিকে। যভা> কৰিকাথা। ইঁদীর্ঘপক্ষ-ু ্যুক পক্ষিমাত্র।

দীর্ঘপটোলিকা (জী) দীর্ঘা পটোলিকা। লভাফলবিশেষ, ধুঁহন। ইহার ভণ--- রিগ্ধ, কটু, বিইজী ও গুরু; বায়ু, পিত, শেখা, কচি ও ভেদকারক, মধুর এবং দীতন। ( রাজবলভ ) দীর্ঘপত্রে (পুং) দীর্ঘং পতাং বহু ।> রাজপলাগু। ২ বিফুকন। ত হরিদভ । ' ইক্ভেদ।
কাজারতাপদেক্ত কাঠেকু: স্চিপত্রক:।

रेननारना मौर्यभवक मौनरभारतार्थ रक्ष्यकुर ॥""

( সুশ্রুত স্তারান ৪৫ অ: )।[ ইকু দেখ।]

দীর্ঘপত্রক (পুং) দীর্ঘপত্র সংজ্ঞারাং কন্। ১.রক্ত লভন্তু লালরভন। ২ এরপ্ত। ১ হিজ্ঞাল বৃক্ত, হিজ্ঞালাই। ৪ বেতস বৃক্ত। ৫ করীরবৃক্ত, মধুরা অঞ্চলে কচড়া। ৬ জনজ মধুক বৃক্ত, জলামৌলগাছ। ৭ লভন।

দীর্ঘপত্রা (জী) দীর্ঘং পত্রং যতা: । '১ চিত্রুপর্ণিক, কুলে চাকুলিরা। ২ ছবজবুরক, ছোট জাম। ৩ পৃলিপর্ণীলতা, চাকুলে। ৪ গন্ধপত্রা। ৫ কেতকী। ৬ ডোরীকুপ। ৭ শাল-পর্ণী, শালপাইন্।

দীর্ঘপত্রিকা (জী) দীর্ঘপত্র সংজ্ঞানাং,কন্টাপ্ অভ ইদং।
২ খেতবচা, সাদা বচ। ২ স্বতকুমারী। ৩ শাদপর্শী। ৪ খেত
ুপুনর্বা।

দীর্ঘপত্রা (ত্রী) দীর্ঘপত্র গৌরাদি গুরীষ্। ১ পঁলাশীলভা। ২'মহাচঞ্পাক।

দীর্পর্ণী (ত্ত্রী) দীর্ঘং পর্ণং যন্তা গৌরাদিং ভীন্। প্রিপর্ণী, চাকুলে।

দীর্ঘপল্লব (পুং) দীর্ঘ: পল্লবো বস্য। ১ শণবৃক্ষ। (ত্রি) ২ আরত পঞ্জুক্ত। (পুংক্লী) ও আরতপল্লব।

দীর্ঘপাদ্ । ११ ) দীর্ঘ: পাদো বস্য সমাসাক্ত: অক্তালোগাঃ।
করপক্ষী, কাঁক। সমাসাক্তবিধেরনিতাত্বাৎ অক্তালোপাভাবঃ।
সমাসাক্ত বিধির অনিত্যতা হেতু অর্থাৎ সমাসাক্তবিধি কোন
ক্তালে হইবে, কোন ক্তেল হইবে না, এইজন্ত অক্তালোপ না
করিয়া 'দীর্ঘপাদ' এইরূপ শব্দ হইবে। পাদ শব্দ স্থানে পদ
আনদেশ করিয়া দীর্ঘপদ এইরূপ হইবে। (ত্রি) দীর্ঘপদমুক্ত।
দীর্ঘপাদ্প (পুং) দীর্ঘলাসো পাদপশ্চেতি। ১ তাল। ২ প্র।
দীর্ঘপৃষ্ঠ (পুং) দীর্ঘণ পৃষ্ঠঃ যন্ত। সর্প।

দীর্মপ্রক্তর (পুং) দাপরযুগে অক্সরাবভার ব্যপর্কা নামক নৃপভেদ।

"র্ষণর্কেতি বিখ্যাতঃ শ্রীমান্ যক্ত মহাস্তরঃ। দীর্ঘপ্রক্তা ইতি খ্যাতঃ পৃথিব্যাং সোহভবদৃপ॥"

(ভারত আ' ৬৭ আ:)

ইনি অভিশর দ্রদর্শী ছিলেন বলিরাদীর্থপ্রজ্ঞ এই নামে বিথাত হন। (অি.)দীর্ঘাঞাজাবস্তা ২ দ্রদর্শী।

দীর্ঘকল (পুং) দীর্ঘং ফলং যন্ত। আরখ্ধরক্ষ, সোন্দাল,
শোদাল্গাছ।

দীর্ঘফলক (পুং) দীর্ঘফল সংজ্ঞায়াং কন্। অগন্তাবৃক্ষ,
বক্দ্লগাছ।

দীর্ঘফলা (স্ত্রী) দীর্ঘ ফলানি যস্তা:। ১ মালবদেশ প্রসিদ্ধ জতুকা নিমে লতা। ২ কপিল্ডাক্ষা, আঙ্গুর।

দীর্ঘফলিকা(অী) দীর্ঘফন কপ্টাপ্কাপি অভে ইম্বং। ১ কপিল্যাকা। ২ জতুকা।

দীর্ঘবালা (ত্রী) দীর্ঘ: বাল: কেশো মৃদ্যা:। চমরী। স্বাঙ্গর্থং ভীষ্। দীর্ঘবালী।

দীর্ঘবাক্ত (পং) দীবৌ বাহ যত। > শিরাম্বরভেদ।

"দীর্ঘরোমাদীর্ঘত্তো দীর্ঘরাহনিরঞ্জন:।" (হরিবংশ ২৭৭ আঃ)

২ গ্রুরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১০১১৭০১০) (তি ) ও
আন্তবাহ্যুক্ত, যাহার বাহ্যুগল দীর্ঘ অর্থাৎ আলাম্লবিত,
ভাহাকে দীর্ঘবাহ কহে।

দীর্ঘবাহুগব্বিত ( ত্রি ) দৈতাভেদ।

দীর্যভূজ ( খং ) দীবৌ ভূজো বছ । ১ শিবাস্থচরভেদ । ২ দীর্ঘ-বাহযুক্ত । ৩ দীর্ঘ এইরূপ বাহ । দীর্ঘমারুত (পুং) দীর্ঘ: অধিকসমন্নব্যাপী মারুড: নি:বাস-বাযুর্বত। হতী। জিলাং জাতি ছাং তীব্। দীর্ঘার (পুঃ) ১ সক্ষাক্ষেদ। (কি.১২ বীর্ষা সময়ত

দীর্ঘমুখ (পুং) > यक्ष ভেদ। (ত্রি) २ দীর্ঘ মুখবুক্ত।
দীর্ঘমুল (পুং) দীর্ঘ মূলং বস্তু । ১ মোরটলভা, কীরমোরটা।
২ বিবাস্তর বৃক্ষ। (ক্লী) ত লামজ্জক তৃণ, বেণাগাছের সদৃশ
পীতাভ তৃণ।

দীর্ঘ্র ক (রী) नीर्धमृत-সংজ্ঞারাং কর্। মূলক। (রাছনিং) দীর্ঘ্র (ত্রী) নীর্থং মূলং বজাঃ টাপ্। ১ ভামালতা। ২ শালপর্ণী, শালপাইনগছে।

দীর্ঘমূলিকা (ত্রী) দীর্ঘমূল কপ্টাপ্কাণি অভ ইয়ং। ছয়ালভা।

দীর্ঘমূলী (জী) দীর্ঘং মৃদং ষতাঃ তীপ্। ছরাগভা।
দীর্ঘজ্ঞ (জি') দীর্ঘং বছকালবাপিকো যজ্ঞো যতা। ১ বছকাল
ব্যাপক যজ্ঞকারী । , যিনি অনেক দিন ধরিরা যজ্ঞ করেন:
(প্ং) ২ বাপর্যুগের একজন অযোধ্যাধিপতি।
"অযোধ্যারাস্ক ধর্মজ্ঞং দীর্ঘজ্ঞং মহাবলং।
অজয়ৎ পাওবভ্রেটো নাতি তীব্রেণ কর্মণা॥"

( ভারত সভা॰ ২৯ খঃ)

দীর্ঘাথ ( আ ) या-कर्माण थ, দীর্ঘকালেন যাথ: গন্ধর:।
দীর্ঘকাল দারা গন্ধর:। "র্থা ক্ষৎপথিভিদীর্ঘবাথৈ:।" ( শক্
২।১৫।৩) 'দীর্ঘাথে দীর্ঘকালেন গন্ধবৈয়:।' ( সারণ)

मीर्घद्र**त्रा** (खी) रुविखा।

मीर्घत्रक ( थः ) क्क्र।

দীর্রদ (প্ং) দীবো বিংলা দক্তে যক্ত। ১ শৃক্র। (বি)
২ আগত দক্ত, যাহার দক্ত দীর্ঘ। (প্ং) ৩ দীর্ঘ এইরপ দব।
দীর্ঘরব, উৎকৃলের একজন রাজা। ইনি উৎকলবিজয়ী
মহারাজ জনমেজনের পুত্র। [জনমেজন দেশ।]
দীর্ঘরসন (পুং) দীর্ঘারসনা জিহবা যক্ত। সূপ।

भीर्घत्रात्रा (हो) भीर्षः अधिककानकात्री त्रांगः युवाः। हित्रात्रा (होजनिः)

দীর্ঘরে (ক্লী) দীর্ঘাঃ প্রচ্রা রাত্রয়ঃ সম্ভাত্র, আর্দ আদিবাদ।
চিরকাল। মুগ্ধবোধ মতে, দীর্ঘালাকো রাজিল্ডেডি 'নর্ফেন্ড দেশস্থাতপুণ্যবর্ঘা দীর্ঘালাজ্যে' ই্জিস্ত্তেশ ব, শুংক্সভি ধানাং। দীর্ঘা রাত্রি, দীর্ঘনিশা।

मीर्घद्राय (जि) नीर्घः तायः यद्य । উक्रमसकात्री । मीर्घद्रांशिन् (जि) विद्यदर्शती, वाद्यंत्रा व्याव नकन अव। (ताश एकाश करत ।

मीर्चटतायन् ( पूर ) नीर्पानि देवामानि यक । ১ छन् क । २ निर्वा स्वत्रदेखन । ( इदिदश्न ১०१२ ) দীর্ঘরোহিষক ( क्री ) বীর্ঘং রোহিষং ততঃ স্থার্থে সংজ্ঞারাং বা কন্। কর্তৃণতেদ, স্থান্ধি তৃত বিশেষ, বড়রোহিষ, পর্যায়— দৃঢ়কাপু, দৃচ্চদে, বজেই, দীর্ঘনাল, তিক্তসার, ইহার প্রণ-কটু, উষ্ণ, ক্ষ, বাত, তৃতগ্রহ ও বিষনাশক এবং এণকত উপশর্মকারক্ত। ( রাজনিং )

দীর্মলতাক্রম (পুং) অবকর্ণক, বুতাশান।

দীর্লোচন (জি) দীর্থং লোচনং মদ্য। ১ আয়তনেত্রক, মাহার চকু আয়ত। ২ শিবাইচরভেদ। ৩ ধৃতরাট্রের পুত্রভেদ। (রী) জায়তং লোচনং। ৪ জ্মায়ত এইরূপ লোচন।

मीर्धालाहिखंयष्टिकं। (बी) त्रक रेक्।

দীর্ঘবংশ (পুং) দীর্ঘোবংশ ইব । ১ নৰ তৃণ। ২ সম্ভতকুণ। ৩ প্রাচীনবংশসমূত ।

দীর্ধবক্তে (পু: জী) দীর্ঘং বজুং মৃধং বসা। ছুকী। (আ) নম্বনন। জিয়াং খাদছে ২পি টাপ্। (ক্লী) দীর্ঘং বজুং। আয়ত এইরূপ বদন।

দীধ্বভিছকো ( ত্রী ) দীর্ঘবৎ, শীকতে সিঞ্চতি শীক-ক প্ৰোদরা• ঃবঃ। কুন্তীর।

দীর্বর্ষাস্থ (পুং ব্রী) দীর্ঘা বর্ষাভূ:। স্বেডপুনর্ণবা। দীর্ঘর্মী (ব্রী) দীর্ঘা বৃদ্ধী। ১ মহেন্দ্রবাদ্ধী, বড় মাকাল। ২ পাতালগরজীলতা, ছেউড়ী। ৩ পলাশীলতা। ৪ আয়তা এইরপ কতা।

मोध्युक्त (प्रः) मोधः वृक्तः। > मानवृक्तः। २ छानवृक्तः।
मोध्युक्त (प्रः) मोधः वृक्तः यगा। त्यानाक वृक्तः, त्यानागाहः।
२ त्यानाक व्यत्कतः, नयात्माना। ० जाठाक्रमः, नञ्जानागः।
मोध्युक्तकं (प्रः) मोध्यृकः चार्त्वः कन्। [मोध्युक्तः त्रवः।]
मोध्युक्तां (क्रो) मोधः वृक्तः यगाः। हेक्ति जिन्ना।
मोध्युक्तिं (क्षो) मोधः वृक्तः यगाः। क्ष्युक्तिं जिन्ना।
विव्यक्तिं (क्षो) मोधः वृक्तः यगाः क्ष्यं गिन व्यक्तिः।
विगानीं, कांगे व्यामकनीगाहः।

দীর্ষশর (পুং) দীর্ঘ: শর:। যাবনাল ধান্ত, জোনার ধান। দীর্ঘশস্ত্য (পুং) গাব ফল।

मीर्घमां थ ( पूर ) मोर्चा माथ्य यत्रा। > मगर्क, मरगत शाह। २ मानद्रकः।

দীর্ঘশৃথিকা (ত্ত্রী) দীর্ঘা শাধা যস্যা: কাপি অভইন্থ:। নীগামীকুণ, হিন্দীতে নলবনগুড়।

দীর্ঘশিন্মিক (পুং) দীর্ঘা শিষির্ঘস্য কপ্। ক্ষব। রাজিকাভেদ। দীর্ঘশূক (পুং) দীর্ঘঃশুকঃ অগ্রং যস্য। শালিভেদ, শালিধান্ত। দীর্ঘশূকক (ক্লী) দীর্ঘং শূকং যস্য কপ্। রাজার, অনুদেশের শামন ধানকে রাজার করে।

नौर्यमाञ्च (बि) दृहद भ्रञ्जयूक, रफ स्मृद्ध ।

দীর্ঘশ্রবস্পান্থ: দীর্ষা প্রবোষ বা । দীর্ষভ্যার পুর অবিভেদ।
"উপিকার বণিকে দীর্ঘশ্রবদে" (অফ্ ১।১১২।১১) 'উপিক্
সংজ্ঞা দীর্ঘত্যদাঃ পত্নী উস্যাঃ পুরো দীর্ঘশ্রবানার কন্চিদ্বিরনাব্রেটা কীবনার্থাকরেবাং বাণিজ্যঃ।' (সারণ) এই অবি কোন
সমরে অনাবৃষ্টি হইলে কীবিকার জন্ম বাণিজ্য করিবাছিলেন।
(আ) ২ দীর্ঘকর্ণবৃক্ত। (রৌ) ৩ দীর্ঘ এইরূপ কর্ণ।

দীৰ্ঘি<u>শ্ৰ</u>ণ (ি । ) ১ বছদ্র হইতে খাহা ভনাৰায় । ২ দ্র দেশ প^{ৰ্যা}ক যাহার নাম বিখ্যাত ।

पीर्चमक्थ (जि) पीर्ष मक्थिनी यमा वहजी हो पाना र वह ।
(वहजी हो मक्थिका पाना र वह । भा र । । । । । । । २ ) भीर्षा म ।
पीर्चमक्थि (क्री) पीर्ष मक्थिनी यमा, पाना पिछारक न वह ।
भक्छे । वहजी हि मभारम पान व्याहरन मक्थि ७ पानि मासु स উखत वह हम, किन्न कहे एता भनी त्राह व्याहरन महे । कहे जा अ वह हहेन ना, ति प्रता पान व्याहरन, त्महे प्रता पीर्चमक्थि ना हहेना 'मीर्चमक्थ' कहे जम हहे (व ।

দীর্ঘদত্ত্র (ক্রী) দীর্ঘং বহুকালসাধ্যং সত্রং। ১ বজ্ঞবিশেষ,
দীর্ঘকালিকবজ্ঞা, এই বজ্ঞ অনুষ্ঠান করিতে দীর্ঘকাল লাগিয়া
থাকে। (ত্রি) ২ দীর্ঘদত্তকর্তা। ৩ তীর্থবিশেষ, এই
দীর্ঘদত্র তীর্থে ক্রন্ধাদিদেবতা ও পরমর্ষি দিদ্ধ প্রভৃতি বধানিরমে অবস্থান ক্রিয়াছিলেন, এই তীর্থে গমন মাত্রই আখমধ ও রাজসুর যজ্ঞের ফল লাভ হর। (ভারত ৩০১০০০১৪)

রেন) ৪ বাবজ্ঞীবন কর্ত্ব্য জানিহোত্র যজ। "দীর্ঘদত্রং হ বা ত উপম্বন্ধি যেহনিহোত্রং জ্বরার্থাং সত্রং যদিহোত্রং জ্বরা বা।" ( শতপথবা > ২।৪।১।২) •
দীর্ঘদত্ত্বত (পুং) দীর্ঘদত্তকারী।
দীর্ঘদ্যক্ত (পুং) দীর্ঘদত্তকারাশকং স্বরতং যদা। > কুকুর।
দ্বির্ঘাং জাতিভাং ভীষ্। (ক্রী) ২ জায়তস্থরত।
দীর্ঘদ্যক্ষ (পুং) দীর্ঘদ্যনেন্ন স্কল্ডেত। প্রাণারামভেদ।

[বিশেষ ব্লিবরণ প্রাণায়াম দেখ।] প্রক্রমালন প্রক্র ক্রার্যাক্রয় মুলু হ

দীর্ঘসূত্র ( তি ) দীর্ঘেণ বছকালেন প্রকং কার্যারস্কঃ যত । 
 চিরক্রিয়, বিল্যে কার্যাসম্পাদনকা য় ।
 "অদীর্ঘস্ত্রশ্রু ভবেৎ সর্মকর্মান্ত পার্থিবঃ।
 দীর্ঘস্ত্রক্ত নৃপতেঃ কর্মহানি প্রবং ভবেৎ ।
রাগে বেষে চ কামে চ জোহে পাপে চ কর্মণি।

অপ্রিয়ে চৈব কর্মবে দীর্ঘস্ত্রঞ্জ শভতে ।" ( মৎত্রপ্রাণ )

সকল কার্বোই অদীর্থস্থ হইবে, নৃপতিগণ দীর্থস্থ হইলে কার্যাহানি হইবে। কিন্তু রাগ, বেষ, কাম, জোহ, পাপকার্য্য এবং অপ্রিয় কর্মে দীর্যস্থী অবলম্বন করিবে, অর্থাৎ এই সকল ছড়ম্মে দীর্যস্থী হইলে সেই সেই কার্য্য হইতে পারে, এইজন্ত এই সকল ফার্য্যে শীর্ষপ্রভার বিধান আছে। যে ব্যক্তি কোন কার্য্য উপস্থিত হইলে তাহা সম্পাদনে সম্বর না হইরা ইহা আজি, না হয় কালি করিব মনে করিরা আলস্তে কালফ্রেপ করে, তাহাকে লীর্যপ্র কহে। বাহারা উন্নতি লাভ করিতে ইচ্চুক, তাহারা যত্নপূর্বক শীর্যপ্রতা পরিহার করিবেন, দীর্যপ্র হইলে কথনও উন্নতিলাভ হইবৈ না। (ক্লী) ২ দীর্ঘ এইরূপ প্রতা। (ত্রি) ও দীর্যতন্ত্রক।

দীর্যসূত্রতা (রী) দীর্থস্ত্রভ ভাব: দীর্ঘস্ত্র-তল্-টাপ্। চিরক্রিরভা।

দীর্যসূত্তিন্ (অি) হঅং বছকালং ব্যাপ্য কর্মারভোষ্ত্যজ্ঞ ুদীর্ঘহজ-ইনি। দীর্ঘহজ্ঞ।

"বিষাদী দীর্থস্ত্রী চ কর্তা তামস উচ্যতে ॥" (গীতা ১৮।২৮)
একদিনে বে কার্যা করা যায়, সেই সেই কর্ম একমাসে
বিনি করেন, তাহার নাম, দীর্থস্ত্রী। "যদক্ষা কার্যাং তৎমার্সেনাপি যো ন সম্পাদয়তি স দীর্থস্ত্রী" (আফ্রিকড্রু)

দীর্ঘক্ষক্ষ (পুং) দীর্ঘ: ক্ষোবজ। তালবৃক্ষ। দীর্ঘক্ষর (পুং) দীর্ঘ: শুর: ৮[দীর্ঘ দেখ।]

দীর্ঘা (जी) দীর্ঘ-টাপ্। পৃল্লিপর্ণী, পর্যায়—পৃথক্পর্ণী, লাঙ্গুলী, কোটপুছিকা, ধামনি, কলদী, তথী, গৃহা, ক্রোটুক-মেধলা, দীর্ঘা, লুগালবিল্লা, প্রীপর্ণী, সিংহপুছিকা, দীর্ঘপত্রা, অভিলুহা, মৃতিলা, চিত্রপর্বিকা। (বৈদ্যকরত্বলালা)

দীর্ঘাধ্বর (পুং) দীর্ঘং আরতং ক্ষধবানং গছেতি গম-ড। ১ দেবহার, পত্রবাহক। ২ উটু।

मीर्घायु (बि) नीर्यः आव्यकः। ितकीरीः। "कीराज्नः नीर्घायुकः (म" ( अक्रयक्" >৮।৬) 'नीर्घायुकारकारः नीर्घायुकः वहकान्मायुः शृरवानतानिषार मरनाशः आयुक्तनरस्वा वा।' (काश) मीर्घायुक् (करे) [नीर्घायु रमवा।]

দীর্ঘায়ুধ (পুং) দীর্ঘ আযুধঃ। ১ কুস্তান্ত । দীর্ঘো আযুধৌ-ইব দডৌু যক্ত। ২ শুকর।

দীর্ঘামু ফ্রু (পু:) দীর্শার্ষো ভব: দীর্ঘায়ুস্ত। বছকাল আরু, দীর্ঘকালজীবন, লৌকিক প্রয়োগে 'দীর্ঘায়ুষ্ট্' হইবে, কিন্ত বৈদিক প্রয়োগে অন্তাপর লোপ করিলে দীর্ঘায়ুষ্ঠ হইবে।

দীর্ঘারু ব্যু পেশুং) দীর্ঘং আর্ফ্সং জীবদং যস্ত । ১ খেত মন্দারক । ( জি ) ২ দীর্ঘাযুক্ত, যাহাদের আরু অভিদর দীর্ঘ ।

দীর্ঘায়ুস্ (পুং) দীর্ঘ আযুর্বজ । দীর্ঘযুক্তন, চিরজীবী, যাহারা অধিক দিন বাচিয়া থাকে ।

"গুড়সন্ধিসিরানায়ঃ সংহতাকঃ স্থিরেজিয়ঃ। উভবোতরক্ষেত্রো বঃ স দীর্ঘাযুক্তাতে ॥ পর্তাৎপ্রভ্তারোপে। য: শনৈ: সমুপচীরতে। শরীরজ্ঞানবিজ্ঞানৈ: স দীর্ঘান্ত: মশ

ু ( স্থ্ৰুত প্ৰস্থান ৩৫ ছ:)

যাহার শরীরে শিরা, সায়ু, বা সন্ধি গৃঢ়ভাবে নিছিও, অব প্রত্যক্ষ পরস্পর দৃঢ়ক্ষপে সংশ্লিষ্ট, ইব্রিয়•সকল[®]স্থির এবং শনীর উত্তরোত্তর অনুজ্ঞ হইয়া উঠে, সেই ব্যক্তিই দীর্ঘার। यिनि अनुपार्विष व्यद्यांगी अवः भंतीत उद्यान ও विख्यान पिन पिन त्रक्षि रत्र, छाशादक मीचांचू आनिएछ रहेरव। हिकिश्नक চিকিৎসা করিতে খাইলে 'প্রথমে রোগী অরার্শক দীর্ঘুরু তাহা নিরূপণ করিবেন। দীর্ঘায়ু নিরূপণ ফলে কুক্রতে এইরূপ 'নিধিত আছে—হত, পাদ, পার্য, পৃষ্ঠ, তানের অঞ্চল্য, मणन, यमन, ऋक अयः नगाउँ (मण विष्कृत इट्टेन, अकृ_{षित} পর্বা, উচ্চু । प ( य भाग টানিয়া লঙয়া যায় ), বাছ এবং চকু দীর্ঘ হইলে, জ 🧐 স্তন্ধয়ের মধ্যজ্ঞাগ এবং বক্ষয়ল বিতীর্ণ হইলে, জভ্যা, মেট্র এবং গ্রীবা হ্রস্ব হইলে, স্বরু, নাভি ও বুদ্ধি গভীর হইলে, স্তনধন্ন শরীরে অধ্যুচ্চ এবং দৃঢ় ভাবে থাকিলে, কর্ণ দীর্ঘরোমবিশিষ্ট হইলে, মস্তিক মস্তকের পশ্চান্তাগে থাকিলে, স্নান ও অঞ্লেপন করিলে, মন্তক হটতে শরীরের নিমভাগ ক্রমশ: শুষ্ক ইটতে থাকিলে এবং স্কলের भारत श्रमप्रतम **७क रहेरन आ**त्र मीर्च हहेना शास्त्र ।

( সুশ্রুত স্ত্রস্থান ৩৪ আঃ)

मीर्घात्रभा (क्रो) नीर्षः षत्रभाः। निविष् वन।

मीर्घालक ( प्रः ) नौर्पाश्नक हैव। या जममा क्रक हकः।

দীর্ঘাস্তা ( বি ) দীর্ঘং আজিং বস্তা। ১ আরতমূব। ২ হরী।
৩ শিরাস্করতেদ। দীর্ঘং আজিং বর দেশে। ৪ পশ্চিমোডরদেশভেদ। (বৃহৎস' ১৪ আঃ)

দীর্ঘাহন্ (পুং) দীর্ঘাণি অহনি যতা। বে সমর্যের দিন সকল দীর্ঘ, নিদাব সময়, গ্রীয়কাল। দীর্ঘ অহ:। এই কলে সমাস করিরা 'রাজাহঃস্থিভাইচ্' এই স্প্রাল্পারে উচ্ সমাস করিলে 'দীর্ঘাহ' এইরূপ হইবে, 'দীর্ঘদিবস' এইরূপ অর্থ বৃথাইবে, বহুত্রীহি সমাসে উচ্ সমাসাম্ভ হয় না, এই জ্লুই 'দীর্ঘাহন্' শক্ষ হইয়াছে, কিন্তু বন্দ, তৎপুরুষ ও কর্মবারয় সমাসে উচ্ সমাসাম্ভ হইরা থাকে।

দীৰ্ঘিকা ( ত্ৰী ) দীৰ্থেৰ দীৰ্ঘা সংজ্ঞারাং কন্ টাণি অত ইছা।
ক্ষাশ্যতিদ, দীঘি, পৰ্যায়—ৰাপী। ত্ৰিশক ধন্ন প্ৰিমিত
ক্ষাশ্য হইলে তাহাকে দীৰ্ঘিকা কৃষ্টে। "শতেন ধন্নতিঃ
প্ৰায়িকী, ত্ৰিভিঃ শতৈকীৰ্ঘিকা, চতুৰ্জি ক্ৰোণঃ পঞ্চিত্ৰভাগঃ"
(ক্লাশ্যোৎসৰ্গতন্ব) ২ জুলাশ্যমান্ত্ৰ। 'স্বৰ্ণীন্ত্ৰদীৰ্ঘিকা' (ক্ৰম্ব)
দীৰ্ঘেবাকে ( পুং ) শীৰ্ঘা ইক্ষাক্ষঃ। ভক্ষীক্তা।

मीर्याक्तात्व (ज्ञी) मौर्यः উक्तात्रगः। উक्तात्रगः कारमः श्रीत्राः जनाधिकामि वृक्षाहेवात जञ्ज सम्म विरम्धयत्र श्वकः উक्तात्रगः। मीर्ग (जि) मृ-विमारत उरुः। विमातिष्ठः।

"আরসং জ্লয়ং নূনং রামমাজুরসংশয়ং। যর দীর্ণং প্রিয়ে পুত্রে বনবাসায় দির্গতে ॥" (রামা॰ ২।৩৯।২৯ ) ২০ভীত । ভাবে ক্ত । ৩ বিদারণ p

দীসা, বোঘাই প্রেসিডেন্সির অন্তর্গত গুজরাট প্রদেশের পালনপুর রাজ্যন্থ একটা সহর ও ইংরাজ সেনানিবাস। অকা' ১৪°১৪০০ উ:, জাঘি ৭২০১২০০ পূ:। এই সহর মাউ নগরের ০০০ মাইল উত্তরপ্রিচমে, নীমচের ২৫১ মাইল পশ্চিমে এবং বোঘাই নগরের ৩৯০ মাইল উত্তরে বানন্ নদীতটে অবস্থিত। পূর্ব্বে এই সহরের নাম ফরিদাবাদ ছিল। সহরের উত্তরপ্র্বিদিকে ৩ কাইল দ্বে বানন্ নদীতীরে ইংরাজ সৈন্তনিবাস। পূর্ব্বে এই সহর অন্ত্র প্রাকারবেষ্টিত ছিল এবং বরদার গাইকবাড় ও রাধনপুরের সৈন্তের আক্রমণে সম্পূর্ণ আত্মরকা করিয়াছিল। এখন ঐ প্রাচীর নানাস্থানে ভাজিয়া গিয়াছে। এখানে ভাকত্বর ও টেলিগ্রাফ আফিস আছে।

তুআ। (দেশজ) > কোন কার্যো অগ্রসর হইয়া পশ্চাদ্পদ হইলে তাহাকে ছআ কহিয়া থাকে। ২ দোহন করা।

ফুআর (দেশ**ল**) দরজা।

তুই (দেশজ) दिসংখ্যা।

प्रहेषे ( (मण्ड ) विमःथा।

इहेवांत ( ( १ मधी ) वि ।

তুইমনা ( পেশল ) যাহার মন ছই দিকে থাকে, বিমনা।

ইংকূল (পুং) চোরনামক গন্ধদ্রবা।

ছঃখ ( ক্লী) ছর্ছটং থনতীতি থন ড বাছ: থরতীতি ছঃখ অচ্। ১ সংসার । ২ রোগ।

"ভেকাভঃ পীড়াতে হুংথৈ পোঁণিতক্ষসন্তবৈ।" (ভাবপ্র•) 'হুংথৈঃ রোগৈ' (টীকা)

০ কট। অন্তথ, পর্যায়—ব্যথা, অমানস্থ, প্রস্তিজ, কট, কচ্ছু, আভীল, অন্তি, অন্তি, আর্থি, পীড়ন, অবাধা, বাধন, আমনস্থ, আমানস্থ, বিবাধন, পীড়িত, বিহেটন। (শক্ষর) এই এই বৃস্তু হংথদ—পারতস্ত্রা, ষাহারা পরের অধীন হইয়া জীবন ধারণ করে, আর্থি (মানসিক কিন), ব্যাধি, মানচ্যতি, শক্র, ক্ভার্যা, যাহার স্ত্রী ছটা, তাহার হংথে জাবন অতিবাহিত হয়, নৈংম, ধনরাহিত্য, ক্থামবাদ, ক্রামিদেবন, বহুক্তা, বৃত্ত, পরগৃহ্বাদ, বর্ধাপ্রবাদ, ভার্যাধ্র, কুভ্তা ও হুর্লক্রণক

কৃষি, **ক্ষ**বিক্রণতার এই সঁকল মহুয়ের ছঃখ্ঞাদ বলিরা উক্ত হইয়াছে।

সাংখাদি মত সিদ্ধ প্রতিক্লবেদনীয় রফোকার্যা চিত্ত-ধর্মভেদ। তার ও বৈশেষিক দর্শনের মতে, ছংথ আত্মার (জীবায়ার) ধর্ম, সাংখা বেদান্ত প্রভৃতি দর্শনের মতে ছংথ বৃদ্ধি ধর্ম অর্থাৎ চিত্ত ধর্ম।

"বুদ্যাদিষট্কং সংখ্যাদিপঞ্চকং ভাবনা তথা। ধর্মাধর্মোগুণাএতে আত্মনস্থান্চতৃদ্দশ ।

অধর্মজন্তং হঃথস্তাৎ প্রতিকৃশং দচেত্রসাং॥" (ভাষাপরিছেদ)
বৃদ্ধি, স্থা, হঃখ, ইচ্ছা প্রভৃতি আয়ার ধর্ম, এই হঃখ
অধর্ম জন্ত উৎপন্ন হইয়া থাকে।

ছংথের প্রতি অধর্ম কারণ ছংথ কার্যা, কার্যা ও ক্রেণের সহিত নিতা সম্বদ্ধেত্ অধর্ম আচরণ করিলেই ছংথ অবশ্যন্তারী। ছংথ যাবতীয় প্রাণীর অনম্ভিপ্রেত, লোকের যত প্রকার চেষ্টা দেখা যায়, তাহার উদ্দেশ্য ছংথিনিবৃত্তি, এই ছংথ নিবৃত্তির জন্ম মানব কতপ্রকার ক্রেশ সন্থ করিয়া থাকে তাহা অবর্ণনীয়। কিন্তু কোন্পথ আশ্রম করিলে ছংথিনিরতি হয়, তাহা নিরূপণ করিতে না পারিয়া প্রতিপদে অনস্তম্থ ভোগ করিয়া থাকে। ন্থায় ও বৈশেষিক দশনে এই জন্ম লিখিত হয়াছে 'অধ্যাজন্মং ছংথং শুং' অধ্যা আচরণ করিলেই ছংখাছে 'অধ্যাজন্মং ছংথং শুং' অধ্যা আচরণ করিলেই ছংখাছ বিবৃত্তি করিয়া প্রতি করিবা সকলেই প্রতিনিয়ত স্থাব্যেবণে প্রবৃত্ত হয়। এই বস্ত হইতে আমার স্থা ছংথ নিবৃত্তি হইবে, এই জ্ঞান হইলে স্থা ছংথ নিবৃত্তির ইছল জন্ম।

যাহা বারা যাহা নিম্পর হয়, তাহাকে তাহার ফল কহে, বেমন রক্নের ফল অয়, শান্তাফ্লীলনের ফল জ্ঞানোদয়। ফল পদার্থও মুখ্য ও গৌণভেদ থিবিধ। চরমফলকে মুখ্যফল কহে। মুখ্যফল অথ ও তাথের ভোগ, এতদতিরিক্ত সকল ফলট গৌণ, বেহেতু সকল কর্ম্মেরই চন্ধমে স্থ বা তাথের ভোগ সক্রপ ফল পর্যাবদান হয়। দেখ রক্ষনবারা পরিশেবে ভোজনী স্ক্রপ ফল পর্যাবদান হয়। দেখ রক্ষনবারা পরিশেবে ভোজনী স্ক্রপ ফল পর্যাবদান হয়। দেখ রক্ষনবারা পরিশেবে ভোজনী স্কর্ম কর্মানানক্রপ প্রথের ভোগ হয়। আর চৌর্যাদি দোবে দ্বিত হইয়া কারাবাসক্রপ অশেষ যয়ণা সক্রপ তারেশর ভোগ হয়। এইক্রণে বিবেচনা করিলে স্পষ্টই প্রেভিপন্ন হয়, বে সকল কর্ম্মেরই চরমকল স্থভোগ কিংবা তাথ ভোগ। অভান্ত তাথেনিবৃত্তি হইলে মুক্তি হয়। এই মুক্তিই একমাত্র সকলের অভিশ্রেত। এই মুক্তির জন্ত সকলেই চেষ্টিত, কিন্তু পথ হারাইয়া লোকে নানা উপায় অবলম্বন করিয়া অশেষবিধ ক্রেশ পাইয়া গাকে।

সাংখ্যদশনের মতে—ছ:খনিবৃত্তির জন্মই পান্ত জিজ্ঞাসা
হইয়াছে, লোক সকল যথন প্রতিনিয়ত হংবে পীড়িত হইয়া
ক্রমাগত লুন্মমূহারূপ হংবে অভিভূত হইতে লাগিল,
তথন পরম কারুণিক কপিলদেব ভূতগণের প্রতি দ্যাপরকল হইয়া ছ:খোদ্ধারের উপায় পঞ্চবিংশতি তব্জ্ঞানের বিষয়
উপদেশ করিরাছেন। এই জ্ঞান হইলে হংথের কর হয়।
যদি এ জগতে হংথ বিজয়া কোন জিনিস না থাকিত,
নিত্য পদার্থের ভায় যদি তাহার নিবৃত্তি না হইত ও এই
হংথ পরিহার যদি অভিশয় কইসাধ্য হইত, তাহা হইলে
শাস্ত্রজ্ঞাসার আবশ্রকতা ছিল না। যথন দেখা যায়,
হংখেংপ্রতি হয়, তাহার আবার ধ্বংস্ত হয়, এইজ্ঞ্ঞ—
"হংশ্রুমাভিঘাতাজ্ঞিজ্ঞাসা তদ্বধাতকে হেতে।

দৃষ্টে সাপার্থা চেৎ নৈকান্তাতান্ততো ভাবাং॥" (তত্তকো ) হংথব্রেরের বিনাশই এহলে জিজ্ঞান্ত, যদিও তাহার ক্ষণিক অবসানের হেতু প্রভাক্ষগোচর হয়, কিন্তু একান্ত ও অভ্যন্ত নির্ভি হয় না, এইজন্ত জিজ্ঞান্তা। এই মতে হংথ ত্রিবিধ আধ্যাত্মিক, আধিদৈবিক ও, আধিভৌতিক। ইহার মধ্যে আধ্যাত্মিক হংথ দ্বিবিধ শারীরিক ও মানসিক। বাত, পিত্ত ও শ্লেমার বৈষম্য নিমিত্ত যে হংথ হয়, ভাহাকেই শারীরিক হংথ কহে। কাম, ক্রোধ, লোভ ও মোহাদি নিবন্ধন হংথ মানসিক। আধিভৌতিক হংথ চারিপ্রকার—ভৃত সকল হইতে উৎপন্ন, জরাযুজ, অওজ, স্বেদজ ও উত্তিজ্ঞ হইতে উৎপন্ন, ফ্রাযুজ, পতু, পক্ষী, সরীস্থপ, দংশ, মশক প্রভৃতি ভাবরাদিজনিত হংথ। আধিদৈবিক অর্থাৎ দেবতা হইতে উৎপন্ন যথা—শীত, উষ্ণ, বাত, বর্ষা ও বজ্ঞপতনঞ্জনিত ক্লেশ।

এই ত্রিবিধ ছংথের বিনাশই একমাত্র শাস্ত্র জিঞালার উদ্দেশ্য, বাহাতে এই ছংথত্রর নাশ প্রাপ্ত হর, তাহাই হেতু।
এই সকল ছংথের ক্ষণিক নাশ হইতে দেখা যায়।
কহু কেহ কহেন, এই সকল ছংথবিনাশের নিমিত্ত শত উপায় আছে। শারীব্রিক ছংখনিবৃত্তির জন্তু চিকিৎসক কর্তৃক নানাবিধ উপায় নির্দারিত আছে। মানসিক ছংথ প্রতীকারের জন্তু মনোজ্র স্থী, পান, জোজন প্রভৃতি উপায় বিদ্যান আছে। নীতি, শাস্ত্রাভাগ্য-কুশলতা প্রভৃতি অবলঘন করিলে আধিভৌতিক ছংথ নিবৃত্তি হয়। আধিধিক ছংথ প্রতীকারের জন্তু মণিমন্ত্রৌষধাদি প্রভৃতি সহজ্ব উপায় আছে।

এই সকল হঃথ প্রতীকারের উপার সত্য, কিন্ত ইহাতে ক্ষণিক নিবৃত্তি হয় বটে, একান্ত ও অভ্যন্ত নিবৃত্তি হয় না, একান্ত ও অত্যন্ত হংথ নিবৃত্তিই সকল দর্শন শালেরই প্রথান
উদ্বেশ । যেমন ক্ষ্মা হইকে ভোজন করিলে ক্ষ্মিবৃত্তি হর,
আবার পরক্ষণে ক্ষ্মা হর, সেইরুণ এই সকল উপারে ছংখ
নিবৃত্তি হইলেও একান্ত ও অত্যন্ত ছংখনিবৃত্তি হর না,
আনার পরক্ষণে হংখনিবৃত্তি হওয়া অসন্তবণ যদি মনে
কর দ্টোপার দারা হংগনিবৃত্তি হর না, কিন্তু আয়ুশ্রবিক
অর্থাৎ বৈদিক ক্রিয়াকলাপ দারা হংখ নিবৃত্তি হইতে পারে,
এ সম্বন্ধে তত্তকৌমুদীতে লিখিত আছে—

"দৃষ্টবদাস্থাবিকঃ সঞ্ বিশু বিক্লয়াতিশয়যুক্তঃ। তিৰপরীতঃ শ্রোন্ ব্যক্তাবাক্তক্ষানবিজ্ঞানাং ॥" (তৰকৌ) দৃষ্টের ন্থায় আন্থাবিক,ও অসম্পূর্ণকারন, ভাষাও অবিশ্ শু জি ও ক্ষয়াতিশয়যুক্ত ভাষার বিপরীত অর্থাং ব্যক্ত অব্যক্ত এবং জ্ঞের জ্ঞানই শ্রেয়:। তিবিধ ছংখ আদে। থাকিবে না, কোনকালেও প্নরুৎপন্ন হইবে না, এইরূপ ভাব বিনির্ভ হইলে বা বিনষ্ট হুইলে ভাষাকে আত্যক্তিক ছংখ নির্ভি বলা যায়।

দামাভাকারে জঃথ নিবৃত্তি হওয়া দামাভ পুরুষার্থ, । কিন্তু আতান্তিক ছংথনিবৃত্তি আতান্তিক পুরুষার্থ। ইহার অপের নাম প্রম প্রুষার্থ। তাহার কারণ এই বে, ঐরুপ তঃথনিবৃত্তিই তঃখনিবৃত্তিকামনার চরমদীমা। দৃষ্ট উপার ষারা অর্থাৎ লৌকিক উপকরণ **দারা আত্যস্তিক** ছ:ব-নিবৃত্তি হয় না, লৌকিক উপকরণে ছংখের নিবৃত্তি হইগেঙ তাহার অনুবর্ত্তন থাকে। ধনাদির দারা উপস্থিত ছ:ধ নির্ত্তি হয় রটে, কিন্তু শ্তাহার পরক্ষণেই আবার তংসদৃশ অন্ত হঃশ্ব আসিয়া উপন্থিত হয়। স্থতরাং শ্বীকার করিতে হই-তেছে যে, লৌকিক উপায়ে কাণিক ছংথনিরুত্তি হয়, আত্য-স্তিক হংথ নির্তি হয় না। ক্ষণিক হংথনিবৃত্তি হইলেও তাহা অপুরুষার্থ নছে। কেননা পুরুষ ভাষাও চায়, ভাষাও প্রার্থনা করে। আজ কুধার প্রতীকার করিলেও কাল আবার क्षा दहेरत, हैंहा छाविया एक रकाशाय छेनामीन शांक ! থাইতে চায়না ? অতএব দৈনন্দিন কুধান্থলে বেমন সেই সামষিক ক্লিবৃত্তি পুরুষার্থ বলিয়া গণ্য, সেইক্লপ লৌকিক উপায় ও তৎসাধ্য দামগ্লিক ছংখনিবৃত্তি উভয়ই পুক্লবাৰ্ণ বলিয়া গণ্য।

সকল হানে ও স্কল সময়ে ছঃখনিবারক লৌকিক উপার থাকে না, থাকিবার সন্তাবনাও নাই; থাকিলেও তদারী ছঃথের আত্যন্তিক নিবৃত্তি হয় না। সেইজক্ত শাক্তবক্ত বাক্তিরা ছঃথনিবারক দোঁকিক উপার ওলিকে হের ও ভুক্ত্তান করিয়া থাকেন। স্ত্রী, অর্পান ও ভোলনাদি দৃষ্ট উপার পরিত্যাগ ও শাস্ত্রীর উপার অবলম্বন করেন।
লোকিক উপারে যে হংশ নির্ত্তি হর, তাহার তারতম্য বা
ভংকর্ষাপকর্ষ আছে, কিন্তু হংশনিবৃত্তিরূপ মৃক্তিতে তাহা
নাই। এই জন্ম মৃক্তিই সংক্ষাংরুষ্ট। ইহার তাংপর্যা
এই যে, মৃক্তির উৎকর্ষতা জানিয়া অভিজ্ঞ প্রুব ক্ষাক
ছ:খনিবৃত্তি ও তৎসাধক লোকিক উপকরণ তৃত্ত জ্ঞান
করেন এবং মৃমুক্ হইরা শাস্ত্রপথ অবলম্বন করেন। ধনাদি
দৃষ্ট উপার এবং বৈদিক ক্রিয়াকলাপ উভয়ই তৃল্য। ধনভোগ যেমন নশ্বর, পুণ্যভোগও তজ্ঞান শ্বর, স্তরাং শাস্ত্রীর
ভিপারের মধ্যে ক্রিয়াক্ষ উপারগুলি আতান্তিক হংখনিবৃত্তির
তারণ নহে। শাস্ত্র মোক্ষ উপদেশ্য করিয়াছেন সভ্য, কিন্তু
ভির্বের অনেকগুলি প্রশ্ন ও অনেক বিচার্যা আছে।

কেহ কেহ বলেন, এই হঃথ ভোগ করে ধ্রুণ থাকা না অন্ত কেহ। ফিল্ক আন্থা কোনরূপ ধর্মে নিপ্ত নহেন, তিনি ত্রিগুণাতীত, প্রকৃতির মায়ার মোহিত ইইয়া প্রতিবিম্বরূপে স্থতঃথাদি ভোগ করেন। 'ফ্রীবান্থা দেখ। ]

জীবের সাক্ষাৎ সম্বন্ধেই হউক আর পরম্পরা সম্বন্ধেই **চটক, একবার স্থামূভব হইলেই সময়াস্তরে ভাছা মনে হই∙ৃ** বেই হইবে। স্থাভিজ্ঞ মহয় যে পুন: পুন: স্থভোগের টক্টা করে, ভোগ কামনা করে, স্থপাধন দ্রব্যে সমাসক গঃ, ভাহাদের সেই ইচ্ছা সেই কামনাবা তাদৃশ আসক্তির নাম রাগ। এইরূপ **স্থেচ্ছার ভায় হঃথের প্রতি অনুশ**য় না অমুবৃত্তি হইয়া থাকে। "হু:খামুশমী বেষ:" ( পাত॰ ২া৮ )। পূর্মানুভূত তুঃথ মনে হইবামাত্রই তুঃখঞাদ বস্তুর ঞাতি বিত্ঞা, অনিচ্ছা বা অনভিলাষ জনো। তাহার প্রতিঘাত চেষ্টাও ^{হয}। সেই প্রতিঘাত চেষ্টা বা অনিচ্ছা বিশেষকে দ্বেষ শব্দে অভিহিত করা যায়। যে বস্ততে একবার 'ছংপ হইয়াছে, পে বস্তুর প্রতি হেষ জনিবেই জনিবে। এইরূপ দেষ জনিলে, ^{যাহাতে} আর ভা**হা না হয়, তাহার চেটা হয় অ**র্থাৎ ষবখই তাহার প্রতিঘাত চেষ্টা জন্মিবে। ক্রোধ, হিংসা, ৭ বিপ্রলিপা অর্থাৎ প্রভারণা করিবার ইচ্ছা এ সুমস্তই ংবের রূপান্তর মাত্র। যাহাতে আমার ছঃথ না হয়, প্রতি-নিরত এই চেষ্টা আছে এবং হৃংথের প্রতি বেষও আছে, তপাচ জংগ পরিহার কবিতে কেহ সম্পৃহয় না। জীব সকল বার ^{বার} মরণছ:থভোগ করিয়া জীবের চিত্তে তত্তাবঔের সংস্কার বাংবাদনা সঞ্চিত বা বৃদ্ধমূল হইয়া আসিতেছে, এই সকল বাসনার নাম অরস, এই আরেভের-বারা জ্ঞানী অজ্ঞানী সম্-^{मत्र} बीरवत्रहे हिरल्ड (महेश्रकात्र छीत व्यर्थार व्यवकात्ररण ^{মরণ} ছংবের ছায়া বা স্থৃতি নামক স্ক্লাকারা বৃত্তি আক্ষ্

चाहि. तर्न्ह चाजा वृद्धित नाम चिक्रित्यन। এक रात्र इःशास्त्रक रहेरन त्महे त्महे इःश्वाम तस्त्रत क्षांक विद्वास वदः जारा चात्र ना रुष्ठ, जल्लीक त्रहो वा हेक्शित्मिय स्वत्य। त्महे हेक्शित्मियत्म व्यक्तित्वम वना याहेर् जलात्तः

ছাংধের চ্ডান্ত সীমা মরণ। মরণই ছাংথের পরাকাঠা বা চরম সীমা। সেইকক্তই কীবের মরণভদ্ধ অব্যান্ত অধিক এবং তাহাদের চিত্তে 'আমি যেন না মরি,' এইরপ একটা হল্ম বৃত্তি অক্সান্ত বৃত্তি-সমূহের মূলে নিগৃঢ় ভাবে নিহিত বা সুকায়িত আছে।

প্রাণিমাত্রেই শরীরের উপর —ইন্সিরের উপর 'অহং' এইরপ সম্পর্ক পাতাইয়া আছে। সেই জন্মই প্রাণিগণ সম্পর্ক
পাতান দেহ ও ইন্সিয় হইতে বিজিল্ল হইতে চাহে না। ধনা দি
নাশের ইচ্ছাও করে না, সর্মদাই মনে করে এবং প্রার্থনা
করে, আমার যেন মরণত্বংথ এবং ধনাদি নাশ না হয়।
বিশেষতঃ মরণত্বংথ অমুবৃত্তি অর্থাৎ 'আমি যেন না মরি'
এইরূপ প্রার্থনাটী জীবের অন্তঃকরণে সর্কাদাই জাগরুক
আছে। কি জ্ঞানী, কি মূর্থ, কি ইতর প্রাণী, সকলেরই উক্ত
রূপ মরণআস আছে এবং সকল প্রাণীই এইরূপ প্রার্থনা
করে। জীবের এইরূপ সংস্কার থাকাতে আশেষ বিধ ত্বংথভোগী হয়, কোনরূপ চুক্তর কার্য্য করিতে সমর্থ হয় না। '
সর্কাদাই যেন, কিনে না মরি, কিনে ভাল থাকিব, ইত্যাকার
চিন্তার বাতিব্যক্ত থাকে। মহর্ষি পত্তপ্রনি ও অন্তান্ত অ্ববিগ
জীবের এই মরণআস -দেখিয়া প্র্রেলম সম্বন অর্থাৎ পূর্ব্য
জন্যের অমুমান করিয়াছেন।

পূর্ব্বে প্রতিপন্ন করা হইরাছে যে, ত্রথ একবার অন্থভ্ত হইলে পুনর্বার তাহাতে ইচ্ছার উদ্রেক হয় এবং ত্রংথ অক্সভ্ত হইলে তৎপ্রতি বিষেষ জন্মে। জীবের যথন মরণের প্রতি অত বিষেষ, তথন নিঃসংশয়িতরপে অক্সমান হইতেছে বে মরণে অবশ্রুই কোন কঠোরতর যয়পা আছে এবং জীব সেই কঠোরতর ত্রংথ অবশ্রুই কোন না কোন সময়ে ভোগ করি না ভোগ করিত, তাহা হইলে জীবের মরণের প্রতি অত বিষেষ হইত না। মরণের প্রতি বিষেষ কেবল মন্থল্যের নহে, কুমি কীটাদিরও আছে, সদ্যোজাত লিভরও আছে। মহুল্য যথন একবার বই তুইবার মরে না, তথন মরিতে এত ভঙ্গ কেন? ইহাতে অবশ্রুই প্রতিপন্ন হইতেছে, মরণে একটা অনির্কাহনীর ত্রংথ আছে, জীব তাহা ভোগ করিয়াছে, বর্ত্ত-মান দেহে তাহারই অক্সরুত্তি হইতেছে, গৈই অক্সবর্ত্তন বাসনার সংখ্যার ফ্রোতে আদিয়া পড়িতেছে, নিগ্রুতম বাসনার

त्याट वहमान हरेएउ हैं विनन्नारे की व ठारी लाहे वृक्षिए পারিভেছে না ; অর্থাৎ আমি অনস্কবার মরিয়াছি এবং অনস্ক-বার মরণ হংশ ভোগ করিয়াছি, ইহা স্পষ্টকুপে বৃথিতে পারে ना। धे कान यनि हे किय बाता उर्शन हरेल, जाहा हहेल উহা অবশ্ৰই বৃঝিতে পারিত। কিন্ত ইহা ইন্দ্রিয় ধারা উৎপদ্মহয় না। কেবলমাত্র অন্তেনিহিত গুঢ়তম সংস্থারের প্রভাবেই উৎপন্ন হয়। 'শ্রুতরাং তাহার কারণ অজ্ঞাত থাকা-তেই জীব স্পষ্টরূপে বুঝিতে পারে না, যে আমি একবার মরিয়াছিলাম এবং ভজ্জনিত অনির্বাচ্য কঠোরতম হংথ ভোগ করিয়াছিলাম। এইলগুই জীবের মরিতে এত অনিচছা। यिन मृत्रवह नकन्यकात कः त्थत अधान हम, जाहा इहेरन ুকিরূপে এই ছ:৭ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করা যায় এবং ইহার कातगई वा कि ? मःमात्रिक व्यवत्वाकन कतित्व त्वथा यात्र, জীব সকল জন্মপরিগ্রহ করিয়া কত ছঃথ ভোগ করিয়া আবার মৃত্যমুথে পতিত ুহইতেছে, অতিশয় গতিতে এক-বার মরিতেছে, আবার জনাইতেছে, ছঃথ ভিন্ন কথাটা নাই, সাংসারিক যে হুব, তাহাও হুংখ মাধা, এইক্স সেই হুংধ-মিশ্রিত মুখকে ছঃথ বলিয়াই জানিতে হইবে এবং সাংখ্য-দর্বিজ্ঞানভিক্লিধিয়াছেন, 'ততু ছঃথপকে নিঃকেপ-ণীয়:'। অর্থাৎ তাহাও ছ:খ মধ্যে গণনীয়। সমগ্রদর্শন শাস্তে किरम जःश्निवृद्धि हम्न, हेहात्र छवात्वम् कतिमाहिन, हेहार्छ কেহ কেহ বলিয়াছেন প্রকৃতি ও পুরুষের সংযোগই ছঃথের প্রতিকারণ। কেহবলিয়াছেন, স্মবিদ্যা থা মায়া বশত:ই তু:থভোগ হইয়া থাকে। যাহা হউক এই সকলে সামাক্ত মত-ভেদ থাকিলেও মূল দকলের এক, কীহারও ুমতে প্রকৃতিও পুক্ষের সমাক্ জ্ঞান হইলে ছঃথনিবৃত্তি হয় বিকহ বলেন, অজ্ঞানোপহিত চৈতভের মায়ারূপ উপাধি তিরোহিত হইলে তু: থ দূব হয় ৷ এইরূপ তু: থ নষ্ট হওয়াকে মৃক্তি বা মোক কছে [মুক্তি ও মোক দে**গ** ৷ ] ছঃথের কারণ কি, এই বিষয় একটু বিশুদ করিয়া বলা যাইতেছে, আমরা যে দকল কার্য্য করি তাহার একটা মংসার আত্মাতৈ দৃঢ়রূপে অকিত হয়, পরে দেই দেই সংস্থারাফুরূপ স্থ ড:থ ভোগ হইয়া থাকে। অভএব সুথ ও জঃথের মূল কর্মাশর বলিতে হইবে, ইহাতে ভগবান্ খতঞ্জলি বলিয়াছেন, "ক্লেশমূল: কর্মাশয়: দৃষ্টাদৃষ্ট-জনবেদনীয়:" (পাত দ ২।১২) কেশম্লক কর্মাশয় ত্টপ্রকার, এক দৃষ্টজন্মবেদনীয়, অপর অবদৃষ্টজন্মবেদনীয় অর্থাৎ বর্ত্তমান শরীর ধারা ক্লক ও জন্মান্তরীয় শরীর ধারা ফুড। চিরকাল ব⁹সিয়া ভাল মন্দ কর্ম কর, আর ভা**হার ফল**-ভোগ কর, জীব সকল ক্লেশের বাধ্য হইম্বাই ভাল মন্দ কার্য্য

করে এবং সেই সকল কার্যা আবার ভারাদের নৃতন ক্লে_{শ্ব} বা কর্ম্মূলের সৃষ্টি করে। • ক্তকর্মের অস্ভব দারা যে চিক্ ক্ষেত্রত্ব হব, হ:ধ প্রভৃতির ক্তিপুরণ হয়, বা নৃতন রাগ বেষাদিরপ কর্মবীজ উৎপন্ন করে, ইহাকেই ষোগীরা কর্মা শর, যাজ্জিকেরা অদৃষ্ট, অস্ক্র, পাপ, পুণাকা ধর্মাধর্ম ক_{হিয়} •পাকেন। কেহবা তাছাকে সংস্কারও ক**হে**, এই •সংস্কার यक मिन शांकिरन, उडिमन इःथ अनिनाया। aह সংস্কার থাকিলেই ভাহার ফুল অরূপ জাতি, জ্বন্ম, মর্ণ জীবন ও ভোগ হইবেই হইবে। উক্ত কর্মাশয় ক্রিয় (याशांनित्र बात्रा कीर्ग, नीर्ग वा नग्रकत्र ना रंग, जाहा इहें। তাহাকে বাধ্য হইয়া অব্ঞাই বিবিধ ভাল মন্দ কার্য্য করিছে হইবে এবং সেই সেই শ্বকৃত কর্মের ভালমন ফলও ভো করিতে ভ্রবে। বার বার জন্ম, বারবার মরণ ও বার বার হুর, নর ও তিথ্যকু যোনিতে পতন, ঝার বার অরকাল 🤉 বহুকাল জীবন ধারণ এবং পুনঃ পুনঃ স্থুপ ছংখাদি ভোগ করিতে হইবেই হইবে। যে সঞ্জ স্থল স্থপ উলিথিত হ**ই**য়াছে ভাহা দাংদারিক ছ:থমিশ্রিত স্থপ, অর্থাৎ ছ:থ নামক হুখ কারণ যোগিগণ বিষয় মাত্রকেই তৃঃথ বলিয়া বলিয়াছেন ৷ "পরিণামভাপসংস্কারছ:বৈশুণবৃত্তিবিরোধাচচ সর্কমেব ছঃৰ विद्विकनः" ( পाउ॰ २।১৫ )।

পরিণামে তুঃথ অর্থাৎ ভোগকালে তুঃথ এবং পশ্চাং ব সরণকালেও তুঃথ হয় দেখিয়া এবং স্বাদিগুণ পরস্পারবে অভিভূত করে দেখিয়া যোগিগণ সমস্ত বস্তুকেই তুঃথ বনিয় গণ্য করেন। কিন্তু অভিজ্ঞ, অযোগী ও অবিবেকী বাজিরাই মোহে মুগ্র ও ভ্রমান্ধ হইয়া ইহাতে স্থপু হয় ও ইহাতে রথা হয় এইয়প নিণয় করে। যে জানে না, সেই গিয় স্থাছ বলিয়া বিষায় ভক্ষণ করে; কিন্তু যে জানে, সে ভাইভক্ষণ করিবে না। যে জানে না সেই গিয়া তুঃথমাথা স্থাতিগা কর্মক, যে জানে সে ভাহা ভোগ করিতে চাহিবে না চক্ষ্ যেমন স্থলতম ও কোমলতম লৃতাভন্তর (মাকড্সাই স্থার) স্পর্শ তুঃসহ বোধ করে; সেইয়প যোগীয়া কিংবা বিবেকীয়া তুঃবাস্থিক ভোগকে তুঃসহ বিবেচনা করেন। প্রত্যেব দৃশ্যে বা প্রত্যেক ভোগে পরিণামত্বংধ, ভাপত্বর ও সংস্থাত্ব থাকত তাথিত আছে।

অনভিজ্ঞ মোহাত্ম লোকের। তাহা বুঝিতে পারে না কাজে কাজেই তাহারা তাহাতে মুগ্ধ হর, বাসক হর ও ভোগ করিবার জন্ম ব্যতিবাস্ত হয়। কিন্তু বাহারা বুঝি য়াছে, প্রভাক্ষ করিগাছে, তাহারা কি আন্ত তাহার নিক্ট যায়, কদাচ নহে। মন্ত্রপান হারা উৎপন্ন মনোবিস্থার বেমন মন্ত্ৰণানীর নিকট হংধ বলিরা প্রতীত হর, তজ্ঞপ বিধরেজিরের সংযোগ বারী অর্থাৎ চক্ প্রস্তৃতির সহিত স্তীমূর্ত্তি প্রভৃতির সংবোগাদি বারা উৎপর মনোবিকার অবিবেকীর নিকট হংধ

व्यविदिकी वाहारक ऋथ वरन, विदिकी जाहारक दृःध করেন। বাহা পরিণাম হংখ, তাপুহংখ ও সংস্থার হংখে बाज्ज, याहा तकवन मरनव विकास माज, याहा तकवन मध-ওণের কল্য পরিণাম ভিল আরে কিছুই নহে, তাহাত স্বৰ নহে, সুঞ্চ নামক হংধ। ভোগে বে, সুথ নাই, প্রত্যেক ভোগের সঙ্গে সকে যে পরিণাম হংখ, তাপহংখ ও সংস্কার হংখ ভোগ করিতে হয়, তাহা অত্যক্ষ মুনোনিবেশ করিলেই অফু-ভূত হয়। মনে কুর, এক দিন ভূমি কোন দিব্যালনায় সংযুক্ত হ্ইলে, তৎকালে ভোমার যে মনোবিকার অন্মির, তা**হাকে** তুমি সুথ বলিয়া ভোবিলে; মনোবিকার যতক্ষণ থাকিল, ততকণ্ট সুথ ভাবিলে, কিন্তু তাহার পরকণেট আবার যে দু:ব সেই ছ:ব, সেই কার্য্য করায় তোমার যে আয়ুক্ষ হইল, ওজ্ঞ অভ আর এক প্রকার পৃথক্ হঃখও হইল, আরও দেখ তোমার সেই মনোবিকার বা স্থ্ডী স্থায়ী হইল না, শীঘ শীঘ্ট নষ্ট হইয়া গেল,। সুথ থাকিল না, নষ্ট হইল, ইহা ভাবিয়াও আবার তোমার ছংথ হইল। তুমি যে সেই षप्रिक मत्निविकात्रदक व्यक्ताकारणत अन्य प्रयं मत्न कतिया-ছিলে, তৎপ্রভাবে পর দিন আবার তুমি তাহাই পাইবার ৰভ লালায়িত, হইলে। স্থের জভ লালায়িত হইলে যে কত ক্লেশ, কত হুঃখ, কত আদাস ও কত পাপ ক্রিতে হয়, ভাহাও মীনে করিয়া দেখ। দেই স্থ নামক মনো-বিকার বা ভোগটী দীর্ঘ করিবার নিমিত্ত তুমি ইচ্ছুক হও কিনা । অবিশ্বাই হও। কোন গতিকে যদি তোমার সেই ইচ্ছার পূরণনা হয়, অর্থাৎ তাহার ইচ্ছাত্ররণ উপকরণনা পাও, অথবা ভোগের সকোচ, কি তাহার অল্পতা ঘটে, তাহা ংইলে ভোমার যে কত ছঃখ, তাহা শতমুখ নাঁহইলে এক मूर्ष वना यात्र ना।

মনে কর, বেন ভোমার ভোগের সজোচ বা অঁরতা ঘটিল না, বৃদ্ধিই হইল। কিন্তু ঘেমন ভোগ বাড়িল, অমনি তংসকে রোগের জন্ম লাল। "ভোগে রোগভন্নং" ভোগের সকে রোগের ভন্ন আছেই আছে। অভান্ত ভোগ করিলে রোণ হইবেই হইবে। স্বভরাং ভাহাতেও হংখ। অভএব এখন সিদ্ধান্ত ইইল বে, প্রভোক ভোগের পরিণাম বে হংখমর ভাহা বলা বাছ্লা, একটু মনোনিবেশ করিলেই চোগের পরিণাম হংখ প্রভাক ইবে।, এমন কি বর্জমানে

অৰ্থাৎ ভোগকালেৰ ভূমি শত শঁত ছংখে বা শত শত পরি-তাপে আক্ৰান্ত বা অভিত হইতেছ। পাছে ইহা নট হন, किरत हेहा इस्त्री इस्टेरन, किरत हेहा वाफिरन, किरत हेरात ব্যাঘাত না হয়, ইত্যাদি বহু প্রকার চিন্তানল বা তাপজনক চিম্বাউপস্থিত হইয়া তোমাকে পরিতেথে করিতেছে। এত-ত্তিল উহার আফ্রজিক বিবিধু পাপমূর মনোবৃত্তি অর্থাৎ রাগ, বেষ, ক্রোধ প্রভৃতি উদিত হইরা তোমার অস্তরে বিবিধ ভবিয়াদু:থের বীজ সঞ্চার করিতেছে। অবতএব ছব-ভোগের সঙ্গে সংক্ষেই যে বিবিধ তাপ বা হঃখডোগ করিতে হয়, ইহা হির সিকাস্ত জানিতে হইবে। এ সম্বন্ধে আরও এক কথা আছে, স্থভোগ করিবামাত্র চিত্তে ভাহার পংস্কার আবদ্ধ হয়, সেই সংস্থার তোমাকে পুনর্কার সেই ভোগের দিকে টানিয়া লইয়া যায়। সৈই জভাই ভূমি পুন: পুন: পূর্বাফুভূত স্থের তুল্য স্থে ভোগ করিবার ইচ্ছা কর, যতক্ষণ তাহা না পাও, ততক্ষণ ব্যাকুল থাকু। অতএব সংখডোগের সংস্কারও ছ:ধজনক। ভোগ কি ? বিবেচনা করিয়া দেখিলে জানা বায় যে ভোগ আর কিছুই না, কেবল এক প্রকার মানস্বিকার মাত্র। প্রতরাং ক্ষণপরিণামী স্ব, রজঃ ও তমোগুণের কণিক পরিণাম রূপ ক্ষণভঙ্গুর ভোগ মাত্রেই হু:খ। এই সকল কারণে অর্থাৎ প্রভ্যেক ভোগেই পরিণাম, তাপ ও সংস্কার এই ত্রিবিধ ছ:থ গ্রথিত থাকায় এবং পরস্পর বিরোধী গুণপরিণাম বর্ত্তমান থাকার যোগীর निक्रे ও विय्कीत निक्रे प्रमक्षे इःथ विषय गेगा। কখন তাঁহার। উহাকে সুথ বলিয়া ভাবিতে পারেন না। जाहा इहेरल कि ऋथ नाहे, मत्नाविकात नहे हहेरलहे ऋथ, क्षेत्रात ७ काश्वि उत्त हित हहेत हरेता स्थ, मत्नामग्र हहेता আরও কথ। সে কথ দৃখ্যভোগে নাই বলিয়াই যোগীর। मृश्च मृभूमाय्यक ष्रःथमत्या नित्कल करतन। ै हे**राहे नकरन**त উদেশ, ইহার জন্ম দকলেই ব্যতিব্যস্ত, হয়, কিন্তু প্রস্কৃতমার্গ অব্লম্বন করিতে না পারিয়া রাশি রাশি ছঃখ নিরুক্রণ জঞ্চ 🤊 cbही वृशा, त्कनना, क्:रेथत यथन खेरश्रखि हत्र, खथन क्:रबत প্রথম ক্ষণে উৎপত্তি, বিতীয়ক্ষণে স্থিতি ও তৃতীয়ক্ষণে হঃধ আপনিই বিনষ্ট হইয়া যায়। জ:ধ যধন আপনা হইতেই বিনষ্ট হইরা যাইবে, তপন ছঃখনিশের অস্ত চেষ্টা করা নিতা-য়োজন। অভীত হঃধ ভো বিনষ্ট হইয়া গিয়াছে, ভাহার জন্মও সাধনের আবিশ্যক নাই, এই জন্ম শাল্লে জাতীত ও বর্ত্তমান হংশ প্রতীকার না করিয়া অনাগত হংপের প্রতীকার করিবার ব্যবস্থা আছে।

"(হরং ছঃখমলাগভং।" (পাতঃ ২।১৬) অনাগত

অর্থাং ভবিশ্ব ছংগই হেয়, বাহাতে আর ভবিষাতে ছংগ না
হয়, তাহা করাই কর্জন। অভিপ্রায় এই বে, প্রায়ন
ভোগ অর্থাং ঘাহার ভোগ আরপ্ত হইরাছে, সে ছংগ বিনা
ভোগে নির্ত হয় না। কোনরূপ বোগ বা য়য় বারা
ভাহাকে নই করা যাম না। স্ভরাং বোগীর প্রতি উপদেশ
এই বে বোগী অনাগত অর্থাং ভবিশ্বছংপের নিবারণ চেটা
করিবেন। যোগ বারা ছংপের বীশ দথ্য করিয়া বিলেই
ভাহা স্থাম ইবে। ছংগবীশ অজ্ঞান নই হইরা গেলে
কোণা হইতে ছংগাস্কর হইবে । জাইা আত্মা ও দৃশ্ব অর্থাং
অন্তঃকরণ, এই ছএর সংযোগ থাকাই ছংপের কারণ।

 অভিপ্ৰায় এই যে হৃৎ ছঃধ ও মোহ এ সমন্তই বৃদ্ধি ু জব্যের বিকার। বৃদ্ধিজব্য'বা অন্তঃকরণ ইন্তিরে সম্বন্ধারা বিষয়াকারে ও স্থ ছ:ধাদি আকারে পরিণত হইবামাত্র তাহা চিৎশক্তিদারা প্রজ্ঞানিত হয়। তাদৃশ প্রদীপ্রতাকে শাক্সকারের৷ চিৎশক্তির প্রতিসংক্রম বাচিচ্ছারাপতি বলিয়া थाटकन। (लाक-वावहादत्र छाहा, 'मर्गन' वा '(मथा', জ্ঞান বা বুঝা; হুতরাং পরিণাম হুভাব বুদ্ধি স্ব বা অস্তঃকরণ পদার্থটী দৃত্য এবং তৎসলিধিত্ব অপরিণামী • চিৎ্শক্তি তাহার ডটা। সেই দৃখ্য আর ডটা---এই ছয়ের যে ক্থিত প্ৰকারের সংযোগ আছে অর্থাৎ একীভাব হইয়া আছে, তাহাই সংসারীঝীবের উলিধিত হঃখসমূহের মূল অধাৎ বৃদ্ধির উপর পুরুষের বা আয়োর অভেদ আতি ৰা আত্মদল্পক কলিত হইতেছে বলিয়াই পুৰুষ অৰ্থহঃথাদি বিকীরে বিকৃতপ্রায় হইতেছেন। স্থতরাং বুদ্ধির সহিত তাদৃশ মিথ্যা সলক ঘটনা থাকাতেই পুরুষের ক্লেশময় ভোগ উপচারক্রমে উৎপন্ন হইতেছে।

্তদিন পর্যন্ত প্রকৃতিপুরুষের তবজান এবং জ্বজানোপহিত চৈতত্তের মারোপাধি দ্র না হইবে, ততদিন কিছুতেই
তংধনিবৃত্তি হইবেন না। পূর্বে উক্ত হইরাছে, বৈদিক
ক্রিয়াকুলাপ দারা তংপ নিবৃত্তি হয় না, ইহার তাৎপর্য্য
এই ধে, ইহাতে আভ্যন্তিক তংপনিবৃত্তি হয় না; তাহা বলিয়া
বৈদিক ক্রিয়াকলাপ পরিত্যজ্ঞা নহে, ইহা দারা চিত্তভি
হয়, চিত্তভিদ্ধি, হইলে সমাক্ জ্ঞানের উদয় হয়, তথন তংশনিবৃত্তি হয়, এইরপ ধরিলে বৈদিক ক্রিয়াকলাপও তংশনিবৃত্তির কারণ, 'অপাম সোমং জমৃতা অভ্নম' ইত্যাদি শ্রুতিতে
আমরা সোমরস পান করিয়া দেবস্থ লাভ করিব, এইরপ
উক্ত আছে। বৈদিক ক্রিয়াকলাপে ক্রাদি লাভ হয়, সেই
বৃব্দে ত্বপ অনুভব করিয়া আর অত্যন্ত হংপনিবৃত্তির প্রতি বয়
থাকে না, ইহাদের যথন প্রাকীণ হয়, তথন আবার

ব্যাপ্ত করিতে হয়, এই সকল কায়ণে জিয়াক্লাণ নিশি হইয়াছে। তত্তির আর কিছুই নহে: বৈদিক জিয়াক্লাণ একমাত্র চিত্তভঙ্কির উপায়। চিত্তভঙ্কি না হইলে ভ্রা জ্ঞানাদি হইবে না।

মহবোর আশাই ফ্রংথের কারণ, আশা-বতদিন থাকি।
 ততদিন অনস্ত হুঃও ভোগ করিতেই হইবে, বধন আ
কোন অকাশ্র আশা থাকিবে না, তথনই বথার্থতঃ ছুঃ
নির্তি হইবে।

"আশা হি পরমং•ছঃখঃ নৈরাশ্রং পরমং স্থাং। • তথা সঞ্চিত্ত কান্তাশাং স্থাং স্থাপ পিল্লা ॥" (সাংখ্যভা

আশাই পরম হৃ:খ,,নৈরাখ্যই স্থুপ, পি্দুলা বেখা কারা ছেদ ক্রিয়া স্থে নিজিত হইয়াছিল। যথন আমা স্কল প্লাশা তিরোহিত হইবে, আর কোন বিষ প্রয়োজন থাকিবে না, তথনই ছংথনিবৃত্তি হইবে। আশ মোহিনী মারার বিমোহিত হইয়া নিরস্তর ছঃথভোগ বা cofe, दानिन नकन आना भूत स्टेट्न, त्महेनिन आत छ ভোগ করিতে হইবে না, সকল ছঃধ নিবৃত্তি হইয়া বাইলে वज्ञाहभूत्रारं এই अनि इ: थंडत वनिया निर्मिष्ठ हरेग्राह व्यहकाती स्त्रीय त्मारह व्यातृष्ठ हहेग्र व्यामारक (क्रेपंत) ध হয় না, ইহা অপেকা আর তঃথতর কি আছে ? বাহারা সর্বা সর্ব্ববিক্রেতা, নমস্বারবিবর্জিত এবং বাহারা আমাকে এ হয় না, ইহা অপেক্ষা আর ছঃধতর কি আছে ? গৃহে মধা সময়ে অতিথি উপস্থিত হইলে অতিথিদেবা না ৰ যাহারা ওভাজন করেঁ, তাহা অপেক্ষা তাহাদের জার হং^ব कि । (कह वा आममारम छक्तन करत, आवात (कह वृज्ध সেবন করে এবং কেই শুক্ষ মাংস ভক্ষণ করে, কেই ছ (क्लिनिख भेषात्र भवन करत, रुक्ट वा छूनभर्गाव पिन का^{हे} (कह विवान, किह कुछी, किह সর্বশাল্পবিশারদ হয়, और কেহ মৃক ুহয়, ইহা অপেকা আর জঃখতর কি আছে ? *

* "ছু:খমেৰ প্ৰবন্ধামি তাজু সূৰ্ বস্ত্ৰরে।
উচিতে নোপচারেণ ছু:খং মোক্ষবিনাশনং।
অহন্ধারকুতো নিত্যং নরো মোহেন চার্তঃ।
যে মাং নৈব প্রপদ্যন্তে ততো ছু:খত্মফু কিং।
সর্বাণী সর্ববিক্রেতা নমুকারবিবর্জ্জিতঃ।

( বরাহপুরা

গে চ মাং ন প্ৰপদান্তে ততো ছংখতরন্ধ কিং।
প্ৰাপ্তকালে বৈধনেৰে দৃষ্টমতিখিনাগকং।
আদত্বা তন্ত যো ভূঙ্কে তত্ৰ ছংখতনন্ধ কিং।
আৰম্ভি গিশিতং কেচিং খৃতশালিনস্বিতং।
ভানাং কেচিদদ্বিতি ততো ছংখতনন্ধ কিং।

্বরবস্ত্রাবৃতাং শব্যাং সমাসেবভি ভূষিতাঃ। কেচিৎ তৃণেব্ সেবভে ততো দ্বঃধতরর্ কিং।" (বরাংগু)

कु:चं आम् (प्रः) इःचानाः श्राप्ता वखः। नःनाव, नःनावरे । সকলপ্রকার ছংখের কারণ, বা সংসারই ছংখ্ময়। সংসার নিবৃত্তি না হইলে ছঃপ্রনিবৃত্তি হয় না। এই জন্ত সংসারকে ছঃখ্ঞাম বলা বার। ছঃখানাং গ্রাম: ৬তং। ছঃখ সমুদর। তুঃধজাত ( বি ) লাতং ছংখমন্ত পরনিপাতঃ। সংলাও মুখ। (क्री) इःथानाः बाजः ७७९। ईःथ प्रमुताः । তু:খতা ( ত্রী ) হঃখত ভাবঃ হঃখ তল্, ততো টাপ্। হঃবের ভাব, হঃ**থছ** । , দৃ: ধর্ত্ত র ( ক্রী ) হংপানাং অরং। তিবিধ হংব ; আধ্যাত্মিক, আভিভৌতিক ও আধিদৈৰিক হঃধ। "হঃধত্ৰদাভিবাভাুজ্জি-জ্ঞাসা" (তছকৌ ১কা ) [ছ: ধ দেখ।] তুঃথদ (ত্রি) ছংখং দুদাভি দা-ক। ক্লেশকর, ছংখন্সনক। তু:খদগ্ধ ( তি ) হ:খেন দগ্ধ:। পরিতপ্ত, ক্লিষ্ট। जू:श्राप्तक (बि) इ:य-ता-निष्धृत्।. इ:यक्त, इ:यक्तक, याहा हरेटज इ: अ छे ९ भन्न हन । তু: থদির (পুং) ছষ্টঃ থদির:। মহাসার থদিরভেদ। তুঃখদোহ্যা ( জ্বা ) হংবেন হহুতে ইভি হহু ন্যুৎ (ৰহুলোর্গ্যৎ । পা ৩।৪।১২৪ ) करहे रेव भाजीत इद्धाराहन करा यात्र। (य গাভীকে সহচ্চে দোহন করা যায় না, করটা। (হেম) **दृः थिनिवह ( खि** ) इः मह । তুঃখভাগিন্ (তি) ছঃধ-ভজ-ণিনি। ধিনি ছঃধ ভজনা করেন, ছঃখভোগী, যাহার ভাগ্যে ছুঃথ হইয়াছে। তু:খড়োর (পুং) হংবন্ত ভোগং। হংবার্ভব, হংব্যহন। তুংখময় (বিচ) ছংখ স্বরূপে-মর্ট। ১ হংখ স্বরূপ। বঁহংখপূর্ণ। তু:থলভা, ( তি ) হ:বেন লভা:। হ:বসাধা, বাহা হ:ব ৰারা ৰাভ হ্য়; বাহা ছঃথে লাভ করা বায়। তু:খলব্ধিকা ( ত্রী) > হু:থে যাহা পাওরা যায়। ২ রাজীভেদ। प्रःथरलाक ( प्रः) मामात्र, त्य लाटक प्रःथरख्का कविरक् रहा। হু:খভাষিত ( তি ) কটে উচ্চারিত। इःथनील (बि) इःथर नीनंदिक नीन-अन्। इःथाय्रक्तभीनन-क्छा, शाहारमञ्ज क्:थरखाश कवा चछाव, चर्चाए त्व नर्समाह হঃধ অমুভব করেন 🕈 ছংখদাগর (পুং) ছংখানাং দাপর। ছংখের সমুদ্ধ, অভিশয় ५:अमरम्भ ( वि ) इ:सम्मर्भ ।

ইংখনঞার ( পুং ) ১ কটে বাপন। ১ কটভোগ।

इ:अल्लेब ( कि ) इ:बरकात्र ।

क्रांशीक्त्र ( प्रः ) इःयक काक्तः । ३ इःरथत थनि, नश्नातं । (बि) २ इ:अड्डाइक्। क्रुश्चित्र (वि) > इःवकाव। २ इःमानन। ष्ट्रं शास्त्र ( पूर ) इःवज्ञ जनाः। इःवत जनगान । ছু:খান্ত্ৰিত (তি) হ:খেন অবিড:। হ:খব্ক । তুঃখার্দ্ত ( ত্রি ) হংখেন খার্ক: পীড়িতঃ । ছংখপীড়িত, খিনি ছঃবে কাতর হইরাছেন। ফু:খিত (ত্রি) হঃৰ সঞ্জাতমক্ত, হঃৰ ভারকানিছাদিভচ্। সঞ্জাত হঃৰ, যাহার ছঃৰ হইরাছে । "হঃথিত। যত্ত দৃভোৱন্ বিক্লতাঃ পাপকারিণঃ।" (ুমসু) সু:ঝিন্ ( অি ) হ:থমভান্তীতি ইনি । হ:থাৰিত। "হংখিনে। ২হংখিনো বাপি প্রাণিনো লব্দচকুৰ: । আত্মবৎ পরিপশুস্তি তে যান্তি পরমাং গতিং ॥" (অগ্নিপু•) তুঃপ্রাপ্য ( ত্রি ) হংবেন প্রাপ্যতে আপ-শ্যং। হংবদভ্য, याहा इः एवं शाख्या यात्र । তুঃশ্কুন (রী) ছটা শক্না। অভতস্চক নিমিত্ত ভেদ। কোন ছলে যাত্রাকালে অভ্তক্তক নিমিত দর্শন করিলে বে কাৰ্য্যে ৰাজা করা যায়, ভাৰা সফল হয় না। वक्षा, हर्ष, जूष, व्यन्थि, मर्थ, गवंग, व्यक्तांत, हेंकन, क्रीव, . विष्ट्रे, टेडन, डेमाड, वना, खेर्य, नक, कंटिन, धावृहेड्न, ব্যাধিত, নগ্ন, তৈলাভাল, বিকলাল, কুধার্ত, রক্ত, জীপুপা, শরঠ, অগৃহদাহ, মার্জারবৃদ্ধ, কৃত ( হাচি ), কাষায় বস্ত্রধারী, ৩৪ড়, তক্ৰ, প**হ্ব, বিধবা, কুজ, কুটুব, ৰল্লাদ্ৱি খ**ৰ্মন, कुक्षशंख्य, कार्त्राप्त, वमन, मिक्निमिटक शर्फखत्रव, शिखनी, মুণ্ডিতম্প্তক, আর্দ্র বঙ্কপরিধায়ী, ছুর্বচ, অন্ধ, বধির ७ উपकी এই नकन इःमक्न व्यर्थां देशपिशाक पिथिया राँजा कतिरन व्यमनन रहा। क्रुक्तवज्ञ शतिशानी, क्रुक्तवर्ग विलागान विভृषिडा ও इक्षावर्ग मान मखरक शांत्रण कतित्रा-हिन बहेजन कुक्तवर्ग नात्री मृहे हहेरन अल्ड हहेना शास्त्र 👡 ( শন্ধাৰ্থচিন্তামণিখত বাকা ) "অন্ত জন্মান্তরকৃতং কর্ম পুংসাং শুভাশুভং। যত্তত শকুনঃ পাকং নিবেদয়তি গচ্ছতাং ॥" (বৃহসং ৮৬ খঃ) প্রন্কালে পক্ষী প্রভৃতি হারা পুরুষ্গণের , স্বান্তর কুত ভভাভভ কর্ম প্রকাশ পায়, ইহার নামই শাকুন, বে ফলে অণ্ডভ প্রিত হয়, তাহাকেই ছ:শকুন কতে। (র্হৎ-সংহিতা ৮৬-৯ • আ: ) [বিশেষ বিবরণ শাকুন দেখ।] তুঃশলা (জী) রাজা ধৃতরাষ্ট্রের একমাত্র কলা, গান্ধারীর

গর্ভে এই কলা লয়ে। সিদ্বাদ করন্তবের সহিত ইহার

ছঃখহুরা ( স্ত্রী ) ছঃখং হরতি জ্বান্ট্রাপ্। ছঃখনাশিনী ছুর্গা। ।, বিবাহ হর। বধন কুক্দেঅসমরে করলপ নিহত হন, তথন

পুর্ব্বোক্ত হংলগ সকল পদেখিলে তাহার শ্রান্তি করা উচিত। ইহার শান্তির বিষয় ত্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণে এইরূপ লিখিত আছে। '

রক্তচন্দন কাঠ স্থতাক্ত করিরা হোম এবং সুর্বর গায়তী অপ করিবে, ভাহাতে ছুঃস্থা জন্ত ফল হইবে না এবং সহত্র মধুস্দন নাম অপ করিলেও ছঃস্থা স্থাস্থা হইবে। প্রীক্ষের নামাইক প্রমুধ হুইয়া ভিক্তিপ্র্কক পাঠ করিলেও ছঃস্থা স্থাপর পরিণত হয়।

"রক্তচন্দনকাঠানি মৃতাক্তানি চ বো ক্ষেৎ।
গায়ত্রা চ সহস্রেণ তেন শান্তিবিধীরতে ॥
সহস্রধা লগেৎ বোহি ভঞ্চা মাং মধুস্দনং।
নিস্পাণো হি ভবেৎ সোহপি ছংম্বগো স্ক্রগোভবেৎ॥
অচ্যুতং কেশবং বিষুং হরিং সূত্যং লনার্দনং।
হংসং নারারণকৈব এতরামাইকং শুভং॥
শুচিঃ পূর্বমুধঃ প্রাক্তঃ দশক্তকেচ যোলপেৎ।
নিস্পাণো হি ভবেৎ সোহিধি হংম্বগোস্থপগোভবেৎ॥
*

(ব্ৰহ্মইববর্গ্ডপু॰)

সুকুল (রী) ছ-উলচ্কুক্চ। ছই: কুলভি ক্ল আবরণে ক পুষো বাসাধু। ১ কৌমবস্ত্র, পট্টবস্ত্র। ২ শ্লফ্ বস্ত্র। ৩ ক্লবস্ত্র। "গোপবধ্টী ছকুলচৌরায়।" (ভাষাপ ১)

তুকুল, (খ্রাম)-জাতক বর্ণিত একজন বৌদ্ধ ধবি। ইনি গোত্ম বা শামের পিতা। শামন্ধাতকে, লিখিত আছে---শামের জ্বনের পর তৃক্ল এবং তাঁহার পত্নী প্রিকা একদিন ফলমূলাহরণে অরণ্যে গমন করেন এবং তথায় দৈবছর্কি-পাকে উভয়েই অফ হন। শাম খুঁজিয়া বাহির করিয়া তাঁহাদিগকে আশ্রমে লইয়া আইসেন এবং স্কুনন্তকর্মা ও একাগ্রচিত্তে অন্ধ পিভামাতার সেবায় রভ হন। একদিন সন্ধ্যায় ডিনি নদীতে जनानत्रत्न शमन कतिरण खमजारम জনৈক মৃগয়ারত নৃপতি তাঁহাকে শরাঘাত করেন। শাম রাজাকে অসহায় পিতামাতার ভাবী হঃধ বলিতে বলিতে প্রাণতাাগ করেন। রাজা অল্প ঋষিদুম্পতির নিকট গমন। क्तिशा यथीयथ সমन्छ विषय वर्गना कतिरण नकरण मान्नण শোকসম্বর্গতিতে মুভ শামের নিকট আগমন কুরিলেন। পরিকা এই বলিয়া ,'সভ্য ক্রিয়া' সমাপন করিলেন, 'যদি আ্বার পুর যথার্থ ব্লচ্চ্য ব্রতপালন করিয়া থাকে, যদি সে 'অখশিলা' ক্রিয়াকলাপ অভস্তিভভাবে সমাপন করিয়া থাকে এবং যদি আমার একমাত্র বুদ্ধদেবেই মতি থাকে ও কথন 'তিলকুনভবন' ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া थाकि, उरव रमहे भूगाकरन आमात भूज भूमश्रीविक इंडेक।'

ছক্লও এইরপে নতা ক্রিয়া করিলে শাম পুন্রীবিত্ত হইলেন। একজন দেবী ঐ কালে আবিত্তি হইরা আর দম্পতিকে চক্ষান করিল। রাজা বিমিত হইরা গৃহে প্রত্যাগমন করিলেন।

এই উপস্থাসটী রামারণবর্ণিত দশরথ কর্জুক অব্বক্তমূনির প্র সিন্ধবধের অফুকরুণ। রামায়ণের সিন্ধ বাণাছাতে গভাস্থ হইরাছিলেন এবং প্রশোকে অন্ধকমূনি প্রাণড্যাপ করিয়াছিলেন। জ্বাতকে শাম আবার বাঁচিয়া উঠিলেন।

জুপড়, থানা নগরের ২০ মাইল, উপ্তরস্থ একটা সহর । ১৭৮০ প্রতিকে জেনারেল হাট্লে হগড়ের মূলে মহারাজীয়দিয়কে প্রাজিত করেন।

তুপড়িয়া, মধ্যভারতের ভূপলিরাজ্যের বন্দোৰ্ভকালে পিঙারী মন্দার চীতুর লাতা রাজা খাঁ তাঁহার জীবদ্দার ভোগ করি-বার জন্ত প্রজাবদপুরের কিরদংশ জায়ণীর পান। ১৮২৫ খুষ্টাব্দের কথামত মুখাবার মৃত্যুর পর বৃটীশ গবর্মেণ্ট তাঁহার পাঁচপুত্রের মধ্যে সমুদ্দ সম্পত্তি ভাগ করিয়া দেন। ছগ ভিরারাজাখাঁর ভ্তীরপুত্রের অংশে পড়িব।

তুপারি, রাঅপ্তানার অন্তর্গত বৃন্দীরাজ্যের একটী সহর। এই সহরেই বৃন্দীরাজ্যের মধ্যে সর্বাপেক্ষা বৃহৎ মহস্থাত সবো বর আছে। ঐ সরোবরের পরিমাণ প্রায়ত বর্গ মাইল বৃন্দীরাজ্যের জনৈক আত্মীয় এথানকার জায়ণীরদার। এথানে অনেক হিন্দু দেবালয় ও হুইটী জৈন-মন্দির আছে।

তুগুল (ক্লা) ছক্ল প্ৰোদরাদিখাৎ সাধু:। ছক্ল, পটবর। তুগ্ধ (ক্লা) ছহতে আ ছহ কর্মণি জ। জীজাতির স্তননিংক: জব জবাবিশৈষ, হধ; পর্যায়—ক্লার, পীযুব, উবভা স্তভ, পর বালজীন। (ভাবপ্রকাশ)

ন্ত লগায়ী জীবগণ জন্মে পর অনেক দিন পর্যাত কেবল ক্ষমাত্র পান করিয়াই জীবন ধারণ করে ও তাহাতে তাহাদের পৃষ্টিদাধন হয়। পরমেশরের অপার কৌশনে সকল প্রাণীর, মাতৃন্তনে শিশুর জীবনধারণোপ্যোগী পর্যাণ করে উৎপন্ন হয়। শিশু তৎকালে আর কোন থালাই পরি পাক করিতে পারে না, অ্লু কোন থালার প্রাণান্য অভা দ্র হয়। শরীরধারণোপ্যোগী স্বারভীয় পদার্থ হাঁবিদ্যানা থাকার একমাত্র ক্রমণান করিয়াই জীবনধার করিতে পারা যায়। এজন্য অনেক ডাক্তার ক্রকে আদ্ধান্য ধরিয়া অন্যান্য থালার প্রিকারিকা নির্মারণ করেন।

মাতৃশরীরত্বর প্রক্রিরাবিশেব বারা তানে ছগুরা পরিণত হর এবং চুচুক দিয়া ক্রিত হর। গোমহিবা নোসন্থক প্রাণীদিগের ভানাগ্রভাগে এক একটা মাত্র ছিত্র থাকে, কিন্তু মন্ত্রের সেরপ নতে, মানব ভানাগ্রভাগে বহু ছিত্র দিরা ছগ্ম নিগত হয়। ঐ সকল ছিত্র বহুশাথা প্রাণাথা-সুক্ত, ল্গ্ম প্রাণাণীসমূহের বহিন্ধা থ মাত্র। [ঐ সকল বিষয়ের বিস্তানিত বিবরণ ভান শব্দে জাইবা।]

প্রায় সকল প্রাণীরই হগ্প অব্ছে, শুবর্ণ, পরিঞাত, অল অপেকা কিঞ্চিৎ অধিক ভারী, ঈবং মিট স্থাদ ও এক প্রকার বিশেষ সাপদ্ধব্ক, ছথ্মে নানাবিধ অস এবং द्धायू अमार्थित मचा रङ्के कुटे शक् छेरशम हहेबा थारक। •উৎকৃষ্ট অব্ৰীক্ষণ বন্ধ সাহাব্যে দৃষ্টি করিলে সদা হন্ধে আনসংখ্য इन्दर्श व्यक्षाकात विष् पृष्टे इय, ये नकरनत बान थाय, > ইঞ্জির ১০ সহার ভাগের একভাগি, মৃতরাং মনুষাশোণিতক্ষ অভাবু পরিমাণে উহাদের বিতাণ অপেকাও অধিক। ঐ দ্ৰুল ফুল্ম অংশুমেদ বা তৈল অংগুলালবং প্ৰাৰ্থময় এবং স্বচ্ছ দলিলবৎ পদার্থে ভাসমাদ্-থাকে। হথের ঐ न्नीयाः न उत्रधाष्ट्र कथान् मुक्त व्यानका क्रेयर खक्र, स्वताः কিছুকণ স্থির ক্রিয়া রাথিলে ঐ স্কল তৈলময় অগু অধিকাংশ উপরে ভাসিয়া উঠে। তথন এই অংশ পৃথক্ করিয়াতাহা হইতে প্রচুর মাথন পাওয়া যায়। অবশিষ্ঠ হুদ্ধে ন্বনীতের ভাগে অল্লই থাকে। হুগ্ধে মন্থন করিলেও লেহ্ময় অংগাণু সকল প্রস্পর মিলিত হইয়া একঅ জমিয়া যার এবং ভাসিয়া উঠে। অবশিষ্ট ছগ্ধকে মাথন তোলা ছধ কহে। ইহার গুণ অল্ল, হুতরাং মূলাও কম।

হ্র ইইতে নবনীত পৃথক্ করিলে যে অংশ অবশিষ্ঠ থাকে, উহাতে প্রচুর পরিমাণে ছানা প্রভৃতি বাকিয়া যায়, অয়াদি যেয় করিলে ঐ ছানা পৃথক্ এমিয়া থাকে। এই-রূপে সমস্ত ছানা বাহির করিয়া লইলে অবশিষ্ঠ অংশে কিঞিং দিকা যোগ করিলে প্রায় সমস্ত ছানা পৃথক্ ইইয়া য়য় এবং স্বচ্ছ ঈয়ৎ নীলবর্ণ জলমাত্র অবশিষ্ঠ থাকে। ইহাকে ছানার জল কহে। ঐ জলে তথুনও হয় শর্করা এবং নানা জাতীয় থানিজ পদার্থ ও লবণাদি থাকিয়া য়য়। নিমে ক্তিপয় প্রধান প্রধান প্রাণীর ছয়ের পৃথক্ পৃথক্ উপাদান লিখিত হইল। ১০০ ভাগ হয় বিশ্লিষ্ঠ করিয়া লে যে বস্তু পাওয়া য়য়, স্ক্র তত্তে তাহার তালিকা দেওয়া ইইল।

এত দ্বির এদেশে মাহিষ ছঝ এবং তত্ত্ৎপদ দিনি, স্বত প্রত্তি প্রচ্ব ব্যবস্থৃত হইয়া থাকে। মহিষের ছথে তৈলের ভাগ অধিক থাকায় উহা হইতে অধিক পরিমাণে নবনীত ও সুত উৎপর হয়। খোটকীতথে শক্ষারার ভাগ অধিক, তক্ষ্ম

**	ज <b>नी</b> ग्राःम	रैंडनामि शमार्च	ছানা	শর্করা	ক্ষারাদি কঠিন পদার্থ
ৰারীছ্ <b>फ</b> (গড়)	b.644	₹¢,७	98,9	<b>8</b> छ. २	• ૨.૭
ঐ (উর্দ্ধাণ)	a)8.•	€8.•	80.2	७२.8	२.१
ঐ (নিম্নংখ্যা)	b 45.8	v.••	33.5	૭৯,૨	<b>ن.</b> د
ঐ (শিশু ১৪ দিনের)	64×.686	82,366	30.33	63.390	<b>₽</b> 4∙.5
গোহন	649.0	8.4.	92.0	₹৮.•	७,२
গৰ্মভীহুদ	د.وده	5.5	36.5	હ•.৮	<b>્.</b> 8
<b>ছা</b> গীত্ব	৮৬৮.৽	૭૭.૨	80.2	45.5	e.b
মেবছ্দ	৮৫७.२	82 •	80,0	e.,.	<b>6.5</b>
	1	1	l	i	}

উহা হইতে একরপ জ্ঞাসব প্রস্তুত হইরা থাকে। তাহা ক্রমশ: নিথিত হইতেছে।,

শুনাই বৃদ্ধিত হয়, শুতরাং হুদেন কেব্দমাত্র ত্তন্য পান করিয়াই বৃদ্ধিত হয়, শুতরাং হুদ্ধে প্রাণীদেহের পুটিলনক সকল পদার্থই বিদ্যমান আঞ্চেবলিতে হইবে। তদস্পারে ডাক্তার•প্রাউট (Prout) সাহেব হুদ্ধের উপাদান অন্থায়ী থান্যের পর্যায় বিভাগ করিবার প্রস্তাব করেন; যথা—

১ অলীয় খাদ্য (অল), ২ অওলালমর খাদ্য (ছানা), ৩ তৈলময় খাদ্য (নবনীত), ৪ শর্করাময় খাদ্য (ছগ্নশর্করা) এবং ৫ কারময় খাদ্য, তাহাও ছগ্ধে বিদামান আছে। 
হেড্লেন সাহেব ছগ্গের কারাংশ বিলিপ্ত করিয়া উহাতে চ্ণ, লবণ, যবকার, সোডা, ম্যাগ্নেসিয়া প্রভৃতি পাইয়াছেন।

ছ্প সহজে পরিপাক্ষয়ের বিশেষ উত্তেল্পনা বাজীত
শিশুর উদরে পরিপাক হয়। ইহার উপাদান সকল সহজেই
পরিবর্তিত হইয়া শরীবপোষণে নিযুক্ত হয়। চ্ব প্রভৃতি
ছ্রের কঠিনাংশ শিশুর অন্থি পোষণ ও দৃঢ় করে। এই রূপে
ছানা তৈলময় ও শর্করা তরল শরীরের অফ্রানান্তংশ প্রণ
করে। শিশুগণের কতকাল মাতৃত্তন্য পান করা উচিত,
তাহা স্ক্ররণে হির হয় নাই। শিশুর শারীরিক পুষ্টি
প্রভৃতি ধারা ইহার বিভিন্নতা হয়। সচরাচর ক মাদ পর্যাক্ত
ত্তন্যপানের কাল নির্দেশ করা ঘাইতে পারে। ইহার উর্দ্ধে

শিশু স্তন্য ত্যাগ করিবেও তাহাকে গো, মহিষ ও অলাদির তথ্য অন্যান্য থান্যের সঙ্গে প্রচ্র দেওয়া উচিত। যদিও
কেবলমাত্র হ্রপান করিয়া শরীরের সম্যক্ প্রি হয়না,
তথাপি সকল অবস্থাতেই মহ্যানেহের পক্ষে অভিশয়
প্রিকর। ক্রম, হর্বল, বিশেষ্তঃ কাশ রোগগ্রস্তদিগের
পক্ষে হয় মম্ভ ত্লা।

ভূঁতে প্রভৃতি কোন কোন ধাতব বিব খাইরা শরীর বিষাক্ত হইলে হয়পানে ঐ বিব প্রাশমিত হয়।

পুরের বলা হইরাছে, দুরবীকণ সাহাযো সদা ছথে কুড কুড মেদমর অও দৃষ্ট হয়। উহাদের অধিকাংশের ব্যাস ১৯০০ ইঞা হইছে হয়ৣয় ইঞা, কচিৎ ১৯০০ ইঞা ব্যাস-বিশিষ্ট অতাণ্ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্ত কোন কোন ভাজার পরীকা করিয়া ছায়ে ১৯০০ এমন কি ১৯৯০ ইঞা ব্যাসবিশিষ্ট অতা দেখিয়াছেন। এই সকল কুজ কুজ মেদময় অতা আবার হক্ষ আবরণ হায়া আছোদিত। ঐ আবরণ তৈলময় নহে, যেহেডু সদাছথে এসিটক এসিড যোগ করিলে ঐ সকল অতা নানাবিধ আকায় ধায়ণ করে। আবরণ তার মেদময় হইলে এয়প পয়িবর্তন হইত না। আবার ইথর যোগ করিলেও উহায়া মেদের ন্যায় জব হইয়া যায় না।

প্রান্থর অব্যবহিত পরেই তান হইতে যে হগ্ধ নির্গত হয়, তাহার উপাদান পরকর্তী সময়ের হগ্ধ হইতে অনেকটা পৃথক্। এই হগ্ধ তিন চারিদিন পর্যান্ত খ্ব ঘন থাকে, ঐ অবস্থায় উহাকে গাজলা হগ্ধ কছে। ডাক্তারেরা পরীক্ষা করিয়া দেখিয় ছেন, গাজলা হগ্ধ কছে। ডাক্তারেরা পরীক্ষা করিয়া দেখিয় ছেন, গাজলা হগ্ধ কছে। ডাক্তারেরা পরীক্ষা করিয়া দেখিয় ছেন, গাজলা হঁগ্ধ অপেকায়ত অধিক সংখ্যক কৃত্র মেদ ও অওলালময় কণাদি বিদ্যমান আছে। ইথর যোগে ঐ সকল মেদভাগ সহজে তাব হয়। ৩।৪ দিবস পর্যান্ত এই সকল কণা অধিক মাত্রায় বিদ্যমান থাকে, তৎপরে ক্রমণ: হ্রাস হইয়া সচরাচর হা> দিন মধ্যে এক বারে তিরোহিত হয়। কথন কথন ২০ দিনস পর্যান্ত হগ্ধে এই সকল কণা দৃষ্ট হইয়াছে। আবার তানেক সময় পীড়া প্রাভৃতি হারা তান হগ্ধ বিকৃত হইয়া এই সকল কণা প্রাক্ষা বিকৃত হইয়া এই সকল কণা

স্থাব্যত্তীত প্রস্তির থাল্যের উপরেও স্থান্থর প্রণাঞ্চণ অনেক পরিনাণে নির্জ্ঞর করে। বলা বাছ্ল্য যথন শিশু কেবল মাতৃত্তক্ত দারা প্রাণধারণ করে, তথন তাহার পীঙা ছইলে মাতা উপবাস করেন এবং স্বয়ং ঔষধ সেবন করেন, তাহাতেই শিশু আরোগ্য লাভ করে। শিশু গাঁড়িত ছইলে মাতৃাকেই পথ্যাপথ্য বিচার করিতে ছয়। ভাক্তারেরা পরীকা করিয়াছেন, একটা কুকুরী যথন কেবল শক্তাদি থাইত, তথন তাহার হুগ্রে অধিক মাত্রায় মাধন ও শর্করা দেখা ঘাইত, আবার যথন তাহাকে মাংসাদি থাইতে দেওয়া হয়, তথন তাহার হুগ্রে কারাদি কঠিন পদার্থের আধিক্য দেখা ঘাইত। বসাযুক্ত খাদ্য দিলে হুগ্রে মাধনের

ভাগ অধিক হয়। এই নিয়ম অভাক্ত আশিতেও স্বৰ্ধ হইতে পারে। আবার প্লেক্ষার পাহেব বেধিয়াহেন দে গবাদি যথন গৃহে পোষা হয়, তথন ভাহাদের হুল্লে অধিক মাথন উৎপত্ন হয়, আর মাঠে চরিতে ছাড়িয়া দিলে চুল্লে মাথনের ভাগ কমিয়া বার। বর্ধাকালের কাটা ৬৯ বাগ আপেকা গ্রীয়কালের টাটুকা বাস থাওরাইলেও চুল্লে অপেকা কৃত অধিক মাথন হয়।

ফেরিয়ার সাহেব পরীক্ষা করিয়া বলেন, শিশুর তার পানকালে নারীছগ্ধ ক্রমণ; •পরিবর্তিত হইয়া আসিলেও উহাতে নবনীর অংশ বরাবর সমান থাকে। শ্লিণ্ডর বরোর্থি সুহকারে মাতৃছগ্রে ছানার ভাগ বর্ত্তিত হয়, এদিকে শর্করা; ভাগ কমিয়া আইসে এবং কারাংশ বৃদ্ধি পাস।

ছথ্যের বিশুদ্ধতা নিরূপণ করিবার **ষষ্ঠ**, নানাবিধ श আবিস্কৃত • ইইয়াছে। [ ছ্কপ্রিমাপক্ষ্ম শংক তাহা বিস্তারিত বিবরণ দেখ। ]

এসিয়ার পূর্ব ও দক্ষিণাংশে কেবল হিন্দুগণ ব্যতীং অপর কোন জাতি প্রায় গোঁমহিষাদির স্দ্য ছগ্ধ পা করে না। এমন কি চীন, অহ্মদেশ, মলম্ব ও ভারতের পুন আছত থলিয়া, গারো, নাগা, যাবা ( যবনীপ ), তুমান **জাপান প্রভৃতি দেশবাসিগণ সদ্য হগ্ধ পান করা** দ্ থাকুক, স্ক্রজনক মনে করিয়া ঘুণা করে। হুগ্ধ শুক্ত করি। কিংবা পচাইয়া ভাহা হইতে পনির, ছানা প্রভৃতি ভাহাদে স্থাদ্য প্রস্তুত হয়। বলা বাহুল্য উহাদের প্রস্ পনিরাদি এদেশীয়দিগের প্রীতিকর হইতে পারে না। হি ব্যজীত অভি অৱসংখ্যক জাতিই নবনীত বা মাধুন গণাই: ত্মত প্ৰস্তুত করে এবং তাহা উপাদেয় খাদ্য ৰলিয়া ব্যবহা করে। য়ুরোপীয়গণ মাধন ব্যবহার করেন, খুত তাঁহাদে ক্ষৃতিকর নহে। অনেক জাতি আছে, ত্থাবিক্রয়কে নিতা शैनवृद्धि मत्न करत्र। व्यात्रत्वत्रा भगुभित्रवर्धन गरे হুণ্ণ দৈয়, কুিন্ত বিক্ৰয় করেনা। শাক্রান (হুণ্ণ বিজেও। ভাহাদের নিকট অভি ছণিত ও কবক্ত বলিয়া গণা বালফোর সাহেব অনুমান কুরেন, ঐ দেশে অতিথিকে 🏁 মূল্যে ছগ্ন দান করিবার ব্যবহার থাকার বিজে^{র প্র} এতদ্র ঘণাই হইলা পড়িরাছে। অদ্যাপি মকানগরে ^{মিকা} এক নিক্ট জাতি ব্যতীত অপর কেহ ছগ্ম বিক্রন্ন করে না।

পশ্চিম ও মধ্যঞ্সিরার অনেক জাতি অন্যাপি উট্টা পান করে। আনেকের উটের হুধই জীবনধারণের প্রশ উপার। বহু প্রাচীনকাল হইতে উটের হুধ ব্যবহৃত হই ওনা যায়। বাইবেলে উক্ত আছে যাকুব তাঁহারু দ্রাতা ইশা রক্তান্ত পশুর সহিত ৩০টা হওঁবতী উদ্ধী প্রদান করিবাছিলেন। হাতে বোধ হর রিছনিগণ অভি পূর্বকাল হইডেই উট্ট ডে ব্যবহার করিত।

চানের উত্তরভাগে বিশেষতঃ মলোলিয়া প্রদেশের অধি-াদিগণ পদা ছথ পান করে এবং তাহ। হইতে ছানা _{মাধনাদিও} প্রস্তুত করে। মঙ্গোলিয়ায়ু গাভীর সংখ্যা পর্যাপ্রু _{এত হা}তীত মঙ্গোশীয়গণ ঘোটকীছগ্ধও পান করিয়া থাকে। ভাটকী হয়ে কঠিন ক্ষারাদির ভাগ শতকরা প্রায় ১৭ এবং ার্করা প্রায়া ৮ অংশ থাকায় শর্করা ভাগ, সহকে অন্তরোৎসেক াঁরা হুরাসায়ে পরিণত হয়। এজভা ম**লোলী**য়গণ এবং চাভারবাদিগণ খোটকীছয় হইতে কুমিদ নামক উহাদের রণাদের এক প্রকার জাদব প্রস্তুত করে। হানবংশীয় আট্গণের রাজস্বকালে চীনদেশে কুমিদ প্রচল্লিত ছিল। চালমক ভাতারগণ, গোহুগ্ধ ও ঘোটকীহগধ সিদ্ধ করিয়া টক্ ্টতে দেয় এবং পরে উহাকে নানারূপে পঢ়াইয়া একরূপ ররা প্রস্তুত করে। এই মুদ্দক দ্রব্য গ্রীম্মকালে তথার গুচুর পরিমাণে ব্যবহৃত হয়। গ্রীষ্মকালে ২৪ ঘণ্টা আনদার ণচান দিয়া টোয়াইলেই স্থরা হয়, শীতকালে ২।০ দিন ।াধিতে হয়।

মাহিষত্থ ভারতবর্ষে বহুপরিমাণে বাবদ্ধত হয়। মহিবের গথ সচরাচর গাঢ় ও মিষ্ট এবং ইহাতে গোল্প্র অপেকাশ নাধনের ভাগ অনেক অধিক। ধুর্ত গোরালার। গোল্প্রে নাধকারত স্থাভ মহিষত্থ মিশাইয়া বিক্রর করে, গোল্প্র ও নাহ্যত্থ একত্র মিশাইয়া মাধন প্রস্তুত করে। যাহ্যু হউক, অনেক নিষ্ঠাবান্ হিন্দু মহিষাদির হ্যু অপবিত্র ্বাধে গান করেন নাঁ।

তিব্বত, শালোলিয়া, চীনডাতার প্রভৃতি স্থানে লোকে 
চামরী, বনগোরু প্রভৃতির চ্থা পান করে। ক্ষিয়ার উত্তরভাগে বল্গাহরিণে চ্ধ দেয়। আর্বেরা আল না দিয়া
হথকে ৩ক করিয়া আমিদা নামক একপ্রকার ক্ষার প্রস্তত্ত
করে। ত্বত সংযোগে উহাতে স্থমিষ্ট খাদ্য হয়। অলে গুলিয়াও
আরবেরা ঐ শুক্ত ক্ষার উপাদেয় বোধে পান করে বটে,
কিন্তু বিদেশীয়দিগের পক্ষে উহা তাদৃল স্থাদ ও প্রীতিক্র
হয়না। বলা রাছল্য হুর্ম হইতে দেশ, কাল ও লোকের
ফিভিদে দ্ধি, ছানা, মাধন, নবনীত প্রস্তৃতি নানা
উপাত্তে প্রস্তৃত হইয়া থাকে। যতস্থানে যতপ্রকার
বিটার হইতে পারে, তাহার অধিকাংশুই হয় হ্রেলাত, হ্র্ম
নিপ্রতি, অথবা হ্র্মলাত কোন পদার্থি ধারা প্রস্তৃত হইয়া
গাকে। গব্যরস ক্ষেলাত কোন পদার্থ ধারা প্রস্তৃত হইয়া
গাকে। গব্যরস ক্ষেপ্ত হিন্দুর নহে, পৃথিবীয় আনক

জাতিরই থালোর প্রধান উপালান। সংশ্বত কবিগন বলেন, স্বারদ্বিহীন ভোজনই বুধা। গো মহিবাদির হয় সলা এবং তরল জ্বাহাতেই অপাচা এবং পৃষ্টিকর, তরির উহাকে বিক্লুক্ত করিয়া যে রূপই থাদা বা পানীর প্রস্তুক্ত করিয়া যে রূপই থাদা বা পানীর প্রস্তুক্ত করিয়া যে রূপই থাদা বা পানীর প্রস্তুক্ত করি না কেন উহা অপেকাক্ত প্রক্রপাক হইয়া উঠে। হয়কে নানা উপায়ে শুক্ত এবং চুর্ণ অবস্থার আনিয়ন করা যায়। এইরূপ হয়চুর্ণ গরমজলে প্রনিয়া ক্রন্তিম হয় পাওয়া অসম্ভব, এইরূপ স্থলে ঐ হ্রাচুর্ণ বারা ক্রন্তিম হয় পাওয়া অসম্ভব, এইরূপ স্থলে ঐ হ্রাচুর্ণ বারা ক্রন্তিম হয় প্রস্তুক্ত করিয়া জাহাজের লোকদিগকে বিশেষতঃ হয়পোয়া শিশুনিগকে দেওয়া হয়।

সদ্য ছথা অধিককণ রাখিয়া দিলে সহজেই নই হইয়া 
যায়। বাহাতে ছথা এইরপে নই না হইয়া বছদিন পর্যাত্ত
অবিকৃত থাকে, তাহার বছবিধ চেটা হইয়াছে। অনেকে
নানা উপায়ে কৃতকার্যাও হইয়াছেন। এইরপে যে ছলে
গোমহিবাদির সদ্যছথা পাওয়া যায় না, তথায় ঐ সকল
ছথাবারা তাহাঁর অভাব পুরণ হয়।

আমরা এছলে ত্থারকা করিবার করেকটা সুল উপার সংক্ষেপে বর্ণনা করিতেছি। এদেশে সম্প্রতি বহুত্রংখ্যক পুথক্ পুথক্ কোম্পানীকৃত যে সকল বিলাতী হগ্ধ আইসে, ভাহার অধিকাংশই সুগত: নিম্লিখিত উপায়ে প্রস্তুত হইয়া থাকে। প্রথমতঃ হ্রুকে প্রশন্ত ভাত্রকটাহে ঢালিয়া >>• कां जार्थ भिक्ष कदिए बहेरव धवर खेहारा किकिश চিনি দিয়া ক্রমাগত ৪ ঘণ্টাকাল হাত দিয়া নাড়িতে হইবে। সিদ্ধুইলে 'ছগ্মরিয়াত অংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইতে হইবৈ, এই গাঢ় ছগ্ম পরে টিনের কোটায় পুরিয়া सान निया नरेट इय, शदत नमछ दकोठी क्रेड ब्लान किङ्कन दाथिया भीखन स्टेरनर स्टेन। এरकरिन श्रास्त्र अस्त इस ব্ঢ়দিন প্রাপ্ত আংবিক্রত থাকে। এসেকা আন্মিক্ এইরূপে প্রস্তুত হয়। বাচফোর্ড সাহেব এক প্রকরে কঠিন দুর্ম প্রস্তুত করেন, তাহা[®]এইরূপ। 🕪 সের ছগ্নে ১৪ সের খেতশর্করা এবং ছোট এক চামচ বাইকার্বনেট অব্ সোডা मां। के बिंदा ज्वा क्यारमन्डमिक लोहक होटर हानिश्र বালোর তাপে সিদ্ধ কর এবং ক্রমাগত উহাতে বাতাস কর ও নাডিতে থাক। এইরূপ করিতে করিতে ব্ধন সম্ভ **জল** মরিয়া চুগ্ধ अँकात यह शहेता आगित्त, তথন নামাইরা লও। এই সকল চুৰ্ণই পরে এক এক পাউওছ লইরা চাপ দিয়া ইইকাকার করিয়া বিক্রেম হয় । বাবহারকালে क्षे देवे खंड़ादेश करन श्रीनरनरे इद रहा बना बाह्ना

বহু লোকের প্রতিযোগিতার দিন দিন নানায়ণ রক্ষিত ছথ আরিক্কত হইতেছে। চিনি, দোডা বা কোন প্রকার কার বোগে জনীয়াংশ প্রাস ও র্ছম হুইতে বায়ু নিজাশন প্রভৃতি ঐ সকল প্রক্রিয়ার মূল স্ত্র। মেবার সাহেব হথ পাত্র হুইতে বায়ু 'নিজাশিত করিয়া পরে ঐ পাত্রকে শতাংশিকের ১০০° উত্তপ্ত অ্থিতে সিদ্ধ করেন, পরে ঐ হথ বোতলে সম্পূর্ণ বদ্ধ রাথায় ৫ বংসর প্রয়ন্ত অবিক্কত ছিল।

বৈশ্বক ভাবপ্রকাশ মতে, ছথের গুণ—মধুর রস, সিথ, বায় ও পিত্তনাশক, সারক, সদ্য শুক্রকারক, শীতবীর্যা, সকল প্রাণীরই সাত্মা, জীবন ও শরীরের উপচরকারক, বলকারক, মেধাজনক, শুক্রবর্দ্ধকের মধ্যে শ্রেষ্ঠ, বরঃস্থাপক, আয়ুকর, সন্ধানকারক, রসার্যন, বমন, বিরেচন ও বন্ধিক্রিয়াভুল্য গুণকর; পাপু, দহি, তৃষ্ণা, হন্দোগ, শুল, উদাবর্ত্ত, গুলা, বন্ধিগতরোগ, শুদারুর, রক্তপিত্ত, অতিসার, বোনি-রোগ, শ্রম, ক্রম ও গর্ভ্রাবে সর্বাদা হিতকর; বালক, বৃদ্ধ, ক্লড, ক্মীণ রোগগ্রস্ত, ক্র্মাভুর ও মৈধুন ধারা ক্রশ এই সকল ব্যক্তির পক্ষে হথ্য সর্বাদা অত্যন্ত হিতকারী।

পোছ্থের গুণ—মধুর রদ, মধুর বিপাক, শীতল, অন্তবর্দ্ধক, দিথা, বাতম, রক্তপিতনালক, দোষ, ধাতু, মল ও
ভ্রোতোদম্হের ঈষৎ ক্রিরতাদম্পাদক এবং গুরু, ইহা প্রতিদিন দেবন করিলে জরা ও সমস্ত রোগ প্রাণমিত হয়।
ছথের মধ্যে গোছ্থই শ্রেষ্ঠ। ইহার মধ্যে ক্রফবর্ণ গাভীর
ছথ্য বায়্নাশক এবং অভিশন্ন গুণকারী। পীতবর্ণ গাভীর ছথ্য
পিওঁ ও বায়্নাশক, গুরুবর্ণ গাভীর ছথ্য ক্ষকারক ও গুরু,
রক্তবর্ণ ও বিচিত্র বর্ণবিশিপ্ত গাভীর ছথ্য বায়্নাশক। বালবৎসা, অর্থাৎ যে গাভীর বাছুর অভি শিশ্ত এবং বৎসহীনা
গান্মীর ছথ্য তিদোষজনক, এই ছথ্য সেবন করিতে নাই;
জলল দেশে বিচরণকারী, অনুপদেশে এবং পার্বভীন্ন দেশে
বিচরণকারী গাভীর ছথ্য বধাক্রমে গুরুব ও দিগ্র।

আহারবিশেষে গুণ বিশেষ।—সে সকল গাডী অর পরিমাণে আহার করে, তাহার হ্য গুরু, কফকারক, বলন্তন, প্রত্যন্ত শুক্রবর্দ্ধ এবং স্থায় কিনিগের পক্ষে গুণকারী। যে সকল গাড়ী পলালত্ন ও কার্পাসবীল ভক্ষণ করে, তাহাদের হয় রোগীদিগের পক্ষে হিতকর।

মাহিব হ্যা।—মধুর রস, শুক্রবর্দ্ধক, শুক্রনিজাজনক, অভিযানী, কুধাজনক, শীভবীর্দ্ধ গ্রাহ্য অপেক্ষা সেহবহল। ছাগীত্যা।—ক্ষার, মধুর রস, শীভবীর্ঘা, সংগ্রাহী, লঘু, রক্ষপিত, অভিসার, ক্ষুকাশ ও অরের শান্তিকারক। শরীরের লঘুত হেছু এবং কটুডিজ ক্ষবা ভোজন, অর

জলপান ও ব্যারাম করে বলিরা ছাগলের ছত্ত্ব প্র রোগনাশক।

মৃগাদির হৃগ্পত্ত।—মৃগ প্রভৃতি কালল দেশক প্রর্ছ ছাগহণ্ডের ভার উপকারীণ

্ মেবীহৃগ্ধ।— লবণ, মধুররস, স্লিগ্ধ, উষ্ণব্লীর্বা, অশারীরে।
নাশক, অন্তদ্য, তৃথিকের, কেশের হিতলনক, শুক্র, পিন্ত কফ্বর্দ্ধক, গুরু এবং বার্জনিত কাসরোগে ও অপর দো সংস্কৃতিহীন বারুরোগে প্রশক্ত।

লোটকীছগ্ধ ।— বোটকীর ছগ্ধ এবং আর সমস্ত এক অর্থাৎ একক্ষুরবিশিষ্ট জন্তর ছগ্ধ রুক্ষ, উষ্ণবীর্য্য, বনক্ষি অমলবন, মধুররস, লঘু; শোষ ও বায়্নাশক।

উদ্বীছগ্ধ।—লঘু, মধুর, লবণরস, অধিনীধিকারক, সাং এবং ফুমি, কুঠ, কফ, আনাহ, শেথি ও উদররোগনাশক

হস্তিনীছ্ও। শরীরের উপচরকারক, মধুর, করাঃ গুরু, গুক্রবর্দ্ধক, বলকারক, শীতবীর্য্য, স্নিত্ত, চকুর হিডক এবং স্থিরতাসম্পাদক।

নারীত্র্য। লঘু, শীতবীর্যা, অগ্নিপ্রাণীপক এবং বার্
ও চকু:পুলবিনাশক। ইহা নম্র ও চকু প্রসাধন-ক্রিয়ার প্র
ধারোক্ষত্র্য।—অর্থাৎ দোহনকালের পর বতকণ
থাকে, এইরূপ তুর্য বলকারক, লঘু, শীতবীর্যা, অমৃত
গুণকারী, অগ্নিনিধিকারক এবং ত্রিদোঘনাশক, কির
শীতল হইলে পরিত্যাগ করিবে। গবাত্র্য্য ধারোক্ষ অ
উপকারী, মাহিষ্ত্র্য ধারাশীত অবস্থার, অর্থাৎ দো
পর শীতল হইলে, দেমবীত্র্য্য শীতোক্ষ অবস্থার (অর্থাণ
করিলে শীতল না হওরা পর্যান্ত) এবং ছার্গীন্ত্র্য দির
শীতল হইলে গুণদারক্ষর। গবা ও মাহিষ্ত্র্য বাবি
সমন্ত্র অর্পনারক্ষর অভিন্তৃন্যী, গুরু, ক্ষবর্দ্ধক, আ
এবং অহিতকারী। অপক নারীত্র্য হিতকারক, দিন
হইলে অহিতজনক।

হয় সিদ্ধ করিয়া উষ্ণ অবস্থায় দেবন করিবে বায় নাই হয়। সিদ্ধ করিয়া শীতল হইলে তত্মারা হিছা । অর্জাংশ অলের সহিত পাক করিয়া গ্রন্থাবিনিই ' অর্থাং অল সকল নাই হইয়া যাইলে তাহা অপক্তর্তু' লমুহয়।

থালরহিত হয় যত অধিক আল দেওরা বাব,
অধিকতর শুক্ত, সিয়, বৃহা ও বলবর্দ্ধক হইয়া থাকে।
সদ্যপ্রস্তা গাভীর ঘন হয়কে পীযুব বলা বাব
হয় আল দিলে তাহার পিগুরুতি অংশকে বিলাট
এবং অপক নই হয়কে কীরশাক করে। ব্ধিল

বারা ছথকে নট করিরা বজ্ঞে বাঁধিরা নিংড়াইরা দ্রবভাগ নিহাশিত করিলে উহাকে তক্রশিশু করে। নট হুধের ছানা উদ্ধৃত করিলে যে দ্রবভাগ থাকে, তাহা মৌরট নামে অভি-হিত। পীযুষ, কিলাট, ক্ষীরশাক ও ওক্রপিণ্ড এই সকল শুক্রগ্রহিক, শরীরের উপচরকারক, বলবর্দ্ধক, গুরু, কফ্ লনক, হুদরগ্রাহী, বায়ু ও পিতনাশক এবং বাহাদের আয়ি প্রদীপ্ত ও বাহাদের নিদ্রা হয় না, অথবা বাহারা মৈণুনপ্রযুক্ত ক্ষান, তাহাদের পক্ষে বিশেষ উপকারী। চিনিসংযুক্ত মৌরট লবু, বলকারক, ক্রচিজাহক, মুথশোথ, পিপাসা, দাহ, রক্ত-

ছ্যের সর— গুরু, শীতবীর্ষা, পুষ্টিকারক, রক্তপিত ও বায়ুনাশক, ভৃথিকারক, শর্মারের উপচরকারক, নিয়, কৃষ, বল ও শুক্রনারক।

বও সংযুক্ত ত্থ-শুক্রবর্দ্ধক ও ত্রিদেশিনাশক। গুড় সংযুক্ত ত্থ-মৃত্রক্তরাশক, পিত্ত ও কফবর্দ্ধক। প্রভাগে ত্রিমগুণ বহুল, এইলপ্র প্রাণি সকলের দেহ সোমাত্মক থাকে এবং রাত্রিকালে কোনক্রপ শারীরিক ক্রিয়া হয় না, এইলপ্র দৈহিক ধাত্মানি সোমগুণবিশিপ্ত হইরা থাকে। এই লপ্র প্রভাত কালের হুঁথ সায়ংকালের উৎপর ভূথ হইতে গুরু ও শীত্রীর্যা। দিবাভাগে স্থাক্রিক দারা প্রাণিগণের শরীর সন্তাপিত হয়, স্থ্তরাং ধাত্মদি সমস্তই আগ্রেম গুণাধিত হইয়া থাকে। বিশেষতঃ বাায়াম ও বায়ু সেবন করা হয়, একারণে প্রভাত সময়ের হুগ্ধ অপেক্যা সায়ংকালীন হুগ্ধ লঘু এবং বায়ু ও কফনাশক।

প্রাতঃকালে ত্র্ধ পান করিলে পুষ্টি, উপচয় এবং অয়িপ্রালীপ্ত ইইয়া থাকে। মধ্যাফ সময়ে পান করিলে বল ও অয়িপ্র্ ছি হয় এবং কফ ও পিন্ত বিনষ্ট ইইয়া থাকে। বাল্য অবস্থায় পান করিলে শরীর বৃদ্ধি হয়, ক্ষমাবস্থায় পান করিলে কয় নিবায়ণ হয়, বৃদ্ধাবস্থায় পান করিলে কয় নিবায়ণ হয়, বৃদ্ধাবস্থায় পান করিলে তক বৃদ্ধি হয় এবং রাত্রিকালে পান, করিলে শরীয়েয় হিত সম্পাদন, বছবিধ দোষের নাশ এবং চক্ষ্র বিশেষ, উপকার ইইয়া থাকে। য়াত্রিকালে অয়াদি ভ্রেয়া প্রবেয়র সহিত সংযুক্ত না করিয়া কেবল পান করিবে। কারণ য়াত্রিতে কোন ড়বেয়র সহিত সংযুক্ত করিয়া পান করিলে তাহা জীণ হয় না। সমস্কই,পান করিবে, কিছুমাত্র অবশিষ্ট য়াথিবে না।

মানবগণ দিবাভাগে যে সকল বিদাহী অন্ন ও পানীর ত্রব্য আহার করিয়া থাকে, দেই বিদাহ প্রশাস্তির নিমিত্ত প্রত্যহ রাজিতে হথা পান করিবে। कृत, तीनक ७ वृक्ष वाक्तिनिश्वत शृत्क अवश् वाहारमञ्जली श्रामीथ श्रीरह, जाहारमञ्जलीक कृष व्यक्तिमञ्जल हिज्यनक। कांत्रन हेहारज तमा कुळ वृक्षि हहेश श्रीरक।

মণ্ণিত চুর্ত্তর গুণ—গব্য অথবা ছাগী হুধ মঁছন করিরা দিবং উষ্ণ অবস্থার পান করিলে তাহা লঘু, গুক্তজ্বনক এবং শর, বারু, পিত্ত ও কফনাশক হইরা থাকে। গো অথবা ছাগী হুগ্ধ হুইতে উদ্ভূত্ব কেনা জিলোবনাশক, ক্ষতিকারক, বলবর্দ্ধক, অগ্নিবৃদ্ধিকারক, হিতকর, সদাতৃথিকারক, লঘু এবং অভীসার, অগ্নিমান্দ্য ও জীগ্জরে প্রশস্ত ।

নিন্দিত হথা।—বে বিবর্ণ, অমরসাঘিত, হর্গদ্বযুক্ত, প্রথিত, অম অথবা লবণরসবিশিষ্ট দ্রব্য সংযুক্ত অর্থাৎ হথে অম ও লবণ দিলে তাহা হুষ্ট মধ্যে পরিগণিত হয়। এইরূপ হুগ্থ সেবন অহিতকর। এরূপ হুগ্ধ সেবন করিলে কুষ্ঠ প্রভৃতিরোগ করে। (ভাবগ্রু পূর্বথণ)

ছ্প্নের বিষয় স্থশ্রতে এইরূপ লিখিত আছে—গো, ছাগী, উট্ট, মেষ, মহিষ, নারী ও হক্তিনী ইহারা বিবিধপ্রকার ওষ্ধি फक्क कुरत विद्या हेशिनरात इक्ष ध्यमन, व्याचीमञ्जनक, खब्र, মধুর, পিচ্ছিল, শীতল, স্নিগ্ধ, নির্ম্মল, সারক এবং মৃত্। যে স্কল প্রাণী পান করিয়া জীবন ধারণ করে, 👊 ই হলে কথিত সকল প্রকার হুগ্ধই তাহাদিগের প্রকৃতির অমুকৃত্ত ও সেবনীর। কোন প্রকার ত্থাই ভাহাদের পানের পক্ষে নিষেধ নাই । কারণ ছগ্ধ সেই সকল প্রাণীর জাতীয় আহার। বায়ু পিত্ত, শোণিত, এবং মানসিক বিকারে ছগ্ন পান বিরুদ্ধ নহে। জীর্ণস্বর, কাস, चान. ऋष, खन्म, खन्मान, खनती, मृद्धी, खम, मख्डा, लाह, পিপাদা, হুডোগ, বস্তিরোগ, পাতু, গ্রহণী, অর্শ, শূল, উদাবর্ত্ত, অতীসার, প্রবাহিকা, যোনিরোগ, গর্ভস্রাব, রক্তপিত্তশ্রম ও ক্লম, ত্থ্য এই সকলের শান্তিকর; পাপনাশক, বলকর, র্ছ্য कारमिक्तिरवत উত্তেজक, त्रगात्रन, रम्धालनक, मसानद्दाशन, বয়:খাপন, আয়ুষ্বর, পৃষ্টিকর, বমন ও বিরেচনে তুল্য হিত-কর এবং ওলঃধাতৃবৰ্দ্ধক। বালক, বৃদ্ধ, ক্ষত, ক্ষীণ এবং কুধা, खीमःमर्ग ७ পরিশ্রমে क्लांख देशामित्मत्र भाक वृद्धदे उँदेवेडे পণা। রাত্রিকালে চল্লের গুণেও ব্যায়ামের অভাবে প্রাতঃ-কালের ছগ্ধ প্রারই ভার ও শীতল হট্যা থাকে। দিবাভাগে স্রোর তাপস্ঞারণ, বায়ুসেবন এভিতি কারণে অপরাহু কালের ছগ্ধ বায়ুর অমূলোমকর, প্রার্থিনাশক ও চক্ষুর দীপ্রিকর। ছগ্ম অগ্নিতে পক করিলে লঘু হয়, কেবল নারীর ত্থাই অপক অবভান হিতকর। অপক ত্থের মধ্যে ধারোফ ছুগ্ধই खनविभिष्टे, দোহনের পর শীতল হইলে বিপরীত গুণ ह्य । तकन हश्वरे अिन्त्र निष्क कतिरन कांत्र धारः भूष्टिकत হয়। ছুগ্নে অনিষ্ট গদ্ধ বা অন্নয়স অবিলে বিবর্ণ, বিরস, লবণযুক্ত বা প্রথিত হইলে অবিণিং ছানা হইরী পিড়িলে) এইরূপ ছুগ্ন পরিত্যাগ করিবে। (সুশ্রুত)

ছন্মোৎপত্তির বিষম হারীভদংহিতার ।এইরাণ নিখিত **ब्हे**ब्राइड *। य य तक काहात कता यात्र, (मॅंडे नकत सुब्र ক্ষীরাশরায় অফুগত হইয়া 'পিতবারা মূর্জ্তিত এবং অঠরায়িতে পরিপাক হয়, এইরূপ পরিপাক প্রাপ্ত হইয়া ভঞ্চবাহিনী শিরা প্রাপ্ত হইলে তাহাকে ছগ্ধ কছে। ইহা অমৃত তুলা এবং সকল ভূতের জীবন ও বলকারক। হারীত সংশ্রাপন্ন रुरेश शिखादक विकाश कतिशाहित्यन, वित्वा। এই इध কেমন করিয়া রদের সম্পত্তি এবং কেমন করিয়াই বা বর্দ্ধিত হয়, রত্তের সংস্থানে রক্তবর্ণ না হইয়া ক্ষীর কেন পাণ্ডুবর্ণ হয় এবং, কুমারী ও বন্ধাদিগের হ্র প্রবৃত্তি না হইবার কারণ কি ? তাঁখার পিতা এই প্রশ্নের উত্তরে বলিরাছিলেন, রক্তপিতে পরিপাক হইয়া রক্তই খেতবর্ণ প্রাপ্ত হয়, এইজক্ত হয় শুলবর্ণ। কুমারী ও বন্ধানিগের অৱধাতু ও অৱবল এইজন্ত ইহাদের হ্রগ্ধ হয় না। বন্ধ্যাদিগের ক্ষীরনাড়ী বাতে পুরিপুরিত থাকে এবং আর্ত্তিব অধিক পরিমাণে হয়, এইজন্ম ইহাদের ছগ্ন প্রবৃত্তি হয় না। নারীসকল প্রস্থতা হইলে স্রোত:বিশুদ্ধি হয়, সেইজত স্লাভকীর উৎপন্ন হইয়াথাকে। সদাংপ্রস্তাজীর ' লৈখিক পয়: জনো, দেইজন্ম এই গ্ৰন্ম কাঠিন্স প্ৰাপ্ত হয়। এই ছগ্ম পরিত্যাগ করিবে। নারীদিগের অবিকৃত ছগ্ম বলকারক ও দোষনাশক। (হারীত )

 "यদ্যদাহারজাতন্ত রসং ক্ষীরশিরামুগং। সরং জলঞ্চ ভুত্তঞ্চ তথা পিত্তেন সংবৃতং 🛭 পাচিতং জাঠরে বঙ্গৌ পিত্তেন সহ মৃচ্ছিতং। পচ্যমানং শিরাপ্রাপ্তং ক্ষীব তদিদ্ধি পুত্রক । তৈন ক্ষীরমিতি থ্যাতমগ্রিদোমান্সকং পরং। অমৃতং সর্বউ্তানাং জীবনং বলফুমতং ॥ হারীতঃ সংশয়াপন্নঃ পপ্রচছ পিতরং পুন:। কথং রসন্থ সুম্পত্তি: কথং সঁকীয়তে বি**ভো**। কণং রসস্ত সংস্থানে ক্ষীরং পাণ্ডুডমীয়তে। कथः ठळ क्रीयातीयाः वस्तानाः न कथः एटवर । অল্পাতুবলং যম্মাৎ ভূমাৎ ক্ষীরং ন জায়তে। বঞ্চানাং কীরনাড্যন্ত বাতেন পরিপ্রিতা: । কীরঞ্চ ন ভবেগুন্মাৎ আর্ত্তবঞ্চাধিকং বতঃ। প্রসতাপ্ত নারীযু বলেন সহ স্মতে। তেন প্রোত্যেবিশুদ্ধি: স্থাৎ ক্ষীরমাশুপ্রবর্ত্তে। তন্মাৎ নদ্যঃ প্রস্তায়াং জায়তে দ্রৈন্মিকং পরঃ। তেন কাঠিঅমায়াতি তল্মাৎ তৎ পরিবর্জ্জপ্পেৎ। **गन्न**कारिकुकः नांगा वनकृष्णावनाणनः ॥" (इतिकृषः अथनवान ৮ णः) পূর্বাছে গৰাজ্য ও অপরাছকালে মাহিব ছয় প্রান্ত, ছয়ের সহিত চিনি মিশ্রিত করিরা পান করিলেই এলকঃ হয়। "গৰাং পূর্বাছকালে ভাদপরীছে তু মাহিবং।

कीतः मनर्कतः भथाः यदा माण्याक नर्कता ॥" ( त्राक्रि )

ত্ত্ব সকল সমরই তথ করিয়া পান করিতে হইবে। তৃত্ত্বের সহিত মৎস্ত, মাংস, গুড়, মূলা ও মূলক জক্ষণ করিলে কুঠ হর, শাক ও আববরসাদির সহিত সেবন করিলে আগু মৃত্যু হয়।

শাক, অস, পল, পিগাক, কুলখ, লবণ, আমিষ, করীর, দিধি ও মাষ মিশ্রিত হইলে হগ্ধ হিলক হয় অর্থাৎ এই সক্ষ মিশ্রিত হগ্ধ সেবন অহিতকর।

्नाकाम्भननिभाकक्नथनवनामिरैवः।

क बी ब्रमियारियम् ध्याबः क्षीप्तः विक्रधार् ।" (ब्राह्मवह्न ।

ছয় জাল দিয়া ঈষত্ক থাকিতে থাকিতে পান করিতে হইবে। জাল দিবার পর তিন মূহুর্জ জাতীত হইলে দেই ছগাকে জাতথ বিদিয়া জানিতে হইবে; এই ছগা দ্বিত হয়। ছগাকে তেওঁ বিদিয়া জানিতে হইবে; এই ছগা দ্বিত হয়। ছগাকে চতুর্থভাগ ফল দিয়া সিদ্ধ ক্রিয়া পান করিলে হিতকর হয়। ছগার সর বায়ুনাশক, ভৃথিকর, বলকর, তেজস্বর, লিগা, কাচিকর ও স্বাহ, পরিপাকে মধুর, রক্ত পিত্নাশক ও জাক্র পাক। ছগার চক্ত্তিকর, বলকর, পিত্নাশক ও রসায়ন। পর্যাধিত ছগা অর্থাবে বাসী ছগা জুর, বিষ্ট্ডী ও ছর্জ্বর।

গাভীর ছগ্ধ প্রস্বের পর ৭ দিন না যাইলে পান করিতে নাই।

তুর্মকৃপিকা (ত্রী) হয়কৃপ: সাধনত্বেন অন্তান্থা ইতি হয় কৃপ ঠন্টাপ্। পিইক বিশেষ। ভাবপ্রকাশে প্রস্তুত্রপানী এইরপ লিখিত আছে;—পাককুশল ব্যক্তি ছানার সহিত তঙ্লচ্গ মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে পেষণ করিয়াঁ লইবে। ইহালারা দৃঢ় কৃপিরা প্রস্তুত্ত করিয়া স্থতের সহিত সমাকৃ পাল করিবে। অনস্তর ঐ কৃপিকার মধ্যদেশ মধ্যে ঘনহয় অধিং ক্রীর দারা প্রণ করিয়া ময়দা দিয়া মুখ বছ করিয়া দিতে হইবে। তৎপত্র উহাকে তপ্ত মৃতে পাক করিয়া কর্পর্বানিত করিবে, পরে উৎকৃষ্ট চিনির রসে নিমজ্জিত করিয়া ক্ষণকাল পরে ভ্লিয়া লইলে ভাহাকে হয়কৃপিকা বলা যায়। ইহার গুণ—বলকারক, পিন্ত ও বায়ুনাশক, পৃষ্টিরানক, শীত্রীর্ঘা, গুরু, শুক্রবর্দ্ধক, তৃপ্তিকারক, শাতির্বানির ত্রপচয়কারক এবং ইহা দেবন করিলে দর্শনশক্তি পরিবর্দ্ধিত হয়য়া গাকে। (ভাবপ্রণ)

তুমা তালীয় (ক্লী) ছম্মত ভালার প্রতিষ্ঠার হিডং। ছম্মান, ক্লীরফেন, ছ্ধের সর।

क्यंता (बी) । इसः मनांचि या इस-न जित्रार होन्। द इस (नत्र)

তুগ্ধপরিমাপক যন্ত্র, (Galacto-meter or lacto-meter) হয়ের গুণাগুণ ও বিশুছতা পরীকা করিবার ষদ্ধ বিশেষ। অনেক ফলেই গোরালার নিকট বিশুদ্ধ ছগ্ধ পাওরা যার না, দ্রবীক্ষণ ব্রধারা । দেখিলে ত্থাত্থ অপরাপর মিশ্রদ্রব্য অনেক দেখিতে পাওরা যাঁয়। স্বাদ গলাদি হারাও উহা কিয়< পরিমাণে অরুভূত হয়। 'ছফের মধ্যে মাধনের অংশ অথবা ইহাতে মিশ্রিত,জলের পরিমাণ নিরপণ করিবার জন্ম হ্রাপরিমাপক খল্লের প্রয়োজন হয়। এই , যদ্ভের গঠন ও ব্যবহার অবতি সহজ্ञ। একটা স্ক্ল কাচের নল ১০০ অংশে[®] বিভক্ত।ু যে হগ্ন পরীকা করিতে হইবে, তাহা ঐ নলে পূৰ্ণ করিয়া ঢালিয়া লিতে হয়। কিয়ৎকণ রা**থি**য়া দিলে ছথ্মের নবনীতাংশ সম্দর্শয় উপরে ভাসিয়া উঠিবে। তথন ঐ নবনীত নুলের কত অংশ ব্যাপিয়া আছে, তাহা নলের গালে চিহ্ন দেখিয়া লইলেই ছবেধ শতকরা নবনীতের ভাগ বাহির ইইল। ডোফেল সাহেব, হগ্ন পরীকার জভা একরপ বারিমাপক যন্ত্র আবিকার করেন, ইহা ছই ইঞ দীর্ঘ এবং ২০ অংশে বিভক্ত, বিশুদ্ধ অংল দিলে এই যদ্তের ॰ চিহ্ন পৰ্যান্ত ডুবে এবং আপেক্ষিক গুরুত্ব ১.৩৮৩ হয়। এমন কি কোন দ্ৰব পদাৰ্থে দিলে ২০° চিহ্ন পৰ্যাস্ত ভূবিয়া যায়। হ্ম নিৰ্জ্জল হইলে ঐ'যন্ত্ৰ ১৪০ অংশ চিহ্নিত স্থান প্ৰয়স্ত ভূবে। বলা বাহল্য ভূধে আপেক্ষিক গুরুত্ব জলের অপেকা কিঞিং অধিক। জল মিশাইলেই ইহার আপেকিক গুরুত্ব হ্রাস হর, স্কুতরাং হুগ্ধপরিমাপক যন্ত্র অধিক ডুবিয়া যায়।

ত্র্রপাচন (ক্নী) পচাতে হিমারিতি পচ অধিকরণে লা্ট। ত্র্র পাকের পাত্র, যাহাতে হ্গ্ম পাক করা যায়। প্র্যায়—বজ্রক। হৃষপাযাণ ৰ পৃং) হৃষং ক্ষীরং পাষাণ ইব কঠিনং যঞ্চ। বৃক্ষ-वित्यव, भित्रशानां, भर्गात्र-इक्ष्मायांनक, इक्षामां, कीती, গোমেদুসলিভ, বজ্রাভ, দীপ্তিক, হৃগ্নী, ক্লীরক্ষব। ইহার খণ--কচিকারক, ঈষত্ঞ, জ্বর, পিত্ত, হুডোগ, শ্ল, কাস ও আগান-বিনাশক।

হৃষপুচ্ছী (স্ত্রী) ছগ্ধবৎ শুভং পুচ্ছং মূলদেশো যস্তা: গৌরাদি-चार डीय्। वृक्तविरमय, इंधरप्रया, भर्याय -- रमवकान्, निमा-**७का, नमकती। ( अक्**ठ॰ )

ইউবিপীষ্য ( তি ) ছ্শ্লেন পোষ্য:। > যাহারা কেবল ছগ্নপান করিয়া জীবিত থাকে। ২ শিশুন,

ইন্ধকেন ( পুং ) ১ ছগ্মস্ত ফেন ইব ফেনো যত্ত। ১ ক্ষীরহি তীর, পঁযার—শার্কর। ﴿ রাজনি॰) ২ ছবের ফেনা।

१वटकनी (जो) इश्ववर छलः त्कर्तनावछाः शोवानिषार छीष्। ক্ষ কুপবিশেষ। পর্যায়—পরংকেনী, কেনগুলা, গরস্বিনী, বিদ্ভক্ক (পুং) ছ-উপতাপে ভাবে কিপ্তৃক্চ ছৎ উপতাপ:

প্তারি, বুণকেড্রী, গোলাপ্নী। ইহার খণ-কটু, ডিজ, শীতল, বিষত্রণনাশক এবং ক্লচিকর। (রাজনি॰)

ত্ববিষ্ণ ক (পুং) ছথার্থং বন্ধ: ভডো কন্। ছথছো হনের । ছথ গোবন্ধ। "পীতছ্মাতৃ ধেহুৱা সংস্থিত। ছ্যুবন্ধকৈ:।

( হেম ও ৪ ৩৩৬ )

प्रुश्च वीखा (खी) इसवर खनः वीखा यकाः। यवनानामः ख्लून, চিপিট। ইহার গুণ—স্থকপুর, হর্জর, বীর্যা ও প্লুষ্টিদারক।

नुक्षेत्रभूतः (१९) त्रभूजितिस्य। त्रश्च त्रभूति सम्हा वक्षेत्र त्रभूति । দুর্গ্বাক্ষ (পুং) ছগ্ধবং ভলং অকং নেত্রং চিহ্নবিশেষো যক্ত। উপল বিশেষ।

ছ্রান্ধি (পং) ছব সম্জ।

দুর্ধাব্রিতনয়া (স্ত্রী) ছগাব্রেজন্ম। দুন্দী।

मुक्कां**ख्र्**थि ( प्रः ) इक्ष मम्ख ।

मुक्षीन्यान् ( थः ) इक्षः क्षीतः षात्रा প্রস্তর ইব কঠিনং যক্ত। इक्ष-

দ্বিকা (•লী) ছগ্ধং নিৰ্য্যাদো বহুলতয়া বিভাতে যভাঃ ছগ্ধ-ঠন্ টাপ্চ। বৃক্ষবিশেষ, হ্ধী হ্ধ্যাকীব । প্র্যায়—আবহুণ্ণী, की तारी, की तिनी, इसी, की ती, को तालाका। (भक्तः) ইহার গুণ-উষ্ণ, গুরু, রুক্ষ, বাতল, গর্ভকারক, স্বাহুক্ষীর, কটু, তিক্ত, মলম্ত্রোপদর্গকারক, পটু, স্বাছ, বিষ্টম্ভী, বলকর এবং কফ, কুষ্ঠ ও ক্লমিনাশক।

২ গন্ধিকারক, ইহার পর্যায়—উত্তমা, যুগাফলা, উত্তম-ফলিনী। (রত্নমালা)

कृश्चिन् ( जि ) इश्वम् छात्र हेनि । की त्र दुक्त ।

তু শ্বিনিকা (ব্লী) বক্তাপামার্গ, লালঅপান।

मृश्वी (श्वी) इश्वः कीतः वहन्छ्या अखाद्याः देखि व्यर्भक्षिः ভাৰচ্গৌরাদি ভীষ্। ক্লীরাবী, পর্যায়ে — উত্তেশা, ভুগ্নিকা, एकी, करनाख्या, कनिनी, इक्ष्मायान। ( त्राक्रिन )

দ্ঘ (অি) ছহ-ক ২স্ত ঘ। দোহনকর্তা। "কামছ্যা গৌ:" ্রিদ্বান্তকো°) এইুরূপ প্রয়োগ কোন উপ**শ**দ পাকিলেই হয়, অকথা হয় না, বেমন কামত্বা। এই ছলে কাম উপপদ शकाय , এই প্রয়োগ সাধু। आत य ছলে উপপদ পাকিবে না অর্থাৎ ছব এই পদের পুর্ব্ধে কোন শব্দ গাকিবে না, সেই স্থলে এইরূপ প্রয়োগ হইবে না।

দঙ্গাগালি, পঞ্চাৰ প্ৰদেশত হাজারা জেলার মধ্যে একটা কুদ্র স্বাস্থ্যবাস , এীমকালে মুরোপীরগণ এথানে আসিরা किছूमिन वभवाग करव्रन।

IIIV

ভরিবারণে শকোতীতি শক-পুচাণ্যচ্। সুরা নামক গন্ধজব্য বিশেষ, বিহারাগ্যবকাশক।

দুচহুন (জি) ছট উচ্ছুন: থ্যাদিস॰ প্ৰোদয়াদিভাৎ সাধু। ছট উচ্ছুন। ছচ্ছুন ভূশাদিক্যঙ্। "কিমমান্ ছচ্ছুনায়সে।" (ঋক্ ৭।৫৫।৩) 'ছচ্ছুনায়স বাধসে।' (সায়ণ)

দুচ্ছ ন (পুং) ছষ্ট: খা প্রাদিসমাসঃ প্যোদরা সাধু। ছষ্ট কুরুর।
"আবে বাধস্ত হচ্ছুনাং।" (শুরু যজু ১৯০৮) 'ছষ্টাশ্চ ডে
শানশ্চ ভেষাং।' (বেদদীপ )

দুজনা, পঞ্জাব গবর্মেণ্টের অধীন একটা দেশীর রাজ্য। অক্ষাণ্
২৮: ৩৯ ১৫ হৈতে ২৮ ৪২ ১৫ উ: এবং জাঘি ৭৬ ৩ ০ প্
ইততে ৭৭ ৪৩ পু: পর্যান্ত বিস্তৃত। এথানকার নবাব মহম্মদ সাদত আলী থা আফগানবংশীয়। ইংরাজ সেনাপতি লর্ড লেক আবহুল সমন্দ থার কার্য্যে অভিশয় সন্তুঠ হইয়া তাঁহাকে ও তাঁহার পুত্রদিগকে আজীবন ভোগ করিবার জন্ম এই স্থান প্রদান করেন। ১৮০৬ খুটাকে গবর্ণরজ্ঞেনারল এক চিরস্থায়ী সনন্দ দিয়াছিলেন। এই সময় হরিয়াণা জেলাস্থ কএকটা জমিদারী এই সনন্দের অন্তর্গত হয়। ৫ পরে সেই কতকগুলি গ্রামে জমিদারীর পরিবর্ত্তে আবহুল সমন্দ রোহতক ক্রেলাস্থ হজানা ও মেহানা গ্রাম গ্রহণ করেন। ছজানা গ্রাম দিল্লী হইতে ৩৭ মাইল পশ্চিমে অবস্থিত। এথানকার নবাব কার্যাকালে বৃটীশ গবর্মেণ্টকে ছইশত অখারোহী ঘারা সাহায্য করিতে বাধ্য। এই রাজ্যের ভূপরিমাণ ১১৪ বর্গমাইল। লোকসংখ্যা প্রায় ২৫ হাজার, তন্মধ্যে হিন্দুর সংখ্যা বেশী।

তুটা (দেশুজ) হই।

তুটী (দেশজ) হই।

मुंगेथानि (मिनक) अब পরিমাণ।

मू ( द्वी ) इति नच ७:। इति, कळ्शी।

দুডুম্দার্ম, দুডুম্দাড়ুম (দেশজ) গোলাগুলি নিংকৈপ কিংবা বাবে আঘাত করার ভাষ শব্দ।

ন্দুপুক (জি) কণ্ড ইব কামতি কৈ ক প্ৰোণ ভলোপ:। ছইচিত।
দণ্ড (পঃ) দ্ৰেড়তি মজ্জতি জড় মজ্জনে উ ভ কুন রলোপণ্ট ।
(উভ: কিং কুদিড়ডিভাগ কন্বুণোরলোপণ্ট। উল্ ১।৪৪০)
ইত্যাণাদিকোষ্টাকাধ্তস্ত্রাং সাধু। ডুণ্ড স্পু, টোড়া
সাপ। "শ্বর্মীনাং মহাহৌডাং প্রাস্থ শক্ত্যুগ্র ছণ্ডভাং।"
(ভারত ৬)১৪৪)১৭০)

দৃণ্ডুভি (পুং) হৃন্দৃভি প্ষো• সাধু। হৃন্দৃভি।
দৃত (ত্রি) হৃ-উপতাপে জ ं পীড়িত। •

ি "মৃত্তরা ত্তরা।" ( মাখ ) 'ছ-গভৌ' এই অর্থে ছধাতুর উত্তর 'ক্ক' প্রত্যর করিলে 'দূন' এইরূপ পদ হইবে ।

দুলাহি, উ-প প্রদেশের ললিভপুর জেলার অরপত এইটা প্রাচীন গ্রাম। ললিভপুর হইতে ১৯ মাইল দক্ষিণে রাম সাগর নামক একটা হুদের ধারে ও ছদরিয়া নামক গিরি. হুর্দের প্রায় অর্থমাইল পূর্বে অবস্থিত।

এথানকার প্রভৃত ধ্বংশাঁবশেষ দৃষ্টে এই গ্রামের প্রাচীন সমৃদ্ধির যথেট পরিচয় পাওয়া যায়। রামদাগরের তীরে এথানকার অতীত কীর্ত্তির বিশিষ্ট,নিদর্শন নিহিত রহিয়াছে।

এখানকার বরাহমন্দির ও ব্রন্ধার মন্দির উল্লেখবোগা।
ভারতে ব্রন্ধার দাদির অতি বির্বা, কিন্তু এখানকার স্থানিত ও শিল্পনৈপুণাযুক্ত মন্দিরটা দেই অভাব মোচনু করিয়াছে,
এই ব্রন্ধানির চন্দেলরাজ যশোবর্দ্ধার পৌত্র দেবলন্ধি কর্তৃত্ব
প্রায় ১০০০ খুটান্দে নির্দ্ধিত হইয়াছে। মন্দিরটা জগমোহন
ভোগমন্ত্রপ ও গর্ভগৃহ এই তিন অংশে বিভক্ত। গর্ভগৃহট অন্ধকারময়ণ এই গৃহহর মধাস্থলে বাবের নিকট নবগ্রহ
রক্ষিত হংসোপক্রি চতুমুর্থ ব্রন্ধার্ম্তি বিরাজিত। খুটার ১০০
দত্তান্দে উৎকীর্ণ কুটিলাক্ষরের ছয় থানি নিলালিপি এট
মন্দিরে উৎকীর্ণ আছে।

এই গ্রামে ছইটা ভগ্ন জৈনমন্দির পড়িয়া আছে। ইহা একটাতে এখনও ৮হাত উচ্চ একটা দিগম্বর জিন মুর্তি রিট রাছে। অপরটাতে পূর্বেই ২৪টা তীর্থইবের মূর্তি স্থাপিত ছিল বাক্ষণদিগের উৎপাতে জৈনমূর্তিগুলির অন্তিম্ব লোপ হইয়াছে

প্রাম হইতে একপোরা পথ পশ্চিমে বিণিরা কা বরা নামে এক অপল পড়িয়া আছে। এই জললের মধ্যেও অনে প্রাচীন মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ দৃষ্ট হয়।

চনেলরাজ সলক্ষণিসংহের একথণ্ড খোদিত লিগিং এই স্থান 'ছগ্মকুপ্যগ্রাম' নামে বর্ণিত হইয়াছে ৷

पृन्या, बहारे खुषी जिनाइ श्रेवाहिक अकी ननी। गरइवन अ ननारे ननीत मिनटन अर्थे ननीत खेरुপछि हरेबाहि। अ ननीजीदित गर्दार्स के व्याप्त कार्यानि विकराइत अव बाष्ट्रक व्याद्ध। अर्थे ननीत कार्यात कअकी जेननी बार यथा—श्रेननी, कार्या, दिश्ली, त्युक्तीक, त्मारनमा, जार्यार क्रम श्रीन कृतिनह गित्रिमानां हरेट वाहित हरेबाहि क्राथा प्राप्ति हरेका क्रमां क्रमां क्रमां क्रमां क्रमां क्रमां क्रमां क्रमां श्रीमां क्रमां क

"বীর্যান্বিতৌ কার্যাবিলঞ্চনাথৌ অক্ষাদিগেনাস্ততরো যুনজি অস্তৌ যদা বৌ বলিনৌ তদাস্তসহায়তঃ কার্যামুশন্তি সন্তঃ॥

 নীলক্ষ্ঠতার্জি

লগ্নাধিপতি বা কার্ব্যাধিপতি বলবান্ হইরা বংক্ত স্থিত কোন গ্রহের সহিত ইথশালী হইলে এই বোগ।

चान्त्रत्र नाहारमः अञ्चलन धीनान करतः। भक्तास्तरत्र यनि লগাধিপতি বা কাৰ্যাধিপতির সহিত অঞ্ভ ৰলবান্ গ্রহৰয়ের हेथमान रम, जाहा रहेरन अरे राता एक कन अन इहेरत। তু (আ) হং উপতাপঃ তংুদদাতি দাক। বাতনাদায়ক। • फ़ु (तिभव ) इटे निक्, इटे शकः। তুতুষ্ ( পুং ) আঁত্বংশীর নৃপজেদ। ( হরিবংশ ৩২ আঃ ) দত্তম (পুং) হর্ডিটোক্রম: প্ৰোদরীদিছাৎ রলোপ:। ইরিৎ প্লাণ্ডু, সবুজবর্ণ পৌরাজ। त्रुश ( (मनन ) इस । द्वर्यकल्या ((पमनः) देश्यक्षिक शाना विद्यान তুধকল্মী ( দেশৰ:)গুলভাবিশেষ। তৃধকুশী ( দেশজ ) বৃক্ষবিশেষ। (Convolvulus turpatham) कृथरकोरतञ्जा (त्मेच) तृक्कविराव। (Trichosanthes anguina) जूशर्ही भा ( (नमब ) हल्लक एखन । प्रेथ एका ला ( प्रमंख ) इत्याखनन । त्या के अप्र क्रेटन (इत्नवा ছধ তুলিয়া ফেলে। দৃধদাঁত (দেশবা) শিশুদিগের প্রথমোদগত দস্ত। द्र्रिंभिष्ठे ली (पन्छ) वृक्तर्छम। (Dolichos lignosus) দুধপুর, বোখাই প্রদেশের রেবাকান্থার অন্তর্গত একটী কুজ সামস্তরাজ্য। ভূপরিমাণ ২ বর্গমাইল মাত্র। এথানকার স্কার রাঠোর রাজপুত। বরদার গাইকবাড়কে ৩০ টাকা মাত্র কর দিতে হয়। ৰুধক়েজ, গুৰুৱাটের ঝালাবারপ্রাস্তের মধাবন্তী **একটা কু**জ পামস্তরাজ্য । ছইথানি মাত্র গ্রামু লইয়া এই বিষয়। আয় প্রায় ১৮০৪ - , তন্মধো ১১০ - ্ টাকা বটাশ গবংমণ্টকে এবং ^{৯৭} টাকাল্জুনাগড়ের নবাবকে কর স্বরূপ দিতে হুয়ঁ। হ্ধলতা ( নেশল ) ক্ষীরীবৃক্ষ। দুধাধারী, এক সন্ন্যাসী সম্প্রদায়। ইহারা কেবল মাত হগ্নপান क्तिया भन्नीत त्रक्षण कटत्रन । ছুধি (ত্রি) ছধি হিংসাকর্ম ইতি ভাষ্যোক্তে ছধ-হিংুসায়াং কি। > হিংসক। "স্কুম গুভে ছ্ধন্নে হৰ্কতে।" ( ঋক্ ৬।৩৬।২) ^{'হ্ধরে} হিংসকার।' (সায়ণ) তেপচারহেত্ হর্ধর এই অর্ধও रुरेरव। "इर्रेंधयुक्तिक स्वतकः महानमा।" (अस् ১०।১०२।७) 'ইংধ্কু জিরক্ত' ( সাম্বৰু) ছ্ধিত ( আ ) কুন্দ্ভিত, বিরক্তা 😘 इधिकू ( पूर ) इस्बब्ह् । इसिंग्ना (रम्भन) > इस्तरभाग्रा। २ क्षयुकः। ছ্ধু (অি) ছধ ৰাছ॰ রক্। ছটং বাঁধারয়ভি, ধক প্ৰোলরাদি॰ শাধু:। ১ হিংসক । ২ কোরক । ৩ ছবির ৷ ৪ ছবি ৷

ৎ হটবাব্যাপক। "হুও আত্বুরামর্রি দামনি।" (গক্ ১।৫৬।৩) 'গ্ৰঃ ছটানাং ধৰ্তা, ব্যবস্থাপয়িতা বা' (সামণ) "গ্ৰন্ধকতো मकराजा लांबाज्हेतः" ( चक् ১/৬৪/১১ ) 'ज्यक्र ज्याः क्हेर नाटेखः इर्फर्षः वा चाचाना' ( नायन ) ছপ্রকৃৎ ( তি ) হন্ত কার্যাকারী। ছুএবাচ্ ( জি.) হন্ত কথা, না ব্রিরা মনকথা বলা। ञ्न् ( (रमज ) मीख। छून ( (मण्य ) विश्वग । छ्ना (समम) विश्वना দুনিয়া ( আরবী ) পৃথিবী, জগং। पुनियानात ( भारती ) भार्षित वा माःमातिक कार्या निश्व । मुनियानाती ( পারদী ) পার্থিব কার্যাসম্ক্রীর। मुञ्जी (रम्भ ) विश्वन । দুন্দম (পুং) হল ইতাবাকেশকেন মণতি শকায়তে ইতি মণ শিক্ষেড। জ্লুভি। (শক্ষর॰) দুন্দু (পুং) > বস্থদেব, শ্রীক্লফের পিতা। ২ হৃন্দ্ভিবাদ্য। म्नुम् ७ ( पूर ) इम् रेठाराजमकः छनि छन छ । इम् छिरामा । দুন্দুভি (পুং) ছন্ ইতাবাজ শুমেন ভাতীতিভা বাহণকাং কি। বৃহৎ ঢকা, পর্যায়—ভেরী, আনক। "আকাশে ছফ্ভীনাঞ বভ্ব ভুম্ল: খন:।" ( ভারত ১৷১২০৷৪৮ ) ২ বরুণ। ৩ দৈত্যভেদ, দানববিশেষ। "অভৰন্ দফুপুত্ৰান্চ শতং তীব্ৰপরাক্রমাঃ। শকুকর্ণো বিদারশ্চ গবের্চো ছন্দুভি তথা ॥" ( হরিবংশ ৩৮১) ৪ রাক্ষদভেদ। ৫ বাছাবিশেষ। ৬ বিষ। ৭ কুরুরবংশীয় অন্ধকের <u>খুঁ</u>ত্র। (ভাগ° ৯৷২৪৷২• ) ৮ ক্রৌঞ্**গী**পাধিপতির প্তের অন্তম। ৯ ক্রোঞ্দ্বীপের দেশভেদ। (•বন্ধাওপু) ৩৬ অ: ) > ॰ পর্বতবিশেষ। (মৎস্থপু॰ ১২১।১৩) ১১ অক্সরবিশেষ। "শায়াবী নাম তেজন্বী পূর্কজোহস্ভে: হুত:।. তেন তক্ত মহদৈরং রলিনঃ জীকুতং পুরা ॥" (বিশ্বা ৪।৯।৪) महिषक्षी मानव, वाली हेहाटक वर्ष कतिया हेहात एमह आधा-মুখে ক্ষেপ্রণ করে, সেই অবধি মহর্ষি মতক্ষের শাপে বালী আর ঝন্তমুথে আসিতে পারিত,না। (রামায়ণ কি॰ ১১ দর্গ) (खी) >२ এক खन शक्तर्सी, उकात चारमरण महता हहेगा अन्य अहन করে, ইহারই উল্থোগে রামের বনবাস হয়। (ভারত বন २१८ च॰) ১৩. चक्कविटमय, शामक, अज्ञविम् विक्षय। ১৪ একপ্রকার প্রাচীন আনদ্ধ যন্ত্রবিশেষ। मून्मू छिक ( ११ ) की विष्ठपः [ को वे (प्रथः ]

मुन्तृ (अति होम ( प्रः ) इन्त्र खुतिवनिर्दाता यक्ष । । भानवर छन । ( कन्त्र )

मृर्क्यु (छिट्रश्व ( प्रः ) इन्यु (छः । तनात्राः, यक्ष, व्यवामानिः यक्षः । न्यु एकष्टनः ।

দৃন্দুভিন্তন (পুং) ছন্দুভে্বাখ্যভেদশু খনোয়তা বিবচিকিৎ-সায়াং। স্থশ্রতোক্ত বিষ্চিকিৎসাভেদ। "অথাতো হৃদ্ভি-অনীয় মধপ্রাং ব্যাখ্যাভাম: "ইত্যাদি" (স্ফুড্ড করছা" ৭ অ:)। বচ, (ধোয়াগাছ) অখকর্ণ, ( লতাশাল) তিনিশ, পিচুমর্দ ( নিম্ব ), পাটলী ( পারুল ), পারিভদ্রক, আম্র, উড়ু-ম্বর, করহাট, ককুভ, সর্জ্জক, আম্রাতক, শ্লেমাতক, অঙ্কোট, আমলক, প্রগ্রহ, কৃটল, শমী, কপিখ, অশাস্তক, চিরবির, মহা-বৃক্ষ, সুহীবৃক্ষ, ভল্লাতকবৃক্ষ, খোনাগাছ, মধুর, রক্তসন্ধিনা भाँक, शास्त्रो, मृद्धा, जिनक, शाक्त्रक, शाप्रचणी, व्यदिसम এই সকলের ভন্ম গোমৃত্র সহযোগে ক্ষার প্রস্তুত করিবার প্রণালী অমুদারে প্রাবিত করিয়া অর্থাৎ ছাকিয়া পাক করিতে হইবে। পরে পিপ্পলীমূল, তত্ত্বীয়ক, অমবেতস, চোচক, গুড়ত্বক্, মঞ্জিচা, করঞ্জিকা, গজপিপ্ললী, মরিচ, উৎপল, শ্রামা-नहा, विक्क, सून, अनसम्न, त्रामनहा, एउउँ।, कूह्म, मान-পরী, কেওড়া, খেতসর্বপ, বরুণবৃক্ষ, দৈর্বলবণ, পাক্ড, হিজ্জলবুক্তি, গাবভেরাগুা, বেতদ, মৃষিকপণী, ছাতিমের জাঁটা, हाजिल ज़ा, बाउरेह, शक्षणिता, हत्रीजकी, जन्माक, क्ष्रे, हित्रम!, वह ७ लोहरूर्व अहे मकन जवा सिहे कादि श्रास्कर করিবে। এই ক্ষার ধারা ছন্দুভিপতাকা ও ভোরণাদি **(लशन कृ**तिरव। ভाहां निश्तत अवग, नर्मन वा स्थार्म विष নষ্ট হয়। শর্করাশারী, অর্শ, বায়ুজন্ত গুলা, কাদ, শূল, উদরী, অজীর্ণ, গ্রহণী, অফুচি ও সকলপ্রকার শোক ও প্লাস এই সকল ধ্রোগেও দেবন করান যায়। ইহা সকল প্রকার বিষের প্রতি কারের পক্ষে বিশেষ উপযোগী। (স্বশ্রুত ছুন্দুভিম্বনীয় চিকিৎ-সিভাধ্যার)

-দুন্ ভিস্বর ( গং ) ছল্ভির শক।
দুন্ ভিস্বর বাজ ( গং ) কএকজন বৃদ্ধের নাম।
দুন্ ভিস্বর বাজ ( গং ) কএকজন বৃদ্ধের নাম।
দুন্ ভা ( গং ) ছল্ভে দানবভেদে বিবে বাদ্যভেদে বা ভবঃ
প্রস্তোবা যথ। ১ কুরভেদ'। 'নমোছল্ভাায় বক্সায়' (গুরু যজু
১৬।৩৫ ) ছুন্ ভ্রে' ত্বাদনায় সাধু যথ। ২ ছল্ভিবাদন
সাধনমন্তেদ। "ঐস্তাঃ ক্রিয়ন্ত চক্রছন্ ভাঃ" ( কাত্যাণ
প্রৌ ১৪।৩।১০) 'ক্রিয়ন্ত চক্রারোহণে ছল্ভেবাদনমন্ত্রা
ক্রিয়া ভব্রি' ( কর্ক )।

দুন্দুমার (পুং) ধুজুমার প্যোদরা॰ সাধু:। ধুজুমার। (শব্দার্থকর॰) দুফানিকুত্থ (ক্লী) নীলকণ্ঠভাজিভোক্ত বর্ধপ্রবেশযোগ ভেদ। শমন্দঃ বভোচ্চাদিপদে বিভক্তেৎ পদোননীদ্ৰেণ ক্ৰভেথশালঃ। ভত্ৰাপি কাৰ্য্যং ভবভীতি বীচ্যং

বক্রাদি নিব্বীর্যা পদে ন চেৎ স্থাৎ ॥" (নীলকঠোক্ত তান্ত্রিক)

মন্দগতিগ্রহ স্থান্ত স্থাক্ষেত্রাদিরহিত হইয়া শীলগাই
গ্রহের সহিত ইথশাল যোগবিশিষ্ট হইলে, যদি উন্ত শীলগতি গ্রহ অন্তগর্ত, নীচগত বা বক্রগত না হর, তাবে গ্রহ যোল হয়। এই যোগ কার্যা সিদ্ধিকারী, এই যোগে: নাম 'ত্কালিক্য' এইরপও পর্চ্চ দেখা যায়।

দুপর (দেশজ) বিপ্রহর, মধ্যাক্ত, মধ্যরাত্তি।
দুপরেমণি (দেশজ) স্থলর পূষ্পর্ক বিশেষ, ইহার পূ
মধ্যাকে প্রকৃতিত হয়।

मुभागि (तम्ब) भूष्भव्यः वित्मव। .

দুবরাজপুর, বাদালার বীরভূম জেলার অন্তর্গত একটা নগর

অক্ষা ২০ ৪৭ তির্নে উট এবং জাঘি ৮৭ হর্ব পূ:। এখা

মুনসফী আদালত, থানা, নানা থাদ্যজন্ম ও তৈজ্ঞলা

বিক্রমের এক বৃহৎ বাজার আছে। এথানে বহুসংখ

পুক্রিণী এবং পুক্রিণীর তীরে বিস্তর তালগাছ দেখা যা

ঐ সকল তালগাছ হইতে যথেষ্ট তাড়ী সংগৃহীত হইয়া থাকে

নগরের দক্ষিণাংশে দানাদার পাথরের এবং কাল অকে
পাহাড় আছে। এই পাহাড়ের উপর উঠিয়া পরিকার দি
পার্মনাথ, রাজমহল ও পঞ্চুট পাহাড় নয়নগোচর হয়।

পাহাড়ের উপর পাথর কাটিয়া একটা স্কর্মর শিবালয় নি

হইয়াছে।

দুমকা, ন্রা, (ছমকা) > বালালার অন্তর্গ্র সাঁজ পর্যণী জেলার সদর সব্ভিভিজন। প্রিমাণ ফল স বর্গমাইল।

২ সাঁওতাল পরগণা জেলার ও ঐ জেলার নরাছ সব্ডিভিজনের সদর। অক্ষা ২৪°১৬ উ:, জাখি ৮৭ ৩০ পু:। • ইংরাজ রাজছের প্রথমাবছা হইতেই হৃষ্টংরাজ গবর্মেন্টের থানার নাম দেখিতে পাওয়া ১৭৯৯ পুটালে হৃমকা বীরভ্মের অধীন একটী ঘটো থানা ছিল। ১৭৯৫ পুটালে রাজমহল পার্কত্য প্রশান্দান জন্ত ইহাকে ভাগলপুরের অধীন একটী "কেইিং থানা করা হয়। ১৮৯৫ পুটালে প্রত্যান্ধ ইহার নাম বিশিয়াই গুনা যায়, ঐ বৎসর সাঁওভাল হালামার এছানের ছাউনির ইংরাজ সেনানী ইহাকে নয়। বিলয়া বর্ণনা করেন। এখনও লোকে সচরাচর। হৃদকা নাম বাবছত ছমকা নাম বাবছত

১৮৫৫ খৃটাবে ছন্কা 'সাঁওতাল পরগণা' জেলার সদর হর,
কিন্তু কিছুদিন পরে ঐ জেলার প্রত্যেক সব্ভিভিজন স স্থ
প্রধান এক একটা জেলা হইলে ছন্কা কেবল ছন্কা সব্ভিভিজনের সদর থাকে, পরে ১৮৭৩ খুটাকে ঐ সমত ক্র
জেলা মিলিত বইলে ছম্কা প্নরার-সমত্ত গাঁওতাল পরগণার
সদর হইল। এখানে জেলা সংক্রান্ত কাছারী প্রভৃতি
আছে। মোড় নদীজীরে ইহার বাজার অবস্থিত; বাজার
তত উৎকট নহে।

দুপাটী ( লেশৰ ) একপ্ৰকার ছোট ফ্লের গাছ। (Impatiens Balsamina)

তুপেঁচা ( দেশজ ) বাহার হুইটা পেঁচু আছে।

प्रकाक ( (पन्य ) विशा

তুবার ( দেশজ ) ছইবার ।

তুভাষিয়া ( দেশজা) বাহারা ছইপ্রকার ভাষা বলিতে পারে। তুমুখ ( দেশজা) ১ ষাহার ছই দিকে মুখ। ২ সপ্তেদ।

हुमू फ़ि ( **प्तमक** ) > इमूथ । २०वाँका ।

চুমেটিয়া, ছুমেটম (দেশজ) ছইবার মৃত্তিকা প্রদত্ত। ইহা কেবল মৃত্তিকাদারা দেবমূর্ত্তি নির্দাণ বিষয়ে ব্যবহৃত হয়।

হুমুড়া (দেশজ) বাঁকান।,

হৃষক (পুং) ছম্বা, মেষভেদ।

হুম্বাডেড়া ( দেশব ) মেষবিশেষ।

**ब्रा**त ( रम्भक ) चात्र, मत्रका।

हुর্ (নৃ) ( অব্য ), ছ-ক্লক্ স্থক্ বা। ১ হট । ২ নিজা। ৩ নিষেধ। ৪ হংব। ৫ ঈবদর্ধ। ৬ ক্লচ্ছোর্থ। ৭ কুশ °৮ অসম্পক্তি। ৯ স্কট। কিয়ার সহিত্রোগ হইলে হর্বা হস্শক্ত উপসর্গ হয়,।

নুর্ ( তি ) দূ- কিপ্ । বার । "ত্রোদ্যতান্তক্ষরং" (ঋক্ ১।১২৮/৫)
'বাছরঃ যজ্ঞ স্ট্রারা' ( সারণ )। "ত্রোমাইধী দেব আচ"
( ঋক্ ৫।৪৫।১) 'মাইধীমইন্তসম্বিনীছ'রঃ বার: ।' ( সারণ )
নুর ( তি ) ত্-বাত কুর । দাতা। "ত্রো অখত ত্র ইক্র" ( ঋক্
১)৫০২)। 'হ্রোদাতাসি' ( সারণ )

বুরক ( পুং ) ছটো অক: প্রাদিস: । ১ কপট পাশক। ২ ছই-নেব। "অকুইর্পুক্রজাকি প্রশায়দেতি হ স্থাহ যাজবংলা। হরক ইন হাদ:" ( শত ুরা তাসাহাস ) 'হরক্ষের অঞ্জনন নাশ্যতি' (ভাষা )। হটমকি যন্ত যুচ্সমাসাক্ষা। ৩ তহাক হটনেব্যুক্ত। হুটো অক্ষা বুরু। ৪ ছুট্গুত। "

্রিভিক্রম (অ) ছংগ্রেন অভিক্রম্যতেহসৌ হর-অভিক্রম ধন্। স্বাহা ছংথে অভিক্রম করা বাহ্ন, অনজ্যনীর, যাহা অভিক্রিক্রম করা হংসাধ্য। ২ অজের। "সর্বস্থিত পদা দাধ্যং তপাহি হয়তিক্রমং।" (মহু) ও বিষ্ণু। (ভারত ১৩/১৪না৯৬) দুরত্যন্ন (জি) ছংথেন অতীরতে গুর্-অতি ই-থন্। > ছয়তিক্রম-নীয়। ২ ছতার। "অর্গমার্গপরিবো ছরত্যরঃ" (রঘূ॰)

ত্রত্যেতৃ ( অ ) 'ছর-জাতি-ই-কর্মণি তুন্। ছরতিক্রমণীর ।
"তাত্রি পাশাসন্তভ্ত সেতৃ ছরত্যেতৃ রিপবে মর্ত্যার" ( ঋক্
৭।৬৫।০) 'ছরত্যেতৃ দ্রতিক্রমণীরেট ( সারণ )

मूत्रमुके (क्रो) इत् इहेर अपृहेर । इडीमा, भीण । मन्नजीमा । भागजीमा । भागजीमा । भागजीमा । अविवास क्रिया क्रा यात्र, जाहात्र अविवास क्रिया क्रा यात्र, जाहात्र अविवास क्रिया क्रिय

দুর্ধিপ (অি) ছংখেন ২ থিগম্যতে ২ সৌছর-অধি-পম বাহণ কর্মণিড। ১ ছত্থাপা। ২ ছজেমি।

• দুরধিগম (জি) ছংখেন অধিগদ্যতে ছ-অধি-গম কর্মণি খল্। ১ ছ্প্রাপ্য। ২ ছজেরি।

দুর্ধিষ্ঠিত (জি) হর্ অধি-হা-ক্ত। > নিতাম্ভ মন্দভাবে সম্পা-দিত। (পুং) ২ অমুপযুক্ত গৃহাধিষ্ঠান।

দুর্ধীত (ক্লী) হুটং অধীতং প্রাদিস॰। হুটাধারন, মন্দাধারন।
*বদ্ধীতমবিজ্ঞাতং নিগদেনৈৰ শক্ততে।

সোহনগাবিব তকৈধো ন তজ্জলতি কহিচিৎ ॥" (নহাভায়)

যাহা অধীত হইনাছে, অথচ অবিজ্ঞাত অধাৎ ধানা
হর নাই, বলিবারও শক্তি নাই, অমি ব্যতিরেকে যেমন্
তক্কাঠ প্রজ্ঞলিত হর না, সেইরূপ হ্রধীত বিদ্যাপ কোন
ফলদারক হয় না।

দুরধ্যয় (অি) ছঃখেন অধীয়তে ছয়-ক্ষধি-ই থল্। অধ্যয়ন করিতে অপক্য। বাহা অনায়ানে অধ্যয়ন করিতে পারা যায়না। যাহাপড়িয়া উঠা কঠিন।

দুরধ্যবসায় (পং) ছব্ছটঃ অধ্যবসায়:। মন্দ কার্য্যে চেটা বা দৃঢ় যত্ন

দুর্থব (পুং) ছটো অংশ। প্রাদি সমাস: অচ্স্মা^ট। ছটব্ছ, ধারাণ প্র।

স্কুরস্পালন ( অ ) পালন করা অতি কঠিন।

छूत्र कूटवांथ ( बि ) वांहा ऋतग कता ७ कठिन ।

ত্রস্তিত ( তি ) হর অ্র-ছা-জ । যাহা হংবে অহঠান করা যায়। তুরস্ঠেয় ( আ ) গুর্-ঋন্ কা বং। কটে জন্ত লাবোগ্য।
তুব স্ত ( আ ) গুটো হস্তো অবসানং যন্ত। মৃগয়া-লৃত-পানাদিবাসন, যাহার অবসান অভিশয় অভ্ডলনক। যাহা প্রথমে
আপাত রমনীর বোধ হয়, পরে অভিশয় হংথ প্রদান করে।
বাসনানি গুরস্তানি প্রথমেন বিবর্জয়ের ॥" ( মন্ত )
বাসন্সমূহ অভিশয় গুরস্তা, ইহা যয়পূর্বক বর্জন করিবে।
গুজেরি। হক্ত পরিচেটো বল্ত। ২ গুজেরি। ও গভীর।
৪ গুরতিক্রমনীয়।

"ন্ত্যতি যুবতিলনেন সমং স্থি! বিরহিল্পনত হ্রত্তে।"
( গীতগোবিন্দ )

দুর্স্ত্র্য (পুং) ছরস্ত-কপ্। ১ অসম্খ্যমর্যাদ। ২ শিব। "হ্বিজেয়ো মহাদেবো ছ্রাধারো ছুরস্তকঃ।"

(ভারত অরু ৪১ অ:)

দুর্দ্বর ( ত্রি ) হংথেন অধীয়তে ২সৌ হর অহ ই কর্মণি ধল্। হংধ বারা অহুগমনীয়।

দুরস্বেষ্ঠ্য ( ত্রি ) কঠে যাহার অন্নসন্ধান করা যায়। দুরভিগ্রাহ্ন ( পুং ) হংথেন আভিম্থোন গৃহতে ২সৌ হর্ অভি গ্রহ থল্। ১ অপামার্গ। (ত্রি ) ২ হংশ দারা গ্রাহ্ন। (স্ত্রী ) ৩১ হ্রালডো। ৪ কপিকছেন্। (রাজনিং)

দুরব**াহ** (অি) হঃধেন অবগৃহতে নিগৃহতে ২সৌ ছর্ অব-াত্ত কর্মণি থল্। কট্বারা অনিগ্রাহ্ন।

"বংশাগতো রিপুর্যন্ত বিচলেৎ ত্রবগ্রহ:।" (কামলকী)
দুরপাচার (ত্রি) যাহাকে অসন্তই বা বিরক্ত করা যার না।
দুরপানীয় (ত্রি) হংখেন হপনীয়তে হসৌ ত্র্ত্পানী যং।
যাহা দুরীকরণ করা হংসাধা, যাহা অধনয়ন করা কঠিন।
দুরবগ্র (ত্রি) হর্ অব গম-কে। যাহা হংখে জ্ঞাত হওয়া
যার, যাহা হংখে প্রাপ্ত হওয়া যায়।
দুরবগ্য (ত্রি) হর-অব-গম-ধল্। হ্জের, হ্রধিগম্য।

দুর্বগ্ম (াঅ) হর-অব-গম-থল্। ছজের, ছরাধগম্য। ছুরভিগাহ (অি) হম্পবেস্ত, জটিল, ছর্কোধ।

দুরব প্রাহ্ম ( অ ) ছ:থেন অবগৃহতে হসৌ ছর অব গ্রহ গাও।
ছ:ব খারা বাহা গ্রহণ করা যায়।

দুরববে বিধ ( তি ) ছংখেন অবব্ধাতে হনে ছর অব বৃধ থলথে যঞ্ । ছবোধা, যাহা ছংখে বৃঝা যায়।

দুর্বরোই ( অি ) হংখেন অবস্থহাতে হসৌ হর-অব-ক্ত খলর্থে যঞ্। হুরারোহণীয়, যাহা কটে আরোহণ করা যায়।

দুর্লবদ (ক্রী) বিকল বলা বা নিলা করার পক্ষে কটকর অধাং বাহা সহজে মল বলা যার না।

मृत्रवरु (जि) इत इ**हा अवहा यङ । याहात अवहा मन्न,** कर्भभाशका তুরবস্থা (ত্রী) ছঙা অবহা প্রাদিস। দারিজাদি মন্দা অবহা তুরবাপ (ত্রি) হংথেন অবাধ্যতেহসৌ অব-আপ-ধল্। ছলাপ্র বাহা হংথে লাভ করা যার।

তুরবেক্ষিত ( क्रो ) ছইং অংগক্ষিতং। মন্দ দৃষ্টি।
তুরুকুরু ( বি ) ছংখ দিতে বা আনিই করিতে ইচ্ছু।
তুমুকু ( পুং ) ছর্ নিন্দিঙেং আহং। ছর্দিন, মন্দ দিন।
তুরাক (পুং ) ছনোতীতি ছন উপতাপে আহং ( আব থলাদে: সতু কিং। উণ্ ১০২১৯) ইতি উণাদিকোষধৃত স্বে নিপাতনাং সাধুং। ১ সেক্ছবিশেষ। ুং সেক্ছেশেশীবিশেষ্।

আ কাজক। নিবৃত্তি হয় না, ছরপ্রত্যাশী, যে অসম্ভব বিষ্টে প্রত্যাশা করে।

দেৱাকাজিকা (স্ত্রী) ছর ছটা আ কাজকা। ছল্পাণ বিষয়ে

দ্র†কাওক্ষ (অি) ছব্ ছঙা আংকাজকা বস্ত ৷ কিছুভেই _{বাহা}

দুরাকাজক। (ত্রী) ছর্ছটা আনকাজকা। ছম্প্রাণ্য বিষয়ে অভিনাষ।

দুরাকৃতি (বি) ইর হুটা আকৃতি র্বস্ত। ১ মূল আকৃতিবিশিট (স্ত্রী) হুটা আকৃতি। ২ মূল আকৃতি, ধারাণ আকার। ভূরাক্রনদ (অব্য) হঃধেন আক্রন্যতেহসৌ আকুন-খ

অতি হৃংথে ক্ৰনন।
দুৱাক্ৰম (অি) হৃংথেন আক্ৰমণতেহসৌ হ্ৰ-আ-ক্ৰমঞ্চ হুংগৰারা আক্ৰমণীয়, হ্রাক্ৰম্য।

দুরাক্রাম্য (তি ) ছর্ আ-কেম-গৃৎ। ছঃ স্বারা আক্ষী বাহা সহজে আক্রমণ করা বার না।

দুরাক্তোশ (পুং) হংখেন আক্সতে হৈসে হর আ কৃশ খব ঘঞ্। আর্ত্তনাদ, কভিরে ক্রন্দন। 🗼

দুরাগত ( ত্রি ) হংখেন আগতঃ। ১ েয়া অতি ক্রটে আদিয়া ২ যে অতি হংখে আদিয়ালে।

দুরাগম ( পুং) মন্দ উপায়ে উপার্জ্জন।

দুরা গ্রন্থ (পুং) ছংখেন আগৃহতে হলে সী ছং-আ-এই-ং মন্দ বিষয়ে আগ্রহ যুক্ত।

জুরাচর (ত্রি) ছংখেন আচর্যাতেইনৌ ছব্র আ-চর ধর। ছংখে আচরণ করা যার। ছুল্চর।

"সোহরং চতুর্ণামেতেবামাশ্রমানাং ছ্রাচরঃ ।" (ভারড ) হুষ্টং আচরতি অচ্। ২ হুষ্টাচারযুক্ত ।

> "সমীরণঃ স্লোত্রগতোৎক্সথা চুরঃ সমস্তত্য: শ্লমতীব কর্ণরোঃ। করোতি দোবৈশ্চ যথা প্রদার্তঃ সকর্ণশ্লো ক্ষিতো ছ্রাচরঃ॥" (

তুরাচরিত (ক্রী) ছঃথেন আচরিতং। বাহা অভি ছ^{য়েও ব} রিত হইরাছে।

তুরাচার ( খুং ) আচর্বাতে ইতি চর ভাবে ধঞ্। ছত্ই: আচার:। ১ ছ্ট আচার, বিরুদ্ধ আচরণ, ক্ব্যবহার, ক্লাচার। "প্রাপ্তে কলিযুগে ঘোরে নরা: পুণ্যবিবর্জিডা:। ছুরাচাররতাঃ দর্কে সভ্যবার্তা, পরাঅুথা: ॥" ( অধ্যাত্মরামারণ ) কলিকালে, লোক সকল পুণাকলবিৰজিত হইবে এবং मुर्त्रामा मन्तर्वा राज्य थाकित्त, मकत्म मजा कथा वृति छ পরামুথ হইবে। (বি.) ইটঃ আনচারো যত। ২ চ্টাচারযুক্ত। "ছ্রাচারোহি পুরুষো গোকে ভবতি নিন্দিত: ॥³ ( মহু ) তুরাচ্চকর ( অ ) ছ:বেন আচ্যং ক্রিয়তে কর্মোপপদে থল্ মুম্। ছঃৰ দারা অনাত্য আত্যকরণীয়। দ্রাচ্যস্তব (ক্লী) ছংখেন অনাচ্চোন আঢ়োন ভ্যতে, উপপদে ভাবে থল্-মুম্,। ছ: ধৰারা অনাচ্যের আচা হওয়া, যাহারা কট্ট করিয়া ছরবন্ধা হইতে ভাল অবন্থা প্রাপ্ত,হয়। দ্রাজাত। (জী) ছরাঅনো ভাবঃ ছরাঅন্-তল্-টাপ্। ছরাস্মার কার্য্য, হুরাত্মার ভাব। দ্বাজুন্ (ত্রি) ছষ্ট: আলা অন্তকরণং যতা। ছষ্টান্ত:করণ, পাপাত্মা, ছষ্ট, অত্যাচারী, নির্দন্ন। "দস্ত ধর্মেণ কার্য্যাণি মোহাৎ কুর্য্যালরাধিপঃ। অচিরাত্তং হ্রাত্মানং রশে কুর্বন্তি শত্রবং ॥" ( মহু ৮।১৭৪ ) य राक्ति कञ्चात দোষ গোপন করিয়া কন্তা সম্প্রদান করে, সে হ্রাত্মা পদবাচ্য এবং তাহার দান নিক্ষণ হয়। "यञ्ज (नायवजीः कञ्चा मनाया) ह्यां भेशान हार । ভত্ত ভবিতৃথং কুর্য্যাৎ কন্সাদাতুর্হাত্মনঃ ॥" (মহু ৯৷৭৩) छुत्रान्ता ( वि ) कट्टे याहा शात्रगा•कता यात्र ।, তুরাধন (পুং) ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (ভারত আদি । ৬৭ আঃ) তুরাধর ( পুং ) ধৃতরাধ্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১।১১৭ অ° ) দ্রাধর্ষ (পুং) হটান্রাক্ষান্ আধর্ষ ছিব আ-ধ্য আচ্। ১ খেঁতস্বপ । ২ অংধ্ৰীয় । ৩ অহকারী । "কগন্ধাথো ছ্রাধর্যো গঙ্গাং ভাগীরথীং প্রতি।" (ভারত অফু '৫৮ অঃ)

দুরাধর্ব। (স্ত্রী) হরাধর্ব টাপ্। কুটুমিনী রক্ষ।
দুরাধার (পুং) হুংথেন আধার্যতে হর আধারি কর্মণি থল্।
১ হংথ হারা আধারুণীয়। ২ চিস্তনীয়। (পুং) ও মহাদের।

• [হুরস্ত দেখ।]

ত্রাধি (পং) তৃত্ ই: আধি:। কেশ্জনক, তৃ: থজনক।
ত্রাধী (ি কি ) [ হৈব ] মন্দ্ধী, মন্দচে টাকারী।
দুরান্ম (ি কি) তৃ: থেন আন্মাতে তুর্ আ-ন্ম ণিচ্ কর্মণি থল্।
তৃ: থ্যারা আন্মনীর। "স বিচিস্তা চ ধ্য দ্রান্মং" ( ব্যু )
ত্রানী, আক্গানভাবের মুস্লমান ধ্বাবল্যী এক্লাতি,

हेराएम मुज्ज नाम जायनानि । इतानी मची भावण जाया हेरे उ जिल्मा, हेरा प्रात्मिक वर्ष 'मुक्ता मची मां । जायनानि वाजि मिक्न कर्ष 'मुक्ता मिक्की में । जायनानि वाजि मिक्न कर्ष 'मुक्ता मिक्की में अन्य मिक्क कर्ष मुक्ता मिक्की में अन्य जायनानि वाजि मिक्क कर्य हेराएम ध्येषम मां वी ने ने ने ने जिल्मा कर्य में कर्य में कर्य में मिक्क में कर्य में क्र में कर्य में कर्य में कर्य में कर्य में कर्य में क्र म

প্রসিদ্ধ আহ্মদ শাহ আবিদালী (পরে হ্রানী) নিজ অসাধারণ বীরত্ব ও অধ্যবসায় প্রভাবে এই জাতিকে প্রবল পরাক্রান্ত রণকুশল এবং দি(যেজ্বয়ী করিয়া তুলেন। [ আহ্মদ শাহ আবদ।লি দেখ।] তাঁহারই সময়ে এই লাভিন চরম উন্নতি হইয়াছিল। পূর্বেশতক্ষও দিক্তীর হইতে পশ্চিমে পারভের মরুভূমি এবং উত্তরে আমুবা অকস্নদী হইতে দক্ষিণে আরবদাগর পর্যান্ত বিস্তীর্ণ প্রদেশে ছ্রানী শাদন সংস্থাপিত হয়। আ্ফানের বারবার রত্নভূমি ভারতবর্ষ লুঠনে ঐ জাতি রাজপদে উন্নীত এবং মহাসমৃ ধিশালী • হইয়া পড়ে। এতাবংকাল পর্যন্ত পশুপালক বা দহ্মাবৃত্ত সন্দারগণ সম্লান্ত সভাসদে পরিণত হয়। কিন্ত অসভ্য অশিক্ষিত অবস্থা হইতে দৈবক্রমে একবারেই প্রভৃত ধন সম্পত্তি ও ক্ষমতীলাভ করিয়া ইহারা অধিকদিন তাহা রাখিঙে পারে নীই। আহ্দান শাহের মৃত্যুর পরই তাঁহার পুত্র বিলাদী, ত্র্বলচেতা ও নিক্ষ-অম তৈমুরের রাজত্বালে অনেক প্রদেশ তাঁহার অধিক্ষার হইতে বিক্রির হইয়া পড়ে। তৈমুরের মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্রগঁণ সমস্ত রাজা পরস্পর বিভাগ করিয়া লয়। কিন্ত শীছই গৃহবিবাদে তাহারা সকলেই হীনবল হইয়া পড়ে, তখন বারকলাই বংশীয় দোত্তমহশ্মদ কাবুলের ঘিংহাসন অধিকার করেন। তাঁহার ভ্রাতৃগণ কালাহার, থিলাত প্রভৃতি স্থানে ब्राब्हा प्रांपन करतः। এই करण मास्माबाहे वश्म हहेरछ वाबकः काहे दःनीयगर्भात रुख चाक्शानचान्त बाकामानन छछ হয়। সাদোজাই বংশীয় আক্ষদশাই ছ্রানীর বংশধর স্থল। লুধিয়ানায় ইংরাজের আশ্রয়ে বাস করিতে থাকে।

ভারতগবর্মেণ্ট ক্ষবিয়ার আক্রমণ হইতে সতর্কত্না অবলম্বন লম্ম দোত্তমহল্মদের সহিত সন্ধিত্তাপনের প্রতাব করেন, কিন্তু দেভিমহম্মণ সম্মত না হওয়ার ১৪৩৯ খুলান্দে ছেবাকে কাব্ৰের निःशान्त প্রতিষ্ঠিত করেন। অবিলয়ে দোওঁমূহখাঁদ ইংরাজ করে আত্মসমর্পণ করিগে তিনি ভারতবর্ষে প্রেরিত^{*}হন। কিন্তু তৎপরেই কাবুল-বুদ্ধের সময় ১৮৪২ খুটাকে স্থলা হর্দান্ত আফগান কর্ত্ত নিহত হন। ঐ বংসর কাব্লন্থ ইংরাজ সেনা नकन विनष्टे इहेन, श्रीकिएनाथ निवांत्र खन्न हेश्त्रांक गवार्यणे পলक সাহেবের অধীনে হৈছে প্রেরণ করেন। এই সৈত প্রতিশোধ লইয়া ভারতে প্রত্যাগমন করিলে দোস্ত মহম্মদকে আফগান্সানের আমীর পদে অভিষিক্ত করিয়া পাঠান হয়। যুদ্ধপ্রির আফেগানগণ সাহদীবীর দোভ মহম্মদকে সাদরে অভ্যর্থনা করিল। তদবধি ঐ বংশীরেরাই রাজাত্ব করিতেছে। দ্রাপ ( তি ) হংধেন আপাতে হর আপ-ধল্। ১ হপ্রাপ্য। "हेक्नाक्ताः इत्रालश्र्षं क्ष्मधीना हि निक्षयः।" ( तप् ) (क्री) डारंव थन्। २ इंट्यांशि। দ্রাপন (অ) হর্-আপ-লুটে। ছম্মাপ, হরাপ, ধীহা ছঃথে পাওয়া যায়। "পরে হি ছরাপনা বাত ইবাহমিম" (ঋক্ ১ •।৯৫২) ভ্রাপনা ছ্**তাপ্যহ্রাপা বান্মি।' (সায়**ণ) দুরাপাদন ( অ ) হঃথেন আপাদাতে হর্-আ-পাদ-লুট্। হঃথ ৰারা আপাদনীয়, গুরু**হ**ু। "কিং হ্রাপাদনং তেষাং পুংসামুদ্ধামচেতসাং। বৈরাশ্রিভটীর্ধপদশ্চরণো ব্যসনান্ড্যয়;॥" (ভাগবত ৩।২৩।৪১) দুরাপুর ( ھ ) ছঃথেন আপুর্যাতে আ-পুর থল্। ১ হঙ্গুর, যাহা অতি কটে পূৰ্ণ হয়। ২ ছংখছারা চারিদিংক যাহা পূর্ব্যমাণ, যাহার সকল দিকে ছংথ পূর্ণ আছে। "হুরাপুরেণ কামেন মোহেন চ বলীয়সা। শেষং গৃহেষু সক্তন্ত প্রমন্তত্তাপযাতি হি ॥" (ভাগে ৭।৬৮) 'ত্রাপুরেণ তঃথৈঃ সুমস্তাৎ পূর্য্যমাণেন।' ( প্রীধর ) मृतावाध ( जिं) > इःथ वा शीषा निवात त्यात्रा नर्दे । ( पूः ) रे भिवा 🔸 তুরান্দ্রায় ( তি ) হু:থে যাহা আয়ত্ত করা যায়। তুরায়্ (তি) হরাপা, হন্সাপা। (বেদ) দ্রারক্ষা (জি°) ছ:থেন আরক্ষতে ছর্রক বং। > ছ:থবারা রক্ষণীর। ২ যাহা অতি কটে রক্ষা করা যার। তুরারাধ্য (ত্রি) হঃথেন স্মারাধ্যতে আ-রাধ্যং। হঃধছারা আরাধনীয়, যাহা অতি **কঁ**ষ্টে আরাধনা করা^{*}বায়। "ইতি লোকাৰ্ভ্মুখানু রারাধ্যাদসংবিদ:।" (ভাগ ১০১০)

২ বিষ্ণু। (ভাগ•৪।৮।৩•)

দ্রারিত্ন্ (পং) ছটমির্ভি ছর্ খ পিনি ছরারী ছর্গানী অহার: তংহস্তিহন-কিপ্। বিষ্ণু। তুরারুত্ব (পুং) ছাথেন আক্ষততে হসৌ ছর-আ বঞর্থে কর্ম্বনি ক। ১ বিৰবৃক্ষ। ২ নারিকেল বৃক্ষ। (তি ) ৩ ছরারোভ্নীয়, याह्यं इः त्थं व्यादताहर कर्ता यात्र । जूत्राक्र्म् श्रा (जो ) वर्ष्क्रीवृक्षः। ত্বাবোহ (পুং স্ত্রী) ছংখেন আক্রতে ছর্-আ-ক্র-খন। ১ সরঠ। অবিষাং জাতিভাৎ ভীষ্। (জী) ২ শ্রীবলী। ৩ শাবালিবৃক্ষ। ( অি ) ৪ চুরারোহণীর। "ছ্রারোহং পদ্ধ রাজাং नर्त्तरनाकनमञ्ज्ञ ।" (कामन्तक) ভाবে वन्। "(পू:) ह:वँ ক্রো আরোহণ। কটে যাহাতে আরোহণ করা যায়। দ্রালক্ষ্য ( ত্রি ) হংখেন আলক্ষ্যতে হর-আ-লৃক্ষ্য-বং। অভি কণ্টে বাহা লক্ষ্য করা যায়। দ্রালভ ( তি ) হংখেন-আলভ্যতে আ লভ-খৰ্। হর্লভ্য, যাহা ত্:থে লাভ করা যায়। দ্রালভা (স্ত্রী) হরালভ টাপ্। সনামধ্যাত কটকষ্ক কৃত্র কুপ বিশেষ। আলকুশীলতা, হিন্দীভাষায় হিলুয়া, যবাদ ভেদ। . পর্যায়—ছ্রালম্ভা, ধ্রুয়াস, তান্ত্রম্পা, কচ্চুরা, জ্ম্পর্শা, ধ্রী, ধৰমবাসক, প্ৰবোধনী, স্ক্ষণলা, বিরূপা, ছরভিগ্রহা, ছর্লভা, ছুম্পুধর্ষা, যাস, যবাস, ছুম্পূর্ম, কুনাশক, রোদনী, অনস্তা, সমুক্তান্তা, গান্ধারী, কাবায়া, ধহুর্বাস, যুবস, কচ্ছরা, বিকন্টক, প্রমুখী। (শক্চ°) ইহার গুণ—- সারক, জ্বর, ছর্দি, প্লেমা, পিন্ত, বিদর্প ও বেদনানাশক। (রাজব॰) কটু, তিব্দ, উঞ্চ, ক্ষার, অন্ন, মুধুর, বাত, ত্বন্ম ও প্রমেহনাশক। ( ভাবপ্রকাশ) দ্রাল্ক্ড ( জি ) হর আং-লভ-খল হৃষ্। হ্রালুভ, হ্সাপ। ক্রিরাং টাপ্ হ্রালস্ভা। [হ্রালস্ভা দেখ।] ° দুরালাপ ( পুং ) ছছ 🕏 আনাণঃ। কটু কথা, গালি। ( জি) তুৰ্দু ষ্টঃ আলাপো যত। ক টুভাষী, ছাইবক্তা। তুরালোক (ত্রি) > অত্যক্ষন। (পুং) ২ অত্যক্ষনতা, মহাছাতি। তুরাবর্ত্ত ( ত্রি ) সহজে যাহা ফিরান যার না। জুরাবহ ( তি ) যাহা আনা কণ্টকর ১ দুরাব্য (ক্রী) অবগভ্যাদৌ ভাবে প্যৎ ছটং আবাং গভিঃ ছিষমতি। "অ্ৰিততত মনামতে ২তিসেতুং ছরাবান্।" 🛦 🚓 ৯।৪১।২) 'গুরাব্যং হুটমজিং।' ( সারণ ) তুরাশ (পুং) হর্দুটা আনুশা যুক্ত। ছরাশাহিত। তুরাশা (জী) হর্দুটো আশো। হর্দনেরথু। হস্রাশা। • তুরাশয় (পুং) ক্র্টঃ আশয়ঃ। ত্ট আশয়। মলচিও।

"ক ট্নিভিন্ন ছ্রাশব্রো ২৭ম:।" ( মাঘ )

इंडे: क्षीनदा स्छ। (बि) २ इंडीनवृक्त।

कृत्रांत्र ( बि ) जात्कव, ज्यवहिकद्रवीव, जनिकाननीव। দরাসদ (ত্রি) ছ:থেন আসালাতে ২সৌ ছর আ-সদ-কর্মণ ৰিল্। ১ ছম্প্ৰাপ্য, ছৰ্দ্ধৰ, ছৰ্ব্বিষ্ট, ছঃস্ট্। "সবভূব ছ্রাসদঃ পরেঃ" (্রঘু) ি দ্রাসিতে (ङ्गो ) ছর্ আস্ ক্ত। ১ বসিবার অনুপ্যুক্ত। ২ ৰসা থারাপ। मताहत ( जि ) इः स्थन काडिवर्ड रेरो इव का-क थन्। इः ध ৰারা আহরণীয়, যাহা ছংশ্বে আহরণ করা যায়। ১ তুরাহা ( তি ) ছরদৃষ্ট, ছর্ডাশ্য। দরিত (ক্লী-) ছটং ইতং গমনং নরকাদিস্থানপ্রাধিরত্বাৎ। "হরিতৈরপি কর্তুমাত্মদাৎ প্রেষতত্তে নৃপস্নবে। হি যৎ।" (রঘু ৮। ২°) ( িত্র ) ২ পাপযুক্ত। দুরিতক্ষয় (পুং) ছরিতভাক্ষয়:। পাপক্ষ। ° দ্রিতদমনী (জী) ছরিতং দমাতে খনরা দম-করণে লা্ট্ ভীপ্। ১ শনীরৃক। ২ (ত্রি) পাপদমনসাধন মাত্র। জিয়াং ঙীপ্। ৩ পাপনাশিনী। দ্রিতারি (পুং) ছরিতস্ত অরি: ৬তৎ। ১ ছরিতনাশক, পাপ-नामक। २ टेकनिमिटात्र माप्तनरमव्हारक्षि। "চক্রেশ্র্যজিতা বালা ছ্রিতারিশ্চ কালিকা। মহাকালী ভাষা শাস্তা ভ্রকৃটিশ্চ স্থভারকা। আকাশা মানবী চণ্ডা বিদিভা চাঙ্কুশী তথা। कन्मर्थनिर्कागवना धात्रिनी ध्रताव्यिया॥ নরদণ্ডাপ গান্ধার্য্যন্বিকা পদ্মাবতী তথা। সিদ্ধার্থিকা চেতি জৈন্তঃ ক্রমাচ্ছাসনদেবতা ॥" (ছেম॰)

ষ্থাক্রমৈ এই স্কল জৈনদিগের শাসনদেবতা।

মুরিষ্টি (জী) হটা ইটি:। অশাস্ত্রীয় যজন। "পাহি ছরিটেয়"

ছরিষ্ঠ (তি ) অব্যমনয়োৱেষাং বা অভিশবেন ছং নিন্দিভঃ।

করার জন্ম যে যজ্ঞ করা যায়।

তুগাগম:। অভিচার্যক্তকর্তা। "দেবৰিজ্ঞপিতৃৰেষ্টার্জুদৃষ্যিতাচ্যঃ।

नेद्राक शमन किन्निया थाएक। 🕈 ०

অগ্লীগ। मुद्रक्कार्या (बि) इत-উ्<- ठत-ग<। याहा महस्य उक्कादन **ए तुरु रुद्ध ए** ( वि ) इः त्थन डेव्हिन र उर्श इत-डेन्-व्हिन दर्गनि থল্। ১ হর্কার, হ্রপনেম, ছনিবার, যাহা অভিকটে উন্মূলিত मुद्भारुक्क्ष्मा ( वि ) इत् उँ९-हिन-गार । इत्म्हना । मृद्भुकुत्र (बि) इः थिन উठीर्गाट अस्तो इत उद जू-कर्मानि थन् । ১ হন্তর। ২ অব্রুতর, যাহার উত্তর দেওয়া কঠিন। ছটং উত্তরং। (ক্লী) ৩ ছষ্ট উত্তর বাক্য, অসহত্তর। 🔧 দ্রুত্তোল্য (অ) ছভোলা, যাহা সহজে উভোলন করা যায় না। क्रूऋ९म् ह ( बि ) इः मह, जमहनीय । छু दुः पृत्र ( অ ) > याश ভान ( पथा यात्र ना । २ ছर्नि द्वीका । म् त्रान्द्व ( a ) इः त्थन উपाडिशट इत्-मा क् कर्मा थन्। সহজে যাঞ্চার উদাহরণ দেওয়া বা বলা যায় না। দ্রিষ্ট (ক্লী) ছষ্টং ইষ্টং যজ্ঞঃ। অবভিচারার্থ যজ্ঞ, অভিচার "অফুজ্মিতার্থসম্বন্ধঃ প্রবন্ধো ছ্রুদাহরঃ।" (মাঘ) क्रुक्र बह ( बि ) इर्कर, इः मह। দুরিষ্টকুৎ (পুং) ছরিষ্টং অভিচারযক্তং করোতীতি ক্ল-কিপ্ দ্রুধ্রা (জৌ) যোগভেদ। ী রবিবর্জ্জং দাদশগৈরনফা চক্রান্দ্িভীয়গৈঃ স্থনফা। উভয়্থিতৈ হুকধুরা,কেমজন সংজ্ঞাকে। 📽 ( বুহজ্জাতক ) ষ যাতি ক্বমিডকে বৈ ক্বমীশেক ছবিষ্টক্বৎ ॥" (বিষ্ণুপ্•২১।৬।১৪) জন্মকালে রবি ভিন্ন অক্তগ্রহ বাদশ গৃহে অবকান করিলে ু যাহারা দেবতা, ত্রাহ্মণ ও পিতৃদিগকে ধেষ করে, এরং অনফা,যোগ হয় এবং যদি রবি ভিন্ন গ্রহ, চক্র হইতে বিভীয় ভবনত্বন, তাহা হইলে স্থনফাযোগ হব ; यनि 🖓 উভরের যোগ র্দাণ্ডরণুও গ্রিষ্ট⁹ যজ্ঞ করে, তাহারা ক্রমিভক বা ক্রমীশ হয়, অর্থাৎ রবি ভিন্ন গ্রহ লগ হইতে বাদশ গৃহে থাকিয়া চক্ত

হইতে বিতীয় গৃহে অবস্থান করেন, তাহা হইলে ছ্রধুরা যোগ

হয়। এই জ্রুধুরা যোগে জ্বন হইলে মহুয়া বাগ্মিভা, ধন,

বিক্রম প্রভৃতি অভাভ ঋণসমূহ বারা, ভূমগুলে বিখ্যাত হয়।

त्म वाकि नर्सना चारीनजा चारा करत वारः त्रीमामूर्कि,

সুরীশ ( পুং ) ছষ্ট: ঈশ: প্রভু: । নিন্দিত প্রভু।

পরিবর্ত্তে দর্দ্ধুর এইক্ষপ পাঠ হুইবে।

मुत्रीयगा ( जी ) इङ् हा त्रेयगा हेष्टा खिमाननाः । मान ।

'इक्क व्लाख्या' এই करन व्यक्त ७ वन अहे नम नाधू नरह,

ঐ হলে 'হহরিতথা' এইরূপ পদ সাধু। তাছা ছইলে ছকর

চুরুক্ত (ক্লী) ছষ্টং উক্তং ।শ্ছষ্টবচন, ছর্ম্বাক্য, কটু কথা, গালি ।

मुक्तकात (वि) इः स्थिन डेकार्याटक्रामी इत्-डेर-इत समार्थ

ঘঞ্। অনুকার্য্য, যাহা উচ্চারণ করিতে পারা যার না,

ছুরু (পুং) পর্বভেদ। (ভারত অহু ১৬৫ আ:)

**मुद्रमञ्जि ( व्रौ ) इहा উक्तिः। कर्ट्**वाका, मन्नडामन ।

VIII

অভিমন।

( खक्रवङ् २_।२० ) °

ধনবান্, উত্তম সোভাগ্যশালী, স্থংগাপভোগী, দাতা, কুটুৰ
প্রতিপালক, স্থব্দি ও উত্তম ঐশব্যসম্পন্ন হবৈ। পাঁকে।
(বৃহজ্ঞাতক)
দুরুপাক্তম ( ি ি ) হঃথেন উপক্রমাতেহংটা হন্ উপ-ক্রম
থল্। হরাসদ, হর্গম, যেথানে যাওয়া কঠিন।
হুরুপাচার ( ি ) হর-উপ-চর-ঘঞ্। অহুপশম্য।
দুরুপালক্ষ ( ি ) হঃথেন উপলক্ষ্যতেহসৌ হর্ উপ-লক্ষ-থল্।
হুরিবীক্ষ।

দুর্কপ্সপিন্ ( ত্রি ) ছঃবেদ উপসর্প যত উপ-স্প-ণিনি। জত-কিতভাবে আগত।

"একমেব দহতায়ির্নবং হৃত্রপদর্পিণং।" (মহ ৭।৯)

হৃত্রপস্থান (জি) হৃত্রাপায়।

হৃত্রপায় (পুং) ছঠঃ উপায়ঃ। হৃত্রোপায়, মন্দোপায়।

দুরাহ (জি) হৃংথেন উহুতে হর উহ কর্মণি বল। হবিভক।

"লানীতে লয়দেব এব শরণঃ শ্লাবো হৃত্তহতে।"(গীতগোবিন্দ)

দুরো (জি) হৃর-ই বাহুণ হ। হৃংথ্রারাগম্য।

"প্রাদেবীর্মায়ঃ সহতে হুরেবাঃ।" (ঝক্ ধাং।৯)

'ছ্রেবা: ছংখগমনা' (সায়ণ)
দুরোক (ত্রি) ছ্ট ওকো সমর্বায়ো অত্র। ছংসেব।
"হুরোকমিয়িরায়বে ওশোচ।" (ঋক্ ৭।৪।৩)
'ছুরোকং ছংসেবং' (সায়ণ)

দুরোণ (পুং) গৃহ। (নিঘণ্টু) যজ্ঞগৃহ। "কাব্যয়োরাজা নেরু ক্রত্বা দক্ষস্ত ছরোণে।" (শুক্রযজু ৩৩/৭২) 'ছরোণে যজ্ঞগৃহে।' (মহীধর)

দুরোণয়ু (পুং) যজমান গৃহের মিশ্রমিতা। "অসি দিবস্তায়ুরু রোণয়ু।" (ঋক্ ৮।৬০।১৯) 'ফ্রোণয়ু 'য়জমানগৃহস্ত সিশ্রমিতা।' (সায়ণ)

দুরোদর (পুং) ছটিং আ সমস্তাছদরমস্ত। ১ দৃতেকার। ২ পণ। ু আক্ষণ (ক্লী) ৪ দৃতে। "ছুরোদরছদ্মজিতাং সমীহতে নুমেন জেতুঃ জগতীং সুযোধনঃ।" (কিরাতং)

সুর্গ (পুং ক্লী) ছ:খেন গমাতে হসৌ হর,গম বাছ ড। প্রান্ধিক রাজাদিগের আশ্রমণীর কোট, গড়, কেলা। কালিকাপুরাণে হর্গের বিষয় এইজেপ লিখিত আছে—রাজা নগরের অদ্রে প্রাকার অট্টালিকা ও তোরণ বারা ভূষিত হর্গ প্রস্তুত করাই-বেন, নগর যদি কোনজ্ঞপ শত্রু কর্তৃক আক্রান্ত হয়, তাহা হইলে হুর্গমধ্যে আশ্রয় প্রহণ করিয়া ভাহার প্রতীকার করা যায়। হুর্গ রাজাদের প্রধান সহার। হুর্গস্তিত একজন ধর্ম্বারী অন্ত হান্দিত একশৃত্র লোকের সহিত এবং হুর্গস্থিত একশত লোকে সহত্র লোকের সহিত আনারালে যুদ্ধ করিতে পারে।

এই অন্ত সকল ছলেই ছর্পের প্রশংসা দুট হয়। আন্দর্গ, ভূমিছর্গ, বৃক্ছর্গ, বনহর্গ, মকছর্গ এবং পর্মজ্জর্গ এই বছ্বিধ ছর্পের মধ্যে দেশার্ছ্পারে যে কোন ছর্গ করিতে পারে, পার্মজ্জর্গদেশ স্থবিধা হইলে পর্মজ্জর্গ, মন্তব্যদেশ মক্তর্গ ইত্যাদি। ছর্গ করিতে হইলে নগর ধছুর ভার, র্ত্তিকোণ বা গোল অথবা চতুকোণ করিবে। অভ্যত্তন ছর্গরিতে নাই। মুদলকার ছর্গ, করিতে নাই, এইরূপ ছর্গ করিতে নাই। মুদলকার রাবগ্রের লভাছর্গ মুদলাকৃতি ছিল। বলিরাজের শোণিতপুরে তেভলামর ছর্গ প্রতিষ্ঠিত, কিছু ইহা ব্যক্তনাকৃতি ছিল, এই জন্ম বলিরাজির পোণিতপুরে ক্রেলামর রাজাদিগের অযোধাননগর ধহুর ভার ত্রিকোণ, এই জন্ম ইহা সর্ম্বাণ জর্মজ্জর বিশ্বিপ্লাকরিলে জন্মলাভ করেন। রাজা জন্ম বৃদ্ধি প্রভৃত্তি ক্রমনার হুর্গসিরিবেশ করিবেন। (কালিকাপুণ ৮৪ অ:)

রাজা ছর্গ প্রান্তত করিয়া ছর্গমধ্যে শাস করিবেন ইহাতে অধিকাংশ বৈশ্য ও শূর্ত, অল্ল প্রাহ্মণ এবং আনের কর্মকার রাখিয়া দিবেন। এইরূপ স্থলে ছর্গ নির্মাণ কর প্রশাস্ত, যে স্থলে শত্রুপা হঠাৎ আসিতে না পারে এবং নান প্রকার ফলপুল্পাদি স্থশোভিত থাকে, ব্যাল ও তয়র প্রভৃতি কিছুমাত্রও উপত্রব নাই। এমন পরচক্রের অগম্য অদেবমাত্র ভক্তলন দেশই প্রশাস্ত ! ধয়হুর্গ, মহীছর্গ, নয়ছর্গ, রক্ষর্গ অমুর্গ ও গিরিছর্গ এই বড়বিধ ছর্গ। ইহার মধ্যে যে কোল এক ছর্গ নির্মাণ করাইয়া রাজা বাস করিবেন। এই ৬ প্রকা ছর্গের মধ্যে শৈলছর্গ স্বর্ধান্তম, অভেদ্য এবং প্রত্তেদন তথায় আছের ছর্গম উৎক্রই অয়্যজামুধসম্প্র এবং হয়াদি। দেবালয়াদি বিল্লাই পুর স্থাপন করিবেন। (আরিপ্রাণ্ড)

রাজা প্রভৃত ধন সম্পত্তি, হন্তী, অথ প্রভৃতি বলসম্প হইয়! তুর্গ প্রস্তুত করাইরা ভাহার মধ্যে অবহান করিবেন তুর্গ-নির্মাণের এইরপ স্থান প্রশন্ত, যেথানে জনে-বৈশ্র ও শূল এবং অরসংখ্যক ব্রাহ্মণ ও বছসংখ্যক কর্মকা অবহানে করে, অনেক জহরক্ত লোক বে হুলে বাস করে, যেথানে প্রজা সকল করভারে পীড়িত্ত না হর ও রাজা স্থত্যুংখ্ডারী হয়, বে স্থলে ভূমি 'আদেবমাতৃক, বুর্মাা সকল ফল্ভুরে অবনত, 'পরিচক্রের অগস্যা, বে হুলে শ প্রভৃতি হঠাৎ না বাইতে পারে, সয়ীস্প, ব্যাত্ম ও তুর্ প্রভৃতি বর্জিত যে স্থল, এইরূপ স্থলই তুর্গনির্মাণের গণে প্রশন্ত। যে কোন তুর্গ প্রস্তুত করিতে হইলে হুর্গে চারিদিকে পরিধা প্রস্তুত করিতে হইবে, পরে প্রাক্ষির এব

অট্টালকসংযুক্ত করিয়া ভাষার চারিদিকে শভ শভ শভগীয়ত্র সরিবেশ ক্রিডে হইবে। ভাহাতে মনোহর সক্পাট পোপুর করিয়া পতাকাদি যারা ছপৌতিত করিবে এবং ইহার মধ্যে চারিটী আয়তবীবি প্রস্তুত করিয়া একটা বীধিকার '- অগ্রভাগে অনৃত্ভাবে দেবতার গৃহ, বিতীয় বীথিকার অগ্রে त्राक्रतिथा, कृष्ठीम वीधारक्ष धर्माधिकेत्रण व्यर्थाए विहातानीम छ চতুর্থ বীথিকার অপ্রভাগে গোপুর প্রস্তুত করিবে। পুর **6 कुरस कांत्रक वा वृक्षाकांत्र इहेरव । जिरकांग, यश्मभा, कार्क्स** চন্দ্রাকার বা বঞ্জাকারও কলে যাইতে পারে। নদীতীরে প্রাদি •করিতে হইলে অর্দ্ধচক্রাকার বিশেষ প্রশন্ত। নদীতীরে অম্ব কোন প্রকার শুভদায়ক নছে। রাজগৃহের দক্ষিণদিতুক কোশাগার ও ডাহার দক্ষিণে গঞ্জান করিতে হইবে, গঞ্চগৃহ পূর্ব বা উত্তরদিকে, অগ্নিকোণে অস্ত্রাগার, মহানস, অণরাপর কর্মশালা, পুরোহিতের গৃহ, রাজগৃহির বামদিকে मडी (वनविन् बांक्रन, ििक्श्मक, ह्लांश्रांत्र, त्ना धवः অখন্থান করিতে হইবে। অখলালার উত্তর বা দক্ষিণদিকে শ্রেণী প্রশন্ত, ইহা ভিন্ন অস্তাদিকে শুভদায়ক নছে। অখ-শালায় সমস্ত রাত্রি প্রাদীপ আলিয়া রাখিতে হইবে এবং অখশালাতে কুকুট, বানর, মর্কট ও স্বৎসাধেত্ রাথিয়া দিবে। গো, গজ ও অশ্বশালাতে স্থ্য অন্তমিত হইলে ইহাদের পুরীষ নির্গম করিবে না। রাজা এইরূপ ভূর্গমধ্যে वशक्तिरम रवाध, भिन्नी, मञ्जी, शादिवना, व्यवदिवना, शक्तदेवना প্রভৃতির অবস্থান নির্দিষ্ট করিয়া দিবেন। ছুর্গমধ্যে নানা প্রকার পীড়া হইবার সম্ভাবনা, এই জন্ম তাহার প্রতীকারের **बग देवता अ**ञ्चितक बन्नभूक्तक ताबिन्ना निर्वन । इर्गमर्था .नाना धाकात्र धाहत्रगयुक महत्वपाछी, व्यर्था९ यिनि महत्वरक যুকে বিনাশ করিয়াছেন ভাহার উপর এই ছুর্গ রক্ষার ভার স্মর্পণ করিবেন। ছুর্গধার স্থগুপ্ত থাকিবে এবং ইহার কার্য্যকলাপ কেহ যেন জানিতে না পারে, তাহার উপায় বিধান করিবেন। তুর্গমধ্যে সকল প্রকার মার্ধ, ধমু, তোমর, থড়াা, কবচ, বসা, লগুড়, গুড়, एफ, भतिष, धाखत, मुनात, क्रिम्म, भक्तिम, क्रीत, मून, मिल, পরখধ, চক্রন, বর্মা, কুদাল, রজ্জু, বেজ, পীঠক, তুব, লাত্ত্ব প্রভৃতি সকল প্রকার অন্ত শস্ত্রাদির সঞ্চর করিবেন। সকল অকার বাদিত প্রভৃতি, সকল প্রকার ওষ্ধি, প্রভৃত পরিমাণ य्त्र, हेक्सन, खड़, टेडन, वना, शांत्रम, मख्डा, जायू, जायि, গোচর্দ্ম, পটহ, ধাঞ্চ, যব, গোধ্ম, রত্ন, সকল প্রকার বস্ত্র, ^{কলায়}, ম্দা, বাষ, চণক, ভিল প্রভৃতি সকল প্রকার শস্ত, পাতে, গোমর, শণ, সঞ্জরস, ভূর্জ, জতু, লাক্ষা, ট্রুণ, আশী- ।

বিৰ ৰালা কুন্ত, ব্যাল, সিংহাদি মৃগপন্দী এই সকল বৰ্ণাস্থানে হৰ্ণমধ্যে সন্নিৰেশিত ক্লিলা লাখিবেন এবং দানা প্ৰেকাল কল অভৃতি ইহাতে বুকা করিবেন।

ভীতঃ প্রায়ত, কুশিত, বিমানিত, কুড়তা ও পাপাশর লোককে হুবনধ্যে রাখিবেন না। (মংস্থপুং ২১৭ আঃ)

হুৰ্গ রাজাদিগের প্রধান সহার, হুর্গ না থাকিলে রাজ্য কিছুতেই রক্ষা হর না। রাঘ্যরক্ষা করিতে হুইলে, সর্কভোভাবে হুর্গ অনৃঢ় করিয়া রাথা নিতান্ত প্রয়োজন।

তুর্ণের বিৰয় মহাভারতে এইদ্ধপ লিখিত আছে—রাজার কিরূপ পুরে অবস্থান করা উচিত যুধিটিরের এই প্রান্ত ভীয়দেব এইরপ বলিয়াছেন, ছর্গ ৬ প্রকার—ধরুত্র্গ, মহীত্র্গ, গিরিছর্গ, মহয়ছর্গ, জলছ্র্গ ও বনছর্গ স্কাত্যে এই ৬ প্রকার হুৰ্গ নিৰ্মাণ করাইয়া ঐ ছুৰ্গ্মধ্যে সমৃদ্ধিসম্পন্ন পুরী ৠপন করিবে। বে পুরী ছর্গমধ্যে অবস্থিত এবং চ্র্গের প্রাকার, স্থৃঢ় পরিধা, হতী, আর ও রথে সমাকীর্ণ, যথার অনেক বিশ্বান্ শিল্পী ও স্থানিপুণ ধার্ম্মিকেশ্বা বাস করিয়া থাকে, অসংখ্য তেজন্ম •মমুদ্য এবং হত্তী, আৰ, চত্ত্ব ও আপণ থাকে, সেই স্থলে কিছুমাত্র আশকা নাই। হুর্গমধ্যে কোষ, দৈল ও भिव পরিবর্জন এবং বিচারালয় সংস্থাপনপূর্বক অন্যান্য নগর ও গ্রাম হইতে দোষ সকল দ্রীকৃত করিতে দঠেট হইবে। नर्त्रना इर्ग मर्था व्यवनाथा वृषि, धार्मानि मःश्रह এवः यह अ অর্গল রক্ষা করিবে; কাষ্ঠ, লৌহ, তুব, অলার, শৃল, অন্তি, वः म, मड्डा, टेल्टन, सधुक्तम, श्रेष्ठभ, मन, मर्ड्डतम, मत्र, हर्मा, সায়, বেত্র, মুঞ্জা ও বল্লজ সংগ্রহ, পুষ্করিণী ও কৃপ পুভৃতি নানা প্রকার জলাশয়, বৃট অখথ প্রভৃতি বৃক্ষ সমুদ্র যদু সহকারে রক্ষা করিবে। আচার্যা, ঋতিত্, পুরোহিত, স্থপতি, সাস্তং-সরিক, চিকিৎসক, প্রজাবান্ ও জিতে ক্রিয় প্রভৃতি সাধু লেক-সমূহকে পরম সমাদরে এই ছর্গন্থ পুরী মধ্যে অবস্থান করাইয়া ভাষাত্রসারে দও বিধান করিবে। যে রাজা ছর্গ নির্মাণ নাকরিয়া রাজ্য রক্ষাকরিতে ইউহাকরে, তিনি অচিরাৎু রাজাচ্যত হন এবং লোকের নিকট উপধাসাম্পদ হন। হর্গই ঝাজাদিগের প্রধান সহায়। এই জন্ত হর্গনিশ্মাণ করিয়া তাহা স্থদৃঢ়ভাবে রক্ষাপুর্বক ষ্ণানিয়মে রাজ্যপালন করিবেন। (ভারত শান্তিপর্ব) [রাজধর্ম দেও।]

২ অন্তরভেদ, এই অন্তরকে বিনাপ করাতে দেবী ভগবতী হুগা এই আখ্যা প্রাপ্ত হন। [হুগাঁ দেখ।] তুর্গ (ক্রুগ) মধ্যপ্রদেশস্থ রারপুর জেলার অন্তর্গত একটা নগর ও সহর। অন্তর্গ ২১° ১১ উ: এবং ফ্রাফি ৮১° ২১ পৃ:। রার-পুর হইতে ১২ জোল পশ্চিম বড় রাজার ধারে অবস্থিত। লোক সংখ্যা প্রায় চারি হাজার। মরাঠার। (১৭৪০-৪১ খুটাকো) বে সমরে ছত্রিশগড় আক্রমণ করে, নৈই সমর এই , হুর্গনগরেই তাহাদের আড্ডা ছিল। তাহারা উচ্চ ভূমির প্রাকারবেটিত এক অন্চ হুর্গ নির্দাণ করেয়াছিল। এখন তাহা ধ্বংসমূখে পতিত। এখানে উৎকৃষ্ট কার্পাস করে পাওয়া যার। এখানে তহসীল, খানা, কুল, ডাক্ঘর, পাছনিবাস ও ওযধালয় প্রভৃতি আছে।

দুর্গ, অস্মার্গাশ্রমনিবাসী নিরুক্তভায়কার। তুর্গকর্মন্ (ক্লী) ছর্গার্থং ছর্গে বা কর্ম কার্যাং। ছর্গসাধন কর্ম-ভেল। [ছর্গ দেখ।]

দুর্গকারক (পুং) ছর্গং করোতি বেষ্টনেন রু-ধূল। ১ বৃক্ষভেদ।
( ত্রি ) ২ ছর্গকর্তা।

তুর্গটীকা ( স্ত্রী ) হর্গসিংহক্বত কুলাপ-ব্যাকরণের চীকাভেদ।
দুর্গত্ত (ত্রি) হর্গছ্জতি হর-গম কর্ত্তরি জ্ঞা ১ দরিজ, দৈৱপ্রাপ্ত।
"সমাশ্বসিমি কেনাহং কথং প্রাণিমি হর্গতঃ।" ( ভট্টি )

(পুং) ২ সহক্তিকণাত্তখ়ত একজন সংশ্বত কবি। দুৰ্গতিকা (স্ত্ৰী) হৰ্গতন্ত ভাবঃ হৰ্গত-তল্ ততো টাগ্ন। দৰিজতা, হৰ্দশাৰ ভাব।

ছুর্গ্ করণী (স্ত্রী) ছর্গং তীর্ঘাতে ২নয়া তৃ করণে লুট্ে ততো ভীপ্। দেবীভেদ। "সাবিত্রী ছর্গতরণী বীণা সপ্তবিধা তথা।"

(ভারত সং ১১ অ: )

豪 👰

(ত্রি) ২ ছর্গতরণ সাধন, যাহা বারা ছর্গ উত্তীর্ণ হওরা বার। দুর্গক্তি (স্ত্রী) ছন্টা গতিঃ। ১ নরক। ২ ছরবস্থা, দারিদ্রা, দীনতা। ৩ ক্লেশকর পথ।

"ন চুর্গতিমবাপ্নোতি অর্গলোকঞ্চ গছাতি।" (ভারত শাস্তি) (ত্রি) ৪ দারিদ্রাযুক্ত।

দুর্গতিনাশিনী (স্ত্রী) হুর্গতিং নাশরতি নাশি-ণিনি ভীপ্। হুর্গাদেবী, ইহার নাম স্থরণ করিলে সকল প্রকার হুর্গতি বিনট হয়, 'এই জন্য ইহার নাম হুর্গতিনাশিনী; বিপদে পড়িয়া যিনি ভক্তি সহকারে একবার হুর্গানাম স্থরণ করেন,

ভাহার সঞ্ল প্রকার তুর্গতি নাশ হয়।

"ব্ৰহ্মাণ্ড বিজয় হাত্ম কঁবচ স্থা প্ৰাক্তিন।

ঋষিচ্ছ নাদ গায়নী দেবী ছুৰ্গতিনাশিনী॥" (ব্ৰহ্ম বৈঃ গণেশৰণ)
দুৰ্গদেব, ষ্টাদংবংগরী নামে সংস্কৃত জ্যোতি প্ৰতি প্ৰণেতা।

ইহার রচিত সংবংগ্রফল নামে আর একথানি জ্যোতিষ
পাওয়া যায়।

দুর্গন্ধ (পুং) ছষ্টঃ গন্ধঃ। ছষ্টগন্ধঃ, পর্য্যার পুতিগন্ধি।

"ফগন্ধং বেন্তি ছর্গন্ধং ছর্গন্ধশু স্থগন্ধিতাং।

যো বা গনামজানাতি গতাস্থতং বিনিন্দিশেৎ ॥" (স্থক্ষত ১।৩০)

বাহারা হুর্গনকে স্থান আন এবং স্থানকে হুর্গন জ করে বা বাহাদের কোনরূপ গন্ধের আন হয় না, তাহাদিগ কীণায় জানিতে হইবে। ২ আন্তর্ক। ও পলাপু। হুছ্ব গাকো বত্ত। (ত্তি) ৪ হুইগন্ধযুক্ত।

"অধাজগাম ত্রিতোধর্মন্টাণ্ডালরপধৃক্। তুর্গন্ধো বিরুতোরক: শাশ্রালো দত্তরো দ্বনী ॥" (মার্কপু ৮৮ ( ক্লী ) তুর্গুটো গন্ধো বিজ্ঞা। ৫ সৌবর্চন লবন।

তুর্গন্ধ তা (জী) ছর্গন্ধ ভাবঃ ছুর্গন্ধ তল্টাপ্। ছর্গন্ধের ভা ছুর্গন্ধাক্ত (ত্তি) ছর্গন্ধে আছে যজা। পুতিগনাধিত । যুক্ত, স্থান্ধি পূজা হর্গণ করিলে ভাহার গাত্তে ছুর্গন্ধ হয়। । "সৌগন্ধিক ভাহরণাং ছর্গনাক্তঃ প্রকারতে।" (শাভাতপ) ছুর্গন্ধিন্ (ত্তি) ছর্গনােই ভারতে ছর্গন্ধ-ইনি। ছর্গন্ধ্ক, । গন্ধবিশিষ্ট।

"অন্তিষ্থা বিষয় বৃতং মাংসশোণিত লেপনং। চর্মাবনদ্ধং ফ্রিকুপুর্ণং মৃত্রপুরী বলোঃ ॥" (মৃত্ব ৬।৭৬)

তুর্গপতি (পুং) হর্গত পতিঃ। > ছর্গরক্ষকে, যাহার উ হুর্গরক্ষার ভার থাকে। ২ হুর্গরামী।

দুর্গপাল ( পুং) ছর্গে ছর্গং বা পালয়তি পালি অণ্। ১ ৡ। পালক। "যন্নোহস্তরাণামসি ছর্গপালো।" (ভাগং ৮।২৩।৫ ২ ছর্গরক্ষক, ছর্গাধ্যক্ষ।

দুর্গপুজ্পী (স্ত্রী) ত্র্গং পূজাং যস্তাঃ জাতিবাৎ ভীষ্। বৃক্ষবিং পর্যায় কেশপুষ্ঠা, মানসী, বালাক্ষী, কেশধারিণী। (শব্দ ইহা কেশপুজা নামে থ্যাত।

দুর্গম ( জি ) ছ ছ : ধেনু গমাতে ইতি ছর্-গম থল ( ঈষদ্ কচ্ছাকচ্ছাথেভা: থল। পা তাতাভ)। ১ ছর্গ, ছর্গে গা অতিশীয় কোন প্রাভৃতি। ছর্গ পে পদও ছর্গ । ২ ছংগ দা গমনীয় স্থান প্রভৃতি। ছর্গথেন গমাতে জ্ঞায়তে ইনি ত ছজের, যাহাকে অতি কটে জানা যায়। (পুং) ৪ বিং (ভারত ভা১৪।৩৫) ৫ অক্সরবিশেষ। (ক্রী) ৬ বিং নুক্টর্লান (ভারত ১৮১।৩০)

দুর্গমণীয় (ত্রি) ছর্-গম-অনীরর্। ছর্গমা, বে ^{ছলে গ} করা অতিশর ক্লেশকর।

তুর্গয়, বাহ্নদেবের পুত্র, বাদশদ্যোকীর টীকাকার।
তুর্গল (পং) হাস্কিতো গলো বত্ত হান্দানাং। দেশভা
নোহভিজনোহস্ত, তত্ত রাজা বা, অব্। দেগিল, পিতাদিজ
তদ্দেশবাসী, বা হুর্পল দেশের রাজা। বহুর অণোস্ক।
হলে অণের লুক্ হইবে সেই হলে 'ফুর্মলাং' এইরপ হই।
অর্থাৎ বহুবচন ভিন্ন অস্ত বিভক্তি হইবে না। হুর্মল দেশর রাজসমূহ।
বাসী লোকসমূহ, বা হুর্মল দেশের রাজসমূহ।

তুর্গলভ্যন (পুং) ছর্গং ছর্গমন্থানং মরুভুমাদি লভ্যান্তেইনেন
লাভ্য করপে স্টে। ১ উট্ট। (হুমণ) জিয়াং জাভিছাৎ গ্রীব্।
চুর্গদংক্ষার (পুং) ছর্গজ সংস্কার:। ছর্গের সংস্কার, ছর্গ
ভয়াদি ইইলে পুনর্কার ন্তন করিয়া প্রস্তুত করণ, প্রভি
পক্ষেদ যুদ্ধার্প উদ্যোগ করিলে, বিশেষক্ষপে ছর্গ সংস্কার
করিতে হয়। ছর্গ জ্ঞান্ত্রত থাকিলে রাজার প্রতিপদে পরাজরের সন্তাননা। এই অন্ত সর্কাই ছর্গ সংস্কার করা বিশেষ
আবিশ্রত।

তুর্গদঞ্চর (পং) ছর্গং দঞ্চীতে অনেন দম্চর করণে অপ্। "দংক্রম, দাঁকো।

তুর্গ সঞ্চার (পুং) ছর্গং নদ্যাদি ছর্গমন্থানং সঞ্চাতে গম্যুতত হনেন সম-চর-বৃঞ্। ছর্গসঞ্চর, সংক্রম, সাঁকো, বাহার সাহায্যে ছর্গম স্থানাদি সঞ্চরণ করা যায়।

ভুর্গিসিংহ, > কাত্রব্জি-রচ্মিতা। মলিনাথ, বিচ্ঠিল, ভট্টোজি,
হুর্গালাস, বোপদেব, হেমাজি প্রভৃতি ইহার মত উক্ত
করিয়াছেন। ইহার বৃতি না থাকিলে কলাপব্যাকরণ সহজে
আয়ত হইত না, এমন কি অনেক বিষয়েই অসম্পূর্ণ থাকিত।
এই হুর্গিশিং সম্বন্ধে অনেকে অপরূপ গল করিয়া থাকেন,
তাহা বিখাস যোগ্য নৃহে। ইহার রচিত পরিভাষার্ত্তিও
আছে। ২ বিথাত নিরুক্তভায়্যকার, ইনি অস্মার্গনিবাসী
বলিয়া পরিচিত। ৩ একজন প্রাচীন জ্যোভির্কিল্। নৃসিংহ
দৈবজ ইহার মত উক্ত করিয়াছেন।

ছুৰ্গদেন, বল্লুদেবের স্থভাষিতাবলী-ধৃত একজন প্রাচীন সংস্কৃত কবি।

তুর্গা (ত্রী) শুর্-গম্ভ ( স্কুরোরধিকরণে। পা তাহান্তদ্বার্ত্তিক)
তত্তীপ্। ১ আল্যাশক্তি। নামান্তর—উমা, কাত্যারনী, গোরী,
কালী, হৈয়বতী, ঈশ্বা, শিবা, ভবানী, কদেণী, শর্কাণী, সর্কমঙ্গলা, অপর্বা, পার্কতী, মৃড়াণী, চণ্ডিকা, অন্থিকা, শারদা,
চণ্ডী, চণ্ডবতী, চণ্ডা, চণ্ডনারিকা, গিরিজা, মঙ্গলা, নারারণী,
মহামান্তা, বৈষ্ণবী, মহেশ্বরী, মহাদেবী, হিত্তী, ক্র্যারী, ক্টোরবী,
বন্তী, মাধবী, নগনন্দিনী, জরন্তী, ভার্গবী, রন্তা, সিংহরধা,
সতী, ভামরী, দক্ষক্তা, মহিরমর্দ্দিনী, হেরম্জননী, লাবিত্রী,
ক্ষপিললা, ব্রাকপারী, লখা, হিমশিলজা, কার্ত্তিকেরপ্রস্ক,
আভা, নিত্যা, বিদ্যা, শুভঙ্করী, সাহিকী, রাজসী, ভামসী,
ভীমা, নন্দনন্দিনী, মহামান্তা, স্বাধারা, স্বন্দা, শুভ্রাতিনী,
বুী, পর্বত্রাজ্বনন্ত্রা, হিমালরস্কৃতা, মহেশ্বরবনিতা, সভ্যা,
ভগবতী, ঈশানী, সনাতনী, মহাকালী, শিবানী, হরবলতা,
উগ্রচণ্ডা, চামুণ্ডা, বিধাত্রী, জানন্দ্রা, মহামাত্রা, মহামুদ্রা,
মাকরী, ভৌমী, ক্ল্যাণী, ক্ল্যা, মানদাত্রী, মদালস্ত্রা, মানিনী,

ठार्सकी, ब्रुवि, केमा, बरनकी, क्यही, कृषा, काखनी, वजी, उन्न-वती, छाविनी, तनवी, चिहला, विदनवा, विभूगा, हर्किका, छीवा, निमनी, नमा, श्रीबार माक्का, िमानमायक्रिमी, मनविनी, महारमरी, निर्जात्रणा, खरानिका, खात्रा, नीममत्रवर्खी, कामिका, উত্ততারা, কামেশরী, কুল্দরী, ফুরবী, রাজরাজেশরী, ভূব-तिनी, पत्रिजा, महानन्त्री, बाखीवरनाहनी, धनना, वात्रीचत्री, विश्रा, बानाम्यी, वर्शनाम्यी, त्रिकविन्छा, अन्नशृर्वा, विभा-লাক্ষী, হুডগা, সপ্তণা, নিপ্ত্রণা, ধবলা, গীতি, গীতবাদ্যপ্রিয়া, चहानवानिनी, चहाहेशिनी, (बाता, त्थामा, वर्षेचती, कीर्खिना, वृद्धिना, अवीता, शिखानग्रवानिनी, मिखिला, সংবংশরা, ক্লফরপা, বলিপ্রিরা, ভূমুলা, কামিনী, কামরূপা, र्गामा, विक्ठकथता, थकमा, वृत्मावनयत्रिभी, कार्याधा-রপিণী, মায়াবভী, জীম্ভবদ্ধনা, জগন্নাথকরপিণী, কুর্ত্তিবদনা, बियांमा, यमनार्व्यूनी, यामिनी, यत्नाना, यानवी, अशंडी, इक्-ৰামা, সত্যভামা, স্বভদ্ৰিকা, লক্ষণা, দিগম্বরী, পৃথুকা, তীক্ষা, चांठात्रा, चक्त्रा, बारूवी, गर्थकी, (धात्रा, कृष्ठवी, त्याहनी, विकाता, अक्त बवानिनी, अश्मका, शिवका, शविवना, जूननी, ष्पञ्जा, स्नांनकी, वस्ता, कामना, नावितिःही, शिवीभा, नाध्वी, क्नानी, क्रमना, काखा, भाखा, क्ना, (वनमाठा, कर्षाना, मुझा, विপ्रयुक्तती, तारमणी, नक्ष्यख्यविनाणिनी, धनर्खा, शर्मापती, চ্ফেশরী, शक्षना, বিদ্যা, কুজিকা, চিত্রা, স্থলেথা, চতুভু কা, রাকা, প্রজ্ঞা, ঋদিদা, ভাপিনী, ভপা, স্থমন্ত্রা, দ্ভী ইত্যাদি 🔹 ৷

নামনিক্জি। দেবীর ছগাদি নাম হইবার কারণ দেবী-প্রাণে এইরূপ নিথিত আছে— "অরণাদভরে ছর্গে ভারিতা রিপ্সমটে। দেবাং শক্রাপুদরো যত্মাত্তন ছ্গা প্রকীর্ত্তিতা॥" ৩৭ অং।

শ্বরণমাত্রই ইক্রাদি দেবগণকে ছর্গম শত্রুদক্ষ ক্রতিত উদ্ধার করিয়াছিলেন বলিয়া ইহার নাম ছুর্গা। ••

মার্কণ্ডেমপুরাণোক্ত দেবীমাহাজ্যের মতেঁ—

"তবৈব চ বধিয়ামি হুর্গমাধ্যং মহাত্মরম্।
হুর্গাদেবীতি বিধ্যাত্ম তক্তে নাম ভবিয়তি ॥

আমি হুর্গা নামক মহাত্মরকে বিনাশ করিব, দেইভক্ত
হুর্গাদেবী নামে আমার নাম বিধ্যাত হইবে।

কাশীধতে (৭২ আ:) শিশ্বিত আছে—

"অদ্য প্রভৃতি মে নাম হর্গেতি খ্যাতিমেয়তি । হুর্গদৈত্যক্ত সমরে ঘাতনাদতি হুর্গমাৎ ॥" ব্রহ্মবৈর্ধপুরাণীর প্রকৃতিধণ্ডের মতে—

সহল্ল নামের মধ্যে এই কর্মী মাত্র লিখিত হ'ইল।

"পূর্ণে দৈত্যে মহাবিদ্ধে ভবদক্ষে চ কর্মণি। লোকে তঃথে চ নরকে বমদক্ষে চ জন্মনি॥ ৭ মহাভরেহতিরোপে চাপ্যশক্ষো হস্ত্রাচকঃ। এতান্ হস্তোব বা দেবী সা তুর্গা পরিকীর্জিতী,॥" চ

তুর্গ নামক দৈত্য মুহাবিদ্ধ, সংসারবন্ধন, কর্ম, শোক, তুঃধ, নরক, যমদণ্ড, জন্ম, মহাভন্ন, অতি ভয় এবং হস্তাকেও যে দেবী হবন করিয়া থাকেন, তিনিই তুর্গা নামে খ্যাত।

( প্রকৃতিখণ্ড 👣 🕶: )

অপরাণর নামনিফ্জি সহজে দেবীপুরাণে এইরপ পাওয়া যায়-⊶

"সর্কাণি হৃদয়খানি মললানি শুভানি চ। দদাতি ইপ্সিতালোকে তেন সাস্ত্রমলকা॥" ১

ঁদেবী সকলের হাদরে থাকিলে মক্স ৩ ও অভিস্থিত ফল দান করেন, এই জয় লোকে তাঁহার নাম সর্ক্মক্সা। "শোভনানি চ শ্রেষ্ঠানি যা দেবী দদতে হরে। ভক্তানামার্গ্ডির্নী মক্সাগতেন সা স্মৃতা॥"

তিনি ভক্তদিগকে শোভন অথবা শ্রেষ্ঠ ফল দানকরেন এবং ভক্তদিগের হুঃথ নিবারণ করেন বলিয়া তাঁহার নাম মলল্যা। "শিবা মুক্তিঃ সমাধ্যাভা যোগিনাং মোক্ষগামিনী। শিবায় যো জপেদেবী শিবা লোকে ততঃ স্থতা॥"

শিব শব্দের অর্থ মুক্তি দেবী যোগিগণের মোকলাঞিকা। শিবকলের নিমিত্ত দেবীর আরাধনা করা হয় বলিয়া তাঁহার নাম শিবা।

"সোমপূর্য্যানিাগল্পীণি ষম্মা নেত্রাণি ভার্গব। তেন সা ত্রাম্বকা দেবী মুনিভিঃ পরিকীর্ত্তিভা॥"

চল্ল, স্থ্য ও বায়ু ইহারা দেবীর তিনেত্র প্রেরণ, এই জয় স্নিগণ তাঁহাকে তামকা ৰলিয়া থাকেন। "যোগাগিনা তুমা দকা পুনর্জাতা হিমালয়ে। পূর্ণস্থ্যেন্দ্রণান্তা অতো গৌরীতি সাস্তা॥''

যোগানলে যিনি আপনার তহাদয় করিয়া হিমালয়ে
পূর্ণ হর্ষেদ্ধে দিদ্ধ রূপ ধারণ করিয়াছিলেন, তিনিই পৌরী। 

"কং ব্রন্ধা কং শিবঃ প্রোক্তমাশ্রনারঞ্চ কং মতম্।
ধারণাবসনাবাপি কাত্যায়নী মতা বুধৈঃ ॥"

ক শব্বে ব্লাং, ক শ্বে শিব ও ক শবে অখ্যসার ব্যায়। ব্লা ও শিব উাহাকে ধারণ করিয়া আছেন এবং অখ্যসার তাঁহার বসন বলিয়া তাঁহার নাম কাড্যারনী ।

प्ति वोत्र खत्रम् ।— बच्चटेबवर्खभूतारम् **मरण**—

"ৰাভা নারারণী শক্তিঃ স্থাইন্মিত্যস্তকারিণী। कटतक्षेत्र रुपत्रा ऋष्टिः यदा व्यक्तानि त्नवका ॥ • বরা অনতি বিশ্বক বরা স্মষ্টি: প্রজারতে। যয়াবিলা অপেরাভিড ময়াদুরা শিবার সা॥ দুয়া নিজা চ কুতৃপ্তিভৃষ্ণা শ্ৰহা কৰা ধৃতি:। ্তুষ্টি: পুষ্টিকথা শাক্তিলুর্জাধিদেবতা হি সা॥ रिक्र्ष्ट मा महामाध्यो গোলোকে রাধিকা मञी। মর্ত্তো লক্ষ্মীশ্চ ক্ষীরোদে দক্ষকস্তা সভী চ সা॥ সা ছুৰ্গা মেনকাকৰ্যা দৈন্তুৰ্গভিনাশিনী। चर्गनचीक छ्र्ना मा नकातीनाः गृह् गृहरू ॥ . , সা বাণী সাচ সাবিত্তী বিস্থাধিষ্ঠাতদেবতা। বলে সা দাহিকা শক্তি: গ্রেভাশক্তিশ্চ ভার্মরে॥ (भाषा मृक्तिः পूर्वहत्त्व बरन मिक्किम मीडना। শক্তপ্রস্তিশক্তিশ্চ ধারণা চ ধরাহ্ব সা ।। बाक्रागणिक विद्धिषु दमवणिकः ऋद्विषु मा। তপস্থিনাং তপস্থা সা গৃহিণাং গৃহদেবতা॥ • मुक्तिभक्तिक मुक्तानाः भाषा मारमात्रिक श्रा मा। মন্তকানাং ভক্তিশক্তি: ময়ি ভক্তিপ্রদা সদা ॥ नुशांगाः त्राकालकोण्ठ विवकाः लखाक्रिशि। পারে সংসারসিষ্কৃনাং তায়ী ছম্বরতারিণী॥ সংস্থ সৰু জিরপাচ মেধাশ জিলার পিণী। ব্যাথ্যাশক্তিশ্ৰতে শাল্পে দাতৃশক্তিশ্চ দাতৃষু ॥ ক্ষতাদীনাং বিপ্রভক্তি: পতিভক্তি: সভীযুচ। এবংরপাচ যা শক্তিম্রাদ্তা শিবায় সা॥" °

স্টি, হিতি ও লয়কারিণী আল্যা নারায়ণী শক্তি। যে শা

বারা আমি ব্রহ্মাদি দেবতা স্টি করিতেই বদারা নি

ক্ষর্ক হইতেছে, যদারা স্টি হইতেছে, যে শক্তি বিনা ব

থাকে না, সেই শক্তিই আমি শিবকে দিয়াছি; দুয়া, নি

ক্ষা, তৃথি, তৃষ্ণা, শ্রন্ধা, কমা, গ্রতি, তুটি, পুটি, শান্তি

লক্ষার অধিদেবতা সেই শক্তি। তিনিই বৈকুঠে গোলাে

থানে ও বর্ণ্ডে বহাসাধনী রাধিকা সতী, তিনিই কীরোলসয়

লক্ষী, তিনিই দক্ষকনাা মতী, তিনিই দৈনায়্রগতিনাশিং

মেনকার কনাা হুর্গা, তিনিই বাণী, বিপ্রগণের অধিটা

দেবী সাবিন্দী, তিনিই অধির দাহিকাশক্তি, স্থাের প্রথ

শক্তি, পুণ্চল্রের শোভাশক্তি, কলের,শীতলা শক্তি, ধর

ধারণা ও শক্তপ্রস্থাতি শক্তি, তিনিই বান্ধাগণের বান্ধাশিং

দেবগণের দেবশক্তি, তিনি তপন্থিসপের তপ্তা, গৃহিণিং

গৃহদেবতা, মুক্তগণের স্থিক ও সাংসারিকগণের মারাণিং

আমার ক্ষেক্সপের অক্তিশক্তি, আমার প্রাক্তি তিনি সর্ব

^{*} দেবীর ভিন্ন ভিন্ন নামনিকজি সম্বন্ধে দেবীপুরাণ ৩৭ জা: ও একাবৈনর্তে প্রকৃতিগও ৫৭ জা: জন্তব্য।

ভক্তিমতী, তিনিই রাজগণের রাজ্যলন্ত্রী, কণিকসংশের লভ্য-ক্রণিনী, সংখ্যারসাগর পার ক্রিতে ভিনিই ক্তরতারিনী এরী, সজ্জনগণের তিনিই বৃদ্ধি ও মেধাশক্তিস্ক্রপা, শ্রুতিশাল্পের ব্যাখ্যাশক্তি, দাভার দানশক্তি, ক্রিরাদির বিপ্রভক্তি, সতীর পতিভক্তি, এরপ যে শক্তি তাঁহাকেই আমি মহাদেবকে দান করিরাছি।

দেবীর পরিচয় ;— শর্ক প্রথম বাজসনেয়সংহিতায় ( শুক্ল যজুর্বেন ৩।৫৭) অধিকার উল্লেখ পাওয়া যায়— "

"এর তে রুক্র ভাগঃ সহ স্ক্রাধিক্রা তং জুবস্ব স্বাহা।"

হে কল ! তোমার তগিনী অধিকার সহিত আমাদের প্রদত্ত এই প্রোডাশ অক্থাহ করিয়া গ্রহণ কর।

( তৈতিরীয় আহ্মণ ১৮৬০১।৪)

এখানে ভাষ্যকার মহীধর এইরপ লিখিরাছেন—
'অবিকারা রুজুভগিনীখং শ্রুত্যাক্তম্ (২।৬।২।৯), "অবিকা

হ বৈ নামান্ত স্থান তরাত্তৈষ সহ ভাগ ইতি যোহয়ং রুজাধ্যঃ
ক্রুরেন বভরা লাধনভূতরা তং হিনন্তি। সা চাম্বিকা শরক্রুণ প্রাপা অরাদিক মুংপাত তং বিরোধনং হস্তি। ক্স্ত্যুস্বিক্রোক্রাত্মনেন হবিষা শাস্তং ভবতি। তথাচ তিন্তিরি:।
এব তে রুজু ভাগঃ সহ স্থাস্থিকয়েতাহে শর্ষা অস্তাম্বিকা সা
ভিন্ন এবা হিনন্তি যংহিনন্তি তর্মেবৈনং সহ শম্মভীতি।"

(本作(120120)

অধিকার কলেওগিনীত শ্রুতিতেই উক্ত হইরাছে বে,
অধিকা তাঁহারই ভগিনীর নাম,—তাঁহার সহিত তাঁহারও ষজ্ঞাগ আছে। এই কলে নামক ক্রুবদেবতা তাঁহার বিরোধিগণের হুননেছা করিরা থাকেন। সেইরূপ সাধনভূতা ক্রুবেব্বি তাঁহার ভগিনীর সহিত বিরোধিকে হনন করেন।
সেই অধিকা শরজপ্রাহণপূর্বক জ্বরাদি উৎপাদন করিরা 
তাঁহার বিরোধিকে বিনাশ করেন। কলেওখিকার উগ্রভ হবিহারা প্রশ্মিত হউক। তিত্তিরি (কাঠক) শ্রুভিত্তে আছে,
হে কলে। এই ভোমার ভাগ, ভগিনী অধিকার সহিত গ্রহণ
কর। এই অধিকাই শর্প রূপ ধারণ করিরা। ইহাদের
হনন করেন, তোমার সহিত (আবার) শাস্ত করেন।

উক্ত প্রমাণ বাপা জানা বাইতেছে, দেবী অধিকা প্রথমে কজের ভগিনীক্রপেই গণ্য 'ছিলেন। তৎপরে তলবকার উপনিষদে উমা হৈমবতীর উৎপত্তি সহক্ষে এইরূপ বিবরণ পাওয়া বায়—

এক সময় প্রশ্ন দেবগণের জ্বন্ত যুদ্ধে জয় লাভ করেন।
ক্বিত এই জয়লাভ উছিলের সামাল বলেই লংটুটিত গিয়াছে,

এরপ ্রাক্লেই মনে করেন। ব্রহ্ম তাঁহারের প্রমনিরাকরণের কল দেখা দিলেন। কিন্তু দেবগণ তাঁহাকে চিনিতে পারেন নাই। তাঁহারা প্রথমে আয়ি, তৎপরে বায়ুকে তাঁহার অরপ আনিবার জল্প পাঠাইলেন। ব্রহ্ম তাঁহালের পরিচর জিজানা করিলেন। অলি বলিলেন, 'আমি সকলই পুড়াইতে পারি।' বায়ু কহিলেন, 'আমি সকলই উড়াইতে পারি।' তখন ব্রহ্ম তাহাদিগকে একগাঁছি ড্গ দিলেন। দেবগর সেই তৃণ গাছটীর কিছুই করিতে পারিদেন না। তখন দেবগণ—

"কথ ইক্স মক্রবন্—মধ্বদ্নেত্বিজ্ঞানী হি কিমেত্তল্থক্ষ মিতি।
তথেতি তদভাত্রবৎ তত্মাত্তিরোদ্ধে। স্তত্মিদ্নেবাকাশে
দ্বিম্মাঞ্জগান বছ শোভ্ডমানামুমাং হৈম্বতীম্। ভাং হোবাচ
কিমেত্তলক্ষমিভি। সাক্রক্ষেতি হোবাচ ব্রক্ষণো বা এত্বিজ্ঞদে
মহীসংক্ষিতি। ততো হৈব বিদাঞ্চবার ব্রক্ষেতি।"

তথন ইক্সকে কহিলেন, 'মববন্! জান দেখি এই ভক্তির জিনিসটা কি ?' ভিনি বলিলেন, 'তাই হউক' এবং যেনন অভিমুখী হইলেন, অমনি অদুখ হইরা গেল। সেই ব্রহ্ম বহুলোভমানা উমা হৈমবতী জীম্র্তিতে আকাশে আগমন করিলেন। তাঁহাকে ইক্স জিজ্ঞাসা করিলেন, 'এই ভক্তির পাত্র কি ?' সেই (জীক্ষপা) কহিলেন, ইহাই ব্রহ্ম। এই ব্রহ্মের বিজয়প্রভাবেই তোমরা মহবলাভ করিরাছ। তথন হইতে তিনি ব্রহ্মকে জানিলেন।

কেনোপনিষদের উক্ত বিবরণান্থসারে জানা বাইতেছে, উমা হৈমবৃতীই ব্রহ্মবিদ্যা। ভাষ্মকার এথানে উমা হৈমবৃতী শক্ষের এইরূপ ব্যাণ্যা করিয়াছেন,—'হৈমবৃতীং হেমকুতাভর্তরপবতীমিব বহুশোভমানামিতার্থঃ। অথবা উমৈব হিমবতো ছহিজা হৈমবৃতী নিভাযেৰ সর্পক্ষেন জ্বীব্রেণ সহ বর্ততে ইতি।'

তৈভিত্তীর আরণ্যকের ভাষ্যে সারণাচার্যাও এইরপ গিথিরাছেন, "হিমবংপ্রাা পৌর্যা রন্ধবিদ্যাভিদানিরপ্রাদ্ গৌরীবাচক উমাশকো বন্ধবিভার্পলক্ষাত। অতএব তলব-কারোপনিবদি বন্ধবিদ্যান্তিপ্রতাবে বন্ধবিদ্যান্তি: পঠাতে 'বন্ধশোভমানামুমাং' হৈমবতীং ভাং হোবাট' ইভি তৰিবরঃ ভার ট্রামার সহ বর্জমানছাৎ সোমঃ।"

হিমবাদের কলা গৌরীর একাবিদ্যাভিমানী রূপ থাকার গৌরীবাচক উমা শক বারা, একাবিদ্যাই উপুলক করিতেছে। এই হেতু তলবকার উপনিবদে একাবিদ্যার মূর্ত্তি বর্ণিত হই-রাছে। 'সেই বহুদোভমানা উমা হৈমবতী তাঁহাকে বলিলেন', এইরূপে উমার সহিত বর্জমান হেতু সোম নাম হইয়াছে।

আবার উক্ত আরণ্যকের ৩৮ অস্বাকের সামণ্ডায়ে এইরূপ নিধিত আছে— 'উমা ত্রন্ধবিদ্যা তরা সহ বর্তমান সোম পরমাত্মনু,

হে পরমাত্মন্ সোম ! * উমা ব্রন্ধবিদ্যা, ভোষার সহিত বর্ত্তমান ৷ 'ঐ আরণ্যকের ১৮ অমুবাকে "অধিকাপতরে †" শব্দ আছে, এথানেও ভাষ্যে 'অধিকা কর্গন্মতা পার্ক্তী তথা ভর্ত্তে' এইরূপ ব্যাধায় আছে।

देकवरनग्रांशिनवरन अश्वविद्यादिवत्रक श्रीखारव **এইज्ञश** वर्गित क्यारक्--*जेमानकाग्रः श्रीज्ञरमंपैतः श्रीक्रः

जिलाहनः नोनकर्त्रः व्यभावः।"

তৈভিরীর আরণাকের নবম অন্থবাকে হুর্গা সহকে স্পষ্ট আভাস পাওয়া বার। বুধা—

"কাত্যারনার বিল্লহে ক্ঞাকুমারিং ধীমহি তরোছ্গি প্রচোদরাৎ।"
সাধণাচার্ব্যের মতে ইহাই বেলোক্ত ছুর্গাগারত্রী। তিনি
এই স্থানেক্তাক্তে নিধিরাছেন, 'পশ্চাদুর্গাগারত্রী। হেম প্রধ্যামিন্প্থারমৌলিমিত্যাগম প্রদিরম্তিধরাং ছুর্গাং প্রার্থরতে
কাত্যাধনার ইতি। কুতিং বতে ইতি কাত্যো ক্তা । ...স এব
বানমধিঠানং বস্তা সা কাত্যাধনী অথবা কত্ত ঋষিবিশেষস্থ
অপত্যাং কাত্য:।...কুংসিত্মনিঠং মার্থতি ইতি কুমারী ক্তা
দীপ্যমানা চাসৌ কুমারী চ ক্সাকুমারী। ছুর্গাং ছুর্গা। লিকাদি-

ব্যত্য সংক্র ছান্দ্রো জটবা:।"
পরে ছুর্গা পায়ত্রী বলিডেছি। স্থবর্গদৃশ মন্তকে অর্জচক্রভূষিতা ইত্যাদি আগমপ্রদিদ্ধ মূর্ত্তিধারিণী ছুর্গার প্রার্থনা
করিতেছে। ক্রতি আছোদন করেন বলিয়া ক্রজের অপর
নাম কাত্য, তিনিই বাহার অধিষ্ঠান সেই কাত্যায়নী। অথবা
কত নামকু শ্বষিবিশেষের অপত্য বলিয়া কাত্য নাম হইয়াছে। কুৎসিত অনিষ্ঠ মারেন অর্থাৎ বিনাশ করেন
বলিয়া তাঁহার নাম ক্রমারী; ক্তা অর্থাৎ দীপায়ানা, উভয়
মিলিয়া তাঁহার নাম ক্রাকুমারী হইয়াছে। ছ্র্গিই ছুর্গা,
এক্রপ লিক্লাদিব্যতায় বেদের স্ক্রিই দেখা বায়।

নারারণোপনিবদে ত্র্গাগায়তী এইরপ আছে—

"কাত্যায়নারৈ বিলছে কন্তাকুমারিং ধীমহি,
তল্লো ত্র্গা প্রচোদয়থে।"
ঋণ্ডেদ পরিশিটের রাত্রিপরিশিটে ত্র্গা সবদ্ধে এই পাওয়া বায়—

"ভোষ্যামি প্রবতেঃ দেবীং শর্বাং বহুবৃচপ্রিরাম্।

সহস্রসন্মিতাং ত্র্গাং লাত্বেদ্দে স্থানবাম গোমম্॥ «

শান্ত্যর্থং বিশ্বান্তিনামূবিভিঃ সোষণাশ্রিভাঃ।
ব্যথেদে অন্ সমুৎপল্লাহরাভি রেভো নিল্যাভি বেলঃ। ৬
বে আম্ দেবি প্রপদ্যন্তে ব্রাহ্মণাঃ হ্বাবাহনীম্।
অবিদ্যা বহুবিদ্যাঃ বা স নঃ পর্শদতি হুর্গাণি বিখা ॥ ৭
অগ্নবর্গাঃ শুভাং সৌম্যাং কীর্ত্তরিব্যস্তি যে বিশ্বাঃ। •
তান ভাররতি হুর্গাণি নাবেব সিন্ধুঃ হুরিভাত্যগ্রিঃ। ৮
হুর্গের্ বিবনে বোরে সংগ্রামে রিশ্বান্তে।
অগ্নভারিনিপাতের্ হুইগ্রহনিবারণে ॥
হুর্গের্ বিবনের্ আং সংগ্রামের্ বঁনের্ চ।
মোহদ্বিত্বা প্রপদ্যন্তে তেবাং মে অভরং কুরু ॥ •
কেশিনীং সর্বান্ত্রানাং পঞ্চমীতি চ নাম চ।
স মাং সমা নিশাঃ দেবী সর্বাভ্র গরিবক্ত্ ॥ ওম্ নমঃ।
ভামগ্নিবর্ণাং ভাপা অলক্তীং বৈরোচনীং কর্মান্ত্রের্ মুইাম্।
হুর্গাং দেবীং শরণমহং প্রপদ্যে স্ক্রসি ভর্সে নমঃ।

হুর্বি ভর্সে নমঃ।

হুর্গা ছুর্বেষু স্থানেষু শং নো দেরীরভিষ্টরে। যঃ ইমং হুর্বাস্তবং পুণ্য রাজৌ রাজৌ সদাপঠেৎ॥ ১৩

দেব্দেনিষদে মহাদেবীর এইরূপ পরিচয় আছে—"সর্বের বৈ দেবা দেবী উপতত্তঃ কাসি ছং মহাদেবি ? সা ববীং অহং বক্ষত্মরূপিনী মত্তঃ প্রকৃতিপুক্ষযাত্মকং জগৎ শৃত্তঞাশৃত্তল অহমানন্দানানন্দাঃ অহং বিজ্ঞানাবিজ্ঞানে অহং ব্রহ্মার্রফনী বেদিতবের ইত্যাহাথর্কক্রিতঃ। অহং পঞ্চভৃতান্তপঞ্চতানি অহমধিলং জগৎ বেদোহহমবেদোহহং অহং ক্রেভির্বন্তিন্দিন রামাহং আদিত্যেকত বিশ্বদেবৈঃ অহং মিত্রাবক্পাব্তা বিভ্র্মার সহমধিনাবৃত্তে অহং সোমাং ছটারং প্র্যাণ তগং দধামাহং বিশ্বমুক্তক্রমং ব্রহ্মাণমূত প্রজ্ঞাপতিং দধামাহং দধামি দ্রবিশ্ব হ্রমাণ হ্রমাণ হর্মাণ বে যজমানার ত্র্মাতহহং রাষ্ট্রী সক্রমনী বস্থনামহং ক্রে পিতর্মস্ত মুর্কল্ম যোনিয়প্তির সমুদ্রেরা বিশ্ববিন্দাহিনী পাশাক্স্প্র্র্মাণধারিনী জীমহাবিদ্যা য এবং বেদ স শোকং তরতি।"

সকল দেবতা তাঁহার চারিপাশে বসিয়া তাঁহাকে বিজ্ঞান ক্রিয়াছিলেন, 'আপনি কে, মহাদেবি ?' তিনি বলিয়াছিলেন, আমি ব্রহ্মতপুক্ষাত্মক ক্রপ্থ, আমা হইতেই লগৎ উৎপন্ন হইতেছে। জামি পৃত্ত ও অপুত্র, আমি আনন্দ ও অনানন্দ, আমি বিজ্ঞান ও অবিজ্ঞান, আমি ব্রহ্মা ও অবঙ্গা আথর্বক্রতিতে ইহাই নির্দিট আছে ৷ আমিই পঞ্ভূত ও অপঞ্জ্ত, আমিই অধিল ক্রগৎ, আমিই বেদ ও অবেন, আমিই কর্মুগণ ও বার্গণ, আমি আদিত্য ও বিশ্বেৰ, আমি

মহীধর বাল্পনেরসংহিতার তাব্যে (৬৬।৬৯) এবং ভট্টভাকরমিশ্র তৈত্তিরীয়সংহিতার তাব্যে 'দোম' শব্দের 'উমরা সহিত' এইরূপ অর্থ ক্ষরিয়াছেন।

[†] জাবিডের প্থিতে ভিমাপতরে এইরূপ পাঠ দৃষ্ট হর।

ও অগ্নি, আমিই অবিনীকুমার্বন্ধ, আমিই সোম, ঘুটা,
। ও তগ, আমিই বিফু, তর্মা ও প্রজাপতিকে ধারণ
র; যাহারা যক্ত করে, সেই যক্ষমানদিগকে আমি বছ
দান করি, আমি সকল রাজ্যে বাস করি, জগতের পিতাকে
মিই প্রথম উৎপন্ন করি, সমুত্র জলের মধ্যে আমার জন্ম,
মার বে আনে, সে দেবীপদ প্রাপ্ত হয়।' পরে দেবগণ
ইলেন, ইনিই আফাশক্তি বিশ্ববিমোহিনী পাশাস্থ্য ও
র্বাণধারিণী, ইনিই জ্লীমহাবিদ্যা। যে ইহাকে জানে,
শৌক হইতে নিস্তার পার্ম।

বহর চেপিনিষদে এইরূপ পরিচর পাওয়া যার---"দেবী ভে্কাগ্ৰ আসীৎ সৈৰ অগদভ্মস্তত কামীক-তি বিজ্ঞায়তে, শৃসায়কলেতি বিজ্ঞায়তে; তভা এব ব্রশ্ব बीबनः विकृत्रजीबनः ऋत्या अजीबनः गर्स्स मङ्गाना शैक्तन शक्सिकात्रमः कित्रता वानिक्वानिमः ममखानकी-न्न, (ভাগ্যমজীজনৎ, সর্কমজীজনৎ, সর্কং শাক্তমজীজনৎ, ७ वर द्यानवर উ**डिज्डर • के तायुक्तर यर्किटेक** उट शानिष्ठावत्र-म्यः मञ्चामकीखनः । देववा श्रामकि देववा भाखनी विका |দিবিত্মেতি বা হাদিবিত্মেতি বা সাদিবিদ্যেতি বা ; রহস্ত+ দ ওম বাচি প্রতিষ্ঠা সৈব পুরত্তম্বং শরীয়ত্তমং ব্যাপ্য বহিরস্তর্য-াগরস্কী দেশকালবস্বস্তরাসঙ্গাৎ মহাত্রিপুরস্থলয়ী বৈ প্রত্যক-তি: দৈবাত্মা তভোহনাদসভামনাত্মা। অতএষা ব্ৰহ্মসন্থিতি: াবাভাবকলাবিনিশাঁক চিৰিন্তা বিতীয়া ব্ৰহ্মস্থিতি:। সচিচ-ননলহরী, মহাতিপুরস্করী বহিরস্তরমস্প্রবিখা স্বয়মেকৈব ভোতি। যদন্তি সমাত্রং ব্ৰিভাভি চিন্মাত্রং মুৎপ্রিরমানন্দং पिउ९ "मर्काकांत्रा महाजिश्रस्मती। प्रकारः हर्नः विधः র্মদেবতেভরং সর্বাং মহাত্রিপুরস্থানরী সভামেতং ললিভাধ্যং ন্ত তদভিতীয় মধ্তার্থং পরং ব্রহ্ম। পঞ্চর পপরিত্যাগাদখ-াপপ্রহাণত: অধিষ্ঠানং পরং তত্তমেকং স্ক্রিশ্রতে মহদিতি। াজানং ব্ৰন্ধেতি বা অহং ব্ৰহ্মান্দীতি বা ভাষ্যতে। তথ্মদী-ত্যব সম্ভাষ্যতে অৱমান্তা ব্ৰন্ধেতি বা ব্ৰীন্ধনামন্দীতি বা যাহহমন্ত্ৰীতি বা সোহহমন্ত্ৰীতি বা ঘোহসৌ সোহহন্দীতি া বা ভাব্যতে বৈষা বোড়শী প্রীবিদ্যা পঞ্চদশাক্ষরী প্রীমহা-অপুরস্করী বালাখিকেতি বগলেতি মাতলীতি শ্বর্থ **ল্লাণীতি ভুষনে শ্রীতি চামুণ্ডেতি চণ্ডেতি বারাহীতির-**ারিণী রাজমাতলীতি বা অখারটেতি বা প্রতাত্তিরা ধ্মাবতী মুবিত্তী গান্নতী সরস্বভী ব্রহ্মাণ্ডকলেতি। খচোঅকরে পরমে वामन् यन्त्रिन् (पर्वे अधिविष्य नित्नकः यः छत्र दिन किः-⁴⁶¹ করিবাতি ব ইণ্ডদ্বিছ: ত ইল্লে স্মাস্তে ইড়্যুপনিবদ্।" দেবীই সর্বাত্তে একমাত্র ছিলেন, তিনিই অন্বাও স্টি করেন, কামকলা ও শুলারকলা নামে খ্যাত হইরাছেন; তাহা হইতেই ত্রহ্মা, বিষ্ণু, কন্ত্রগণ, গন্ধর্বগণ, অপ্সরোগণ, কিন্তুরগণ ও স্কুলু ছানের বাদিত্রবাদিগণ জন্মগ্রহণ করেন। তিনিই সক্ল ভোগা উৎপাদন করিয়াছেন, বাস্তবিক শক্তি হইতেই সমত উৎপদ ब्हेबाह्य। अध्या त्यमण, উভিজ্ঞ । अवायुक যে কোন প্রাণী স্থাবর, জ্বুদম, মনুষ্যাদি জন্মণাভ করিয়াছে। **ब्रेट (मर्वीरे भन्नामकि, मास्वी विमान, कामिविमान, हामिविमान,** সাদিবিদ্যা, রহস্ত, ওম্বারাদি বাক্প্রতিষ্ঠা, তিনিই পুরুত্তম ও শরীরতার ব্যাপিয়া দেশকাল ও বস্তুর আসলহেতু অন্তরে ও বাহিরে প্রকাশিত, মহাত্রিপুরস্থলারী, প্রত্যক্ ভৈতন্ত, তিনিই আত্মা, তিনিই অন্তপক্ষে অস্ত্য ও অনায়া, এই দেবীই এক-निष्, ভাবাভাবকানবিনিম্ক, চিছিদ दिভীয়া, बङ्कानिष्, मिकितानसगर्ती, महाजिश्वर्यस्त्री, जलात व वाहित्व जरू श्राद्य कतिता चम्रः এकचक्रेश श्रीकाममान, याहा किছू मे प्लाहि, याहा किছू हि९ विषामान, याहात आनुमहे श्रित्र, छाहा এই गर्साकात्रा महाजि पुत्र खुन्मत्री, तकन विश्व नर्सराहवडा नर्सनाधात्रण महा-विश्वयुक्ति है निष्टे मछा गानिजा नारम व्याधाल, वास्विक ইনিই অবিতীয় অথও পরব্রজা। পঞ্জাপ পরিত্যাগপুর্কক अध्यत्भ धात्रण कतिया अधिष्ठांन कतियाहित्नन, छाट्टारे भरुपापि দং এক পরতত্ত্ব পূ আমি প্রজ্ঞান ত্রহা, আমিই ত্রহা, তত্ত্বমিদ, আমিই আত্মা বা পরব্রদ্ধ, ব্রদ্ধই আমি, যে আমি সেই আমি, যে এই সেই আমি, এইরূপ যাহা বলাযায় বা ভাবা যায় সে সমস্তই তিনি, তিনিষ্ট এই ষোড়নী, জীবিদ্যা, পঞ্চদশাক্ষরী, এমহাত্রিপুরস্থন্দরী, বালাধিকা, বগলা, মাতকী, স্বয়ম্বর-कनानि, जुरानचती, চाমুগু, চগু, वातारी, जित्रस्तिनी, বাল্মাত্রী, শুক্সামলা, লঘুসামলা, অধার্টা, প্রত্যাসিরা, ধুমাবতী, সাবিত্রী, গায়ত্রী, সরস্বতী ও ব্রন্ধানল কলা।

ে দেবীর বৈদিক পরিচর উপরে লিপিবছ হইল। মহাভারত ও হরিবংশে এইরূপ বর্ণিত আছে। এখন পৌরাণিক বিবরণ বর্ণিত হইতেছে—

মহামারার আধির্জাব। কালিকাপুরাণের মৃতে, জ্যোতির্মার পরীব্রদ্ধের অংশঅরপ এক্ষা, বিষ্ণু ও মহেশর আবিত্তি হন। 'ব্রহ্মা ও বিষ্ণু কৃষ্টিছিভির সংরক্ষণের জন্তু অ শাজি গ্রহণ করিলেন, কিন্তু মহেশর ভাহা করিলেন না। তিনি বোগে তক্মর হইরা রহিলেন। কুরুমশরের প্রভাবে ব্রহ্মা নিক ক্ষেষ্ট সন্ধার প্রতি অমুরক্ত হন। এই কার্যোর জন্তু মহাদেব ভাহাকে যথেষ্ট উপহাস করেন। তাহাজে মহাদেবও কির্মাণ শিক্তির সহিত মিলিভ হইবেন, তৎপক্ষে ব্রহ্মারও অনেকটা জেল হইল। এদিকে মহাদেব পাণিগ্রহণ

না করিলে স্টেরকা হয় না, কিন্তু মহাদেবের কীবেন-সলিনী হইবার উপযুক্ত কোন রমণীও ছিলেন না। কাজেই সকলে বিশেষ চিন্তিত হইলেন।

অবশেষে ব্রহ্মা অনেক চিস্তার পর দক্ষ ও মরীটি প্রভৃতিকে এই कथा विशासन, 'मन्ना ও সাবিত্রীর আরাধ্য দেবতা विक्रुभात्रा वाजीज निवरक जूनाहेर्क भारतन, अमन नाती **(कर नारे। आगि ठाँशात. छर कतिएहि, अर्थ छिनिरे** শিবকে মোহিত করিবেন। দক্ষ! তুমিও সেই জগন্মগীর পুৰা কর, তিনি যেন তোমার কন্তারূপে ৰুমগ্রহণ করিয়া শিবের পত্নী হন।' ব্রহ্মার আদেশে দক্ষ প্রজাপতি তিন সহজ্র দিব্য বৎসর কঠোর তপস্থা করিয়াছিলেন। মহামায়া প্রথমে ব্রহ্মা, তৎপরে ধ্যানস্থ দক্ষের সমূথে উপস্থিত হইলেন ; তিনি ত্রন্মার কামনা পূর্ণ করিবেন স্বীকার করিলেন এবং দক্ষকে বলিলেন, 'আমি অবিলম্বেই তোমার পত্নীর গর্ভে তোমার ক্সারূপে উৎপদ্ন হইয়া শঙ্করের সহধর্মিণী হইব। यथन जूमि जामारक जात जानद कतिरव ना, ज्थनहे जामि দেহভ্যাগ করিব।' পরে দেবী দক্ষপদ্মী বীরিণীর গর্ভে জন্মগ্রহণ করিলেন। ক্রমে মুহামায়া শৈশব অভিক্রম করিয়া ट्योद्रात भनार्भन कतिरानन। महारान्यरक भारेतात्र अञ्च মাতার আদেশে মহাদেবের পূজা করিতে লাগিলেন। যে মহাদেব বিবাহের সম্পূর্ণ বিশ্বেষী ছিলেন, এথন সভীর রূপে ও পুজার তাঁহার মন টলিল, ভোলানাথ ভুলিলেন। সভীকে দেখা দিলেন। সভী বর প্রার্থনা করিলেন। দাক্ষায়ণীর কথা শেষ হইতে না হইতেই 'তুমি আমার ভার্য্যা इ ७' महाराज এই कथा वात्र वात्र विलिख- नाशिरनम । जथन সতী হাসিতে হাসিতে বলিলেন, 'আমার পিঙাকে জানা-ইয়। আমায় গ্রহণ করুন।' এই বলিয়া সভী মাতার নিকট চলিয়া আসিলেন। মহাদেবও হিমালয়প্রত্বে প্রবেশ করিয়া সভীর বিরহে ব্যাকুল হইলেন, ত্রন্ধাকে আপনার মর্ম্মের कथा कानाइरिनन। बंकात मरनात्रथ পूर्व इहेन। छिनि দক্ষকে গিয়া শিৰের মনোভাব জানাইলেন। দকও প্রফ্র সম্প্রদান করিলেন। প্রাকৃতিপুরুষের সতীকে भिन्न इहेन। देकनामिशिति-कन्मदत ও हिमानस प्रहादकारी नमी अशास्त्र निक्षे भाषा भिषापात महिष्ठ नानाकरण विहास করিতে লাগিলেন। এইরূপে কিছুদিন অভীত হইল। দক্ষ মহাযজ্ঞের অবস্থান করিলেন। সকল দেবতাই তাঁহার গজে নিমন্ত্রিত হইলেন, কেবল মহাদেব কপালী, অভএব यकार्र नरहन, এই छाविया एक छाहारक निमञ्ज कतिरानन না। সতী তাঁহার অতি প্রিরভমা হইলেও কপালীর ভার্যা।

বলিয়া দে ৰজে দোৰ্দ্দী দক্ষ তাঁহাকেও আহবান হয়ে: নাই। যধন সভী পিভার এই ছুর্বাবহারের কথা ভনিনের ক্ষণমাত্র আর তাঁহার জীবনধারণের ইচ্ছা রহিল না তথ্ন কোপারক্তনন্ত্রনা সভী, বোগবলে শরীরের স্কৃত 🕫 রোধ করিয়া কুম্বক করিলেন। সেই মহাকুম্বকে তারা প্রাণবায়ু অক্ষরদ্ধ ভেদ ক্রিয়া নির্গত হইল। মহাদেব গ্লে আসিয়া বিজয়ার নিকট সভীর প্রাণভাগের কারণ শুনিলেন **७थन द्वार्थिन महाक्रम अदिनाय मन्त्रास्क छै**निहर हरे। যুক্তধ্বংস করিতে উত্তত হইলেন। [দক্ষ্যক্ত দেখ ১] তথ क्ष्मिकीक यस बन्नारगांक रहेरक अवत्र भूक्ष के निम मातावा স্তীর মৃত শরীরে প্রবিষ্ট হইলেন। যজ্ঞামুগামী কল সঙী নিকট আসিয়া ও তাঁহাকে মৃত দেখিয়া যজ্ঞৈর কথা ভূলিঃ গেলেন, শুব্দেহের পার্থে বিসিয়া অসভাত শোক করিল नाशिरनन। ' छाहात नत्रन मनिरन देवछत्रवी नवीत छे९भी इट्टेन। महाराव प्रजीद भव ऋस्त नहेवा विनाभ क्रिए করিতে পূর্বাভিমুখে ষাইতে, লাগিলেন ৮ তথন এম বিষ্ণু ও শনি এই ভিন দেব সভীর শরীরে প্রবেশ করি ভাহা খণ্ড খণ্ড করিয়া ফেলিলেন। যে যে স্থানে সভী অঙ্গ পতিত হইল, দেই স্থানেই পুণাতীর্থ বা মহাপীঠ হইন শিব মায়া মোহিত হইয়া সভীশোকে বিলাপ করিতেছিলে অপেজজননী মায়াই ইহার কারণ। যতদিন না সতী পুনরা জন্মগ্রহণ করেন, ততদিন তিনি নিক্ষণ পরত্রন্ধের ধ্যানে নিম থাকুন, ব্রহ্মাদি দেবগণ এইরূপ চিস্তা করিয়া মহামায়া ন্তব করিতে লাগিলেন ৷ তাঁহাদের তবে তুই হইয়া মহামাঃ যোগনিতা শিবের হৃদয় পরিত্যাগ করিলেব। এংছিন ।পক্তি দহম্মাং শাবফুমুকজমং এলাণমুত প্রজাপতিং দধামাহং पद्यामि उपविणः ह्विचाटा स्थार्णारा यक्षमानात्र प्रस्टिष्ट রাষ্ট্রী সক্ষনী বস্থামহং স্থাবে পিতরমভা মূর্জনাম যোলিরণ্ স্বস্তঃ সমুজে যা এবং বেদ স দেবীপদমাপ্লোতি।" "এযার-শক্তিরেষা বিশ্রবিমোহিনী পাশার্শধক্র্বাণধারিণ জী^{ন্হা}-विमा य এवং द्यम म (भाकः छत्रिछ।"

সকল দেবতা তাঁহার চারিপালে বসিরা তাঁহাকে জিজানা করিরাছিলেন, 'আপনি কে, মহাদেবি ?' তিনি বলিরাছিলেন, আমি ব্রহ্মপথী প্রক্রতিপুক্ষাত্মক করণ, আমা হইতেই লগৎ উৎপর হইতেছে। জামি শৃক্ত ও অশুক্ত, আমি আনন্ধ ও অনানন্দ, আমি বিজ্ঞান ও অবিজ্ঞান, আমি ব্রহ্মা ও অবলা আথর্কাগতিতে ইহাই নির্দিষ্ট আছে । আমিই পঞ্ভূত ও অপঞ্জুত, আমিই অধিল অগৎ, আমিই বেদ ও অবেন, আমিই কর্মুগণ ও রাষুগণ, আমি আদিত্য ও বিশ্বেৰ, আমি

ক্রণভা ও অবর্ণের ভার পোরাদী বিছাৎসদৃশী হইবের।
পিবই ইহার বোগা বর। তৎকালে মহাদেব হিমালরের ওর্মধি
প্রান্থনারের নিকট এক সামতে থানেরও ছিলেন। গিরিরাল এখানে আসিরা একট্টিন ম্থাবিধানে মহাদেবের পূজা
করিলেন। মহাদেব তাঁহার পূজা গ্রহণ করিয়া বলিলেন,
"গোপনীর হানে তপভার জন্ত আসিরাছি, কিন্তু যেনুকোন
ব্যক্তি এখানে না আসিতে পারে, তাহাই কর।" গিরিরাজ্ব
তাহার আদেশ পালন করিলেন। কেবল ভিনি নিজ্
তনয়াকে মহাদেবের পূজার জন্ত রাধিয়া গেলেন। কালীও
প্রতিদিন ভিজিপ্রক শন্ত্র সেবা করিতে লাগিলেন।
কিন্তু এবার ভোলানাথের মন সহজে ভূলিল না। কেবীর
সাধ্য সাধনার মহাদেব দেখিয়াও দেখিলেন না।

এদিকে তারকাম্ব প্রবল হইরা স্বর্গান্ত অধিকার করিয়া বিদিল। দেবতারা সকলেই ব্যতিবাত ইইয়া পড়িলেন। এ সময় মহাদেবের ঔরসকাঁতি প্র ভিন্ন কেইই ভারকাম্বরকে বধ করিতে মুমর্থ নহে, ব্রহ্মা একথাও সকলকে বলিলেন। মহাদেবকে মোহিত করিবার ক্রম্থ মদন রতি ও বসস্তের সহিত প্রেরিত হইলেন। এবার ক্র্ম্মায়ুধের শয়্ব সন্ধান বার্থ ইইল। মহাদেবের জোধানলে তিনি ভশীভূভ ইইলেন। তাহাতে ভগবতীর বিরহ আলা আরও বাজিয়া উলি। তিনি পঞ্চলা করিয়া ক্রীণ ও মলিন ইইয়া পড়িলেন। (হরিবংশে লিখিত আছে, মেনকা ক্রমার ঐ অবস্থা দেখিয়া বলিয়াছিলেন, 'উ মা' আর তপস্তা করিও না, তাহা ইইতেই ভগবতীর উমা ল্বাম ইইল।)

अपने मुक्तिकाती कि हिंद शिक्ति भारतन १ प्रवीत्क দর্মদেবতেতর প্রথ মহাত্রিপুরস্থলরী সভ্যমেত লিউথি পঞ্চরপপরিত্যাগাদখ বন্ধ তদবিতীয়স্থতার্থং পরং ব্রহ্ম। রুণপ্রহাণতঃ অধিষ্ঠানং পরং তত্তমেকং সচ্ছিপ্ততে মহদিতি। প্রজানং ব্রন্ধেতি বা অহং ব্রহ্মান্মীতি বা ভাষ্যতে। তব্মসী-ত্যেব সম্ভাষ্যতে অবয়মান্তা ত্রন্ধেতি বা ত্রীক্ষণামক্ষীতি বা যোহহদন্মীতি বা দোহহুদন্মীতি বা যোহসৌ দোহহন্মীতি বা বা ভাষাতে সৈমা ষোড়শী প্রীবিদ্যা পঞ্চদশাক্ষরী গ্রীমহা-অিপুরস্করী বালাখিকেতি বগলেতি মাতদীতি অরখন কলাণীতি ভুবনেশ্রীতি চামুণ্ডেতি চণ্ডেতি বারাহীতির-क्रिंगी ब्राव्यमाञ्जीिक वा अवार्किक्षिक वा श्रकादिता ध्मावकी মুবিত্রী গায়ত্রী সরস্বতী ব্রহ্মাণ্ডকলেতি। খচোঅকরে পরমে (वामन् विचन् (पर्व। व्यक्षिवित्ध नित्नकः यः जन्न दिनः খচা করিবাতি ব ইস্তদ্বিছ: ত ইয়ে সমাসতে ইত্যুপনিবদ।" দেবীই দর্বাত্তো একমাত্র ছিলেন, তিনিই অসাও কৃষ্টি

এছতি, মর্বেখ্যাকে দেখিরা পার্কতীকে সংখাধন করিয়া क्रिरनन, 'ভिज्ञाधनभ्रामरन कानि! जूमि डेर्सनी अप्रित সহিত আলাপ কর।' এই বলিয়া তিনি কালীর নিকট हहेर्ड महिना (शरनन । 'जिन्नाश्चन श्रामना कानी' वहें कथा ভ্ৰিরা ভগবতীর ক্রোধান্তেক হইল। তিনি অপারোগণের नमान महारम्यद के कथान जाननारक निम्मिक रवाध कति-त्मन ७ देननिभदा अर्थ इरेम्रा धाक्रिक काव'धार इरेरनन । মহাদেব অনেক খুলিয়াও তাঁহাকে বাহির করিতে পারিলেন না, বড়ই ব্যাকুল হইয়া পড়িলেন। মহাদেবকে বিশেব কাতর জানিয়া সভী দেখা দিলেন। মহাদেব তাঁহার মান ভাঙ্গিতে গেলেন, কিন্তু কালী মানভাৱে বলিলেন, "যে পর্যান্ত আমার শরীর সোণার মত গৌর না হয়, সে পর্যান্ত আমি ভোমার সহবাস করিব না।" এই বলিয়া মহামায়া মহাকৌধীপ্রপাত নামক হিমালয় সামুতে গমন করিলেন। এথানে তপভায় এক শত বংসর অভিবাহিত হইল। তপস্থান্তে তিনি অন্তরে वाहित्त टकवन महारावटकहे रमेथिए नागिरनन । এथन रमवीत अजीहे निक इरेन, आकामशकांत्र करन यान कतिया कानी विकारमण्या (शोतवर्ग (शोती बुहेरनन। (कानिकाश् 80 व्यः) कार्डिक श्राम हैदांत्र श्रुख। देनिहे महिवीमिक्ति तिराप

কার্ত্তিক গণেশ ইহার পুত্র। ইনিই মহিবীমর্দিনীরণে মহিবাস্থ্যকে নিধন কয়েন।

দেবীভাগবতে দেবীর উৎপত্তি সম্বন্ধে এইরূপ শিধিত

দেবগণ, মহিধাস্থরের যুদ্ধে পরাস্ত হইয়া সকলে একার শরণাপর হন। একা আবার শিব ও দেবগণকে সলে লইয়া বিফুলোকে উপঞ্জি হইলেন। এধানে বিফুকে সকলে জানা-हेरनम राष्ट्र बन्तात वरत महियान्त्रत भूक्रस्यत व्यवशा हहेगारह । ক্তরাং ব্রদানের বলে দে বড়ই উত্তেও গর্কিত হইয়া भेषित्राह्म, अमिरक अमन तमगी अ अपि ना दिन, जारात्र সহিত যুদ্ধ করিতে পারে। এখন বাহাতে তাহার মৃত্যু হয়, ভাহার একটা উপার বিধান কর্মন। বিষ্ণু-টাহাদের ক্রা শুনিয়া হাসিতে হাসিতে বলিলেন, যদি সেই অন্তর্কে বধ ক্রিতে চাও, তাহা হইলে তোমরা আপন আপন জীর সহিত মিশিত হইয়া স্বাস্থ তেজের নিকট প্রার্থনা কর, যেন উৎপন্ন **তেজসমূহ সমবেত হইয়া এক নারীদ্ধণে স্থাবিভূতি হন।** সেই নারীকে আসরা ক্রাদির ত্রিশূল প্রভৃতি দিবা-অত্তে ভৃষিত করিব। সেই নারীই মদগর্কিত অপ্রুক্ত বিনাশ ক্রিতে সমর্থ হটুবে। তথন ত্রন্ধার মুধ হইতে প্রারাগমণির ক্লার রক্তবর্ণ হঃসহ তেজ উৎপর হুইল। এইরূপ শহরের শ্রীর হইতে অত্যত্ত রৌণাবর্ণ, বিশ্বর শরীর হইতে নীলবর্ণ, ইল্পের শরীর হইতে অগুণর্যর বিচিত্রবর্ণ, কুবের-সম অনল
ও বলণের শরীর হইতে একেবারে অ্বহুৎ তেজাপুর প্রাত্ত্র্ত হইল, পরে অক্সান্ত দেবগণের শরীর হইতে ভাষর
তেজ নির্গত হইল। তথন সেই মহাতেজের সমষ্টি অতীব
উজ্জন হইরা উঠিল। সেই তেজোরাশি অবলোকন করিয়া
বিষ্ণু প্রভৃতি সকলেই বিদ্যিত হইলেন। অক্সাৎ সেই তেজাঃ
প্রঞ্ছইতে এক অন্বিতীর রমণীমৃত্তি আবিত্তি হইরা সকলের
বিশার উৎপাদন করিলেন। এই রমণী মৃত্তিই মহালন্মী, এই
ভ্বনমোহিনীর বাল অটাদশ, মুখমগুল খেতবর্ণ, নয়ন ক্কবর্ণ,
অধর রক্তবর্ণ ও পাণিতল তাদ্রবর্ণ। তিনি দিব্যভ্বণভ্বিতা
কমনীয়া কান্তিধারিণী; উহার সহস্র বাল হইলেও অস্তর্বগণের বিনাশের নিমিত্ত তেজোরাশি হইতে অটাদশভ্রারণে
আবিত্তি ইইলেন। (দেবীজ্গিণ ৮৮ জঃ)

কাহার তেজ হইতে তাঁহার শরীরের কোন স্থান উৎপন্ন হইয়াছিল সে সম্বন্ধেও দেবীভাগবতে এইরূপ বর্ণিত আছে—

শহরের তেজ হইতে তাঁহার স্থবিপুল খেতবর্ণ ও মনো-হর মুধকমল, যমের তেজ হইতে আলাহলবিত কৃষ্ণবৰ্ণ মনোহর কেশকলাপ, অগ্নির, তেজ হইতে মধ্যন্থলে কৃষ্ণবর্ণ-তারকাযুক্ত ও প্রায়ভাগ রক্তবর্ণ এইরূপ তিনয়ন; সন্ধার তেল হইতে ক্লফবৰ্ণ জ্বগুল, বায়ুর তেল হইতে নাভিদীৰ্ঘ নাতি হ্রত্ব প্রবণবুগল, কুবেরের তেজ হইতে তিলফুল সম্পূদ নাদিকা, দক্ষাদির তেজ হইতে কুলকুত্ম সদৃশ দম্বপঙ্জি, অরণের তেজ হইতে রক্তবর্ণ অধর, কার্ত্তিকের তেজ হইতে রমণীর ওঠ, বিফুর তেজ হইতে অষ্টাদশ বাহ, বস্থগণের তেল হইতে বজাৰণ অঙ্গুলি সকল, সোমের তেল হইতে উত্তৰ অন্যুগ্ল, ইল্পের তেজ হইতে তিবলীযুক্ত মধ্যবল, বরুণের তেজ হইতে জল্বা ও উক্ষুগ্ৰ এবং পৃথিবীর তেজ হইতে বিপুল নিওঁছ উৎপত্ন হইল। তথন সেই পরাশক্তিকে দেবঁগণ এইরূপে স্বস্থ অন্ত প্রদান করিলেন ;--বিষ্ণু চক্র, শন্ধর শূল, অফণ শহা, অধি শভন্নী, বারু বাণপূর্ণ তূণ, ইব্রু বক্ত, যম কালদত, বৃদ্ধা গলাললপূর্ণ কমতলু, বৃহণ পাল ও পন্ম, কাল থড়কা ও চর্মা, কুবের স্থরাপূর্ণ পানপাত্র, বিষকর্মা পরভাও গদা প্রদান করিলেন। এইরূপ অল্পত্তে ভূষিত হইয়া মহা-দেবী সিংছেল উপর আরোহণ করিরা অহুর বিনাশে অগ্র-সর হইলেন। খোরজর যুক্তের পর মহাদেবীর হত্তে মহিয়া-স্থর পরাজিত ও নিহত হইলেন।

মার্কণ্ডের চণ্ডীতেও সর্বাদেবের তেজ হইতে সহস্রজ্বা মহিব মর্দিনীর আবির্ভাবের কথা বর্ণিত ধ্ইরাছে। কালিকাপুরাণে মহামারার আবির্ভাব সহকে এইরূপ উপাধ্যান বর্ণিত আছে—

"दलि अहारमवी ( नमञ्जा) " निर्मार विवादशस्त्र वर कतिशहित्नन, छत्व भाराम छिनि (र्ताक्रमकुमा) कर-कानीक्रां द महिवाद्यक्त वर्ष कृतिश्राहित्वन, अक्रथ वितः वात कात्रण कि ? प्रायोग वर्षन त्यारे छलकानी मूर्खि मर्गन कप्रित्राहितन, उथन मिरीय शानरमान महिकाल निग्छिल ও তাহার জনরে শূল किম দেখিয়াছিলেন, ইহারট বা ভারণ कि ?" खेर्क कहिरलन, "रह महात्राण !" राजार्थ महिराव महिरा ভদ্ৰকালী প্ৰাহ্ভুত হইয়াছিলেন, তৰিষয় বলিতেছি শ্ৰৰ কর। বীর মহিষাপ্রর এক দিন নিশাবোগে পর্বতে নির্জী ঘাইছে যাইতে অতি নিদারণ ভরকর অগ্ন দেখিয়াছিলেন,—ধেন মহামারা ভদ্রকাণী অতি ভীষণভাবে মুথবিভারপূর্বক _{গজা} দারা তাহার শিরশ্ছেদ করিয়া তাহার রক্তপান করিতেছেন। প্রাত:কালে হহিবাক্তর অতিশয় ভীত হইয়া আপনার অনুচর বর্গের সহিত সেই মুহামায়ার পূজা করিক। অনন্তর মহা-দেবী মহিষাপ্তর কর্তৃক প্রপুজিত হইয়া বোড়শভূজা ভদ্রকানী ক্লপে আবিভূতি হইলেন। তাহার পর মহিষাত্মর মহামায়াকে প্রণাম করিয়া বলিয়াছিল, দেবি ! আমি সভাই খলে • দেখিয়াছি, আপনি আমার শিরশ্ছেদ করিয়া রক্তপান ক্রিতেছেন। তাহাতে আমি নিশ্ব বুঝিয়াছি, আপনি আমার क्रियेत्र शांन कतिर्दन । जामि रय जाशनांत्र वधा, रम विवास সক্ষেত্র নাই, আমারও ভাহাতে ছ:ধনাই। পূর্বে আমার পিডা আমার জন্ত আপনার সহিত শস্তুর আরাধনা করিয়াছিলেন, ভারতেই আমার অন্ম হয়। আমি ইক্রত প্রাপ্ত হইয়াছি ও অবত ব্রহ্মাতের আধিপত্য নির্বিবাদে উপভোগ করিয়ছি, স্করাং, আর আমার বাস্নীয় কিছুই নাই। এখন আপনার আশ্রয় এই মাত আমার প্রার্থনী। নিধিল ^{যুক্তে} যাহাতে আয়ি পুলা হই, তাহা করুন। ফতদিন প্রা थांकिरत, उछिनि रान भागि आंभनात्र भन्छांत्र ना कति, **এই বর প্রদান করুন। মহাদেবী কহিলেন,** ঘ্রের এমন একটা ভাগ নীই, যাহা এখন আমি তোমাকে দিতে পারি। কিন্তু ভূমি যুদ্ধে আমাধারা নিহত, হইয়াও কোনকালে আমার পদত্যীগ করিবে না। বেঁথানে আমার পুলা হইবে, দেই ংখানেই ভোমার এই শরীরের পূঞা হইবে।

তথন মহিবাহার দেবীকে সাদরে নমন্তার করিরা জিঞান।
করিল, প্রমেশরি ! বজ্জৈ আপনার কোন্ কোন্ মূর্তির
সহিত আমি পূজা হইব ? দেবী কহিলেন, উগ্রচণ্ডা, ভন্তবুলী
ও তুর্গা এই তিন মূর্তিতে তুমি সর্কাণা আমার পাদলগ হইগ
মহায় দেব ও রাক্ষ্যগণের পূজা হইবে । আদি স্টিতে আমি
অইাদশভূকা উগ্রচণ্ডা মূর্তিতে ভোমাকে বিনাশ করিরাহি।

ৰিজীর শৃষ্টিতে এই (বোড়ুশভূলা) ভদ্রকানীরূপে ভোমাকে বিনাশ করি। এখন (দশভূলা) ছর্গারূপে অফুচরবর্গের সহিত ভোমাকে বধ করিবু।

•হুর্গার আবির্ভাব সম্বন্ধে কাশীপতে এইরূপ বর্ণিত আছে— প্রাকালে হর্ণ নামে রুরুর এক পুত্র ছিল, এই মহাদৈতা ভণস্থার বলে ত্রিলোক জন্ম করিয়া আপনার অধীন করিয়া ছিল। ইন্দ্র, চন্দ্র, বায়ু, বরুণ প্রভৃতি সকলের পদই কাড়িয়া লইয়াছিল। তাঁহার ওয়ে ঋষিগণের তপস্থাও ব্রাহ্মণগণের (वन्तर्भार्ध नक्ष इहेन। महाविश्वान शिष्ठ्या त्मवश्य महत्त्वत्र আশ্র লইলেন। মহেখর সেই ছত্ত অফুরকে বিনাশ क्रिवांत्र खेंग्र (पवीरक भागे।हेरलन। महारावी रापवागरक অভয় দিয়া যুদ্ধের উদেশাগ করিতে লাগিলেন.। প্রথমে তিনি কালরাত্রি নামী রুজাণীকে দৈত্যকৈ আনিবার জন্ম পাঠাইলেন। ত্র্গাহ্রর সেই ফ্লোরমা রুদ্রাণীর ক্লপে মোহিত হইয়া তাঁহাকে ধরিয়া অসতঃপুরে লইয়া যাইতে আদেশ করিলেন, দৌত্যকার্যো আসিয়াছে বলিয়াও তাঁহার কোন কথাই গুনিলেন না। দৈত্যামূচরগণ যেমন কাল-রাত্রিকে ধরিতে যাইবেন, অমনি দেবীর ছক্কারে সৈই রক্ষিগণ জন্মীভূত হইতে লাগিল। তথন ছ্গান্থরের আদেশে অযুত স্থাক অসুর আসিয়া সেই দেবীকে ধরিবার উপক্রম করিল। তাঁহার নি:শ্বাস বায়ুতে দৈতাগণ ইতন্ততঃ বিকিপ্ত হুইয়া পড়িতে লাগিল। দেবীও আকাশমার্গে উঠিয়া সে স্থান পরিত্যাগ করিলেন। হুর্গাস্থর দৈত্যবীরবর্গের সহিত তাঁহারু অনুগমন করিলেন। কিঁয়ৎকাল পরে সেই মহাস্থরা-গণ বিশ্বাাচুলে আসিয়া সহস্রভুজা, মহাতেজা, মহাপ্রহরণা মহাদেবীকে দেখিতে পাইল। আরও দেখিল যে, কালরাত্রি আসিয়া দেবীর নিকট তাহাদের বিরুদ্ধে অভিযোগ করিতে-তুর্ণাকুর মহামায়ার রূপ দর্শন করিয়া কামশরে পীড়িত হইল এবং যে কেহ তাঁহাকে ধরিষুা আনিতে পারিবে তাহাকে বিশেষরূপে পারিতোষিক দিবার লোভ দেধাইল। তথন দৈত্যবীরগণ ভগবতীকে ধরিবার জন্ত ছুটুল। কিন্ত काहाटक 8 महामात्रात मन्त्र्यीन हरेट इरेन ना। भकत्नरे পীরাজিত হইলু ১ পরে তুর্গাস্থর নিজে মহাদেবীর সহিত यूष्क श्रीवृख् इहेग।

মহাদেবীর শরীর হইতে শক্ত্বিণ উৎপর হইয়া দৈতাদেনা ধ্বংস করিতে লাগিল। তুর্গান্তর সেনাগণের তুর্দিশা দর্শন
করিয়া মহাগল মূর্তিধারণ করিয়া দেবীর প্রতি ধাবিত হইল।
মহাদেবী পাশাল্প প্রহারে তীহার ভীমত ও বিধ্ত করিয়া
ফেলিলেন। তথ্ন দৈত্যপতি স্থাবার মহিবরীপ ধারণ করিয়া

দেবীকে আক্রমণ করিল, কিন্তু দেবী ত্রিশুলাঘাতে ভাছাকে ভূমিশারী করিলেন। অবিলবে সেই দৈতা সহস্রভ্রেল পুরুষ মুর্জিশারণ করিরা প্রাণপণে যুদ্ধ করিতে লাগিল। অবিলবে দেবী একটা মহান্ত্র নিক্লেপ করিয়া ভাহাকে থণ্ড বিশ্ব করিয়া ফেলিলেন। তুর্গান্ত্রইল। অর্গে ভুন্পুভি বাজিতে লাগিল। দেবগণ দেবীর তাব ক্রিভে লাগিলেন। সেই দিন হইতে মহাদেবী ভুর্গা নামে বিখ্যাত হইলেন। (কানীখণ্ড ৭২ অঃ)

কালিকাপুরাণে একন্তলে লিখিত আছে— সেই দশভ্জা জগজাত্রীই মহিষাত্মরকে নিধন করিয়াছিলেন। ইনিই আখিনমাসে কৃষ্ণপক্ষে চতুর্দশীর দিন প্রাছত্তি হইয়াছিলেন। পরে শুক্রপক্ষে সপ্রমীর দিন প্রাছত্তি হইয়াছিলেন। পরে শুক্রপক্ষে সপ্রমীর দিন প্রেরণ্ডর তেজে সেই দেবীমুর্ত্তি ধারণ করিয়াছিলেন। অইমীতে দেবগণ তাঁহাকে নানা অলঙার দিয়া সাজাইয়াছিলেন। নবমীতে মহাদেবী নানাবিশ্ল উপচারে পুলিত হইয়া মহিষাত্মরক বিনাশ করেন এবং দশমীতে দেবগণ কর্ত্তক বিস্ট হইয়া অন্তর্ধান করিলেন। পুরাকালে সায়জুব মন্তরে এই দশভ্লা দেবগণ কর্ত্তক প্রতিত হন। সপ্তশতীচ্তীর মতে— আরোচিষ মন্তরের অ্রথ রাজা ও সমাধি কৈশ্র প্রারণকরে মত্তের মত্তে, ভারতভ্যে সর্ব্বথম ক্রিথম ক্রিলেন। দেবী প্রারণকরের মতে, ভারতভ্যে সর্ব্বথম ক্রিথম ক্রিলের। লেবীর পূজা করিয়াছিলেন।

দেবীভাগবত, মহাভাগবত, কালিকাপুরাণ, বৃহয়ন্দিকেশ্বপুরাণ ও বৃহদ্ধপুরাণে র্মচন্দ্র কর্তৃক দেবীর
অকালে (শরৎকালে) পূজার কথা বর্ণিত আছে । কালিকাপুরাণে ও বৃহদ্ধপুরাণে লিণিত আছে—রামের প্রতি অমুগ্রহণ ও রাবণের বধের নিমিত্ত ক্রমা রাজিকালে মহাদেবীর
বোধন করিয়াছিলেন। মহাভাগকতে আছে—রামচন্দ্র
অটোতর শত নীলপ্ল ধারা দেবীর প্রভায় প্রত্ত হন, কিছ
দেবী তাঁহাকে ছলনা করিবার অন্ত একটা প্ল লুকাইয়া
রাধেন। তথন রামচন্দ্র আপনার একটা চ্কু উৎপাটন করিয়া
দেবীর পাদপ্রে অর্পণ করিতে অগ্রসর হন। দেবী তাঁহাকে
নিরস্ত করিয়া তাঁহার মনোবাঞ্গ পূর্ণ করেন।

কাহারও মতে, রাবণ বসত্তকালে ত্র্গাপুলা করিয়া-ছিলেন, এই জন্ম তাহা বাসভীপুলা নামে পাতে।

[বাসন্তীপুলা শব্দে বিভ্ত বিবরণ জ্ঞাইব্য।]

ছুর্গোৎসববিধি।—শরৎকালে বার্ষিক যে মহাপুলা করা হয়, ভাহাকে শারদীয়া মহাপূলা কহে এবং এই পূলার চারিটা প্রধান কর্ম মপন, পূলন, হোম ও বলিদান। এই পূলা তিথিতার ব্যাপিয়া করিতে হয়।

"শরৎকালে মহাপুজা ক্রিয়তে যা চ বার্ষিকী। শানেদীয়া মহাপুজা চতু:কর্মময়ী শুভা ॥
তাং তিথিত্রমাসাদ্য কুর্য্যান্তক্ষ্যা বিধানত: ।"
'চতু:কর্মময়ী মণনপুজনবলিদানহামরূপা সা॥'

প্রতি বৎসর আখিন মাসে প্রত্যেকরই এই পূলা অবশ্র কর্ত্বব্য, যাহারা, মোহ আলফ্য দন্ত বা ধ্যেপ্রকি পূলা না করেন, তাহাদের প্রতি দেবী ভগবতী ক্রুদ্ধ হইয়া তাহাদের সকল প্রকার অভিলাষ নষ্ট করেন। এই শরৎকালীন হুর্গা পূলার সকল প্রকারে নিত্যতা প্রতিপাদিত হইনাছে। ইহা না করিলে প্রত্যবায়ভাগী হইতে হইবে। (তিথিত') "বিশ্বীরে চরে চৈব লগ্নে কেন্দ্রগতে রবৌ। বর্ষে কর্বে বিধাতবাং স্থাপনঞ্চ বিসূর্জ্জনং॥ বো মোহাদ্ধবাল্ভাদ্দেবীং হুর্গাং মহোৎস্বে। ন পূল্মতি দন্তাধা হেঘাধাপ্যথ ভৈরব॥ ক্রুদ্ধা ভগবতী তম্ভ কামানিষ্টান্ নিহন্তি বৈ॥"

ছগা পূলা করিলে দেবতা সকল প্রীত হন এবং যিনি পূলা বিধির অন্তর্গন করেন, তিনি অতুল বিভৃতি ও চতুর্বর্গ ফল লাভ করেন। ধর্ম অর্থ কাম ও মোক্ষ ইহার মধ্যে যিনি নাহা অভিলাষ করিয়া ভক্তি সহকারে পূজা করেন, তিনি অচিরাৎ তাহা প্রাপ্তহন। সমাধি নামক বৈশ্ব ও প্ররথ রাজা পূজা করিয়া সমাধি বৈশ্ব নির্ব্বাণ ও প্ররথ রাজা রাজ্যাদি পূনঃ প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন। যে যে কোন অভিলাষ করিয়া দেবীর পূজা করে, তাহার সেই অভিলাষ পূর্ণ হয়। রোগী রোগ হইতে মুক্ত হয়, মুমুক্ত মাভ করে, এই স্কল কারণে প্রত্যেকেরই এই পূজা করি অবশ্ব কর্তর্য। এই পূজার ৭টী কল্প বিহিত আছে—এই সকল গটী কল্পের মধ্যে সামধ্যালুসারেণ্যে কোন কল্পে পূজা করিতে হইবে।

নবম্যাদি কর। — ভাজমাসের ক্ষণানবমী হইতে আখিন মানের মহানবমী পর্যান্ত হে পূজা করা হয়, ভাহাকে নবন্যাদি কর কুঁছে। আখিন মানের শুক্লা প্রতিপদ হইতে মহানবমী পর্যান্ত যে পূজা করা যায়, ভাহাকে প্রতিপদাদি কর, আখিন শুক্লার্যনী হইতে মহানবমী পর্যান্ত ষ্ঠ্যাদি করা, সপ্তমী হইতে মহানবমী পর্যান্ত সপ্তম্যাদি করা, মহাইমী হইতে মহানবমী পর্যান্ত অপ্তম্যাদি করা, কেবল মহাইমীর দিন অইমীকরা, এবং মহানবমীর দিন নবমীকরা; এই সপ্তবিধকরা উলিখিত হইয়াছে। এই সপ্তবিধ করহারা ইহার নিভাজ প্রতিপাদিত হইয়াছে। খিনি খেরপ অবস্থাপর, ভিনি এই সপ্তবিধ করের মধ্যে যে কোন এক করে পূজা করিতে পারেন।

"उष्डवधनाः क्षकनवमानि अखिभन्ति वंशानि नश्चमानि

মহাইন্যাদি কেবলমহাইনী কেবলমহান্বনী প্ৰায়প্_{ৰয়া} উলেয়া।" (তিথিত॰)

করারন্তের পর যদি আশোচ হ'ব, তাহা হইলে প্রার প্রতিব্রুক হইবে না। বেহেতু এইরপ লিখিত আছে— "এত্যজ্ঞবিবাহেরু প্রান্ধে হোমেহর্জনে জপে। আর্ত্রিক প্তকং নস্তাদনার্ত্র তু প্তকং॥" (তিথিত ) এত, যজ্ঞ, বিবাহ, প্রান্ধ, হোম, অর্চনা ও অপ আরম্ভ হইবে

স্ভক অশোচ হয় না, অনারক <u>হ</u>ুইলে স্তক অশোচু _{হয়।} তুর্গেৎেসৰ ব্রক্ত বলিয়া উল্লিখিত হইয়াছে। এই পূলা• সাভিকী রাজদী ও তামদী এই তিবিধা। সাথিকী পুঞার নিরামিষ নৈবেদা, জপ ও যঞাদি, পুরাণাদিতে কীর্ত্তিত ভগ-বতীর মাহাত্ম্য পাঠ, এবং দেবীস্কু জপ প্রভৃতি করিতে হয়। বলিদান ও সামিষ নৈবেভাদি ছারা যে পুজা করা যায়, তাহাকে রাজসী পূজা কতে। ূজপ যজ্ঞ বিনা স্থরামাংসাদি উপহারে যে পুলাহয়, তাহাকে তামনী পুজা কহে। এইরূপ পুলা মেচ্ছগণ ও দহাগণ অহুষ্ঠান করিয়া থাকে। "শারদী চণ্ডিকা পূজা ত্রিবিধা পরিণীয়তে। ঁদান্ত্রিকী রাজসী চৈব তামদী চেতি বিশ্রুতি:॥ माजिकी क्रवारकारेक देनदिराम्ड निवासिदेयः। মাহান্মাং ভগবত্যাশ্চ পুরাণাদিষু কীর্ত্তিতং॥ পাঠন্ত জপ: প্রাক্ত: পঠেদেবী মনান্তথা। দেবীস্ক্তজ্প পৈশৈচৰ যজ্ঞোৰছিষু তৰ্পণং॥ त्राक्रमौ विनित्तरिम्ह देनद्वदेषाः मास्टिष्ड्या ॥ স্থরামাংসাহাপাহারে জপ্যজ্ঞৈ বিনা তথা।

প্লান্থলে প্লুকের তপোধে:গ অধিক থাকে এবং প্লার আতিশ্যা ও দেব প্রতিক্তির স্বরূপ হয়, সেইস্থলে দ্বেতার সালিধ্য হইয়া থাকে।

বিনা মট্ৰেন্ডামসী ভাৎ কিরাতানাম্ভ সম্মতা ॥".( ডিথিতৰ)

"অর্চ কুল্ল তপোনোগাদর্চনন্তাতি শারনাং।
আভিরূপ্যাচ্চ বিশ্বানাং দেব: সারিধামৃচ্ছতি॥" (তিথিত')
নবম্যাদিকর—রবি কলারাশৈতে গমন করিলে অর্থাৎ
আ্রিনমানের রুক্ষণক্ষের আর্রানক্ষরেযুক্ত নবমী তিথিতে
দেবীর বোধন করিতে হইবে। যদি নবমীতে আর্রানকর্বা
না হর, তাহা হইলে কোন্ নবমীতে বোধন হইবে!
কালিকাপুরাবের মতে নবমীতে অন্তাদশভূলার বোধন ও বজীতে
'দশভূলার বোধন করা কর্ব্বা। সার্বের মতে, ইহা সলত নহে,
কারণ কামাধ্যাপঞ্মুত্তি প্রকর্বণ এইরণ লিখিত আছে—

শেরৎকালে পুরা যন্ত্রাৎ নবঁমাাং বোধিভাস্থরৈ:। শারদা সা সমাধ্যাভ্যা পীঠে লোকে চ নামতঃ। রূপমন্তা: পুরা প্রোক্তং সিংহত্বং দশ বাছভিং।
রূপমেবং দশভ্জং পুর্বেজ্য বিচিন্তরেং।'
উত্তচন্তেতি না মূর্তি ভক্তকালী ঘৃহং পুন:।
বরা মূর্ত্ত্যা ঘৃষ্ণ হলিয়ে না ছুর্নেডি প্রকীর্ত্তিতা॥" (ভিপিড')
.পূর্বে শরৎকালে নবমী ভিন্তিতে দেবগণ কর্ত্ত্বক বে
নবী বোধিত ছইরাছে, তাঁহার নাম শারদা, ইনি দশবাহ
মহিতা এবং সিংহবাহিনী। ইত্যাদি পূর্বেজি বচনামুসারে
হিষাম্বরের পাদলগ্গত হেতৃ পুজার বিষয় পূর্বেজিজ হইনাছে। কিন্তু অভাদশভ্জার মহিবাস্থরের প্রতি পাদলগ্গত
ভাবনা নাই ইত্যাদি কারণে নবুমীতে বা বজীতে দশভ্জার
বাধনই যুক্ত। "ছর্নায়াং পাদলগ্গতেন মহিবাস্থরত পূজাতং
গ্রেম্কং অতএব অভাদশভ্জারাং পাদলগ্গত মহিবাস্থরত
গ্রেম্কং অতএব অভাদশভ্জারাং বিষয়াং বা বোধনং।"

( ভিথিত * * ) নবমীতে বোধন করিয়া জোষ্ঠানক্ষত্রযুক্তা ষ্ঠাতে বিব-কে আমন্ত্রণ, মূলানক্ষত্রযুক্ত সপ্তমীতে পত্রিকাপ্রবেশ, পূর্বা-াঢ়ানক্ষত্রযুক্ত অষ্টমীতে পুজা হোম ও উপবাদ, উত্তরাঘাঢ়া-ক্ষত্রযুক্ত নৰমীতে বিৰিধ বলিয়ারা শিবাকে পূজা ও শ্রবণা-।ক্ত্রযুক্তা দশমীতে প্রণাম করিয়া বিসর্জন করিতে হইবে। ार्क्स त्य मकन नक्ष्य डेक रहेन, ओ मकन जिथिए यनि औ াকল নক্ষত্ৰ যোগ নাহয়, ভাছা হইলে ঐ সকল ভিথিতেই চার্য্যাদি হইবে, নক্ষত্তের কথা যাহা উক্ত হইয়াছে, তাহা हना जिभारत्रत क्छा। यनि के जिथिए जुर्स्ताक नकुष्वत रयान য়, তাহা হুইলে পুঞাতেও বিশেষ ফল হয়। "ঈষে মান্তর্দিতে পক্ষে কন্তারাশিগতে রবৌ। नवमाः ८व धरम्लवीः कीजाटकोजूकमन्द्रिः १ . জোষ্ঠানক্ত্রযুক্তারাং ষ্ঠ্যাং বিশ্বাভিমন্ত্রণং। সপ্রম্যাং মূলযুক্তায়াং পত্রিকায়াঃ প্রবেশনং ॥ পূর্কাবাচযুতাষ্টম্যাং পূজাহোমাছ্যপোষণং। উত্তরেণ নবম্যান্ত বলিভিঃ পুরুরেচিছবাং । শ্রবনেন দশম্যান্ত প্রাণিপত্য বিস্তর্জন্তে ।" ( তিথিত ) •

প্রতিবংসর ক্সারাশিতে ত্থ্য অবস্থান করিলে অর্থাৎ আখিননাসে কর্ত্তব্যশ্তির অনুপণতি হেত্ সিংহকে অর্থাৎ ভারমাসে বোধন এবং তুলার অর্থাৎ কার্ত্তিক মানে স্থাপনাদি করিবে। কিন্তু মলমাসে করিবে না। বাদি আখিন মাস মনমাস হর, তাহা হুইনে আখিন মাসে প্রাণি কিছুই হুইবে

না, কার্জিক মানে হইবে। এইরূপ হলে ডাক্রমানে বাঞ্চন ও কার্জিক,মানে, পূজা হইবে, ভাত্তের ক্লানবমী হইতে প্রজি-লিন,দেবীমাহাত্মা পাঠ ও পূজাদি করিতে হইবে। "প্রতি-বর্ষং কল্পার্কে কর্ত্তবাদান্ত্রপার্ত্ত নিংহার্কেছিন বোধনং তুলার্কেছিল স্থাপনাদিকছ ক্রিয়তে চাল্লেক্ত্রভাবং কল্পার্কে মলমানে ন তদারভাতে যদি পূর্কমারক্ষং তদা মলমানে হিন পূজা দেবীমাহাত্মাগাঠাদিকং প্রভাহং কর্ত্ববানেব।"(তিথিতং)

ক্ষান্বমীতে বে বোধন হইবে, তাহা দেবক্ষতাহেত্
পূর্মায়ে হইবে, যদি উজয় দিন পূর্মায়ে নবমী লাভ হয়, তাহা
হইলে পূর্মদিনে এবং পূর্মদিনে যদি আর্দ্রাক্ষর হয়, তাহা
হইলে পূর্মদিনে পূর্মাইসময়ে দেবীর বোধন হইবে।
বোধন কার্যাে যে রাত্রিপদ উল্লিখিত ইয়াছে, তাহা দেবরাত্রিপর জানিতে হইবে। দক্ষিণায়ন দেবতাদিগের রাত্রি,
এই জল্ল রাত্রিপদ ব্যবহৃত হইয়াছে। যদি প্রদিনে
আর্দ্রানক্তর লাভ হয়, তাহা হইলে পরদিনে বোধন হইবে
এবং পূর্মায়েতর সময়ে যদি আর্দ্রানক্তর লাভ হয়,
তাহা হইলে আর্দ্রানক্তরাল্বোধে পূর্মায়েতরকালে বোধন
হইবে।

"ज्ञ क्षकनयगाः (प्रविक्ठाएक পृर्काष्ट्र त्यायनः।
উভয়দিনে পৃर्काष्ट्र नयभौगाट পृर्काप्टन आर्जाक्ष्रद्राद्ध
ज् পृर्काष्ट्रः विना निवामात्व यूणानतः विनागि भन्निति
त्यायनः উভয়দিনে পৃर्काष्ट्र नवमार्जगाटक পृर्काप्टन त्यायनः
यूगार ।" (जिथिकः)

ষ্ঠাতে বোধন করিতে হইলে সায়ংকালে বোধন করিতে হয়। যাহার। নবনীতে বোধন করিতে সমর্থ হন না, ভাহার্টি ষ্ঠাতে সায়ংকালে বোধন করিবে।

"बंध्राः विवाछत्त्रो त्वाधः मात्रः मन्त्रान्य कौत्रत्यः ।"

ষ্ঠীতে বিৰর্কে সায়ংকালে দেবীর বোধন করিবে, বে সময় সন্ধা পরিকুট হয় নাই, তারকা সকল্যধন ভাল ' করিয়া দেখা যায় না, অইরূপ সময়ই, প্রেক্ত বোধনের কাল।

यकीर अक्षाकाल राधन आमज कहिर्छ हहेरन, शबीश्रादाल श्र्मिति वर्षि नाम स्वाप्त विश्व नाम हहेरन

क्षित्र राधन ७ सामज स्हेर्य। क्षिण गबीश्राद्यलम्म

श्रादान नामःकारन यक्षिनास ना हहेरन छाहात श्र्मित

नामःकारन राधन कर श्रादान मामज स्हेरन सामज हहेरन।

यथन उष्टमितन नामःकारन यक्षि हहेनाह, राहे नमम श्रादान

विश्व विश्व राधन हहेरन। यहि उष्टमितहे नामःकारन

विश्व विश्व हिन श्रादा हहेरन श्रादा विश्व राधन क्षित्र ।

विकार द्वाधनामञ्जलकत्रत्वर्ति श्रेषीद्यद्वमशूर्वकातन

শ মার্তের এই স্থানে কিছু বিরোধ দেখা। শাইতেছে। কারণ কালিকা-বাণে দশভ্লা, বোড়শভ্লা ও অট্টাদশভ্লা এই তিন মূর্তিরই পাদদেশে হিবাহর থাকিবে ও পূল্য হইবে এরপে বিবরণ পাওরা বার।

প্রতিপদাদি কর—আখিন মাসের শুরুপক্ষে নবরাত্রক বিধি অফুঠান করিবে। প্রতিপদাদি ক্রমে মহানবমী পর্যান্ত মধাবিধানে পূলা করিতে হইবে। প্রতিপদে করারন্ত করিয়া মহানবমী পর্যান্ত দেবীমাহাত্ম্য পাঠ ও পূলা করিতে হইবে। প্রতিপদে কেশসংস্কার ক্রব্যা, বিতীয়ার পট্টভার, তৃতীরাতে দর্পন, সিন্দ্র ও অলক্তক, চতুর্থীতে মধুপর্ক, তিলক ও নেত্র-মঞ্জন, পঞ্চমীতে অলরাগ ও ঘর্থাশিক্তি অলক্ষার, ষ্ঠীতে সারংবিষ্ঠকতে বোধন, সপ্রমীতে পূলন, অইমীতে উপবাস ও অইশক্তি পূলা, নব্মীতে উগ্রহণ্ডা ও অক্সান্য দেবতার পূলা, বলিদান ও কুমারীপূলা করিতে হইবে, দশ্মীতে পূলা করিয়া বিসর্জন করিতে হইবে।

এইরূপ বিধিবারা ধাহারা পূজা করে, ভাহাদের সকল আপদ্নাশ এবং পুত্র, দারা, ধন ও ধান্যাদি বিবিধ স্থ লাভ , হয়; অ্তুকালে এই দেহ পরিত্যাগ করিয়া ভগবতীর গণমধ্যে পরিগণিত হয়। এই বিধানকে নবরাত্রক কছে। "আখিনে শুক্লপক্ষে তু কর্ত্তব্যং নবরাত্রকং। थाजिननामिक रमरेनव यावक नवमी **करव**र ॥ কেশসংস্থারদ্রব্যাণি প্রদন্তাৎ প্রতিপদিনে ১ পটুজেরং দ্বিতীয়ায়াং কেশসংযমহেতবে ॥ দর্গাঞ্চ তৃতীয়ায়াং সিন্দুরালক্তকং তথা। মধুপর্কং চতুর্থ্যান্ত ভিলকং নেত্রমণ্ডলং॥ भक्षभार **अन्द्रांशक भक्तां नक्दरानि ह।** यर्काः विवज्दते। त्वाधः मात्रः मक्तान्य कात्रस्य ॥ সপ্তম্যাং প্রাক্তরানীয় গৃহমধ্যে প্রপুর্জয়েও। উপোষণমণাষ্ট্রম্যামষ্ট্রশক্তে: প্রপুঞ্জনং ॥ नवमाम् अष्ट शास खबुरक्तवार्कनः किया। পুজাচ বলিদানঞ্ভবনাতৃ: প্রপুলয়েৎ॥ क्रमात्री পूजनीक्षा ह जूत्रीया ह ज्वरेनः। সংপ্জা এপ্রেষণং কুর্যাৎ দশম্যাং শাবরোৎসবৈ: ॥ ष्यत्मन विधिना यस (पर्वोः श्रीगग्रट्ड नदः। क्रम्प वर भागाय उद्घ (मवी मर्काभिम क्रिजर ॥ পুত্রদারধনধীনাং সংখ্যা তম্ম ন বিভাজে। च्राक्त र शत्रमान् ८७। शान् ८० छ। ८ पती शरण खरवर ॥"

ষষ্ঠ্যাদিকল নষ্ঠীর দিন আভিংকালে করারস্ত করিরা সামংকালে বিবশাখা ও ফলে দেবীর বোধন করিবে, দুগুমীতে বোধিত বিশ্বশাথা আনিরা-পূজা করিতে হইবে, আইনীতে পূজা ও আগরণ, নবমীতে প্রভুত বলিদান ও পূজা এবং দশমীতে শাবরোৎসব ঘারা-বিসর্জন করিতে হইবে।

"বোধরে বিশ্বশাথারাং হঠাং দেবীং ফলের্চ।

স্বাং পূজাং তথাইম্যাং বিশেবেণ স্মাচরেৎ।
আগরঞ্চ শ্বং ক্র্যাং বলিদানং মহানিলি॥
প্রভুতবলিদানক্ষ নহম্যাং বিধিবচরেং।
ধারে দ্বুজাং দেবীং ছ্গামজেণ পূজ্রেং ॥
বিস্ক্রনং দশমাস্ত ক্র্যাংবি শাবরোৎসবৈং।
ধ্লিকর্দম বিক্ষেণে: জীড়াকৌ তুক্ম দেবীং ।
ভগলিলাভিধানৈশ্চ ভগলিলপ্রগীতকৈং।
ভগলিলাভিধানিশ্চ ত্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।
ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।
ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।
ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।
ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্চ ক্র্যাচ্চ দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্ব ক্রিয়াভ্যান্ত দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্ব ক্রিয়াভ্যান্ত দশ্মীদিনে।

ভগলিলাভিধানিশ্ব ক্রিয়াভ্যান্ত দশ্মীদিনে।

সাধারণতঃ থাার এই তিন কর দেখা যার, নবমাাদি কর, প্রতিপদাদিকর ও মধ্যাদিকর। জনেক ভাল এই ত্রিবিধ করের মধ্যে যে কোন এক করাহ্নারে হুর্গা পূল্ হইরা থাকে; কিন্তু কুলাচার অন্ত্রাহ্নারে পূলা করিব। করের বিধান থাকে, তাহারা সেই করাহ্নারে পূলা করিব। যেহেতু কুলাচার উল্লেখন করা শাস্ত্রসমত নহে।

কল্লারস্ত হইলে সেইদিন হইতে মহানবমী প্রাঞ্পণ ও বিজ্ঞাদশমীতে বিসর্জন করিতে হইবে এবং প্রতিদিন ।
দেবীমাহাত্মা ও ঋষিচ্ছেলাদি পাঠ করিতে হইবে।
শমাহাত্মাং ভগবত্যা শু প্রাণাদিষু কীর্ত্তিং।
পঠেচত শৃণ্যাধাণি সর্কামসমূদ্ধয়ে॥"

পুরাণাদিতে কীর্স্তিত ভগবতীর মাহার্ম্ম সকদকাফ দিনির নিম্পিত্ত পাঠ কারবে। মার্কণ্ডেমপুরাধান্ত্র্গত চতীত এইরূপ দিখিত আছে—

শিরৎকালে মহাপূঞা ক্রিয়তে বা চ বার্ধিকী।

তেন্তাং মধ্যতনাহাত্মাং শ্রুতা তক্তিসমন্বিতঃ।

সর্বাবাধাবিনিমুহক্তা ধনধাঞ্জুতান্বিতঃ।

মন্ত্রো মৎপ্রসাদেন ভবিত্যতি ন সংশ্রঃ॥

(চণী)

শরৎকালে যে মহাপূজা হর, তাহাতে আমার নাহার্থ অবস্থা পঠনীর, যাহারা ভক্তিপূর্বক এই দেবীমাহাত্ম গা বা শ্রবণ কবে, তাহাত্ম সকল প্রকার বিপদ হইতে বৃদ হয়। [চতীপাঠ শব্দ দেখ।]

নবম। দি করারস্ত হইতে মহীনবমী পর্যন্ত প্রতিধি একবার করিয়া দেবীমাহাত্মা পাঠ করিতে হ^{ইবে। কো} কেহ, বলেন, দেবীমাহাত্মা একবার পাঠ ^{করিনোঁ} হয়। প্রতিদিন পাঠ করিবার আবিশ্রুক কি ? ইহাতে ^{রহুক্র} এইরপ মীমাংসা করিরাছেন, একবার পাঠ করিলে লাত্রার্থ সিত্ত হর, তথাচ ফলবাছল্য হেডুঞ্শুন: পুন: পাঠ করা আবশুক।

"ৰাত্ৰ বন্ধণি দেবীমাহান্মাপাঠন্ত 'সক্ত কৃত্তে কৃতঃ দান্ত্ৰাৰ্থং' ইতি স্থানাৎ সক্তংক্ষ্মণাদেব তত্তদ্দলসিদ্ধিৰ্জায়তে তথাপিতংফৰবাছলাায় পুনঃ পুনঃ পাঠঃ।" (তিথিতত্ব).

প্রতিপদাদি করে প্রতিপদ্ ছইতে মহানবমী পর্যন্ত ও ষ্ঠ্যাদি করে ষষ্ঠা হইতে মহানবমী পর্যন্ত পাঠ করিতে হইবে। নবম্যাদি করে নবমীতে বৈধিন ক্রিয়া পত্রীপ্রবেশ পূর্ক্ দিনে কর্থাৎ ষ্ঠাতে সায়ংকাশে আমন্ত্রণ ও অধিবাস এবং নবমীর দিন বৈধিন করিতে অসক হইলে ষ্ঠার দিন বোধন, আমন্ত্রণ ও দেবীর অধিবাস করিতে হইবে।

বোধন ও আমেরণের ময় ভেদাহসারেই পৃথক্ত অর্থাৎ

ছইটা ভিন্ন ভিন্ন ময়্বর্ণারা বোধন ও আমরণ পৃথক্, এইরূপ

স্চিত হইরাছে ৮ বোধন ময়—

"শ্রীবৃক্ষে বোধয়ামি ছাং যাবৎ পৃভাং করোমাহং॥

ঐং রাবণস্থ বঁধার্থায় রাময়ামুগ্রহায় চ।

অকালে ব্রহ্মণা বোধো দেব্যাত্ময় কতঃ পুরা॥

অহমণ্যাখিনে তবং বোধয়ামি স্বরেখরীং।

শক্রেণাপি চ সংবোধা,প্রাপ্তং রাজ্যং স্বরালয়ে॥

তত্মাদহং ছাং প্রতিবোধয়ামি বিভৃতিরাজ্যপ্রতিপন্তিহেতোঃ।

যথৈব রামেণ হতো দশাস্থ তথৈব শক্ন বিনিপাতয়ামি॥"

"নেক্মন্দার্ক্টকলাসহিমবচ্ছিথরে গিরৌ। লাতঃ শ্রীফলর্ক ডং অধিকায়াঃ সন্দাগ্রিয়ঃ ॥ । শ্রীশৈলাশীথুরে জাতঃ শ্রীফলঃ শ্রীনিকেতনঃ। নেতব্যোহ্সি মুমা গচ্ছ পুজাো তুর্না স্বরূপতঃ॥"

আমন্ত্রণের মন্ত্র---

এই তৃইটী মন্ত্রহারা বোধন ও আমন্ত্রণ এই তৃইটী পৃথক্
অর্থাৎ বোধনের সময় পৃর্কোক্ত বোধনমন্ত্র এবং আমন্ত্রণ
সময়ে আমন্ত্রণের মন্ত্রপাঠ করিতে হইবে।

সপ্তম্যাদিকর। আখিনমাসের শুক্লা সপ্তমী হঁইতে
মহানবমী পর্যন্ত দেবীর প্রা করিতে হইবে। সপ্তমী
ভিথিতে কল্লারপ্ত করিয়া নবপত্রিকা ও মৃথারী ভগবতী
প্রতিমাপুলা ও অষ্টমীতে মহালান করাইতে হইবে। পঞ্চগবা,
গায়ত্রী, কম্বার, গল্লাদি, তীর্থবারি, সকল প্রকার ওষধি,
ভুলার, কলস, পূঁপার্ত্বাদি, ভোর প্রভৃতি এবং শীতবাদিত্রনাট্য সহকারে মহালান করাইতে হয়। পরে প্রশা,
নানাবিধ উপহারাদি দারা নৈবেদ্য ও তিল্থান্তাদি সংযুক্ত
বিব্পত্র দারা হোম করিতে হইবে। সংসারে যে সকল কাম্য
স্ব আছে, তাহা এই হোম দারা হয়ু এবং দীর্ঘারু, প্রত্ত

বিপুল ধন্ধাঞ্চাদি লাভ হয়। সংমীতে এই বিধি অনুসারে পুলা এবং দেবীর প্রীতির নিমিত্ত বলি প্রদান করিবে। এইরূপ বিধি অনুসারে পূঞা করিলে ইহজ্বে বিবিধ ভোগ করিরা অত্তে দেবীপুরে গতি হয়।
"আখিনে শুক্রপক্ষেত সংযোগি দিন্তরে।

"আখিনে ওরপকে তু সপ্তম্যাদি দিনত্তরে। ভত্ত পুৰাবিশেষেণ কৰ্ত্তবায়ু মম মানবৈঃ ॥ বিশেষং ভত্ত বক্ষ্যামি শৃণু পুত্ৰক সম্বভং। সপ্তমাং পত্রিকাপুকা রম্ভাদি নবভির্ভা॥ महीमग्री ह मृर्खि (सं পूजायुर्धनदृष्ठत्त्र। অষ্টমী সা মহাপুণ্যা তিথি: প্রীতিকরী মম॥ কুর্যাত্তিত মহাস্থানং পঞ্চগব্যযুঠৈতত্ত্ব।। গায়ত্রীভিঃ কষাধৈন্দ গন্ধীদ্যৈন্তীর্থবারিভিঃ॥ अवधी जिन्ह नर्सा जि ज्ञादि के करिन छथा। গীতবাদিত্রনাট্যেন স্নাপয়েশ্যাঞ্চ ভক্তিত:। পূজা সহপহারেশ্চ নৈবেজৈশ্চ মুনোহরে: ৪ विष्परेवः चुडारेकक जिन्धामानिमः यूरेकः। জুত্যাজ্ঞলিতে বক্ষৌ ভক্ত পুণাফলং শুণু॥ भः माद्र यानि भोशानि कामभनि नद्रश्रव । দীর্ঘমাযুর্ধ-পুত্রং বিপুলং ধনধাক্তকং। লভতে মংগ্রসাদেন অক্টেমম পুরং ব্রঞ্জে। অনেন বিধিনা যস্ত নবমীমতিবাছরেৎ। ভৃঙ্কে চ বিপুলান্ ভোগানন্তে শিবপুরং ব্রন্ধে ॥"

পত্রী প্রবেশ-ব্যবস্থা— মৃশানক্ষত্রযুক্ত স্থামী তিথিতে বা কেবল স্থামীতে পূর্বাত্র সময়ে পত্রীপ্রবেশ অর্থাৎ নব-পত্রিকা স্থাপন করিতে হইবে, উভয় দিন যদি পূর্বাত্র লাভ হয়, তাহা হইলে পরদিনে পত্রীপ্রবেশ হইবে। ইহাতে তিথিযুগ্মাদি আদরণীয় হইবে না।

ঁতিতঃ সপ্তম্যাং মূলযুক্তারাং কেবলারাং উভয়ত পুকাছে সপ্তমীলাভে পরতা।

"বুগাদ্যা বর্ষক্তিক সপ্তমী পার্ক্তী প্রিয়া। রবেক্দর্মীক্ষতে ন ওঁজ ডিথিবুগাডঃ॥" ( ভিথিতক )

"পূর্ব্বাহ্নে নবপত্রিকা শুভকরী সর্বার্থসিদ্ধিপ্রদা আরোগাং খনদা করোতি বিজয়ং চণ্ডীপ্রবৈশে শুভা। মধ্যাকে জনপীড়নক্ষয়করী সংগ্রামে বোরাবহা।" সায়াকে বধবদ্ধনানি কলহং সর্পক্ষতং সর্ব্বদা।" (ভিথিত )

পূর্বাহু সমরে নবপত্রিকাপ্রবেশ অত্যন্ত শুভ এবং সকল সিদিবারিনী। মধ্যাক্ত সমরে পত্রীপ্রবেশ অনপীড়ন শু ক্ষম, সামাক্তকালে বধ, বন্ধন ও নানা প্রকার অভ্যন্ত হইয়া থাকে। এই বন্ধ পূর্বাহু সময়ে নবপত্রিকা প্রবেশ প্রাশস্ত। নবপত্রিকা—কন্দনী, নাজিমী, ধাল্ল, হরিজা, মানক, কচু, বিব, অশোক ও অরতীপত্র এই নরটী নরপত্রিকা—

"কনলী দাজিমী ধাল্লং হরিজা মানকং কচুঃ।
বিবোহশোক: অরতী চ বিজ্ঞেরা নবপত্রিকা ॥" ( তিথিত )

[নবপত্রিকা দেখ।] পত্রীহাপন করিরা মুখ্রীমুর্ভির প্রাণ
প্রতিষ্ঠা করিতে হইবে। কারণ দেবপ্রতিমার প্রাণপ্রতিষ্ঠা
না করিপে তাহাতে দেবত হর না।

"অক্টেষামপি দেবানাং প্রতিমাদপি পার্থিব। প্রাণপ্রতিষ্ঠা কর্ত্তব্যা ভস্তাং দেবস্থসিদ্ধরে ॥" (ভিথিতং) প্রাণপ্রতিষ্ঠার পর যথাবিধি নানা প্রকার উপহার

षात्रा, (मरीशृका कतिरक श्हेरव।

মহাইমীর দিন উপবাস, নানা প্রকার উপহার ও বলিছারা ভগবভার পূজা করিতে হইবে। অইমীতে বলিদানের বিষয় বাবস্থাপিত হইরাছে, কিন্তু দেবীপুরাপের বচনান্তরে লিখিত আছে, অইমীতে, বলিদান করিলে বংশনাশ হয়। ইহাতে রঘুনন্দন এইরূপ মীমাংসা করিয়াছেন, অইমীতে বে বলিদান নিষিদ্ধ হইরাছে, তাহা সন্ধিপুলাপর; কারণ সন্ধিপুলা অইমীর শেষ দণ্ড ও নবমীর প্রথম দণ্ড, এই তুই দণ্ডের মধ্যে এই সন্ধিপুলা হয়, উভয় ভিথিকতা হেতু সাবকাশ হল হইয়াছে, এই অস্ত ঐ অইমীতে বলিদান না করিয়া নবমীতে বলিদান নিষিদ্ধ, এইরূপ অভিপ্রার নচেৎ অস্তবচনে লিখিত আছে, অইমীতে বলি প্রভৃতি উপহার হারা দেবীর পুলা করিতে হইবে এই বচন নির্থক হয়।

"এইম্যাং পশুবাতশ্রতঃ— অইম্যাং কৃষিবৈশ্বাংকৈ মহামাংকৈ: স্থানিভিঃ। পূল্বেরহুলাভীবৈশ্বলিভিডোল্যেচ্ছিবাং ॥ '

हेि कांगिकाश्रुवाशांक। बहेबार बनिगीतन श्रुवनात्मा करवर क्षेत्र।

ইতি দেবীপুরাণীয়ং। সদ্ধিপুঞ্জাবলিদানপরং তৎপুঞ্জারা উভরতিথিকর্ত্তবাদ্ধেন তর্বলিদানত নবম্যাং সাবকাশস্থাৎ।"
(ভিষিত )

স্থিপুলা—অইমী ও নব্দীর স্থিতে ব্যাগিনীগণের স্থিত দেবীর পূলা করিতে হইবে। ইহাতে অইমীর শেবদণ্ড ও নব্মীর প্রথমদণ্ড বে দেবীর পূলা করা যায়, তাহা অতিশ্য ফল্দারক; অইমী ও নব্মীর স্থি রাজিভাগেই প্রশন্ত, অর্থরাতে দশগুণ, সন্ধারাতে ত্রিগুণ ফল্দারক। এই স্থিকিলাকে উমামহেশ্বর্তিথি কছে।

"অইমী নবমী দক্ষিী ভৃতীয়া ধলু কথাতে। তত্ত্ব পুলাাখহং পুত্ৰ যোগিনীগণনংমুক্তা। অন্তমাঃ শেষদভশ্চ নৰফাঃ পূৰ্ব্বএব চ।
অত্ত বা ক্ৰিয়তে পূকা বিহেক্য সা মৰাকলা ॥ '
অন্তমী নৰমীবোগো বাকিভাগে বিশিয়তে।
অৰ্দ্ধনাকে দশগুণং সন্ধান্ত ক্ৰিপং ভবেৎ ॥
অন্তমী নৰমীযুক্তা নৰমী চাইমীযুক্তা।

অৰ্দ্ধনাৱীশ্বকানা উম্বা মাহেশনী তিথিঃ ॥" (তিথিক)

মহাইমী ভিথিতে প্রবান বাক্সি উপনাস করিবে না
নবমীতে বিবিধ বলি প্রভৃতি উপহার বারা দেবীর প্র
করিতে হইবে। অইমী বাতনবমী এই হুই দিনেক্সমধাে ে
কোন একদিনে হোম করিতে হইবে, কিন্তু মহাইমীর দি
ংহাম প্রশন্ত। অপ ও ভারোপাঠ করিয়া নবমীর দিন দিলগাঃ
করিতে হইবে। দেবীর প্রোপাচার সম্বদ্ধে বাহার যে প্রবা
শক্তি, তিনি সেই শক্তাহ্সারে প্রা করিবেন।

"উপবাসং মহাষ্ট্ৰম্যাং পুত্ৰবান্ধ সমাচবেৎ । যথা তথৈব পূতাত্মা ব্ৰতী দেবীং প্ৰপূক্ষমেৎ ॥ নবম্যাং বলিদানন্ত কৰ্ত্তব্যং উত্ব যথাবিধি । কপং হোমঞ্চ বিধিবৎ কুৰ্য্যান্তত্ৰ বিভূতবে ॥" (তিথিত )

মহাষ্টমীর দিনই উপবাস করিতে হইবে, মহাষ্টমী পূজ পর দিন যদি সন্ধিপূজা হয়, তাহা হইলে সেই দিন উপবা হইবে না।

মহানবমী পূজাকর—আধিন মাসে মহানবমীতে ভা বতীর পূজা করিতে হইবে।

"লকাভিষেকা বরদা গুলে চাখ্যুজন্ত চ।
তত্মাৎ রা তত্ত সংপূক্ষা নবম্যাঞ্জিকা বুধৈঃ ॥" (ভিৰিত্ত কেবল অনুমী গুকেবল নবমীকল—জাবিনমান

মহাষ্টমী ও মহানবহী তিথিতে বিশুক্তাবে ভগবভীয়ে যথাশব্দুগুপঢ়ারৈ পূজা করিতে হইবে।

"ভদ্ৰকানীং পটে কছা তত্ৰ সংপৃষ্ধমন্ত্ৰিকা।
আখিনে ভ্ৰুপক্ষ চাইম্যাং নিমতভঙঃ ॥" ( বিষ্ণৰ্শ )
"উপোৰিতা দিতীয়েহছি পৃষ্ধেৎ পুনরেন তাং।
যত্ত্বেজ মথাইম্যাং নবম্যাং বাধ সাধকঃ।
পৃষ্ধমেদম্যাং দেবীং ভদ্দাবেন চেভদা ॥" "( ভালিকাণ্ড

श्रृक्रद्ववत्वार (भवार उपकारन ८०७ना । (भागान प्रकाराख—चहमा ७ नवनी धहे हरें हैं। वश्रीविह्य श्रृकांकि कतिएल हरेंदर।

ছর্গার থান —
"অটাজ্টসমাযুক্তামর্কেন্দুকতলেথরাং,।
লোচনত্ত্বসংযুক্তাং পূর্ণেন্দুসম্পাননাং॥
অভসীপুশাবর্গভোং পুরুডিষ্ঠাং স্থানোচনাং।
নববৌৰনসম্পানাং,নুক্তাভরণভূষিভাং॥

कृतिकृत्रभनाः ७५९ नीमात्रज्ञश्रदाध्यार । जिङ्क्ष्टानमश्यानाः विद्यास्त्रवर्षिनीः ॥ मुनामायजनः न्यानम् न स्वास्त्रम् । बिन्नः मक्टिन नार्गो थड़ते ठळा कमान्यः । जीकैवानः ज्ला मिकि मिक्ति मित्रित मित्रित्मासः । •ধেটকং পূৰ্ণচাপ<del>ক</del> পাশ্মস্থ্ৰমেক্চ ॥ चन्होर वा शत्रक्षः वाशि वामकः मन्निदवभएतः । व्यवज्ञात्रहिषः ७६विभित्रङ्गः व्यवर्गरत्र ॥ निर्देशकालाह्यः जवकानयः थ्रष्टाक्रिनिः। হৃদিশ্লেন নির্ভিন্নং নির্যদন্তবিভূষিতং॥ রক্তরকী ব্রতাপঞ্চ রক্তবিক্তরিতেকণং। বেষ্টিতং নাগণাশেন জকুটীভীষণাননং ॥ স্পাশবামহস্তেন ধৃতকেশঞ্চ হুর্গরা। वमक्षित्रवर्ष्क्ष्य (प्रवााः निः इः ध्वनर्गद्राः ॥ দেব্যাক্ত দ্বিকণং পাদং সমং সিংহোপরিছিতং। किकिप्राः उथा वाममञ्जूष्ठः महिरवाशित ॥ नक्षभ्रकत्रीः प्रिवीः पिछानानवर्ष्यशः। প্রসন্নবদনাং দেবীং সর্বকামফলপ্রদাং॥ खृत्रमानक ७ जनभारतेतः महिरवणस्त्र । উত্রচণ্ডা প্রচণ্ডা চ চণ্ডোগ্রা চণ্ডনারিকা॥ চঙা চণ্ডবতী চৈব চণ্ডরূপাতিচণ্ডিকা ॥ আভি: শক্তিভিরষ্টাভি: সততং পরিবেষ্টিতাং। চিত্তবেৎ সভতঃ তুর্গাং ধর্মকামার্থমোক্ষদাং ॥"

এই মত্ত্রে দেবীর ধ্যান করিরা মহাল্লানপূর্বক বোড়শোচার ও বলিদানাদি ছারা পূজা করিতে হইবে এবং আবরণ ও
দেবতা পূজা করিবে। এইরূপে সপ্তমী, জ্বইমীও নবমী পূজা
করিবে।

বিজয়াদশমীক্তা—উক্তরণে পূজা স্মাপন করিয়া দশমী দিনে বিস্ক্রন করিতে হইবে।

'চরলমে বিসর্জ্জরেং' এই বচনামুসারে চরলমে বিসর্জ্জন করিতে হইবে। বদি চরলম না পাওরা বার, তারা হইলে কেবল তিথিতৈই বিসর্জ্জন করিতে হইবে। দেবীর বাজাকালে, নিমজ্জন করিতে হয়, তাহার পর বিসর্জ্জন করিতে হইবে, নৌবান বা নরবান হারা ভগবতী শিবাকে লইরা বাইরা জীড়া কৌড়কাদি মঙ্গলহারা স্রোভোজনে নিক্ষেপ করিতে হইবে। "হর্গে দেবি জগল্মান্ত: অহানং গত্ত প্রতে। সংবংসরবাতীতে তু পুনরাগমনার চ। নিমজ্জাভিসি দেবি ঘং চভিকা-জাতিরা ভঙা। পুরার্থনব্দ্বার্থং হাপিভাসি জলে সরা।" বিসৰ্জন করিবা গৃহে আগমন করিবা অভিযোবধারণ করিবে। ভাহার পর বটছিত জল বারা এই সত্তে বক্ষায়ুকে অভিবেক ক্রিতে হটবে।

ু সভিবেক্ষন্ত্ৰ---

ও উভিষ্ঠ ব্রহ্মণম্পতে বর্মস্তব্দেশহে দেবা উপপ্রয়ন্ত मक्कः चुपानस्य रेखकाशुर्खना नहा । ওঁ স্থ্যাত্বামভিবিশ্ব ব্রহ্মাবিকু মহেলরা:। विद्राप्तरवा बननाथ खथा महर्दनः ध्रकुः ॥ প্রহারশ্চানিরুদ্ধশ্চ ভবন্ত বিজয়ার তে। আৰওলোগ্নিৰ্ছগৰান্ ৰমো বৈ নৈশ্ব ভিতৰা ॥ वक्रनः भवनदेभ्यय धनाधाः क्षायाः । ব্ৰহ্মণা সহিতো শেষো দিক্পালাঃ পাস্ক তে সদা ॥ कीर्जिन नीर्श्व जिस्मेश भूष्टिः अदा क्या गिजः। ব্দ্ধিলজ্জা বপু: শাব্ধি: পৃষ্টি: কান্তিক মাভর:॥ এতাভিন্তাভিষিকত্ত ধর্মপালা: স্থসংঘতা:। আদিত্যুক্তস্ত্রমা ভৌমো বুধনীবসিতার্কলা: ॥ গ্রহামাভিষিণ্ড রাছকেতুশ্চ ভর্গিতা। ঋষয়ে। মুনয়ে গাবো দেবমান্তর এব চ। *ू*प्रवेशिक्षां स्थाना निष्णां महास्थान । र नोतानि नर्समञ्जानि ब्रामात्ना वाह्नानि ह । 'खेरपानि ह त्रज्ञानि कानकावत्रवान्ह दर । সরিতঃ সাগরাঃ শৈলান্তীর্থানি জ্বলা হুদা:। (मवमानवर्गकैकी यक्तजाकर्मश्रामः। এতে স্বামভিষিক্ত ধর্মকামার্থসিদ্ধরে॥" (বৃহর্নিক্রেখরপুরাণ)

এই বিজয়া দশমীর দিন অপরাজিতা পূজা করিতে হইবে। এই দশমী তিথিতে রাজাদিগের বিজয়য়াত্রা ক্রিতে হয়, এই যাত্রা অতিশয় গুভলায়ক। য়দি দশমী উল্লেখন করিয়া নৃপর্য যাত্রা করে; তাহা হইবে তাহার রাজ্যে সংবংসরের মধ্যে কোন বিজয় হইবে না।

"দশমীং যং সমূলতা প্রাছানং কুক্তে নৃগঃ। । তাত সুংবৎসরং রাজোঁন কাপি বিভাগে ভবেৎ ॥ (তিথিত॰)

খগং বাজা করিতে অশক্ত হইলে ওড়গাদির বাজা করিতে হইবে। এই বিজয় দশমীর দিন ছ্র্গান্মে লপ করিতে হইবে, বে কোন বিপদ্ হউক না কেন ছ্র্গানাম লপ করিলে ভাহা দুর হয়।

"হুর্না হুর্নেতি হুর্নাতি হুর্নানামং পরং মকুং। বো ক্ষপেৎ সভতং চাও কীবস্কুতঃ স্মানবঃ॥ মহোৎপাতে মহারোপে মহাবিপদি সকটে। মহাহঃথে মহাপোকে মহাভরসমুখিতে। ব: মরেৎ সভতং ছুর্গাং জপেৎ বং পরমং মছং। নং
সূজীবলোকো দেবেলি নীলকভ্রমবাপুরাং ॥" (মুগুমালাতণ)
প্রাতঃকালে উঠিয়া বাহারা হুর্গানাম অরণ করে, তাহাদেরও কোন বিপদ্ হর না। হুর্গানাম ভবসমুদ্র উদ্ধারের
একমাত্র ভরণি অরপ'। ভক্তিপূর্বক হুর্গানাম করিয়া
বে বাহা চার, সেই ভাহা প্রাপ্ত হর। হুর্গানামে সকল
বিপদ্ দ্র হয়। হুর্গাদেবীর বিস্ক্রেন হুইলে পর
সম্বংসরের শুভাশুভের নিমিত্ত হুর্গামগুপে বিসন্ধা হুর্গানাম
লপ করিয়া বাত্রা করিবে। দেবীকে বিস্ক্রন করিয়া
আালিয়া পিতা, মাতা ও গুরুলোকদিগকে প্রণাম ও আত্মীয়,
অজন, একু বান্ধবদিগকে প্রেমালিকনে সন্তামণ করিতে হয়।



A

বলবাসী হিন্দ্গণের ছর্পোৎসবই সর্ব্ধপ্রধান উৎসব বলিয়া
গণ্য। বৎসরাস্তে এরূপ মহাপুজার ধুমধাম আর কোন দেশে
দেখা যায় না। ছর্পাপুজার তিন দিন বালাণী হিন্দ্মাত্রেই
অপর সকল কর্ম পরিভ্যাগ করিয়া এই মহোৎসবে যোগদান
করেন।, হিন্দৃগণ ভাবেন, এমন দিন আর আসিবে না।
এই কয় দিন আমরা যেরূপে কাটাইব, সংবৎসর সেইরূপে
যাইবে। ভাই এই কয় দিন সকলেই নব বেশে নবোলাসে
মহাস্থী বইবার চেষ্টা করেন এবং দেবীর নিকট আপনার
মনের কথা প্রকাশ ক্ষিয়া ক্তক্তভার্থ জ্ঞান করেন। পৃজার
চতুর্থ দিবস অর্থাৎ বিজয়ার দিন বৎসরের মধ্যে প্রধান দিন
বলিয়া গণ্য। মহামায়াকে বিসর্জন দিয়া আসিয়া মনের
আবেগে শান্তিবারিগ্রহণার্থ আত্মীয় সজ্জন একত্র হন। সকল
অভ্যাচার ছর্বাবহার ভূলিয়া গিয়া শক্রকেন্ত কোলে নিয়া
থাকেন। এ সয়য় শক্রমিত্র জ্ঞান থাকে না, সকলেই পরস্পরে।
কোলাকুলী করেন, আনীর্কাদ নমস্বায়াদি করিয়া থাকেন।

ব্যের স্প্রিট্র কার্ত্তিক্সণেশ লক্ষ্ম সরস্থতী প্রভৃতি পরিবৃত্ত দশভূজা হুর্গার মুগারী প্রতিমার পূজা হর ৷ বাদাসা

দেশ ভিন্ন আর কোষাও এরপ মৃথারী প্রতিমান্ন পুলা হইতে দেখা বার না। আর্থাবর্ত ও দাক্ষিণাত্যের অপঁরাপুর হাবে বেখানে ভগবভীর শক্তিমৃত্তি প্রতিষ্ঠিত অছে, সেইখানেই ঐ কয়দিন দেবীপূলা ও উজাবাদি হইরা থাকে। অনেক হানে ঘটহাণনা করিরাও মহাদেবীর পূলা হইরা থাকে। বাহালা ভিন্ন অপর সক্র হানে এই উৎসব 'দশেরা' নামে থাত। তুর্গোৎসব উপলক্ষে বেমন এ দেশে চঙীপাঠ হয়, দশেরার কয়দিন দাক্ষিণাত্যের নানাহানে ঘরে ঘরে বেদ্পাঠ হইরা থাকে। [মহাবিত্তা, পারদীরপূলা ও বাক্ষ্যীপূলা প্রভৃতি শক্ষে অপরাপর বিবরণ জন্টবা।]

তুর্গাচরণ রক্ষিত, একজন বালানী বণিক। গোবিলচন্ত্র রক্ষিতের পুত্র। সন ১২৪৭ সালের ১৪ আখিন বুধবার (১৮৪১ थृष्ठीर्दमत्र २७. (मट्लेक्ट्र ) वलातामत्र कर्तामी हन्तननगद्ध क्य হয়ঃ অল্লবয়সে পিতৃবিয়োগ হইলে কলিকাতার সভদাগরের বাটীতে চাকরি ক'রিতে আরম্ভ করেন। কিন্ত সেই সঙ্গে निक्छ नाना श्रकात चाधीन शतुत्रा आंत्रखंकतिया विवक् সমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিবার অবসর প্রাপ্ত হন। তাঁহার সভ্যনিষ্ঠা ও উদারতায় ফরাসী বণিকদিণের চিত্ত আকর্ষণ করে। ক্রমে মরিচসহর, বদ্দেতি জ্রানেসর অক্তান্ত অধিকারের সহিত তিনি স্বাধীনভাবে বাণিক্য করিয়া প্রভূত ধনশানী হইয়া উঠিয়াছেন; তিনি এখন একজন প্রধান বাঙ্গালী বণিক। চন্দ্ৰনগৱে জলকষ্ট উপস্থিত হইলে তিনি অনেক অৰ্থ ব্যয় করিয়া কল বসাইয়া গলা হইতে জল তুলিয়া লোকের পুষ্করিণী পরিপূর্ণ করিয়া দিতে আরম্ভ করেন। হঠাং কলটা তগ্ন হইরা যাওয়ার ফরাসী গবর্মেন্ট তাঁহাকে ঐ কার্য ছইতে নিরস্ত করেন। তিনি নিজ ব্যয়ে বিভালয় খাপুন ও দানাদিতে খ্যাতি লাভ করিয়াছেন। তৃতীয় নেপোলিয়নের রাজ্য ত্যাগের পর ফরাসি-রাজ্যে আবার সাধীরণ তঃ প্রবর্ত্তিত হয়। সেই জন্ত ফরাসী উপনিবেশ গুলিতে নির্মা চনত্রপা প্রচলিত হইল। চন্দননগরের শাসন ও ^{বিধি} ব্যবস্থা করিবার ভার তত্ততা নির্বাচিত 'লোকাল কৌ^{দ্রিন}' নামক সভার উপর অপিত হয়। ১৮৭২ •খৃটালে ^{ইহার} স্থাপন সময়ে তুর্গাচরণ এই সভার সূভা নিযুক্ত হন 🕩 ^{গ্রে} ১৮৭৯ হইতে ১৮৯৫ খৃষ্টাব্দ পর্যান্ত ফরাদীরা ছর্নাচরণকে এই সভার সভাপতি মুনানীত করিয়া তাঁহাঁর প্রামশারু^{সারে} কার্য্য করিয়া আসিয়াছেন। ১৮৮০ খুটাকো ফ্রামী গ^{বর্জেন্} তাঁহার স্ততার ও **স্থা**রপরতার প্রকার স্বরূপ তাঁ^{হাকে} नगदच ष्टेदङनिक स्वस 'अमाबिट द्वेषे निय्क करवन। डीहाँव বিদ্যাসুরীপ দেখিরা, পারিনগরে করানী সাহিত্য-^{গরিবর্ণ}

ভাঁহাকে সন্মানিত সভাপদ (Officier de Academie)
অৰ্পণ কৰিয়া একটা পদক পাঠাইয়া দিয়াছেন। এসিয়ার
পূৰ্ধপ্রাত্তে কৰোজের ফরাসীস্মাল ১৮৮৯ খুটাকে ভাঁহাকে
(Chevalier de ordre Royal du Cambodge) নামক
ভিপাধি অৰ্পণ করিয়াছেন।

১৮৯৬ খুরীবের ১লা জামুরারিতে প্রসিদ্ধ নেপোলিয়ান বোনাপার্টির প্রতিষ্ঠিত দ্বরাদীদিগের অত্যক্ত সন্মানের পদ সেভালিরে দেলা লেজিদক্ষার (Chevalier de la Legion de honour) নামক উপাধিও ইনি লাভ করিয়াছেন।
১৮৯৬ খুরীকের ৮ই জুন চন্দননগরের রাজবাটীতে এই উপাধি বিভরণ উপলক্ষে এক বিরাট সভা হয়। পরদিবস তিনি দীন ছংশীকে প্রায় দশ সহত্র মুদ্রা দান করেন। ছুর্গাচ্বণ জাভিতে ভজ্তরায় ও প্রকৃত হিন্দু। বৎসরে ২০১ বার করিয়া তীর্থ পর্যাটনে গমন করেন। অতি স্ক্রমান্ত অবহা হইতে নিজের চেন্তার যে সকল লোক সমাজে উরত হইয়া ছেন, ইনি উইনেদের মধ্যে একজন।

তুর্গাচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, বালালার একজন অতি প্রাসিদ্ধ
চিকিৎসক। প্রাসিদ্ধ বাগ্যী স্থবেক্সনাথের পিতা। ইনি

য্রোপীয় চিকিৎসায় এরূপ পারদর্শিতা লাভ করিয়াছিলেন,
যে বালালাদেশে কেইই তাঁহার সমকক ছিলেন না এবং

এখনও কেই তাঁহার সমকক নাই। চিকিৎসাকার্য্যে
অভ্তপর্ক পারদর্শিতা দর্শনে দেশের লোক সকলেই শতমুথে
তাঁহার প্রশংসা করিয়া থাকেন।

হুৰ্গাঢ় ( ত্রি ) ছর-গাহ কর্মণি ক্ত । কট হারা অবগাহ, যাহা সহজে অবৃগাহন করা যায় না ।

তুর্গাদন্ত মৈখিল, বুদেশাপতি হিল্পতির আশ্রমে ইনি বৃত্ত-শ্কাবলী নামী সংস্কৃত গ্রন্থ রচনা করেন।

দ্র্গাদাসু একজন বিখ্যাত রাঠোরনেতা। মাড্বাররাজ বশোবস্ত সিংহের মৃত্যুর পর পিশাচ-প্রকৃতি অরলজেব বধন বলোবস্তের শিশু পুত্র ও তাঁহার পরিবারবর্গুকে আপনার করায়ত করিবার চেষ্টা করেন, সেই সময় রাঠোর-বীর হর্গাদাস রাঠোরকুলমান রক্ষা করিবার জন্ত দিল্লী রাজধানীতে মুসলমান সৈল্লের সহিত বোরতর যুদ্ধ করিয়াছিলেন। তাঁহারই পরামর্শে একজন বিখাসী মুসলমান ইড়ির মধ্যে (যশোবস্তের পুত্র) শিশু অজিত্তকে লইয়া অপ্তভাবে দিল্লী পরিত্যাগ করিয়া নিরাপদ হানে কইয়া আর্দ্র। কুমার নিরাপদ হানে কেইয়া আর্দ্র স্কুচর সহ সেই হানে আসিয়া কুমারকে লইয়া আবৃশিখরে উপস্থিত হইলেন। এখানে হুর্গাদাস এক স্র্যাসীর গৃহে অতি শুপ্ত-

ভাবে থাকিরা শিশু অন্ধিতকে গালনপালন করিতে লাগি-লেন। উদ্ধার বল্পে ও মেকে শিশু অন্ধিত রক্ষিত ও যুক্ত-বিভালি শাল্রে স্থাশিক্ষিত হইরা শেষে রাজপুত সমাজে বিশেষ থাট্ডিলাভ করেন।

য়ে সমর্বে ছুর্নাদাস অজিভকে সইয়া অর্ক্র শিখরে অবস্থান করিতেছিলেন, সেই সমন্ন ইন্দ্বংশীল পরিহাররাজ মাড়বারের শৃক্ত সিংহাসন ,অধিকার করেন। রাঠোরজাতি নেতৃহীন হইলেও অবিলয়ে আবার পরিহারদিগকে তাড়াইয়া মাড়বার উদ্ধার করেন। নেড়হীন রাঠোরদিগের বীরছের পরিচয় পাইয়া অরক্তেব জলিয়া উঠিলেন, তিনি মাড়বার রাজা ধ্বংস করিবার আধ্যোজন করিলেন। এই সময় হুর্গাদাস কুমার অজিতকে মিবারে আনিয়াছিলেন। অরঙ্গজেব সদৈত্তে চিতোর আক্রমণ করিলেন। এই স্কুময়ে তিনি শুনিলেন যে, রাঠোরবীর ছুর্গাদাস ঝালর অধিকার করিয়াছেন। মোগল সমাট কালবিলয় না করিয়া ভাহার প্রতিবিধান করিবার অস্ত ঝালরে দৈক্ত পাঠাইলেন। মোগল বৈত্ত পৌ্ছিবার পূর্বেই হুর্গাদাস ঝাপর অধিকার ও এথান হইতে প্রভৃত অবর্থ সংগ্রহ করিয়া যোধপুরে উপন্থিত হই-লেন। এই সময় মোগল সমাট সমত রাজপুতজাতিকে ইস্লাম ধর্মে দীক্ষিত করিবার জন্ম আদেশ ক্লরিলেন; তাঁহার এই আদেশ প্রতিপালন করিবার জক্ত তাঁহার পুত্র কুমার অক্বর মোগল দেনাপতি তাইবর থাঁর সহিত মিলিড হইলেন। নাদোল নামক ক্ষেত্রে ভীষণ প্রজ্ঞলিত হয় । মিবাক ও মাড়বারের বীরগণ, একত হইয়া মুদ্রমান দৈত্র বিধবন্ত করেন। ১৭৩৭ সম্বতে ১৪ই আখিন যে মহাযুদ্ধ হুয়, ভাহাতে মহাৰীর ছুৰ্গাদাস অতুল বীর্জ ও অপূর্ব্ব শৌর্য্য প্রকাশ করিয়াছিলেন।

, অরলজেবের পুত্র কুমার অক্বর রাজপ্তগণের অসীম সাহস ও অহপম বীরত্ব দর্শনে অভিশর মুক্ত হইরাছিলেন। তিনি ভাবিয়াছিলেন, যে যদি এরূপু মহাবীরদিগকে আমার পক্ষে লইতে পারি, ভাহা হইলে আমি অবিলুম্ম ভারভের রাজছত্র গ্রহণ করিতে সমর্থ হইব। এই ভাবিয়া হুর্গাদাসের সহিত সাক্ষাৎ করিবার জল্প ভাহার নিক্ট লোক পাঠাইলেন। হুর্গাদাস ভাবিলেন, কুমার অক্বরের সহিত মিশিলে কুমার অজিতের অনেক্টা স্থবিধা হইবে। এই ভাবিয়া তিনি সমন্ত রাজপুত বীরগণের সহিত মিশিত হইরা মোগল শিবিরে উপস্থিত হইলেন। উভর দলে সন্ধি হইরা গেল। অরলজেবের চির্শক্ত রাঠোরগণ কুমার অক্বরকে ভারতের সম্রাট্ বিলিরা স্থীকার করিলেন। তথ্ন অক্বর সম্রাট্রপে

নিজ সামে বোবণা প্রচার করিলেন। 'অরক্তেব এই সংবাদ পাইরা অক্বর ও উাহার সহচর ছর্গাংবাসকে রীতি-মত শাত্তি দিবার অন্ত কৃটনীতি বিভার করিলেন। তিনি কুমার অক্বরের দক্ষিণ হস্ত তাইবর খাড়ে হস্তগত করিবার জন্ত মহোচ্চ পুরস্বারের লোভ দেধাইলেন। ভাইবর খাঁ লোভে পড়িয়া অরঙ্গজেবের পকাবলম্বন করিলেন এবং একল্পন বিখাসী ফকিরকে পাঠাইয়া রাজপুতদিগকে জানাই লেন, 'শিতাপুত্তে এথন' মিলিত হইরাছে। আমরা বাহা আহতিজ্ঞা করিয়াছিলাম, এখন মনে করিবেন ভাষা পূর্ণ হইরাছে। এখন আপনারা খদেশে এছান করুন।' দুত আসিরা ঐ সংবাদ জ্ঞাপন করিল, আরও জানাইল বে তাইবর খা নেরললেবের হল্ডে নিহত হইয়াছে। রাজপুত মধ্যে মহা গোলবোগ উপস্থিত হইল। তাহারা কালবিলয় না করিরা অবসমের হইতে ১০ কোশ দুরে চলিয়া আসিলেন। কুমার অক্বর পরে দেই বিখাস্বাভক্তার সংবাদ পাইয়া আবার বিশ্বস্ত দেনানীবর্গ্নে পরিবৃত হইয়া রাজপুতগণের সহিত মিলিত হইলেন। রাজপুতগণ এখন বুঝিতে পারিয়া সক-্লেই অমুতাপ করিতে লাগিল। তাঁহারা বে স্ক্যোগ পাইয়া ছিল, তাহাতে অচিরে অগ্নকজেবের ধ্বংস্সাধন ও ভাহাদের 'দৌভাদগ্যাদর হইড, ভাহাতে সন্দেহ নাই।

এখন বীর ছুর্গাদাস কুমার অক্বরকে লইরা মাড়বারের পশ্চিমমুখে ধাবিত इहेरनन। এদিকে অরলজেৰ অক্বরকে ধৃত করিবার জন্ম একজন বিখাসী লোকের হত্তে ৮ হাজার चर्न भूजा निया पूर्णानात्मत्र निकृष्टे शांठीहेश नित्नन । पूर्णानाम উৎকোচের বশীভূত হইবার লোক নছেন, ভিনি সেই টাকা গ্রহণ করিয়া কুমার অক্বরকেই গ্রাদান করিলেন। অক্বর ূহুর্গাদাদের দেই আহুরক্তি ও প্রতিজ্ঞা পাননে তাঁহাকে অটন দেখিরা বিশিত হইলেনু। এরপ উচ্ছদর তিনি পুর্বে कथन (मृत्यन नाहे। अत्रम्हास्य यथन (मृथितान, द्व छैं। इति চাতুরী বার্থ হইল, ভিনি ছুর্গাদাস ও অক্বরকে খৃত করি-বার জঞ্জ অবিলয়ে একদল সৈত্ত পাঠাইরা দিলেন। ছুর্গা-দাস নিজ অগ্রন্ত শোনিক্ষের হত্তে অক্তিতের রক্ষাভার অর্পণ করিয়া অক্বরকে লইয়া বহির্গত হইলেন: তিনি বহির্গত হইলে মোগলসেনা আসিয়া উাহাকে বেরিরা কেলিল। তিনি অনিততেলে শক্তব্যহ ভেদ করিয়া দক্ষিণমুখে চলিলেন। অর্ফ্লেব ঝালর পর্যন্ত তাঁহাদের অর্গরণ করিরাছিলেন। শেষে বধন জানিজেন যে তিনি **প্রকৃ**ত পথে আদেন নাই, তুর্গাদাস দক্ষিণে ওজরাট ও বাবে চল্পন वाविवा निवानरा निवान किया किया किया निवाहन, उथन তিনি ক্লোখে অধীর হইয়া পুত্র আজিমতে রাঠোরবংখ श्वरत कत्रियात चारमण मिरमन এवर निरक मरेमात मक्किनानशास्त्रम् अध्यमत्र इहेरनन। किस स्ति किहाउडे ছুর্নাদাসের পরাক্রম ধর্ম করি:ত পারিলেন না। ১৭৩৮ সমতে কুমার অক্বর মরাঠাদিগের সহিত মিলিত হইলেন চ তুর্গাদাস নিশ্চিত হইয়া সসৈতে অলমেরভিমুৰে উপত্তিত ছ্ট্যা তথাকার মুসল্মান শাসন্কর্তাকে আক্রমণ ক্রি_{নিন।} পরে তিনি মাড্বার হইরা ম্হারাণীর সাহায্যার্থ কিছু দিন চিতোরে যাত্রা করেন। ইহার অরকাল পরে কুমার জ্ব-বর অবজনেবের ওরে পরিভ দেশে, চলিরা বান। পুর্ব **হুইতে তাঁহার কম্মা ও** পরিবার রাঠোরদিগের ভদ্বাব্ধানে ছিল। পাছে রাঠোরপতি মোগলরাজনমিনীর সভীত ন করেন, এই কলছের আশহার অরক্তেব অভিতের সহিত স্ক্রিক্রে ঝাব্র হইলেন। এতদিনে ছুর্গাদাসের মনোছামন সিদ্ধ হইল। তাঁহার যত্ত্বেধন অঞ্জিত সমস্ত আপদ্ ছতি-ক্রম করিয়া তিনি সিংহাদনে আরোহণ ক্লরিলেন দেখিয়া তিনি আন্তরিক প্রীত হইলেন। বতদিন তিনি জীবিত ছিলেন, অব্রিতের সুধসমূদ্ধির ক্ষুষ্ট তিনি আত্মোৎসর্গ করিরাছিলেন। এরপ উচ্চপ্রকৃতি প্রভুত্তক, মহাবীর, সদাশর ও দৃদ্পভিত্ত অভি বিরুশ।

ছুৰ্গাদাস বিদ্যাবাগীশ, নবৰীপনিবাসী একজন পণ্ডিত।
ছুৰ্গাদাস নৈয়ায়িক প্ৰধান বাস্থদেব সাৰ্কভৌমের পুত্র ছিলেন।
ইনি বোপদেব ক্বত মুগ্ধৰোধ ব্যাকরণ ও কবিকরজমের
টীকা প্রণয়ন করেন। ঐ করজম টীকার নাম ধাত্নীপিক।
ঐ টীকার ভিনি আপনাকে বাস্থদেব সার্কভৌমের পুত্র বিদ্যা
পরিচার দিরাছেন।

শাকে পোমরদেব ভূমিগণিতে শ্রীসার্কভৌমারলো তুর্বালাস ইমাং চকার বিষলাং টীকাং স্থবোধাবধিঃ,"

অন্ত আর একছলে লিথিরাছেন---

ঁইভি ুবাহ্মদেৰসাৰ্শ্বভোমভট্টাচাৰ্যাত্মৰ প্ৰীহুৰ্গাদাসৰ্শ বিরচিত খাতৃদীপিকা নাম কবিকল্পজনটাকা সমাধা।

ুছ্র্গাদাস খাড়্দীপিকার টাকা ১৫১১ বা ১৫৬১ শকাবে সমাপ্ত, হইরাছে, কারণ পাকে সোমরসের্ রসা-ইর্ ও রস ইর্ এই ছইরেই 'রসের্' হর। রসাললে ১ এবং রস্পিবেও ব্রায়। যদি এই হুরে 'রসা-ইর্ এইরুগ গ্রহণ করা বার্গি ভাল ইইলে এ টাকা ১৫১১ শকে রচিত এইরুগ বার্গি ইহাকে সার্বভোষের পূজ এইরুগ নির্দেশ করা বার্গি ১৪৫৫ শকে চৈতভের 'অর্জান হর। তৎকালে সার্বভোষ জীবিত ছিলেন এবং ১৫১১ শকে 'ধাড়্দীপিকা' রচিত হ্র

ভাহা হইলে উভরের ব্যবধানকাল ৪৬ বংসর বেথা বার।
বিদ র্পালাসকে কিছু নীর্বজীবী ধরা বার, ভাহা হইলে এবং
বিদ সার্প্রভোমের শেব দশার তাঁহার জন্ম হর, ভাহা হইলে
অনায়াসেই ভাঁহাকে দার্প্রভোমর প্র এইরূপ অনুমান
করা বার। সার্প্রভোম জগীবিধ্যাত পণ্ডিত ছিলেন। এই
জন্মই ভাহার নামে পরিচর প্রদান করিরাছেন। হুগাদাসের
পর সার্প্রভোমবংশের আর কোন শিরিচর পাওরা বার না।
হুগাদাস বিদ্যাবাচক্পাতি, ওকপাহ্কাপঞ্চক ভোত্রটকাকার।

কুর্গাদাসস্মিশ্রে, ভারবোধিনী নামে সংশ্বত প্রন্থপেতা।

দুর্গাদেবী, মহারাইদেশে প্রসিদ্ধ প্রক মহাছাভিক। এরপ

ছতিকের কথা কথন গুনা বারনাই। (১০৯৬ হইতে ১৪০৭

গুটাল পর্যাস্ত গুলাদশবর্ব বাপী অনাবৃষ্টিতে এই ছাভিক বটে।

ছতিকের ১ম বর্ষে মাক্ষ্ দুশাহ বাহ্মণি গুলুরাট হইতে শুভাদি
আমদানী করিবার জন্ত ১২০০০ ব্য দিয়ুক্ত করেন। কিছ্

তাহাতে কি হইবে ? জ্লাভাবে অল্লাল মধ্যেই অনপদ্ম মুক্তুমে পরিণত হইল। কত শত লোক মরিল, তাহার সংখ্যা নাই। মুসলমান শাসনকর্তাগণ দেশ হাজ্যা প্লাই
দেন। এই স্থবোগে হিন্দুসামন্ত্রগণ অধিকার লাভ করেন।

১২ বর্ষের পর বৃষ্টি হইলে এই ছর্ভিক নিবারিত হয়।

তুর্গাধ্যক্ষ (পুং) ছর্গন্ত অধ্যক্ষ: ৬ডং। ছর্গরক্ষক, ছর্গের প্রধান অধিনায়ক।

"অনাহার্ব্যন্ত শ্রন্ত তথা প্রাক্ত: কুলোডব:।

হুগাধ্যক্ষিতো রাজ্ঞতদ্যুক্ত: সর্কার্ম্যন্ত ॥" ( মংস্তপুণ )

অনুহার্য্য অর্থাৎ হঠাৎ যাহাকে পরাভব করা যার না,
বীর, কুণীন, এবং সকল কার্য্যকুশল ব্যক্তিই ছুগাধ্যক

ইইবার উপযুক্ত।

তুর্গানব্মী (ত্রী) ছর্পারা প্রভাগলক্ষিতা নবমী। কার্ত্তিক মাসের শুরু নবমী, চাক্স কার্ত্তিকের শুরু নবমীকে ছর্পানবমী করে। এই তিথি ত্রেভার্গের আভাতিথি, অর্থ্যং এই তিথিতে ত্রেভার্পের প্রথমাংপত্তি হইরাছিল। এই হুর্পানবমীর দিন তিনবার অগভাত্রী হুর্পানেবীর পূজা করিতে হর, পূর্বাহু, মধ্যাহু ও সারাহ্ম এই ত্রিকালে পূজাই প্রশন্ত। বাহারা এইরূপ পূজা করে, ভাহারা সকল প্রকার অভিলবিত লাভ করে। হাহারা, ত্রিকালে পূজা করিতে সমর্থ না হয়, ভাহারা এককালে অর্থাং একবার পূজা করিবে। বিধিপ্র্কিক চারি মাস চভিকাপ্রা করিলে বে পুণা হয়, নবমী দিনে অগজাত্রী পূলা করিলে সেই ফললাত হয়। তুল আজাত্রী দেখ।

তুর্গাপুর, রশপুর জেলার বাহিরবন্দ পরগণাত একটা গওগ্রাম।

এখানে পাট হইতে এক রক্ষ কাগল প্রস্তুত হয়। দিনে এক

রিবের বেশী কাগল প্রস্তুত হইতে পারে লা। এই প্রস্তুত
কাগল প্রার স্তর্জেক বশুড়া ও ললপাইগুড়িতে রপ্তানি হটুরা
থাকে।

২ মরমনসিংহ জেলার অন্তর্গত স্থলকের রাজধানী। [ স্থলক দেখ।]

তুর্গাভক্তিতরঙ্গিণী (জী) এক্থানি তত্ত্বের নাম।
[বিদ্যাপতি দেখ।]

তুর্গামাহাত্ম (ক্লী) হর্গারা: মাহাত্মাং। দেবীমাহাত্ম, ভগ-বভীর মহিমা। চঙীতে দেবীর মাহাত্ম বিশেষরূপ বর্ণিত আছে, এইবস্তু চঙীকে দেবীমাহাত্ম করে।

দুর্গারাম, পাৰওখন্তক নামে সংস্কৃত গ্রন্থকার।
তুর্গাবিতী, চিতোরের রাণা সন্দের করা। রেসিনের রালা
শিলোটীর সহিত ইহার বিবাহ হয়। ১৫৩১ খুটাকে ওলরাটের অধিপতি বাহাত্বর শাহ শিলোটীকে বন্দী করিরা
তাঁহাকে বলপুর্বক মুসলমান ধর্মে দীক্ষিত করেন। কিয়ংকাল পরেই রালা শিলোটীর ল্রান্ডা লক্ষণ অনম্যোপার হইরা
রেসিনের তুর্গ বাহাত্র শাহের হল্তে অর্পণ করিতে মন্ত্
করেন। তথন রাণী তুর্গাবিতী মুসলমানের হল্তে নিগ্রহভোগ
অপেকা অহর্ত্রত অবল্যনই শ্রের বিবেচনা করিয়া সাত শত
রালপুত্রমণী সহ প্রজ্ঞাত অগ্রিকৃত্তে আল্মসমর্পণ করেন।
তর্গাবিতী হামিরপুর জেলার মহোবা নগরে চক্লের রাজপ্ত

তুর্গাবতী, হামিরপুর জেলার মহোবা নগরে চলেল রাজপুত বংশীরদিগের রাজধানী ছিল। তুর্গাবতী মহোবার রাজার কল্পা। ইহার রূপ গুণ শ্রবণ করিয়া গড়মগুলের গৌড় রাজপুতবংশীর দলপৎ শা তাঁহাকে বিবাহ করিবার প্রতাব করেন। তুর্গাবতী অন্ত একজনের বাগ্দতা এবং দলপৎশা প্রগাবতী হইতে জাত্যংশে হীন ছিলের, এই শুই কারণে বিবাহের অবোজিকতা প্রদর্শন করা হর। দলপৎশা তাহাতে নিরস্ত না হইরা নিজ দলবল সহ তুর্গাবতীর পিতাকে আক্রমণ করেন ও তাঁহাকে পুরাভৃত করিয়া তুর্গাবতীকে 'বীর ধর্মপরী-

নির্মার প্রতিমাংশীক্যা লগভাত্যা বিধানত: ।
পূলরিছা পরদিনে প্রতিমাং তাং বিসর্জ্জনেং ।
এবং কুষা চক্রবর্তীং ভবেৎ সাধকসভম: ।
পূত্রপৌত্রধনৈবর্ত্তাসভাত ভবেৎ পূরী ।
লাসদাসীগণৈর্ভ: মুক্ত: ভাং পাপসভটাং ।
বিশেবতো বহুবুঝাং নবনীং প্রাণ্য সাধক: ।
পূলরিছা সুমরীং দাং লভতে বাছিতং কলংগ" ( শক্তিসঙ্গমভত্র )
"মানৈ শচ্চুর্তি বঁং পূণ্যং বিধিনা পূল্য চতিকাং ।
' তৎকলং সভতে বীর নবন্যাং কার্তিকন্ত চ ।" (তিধিতত্ব)

 [&]quot;कार्डिकक निष्ठ भटक नवम्रार सगरीयतीः । विकासककांकाः व। वर्ष वर्ष अभूसतः ।

রূপে গ্রহণ করেন। বিবাহের একবৎসর পঁরে ছুর্গাবতীর একটা পুত্র সন্তান ক্ষে। এই পুত্রের তিন বংগীর বর্যক্রম-কালে দলপংশা রাণী ত্র্গবিতীকে রাজ্যভার ও পুত্র বীরনারায়ণের রক্ষাভার দিয়া মৃত্যুমুখে পতিত হন। कुर्गावजी मन्नाधरम् छेन्नछ ও প্রজাপালনে नर्समा न्कर्खवा-পরায়ণ ছিলেন। মধ্য খাদেশে এখনও প্রতি গৃহে তাঁহার স্নাম কীর্ত্তিত হইরা থাকে। তাঁহার অতুস ঐমর্ব্যের কথা ভনিয়া সমাট্ অকবরের মাণিকপুরস্থ প্রতিনিধি আসক খাঁ ১৮০০০ সৈতা শইয়া মণ্ডলের রাজধানী সিংহগড় আবিজ্মণ করেন। রাণী হুর্গাবতী যুদ্ধে পরাঞ্চিত হইয়া প্রথমে গড়া ( আধুনিক অব্বলপুরের সল্লিকটে ) ও পরে মণ্ডলে প্রস্থান करत्रनः। এখানে প্রথম মৃত্তে রাণী ছর্গাবভীরই অব হয়। পর্জিন ্যুকে আসফ থাঁ কামানু ব্যবহার করেন। ভাহাতে বিস্তর ক্ষতি হইলেও ছুর্গাবতী অসীম সাহসে নিজ সৈম্ভ পরি-চালন করিতেছিলেন-- যুদ্ধক্ষেত্র পরিত্যাগ করেন নাই। যুদ্ধ-কালে একটা তীর তাঁহার বামনেত্রে ও বিতীয় তীর তাঁহার গলদেশে বিহন হয়, এই সময়ে তাঁহার পশ্চাদিকার ওক নদী সহসাজলে পরিপূর্ণ হওয়ায় সৈল্পগণ অস্তত্দয়ে পলায়নপর হয়। তখন যুদ্ধ অংয়াশায়[®] হতাশ হইয়া রাণী মাত্তের কটিদেশ হইতে তীক্ষধার ছুরিকা গ্রহণ করিয়া নিজ হৃদয়ে আমূল বিদ্ধ করিয়া সংসারবন্ধন হইতে সুক্তিলাভ করেন। তুর্গাশকর, ইনি মলারিপদ্ধতি নামে জ্যোতিষের টীকা ও আগারবিনোদ নামে শিল্পান্ত রচনা করেন। তুর্গাসহায়, একজন খ্যাত সংস্কৃত পণ্ডিত। ইনি অকর্ত্র নামে ও মুহুর্ত্তরচন নামে সংস্কৃত জ্যোতিষ এবং বৃত্তবিবেচন নামে ছন্দোগ্রন্থ রচনা করেন। ভূর্মাস্যরণ (ক্রী) ত্র্ণারাঃ অরণং ৬তৎ। ত্র্গানাম অরণ। "হুর্গা অংশদিদং সর্ক্তা হুর্গা সর্ক্তান্ত কারণং। অহঞ তুর্নেত্যেবং যৎ তদ্ তুর্গাম্মরণং বিহ: ॥" ( তন্ত্রদার ) পরিদৃশ্বমান অংগং প্রকাই ছুর্গাময়, বা তিনিই এই স্কুল জগতের কারণ, তাহা হইতেই এই জুগৎ উৎপত্তি হইতেছে, আমি হনী স্বরূপ অর্থাৎ অভেদ এইরূপ চিন্ধাকে হর্গামূরণ কছে। তুর্গাহ্য (তি) হঃধেন গাহতে গাহ-গাৎ। সহছে যাহা অব-

তুর্গাহ্ব ( পু: ) হর্গা আহ্বা যক্ত। ভূমিলগুগ্গুলু। ( রাজনি )

पूर्ण ( जि ) इः त्थन शृक्ष त्वरती प्रत- श्रव वा कर्षा कि,

সম্প্রসারণং বেদে হস্ত ভঃ। তৃঞ্জাই, প্রাক্লণ করিতে অশক্ত,

যাহা গ্রহণ করা অত্তি কটকর। "বৃত্তক্ত বংপ্রবেশে ছগুডি:

খনং" ( ঋক্ ১:৫২।৬ ) 'হুগু'ভিখনঃ হুগ্ৰ'হুব্যাপনং' ( সাৰণ )।

গাহন করা যায় না•।

প্রগোৎসব (পুং) ছর্গারাঃ উৎসবঃ। ছর্গাপুজা নিমিত্ত উৎ সব, হুৰ্গাপুজার সময় পুজানিমিডক বে নানাঞ্কার উৎসব हत्र, जाहारे कृत्रीएमव । किंख वावहात्रिक कृत्रीएमव विश्व ত্ৰ্পাপুৰা এইরূপ ব্যবহৃত হয়। [ ত্ৰ্গা দেখ। ] কু এ ছি ( ত্রি ) ছ: ধেন গৃহতেই সৌ হর-গ্রহ কর্মণি ধন্। ছ:४ .* ছারা প্রহণীয়, যাহা সহজে প্রহণ করা বার নী। ২ ছজে রি। ৩°ত্রাসক। "হুর্গাণি ইএ'হাণ্যাসন্ তভ রোদ্রুপিছিয়াঁং।" (রঘু)। (জী) টাপ্। ৪ অংপামার্গ। ছুগ্র (অ) হংখেদ গৃহতে হুদৌ হর-গ্রহ কর্মনি ুণাং। গ্রহণ করিতে অশক্য, সহজে যাহা গ্রহণ করা যায় না। "অগ্রাহ ওছন্রদ্ধ ছগ্র ছিং দৈবতৈরপি।" ( হরিব ৮৪ মঃ) ত্র্যতি (ত্রি) হংধেন ঘট্যভেৎসৌ হর্বট কর্মণি থল। হর্ यहे क्रमानि थन्। इ: प्रः भाग, याहा इ: ८४. मण्डी हम, याहा हआ অতি কঠিক। "কোহৰৰো হুৰ্টইূৰ ভবতি স্বরূপৰয়াভাবাৎ" (ভাগণ ৬৮৯৩৪) পুর্যটনা (জী) হর্দু हो অওভা ঘটনা। অওভ মটনা, বিপদ্। তুর্হোষ ( পুং ) হর্দ্দু है: বোষো নিনাদোষতা । ১ ভলুক। (এ २ इंडेमलयुक्त । ( पूर ) इंडे मल । खिन्नार डीस्। पूर्कन ( पूर ) इटहाबन: श्रामित । इहेटनाक, धन। 'কুর্জ্জনঃ পরিহর্তব্যো বিভায়া ভূষিতৌহপি সঃ।

सभ् जिडेजि जिस्तार्थ स्वारत प् रवाहनः॥" ( চাवहा )

क्रमंन विनारिष्वि हरेलि छाहारक परिष्ठांग करिए हरेरव, स्विविष्वि मर्भ कि छत्रक्त नरह १ क्रमं शिववाणे हरेरव छाहारक विश्वाम करिए नाहे, स्वरह छाहारव स्वार स

মণিনা ভৃষিতঃ দর্পঃ কিমসৌ ন ভরক্করঃ॥

ত্বৰ্জনঃ প্ৰিয়বাদী চ নৈতিৰিখাসকারণং।

ত্র্জন প্রত্যুপকার বারাই শাস্ত হর, উপকার করিলে ঠাও হর না। ত্র্জনকে উপকার করিলে বরং মল ফলই হয়। ফ্রজনের সহিত সংসর্গ করিলে মহাপাতক হয়। দুর্জ্জনশালে, রাজপুতানার অন্তর্গত কোটার একজন প্রিনির রাজা। কোটারাজ ভীমদিংহের এর পুত্র ৯ পিতার মৃত্যুর পর প্রথমে জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা অর্জ্জনসিংহ রাজা ইইরাছিলেন, কিন্ত চারি বর্ষ রাজ্যভোগের পর নিঃসন্তান অবস্থায় তাঁহার মৃত্যু ইইলে মধ্যম শুসাসিংহ ও কনিষ্ঠ হ্র্জ্জনশাল এই ছই ভ্রাতার সির্বা

হর। যুদ্ধে শ্রামসিংহ নিহত হইলেন, ত্র্জনশালের আর শোকের পরিসীমা রহিল না। ১৭৮০ সমতে শোকসম্ভও হদরে ত্র্জনশাল পিতৃসিংহাসনে আরোহণ করিলেন।

মোগল-সম্রাট্ মহম্মদশাক ছজ্জনশালকে ভাল বাসিতেন।

মুর্জনিশালের প্রার্থনামত মহম্মদ শাহ আদেশ দেন যে, অমুনাভীরে বে বে অংশে হরজাতি বাফ করেন, সেই সেই জ্ঞাংশে
কোন মুসলমান আর গোহত্যা করিতে পারিবেন না।

১৭৯৫ সমতে হররাল ছজ্জনশালের সহিত মহারাষ্ট্রনারকৈ পেশবা বালীরাওর স্মিলন হয়। কিন্তু এ মৈত্রতা
অধিক দিন স্থায়ী হয় নাই। ১৮০০ সমতে অম্বররাল
লম্বরীসিংহ কোটা লয় করিবার অভিলাবে লাঠ ও মহারাষ্ট্রগণের সহিত মিলিত হইয়া কোটা আক্রমণ করেন। এই
সময় মহাবীর ছজ্জনশাল বিপুল বিক্রমে রাজ্জারক্ষা করিয়াছিলেন। তিনমাস অবরোধের পর বার্থ মনোর্থ হইয়া
লম্বরীসিংহ চলিয়া আসেন। সেই স্ম্মুকার মুদ্দে মহারাষ্ট্রদলের অন্তত্তম নেতা লম্বাপ্লা সিরিয়ার একটা হাত কামানের
মুধে উড়িয়া যায়। প্রধান সেনাপতি হিম্মতসিংহের
গুণে ছজ্জনশাল বাজীরাওর নিকট হইতে নাহরগড় ছর্গণ
লাভ করিলেন।

ঈশ্বীসিংহ প্লায়ন করিলে বীরবর হজ্জনশাল পূর্ধশক্ততা বিশ্বত হইয়া উমেদসিংহকে তাঁহার পৈত্রিক বৃল্ণীরাজ্যে অভিষিক্ত করিবার জ্ম্ম সবিশেষ চেটিত হইলেন।
ঐ সময়ে তাঁহার পরামর্শে হোলকরের সাহায্যে উমেদসিংহ
বৃলীরাজ্য উদ্ধার করিলেন বটে, কিন্তু উমেদসিংহের উপকার
করিতে গিয়া তাঁহাকে পর্যন্ত হোলকরের অধীনতা শ্বীকার
করিতে হইল। ইহার পর হজ্জনশাল নানাদেশ জ্ম করিয়া
কোটা রাজ্যভুক্ত করেন। ১৮১০ সম্বতে হয় ও থিচি এই
ছই জাতির মধ্যে প্রবল যুদ্ধ সংঘটিত হয়, এই যুদ্ধে উমেদসিংহ হজ্জনশালকে যথেষ্ট সাহায্য করিয়াছিলেন।

তিনবর্ধ রাজত্বের পর তৃজ্জনশাল ইহলোক পরিত্যাগ করেন। যে গুণ থাকিলে রাজপুত প্রশংসনীয় হয়, তৃজ্জন-শালের তৎসমস্ত গুণই ছিল। অমায়িকতা, উদারতা ও সাহ-সিক্তা প্রভৃতি কিছুরই তাঁহার অভাব ছিল না। তিনি গুণ ও বিখাসের বড় পক্ষপাতী ছিলেন। তাঁহার সময় নিরম হয় যে, সন্ধ্যার পর কোটার নগরবার ক্ষম হইবে, লার কেহ প্রবেশ ক্রিতে পারিবে না। ঘটনাক্রমে এক দিন তিনি যুদ্ধল হইতে ফিরিয়া নগরবারে উপন্থিত হইলেন। তথন রাত্রি হইয়াছে, তাঁহার অনুভর্তেররা প্রথমে বার ঠেলিল, শেষে তৃজ্জনশাল নিজ পরিচয় দিয়া বার খুলিতে বিল্লেন। বাররকক্ত কহিল, 'রাত্তে তাহাঁর বার খুলিবার আদেশ নাই, স্বতরাং এখন তিনি অন্তত্ত গিরা অবস্থান করুন।'

প্রাতে বুধন ছর্জনশাল নগরে প্রবেশ করেন, ধারমুক্তক তাঁহার পদদৈশে অন্ত রক্ষা করিয়া তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করে। ছর্জনশাল তাহার কর্ত্তবিচ্চ কার্য্যের প্রশংসা করিয়া তাহাকে পারিভোষিক দিয়াছিলেন। কোটায় ছর্জনশালের গুণের সম্বন্ধে অনেক কথা প্রচলিত আছে।

দুর্জয় ( আ ) হৃংথেন জীরতেহসৌ হর-জি-থল্। ১ জয় করিতে আশক্য, যাহা সহজে জয় করা যার না। (পুং) ২ বিষ্ণু। (ভারত ১৩/১৪৯/৯৬) "ক্রেশাংশ্চ বিবিধাংতাং তান্ মৃত্যুদেব চ হর্জয়ং॥" ( মহ ) ত কার্ত্তবীর্যা বংশীয় অনন্ত রাজার পুত্র-ভেদ। (কুর্মপুং) ৫ দানব বিশেষ। ও রাক্ষস বিশেষ।

দুর্জ্জয়িরি, কামরূপন্থ বিখ্যাত শৈল। কালিকাপুরাণে এই গিরির বিষয় বর্ণিত আছে। [কামরূপ দেখ।]

फूर्फग्रस्ट ( प्रः ) नृभए छन । ( विकृश्रः )

হুর্জর (কু) হংথেন জীর্যাত জু-অচ্। কটপরিপাচ্য, যাহ। সহজে পরিপাক করা যায়না।

"ষাহ পাকরসং শাকং হর্জরং ইরিমছজং।" (সুশ্রুত ১।৪৬) ফুর্জরা (স্ত্রী) হর্জর-টাপ্। ক্যোতিয়ভীলভা। •

তুর্জাত (ক্লী) ছটং জাতং প্রাণ সং। বাসন। "তৃর্জাত বন্ধুরম মুক্তরীখবোমে পৌলন্ত এব সমরেষুপুরং প্রহর্জা।"(রঘু ১৩:৭২) ২ অসমঞ্জা। (ত্রি) অসমাক্রাত, যাহার বৃধা ক্লম হইয়াছে। "যোন যাত্যতৈ বৈরমক্ষমক্রোদ্যমং পুমান।

তুর্জীব ( জি ) ছ: স্থিতো জীবনো জীবনোপারো যন্ত। পরভক্তাছাপজীবী, যাহারা পরের অরাদি তক্ষণ করিয়া জীবন ধারণ
করে। ছর জীব ভাবে থল্। ( ক্লী ) ২ নিন্দিত জীবন। ছ: এং
জীবতি জীব-অচ্। ত পরের অধীন হইয়া জীবনধারণ।
'সর্ক্ষং পরবশং হ: খং' পরের অধীন সকল্ট ছ: খজনক। এই
জন্ত জীবনের পরাধীনতা হেতু ছলীর শক্ষে এই অর্থবোধ
হইরাছে।

জুর্জেয় (অি) ছংখেন জীয়তেহসৌ ছর্-জী-গাং। ছর্জার, বাহা ভংগে জায় করা বার।

কুন্তের (ি ) হংখেন জায়তে জা কুর্মণি বং। জানিবার নিমিত্ত অপকা, ছবেঁধা, বাহা বহু কটে জাত হওরা বার। "উচ্চাবচেমু ভূতেরু ছক্তেরিমকুতান্তি:।" (মুমু) দূর্ণ(র্ন)য় ( পৃং ) ফ্টোনয়ঃ, প্রাদি সং ততোগদং। গুটা নীতি। क्रिश्राजा नामा रक्ता (बि) इंडेनीजियुक । "क्कराया सम ब्रेडिक ছুর্মত ফলোদয়:॥" (হরিবংশ ৫১ অঃ) ১০ই স্থলে গছ না ছওরাই স্থায়, যে হেতৃ 'পূর্বপদাৎ সংজ্ঞারাং' সংজ্ঞা রুঝিতে পুर्स्त पात्र छेखत गण वहाँदे, এই ऋता नी थाजू आह् खेलाब कतिया मत्र वा पत्रिविधिक इत् मस्यत धालिया रह्यू जान অর্থাৎ ণত্ব না হওয়াই উচিত।

म्बीम ( बि ) इः १४ न न माजि इत् मन-कार् दराम गर्यः । कष्टे ছারা নষ্ট, যাহা অতি কটে নষ্ট হয়। "পরএকেন ছর্ণশং চিদর্বাক্" (অথর্বা ৫।১১।৭) বৈদিক প্রায়োগে 'ছর্ণশ' এইরূপ नम इस, किन्न लोकिक व्यव्याश वृत्तम बहेक्रम मनम इहेरत। দুর্ণামন্ (ত্রী) ছঃন্থিতং নামাহতু 'পুর্রপদাৎ সংভাদাং' ইতি ণিছে প্রাপ্তি কুভাদিপাঠাৎ ন পদ্বং ইতি কেচিৎ, বেদে তু পদ মধ্যপাঠোদৃখ্যতে। ১ দীর্ঘকোষিকা, ঝিমুক। ২ অর্শ-রোগ। অভিপাতক করিলে অর্লরোগ হয়, তাহা হইলে অতিপাতকই অর্শরোগের কারণ, এইজন্ত ইহা অতিশয় নিন্দিত বলিয়া এই রোগের নাম ছ্ণামন্ হইয়াছে। "অমী বা যুত্তে গর্ভং ত্রামা যোনিমাঁশরে" (ঋক্ ১০০১৬২০১) বা টাপ্। "ছুর্নামা উপধার লোপ করিলে বিকর পকে তীপ্ হয়, সেই স্থলে 'ছর্ণায়ী' এইরূপ হইবে।

দ্ণীতি [ হনীতি দেখ।]

मृर्मे म् ( जि ) इः थिन नगार्छ श्रमो इत् नम कर्मनि थन् । जनमनीम, যাহা অতি কটে দমন করিতে হয়। "সক্তং পাশাবকীণাতে ন ভবিষ্যতি হুৰ্দ্মাঃ।" (ভারত শা ৮৮ অঃ) ২ রোহিণীর গর্ভনাত বস্থানবের এক পুত্র। (হরিবংশ ৩৫ জঃ)

प्रक्रियन ( a ) इ: त्थन प्रमार कराने वा॰ यूष्ट् इ: त्थन प्रमनः যস্ত ইভি॰বা। ১ জুঃৰ বারা দমনীয়। ২ জনমেজয় বংশকাত শতানীকাত্মজ নৃপভেদ। (ভাগবত ১।২২।২৯)

, দুর্দ্দম্য (ত্রি.) ছংখেন দিয়াতে দম-বং। > অদমনীয়, ছর্দ্দম, ত্রস্ত, অশক্তি। ২ বৎসতর, গোশিশু, বাছুর।

मृर्तर्भ ( a ) इः त्थन मृथाँ ७ १८मी इत-मृभ कर्षाण थए। मर्नन করিতে অশক্য, ভুংথদারা দর্শনধোগ্য, যাহা অভি, কষ্টে দেখা যার। "স্ফুর্নর্শমিদং রূপং দুষ্টবানিমি যন্মম।" (গীতা ১১ জঃ) त्वरमञ् इः त्थन मर्त्मामर्गनमञ्च टेल्डाववाकाः।

দৃদ্দশ্ন ( তি ) ছংথেন দৃভাতে দৃশ-যুচ্। ছর্দশ্, দেখিতে অশক্ত। "বিশেষতশ্চাত্ত ছুৰ্দৰ্শনানি পৰুষাণি" ( স্থশ্ৰুত )

मूर्फिन्। (जी) इंडी नज्ञा। छ्त्रवद्या, मन व्यवद्या।

मुद्राञ्च ( कि ) क्: त्थन नाखः नम-कः । इक्मनीत्र, क्यांछ । "এनना বুৰাতে রাজা হর্দান্ত ইভি চোচাতে ৷" ( ভারত শাং ২ঃ আঃ )

त्राका भागी हरेरन इक्तिक्षणस्यात्र हत्र। २ कन्छ। ७ व्र_ार তন্ন, বাছুর। ৪ শিব। (ভারত শা २৮७ আ:) कुर्मिन (क्री) इंडेर मिनर। > स्याष्ट्रकृ मिन, मिन विनात आहा. ब्राज द्याब, किन्न एकिन मरक्त्यांजि द्याहेरव मा, रक्तन _{पिन}.

মাজ পর বুঝাইবে। ২ বনান্ধকার। ৩ বৃষ্টি । "অনৈভিজা-छिमिञांगाः छ्तित्विष्ठिकात्रिकाः।" (क्वांत्रनः) **६** द्व्_{रिष} मिनमाज, यन मिन।

"यबळ ्डकवानाभवमश्रीय्ववर्ष्डिंजुः।

তদ্দিনং হেদিনং প্রোক্তংমেঘাইলয়ং ন ছদিনং ॥" (প্রাথচি । বুড) दर मिन खशवादनत्र नाम कता इत्र नारे, त्मरे मिनरे इकिन र्भियोष्ट्रज्ञ पिन इकिन नरह।

ফুর্দ্দিব্স (পুং) ছটা দিবসা আদি সা। ছর্দিন। .বৃটির দিন। म्मि तित्रा, दोन्नाना धारमण्यत छाका स्वनात व्यक्ति अकी প্রাচীন বিধবস্ত গ্রাম। ভূঞা রাজগণের নির্দ্মিত ছর্ণের श्वः नायाम्य अवारने त्रश्विष्ठ । नायात्राय देशास्त्र त्रामेशक्ष ৰলে। এক সময় এই জুর্গ থাইচন্দ্রাকারে স্থাপিত ছিল, हेशत ठातिमिटक वनात्र नमी ध्ववाहिछ। ১৮৩৯ थृहास्त्र প্রায় গুই মাইল বেড়ের মধ্যে ১২ হইতে ১৪ ফিট্ উচ্চ বহি:-প্রাচীর বিদ্যমান ছিল। ছর্গের অবস্থান দেখিলেই বোধ হয় যে এক সময়ে এথানে ছইটা বাটা ও একটা বুরুল ছিন। ছৰ্দুরিয়ার পার্বে ও পুর্বে একটা প্রাচীন নগর ছিল, এখন ভান্ধা ইষ্টকাদি ভাহার পরিচর দিতেছে মাত্র।

দৃষ্টু রি.ড় ( ক্রি ) দোলরতি উৎক্ষিণতি আন্তিকভামিতি দোলি বান্ত্• কৃট প্রভারেন সাঁধু:। নান্তিক । ( ঋটাধর ) দুর্কু হা ( জী ) সহজে যাহাকে দোহন করা যায়,নাঁ। দুর্দ্ধ (রী) হুইং দৃতেং প্রাদি॰ ন॰। কপট দৃতিক্রীকা, কণট পাশাথেলা। "অহং হি ভাবৎ সর্কেবাং ভেষাং হৃদ্যুত্তদেবিনাং।" (ভারত আৰ' ৮ জঃ)

দুদৃ শীক (সী) ছঙ্গুশ বা° কর্মণি ঈকক্। ছর্দশনীয় বি^র। "अबकातः स्रुष्ट्गीकः ভित्ताम्त्यः" (सक् १।८०।२) 'द्र्ष्ण् नीकः चूक्रम्निः विवर' ( गुत्रन')

तृष् के (जि ) क्षेर मृदेर। बाशांनिरमाय क्षेत्र। "হৃদ্ ষ্ঠাংস্ক প্ৰদৃ ষ্টা ব্যবহারান নৃপেএ ছে। সভ্যাঃ সূজ্যিনো দখ্যা विवामा विश्वनः मुनः ॥ (वास्त्रवर्ग) क्रुटेर्मव (क्री) इंडेर टेमबर। इत्रमृष्ट, इंडीगा। नान।

मूरेर्मवत ( बि ) इटेर्कवः विष्ठा इटेर्कव मङ्ग् मर्ज सः। **ञ्त्रमृष्टेयूक** ।

मुर्क्किला (जी) थिए गर्जीविष्मव। मृद्धः म ( गः ) इटोक्यः। भगाष्, भौताम । (बहारत) কুর্জর ( পুং) ছর্ত্ থেদ ভিরতে ব্-কর্মণি থল্। ১ নরক বিশেষ।
২ থবভৌবধি। ৩ পারদ। ৪ জুরাতক। ৫ বহিবাস্থরের সেনা-পতিভেদ, ইনি দেবী ভগবতীর সহিত বুজে নিহত হন।

( মার্কণ পুণ ৮৩।১৯ )

৬ গৃতরাষ্ট্রের প্র ভেল। (ভারত, ৭।১৩০।৩০) ৭ শ্বরাস্থ্রের এক মন্ত্রী। (হরিব ১৯২।১৮) ৮ বিষ্ণু। (ভারত ১৩।১৪৯।৮০) ১ রাবণের সেনাপতি, অশোক বন ভক্ত সমরে রক্ষকগণ হন্মানের হত্তে প্রাণত্যাগ করিলে রাবণ হন্মানকে ধরিবার জন্ম ক্রির প্রাকৃতিকে আদেশ দিয়াছিল। (রাষা ক্রুর ৪৬ আ:) হর্মর রাক্ষস হন্মানের হত্তে বিহত হন।

জুর্দ্ধরা, মহারাজ চক্তখণ্ডের প্রধানা মহিনী। চাণকা চক্ত খণ্ডকে শত্তহন্ত হলত রক্ষা করিবার জন্ম প্রভাহ একটু একটু করিয়া বিষণান অভ্যাস করাইতেন; কিন্তু চক্তাগুণ ভাহা জানিতেন না। ঘটনাক্রমে একদিন রাণী হর্দ্ধরা উছার সহিত আহার করিতে বসেন, তথন চক্তগুণ্ড নিকটে ছিলেন না, রাণীও তথন পূর্ণগর্ভা। বিষ খাওরা রাণীর অভ্যাস ছিল না। স্মৃতরাং বিষার ভোজন মাত্রই চাণকা আসিয়া বলিলেন, 'একি করিয়াছ' এই কথা বলিতে না বলিতে রাজী, পঞ্চত্ব পাইলেন। তথ্ন চাণকা হর্দ্ধরার গর্জ বিদারণ করিয়া গর্জন্ব শিশুকে বাহির করিলেন। সেই শিশু বিন্তুমার।

( স্থবিরাবলীচরিত ৮।৪৩৯-৪৪৩ )

ছুর্নিরী তু (পুং) ছর্-ধ বা॰ ঈতুন্। ছর্ক্রণীয়। "অधিনীলে ভুলাং
ববিঠং শাদা মিত্রং ছর্করী ডুং" ( ঝক্ ১০।২০।২)। 'ছর্করী ডুং
ছর্করণীয়ং' ( সায়ণ )

হুদ্ধিতু ( জি ) হৃদ্ধির, যাহাকে ধরা যায় নাবা যাহার,গভিবোধ

ত্ত্বর্ম (জি) হ: স্থিতো ধর্মোয়স্ত, সমাসাত্তবিধেরনিত্যত্বাৎ
আর্থেন কচিং অনিচ্সমাণ। ত্বই ধর্মাযুক্ত। "কর্কোটকান্
বীরকাংশ্চ ত্ত্বর্মাংশ্চ বিবর্জনের।" (ভারত কর্ণ ৪৪ জঃ)
গৌকিক প্রয়োগে অনিচ্ সমাসাত্ত হইবে। সেই স্থলে
'হর্মান্' এইরূপ হইবে।

ত্র্বি ( বি ) ছ:বেল ধ্যাতেহসোঁ ত্র ধ্য কর্মণি থল। আধর্ষাীর, ধর্ষণ করিতে অশক্য, ছ:ব ছারা ধর্ষীর। "সংশিতাদ্ধা
ক্ষর্ক্ব টাবো তপদি বর্ততে।" (ভারত আণ ৭১ আঃ)
ব ধৃতরাষ্ট্রের পূত্র বিশেষ। (ভারত ১০১১৭০) এ ছর্ক্কের।
ছুক্ক্বিণ ( বি ) তুর ধৃষ্-যুচ্। ছ:বছারা ধর্ষণীর।

"বিকামবিন্দে ছর্মর: প্রবাহ: ছন্তাধর্বণঃ।" (ভারত শা॰ ৬৭) ইনির্বিতা (স্ত্রী) ছর্মরক্ত ভাব: ছর্ম্মেক্তন্ টাপ্। ছর্মেরের ভাব, ছর্মন্ত্র। হুর্দ্ধর্শ (জী) হর্দ শিলা। > নালাদমনী। ২ কছারীবৃক্ষ। হুর্দ্ধা (জী) হর্ধা-ভাবে কা। হুইধান।

"इर्थाः न्यांचि नद्राय त्यायन्।" ( बक् ১०।১०৯/৪ )" 'इर्काः क्रकीनः।' ( नावन )

তুৰ্দ্ধাৰ্য্য (জি) ছংশেন ধাৰ্ব্যতে ধাৰি-বং। বাহা সহৰে ধারণ করা যার না, ছর্কোধ্য।

ष्ट्रकींव (बि) ছत्र-धाव-धन्। • इध्रमाधनीत ।

চুর্দ্ধিত ( আ ) ছর্-ধা কর্মণি জ্ব, বেদেন ধাঞো হি:। ছই
ভাবে স্থাপিত। "ইদমপ্রে স্থাধিতং ছর্দ্ধিভাদি।" ( ঋক্
১/১৪০/১১) 'ছর্দ্ধিভাৎ ছাইং স্থাপিতাং।' ( সারণ ) লৌকিক
প্রায়োগে 'ছর্দ্ধিত' এইরূপ প্রায়োগ হইবে না, বেদেই ব্যবহৃত
হর, লৌকিক প্রয়োগে 'ছর্হিত' এইরূপ প্রয়োগ হইবে।

তুৰ্দ্ধু ক্রটে (আি) ছর ধূর্ব ডট্ পুষোণ সাধুঃ। যুক্তিবিনা ঋর-বাকা অমাজকারী শিল্প, যে শিশ্য বা ছাত্র বিচারকরণান্তর ঋরুবাকা মাজ করে।

জুর্নয় (পুং) ছর্-নী-অচ্। নীতিবিরজ্জাচরণ, ছর্নীতি, কুনীতি, নন্দরীতি। "সংচিষ্ণা ছর্নরং ঘোরং স্থতানাং ছাতজন্মবং।"
• ু (ভারত বনং ৫১ আঃ)

তুর্নামক (পুং) ছইং নামা অন্ত। অর্শরোগ।
তুর্নামন্ (রী) ছর্ ছইং নাম যতা। অর্শরোগ।
শিধ্যালং ক্ষণিভয়ং লঘুবাতক্ষয়াপহং।

ছুন্মি খাসকাসের্ হিতমধ্যে প্রাণীপনং ॥'' ( স্থান্ত ) জুন্মিন্ (পুং জী) ছা নিশিতং নাম বন্ত। দীর্ঘ্রে বিকা, ঝিণ্ক। জুন্মিারি (পুং) জুন্মিঃ অর্ণোরোগ্র অবিঃ শক্রঃ। শ্রণ, ইহা অর্ণারোগ নাশক।

তুর্নান্ত্রী (জৌ) ছর্ নিশিতং নাম যস্তাঃ ঙীপ্। ছর্নান্তা। (শব্দরণ) তুর্নিপ্রস্থ (জি) ছংখেন নিগৃত্বতে ছরং নি-এহ-খন্। বাহা সহজে নিগ্রহ বাদমন করা বার না, ছর্দম।

তুর্নিমিত (ত্রি) ছর্-নি-মি-জ । ইইভাবে কিপ্ত, সম্রমে উৎক্ষিপ্ত। "পদে পদে ত্নিমিতা গলস্তী।" ( কুমারদ ৭।৬১)

জুর্নিমিন্ত (রী) ছটা নিমিতা। তাবি রিটস্চক শকুনতেল, যাহাতে ভবিষ্থ অমলল স্চিত হয়। বিপদ্ হইরার সুক্রে ছর্মিমিত্ত সকল দর্শন হয়। ছর্মিমিতী দর্শন হইলে তাহার শান্তি করা উচিত। [বিশেষ বিরৱণ শাকুন দেখা] দুর্নিয়স্ত (জি) ছর্-নি বম-জুন্। ছংখ বারা নির্ভুব্য, বাহাকে অতি হংখে নিরমন করা বার।

" শৃষ্ণাজের রশ্পরো ছনিয়ন্তবো ক্তরোছনিয়ন্তব: । ( ধক্
১০১৩৫:৯) 'ছনিয়ন্তব: ছংথেন নিয়ন্তবা: ।' ( সাম্প )

দুর্নিরীক্ষ (জি ) ছংথেন নিরীক্ষাতে নির্কিক থল্। অভি কটে

যাহা নিরীক্ষণ করা যায়, যাহা দেখিতে অভি কট হয়। ছর্দর্শ।

দুর্নিরীক্ষ্য (জি ) ছংথেন নিরীক্ষাতে নির্কিক বং। ছাংথে

যাহা নিরীক্ষণ করা যায়।

দুর্নিবর্ত্ত্য (ত্রি) হৃংথেন নির্বৃত্যতে ছর্নি-র্ত যং। হৃংথে বাছা নিবর্ত্তিত হয়, যাহা অতি কটে সম্পাদিত হয়। দুর্নিবার (ত্রি) হর্নি-র্-ঘঞ্। যাহা অতি কটে নিবারণ করা যায়।

দুর্নিবার্থা ( আ ) ছর্-নি-বৃ-ণাংশ। যাহা অভি ছ: থে নিবারণ করা যায়, সহজে যাহা নিবারণ করা যায় না।

"হর্নিবার্যভয়া চৈব প্রভয়া মহতী চমৃ:।" (ভারত শাস্তি )
ফুর্নিপ্রপাতর (ক্রী) হঃথেন নিস্তাপততি হর্নির্ প্র-পতআচ্, অতিশরেন তৎতরপ্ বেদে তকারলোপ:। হঃথ বারা
নিজ্যস্তর, অভিশয় হঃথে নিজ্যস্ত হওয়া। "অভো বৈ ধল্
ফুর্নিস্তাপ্তরং ভবতি।" (ছানোগ্য উ:) 'হর্নিস্তাপতরমিতি
তকার একো লুখো দুইবাং।' (ভাষা)

তুর্নীত (ক্লী) ছর্-নী-ভাবে ক্ত। নীতিবিরুদ্ধাচরণ। "ষন্ত প্রসাদাৎ ছুর্নীতং প্রাপ্তামি ভরতর্বভ।"

. (ভারতেবি° ২০ আ:)

ছুর্ণী-কর্তরি জ। (ত্রি) ২ ছ্নীতিষ্ক, কুরীতিবিশিষ্ট, মাহার রীতি নীতি ভাল নহে, উচ্ছ্ অল, অশিষ্ট, অসদাচারী। ছুনীতি (ত্রী) ছুর্ ছুটা নীতিঃ ছর্নী কিন্। ছুটানীতি, কুনীতি, ছুনীতি পরায়ণ হইলে নানাবিধ কট পাইতে হুয়, এই জ্লুল প্রত্তেক্ত্রের ছ্নীতি পরিহার করা কর্ত্বর্য, রাজা ছুনীতিষ্ক হইলে তাহার রাজ্য অচিরাৎ ধ্বংস হয়। ছ্নীতি অবলম্বন করিয়া যে কোন কার্য্য করা যায়, তাহাই উচ্ছ্ আল, হয়। [নীতি দেখ।]

ছूनी जिलाव ( प्रः ) इनीजाः लावः। इनीजित्र स्रवि ।

हून् भ ( प्रः ) इहेः नृतः। क्रवासा, मस नृत्रि ।

मूर्वहन ( प्रः ) इहिं। क्रवासा, मस नृत्रि ।

मूर्वहन ( प्रः ) इहिं। इहिंदि वह्न, स्वत्र भ स्रवि ।

मूर्वहन ( क्रिकेट । इहिंदि वह्न, स्वत्र भ स्रवि ।

"হুর্বন্ধেনামূ ভিল্লে চ বিজেয়ং ভিল্লনেত্রবঁৎ।" ( স্থশত ) দুর্বুল ( ত্রি ) হুনিনিতিং বলং বস্তা। কুশ, পর্যাদ্ধ—স্থমাংস, ছাত, কান্ত, শাত, শাত, স্বব্দ ও স্লল্লবদ্যুক্ত। "नवरना बदमारक्षां कि रेन बिकार कि इस्तेनः ।" (रिन विकार अञ्चारक्ष मिन कर्ना वाक्षि क्रिक्न क्रिक्त क्रिक्न क्रिक्न

"অটিলশ্চানধীয়ানং ছর্বলং কিতবস্তথা।

• বালয়ন্তি চ বে পৃগাংস্তাংশ্চ প্রান্ধেন ভোলবের ॥"(মহ ০।১৫১) দুর্বলেকা (জী) ছর্মলন্ত ভাবঃ ছর্মল-ভল্-টাপ্। ছর্মলন্ত, ছর্মিলর ফার্যা।

দুর্বলৈত্ব (ক্নী) হর্মণ ভাবে-তা। হর্মণতা।
দুর্বলা (জী) হর্মণ-টাপ্। অম্পিরীবিকা।
দুর্বলোচার্যা, পরিভাবেন্দুশেধরটীকা, মঞ্যা ও কৃঞ্চিকা নামে
তাহার টাকা এবং হর্মণী নামক সংস্কৃত ব্যাকরণ রচয়িতা।
দুর্বালে (জি) হুটো বালো যথা।> হৃশ্চম্মরোগয়ুক্ত।২ ধণতি।
টাকরোগ। ৩ কুটিলকেশ। (মধাতিথি)

"किंगिनानानशीयानः इर्जानः किञ्चर छथा।" ( मञ् २।२६) । मूर्वी त्रन (क्री) इष्टेर वीवनः। इष्टेवीवन छनएसन।

শশশংশাণ্যোপপক্ষ্যাণি ছবীরণানি জায়ত্তে।" (শতং বাং ১১।৪।
১।৬) 'ছবীরণানি ছষ্ট বীরণানীবেতি লুগোপমা'। (ভাষ)
দুবুদ্ধি (জী,) ছষ্টা বৃদ্ধি। ছমতি, কুবৃদ্ধি। (জি) ছ্টা বৃদ্ধি
গ্রন্থা ১২ মলবৃদ্ধিযুক্ত, কুবৃদ্ধিশালী।

দুবুধ ( তি ) হৃংখেন বুধ্যতে হসৌ ছয়-বুধ-বঙর্থেক । ছর্বন চিত্ত, হর্মনং বি

দুৰ্বেবিধি ( ত্ৰি ) ছঃখেন ব্ধাতে ব্ধ-কৰ্মণি থল। ছলেই, মাহা সহজে বোঝা যায় না।

"নিসর্গত্বেধাধমবোধবিক্লবাঃ।" (কিরাতা॰)

দুর্বোধ্য (ত্রি) ছ:পেন ব্ধাতে বৃধ-ণাৎ। ছর্কোধ, ছর্কোর।
দুর্ত্রাহ্মণ (পুং) ছঙ্টো আহ্মণ:। নিন্দিত আহ্মণ ভেদ। বাংার
তিন পুরুষ হইতে বেদপাঠ ও বিহিত্তহাম লোপ হইরাছে,
তাহাকে ছর্ত্রাহ্মণ কহে।

''यक्त ८ वन्ति ह उँ देशका ह जिल्लो क्रेंबी।

স বৈ গুৱান্ধণো জ্যোষ্ট ।" (ধ্র্তবামী)
দুর্ভক্ষ (ত্রি) গৃংধেন ভক্ষতে গুরুভক্ষ-ধল্। ১ কট বারা চলা শীর, বাহা অতি কটে উক্ষণ করা বার। ২ বে স্বরে ^{ভ্রু} ফুব্য গুলাপা হইরা উঠে, গুর্ভিক্ষ। ছুর্ভকার ( আ ) ছর্-জক-গাং। ছর্ভক।
দুর্ভগ ( আ ) ছঃহিতো ভগো ভাগোং যভ। ছইভাগাাযিত, মক ভাগাযুক।

"ত্র্তগোহয়ং জন তাত্ত কিমর্থমুম্পন্ধিত:।" (হরিবংশ ১২৬ জঃ) ফাহারা প্রাপকার্য্যের অনুষ্ঠান করে, তাহারা ত্র্গ হইরা ফুরাগ্রহণ করে।

দুর্ক্তগান্ত্র ( ক্রী ) হর্তগাল্প ভাব: হর্তগান্ত । হর্তগান্তা, হর্তগোর ধর্ম, মন্দ্রভাগ্যের ভাব।

দুর্ভগী (ত্রী) ছর্ভগ-টাপ্। পতিছেহরহিতা স্ত্রী, পর্যায়— বিরক্তা, বির্ক্তা, নিম্বা, সৌভাগ্যরহিতা স্ত্রী, যে ত্রীকে স্বামী ভালবাদে না।

"কণ্মভিঃ স্বকৃতৈঃ সাতৃ হুর্তগা সমপদ্যত । নাভ্যগচ্ছৎ পতিং দা তৃ ক্সা রূপবতী দতী ॥"

নারী সকল সক্ষত কর্মাহ্মারে হুর্ভাগ্য প্রাপ্ত হয়।
হুর্ভার ( বি ) হুটো ভগ্ন: । নহজে যাহা ভগ্ন করা যায় না।
হুর্ভার ( বি ) হুটো ভগ্ন: ভালা যায় না।
হুর্ভার ( বি ) হুটো ভাগ্য: প্রাদি সং। ১ হুরুদ্ট। ২ পাপ।
(বি ) হু:হিত: ভাগ্য: যা। ৩ হুট ভাগ্যযুক্ত। ৪ হতভাগ্য,
সভাগা, যাহার ভাগ্য ভাল নহে।

ছুর্ভাবনা ( ত্রী') ছাঁ । ভাবনা। ছিল্ডা, উদ্বেগ, উৎকণ্ঠা।
ছুর্ভব্য ( ক্রী) ছাংখেন ভূমতে ছর্-ভূ-গাং। অভাবনীয়।
দুর্ভাষিত ( ত্রি ) ছাঁঃ ভাষিত:। ১০মন কথন, মুন্দবাক্য বলা,
ছুক্ত ি ছুর্ভাষিতং যন্ত। ২ কর্কশভাষী।
দুর্ভাষিন ( ত্রি ) ছাংখেন ভাষতে ছর্-ভাষ-পিনি। ছুইভাষী,

তুর্ভিক্ষ (রী) ভিক্ষারা: অভাব: অব্যয়ীভাবসমাসে অভ অব্যয়ন্তং। ভিক্ষার অপ্রাপ্তিকাল, যে সময়ে ভিক্ষার অভাব হয়, যথন থাদ্যদ্রব্য পাওয়া যায় না। যে দৈশে যেয়প শভ হওয়া আবশুক, সেই সেশে ভংপরিমিত শভাদি না হইলে ছভিক্ষ উপস্থিত হয়, যাহা কিছু পূর্বে উৎপন্ন হইয়াছিল, তাহা । নিঃশেষ হইয়া যাইলে চেটা করিলেও আর খাদ্যদ্রব্যাদি পাওয়া য়ায় না, কাজে কাজেই তথন ছভিক্ষ আসিয়া উপস্থিত হয়। ছভিক্ষকারক বৎসরের বিবয় জ্যোজিতত্বে এইয়প 'লিখিত আছে ।

"রাইভক্ত ছর্ভিক্ষং তক্তরেরপণীড়দং।
 কানীয়াদিএহং ঘোরং প্রমাধিনি বর্নিনে ॥

বৃত্তি সংবংসরের মধ্যে ১০ প্রমাধী নামক সংবংসরে মাইওল, ছডিল, চৌরোপদ্রব ও ঘোরবিতাই হর। ২০ বার নামক সংবংসর, ৩৪ শর্কারী সংবংসর, ৩৫ প্রবসংবংসর, ৫০ অনল সংবংসর, এই সকল সংবংসরে ছডিল হয়। ৫৫ ছপ্রতি নামক সম্বংসরে সামাক্ররপ ছডিল উপস্থিত হয়। ৫৬ রক্তাক্ষ সংবংসর, ৫৮ ক্রোধসংবংসর ও,৬০ ক্ষরসংবংসত্তে বিষম ছডিক ও নানাপ্রকার উপদ্রব হইয়া থাকে।

বে সময়ে খাশান হইতে শৃগাল, কুরুরাদি মাংস অস্থি প্রভৃতি দইরা পুরের মধ্যে আগমন করে, বা গৃহমধ্যে পরি-ড্যাগ করে, সেই বৎসর ছর্জিক হইয়া থাকে; পৃথিবী খাশান ভূমিতে পরিণত হয়।

শ্মাংসান্থিনী সমাদায় শ্মশানাদ্ গৃধবাগদা।
শাশৃগালোহথবা মধ্যে পুরস্ত প্রবিশন্তি চেত্র।
বিকিরম্ভি গৃহাদৌ চ শ্মশানং সা মহী ভবেও।
সংগ্রামশ্চ মহাঘোরো ত্রিক্মরকস্তথা ॥" (জ্যোতিস্তর)

ত্র্ভিক প্রভৃতি রাষ্ট্রবিপ্লব উপস্থিত হইলে অশৌচাদি বিশেষ নিয়ম উল্লেখন করিলে, দোষাবহ হয় না। "ছ্র্ভিক্ষযুক্তরাষ্ট্রেচ মৃতকে স্তকেহপি বা। নিয়মাশ্চন হয়স্তি দানধর্মরতেম্বপি॥" (গরুড়পুঁ ২২৬ অ:),

ছর্ভিক্ষং জায়তে ঘোরং সর্বেরাপদ্রবসংযুতং। অনাবৃষ্টিঃ সমাধ্যাতা ব্যয়ে সংবংসরে প্রিয়ে॥ ২০॥ किं वर्षा पर्यात्र प्राप्त मः विद्याप्त मार्थि सम्बन्ध । ছডিক্ষং শর্কারীবর্ষে ব্যবহারা বিপর্য্যয় ॥ ৩৪ ॥ छुर्ভिकः बाग्रुए प्रस्ता स्मिनी द्रगुष्टि थिए । প্লবে প্লবাড়িত তোয়ানি পীড়িতা মানবা ভূবি । ৩৫ । ছুর্ভিক্ষং জায়তে ঘোরং ধাষ্টোষধি প্রপীড়নং। অনলে চ সমাথ্যাতা নাত্র কার্য্যা বিচারণা ॥ ৫০ ॥ দেশভক্ষঃ স্ত্রভিক্ষং সমাসাৎ কথ্যান্যহং। পিঙ্গলে চারপদাকি । ছভিকং নর্মদাত্টে ॥ ৫১ ॥ ছুর্ভিক্ষং মধ্যমং প্রোক্তং ব্যবহারো ন বর্ততে । ভবেদৈ মধ্যমাবৃষ্টিছ্ আতৌ সম্পহিতে ॥ ৫৫॥ ত্রভিক: মরণ: ঘোর: ধাক্তোবধি প্রপাড়ন:। পাপ্ররাগো ভবেদ্ধেবি রক্তাথ্যেহমরবন্দিনি ॥ 🖙 ॥ রোগো মরণ ছর্ভিক্ষং বিরোধোপদ্রবাক্লং ৮ ক্রোধে তু বিষমং দর্বাং সমাধ্যাতঃ হরপ্রিয়ে॥ ৫ ।। মেদিনী চলতে দেবি দর্বভূতং চরাচরং। দেশভক্ষক ছর্ভিকং করে সঙ্গীয়তে প্রজা। (मोबाद्धे मालद एएल प्रकार कांकर उथा। ছর্ভিকং জারতে ঘোরং করে সংবংসরে ঐিন্নে॥ ७० ॥" (জ্যাভিডর)

কৈৰ্কশভাষী।

ৰে জীর পতিগৃতে বিরাণমন হয় নাই, তৎপুর্বে যদি ছবিক উপস্থিত হয় এবং পতি তাহাকে লইরা যার, ভাহা হুইলে কোন দোষ হয় না।

্"একগ্রামে চতু:শালে ছর্ভিকে রাষ্ট্রবিপ্লবে !" ় " পতিনা নীয়মানায়া: পুরুষ্ডকো ন হ্যাতি ॥" ( জ্যোতিতত্ব )

ত্তিক উপস্থিত হইলে রাজা অতিশর যত্ন সহকারে প্রজাদিগকে রক্ষা করিবেন, তাঁর যে স্থলে রাজার দোষে ত্তিক উপস্থিত হয়, সেই দেশ সম্লে বিনষ্ট হয়। ছর্তিক সময়ে যাহারা অলপ্রদান করে, তাহারা অতিশয় প্রাশালী। ত্তিক সময়ে চাণকা নয়টী বৃত্তির বিধান করিয়াছেন।
শিকটঃ শাকিনী গাবো জালমাসক্ষনং বনং।

অন্প: পর্বতোরাজা ছর্ভিকে নবর্ত্য: ।" (চাপকা)
শীকট, শাকিনী, গো, জাল, স্নাস্কলন, বন, অন্প, পর্বত ও
রাজা ছর্ভিক সময়ে এই নয়টী বৃত্তি অবলম্বন করিয়া ঐ বিপদ্

রাজা ছার্ভিক্ষ সময়ে এই নয়টা হৃতি অবলম্বন করিয়া ঐ বিপা হইতে উদ্ধার হইবে।

দুর্ভিদ ( তি ) হংথেন ভিদ্যতৈ হর ভিদ কর্মণি ঘঞ্চথে ক।
হভেদ্য, ভেদ করিতে অশক্য, যাহা ভেদ করা যার দা।
দুর্ভিষজ্য (ক্রী) হর ভিষক্ কন্থা যক্ কর্মণি গৃৎ যলোগং।
২ চুশ্চিকিংস, সহক্ষে যাহার চিকিংসা করা যার না। ভাবে
গাং। ২ হংথ দারা চিকিংসা। "হর্ডিফ্লাং চালৈ ভবভি
যমেধন প্রতিপদ্যতে" (রুহ্দারণা উ ) 'ভত আদ্ধা বাধিষ্যাদি
দোষ প্রাপ্তৌ হর্ভিফ্লাং হংথভিষ্কর্মতা হাস্তৈ দেহার ভবভি
হংথেন চিকিংসনারো হসৌ ভবতি।' (ভাষা)

पूर्ण जि (१३) इत्हां अमन् एकाः । इहेएका । एकनी जित्क एराम विम्निक हहेम्राह्न । य मक्न एकार से अपूर्क त्वन तम् विम्निक हहेम्राह्न । य मक्न एकार से अपूर्क त्वन तम् अमा मां, ववर याहामिशत्क मछ तम् अमा हहेम्राह्म, महि, कालम, मून, ममत्क आक्षिमताने, आक उर्देशांका, महिन के से सामि के विद्या का निक्ष प्रकार महिन महिन के महिन के स्वाम के स्वाम

দুর্ভেদ্য ( বি ) হংথেন ভিদ্যতে হর-ভিদ কর্মণি ণাং। হর্ডেদ। তুর্জ্ব ( পুং ) হুঙোলাভা। হুই লাভা। "হুর্ন্ধ ভূতত চোগ্রস্থ রাজন হংশাসনত চ।" " ( ভারত বন ২৭ আং )

मुर्माथ (जि) > अञ्ची। २ मम एक।

তুর্মঙ্গল (বি) অভভ।

দুর্মাতি (বী) ছটা মতিঃ। চুর্মাছি, বাহাতে বিবেকাংগছি হয় তাহার প্রতিবন্ধক পাপলিও মলিন বৃদ্ধি।

"নিষীদরো অপহুর্মতিং জহি।" (শুক্লবজু: ১১।৪৭) ছবিতা মতির্বস্ত । (ত্রি) ফুটমভিযুক্ত । ত বটি সংবৎসরের মধ্যৈ ৫৫ম বৎসরের নাম, এই বৎসরের ছভিক্ষ হয় । (জ্যোতিতার) দুর্মুদ (ত্রি) হক্ষতিতো মদো ষস্ত । উদ্মত । "হুর্মদং পদ্ধাণ্-স্বোভাঃ"।'' (শুক্লবজুং ৩০।৮)

২ ধৃতরাষ্ট্রের প্রজেদ। (ভারত ১।১২৭।৫)
দুর্মনস্ (জী) ছইং মনং। ছই মন।
শ্প্রাপ্য জ্মনসা বীর গর্বেণ চ্ বিশেষতঃ।" (রামাণ ২০১।২১)

হৃষ্টিতং মনোমস্ত। ( বি ) ছৃষ্টিতমনস্ক, বাহার ছুর্জাবনা উপস্থিত হইশ্বছে, উদ্বিশ্বচিন্ত, চিস্তিত, বিমনা, ছুর্মনা।

मुर्चाना [ इर्मनम् (१९४ । ]

তুর্মনায়মান ( তি ) ভূমন্দ্ কাঙ্, সলোপঃ। ভূমনায় শানচ। উদিয়চিন্ত, ভূজাবনাগ্রন্ত। • •

দুর্মসূষ্য (পং) ছটো মহয়ঃ। ছট মাছব, ছটু লোক। দুর্মস্ক (অি) ছর্মন-ভূন্। ছট মম্মান, ছট বলিয়া ভাবা। "ছর্মস্ক মৃতস্থ নাম।" (ঋক্ ১০০১১৮)

দুর্মন্ত্র (পুং) ছটোমত্র:। ছট মত্রণা, ছর্মন্ত্রণার রাজগণ আঙ বিনষ্ট হয়।

দুর্শ্মস্ত্রিত (ত্রি) হর্-মন্ত্র-জ। হুইভাবে মন্ত্রিত, বাহা মন্দভাবে । মন্ত্রণা করা হইরাছে।

"দ্বয়া ত্রশ্বন্ধিতং দাতং ৎসীবলে ন চ ভারত ॥" (ভারত উ ১২৭ অঃ.) (ক্লী) ভাবে ব্জ । ত্রষ্ট মন্ত্রণা।

তুর্ম ক্রিন্ (পুং) ছটঃ মন্ত্রী। কুমন্ত্রী, মন্ত্রীর বে সকল ঋণ উল্লিখিত হইরাছে, সেই সকল ঋণ যে মন্ত্রীর নাঁ থাকে, তাহাকে হুর্মন্ত্রী কহে। মন্ত্রী হুট হইলে সেই রাজ্য অচিরাং নই হর। [মন্ত্রিন্ধে।]

দুর্মর ( ি ি ) ছটো মরো মৃত্যা। ১ ছট মৃত্যা। ( জি ) ছাংখন
মরো মুরণং যক্ত। ২ ছটভাবে মৃত, যাহার কটে মৃত্যু হর।

"হুৰ্যৱন্তমহং মন্তে নৃণাং ক্লেন্ড্ৰপি বৰ্ততাং। বৃত্ত কৰ্ণ হতং শ্ৰুদা নাত্যজন্ জীবিতং নৃগা।" (ভারত ১৮ ১ জঃ)

বাহারা অতিশয় পাশী, তাহাদের অতিশয় কটে মৃত্য হয়। ইহার বিষয় নির্ণয়িদ্ধতে এইরার নিথিত আহে— চাণ্ডাল, উদক, সর্প, ব্রাক্ষণ, বিছাৎ, দংগ্রী ও পত হইতে পাপীদিগের মৃত্যু হইরা থাঁকে, এইরাপ মৃত্যুকে হ্র্মরণ করে। এইরাপ ভাবে বাহাদের মৃত্যু হয়, ভাহাদের উদ্দেশ উদকাদি জিরা অস্টিত হইলে তাহা বিফল হর। বাহারা জোধপূর্বক শাল্ল, আলি, বিষ_{্ণ}, উল্লন, জল, গিরিও বৃক্ষ হইতে পতন প্রভৃতি ইহার মধ্যে যে কোন এক উপারে প্রাণু পরিত্যাগ করে, তাহাদের এইরূপ মৃত্যুও হুমৃত্যু পদবাচ্য।

हेशांतत माइ, व्यास्ताष्टिकिया था कृषि कि कूहे हहेरव ना। यित कह हेशांतत माहानि करत, कुश्चित ध्यायिक कि कित्र्या एक हहेरल हहेरत *।

হুৰ্মৃত্যুক্তত দানাদি ক্রিতে হয়। তাহার বিবঁয় বিখ-প্রকাশনিতে এইরপ লিখিত আছে ৷—সর্পদষ্ট হইয়া মৃত্যু ইইলে কাঞ্চন, হন্তী ধারা নিহত হইলে চতুর্নিষ্ক পরিমাণ স্থবর্ণ, त्राका कर्क्क रख रहेला हित्रधात्र शूक्ष, हात्र कर्क्क रख रहेत्क ধের, বৈরি কর্তৃক হত হইলে যথাশক্তি কাঞ্চন, শঘ্যাতে मृज्य रहेरन भया, भौठरीन अवसाय मृज्य हुहेरन विनिक द्भवर्ग, मःक्षात्रहीन, रहेशां मित्रत्न खाक्तन वानकरकं छेलनयन, অখ ছারা হত হইলে নিজ্ঞয়পরিমিত সুবর্ণ নির্মিত আংখ, কুকুর কর্ত্তক হত হইলে শুক্তি অনুসারে কেত্রপাল স্থাপন, শ্কর কর্তৃক হত হইলে সদক্ষিণ মহিষ, উচ্চস্থান হইতে পড়িয়া মরিলে ধান্ত পর্কত, বিষ ধারা মৃত্যু হইলে স্থবণনির্মিত মেদিনী, উল্ল্লনে মৃত হুইলে কনকনিৰ্মিত কপি, প্ৰস্তৱ ৰারা নিহত হইলে সবৎসা পয়িখনী ধেরু, জল ৰারা মৃত্যু हरेल देशवकून, विक्ठिकारबार्य मृजू हरेल मेज बान्नन-ভোলন, কাসবোগে মৃত্যু হইলে অইকুচ্ছুত্রত, অভিসার রোগে মৃত্যু হুইলে লক্ষ গায়ত্তী অপ, অত্তরীকে মৃত্যু হুইলে বেদপারায়ণ, বিছাৎপাতে মৃত্যু হইলে, বিদ্যাদান, এবং পতিত ररेया युठ रेहेला (याज्य ध्याकाथठा अन्हेशन क्रिएं हय। প্র্ণোক্ত মৃত্যু দকল হৃম্ত্যু, এরূপ মৃত্যুতে এবং অপত্য রহিত হইয়া মরিলে নবতি ক্বচ্ছুচাক্রায়ণ করিকৈ। মৃত্যুর পর धरे नक्न व्यक्नांन कतिया मुख्याक्तित्र खेर्कारमध्क कियामि অফুঠান করিতে হইবে। (শাতাতপীয়) [মৃত্যু দেধ।] पूर्मद्र (क्वी) इद्-मृ-ल्राहे। [ इर्मद (नथ। ] দুর্মরত্ব (ফ্রী) হুমরত ভাবঃ হুমর-ত। হুমরতা, হুমুত্যের ভাব। পুষরা(জী)ছর্মর-টাপু। দুর্কা।

গিরিবৃক্তপ্রণাতঞ্ বে কুর্বন্তি নরাধমা:।" ( নির্ণরসিণ গৃষ্ট অঙ্গিরা )

তুর্মর্ব (পুং) ছুংখেন ম্বাতে ছর্-মৃক কর্মণি ধল্। ছংখ খারা মর্বণীর, বাহা অভিকটে সহু করা বার । 'বচ্চুক্রারা ইনং হবং ছর্মবিং চক্রিরা উত্ত ।' (গ্লক্ ৮।৪৫।১৮)

তুর্মর্বণ ( পং ) দ্বর-মূব ভাষারাং খল বাধিতাং মূচ্। ১ অভিকটে সহনীর । ২ বিষ্ণু। ৩ ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১০১১৭৩) তুর্মর্বিত ( ত্রি ) হুর্-মূব-জ। বৈরতা-সাধনে উভেঞ্জিত।

তুর্মাল্লিকা (জী) দৃখকাব্যর্ত্তপ টপরপক ভেদ, নাটকা আটক, গোটা, সম্ভক প্রভৃতি নানাবিধ, তুর্মলিকা তাহার মধ্যে একবিধ। ইহার লক্ষণ সাহিত্যদর্পণে এইরূপ লিখিত আছে—

"গ্ৰন্মনী চতুরকা ভাৎ কৌশিকী ভারতী তথা।
অগর্জা নাগরনরা ন্ন নাফকভ্বিতা।
বিনাশি: প্রথমোহকোহভাং শিটক্রীড়াময়ো ভবেং।
পঞ্চনালি বিতীরোহকো বিদ্যকবিলাসবান্।
বঙ্গালিকভৃতীয়ন্ত পীঠমন্দিবিলাসবান্।
চতুর্থো দশনালি: ভাদকঃ ক্রীড়িতনায়কঃ॥

( সাহিত্যদ ভারে৪৪)

এই দৃশ্রকাব্য হাজ্যরসপধার, ইহা চারি অকে সমাপ্ত হইবে, গর্ভাঙ্ক থাকিবে না, অল্পনায়ক হইবে। প্রপুম অকে জিনালি হইবে এবং ভাহাতে বিটের জীড়াতে পূর্ণ থাকিবে, দিতীয় অকে পঞ্চনালি এবং বিদ্যুকের বিষয়, তৃতীয় অকে ষণ্ণালি এবং পীঠমর্দের বিষয়, চতুর্থ অকে দশনালি এবং জীড়িত নায়ক হইবে; এই সকল লক্ষণাক্রাস্ত হইলে ভাহাকে ভুশ্লিকা কহে। যেমন বিদ্যুতী।

জুর্মাল্লী [ হর্মানিকা দেশ।]

তুর্মাৎ স্থা ( क्री ) তৃষ্টং মাৎসর্বাং। তৃষ্ট মাৎসর্বা।
তুর্মায়ু ( তি ) তৃষ্টাক্তায়্ধানি মিহস্তি মি ক্লেপে তুন্। তৃষ্টায়ুর্ধক্লেপক, তৃষ্টাক্ত নিক্লেপকারক।

"হ্মায়বো হরেবা মর্ত্যাস:।" (ঋক্ ৩।২০।১৫)
হুমিত্র (পুং) হুটং মিঅং প্রাদি সং অমিতবং পুংহং। ১ •
অমিত্র, শক্ত। (আি)• হুঃস্থিতং মিআুং যস্ত। ২ হুটু মিত্রক;
হুটবন্ধুমুক্তী।

জুর্মিত্রিয় (বিজ্ঞ) ছর্মিত্রার অমিত্রভার সাধু। অমিত্র ভাবে অবস্থিত।

্রিন্ত্রিমিত্রিরান আপা ওবধরঃ সম্ভ ভূমিত্রারা ছালৈ সন্ত।"
( শুক্রযকুণ ভাবর)

'ছৰ্মিজিয়া অমিজভেনাৰস্থিতাং।' (বেদদীপ)
ভূমিজিকা (জী) মাত্ৰাবৃত্তভেদ, ইহার ঐতিচরণে ছাজিংশং
মাত্রা হইবে।

^{* &}quot;চণ্ডালাছদ্ৰকাং সুপাং ব্ৰাহ্মণাবৈছাতাদপি।

বংট্ট্ ভাল্চ পশুভাল্চ মরণং পাপকৰ্মণাং।

উদকং পিশুদানক প্ৰেক্তেভা বং প্ৰদীয়তে।

নোপতিষ্ঠতি তৎ সৰ্ব্ধ মন্ত্ৰরীক্ষে বিনশুতি।

কোধাং প্রাশং বিবং বহিং শব্রমুক্ষরংজ্ঞলং।

ষাত্রিংশন্মাত্রং ফণিপতি শ্বান্ধিত-দক্ষ-বিভ্বণ, বৃত্তবরং।
দশবস্থ ভ্ববৈর্যতিরত্ত প্রভাগত ক্ষিক্ষল্যানন্দরঃ।
বদাইচভুকলগণনিশ্বিতপদমিতি হার্মলকা নামপরং।
নরপতিবরভোবণ-বন্দিবিভ্বণ ভ্বনবিদিত স্তাপহরং॥
**

(ছম্পান্ত্র)

তুর্মুখ ( তি ) হছং মুপং যন্ত ত্বাপারো বা যন্ত। ১ আখ।

২ বানরভেদ। ৩ মহিষাস্বের সেনাপতিভেদ। ( চঙী )

৪ রামচক্রের গুপ্তচর, রামচক্র ইহার বারা প্রকামগুলীর

অভিপ্রায় জ্ঞাত হইতেন, ইহার নিকট সীভার লোকাপবাদ

সৃত্যান্ত প্রবণ করেন। এই অপবাদ ভানিয়া রামচক্র সীভাকে

নিক্ষাসিত করেন। উত্তররামচরিতে কেবল ইহার উল্লেখ
দ্বাযায়।

"গুদান্তারী ত্যুবি: সময়া পৌরজানপদানপস্পিতৃং প্রায়ুক্ত:।" (উত্তররামচণ) ৫ নৃপভেদ। (ভারত ৬৭ আ:) ৬ নাগভেদ। ৭ শিব। (ভারত ১০১১৭০০) ৮ ধৃতরাষ্ট্রের প্রভেদ। ৯ উত্তরদারগৃহ। ১০ ষ্টিদংবংসরের মধ্যে ১১ বংসরের নাম হ্যুপ্বংসর। ১২ ফফভেদ। ১০ অপ্রেরাদী। ভক্তমালে এক হ্যুবের, উল্লেখ দেখিতে পাওয়া য়য়, ইনি রাধিকার দেবর ও ভগিনী অনক্ষজরীর আমী। (ভক্তমাল) হুমুহুর্ত্ত (পুংক্রী) নিন্দিতো মুহুর্ত্ত: প্রাদি সণ। অপ্রশন্ত মুহুর্ত্ত, নিন্দিত মুহুর্ত্ত।

্রিক্তেষাস্থরেষতে হতিথো হুর্মুর্ছজা:। সংপতস্তাস্থরীং যোনিং যজপ্রসববর্জিতাঃ॥''

(ভারত শা ১৮০ জঃ)

তুর্ম্যুষ (দেশক ) মূলার, পিটনে, গাদনী, যদারা মৃত্তিকা পেটা হয়, নৃতন প্রাসাদাদি প্রস্তুত করিতে হইলে প্রথমে মৃত্তিকাকৈ হুমুষ করিয়া অর্থাৎ মাটী ভাল করিয়া পিটিয়া তাহার উপর গার্থনি বা অুপ্রাপর কার্য্য করিতে হয়।

তুমুল্য ( তি ) ছন্থিতং মৃল্যং। ছন্থিত মৃল্য, মহার্য্য, যাহার দাম অধিক, যে বস্তুর যে পরিমাণ দাম দ্বির আছে, দেই বস্তুর তাহা অপেকা অধিকু দাম হইলে ফুর্মেল্য কহে।

তুর্ম্বেধ্স্ ( জি ) নিন্দিতা মেধা অস্ত, অসিচ্ সমা। নিন্দিত নতি, ছর্জ্ জি, ধারণাবর্জিত বৃদ্ধি, যে বৃদ্ধিশক্তি কোন বিষয়ে ধারণা করিতে না পারে।

"ন কিঞ্চিত্ত। চুর্মেধান্তফৌ কিঞ্চিদবান্ধুৰে।" (ভারত বন° > তথঃ)

আর্বেড় সমানান্তবিধেরনিতাছাৎ নাসিচ্। আর্ব প্রয়োগ প্রেল সমাসান্ত থিবির অনিত্যতা হেন্তু অসিচ্ সমাসান্ত হইবে না, সেই স্থলে ছুর্মেধ এইরূপ প্রয়োগ হইবে। "আশ্রদ্ধানান্ নিংসন্থান্ ছমেধান্ ছসিভার্থ:।"
(ভগিৰত ১০০১৮
সূমেধিস্ত (ক্লী) ছমেধিলো ভাব: ত্ব। ছমেধার ভাব, ছইবৃদ্ধি

ছুর্মেধাবিন্ ( আ ) ছটঃ মেধাবী। ছটংমধা যুক্ত । ছুইমেআ ( আ ) ছটো সৈতা। ছটামিআ, ছটবক্ । ছুমেমি ছুম্মি হৈ ( পুং) ছটং নিলিতং মুহাক্সানেন মুহ করণে দুঞ্ ১ কাকতৃতী। ( জী ) কাকাদনী।

তুর্য্য (পুং) ছরং যাজি যা ককছরি বাবে ভব: যৎ বা প > গৃছ

"বং গোষ্ঠমাবদতং দেবী হুর্যো।" (ভরুষজু ৫।১৭) ছর্যা শর্মে

" গৃহবালী 'ছুর্য্যাবৈ গৃহাঃ ইতি শ্রুতেঃ।' (বেদদীপ) ২ দার
ভব যুপ। 'নিরেকে পজেয়ু ভোমো ছুর্যোন কুপ।'

( প্রকু ১।৫১। ১৪)

তুর্শস্ (ক্রী) নিলিতং বশং। অকীর্তি।.

"তদগ্রস্টী সচিবঃ স কামিনীর্মনোভবঃ সীব্যতি ত্র্বশঃ পটো।"
(নৈবধ) ত্রান্তিং যশো যতার (ত্রি) তুট যশ্যুক্ত, মন্দ্রশয়।
তুর্বোপ (পুং) ত্রটো যোগঃ। > ত্র্তাস্মাস্টক গ্রহ্যোগ ভেদ।
২ ত্টকৌশল।

শিনসীভূতাত্মি হর্ষোগাৎ সপজ্যা: পুতগোত্তম।" (ভারত আ' ২৭ আ:) (দেশজ) হর্দিন, মেঘাচ্ছমদিন, যেদিন অতিশর বড় বৃষ্টি প্রভৃতি হয়।

তুর্হোণ (রুণী) তৃষ্টা বোনিস্থানমস্ত্যক্ত. আংশ আদি আদ সংজ্ঞারাং গল্পং। সংগ্রাম, যুদ্ধ।

> 'নিস্থোণ আর্ণশু মূধবাচ: ।" ( ঋক্ ৫।১৯।১• ) , 'হুযোণ: সংগ্রাম: ।' ( সারণ )

ভূর্মেধ (পুং) ছ:বেন য্ধাতে হসৌ ছর্ যুব কর্মণি বল। ছ:ব দারা বোধনীয়, যিনি অভিশন্ন ছ:ব সহু করিয়া যুদ্ধ করিতে পারেন।

তুর্ব্যাধন (পুং) ছর্দ্বুংবেন যুধাতে হসৌ ছর্ব্ধ যুচ্। তুক কংশীর রাজা ধৃতরাষ্ট্রের জ্যেষ্ঠ পুত্র। মহাভারতীর যুক ইনিই প্রধান নামক ও কৌরবদ্ধলের নেতা ছিলেন। পাঞ্ রাজের মৃত্যুর পর পঞ্চপাশুর রাজা ধৃতরাষ্ট্র কর্তৃক হকি নায় আনীত হন এবং ছুর্যোধনাদি শত্রাতার সহিতৃ এক্র শান্ত ও শত্রশিক্ষা করিতে আরম্ভ করেন। ছিতীয়পাশুর ভীম ছুর্যোধনের সমবয়্ব ছিলেন। তাঁহার অপরিমিত বলবিক্রম এবং গদা চালনার বিশেষ ক্রতিছ দর্শন করিরা ছুর্যোধন তাঁহার বিশেষ বিদ্বেষ্ট্রা হইয়া পড়েন। ছুর্যোধনও গদা যুক্ষে বিশেষ পারদর্শী ছিলেন এবং বারকাধিপতি প্রিক্রমের জ্যেষ্ট্রাতা বলরাদুমর নিকট উক্ত অজের ব্যবহারাদি শিক্ষা করেন; কিছ তব্ ভীমের সমকক্ষ হইতে না পারিয়া ভীমকে বিদিষ্ট করিবার জক্ত ক্রীড়াচ্ছলে একদিন তাঁহাকে বিষপান করাইরা মুচ্ছিতাবস্থার পদাগর্ভে নিক্ষেপ করেন। ভীম তদবস্থার নদীগর্ভে পড়িয়া থ্লাকিবার প্র বাস্কী কর্তৃক নাগলোকে নীত ও বিষক্ষর হইতে আরোগ্য লাভ করেন।

ू धुछ दा है टबार्छ छाटन भाखन ७ द्वनोत्रनगत्नत्र मत्या यूधि-छित्रक योवत्रात्का कालियिक कतिवात हेव्हा श्रकाम कतित्व ধুর্ব্যোধন ভাষতে বিষম আপত্তি উত্থাপন করেন। পুত্র-লেহে শীজিত হইরা ধৃতরাই কুহেব্যাধনের কুমস্ত্রণার যুধি-ষ্টিরাদি পঞ্জাতাকে বনবাদে প্রেরণ করেন। পথে ইহা-দিগকে বিনষ্ট করিবার জন্য তুর্য্যোধন লোক পাঠাইয়া জতুগৃহে বন্ধ করিয়া পুড়াইয়া মারিবার কলনা করেন, কিন্তু তাহাতে পিছকাম হন নাই। বনবাদের পরু পাওঁবের। ফিরিয়া আদিয়া, ইক্সপ্রতে রাজধানী ভাপন করেন। এই সময় যুণিষ্ঠির রাজত্য যজ্ঞান্তান করিলে তুর্যোধন যজ্ঞ সভার পাণ্ডবগণের ক্ষমতা, প্রতিপত্তি ও যশ দেখিয়া একান্ত অস্যাপরবশ হইয়া পিতাকে প্ররোচিত করিয়া পাণ্ডবগণকে থককীড়ায় আহ্বান করেন। শকুনি নামক গান্ধার রাজ্তন্য অক্বিদ্যার অতিশয় পায়দশী ছিলেন। তিনি হুর্যোধনের মাতৃল, স্থতরাং তিনিই ছর্য্যোধনের পকাবলম্বনপূর্মক থেলিতে বদিলেন; রাজা যুধিষ্ঠিরও অক্ষবিদ্যায় অভি পটু, শকুনি ঝায়পথে তাঁহাকে হারাইতেনা পারিয়া মায়া অক ষার। যুধিষ্টিরের সর্বাস্থ হরণ করিলেন। শেষে যুধিষ্টির ভাতৃ-গণের, পদ্মীর ও নিজের স্বাধীনতা পর্যাস্ত পণে হারিলেন। হর্ণ্যোধন পরে প্রফুল হইরা জৌপদীকে সভামধ্যে স্থানিতে षातम निर्वत । रखोभनी त्रवःचना हित्नन ; তिनि षात्रित অ্যীকৃত হুইলে ছঃশাসন গিয়া তাঁহার কেশাক্র্বণ ক্রিয়া गरेया व्यापितन । इर्त्यापन डांशांक त्रीय छक्तात्म विन-বার নিমিত্ত আহ্বান করিল। ভীম এই অপমানে অলিয়া গদাখাতে ছর্ব্যোধনের উক্নভঙ্গের প্রতিজ্ঞা করিগেন। তথন বৃদ্ধ বাজা ধৃতরাষ্ট্র মধ্যন্ত হুইয়া আগুবিবাদ নিবারণ করি-लिन धवर भरवत निव्यास्मारत रेश्विष्ठतानिरक पानम वैरमत বনবাসু ও এক বংসর অজ্ঞাতবাস করিতে আদেশ দিশেন। ^{বনবাস} কাল্বে ছর্ব্যোধন পাওবদিগের ছর্দ্দশা দর্শন করিয়া খানন্দলাভের অভ খোষ্যাত্রা করেন। পথে ভিনি সদলে গকর্মণ কর্তৃক বন্দী হন: মুধিটির ভনিতে পাইরা ভীম ও অর্চ্চ্নকে পাঠাইয়া তাঁহাকে উদার করেন। এই ঘটনার হর্ষ্যোধন মর্শ্বপীড়িত ক্রইরা পাওবের শক্ততা-गांधान वद्मभविकत इन। कार्य निर्मिष्ठ अकार्डशानकान

অতীত ৰুটুলৈ কৃষ্ণের মধাহতার উভর পক্ষে শাবি স্থাপনের চেষ্টা হর, কিন্ত হর্য্যোধন ক্লফের প্রান্তাবে সম্মত না হওরার উভ্র'পকে বোরতর যুক্তর আহোলন হইতে লাগিল। উভন্পক্ষই ক্লফের সাহায্য চাহিলেন। পাওবেরা একা ক্লফকে এবং ছৰ্ব্যোধন ক্লফের সৈঞ্চদল গ্রহণ করি-লেন। কুকক্তে মহাযুক্ৰ বাধিল। দশদিন যুক্ষের পর কৌরবগণের সেনাপতি জীম: পাঁচদিন খুঁদ্ধের পর কৌরব দেনাপতি জোণ, আড়াইদিন যুদ্ধের পর কৌরব সেনাপতি কর্ণ ও অর্দ্ধ দিন যুদ্ধে কৌরব সেনাপতি শলা বিনষ্ট হইলে কৌরবগণের সমাক্ পরাজয় হইল। क्र्र्याधन भनादेश अक इत मत्या नुकारेलन। अत्रामत्य ছৰ্কাক্যে ও বিদ্ৰূপে উৎপীড়িত হইয়া তিনি বাহিরে আগ্রিলেন এবং ভীমের সহিত গদাযুদ্ধে পার্ত্ত হইলেন। যুদ্ধে ছুর্যো। ধনেরই জন্মলাভের সন্তাবনা ঘটিল। কিন্তু ভীম প্রতিজ্ঞা স্মরণপূর্বক ভার বিরুদ্ধ হইলেও কটাদেশের নিমে গদাঘাত করিলেন। ছর্ণ্যোধন তাহাতে অন্থিভগ্ন হইয়া পড়িয়া গেলেন। ভীম পতিঁত-শত্রুর মন্তকে পদাঘাত করিয়া চিরপোধিত ক্রোধের শান্তি করিলেন। পাশ্ববেরা মৃতপ্রায় ছর্ব্যোধনকে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গেলে জোণপুত্র অখথামা, আদিয়া দেখা করিলেন। হতাশ অবস্থার হর্ঘ্যোধন ইহাকেই পাগুব বিনাশে নিযুক্ত করিলেন ও ভীমের মুও আনিতে বলিয়া দিলেন। অখথামা ছলবেশে পাওবশিবিরে প্রবেশ করিয়া জৌপদীর পঞ্চ পুত্রকে রিনাশ করিয়া ভ্রোধনকে সংবাদ দিলেন। ত্র্যোধন পাগুবপুত্র নিধন সংবাদে উৎফুল হইরা স্বর্গারোহণ করিলেন। (মহাভারত)কাশীদাসী মহাভারতে আছে—অর্থামা পঞ্পাত্তব ভ্রমে ক্রৌপদীর পঞ্চ পুত্রের মৃত্ত লইয়া আসেন। হুর্যোধন ভীমের মুগু চাহিলেন। অখ্যানা ভীমাকতি ভীমপুত্রের মুগু দিলেন, কিন্তু বর্থন ছর্ব্যোধন ভাহা চুই হল্ডের চাপে ওঁড়াইয়া ফেলিলেন, তথনই ভ্রম বুঝিতে পারিবেন। তথন দীর্ঘ নিঃখাদের সহিত বলিলেন, অখথামা 🤏 र्भक्षभां खबरे ब्यामात्र मद्भ, त्योभनीत श्रेट्ट वानक कन्नती व्यामात्र निक्र दर्वीन (मारी) नहर । देशात भन्न अलाख हर्दन भन्न **कां विशान छेऽभन्न हरेग्रा क्रांगरानत व्यांग वहिर्गठ हरेग।** कूर्याधनरक यूधिष्ठेत 'ऋर्याधन' विनाउन । (खि) यिनि অভিশয় হংথ সহ্য করিয়া বৃদ্ধ করিতে পাস্কেন।

ভূৰ্যোনি ( বী ) নিন্দিতা বোনিঃ প্ৰাদি সং। নিন্দিত জাতি।
ছ:ন্থিতা বোনিৰ্থত। ( বি ) নিন্দিত আতিক, বাহায় নিন্দিত
কুনে জন্ম হইয়াছে।

"न तथकन इर्तिनिः धङ्गिष्ठः चाः निवक्षि।" ( मन् )

তুর্লক্ষণ (রী) হুইং লক্ষণং। অন্তত চিহ্ন, আমন্তল্যতক চিহ্ন।
দুর্লক্ষ্য (ত্রি) হুংবেন লক্ষ্যতে হসৌ হুর্লক্ষ্ম বং। আনৃত্ত,
মাহা অতি কটে দেখা বার।

ভুল্ভ্রন ( জি ) ছঃথেন শব্দতে শব্দন্ত, ছঃথহারা শব্দ নীয়, অতি কটে শব্দনীয়, অগভ্যা, যাহা সহজে শধ্যন করা বাষ না।

দুর্লভিষ্য (তি ) ছ:থেন শৃত্যাঙে শৃত্য-যং। অংশত্যনীয়, যাহা সহজে শৃত্যন করা যায় না।

দুর্লভিকা(ত্রী) ছটা বতৈব খার্থে কন্টাপ্। ১ নিন্দিতা বভা। ২ ছলোভেদ।

দুর্ল⊕ (অি) ছ:থেন লভাতে ছর্-লভ কর্মণি থল্। লাভ করিতে অশকা, ছ্প্রাণা, বিরল, যাহা সহজে লাভ করা যায় না, বাহা সচরাচর পাওয়া, যায় না। বহুমূলা। ২ অভি প্রশস্ত। ৩ প্রিয়।

"নরত্বং চুর্লভং লোকে বিদ্যা তত্ত্ব স্থচ্র্লভা।" ( সাহিত্যদ' ) "চুর্লভং প্রাকৃতং বাক্যংচুর্লভ: ক্ষেমকুৎ স্থৃত:।

হুৰ্নভা সদৃশী ভাষ্যা হুৰ্নভ: অজন: প্ৰিয়: ॥" (চৰ্ণক্য)
সভ্যৰাক্য, উত্তমপুত্ৰ, সদৃশী ভাষ্যা ও প্ৰিয়তম অজন
ইহ জগতে অতি হুৰ্নভ। ৪ কচ্চুর। ৫ বিষ্ণু।

"ईर्न (ভा इर्ज्डा इर्गः।" (विकृतहस्यनाम)

তুর্লভ ভক্তিধারা বিষ্ণুকে পাওয়া যায়, এই জন্ম জগবান্ বিষ্ণুর নাম তুর্লভ হইয়াছে। ব্যাস বচনে লিখিত আছে, সংস্র সহস্র জন্ম ধরিয়া তপভা করিলে ক্লফে পরাভক্তি জন্মে, সেই ভক্তিধারা তাঁহাকে পাওয়া যায়।

(ত্রী) ৬ ছরালভা। ৭ খেত কণ্ট,কারী।
দুল্ল ভিক্, কাশ্মীররাজ ছর্লভবর্দ্ধনের পুত্র। দুইনি অনকলেথার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। পিতার মৃত্যুর পর কাশ্মীরের
সিংহালনাধিরোহণ করেন এবং পরে প্রভাগাদিতা এই নাম
গ্রহণ করিয়া প্রসিদ্ধ হন।

ইনি প্রতাপপুর নামে একটা নগরী স্থাপন করেন। ঐ স্থানে ক্লেভিত হইতে নোনগ্রামের একজন বণিক আসিরা বাস করেন। ঐ বণিকের সহিত ইহার অভিশম্ম বন্ধুদ্ধ হয়। একদা ইনি বন্ধুর পৃহে তাহার পত্নী শ্রীনরেক্সপ্রভাকে দেখিরা জুভিশর ওমাহিত হন, কিন্ধু শ্রীর অভিলায়কে অস্তরে গোপন রাখিরা দারুণ মনঃপীড়ার আক্রান্ধ হইরা শ্যাশারী হন। এই সমর ইহার বন্ধু পীড়ার কারণ কোনরূপে অবগত হইরা আপনার ক্রীক্রে প্রক্রিকার্ক ইরার ছর্নভ্তের করে অর্পণ ক্রেন। প্রক্রিকার্ক ইনার দেহ পূর্ববং বল প্রাপ্ত হয়। ঐ রাণীর গর্ভে ইহার ভিন পুর হয়,—ভাহাদের নাম চক্রা-

পীড় বা বজাদিত্য, তারাপীড় বা উদয়াদিত্য এবং অবিষ্কা পীড় বা দলিতাদিত্য। ইনি ৬০ বংসর রাজত করিয়া মৃত্যু মুথে পতিত হন। (রাজত°) [কাশ্মীর দেখ।] তুল্ল ভি, মৃলতানের একজন বিখ্যাত জ্যোতিবিদ্। আল্বিক্নী ইহার মত উক্ত করিয়াছেন।

দুর্লু ভরাজ, গুলরাটের চৌলুকাবংশীর একলন বিখ্যাত রালা। ইনি ১০৭৮ সংবৎ পর্যাত ১১ বর্গ ও মাস রালত্ব করেন।

[চৌলুকাশবেদ বিস্তারিত বিষয়ণ জটবা।] দুল্ল ভারাজ, সাম্ত্রতিলক নামে সংস্কৃত গ্রন্থর চিরতা। ইংগর প্র জগদ্দেব অপ্রচিন্তামণি নামে সংস্কৃত জ্যোতিগ্রন্থির রচনা করেন। ভুল্ল ভবৰ্দ্ধন, কাশীররাজ বালাদিডোর আমাতা। বালাদিডা গণকের মুথে ভনিয়া ছিলৈন যে, তাহার মৃত্যুতেই গোন্দ বংলের শেষ হইবে, ডজ্জন্য তিনি ইহার সহিত শীর 📦 অনঙ্গলেধার বিবাহ দিয়াইহার পুত্র হুর্গভককে পুত্ররূপে গ্রহণ করেন। '১ইনি কর্কোটনাগের পুতা। ইহার খন্তর दैशाक व्यक्तांपिका नाम पिया घानक धन घर्षन काउन। ইহার পত্নী ইহাকে বড়ই অবজ্ঞা করিভেন। তারার ব্যভিচার কাশ্মীরভূমিকে কলম্বিত করিয়া ভূলিয়াছিল। ইনি এই ব্যভিচার বৃত্তাম্ভ জ্ঞানিতে পারিয়া আর তাঁহার সহিত পত্নীবৎ ব্যবহার করিতেন না। খগুরের মৃত্যুর পর ইনিই রাজা হন। ইহার পত্নীর গর্ভে অনেক সম্ভান অবিয়াছিল। তমধ্যে ইহার ঔরদজাত প্রথম পুত্র ছর্লডক ইহার মৃত্যুর পর রাজা হন। ইনি ৩৬ বৎসর রাজ্ব করিয়া-ছিলেন। (রাজ্বতর ্রুতরণ) [কাশ্মীর দেখ।]

চূর্ল ভকামিন্ (পং) কাশীরের জীনগরে প্রতিষ্ঠিত দেবস্থি-বিশেষ। (রাজত ৩৩)

তুললিত (ক্লী) ছব্লৰ ঈশ্বারাং ভাবে জ্বন, ১ ছন্চেটা, আবদার। ২ ছন্চেটিত।

"স শশাপ ওতে। রোষাসুনিত্ হিডরং তব।
অতিত্ললিতৈঃ কয়া শক্তহতং গমিয়তি ॥" (হরিবংশ ১৪৯ জঃ)
কর্তারি জ্ঞা। ৩ তথাবিধ ইচ্ছাযুক্তা। ৪ ত্পেটারিত। (বি)
৫ চপল।

'मूर्लिनिख (क्री ) ছत् नग-कः। ছম্পেটা। मूर्लीख ( পুং ) ছংথেন नखाउं ছत्-नख-नेक्। हाुंचे नांवी नींव, करहे नांकृ, क्रांच পांचता।

"মোকত্লভিবিষরং বড়বাসুধনাগরং।" (ভারত লাও ০০ জন)
দুর্লেখ্য (ক্লী) ছটং লেখ্যং। গহিত লেখ্যগত, জাল দ্বিন।
আবভাকীর কাগজ পতালি নট হইরা যাইলে পুনরার বাহা
বাহা লেখা বার।

"নেশাস্তরত্বে ছর্লেখ্যে নষ্টোল্গুটে ছতে তথা।
ভিরে দথ্য তথা ছিলে লেখ্য ছততু কাররেং ॥" ( নারদ )
নিশির অক্ষর লোপ করিরা ছটভাবে মিধ্যা করিরা যাহা
লেখা যায়, তাহাকে ছর্লেখা কুছে। কাগজে যেরপ ছিল, সেই
রূপ লা লিখিয়া নিজ আবশ্রক মত মিধ্যা করিরা বাহা
লিখিত হয়। "ছটং লিপাক্ষরুপরিলোপেনাবাচকতয় বা
বর্রেখাং ততু ছর্লেখাং।" (বীরমিং)
ক্রি (জি) ছর্লিখাং নিজ উচাতে ছর্বচ্প্র। অভিচাধে কথ-

ছুর্বচ (জি) ছর্দ্ধেন উচাতে ছর্বচ্পল্। অভিহংধে কথনীক্ষাহা অভিশন্ন ছংধে বঁকা যার।

" অপি ৰাগধিপক্ত ছব্চং বচনং তৰিদধীত বিষয়ং।"(কিয়াত) দুৰ্ব্চদ্ (ক্লী) ছঙ্কং বচঃ। গহিত ৰাক্য, ছৰ্ব্বাক্য, কট্কথা, নিলাৰাক্য।

"অসহং হর্কচো জ্ঞাতে মেবাস্তরিতরোজবং।" (উডট)
মেবাস্তরিত রোজের স্থার জ্ঞাতির হর্কাকা অসহ।
দুর্বরাহ (পুং জ্ঞা) হুটো বরাহ: প্রার্টিন । গহিত বরাহ,
নিন্দিত বরাই, গ্রামা শৃকরু । জ্ঞিয়াং জাতিখাং তীয়। "অয়ো হ বাপশবো হমেধা। হর্করোহ এড়ক: খা।" (শতং গ্রাং ১২।৪।১।৪)
দুর্ব্ণা (ক্লী) হুর্ নিন্দিতং স্বর্ণান্যপেক্ষরা বর্ণং বস্ত । ১ রজত,
রৌপ্য।

২ এলবালুক। (ত্রি)৩ নিল্যবর্ণযুক্ত। "ন তত্র কশ্চিদুর্বরণোব্যাধিতোবাণি দৃশ্রতে।" • (ভারত বন ১৯৬ অং)

৪ খেতৃক্টী, বাহার গারে খেতবর্ণ কুঠরোগ জন্ম। "ত্র্ণ: কুনথী কুটী মারাবী কুগুলোলকৌ।"

( ভারত ধন ১৯৯ আ: )

ছটোবর্ণ: ে ধনিদ্দনীর প্রাদ্ধাদিবর্ণ। "ছর্বর্ণোহন্ত লাড্বাঃ।" (বৈডিং সংহিতা হাহাহাড) ও ছই অক্ষর। ছুর্বর্ত্তু (বি.) ছর বৃ-কর্মণি তুন্। ছর্বার। "ছর্বর্জু: মা ভবতি ভীম:।" ( পাক্ ৪।০৮৮) 'ছর্বর্জু: ছর্বার:' (সারণ) ছুর্ব্স (বি.) ছঃধেনোষাতে হল ছর্-বস বাহং 'আধারেং ধল্। করে বাসবোগ্য, বেধানে বাল করিতে অতিশার কই হর। "অরোদশোহরং সংপ্রাপ্তঃ ক্ট্রাং প্রমহ্র্বসঃ।"

(ভারত বি°১ আং) ফুর্বস্তি (ত্রী) ছংথেঁন বস্তি:। ছংথে অবহিতি, কটে

ष्यवद्यान ।

भ्रत्न।

कुर्वह (बि) इश्रथन উद्युख ब्यानन इत्नेह कर्षि थन्। इश्रथ

क्रिक्त, वाहा ब्याजिन इश्रथ तहन करा वात्र, वहन क्रिड्ड क्षमणा। "ब्याच्यादनानाम्य श्रास्त्रकाणि इर्वहर्ण (त्रृष्)

क्रिक्त, श्रष्टाविष्ठावनीयुख धक्यन व्याजीन नश्युख क्रि।

ছুর্বাচ্ (আই) ছর্দু हो নিশিতা বাক্। > নিশিত বাক্। ছটা বাক্ষত। (অি) ২ নিশাবচনাবিত, নিশানীর বচনবুক্ত। "অতীৰ অলন্ ছুর্কাচো ভবতীহ বিহেটক:।"

(ভারত ২।৭৪।৮৮)

তুর্বাচ্য (ক্লী) নিন্দং বাচ্যং প্রাদিক্ষ। অপবাদ, অকীর্ত্ত।

"ক্রীড়ানিমিন্তং ন শ্রুড়া ছুর্বাচ্যং ন ভবিবাতি।" (রামাণ স্থা)

২ কটে কথনীর, বাহা বিশক্তে অভিশর কট ছর।

তুর্বাদ (পুং) ছটো বাদং প্রাদি সং। ১ অকীর্ত্তি, অপবাদ।

২ স্ততিপূর্বক অপ্রিরবাকা। ৩ নিন্দিত বাকা।

তুর্বাস্ত (ক্লী) ছটং বাস্তং প্রাদিসং। ১ বিধানাতিক্রম বারা বমন,

অনিরমিত বমি। ছাছিতং বাস্তং বস্তা। ২ ছটবমনযুক্তা।

তুর্বার (জি) ছাধেন বার্যাতে হসৌ ছর বারি-ধল। কটে বারণীর,

ত্বার (1এ) হংবেদ বাব্যক্ত হবো হর্বারে বার করিতে অশব্য।
বাহা অভিশব্ন কটে বারণ করা যার, বারণ করিতে অশব্য।
"কিঞান্ত্রার: পাণো পাশ: প্রচেত্র:।" (কুমার্সং)

জুর্বারণ (অি) ছংখেন বারণমক্ত। ১ কটে বারণীয়। (পুং) ২ শিব।

मूर्वाति (कि) इर्फ्ःरथन वातिर्वात्रगः यद्य। करबाल तमीव रवाथरछन।

"এতে তুর্বাররো নাম করোজা যদি তে প্রভা:।", ।
(ভারত ডোগ ১১২ আ:)

ছুর্বারিত (নি) মন্দভাবে নিবারিত বা শাসিত। ছুর্বার্তা (স্ত্রী) ছষ্টা নিন্দিতা বার্তা। ছষ্টবার্তা, মন্দথবর, অপ্রিয়াবেদক বার্তা।

দুর্বার্য্য ( তি ) ছ:থেন বার্যতে হসে ছর্-বারি-গঞ্জ। অভিক্তি বারণীর, সহজে যাহা নিবারণ করা যার না।
তুর্বাসনা ( ত্ত্তী) ছর্দুটা বাসনা। ছট বাসনা, ছম্পুরেচ্ছা, বে
ইচ্ছা পুরণ হইবার নহে। ছর্বাসনাবশে মানবগণ সর্কানট অভিশ্য কট পাইরা থাকে। [বাসনা দেখ,।]

দুর্বাসমৃ (পুং) ছর্দ্ধ ইং নিগ্ঢ়মিতি বাস ইব ধর্মবিরণসং বক্ত।
মুনিবিশেষ । ইহার নামনিফজিন্তনে এইরপ লৈথিত হইং
বাছে, বাহার ধর্মে দৃদ্দিশ্যর আছে, তাহাকে ছর্কাসা কহে।
শিন্তুদিশ্যমং ধর্মে যং তং ছ্রাস্সং বিহাং।

(ভারত অহ ৪৭ অ:)

ছ্র্মানা অতিমুনির পুত্র,' শিবাংশসভ্ত। ইনি অতিলয় কোপনখডাব ছিলেন। ঔর্মমূনির কল্পা কলানীকে
ইনি বিবাহ করেন। বিবাহ সময়ে এইরপ প্রতিজ্ঞা করিরা
ছিলেন, বে গন্ধীর শত অপরাধ মার্জনা করিবেন। ভদমুনারে ইনিশত অপরাধের পর পত্নীকে শীপ ধারা ভন্ম করেন।
ঔর্ম কলাশোকাভুরা হইরা ইহাকে 'হত দর্প হইবে' এই

विना अखिनान थानान करतन। उनक्तारत हैनि महातान अप्रतीद्यत निक्रे रू छम्प रन। अकृषा देनि सम्बन्ध कतिएड ক্রিতে কোন অপ্যরা-হন্তে এক ছড়া সন্তানক পুশামানা দুৰ্শন করিয়া ভাহার নিকট ভিক্ষা করিয়া পুন ি ঐ মালা ঐরাবত মন্তকে রক্ষা করিলে ঐরাবত ঐ মালা ভূতলে কৈলিয়া দেয়। এই জন্ম হ্রাসা কুপিত হইয়া ইক্সকে শাপ দেন, ইক্স এই শাপে এতিই হন। ইতারই শাপে শকুত্তলা ছমত কর্তৃক পরিতাক্ত হন। ইনি কুন্তীভোজগৃহে কুন্তীর পরিচর্যায় তুষ্ট হইয়া তাঁহাকে যে মহামন্ত্র প্রদান করেন, তৎপ্রভাবেই পাঞ্চব-গণের জন্ম হয়। ইনি রাধিকাকে প্রকৃতি জানিয়া ব্যভান্থ রাজার নিকট অনেক প্রশংসা করেন। পরে খেতকি রাজার দীর্ঘ-সত্রৈ যাজন ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়াছিলেন।

"ফুর্ফোধনের প্রতি সন্তুষ্ট্ হুইয়া কাম্যকবনে দ্রৌপনীর ভোজনের পর ভোজন করিতে গিয়াছিলেন। একদা ভ্রমণ করিতে করিতে শ্রীক্বঞ্চের আতিথা গ্রহণ করেন।

ছুর্বাসা উন্মন্তবং ছিগোন, এজন্ত কথন কোন কার্যোর ব্যবস্থাছিল না। কোন দিন বহুলোকের ভোজন ভোজন করিতেন, কোন দিন অল্পমাত্র ভক্ষ্য ভোজন করিয়াই ভোজন সমাপ্ত করিতেন। একদিন ইনি উভপ্ত পায়স ভোজন করিতে করিতে শ্রীক্বঞকে কহিলেন, এই পায়স স্র্রাকে লেপন কর। ক্লফ তৎক্ষণাৎ তাহাই করিলেন। কেবল ব্রাহ্মণের প্রতি ভক্তিবশতঃ পদতলে পায়স লেপন করিলেন না। তথন হর্কাসা রু জ্বীর দেহে পায়স লেপন করিয়া তাহাকে রুরেথ ঘোজনা করিয়া সেই রূথে আরোহণপূর্ব্বক কুক্মিণীকে কশাঘাত করিতে লাগিলেন। কুক্মিণী যথাশজি त्रथ व्याकर्षन कतिया यथन क्रास्त इहेरलन, उथन्दुइसीमा क्रुक হইয়ারথ হইতে অবতারণ করিলেন এবং দক্ষিণাভিমুথে প্রস্থানোক্তত হুইল্লেন। পরে এক্রিঞ্চ ইহাকে সন্তঃ করিলে ইনি বলিয়াছিলেন, তুমি ক্রোধজিৎ; আমার বরে তুমি ও কৃক্মিণী সর্ক্রলোকের প্রিয় হইবে। তুমি পদতলে পায়স লেপন কর[•]নাই, ভাহাতে আমি বড়ুই অগ্রীত হইয়ছি। যাহা হউক, পদতল ব্যতীত তোমার সর্বদেহ অভেদঃ হইল। ইহারই শাপে শাঘৰত্বংশনাশক মুসল প্রস্ব করিব্লাছিলেন, তাহাতেই যুদুবংশ ধ্বংস হয় ৷ (ভারত, ব্রশ্ধবৈ , ভাগবত)

২ আর্য্যাদিশভূা, দেবীমহিমন্তোত্ত, পরশিবমহিমন্তোত্ত্ব, লণিতান্তবরত্ন ও স্বল্বীমহিমা নামক সংস্কৃত গ্রন্থ-রচমিতা। দুর্বাহিত ( ক্লী) হুর্বহ, সহজে যাহা বহন করা যায় না। দূর্বিকথন ( অ ) ক্রেংশে বা দন্তে গর্ক করা। তুর্বিগাছ ( অ ) হর্দু:থেন বিপাহতে হর বি-পাহ কর্মণি খুল ।

' ছবিনাড অতি কণ্টে গাহনীর, ছরবগাহ। (পুং) ২ ধৃতরাষ্ট্রের _{পুত} ভেদ। (ভারত ১।১১৭।৫ ) তুর্বিগাহ্য (ত্রি) হংবেন বিপা**হতে** হর বি-গাহ শাং। হরি গাহনীর। দ্র্বিচিন্তা ( ত্রি ) হংবেন বিচিন্তাতে হর্-বি-চিন্তি-বং । সহবে যাহ। চিন্তা করা যায় না, চিন্তার অসাধ্য । তুর্বিচেষ্ট ( ত্রি ) হর্দ,ংখেন বিচেষ্টাডে চুন্-বি-চেষ্ট-খল । ছর্। বহার, চেষ্টার অসাধ্য। তুর্বিজ্ঞান (क्रो) হর্দু: থেন বিক্লারতে হর-বি-জ্ঞা-বৃচ্। এজের অতি কটে জের, যাহা অতিকটে জানা যার। • ু "বনেষু চ বিহুটভাবং ভৃতীয়ং ভাগমায়ুম:।" (মন্থ ৬।৩৩) 'আয়ুষভৃতীয়ভাগভা হবিজ্ঞানাং।' (কুলুক) তুর্বিতর্ক ( অ ) হর্দ থেন বিতর্কাতে হর্-বি-তর্ক-ধল। তর্কের অসাধ্য। "দৈবেন ছবিতকেনি পরেণানিমিষেণ চ। জাতক্ষোভান্তগৰতো মহানাদীদ্গুণত্রমং ॥" (ভাগ॰ এং ।।১২) তুর্বিতর্ক্য (অ) হর্বিতর্ক্যং। সহজে যাহা তর্ক করিয়া व्हित्र कत्रा यात्र ना। "স্নিশায় পুরস্তিভো হেমী রৌপ্যাস্মীর্বিভূ:। তুল ক্ষ্যাপায়সংযোগা ত্বিভক্যপরিচ্ছন। ॥" (ভাগ॰ ৭।১১।৫৪) তুর্বিদ ( অ ) ১ হজের। ২ সহজে যাহা জানা যার না। তুর্বিদ্যা ( অ ) ছটো বিদশ্ব প্রাদিস । গর্নিত, অহঙারী। "অनोक्द्रशङ्बिमग्रः शक्ष्यसः।'' (कामभन्नी) ছুর্বিদত্ত ( জি ) বিদ-লাভে বিদ-জানে বা বাছ॰ অজ, বিজজঃ লভাংধনংজ্ঞানংবা প্রাদি সং। > ছর্ধনক । ২ ফুর্জানক । "আ (त मलाः ছर्विमञ्ज धीमिष्" ( अक् > ।।००।।। "ছর্বিদত্তা নিখু তির্ন" (ঋক্ ১০।৩৬।২) চুর্বিদ্য ( তি ) ছবিদ-বং। অজ্ঞ, অশিকিত। छूर्विच्नम् ( वि ) क्मना, व्यन्थ । তুর্বিধ্, ত্রি) ছহাবিধা অভা ১ দরিজা। ২ খল। ৩ মূর্ব। "भाष्यचरत्रम् क्षिया विश्वमात्नम् इर्विषाः। বৃদ্ধিৰাৰীক্ষকীং প্ৰাপ্য নির্ধান্ প্ৰবদন্তি তে ॥' ( द्रामात्रव २।२०२।००) मूर्विधि ( ११ ) इंडेः विधिः । ३ इंडीगा । १ इतिवृत्त । দুবিনয় (পঃ) ছর্-বি-নী ভাবে অচ্। বিনয় রাহিজা। पूर्विनी छ (बि) इन्दिनी क्षंति छ। विनश्ण, व्यक्तिक,

উদ্ধন্ত, কুব্যবহারী। "কুপুতোহণি ভবেৎ পুংসাহজুদরা**নদকারকঃ।** ছবিনীতঃ কুরপোহপি মুর্থাহপি ব্যসনী থলঃ ॥" (পঞ্চর ৪০০৭) অশিক্ষিত অখ, জিরাং জাভিরাৎ তীয়।
তুর্বিনীতি (জী) হর-বি-নী ভাবে জিন্। বিনয়রাহিত্য।
তুর্বিপাক (পুঃ) হটা বিপাকা। মন্দ পরিণাম, ছর্ঘটনা।
তিবেহুর্বিপাকালগলিতনীয়নঃ। (হিতোপাণ)

° দুর্বিভাগ (পুং) ছটো বিভাগ: আদিস । মক বিভাগ, সুহজে
বাহা বিভাগ করা বায় না।

দুর্বিভাব্য (জি) ছুর্দুংখেন বিভাবাতে হর-বি-ভূ-ণাং। ছর্বোধ, বাহা হুদুর্ঘদ্ম হয় মা।

দুর্বিভাষ ( क्री ) ছষ্টা বিভাষী মন। ছুর্বাচ্য।

শীর্বিভাবং ভাষিতং খাদৃশেন" (ভারত ২।২১৪৭)
দুর্বিমোচন (জি) ছংখেন বিমোচনং ষক্ত। অতি কঠে
মোচনীয়। (পুঁং) খৃতরাষ্ট্রের পুঁজভেদ। (ভারত ১।১১৭ আঃ)
ছবিমোচন স্থলে ছবিরোচন এইরূপ পাঠান্তর্ভ দেখা যায়।
ছুর্বিলাসিত (ক্লী) ছইং বিশসিতং। ছফার্য্য।

কুবিলাস্ত (ক্না) হটং বিশসিতং। হুদার্য।

দুর্বিবক্তৃ (পুং) হটঃ বিবক্তা। মন্দবক্তা, যেঁথান্দভাবে উন্তর দেয়।

দুর্বিবাক্ (পুং) হুটি নিন্দতা । বিবাহ:। আহ্বর প্রভৃতি চারি

প্রকার বিবাহ। আদ্ধ প্রভৃতি চারি প্রকার বিবাহে গুণবান্
প্রকারে, এই কারণে উক্ত চারি প্রকার বিবাহ হুবিবাহ,

ভার আহ্বর প্রভৃতি চারি প্রকার বিবাহে ত্রহ্মারেই। ও
ধর্মবেই। পুত্র হয়,—এই জন্ত ইহাকে হুবিবাহ বলে, এইরূপ
বিবাহ পরিত্যক্তা। নিন্দিতা ত্রী বিবাহ করিলে নিন্দিত

সন্তান হয়, তাহাও হুবিবাহ।

"বান্ধাদিষু বিবাহেষু চতুদে বাহুপূর্বল:। বন্ধবর্চষিন: পুতা জায়ন্তে শিষ্টদক্ষতা:॥ ইতরেষুক্তু শিষ্টেষু নৃশংসান্তবাদিন:। ভায়ন্তে ছবিবাহেষু বন্ধান্দিরি: স্থতা:॥ অনিন্দিটেত: জীবিবাহৈরনিন্দ্যা ভবতি প্রস্থা। নিন্দিটেতনিন্দিতা নৃগাং তত্মান্নিন্দ্যান্ বিবর্জমেৎ॥"

( মৃত্ব ৩।৩৯-৪২ )

দুর্বিষ (পুং) ছঃছিতো বিষো যন্ত। বিষক্ষত বিকারশৃত্য
শিব, মহাদেব, সমুক্ত মন্থনুকালে মহাদেব বিষপান করিলে
কিছুমাত্র বিশক্তিয়া হয় নাই, এই অভ মহাদেবের নাম
'ছবিয়' হইয়াছে।

দূর্বিষ্ঠ (অনু) ছঃধেন বিষ্কতেত্তো ছর্-বি-স্ত কর্মণি ধৃস্।
১ অভিশ্য ছঃধে শৃত্নীয়। ২ অস্ত !

"দৈখা ছবিষহা মারা দেবৈরপি ছবাসদা।" (হরিবংশ ৪৬ আ:)
(পং) ও শিব। ৪ খৃতরাষ্ট্রের পূত্তেদ। (ভারত১।১৮৬ আ:)
দূর্বিষহা ( জি ) ছংথেন বিষহাতে কি-সহ-বং। অভিশন্ন ছংথে
সহনীয়।

দুর্ভ (রী) ছটং বৃতং প্রাদি সং। ১ নিশিত আচনণ, থারাপ বাবহার। ছাহিতং বৃত্তং বৃত্তং বৃত্তঃ হুরত্ত, অবাধ্য, উত্ততঃ

"ছর্তবৃত্ত শ্লমনং তব দেবি ! শীলম্" (দেবী বাহান্মা) ° দুর্ক্তি (ত্রী) ছষ্টা বৃত্তিঃ। মন্দ ব্যবহার, নিন্দিত আচরণ। হশ্চরিত্র, ফুর্জনতা।

দুর্বেদ (ত্রি) হৃংধেন বিহতে কভাতেংসৌ হর্-বিদ্-লাতে কর্মণি ধল্। অভিশন্ন কঠে কভা, যাহা অতি হৃংধে লাভ হয়। "যে এব কে চ মাক্ষতাৌ ভাতাং হুর্বেদে এব বলা পৃদ্ধি-র্যদি বলাং পৃদ্ধিং ন বিন্দেদণি" (শতপথবাং ৫।১।৩৩) হুক্পংসলো বেদো যন্ত। (ত্রি) ২ বেদপঠিরহিত, যে ব্রাহ্মণ বেদপাঠ করে লা।

"ছর্বেদা বা অবেদা বা আফ্রভা: সংক্ষতান্তবা। বান্ধবা নাব্যস্তব্যা ভন্নাভ্না ইবাগন: ॥" (ভারত ৩:১৯৯ আ:) দুর্ব্যবস্থাপক (পুং) ছটো ব্যবস্থাপক:। ছট ব্যবস্থাপক, বিনি মন্দভাবে ব্যবস্থা করেন।

"উপচারে।জিদারল।ছেলহারিডবেতনঃ।

সেহিং জহাক্তপূৰ্ণারে হুর্ব্যবিদ্ধাপকস্ত তে ॥" (রাজতে ৬।০৪)
দুর্ব্যবস্থার (পুং) হুর্দুটোব্যবহার: । ১ রাগ ও লোভাদি শারা
অসম্যক্ নির্ণীত ব্যবহার, প্রকৃত বিধি দ্বির হুইয়া সম্যক্
রূপে জানিতে হুইবে, কিন্তু যে হুলে রাগ বা লোভাদিতে
ব্যবহার অসম্যক্রপে নির্ণীত হয়, তাহাই হুর্ব্যবহার প্রভাচ্য।
২ মন্দ্ আচর্ব, ধারাপ,ব্যবহার।

দুৰ্ব্যাহ্যত (অি) ছটং ব্যবহৃতং প্ৰাদি সণ। মলক্ষিত, মল কথাৰলা।

"ন মে ধ্বানিতং কিঞ্চিনাপি মে গুরস্ঞিতং।
গল্পণ রাঘব প্রাতা বস্থাদ্জ্ব ইহাগতঃ ॥' (রামাণ ৪।৩২।৩)
দুর্ত্র ক্রিন্ত (ক্রী) গহিতং ব্রন্ধিতং প্রাদি সং । নিন্দিত গতি।
"হ্ব্যানিতাদ্ভিদ্দানা হঃস্থিতা হরবেন্বিতাং।
হ্রাসিতাদ্ হ্র ক্রিতাদিকিতাধ্যাসিতাদপি॥"(ভারুত ৩)২৩২ অঃ)
দর্ত্র ত্র (ব্রি) হুইং ব্রতং। ক্রাধ্য, হুর্নীত।

দুইণ ( অ ) হংথেন আহন্ততে হসো আ-হন-কৰ্মণ থল্। হনন
করিতে অপক্য, হংৰে হননীয়, যাহা অভি কটে হনন করা
যায়। বেদে তুণজং। বৈদিক প্রয়োগে 'হ্ইন' দত্তানকারাত্ত
গোকিক প্রয়োগে গত্ত হইবে না, তথন 'হুইন' দত্তানকারাত্ত
থাকিবে। উদাহরণ—

"প্রকর্তিতি চ'তভার্থো নিকুন্তে ছর্কুনে হতে।'' (ভট্টি)
এই লৌকিক প্রয়োগে 'গড়' হইল না, কিন্ত বৈদিক
প্রকরণে "নিক্তি ছ'র্কণা ব্যীৎ।" ( ঋক্ ১০৮৮৬) পদ হইল।

हुई गोत्रू (बि) इंडेर इननिमक्छि कार्, इईनांत्र छन्, त्वरम णकः। इंडेस्नटनष्ट् । "खियः यम्धर्रभाय्वरः" ( अक् 81001b) ' জুঁহণাযুবং হুটহননমিছে জীং।' (সারণ) ছান্দস উবঙ্। তুর্হণাবৎ ( অ ) ছইণাবিছতে ২ভ ছইণা বছুণ্ মভাব:। সাংঘাতিক।

দুৰ্বপু(অি) ছংছোহত্যজ আংদি বছ বা ছব হন উন্। ১ इः त्वं इननीम। २ इहे .इस्यूकः। "उनात्रज्य इई त्ना।" ( ঋক্ ১০।১৫৫।৩) লৌকিক প্রায়োগে ছর্হনু অণত হইবে, ইহার অর্থ হট্টহমুক্ত।

मुर्दल [लि] (खि) इत्हो हिनद्रज्ञ । अस् नमा । समा हेनसू<del>खा</del>। দুইদ্দি ( ত্রি ) হুরাচরিত।

দুহিতু (অি) নিলিতো হিতঃ প্রাদি সং। শক্ত, অমিতা। "ন `হুৰ্ছিতঃ স্থাদত্তো ন পাপয়া।" (থক্ ৮/১৯/২৬)

দৃত্ ত (क्री) নিন্দিতং হতং। নিন্দিত হোম, অফলজনক হৈ।মকাৰ্য্য।

"मरेनव याहमारनय् उथा मञ्जीवारत्र् ह।

এতেষু দক্ষিণা দত্তা দাবাথাবিব হহু তিং ॥" (ভারত শা॰ ১৮ অঃ) দূহ পাযু (অি) হ'ইং হণীয়তে কুখাতি লজ্জতে বা ছব্হণী क्ण्यामिष्ट्रार यक् खटला छेन् ब्याझानयरनारनी नृरमा नाधुः ণ স্ক্রকারস্তাকারঃ। ১ হৃষ্ট ক্রোধন, হৃষ্টস্তাবে ক্রোধযুক্ত। ২ চৃষ্ট ভাবে লজ্জমান। 'হৃহ'ণায়্তিরশিচত্তানি বসবো লিখাংসতি।" ( ঋক্ ৭।৫৯।৮ ) 'ছ্ছ্ পায়্রশোভনং কুধান্ '

তুর্দ্ ( তি ) হৃদ্ हैং হদরং বন্ত (স্কুদ স্ক্ দেই নিতামিত্রোঃ। পা ৫।৪।১৫•) ইতি নিপাতনাৎ হাদয়ভ হাদ্ভাব:। শক্ত, অমিতা। হংস্থিতং হৃদক্ত প্রাদিবণ। ২ গ্রংস্থিত হৃদয়। "অশ্যসারময়ং ন্নং হালয়ং মম ত্রুলিং।" (ভা॰ বন॰ ১১২ জাঃ) তুক্ দয় ( অি ) ছ: খং হৃদয়ং যক্ত প্রাদি॰ বছ ৷ ১ ছ্টান্ড:করণ-

युक्त । इंडेर इज़न्नरेर । (क्री) २ इंडे अन्तरः कत्रण । य ऋता भक्त ख মিতা না বুঝার, সেই ভূলে জালয় শকা ভানে জাল আনেশ হয় 'না। শত্রুওমিতা বুঝাইতে ছর্ওছ পূর্কক হাদর শক ভানে হক্ আনেশ হয়∉ এই জস্ত "হছ দয়" এই ভবে হদ আদেশ হইল না ৷

पूर्श्योक (णि) पृष्टुं: क्योंकः यष्टा प्रवंतिवित्र, यादात्र हेक्तिय मक्न इक्न ।

তুল্ (দেশজ) কণাভরণ বিশেষ।

छूली (जो ) > देहेका (छम । २ त्मांना ।

তুলাই, > পাৰ্কভীয় অিপ্ৰারাকো প্রবাহিত মহনদী হইতে নির্গত একটা উপনদী। ২ ত্রিপুরাজেলার অন্তর্গত একটা পর্গণা।

তুলারভট্টাচার্য্য, প্রাসদ্ধ ভারপ্রহ গাদাধরীর জ্বোড় নাম্ক টীকা রচম্বিতা।

छुल्।ल ( (तमक ) > (ध्येम, अस्त्रांग। २ थित्र, मानाकः। তুলালটাপা (দেশজ) এক প্রকার স্বন্ধর পুশর্ক। চুলি (পুং) জ্ল-কি। ১ মুনিভেদ। ফুলিচা ( দেশজ ) আসন বিশেষ।

তুলিয়া (দেশজ) বর্ণশঙ্কর জ্বাতিবিশেষ, ইহারা নীচলাতি, শিবিকা'বা ভার বহন করিয়া জীবন ধারণ করে।

ফুলিডুছ (পুং) দিলীপ বাজার পিতা, অনমিত্তের প্তঞ "( হরিবংশ ১৫ অণ)

ছুলোল, হজিকণামৃত ধৃত একজন কৰি। তুল্ল ( অ ) ছ-কিপ্ছতং লগতি লল-অচ্। ় রোমণ।

তুল্লানবাব, একজন বিখাত সাধু। ১৭৫৪ শকে ক্লিকা তার নিকটবর্ত্তী শিবপুর হইতে ভূকৈলানে আনীত হন। তথন ইনি সমাধিষ্থ ছিলেন ৮, অনেক বাঙ্গালী ও সাহেব ইহার ধ্যানভক্ষের চেষ্টা করেন। ইহার নাসিকার নিকট আমোনিয়া প্রয়োগ করিয়াও সহজে কেই ইহার ধানভদ করিতে পারেন নাই।

কতদিন তিনি সমাধিষ ছিলেন, তাহার হিরতা নাই। এ সময়ে তিনি কিছুই আহারাদি করিতেন না। অনেক কটে প্রথমতঃ কএক ফোঁটা হ্র গ্লাধঃকরণ করা হয়। ধার হউক সাধারণের উত্তেজনায় কিছুদিন পরেই তাঁহার ধান **जल हरेन। ४।१ मिन्न (**हिंदात्र शत्र जिनि इरे धक्ती न्धा কহিয়ছিলেন। তাঁহার নাম জিজ্ঞাসা কৃষিলে ডিনি 'হল্লানবাব' বলেন। ১ েহ কেহ তাঁহাকে পঞ্জাবী বলিয়া অহ মান করেন। বৈধন তিনি সমাধিত ছিলেন, তথন তাঁহার তথ কাঞ্চনের মত উজ্জল বর্ণ ছিল, কিন্তু ধ্যানভলের পর তাঁহার সে মুখনী ও শরীরের স্বোতিঃ অন্তর্হিত হয়। ১৭৫৫ শকে উপীর ভক ইইয়া তাঁহার মৃত্যু হয়।

সমাধিকালে যোগিগণ যে মহা শ্বচ্ছন্দ ভোগ করেন এবং এই ছিদিনের সময়ও যে ভারতে সিদ্ধ যোগীর অভাব নাই, এই সাধু তাহার নিদর্শন।

সুস্থ, তিব্বতে বৌৰ্দিগের, বিনরশাল্প ছব নামে পরিচিত। তুল্হী, অন্যাধা। প্রদেশের ধেরিজেলার অন্তর্গত একট নগর। চৌকানদীর ২ ক্রোশ উত্তরপুর্কে অবিহিত। ^{সুর্কে} এখানে গ্রামের জমিদারের বৃহৎ বাটা ছিল। সিপাহী^{বিরো} হের সময় বাজেয়াপ্ত হয় 🛦

(বী) চবস পরিরক্ষণে কঙা বক্ছবস্থ কিশ্ ^{বরোপ}

ৰলোপোভাব:। > হবি:। ২ পরিচরণ। "এভিরখে ছবো। গিরো বিশেভি:।" ( ঋক্ ১১১৮)

দুবস্তা ( ত্রি ) ছবজ শক্যার্থে যৎ অলোপ্যলোপে। পরি-চর্ঘার্হ। "আ বদ ছবজাদ ছুবসে ন কারু:।" (ঋক্ ১।৬৫।১৪) 'ছবজাৎ পরিচর্ঘার্হাৎ ছবসে পরিচরণায়।' (সারণ)

ছুব্সুত্ত ( জি ) ছব: পরিচরণমিচ্ছতি কাচ্ ডভো উন্। পরি-চরণেজাযুক্ত। "গোক্তৃর্বতি পর্যাগ্রং ছবস্থা:।" ( ঋক্ ১০। ১০০।১২) বেদে কচিদন্ত জিরামুবঙ্।

দুব্বক্ত (কি ) ছবো হবিঃ গুরিচরণুং ৰাস্তাভ মতুপ্মভাৰঃ সাক্তৰাং দ পদকার্যং। ১ হবিযুক্ত । ২ পরিচরণযুক্ত । "অবহারসি ছবভান্" (ভক্ল যকুং এ০২)

म्राया (को) भूका। (देव)

দুবোয়ু( অ ) ছবং পরিচর্য্যা মিছেতি কাচি বেদ্ধে বা পদকার্যাং
ততো উন্। পরিচরণেচছু। "স তু শ্রুধি শ্রুত্যা বো ছবোমুং"
( ধক্ ৬০৬।৫ ) 'ছবোয়ুরস্বদীয়ং পরিচরণমাত্মন ইছেন্'
( সায়ণ )

দুশ্চর ( ত্রি ) ছু:থেন চর্যাতেংসৌ ছর্-চর কর্মণি থল। যাহা আচরণ করা কঠিন, অতি কটে আচরণীয়।

"চরতঃ কিল হুশচরুং তপঃ" (রঘু) ২ হুর্গম। হুংধেন হুটংবাচরতি চর-আচ্। ৩ শমূক । ৪ ভলুক ।

দুশ্চরত্ব (ক্লী) হশ্চরস্থ ভাবঃ ছ। হশ্চরের ভাব, হশ্চরতা। দুশ্চরিত (ক্লী) হটং চরিতং প্রাদি স'। হঙ্কত, পাপ, হস্মভাব, মুন্দ চরিত্র।

"ইহ হৃশ্চরিতৈঃ কেচিৎ কেচিৎ পূর্বাকৃতিতত্তথা।

व्याश्र वैश्वि ছ्वाञ्चात्ना नत्रा क्रश्तिर्गग्रहः।" ( मञ्ज, ১১।৪৮ )

বাপু বাস্তু ছ্রাত্মানো নরা ক্লাবপ্যারং।" (মন্তু, ১১।৪৮)
ইহলনের বা পূর্বলনের ছণ্চরিত্র ছারা মন্ত্র কুটী,
কুনণী প্রভৃতি ক্লণবিপর্যার প্রাপ্ত হয়, অর্থাৎ পাপ অনুষ্ঠান
করিলে ভাহার ফল রোগভোগ অবস্তুই করিতে হয়। যথা—
ব্রথা মহাত্ত্রণ প্রোপ্য ক্লিপ্তং লোট্রং নিমজ্জতি।

তথা ছণ্চরিতং সর্কাং বেদে তির্তিমজ্জতি ॥ ( মহ ১৯।২৬৪)
বেরপ মহাইদে লোই নিঃক্ষেপ করিলে তাহা নিমগ্ন হর,
সেইরপ সকল ছণ্চরিত বেদে নিমগ্ন হর, অর্থাৎ বেদপাঠ ও
বেরদাক ক্রিরাক্লাণ অন্তান করিলে ছণ্চরিত সকল বিনষ্ট
হর। যাহারা যথাবিহিত ব্রেদপাঠ ও বৈদিক ক্রিয়ার অন্তচান করেন, তাহাদের পাপে আর মতি হয় না,০এবং পূর্ককত
পাপ সকল বিনষ্ট হয়। ( তি ) ছংথেন চরিতং। ২ অভিকটে
কত, ছংথে আচরণীয়। ছইঃ চাঞ্চিং যত প্রাদিবছং।
০ ছল্ডরির, যাহার স্বভাব সক্ষ্ত প্রকৃতি।

**দুশ্চরিতিন্ ( জি** ) ছরাচার।

সুশ্চরিত্রে (জি) ছনিন্দিতং চরিত্রং বস্ত। মন্দচরিত্র, কুম্মজার।
দুশ্চম্মন্ প্রি:) ছইং চর্মং যক্ত। অনারত মেচু, বাহার মেচুের
অগ্রভাগ চর্ম আছোদিত থাকে না। পর্যায়—হিনমক, কও,
শিশিবিষ্ট। (হেম॰) শুরুপদ্ধী হরণ করিলে হৃদ্দর্মা, হর,
ইংগ মহাপাতকের চিক্ত। "হৃদ্দর্মাশুরুতরগঃ।" (মৃতি)

ছশ্চশা ব্যক্তি প্রায়শ্চিতামুঠান না করিলে তাহার কোন ধর্ম কর্ম করিবার অধিকার থাকে না এবং এই অবস্থার মৃত হইলে তাহার প্রায়শ্চিত্ত না করিয়া দাহাদি করিতে নাই। [মহাপাতক দেখ।]

দুশ্চারিত্র (ক্লী) চরিত্রমের স্বার্থে অণ্ চারিত্রং ছুইং
চারিত্রং। ১ ছুইচরিত্র, পাপ। ছুঃস্থিতং চারিত্রমন্ত। ২ ছুই
চরিত্রযুক্তা, যাহার স্বভার অতিশয় মন্দ।

দুশ্চিকিৎস (অি) ছর্-ট্রিকংস-ধল্। অচিকিংস, যাহার চিকিৎসা ছঃসাধা।

"অহুশ্চিকিৎসন্থ ভবন্ত মৃত্যোভিষক্তনং দ্বান্ত গভিং গভাঃ ম।" (ভাগবভ ৪।৩•।৩৮) 'স্তৃশ্চিকিৎসন্থ অভ্যন্তং অচিকিৎসম্থ ভবন্থ ধন্মনো' (শ্ৰীধরদানী)

দু শিচ্ কিৎ সা ( স্ত্রী ) ছর্নিন্দিতা চিকিৎসা। নিন্দিত চিকিৎসা, অন্তায়রূপে চিকিৎসা। ভিষণ্গণ এইরূপে গো পণ্ড প্রভৃতিকে চিকিৎসা করিলে উত্তম সাহস দণ্ড এবং মীমুষের প্রতি করিলে মধ্যম সাহস দণ্ড হইবে।

"চিকিৎসকানাং সর্কেষাং মিথ্যা প্রচরভাং দম:।

অমাহবেৰু, প্রথমঃ মাহবেৰু তুমধামঃ ॥" (মহ॰ ৯।২৮৪)

'সর্ফোরাং কায়শন্যাদিভিষজাং ছশ্চিকিৎসাং কুর্স্নভাং দণ্ডঃ কর্ত্তব্যঃ' (কুরুক)

দুশ্চিকিৎ নিত ( ঝি ) ছশ্চিকিৎস-জ্ঞা। আচিকিৎসনীয়, বে ব্যাধির প্রতিবিধান করা যায় না, বে গ্রামে ছশ্চিকিৎসিত ব্যাধি পীড়িত বছলোকের বাস, সেই 'গ্রামে বাস করিতে নাই।

"নাধার্ম্মিকে বসেদ্গ্রামে ন ব্যাধিবছলে ভূশং।" (মহ ৪।৬ঃ)
'যত্র ভূশ্চিকিৎক্লিত ব্যাধিপীড়িতা বহবো জনাঃ তত্র বাসো ন যুক্তঃ।' (কুলুক)

দুশ্চিকিৎস্থা ( জি ) হর্-কিত স্বার্থে দন্, হুংথেন চিকিৎস্থাতে হর্-চিকিৎস কর্মণি যং । অভি হুংথে চিকিৎস্ক্রীয়, প্রতিকার্ধ্য , রোগ, যে রোগ কট্টসাধ্য, কিন্তু আল করিরা চিক্তিৎসা করিলে আরোগ্য হয়। [রোগ দেখ।]

দৃশ্চিক্য (ক্লী) শগ্ন হইতে তৃতীয়রাশি।

্শত্রিত্রিকোণঞ্চ নববং ছন্চিক্যং ভাৎ পৃতীয়কঃ।" (জ্যোতিগুর) কুদিচ্ছ ( ত্রি ) ছন্টিস্থা, মল ভাবা। তুশ্চিস্তা (জী) ক্চিস্তা, মন্দ,ভাবনা।

দুশ্চিস্তা (জি) হুংথেন চিস্তাতে চিস্তি কর্মণি খং। অতি
হুংথে চিস্তনীয়, যাহা চিস্তা করা অভিশয় কুইকর।

দুশ্চেম্তিত (ক্লী) হুর্নিন্দিতং চেষ্টিতং। ১ নিন্দিত চেষ্টিত, মন্দ
চিষ্টা। ২ মন্দকার্যা।

দুশ্চ্যবন (পুং) জঃসহং চ্যবনং চালনমশু, বা ছর্দ্দুইশ্চাবনঃ
শিবোষভ জ্র্-চ্যু-ল্যু। ইক্স্যু-শ্যুৎকারেণ জ্শ্চাবনেন ধৃষ্ণনা।"
(ঋক্ ১০।১•২।২) 'জ্শ্চাবনেন অতৈগ্রবিচাল্যেন' (সারণ)

ইন্দ্র বছকাল স্বর্গ রাজ্য ভোগ করিয়া নিজ স্থান হইতে
চুত্ত হন, এই জন্ম ইহার নাম ছণ্চাবন হইয়াছে। এক এক
মস্বস্তরে চতুর্দশ ইন্দ্র হয়, কিঞ্চিদ্ধিক পাঁচহাজার যুগ এক
এক ইন্দ্র নিজপদ ভোগ করে। ,কয়ভেদে প্রত্যেক ইন্দ্রের
নাম বিভিন্ন। [ইন্দ্র দেখ।] ( ( বি ) ২ স্মবিচাল্য।
দুশ্চ্যাব ( বি ) ছংখেন চ্যাব্যতে হসৌ ছর্-চু-পিচ্ কর্মণি থল্।
১ অতি কঠে চ্যাবনীয়, মাহাকে অতি কঠে চ্যাবিত করা
বায়। ( পুং ) ২ মহাদেব।

"হুশ্চ্যাবশ্চ্যবনোঞ্চেতা হস্তা ব্রহ্মবিষাং হর:।" '

(ভারত কর্ণ ৩৪ আ:)

দুশ্জাব (ক্নী) ছ:বেন শ্রমতে হসৌ ছর্ শ্র-এল। শ্রতি-হ:থাবহ পর্যবর্ণযুক্ত কাব্যদোবভেদ, যে সকল স্থলে শব্দ বিভাস শুনিতে অতি কঠোর হয়, সেই স্থলে এই দোব হয়।

"ছ:শ্রং ত্রিবিধা শ্রীলাস্টিভার্পপ্রযুক্ততা।" (সাহিত্যদ গাওে৪)

'পর্যবর্ণতয়া শ্রতিছ:থাবহুদং ছ:শ্রবুদ্ধ ( সাহিত্যদ )
উদাহরণ---

"কার্তার্থং যাতু তয়দী কদানন্দবশং বদাণ" ( সাহিত্যদ )
চন্দ্রালোকে ইহা শ্রতিকটুদোষ এইরপ নিথিত হইরাছে।
"ভবেচছু তিকটুর্বণ: শ্রবণোবেজনে পটু:॥" ( চন্দ্রালোক )
শ্রবণের উব্লেশনে পটু বর্ণ হইলে শ্রতিকটুদোষ হয়।
দুক্ষর ( তি ) হুংথেন ক্রিয়তে হর্ক কর্মণি থল্। অতিশয়
হুংথে করণীয়, যাহা করা অতিশয় কইকর।

"অপি যং স্করং কর্ম ভদপ্যেকের তত্ত্ত্ ।" (মহ)

(क्री) २ जाकाम। ज्ञादि थल। ० इः द्व क्रवन।

प्रक्रत प्रिं। (ज्ञी) एक्रव क्रवन क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन क्रवन व्याप्त क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन व्याप्त क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन व्याप्त क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन क्रवन।

प्रक्रत (ज्ञि) एक्रव क्रवन क्रवन।

प्रक्रत क्रवन व्याप्त व्याप्त क्रवन क्र

তুক্ষলেবর (পুং ক্লী) ছষ্টং নিন্দিতং কলেবরং। ১ কুৎসিও কলেবর।
"শক্তে বিহান্ কুকলেবরাত্যরাদ্ বক্তঞ্চ ক্ষম এব
কেবলং।" (ভাগ ৫ । ১৯ । ১৫) 'কুৎসিতক্ত কলেবর্ম্ব অত্যয়াৎ' (শ্রীধরন্বামী) ২ ব্যাধিময় দেহ।

দুক্ষাল (পুং) ছষ্টঃ কালঃ প্রাদি দং। > নিন্দিত কর্মান, বে কার্য্যের জন্ত যে কাল বিহিত হইরাছে, সেই কার্য্য সেই কাল অভিক্রম করিয়া অন্ত সময়ে করিলে কালের ছষ্ট্র হয়। ছংসহং কালো কলনমন্ত। ২ মহাদেব। (ভারত শাং ২৮৬) দুক্ষীর্ত্তি (তি) ছষ্টা কীর্ত্তির্তা। ছষ্টা কীর্ত্তি। ছষ্টা কীর্ত্তি।

দুস্কুল (ক্লী) হৃষ্টং কুলং প্রাদি সং। নিন্দিত কুল। "অন্ত্যাদপি পরং ধর্মং জীরত্বং হৃষ্কুলাদপি।" (মন্ত্)

নিনিতৃকুল হইতেও জীগ্রহণ করিতে পারা বাঁর। হু:ছু: কুলং যন্ত। (ত্রি) ২ নিনিত কুলজাত।

"মদমূর্থতাভিমানা ছেদ্লৈ তৈশ্চর্ঘ্য সংযুক্তা: ।" (সাহিত্যদ)
দুদ্ধলীন (ত্রি) ছঙ্গে ভব: য়্ছ্ল-ঠক্। নিন্দা ক্লভর,
দিন্দিত ক্লভাত।

फ़ुक्कू ( वि ) यनकार्या ।

তুক্ক ত (ক্নী) হুটং ক্বতং প্রাদি সং। ১ পাপ।

"দাতুর্বং হুদ্ধতং কিঞ্ছিৎ তৎসর্কং প্রতিপম্বতে।

নিপানকর্ত্তঃ লাভা ভূ হৃদ্ধতাংশেন বিপাতে ॥" (মছ)

২ তজ্জনক কর্ম।

তুদ্ধত কর্মন্ ( অি ) হঙ্কতং কর্ম বছা। ১ ছকার্যা,। ২ গানী, মহোরা হকার্যা করে। ০

প্তৃত্বতাত্মন্ (তি) হন্ধতং আত্মা বভাবো বস্ত। পাপাৰী, হয়রা। প্তৃত্বতি (তি) হন্ধা ক্লডিংশ। ছন্দর্মকারক।

"পাদপার্শন্ত রঞ্চাংসি গুড়তীনবধ্ননং।" (মছ) দুষ্কৃতিন্ (ত্রি) গুড়তমন্তান্ত অন্তার্থে ইনি। গু\$তকারী, পাপকারক।

পুষ্ঠ ( তি ) ইন্ক্ষ-জ। হঃথে বাহা কৰিত হইরাছে। পুজিন্মা ( ত্বী ) হটা কিবা। কুকার্য, হৃদর্শ, পাণী। পুজিন্মা চরণ ( ত্বী ) হজিবাব অষ্ঠান, কুকার্যকরণ। । দিক্তিয়ার ( তি ) হজিবাবাং রতঃ ৭তুং। কুকার্যা, কবি

ীনবিষ্ট। । দুক্ৰীত ( ডিছুৰ্দু:খেন ক্ৰীনতে স্ব ইতি ছব্-ক্ৰী-জ্ল। ছব্^{না,}

মহার্থ, অম্বচিত্তন্য ক্রীত।

"ক্রীতা মৃল্যেন থেনত মৃক্রীতং মন্ততে ক্ররী।"

( প্রায়ন্ডিডণ নাগ)

দ্ব্য ক্রিয়া, যদি

বিবেচনা কুরে, ভাষা ৰইলে সেই দিন অবিকল সেই বস্তু-বিক্রেডাকে ফেরড দিবে।

कृष्ध [ इ:वः (तथ । ]

ভুষ্থদির (আ) ছটঃ পদির: প্রাদি সং। কালছন্দ, কুজ পদির-ভেদ, পর্যায়—কাথোজী, কালছন্দ, গোরট, অমরজ, পঞ্জর, বহুসার, পদির, মহাসার, কুজপদিরণ। ইহার গুণ—কটু, উঞ্চ, তিব্দ, রক্তত্রপোপ দোব, কণ্ডুতি, বিষ, বিসর্প, জ্ব, রুঠ গু উন্মাদনাশক। (রাদনিং ১

ছুই ( ) ছব্ক । ১ ছবল । १ অধন, ছৰ্জন। ৩ দোবাপ্ৰিত। ৪ পিতাদিলোৰমূক । ( ক্লী ) ৫ কুঠ, কুড়।

म् केंगक (११) रहेः गणः। गसीतरवनी रखी।

জুইটচারিন্ ( অি') ছইং চরতি চর-ণিনি। দোবযুক্ত কর্ম্ব কারী,
কুকর্মান্তর্চানকারী।

"অথ ষ্ট্রেনমাসীনং শক্ষেন্ ছ্ট্টারিণ:।" ( ভারত বি॰ ৪ আ: ) তুষ্ট্তা ( ব্রী) ছুট্ট ভাব: ছ্ট্ট-তল্ তভো টাপ্। ছর্জনতা, দোধ-যুক্ততা, অধমত্ব।

তুষ্টত্ব (ক্লী) ছষ্টদ্য ভাবঃ ছষ্ট ভাবে-ক্ত্ব। ছষ্টভা।

হুষ্টসু (তি) হস্বা তরুর্বভ প্রাদি বহু বেদে বহুং। ছষ্ট দেহযুক্ত।
"কুধা কিল ছা ছষ্টনো জক্ষিবানৎসক্ষপ।"

( व्यथर्स ४।१।० )

লৌকিক ,প্রয়োগে ছট্টয় এই পদ হইবে না, সেইফলে ছত্তমু এইরূপ হইবে। বেদেই কেবল যত্ত হইয়া ছট্টয় এই পদ হইয়াটে,।

দুষ্ট যোগ , (পুং) গুট: বোগ:। > বৈধৃতি ব্যতীপাত প্রভৃতি
নিন্দিত যোগ।, এই যোগে লান দানাদি অন্ত কোন প্রকার
ভঙ্কর্ম ক্রিতে নাই। ২ অরিষ্টত্চক গোচরবিল্মাদিন্থিত
গ্রহযোগ ভেদ।

ছুষ্টর ( ত্রি ) হৃংথেন তীর্ঘতে হসৌ কর্মণি থল্ বেদে যক্ষ।
হস্তর, অতি হৃংথে তরণীয়।

"চক্তিয়ং মক্তঃ যৎক্ষ ছইরং।" (ঋক্ ১।৫৪)১৪) লৌকিক প্রয়োগে বন্ধ হইবে রা। সেইছলে 'ছত্তর',এইরূপ প্রয়োগ হইবে।

"ভিতীষ্ত্তিরং শেক্ছাত্ত্পেনামি সাগরং।" (রঘুব॰)
ছুক্টরক্তেদৃক্ (অি.) ত্টা রক্তা চ , দৃগতা। পিতাদি দোবজরক্তনে অক, পিতাদি দোব জালিলে চক্ রক্তবর্ণ হর, এইরপে চকুরক্তবর্ণ হইলে তুটরক্তদৃক্ বলাবার।

"দীক্তিঃ ব্রীপ্রসংসন জারতে হুইরজনৃত্।" ( শাতাতপীর ) বাহারা অভ্যন্ত ব্রী আশক, তাহারা হুইরজুনৃত্ হইরা সমগ্রহণ করে। তুক্তিরীজু ( গ্লঃ) হর্-ভূ-জুন্ বেলৈ ইট্ দীর্ঘন্ত ভভোষদং।
স্তি হংলে তর্থীয়। স্বাহিংস্ত।

"ত্বিপ্রদ্বে কছুরে ছউরীভবে।" ( ঋক্ ২৷২১৷২ ) ।
্লৌকিক আরোগে 'ছউরীডু' হইবে না, সেইবলে ছজরীডু হইবে।

জুইটবুষ ( পৃং) ছটা বৃষ:। ,যে সকল বৃষ ভার ৰহন করিতে
সমর্থ অখচ ভার বহন করে না, ভাহাদিগকে ইটবুষ কহে;
পর্যায়--গলি।

কুষ্টব্রণ (পুং) ছট: ব্রণ:। অচিকিৎক বণ ভেদ, এই রোগ
চিকিৎসা করিলে আবোগ্য হয় না। পূর্বজন্ম মহাপাতক
করিলে ইহজন্মে এই রোগ হয়। এই রোগে বদি মুড়া হয়
এবং তাহার আন্দিত্ত নী করা হয়, তাহা হইলে উহায়
দাহাদি কার্য্য হইবে না, ঘদি কেহ মোহবলে তাহার
দাহাদি ক্রিয়া সম্পন্ন করে, তাহা হইলে দাহকারীরও প্রারশিত্ত করিতে হইবে। নচেৎ দাহকারী কোনরপ ধর্ম কর্ম্ম
অমুষ্ঠান কুরিতে পারিবে না।

"হুষ্টব্ৰণং গ**ওমালা পক্ষাখাতো ২ক্ষিনাশ**নং।

ইত্যেবমাদয়ো রোগা মহাপালোভবাঃ স্বভা ॥" ( মলমাসত॰ )

ভূট ত্রণ, গগুমালা, পক্ষাঘাত প্রভৃতি রোগ মরাপাতক্ষ, এই রোগপ্রস্ত ব্যক্তি জীবিতকালে যদি এই রোগের প্রায়শ্চিত বাকরে, তাহা হইলে নিজেও ত্রত নিয়মাদি কোন ধর্মকর্মের অফ্রান করিতে পারিবে না। কিন্ত প্রায়শ্চিত করিলে পাপ নত্ত হয় ও পাপ জন্ত ব্যাধির শান্তি হইয়া থাকে। এই জন্ত মহাপাতকন্ধ রোগ মাত্রেই সর্কাত্রে তাহার গামেশ্চিত করা আবিশ্রক। [মহাপাতক ও রোগের বিশেষ বিবরণ বিত্রীয় শর্মেক দেও।]

जू (हिं (हों) इय-कित्। (नाव।

"শিপ্তং রক্তং ছষ্টি মায়াভি।" (স্থশ্রুত) 🕨

চুই ত ( জি ) হর্দ ই: নিন্দিত: স্বজ: বেদে বজ: । নিন্দিত
ভাবে স্বত। "যজ্ঞ হু ই জ: হ:শতঃ।" ( ঐতরেম্বরাং তাতাং)
লৌকিক প্রয়োগে 'ইই জ' এইরপ কইবে না, 'হস্বত' কইবে ।
চুইসাক্ষিন্ (পু:) হুই: সাক্ষী কর্মধাং । নারদাদি কথিত
অসাক্ষিত্ব প্রয়োজক দোবযুক্ত সাক্ষী, কুটসাক্ষী, যে সকল
সাক্ষী প্রস্তুত কথা বলে না, ভাহাদিগকে হুইসাক্ষী করে।

' "নাৰ্থ সংক্ষিনো নাপ্তান সহায়া ন বৈরিণঃ। ন ছুইদোবাঃ কপ্তব্যান ব্যাধার্তান দ্বিতা॥ ন সাক্ষীন্পতিঃ কার্য্যোন কারুকজুশীলবে।। ন শ্রোজিরোন নিক্ষোন সংক্ষেত্যা বৈনির্মতঃ॥"

( 직页 너+8-+4 )

সকল বর্ণের মধ্যেই খাহারা সত্যবাদী, যাবাদের কর্ম্বর কর্মের জ্ঞান আছে এবং অপুরু, তাহাদিগকে সান্দী মানিতে পারা বার। কিন্ত ইহার বিপরীত গুণাবিল্নী হইলে তাহাদিগকে ত্যাগ করিতে হইবে। বাহাদের হহিত অর্থ সহদ্ধ আছে, যাহারা মিত্র এবং সাহায্যকারী, ভৃত্য, প্রকৃত শব্দু, পূর্বের বাহারা মিত্রা সান্দী দিরাছে, ব্যাধিপ্রত এবং মহাপাতকাদি দোবে দ্বিত ইহাদের সান্দী প্রায় নহে। এই সকল সান্দী হইসান্দী। স্থাকার বা তক্ষপ কার্মকর্মনীবী,
নটাদি-বহুবেদজ্ঞ, প্রস্কচারী বা সন্ন্যানী, দাস, লোকবিগর্হিত ব্যক্তি, নিবিদ্ধকর্মকারী, বৃদ্ধ, শিশু, চণ্ডালাদি নীচলাতি,
আরু ধ্রাদি বিকলেজির, আর্ভ, মন্ত, উন্মন্ত, কুধা তৃষ্ণার শীড়িত, পথশ্রমে ক্লান্ত, কামান্ত্র, কুদ্ধ এবং তম্বর ইহাদিগকেও সান্দী মানিবে না। ইহারাও হুইসান্দী পদবাচ্য।
[বিশেষ বিবরণ সান্দিন্দেশ।]

ছুফ্টু (অব্য) ছর্ নিশিক্তঃ তিঠতি ছর্-স্থা-কু, ততো বস্বং। নিন্দা।

তুষ্টু ( ত্রি ) ছনিন্দিতং তিঠতি হর ছা-কুষজং। স্থাবিনীত।
তুষ্পাচ ( ত্রি ) ছংখেন পচঃতে ছর-পচ-থল্। সহজে যাহা
পরিপাকুহয়না।

ত্তপ্তন (ক্লী) হাইং পততানেন পত করণে লাট। অপ্
শব্দ, অপ্ শব্দের প্রয়োগ করিলে হরদৃষ্ট জনো এবং হরদৃষ্ট
জন্ত পতন হয়, এই কারণে হৃষ্ণতনশব্দ অপ্ শব্দবোধক।
"নাপ ভাবিত বৈ নমেছিত বৈ মেছে। হ বা নাম বদপশবাং।"
(শুভি দ (ক্লী) হর্পতভোবে লাট। অতি হংবে পতন।
ত্তপত্ত (পাং) ছাইানি পতাণি যক্ত। চোর নামক গন্ধবা। (অমর)
ত্তপান (ত্তি) হংবেন পক্ততে হ্র পদ কর্মণি ধল। অভিশন্ন
হংবে প্রাণা, ক্লাহা অভি হংবে পাওয়া যায়। "শ্রুত্তোলি
চক্তেশ রব্যা হৃষ্ণদা ব্লক।" (ক্লি ১০০১১)

'ছব্দা ছব্দেন প্রাপ্র্মশকোন চজেণ ভৃতীয়ায়ানে 'ছানস আর্টু' (সায়ণ)

তুল্পরাজ্জয় (জি) ছগুথেন পরাজীরতে ২সৌ ছুর্-পরা-জি
কর্মণি খল্। জয় করিতে অশক্য, অভিশর ছংখে জেতব্য,
যাহা অভিশর ছংখে জয় করা যায়। (পুং) ২ খুভরাট্রের
প্রভেম। (ভারত ১০১১ গুজঃ)

ছুম্পরিপ্রান্ত্র (জি) ছঃথেন পরিগৃত্তে হসৌ ছর্-পরি-প্রত্কর্মণি থল্। পরিপ্রত্করিতে আদক্ষ, বাহাকে পরিপ্রত্করিতে পারা বার না।

"লোকাধারা: ব্রিয়ো রাজ্ঞাং ভ্রাপা ছঙ্গরিগ্রহা:।"

(ठावकंठी)

২ নিন্দ্যভার্যা। হংস্থিতঃ পরিপ্রহো ভার্যা; বন্ধ । ৩ হুট ভার্যাক, বাহার ভার্যা। হুট। "

প্রুপারিহস্ত ( জি ) ছর্-পরি-হন খুরর্থে তুন্। জাওিশর ছংগে নাশরিতবা, বাহা অতিশয় ছংগে হনন করা বার। ২ ছুপা । রিহার্যা। "বচ্ছতা নো ছুপারিহস্ত শর্মা" ( ঋক্ ই।২৬৮) 'ফুপারিহস্ত হস্তমশক্যং' ( সারণ্)

তুপারীক্ষ ( aি ) হংবেন পরীক্ষাতে হর্পরি উক্ষ-বং। অভিশর হংবে পরীক্ষণীর, বাহা অভি কট্টে পরীক্ষা করা বার।
দুক্তার্ক ( aি ) হর্-ল্যুক্ত কর্মানী থল্-বা বিস্গলোপ:। , ১ হুংগ্রে

্লপর্শনীর, স্পর্শ করিতে অশক্য। (ত্রী) ২ ছরাল্ডা।
দুক্তপান (ত্রি) হংথেন পীরতে ২সৌ ধনর্থে কর্মণি যুচ্। হংথে
পের, বাহা অভিশর হংথে পান করা করে, খান করিতে
অশক্য। ',ভাবে যুচ্(ক্রী)

তৃষ্পার ( a ) > সৃহতে বাহা পার হওরা বার না। ২ ছ:সাধা।
দুষ্পুত্র ( পুং ) ছষ্ট: পুত্র: কর্ম্মাণ । কুপুত্র । নিন্দিতপুত্র । (a)
ছষ্ট: পুত্র: বস্তু । ২ বাহার ছষ্টপুত্র আছে, ছষ্ট পুত্রযুক্ত ।
দুষ্পুরুষ ( পুং ) ছষ্ট: পুরুষ: কর্ম্মাণ । নিন্দানীয় পুরুষ, মন্দ্র

দুজ্পুর ( ত্রি ) ছর্-পুরি কর্মণি থল্। পুরণ করিতে অশক্য, অতিশয় ছঃথে পুরণীয়, যাহা পূর্ণ হয় না।

"কামমাশ্রিত্য তৃষ্পুরং দস্তমানমদাধিতা:।" ( গীতা )

২ অনিবার্য। মহয়ের আশা ছপ্র, মানবগণ এই ছপ্র আশার মোহিনী মারার বিমোহিত হইরা প্রতিপদে ছ:খ ভোগ করিয়া থাকেন। আশা কিছুতেই পূর্ণ হর না। একটা আশা পূর্ণ হর, আবার পরক্ষণেই রেইবলে আর একটা আশা আসিরা হান স্বধিকার করে।

দুম্প্রকম্পা ("a) ছ:খেন প্রকম্পাতে ছর্-প্র-কম্প-বং। সহজে বাহা কাঁপে না।

দুষ্প্রকাশ ( ত্রি ) হুট: প্রকাশ: প্রাদিস । স্বন্ধকার। "পাপত্ত লোকো নিরয়ো ছন্তকাশো

নিতৃঃ হংখং শোক ভ্রিষ্ঠিয়েব।" (ভারত শান্তি ৭০ জঃ)
দুজ্পাক্তি (অি) হংখা প্রকৃতির্বন্ধ। ছট অভবি, মল অভাব।
(আী) হটা প্রকৃতিঃ। মল এমন প্রকৃতি।
দুজ্পাক্স (জি) হংখা প্রজা বন্ধ বছত্রীহৌ আসিচ্ সমাসাতঃ।
নিল্য প্রজাব্জ, যাহার প্রজা নিল্তি। প্রাদি সমাস হইনে
আসিচ্ সমাসাক্ত হবৈ না। স্বারণ বছত্রীহি সমানে আসিচ্
প্রত্যের হর, বে হলে 'ছটা প্রজা' এইরূপ বাক্য হইবে, সেই
স্থলে হল্পাল্য এইরূপ না হইরা ছল্পালা এইরূপ হইবে।
অর্থ নিন্দিত প্রজা হইবে।

मुख्युख्य (बि.) मन्न थोख, निर्द्शांध। দুপ্ৰাক্তান (অি) হংখেন প্ৰজানতে হসৌ হৰ্-প্ৰ-জ্ঞা খলৰ্থে কৈৰ্পণি যুচ্। কানিতে অশকা, অভিশয় কটে বাহা জানা ः रात्र। (क्री) इहेर व्यक्तांनः। २ निसनीत्र कान। "कृष्टें कारनने नित्रकाः वहवः ममूलक्षाः।"

🛊 ভারত শাস্তি ১২৭ 🖦 )

দুপ্ৰতিগ্ৰন্থ ( জি ) প্ৰতিগ্ৰহ পক্ষে অতি কঠিন, সহজে বাহা গ্ৰহণ করা যার না।

हुळाजियोक्तगोप्त (बि) इर्न-अणि-वि-क्रेक-अनीवन्। वाहा অতি কটে দেখা যায়, দেখিতে অশক্য।

দৃপ্রতিবীক্ষ্য (তি) হংশেন প্রতিবীক্ষ্যতে হংশ-প্রতি-বি-ঐক কর্মপ্রীয়ং ৷ বাুহা অভি কটে নিরীকণ করা বায় । দুজ্পুধর্ম (ত্রি) হন্ধর: প্রধর্ষো হস্ত। অতিশন্ন কু:থে ধর্ষণীয়। িপুং) ২ ধৃতরাষ্ট্রের পুরভেদ। (ভারতভীরণ ৬৮ আং) ছ্প্ৰধৰ্ম ভালে ছ্প্ৰহৰ্ম এইরূপ পাঠাক্তর দৃট হয়। (জী) ০ ছুরালভা। ৪ থর্জুরা।•

দৃষ্প ধর্ষণ (তি.) হর্-প্র-প্রব ভাষারাং যুচ্। অভিশয় হঃথে `ধর্ষণীয়। (পুং) ২ ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (ভারত ১।১১৭।০) (স্ত্ৰী) ৩ বাৰ্দ্ৰাকী। 🔸

দৃত্যধর্ষিণী (স্ত্রী) হপ্রধর্ষো হস্তান্তাঃ ইনি-ডীপ্। ১ কণ্টকারী। ২ বৃহতী।

দৃষ্পুষ্ (ত্রি) ছঃথেন প্রধ্যতে হনেন, ছর্-প্রাধ্য কর্মণি वे९। व्यक्ति इ:स्थ धर्यनीय ।

দুজ্পুমেয়ু(অি) সহজে যাহা মাপাৰার না।

मुञ्जलेख ( वि ) इः स्थिन धानकारक इत्र धानकः भन्। > नहरक

যাহা ঠকান যার না। ২ সহজে যাহা পাওরা যার না। দুপ্রবাদ (পুং) ছষ্টঃ প্রবাদঃ প্রাদি সং। ১ ছষ্ট প্রবাদ, নিশ্বিভ অবাদ। ছইঃ প্রবাদো যক্ত। (ত্রি) ২ নিন্দিত প্রবাদযুক্ত। দুস্পার্ত্তি ( স্ত্রী ) ছটা প্রস্তিঃ প্রাদি সং। ছটা প্রস্তি, বার্তা।

"তেবাং স্পনিবৈধবৈকা ছতাবৃত্তিহরাভবং।" ( রুণু ) मुख्यात्यमं ( जि ) इकतः वीरवामा २व । इःरथ वारवण, द्व ऋला

षि छः १४ व्यक्ति कत्री सात्र ।

" "মহির্বিগণসভাধং আক্সা লক্ষ্যা সময়িতং। ছন্তাবেশং মহাব্যক নবৈ ধর্মবিছিম্বতৈ: ॥" (ভারত ১৪৫ খাঃ) ू (बी) २ क्षांत्रीतृकः।

দুষ্প্রস্ক ( অি) ছঃখেন প্রসহতে হসৌ ছর্-প্র-সহ কর্মণি খন্। ১ হংসহ, বাহা অভিশব হুংথে সম্ভ করা বার। ২ ভীবণ।

( पूर्) ७ अवस्य टानिक देवनां गर्गाः। দুষ্পুস্ক ( তি ) সহজে বাহা প্রসর করা বার না। मुष्ट्री मानग् (बि) इत्यमान। • मुख्यानाशः (बि) इःयन धानाशास्त्र श्राम इत्यानाश्वरः। সাধন করিতে অশব্য, খাহা জতি কটে প্রসাধন করা বার । मुष्ट्रो मुक् ( जि ) इः त्थन खनस्ट रुतन थनार्थ वक् । इः नहै ।

দুক্পুত্র (অি) ছকর: প্রবর্গে ৮ ছকর প্রবর্জ। (পুং) ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রভেদ। (জুারত ১।৬৭ আ:)

मुष्भा । १४ (बि) इःरथन श्रांगारङ स्रामे इत्य-षाभव्यम् । इर्नङ, যাহা অতি কটে পাওরা বার।

দুষ্পুণ্পন (ত্রি) ছন্তাণ্য, সহজে বাহা পাওয়া বাহ না ৷ मुक्भु †श्चि ( जी ) इःत्य व्याखि,',इर्नछडा, व्यछार ।

দৃষ্পাপা (জি) ছংখেন প্রাপ্যতে হসৌ ছর্প্র আপ, কর্মণ বং। ছ্রালভ্য, যাহাসহজৈ পাওয়াযার না।

मूळ्पुरिवो (जो ) [ देव ] > इन्द्रीना । २ व्यन्तव्यक्त वि দুষ্প্ৰীতি (ত্ত্ৰী) হয় প্ৰীতি:। অপ্ৰীতি, মন্দ ভালবাসা। ( ভি ) হটা প্রীতির্যন্ত । ২ ছট প্রীতিবৃক্ত ।

দৃচ্পে ক্ষ ( বি ) হ:খেন প্রেক্ষাতে হর্-প্র-জিক কর্মণি খন্। इर्फर्न, याहा व्यक्ति कटहे दम्था यात्र ।

मुर्का क्राचीय (बि) इत्-ध नेकश्वनीयत्। इर्मनीय। দ্ভেপ ক্ষ্য (তি) ছংখেন প্রেক্যতে ছর্-প্র-ক্টক কর্মণি বং। অতি কষ্টে দর্শনীয়।

দৃত্যুন্ত (পুং) পৌরববংশীয় একজন রাজা। চন্দ্রবংশীয় ঐতি-রাজার পুত্র। ইনি অভিশয় ধর্মপরারণ ছিলেন। ইনি একদিন মৃগরা করিতে গিরা অপতিশর প্রান্ত হইরা কর্মন্নির আপ্রমের নিকট গমন করেন এবং এই স্থল হইতে জমাত্য প্রভৃতিকে বিদায় দিয়া একাকী কর্মনির আশ্রমে উপনীত হন। এই সময়ে মহর্ষি কথ আশ্রমে ছিলেন না। আশ্রম-পালিতা শুকু-কুলা আসিয়া যথাবিধানে সাঞ্চাকে পাত অুর্থানি নিয়া স্থাগত জিজ্ঞাসা করেন। রাজা যথাবিধানে প্জিড হইরা শকুন্তলাকে কহিলেন, ভজে ! আমি মহাভাগ কর ঋবিকে উপাসনা করিতে আসিয়াছি, তিনি কোথার গুমন করিয়া-ছেন। শকুস্তলা কহিলেন, ভগবান্ পিতা ফলাঃঘ্ৰণে গমন করিরাছেন, মুহুর্তকাল প্রতীকা করিলে তাঁহার দর্শন লাভ হইবে।

রাজা শকুন্তলার অসামার সৌন্দর্যা দর্শন থরিয়া নিভাত 'বিমোহিত হইলেন এবং তাহাকে জিঞ্জাদা করিলেন, জরি শুভে ৷ ভুমি ঈদৃশ রূপসম্পরা হইরা কি নিমিত বনে আসি-बाह धर: काशा श्रेटिक व्यानिबाह ? यनि कान वाशा ना থাকে, ভাহা হইলে সৰুল বৃত্তান্ত বলিয়া আমার কৌতৃহল निवृद्धि कृत । भक्षमा तालात এই कथा छनित्रा कहिलान,

আমি অপরার গর্ভগন্তুতা," মহামুনি কৌশিক স্থামার পিতা। আমি উর্দ্ধেতা ভগবান্ কথের পালিতকন্তা। রাজা শকুন্তলাকে অপর-গৈর্ভা ভাবিয়া তাহাঞে কহিলেন, তুমি মামার পিছী হও। শকুন্তলা রাজার এই কথা ভনিয়া কহিলেন, যদি गक्षर्य विवादह कान लाय ना शांक जवः आमात्र गर्छकाछ পুত্র যৌবরাজ্যে অভিবিক্ত হয়, ভাহা হইলে আমি বিবাহ করিতে সমত আছি। মহারাজ চ্মস্ত তাহাই হইবে, ইহা স্বীকার করিয়া যথাবিধানে গদ্ধর্ক্ত মতে শকুন্তলাকে বিবাহ করিলেন। মহর্বি কর আশ্রমে আসিয়া এই বৃত্তান্ত শুনিরা সন্তই হইলেন। এই বিবাহের পর শকুস্তলা গর্ডধারণ করেন, তিন বংসর সমাপ্ত হইলে ডিনি হুম্মস্তের ঔরসসম্ভূত এক কুমার প্রসব করেন। ঋষিপণ ঐ কুমারের নাম সর্কাদমন রাথিয়াছিলেন। কিছুদিন পরে মহর্ষি কথ শিশ্বের সহিত শক্তলাকে স্বামীগৃহে প্রেরণ করিবেন। শক্ষলা রাজার সমীপে আগমন করিয়া যথোপযুক্ত সংকার করিয়া কহিলেন, হে রাজন্, আপনার এই পুত্র আধার গতে জন্মপ্রহণ করিয়াছে। দেবতুলা এই পুত্র আপনারই ঔরসজাত, আপনি ইহাকে যৌবরাজ্যে অভিষেক করুন। মনস্থিপণ যাহা প্রক্রিশ্রত হন, তদমুসারে কার্য্য করিয়া তাঁহারা, যশোভাজন হইয়া থাকেন। শকুন্তলার এই কথা ভনিয়া পূর্বাক্ত সকল কার্য্য ছ্মান্ডের স্মৃতিপথারুড় হইল, কিন্ত তিনি মনোভাব পোপন করিয়া শকুন্তলাকে তিরস্কার করিয়া কহিলেন, রে ছষ্ট তাপদি! তুমি কাহার ভার্যা ? তোমার সহিত আমার ধর্ম, অর্থ ও কাম বিষয়ে কোণ সম্বন্ধই আমার স্বৃতিপথে আক্লড় হইতেছে না, অতএব এখন তোমার যথায় ইচ্ছা চলিয়া বাও।

শক্তলা রাজার এই নিষ্ঠ্র বাক্য শুনিষা রাজাকে নানাবিধ তিরস্কার করিলেন। ছয়ন্তও শক্তলাকে নানাবিধ মর্ম্ম-পীড়ালারক বাঁক্য প্ররোগ করিলেন, কিন্তু কিছুতেই শক্তলাকে গ্রহণ করিলেন না। শক্তলা তথন নিজাত ক্রা হইয়া রাজাকে তিরস্কার করিতে করিতে কহিলেন, রাজন্! ম্যাপনারা স্বয়ঃ ছর্জন হইয়া শক্তনদিগকে তিরস্কার করেন, যেমন কুণিত ভুলা হইতে ভয় হয়, সেইরপ সত্যধর্মন চাত প্রকা হইতে নাত্তিকদিগেরও ভয় হয়া থাকে। আতিকগণ যে ভীত হইবে, তাহা আর বলাই বাহল্য। বাহা ইউক বে বাজি নিজে আত্মরূপে সন্তান উৎপাধন করিয়া পরে অত্মীকার করে, ভগবান ভাহার যথোচিত ফল বিধান করেন। শক্তলা এইরপে অনেক বলিয়া প্রস্থান করিলেন। তথন সভামধ্যে এইরপ নৈববাণী হইল, 'মহায়াজ! শক্তরণ যাহা বলিয়াছে, তাহা সকলই সন্তা। এই পুত্র কাণ-

নারই, আপনি ইহাকে গ্রহণ করন, এই পুরুকে আমাদ্র ৰাক্যাত্মারে ভরণ করুন এই জন্ত ইহার নাম ভরত হইবে ৮ -রাজা এই দৈববাণী শুনিয়া **শক্রজা**চক গ্রহণ করেন। শকুন্তলার মেই পুত্র সার্কভৌম রাজচক্রবর্তী হন, এই ভরত : হুইতেই ভারত প্রসিদ্ধ হইরাছে। (মহাভারত আদি ৩৮-१৪) মহাকবি কালিদান •প্ৰণীত অভিজ্ঞান শকুস্তলা নামকগ্ৰছে ত্মত চরিত বাহা বর্ণিত হইয়াছে, 'তাহা মহাভারত হইতে সম্পূর্ণ পৃথক্। মহাভারতে রাজা গুলত লোকনিলাভরে কণ্ট ভাৰ অবলখন করিয়া শকুস্তলা বৃত্তান্ত স্কৃতিগ্ণার্চ হইলেও তাহাকে অস্থায়রূপে পরিত্যাগ করেন। কিন্তু কানি দানের অমৃত্রয়ী লেখনী-নিজ্লিত শকুত্তরাকে রাজা চ্যুত্ত ত্র্কাসা মুনির শাপ প্রভাবে বিশ্বত হল এবং প্রভিগদে পাছে ধর্ম কৃষ্টতে চ্যুত হন, না জানিয়া কি করিয়া পরত্রী গ্রহণ ক্রেন ইত্যাদি ধুর্মবোপ আশখা করিয়া বাধ্য হইরা ডিনি শকুন্তলাকে প্রত্যাধ্যান করেন, বিশেষতঃ শুকুন্তলা এই সময় গর্বতী ছিলেন, কোন্ধর্মভীক ব্যক্তি না জানিয়া গ্রিনী ক্রীকে নিজ পত্নীরূপে গ্রহণ করিতে পারে ? শকুস্তলা রাজাকে অভিজ্ঞান অসুরীয় দিতে স্বীকৃত হইয়া পরে দেণাইতে পারিলেন না। ইহাতে রাজার অবার ও সম্ভেহ হইন, কালেই শকুস্তলা প্রক্ত্যাথ্যাত হইলেন।

মহাভারতে শকুন্তলাও নিতান্ত লজ্জাহীনা হইরা পুংক-লীর স্থায়, রাজাকে নানাবিধ হুর্বাক্য প্রয়োগ করেন, বিৰ কালিদাদের শকুন্তলা যেন মূর্ত্তিমতী লজ্জা।

"শকুন্তলা মৃর্ত্তিমতীব সংক্রিয়া।" ( শকুন্তলা)

শফুন্তলা কালিদাসের এক অপূর্ব্ব স্টে। E বিশেষ বিধ-রণ শক্তলা দেখ।]

হরিবংশে ত্রান্তের বিবরণ এইরূপ লিখিত আছে—
মহারাজ হুরোধের ঔরনে উপদানবীর গর্ভে ত্রান্ত জনপ্রহণ
করেন। ত্রান্তের পুত্র ভরত, ভরত শকুন্তদার গর্ভে বন্দ্র গ্রহণ করে। (হরিবংশ ৩২ আঃ)

দুস্থ (অি) ছর্-স্থা-ক, বাহুলকাং, বিস্গ লোণ:। ছ: ধে অবছিত।

"কল্লান্ত হুল্লা বহুধা তথে। হে।" (ভট্টি) ২ কুক্ট।

ত কুকুর। স্তিয়াং জাতিখাৎ ভীষ্। ••

তুস্পৃষ্ট (ক্লী) ছন্তং পৃষ্টং বা বিসর্গলোপ:। মন্তুজাবেঁ বিজ্ঞানিত। ছহাদি (পৃং) ছহ আদি ইছা। ধাতু গণ বিশেষ, লকার নির্ণর বক্ত এই গণ নির্দিষ্ট হইরাছে ছক্, যাচ, ক্লং, প্রাছ, চি, ক্রে, শান, জি, দক্ত, মহ, বদ এই সকল ধাতু ছহাবি গণ। "অপ্রধানং ছহানীর্দাং।" পাণিনিক শাসনাল্সারে বে হলে বিক্লাক ধাতুর কের্ম্ম উক্তে হইবে, সেই হল্পে, হহাবি

धाजूत अर्थियान कर्ष छेक हरेदन, रशीनकर्षात अर्थियान कर्ष करहा अर्थियान कर्ष छेक हरेदन 'छेक्क क्ष्मिन रामिन वह नित्रमाञ्चनादत इहाहि थाजूत अर्थियान कर्ष अर्थार रामिन कर्षा राभिना विख्या हरेदन वाद, राभान कर्षा विजीता विख्या हरेदन। विक्रांक थाजूत मुशाकर्ष छेक हत, किछ 'अर्थियान इहातीनार' वरे निरम्य नित्रमाञ्चनादत्तु जाहा हरेदन ना। इहिज्रु अर्थि (ग्रः) इहिज्रु अिंहः नाः विद्यास स्क्रीत अनुक् मानि हत्, त्य श्रम अनुक् हरेद्धद ना, राहेथान श्रम् इहिज्शिक विवेदन ।

তুহিতৃ (ব্ৰী) দোধি বিবাহাদিকালে ধনাদিকমাক্কর গৃহ্ধতীতি বা দোধি গা ইতি ছহ-ড্চ্ (নপ্নেই ছই হোড়
পাত্লাভ্জামাত্মাতৃশিভ্ছহিত্। উণ্ ২।৯৬) নিপাতনাৎ
ভণাভাব:। কল্পা।

ছহিতাকে স্বত্বে পালন করিয়া উপযুক্ত পাত্রকে দান করিতে হয়। বিশেষরূপে পাত্র বিবেচনা করিয়া ক্সাকে দান করিতে হইবে, ক্সাদানের পাত্রাপাত্রের বিষয় এইরূপ লিখিত আছে;—গুণহীন, বৃদ্ধ, অজ্ঞানী, দরিজ্ঞ, মৃদ্, রোগী, কুৎসিত, অত্যক্ত কোপন, অতি ছুমুখ, চাপল, অঙ্ক-হীন, অন্ধ, বধির, অড়, মুর্থ, ক্লীবতুল্য ও পাপী, ইহাদের সহিত ক্সার বিবাহ দিলে বন্ধহত্যার পাত্তক হয়। কদাপি এইরূপ পাত্রকে ক্সা সম্প্রদান করিবে না।

শান্ত, গুণী, যুবক, পণ্ডিত ও বৈষ্ণব ইহাদের সহিত বিবাহ দিবে। এইরূপ পাত্তের স্তুহিত বিবাহ দিলে কয়া-দাতা দশ্বাপী দানের ফল প্রাপ্ত হয়।

উক্ত রূপ প্রণ ও দোষ বিশেষরূপে পরীক্ষা করিরা সম্প্রান্ত করিবে। যদি কেই কঞা পালন করিবা। বিক্রের করে, তাহা হইলে তাহার কুন্তীপাক নরক হর। ঐ নরকে গমন করিরা মৃত্র ও পুরীষ ভক্ষণ করে এবং যতদিন চতুর্দিশ ইক্ত অবস্থান করে, ততদিন পর্যান্ত এই ছর্দিশা ভোগ ক্লরে, ইহার পর ব্যাধ বোনিতে ক্লম হয়, এই ব্যাধ ক্ষম লাভ করিরা দিবালিশি মাংসভার বধন ও বিক্রের করিরা থাকে ২। যথেক্তরূপে কন্তাদান করিলে অশেষবিধ পুশা হইরা

VIII

থাকে। বেষজ্ঞ, বাঁহারা ত্রিসন্ধ্যা করিরা থাকেন, পণ্ডিত. সভাবাদী, জিভেজিক এরপ সদ্পণ সম্পন্ন পাত্রকে কয়া সম্প্রদান করিতে-হইবে। অপাত্রে কিছুতেই কয়া-সম্প্রদান করিবে নাঁ।

বাঁহারা ক্টাকে বিষ্ণু বা মহাদেবের প্রীতির জন্ত দান করে, তাহারা নারারণ স্বরূপ হর, এই কথা শ্রুতিতে লিখিত আহে।

"নদা কন্তাং স্থানাঞ্চ হরার হররে ২থবা। নারারণম্বরপঞ্চ ভবেদেব শ্রুতৌ শ্রুতং ॥ বিকৃতকো বদা কন্তাং দদাতি বিকৃতীভরে। সলভেদ্ধরিদাশুঞ্চ শ্রুবং বিশ্বোভবার ৮ ॥" (এক্সবৈ॰ প্রাকৃতিধ॰)

মবাদি সংহিতারও অপাত্রে কস্তাদান নিষিদ্ধ হইরাছে।
সূহিতৃত্ব (রী) ছহিতৃত্বি:। হৃহিতৃ-দ। কলার ভাষ।
সূহিতৃপতি (গুং) ছহিতৃ: গতি:। জামাতা।
সূহিতৃসং (বি) গৃহিতৃ বিদ্যাতে ২৩ অন্তার্থে মতুপ্।

হহিত্যুক।

তুক্ত (ক্লী) হহুতে ইতি হৃহ কৰ্মণি কাপ্ (এতিক শাস্ব্দ কুষ্ কাশ্। পা তা১া১০৯), ইতি ক্তুন্ত শিংসি ভঞি

ভুষঃ কাপ্। পা ৩১১১-৯) ুইতি স্অভ 'শংসি ছহি ভুহিভোবা' ইতি কাশিকোজেঃ কাপ্। ১ দোহুনযোগ্য। ২ দোহ।

তুহামান (তি ) গ্ৰুততে ইতি হছ কৰ্মণি শানচ্। ধানাকে দোহন করা যায়। দোহনবিশিষ্ট!

ভূতা (পুং) যথাতি স্বাজার প্রভেদ। ইনি শ্বিষ্ঠার গঠে জন্মগ্রহণ করেন। ব্যাতি দিক্ সকল বিজয় করিয়া প্রভিদিনেক বিভাগ করিয়া শিয়াছিলেন। প্রতীচীদিকের শাসনভার ক্রন্থ উপরুষ্ঠ অর্পিত ছিল। ব্যাতি হৃত্যকে নিজের বাদ্ধকা দিয়া তাহার যৌবন প্রার্থনা করিয়াছিলেন, কিন্ত চ্তা সীকার করে নাই। ভাহাতে ব্যাতি কৃত্ত হইয়া অভিশীপ প্রদান করেন।

ব্ৰন্ধহত্যাং লভেৎ ক্ষেইপি যং অৰক্ষাং নদাতি চ ॥
শান্তীয় গুণিনে চৈব বুলে চ বিছুবে হপি চ ।
বৈশ্ববায় হতাং দৰা দশবাপী ফলং লভেৎ ॥
ফ্যাবিক্ৰৱে দোব যথা—

"যং কন্থা পালনং কৃষা করোতি বিক্ৰয়ং যদি ।
বিপদাধনলোভেন ক্ৰীপাকং স পছতি ॥

ক্যানুত্ৰপুৱীৰক তত্ৰ ভক্ষতি পাতকী ।

কৃষিভিৰ্ননিতঃ কাকৈবাবদিক্সাকভূৰিশু । মৃতক ব্যাধবোৰো চ স সভেক্ষয় নিশিতং ।

্বিদ্রীণীতে বাংসভারং বহতেয়ব দিবানিশং।" ( একাবৈ একু )

বিষংমে হণরাজ্জাতঃ বরং সং ন প্রবৃদ্ধতি। তথাদুহো। প্রিয়ং কামোন তে সম্পৎস্থতে কচিং॥"
(মহাভারত)

ত্মি আমার হানর হইতে জন্মগ্রহণ করিয়া স্বীয় বৌবন আমাকে দিতেছ না, এই জন্ত তোমার কোন প্রির অভি-লাব পূর্ণ হইবে না। [যবাতি দেখ।] ইহার পাঠান্তর ফ্রন্ডা এইরূপ দেখা যার। ু

দৃস্ত্রপুর, রাজপ্তানার অন্তর্গত একটা দেশীর রাজ্য। গ্রণর-লেনারলের এলেণ্টের রাজনৈতিক শাসনাধীন। অক্ষাণ ২৩° ৩১ হিতে ২৪° ৩ উ: এবং জাবি॰ ৭৩° ৩৭ হিইতে ৭৪° ১৬ পু:। এই রাজ্যের উত্তর সীমা উদরপুর রাজ্য, পূর্বের উদরপুর ও মাহি (মহী) নদী, দক্ষিণে ও পশ্চিমে গুজ-রাটের অন্তর্গত রেবাকাস্তা ও মহীকাস্তা বিভাগ। পূর্বাপশ্চিমে দৈর্ঘ্য ৪০ মাইল এবং উত্তরদক্ষিণে বিস্তার ৩৫ মাইল।

রাজ্যের অধিকাংশই শৈলময়, বদরী, নাগফণী ও শলার নামক গঁদ গাছের জন্দলৈ ভরা, মধ্যে অপরাপর তরুপ্তবালতাও দেখা যায়। উত্তরাংশের ভূমি বস্তু ও অসমতল, দক্ষিণাংশ দেখিতে অনেকুটা গুজরাটের মত। এখানে আব্লুস, শিশু প্রভৃতি মূল্যবান্ কাঠেরও হই তিনটী বন আছে। কিন্তু পশু চারণের উপযুক্ত মাঠ নাই। স্মৃত্যাং গ্রীমকাল আসিলে এখানকার জীলদিগের পালিত গবাদি উপযুক্ত আহারাভাবে নিতান্ত শীর্ণ হইয়া পড়ে। পর্কতের উপত্যকার ও পাদদেশে চাববাস্ হয়। অন্ত মানে বনজ্পল পোড়াইয়া ভক্ম হইলে তাহার উপর বীক্ষ ছড়াইয়া সামান্ত চাব হইয়া থাকে।

এখানে নানাবিধ পাথর পাওরা বার। ওর্মধ্যে গ্রানিট্
পাথরে গৃহাদি প্রস্তুত হইরা থাকে। সামাক্ত রক্ম চুণও
পাওরা বার, ডিস্ক ভাহা ভেমন বিশুদ্ধ নর। এখানে
লোহের আকর থাকিলেও লোহ উত্তোলনের জন্ত কোন
চেটা করা হর না।

এই রুটেলা মহী ও সোম কেবল এই ছই নদী প্রবাহিত। মহী-সোম-সঙ্গম একটি পুণা তীর্থ। এখানে বাণেশর শিবের একটি বিখাত মন্দির আছে। প্রতিবর্ণে এখানে মহাসমারেংহে একটি মেলা ছয়।

নহীনদী বাসরাড়া হইতে এবং সোম সালুখর হইতে এই রাজাকে পৃথক রাখিরাছে। মহীনদীর প্রস্তরমর গর্ভ । আর এ৪ শত ফিটু বিভৃত ; ইহার তীর বেণাগাছে পরিপূর্ণ।

বব, গম, ছোলাং ধান, কালনি, বালরা ও করেক প্রকার সামান্ত শক্ত, কাপান, অহিফ্নে, ভিনি, সরিবা, আ্লা, ল্বা, হরিলা ও ইক্ উৎপর হয়। তরিতরকারীর নীখা পেঁরার,
লগুন, রালাআলু, মূলা প্রভৃতি ললো। ক্ল তেমন বেই
হয় না, তবে তরম্ব, নেব্, আম ও কদলী লয় বয় পাওর
বায়। মউয়া গাছ যথেই, ললেয় এবং তাহা হইতে প্রুর,
পুরিমাণে মত প্রস্তুত হইয়া থাকে।

এথানে প্রার লক্ষ্ ভীলের বসবাস।

রাজ্যের মধ্যে ১৬ ঘর প্রধান ও তরিস্বে ৩২ ঘর ঠাকুর বাস্থিতের বাস। ইহারা স্কলেই রাজপুত। এই ৪৮ ঘরই প্রধান বলিরা গুণা।

এই রাজ্য ছয় ভপ্নায় বা প্রগণাঁর বিভক্ত। বধা— বারা, ব্যেল, কিভারা, চৌরাণি, ভির্পোদ ও চ্বট্। প্রত্যেক প্রগণায় কভকগুলি গ্রাম আছে।

'অমিরুমধ্যে কডক থাল্সাবাঁরাজার থাসে, কডক আয়গীর বাঁসদারগণের অধীন এবং কডকগুলি ধয়রাং বা দেবোক্তর।

রাজপুত মহাজন ও বোড়া শ্রেণীর মুসলমানেরা এখানে বাণিজ্য ব্যবসা করিয়া থাকে। রাজার অধীনে গাঠান মেকরাণী সৈত আছে।

দ্দরপুর রাজ্যে গুজরাটী ও ছিদ্দ্রানী মিল্রিড 'বাগর' নামক ভাষা প্রচলিত।

এখানে তেমন ভাল রাস্তা প্রস্তুত হর নাই। প্রধান নগর
দূলজুপুর, গলিরাকোট ও সগ্বারা। বাণেখনের মত গলিরাকোট নামক স্থানে প্রতি বর্ষে ফাব্তন মাসে ১৫ দিন বাাপী
মেলা হইয়া থাকে।

ইতিহাস।— দৃল্ভপ্রের রাজার উপাধি মহা-রাবল।
উদরপ্রের রাণার জ্যেন্ট প্রের বংশেই মহারাবলের উৎ
পতি। ইনি বিখ্যাত শিশোদীর বংশ-সভ্ত। "এই বংশের
প্রাচীন ইতিহাস কিছুই জানা বার না। বে সমরে মোগল
বাদশাহগণ আধিপত্য বিস্তার করেন, তৎকালে এখানস্থার
মহারাকা মোগলের অধীনতা শীকার করিরা প্রভুত হাগন
করেন। মোগল সাম্রাজ্যের অবনতি হইলে দৃল্ভপ্ররাল
মহারাষ্ট্রগণের করেল হইলেন। শেষে বৃদ্ধীশ গ্রম্ভির
সাহায্যে মহারাবল মহারাষ্ট্রকবল হইতে সুজিলাভ করের।
১৮১৮ পৃথীকে রাবল বশোবস্ত সিংহ বৃদ্ধীশ গর্মেন্টির
সহিত সমিহত্তে আবর্ছ হইলেন এবং বৃদ্ধীশ গর্মেন্টির
করিব বর্ষেওং হাজার টাকা দিতে সম্বত্ত হইলেন। ম্পোবর
ভীক্র, বাসনাশক্ত ও ক্রুপ্টেবার ক্রেপাভ হওরার ১৮২৫
শৃথীক্ষে বিলের আবন্ধি শ্রুবিবার ক্রেপাভ হওরার ১৮২৫
শৃথীক্ষে তিনি রাজ্যছাত হইলেন এবং উট্যার ক্রেপ্র

দলপংসিং (প্রতাপগড়ের নামস্তসিংহের পৌত্র) রাজপ্রতি-নিধি নিযুঁক হইলেন।

১৮৪৪ খুটাজে সামস্তসিংছের মৃত্যুর পর দলপ্ৎসিং প্রতাপগড়েরও অধিকারী হইলেন। বৃটীশ গ্রমণ্টের প্রামর্শ মত দলপং সবলির ঠাকুরের জিওপুত্র উদর্সিংহকে দতক ভয়েন এবং দৃক্তপুররাজের ভাবী উত্তরাধিকারী • ত্তির করেন। মধ্যে একবার যশোবস্ত সিংহ রাজাগ্রহণের চেটা করিরাছিলেন, কিন্তু উহুতার আখা পূর্ণ হয় নাই। এই সমীর নাবালক রাজাকে লইরা রাজামধ্যে অনেক অনিরম বটিতে লাগিল। ১৮৫২ খুটান্সে বুটাশ গবর্মেণ্ট প্রতিনিধির হত চইতে সুমত্ত কমতা কাড়িয়া লইয়া একজন দেশীরতৈ এজেণ্ট নিবুক্ত, করিয়া তাঁহার হতে শাসনভার অর্পণ করি-तन । १४८१ थ्टीस्य महातावन छेनम्त्रीहर वर्ताधारा হটলে রাজ্যশাসনভার গ্রহণ করেন। সিপাহী বিজোহের সময় তিনি বৃটীশ গ্ৰমেণ্টের যথেষ্ট সাহায্য করিয়াছিলেন। তাঁহার যত্নে দ্রুড়পুররাক্ষাের প্রভৃত উন্নতি সাধিত হইরাছে। **১৮**98 थृष्टीटक् महानमारतारह क्यमानरमस्त्रत्र महात्रास्क्रत সহিত তাঁহার কন্তার বিবাহ হয়।

এখন মহারাবলই দশুমুণ্ডের কর্তা। তাঁহার অধীনে
দেওরান এবং দেওরানের অধীনে কামদারগণ দেওরানী ও
ফৌজদারী উভরবিধ বিচার করিরা থাকেন। কোন মোককমার প্রাবিচার অর্থাৎ শেব বিচার করিতে হইলে তাহা
মহারাবল করিরা পাকেন। রাজ্যের শান্তিরক্ষার জল্প
পানাদার ও কোতোরাল নিযুক্ত আছে। মহারাবলের
অধীনে ১,০০ পদাতি ৪০০ অখারোহী ও ০টী কামান
আছে। তিনি বৃটীশ গ্রমেণ্টের নিক্ট ১৫টি মাল্পতোপ
পাইরা থাকেন।

দৃড্ভ ( বি ) হুর্দ্ ংথেন দভাতে ইতি হুর্-দভ-ধন্ ( হুরো দাশনাল দভধোর্ত্ম প্রপদাদে: ই হুঞ্। পা ৬।৩।১ ৯ ) ইতভেতি
বার্তিকোক্তা। উত্থং ভক্ত ডৃত্বঞ্। ১ অতি হুংথে
দগুনীর। ২ বাসনপ্রাপ্ত বিপ্দৃত্ক। ৩ হুর্দহ নাশ করিতে
অশক্য। "বুবং দক্ষং ধৃতব্রত মির্রাবর্দণ দৃড্ভং" ( অর্
১।১৬।৬) 'দৃড্ভং হুর্দহং শক্রভির্দিগ্ধং বিনাশরিত্ং অশক্যং
দ্ডভং দহ ভদ্মীকরণে হুংথেন শহুতে ইতি হুর্দহং ঈবদ্ধুং
বিত্যাদিনা হুরিত্যুপপদে দ্বেং থন্, ব্যতারে। বহুন্মিত্যুকারত উকারো বেরুক্ত লোপং দক্ষরত ড্কারে। হকারত চ
ভকারং ( সারণ )

मृ्ड्राम (बि) इःरथन बाज्यक रः क्र्न्न्वानि-धन् 'शृर्वावत्रावीनि रवानविद्देश देखाज इरतावामनारमञ्ज' देखि वार्तिरकाका। উদং ডৃদুষ্ট। পীড়াব্জ, পীড়িত। "নমতে অত্থানে বেনা দ্ডাশে অক্তনি" (অবং ১/১৩/১১) কোন কোন কুলে দত্ত সক্রারাস্ত্র এইর্লপও দেখা যার। সেই ফলে দুড়াস এই্রপ হইবৈ।

দূঢ়ী (ি এ) হটং ধাারতি ছব্- ধাৈ চিঁঝারাং সম্পদাদিতাৎ ভাবে কর্ত্তরি বা কিপ্। দৃজ্জ শক্বৎ কার্যাং। ১ হটধাারী। ২ হট বুজি। "আলাকং শংগোঁ অভাক্ত দৃঢ়াঃ।" (ঋক্ ১৯১৮৮)

'হটো হর্ষির: পাপব্দীন্ হর্বধা কিপ্ দৃশি গ্রহণাম্বৃত্তে ভক্ত চ বিধাংতরোপসংগ্রহার্থদাৎ সম্প্রারণং, প্রোদরাদিষ্ ধার চেতি পাঠাদ্বো রেফসোজং উত্তরপদাদেই ছঞ্চ।' ( সারণ ) দূঢ্য ( বি ) হংখেন ধারতি হর্বধা ক দৃড্ডশন্ববং ফ কার্যাং। হইধাারী অধম।

দুর্গাশ ( জি ) ছঃথেন নশুর্তে হসৌ ছর্ নাশি-থল্ ( ছুরো দাশ-নাশেতি। পা ৫।০।১০৯ ইতান্ত বার্ত্তিকোক্ত্যা উত্থং গৃত্ঞ। অতিশর ছঃথে নই, যাহা নাশ বর্বিতে অশক্য।

দূত (পুং,) দ্যতে বার্তাবহনাদিনা দ্ক দীর্ঘণ্ট (দ্কনিজ্ঞাং
দীর্ঘণ্ট। উণ্ ৩৷৯০) বার্তাহর; পর্যায় — সন্দেশ, সন্দিইকথক।
রাজগণ যথন সন্ধিবিগ্রহ প্রভৃতির অন্থান করেন অথবা যথন
কোন সংবাদ প্রেরণ করিয়া থাকেন, তথন দ্তের প্রাক্তান।
"চারেকণং দ্তম্থং।" রাজাদিগের দৃত মুথ অরুণ, চর চক্ষু,
অর্থাৎ রাজগণ যাহা কিছু বলিবেন, সকলই দৃতম্থে। দৃত
ও চর নুপতিগণের প্রধান সহায়, দৃত ভিন্ন সন্ধিবিগ্রহাদি কোন
কার্যা শৃত্যাদির সহিত সম্পার হর না, এই অক্ত বিশেষ করিয়া
দেখিরা ও দৃতের অভাব চরিত্র পর্যাদিতে এইরপ লিখিত আছে—
বিধ্যাক্রণী দৃতঃ ভাদেশভাষাবিশারদং।

গুক্ত: ক্লেশনহো বাগ্মী দেশকালবিভাগবিৎ'॥ বিজ্ঞাতদেশকালশ্চ দৃত: ভাৎ স মহীক্ষিত:'।

বক্তানয়তা যঃ কালে স দ্ভো নৃপত্তের্ডবেং ॥" (মংক্তপু॰)

দ্ত নিয়েগ করিতে হইলে তাহার এই সকল গুণ থাকা , আবখ্যক,—মংগাজবাদী, দলশভাষাবিশারদ, যে হলে দৃত প্রয়োগ করিতে হইবে সেই স্থানের ভাষার ম্পণ্ডিত, কার্য্যকুশল, ক্লেশসহ, দেশকালবিভাগবিদ্ অর্থাৎ কোন্ সময়ে কিরপভাবে কার্য্য করিলে ফলদায়ক হয়, তাহা বিনি বিশেষরূপে অবগত আছেন, এবং নীতিশায়ে বকা এইরূপ লৃক্ষণাক্রান্ত লোক দৃত হইবার উপযুক্ত। চাপক্য দৃত বিষয় এইরূপ বনিয়াছেন-

"মেধাৰী ৰাক্পটুঃ প্ৰাজঃ প্ৰচিত্তোপ্লক্ষকঃ। ধীৰো মুখোক্তৰাদী চ এৰ দুতো বিধীৰতে ।" (চাপকা ১৯৯১

विनि चिंति वृद्धिमान्, याक्शर्, छेख्य वृद्धिवृत्तात अत्रः विनि व्यनदेत हिन्द बानिए विरम्ब नावनमी, धीव व वर्धाक-বাদী, এইক্লপ ঋণ-সম্পন্ন হইলে ভাঁহাকে দৃত নিবোগ করা যাইতে পারে। * যুক্তিকরতরুতে দুতের বিষয় এইরূপ লিখিত আছে, বিনি শত্রুদিগের আকার ও ইঙ্গিত দেখিয়া সকল ভাব ব্ঝিতে পারেন, শক্তর বাক্য ও বাকার্থ প্রভৃতি অবগত আছেন এবং বিনি অভ্যুৎপর্মতি, ধীর, ইঞ্চিতজ্ঞ, সভ্য, সংকুলজাত, কাৰ্য্যকুলল, রাজার প্রভি দৃঢ় অমুরক্ত, বিশুদ্ধ স্বভাব, মেধাবী, দেশকালবিদ্, বপুলান্, নিভীক, বাগ্মী, এই সকল গুণসম্পন্ন হইলে তাহাকে দৃত निर्दात् करा वात्र अवः खेल खननम्भन्न म्छरे धनखः। अरे দ্ত ত্রিন প্রকার - বিমৃত্যার্থ, মিতর্থ ও লাসনহারক, ইহার মধ্যে যিনি কার্য্যকালে কেবল প্রভুর আজা প্রতিপালন করেন, তাঁহাকে বিষ্যার্থ; যিনি কার্য্য মাত্র কহিয়া ক্ষান্ত হন, উত্তর প্রত্যুত্তর করেন না, তাঁহাকে মিতার্থ এবং विनि (लथा) भवापि भहेता यान, छांशांदक मामनशांदक करह। पृত कान विषयात निक्षत्र कतिरवन ना, ध्वर कान विषय निशियन न।। म्जरक जाँशांत व्यक्त विषय बिकाना कवितन প্রভুর কোনরূপ ছিদ্র প্রকাশ করিবেন না। দৃত ঘাইয়া নিল প্রভুর ভেজ এবং শ্রী, বিক্রম ও উন্নতিকর বাক্য, শক্রর ক্ষোভকর চেষ্টা, অমর্বণীয়তা, কার্য্যদক্ষতা ও নিভীকতা এই সকল বিষয় বর্ণন করিবেন। কামন্দকীতে দৃতের বিষয় এইরূপ লিধিত আছে---মন্ত্রণাকুশল, মন্ত্রজ, প্রগল্ভ, মেধাবী, বাগ্মী ও প্রপণ্ডিত এইরূপ গুণসম্পন্ন ব্যক্তি দৃত হইবার উপ-যুক্ত। এবংবিধ গুণসম্পন্ন দৃতকে দৃতাভিনানীর নিকট প্রেরণ

করিছে হইবে। রাম্বাদিশ্রের চর ছই প্রকার-প্রকাশ ও লগ্র-কাশ, ঘাহারা প্রকাঞ্চভাবে রালার কার্যাদি করে, ভাহাদিগকে দূত ও বাহারা অপ্রকাশিত থাকে, ভাহাদিগকে চর করে।

व्यथम प्रवास महान नहेंसे हत व्यक्षित कविरन, उथन वहें है जेगाद भृतता हुँ ममूमत दुवा क बाति ममूर्व हरेदन। य मामूर्य प्रकार वा भारत्य प्रक्रिया बाति ममूर्य हरेदन। य मामूर्य प्रकार वा भारत्य प्रक्रिया बाति का निवास का निवास का निवास करिया करिय

ং কাষার ও পীড়া হইলে তাহার বিররণ জানিলা থিনি বৈদাপৃহে গমন করেন, তাহাকে বৈজক্তে দৃত কহে। ইহার মুখে ওনিলা চিকিৎসক রোগ নির্ণয় করিবেন। "আতুরোপক্রমার্থজ দৃতো যাতি ভিষ্ণপৃহহ।"

তত্ত পরীক্ষণং কার্য্য যেন সংলক্ষ্যতে গদঃ 🖟 ( হারীত )

বৈদ্যক দূতের লক্ষণ।—ধঞ্জ, অন্ধ্, মুক্, বধির, বামন, স্ত্রী, ক্ক, তুষিত, জীণ, প্রাপ্ত, ক্ষণার্জ, দীন, ক্রোধী ইত্যাদি দোষমুক্ত ব্যক্তি দূত হইতে পারিবে না, অর্থাৎ ইহাদিগকে বৈদ্য-গৃহহ প্রেরণ করিতে নাই। (ত্রি) ২ প্রেবামার।

দূতক (পুং) দৃত স্বার্থে কন্। ১ দৃত। ২০রাজপ্রদত শাস-নাদি জ্ঞাপন করিবার প্রধান কর্ম্মচারী।

দূভত্নী (জী) দূভং ছ উপভাপে ভাবে উণাদ্ধিক জঃ, দাৰ্থক, দূভং উপভাপং হন্তাতি হন-টক্, ভীপ্। কদমপুশী। (Michelia Kadamba)

দৃত্তত্ব (ক্রী) দৃতভ ভাবঃ দৃত ভাবে স্ব। দৃত্তের কর্মা, দৌত্য, দৃত্তের ভাব।

দৃতি (ঝী) দ্রতে নারকাদিবার্তাহরণাদিনেতি। হ-বাহ' তি
দীর্ঘশচ। পৃতী। "প্রতিকৃতিরচ্নাড্যো দৃতিসন্দর্শিতাভাঃ
সমধিক্তরক্রপা: ভ্রমন্তানের:।" (রযু ১৮/৫৩)

দুতিকা ( খ্রী ) দ্ভিরেব খার্থে কন্ তভটাপ্ অভইবং। দ্তী।
"অধ্কো হড় যুক্তন বরং আবাচ্ছ্তিনা।
দ্ভিকা পরকার্যোগ এয়ো,দোষাঃ খরং রভাঃ।"

े (१४०५ २) ११० कृषिकाणिक वा छील्। त्रीका कर्ण विश्व जी, जील्करवत्र वार्कावहिनी, कृष्ठेनी, कृष्टेनी, नक्षाविका गर्गात-वातिका, मृष्ठीका, पृष्ठिका । नाविकाणिका पृजीत विवत्र बदेवल तिथिक सारक-"निक्टोर्का विश्व

^{* &}quot;পরেদিভজ্ঞা পরবাপ্যালার্যজ্ঞাপি তথবিদ।

সদোপেল্লমতির্যুনো দৃত্য ভাং পৃথিবীপতেঃ।

ইন্দিভজ্ঞা তথা সভাঃ শৃক্ষ সংক্লসভ্তবাঃ।

ইন্দিভজ্ঞা তথা সভাঃ শৃক্ষ সংক্লসভ্তবাঃ।

অসুরজ্ঞা ততির্দিকঃ স্থৃতিয়ান্ দেশকালবিদ্।

বপুমান্ বীভজ্ঞীর্যালী দুতো রাজ্ঞা প্রশান্ততে।

দৃতএব হি সন্মতো ভিনত্তোব হি সক্ষতান্।

বিস্বাহার্থা মিতার্থাল তথা শাসনহারকঃ।

দৃতারলোহ্যাতার্থাণঃ সমৈঃপালার্ব্যজ্জিতৈঃ।

বিস্বাহার্থা কার্য্যলাকে ন ক্রোভি বাঃ।

মিতার্থা: কার্য্যনাত্রোকে ন ক্র্যান্ত্ররান্তরঃ।

যথোক্রবাদী সন্দেশহারকো লেখহারকঃ।

ত্র দুতো ব্রল্গের ভিন্তবেছ্যারোন্তরঃ।

দৃতো হি ন লিবেং কিঞ্কিং সির্প্রো বিনিস্পান্তর।

শৃত্যানিহিপি ন জয়াৎ যানিদ্যা কাপি বেশস্য।" (মৃত্যুক্তরাজ্ঞার)

ভধা সক্ষোহারকঃ। কার্বাধেয়াজিধা দ্ভো ছ্ডাশ্চাশি ভথাবিধাঃ।" (সাহিত্যদ ৬৮৬)

৪ প্রবোজন মত লোক প্রেরণ করিলে ভারাকে সূত্রনাবার, এই দৃত তিন প্রকার—নিস্টার্থ, মিতার্থ ও সম্পেশহারক। দৃতীও এই প্রকার কার্নিতে হইবে।

*উতরোজাবমুরীর শবং বদতি ভোতরং।

প্রাইং ক্কতে কার্যাং নিস্টার্থত্ত স মৃতঃ ৪

মিতার্থতাবী কার্যান্ত সিদ্ধিকারী মিতার্থকঃ।

বাব্রাবিতসন্দেশহার: সম্পেক্রারসং ॥ (সাহিতাদণ ৩/৮৭-৮৮)

বে সকল দ্ত বা দ্তী উভরের অর্থাৎ বিনি প্রেরণ করিরাছেন এবং থাহার নিকট প্রেরিত হইরাছে, এই ছইলনৈর
ভাব বিশেষকণে অবগত হইরা নিজেই উত্তর প্রালান করে,
এবং কার্য্য স্থানির করে, ভাহাকে নিস্টার্ক্য; যাহারা অপ্প
কথা কর এবং কার্য্য সাধিত করে, ভাহাকে মিতার্থক ও্যাহারা
প্রভ্র কথা মাত্র বলিরা থাকে, ভাহাকে সন্দেশহারক করে।
নারীদিগের ভাবাভিব্যক্তি দৃতীপ্রেরণ ধারা জানা যার—
"লেথ্যস্থাপন্য রিথ্রবীক্ষিতে মৃত্ভাবিতৈঃ।

प्ठीमस्थारोगर्नाशा **ভা**বাভিবাজিরিবাডে ॥"

( সাহিত্যক ৩০১৫৬ )

স্থী, নর্ত্তকী, দাসী, ধাত্রীকস্তা, প্রতিবেশিনী, অপ্রোচ়া ক্ষা, সর্যাসিনী, রম্বকী, চিত্রকারাদি স্ত্রী, তাছ্ দিক, গান্ধিক স্ত্রী প্রভৃতি দ্তী হইরা থাকে। নামিকাবিষয়ে ইহারা দৃত্রী হর, কিন্তু,ইহাদিগকে নামক বিষয়েও দৃত্রী আনিতে হইবে। "দ্ত্যঃ স্থী নটী দাসী ধাত্রেরী প্রতিবেশিনী ৮ বালা প্রেব্রক্তা কারুঃ শিরিক্তান্তাঃ স্বয় ওথা ।"

দ্তীদিগের এই সকল গুণ থাকা আবর্ত্তক,—নৃত্য দীতাদি কার্যাদকতা, উৎসাহ, দৃঢ়তর বক্ষ, ভক্তি, স্বতি, চিত্তক্তা, অর্থাৎ চিত্ত দেখিরা যে সকল অবগত হইতে পারে, কর্জব্যার্থ স্মরণ, মাধুর্যা, নর্শ্মবিজ্ঞান অর্থাৎ পরিহাসান্ডিজ্ঞতা, বাগ্মিতা ও মধুরভাষিত্ব গুই সকল গুণ ভূষিতা হইলে তাহাকে দ্তী কহে। গুণের ভারতম্যান্ত্র্সারে দ্তী উত্তম মধ্যম ও

"কলাকৌশলমুৎসাহো ভজিদিতভক্ততা স্বৃতিঃ।

মাধুর্বাং নশ্মবিজ্ঞানং বাগিতা চেঁতি তদ্পুণাঃ র

তিতা অপি যথৌট্ত্যাত্ত্যাধ্যমধ্যমাঃ ॥" (দাহিত্যদ ৩০১৫৮)

দ্তীদিগকে চলিত কথার কুটনী বলে। কুলললার

স্পানশ সাধন করাই ইহাদের কৃষ্টি, ইহাদের কুহকে পড়িরা

ত জিতেজির পুরুষ ধর্ম হুইতে চুতে হুইরাছে।

দূত্য (क्रो) দূতত ভাব: কর্ম বা দ্বে বিশিশ্ত্যাঞ্চ। পা ৫।১)১২৬)
ইত্যতেতি বার্তিকোজ্যা বং, বৈদিকে জু ( দৃতত ভাগকর্মনী ।
পা ৪।৪।১২০) ইতি ব ৮১ দৃতকর্ম । ২ দৃতের ভাব, দৃতের কর্মী ।
দূন (পুং) দুর্তীপতাপে জ 'হুখোনীর্যক্ত' ইতি বার্তিকোজ্যা
তত্ত ন দীর্যক্ত। ১ অথবাদি দারা প্রান্ত। ২ উপজ্ঞা।
ত হুংখিভারিতি, প্রান্ত পরিভাপিত।

"পিছেন দূনে রসনা নিভালি

ভিজ্ঞারতে হংসকুলাবভংস 🗗 ( নৈবধচণ ০৷১৪ )

দূর্ (ত্রী) বেণ ভঙ্জী বাহ্নকাং কৃ। প্রাণক্ষণ দেবতাজেদ।

"সাবা এবা দেবতা দূর্নাম দূবং হুতা মৃত্যুদূরিং হ বাদান্
মৃত্যুর্ভবিতি ব এবং বেদ।" (শতপথ আ॰ ১৪।৪।১।১০) 'উপা
সকলবীরহা প্রাণক্ষপ। ওদেবতা দূর্নাম দ্রিত্যেবং থাতাঃ
অতঃ ভঙা' (ভাষা) উপালকদিগের শরীরে অব্যতি প্রাণক্ষপ দেবতা 'দূর্' এই নামে থাতে বলিয়া বিভঙ্ক। উপাসক্ষে মৃত্যুক্ক দূর্ করে বলিয়া এই অভ দূর্ নামে থাতে।
দূরং করোতি মৃত্যুম্পাসক্ত দূর ক্তার্থে পিচ্ বাহ্লকাং
ম দ্বাদেশঃ কিপ্, শিলোপঃ।

দুর (জি) ছর্দ্ধনেরতে গ্রাপ্যতে ইতি ছন্ন-ইণ্-(ছনীণো-লোপন্ড। উণ্ ২।২০) ইতি রক্ধাতোর্লোপন্ড। অন্নিকট, অস্ত্রিক্ট। প্রায়--বিপ্রকৃষ্ট, অনাসন্ত্র।

শ্রীরভ শুণানাঞ্দ্রমত্যস্তম্ভরং।

শরীরং ক্ষণবিধ্বংসি করান্ত: ছারিনোগুণা: ।" (হিডো ১৪৩)
বৈদিক এপর্যায়—,আক, পরাক, পরাচ, আর, পরাবত।
(নিক্জেও অ)

শ্রাতিকাদিধীহেতুরেকা নিত্যা দিওচাতে।" (ভাষাপ')
দিকের দেশগত পরস্বই দ্রস্থ, অত্যন্ত দ্র হইলে প্রত্যক্ষ জ্ঞান হর না, কোন বস্তু অতিশর দ্রে আছে, এই দ্রস্থ প্রত্যক্ষ জ্ঞানের প্রতিবন্ধক।

"অভিদ্রাৎ সামীপাাদিক্সিয়ঘাতান্মনোহনবস্থানাৎ। সৌশাধাবধানাদভিভবাৎসমানাভিহারাচে।" '(সাংধ্যকা'•) অভিশয় অর্থ ব্যাইকো ইঠন্, ঈয়সুন্ প্রভৃতি 'প্রভায় হইলে দূর শুক্ব স্থানে দ্ব আদেশ হয়।

দূরক (অি ) দ্র খার্থে কন্। দ্র। দূরপ (অি ) দ্রংগছভি দ্র গমড। দ্রগামী

ঁবো জাকাশমরো দেবো দ্রগং শক্ষণক্তবং ।" (ছরিবংশ ১৩৯:৪০)
দূরপ্ত ( জি ) দ্রং গভঃ ৬তং । বাহারা দ্রে গমন
করিয়াছে ।

দূরগামিন্ (অ.) দ্বং গছতি দ্বী-গম-ণিনি। বে দুবে প্যন কুরিয়াছে।

ろうし

দূরপ্রহণ (ক্রী) বছদুর হইতে গ্রহণ বা দর্শন করিবৃার ক্ষতা।
দূরক্ষরণ (জি) দূর করা, স্থানাস্তর করা।
দূরংগত (জি) দূরে থাকা।

দূর্জম (অি) দ্রং গছেতি গম বাহলকাৎ বেদে থ, মুম্চ। দ্রগামী। "

"দ্রদমং জ্যোতিষাং জ্যোতিরেকং।" ( শুরুষজু: ৩৪।১)
লোকিক প্ররোগে দ্রদমণদ হইবে না, "দ্রগ" হইবে।
দূরচর ( আ ) দ্রে চরতীতি চর ট। দ্রবিচরণকারী, যাহারা
দ্রে বিচরণ করে। টিঝাং তীষ্। স্ত্রীলিকে দ্রচরী হইবে।
দূরতস্ ( অব্য ) দ্র তস্। দ্র হইতে।

"রাতৌ চ বৃক্ষমূলানি দ্রতঃ পরিবর্জনেও।" ( মন্থ ৪।৭০)
রাজিছালে বৃক্ষমূল দ্র হইতে পরিবর্জনীয়।
দূরত্ব ( ক্লী ) দ্রত ভাবঃ দ্র ভাবে ছ। দৈশিক পরছ, দেশগত

"দোবো হ প্রমায়া জনকং প্রমায়াত ওণোভবেং।
পিওদ্রতাদিরপো দোবো নানাবিং মৃতঃ ॥" (ভাষাপণ)
দূরদর্শন (পুং স্ত্রী) দূরে হপি দর্শনং দৃষ্টি র্যন্ত। ১ গ্রা জিরাং
ভাতিতাং ভীষ্। (পুং) ৽২ পণ্ডিত। দৃশ-ভাবে সূট্।
(ক্লী) ৩, দ্র হইতে দর্শন। দ্রতো দৃশ্রতে হনেন দৃশ-করণে
ব্রাট্। ৪ দ্রবীকণ যন্তভেদ, দ্র্বীন।

দূরদ শিন্ ( জি ) দ্রাৎ পশুতি কার্যোৎপত্তে: প্রাক্ পশুতি কানাতি বা দৃশ-পিনি। ১ দ্রদর্শক। (পুং) ২ পশুত। ৩ গুগ্র।

দ্রদৃশ্ (ঝি ) দ্রাৎ পঋতি দৃশ-কিন্। ১ দ্রদশী। ২ প**ভিত**। ৩ গ্র।

দূর দৃষ্টি ( তি ) দৃরে দৃষ্টির্যভা ১ দ্রদর্শী, পরিণার্শদর্শী। ( জী )
ং দ্রদর্শন্। .

দূরমূল (পু:) দূরে অসেরিকটে মূলং যক্ত। মুঞ্জুণ। দূরযায়িন্ (তি) দূরে যাতি যা-ণিনি। দূরগামী, যে দ্রে 'গিয়াছে।

দূরবর্তিন্ ( ত্রি ) দূরে হর্ততে দ্র-বৃত-পিনি । দ্রস্থিত, যাহা
দ্রে আছে ।

দ্রবস্ত্রক ( তি ) पृरंत रखः यष्ठ । বজ্ঞ होन, উनन । 
দ্রবাসিন্ ( তি ) पृरंत वंगिष्ठ বস-ণিনি । प्राप्तभवाती,

যে प्र प्राप्त वाग करत ।

দূরবীক্ষণ (ক্লী) দূরং বীক্ষাতে হনেন দূর-বি-লিক লাট। ' (Telescope) চক্র, অগোচর দ্রস্থিত বস্তুদর্শনার্থ নলাকার যন্ত্র। যে যন্ত্র হারা বহুদ্বের পদার্থ দেখা যায়, ভাহাকে দূরবীক্ষণ কহে।

द नक्न वड बाता कीवनम्ट्द अप्सविध क्_{नावि} সাধিত হইরাছে, তমাধ্যে দ্রুবীকণ যত্র একটা। ইলগুরালোর হিডেলবর্গ দেশের একজন চসমাৃ-ব্যবসায়ীর পুত্র হুইবানি কাচ লইয়া এদিক্ ওদিক্ করিয়া ক্রীড়া করিতেছিল ঐ তৃইধানি কাচ, একবার এদিকে একবার ওদিকে এইরপে দেখিতে দেখিতে ঐ কাদ বারা সমুখন্থ এক গিব্জার চ্ডাদিংত কুকুটকে অপেক্ষাকৃত বড় ও তাহার উপরিভাগ নিয়ে ও নিম্ভাগ "উপরে দেখিতে পাইলু। এইরূপ দেখিয়া অত্যন্ত বিশ্বরাপর হইয়া ভাহার পিঁভাকে ভৰিষর জ্ঞাত <mark>ক</mark>রিল। ভাহার পিভাও সেই ছই কাচ হারা ডক্রপ অবলোকন করিয়া অতিশর চমংকৃত হইলেন। তিনি অনেকু চিন্তা করিয়া নেই হুইখানি কাচ এক কাৰ্ডফলকে এরপ কৌশুলে হাণিত कतिरामन, 'द्रव हेम्हाक्राम जीहा निक्षेष्ठ 'अ प्राप्त कतिराउ পারেন, এই প্রকারে, দ্রন্থিত বস্ত নিকটন্থিত বস্তর ভার দৃষ্ট क्तिवात वज व्यमम्पूर्वक्राप स्टेट रहेन। ১४१० वृहार ডাব্রুলার ডি পরিপ্রেক্ষিত কার্টের ( perspective glasses विषम वर्गना करतन। ७९ भरत प्रवीक्षण युरत्वत्र व्याविष्ठात्र সম্বন্ধে বহু পরীক্ষা হয়। যুরোপীয়গণ সকলেই স্বীকার করেন, হলও হইডেই দ্রবীক্ষণের আবিকার হইয়াছে। জচারিয়াস্ জান্দেন, ছান্স্ লিপার্সে, জেম্স্ বা যাকুব মেতিয়াস্ এড়তি কএক ব্যক্তি দ্রবীক্ষণের আবিষ্ঠা বলিরা খ্যাত। তৎপরে ভূবনবিখ্যাত গ্যালিলিও ইহার বিষয় অবগত হইগ দূরবীক্ষণযন্ত্র ক্ষ্টি করিতে যন্ত্রশীল হইলেন। . তিনি ১৬০১ थुंडोटन এक कार्कमत्र भरनत्र इहे मिटक प्त्रमृष्टिनाधक काठ বসাইরা প্রকৃষ্ট এক দ্রবীক্ষণ বল্লের সৃষ্টি ক্রিলেন এবং ভদ্বারা আকাশমণ্ডলত্ব ক্যোতিক সকল নিরীকণ করিতে লাগিলেন। 'তিনি এই ষল্লের সহায়ভার বৃহস্পতি গ্রহের চতুর্দ্দিকে চারিটা চক্ত ভ্রমণ করিভেছে, স্ব্য আপন মেরুদঙে বুরিতেছেন ুও ভন্মধ্যে নানাবিধ দাগ আছে, চক্র ^{মধ্যে} পর্বতি ও উপত্যকা আছে এবং সামান্ত চকুর অগোচর অনেক ক্যোতিক আবোশমগুলে বিরাজমান আছে, এই স্বন ়বিষর আন্বিফার করিলেন। ১৬১০ খৃ: আবেদ প্রাকৃত ছুর্বীকণ यरज्ञत्र रुष्टि रुरेण। जनविध कारम कारम क्षेत्र वरज्ञत्र जेनिक रहेगी আকাশমগুলস্থিত অত্যাশ্ৰী পদাৰ্থ সকল আবিষ্ণুত হইতেছে। **ভোডির্বিদ্ পঞ্জিত হর্নেল সাহেব কৃত** দ্রবীক্ষণ ব্যবার। দৃষ্ট বস্তু তাহার খাভাবিক অবরুত্ত অপেকা ৬০০ 🕅 বড়দেধায়। মহাতেজঃপ্**ল** শনিপ্ৰহকে ঐ যগ্ৰারা ^{লাই}

রূপে দেখা যায়, বোধ[®] হয় যেন আসমা ঐ প্রহাতি^{রুখ}

৪০০০০০০০ ক্ৰোশ **প**ঞ্চানৰ হইয়া ভাৰাকে স্পষ্ট ৰেণিতেছি।

১ বণ্টার বদি আমরা ২৫ জোশ ঐ গ্রহান্তিম্বে গাবন করিতে পারি, তাহাঁ হইলে ঐ ৪০০০০০০ কোশ উত্তীর্গ হইতে আমাদের ১৮০ বংশর সম্য লাগে। কিন্তু এই বন্ধের সহ্বিত্ত ব্যার আমরা এই দ্রহিত ব্রুলেও স্থাপট রূপে দেখিতে পাই। ইহার সহায়তার আমরা, বহুদ্বস্থ অগম্য শাঁচল জ্যোতিক ও তাহাদের অবস্থিতি, স্থান ম্পাইরপে দেখিরা থাকি। দ্রবীশাশ যন্ত্রের স্থাই হওয়াতে জ্যোতিবশাল্রের বিশেষ উন্নতি সাধিত হইরাছে। পুর্বে বে সকল গ্রহ, উপগ্রহ, নক্ষর এবং ধ্যুমকেত্ লোকের স্থানর স্থাবার স্থাবার আবিহার করিয়াছেন; দিন দিন এই বন্ধের উন্নতি সাধিত হইতেছে। কুল্র ও বৃহ্ৎ প্রভৃতি অনেক প্রকার দ্রবীক্ষণ যন্ত্র আছে।

8 • देशि वाानगुंक काठवात्रा वस्त्रप्थ (pbject-glass) निर्माण कतिया अकरी मृत्रवीकण यस निर्माणार्थ व्यानक मिन इहेट क अक्सम मार्किन देवकानिक नैश्विक विरम्ध छडी क्तिरलह्न, हेरात वस्त्रपुरखन्न अकाश्य शानिनगन रहेरल নিশ্তি হইয়া আসিয়াছে। একখণ্ড কাচ ৰারা বলি বস্ত্রপণ্ডের কাজ চলিত, ভাহা হইলে এ প্রকার একটী দ্রবীক্ষণ নির্মাণ সহজ সাধ্য বিষয় হইয়া পড়িত। কিন্তু বস্তুপত্তের জন্ত আরও একথানি ভিন্ন প্রকৃতির কাচ আবশ্রক এবং এই কাচ প্রস্তুত করা এত কঠিন ব্যাপার, যে তিন বৎসর ধরিয়া অবিচিছ্ন ভাবে কাৰ্য্যতৎপর ও স্থানিপুণ শিলিগণ ৰাবা কাৰ্য্য করা-हेलाउ এकथ्रानि नर्काण स्मात काठ ध्यस्त हहेरव किना, অবিষয়ে মতবৈধ আছে। এই কাচথত ,এমন ভাবে গঠিত হইঁবে, যে ইহার বিভিন্নাংশের স্থলতা পুর্বপ্রস্তত কাচের তত্তৎ অংশের স্থূলতার সহিত একটা নির্দিষ্ট অমুপাত রাখিবে এবং আলোক রশ্মি সকল প্রথম কাঁচ খানির মধ্যে বিফারিত (refracted) ও বিলেষণ জনিত রঙ্গিন হইয়া আসিয়া বিতীয় থণ্ডে প্রবেশ করিলে ধাহাতে রশ্মি সকলের বিশ্লেষণ সম্পূর্ণ অপনোদিত হইয়া দ্রস্থ বস্তীর ছায়া এক-কালীন বৰ্ণছটো শৃক্ত হয় এবং বাহাতে কাচ ৰাৱা কেবলমাত্র বিকারণের কার্য অ্সাধিত হর, তাহা বস্তবণের বিতীয়াংশের এইভেড সময়ে বিশের স্বিধানের সহিত দেখা আবিশুক। স্তরাং এইরূপ একখণ্ড কাচ ঘদিরা মাজিরা প্রস্তুত করিতে তিন বংসরের অধিক সমর লাগিবে, তাহাতে আর আশ্চর্য্য কি। এই প্ৰকার ৪০ ইঞি ব্যাসযুক্ত কাচথও নিৰ্দ্দিত হইলে हेहा (ब्ल्याजिक्सिन्निरशंत अञ्चननेदेत आन्टदेत नामश्री हहेटन रं वर वह काठ इहेशानि किलमह मूनावान् हहेरव।

अखाबिंछ म्बरीक्न निर्माण त्मव ना हरेए छे हेराबाबा

কি কি কার্যা সাধিত হইবে এবং আধুনিক বৃহত্তম দ্রবীকণ অপেকা ইহুরি আকৃতি-বৃদ্ধিকারী ক্ষমতা কত অধিক হইবে, এখনই সেই সকল বিষয়ের গণনা হইতেছে।

লিক্ মান্দ্ৰীন্দরের ছই হাত ব্যাসমুক্ত দ্রবীক্ষণ ও আরর্জান্তের ৪ হাত ব্যাসমুক্ত যন্ত্রই আলকাল পৃথিবীর ২টা সর্কারহৎ যন্ত্র বলিরা কথিত আছে। ইহার মধ্যে বিতীরটার (লর্ড রসের) বন্তরীর ব্যাস পরিমাণ অপরটা, অপেকা বিশুণ হাইলেও একটা প্রতিকলক দ্রবীক্ষণ (Reflecting telescope) বলিরা লিক্ষের যন্ত্রটার অপেকা ইহার পরিসর বৃদ্ধিকারী শক্তি অনেক কম। এইরপ লিক্-মানমন্দিরের দ্রবীক্ষণ যন্ত্রটা ক্ষমতার সর্বাধান বলিরা বৈজ্ঞানিক্লণ করিত দ্রবীক্ষণের ক্ষমতা এই যন্ত্রটার সহিত জুলনা ,করিরাছেন এবং গণনা করিরা দেবিয়াছেন, নৃত্র যন্ত্রের রন্ধিপ্রীক্ষরণশক্তি (Tightgathering power) লিক্ষের বন্ধ অপেকা এক চতুর্থাংশ অধিক হইবে। স্ক্ররাং এই যন্ত্রটা বারা অপরিজ্ঞাত তারকা ও নীহারিকা মণ্ডলের প্রক্রতি আবিদ্ধত হইবার সন্তাবনা এবং ওরিরন্ (orion) প্রভৃতি জ্যোতিক্রালির রহস্ত ক্তকটা উরেদ করা সন্তবণর হইবে বলিরা আশা করা যার।

আলোক রশিথপেরণে বাষ্ত্ররের বাধা ও আকাশের অপরিচ্ছিন্নতা ইত্যাদি ধরিয়া হিদাব করিয়া এই নৃতন ষদ্ধীর আফতি বৃদ্ধিকারী ক্ষমতা শেবে কি দাঁড়াইবে, ইহা লইয়া অনেক বাগ্বিতওা হইয়া গিয়াছে এবং ইহাবারা লম চক্ষ্ দৃষ্ট পদার্থ যে একলক গুণ বৃহদারতন দেখাইবে, তাহা সকলেই একবাক্যে স্বীকার করিয়াছেন। স্মৃতরাং এই যন্ত্র বারা শুক্র ও মকলাদি গ্রহের উপরিস্থ নানাবিবরের আবিদ্ধার প্রত্বার সন্তরেনা। কিন্তু ইহা গ্রহবাসী জীবগণের অভিত্ব সংপ্রমাণ বা তাহাদের কার্যাকলাপ প্রত্যক্ষ করাইবার উপযোগী হইবে না। কএকজন পণ্ডিত গ্লানা করিয়া দেখাইছেন;—এই দ্রবীক্ষণ ষ্ট্রটী বারা চক্রমণ্ডল পরীক্ষা করিলে ইহা ১২০ জোশ দ্রবর্ত্তী পদার্থের স্থার বৃহৎ দেখাইবে

বিজ্ঞানের উন্নতির সহিত কওঁই ন্তন ন্তন যা আবি-ফার হইতেছে, তাহার ইয়তা করা সম্ভবপর নহে। কালে হয়ত এইরূপ দ্রবীক্ষণ যন্ত্র নির্মিত হুইতে পারে, যাহাধারা জ্যোতিক্মপুলের সকল বিবরণ প্রত্যক্ষ্গোচর হুইবে।

দূরবান (দেশজ) দ্রবীকণ যত্ত।
দূরবেধিন্ (পৃংণ) দ্রাৎ বেধো হত্তাত ইনি। ১ দ্র ছইতে
লক্ষ ভেদক। দ্র নিকেপা অল, শুরাপাতী, দ্রহ বস্তবে যাহা বিদ্ধান্ত, সারকাদি। मृत्रभ्रः ह (बि) प्रव गरहा हिल्यंत्र । प्रवृत्त प्रविक्त , प्रविक्त । प्रवृत्त क्षि । प्रवृत्त क्ष क्ष । प्रवृत्त क्ष क्ष । प्रवृत्त क्ष क्ष वित्त क्ष क्ष ।

मृत्रन्ह (बि) प्रत जिडंजि प्त-शःक। इतर्श्वि, र्व प्रत शास्त्र,
प्तवर्जी।

দূরাপান্ত (ত্রি) দূরমাণওতি দূর আ-পত-ণ। দূরপাতী অন্ত্র, বে,অন্ত দূরে নিকেল করা বার।

দূরাপাতিন্ (বি) দ্রং আপততি আ-শত-ণিনি। দ্র-নিকেণ্য অস্ত্র।

দূরাপ্লাব (তি) দূরে আপ্লাবে বজ। দূরে সন্দর্শনকারী, বে দূরে সন্দ প্রদান করে।

দুরাবস্থিত ( জি ) দ্রে অবস্থিত, দ্রবিত, দ্রবর্তী।
দূরীক্তর্ব ( ক্লী ) বহিছত করও, তাড়াইরা দেওন।
দূরীক্তত ( জি ) তাড়িত, বাহাকে দ্র করিরা দেওরা হইরাছে।
দূরীভূত ( জি ) তাড়িত, বহিছত, বে দ্র হইরা গিরাছে, বে

े অবমাননা সহকারে বহিষ্কৃত হইরাছে। দুরুত্। (জী) হর কহ-ক বেফে পরে পূর্বাণো পর্বিঃ। ক্সুত্র-

রোগ ভেদ। দূরে অমিত্র (পুং) দূরে অমিত্র শক্তর্যক্ত বেদে সপ্তমাঃ অনুক্।

অকোনপঞ্চাশৎ মক্সৎমধ্যে মক্সৎ ভেদ।
দুরেত্যে (ত্রি) দূরে ভবঃ এতা। দূরভব, দূরগামী, দূরক।
দুরেপাক (ত্রি) দূরে পচতি পচ-শ ভক্ষাদিছাৎ কুছং, সপ্তমাঃ

অপূক্। দ্রে পাচক। স্তিরাং টাপ্। স্তর্নারিগণে এই শব্দ স্ত্রানিক নির্দেশ আছে, কিন্তু নিক্বিশিষ্ট পরিভাষার নিত্যতা নাই, এইঅক্স এইবলে কুম্ব হইল।

দূরেপাকু ( ত্রি ) পচ-উণ্ ভঙ্গদিছাৎ কুরং সধীম্যাঃ অলুক্।
ধ্রে পাচক।

দূরেরিতে ক্রিণ ( ত্রি ) দ্রে ক্রিরিতং ক্রকণং ঘেন। দূর পর্বাস্ত প্রেরিড দর্শন, কেকর, টেরা, বক্রাক্রি।

দূরোহ্ (পুং) ছংথেন ক্ষয়তে হসৌ হর-ক্ষ কর্মণি ধল রেকে পরে পূর্বাণো দীর্ঘঃ। > ছংথ ধারা রোহণীর, রোহণ করিতেঁ অলকা, আদিতা লোক। "অসৌ বৈ দ্রোহো যো হসৌ তপতীতি।" (ঐতং আং ৪।২০) (জি) ২ দ্রায়োহমাজ। দ্রোহণ দি ) ছফরং আরোহণং যন্ত। > আদিতা। (রী) ২ ছন্দোভেদ। "অসৌ বা আদিত্যো দ্রোহণং ছলাঃ।" (শুরুষজুঃ >০।৫)

(ত্রি) ও দ্বাবোহণীর। ৪ অতি 'হাংবে আরোহণ। ৎ হংসাধারোহণ। ও উচ্ছালফ মন্ত্র আধ্যার ভেদ। "পুনত্রি-পভাষ্ধর্চনা পচ্ছ এব সংধাম।" (আর্থা শ্রৌণ ৮।২।১৪) গ 'পুনজিপভেতে বমাদিনোজং পঞ্চমং অর্থইলঃ বঁচং পুন:
পাল্য: সপ্তমং, এডদ দ্বোহণ্য ভবতি। স্থামবাননিবনের
বক্ সপ্তক্ষোহভাতা দ্রোহণ্যিতি জ্ঞাপনার্থ্য।' (নাবাহণ)
"এডদ দ্রোহণ্য" (জার্খ জৌ দ্বাহণ্যিতি,
ক্লাক্তে: পুনদ্রোহণ্যচনং বিবিধং। দ্রোহণ্যতীতি
ক্লাক্তাং পুনদ্রোহণ্যচনং ভ্রতি।'
(নাবাহণ)

দুর্য্য (র্ন্স ) দ্রে উৎসার্যাং দ্র বং। > পুরীব, বিঠা, আড:
কালে উথিত হইরা, নৈকতি কোণে গাঁড়াইরা বঁণি জাগ করিলে বত দ্র বায়—সেই স্থান ভ্যাপ করিরা বিঠা জ্যাগ করিতে হয়, এইলম্ভ পুরীবের নাম দুর্য।

"ভতঃ কলাং সমুখার কুর্বাবৈদ্ধকং নরেখর। নৈর্বাত্যামির্বিকেশমতীত্যাভাধিকং ভ্রঃ ॥" (বিফুশু:)

पूर्व ( गूर ) नृगछम । ( छान कारश्र का मूर्क ( गूर्स हिरनातार कह क्वि । ( श्री ) मूर्क ( ग्रें वा ग्रें वा ग्रें वा ग्रें विराम कार्क ( ग्रें वा ग्रें वा ग्रें वा ग्रें विराम कार्क विराम कार्य कार्क विराम कार्क विराम कार्य कार्क विराम कार्य कार्क विराम कार्क विराम कार्य कार्य

গোলোকাঁও শতবীবাা খেতদ্ব্যার নামান্তর, ইহার ওণক্যার, তিজে, মধ্র রস, ত্রণনাশক, ওলোধাত্বর্ত্তক, শীক্
বীব্য, বীসপ্, রক্তদোব, তৃষ্ণা, পিন্ত, ক্ষ ও লাহনাশক।
গঙালা, মংস্থাকী ও শক্লাক্ষক ইহা গওচ্ব্যার নামান্তর;
গুণ-শীতবীব্য নোহলোবক, ধারক, লঘু, তিজে, ক্ষার,
মধ্র রস, বার্বর্ত্তক, কটু, বিপাক এবং দহি, তৃষ্ণা, কড়,
কুঠ, রজপিত, ও অরনাশক। (তার্প্রকাশ)
দ্ব্যার উৎপত্তি বিব্রন্ধ-তবিন্মোন্তবে এইরপ লিখিত

আছে— পুরাকালে বর্থন দেবাক্তর কর্তৃক,ক্ষীরোদ সমূদ্র মধিত হয়, সেই সময় বিচ্ছু মন্দর পর্বান্ত বাছ ও ককা বারা ধারণ করিয়াছিলেন। মধন গুল্প এই পর্বান্ত অভিশব্ধ কেগে ব্রিডে লাগিল, ভাষাতে বিক্তুর হোম সকল কর্বিত ইইয়া উৎগাটিও

हरेबाहिन ; तनरे नकन त्वाम छेन्दिवात्रा छे० व्यक्त हरेत्रा छो। ন্তরে লাগিরাছিল, ভাষাতে হরিৎবর্ণ তুল্দর দুর্বা উৎপন্ন হর। এইরপে বিষ্ণুর শরীর হইতে ুদ্র্বা উৎপন্ন হইরাছিল। এই দুর্কার উপরি মধিত অমৃত বিশ্বত হইল; ঐ অমৃতকুভের গাতের বারিবিন্দু ইহাতে পভিত হয়; সেই লয় এই দুর্কা অলর ও অমর হইরাছে এবং ইহা অভি পৰিত বলিয়া প্রসিদ্ধ। म्सी পार्ण नकन विनष्ट करत, वह कछ देशव नाम म्सी। "দুর্বা হরতি পাপানি ধাত্রী হরতি পাতকং। हत्री छको हत्त्र स्वागः जूननी हत्रस्य खत्रः ॥ " (विक्रूपः) अन्ती श्वात अकृति थरीन छन्नत। दक्रम म्सा बाता ॰ দেবপূজা হইরা থাকে। দুর্কা অভিশর পবিতা। কিন্ত গুর্গা-দেবীকে দুর্কা দারা পূজা করিতে নাই। "अक्टेडर्नार्फरप्र विकृश न जूनका विनाप्तकः। न पूर्वत्री यरकर ह्रकार नोचारङन निवाकत्रः॥" ( आक्रिक्छः) অক্ষত ৰাবা বিষ্ণু, ভূলদী ৰাবা বিনায়ক এবং দুৰ্বা ৰাবা ত্ৰ্গাকে পূজা করিবে না। "ন দুর্ক্ষা বলৈৎ ছুর্গাং এই বচনাত্ব-সারে হুর্গাকে দুর্বা বারা পূজা করা যাইবে না, কিন্ত হুর্গাপুজার অর্থে দুর্কা দেওয়া ঘাইতে পারে, কারণ অর্থে দুর্কা দান বিশেষ विधि चाह्य, वर्षे बग्न चर्चा कार्या पूर्वामान त्माबावर नहर । দুর্ববাক্ষী ( স্ত্রী ) বস্থদেবের ভ্রাতা বৃক্ষের পত্নী। "उक्त भूक त्रमानातीन् पूर्वताकाः त्रक जात्रत्य ।" (ভाগ । ৯।२८।२२) দুর্ব্বাগ্রাম্ পঞ্কুটের অন্তর্গত এক প্রাচীন গ্রাম। চন্দন-কারির ৫ ক্রেশ পূর্ব্বে অবস্থিত। (দেশাবদীবিবৃতি) **म्**र्द्वामाञ्चल, देवमादकांक ब्रक्कशिखाधिकादवब्र खेवध दण्म। প্রস্তুত প্রণালী—লাউদখানি চাউলু ৪ সের, ১৬ সের ব্রুল মাড়িয়া হাঁকিয়া তাহার ১৬ সের জল লইবে, তাহাতে ছাগ-হ্য ১৬ দের, ছাগছত ৪ দের, কঝার্থ দ্র্মামূল, স্ট্রিরকেশর, মঞ্জিটা, .এলবালুক, চিনি, খেতচন্দন, -বেণারম্ল, মুতা, त्र**क** हन्मन ७ भन्नकार्ध कार्काक २ राजाना निर्दा वर्क वसन হইলে এই ম্বত পান, নাসিকা হইডে রক্তলাব হইলে ইহার নত, কর্ণ ও চকু হইতে মক্তলাব হইলে চকুতে পুরণ ও श्रञ्जात त्रित्रा त्रकात्वाव ब्हेटन हेशत भिठकात्री अवः रतामक्ष হইতে রক্তক্তরণ হইলে গায়ে মালিস করিবে। नृर्द्धा के भी (जी) नृर्द्धा कक्ष भारती दे शिवा बहे भी। छाउँ ভুকাইমী, ভাজমানের ভুকুণক্ষের অইমী তিথিতে বতামুদান

"বন্ধন্ধার প্রতিষ্ঠিন্য বিশেষ ।

দ্র্লাং গৌরীং গর্নেক ফলাকারং নিবং ব্রের ॥

কলবীকীদিভিঃ সর্কাং শস্কুং নমঃ শিবার চ।

সন্ধিপক্ষশ্লীরাং ম্বাতে বন্ধত্যরা॥" (গরুড়পু॰)

ভারেষাদেশ শুক্লপক্ষের অইমী ভিনিতে উপবাস করিয়া দ্র্মা, গোরী, গণেশ ও মহাদেবকে ফল প্রভৃতি যথাশক্তি উপচার হারা পূজা করিবে এবং এই অন্যিপক দ্রব্য ভক্ষণ করিতে হইবে। এই রুপে বুড়াছার্ডান করিলে ব্রহ্মহত্যা, পাপ হইতে মুক্তি হয়। এই ব্রন্ত অইমর্থ সাধ্য। যে বংশরে আরম্ভ করা যার, সেই বংসর হইতে আরম্ভ করিয়া যে বংশর পূর্ণ হইবে সেই বংশরে এই ব্রন্ত প্রতিষ্ঠা করিতে হয়, যে বংশর এই ব্রন্ত গ্রহণ করিতে হইবে, সেই বংশর যদি অকাল হয় তাহা হইলে ব্রন্ত গ্রহণ করা যারু না এবং যদি প্রতিষ্ঠা বংশরে কোন রূপ প্রতিবৃদ্ধকে প্রতিষ্ঠা দা, করা হয়, তাহা হইক্লেশ্যকালে প্রতিষ্ঠা করা যাইবে না। যে বংশর কালাভ্রম্ম থাকিবে; সেই বংশরে প্রতিষ্ঠা করিতে হইবে।

ত্রতপ্রবোগৰিধি—ত্রতারভের পূর্বদিনে সংখ্য করিছা প্রদিন• প্রাতঃকালে ঘানাদি ও আচমন করিয়া খণ্ডিবাচন করিবে; পরে স্থার্থ দিরা সম্বন্ধ করিতে হইবে।

সঙ্গল—বিষ্ণুর্নমোহন্য ভাত্তে মাসি ভক্লে পক্ষে অইম্যা-তিথাবারভ্য অমুক গোত্তা প্রঅমুকী মর্ত্যলোকাধিকরণক-ত্বথ-সৌভাগ্যাবিচ্ছির পুত্রপৌত্তাদিলাভপূর্বক ব্রন্ধলোকপ্রাপ্তিকামা ভবিষ্যপুরাণোক্তাষ্টাবর্ধনিস্পাদিত দুর্বাষ্ট্রমীব্রতমহং করিষো।

এইরপে সম্বর করিয়া সংকর হত পড়িবে; পরে যথাবিধি
আসন শুদ্ধানি করিয়া গণেশাদি দেবতা প্রভৃতিকে পূজা
করিবে। পরে ক্লফের ধ্যান করিতে হইবে। ধ্যান—
"নীলোংখুলদলখামং চতুর্জাহং কিরীটিনং।
শৃত্থশক্রগদাপন্থধারিণং বনমালিনং॥
•শীবংসক্ষণোপেতং প্রিয়া বাঞ্চা সম্বিত্তং।"

এইরপে ধ্যান ও মানসোপচারে পূজা করিয়া "ওঁ রক্ষায় নমঃ" এই মত্রে পাদ্যাদি ছারা পূজা করিবে।

তাहात পর আবুরণ দেবতা পূজা করিতে ইইবে। শচী, 
হুর্গা, লোরী, ত্রী, সরস্বতী, গলা, দিতি, অদিতি, স্থ্যেণা, অরুকতী, মুন্দোদরী, স্থতন্তা, শাতিলী, জরা, বিজয়া, রমা, 
দীক্ষা, রেবতী, দমরতী, শীরা, স্থকেশা, রস্কুা, বাস্থ্যেব, 
দেবকী, বিজ্ঞু, মহাদেব এই সকল আবরণ দেবতা পূজা 
করিয়া দ্র্বার ধ্যান করিতে হইবে। ধ্যান—
ও নীলোৎপলদলশ্রামাং সর্বদেবশিরোধৃতাং।
বিজ্পদেহোদ্ভবাং পুণ্যামমুতৈরভিষিঞ্জিং।

করিতে হয়, ইহাকে দুর্বাষ্ট্রমী ব্রভ কহে।

•"শ্ৰাৰণীদৌৰ্গনবৃদী দুৰ্বন চৈব *ছ*ভাশনী।

र्श्विदिषय कर्खवाँ निवतािक वंदन निनः॥"

সর্ক্লৈবাজরাং দ্র্জামমরীং বিষ্কৃত্রপিনীং।

দিব্যসন্তানসংদাত্রীং ধর্মার্থকামমোক্ষদাং॥"

পরে যথোপচারে দ্র্জা পূজা করিরা প্রীণাম করিতে

ইবৈ। প্রণাম মন্ত্র—

শ্বং দ্র্জেহম্তনামাসি প্রভাসি ক্রান্তরিঃ।

সোভাগ্যসন্ততিং দ্বা সুর্ক্কার্যকরীভবঃ॥

যথাশাথাপ্রশাথাভি বিস্তানি মহীতলে।

তথা মমাপি সন্তানং দেহিত্ম্ভ্রামরং॥"

এইরূপে প্রণাম ভোজা উৎদর্গ করিতে হইবে, ভাহার পর বামহত্তে ভোর ধারণ করিরা ব্রতের কথা শুনিতে হইবে। ব্রতক্থা—

় যুধিষ্টির উবাচ। ব্রুমেকং সমাচক বিচার্য্য মর্ধুস্থন। যেন সম্ভতি বিচ্ছেদো কার্যতৈ ন কদাচন॥

শ্রীকৃষ্ণ উবাচ।
মাসি ভাদ্রপদে ১ইম্যা শুক্লপকে যুধিষ্টির।
দৃর্ব্বাইমীরতং নাম যা করোতি পতিব্রতা।
ন তন্তাঃ করমাপ্রোতি সন্তানং সাপ্তপৌকুবং।
নন্দতে বর্দ্ধতে নিতাং যধী দৃর্ব্বা তথা কুলং॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।
কথমেবা সমুৎপরা কমাদূর্কা চিরায়্বী।
কমাৎ বন্দ্যা পবিত্রা চ লোকে ধন্তা মহীতলে॥
কেন বা তৎব্রতং দেব চরিতং কেন হেতুনা।

শীকৃষ্ণ উবাচ।

কীরোদসাগরে পূর্বাং মণ্যমানেহম্তার্থিনা।
বিষ্ণুনা বাছজক্যান্তাং বিশ্বতো মন্দরো গিন্ধি॥
প্রমতা তেন বেগেন দোমান্তার্যবিভানি বৈ!
উর্নিভিন্তানি রোমানি চোৎক্রিপ্তানি তটান্তরে॥
অজারত কুলা দ্বার রম্যা ছরিতশাবলা।
এবমেয়া সমুৎপরা দ্বার বিষ্ণুতন্ত্রা।
ততা উপরি বিশ্বতং মথিতামৃতমুক্ত্রা।
ততা উপরি বিশ্বতং মথিতামৃতমুক্ত্রা।
ততা যে হম্তক্তত নিপেত্র্বারিবিন্দরং॥
তৈরিরঃ স্পর্নাসাদ্য দ্বারিবিন্দরং॥
বৈরিরঃ স্পর্নাসাদ্য দ্বারিবিন্দরং॥
প্রিত্রা দেবৈত্ব সর্ব্বাভাচিতা তথা॥
প্রয়েন্তাং প্রযমেন দ্বার্নানাবিধেরপি।
অইমাাং ফলপ্লেন্ত শুবারিনারিকেলকৈঃ।
ভাকা হরীত্রীতিক মোচকৈ জারকৈত্বা॥

নাগরবৈদ্য অধীরে বীঅপুরেদ্য শোভবৈঃ। प्रथाकरेकः भरत्राख्यिक युगरेनरवग्रामीशरेकः ॥ मज्जनात्मन द्राष्ट्रक्ष मृत्यु क्थिष्टः महा। ত্বং দুর্বেহিমৃতনামাদি বন্দিভাদি স্থরা**ন্থ**রৈ: 🛭 সৌভাগ্যং সম্ভতিং দশা সূৰ্ব্বৰ্ণাৰ্য্যকরী ভব। য়ণা শাণাপ্রশাভিবিভূতাসি মহীতলে 🛚 তথা মমাপি সন্তানং দেহি স্মজরামরং। এবনেব পুরা পার্থ পুলিতা জিদশোভাম: ॥ তেথ্যং পদ্মীভিরনিশং ভগিনীভিস্তবৈধন চ। পুজিতা চ তথা গৌৰ্ব্যা প্ৰেৰ্থা বত্যা শ্ৰিয়া তথা ॥ 🗸 সরস্বত্যা গঙ্গরা চ দিত্যাদিত্যা স্থশীলয়া। বিন্দ্ৰত্যা বেশবভ্যা ইন্দ্ৰভ্যা স্থনীলয়া ॥ मत्यापरी ठिकिया मार्यम पीक्या उथा। পর্কালেকে চ রেবত্যা দময়ন্ত্যা ত্রীলয়া॥ হুকেশরা ঘুতাচ্যা, চ রম্ভরা মিশ্রকেশরা। স্থকেশরা ঘৃতািচা চ রম্ভয়া মিশ্রকেশরা। মজ্জনন্তা মেনকয়া ভথৈব মানিকাদিভি:।° ত্ৰীভিরভার্চিতা দ্র্বা সৌভাগ্যত্বধদারিনী। সাতাভিঃ ওচিবস্তাভিদ্ র্কা সংপুলিতা জনৈ:। मच। **निडानि विट्यकाः क्नानि विविधानि** छ॥ তিলপিষ্টানি গোধ্যধাঞ্চপিষ্টানি পায়সং। ভোক্ষিত্বা স্থভান্মিত্রং সম্বন্ধিস্থভনং তথা ॥ ততো ভুঞ্জীত তচ্ছেষং শ্বয়ং ভক্ত্যা সমাধিতা। নারীচৈব প্রকৃবীত চাইমীত্রতমুক্তমং॥ नर्सनः ऋषमोजागशुत्रवाभीवामिष्टिय् जा। মর্জ্যলোকে চিরং স্থিতা চতুর্বর্গং গতা খণঃ ॥• বসতে রময়া সার্জং যাবচ্চক্রদিবাকরৌ। মেঘাবৃত্তে ১মরতলে বিশদে চ পক্ষে যাশ্চাষ্টমীব্রভমদো নভদীহ কুর্তঃ। मृर्काः जनकठिटेनः श्राठिशृबरमञ् •ভা: প্ৰাথাুয়ু: সকলসিদ্ধসমৃদ্ধিমৃদ্ধি[॥]

ইতি ভবিবোদ্তরে দ্র্কাষ্ট্রমী ব্রতক্থা সমাধা।
বুধিন্তির প্রীকৃষ্ণকে একদিন জিজ্ঞাসা করিরাছিলেন,
কোন্ ব্রভাস্থভান করিলে জীদিগের সম্ভতি বিজেদ হর না,
ইহাতে প্রীকৃষ্ণ বলিরাছিলেন, ভাত্তমাসের ভঙ্গপ্রের জইনী
তিথিতে দ্র্বাইনী ব্রত করিলে সম্ভতি বিজেদ হর না। দ্র্বা
বেরপ মহীতলে অর্জর অমর হইরা বিভূত লাভ করিরাছে,
বে নারী এই সকল ব্রভাস্থভান করে, ভাহাদের সম্ভতিও প্রন্প
বৃদ্ধিনাভ করে; কদাত ক্ষুর হর না। এই ব্রত নারীদিগ্রে

সকল সৌতাগ্য দান করিবা থাকে। ভবিবোজরপুরাণের
মতে—এই ব্রত প্রত্যেক নারীর অফ্টান করা কর্ত্তবা।
দূর্বোসোম (পং) অঞ্চতোক ক্লারনাদ লোমনভাভেদ।
"অংশুমান মুঞ্জবাংশৈতব চন্দমা রলতপ্রতঃ।
দুর্মানোমং কনীরাংশ্য খেডাল্কঃ কনকপ্রতঃ ॥" ( অঞ্চত )

(সাম দেখা।

দূর্বেইকা (ত্রী) বজাল চিতিরূপ ইইকাডেন।
"তদ্মিরত্রবীৎ। উপাহ্মায়ানীতি কেনেতি পশুভিরিতি
তথেতি পবিট কয়াহ তদুবুটিয়ো বাব পবিটকা বদুর্বেটকা
তল্বি।" (শতং ত্রাং ভাষাএকং)
দ্বাদা (ত্রি) দুড়াশ ভাষা বারা। হংব বারা হিংস, অতিশয়

ेक्टरथ हिरमनीय।

पृलिका (जी) प्री-चार्थ कन् छाण्, शूर्क इयक । प्री, नीणी।

पृली (जी) प्री-चार्थ कन् छाण्, शूर्क इयक । प्री, नीणी।

पृली (जी) प्रशः स्वष्टः खळा खिळ स्व-चार् वळ नः, रंभोता
क्विरिक्ष कीय। नीणीवक, नीणगाह। এই वृक्ष वर्षन व्यक्छि

किवरिक नाहे, देश विक्रमाणि किवरिण शिक्षिण खत्य, याशाया

त्माहश्यक्र वर्षन छ विक्रमाणि करवा, जाशाया जिन कृष्ट्

हालायण किवाया विक्षक हरेरव। देशाय विक्रमाणिट शिक्षिण

खत्या, এই हिक् देशा स्व किवया पिरव, এই स्वस्न देशाय नाम

पृणी हरेगारह।

শৃণুদেহ মহাবাহো নীলীরক্ত ধারণাং। বাসসোগশার্দ্ ল গদতো মম কংলশ:॥ পালনাং বিক্রমাটেচব তহুতেরপজীবনাং। পতিতক্ত ভূবেং বিপ্রাক্তিত: কুট্ছে বিশুধাতি

পতিতন্ত ভূবেৎ বিপ্রন্তিভিঃ কুল্ডৈ বিশুখাতি ॥" (ভবিষাপ্")
দূবকুণ্ড, পোনালিন্নর রাজ্যের অন্তর্গক্ত একটা প্রাচীন স্থান।
গোরালিন্নর সহর হইতে ৭৬ মাইল দক্ষিণপশ্চিমে এবং সিপ্রি
হইতে ৪৪ মাইল পশ্চিমোন্তর কোণে কুমুণ্ড চম্বল নদীর
অধিত্যকার উপর নিবিভ জনলের মধ্যে এই ফান অবস্থিত।
এখানে অতি প্রাচীন জৈন দেবালর আছে। প্রায়ন শত বর্ধ
পূর্বে ঐ মন্দির নির্দ্মিত হয়। জৈন শ্রেষ্ঠি ও প্রাবকগণের
উৎকীর্ণ কএকখানি খোনিত লিপিযুক্ত শিলাফলক আছে।
তৎপাঠে জানা যার, এক সমন্ত্র এখানে দিগম্বর জিনাম্তি
দ্থার্মান আছে। প্রবাদ এইরূপ অমরকণ্ঠ নামে এক
মহারাষ্ট্র স্ক্লার এখানকার জৈন দেবস্থি ভালিন্না চ্রিনা
দুঠণাট করিন্না চলিন্না যার।

্পুড (ক্লী) দ্বতে ইভি ভাবে কিপ্ দৃং থেদন্তাং স্থারতে স্তৈ-ক। বিষনির্দিত গৃহ, ভাব্। (সারস্ক্লী)

न्वक (जि) प्रवहिष्ठ पृष्- शिष्ठ- यून्। > (मारवारशामक,

লোবজনক। প্ৰথাৰ জীপাংসন, বে লোব জনাৰ, বে লোব বুক করিয়া দেৱ।

"বেদবিজ্ঞনিপ্ৰৈচৰ বেদানাং চৈব দ্ৰকাঃ। বেদানাং নিস্ফাইল্চব'ভে বৈ নিয়নগামিনঃ ॥" (ভারত স্বয়ুঁ) ২ থপা।

मृष्व (क्री) पृषि ভাবে नाहि। त्यांव, त्यांव त्यवन, नत्यांवडा नन्यायन।

"দ্বাজা দ্বণার্থং চ পরিত্যাগো"মহীরদঃ। অর্থজ নীভিতত্তিজরর্থদ্বণমূচাতে।" ( কামক্ক )

( বি ) দূৰি কৰ্জনি দূ। । ২ দোষজনক।
"পানং ভূজনসংদৰ্গ: পত্যা চ বিশ্নহো হটনং।
অগ্ন-চান্তপ্ৰে বাদো নামীণাং দূৰণানি চ ॥" ( মন্থ ৯),১৩ )

পান, ছর্জন সংসর্গ, পতিবিশ্বহ, ভ্রমণ, আছ গৃছে বাস ও
নিজা জীদিগের দ্বনীয়। (পুং) ০ রাক্ষস ভেদ, রাবণের
ভাতা। পঞ্চতী বনে ধর ও দ্বণ স্থানধার রক্ষণাবেক্ষণে
নিযুক্ত ছিল, লক্ষণ স্থানধার নাসিকা ও কর্ণছেদ করিলে
রামচজ্রের সহিত ইহার ঘোরতর সংগ্রাম হয়, এই সংগ্রামে
দ্বণ রামের হত্তে নিহত হয়। (রামারণ আরং)

দূষণারি (পুং) দূষ্ণস্ত রাক্ষ্য ভেদস্ত অরি: ৬৩ৎ। রামচন্ত্র, ইনি দৃষ্ণকে নিহত করেন।

मृष्ठिष्ठ् ( बि ) मृष- भिर् एर्। त्नारवार भावकः। मृष्ठिष्ठक्रु ( बि ) मृषि भीनार्थ रेक्ट्र। मृष्णीन।

पृ्षि ( জী ) प्यत्रिक पृष्टेन्। ( সর্বধাঙ্ভাঃ ইন্। উণ্ ৪।১১৭ )
पृष्ठिका, নেঅমল, চকুর মলা, পিচটী।

দূষিকা (ত্রী) দ্বি-বার্থে কন্টাপ্যবা দ্বি ধৃল্টাপ্ অত-ইন্ক । ১ নেঅমল'। পর্যায়—দ্বি, দ্বী, পিকোড়ক, দ্বীকা, পিজেট, পিজাঁট । ২ ত্লিকা । ৩ দ্বণকর্মী।

"শান্দ্ৰনীকণ্টকপ্ৰথা। কক্ষাক্তশোণিতৈ।

कांत्ररक्ष शिज़का यूनाः वरक्तु या प्रथम्विकौ ॥" ( स्ट्रेंक )

আকারিত। (শক্ক)

দূষিতা (খ্রী) দ্বিত টাপ্। দ্বণপ্রাথা কল্পা, পর্যার—সংখদা,
বর্ষকারিশী, প্রমাদিকা। (শক্ষরণ)

मृशी (बी) प्रि 'क्निकातानिष्ठि' छीय्। प्रिका।"

मृ होक । (बी) म्यविक प्रिकेन छल्डो भ् (क्विप्रिकासी-कन्। উণ্ ৪।১৬) प्रिका।

দুষীবিষ (क्री) দ্বীরতীতি দ্বি বাহণকাং ঈ, ততঃ কর্মধারর:। প্রশ্রতোক ধাতুদ্বক বিব ভেঁদ, এই বিবের বিষয়

স্ক্রতে এইরূপ নিধিত আছে। স্থাবরু, জগদু অথবা ক্লমে এই তিন প্রকার বিষের সধ্যে যে কোন বিষুহ্টক শলীর हरेरा निः एष हरेरा वा बीर्ग हरेरा वा विवयं खेवन कर्ष्क विनष्टे रहेरल व्यथना मानाधि नात् किःना एर्गक्तित्रर শোষিত হইলেও যদি শরীরে ভাহার •িক্ছু অবশিষ্ট থাকে অথবা স্বভাবতঃ গুণহীন কোন প্রকার বিষ यि भत्रीदत थाविष्ठे इत्र, जाहाद्क म्सीविय करह । अन्नवीर्या প্রযুক্ত এই বিষে প্রাণ লাগ হয় না, কিন্তু ককের পহিত মিলিত হইয়া ভাষা বছকাল শরীরে অবহিতি করে। দ্বীবিষ কর্ত্তৃক পীড়িত হইলে পুরীষের বর্ণ ভিন্নপ্রকার হয়, মুধ তুৰ্গদ্ধ হুক্ত ও বিৱস হয়, পিপাসা আংলা, মৃচ্ছা, ৰমন ও ৰাক্যের জড়তা হর এবং ছ্যোদরের সকল লক্ষ্য প্রকাশ পায় ৷ ঐ বিষ আমাশর গত ত্ইলে কফ বাতমভ রোগ এবং পঁকাশয় গত হইলে বাফুপিওজন্ত রোগ জন্তে। পক-**হীন পক্ষীর ভার ইহাতে রোগীর মন্তকের সমন্ত চুল উঠি**রা বার। রস প্রভৃতি ধাভূতে এই বিষ আলার করিলে যে ধাতুকে আশ্রয় করে, ভাহারই বিশার অন্মে। শীতল বায়ু श्रवाहिक स्मिषाक्त्रमात्त हेश कूभिक हम, अवर अहे ममन अहे সকল लक्क् श्रकान शाहेबा थारक,--- निजा, प्राट्ब छात्र, बुखन, इर्ब, व्यर्वा९ द्वामाक, व्यवस्य व्यर्वा९ शास्त्रत कामफानि, चालत चत्रताडा, धरे मकन छेभज्ञत चलित काल कालि असीर् ७ नदीत मखनाकांत्र ठाका ठाका नांग सत्त्र, श्रंजू স্কল ক্ষয় হয়, হস্ত ও পদ ফুলিয়া উঠে, অংলোদরী ও বমন হয়, এবং অতীদার রোগ জন্মে,, অথবা শ্রীরের বিবর্ণতা, मुद्धी दी विषमस्त्र ज्यथवा शिशामा उक्तमनः वृद्धि इत्र। এই বিব কর্তৃক উন্মাদ, আনাহ, শুক্রকণ, বাক্যের জড়তা ও কুষ্ঠ প্রভৃতি বছবিধ বিকার জন্ম।

 श्राकीकात्र कतिरक रहेरत। प्रवीतित त्रांश आश्रान् रहेरत नीय आरताशा रत, क्खि अक यरनत्रत्र अधिक कारनत रहेरत वाशा थारक। कीन अ अहिकाठात्रीत रहेरत आरताशा रहे ना। (विकास स्थान र आ:)

पृथी विषय प्रिकार प्रशिविद्या प्रशिविद्या प्रशिविद्या । प्रशिविद्या । प्रशिविद्या । प्रशिव्या । प्रशि

"রাজ্যোপদান্তং কুর্বাণা যে পাণা ব্যক্তরজ্ঞা:।

একৈক্দা: সংহতা বা দ্যাংতানু পরিচক্ষতে ॥" (কামল্বনী)

যাহারা রাজ্যের পীড়া ক্সাম এবং পাণিষ্ঠ ব্যক্তি বাঁহাদের

মিত্র, তাহারা একত্র অথবা মিলিড হইলে তাহাদিগকৈ দৃষ্ট
কহে। ও বস্ত্র।৪ বস্ত্রগৃহ, তারু।(ক্লী) ৫ পুষ।

দৃষ্যা (আী) দ্যাতে ইতি দৃষ্-ণিচ্ যং-টাপ্। হতিকল বজ্ হতিবন্ধ বজ্জা পর্যায়—কলা, বর্ত্তা, চ্যা। (অমর)
দৃষ্যাদর (ক্রী) উদররোগ ভেদ, ইহার লক্ষণ—অসং
ত্তীলোকের কারা নিথ, রোম, মৃত্তা, মল বা আর্ত্তব্যুক্ত অরপান
প্রান্ত হইলে বা শক্ত কর্তৃক বিষ প্রান্ত হইলে অথবা দৃষ্টি
ভাল বা দৃষ্টিবির সেবন করিলে রক্ত ও দোর ক্পিত হইল
ভাঠরে সালিপাতিক লক্ষণবিশিষ্ট বোর উদরী রোগ কলে।
শীতল বায় প্রবাহিত ও মেবার্ত দিনে এই রোগে দোর
সকল ক্পিত হইলা দাহ, রোগী মূর্চিহ্ত, পাপুরণ, কণও
তৃষ্ণার কঠ শুক্ত হয়। ইহাকে দ্ব্যুদর কহে। (স্পুর্ত)

ভাবপ্রকাশে ইহার লক্ষণ এইরুপ লিখিত আছে,—
কোন অসচ্চরিত্রা জী বলীকরণাদি ছারা স্বার্থসিছির মানদে
যাহাকে ক্রমণানীয়েরত সহিত নথ, লোম, মৃত্র-মার্জারাদির
বিষ্ঠা রা আর্ত্তরক্ত ভক্ষণ করায়, অথবা শক্ততে যাহাকে
সংযোগন্ধ বিষ ভক্ষণ করায়, কিংবা বে ব্যক্তি পৃথিত ফলপান
বা দ্বীবিষ ভক্ষণ করে, উাহার বাভাদি দোম এবং রক্ত দ্বিত
হয়া শীত্রই অভি বোরতর ত্রৈদোমিক উদররোগ উংগাদন
করে। শীতল বায়তে এবং ছন্দিনে এই রোগ অভি প্রবন হয়।
অভিশর পিপাসা হইতে থাকে, রোগীয় ক্লশতা ও নিরবর
মৃদ্ধ্যি হয়, এবং শন্তীর পাত্রবর্ণ ও পিপাসায় কণ্ঠাদি ভক্ষইয়া
থাকে। ইহাকে সাল্লিপাতিক উদরও কহেন। (ভাবপ্রণ)

দৃংহৃণ (জী) দৃংহ-সৃষ্ট । দৃড়করণ ।
দৃংহিত (জি) দৃংহ-জ । বৃদ্ধিত ।
দৃক (জী ) দীর্যাতে ইতি দৃ-বিদারে বাহলকাৎ কর্। হিজ ।
দক্ষাণ (জী) জ্যোতিবোক রাশির তৃতীর দশাংশরণ জংশ,
কোণ । "জিংশংসভে বিংশতিকচ্চতে তে হদেং কিচল্লা।
দশকং দৃকাণে ।" (দীদক্ষ তালক)

দ্রক্র (পুং) দৃশৌ নেআবেব কণো যন্ত। সর্প।

"দৃর্বরণা মশকং শিলা সরসিল্প বাণো ললোকাঃ শুকঃ
শুভাংশুর্গণকো কুলোভ্রমবনী পাছো নভশাভকঃ।
বাদী চক্রচরো বকো মধুলিছো লালাটিকো লম্পটঃ
শ্রীমদ্ভাল , ভবন্ত বিংশভিরমী দ্রবৈরণাং সেবকাঃ॥"

্উদ্ধট)
দ্রুম্মন্ (ক্লী) দৃগর্থং দৃষ্টার্থং কর্মান্ (ক্লী) দৃগর্থং কর্মা। গ্রহ সকলের দর্শন্যোগাতা-জ্ঞানার্থ কর্মভেদ্

"নক্তগ্রহবোগের গ্রহান্ডোদম্সাধনে। শ্লোনতে। তুচক্র ভূকর্মাদাবিদং মৃতং ॥" ( স্থাসিকান্ত ) দ্কাণ(ক্রী) জেয়াতিবোকে রাশির দশাংশরণ তৃতীয়াংশ, দ্ৰেকাণ। এক একটা রাশিতে তিনটা করিয়া দ্ৰেকাণ আছে। রাশির তিন অংশের এক অংশের নাম দ্রেকাঙ্। বে গ্রহ বে রাশির অধীখর হন, তিনিই দেই রাশির প্রথম জেকাণের অধিপৃতি এবং সেই রাশি হইতে পর্কমরাশির অধীখর যে গ্রহ তিনি বিতীয় জেকাণের এবং তাহার নবমরাশির অধী-শর যে গ্রহ তিনি তৃতীয় জেকাণের অধিপতি হন। অর্থাৎ মেবের অধীশ্বর মঙ্গল, তিনি মেবের প্রথম ডেক্কাণের অধি-পতি; মেবের পঞ্চরাশি সিংহ, ঐ সিংহের অবধীশ্বর রবি-গ্রহ, তিনি মেধের দিতীয় দ্রেক্কাণের অধিপতি; মেধের নবম ধহু, ঐ ধহুর অধীশ্বর বৃহস্পতি, তিনি মেষের ভৃতীয় দ্ৰেকাণের অধিপতি হন। এইরূপ বৃষ প্রভৃতি সকল রাশি সম্বন্ধে জান্তিতে হইবে। মেষাদি লগ্ন পরিমাণকে তিনভাগ क्तिरल एक्कांग काना यहिरव । मृष्टे<del>श्व</del>-कनिकाळानि अरनरम অয়নাংশ শোধিত মেষলগ্রের পরিমাণ ৪ দণ্ড, ৭ পল, ৭ বিপল উহাকে তিন ভাগ করিলে প্রত্যেকভাগ ১ দণ্ড ২২ পল ২২ বিপল°২০ অনুপল হয়, অনতএব মেষলফৈর প্রথম ভাগে জনিলে তাহার মঙ্গলের ড্রেকাণে জন্ম বলা যায়। প্রথম ভাগের পর ২ দণ্ড ৪৪ পল ৪৪ বিপল ৩০ অনুপল মধ্যে জন্ম হুইলে মেষ হইতে গণনায় পঞ্চম রাশি যে সিংহ, ভীহার আইপতি রবি, তিনি ঐ মেষের দিভীয় জেকাণের অধিপতি হন, অত-এব রবির ক্রেক্কাণে জন্ম হইল। ২ দণ্ড ৪৪ পল ৪৪ বিপল ১০ স্বামপল গতে জনা হইলে মেষ হইতে গণনায় নবমরাশি ধমু এবং 🗗 ধমুর অধিপতি ব্লহম্পতি অতএব বৃহস্পতির জেকাণে জন্ম জানা যাইবে। অগ্নাংশ-শোধিত পথ সকলকে কিভাগ করিয়া সহস্কোপায়ে ড্রেকাণ জ্ঞাত হইবার জ্ঞ্জ একটা তালিকা প্রদত্ত হইল, ইহাতে বল্লমান তিন ভাগ করিয়া कारात्र रकान् ভाग्न समा रहेबाइके, देश मिथितारे महस्सरे বুঝা যাইবে। তালিকা---

রাশির নাম	প্ৰথম দ্ৰেকাণ	বিতীয় দ্ৰেকাণ	তৃতীয় দ্ৰেকাণ
মেষ	মক্ত	<b>র</b> বি	বৃহ <b>স্প</b> তি
<b>বৃষ</b> ্	ভক	বুধ	শূনি
<b>মিথ্ন</b>	বুধ	<b>9</b> 06	শনি *
क क है	<b>5₹</b>	সঙ্গল	বৃহ <b>স্প</b> ত্তি
<b>সিং</b> হ	<b>র</b> বি	বৃহস্পতি	মঞ্চল
কন্তা	বুধ	• শনি	* **or
<u>তুলা</u>	死罗	শনি	বুধ
বৃশ্চিক	মঙ্গল	বৃ <b>হস্পতি</b>	<b>53€</b>
ধন্থ	বৃহস্পত্তি	মল্ল	রবি
<b>म्</b> क्त	শ্ৰি	<b>**</b>	ৰুণ
কুম্ভ	শনি •	বুধ	<b>क</b> क
মীন	বৃহস্পতি	• 5 <del>4</del>	মঞ্জল

ভভগ্রহের দেকাণের নাম জল, এবং অভভ গ্রহের দেকাণের নাম দহন। ঐ জল দেকাণে যে বাজি জামিবে, তাহার জল মধ্যে মৃত্যু এবং দহন দেকাণে যাহার জন্ম হয়, তাহার অধিতে মৃত্যু হয়। শুভগ্রহের দেকাণে পাপগ্রহ-যুক্ত হইলে তাহার সলিল এবং মিশ্র সংজ্ঞাহয়।

সৌমারূপ জেকাণ—মিথুনের এবং মীন ক্রােব প্রথম ফেকাণ, কর্কট ও ধফুলগের দ্বিতীয় জেকাণ এবং ক্লালগের ' তৃতীয় জেকাণ, ইহালের নাম সৌমারূপ জেকাণ। এই সকল ফেকাণে জন্ম হইলে মানব স্থবী হয়।

রক্ষভাণ্ডাম্বিত জেকালে — ককটি লগের প্রথম জেকাণের নাম
ফলপূপা যুত, এই জেকাণে জনিলে ফল পূপায়ক বীটাতে বাদ
হয়। ধমূলগাের মিতীয় জেকাণ এবং তুলা লগের প্রথম জেকা।
গের নাম রক্ষাণ্ডাম্বিত । ইহাতে কামিলে রক্ষাণ্ড লাভ হয়।
রেইভাণ্ডাম্বিত । ইহাতে কামিলে রক্ষাণ্ড লাভ হয়।
রেইভান্তেকাণ — মেষলগাের মিতীয় এবং কৃতীয় জেকাণ
র্শিচকের মিতীয় ও ভূতীয়, মিপুন ও তুলার ভূতীয়, মীন
লগাের মিতীয় এবং সিংহ লগাের প্রথম ও মিতীয় এই সকল
জেকাাণের নাম রাৌজ-জেকাাণ।

উন্থতান্ত দেকাণ — মিথুন, মেন, মকর, কুন্ত, ইহাদের প্রথম, বিতীয় ও তৃতীয় দেকাণের এবং ধুন্তর প্রথম ও তৃতীর, তৃলার তৃতীয়, সিংহ এবং ক্লার বিতীয় দেকাণ এই সকল দেকাণের মাম উন্থতান্ত দেকাণ ; এই সকল দেকাণে অস্মিলে অস্ত্রাহাতে মৃত্যু হয়।

স্প্রিগড় দ্রেকাণ — মীন ও কর্কটের শেষ দ্রেকাণ এবং বৃশ্চিকের প্রণম ও বিতীয় দ্রেকাণ, ইহাদের নাম স্প্রিগড় দ্রেকাণ, এই সকল দ্রেকাণে জন্ম হইলে সেই ব্যক্তিকে সূর্পে দংশন ব্যুরে। সে শৃঞ্জলে আবন্ধ হয়। ব্যাড় দ্ৰেকাণ — কুন্ত ও বৃশ্চিকের প্রথম ও বিতীয়, কর্কট ও মীনের তৃতীয়, সিংহের প্রথম ও তৃতীয়, মকরের তৃতীয়, তৃলার বিতীয় ও তৃতীয় এই সর্কল দ্রেকাণের নাম ব্যাড় দ্রেকাণ, ইহাতে জন্ম হইলে হিংপ্র জন্ত হুইতে মৃত্যু হয়।

পালধারিপক্ষি জেকাণ—ব্যের প্রথম, এবং মকরের প্রথম
ও তৃতীর জেকাণের নাম পালধারি জেকাণ, ইহাতে জারিলে
পালধারী অর্থাৎ বাণ "বিলেষে মৃত্যু হয়। তুলালগ্লের
দিতীয় ও তৃতীয় এবং সিংছ ও কুজের প্রথম পাক্ষ-জেকাণ;
এই পাক্ষ-জেকাণে জায় হইলে পাকী হইতে মৃত্যু হয়।

দেকাণে অন্মফল—প্রতি লগমানকে তিনভাগ করিয়া তাহার কোন দেকাণে পুরুষ এবং কোন দেকাণে স্ত্রী এবং তাহার কিরুপ আরুতি এবং হত বা নই বস্তুর প্রায় গণনায় চোর পুরুষ বা লীও তাহার কিরুপ আরুতি ও পরিচ্ছদাদি তাহার বিষয় বৃহজ্জাতকে এইরুপ লিখিত আছে—

মেষের প্রথম দেকাণে প্রস্ব করিলে পুরুষ জন্মে, সে ব্যক্তি কটিদেশে শুক্রবস্ত্র বেষ্টন করিয়া রাথিবে, রুফ্ডবর্ণ, কোধী, বিপদ্প্রস্ত ব্যক্তিকে রক্ষা করিতে সমর্থ, ভীষণ স্বভাব, কুঠারধারী এবং রক্তচকু হউবে।

° মেদ্রর দিতীয় দেকাণে স্ত্রী জয়ে। সেই স্ত্রী রক্তবস্ত্র পরিধান, ভূষণ এবং ভোজনীয় জব্যে লালসা করিবে, কুজোদরী, অশমুখী, পিপাসাযুক্তা এবং থঞা হইবে। মেবের ভূতীয় ক্রেকাণে পুরুষ জয়ে, ঐ পুরুষ ক্রুর, চভূ:বৃষ্টিকলাভিজ্ঞ, কপিলবর্ণ, সর্বাদা কর্মে অভিলাষী, নিয়ম রক্ষা করিতে অসমর্থ, উদাত দিওহন্ত, রক্তবন্ত্রপরিধানপ্রিয় এবং ক্রোধী হয়।

বুষের প্রথম দ্রেকাণে স্ত্রী জায়ে, এ স্ত্রীর কেশ ক্ষিত ও লুন, উদর কুভাক্তি, এবং পান, ভোর্জন ও অলফার পরিধানে সর্কাশ অভিলাধিণী হইবে।

বুনেম বিতীম দেকাণে পুরুষ জন্মে, ঐ পুরুষ কৃষি, ধান্ত, গৃহ, ধেনু প্রভৃতি লাভ করিবে, পণ্ডিত, লালল ও শকট চালনে দক্ত, কুধার্ত্ত ও মলিন বস্ত্রধারী হইবে।

বৃষের তৃতীয় দ্রেতাণে পুরুষ জীয়ে, ঐ পুরুষের শরীর হস্টার সদৃশ বৃহৎ, দস্ত পাভুবর্ণ, চরণ বৃহৎ, বর্ণ পিঙ্গল এবং নেব ও মৃগমাংস ভূক্ষণে অনুষাগী হইবে।

মিথুনের প্রথম জেকাণে স্ত্রী জন্মে। সেই স্ত্রী স্টীকর্মে অভিলাষিণী, স্থানরী, আভরণ পরিতে ও পরাইতে আহলা-দিতা, সম্ভানহীনা এবং অতিশর কামার্ভা হয়।

মিথুনের বিতীয়, জেকাণে পুরুষ অন্মে, ঐ পুরুষ ধর্মারী ও বলবান্ হইবে, সর্বাদা জীড়া, পুত্র ও অলম্বার প্রভৃতি চিম্বনে ব্যতিবাস্ত থাকিবে।

মিথ্নের ভৃতীয় দ্রেকাণে পুরুষ জন্মে, ঐ পুরুষ জনহার বিভূষিত, বহু অর্থশালী, ধছ্র্জারী, নৃত্যুগীতাদি কুশল ও পরি. হান পটু হর।

কর্কটের প্রথম দ্রেকারে জন্ম হইলে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ হুতী সদৃশ বলবান, মলমকানন-বাসপ্রিয়, আহার মুধ শৃক্রের ক্রায় ও হয়গ্রীব হইবে ।

কর্কটের বিতীয় জেকাণে অমা-হইলে স্ত্রী অংম। ঐ স্ত্রী কর্কশক্ষতাবা ও পূর্ণবোবনা হইয়াও রোদনশীলা হয়।

কর্কটের তৃতীয় এন্তেকাংশ পুরুষ অন্ম, ঐ পুরুষ গ্রীর আভিরণ জন্ত বিশেষ ব্যতিব্যস্ত থাকিবে।

সিংহের প্রথম জেকাণে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ মলিন বর্ধারী এবং পিতৃমাতৃবিরোগবিধুর হইয়া রোদনপ্রায়ণ হইবে।
সিংহের বিতীয় জেকাণে পুরুষ জল্ম। ঐ পুরুষের য়য় সদৃশ আকৃতি, মৃত্তকে পাণ্ড্বর্ণ মালাযুক্ত ক্ষ্ণসার চর্ম ও ক্ষলধারী, ত্রাসদ এবং তাহার নাসিকাগ্রভাগ নত হয়।

সিংহের তৃতীয় দ্রেকার্ণে প্রক্ষ হয়, ঐ পুক্ষ বানরের স্তায় স্বভাব এবং দীর্ঘশ্মশ্র ও কুটিল হইবে।

কন্তার প্রথমভাগে স্ত্রী হৃদ্দে, ঐ স্ত্রী মলিন বস্ত্রপরিধানা, অর্থাভিলাবিণী ও শুরুকুলগামিনী ক্ইবে।

কন্সার বিতীয়ভাগে প্রুষ হয়, ঐ পুরুষের হত্তে নেধনী, শ্রাম বর্ণ মন্তক বস্তবারা বেষ্টিত, ধফুর্দ্ধারী ও লোমশ হইবে। কন্সার ভূতীয় দ্রেকাণে স্ত্রী অবন্ম, ঐ স্ত্রী গৌরবর্ণা, খৌত-পট্টবাসে আচ্ছাদিতা ও দেবভক্তিপরায়ণা হইবে।

তুলার প্রথম ক্রেঞ্চাণে পুরুষ জন্মে। ঐ পুরুষ পথিমগে তুলাদও ধারণ করিয়া বিক্রেয়াদি ছারা জীবিকা নির্মাহ করিবে। তুলকার্যো বিশেষ দক্ষ হইবে।

তুলার দিঁতীয় জেকাণে পুরুষ জন্মে, ঐ পুরুষের মুধ পদী সদৃশ এবং সর্বাদা কুৎপিপাসাঘিত হইয়া ত্রী পুঁএকে মাঞ করিয়া থাকে।

তুলার তৃতীরভাগে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ নানাবিধ বর্ণান কারে বিভূষিত এবং আরুতি কুংসিত হইবে।

বৃশ্চিকের প্রথম জেকাণে ত্রী ক্ষমে। ঐ স্তী বস্তু আভর্ব-বর্জিতা হয় এবং নানাবিধ কট পাইয়া থাকে। বৃশ্চিকের বিতীয়ভাগেও স্তী হয়, সেই স্তী স্থাভিলাবিণী-হইবে।

বৃশ্চিকের তৃতীয় দেকাণে পুরুষ হর, ঐ পুরুষ অভি প্রতাপায়িত হইবে, ইহাকে দেখিলে সকলেই ভয় পাই^{রে}।

ধমুর প্রথমভাগে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ অর্থ সদৃশ বলবার্

ইইবে ও ধমুদ্ধারণপূর্বীর তপশীদিগের যজ্ঞীর জবা রশা

করিবে।

ধন্নর বিতীর জেকাণে স্ত্রী হয়, ঐ স্ত্রী মনোরমা, অতিশয় কুন্দরী ও সৌভাগাশালিনী হয়।

ধনুর তৃতীর দ্রেকাণে পুরুষ জন্মে। ঐ পুরুষ অতিশর সুন্দরাকৃতি হয় এবং নানাবিধ স্থমস্পদ ভোগ করিয়া থাকে।

মঁকরের • প্রথম জেকাণে পুরুষ জন্মে, ঐ পুরুষ রোমশ, ক্রুবরত্ত ও শৃক্র সদৃশ দেহসম্পত্ত হয়।

মকরের দিতীয়ভাগে স্ত্রী জন্ম। ঐ স্ত্রী কলাভিজ্ঞা ও নানাবিধ বিচিত্র বস্তুতে স্থাভিলাধিণী হইবে।

ু মুক্রের তৃতীয় দ্বেকাপে পুরুদ্ধর, ঐ পুরুষ স্থানারুতি এবং অর্থ সম্পদ্ধান্ত করিয়া থাকে।

কুন্তের প্রথম জেকাণে পুরুষ কলে । ঐ পুরুষ ভোজন চিন্তার সুর্বদা ব্যাকুলচিত্ত হইবে।

কুন্তের বিতীয় জৈকাণে স্ত্রী হয়, এই স্ত্রী•ুগুর্জাগাঁশালিনী হটবে।

কুন্তের তৃতীয়ভাগে পুরুষ জন্মে। ঐ পুরুষ খ্রামবর্ণ এবং কর্ণে লোমযুক্ত হইবে। •

মীনের প্রথম জেকাণে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ সৌভাগ্যশাণী 
হইবে।

মীনের বিভীয় এদেকাণে স্ত্রী ক্ষরিবে, ঐ স্ত্রী ক্ষতিশয় স্বন্দরী হইয়া থাকে।

মীনের তৃতীয় জেকাণে পুরুষ হয়, ঐ পুরুষ নানাবিধ তৃঃধভোগ করিয়া থাকে, বিশেষ এই যে, জেকাণাধিপতি জীগ্রহ যদি তুর্জনা হয় এবং লগ্নাধিপতিগ্রহ যদি পুরুষ হয়, কিংবা যদি পুরুষ গ্রহের দৃষ্টি থাকে, তাংশ হইলে জী •জেকাণে পুরুষ করে এবং বলবান্ জীগ্রহ যদি ঐ লগ্নে থাকে, তাহা হইলে পুরুষ জেকাণে জী জন্মে, কিন্তু জী জেকাণে পুরুষ জ্মিলে ঐ পুরুষৈর স্বভাব জীলোকের মত এবং পুরুষ জেকাণে জী জানিলে ঐ জীনলে ঐ জীর অভাব পুরুষের মত হয়। (দীপিকা)

লাগের কোন্ দেকাণে জন্ম হইলে স্ত্রী এবং পুরুষ জন্ম তাহা বলা হইল। কোজিপ্রানীপের মতে—নেষের প্রথম দেকাণে জন্ম হইলে দাতা, ভোজা, তেজখী, উগ্র, উন্নতিহীন, বন্ধুপ্রিয় ও কোপন হইবে। মেষের বিতীয় ক্রেকাণে জন্ম হইলে স্ত্রীচঞ্চল, রৃত্তিমান্, গীতপ্রিয়, প্রালস্তমনা, মিত্রধনভোগী ও স্কুল্প হয়। তৃতীয় দ্রেকাণে জন্ম হইলে গুণবান্ পরদোষকর, নরেক্রসেবী, স্কুনপ্রিয়, অতিশন্ধ ধার্মিক ও গালপ্রিয় হইবে।

ব্ৰের প্রথম দ্রেক্কাণে জন্ম হইলে পানভোজনপ্রিয় ও নারী-বিয়োগ-সন্তাপযুক্ত, ত্রীকর্মাস্সাত্রী ও বস্তালম্বারমুক্ত হইবে। বিতীয় দ্রেক্কাণে জন্ম হইলে উত্তম ধনসম্পর, মিত্রতাযুক্ত, স্থার সম্পার, ভোজা, ভ্রণরত, বলবান, দ্বিরপ্রকৃতি, মনস্বী, লোডী ও ব্রীপ্রের হইবে। ভৃতীয় জেকাণে জন্ম হইলে চড়র, স্বার ভাগ্যধর, মনিন এবং স্বজাতিগণকে গ্রহণ করিয়া পশ্চাৎ পরিক্রীপিত হয়।

শিথ্নের প্রথম জেকাণে ক্রয় হইলে স্থল মন্তকসম্পন্ন.
বলবান, প্রাজ্ঞ, গুণবানু, ধৃর্জ, বিলাসী, রাজলকমানী ও
বাগ্মী হইবে। দিতীয় জেকাণে জন্ম হইলে ক্ররণ ও স্থলর
গঠন, স্ক্র কেশযুক্ত, বিধ্যাত, মৃত্ব, মহাধীসম্পন্ন, প্রতাপাবিত্ত, বলশালী ও যশবী হইরা থাকে। তৃতীয় জেকাণে জন্ম
হইলে কোমল নম্ন, উত্তম শরীরসম্পন্ন, বৃহৎ মন্তক বিশিষ্ট,
নির্জ্জনপ্রিয় ও ভ্রমণশীল হইরা থাকে।

কর্কট রাশির প্রথম দ্রেকাণে জন্ম হইলে দেবতা ও বান্ধণন্ডক, চপল, গৌরবর্গ, স্থাীর মূর্ত্তি ও প্রাপুদ্দিপ্রির হয়। বিতীয় দ্রেকাণে জন্ম হইলে লোভী, স্থলর স্থারত, অন্তর্গতি, জীলিত, অভিমানী, ভাতৃপুলিত, বিলালী, চপল ও বহুভোলী হইবে। তৃতীয় দ্রেকাণে জন্ম হইলে স্থাচিঞ্চল, ভাগ্যবান, বিদেশপ্রির, মিত্র ওপুত্রাদির প্রীতিকর ও ব্রৈণ হইয়া থাকে।

ি সিংহের প্রথম জেরারে জেরা হইলে দাতা, ঘাতক, বিজয়েছে, বহু ধনসম্পান, রমণীর বন্ধ, গুরুল, রুলেসেরক ও সহিষ্ণু হইবে। বিতীয় জেরাণে হইলে স্কেবি, কামী, দাতা; ছির স্বভাব, উত্তমশ্রীর, ভ্রণেছে, স্থভোগী, গুতকর্মে রুচি ও উত্তম বৃদ্ধিযুক্ত হয়। তৃতীয় জেরাণে জনিলে পরধনহরণে লোভী, স্থল শ্রীর, মহামতি, ধূর্ব, আনেক সন্ততিযুক্ত ও প্রগল্ভ হয়।

কভার প্রথম দেকালে জন্ম হইলে ভামিবর্ণ, স্বাক্যসম্পর, বিনীত, প্রাজ্ঞ, স্থলরমূর্ত্তি ও উত্তম চক্ষু যুক্ত হয়। বিতীয় দেকালে জানিলে ধীর, বিদেশগামী, শিল্প ও সমর্কুশল, বাচাল ও বৃদ্ধিনান্ হয়। তৃতীয় দেকীপে জুনিলে রোগী, পরারভোজী, রতি ও গীতযুক্ত, রাজপ্রিয়, থর্ম, সুলদৃষ্টি ও সুল্মস্তক হইয়া থাকে।

ভূলারাশির এখন জেকালে, জনিলে কলপ সমান কপবান, কর্মনিপুণ, মন্ত্র সেবাজ্ঞ এবং উত্তম মেধাবী হয়। বিভীর জেকাণে জনিলে পদাচকু, উত্তম কপবান, প্রলাপী, বিখ্যাত আত্মবংশ-বর্দ্ধনকর্তা, বৃত্তি ও অর্থ পটু হয়। তৃতীয় জেকাণে জনিলে চপল, শঠ, কৃতদ্ব, কপহীন, জুরাচারী, কুশ শরীর, ধন, বন্ধু ও যশোহীন, অন্বৃদ্ধি ও পতিত হইয়া থাকে।

वृष्टिक्त व्यथम क्षित्रां क्षित्र विक्रित क्षित्र व्यक्ति है, स्वत्र क्षित्र विक्रित क्षित्र क्षित्र

বিবাদপ্রিয় হইবে। বিভীয় ক্রেকাণে অন্মিলে মিটাগ্ন-পানভোগী, বলবান্, রভিপ্রিয়, কমনীয় মৃর্ত্তি, শুক্রজারজারী, সর্বল ও ক্রিয়াবান্ হইবে। তৃস্তীয় প্রেকাণে অন্মিলে শুক্রমেন্ডান, হিংল্র, পিলাক্ষ, মহোদর, প্রবৃত্তা, বাহু ও হৃদয় স্থল এবং সভৃষ্ণ হইয়া থাকে।

ধছরাশির প্রথম ডেকাণে জ্বন্মিলে উত্তম মণ্ডলাকার চক্:সম্পন, বাগ্মী, মৃহ ও ধর্মপরারণ হইবে। বিতীয় জেকাণে জ্বিলে শাস্তার্থবৈতা, মন্ত্রভুৎদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ও প্রভু হয়। তৃতীয় ডেকাণে জ্বিলে বন্ধুতাপট্, সাধুগতি, ধার্মিক, মানী, বারাক্ষনাস্ক্র, রূপযশোভাজন ও প্রভু হইয়া থাকে।

নক্রের প্রথম জেকাণে জানিলে আজাফ্লাছত বাত্, শ্রাম-বর্ণ, পূর্ণুলোচন, শঠ, মিতভাষী, জীবিজিত ও মেধাযুক্ত হইবে। বিতীয় ডিজকালে জানিলে শ্রামবর্ণ, শঠ, পরজী ও ধনাপহারী হইবে। তৃতীয় জেকাণে জানিলে দীর্ঘ ললাট, পাপাত্মা, কুল ও দীর্ঘান্ত এবং বিদেশবাদী হয়।

কুন্তের প্রথম দ্রেকার্ণে জন্মিলে অতিশয় লুক, উন্নত, কাথ্যকুশল, ধনবান্ও স্থবক্যেসপান হয়। দ্রিতীর দ্রেকারে জন্মিলে লুক, পটু, ধৃতিমান, গৌরবর্ণ, মেধাবী ও বহুমিত্র-সম্পন্ন হটুবে। তৃতীয় দ্রেকাণে জন্মিলে শঠ, প্রলাপী, কুশ, কুশীল, রতিবেতা ও বহুমিত্রযুক্ত হয়।

মীনের প্রথম দ্রেকাণে জানিলে প্রাজ্ঞ, গৌরবর্ণ, মেধাবী, ক্বতজ্ঞ, বিপ্যাত, ক্রিয়াকুশল, স্থভাগী ও বিনীত হয়। দ্বিতীয় দ্রেকাণে জানিলে বহননীল, পরনেভোক্তা, কামী, সজ্জনের ক্স্মবাধী এবং পণ্ডিতপ্রিয় হইবে। তৃতীয় দ্রেকাণে জানিলে খ্যামবর্ণ, কলানিপুণ, শুচি, দ্বিজামুরক, ক্রীড়া ও হাস্তকুশল হইয়া থাকে।

যদি ত্র্যের ডেকাণে জন্ম হয়, তাহা হইলে বালক মলিন,
শ্র, স্ত্যাবিল্লভ, ক্রুর, সাহদিক, কুক্মাকুশল, মৃর্থ, রূপহীন,
ব্রণাধিত শরীর, বহু আশাযুক্ত, গুর্বাঙ্গনাগামী, অল সন্তানবিশিষ্ট, দৃষ্ট্কিয়ারত, পাপী, মুধর, ক্রপণ ও অস্যাধিত হইবে।

চক্রের দ্রেক্কাণে ক্লিলে অন্তর্ক গঠন সম্পূর্ণ ধনবান, সর্বাণা শালসম্পার, বছভাষী, বৈধকপারত, তীর্থগামী, শাল্রবেন্তা, কুণভূষণ, দেবতা, গুরু ও বন্ধুলনের ওক্ত, নিত্য ধ্যারত, বিদেশ-যাত্রাকুশল ও দাতা হয়।

মঙ্গলের তেন্ধাণে অন্থিলে মলিন, ক্রুর, ধনহীন, পাপাস্থা, খল, দয়াহীন, ছশ্চরিক, বছভাষী, আত্মস্তরি, কোধন, ' রোগার্ড, প্রসেবক ও গুণবিহীন হইবে।

ব্ধের দ্রেকাণে জন্ম হইলে বুদ্ধিমান, সর্বনা রাজপূজ্য, দীর্ঘায়, বলবান, বছসস্ততিযুক্ত, শাস্ত, যশস্থী, ওচি,

ধর্মজ্ঞানপরায়ণ, প্রমাদশ্ভ, শান্তবিদ্, ধনী, মানী ও স্কুপ হইয়া থাকে।

্র্হস্পতির দেকাণে জন্মিলে অতিশয় গুণবান্, দীর্ঘাষ্ট্র, সুবৃদ্ধিসম্পান্ন, প্রিয়ভাষী, ধার্ম্মিক, দয়ালু, শান্ত, সুনীল ও ।

ু গুক্তের দেকাণে জুমিলে হৃন্দর শরীরসম্পন্ন, রাজ্মন্ত্রী, সর্বজ্ঞ, দাতা ও সাধুগণের প্রতিপালক, ধনী, দ্যালু, গুচি ও ধার্মিক ইইবে।

শনির দেকাণে অন্মিণে মলিন, ক্রুর, মৃহ, তত্তর, ত্কীরিজ্
কপণ, গুণহীন, পাপাত্মা, গুর্বজনাগামী, অভিশন্ন ওলাধন,
নির্দয়, রোগার্ড, মুখর, ক্রুপ ও কামাত্র হয়। (কোটাপ্রনীপ)
দৃক্সেপ (পুং) দৃশাং কেপঃ ৬ডৎ। ১ দৃষ্টিপাত। ২ স্ব্যাসিদ্ধান্তাক্ত দৃক্রভ্রাস্তরালয় শররপ কেপ।

"মধ্যোদর জারাভাত্তা ত্রিজ্যাপ্তা বর্গিতং ফরং।
মধ্যজ্যাবর্গবিশ্লিষ্ট দৃক্কেপ: শেষতঃ পদং॥" ( স্থাদি )
দৃক্পথ ( পুং ) দৃশাং পদ্বা ৬তৎশ দৃষ্টিযোগ্য স্থান।
"ক্রমেণ তাম্মিথ তীর্ণ দৃক্পথে।" ( নৈষধ )

•দৃক্পাত ( পুং) দৃশাং পাতঃ ৬তং। দৃষ্টিণাত, দৃষ্টিনি:কেশ। "নুপতিস্তম্ম দৃক্ণাতৈ জ্লিডিঃ কণিশীক্তঃ।"

্রাজতর ৩।০৪১)
দৃক্প্রসাদা (জ্রী) দৃশৌ নেত্রৌ প্রসাদয়তি প্র-সদ-ণিচ্ অণ্
টাপ্। কুলখা, কুলখাঞ্জন, ইহা চকুতে দিলে চকু প্রশন্ন
হয়, এই জ্ঞানুক্প্রসাদা নাম হইয়াছে।

দৃক্ প্রিয়া (.জৌ) দৃশো ৯ প্রিয়া ৬৩৫। শোভা, দেখিতে চক্র
অতিশয় প্রীতি জন্ম, এই জন্ত দৃক্ প্রিয়া নাম হই মীছে।
দৃক্ শক্তি (জৌ) দৃক্ ও কাশনমেব শক্তি: ১ প্রকাশন
চৈতন্তা। ২ তহাঁতে সর্বপ্রকাশক চেতন প্রয়া। "দৃক্দশনশক্তোরেকাল্লতেবান্দিতা।" (পাতে সংখ্যাও) 'পুর্বা দৃক্-

শক্তির্ জিনশনশক্তি:।' (ভাষা)
দৃক্শ্রীকৃতি (পু:) দৃশো এব শ্রুতী কণো যন্ত। সর্প, চকু:শ্রুবা।
দৃগধ্যক্ষ (পু:) দৃশো: নেত্রয়োরধঃক্ষ: অধিষ্ঠাত্দেব:। স্বা,
স্বা ইইতে আলোক প্রাপ্ত হওয়া ষায়, প্রই আলোকে
দেখিবার শক্তি জলো।

দৃগল (ক্নী) দৃশে দর্শনায় অলেতি অল-অচ্। শক্ষেথও, প্রেচ ডাশ। "শুরাদৃগলং প্রতমিস্তামিত্রঃ।" (আমার্ম প্রেটি থেবং) 'দৃগলং শক্লং' (নারায়ণ)

দৃগগতি (ত্রী) দৃশোগড়ি: ৬৩৫। > চক্র গতি। ২ ^{স্থা} নিদ্ধান্তোক্ত গ্রহস্পাষ্টোপধ্মাগী দৃগ্গতিভেদ। দৃগ্গোল'(পুং) থগোলান্তর্গত গোল, দৃশ্ব ওল। "বদ্ধা থগোলে নলিকাবরং চ ধ্রবহুরে ভন্নলিকান্থমের।
বহিঃ থগোলাবিদ্ধীত ধীমান্ দুগুগোলমেবং থলু বক্ষামাণং ॥"
( সিদ্ধাবনিয়োণ )

প্রথমে থক্ষতিক ও ক্ষাংক্তিক এই ছইটা ব্যক্তিক ক্রিবের, তাহাত্তে অক্তংকীলক্ষর নির্দাণপূর্কক সধ ভাবে প্রোধিত ক্রিরা তাহার পর দৃত্যগুল করিবে। এই দৃত্যগুল পূর্কর্মত হইতে ক্রিকিং নান করিবা করিতে হইবে, বাহাতে ইহা থগোলের মধ্যে প্রমণ করিতে পারে।, ইহাতে যদি একটাই এইগোল হর, তাহা হইলে একটা দৃত্যগুল হইবে। যে বে প্রহ বেখানে বেগনেক অবস্থান করে, সেই সেই প্রহের উপরিভাগে দৃগ্ল্যা ও পর্বাদি করিতে হইবে। অথবা তির ভির রূপে আটেটা দৃত্যগুল রচনা করিবে। ভাহাতে অটম এবং দৃত্তক্ষপমণ্ডল ঐ থগোলে প্রব চিক্রেনলিকাম্বর বদ্ধ করিরা ঐ নলিকার আ্বাধার-কে থগোল করিয়া অকুলিত্রর অভরে দৃগ্গোল রচনা করিবে।

কাজিমগুলাদিব্জ ধংগালয়ত এবং ব্দুগোলয়ত বারা বাহা
নিবছ হয়, আহাকেই দৃগ্গোল কহে। অগ্রা, কুল্লা, সমশল্প, আদাকক্ষেত্র, বিগোলভাত, তগোলয়ত এবং ধংগালরত মিলিত হইলা গোলবদ্ধে বাহা সমাক্ষণে উপলক্ষিত না
হয়, এইরূপ হইলে দৃগ্গোল কহে।

্গ্জ্যা ( ত্রী ) ত্র্যাসিকাজোক দিনমানাদিজ্ঞানার্থ শহুজ্ঞারার উপযোগিনী দৃষ্টিযোগ্যা দৃক্রুতক্ষেত্রত্ব কীবা।

। शृक्षकि ( जी ) द्वा मृष्टि ।

গ্ৰুড় (স্ত্ৰী) > বজ্ঞ। ২ হৰ্ষ্য। ৩ সৰ্প।
গ্ৰান্থন (ক্লী) সিদ্ধান্তশিরোমণিক থিত গ্রহণদর্শনোপযোগী

দৃক্কেত্রস্থ, লম্ব ভেদ।

"গর্ভদ্বে সদা জাতাং চক্রাকৌ সমলিপ্তিকে।

দৃক্দ্রার্থিত শুক্রেন ভ্রম্বনং মৃতং ॥" (, নিভান্তলিরো॰)

থিষ (প্রং) দৃশি বিবং যক্ত। দৃষ্টিবিষ সর্পতেদ, যে সর্পের

চক্তে বিষ আছে। জিরাং আভিছাৎ তীষ্।

গ্রুক্ত (রী) দৃশঃ প্রচারস্থানং বৃত্তমিব। বৃত্তাকার দৃর্প্রচার স্থল।

ও্নতি (স্ত্রী) সিভান্তলিরোমপাক্ত গ্রহণ-দর্শনোপ্যোগিতা

হেতু দর্শিত দৃকু প্রচারের নতিবিশেষ। [নতি দেখ।}

ব্যাপ্তল (রী) দৃশঃ তৎপ্রচারক্ত মন্তল্মিব। গোলনভান্তর্শতেশ

ভিন্নাধ্যস্থিককীলযুগো প্রোভং প্লথং দৃখলনং ভদ্ঝা।
কম্বা পরিপ্রাম্য চ ভত্ত ভত্ত নেনং প্রহো গছেতি বত্ত যত্ত ।
জেনং ভদেবাধিলথেচনালাং পৃথক্ পৃথধা রচমেৎ ভথাটো ।
দ্যাওলং বিত্তিভলগ্রকত দৃক্ষেপ্র্ত্তাথামিদং বদস্তি ॥"
(স্ক্রাক্তিশি)

ষূচ ( বি ) কৃষ্ণ নিশীতনাৎ সাধু: । ১ ছ্ল । ২ অনিধিল,
প্রগাঢ়। শুলবান্। ৪ কঠিন। ( ক্লী ) ৫ লৌহ। ভাবে-জ।
৬ অতিশর। (পুং) ৭ খতরাষ্ট্রের প্রভেদ। ৮ অরোহণ
ময় কচির প্রভেদ। (হরিব॰ ৭ অ॰ ) ৯ বিফু। (বিফুস;)
১০ সপ্তবিধ রূপকের মধ্যে একপ্রকার।

"गृहः त्योरहार्थ पहरता विख्यक्षेत्रक्षमः। तिभाक्षकः व्यक्तिहानः क्षिणाः मुख्यक्षणकाः॥" देशत नक्षण---

শৃঢ়াথাঃ ভারঘ্ৰশং তানেহত্ত হংসনীনকে।
চতুর্দশাক্ষরৈযুক্তঃ শৃলারে পরিকীর্তিতঃ ॥" (স্পীতদামোদর)
১১ নীনাবভূতে কুটুনগণিতভেদ।

पृष्ठक के (११) पृष्ठः क के क्या वर्षः । ) क्या कनक द्रकः, धना भोकपा। २ क्या क के क्या कुला वर्षः । —

**দৃঢ়কণিও (পুং) দৃঢ়ং কাওং বছ। ১ বংশবৃক্ষ। ২** দীর্ঘ-রোহিষক। (স্ত্রী) ৩ পাতালগরুড়ীলতা।

मृष्ट् कांत्रिस् (আ) मृष्ट-क्र-शिनि । ॰ প্রায়ন্ধসম্পাদিয়িতা, কর্তব্য বিষয়ে ফিনি मৃष्टनिশ্চয় ।

শৃঢ়কারী মৃত্রণিক্তঃ জুরাচারৈরসংবদন্। অহিংলোদমদানাভ্যাং করেৎ বর্গং তথা এতঃ ॥"(মহ ৪।২৪৬) দৃঢ়ক্ষত্রে (পুং) গৃতরাঙ্কের পুরুভেদ। (ভারত ১।৬৭° অ:)

দৃঢ়কুরা (ঝী) দৃঢ়ং কুরমিব অবাং যভাঃ। বহুলাভূণ। (রাজনিং) দৃঢ়গাত্তিকা (ঝী) দৃঢ়ং গাত্তং যভাঃ কপ্টাপি অভইদং। মংভাগী। (শক্ষচ•)

**ল্ঢ এছি (পং) দৃঢ়ঃ এছিঃ পর্ক ষ**ভা৷ ১ বংশ ৷ (অ.) ২ দৃঢ এছিযু<del>ক্ত</del> মাত্র ।

দৃঢ়প্রাহিন্ (বুঁঅ) দৃঢ় গ্রহ-পিনি। দৃঢ়রূপে গ্রহণকারী, নিশ্চয় করিব এইরূপ ভাবে বাহারা গ্রহণ করে।

• "লৃচ্গ্রাহী করোমীতি জপাং জপতি জ্বাপক: । • • ন সম্পূর্ণো ন সংযুক্তো নিরয়ং সোহস্থাছতি ॥"

• (ভারতুশান্তিপর্ক)ু

ক্চুচছদ (পুং) দৃঢ়ঃ ছদুো যক্ত। দীর্ঘরোহিষক তৃণ। (রাজনিং) দৃঢ়চুতে পুং) পরপুরশ্বরন্থায়লাতে লাত অগতা মুনির পুত্র, ইহার নাম ইয়বাহ। (ভাগবত ৪।২৮ অঃ)

দৃঢ়তকে (পং) দৃঢ়ঃ ভক্ষ: কর্মধা । ধবর্ক। (রাজুনি॰) দৃঢ়তা (রী) দৃঢ়ত ভাবঃ দৃঢ়-ভদ্টাপ্। দৃঢ়ব্, কাঠিছ, স্থিয়তা।

मृ ए छुन ( पूर ) मृहः कठिनः छ्नः यक्त । मू अछ्न ।

मृष्ड्र्श (क्षी) मृष्ट्रङ्गः यञ्चाः । ववस्राङ्ग । सृष्ड्र् (क्षी) मृष्ट्रञ्जावः मृष्ट्र जादन्द । मृष्ट्रजा ।

मृष्ट्रकृ ( श्रः ) मृष्। पक् यद्य । यायनान मन्न ।

VIII

দৃঢ়দংশক ( গং) দৃঢ়ং বথা তথা দংশতীতি দংশীব ৃশ্। অসমত वित्मव, राज्य ।

मृत्त्रस्थः ( श्रः ) मृत्त्रात्वत्र श्र्व अक्ष्न चित् । क्रुप्त ( १९१) पृष्ट धनः निकायक्रणमण्यस्त्रिकः । भाषामूनि । मृष्धरूम् ( शूः ) भाकामूनित अक भ्राक्षक्ष । मृष्ध्यम् ( प्रः ) मृष्ः धमूर्यका, अन् म्मानांख । > मृष् धम्क । "त्राबानः हृष्यानः पिनीशः मृष्ठावापिनः।"(खात्रक ৮)১৩১ घः)

২ পৌরব নৃপজেন। (ভারত ১।১৮৬ অ॰)

मृष्धिन् ( जि ) मृष् धरूर्क ।

मृष्धूत् ( बि ) मृष्ध्वाय्क ।

দৃঢ়নাভ (পুং) মারা-অত্ত এড়াইবার মত্তভেদ। দৃঢ়নিশ্চয় (পুং) দৃঢ়ঃ কুতকৈ মৃভিভবিতৃং অশক্যতরা বিরঃ নিশ্টো অহং এক অমি ইতি নিশ্চরো বত। বিরপ্রজ,

সংগার হইতে উপরত আমিই ব্রহ্ম এইরূপ অধাবসার্যুক্ত

দূঢ়নীর (পুং) দৃঢ়ং কালেন দৃঢ়তাং প্রাপ্তং নীরং যক্ত। নারি-কেল, ইহার জল ক্রমে ক্রমে শহুরূপে পরিণত হয়।

मृह्दन्ज ( प्रः ) विश्वामित्वत्र प्रवास्त्र ।

দৃতুনেমি (পুং) > অলমী চ বংশীয় সভাগতি নৃণ-পুত্র নৃপভেদ। (হরিব ২০ অ॰) দৃঢ়ানেমিহ'ড। ২ দৃঢ়নেমিক রথ, কঠিন নেমিবুক্ত রথ।

मृष् পত्त ( पूर ) मृष् भवा यथा । वः म।

मृष् अबी (बी) मृष्पब शोतामिषा शीव्। वदकाष्ट्र । দৃতৃপাদ ( জি ) দৃতঃ পাদঃ পদনং জ্ঞানং যন্ত । ১ দৃত্নিশ্চয়।

২ বেধন্। "বছড়াদ্ঢ়পাদ" বিখায়া অংগতাং পতিঃ।"

🖟 ( হরিবংশ )

लुष्ट्रभाना (जी ) नृष्: भारता मृतः यकाः, नमानास विराधनिष्ठाः ছাং নাস্তালোপঃ। ববতিকা।

मृष्णानी (जी) मृष्णाम-छीव्। ज्यामनको।

· मृष्ट थारत्रोक् ( प्रः ) मृष्टः थारत्रोकः अब्दत्रो यद्य । वहेवूकः ।

पृष्कल ( परः ) पृष्वि कनानि यस । नातिरकन ।

দৃত্বিদ্ধিনী (স্ত্ৰী) দৃত্ং যথা তথা ৰগাতীতি বন্ধ-শিনি-ঙীপ্।

১ শ্রামালতা। (অি) ২ অলিধিলবদ্ধকারক। , দৃতৃভূমি (পুং) পৃতা ভূমিরবছা যত। মনের হৈর্গকরপের জয় অভ্যান ভেদ, ইহার বিষয় পাতঞ্জনযোগণালে এইরপ

লিথিত আছে— "তত্ৰ হিতৌ বদ্বোহভাগে:" (পাতে ১০১৩)

"দ তু দীৰ্ঘকালাগৰ্মনৈরস্তর্যানংকারদেবিতো দৃঢ়ভূমিঃ"

( পাত্ত ১৷১৪ )

চিত্তকে বির করিবার অভ বাহাতে রাজন: ও ভাষ্য বৃত্তির छितत्र ना इत्र, এই ज्ञान राष्ट्र विश्वा ভিনিবেশ ত্যাপ করিয়া চিত্তকে বন্ধপূর্বক বারবার একাঞ বা একতান করা এবং ভাহার পূর্ব সাধক ব্যনির্যাদি সাত क्षकात्र त्यांशास्त्रत अष्ट्रीन कतारे अखात । कन कृथा वहे : र्यक्र यम बाता हिटलत केवां वां नाशिक दर्त, त्नहें क्र वह ওঁজ্রণ অমুষ্ঠান করার নাম অভ্যাস। বম নিরমাণি গারা পরিশোধিত চিত্তকে বার বার একাঠা করিতে করিতে জ্বে छाहा मृह अर्थार अविहाना इहेश माफाइटव । यथन द्विता বে অভ্যাস দৃঢ় হইরতিছ, তথন তাদৃশ চিজ্বকে বধন ইছা তথনই একতান করিতে পারিবে। এবংবিধ অভাানকে मीर्यकांन व्याभिया नर्यत्ता अका नरकारत नम्भव कतिए পারিলে ক্রমে তাহা দৃঢ় অর্থাৎ অবিচলিত হয়। এইরণ হইলে ভার্থাকে দৃঢ়ভূমি করে। বস্ততঃ উক্তবিধ অভাান হই পাঁচ দিনে হয় লা, শ্ৰহার সহিত, ভক্তির সহিত, উংগা-ट्रिय प्रहिष्ठ प्रस्तिन खल्लाम कतिर्छ शांतिरन हे छारा नीर्थः কালে গিয়া দৃঢ়ভা প্ৰাপ্ত হয়। 'ডজপ যোগাভ্যান বৰন দৃচ হইবে, তথন চিত্ত সম্পূর্ণক্লণে অধীন হইবেন চিতের কোন ক্ষণ চাঞ্চল্য উপস্থিত হইবে না। তথন চিত্ত একতান হইবে, এইরূপ হইলে দৃঢ়ভূমি হয়। চিত্তের দৃঢ়ভূমি অবস্থা হইলে ज्थन देवत्रागा निक्रवर्खी ब्हेत्रा शास्त्र ।

मृष् श्रृष्टि ( पूर ) मृष् श्रृष्टिर्शत्र शत्र यक्त । > अक्तांति । मृष्टा नानावः ভাবাৎ কঠিনা মৃষ্টিৰ্যন্ত। (অ.) ২ কুপণ। ৩ দৃচ্মুষ্টিং।রক। "নিগৃহীত: কন্ধরারাং শিশুনা দৃঢ়মুটিনা।" ( হরিবংশ ২০১১) पृष्यूल ( पूर ) वृष्ट म्नर यद्य । > मृश्वष्ट्व । २ मृश्वन्व छ्व । ৩ নারিকেল।

पृण्तला (खो) तुणः वितः तदला तारमा वकाः। कणि, क्वेविति। मृ एत्र ( १९ ) श्रुवाङ भूका एक । ( कामक २०७१ मृ ) हेरा व পাঠান্তর দৃঢ়রথাশ্রর এইরূপ দেখা যায়। (ভারত ১/১১৭/১১) २ करण्यस् द्वरणीत्र नृशरकतः। ( इहिन्दरम् ७७० **वर**)

मृ ए उक्कि (बी) मृहा कि विक् । > खित न्नागयुक्त । २ कूनरीय পতি হিরণারেতা প্রৈরভের এক পুত্র।

' দৃঢ়লতা (বী) দৃঢ়া কঠিনা দতা। পাতালগরুড়ীলভা (বাৰনি⁾ দৃঢ়লোমন্ (পুং) দৃঢ়ানি লোমানি বঁছ। ১ শুকর।^{৫ বিরাং} होश् छोत् वा। मृहत्नामा वा मृहत्नामी . अहेकन नव हहेरर। ( ত্রি ) ২ কঠিন লোমযুক্ত।

पृष्ठे ( पूः ) अवस्त चल्रवासः । ° দৃত্বৰ্মান ( গং ) ১ খৃতদ্ধাষ্ট্ৰের প্তা বিশেষ। (ভারত ১/১১৭৮) मृहः वर्षा यश्च । प्रत्यंत्रमन्त्रीहरूक, याहात वर्ष अधिनत वर्षेत्र।

দৃঢ়বল, এক্ষন প্রাচীন বৈষক গ্রহকার। বাচল্পতি ইহার বচন উদ্ধৃত করিরাছেন।

দৃঢ়বক্ষল (পুং) দৃঢ়ং বৰণৰভ। ১ পুগর্ক। ২ লকুচ। (আ) ০ দৃঢ় বৰণৰ্জ, বাহার বৰণ অভিশয় কঠিন।

मृष्ट्यस्तु (बी) मृहर वदः यष्टाः। अवर्धाः (वासनिः) , मृष्ट्रीक (पूरे) मृहर वीसर यष्टाः > ठळ्यकः। २ वेस्त्रः।

े वर्ज्य। (खि) ८ कठिन वीकर्षकः। (क्रो) पृष्टर वीकरै। पृष् खक्रम वीकः।

দুঢ়ুকুক ( পুং ) নারিকেল ১

•मृष्ट्रवर्षन (जी) एएकरण विक्रकृत्रण

म्हेवा ( प्रः ) श्रविष्ठम ।

শৃদ্ব্যশ্চেম্বাছত তৃণসোমালিরাতথা।" (ভারত অনু ১৫ আ:)
দৃঢ়ব্রত ( বি )" দৃদ্ধ অতিপকৈতালয়িত্ব বতং বতঃ। দ্বির
সহরযুক্ত, দৃদ্ অধ্যবসারবিশিষ্ট, ফলোদর পর্যন্ত কার্যকারী,
অবলম্বিত কার্যাধনে বাহার দৃদ্ধর মৃদ্ আছে।

"এবং দৃঢ্ত্রতো নিতাং ব্রন্ধারী সমাহিতঃ।" (মহ )
দৃঢ়শব্জিক (ব্রি ) দৃঢ়া শক্তির্থক ততো কপু। মহাশব্জিযুক্ত।
দৃঢ়সন্ধ (ব্রি ) দৃঢ়া সন্ধা যক্ত। ১ হির সন্ধান। (পুং) ২ ধৃতরাষ্ট্রের পুরুজেদ। (ভারত ১৷১১৭৷৮)

দৃঢ়সৃহ্মি (আ) দৃঢ়ঃ পুংলঃ সহিষ্ঠ । নিশিছল । পর্যায়— সংহত, দৃঢ়রপে মিলিত ।

দৃঢ়সূত্ত্রিকা (ত্ত্বী) দৃঢ়ং স্থাবং বঙ্গাঃ কণ্ অত ইবং। মূর্বাণডা। দৃঢ়সেন (পুং) কলিযুগের জনমেজর বংশীর নৃপভেদ।

(ভাগবত না২২।৪৭)

मृह्युक्क (१९१) मृहः प्रस्कायस्थ । > कोत्रिका वृक्तः (वि) र मृह्युक्क विभिद्धे ।

দৃঢ়্ন্ত্য (পুং) লোপামুলার গর্ভদাত অগন্তা, ঋষির পুত্র, ইনি ইয়বাছ নামে প্রসিদ্ধ।

দৃচ্হসু ( পুং ) অধ্যীড় বংশীর নৃপজেন। (ভাগ॰ ৫।২১।১৭ ) দৃত্হস্ত ( পুং ) দৃঢ়: হক্ত: হক্তব্যাপারোহক। ১,৭ড়গাদুি ধারণ

বিবরে দূঢ়হত্তযুক্ত বোদ্পুরুষ। ২ গুডরাট্রের প্রভেদ।
(ভারত ১।৮৭ আ:)

मृঢ़ाक्र"(बि) मृहः खद्भः यज्ञ। > कठिनामयुक्त, यादात्र व्यवस्य "व्यक्तिमत्र कठिन। "("क्री) २ कीत्रकः।

দ্ঢ়াদি ( পুঁং ) পাঃপিছাক শক্ষান্ধ বিশেব,—দৃচ, বৃঢ়, পরিবৃচ, তুপ, রুপ, বজ, ওক্ত, চুক্ত, আম, ফক্ত, লবণ, তাম, শীত, উক্ত, অড়, বধির, পিগুত, মধুর, মুর্থ, মুক্ত, অবন এই সকল শক্ষ দৃঢ়াদিগাণ। "বর্ণদৃঢ়াদিডাঃ যুক্ত্ চ।" ( পাণিনি ) ভাবার্থে দৃঢ়াদির উদ্ভের যুক্ত্ ও ইমনিচ্ প্রত্যর হত্ত্ব।

দৃচায়ু (পং) শ্ভতীর দিল সাধানির প্রা বিশেষ। (হরিবার আচ)
২ উর্জনী-শর্ভনাত ঐল নূপপুত্রভেদ। (ভারত ১/৭৪ আঃ)
দৃচায়ুধ (পুং) দৃচং আর্থো তথ্যাপারে। বস্ত। বোধা, বৃদ্ধতৎপর ক্ষতিন।

"ए ए । ब्र्री अनगार्क ब्र्ड ह क्र क्रिक्ट हो।"

(ভারত বনপর্ম ১৯ আ:)

২ গ্রনাষ্ট্রের প্রভেদ । (ভারত ১/৩৭ জঃ)
দৃঢ়াশ্ব (পুং) গুদ্ধার নৃপপ্রভেদ। (ছরিব ১২ জঃ)
দৃঢ়েয়ু (পুং) গবিভেদ। (ভারত জন্ম ১৫০ জঃ)
দৃঢ়েয়ুধি (পুং) দৃঢ়ং ইর্ধি র্বন। ১ বছত্ণক বোধ, বে বোদ্প্রদ্বের ইর্ধি দৃঢ়ভাবে বছ আছে। ২ রাজভেদ।

( ভারত অহু ১১ - অ: )

দৃত (বি ) দৃ-ক। ১ আদর্যুক্ত। দৃ বিদারে ক্ত ,বাছলকাৎ রবঃ। ২ বিদীর্ণ। "দৃতে দৃংহ মামিত্রত।" ( তারবজুঃ ৩৬/১৮) 'দৃতে দৃ বিধারে বিদীর্ণে অরাজ্ঞরিতে হপি শরীরে।'

( (वननीभ )

দৃতা ( বী ) নিরতে শেভি দৃ-কর্মণি ক্ত টাপ্। জীরক।
দৃতি ( পং ) দৃণাতীতি দৃ বিদারে ইতি তি হ্রফচ ( দৃণাতে
হ্রস্ফ। উণ্ ৪।১৮০) চর্মপুটক, চর্মমর পাত্র।

"हेक्षित्रांगांख मर्स्स्यार यात्राकर क्या छोक्षित्रः।

एजाछ क्या छ ख्रा मृत्छः गांवानित्यामकर ॥" (वस् २।३৯)

हर्ष्मगांव वह हिस्त्रमत्र ना हरेत्न छ वक्षी हित्स्य त्मार्य त्यमन क्ष्मभून हरेत्रा मत्र हरेत्रा यात्र, एक्ष्म हेक्षित्रगत्न मत्या यात्र कक्षी हैक्षित्र चानिष्ठ हत्र, छाहा हरेत्न त्याहे कक्षी हेक्षित्र-प्रोक्तालाहे गुत्रम खान नहे हहेत्रा थात्म। २ मरुष्ठ।

৩ গলক্ষল_ু। "সবৎসাং পীৰয়ীং দ্বা দৃতিক্ঠামলয়ভাং। •বৈশ্বদেবমসংবাধং স্থানং শ্ৰেঠং প্ৰপদ্যন্তে ॥"

(ভারত ১৩।৭৯/১৮)

'দ্তিকঠাং প্রাল্যগণকৰ্দাং।' (নীলকঠ ) ৪ মেছ ।

• (নিঘণ্ট ) ৫ সত্রবিশেষধারক যজ্মান ভেদ। ৺বোমশ চর্ম।

দৃতিধালক (পুং) দৃতিদর্মপুটজদক্ষারং ধাররতীতি ধারিধুল্ (ধুল্ ভূচো। পা ৩)১/২৩০) রুক্ষবিশেষ, আক্নপাতা।

পর্যার—আনন্দী, ম্বিকারাব্, নামন। '(শল্চং)

দৃতিবাতবতোরয়ন (ক্রী) বজ্ঞভেদ। "দৃতিবাতবতোরয়নমেকৈকেন প্রতিভাবেন মাসং মাসং।'' (কাত্যাণ শ্রোণ ২৪।

২৪/১৬) 'দৃতিবাতবতোরয়নমিতি সত্ত্বত সংজ্ঞা।' (কর্ক)

দৃতিক্রি (পুং) দৃতিং চর্মমর জ্বার্ম ক্রেডীতি দৃতি-জু-ইন্।
কুকুর। যে স্থলে পশু অর্ধ ক্রেবেনা, সেই স্থলে ইন্না

**ठर्षहात्रक यूक्षाहेदर ।** मृद्धा (बि) ए-कर्षनि काश्। > व्यामत्रनीतृ। (क्री) ভাবে ক্যুপ্। ২ আদর। "আদৃত্যক্তেন বুভ্যেন"। (ভটি) দুধ্র (क्री) গোদিগের মির্গমন-বাররোধক। 'তে প্রবাড यनमा वृक्षभूर्याः । ( अक् ८। ১। ১৫ कार्या नायन ) पृत् ( जवा ) > हिश्मा । २ पृष्ठार्थ । ॰ ( मकार्विति॰ ) দৃন্ফু (জী) দৃন্ক কু নিপাতৰাৎ ম মলোপঃ। ১ সর্পলাজি। দৃষ্ভু (জী) দৃক্ষভীতি দৃন্ফ নিপাতনাৎ ক্প্ৰভাৱেন নাৰু। (अम् मृत्कृ अप् कष्कारकत् कर्कसृति विवृ। উप् ১।৯৫) ১ দর্শ (২ চক্রে। (পুং) ৩ বজ্র। ৪ হর্ষ্য। ৫ রাজা, নূপ। ৬ অন্তক +ুকোন কোন ছলে চৃন্তুর পাঠান্তর চৃন্কু দেখা বার। मृश्व (बि) मृश-अर्व्स स्टर्ष ह वर्षमात्व क । शर्रवाविक । शर्रिक । "यमाध्योयः कानस्मात्रज्ञस्य (भोलायाना वत्रमागाक मृद्याः। (एरेवद्रक्षत्रा निर्व्धिजान्हार्क्युनन **छम। नामःरम विषयात्र मश्रद्य ॥'' ( छात्रछ ১।১।১७२ )** দৃপ্র ( বি ) দৃপতি বাধতে ইতি দৃপ-রক্ ( কারিডকীতি । উণ্ रां २०) मृथ वनयूक । मुक्क (बि) मृष्ठ क्षप्रत्न कर्षां (क्रः। ५ क्षथित । मृष्ठ-करा कर्खति 😎 । २ की खा । खादा खन्। (क्री) ७ अध्न । ८ खन्न । मुखीक (शूर) मृख वाहनकार बेकन्। अञ्चलका । "अथर-र्यता (या पृत्वीकः।" ( यक् २।>८।७') 'पृत्वीरंका नामाञ्चतः।' ( সাম্ব ) দ্মিচতগুলর ( ङो ) ষংকপুরাণোক্ত শিবলিক ফুল। मृत्त् (जि) मृ-विवादं किन् वाहनका९ व्याप स्थाः। विमात्रक । "मृंशृति क्रकाति ।" ( अक्रवक्: > । । ) 'पः मृत्रिति षु विश्वातर्ण मृगाँकि भळ्न विषात्रप्तकि मृवा ।' ( छाया ) मुन् ( बि ) भृष्णकारमम देखि मृणं-कत्रां किए। १ ठक्र, त्नव, যাহার ছার । দেখা যার। "मृना मद्भः मनिकः कीवत्रकि मृटेनव याः। বিরপাক্ষত ক্রিমীন্তাঃ স্থমো বামলোচনাঃ ॥" ( সাহিত্যক ) ভাবে किन्। २ नर्भन। १० वृद्धि। (खि) नश्च छौकि मृत कर्त्वति क्रिन्। ६ वीक्षकः। छक्षः भवार्थ-वर्णकः। "वाब्छक्तापिव। जिबेन् बाबिश नीषान्य द्वापृक्।' (याकः) ঃ দ্রষ্টাপুরুষ। "দৃক্ দৰ্শনশক্ষ্যোহে**কান্মটেন্তবান্দ্রিকা।'' ( পান্ড॰ স্তর** ).

'पृक्भिक्तिः श्रूक्षवः' ( खार्या ) ७ विष मःशाः।

हरेत्रा व्यक् हरेटर अवश् भन 'मृष्ठिहात' श्वरेत्रभ'रहेटर, व्यर्ग मृष्टि (जी) मृग वाहनकार **चाटन व्यक्ति** : वर्गत । "হুরো ন যত দৃশতিররেপাঃ।'^ ( পক্ ৬।৩)৬১) 'मृण्डिर्म्मनः।' ( नात्र ) जुर्भेज् (जी) मृदम् शृरवामकामिषाव नामुः। निमा, शावान নিপোষণ শিলাগট। "তথাঁ দৃশংপুত্ৰ**ক।**" (গোডিন) 'पृनं९ भिर्यनाधात्रभिनाशुब्धे भिर्यनकद्मवद्भवश्चर्यक्षः।' . ( বংকারতত্ত্বে রবুনদ্দি₎ पृभव्यकी (जी ) प्रवकी श्रवामत्रामिषार नायुः। 3 वकार्व्ह नीमान् ननीरकन। এই ननी क्करकरवाद अवर्गत, बहाता দৃশৰতী নদীতীরে অবহান করেন তাহায় অর্থে বাস-অরিয়া. পাকেন। এই স্থান অভি মনোরম। [ দৃবদভী দেখ।] "দক্ষিণেন সরস্বত্যা দৃষ্যত্যান্তরেণ চ। বে ৰুসন্ধি কুরুক্তেতে তে বসন্ধি ত্রিপিষ্টপে 🗗 (ভারভ ৩/৮৩৪) ২ কাত্সরনী। पृथ्म (खी) एन स्नत्स्थार वा होश्। हकू, देनक। पृभाक्षिका (क्री) मृना मृनत्रा वा व्याकाकाः विश्वतिकारीः। पुर्भान ( श्रः ) पृत्र-चानत् किछ । > लाक्शांका । २ विद्याहन। ৩ আচাৰ্য্য। ৪ ব্ৰাহ্মৰ। ৫ উপাধ্যায়। (ক্লী) ৬ ৰ্যোডি:। ( ত্রি ) দৃশ্বতে ইতি দৃশ-কর্মণি আনচ্। ৭ দৃশ্রমান। "দৃশানো রূজ উবিয়া।" ( অক্ ১০।৪৫।৮) मि ( जौ ) मृश्चरण श्नमा मृन-रेम् म छ-किए। ३ ठक् । २ (ठठन পুরুষ। "ডারা দৃশিমাত্র: ওবোহণি প্রত্যেরারূণখ্য:।" ( পার্ড ফু থাং ) প्रस्पतं नाम जहा, वज्रकः वाहादक जहा वना हुत, छिनि जहा नर्दन, रकनना छिनि ठिक्कभी ७ अभिनामी। यूज्याः পরিশমনবভাব, অভকেরণই জানাদি ধর্মের আধার। নির্বিকার অভাব আত্মা বা পুরুষ যথন ভাদৃশ বৃদ্ধিত উপ-রত হন, বৃদ্ধির সহিত একীভূত হন, অর্থাৎ বধন তিনি সন্ধিন ৰশক্ষা বৃদ্ধি বৃদ্ধিতে প্ৰতিবিশ্বিত বা অভিবাজ হন, उथनहे छाहारक উপচারক্রমে सही करह । বৃদ্ধির বা অত্তঃ-করণের পরিণাম বা বিষয়াকারতা না থাকিলে, তাহার কিছু ' याज अङ्ख् थारक मा। তাৎপৰ্য্য এই যে বৃদ্ধিবৃদ্ধিতে প্ৰতিবিদিত মধুদাই ভীহাই

দেখা। অসু কোনরূপ দেখা তাহার নাই।•

"তদভাবাৎ সংযোগাভাবো ছানং তদ্শে: देकवनार।"

हुक् अवर मृत्यात अरदुवारणम स्थातन स्वितमा, अहे स्वित्या

যদি যোগাভ্যাস বারা ভবকান বা চিভনিবোধ বারা বিব্রিট

* ( পাত ক্ বাবং )

হর, তাহা হইলে বে প্রথমের সহিত প্রাক্তরে সংযোগ বা এই দৃশ্যকাব থাকে না। প্রথম তথন মুক্ত অথাৎ কেবল হন। অভ সমমবর্জিত হওঁরায় তিনি তথন সীর চিল্মন বভাবে প্রতিষ্ঠিত থাকেন।

দৃশী (জী) দৃশি বাছলকাং জীষ্। [দৃশি দেখ।]
দৃশাক (জি) দৃশ কর্মণি ঈকক্ৰ দর্শনীয়। "ভোষং ক্ষরার
দৃশীকং।" (ঋক্ ১৷২৭৷১০) 'দৃশীকং দর্শনীয়ং' (সংর্থ)
দৃশোল্য (জি) দৃশ কর্মণি কেন্তন্। দর্শনীয়। "দৃশোল্য মহিনা
সমিদ্ধঃ।" (ঋক্ ১০৷৮৮৯) 'দৃশেল্য দর্শনীয়ং' (সার্থ)
দৃশোপুম (কী) দৃশারা উপমী যতাৰ শেতপ্য। (শক্ষালা)
দৃশ্য (জি) দৃশতে ইতি দৃশ-কর্মণি ক্যেপ্। ১ দর্শনীয়।
২ মনোর্ম। ৩ এইবা। ৪ জ্বের্মাত্র, প্রকাশ্য।

শিন্ত লুশ্যমোঃ সংযোগে হেরহেতু:।" (পাত কং ২।১৭)

দ্রুষ্টা ও দৃল্লের সংযোগই হের হেতু অর্থাণ ই:ধের প্রতিকারণ। দ্রুষ্টা, আত্মা ও দৃশ্র অর্থাং অন্তঃকরণ এই ছইরের সংযোগ থাকিলেই ছাথ উপস্থিত হয়, কেবল ছাথ নহে, ত্বণ, ছাথ ও মোহ এ সম্বন্ধই অস্তঃকরণের বিকার। বৃদ্ধি দ্রুষ্টা বা অন্তঃকরণ ইন্দ্রিয় সম্বন্ধ ছারা বিষয়াকারে ও ত্বথ ছাংথাদি আকারে পরিণত হইবা মাত্র তাহা চিংশক্তি ছারা প্রেণজ্বল হয়। স্থত্রাং পরিণাম স্বভাব বৃদ্ধিসন্থ বা অন্তঃকরণ পদার্থটা দৃশ্য এবং তৎসন্ধিষ্ট অপরিণামী চিংশক্তি তাহার দ্রুষ্টা।

দ্ভাও দ্রুটা এই ছ্রের বে সংযোগ আছে অর্থাৎ একীভাব হইয়া আছে, ইহাই সংসারী জীবের ছংথ সম্হের মূল।
"প্রকাশক্রিয়াছিভিশীলং ভ্তেক্সিয়াত্মকং ভোগাপবর্গার্থিং
দৃগ্যং।" (পাত হা১৮) প্রকাশন্তবাব সম, ক্রিয়াত্মক রক্ষঃ,
তহভরের প্রতিরোধক অচল স্বভাব তম, এতৎ ক্রিয়াত্মক
ভূত ও ইক্সিয় ইহারা দৃগ্য। পুরুষ ভিন্ন পরিদৃশ্য জগতে যাহা
কিছু নন্নন গোচর হয়, সকলই দৃগ্য; ইহারা সকলেই পুরুষের
ভোগ ও অপবর্গ প্রদানার্থ উন্যত আছে। সত্ব, রক্ষ ও
তম এই প্রণক্রয়াত্মক প্রকৃতি ও ভত্ত্পের বৈ কিছু ভূত
ভৌতিক সে সকলই পুরুষের ভোগের ও অপবর্গের নিমিন্ত
কারণ। এই দৃগ্য অবিবেকীর ভোগ এবং বিবেকীর মোক
প্রদানার্থ উন্যত আছে। হিহার বিশেষ বিবরণ প্রকৃতি দেখ।
দৃশ্যকাব্য (ক্লী) কার্যবিশেষ, যে কাব্য রক্ষালয়ে নটগণ
কর্ত্ব প্রদর্শিত ইয়, তাহাকে দৃগ্রকাব্য কহে। •

भ्नुश्चर्यवाचरण्डामन श्रूमः कावाः विशामेणः। नृश्चः ज्वाचितमः जन्मभारताभाज्यभावः॥"

(সাহিত্যদ ভাবণৰ)

কাৰত ছই প্রকার—দৃশ্য ও প্রব্য, বাহা অভিনীত হয়, ভাহাত্তে, দৃশ্রকাব্য কহে। ইহাকে সাধারণ লোকে নাটক কহে, কিন্তু সাহিত্যদর্শণ প্রভৃতি অনন্ধার শাল্পের মৃতায়-নারে নাটক, দৃশ্রকাব্যের এক প্রকার মাত্র।

ুরদানর নটগণ বে যে পুত্তক অভিনর করে, স্কন্ট দৃশুকাব্যের মধ্যে অস্তর্ভূতি । যে নাট্যশাল্প দৃশুকাব্যের প্রাণস্থরপ, তাহা ভরত মুনি কর্তৃক স্টু হয়। এইরপ ক্থিত আছে, তিনি উহা একার নিক্ট শিক্ষা করিয়া গন্ধর্ম ও অপ্রোগণকে শিক্ষা দেন। ক্রমে উহা প্রচলিত হইরাছে। দৃশুকাব্য হুই ভাগে বিভক্ত রূপক ও উপরপক, ইহার মধ্যে রূপক দশ এবং উপরপক অটাদশ প্রকার। রূপক—

"नाउँक्मर्थश्रकत्रशः छानयाद्याशत्रमयकात्रिष्याः । स्रेहामृशाक्रवीयाः श्रहनिमिष्ठि ऋगकानि नम्॥"

উপরূপক---

"নাটকাত্রোটকং গোষ্ঠা সম্ভকং নাট্যরাসকং। প্রস্থানোলাপ্য কাব্যানি প্রেক্ষণং রাসকং তথা ॥ সংলাপকং জ্রীগদিতং শিরকঞ্চ বিলাসিকা। দুর্ঘারিকা প্রকরণী হলীশো ভাণিকেতি চ ॥ অস্টাদশ প্রাচ্কপক্ষপকানি মনীবিশ:। বিনা বিশেষং সর্কোবাং লক্ষ্য নাটকব্য়তং ॥"

( সাহিত্যদ ভা২৭৫-৭৬) '

নাটক, প্রকরণ, ভাণ, ব্যায়োগ, সমবকার, ডিম, ঈহাম্গ, জহু, বীথা ও প্রহসন এই দশবিধ রূপক। নাটকা, ত্রোটক, গ্যেষ্ঠা, সম্ভুকু, নাট্যরাসক, প্রস্থান, উল্লাপ্য, কাব্য, প্রেক্তন, রাসক, সংলাপক, শ্রীগদিত, শিরক, বিলাসিকা, হুর্দ্ধারকা, প্রকর্মিকা, হল্লীশ ও ভাণিকা এই অষ্টাদশ প্রকার উপরূপক দি

দৃশুকাব্যের মধ্যে নাটক সর্ব্ব প্রধান। ইছার গার প্রিনি নি বিবরণ হইতে গৃহীত এবং কিয়্দুংশ কবির মন্বিরত হইবে। ইহার নায়ক হয়ত্তের ছার নূপতি, রামচজ্রের ছার অলোকিক ক্ষমতাসম্পার এবং শ্রীক্লন্ধের লায় করেছার দেবতা হইরে। শৃলার বা বীররস ইহার প্রধান বর্ণনীর বিষয়। অভিজ্ঞান-শক্তল, মুজারাক্ষস, বেণীসংহার, অমর্থন্নাথ প্রভৃতি নাটকশ্রেণীভূকা প্রক্রণের লক্ষণ নাটকের ছায়, কেবল ইন্ধার গরে সমাজ্যের প্রকৃতি ও প্রেম-বিষয়ক বর্ণনা থাকিবে। প্রক্রণ, হই অংশে বিভক্ত ওম-বিষয়ক বর্ণনা থাকিবে। প্রক্রণ, হই অংশে বিভক্ত ওম-বিষয়ক বর্ণনা থাকিবে। প্রক্রণ, হই অংশে বিভক্ত ওম ও সন্থাণ। শুরুপ্রকরণের নারিক বেশ্যা এবং সন্ধাণ প্রক্রণের নারিক বেশ্যা এবং সন্ধাণ প্রক্রণের নারিক। কোন ভন্তবংশের প্রতিপালিতা কামিনী বা সহচরী। প্রক্রণের নারক নাইকের ভার উক্ত প্রেণীর

ব্যক্তি নহেন। ইহার নারকু মন্ত্রী, ব্রান্থণ বা গ্রান্তবণিক।

সূচ্ছকটিক, মালজীমাধব প্রভৃতি প্রকরণ লক্ষণাক্রান্ত। ভাণ

ইহা এক অঙ্কে সম্পূর্ণ, ইহার ভাষা বিশুদ্ধ হইবে, প্রারম্ভে ও
শেষ সঙ্গীত থাকিবে। মাট্যের নারক মাত্র অদিনর জীড়া
করিবেন। তিনি রজভূমিতে আসিরা নানাব্রে ও নানা
ভাবভঙ্গী হারা বিবিধ ব্যক্তিকৈ সংখাধন করিয়া সভাগণের
মনোরঞ্জন করিবেন। দীলামধুন ও সারদাতিলক নামক
বাহ ভাণপ্রেণীভূক।

ব্যারোগ ইহাও এক অত্তে সম্পূর্ণ। যুদ্ধবর্ণন ইহার উদ্দেশ্য, প্রেম বা রহস্ত বর্ণনীয় নহে, ইহার নায়ক অলোকিক ক্ষমতাসম্পন্ন পুরুষ হইবে। আমদগ্যজন, সৌগন্ধিকাহরণ, ধনপ্রয়ানিজয় প্রভৃতি সংস্কৃত গ্রন্থ ব্যায়োগ মধ্যে পরিগণিত।

সমরকার তিন আছে সম্পূর্ণ, দেবতা ও অহারদিগের

युक्त वर्गन देशांत्र धारान वर्गनीप्र विषय। देश चारनगांभा

বীররসবাঞ্জক এবং উফীক্ ও গায়তী ছলে রচিত। অভি नवकारन देहारा हव, हछी, वशानि भविभून, युक्तका, जुमूर्ग। मংগ্রাম এবং নগরাদির ধ্বংস, ইহার বিষয় বিশেষ্ক্রপে বর্ণনা थांक्टित। সমৰকার গ্রন্থ অতিবিরল। ডিম--বীর ও ভরানক রস সংযুক্ত রূপক, ইহা চাম্মি অঙ্কে সম্পূর্ণ, অস্কর বা দেবতা हेशत्र नाष्ट्रक । जेहामृश हात्रि व्यत्क मण्पूर्व, त्मवत्त्रवी हेहात्र ' নায়ক নায়িকা, প্রেম ও কৌতুক বর্ণন ইহার প্রধান উদ্দেশ্য। কুমুমশেধরবিজয় প্রভৃতি ঈহামৃগ। অঙ্ক-ইহা এক আছে সম্পূর্ণ এবং করণ রসপ্রধান। কবি কোন প্রাসিদ্ধ পৌরা-ণিক বিষয় লইয়া ইহার গল রচনা করিবেন ৮ শর্মিঞ্চা-য্যাতি নামক কুদ্ৰ সংস্কৃত গ্ৰন্থ অহ লকণাক্ৰান্ত। বীণ্য ভাণের স্থায় লক্ষণাক্রান্ত, এবং এক অঙ্কে গ্রাথিত।' কিন্তু দশরূপকের মতামুসারে ছই অঙ্ক থাকিতে পারে। প্রহদর্শ হাক্তরসঞ্চান । দব্ন (জি) দৃ-বিষ্ট্রেল ক্লিপ্র করিতে হয় বৈলে সম क्री जि म्राम्थिन ७ त्रक्ष्यनक विवत्र वर्गना कता देशत মুধ্য উদ্দেশ্য, নাট্যোলিখিত ব্যক্তিগণ রাজা, রাজপারিষদ, " ধৃর্ক্ত, উদাসীন, ভৃত্য এবং বেখা। ইহার মধ্যে নীচ জাতীয় পুক্ষপণ জীলোকের ভূার প্রাকৃত, ভাষার কথোপকথন করিবে। হান্তার্থ, কৌতুক্সর্বস্থ এবং ধ্র্তসমাগম প্রভৃতি সংস্কৃত প্রহ্মন। "নাটিকা বা প্রকরণিকা প্রায় একপ্রকার, শূলার রস , ইহার প্রধান কানীয় বিষয়। রত্নাবলী প্রভৃতি নাটকা। ভোটক ধাণাচ বা ৯ আছে সম্পূর্ণ, পার্থিব ও স্বর্গীর বিষয় ইহার প্রধান বর্ণনীয়। বিক্রমোর্বশী প্রভৃতি ভোটক। গোষ্ঠা এক আছে সম্পূর্ণ, ইহার নাট্যপ্রদর্শক ব্যক্তি ৯/১٠ জন পুরুষ, এবং ৫। তী লী। দৈবতমদনিকা গোটা লক্ষণা-

ক্রান্ত। সট্টকে একটা আশ্চর্য্য গর আল্যোপাত প্রাক্তর खायात्र वर्षिष्ठ थाकित्व। कर्न्द्रमञ्जूती **धरे नक्न**गाकातः। नांछात्रांत्रक--- अक कारक मान्त्र्र अवर वर्गिकवा विवय तथम ও কৌতুক। ইহার আন্যোপার অভিনরকানে নৃত্য ও সঙ্গীত সহ সম্পন্ন করিতে 'হয়। নর্মবতী ও বিলাসবতী 🐛 নাধক সংস্কৃত গ্ৰন্থ নাট্যরাসক লক্ষণাক্রান্ত। প্রাথানত नार्ग्यतामरकत मनुम, किन्त देशांत नार्ग्याविष्ठ व्यक्तिश्व অতীৰ নীচ জাতীয়। ইহাও তান বয় স্বয় সংযুক্ত নৃতাগীতে পরিপূর্ণ এবং ছই অছে সম্পূর্ণ , উল্লাপ্য এক অত্তে এথিত, প্রেম ও হাজ ইহার প্রধান বর্ণনীর। পৌরাণুক এবং नाष्ट्राविषयक करवाशकवन मत्या नकील त्रव । एनवीमहाराव নামক সংস্কৃত গ্রন্থ এই শ্রেণীভূক। কাব্যপ্রেমবিষয়ক বর্ণনে এবং এক আছে সম্পূর্ণ, ইছার মধ্যে মধ্যে সলীতু ও কবিতা थार्कित। गामरवानम ध्यक्षि हेराम अखर्क छ। थ्याकन বীররদ প্রধান পুরুং এক অঙ্কে সম্পূর্ণ, ইহার নারক নীচ লাতীয়। বালিবধ প্রভৃতি সংস্কৃত গ্রন্থ প্রেজ্ঞা বলিয়া প্রসিদ্ধ । রাসক—হাক্তরস উদ্দীপ্লক উপরপ্রক এবং ইহা এক আছে সমাপ্ত, ইহার পঞ্চব্যক্তি মাত্র অভিনেতা। নারক নারিকা উচ্চশ্ৰেণীর ব্যক্তি, নামক মূর্থ এবং নামিকা বৃদ্ধিমতী হইবে। মেনকাহিত একথানি রাসক। ,সংলাপক সংগত বা ৪ অত্তে সম্পূর্ণ, ইহার নায়ক প্রচলিত ধর্মের বিরুদ্ধ মতাবলয়ী, ইহার অধিকাংশেই যুদ্ধ বর্ণন। মায়াকাপালিক নামক সংস্কৃত প্রস্থ এই শ্রেণীভূক। শ্রীগদিত—এক অঙ্কে সম্পূর্ণ, ইহার নারিকা লক্ষ্মী, এবং ইহাতে অধিকাংশ ফ্রঙ্গীত থাকে। ক্রীড়ারদাতল (সংস্কৃত) একথানি ঞ্রীগদিত। শির্ক— চারি অক যুক্ত, শ্মশান ইহার রক্ত্ব, নীয়ক আলণ, প্রতিনায়ক চণ্ডাল, ইক্র'বাল ও আশ্চর্ঘ্য বটনা বর্ণন করাই শিরকের উদ্দেখ্য। কনকাবতীমাধব নামক সংস্কৃত গ্রন্থ এই শ্ৰেণীভুক্ত। বিলাসিকা এক অংক প্ৰথিত, প্ৰেম এবং কৌচুক ইহার বর্ণনীয়। ছর্মলিকা হাতারস প্রধান উপ্রপ্র ইহাঁচারি আঁছে সম্পূর্ণ। বিদ্যুতী এই শ্রেণীভূক্ত। প্রবর্গ ণিকা নাটিকার স্তায়। হল্লীশ—ইহাতে আন্তোপান্ত সদীও ও নৃত্য হইয়া থাকে। আলকাল ইহাকে 'অপেরা' বলা ^{ঘাইতে} भारत। हेरा अक जरह जल्लूर्ग, अकुबन भूक्ष अवु भार জন জীলোক খারা ইহা অভিনীত হয়। একনিরৈ^{বত্ত} নামক সংস্কৃত গ্ৰন্থ তেই শ্ৰেণীভূকে। ভাণিকা এক ^{ৰাছ} সম্পূর্ণ এবং ইহা হাজ রসমর। কামদত্তা (সংস্কৃত) ভা^{নিকা} লকণাক্রান্ত।

সংস্কৃত দৃশুকাব্যসমূহে এই স্কল লকণ স্থি

থাকিত। নাটক রচনার ভাষাদিরও বিশেষ নিরম ছিল, নাটক আৰু ও গৰ্ডাকে বিভক্ত। নাট্যোদ্ধিত ব্যক্তিগণের मत्था नाम्त्री, विम्वक, श्रुविधांत्र, शातिशाचिक ও नहे नहीत উলেধ থাকিবে। প্রায়গণের ভাষা সংস্কৃত, এবং স্ত্রীলোক-দিগের প্রাকৃত ভাষায় ক্থাপকধন হওয়া আব্ভক। এই দক্ল বিবক্ন সাহিত্যদর্শণে এইরপ লিখিত আছে। উচ্চপদত্ত পণ্ডিতদিগের বক্তবা ভাষা ঋত্বত। এইরপ ছালোক-निश्तंत्र नचरक मोत्ररननी अवर शांशा नम्मर्क महात्राज्ञ छावा ध्ययुक्त ब्हेटव । त्राकाञ्चः भूत्रहाती. बनगरणत श्रावा मागशी । রাজুপুত্র ও রাজপরিচারক এক শ্রেষ্টাদিগের সম্পর্কে অর্জ-मांगंधी। विम्राद्य थांठा, ७ ध्रांचन व्यविका। यादा ध्वर নাগর প্রভৃত্বির পক্ষে দাক্ষিণা্ভ্য ভাষা প্ররোগ করা উচিত। শকার প্রভৃতি অন্তাক কাতির পক্ষে শকারী, বাহলীকের वास्तीकी, जाविर्फ़त जाविष्ठी, बाजीत अनीरप्रत बाजाती, পহলবের ও তৎসদৃশ জাতিতে চাগোলী রীতির ভাষা वावर्श्या। कार्ष्ठ वा ज्लभनीतिकीवी वास्क्रित मध्यक चाछीती বা চাণ্ডালী এবং অলাব্রকারক নীচ ব্যবসারিগণেরও ঐ ভাষা গ্রাহ্ন। কুৎ্বিতবাক্ মুর্থদিগের পক্ষে পৈশাচী এবং উচ্চ পদাভিষিক চেট ও চেটাদিগের পক্ষে শৌরসেনী। বালুক, উন্মন্ত,বণ্ড ও আর্ত্ত,ব্যক্তিদিগের শৌরসেনী এবং স্থল বিশেষে সংস্কৃত ব্যবহার করাও কর্ত্তব্য। ঐশ্ব্যমদে মন্ত এবং দরিক্ত ভিক্স প্রভৃতির প্রাকৃত ভাষা প্রয়োগ করা আবশ্রক। উত্তমা-শন ব্যক্তি, কঁপট সন্নাসী প্রভৃতি, দেবী, মন্ত্রিকন্তা ও বেখা এই স্কল ব্রাক্তির পক্ষে সংস্কৃত ভাষা শোভনীয়া। অভ্যঞ্জার हहेराव छाहार एपायांवह इस ना। खी, मधी, वांवक, ভাষা ব্যুবহার কালে धुर्छ, "रवश्रा, এवং अञ्जतानिराज চাতুর্যাতিশম প্রদর্শনের জন্ত মধ্যে মধ্যে সংস্কৃতও ব্যবহার করা যাইতে পারে। (সাহিত্যদ॰)। বাঙ্গালা ভাষায় এইরূপ मृश्रकीत्वात्र त्कान वांधावांधि निव्रम नांहे। त्कवन नांहेकहे দেখিতে পাওয়া যায়, তাহাও সর্বাজীন দৃশ্রকাব্যের নাটক नक्षभाद्धांख नरह। [ এই मक्न मृश्चकारकात्र विरम्भ विवद्रभ नाउँक এবং ভত্তৎ শব्द प्रहेवा।]

দৃশ্যাদৃশ্য ( তি ) দৃশুক অদুখক ৰদ্দশ । দৃশ্য ও অদৃশ্য ।
"অটাদশশতাভ্যন্তা দৃশ্যাংশাং বোদয়ান্তভিঃ।
বিভন্তান্ত্ৰাং কেতাংলৈবৈজ্ব শাদৃশ্যতাথ বা ॥" ( স্থাসি॰ )
দৃশ্যাদৃশ্যা ( ত্ৰী ) > কোন অংশে দৃশ্য চক্ত পুবং কোন অংশে
• অদৃশ্যচক্ত, সিনীবালী, ইহাতে কোন অংশে চক্ত দেখা বাদ্ধ
না। ২ তদ্ভিমানী দেবতাভেদ। ইনি অদিবার তৃতীয়া

4911

"বাং কণ্ট্ৰিস্থতাম্বাহদূ ভাদুভেতি দেহিনঃ। তহৰাৎুস্যু সিনীবানী ভূতীয়াং দিয়সঃ স্থতা ॥"(ভায়ত এ২১৭জঃ) দৃশ্বন্ ( বি ) দৃশ-নহিপ্। দৰ্শক।

"आनाकुडेज विवरित विकासः भात्रम्थनः।" (तर्ष् ১ সর্গ )
मृद्द् সার (क्रो) দ্বদঃ পাবাণত সারইব সারো বতা। মৃতারস।
দৃবদ্ (জী) দীর্ঘত অসৌইস্তি দু-অদি-বৃগ্ এবণ্চ ( দৃণাডেঃ
বুগ্ এবণ্চ। উণ্ ১০১০১) পাবাণ, শিলা, পেবণ্শিলা।

"তত্ত্ব বক্তং দ্যদিচরপঞ্চীসমর্কেছমৌলে:। •

শবং সিকৈরপচিতবলিং ভক্তিনম্র: পরীরা:।" (মেষদ্ত ৫৭)
দূবদিমাযক (পুং) মাবং ভক্তেন দীরতে কন্ দৃষ্দি পেষণ,
ব্যবহারে রাজ্ঞে দের: মাবক: জলুক্ সমাস:। প্রেষণ ব্যবহারে রাজ্দের মাবরূপ কর।

দৃষদ্ধ ( অ ) দৃষদঃ সভাদিন্ ভূমা মতুপ্ মত বঃ। > দৃষদ্যুক,
শিলাযুক। (পুং) ২ পুণতেদ। (ভারত ১।৯৫ মঃ)
দৃষ্দ্তী ( জী ) দৃষ্ধ জিরাং ভীষ্। নদীতেদ, সর্বতী ও

प्रकार कार्य प्रवास विकार कार्य निमारकम्, मनवका छ पृत्रक्की अहे इहेंगे तम्बनमी, अहे इहें नमीत्र मधाश्रान बन्धावर्क नात्म व्यनिद्धाः

"नैत्रच्छी नृयब्दछादिन्यनदिगार्यन्छतः।

তং দেবনির্মিতং দেশং ব্রহ্মাবর্তং প্রচক্ষতে ॥" (মহ ২।১৭)
কুরুক্ষেত্রে এই নদী প্রবাহিত। ঋকুসংহিতা হইতে
এই নদী প্রণাসলিলা বলিরা প্রাসিদ্ধ। মহাভারতে এই নদী
মহাতীর্বরূপে গণা।

মুসলমান ইতিহাসে ইহা "বাঘর" নামে বর্ণিত হইয়াছে। ইহার বর্ত্তমান নামু "রাক্ষি।" থানেখবের ১৭ নাইল দক্ষিণে প্রান্তরময় গর্ভে এই নদী প্রবাহিত হইতেছে। (ক্লুক্কেঅ দেখ।] ২ বিশামিজের পদ্ধীভেদ। (হরিবং ২৭ জঃ)

দৃষ্ট ( তিওঁ) দৃশ-কর্মণি জ । ১ দর্শনকর্ম বিলোকিত।

"দৃষ্টদোবোহণি বিবরে মমস্বাক্টচেতনঃ।" ( দেবীমাং )

২ জ্ঞাতমাত্র।

"দৃষ্টাহুখবিকবিষয়বিভূক্তবশীকার্সংজ্ঞাবৈরাগ্যং।'' ( পাত॰ দৃ॰ ১/১৫ )

দৃষ্টবিষয় ও আয়ুশ্রবিক অর্থাৎ বেদগ্রৈতিপাদিত বিষয়
যুগীপদ্ উভয় বিষয়েই সম্পূর্ণরূপে নিম্পৃত্ ইইলে বশীকার
সংজ্ঞা নামে বৈরাগ্য জন্মে। বাহা'দেখা বায়, তাহার নাম
দৃষ্ট। স্ত্রী, অয়, পান, উপজেপন প্রভৃতি বর্তমান ভোগসাধন
বস্ত সকলই দৃষ্ট। বাহা বিন্দুমাত্রও প্রভ্যক্ষগোচর হয়, তাহা
সকলই দৃষ্ট পদ্বাচ্য। ভাবে জ্ঞা। ত দর্শন। ৪ রাজাদিগের
স্বরাষ্ট্রন্থিত এচারাদির ভয়। ৫ পররাষ্ট্রন্থিত দাহবিলোপাদির
ভয়। (য়ী) ৬ সাক্ষাৎকার। ব

"দৃষ্টমৰ্মানমাণ্ডবচনং চ দৰ্কপ্ৰমাণ্সিদ্ধাণ তিৰিবং প্ৰমাণমিষ্টং।'' ( সাংখ্যকারিকা )

সাংখ্যমতে প্রমাণ তিনপ্রকার— দৃষ্ট, অনুমান ও আথবচন।
তাহার মধ্যে প্রত্যক্ষ প্রমাণের নাম দৃষ্ট প্রমাণ, এই প্রমাণ
সর্বশ্রেষ্ঠ। যাহা প্রত্যক্ষ হয়, তাহাতে আর কোন প্রকার
সলেহ থাকে না। এই জন্ত দৃষ্ট প্রমাণ সর্বশ্রেষ্ঠ।
ইক্রিয়ের সহিত বাজ্বস্তর সংযোগের অব্যবহিত পরেই যে
তৎসম্বন্ধ বস্তর অরুপবোধকর্তি জন্মে, তাহারই নাম দৃষ্ট
বা প্রত্যক্ষ। [বিশেষ বিবরণ প্রমাণ শব্দে দেখ।]

मृक्ठेकर्ण्यन् ( बि ) यादा कार्या मृष्ठे वा नतीकिल ब्हेबार्ष्ट् । मृक्ठेकूष्टे ( क्री ) व्यरहणिका, रहेबानित मृष्टे व्यव्र ।

দৃষ্ট তু (রু) দৃষ্ট ভাব: দৃষ্ট ভাবে স্ব। দৃষ্টের ভাব, দর্শনহেতু।
দৃষ্ট দোষ (জি) দৃষ্টো দোষ: রাগলোভাদির্য ভা জ্ঞাতরাগলোভদোষানিযুক্ত; যে ব্যক্তির নোগ লোভ প্রভৃতি দোষ
সকল দেখা গিয়াছে, তাহাকে দৃষ্টদোষ কহে। এবংভৃতব্যক্তিকে সাক্ষী মানিতে পারা যায় না। মানিলেও তাহা গ্রাহ্ম
হইবে না।

"न पृष्ठेरपायाः कर्छवा। न वाधार्खा न पृथिष्ठाः।" (मस् १।७৪) पृर्दे। रपाया मिथाञ्जानसञ्ज सामना यजः। २ छाष्ठ-मिथा-छान-सञ्ज वामनायुक विषयः।

"मृष्टेरनारस्वरिन विसरम समजाकृष्टेरज्जनः।" (रमवीमा॰) मृर्छो क्यांट्या रमासा रयन। ७ हिस्सान्रत्नाकक म्रिपू, स्य मञ्जरमाय रमिष्यारह।

দৃ ঊনঊ ( আ ) দৃষ্টা সন্ নষ্টা। দর্শন মাংতেই নষ্ট্, যাহা দেখি-লেই নষ্ট হইল। যায়। "বিছাৎপুঞ্জাবিবগণী দৃষ্টনটো বভ্বভু:।" (কথাসন্ধিৎসাগন ১।৬২)

দৃষ্টপৃষ্ঠ ( তি ) দৃষ্টং প্রতিযোধে: পৃষ্ঠং যক্ত। প্রশংসনাম, যুদ্ধকালে পলাগন করিলে শত্রুগণ পৃষ্ঠ অবলোকন করে, এইজ্বস্ত দৃষ্টপৃষ্ঠ অর্থে প্রায়ন চ

দৃষ্টপ্রত্যয় (জি) দৃষ্টেন দর্শনেন প্রত্যয়ঃ বিশাসো হস্ত। দর্শনের খারা কৃত দৃঢ়নিশ্চয়।

मृश्वेतकम् (बी) पृष्टेः त्रवः व्यक्तिः यत्रा। > मृष्टे त्रव्यानात्री,

य नातीत त्रवः पृष्टे स्टेशार्षः । २ ज्ञ्ञानिक्ता (श्वीणाक्षी) ।

मृश्वेतीर्था (बि) पृष्टेः तीर्थाः यन। पृष्टे तन, यादात तब प्रवा वा गतीका कृता इदेशार्षः।

पृष्ठेनात ( बि ) पृष्टः नाद्या (यन । पृष्टे वन ।

"গজেলো দৃষ্টদারেণ গজেন্তানৈব বধ্যতে ॥" (কাম॰ নীতি॰ ৮।৬৭)
দৃষ্টাদৃষ্ট (তি ) > যাহা দেখিবার নয়, তাহা প্যে দেখিয়াছে।
২ দেখা ও অদেখা। •°

দৃকীতে (গং:) দৃষ্টঃ অতঃ বিশ্চমে বিবাদ ১ ট্টাবাছন।
কোন বিবন স্পাইনাপে ব্যাইনা দিবার অভ না প্রমাণিত
করিবার অভ অভ কোন পরিক্ষাত বিষয়ের উল্লেখ।
"তৃতিযোগঃ পরেণাপি মহিনা ন মহান্দাং।
পূর্ণভূজোনরাকাজনী দৃষ্টাভোহেজ মহার্ণবং॥"

ৎ শাস্ত্র। ও মরণ। । । অর্থালভারবিশেষ, ইহার লক্ষ্ণ সাহিত্যদপুণে এইরূপ লিখিত আছে—

"দৃষ্টান্তত সম্প্ৰত বন্ধন: প্ৰতিবিশ্বরং ॥" ( সাহিত্যদ ১০।৯৮)
সমান ধৰ্মাজ্যন্ত বন্ধন অতিবিশ্বনের নাম দৃষ্টান্ত ; বেছুলে
ছইটা বিষয় সমান ধৰ্মাবলম্বী হইবে এবং এই ছইটা বিষয়ের
আতিবিশ্বন প্রণিধানগম্য সাম্যুত্ত হইবে অর্থাৎ ছইটা বিষয়ের
সমতা প্রণিধান করিলেই বোধ হইবে, সেই ছলে দৃষ্টান্তাল্যার

हरेटव । देशेकाथत्या व्या देवथत्या हरेटव ।

উদাহরণ

"অবিদিত গুণাপি সংক্ৰিভণিতিঃ কর্ণের ব্যতি মধুধারাং।
অন্ধিগতপ্রিম্লাপি হি হ্রতি দুশিঃ মাল্ডীমালা॥"

( সাহিত্যদ ১০ গ )

नरकवितिरात्र वागीत अन ना कानिरम् अर्थार कर्वाति অবগত না হইলেও কর্ণে মধুধারা বর্ষণ,করে, বেরূপ মাল্ডী-পুষ্পের মালার গন্ধ পরিজ্ঞাত না হইলেও নেত্রকে হরণ करत । এই ऋल कर्ल मधुशाता यमम ७ त्मळहत्र वह इहे টীর শব্দ ঠিক্ একরূপ নতে, কিন্ত একটু প্রণিধান করিয়া দেখিলেও এ ছইয়ের সামাতা স্পষ্টরূপে বুঝাইবে 🏎 এইখনে ছুইটা বিষয় একটা সংক্ৰিভণিতি ও বিতীয় মানতীমানা। म् क विष्कृति जित्र श्राम 'अविनिष्ठ ग्राम' अन अर्थार अर्थानि त्नाव मा रहेरल ७ कर्न मधुक्ष तावर्षन, विजीय मानजीमाना वह পদে 'অন্ধিগতপুরিমলা' গন্ধপরিজ্ঞাত না হইলেও নেত্র অর্থাৎ একটু মনোবোগপুর্বাক দেখিলে এই ছইটা বিষয় व्यक "जाहात्र "मामृश्चरवाध हरेम, वरेमम वरेग्राम पृहेरि অলকার হইল। সাধর্ম্য ও বৈধর্ম্ম অর্থাৎ বৈপরীতো ^{এই} ञ्नकात रत। शृत्सीक উनाहत्रण नाधर्मा बाता इहेन। বৈধর্ম্যের উদাহরণ

"षप्ति मृट्डे-कूत्रमाथाः अःमटक समस्याथा । मृहोक्षमप्रकावित्मो सानिः कूप्रमगरहरकः॥"

( সাহিত্যদ > পরিশ)

তুমি দৃষ্ট হইলে কুরজাকীর মদন ব্যথা দূর হয়। ইন্ উদিত না হইলে কুম্দলংহতির প্লানি দেখা যার। এইবলে এই তুইরের বৈপরীতা ভাবে সমতা হওরার দৃটাত্তালভার হইল।
এই প্লোকে, ক্রলাকীর মদন বাধা নাশ এবং কুমুদদংহতির
প্লানি দর্শন, একের ছঃধ নাশ, অপরের ছঃধ দর্শন এই ছই
পদের বৈপরীতা ভাবে প্রণিধান ঘারা সমতা হওরার দৃটাত্তালকার হইল। দৃটাত্ত ও প্রতিবিত্বসা প্রার একরুপ, ক্বেল
এইমাত্র পৃথক্, বৈ হলে একটা ক্রিরার পৃথক্ নির্দেশ হইবে,
সেই হলে প্রতিবস্ত্বসা অলুহার হইবে। প্রতিবস্তুব্যা দেখ।

গোত্তমক্রোক বোড়ল পদার্থের মধ্যে পদার্থ-কেনু। "লৌকিক পরীক্ষকাণাং ক্ষিয়র্থে বৃদ্ধিনামাং দ • দৃষ্টান্তঃ" (ব্যোত্তমক্র')। প্রকৃত বিষয়ের দৃট্টাকরণার্থ যে প্রসিদ্ধ ছলের উপস্থাস করা যায়, সেই ছলে দৃষ্টান্ত কছে। যথা এই পর্কান্তে বহি আছে, যেছেতু ধ্ম দেখা যাইতেছে, যে যে ছানে শ্ম থাকে, সেই সেই ছলে নিশ্চয়ই বহি থাকে, যেমন রদ্ধনশালা। এ ছলে যেমন রদ্ধনশালা 'এই অংশটাকে দৃষ্টান্ত কছে।

নৃকী স্থিত (জি) দৃষ্টাস্ত স্বরূপ গৃহীত।
নৃকীর্থ (জি) দৃষ্টা অর্থো কেন। ১ যং কর্তৃক অর্থ দৃষ্ট হইয়াছে, যিনি অর্থ অবলোকন করিয়াছেন।
"স নিমিত্তৈশ্চ দৃষ্টার্থা কারবৈশ্চ মহাগুণৈ:।

শ্বিবাকৈশিক হত্মানভৰৎ প্রীভিনান্ পুন: ॥" (রামাণ ৫ ৫১।২৫) ২ যাহার অর্থ স্পাষ্ট।

নৃষ্টি (স্ত্রী) দৃশ;ভাবে জিন্। ১ দর্শন, চাক্ষ্ব জ্ঞান। ২ জ্ঞান মাত্র। "বিদিত বন্ধকারণত দৃষ্টা তজ্ঞপং" (সাংখাতং) ৩ প্রকাশী পশ্মতানেন দৃশ-করণে জিন্। ৪ চকু। "দৃষ্টা দৃষ্টি,মধো দদাতি কুরুতে নালীপমাভাষিতা"

( সাহিতাদ ৩৬৮ )

দৃষ্টিকুৎ ( অ.) দৃষ্টিং করোতি ক্ল-কিপ্, তুগাগ্মশচ। ১ দর্শক। (ক্লী) ২ স্থলপন্ম।

নৃষ্টিকৃত (ক্লী) দৃট্যেদর্শনায় ক্বতমিব অতীব শোভাকরত্বাৎ তথাতং। ফুলপন্ম।

पृष्टि (ऋप ( प्ः ) मृत्हेः (ऋपः । मृष्टिभाज ।

্ দৃষ্টিগত (পুং) দৃষ্টিং গঁতঃ •বিষয়ভয়া প্রাপ্ত ২য়া তং। ১ নেজবিষয় । ২ নেজগত রোগ ভেদ।

দৃষ্টিগুৰ্ব ( পুং ) দৃষ্টা। গুৰাতে অভাভতে যতা গুৰ অভাবে অচ্
বা ঘঞ্। ° > বাবাদিকক্ষা। হ'বেতগুৰ।

দৃষ্ট্রিগুরু (পুং) শিব।

দৃষ্টিপোচর (পুং) দৃষ্টের্গোচর: নেত্রগোচর। দৃষ্টিপথ
নধাবর্তী যাহা চকু হারা দেখিতে পাওয়া যায়।

নৃষ্টিনিপাত ( পুং ) দৃষ্টের্নিপাতঃ।' দৃষ্টিনিংকেপ, দৃষ্টিপাত।

দৃষ্টিপ (পং) দুষ্টিং প্রিবতি পা-ক। দেবগণভেদ। ° "আভান্তরা ুগরুণা দৃষ্টিপান্ড" (ভারত অন্তুং ১৮ আঃ)

দৃষ্টিপথ ( প্র: ) দৃষ্টে: পছা। দৃষ্টির পথ, দর্শনপথ।
দৃষ্টিপাত ( পুর: ) দৃষ্টে: পাতঃ। দৃষ্টিনিংকেপ, দৃষ্টিনিপাত।
দৃষ্টিফল ( ক্রী ) গ্রহগণ রাশিতে অবস্থান করিয়া অভাত রাশিকে অবলোকন করিলে উভাতভাদি যে ফল হয়, তাহাকে দৃষ্টিফল করে। বুহজ্জাতকে দৃষ্টিকলের বিষয় এইয়প লিখিত আছে।

মেষ রাশিষিত চন্দ্র মঞ্চল কর্ত্ব দৃষ্ট ছইলে জুপাল, বুধ দৃষ্টে পণ্ডিত, বৃহস্পতি দৃষ্টে রাজ সদৃশ, শুক্রদৃষ্টে গুণবান, শনি কর্ত্বক দৃষ্ট ছইলে তত্ত্বর এবং রবিদৃষ্টে ভূত্য হর। বৃষ রাশিষিত চন্দ্র মঞ্চল কর্ত্বক দৃষ্ট ছইলে ধনহীন, বৃধ কর্ত্বক দৃষ্ট ছইলে ধনহীন, বৃধ কর্ত্বক দৃষ্ট ছইলে গুকুলাল, শনি দৃষ্টে ধনবান্ এবং রবি কর্ত্বক দৃষ্ট ছইলে ভূত্য হয়।

মিপুন রাশিছিত চক্র মদল কর্ত্ক দৃষ্ট ছইলে শাস্ত্র বাব সারী, বুধ দৃষ্টে ক্লিভিপভি, প্রকৃদ্ষ্টে পণ্ডিভ, শুক্রদৃষ্টে ভয়-হীন, শুনিদৃষ্টে ভদ্ধকর্মকারী এবং রবিদৃষ্টে ধনহীন হইয়া থাকে। কর্কট রাশিছিত চক্র মদল কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে যোদ্ধা, বুধদৃষ্টে কবি, বৃহস্পতি দৃষ্টে পণ্ডিভ, শুক্রদৃষ্টে ভূপাল, শনিদৃষ্টে অক্সধানী ও রবিদৃষ্টে ধনহীন হইয়া থাকে।

সিংহরাশিন্থিত চক্র বুধ কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে জ্যোতিধবেতা, গুরুল্টে ধনবান, শুক্রদৃষ্টে নরশ্রেষ্ঠ, শনিদৃষ্টে ক্রক্মকর, রবিদৃষ্টে নরপালক এবং মঙ্গল কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে প্রাণিঘাতক চটবে।

বৃশ্চিক রাশিস্থিত চল্ল বুধ কর্ত্ব দৃষ্ট হইলে যুগল সন্তানোৎ পাদক, বৃহ্পতি কর্ত্ব দৃষ্ট হইলে কুজাল, শুক্র দৃষ্টে বল্লের রাগকর্ত্তা, শনিদৃষ্টে অলহীন, রবি কর্ত্ব দৃষ্ট হইলে ধনহীন এবং মলল দৃষ্টে ভূপাল হয়।

ধহুরাশিক্তি চক্স বুধ কর্তৃক দৃষ্ট কইকে জ্ঞাতিগণের অনীশ্বর, বৃহস্পতি দৃষ্টে ক্ষিতিনাথ, শুক্রদৃষ্টে লনগণের আশ্রয়-হল এবং শনি রবি ও মঙ্গল কর্তৃক দৃষ্ট হইকৈ দান্তিক ও শঠহুরু।

মঁকর রাশিন্থিত চক্র বুধ কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে রাজাধিরাল, বৃহস্পতি দৃষ্টে রাজা, শুক্র দৃষ্টে পঞ্জিত, শনিদৃষ্টে ধনবান, স্থ্য-দৃষ্টে দরিজ এবং মঙ্গল কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে ভূপতি ইইয়া পাকে।

কুন্তরাশিদ্তি চক্র ব্ধ কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে ভূপাল, গুরুদ্টে রালভূল্য এবং শুক্র, শনি, রবি ও মঙ্গল কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে প্রস্তীতে আসক হয়।

মীনরাশিহিত চক্র বুধ কর্ত্ক দৃষ্ট হইলে উপহাসবেডা,

বৃহস্পতি দৃটে নরপাল, গুক্রদৃটে পঞ্জিত এবং শনি, রবি ও মলল এই পাপগ্রহ কর্তৃক দৃষ্ট হইলে পাপানা হইয়া থাকে। মেষাদি বাদশরাশির অর্ক্ডাগ হোরা নামে বিখাতি। সেই হোরা রবি ও চন্দ্রগ্রহের হইয়া থাকে।

ত্র্যাদি গ্রহণণ স্থীয় স্থীয় অধিষ্ঠিত রাশির যে, হোরায় অবস্থিতি করিবেন, যদি চক্তমা তৎকালে স্থীয় অধিষ্ঠিত মেষাদি ঘাদশরাশির কোন একরাশিতে প্র্যাদি গ্রহের অধিষ্ঠিত হোরাতে থাকিয়া ঐ সকল গ্রহগ্রণ কর্তৃক দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে শুক্তকর হইবে।

মেষাদি ছাদশ রাশির কোন এক রাশিতে রবির হোরাভাগে চক্রমা থাক্কিয়া মেষাদি ছাদশ রাশির রবির হোরাভাগিতি ক্রাদি গ্রহণণ কর্তৃক দৃষ্ট হইলে অভিশয় শুভকর হয় এবং মেষাদি ছাদশ রাশির কোন এক রাশিতে চক্রের হোরাভাগস্থিত স্থাাদি গ্রহণণ কর্তৃকী দৃষ্ট হইলেও শুভকর হইয়া থাকে। ইহার বিপরীত অর্থাৎ রবির হোরাভাগস্থিত গ্রহ দৃষ্টে অগুভ এবং চক্রের হোরাভাগস্থিত গ্রহ হোরা ভাগস্থ গ্রহ দৃষ্টি অগুভকর হয়। অধিপতি শুভগ্রহ কর্তৃক দৃষ্ট হইলে শুভ এবং পাপগ্রহ কর্তৃক দৃষ্ট হইলে মধ্যকল হইয়া থাকে। যদি শ্বব্যাদি গ্রহণণ মিত্রভবন এবং সম্ভবন পত হইয়া দৃষ্টি প্রদান করে, তাহা হইলে শুভ হয়। আর শত্রুভবন গত হইয়া দৃষ্টি করিলে অগুভ হয়।

গ্রহগণের দৃষ্টি অমুসারে এই যে ফল উলিখিত হইল, এই ফলই লথের ফল হইয়া থাকে। (বৃহজ্জাতক)

যে রাশিতে রাছ থাকে, সেই রাশি ছইতে দক্ষিণাবর্ত্ত গণনায় পঞ্চম, সপ্তম, নবম এবং বাদশ রাশিতে রাছর পূর্ণ দৃষ্টি; বিতীয় ও দশম রাশিতে ত্রিপাদ দৃষ্টি, তৃতীয়, ষষ্ঠ, চতুর্থ ও অইমরাশিতে অর্দ্ধি এবং যে রাশিতে রাহ থাকে, সেই রাশিতে আর একাদশ স্থানে রাছ ও কেত্র দৃষ্টি নাই। এই সকল দৃষ্টি তে গ্রহ বলাবল অম্পারে ফলাফল বিবেচিত ভইয়া থাকে। (জ্যোতিস্তৰ *)

"ত্তীরে দশমে চৈব পাদদ্টিরদারতা।

অর্ধদৃষ্টিশ্চ নবমে পঞ্চী চ প্রকীর্তিতা।

চতুর্থ চাষ্ট্রমে দ্বৈ পাদোনাপরিকীর্তিতা।

সপ্তমে পরিপুর্ণা চ ফলমেবং প্রকল্পাতা।

তৃতীয় দশমাবার্কিঃ পশুন্ পূর্ণফলপ্রদঃ।

ক্রিকোণগান্ গুল্লেই চতুর্থিইনগান কুজঃ।

পাদৈ কদৃষ্টির্দশমস্ত্রীয়ে বিপাদদৃষ্টির্নবপঞ্জে তু।

ক্রিপাদদৃষ্টিশচ্তুর্ইকে তু স্ম্পূর্ণদৃষ্টিঃ সমসপ্তকে তা।

সত্মদননবান্তেঃ পূর্ণদৃষ্টিঃ ইংরারে যুগল দশমরাশৌ দৃষ্টিমাত্রং ত্রিপাদং।

সহজ্বিপু চতুর্থ চাইদে চার্দ্ধন্টঃ বিভিত্বনমুপাত্রাং নৈব দৃশ্ধ হৈ বা্হোঃ।

সহজ্বিপু চতুর্থে চাইদে চার্দ্ধন্টঃ বিভিত্বনমুপাত্রাং নৈব দৃশ্ধ হৈ বা্হোঃ।

সহজ্বিপু চতুর্থে চাইদে চার্দ্ধন্টঃ বিভিত্বনমুপাত্রাং নৈব দৃশ্ধ হৈ বাহ্নোঃ।

স্বিদ্ধান্ত বিভ্নাক বিভান্ত বিভ্নাক বিশ্বাহান স্বাহ্নির দৃশ্ধ হৈ বা্হান ।

সহজ্বিপু চতুর্থে চাইদে চার্দ্ধন্টিঃ বিভিত্বনমুপাত্রাং নেব দৃশ্ধ হৈ বা্হান ।

স্বিদ্ধান্ত বিভান্ত বিভান্ত বিভান্ত বিশ্বাহান স্বাহান স্

पृष्टितक्षु ( श्रः ) गृट्डिर्जिक्छ वक्षत्रिय नामृश्चानावनाद । धरमाछ । पृष्टिश्च ( क्रि ) मृष्टि विगाटक च्यक्ष मृष्टि-मक्नु । मृष्टिवृक्क, वर्गन-विभिष्टे । "चारत्रत्रानाव स्मर्थविक मृष्टेर मृष्टिमकार वरेतः।"

্ (কাষক)
দৃষ্টিবাদ (পুং) জৈনদিগের পঞ্চামক বাদসখনিত জুল ভেদ। ...
শৃদ্বিবাদে। খাদশালী ভাদগণিপিটকাহবর। ! পরিকর্মস্ত্রপূর্বায়্যোগপূর্বগত চুলিকাঃ পঞ্চ।
স্থ্যদৃষ্টিরাদভেদাঃ পূর্বাণি চতুর্দৃশাপি পূর্বগতে ॥ শ

কৈনদিগের ১২ গানি অক্ষের মধ্যে ছাদশ • দৃষ্টবাক।
ইহাতে ক্রিয়াবাদীদিগের মত বিস্থৃত ভাবে আলোচিত हहे.

য়াছে। প্রাসিদ্ধ কৈনাচার্য্যন কলকীর্ত্তিকত ভার্বিসারদীপকে
লিখিত আছে —

"অস্তিৰ্বং দৃষ্টিৰাদাঙ্গং ক্ৰিয়াৰাদ্যাদিস্চকং। চক্রভায়্র্বিভূত্যদ্যে যভাং প্রোক্তা জিনাধিপৈ: ॥ ১৫ চন্দ্রপ্রজাপ্তিসংজ্ঞাসাচন্দ্রগৃত্যাণিস্চিকা। বট্তিংশলক্ষ্ক্পঞ্সহত্রপদপক্ষিতা ৷ ৯৬ লক্ষা: পঞ্চ সহস্ৰাণি ত্ৰীণীতি পদসংখ্যকা। স্থান্তায়ু:পরীবারচারক্ষেত্রাদিসম্পদাম্ ॥ ১৭ সমাগ্রিরূপিকা স্থাপ্রজ্ঞপ্রিক্চাতে বুধৈ:। পঞ্বিংশৎসহস্রতিলক্ষসৎপদসন্মিতা। ১৮ জন্বীপকুলাজীণাং ভোগভূমীতরাত্মনাং,। পৃথক্ প্ররূপিকা অমৃধীপপ্রজ্ঞপ্রিরচাতে ॥ ১১ স্থাৎ ষ্ট্তিংশৎসহস্থিপঞাশলকসংপদা । " অসংখাঁৰীপৰাধীনাং তিহাক্ছিভাাদিভূভ্তাম্ঞ >•• সমাক্প্ররপিকা দীপবাদিপ্রজ্ঞতিকত্ম। • লক্ষান্চতুর্শীভিঃ ষ্ট্তিংশংসহস্তমংযুতা॥ ১০১ ইতি সংখ্যান্ধিতা ব্যাখ্যাপ্রজ্ঞপ্তিঃ প্রতিপাদিকা,। यज् स्वानकनानीनाः अनमर्गात्रकावरैनः ॥ >०२ क्का दुकांने उथा नका क्कानीजिः महस्रकाः। পঞ্চেতি পদসংখ্যাত্যং পঞ্চধা পরিকর্ম চ ॥ ১০৩ कर्मनाः कर्ज्ञाक् जानस्त्रा बर्ध्वानिका नृगाः। তৎস্ত্ৰং স্থাৎপদং ছষ্টানীতিলক্ষণদপ্ৰমং ॥ ১•৪ ' স্তাৎ প্রথমানুষোগং পঞ্চ সহস্রপদ্ধারং। मिट्यिष्टिमनाकाश्करवृत्रक्षशतमकम् ॥ ३००

ত্ৰিদশে স্বীপ্ত্ৰস্ত ত্ৰিকোণে চ বৃহস্পতৌ। চতুরস্ৰে মহীজন্ত পূৰ্ণদৃষ্টিং প্ৰকীৰ্ত্তিতা। স্বস্থানক বিতীয়ক বৰ্চমুকাদশন্তথা। বাদশুক ম পশ্চন্তি সৰ্ব্বেই কিল গ্ৰহাঃ।" (জ্যোভিন্তৰ)

चानाम्र्राम्यूर्यः छार् कार्ष्टाक्रममामकम्। बीवांदीनां कित्नांदशात्वाद्यांवातिक्ठकर ॥ ১०७ ष्मश्राविष्यं यहविष्यक्रिम्भारभारः। অবানামগ্রভূতার্থপ্রধানার্থপ্ররপকং॥ ১০৭ बीर्या थवाम् पूर्वरः मश्र कि नैक्न भम् थारः। ठिकटक्वेनिटस्टवक्कामीनाः मृथीर्याटम्थकः ॥ ১ » ৮ অন্তিনান্তিপ্ৰবাদং স্থাৎ ষ্টিলীক্পদপ্ৰমং। जवानकाखिकांत्रीखिनाखानिनत्रचावकः ॥ ১३৯ জ্ঞানপ্ৰবাদপূৰ্বং চৈইকানকোটী পদপ্ৰমা। शक्खानविकाळात्नारशकाशात्राम्। १३० সতাপ্রবাদপূর্বং বড়গ্রকোটীপদপ্রমং। বাগ্গুপ্তিস্নৃতাস্ত্যাদীনঃ স্চক্ষঞ্সা॥ ১১১ আশ্ম প্রবাদপূর্ব্বং বড়্বিংশকোটীপদপ্রমং। भौरानाः कर्षकर्ष्षण्डाक् पानिनिज्ञशकर्म्॥ ১১२ এককোট্যধিকাশীভিলক সংপদৰ্শ্নিভস্। कर्षाधवानभूकाः छा९ कर्षागाः एठकः नृगाम्॥ ১১० वरकायभवभागीनाः निर्व्जताञ्चवाषानाम् । চতুর্জিরধিকাশীতিলক্ষসংখ্যপদপ্রমং॥ ১১৪ প্রত্যাথ্যানাহ্বয়ং পূর্ব্বং প্রত্যাধ্যানশু ধীমতাং । ব্রতানাং নিয়মাদিকরপাণাং চ প্ররূপকম্॥ ১১৫ বিভান্থবাদমেকা কোটীদশলক্ষসৎপদং। সর্কবিন্তা নিমিত্তাস্ত্রীঙ্গনিমিত্তস্চকং॥ ১১৬ কল্যাণনামধেয়ং ষড়্বিংশকোটীপদপ্রমং। मर्जियष्टिमनाकाभूक्यकन्यागरम्भकम्॥ ১১१ व्यागावात्रः ভरवरकातिनाः खर्याम्ममर्थम् । প্রাণারারচিকিৎসাদিপ্রতিপাদকমদিনাম্ ॥ ১১৮ किमाविभागभूर्त्तः शामवत्कावीशमश्रम्ः। ह्रात्मानकात्रम् कावाः कनाखनातित्मकम् ॥ ১১२ হিষ্টুকোট্যগ্রপঞ্চাশলক্ষ্সংপদমানকম্। ভালোকবিন্দুসারাখ্যং মোক্ষমার্গাদিস্চকুম্॥ ১২০ পঞ্চাগ্ৰনৰভিঃ কোট্যো লক্ষাঃ পঞ্চাশদেব হি। পঞ্চেতি সর্ব্যপুর্বাণাং গদসংখ্যান্তি পিণ্ডিতা ॥ ১২১ ' বে কোটৌ নব লক্ষাণি নবাশীভি সহস্ৰকাঃ ৷ ৰে শতেত্ৰেতি চাঙ্কোকপদসংখ্যাসমৰিতা॥ ১২২ আতা অনুগতাভিখ্যা চুলিক্লান্তি নিরূপিকা। জলেষু গমনস্তম্ভনাদি সন্নাদিকাত্মনঃ॥ ১২৩ এতাৰৎ পদসংখ্যা চুলিকা স্থলগভাভিধা। ধরাগমনসন্মন্তভন্তাদিপ্রতিপাঁদিকা ॥ ১২৪ তাবৎ পদপ্রমা মায়াগতাব্যা চুলিকা স্থতা 🕽

ইক্তমানাদিকেত্নাং মন্ত্রবাদানিস্টিকা ॥ ১২৫
প্রেণ্ডিক পদসংখ্যা চ্লিকা রূপগভাহবর।
নানা ব্যান্ডেজরুণানি কর্ত্বিভাদিদেশিকা ॥ ১২৬
তৎপ্রাম্মণা-পদাঢ়া। চ্লিকাকাশগভা মতা।
• আকাশগমনাদীনাং মন্তজ্ঞানিস্চিকা ॥ ১২৭
দশকেটিশ্চ লক্ষাণ্যেকোনপঞ্চাশদেব হি।
সহস্রাং বট্চভারিংশংপদসংখ্যেতি চ্লিকা ॥ ১১৮
অটোত্তরশতকোটোটেবটিসক্ষসংখ্যকাঃ।
বট্পঞ্চাশং সহস্রাণি পঞ্চেতি পদস্মিতা॥ ১২৯
সংখ্যা পিঞ্জীকুতা প্রোক্তা শ্রীগণেশৈর্জিনাগমে।
দৃষ্টিবাদাখ্য পূর্বজ্ঞান্তিমক পঞ্চধান্মনং॥" ১৩০
শেষ অক্ষের নাম দৃষ্টিবাদ। ইহাতে ক্রিরাবাদী ও অপরা-পর বিষর আছে। উহা ভ ভাগে বিভক্ত—প্রিকর্ম, স্ত্রে,
প্রথমান্ত্রোগ, পূর্বগত ও চ্লিকা।

পরিকর্মের মধ্যে---

- >। চক্রপ্রক্তপ্তি—ইহাল্ডে জিনাধিপ চক্রের শক্তি, গতি, আয়ু, বিভূতি প্রভৃতি বর্ণনা করিরাছেন। ইহার পদ-সংখ্যা ৩৬-৫০-০।
- ২। স্ব্যপ্রজাপ্ত ইহাতে স্ব্যের আয়ু, পরিবার, চার ও ক্ষেত্রাদি-সম্পদ্ বণিত আছে। ইহার পদসংখ্যা ৫০০০০।
- ৩। অঘূৰীপপ্ৰজ্ঞপ্ৰি—ইহাতে অঘূৰীণের ভোগ, ভূমি ও কুলপৰ্বতাদির বিষয় বৰ্ণিত আছে। ইহার পদসংখ্যা ৩২৫০০০।
- 8। বীপবার্ধিপ্রজান্তি—ইহাতে অসংখ্য বীপু, সমৃদ্র ও পর্বতাদির বিষয় বর্ণিত আছে। পদসংখ্যা ৫২৩৬০০।
- ধ। বাাগ্যাপ্রজ্ঞাপ্র ইহাতে ছর প্রকার দ্বেরর গুণপর্যাদ্ধ লক্ষণাদি বর্ণিত হইরাছে। পদসংখ্যা ৮৪৩৬০০০।
  সর্বপ্রক্ষেপর পদসংখ্যা ১৮১০৫০০০।
- স্তা—মানবের ধারা কর্ম্মের কর্ত্ম ও ভেগানি যে সমস্ত হইরা থাকে, স্তাে সেই সমস্ত বর্ণিত হইরাছে। ইহার পদসংখ্যা ৮৮০০০০।

প্রথমান্থযোগ — ইহাতে ৩০ জন শলাঞা-পুরুষের আর পাল্লি নির্ণীত হইরাছে। পদসংখ্যা ৫০০০। পূর্ব্গতের মধ্যে—

- >। উৎপাদপূর্ব-ইমাতে জীবাদির উৎপত্তি, নাশ ও ছিতির বিষয় বর্ণিত। পদসংখ্যা ১০০০০০০।
- ২। জ্ঞারণীয়পূর্ক ইহাতে জ্বলস্থ্রে মুখা বিষয়গুলি ও মুখ্য তাৎপর্যা নির্ণীত হইয়াছে। প্রদর্শ্যা ৯৬০০০০ ।
- বার্য্য প্রবাদপূর্ব-- চক্রী; একবলী ও দেবাদির শক্তি-জান ও বার্যাদি নির্দিষ্ট হইয়ছে। পদসংখ্যা ৭০০০০০।

৪। অন্তিনাতি প্রবাদপূর্ব—

জবেরর পুঞাতিকারের অতি
নাত্তি সম্বন্ধে আলোচিত হইরাছে। পদসংখ্যা ২০৪০০০।

৫। জ্ঞানপ্রবাদপূর্ব্ব-এই গ্রন্থে পঞ্চজান ও ত্তিপ্রকার অজ্ঞান এবং যাহারা জ্ঞানাজ্ঞান ধারণ করে,, ত্রন্থিয় বর্ণিত আছে। পদসংখ্যা ১৯৯৯৯৯।

৬। সত্যপ্রবাদপূর্ক-বাগ্গুপ্তি অর্থাৎ বাক্সংযম, সূন্ত ও সত্যাদির বিষয় বর্ণিত আছে। ১ পদসংখ্যা ১ • • • • • ৬।

। আয়প্রবাদপূর্ম—৸ই গ্রন্থে জীবগণের কর্ম, কর্তৃত্ব
 ও ভোক্তৃতাদি নিরূপিত হইয়াছে। পদসংখ্যা ২৬০০০০০০।

৮। কর্মপ্রবাদপূর্ব -- ইহাতে মানবের কর্ম সম্বন্ধে অনেক কথা বিবৃত হইয়াছে। পদসংখ্যা ১৮০০০০০।

১। প্রত্যাধানপূর্ব—ইহাতে জীবের প্রত্যাধান, ব্রভনিয়মাদি স্ক্রপ বর্ণিত হইয়াছে। পদসংখ্যা ৮৪০০০০ ।

১০। বিভাম্বাদপূর্ক-ইহাতে সকল বিভার নিমিতাদি অঠাদের বিষয় আছে। পদসংখা ১১০০০০০।

১১। কলাাণপূর্ব-ইহাকে ৬০ শলাকা-পুরুষের কলাাণকর কর্মসমূহের বিষয় বর্ণিত আছে। পদসংখ্যা ২৬০০ ঃ০০০০।

১২। প্রাণাবারপূর্ব্ধ—প্রাণাপান চিকিৎসার বিষয় বর্ণিত আছে। পদসংখ্যা ১৩০০০০০

50। 'कियाविभागभूर्य-हेहाट हम, खनहात, प्रकाबा, क्ला ७ खगानित विषय वर्गिङ खाटह। शमनःथा।

১৪ ৄ লোকবিন্দ্পারপূর্ব্ধ—ইহাতে মোক্ষমার্পাদির বিষয় বিবৃত হইয়াছে। পদসংখ্যা ১৩৫০০০৮০।

পূर्ववातित रगांचे भनमः था। २००००००।

চুলিকার মধ্যে---

১। কলগতা—এই গ্রন্থে জলে গমন ও মন্ত্রাদিপ্রভাবে ফলগতভনাদির বিষয় বিবৃত হইরাছে। গদসংখ্যা ২০১৮১২০০ এ

২। স্থণগতা—ইহাতে স্থলভ্ৰমণ ও তল্তমন্ত্ৰাদি প্ৰতি-গাদিত হইরাছে। পদসংখ্যা ২০৯৮৯২০০।

৩। মারণগতা—ইহাতে ইক্রজালাদি হেতু মন্তবাদাদি লিখিত হইয়াছে। পদসংখা ২০৯৮৯২০০।

৪। রূপগতা—ইংাতে বাছি, হস্তী প্রভৃতির রূপধারণ করিবার বিষ্ণা আছে। পদসংশ্ল্যা ২০৯৮৯২০০।

৫। আকাশগতা— আকাশ গমন সকলে মন্তভানি ব্ৰিতজাছে। পদসংখ্যা ২০৯৮৯২০০।

চুলিকার মোট পদসংখা। ১০৪৯৪৬০০। •

গণধরগণের বির্দ্ধিত এই শেঘ অলের মোট প্রদসংখ্যা

দৃষ্টিবিক্ষেপ (খং) দৃষ্টিওদেকদেশত বিক্ষেপঃ। ১ কটাক্ষদর্শন। দৃষ্টিবিক্ষেপঃ। ২ দৃষ্টিপাত। ৩ দর্শনাজ্বার।
দৃষ্টিবিজ্রম (পুং) দৃষ্টেবিজ্রমঃ। নেত্রবিলাস জেল।
শবিবর্ত্তিজ্ররিয়মত শিক্ষাতে ভরাদকামাণি দৃষ্টিবিজ্রমং।

শকুন্তলা) ।

দৃষ্টিবিজ্ঞান (ক্রী) দৃষ্টিবিজ্ঞানং। আলোক ও দর্শনবিষয়ক
বিজ্ঞা।

দৃষ্টিবিষ ( শ্লং ) দৃষ্টো বিষং যক্ত। দৃর্পজেদ। জিরাং জাভিদাং।
"দৃষ্টাবিধৈং দগুশীর্ধৈর্গুপে ভোগিভিরভূতৈঃ" (ভারত এ২২ জু:)
'দৃষ্টাবিধং' ইভাত্র আর্ফোদীর্ঘঃ।

দৃষ্টিস্থান (রী) দৃষ্টে: স্থানং। গ্রহদিগের অবলোকনন্তান।
ইহার বিষয় জ্যোতিষে এইরপ দিখিত আছে—প্রাশ্ন কিংবা
জন্মকালে যে গ্রহ যে রাশিতে অবভিত প্লাকেন, তর্কহা হইতে
গণনায় তৃতীর্ব আর দশম স্থানে সেই গ্রহের একপাদ দৃষ্টি,
পঞ্চম আর নৰম রাশিতে অর্দ্ধ দৃষ্টি, চতুর্থ এবং অইম রাশিতে
ত্রিপাদ দৃষ্টি, এবং সপ্তম রাশিতে সম্পূর্ণ দৃষ্টি হয়।

ইহাতে বিশেষ এই যে—তৃতীক আর দশম স্থানে শনি প্রছের পূর্ণ দৃষ্টি, নবম ও পঞ্চম রাশিতে বৃহস্পতির পূর্ণ দৃষ্টি, 'চতুর্থ এবং অইম রাশিতে মঙ্গলের পূর্ণ দৃষ্টি, এতত্তির অভাভ স্থানে অর্থাৎ বিতীয়, ষষ্ঠ, একাদশ ও বাদশ স্থানে তাহগণের দৃষ্টি নাই। গ্রহগণের বলাবল এবং এই সকল দৃষ্টি অমুসারে ন্যাধিক বিবেচনা করিয়া ফলাফল নিণ্য করা যাইবে। দৃষ্যা (স্ত্রী) দ্যা, হত্তীর গাজাবরণ।

দেআন্ত ( আরবী ) নিষ্ঠা, সাধুতা, নম্রতা।
দেআন্দার ( পারদী ) ধার্মিক, ফারপর।
দেআল (পারদী ) প্রাচীর।

দেআলতা (দেশ্ব ) ১ অবস্ত কভেদ। ২ সিন্দুর। দেউটী (দেশৰ ) প্রদীপ।

(पिউড़ी ( प्रमन ) প্রবেশহার, ফটক। দেউড়ীবাল (পারসী) হারবান, হাররকক।

প্রেডিড়ী বা বার-দেউড়ী, সাগর জেলার অন্তর্গত একটা প্রাচীন-লগর। অক্ষা ২৩° ২৮ উ: এবং দ্রাঘি ৭৯° ৪ পূ:।
সাগর হইতে ৪৪ মাইল দক্ষিণপূর্বে অবস্থিত। এক সময়ে
এখানে প্রায় লক্ষাধিক লোকের বসবাস ছিল। প্রায় প্রাণান বর্ষ হইল, ডাকাতেরা আঞ্চন লাগাইয়া প্রধানকার গুলালি
প্ডাইয়া দেয়, ডাহাতে প্রায় জিশহালার লোকের বুড়া
হয় ও বহুসংখ্যক লোক নগর ছাড়িয়া প্রদারন করে। সেই
প্রায় লোক সংখ্যা অনেক কিমিয়া গিয়াছে।

(पिछल (प्रमुख) (प्रवानम्, भिन्नित, गर्छ)

দেউলগাঁও রাজা, বরারের ব্লদানা কেলার অধীন একটা নগর। অকা ২০ উ:, তাবি ৭৬ পৃ:। ইহার প্র্নাম দেবলবাড়ী। জাদোনবংশীর রাজগণ এথানে কুল্পবাটিকা নির্মাণ করিয়াছিলেন, তদফুসারে ঐ নাম হয়। নগরের উত্তরে সারি সারি ছোট পাহাড়ও দক্ষিণে আলী নামে একটা ছোট নদী প্রবাহিত। এক সময় নগরের চারিদিকে প্রাচীর ছিল; এখন তাহার ভগাবদেব পড়িয়া আছে।

নগর-নির্মাতা জাদোনবংশের বিশেষ ক্লেন পরিচয় পা•ওয়া যায় না। লথ্লি জাদোনরাও উত্তর-ভারত হইতে অনিবীয়া এখানে বাস করেন। তাঁহার ক্ঞা কিলিয়ার সহিত শাহলীর বিবাহ হয়। এই জিলিয়ার গর্ভে মহাবীর শিঝুলী জন্ম গ্রহণ করেন।

জানোনবংশ করাবর এখানকার আর ভোগ করিতে-ছिলেন। ১৮৫১ थृष्टीस्य वासीताश्वत अधीरन धैक मन आत्रव-रेमळ व्यामित्रा এथान व्यालय नम्, त्मेरे व्यवधि सारमानिमत्भव मल्लेखि वृत्तिन शव्दर्भके वृद्धिशाश कतिया नन । कारनान-দিগের বজে বরারে যে সকল দেবস্থান নির্মিত হইয়াছে, তমধ্যে এই নগরন্থ বালাঞীর মন্দির বিখ্যাত।

कार्डिक भारत वालाबीत मरहारत हम, रत तमम रात्रवत উদ্দেশে প্রায় অর্কলক টাকার পূজা দেওয়া হয়। বাহার। দেবদর্শনে আসিয়া থাকেন, তাঁহারা সকলেই উদর পুরিয়া প্রসাদ পাইয়া থাকের। এথানে কার্পাস ও রেশ্মের ব্যবসাই প্রধান। দেউলঘাট, বরারের ব্লদানা জেলার অন্তর্গত একটা নগর। অকা २ । ৩১ উ: ও দ্রাবি ৭৬ ১০ ৩ পু:। বেণগদা নদীর তীরে অবস্থিত। পুর্বেদেউলী নাম ছিল। এখানে অনেক ধিন্দু । দেবমন্দির ছিল, অর্লজেব-প্রেরিত নাসির্-উ को न् कूर्ङ्क र न हे म स्छ विश्व छ इत्र । 🗼

দেউলামি (দেশৰ) গতবিভবতা, নিঃস্বতা : দেউলিয়া (দেশজ) গতসর্বন্ধ, গতবিভব, নি:স্ব। (मिडेली (प्रमुख) मीभावनि ।

CbBI अ या मधुतात नातिनित्क वित्याहानन ध्यवनिक हहेते। উঠে। ৫ই অক্টোবঁর, আগ্রা হইতে মালিট্রেট সাহেব দৈক সামত লইয়া মধুরা আক্রমণে । আগমন করেনু। বিজোহী दुमनाथि (ए ६ कर्न मासिट ड्रेंट कर्ड्क वन्ते इन। (ए ६ कर्न वसी रहेरन शत करैनिन कहेरनत रेमक्रमन मध्वाद ভिज्त निधा विद्याशीनगरक भाखि निष्ठ निर्देख कांनी পर्वाख गमन करत्र। 🗣 ইহার পর আর মধুরার কোন গৌল্যোগ ঘটে নাই।

८ए ७ कलि, वाशिक्षेवित्सव। हेरात्र नामाचत्र ८एवशिति। [ मिवशित्रि (मथ । ]

দেওকালী, ত্রিছত জেলার সীভাষারীর রান্তার উপর একটা थाम। 'थेश्'रिन এक है वृहद मिलत चाहि, छन्नार्था अकही শিবলিক প্রতিষ্ঠিত। ফাল্লনমানে এই শিবলিকের মাথায় कन निरात क्रज कारनक रनारकत्र नमार्गम इय । रनहे नमस्य এথানে একটা মেলা হয় . .

দেওগড় মেবার রাজ্যের অন্তর্গত একটা নগর। মেবারের একজন প্ৰধান সামন্ত এখানে বাস করেন। ৮২ খানি প্রাম তাঁহার ক্ষধীন। নগরের চারিদিকে প্রাচীর দিয়া ঘেরা। ইহার মধো প্রায় ৩০০০ ঘর ও প্রায় সাতহাজার লোকের বসবাস আছে। রাও উপাধিকারী সামস্তের ত্মাদাদের চারিপার্যে গড় আছে।

দেওগড়, মধ্যপ্রদেশত ছিল্দবাড়া জেলার অন্তর্গত একটা গ্রাম। পূর্বকালে এখানে গোও রাজাদিগের রাজধানী ছিল। এখন দেওগড়ে ৫০।৬০ ঘর মীথে লোকের বসতি। কিন্তু আমের শ্লাহিত অকলে বহুতর গৃহাদির ভগাবশেষ দেবা ্যায়। এখানে অনেকগুলি পুছ্রিণী ও কৃপ দেখা যার, সেগুলির জল এখন অব্যবহার্য। এখানে অনেকগুলি প্রাচীন মন্দির আছে এবং গ্রাম-সন্নিহিত পর্বতচূড়ায় এঁকটা প্রস্তর-নির্মিত গড়ের ভগাবশেষ দেখা যায়।

দেওগড় (দেবগড়), বোষাই প্রেগিডেম্পির অধীন রত্ন-গিরি জেলার অন্তর্গত একটা উপবিভাগ। দৈর্ঘ্যে এ৬ মাইল ও প্রস্থে গড়ে ৩২ মাইল। উপবিভাগের মধ্যে ১২১ থানি গ্রাম আছে, লেকেসংখ্যা ১১২৯-৩। ঐ উপবিভাগের মধ্যে দেবগড় নগুরটা সমুদ্র তীরবর্তী একটা স্থলর বন্দর। এথানে একটা ছর্গের ভগাবশেষ আছে। প্রায় ছইশত বংসর পুর্বের মরাঠা দক্ষ্য অঙ্গিরা কর্তৃক এই হুর্গ লিখিত হয়। অলিরা ১৮১৮ थ्हेर्टिक कर्नम हम्माक् कर्ज्क श्रुष्ठ ह्या। ১৮१৫ थ्हेरिक থারেপত্তন হইতে মহকুমা উঠাইয়া 'এথানে আরা হয়।

দেওকর্ণ ১৮৫৭ খুটাবে যে সিপাহীবিজ্ঞাহ হয়, দেওকর্ণ সেই । দুবুর্গা, উ: প: প্রদেশত্ব আজিমগড় জেলার একটা নগর। लाकवःथा। > २२०१८। अथादन मैश्वाद छ्हेवात्र हाँ हत्। দেওত্ব, সাঁওভাল পরগণার অন্তর্গত একটা নগর। এখানে একটা মহকুমা ও মিউনিসিপাৰিটা আছে,। আয় পাচ-হাজার টাকার উপর। বিখাতে তীর্থ বৈদানাথ এথান হইতে প্রার ৪ মাইল দ্রে অবস্থিত। [বৈদ্যনাথ শক্ষে বিভ্ত বিৰয়ণ দেও। ] দেশাবলী বিবৃতিমতে, ইহার নাম '(प्रविषय', देश वीयकृष आदित्यात व्यक्तिक।

८म् ७६, ( प्रमंज ) > वाजित्र चावतान । २ ७नि नित्क्ष्म ।

দেওড়া, পঞ্চাবের বসাহর রাজ্যের অর্থত একটা আম।
ইহার জকা ৩১ উ: এবং জাঘি ৭৭ ৪৪ পু: ি চারিদিকে
পেটিত ও মধ্যে নানা শহুস্তামলা উর্বরক্ষেত্রমূক্ষ। বেথানে
পেথানে ক্রমি আছে বা লোত চলিয়াছে, পেথানে লোকের
বসবাস। এখানকার রাণা নিকটবর্তী পাহাড়ের উচ্চ শ্লে
সম্ভ্রপ্রাসাদে বাস করেন। ইহা সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ৬৫০ ফিট্
উচ্চে অবস্থিত।

দেওদার, গুলরাটের অন্তর্গত একটা অর্দ্ধ স্বাধীন ক্ষরাল্য।

এখানে অধিকাংশই রালপুত ও কোনীলাতির বাস। পুর্বের্ধ এখানে কেবল ডাকান্তের আডা ছিল। তাহাদের উৎপাতে নিকটস্থ জনপদ বড়ই উৎপীড়িত হইয়া পড়িরাছিল।
১৮১৯ খুটাবেল রুটীশ গবর্মেণ্টের যত্নে এখান হইতে ডাকাতেরা পূলায়ন করে। সেই অবধি এই রাল্য রুটীশ গবমেণ্টের রক্ষণাধীন আছে। কিন্তু রুটীশ গবর্মেণ্ট রাজ্যের
আভ্যন্তরিক কোন বিষয়ে হত্তক্ষেপ করেন না। দেওদার
নগর অক্ষা ২৪° ৯ উ: ও জাবি ৭১° ৪৯ পুর্বের্ম অবস্থিত।

দেওন্থলা, একটা গ্রাম, পঞ্চাবের অন্তর্গত স্বর্ম্থ ইইতে
সিমলা যাইবার পথে সমৃত্পুষ্ঠ ইইতে ২২০০ ফিট্ উচ্চে
গম্বর নদীতটে অবস্থিত। অক্ষা ও২° ১ উ: ও জাবি ৭৭° ২
পু:। এই স্থানের অবস্থান ও দৃশ্য অতি মনোরম।

ইহারই ১৫ মাইল দ্বে দেওনথল নামে আর একটা বিখ্যাত গ্রাম আছে। এখানে ১৮১৫ খুটাকে কোনল অক্টর্লনির সহিত শুর্থাদিগের ভীষণ যুদ্ধ হইয়াছিল। এই যুদ্ধের পুরই শুর্থারা বুটীশ গ্রমেন্টের সহিত দল্ভি করিতে বাধ্য হয়।

দেওয়ান্, (আরবী দিবান্) ভারতবর্ধে বজু বজু রাজার
মন্ত্রীর যে কার্য্য, ছোট রাজার বা জমিদারের দেওয়ানের
কার্য্য তাতাই। পারভদেশে দেওয়ান বলিলে আদালত
বুঝায়। যে গৃহে আগস্কুক লোকদিগকে আহ্বান করিয়া
বসান যায়, তাহাকে দেওয়ানীআম বলে। কোন গ্রন্থকারের
গ্রন্থাবলী প্রকল্প সংগ্রহ করিয়া বর্ণামুক্রমে স্টীপ্ত সংযুক্তঃ
করিলে তাহাকেও দেওয়ান বলে।

ইটইভিয়া কোম্পানির অধীনে যে দেওয়ানী, আদালত ছিল, তাহাতে দেওয়ানী ও ফৌজদারী ছই রক্ষ মোক্দমাই হইত। ইটইভিয়া কোম্পানি শাহ আলমের নিকট যে বাগালার দেওয়ানীর সনন্দ প্রাপ্ত হন, সে দেওয়ানীর অর্থ. করসংগ্রহ ও বিচারক্ষমতা।

দেওয়ানী আদালভ' (পারনী) বিচারালর বিশেষ, এথানে'
ভূসম্পত্যাদির বিচারকার্যা মিশ্রর হয়। [বেওয়ানুবের।]

দেওয়াল (দেশৰ) প্রাচীর।

Cम अप्रानी, मीभमान उरनद । कार्तिको खमावखाइ कानी-आ মার পূজা হইরা থাকে, সেইদিন প্রতিগৃহ আলোক্ষাল मिक्कि इत । वनरात्म रमखानीय प्र मारे, वानानीया कार्तिः ক্ষ্ণাচতুর্দশীতে ও অমাবস্তার বরে বরে আরো দি थारक ; विरमय आस्मान किह्रे करत ना। शक्तिम आरमरः ইহার গৌরব দেখা যায়। রুঞ্চাচ্তুর্দশী হইতে আ করিরা তৃৎপ্রদেশবাসীরা ভক্লাথক্ষী পর্বান্ত প্রভিদিন সন্ধ্য গৃহাদি আলোকশোভিত ক্রির্ম গীতবাদ্য প্রভৃতি আনুমা त्रज्ञ शांदक । महात्राङ्घे वावनात्रीत्रा **এ**ই नित्न समस्त्र विकास ক্ষতিৰাভ হিসাব করিয়া "নৃতন থাতা" আরম্ভ করে প্রবাদ যে জীক্বঞ্চ এই দিনে নরক দৈতাকৈ হত্যা করি ১৬০০ • হাজার বন্দীকৃতা ^{বিষ্}ষারীর উদার করে: टमवाद्यत्र त्रीना अहेनिटन खारा टिंगई-धान मञ्जीटक महत्र गरे चाहात करतन ; 'तांना अकलिंड, हें ड्रेंत थानीन हार्छ नहें দাঁড়াইয়া থাকেন এবং ম^{্স}ও রাণার আত্মীরবর্গ ে क्षतीर्प टेडन अक्रन क्रिया थार्टकन। এই मिरन ७ हेर পুর্বাদিনে তুলদী প্রভৃতি হাতে লইয়া দেবমন্দির প্রদা করিতে হয়। [দীপাবিভা অমাবস্থা দেথ।]

দেওর (দেশৰ) দেবর, স্থামীর কনিষ্ঠ প্রাতা। দেওরালী, একটা আধুনিক রাগ। গান্ধারী, মানগ্রী

সরখতী বোগে উৎপন্ন। (সলীতর্ত্বাকর)

দেওলী, রালপ্তানার অস্তর্গত আলমের, জরপুর ও মা
বারের মধ্যবর্তী স্থানে, অব্দ্বিত একটা সেনানিবাস। মে
টম কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত। এখানে পদাতিক ও অ্লারোহী
প্রকার সৈত্ত অব্লানের বন্দোবন্ত আহি। হরবর্ত
প্রিটিকেল এলেন্ট এই স্থানে অব্স্থান করেন।

দেওলী, মধ্যপ্রদেশের বরদা জেলার একটা নগর। এখা তুলা বিজ্ঞারের জক্ত সংগ্রাহে তুইবার হাট হইরা থাটে হাটে গোক্ষ বিজ্ঞাপ হর। লোকসংখ্যা ১২৬। এখা চিকিৎসালয়, বিদ্যালয় ও পাছনি,বাস আছে।

দেওবিহাগ, [দেববেহাগ দেও।]
দেওশাক, সম্পূর্ণ রাগ। মোলার, কানড়া ও শুরুরাড়া
বোগে উৎপর।

বরগ্রাম। "গ, ম, গ, ধ, নি, গ, ঝ,ংও।" (সঙ্গীতর্থাব দেখান (দেশজ) দর্শন, অবলোকন। দেখান (দেশজ) অবলোকন করা, দর্শন করা। দেখান (দেশজ) প্রদর্শন। দেখানে (দেশজ) > অনুকরণ। ২ সামনাগামনি। দেখা শুনা (দেশৰ) দর্শন ও প্রথণ। দেখা সাক্ষাৎ।
দেগাঁ, বোৰাই প্রেসিডেলির ক্ষম্বর্গত বরোচ জেলার ক্ষুসহর
উপবিভাগের ক্ষধীন একটা প্রাতন বন্দর। নগরটা মহীনদীর উপক্লে, কাংখ উপসাগরের ১৮ মাইল ঈশানকোণে
অব্দ্রিত। লোকসংখ্যা ২০০০। আইন-ই অকব্রীতেইহার
উল্লেখ আছে।

८एए ( 'तमक ) अर्कन्।न कहे, नाटकैंक।

দেড়ী (দেশক) ১ দেড়গুণ, সার্দ্ধ এক গুণ। ২ ক্লব্ধ প্রস্তত। (ধ্বনের ধোসা মাড়িরা যধীন প্রহেদ্ধ্রিকার করা হয়)।

°८मङीकु। ( ६नमकः) क्नरकम ।

দেশীপামান ( আ ) লাজলামান, অভিশন্ন দীপ্তিবিশিষ্ট। •

দেখান ( দেশল ) থাতের ভার শীভাবিশেব, ইহাতে থই হয়।

দেনদার ( পার্মী ) খনী, অধ্যন।

(मन्मादी ( भादमी ) अभ्धछ।

(एन) ( जातरी ) सन, शात, कर्ज ।

(म्यूग्ना ( त्मेष ) मात्न ध्रक्छ।

(पक्त (पमक) वृक्कविरमेश।

দেমাক ( আর্বী) অহস্বার, ধৃষ্টতা।

দেমাগিরি, চউ আম পার্বত্য প্রদেশে কর্ণফ্লী নদীর একটা জলপ্রপাত। এই প্রপাতের পরে কর্ণফ্লী বৃদ্ধিতারন হইরাছে। ১৮৭২ খুটাকে দেমাগিরি প্রামে রবর ও অভাভ বনজ পদার্থ বিক্রয়ার্থ একটা হাট ছাপিত হর। হাট উত্ত-রোভর জ্মকাইরা উঠিতেছে।

(मगालश्रुत [ मिशानश्र (मध । ] •

দেয় ( অ ) দা-কর্মণি যং। ১ দাতব্য। দানযোগ্য, দিবার উপযুক্ত।

"यः क्रूम्बाबिटबाटधन त्मन्नः मात्रञ्जामृट्छ।'.

নারমে সতি সর্ববং যচান্তলৈ প্রতিশ্রতং ॥" ( যাজ্ঞবন্ধ্য )

দেরা ইস্মাইল থাঁ, পঞাবের অধীন একটা জেলা। ইহার উত্তরে বয়ু জেলা, পূর্বে ঝল ও, সাপুর, দলিণে দেরাগালি থা ও মুজক্ষরগড় ও পশ্চিমে অলেমান পাহাড়। এই জেলা ভারতের লেষ সীমা। ইহা উত্তরদক্ষিণে ১০০ মাইল দীর্ব, পূর্ব পশ্চিমে গড়ে ৮০ মাইল।

অথানে হুইটা গড়ের ভগ্গাবশেষ পাওরা যার। তাহা-দিগকে কাফিরকোট বলে। গিন্তবতঃ গ্রীকরাই এই গড় নির্মাণ করে। খুগীয় চতুর্দশ শতাকী পর্ব্যন্ত এ দেশের বিশেষ বিবরণ কিছু পাওরা বার না। গঞ্চদশ শতাকীর শেবভাগে মালিক লোহরাবের অধীন এক্দেগ বল্চী আলিয়া এই স্থানে বাস করে। ইস্মাইল বাঁ ও ফড়েবাঁ নাবে তাঁহার ছুই পুর

আপন নামে ছইটী নগন স্বাধিত করে। এই বন্টাদিগকে হটলাতি বঁলিভ। এই হটলাভি ৩০০ বংসর সাধীন ভাবে त्रांबच करत, शस्त्र ১१६० चुंडारक बाक्तनगर छ्त्रांगि छारानिशस्क गत्रांबिड कृतिता निक अधिकारत आनम्न करत्रन । ১१०१ খুঁটীকে ছ্রাণীর সিংহাসনাধিকারী, শাহ জমান মহত্মদ খাঁ এক-জন আফগানকে নবাব খেতাব দিয়া এখানে প্রেরণ করেন। মহম্মদ বাঁ দেশ অধিকৃত করিয়া মনকেরা নামক হানে রাজ-ধানী ভাপিত করেন। উাহার মৃত্যুর পর তাঁহার নাবালক ণৌহিত্র সের মহমদ খাঁ রাজ্যে অভিষিক্ত হন। রণজিং-সিংছ এই সময়ে দেশকমে ব্যাপৃত ছিত্তেন। তিনি মনকেরা अधिकांत्र कतिया नहेला त्मत्र महत्त्वत त्मत्रो हेम्याहेल थी नशत्त्र পলায়ন করেন ও শিধুরাজের করদ হইরা তথাঁয় পঞ্চদশ-বর্ষকাল রাজত করেন। দের কর বাকি পড়িলে 🕹 ৩৬ খৃষ্টান্দে नर न्हानित्रः धारम् जानन जिसकात्रज्ञ कतिता नन। शक्षाय करत्रत्र मरक मरक रमत्रा हेम्साहेन थी हेश्ताक त्राकाङ्ख हरेबा यात्र। ১৮৫१ थृष्ठीत्म तिभाहिवित्जाह कारण এथान्छ বিজেটির হুচনা দেখা যায়, কিছ ডেপ্টা কমিশনার কর্ণেল . কক্ষের যত্নে সে বিজোহ-মধি অনিবার পূর্ব্বেই নির্ব্বাপিত হয়।

এখানকার লোকসংখ্যা ৪৪১৬৪৯। চাষের স্থাবিধা আদৌ নাই। খাল কাটিয়া জল আনিরা মাটি ভিজাইয়া চাফ করিতে হয়। গম, বব, কোরার, চিনি, ভামাক, মকা, মুগ, মহ্বর, অরহর প্রভৃতি এখানে জন্মিয়া থাকে। দেরা ইস্মাইল খাঁ,ও খোরাসানের সহিত বংসরে হুইবার এখানে আমদানী ও রপ্তানী চলে। চামড়া, লবণ ও আন্তান্ত নানাবিধ সথের জিনিব এখানে আমদানি হয়। এখানে গ্রীমের প্রকোপ বড় বেশীঃ

দেরাপাজী থাঁ, পঞ্চাবের দেরালাত বিভাগের অন্তর্গত একটা লোগ। ইহার উত্তরসীমা দেরা ইস্থাইল থাঁ, পূর্ব্ধে সিদ্ধু নদী, দক্ষিণে উত্তর-সিদ্ধর প্রান্তসীমান্থ লোলা এবং পশ্চিমে স্থান্যমান পাহাড়। অকা ২৮° ৩৭ হইতে ৩১° ১৫ উ: এবং দ্রাঘি° ৬৯° ৩৫ হইতে ৭° ৫৯ পু: মধ্যে অব্দ্পিত। দৈশ্য ১৯৮ মাইল, প্রত্থে ২৫ মাইল। মোট ভূপরিমাণ প্রান্ত ৪৫১৭ বর্গমাইল।

এই জেলা বালুকামর নিয়ভূমি সমাজ্য। এক দিকে
, স্থলেমান পাহাড় ও অপর দিকে দির্ভট এই হান ঘেরিরা
রাখিরাছে। পশ্চিমাংশে নতোরত গিরিমালা পাহাড়ের
মালভূমির দিকে বিভৃত, ইংার মধ্যে বহু সংখ্যক স্বাধীন
বল্টী আতির আশ্রমন্থান রহিরাছে। পাহাড় হইডে
বিভর জল্লোত অমির উপর আসিরা প্তিত হর বটে,

কিন্ত ওচ কৃষিতে শীঘ্রই শুকাইয়া যায়। কঁছা ও সভ্যর নদীতে কেবল বারমাস জল থাকে, অন্ত' সঁকল ছানে গ্রীমাগমে নদী বিল প্রায়ই শুকাইয়া যায়। এ সময়ে বলু-हीता च च शास्त्रवानि वहेना नृत्रामरण भीशाए हिनाबा আসে। তৎকালে কেবুল নেড় শত বা হুই শত হাত মাটির नीटि कुल श्हेरक बन शाख्या यात्र। এहे शान्त्रमाराण नहीत ধারে অব্যানবশৃত্ত নির্জন্ম কৃত্মি পড়িয়া আছে। মধ্যে मर्पा जनकहिनिवात्रवार्थ शवर्याल्डेत्र वारत्र ०৮৮ किंद्रे शर्ख করিয়া কৃপ নিশ্বিত হইয়াছে। পূর্বাংশে সিন্ধুনদের অল কতকটা ভূমিকে, উর্বরতা দান করিয়াছে। এই অংশেই অধিকাংশ লোকের বসবাস। অধিবাসীর মধ্যে প্রধানতঃ कारे, हिन्दू ७ नानाविध वन्ही क्षां छ। এ अकारण छे भवन মধ্যে বিশুর থর্জুর বৃক্ষ জম্মে। এখানকার থর্জুর অতি উৎकृष्टे। এथान यन सकरण द्य कार्ष्ठ भाउता यात्र, छाहा কেবল জ্বালান হইয়া থাকে। চাষ্বাদের জল কএকটা থাল কাটাও হইয়াছে। সভ্যর ও জামপুর তহসীলের অংশ এথানকার লোকের নিকট কালাপাণি নামে থাাওঁ। ছুইটা নদীতে বার মাস ক্লফনীলাভু জল থাকে, এই জন্ম কালা-পাণি নাম হইয়াছে।

এথানকার স্থলেমান পাহাড়ের প্রধান শৃঙ্গের নাম এক-ভাই, তাহা প্রায় ৭৪৬২ ফিটু উচ্চ, ইহার পরই গন্ধারি নামক শৃঙ্গ। গ্রীত্মের সময় স্থলেমান পাহাড়ের উর্নভাগ বেশ শীতগভাকে। স্বতরাং য়ুরোপীনদিগের পক্ষে, অভি মনোরম। এথানে ৯২টী গিরিসকট আছে, তন্মধ্যে সভ্যর, স্থী স্কার, চাচার, কহা ও মোরি প্রধান।

সিন্ধনদের প্লাবনে জেলার পূর্বাংশে কেনি কোন স্থান ভূবিরা যার। যে যে গ্রাম প্লাবিত হয়, তাহাতে পলি পড়িয়া জমির উর্ক্রতা খুদ্ধি করে। সময়ে সময়ে সিন্ধনদের ভাষণ প্লাবন হইয়া থাকে। তয়য়য় ১৮৩০ ও ১৮৪১ খুটাকের প্লাবন পকলেই উল্লেখ করিয়া থাকে। এই সময়ে সিন্ধনদের জল ২০ ফিট্ টুটিয়া ঘণ্টায় ৬ ক্লোশ ভূমি প্লাবিত করিয়া শায়র্ম উপত্যকা পর্যন্ত ধাবিত হইয়াছিল। ১৮৫৬ খুটারের প্লাবনে দেরাগালী থার সেনাবারিক ভালিয়া যায়।

ধনিক জব্যের মঁথো এখানকার পাহাড়ে লৌহ, তামা ও সীসক পাওরা যায়, উৎক্ট করলাও বাহির হইরাছে। জেলার দক্ষিণাংশে ভটকিরি উজোলিত হয়। পাহাড়ে মূলতানী মাটি নামে এক একার মাটি পাওয়া যার, তাহাতে ঔষধ প্রস্তুত হয় এবং তাহা সাবানের পরিবর্তে ব্যবহৃত্ব হয়। এখানকার ধার নামক গাছ প্ডাইরা সাজী প্রস্তুত করে। শিল্প-সাবিত ভূমিতে যথেষ্ট মুঞ্জাতৃণ অংশ। বন্ধ পশুর মধ্যে বাদ, হরিণ,
শুকর, বন্ধ গর্মজন, নানাপ্রকার পক্ষী ও পায়রা দেখা যায়।

ইতিহাস। — পূর্বকালে এই জেলার কেবল হিন্দুলাভির বসবাস ও হিন্দুরালত ছিল। অেলাক আনেক নগরেই হিন্দু রাজগণের কীর্তিকলাপ বর্ণিত হইরা থাকে। এথানকার হিন্দু রাজগণের মধ্যে বীরবর রসাল্য নাম অভি বিখ্যাত।

[ द्रशालू (पर्थ । ]

সঙ্কর ও অপরাপর নানংখানে মুসলমান আক্রমণের পূর্ববর্ত্তী প্রাচীন কীর্ত্তির প্রভূত ধ্বংদাবশেষ পড়িরা আছে। ৭১২ খুটাকে মুলভানের সহিত এই জেলা আর্বংকিজেও মহক্ষদ বিন্-কাসিমের হস্তগত হয়। মুসলমান রাজ্ত্তালে এই জেলার আয় রাজপরিবীরগণের বৃত্তি অর্থ্য বরাদ ছিল। প্রায়ণ ১৪৫০ খুষ্ঠাবে তৎকালীন নবাবের সাগ্রীয় লোদী-বংশীয় নাহীরৈরা প্রাধান্ত লাভ করেন। তাঁহারা কিন ও সীত-পুর অঞ্চলে স্বাধীন ভাবে রাজ্য করিতে থাকেন। নাছীরবংশ সমস্ত দেরাজাত বিভাগে আগ্নিপত্য বিস্তার করিয়াছিলেন কিন্ত পশ্চিমপ্রান্তবাদী পার্বজীয় বলুচীলাতির আক্রমণ उाहारमञ्ज व्यक्ति द्वान हरेट थारक। वैनुहीमिरात मर्पा भागिक সোহ্রাবের নামই প্রথম ভনা যায়। তৎপরে স্গার हां भी थी था वन हहेगा डिटर्जन। हैहात भूख गांकी था ( शृह्य ১৫শ শতাব্দে) আপনার নামামুসাবে সহর ও এই জেলার नामकत्रण करत्रन, जनविध रात्रांशाओं था नामह अहिन इहे-রাছে। প্রথমে উক্ত বলুচীরা মূলতানরাক্তের অধীন সামন্তরণে भग ছिल्ता। ज्याम जाननामित्रत मन्त्र के कतिया हरे भूक्ष পরে ইङ्गात्रा দেরাজাতের স্বাধীন রাজরূপে গণ্ট হইলেন। এই বংশীয় ১৮ জন রাজা দেরাজাত শাসন করেন এবং তাহারা পর্যায় ক্রমে ছাজী ও গাজী বাঁ উপাধি ধারণ করিতেন। অক্বরের আধিপত্যকালে গানী খার বংশ নামমাত্র মোগন সাম্রাজ্যের অধীনতা স্বীকার করেন। যদিও এই সময় তাঁহা-দেম রাজ্য "জামনীর অক্রপ গণ্য হইত এবং কিছু কিছু কর দিতে হইত, কিন্তু প্রক্তুত প্রস্তারে তাঁহারা সম্পূর্ণ খাধীনতা ভোগ করিভেন। দক্ষিণাংশে নাহীরেরা খৃষ্টার ১৮শু শতালী পর্যস্ত স্বাধীনতা রক্ষা করিতে সমর্থ ছইয়াছিল ৷ ৻য়াগল প্রভূত হ্রাস হইয়া আসিলে. ১৭৩৯ খুষ্টাব্দে সিকুনদের পশ্চিম ভুলবর্তী এদেশ নাদিরশাই ত্রাণির অধীন হয় ৷ এই সমরের গালী থাঁ ত্রাণির অধীনতা খীকার ক্রিয়া গৈতৃক জিংকার নির্বিবাদে ভোগ করিতে পাকেন। তাঁহার মৃত্যুর পর উভরাধি काती ना थाकाम এই क्लिगु आवात किছ्नित्तत वस नाम मार्क म्नजारनम् नामीन रम/वात्र ১१०४ थुः चः)। अहे नमत्र निर्दे

कन्द्राचा त्रांवनन थहे (बना आक्रमन ७ वह क्रांत्र, किंड ১११० बृंडोइच मांकृत अवत नार्य आवानमाह इत्रांत्रित अधीनष्ट् क्रक्रम मांगनकर्छ। धरे (बना उद्यांत्र क्रांत्र । डांहात यरक्र क्रोट (बनात नानाशांत्र क्रि ७ थान थनन धरः क्रियंत्राची व स्वरम्ह्रावच हत्र। इत्रांत्री तांवनंत्रत्र अधीरम ध्यांत्र क्रक्र व्यक्ति वर्षाक्रम मांगनकार्या निर्माह क्रांत्र, उर्भाद वंग्ही-कांक्रित अखर्विर्झाह धर्वे शांत क्षेत्रह ४ छर्गन हत्र।

এ সময় সংস্কারাভাবে খালগুলি মলিয়া যায়, ক্ষবিকর্ম উদ্ধিনা যায়, প্রজাগণের স্থাদায় একশের হয়। রণলিতের জাল্পান্দকালে এই জেলা লাহোর দরবারের জাধীন হয়। সমস্ত পঞ্জাব বৃটীশ গবর্মেন্টের শাসনাধীন হইলে এই জেলাও সেই সলে বৃটীশাধীন হইল। স্বৃটীশ শাসনে জেলার ক্রমিক উন্তি হইতেছে।

(जनात मत्था शांहती धार्यान महत्र चार्ष्ट,—त्नताशांकी चा, मजन, त्नोमहत्रा, यमश्रुत, तांचनश्रुत ७ मिथनत्कांते।

২ উক্ত কোলার প্রধান নগর ও সদর। অক্ষাণ ৩০° ৩ ও উ: ও জাখি ৭০° ৫০ পু:। এ সময়ে ইহার ধার দিরা দিল্প প্রবাহিত হইত, এখন গর্জ পড়িয়া আছে, লোভ প্রায় এক কোশ পশ্চিমে সরিয়া গিয়াছে। লোকসংখ্যা ২৭৮৮৬, তন্মধ্যে ১১১২৪ জন হিন্দু ও ১৫৯৬ জন মুসলমান।

> 89 ६ थृष्टीत्म शाबी थी महतानि नामक এक वन्ही এই নগর স্থাপন ক্লরেন। সেই পর্যাস্ত এই স্থানই নিকটবর্ত্তী জনপদ্দমূহের শাসনকেক্ত হইয়া রহিয়াছে। নগরের প্রবাংশে কস্তিমাল চলিয়াছে; তাহার ছইপার্থে ঘন আত্র বৃক্ষ,শোভিত ; মধ্যে মধ্যে অনেকগুলি বাট আছে ; গ্রীমকালে 'বিস্তর লোক এথানে মান করিতে 'আইসে। নগরের উপর এক সমুচ্চ বাঁধ আনছে, বুক্তা হইতে নগর-तका कतिवात व्यक्त ১৮৫৮ थ्होर्स धहे तीम धान्त छ। পুর্বে যেখানে পাজীখার বাগান ছিল, এখন দেখানে আলালত ও প্রাচীন হর্গ মধ্যে তহুদীলের কাছারী ও পুলিদ कार्यानम इहेमारहः व हाफा ठाउनहन, विनानम, ঔষধালয়, বাললা, ভাকত্র প্রভৃতি এবং মধ্যে মধ্যে অনেক-গুলি মন্তিদ আহে, তমধ্য গাজী থাঁ, আবছল জবাম °ও চুঁতাখার মস্ভিদ° বিখ্যাত। শিখদিগের আধিপত্যকালে ঐ তিনটা শিখদিগের উপাসনাগৃহরূপে গণ্যু হইরাছে। ও ছাড়া করেকটা প্রাচীন হিন্দু দেবমন্দির ও ছইকান মুসল-মান সাধুর আস্তানী আছে।

এথান इटेडि नीन, आर्किंग, थ्यक्त, गंग, कार्भात, काक्ति, इड ७ हम्ब दक्षानी इस अवश् विति, कावूलुत नाना कन,

বিশাতী কাঠা কাপুড়, ধাড়ু, লবণ ও গ্রম্মসলা আমিদান হর। এক,সময়ে এধানে রেশম ও তুলার বিভ্ত কারবার ছিল, এখন আর নাই। এখানকার বাজারটী মল নয়।

গ্রীমকানে, থালের ধারে সপ্তাহে একবার হাঁট বলে। জেলার প্রায় অধিকাংশ বণিকই এই সহরে বাস করে। শান্তিরকার জন্ত এথান'কার কৈঁলার একদল অখারোহী ও ছইদল প্লাতিক আছে।

দেরাজ্ঞাত, পঞ্চাব প্রদেশের অত্তর্গত একজন কমিদনরের অধীন একটী বিভাগ। অক্ষাণ ২৮ ২৭ ছিইতে ৪০ ১৫ উ: এবং জাঘি ৬৯ ৩৫ ছইতে ৭২ ২ পৃ: পর্যান্ত, সিন্ধুর উপভাকার অবস্থিত। দেরাইদ্মাইল খাঁ, দেরাগাঞ্চী খাঁ ও বরু এই তিন জেলা ইহার অন্তর্গত। মোট ভূপরিমাণ ১৭৬৮১ বর্গ মাইল। (मद्राम्न, छेखत शिक्ष थार्मा थार्म वक्षी स्वनाः। त्नाक-मःश्या >88.9. । श्रावान मेटल, दनतान्न महाटनट्वत आवाम স্থান কেদারথণ্ডের এক অংশ। রাবণবধ-ফনিত পাপের প্রায়-শ্চিত করিবার জন্ত রাম শক্ষণ এথানে আসিয়া পূজাদি করেন। মহাপ্রস্থান-গমনকালে যুধিটিরাদিও এই স্থানে আগমন করিয়াছিলেন। নাগবংশীয় বামন নাগাশধ পর্বতে কিছুদিন রাজত্ব করেন। হরিপুরের নিকটস্থ বিধ্যাত চালশি শিলার উপর অশোকের একধানি লিপি ধোদিত আছে, তাহাঁতে বোধ হয় এই দেরাদুনই এক সময় ভারত ও চীন সাম্রাঞ্জার সীমা-নির্দেশক ছিল। হিউএন্ দিয়াংএর ভারতে আগমনকালে তিনি এথানে কোন নগরই দেখেন নাই। কথিত আছে, একা-দশ শতাকীতে একদল বঞ্চারা এই পথ দিয়া ঘাইবার সময় এই স্থানের শোভায় মুগ্ধ হইয়া এই বস্তিশ্য ও গোঁকসমাগম-শৃত্য স্থানে ত্রাহাদের চিরবাস্থান নিরূপিত করে। খৃষ্টীয় সপ্তদশ শতালীর পূর্বে ইহার কোন যথার্থ ইতিহাস পাওয়া যায় না। ত্রখন দেরাদ্ন গড়বাল রাজ্যের অধীন। শিখ্ঞুকু রামরায় [রামরার দেখ।] পঞাব হইতে তাঙ্িত ছইয়া সমাট্ অরক্লেবের স্থপারিস লইয়া গুড়বালের রাজার নিকট গমন করেন। রাজা ফডেশা রামরায়কে, দেবায় বা প্রক্রাুরে একটা মূদ্দির প্রস্তে°করাইয়া দেন ও তাহার ব্যয়নির্বাহার্থ কিছু সম্পত্তি প্রদান, করেন। ফতেশার মৃত্যুর পর তাহার নাবালুক পেটা প্রতাপ শা ১৬৯৯ थुष्टेरिक निः होत्रत्न चार्त्राह्ण करवन । वारकाव नमुक्ति त्मिष्या 'সাহারাণপুরের শাসনকর্তা নাজীবুদ্দৌলা রাজধার আঅসাৎ করেন। তাঁহারে শাসনকালে রাজবার আরও সমৃদ্ধ হয়। नाकीरवत्र मुक्तृत भन्न रमतामूर्यनत्र अवन्ता विभर्गात वरहे। সীমাস্তের জাতিসমূহের ক্রমাগত আক্রমণে দেশ দরিক্র

হইরা পড়ে। ইত্যবসরে ১৮০৩ খৃইদুর গুর্থজাতি আসিয়া দেরাদ্ন আক্রমণ করে। রাজা পর্গমান, শা প্রীনগর হুইতে দ্ন ও তথা হইতে সাহারণপুরে পলায়ন করেন। গুর্থাজাতি দেরাদ্ন অধিকার করিয়া লয়। গুর্থাদিগের শাসন সময়ে দাস-বাবসার চলিতে লাগিল। দেশের অবস্থা, শোচননীয় হইয়া উঠিল।

শুর্থানিগের ব্যবহারে উত্যক্ত হয়। ১৮১৪ খুরাজে ইংরাজ গবর্মেন্ট তাহাদিগের বির্দ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করেন। দেরাদ্ন সহজেই হস্তগত হয়। ক্রমে বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াও ইংরাজ গবর্মেন্ট কলিজাদুর্গ হস্তগ্রত করেন। ১৮১৫ খুরাজে দেরাদ্ন ইংরাজ করগত হয়।

দেরাদ্ন উত্তরাংশে একটা ত্রিভ্জের আকারে হিমানয়াতিমুখে প্রস্থান করিয়াছে, দক্ষিণ শিবালিক পর্বত তাহাকে
বেইন করিয়া ছইটা রহৎ উপত্যকা উৎপাদন করিয়াছে।
পর্বতে দেবদাক, ওক প্রভৃতি বৃক্ষ আছে। জন্দে হন্তী,
ব্যাদ্র, ভন্নুক, হরিণ প্রভৃতি কন্ত বাস করে।

দেরাদ্নের ভূপরিমাণ ১১৯৩ বর্গমাইল। তরুধ্যে ১০২১
বর্গমাইল ভূমি এখনও ক্ষিত হয় নাই। ধাস্তু, তিল, ইকু,
গম, যব প্রভৃতির চাষ হইয় থাকে। এখান হইতে বড় বড়
কাঠ, বাশ, চ্ণ, কয়লা ও চাল্তা প্রভৃতি রপ্তানি হইয়া থাকে।
দেরানানক, পঞ্চাবের গুরুদাসপুর কেলার অন্তর্গত বভালা
তহসীলের অধীন একটা নগর। অক্ষা ৩২° ২০০০ উল ও
জাঘুণ ৭৫° ৪০০০ কিলাক উত্তরপ্রিমি ক্ষীর ধারে ও
বতালা সহর হইতে ৬ ক্রোশ উত্তরপ্রিমে অবস্থিত।

এই নগরের নিকট অপরদিকে পথেকি গ্রামে শিথদিগের আদি গুরু নানক বাদ করিতেন ও ঐ গ্রামে তাঁহার
মৃত্যু হয়। তাঁহার বংশধর বেদিগণ বরাবর ঐ গ্রামেই বাদ
করিতেন, কিন্তু ঐ গ্রাম ক্রমে ইরাবতীর গর্ডশায়ী হুইলে
বেদিরা নদী পার হইয়া আদিরা এক ন্তন নগর স্থাপন
করেন এবং তাঁহাদের আদিপুরুষ নানকের নামায়ুসারে এই
স্থানের প্রানানক নাম রাধেন। তদবধি এই নগরে
শিথদির্গের নিকট অতি পবিত্র ব্লিয়া গণ্য। রাবা নানকের শর্বার্থ এথানে একটা স্কর্ম মন্দির নির্দ্ধিত হইস্থাছে। এথানে নারকের বংশধরেরাই প্রধান। আরও অনেক
শিথের বাদ আছে। হিন্দুর সংধ্যা বেশী নয়।

এক সময়ে এধানে প্রভৃত বাণিজ্য সম্পন্ন হইত; রেঁল-পথ হইনা অবধি ব্যবসার বড়ই ক্ষিনা গিনাছে। তবে এখানকার শাল প্রভুতের ব্যবসা এখনও প্রসিদ্ধ। এখানে-বিস্তর কার্পাস ও চিনি রপ্তানী হয়। রাবি নদীর জ্বালনে

নগরের বিশেষ অনিষ্ঠ ঘটিবার সম্ভাবনা, সেই জন্ত বাধও নির্মিত হইরাছে, কিন্ত মন্দির ও নগর স্কথন গর্ভণারী হইতে পারে, এ আশৃকা দুর্ন হর নাই।

এথানে থানা, ইংরাজী ও দেশীর ভাষা শিধিবার
বিভালর, ডাকঘর, ঔষধালর অভ্তি আছে।
দেরাপুর, উ: প: প্রদেশের কাণপুর জেলার অন্ধর্গত একটা
নগর ও দেরাপুর তহলীলের সদর। সেকুর নদীর ডানধারে
ও কাণুপুর সহর হইতে ১৭ কোশ পশ্চিমে অবহিত। এখানে
ভহনীলের কাছারী, প্রথম্প্রেমীর থানা, বিভালর, ড্রাক্ষর
প্রভৃতি আছে। মর্রাঠাদিগের শাসনকালে (১৯৫৬-১৭৬২
খু: আ:) এ প্রদেশের শাসনক্তা গোবিন্দরার পশ্ডিত এখানে
একটা স্পৃত্ তুর্গ নির্মাণ করেন। নগরের মধ্যে কতকভানি
প্রাচীন মস্কিদও আছে।

দের্বন্দ, শঞ্চাবের হাজারা জেলার অন্তর্গত একটা গ্রাম।
আক্ষাণ ৩৪° ১৮ উ:৩৬ দ্রাখিণ ৭২° ৫৫ পু:। সিজ্নদের বামধারে
অবস্থিত। এথানে ১৮২৭ খুষ্টান্দে শিথ-সেনাপতি শেরসাহ
দৈরদ আক্ষান্তে পরাস্ত করেন। এখন এই স্থান আমের
নবাবের অধীন।

দেব (পুং) দিব-অচ্। ১ অমর, স্থর। ২ রাজা। ৩ নৃপ। ৪ মেঘ। ৫ পারদ। ৬ আক্ষণদিগের উপাধিভেদ। তিতশ্চ নাম কুকীত পিতৈব দশমেহনি।

(পবপূর্কাং নরাখ্যং হি শর্ম বর্মাদিসংযুতং ॥% (ভবিষ্মপু॰)।
পিতা পুত্রজননের দশম দিনে দেবপূর্ব নামকরণ করিবেন।
৭ দেবদারু। ৮ পূজা। ১ দীপ্ত। ১০ পারদ। ১০ পরায়া।
"একদেবঃ সর্বভূতের গুড়াং" (ক্রান্ত)।

"দীবাতৈ ক্রীড়তে ষম্মাৎ ক্লোচতে ছোততে দিখি।
তন্মাদেব ইতি প্রোক্তঃ স্ত্রতে সর্বদৈবতৈ: ॥" (বোগিবাজ)
প্রধানত: মুর্গবাসীকে দেব বা দেবতা কছে। এই নগতেও
প্রোক্ত বাক্তিকে দেবও বলা যার, বেমন ভূদেব অর্থাৎ রাজণ,
নরুদেব অর্থাৎ রাজা। কেছ কেছ দেব শব্দকে প্রেটার্থবাচন
বিলয়া থাকেন। বেমন নরদেব নরপ্রেট। [দেবতা শদে
বিভ্ত বিবরণ দেখ।] ১৯ একজন প্রাচীন বৈরাক্রণ। ১০
আত্র-সন্ন্যাসকারিকা নামে ধর্মশাস্তকার।

দেবখাযান্ত (পুং) দেবশ্চানৌ ঋষ্ডশ্চেতি নিত্তি ব্যাধা প্রকৃতিবন্তাব:। ধর্মের পুত্রী ভাত্মগর্জনাত পুত্র, ইনি কর্ত্ত পের ক্যা। (ভাগবত ভাভা৫)। 'দেবঋষড' এই বুলে প্রকৃতিবন্তাব না হইলে দেবর্ষত এইরুপ পদ হইত।

দেবঋষি (পুং) দেবানাং ঋষিঃ পুজাধাৎ প্রস্কৃতিবভাব। দেবধি রারণাদি। " अथ (प्रवक्षरो त्रांजन् गःगत्त्रजः तृशाच्यवः।" (जागः ७।১७।১) প্রকৃতিবভাব না হইলে দেবর্ষি এইরূপ হইবে।

দেবক ( পং ) যত্বংশীয় একজন রাজা ইনি জীরুষ্ণের যাভামহ, ইনি গন্ধর্মপতির অংশাখভার রূপে জন্ম গ্রহণ করেন। "যন্ত্রাসীন্দেবকোনাম দেবরাজ সমন্ত্রাভিঃ।

সগদ্ধপতিমু খাঃ ক্ষিতে অজেনিয়াধিপঃ ॥" (ভারভ ১।৩৭।৬৯) আহক নরপতির ক্ষার পর্ছে ছই পুত্র জন্ম, দেবক ও উগ্রসেন। এই দেবকের চারি পুত্র ও সপ্ত ক্ষা হর। নৃপতি দ্বেক বস্থানেকে সাভটী ক্ষা সম্প্রদান করেন।(ছরিব ৩৮জঃ)

• ২০ মুধিষ্টিরের এক পুত্র। (ভারত)

দেবক দিন (পু°) দেবপ্রির: কর্দমইব। স্থান্ধি জব্য বিশেষ। চন্দন, অপ্তর্ম, কর্প্র ও কছ্ম এই সকল মিশ্রিত হইলে দেব-কর্দম শীদবাচা হয়। (রাজনি°)

দেবকাত্মজা (জী) দেবকভ আত্মজা কলা। বদেবকী। দেবকাহ্য (জী) দেবপ্রিয়ার্থং কাধ্যং। দেবপ্রিয়ার্থ হোম-প্রাদি কার্য।

"দেবকার্যাৎ বিশাতীনাং পিতৃকার্যাং বিশিয়তে ॥" (মহু)
দেবানাং অভিল্যিতং কার্যাং। ২ দেবভাদিগের অভি-ল্যিত কার্যা।

দেবকাঠ (রী) দেবপ্রিয়ং কাঠং। দেবদারু, দেবদারুপ্রভেদ।
পর্য্যায়-পৃতিকাঠ, ভজকাঠ, অকাঠক, বিশ্বদারুক, কাঠদারু।
ইহার গুণ ভিক্ত, উষ্ণ, রুক্ষ, শ্লেম, ও বায়ুনাশক। (রাজনিণ)
দেবকিরী (স্ত্রী) দেবং মেঘং কিরভীতে কৃক। গৌরাদিঘাৎ ভীষ্। মেঘরাগের ভার্যাঃ।

"ললিত। মালসী গৌরী নাটী দেবকিরী তথা। মেঘরাগন্ত রাগগৈণ্যে ভবন্তীমা: ক্মধ্যমা:॥" ইহার স্বরূপ—

"অমন্তী নন্দনে শ্রামা পূষ্পপ্রচয়তৎপরা।
থ্যাতা দেবকিরী ক্যো করাপিতস্থীকরা॥" (সঙ্গীতদামোণ)
দেবকিল্পিষ্ (ক্লী) দেবেন কৃত্ং কিবিষং অলিটকর্ম ৮ দেবকৃত অনিটকার্য।

"অথো ষমভ্ন পড় বীশাৎ সর্কাশাদেব কি বিষাৎ"(এক্ ১০।১৬)

দৈবকী (স্ত্রী) দেবক ভীব্। দেবকের কঞা, বস্থাদেবের
পদ্মী। প্র্যার—দৈবকী, ক্লফলননী, দেবকাশ্মলা। (শলরণ)
বস্থাদেবের সহিত ইহার বিবাহের পর একদিন, নারদ আসিরা
কংসকে এই সংবাদ জ্ঞাত করেন যে এই মণ্রাপ্রীতে দেবকী।
নামে যে ভোমার পিড়খসা আছেন, ভাহারই অইম গর্ভলাত
প্র ভোমার মৃত্যু শ্বরূপ হইবের। তুমি এই বেলা হইতে
সাবধান হও। নারদ এই কথা বিল্য়া প্রশান করিলেন। জন-

ন্তর কংসংক্রোধ /ভরে অধীর হইরা আত্মীর ও সচিবগণকে षाका बिल्लन, राजायता रहतकीत शर्छ कुछत्न नर्सना वक्षणीन रहेरत, धार्यम हरेरज्हे स्वकीत मकन गर्छ स्वःम कतिरव । (मवकी विक्थक क्नरत्र व्यक्तांश्रनारत कामात क्यकः नृत, मध्या ব্দবস্থান করক, অতঃপুরে নারীগণ বেন প্রচ্ন ভাবে ভাহাকে রক্ষা করে। দেবকী যুণাক্রমে সপ্তগর্ভ ধারণ করিয়া-ছিলেন। যথন তাঁহার অকৃ একটা গর্ভহবালক ভূমিষ্ঠ হইতে नाभिन, काम उपमार नहेंगा निनाउतन निः क्लिश्क्रिक তাহার প্রাণ সংহার করিল। এইরূপে একাদিক্রমে বৃদ্গর্জ নিহত করিলে দেবকী সপ্তম গর্ডধারণ করিলেন। তথন र्यागमात्रा चीत्र मात्रावरन चाकर्यन कत्रित्रा के शर्ज त्याहिनीटज বিনিবেশিত করিশেন। এদিকে দেবকীর সপ্তম গর্ভ কি रुरेन विनित्रा अञ्चलकान रुरेट आतस्य हरेन। धरे नुमन (नवकीत অষ্টম গর্ভের সঞ্চার হইল। রক্ষিবর্গ এই সমরে বিশেষ যত্রপূর্ব্বক তাহার সেই গর্ড রক্ষা করিতে লাগিল। অনম্বর গর্ভকাল मन्पूर्व रहेरा ना रहेरा एनवको चहेममारम चर्कत्राव ममरम भूव প্রস্বংকরিলেন। এইরাত্রে বুশোদা একটা কল্পা প্রস্ব করেন। বস্থদেব এই রাজে শিশুকে কোড়ে করিয়া যশোদার গৃহে রাধিয়া তাহার কভা गইয়া দেবকীর শ্যার অর্পণ করিলেন। পরে বস্থদেব কংস সমীপে উপস্থিত হইয়া কাইলেন, আমার একটী কন্তা হইদাছে। কংস ইহা গুনিরা ঐ কন্তা গ্রহণপূর্বক শিলাভলে নিঃক্ষেপ করিলেন। তথন ঐ কম্মা উর্দ্ধে উথিত হইয়া কংসকে কহিল, 'তুই এই পাপে অচিরাৎ ব্রিনাশ প্রাপ্ত हहेि ।' এই कथा विनिन्ना स्थानमान्ना आकृष्णमार्था नमन करबन । भरत कुक कः मरक वध कविया (मवकी ७ वस्रामवरक উদ্ধাৰ কর্মন। দেবকী ও ৰহুদেব জনাস্তরে পুলি ও হতপা নামে বিখ্যাত ছিলেন। ভগবানের বরে অদিতি ও কল্পপ 'হইয়া বামনরূপী ভগবান্কে পুত্ররূপে ব্লাভ কন্সেন। অদিতি কশ্রপকে বন্ধণের গাড়ী প্রভার্পণ করিতে বারণ করায় ব্রন্ধার नार्ल मास्त्री इहेशा अधाशहर करतन अवः (पवकी नारम व्यनिक हन। [ वृद्धानव, क्रक ७ वःन (नव । ]

প্রার ইহার মূর্তি প্রতিষ্ঠিত আছে, দর্শন করিলে সকল প্রকার পাতক বিনট হয়। (প্রাণ)

দেবকীনন্দন (পুং) দেবকর্ম: নন্দন: ৬ডং । বহুদেবপশ্নী দেবকীর পুত্র শ্রীকৃষ্ণ।

"নন্দগোপত জাবৈকা বস্থদেবত চাপর। ।
তুলাকালং হি গভিণো) যশোদা দেবকী তথা ॥
দেবকা জনম্বিফুং যশোদা তাত্ত বৈঞ্জাং।
• মৃহুত্তি হভিজিতে প্রাপ্তে সার্দ্ধাতে বিভূষিতে ॥"

দেবকীনন্দন কবিরাজ, একজন প্রসিদ্ধ বৈক্ষব গ্রন্থকার। ইনি আচার্য্যচিস্তামণি, একাদশীব্রতনির্ণর, চপ্রিজচিস্তামণি, নাশ্যরত্ববিরণ, বালবোধ, রসাভিধমূহাকার্য এবং বৈক্ষবা-ভিধান প্রভৃতি সংস্কৃত গ্রন্থ প্রণরন করেন।

দেবকীপুত্র (পং) > দেবুকীনন্দন শ্রীক্কন্ত। ২ পুরুষবর্জনর্দনি
বিষয়ে ঘোর নামক আদিরসের শিশ্য কৃষ্ণ, এই কৃষ্ণের
মাতার নামও দেবকী। "ত্রৈতদেবার আদিরসঃ কৃষ্ণার
দেবকীপুত্রারোক্তোবাচা হপিপাস এব স বভূব।" (ছান্দোগ্য
উ॰ ৩।১৭।৬) 'তবৈতং যজ্ঞদর্শনং ঘোরো নামতঃ আদিরসো
গোত্রতঃ কৃষ্ণার দেবকীপুত্রার শিয়ার উক্ত্যু উবাচ তদেতশ্রেরমিত্যাদি।' (ভাষা)

দেবকীমাতৃ (পুং) দেবকী মাতা মৃষ্ঠ । সমাসাস্তবিধেরনিত্য-ত্বাং ন কণু । বাস্থদেব শ্রীকৃষণ ।

"পখৈতান্ দেবকীমাতমুম্ৰুনি অ সংবৃগে।" (ভাণডোণ ১৮আঃ)
দেবকীয়া ( জি ) দেবভোলং গহাদিখাৎ ছ। দেব সম্বন্ধীয়।
দেবকীৰ্ত্তি, ১ একজন প্ৰাচীশ সংস্কৃত জ্যোভিবিদ্। ভটোৎপল ইহার মত উদ্ভ করিয়াছেন।

২ বর্ণদেশনা নামে সংস্কৃত ব্যাকরণ-রচয়িতা। রায়-মুকুট ইহার কথা উচ্ভ করিয়াছেন।

দেবকোট, দিনালপুরের অন্তর্গত প্রাচীন নগর। মহম্মদ বধ্তিয়ার গৌড় আক্রমণের পর এখানে কিছুদিন রালধানী করিয়াছিলেন। এই স্থানেই ৬০২ হিজরায় আলীমর্দন উাহাকে হত্যা করেন। দমদমার নিকট গলারামপুরে যে ধ্বংসাবশেষ পড়িয়া আছে, বুক্মান সাহেবের মতে এখানেই প্রাচীন দেবকোট অবস্থিত ছিল। এখনও ইহার নিকটবর্তী সমুদ্র স্থান দেবকোট পরগণার অধীন।

(দবকুণ্ড (রী) দেবজ্বতং কুণ্ডং। দেবধাত। দেবকুরু (বুং) স্থয়েজ ও নিষধের মধ্যন্থিত অনপদ। ( আনহরিবংশ এ৬৫)

দেবকু কৃষা (জী) মহাজোগী। (রাজনি°) দেবকুল (জী°) দেবায় কোলভীতি কুলু সংঘাতে ক। বিনা-° মুথ, অল্লমুথ, দেবগৃহভেদ, দেউল।

"সোহহং দরিজস**র্যস্তম্ভ নারা**য়ণপ্রিতঃ। নিরাহার: ফ্লিডোহকীর্বং গদ্বাওদেবকুলং তপঃ॥"

( कथानतिष्मा" >२।>२१ )

পেনানাং কুলং। ২ দেবতাদিগের বংশ। ও দেবতাসমূহ।

দেবকুলা, প্রভাসধত্যেক প্রিত্ত নদী।

দেবকুলা। (জী) দেবকুতা কুলা। অলস্থিৎ। ১ দেবনদী

সদা। ২ মরীচির কভা পুর্ণিমার তন্ত্রা।

"পদ্মী মরীচেন্ত কলা সূত্রে কর্দমাত্মধা।
কল্পপং পূর্ণিমানক বয়ো রাপুরিতং জগৎ।
পূর্ণিমান্ত বিরজং বিশ্বগঞ্চ পরস্তপ।
'দেবকুল্যাং হরে: পাদশোচাদ্ যাতৃৎ সরিদ্দিব: ॥"
(ভাগবত ৪।১।১০-১৪)

ইনি ভগবানের অংশাবতার ভ্মার পদ্মীভেদ। (ভাগ লা১লা৬) দেবকুসুম (ক্লী) দেবপ্রিদ্ধিং কুস্থম পূসাং যক্ত। লবদ। দেবকুট (ক্লী) বশিষ্ঠাশ্রম সন্নিকুট্ছিও আশ্রমভেদ।

"ত আশ্রমো বলিষ্ঠ তা বিজ্ব লোকে ব্ বিশ্রতঃ।
ত আভিবেকং কুর্বাণো বাজপের সমাপ্রমান।
দেবকুটং সমাসান্ত দেববিগণসেবিতং।" (ভারত বনপ ৮৪)
২ মেকর পূর্বস্থিত একটা পর্বত। ( বিক্পুণ ৪৯/৪)

(দ্বক্ষন্ত (ক্নী) দেবানাং ক্ষত্তং বলং ষতা। ইজা । ইজা । ইজা । তে ষজতা দেবক্ষতে ক্ষণ গবি।" (ঋক্ ৫।৬৪।৭) 'দেবক্ষতে যজ্ঞে' (সামণ) • •

দেবক্ষেত্র (ক্লী) দেবানাং কে,বং। ১ দেবভাদিগের কের, পুণাস্থান। ২ স্বর্গ।

দৈবক্ষেম (পুং) বিজ্ঞানকার নামক প্রস্থরচরিতা।
দেবথাত (ক্লী) দেবেন থাতং, অক্তিমিফাদত তথাবং।
দেবথাতক, অক্তিম অসাশয়। দেবসমীপত্থাত।
শনদীষু দেবথাতেষু তড়াগেষু সরঃস্থাচ।

স্থানং সমাচরেরিতাং গর্ভপ্রস্তবণেষু চ ॥" (মন্ত্র ৪।২০০) নদী, দেবধাত, ভড়াগ, সরোবর, গর্ভ ও প্রস্তবণ প্রভৃতিতে প্রাতিদিন স্থান করিতে হুয়।

দেবথাত ক (পুং ক্লী) দেবথাতমেব স্থার্থে-কন্ ৯০ অর্কুলিম জলাশর, অপৌক্ষের দেবকুণ্ড, নাগাদিকুণ্ড, সক্লিলিমকুও। পর্যায়—আথাত, অথাত, দৈবনির্দ্ধিত। ২ গুরু।। দেবথাতবিল (ক্লী) দেবথাতং অক্লেমিং বিলহ, নিতা-কর্ম্মণাণ। প্রহা।

দেবগল, আভামে প্রবাহিত এক নদী। বর্তমান নাম দিবদ।
(দেশা )

দেবগণ (পং) দেবানাং গণঃ ৬ডৎ। দেবসমূহ, এই দেব গণের সংখ্যা অয়জিংশৎ।

"এরজিংশত ইতেঃতে দেবান্তেষামহ তব।
অহম: সুংপ্রবক্ষ্যামি পক্ষশ: কুলতো গণান্॥"
(ভারত ১০৬৬ লঃ)

২ নক্তভেদ। ৩ দৈবপক্ষ। ৪ দেবাল্লচরাদি। দেবগণতাত্ (পুং) স্ক্রুতোক্ত দেবাদিগণরূপ এই, ^{দেবসমূহ} বিশুদ্ধ স্ক্রাব, এই স্কুত তাঁহারা এই ইইতে পারেন না, স্তরাং দেবগণদিগকে দেবগ্রহ বলিরা উল্লেখ করিরাছেন। ইহার বিষয় স্থশতে এইরপ্প লিখিত আছে—

রোগীর ক্রিরা-গুহুতা, বিষমতা, অমাস্থ্রিক্তা এবং সহিষ্ণুতা থাকিলে এই বুলা যার। অসংখ্যগ্রহ এবং গ্রহামিপতিগণ, অশুচি, অমর্যাদক, ক্রুত হউক বা না হউক লোকের হিংসাকারী। ইহারা সংকারাভিলাবে প্রমণ করিয়া থাকে। এই গ্রহণ বিবিধাকার ও আট ভাগে বিভক্ত। দেব, অস্থর, গন্ধর্ম, বক্ষ, পিতৃ, রক্ষ, ভ্রুত্ত প্রমান বিশুদ্ধ, গন্ধর্ম, বক্ষ, পিতৃ, রক্ষ, ভ্রুত্ত প্রস্তাহীন, বিশুদ্ধ, সংখতভাষী, ভ্রেত্ত্বী, হ্রিন্তি, বরপ্রদাভা, ব্রহ্মনিষ্ঠানীল এই সকল দেবগ্রহাবিষ্টের লক্ষণ। ঘর্ষাক্ত, বিজ্ঞ, প্রস্তুত্ত দেবতার দোষবক্তা, কুটিলনে ক্রি, নির্ভয়, বিষম দৃষ্টি, অয়পানে অসম্ভ্রত হুইবৃদ্ধি ক্রি সকল অস্ত্রগ্রহাবিষ্টের লক্ষণ।

দর্শণাদিতে, যেরপ ছারা, প্রাণীদেহে শীতে ফি, স্থাকাস্ক-মণিতে যেরপ স্থারশি এবং দেহে যেরপ জীব অলক্ষিত ভাবে প্রবেশ করে, গ্রহগণও সেইরপে দরীর মধ্যে প্রবেশ করিয়া থাকে। দেবগ্রহ পৌর্ণমাসী তিথিতে আবিষ্ট হয়। গ্রহগণ মধ্যে যাহারা দেবাংশসস্ত্ত, তাহাদের মধ্যে দেবতার স্বা থাকার তাহাদিগকে দেবাংশ বলিয়া জানিতে হইবে। সেই সকল শুচিশীল দেবগ্রহকে দেবতার স্তায় নমস্কার ও তাহাদিগের নিকট প্রার্থনা করিতে হইবে।

কিন্তু এই সকল দেবগ্রহ দিবাভাব ধারণ করিয়া হিংসার্থ বিচরণ করে বলিয়া ইহাদিগকে ভূত বলা যায়। ইহাদিগের শান্তির জন্ত একাগ্রচিত্ত হইয়া জ্বা, হোম প্রভৃতি ক্রিয়ার অষ্ঠান করিতে হইবে।

ইংাদিগকে রক্তবর্ণ গদ্ধমালা, সকল প্রকার ভক্ষরবা, বস্ত্র, মহা, মাংস, রক্ত প্রভৃতি যাহার যাহা দুভিলষিত, তাহা প্রদান করিতে হইবে। যাহারা দিবাভাগে মন্থ্যের হিংসা করে, তাহাদিগকে দিবাভাগেই বলিপ্রদান করিবে। দেবগ্রহ ইলে দেবতার গৃহে হোম করিয়া বলি প্রদান করিবে। দেবগ্রহের হলে কোন বিষয় অযুক্তরূপে প্রয়োগ করিবে না। দিশাচগ্রহ ভিন্ন অ্য গ্রহের ইলে প্রতিকৃল আচরণ করিবে না। তাহা হইলে সেই গ্রহ কুদ্ধ হইয়া বৈশ্ব এবং আতুর উভয়কেই, হনন করে। (মুশ্ত উত্তর্ভন্ত ৬০ আঃ)

(नवर्गन्दात्व, वर्षे आहीन मः इड कवि।

দেবগণিকা (জী) স্বর্বেখা, অপরা।

দেবগন্ধক্ব (পুং) দেবানাং গন্ধকা ৬তৎ। ইহারা দেবতা-দিগের স্মীপে গান করিয়া থাকে।

(नवशक्ता (जा) (नविधा गक्ता यक्षाः। महास्मता।

দেবপর্ভ ( ব্রং) দেখাৎ গর্জোবফ্ল। দেবাহিত গর্ভক, দেবপুত্র নরাদি।*•

"প্রতিজ্ঞাহ তং রাধা বিধিবদিব্যরূপিণং। • • পুরং ক্রমীলগ্রন্ডাভিং দেবগর্ভং প্রদাবৃত্তং॥" •

, , (ভারত বনপণ ৩০৮ আ;)

(बी) २ कूमबीत्भन्न नगीत्छन। (छात्र॰ ११२०।२১)।

বেবগান্ধার (পুং) দেবপ্রিয়ঃ দেববোগ্যোক্ত গান্ধার:। স্বর-ভেদ, রাগভেদ, দেওগান্ধার নামে প্রসিন্ধ, ইহা সম্পূর্ণ জাতীয় রাগ, ষড়ক বাদী, স্বরগ্রাম "গ্রম পৃধ নি স ক্ষঃ" (স্কীতর•)

দেবগান্ধারী (স্তা) এ রাগের ভার্যা, ইহার গানের সমর শিশির ঋতু এবং তৃতীর প্রহর হইতে ক্ষর্মাত্তি পর্যান্ত।

গান্ধারী দেবগান্ধারী মাশুরপ্রীশ্চ সারবী।
রামগির্থাপি রাগিণাঃ প্রীরাগন্ত প্রিরাইমাঃ॥" (সৃদ্ধীভদামোণ)
দেবগায়ুন ( পুং ) দেবানাং গায়নঃ ওতং । গ্রন্ধা

দেবগিরি (পুং) দেবানাং প্রিয়: গিরিঃ। ১ পর্কত বিশেষ, রৈবত । পর্কতের নাম ভেদ, গিরনর। এই ছানে অনেক . দেবমৃত্তি আছে বলিয়া ইহার এই নাম হইয়াছে।

দৈবগিরি, দাকিণাত্যে নিজামরাজ্যের অন্তর্গত একটা প্রাচীন নগর ও তুর্গ। এখন দৌলতাবাদ নামে খ্যাত। অক্ষাৎ ১৯°৫৭ জি: ও জাঘি ৭৫° ১৮ পু:; অরজাবাদ হইতে ৫ কোশ এবং হারদরাবাদ হইতে ১৪ কোশ উত্তরপশ্চিমে অব্দ্বিত। যন্ত্র্যাজ নামক সংস্কৃত জ্যোতিষের মতে, দেবগিরি ২০° ৩৪ ক্ষাংশে অব্স্থিত।

দেবগারি হুর্গ অতি প্রাসিদ্ধ। দাকিণাত্যে হিন্দুরাজ্বনগণের আদ্বিপত্যকালে এথানে অনেক প্রবল পরাক্রান্ত রাজা বাস করিতেন। দেড়শত ফিট উচ্চ কোণাকার পাথরে হর্ডেন্য হুর্গ গঠিত। ইহার বহিঃ জাকারের 'বেড় প্রায় দেড়কোশ হইবে। হুর্গ ও প্রাকারের মধ্যবর্তী স্থানে অনেক গুলি পরিধা আছে। তোরণদার 'গুলি ব্যতীক আর কোনক দান দিয়া প্রবেশের, পথ নাই। পাহাড়ের উপর হুর্গ অব-ছিত পাহাড়ের চুড়ায় কামান ও ধ্বজন্তম্ভ থাকিবার একটা হোট জারগা আছে। গড়থাই এর বাহিবে অরা দ্বে ২১০ ফিট উচ্চ একটা মিনার আছে। গড়থাই এর বাহিবে অরা দ্বে ২১০ ফিট উচ্চ একটা মিনার আছে। ১২৯৪, খুইান্সে মুসল্নানেরা সর্ব্বপ্রথম এই স্থান আক্রমণ, করিলে শ্বরণার্থ এই মিনার নির্দ্বিত হয়। এখনও এই মিনারটার কোনক্রপ অক্থানি হয় দাই। চুড়ায় উঠিলে নিকটবর্তী প্রদেশের দ্খা বেশ নমনগোচর হইয়া থাকে। মিনারের নিকটেই অতি প্রাচীন ও বৃহৎ কৈন-মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ পড়িয়া

আছে। মন্দিরের নিকটেই চীনী-মইকার ভগাবশেব দেখা যার। গোলকভার শেব অ্লতান আবৃল্ হস্ন (তানশা নামে খ্যাত) অরক্তেব কর্তৃক এখানে বন্দী ছিলেন। এত-ভিন্ন প্রাচীন রাজপ্রাসাদাদির ভগাবশেব নাধাস্থানে পূর্বতিন সমুদ্ধির পরিচয় দিতেছে।

বে পাছাড়ের উপর দেবগিরি হুর্গ স্থাপিত, ভাহা প্রার ৬০০ ফিট্ উচ্চ। পরিধাক প্রার ০০ ফিট্ বিস্থত; একটা ছোট পাথরের সেতু দিয়া পার হইতে হয়।

কোন্সময়ে দেবগিরি নগর ছাপিত হয়, তাহা স্থানা বায় নাই। এথানুকার যাদবরাসগণের অভ্যাদর হইতে দেবগিরির নাম ও সমৃদ্ধি ভারতবিখ্যাত হইরাছে।

কলচ্রিবংশের অধংপতন হ্ইলে তাঁহাদের অধিকৃত ভূভাগের দৈকিণাংশ হোরশল বৃলাল ও বারসমূজের যাদব-গণের শাসনাধীন হয়। এই সময় উত্তরভাগ আর এক বাদববংশের করভলগত হইল। তাঁহারা দেবগিরিতে রালধানী স্থাপন করিলেন। নানা স্থান ইইতে প্রাপ্ত থোদিত লিপি হইতে দেবগিরির বাদবরালগণের এইরূপ বংশাবলী পাণ্ডরাধার।

মলুগি ভিল্লম ( 22・9~222の 4年 ) হৈত্যি (১ম), জৈতিসিংহ বা জৈতিপাল ( >>>ロー>>ロ> ギザ ) সিজ্থন (২য়) [ সিংছ, সিংছল, সিংছন বা ত্রিভ্বযুমল ] ( ) ついつ こうしゅ ずず ) বৈতুগি (২র) * মহাদৈব ( অপর নাম উরগ সার্কভৌম ンントミーンンかつ 可存 ) অস্থন বামচন্ত্ৰ বা বামদেব • ( )/20~/50/ 単年 ) কর্মা (হরিপালের সহিত বিবাহ) ভীম ( ) その**) ― ) その8 単夜** ) যাদ্বরাজ ১ম সিজ্যন মহাবল্শালী কণ্টিকরাজকে

পরাঞ্য করেন। প্রবাদ আছে, ভিরমের জীবদশার তং-

পুত্র কৈতৃপি ধারবাড় কেলার অন্তর্গত লক্তি নামক যানে হোরশলরাজ ২য় বলালের নিকট পরাজিত হন। কৈতৃপি বিজরপুরে (বিজাপুরে) রাজধানী স্থাপন করেন। তিনি ত্রিকলিজরাজকে পরাজয় করিয়াঁ তাঁহার রাজ্য অধিকার করেন। পরে ধারবাড় পর্যান্ত ইহার রাজ্যদীমা• বিভ্তত ইয়াছিল।

২য় সিত্তনের রাজত্বলৈই দেবগিরি যাদবগণের রাজথানী বলিয়া থ্যাতিলাভ করে। ২য় সিত্তনের সমন্ত্রার
৩৮ থানি থোদিত লিপি জাবিঁছত হইয়াছে। ডক্পাঠে
জানা যায় বে, তিনি তিলজ, কলচুরি ও জঙ্কুরাজ্ঞি জর্
করিয়াছিলেন। তাঁহার সম্বে দেবগিরির বাদবরাজ্য
জনেকটা বিভ্ত হইয়াছিল। ২য় সিত্তনের পর তাঁহার
পৌত্রুক্ক, রাজা হন। তাঁহার মহাপ্রধান বা প্রতিনিধির
থোদিত লিগিপাঠে জানা যায়, তাঁহার পিতা (ধাদব-সেনাপতি)
রট্ট, কোছণের কাদ্ধ, গুতির পাঞ্চ এবং হোয়পলরাজকে
পরাজয় করিয়া কাবেরীতীরে জনকত্ত স্থাপন করিয়াছিলেন।

বিতীয় সিক্তনের পর মহাদেব আপন প্রতাপে সিংহাসন অধিকার করেন। এই মহাদেবের সময় দৈবগিরির সভার **জনেক মহাপঞ্জিত অবস্থান করিতেন। তাঁহাদের মধ্যে** মহা-পশুত द्याप्ति ७ (वानात्वत्र नाम नर्वेत्व विशाष्टा महारारवत्र পর তৎপুত্র অন্মনের ভাগ্যে রাজ্যসম্পদ্ ঘটে নাই। কৃঞ্জের পুত্র বীরবর রামচন্ত্র সিংহাসন অধিকার করিলেন। তাঁহার বাহ্বলে বর্তমান বোদাই প্রেসিডেন্সির সমৃদয় দক্ষিণ ও মধ্যভাগ তাঁহার অধিকারভুক্ত হইয়াছিল। ১২১৬ শকে ( ) २ २ ८ थुडो (व ) जाना जेकीन् चिनकी ४ हा का क्र व चारा है। সহ অক্সাৎ দেবগিরি আক্রমণ করেন।° রীলা রামচন্ত প্রাণপণে তুর্ফ হইতে যুদ্ধ করিয়াছিলেন। .৩ স্থা^হ ক্রমাগত যুদ্ধের পর খাদ্যাভাব ঘটিল, ত্তরাং রামচন্ত্র বাধ্য হইয়া আত্মসমর্পণ ও আলোউদ্দীন্ ধিল্লীর সহিত সৃষ্টি ত্থাপন अतिरामन । এই সর্ব্বপ্রথম দেবগিরির যাদববংশ মুসলমানের নিকট আহুগতা ুবীকার করিলেন। ^{দেব} পিরিপতি কর দিতে বাধ্য হইলেন। ১২২৮ .শকে রামচল क्तपारन अचीकात करतन। छथन आगाउँमीन आगन পিতৃব্যের প্রাণসংহার করিয়া দিলীর সিংহাসনে বসিয়াছেন। তিনি একুলক অখারোধীসহ মালিক কাছুরকে দাকিণাতো পাঠাইলেন । এবারও রামচক্র বিপুলু মুসলমান-বাহি_{টী}র সহিত যুদ্ধ করিয়া খাধীনতা রক্ষা করিতে সমর্থ হইলেন না। कारमरे आवात वश्रका श्लोकात कतिरागन। जिनि वित्रोति প্রেরিত হুইলেন।

 [ং] হেমাজির চতুর্বাগচিন্তামণির পরিশেষখতে ই হার নাম 'চৈত্রপাল' লিখিত ইইয়াছে।

আলাউদীন্ স্বাদ্রে স্থামচক্রকে গ্রহণ করিরা স্বস্থানে **८** इति विक्रिक विकास कि विकास के विकास के विकास कि विकास के कि व কাফুর ওরকল কর করিতে বান, তৎকালে রাকা রামচক্র মহাসমারোহে তাঁহার অভ্যর্থনা করিয়াছিলেন। ১২৩২ শকে ব্রাজা শুরুর আপনাকে স্থাধীন বলিয়া প্রচার কৈরি-লেন এবং মুসলমানরাজকে করুলানে অবীকৃত হইলেন। আবার (১২৩৪ শত্ত্) বালিক কাফুর ভীমবলে আসিরা শঙ্ককে আক্রমণ করিলেন'। প্রভৃত বিক্রম প্রকৌশ করিয়া শহর পরাজিত ও নিহত হঁইলেন। , এই সমর মালিক কাছ্র [®] দাক্ষিণাঁত্য "সুঠন"করিতে লাগিলেন। দেবগিরিতে তাঁহার সদর হইল। কিছুদিন পরে তিনি দিলীতে আহুত হইবল রাজা রামচকের জামাতা হরিণাল দাক্ষিণাত্যের নানা স্থান হইতে দলবল সংগ্রহ করিয়া মুসলমানদিগকে তীড়াইয়া দেবগিরির সিংহাসনে আরোহণ করেন। ঐবন প্রভাপে ছয় বর্ষকাল তিনি রাজ্যশাসন করিয়াছিলেন। তৎপরে ১৩৪০ শকে দিলীখন মুখানক আপনি সদৈছে আসিলা হরিপানকে আক্রমণ করিনেন। ষড়যন্ত্রে ও বিশাস্বাভক্তার হরিপাল পরাজিত হইলেন। মুসলমানেরা তাঁহার মতকে विथल कतिया नगत्रवादा सूनाहेशा किन। এইकार एवर शिवित यानवतारकात्र व्यवनान रहेन। ७९भरत निज्ञीचरत्रत প্রিয়পাত্র কএক ব্যক্তি ধর্ণাক্রমে দেবগিরি শাসন করিতে থাকেন। গন্ধাস্উদ্দীনের পুত্র মহম্মদ তোগলক ১৩২৫ খুষ্টান্দে দিলীর সিংহাসনে আরোহণ করেন। স্থবিখ্যাত দিলী নগরী তাঁহার ভাল লাগিল না। ১৩৩৮ খুটাফে তিনি দিল্লীতে স্বাঞ্ধানী স্থাপন করিতে ক্রতস্বর হইলেন এবং निहीवाशीर्मिशकं जारमम कतिरानन, 'अविनास नगत मुळ করিয়া সকলে দেবগিরি যাত্রা কর।' দিল্লী চুইতে দেবগিরি চারিশন্ত ক্রোশ ব্যবধান। স্থুদুর পথ পর্যাটন করিতে দিলীবাসিগণ কিন্তুপ কষ্টভোগ করিছাছিলেন, ভাহা বলাই বাছলা। কৌণমতি মুবারকের, বুদ্ধির দোবে দিলী কনশ্র ও জীত্রই হইল। দেবগিরির সমৃদ্ধি বাড়িয়া উঠিল। এই সময়ে দেবগৈরির 'দৌলভবাদ' অর্থাৎ সৌভগ্যিশালী নগর নাম হইল। এই সময়ে তাঞ্জিয়রবাসী ইবন্ বতুতা দেবগিরি দেখিয়া শতমুধে ইহার সমৃত্তির পরিচর দিয়া গিয়াছেন। ভোগলফবংশের পর দেবগিরি কুলবর্গা ও ब्रिमरत्रत्र वाऋगिवश्रमम् भागनाधीन हरेग । १८२७ युडीस পর্যান্ত এই স্থান বান্ধণীবংশের অধীন থাকে। তৎপরে (नविशिति-क्रि चाक्क नगरत्र निक्कामनारी वरम्ब क्राविख रहेन। छांशासत्र शोत्रवत्रवि अविश्व रहेरन भागनित्रत

অধীন হয় । ১৭ শ খৃষ্টান্দে স্থায়লজেবের মৃত্যুর পর দক্ষিণা-পথে নক্ত দোগলাধিকারের সহিত এই দেবগিরিও বর্ত্তমান নিজামবংশের প্রাপয়িতা আসন্দ্রার অধিকারজুক্ত হইল। এথানকার চুর্গে এখন ১০০ মাত্র সৈম্ভ আছে।

দেবলিরি, ধারধাড়ের অ্রপত একটা গওরাম। করালগীর তিন কোশ পশ্চিমে অবস্থিত। এখান হইতে কালফ রালগণের সমরকার অনেকুগুলি তাম্রশাদন পাওরা গিরাছে। এক সমরে এখানে জৈনপ্রাধান্ত ছিল। ব্ধনাচার্য্য নির্মিত এখানকার ব্রমার মন্দির বিধ্যাত।

দৈবগিরী (স্ত্রী) রাগিণী বিশেষ। নোমেরর মতে, বসন্তরাগের ভার্যা। এই রাগিণী বদন্ত সমরে গের। ভরত মতে, হিন্দোল রাগের পুত্র, নাগধ্বনির ভার্যা। সদীতদর্শন মতে, নটকল্যানের ভার্যা।

"काषिनी भागवदः खुरुखा कृषयनी ख्यादशादकी। विवादमा मस्करकादानका मगानना (गर्नाभी खिविकी।" बद्रस्थाम "न स न म न म न म न : "

হেমতে দিবা চতুর্ব প্রহর হইতে আর্রাজি পর্যন্ত গান সময়।
লেবপ্ত প্রসূত্রি, আপর নাম লিনচন্ত্র। উকেশগচ্ছ-সভ্ত একজন বিখ্যাত লৈনাচার্য্য, করুছার দিয়া। ইনি প্রথমে "নবপর" বা নবপদপ্রকরণ নামে জৈন শালীর গ্রন্থ প্রকাশ। করেন, তৎপরে ১০৭০ সহতে 'প্রাবহানদদ' নামে নবপরের একথানি বিভ্ত সংস্কৃত টাকা রচনা করেন। ইহার কুণচন্ত্র নামে, আর একটা উপাধি ছিল।

২ আর একজন কৈনাচার্য্য, সিদ্ধপ্রির পিয়া। এই বিতীয় দেবগুপ্তের শিয় যশোদেব ও সিদ্ধপ্রি, ইহার প্রথম শিয়া ১১৭৪-সম্বতে অষ্ট্র্যাবিবরণ ও ২য় শিয়া ১১৯২ সম্বতে বৃহৎক্ষেত্রসমাসবৃদ্ধি রচনা করেন।

(प्रतिशृह, श्वांच এकी श्रायान। • ज्यादन 'ठावनाळ्य हिन। ((प्रमावनी)

দেব**্রাম,** ত্রিপুরার সম্বর্গত একটা আচীন গ্রাম, রাধানগরের ** দক্ষিণে স্বাহিত। ু(দেশাবলী)

দেবঘট্ট, ১ যশোরের মধ্যবর্তী একটা গগুগ্রাম। ২ হিমালয় শৈলস্থ দেবপ্রয়াগের অদ্বে অবস্থিত একটা প্রাচীন তীর্থ। স্বন্ধপুরাণে হিমবংখণ্ডে ইহার ঝাহান্যা বর্ণিত আছে।

( इ.सव९ ४।२४,881>88)

• দেব গুরু (পুং) দেব ছা ওকং ৬ চং। দেবতাদিগের ওক, বৃহস্পতি, স্বাচার্যা: ২ দেবতাদিগের পিতা কশ্পণ। 'দেবগুরু (জী) ওব-বাছনকাং কি গুলি দেববং ওবী। ওবা দুর্বতী। "দেবগুহাং সরস্বত্যাং সার্ক্ক্রেম ইভি •প্রভূ:।⁴

( ভাগৰিও ৮৷১৩৷৮ )

দেৰপুত্য (জি) দেবানাং গুহুং, ৬৩৫। দেবতাদিগের অভতি রহস্ত । • •

"শ্রতার্থো দেবগুঞ্জ ভবান যুত্র বরং ছিতা:।"(ছরিব ১১৬ জং)
বাহাতে প্রাণীগণের বৈরাগ্য উৎপন্ন না হয়, এই জঞ্জ দেবগণ কর্তৃক শ্রুতির অর্থু আডিশয় গোপিত বলিয়া ইহার নাম দেবগুঞ্ হইয়াছে।

দেবগৃহ (ক্লী) দেবানাং গৃহং ৬তং। দেবালয়, দেবমন্দির। ইহার বিষয় বৃহৎসংহিতায় এইরূপ লিখিত আছে—

দেবগৃহ নির্মাণ করিতে হইলে তাহার মধ্যে প্রভৃত জলাশর এবং উপবন সকল বিনিবেশিত করিতে হইবে।
ইপ্তি ধারা যে সকল লোক লাভ হয়, এক দেবগৃহ নির্মাণ করিলে সেই সকল লোক লাভ হয়়া থাকে। ইহাতে লোকভ্ষণ ও দেবতাতৃষ্টি ছইই হয়। সলিল এবং উল্যানমুক্ত মহয়কত বা দৈব সম্পাদিত স্থানের সন্নিধানে দেবতাগণ স্বয়ং উপস্থিত হন। যে সরোবরে নিলিনীক্ষপ ছঅবারী স্থেয়ের কিরণ নিরস্ত হয়, যাহার বিমল সলিলে হংসের স্কয়্ষারা কল্পার নিয়ে বীচি সকল বিকিপ্ত হয়, যে সরোবরে হংস, কারওব, ক্রৌঞ্চ ও চক্রবাকগণ কর্তৃক শব্দিত হয় এবং যাহার তীরস্থ নিচ্কা বৃক্ষের ছায়ায় জলচারী প্রাণিগণ বিশ্রাম লাভ করে, সেই সরোবরের সামিধ্যে দেবগণ স্থী হল।

কোঞ্চুশ্রণী বাহার কাঞ্চীকলাপ, কলংংসের কলখন যাহার শব্দ, জল যাহার বস্ত্র, শফরী সকল যাহার মেথলা, তীরস্থ প্রফুল বৃক্ষ সকল যাহার কণ্ডুষণ, দ্লল ও স্থলের সঙ্গশন্থল যাহার শ্রেণী, পুলিন যাহার উন্নত স্তন এবং হংস সক্ষই যাহার হাত, এইরূপ নিম্নামিনী নদী সক্ষের সমীপ্রস্তী ত্বানে দেবতাগণ উপস্থিত হন।

• বনের উপাস্ত স্থানে, নদী, শৈল ও নির্মরের উপাস্ত ভূমি সকলে এবং উভানযুক্ত পুর প্রদেশে দেবগণ নিত্য রতি ।

লাভ করেন। দেবগৃহ নির্মাণের স্থান নির্মণণ করিতে 
ইইলে বাস্তবিদ্যার বৈ সকল ভূমি ব্রাহ্মণগণের বিলয়া 
কথিত ইইয়াছে, নৈবমন্দিরে সেই সকল ভূমি প্রাশস্ত ।
সর্মাণ দেবগৃহে চতুঃযষ্টিপদ বাস্তমগুল করা কর্ত্তব্য ।

ইহাতে সমনিক্স্তিত মধ্যমন্তলে প্লার করিতে হইবে।
বাহার বিভাগে যত হইবে, ভাহা ভাহার বিভাগ পরিমাণে
উল্লুক্তির একভৃতীয়াংশ কটি হইবে, বিভারের
কাল্যেক গর্ভাগ্ ও চতুর্দিক্ত মন্ত ভিত্তি স্কল হইবেঁ। আর

গতের পাদ অর্থাৎ একচতুর্থাংশ পরিমাণে উহা বিস্তীণ ৬ বিস্তাপারত হইবে।

উন্নতির পাদ পরিমাণে বিস্তীর্ণ শাধা ও মারের উপরি-তন অংশের দিগস্তকে সম্ভাবেঁ নির্মাণ করিয়া ভা_{ইবি} বিজ্ঞার এক চতুর্থাংশ করিতে হইবে এবং তাহার বেধ এই বিস্তাবের এক চতুর্থাংশ হইবে, অর্থাৎ শাধাৰদের দৈগ্য विद्यादित शाम शतिमार्ट इहेट्टा खि, शक, मश खन्द সংখাক•ু শাধাসময়িত আয়তনই প্রশস্ত। অবংহ শাধার চারিভাগে ছইটী বারদেশ দিবিট করিবে। ইহার শেষভাগ মকলস্চক বিহক্ষম, শ্রীবৃক্ষ, স্বস্তিক, বট, মিপুন, পতাঁবীরী ও ঞামথগণ কর্তৃক উপশোভিত হইবে। বার পরিমাণের অইভাগের একভাগ হীন ও পিণ্ডিকাযুক্ত প্রতিমা হইবে এবং * তাছাতে ত্ইভাগ প্রতিমা ও তৃতীয়াংশ পিতিকা हरेटर । रमर्के, मन्तर, टेकनान, विमानक्रम, नृन्मन, न्रमूना, नगू গরুড়, নন্দিবর্দ্ধন, কুঞ্জর, গুহরাজ, বুষ, হংদ, সর্কডো ভज, घট, तिः र, बृख हजूरकान, (साफ्नाव्य क कहावि वहे বিংশতি প্রকার দেবগৃহের সংজ্ঞা। যথাক্রমে ইহাদের লক্ষণ বলা হইতেছে---

যে দেবগৃহ ষভ্কোণ, দশভৌম, ফুলর কুহরযুক্ত, চতুর্বার ও বাতিংশৎ হস্ত বিস্তীর্ণ, এইরূপ লক্ষণ্যুক্ত দেবগৃহের নাম 'মেরু'। যাহা ত্রিশহক্ত বিক্তীর্ণ, দশভৌম-যুক্ত ও চূড়াবান্, তাহার নাম 'মলক'। মঞ্চর লক্ষণাক্রান্ত দেবগৃহ যদি ২৮ হস্ত বিস্তীৰ্ ও আনত ভৌমযুক্ত হয়, তাহা हरेरन ভाष्ट्रारक 'टेकच्चान' वना यात्र। याहा बानाकृति গৰাক্ষবিশিষ্ট এবং ২১ হাত বিস্তীৰ্ণ, ভাহার নাক 'বিমান'। যাহাতে ৬টা ভৌম থাকে় ঘাহা ৩২ হাত বিক্তীৰ্ণ এবং ১৬টা চুড়াযুক্ত, ভাহুদকে 'নলন' কছে। গোলাকার, একণ্র ও এক ভৌম দেবালয়ের নাম 'সমুদ্র'। একভূমিক, এক শৃঙ্গ, পদাক্ততি ও অষ্টশাথ দেবগৃহের নাম 'পদ্ম'। গরুড়ের স্থায় আক্লভিবিশিষ্ট দেবগৃহের নাম 'গরুড়'। ২৪ হাত বিভীৰ্ণ সপ্তভৌম এবং বিংশতি অতে বিভূষিত দেবগৃহ 'নিশিবর্জন' নামে বিখাতি ৷ গলপৃঠের তীয়ে আকারধারী,ও মৃণ ^{হইতে} চতুর্দিকে যোড়শ হস্ত বিস্তৃত দেবালয়ের নাম ^{'কুলুর'।} যাহার বিস্তৃতি ১৬ হাত এবং বলভীদেশ তিন্টা চক্লশালা विभिष्ठे **डाङ्काटक 'श्रुरताल'॰ कटर।** याहा •वामभहस्र विस्^ठ, গোলাকার, একশৃক ও এক নেমিযুক্ত, তাহা 'রুব' নামুক (प्रवश्ह। हेरा शांनाकात रहेरन 'वृक्त' (प्रवश्ह हर्व। हः नाकात्र त्वर्ग्ट्त नाम, 'हरम'। ৮ हां विखीर्ग कननाक्ति (नवानरम्ब नाम 'घडे'।

त्व त्मवशृंद्ध श्री बांत्र थात्क छ वाहा वहतृकाविभिन्ने, তাহার লাম 'সর্কতোভদ্র'। ইহাতে ৫টা ভৌম এবং অুক্সর অনেক চক্রশালা থাকে, ইহার বিস্কৃতি ২৬ হাত। যাহাতে দিংহ চিল থাকে, যাহী ৮ হাত বিস্তীৰ্ণ ও বাদশ কোণ সম-ষিত, তাহার নাম 'সিংহ',। " যাহার ৫টা মাত্র অত্যের, মধ্যে চারিটা क्रकार्त्न, ভাগাকে 'চকুরঅ' কছে। ( तृहৎतर १८ पाः ) অগ্নিপুরাণে এইরণ লিখিত আছে—প্রথমে স্থান নির-পণ করিয়া চতুরজাঁকত ক্ষেত্র বোড়শ ভাগে বিভক্ত করিয়া মঞান্তিত চতুর্জাগ আবিও কুরিরা অপর বাদশভাগ ভিত্তির • নিশিক কলিড করিবে। অংজ্যাচতুর্ভগে পরিমিত উচ্ছিত, জক্তার বিশুণ উল্লভ মঞ্জরী, মঞ্জরীর চতুর্বভাগে প্রদৃক্ষিণ পরিমাণ হইবে। উভয়পায়র্থ সম বা বিতাণ শোভা-সম্পাদরামুরপ অএভূমির বিস্তার হইবে। মণ্ডপের অগ্রে গর্ভস্তাহর পরিমাণে বিস্তীর্ণ এবং পাদাধিক পরিমাণে দীর্ঘ বা প্রাদাদ পরিমাণ ভক্ত হাস্তা মুখমগুপ করিবে। পরে একদীতি পদযুক্ বাস্ত করিয়া মণ্ডপ আরেম্ভ করিবে। প্রতিমা-প্রমণি শুভ পিণ্ডিকা করিরা পিণ্ডিকার্দ্ধ পরিমাণে গর্ভ নির্দাণ করিবে। ঐ গর্ভ পরিমাণে ভিত্তি সকল প্রস্তুত করিবে। ভিত্তির আগাম পরিমাণে উৎসেধ, ভিত্তির উচ্চারের বিশুণ পরিমিত শিধর, শিধরের চতুর্গ ভ্রমণ-ভূমি, শিখরের চতুর্থাংশ পরিমাণে সম্মুথে মুধ্মগুপ, গর্ভের काष्ट्रेमाः म পর্যরিমাণে রথনির্গমন্বার, পরিধির ষ্টাংশ পরি-মিত রথ সকল এবং উহার তৃতীয়াংশ পরিমাণে রথনির্গম-ষার করিতে হইবে। রথতায়ে ঘোটকতায় সর্বাদা যোজিত क्तिया आथित्। त्विनिका প्रतिमात्त्व উत्त क्निम क्रिक

প্রাদাদের চতুর্থাংশ পরিমাণে প্রাকারের উচ্চতা এবং পালোনপরিমিত গোপুরের উচ্চতা হইবে। (অমিপু ২৬৮ আঃ)
[বিশেষ বিবরণ প্রাদাদ ও মন্দির দেখ।]

দেবগ্রন্থ ( খুং ) স্ক্রান্তাক গ্রন্তের।

"যঃ পশ্চতি নরো দেবানু জাগ্রবা শরিতোহপি বা। উন্মাদ্যতি, বড়ুক্তিখং ততু, দেবগ্রহং বিহঃ॥"

করিয়া বিস্তানের বিগুণ দৈর্ঘ্য করিতে হইবে।

বৈ সকল মহুব্য জাগ্ৰং বা শয়িতাবস্থায় দেবতাদিগকৈ অবলোকন করে, তাহারা তৎক্ষণাৎ উন্মত্ত হয়, ইহাদিগকে

দেবগ্ৰহ কৰে।••

দেবক্সম ( তি ) দেবং গছেতি গম বেলে ক। দেমগামী। , "অস্তাং রাধ্যেত্ হোতায়াং দেবলমায়।" (শতপথতা সামাস্থ্য

लोकिक व्यव्यात्र — "त्ववन्न " व्हेर्य ना, त्महेन्द्रल निन व्यञ्जत बहेना त्मवनामी अहेन्न भूण बहेर्य। দেবচক্র (সী) > ধজাদ অভিগ্নবজেদ।

"পন্নিৰো এতদেৰচক্ৰং যদভিগ্নৰ: II" ( ঐত বা ৪/১৫ )

২ যামনোকু দেব্তাভেদে উপাসনাজ্ঞাপক চকুভেদ ১

দেবচস্ত্ৰ, বিশাত জৈন গ্রন্থকার হেমচজের শিল্প। ইনি শান্তিনাধর্ত্ত নামে প্রাকৃত গ্রন্থ রচনা করেন। মুনিদেব হরি তাহাই সংক্ষেপে সংস্কৃত ভাষার প্রকাশ করিরাছেন।

দেবচন্দ্রগণি, এক থাওঁনামা কৈন পঞ্জি। ইনি ১৬৪৮ সংতে আপন শিয়া মুনিচল্লের জন্ত ব্যক্তাতি ও তাহার টীকারচনা করেন।

দেবচর্য্যা (জী) দেবানাং চর্যা ৬ তথ। ১ দেবচরিত। ২ দেবার্থ চরণ হোমাদি।

"শ্রিরাযুত্তমনির্দেশ্রং দেবচর্য্যোপশোভিতং।" ।

(ভারত বুর ১৪৫ আ:)

দেবচিকিৎসক (পুং) > দেবতাদিগের চিকিৎসক, ত্বর্বদা,
আবিনীকুমার্থয়। এই শক্ষ থিবচনান্ত। ২ থিছ সংখ্যা।
ত অধিনী নক্ষত্র।

দেবচছকা (পুং) দেবৈশছনাতে আকাজকতে ছল-ঘঞ্। হার-্বিশেষ, এই হার শতযৃত্তিক। কাহার কাহার মতে অটোন্তর-শত ষ্টিক।

"শতমট্যুক্তং হারো দেবচ্ছদো অশীতিরেকযুক্তা।" অষ্টাধিকো হর্দ্ধহারো রশ্মিকলাশ্চ নবষ্ট্ক: ॥" ( বৃহৎস॰ ) অষ্টাধিক শতসংখ্যক লতাযুক্ত বা একাশীতি সংখ্যক লতা-যুক্ত হইলে দেবচ্ছদা।

(प्रविष्ट्रम्मम् ( क्री ) (विविधितः हन्नः हेट् मर्थामाखः। देवितिक हत्नारकत्।

দেবজ ( জু ) দেব জারতে জন-ড। ১ দেবজাত। ( ক্লী )

২ মাসভেদ। "তত্মাদাহ: সত্যং সাম দেবজং সামেতি" (পৃতপথ
ব্রাণ ৩।৪।২।১৬)। ( প্রং) ৩ ক্লশাখের সংহাদ্ধ ক্রেণিবংশীর

সংযম নুপভির পুত্র ভেদ। (ভাগণ ৯।২।২২) ৪ প্র্য্য সম্পাদিত
ঋতু। "সপ্তথ মাহরেকজং বড়িদ্ প্রমা খবরো দেবজাঃ" ( খুক্
১)১৬৪।১৫) 'সপ্তানাং ঋতুনাং মধো সপ্তথং সপ্তমং ঋতু
একজঃ একেনোপেলঃ আহু: কলাত্রবিদঃ। তৈত্রাদীনাং
মাসানাং হরমেশনেন বসস্তাভাঃ বড়্তরো ভবস্তি, অধিক মাসেনৈক উৎপভতে সপ্তমভূ:। ন চ তাল্লোমাস এব নাজীতি
মন্তবাং। অভি ত্রেরোদশমাস ইত্যাহ্রিতি শতেঃ, তদেব
'উচাতে। যড়েব ঋতবো মাসব্যরপ্রব্রোগস্তারঃ। ভে চ
দেবজাঃ দেবাদ্বাদিত্যাক্ষাতা ইত্যেবমাহঃ যড়েব দেবজাঃ
অদেবজ একং' ( সারণ )

Cদরজগ্ধ ( ত্রি ) দেবৈরম্ভতে ইতি অদ-ক্র জগ্ধাদেশ: ( অদো-

ক্রিনিস্তিনিতি। পা• ২।৪।৩৯) ১ দেবাণে কর্ত্ক ভক্তি। (ক্লী)২ ক্তৃণ। •়ে৬

দেৰজগ্ধক ( ক্লী ) দেবলগ্ধ-খাৰ্থে কন্। কজুণ।
দেৱজন ( পং ) দেবলপোজন:। দেবলপ জন । "জক্ষিভাজ্যাঅমপং ক্ষান নিনয়তে তিঃ সর্বদেবজনেজ্য: খাহেতি" (ন্মাৰণ প্রৌণ ২।৪।১২ )। দেবানাং জন:। ২ উপদেব, দেবভাদিগের উপক্রণে উৎপন্ন গন্ধ্বাদি।

দেবজনবিদ্যা (ত্রী) দেবজনানাং বিভা। গছর্কবিভা, নৃত্য-

দেবজাত ( ত্রি ) দেবেভ্যোক্ষাতঃ। দেবতা হইতে যিনি ক্ষমিয়াছেন। "যথাকিনো দেবকাতত সংগ্রঃ" ( ঋক্ ১৷১৬২৷১ ) দেবানাং ক্ষাতঃ। ২ দেবগণ। "যাক্তেভানি দেব-ক্ষাতানি পুণশ ক্ষাথ্যায়ক্তে।" ( শৃতপথবাং ১৪৷১৷২৷২৬ )

দেবজামি (জী) দেবানাং জামিরিব। ১ দেববনু। "আবামি বোষ ইঞা দেবজামি রিরজ্যস্ত" (ঝক্ ৭।২৩।২) 'দেবজামি দেবানাং বর্কু:' (সায়ণ)। eদবানাং জামি:। ২ দেবভাদিগের জী। "বিশ্বতে অপ্রজনিতাং দেবজামীনাং পুতোহসি।"

( खपर्क्त ७। ८७। २ )

(प्रवक्ष्ये (वि) (पटेवक्षेडर। (प्रवटमिवछ। (प्रवादे (वि) पिराजीजि पिर-कार्रेन् (भकापिरका कार्रेन्। जेन् 816>) भिन्नी।

দেবট্টী (স্ত্রী) দেবং দেবশবং অটতে অতিক্রামতীতি অট-অণ্
শক্ষাদিস্থাদলোপ: গৌরাদিস্থাৎ ভীষ্। গলাচিলী।

দেবতের (অি) অতিশয়েন দেব: দীপ্ত: দেবকৈ। বা তরপ্। ১ অতিশয় দীপ্ত। ২ অতিদেবক।

দেবতার্ক (পুং) দেবপ্রিয়ঃ তরুঃ। > মন্দারাদি বুক। প্রেক্তে দেবতরবঃ মন্দারঃ পারিজাতকঃ।

সন্তান: ব্রর্কণ্ড পুংসি বা হরিচন্দনং॥' ( অমর )

মন্দার, পারিজাত, সন্তান, করবৃক্ষ ও হরিচন্দন এই ৫টা

ুক দেবতকু । ২ চৈডাবুক ।

দেবতা (ব্রী) দেব খার্থে তল্, কচিৎ খার্থিকা অপি প্রতারা:

প্রকৃতিতো লিঙ্গবচনাঞ্চতিবর্ত্তকে ইতি ভাব্যোক্তে: প্ংব্যতিক্রমেণ স্ত্রীয়ং ৷ দেব, নির্জর ।

।*। এখন দেবতা বলিলে আমরা যেমন অর্গবাসী অমর-বৃল্পকে বুঝিয়া থাকি, অংগদের অবিগণ ঠিক এয়প ভাবিতেন কি না, তৎপক্ষে ঘোর সল্পেহ। কাত্যায়ন অবি অক্সংহিতার অফুক্রমণিকায় লিখিয়াছেন—

"যন্ত বাক্যং দ **খু**ৰিং, যা তেনোচ্যতে সা দেবতা। তেন বাক্যেন প্ৰতিপাতং **ঘৰত সা দেবতা**॥" যাহার কথা দেই পৰি। বাহার বিষয় তৎকর্ক বলা হইরা থাকে, তাহা দেবতা। দেই (পাবি) বাচক্যয় প্রতি পান্ত বে বস্তু, তাহাই দেবতা।

থবি, ছন্দ ও দেবতা এই তিন নইরা বেদ। বে বস্তু আয়রা সচরাচর দেখিতে পাই, চক্র, স্থা, এহাদি গিরি, নদী, বনস্পতি প্রভৃতি যাহা হারা বৈদিক শ্বিসণ কিছুমান উপকার পাইরাছেন, শ্বীসংহিতাদ সে সমস্তই দেবতানামে স্তত হইয়াছে।

় নিক্জকার বাছ দেবতা শ্লের এইরূপ অর্থ করিরাছেন— "দানাঘা দীপনাঘা হাছানো ভবতীতি আ বো ব্দবঃ• সানেবতা।" (৭।১৫)

দান এবং দীপন হেড়ু মিনি অর্গন্থানীর ইন, ভিনিই দেব এবং দেবতা।

সায়ণাচার্ব্য অক্সংহিতার প্রথম মত্ত্রের ভাষ্যে 'দেব' শক্ষের এইরূপ ব্যাখ্যা করিয়াছেন—

'তথা দেবনার্থ দীবাতি ধাডুনিমিত্তো দেবশন্ধ ইত্যেতদামায়তে। দেবনাবৈদেবোহভূদিন্তি তদ্দেবানাং দেবছমিতি।'
দেবনার্থ দিবধাড়ু হইতে দেবশন্ধ নিম্পার, এই বস্তু দেবতা
হইয়াছে। দেবন হেড়ু দেবতা হইয়াছে, এই নিমিত্ত
দেবতাদিগের দেবত।

(यांनी वाळवडा निश्चित्राह्म---

"দীব্যতে ক্রীড়তে যন্ত্রাৎ রোচতে দ্যোততে দ্লবি। তন্মাদেব ইতি প্রোক্তঃ স্তৃয়তে সর্কাদৈবতৈঃ॥"

যাহারা দীপ্তি পান, ক্রীড়া করেন, অর্গে শোর্ভিত হন এবং ছাতিবিশিষ্ট হন, এইজন্ত তাহাদিপকে দেবতা বলা বার এবং সকল দেবতা কর্তৃক তা মমান হন।

দেব শব্দের মূল ধাত্রথ দ্যোতমান বা নীপ্তিমান্।
('দ্যোতনান্দের:।' মন্ত্রীকার কুলুক ১২।১১৭) আর্ব্য কবিগণের সমক্ষে যাহা দীপ্তিমান্ বা প্রকাশমান হইয়াছিল।
প্রথমত: তাছাকেই তাঁহারা দেবতা বলিয়া গ্রহণ করিয়াছিলেন। এখন দেব শব্দের বেরূপ বিশেষত্ব আছে, প্রথমত:
বৈদিকযুগে দেবতা-আখ্যাত প্রকৃতিপুঞ্জের এরুণ একটি
'বিশেষত আরোদিত হর নাই। ক্রমে স্র্বা, চক্র, আমি
প্রভৃতির স্থায়িত্ব দর্শনে, এই সকল প্রকৃতিপুঞ্জ হইতে ক্রাতের
নিত্য উপকার ও নিত্য প্রেরাক্ষনীয়তা দর্শনে মুম্ম হইয়া বিনি
গণ তাঁহাদের প্রতি বিশেষ দেবত আরোণ করিলেন। দ্বেশ
তব্দের ইহাই মূলবীজ। অক্সংহিতার এই ক্রকন দেব দেবীর
বিশেষ উল্লেখ আছে। বর্ণা—আলি, বায়ু, ইক্র, মিলা, বরুণ,
আখিবয়, ব্রিখদেবগণ, মুক্রবিণ, অতুগণ, ব্রক্ষণভাতি, সোঁক,

ষ্টা, স্থা, বিষ্ণু, পৃন্নি, যম, পৰ্জন্ত, অর্থানা, পৃথা, কল, কলগণ, বস্থাপণ, আদিভাগণ, উপনা, জিড, তৈতল, অহিব্রি, অল একপাৎ, ঝছ্কা, গরুআন্ এই সকল দেব এবং সর্বাতী, স্নৃতা, ইলা, ইলাণী, হোলা, পৃথিবী, উবা, আশ্রী, রোদদী, রাকা, সিনীবাদী ও গুদু প্রভৃতি দেবী।

তথনও দৈবতত্ব দৰ্কবাদিসত্মত হয় নাই। দেবগঁণের দংখ্যা ও অভিত্ব নাতিত-সহদ্ধে বৈদিক অবিগণের বংগ্রও বত ভেদ ছিল। এ বিষয়ে নিক্তকবার যাত্ব লিখিয়াছেল—

্"দেবতা তিনজন, পৃথিবীতে আমি, আন্তরীকৈ ইক্স বা

বাফু এবং আ্লালো প্রা। তাঁহাদের মহাভাগ্য, কারণ এক
এক জনের আনকগুলি নাম। অথবা হোডা, অথবর্ত্য, প্রজা,
উল্গাতা প্রভৃতি পৃথক্ পৃথক্ কুর্মের জন্ত (ভিন্ন নাম হইয়াছে।) অথবা উছিলেন। পৃথক্ পৃথক্ দেবই ছিলেন,
কারণ সভল্লভাবে তাঁহাদিখের স্ততি করা হইনাছে ও ভিন্ন
ভিন্ন নাম স্বেগা হইনাছে।" (নিক্সক্স গাং)

ঋক্সংহিতার ১ম, ৮ম, ও ৯ম মণ্ডলের জনেক হুক্তে ৩০ জন দেবভার উল্লেখ আছে। যথা—

"যে দেবাহো দিবোকাদশন্থ পৃথিব্যামধ্যেকাদশন্থ। অপ্লুক্ষিতো মহিনৈকাদশন্থ দেবাসো বজ্ঞমিমং জুবধবং॥" ( শক্ ১।১৩৯।১১ )

বে দেবগণ স্বর্গে একাদশ, পৃথিবীর সধ্যেও একাদশ, অন্তরীক্ষে অবৃদ্ধানকালেও একাদশ, তাঁহারা আপন মহিমায় যক্ত সেবা করেন।

"যে ত্রিংশতি ত্ররস্পরে। দেখালো বহিরাদদন্। বিদল্ল দ্বিতাদনন্॥" (ঋক্ ৮।২৮।১)

যে ত্রিশের পর তিন সংখ্যাযুক্ত অর্থাৎ যে ৩০ জান দেবতা বহিতে উপবেশন করিয়াছিলেন, তাঁহারা আমা দিগকে অবগত হউন এবং ছই প্রকার ধন দান করুন।

এই ৩৩ জন দেবতা কাহারা ? এ সম্বন্ধে ঋক্সংহিতায় কোন কথা নাই। শতপথবাহ্মণে লিখিত আছে—

"কতমে তে অমিল্লংশদিত্যটো বনব একাদশ কলা বাদশা-দিত্যান্ত একজিংশৎ ইক্সকৈব্ প্রস্থাপতিশ্চ অম্বল্লিংশাবিতি।" (শতপথবাণ ১১।৬।৩)৫.)

শেই ৩৩ জন, এক কে, আইবন্থ, একাদশ কয়, আদশ
 আদিত্য এই একুলিশ এবং ইয়্ও প্রজাপতিকে লইয়া ৩৩।

অভরেম্বাজনে আবার ৩৩ জন, সোমপ এবং ৩৩ জন জনসোমপ এই ৬৬ জন দেবতার উল্লেখ আছে। যথা—

'অইবস্থ, একাদশ ক্লা, ধাৰণ আদিতা, প্ৰজাগতি ও ব্যট্কার এই ৩৩ জন সোমণ এ কাদশ প্ৰযাজ, একাদশ অহ্যাৰ এবং এক্ষেপ উপবাৰ ইহার। অসোমপা গোম-পারীরা কোমবারা তৃপ্ত হন এবং অসোমপারীরা বন্ধীর পণ্ডবারা শ্রীত হন।' ( ঐত্তরেমন্তান্ধণ ২০১৮ ) ক্সপহিতার আবার ৩০৩৯ দেবতারও উল্লেখ আছে । "ব্রীণিশতা ব্রী সহস্রাণারিং ব্রিংশুচ্চ দেবা নব চাস্পরিন্।"

(ঋক্ ৩)৯)৯)
ভিন সহজ তিনশত কুণিংশৃৎ ও নবদংখ্যক দেবগণ *
অধিকে পূজা ক্রিয়াছেন।

শতপথবাক্ষণ (১১।৬।৩।৪), শাঝারনপ্রোক্তর্ত্ত (৮।২১।১৪) প্রাভৃতি বৈদিক গ্রন্থের তেও৯ ক্ষন দেবতার বর্ণনা আছে। বোধ হর দেবগণের এইরূপ সংখ্যা সম্বন্ধ মত তেও দৃষ্টে কোন কোন ক্ষরি আবার দেবগণের অস্তিষ্কে সন্দেহ করিয়া গিরাছেন। অক্সংহিতায় দিখিত আছে—

শ্রে স্থ তোমং ভরত বা করস্ত ইক্সার সত্যং বদি সত্যমন্তি।
নেক্সো অতীতি নেম উ: ব আহ ক ঈং দদর্শ কমভিটবাম ॥"
(৮।১০০।৩)

হে স্বরাভিলাধী বাজিবৃদ্দ। ইক্স আছেন, ইহা যদি সভাহর, তাহা হইলে ইক্সের উদ্দেশে সভাভৃত সোম উচ্চারণ কর। নেম ঋষি বলেন, ইক্স নামে কেহ্নাই। কে তাহাকে দেখিরাছে? সামরা কাহার স্তাভি করিব?

এরপ সন্দেহ অর্ণিন মধ্যেই ঋষিগণের হৃদয় হইতে তিরোহিত হইয়াছিল। ঋষিগণ কানিরাছিলেন, দেবগণ দোমরস পান করেনও মানব হইতে ভির।

"দেবেভাে হি প্ৰথমং যজিয়েভােহ্যভদং

স্বাস ভাগমূত্যমূন।" ( ঋক্ ৪।৫৪।২ ⇒ শতপথ রা থা।২।১ )
প্রথমে, হজিয় দেবগণের নিমিত্ত অমরছের সাধনভূত
সোমরূপ উত্তমভাগ উৎপর ক্রিয়। থাক।
"জং বিষেষাং বরুণাসি রাজা বেচ দেবা,অস্থির মেচ মর্ডাঃ।"
( ঋক্ ২।২৭।১• )

ঋকুসংহিতার দেবতা সবকে মহোক্ত ভাবও প্রকৃষ্টিত হইরাছে। ঝহাছে নির্দিট হুইগ, ভিন্ন ভিন্ন দেবতা এক প্রমান্ধান নাম মাত্র।

"ইব্রং মিত্রং বরুণ মহিমাহরথো দিবাঃ স স্থপর্ণো গরুস্থান্।

* সারণাচার্য্য কাষ্যে লিখিরাছেন, দেবতা কেখন ৩০ জন, ৩০০৯
নংখ্যা ভাহাদের মহিমাঞ্রকাশক। কিউ • ≱ক্সাহিতার ১•ম মঞ্জের

ং স্কেও এই ৩০০৯ জন দেবতার উরেধ আছে।

একং স্থিতী বহুধা বদ্ধানিং মসং স্কাত্রিবাসমাহঃ "

( ১১১৬৪।৪৬ )

্ মেধাবীরা ইক্স, মিত্র, বরুণ ও আয়ি ব্লিয়া থাকেন। ইনি
ব্রুগীয় স্থপণ ও গরুয়ান্। ইনি এক হইলেও ইহাকে বহু
বলিয়া বর্ণনা করে। ইহাকে আয়ি, য়ম ও মাতরিখাত্বলে।
"স্পর্ণং বিপ্রাঃ করয়ো বচোভিরেকং সন্তঃ বহুণা কয়য়ন্তি।"
(১৩)১১৪।৫)

স্থপর্ণ অর্থাৎ পক্ষী একট আছেন, বৃদ্ধিমান্ পণ্ডিতের। তাঁহাকে কলনাবলে নানারণে বর্ণনা করেন।

শেষে যে ত্ইটা ঋক্ উজ্ত হইল, উছাই উপনিবদ্ ও বেদান্তপ্রতিপাদ্য একাত্মবাদের মূল বীজা। পুরাণে যে অসংখ্য দেবদেবীর বর্ণনা আছে, তাহা আর কিছু নয়, এক এরমাত্মা বা ঈশ্বেরই মহিমাব্যঞ্জক রূপক বর্ণনা, ঋক্সংহিতার উক্ত ত্ই মত্রে তাহার মূল ক্রে প্রকটিত হইল। অধিক বলিতে কি দেব-দেবীর উপাসনামূলক বর্তমান হিল্পুর্ম্ম উক্ত ত্ই ক্রে প্রতিষ্ঠিত। মীমাংসাদর্শনের মতে, দেবগণের বাত্তবিক রূপ বাবিগ্রহ নাই। দেবগণ মন্ত্রাত্মক। চতুর্গত্ত পদযুক্ত মন্ত্রই দেবতা।

[ পৌরাণিক দেবতত্ত্ব শব্দে বিস্তৃত বিবরণ দ্রষ্টব্য।] শম্পুৰ্গংহিতায় লিখিত আছে—

"ঋষিভাঃ পিতরো জাতঃ পিতৃভাো দেবদানবাঃ। দেবেভাস্ত জগৎ সর্কাং চরং স্থায়সূপ্র্কাণঃ॥" (মৃত্ ৩)২০১)

খুষিগণ হইতে পিতৃগণ, পিতৃগণ হইতে দেবদানৰ এবং
দেবগণ হইতে স্বাবর জন্মাদি সমন্ত জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে।

মন্ত্র বচনাম্সারে দেবগণ যেন এক শতন্ত্র শ্রেণী বলিয়া বোধ হয়। সকল পুরাণ মতেই কশ্রপ ঋষি ও অদিতি হইতেই দেবগণের উৎপত্তি হইয়াছে। আবার দাক্ষি ণাত্যে দ্রোবিড়াদি অঞ্চলে হিন্দুগণের মধ্যে বিশাস লাখ-বাক্তিগণের মৃত্যু হইলে ভাহারা দেব এবং অসৎ ব্যক্তির মৃত্যু হইলে ভাহারা উপদেবতা হয়।

এদিকে বৈদিক ও পৌরাণিক গ্রন্থে দেবাস্থর সংগ্রামের।
পরিচয় পাওয়া যায়।

ঐতবেয়ত্রাক্ষরে আমরা সর্বপ্রথম দেব ও অব্সরনামক তুই দলের স্পষ্ট সংগ্রামের পরিচয় পাই.।

কাহার ও মতে — দেবাস্থরের সংগ্রাম রূপক বর্ণনা মাত্র, উহা প্রাকৃতিক শক্তিসমূহের সংঘর্ষ-প্রকাশক। ঋক্-সংহিতার অনেক মত্রে দেব ও অস্থর এই ছই শক্ষ এক অর্থে প্রযুক্ত হইলেও এবং ঐ ছই শক্ষই অনেক স্থলে দৃষ্ঠানান প্রকৃতিপুরের সংক্ষা অরুপ ব্যবহাত হইলেও, ঋক্সংহিতার

Cकान Cकान माध्य अवः क्षेत्रहत्रवाचारण एवं क क्षेत्रक এই ছুই দলের পরস্পার বৈর্ভাবের প্রভূত দিদর্শন পাওয়া যার। এই নিদর্শন হইতে অনেক ভাষাবিদ্ ও প্রাবিদ व्ययमान करतन, त्वरमाख्य (मराञ्चत्रहे वर्गाष्ट्रत व्याहीनहम সূভ্য আর্যাজাতির পূর্বপুরুষ। পারভ ও দ্বারতবাসা कार्यागरणत शूर्वश्रवमण यथन धक्क वनकाम कतिएछन् দৈ সময় দেবাস্থরের পার্থক্য ছিল না। সেই স্ময়কার ঋকে ,দেবাহ্রর এক ভাবেই বর্ণিত হইরাছে। আবার ৰথন পৃহবিবাদে অধ্বা অপর কোন কারণে দেব ও ক্লানুর উপাদকগণ পৃথক্ হইয়া পড়িলেন, যথল ওাঁহাদের ধরক্ষ্ বিৰেষভাব বৃদ্ধি হইভেছিল, সেই সময় এক দল অভদলের উপাত্তদিগের কুৎসা করিতে লাগিলেনণ অধি-উপাদক প্রাচ্নীন পারসিকগণ তাঁহাদের ক্ষবন্তা নামক প্রাচীন धर्मानाद्यं क्षेर्गनादक व्यविकातात्री ७ थ्यक्षक्रम व्यरः (सर्वा-পাসকগণকে মিধ্যা শঠ প্রভৃতি নামে সংখাধন করিয়া-ছেন। অন্তপকে বৈদিক ঋষিগণ অহার ও অহারোপাদক-গণের যথেষ্ট নিন্দাবাদ করিডে ছাড়েন নাই। (জার্গ, (राप, भारती প্রভৃতি শব্দ দ্রষ্টব্য ।]

আদিরীর হইতে আবিষ্কৃত প্রাচীনতম শির্দিণিতে আসিরীরবাদীগণ 'অস্থর' নামে বর্ণিত হইরাছে। 'কেহ কেহ অসুমান করেন সেই অস্থ্র ও দেবোপাসকগণের যে ঘোরতর সংগ্রাম হইরাছিল, তাহাই দেবাস্থর সংগ্রাম নামে খাত।

বেদে যে ৩০টা দেবতার উল্লেখ দেখিলাম, প্রাণে তাহাই ৩০ কোটা হইরাছে। পদ্মপ্রাণে লিখিওঁ আছে—
"সদারা বিবুধাঃ সর্কে স্থানাং স্থানাং গগৈঃ সহ ১
কৈলোক্যে তে অম্প্রংশৎ কোটিসংখ্যত্যাহত্ত্বন্।"

(পান্থে উত্তরখণ্ড)

এই ত্রৈলোক্যে দেববণ তাঁহাদের পদ্ধী ও স্থার গণ ^{সহ} সংখ্যার মোট ৩০ কোটা। [দেবতাদিগের গণ গণদেবতা শক্ষে দ্রান্তব্যা]

পুরাণ মতে, অধিকারী ভেদে দেবতার ভেদ হইরা ^{থাকে ।}
কুর্মপুরাণে শিথিত আছে—•

"या यद्याजिमजा श्रःमः मा हि उटेख्य (मयजा।

किंख कार्यावित्मत्यन भूकिजा टिडेमा मैनाम ॥

वित्मयाद मर्समा नामर ज्ञिमत्माख्यक्षा नृभाः।

नृभागार देवयुक्त विक्षुष्ठदेवय ह श्रुवस्त्रः॥

विश्वागामधिन्नामित्जा विक्षा टिह्य भिगक्षिक् ।

त्वानार देवयुक्तिन्यानार विभ्नाहर ॥

शक्तिशृहर ज्ञा दिव्यक्तिन्यानार विभ्नाहर ॥

शक्तिशृहर ज्ञा दिव्यक्तिन्यानार विभ्नाहर ॥

विमाधवागाः वाटमवी नाधानाः छशवान इति: व রক্ষসাংশক্ষরো রুদ্রঃ কিন্নরাণাঞ্চ পার্বভী। बाबी गाः रेमवजः बक्ता महास्मिवक मृत्रज्ञः। মন্নাং ভাছমা দেবী উপা বিষ্ণু: সভাস্বর:॥ গৃহস্থানাঞ্সর্বে হ্য এ ক। বৈ একচারিণাম। रेवथानमञ्जाषिका ञान् यजीनां महस्यतः। ভূতানাং ভগবান্ কল্ল: কুলাগোনীং বিনায়ক: । সর্বেষাং ভগবান্ ব্রহ্মা দেবদেব প্রকাপতি:। • ≷ত্যেবং ভগবান্ ব্ৰহ্মা স্বয়ং দেবেহিভাভাষত ॥" • বৈ পুরুষের ঘিনি অভিমত, তিনিই তাহার দেবতা। তিনিই কার্যাবিশেষবারা পুলিতা হইয়া মহুবাদিগের অভীষ্ট-দান করিয়া থাকেন। সকক স্থলেই বে এই নিয়ম, তাহা নহে, ইহার বিপরীতও দেখা বায়। নৃপদিগের দেবতা অগ্নি, আদিতা, ব্ৰহ্মা ও মহাদেব, দেবতাদিগের দেবতা বিষ্ণু, मानविमार्गत महारावि, शक्तर्य ও यक्तमिर्गत साम, विश्वाधतः मिट्शत वाह्यस्वी, সाधामिट्शत रुत्रि, त्रक्रमिट्शत नकत क्रम, किञ्चत्रितित शार्क्त हो, श्रीविभिरागत खन्ना ७ महाराज, मसूपिरागत উমা, বিষ্ণু এবং ভাস্কর দেবতা, ব্রহ্মচারীদিগের দেবতা ব্রহ্মা,

দেৰতাধিগের মধ্যেও আবার বর্ণভেদ নির্ণীত ইইয়াছে।
মহাভারতে শাস্তিপর্ফের মোক্ষধর্মে লিখিত আছে—
"আদিত্যা: ক্ষত্রিয়ান্তেষা: বিশ্চ মক্ষতন্তথা।
অখিমৌ চ স্মৃতৌ শৃদ্রৌ তপস্থাতো সমান্তিতোঁ॥
স্মৃতান্থান্সিরদা দেবা ব্রাহ্মণা ইতি নিশ্চয়ঃ।
ইত্যেতৃৎ সর্কাদেবানাং চাতৃবর্ণাং প্রকীর্ষ্টিতম্॥

देवथानमित्रित दनवं मक्नहे, यिजित्रित मद्दश्वत, कृजित्रित

ভগবান্ ক্রন্ত, কুখাতের বিনায়ক এবং সকলের দেবতা

দেবদেব প্রস্তাপতি। এরূপ ভগবান্ ব্রহ্মা স্বয়ং বলিয়াছেন।

ভাদশ আদিতা ক্ষত্তির, মরুদাণ বৈশ্ব, উগ্রতপঞাযুক্ত অখিষর শৃদ্র এবং আফিরস দেবগণ ব্রাহ্মণ বলিরা নির্ণীত। এইরূপ সকল দেবতার চাতুর্ব্য কীর্ত্তিত হইয়াছে।

ব্রহ্মবৈবর্ত্তের মতে—দেবগণের মধ্যে ছয় জনই প্রধান।

"গণেশঞ্চ দিনেশঞ্চ বহ্ছিং বিফুং শিবং শিবাম।

দেবষট্কঞ্চ সংপ্রা নমস্কৃত্য বিচক্ষণঃ॥" (ব্রহ্মবৈ )

গণেশ, স্র্য্য; ভর্মা, বিফু, শিব ও ছগা এই দেবষট্ক,
বিচক্ষণ ব্যক্তির এই ছয়জনকে পুলা ও প্রণাম করা কর্ত্ব্য।

মাসবিশেষে দেবতাবিশেষের পুলা নির্দিষ্ট আছে।

মন্ত্রমধ্যের মতে—
"ষ্পা যথেষ্ট্রম্বেষ্ নৃণাং ভক্তিঃ সমেধ্তে।
প্রাপ্যতে তৈর্যুদ্ধন মনোহজীইঃ তথা তথা॥

শুচৌ তত্ত্বহে কুৰ্ব্বান্দেৰপ্ৰাশ্বপৰাৎসৰম্। উर्व्छ छुट्रेशव मिवानाम्थाननविधिः स्थीः ॥ मापक्रकाठ्याः विरमयाव्हिवशृक्षनम्। षाचिनानानुतारश्यु इंगी शृका। मधीविधि॥ लीभानः भृकदम्बिनामञ्चः क्रकाहेमीनित्न । রামং চৈত্রে সিতে পকৌ নরসিংহং প্র**পৃত্ত**য়েও। যজেচভুক্লচভূৰ্থ্যান্ত গণেশ ভাদ্ৰমাৰয়ো:॥ मरानचीः यद्मविषान् ভाजक्रकाष्ट्रमीतितः। মাঘ্য শুক্লসপ্তম্যাং বিশেষাদিননায়কম্ ॥ যা কাচিৎ সপ্তমী শুক্লা রবিবারযুতা যদি। তত্যাং দিনেশং সংপ্রা দন্তাদর্যাং পুরোদিতম্॥ তত্তৎ কল্লোদিতানস্থান্ দেবতাপ্রীতিবর্দ্ধনান্। विष्यिनियमान् कृषा खँदबाक्यमन्त्रधीः॥ আষাঢ়ী কার্ত্তিকী মধ্যে কৈঞ্চিন্নন্নমাচরেৎ। দেবসম্প্রীতয়ে বিদান্ জপপৃঞ্জাদিতৎপর:॥ এবং যো ভক্ততে विकृः क्रजः प्रतीः गगाधिनम्। ভাস্তর: শ্রহ্মা নিত্যং স কদাচির সীদতি ॥"

বেরপে মনুষাদিগের ইউদেবে ভক্তি বৃদ্ধি এবং যত্ন বাতীত অভীষ্ট লাভ হয়, (তি বিষর বঁলিতেছি।) গ্রীয়কালে দেবতাদিগের পাল্পনাংসব করিবে এবং ভাহার পর দেবতাদিগের উত্থাপন করিবে। মাঘমাদের ক্ষচতুর্দলী ভিথিতে শিবপুলা করিবে। আখিন মাসে প্রভিপদ্ হইতে নবনী পর্যান্ত হুর্গাপুলা, প্রাবণের ক্ষাইমীদিনে গোপাল, চৈত্রমাসের শুক্রপক্ষের নবনী ভিগিতে রাম, বৈশাধের ক্ষচতুর্দলী ভিথিতে নরসিংহ, ভাত্র এবং মাঘমাসের শুক্রচতুর্থীতে গণেশ, ভাত্র মাসের ক্ষাইমী ভিথিতে মহালন্মী, মাঘমাসের শুক্রসপ্তমী ভিথিতে দিননারক, যে কোন শুক্রসপ্তমী ভাহাতে, যদি, রবিবার হয়, এই বারে গণেশপুলা করিবে। আ্যাঢ় এবং কার্ত্তিক নামিত যদি লগ্ন নিয়ম আচরণ করিবে। আ্যাঢ় এবং কার্ত্তিক নিমিত্ত যদি লয়ম আচরণ করিবে। দেবতার প্রীভির নিমিত্ত যদি লগেক নিত্য পূলা করা হন, তাহা হুইলে বাঁহারা পূলা করেন, তাহালা কথন অবসম্ন হন, তাহা হুইলে বাঁহারা পূলা করেন, তাহালা কথন অবসম্ন হন না।

বর্ত্তমান হিন্দ্দিণের মধ্যে কুলদেরতা, ইইদেবতা, পৃহ-দেবতা, গ্রাম্যদেবতা, স্থান্দেবতা প্রভৃতি দেবতার পৃত্তা দৃষ্ট হয়।

কুণক্রমান্থনারে যে দেবতা পৃষিত হইয়া আসিতেছেন, তাহাই কুলদেবতা। শিব, বিষ্ণু, হুগা প্রভৃতি ইহাদের মধ্যে কোন একটা কোন শ্রেণীর হিশ্পেরিবারের কুলদেবতা। বিনি যে দেবতার মন্ত্রে দীক্ষিত হন, সেই মন্ত্র-প্রতিশাদ্য দেবতাই

ইটদেৰতা। গৃহের অধিষ্ঠানী স্বরূপ বাস্ত প্রিক্ত হন, তিনিই গৃহদেৰতা। গ্রামাদেৰতার বিশেষ ক্ষোন ক্ষণাদি নির্দেশ নাই। রঘুনন্দন লিখিয়াছেন—

্ প্রাম্যদেবতার স্থিতিকাল কলির প্রথম ২৪০০, বংসর, এই সময়ের পর হইতে আর প্রাম্যদেবতার দেবর্ছ থাকিবে না। "কলেদল সহস্রাণি বিষ্ঠৃতিষ্ঠতি ভূতলে। তদর্জং কাহুবীতোরং তদর্জং প্রায়্যদেবতা।"

হৈত্য' প্ৰভৃতি বৃক্ষাদি তলৈ যে দেবতার প্ৰা হইরা থাকে, তাহাকেই গ্রাম্যদেবতা কহে।

দাক্ষিণাতোই গ্রাম্যদেবতার বেশী প্রাধায়। তথাকার নিম শ্রেণীর হিন্পাণের মধ্যেই গ্রাম্যদেবতাগণের বথেই প্রতিপত্তি দেখা যায়। ঐ সকল গ্রাম্যদেবতা কোন স্থানে মূর্তিহীন,কাঠথও বা শিলাথওে প্রিত হন।

দাকিণাত্যের দক্ষিণ ও পশ্চিমাংশে ইহারা অত্ম, অত্মন্ বা অত্মার এবং পশ্চিম ও উত্তরাংশে সট্টে, ভৈরো, মদোবা, চামণ্ডা, অসরা, অই, মরিয়াই প্রভৃতি নামে থ্যাত। সাধা-রণে বিপদে পড়িলে, রোগে পীড়িত হইলে, তাঁহালের প্রা দের এবং তাঁহালের ভৃত্তির জন্ম ছাগ, মেষ, মহিষাদি বলি দিয়া থাকে।

বাধেরাও দেবতার অন্তিত্ব দীকার করে। তাহাদের মতে, বৃদ্ধ ও বোধিসত্বের নিম শ্রেনীতে দেবগণ। দেবগণের নিমে মানব। বৌদ্ধগণের মতে, অনেক প্রকার দেবতা আছেন, তন্মধো দিব্যাবদান নামক সংস্কৃত বৌদ্ধগ্রন্থে চাতুর-মহা-রাজিক, তুবিত প্রভৃতি কএকপ্রকার দেবতার উল্লেখ আছে।

যথা—"যা উপবিষ্ঠাপাছন্তি তাশ্চাত্রমহারাজিকান্
দেবান্ গড়া অয়ন্তিংশান্ যামাংস্তবিতান্ নির্মাণুরতীন্ পরনিন্মিতবশবর্জিনো দেবান্ বন্ধকায়িকান্ বন্ধপুরোহিতান্
মহাবন্ধাঃ পরীব্রাভান্ অপ্রমাণাভান্ আভাশ্বরান্ পরীক্তাভভান্ অপ্রমাণাভভান্ ভভকংমাননভ্রকান্ পুণাপ্রস্বান্
বৃহৎফলান্ অবৃহান্ অতুপান্ স্বদ্শান্ স্বদর্শান্ অকনিষ্ঠপর্যান্তান্ গড়ানিতাং হু:খং শ্রুমনাংযুভ্যদেঘাষয়ন্তি।"

(দিব্যাবৃদান)।

যাহারা উপরিভাগ হইতে গমন করেন, তাঁহারা চাতৃর
মহারাজিক দেবতা, তুষিত নির্মাণরতি, পরিনির্মিতবশবর্তী,
পরীত্তাভ, অপ্রমাণাভ, আভাশ্বর, পরীত্তভ, অপ্রমাণশুভ,
শুভক্তংম, অনত্রক, প্ণাপ্রসব, বৃহৎফল, অবৃহ, অতপ, স্বদৃশ,
স্থদর্শ ও অকনিষ্ঠ প্রভৃতি দেব সমীপে গমন করিয়া অনিতা হঃথ
শুসমর, আত্মার অভিত্রু নাই, ইছাই উদ্যোষিত করিয়াছিল।

লৈনেরাও বৌছদিগের মত তীর্থকর কেবলী প্রভৃতি

তাঁহাদের উপাত্তপণকে দেবাধিদেব বলিরা প্রকাশ করিয়া-ছেন; দেবগণ এই দেবাধিদেব অপেকা পদমর্ব্যাদার সকল বিষয়ে নিম। দেবগণের পর্ম মানব। কৈন্দিগের দেবতা ঢারিপ্রকার—বৈমানিক বা করভব, করাতীত, গ্রৈবেরক ও অফুত্তর। বৈমানিক ১২ প্রকার—সৌধর্ম, জিশান, সর্বক্ষার, মাহেক্স, ত্রামা, অভক, ভক্ত, সহ্সার, নত, প্রাণত, আরণ ও অচুচ্ত। করাতীত দেব স্প্রকার ও অফুত্তর & প্রকার। (হেম)

পৃথিবীর প্রাচীনত্য সকল বজা দেশেই এক সময় ভিন্ন জিল দেবদেবীর উপার্গনা প্রচলিত ছিল্ল। অনেক প্রবক্ত দেবীর পূজা পছতি ও রুপাদির পর্যালোচনা করিয়া কেই কেই প্রকাশ করিয়াছেন, মিসর ইইতে দেবতদ্বের স্ত্রপাত হয়। ভিন্ন ভিন্ন দেশে তাহারই ছালা, অমুস্ত ভুইলাছিল। কিন্তু এই প্রত সমাচীন বলিয়া বেধি হয় না। বৈদিক আর্যাগণের স্থায় অপরাপর সভ্যজাতির মধ্যেও দেবতহ আপনাপনি উত্ত ইইলাছিল; তবে বিদেশীর সংপ্রবে এক ভাব ভাবাস্তরে বে রুপাত্তিক হয় নাই, এমন নহে।

'দৈবতাগার (ক্লী) দেবতানাং আগারং ৬তং। দেবগৃহ, দেবতামন্দির।

"কোষ্ঠাগারায়্ধাগারদেবভাগারভেদকান্।

হস্তাশরপহর্ত্ংশ্চ হস্তাদেবাবিচাররন্॥" (মস্কু নাং৮০)
বাহারা কোষ্ঠাগার, আর্ধগৃত ও দেবগৃহ নট করে এবং
হস্তী, অংশ ও রথ হরণ করে; রাজা কোন বিষয় বিচার না

করিয়া ভাহাদিগকে বিনাশ করিবেন।

দেবভাগৃহ (ক্লী) দেবভানাং গৃহং ৬তং। দেবভাদিগের
আলয়, দেবমন্দির।

দেবতাজিৎ (পুং) দেবতাং করতি জি-কিপ্। ১ দেব বিজয়ী অমুরাদি। ২ ভরতপুত্র মুমতির পুত্তেদ।

"তত্মাধ্ জনে নারাং দেবতাজিরাম প্রোহভূৎ" (ভাগং থা>থাই দেবতাড় (পুং) দেবো দীগুঁতালঃ ইতি লন্ড ড়। বৃক্ষবিশেষ দেবডাড়াগাছ।পর্ব্যার—বেণী, পুরা, গাঁর, জীমৃত, অগরী, ধরাগর ভাড়ী, আ্পুবিষহা, আপু, বিষজিল, মহাচ্ছদ, কদম, ব্জাব দেবতাড়ক। (রত্মালা)। দেবৌ চক্রাকৌ তাড়মতি জানি কর্মণি অণ্। ২ রাহ। দেবুনার দীপনার ত্রাডাতেইদৌ তানি কর্মণি অণ্। ২ রাহ। দেবুনার দীপনার ত্রাডাতেইদৌ তানি

দেবতাড়ক ( পুং ) দেবতাড় স্বার্থে কন্প দেবতাড় বৃক।
দেবতাত ( পুং ) তন-জ্ব ততএব তাত স্বার্থে অণ্। দেবন
তাতঃ। দেবতাদিগের নিমিত্ত বিভ্ত ব্জ্ঞা "এবা দেব দেবতা

পৰস্ব " ( ৰক্ ৯৯৭।২৭ ) দেবানাং তাত: ৬তং। ২ দেবতাদিগের অনুক কশ্রপ। ০ মরীচাদি অবি। ৪ হিরণাপর্ত।
দেবতাতি ( পুং ) দেব-আর্থে ভাতিন্। দেবতা। "ন আবহ
দেবতাতিং ববিষ্ঠ" ( শক্,৩।৪৯।৪ ) 'দেবতাতিং দেবং আর্থে
তাতিন্' ( নারণ )
সেবতাধিকবন (জী) দেবতাকর্ম্ম ভ্রম্মেরবিষ্ক্রন্তিক্র

বেবতাধিকরণ (ক্রী) দেবতাকর্মস্থ তদধিকারিদ্বনধিকারিদ্বং
বা-অধিক্রিদ্বতে বিচার্বাতেইত অধিক্র-আধারে সূটে। নজাদিতে দেবতাদিগের অধিকারিদ্ধ ও অন্ধিকারিদ্বের অন্ততন্ত্র
সাধক স্থায়ভেদ।

দেবতা ধিপ ( প্ং ) দেবতানাং অবিপ: তং। দেবতাদিগের অধিপতি ইক্স।

দেবতাধ্যার (ক্লী) দানবেদের একথানি ব্রহ্মণ।
দেবতাকুক্রম (পুং) দেবতানাং অন্তক্রম ৬৩৭। দেবোদেবতাদিপের উদ্দেশ।

"नामरध्यानि बद्धक मक्तिगाक बङानि, हु।

দেবতাকুক্রম: কর: সংকরস্তর্মেব চ 🕫 ( ভাগে ২।৬।২৬ )

দেবতাপ্রতিমা (স্ত্রী) দেবতানাং প্রতিমা ৬তং। দেবতা দিগের প্রতিমূর্ত্তি। দেবতাদিগের প্রতিমা গঠন করিবার অক্সমানাদি এবং মৃত্তিবিষয় সামান্ত রূপে বৃহৎসংহিতার। এইরূপ নিথিত আছে,—

দেবালয়-মারের যে এক ভৃতীয়াংশ তাহাই পিণ্ডিকার প্রমাণ; এইরূপ পরিমাণ-বিশিষ্ট পিতিকার নির্দ্ধাণ করিয়া ইহার বিশুণ পরিমাণে প্রতিমা প্রস্তুত করিতে হইবে। প্রতিমার • স্বীয় অঙ্গুলি প্রমাণের দাদশগুণ বিস্তীর্ণ এবং আয়ত মুধ হইবে, কিন্তু নয়জিৎ মুনির মতে প্রতিমার মুধ देनर्या ठ्रूफ्न् व्यक्ति इहेर्दा हेहा लाविष् रम्स প্রচলিত। নানা, ললাট, চিবুক ও গ্রীবা চতুরসুল প্রমাণ এবং কর্ণব্য, হত্মবয় ও চিবুক বিঅঙ্গুল পরিমাণে বিভৃত। ললাটের পরিমাণ অষ্টাঙ্গুল, বিস্তার দ্বিজুল, শৃথারয় ৰিঅঙ্গুল এবং কৰ্ণৰয়, হুমুৰয় ও চিবুক বিজ্ঞুলি পরিমাণে বিস্তৃত হইবে। সার্দ্ধপঞ্চমাঙ্গুলে জনবের সমস্ত্রে কর্বোপাস্ত এবং স্বন্ধররপে কর্ণস্রোভ ক্রিভে হইবে। নেত্রাস্ত্ইভে ক্ৰিয়ের বিবর চতুরসূপ, অধর অসুপ প্রমাণ এবং তাহার .অন্তাধিক ওঠ, বশিষ্ঠ এইরূপ বলিয়াছেন। গোছা অন্ধাঙ্গুল এবং মুধ ভারি অঙ্গুল, নাদার অগ্রভাগ হইতে নাদাপুট্বর ৰিঅসুন, নাসার উচ্চায় ৰিঅসুন এবং ইহা চকুৰ্বের মধাভানে চীরি অঙ্গ অন্তর পর্যান্ত ব্যাপ্ত ছইবে। অঞ্চিকোষ ও নেত্রদর বিঅসুন, নেত্রভারা ইহার এক ভৃতীয়াংশ, দৃক্তারা ইহার এক প্ৰকাশে এবং অকিৰিকাশ অৰুটি পরিমিত হইবে। এক

পাৰ্য হইতে, অপন্ন পাৰ্য পৰ্যন্ত জ সকল দশাসুল, 'জন্মেধা चर्ताजून, क्रमशा विचन्न ७ करिनचा ह्रूबन्न ध्रमान रुरेदा। क्रमशमान चर्काकृत विखीर्ग, हेरा टक्नद्रशावर করা আবুঞ্জু। নেতাতে অঙ্গুলি সদৃশ করবীর দেওরা কর্ত্তরা। মন্তকের বিশালতা ৩২ অঙ্গুল এবং ১৪ অঙ্গুল প্রশন্ত হইবে। নগ্নজিৎ মুনির মতে, কেশযুক্ত মন্তক দৈর্ঘ্যে ১৬ অসুল। গ্রীবারদশ দশ অসুলি বিস্তীর্ণ ও এক-বিংশতি অকুনি দীর্ঘ। কঠ হুইতে হাদর ধাদশ অকুনি, ক্ষুষ্ হইতে নাভি এবং নাভি হইতে মেচুদেশ প্রান্ত এই পরিমাণ হইবে। উক্লবর ও জল্লা চভূবিংশতি অংসুলি, জাত্ব ও পিচছ চারি জাজুল, ওল্ফব্যও "চারি জাজুল, পদব্য ১২ অসুন দীৰ্ঘ ও ৬ অসুন প্ৰাশন্ত, পাদাসুষ্ঠৰয় ৩ অসুন প্রশন্ত এবং পঞ্চাসুল পরিমাণ দীর্ঘ, পাদভর্জনী দৈর্ঘ্যে ৩ অঙ্গুল হইবে। অবশিষ্ট পানাসুলি সকল ক্রমে ক্রমৈ অষ্টাংশ অষ্টাংশ কম করিয়া করিতে হইবে। ১।০ অঙ্গুলি অসুলের উৎসেধ হইবে। অঙ্গুষ্ঠের চতুর্থ্ভাগই অঙ্গুর্চ-নথের পরিমাণ। ইহাতে কাহার কাহারও মত--একাঙ্গুলির চতুর্বভাগ কম, অক্ত সকল অকুলির পরিমাণ বা অর্দ্ধাকুলি কিংবা তদপেকা किकिए कम हरेटन। अञ्चात चैश्राकारगत रेमर्चा >८ अञ्चलि छ विखात ६ व्यक्ति। वज्यात मधाक्षांग मधाकृति, ॰देवर्षा भित-ণাহ অপেকা ত্রিগুণ ও উহা সপ্তাসুলি বেধবিশিষ্ট, জাহু মধ্যে বেধ অষ্টাঙ্গুলি এবং পরিণাহ ২৪ অঙ্গুলি হইবে। চতু-র্দশ অকুলি পরিমিত বিপুল উরুদ্ধের মধ্যদেশের পরিধি তাহার বিশ্বণ, অর্থাৎ ২৮ অঙ্গুল, অষ্টান্পাঙ্গুল পরিমিত কটিদেশের পরিধি ৪৮ অঙ্গুল এবং নাক্তির বেঁধ ও প্রমাণ এক অঙ্গুল ইইবে। নাভিমধ্যের সহিত তান্ধ্যের মধ্য-পরিণাহ পরিমাণ ২৪ অঙ্গুলি ও উর্দ্ধ বোড়শাঙ্গুলি, তাহার कृक्षत ७ अञ्जान, अक्राम ৮ अञ्जान এवः बाह वृ व्यवाहरतत्र পরিমাণ ১২ অঙ্গুলি, বাছ ৬ অঙ্গুলি বিভ্ত ও প্রতিবাহ চারি व्यक्ति व्यभाग रहेरत । ताहभूगद्य > व्यक्ति नीर्घ अध्या-হস্তবর বাদশ অসুলি পরিমিত দীর্ঘ হইবে।

করুতল বিতারে ৬ অঙ্গুলি ও • দৈর্ঘ্যে সপ্তাপুলি, মধ্যমা পঞ্চাঙ্গুলি, প্রেদেশিনী অঙ্গুলির পরিমাণ, মধ্যাঙ্গুলির পর্বার্ক্ত-পরিমাণে কম, অ্নামিকা তর্জ্জনীর সম্ভান, আর কনিষ্ঠাঙ্গুলি অনামিকার এক পর্বা পরিমাণে কম হইবে। অঙ্গুঠে তুইটা পর্বার এবং অক্তান্ত আপ্রত্বি এবং অঙ্গুলি সকলের নথের পরিমাণ পর্বের অর্থেক হইবে। দেশান্ত্রপ ভ্রবণ, বেশ, অসকার ও মৃতিধারা প্রতিমাকে গঙ্গুরুক্ত করিতে হইবে।

स्विथिति ३०৮, २७, वा ৮৪ **अन्**ति भत्निक इहेरन

বণাক্রমে উত্তম, মধ্যম ও অধ্য হয়। ভুগবান্ বিষ্ণুকে বিভূল, চতু ভূ অ বা অষ্টভূজ করিবে, পরে ভাহার বক্ষঃছল প্রীবংসাক্ষয়ক এবং কৌস্বভমণি ভূষিত করিতে হইবে। তাহার আকৃতি অভসীপুল্পবর্ণের স্থার স্থামুবর্ণ, পীতবস্ত্রপরিহিত, প্রসরম্থ, কুণ্ডল ও কিরীটবাদী এবং তাহার গল, বক্ষঃছল, সন্ধ ও ভূজবন্ধ করিবে। এই বিষ্ণুপ্রতিমায় দক্ষিণ হস্তসমূহে বথাক্রমে খড়ুগা, গদা, শর ও চতুর্থ হস্তে শাস্তি এবং বাম কর সর্কর্ণে কামুক, থেটক, চক্র ও শুভা ধারণ করাইবে। নারায়ণকে চতুর্ভু ক করিতে হইলে দক্ষিণ পার্শের একহস্ত শাস্তিপ্রদ ও অন্থ হস্ত গদাধর এবং বামপার্শের হত্তে শভ্য ও চক্র ধারণ করাইবে। কিন্তু বিভূজ করিলে দক্ষিণ হত্তে শাস্তি এবং বামহন্তে শভ্য থাকিবে। ভক্তগণ এই প্রকার বিষ্ণুপ্রতিক্ষা নির্মাণ করিবেন।

বর্ণদেবকে শৃষ্ম, চক্র ও মৃণালের স্থায় গৌরবর্ণ কলেবর বিশিষ্ট এক কুওলধারী, মদবিভ্রমলোচন ও হলধারী করিয়া নিশ্রাণ করা কর্তব্য।

ক্লফাও বলদেবের মধ্যে এক অনংশা নামী দুবী প্রতিমা করিয়া দেই দেবীর কটি সংস্থিত করিবে, আর তাহার হত্তে পন্ম রাধিবে। ঐ দেবী চতুভূ′কা হইলে তাহার বামকরখয়ে পুস্তক ন্ত্ৰিত পদাও দক্ষিণ হস্তৰ্যের একটা বরদ ও অপর্টী দাক্ষপ্ত হইবে। অইভুজার বামহস্ত দক্ল কমগুলু, ধরু, পন্ম ও শস্ত্রমূকে এবং দক্ষিণ হস্ত সকল বর, শর, দর্পণ ও অকস্ত্রসম্বিত করিতে হইবে। সাম গদাধারী, প্রাহায় চাপণারী ও স্বলরক্ষণ বিশিষ্ট হইবেন • এবং ইহাদিগের ন্ত্রীদিগণ্ডেও থেটক ও নিস্তিংশধারিণী করিবে। এক্সা কম-ওল্ধারী, চতুর্মূথ এবং পন্মাসনিষ্বিত ইইবেন। কার্ত্তিকেয়-কে কুমারক্লপধারী, শক্তিধর ও ময়ুরচিহিত করিবে। ভুকুবৰ্ ইন্দ্ৰের হতে বজ্ব ও তিৰ্ঘাক্ভাবাপন ললাট, ইন্দ্ৰের বাহন ঐকাবক চতুর্দিন্ত ও তিনটা নেত্র। মহাদেবের মন্তকে চক্তকলা, ব্যধ্বজ, উর্জে তৃতীয় নেত্র, বামার্জে শৃণ, ধরু, পিনাক, কিংবা গিরিলা উমার অর্কাঙ্গ, এই সকল চিত্ থাকিবে"। বুদ্ধের চর % ও হস্তে পন্ম धिहिङ করিবে। তাঁহার প্রসন্ধর্ম্বর, স্থনীলুকেশ ও ভিনি প্রাসনে উপবিষ্ট পাকিবেন। অর্তের আলামুলুদিত বাহু, এবংসাল্পুক, প্রশান্তম্র্ডি, দিখসন, তঁরুণ ও রূপবান্ করিতে হইবে।

রবির নাসা, ললাট, জল্লা, উরু, গণ্ড ও বক্ষ: উরত, কিন্তু পদ হইতে বক্ষ: পর্যাপ্ত ল্রুনায়িত হইবে, তিনি ঔত্তরিক বিশ্বামারী হইবেন। ু.ডাঁলার হত্তে পদ্ম, মাথায় মুকুট ও ভ্রমণ-কারী গ্রহে পরিবৃত্ত এবং তাহার গলদেশে হার,প্রশাহিত ও

কুণ্ডল হারা বদন ভূষিত হইবে। স্বৰণের ভার হাতিশালী বৃধ্,
কঞ্ক হারা গুপুদেহ, স্মিত ও প্রস্তমন্থ এবং রম্মের উজ্জন
প্রভামগুলবিশিপ্ত স্থাপ্রতিমা যিনি নির্মাণ করান, তাহার
কাশেষ বিধ মলল হইরা থাকে। দেবপ্রতিমা একহন্ত পরি
মিত হইলে সৌম্যা, হল্ডার উরতা হইলে ধনদারিনী এবং ।
তিন হস্ত বা চারি হন্ত পরিমিতা হইলে তাহা ক্মেম ও
ক্ষেভিক্ষের কারণ হয়। দেবপ্রতিমার আল অধিক ক্ষ্ট্রে
কর্তার নূপভয়, প্রতিমা হানালী হইলে অমলল, ক্ষীণোদরী
হইলে ক্ষুদ্র এবং ফ্রশা হইল্ফে ক্রার অর্থনাশ হর।

প্রতিমা শল্পাত বার্ম কত হইলে অধবা বামদিকে অবনত হইলে কর্তার মরণ, বামদিকে অবনত হইলে কর্তার মূড়া কর্তার পত্নী এবং দক্ষিণ্দিকে অবনত হইলে কর্তার মূড়া হইয়া থাকে।

প্রতিষ্ণার দৃষ্টি উদ্ধাত হইলে কর্ত্তা আর এবং দৃষ্টি আধো মুখী হইলে কর্ত্তা সর্বাদাই চিস্তিত থাকে। এই স্থা প্রতিমা সম্বদ্ধে যাহা বলা হইল, তাহা স্কল দেবপ্রতিমা সম্বদ্ধেই জানিতে হইবে।

পূৰ্ব্বোক্ত দোষ সকল যাহাতে না ঘুটে, এইরপ বিশেষ সাবধান হইরা দেবপ্রতিমা সকল প্রস্তুত করাইতে হয়।

লিলের বৃত্তপরিধিকে ক্রেছার। দৈর্ঘো পরিমিত করিরা তাহা ত্রিভাগে বিভক্ত করিবে। তাহার একভাগ ম্লের পরিমাণ, কিন্তু মূল চত্রস্ত হইবে। বিতীয়ভাগে অটাপ্রিমধ্য আর তৃতীয়ভাগে উর্জ্বল বৃত্ত করিবে। লিলের নিমের চত্রস্তভাগ অবনীথাতে পিণ্ডিকাছিজের মধ্যের সহিত এরূপ সমভাবে বিভান্ত রাখিতে হইবে, যে গর্ত হইতে পিণ্ডিকার উচ্চায়ের সহিত পিণ্ডিকা যেন চত্র্দিক্ হইতে দেখিতে পাওয়া যার। উক্ত লিক্ত রুদ্দীর্থ হইলে দেশনাশন, পার্যবিহীন হইলে প্রবিনাশক এবং ক্ষত-মন্তক লিক্ত বিনাশের কারণ হয়।

মাতৃগণ অনামদেবতার অন্তর্মণ চিচ্চ্যুক্ত করা কর্তবা।
ক্রীপুত্র বিরবস্ত অধারাত, মুগরা-ক্রীড়াদিযুক্ত, মহিষারুত্ব বরুণপাশধারী ও হংসারাত। কুবের নরবাহন, রুংং
কুক্ষি ও অন্সর কিরীটধারী। প্রমধাধিপতি গণেল গলমুর,
প্রাথম অঠর, কুঠারধারী, একদস্ত এবং মূলক কন্দ ও জুরীগ
দল কন্দধারণকারী হইবেন। (বুহৎসং ৫৮ আছে)

অধিপুরাণে দেবপুঁতিমার লক্ষণ এইরণ নিধিও
আছে। → ভগবান নারারণ যে মৎভারতার পরিপ্রত করির।
ছিলেন, সেই মৎভের আকার প্রাক্ত মৎভের ভার। কূর্ণের
আকার কুর্ণের ভার। °ুবরাহের আকার মহুবোর ভার শর

প্রভ্যক্ষবিশিষ্ট, হত্তে শব্দ চক্র গদা পল্ল, দক্ষিণে ও বামে শব্দ, লক্ষী বা পল্ল, বাম কুর্পরে শ্রী,ক্ররণতলে পৃথিবী ও অনস্ত।

নরসিংহের বদন বাদিত, বাম উরুতে দানব ক্ষত বিক্ষত, গলদেশে মালা, হত্তে চক্র ও গদা, এই অবস্থার তিনি দৈতাপতির বক্ষ বিদারণ কুরিতেছেন।

বামনের আঞ্চিত হব, মন্তবে ছত্ত, হল্তে দস্ত এবং চারি বাহ। পরগুরামাবতারের হল্তে সশর শরাসন, থজা ও পরগু। রামাবতারের ছুইভ্ল, ঐ ছুই হল্তে ধর্ম শর, থজা ও শুঝা শোভিত। বলরামের চারি বাহ, ইহা গদা ও লাক্তন হুশোভিত, তর্মধ্যে বামহন্তের উদ্ধে লাকল, অধোদেশে হুশোভন শঝা এবং দক্ষিণ হল্তের উদ্ধিকের বাহতে মুবল ও অধোদিকের বাহতে চক্র।

ভগবান্ বৃদ্ধের মূর্ত্তি অভি শাস্ত, কর্ণ লখিতু, অল গোরবর্ণ, পরিধান স্থান বস্ত্র, আসন উর্জাগ, তিনি বর ও অভয় প্রদান করেন। ভগবান্ কবি আক্ষণ মূর্ত্তি, তিনি অখের উপর আরোহণ করিয়া আছেন ; হত্তে ধস্তু, তৃণ, ওজা, শঝ, চক্র ও শর। দক্ষিণোর্দ্ধে গদা, বামোর্দ্ধে চক্র, ছই পার্মে ব্রহ্মা ও মহেশব। এই প্রকারে বাস্থদেব মূর্তিনির্মাণ করিতে হইবে।

চঞীর বিংশতি হন্ত, তন্মধ্যে দক্ষিণ হন্তসমূহে শূল, অসি, শক্তি, চক্র, প্রাস, বেট, আযুধ, অভর, ডমরু ও শক্তিকা এবং বামকরসমূহে নাগপাল, থেটক, কুঠার, অঙ্কুল, ধয়, ঘন্টা, ধয়য়, গলা, আদর্শ ও মূলার অথবা চণ্ডীর দশবাহ, তাঁহার অধোভাগে হিরম্জা পভিত মহিব। ক্রোধভরে হন্তে অজ্ব শেভিত। ক্র মহিবের গ্রীবা• হইতে এক পুরুব উত্ত হইমাছে, তাহার হন্তে শৃল, মুথে রক্ত বমি হইতেছে এবং তাহার কেশ, মাল্য ও লোচনমুগল রক্তবর্ণ, গলদেশ পাশবধ্ব এবং ক্র পুরুব সিংহ কর্ত্ক আক্রান্ত। চণ্ডীর দক্ষিণ চরণ সিংহের ক্রেরে এবং বামচরণ অস্থ্রের পৃষ্ঠদেশে বিস্তন্ত। ইনি ত্রিনেত্রা ও সশস্ত্রা।

চণ্ডীর আর এক প্রকার মূর্ত্তি আছে, ইহাতে, অটানশ বাহ, তন্মধ্যে দক্ষিণ করসমূহে মুও, খেটক, আদর্শ, তর্জনী; চাপ, ধ্বজ, ভমক ও পাল এবং বামহত্তসমূহে লাজ, মুদগর, শুল, বজ, ওড়া, অঙ্গ, শর, চক্র ও শলাকা। অবঁশিট মূর্ত্তির বোড়ল বাহ। কলচ্ডাদি নর মূর্ত্তির হতে ভমক ও তর্জনী ভিন্ন উলিখিত সমত 'অন্নই বিরাজমান। কলচ্ডা, প্রচার, চড়োগ্রা, চড়নারিকা, চড়া, চড়বতী, চড়বুগা, অই সকলের বর্ণ বথাক্রমে রোচনাত, অক্লণ, অসিত, নীল, গুক্ত, গ্রু, পীত ও খেত। ইহারা সকলেই সিংহের উপর আর্থেছণ করিলা মুটিবারা মহিব ও

ভাষার প্রীবাসন্থক শক্তশালী পুরুবের কচ প্রহণ করিয়া বিয়াল করিতেছেন। ইহাদিগের নাম নবছর্গা। ললিভার বামহত্তে কর ও মত্তক এবং দক্ষিণ করে দর্পণ। লুক্রীর দক্ষিণকরে পল এবং বামহত্তে শ্রীফল। সরস্থতীর হুতে পৃত্তক, অক্ষমালা ও বীণা। আফ্রবীর হুতে কুন্ত ও পল্ল, বর্ণ খেত এবং ভাষার আসন মকর। তুমুক্র ভক্রবর্ণ এবং শূল ও বীণা হুতে মাডার পুরোভাগে বুবে আরেছ। গৌরী চতুর্দ্ধ্বী, ব্রন্ধচারিশী ও অক্ষমালা হুতে বিরাজমানা। শালরী খেতবর্ণা ও হংসগামিনী, ইহার বামহত্তে কুত্ত ও অক্ষপাত্র এবং দক্ষিণহুত্তে শর ও চাণ। কৌমারী হিত্রা, রক্ষবর্ণা, শক্তিহত্তা ও শিধিপৃষ্ঠে আসীনা। বারাহী দত্ত, শন্ধ, অসি ও গদা হুতে মহিষ পৃষ্ঠে অধিরুৱা, উহার বামহত্তে চক্র এবং পার্থে গদাপ্রধারিশী লক্ষ্মী বিরাজমানা। ইন্ত্রাণী সহত্রলোচনা ও বামহত্তে বস্তুধারিশী।

চামুণ্ডার তিনয়ন কোটয়ে মথ, দেহে মাংস নাই, অহি
চর্মসার, কেশ সকল উর্জ্ব, উদর ক্লশ, পরিধান বীপিচর্ম,
বামহন্তি কপাল ও পট্টিশ, দক্ষিণহত্তে শূল ও কর্ত্তরী, অহি
ভূষণ ও শব আসন। যক্ষিণীদিগের লোচন তার ও দীর্ঘ,
শাকিনীদের দৃষ্টি বক্র এবং অপরাদের নয়ন পিললবর্ণ ও
শরীর সৌন্দর্য্যে পূর্ণ। বারপাল নন্দীধর ক্ষেক্মালা ও
ক্রিশ্লহত্ত। (অয়িপ্ ৮৮ অ)

দেব প্রতিমা সকল নগরাভিমুখে স্থাপন করিবে, পরাঅ্থি স্থাপন করিবে না। পূর্বনিকে ইন্তের, অ্থিকোণে
অগ্রির, দক্ষিণনিকে মাতৃকাগণের, তৃতসমূহের, যুম ও চণ্ডিকার,
নৈথাতে পিতৃদেবতাদিগের, বাহুণে বরুণাদির, বায়ব্যে বায়্
ও নাগের, সৌম্যে যক্ষ ও ওছোর, ঈশানে চণ্ডীখর ও মহাদেবের এবং সকল দিকে বিফুর ও মধাভাগে ব্রহ্মার, মন্দির
প্রতিষ্ঠা করিবে। বিশেষ সাবধান হুইয়া দেবালয় প্রতিষ্ঠা
করিত্তে হয়। পরে তাহাতে দেবপ্রতিমা স্থাপন করিবে।

(অগ্নিপু ৮৮ অ )

অগ্নিপ্রাণে অনেক দেবপ্রতিমার লক্ষণ নিধিত হইরাছে, বাছলাবোধে সকল লিখিত হইল না। হেমাজির ব্রতথপ্তে, বিফুধর্মোন্তরে ও হর্ধনীর্য পঞ্চমাত্রে অনেক দেবতার মূর্ত্তি লক্ষণ লিখিত হইরাছে, এইছলে সমন্ত লক্ষণ না লিখিরা কেবল মাত্র সেই দেবতার নাম প্রদত্ত হইল। গণেশ, সরস্বতী ( মূর্ত্তি চত্ত্র্ত্তা ও স্ব্রাভরণবিভ্বিতা, ইহার দক্ষিণ হস্তেপুত্তক ও অক্মালা, হস্তে বীণা ও ক্মগুলু), লক্ষ্মী, মহালন্ধী, ভদ্রকানী, চিঙিক্লা, ছ্গা, নন্দা, অহা, স্ব্রভি, মল্লা, কালরাত্রি, লিলিতা, জ্যোচা, গৌরী, ভ্তমাতা, স্ব্রভি,

त्यार्गनिखा, माञ्गन, बाक्षी, मार्ट्यहै, क्रीभाही, देवस्वी, वातारी, खेखी, ठामूछा, नानीमूथ माजृशन, ८ हगीती, शचा, नृती, त्यथा, नाविजी, विसन्ना, सन्ना, त्वयां, चारा, चथा, वृत्ति, शृष्टि, षृष्टि, ष्राञ्चत्वता, क्नात्वता, • ृहेशाता नाम्नीमूथ माज्यन,) नवक्षां, वामा, (खाष्टां, दबोली, काली, कलविकेर्निका, वनविकर्विका, बन धमधनो, मर्सक्कममनी, मरनामनी, इस्था, উমা, পাৰ্বভী, মহাকালী, বাৰুণী, চামুণ্ডা, শিবদ্তী, কাত্যা-त्रनी, व्यक्षिना, त्याराचत्री, देखत्रती, त्रञ्चा, निता, कीर्छ, निष्क, सिंह, क्यां, देवस्वी, केट्टी, यामां, मीशि, त्रकि, त्रका, खलां, भक्ता, क्या, विक्या, कांगी, चणीकर्ग, क्यली, निष्ठि, अपन-क्रजी, व्यवताखिना, दकोमात्री, ह्यू:यष्टि त्यानिनो, मश्रेमीनिकात्र মতে যোগিনীগণের নাম—অক্ষোড্যা, ঋকপণী, রাক্ষনী, ক্ষপণা, क्या, शिक्षाकी, श्रक्या, त्क्या, ताना, नीना, नवा, ताना, नवा, लरकचंत्री, नामना, विभना, एडामना, विभानाकी, एकात्रा, वख्या-प्री, शहादवा, महाज्तृता, त्काधना, खन्नानना, नर्खखा, खन्ना, তারা, कृषा, रमानना, जनमःशारी, भवता, তালুकिह्तिका, त्रकाकी, स्थितिका, विद्याब्किस्ता, कत्रकिनी, स्थिनाना, ध्यह-(७) छा, कांगक्षी, ठळावनी, ठळाशंत्रा, वत्रश्राम, व्यविका, व्यनप्रासा, निक्वक्ता, निभागों, निभिजामप्रा, त्नानूना, समनी, তপনী, বাঘনী, বিক্বতাননা, বাষ্বেগা, বৃহৎকুকি, বিক্বতা, विश्वक्रिका, यमिक्स्वा, क्याखी, द्वा, यमाखिका, विद्यानी, রেবতী, পৃতনা ও বিজয়স্তিকা এই ৬৪ জন চতু:ষ্টিযোগিনী)।

আদিত্যপ্রাণে এই সকল দেবমূর্ত্তির উল্লেখ পাওয়া यात्र-- बक्ता, श्रकां पिछ, लाकपान, विश्वकर्त्या, धर्म, श्रार्थन, नामर्वन, येंक्र्दर्रन, व्यथर्वर्रन, भिका, कहा, व्याकतन, নিকক, ছল, জ্যোতিষ, মীমাংসা, ভাষ, ধর্মপুল্ল, পুরাণ, ইতিহাস, ধর্মেদ, আয়ুর্মেদ, নৃত্যশাস্ত্র, পঞ্চরাত্র, পাশুপত, পাতঞ্জল, मान्धा, अर्थभाञ्च, नांत्रम भूनि, एक, जिल्हा, विक्रू, লোকপাল বিষ্ণু, বাহ্নদেব, সন্ধর্ণ, প্রহায়, অনিরুদ্ধ, লক্ষ্মী-नातायन, त्याल्यत, रूप, मल्छ, कूर्य, वतार, नत्रशिरह, वामन, তিবিক্রম, পরভারাম, রাম প্রভৃতি, ক্রফ, বুলভঁড়া, প্রভায়, কাম, अनिक्क, गाँव, (नवकी, यर्गाना, (शाशान, त्क, कक्षित नद-नावायन, इति, इत्रधीय, किनन, वात्रात्र, वात्रीकि, निष्ठा-তের, ধ্বস্তরি, জলশামী, গরুড়, রুজ, মূর্ত্যপ্তক, অর্ধনারীখর, দক্ষিণামূর্ত্তি, উমামহেখর, হরিহর, বিভেখর, ক্রডভেদ, একপাদ, অহিব্রি, বিরূপাক্ষ, ব্রৈবত, হর, বছরূপ, ত্রাম্বক, স্থারেশ্বর, लग्रस, ज्ञानिक, इन, टेब्यून, महाकान, जन्मि, चीत्रक्रम, ছর, বস্থু, জব, সাপ, অমিল, অমল, প্রত্যুষ, প্রভাস, দাদশা-দিত্য, ধাতু, মিত্র, অর্থামা, কৃত্র, বরুণ, স্থা, ভগ, বিবৈশ্বান্,

श्र्वा, रुवी, पृष्ठी, विक्रू, ४० मङ्गर, ८इवस, यक त्राक्रमानि, शक्त वास्वि, जनकाति, शिक्षृंग, विश्वत्व नकन, मश नमूज, ৰীপাদি দিক্পতি, অধি, যম, বৰুণ, ৰায়ু, ধনদ, আকৃাশ, _{পৰ,} নবগ্রহ, তিথি, নক্ষত্র, যোগ, করণ, রাশি, কাল, মুহুর্ন, _{শিত, ত} अनुन, वार्याखि, नाविख, देवताल, गसर्व, चुलिखिल, तोहि-ণেয়, ৰল, বিজয়, সন্তম, বকণ, হুভগ, বিক্রম, বুষ, চিত্রভান, खर्णाञ्, छात्रण, ष्यवास, गर्खिक्ष, देनस्, मनाथ, दश्मनम्, विनन् বিকারী; প্লব প্রভৃতি বহুতর দেবভার উল্লেখ আছে। এ রকল দেবপ্রতিমা ষ্ণাবিধানে প্রতিষ্ঠিত করিলে ধর্ম অর্থ প্রভৃতি লাভ হয়। [প্রতিমালকণ তত্তৎ শকে দ্বর্থনা । **দেবতাপ্রতিষ্ঠা** (স্ত্রী) দেবতানাং প্রতিষ্ঠা ৬তং। দেবতা-দিগের প্রতিষ্ঠা, বিধানপূর্বক দেবপ্রতিমাতে দেবগণের সায়িখ্য-সম্পাদুক কার্যাভেদ। দেবজীদিগের প্রতিষ্ঠাবিধি অফুদারে প্রতিষ্ঠা করিলে দেবপ্রতিমার দেবত্ব ক্ষয়ে। দেব-প্রতিমার প্রতিষ্ঠানী করিয়া প্রাদি করা যায় না, প্রথমে দেবসূর্ত্তি নির্মাণ করিয়া পরে যথাবিধি প্রতিষ্ঠ। করিতে হইবে।

"সৌবলী রাজতী বাপি তান্ত্রী রত্মন্ত্রী তথা।

শৈলদার্ক্ষনন্ত্রী বাপি লোহশন্ত্রমন্ত্রী তথা।
বীতিকা ধাতৃ্যুক্তা চ তান্ত্রকাংশুমন্ত্রী তথা।
শুভদার্ক্ষনন্ত্রী বাপি দেবতার্চা প্রশন্তরে। (প্রতিষ্ঠাতর)
স্থবর্ণ, রজত, তান্ত্র, রত্ম, পাষাণ, দারু, লোহ, শন্ত্র,
রীতিকা, তান্ত্র ও কংশু দারা প্রতিমা নির্মাণ করিয়।
প্রতিষ্ঠা করিতে হইবে। এই সকল প্রতিমা প্রাসাদে প্রতিষ্ঠা
করিলে অধিক শুভ হুয়। প্রতিমাতে দেবত্ব করিত
না হইলে সাধকদিগের উপাসনার ব্যাঘাত হয়, এই জয়
চৈতগুলর্ব্নপ, অধিতীয়, অশ্রীরী ব্রহ্মের উপাসকদিগের

"চিন্ময়ভাদিতীরভ নিজনন্তাশরীরিণঃ। উপাসকানাং কার্যার্থং ব্রন্ধণো রূপকরনা॥" 'ক্রপকরন্থ রূপস্থানাং দেবতানাং পুংস্ত্যংশাদি করনা।' (দেবপ্রতিষ্ঠাত্র)

কার্যোর নিমিত্ত কপ কল্লিত হইয়া থাকে।

স্বৰ্ণ প্ৰতিমা প্ৰতিষ্ঠা করিলে মুক্তিলাভ এবং তেলে।
নিৰ্দাত দক্ষিনিৰ্দাত এবং রৈতিকী প্ৰতিমা প্ৰতিষ্ঠা করিলে,
শুভ হয়। দেবপ্ৰতিমার জায় শালগ্ৰামাদি শিলা, শিবলিঙ্গাদিও প্ৰতিষ্ঠা করিতে হয়। ক্যোতিবীক দিনে এবং
কালগুদ্ধিতে প্ৰতিষ্ঠা করিবে। মলমাসাদি অভ্যাকশিল
প্ৰতিষ্ঠা হয় না। প্ৰতিষ্ঠা দেখ।

দৈবতাময় ( ত্রি ) দেবতাত্মকং দেবতা মরট । ১ দেবতাত্মক। দেবতাত্মরপ এ জিরাং ভীপা। হি হিরণাগর্ভরণ দেবতাতের। "যা প্রাণেন সম্ভবতাদিতিদেবতামন্ত্রী গুহাং প্রবিশ্ব তিঠন্ত্রী যা ভূতেভিবাজায়ত ॥"*(কঠোপনি॰ ৪।৭)

'ঘা দেবতাময়ী সর্বাদেবতাত্মিকা প্রাণেন হিরণ্যগর্ভরূপেণ পরস্মাৎ ব্রহ্মণঃ সম্ভবেতি' (ভাষ্য)

বেবতায়তন (ক্লী) দেবতানাং আয়তনং ৬তং। দেবপৃহ।

• "সীমাসন্ধিষ্ কাব্যানি দেৱতায়তনানি চ।" (শ্মন্থ)

সীমার সন্ধিন্ধনে দেবগৃহ প্রত্ত করিতে হর।

(भर्जालग्न (श्रः) त्वरकानाः चानग्नः ७७९। (मैर्गुह। (भर्जाद्वन्यान् (ज़्रो) त्वर्जानाः (रुच ७७९। त्वर्ग्ह, त्वराणग्र।

দেবতিথি (পুং) পুরুবংশীয় জ্ঞোধনের পুত্র নূপভেদ।
(ভারত ১৯৫ জং)

'দেবাতিথি' এই পাঠই প্রায় অধিকাংশ, পুততে দেখা যায়, 'দেবতিথি' এই পাঠ অল পুততেই আছে।

দেবতীর্থ (ক্রী) > পবিত তীর্থভেদ। ২ দেবপুকার উপযুক্ত সময়। ৩ অঙ্গুলির অগ্রভাগ, দেবপুকার উপযোগী হতের অংশ।

দেবত্ত ( ত্রি ) দেবতা কর্তৃক দত্ত।

দেবত্য ('ত্রি ) দেব সশ্বনীয়।

দেবত্যা (ত্রি) পশুভেদ। (বেদ)

দেবত্রা ( অব্য ) দেবার দেরং করোতি সম্পন্ততে দেরে আচ্।

> করণাদি বিষয়ে দেবতাকে দের। ২ দেবতাধীন। দেরং বন্দে
দেবে রমে বা দ্বিতীরাস্তাৎ সপ্তমান্তাৎ ন দেবশস্বাৎ ত্রা। ৩
বন্দনাদি কুর্দ্মকুল দেবতা। ৪ রমণ্বিষয় দেবতা। ৫ দেবদিগের প্রতি এই অর্থ। "দেবত্রা যন্তমবদে" (শুক্লযন্ত্র্যু: ৬।২০)
"দেবান্ প্রতি যন্তং গচ্ছস্তং।" (বেদদীপ) ( ত্রি) দেবান্
ত্রায়তে ত্রা ক। ৬ দেবতারক্ষক। "দেবত্রৰ দ্বিতা প্রপরতি
বর্ষিঠেইধিনাক ইতি দেবত্রো এতদাহ "(শতপথরা ১।২।২।১৪)
দেবত্রাত, আখলায়ন প্রোভস্ত্রের এক্ষন ভাষ্যকার। নির্ণরদিক্ষ ও সংস্কারকোন্তক্তে এই ভাষ্য উক্ত হইয়াছে।

দেবজ্ (ক্লী) দেবজ্ঞ ভাবঃ ভারে জ! দেবতার ভাব, দেব-তার ধর্ম, দেবদাযুক্তা, দেবভূয়।

পেবদন্তা (ত্ত্ৰী) দেখাৎ মেঘাৎ দণ্ডো যস্তাঃ। নাগবলা। (রাজনিং)

দেবদত্ত (পৃং) দেবা এনং দেয়ান্ত্রিতি সংজ্ঞায়াং (ভিচ্
জৌ চ সংজ্ঞায়াং। পা ৩৩০১৭৪) সংজ্ঞা শল-প্রতিপাদ্য
নরভেদ, যে হলে নামাদি জ্ঞাত হওয়া বার না, সেই হলে
দেবদত্ত এই শল প্রয়োগ হইয়া বাকে, যথা দেবদৃত প্রস্তত
ক্রিতেছে ইত্যাদি।

"বান্ধণাংশ্য ৰধা নাস্তি কশ্চিৎ বান্ধণক্ষলে। দেবদভাদয়ো বাক্যে তথৈব স্থানিরথকাঃ॥"

त्रिक्ष बाक्रण कवरन बाक्रणार्थ नाहे, त्महेक्रण त्मवमखानि
 वांका निवर्षक व्यक्षिः हेहाब त्कान व्यर्थ नाहे। ( बि ) त्मरवन
 पछः ०७९। २ त्मवजा केर्क् मेल, त्मवनक। ० तमवजातक
 वांहा व्यक्ष हेहेबाहि। ८ व्यक्कित्व व्यक्ष नाम त्मवन्छ।
 "পाक्षवक्षः क्रवीत्कणः तम्मवन्छः सम्बद्धः।" ( विंडा )

ৎ দেহখিত ভৃত্তনকর ৰাষ্ভেদ।

"বিজ্ঞানে দেবদন্তঃ গুৰুফটিকসন্নিতঃ।" (সারদাটী রাহব) দেবার দত্তং। ও দেবার্থ উৎস্ট গ্রামাদি।

দেবদক্ত, > কৈনমতে কর্ষোর এক পুত্র। (জৈনহরিবংশ ১৭।৩•)

২ একজন বিখ্যাত জ্যাতির্বিদ্। ইনি সংস্কৃতভাষার গ্রহণাঘরপ্রকাশ রচনা করেন।

৩ শৃক্ষাররস্বিলাস নামে অল্ফার-গ্রন্থভা।

৪ শুর্জয়বাসী হরির পুতা। ইনি ধাতুরড়য়ালা নামে সংস্কৃত নৈদাক গ্রন্থ রচনা করেন।

দেবদ্ত্ত, শাক্যবংশীর একজন রাজকুমার। ওজোদনের ভাতৃশ্তা। বেরূপ ছর্ব্যোধন যুধিষ্টিরাদির শত্রু, দেবদন্ত শাক্যবুদ্ধেরও দেইরপ বোর জ্ঞাতিশক্র ছিলেন। যে বৈ বৌদ্ধ প্রাক্ত বৃদ্ধ শাকাসিংহের বিবরণ আছে, সেই সেই গ্রন্থের কতক কতক পরিচয় পাওয়া যায়: বুদ্ধের সহিত বাল্যকাল হইভেই একত্র লালিত পালিত रहेरलक राज्यः वीर्या 'विश्वाव् कि नर्वविषयः भाकानिः रहत উন্নতি দর্শনে দেবদুত্ত অতিশয় মর্মাপীড়িত হইতেন। প্রাথমে रमवनल यद्भाधनाटक विवाह कतिवात है छ। कतन, किन्न যশোধরা তাঁহাকে উপেক্ষা করিয়া সিদ্ধার্থের অঙ্কলন্দ্রী হদ, ভাছাতে দেবদত্ত আরও মর্মপীড়িও ও ভাছাদের অনিষ্ট কুরিবার জন্ম বিশেষ চেষ্টিত হন। কিনে বুদ্ধের অনিষ্ট করিবেন, দর্বদাই তাহার স্থবোগ পুঁলিতেন। 🗠 মগধরাজ বিভিসারের পুত্র অভাতশক্ত দেবদভের প্রম বদু ছিবেন। কর্ত্রমাবদানে লিখিত আছে, অঞ্চাতশক্ত তাঁহার বৃদ্দেবদভের প্ররোচনার আপন পিতা বিষিদারের প্রাণসংহার করেন। অবদানশতকে লিখিত আছে, যুগন त्क स्माज्यत्म व्यवस्थान क्रिएकिस्त्रन, पृत् ख त्मत्रमञ्ज बङ् সংখ্যক ঘাতককে তাঁহার প্রাণসংহার করিতে পাঠান। কিন্তু তাহারা কিছুই ক্রিতে পারিল না। দেবদত্ত ও অজাতশক্ত উভয়ে মিলিরা বৃদ্ধ-মতের বিরুদ্ধে 'গ্রন্থও প্রকাশ করিরা हिलान। ভज्रकतावनात्न निषिष्ठ आह्न, निहार्थ সংসার ভ্যাগ করিলে তাঁহার প্রিরতমা ভার্য্যা যশোধরাকে পাইবার

জন্ত দেবতত অনেক প্রলোভন দেখান, কিন্তু তাহার বাসনা পূর্ণ না হওয়ার যশোধরার প্রাণসংহারের চেটা করেন।

वाहा इष्ठक निकार्षत्र विकार निकार निकार निकार विकार निकार न

ক্রমনেশীর বৌদ্ধেরা দেবদন্তকেই যীওপৃষ্ট বলিরা মনে করে। আবার ভামবাদিগণের বিশ্বাস দেবদন্ত মুরোপের এক দেবতা।

পেবদত্তক (পুং) দেবদত্তো মুখ্য এষাং ইতি কন্। দেবদত্ত প্রধানক, এই দেবদত্তক শব্দ বছবচনাত্ত।

দেবদত্তাগ্ৰজ (পুং) দেবদত্তত অগ্ৰজ:। শাক্য বুদ্ধ।

দেবদর্শ (জি) দেবং পশ্রতি দৃশ-অণ্। ১ দেবতাদর্শক, মাহারা দেবতাকে দেধে। (পুং) ২ ঋষিতেদ।

. দেবদর্শনি (অি) দেবং পশুতি দৃশ-ধুল্। > দেবদর্শক।
(পুং)২ ঋবিভেদ। (ক্রী)৩ দেবতাদিগের দর্শন।

(मयमर्गिन् ( प्रः ) त्वरमर्गनत्थाकः व्यभित्रत्व हेि त्वर-मर्गक्षिन । त्वरमर्ग व्यवित्थाकः गांज घाहाता व्यवज्ञन करत । त्वरमानी (जी ) तेवश त्यांथत्व कात्य गांव । त्वरक्षव मानः कृषिर्यक्षाः शोवां विवाद होव्। त्यांवर्षक्षि, हिल्लाया।

(नयमां त्र (क्री) (मरानाः नाक (उदाः श्रिक्षाँ । द्रक्रवित्मदः भर्गात्र--गळणीन्श्न, भाविष्णक्रक, ष्रम्नाक्र, क्रिकेनिम, श्रीषृष्ठाक्र, नाक्र, शृष्टिकिष्ठे, ख्वनाक्र, माक्रक, श्रिक्षनाक्र, ष्रमत्रमाक्र, माख्य, ज्रुष्ठशिव, ख्वनाक्र, ष्रक्रवर, हेखनाक्र, मखनाक्र, ख्व

ज्यह, स्वीह, (प्रवक्षि ( त्रज्ञमाना )।'

क (प्रत्म (प्रवक्षि त्रज्ञमाना )।'

क (प्रतम (प्रवक्षि त्रज्ञमाना हिन्नी उक्षित्, द्वावि त्र व्यावि त्यावि त्र व्यावि त्यावि त्याव

উত্তর ভারতে সর্বাজই এই বৃক্ষ জায়ে। এই গাছ খুব

উচ্চ হয়। হিমালর প্রাদেশেই বড় বড় দেবদার গাছ দেখা যার, এই সকল গাছ এক একটা একণত দেড়েশত বংসরের হইবে। ঐরপ এক একটা গাছের ভাড়ি চারি লাঁচ হাত পর্যস্ত মোটা হয় ৮

ি দেবদার কাঠের মাঝা অর পীতাত, গন্ধবৃক্ত ও কঠিন। এই কাঠ বহুকালছায়ী হয়। ইহাতে নানাপ্রকার স্লান-বাব, তক্তা ও সেতুপ্রভৃতি প্রস্তুত হয়। কন্ধি দেবদার হাগমেবাদির প্রিয় থানা।

শেবদারুগাছ হইতে এক প্রকার আল্কাডরা ও তৈনবং নির্ব্যাস বাহির হর। পঞ্জাবে তৈলকে 'কেলোন-কা-তেন' বিলে। পঞ্জাবে এইরূপে উক্ত আল্কাডরা ও তৈল প্রস্তুত ইইরা থাকে।

প্রথমে • চারিদের ধরিতে পারে এরপ একটা কল্মী পর্ত্তের মধ্যে রাপ্নিয়া ভাতার উপর ১২ সের ধরিতে পারে এরণ আর একটা বড় কলসী তলদেশে তিন্টী ফুটা বরিরা প্রথম কল্সীর মুখের উপর চাপাইরা দেয়। এই কল্মীর ভিতর কতকগুলি টুক্রা টুক্রা দেবদারুর ভাল রাথে এবং সেই দিতীয় কলসীর মুধে আর একটা ছোট জলপাত্ত মুধামুধী চাপাইরা উপরে ভাল করিরা কাদা দিরা তিনট মুধ্ই বছ করিতে হয়। পরে ভাষার চারিপাশে ৪ ঘণ্টা হইতে ৮ ঘণ্টা পর্যান্ত অন্ন আন আল দিতে থাকে। সেই উভাগে বড় কলদীর মধাত্ত ভাল হইতে চট্চটে আঁটা বাহির হইয়া তাহার তিনটা ছিজ দিলা নিম কলসীতে আসির৷ জনা হইতে থাকে। পরে তাহা বাহির করিয়া পূর্ববং বড় ক্লসীতে সেই আল্কাতরাবং আটা রাখিয়া পূর্ববং তিন্টী, কল্মী একল कतिया भरत ज्यान रमञ्जा हम। ज्यांठी वाहित कतिया कामीरङ দিবার সমর বাহাতে কোন রক্ষে ভিতরে মটি না পড়ে, তৎপ্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাধা হয়, এইরূপে ক্একবার পাতান্তর ক্রাও আবাল দেওরা হয়। এইরূপ ১ সের কাঠে প্রার ছই ছটাক আটা ও ৪ ছটাক কয়লা হয়। আবার কাঠ চোঁগাইগ লইলে তার্পিণ তৈলের মৃত কৃষ্ণবর্ণ তৈল পাওয়া ^{যার।} मानि चूं।, विवरकांड़ा, व्याड़ात्र शांठड़ा ও शवांतिह शांहर তলার কত হইলে এই তৈল প্ররোঞ্জ বিশেষ উপকার হা। **टमनमाज्ञत किलाजा नाणिका व्यटनश मिटन नित्रभी**फा जानहरू। বৈস্তক মতৈ, ইহার গুণ-ভিক্ত, ক্লফ, ক্লেয়া, বায়ু ও ভূচ দোষনাশক। (রাজনি°) লিখ, উঞ্চ, কটুণাক, ^{হিবর,} আগান, শোধ, হিকা, • অব, প্রমেষ্, পীনস, সেমা, গান, কাস, কণ্ড বায়ুনাপীত্ব। (ভাবপ্র°) ইহার বেণ্নগণ कांखि श्रीम, जामाताम, विवक, जर्न, आमर ७ वदनानन

দেবলাক্ষবন, একটা পুণাখান। সহাজিখও, নৃসিংহপুরাণ ও ত্রুলাওপুরাণে ইহার বর্ণনা আছে।

দেবদাঠাদি ( পং ) ভাবপ্রকাশোক্ত কাথোষধি ভেদ, প্রস্তত প্রণালী—দেবদাক, বচু, কুড, পিপ্পলী, ভঙ্গী, চিরাতা, কট্-ফল, মুখা, কট্কী, ধনিয়া, হরীতকী, গলপিপ্পলী, হরালভা, গোকুর, বহুভী, আতইচ্. গুলঞ, কাকড়াশূলী ও কুক্ষলীরা, এই সকল সমভাগে গ্রহণ কল্লিয়া অইমাংশ অবলিপ্ত কাথ করিতে হইবে, পরে সৈদ্ধর ও হিন্দু প্রকেপ দিবে। ইহা প্রস্তা নারীকে পান কুরাইলে জ্বর, খাস, মৃহ্ছ্র্য, কম্প, দিরুপীড়া, প্রলাপ, পিপানা, দাহ, তল্লা, অতীসার এবং বমি প্রভৃতি, বায়ু, পিত্ত ও ক্ষজনিত স্ক্রিকার স্বভিকারোগ নই হয়। (ভাবপ্রণ)

দেবদালিকা (ত্রী) দেবদালীৰ কায়তি কৈ-ক টাপ্ পূর্ব-হুম্ম: মহাকাল বুক্ষ।

দেবদালী (জী) দেবেন মেখোদয়েনু দালো দলনং যন্তাঃ
গৌরাদিখাও উষ্। লভাবিলেষ, হিন্দীতে অবরবেল ও সোনেরা
বলে। পর্যায়—জীমৃতুর্ক, কন্টফলা, গরা, গরী, বেণী, মহাকোষফলা, ক্টফলা, খোরা, কদমী, বিষহরা, কর্কটী, সারমৃষিকা, বৃস্ককোষা, আখুবিষহা, দালী, রোমশণত্রিকা, ক্রদিকা,, হৃত্কারী, দেবুভাড়। ইহার গুণ—ভিক্ত,উষ্ণ, কটু, পাপু,
কফ, ছ্র্নাম, খাস, কাস, কামলা ও ভূতনাশক। (রাজনিং)
দেবদাস (পুং) দেবানাং দাসঃ ওতং। > দেবভাদিগের দাস।
২ দেবদাস প্রকাশ নামক বৃহৎ স্থৃতিনিবদ্ধকার।

দেবদ†সী (জী) দেবং ইজিলেঃ দাস্মোতি হস্তীতি দেব-দাস-অণ্গৌরাদিছাৎ ভীষ্। বনবীজশুরক রুক্ষ । (রাজনিং)

দেবীয় ক্রীড়ারৈ দাসীব। ২ বেখা। দেৱানাং দাসী। ৩ দেবতাদিগের পরিচারিকা।

পূর্ককালে মিনুর, গ্রীস, আসিরীয়া, ফিনিসীয়া প্রাভৃতি
নানা স্থানে দেবালয়ে এই রূপ-বিস্তর দেবনর্ত্তকী ছিল। বেশী
দিনের কথা নর, এসিয়ার পশ্চিমাংশে এবঙ গ্রীসের বীণাস্
পেবীর মন্দিরে জ্বানেক দেবদাসী দেগা যাইত। বেখার্ডিং
ও দেবতার মহিমা গান করাই তাহাদের কার্যা ছিল।
এক সমরে আম্পেণিয়ায় এই নিয়ম ছিল যে উচ্চবংশীর

সকল লোকের ক্ষাগণ বিবাহের পুর্ব্বে জনাইন্ডিস্ (জনাইন্ডিস) দেবীর সেবার নিযুক্ত হইত। এ সমর তাহারা জনেক জসদাচরণ করিলেও বিবাহের পর কেহ জার নিন্দা করিও না'। বাবিলনে কোন রম্পীই মিলিঝা (Mylitta) দেবের মন্দিরে একবার জাল্লমর্মপণ না করিরা জার জব্যাহতি পাইত না ৮ বিবাহের পর জার দেবমন্দিরে তাহাদের প্রয়োজন হইত না। বাইবেলের এক্রোজাস্ প্রস্থেও লিখিত জাছে— জারণ-নির্দ্ধিত গোরৎসরপ দেবের সম্মুথে ইস্রাইলের সন্তানগণ নৃত্য করিত। (Exodus)

मांकिगांट्या टिक्नने १९ ८ बनात शांत्न शांत्न खब्दवां प्रमिट्शंद মধ্যে এক অপূর্ব্ব নিয়ম প্রচলিত আছে। প্রত্যেক গৃহস্থ स्वार्षक्ञारक अञ्चल इहेवांत्र शृद्ध त्ववानत्त्र श्रामन करत् । এখানে একজন ওস্তাল্ ভাহাদিগকে নুভ্য গীত শিক্ষা দেয়। তৈলকে এই সকল ফুমারী 'বলবা' এবং মহারাষ্ট্রে 'মুরলী' नाम व्याचाा । वनवान श्रामान । भिरवत (नवात्र कीवन অতিবাহিত করে। ইহাদের মধ্যে যাহার। সচ্চরিত্র তাহারা আলীবন ত্রদ্ধচর্ঘ্য রক্ষা করে;---অপর অনেকেই দেবালয়ের পূজক বা কর্তৃপক্ষগণের ভোগ্যাহয়। ইহাদের মধ্যে কাহারও পড়েগার মহিত, আমাবার কাহারও দেবের সহিত বিবাহ হয়। থড়েগর সহিত বিবাহ-কাল্পে কঞা থড়েগর উপর এক ছড়ামালা দেয়, ভাটমকলখ়োক পাঠ করে; তাহার মাতা ধান দুর্কা দিয়া আশীর্কাদ করে। उथन इटेडि (म 'खितन्' वा कूमाती इहेगा कान मिलाइ নিযুক্ত হয়। কেছু যদি মানত করিয়া অতি অল বয়সেই क्ञारक (मवडांत्र উष्माम मच्छानांन कर्तु, এই क्रियारक দাক্ষিণাতো 'পেজ' বলে।

দেশদানীরা প্রথমে অতি প্রতাবে ছই দণ্ড রাত্রি থাকিতে
মন্দিরে গিয়া এ বেলা ছই ঘণ্টা এবং বৈকালে ছই ঘণ্টা
নৃতাগীত শিক্ষা করে। ছই চারি বুর্ব মুদ্ধৈই নৃত্য গীতে
পরিশক হয়। ইহাদের মধ্যে অনেকের বিখাদ যে স্বর্গে
দেবসভায় যেমন অপ্সরাগণ দেবনর্ত্তী, মর্ত্যে ইহারাও
সেইরূপ দেবালুরে দেবনর্ত্তী। ইহাদের ভুরণপোষণ অভ্যন্তির করিতই বুভি নির্দিষ্ট আছে। রাজা বা কোন বড়
লোকের বাড়া উৎসব উপলক্ষে আহুত হইয়াও অনেক রোজগার করে। ইহাদের প্রেরা মাতার সম্পত্তির উত্রাধিকারী
হয় না। কেবল ক্যাই উত্রাধিকারিনী। কাহারও ক্ন্যালি
না হলৈ অপরের ক্যা দত্তক লয় বা ক্যা জ্বার করিয়া
ভাহাকে লাখন পালন করে। ভবিষাতে সেও নৃত্য গীত
শিবিয়া দেবনর্ত্তী বলিয়া গণ্য হরী।

দেখনেবার অস্ত্র দেবনর্জকী নিযুক্ত করিবার প্রথা প্রীস প্রভৃতি পাশ্চাত্য দেশের ফ্রার ভারতবর্ধের বছদিন হইতে প্রচলিত আছে। সহস্রবর্ধের পূর্ববর্তী অনেক খোদিত দিপিতে মন্দির প্রতিষ্ঠা প্রসাদে দেবনুর্জকী প্রদানের কথা বর্ণিত আছে। এক সময়ে উত্তর ভারতেও এইরূপ আনেক দেবনর্জকী ছিল, এখন আরু সেরূপ নাই। প্রবাদ এইরূপ, এক সময়ে কামাখ্যার মন্দিরে প্রায় পাঁচ হাজার দেবনর্জকী ছিল। এখন দক্ষিণ ভারত ভিন্ন আর কোথাও দেবনর্জকীর আদের নাই। তথার দেবনর্জকীর বেশ সম্মান আছে।

(দেবদীপ (পং) দেবার্থ: দীপঃ। > দেবতার নিমিত্ত দীপ।
দেব: দীপ্রিণীলং দীপরতি প্রকাশরতি বৃদ্ধিত্বং করোতি দীপনিচ্-অণ্। ৢ২ লোচন, চক্ষ্।

Сদবস্থু ক্তি (পুং) দেবানাং গুন্দুভিরিব হর্ষ প্রদন্তাৎ। ১ রক্ত তুলসী। ২ দেবঢকা, দেবতাদিগের গুন্তি।

"দেবত্নস্ভয়ে। নেত্রনিত্তাপুসরোগণাঃ।" (ভ্রিপ্রয়োগ)

দেবদূত (পুং) > দেবগণের দৃত। অগ্নি।
দেবদূতী (স্ত্রী) দেবানিজ্ঞিয়াণি দ্যত্তে অবসাদয়ন্তীতি দৃ-জিচ্
ততো ভীষ্। > বনবীলপুরক কৃক্ষ। ২ অপ্রা, অর্গবিস্থাধরী।
দেবদেব ( ধ্রং) দেবেষু মধ্যে দীব্যতি দিব-অচ্। মহা-

° দেব, শিব। "অ্যাচিতারং নহি দেবদেবং

অদ্রি: স্থতাং গ্রাহয়িতুং শশাক ॥" ( কুমারসং )

২ ব্ৰুমা। ৩ বিষ্ণু।

"কারণং সর্বলোকানাং দেবদেবং অগৎ গুরুং"। বাস্থদেবং অগন্নাথং তপ্যমানং মহন্তপঃ ॥"(দেবীভাগ ১।৪।০৫) ৪ গণেশ।

Сलवरत्तर्वभा (पूरः) रलवश्यकातः रलवरत्वयः उर्द्धभाः । महारत्व । दलवरत्ताल (पूरः) रलदेवर्छहेरवा। रलालः। श्राजःकत्रीह्न रलारलाद्यव, अश्राकःकारत स्य रलालभूका हम्न, छाहारक रलव-रलाल करह । [रलाल रल्थ ।]

দেবঁছু রে (পু: ) ভরতবংশীর দেবাজিতের অপতা নৃপতেদ।

(ভাগ ং।১৫।৩)
(দবদোণী (স্ত্রী) দেবানাং দ্রোণী ৬তং। ১ দেবধাতা। ২ স্বয়স্ত্

লিমাদির অবসান গহবুর।

"দেবজোণীয়াং বিহারে চ কুপেমারতনেষু চ।

এবু গোষু বিপরাক্ত প্রায়শ্চিত্তং ন বিস্ততে॥" (সংবর্ত) •

'দেবজোণী স্বরস্থলিসান্তবন্ধানগহবরং।' (প্রায়শ্চিত্ততম্ব)

দেবজ্ঞে (ত্রি) দেবং অঞ্চিত পুন্ধতি অন্চ-কিন্টেরজ্ঞান্দেশ (বিষগ্দেবরোশ্চ টেরজ্ঞাঞ্ভাবপ্রতায়ে। পা ভাগু১২)।

১ দেবপুরক। গতার্থ অঞ্বাজু হইলে নকারের দোপ হইরা দেবজচ্ এই পদ হইবে, সেই ছলে দ্বেজচ্ শদ্ধে দেবসমীপগন্তা।

(দেবধন (ক্লী) দেবার্থং ধনং। ১ দেবভার উদ্দেশে উৎস্ঠ ধন। ২ দেবভামিকধন। •

দেববর ভাগবভাচার্য্য, কাশ্মীরবাসী, কবি মংশ্র সম্পান্ত্রিক একজন গৃহস্ত্ত-ভাষ্যকার।

দেবধান্ত (ক্লী) দেববোগ্যং ধান্তং। ধান্তবিশেষ, দেধান, জোরার হিন্দী ভাষা। পর্যায় নুষ্বনাল, যোনল, জুর্ছিন, পোণ্ডালা, বীৰপুলিকাণ

দেবধুপ (পুং) দেবানাং প্রিরো, ধৃপঃ। গুগ্রুল ।

দেবন্ (পুং) দিবং বাং অনি । পতির অমুলাভু ভাতা, দেবর।

দেবন (ক্নী) দিব-ভাবে লাট্। > ব্যবহার। ই জিনীলা।

ত ক্রীড়া। ক্রীব্যতি অম্মিন্ অধিকর্ণে লাট্। ৪ লীলোভান । দীব্যতানেন দিব-করণে লাট্। ৫ পক্ষ । ৬ পরিদেবন।
৭ ছাতি। ৮ স্থতি। ৯ কাস্তি। ১০ গতি। ১১ শোক।
১২ দাত।

"প্রকাশমেতৎ তাস্কর্য্যং যদেবন সমাহৃত্য্যৌ।

তয়োর্নিত্যং প্রতিঘাতে নৃপতির্মন্নান্ ভবেৎ ॥" (ময় ৯।২২২)
 (পুং) ১৩ পাশক।

(দবনদী (স্ত্রী) দেবানাং নদী ৬তং। গলা।

"স্লাতৃং গভান্ দেবনন্তাং হর্কাসঃ প্রভৃতীন্ মুনীন্।" (ভারত বনপ॰ ২৬২ অ॰)। ২ দেবধাত নদী মাত্র। সর্বতী ও দৃধ্যতী এই হুই দেবনদী।

"সরস্বতী দৃষ্ধতোঁ। रेनवनत्यार्थनस्वतः॥"

**Cদননিদ্দ্** (পুং) দেবং শক্তং নন্দয়তি নন্দি-ণিনি^দিই প্ৰ^{হার}-পাল।

(দেবনন্দী, একজন প্রসিদ্ধ জৈন বৈয়াকরণ। কোন কোন পট্টাবলীতে দেবনন্দীর নামান্তর যশঃকীর্ত্তি, যশোনন্দী, পূজা-পাদ, গুণনন্দী ও গুণাকর এই কয়েকটা নামান্তর দৃষ্ট হয়।

भैयमःकोर्हिर्यामानको स्वतनको महायिः।

**এ পুজাপাদাপরাঝ্যো গুণনুন্দী শুণাকর:** ॥"

করেন। আবার কাছারও মতে, পুদ্ধাপাদ ও দেবুনদী, স্বতর ব্যক্তি। পুজাপাদ ওলনেজ ব্যাকরণের মূল প্র ও দেবুনদী তাছার টীকা প্রেণয়ন করেন। এতহাতীত দেবনদী পঞ্চবস্তক' ত নামে সংস্কৃত ব্যাকরগ্রবিষয়ক একখনি সুন্দর গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন। শ্রুতকীর্ত্তি পঞ্বস্তাহর বিবরণ স্থালিত ব্যাধ্যাণ প্রকাশ করেন। দিগ্দর্দর্শন

সার নামক অর্জনাগণী ভাষার রচিত জৈনপ্রছের মতে পূজাপাদের শিক্ত বজনন্দী ৫২৬ স্থতে মধুরার ক্রাবিভূস্ক হাপন কলেন।

"সিরিপুংজ্জপাদসীদের দাবিভ্সক্ষকারগোবৃট্ধ।
পামেণ বজ্জপংদী পাহভ্কেনী মহাস্থো॥
পংচস্এছবীসে বিভ্যজারস্স্ মরণপত্তস্স।

*ধরিকণমহরাজালো দ্বিজ্সংখো মহামোহেব।।"

স্তরাং পূজাপীদ ৫২৬ সম্বতের পূর্ব্বে বিশ্বমান ছিলেন।

ফুতকীর্ত্তি ১০১৫ শকে জীবিত ছিলেন। যদি পূজাপাদ
, ও দেবনন্দী এম্ব ব্যক্তি হন, তাহাঁ হইলে আর কোন কথাই
নাই। নহিলে দেবনন্দী পূজাপাদ ও শ্রুতকীর্ত্তির মধ্যকালে
আবিত্তি হইরাছিলেন, তাহাতে সন্দেহ নাই।

লেবনজ্ব প্রাটি দেবটব শ্রেষ্ট্ডাৎ নল:। নলভেদ। পর্বাার—
দেবনাল, মহানল, বছা, মলোত্তম, স্থলনাল, ব্রুণদণ্ড, জ্রনাল,
ক্রেক্রম। ইহার গুণ অতি মধুর, বৃষ্ধ, দ্লীষৎ করায়, নলাপেক্রা
অধিকবীর্যা, ও রদকার্য্যে অতিশয় প্রশত্ত। (রাজনিং)

দেবনা (স্ত্রী) দিব ভাকে যুঁচ্টাপ্চ। ১ ক্রীড়া। ২ দেবা। দেবনাগর (পুং) লিপিভেদ। প্রকৃত নাম নাগর বা নাগরী।

এদেশীয় পণ্ডিভগণের মতেও 'নগরে ভবং' এইরূপে নাগর নাম হইয়াছে। কাশীত্ব কোন পণ্ডিত "দেবনগরে ভবং ইতি দেবনাগরম্' এইরূপ বাংপত্তি সাধিয়াছেন। এইরূপে কেহ নগরে বা যে কোন জনপদে এই অকর প্রচলিত ছিল বলিয়া हेरात "नागत" नाम रहेबाहर, प्याचात्र त्कर भूटर्स (पवटनाटक এই অক্স প্রচলিত ছিল বলিয়া ইছার "দেবনাগর" নাম হইয়াছে, এইরূপ কল্লনা করিয়া থাকেন। 'কিন্ত উপরোক্ত কোন মতেই সমীচীন বলিয়া বোধ হইল সা। কেবল "নগরে ভবং" এইক্লপ বৃাৎপত্তি সাধিলে যে কোন নগর हहेए नौगरतत छै० भक्ति कत्रना कता वाहे एउँ भारत, छाहाएछ অনিশ্চয়তা দোষ পড়ে। কোন এক নির্দিষ্ট অক্ষর দেখাইতে হইলে যে স্থান বা পাত হইতে উভাবিত হইল, সেই স্থান বা পাত্রবিশেষ নির্দেশ করা চাই। কিন্তু উক্ত মতপ্রকাশক-গণ কেহই বিশেষ স্থান বা পাত নির্দেশ করেন নাই। হুতরাং কেবল "নগরে ভবং" বলিলে নাগরাক্ষুরের উৎপুত্তি • নির্নীত হইতে পুরুর না। স্বর্গীর রাজা রাধাকান্ত দেব তাঁহার জগৰিখ্যাত শক্তরক্রমে নাগর শক্ষের এক অর্থ লিখিরাছেন, "নাগর দেশীয়াকরম্।" বর্তমান অধ্যাপক-দিগের নিকট শস্করজনের মত গৃহীত হর নাই। আমর यक मृत व्यमानवाद्यांग मध्येर कतिशाहि, जाराटक द्वांध स्त्र, नगत-नामक शान विरम्द धवः नीगत-नामक मच्छानात्र विरम्ब

কর্ত ক্লাবর্তিত বলিরা এই অকলের নাম নাগর হইরাছে।
বেমনু বুলদেশ হইতেই বালালী, বলভাবা ও বলাকরের
নামকরণ হইরাছে, নাগরের নামোৎপত্তিও সুইরূপ।
প্রার স্থাত্ত সাভ দত বর্ব পূর্বেবিখ্যাত পত্তিত শেমকুরু (১)
টোহার প্রাক্তচন্ত্রিকার এই কর্টী স্নোক উল্ভ করিরা
দেশভাবার পরিচর বিশ্বাহেন্ন

শনহারায় তথা করী শোরদেশ জ্মাগধী।

বাহলীকী মাগধীটে ব বড়েডা দাকিণাপ্তাকা: * ॥

ত্রাচথ্যে লাটবৈদ্র্জাবুপনাগরনাগরে।

বার্ক্রাবস্তাপাকালটাক্রমালবকৈ কয়া: ॥

গৌড়োডুদৈবপাশ্চাতাপা এটকী জলদৈহলা: ।

কালিল্যপ্রাচ্যকর্ণাট: কাঞ্চান্তাবিড়গৌজ্বা: ॥

আতীরো মধাদৈশীর হক্ষভেদব্যবহিতা; ।

সপ্রবিংশতাপক্রংশী বৈড়ালালি প্রতেদক্র ॥

সপ্রবিংশতাপক্রংশী বৈড়ালালি প্রতেদক্র ॥

মহারাষ্ট্রী, অবস্তী, শৌরসেনী, অর্জমাগধী, বাহ্লীকী ও মাগধী দাক্ষিণাত্য-দেশজাত এই ৬টা মুলভাষা। ঐ ৬টা হইছে আভীর, ব্রাচণ্ড (१), লাট, বৈদর্জ, উপনাগর, নাগর, বার্ক্সর, আবস্তা, পাঞ্চাল, টাক, মালব, কৈকর, গৌড়, দৈব, পংশ্চাত্য, পাণ্ডা, কৌস্কল, সৈংহল, কালিল, প্রাচ্য, কর্ণাট, কাঞ্চা, ভাবিড়, গৌর্জ্জর, আভীর, মধ্যদেশীয়, বিড়াল, এই ২৭টা পরস্পর অল্লবিস্তর প্রভেদামুসারে অপভ্রংশ ভাষা।

উক্ত বচন দারা স্পষ্টই জানা যাইতেছে, যেমন মহারাষ্ট্র,
শ্রদেন প্রাভৃতি স্থানের নামান্দ্র্যারে মহারাষ্ট্রী, শৌরদেনী,
মাগধী প্রভৃতি ভাষা প্রচলিত হয়, সেইরূপ পূর্বে নগর,
উপনগর, দেব প্রভৃতি জনপদের নামান্দ্র্যারে নাগর, উপনগের,
দৈব প্রভৃতি জন্মবেরও নামক্রণ হইয়াছে।

ভারতে নগরনামক জনপদ একটা নর। আমাদের এই বলদেশে বীরভূমের প্রাচীন রাজধানীর নামও নগর, তলোরে নগর নামে একটা প্রসিদ্ধ বন্দর আছে। মহিন্দ্রের একটা বিস্তার্গ বিভাগের নাম নগর, এই বিভাগে নগর নামে একটা ভারুক ও ভাহার মধ্যে নগর নামে গ্রামও আছে। পর্নাবের কাল ড়া জেলার ক্ষে বিপাশা ন্লুদীটোরেও নগর নামে একটা বিশ্রি সহর এবং নগরকোট নামে একটা প্রাচীন নগরও

⁽১) কৃষ্ণণিত নামেও খ্যাত। ইনি নরসিংকের পুত্র ও শেববংশে জন্ম গ্রহণ করেন। বিখ্যাত রামকৃষ্ণ গোপাল ভাতারকরের মতে, শেবকৃষ্ণের ত্রাতৃস্পুত্র রামচন্দ্র প্রায় ১১৫০ খৃষ্টাব্দে বিদ্যামান ছিলেন। (B. G. Bhandarkar's Report of the Banakrit Mes. 1883-84, p. 59.)

^{* &#}x27;অটেতা দাকিশাত্যঝাঃ।' এইরপ গাঁঠান্তরও আছে।

পাওয়া যায়। এতহাতীত দরভালা , বেলায় নগরবাত, দিল্পদেশ নগরপার্কর নামে একটা সহর এবং বৃত্তি কেলায় নগরথাস নামে একটা নগর দৃষ্ট হয়। এ ছাড়া দাকিণাতেয় "নগুরম্" নামে অনেকগুলি কুদ্র ও প্রাচীন গ্রাম স্থাছে।

নাগর নামেরও অসভাব নাই। উত্তর বঙ্গেই নাগর नारम प्रेति नही चार्छ, अक्री शूर्विश स्वना स्टेट मिनाब-পুর বেলাভিমুথে গিয়াছে, অপুরুটী বগুড়া বেলা হইতে রাজশাহী জেঁলায় প্রবেশ করিয়াছে। এক রাজপুতনার মধ্যেই নাগর নামে ৯৷১•টী স্থান আছে, তন্মধ্যে তিনটী সহর মধ্যে গণ্য, তাহার একটা জয়পুর রাজ্যের অন্তর্গত *। অপরটী মাড়বার রাজ্যের মধ্যে 🕇, এবং ৩য়টী প্রাসন্ধ রণ থস্তরের ৫ ক্রোশ দক্ষিণপশ্চিমে অবস্থিত। সাঁওতাল পর-গণার মধেঃও তুর্গদ্ধনিত নাগর নামে বিখ্যাত গ্রাম আছে। স্থান আফুগানভানের কাবুল জেলার পার্বত্যপ্রদেশে নাগর নামে এক প্রবল জাতির বাসও আছে। বৃটাশ গবর্মেণ্টের সহিত সে দিন তাহাদের যুক্ষবিপ্রাহ হইয়া পিয়াছে। কোন বাক্তি এই নাগর জাতির সম্ধান পাইয়া স্থির করিয়াছেন, তাহাদের নামানুদারে এই নাগরাক্ষরের নাম হইয়াছে। তাঁহার বিশ্বাস, যেমন প্রাচীনতম আর্যাগণ মধ্য-এসিয়া হইতে ক্রমে ভারতে আসিয়া প্রবেশ করিয়াছেন, সেইরূপ ঐ নাগর জাতি হইতেই কোন রূপে ভারতে নাগরাকর প্রবেশলাভ করিয়া পাকিবে। কিন্তু উক্ত মত কিছুতেই সমর্থন কুরা যায় না। ঐ নাগর জাতি এখন ইস্লাম্ ধর্মাবলম্বী হইলেও সকলেই রাজপুত। তাহারা রাজপুতনীই আপনাদের পুর্বনিবাস বলিয়া প্রকাশ করিয়া থাকে। এরূপ ভলে কাব্লের উত্তরাংশ হইতে যে নাগরাক্ষর এদেশে আসিয়াছে, তাহা কল্পনা করাও অসমত।

রালপুতরার চিতোরের নিকট নাগরী নামে একটা অতি প্রাচীন নগর আছে। থুই জন্মের বহু শতাকী পূর্ব হুইতেই এই নগর ছিল, তাহা স্থাসিক কনিংহাম্ সাহেব সেই স্থান হুইতে আবিষ্কৃত ছেনি কাটা (Punch-marked) মূলা বারা জির করিয়ীছেন। কিন্তু তাঁহার মতে ঐ ভানের প্রাচীন নাম তামবতীনগরী।

উপরে যে সকল নাম উদ্ভ করিলাম, ঐ স্কল খানে এমন কোন কথা অথবা আমুসলিক এমন কোন প্রান্থ পাইলাম না, যদ্বারা নাগরাক্ষরের উৎপতিস্থান বলিরা শীকার করা যার।

উপরোক্ত করেকটা বাতীত বোষাই প্রেস্ডিন্টার • আর্মাননগর জেলার মধ্যে নগর নামে একটা বিস্তার্ বিভাগ আর্টে। ইহার ভূপরিষাণ ৬১৯,বর্গ মাইল 🔹। এখানে নাগর নামে এক শ্রেণীর বাহ্মণেরও বাঁস আছে। এথান_{কার} স্থানীয় লেক্রির আন্ধাননগরকে একবল নগর বলিয়াও জানে। ভাহারা বলে, স্থলতান আন্ধান কর্তৃক ১৪১১ খু: আরে আহ্মদনগর স্থাপিত হইবার পুর্বের এই স্থান নগর নামে থাতি ছিল। এথানকার নাগর বাহ্মণেরা স্কলপুরাণের নাগরপুতকেই আপনাদের প্রধান পুরিচয়িক গ্রন্থ বিলয় উল্লেখ করিয়া থাকেন। নাগরথতে লিখিত আছে-সরস্বতীনদীতীরবর্ত্ম • হাটকেশ্বরক্ষেত্রের অপর নাম নগর। নগরবিভাগের নাগর আক্ষণেরা বলিয়া থাকেন যে, উক্ত বিভাগের মধ্যে সরস্বতী নদীতীকে প্রীঞ্জী নগরে যে প্রাচীন হাটকেশ্বর সন্দির আছে, তাহাই নাপর্থ ওবর্ণিত হাটকেশ্ব, ইহার ক্ষেত্রবিস্তার পঞ্জেশে। এক সময়ে নগর বা আদ্ধন-নগর এই বিশ্বত ক্ষেত্রের অন্তর্গত ছিল। তাঁহাট্নের বিশ্বাস নাগরবতে যে বহুসংখ্যক জীর্থের উল্লেখ আছে, তাহা উক্ত নগরবিভাগের মধ্যেই ছিল। মুদলমান ব্লাজগণের দারুণ অত্যাচারে তাহার অধিকাংশই বিধ্বস্ত ও বিলুপ্ত হইয়াছে। এখন সিদ্ধেখর, নাগনাথ, হাটকেখর প্রভৃতি অল মলিঃই বিদ্যমান আছে।

উন্তর্গ নগরবিভাগ ও দেখানকার ব্রাহ্মণ্রিদ্রের মুথের কথা বিশাস করিলে বলিতে হয়, এই স্থানই নাগরখণ্ডাক্ত প্রাচীন লগরক্ষেত্র এবং এখান হইতে নাগর ব্রাহ্মণ ও নাগরাক্ষরেব নামকরণ হইয়াছে। কিন্তু হাটকেখরের পাঙারা নাম জাহির করিবার জন্ত ঐ রূপ ক্ষেত্রমাহান্ত্রা প্রকাশ করিলেও বর্তমান শ্রীপ্রতী নগরের হাটকেখর নাগরখণ্ডাক্ত প্রাচীন হাটকেখর নহে। পূর্বতন হাটকেখর ক্ষেত্রত স্থাপিত হইবার স্থানেক প্ররে উক্ত মন্দির নির্দ্বিত হয়। নাগরখণ্ডের এক স্থানে শিখিত আছে যে, চম্পশর্মা লামে এক নাগরখণ্ডাক্ষ পূপা নামে এক ব্যক্তির দান গ্রহণ কুরিয়াছিলেন বিন্যা সমাজচ্যত হন। ভিনি জ্ঞাতি বন্ধু কর্ত্ক পরিত্যক হইয়া নগর পরিত্যাগপুর্বক সরস্বতী নদীর দক্ষিণ তারে গিয়া

^{*} প্রত্তবিদ্ কনিংহার সাহেবের মতে, ইহার প্রাচীন নাম কর্কেটিনগর। প্রবাদ এইকপ, রাজা মৃত্কুল এই নগর স্থাপন করেন। এখান হইতে হিলুরাজপণের সময়কার বহু প্রাচীন হর হাজার মুলা জাবিলত হইয়াছে।

[া] হানীয় লোকের মন্তি নাপগড় ছইতে বর্তমান নাগর নাম হইয়াছে।

^{*} Bombay Gazetteer, Vol. XVII, p 608.

বাস করেন। তীহার বংশধরেরা বাজনাগর নামে খ্যাত
হন। সেই বাজনাগরেরাই বর্তমান নগরবিতাগের অন্তর্গত

শুণ্ড ল নামক নগরে পূর্বতন হাটকেশরক্ষেত্রের আদর্শে
সরস্থ ল নামক নগরে পূর্বতন হাটকেশরক্ষেত্রের আদর্শে
সরস্থ ল নদীর দক্ষিণকূলৈ হাটকেশরাদি স্থাপন করেন ও
বর্তমান আক্ষদনগরকেই প্রাচীন 'নগর' বলিয়া করনা করিয়া
থাকেন। নাগরপণ্ডের মতে, নগরক্ষেত্র পঞ্চক্রোশী হাটকেশর
ক্ষেত্রের অন্তর্গত এবং সরস্থ লী দীনির উত্তরক্লে অবস্থিত,
কিন্তু বর্তমান আক্ষদনগর শুণ্ড ল ইতিত ৫ ক্রোশ অপেকা
বন্ধু দ্রের অবস্থিত। আক্ষদনগরের নিকট সরস্থ লী নদীও
প্রাহাতি নাই। এরপ স্থলে নগরবিভাগের অন্তর্গত আক্ষদনগর নাগর আক্ষণের আদিনিবাস নগরক্ষেত্র বলিয়া গ্রহণ
করা বায় নাণ এথান হইতে নাগরাক্ষরের উৎপত্তি সম্বন্ধেও
কোন প্রবাদ প্রাহাতি নাই।

তবে প্রস্কৃত সাগরোৎপত্তি স্থান কোর্থীয় 💡

গুলরাট হঁইতে এক ব্যক্তি নিধিদাছেন, যে গুলরাটের নাগর পণ্ডিভেরা বলিয়া থাকেন, নাগরী অক্ষর তাঁহাদের পূর্ব্যস্ক্ষগণের উদ্ভাবিত।

গুলরাটে এখনও বছসংখ্যক নাগর প্রান্ধণের বাস আছে। তাঁহারাই আপনাদিগকে অপর সকল প্রান্ধণ অপেকা শ্রেষ্ঠ বলিরা জ্ঞান করেন। এমন কি, তাঁহারা অপর কোন শ্রেণীর প্রান্ধণের অরম্বল গ্রহণ করেন না। গুলরাটের ছিন্দ্রালগণ অতি প্রাচীন কাল হইতে এখনও পর্যান্ত এই নাগর প্রান্ধণিগকে অভিশয় ভক্তি করিয়া আসিতেটিল। মন্ত্রিপ্রপ্রতির সকল প্রধান রাজকীয় কার্য্যে নাগর প্রান্ধণের প্রক্ষাহক্রমে অধিকার লক্ষিত হয়। এই প্রান্ধণের। স্কলপ্রাণের নাগরপঞ্চকেই আপনাদিগের প্রধান পরিচারক ধর্মগ্রান্থ বলিয়া বীকার করিয়া থাকেন।

নাগর আন্ধণের উৎপত্তি সম্বন্ধে নাগরপতে এইরপ আছে,—আনর্জাধিপ চমংকার কুঠরোগে আক্রান্ত হন। তিনি কোনক্রমে এই রোগ হইতে মুক্তিলাভ করিতে না পারিয়া শীবনে হভাশ হইলেন। এক দিন তিনি বিশামিত্রের আশ্রমে আসিয়া তাঁহাকে বিশ্ব প্রবন্থার কথা জাবাইলেন। আশ্রমবাসী মুনিগণ রাজার কাতরোক্তিতে দয়য়্র্জচিত হইয়া তাঁহাকে শশুভীর্কে মান করিতে বলেন। তিনি শশুভীর্কে সান করিয়া কুর্কুরোগ হইতে মুক্ত হইলেন। তথন সেই শশুভীর্কের নিকট চমংকারপুর নামে এক ক্রেশি বিশ্বভ এক নগর নিশ্বাণ করিলেন। এথানে বিবিধ স্বর্মী হর্ম্য নিশ্বাণ

কোন সময়ে আনর্তাধিপতি জানিতে পারিলেন যে. তাঁহার পুত্রের গ্রহবৈশুণো তদীয় চিরশাস্তিময় সমুদ্দিশালী রাজ্য মধ্যে মহাবিম্ন উপস্থিত হইবে, তিনি প্রধান প্রাণান ইদবজ্ঞদিগকে ভাকাইয়া পাঠাইলেন। তাঁ**হারা সকলেই** উপযুক্ত ত্রাহ্মণ হারা শান্তি করাইতে পর্মার্ম দিলেন। चानर्तताङ्क भूटलंहे हमश्कात्रभूदत चन्त्रत मोधावनी निर्माण করিয়া ৬৮ গোত্রক ত্রাহ্মণকে স্থাপন করিয়াছিলেন। এখন ্তিনি দৈবজ্ঞের প্রামর্শ গ্রহণপূর্ক্তক চনৎকারপুরে আসিয়া নেই ব্রাহ্মণগণকে তাঁহার ভাবী পুত্রের মকলের অস্ত শাক্তি অস্তায়ন করিতে অম্রোধ করিলেন। তথন ১৬ জন আকাণ শাস্তি ও হোম কার্য্যে নিযুক্ত হইলেন। এনিকে যাগ্যক্ত হইতে লাগিল, ওদিকে আনৰ্তনাজের রাজধানীতেও রাজ-পুত্রের অন্মোৎসব উপলক্ষে মহা ধুমধ্যে পড়িয়া গেল। কিন্ত त्नह^क्यात्मान द्वारमातन व्यात्वात नित्रातम् तन्था निन । तास-शुरुत अहरमाद त्रांकात त्रांका शक्यांकि-यान-वाहनामि नमखरे ক্ষ হইতে লাগিল। ভাহাতে চঁমংকারপুরের বিপ্রগণ অত্যস্ত কুত্ব হুইয়া উঠিলেন। তাঁহারা ভাবিলেন, আমরা প্রতি মালে ১৬ জনে মিলিয় বর্ণপরিধি হোমালি করিতেছি, কিন্ততাহার কোন ফল দেখিতেছি না। অতএৰ আমরা

করিয়া বেদবিং কুলীন ও ধার্মিক গ্রামণদিগকে আনাইয়া বসতি কর্।ইলেন। কিছুকাল পরে তাঁহালের মধ্যে চিত্রশর্মা নামে এক বেদবিৎ আহ্মণ ক্ষমগ্রহণ করেন। ইতিনি তপভালি বারা দেবাদিদেবকে সম্ভষ্ট করিলেন। •সহা-দেব তাঁহার মনোবাঞা পূর্ক্রিবার অভ্নতালক হাট-त्कचत म्डिंड चाविक् उ इहेरनन। नाना त्कम विरमण হইতে যাত্রিগণ দেই অনুসূপ্ম হাটকেশাল লিক দেখিতে व्यानित्नन। हमएकात्रभूतवांगी व्यथतांभन्न खाँक्रानंश छावि-लन, ठिजमर्यात्र कात कामालत मर्पा कि हुमाज कार्कन নাই। সে চিরস্থায়ী কীর্ত্তি স্থাপন করিয়া সাধারণের পূজ্য হুটল, আমরাই বাকেন না হুইব গুসকলে এইরূপ চিন্তা করিয়া বোরতর তপতা আরম্ভ করিলেন। মহাদেব সম্ভষ্ট হইয়া দেখা দিলেন। তপন চমৎকারপুরবাসী । আহ্মণদিগের মধ্যে ৬৮টী গোত্ৰ ছিল। মহাদেব সেই আহ্মণদিগকে কহি-লেন, সর্বাপ্তর ৬৮টা শৈব কেত্র আছে, আমি ৬৮ ভাগে বিভক্ত হইয়া সেই স্থানে অবহান করি। এখন তোমাদের অভীষ্ঠ দিদির জল্প ৬৮ মূর্ত্তিতে এই ক্ষেত্রে আবিভূতি হইব। তদমুদারে এখানে ৬৮টা দেবপ্রাদাদ নির্মিত হইল এবং এक এक शांख अक अक एमरनंत्र स्मरांत्र नियुक्त स्टेरनन । (নাগরপত্তে ১০৬ ও ১৯৭ অধীয়ে।)

^{*} List of Antiquarian Remains in the Bombay Presidency, by J. Burgess, p. 107.

जतिराग्यरक मिण्डत्रहे अजिणाश ध्यक्तांन कत्रिय। खथन অগ্নিদেব দেখা দিয়া ওাঁহাদিগকে বলিলেন, "গ্ৰাক্ষণগণ! রুখা রোব্বশে আমাকে অভিসম্পাত করিও না। মাসে मारत त्व ১७ वन दशम कतिका थात्क, छाहारतत मत्था विकाल नामक विक बाद्यालय स्नार्य मकन खवारे नहे उरेश यात्र, त्मरे अग्रहे स्प्रीमि श्रेरुमण जाननात्मत्र ध्येमख जवा शहन करतन ना, त्महे खछहे ताका मत्या द्वांग, लांक এछ বৃদ্ধি হইরাছে। সেই ত্রাহ্মণাধ্মকে পরিভাগি করিয়া হোম কর; তাহা হইলে রাজা আরোগ্য ও পুত্রাদি লাভ করিবেন এবং তাঁহার শত্রুগণের নিপাত হইবে।" তথন आधनगण निष्कुष्ठ रहेग्रा विशतन, "किकाल सानिव त्य, আমাদের মধ্যে এক ব্যক্তি হোমজব্য দৃষিত করিতেছে ?" অগ্নি ক্রিলেন, "হোমকুণ্ডে আমার বেদ অলে দান ক্রিয়া সকলে পরিভদ্ধ হও। সানের পর যাহার পাত্রে বিস্ফোটক উৎপन्न इहेरव, कांनिरव, खांहा इहेरख खवा नहे इहेनाह ।" অগ্নির কথামত একে একে-নেই ১৬ জন ত্রাক্ষণ হোমকুণ্ডে নামিরা ছান ক্রিলেন। তাঁহাদের মধ্যে কেবল ত্রিলাতের গায়ে বিক্ষোটক জমিল। তখন ত্রিজাত লজ্জায় আর মুধ তুলিতে পারিলেন না। নিতাস্ত হৃংথে থেলে ও লক্ষায় वनवांत्री शहेरनेन। जिलां वाखिवक अकलन द्यादिश মহাপশুত। মাতৃদোবে তাঁহার এই হর্দশা ঘটরাছিল। আপনার অবস্থা বুঝিতে পারিয়া নির্জ্জন বনভূমিতে কঠোর তপস্থা স্থারম্ভ করিলেন।

মহাদেব সম্ভষ্ট হইরা তাঁহাকে দেখা দিলেন। তিজাত তাঁহার চরণে পতিত হইয়া কহিলেন, "দেবাদিদেব ! স্থামি মাতৃদোষে চমৎকারপুরবাসী আহ্মণগণ ও আনর্তরাজের নিক্ট স্বিশেষ লজ্জিত হইয়াছি। যাহাতে আমা সকল বান্দণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ্য ্লাভ করিতে পারি, আপনি তাহার উপার করুন।" খহাদেব কছিলেন, "কিছু কাল অপেকা কর, শীঘই তোমার অন্ভীষ্ট পূর্ণ ছইবে।" এই বণিয়া त्नवामित्मव अञ्चिष्ठ इहेत्नन। अमिडक চমৎकात्रशूरत মহাবিভাট উপস্থিত ! শোদালা গোতীক দেবরাকের পুত্র ক্রথ নামে এক আহ্মণ অপর আহ্মণগণের সহিত নাগপঞ্মীর দিন নাগতীর্থে লান করিতে গিয়া, সামায় জলসপ ভাবিয়া ल छ ए। चार के नागक् मात्र क कमारना अभिवंध कतिन। ভাছাতে নাগরাজের আদেশে বিষধরগণ চমৎকারপুরে দলে भरन উপश्विक इहेन। विवसस्त्रत्र विषम फ़ुर्शास्क आविन-বৃদ্ধবনিতা, সকলেই পুত্র ছাড়িয়া পলায়ন করিতে লাগিল। শত শত আক্ষণ সর্পদংশনে श्रीবন বিসর্জন করিলেন। তথন কডকপুলি ব্রাহ্মণ অভিশন্ন জীত হইয়া বে বনে বিষয়ত অবস্থান করিতেছিলেন, নেই বনে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। তাঁহাদের ছঃধের কথা গুলিয়া ব্রিহ্মাত করি-লৈন, "তোমাদের কোন ভয় নাই'।" তিনি আবার দেবাদি-দেবের ধ্যানে নিম্মা হইলেন মহাদেব দেখা দিয়া রুলিলেন, "তোমাকে এক সিদ্ধ মৃত্র প্রদান করিছেছি, এই মৃত্র উচ্চারণ করিলেই মহাবিধিবয়ও বিসহীন হইয়া পড়িবে। "

শারং বিষমিতি প্রোক্তং দ তত্ত্বতি চ দাত্ত্ত্ব।
মংপ্রদাদাত্ত্বাহিত ক্রেরার্থা ক্রেরার্থা ।

দ গরং ন গরং চৈতৎ ক্রেরা যে পরণাধনাঃ। 
তত্ত্ব স্থাতিত তে বধ্যা তবিহাতি বধা স্থান ।

ভবিষ্যতি স্থবিধ্যাতং তবকীর্তিনিবর্দনন্। 
তথান্থোন ক্রেরা অভিমন্ত্রা তিধা ক্রম্।

নগরাধ্যেন ক্রেরা অভিমন্ত্রা তিধা ক্রম্।

প্রাণিনং কালসংদৃষ্টম্পি মৃত্যুবলং গতং ।

( नांगव्यकः ३०११४-- ४२ )

'शंद्रभटक विष वृद्धांत्र, किन्छ ष्यधूना त्महे श्रांत विष নাই। আমার অমুগ্রহে তোমার উচ্চারিত "ন গরীং ন গরং" (विष नांहे विष नांहे) अहे कथा अनिया त्य भवनाध्म, त्रहे-ধানে থাকিবে, স্বছন্দে ভাহাকে মারিতে পারিবে। ধরাতবে আৰু হইতে তোমার কীর্তিবর্দ্ধক এই স্থান "নগর" নামে বিখ্যাত হইবে। অক্ত যে কোন বিশুদ্ধ নাগর আদে এই নগর মন্ত্র উচ্চারণ ক্রিয়া তিনবার জল শইয়া মৃত্যু মু[ং] পতিত প্রাণীর মুখে প্রদান করিলে সে বিশ্চক্ষ জীবন গাড ক্রিবে। এই মন্ত্র উচ্চারণ বা শ্বরণ ক্রিলে স্থাবর জ্বন कुलियांति नकंग विषदे नहे इत।' এই विनिष्ठा, जगवान् অদৃখ্য হইলেন। ত্রিজাত সেই ত্রাক্ষণদিগকে সলে করিয়া চম**ু**কারপুরে আগমন করিলেন। সকলে মিলিয়া উচ্চৈ: ^{ছরে} "ন গ্রং ন গ্রং" শব্দ করিতে লাগিলেন। সিদ্ধনত ভ^{নিয়া} চমংকারপুরস্থ আশীবিষগণ নির্কিষ হইরা পড়িল। ^{কে} কোথায় পেলাইবে। সহস্ৰ সহস্ৰ সূপ বিনষ্ট হইল ? এখন ত্রিকাতের সম্মান দেখে কে ? যে এক∙ দিন লজ্জাবন<del>ত</del>ম্খ मनःकाष्टे दिन छाड़िया हुनिया शिवाहित, बील छाराव হৃদরে আনলৈর স্রোড় প্রবাহিত! আরু তাঁহা হইতেই ^{চ্যং} কারপুর "নীগর" নামে প্রসিদ্ধি লাভ করিল এবং সেধাননার আন্দণেরা নাগর নামে খাতি হইব।

नागत्रभए । मण्ड - बगरबब श्र्वनाम हमश्कात्रण्ड।

রাজা চন্দ্রকার এখানে বছতর সৌধ নির্মাণ করিরা আহ্মণসগকে ছাণিত করার তাঁহার নামান্দ্রারে চন্দ্রকার্প্র নাম
হর। এই স্থানের আগর নাম হাটকেশর ক্লেজ; আনর্জদেশের নৈর্গত কোণে হাটকেশর অবস্থিত। এই পুর্ণাধাম
পঞ্চুক্রোশ বিস্থৃত (২)। ইহার পূর্বসীমা গ্রাণীর্গ, পশ্চিমে
বিষ্ণুপদ এবং দক্ষিণোন্তরভাগে গোক্ণেশর (৩)।

নাগরণণ্ডের আর এক স্থানে লিখিত আছে—উক্ত ক্ষেত্র পঞ্চক্রোল ইইলে,ও নগরের আরতন এক ক্রোল মাত্র (৪)। উক্ত পঞ্চক্রোলী হাটকেখরের মধ্যে অচনে-খন, হোল্ডপের, গরালীর্ব, মার্কভেরেশর, চিত্রেশর, ধুজুমারে-খন, য্বাতীশর, আনন্দেশর, কলনেশর, কণিলেশর, আনর্কেশর, শৃতক্রেশর, অব্দালীশর, বাণেশর, ললপেশর, ত্রিজাভেশর, অন্থানেবতী, কেদারেশর, ব্রভনাল, সভ্য-সন্ধেশর, অটেশর, শর্দরাজেশর, মিষ্টারদেশর, চিত্রালদেশর, অমরকেশর, অটেশর, মকরেশর, শুলাদিত্য প্রভৃতি দেব-মন্দির একং পাতালগলা, গলাযম্না, প্রাচী সর্বতী, নাগতীর্থ, দলভীর্থ, মাতৃতীর্থ, মুধারতীর্থ প্রভৃতি শত শত তীর্থ আছে।

নীগরথণ্ডের মৃতে---

নৈমিবারণ্য, কেদারনাথ, পুকর, ভূমিলালল, বারাণসী, কৃলক্ষেত্র, প্রভাগ ও হাটকেশ্বর, এই আটটী দর্কপ্রধান পুণ্যক্ষেত্রে শ্রকাপ্রযুক্ত হইয়া যে সাম করে, ভাহার দর্ক-

( २ ) "অস্মিন্ নৈশ্ত দিপ্ভাগে দেশে চান্ত্সংক্তিক্ষ্। উন্তান্য স্থাপিতং লিঙ্গং হাটকেন হুরোভনৈ:॥ এতৎ সংকীপ্রতে লোকে পাতালে হাটকেষরম্॥"

( নাজাবহাত ৪।৫১—৫২ )

( ৩০ "পঞ্চকোশপ্রমাণেন ক্ষেত্রে ব্রাহ্মণসভ্যা: ।
আরামব্যাসভল্টের চমৎকারপুরোত্তবন্ ॥
প্রাচ্যাং ডন্তাং গরাশীর্বং পশ্চিমেন হরে: পদম্ ।
দক্ষিণোভরয়োল্টের গোকর্ণেবরুরাজভ্যা: ।
হাটকেশ্বরুরাজ্ঞ পূর্ক্মাদীন্দিজোভ্রমা: ।
তৎক্ষিত্রে প্রধিতং লোকে সর্ক্পাতকনাশনন্ ॥

যত: প্রস্কৃতি বিপ্রেক্ত্যো দন্তং তেন মহাস্থন। ॥ চমুৎকারেণ ওৎস্থানং নামা থ্যাতিং ততো গতম ॥"

( নাগর্থও :৬।০--৬ )।

, ( ৽ ) "নগরং কল্পরামাস তত্র হানে মহন্তমন্। প্রাকারেণ স্কুজেন পরিধার্জেন সর্বতঃ। নালামব্যাসতলৈত ক্রোশসাত্র্য মনোহরম্।"

( मानव्यथ ১১।७२--७७ )

তীর্থনালের ফক লাভ হর। এই আইটা ক্লেমের বধ্যে হাটবেশ্রনামক ক্লেমই সর্ব্যধান। এথানে আমার (শিবের) আজার সকলতীবাই অধিষ্ঠিত। ক্লিকালে মুমুক্ ব্যক্তি নাজেরই সর্ব্যক্তিবেরিত সেই হাটকেশ্বর ক্লেম মর্ব্যক্তি নাজেরই সর্ব্যক্তিবেরিত সেই হাটকেশ্বর ক্লেম

উইন্সন্ সাহেব তাহার ভারতীয় স্বাভিত্ত (Indian Casto) নামক প্রছে শিখিয়াছেন—

"নাগর শক প্রবাচক নগর শক্ষের বিশেবীপর্লণ। নাগর বিশিব গুজরাটের প্রধান ছর শ্রেণীকে ব্রার। উক্ত প্রদেশের উত্তরপূর্বভাগত কোন কোন নগর হইছে ভাষাদের নামকরণ হইরাছে।" (৫)

পূর্বেই দেখাইরাছি, নাগরণতের মতে জিলাত কর্তৃক হাটকেশবের ক্ষেত্র বিষধরহীন হইলে উহার নাম নগর হর। তৎকর্তৃক সমানীত ত্রাহ্মণরণ ঐ নগরে বাস হৈতৃই নাগর নামে থাত হইলাছিল (৬)।

শুল্মাটের নাগর রাক্ষপেয়া বলিরা থাকেন যে, আনন্দপুর বা বর্ত্তমান বড়নগর নামক ছানই তাঁহাদের আদি
নিবাস। শুল্মাটের অন্তর্গত কড়িজেলার মধ্যে ঐ ছান
অবস্থিত। এখন উহা বর্ত্তার গাইকবাড়-রাজের অধিকারভূক্ত। কোন কোন পুরাবিৎ আনন্দপুর লামেও উহার
উল্লেখ করিয়াছেন। (৭) বোধ হয়, সম্মজ্যুত বাজ্যনাগরগণ উক্ত নগরকেত্রের নামাস্থ্যারে অভ্য নগর পত্তন
করিলে (৮) আনন্দপুরবাদী নাগরগণ আপনাদের নিবাসভূমি পৃথক্ বুঝাইকার জন্ম উহা বড়নগর নামে অভিহিত
করিয়াছিলেন।

বর্ত্তমান বৈড়নগরে এখনও প্রসিদ্ধ হাটকেশ্বর মন্দির বিরাজমন্ত্রী। এখনও এখানকার নাগর আদ্ধণেরা উচ্চাদের

⁽a) "The word Nagar is the adjective form of Nagar, a city. It is applied to several (six) principal castes of Brahmans in Gujarat, getting their designations respectively from certain towns in the north-castern portion of the province."

Wilson's Indian Castes, Vol. 11. p. 96.)

^(%) নাগরণথেও লিখিত আছে, ত্রিজাতের আগমনের পুর্বে নাগেক উৎপাতে হাটকেশর ক্ষেত্র জনপৃত্ত হইরাছিল। তিনি আবার নানা স্থান হইতে ৬৪ পৌত্র ভ্রাহ্মণ আদিয়া স্থাপন করেন। ( নাগরণও ১০৮ জঃ)

⁽¹⁾ Epigraphia Indica, Vol. I. p. 205.

⁽৮) নাগরথওও লিখিত আছে, সমাজচ্যুত চম্পশ্রা ও উছার সহচর
সরবতী নদীর দুদ্দিশকুলে নগরেষর ও মগরাদিত্য বামে মূর্ট্টি ছাপন
করেব। (নাগর্থও ১০০ আঃ) এরপ ব্রুল বাহ্ননাগরের। যে, এথানেও
নগর বামে একটা পুর ছাপন করিয়াছিলেন, তাহা অসভব নহে।

অধিপতি গাইকবাড়ের মক্তের অক্ত শান্তি পাঠ করিরা থাকেন। এখনও পশ্চিম ভারতের সহস্ত সহস্ত মৃত্রী এখানে আগ্রমন ক্রিয়া থাকেন। কিন্তু বড়ই আশ্চর্ব্যের বিষয়, বজ্ঞের অনেকেই এই হাটকেখারের নাম পর্যান্ত শ্রমণ করেন নাই।

বড়নগুর ও উহার চারি দিকে পঞ্জোদের মধ্যে নাগরপগুবর্ণিত পূর্ব্বোক্ত দেবম্নির ও তীর্থকুলি এখনও বিভ্রমান ( ৯ । এথানকার সরস্বতীনদী স্থানীয় লোকের निक्टे श्रमात्र छात्र श्राश्रमा। द्य क्रमान नामक नाग-क्मार्त्वत र्जाध्ययुक शृक्जिन बाक्तगण गृर्जानी रहेवा-ছিলেন, এই পঞ্জোশী হাটকেখর ক্ষেত্রের মধ্যে সিম্বপুর নামক স্থানে সরস্বভীনদী তীরে সেই ক্রন্তমানের মন্দিরের ভগাবশেষ , আজও দর্শকর কের নরন আকর্ষণ করিয়া থাকে। নাগর বাহ্মণেরা বলিয়া থাকেন, এমন এক সময় ছিল, যখন ভারতের সকল খান হইতে লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী নগর বা হাটকেশ্বর ক্ষেত্রে প্রাগমন করিত। এথানকার পাগুগেরে অফুচরেরা ভারতের সর্ববিই যাত্রীর অসুসন্ধানে ঘুরিয়া বেড়াইত। বাস্তবিক এখনও দাক্ষিণাত্যের নানা-স্থানে নাগর আহ্মণ দেখা যায়। [®] উাহায়া এখনও কেবল নাগ-রাক্ষরৈই সলস্ত ধর্মপুস্তকাদি লিখিয়া থাকেন। এমন কি হুদুর দ্রাবিড় ও কর্ণাট অঞ্চল—বেধানে অপর কোন জাতি নাগরাক্ষর ব্যবহার করে না,—তথায় এই নাগর ব্রাক্ষণেরা বহুশতাকী বাদ করিয়া মাজভাষা পরিত্যাগ করিয়াছেন বটে; কিন্তু তাঁহাদের জাতীয় নাগরাক্ষর এখনও পরিত্যাগ করিতে পার্রেন নাই। এখনও তাঁহারা নাগরাক্ষর ব্যবহার कतिया थाटकन। अप्रिक्ष शांष्ठन्हैन हो क गोटहर विकासन गत ও আনগুঞ্জীর নিকটবর্জী নাগর ব্রাহ্মণদিনের সম্বন্ধে লিথিয়াছেল, "বিষয়নগরু ও আনগুণী রাজগণের প্রাধান্ত কালে তাঁহারা এ অঞ্চল আসিয়া বাস করেন, তাঁহারা क्षाफ़ो खाद्यात कथा करहन, किन्तु भूखकानि निथियाँत नमन (कंवन नागती क्राक्तत्र वावहात कतिया थादकन" (>•)।

পূর্বে ঘাহা শিথিয়াছি, মনোধাগপূর্বক তাহা আজোপাত পাঠ করিলে নিঃসন্দেহ ছির হইবে, ত্রিলাত কর্ত্ক আনীত আহ্মণগ্রণ নগর নামক পুরে বাসনিবন্ধন নগরনামক প্রবাসী নগির ত্রাক্ষণপথ ধর্মপরায়ণ প্রাচীন
হিন্দুরাজপণের সময়ে গুলমাটের সর্কতে বিস্তৃত হইয়া পড়েন।
উাহাদের মধ্যে অনেকে সোমনাগ্রপত্তনে গিয়া বাস করেন।
প্রভাস বা সোমনাগ্রপত্তনের অলর একটা প্রাচীন রাম
দেবনগর। [দেবপত্তন দেখ।] এই দেবনগর্বাসী রাগর
রাজ্পণেরা যে অক্ষরে আপনাদের ধর্মগ্রছাদি লিপিবদ্ধ
করেন, বোধ হয় পরবর্ত্তী কালে তাহাই দেবনাগরী নামে
গাত হয়। অগবা নাগরী লিপির বহু বিস্তৃতি অগবা
ইহাতে অধিকাংশ দেবমাহাস্মাহতক শালীয় গ্রন্থ লিখিত
হয়ায় মহিমাবাচক দেবশক্ষযোগে নাগরী দেবনাগরী নামে
গাত হয়।

কত দিন হইতে নাগরাক্ষর উপ্তাবিত হইরাছে, তাহা দ্বির করা অতি কঠিন। এ দেশের আদ্ধাপ পণ্ডিতগণের বিখাদ, বৈ দিন হইতে লিখিবার প্রণালীর স্থাই হইরাছে, দেই দিন হইতেই নাগরাক্ষরের উৎপত্তিনির্ণয় ক্রিতে হইবেঁ। উদয়-পুরবাদী প্রাচীন লিপিমালাপ্রণেতা পণ্ডিত গৌরীশঙ্করও এই মত প্রকাশ ক্রিয়াছেন, কিন্তু আমাদের সাম্মান্ত বিবেচনায় উক্ত পণ্ডিতগণের কথা সমাচীন বলিয়া গ্রহণ করা যায় না।

ষে সকল প্রাচীন প্রছে ভারতীয় প্রাচীন লিপিসম্হের নামোরেথ আঁছে, সে সকল প্রছে নাগরী লিপ্রির আনে। উল্লেখ নাই। উদাহরণ স্বরূপ এখানে ক্লয়েকটা প্রমাণ উদ্বুত ক্রিতেছি—

প্রাচীনতম বৌদ্ধগ্রন্থ ললিভবিস্তরে লিখিও আছে, বিশ্বামিত্র লাক্ষ্কাচার্য্য সিদ্ধার্থকে লিপি লিখাইতে আসিলে সিদ্ধার্থ শিক্ষার পূর্ব্বেই গুরুর নিকট এই ৬৪ প্রকার লিপির পরিচয় দিয়াছিলেন—ঘথা ১ রাদ্ধী ২ থরোষ্ট্র ও পুদ্ধানারী ৪ অললিপি ৫ বললিপি ৬ মগ্রালিপি পাললালিপি ৮ মন্ম্যালিপি ১ আর্বীয়লিপি ১০ কিনারিপ্রিকি ১১ ব্রহ্মবলীলিপি ১২ ত্রাবিড়ালিপি ১০ কিনারিপ্রিকি ১৪ দক্ষিণিলিপি ১২ ত্রাবিড়ালিপি ১৪ দক্ষিণিলিপি ১১ উগ্রালিপি ১৬ বিভাগি

নাগর (>>) নামে বিখ্যাত হন। তাঁহাদের ব্যবহৃত ভাষা নাগর
এবং অক্ষর নাগর বা নাগরী নামে প্রচলিত হয়। • তাঁহাদের
সহিত হে নাগরাক্ষরের বিশেষ সংশ্রব আহে, তাহা বহু দিন
হইতে বিদেশবাসী নাগরগণের •ব্যবহৃত অক্ষরই প্রাকৃতি
উলাহরণ।

⁽a) Campbell's Bombay Gazetteer, Vol. VII., and Lists of the Antiquarian Remains in the Bombay Presidency, by J. Burgess, p. 169.

^{(&}gt;•) Indian Antiquary, 1874. p. 230.

⁽১১) নাগর ত্রান্ধণেরা এখনও অপর সকল ত্রাহ্মণ অপেকা আণ-নাদের শ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপাদনের জন্ত এই লোকটা আকৃতি করিরা থাকেন,

[&]quot;শ্রেষ্ঠা গাবঃ পশ্নাক যথা পরসমূত্তব।

বিপ্রাণামিত সর্কেবাং তথা শ্রেষ্ঠা তি নাপরা: ॥" ( নাগরখণ্ড ১৬৯০) «)

১৭ অন্থলোমলিপি ১৮ অর্জধনুলিপি ১৯ দরদলিপি ২০ ধাঞ্চলিপি ২১ চীনলিপি ২২ ছ্ণলিপি ২০ মধ্যাক্ষরবিস্তর্লিপি ২৪ পূপ-निर्णि २६ मियनिर्णि २७ नागनिष्णि २१ वक्कनिर्णि २৮ शक्कीनिर्ण ২৯ কিল্পবলিপি ৩০ মুহোরগলিপি ৩১ অক্স্বলিপি ৩২ গরুড়লিপি ৩৩ মৃগচক্রলিপ্তি ৩৪ চক্রলিপি ৩৫ বারুমরু-লিপি ৩৬ ভৌমদেবলিপি ৩৭ অন্তরীক্ষদেবলিপি ৩৮ উত্তর-কুক্রবীগলিপি ৩৯ অপুরগৌড়ব্রিপি ৪০ পূর্ববিদেছলিপি ৪১ উৎক্ষেপলিপি ৪২ নিক্ষেপলিপি ৪৩ বিক্ষেপলিপি ৪৪ প্রক্ষেপনিপি ৪৫ সাগ্রুরনিপি ,৪৬ বজ্বনিপি ৪৭ নেখ-প্রতিবেধনিপি ৪৮ অহজতনিপি ১৯ শালাবর্জনিপি ৫০ গণনাবর্ত্তলিপি ৫১ উৎক্ষেপ্পাবর্ত্তলিপি ৫২ নিক্ষেপাবর্ত্তলিপি ৫৩ পাদলিখিজ্ঞলিপি ৫৪ विक्रख्त्रभएमिकिनिश ৫৫ मर्गाख्त-পদসন্ধিলিপি ৫৬ অধ্যাহারিণিলিপি ৫৭ সর্বাঞ্তরুণ্ লিপি ৫৮ বিদ্যাম্বলোমলিপি ৫৯ বিমিঞ্জীতলিপি ৬০ ঋষিতপত্তপ্তা ৬১ রোচমানা ধরণীপ্রেক্ষুণ্রিপি ৬২ সক্রোষধি-নিষ্যলা ৬৪ সর্মসারসংগ্রহণী এবং ৬৫ সর্মভৃতঞ্জ গ্রহণীলিপি (১২)।

জৈনদিগের প্রাচীনতম একাদশাঙ্কের মধ্যে সমরায়নামক ৪র্থ অকে লিধিত আছে, আদি জিন ঋষভদেবের ছহিতাও ব্রান্ধীকে আশ্রয় কুরিয়া যে লিপি হয়, তাহাই ব্রান্ধী। ব্রান্ধী প্রভৃতি ১৮ প্রকার লেখন-প্রক্রিয়ার নাম যথা—১ ব্রান্ধী ২ যবনালী ও দাশপুরিকা ৪ থরোষী ৫ পুল্ব-

(১২) "অব বোধিসজ উরগদারচন্দ্রময়ং লিপিফলকমাদার দিবা-বর্ণকং স্বর্ণতিলকং সমস্তান্মণিরত্নপ্রত্যুপ্তঃ বিদামিত্রমাচার্যামেবমাই। কতমাং ভো উপাধ্যায় লিপিং মে শিক্ষয়িষ্যদি। ত্রান্ধীং থরোষ্ঠাং পুরুর मार्वीः अञ्चलिभिः वञ्चलिभिः मग्रस्तिभिः माञ्चलालिभिः मसूरालिभिः अक्नीव्रतिभिः नकावितिभिः बक्षवद्यौनिभिः जाविष्रतिभिः किनावितिभिः দক্ষিণলিপিং উগ্রলিপিং সংখ্যালিপিং **অভ্**লোমলিপিং **অভ্**ণেত্রিপিং नत्रनिनिशः थाक्यलिशिः চौनिनिशिः द्वर्गनिशिः मशाक्तत्रविखत्रनिशिः পুষ্পলিপিং দেবলিপিং নাগলিপিং यक्तलिপিং গন্ধর্কালিপিং কিন্নব্রলিপিং মহোরগলিপিং অস্থরলিপিং গরুড়নিপিং মুগচক্রলিপিং চক্রলিপিং বায়ুমক্সলিপিং ভৌমদেবলিপিং, অস্তরীক্ষদেবলিপিং উত্তরকুক্সদীপলিপিং অপরগৌড়াদিলিঞ্জিং পুর্ব্ধবিদেহলিপিং উৎক্ষেপলিপিং নিক্ষেপলিপিং বিকেপলিপিং প্রকেপলিপিং দাগরনিপিং বজ্রলিপিং লেধপ্রতিলেথলিপিং यैर्फ्ड विभिन्न बाह्यावर्श्वनिष्ठिः गगनावर्श्वनिभिः छः क्लिपावर्श्वनिभिः निक्लिपा वर्डनिशिः शामनिश्विकनिशिः विक्रवत्रशपुनिक्तिशिः गावम्यावत्रशपनिक লিপিং অধ্যাহারিণিলিপিং সর্ক্রতসংগ্রহণিলিপিং বিদ্যান্তোমালিপিং বিমিশ্রিতলিপিং ক্ষিতপত্তপ্তাং রোচমানন্ধরণীপ্রেক্ষণলিপিং সর্ক্রীষধিনিধ্যক্ষাং নর্কসারসংগ্রহণীং সর্কভুতক্রতগ্রহণীমাসাং ভো উপাধ্যার চতুংবট্টলিপীনাং ক্তমাং লিপিং মাং ছং শিক্ষরিষ্যাসি ॥" (ুলীলিতবিন্তর ১০ অ: )

শারিকা ৬ পার্বভীরা ৭ উচ্চত্রিকা 🕆 ৮ অকরপুত্তিকা ৯ ভোগ্ৰয়স্থা ১০ বেরণভিয়া 📍 ১১ নিরাহইয়া ১২ আছ-লিপি ১৩° গণিতলিপি ১৪ গন্ধলিপি ১৫ আদৰ্শলিপি ১৬ মাৰেখুরল্পি ১৭ দামলিপি এবং ১৮ বোলিদলিপি (১৩)। • , জৈনদিগের ৪র্থ উপাদ অজ্ঞাপনাপ্ত্রেও এইফ্লপ ১৮ व्यकात निभिन्न উলেধ आहि। रेश-> बाकी र यवनानी ত দাশপুরী ৪ ধরোষী ১৫ পুছরশারী ৬ ভোগবছিকা (१). পার্বভীয়া ৮ অন্তরকরী ৯ আকরপুত্তিকা ১০ বেশনিয়া (१), ১১ निरुषेत्रा (१) ३२ व्यक्तिनि ১৩ গণিতनिनि ১৪ গদ্ধविनि ১৫ আদর্শনিপি ১৬ মাহেশরী ১৭ ক্রাবিড়ী ও ১৮ পোলিন্দা-লিপি (১৪)। কেহ কেহ বলিভে' পারেন, উপরোক্ত লিপিসমূহের মধ্যে দেবলিপি, ভৌমদেবলিপি ও অস্তরীক্ষ-দেবলিপি এই যে জিল প্রকার লিপির উল্লেখ আছে, ইহার কোনটা দেবনাগর হুইতে পারে এবং দৈই দেব বা एकोमरमविणिके अथन स्वनागत वा दक्वण नागत नारम অভিহিত হইতেছে। কিন্তু আুমাদের বিবেচনায় যথন স্পষ্ট नागत मृत्यत উল্লেখ नार, उथन दक्तन दिन्यम धतिया नागती লিপির করনা করিতে পারা যায় না।

এই প্রবাদ্ধের প্রারম্ভেই প্রমাণ উদ্ভ করিয়া দেখাই-য়াছি বে, প্রাক্তনজ্রিকারচিরিতা শেষক্রঞ (এইটার ১২শ শতাব্দে) সাতাইশ প্রকার অপত্রংশ ভাষার মধ্যে নাগর, উপনাগর ও দৈব নামে তিনটা স্বতন্ত্র ভাষার উল্লেখ করিয়া-ছেন। হয়ত বেমন তিনটা ভাষা ছিল, তেমনি তিন্প্রকার

টাকাক্কার মলমণিরি লিখিয়াছেন, "এ।জীববনালীত্যাদয়ে লিপিছেলান্ত সম্প্রদায়ান্বদেয়:।" "জেনদিপের মতে, মহানীরের স্কুরেই অলসমূহ প্রচলিত এবং মহাবীরের নির্প্রাণের ১৬০ বর্ষ পরে অর্থাৎ ১৬১ বৃষ্ট পূর্বাদে পাটলিপুত্রের শ্রীসংঘে সংগৃহীত হয়। শেব সময় ধরিয়া লইলেও শীকার করিতে হয়, পৃষ্ট পূর্বা এই শতান্দে নাগরী লিপি ছিল না। সমবায়াকে "জবনালিয়"র যে উল্লেখ ক্ল্যুছে, তাহাই পাণিনি বর্ণিত ব্বনানী লিপি।

⁽১০) "বঙী এণং লিবী অঠারসবিহলেপ্কবিহাণে। বঙী জবণালিয়া দাবউরিয়া থড়োট্টুয়া (৭) প্রসারিয়া পহারাইয়া উচ্চতুরিয়া অপ্করপুথিয়া ভোগবয়রা বেয়ণতিয়া দিরাহইয়া অংকলিবি গণিআলিবি গলজ্জুলিবি আনুদস্লিবি মাহেসরলিবি দামিলিবি বোল্টুঞ্জিবি ২" (ত্রুমবুাদ্দতে)

⁽১৪) "বন্ধীএণম্ লিবিএ অট্ঠারসবিহলিক্ধবিহাদে পথতে তাম্ বন্ধী জবনালির দাসপুরিয়া ধরোট্ঠী পুক্ধরসারিয়া ভোগবইয়া পহারাইয়া উ য অন্তর করিয়া অকুণরপুট্টীয়া,বেণণিয়া নিহইয়া অক্লিবি গণিতলিবি গক্ষকলিবি আদন্সলিবি মুহেসরী দামিলী পোলিশা সেঠতঃ ভাষাবিয়া॥" (প্রজাপনীস্ত্র)

অক্র ও প্রচলিত ছিল। ললিতবিস্তরে যে ভৌমদেবলিপির উল্লেখ আছে, ২য় ত দৈব বা দেবভাষার অক্রের সহিত তাহার সৌদাদৃশ্য থাকিতে পারে।

কিন্ত দেবলিপি বলিলে যে নাগরাক্ষরকে ব্ঝাইতে পারে, এমন কোন প্রমাণ পাইলাম না। নাগর বলিলে যেমন দেবনাগর অক্ষরকে ব্ঝাইরা থাকে, কিন্ত দেবাক্ষর বলিলে আমরা সেরপ কুঝি না। এদেশে যাহার লেখা সংক্ষে ব্ঝা যায় না, নিতান্ত অস্পষ্ট, সেই লেখাকেই সাধারণে দেবাক্ষর বলিয়া উপহাস করিয়া থাকেন। এরপ হলে দেবলিপি বা ভৌমদেবলিপিকে নাগরাক্ষর বলিয়া গ্রহণ করিতে পারিলাম না।

খুষ্ট জন্মের পূর্বে ২।০ শতাকী মধ্যে ললিতবিস্তর রচিত হয়। ৄুজনদিগের ৪র্থ উপাক্ত প্রেজ্ঞাপনাস্থ শামার্য (১ম কালকাচার্যা) কর্ত্ক রচিত হয়। প্রতরগচ্ছীয় পট্টাবলীর মতে বীর-নির্বাণের ৩৭৬ বর্ষ পরে শামার্যা আবিস্কৃতি হন। [ কৈন শক্ষ প্রস্তানার বর্ষ পূর্বে কোন আক্ষরের ত্লাগরী নাম ছিল না।

তবে কোন্ সময় হইতে নাগর বা নাগরী নাম প্রথম প্রচলিও হইল ?

জৈনদিগের ধর্মশাত নন্দীস্তে আমরা সর্বপ্রথম নাগরী
লিপির উল্লেখ পাই। জৈনপণ্ডিত লন্দীবল্লভগণি তহিরচিত্ত কল্পতাকল্লড্রমকলিকানামক কল্পতার ব্যাখ্যার
লিখিয়াছেন—

"অথ প্রীধ্বভদেবেন ব্রাহ্মী দক্ষিণহত্তেন আইদেশ লিপয়ে দর্শিতাঃ। নন্দীস্ত্রে উক্তা যথা—১ হংসলিপি ১ ভূতলিপি ৩ মক্ষলিপি ৪ রাক্ষনীলিপি ৪ উড়ীলিপি ৬ মাকনীলিপি ৩ মক্ষলিপি ৮ কারীলিপি ৯ জাবিজীলিপি ১০ নেম্বরীলিপি ১১ নালবীলিপি ১২ নড়ীলিপি ১৩ নাগরীলিপি ১৪ পারসীলিপি ১৫ লাটীলিপি ১৬ জানিমিন্তলিপি ১৭ চাগরীলিপি ১৮ নোলদেবা। দেশবিশেষাদক্ষা অন্পালপর তদ্যথা ১ লাটী ২ চৌড়ী ত ডাহলী ৪, কাণড়ী ৫ গুজরী ৬ সোরঠী ৭ মরহঠী ৮ কৌরনী ৯ খ্রাসানী ১৬ মাগরী ১১ সংহলী ১২ হোড়ী ১০ কীরী ১৪ হন্বীরী ১৫ প্রতারী ১৬ মদী ১৭ মালবী ১৮ মহাঘোষী ইত্যাদয়েরা লিপয় প্ররক্ষানাং গণিতকলা দর্শিতাঃ বামহত্তেন স্থান্দরী প্রতিলিপি দর্শিতা।"

নন্দীত্ত ও ক্রত্তের রচনাপ্রণাদী প্রায় একরণ। জৈনাচার্য্যগণ বলিয়া থাকেন, কলত্তের কিছু পুর্বে নন্দী-

প্ত প্রচারিত হর। করুপুর আনক্ষপুরে (বর্তমান বড়নগরে) বলভীরাজ প্রবসেনের আদেশে বীরনির্কাণের
৯৮০ বর্ব পরে (৪৫৩ খুটার্কে) সঙ্কলিত হর। প্রার্থ নেই সমরে
কি তাহার কিছু পূর্ব্বে নলীপ্তত্ত সঙ্কলিত হইরা থাকিব।
এরূপ খলে খুটার ৪র্থ কি ৫ম শতাকে আমরা সর্ব্যথমন
নাগরীলিপির সন্ধান পাই। খুটার ৪র্থ বা পঞ্চম শতাকের
পূর্বেবর্তী কোন গ্রন্থে নাগরীলিপির এথনও সন্ধান পাই নাই।
আমাদেরও অনুমান, খুটার ৪র্থ শতাক্ষীর পূর্ব্বে কোন বিশেষ
লিপির নাগরী নাম হর নাই।

যথন ৪র্থ শতাকীর পূর্ববর্তী প্রাচীন প্রত্তে নাগরী লিপির উল্লেখ পাওয়া যাইতেছে না এবং কোন্ সময় ছইতে নাগরাক্ষর আরম্ভ ছইরাছে, তাছারও যখন কোন দ্বিরতা নাই, তথন ভারতের নানাস্থান হইতে বে দকন নাগরাক্ষরে উৎকীর্ণ প্রাচীনতম শিলাফলক, তাম্রশাসনাদি এবং নাগরী অক্লরে লিখিত প্রাচীনতম হুতুলিপি আবিষ্কৃত ছইরাছে, আপাততঃ সেই সমুদর পরিদর্শন করা চাই। এরপ স্থলে ছই এক থানি প্রাচীন থোলিত লিপি বা হুতুলিপি হুইলে চলিবে না। এসিয়াটক সোনাইটির ভিত্তিস্থাপন হুইতে এ পর্যান্ত প্রস্কৃত্তবিদ্যাণের যত্তে এবং নিজ অমুসন্ধান নারা যত দ্র আবিষ্কৃত হুইরাছে এবং নিজ অমুসন্ধান নারা যত দ্র আবিষ্কৃত হুইতে পারে, তৎসমুদারের অক্ষরবিস্থাস মনঃসংযোগপুর্বক আলোচনা করা একান্ত আবস্তান । মৃত্রাং নাগরাক্ষরের পূর্বাপর লিপিবিস্থাস হির করা বহু অমুসন্ধান ও বহু সমন্ধ্যাপেক

উপাৰত অৱ অমুধন্ধান বারা যাহা আমরা ছির করিরাহি তাহাই সংক্ষেপে লিখিতে বাধ্য হইলাম।

বৈদিক সময়ে ভাএতবর্ষে কিরপে অকর প্রচলিত ছিল্
তাহা এখনও স্থির হয় নাই। অনেকের স্মতে বৈদিব
সময়ে ভারতে লিপিপছতি ছিল না, তখন সঁমন্তই মুদ্
মুখে চলিয়া আদিত বলিয়াই বেদের অপর নাম শ্রু
ইইয়াছে। পাশ্চাভা পণ্ডিতগণের ধারণা পাণিনিতে (
"য়্বনানি লিপি"র উল্লেখ আছে, তছারা বোধ হয় (
ভারতে প্রথমতঃ যবনলিপিই প্রচলিত হয়। তাহাই গ
ভারতীয় লিপি বলিয়া গৃহাত ছুইয়াছে (১৫)। প্রি
সভ্যত্রত সামাশ্রমী প্রমাণ করিয়াছেন ফে মূল বেদ
উপনিষা রচিত হুইবীর অব্যবহিত পরে এবং বেদ
নিক্তক্রকার যাক্ষের পুর্বে পাণিনি স্লাবিভূতি হুইয়াছিলেন

^{(&}gt;c) Max Mullert Ancient India, Weber's Indiad Studiep, IV, p, 544

डीहाब गछीत गरवरगापूर्व व्यवक्त भार्ठ कतिएन (बाध हुँब (व অন্ততঃ ভিন হাজার বর্ষ পূর্বে পাণিনি বিভ্রমান ছিলেন (১৬)। পাণিনির_• ৩।২।২১ সুত্রে "লিপিকর" দক্ষের উল্লেখ আছে, ইহাতে যে তাঁহার সময়ে নিপিপ্রণানী প্রচলিত ছিল, ভাহাতে সুন্দেহ নাই। পণ্ডিত গোক্তই-. কারের মতে, পাণিনিতে যে "যুবনানি" শঙ্গের উল্লেখ্যাছে, জুহা Cunciform writing হইতে পারে (১৭)। কুছারও অञ्मान, পাণিনির সময় ত্রাহ্মণগণের প্রবর্তিত ত্রাহ্মী অক্ষর প্রচলিত ছিল, দেই অক্রের সহিত পার্থক্ষ্য প্রদর্শনের অঁভট পাণিনি যবনবিপিয় উদ্লেখ করিয়া থাকিনেন। তৎপরে ধরোষী প্রভৃতি লিপির উদ্ভাবন হইয়াছে। ব্রাহ্মী-লিপি নাগরীর বছ পূর্ববর্তী প্রাচীনতন লিপি হইলেও বিশেষ প্রমাণ ব্যতীত তাহাঁকেই আমরা ভারতের আদি অক্ষর বলিয়া গ্রহণ করিতে পারি নাম জৈনদিগের প্ৰজ্ঞাপনাহত্তে লিখিত আছে, অৰ্থমাগধী ভাষা যাহাতে প্রকাশ করা যায়, তাহাই ত্রান্দীলিপি (১৮)। কিন্তু যে লিপি বেদব্যাস বাল্মীকির অমৃতময়ী লেখনী হইতে নিঃস্ত হইয়াছিল, সেই লিপি কি ? তাহা এখনও অজ্ঞাত।

বৃদ্ধের সময় যে ভারতে বছবিধ অক্ষর প্রচলিত ছিল, ললিত্বিস্তর হইতে তাহার প্রমাণ পাইয়ছি। তাঁহার পর হইতেই ভারতে মগধ-রাজ্যের মহাসমৃদ্ধি লক্ষিত হয়। দে সময়ে এখানকার সম্রাট্গণ হানীয় মগধলিপিই ব্যবহার করিতেন, ওাহা নিভাস্ত সম্ভবপর। সমস্ত ভারতবর্ষেই যথন মগধ রাজগণের আধিশত্য বিভ্ত হইয়াছিল, তখন মগধলিপিও যে সর্বত্ত প্রচলিত হুইবে, তাহাতে সক্ষেত্র কি পু এজক্সই আমরা সিন্ধনদের পশ্চিম পার ব্যতীত সর্বত্তই একরপ অক্ষরে উৎকীণ অশোকের অমুশাসনলিপি নয়ন্রনাচর করিয়া থাকি। উক্ত মগধলিপি ক্রমোছি লাভ করিয়া যথাক্রমে শাহ, গুপু, বলভী, চালুক্য প্রভৃতি বংশীর রাজগণের সময়ে উৎকীণ লিপির আকার ধারণ করিয়াছে। ক্র সকল লিপি কিরপে পৃষ্টিলাভ করিয়াছে, তাহা ক্রপ্রবাহ্তের বিষয়ীভ্ত নহে। ব্রাক্ষী ও বর্ণমালা শক্ষ ক্রইব্য।

প্রভৃতি লিপি উৎপন্ন হইরাছে, সাগরী লিপিও মগুধলিপি-সভৃত। কিল্পেও কত দিনু হইল, মাগণী লিপি হইতে নাগরাক্ষরে প্রকাশ হইরাছে, এক্ষণে তাহাই প্রমাণ করিতে হইবে।

পরাক্রান্ত গুপ্তরাজগণ খৃষ্টার ৪র্থ শভাষ্টার প্রারম্ভ ২ইডে ৭ম শতালী পর্যন্ত মগুধের সিংহাসনে সমাসীন ছিলেন। তাঁহাদের সময়কার লিপিসংযুক্ত শিলাফলক ও ভাষ্রশাসন আবিছত হইখাছে। তখারা জানা যার, যে খুটীয় ৪ৰ্থ ইইতে ৭ম শতাকী পর্যান্ত ভারতের পশ্চিম প্রান্ত হইতে পূর্ব্ব প্রান্ত বল উৎকল পূৰ্ব্যস্ত গুপ্তমগধলিপি ব্যবস্থত হইত (১৯)। স্থ্য শতাকীর মধ্যভাগে মগধ্রাক আদিভ্যসেনের শিশা-निभित्त यामता नागतीनिभित्र म्महे क्षमा त्विर् भारे। গয়া জেলার অন্তর্গত নবাদা থানার এলাকাধীন শুক্রী নদীর ডান ধারে জাফরপুর বা অফ্সড় নামে একটা প্রাচীন আম चाह्ह, रत्रथानकात्र এक व्याठीन मन्मिरत वत्राह्मुर्खित निक्र ঐ শিলালিপি থানি ছিল। তক্ষাদিত্য নামধের এক গৌড়-বাসী কর্ত্বক ঐ লিপি থামি উৎকীর্ণ হইয়াছে। অসিত্ব প্রত্নতীত্ববিৎ ক্লিট্ সাহেব ঐ লিপি সম্বন্ধে লিপিরাছেন, "এই থোদিত লিপির অক্ষরকে (খুষীর) ৭ম শতান্দীর মাগধী কুটিল (২০) নামক অক্র বলা ঘাইতে পারে। বান্তবিক বর্তমান (प्रवनाशती हरेल देशत जाहरे (छप नक्षिण हम्राँ" (२)

আদিত্যসেনের পূর্ববর্তী গুণ্ডরাজগণের সময়ে উৎকীর্ণ লিপিতে যুক্তবয়গুলির লিখনপ্রণালী এখনকার বলীয় বা

⁽১৬) এসিয়াটক সোসাইট হইতে একাশিত নিয়ক্তের ৪ৰ্থ ভাগে "কঃ

কালো যাকস্ত গ্ৰহণ স্কাৰ স্কাৰণ ।
(১৭) Prof. Goldstucker's Manava-kalpasutra, preface,

⁽১৮) "দে কিং তং ভাষারিয়া ?, ক্লেণং অন্ধনগহাএ ভাষাএ ভাসেতি
জব্ব মং বন্ধীলিবি প্রতই ॥" (প্রক্রাপনাস্ত্র)

⁽১৯) শুপ্ত সম্রাচগণের স্ময়ে এই লিপি ভারতের সর্ক্রে প্রচলিত ছিল বলিয়া ইহার 'শুপ্তলিপি' পরিভাষা দেওয়া গেল। বাত্তবিক এই লিপি শুপ্তমাট্গণেরও বহু পূর্বে প্রচলিত ইইরাছিল। পঞ্চাব, গুল রাট ও মধুরা অকল হইতে পাহ (শক) রাজগণের স্ময়ে উৎকীর্থ সে সকল প্রাচীন শিলালিপি ও মুন্তানি আবিছ্ত ইয়াছে, তাহাতে গুপ্তালিপির নিদ্দির আর্ছে। বাকুড়ার শুপ্তনিয়া পাহাড় হইতে প্রবল প্রভাগান্তিত শুপ্তমাট্ সম্মুন্তগের পূর্ববর্তী মহারাল চল্লবর্ত্তার বে শিলালিপি সম্প্রতি আবিছত হইয়াছে, তাহাতেও শুপ্তলিপির পূর্ণবিকাশ লক্ষিত হয়। আমাদের বিবেচনার্থ অলোকলিপি হইলেই শাহ এবং তাহা হইতেই শুপ্তলিপির ক্রমবিকাশ হইয়াছে।

⁽২০) ছিন্সরাজ ললের ১০৪৯ সম্বতে উৎকীর্ণ দেবল প্রশন্তিতে কুটি-লাক্ষর শব্দের সর্বপ্রথম উল্লেখ পাঁওয়া যায়,— । 'বিক্স্হরেন্ডনয়েন চ লিখিতা গৌড়েন করণিকেনৈথা। কুটিলাক্ষরাণি বিস্থা। তক্ষাদিত্যাভিধানেন।"

Epigraphia Indica, Vol. I. p. 81.

⁽²⁾ Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III p. 202.

নাগরাক্ষরের মত নহে, বরং এখনকার তিবতীয় (২২)
অক্ষরের সহিত জনেক সৌসাদৃশু আছে। কিন্তু উক্ত অফ্সড্লিপির যুক্তস্বর প্রাচীন গুপুলিপির যুক্ত, প্ররের মত
নত্তহ, বরং মৈথিলী বা প্রাচীন নাগ্লরাক্ষরে লিথিত পুথির
ক্ষুক্তাক্ষরের স্থিত অনেকাংশে সাদৃশু আছে পি অফ্নড়লিপির বর ও বাঞ্জনের, আকার, লাখামগুলপ্রশন্তি (২০)
ও ভাটিন্দার লিলাফলকে (২৪) পূর্ণতাপ্রাপ্ত হইরাছে।
প্রশ্রের শবররাজগণের লিলালিগির অক্ষরও অফ্সড়-লিপির
ক্রমবিকার্ল (২৫)। ভাটিক্ষা-লিলাফলক থানি যদিও পঞ্জাব
অঞ্চলে আবিষ্কৃত হইরাছে, তথাপি উহার যুক্তব্বর ভিন্ন
অপরাপর অক্ষরের সৃহিত প্রাচীন ও আধুনিক মৈথিল অক্ষরের অনেকাংশে সৌসাদৃশ্য আছে। আমাদিপের গৌড়রাজ ধর্ম্পালের ভাদ্রফলকে উৎকীর্ণ অক্ষরও ভাটন্দালিপির
অফ্রপ (১৬)।

বদিও অফ্সড়-নিপির পূর্ববর্তী গুপ্তনিপিতে যুক্তব্বর
সম্পূর্ণ পৃথক্ ছিল, অর্থাৎ বর্ত্তমান ভোটাক্ষরের যুক্ত ব্বরের
মত ছিল, তথাপি তাহাই যে ক্রমোরতি প্রাপ্ত হইরা বর্ত্তমান
মৈথিল, বল ও নাগরাক্ষরের যুক্তব্বের আফার ধারণ
করিয়াছে, তাহাতে সন্দেহ নাই। বথ্যালী হইতে সারদা
অক্রে লিখিত যে প্রাচীন পুথি আবিষ্কৃত হইরাছে, তাহার
বর্ণমালাই আমার প্রস্তাবের অনেকটা সমর্থন করিতেছে।
ডাক্তার হোর্ণলি সাহেবের মতে, ঐ পুথিথানি প্রায় পৃষ্টীয়
৮ম কি ৯ম শতাব্বের মধ্যে লিখিত হইরা থাকিবে (২৭)।
ঐ পুথি সিখিত ক, গ, ম, চ, ছ, য়, গ, ত, দ, ধ, প, ব, ম
প্রভৃতি অন্কে অক্রের সহিত প্রাচীন বলাক্ষর ও এখনকার
মৈথিল হস্তলিপির বিশেষ সোসাদৃশ্য আছে দ আবার অনেক
যুক্তব্বর ও ব্যায়নের সহিত অফ্সড় প্রভৃতি গুপ্তলিপির সম্পূর্ণ
মিল দেখা যায়। ইহাতে বোধ হয়, উক্ত সারদা অক্ষরও
মগধ বা গৌড়া হুইত্তে প্রশ্বম উত্তাবিত হয় এবং তৎপরে

কাশ্মীর পঞ্জাক অঞ্চলে প্রচলিত হইরা থাকিবে, কারণ ঐ
লিপির সহিত সামরিক গৌড়লিপির সৌসাদৃশ্য থাকিলেও
ডৎকাল-প্রচলিত উত্তরপল্চিমঞ্চেলের লিপিসমূহের সহিত এরপ
সাদৃশ্য নাই। এরূপ হলে দ্রদেশে প্রচারিত হইবার পূর্কে
অন্ততঃ খৃতীর ৭ম বা ৮ম শতাকীতে গৌড়রাজ্যে ঐ অক্ষর ত্থাতি চিল, তাহা অনারাসেই খীকার করান্যায়।

ূঅতএব যে সময়ে মগধরাজ্যে অফ্সড় শিলালিণি উৎকীৰ্ণ হয়, সেই সময় বা ভাহার ক্ষাল্ল পরেই আধুনিক লিপিম্লক মৈথিল ও বৃদাক্ষর প্রচুলিত হইয়া থাকিবে।

ে এখানে আপত্তি উঠিতে পারে, যদি ুখুচীর ৭মু বা ৮মু मठात्म वर्खमान देमिथन ७ वनाक्तत्र आहिनछ इहेबा शादक. তবে গৌডরাজ ধর্মপালের লিপিতে বর্ত্তমার গৌড়াক্ষরের প্রকৃতরূপ প্রদত্ত হয় নাই কেন ? ইহার উত্তর ৢএই, ধর্ম-পালের পিডা গোপাল মগধে রাজত্ব করিতেন, সৈ সময় অক্র পরিবর্ত্তন হুইলেও তিনি রাজকীয় দানপত্রাদিতে পূর্ব্বতন মগধলিপি পরিতাাগ করিতে পারেন নাই (২৮)। কিন্ত ধর্মপাল ও দেবপালের পরবিত্রী পালরাজগণ পুর্বাক্ষর পরিত্যাগ করিয়া তৎকাল-প্রচলিত অক্ষরেই ভামশাসন ও , শিলাফলকাদি উৎকীর্ণ করাইয়াছেন। তাঁহাদের প্রচলিত অকরের সহিত গুপ্তলিপির কোন মিলুনাই। সেই অকরই এথনকার গৌড়লিপির আদি বিকাশ (২৯)। ঐ সকল লিপি নিতান্ত অৱ সময় মধ্যে কিছু পূর্ণতা লাভ করে নাই। পূর্ণতা ও পুষ্টিতা লাভ করিতে অস্তত: হুই তিন শতান্দীর কম সময় গৌড়াক্ষর বর্তমান অবভৃষি আসিয়াছে, তাহা অসূত্রব নহে। किन्द भूग अन्न गिर्ण जन एक व्याही मू, क्वाइन इहे হাজার বর্ষেরও পূর্ব্ববর্তী ললিভবিস্তরে বঙ্গলিপির স্পষ্ট উল্লেখ আছে। [বন্ধাপি দেখ।] নাগরীলিপি তত প্রাচীন নছে।

বর্ত্তমান নাগরাক্ষরে লিখিত যত শিলাফলক, তাম্রশাসন ও হস্তলিপি আবিষ্কৃত হইরাছে, তদ্মধ্যে বগুম্রা হইতে প্রাপ্ত ৪১৫ শীকে উৎকীর্ণ শুর্জেররাক্ষ দক্ষপ্রশাস্তরাগের তাম্রশাসনই সর্ব্বপ্রাচীন (৩০)। এই তাম্রশাসমের সর্বাংশই তথনকার

⁽২২) তোন্ মি-সন্ ভোট নামে এক বাজি পৃষীয় ৭ম শতাংক ভারতীয় বর্ণমালা তিক্তে প্রকাশ করেন। সেইজন্ম গৃতীয় ৭ম বা তৎপূর্ববতী
উত্তর-ভারতীয় বর্ণমালার সহিত এখনকার তিক্তীয় অক্ষরের অনেকাংশে
সৌসাদৃশ্য আছে। ভারত ইইতি বছ দিন হইল, যে অক্ষর বিল্বার্গ ইইয়াছে, তিক্তে এখনও তাহা প্রচলিত।

⁽२७) Epigraphia Indica, Vol. I. p. 10

⁽³⁸⁾ Cunningham's Archæblogical Survey Reports, Vol. XXIII. plate XXVII.

⁽³⁴⁾ Cunningham's Archaeological Survey Reports, Vol. XVIII, plates IX, XVIII, XIX, and XX.

⁽³⁾ Journal Asiatic Society of Bengal Vol LXIII, pt. I, plate III.

⁽³⁴⁾ Indian Antiquary, Vol. XII. p. 89.

⁽২৮) নাৰক ইইতে মহারাজ গোপালদেবের যে উথকীপলিপি পাওয় গিয়াছে, তাহার কোন অংশ আধুনিক ভাব ধারী করিলেও অনেক্টণে অফ্সড় লিপির সদৃশ। (Cunningham's Archimological Survey Reports, Vol. c. plate XIII, No. I. महेरा)।

⁽২৯) Cunningham's Archeological Survey Reports Vol. III, plates XXXV, XXVI, XXVII অশোকবর, নরণাল, নারাংপপাল প্রভৃতির গরাস্থ শিলালিশির প্রতিকৃতি জটুবা।

^(0.) Indian Antiquary, Vol. XVII.

শুকরাটী অক্ষরে নিথিত হইলেও সর্বাশেষে রাজার স্বাক্ষর স্থানে এই কএকটা কথামাত্র নীগরাক্ষরে নিথিত---

"বহুত্তোরং সম ঐবিত্রাগস্নো: ঐপ্রশান্তরাগভ।"

কেবল রাজার স্বাক্ষর নীগরাক্ষরে লিখিত হওয়ায় স্পষ্টই ্লানা বাইতেছেঁ, গুলরাটে ভির **গ**কর ( গুহালিপি ) প্রচলিত ধাঁকিলেও, তৎকালে বা তৎশ্ব হইতেই রাজপরি-বারগণ নাগরাক্ষরে লিখন, অভ্যাদ করিতেছিলেন। উপ-ঝেক দদ্দের তামশাসদের পর হারকাপুরীর দিকিণপুর্বে ্সমূলকুলে অব্হিত ধিনিকি গ্রাম হইতে আবিদ্বত ৭৯৪ সম্বতে উৎকীৰ সৌরাষ্ট্রয়াল আইম্বদেবের তামশাস্নে নাগরাক্ষরের পূর্ণ প্রচার বৃদ্ধিত হয় (৩১)। জাইতদেব মহামাত্র ভটনারায়ণের অনুমতি লইয়াই মুদ্যুলপোত্র ष्ट्रेष्टर ए के भागनभव मान करवन। स्रीहेक्टररवव के ভাষ্রশাসন দেখিয়া অনেকে বলিয়া থাঞ্জন যে, উহার লেখা কোন অপটু, লেখকের হস্তপ্রস্ত। কিন্তু আমাদের বিশাস অক্তরণ। মহারাজ দক্ষের হস্তলিপিতে যেরপে নাগরাক্ষরের সহিত কতক কতক শুপ্তলিশির আভাস লক্ষিত হয়, জাইর-**(मरवज्ञ निभिर्क अन्तर्भ व्याकाम भाषत्रा यात्र ना वरहे, किन्ह** खेरा (प^{*}वर्खमान नागत्राक्तरत्रत्र श्राहीनलम क्रम, लाहा महस्बहे খীকার করা যায়। তৎপরেই রাষ্ট্রকৃটরাজ দন্তিত্র্গ ওড়না। বলোকের ৬৭৫ শকে উৎকীর্ণ তাত্রশাসন দেখিতে পাই। কোলাপুরের অন্তর্গত সামনগড় হইতে ঐ শাসনথানি আবি-ক্বত হইমটিছ (৩২)। এই তাত্রফলকের অক্ষরবিভাগ অতি পরিপাটী। ইহার ই এ घ চ[°] ग ধ ন [°]ব এবং स्ट শুলরাটের • প্রাচীন ( Cave ) অক্রের রূপ ধারণ করিলেও व्यभन्न मकन वर्णारे नागनाक्यतन विकाम मुद्दे इत्र । वाख-বিক দ্বিত্র ও তৎপরবর্তী গুলরাটের রাষ্ট্রকৃট রালগণের यरक्रहे नागवाक्यरत्रत वर्ष्ण व्यक्तात्र क्यात्रक्ष हव ( ७७ )। १८१ শকে উৎকীৰ্ণ রাষ্ট্রকৃটরাজ ২য় এপবের তামশাদন (৩৪), ৮০৬ শকে উৎकीर्न ताहेक्षेत्रांच हेट निर्णुवर्सन छाञ्च-

শাসন (৩৫), ৮৫৫ শকে উৎকীর্ণ গোবিক্ষ ক্ষ্বর্গবর্ষের তামশাসন (৩৬), ৮৬২ শকে উৎকীর্ণ রাষ্ট্রক্টরাজ ক্ষ্ণ অকালবর্ধের তামশাসন (৩৭), এবং ৮৯৪ শক্তি + উৎ-কীর্ণ অমোঘবর্ষের তামশাসনে বর্ধাক্রমে আগরাক্ষরের পূর্ণ-বিকাশ সংসাধিত হইরাছে।

২র জ্রবের ভোমশাস্ত্র প্রাচীনতম নাগরাক্ষরে লিখিত हरेल अरुवि क ध व न थे अ अकृषि काल कान वार् প্রাচীন ঋপ্তাক্ষর বা দাকিণাত্যের ঋহালিপির ছাঁদ আছে, কিন্ত গোৰিন্দ স্থৰণৰৰ, ইক্স নিত্যবৰ্ষ এবং স্মােখৰৰের তামশাসনে আধুনিক নাগরাক্ষরের 'প্রাত্তাব হইরাছে। পূৰ্বতেন দক্ষ, জাইছ, দস্তিছৰ্গ বা ঞ্চবের শাসুনশিশির যুক্ত শ্বরগুলি দেখিলেই শুপ্তলিণি হইজে নি:স্তু ও বর্ত্তমান নাগরাক্ষরের আদিম অববিধার যুক্তবর বলিরী প্রতীর্মান হয়, কিন্তু গোবিন্দ স্থবৰ্ণবৰ্ষের লিপিতে বৈলক্ষণ্য ঘটিয়াছে। যেমন প্রাচীন বন্ধীর ও মৈথিলু লিপিতে ে ো ৌ প্রভৃতি যুক্ত খুর আছে, দেইরূপ হংবর্ণবর্ষ প্রভৃতির ভাষ্ণাদনে নৈথিল বা বলীয় যুক্তখর গৃহীত হইয়াছে। এত দ্বো কানা याहेट एक एक प्रकार विशेष के सिथिन निशिष्ट एवं यूक यह ব্যবস্থত হয়, অপ্ত বা নাগরীলিপির সহিত উহার মিণ না থাকিলেও উহা নিতান্ত আধুনিক নয়। অন্ততঃ খুষ্টায় ৭ম ৰা ৮ম শতাকে ঐরপ যুক্তকর উভাবিত হইয়া থাকিবে। ঐরপ যুক্তস্বরবিশিষ্ট নাগরীলিপি গুলরাটে লৈননাগরী বলিয়া খ্যাত। বড়ই আশ্চর্ণ্যের বিষয় যে, গৌড়রাজ ধর্মপালের ভাসশাসনে ঐরপ যুক্তশ্বর ব্যবহৃত না হইলেওঁ তৎপরবর্ত্তী অপরাপর পাল ও সেনরাজগণের সময়ে উৎকীণ লিপিতে ঐরপ যুক্ত বর স্পষ্টতঃ গৃহীত হইয়াছে। বিশকো্য-কার্য্যা-বুয়ে সংগৃহীত ৯৩০ শকে বলাক্ত্র কিনিওত কাশীখণ্ডের প্থিতে ঐরপ যুক্ত স্বর অতি পরিষার অঞ্চিত আছে।

খুঁটীর ১ম শতাকী হইতে নাগুরী ও গৌড়লিপির পূর্ব-প্রচার লক্ষিত হয়। ১ম হইতে ১১ল শতাকী, মধ্যে নাগুরী ও গৌড়লিপি বে ক্ষাকার ধারক ক্রিয়াছে, আজও সেই আকার দৃষ্ট হর। যাহা কিছু অতি রামাক্ত প্রভেদ দেখা বার, তাহা স্থানভ্যেদ লেখক বা ক্ষেদকের অভিকৃতিক্রমে

⁽⁹³⁾ Indian Antiquary, Vol. XII. p. 155.

^{• (}ex) Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. II., p. 3-II. and Indian Antiquary, Vol. XI, p. 110.

[্]তে) কেবল রাইক্টরাজ কর্ক স্বর্গবর্ধের ৭৩৪ শকান্ধিত তামশাসনে বৈলকণা দৃষ্ট হয়। এই তামশাসনে দান্দিশাত্যের প্রাচীন গুছালিপি (Cave alphabet) সৃহীত হইরাছে। (Indian Antiquary, 1883. p. 156.)

⁽⁹⁸⁾ Indian Antiquary, Vol. 201V. p. 200,

^{• (9}e) Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XVIII.

⁽⁹⁶⁾ Indian Antiquary, Vol. XII. p. 280.

⁽⁹¹⁾ Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XVIII.

¹ Indian Antiquery, Vol. XII. p. 266.

উপরে যে সকল কথা লিখিলাম, তদ্বারা এইটুকু জানা যাইতেছে যে কি গ্রন্থত প্রমাণ, কি প্রাচীনলিপি উভয় ইততেই খুষ্টায় ৫ম শতান্ধে আমরা সর্ব্বপ্রম লাগরীলিপি কিল কি না তাহার প্রমাণের অভাব । 'সর্ব্বপ্রথম লিখিয়াছি, নগর নামক প্রবাসী নাগর ব্রাহ্মণ হইতে নাগরাক্ষর বা নাগরীলিপি প্রচলিত হইরাছে। নাগর ব্রাহ্মণেরা গুজরাটের অধিবাসী। গুজরাট হইতেই সর্ব্বপ্রাচীন নাগরী লিপি আবিষ্কৃত হওয়ায় আমাদের প্রস্তাবের অনেকটা সমর্থন করিতেছে।

কিন্তু এথানে একটা কথা উঠিতে পারে। গুজরাটে খুষ্টায় হয় হইতে ৭ম শতাকী পর্যান্ত যে অসংখ্য শিলালিপি আবিদ্ধৃত, হইয়াছে, তৎসমুদ্মকে প্রাবিদ্গণ গুহালিপি (Cave-character) বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। সমস্ত দাকিণাতা হইতে যে সকল প্রাচীন শিলালিপি বা তাম-শাসন আবিদ্ধৃত হইয়াছে, তৎসমুদ্যের অধিকাংশই ঐরপ গুহালিপিতে উৎকীর্ণ। এরপ স্থলে নাগর বোলাগের দেশ-প্রচলিত অক্ষর গ্রহণ না করিয়া ভিন্নরূপ অক্ষর গ্রহণ করিলেন কেন? গুহালিপির পর্যালোচনা করিলে তাহা হইতে কাগরী লিপির উৎপত্তি স্পষ্টতঃ খীকার করা যায় না, ববং নাগরী লিপিকে মগুধের গুপ্তলিপিমূলক বলা যাইতে পারে। এতদ্বারা বোধ হয়, গুজরাটে প্রচলিত প্রাচীনতম নাগরীলিপি গৌড়, মগুধ বা উত্তর ভারত হইতে আনীত হইয়া নাগর ব্যহ্মণ কর্ত্ব নাগরী নামে অভিহিত হইয়া থাকিবে।

কিরপে কোন্ সময়ে এই নাগরী শিপির, প্রাচীন রূপ উত্তর-ভারত ইইতে গুলরাটে আনীত হয়, তাহা নির্ণয় করা সমস্তব ক্ষিত্র প্রাণীয় নাগরথকে ১০৮ অধনীয়ে শিথিত আছে, দুর দেশান্তর হইতে যে রাহ্মণগণ্ধ প্রকল-আদিনহ হাটকেশ্বর কেত্রে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছিলেন, নাগ হইতে নগর-উদ্ধারকারী বিপ্রবর বিজ্ঞাত ভাহাদের সকলকেই ধন রুত্র দিরী এখানে (নগরে) স্থাপন্ধ করিয়া-ভিলেন (৩৮)। এতদ্বারা বোধ হইতেছে, নাগর বাহ্মণগণ বহু দ্র দেশান্তর হইতে আশিয়া এখানে বসতি করেন।

( ৩৮ ) "চতুংষ্টিষ্ গোত্রেষ্ এবং তে এক্ষণোন্তমা: ॥ १২ ॥
তেন তত্র সমানীতাল্লিজাতেন মহান্ধনা 🕊
তেগামেকত্রজংশীতি দশপঞ্চ শতানি চ ॥ ৪০ ॥
সামান্ডাগমোক্ষাণি তানি তেন কৃতানি চ ।
অপ্তব্যবিভাগেন পুক্মান্ব্যব্যান্তব্য ॥ ৪৪ ॥

পূর্বেই লিখিয়ছি, নগর বা বড়নগরের এপাচীন নাম আনন্দপুর। খৃষ্টীয় ৪র্থ, ধ্ম ও ৬ ঠ শতাকীর তাদ্রশাসনে নগরের পরিবর্ত্তে কেবল আনন্দপুর নামই দৃষ্ট হয়। ৫১. সম্বতে সকলিত জৈনদিগের ধর্মগ্রন্থ করুসত্তে লিখিত আছে বে; বলভীরাজ প্রবসেনেম্ম আদেশে এই আনন্দপুরেই সর্মান্দকে করুসত্ত পঠিত হকতে থাকে। চীনপরিব্রাজক হিউ. এন্ সিয়াঙ্ এখানে বৌদ্ধসভারাম ও বিস্তর হিন্দু দেবমন্দির দেখিয়া গিয়াছিলেন। সে সমষ্ট এই নগর মালব রাজার অধীন ছিল। চীনপরিব্রাজক এখানে শ্লে সকল হিন্দু দেবা। লয় দেখিয়াছিলেন, তাহাই বেয়ধ হয় নাগর্মগুর্বিত হাটকে. ধ্র প্রভৃতির মন্দির।

নাগরখণ্ডে লিখিত আছে,—বি প্রর ত্রিজাত ও তাঁহার সহচারী আন্ধাগণ নাগবংশ ধ্বংস বা নাগৃদিগকে তাড়াইয়া হাটকেশ্বর ক্ষেত্র উদ্ধার করেন,—ইহার প্রসঙ্গ পূর্বেই লিখি-য়াছি। আমাদের বিবেচনার উহা একটা রূপক বর্ণনা। সম্ভবত: শৈবগণ খৃষ্ঠীয় তৃতীয় শতাব্দের শেষুভাগে গুজ-রাটের শাহ বা নাগবংশীয় রাজগণকে পরাজয় করিয়া হাটকে-শ্বর অধিকার করেন;—তাহাই রূপকভাবে ক্ষন্প্রাণের নাগরখণ্ডে বর্ণিত হইয়াছে।

গুর্জবেখর পুরোহিত সোমেখর একজন নাগর রাজণ ছিলেন। তিনি তদিরচিত স্থরণোৎসব নামক মহাকাবো আপনার পূর্বপ্রধাণের পরিচয় উপলক্ষে লিথিয়াছেন,— "বিজ্ঞাতিগণের প্রশস্ত বাস্কুমি নগর নামক স্থান, বেদবিং

ত্রিজাতস্ত চ বাকোন বেন দ্রাদপি স্কৃত্য।
সমাগচছন্তি বিপেল্রাঃ গুরবৃদ্ধিঃ প্রজায়তে ॥ ৪৬৭
নাক কিন্যাতি সংসকা দৌছাদক্তত্র চ বিজাঃ।
কতুত্তেখাং হুতৈঃ পৌল্রের্মগুভিন্চ সহপ্রাঃ ৪৪ ॥
তৎপুরং বৃদ্ধিমাপদ্ধেদ্ ব্যাকুরৈরিব বিজাঃ।"

( নাগরথ**ও** ১০৮ ^{জ: )}

(७৯) क्वांगतथर७ **कानुसमीत महास्तर्**तत वर्गना खाहि, ता^{ह हा} कानम्पूरीत रहेरजरे कानसम्बद्ध नामकत्तन हरेत्रा शोकित्त ।

 পবিত্ যজীয় হোমায়িতে যে ভান পবিত্র ভাব ধারণ করিয়াছে, তথায় রাজপ্রাদপ্রাপ্ত বশিষ্ঠগোত্র গুলেচ বাস ক্রিভেন, তাঁহার বংশে সোলশর্মা জন্মগ্রহণ করেন, তিনি জ্জরেশ্বর মূলরাজের পৌরে ট্রিভ্য প্রাপ্ত হন।" (৪০) দোমে-·चत भरत निधिवारह्न, छाँशान्न भूर्त्तभूक्रवशनहे भूक्रवार्हेक्य প্তর্জবের চৌলুক্যগণের পুরোছিত ছিলেন। কেই কেই রাষ্ট্রকুটরাজেরও পুরোহিত হইয়াছিলেন (৪১)।

ু মূলরাজ খৃষ্ঠীর ১০ম শুভাব্দে বিষ্ণমান ছিলেন। তাঁহার , সমুয়ে, নগর নাম প্রচলিত হইলেও তাঁহার অনেক পূর্ব ছইন্ডেই যে এথানে নাগর ,বাহ্মণের বসতি ছইয়াছিল, তাহা দোনেখারের বর্ণনা পাঠেই জানা যায়। খুষ্ঠীয় ১ম শতীকী পর্যাস্ত এথানে বনরাজ প্রভৃতি জৈন রাজগণ রাজত করিতেন, त्रहे <del>केंग्र</del> (वांध इंग्रु এथान्न नागत्रवाक्षणकृत्रक नगत नाम প্রচলিত হইতে পারে নাই।

চীন পরিপ্রাক্তকের সময় খৃষ্টীয় ৭ম শতাব্দীর প্রারত্তে এথানে হিন্দু দেবালয়। দ্বি প্রতিষ্ঠিত ছিল। নাগরথতের মতে, নাগর ত্রাহ্মণেরা নগর বা চমৎকারপুরের দেবমন্দিরাদি প্রতি-ষ্ক্রিত করেন। খৃষ্টীয় ৫ম শভাকী বা তৎপূর্ব্বে আনন্দণুদ্র জৈন প্রাধান্তের প্রমাণ পাওয়া যায়। পুর্কেই লিখিয়াছি যে খুষ্টায় ৪র্থ বা ৫ম শতান্ধীতে রচিত নন্দীত্তে নাগরীলিপির म्लाष्टे উল্লেখ আছে এবং ঐ সময়ের श्रार्कतत्रांक नम् श्रामाञ्च-রাগের হস্তাক্ষরেও নাগরীলিপির প্রথম প্রয়োগ লক্ষিত হয়। এক্লপ ভলে আমাদের বোধ হয়, খুষ্ঠীয় ৫ম শতাকীর পূর্বের প্রায় তৃতীয় শতান্দীর শেষে চতুর্থ শতান্দীতে উত্তরাঞ্চল হইতে সমাগত নাগুর আহ্মণ কর্তৃক নাগরাক্ষর প্রচলিত হইয়া খাকিবে। আশ্চর্যোর বিষয় যে, গুজরাট হইতে নাগরাক্ষরে

( ४० ) "অস্তি প্রশন্তাচরণপ্রধানং স্থানং বিজ্ঞানাং নগরাভিধানম্। কর্ত্ত্রং ন শক্রোতি কদাপি যস্ত ত্রেডাপবিত্রস্ত কলিঃ কলঙ্কঃ । চঞ্চৎ পঞ্মথাগ্নিভগ্নতমদি স্থানেত্র নেত্রানল-জ্বালা প্রজ্ঞলিত প্রস্থন-ধনুষা দেবেন দভৌদয়ে। আবিভূ তমভূতপুর্কীচরিত্বশ্রেষ্ঠাবশিষ্ঠাততঃ সংকর্মোদরমধ্বরস্থিতিবিদাং স্থানেত গোতাং মহং ॥ যেবামশেবাঞ্জিপতিঃ প্রসন্ন: সংনদ্ধপাণিঃ ফণিককণেন। ত্তএব সংভৃতিমিহাপু বস্তি কুলে গুলেচাভিধরা প্রসিদ্ধে । শ্রীদোলনুর্বা বিমলে কুলেঞ জন্ম বিজন্মপ্রবর্ষ প্রপেদে। ষঃ স্বর্গিণঃ সোমরদেন বাগে পিত্ইক পিতেরপুণৎ প্রয়াগে। শুর্জরক্ষিতিভূজা কিল মুলরাজদেবেন দ্রম্পঁরুধ্য পুরোদধে যঃ ॥" ( হুরপোৎসব ১৫শ সর্গ•)

উৎকীৰ্ণ ধে সকল প্ৰাচীন ভাস্ত্ৰশাসন পাওয়া গিয়াছে, তাহার অধিকাংশিই কান্তকুজ, পাটলীপুত্র, পুণ্ডুবর্জন প্রভৃতি স্থান-বাসী সমাগত ত্রাহ্মণের অন্তই প্রদত্ত ইয়াছে।

উপরি ট্রীক্ত দদ প্রশাস্তরাগ্যের ৪১৫ শকান্ধিত ভাষ্ড-শাসনে লিখিত আছে, কালুকুলবান্তব্য ভট্ট মহীধরের পুত্র ভট্রগোবিদ্দকে ঐ তাম্রশাসন প্রদত্ত হইল। রাষ্ট্রকৃটরাজ নিভাবর্ধের ৮৩৬ শকার্দ্ধিত ভাষ্রশাসনে শিধিত আছে, পাটলীপুত্রবিনির্গত লক্ষণগোত্রীয় বেল্পভট্টের পুত্র সিদ্ধ-ভটুকে লাটদেশাস্ত্রগত ভেল্নগ্রাম লান করা হইল। এইক্লপ ৮৫৪ শকাঙ্কিত রাষ্ট্রকৃটরাজ গোবিলুদ হ্বর্ণবর্ষের ভাত্র-শাসনেও প্তুবর্দ্ধননগরবিনির্গত কৌশিক গোতা কেশব-দীক্ষিতকে লোহগ্রাম_্দানের কথা বর্ণিত আছে ৷° ইত্যাদি প্রমাণ দারা স্পষ্ট প্রতীত হইতেছে যে বহুপূর্ব্যেল হইতেই কাক্সকল, পাটলীপুত্র ও পুঞ্বর্দ্ধন হইতে বহুসংখ্যক ত্রাহ্মণ चानित्रा धक्रतारि वान करवन। छाहारनत्र वह्रश्र्व हहेरा है নাগর ব্রাহ্মণগণ ঐ সকল স্থান হইতে আসিয়া চমৎকারপুরে , বাস করেন, ভাহা নাগরওওবর্ণিত দ্রদেশাস্তরগত আক্ষণ-গণের বিবরণ পাঠ করিলে, সহজেই অনুমিত হয়। ঐরপ ব্রাহ্মণগণ খারাই নাগরীলিপির প্রাচীনরূপ গুজরাটে আনীত ও প্রচারিত হইয়া থাকিবে।

নাগর ব্রাদ্মণগণ অতি প্রাচীনকাল হইতে ওঞ্জরাটের রাষ্ট্রকৃট ও চৌলুকা রাজগণের বংশাফুক্রমে পৌরোহিতা ও তাঁহাদের নিকট মুহাসম্মান লাভ করিয়াছিলেনীঃ প্রজ্জার-রাজগণ নাগর ব্রাহ্মণদিগকে কিরূপ অসাম্যুত্ত ভক্তি শ্রন্ধা প্রদর্শন ক্রিভেন, ভাহা নাগর ব্রাহ্মণগণের আদি বাস্ভূমি বড়নগরেঁ ∞প্রস্তরে উৎকীর্ণ শত শত প্রশস্তিতে বিঘোষিত হইয়াছে। উক্ত রাষ্ট্রকৃট ও চৌলুকা রাজগণের বঁল্লেই নাগরী-লিপি সমস্ত ভারতবর্ষে প্রচারিত হয়। , নাটাধিপতি রাষ্ট্র-কৃটবংশীয় কর্ক স্থবর্গবর্ষের ৭৩৪ শকান্ধিত কামলাসনে স্পট্ বৰ্ণিত হইয়াছে---

"গৌড়েন্দ্র-বন্দতি-নির্জয়-ছুর্নিদগ্ন-

- সদগুরজনৈেখন-দিগর্গলভাঞ্যভা।
- नीषा ज्ञाः विहलः गानव-त्रक्रगार्थः খামী তথাভামপি রীক্ষাজ্লানি ভূঙ্জে ।" (৪২)

আবার মাঅথেটপ্রতিষ্ঠাতা রাষ্ট্রক্টরাজ নৃপভূলের পুত্র শুর্জ্জরেশব কৃষ্ণরাজ সহকে অকালবর্ষের ৮৬২ শকালিত তাম্ৰশাসনে শিধিত আছে 🕝

⁽ ৪১ ) "ছहोत्रिकाि कपत्नां क्रिकेश्वां कृष्टे-कृत्वन निम्निक्तर्गात्रगरकोकतन्त्र। সর্ব্বেখানপুরুষাধিপতিঃ প্রতাপমলেন ভূপতিমতীলকর। কৃতো যঃ।" ।

^(8:3) Indian Antiquary for 1883, p. 106

তভোত্তজিত গৃৰ্জনোদ্ৰতহটলাটোত্তট শ্ৰীমদৈ। গৌড়ানাং বিনয়ব্ৰতাৰ্পণগুৰুগামুজনিজাহরঃ ১

- বার্যায়্ক কলিক গাক্ষণাবৈধরভার্কিতাক্ত শিচরং
- স্থ স্থন্ত্বাগ্ভ্বং পরিবৃঢ়ং জীক্ষরাজোঁতেবৈ ॥" (৪০)
  উপরি উক্ত শাসনলিপি পাঠে জানা বাইতেছে যে পৃষ্টীর
  ৮ম, ৯ম ৪ ১ শতাকীতে গুর্জ্জরের রাইক্টরাজগণ গৌড়,
  বল, কলিল, গাল, মগধ, মালব প্রভৃতি স্থান জয় করিয়া
  ছিলেন। (কনোজের বিখ্যাত রাঠোর-রাজগণও রাইক্টবংশীর।) এরূপ স্থলে বোধ হয় খৃষ্টীর ৮ম হইতে ১ ম
  শতাকীর মধ্যে পুর্জ্জরের রাইক্টবংশের ক্লগুরু নাগর
  ভাক্ষণদিগের প্রবর্ত্তিত অথবা ব্যবহৃত নাগরাক্ষর নাগরী নামে
  সমস্ত জার্যাবর্তে প্রচলিত হইরাছিল।

রাষ্ট্রকুট্রনাজগণের বজে বে, নাগরী নাম সমস্ত জার্ধ্যা-বর্ত্তে প্রচারিত হইল, মূলাবন্তের সাহাব্যে এবং পাশ্চাত্য প্রাক্তত্ত্ববিদ্যাণের উৎসাহে সেই লিপি এখন সমস্ত জগতে পরিব্যাপ্ত হইরা পড়িরাছে।

দেবনাগরী, নাগরী লিপির নামান্তর। [দেবনাগর দেখ।]
দেবনাথ (পং) দেবানাং নাথ৯ ৬৩ং। শিব, মহাদেব।
দেবনাথ, ১ একজন সংস্কৃত গ্রন্থকার। ইনি ওএচিন্তামণি
রচনা করেন।

২ মীনকেতৃদর নামে সংস্কৃত কাব্য রচরিতা।

৩ রসিকপ্রকাশ নামে সংস্কৃত অলভার-রচরিতা।

দেবনাথ ঠকুর, একজন গংস্কৃত গ্রন্থকার, সোমভটের শিস্ত। ইনি অধিকরণকোমূলী, অধিকরণসার ও স্বৃতিকোমূলী নামে কএকথানি গ্রন্থ রচনা করেন।

ইহার অধিকরণকোমুদীতে আদিত্তের রক্তাক্র, হরিনাথের করতক ও বাচম্পতিমিশ্রের মত উদ্ভ হইরাছে।
দেবনাথ তঁকীপঞ্জান্ম, কাব্যকোমুদী নামে কাব্যপ্রকাশের
একজন বিধ্যাত টাকাকার।

(দকনামন্ (পুং) > কুশ্বীপপতি হিরণারেতার প্রভেদ।

২ কুশ্বীপের একটা বর্ধু।

দেবনামক (পুং) দেবেতি নাম যক্ত কপ্। দেবযোনি বিদ্যা-ধরাদি। হেমচক্র দেবনাবক এই শব্দ ধরিরাছেন।

দেবনারক ( %ং) নরএব নার: ততঃ স্বার্থেকন্। দেবরূপ নর, দেবজন। ( হেম•)

দেবনাল (পুং) নলএক স্বার্থে অণ্ দেবইব শ্রেষ্টতাং নালঃ। নলোতম, দেবনল। দেবনিকায় ( আ ) দেবানাং নিকার: ৬৩৫। ১ দেবসমূহ। "এতে মন্ংক্ত সপ্তাম্ভানস্কন্ ভ্রিতেকসঃ।

ুদেবান্ দেবনিকারাংশ্চ মহ্বীংশচারিতৌজসঃ ॥" (মহু ১০৬৬) ২ দেবস্থান, অর্গ।

দেবনিদ্ ( অ ) দেবং ত্রিক্তি নিক্স-কিপ্ । দেবনিক্স দেব্জাদিগের নিক্ষাকারী।

"দেবনিদো হপ্রথমা অজুর্বন্।" (পাক্ ১।১৫২।২)
দেবনিশ্মিত (তি ) দেবৈ নিশিভে: ৩তৎ। দেবতা হুর্ত্ক রচিত।

"ৰীপেরু দিক্ষু পূর্বাদি নগর্ব্যা, দেবনিশ্বিতা:।" ( স্ব্যাসি ) ° ( ত্রী ) শুজুচী। ( শব্দার্থচি )

Cन वनीथ ( १: ) नशन नशानवृक मजरछन । •

দেবপঞ্জান্তে ( পুং) পঞ্চাই বাগভেদ। ( নাশক) দেবপতি ( পুং) দেবানাং পতিঃ ৬তৎ। ইঞ্জ, দেবতাদিগের স্বামী।

দেবপতিমন্ত্রিন্ (পুং) দেবপঠে র্নন্ত্রী ৬ডৎ। ইল্রের মন্ত্রী, বুহস্পতি, স্থরাচার্ব্য।

দেবপণ্ডিত, একজন সংস্কৃত প্রস্থকার। ইনি প্রাণ্গ্য-নিঘটু নামে একথানি বৈদ্যকগ্রন্থ করেন। °

দেবপাত্তন, কাঠিয়াবাড়ের অন্তর্গত প্রসিদ্ধ দেবস্থান। ইহার বর্তমান নাম সোমনাথ।

পুরাণাদিতে এই স্থান প্রভাগ এবং প্রাচীন খোদিত লিপিতে দেবপত্তন নামে বর্ণিত হইরাছে। (বৃঁহীর ১০শ শতাকীতে উৎকীর্ণ) সরিদদেবের প্রশন্তিতে দ্বেবপত্তনের এইরূপ উল্লেখ ক্ষাছে—

"প্রীদেবপত্তনসমন্তবনন্তনীনাং
নেত্রারবিশ্বস্থকতৈরিব সাহ্ববৈদ্ধঃ।
তীর্ধাবগাহনধিয়া দিশি পশ্চিমারা
মায়াতবাহ্পপশ্মারতনং কৃতী বং ॥
সরস্বীসাগর্মপংপ্রারোগবিভৃষিতাভোগমধাগমদাঃ।
সোমেশুচ্ডাবলমানবালচন্ত্রপ্রভাগেংইলিভং প্রভাগং।" *
প্রের্থ এই স্থান দেবনগর নামেও খ্যাত ছিল। (*)

. পূর্বে এই স্থান দেবনগর নামেও খ্যাত ছিল। (*১৪শ খু: শতাবেদ) জয়সিংছদেবস্থার কৃষ্ণরপালচরিত্রে ^{এই} * দেবনগরের উল্লেখ আছে—

"রাজা রীজিরথান্তিরাজিবিজরী রাজেব রেজে ওচি বোষাত্তাং বিরটষ্য দেবনগরে শ্রীসোমনাথোন্ডিভঃ।"প্লোক ২৮। কাহারও কাহারও বিশাস, গুলরাটের নাগরবান্ত্রণ দিগের নামে শুভিহিত নুষ্ঠিয়াক্ষর এথানেই প্রথম দেব-

⁽⁸⁸⁾ Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XVIII, p. 243.

^{*} Epigraphia Indica, Vol. I. p. 283,

নাগরী নামে আখ্যাত হয়। [সোমনাথ, প্রভাস, দেবনাগর প্রভৃতি শঙ্কা জইবা।]

দেবপত্নী (স্ত্রী) দেবানাং পদ্ধীব প্রিরদর্শনদ্বাং। ১ মধ্বালুক।
(ত্রিকাণ) দেবানাং পদ্ধী বা দেবঃ পতির্যন্তাঃ। ২ দেবতাদিগেরু ভার্যা।

"(मर्गानाः"माठतः मर्ता (मर्गपू) मक्छकाः।"

• (ভারত ১৩|১৪।৩৯৩)

দেবপথ (পুং) দেবানাং প্রা ৬তং। দেবতাদিগের পণ, পশ্চার—ছারাপণ, সোমধারা, নভঃসরিং। (ত্রিকাণ্ডা

"লিৰ্োদ্বেপথোহ্যেষ নাত্ৰ গছকি মাহ্যাঃ।"

( ভারত ৩।১৪৮।২• )

দেবপথ অতি রমণীয়, ক্বিন্ত এই পথে মানবগণ গমন করিতে পারে না। . ২ তীর্থবিশেষ।

"ততোদেবপথং গছ† নিরতো নিরতাসন:। "•

দেবসত্ত যং পুণাং ভদবাপোতি মানবঃ॥" (ভার॰ এ৮৫।৪৫)

দেবপথ তীর্থে গমন করিয়া সংযত হইয়া স্থান দানাদি
করিলে দেবসত্তের ফলকাভ হয়।

দেবপথাদি (পুং) পাণিয়াক্ত শব্দণ বিশেষ। দেবপথ, হংসপথ, বারিপথ, রথপথ, স্থলপথ, করিপথ, অব্লপথ, আব্দপথ, রাজপথ, শব্দপথ, শব্দপথ, দিক্ষিপতি, উট্টগ্রীব, বায়রজ্জ্, হস্ত, ইস্ত্রদণ্ড, পৃষ্প, মংস্থা এইগুলি দেবপথাদি। (পাণিনি) দেবপর (ত্রি), দেবং পরো যস্তা। দেবায়ত দিক্ষিতিত্তক, আপ্রুমারণার্থ পৌক্ষ ও চেটায়হিত, যাহারা বিপত্তি প্রতীকারের কোন চেটা করেনা, কেবল দেবের উপর নির্ভর করিয়াথানে।

দেবপূর্ণ (ক্নী) নদেবপ্রিয়ং পর্ণং যক্ত। স্থরপর্ণ। (রীজনিং)
দেবপুঞ্জু (পুং) দেবায় উৎস্টঃ পশুঃ। ১ দেবতার উদ্দেশে
উৎস্ট, পশুঃ।

"অনিৰ্দাহাং গাং স্কৃতাং বৃষান্ দেবপশৃংস্তথা। সপালান্ বা বিপালান্ বা ন দ্স্তান্ মহুবত্তবীং॥" (মুফু ) ২ দেবোপাসক।

"অথ বোইন্সাং দেবতামুপ্তান্তে অন্তোহসা বলো । ইহমন্মি ন স বেদ যথা পশুরের সদেবানাং" (এইতি ) দৈবসাত্তে (ক্লী) দেবানাং পাত্রং, ৬তৎ। বা দেবৈং পীয়তেহত্ত্র পা আধারে ষ্ট্রন্ক অগ্নি।

"আস্ পাত্রং জৃহর্দেবানামিতি দেবপাত্রং বা এষ যদথি স্তম্মাদমৌ সর্ম্বেডা: দেবেডা: জৃহ্বতি" (শতপথবী ১।৪।২।১•) 'সমৌ প্রক্রিপ্ত হবিষো দেবৈর্গুমানমাদমেদেবপাত্রস্বং' দেবপান (পুং) দেবৈ: পীরতে হলেন পা-করণে লুট্। চমস, গোমপানপাত্তেল। 'চমসো দৈবপান ইতি চমসেন হ বা এতেন ভূতেন দেবা ভক্ষাত্তি ভক্ষাদাহ চমসৌ দেবপান ইতি।' (ভাষা)

দেবপুলি (পং ) : শাক্ষীপের বর্ষপর্কাণ্ডভেন । ধ্ডাগণ ৫।২০।১৯)

২ পালবংশীয় এক সন প্রবেশ পরাক্রান্ত ও বিধ্যাত
রাজা। গৌড়ের প্রথম পুলবংশীয় রাজা ধর্মপালের পুত্র
মূলের হইতে প্রাপ্ত দেবপালের তাত্রশাসন পাঠে, জানা যার,
কামরূপ হইতে উড়িয়া পর্যন্ত সমূল্য স্থান ইহার অধিকারভূক্ত হইয়াছিল। 

তিব্বভের বৌদ্ধ ঐতিহাসিক তারানাথের
মতে,

হিমালয় হইতে বিদ্ধা ও জালদ্ধক হইতে সমূল পর্যান্ত
সমূলয় উত্তরভারত কামরূপ-বিজ্ঞোৱাক ক্রাম্ভ হইয়াছিল। ।

বাত্তবিক যে সকৰ বৌদ্ধপালয়ালগণ গৌড়ে রালছ করেন, তন্মধ্যে যশে, মাধন, পরাক্রমে ও কিলা বৃদ্ধিতে সর্বাপেকা এই দেবপাল থাতিলাভ করিয়াছিলেন। হরিমিশ্র নামক রাটায় আক্রণদিগের এক কুলাচার্য্যাকারিকায় এই দেবপালের যথেই অ্থাতি দৃষ্ট হয়। বাত্তবিক ইনি বৌদ্ধ রাল্লা হইয়াও এখানকার আক্রণদিগকে বিশেষ আদর করিতেন। এমন কি ভট্টনারায়ণ-বংশীয় আন্ধাণণ ইহাদের মন্ত্রী ছিলেন। একথানি তাম্রশাসন চুইতে কানা যায় যে, ইহার আন্ধ্রণমন্ত্রীয় কৌশলেই ইহার রাল্য বিভ্ত হয়াছিল। দিনালপুর হইতে আবিদ্ধৃত মহীপালের তাম্রশাসন পাঠে কানা যায় — কয়পাল নামে দেবপালের এক ভ্রাতাও অনেক রাল্য কয়য় করিয়াছিলেন **।

দেবপাল কোন্ সময়ে গৌড়ের সিংহাস্থন অধিটিও ছিলেন, সে সৃষ্ঠে অনেক মতভেদ আছে। আড়াইশত বর্ষ পূর্বে লিখিত ব্রহ্মণ্ড নামক একথানি সংস্কৃত গ্রন্থে লিখিত আছে—

"চতুর্বর্ধ সহস্রাস্তে দেবপালো মহান্দী:। অটো গ্রামান্ চাঙ্গদেশে স্থাপয়িয়তি দানকং।" ( এফুখণ্ড ২২।৪৪°)

কলির চারি হাঞ্চার বর্ধ গতু হইলে মহারাজ দেবপাল অলদেশৈ আটথানি গ্রাম ছাপন করিয়াছিলেন। এথন কলির ৪৯৯৬ বর্ষ চলিতেছে; — এরূপ ভণে, প্রায় সহস্রবর্ষ পূর্ব্বে অর্থাৎ খৃষ্টায় ৯ম শতান্দীর শেষভাগে কোন সময়ে দেবপাল , বিভানান ছিলেন। বেহারের নিকটত্ব পোদ্রাবান্নামক ভান

( সায়ণ )

^{*} Asiatic Researches, Vol. I. P. 123.

t Cunningham's Arch. Sun Report, Vol. XV. P. 151.

^{**} Journal of the Asiatic Society of Bengal, pt. I. 1892, p. 82.

হইতে আবিষ্কৃত খোদিত লিপি পাঠে জানা বার, বীরদেব নামে একজন বৌদ্ধ পরিব্রাজক বিহারে 'বংশাবর্ত্মপুরে' মহারাজ দেবপালের অনুগ্রহে অনেক দিন অতিবাহিত করিরাছিলেন ‡।

গৌড়াধিপ দেবপালের পূর্ব্বে কান্তকুঞ্জে ষশোবর্ত্বাতনামে একলন প্রবল পরাঞ্জীত রাজা রাজত করিতেন। তিনি बाह्यरम रशोरफ्त्र रकान त्राङ्गारक भतास्त्र ও वध करतन, ভতুদ্দেশ্বে তাঁহার সভাত্ব'কাঁব বাক্পতি 'গৌড়বধ' নামক প্রাক্ত কাব্য রচনা করেন। বোধ হয় উক্ত মুশোবর্দ্মাই (शोए चत्रत्क भवासम कवित्रा निक नारम म्हणावर्षभूत चामन ক্রিয়া যান। আই যশোবর্দার পুত্রের নাম আনমরাজ। রাজশেশবের প্রবন্ধচিন্তামণি পাঠে জানা যায় যে, গৌড়াধিপ 'ধর্ম' জৈনাচার্যা বপ্পভট্ত রের শিষ্য আমরাজের প্রবেশ শত্রু ছিলেন । বরভট্ত বির সরক্ষতী কোতা পাঠে জানা ধার বে, বীরনির্কাণের ১৩০০ বর্ষ পরে এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ করেন। ৮৯¢ সমতে তাঁহার মৃত্য হুয় †† । রাজদেশবের প্রমাণামুদারে গোড়রাজ ধর্ম যথন আমরাজের সমসাময়িক, তথুন তিনিও বে ৮৩ • हरेल ৮৯৫ मध्य जत्र मर्था कीवित हिलान, खाहाल সন্দেহ নাই। গৌড়রাজ ধর্মপাল বছদিন রাজাত্ত করেন। [ধর্মপাল দেও।] এরূপ ছলে তাঁহার পুত্র দেবপাল ৮৯৫ সংবত্তের পর রাজা হইয়াছিলেন, এরূপ অফুমান করা যায়। বৃদ্ধথণ্ডে দেবপালের যে সময় দেওয়া আছে, ভাষা অনেকটা ঐ সময় হইয়া পড়ে। ভামশাসনে দেবপালের পুত্তের নাম রাজ্যপাল, তিব্বতের তারানাথের মতে রাঘপাল এবং উক্ত ব্রহ্মথণ্ডের মতে দেবপালের পুরের নাম শরণপাল। দিনাজপুর ও মুদ্দের অঞ্লে দেবপালের অনেক কীর্ত্তি পড়িয়া আছে।

২ কান্তকুজের একজন বিখ্যাত রাজাী হেরম্বপালের প্র। ক্লিভিপালের পর ইনি কনোজিনিংহাসনে অধিয়ে ছব করেন। শীয়ভোগীর খোদিভলিপি অনুসারে ইনি ১০০৫ সম্বতে রাজ্য করিতেন §।

ত পঞ্চালের (বদাউনের) একজন বিধাতে রাষ্ট্রক্টবংশীয় রাজা। প্রাণালদেজের পুত্র এবং মদন্দণালের কনিষ্ঠ সহোদর
ও উত্তরাধিকারী। ধারার একজন প্রবল পরাক্রান্ত হিন্দু
রাজা। ১২৭৫ সংবৃতে ইনি রাজত করিতেন, থোদিওলিপি
হইতে জানী বার *।

৪ হরিপালের প্ত, কাঠকগৃহত্তভাষ্য-রচরিতা।

দেবপালিত (আ) দেবেন মেঘাখুনা পালিড:। ১ দেবমাড়ক দেশ, বে দেশে কৈবল বৃত্তির জলে শভাদি উৎপর

হর। ২ ত্বরন্দিত, দেবতা কর্ড্ক পালিত। দেবা এনং
পাল্যান্ম: আশিবি সংজ্ঞারাহক। ৩ সংজ্ঞাভেদ।

দেবপীয়ু (পুং) দেবান্ শীরতি হিন্তি পীর্ষ-উন্। দেবব্রিঃ

অপ্রে। "অপেতো ফুর গণরে। ২গুরাং দেবপীরবঃ"

( ७क्रयक्: ०६।) ।

'দেবপারবং দেবছিবং।' (বেদদীপ)

দৈবপুত্র (পুং) দেবানাং পুত্রং, ৬তৎ। ১ দেবকুমার ১(ত্রী)
দেবত পুত্রীব প্রিরজাৎ। ২ এলা। ৩ দেবকক্সা।
দেবপুর (ত্রী) দেবানাং পুং সমানান্তবিধেরলিত্যভাৎ ন অপ।
দেবপুর (ত্রী) অমরাবতী।
দেবপুরী (ত্রী) দেবানাং পুরী ৬তৎ। অমরাবতী।
দেবপুরী (ত্রী) দেবানাং পুরী ৬তৎ। অমরাবতী।
দেবপুক্রা (পুং) দেবানাং পুরাঃ ৬তৎ। স্বরাচার্যা রহসাতি।
দেবপুত্রিকৃতি (ত্রী) দেবানাং প্রাভক্তিং প্রতিমা ৬তং।
দেবপ্রতিমা।

দেবপ্রতিমা (ন্ত্রী) দেবানাং প্রতিমা ৬ডৎ। দেব-প্রতিমৃর্টি। [দেবতাপ্রতিমা দেখ।]

দেব প্রয়াপ্ হিমালয়ের ভিহরীজেলার মধ্যে গলা ও অলক নন্দা নদীর সম্বামে অবস্থিত একটী পুণাস্থান। স্কন্পুরাণে हिमय ९ थए ७ ( ८१। ६० ७ ७) व्यक्षादम ) এই পুণा ভূমির মাহায়া বর্ণিত আছে। এখানে দেবপ্রয়াগ ও ব্রহ্মকুও এই ছইটী তीर्ध हे थारीन, এতডिর এখানে অনেক তীর্থ আছে। ভাগীর্থীর উত্তরে শিবলিক, ছুইনি নদীর মধ্যে স্বয়ভূলিক, নদীপক্ষে বৈতালিক শিলা, বেতালকুণ্ড, শিবভীর্থ, সূর্য্যকুণ্ড, বাশি^ঠ जीर्थ, बाबारीजीर्थ, वाबारीमिना, পूलामानाजीर्थ, धाराम স্থল, প্রায়স্থলের নিকট বৈজপায়ন ক্ষেত্র, এখানে গুং মধ্যে বিষ্ণুমূৰ্তি প্ৰতিষ্ঠিত আছে। এথান হইতে অৰ্থ কোশ দ্রে গৃঙাচলের নিকট বিষ্তীর্থ। স্থাকুণ্ডের উত্রে ঋষিকুও, গলার দক্ষিণকৃলে, সৌরকুও, নুদীর দকিণকৃলে ·ততে প্রায় কিন্দু, তথা হইতে ৪ ধছু আন্তরে দানবতী নদীর নিকট দানবেশ্ব-মন্দির, দানবভীর মে**হি**ানার নিকট বিশে^{ন্ত্র}, মহালিল, তাটকেখন, তৃঞ্চীখন ও দানৱেখন লিল। ^{দেব-} व्यवारगत पिक्रिश स्त्रभारन नवानिक धाता छात्रीत्रभीत गांधा সহিত মিশিত আছে, সেধানে ইন্দ্রপ্রীগতীর্ণ, ইন্দ্র<del>রুও ও</del> ধর্মকুও। ভাহার দক্ষিণৈ ধনুতীর্থ, এক্ষধারা ও ইত্তেবন লিক। নবালিকের পুঁজের তিশ্লতীর্থ, তাহার দলিং।

[:] Indian Antiquary, Vol. XVII. P. 309.

tt Peterson's Report on the search of Sanskrit Mss, 1886-92, P. LXXXII,

[§] Epigraphia Indica, Vol. I. P. 130, 170.

^{*} Indian Antiquary, Vol. XX. P. 310.

किर्मिकामनी ७ रिनाएक मनी, धरे क्रे मनीत मनस्य भक्र एक्पेन निन, जाराज मिक्स विकारिनी ननी, ननीमनस्य कार्यक्षेत्री हिन्दी मनित, काराज साह्य साह्य

লৈবপ্রজন্মি, উপাধি মণধারী। একজন জৈনাচার্য।
ইহার কোটিকগণ, মধ্যমশাখা, প্রীপ্রস্বাহনকুল ও হর্পুরীর
গছে । ওর্জাররাজ নিভরাজের সমদাম্বিক হেমস্থারির শিশু
বিজয়সিংহ হরি, তাঁহার শিশু চক্র হরি, জাহার শিশু ম্নিচক্র হরি, দেবপ্রত এই মুনিচক্রের শিশু।

ইনি পাণ্ডবচরিত্র ও মৃগাবতীচরিত্র নামক কএকথানি সংস্কৃত গ্রন্থ করেন। বশোভত্র ও নরচক্র দেবপ্রভের জন্ম পাণ্ডবচরিত্র সংশোধন করেন।

দেবপ্রশ্ন ( গৃং ) দেবাফ্দিশ্য প্রশ্ন: বা দেবানাং গ্রহদেবতানাং প্রশ্ন: । গ্রহনক্ষজাদি ঘটিত জিজ্ঞাদা। দেবতাদিগের প্রতি শুভাশুভ বিষয়ক প্রশ্ন। পর্যায়—উপশ্রতি। ( হেম• )

দেবপ্রসূত্ত (ৢি । দেবতা হইতে জাত।

দেবপ্রস্থ্ (পুং) সেনাবিন্দ্ নৃপের পুরী, কুরুক্কেত্রের পূর্বে অবস্থিত।

"দ দেবপ্রন্থমাদাদা দেনাবিন্দো: পুরং প্রতি।"(ভারত ২।২৬ আঃ) দেবপ্রিয় ( গুং) দেবানাং প্রিয়ঃ ৬৩९। ১ পীতভ্দরাজ। ২ বকর্ক। (রাজনি )

Cक्वयम् (जी) दिवानाः वशः ७७९। अश्रता।

দেববন্ধু (পুং) ঋৰিভেদ।

(म्बद्धा (जी) (म्बानामिय वनः यष्टाः। भू महरमयी नजा, बनाएकमः। २ जात्रमाना नजा, बनाजूम्यः।

দেববৃদ্ধি ( পৃং ) দেবার্থং বঙ্গিঃ। দেবতার নিমিত্ত শীৰ্ষার। দেববৃদ্ধি ( পুং ) ১ বছবংশীর স্থানিকপুত্রভেদ। (ভাগি ১।২৪।২৬)

र बाविएछन। (क्रिविराम २७) णः)

দেববোধ ( প্⇔) মহাভারতের একজন চীকালুার।

(तरदाधिमञ्जू अक्बन दाधिमछ।'

Cप्तरखन्तान् (श्:) (पत हेव बन्ना। नातम। (जिका)

(प्रवाक्तन ( श्रः ) (प्रवश्चक बुक्तनः। (प्रवन, बाहाता (प्रव ) श्वा कतित्रा कीविकानिर्साह केरतु। দেবভাদে, ১ একজুন চন্দ্রগান্ধীর বিখ্যাত কৈনাচার্যা, অল্লেখর পরিব্রু, লিক্স ও প্রবচনসারোদ্ধারের বিখ্যাত টাকাকার সিদ্ধান্ত নেনের ওর । ইনি প্রমাণ-প্রকাশ, প্রেরাংসচরিত্র প্রভৃতি প্রছ্ রচনা করের। ইনি ১২৪২ সহতের পূর্বে বিভ্যান ছিলেন।

১ ২ রাজা ভোলের সমসামন্ত্রি একজন কবি।

ত একজন প্রাসীদ্ধ বৈশ্বগ্রহ্কার। ইনি প্রাক্কত ভাষার 'পাসনাহচরির' (পার্ছনাথচরিত্র), সংখ্যরজ্পালা, ভারধণশাল্প, বীরচরির (বীরচরিত্র), কহাররপকোস (কথা-রদ্ধকোশ) প্রভৃতি গ্রন্থ রচনা করেন। ইহার প্রন্থভালির মধ্যে কহাররপকোস ১১৫২ সহতে এবং বীরচরির ১১৬৮ সহতে ভরোচ নগরে সম্পূর্ণ হর।

ইবার শুরুর নাম প্রসন্নচক্ত প্র উপাধ্যান্তের নাম ক্সমতি। ইনি অভরদেব ক্রির আদেশে চিট্টোরে মহাঝীরের মন্দিরে 'জিনবল্লত' প্রতিষ্ঠা করেন।

৪ উপদেশরত্বকোশ-চীকাকার।

দেবভদ্রপাঠিক, একজন বেদবিদ্ পণ্ডিত। বলভজের প্রক্ষে ভাগীরধীর গর্ভে ইহার জন্ম। ইনি কাত্যায়নকরত্বের কাত্যায়নপ্রয়োগসার' নামে একথানি পদ্ধতি রচনা করেন। দেবভব্ন (ক্লী) দেবানাং ভবনং ৬তং। ১ বর্গ। ২ ক্ষথ-বৃক্ষ। ০ দেবপ্রতিমালয়।

দেবভাগ (পুং) দেবানাং ভাগ: ৬তং। দেবতাদিগের ভাগ।
প্রাসিদ্ধান্তোক লবণসমূল হইতে উত্তরহিত উত্তর গোলরণ
পদার্থ।

"ভতঃ সমঁস্তাৎ পরিধিঃ ক্রমেণায়ং মহার্ণবঃ। মেধলেব ছিভো ধাত্র্যা দেবাস্থ্যবিভাগক্কৎ॥" ( স্থ্যসি॰ ) 'তেন সম্ড্রাছুভরং ভূগোলভার্দ্ধং অস্থীপং দেবানাং।' (রঙ্গনাথ)

লবণ-সমুদ্র হইতে উত্তরহিত তৃংগালের অর্থ আৰু ।

াৰীপ পর্যান্ত দেবভাদিগের বিস্তুক। দেবাক দেয়ে ভাগা।

ব দেবভাকে দের ধনাদি ভাগভেদ। ও দৈবভাদিগের ভাগ।

দেবভীতি (নী) দেবেভ্যোভীত্তিঃ। > দেব হইতে ভুন।

ব দেবভাদিগের ভর।

দেবজু (পুং) দেবং দেবজং ভবতে ভূঁ-কিপ্। দেব, দেবতা।
দেবানাং ভূ নিবাসভূমিকংপতিয়ানং বা যত্ত। স্বৰ্গ।

দেবভূতি (ব্রী) দেবাৎ দেবলোকাৎ ভূত্ত্বিরুৎপত্তির্বস্তা:।
মন্দাকিনী। দেবানাং ভূতি: ৬ডৎ। ২ দেবভাদিগের ঐপর্য্য।
দৈবভূমি (ব্রী) দেবানাং ভূমি: ৬ডৎ। ১ স্বর্গ। ২ দেবভাদিগের প্রিয় ভূমি।

দেবভূর (রী) দেবজ ভাবঃ ভূ-কাশ্। (ভূরো ভাবে। পা া)।১৯৭) ১ দেবস। ২ দেবসাযুদ্ধ। দেবভূহ (পুং) দেবং বিভর্তি পালরভি ভূ-কিপু। ১ ইজা। ১২ বিষ্ণু। "দেবেশো দেবভূদ্ গুক:।" (বিষ্ণুদ্ ু) 'দেবভূৎ শ্ব্ৰুত্ত গুৰু শাতা।' (ভায়)

দেরভোজ্য (ক্রী) দেবৈর ভোজ্যং। অমৃত । দেবভাজ্ (পুং) দেবেমু ভাজতে ভাজ-কিপ্ । স্থ্যবংশীয় দেবভোদ। "পুরা বিবস্ত: সর্কে মহাজেবাং তথাপর:। দেবভাট্ তনয়ত্তত স্ভাড়িতি তেতঃ স্ত:॥"

(ভারত আদি ১অ:)

(দেবমঞ্জর (রী) কৌস্তভ্মণি।

দেবমণি (পুং) দেবেষু মণিরিব। ভর্গ, স্থা। দেবঃ দ্যোতনশীল: মণি:। ২ কৌস্তভ। ৩ অখ্রোমাবর্ত্ত। "আব্রতিন: ভভ্জলঞাদশুক্তিযুক্তা:

সম্পারনের্মণয়ো ভ্তরদ্ধাগাঃ। ( শিশুপালবধ ৫।৪) ৪ মহামেদা।

দেবম্ভ (আ ) দেবানাং মতঃ ৬তং। ১ দেবসম্মত। (পুং) ২ ঋষিভেদ। (ভারত আঞ্চং ১৪ অং)

দেবমাতৃ (ঝী) দেবানাং মাতা ৬তং। ১ দেবতা জননী। ২ অদিতি। ত দাক্ষায়ণী। [মাতৃকা দেখ।]

দেবমাতৃক ( আ ) দেবে। বৃষ্টির্মাতের শক্তোৎপাদনেন পাঁলকডাব জননীর যক্ত কপ্। বৃষ্ট্যস্কুস্পন্ন ত্রীহিপালিত দেশ, যে দেশের শক্তাদি একমাত্র বৃষ্টির জলদারা উৎপন্ন হর; দেশ তিন প্রকার দেবমাতৃক, নদীমাতৃক ও উভয়মাতৃক। ইহার মধ্যে যে দেশ বৃষ্টিধারা সম্পন্ন হর, তাহাকে দেবমাতৃক দেশ কহে। "কচিৎরাষ্ট্রে ভড়াগানি পূর্ণাণি চ বৃষ্ধি চ।

ভাগশো বিনিবিষ্টানি ন ক্ষাবিদেবমাতৃকা।।" (ভারত হারাও৮) দেবমাদ্ন ( পুং ) দেবমোহনকারী সোম।

দেবমান (ক্রী) দেবানাং মানং কালপরিচ্ছেদ:। দিব্যমান, মর্স্থাদিণের পুরের্ধান্ত্রকালে দেবতাদিগের একদিশ, এইরূপ ৩০ দিনে মাদ এবং ১২ মাদে বংসর হয়; এই পরি-মাণকে দেব্যান করে।

ব্রাক্ষ্য, শিব্য, পিত্রা, প্রাক্ষাপত্তা, গুরু, সৌর, সাবন, চাক্র ও ঝক এই নয় প্রকার মান। দেবেরু মানোহস্থ রমণীয়জাং। ২ দেক্যোগ্য গৃহাদি।

"বেশাপরিস্কৃতং দেবমানেব চিত্রস।" ( ঋক্ ১০।১০ ৭।১০ )

'দেবমানেব দেবুমানমিব রমণীয়ং প্রথমাস্থানে আকারাদেশচ্ছান্দশঃ।' ( সায়ণ )

দেবমানক (পুং) দেবের মানো যন্ত কুপ্। সংজ্ঞারাং কন্বাঃ কৌন্তভমণিও দৈবমণি।

দেবমায়া (খ্রী) দেবানাং মায়া ৬১২। স্ববিদ্যা বৃদ্ধহেতু,

পরমেশরের মারা, এই মারাই সকলপ্রকার বদ্ধের প্রভিকারণ। [মারা দেখ।]

দেবমার্গ (পুং) দেবোপলক্ষিতো মার্গ:। > অর্চ্চিরাদি দেবা-ধিষ্ঠিত দেবযান পথ। ২ দেবাধিঞ্চিতপথ মাত্র।

"তে বিকৃষ্টাশ্চ বাজ্জ্যাং লেবমার্গং চ দর্শিক্তাঃ।" ( রমায়ণ ৬।৬১/৪ ১

দেবমাস (পং) দেবার ক্ষণত কীড়নার যো মাস: অঅ হি
স্বতেরোল্পস*চ প্রাত্তাবাৎ গর্ভত কীড়নাদিছাৎ তথাছং।
১ গর্ভের অষ্টমমাস। গর্ভের পর অষ্টমমাসে স্থৃতি ও ওলোগ্রভুর
উৎপত্তি হয়, এইলত গর্ভের অষ্টমমাসই দেরমাস,। স্ব্যায়ন—
গর্ভাইম। দেবানাং মাস:। ২ মন্ব্য পরিমাণ ৩০ বৎসরে
এক দেবমাস।

পেবমিত্রে (পুং) দেবো মিত্রং যত। ১ সংজ্ঞাভেদ্মুক্ত মন্থ আদি। (ক্রী) ২ কুমারাহুচর মাতৃতেদ।

(ভারত শ্লাপ ৪৭ অ:)

দেবমী ঢ় ( পুং ) যহবংশীয় নরপতি ভেদ।

(ভারত দ্রোণপ ১৪৪ জঃ)

দেবমী ঢ়ুষ (পুং) > হুণীকের পুত্রভেদ। ২ দেবমী ঢ়বকুদেব-* পিতামহ।

"অশাক্যাং জনয়মাস শ্রং বৈ দেবমী দুষ:।

মহিষ্যাং জজিবে শ্রাভোল্যাষাং পুরুষদেশ॥' (হরিব ৩৫ ছঃ)

দেবমুনি (পুং) দেব ইব মুনিঃ। > দেবর্ষি নারদাদি। ২
ভূরাথ্য ঋষি।

"এতেন বৈ তুরো দেবমুনিং দর্কামৃদ্ধিমাধ্যেৎ।" ^{*} ( পঞ্চবিংশ**রা**ং ২৫।১৪)

দেবযজ্ (শুং) দেব ইজাস্থে ২০া যজ-আধালে কিপ্। দেব-যজনযোগ্য অগ্নিভেদ। "অপাধে অগ্নিমাসাদং হি নিজুব্যাদং দে আ দেবযজং আ বহা" (শুক্লযজু: ১৷১৭)

দেবযজন ( ক্লী ) দেবা ইজাতে হত্ত যজ আধারে লাট । বেলি স্থান্ত । "অপাবকং পৃথিবৈ দেবযজনী । ব পৃথিবী । "পৃথিবি । দেব-১০০ ) জিলাং ভীপ্ । দেবযজনী । ব পৃথিবী । "পৃথিবি । দেব-যজতোবিধ্যাতে মূলং মা হিংদিশং ।" ( শুক্লযজ্বঃ ১০১৪ ) 'ছে দেবযজনি হে পৃথিবি' ( বেদদীপ ) ৩ ধাগাধিকরণস্থান মতে যে স্থানে যাগ করা ধান্ত ।

দেব যজি (পু) দেবং যজতে যজ-ইন্। কেবযালক, যাহার। দেবতাযজ্জ কুরে।

"অংঘা বিজান্দেবযজীন নিহনা:।" (ভটি) 'দেবযুক্ত (পুং) দেবানাং যুক্তঃ ৬ডং। পঞ্যজান্ত ^{হোর}ং রূপ গৃহস্থানের নিত্যকর্তীয় যজভেদ; গৃহস্থানিগের প্রতি দিন দেববজ্ঞ, ভূতবজ্ঞ, পিতৃযজ্ঞ, ব্রহ্মযজ্ঞ ও মহুদ্রাবক্ত এই পঞ্চযজ্ঞের অনুষ্ঠান করিতে ক্ছয়। গৃহস্থাপ প্রতিদিন পঞ্চলাজনিত বে পাপ কার্য্যের অনুষ্ঠান করেন, তাহা এই পঞ্চযজ্ঞ বারা বিনষ্ট হয়। "তদাদমৌ জুহোতি স দেবযজ্ঞ: বহুলিং কর্মোতি স ভূতবজ্ঞ:, বহু পিতৃত্যো দদাতি স বিভূযজ্ঞ:, বহু পাধারমধীরতে স ব্রহ্মযজ্ঞ: বহু মনুম্মেড্যো দদাতি স মনুষ্যজ্ঞ:।" (ক্লাম্মণ গৃণ তাহাহাত) প্রতিদিন ইইদেবতার উদ্দেশে যে হোম করা যার, তাহাকে দেবযজ্ঞ, যে সকল উপ্রারাদি প্রদান করা যার, তাহাকে পিতৃযজ্ঞ, বিধিপুর্বাক বেদাধ্যরনের নাম ব্রহ্মযজ্ঞ এবং অতিথিসেরা ও দানের নাম মনুষ্যজ্ঞ। এই পঞ্চযজ্ঞ বারা দৈনন্দিন পঞ্চপাতক বিনষ্ট হয়। দেবযজ্ঞা (ত্রী) দেবানাং যজাঃ যাগ: টাপ্ প্রদ্বতার নিমিত্ত বাগক্রিয়া। "দৈব্যায় কর্মণে শুক্রবং দেবযজ্ঞারৈ।"

( अक्रवकू: ১।১৩ )

'দেবযজ্যারৈ দেবসম্বন্ধিত যাগক্রিয়ারৈ' ( বেদদীপ )

দেবহা ( ত্রি ) দেবভাগণকে প্রাপয়িতা, যাহাবা দেবভাদিগকে

পাওয়ান। "ধিয়ং ধিয়ং বো দেবয়া উদ্ধিধেন।" (ঋক্ ১১১৬৮।)

'দেবঘা দেবান্প্রাপয়িতার:।' ( সায়ণ )

দেবযাজিন্ (পুং ) দেবং যজতে যজ-ণিনি। ১ আয়ভেদে

দেবার্থ যাগকারক। "অরথ হুস দেব্যাফী মো বেদ দেবানেবাহমিদং।"

• (শতপণ্রা ১১/২/৬/১৪) ২ কুমারামূচর মাতৃভেদ। (ভারত শল্য-৭৬ আ:) সেরমাজে (কি.) দেবণ দেবতং যাত:। দেবজ্পাপ্র যিনি

দেবয়াত, (জি) দেবং দেবতং যাতঃ। দেবত্বপ্রাপ্ত, যিনি দেবতা হইয়াছেন।

ত স্থা বিষয়ো: দেশ: রাজ্যাণ বুঞ্। দেশবাতক, ভবিষয়ক দেশ। দেববাতকের পাঠান্তর দেববাতব এইরূপ দেখা যায়। সেইস্থলে দেববাতু স্বার্থে অণ্।

দেবযাক্রা (স্ত্রী) দেবানাং কাত্রা। দেবোৎস্বাদি। দেব-প্রতিমার স্থানাক্তরে আধনয়নুদ্ধপ গতি।

(मतमाजिन् ( शः ) मानवर्णमा

- ে "নোমপো দেবঘাতী চ প্রবরো বীরমর্জন:।" (ছরিব° ২৪ জঃ)
  দেববান (ক্লী) যায়তে হনেন•যা করণে লাট, দেবানাং যানং
  ৬তং। দেবতাদিপের গতিসাধন রগভেদ, থিমান।
  - ি দেব: পরেশঃ যায়তে হনেন মার্থেন আঠ করণে ল্যুট্। ২ অর্কিয়াদি মার্গ্রণ পথ।

"অর্চিরাদিনা তৎপ্রথিতে;" (বেদার গুণা) হতা) বেদারদর্শনে অর্চিরাদি পথের বিবরণ এইরপ্ দিখিত

আছে — জানী ও অজ্ঞানী উভয়েরই সমানরপে উৎক্রান্তি অর্থাৎ मार्खाक श्वेगानीरा भरीत जाग हत । प्रस्नानी व केरकां सर्म, कानी अ डेरकां इन। व्यक्ति वह य कानी व डेरकमान वे न्य , जिन्न । जानी नाजनिर्मिष्ठ शर्थ छे देखां छ इहेन्रा छे ई त्नाक नेमन করেন। অজ্ঞানী ভাহা-পারেনা । কিন্তু শান্ত সকল অনুসন্ধান कतिरम रम्था यात्र, छेर्कास्तित शत स्त्रामी छेशानकिराशत গতি ও গন্তব্য পথ একরাণী মহে, বিভিন্ন প্রাকৃরে। বাঁহারা वक्षालाटक शमन करत्रन, उाँशांत्रा मकलाई व्यक्तिः। व्यक्तिः **इटेंटेंड अहं बहें ज़िल गमन करत्रन अवीं९ (में बानिश्री)** অন্ধানে গমন করেন। এইটাই ব্রহ্মলোক-গমনের প্রসিদ্ধ পথ। সাধক এথথমতঃ অর্চিতেজঃসম্পন্ন হন, পরে অর্চি হইতে দিনদেবভায় ৵গমন করেন। ত্রন্নলোকগমনের এক পথ আছে, ভাভার নাম দেবধান। উপাসক এই দেব্যান পণ অবলম্বন করিয়া প্রথমত: অগ্নিলোকে প্রমন করে। আরও অনেক প্রকার পথের বিষয় উল্লিখিত আছে, বিভিন্ন প্রকার পথের শ্রুতি থাকার সংশয় হয়, ঐ সকল • পথ বাস্তবিক ভিন্ন কি না ় শ্রুতিতে কি বাস্তবিক্ট বিভিন্ন পথের উল্লেখ আছে। না •একই পথ নানা প্রকার বিশে-বণে বিশেষিত হইয়াছে। সামাজ দৃষ্টিতে দেৰিলে 🚱 পথ मकल विভिন্न विलया त्वांध इहेरव, आत हेहात मर्सा असू-व्यविष्ठे इहेटन दिशा बाहेट्व, मकन नथहे अक, विजिन्न नहा। वक्षिकाञ्च मात्वहे व्यथस चर्किः, उ९शत चर्र, এहेज्ञरभ গমন করেন। কারণ এই যে ঐ পথই প্রথিত ব্রহ্মজ্ঞ-निरंगत मध्या धानिक। ছाल्मांगाडेशनियत्तक शकाबिविचा-প্রকরণে উল্লিখিত আছে, যাহারা অরণ্যে থাকিয়া ব্রহ্মের উপাদন। करत, जाहारमत व्यक्तितामि भर्ष गक्ति हम। किन्क हेश प्रकल छेशाप्रकत्र नरह। भारत्र र्य प्रकल छेशीप्रनात्र ফল্ম্বরূপ নির্দিষ্ট গতি অভিটিত হয় নাই, সেই স্কল উপাশ্বাতেই উপাদকের অর্চিরাদি পথে গতি হয়। ভিন্ন ভিন হলে ভিন ভিন পথবোধক শব্দ উচ্চারিত হইলৈও বস্তুত: সে সকলেরু অভিধেয় এক, অর্থাৎ পথ এক। সেই এक ₹ भथ विভिन्न करन विভिन्न विरमध्य विरम्धिक इहे-য়াছে। সেই বিশেষদোর বিশেষভূত পথ এক, ছই বা **उट्टाधिक नर्ट्। ध्वार्डीक ऋर्ण्डे मिटे माञ्च विविक्र** দেবয়ান পথের একদেশ অর্থাৎ এক এক অংশ প্রভ্যাভি-জ্ঞাত হয়, অর্থাৎ সেই পথই এইরণে অহুভূত হয়। স্তরাং একরোক্ত পথের সৃহিত অম্ভব্যেক্ত পথ বিশেষণ সকলের সমন্ত্র হওরাই সকত। সকল শান্তেই সিদ্ধাক্ত ছঁইরাছে, ত্রহ্মগমনের পণ এক। কিন্তু যে যে প্রকরণে

বে প্রকার পথ বিশেষণ বা পথবাঁধক শব্দ উচ্চারিত

ইইরাছে, সম্পারই সেই ব্রহ্মপথের বিশেষণ । শুতি দেবযান ও শিত্যান এই ছই পথ বর্ণনা ক্ষরিয়াপরে বলিয়াছেন,
উত্তর পথবাইদিনের স্থান অতি কইকর, এবং তাহা তৃতীর
বলিয়া গণ্য। শ্রাতি সেই কইদেয়ক তৃতীর স্থানের কথা
বলাতেই বুঝা যাইতেছে, পিত্যান পথের অতিরিক্ত দেবযান নামে, অন্ত একটা পথ আছে, এবং সে পথটা অচিঃ
প্রভৃতি বহু পর্যায়ুক্ত, ইহার ভাবার্থ এইরূপ যে ওভপথ
অনেক থাকিলে শ্রুতি তৃতীয় স্থান এরূপ নির্দ্ধেশ করিতেন
না। অচিঃশ্রুতিতে দেখা যায়, এই পথের অনেকশুলি
পর্যা বিভাগ আছে। উপাসকগণ ব্রহ্মলোকে গমন
করেন, তাহাদের সেই ব্রহ্মলোক গমনের পথ ক্রিরপ
সরিবেশ বিশিষ্ট, কি রূপেই বা সেই একই পথ শ্রুতিতে
নানা বিশেষণে বিশেষত হইয়াছে ? ইহার উত্তরে এইরূপ
স্থা বিনিব্দ ইয়াছে—

"वायुमसानविद्यविद्यवाखाः" ( द्यमाखरः । अ २ )

उक्तत्वाक-सिगमिञ्च (प्रवयान १०४ व्याश हहेया व्यथमणः चिश्रत्नाटक चारमम, शदत स्थापूर्ताटक, वस्न्पर्ताटक, हेल-त्यात्क, श्रवाशिक्षात्क ७ वक्षातात्क चागमन करतन, • ইহাতে প্রথমত: অগ্নিলোক গমনের উল্লেখ আছে, অস্ত **শ্রতিতে প্রথমতঃ অর্চিঃ প্রাপ্তির বিষয় উরেও আছে,** দেখিতে গেলে অর্চিঃ শক্ত অগ্নিলোক শক্তৃনার্থ বিনয়া প্রতীত হইবেক। অর্কি: ও অগ্নিকে জনন বুঝার,— স্থুতরাং অর্কি: ও অবি এই হুইবের কর্থ এক হওয়ার কোন রূপ অস্কৃতি হয় না। ছাল্লোগ্যোক্ত দেব্যান পথের বর্ণনার ঝযুলোকগমনের উল্লেখ নাই, কিন্তু বারুলোক ও দেবঁথান পথের এক পর্বা,—কিন্ত ছালোগ্যে ভাহার উল্লেখ नाहे, हेहा कि श्राकारत हैहें एक शादत, हेहात छेखत थहे य উপাদকগণ প্রথমে অর্চিঃ প্রাপ্ত হন, অর্চিঃ হইওে দিবদে, দিবস হইতে শুরুপকে, শুরুপক হইতে উত্তরায়ণে, বগানা অক উত্তরধরণ হইজে সংযুৎসরে ও সংযুৎসর হইতে লাদিতো গিয়া সম্ভূত হন ইত্যাদি। এই সকল শ্রুতিতে যে সংবৎসর ও আদিত্য শক্ষ আছে, বায়ুর সলিবেশ তত্তদের মধ্যে। অর্থাৎ সংবংসরের পরে বায়ুতে সম্ভূত হন, তৎপরে আদিত্য-লোকে গমন কলেন। এই শ্রুতি সামান্ততঃ বায়ুলোক; গমনের কথা বলিয়াছেন, কিন্তু কিন্তুপ ক্রেৰে বায়ুলোকে গতি হয়, তাছা বংলনু নাই। এই কথা বিশেষ ক্ষিता ना वनात, ऋडीताः व्यविरमेव छेशाम श्रेतारह । व्यक्तास अविर ইহার বিশেষ উল্লেখ দেখা যায়। বৰন উপাসক সুক্রব এ লোক হইতে প্রলোক গমন করেন, তথ্য এই দেহ
ত্যাগ করিরা বাষ্ণোক প্রমণ্ড হম। বাষ্ ভাহাতে প্রাপ্ত
হর, হইরা তাহার কর আপনাতে প্রদান করেন, তথন
তিনি সেই অবকাশে আদিতো গমন করেন। ইহাই
বিধোষেপদেশ। এই উপদেশে আদিতাগমনের পর বাহু
লোক গমন পাওয়া বাইভেছে। ইত্যাদিরপে বিশেষ করিয়া
দেখিলে কোনরপ আর বিরোধ বা অসক্তি হয় না।

কৌষিতকি শ্রুতিতে অধির পরে বায়ুপর্কের উল্লেখ আছে; ছালোগ্য ঞ্জিতে আয়ুর পর বরুণের স্থান নির্দিষ্ট হইরাছে। আদিতা হইতে চক্র, চক্র হইতে বিছাৎ ইঙাদি ঞ্তিতে যে বিছাৎ লোকের ৰূপা আছে, সেই বিছাৎ लारकत छेशरत बक्रांशत चीन, देश विद्योक्षण स्टेबाह्य। कातन किह्नद्र उत्र महिल बक्र त्वा निक्र मध्य नाका पृष्टे হর। বিচ্যুৎ ও বরুণ উভরের মধ্যে পরকার সমদ থাকার - এইরপে অফ্মিত হইতে পারে। তথনই দেখা বার অভি বিশাল বিহ্যাৎ সকল অতি জীব্ৰ মেঘনিৰ্ঘোটে মেঘোলরে নৃত্য করে, তথনই অথবা ভাহার অব্যব্হিত পরেই লন . বর্ষণ উপস্থিত হয়। বঙ্গণের উপর ইক্স ও প্রকাপতি, এই छ्हेरत्रत छान व्यक्तिः वा व्यक्षि, ७९शरत मिन, ७९शरत एक-भक, **उ**९भद्र উछत्रायन, अहे दि तना हहेन, वश्वकृत्य के সকল কি ? অর্থাৎ কিংম্বরূপ ? ঐ সকল কি দেব্যান পথের এক একটা স্থান, অর্থাৎ চিক্ত্? কি ঐ সকল ব্রন্ধলোকপ্রস্থিত উপাদক ফীবের ভোগ স্থান, অথবা ভাহাদিগের বাহক বিশেষ ? প্রশের প্রথম উত্তরে পাওয়া বার, অনুষ্ঠি: প্রভৃতি দেবযান পথের চিক্সরূপ। কারণ উপদেশের স্থরূপ প্রায় ঐ রূপই হয়। যেমন কোন লোক टकान अक नगैदत अथवा आत्म वाहरवक, १५७ डेगलही टियमन छाहाटक वरन, अर्था९ উপদেশ कत्त्र, अ शाँन हरेला অমুক পাহাড়, ভারপর এক বৃহৎ বটবৃক্ষ, ডংপরে নদী, ত্বীরে ত্রীম, সে স্থানে গেলে অথবা তথা হইতে গতবা নগর পাইবে, এই বেমন দুটাত তেমনি অর্চিঃ, অর্চি ছুইতে দি্বা, দিবা হইতে শুকুপক ইত্যাদি বঁলা হইয়াছে। প্রথম প্রাকৃতিরে মনভাষ্টিনা ছওয়ার **ডি**তীর পক্ষ গ্রহণ কর, অর্থাৎ ঐ অর্কিঃ প্রভৃতি এক একটা ভোগ ভাষ। এইরণ অবধারণ কর। শ্রুতি ^বঅঘিলোকং আগছতি' ইত্যাদি ক্ৰমে অগ্নি• প্ৰভৃতি ক**্ৰকটা প্ৰপৰ্কেলোক শ্ব** বোৰিড করিরাছেন, ভাষাতে প্রভীতি হর, ঐ অর্চিঃ প্রভৃতি সম্বত্তী लांक वित्मव, लांक नांक थानी बिरनंत (छात्रावर्धन বুঝায়। ধ্ৰেমন মহুবালোক, দেবলোক, পিতৃলোক ইত্যানি।

আর্ক্তি প্রভৃতির ভোগভূমিত পক তিরীয়ত হইরাছে, আতি-ৰাহিকপক্ষ নহে। বেহেভূ অর্চি: প্রভৃতি অচেতন, সেই ८इकू छाहारान चार्डिवाहिकच चक्रुशना। त्नाक मर्या ८एथा वात्र, मटाजन कीरवतारे ब्रांबकर्त्क कि अब कर्ज्क अथवा শ্বং প্রাযুক্ত ক্রয়া পথে ও পুর্য়য় প্রাদেশে অভিবহনীর জীব-এদিগকে বহম করে। ইহার সিহাত্তে এইরূপ লিখিত আছে, এ সকল অৰ্থাৎ অচিঃ প্ৰভৃতি পৰ চিহ্ন কৰে, ভোগভানও मरह, উहाता चालिवाहिक (हजून। हज्ज स्टेंट विद्वार, ৰিছাৎ হইতে তাহাদিগকে অনানৰ প্রবেরা বন্ধানে লইরা বার। অর্চি: প্রভৃতি দমুদদ পর্বাকে বাহকরণে নির্দেশ করিতে সমর্থ। অর্চিঃ হইতে বিছাৎ পর্যান্ত সমগ্রত চেতন, দেরাত্মা ও বন্ধলোকপ্রাপক নেতা বা বাহক। दर भूजेय विद्यार हुईएक नहेन्ना बान, ब्यू अन्नर्गाकवानी जमानवम्य । यारामा जर्कितानि भूत्य खन्नत्नात्क यान, ভাহার। সকলেই দেহভ্যাণের পর পিগুডেক্সির হর। (পিণ্ডিতে জির অর্থে তীহাদের ইজির নির্কাণ ও মনে णत्र व्याखि )।

অঠিচ: ভোগভূমি নহে, গন্তা তখন পিণ্ডিতেক্সিয় অৰভ্যয় থাকে। স্তরং তুখন তাহার ভোগও অনসম্ভব। যদি বল লোকবাচী ভোগ পম্বের আবখ্রক কি 🕈 ইহার প্রত্যুত্তর এই দে স্থলে গন্তার ভোগ না থাকিলেও তল্লোকবাসীদিগের ভোগ থাকায় তহদেশেই ভোগৰাচী লোক শব্দের প্রয়োগ हरेग्राह् । य लाक्त्र अधिপতि अर्किः अर्थार अगि-नक रमहे रामक आशे हहेवामां कि क्या जाहारक वहन करत्र, व्यर्था वृहेश यात्र এवः वाशूलाटकत्र वागी दम लाटक गरिवामाळ वायू छाहात्क वहन करत्र हेछानि। विद्युटि অভিস্ভৃত হওয়ার পর বিহাতের পরবর্তী অমানব পুরুষের ষারা বঁরুণাদি লোকে বাহিত হয় এবং তথা হইতে ব্লম-रनारक नीज इग्र। स्निहे अभानव भूक्ष हेहानिगरक बन्ध-লোক প্রাপ্ত করার ইত্যাদি শ্রুতিতে অমীলব পুর্কবেরই নেতৃত্ব প্ৰান্ত স্নাহে। একণ প্ৰাভৃতি কেহ বাধা নাু ৰুনাইয়া সাহায্য করে, অর্জি: প্রভৃতি পথ চিহু অথবা ভোগম্বান নুহে, ত্যহারা আভিবাৃদ্ধিকী দেবভা এই পূর্ব্বোক্ত দেবধান পথে উপাদক শর্কি: প্রভৃতির সাহায্যে বন্ধনোকে গমন করিয়া चारकन। ( द्वेनाखनर्नन)

দৌবঘানী (গ্রী) দৈত্যখন শুক্রাচার্য্যের ফ্রা। ব্রুম্পতি-পুত্র কচ মৃত্যঞ্জীবনী বিদ্যালায়তর অন্ত শুক্রাচার্য্যের শিব্য কন। বুবা কচ শুক্রাচার্য্যকে° সম্ভষ্ট করিরা নৃত্য গীত, বাদ্য থ কল পুশাদি ধারা এবং শুত্যবৎ আক্রায়বর্ত্তিতা ধারা ষ্বজী দেববানীর সভোব সম্পাদন করিতে লাগিলেন। এই মুপে দেববানী কচের প্রতি অভিশয় অহুরক্ত হইরা পঞ্জি।

সমূরগুণ কচের অভিআর জানিরা একবিন ভাঁহাকে বিনাশ করিল। দেবদানী কচের আগকনে বিলয় দেখিয়া শুক্রাচার্যোর নিকট কহিল, হে জাডঃ ৷ কচ এখনও প্রভাগিত **रहेर** जिल्ला मा। आमान निक्त त्वांथ स्टेरज्ञ क मृत किया इठ रहेबाट्ड। कड वाकीक जामि क्लाकान बीवन शांत्रन করিতে পারিব না। তথম শুক্রাচার্ব্য মৃতসন্ধীবনী বিভাপ্রভাবে **डाहारक कोविड करवन। जात अक निन कठ रहरानी**व **লাদেশে পুলা আহরণার্ধ বনে ত্রমণ• করিডেছিল, দানবগণ** हेरा खानिएक भाविता कहरक निष्मिय स्तिता ममुख-मनिरन মিশ্রিত করিরা কেলিয়া দিল। কচের আসিতে বিলয় বেধিয়া দেববানী অভিশব কাতর হইয়া পিতাকে কহিল, কচ নিহত হইয়াছে, আমি কচ ব্যতীত ক্ৰকাণও জীবন ধারণ করিব না। শুক্রাচার্য্য ইহা শুনিরা দেব্যানীকে कहिटनन, एक प्रत्ववानि ! क्रूमे वृश्वी (भाक कति व ना, कह मृछ " रहेबाँह, आिय विद्याध्यकारन कारास्क भूनः भूमः वैकारे ; তথাচ অন্থরেরা ভাহাকে বিনাশ করে, অভএব ভূমি লোক পরিহার কর। ভোমায় ভার অভোবশালিনী নাবী কোন নবর ব্যক্তির অস্ত্র শোক প্রকাশ করে না। অভএব ভূমি শোক পরিহার কর। দেবধানী কিছুতেই তাহা না ভনিরা কহিল, कह बौविज ना इरेटन आमि क्लाकाल बौवन शांत्रण कतिएज शांतिय ना । एकांडाया हेरा एनिया श्नतात कंटक वींडाहेरनन । क प्नः प्नः मृष्ठ हरेवा की विष्ठ हरेक वाशिन दिश्वा দানবগণ পরামর্শ করিয়া কচকে বিনাশ করিয়া শুক্রাচার্য্যের স্থরার সঁহিত মিশ্রিত করিয়া দিল। 'শুক্রাচার্য্য তাহা পান করিলেন। কচের আগমনকাল উত্তীর্ণ ইইলে বেব্যানী অভিশব बाक्न रहेवा कहिन, आमि कहरक ना तिथिवा ক্ৰক্ষীৰ থাকিতে পারিতেছি না, কচকে জীবিত না ক্রিতে পারিলে আমি নিরাহারে প্রাণ্ডাগ করিব ৷ এই বিশিয়া রোদন করিতে লাগিণ। বুকুাচ±ব্য দ্যাশরবশ হ্ট্রা कहरके कास्तान कतिरानन। कह कुक्काहार्र्यात्र छेनत भर्या অবস্থান করিরা উত্তর দিলেন, 'শুরো! অস্থ্রেরা আমাকে বিনট করিলা ক্রা সহযোগে আপনাকে ভৌজন করাইরা-हिन'। देश अनित्रा अव्यानांत्रा कहित्तम, 'त्ववयानि ! कहछ আমার উদর মধ্যে অবছিতি করিতেছে, এক্সণে আমি আপভাগে না করিবে কচের প্রাণুরকা হওরা ক্কঠিন।' रनवरानी हैरा अनिका कहिरनम, करहत्र मार्ग ও आर्थनात्र मृज्ा थेरे प्रेरे जामात शत्क विरम्य क्षेत्रता।

তथन चुळाठार्या कठरकं मुख्यश्रीवनी विला निम्ना कहि-लन, जुमि विन कठक्रभी देख ना इब, जाहा हरेल जुमि এই विमानां कत्र, धवः हेशत প্रভाव विश्वि हन। कि बहैकार विमानां कारेगा श्रशान यहित्व कछिनारी सह-লেন। ইহাতে দেবধানী কহিলেম, কচ! আমি ভোমার প্রতি নিতান্ত অমুরক্তন, তোম্াকে না দেখিলে ত্রিভূবন শৃক্ত দেখি। অতএব তুমি ষংখাচিত বিধানে আমার পাণি-গ্রহণ কর। কচ ইহা শুনিয়া কহিলেন, শুভে! আমি তোমার পিতার শিষ্য, তুমি আমার গুরুপুত্রী, এরূপ বলা ভোমার উচিত নহে। দেব্যানী কহিলেন, কচ। তুমি বতদিন এখানে অবস্থিতি করিয়াছিলে, ততদিন ভোমার প্রতি আমি ফেরণ ভক্তি, সোহার্দ 📽 অমুরাগবতী হইয়াছি, তাহা তোমার অবিদিত নাই ২ তুমি আমাকে পরিত্যাগ क्ति ना। कह नाना श्रकांत्र वारका वृक्षाहेश विशिवन, ইহা অতি অসঙ্গত। দেবধানী বারংবার প্রত্যাধ্যানে জুদ্ধা হইয়া বলিলেন, দেথ কচ ! তুমি ষেমন বিনাপরাধে আমাকে প্রত্যাধ্যান করিলে, তেমনি তোমার মৃতস্ঞীবনী বিদ্যা क्तवजी इहेरत ना। हेर्ड्ड कहल (प्रवस्तीरक मान দিলেন, দেব্যানি! আমি ধর্মলোপ ভয়ে গুরুক্তা বলিয়া 🕆 প্রত্যাথ্যান করিয়াছি, অবতএব বিনা অপেরাধে তুমি যেমন আমার শাপ প্রদান করিলে, তেম্নি তুমি শুক্রাচার্য্যের ক্ষা হইয়াও কোন ব্রাহ্মণের পত্নী হইতে পারিবে না। তোমার শাপে আমার এই মন্ত্রিকল হইবে, কিন্তু আমি ষাহ্ধকে দিব দে অবশুই কৃতকার্য্য হইবে, কারণ এই গুরুদত্ত মন্ত্র অনোঘ। এই বলিয়া কচ ত্রিদশালয়ে গমন করিলেন। [কচ দেখ।] দৈত্যক্ষা ব্ৰপক্ষার ত্হিতা শর্মিলার সহিত দেবধানীর অতিশয় স্থা ছিল। একদা উভয়ে স্থীখনের সহিত জল বিহারের নিমিত্ত ক্লৈ বদন রাথিয়া জলে অবতরণ করিয়াছিলেন; এমন সময় ইব্র বায়ুরূপ ধারণ করিয়া বস্ত্রগুলি একত করিয়া দেন, জলবিহারাতে শশ্চিষ্ঠা বুয়স্তভা বশ্চঃ দেবধানীর বসন পরিধান করিলেন। এই বস্ত্র পরিধানের জন্ত দেবীযানী ও শর্মিটায় প্রস্পর বিরোধ উপস্থিত হইল। এইরংখে বিবাদ হওয়ায় শশ্রিষ্ঠা ইহাকে কুপেঁ নিকেপ করিয়া দেবধানী মরিয়াছে, এইরূপ নিশ্চয় করিয়া গৃছে গমন করেন ু এদিকে নহবাত্মজ য্যাতি মৃগয়া করিতে আসিয়া ইহাকে তদবস্থ দেখিয়া কৃপ হ্ইত্তে উদ্ধার, করেন এবং তাহাকে সম্চিত সন্তামণ ক্রিয়া তৎক্ণাৎ অনগরে গমন করেন। **(मन्यानी काळिणम त्माक्मखर्था इहेंग्रा यूर्निया नाम्य**  দাসীকে কহিলেন, 'ভূমি জামার পিতার নিকট এই সংবাদ
দাও।' ঘূর্ণিকা দৈত্যসভার উপস্থিত হইরা শুক্রাচার্য্যকে এই
নংবাদ দিলেন। শুক্রাচার্য্য এই সংবাদ শুনিরা দেবহানীর
নিকটে আসিরা দেবহানীকে নানা প্রকার বাক্যে বুরাইকেন, কিন্ত দেবহানী কহিলেন, আমার নিক্তি হউক ঝ
না ত্উক, ভাহাতে কোন কতি নাই, শর্মিষ্ঠা আপনাকে
বাহা কহিরাছে, আপনি ভাহা শুন্ন। শর্মিষ্ঠা ক্রেম্পন্তরে
'ভোর শিতা দৈত্যগণের ভতিপাঠক এবং গায়ক' ইভ্যাদি
নানা প্রকার ভিরন্তার করিয়া প্রস্থান করিল। আমি আর
দৈত্যনগরে প্রবেশ করিব না।

" শুক্রোচার্য্য দৈত্যনগাঁর ভ্যাগ করিতে ুসঙ্কল করিলে বৃষ্পর্কা তাহা জানিতে পারিয়া শুক্রাচার্ফের শর্ণাপন হই-त्नन। शुक्राहार्या कहित्तन, त्रवयानीत्क धारत करें। उथन वृष्यभन्ती (प्रवानीत निकटि शमन कतिम जाहारक मुद्धे क्तिएक (ठष्टे। क्तिर्लन। (प्रविधानी क्हिर्लन, व्याप्ति वहे কামনা করি, যে সহত্র কন্তার পৃত্তিত শব্দিটা আমার দাসী হউক, আমার পিতা আমাকে যেখানে দান করিবেন, भर्मिकी उथात्र आमात्र अस्गामिनी रहेरत। त्रमभर्ता हेरा শ্বীকার করিয়া সহস্র কন্তার সহিত শর্মিচাকে ইহার দাসীডে নিয়োগ করিলেন। শর্মিষ্ঠা পিতার • নিয়োগামুসারে দেব-ষানীর দাসীতে নিযুক্ত হইল। এক দিন দেবষানী দাসীগণে পরিবৃত হইয়া সেই বনে ক্রীড়া করিতে [®]গমন করিলেন **এবং मिट ऋरण नाना क्षकांत्र क्री**फ़ा क्रतिरङ्ग्लिन, अपन मगत ষ্যাতি দেইহুলে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। তাঁহাকে দেখিয়া দেব্যানী কহিলেন, মহাভাগ হই সহত্র ক্রী •ও দাগী শবিষ্ঠার সহিত আমি অপনার অধীনা হইতেছি, আপনি आमात मुशा ७ फर्छ। इडेन। এই करल (प्रविधानी य्याष्टिक সম্মত করাইয়া পিতার নিকট সংবাদ প্রেরণ করিলেন। শুক্রাচার্য্য বন্মধ্যে আসিয়া য্যাভির সহিত দেব্যানীর বিবাহ-ক্ষাি সম্পন্ন করিলেন। পরে য্যাতি অস্কুরগণ কর্তৃক নানাবিধ উপচার প্রাপ্ত হইয়া দেবযানী প্রভৃতির সহিত বালধানীতে গমন করিলেন। °পরে য্যাতির গুরুসে শুর্ণিঠার এক পুত্র হইল, দেবযানী শশ্বিষ্ঠার পুত্র হইতে শ্বেধিয়া তাহাকে জিজাসা করিলেন, তুমি কামপুর ভইয়া অভার আন্তরণ কারিয়াছ। শব্দিঠা বলিল, আইনি এক তেজঃ-পুঞ্ল আক্ষাৰ, হইতে তিই পুত্ৰ লাভ কুরিয়াছি। দেব<del>ধা</del>নী ইহাতে বিখাস করিয়া 👡 প্রত্যাবৃত্ত হইল। অন্তর দেব-যানীর গর্ভে বছ ও তুর্ক্তমু নামে ছই পুত্র এবং শর্মিনার গর্ভে জন্ম অনুধ পুল এই ভিন পুত লিখিন। ফাভি

ভ্ৰতে শৰ্মিনার ডিন পুত্র হইয়াছে, দেবঘানী ইহা জানিতে পারিলা নিভাক্ত কোধপরবৃশ এইয়া পিভার নিকট এই সংবাদ জ্ঞাপন করিল। ভালাচার্যাও কুদ্ধ হট্যা ম্যাভিকে অভিদন্দাত প্রদান করিলেন, তুমি ধর্মজ্ঞ হইয়া অধর্মকৈ আত্রেষ করিয়াছ, এই কাত্রণ পনতিবিলগে ছজ্জার রাজিক্য **তোমাকে আজমণ করিবে।** यगांछि कृष्टिशन, ह् छर्गेवन । मानदृष्ट्रिका आमात निक्ठे अधूर्विका आर्थना कवियाहिन, ভাহা ধৰ্ম কৰ্ম ৰলিলাই এইৱাপ কাৰ্য্য কৰিয়াছি, কাম-ষশবর্তী হইয়া করি নাই। ুকোন কামিনী পাতুরকা প্রার্থনা कत्रित्व छाशास्त्र पिनि উপগত्ना १न, डिनि जनश विवश অভিহিত হন। এইরূপে কাতবংহইয়া যা'তি অনেক অনুনয় विनय कविटंड माशिरमन। - डांशांड एका हार्य। विलयन, তোমার এই বিষয় অনুমতি শওয়া উচিত ছিল, আদাব বাক্য निक्कल इहेवात नटह, किछ यनि ८४ ह ट्डामार्न এह जारा धर्ग कतिया शोवन अलान करत, छाहा धरेला जूमि शूर्लि मक ষৌবন ভোগ করিতে পারিবে। [ যদাতি প শর্মিষ্ঠা দেখ। ] **ट्रिक्यांदन** (बि.) द्वेष यांखिणा-विनिम्। द्वितकां क्रिक्त প্রতিগন্তা, যাহারা দেবভার উদ্দেশে গ্যন্ধীয়। "জবদ্ দৃতী (प्रवर्षाया विनिष्ठ:" ( अक् १।२०।२ )

Сमविश्वरु (खि) निवादह शांत्रत्वरम हर्। शतिरमवक, निवासक शांती।

प्रमुक्त । जिन् अल्ड शांक छेलाक एक न छा छा। छ मान्यू ( पृश्या-स्वक । छेन् अल्ड । । अवार्षक । "अल्ड छित्र मिक्ड लार्षा प्रकार नद्या एक प्रत्यस्तु मनिष्ठ" ( लाक् अञ्चल) 'द्विष्ठ दे द्विष्ठ । प्रत्यस्त । अल्ड व्यक्ति । अल्ड व्यक

দেবযুগ (পুং) দেবপ্রিমং যুগ । প্তায়গ । , "পুরা দেবযুগে ভাত দেবেলের মহামন:।"(ভাবত অন্ ৮০জ') দেবযুখানি (পুং) দেবানাঙ্গিব যোনিঃ যুগু। ১ বিজ্ঞাবয়াধি ।

প্রিক্তাধরোহপুরো যকো রকো গরকাকরবাই।
পিশাচো গুরুক: সিজো ভূলোহনা দেবধানযা । (অনএ)
বিভাধর, জ্বারুর হক, রক্ষ্, গ্রুক, কিন্নর পিশাচ, শুরুর
ক্র সিম ইহারা দেববোনি। ২ দেবজাতি। "ছে বৈ বোনী বার্কি ক্রেরাহ দেববোনিরভা মনুয়াবোনিরভা" (শতপ্রীর গাণ্ডাং)
দেববোহা (জী) দেবানাং দোয়া ৬তং। দেবভাদিসের জী।
শুকুর দেববোযাল পুশ্বইন্স্কর্য়। (ভারত শুশা গাংম)

দেবর ( খং) দীঝুতানেন দ্বি-অর ( অর্জি কমি এমীতি ১৮ উপ্ এ১৯২৮) পতির কনিও আতা; চলিত কণায় দেওলুঃ পর্যায়—দেবা, দেবু, দবার, দেবান, ভ্রাগাব, দেঝুলী। (শন্তর ১৮০২ পতির আত্মাত্র, পতির কনিঠ বা জ্যেষ্ঠ উভয় আত্তেই দেবর বলা যায়।

"দেববাৰা সলিভাগা স্থিয় সমাক্ নিযুক্তরা।
কালেপিভাগিগন্তবা গৃস্তানত প্রিক্তরে।
বিধ্বাধাং নিযুক্তর ছাতাকো বাগ্যভো নিশি।
এক মুংপাদ্বেং পূবং ন ধি নীয়া কর্মকান।" (মহু ৯০৫৮-৫৯)
বিধ্বা সা সকল স্থামী ছারা স্থান্যাংপত্তি না হইলে
দেবর কিংবা মত কোন স্পিও ছারা একটী মাত্র স্থানোংপত্তি
করিছে পারেন। একটীর অবিক স্থানোংপত্তি
করিছে পারেন। কেই কেই বংগন, চুইটী পর্যান্ত
ক্ষানোংপত্তি করিছে পারেন। কিও ক্ষেত্রশতা যদি
এই প্রপান্তর করে, ভাল চইগো পানক জানিবে। কিন্ত
স্থানান্যান্য সভানাতঃ কলৌ মুপ্রে কাম্ব্রাইরা
নিম্নির, এই বন্ধান্যারে, কলিতে ইরা বিশেষ নিমিল।
দেববের বংগা জ্যেটা ভার্কারা মান্ত্রশ্যা বেবং কনিটা
ব্রেহ্ব বংগা জ্যেটা ভার্কারা মান্ত্রশ্যা বেবং কনিটা
ব্রেহ্ব বংগা জ্যেটা।

দেশব্রু বাজপ্রভানার উন্থপণ রাজ্যের অন্তর্গত একটা হৃদ।

অকাশ ২৭০ ১৮ জিঃ এবং দাবিশ ৭৭০ ৩ পুঃ। উৎস্পুর

স্থানের ১৫ কোশ দাবিশপুর্বে অবৃহ্নিত। এবানকার

লোকেরা কোনস্থা বা ব্যুস্থ বলে। ১০০১ পৃথিকে

বালা কান্ত্রে নিজ নামে এই রুহ্ম ঘলান্য পার্কা হবেন।

ইতা পুরুগান্তিরে পোল ৮ বা ২০ মাইল, নার্বি কায় ৩০

মাইল। উহার চারিগারে এ০২ রুহ্ম শালের বাদ দিয়া

শ্রুক। উহার চারিগারে এ০২ রুহ্ম শালের কুজ
গ্রিক)। ম্যান্তবে ব্যুগালি স্থান্তর একটা ক্ষম বার্গা এত

ব্যুক্ত ক্রিম জ্লাশ্য জ্লগতে অতি বির্ধা।

দেবস্থার ( প্রং ) দৈবর স্বাধেনিকন্। দেবব ।

দেবস্থাক্ত ( প্রে ) দেবৈর স্থানিকন্। ১ দেবখা কর্ম্ব র**ক্ষিত্র ।**প্রং ) ২ বেবক ন্পের প্রতেদ্ধ, দেবফ নগ্তির **চারি প্রে ও**ন্থা নতা ২ইয়াছিল। ( হরিবা ৩৮ আঃ)

ত একজন রাজা, ইনি ভাষণিপ্তে রাজত্ব করিতেন।

দেবর্হিন্তা (সাঁ) বেবকের এক কন্তা, দেবকীর ভাগিনী।
দেবর্থ (সাঁ) বেবজ আদিভাজ রথা। স্থারথ, স্থ্যের
রগা "রাভিশেতা বৈ দেবর্থাজনাগে" (শতং রাণ ১৪।৬৩।২)
দেবর্জাদিতা ওভা রথো দেবর্থা ভাত গত্যা অক্নোভা

(ভাষ্য)। ২ প্রবিধান্তর্গত ক্ষতিভেদ। দেশানাং রথ:। ও দেবভাদিগের রথ, বিমান।

ক্রের্হ্জু (ক্লা) দেবনাং রহজং। দেবতাদিগের রহজ, ক্রিগোপ্য। "এতং নেবরহজং তে নারদাবে্ধ,শনাং।" (ভারত আঞ্চ ৩৮ ঋঃ)

(দ্বরাজ্ (গু°) দেবেন্রাজতে রাজ-ভিপ্। ইস্তা। দেবহুজে (পুং) দেবানাং গ্রাজ। ৬৩২, 'রাজাহুস্থিভান্তচ্' हो है एं प्रभागायः। अवदाल रेखाः देशत नामायदा-ইক্ প্রপতি, শক্র, নিতিজ, প্রনাগ্রহ, সহস্রাক্ষ, ভগান্ধ, कलगाइन, विद्याश, सनामीत, मनवर, भाक्षामन, छावत्यत्क, महील, देव डार्यन, वश्रुष्ठ, कामस्या, एगोछभी-ব্রন্ধন, ব্রহ, বাদ্র, দ্বীতিদেহভিত্তক, জিফু, বামন-ল্ডিন্ প্রত্যত গ্রন্তর, দিবপ্রতি, শতম্প, স্ক্রামা, গোল্ল-कि : दिङ् ्वथ्य ५, वयातालि, अष्ठ एउपी, अत्राख्य, मरजन्म, গুশ্চবেন, মেঘবাহন, আধিওল, ছরিছল, নগুচিপ্রাণিনাশন, विष्ट्रसन् प्रहारिक्टामनीनेष्ट्रमा [ ईक्क (एथ । ] टेकाइ माग हैकारन प्रतिस्था क्या भाग भाग भाग । (अकारिक स्वाय छ ) দেবলাল অনিদ িশুবার ওছিরের পুরতাত পুরু। সাহারত মতে ইহার পিতার নাম চল্র। রাজিণাবাদের न्य मार्न १८० (शाकार्यक निक्छेन्डी शिद्धा (निद्धांशी ?) इन्द्रक प्राटन होने पाछाइ को पाटन । अध्यक्ष विन् कांत्रियात নিত্র ডাহির প্রাজিত ও নিহত ইইলে টাহার অনেক ত। প্রীয়ুপুর্বা দেববাজের নিকট গিচা আশ্রেম ধাইয়া ছিলেন। দেবের জে, বাক্ষিণতের ক একরন হিন্দু বলো। [ বিভাননগর, মহিতার, ও বাদারাজকশে শাস এইবা । ।

দ্বেরাজ, কএকজন সংগ্রুত চবি, জনিস্কাচরিত আধামঞ্জী,
নানকংক্রেদ্ধ প্রভৃতি কাবা বচ্যিতা। ২ বিশ্বতব-প্রকাশ্বাং রালে বৈরাভিত্ব গ্রেস্কার। ও ব্রদ্ধান্তের প্রা,
ন্ত উপন্নালা রচ্যিতা ও মুকারকী নামে একপানি ক্যোতিষের
াকাকার।

বৃদ্ধব্যক্তা, হালিবাতো মালাছের অন্তণত বিশ্বমণ্যের বিলয় বিদ্ধান ক্ষিতিন্নের মধ্যে জনৈক রালা। এ প্রত এই বংশের হত গুলি ভার্শাসন বা শিবালিপি কর বিশ্বমুক্ত, তর্মধা "রালা দেবরাল" নামে কোন বাজ- কর বিশ্বমুক্ত, তর্মধা শাষ নাই। কিন্তু ভাঃ বুর্ণেল এই বিলোগে বিশ্বমুক্ত ব্যাসমালা ও রাজ্যকাল বির করিয়াছেন, তথ্য বিলোগ বি বাজা বিত্তীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বি বাজা বিত্তীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বাজা বি বাজা হিতীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বাজা বি বাজা হিতীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বাজা বি বাজা হিতীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বাজা বি বাজা হিতীত বুকের হোট প্রের নাম ক্রেরাড বিলোগ বাজা বিলোগ বাজা হিতি বাজা করেন। হিতি বাজার বাজা হিতীত বুকের স্বাস্থ্যান বাজার হালি বাজার হালি বাজার বাজার হালি বাজার বাজার হালি বাজার হালি বাজার বাজার হালি বাজ

নাজাজের প্রাচীনতত্ব সংগ্রহ করিবার অন্ত বে স্ক তামশাসন ও শিলালিশি পাইরাছিলেন, তাহার আতে চনার তিনি ছির করিয়াছেন রাজা বিতীর হরিহরের জে পুজের নাম হরিহর (২য়)। রাজা বিতীর হরিহরের জে পুজের নাম দেবরার (১ম), তিনি ১৪৩৬ খুইাকে রাষ্ট্রিলের। এই প্রথম দেবরায়ের পুজের নাম রিজয় ভূপতি ইনিই ১০১৮ শকাজে রাজা ছিলেন। মিং নারের রাগ বিজয় ভূপতি প্রাণ্ড ১৪১৮ শকাজের (১৪৯৬ খুইাঝের প্রেল্ড একখানি তামশাসন পাইরাছেন; স্ক্তরাং অধ্য করিতে হইলে এই বিজয় ভূপতিকে দেখরাজের নানার বিলয় ধরিতে হয়। গাধবা এই বংশের নামালা আ কাল ভালিকার আলোচনা নিঃশংস্মিতর্রপে মীমার্থির হয় নাই। [বিজয়নগর দেখা]

দেবরাজ যজ্জন, রঙ্গারীর মজ্জেখরের পূজ। নিবট ভাগ্তক। দেবরাত (পুং) জৈ-জ দেবেন জীক্ষেন রালঃ র্ছি । ১ দেবতা কর্ত্ব রক্ষিত প্রীক্ষিক নৃপ।

## ২ বিশামিত্রের এক পুত্র।

ত দ্বাপর যুগের একজন খ্যাত রাজা। ৪ এক ছিল্ল দেবরাম, অধিকরণমালা ও আজ্কিচল্রিকা নামে । « গ্রাহায়িতা।

দেবরায়, বিজয়নগবের জাচীন চক্রবংশীর রাজগনের ন "নেবরায়" নামে ছইজন রাজার নাম পাওমা গান। জন দেবরায় রাজা দিতীয় ছরিৎবের প্র, ১৯০০ কি. ১৯১৭ খুটাক প্রতি রাজত করেন। দিতীয় কেলে বিজয় ভূপতির পুত্র, ১৪২২ ছইতে ১৪৪৭ খুটাক গা রাজত করেন। [বিজয়নগর দেবা।]

দেবরায়ত্র্য, মৃধিহর রাজ্যের তুনক্ত জেলার মাজ একটা প্রকিত গিরিজ্গ। সমুদ্রপৃষ্ঠ হইতে ১৯৪৫ টি উচ্চে, অকাণ ১০০ ২২ তিও উ: ও দ্রাধিণ ৭৬০ ১৪ টিট টি ভূমকুড় সূত্র হইতে ১ মাইল পুরে অবস্থিত।

১৬০৮ খুটাবেদ দেবরাজ এই স্থান জয় করিয় এলা উল্ফ গড় নির্মাণ করেন। মহিস্পরের জনৈক রোজপ্রিন্ন নিরিশ্নে হুর্গনরসিংহের মন্দির আছে। দেবের গ্রাধ্যক উল্প্র দশ হাজার জহরত আছে। দেবের বাধিক উল্প্র স্ময়ে এথানে অনেক লোক্ত আসিরা থাকে।

বীমকালে জেলাই ইংরাজ রাজপুরুষ্গণ এথানে জাগি বাস করেন। এথানে জলকট নাই। দেবরায়পল্লী, নেল্ব ছেলার আত্মক্র তাল্কের মণাবা একটা গ্রায়। লোকসংখ্যাপ্রাের ৩০০০।

८सचर्चि (प्रः) ८मवरेव अविः त्मवानाः अविवा। > नाम्रमानिः अभि। र जात्रानिक्डी क्लानानि।

> "দেবর্ষিরচিতং গার্গ্যঃ কুঞ্চাত্রেমটিকিৎসিতং। স্থায়ভন্তাণ্যনেকানি তৈত্তৈরকানি বাদিভি:॥"

> > (ভারত শাস্তি ২১০ 🕬: )

**८मवल ( ११: )** (परः गांकि शृङ्गांकि निम भौविकार्थः (पर गा-क । **(मुताबीय, यांशाबा (मत्यांशृका के**बिया बीतिका निर्माह करत, পুঞারি বামুন, এই দেবলরাগ্রণ পতিত।

"(मरवाभकीवकीवी ह (मंबल्फ व्यकोधिक: ।" ( उक्करेववर्कः ) ⁴िकिदमकान् तियमकान् सारेन्तिकासिन्छथा ।

विभागन ह जीवरन्ता वन्जार साईवाक गरमा ॥" (मस ०। ५०)

bिकि दशके, (भवन, मांश्मिविकशी, वावनां श्रीवि हेराता र्वाक्ट्रेंचा वर्क्कनीय। स्वतन आमान यात्रा आक्षापि कत्रितन ভাষা দিও হুর না। দীব্যতি আনন্দেনেতি দিব-কলচ্ ( সুধানি ভাশ্চিৎ। উণ্ ১।১০৮)। "২" ধার্মিক। ৩ নারদ মুনি। রকার ও লকারের অভেদ হেড়াও দেবর। ৫ ধর্ম-শাস্ত্রবন্ধা মুনি বিশেষ িইনি অদিত মুনির পতা, বেদবাদের শিখা। বছার শাপে অইবজ হইরাছিলেন।

"জ্বসিতো দেবলকৈব বৈশস্পায়ন এবচ। লৈমিনিশ্য স্থয়গুল প্ৰভাঃ মধ্যে ভপোধনাও ॥"

( (पर्वी नांशवङ अरु । ०)

ভ প্রক্রায় রাখিব পুর। (বিফ্প্ ১০১৫০১:৫) ৭ এক শ্বতিকার। দেবল, ্দিকুনদের মোধানাধ অবস্থিত একটা অতি প্রাচীন বন্দর। এখন আর এ বন্দরের চিহ্ন মাত্র নাই। সমুদ হইতে 🤊 জোন প্ল দূরে অবস্থিত। পূর্বে গালে এখানে নতসংখাক লোকের বন্ধান ছিল। নানা দেশ বিদেশ হইতে ব্যিক্ত্য এথানে বাণিজা করিতে আসিও:

१५२ शृष्टीत्क महस्त्रम विन् कांत्रिम् भरेनत्त्व १६६ नगाः । व्यादम करवन । युक्तमान क्रिक्शिमक वनास्त्री निविधारह्म, महत्मन अवगाहेल् इटेशा निकृत वसत्र (भवरत् आफिट्यन) এথানে আরবেরা এক বৌদ্ধ মন্দিরের উচ্চপতাকা দেখিতে পানু, ভাহানা ঐ পভাকা ভূলিয়া ফেলিয়া দিয়া সহর অধিকার करते। हहनामात्र भएक, २० हिलिया उक्षय भारत (१०२ प्रहीटन মে মাদে ) দৈবল বন্দর কাদিমপুত্র মহক্তদের অধিকৃত হয়।

**(म्दलक ( पूर ) "ए**मवल खव चारर्थ कन्। एपवन्।

All the second

 "আহ্বায়ক। দেবুলকা নক্ষয়গ্রাম্থাজকাঃ। এতে বাহ্মণচাণ্ডালা মহাপ্ৰিক প্ৰথমাঃ 🕆 (ভারত ১২।৭৬।৬) **(त्रवल्या**ठे. [त्रडेगघाठे त्रथा]

Cक्वलामां (अ. मधाकार्यात्वाची किया क्रिका विकास क्रिका

আম। ইহারই প্রবর্গ একটা অন্তর্গ পাহাড় আছে। অন্তা ২০ ২০ উঃ ও লাখি ৮০ ২ পু:। বৈরাগড়ের ভ জোন निकन्यिका क्षरिष्ठ। के गाहार्ष्ट्र क्षि प्रेट्स स्मोह পাওয়া যার শ (म्यंनवाडा, अमगावाधारणात्र वक्षा दश्यात्र मधाक धकरी কুত্র গ্রাম, বর্দ্ধা ( বরুদা ) নদীয় তীরে অবস্থিত। এখান-কার ক্লিণী দেবীর নাদির অভি প্রদিষ। প্রচি বর্ষের কার্ত্তিক মানে এখানে এক মহামেলা হব, ভারীতে নাগপুর, পুণা, নাদিক, জনালপুর প্রভৃতি নানালান হইতে বিষয়া ভীর্থানী ও ব্রিক উপস্থিত হয়। মেলা প্রায় ২৫ দিন शीटक, छोशोट्ड लकांधिक हेक्कात कांधवीत र्ष। अ म्यरा **८एवानरप्रत्र** सर्वष्ठे आंच रुहेय' वारकः

এই প্রামের গার্বেই ভাগবডোজ প্রাচীন কুভিনপুর প্ৰবিষ্ঠিত। এখানে বিদৰ্ভৱাহ ভীম্মক গ্ৰেছ কবিজেন।

২ বরারের ইনিচপুর ভেলার মধ্যবর্ড একটা আম। काष्पा॰ २२ १५% छै: ७ ए मि॰ ११ हट थ:। श्रीगहसूत्र **क्रेंटिक खोत्र मांक त्लांग मता जुनी नमी मैदित कर्नावक।** প্রাক্ষে ন্রথানে বিশ্বর বোকের ব্যবাস ছিল। জান মতি শ্বয় লোকই যায় করে। এই একটা প্রাচীন মন্তির ও ভিন শত বর্ণ পুর্কোকার এফ মস্টিদ ভিন প্রাচীন ননাথ্য পরিচয় দিবার কিছুই নাই। হিন্দুদলিবের মধ্যে নৃগিক-भिनाद जैदस्यद्याना । यह मनियत्त्र निकाह किन् ভীর্যা। প্রাণাদ এইক্ষপ, নশ্দিণ্ড হিরণ্যকশিশুকে ব্য কার্য়া কোথাও ভাগের হাজের কন্ধ বৌভ কানতে পাস্থি-८गम मा। ८५८व अहे रमवनदाक्ष कालिल है। हार क्र শোধন জারিতে সমর্য কটলেন, যেখানে পিনি হস্ত ধৌত করেন, সেই সরোধর এখন করন্ত্রিভার্থ নামে শ্যাভার

নেবল্ডা (জী) দেবপিয়া ল্ডা। । নংমলিকা। দেবপ্র खावः छल् हाल्। । र तन्त्रमाह, डेलकोविकान अश्च (नवण्डन । (भवलाञ्चलिका (जो ) सनग्रीत श्रीतरात्रप्रशासन (भन-नि च अ:। तमवः लोकृतिकः भृतका यक्ताः। युन्तिकानि, विक्रुति । দেবলগতি (সী) দেবানাং ভংখাতনানাং লাভিঃ এংশং ৬৩৫। দেবপ্রতিমা এইণ।

দেবলোক ( প্: ) দেবানাং লোক: ৬তং। ু খর্গ, ভূঃ, ভূৰ, স্থ, মহ, জন, ভপঃ ও সভা এই ৭টী দেবলোক। "कुर्लाटकार्थ क्रालाकः चर्लारकार्थं मर्छनः। ভनः महाक परेश्रक (नरामाः धकोहिंकाः ॥" ( भर्ष्णम् )

८मयवयुक् (क्री) प्रवानाः वर्ड्यः प्रशाय । ्त्वकामिरशः विष

অবি মুখবদ্ধণ, কারণ তাঁহায়া অবিমূথে ভোজন ক্রি

থাকেন। জায়িতে দেবভার উদ্দেশে হ্রাক্রাদি হ্ভ হয়, অথ চইতে দেবগণ প্রাপ্ত হন, এইজন্ত দেববন্দু শব্দে জায়।
দেববর্জুন্ (ক্রী) দেবানাং বর্জা ৮৪৫। আকাশ।
দেববর্জাকি (পুং) দেবলাং বর্জাকি:। বিশক্ষা।
দেববর্জাকি (পুং) দেবলাবে পুলভেদ। (ভাগা চাংচাচহ)
দেবর্জি (দেবর্জিগণিক্ষমশ্রমণ) একজন গুলিজ স্থবির। ইনি গোহিত্যপুরি ও দ্বগণিব শিক্ষা ১৮০ বীর গভাকে বলজীর সংখ্যে ইনিই জৈনসিল্লান্ত শিপিগত করেন। ইহার সময় এফ পুর্মাজ কর্মারি ছিল। ইহার আর এক নাম দেব রাচক।

দেবধর্ষ (ক্রী) দেবানাং বর্ষং ৬তং । দীপভেদ। (ভাগণ রাং •া৯) কোন কোন পুত্তকে বেদবর্গ এইরাগ পাঠান্তর দেখা যায়। দেববল্লভ (জি) দেবানাং এলভঃ ৮তং। ২ দেবতাদিগের প্রিয়। (পুং) ২ শ্বপুরাগ।

দেববাত (পুং) হৈবেবাত কথানিক। ধাৰ্তিদ। "অন্থিটাং ভারতারেবংগিং দেবশ্বা দেববাত মুদ্দং।" (ধাক্ এ২এ২)
দেববায় (পুং) দাদ্ধ মছ্র পুঞ্জেন। (ধ্রিবং ৭ অং)
দেববায় (পুং) দেবান্ ধ্বীংয়ি বাধ্যতি প্রাপ্যতি বছশিচল্চ। আগ্লি, ইনি দেবতাদিপের ধ্বি বছন করিয়া
ঘাকেন, এইজন্ত দেববাধন শন্দ অগ্নি।

্রিয়ে জ্বিঃ স্মিধ্তে জ্বোন দেববাহন:।" (শ্বক্ ২.২৭)১৮)
(ফ্রী) দেবানাং যাস্কং। ২ দেবতাদিগের বাহন।
দেববিদ্যা (ফ্রী) দেবজানাথো বিভাগ। নিজ্জবিদ্যা ।
িদ্ববিভা অক্ষবিদ্যা ভূতাবিদ্যা ক্রেবিদ্যা নক্রেবিদ্যা
নগন্ধক্রবিদ্যা নামেবেভয়ালোপার।" (ভানেশায়া উপং)

्रि, देशा निकल्लः (ज्यार) जिल्ला (कर्मात्रकार)

দেৰতিশ্ (আ) দেবানাং বিশঃ। নেবজাৰিশেৰ। নেব্যা (জি) দেবং বেচি কাময়তে বী-কিপ্। দেবকান। "বংশিং সোমঃ জাত্তবিং গরস্থ দেববীবিতি।" (ঋক্ নাজাৰ) ভেববাঁজি (জা) বী-খাদনে জিন্, দেবানাং বীতিঃ ৬৬২। দেবজাৰিগেঃ ভক্ষা।

िल्बराज्या को गृङ्गाम : '( क्षक्रयक्ष् १४) ( '(ज्लोबो: क्ष्मणेश' ( भवीषत )

(त वतृत्वः ( पूरः) त्वविद्यातृभः । > मनात्र वृक्षः । र ७५(७नू । 
- र ७४(४) कः ।

প্রতিবান্ত (প্রী) **দেবক্তা উণাদিস্ত্তপ্রতির** । উণার্দি তথ্যবিধ্যাভিক্ষেদ্য

१८मण्ड्रिका १५ ) माराइक क्षेत्र स्वति (विक्षूप्) १**८**मण्डरहास, देशस्य असिर्ध माम **स्वतिकात, क्रिमात** छ বেহাগ বা সারক ও প্রবী বোগে উৎপন্ন। ইহা সং স্বর্থান—নি সা ঋ গ ম প ধঃ। ( স্কীভরং ) দেবব্য চস্ ( এি ) বি অঞ্চ গতৌ কন্থন্ দেবৈর্বাচঃ ত দেবতাকর্তৃক ন্যাপ্র। "স্থনীমহি দেবব্য চা বিবহিঃ।" (ঋক্ত দেশব্রত ( পুং ) ভীম্মদেব।

"গান্ধং দেবব্রতং নাম পুরুং দোহজনমং প্রভু:।
স তু ভীম ইতি থাতে: কৈটা ধানাং গিতামহঃ॥ (হলিং বি হ গেম সামভেদ। (ক্রী) ও দেবজ্বাধনব্রত।
কেবব্রতিন্ (জি) দেবতার্থং, ব্রতং অক্তান্ত ইনি। দেবতার্ক, বাহারা দ্বেরতার নৈমিত ব্রতধারণ করেন।
কেবলকে (পুং) দেবানা শক্রং ৬তং। ১ দেবারি, জা নেবতানিগের শক্র। ২ স্থাতোক্ত দেবগণ্ডাহভেদ।

দেবশার্মান্ (পুং) দেব ইব শক্ষা অভ্জনাশক। আহ উপনান, আক্ষণস্থাতির উপাধিবিশেষ। আক্ষণদিপ্রেব করনের সময় নামের শেষে দেবশর্মান্ এইক্ষপ রাখিতে হই "ভত্জ নাম কুর্বীত পিটেডৰ দশমেহহনি। দেবপুরাং নরাথাং হি শর্মাব্যাদি সংযুক্তং॥" (বিহুপ্ত) পিতা দশন বা একাদশ দিনে 'হং অমুক দেবলা এইক্সপ নামকরণ করিবেন। [নামক্রণ দেব।] ২ ক্ষিভেদ। (ভারত অসুণ ১৯৫ ছাঃ)

৩ একজন বেদ্জ ব্রাহ্ণণ। ইনি ত্রাহ্ণ নি বিলিয়া ইহার পালী সর্বানা ছংথ করিছেন। এই ইনি মলবলে দেবতাকে সন্থাই করিয়া এক প্রকাশন বিলাগ ইন্ মূর্পাকার ছিল। কিন্তু জান্তী তালে বিলাগ হয়। তথন ঐ সর্পালিয়ী ব্রাহ্ণাওন্য প্রভাগ করিল ও সর্পাদেহ জন্ম করা ইইল। তেই তালিন নরদেহ ধারণ করিলেন। ৪ পাটলিপ্রকাশবাহিন নরদেহ ধারণ করিলেন। ৪ পাটলিপ্রকাশবাহিন করেন বিলান ব্রাহ্ণণ। ইনা কালনেমি ও বিভিন্নি করেন। (কথাস্বিৎ) ক

দেবশস্ (অব্য) দেব বাহু শস্। দেব্তা।

"হচি প্রতি তান্ দেবশ্যে বিহি।" ( ঋক্ তাঠার )

দেবশিল্পিন, প্রং) দেবানাঃ শিল্পী। বিষ্ক্ষা।

দেবশুনী ( স্ত্রী) দেব ইব অভাবাহিতা গুনী। দেব

শ্পণিতি রস্থবৈর্নিগৃত্বগা, অংহেটুং সরমাং দেবতনীমিতে কুন্ধু ( প্রক্স গন্ধীকিং পুত্র জনমেজর কুক্লেত্রে এক দীর্ঘদত্তের অমু। বিলালকালে এক কুকুর উপদ্বিত হইমাছিল,
জনমেজরের ল্রাড্গণ ভাষাকে প্রহার করেন। ঐ কুজুর ভাষার
মাতার নিকট গিয়া বুলিয়া দেয় বে, 'আমি কোন অপরাধ বা
ঘঞ্জীয় লব্য ম্পর্ল করি নাই, ভথাচ বিনাপরাবে আমাকে প্রহার
করিয়াছে।' দেবতনী পরিমা ইহা তুনিয়া জনমেজয়য়র্ম বিজে
গমন করিয়া জনমেজয়কে কুলুল, 'আমার এই পুত্র ভোমাবদর নিকট কোন অপরাধ ও যজ্জীয় স্বত অবলেইন করে নাই,
রবিনাপরাবে বেমন আমার এই পুত্রকে প্রহার কবিয়ায়,
এই জন্ম ভোমানের অলক্ষিত ভয় উপন্থিত হইবে।' নেবতনী
সরমা এই শাপ দিয়া চলিয়া ব্রয়। (ভারত আদি ও আঃ)

(ক্রী) দেবনাং শেখরং। হিবেতার মন্তক।

Cमव टिम्य (क्री) अन्छ।

দেবপ্রাবস্থা ) > বিধানিজের প্রভেদ। ২ বন্ধদেবের ভাতা।
দেবপ্রি (পুং) দেবান কুরতি হবির্দানেন সেবতে প্রী-কিপ্।
যজ্ঞ। "নৈবায় ধর্ত্রে কোট্রে দেবলী:।" ( গুরুষজ্ব ১৭.৫৬)
(প্রী ) দেবানাং শ্রী। ২ দেবভানিগের লগ্নী।

স্বেক্ত (বি) নেবেৰু জনতে জ-কিপ্তৃক্। দেবতা-বিশ্বর মধ্যে বিখ্যাত।

"(म्दल्काको (भरवशारपाधिष्ठः।" ( क्षक्रमकूः ६००१)

দেবক্ষতে ( পু:) দেবের শতঃ বিখ্যাতঃ : ১ ঈশ্বর । ২ নারদ । ৩ শাস্থা : ১ অবস্পিনীর ফিনভেদ ।

"ল্ফংপ্রল ক্রিকুভিদেরশ্রতী চ যৌ।" (হেম) ্নিট্যোর প্রবিশেষ। (দেবীব্যা ১০১৯৪১)

(দে মুক্রেনী ( স্ত্রী ) দেবানাং প্রেণী চ। ১ মূধ্বনেতা । ২ দেবতা-দিগের পংকি !

দেবদেশ্রন্থ (পুং ) > ছাদশ মন্থর পুত্রভেদ। "দেববাধু রহজন্চ দেবগ্রেষ্ঠঃ বিদুর্থঃ॥" ( হরিবংশ ৭ আঃ) দেবের প্রেষ্ঠঃ। ২ দেবতাদিগের মধ্যে গ্রেষ্ঠ, প্রধান।

**দেবস্থ ( १:)** দেবানাং ল্যা "রাজাহংক্রিভাটগুর্ন" ইভি উচ্সমায়ায়। দেবতানিগের স্থা।

**(प्रवमःशी**खरयानिन् (वि) नावम ।

ু দেবসত্ত ( ক্লী এ যজ্ঞ ভেদ।

দেবসত্ব (ত্রি) দেবইব স্বং ক্ষে। দেবতাৰ ভাষ অভাবযুক।
দেবসদ (ত্রি) শীদভাত ক্ষ কিপু দেবানং সদঃ। দেবছান।
দেবসদন (ত্রি) শীদভাত সদ আধারে ল্টে। > দেবভাদিনের
আধার। "বহিদেবসদনং " ( ঞ্জি) "অখ্যো দেবস্দনস্থুতীয়ন্তামৃতো দিবি ।" (অধ্যুধ ধাছাত) ২ অর্গ। ও দেবালয়।

দেবসন্মন্ (রী) দেবানাং সন্ধ। "দেবতাগৃহ, দেবাল্য। দেবসভা (রী) শদেবানাং সঞা। > দেবভাদিগের সমাজ র পর্যায়—অধর্মা, অধ্যা। ২ রাজসভা।

দেবসভা (কি) দেবজ কীড়ায়া: মন্তা ৬জাং শীদতি ইতি বং। জীড়ামভাষ, জীড়াসভাগত। পর্যায় নাভিক, দেব-সামাজিক। (কিকাও) ু

Cদ্বস্থপি (পুং) দেবপ্রিয়: সর্বা:। র্ফভেদ। পর্যায়— অখ্যক্ষ, বদর, রক্তম্বাক, করম্বাক, কুলদেল, নিজ্লর্পর্বপ, কুববাজিবু। ইছাব গুল—কটু, উফ, কফদোর ও রক্তামালয়-নালক। (বাঞ্নি॰)

দেবসক্। রী) দেবং সহতে সহজের। ১ জিকাক্তভেদ। (স্বী) ২ দজোংশলোষধি। (সুং) ০ সোমাকর প্রেডভেদ। শহিমবভার্নি সভে মহেলে যলগে ১ধা।

শ্রীপপ্ততে দেবাগ্রে গিনৌ দেবদহে ওলা। । ( প্রক্রুত) এই স্কল পর্জত উত্তর্গতেক বিশ্বত আছে, ইছাদের মধ্যে

বিস্তর পোম উৎপন্ন হয়।
দ্বেমাগরগণি, একজন জৈন পণ্ডিত। ইনি ১৬০০ গৃহাকে
ক্রিলান্টিস্তান্দির 'ব্যংপতির্বাকর' নামে একথানি নীকা ংচনা কংবন।

দেৱসাত (অবা) নেৰাধীনং করোতি দেব-সাতি। ১ দেবতাৰ নিমিন্ত দেৱ, দেবতার অধীন। ২ অতি কটে দেবতার ক্ষান করা।

"হতা বা দেবসাং হুৱা সোকান্ প্রাপ্তণ পুগ্লান্।" (ভারত ছে'। ১৯০ অং )

(দ্বসাযুক্ত্য ( ফ্রী ) দেবেন সংযুক্তং বংমিশনং । পের দেবসার্বা ( গুং ) মহুডের । ইনি অংগ্রেশমন । শুরুস্কোদেশো ভূযো দেব সংব্রিয়ার্বান্

िक्दलनांबिक्तिभा (प्रवसाविक्तिस्साः ॥" ( डीशा नाराणारे । त्वसाविक्ति सारम रत्यसम्प्रविक्तिस्साः ॥" ( डीशा नाराणारे ॥ )

দেবসিংহ, মধ্যভারতের অন্তর্গ রায়পুর জেলার রাজিম
নামক স্থান হইছে ৮৯৬ কলচুরি সম্বতে (১১৪৫ গুটাজে)
ার্থী ভরাট্যীতে (৩৯ জাল বিহাতে) থোলিত একথানি
নিলালিবি আবিষ্কু হইয়ছে। ইহা তথাকার সমচক্র
মান্তরের গাতো উৎহীর্থ আছে। তাহা হইতে জানা যায়,
রাজ্যালবংশের প্রভংগ শাবার ঠাকুর সাহিল নামে এককন
বিখ্যাত বীর জন্মগ্রহণ করেন। তিনি জ্যুগ্রহণ ভূতারে
রাজ্য হব : উহির বাস্তদেব নামে এক কনিঠ ভাতা ও
ভূমিল, দেশণ ও স্থামিন্ নামেণ্ডিন পুর ছিলেন। ত্রমধ্যে

26 PM 6

य**ःस** ।

প্রামিন ভট্টাবিল ( রটিলে) ও বিহরা প্রাদেশ অধিকার १८०नः उडे अधिरामत स्वाष्ठे श्व स्वयापत पाराधात व्यापन ্বন কান্ত্র পুত্র দেবসিংহ কোনো নামক মণ্ডল অধিকার করেন। দেবনিংহেৰ পূব স্কবিখ্যাত বীর্জগণাল বা জগংপাল উপ্রাঠাস্থর দীব গভে জন্মগ্রহণ করেন। [ জ্পবিশ্বলি দেখা। ]

্ৰহ্মি ফেব আর ও ছুই পূরে ছিল, উ।হাদের নাম গালল उक्षार्शिश्ह । द्याताम नात्म हेश्रापत এक नहीं अत्नव वाक्षेत्रीयो विध्यान, केश्वादरे महारावटम वयरमानांति काल्लक অংশ্য প্রভাপশালী হট্যা উঠেন ও নানা বাজা জয় করেন। ্দৰ্দিংহ, এই জন 'কান্তশাস্ত্র' ১৮ছিল।

अवश्वनम् ( भू॰ ) त्वाभाकाव इष्टक्षम् ।

ন্বস্থলরে, তণাণ্ডের একজন বিখ্যাত জৈনাচার্য। ১০১৬ পুষ্ঠে এল. ১৯২৪ স্থতে মহেখবগ্রামে রভ ও ১৪২∙ স্মতে অব্ভিন্নপদ্ধনে স্বিগদ লাভ করেন। ইহার গাঁচ শেষ্য অধান-কুল্ম ওন, ভেগরার, ধোমগুলর, জ্ঞানসাগর अध्यक्ष, अर्ड भाग्निस्ट भारतक देवनशाहीय शहरत दृष्टि वहमा क्टडन ।

[শবস্তুষি ( পি ) দেইবঃ প্রাণুদ্দিভিঃ বক্তমাণঃ স্থাসি হারং। ल्यानाभिषाता अपन्तास अभटवत चात्र छन । ७ छ चार वर्ती । [मर्चा ( थर ) स्विध अञ्चलांसीय कार्किय्, सार्वाक एउ स्वय-(% के कष्पतावाः । प्रायक्षाकर्त्ताः (मद्द्राक्षाः "भदेव मीक्षरक, ল উপনব্ধেহগুলোমীয়ং প্রস্থালন্ততে তথ্য ব্পয় প্রচর্ম্য পুরোভাশ নিবণতি की नामाध्यकामनकशाना । । প্রাক্তরণ শ্রীণার শনক্ষপ্রতে ।" ( শতং রাণ কার, সাঠ ) তিওঞ Gनवस्तात्र क्रीरच निकाहि, স্বতামুলানগীতি সুবঃ েবাশ্যতে প্ৰদেশ্যতি দেবস্বঃ কেনাং দেবস্বাং।' (ভাষা / ुल्डरुवि, २ अक्षप्त देशन अञ्चात्र । होन सहिमानिया ( र ( र तना या। ) दहना करहन ।

 একজন বিখ্যাত তিল্লাচার্যা। মুনিচক্রফরির শিষ্যা। ু ৪০ বিং ৬ জন্ম, ১৯৫২ সমতে দাস্য এবং ১১৭৪ সমতে ত্তিক্দ লাভ করেন। অন্তিল্লপত্তনে জয়সিংহ সিদ্ধরাজের মুখ্য স্থোধের মুক্তি নম্বন্ধে বিগ্লাবার্থা কুমুন্চজ্জের ०७ ोशत (संवठत विष्ठाः रकेन होंस विष्ठाःत समापाञ ত্যাল স্পান্ধৰ অপকান্ত্তি জ্যাসভা ইইয়াছিল। ১২০৪ গুল্ল বাৰ স্বাধানগ্ৰাকে অকন্তিম্বিদ্ ও এক চৈতা उत्रात्तिकार स्टारक कारन स्मिनाय विक्रित करतन ।

इति १९२० (श्वरूप भारत दक्षति **सुन्द धार्माधा**ह উচন। করেন : তহাল লেক্টা রক্সপ্রস্থার রক্তাক্রাবভারিকা भारत छात्रास्त्रका ६८२० अपनानि है की विश्वम शिवास्कृत ।

১২২৬ সম্বতে দেবসুরি ইহলোক পরিজ্যাগ করেন। (জি) (দৰেন স্ট:। দেবভাৰত্ক স্ট্র। "দেব-श्रदेश वा केंद्रविश्वनाक्षय्रविष्ठतमा।" ( भाष्ठभथडा॰ काराज्य ) (দেবস্থী। স্ত্রী) দেবায় জীড়ার্থং স্থরী। মদ্য, মদিরা: (एवएमन् > शिक्षुनक्तित ताका। हैशत कसात्र नाम छःथ-विक्शि। २ এकस्रत त्राथान, वरमतास जिनस्ताव त्रास्त्रा अक হানে কতক গুলি যক্ষ রক্ষিত ধন ছিল। সেইছানে এই আজি রাম্বল্পের উপর আধিপত্য করিত। রাজা সূত্যান্ত জানিয়া ধন উদ্ধার করেন। ৩ প্রাবন্তা নগলের এक्छन ब्राह्म। अहेतासम अभागिनी नाम अक मञ्च-লুলুক্ণুসম্পন্ন। প্রমাত্মন্ত্রী ক্রাছিল। বণিক ভন্তাতে রাজার দৃহিত বিবাহ দিবার মনত্ত করিলেন, কিল রাজ পুরুষগণ রাজকাধ্যের বিশৃত্বাল, হইবার ভয়ে সেই কভাকে কুলক্ষণা বলিয়া সাজার সমীপে প্রচার করেন। কাজেই রাজার সাহত ভাষার বিবাহ হইল না। কিন্তু সেনাপ্রভির স্থিত বিৰাধ্যইল। সাজা দৈৰণতিকে একদিন ভাষাকে লেকি: ইহাকে প্রাভ্যাধ্যান করিয়াছি, ইহা ভাবিয়া অনুতল ৫ রোগ্রস্ত হইয়া প্রাণ্ড্যার্গ করেন ৷ (কথাস্বিৎসাপ্র) দেবসেন, (ভটারক দেবদেন) একজন গুসিদ্ধ জৈন এছ চাৰ বাম্পেনের শিষ্য। ইনি ৯৫১ সম্বতে জন্মগ্রহণ ক্রেনঃ हेशाव प्रक्रिक वर्भनमात्र ( प्रभूनमात्र ), ज्ञानमध्यह ७ ३२४।व নামে প্রাকৃত এব, স্বারাহণসার (স্বারাধনসার) গলাত

আক্রত সংস্কৃত মিশ্রিত প্রস্ত এবং ধর্মসংগ্রহ নামে গংখত গ্রহ भा ७४। याम ।

(एवर्ममा (श्री) प्रवासाः (मनाः > १९वर्छः, ২ প্রসাপতির কভাভেদ। সাবিজীর গভে জনা। ইহার বাব নাম ধটা বা মহাধনি, হান মাতৃকা শ্রেষ্ঠা ও শিশুণালিবা ইহার ভগিনীর নাম দৈত্যদেনা। একদা কেনাদানব ইহাকে হ্রণ করে। কিন্তু ইঞ্জ দেবগেনাকে ব্লকা করেন , "এক দিন ইক্স ওদাকে ভাকিবা কহিলেন, হে স্থান্দ। আগনি জ্বতাহ্য না কবিভেই স্বয়স্তু এই ক্লাকে আপনার প্রা (নিহিও ক্রিয়াছেন। **অভএব আপনি ইহা**র, পানিগ্রহণ कक्ता इन्ह (मन्द्रम्मात वर्णानिवे शानिखर्ण स्वित्र्यः) বুহল্পতি লগ ও কোমকার্য্য সুম্পাদন করিলেন। ত্রাগ্ধনের। हैशादक पर्छी, नामी, जागा, असुबक्षा, त्रिनीवांनी, कूर, महाव ও অপরাধিত। এই নামে অভিছিত করিয়াছেন। বে সম। त्नवरमनात्र महिल कत्न्वत निवाह हेत्र, छवन लन्नीति मृति 'মতী হইয়া **ভাঁহাকে আল্র মরেন**। পঞ্মী তিথিতে স্বন্ बीयुक इरेगाएकन, त्मरे निमिन्न छेश् श्रीनक्षणी विनिधा वाहि হইছছে, এবং বল্লীতে তিনি ক্রতকার্যা হন বলিয়া বঁটা মহাতিথি,হুইয়াছে। (ভারত বন্দণ ২২৮ আং)

দেবসেনাপতি (পৃং) দেবদৈনালা: পজি: ৬তং। রুক্ কার্ত্তিক। কার্ত্তিক দেবতাদিগের সেনানামক এই হৃত্তু ু কার্তিকের নাম দেবদেনাপজ্যি

িঁইদিবস্থলি, আমীমতন্ত্রনচয়িত্র 🗥 🐃

Cদরক্তানু (পুং) দেবানাং ক্রানি ক্রিল স্থানং যক্ত। ু আঁকজন সিলা ব্রান্ধি। এই ঋষি, পাগুবদিপুরি বনবারু কালে উট্টোদিগকে অনেক সভ্পদেশ দান কার্যাছিলেন।

ুপরে রাজ্য জ্যু হইলে ব্রিষ্কি হৈ সমধে ভাগীরথী তীরে অবসান করিতেছিলেন, সেই ীয়ন্ন ইনি জনেক প্রকার সন্থাদেশ দিয়া যুদ্ধিরকে রাজ্যতাগে বাসনা হইতে নির্ভ করেন। , (ভারত শান্তি ১-২০ খাং)

দেবিশ্বিক্তা, দর্মগুরু ক্রিকেব ক্রা। ইনি ক্রেন্ডার প্রথৎ নেনকে বিবাহ করিবার হল প্রিয়ালার অজ্ঞাতসাবে জাহার সহিত প্রায়ন কনেন। ইনি অভিশ্ব গতিপ্রায়ণা ছিলেন। ইনি আয়ালার কিন্তে প্রায়ণা ছিলেন। ইনি আয়ালার কিন্তে প্রিতেন না। প্রক্রেন ক্রায় বালিক বালিক করিছে বালিক প্রতির প্রায়ণ বালিক করিছে বালিক প্রতির করে। নেই ছুইগা যোগক রিজিক। নাণে এক পরিরাজিকার পর্যাণার হইন। এ পরিরাজিকার সিজিক রীনামে এক শিলা ছিল। তিনি জ শিলাকে লইনা দেবিশ্বির জননে উপান্ত হইলা তাহাকে প্রপ্রক্রাণকা করিবার জ্ঞানেন করিছে ক্রিলাক স্থিতিন প্রপ্রক্রাণকা করিবার জ্ঞানেন করিছে ক্রিলাক উপান্ত শালিক দিবার জ্ঞাক ক্রিলাক করিবার ক্রিকে ক্রিলাক বালিক বালিক করিবার ক্রিকে ক্রিলাক করিবার ক্রিকের ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক করিবার ক্রিকের ক্রিলাক করিবার ক্রিকের ক্রিলাক করিবার ক্রেকের ক্রিলাক করিবার ক্রিকের ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক করিবার ক্রিলাক নামিক করিবার ক্রিলাক ক্রিলাক করিবার ক্রিল

আদক্ষে তীহার পরিচারিকা তাহার বেশবারণ করিয়া ও বাণক্পুত্রকে সেই প্রকাপান করাইয়া সংজ্ঞাশুত্র করিল, এবং দেই মোহর ধারা ভাহার কপালে ক্ষরিযোজন চিপ্তিব বিষয়ারান্তার ধ্বের থানায় কোলয়া দিল।

এই, কংপ একে একে চারিজনই স্বরুত কর্মের শাজিতে। গুণাত্যা প্রত্যাগত হুইল। কিন্তু কেহই কাহারত । নকট একাশ করিল না। দেবস্থিত। প্রত্ত্তিনা করিয়াই ভাহানের গোল ক্ষেত্রক, সেইখানে কেলিয়া দিল্লেন। পরে পাছে ঐ বণিক্প্রগণ তাহার স্থানি কেলিয়া দিল্লেন। পরে এই জন্ত বণিক্প্রগণ তাহার স্থানির ক্ষেন অনিট করে এই জন্ত বণিক্বেরণ ফটাহবীলে কুমন করেন এবং তথায়

মাজার নিক্তটে জানাইলেন, আমার চারিটা চিহ্নিভ ভূতা আপনার, বাজো পলাইলা আদিয়াছে, আমাকে প্রত্যর্গণ কর্মন। রাজা ঐ ভূতাগণের অনুসন্ধান করিছে বলিলে বিকিবেশণণ্ডী দেবিস্মিতা চারিটা বিশ্বিপ্রেকে দেগাইয়া দিন। শতিই জল্প প্রবাশীরা, বিশেশতঃ সেই ব্রিকৃপ্রেরা সতিশয় ক্রম হইল। দেশস্থিতা কহিলেন, রাজন্ এই ভূতাগুলিব ক্যাণে কুরির পদ চিহ্ন আছে, দেখিতে আছে হউন, পরে দেবিস্মিতা আয়ল আম্বনিব্যুগরাজসমক্ষেব্যুজ করিলে নকলে উলোর ভূমনী প্রশংসা করিছে লাগিল, এবং রাজনে গাতিবতোর উপলার স্থকা বন্ধ সম্পত্তি প্রদান বিলোন। গরে দেবিস্থিতা স্থানার বাহিনি তানলিপ্তিতে বাইনা স্থান স্বাস্থান ক্রমন ক্রেন। ক্রমারহ্মাগর)

দৈব হো কাঁ) নে । নাং খা । বেৰ প্ৰতিমাৰ জন্ত উৎস্ঠ ধন,
কোন জোক বেৰ প্ৰতিমান্ধ্যাৰ কৰাইয়া দ্বাবৰি উৎস্থাৰি
ক্ৰিয়া ভাগ্ৰ নালাকি হারিচলেনেৰ জ্বজা যে ধন দলে কৰে,
সেই বনকে ত্ৰৰ সংহ্। এই সেবস বিনি অপুহ্ৰা ক্ৰেন,
তিনি প্ৰযোনি প্ৰাপ্ত হন।

ात्भाषाः **५ ५**७८३१४ वाः (मदयः। ४८८७) सः।

্ৰভাগে দিবাজি গুলেন সালেগেলা জানিতে মূলং ৮" (ভাৰত) "বৰ্তনাৰ সঞ্জীনানাৰ দেবপৰ ভাৰিতবুৰীয়া" (মুখু ১১)২০)

নজনীব এবা জারগের দেবন ভারাফে দেবর করে। এই দেবল লোভপূর্বক হরণ ফারণে গুরোভিত দার। জারদ বাবন করিতে হয়।

"দেবসং আক্ষাসং চ লোভেনোপহিনাও তে। ন প্রসাম পরে লোকে পুরোজিটেন জীবতি ॥"

(関語の2次の)

দেবস্থাক (গ্রং) দেবস্থাকি আনাশ্রেছিড। জন্তা ক অনামে বা গুন্। দেবস্থাকি প্রতিগুল স্বাম বা ওওবাক। দেকস্থানী, একসন বিখ্যাত ভাষ্ট্রার। স্থান জাধ্বামন-লোকস্তা, আধ্বামনগৃহস্থ ও বৌধামন্থ্যের ভাষ্ট্রার ্ত্রেন। হেমাজি-প্রভৃতি ইহার মত ওক্ত স্বিসাছেন। ১ ভিজ্কিরতক নামে বংশ্বত গ্রুছাক্তা

দৈবহবিস্থা রী ) যঞ্জীয় পশু। "আলেগা দেবীঃ স্বদ্ধ স্থাত্ত চিৎ মন্ট্রেকিং ( কুলুম্কু: ভাতু )

দেবহ্ব্য (পুং) দেবায় হবঃ ২৩ । স্থানিভেদ । "সবস্তো দেবহ্ব্য চিষ্ক্সেন্স বাধাবান্।" (ভারত সং ৭ অং)

(দবহাটা, গ্রনা প্রেলার, সাইহাটা পরগণার মধ্যত একটা কুদ্র সহর। অফাণ ২২° ৩০´৩০´ উঃ, ছাদ্রিণ ৮৯০০´১৫´´ পু:। যমুনান্দীর ধূতারে অবস্থিত। শোকসংখ্যা প্রায় ৭ হাজার। विशास मिछिनितिशानिष्ठै , आहि। , विशास अधि शृक्षित्र ।

हुन श्रेष्ठि हम। विहे हृत्यत्र वादनाव स्ट वहे स्थान श्रीकः ।

(गविह्रि (वि) स्वानाः वा (स्टेव्हिंडः । ऽ स्वडामिरमञ्जूष्टे

"নানা হি বা দেব হিতং।" ( উক্লযজু: ১৯। ব)

(দেবছু (জী) দেবাধ্বয়স্তেহত ধ্বে সম্পূণ ভাবে-কর্তার বা কিপ্।

১ দেবাধ্বান। "দেবছুর্যন্ধ আ চ বক্ষং" ( তক্লযজু: ১৭।৬২ )

(জি) ২ দেবাধ্বানকর্তা। ৩ ত্রীহিপুণপক্ট। "পপ্রিতমং
জুইতমং দেবহুতমং" ( তক্লযজু: ১৮ ) 'দেবানাং অভিশরেন
আহ্বাতৃ যভাগং ত্রীহিপুণং শক্টং দৃষ্টা দেবা আহুতা ইব
শীগ্রমাগচ্ছতি।" (বেদদীপ) ৪ বামকর্ণ।

শ্বাপণে! ব্যবহারোহত চিতাসকো বহুদনং। পিতৃষ্ট্রিকণ: কর্ণ: উত্তরো দেবহু: স্বত: ॥" (জাগ ৪।২৯।১৩) ৫ অধিডেন !

দেবসূতি (প্রী) সারস্থ নমুর শ্রা। নহর্ষি কর্দমের সহিত ইহার বিবাহ হয়। মহর্ষি ইহার গরিচর্যায় ভূষ্ট ক্ট্যা ইহাকে দিবাজ্ঞান অর্পণ করেন। ইহার গর্ফে নর ক্ঞাও এক পুত্র হয়, এই পুত্র সাংখ্যশাস্ত্রকর্তা ক্পিন। (ভাগ॰) ফর্মন ও ক্পিন দেখ।

ट्रिन्यपूर्य (११) दिन्न इयटक्यर्यतः यद्य आधादत कान्। ১ दिनास्त्रतमः कार्यः । "अर्थः । "अर्थः । "अर्थः ।

वा छ (प्रवर्शन ( क्षेत्र १४० व ), ( क्षेत्र) व्याव करें। इ त्वकानियान व्यावन के क्षेत्र जारेशक विश्व करें। (भक्तर ( भट्ट भवत १४० वर्ष) ' (भवत का दिनकार क्षेत्र) (वर्षा व्यावक वर्ष) ( क्षि ) ( ज्यादक ( क्षेत्र) ( क्षेत्र)

८ जुट्छुन (३१) रहन बादरान्य ह स्वातास्त्र क्रिका स्वरहण्य स्वजातिस्थाय स्वरह्मान क्रिके स्वातास्त्र क्रिका स्वरहण्य स्वातास्त्र क्रिकार्यस्त्र (स्वातास्त्र स्वरूप)

ट्रिक्ट्रिक (जी) देवनामाः (क्षित्रः। (स्वाद्धः) ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट

( জাগ দাহতাঃ ৪)

দেবদ্রদ (পু: ) শীপ্রতিষ্ঠিত তীর্থ তেল, এই হলে সংযতচিত ছইলা সামী করিলে আবা স্থাধকের কেলাভ হল। এই প্রতি সহাদেক দেবীর স্বাহ্ন আবা ক্রান্ত্র দেব সহিত অবস্থান করিছেক্ত্র

( अविक ५ अवेदेशक ३-४२ )

## অষ্ট্রম ভাগ সম্পূর্ণ।

